

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक आभोगी प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक - साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सम्पादक
राममूर्ति

शुक्रवार १४
६ अक्टूबर ६७

इस अंक में
गणनी - परमाणुबलक या.
इकाग्रबलक भाग्य नया दृश्य
- विनीता

काश्मिरी विद्रोह की लीन
- प्रबन्ध चोक्मी
विनीता का स्वभाव शास्त्र - या० मू०
गणनी के विचार - भाग्य, नवी शक्ति
- लक्ष्मी

परिचयों का प्रकाश, भाग्यदान - १-२२
अन्य स्तम्भ

समाचार द्वारकी
मुद्रा और सामग्री
- लीला रंगमय
पुस्तक-परिचय
अभोजन के अनिर्वाह, पत्रकारिता
सामयिक चर्चा

आपने और का आरंभ
जे० पी०
व्यक्तित्व और विचार

वार्षिक शुल्क १० रु०,
एक प्रति २० पैसे
विदेश में
१८ रु०, १८ नि० या २१ डॉलर
सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजपाट, बांदागली-१
फोन नं० ४२८५

भारत और विश्व

जब भारत स्वाधीन और स्वाधीन बन जायगा और इस तरह न तो सुदूर किरीको सभ्यता की लोभ-कैलाश और न अपनी हीरोईकी की शोषण होने देगा, तब यह पश्चिम या पूर्व के किरी भी देश के लिए - फिर उसकी शक्ति कितनी भी प्रबल क्यों न हो - लोभमय आकर्षण का विषय नहीं रह जायगा; और तब यह सर्पिली शास्त्राचार्य का बोस उगाये बिना ही अपने को मुगलत अनुभव करेगा। उन्नीस यह भीसीरी स्वाधीनी अर्थ व्यवस्था वही आत्मरक्षा के विनाय सुदृढ़ म सुरक्षा सिद्ध हागा।

पूण स्वराज्य की मरी बलवता दूसरे देशों से काह नाता न रखनेवाली स्वतंत्रता की नहीं, बलिन स्वराज्य और प्रतिष्ठित स्वतंत्रता की है। मेरा राष्ट्रम उभर तो दे, पर वह स्वतंत्रता नहीं है, उन्नीस किरी दूसरे राष्ट्र या शक्ति को हानि पहुँचाने की भावना नहीं है। बाल्मी विद्यालय उतने बाल्मी नहीं है, बलिन कि व मैतेक है। अपनी सभ्यता का उपयोग हन तरह करो कि पड़ोसी की सभ्यता को कोई हानि न पहुँचे। - यह बाल्मी विद्यालय एक स्वतंत्र स्वयं को प्रकट करण है और उन्नीस मैदू पूरा विभास है।

स्वतंत्र प्रजातांत्रिक भारत आक्रमण के विनाय पारंपारिक रक्षण और आर्थिक लक्ष्यार के लिए दूसरे स्वतंत्र देशों के साथ खुशी से सहयोग करेगा। यह भावना और जनन पर आधारित ऐसी विश्व-व्यवस्था की स्थापना के लिए काम करेगा, जो मानव जाति की प्रगति और विकास के लिए विश्व के समूचे मान और उमरी समूची सामूहिक सभ्यता का उपयोग करेगी।

परिचय राशों की अपनी कुशलता का साथ दूसरों को देना चाहिए। यदि ये अपनी कुशलता का उपयोग विश्वों में परमाणु युद्ध से करना चाहते हैं, तो अमेरिका करेगा 'अच्छा शिपे, हम पुन बनाने मानते हैं। इस कृपा को हम शुभ नहीं सोचना चाहते। हम तो समूची दुनिया से कहेंगे कि हम आपको पुन बनाना शिवायेगे और उसके लिए आपसे कुछ भी बीमत नहीं लेंगे।' अमेरिका माने करेगा 'बन भाष राष्ट्र गेडू का एक ही दाना पैदा कर पाते हैं, तब हम दो हजार टने पैदा कर सकते हैं।' पर अमेरिका चीनकेबालों को यह कृपा प्रकट शिवायेगे और समूची दुनिया के लिए गेडू पैदा करने की महावापसीदान न रयेगा, नहीं ता स्वयंभुव दुनिया के लिए यह एक सुख नि होगा।

- गांधीजी

संग इतिहास - १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२ २३ २४ २५ २६ २७ २८ २९ ३० ३१ ३२ ३३ ३४ ३५ ३६ ३७ ३८ ३९ ४० ४१ ४२ ४३ ४४ ४५ ४६ ४७ ४८ ४९ ५० ५१ ५२ ५३ ५४ ५५ ५६ ५७ ५८ ५९ ६० ६१ ६२ ६३ ६४ ६५ ६६ ६७ ६८ ६९ ७० ७१ ७२ ७३ ७४ ७५ ७६ ७७ ७८ ७९ ८० ८१ ८२ ८३ ८४ ८५ ८६ ८७ ८८ ८९ ९० ९१ ९२ ९३ ९४ ९५ ९६ ९७ ९८ ९९ १००

समाचार-डायरी

देश :

२७-१-६७ : नयी दिल्ली में मुख्य मंत्रियों से चर्चा करते हुए एहमदी श्री चान्दान ने कहा कि देश में साम्यवादीक तत्वों के खतरे का सामना करने के लिए प्रशासकीय कार्यकारी के अतिरिक्त गैरसरकारी ढंग के सार्वजनिक प्रयत्नों की जरूरत है।

२९-१-६७ : बिहार के मुख्य मंत्री ने पत्र-प्रतिनिधियों के सम्मेलन में बताया कि बिहार के ३२ कांग्रेसी विधायक संयुक्त मोर्चे में शामिल होंगे।

३०-१-६७ : कांग्रेस-अध्यक्ष श्री कामराज पंत वंगाल कांग्रेस समिती की भंग कर उसकी जगह तदर्थ समिति की स्थापना के प्रस्ताव से सहमत हो गये।

१-१०-६७ : बिहार सरकार ने पेशाव अग्निदोलन को नैतिकानुनी और असाध्विपानिक घोषित किया।

२-१०-६७ : उत्तर प्रदेश में न्यायपालिका और कार्यपालिका आज से अलग-अलग काम करने लगी है।

देश भर में सर्वत्र गांधी-जयंती मनायी गयी, इस अवसर पर राष्ट्रपति और प्रधान मंत्री ने अकाशवाणी द्वारा देश के नाम संदेश प्रसारित किया।

पाइल (गुजरात) में प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने कहा कि गांधीजी की आर्थिक समानता की विचारधारा के अनुसार आन्तरिक विनोद करने देश में नियमित-निरन्तरण का काम कर रहे हैं।

डा० लोहिया अस्वस्थ, राष्ट्र विज्ञानक विदेशः

२६-१-६७ : पश्चिम के राष्ट्रपति अरुण लॉ ने मास्को में आयोजित स्वागत समारोह में कहा कि वे जनवरी १९६६ की ताश्कंद घोषणा की भावना से भारत के साथ सभी समस्याओं की बातों के लिए सहमत हैं।

२८-१-६७ : संयुक्त अरब गणराज्य ने राष्ट्र संघ के महामंत्री श्री उथी की सूचना दी कि यह राज नहर को इस्वापण के बदलों के लिए तैयार करता है।

सुझाव और सम्मतियाँ

● 'भूदान यज्ञ' में काट्टन और पोरो होने चाहिए।

● 'दैनन्दिनी' में पर्व, त्योहार तथा संस्मरण दिवस की सूची दी गयी है। प्रत्येक पर कुछ लिखना चाहिए।

● डॉ.क-समाधान कायम भी मुख्य किया जाय।

● प्रत्येक प्रांत की रचित बहानों के लिए 'नम' की टिप्पणी देनी चाहिए।

● विचारधियों की रचित की सामग्री भी खपनी चाहिए।

● 'गौर की गान' की मॉति प्रथम पृष्ठ पर, साहन ब्याक या काट्टन होना चाहिए।

—सुतीराम 'क्षय रोगी', जिजा खोदिय मण्डल, रेवाड़ी (मुहमोव), हरियाणा।

● 'भूदान यज्ञ' से मुझे काफी प्रेरणा मिलनी है, इसलिए मैं इसका निषमिंत प्रादक और पाठक हूँ। सर्व सेना सघ का यह प्रकाशन महान सुकृत्योर् बन्यु।

—पद्मनाभ राय, छत्रपडा (उड़ीसा)
'भूदान यज्ञ' का ८ सितम्बर का अंक पढ़कर एवं नवीनता पाकर खुशी हुई। लासकर रेवाचित्र पाठक का स्थान अवश्य आकर्षित करता है।

मैं निम्नलिखित सुझावों को पत्र में प्रवेश दिवाने की अपेक्षा रखता हूँ :

● 'भूदान यज्ञ' में भूदान की प्रगति, आलोचना, समालोचना एवं सदी और दे प्रकाशित हो, जिनसे सामान्य जनता एवं समाजिक कार्यकर्ताओं को भी सही माँगें दर्शन मिले।

● सामाजिक जनता के विरुद्ध, कम लक्ष्यवाले उद्योगों की जानकारी एवं उद्योगों के विकास का सही रूप प्रस्तुत किया जाय।

● विश्व सत्य-सेवी संस्थानों के अपारंपरिक कार्यों का विवरण एवं विद्वानों के विचार प्रकाशित हो।

● इन सब सुझावों के साथ विद्वान और अल्पसंख्यक सहकार्य हो। पत्र को

आकर्षक बनाने के लिए रेखाचित्र देकर जो सभ्य उठाया गया है, यह सही कदम है। इसके अलावा भूदान की खमीन के विकास कार्यों के दृश्य, कृषि-कार्यों के दृश्य, चरम्या केन्द्र, खुप उद्योग केन्द्र इत्यादि के चित्र भी प्रकाशित किये जायें। इसके साथ-साथ सत्याद के प्रमुख समाचारों का चित्र प्रकाशित करके पत्र को आकर्षक बनाया जा सकता है।

सुरेन्द्रप्रसाद मण्डल, राजपाट, बाराणसी।

● 'भूदान यज्ञ' में पुराने पंजाब का नक्शा प्रामदान सहित देखने की मिलना चाहिए।

● नये लेखकों के विच, रेखाचित्र आदि समय समय पर प्रकाशित हो।

● सर्व सेना सघ के अन्वेष के पास जो व्यस्य चित्र हैं। बीच बीच में उन्हें प्रकाशित करते रहें।

● पटना में कार्यकर्ताओं की बैठक में लोक शिक्षण की जो योजना बनी है, यह किस प्रकार कार्यान्वित हो रही है, यह सराबर प्रकाशित करते रहना चाहिए।

● प्रामदान-प्राति के जिज्ञासक और दे देने चाहिए।

—विठ्ठल पांडुरंग मोगल-मुन्नी, वाया रविमपुर, जिजा लाला (मराठा)

आन्तरिक सूचनाएं :

भूदान यज्ञ के मुद्रक में परिवर्तन "भूदान यज्ञ" का वार्षिक संदा नये रूप में ८०० के बरते १००० किया जा रहा है। इसका कारण है छपार, संविधान, कागस आदि के बढ़ते हुए भाव। ८०० बरते में यह पत्रिका पाठो में ही खंड रही थी। इसलिये भी यह सुविधि अनिवार्य हो गयी। हमारे पाठक गण और हितैरी इस विषयता को महसूस करके उदात्तार्थक पत्रिका को पूर्णतः अन्तर्गत हरिके सुयोग देकर अपने मित्रों को भी इसका प्रादक बनानेो देरी हम आशा करते हैं।

२ और ३ अक्टूबर को देस संत खने के कारण प्रमुन अंक एक दिन दिना में प्रकाशित हो रहा है। पाठक शुभा करे।—मं०

भूदान-यज्ञ : सुक्रवा, ६ अक्टूबर, '६७

भूदान-यज्ञ

भारत के भूदान की प्रथा का विकास और प्रसारण

गांधी : परम्परापोषक या.....?

"गांधीवाद जीवन सम्बन्धी मौलिक प्रश्नों का उत्तर देता ही नहीं। उसका कोई अपना दार्शनिक मन नहीं, इसलिए उसमें जीवन के सब अंगों के एकीकरण की, समन्वय की, शक्ति नहीं है। यह कुछ बातों को मायब करके समस्या को सरल करना चाहता है। यह जान बुझाने का उपाय हो सकता है, परन्तु इससे काम नहीं चलता। हमारे बहुते प्रश्न इसलिए खड़े हो गये हैं कि आज मशीनें चल रही हैं। यदि गांधीवाद का बोलबाला हो तो मशीनें ठंढा दी जाएंगी, विद्युच्चालय भी प्रायः बन्द हो जाएंगे। रेल, तार, कल कारखाने होंगे ही नहीं, प्रबन्ध खत्म हो जाएंगे, पुराना साम्य जीवन ब्य जायेगा। शिष्टे हीन चार ही वर्गों में मनुष्य की बुद्धि ने भी नम शर्श का प्रयास किया था, दुःखन के समान उसकी सीमा स्मृति रह जायेगी। यह समस्या का सुल्झाव नहीं दे, समस्या से पराजित है।" ये उद्गार प्रगट किये हैं, अपने देश के एक विद्वान् लेखक और बुद्धिवादी व्यक्ति ने, एक दूसरे हिन्दी साहित्य के मूर्खत्व तथा स्वर्णत्व, की एक प्रस्ताव पुस्तक की प्रस्तावना में। पुस्तक के कई उत्तरण ही पढ़ा था। गांधी विचार का अध्ययन तथा गोप्यन करनेवाले देखे और भी विद्वानों की सहया कारी हैं, जो गांधी की परम्परा पोषक के रूप में देखते हैं। उनको आर्थिक, राजनीतिक विचार धारा को आध्यात्मिक मानते हैं, और मानते हैं कि इस विद्यान के युग में गांधी की पान 'आय' देते हैं।

बात सही है। अगर गांधी विचार उन परम्पराओं को ही पोषण देता है जो परम्पराएँ आज हमारे युद्ध के और समाज के विनाश में बाधक सिद्ध हो रही हैं, तो इस विद्यान के युग में कोई प्रगतिशील मनुष्य परम्परापोषक गांधी की बातों को क्यों मानेगा ?

यही यह स्वर्ण पैदा होता है कि क्या हम वैज्ञानिक युग में गांधी का कोई स्थान है ? चौद पर मानव की पहुँच के युग में ? हमें हल-प्रश्न-पर-विचार करना चाहिए, और अगर हम युग में गांधी सचार्थ अनासक्त सिद्ध होता हो, तो आज की चार्ल्स और आकाशवाणी से जो नयी पीढ़ी को चाहिए कि साहसपूर्वक गांधी की याद की भी रात्रवान की समाधि के बाजे श्वस्त परधरों के नीचे दबा दे, लूटि देव की हवा में, देशवासियों की सुवान पर फिर कभी गांधी लौटकर न आने पाये।

गांधी ने इस देश के अन्तिम व्यक्ति को राष्ट्रीय विद्यान की कसौटी और आधार माना, उन अन्तिम व्यक्त के तत्कालीन स्तर

में आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक पुनर्निर्माण की परिवर्तनाएँ प्रस्तुत किया, उस अन्तिम व्यक्ति की शक्ति को बसाने के लिए उसकी समझ में आ सकनेवाली अत्यन्त सीधी और सरल भाषा में, उसकी पकड़ में आ सकने लायक जीवन दर्शन और मूल्यों की कल्पना किया, यहाँ तक कि उस अन्तिम व्यक्ति से एकदम साधने के लिए उसने जगत् को धारा कर लिया। मजदूर, मग, शूद्रवार, हुनकर, परिचारक क्या क्या नहीं बना ?

विद्यान का वैभव जिसे हमेशा नहीं करना, समाज में विभव को ही स्थान नहीं, जो आज हम 'चौद पर मानव की पहुँच' के युग में भी सदियों पुराने परिवेश और परिस्थिति में रहता है, उस अन्तिम व्यक्ति को नयी समाज रचना का आधार माननेवाला, 'हम पहुँचवालों' की निगाहों में सदियों पीछे का परम्परापोषक मनुष्य मात्र पढ़े, तो इसमें आश्चर्य की भी बात क्या है ?

लेकिन मुस्लिम अमेरिकी समाजशास्त्री मि-रोल वारसोदी कहता है—

'आमूलो से जहाँ तक दुनिया की परिवर्तनानों के इतिहास का पढ़ना सामने आया है—सोवियतों ने हमेशा अपने आधुनिक समाज के नेतृत्व के लिए ऐसे शास्त्रों की अनिवार्यता को महत्वपूर्ण माना है, जो मरदा दृष्टिपाने और उसका शीघ्रतः उपयोग करने में सक्षम हों।'

अगर पि- वारसोदी की बात में सत्य का तत्व है—और इतिहास उस तत्व को इनकार नहीं करता, तो क्या यह माना जाय कि अन्तिम व्यक्ति की बात बहना मानव विवास की ऐतिहासिक परम्परा में अभिन्न कड़ी है, यह सदियों पुरानी बात हो ही नहीं सकती ? साबू सदियों पुरानी बात तो यह है कि समाज 'एक' वा 'कुटु' सनापारी और सवाभाषी विशिष्ट जनों के नियन्त्रण में रहे, चले, और आम मनुष्य की भारी तन्नाद इनकी विदमत में लगी रहे।

दुनिया के कर्ममान कालीन इतिहास के पृष्ठों पर साम्यवादी विद्वानों की जो बहानियाँ अंकित होगी वा रही हैं, उस कड़ी में 'नकसलवादी' की भयना ने बुद्धक यह चेतावनी दी है कि 'एक' वा 'कुटु' की सगह 'सर्व' का अन्तिम समाज नहीं बना, तो मानव विधात की प्रक्रिया मनुष्यों की आग में वक्कर राख हो जायेगी। इसलिए सदियों से चली आ रही 'एक' वा 'कुटु' विशिष्ट जनों द्वारा सञ्चालित समाज की परम्परापोषक बातें करना चौदकर, रन आम मनुष्य के आन्तिम व्यक्ति जहाँ है, वहाँ से सीचना शुरू करना होगा।

गांधी की सीधी सरदी बातों को समझने के लिए वैज्ञानिक और शास्त्रीय बोध हो रहे हैं, बड़े-बड़े और महार प्रयो की रचना हो रही है, और इन प्रयो का गांधी 'अन्तिम व्यक्ति' की पहुँच से परे दया वा रा है। लेकिन क्या उन अन्तिम व्यक्तियों की पुर्न, चिन्तनों और दर्द भी सदियों से लौचकर हम गांधी की आत्मा को विद्यान प्रस्थापनों में नैद कर सकेंगे ?

● 'एन' समाज भाव की होमल' पृष्ठ १५४ १५।

सत्ता किसकी : एक की, कुछ की, या सर्व की ?

● जब विदेशी राज्य था तो प्रश्न था अपने देश में अपने राज्य का। जब अपना राज्य हो गया तो प्रश्न हुआ, 'स्वराज्य' का। राज्य जनता के नाम में चलता है, चाहे कोई डिप्टेटर चलाये या जनता के जुने हुए प्रतिनिधि, लेकिन स्वराज्य तो स्वयं प्रत्यक्ष जनता द्वारा ही चल सकता है। राज्य के लिए सरकार की शक्ति यानी नेताओं और अधिकारियों की शक्ति चाहिए। स्वराज्य के लिए जनता की शक्ति यानी लोकशक्ति—संगठित लोकशक्ति—चाहिए।

● दलों की प्रचलित विरोधवादी राजनीति से सरकार की ही शक्ति बनती है, चाहे वह एक दल की हो, या कई दलों को मिलाकर। विरोधवादी राजनीति से 'सर्व' की शक्ति यानी 'लोकशक्ति' नहीं बन सकती।

● १९ वीं शताब्दी से मार्क्स की प्रेरणा के कारण क्रांति का यही लक्ष्य रहा है कि राजनैतिक तथा आर्थिक, दोनों शक्तियों क्रांतिकारी दल के हाथ में आवें। और यह शासन-सुक्ति की दिशा में कदम समझा गया। २० वीं शताब्दी के मध्य में गांधीजी ने यह विचार दिया कि क्रांतिकारी पार्टी सत्ता से अलग रहे, और लोकशक्ति को संगठित करे। समाज-दर्शन में यह विचार बिलकुल नया है।

● संगठित लोकशक्ति से स्वराज्य का संचालन हो, और राज्य की शक्ति पूरक के रूप में रहे, यह इस शताब्दी के उत्तरार्ध में लोकतंत्र के विकास में सर्वोदय आन्दोलन की देन है। अब दुनिया की परिस्थिति ऐसी है कि सर्वोदय लोकतंत्र चाहे डिप्टेटरों का रूप लेगा, या लोकतंत्र सरकार की शक्ति को क्रमशः छोड़ता जायगा और अधिक संगठित लोकशक्ति से चलेगा। लोकतंत्र के सामने ये दो ही विकल्प हैं।

● लोकशक्ति ही लोक-स्वराज्य की दुनियादी शक्ति है। विनावादी ने अपने 'स्वराज्य-शास्त्र' में लोकशक्ति के तात्त्विक और व्यावहारिक पहलुओं पर विचार किया है।

● 'स्वराज्य-शास्त्र' के अनुसार 'राजनैतिक विचार' के अन्तर्गत दो प्रश्न हैं : एक, प्रकृति के साधनों का उपयोग तथा, दो, समाज में रहनेवाले मनुष्य की आपसी व्यवस्था। व्यवस्था में दो चीजें हैं : भूमि आदि साधनों की मालिकी तथा मनुष्यों के परस्पर सम्बन्ध।

● 'स्वराज्य-शास्त्र' मनुष्य-समूह को कृत्रिम भागों में नहीं बाँटता—न उच्च वर्ग, मध्यम वर्ग, निम्न वर्ग, न वर्ग, न सम्पन्न-विषय। समाज के विकास में ये भेद दूसरे कारणों से पैदा हो गये हैं। वास्तव में भेद एक ही हो सकता है—समर्थ और असमर्थ का। 'वर्ग-जैती कोई चीज ही नहीं है, केवल कम या अधिक सामर्थ्यवान् व्यक्ति हैं।' बुद्धि, बल, धन, सख्या, साधन, संगठन आदि सभी सामर्थ्य में शामिल हैं। सामर्थ्य की विषयता में से दमन और शोषण आदि का विकास हुआ है। ये सब कम या अधिक सामर्थ्यवान् व्यक्ति मिलकर अपनी व्यवस्था कैसे करें, यही मूल राजनीतिक प्रश्न है।

● व्यवस्था तीन प्रकार से हो सकती है : १. कोई एक समर्थ व्यक्ति सबके लिए व्यवस्था करे। २. एक से अधिक समर्थ व्यक्ति एकट्ठा होकर सबके लिए व्यवस्था करें। ३. सब मिलकर समाज की जिम्मेदारी से अपनी व्यवस्था करें।

● दूसरे प्रकार में, यानी एक से अधिक की व्यवस्था में, शासक, शास्य या जन की सत्ता हो सकती है, अथवा किसी दो या तीनों की मिलीजुली सत्ता हो सकती है। और, इन सत्ताओं के अनेक रूप हो सकते हैं। एक वर्ग, वंश, राष्ट्र-समुदाय की दूसरे के ऊपर चञ्चलायी सारी सत्ताएँ इन्हींके अन्तर्गत आ जाती हैं।

● आज की दुनिया में तीसरे प्रकार की, यानी 'सर्व' की सत्ता, कहीं नहीं है। जिसे हम लोकतंत्र कहते हैं वह अधिक से-अधिक दूसरे प्रकार की, यानी एक से अधिक

समर्थ व्यक्तियों की सत्ता है, भले ही वे जुने हुए हों। जब तक 'सर्व' पर एक या कुछ का शासन होगा, तब तक वह शासन चाहे जैसा हो, और चाहे जिस नाम से चले, हिंसा की ही शक्ति पर आधारित होगा। अहिंसा 'सर्व' की शक्ति है, इसलिए सर्व की ही सत्ता अहिंसात्मक हो सकती है।

● नाजीवाद, फासिस्टवाद, साम्राज्यवाद, साम्यवाद, आदि सब मोड़े समर्थ व्यक्तियों द्वारा चलनेवाली शासन-पद्धति के विभिन्न रूप हैं। सेना, बड़े यंत्र, बड़ी रूसी, केन्द्रित योजना, आदि सब उस शासन के इत्याहार हैं। "आम जनता हमारी व्यवस्था के बिना कभी व्यथित नहीं रह सकती!"—इस शासन-पद्धति की सारी इमारत इन्हीं नींव पर खड़ी है।

● साम्यवाद इस पद्धति का विरोध प्रयोग है। उसमें शासक, शास्य, धन का अन्वय-धारण मेव है। इस तरह का प्रयोग पहले कभी नहीं हुआ है। ईमानदारी से बना गया यह प्रयोग है, लेकिन इतमें भी है उन्नी गुच्छ का शासन, जो शासक, शास्य और धन की शक्ति का प्रयोग करने में निपुण है।

● इस तरह सर्व की सत्ता, यानी लोकशक्ति से चम्बेवाला लोकतंत्र और संगठित अहिंसा अभिन्न हैं। इस अभिप्रता को ध्वन-हार में प्रकट करना सर्वोदय का लक्ष्य है। सर्वोदय के समाज-दर्शन का आधार है लोकशक्ति। (क्रमशः) —रा० मू०

नयी तालीम

शिक्षा द्वारा समाज-परिवर्तन की
संदेशवाहक
मासिक पत्रिका

सालाना चंदा : छह रु०
सर्व सेवा संप्रदाय
राजघाट, वाराणसी-१

...सम्पादक की ओर से

'भूदान यज्ञ' के २२ सितम्बर '६७ के अंक में हमने यह परिचर्चा आमंत्रित की थी। विषय था—'क्या आज पूरे देश के लिए कोई ऐसा एक सर्वमान्य सत्य है, जिसके आग्रह का अभिप्राय पूरा देश एक साथ खड़ा सके?' विषय की स्पष्टता के लिए बतौर भूमिका में, इस मुख्य प्रश्न के इर्दगिर्द भी कुछ दृष्टिकोण जोड़ दिये गये थे। हमें खुशी है कि अल्पावधि में ही अच्छी संख्या में पाठकों के विचार हमें प्राप्त हुए। परिचर्चा के लिए आये हुए विचार अधिकतर ग्रन्थों के अध्ययन पर आधारित न होकर अनुभूतियों, धारणाओं और अपने दृष्टिकोण से समाज की प्रत्यक्ष परिस्थितियों के विश्लेषण के आधार पर हैं। कुछ तर्कसंगत-विचारप्रधान; कुछ परिस्थितिजन्य परेशानों के कारण पत्र ररे अन्तर के आक्रोशप्रधान, लेकिन अधिकांश विचार—प्रामाण्य, सर्वोदय और व्यक्ति-विनोय के प्रति निष्ठा और भावप्रधान हैं, जैसा कि पाठक स्वयं देखेंगे, भाव कहीं भक्ति का रूप लिये हैं, तो कहीं सरस विनोद का।

एक दूसरी महत्त्वपूर्ण बात कि सत्याग्रह की चर्चा का प्रसंग आते ही हमें स्वराज्य का आदर्शजन्य याद आता है, स्वराज्य के बाद का बीस साल का अनुभव ताजा हो जाता है, और हमारी लुभाव पर अन्तर कड़वा कसैला और घाने कैशा पैसा, रखा उभड़ने लगता है।

लेकिन इतना स्पष्ट है कि स्वराज्य आन्दोलन के जमाने की और आज की परिस्थिति में अच्छे या बुरे, बहुत बड़े-बड़े परिवर्तन हो गये हैं। बीस वर्ष जो बीत गये, वे लोट-कर आ नहीं सकते। इसलिए इस वर्तमान काळ की जिस सीढ़ी पर हम पाँव रखे हुए हैं या रख रहे हैं, उस या उससे आगे की परिस्थिति का मूल्यांकन हमें क्षोभरहित मन-स्थिति में ही करना होगा।

२२ सितम्बर '६७ से ६ अक्टूबर '६७ के बीच का समय इस परिचर्चा के लिए निश्चय ही अपर्याप्त है। इस अल्पावधि के कारण बहुत सारे पाठक इस परिचर्चा में भाग नहीं ले पाये, इसलिए हमने यह परिचर्चा जारी रखने का निश्चय किया है। छुपया याद रखे, जगदी विष्णु, २० अक्टूबर '६७ के 'भूदान-यज्ञ' के अंक में प्रकाशित होगी।—सं०

सर्वमान्य सत्य बनाम स्वात्मानुभूत सत्य

मानव-प्रगतिपरक इतिहास बताता है कि प्राइमिटीव प्रकृत सत्य के विषय संसार में किसी एक सत्य को सर्वमान्यता प्राप्त नहीं हुई है। 'सत्य ही ईश्वर है।' अथवा 'ईश्वर ही सत्य है।' इस पर भी आज तक सारे वेदान्त व दर्शन में मतभेदता दिखाई नहीं पड़ती। हमारे प्राचीन व अर्वाचीन महापुरुषों ने पूर्ण एवं सर्वमान्य सत्य की लोभ में जिस प्रकार विचार-मग्नन किया और सत्य-प्राप्ति के लिए

सत्य, तपस्या व बलिदान की जो प्रक्रिया अपनायी, वह भी कल्पना की उच्चतर उद्धान पर आधारित है। यदि किसी एक सत्य को सर्वमान्यता प्राप्त हो गयी होती तो नीति व धर्मशास्त्र की जरूरत नहीं पड़ती। ईश्वर व अनीश्वरवाद की चर्चा व खण्डन-मण्डन से हमारे प्राचीन ग्रन्थ भरे पड़े हैं। अपने-अपने विश्वास के अनुसार मनुष्य ने सत्य को स्वीकार किया है। मानव-मानव की प्रकृति में जो भिन्नता पायी जाती है, वह प्राकृतिक शक्तों के कारण होती है। अतः सर्वमान्य सत्य के आधार पर ही सत्याग्रह किया जा सकता है,

यह सिद्धान्त-रूप में स्वीकार करना उचित नहीं जान पड़ता। इसलिए कि सर्व स्वीकृत सत्य हो तो सत्याग्रह की आवश्यकता ही नहीं रह जाती है।

पूज्य बापू के पहले ही सत्याग्रह किये गये हैं। प्रायः सभी सत्याग्रहियों ने जिस सत्य का आग्रह किया, उसका विरोध भी सदैव होता आया है। पूज्य बापू ने अपने समय में जितने भी सत्याग्रह किये वे सर्वमान्य आधार पर ही किये, ऐसा कहना कठिन है। 'स्व' को जिस सत्य की प्रतीति हो, वह बहुजनों द्वारा समर्थित हो तो सत्याग्रह के लिए पर्याप्त आधार मिला समझना चाहिए। स्वराज्य हेतु सत्याग्रह और नमक-सत्याग्रह ही ऐसे सत्याग्रह थे, जिसमें बापू भी अन्तरहत्या और देश की भात्मा का योग था। दूसरे सत्याग्रह यद्यपि लक्ष्य की दृष्टि से श्रृंखलाबद्ध थे, किन्तु समूर्ण भारतवासियों का योग उधमें नहीं था। अतः हम उन्हें खण्ड सत्य के आधार पर किये गये सत्याग्रह मले ही कह लें, किन्तु यह ध्यान रहे कि सत्य के खण्ड नहीं होने और न किये ही जा सकते हैं।

आज हम उस सत्य की लोभ में हैं, जिसकी अयदेवता के कारण वर्तमान संकट पैदा हुआ है। यद्यपि बापू ने इसकी लोभ पहले ही कर ली थी। बाबूजी उनके धार-धार चेतवनी देने पर भी हमारे देव ने अपनी छमता व स्थिति, धर्म व सङ्कटि की परवाह किये बिना पश्चात्काल अर्थशास्त्र का अन्वयानुकरण किया। परिणामस्वरूप पूँजीवादी संघर्षरुति और यंत्रबादी मैट्रिड उद्योगरुति को शोषण के आधार पर कल्पने-पूर्वक का नुक भवकर मिला। इसी कारण असमानता की तारें दिन-प्रतिदिन अत्यधिक चौड़ी होती गयी। इस तारों को पटने में आज दण्डशक्ति भी कारगर साबित नहीं हो पा रही है। यह इसलिए कि पूँजीवादी संघर्षरुति समता लाने में बाधा उपस्थित करती है। हमारे देव में न उदायन की कमी है और न सागनों की।

कमो केवल उपादन के साधन और जीवन की आवश्यकता सामग्री के समता के आधार पर विचार की है। अतः आज की समस्याओं का हल व्यापकवितरण में ही है। असमानता सर्वमान्य सत्य है।

यूरोप का 'ट्रूनिटि' विद्वान और पूरा विनोबा का मार्कण्डेय विज्ञान विद्वान का मूल प्रयास एक ही है। दोनों एक ही स्थिति को और हमें ले जाते हैं। क्रिन्ड विनोबा के प्रामदान आन्दोलन को औपचारिक सत्याग्रह मानते पर भी उसमें तात्कालिक समस्याओं के त्वरित हल करने की प्रवृत्ति नहीं है। अतः हमें तात्कालिक समस्याओं के हल के लिए बापू का अवसर और सत्याग्रह को कृपा को साहस के साथ अपनाया चाहिए। सर्वप्रथम हमारा आग्रह समग्रहीत धन (वैश) के वितरण का मस्ये ही न रहे, विन्ड समान उपादान के साधनों को समाज को सौंप देने का आग्रह तो हम कर ही सकते हैं।

आज साधारण-से साधारण वर्ग भी अपने को आर्थिक संकट में पँसा पाता है। यद्यपि अधिकांश हल संकट के मूल कारण को नहीं जानते हैं। साधारण अर्थ तक हम जनमानस को यह भावित नहीं करा पाये हैं कि यह संकट मानव द्वारा मानव पर बनाएँ टाया हुआ संकट है। देवी संकट नहीं है। यह संकट तब तक नहीं टल सकता, जब तक उपादान के साधनों पर समाज का अधिकार नहीं होता। आग्रह का सर्वमान्य सत्य यही है। हमें विश्वास है कि हम लोग को सत्याग्रह करके उधे सर्वमान्यता ही नहीं, बल्कि संकट प्रथम जन समाज द्वारा योगदान व अतीतों में मिलेगा।
—ममराजप्रसाद भवस्ती
१५/२/२९, मित्रित्व लाहन्, कानपुर

सत्याग्रह या राजनीतिक 'स्टण्ट'

महान्ता गांधी द्वारा चुने गये 'प्रथम सत्याग्रही विनोबा' लगातार १८ अमेरिका में ही रह के कोने कोने में भूदान प्रामदान का अन्वेषण कर रहे हैं। क्या यह अपने आप में सत्याग्रह की औपचारिक प्रक्रिया नहीं है? भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, ६ अक्टूबर, '६७

अगर विनोबाजी का प्रामदान आन्दोलन "सत्याग्रह" नहीं है, तो इस युग में सत्याग्रह का दूसरा कोई और तरीका है ही नहीं। अगर है तो वह दिशा ही प्रक्रिया है। सत्याग्रह की प्रक्रिया होती है किसी सत्य को अधिक से अधिक लोगों द्वारा मान्य बनाने की।

आज देश की जो स्थिति है, उसमें आज को देश में सत्याग्रह का सकारण बना है, उसकी बात बहनेगले लोग या तो देशद्रोही हो सकते हैं या फिर भारत को अन्वष्टता को सङ्घटित करनेवाले विदेशी लोग, क्योंकि आज देश में विनाश की ही सम्भावनाएँ नित्य नये रूप में प्रकट हो रही हैं। राजनीति के कारण देश में विरोध और असन्तोष का वातावरण होने से हर छोटी-सी छोटी बात के लिए भा आन्दोलन, प्रदर्शन, टापण, आगजनी के साथ ही सत्याग्रह का भी प्रयोग लेकर अपनी बात मनवाने का एक ढंग बन रहा है। अगर प्रामदान के लोग भी उन्हीं उपायों का सहारा एक मानवीय और सर्वथा उचित काम के लिए लेंगे तो राजनीति या अर्थसांसारिक तर्कों में और मस्येन्द्रवालो न क्या अन्तर रह जायगा!

२२ वर्षों के अनुभव के आधार पर मैं आज सोचता हूँ तो सत्याग्रह भी एक प्रकार का 'कीर्तन' ही लगता है। गांधीजी ने किसी भी प्रकार के दबाव अथवा बल प्रयोग को उचित नहीं कहा था। उन्हीं के लिए सत्याग्रह अन्न का प्रयोग किया था, न कि अपनी हठता को सारे देश पर लादने के लिए। कम-से कम इस ढंग का पट्टा लिखा समाज प्रामदान के लिए तैयार और उग्र सत्याग्रह करने की सलाह नहीं देगा। फिर आज को प्रामदान आन्दोलन दृष्ट में नव प्रकाश है। दो चार, दृष्ट, आदमी अगर दिल्ली में प्रथममन्त्री के दरवाजे बाहर, चाहे बितनी भी घड़ी, उनकी भंग बगैरे न हरी, अगर सत्याग्रह करे तो निश्चित रूप से उनको शांतिभंग करने के आरोप में जेल में डाल दिया जायगा और यह उचित

मौखिक भी राजनीति का "हल" करा दी जायगी। उधे यह लाल गुना अन्वष्टा है कि गाँव गाँव के लोगों के मन में सामूहिक हठता शक्ति पैदा हो रही है और यह आवाज उठ रही है कि हम प्रामदान के लिए प्रामदान कर रहे हैं, हममें हत्या मरणा है और हमने हमें कोई रोक नहीं सकता। दृष्टसे अन्वष्टा सत्याग्रह अपने आप में और क्या हो सकता है।

सत्याग्रह तो उस चीज के लिए होना चाहिए, जो अधिकांश लोगों का मान्य हो। दो चार किसी कारणवश न मान रहे हो तो उनको मनाने के लिए सत्याग्रह का सहारा कारगर हो सकता है। अभी यह प्रामदान आन्दोलन सर्वमान्य तो हुआ नहीं। अगर सर्वमान्य हो जाता तो सत्याग्रह की आवश्यकता ही नहीं रहती, कारण का उन सब अपने आप बन जाते और फिर प्रामदान अभियान जन आन्दोलन के रूप में संचरित होगा। कलने का तात्पर्य यह है कि प्रामदान का विचार अभी पूरी तरह से लोगों को समझाया नहीं गया है, अथवा किसी कारणों से लोगों की समझ नही आया है, इसलिए हमने "प्रचार और शैले लोककल्याणकारी कार्यक्रम के लिए किसी भी प्रकार का आग्रह नहीं होना चाहिए। फिर आग्रह करने के अधिकारी हम हैं ही क्यों?"

—कविन्द्र प्रवन्धी
कान्ठवृत्त बोधेशानल विद्या बाल्य, पारवण, लखनऊ

सबसे बड़ी चुनौती

आज देश में एकमात्र बड़ी चुनौती भारत की राजनीति ही है। हम सब भारतवासी राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न ढंगों के साथ मिश्रित राष्ट्र के अन्तर्गत सवाल पर विचार विनिमय नहीं कर रहे हैं। अगर सभी एक एकलव्य बैठकर राष्ट्रीय समस्या पर विचार करना शुरू कर दें, तो सभी मस्ये अन्वष्ट हल हो सकते हैं।
—संजय सिंह, कदावा

स्वेच्छया स्वामित्व-विसर्जन : सत्याग्रह का अभिनव स्वरूप

सुख या अभिनव प्रामदान की प्रक्रिया ही सत्याग्रह का उदात्त स्वरूप है, जिसमें भय न्यक्ति का, साधन समाज का स्वीकार्य है; जिसे आध्यात्मिक भाषा में सेवा मानव की, स्वामित्व ईश्वर का ही कहा जाता है। वर्तमान विज्ञान युग में भी मनुष्य अपनी समस्याओं को व्यक्तिगत और मिला समझ रहा है, जब कि पूरे समाज की मूल समस्याएँ सामूहिक हैं, जैसे भूख-प्यास की रूति आदि शारीर-रक्षा के लिए सारे साधन भी चाहते हैं; दिवात की, आरोग्य की तथा उत्पादन के साधनों की उपेक्षा सभी को रहती है। फिर भी मनुष्य दूसरों के हित की उपेक्षा करके अपने ही हित को सर्वोपरि मानता है, यही उसने बड़ी मानसिक गुणगी है, जिसमें मानव उन्मत्त गया है।

प्रामदान एक स्वयंपूर्ण तत्त्व है, और उनका दृष्टिकोण व्यापक तथा जागतिक है। सत्य, प्रेम, कृपा ही इसके आधारस्तम्भ हैं। जिस विचार की दिशा इतनी व्यापक हो, जो समस्त विश्व को ही एक दिन आत्मगत कर ले, इस प्रकार के सत्य का अन्य किसलय अस्मत्त ही है। मानव हृदय पर जहाँ तक विश्वास है, इसका औचित्य स्वीकार करना ही पड़ेगा। इस प्रकार की क्रान्ति ही भारतीय चेतना की स्रोतक है। अन्य पाश्चात्य विचार अहिंसादि नहीं, परिस्थिति परिवर्तक मात्र हैं। पूं. विनोबाजी तथा उनके अनुयायियों की इस समन्वय में तीव्रता है कि प्रामदान-विचार एक राष्ट्रीय विचार बनकर उसकी पुष्टि एवं विकास की ओर बढ़े तथा इही भूमिका पर व्यक्ति तथा समाज का तब निर्माण हो।

सत्याग्रह-प्रवाह के साथ-साथ सत्याग्रह का स्वरूप भी प्रायः बदलता रहता है। गांधीजी ने स्वराज्य-प्राप्ति को सत्याग्रह का लक्ष्य माना था। वह लक्ष्य आज साधन मात्र ही दिखाई देता है। उसके आगे प्राम-स्वराज्य ही अब साध्य की भूमिका में है, जिसके बिना आज का स्वराज्य भी खतरे में है। गतिमान प्रवाह

में उत्तरोत्तर लक्ष्य आगे ही बढ़ता जाएगा। अहिंसक साधनों से व्यक्तिगत स्वामित्व विसर्जन ही सत्याग्रह का अभिवर्चनीय स्वरूप है, जो सामाजिक, आर्थिक तथा राजनैतिक सभी दृष्टियों से स्वयंपूर्ण है।

—सिखनारायण शास्त्री, संयोजक
जिला सर्वोदय मण्डल, मथुरा

वास्तविकता देखें, तर्क नहीं

देश की आज की स्थिति में कच्ची कार्य-शक्ती सत्याग्रह की आवश्यकता महसूस करते हैं। अगर वे प्रामदान को सत्याग्रह-कार्य मानते तो फिर ऐसा क्यों महसूस करते ?

जब तक देश में विभिन्न मत कां व स्वार्थ मौजूद हैं, तब तक सबकी सभी के लिए मान्य कोई स्थिति या सत्य आयेगा, इसमें शक ही है। वद अस्थायी ही हो सकता है। प्रामदान को ही लें। पूंजीवादी इले राजपुत्राद से बचान के रूप में देखता है। समाजवादी इले समाजोत्थरण के रूप में। लेकिन यह स्थिति अस्थायी है। समाजवादी इहमें व्यक्तिवाद देखेगा और पूंजीवादी इहमें सामूहिकीकरण। फिर उनमें मतभेद होना स्वाभाविक है। सर्वमान्य की भूमिका अदृष्ट या भाव को ही मिल सकती है, वास्तविक स्थिति को नहीं ऐसा मेरा खयाल है।

इसलिए आज की स्थिति में सत्याग्रह की आवश्यकता को खण्ड सत्य या सर्वमान्य रूप के अभाव में असत्य मानकर टाटना यह एकदम करत है कि ऐसा विचार प्रकट करने-वाले नूतन (माडरेट) सत्याग्रह के लिए आवश्यक स्थान नहीं करना चाहते अथवा उनका अन्तर्गमन सत्याग्रह से प्रभावित होने-वालों का हित-साधक है।

आवश्यकता इस बात की है कि हम जिसे निरपेक्ष सत्य मानते हों, उसकी रक्षा के लिए एकदम श्रुत जायें। ऐसे न्यूनतम कार्यों में विद्याल उद्योगों के स्थान में ग्रामीणों की स्थापना, मध्यनिवेश, अमीन के मार्गित शोषण-समाप्ति एवं लोकतांत्रिक संस्थाओं को पूरे अधिकार दिखाना, जैसे मजदूर संघों को प्रबन्धक बनाना, कारपोरेशनों, नगरपालि-

हाओं और जिन्हा परिपदों को मानवों से मुक्त करना आदि आदि। दुनिया में मानसिक कष्टत ही करते रह गये तो जो मोड़ा भी सत्य हम हासित कर सके हैं, उसका भी हनन करेंगे।

—मन्मोहन दुबे,
शिवपुरी, इलाहाबाद-४

प्रामदान : सारी समस्याओं का हल

मंत विनोबा का यह कथना अधरसः सत्य है कि प्रामदान सत्याग्रह की सतत प्रवर्धमान प्रक्रिया है, तथा इसमें सारी समस्याओं का हल निहित है। देश की समस्याएँ अवश्य बल रहो हैं, पर सत्याग्रह की तीव्रता महसूस करना उचित नहीं। सत्याग्रह टोस, सर्वतो-मुणी तथा जय जगत् के सिद्धान्त से प्रेरणास्पद हो। साथी सामूहिक स्वाध्याय से बल लें तथा त्रिविध कार्यक्रम की क्षण के लिए भी न भूलें।

—हर्रीमकर लाल,
४२३, सुट्टीगंज, इलाहाबाद

प्रामदान ही देश को बचा सकता है

रचनात्मक कार्यक्रम द्वारा गांधीजी के सपनों को मूर्त रूप देने के लिए मिलने हुए साधनहीन तथा सख्या में अल्प लोगों को विनोबा जैसे सततदृष्टा तथा सद्यम व्यक्ति का नेतृत्व प्राप्त हुआ। गांधीजी के विश्वन के बाद अगले कदम की खोज में उन्होंने समस्त देश की चालीस हजार मील की पद-यात्रा की, जिसकी मिसाल भारत के इतिहास में ही नहीं, विश्व के इतिहास में भी मिलना कठिन है। इसकी पदयात्रा के दौरान आंध्र प्रदेश में, तेलंगाना स्थित पोचमपल्ली ग्राम में भूदान आन्दोलन का जन्म हुआ। आज तक देश के लगभग ८ प्रतिशत गाँव इस आन्दोलन के अन्तर्गत आ गये हैं।

आजकल राजनीति तथा व्यापार में एक अवस्यल प्रतियोगिता चल रही है। प्रायिक मनुष्य व्यक्ति-से अधिक पचन-सौहार्द के पीछे

भूदान-यज्ञ # शुक्रवार, ६ अक्टूबर, '६४

पात्र है। देश की चिन्ता करने की जिम्मेको पुरस्त नहीं है। प्रेम तथा विश्वास का स्थान स्वार्थपरता तथा लेमगपून ने ले लिया है, ऐसी दशा में प्रामदान आन्दोलन ही देश को बचा सकता है। देश से अधिक ले-अधिक प्राप्त करने के बजाय देश को अधिक से अधिक देने की प्रेरणा पैदा कर सकता है। यदि इस आन्दोलन को पर्याप्त सहाय में नई नहीं है कि नवयुवकों में इसके प्रति आकर्षण नहीं है, अधिक आर्थिक परिस्थितियों ने उनको बन्धु बना है, भूदान आन्दोलन लौट सत्य नहीं, पूर्ण सत्य है।

—बादमल ब्रह्मवाल, ईदराबाद

शत प्रतिशत सहमत

विनोबाजी १८ अप्रैल '५१ से सर्वो के लिए सर्वमान्य सत्य की भूमिका बनाने का नाम कर रहे हैं। भूमि में तो स्थिति के अधिकार में रहे, न तो राज्य के, यह प्रामाण्य के अधिकार में रहे, देश का र नागरिक का भूमि के साथ सम्बन्ध जुड़े, इस प्रस्ताव को मानता है। —दयानन्द विद्, मु० पी० चाल, पटना

प्रदर्शन योग्य कार्यक्रम चाहिए

राष्ट्रीयों ने अडावद्विच कार्यक्रम देश के सामने रखा। इनके पूर्ण करने से पूर्ण स्वराज्य हासिल हो जाएगा ऐसा भी कहा, तो भी बीच बीच में साप्ताहिक सत्याग्रह, व्यक्तिगत सत्याग्रह को उन्हीं पूरा अथवा आधा-आधा सत्याग्रह, नमक सत्याग्रह, चाय-कम सत्याग्रह, और आलिर में 'भारत छोड़ो' प्रसार। राष्ट्रीयों के सत्याग्रह की प्रक्रिया सीधी थी, अहिंसक थी, पर वह किसानों की अहिंसा विराधी को मोचने विचारने को मजबूर करती थी।

विनोबाजी भी सत्याग्रह ही कर रहे हैं, लेकिन तारा बन-भगवत उनमें दिशान नहीं ले रहा है, यह भी इकी त है। जन समाज हमने भूदान-यज्ञ : सुकवार, ६ अक्टूबर, '६०

रस से, ऐसी हमारी प्रक्रिया होनी चाहिए। इसके लिए अभी के हमारे कार्यक्रम पर्याप्त नहीं मान्य होते। जन शक्ति को बनाने के लिए, उसको आन्दोलनात्मक मोड़ देने के लिए सत्याग्रह का कोई न कोई परदर्शनयोग्य कार्यक्रम आवश्यक है। आज हमारी सरकार के कई काम ऐसे हैं, जिन्हें सारे जनता और हम नहीं समझते, फिर भी हम सब स्वागोश हैं। सरकार को मनमाना करने का मोका मिला है। विधायक, सभ्य सवल आदि ज्यादातर अपना स्वार्थ या अपनी पार्टी का स्वार्थ देखते हैं। ऐसी दशा में जनता सच्चा मार्गदर्शन नहीं पा रही है। राष्ट्र के प्रश्नों का राष्ट्रीय स्तर पर विचार करें और लोगों का मार्गदर्शन करें। इतने पर भी, पूरा अचरर देने के बाद भी मामूले न सुधरें तो सत्याग्रह का रास्ता याने कारून भंग का रास्ता भी अपनायें। हममें हमें पहले विधायकों, सभ्य सदस्यों आदि के सामने मलामद करना होगा, बाद में सरकार के सामने।

बीच बीच में मलामद के ऐसे कार्यक्रम बनना जो राष्ट्र रवियों और सरकार भी मजबूत कराने उठावेगी। हम वैसा स्वराज्य जना चाह रहे हैं भारत के लिए, उरी तबोंया अनु कूल रहे, हमका प्रचार हमें करना होगा और लोगों का मन उन दिशा में मोड़ना होगा। अगर यह देशव्यापी कार्यक्रम न भी बने तो भी अमुक सेच सुनकर यह काम करना होगा। यह हमारे सारे कार्यक्रमों आगे बढ़ाने का कार्यक्रम होगा। मैं चाहता हूँ कि ऐसे कार्यक्रमों के बारे में सीधा बात और उनको अमल में भी लाया जाय।

—सुब्रह्मण्यम शं० शाह, वर्षा

दृष्टिकोण : सुधारवादी या क्रांतिकारी ?

भूदान प्रामदान आन्दोलन निरस्त-रह एक सत्याग्रह आन्दोलन है, किन्तु उभी इन तक भाँते तक कि यह सुधारवादी दृष्टिकोण से न किया बाकर क्रांतिकारी दृष्टिकोण अपना कर लिया जा रहा है। किसी भी सत्याग्रह

आन्दोलन के लिए हमें इन दोनों दृष्टियों के अन्तर को समझना परम आवश्यक है। सुधारवादी दृष्टि युनिथनियर अथवा राश्ट्र का काम करने के दृष्टिकोण के अनुसार—भूदान प्रामदान आन्दोलन एक ऐसा आन्दोलन है, जिसमें वैज्जमीनों को जमीन मिलनी है। उनकी दशा में सुधार होना है। उन्हें आधा ये रोगी का आशासन मिलता है। किन्तु यह सब उभी अन्वय्य के अनर्गत है, और इसके लिए हम अधिक से अधिक कि जितने उन्हीं इस दशा में लाकर रल दिया है, और इसके लिए हम अधिक से अधिक उन्हीं राश्ट्र देने का प्रयत्न करते हैं। यह माँग करते हैं कि प्रामदान के गाँवों के वैज्जमीनों को व अन्य लोगों को सहायता मिले, जिससे यह दिवाया जा सके कि यह प्रणाली सरकारी प्रणाली से उत्तम है और इस तरह नमूना दिवाकर लोगों को भूदान प्रामदान को और प्रेरित किया जा सके। पहना न होगा कि आज यही दृष्टिकोण क्रांतिकारी नहीं मानेजानी मोशानिय पात्रियों तक ने अपना रखा है और उनका प्रयत्न यह रहना है कि वह किसानों व जनता की यह दिवाया सके कि उनकी पत्नी किसानों व जनता का अधिक से अधिक भण्य कर रही है।

इन दृष्टिकोण के वन्दस्वप विन लोगों को जमीन दी जाती है, वे दानाओं व प्रय नकलाओं को परामाओं को कृषद समझने लगते हैं। कार्यकर्ता अथवा प्रयत्न में लग्नता अनुभव नहीं करता है और देने व उने दोग देने लग जाता है, क्योंकि इस भाग दौड़ में यह सबकी दृष्टि में भूमिज हो जाता है कि सब लराभी की बड़ डवाराटन के साथनी का ज्वलिंग-गत स्वाभिय, अभी पूर्ववत् बना हुआ है और हमारा प्रयत्न क्रांतिकारी मानना को बुद्धित करने का एक वन्व न बना है।

इसके विपरीत, क्रांतिकारी दृष्टिकोण में भूदान प्रामदान सत्याग्रह अथवा क्रांति के स्वर प्रवाह की एक प्रक्रिया है। यह समाज काही समाज कायम करने का तरीका है। इन बातों के द्वारा यह परदर्शन होता है कि जनता की रोजगारी समसाम्ये समाजवादी इस से जुड़ी हुई है। प्रामदान से हम तरह की कोई मजबूत नहीं होनी कि पूर्वोक्त के रहते

प्राग्मदान के द्वारा जनता की समस्याएँ हल हो सकती हैं। अतः हम इनके प्रति बिलकुल उदासीन रहते हैं कि सरकार प्राग्मदानी गाँवों की सहायता करती है कि नहीं, बल्कि हमारा जोर फ़ासि अथवा अत्याग्रह को फैलाने (एक्स्टेंसिव) अर्थात् बड़ासे बड़ा प्राग्मदान करने और 'इन्टेग्रेस' अर्थात् गाँव में सामाजिक न्याय पाने के लिए लोगों को प्रेरित करने या आन्दोलित करने पर केंद्रित रहता है। मिशन के तौर पर, वेदमीनों या कम जमीनवालों को संगठित करने उन मालिकों से जमीन प्राप्त करने की कोशिश करना, जो कि रायें काम नहीं करते और उसके लिए आवश्यकतापुसार अतिरिक्त अत्याग्रह आदि करना।

इस काम में गाँव की, राहत के कामों द्वारा, सेवा करना बर्जित नहीं है। जो लोग फ़ासि का काम नहीं कर सकते या नहीं करना चाहते, वे इन कामों को करें, किन्तु दोनों का अन्तर समझ लेना अति आवश्यक है। दूसरी बात यह है कि जमाना बड़े तेज़ी में बीत रहा है। जिन सामाजिक न्याय की हम बात करते हैं, उसकी शलक हमारे चारों ओर निरन्तर चरिष्य, तभी लोगों की आस्था हमारे तरीके में होगी। अपनी थोड़ी जानकारी के आधार पर मेरा विचार है कि प्राग्मदानी गाँव की अभी अलसी बोटनेवालों को जमीन मिलने की गारन्टी नहीं दे पाये हैं। नरकवादी आदि का कम्युनिस्ट-आन्दोलन इस दिशा में अधिक दृष्ट है और इसी कारण वर जनता की आन्दोलित करना व अपनी ओर लीच्छता है।

बरा ही अच्छा हो कि हम यह सोचिन कर सकें कि सामाजिक न्याय के लिए सबसे बड़ा व कारगर हमारा तरीका है। नेवक बण्डा तरीका होना जानी नहीं है, उसका फ़ायदा होना भी आवश्यक है। यह समझना भूत है कि यदि हम अहिंसा के मार्ग पर चलेंगे तो ज्ये की प्राप्ति स्वयमेव हो जायगी। हमें पहले अपने उद्देश्य को देखना है और फिर उसको प्राप्ति के लिए उचित व कारगर साधनों को।

—श्रीवामा,

मिन्टिल लाहन्स, मुद्रानाबाद

कागज-फलम 'सुशास' की

देश के हर नागरिक की भूमिका नागर, भूमि और शौ से ही बनी है। उन्हें दूसरे शब्दों में 'हृत्', 'धरा' और 'धेनु' भी गोपनीय संकेतों में कहा जाता है। हम त्रिधोते भी भावा का, धर्म का, राज और नीति का टंटा नहीं चाहते, हमें उन शब्दों और संकेतों के 'धो—राज, धन दे' से प्रयोजन है कि जिनमें हमारी भूल का मल्लाह हल हो। मानव मान बेकार न रहकर सेतुबंध के पुल बँधने में लगे।

राष्ट्र की धुरी या धर्म की धुरी पागल बसुधरा में—'धरा' 'धेनु' हैं। गिरा, भारती, बाणों के वरदानों भूल मावेकी ने अनेक शान्ति के मन्थन से अमृततुल्य पद+अर्थ (पदार्थ) सर्वोदय घट में भर दिया है। महाशत्रुओं के पर्वतों को उँचे उठानेवाले 'गिरा धरणी' के शायों के सदयोग के लिए हर नागरिक की सम्मति की स्तुति लगी ही चाहिए।

सबे भूमि गो-पाल की,
राजनीति भू-पाल की,
धरणी घोड़ा पालकी,
मिथ्या भावा मालकी,
संत विनोबा ख्याल की,
कागज-फलम 'सुशास' की ॥

—छोटेलाज नेमा 'सुशास',

११९१११, रामनगर, जबलपुर

सत्याग्रह केवल निष्पन्न प्रतिरोध (पैसिव रेसिस्टेन्स) का रूप न ले। निष्क्रिय प्रतिरोध नकारात्मक (निगेटिव) होता है, जब कि सत्याग्रह भावात्मक (पॉजिटिव)। निष्क्रिय प्रतिरोध में हिंसा के बल शेष मौजूद रहने हैं और भावात्मक दुर्बलता का भान। दोनों मिलकर वह खीरहीन बन जाता है। पर रचनात्मक कार्य के आधार पर सदा सत्याग्रह सामनेवालों की विचार-शक्ति को अग्रज करता है, वृद्धि नहीं। सत्याग्रह एक आत्म-झाड़ि का प्रयत्न है, जिनका अनिर्वाय परिणाम सामनेवालों की हृदय-झुक्ति होता है। सत्याग्रह में परिभाषा का महत्त्व धर्म है, गुण का अधिक है।

—विनोबा

लोक-यात्रा

श्री नाक भारत की सेवा में आगे आये और लोक प्रेरणा और लोक-जागृति का निमित्त बने, इसके लिए विनोबा ने बाबू साहब की भारत-यात्रा का विचार असम की बहनों के सामने रखा। उन्होंने उसाह में स्वीकार किया। मित्र-भंडल की राय और विनोबाजी की सहाय से यात्रा सन्नधि निम्न बातें तय हुईं :—

- नाम—'लोकयात्रा' रहेगा।
- उद्देश्य—'लोक हितक चिन्तन'।
हिंसा लोकहित का चिन्तन करना; सत्य, प्रेम, कृपा की विमूर्ति को समाज में स्थापित करना तथा गार्डर एजेंट के लिए एकादश बतों का संदेश फैलाना।
- तत्वावधान—यह लोकयात्री टीवी विनोबाजी की ओर से प्रेषणी।
- सदस्य—(१) श्री हेमप्रभा भारती (२) श्री लक्ष्मीधर जुजुन (३) श्री निमेष वेद
- संचार क्षेत्र—श्री प्राग्मदान विद्यदान प्राप्ति का अभिमान हो, वहीं लोकयात्रा टीवी प्रेषणी। इस दृष्टि से पहले तीन माह की यात्रा इन्दौर जिले में शुरू हो।
- समय—यात्रासमय लोक यात्रा का आरंभ २५ अक्टूबर '६७ में हो और करीब २५ जनवरी '६८ तक चले।
- संयोजन—प्रांतीय या स्थानीय संस्था या मित्र-मण्डल लोकयात्रा का हर दिन का कार्यक्रम बनाये। तबकी पूर्वनिर्धारित करे और यात्रा का पूरा प्रबन्ध करे। साथ में साहित्य विक्री आदि भी व्यवस्था भी करे।
- पहाय—पहायों का यात्रा ३ से ५ मोड तक चलना अच्छा होता। शुद्ध दृष्ट प्रकाश होने के बाद निष्क्रिय और बहुत करी धूर होने के पहले पहुँचना।
- स्वभाव—लोकयात्रा का स्वभाव पूरा शांतिपूर्ण रहेगा।
तीन माह के अनुभव के बाद लोक यात्री टीवी विनोबाजी के पास या किसी काश्मि में पहुँचे। अस्पष्टता, एग्रेसिव, त्रिरीधन, अनुभवों का अदान प्रदान करने, फिर आगे के कार्यक्रम का तय हो। —कृष्णराज मेहता

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, ६ अक्टूबर, '६७

हत्या एक आकार को



पुस्तक परिचय

इस बार २ से ८ अक्षरों का स्तम्भ गांधी जय शताब्दी के लिए पूर्ववैधारी का स्तम्भ है। अब अनेक महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के अन्तर्गत इस स्तम्भ का एक और विधा आरम्भ है—गांधी हत्या के पूर्व हत्यारों के अन्तर्द्वारा आधारित नाटक—'हत्या एक आकार को'। इसका प्रदर्शन ६-७-८ अक्षरों को 'ग्राहम आर्ट्स थियेटर' में हो रहा है।

इस नाटक के लेखक जॉर्ज सरगन को गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपलक्षित ने इस नाटक के लेखन पर पुरस्कार भी दिया है। रेडियो, टेलीविजन तथा रंगमंच की अन्य मीडियाधियों से परीचियों के लिए जॉर्ज सरगन का नाम नया नहीं है। भी सदागल ने गांधी की तारीख में दोन पीनने की जिमी जिमी पदति से अलग हूकर गांधी विचार को विरोध में ने उभारने की सज चैरा की है। वो विचार तीन विरोध में विक नने, यशो सभ्य होता है।

इस नाटक में गांधी का हत्याकाण्ड हत्या के लिए चलता है, तो सदागल सज प्रज्ञा हो जाता है। उसके मन में अनेक अन्तर्द्वारा उठने हैं। इन्हीं अन्तर्द्वारों को प्रस्तुत करने के लिए नाटककार ने जॉर्ज सरगन नाम का एक पात्र लड़ा किया है। यह शक्ति युक्त वास्तव में शक्ति हत्यारों की अपनी अन्तरेणना ही है। हत्याकाण्ड पर एक करके आपोप लगाता है, उसे कंधरे में लड़ा करता है और बार बार हार लता है। अपने पूर्वग्रहों से प्रसन्न होने के कारण यह करता बरी है, आ उस कल्या होता है, पर हत्यारों की दलीलों का घोषाघन प्रसन्न हो जाता है। अंत में हत्याकाण्ड यह भी महत्त्व कल्या है कि यह मात्र एक आकार की हत्या कर सजा है।

गांधी के विचारों पर आधारित जिन्दा आनेवाला अनेक दण का यह पक्ष ही नाटक है, जो दि श्रे के रंगमंच पर प्रस्तुत हो रहा है।

—सत्यजित कुमार

गुराम-रक्षा । गुराबार, ६ अक्षर, ६०

ब्रह्मसूत्र शांकरभाष्य विवेचन (हिन्दी)

विवेचनकार बालकोबा भावे
उत्तर भाग का मुद्रण अगस्त १९६६ में शुरू हुआ था। प्रथम भाग सन् १९६६ के अक्टूबर में, दूसरा भाग सन् '६६ के अगस्त में प्रकाशित हुआ है।

ग्रन्थ की प्रस्तावना में बिनाबाजी लिखते हैं "विवेचन में बालकोबा की दृष्टि एक नम्र साधक की है। अपने साधना काल में साक्षात्कृत चित्त को निराकार बनाने में शांकरभाष्य से बालकोबा की बड़ी मदद मिली है। समान्यधर्मों साधकों के लक्ष्य के लिए यह 'विवेचन' लिखने का साहस किया गया है।

"नम्र साधक नम्रता के वाण हिम्मत भी कर सकते हैं। वैसी एक हिम्मत इस विवेचन में बालकोबा ने की है, प्रत्यक्ष

में से अनेक क्षण छोड़ देने की हिम्मत। विन श्रे को साधकोपयोगी तब माना, उतने ही श्रे को हथमें सज किया है। ऐसे चुनाव से ग्रन्थ की उा योगिता स्पष्ट होती है। साधक के दृष्टि और ब्रह्मज्ञान की दृष्टि, दोनों मिलाना प्रसन्न का फलदाता की गुणादय हो जाती है।"

ग्रन्थ के दबल डिमांड आधार का है। बहिष्कार, चिकने कागज पर मुद्रित, कंधरे की सुन्दर और मजबूत बन्ध में ग्रन्थ आकर्षक बना है। तीनों भाग मिलकर कुल छठ सन्ख्या १०२६, मूल्य पुरे ग्रन्थ का पञ्चमीन रुपये।

प्रकाशक परधान प्रकाशन
पब्लिशर, जि० नरथी (मदराष्ट्र)

आज की पीढ़ी के

प्रतिनिधियों का शिखर आज का और निराला में प्रत आज की पीढ़ी का नये समाज की स्थापना का मग है। यह काम एक चुनौती के रूप में हमारे सामने है। गांधी जय शताब्दी वर्षानि की रचनात्मक कार्यक्रम उपलक्षित देकर के ऐसे तरणों और निष्ठाधियों को आपस में मिला जेकर बात करने का आमन्त्रण दे रही है। कृपाए, सतनम और कुन में स गुजरती हुई आज की धारा को मानवीय-मानवि का प्रसाद देना है। इसी प्रयास में १० से २५ अक्षर तक आचार्य राममूर्ति के कुलपतित्व में सिसुसंलग्न में यह शिखर हो रहा है। मग सभी विश्वविद्यालयों के छात्र नेता और विभिन्न क्षेत्रों में काम करनेवाले युवक नेता इस शिखर में मग होंगे, ऐसी आशा है। सर्वप्रथम परधान नारायण, प्रो० सुधीर, सच्चिदानन्द वास्तव्यधन, विष्णु सेन, मधु मिश्र ने ब्यापि विभिन्न क्षेत्रों के शीर्षस्थ मानवीयों को भी शिखर में विचारविमर्श के लिए आमन्त्रित किया गया है। —सत्यजित कुमार

यान्द रहैगी अभियान की सीरीयें बढ़ाईं
२ सितम्बर को वर्णन दब शिखर पत्रे और कई दिनों बाद सूर्य भगवान के रश्मिं हुआ। सामान्य अभियान के लिए यात्रियों की दौलियों निकल पड़ीं। गाँवों में लोग रात को हा मिल पाने थे। दिन में किसी स्थूल में कार्यक्रम चलताये थे।

एक दिन एक गाँव में कोई बादमी नहीं मिला दृश्य में भी बड़ी मिला तीर्थों की क्षार को। पहाड़ का लीपी दो मोल की पगईं, पट म पृथ हूद रहे थे। आम्रपन की बालें मिलीं। झाले कथे से उतरकर एक क्षार रस दिये और मड्डवा बचाने लगे। ७० वर्ष के बूढ़े हरिद्वारी के दौन ही नहीं गाने हुए मजिल की ओर चल बड़े— 'नितको लगी सेवा की लगन, सुर्नाजी का निप पर रंग बना ।'

—गुरुमत्सद जोशी
दक्करबाबा छात्रावास, रिहरी

टीकमगढ़ जिले में ग्रामदान की स्थिति

विकास मण्ड	स्थिति का विवरण			ग्रामदान में शामिल					
	पंचायत संख्या	ग्राम संख्या	जनसंख्या	पंचायत संख्या	ग्रामदान संख्या	जनसंख्या	शेष ग्राम, जिनका ग्रामदान अभी बाकी है	प्रत्येक ग्रामदान में ग्रामों का प्रतिशत	विशेष
टीकमगढ़	३३	१७७	६६८३०	२६	१६६	६३७५२	११	९४	तहसील टीकमगढ़ के कुल ३४३ ग्रामों में ३०४ यानी ८९ प्रतिशत ग्राम ग्रामदान में शामिल, इसलिए टीकमगढ़ तहसीलदान घोषित।
बलदेवगढ़	४०	१६६	८०६४५	२५	१३८	६५६१६	२८	८३	
	७३	३४३	१४७४७५	५१	३०४	१२९३६८	३९		
जायरा	४४	२०३	७८७२२	१३	५३	३५८९९	१५०		
पृथ्वीपुर	३३	१११	५४१७४	२	२	५२०९	१०९		
कुल :	७७	३१४	१३२८९६	१५	५५	४११०८	२५९		

—दामोदर प्रसाद पुरोहित, संयोजक
जिला ग्रामदान तृपान अभियान, टीकमगढ़

आन्दोलन के समाचार

ग्रामदान अभियान

बलिया (उ० प्र०) : २० कार्यकर्ताओं की संघियों ने देहभारबादी प्रत्यक्षदान अभियान की पूर्वसैरारी के लिए निकल पड़ीं। इस प्रत्यक्ष में कुल ७ पंचायतों और ३५ ग्राम-समाए हैं। १०० से अधिक आत्रादावले ६४ गाँव हैं। जिसे का ही नहीं, प्रदेश का यह एक प्रमुख सम्पन्न और सजग प्रत्यक्ष है। अब तक इस प्रत्यक्ष में ९० ग्रामदान ही चुके हैं। प्रत्यक्ष के प्रमुख गाँव और पंचायतें ग्रामदान में आ चुकी हैं।
—रामरुख शास्त्री

उत्तरप्रत्यक्ष : गत २२ अगस्त को टोलिधों ग्रामदान-यात्रा पर निकलीं। बरसात भी ओरों पर थी। ३१ अगस्त तक २१ ग्रामदान हुए। मधुवन, आजमगढ़ : २४ सितम्बर '६७ से २ अक्टूबर '६७ तक चल्ते गये ग्रामदान-अभियान में २८ ग्रामदान घोषित हुए। स्मरणीय है कि आजमगढ़ में ७३ ग्रामदानों की घोषणा 'विनोबा-अपदी' के अवसर पर हुई थी। इस प्रकार अब आजमगढ़ में १०१ ग्रामदान हो गये। —मेवालाल गोस्वामी

महाराष्ट्र के चन्द्रपुर जिले में ग्रामदान-यात्रा चल रही है। इसमें महाराष्ट्र के प्रमुख कार्यकर्ता भाग ले रहे हैं। जिला परिषद और पंचायतों के सरपंच, ग्रामसेवक और शिक्षक आदि पूरा सहयोग दे रहे हैं। राज्या तथा भद्रावती प्रत्यक्षों में ३६ ग्रामदान हुए हैं। ३९७ रुपये की सारिय विक्री और 'साभ्योग' मराठी के ५० प्राइक भी बने हैं। भद्रावती के बाद अभियान का क्रम भारोपरी प्रत्यक्ष में तथा उसके बाद यह सिलसिला गोंदिया में चलेगा।
—बाबूराव चन्द्रवार

गुजरात : बलगाढ़ जिले के उत्तर वोंसदा भाग में १३ से १७ सितम्बर '६७ तक हुई पदयात्रा के दौरान ७ ग्रामदान घोषित हुए। अब पदयात्रा का क्रम वासदा के दक्षिणी भाग में चल रहा है। ३ ग्रामदान घोषित हुए हैं। रतन्याम : ग्रामदान से ग्राम स्वराज्य की गाँवों में बुनियाद पड़े, इस दृष्टि से म० प्र० सरोदर प्रत्यक्ष के तत्वावधान में सामूहिक ग्रामदान अभियान आलोट और रतन्याम तहसील में किया गया। ६५ ग्रामदान प्राप्त हुए। स्थानीय शिक्षकों, पंचायतों के सरपंचों, मंत्रियों, ग्राम-सेवकों आदि ने सक्रिय सहयोग दिया।
—मानव मुनि

नशापन्दी

आगवा : यहाँ महिलाओं की हुई मोहो में उत्तर प्रदेश नशापन्दी समिति-महिला विभाग का गठन किया गया। यँगी विभागी जोहरी अल्पथ तथा कु० सन्तोष निराम मन्त्री एव १३ सदस्याएँ चुनी गयीं। राजस्थान नशापन्दी समिति ने २ अक्टूबर '६७ से शरारतपन्दी-सत्याग्रह की घोषणा की है।

संगठन

मुजफ्फरपुर : बिहार सादी-ग्रामोद्योग सघ के नये अध्यक्ष श्री राजकिशोर प्रसाद और मंत्री श्री रमरानि चौधरी चुने गये हैं।

शुक्रपुर (गारग) प्रत्यक्षदान	
क्षेत्रफल	६७,३३२.०६ एकड़
घोत की जमीन	३१,७३२.०९ "
" " ग्रामदान में	१९,०६९.०० "
जनसंख्या	१,०८,४८१
" " ग्रामदान में	८६,६०३
जनसंख्याका प्रतिशत	७८
चिरागी गाँव	१२२
" " ग्रामदान में	९९

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, ६ अक्टूबर, '६७

खासियर - मया प्रदेश भूदान यम परिषद के माफी भी देमदेश बागी की सुचनापुकार मया प्रदेश में मई '६७ से अगस्त '६७ तक भूदान में प्राप्त भूमि का विवरण निम्न प्रकार हुआ

जिला	सहयोगी	गाँव-संख्या	भूमिहीन परिवार संख्या	वितरित भूमि, एकड़ में
मुना	मुगाबणे	३	३४	१३६
"	मुना	२४	२३५	१, २३१
शिवपुरी	शिवपुरी	३	२४	१२९
मुनेरा	विजयपुर	३	११	४११
३	४	४१	३८४	१, ९१०

मुनेरा, प० निमाड़ और तालाम में १७ एकड़ का नया भूदान भी मिला ।
सम्पूर्णतः ३१ कुलार्क तक जिले में प्रायदान की गिनी -

सहयोगी	समिपान केन्द्र	अवधि	किपने गाँवों में	प्राप्त प्रायदान
गरीड	सर्वोदय साधना केन्द्र, पूरुनेडा	अक्टूबर '६५	५	३
मानपुरा	मानपुरा	१८ जून से २४ जून '६६	८४	१९
मानपुरा	मानपुरा	७ जून से ११ जून '६७	८४	१६
मानपुरा	मानपुरा	११ जून से ११ जून '६७	६०	८
गरीड	सर्वोदय साधना केन्द्र, पूरुनेडा	१७ जून से २० जून '६७	७२	४

- प्लास्टिक का विनाकार्यक कचरा,
- पहले की मति बिमार्ई अटपेजी (१" x ५") और काठन अटपेजी (७" x ५") दो बाधारों में,
- एक कलदार,
- बिमार्ई साइज का मूल्य ३ रु० १५ पैसे, काठन साइज का मूल्य २ रु० ७५ पैसे प्रति,
- दैनिकिनी उपकर आ गयी है। इस माह में दैनिकिनी आपकी सेवा में मिथवाला प्रारम कर लुनेगे। आरामे मादर अनुबंध के कि अपनी भाव रचना हूँ एवित करे।
- विज्ञानकों को चुन १५ प्रतिशत बर्मीयन,
- पुन्यपुरा ५० प्रतियों या उमने अधिक्त प्रतियों मंगाने पर इंडेशन एडुकेट मी डिग्रीबरी, इवने कम प्रतियों पर पंडित, वाग्नेज और लम्बाइ मरीद्वारा का देना हागा,
- अपने पर बापय नहीं की जाती, उकती ही प्रतियाँ मंगाने, जिनेने की भाव रचना हो,
- जवना वना साफ साफ जिमें तथा मरदीची एक्के स्टेशन का नाम दे,
- मूल्य बर्मित अडे, दैनिकिनी बपार नहीं भेजी जाती है। बैंक धा बी० पी० से मंगाने के लिए पोस्ट ई मूल्य पेरगामी के रूप में बर्मित भेजिये,
- धरने काटेगामी रचना का मनिमार्ई का बैंक-गण्ट सर्व सेवा मव प्रकाशन के ही नाम से भेजे ।

सर्वे सेवा मव प्रकाशन एडुकेट, वाराणसी-३

'आन्तर भारती'

राजसेक तथा चित्रराशियों की निर्मयंत्रण

एक नम भयन के लक्ष्यनिर्माण का अर्थ सर एडुकेटर के 'आन्तर भारती' मासिक पत्र के द्वारा पर निर्मयंत्रण देना का राह है। मई १९६८ के प्रकाशक दिन पर 'आन्तर भारती' का इमारत बर्माण अक २६ दिन तो राह है। पर काने टव का एडमन प्रकाश रिने में एवने ही राह तो राह है। १९ नमबर १९६९ के बाद बिनाही बर्माण है, एने मव काने मरने पार एक विच तथा मेल प्रेकरर हनके विरु अर्णं विरु अर्णं मी मी शिमा से लुनेगे। लेपन में बर्माणमने, निम्न, वागार्णन, बर्माण, नाक काने की मव नुनेगे।

— जिना सर्वोदय मण्डल

- लेपन या विच के लिए कोई जिपय सुकरि नही किया गया है।
- लेपन रिने। एव में होना चाहिए।
- हर्षां मरदिय बागव की एक हो वाउ का उमनेय कर तीगर दिशा बाव।
- इरेक हर्षक आरने कर्णाहने के मय निम्नलिखित कानकारी भेजे (१) हर्षक का नाम, (२) लक्षणा/मरदी, (३) कर्णाहने, (४) मूल्य का तथा वागोद का नाम और (५) बर्माण मरी हुने तथा बर्माण हने की आरनी हुने के उमनेय में कम्पा मनुष्य का उमनेयय। कर्णाहणी १८ नमबर १९६७ के एरने एडुकेट काने कादिद।
- बर्माण-मरदिय बर्माण बर्माणमने विदेके मव नमर, वाराणसी, (मरणाए १९६७) कर्णाहने १० हने, रिनेने ३ रु०।

भूदान यम : मुकबारा, ३ अक्टूबर, '६७

प्रमण्ड मरिपि की केंटक आगामी १२ १३ अक्टूबर को मं हुने मव की प्रवक्त मरिपि को केंटक मव के बर्माणमने मरान बर्माणमने हुने का ही है।



'मालिक नहीं, दोस्त' और शेख अब्दुल्ला का खत

गत १० अगस्त को पाकिस्तान के राष्ट्रपति अबूब सौ की आत्मकथा 'फ्रन्ड्स, गूट मास्टर्स' पुस्तक के रूप में आकस्मिक प्रकाशित हुई, कराची से प्रकाशित हुई। इस पुस्तक में भी अबूब सौ ने एक जगह लिखा है कि अब भी शेख अब्दुल्ला और मिर्जा मोहम्मद अफजल बेग सन् १९६४ में पाकिस्तान आये थे तो भारत, पाकिस्तान और कश्मीर का एक महासंघ बनाने का पूर्णपूर्व प्रस्ताव भी लाये थे। उन्होंने आगे लिखा है कि जिस समय हम कश्मीरियों की मुक्ति का मार्ग ढूँढ़ रहे थे, उस समय वे एक ऐसा विचार प्रस्तुत करने के लिए स्व० जगदहलाल नेहरू द्वारा मजबूर किये गये थे, जिसके अनुसार हमें दासता की ओर जाना पड़ता। उन्होंने यह भी लिखा है कि शेख अब्दुल्ला और मिर्जा अफजल बेग ने सन् १९६४ में उन्हें एकत्र विचार दिया था कि कश्मीर का भविष्य पाकिस्तान के साथ ही सुनिश्चित है।

शेख अब्दुल्ला ने अबूब सौ के उपरोक्त उद्धरणों को संशोधित कर सभी सतर्कता से उनके उद्धरणों की प्रामाणिकता को सुनिश्चित कर दिया है। शेख अब्दुल्ला ने भी अबूब सौ को एक पंथ खिला है और कहा है कि वे एक बार फिर से अपनी शायरगी को वाज्य करें। शेख अब्दुल्ला ने अपने पत्र में लिखा है कि अब वे मिर्जा अफजल बेग के साथ १९६४ में अबूब सौ से मिले थे तो भारत-पाकिस्तान और कश्मीर का महासंघ बनाने का कोई पूर्वनिर्धारित प्रस्ताव खड़ा नहीं गये थे और न तो स्व० जगदहलाल नेहरू ने ऐसे प्रस्ताव के लिए कोई रभाव दिया था।

शेख अब्दुल्ला ने पत्र में आगे लिखा है, "मैंने पाकिस्तान आने और आगये मिलने का मुख्य उद्देश्य आभोजन स्व० जगदहलाल नेहरू के साथ एक विचार-वार्ता के लिए तैयार करना था, ताकि उस गोष्ठी से कोई सर्वमान्य हल निकल सके। जब मुझसे कोई हल पृष्ठा गया तो मैंने साफ तौर पर बताया था कि राष्ट्रपति द्वारा निकाले हुए हल के अतिरिक्त मेरे पास कोई दूसरा रास्ता नहीं होता। सामाजिक रूप में मैंने कई अन्य समझ हल भी, जिन्हें समय-समय पर अनेक लोगों तथा भिन्न देशों ने सुझाये थे, बताये थे। इसी प्रसंग में भारत-पाकिस्तान और कश्मीर का एक महासंघ बनाने की बात मैंने कही थी। लेकिन आपने प्रस्ताव की शीर्षक में यल्लंका की भी है।"

शेख अब्दुल्ला ने आगे लिखा है, "मैंने आभोजन राय दी थी कि इस समस्या के हल के लिए कोई गोष्ठी होनी चाहिए, और जिस तरह से भारत और पाकिस्तान इस सगड़े में उलझे हुए हैं, उसे दलते हुए कोई व्यावहारिक, प्रविष्टा तथा न्यायपूर्ण हल किसी गोष्ठी द्वारा ही ढूँढ़ा जा सकता है।"

शेख अब्दुल्ला ने आगे लिखा है, "आप भारत आने और स्व० पंडित अजयलालजी से मिलने के लिए तैयार हो गये थे, लेकिन हमारे दुर्भाग्य और पंडितजी की दुःखदृष्टि असाध्यिक के मृत्यु से यह मौका ही नहीं आने दिया।"

शेख अब्दुल्ला का यह पत्र १ सितंबर को लिखा गया था, जिसे उनके ही अनुरोध पर १० दिन बाद प्रकाशित किया गया।—नम्र

समस्याओं का समाधान दिल्ली की शक्ति से असम्भव

—जयप्रकाश नारायण

वारतापत्री : २ अक्टूबर। गांधी-जननी

के अन्तर्गत पर वाराणसी न्यायिक परिषद द्वारा आयोजित वाराणसी की दार्शनिक सभा में भाग्य देते हुए श्री जयप्रकाश नारायणजी ने कहा, 'अपने देश की समस्याओं का मूल कारण देश के जीवन का गिरता हुआ नैतिक स्तर है। गांधीजी का सपना सदा और मजबूत के आसन्न पर था।

'गांधीजी ने राजनीति को सत्य की कनोरी पर रखा। परन्तु आज राजनीति में अमन्य का ही बोधवाच है। सब पार्टियों का अना-अपना सत्य है। पार्टियों अपने-अपने सत्य से मजबूत होने की कोशिश करती हैं और इसी कारण सत्य बच है, वे नहीं देख पाती हैं। राजनीति में पवित्रता होती, तो पि नहीं समझता कि समाज के दुबरे हिस्से में इनकी शक्ति से नैतिक पतन होता। पार्टी परिचयन भी उन्नी प्रकार का प्रयास है, जिस प्रकार अब कोई प्रयास है।

'राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का समाधान जनशक्ति से ही हो सकता है; दिल्ली की शक्ति से नहीं।

'अपार कोई यह मानना हो कि प्रशासन किसी तानाशाह के आने से भिन्न था, तो उनका यह भ्रम है। प्रशासन तब मित्रता जब जनशक्ति संगठित होकर प्रशासन का सुधार किया करेगी।

'आज जो सरकारी तंत्र है, उसे गिरा सकते चाहे कोई भी पार्टी शान्त में बनी न आवे, कुछ भी काम नहीं कर सकती है। अनेकों जमाने का यह तंत्र आज समाज के साथ नहीं है।' ●

भूदान-याज्ञः

भूदान-याज्ञः अनेक-श्री-मोक्ष-प्रधान-आदि-सक-प्रान्ति-क-सन्दि-स-वाह-...-स-प्रता-दिक-...

सर्वं सेवा संघ का मुख पत्र

सप्ताहक : रामभूति
 शुक्रवार वर्ष : १५
 २० सन्मूल १९७ मक : ३



मान को क्या बुझ नहीं है, निराश हूँ कि
 हिन्दुमान को साधारण लोग और
 गरीब साधने हैं कि मैं साधन
 बनना चाहती हूँ।
 —सं० रोहिणिया

इस अंक में

श्रीश्रीवैष्णव पर महात्मापण्डित	२०
परिवर्तन कल्याण रामदान	२८ २१
अधिक उपादान की सुशान्तिचिन्ता	३२
'वादी' का स्वर	३४
साधनयोग का विशेष	३५
शांति पेसा के प्रकार से	३६ ३८
आनन्दन के अन्वय	३९
'पौरा' का पौराणिक	४०

अपने सवक का भावपूर्ण
 चिन्तित होगा।

सर्वं सेवा संघ प्रकाशन
 राणघाट, धारामधी-१

समस्त के तीन पहलू

भारतीय या समस्त के तीन पहलू हैं—भौतिक, सांस्कृतिक, और आध्यात्मिक
 अन्वय। भौतिक भारतीय देश के अन्दर और देशों के बीच व्यापकी स्थिति के विचारित से समझी
 जा सकती है। इस तरह इच्छे को रूप मिलते हैं देश के भीतर आधुनिकी बदलती और
 दुनिया के देशों के बीच आधुनिकी बदलती।

यह मैं देश की अन्दरली बराबरी की बात कहता हूँ, जो उभरता एक सुख्य पहलू
 होता है, अनेकों की आप और दूसरी आर्थिक सुख सुविधाओं की पंक्ति के बीच समानता।

दुनिया के देशों की आधुनिकी और बराबरी साधन अधिक मात्रक हैं। दुनिया दो
 हिस्सों में बँटी हुई है। कुछ ऐसे देश हैं, जो बहुत अधिक धन पैदा करते हैं। लेकिन भारतीय
 का उपादान एक राष्ट्र की सीमा में मनुष्य और मनुष्य के बीच की बराबरी ही नहीं, बल्कि एक
 राष्ट्र और दूसरे राष्ट्र के बीच मनुष्यों की बराबरी या सम-च भी है।

समस्त का दूसरा पहलू सांस्कृतिक है। सांस्कृतिक तो मन की स्थिति है। आधुनिक
 समाज के चक्कर में पढ़कर यह कुछ भद-पक्ष गयी है, लेकिन वे एक स्थान बूझि ही। मन की
 निराली स्थिति में सांस्कृतिक या श्रेष्ठ की उदम प्रवृत्तियाँ उत्पन्न काम करती हैं। लेकिन वह
 मन कुचित हो जाता है, तो वे प्रवृत्तियाँ टप जाती हैं।

यह उदम सांस्कृतिक की प्रवृत्तियाँ दब जाती हैं, और उदमे स्थान पर अधननकता या
 पुला पर करके, तो समझी कि पतन की उपभोग हो गयी है।

सांस्कृतिक के प्रकाशन वे मन की आनन्द भी निराला है। इसकी बराबरी के उदम उदमे
 सुख दुःख में व्यापकता या समान का अन्वय ही आनन्द है।

तिसरी देवी में समस्त भौतिक बराबरी तथा सांस्कृतिक बराबरी का अर्थ उपादान है।
 भारत में समस्त का इन दो के अन्वय एक हीतरक पहलू भी है। यह है, मन की बराबरी। मन के
 अन्दरली बराबरी हिन्दुमान में अधिक मात्रक की है। सुख दुःख, हार जीत, श्रेय-मार्ग, इन सभी
 स्थितियों में एक-सा बराबर मन या स्थिर मन और आध्यात्मिक समस्त भारत की विशेषता है।

सुख दुःख, हार जीत, श्रेय-मार्ग में समान स्थिति रखना कुछ अमान्य नहीं। उपादान से
 बराबर करने की बात उतनी महत्व की नहीं, लेकिन मन की एक-ही स्थिति रखना आदर्श स्थिति
 है। लेकिन एक हलक मन होता है, जो साधन इनके अन्वय रहकर या इनके ऊपर बन सकता
 है और रहता है। यही, उदम लग रही है न या। यह हार मने न या। तो बराबरी का
 अन्वय का तीसरा पहलू मन की बराबरी—सुख दुःख, हार जीत, श्रेय-मार्ग में है।

इस तरह इन समस्त की एक राष्ट्र की सीमा के अन्दर मनुष्य मनुष्य की बराबरी, और एक
 राष्ट्र और दूसरे राष्ट्र के बीच मनुष्यों की बराबरी, मनुष्य के प्रति उदम सांस्कृतिक, सुख दुःख,
 हार-जीत, श्रेय-मार्ग में मन की एक-ही स्थिति यह कहते हैं।

अन्वय अन्वय-साधन साधन दो-सीन की बराबरी में भी न आनन्द हो। लेकिन उदम को एक
 प्रवृत्ति है। यह तीतर चमकी रहेगी। अन्वय यह तो साधन है कि अन्वय-साधन की चमकीति का
 आकार समस्त हो होगा। मनुष्य का हिन्दुमान देखे ही तोयों को देना भी।

—राममोहन रोहिणिया

[अन्वय स्थिति-अन्वय में १० सितम्बर '५४ को दिने दने आनन्द हो]

लोक-जीवन पर गहरा आघात

डा० लोहिया का घरीर नदी रहा, इसलिए हम दुःखी हैं। आज हमारे एक उनका घरीर बचाने की कोशिश की गयी। उनका घरीर बचाने की कोशिश रही, इतना ही हमें पता है। उस घरीर के लिए हमारे मन में होम था और आश भी है। उनके जो मिल घरीर को बचाने के लिए अपना रक्त दे सकते थे, वे देने के लिए प्रस्तुत हुए। मैं तो यह भी मानता हूँ कि ऐसे कई लोग होंगे, जो डा० लोहिया को अपनी आत्मा दे दें, तो देते। इतना महत्व उनके घरीर का था। जो सोच में रचित पर प्रमाण कर गयी वह यह थी कि उनके घरीर के संरक्षण के लिए विचार मेद, पञ्च मेद, संयंत्र मेद, किसी प्रकार के मेद का कोई मान किसी नदी रहा। कुछ प्रसंग ऐसे होते हैं, जब मनुष्य मनुष्य के आधार पर एक हो जाते हैं।

राममनोहर लोहिया का बहुत बड़ा शय था। आश हम देखते हैं कि हमारी संस्थाओं में, चाहे वे विचारक हों, व्यापारिक हों, पार्षिक हों, राष्ट्र सत्ता का बहुत प्रभाव है। इस अर्थ में कि हम लोगों की कई बार यह हिम्मत नहीं हुई कि राष्ट्र सत्ता का बोध अपने ऊपर ओढ़ ले। उल्ला के प्रयोग से हमारी संस्थाओं की सुरक्षितता हमारे मन में आ जायगी, इस प्रकार की आघात हमारे मन में बहुत दूर के कोने में दबी हुई है।

छोटा व्यक्ति जब अपने सामने मर जाता है तो एक टुकड़ी मन से निकलती है। मन में ऐसा होता है कि अपने सामने कोई न मरे तो क्या ही अच्छा। रात्राजी ने एक दान लिया था कि ऐसे अवसरों पर मन में ऐसा होता है कि जो दीर्घायु हमें मिली है वह अज्ञान और दुर्भाग्य का विषय है। ऐसी याचना मनुष्य के चित्त में पैदा हो सकती है, ऐसा ही वह प्रथम है।

हमारे बीच अखिल भारत के आकार के जो कुछ रहे जिने -भक्ति शेष रह गये हैं, उनमें से लोहिया एक थे, और आश भी उनका टुकड़ा के अन्तर्गत रह ही कम होंगे। उनकी विवेचना यह थी कि उनकी लोकहितता क्या अधिकार या पद पर निर्भर नहीं थी। वे सत्ता से बाहर रहकर लोकसभ में लोकसभ का प्रभावशाली प्रतिनिधित्व निरंतर करते रहे। डा० लोहिया के तौर-तरीके के बारे में जाड़े जिनसे मतभेद रहे हों, लेकिन एक बात के बारे में कोई मतभेद नहीं है कि वे बहुत ईमानदार थे। जो कुछ वे कहते थे, वह उनके दिल में होता था। मैंने, आपसे कहा कि वे अखिल भारत की नायक के रूप में, लेकिन मैं यह भी कह देना चाहता हूँ कि उनका वह मानसता के बहुत नबरीक पहुँच गया था। वह पार्सी में तो रहे, लेकिन पार्सी के कभी नहीं रहे। वे किसी संस्था में, समाज में, किसी पक्ष में घुसा नहीं गये। ऐसा विशाल व्यक्ति बनना था। उनका व्यक्तिगत कुछ ऐसा था, जो संस्थाओं, अंशदाओं, आदि को बौद्धिक बाध निरूपित करता था। हिमालय तो हत्ती थी कि कभी-कभी दुःख सह बीसी माध्यम हाती थी।

डा० लोहिया की प्रतिभा अगुठित थी। जो प्रतिभाशाली व्यक्ति इस ब्रह्मण्ड में हो गये हैं, उनकी पहचान करने में डा० लोहिया का स्थान होगा। हमारे देश में बड़े बड़े विद्वान हैं, पंडित हैं, लेकिन जिनमें आधुनिक प्रतिभा साज कर सकते हैं, उन बहुत थोड़े लोगों में डा० लोहिया थे। मेरी राय में उनकी दुनिया प्रतिभा



के विषय में मानवैज्ञान्य राय के साथ हो सकती है। जिस प्रकार इस देश में एक नया विचार देने की कोशिश लोहिया ने की, उसी प्रकार समसामयिकों की तरफ देखने की भी उनकी अपनी एक दृष्टि रही। कुछ ऐसे सब तर भी होते थे, जब उनकी प्रतिभा प्रकट नहीं होती थी। उस समय उनके अविज्ञान का जो पदश सामने आता था, उसके विषय में मैं यह नहीं कह रहा हूँ। वे गांधी को बहुत मानते थे पितृव्य और मुझ के समान मानते थे। लेकिन फिर भी उनकी अपनी एक स्वतंत्र और मौलिक दृष्टि थी।

लोहिया ने अखिल भारतीय भूमिका से, लोकहित भूमिका से और अधिक-अधिक संस्था और शांतिनिपत्ता की भूमिका से लोगों में आत्मप्रपण और प्रतिकार की क्षमता कायम करने का प्रयत्न किया। राममनोहर लोहिया ने रात्राजी को हथकौड़ी पर लिखा था, उसमें कहा था कि लोगों में हम योजना नहीं पैदा कर पाते हैं, उसके ठहर में रात्राजी ने लिखा था कि 'गांधी ने इसी कदम जनता में योजना पैदा की थी। इसका अर्थ यह हुआ कि लोगों में योजना पैदा करने के लिए एक नये आयाम की आवश्यकता है। इस आयाम का नाम है निःसूचित्व। वह गांधी में था, हममें नहीं है। इसलिए हमारा इतना ही अधिकार है कि हम लोक-आयति का निरंतर प्रयास करते रहें और उसमें जो अक्षमता मिले, उसे संशुद्धता का कर्म मानते रहें। यह जो हमारी अवशरता है, उसके पीछे अमर सत्य प्रयास हो तो उसीमें अपने जीवन की परिपूर्णता माननी होगी।' इस तरह देश में जो अर्थिक सामाजिक आचरण में जो कुछ हैं, उनमें से एक राममनोहर लोहिया थे। मैं ऐसा मानता हूँ कि अज्ञान-संशुद्धता की श्रुत्य के बाद इतना बड़ा आघात लोक जीवन पर यदि किसीको मनुष्य से पहुँचा हो तो वह डा० लोहिया की मृत्यु का। मैं आश सब लोगों के साथ उनकी मृत्यु पर अपना शोक प्रकट करता हूँ।

राज्य सत्ता की प्रतिष्ठा कम करने में डा० भूतान-या : शुक्रवार, २० अक्टूबर, १९७०

[श्री दारा धर्माधिकारी द्वारा डा० राममनोहर लोहिया के निधन पर भाराण्डा की 12.10.1960 को आध्यात्मिक सोच-समा में प्रकट किये गये वक्तव्य ।]

...सम्पादक की ओर से

हमने दो अंकों में सत्याग्रह के प्रश्न पर मित्रों के विचार छापे हैं। अभी भी लोगों के लेख आ रहे हैं, लेकिन इस सिखलने को सिलहल आगे बढ़ाना संभव नहीं है। हमारी कोशिश रहेगी कि भविष्य में किसी उपयुक्त अवसर पर इस प्रश्न को फिर प्रस्तुत करें।

सत्याग्रह को लेकर मुख्यतः दो पहलू सामने आये हैं। एक ओर कई मित्रों ने यह मरसल किया है कि प्रशासन के कुप्रबन्ध, बाजार के शोषण और समाज की विपन्नता के कारण होनेवाले दुःख और अन्याय का प्रतिहार होना चाहिए। इस उद्देश में सत्याग्रह का यह अर्थ समझा गया है कि कोई ठग, विरोधात्मक कारखानों की ज़ानो चारिय, ताकि जल्द-से-जल्द मुक्ति मिले। दूसरी ओर कुछ मित्र यह सोचते हैं कि साम्प्रदायिक रूप में एक न्यायक सत्याग्रह चल रहा है, भले ही उसके स्पष्ट परिणाम अभी न दिखायी देते हों। जो लोग साम्प्रदायिक में सत्याग्रह देख रहे हैं उन्हें सत्याग्रह के नाम से चलनेवाले प्रचलित कारखानों में दुराग्रह दिखायी देता है; कभी कभी उपद्रव के शिवाय दुःख कुछ नहीं दिखायी देता।

उप कारखानों के समर्थक कहते हैं कि सर्वोच्चतः सत्य सत्याग्रह के लिए आवश्यक क्या माना जाय? अधिक लोगों का समर्थन कान्सी होना चाहिए। क्या असमानता सर्वमान्य प्रश्न नहीं है? उसके निराकरण के लिए हम उत्पादन के साधनों के समाजीकरण की बात क्यों नहीं कह सकते? आखिर, विनोबा के 'सत्याग्रह' में तारकात्मिक समस्याओं को दूरत हल करने की क्या प्रक्रिया है?

इसके विपरीत कुछ लोग सत्याग्रह के दुष्प्रयोग से सचकित हैं, और उसे दूसरों से अपनी बात मनवाने के कुचक्र के रूप में देखते हैं। उनकी दृष्टि में सत्याग्रह की वास्तविक शक्ति विचार-परिवर्तन में है।

दोनों विचार एक-दूसरे से बहुत अलग हैं, लेकिन इतना सब मानते हैं कि राजनैतिक दलों के जो विरोधात्मक कार्यक्रम चलते रहे हैं उनसे अव्यसित परिणाम नहीं निकलता है। और यह भी कि साम्प्रदायिक बुनियादी तौर पर कोई नयी बात कह रहा है, भले ही वह बात किसीको सही न लगे।

स्वराज्य के बाद 'सत्याग्रहों' की कमी नहीं रही है। इतना ही नहीं, सरकारें भी बदली हैं, और मशीनों से चला रही हैं, लेकिन क्या कारण है कि लोगों का 'दुःख दूर होता नहीं दिखायी दे रहा है? (अपने हतने राजनैतिक दलों में, जिनमें से हर एक हमेशा किसी न-किसी प्रकार का प्रदर्शन या विरोध की रचना करता ही रहता है, लेकिन कुल मिलाकर रोजमर्रा के जीवन के लिए कोई चीज हाथ

नहीं आ रही है, और जनता की निराशा दिनों दिन बढ़ती जा रही है। आखिर, कारण क्या है? कमजोरी क्यों है!

आज जिन लोगों के हाथ में प्रशासन है, क्या उनमें भले और बुद्धिमान लोग हैं ही नहीं? क्या इतने वर्षों के अनुभव के बाद हम अब भी नहीं मानेंगे कि मूल दोष व्यवस्था में है, और उसको बदले बिना कल्याण नहीं है? गांधीजी का सत्याग्रह अंग्रेजों के विरुद्ध नहीं था, साम्प्रदायिक दलों के विरुद्ध था। अंग्रेजों को तो वह मिला मानते थे। स्वराज्य के बाद हमने पुराना टॉचा कायम रखा, जिसका दुष्परिणाम हम आज तक भोग रहे हैं। क्या इस टॉचे के रहते हुए हमारा कोई भी प्रश्न हल हो सकता है?

कई बार सरकार का निकम्पान हमें

सत्याग्रह है। उसकी निरंकुशता से हमें खोम होता है। इस खोम के परिणामस्वरूप पिछले चुनाव के बाद बड़े पैमाने पर सरकार-परिवर्तन हुआ। लेकिन क्या हम मानते हैं कि सरकार के बदलने से काम बन जायगा? क्या रोज-रोज होनेवाली राजनैतिक उलट-पेर अपने में एक गम्भीर समस्या नहीं है?

सरकार कोई भी हो, उसे सही रास्ते पर रखने के लिए गैर-सरकारी शक्ति चाहिए। यह काम ईश-परवर से नहीं होना। वह गैर-सरकारी शक्ति जनता के सहकार और संगठन की होती है। वह लोकशक्ति आज क्यों है? न लोक का सत्य है, और न लोक की शक्ति है। जो सत्य है, दल का है। हर दल का अपना-अपना सत्य है, और आग्रह का अपना अपना टंग है। जब देश में स्वराज्य के एक सत्य में से मुस्लिम लीग ने अपना सत्य अलग कर लिया तो सदा से एक रहनेवाला देश दो हो गया। आज जब देश में धर्म, भाषा, जाति, दल आदि के सत्य ही खर हैं तो एक का आग्रह दूसरे के आग्रह से टकरायेगा और निश्चित है कि यह टकराव देश के दुबड़े-दुबड़े कर देगा।

देश में आज एक जबरदस्त गैर-सरकारी शक्ति दिखायी देती, अगर गांधीजी की सहाय मानकर कांग्रेस सदा से अलग रहती। सब समाज के पास सत्य और संगठन, दोनों की शक्ति होती। लेकिन आज तो हमारी शक्ति दुर्बल और भाषण, पंचायत और घेराव में ही खत्म हो रही है। उससे समाज या सरकार की शोषण और दमन की व्यवस्था पर क्या असर होता है? लोकतन्त्र के प्रचलित ढोंचे में 'विरोध' के लिए गुंजादर है, और कई अवसरों पर जबरत मी है। यह काम राजनैतिक दलों या नागरिकों की समितियों के द्वारा हो सकता है। लेकिन विरोधवाद को क्रान्तिकारी राजनीति मान लेते तो भ्रम का अपूर्व लोकतन्त्र भी समाप्त हो जायगा।

अवस्था के परिवर्तन के लिए दो काम अनिवार्य हैं : (१) जनता अपने सहकार और संगठन द्वारा अपने रोजमर्रा के जीवन को क्रमशः सरकार के हाथ से निकाले; (२) भूमि और दूसरे साधनों का स्वामित्व

बदले—न परिवार का रहे, न सरकार का हो। अगर यह 'क्रान्ति' बरूनी हो तो इसके लिए कैला ख्यामद होगा ! क्या गाँव-गाँव में प्रालिक और मजदूर, भाति और भाति, दल और दल एक दूसरे की अनीति के खिलाफ लड़े हो जायें तो इन दोनों शक्तों की पूर्ति की शक्ति बनेगी। ऐसे 'विरोध' से तो हर गाँव में यह बुद्ध उठि जायगा। फिर क्यों रहेगा लय और और हर्ष होगा आग्रह !

ग्रामदान को मात्र विरोध से मतोप नहीं है। उसे आज की संपूर्ण परिस्थिति बदनी है, नयी बुनियाद का नया समाज बनाना है। इस काम के लिए 'विरोध' नहीं, 'विद्रोह' चाहिए। ग्रामदान की प्रामथमा गाँव की सांस्कृतिक शक्ति का प्रतीक है, और प्राम-साहित्य शोषण-मुक्ति की दिशा में प्रत्या-बदन है। हम इस 'ल्य' को क्यों नहीं पहचानते, और इस 'आग्रह' को क्यों नहीं पहचानते ?

संराज्य के बाद सत्याग्रह बहुत हुए, लेकिन वे सब सत्याग्रह में सत्याग्रह थे। अकरत इस बात की है कि परिस्थिति से तथा देश में, प्रमथित विचारों में जो 'ल्य' है, उसे प्रथन कर और उसे एक नया आन्दोलन का आधार बनायें, ताकि आज के समाज के लय पर एक नया समाज बनना, बूना दिलायी दे।

क्रान्ति की पकी फसल और अहिंसक हाथ

इस समय सत्याग्रह के लिए विन्डुल सत्य एक सर्वमान्य ल्य यह है कि देश के आर्थिक ढाँचे में अमृत परिवर्तन किया जाय, जिससे नृशिक के लिए रंमानदारी से रोबी बनाना आसान हो जाय और आर्थिक क्षेत्र की अनीति का समाप्त हो। इसके लिए आग्रहक है कि वेदाचार के लयन, वितरण के माथनी, रने के लयनों और एक मर्यादित सीमा से ऊपर लयन घन, मिनते हुए लो का शोषण होता है, की नृशिकगत मालिकन कानून द्वारा भी समाप्त कर दी जाय। इसके लयन पर माणिकन लयन समाज या नगर समाज की हो और

शयखा की दृष्टि से लेनी स्वयं कोनेवालों की हो, धारखाने व दुशानें उनमें काम करने-साधों के हों, मकान कुछ प्रतिबन्धों के साथ उनमें रहनेवालों के हों। माय का अन्तर भी १ : १० से अधिक न हो।

यह आज के लिए सर्वमान्य ल्य है। पूर्ण ल्य है ही नहीं। इस सर्वमान्य ल्य के आधार पर आन्दोलन चलाया जा सकता है। उलटके दो अंग होंगे। पहला अंग यह होगा कि हम ग्रामदान की यात्राओं के साथ साथ ग्रामों के नये नगरों से इस मलबेदे के प्रभाव परित (पास) करवा करके लोकप्रमा व विधानसभा को मेमें व भिन्नवायें, जिसमें सुसाव दिया गया हो कि वह लयिचान में हम तरह का परिवर्तन करें या इस आधार पर नया लयिचान बनायें। सर्वोदय कार्यकर्ता अपने-अपने मिते में लोकप्रमा व विधान सभा के लयनों की मिल्कर इस प्रलाव को नोकप्रमा में रलने और स्वीकार कराने के लिए होंगे।

सत्याग्रह का दुसरा अंग यह होगा कि देश में बगद बगद कई अन्वाय हो रहे हैं, इनमें से किसी सर्वमान्य सदाशिक अन्वाय को लेकर उस स्थान पर लयन न्याय (लमा धान) की स्थापना का प्रयत्न करना और कलत पढ़ने पर प्रकट सत्याग्रह करना।

येने अहिंसक सत्याग्रह को चन्ते की शक्ति सर्वोदय-कार्यकर्ता और सगं सेवा लय में पूरी तरह है। देश पर विनोबाजी और ग्रामदान लय चउ रहे सत्याग्रह का एक बहुत बड़ा उपकार यह भी है कि उन्हीं के देश के हलारों लयन लोमी की शक्ति को शान्तिविक दलदन और पुनाव में नष्ट नहीं होने दिया, उनके चिन्तन को लयल रल्ल, क्रान्ति के अहिंसक मार्ग की प्रकाशित किया। इस प्रकार ग्रामदान आरोहण द्वारा लंबोपी गयी शक्ति प्रकट सत्याग्रह करके अहिंसक क्रान्ति करने में पूरी तरह समर्थ है और लयता भी है कि भारत में क्रान्ति की पकी फसल को अहिंसक हाथ से लने दें।

—कल्याणपुरमा

श्याम स्पोर्ट्स इन्फ्रस्ट्रक्चर, मेरठ

गुड़ कहीं गोबर न हो

अभार में सत्य सत्य के लिए आग्रह भी सत्याग्रह इल्लापेगा। देश के लयने जो जुनोतिवाँ हैं, उनका उलमें अवयव क्वाव मिनेगा, ऐसी मेरी धारणा है, बधते कि वह सत्याग्रह पूर्य बापू के निर्देशानुसार विनोबाजी के लये सत्याग्रहियों द्वारा हो। खुलासा यह कि उलम निर्देशन में उक्चम सत्याग्रही सत्याग्रह करें। बन्धे सत्याग्रहियों के अमाम में सत्याग्रह के द्वारा अन्तर वेचीदगी बढ जायगी तथा और एक जुनोती अवयव ल्परी हो जायगी।

पूर्य विनोबाजी की मान्यता—सत्याग्रह की प्रक्रिया ग्रामदान अवयव है—ऐसी मेरी भी मान्यता है। पूर्य विनोबाजी की मान्यता—सारी लयल्ला का ल्य ल्पनीं निहित है, बहुत अल में लरी है।

बिच दग तथा प्रक्रिया से ग्रामदान का ढोग तथा कार्य सत्य दुभा है, तथा ल्य को विनारे या पाके में बढ कर ग्रामदान कथा गया है, उलको मान्यता में नही देना चाहता और न मेरी श्रद्धा उस पर है, और यही प्रक्रिया अगार रही तो मुझे लगता है कि सारा गुड़ कहीं गोबर न हो जाय। भूदान, ग्रामदान तथा शिर्लक कार्य आदि बहुत कामों में उन दुर्गुणों का लुन्दर आभाव मिल् रहा है, जिससे कामेव की मिट्टी पलने हो रही है। अल लयन रहने यदि कार्यकर्ताओं में सुधार का भाव लो घुम, अयया देश का, विश्व का दुर्नोय।

—राजब प्रसाद सिन्धु
सिवनार (मोकामा), पटना

समस्याओं का केन्द्र-विन्दु : गरीबी

भारत को प्रामों का देश बढा जाता है। यहाँ की लयमन लीन-न्यूयार्ड, अग्रार्ड लयर प्रतिघव बनता प्रामों में बनती है। अल ल्य विशाल प्रामवासिनों का विकास ही इस देश का ल्पना विकास बढा जायगा। यदि इनका विकास नहीं हुआ तो भारत का विकास नहीं हुआ।

गौर की अनेक समस्याओं में गरीबी, बेकारी और अज्ञानता मुख्य हैं। इन सारी समस्याओं की जड़ गरीबी है। गरीबी से लोग पीढ़ी-दर-पीढ़ी तक मताये जाते हैं। गरीबी भविष्य का विश्वास रोक देती है। गरीबी दूर हो जाय तो अविद्या, अन्धविश्वास, बेकारी, यहाँ तक कि चोरी-दकैती आदि कितने ही अनैतिक कार्य बहुत दृढ़ तक स्वयं समाप्त हो जायेंगे। इस देश की घनता गरीबी से आकुल है। राष्ट्रपिता बापू ने कहा है—“भूखों मरता आदमी अन्य सब बातों से परहे अपनी भूख बुझाने का ही विचार करता है। वह रोटी का एक टुकड़ा पाने के लिए अपनी स्वतन्त्रता और अपना सब कुछ बेच डालेगा। भारत में लाखों आदिमियों की आज ऐसी ही स्थिति है।”

गौर की गरीबी या अन्य समस्याओं का मूल कारण है भूमि की वर्तमान गलत व्यवस्था। लेकिन इस गलत व्यवस्था का समुचित समाधान अभी तक नहीं हो पाया है। भूमि अर्थात् कृषि गाँव अथवा देश की आर्थिक रीढ़ है। इसके लिए भूमि-सुधार के बहुत-से नियम बने, भूमि-सीमा (टैण्ड सीमिंग) ऐक्ट पास हुआ, जो अभी तक लागू नहीं हो पाया। समस्या यहाँ की त्यों है। भूदान-यज्ञ के कार्यक्रम से कुछ भूमि मूिमिदियों को प्राप्त हुई, लेकिन उससे ग्राम की सभी समस्याओं का समाधान नहीं हुआ। उसके अनुभव से आचार्य विनोबा ने 'ग्रामदान' आन्दोलन चलाया। वास्तव में यह आन्दोलन गाँव के इतिहास का एक महत्वपूर्ण अंगण है। कुछ लोग पुरानी परंपरा को कामन रखकर; जमीन पर या तो अविचार अविचार खलना चाहते हैं या कुछ लोग इसका राष्ट्रीयकरण कर इसे सरकार के अधिकार में देना चाहते हैं। ग्रामदान में यह कोविद्य होता है कि भूमि गाँव की है, इस पर चारे प्राणीय समाज का अधिकार हो, सभी मिल-जुलकर रहनी व्यवस्था कर और सभी बाँटकर लार्में। यह मार्ग बीच का मार्ग है, लक्ष्योत्सम है। इससे भूमि की समस्या का समाधान हो जाता है। गाँव की गरीबी, बेकारी और गाँव का शोषण ग्रामदान से बन्द हो सकता है। इस प्रकार गाँव आर्थिक मामलों में

स्वायत्तनी होकर विकास के मार्ग में अग्रसर हो सकता है।

—वैजनाय लाम

रोड नं० ६१६, मर्दनी बाग, पटना

युवा संशोधनकर्ताओं को चुनौती

वर्तमान समय में जिन समस्याओं को ताबड़तोड़ हल करने की जरूरत दिखायी देती है, उन्हें अहिंसक प्रतिकार द्वारा समाप्त करने के लिये निराने की तमन्ना बहुतोंरे ध्यान कार्य-कर्ताओं के दिमाग में हलचल मचा रही है। आखिर ऐसी तालमेली क्यों उठती है!

राष्ट्र की छोटी-बड़ी, तरह-तरह की उलझती समस्याओं का हल ढूँढना नहीं और दिमाग में एक प्रकार की उथल-पुथल मचती है।

क्या विनोबाजी के दिल में तात्कालिक समस्याएँ हल करने की उलझत इसी की तुलना में कम है, ऐसा माना जाय! या यह कहा जाय कि विनोबाजी वास्तविकता और नतीजों की उपेक्षा करते हैं! हम देखते हैं कि समस्याओं का तात्कालिक और तात्कालिक हल ढूँढने में ही 'भूदान-योग' प्रवृत्त हुई, और यही धारा आगे चक्कर ग्रामदान और अब विनादान के रूप में विकसित हुई।

आज विनोबाजी हमें 'आरोहण' और 'असोष चिन्तन' जैसे मनो को दीक्षा दे रहे हैं। हम यह भी कैसे भूल जायें कि आनादी प्राप्त करने के बाद एक स्वतंत्र, प्रजातंत्र प्रणाली जिस देश में अपनायी गयी है, उस देश में समाप्त का स्वयं ही बल चुका है! इसलिये तो विनोबाजी 'शोष, शोषण-शोषण' समस्या की प्रकिया हमें समझा रहे हैं। हमें यह भी सोचना पड़ेगा कि अणुयुग की वैज्ञानिक पर चैते हुए मानव की सर्वनाश की राह से हटाकर सर्वोदय की ओर के आनेवाली अहिंसक की प्रकिया कितनी शक्तिशाली है। वर्तमान विश्वभूमि का स्वयं में 'अहिंसक' कितनी और कैसे देखेगी, इस बारे में सोच-विचार करने आगे कदम बढ़ाने का तय करना होगा।

विनोबा से एहन सत्याग्रह का एक नया इतिहास हमें प्राप्त हुआ है: (१) प्रथम

की उपेक्षा-वृत्ति, (२) गुणदर्शन-वृत्ति, (३) मज्जा से शून्यता की ओर जाने की वृत्ति। इस बारे में हमने कितनी स्वगत लिखार्य है! और कितनी गहराई में जाकर हमें संशोधन करने की वृत्ति हमने विकसित की है! आज की ताबड़तोड़ हल का तत्काल करनेवाली समस्याओं के सन्न्यप में प्रत्यक्ष कार्यक्षेत्र में जाएँ रहकर पूर्ण अज्ञा से क्या हमने इस शाख को आग्रामपाद है!

होकरनीति की मजबूत सुनिपाद पर सही जनशासन की स्थापना अब भी बाकी है। सर्वसम्मति और प्रेम से समस्याएँ हल करने की तस्वीरें अब तक खिचि नहीं हुई हैं। प्रायतः और विश्वतंत्र—दो ही तंत्र आखिर में टिकेंगे। ये बातें युवा संशोधनकर्ताओं को चुनौती दे रही हैं। जीवन-समर्पण का तत्काल लेकर समस्याएँ सामने लाई हैं। ऐसे मौके पर पीछे हटने का अवकाश ही नहीं दिखायी पड़ता। सोरे संसार में दिमाग का ही मोलनाय है। हमें अहिंसा की शक्ति प्रकट करने के लिए नयी-पद्धति (न्यू-टेकनिक) की लोक हथे करने ही होगी।

—कालिदास चन्द्राराम

धरमपुर, बलगाड, गुजरात

ग्रामदान : सत्याग्रह नहीं

देश में जो समस्याएँ चुनौती बनकर सामने लखी हैं, उनका कोई एक होना चाहिए, इससे कौन इनकार कर सकता है! तत्काल होना चाहिए, यह भी सभी चाहते हैं, पर क्या यह सम्भव है! जो समस्याएँ हैं, वे क्या केवल हमारे ही देश की हैं! आज तो विश्व भी अन्धे कुँरे काग के लिए फिलो ही देश को चिन्तुकुल अलग मानकर सोच रही नहीं है। यदि यह सत्य है कि आज सभी समस्याएँ विश्वव्यापी हैं तो अधिक उपयुक्त और अधिक उत्तम होगा। साथ ही उसका हल भी उठी विमानों पर सम्भव होगा। गाँवों में क्या अपने सत्याग्रह, कार्य-क्रम से रबीयुग की पुट हो और समीयुग को गहरा उतारकर उठाया आन्दरक हलम अंश सदा काम में लिया।

आज दूरे देश के लिए नहीं, अविद्युत विश्व के लिए सर्वमान्य वन एक नदी अनेक है, जो मुद्रान-सह : सुक्रवार, २० अक्टूबर, १९६०

विषय के लिए सर्वमान्य, स्वयं है। यह देश के लिए अपने आर्य सर्वमान्य है ही। वास्तव में सर्वमान्य रूप के लिए उचित स्वरूप में आग्रह करनेवाले क्यों हैं? है। साम्प्रदाय को स्वग्रहण तो नहीं मानना ही का सखता है, फिर चाहे और कुछ भी उल्लेख करें, स्वग्रहण का क्या मार, विना या पुराण! श्रावण शीमन्त व शीमन्त श्रद्धा इसके साथ पूजा विनोनाओं ने हकीमिए लगाने हैं, क्योंकि यह स्वग्रहण नहीं है।

यदि विनोनाओं का करना है कि प्रामदान स्वग्रहण है और प्रामदान स्वग्रहण की सतत प्रवर्धमान प्रक्रिया है, इतने सारी समस्याओं का एक निरिह है, तो क्या सारे विषय में प्रामदान प्रक्रिया से समस्यारों समाप्त हो जायेगी? आज इस दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए स्वातंत्र्य सचक और रोगीण पाठक प्रक्रियायुक्त स्वग्रहण की आवश्यकता है।

—सत्यप्रिय
भी गांधी साम्राज्य
सुपरतरण

सत्याग्रह जन-चेतना के लिए

जिसे हम जन आन्दोलन करते हैं, वह को एसी मानसिक अवस्था हमारी शारी भूदान का काम करनेवालों की नहीं है। स्वग्रहण आदि आत्मरक्षण के कार्यक्रम पुराने पड़ गये, ऐंठा मानकर एक तरह की छुआछूत की मानना स्वग्रहण के प्रति हममें पैदा हुए है। 'परशु एषम' का स्वग्रहण हमने मान लिया है। परशुवा और उल्लाह सगठन स्वग्रहण का ही एक रूप है। लेकिन इतने जन आन्दोलन नहीं बन सका, कभी बनेगा, देखो डम्मीद भी नहीं कर सकते। तब यह स्वावल आता है कि जब आन्दोलन की गति से भूदान प्रामदान का कार्य करना हो तो क्या करना चाहिए?

स्वग्रहण के बारे में हमारे मन में जो है वह यह कि स्वग्रहण के द्वारा जो जन आन्दोलन होगा, उसके जो जन मानना पैदा होगी, वह स्वग्रहण के अत्युत्तल रहेगी या प्रतिकूल? कुछ अन्तरवाणी भावनाएँ स्वग्रहण के जन आन्दोलन भूदान यज्ञ: छुटकार, २० अक्टूबर, '६०

में गुप्त भावोंगी और नतीजा स्वग्रहण के अनुकूल निकलने नहीं। एते समय पर स्वग्रहण का क्या होगा! लेकिन जन आन्दोलन में स्वग्रहण रहेगा ही नहीं, देश सोचना बनता है। स्वग्रहणों का अनारद करने पैसा ही है। यह मान लिया जाय कि स्वग्रहण के जन आन्दोलन में श्रुचित माननाओं का समावेश होगा ही, ता भी इसके बिना जन आन्दोलन का कोई दूसरा अदिकत तरीका भी आज मौजूद नहीं है। जो है देश हम मानते या करते हैं, वह परिवर्तनों की दृष्टि से प्रभावहीन है। नये मूल्य बताते समय, उमकी प्रतियोगिता, ऐसे प्रयास करते हुए कुछ हा ही हमारा करनी ही चाहिए। स्वग्रहण के मूल्यों की स्थापना जन मानस में हो, इच्छित बनता को स्वग्रहण की प्रक्रिया में सम्मिलित करना होगा। स्वग्रहण के नेतृत्व में उनके मूल्यों की स्थापना करने, जीवन निष्ठा रखनेवाले ही तो माननेवाले, जीवन निष्ठा रखनेवाले ही तो हिय, कई बार असफलता आयी, स्वग्रहण वापिस लिया गया, लेकिन स्वग्रहण करना छोड़ नहीं दिया गया। बार-बार के स्वग्रहण से जनता में एक चेतना आयी। जनता में चेतना आये, देश कोई उपाय है तो वह स्वग्रहण ही है। लेकिन आज जो हर रोज करी न करी स्वग्रहण होते रहते हैं, उसे स्वग्रहण नहीं कहा जायगा। आत्मरक्षण द्वारा प्राम को शक्ति बनानेवाले कार्यक्रम का ही स्वग्रहण कहा जायगा, लेकिन इच्छा सामाजिक स्वरूप होना चाहिए।

स्वग्रहण द्वारा जन आन्दोलन होना ही चाहिए। लेकिन हम यह नहीं करते। स्वग्रहण से बोली दूर भागते हैं। चुनौतियों की स्वीकार नहीं करते हैं। शक्ति, बुद्धि, योग्यता, तपश्चर्या व ज्ञान के होने हुए भी अक्षित रहते हैं, इसलिए स्वग्रहण का शान्त रूप सम्पने आता है। उपाय हिंसा को बढ़ावा मिलता है। गुच्छामर्दी का सामाज्य बनता है, बना है।

स्वग्रहण के कार्यक्रम को सुयोग्य नेतृत्व दिया जाय तो उसके एक नयी चेतना देयक्रम में आयीगी। आज चेतना की बहुत ही आवश्यकता है। हिंसा का मुकामला इस चेतना से ही होगा।

हिंसा के बढ़ते आत्मरक्षण करने की इच्छा जनता में आयीगी तभी हिंसा का अत्युत्तल होगा। नती तो हिंसा बढ़ेगी, उसका मूल्य बना रहेगा।
—शारदा स्वग्रहण, विवेकानन्द शास्त्र, शब्द १५०

अहिंसक शक्ति का जागरण

प्रामदान के विचार को विकसित करते हुए उसके द्वारा समाज की आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक समस्याओं का हल खाना का रहा है। इस प्रकार विहार में स्वग्रहण का एक पूर्ण रूप से विकसित विक प की लगन करने में सब लोग लगे हुए हैं। देश स्वता है कि भारत क्रांति के कगार पर खड़ा है। आ गीतों के भीमानी का वर्तमान है कि वे अपने पक्षी, गरीब, कमबोर् और श्रावित प्रामोण मजदूर को तन मन व धन से स्वग्रहण करते हुए उनके सुख दुःख में साक्षीदार हो, नदी वा अहिंसक शक्ति का स्वग्रहण है।

देश में अहिंसक शक्ति प्रामदान के कार्यक्रम द्वारा श्रावित हो रही है। यदि प्रयास द्वारा देश की समस्याओं को विवेकपूर्वक न सुलझाया गया तो जनता को अपनी अहिंसक शक्ति का उपयोग भी उसके विरोध में करना ही पड़ेगा।

—भोलानाथ पाण्डे,
शांति-केन्द्र, चौराहादा बाढ़, भागलपुर

Sarvodaya After Gandhiji

सर्वोदय माफ्टर गांधीजी लेखक: डॉ० विद्यानाथ टटन
श्रावण के लिए लीहट घोष प्रव था। सर्वोदय क्या है, गांधीजी के बाद सर्वोदय विचारधारा कैसे बन रही है—इसका प्रामाणिक विवेचन। अमेरीक शानेवाले प्रत्येक शक्ति के लिए अनिवार्य।
हिमार्द्र आकार के कुल २६८ मूल्य अक्षित, दश रुपये।
सर्व सेवा संघ प्रकाशन,
राजपाठ, वाराणसी-१

अधिक उत्पादन की मृगमरोचिका

नयी दिल्ली में गत सितम्बर के पहले छात्रों में खेती और उद्योग में लगे गिने-जुने लोगों की एक मित्रियुक्त बैठक हुई थी। उस बैठक का उद्घाटन केन्द्रीय कृषि तथा खाद्य-मंत्रि श्री जगजीवन राम ने किया था। बैठक की व्यवस्था भारत के उद्योगपतियों की संस्था "भारतीय वाणिज्य उद्योग मण्डल" ने की थी। बैठक में कहा गया कि हमारे देश में खेती और खेती में लगे मजदूर—दोनों की उत्पादकता बहुत कम है। इसका नतीजा है कि खेती भारत की अर्थ-व्यवस्था का सबसे द्रिष्ट क्षेत्र है। भारत में खेती में प्रति मजदूर पीछे बहुत कम उत्पादन होता है। प्रति मजदूर पीछे कम उत्पादन होने के साथ-साथ प्रति एकड़ उत्पादन भी बहुत कम होता है।

भारत में प्रति एकड़ उत्पादन	विश्व का औसत
कसल गेहूँ ३१९ किलोग्राम	५१० किलोग्राम
नावल ५५८ "	८०५ "
कपास ४८ "	२३३ "

अर्थात् जिनमें से यहाँ बताया कि देश के १०० पीछे १० आदमी खेती के धंधे में लगे हैं, लेकिन वे भारत की कुल राष्ट्रीय आय का आधा ही पैदा करते हैं।

भारत में कृषि की नया स्थिति है, इसका परिचय नीचे की तालिकाओं में मिलेगा।

भूमिकों का विभाजन (प्रतिवर्ष)

धूम्ये	१९५३	३९९३
खेती	५०.०	५३.८
कृषि भूमिक	१९.७	१६.७
कृषि निष्पन्न उद्योग और घरेलू उद्योग	१२.०	१३.४
अन्य भूमिक	१८.३	१७.१

कुल १००.० १००.०
इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय आय में कृषि का योग कितना बढ़ा होता है, इसकी सही इस तालिका में मिल सकती है—

राष्ट्रीय आय के घात	१९५०-५१	५५-५६	१०-६३
कृषि	५१.३	५६.३	४८.७
खुले उद्योग	९.६	९.७	७.९
बड़े उद्योग	६.५	८.८	१०.५
अन्य घात	३२.६	३६.२	३२.९
१००.०	१००.०	१००.०	

उद्योगपतियों के प्रतिनिधियों ने कहा कि ऐसी भी एक रोजगार है, एक उद्योग है, इसलिए उसे भी एक रोजगार की ही तरह चलाना चाहिए।

भारत के कृषि और खाद्यमंत्री श्री जगजीवन राम ने देश के उद्योगपतियों से अंगुल की कि वे खेती की दशा सुधारने के लिए किसानों की मदद करें। वाणिज्य मण्डल के अध्यक्ष श्री लक्ष्मीनिवास बिरला ने सुझाव पेश किया कि पैदावार बढ़ाने के लिए सरकार खेती का काम करनेवाली कंपनियों चलाने की सुविधा दे, तो देश अनाज के मामले में बल्की हो खालसम्भी हो जायेगा। श्री बिरला ने बताया कि बड़ी-बड़ी कंपनियाँ अपने अनुभवों, मशीनों, औजारों, और रोजगारी कुशलताओं के बल पर खेती की उपज बढ़ाने में बहुत उपयोगी, साबित होंगी। अपने सुझाव का खुलासा करते हुए उन्होंने कहा कि छोटे-छोटे खेतवाले किसान की सहायता लेकर अपनी उपज बढ़ाने में सफल नहीं हो सकते, क्योंकि अन्य उद्योगों की तरह खेती के वैज्ञानिक विकास के लिए भी मारी मात्रा में पूँजी की जरूरत पड़ती है। इसकी व्यवस्था करना छोटे-छोटे किसानों के धूँते के नाहर की बात है और सरकारी खेती की सम्भावनाओं की बर्दाँ तक बात है वह तो हमारे देश में अब तक असफल ही रही है। श्री बिरला ने बताया कि कंपनी-व्यवस्था में किसान को कोई नुकसान नहीं होगा। वह आज जिनकी आमदनी बढ़े लाता है, उतना तो उसे निश्चित रूप से देने की व्यवस्था की जायेगी।

देश की परती जमीन का उल्लेख करते हुए बैठक में कहा गया कि इस समय भारत में लगभग २० करोड़ एकड़ भूमि ऐसी है, जो परती है। पर वह ऐसी है, जिस पर खेती की जा सकती है। इसमें से कम-से-कम आधी यानी १ करोड़ एकड़ भूमि तो निश्चय ही कृषि-योग्य बनायी जा सकती है। किन्तु इतनी अधिक भूमि तो खेती के लायक बनाने और उस पर खेती करने के लिए बहुत अधिक पूँजी की जरूरत होगी। यदि ऐसी जमीन उद्योग-

पतियों को दी जाय, तो वे उसके लिए पन का भी प्रयत्न कर सकेंगे और उस पर व्यापारिक तरीके से खेती भी करा सकेंगे। एटहन, सूती कपड़ा, लायवेल, बनरसति और चीनी के ऐसे उद्योग हैं, जिनका कच्चा माल खेती से ही मिलता है। यदि इन उद्योगों को बड़े-बड़े फार्म बनाकर कच्चे माल की खेती करने की सुविधा दी जाय तो इन उद्योगों के लिए कच्चे माल की कमी नहीं रह जायेगी।

खाद्य और कृषि-मंत्री श्री जगजीवन राम ने उद्योगपतियों के इन सुझावों को स्वीकार करने में कठिनाई बतायी। उद्योगपतियों ने हटने दिनों तक खेती को व्यावसायिक आधार पर चलाने की बात नहीं की थी। एटहन ही पन उठता है, कि अचानक उनके भीतर खेती के प्रति इतने लगाव का विचार कैसे घग गया!

पिछले २० वर्षों से यह देश आर्थिक विकास के रास्ते पर आगे बढ़ने की कोशिश में लगा रहा है। अब तक के आर्थिक विकास का लाभ प्रायः नगरों और औद्योगिक क्षेत्रों में दिखाई पड़ा। ऐसी के क्षेत्र की लगभग उपेक्षा ही होती रही। एक ओर आर्थिक विकास की योजनाओं में उद्योगों और व्यवसायों के विकास पर ही ताकत लगायी गयी, दूसरी तरफ योजनाकारों ने इस बात की भी कोशिश की, कि खेती व्यावसायिक ढंग से न चलने पाये, यानी ऐसी करनेवालों को खेती की उपज में मुनाफा की गुवाहच न रहे। अपनी इस इच्छा को सफल बनाने के लिए सरकार प्रति वर्ष विदेशों से भारी मात्रा में गन्ना मँगाने पर उद्योगियों को प्रेरित किया। इलाके में रखेथेले नागरिकों को कम कीमत में खेती की रही। इस बनावटी इच्छाबल के कारण आज हमें गल्ले का भाव तो उतना नहीं बढ़ा, लेकिन उद्योगों द्वारा तैयार होनेवाली चीजों के दाम बढ़ते गये। इसी बीच पिछले तीन वर्षों से लगातार वर्षों की कमी के कारण देश में अनाज का उत्पादन बहुत कम हुआ। सरकार चाहते हुए भी विदेशों से मनचारी मात्रा में गन्ना नहीं प्राप्त कर सकी; क्योंकि विदेशों में भी गल्ले का उत्पादन अधिक नहीं था। भारत से मजदूर गन्ना न मिल पाये तो पिछले ३ वर्षों में पहले का बाजार का भाव बहुत ऊपर चला गया।

सुष्ठु वस्तुओं के मूल्य सूचक अंक

अनाज	१९६४	१९९५	१९९६	जनवरी अक्टूबर
औद्योगिक कच्चा माल	११४	१४५	१६३	१६३
वित्पन्न	१५५.२	१८०.७	२१७.७	२८४
सब मिलें	१४८.१	२२९	२६१.१	१८१.०

के कर्मचारी से कई माने में अधिक उद्यम होता है। उसके यकने, सोने या टाट-मण्डे करने की गुंजायश नहीं होती। वह अपनी मजदूरी बढ़ाने या हकों की मांग पूरी करने के लिए इन्डाल की धमकी नहीं देता।

वस्तु पश्चिमी देशों का उद्योगपाद म् वास्तव कारणात्नों के युग में प्रवेश कर रहा है। जिन कारखानों ने पहले इबारों लोग काम करते थे, वहाँ अब स्वचालित मशीनों द्वारा काम करती हैं।

घनी आबादीवाले गरीब देश की अर्थ व्यवस्था देखी होनी चाहिए, जिसमें देश की शैल्य बढ़ने के साथ साथ करोड़ों लोगों की रोजगार भी मिले। केवल कच्चा मालों और मशीनों के ब्रिचिये पैदावार बढ़ायी जायेगी तो फुक म घनी लोग और ज्यादा धनी होंगे और मशीनों की मशीनी और ज्यादा धनी होंगे और दन बढ़ाने के साथ साथ सबको काम देना वह भारतीय अर्थ-व्यवस्था की पक्षी उर्ग है। उद्योगन का जो दग लाली करोड़ों की रोजेग गार बनाता है, वह वस्तुन हमारे लिए कचम युग जैसा ही है। उसके पीछे पायल होकर हम अपने भाव को खरोते में डालेंगे।

भात की लेती और उद्योग एकदूभरे पर निर्भर रहकर देश की आर्थिक तरकी नेमे कर सकते हैं, यदि इसका टोक टोक विचार किया जाय तो दीनेगा कि लेती की व्यव थाविक सञ्चना के लिए लेती करनेबाधे कपनियों की बगद लेती के छोटे हुए औद्योगों और गाँवों म चलनेवाले छोटे पैमाने के प्राम उद्योगों को उद्योगपति भागें माना जायें, इस कार्य में जो उद्योगपति भागें माना जायें, उनके लिए प्रादमानी छेत्नों की प्रादम-सहायें एक भागमे लायक वासीदार बन सकती हैं। —उद्योगान

नयी तालीम
 शिक्षा द्वारा समाज-परिवर्तन की संदेशवाहक मासिक पत्रिका
 सालाना बहा: रु० ६०
 सर्व सेवा सप पत्राशन राजघाट, पाराणसी-१

पाग उठाना पड़ा है, इसका दिशाब धायर ही कभी तक किरानी लगाया हो।

एक तरफ भारत की लेने की इत बुरी तरह चूस लिया गया, दूसरी तरफ उसके पायादा उठानेवाले ही यह भी करते हैं कि भारत की अर्थ-व्यवस्था का उसके दरिद्र क्षेत्र सुधिये है। उद्योगपतियों ने अपना एक अलग ही अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र गढ़ लिया है। काली पैंकों के बल पर व होने वैज्ञानिकों और वैज्ञानिक साधनों पर बन्ना शमा लिया है। वैज्ञानिक बुद्धलता और उत्पादन की सुधि का उगावा दिनाकर उद्योगपतियों ने भारतीय अर्थ-व्यवस्था में पण्ड पण्डित से होनेवाले जमानों को अपने चपुल में ले लिया। वैज्ञानिकी, कौलू और इत की बगद मीगर, इत और डैक्टर ने ली। इसके बाद मेहनत का काम करनेवालों का घचा भी मशीनों के हाथों में चला गया। तैय्य, बुद्ध, लुहार, कुम्हार और शुकादे बेहार हाते गये।

जिन औद्योगिक व्यापारिक आयात पर मशीनें हमारे दाय में करीगरी का खान लेती का रही हैं, उन्को आधार पर दुनिया के औद्योगिक इति के भाग्ये बड़े हुए देगों म अथ 'कम्प्यूटर' (याविक दिमाग) दिमागी काम करनेवालों की बगद ले रहे हैं। 'कम्प्यूटर' एक ऐसी मशीन है, जो घात्ने का काम करती है। जितनी देर में एक वाक्य पढ़ा जा सकता है, उतनी देर में एक 'कम्प्यूटर' तीस लाख गणनायें कर सकता है। जितनी दर एक पचा १ विदेशी भाषाओं में उलका अनुवाद कर सकता है। कई दिशाब करनेवाले और अनुपाद करनेवाले ही नहीं, कदाही, कविता लिखनेवाले लोग भी चारे चारे पेशारी को प्रभाव में घासिन होने को विवच्य हो रहे हैं, क्योंकि 'कम्प्यूटर' की कार्य-धमता की तुलना में वे बहुत कमबोर लखित होते हैं। 'कम्प्यूटर' हाइ मील

कुल मिलाकर अनाज का भाव इतना ऊँचा हो गया कि उद्यम में रहनेवाले लोगों की आमदनी का बहुत बड़ा हिस्सा गल्ला खरीदने में ही खर्च होता रहा। इतने ज़िदगी की दृष्टी काली चीकों को खरीदने की गुंजायश पट्टी गयी। लोगों ने अन्न खाना खरीदना कम कर दिया। इस परिस्थिति से जून १९६६ में भारत के उद्योगों को भारी क्षाका लगा, कारखानों में कामना तो शुरू तैयार हो रहा था, लेकिन बाजार में खरीदार कम थे, अतः मातम माल से भरने लगे। जो उद्योगपति कौल कर्णो से दिन दुना और रात चौपुना मुनाता करते आ रहे थे, उनको विचारियों खाने रहने खनी। इस परिस्थित उद्योग पतियों के सामने एक चुनौती बनकर आयी।

भारतीय अर्थ व्यवस्था में आज तक औद्योगिक क्षेत्र का बोलबाला रहा है। औद्योगिक उत्पादन में जो चीजे तैयार होती हैं, उनको चीयने व्यावसायिक आधार पर तय शानी हैं। व्यावसायिक आधार का लीया साण अर्थ यह होता है कि मात्र तैयार करने में का लागत खर्च आता है, उस पर मुनाफा एककर उतकी बाजार की सीमान तय की जाती है। व्यावसायिक आधार का मन्त्रन ही है मुनादे का रोजगार।

आज तक लेने के पैदा होनेवाले गल्ले की बीमता या तो बाजार के व्यापारियों से तय हाती रही है या सरकारी अधिकारियों द्वारा। इनकी सब गल्ले का भाव तय करते हैं तो वे पैदावार की लागत का हिस्सा नहीं ख्याते। पैदावार की लागत का हिस्सा खाने पर गठना इतना महँगा कावित होता है कि कई उतकी विचारिए नही करना चाहता। बाहर है कि इतने कर्णों तक भारत के लेती करनेवालों को अपनी उद्यम पाग उठाकर बेचने के लिए विवच्य किया गया। इस तरह कौल कर्णों में भारत के किरानों को कुल मिलाकर कितना मूदान-पन्न : शुक्रवार, २० अक्टूबर, '६७

→योग करने को करना मोहक में कैसे आरामग्य चित हो नही जैवही ।”

साम्यवाद दुनिया के चीनियों को एक एल में बाँधने की बात कहता रहा है, लेकिन अपने 'वाद' के विस्तार के लिए हिंसा को बर्णित नहीं करता। चीन को सुखकर बह रहा है कि नये समाज का जन्म बनूक की मनी से होता है। और चीन मक यह कहते हैं कि चीन की वेना हमेशा मुक्ति के लिए ही दायित्व उठायेगी। यह उठ स्तर की बात हुई जैसे राम के मन करते हैं कि रामजी के बाण से जो जो मरे सवरो मुक्ति हो गिनी।

• प्रथम शान प्रचार की घूट न काठिल वाद में है, न साम्यवाद में। पाठित्वाद् वे अलग साम्यवाद ने समाज के हित की को बल करी है वह सर्वोदय के प्रतिद्वन्द्व नहीं है। साम्यवाद ने समाज के हित में सबका हित देना, लेकिन मानि को दिन जियोध के आधार पर समष्टित किया। नतीजा यह हुआ कि मानि के तप दौरे और कम विकास हो गये। "बर्खा" (नारीवाद में) धर्मन नेताओं को यह सोह रहा कि वस ह्य अभिमान बगाये बिना धायद राष्ट्र का धगटन शीम नहीं होगा, बर्खा रूबी नेताओं को यह भ्रम था कि बर्खा-विरोधी भी भूमिका के बिना मानि नेत्रो से नहीं होगी!"

• "भारत में इन समय सभी 'बानों' को खान मिल सकता है। गरीबी तो हमारी बेमिसाल है और हमारे परम्परागत समाज को मानि को अभिमान भी अधिक प्रतीत हो सकता है। इसलिए गरीबी से हमदर्दी रखनेवाले साम्यवाद को चादनेनाला और मानि-अभिमान का समूहन करने की रणछा रखनेवाला, इस तरह से दोनों बर्ग इस समय यहाँ पैदा हो गये हैं।" यह सब है कि भारत के लिए इन दोनों में से एक को अनुदय नहीं है, फिर भी साम्यवाद ब्यादा आकर्षक हो सकता है, और उसमें सुधार भी हो सकते हैं, लेकिन पाठित्वाद् में नहीं। (क्रमशः)

—रा० मू०
अन्वय, '६०

साम्ययोग का त्रिकोण

हमारी विचारधारा के चार अंग हैं :
एक है हमारा उद्देश्य, जिसको हमने नाम दिया है—साम्ययोग,
दूसरा है तन्त्रज्ञान। तन्त्रज्ञान में हम चाहते हैं—समन्वय,
तीसरा है सामाजिक और आर्थिक रूप। यह है—सर्वोदय,
चौथा है उसको आमज में लाने की पद्धति, वह है—सत्याग्रह,
× × ×
सत्याग्रह जीवन-पद्धति है।
उसीके आधार पर जो समाजतन्त्रज्ञान जैसी, वह सर्वोदय होगा।
उसके लिए भिन्न भिन्न चिन्तन और तत्त्वज्ञान आज दुनिया में बघटे हैं, उन सबका आपसी विरोध मिटाकर समन्वय करना होगा। वह हमारा सब प्रकार के बानों और विचारों को लजम करनेवाला समन्वय का सिद्धान्त है।
इन तीनों के परिणामस्वरूप भगवि गत और सामाजिक चित्त की सम्पत्ता हासिल होगी। उसको हमने नाम दिया है साम्ययोग।
× × ×
'साम्ययोग' शब्द भगवद्गीता का है।

'समन्वय' शब्द वैदिक का है।
'सर्वोदय' शब्द आधुनिक विज्ञान का है, जो हमको पश्चिम से मिला, जिसका आरम्भ ईसा मसीह ने किया था। किन्तु जो यह कोविश है कि दुनिया म सर्वोदय स्थापित हो। इसका मूल आधार सत्यत्व में मिला है।
सत्याग्रह एक जीवन पद्धति है, जो अनेक सन्तों ने दुनिया म चलायी। उन सबके जीवनके परिणामस्वरूप एक भगवित्त पद्धति हमारे हाथ म आ गयी है। वह पूर्णता को पहुँची है, देना नहीं है। उसका विकास हो रहा है। तो यह सज सन्तों के अनुभव के परिणाम हैं।
सत्याग्रह सब सन्तों के जीवन का निचोड़ है।
× × ×
यह एक त्रिकोणमक विचार है, जिसकी एक रेखा है स याग्रह, दूसरी रेखा है सर्वोदय, और इसका क्षेत्र है समन्वय।
यह त्रिकोण है। ये तीनों सिक्का जो आधार होता है, पर किसी एक रेखा से नहीं बनना, तीनों समन्वित्त होनी हैं, सब बनना है। उसका नाम है साम्ययोग।
—बिनोया

दैनिकी १९६८

• प्लास्टिक का विचारधर्क कवर,
• पहले की मॉडि डिमाई अठवैजी (२" × ५") और ब्राउन अठवैजी (३" × ५") दो भाकारों में, • टूट क्ल-दार, • डिमाई साइज का मुख्य रू २५ पैसे, ब्राउन साइज का मुख्य रू ३० पैसे प्रति।
• दैनिकी टाकर आ गयी है। आपसे अनुरोध है कि अपनी आवश्यकता हम सूचित करें।
• बिक्रेताओं को कुल २५ प्रतिशत बर्मीशन। • एकमुद्रक ५० प्रतिशत या बचने अधिक प्रतिशत मँगाने पर स्टेशन पहुँच भी मिलेगी। हमने कम प्रतियों पर कैलिंग,

पोस्टल और रेलभाडा स्वोदरार को देना होगा।
• बचने पर आपन नहीं की जाती, रखक्या हो।
• अपना पता माफ-त्याक लिपे तथा मजदारीकी तेल्ले को ज्ञान का नाम हैं।
• मुख्य मन्त्रिम भेजें, दैनिकीनी उचार नहा भनी जगो है। बैंक या ६० पी० से मँगाने के लिए बीपार्ड मुख्य पैसगी के रूप में मन्त्रिम भेजिये।
• भेजी जानेवाली रकम का मनिजाउंडर या बैंक ड्राफ्ट सब सेवा सब प्रकाशनी के ही नाम से भर्न।

सर्व मेषा संघ प्रकाशन,
राजघाट, वाराणसी-१

भूदान-पत्र : शुक्रवार, २० अक्टूबर, '६०

शान्तिसेना

पत्राचार द्वारा स्वाध्याय योजना

उपनिषद के ऋषि स्वाध्याय वा महाव्रत मान्यता अर्थात् नहीं। हजारों वर्षों के बाद आज स्वाध्याय का महत्त्व उस काल की अपेक्षा बढ़ा ही है, घटा नहीं। आज विज्ञान ने अनेक दिशाओं में अनेकविध प्रगति की है। ज्ञान, योग की साधना के लिए आज अनेकानेक क्षेत्र खुल गये हैं और विज्ञान की प्रगति ने मनुष्य को अध्यात्म के द्वार पर लाकर खड़ा कर दिया है। स्वाध्याय, विज्ञान और अध्यात्म, दोनों के लिए अनिवार्य है। स्वाध्याय आज के युग की अनिवार्य साधना है।

जीवन का कोई काल स्वाध्याय के लिए प्रतिकूल नहीं होता। बाल्यावस्था जूतन ज्ञान ग्रहण करने के लिए उत्तम अवस्था है ही, जीवन के नर्मयोग की मनुष्य यदि स्वाध्याय में ताना न बनता रहे तो उसका कर्मयोग दक्षिणावृत्ति और लज्ज बन जाया। प्रौढावस्था और वार्धक्य में चित्त-मनन और स्वाध्याय से द्वारा ही मनुष्य जीवन की नयी दिशाएँ लोकात्ता है। गर्भावस्था में जो अलसताओं का यात्रा के समय बंगाली भाषा सीखता शुरु किया था। विनोद ७३ साल की उम्र में भी निल-प्रति अनेक बड़े स्वाध्याय में विताते हैं।

स्वाध्याय की इस आवश्यकता से संदर्भ में देखें तो आज की हमारी स्वाध्याय-प्रवृत्ति सबनुव शोचनीय है। अपने पाठ्यपुस्तकों का अन्वयन यदि मार्गदर्शिकाएँ रहते से यह जाना जाय तो हमारे तबण उद्योग काम निमाने को तैयार होते हैं। हमारे जवान कार्यकर्ता आज अवसरों के अन्वय और बहुत कम अवसर करते हुए पाये जाते हैं। यहाँ तक कि राष्ट्र-नैतिक पक्ष, जो पहले अपनी अध्यात्मशिल्पा के लिए मशहूर थे, इनके कार्यकर्ताओं को आज धुल नारों को रहने के अन्वय अध्यात्म अध्ययन करते नहीं पाये जाते और हमारे श्रद्धालु युगने कमाने में अपने आप बड़ी हुई बातों को बार-बार करते रहने में ही मानते

अपने सारे चित्त-मनन और स्वाध्याय की सार्थकता मानते हैं।

कोई भी व्यक्ति बिना स्वाध्याय के ताना नहीं रहता, कोई भी आन्दोलन बिना स्वाध्याय के बिन्दा नहीं रहता है। लेकिन हमारा देव, हमारा आदर्शन और हममें से अधिकांश लोग मानते स्वाध्याय के विषय में जैज-से रहे हैं। वस्तुतः इस अवस्था में से एक सोचने की।

इस दृष्टि से प्रकृति प्रयास के रूप में शान्तिसेना ने पत्र-पाठ द्वारा स्वाध्याय बढ़ाने की एक योजना बनायी है।

योजना की रूपरेखा

उद्देश्य : लोगों को घर बैठे पत्र-व्यवहार द्वारा पुस्तकों के अध्ययन द्वारा स्वाध्याय करने का मौका देना।

प्रतिस्पर्धी : आम तौर पर इस योजना का लाभ दो प्रकार के लोग लेंगे—(अ) सर्वोद्य-कार्यकर्ता, (आ) इस आन्दोलन के संर्क में आनेवाले तबण विद्यार्थी।

मार्गदर्तक : पत्र-पाठ योजना में दिने हुए विभिन्न विषयों के आन्वयण लोग एक-एक क्रिय में विद्यार्थियों के मार्गदर्शन का काम करेंगे। हमें इस बात की खुशी है कि सर्वोद्य-अवस्था कीपरी, मनमोहन जीपरी, मार्तरी साहब, प्रभाभट्टन शंकर, रामरुद्र प्रणयेंदु ह्यादि ने हमें सहायता देने का पचन दिया है।

प्रतिक्षण-श्रद्धाति : कुछ निमित्त की हुई क्रियाएँ निमित्त क्रम के अनुसार विद्यार्थी को पढ़ने के लिए ही बाँधेंगे। नये पढ़ लेने की सूचना पाने के बाद मार्गदर्तक विद्यार्थियों के लिए कुछ प्रश्न भेजेंगे। प्रश्न के उत्तर आने के बाद मार्गदर्तक उनको उस विषय के बारे में और सही-सत्य करवा सकते हैं, या आगे पढ़ने के लिए साहित्य प्रस्ताव सकते हैं। आम तौर पर हर कोर्स में चार पुस्तकें होंगी। लेकिन विद्यार्थी की योग्यता की देखते हुए उतम

कमोयोग भी हो सकता है। हर कोर्स के पूरे होने पर प्रश्नपत्र भेजा जायगा, जिसमें उत्तीर्ण होने पर कोई पूरा किया माना जायगा।

श्रद्धाति : प्रत्येक कोर्स पूरा करने का समय विद्यार्थी की योग्यता को ध्यान में रखकर अनु-कूलता पर निर्भर रहेगा। लेकिन आम तौर पर प्रत्येक कोर्स की शालाश्रद्धाति छः मास की माने जायगी।

पत्र-व्यवहार का माध्यम : हिन्दी वा अंग्रेजी रहेगा।

शुल्क : प्रत्येक कोर्स का शुल्क दो रुपये होगा। मंडल की ओर से होनेवाला पत्र-व्यवहार का खर्च इलीमें शामिल माना जायगा।

पुस्तक-प्रति : विद्यार्थी अपनी पुस्तकें आप मंगा लें तो अच्छा है। किन्तु यदि मंडल से क्रियाएँ मँगवाना चाहें तो क्रियाओं की कीमत की रकम वेद्योगी के तौर पर देकर मँगवा सकते हैं। ये क्रियाएँ छोटने पर वेद्योगी के ७५ प्रतिशत रकम सौदायी जायगी और २५ प्रतिशत रकम बच ही जायगी।

पाठ्य-विषय : प्रौढावस्था निम्न विषयों का पत्र-पाठ के द्वारा अध्ययन किया जा सकेगा—
(१) अहिंसा शास्त्र, (२) स्वाध्याय, (३) विदेशों में शान्ति-आन्दोलन, (४) भारत और अणुसम, (५) अन्न दायिक समस्या, (६) राष्ट्रवाद, अन्तर्देशीय शांति और अन्तर्देशीय, (७) सर्वप्रथम समग्र, (८) शान्ति और प्रतिस्था, (९) भूमि-श्रद्धाति, (१०) सादो-श्रीयोग, (११) लोक-नीति।

प्रत्येक विषय में पढ़ने लायक पुस्तकें की सूची विद्यार्थी का आवेदन पत्र आने पर भेजी जायेगी। आवेदन-पत्र में निम्न बातपत्री नये कार्य—

(१) पूरा नाम, (२) पता, (३) दैयिक योग्यता, (४) किन विषय का पत्र-पाठ आरम्भ करना चाहते हैं।

आवेदन-पत्र के साथ पाठ शुल्क रुपये २० अथवा नये कार्य। —नारायण दीगार्, मंडल

शुल्क : स्वाध्याय की सुविधा को दृष्टि में ही उपरोक्त योजना की रूपरेखा तैयार की—

विदेशों में शांति-आन्दोलन

वियतनाम-युद्ध बन्द हो

अमरीका में मीषावाचीन आयोजन के निमित्त वियतनाम युद्ध को समाप्त करने के लिए कार्यान्वयन के रूप में विमललिखित प्रस्ताव प्रेषित हैं :

● ट्रेक्लर पर खिन्न प्रकार के खूना फलक, जिनमें शांति संदेश व युद्ध विरोधी वाक्य लिखे गये थे, लेकर लोग निकले। पीछे पीछे अन्य पुराने व महिलाएँ हडल में सम्मिलित थी। 'दुःख के देवों को एक होने दो', 'तलाशों को हथ के रूप में परिणत करो', 'युद्ध बन्द करो', 'अपने भाइयों को मारकर हम किनके लिए खींचेंगे ?'—एक प्रकार के वाक्य इन फलकों पर लिखे हुए थे। इन्हें यात्रा का विधेय नारा था—'अब बैठे रहने का समय नहीं है।'

● इसके पूर्व रथानीय आम समारोहों, खूना पट्टों तथा दहनहारों व मोटियों का मराप कर लिया जाय।

● यह आयोजन कार्यक्रम एक लम्बे उम्र आंदोलन का प्रारंभ होगा, जिसके द्वारा वियतनाम युद्ध की भीषणता, निरपराधिता, अनैतिकता और उसके द्वारा छप्यता को उलान सतारों को धनता के समुत्पन्न स्थिति बचाया जाय।

● अतः रक्षादंडन से रहन तक एक बड़ी यात्रा निकाली जाय। साथ साथ साथ साथी रथानों से छोटे छोटे यात्राएँ निकलत दिन रहन नगरी में आकर समाप्त हों।

→ गयी है। लेकिन यह योजना इनके ही विपरीत तक और इनकी ही पुष्टाओं तक मर्यादित नहीं रहेगी। पत्र वाट योजना में सम्मिलित होनेवाले विचारियों की वैधुनिक मायना के अनुसार पाठ्यक्रम में परिवर्तन भी हो सकते हैं, अगर विचारियों को कोई ऐसा विषय चुनने की हच्चा हो, जो हथ हलनेया में न आता हो, तो उस विषय के मार्गदर्शकों की सहायता भी उपलब्ध कर सकते हैं, देखी जायता है।

हमारे यह आरोप है कि सर्वोदय कार्यकर्ता, शांति सेवक तथा तत्पत्र विचारकों इन योजना का अधिक से-अधिक लाभ उठावें। हथ समय में सारा पधारा सवाक्य, पत्र-वाट योजना, मांजिन सेना मंडल, राक्षस, वारलकी-१ के पत्र पर करें। —ना० दे०

मूलात्मक-पत्र : शुक्रवार, २० अक्टूबर, '६७

● उस दिन एक कार्यक्रम 'शांति के लिए समोहन' के रूप में हो, जिसमें आंदोलन को आगे बढ़ाने के विषय पर चर्चा की जाय।

—जान पापवर्ष

● ट्रेक्लर पर खिन्न प्रकार के खूना फलक, जिनमें शांति संदेश व युद्ध विरोधी वाक्य लिखे गये थे, लेकर लोग निकले। पीछे पीछे अन्य पुराने व महिलाएँ हडल में सम्मिलित थी। 'दुःख के देवों को एक होने दो', 'तलाशों को हथ के रूप में परिणत करो', 'युद्ध बन्द करो', 'अपने भाइयों को मारकर हम किनके लिए खींचेंगे ?'—एक प्रकार के वाक्य इन फलकों पर लिखे हुए थे। इन्हें यात्रा का विधेय नारा था—'अब बैठे रहने का समय नहीं है।'

● २८ अप्रैल को 'कमरे की आध इन्डूड की आर से एक हडल 'माच आठ घोस' के नाम से निकाला गया, जिसमें 'पीस केन्द्र यूनिन' के सदस्य भी सम्मिलित हुए। हथ यात्रा वा उद्देश्य वियतनाम में हो रहे लम्बापूर्ण इतिथी की और ध्यान आकर्षित करने का था।

● एक विचारण में विचारियों की एक वादविवाद समा म 'आध युद्ध की कोई उपयोगिता नहीं', हथ विषय पर चर्चा की गयी।

● कैलिफोर्निया के एक शांति सगठन के द्वारा वैशान्तिकों की एक गोष्ठी आयोजित हुई, जिसमें 'राजपतिक और कीलणु युद्ध' विषय पर चर्चा हुई।

● २१ मई को हदन के ट्रेक्लर सत्रेभर में शांति प्रती पुस्तकों द्वारा एक रैली निकाली गयी, जिसका संदेश था कि वियतनाम में शीघ्र शांति को स्थापना हो।

(रंभीकिय, मई शू ६७ से)

चीनी अणुधम का विरोध

हल्फेड के अणु निशान्त्रीकरण समिति के कुछ कार्यकर्ताओं ने चीनी अणुधमों के विरोध पर अपना विरोध प्रकट किया

है। उनकी ओर से प्रथम प्रदर्शन जून के अंत में हुआ था।

४ गुणार्ध को २१ कार्यकर्ताओं ने चीन द्वारा परीक्षण के विरोध में प्रदर्शन किया।

एक प्रदर्शन ८ गुणार्ध की भी सगठित किया गया। इस प्रदर्शन के बारे में दानी हेरिगियन द्वारा किये गये विवरण का कुछ अर्थ यहाँ दिया जा रहा है

● 'पिउठे सनितार को चीनी दूतावास में हुए प्रदर्शन में लगभग २० व्यक्तियों ने भाग लिया। दो पत्र तक लोग प्रदर्शन करते रहे। 'वाई० सी० एन० डी०' सहाय की मन्त्री लेस्लीवेक फेयर ने शांति और मित्रता के प्रतीक स्वरूप चीनियों को फूड में किये।

पहले तो वहाँ के एक अधिकारी ने उन फूलों को पहले दिये गये पत्र की तरह ही लक्ष्मीकार करना चाहा, परन्तु अब उठे सहायता गया कि ऐसा करना सम्भार अपमान होगा, तो उसने फूलों को रख लिया। इसके पहले उल्टे परिचय से आये कुछ व्यक्तियों ने वहाँ के प्रथम अधिकारी को पत्र देने का प्रयत्न किया था। अदर तक पहुँचनेवागों ने केवल भी ही था। वहाँ के ७८ कमचारियों ने

बारी बारी से प्रकृते बहा कि तुम परिचय की सूचीवाद के दवे' हो। चीन के अणुधम के बारे में सुनकर सगठन के क्रांतिकारी लोग प्रथन हुए हैं। राष्ट्रपति माओ ने कहा है कि चीन के अणुधम शांति के लिए हैं और वे केवल सूचीवादियों के विरुद्ध प्रयोग में लाये जायेंगे। प्रकृते किंगीने यह नहीं बतवाया कि अणु परमाणु वम शिरों' के समय किम प्रकार सूचीवादियों और अन्य लोगों में अन्तर करेगा।

'दूतावास के एक सचिव ने आदर अन्य कार्यकर्ताओं को प्रकृते बातचीत करने से मना किया। मैंने कहा कि मैं बिना यहाँ के प्रकृत अधिकारी से मिले नहीं जाऊँगा। हथ पर प्रकृते उल्टे दिया गया कि प्रथम एक समय चीन के अधिकार क्षेत्र में हो और प्रथम पर दूतावास म प्रकृता चलाया जा—

अमेरिका की वियतनाम-नीति : बढ़ता हुआ विरोध

गिरजापुरों के एक विद्य-संगठन (इन्फ्यूं सी० सी०) के मंत्री डा० जेक ने २६ अप्रैल '६७ को एक सम्मेलन में भाग लेते हुए कहा: 'हमारी (अमेरिका की) स्थिति इसीसे स्पष्ट है कि राष्ट्रपति केनेडी की हत्या पर सारे संसार ने हमारे साथ योक्त मनाया और आज हमारे राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति संसार के किसी माग में बिना अधिकृतता सुरक्षा व्यवस्था के बाहर नहीं निकल सकते हैं। वे देश भी, जो कम्युनिस्टों द्वारा हमला किये जाने के भय से सहमे हुए हैं, आज हमारा खुल्लम खुल्ला साथ देने का साहस इसलिए नहीं कर रहे हैं, क्योंकि उनकी जनता को इस बात का बहुत अधिक भय है कि पता नहीं आये, अमेरिका क्या कदम उठायेगा।

'संसार के प्रमुख स्वतंत्र देशों (जिनमें अमेरिका भी सम्मिलित है) के अलबतों के सपादकीय लेटों में अमेरिका की नीति के प्रति विरोध प्रकट होता रहता है, वे सावधान करते हैं कि प्रति माह संसार के देश हमसे अलग होते जा रहे हैं और हम अकेले पड़ते जा रहे हैं। यह ठीक है कि हम इतनी शक्ति

→शक्ता है। परंतु सचिव ने कहा कि मैं तुमको इस अवसर पर गिरफ्तार नहीं करूँगा। यह कहकर वह जापस चला गया।

'सोवियत देर बाद कुछ सिपाहियों को एक टुकड़ी को लेकर वह सचिव पुनः आया और कहा कि यदि तुम यहाँ से जापस नहीं जाओगे तो तुम्हारे विरुद्ध बल-प्रयोग किया जायेगा। इतने में ही सड़क की ओर बाधा दरवाजा खुला, कुछ और पुलिस के सिपाही अन्दर घुस आये, जिनके सुपुर्द में कर दिया गया। एक अधिकारी ने मेरा फोटो लिया। एक पुलिस-अधिकारी ने मेरा नाम सचिव को मतलब था।

'पुलिस ने मुझसे कुछ प्रश्न करने के पदनाह छोड़ दिया, क्योंकि मैंने किसी कानून का उल्लंघन नहीं किया है, ऐसा उन्होंने अनुभव किया।'

('गोपी पीस फाउन्डेशन' न्यूजलेटर, १-८-६७)

रखते हैं कि कुल वियतनाम—उत्तरी व दक्षिणी—को बरबाद कर सकते हैं, परन्तु जब हम देखते हैं कि मीकांग नदी के डेल्टा के दलदल वियतनामियों की लाशों से भरे हुए हैं और उनमें हमारे राष्ट्र के सैनिकों युवकों की लाशें भी पड़ी हुई हैं, तो लगता है कि इस प्रकार हमें वैसी फतह हासिल होगी? जितनी ही अधिक संख्या में हम वहाँ अपनी फौज भेजते हैं, उतना ही अधिक हम अपने आदर्शों को कमजोर बनाते हैं। प्रत्येक अमेरिकी योद्धा, जो आहत होता है अथवा घायल होता है, वस्तुतः एक व्यर्थ की आहुति है।

'वियतनाम के युद्ध का बढ़ाना लेकर हम अपने साधनों के द्वारा गरीबी के विरुद्ध युद्ध करते, जातिगत समानता लाने, अर्थात्, लेटिन अमेरिका तथा एशिया के अन्य स्थानों में न्याय स्थापित करने में अपनी असमर्थता प्रकट करते हैं। इसलिए हम ईसा के अनुयायी के गते न केवल युद्ध को समाप्त करें, वरन् न्याय और स्वतंत्रता पर आधारित शांति भी स्थापित करें। नये नये हथियारों के आविष्कारों की संभावना मानव के लिए शांति की स्थापना को अधिक अनिर्वाप बना देती है। मानव के लिए युद्ध अब किसी प्रकार वाञ्छनीय नहीं रहा।'

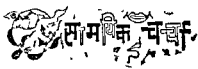
मार्टिन लूथर किंग ने अमेरिकियों से अनुरोध किया कि वे वियतनाम के युद्ध का 'बायकौट' करें। 'अग्रेल को अमेरिका में भाषण देते समय नीम्रो लोमो से उन्होंने कहा कि वे विवेकशील नागरिकों को हैसियत से फौजी नौकरी या विरोध ऐदात्मिक आचार पर करें। वे न्यूयार्क में रिबरसाइड चर्च में वियतनाम के संबंध में भाषण दे रहे थे। वहाँ प्रातःकाल प्रेस क्लब में अलबार्-पालो से चर्चा करते समय उन्होंने कहा कि वियतनाम में नीम्रो मृतकों की संख्या अपेक्षाकृत कहीं अधिक है। वहाँ युद्ध के सैनिकों में गैरे सिपाहियों की अनेका नीम्रो सिपाहियों की संख्या दुगुनी है। ऐसी स्थिति नीम्रो लोमो की अमेरिका में है। उन्होंने

उन सभी गिरजापुरों के धर्मगुरुओं से अपील की, जिनकी व्यापु फौज में भर्तों होने योग्य है और जिन्हें अधिकारियों के नाते वीज में भर्तों होने में अपवाद माना गया है कि वे भी अपने को फौज में भर्तों का ऐदात्मिक विरोधी घोषित करें। उन्होंने वियतनाम में संघर्ष के फलस्वरूप हो रही हानियों के प्रति जनता को सचेत करने का एक बृहद आन्दोलन चलाते, सामूहिक प्रशिक्षण तथा सामूहिक उपदेश दिये जाने के कार्यक्रम प्रारम्भ करने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि अमेरिकियों को यह स्वीकार कर लेना चाहिये कि उन्होंने (अमेरिकियों ने) वियतनाम के युद्ध में भाग लेकर एक भूल करी है, और इस प्रकार वे विरव्यापी शक्ति के गलत पक्ष में पड़ गये हैं। अमेरिकी सैनिक-नीति की निन्दा करते हुए उन्होंने स्पष्ट किया कि उसकी नीति वियतनाम के युवकों के लिए अहितकर है। अमेरिकियों को गोलाबारी के फलस्वरूप चहों एक वियत-कींग आहत होता है, तो उसके कारण पानी के विपयुक्त हो जाने से फलक बरबाद होती है और उसके कम से कम २० कृष्ण प्रभावित होते हैं, जिन्हें अस्तराओं की धारण लेनी पड़ती है। अभी तक इस प्रकार शयमग एक लाख लोग मार चुके हैं, जिनमें अधिकांश संख्या बच्चों की है। युद्धों पर बानबनों की तरह छंड के छंड वरवहीन, भेबरवार हुए बच्चे इधर उधर चित्ते देले जा सकते हैं। इन बच्चों को मिला सौतेने तथा परिवार के भरण-पोषण के लिए अपनी बहनों को सैनिकों के हाथ से बेच देने को मजबूर होना पड़ रहा है।

डा० किंग स्वयं विपुष्प, तिरस्कर और मोचित युवकों के बीच घूम चुके हैं। उनकी तरह धारण है कि बच्चे के द्वारा नहीं, वरन् आदिशक प्रक्रिया के माध्यम से ही अर्थात् सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है।

('न्यूजलेटर इन्टरनेशनल' एफ० को० आर०: मई '६० में प्रकाशित लेख के आधार पर) ●

भूदान-यज्ञ: शुक्रवार, २० अक्टूबर, '६०



‘घेराव’ का घेराव

गत १९ सितम्बर को कलकत्ता उच्च न्यायालय की एक विशेष बेंच ने एक फैसले के अनुसार ‘घेराव’ को गैरकानूनी और असाध्विधानिक घोषित कर दिया। घेराव का आधिपत्य पर प० बंगाल के भ्रममन्त्री और वामपंथी साम्यवादी नेता श्री सुबोध बनर्जी की प्रेरणा से हुआ था। आन्दोलन के इस तरीके में कर्मचारी अपने अधिकारियों या मालिकों को घेर लेते हैं और तब तक घेरे रहते हैं, जब तक कि उनकी माँग न पूरी हो जाय अथवा जब तक वे घेरना चाहें। कारखानों से शुरू हो चौर-बीरे यह आन्दोलन विद्यालयों, अन्य संस्थाओं, न्याय विधान-सभाओं और संसद तक फैल गया। पिछले ६ महीनों में—विश्व, बंगाल में १५० के अधिक घेराव हुए। घेराव के इस संस्थान से पंचम बंगाल के औद्योगिक संस्थान परेशान हो गये। जब इन संस्थानों के मालिकों, अधिकारियों ने पुलिस की मदद चाही तो घेरावों की सरकार ने गत २७ मार्च और १२ जून के दो परिपत्रों में पुलिस को घेराव में हस्तक्षेप न करने का आदेश दे दिया।

पिछले महीने कलकत्ता की एक संस्था के अधिकारियों ने कलकत्ता उच्च न्यायालय को एक अर्जी दी, जिसमें शिकायत की गयी थी कि संस्थान के मजदूरों ने उनका गैर-घेराव किया और पुलिस ने कोई मदद नहीं की। मुख्य न्यायाधीश की अध्यक्षता में कलकत्ता उच्च न्यायालय की एक विशेष शाखा ने इस मामले की पूरी छानबीन करने के बाद अपने फैसले में घेराव को गैर-कानूनी और असाध्विधानिक बताया हुए प० बंगाल सरकार के उक्त दोनों-परिपत्रों को रद्द कर दिया और कहा कि घेराव करनेवालों को

भारतीय दंड-कानून की धारा २२९ या २७० के अन्तर्गत बिना वारंट के गिरफ्तार किया जा सकता है और पैद की सजा या अर्ध-दंड दिया जा सकता है।

न्यायाधीशों के अनुसार घेराव ‘रक्ष्य’ की शारीरिक तोर पर बाधा देना है, यह चाहे ‘रक्ष्य’ को घेरकर या जबरदस्ती उस पर अधिकार करके दिया जाय। यह ‘रक्ष्य’ कोई व्यक्ति, व्यक्तियों का समूह, कोई स्थान या साधारण तोर पर औद्योगिक संस्थान का संचालन या निरीक्षण विभागा हो सकता है।

न्यायाधीशों ने प० बंगाल के भ्रममन्त्री श्री सुबोध बनर्जी की आलोचना करते हुए कहा है कि उन्होंने पुलिस को ‘घेराव’ में हस्तक्षेप न करने का आदेश देकर अपने अधिकारों का उल्लंघन किया है।

पुलिस-विभागा की निष्क्रियता को आलोचना करते हुए न्यायाधीशों ने कहा है कि पुलिस को असाध्विधानिक आचरणों से सम्बन्ध शिक्षावर्षों पर तत्काल कदम उठाना चाहिए और ऐसे अपराधों को घटित होने से रोकना चाहिए।

हिन्दी साप्ताहिक ‘दिनमान’ ने इसे ऐतिहासिक निर्णय बताया है इसको प्रशंसा की है। अंग्रेजी दैनिक ‘स्टेट्समैन’ ने इस निर्णय को एक नमूना बताया है। हिन्दी दैनिक ‘हिन्दुस्तान’ ने अपने संपादकीय में लिखा है कि ‘इस घेराव की काली छाया से पहिलम बंगाल मुक्त होता है, यह हर्ष का विषय है।’ हिन्दी दैनिक ‘भाज’ ने अपने संपादकीय में लिखा है कि इस निर्णय ने उच्च न्यायालय की प्रतिष्ठा बढ़ाई है और देश के शांति, व्यवस्थाओं तथा शान्त अभिक्ता को भी एक नई नदियाँ दी है। अंग्रेजी

दैनिक ‘हिन्दुस्तान स्टारम्स’ ने अपने संपादकीय में लिखा है कि हम लोगों का यह सौभाग्य है कि हमारे संविधान में न्याय-पालिका स्वयंसे है और उसका कार्यपालिका से स्पष्ट अलगवा है। इससे हमारे मौलिक अधिकारों की रक्षा होगी, जो हमें भारतीय संविधान में मिले हैं। अंग्रेजी दैनिक ‘इन्डियन एक्सप्रेस’ ने अपने संपादकीय में लिखा है कि इस निर्णय में आदर्श की एक झलक दिखायी पड़ती है। संपादकीय में आगे लिखा है कि इस फैसले को ध्यान में रखते हुए परिस्थिति का तत्काल है कि कथित परिपत्रों को जारी करनेवाले उक्त प्रदेश के भ्रममन्त्री श्री सुबोध बनर्जी त्यागपत्र दें। अंग्रेजी दैनिक ‘असूट कामार एजिक’ ने अपने संपादकीय में यह आशा की है कि इस फैसले से ‘घेराव’ सही अर्थ में मजदूरों, प्रदासकों तथा जनता के सामने आयेगा।

इस निर्णय के बाद प० बंगाल सरकार ने कथित परिपत्रों को वापस लेने का फैसला किया है। वहाँ के कृषिमन्त्री डॉ० पी० सी० घोष ने इस निर्णय को बखला की दिशा में सही कदम बताया है। इस निर्णय के दूसरे दिन ही बिहार-सरकार ने भी ‘घेराव’ को गैरकानूनी घोषित कर ‘घेराव’ करनेवालों के विरुद्ध कड़ी कार्रवाई करने की चेतावनी दी है।

“भूदान-यज्ञ” के मुद्रक में परिवर्तन
 “भूदान-यज्ञ” का वार्षिक चंद्रा नये वर्ष से ८ द० के बदले १० द० किया जा रहा है। इसका कारण है छपाई, कम्पोजिंग, कागज आदि के बढ़ते हुए भाव। ८ द० बन्द में यह पत्रिका घाटे में ही चल रही थी। इन्फ्लेशन भी यह बृद्ध अनिवार्य हो गयी। हमारे पाठक-गण और दैतवी इस विवशता को मर्याद करके उदारतापूर्वक पत्रिका को पूर्णतः अपना हार्दिक सहयोग देकर अपने मित्रों को भी इसका हार्दक बनाने, ऐसी हम आशा करते हैं।
 —एनम्पारक

धीरुष्णदत्त भट्ट, सर्व सेवा संघ द्वारा संसार प्रेस, घाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, घाराणसी-१
 वार्षिक मुद्रक : १० द०, विदेश में : १८ द०, या १८ द०, या २५ डालर। एक प्रति : २० पैसे
 पिछले अंक की छपी प्रतियाँ : ३९,०० इस अंक की छपी प्रतियाँ : ४,८००

भूदान-यात्रा

भूदान-यात्रा मूलक ग्रामोद्योग प्रथाय अहिंसक क्रान्ति का सर्वप्रवाहक साप्ताहिक

13766

सर्वों सेधा सँघ का मुख पत्र

सम्पादक : राममूर्ति

शुक्रवार वर्ष : १४

२७ अक्टूबर '६७ अंक : ४

सत्याग्रह : शक्ति और दिव्य

सत्याग्रह हीम से हीमकर और हीमकर से हीमनम होता जाएगा, बसमा इसके कि यह हीम मे कर और कर के बनकर होगा। उग्र से उग्रतर और उग्रतर होगा। भाषणा ती हम दिव्य-अहिंसा की मोर देना पर आकर लगे रहेंगे और एक कम आगे बढ़ने से दिव्य में हो आ पहुँचेंगे। इहानिद तीकलाकानी दिव्या दिव्या की है, अहिंसा की नही।

इस अंक में

क्रान्ति केनारेंद्र ४ ४१

अन सम्पत्ता : सम्पत्ता के संकेत
—श्रीमद्वाचना ४१

नोकर का असम्बन्ध
—दूर्योधन काव्य ४१

विनोद और अदोषनादी दर्शन
—डा० राममूर्ति दर्शन ४०

बन्धु स्वामी :

समाचार हास्य ४२

मन का संघर्ष ४२

सामाजिक चर्चा ४८

परोपकार के समयाव ४८

अपने संकट का आचरण

राष्ट्रीय की विशेषता

विद्वान्त्व

अन्याय का प्रतिपत्त

वार्षिक मुद्रक : १० रु०

पत्र प्रति : २० पैसे

विदेश में :

१८ रु० या १८ रिया० या २१ डालर

सर्वों सेधा संघ प्रकाशन

समयाव, बाराणसी-२

पतेन सं० ४२५०

दिव्य में एक प्रयोग होने पर कल्पना नहीं मिले, जो उसमें बंधक तीन प्रयोग किया गया है, और उसमें भी कल्प नहीं हुए तो तीसरे प्रयोग किया गया है। यह दिव्य की दिव्य है। अहिंसा में एक प्रयोग किया और परिणाम नहीं आया तो और और प्रयोग करना चाहिए। होमिओपैथी का यह सिद्धांत है कि अत्यंत में उत्पन्न शक्ति विषय अधिक किया जाय और उसे जोर काय। उत्पन्न दवा की मात्रा कम की जाय और शक्ति की मात्रा बढ़ा दी जाय। उत्पन्न दवा कम से कम होती है और उत्पन्न शक्ति बढ़ती है। यह होमिओपैथी की एक प्रथा है। यह सिद्धांत अहिंसा की स्पष्ट होती है। अहिंसा की शक्ति बढ़ती नहीं होती है। यह उत्पन्न होने के द्वारा ही और उत्पन्न में होती है।

मैंने कहा था कि धन्य शक्ति कृतित होने पर उत्पन्न शक्ति आगेगी। धन्य-वाचि उत्पन्न चिन्तन से बढ़ती है उसके लिए स्पष्ट किया बढ़ती की उत्पन्न नहीं। यह मात्र धन्य से बनती है। राष्ट्रीय में कहा था कि एक ही रूप ख्याती कुल दुनिया की दुःख मुक्त कर सकेगा। यह उत्पन्न की अतिमा भी कि उल्टा दर्शन उत्पन्न हुआ। यह अतिमा मात्र धन्य से आती है। उत्पन्न शक्ति का प्रयोग मात्र धन्य से होता है, जो धन्य में लाकर आती है। इहानिद हमें संतोष्यन बढ़ता चाहिए। शब्दों की लीन और धन्य शक्ति बढ़ती चाहिए।

एक बार मैंने यह भी कहा था कि पालक का चित्र तब प्रकट होता है, जब तक माता अपने बच्चे को प्यार से दूध पिलाती है। उसे देखकर हृदयक को आनंद होता है और हृदयक के मन में प्रसन्नता होती है। किसी एक दुःखित, पीड़ित रोगी की कोई सेवा करता है और वह दुःखता होता है तो उत्पन्न चित्र प्रकट होता है। उल्टा, पाठक और वेग के चर्च का करी होता है, उसके प्रथम अर्थ से ही उत्पन्न से उत्पन्न करते हैं। मैंने ही बहती बसाव समाग्रह हो रहा है, यह हमने पर दुनिया में सर्वसम्पन्न प्रतिपत्त का रोनी चाहिए कि समाग्रह के प्रथम अर्थ से ही उत्पन्न का उत्पन्न हो। बहानी में बढ़ते हैं—'कोलो सुन्द, भोजो सुन्द'। उत्पन्न ही रहा है—विद्या सुन्द, विद्या अन्ध, विद्या सुन्द।
—विनोद

देश :

१७-१०-६७ : भारतीय खाद्यार्थ व्यवसायियों के अखिल भारतीय संगठन ने देश के खाद्य क्षेत्र की समाप्ति के लिए आन्दोलन शुरू करने का निर्णय किया।

२०-१०-६७ : केन्द्रीय खाद्यमंत्री श्री जगजीवन राम ने घोषणा की कि दिसम्बर महीने से चीनी खुले बाजार में बिकने लगेगी। उन्होंने यह भी बताया कि किसानों को गन्ने का उचित मूल्य दिया जाय।

२१-१०-६७ : प्रधान-सुधार आयोग ने हर बड़े उद्योग के लिए पृथक 'निगम' स्थापित करने का सुझाव दिया।

२२-१०-६७ : उत्तर प्रदेश के राष्ट्रपाल ने एक अभ्यास लागू किया, जिसके अनुसार १ हजार रुपये जमाकर कोई भी व्यक्ति ५ वर्ष के भीतर किसी मंत्री या राजनीतिज्ञ के विरुद्ध जाँच-व्यवस्था जारी करा सकता है।

विदेश :

१९-१०-६७ : रूस का 'वीनस-४' अन्तरिक्षयान निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार शुक्र ग्रह पर बिना झटके के उतर गया और संकेत भेजना शुरू किया।

काहिरा में राष्ट्रपति नासिर की मेट-यात्रा में भीमवी इन्दिरा गांधी ने कहा कि वे अजब-इसहासक समस्या को हल करने के लिए बड़े राष्ट्रों से राजनविक स्तर पर प्रयास तेज करें।

२०-१०-६७ : प्रधान मंत्री इन्दिरा गांधी पूर्वी यूरोप की यात्रा पूरी करके भारत लौट आयीं।

२२-१०-६७ : अमेरिका की राष्ट्रीयतावादी वादियों ने विपत्तनाम युद्ध के विरोध में विशाल नागरिक-प्रदर्शन हुआ।

मिस्रि युद्धपोत ने प्रवेशगम्यता का प्रयोग करके दो इजरायली विध्वंसक जहाजों को हुबो दिया।

दीवाने निकल पड़ें

गाँव आज अनाथ हैं। गाँवों के बाद विनोबा की क्रांतिकारी चाली से उनके भाग्य जगने का कुछ आशा हुई थी। अनेक कार्य-कर्ता जिनमें से मैं भी एक हूँ, दीवाने बन निकल पड़े थे; गाँव-गाँव में अथल जगाने। 'कोई नंगा न रहेगा', 'मूला न रहेगा', 'न रहेंगे अमीर', 'न रहेंगे गरीब', 'सबे भूमि गोपाल की, सपत्ति सब भगवान् की'—इतने-इतने हमारा गया भर आया था। एक तद्वन थी, बोध या दिल में, उमंगें थी; लेकिन न जाने क्यों शान्त हो गयीं। न गरीबी मिटी और न अमीरी ही।

ग्रामदान वृक्षान शान्त हो गया। समुद्र में जैसे कभी-कभी तूफान आते हैं, वैसे ही पदयात्रा, सम्मेलन, रैलिनार, गोष्ठी करके अपने मन की तद्वपन शान्त करने से क्या भूमि समस्या हल होगी। उतर दे—नहीं। इच्छा एकमात्र उपाय है पदयात्राएँ। क्यों नहीं सर्वोदय समाज के सभी छोटे-बड़े नेत्र एक बार पुनः पदयात्राओं के अण्ड प्रचार से सोये हुए हन्सान को जगा दें। और भूमि-वानों को विषय कर दें कि वे भूमि को श्रुतन पैद से मुक्त करें, भूमिदोनों को सर्वप तिलक लगाकर भूमि बाँट दें और आनेवाली लूनी क्रांति से—जिसकी सम्भावनाओं को नजरअन्दा नही किया जा सकता, बच जायें, और समाज में स्थायी शान्ति का वातावरण निर्मित करें।

हम सब, मन्त्रियों, कर्मचारियों और समाज को दोष देते हैं, पर उसके सुनार के लिए हम क्या समा-सम्मेलन गोष्ठी ही करते रहेंगे और पढ़ें में बन्द बीबी की तरह दुआ या पश्चात्ताप के आँसू बहाते रहेंगे।

मेरी तो कामना है कि अण्डकाय शत्रु चीन के लानायाह माओ की तरह निकल पड़ें लकी यात्रा पर हजारों शान्ति के विनाही लेकर, और गुंजा दें एक बार फिर ग्रामदान,

जाय जगत् के मन्त्र। जिस प्रकार हमारे देश को आजादी मिलने के बाद अण्डाई देश आजाद हुए, वैसे ही हमारी भूमि-समस्या के शान्तिपूर्ण समाधान के बाद नेपाल, पाकि-स्तान, लंका, बर्मा, चादि पड़ोसी देशों की समस्याएँ भी शान्ति से हल हो जायेंगी। फिर इन देशों को न साम्यवाद का भय रहेगा और न वायस में भय, अविश्वास और लजा की सुल्लों के लिए लड़ने की भावना रहेगी। सभी एक खुश में आवद्ध होकर नये एशिया का निर्माण करेंगे।

माओ की विचारधारा पराजित होगी, उनकी साम्यवादी सेना फिर हराया करने नहीं आयेगी, और यदि सर्वोदय के कार्यकर्ता भी समाजवादी समाज की रचना बिने बिना ही शहरी-स्वार्थों की लड़ाई में शान्ति स्थापना करके शरीर महत्वाते रहे, तो देश के लालों प्राणों में भयंकर लूनलराबी होगी, जिसकी चपेट में आने से कोई बच नहीं पायेगा।

एक बार फिर से दीवाने बन निकल पड़ें। बाबा को बैठे बैठे 'कमाण्ड' करने दें। कोई भी ऐनिक आशय में न बैठे, पर पर न रहे। सब कर्मक्षेत्र में उतरें और गाँवों शान्-संवासी तक खादी-प्रयोगों पर आधारित आर्थिक व्ययन और शोषण शासन से मुक्त समाज-रचना का रान्त साकार करने में लग जायें, इसी में कल्याण है।

—जगन्नाथ सेठिया, इन्दौर

आवश्यक ध्वनता :

"भूदान-यज्ञ" के मुक्तक में परिवर्तन

"भूदान यज्ञ" का वार्षिक मुक्तक ८६० के बदले १०६० किया गया है। इसका कारण है छात्रों, कर्मियों, जागत आदि के बढ़े हुए भाव। ८६० कदों में यह पत्रिका घाटे में चक रही थी। इसलिए भी यह मुक्ति अविचार्य हो गयी। हमारे पाठन-याग और हितैषी इस विषयता को मरदूष करके उदारतापूर्वक पत्रिका को पूर्ववत् अपना वार्षिक हदयोग देकर अपने मित्रों को भी इसका साहक बनायेंगे, ऐसी हम आशा करते हैं। —अण्डकाय

भूदान-यज्ञ

भारत के भूदान-यज्ञ की शुरुआत के लिए प्रेरणा देने वाले लोगों की याद में

किन्नी सेनाई ?

भारत की किन्नी सेनाई यादें

यह मान लिया जा सकता है कि प्रविष्टियों के लिए सेना यादें, यह भी मान लिया जायगा कि शक्ति और सुखरक्षा के लिए पुस्तिक या उपवास दे, यत्रिप सलही उपवासिना दिनोदित पाटी का रही है।

द्विपन्न और कुलीनों के अर्थसिद्धि कष्टन थे। इन जलने है, उद्विने बना बिना। अपने ही देश में मुस्लिम लोग के घमाने में साह साय थे। देहरादू में तो राधाधारी के सिखाक पूरी सेना मेक्री पडी थी। इस वक्त राष्ट्रीय स्वयसेवक संघ में इमारती सुखक इशकिए सलही किने का रहे हैं कि उद्वे रिदुलत और रिदुलत को बसा करती है। रात्रनीक इलो में श्राव सभी अपने स्वयसेवक दक सलही करते हैं, ताकि जलके विचार का प्रचार हो और युवाव में बड़े साह मिले।

इन सलहे दस परिचित हैं, लेकिन शिशुसेवा, मातृसेवा, लाजिसेवा, बखसेवा, उमिषक सेवा यादें के नाम से बननेवाने में सलहन सिधीप है। सिधसेवा की योजना है कि अमे महाद्वार में महाद्वार के नागरिकों को बहार के जेलों, दुखाक दलित आर्थिक जेलों से रक्षा करती है। बम्बई में 'सेना' और 'दलित भारतीय', बांग्ला में 'दिदुलतनी', अरुघ में 'साथी', रूसिका भारत में 'उपर भारतीय' यादें बायी हैं। आर रिदुलत में रिदुलतनी बरते हैं!

दुलतनी के दिनों में भारत को जता से बहारों थी, लेकिन आर तो भारत में भारतीयों को बरका दिना बा रदा है, बरकि वे कितने नाम सिधी न किन्नी सेना में बाहरों माने जा रहे हैं, वे सब भारतीय नागरिक हैं, क्विने सविधान की अर से भारत की सीमा के अन्दर बरती थीं इन और बीडिका क्रमाने का अधिकार मिला हुआ है। लेकिन उलके बना है अधिकार तो हरिषको भी मिलि हुआ है, किने कमाण सीके के बाहर बरका है और अदुलत मानका है।

महाद्वार के दसवीं में, लाहरीयों में बगा महाद्वार के लोगो को बिपनी यादें, या अरुघ की कमान पर पटना एक अरुघ के ही लोगो का है—ये लोगो मुझने में यलता नहीं मादुप होनी। लेकिन अरुघ की बरका है कि इमारतें देना में सभी बरते भी समरित सीकर बनन बायी हैं। बाधारी को सरो प्रशासन-स्वयसेवा उचित मारी का भी सैन नहीं मिला बा रही है!

मुझ से सारे बरते, अपने और पारने को वे बारी अरुघ आर्थिक है। क्विने लिए पसीने रोनी नहीं है, रशीनिप छीना हाजी है। अरुघ में सलमन नह हो रहा है, मुझ के एक गुण माना हो रहे हैं। हर एक का मानक योग और विमन से भर गया है। इन लोगो और विमानो को दक्षकरी भी रात्रनीति बदाह दे रही है, सलहीन कर

रही है और इयना उलके सीपा कर रही है। बम्बई के युवाव में सिधसेवा में पुस्तिक दिना बिना था।

इलोयें राक नहीं है कि इन 'सेनाओं' का बनना देण की एरुका के लिए एक बरारुलत बनता है। बरते इली सेनाएँ ही, बरते पदुख भी रो तो भाषने बना होगा।

इत सलहे का उपाय बना दे है क्या इना ही कि सेना बनने वारो भी कोस भाव और देण की अपरला की दुहाई दी जाय। एण दुरारें को सैन पुनेगा।

पारो वलत पर है कि हर व्यक्ति को सबसे पहले जाने बरते में, गौर में, पकाश में, बीनिना गिनकी यादें। व्यक्ति विरुध को पेशी सेवना दीने यादें कि सायानक-निमीको बाहर जाने के लिए विवना न सेना वरे। इस सलहे में ही इलये की रखा है। अरुघ उरर सैन्य का सलहर रसीके के बरारुलत में बना बरते जाने के लिए सलहर होना को बन से का अरुघ सिधसेवा को बन आने सिधसेवा सलहर को बरते या वलत के गारे के अरुघांत पान बरेगा, ताकि सलही बरारुलत में मिले। इरुधों को अर्थसिद्धि में सलहर बुवि का विगत भावप मनी है। ऐसी अरुघांत में जो सलहर दिभारें देता है, यह दुरारें पर भादर बनने के लिए होवा है।

भारतीय विगत के दो पदर एक दूजे से पुदे है—आर्थिक और सांस्कृतिक। अरुघ आर्थिक विगत में हर इरुधों को सल सेना बनाया बाव तो सलभिता की प्रमिता से एक-अनिक दुरारे बनति वे सुनेगा, आरुघ रोषी में यह पदरोषी की देन देवेगा, और बर दाता होवा तो एक का रिम दुरारे के बनन आरुघांत।

लेकिन पिछले वर्षों में अनुभव थाया है कि सांस्कृतिक विगत के बिना आर्थिक विगत विकास का अरुघ बनता है। अरुघसेदुख का आर्थिक विगत सिधसेवा दुलोयें दरो को नहीं रोके रका। एक बने मय में सब सैन्यवर्गो ने मर कडाया कि बरती की विनी से ये २ को बरते दान बरगाते हैं ता मीने दूखा 'इलोयें बरते बर अरुघ करने बना है।' सलर मिला 'साय को रसिदना।' श्राव को यह देला कि सावद ही बोरें रहा हो, जो अरुघ से पुन नहीं था, और गौर में आरे बनन बरते के मय में युवाव नहीं हो रहा था। वीक में पैस हो, और बुदि बरिचन न को तो विगत इलके और नरा होगा।

आर्थिक विगत और सांस्कृतिक विगत, ये दोनों अरुघ प्रकृतिवों बरती हैं। दोनों सलम विगत के दो पदर हैं। रशीनिप नरो शाडीनी की मीग है कि गौर विगत और विगत दोनों ही बरारु माना जाय। बर देल रोशा तो एक एक तीब सलभिता सलसीय सलसीय भी इरुधें बनगा, और सलही बाधरी, अरुघसेपारके के उमार वे गौर का मन दूक हो बाएगा।

आर को अर्थसिद्धि, रात्रनीति और सिधसेवादि विमन्न 'भारतीय विगत' का विगत मनी रोनी है रशी है। विगत की इन सेनाओं के सुभासिने इमारती भूमि सेना, सेवकीना और सलभिता को बरका होना पड़ेगा। अरुघों अर्थसिद्धि को विगत के राव अरुघों सिधसेवा अरुघ में सली यादें।

अन्न-समस्या : समाधान के संकेत

इसको वर्ष पहिले जब देश की जन-संख्या अधिक न थी, हमारे श्रमियों ने अन्न के अधिक उत्पादन पर बहुत जोर दिया था। तैयिरीयोनपिनपद के द्वितीय अन्वयाक के प्रारम्भ में ही श्लेषा गया है : "अन्नं श्रेष्ठिभ्यजानात्"—अर्थात् अन्न ही मूल है, इस प्रकार जान। इसके आगे श्रेष्ठि इसका कारण भी समझाते हैं। अन्न को प्रकृत-स्वरूप माना गया है, क्योंकि अन्न से ही सब प्राणी उत्पन्न होते हैं, अन्न से ही जीते हैं और अन्न में प्रयाण करते हुए अन्न में ही प्रविष्ट होते हैं। इसी उपनिषद के सप्तम अन्वयाक में कहा गया है : "अन्नं न निद्रयात्"—अर्थात् अन्न की निद्रा न करो। और फिर अष्टम अन्वयाक में : "अन्नं न परिचक्षीत" यानि अन्न की अवहेलना न करो। अन्न में श्रेष्ठि बड़ी अद्भुत व हृदय संकल्प से प्रतिष्ठा करते हैं : "अन्नं बहु सुवीत। उद मत्सम्"—अर्थात् अन्न को खूब बढ़ाओ, यह मत है।

जब भारत आजाद हुआ और सन् १९५१ में हमारी पहली राष्ट्रीय पंचवर्षीय योजना बनायी गयी तब पश्चिम अफ्रीका (साल्वाडोर) ने देश के प्रधान प्रधान मंत्री को देखित से प्रण किया था कि पाँच वर्ष के बाद राष्ट्र बाहर से अन्न नहीं मंगायेगा और इस दिशा में स्वयंपूर्ण बन जायेगा। किन्तु दूसरी ओर तीसरी पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी हो जाने के बाद भी भारत को विदेशों से अन्न के लिए भील मंगाना पड़ रही है। यह दशा उच्चगुण दयनीय व शर्मनाक है।

तीन महत्त्वपूर्ण प्रश्न

जब मैं योजना-कमीशन का सदस्य था, तब एक दिन सुबह की प्रार्थना में महाभारत का यह भाग सुनकर बड़ा आश्चर्यचकित हुआ, जहाँ सुमित्रि के दरबार में नारद मुनि गये और राजा से तो प्रश्न पूछे। कुशल-क्षेम के बाद नारद ने पूछा : "राजन् ! आपके राज्य में कृषि कहीं बनी पर तो निर्भर नहीं रहती ?" मैं तो यह प्रश्न सुनकर ही दंग रह गया। इतने वर्षों तक देश का आर्थिक संवोजन होने के पश्चात् भी हमारे

नेता यह दावा नहीं कर सकते कि खेती वर्षों पर निर्भर नहीं है। फिर इसको वर्ष पहिले मुनि नारद ने राजा से यह सवाल करने की हिम्मत की। इस प्रश्न का रहस्य सारो के दो और सवालों से स्पष्ट हो गया। "क्या आपके राज्य के प्रत्येक गाँव में कुएँ व तालाब हैं ?" और अन्त में : "क्या इन कुओं व तालाबों की हर साल मरम्मत होती है ?" इन तीनों प्रश्नों में हमारे प्राचीन कृषि-सम्बन्धी आर्थिक संवोजन का सारा निचोड़ आ गया है।

कुछ समय पहले जब हम अन्वयाक विनोबा से मिले तो भारत के वर्तमान आर्थिक संकट का जिक्र करते हुए उन्होंने बड़े दुःख से कहा :

"आशादी मिलने के बाद जब मैंने अपने पवनार आश्रम में कांचन-मुक्ति का प्रयोग किया था, तो सबसे पहिले मुझे सड़क एक कुआँ खोदने की ही सूझी। उसके जल से हमने खेती व बागवानी शुरू कर दी। बाद में भूदान आन्दोलन के साथ मैंने 'भूदान' कार्यक्रम भी देश को आग्रहपूर्वक सुझाया। किन्तु आज हम जहाँ के तहाँ हैं। मैं तो चाहता हूँ कि संभवतः हरेक खेत में एक कुआँ हो। पाताल-गंगा को जमीन पर लाकर ही हम अन्न की समस्या पर विजय पा सकते हैं।"

कुछ समय पहिले जब मैं पदवीदान माग्य देने के लिए गोरखपुर गया था, तो सड़क के दोनों ओर सेकड़ों-हजारों कच्चे कुएँ खुदे हुए देखकर बहुत संतोष हुआ। शिक्षकों, विद्यार्थियों व सामाजिक कार्यकर्ताओं ने भी इस कृद-आन्दोलन में उसाह से भाग प्रदान का स्मरण हो आया : "राजन्, क्या इन कुओं व तालाबों की हर साल मरम्मत होती है ?" पूछने पर सादर हुआ कि गोरखपुर बिजने में कुएँ तो हजारों खुद गये हैं, लेकिन वे बरखात आने पर मिट्टी से फिर भर जायेंगे, किं दस हील्दी कुओं को पक्का बनाने की स्वीम है।

पट्टी हाल अन्य क्षेत्रों व राज्यों का है। दक्षिण भारत में भी हमारे पूर्वजों ने हजारों तालाबों द्वारा सिंचाई का प्रस्थ किया था। नदियों में भी छोटे-छोटे बाँधों के बरिये कृषि का उत्पादन बढ़ाने का प्रयत्न किया गया था। किन्तु इन तालाबों व बाँधों की सलाखी मरम्मत न होने के कारण उनमें से बहुत बड़ी संख्या सिंचाई के लिए बेकार हो गयी है। इसीलिए हमने योजना-आयोग की ओर से बार-बार सजी राज्यों को हिदा-यते में भी कि लघु-सिंचाई योजनाओं में मरम्मत (मेन्टेनेंस) पर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। लेकिन अन्ततः हमें कि इस ओर अभी भी हमारी राय सरकारों का बहुत कम ध्यान जाता है।

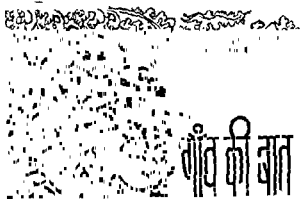
हमारा पक्षगीपन

इन दिनों शासनाधिक साद का बड़ा बोलबाला है। सभी अण्ड कृषि मत्स्य खादों के "टारगेट" (उद्घ) बने हुए हैं। यह जाहिर है कि 'क्रेमिज' साद उनही खेतों में लागू करी सिद्ध होगी, जहाँ सिंचाई का सुवासा है। पानी के बिना इस तैब साद के डागने से तो पत्त बड़ने के बजाय सूख ही जायगी। यह भी जरूरी है कि शासनाधिक साद के साथ 'कपोस्ट व हरी साद' मिश्रित की जाय। गोबर व हरे पत्तों के मिलने से जमीन की उर्वर शक्ति बढ़ती है और कृषि मत्स्य साद की गरमी भी कुछ कम होती है।

हम जानते हैं कि ज्ञान की ही एक उच्च भारत से विद्युनी-व्योदनी है। इन चम्पकर का प्रत्यक्ष दर्शन जाने और उनके कारण समझने के लिए मैं कुछ साक परने योजना-कमीशन की ओर से ज्ञान गया था। वहाँ मैंने प्राचीन क्षेत्रों का काफी अन्दर जाकर प्रमग किया। ज्ञानवी (अन्वी) ने मुझे कहा : "साहब, हमारे यहाँ एक कहावत है कि केवल शासनाधिक साद का प्रयोग पित्त के लिए तो अच्छा है, लेकिन कच्ची के लिए बहुत बुरा।"

"मैंने इतना हीक अर्थ नहीं समझा।"

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, २७ अक्टूबर, '६४



पाँव की बात

1960 अक्टूबर 27
 इस भाग में अक्टूबर और नवंबर के लिए सब लेखों को।
 अक्टूबर 1960

इस भाग में पढ़ें—
 'छड़ के गिगड़ उठे हैं'
 गाँवों की समस्या

- आमदुआ
- बनाये
- : जामेरी ?
- 1-2
- 15 और ऐसी
- कानून का अर्थ
- : सामूहिक जीवन के प्रयोग २
- आकरें—
- सहकारी
- 1 की सही छाया

२७ अक्टूबर, '६०
 पृष्ठ २, अंक ६ [१८ पैसे

छड़ के गिगड़ उठे हैं ?

जिस बड़े आश्रम में बच्चों का कुछ योजनात्मक चरता था उनके बड़े फाटक पर एक मुरदास रहते थे। बच्चों के साथ रिप्लेक की सिक्की खाने से और जबतक जगने से भजन पाया करते थे। कभी-कभी दो-चार लोग पास बैठते तो मधुसूत विपुण का भेद समझाने या वेद-मुनिमा की बात बताते। और जे जाने पर बुद्धि न जाने कबसे इतनी तेज हो जाती है।

एक दिन मास को मुरदास को खेरकर गांव के तीन पार आदमी बेंठे हुए थे। उनमें इसी साल बददीनाम की माया ने लीए हुए मुखियाजी भी थे। बच्चों के रोमान मुखियाजी ने कहा 'मुरदास, आपने भी इवराज में काम किया है। कई बार बैठ गये हैं और मार भी खादी है। माएको मार है जब स्वयमेवहा की जहरका पत्थरी से तो हार्दिकता से लड़ने हमजोषा की विपनी मार करते थे। लेकिन आज तो यह हाल है कि सगजा है लड़के देग में आय लगाने। कुछ समय में नहीं आता कि क्या हो गया है। लड़का पर तो जेसे मया छा गया है।'

'हो! एक दिन माएटर साहब आये थे तो यह भी कह रही थे कि स्कूल में एक दिन मुलाक ग मोड़ आते के लिए भगवान से मार-चार प्रार्थना करती रहती है।' मुरदास ने कहा।

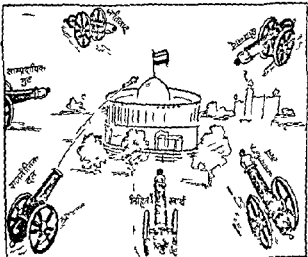
मुखियाजी— इतना ही बही, इस समय

उपटव करने में विद्यार्थी सबसे आगे हैं। बात-बात में तोड़ फोड़ करना आम लगा देना मारपीट करना आदि जैसे उनके रोक के काम हो गये हैं। सरकार ने लिए विद्यार्थी खसमे नद निरदर है।

मुरदास— यह सब क्या हो रहा है? विद्यार्थी पढ़ने गिनने का है?

मुसू— जब कोई दूसरा काम नहीं रहता होगा तो यह भी लेते हूंगे। विद्यार्थी बिगड़ उठे हैं।'

मुरदास— आगिर विद्यार्थी यह सब क्या करते है? आंगिने क्या है?



विद्यार्थी काप के गांठे

मुखियाजी—“कौन शिक्षक रहे, इम्तहान में कंसा पचा दिया जाय, अधिक होस्टल बनें, फीस घटायी जाय, आदि तरह-तरह की माँगें उनकी ओर से होवो हैं। अभी-अभी बंगाल के कुछ विद्यार्थियों ने सरकार के सामने अपना एक पूरा माँग-पत्र पेश किया है।”

सूरदास—“बताइए कि सरकार ने क्या जवाब दिया?”

मुखियाजी—“शिथामंत्रीजी ने विद्यार्थियों से यह कहा कि बंगाल की नयी सविद सरकार को विरोधियों से बचाना तुम्हारा काम है। बंगाल तुम्हारे हाथ में है। तुम लोग तैयार रहो।”

सूरदास—“बस, सभस में बात आ गयी। जब नेता लोग अपनी गद्दी बचाने के लिए विद्यार्थियों के सामने हाथ फेंकाने लगे, तो मारो हूँ बात है कि विद्यार्थी अपनी मदद की पूरी कोशिश बमूल करेंगे।”

सुकु—“ठीक कहते हो, सूरदास। और अब तो मुनते है, पटना के बड़े-बड़े प्रोफेसर लोग भी हड़ताल और आन्दोलन की धमकी देने लगे हैं।”

सूरदास—“ठीक ही है। जो काम शिक्षक करें उसे विद्यार्थी क्यों न करें? बल्कि मैंने तो यह देखा है कि स्कूल में जो भी अच्छा-बुरा होता है वह सब शिक्षकों के कहने से होता है।”

मुखियाजी—“सही बात है। रामबदल का लड़का पिछले

साल धनवाद में प्रोफेसर हुआ है। दुर्गापूजा में घर आया था। गुटबन्दी, जातिवाद, इम्तहान में नकल, हिताघ में गोलमाल आदि का जो हाल बताता था उसे सुनकर ऐसा लगता था कि हमलोगों की पंचायतों से ये स्कूल और कालेज कहीं आगे निकल गये हैं।”

सूरदास—“क्या कहें, किसकी? कौन किससे अच्छा और कौन किससे बुरा? रात अंधेरी हो, आसमान में बदली हो, जगली रास्ता हो तो सोचो, राही का जो हाल होगा वही इस समय देश का हो रहा है।”

मुखियाजी—“लेकिन यह बताइए कि यही हाल रहा तो काम कैसे चलेगा? क्या किया जाय कि हवा कुछ बदले?”

सूरदास—“मुखियाजी, और कुछ नहीं, बस एक सपना चाहिए। गांधीजी ने एक सपना दिया स्वराज्य का। हम लोग उस सपने के पीछे चल पड़ें। प्रेमी की तरह जवान को भी एक सपना चाहिए, जिनके पीछे वह पागल हो उठे। पागल तो वह कुछ-न-कुछ रहेगा ही। यह देश के अगुआ लोगों का काम है कि जवान को देश के लिए पागल बनायें, गद्दी और गुट के चक्कर में न फँसायें।”

मुखियाजी—जवान बाटद है, जिसे हर एक अपनी बन्दूक में भरना चाहता है।”

सूरदास—“तो एक ही बन्दूक दूगरे के ऊपर छुटैगो, और देश चोपट हो जायगा।”

सुकु—“बात तो सही है, लेकिन लोग सोचें तब तो।”

गाँवों की समस्या

आज भारत के सामने गाँवों की समस्या है, उन्हें उठाना है। इस मामले में बहुधा पश्चिम की नकल की जाती है, मगर यह गलत है। हमारे पास इतने साधन नहीं कि हम पश्चिम की नकल कर सकें। अमेरिका का गजदूर तो ५०० रु० प्रतिमास बेकारी का भत्ता पाता है !.....हमारे गाँवों में और समस्याएँ तो हैं ही, दो समस्याएँ ऐसी हैं, जिनकी ओर तुरत ध्यान जाना चाहिए : पहली तो है पानी की समस्या, और दूसरी है, पाखानों की समस्या।

देहातों में पानी के कल नहीं हैं। कुएँ से पानी प्रायः औरतें खींचती हैं। धारौरिक् कण तो होता ही है, बहुत-सी बीमारियों के फ़ैलने का कारण भी कुएँ का पानी है। “गोरी सर पर पानो से भरे मटके रखकर, कमर लचकाती हुई चलती

है।” —कान्यगत सौन्दर्य की चीज हो सकती है, मगर है बड़ ही मूर। और फिर यदि यही सौन्दर्य है तो इसमें भी ‘बराबरी’ कायम होनी चाहिए। केवल अट्रिज या गोव की छियाँ ही क्यों इस सौन्दर्य की हफदार बनें ?

दूसरी समस्या पाखाने की है। किसी भी साम्यता का पता लगाना हो, तो उसके पाखानों की ओर देखो। कुछ बरस पहले जब मैं जापान गया था, तो वहाँ के पाखाने देखने को मिले। सफाई तो यो ही, हर पाखाने में गुटदले खड़े थे। मुरुचिपूर्ण वातावरण था। अपना देग इस मामले मूर और राक्षस है। औरतें गाँवों में मुक-छिपकर पाखाना जाने का मौका निकालती हैं। देश में कई महिला-संघाएँ भी हैं। उनका उद्देश्य सम्पत्ति-विभाजन या तलाक़ तब ही सीमित है।

—स्व० डा० राममनोहर लोहिया

गाँव की बात

जाता है या किया जाता है, उसमें हमारी हालत निगलनी जाती है।"

कानून और धामदान

मैं धामदान के सिलसिले में शान-शान धूम रहा था। एक गाँव की छोटी सभा में लोगो को समझा रहा था कि खेत को उपज बढ़ाने के लिए खेतों के नये तरीका नये साधन। अर्द्धे खेती तथा साधा का उपयोग करना चाहिए। पुरानी पद्धति से ही खेती होती रहेगी, हमारे वे ही सपी पुरान हए पुरानी पुरानी और कृषाजी हमारे खेतों के औजार रहेंगे तो खेती का उत्पादन कैसे बढ़ेगा ? फिर तो हमें अनाज के लिए दूल्हे बेगों का ही मुँह खाना पड़ेगा।

मैं खेतों की कुछ और भी बातें बताना चाहता था कि एक दूधा आदमी खेत पका बाहुनी आप तो बहुत ही अच्छी बात बता रहे हैं, लेकिन धारकी यह अच्छी बात हमारे जिन काम आधगी ? मैंने पूछा क्या ? अपनी-अपनी खेतों में घुमार करो। देखो, उत्पादन बढ़ता है या नहीं। इसके लिए सरकार भी बीज, खाद पानी का इन्वेन्शन करते बावो है। "

बहु लोग यही तो मैं कह रहा हूँ कि आगकी यह सलाह और सरकार की वे सारी मदद हमारे काम की नहीं। हमको तो मजदूरी करनी है और जो मजदूरी मिलेगी उसीसे खाना पेट भरना है। जिसके पास जमीन है उसे ही न लाभ मिलेगा। हम जो मजदूर हैं। हमारे लिए आप क्या सोचते हैं ? हम थोड़ी-बहुत जमीन बँटाई पर सरकार जोतते थे। अब वह जो सरकार की क्या से नहीं मिलती। सरकार ने जब से मजदूर बना दिया है कि बँटाईदार बेदखल नहीं जिने जा सकते और बँटाई पर खेत देनेवाले मालिक जो ४० सेर में १४ सेर हो अनाज मिलेगा बाकी बँटाईदार को तब से तो हमें बँटाई पर जमीन ही नहीं मिलती। अब सिवाय मजदूरी का हम कर ही क्या सकते हैं ? जब खसबा देकर खेत खाना हमारे पास था है नहीं। कर्तौगिय यदूनी हमारी छोटी बुद्धि में तो यही समझ में आ रहा है कि हमारे लिए कुछ न सोचा जाय, नहीं अच्छा है। हमारे बारे में जितना सोचा

मैंने कहा ' आप जो कुछ भी कह रहे हैं, वह सब सही है। अबतक खेतों के सुधार की जो भी कोशिश की गयी है उसमें जिसके पास कुछ खेत है उसीको लाभ हुआ है। जिसके पास खेत नहीं है वह और गरीब होता गया है। उसका कष्ट बढ़ा गया है। फिर भी कुछ तो उपाय करना ही चाहिए। आज जसा है वसा तो चलने नहीं देगा है। वह तो बदलना ही होगा। यही सोचकर विनोबाजी ने कहा कि अपने लिए तुम स्वयं ही सोचो अबतक तुम्हारे लिए दूसरा सोचनेवाला होगा तबतक तुम्हारी तकलीफ दूर नहीं होगी। विनोबाजी ने पत्र है कि गाँव की समस्याओं को दूर करने के लिए गाँव के लोग साथ बैठकर सोचें और एक-एक कर सब समस्याओं को दूर करने का उपाय सोचें। गाँव की सबसे बड़ी समस्या जमीन है। उसको सबसे पहले हटाना चाहिए। उसके लिए विनोबाजी ने धामदान को बात कही। धामदान में गाँव के लोगों को ही इन्वेन्शन करना पड़ता है। बाहरी आदमी को नखरना नहीं पड़ती।

अपने राज्य (बिहार) को ही सीमित। सरकार ने कानून बनाये। लेकिन सरकार ने अबतक साहस नहीं किया कि उस कानून का अमल हो। जमी पटना में श्री महाशया वाष्प की अध्यक्षता में सभी पार्टियों का सम्मेलन हुआ। सब इस बात के लिए राजी हुए कि जमीन के जो जो मजदूर बने है उन्हें अबतक से लाने के लिए सार्वजनिक तरीका हुआ जाय और जल्द कानून को अमल में लाया जाय। यह एक प्रयत्न सरकार और पार्टियों के स्तर पर भूमि-सुधार के लिए हो रहा है। और इसी राज्य में विनोबाजी प्रम की पद्धति से जमीन की समस्या के हल में लगे हैं। क्या अब भी आप निराग हैं ?

मगर ऐसा होगा कब ? हन कब तक रहेंगे बेघरे ? विनोबाजी से कुछ जाग्य बघी यो कि हमलोबा की जो अमान मिलेगी। लेकिन इतने नरें बीत गये, पर जमीन का कदा कोई पैदा नहीं। हमारी तकलीफ बढती ही गयी। हमें तो जमीन चाहिए। चाहे वह मुदान से मिले, चाहे मजदूर से मिले, चाहे मोन-सजोड से।—एक नवमूलक ने कहा।

एक दूसरा नवमूलक भी पना रिखात मान्य पड रहा था, बडे शास्त्र भाव से सडा हुआ और बीडा, भारीको, हमें जमीन

चाहिए और जहर चाहिए। हमारे पास जिनकी जमीन है उसमें कुछ भी नहीं होता। सर्वोदय के एक कार्यकर्ता से बात-चीत हुई थी। उनकी बातें बड़ी अच्छी लगी थी। यह ठीक बात है कि हमारे पास जमीन होती तो हम रुचि के साथ खेत में काम करते और उत्पादन बढ़ता। आज खेती में हमारी रुचि नहीं है। जब हमारा पेट ही नहीं भरता तो हम ज्यादा मेहनत ही क्यों करें? कानून से हमें जमीन मिलेगी, इसका भरोसा हमें नहीं होता। ग्रामदान में हमें जमीन भी मिलेगी और हमारा सामाजिक सम्बन्ध भी बनेगा। कानून में जमीन तो मिलेगी, लेकिन हमारा सम्बन्ध खराब होगा ऐसा अन्देसा है। अभी से ही हमारे यहाँ मालिकों की तरफ से धमकी दी जा रही है कि चाहे जो हो जमीन हम नहीं देंगे, हम खुद जोतेंगे।”

मैंने कहा, “आप ग्रामदान के विचार को अच्छी तरह समझते हैं। यह सही बात है कि ग्रामदान में भूमिहीन को भूमि तो मिलती ही है। परन्तु इसमें सबसे बड़ी बात यह है कि गाँव के धनी, गरीब, ऊँच-नीच, सब मिलकर सभी के लिए सोचेंगे। गाँव में सबका सम्बन्ध विश्वास का होगा। आपस का अविश्वास दूर होगा। मिलकर काम करने की भावना पैदा होगी। आप गाँव के लोगों को समझाइये और ग्रामदान के लिए कुछ काम करिये।”

उसने कहा, “हम प्रयत्न कर सकते हैं। आप आइये तो हम मिलकर काम करेंगे।” •

अपना गाँव बनायें

सुनो सुनो गैबर्ड के भाई, क्या कह रहा जमाना ?
राजनीति के लम्बे-चोड़े, वादों पर मत जाना !
राजनीति बनकर सुर्पनखा, छलने को आनी है,
तरह-तरह के रूप बदलकर, जन को भरमाती है।
लोभ दिखाती है दिल्लों का, पर तुम मत पतियाना,
है हमको अब नन्दन-नगनन, अपना गाँव . सजाना ।
ग्रामदान की गंगा आयी, इसमें चलो नहायें ।
सत्य, अहिंसा, कष्टना, श्रम से, अपना गाँव बनायें ।

—प्रो० सतित



दुनिया क्या जानेगी ?

बहुत दिनों बाद यशोदा मिलीं। इस बीच इनके घर कई नये काम हुए। बड़े लड़के को शादी और पाँचवें लड़के का जन्म। लड़के की शादी हो गयी, इसलिए बहुत प्रसन्न थीं।

“इतने छोटे लड़के की शादी क्यों कर दो? बहू नैती है?” मेरे यह पूछने पर उत्तर दिया—“देविसे, यह शादी मैंने अपने लिए की है, लड़के के लिए नहीं। यह तो मैं भी जानती थी कि बहू सयानी है, लड़का छोटा है। लेकिन सयानी बहू है तो घर का सब काम करेगी, नहीं तो मेरी जिन्दगी भर यह चूल्हा-चौका न छूटता।”

मैंने कहा, “आपने केवल अपने आराम की बात सोची, लड़के और लड़की पर ध्यान नहीं दिया।” इस पर यशोदा ने उत्तर दिया, “ऐसी बात नहीं है, बहिनीजी! शादी के बाद मैंने लड़के को उसके चाचा के पास कानपुर भेज दिया है। अब वह वहाँ ही रहेगा। लड़के की तरफ से तो मन निश्चित हो गया है। रह गयी बहू। इसके रहने से शरीर को तो बहुत आराम है, लेकिन मन को नहीं है। सब बहूटी है रात भर नींद नहीं आती। रात को उठकर बार-बार पर और बाहर देखती हूँ। इसी पहरेदारी में दिन-रात रहना पड़ता है। बाहर अपने पति, घर में लड़के की पत्नी, दोनों पर ध्यान रखना पड़ता है।”

“इस तरह आप निरतन दिनों तक रखवाली करेंगी?”

उत्तर दिया—“जब तक लड़का छोटा है तभी तक, फिर तो जो कुछ होगा उसे अपना मत जानेना, दुनिया क्या जानेगी? पर के आदमी की रखवाली करना बहुत मुश्किल है।

—बिटा

पान की बात

से अधिक गहराई पर बोयी जाती है तो वे देर से अकुरित होती है तथा इन कोसला की संख्या कम होती है। अब इन कारणों को देखते हुए बीनी विस्मा को ३ इंच से गहरा कभी न बोय। हार्ड इच की गहराई पर बुआई करने से सातोपजनक अकुरण होता है।

गेहूँ की खेती—२

पिछले अक में गेहूँ की दो नयी बीनी विस्मा का जानकारी दी गयी है। यहाँ हम उनको सेती की विधि बताने जा रहे हैं।

बीनी किस्मे और उबरक रूमी विस्मा से अधिक उत्पादन न होने का मुख्य कारण यह रहा है कि ये किस्में अधिक उबरवा विशेष रूप से नाइट्रोजनवाले उबरका को सहन नहीं कर सकती या कबोकि अधिक मात्रा में नाइट्रोजन देनेवाले उबरक डालने से इनका तना अधिक बड़ जाता था और बापु के वेग से वह भूमि पर गिर जाता था। बीनी विस्में कृ में बीनी हैं तथा इनका तना कठोर होता है जिस कारण वह गिर नहीं पाता। सोनोरा-६४ तथा ठरमा रोसो किस्में ८० किलो० नाइट्रोजन प्रति एकर तक अपनी उपज लगातार अधिक देती चली जाती है। परन्तु जैची किस्मा में लगभग २१ कि०० नाइट्रोजन प्रति एकर से आगे बहुत धीरे उबरक में बढ़ि करने है।

भूमि की तैयारी भूमि की अच्छी जुगाई की जाय। दो-तीन जुगाईयाँ मिट्टी परलनेवाले भारी हल से करने के बाद हल-बारह जुगाईयाँ दगी हल से करनी चाहिए। हर होना। इसके मिट्टी भुरभुरी होगी और मेन में नमी बनी रहेगी। मेन में खरखवार निबालने के लिए तीन चार बार हेतो या मिह पट्टेला पलया जाय।

उबरक कितनी दी जाय इसकी जानकारी पिछले अक में दी गयी है।

भूमि समतल होनी चाहिए ताकि आसानी से सिचाई की जा सके। अगर भूमि में नमी की कमी हो तो बीने के पहले एक हफ्ते सिचाई की जाना चाहिए। बीने समय ठीक नहीं होगा।

उबरक भूमि में डालने की विधि नाइट्रोजन देनवाले उबरका को बीज के साथ मिलाकर कभी भी नहीं देना चाहिए। उबरका की भूमि में मिलाये जाने पर उबरका उज बोग उम समय तक नहीं हो पाता जबतक की सिचाई न की जाय। नाइट्रोजन की दो जिहाई तथा फासफोरस और पोटाशवाली सभी उबरक बुआई से पहले भूमि में मिला देनी चाहिए तथा कचो हुई जिहाई नाइट्रोजन पट्टी सिचाई में पहले छाट देनी चाहिए।

बुआई का समय बुआई का सहा समय यह की विस्म और वायुमय पर निर्भर करता है। यदि सोनोरा-६४ की गीम बुआई कर दा जाय तो कारल कम पूरगी तथा स्थान समय से पहले ही आ जायगा। उसी प्रकार यदि खरमाटोसो की गीम बोना जाय तो पोपे अधिक बड़ बागने और फसल निर जायगी। ये किस्में निम्बर के पहले महाह तक भी बो सकते हैं। ३ निम्बर तक की बुआई में ज्यादा स्थान पाना गया है। देर से बुआई के लिए यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि प्रति एकर बीज की मात्रा अधिक डाली जाय।

सिचाई का प्रबंध बुआई के लगभग २० २५ दिन बाद गेहूँ की बीनी किस्मा में सिचाई की आवश्यकता पडती है कबोकि इस समय गीवमूल तथा कारल निर लनी है। यदि इस सिचाई में देर की जाती है तो बीजल कम निकरती है। बापल पूटते समय तथा दागा बनते समय का सिचाई का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इनके साथ अय परिधिपधिया जैसे भूमि की विरम तथा अन्वामु को ध्यान में रखने हुए सिचाई का जाय। सामान्यतया ४ मे ८ बार सिचाई पर्याप्त रहता है। बीनी किस्में सिचाई के जल्द का सहा उपभोग करता है। उह सिचाई की कमी न होने दी जाय।

बीज की मात्रा भाधारण एक एकर के लिए ४० कि०ग्राम बाज पर्याप्त होता है परन्तु यदि २ से बुआई की जाय तो बीज की मात्रा बड़ा दी जाय। यान्त ४० कि०० के बराबर ६० कि०० बीज लगेगा।

बुआई की गहराई बीनी विस्मा का जड अधिक गहरी तक भूमि में नहीं जाता है। यदि बीज विरम ३ इंच

—भोपाल सिंह

कृषि, किसान और कानून

बिहार के मुग़ेर जिले में जमालपुर-कारखाने से कुछ ही दूरी पर एक गाँव है भलार। इस गाँव के एक साधारण दर्जे के पढ़े-लिखे किसान हैं हेमनाथ बाबू। पहले एक हाईस्कूल के हेडमास्टर थे। कई साल हुए नीकरी छोड़ दी। वे सामाजिक कामों में रुचि रखते हैं, बल्कि यों कहे कि अधिक समय उनका सामाजिक कामों में बीतता है। बिहार के कृषि, किसान और कानून की स्थिति का अध्ययन करने के सिलसिले में मैंने भी हेमनाथ बाबू से मुलाकात की। अपने गाँव का परिचय देने हुए उन्होंने कहा, "हमारे इस छोटे से गाँव में थोड़ी-थोड़ी जमीनवाले किसान हैं। कुछ बिना जमीनवाले लोग भी हैं। वे बैटाई पर शेती करते हैं। लेकिन उनकी हालत बड़ी खराब है।"

मैंने उनसे सवाल किया कि बिहार में तो बैटाईदारी का बहुत अच्छा कानून बना है, क्या उससे बैटाईदारी की पुरानो परम्परा पर कुछ असर नहीं पड़ा है? हेमनाथ बाबू ने जवाब दिया, "बिल्कुल नहीं। जैसा पहले चलता था, आज भी वैसा ही चलता है। कानून अपनी जगह है, परम्परा अपनी जगह है। और बैटाईदारी का ही क्या, सभी कानूनों का प्रही हाल है।"

सिर के आधे सफेद, आधे काले बालों में हाथ को उगलियाँ फिराते हुए फिर उन्होंने पुरानी बात याद की, "सन् १९३६-३७ में जब कांग्रेसी सरकार बनी थी तो उस समय कुछ काम हुआ था। उन दिनों मजिस्ट्रेट रैयत और जमींदार को बुलाता था, दोनों की बात सुनता था, जमींदार को माल-गुजारी पटाने के लिए राजी करने को कोशिश करता था। और दोनों की बात सामने रखकर मालगुजारी की नयी दर चानू करता था। नयी दर निश्चित रूप से पुरानी दर से कम होती थी। उस समय मालगुजारी अनाज में भी दी जाती थी। उसे 'भाबली' कहा जाता था।"

"भाबली पर जमीन पोतनेवालों को एक लाभ यह मिलता था कि रैयत और जमींदार को बुलाकर मजिस्ट्रेट भाबली को कैसे में बदलता था। उदाहरण के लिए रैयत को यदि १ मन अनाज देना है, तो मजिस्ट्रेट उसकी दर तय कर देता था। रैयत मालगुजारी में अनाज देने की जगह एक मन अनाज को कीचत (जो मजिस्ट्रेट के सामने तय होती थी) दे देता था। अगर अनाज बेचते समय अनाज

का बाजार-भाव बढ़ जाता था, तो उसका लाभ रैयत को मिलता था।"

इतना कहते-कहते हेमनाथ बाबू के चेहरे पर कुछ तनाव-सा आ गया। उन्होंने कहा, "सन् १९३७ से '६७ तक पूरे तीस सालों में मुझे याद नहीं कि इन दो के अलावा कोई तीसरा कानून बनकर लागू हुआ हो, जिससे रैयत को लाभ पहुँचा हो।"

मैंने हेमनाथ बाबू को जमींदारी-उन्मूलन-कानून की याद दिलायी और जोर देकर कहा कि इसका लाभ तो किसानों को मिला ही होगा? क्या इसे आप इनकार कर सकते हैं? मेरे प्रश्न का उत्तर देते समय अपनी बात पर मुझे अधिक जोर डालते हुए उन्होंने जवाब दिया, "बड़े जमींदारों के अलावा रैयत को तंग करते थे। छोटे-छोटे जमींदार रैयतों के पाँव के आस-पास के होते थे। वे खुद हार छोटी-बड़ी बात के लिए रैयत को तंग करते थे। जमींदारी-उन्मूलन से रैयत को राहत मिलेगी, ऐसी आशा बनी थी, लेकिन हुआ कुछ दूसरा ही। वे कड़ाही से निकलकर जैसे चूहे में जा गिरे! छोटे-छोटे जमींदारों और बड़े-बड़े जमींदारों के कारिन्दों से तो रैयत का सीधा दिन-रात का सम्पर्क रहता था। उनकी ताकत भी। वे रैयत से लड़-सागड़कर अपना काम निकाल लेते थे। लेकिन आज तो सरकारों कर्मचारियों (पटवारीयों) और शासन की तेषोचयियों से हर किसान परीघान है। हर कर्मचारी (पटवारी) तहसीलदार कहलाता है। किसान जित नम्बर के खेत का लगान दे रहा है, उगो नम्बर के खेत में उसका लगान कर्मचारी जमा करेगा, इसकी कोई गारंटी नहीं है। वड़े किसान जो पढ़े-लिखे और चलता-पुर्जा होते हैं, वे तो अपना काम बना लिया करते हैं, लेकिन छोटे-छोटे किसान होंगे परीघानो भूगवते हैं।"

"लेकिन मैंने पढ़ा है कि स्वराज्य के बाद बिहार में भूमि-पुष्पार के बहुत अच्छे-बच्चे कानून बने हैं। क्या आपको कुछ जानकारी है?"—मैंने यह सोचकर पूछा कि तापद ये महानग्य बिना जातकारी के ही अपनी राय बनाये हुए है।

"हाँ, मैंने भी सुना है। अलायर्स में भी समय-समय पर पढ़ा है। कानून बना है कि भूमिहीनों को दाम की जगह उनकी अपनी हो जायगी। दाम की जगह से कोई उनको हटा नहीं सकेगा। कानून बना है कि बैटाईदारी को उरज का २६ बाँ और मासिक को १४ बाँ हिस्सा ही मिलना चाहिए। लेकिन भूमिहीन मशहूरों को तोपड़ियाँ आज भी पहले की

तरह ही उजाह दी जाया जाती है। वे बेदयत कर दिये जाते हैं। बैटार्डारो का यह हाल है कि अनाज की कुल उपज को मालिकों के घर पकी जाती है; बैटार्डारो को मिलता है सिर्फं पास-भूना। अनाज कुछ चोरी करने मले मिल जाता हो, हिस्से के रूप नहीं के बरबर ही मिलता है।

"कहीं-कहीं तो 'जोत' का अधिकार बिकता है। समुद्र में पिछले साल जितनी फसल हुई अनाज का भाव क्या रहा, आगे जितनी फसल होगी, भाव क्या रहेगा, इन बातों का मिश्रण मालिक आगो मर्जों के मुताबिक कर लेते हैं, फिर फसल बीने के बैट-दो महीने पहले ही कई बैटार्डारो को बीने के लिए जमीन देने की शर्तों दे देते हैं। बैटार्डारो में जब जमीन लेने के लिए होउ रूप जाती है तो जो सबसे अधिक पैसा या अनाज देना बहूतना है, उसे ही जमीन जोतने के लिए दी जाती है। इस तरह मालिकों की आयदनी बढ़ती रहती है, मुर्तमिन रहती है, जब कि जमीन जोतनेवालों की आयदनी घटती रहती है, अरक्षित रहती है। और, बानून कुछ नहीं कर पाता।

"लेरी का बानून क्या था, फिर रोक दिया गया। सीरील' का बहूत भी क्या। अपने जिनोको जमीन मिटो, ऐसी कोई मिलावत जमी तब मेरी जानकारी में नहीं आयी।

"एक और बहनुन है कि नेत्रे स्टाइन के किनारे की जमीन हरिनो को ही बीनेके लिए दी जायगी। जिस रेट पर जमीन दी जायगी, यह सरकार तय करती है। सरकार के बलाय में जमीन दी जाती है मालिकों के हरिजन हलवाही को, लेकिन उस पर बना रहता है, मालिकों का ही। हरि जन को पैसा देकर, बरा धमकाकर या धुग देकर यह मित्र मिला बर्षों से बना आ रहा है।"

मिने सोचा था कि हेमनाथ बाबू को बानूनों को आनकारी नहीं होगी। लेकिन, बात कुछ भिन्न निकली। और उनके बनावे तम्बों के जायदाद पर मुझे बड़ मानना पडा कि जनता को सम्मति और जागरण के बिना इस देश में सरकारी बानूनों से शायद बहुत काम नहीं हो सकता। एक के बाद दूसरे सरकार आयगी, मित्र नये बानून बनायेंगे, और लोग उन बानूनों से बचने के मित्र नये उपाय खोज लेंगे! इसलिए गाइड इस देश में कोई भी सुधार लाने का एक ही रास्ता है—जनता को समझाना, बार-बार समझाना, और एक-दूसरे के लिए रिशतेय को बनाकर परम्पर के सहकार को बढ़ाना। ●

भूमिसुधार-सम्मेलन से

भूमिसुधार-कानून का अमल

लोकतांत्रिक पद्धति से भूमि-सुधार में रुचि रखनेवाले राजनीतिक दलों के प्रतिनिधियों, सगलनों तथा कुछ व्यक्तियों का एक सम्मेलन पटना में १७ और १८ अक्तूबर को हुआ। इस सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा कि इस राज्य में किसानों को दया का सुधारने के लिए स्पष्ट और बरबर उपाय सोचने चाहिए। अवलक्ष इति-सुधार के जितने भी बानून बने हैं उन्हें रोम ही अमल में लाने की जरूरत है। इसके साथ ही इन बात का भी ध्यान होना चाहिए कि दिया का सहारा न लिया जाय। दिया से सिर्फं अल्प-बध्मा उल्लेख और अजायबता ही फेंकेगी। सभी किसानों को मैत्री भाव से हल करना चाहिए।

बैटार्डारो को, जो हिम्मा बानून में तय किया गया है, वह मिलाया चाहिए। परन्तु इनके लिए न दिया का मार्ग अपनाया चाहिए और न अराजकता ही फैलानी चाहिए। प्रशासन के तय को कोई उपयुक्त रास्ता निकालना चाहिए, जिससे बैटार्डारो को बैटार्डारो-बानून में दी गयी सुविधाओं का लाभ मिल सके। किसानों को मद्यजन के धनुन से बचाव के लिए बरार बंदन उठाना चाहिए। परन्तु जवन राजनीतिक दल ईमानदारीपूर्वक परस्पर के सहयोग से काम नहीं करते, वक्तव्य इति को तन्मयाओं को डूर नहीं किया जा सकता है।

राजस्वमंत्रों श्री इन्द्रदीप मिश्रा ने कहा कि किसानों की आर्थिक और सामाजिक स्थिति में सुधार लाने के लिए व्रतित कारो बंदन उठाना जरूरी है। इन्द्रदीप मिश्र को टीडरपर सभी वक्ताओं ने बजाया कि इति-मसलाओं का सामना करने के लिए वक्तमान कानून बरारो है। उन्होंने सुधार दिना कि प्रथम-स्तर पर, जिन्य-स्तर पर तथा राज्य-स्तर पर सभी दलों की मिली-जुली सहायकार समिति बनती चाहिए। वह सखारों अधिकाधिकों को भूमि-सुधार के बानून के परिवर्तन में सहाह देगी तथा मदद करेगी।

इस सम्मेलन की अध्यक्षता मुख्य मंत्री श्री महाभाषा प्रसाद मिश्रा ने की। ●

अमेरिका में सामूहिक जीवन के प्रयोग—२

दुखोबोर

दुखोबोर लोग शाकाहारी हैं। वे ईश्वर के नियम के अनुसार जीने की कोशिश करते हैं। उन्होंने अपने को मनुष्यों के संरक्षण और शासन से इसलिए दूर रखा, क्योंकि वे मानते हैं कि मनुष्य एक साथ दो मालिकों की सेवा नहीं कर सकता है। श्रम और शान्तिमय जीवन बिनाते हुए वे वह सब कुछ मानने और करने को तैयार होते हैं, जो ईश्वर के नियमों के विरुद्ध न हो। वे भय से किसी बात को नहीं मानते, बल्कि अपनी अन्तरात्मा की बात को ही मानते हैं।

इनकी धार्मिक सभा के समय आये हुए लोगों के बीच में भोजन पर डबल रोटी, नमक, पानी की सुराही और फिलाम रखा रहता है। यदि किसीको प्यास लगती है, तो वह सहज ही पानी पीता है। सभा में सामूहिक भजन और छोटे उपदेश होने हैं।

सन् १६६६ से दुखोबोर लोग अपने देश, रूस के गनातन धर्म से बहिष्कृत रहे हैं। तभी से वे एक विश्वव्यापी भाई-चारेवाला ईसाई-समाज बनाने के प्रयत्न में हैं। उनका यह "आध्यात्मिक संघर्ष" अब भी जारी है। कुछ दिनों के प्रयत्न में सन् १८९९ में ८००० दुखोबोर बेनेडा पहुँचे। सरकार ने उन्हें जमीन भी दी, और उन्हें अनिवार्य फौजरी भरती से मुक्त कर दिया। बेनेडा में उनका सामूहिक जीवन प्रारंभ हुआ। वहाँ वे काफी सफल हो रहे थे। लेकिन इन्हीं बीच उनके प्रथम मार्गदर्शक के लड़के ने उन्हें गहन मार्ग दिखाया। उन पर पाँच लाख डाक्टर का भ्रम था। बर्ज को चमूकी के लिए सरकार ने उनकी जमीन जप्त कर ली। इसके उन्हें अपने भ्रमण तथा कृषि-भूमि को त्यागना पड़ा। अब वे किसी प्रकार से कहीं-न-कहीं जमीन प्राप्त कर लेते हैं।

उनके बीच के कुछ अल्पसंख्यक लोग त्रेम्नोवा नाम के गाँव में रहते हैं। वे समझते हैं कि हवा और पानी को तरह भूमि भी परमेश्वर की देन है, इसलिए जमीन की व्यक्तिगत मिलकियत समाप्त होने चाहिए। वे मानते हैं कि साधारण पाठशालाओं की शिक्षा से निर्दोष बच्चे बरबाद हो जाते हैं। वे बुलाई करनेवाले साधियों के विरुद्ध हिसक काररवाई करने में विश्वास करते हैं। पिछले चालीस वर्षों में उन पर ४०० धार लोगों की जापदाद में आज लगाने का आरोप लगाया गया है। सन् १९६२ में उनमें से १०० आदमी गिरफ्तार हुए थे। उनकी माताओं और पत्नियों ने सारे गाँव को जलाकर ५०० मील की पदयात्रा उनके जेल तक की थी। जब अधिकारियों ने उन्हें जेल के सामने घे भगा दिया, तो वे एक सार्वजनिक बगीचे में बैठ गयी थी। उनका भयम जारी है।

वार्तन में उनके लिए अपना सही मार्ग खोजना बड़ा कठिन हो गया है। उन्होंने एक बहुत ओपचारिक धर्म के विरुद्ध, अन्यायकारी सामन के विरुद्ध आध्यात्मिक बग़ावत की। वे प्रायः शम की स्थिति में रह रहे थे और पूरी तरह अतिरिक्त थे। उन्हें प्रजातांत्रिक व्यवस्था का कोई अनुभव नहीं था। सरकार भी अपने विद्रोह के अनुसार शम करने की पद्धति के द्वारा उन्हें पुरानी विगानो मस्जिद की आज की यात्रिक संरचना में परिवर्तित करने का प्रयत्न करना पड़ा। उन्होंने विभिन्न धर्म, तथा पराधी भाषा में ज़रने का अरण रखने का प्रयत्न किया। ●

—सतया हरत

गाँव-गाँव "गाँव की बात" पहुँचाने का निद्रय

देशीय विज्ञे की नवगठित सामरस्यन संघित को पत्नी बैठक १९ अक्टूबर को पूरा हो गई है। संघित ने पुष्टि करती की योजना बनाई हुए पर निश्चय किया कि गाँव-गाँव में आम तस्तरन का संदेश पहुँचाने के लिए "गाँव की बात" का संक्षिप्त संस्करण तैयार किया जायेगा। वे संघितों के लिए गाँव-गाँव के आम तस्तरन का संदेश भेजने, सतारन पूरे करने के लिए-संघितकारी के पास पहुँचाने तथा "गाँव की बात" संघित सामरस्यन का विज्ञे सतारन के लिए कुछ पुस्तकी (१० संरने की संख्या के अन्तर) का संदेश संघित रूप से पहुँचाने का काम करेंगी। पुस्तकी के संदेश का सुतारन को सामूहिकी करेंगे।

मैंने बोरे थे पूजा। एक बूढ़े विद्यान ने बड़ी शांति से उत्तर दिया : "दुष्का मन्त्र व तो साफ बाहिर है। डिर्न कृत्रिम खाद के इतले माल बनने से दो-तीन फलछे तो बहुत अच्छी हो जाती हैं। लेकिन बाद में भमीन की उत्पादन शक्ति तेजी से घटने लगती है।"

जापानियों की गाय भक्ति

सुते घर आनकर भी बड़ा तालखु हुआ कि अब जापानी किसान मी गाय का मत बनवा बा रहा है। अब मैं पन्द्रह वर्ष पहिले जापान गया था तब वहाँ गाँवों नही के करावर भी और दूध पीने का विश्वास भी बहुत कम था। किन्तु इस बार गाँवों में जारी गाँवों देलकर मैंने किसानों से इच्छा वनइ पूछी। उत्तर मिला : "इसिम खाद में कम्पोस्ट मिलाके के लिए गाय से गोबर मिला जाता है और बच्चों के पीने के लिए अच्छा दूध भी।" एक और किसान बोला "साहब, पहिले हम छोटे छोटे देरनों का अधिक उपयोग करते थे। लेकिन मशीन न तो दूध देती है और न खाद। इसलिए हमें गावों से बहुत पायदा है।" तीसरा किसान कहने लगा "हम तो गावों से लेते बीजने का काम भी देखते हैं। गाय को हल में बीजने से उतका स्वास्थ अच्छा रहता है और उसकी सेवाना भी अधिक मजबूत होती है।"

हमारे देश में "गोमय" तो बहुत है, लेकिन वे गाय माता की रचनात्मक सेवा करना नहीं जानते। जापानी किसान किस तरह अपनी गावों को देखभाल व सेवा करता है, वह सचमुच अद्भुत प्रयोग है।

भारत में गाय का स्थान पारमिंक दर्जे से भी रहना उँचा इसलिए माना गया है कि वह हमारी कृषि की उन्नति के लिए बहुत आवश्यक है। वह हमें बीज देती है व बीजने के लिए, गोबर देती है खाद के लिए और खादरूपक दूध देती है बच्चों के लिए। अत गोबरपन की ओर हमारा अधिक ध्यान जाना निजोक्त आवश्यक है। गोहत्या क्रिषी मान्दोलन के लिये मूल भावना यही है और हमारे संविधान के अनुसार गोवध की रक्षा करना हमारा पवित्र कर्तव्य हो जाता है।

भूतान-पत्र : शुक्रवार, २७ अक्टूबर, '६७

एक और सुसिक्त

लेकिन एक और पक्ष की तरफ भी हमारा ध्यान जानना जरूरी है। अब मैं गोरव पुर जिले में हजारों की संख्या में खुदे हुए देलने गया वो बड़ी प्रसफला हुई। सड़क के दोनों ओर हों भरे खेत थे। अन्न के अलावा केले व पपीते के बगीचे भी लहलहा रहे थे। मैंने कुछ किसानों से पूछा - "क्यों मारें, आप अन्न तो खुदा हैं न? कोई दिक्क तो नहीं है।" "बापूजी, कुओं से तो बड़ा पायदा हुआ है।" एक बूढ़े विद्यान ने कहा "लेकिन हम दिन भर लेनों में परिश्रम करते हैं और रात में जगली गाँवों के छद्म के छद्म आकर हमारी खेती बर्बाद कर जाते हैं। रतखिए हम बहुत परेशान हैं। हमारी मरद कीजिए।"

यह सुनकर सुते बड़ा दुःख हुआ। लेकिन इतना क्या इलाज? किसान कहने लगे—हम कृषी तार दिखवा दीजिए, ताकि हम अपने खेतों की हदबन्दी कर सकें। लेकिन हमारे देश में कितने किसानों की यह तार दिखवाया जा सकता है। और फिर जगलें गाँवें हो इन तारों के लगभग का भी ताड़कर खेती में पुनर्जायगी।

इसका अन्वय व शायी इलाज तो बहुत महत्कार से सोचना होगा। लेनी क हाथ साथ हम पंचायती चरगाहों की व्यवस्था करनी होगी। गांधीजी ने 'गोसदन' की स्वीय का सुझाव दिया था, वहाँ दुग्ध व निकामी गाँवें रखी जायँ और मजले पर उनकी इड्डी, चमड़े, चीग आदि के उपकरण के लिए प्रायोगिकों की व्यवस्था की जाय। कुछ गोसदनों को सरकार की ओर से उपलब्ध पूर्वेक बनाया भी जा रहा है। लेकिन इस योजना की ओर अधिक ध्यान देने की जरूरत है। प्राय पंचायतों की भी ऐसा प्रयत्न करना होगा कि सामूहिक दम से जगली व आवारा पशुओं से खेती की रक्षा हो सके।

न्याय की भी रचनात्मक 'गावेषा' को व्यवस्थित रूप से अपनाया होगा। नहीं तो गोरहा भी न हो सकेगी और हमारी खेती भी बर्बाद होती रहेगी। कम या उत्पादन

बढ़ाने के बजाय हमारी गोमाता विद्यान के लिए एक अभिशाप बन जायगी।

हमारा अजीब शिक्षाचार हमारे श्रमियों ने 'अन्न को मरना' कहा है।

उत्तक अपमान या निन्दा करना महापाप बताया है। किन्तु बड़े रंज की बात तो यह है कि हम आज भी अन्न की बरबादी करते ही रहते हैं। धानी में कुछ जूटा छोड़ने की हमारी आदत पक्क गयी है। विदेहों में प्ले में छूटा छोड़ना अतिशय माना जाता है। लेकिन हमारे देश में जूटन छोड़ना मानो एक शिक्षाचार ही बन गया है। जब देश के कई स्थानों में भयंकर अकाल पड़ रहा है और करोड़ों गरीब लोग भूख से तनहा हैं।

उस समय भी हमारे शायी विचारों की दायतों में जूटा अन्न या तो रेंका जा रहा है या खेतों को दिया जाता है। और सबसे बड़े दुःख का विषय तो यह है कि हमारी रचनात्मक संस्थाओं के समूहों में भी इस ओर आवश्यक ध्यान नहीं दिख जाता। मैंने कई शमारीयों में गांधीयों व पत्रों में जूटा अन्न फेंकते देखा है। चायद इसी राष्ट्रीय पाप का अभिशाप हम आज भोग रहे हैं। जो समाज या दल कमजोर अवमान करेगा, वह कृपा हानी व समुद्र न हा सकेगा, वह हमारे श्रमियों की मान्दोलनी है।

अन्न व एक बात और। अन्न का मरना क रूप में तभी दर्शन किया जा सकता है, जब हम इशावात्यापानियर का "लेन लखतेन सुयोग्या" आदर्श का पालन अपने दिन प्रति दिन क जीवन में करते रहें। अगर हम त्याग अन्न का उपयोग करोगे तो जीवन में अन्न-व्रत का स्थान पर अद्भुत का रूप धारण करेगा। भगवान् ने गीता में स्वयं स्पष्ट शब्दों में वायात कर दिया है कि जो अपने ही लिये अन्न फकाते हैं वे पाप खाते हैं।

'सुश्रुत उ ख्वं पाया ये पच त्यागकराण्ण' और बर्दा तक मैं समझा हू, जिनीवाओं क मूदान व भावदान आन्दोलन का मूदान भी यही है - 'मिलकर भूयता की सेवा करो और अन्न बर्बाद नसो।'

—श्रीमत्पारायण

लोकतंत्र का अवमूल्यन

समाजवाद के दो प्रकार हैं। एक, हाकुआँ का समाजवाद, जिसमें छूट के माल का उनकी सुनहरी टोली (गोल्डन रिंग) के आंतरिक उदरानों के अनुसार बँटवारा होता है। दूसरा समाजवाद, सर्वसाधारण जनता के लिए होता है, जिसमें परिभ्रम (छूट से नहीं) से उत्पादन बढ़ाया जाता है, और भ्रम वा कल भ्रमिकों द्वारा उनके ही बनाये नियमों के अनुरोध विवरित किया जाता है। लोकप्रधान समाजवाद के नियमों का आधार होता है— "कृषि-भूतधार कार्य करना और आवश्यकता-नुसार लेना।"

बिना कर्कर के वर्तन में स्वार्थपरक दही बाहर फँसने योग्य विषय हो जाता है, उन्हीं प्रकार लोकतंत्र, समाजवाद, पंचायत राज, सरकारिता व राष्ट्रीयकरण आदि आभ्र बिना कर्कर के (अर्थात् कुंठकारोवले) दुपानों में पक जाने से विष बनते जा रहे हैं। बिजली, पानी, बस सर्विस, बेल, डाक-तार, टेलीफोन, हवाई नेत्र, दुग्ध योजना, जीवन बीमा आदि राजव द्वारा संचालित एक भी धया ऐसा नहीं है, जिससे जनता को पुराने गुलामी के दिनों की अपेक्षा कम कीमत पर अधिक सुविधा व सही स्तर की सेवा मिलती है। राजकीय धंधों व संस्थानों में घाटा है, लुटमार है, बेईमानी है, मजदूरी पर अत्याचार है, उनकी इकताले तथा घेराव हैं। राजनैतिक नेता व उनके दल ऐसी हालत में भी अन्य व्यवस्थाओं के भी राष्ट्रीयकरण की बातें न मास्कर किन्तु छेपे से करते रहते हैं, और पता नहीं कि इस सबकी प्रथमि में उनकी वास्तविक इच्छा क्या है ?

देश की कितनी बर्बादी हुई और हो रही है ? पाटे में लन्नेपाने खरकरी व्यवस्थाओं तथा संस्थाओं में बरोहों की पूँजी लगी है, व लगती जा रही है। अनेक देशों से भारत ने अवीम श्रम और दान माँग माँगकर प्राप्त किये हैं। उन सब देवों में से अकेले अमेरिका के ये आँकड़े हैं :

"भारत को आर्थिक सहायता का

अमरीकी कार्यक्रम जून १९५५ में प्रारम्भ हुआ था, तब से ७ अगस्त १९६७ तक भारत को इस प्रकार रकमें प्राप्त हुई हैं :

कुल प्राप्ति ७,८७,१८,००,००० डालर (५९,०३,८५,००,००० रुपये) विवरण इस प्रकार है :

दान (अल्पमो से मुक्त) ७६,८९,००,००० डालर (५,७६,६९,००,००० रुपये)
श्रम (सौदाना होगा) ७,१०,३९,००,००० डालर (५३,२७,१६,००,००० रु०)

इसका विवरण इस प्रकार है :

डालर	रुपये	:	अदायगी निम्नानुसार
१५,४२,००,०००	=	१,१५,६५,००,०००	: रुपयों या डालरों में
४,४२,७४,००,०००	=	३३,२०,५६,००,०००	: रुपये में
२,४२,१३,००,०००	=	१८,९०,९५,००,०००	: डालरों में
कुल :	७,००,२९,००,०००	=	५३,२७,१६,००,०००

अमेरिका से प्राप्त इन उनसठ अरब तीन करोड़ पचासी लाख की रकम में अन्य सभी दाता देशों से प्राप्त राशियों की जोड़ने पर पता चलता है कि भारत पर इतना भयकर क्षण बढ गया है कि तैरकू बर्षों तक कण-मुक्त होना संभव नहीं।

औत वर्षों तक हमारे भाग्य-निर्माण का अधिकार हमारे पास होते हुए भी हमारा देश दिवालिया बनता जा रहा है और दिवालिये की ओर गति होती है, वही दुर्घति हमारे राष्ट्र की हो रही है। क्या इसीकी योजनाबद्ध विकास या प्रगति करते हैं ? पहले हम विदेशी बंदूक के गुलाम थे और अब हम उनकी सडूक के गुलाम हो गये हैं।

मानवीय मूल्यों का रूप समझने हेतु यह उदाहरण अत्युल्ल पढ़ेंगे। एकनायकी प्रसारण में। उनकी वेपभूषा देलकर एक विदेशी सेनापति ने दुभापिये की सहायता से उनसे इस प्रकार बातचीत की :

सेनापति : आप कौन हैं ?
नाथथो : नाथ।
सेनापति : नाथ अर्थात् मालिक, तो आपकी प्रथा कहां है ?

नाथथो : हमारा पराया कौन है ?
सेनापति : मालिक की सेना कहां है ?
नाथथो : हमको भय कहां है ?
सेनापति : नाथ का लखाना कहां है ?
नाथथो : हमको लंच कहां है ?

तीन प्रश्नों के तीन उत्तरों ने सेनापति को नाथथी का भक्त बना दिया। ये मानवीय मूल्यों के उत्तर। आवश्यकता से अधिक संग्रह मानवता के विरुद्ध है और वही सर्वत्र और सब संकटों की शड़ है। संकीर्ण राष्ट्रीयता से मुक्त होकर संपन्न देश भी यदि अपनी आवा-

धकताएँ (अर्थात् अपने ऐशोआराम) कम करके दूसरे देशों की निःस्वार्थ सहायता नहीं करेगे और एक देश धनकाम और दुग्ध देश मारीब बना रहा, तो मुक्त अवश्य होंगे। विश्वासति नहीं हो सकेगी। मनुष्य का स्वभाव कोपी नहीं, बसोकि शीघ्र में मुच नहीं होता है, कोप उठाने पर ही मुच होता है। जीवन संघर्ष नहीं है। मनुष्य का प्राकृतिक स्वभाव प्रेम है, अर्थात् मानवता है। स्वभाव यह है, किसे हम रतना चाहते हैं। कान्ति की प्राप्ति भी स्वभाव के अनुसार ही। मिडिपूलक राजनीतिक हो सकता है, पर मानसिकारी नहीं हो सकता। कम ही नहीं हुआ वह भाव हो, यह इतिहास है। हमेशा से होता आया है वही होता रहे, वह यादमरेवुल है।

करोड़ों की बोबनारें बनी, परन्तु मानव-निर्माण की कोई योजना हमारी व्यवस्था ने नहीं बनायी। करोड़ों की संस्था में धन्य बहुत होते हैं, परन्तु उन धन्यों का मूल्य तभी है, जब कि धन्यों के प्रारम्भ में एक का अंक हो। बिना एक के अंक के सभी धन्य निरर्थक हैं।

भूदान-पत्र : शुक्रवार, २७ अक्टूबर, '६७

देव में शराब भरी व नशाबंदी कैसे हो, गाँवों, गरीबों व मरिदाओं को गुलामी से कैसे मुक्त किया जाए, रोगों, कष्टों, आघात, विधा, उपचार, न्याय व सुशास अर्थात् शांत प्रारंभिक आचरणकर्ताओं की उन्नतव्य मानव मात्र को कैसे हो, उनके अन्तित्व का भरोसा उन्हें कैसे दिया जाए ? भाषावाद, प्रान्तवाद, भातिवाद, सम्प्रदायवाद, दलवाद, सत्तावाद आदि के कारण होनेवाली शिष्टकुलव्य से कैसे सुशुक्राण मिले ? गाँवों की हारी समस्याओं का एक चारते थे, ताकि स्वयंसेवक सुलाज्य में परिणत हो जाए।

स्वर्ग में बैठे गांधी देश को हान्त देख कर क्या सोचना होगा ? यही न कि उसके देते क्यून समित्त हुए, जो भी राष्ट्रपिता चाहता था, उस सबके विपरीत कार्य व आचरण उसके नाम का शोषण करनेवाले कर रहे हैं और कोई इस सबको रोक नहीं पा रहे हैं। क्रिष्ण रहता है तो बिदा रहने की क्या सीपनी ही होगी। एत्यों या हंगों के भजन निर्माण करने समय एक एक छते या रूँट को गढ़ना पड़ता है तभी अण्डा, मुट्ठ व मिठाऊ निर्माण हो सकता है। इसी प्रकार गाँधी के स्वप्न को साकार करने हेतु स्वराज्य को सुरक्षित बनाने क लिए आज मानव निर्माण के आन्दोलन की पूरी आवश्यकता है।

मिशन और अन्तःशान का सम्बन्ध अब अनिवार्य है। क्षान्ता एव बात को समझा देगा कि मानवता या सर्वमान्य में से कौनसा मार्ग चुनना है।

हरको समिति दे भयवान् ।

—शुभचन्द्र बाफणा, विधासक
२२, विधासक पुत्री, जयपुर

नयी तालीम

विज्ञा द्वारा समाज-परिवर्तन की संदेशवाहक
मासिक पत्रिका
सालाना पत्रा : छह रु०
सर्वे सेवा सभ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी-१

भ्रान्त यज्ञ : शुक्रवार, २० अक्टूबर, '६०

विनोबा और अद्वैतवादी दर्शन

विनोबाजी पर औपनिषद् वेदान्त दर्शन का व्यापक प्रभाव है। विनोबाजी पर गीता एवं उपनिषदों का प्रभाव उनके निम्नोद्भूत कथन से ही स्पष्ट है

“भरे जीवन में गीता ने माँ का स्थान दिया है। वह स्थान तो उसीका है, लेकिन मैं जानता हूँ कि उपनिषद् मेरी माँ को माँ है।”

उपर्युक्त कथन के अनुरूप विनोबाजी पर वेदान्त विद्या के आधार, ग्रन्थ गीता एवं उपनिषदों का प्रभाव स्पष्ट है।

उपनिषदों के ब्रह्म एवं मुक्ति आदि विद्वान्तों का प्रतिपादन विनोबाजी ने अपने स्वतंत्र एवं नवीन दृष्टिकोण के आधार पर किया है।

कहना न होगा कि विनोबाजी ने अद्वैत दर्शन को पूर्ण रूप से व्यावहारिक दर्शन का रूप प्रदान किया है। शांकर अद्वैतवादी की तरह विनोबाजी भी ब्रह्म को सर्वोच्च तत्त्व मानते हैं। विनोबाजी ने “ब्रह्म शब्द का अर्थ—विद्याल एवं न्यायक किया है।”

विनोबाजी का कथन है कि सत्सुखित जीवन को छोड़कर ब्रह्मरूप होना ही मनुष्य का स्वयं है। इस प्रकार विनोबाजी के अनुसार व्यापकतम स्थिति प्राप्त होने का नाम ही ब्रह्म निर्वाण है। गीता दर्शन के आधार पर विनोबाजी का मत है कि वस्तुतः शीघ्र ब्रह्मरूप है, परन्तु देह के पदों के कारण वह अपने ब्रह्म स्वरूप का अनुभव नहीं करता। विनोबाजी के मना अनुसार देह साधन तो है, परन्तु साधन नहीं। विनोबाजी जीवन मुक्ति के पथगाथी हैं।

१-विनोबा-“उपनिषदों का कल्पयन्”, प्रस्तावना। प्रकाशक सत्मा साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली

२-विनोबा-“भित्तयन् दर्शन”, पृष्ठ १६५, सत्मा साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली

३-विनोबा-“गीता प्रवचन” पृष्ठ— १०१ (अनु० हरिमोक्ष उपाध्याय), सर्वे सेवा सभ प्रकाशन वाराणसी

उहीने जीवन मुक्ति के विचार को स्पष्ट करते हुए कहा है : “मेरा तो खयाल है कि मनुष्य पूर्ण जीवन में महानता का मायम साक्षात्कार कर सकेगा है।” परन्तु दूसरे एक सत्य पर विनोबाजी ने यह भी कहा है कि इस जीवन में जीवन मुक्ति की अवस्था प्राप्त करना संभव तो है, किन्तु शारीर रहते हुए उसकी पूर्णता होना कठिन है। विनोबाजी का निवार है कि माद्री स्थिति प्राप्त होती ही शारीर छूट जाना चाहिए।”

महाशोक से विनोबाजी का आघात साम्यतया से है। समस्त कि स्थिति प्राप्त करना ही ब्रह्मलोक की प्राप्ति है। इस साम्य दर्शन को विनोबाजी ने अपने साम्यदृष्टक के अन्तर्गत विद्या रूप से स्पष्ट किया है। साम्ययोग सिद्धान्त के अन्तर्गत विनोबाजी का विचार है कि सभी मनुष्यों में एक ही आत्मा स्थित है। अतः मनुष्य परतुष्य में भेद नहीं है। यही तर्क नही, विनोबाजी का कथन है कि मनुष्य और दूसरे पशुओं में भी आन्तरिक दृष्टि से भेद नहीं। विनोबाजी का उक्त विचार ही उनका अद्वैतवादी निवार कहा जा सकता है। साम्ययोग के अन्तर्गत विनोबाजी ने आर्थिक, राजनीतिक एवं सामाजिक, सभी क्षेत्रों में साम्य सिद्धान्त की प्रतिष्ठा की है। इसी साम्ययोग के आधार पर विनोबाजी ने समन सत्कार को अद्वैत रूप बनाने का संकल्प किया है।

विनोबाजी का सर्वोदय-दर्शन भी उनकी अद्वैत निष्ठा का ही परिणाम है। सर्वोदय दर्शन का मूलधार “सर्वेपि सुखिन सन्तु” का भाव है।

—डा० राममूर्ति शर्मा

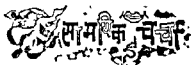
४-स्वीडन राजेन्द्र सिंह—“विनोबा सत्तर”, पृष्ठ-१५, सर्वे सेवा सभ प्रकाशन, वाराणसी

५-स्वीडन राजेन्द्र सिंह—“विनोबा सत्तर”, पृष्ठ-३२

६-विनोबा—“साम्ययुव”

७-विनोबा—“क्षमाता मिशन -”

(‘श्रुदान यज्ञ’, मासादिक, १९ मार्च ‘६५)



शिवसेना

आन्दोलन के समाचार

शिवसेना की स्थापना 'मार्मिक' साप्ताहिक के सम्पादक श्री बाल ठाकरे ने शिवाजी के नाम पर पिछले वर्ष की थी। पहले यह केवल बाल-संगठन के रूप में था, लेकिन बाद में यह उम्र और शक्तिशाली संगठन हो गया। इसकी गतिविधियों का आभाव लोगों को उस समय मिला, जब उत्तर बम्बई में परबरी '६७ के चुनाव में श्री मेनन के विनाश हेतु प्रयोग में लाया गया। श्री बाल ठाकरे के अनुसंधार शिवसेना की स्थापना महाराष्ट्रियों को अपने ही प्रदेश में सम्मानजनक स्थान दिलाने के लिए हुई है। शिवसेना के संगठकों की मुख्य शिक्षाएँ हैं कि दक्षिण भारतीयों को बम्बई में आते ही नौकरियों मिल जाती हैं और महाराष्ट्रीय पिछड़ जाते हैं।

इस संस्था ने महाराष्ट्रियों को अपनी तरफ खूब आकर्षित किया है। इस समय इधमें १ लाख से अधिक सदस्य हैं। इसकी सट्टपत्ता के लिए प्रतिष्ठा-पत्र में जो शर्तें भरावानी जाती हैं, उनके अनुसार शिवसेना का सदस्य महाराष्ट्रियों द्वारा ही बनाया गया सामान खरीदेगा, मैरमहाराष्ट्रियों को कोई प्रश्न या प्यार नहीं बेचेगा, अपने संस्थान में महाराष्ट्रियों को ही नौकरी देगा तथा अमहाराष्ट्रियों के साथ अस्वभाव्य करेगा।

अब यह संगठन राजनीति में भी प्रवेश कर गया है। गत अंगस्त में बम्बई के ठाण नगरपालिका में शिवसेना ने चुनाव लड़कर ४० में से २२ सीटें प्राप्त कर ली हैं। अब शिवसेना ने बम्बई नगरनिगम के चुनाव भी लड़ने का निश्चय किया है।

महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री की. पी. नायक ने कहा है कि शिवसेना की कुछ शिक्षाएँ बायज हैं, किन्तु उन्हें दूर करने का इसका तरीका तनाव पैदा करनेवाला है। केन्द्रीय

सर्वमन्त्री भी य. व. चव्हाण ने भी शिवसेना की गतिविधियों की निन्दा की है और जनता को आश्वासन दिया है कि केन्द्र सरकार ऐसी विध्वंसक प्रवृत्तियों का हृद्दातुपूर्वक सामना करेगी। संयुक्त समाजवादी दल के नेता और संघसदस्य भी मधु लिमये ने कहा है कि शिवसेना की गतिविधियों क्षेत्रीय भावनाओं पर आधारित हैं। उन्होंने इसके संगठकों को चेतावनी दी है कि इन कारवाइयों का असर उन महाराष्ट्रियों पर भी पड़ सकता है, जो पिछले २० वर्षों से अन्य प्रान्तों में रह रहे हैं। वामपंथी साम्यवादी पार्टी की केन्द्रीय समिति ने अपने प्रस्ताव में शिवसेना की गतिविधियों की निन्दा की है। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेताओं ने भी इसकी कार्य विधियों की निन्दा की है।

मैदूर के मुख्यमंत्री श्री निरञ्जलिया ने कहा है कि बम्बई में शिवसेना से प्रसन्न नागरिकों को एकजुट होकर इस गुण्डागर्दी का सामना करना चाहिए। मद्रास के मुख्यमंत्री श्री अन्नादुरै ने शिवसेना की कारवाइयों को दुष्टता और क्लृप्तापूर्ण बताया है। द्रमुम-नेता और संघसदस्य भी वी. कृष्णामूर्ति और वामपंथी साम्यवादी संघसदस्य श्री आर. उमानाथ ने बम्बई, जोकर शिवसेना की गतिविधियों का अक्षयपन, किया और मद्रास बापस लौटने पर उन्होंने शिवसेना की कारवाइयों के लिए पुलिस को दोषी ठहराया है।

शिवसेना की प्रतिक्रियास्वरूप तमिलनाडु में कर्णम के नेता नायकर ने एक 'तमिलसेना' की घोषणा की है। यह सेना भी तमिल लोगों के हितों की रक्षा के लिए गैरतमिलों को तमिलनाडु छोड़ने के लिए बाध्य करेगी।

—'नव'

भामदान : गाजीपुर जिले के सेधुर न्यायक ने ११-१२ अक्टूबर को एक चिकित्सक हुआ था। शिविरार्थियों ने ७ टोलियों में विभक्त होकर इन ७ न्याय पंचायतों में भाम-स्वास्थ्य भामदान का सर्वेक्षण पहुँचाया— रामपुर, खानपुर, आरवा, मोवा, लयकडीह, शिलहरी और सिधौना।

१८ अक्टूबर तक के इस अभियान में सात न्याय-पंचायतों में ५९ भामदान प्राप्त हुए। अभी ८ न्यायपंचायतों में भामदान-अभियान चलता बाकी है। आशा है, आगामी नवम्बर-दिसम्बर में यह अभियान व्यापक रूप से आरम्भ किया जायगा।

—कविलबाई

आजमगढ़ जिले के गधुवन क्षेत्र में १०१ और दूसरे क्षेत्र में ४, इस तरह २ अक्टूबर तक कुल १०५ भामदान हुए।

प्रखण्डदान : गवा जिले के कौआकोल प्रखण्ड में संस्थापित सर्वोदय आश्रम, सोलो-देवरा के कार्यकर्ताओं के प्रयास से कौआकोल प्रखण्डदान की घोषणा १६ अक्टूबर को हुई। अब तक गया जिले में कुल ११५० भामदान और १ प्रखण्डदान हुआ है। शेष प्रखण्डों की भी प्रखण्डदान कराने का प्रयास जारी है।

शान्ति-स्थापन : पिछले दिनों रतलम में साम्प्रदायिक उपद्रव के कारण शांति में कष्टपूर्व लागू कर दिया था। नगर के शान्ति-सैनिकों ने हिम्मत व वीरज के साथ पीड़ितों को भय से मुक्ति दिलाने, घायलों की सैनिकों के सहयोग से अस्पताल पहुँचाने और उधेकना को आगे न बढ़ने देने का प्रयास करने का सार्थक कार्य किया। घटना के बाद मुभी निर्माता देशपाण्डे, संचालिका शान्ति सेना विद्यालय कम्प्यूटरास्रम, ने भयभीत परिवारों से सम्पर्क स्थापित किया। उनके साथ नगर की महिला शान्ति सैनिक विशेष रूप से सक्रिय हैं।

भूदान-थर

भूदान-थर एक प्रागोष्ठान-प्रधान आहिसक क्रान्ति का सिद्धांत है - साप्ताहिक

सर्वे को वा संघ का मुख्य पत्र

सम्पादक : रामभूति

द्विमासिक वर्ष : १४

३ नवंबर '६७ अंक : ५

इस अंक में

बाद वर्ष की लोकपाल ५०

एन दोसी की वक्तव्य ५१

दयाल आर कर्तव्य

—राज परमेश्वरजी ५२

समय और सार्वजनिक २ सार

और समय —रा. ५० ५४

मानव सेवा भवन से ५५ ५६

अन्यास का प्रतिकार —श्रीर. ६०

साधारण २ धर्म सार शिवराजसिंह

—देवेन्द्रधर धारा ६२

कनेक्ट की योजना —नाथ ६४

अन्य सार :

समाचार भाषी ५०

आंदोलन के समाचार ६४

समाजे अंक का आभार

सापदाधिकारी और पत्र

कारिक शुल्क : १०-२०

एक साल २० केने

निम्ने में : साधारण डाक-शुल्क-

१०-२० का १६ डा. या ५४ डा.का

(बाहरी डाक-शुल्क देवों के अनुसार)

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन

राजस्थान, भारत-१

फोन नं० २४८५

सार्वभारतीय आन्दोलन

मैं अपने इस नाम को राष्ट्रीय आन्दोलन रखना ही नहीं, आगतिक आन्दोलन मानना हूँ। आगतिक धर्मधर्म पर ही विचार करना हूँ कि कौन कौनसे समय उठाने वाले हैं। पहले विद्युत् इसी तरीके से उठने लगे और पर हम तभी कर सकते हैं, जब हम आगतिक परिस्थिति में आने की वक्तव्य करें। इसीलिए हम 'अप बन्ना' का उद्घोषण करते हैं। यह दर्शन ही क्रांतिक में भी हुआ, जो एतुन विश्व बताने की दिशा में एक महाव्यूर्ण करन है। इसका वह विचार दर्शन की सीमा को बहुत पकड़ गया। अभी हमें 'अप बन्ना' का साथ देना। फिर तो दर्शन के रूपके रूपके 'अप बन्ना' बोलने लगे। यह कोई छोटी बात नहीं है। आगतिक के बाद हम हम साधारण रूपों में अप विद्युत् से अप बन्ना तक पहुँच लगे हैं। कुछ दुनिया में अप को एक विचार, एक सत्य मान कर रहा है, यह सभी दुनिया को एक करने ही रहेगा। अब राष्ट्र राष्ट्र के मेरे हूँ आगे, नहीं रहने। विज्ञान का वह हमारे विचारों के पीछे पीछे है।

इन दिनों में विज्ञान विज्ञान का वह प्रदूषण करता हूँ, उनका पहले पहले छोटी नहीं विचार था। हमारे पीछे आगतिक का विचार बन है, उनका ही विज्ञान का भी बन है। विज्ञान सत्यता समोक्ष को नहीं रहने देगा। यह हमें विचार है। यह आगतिक का रहा है कि मानव। हम एक ही भाषी या फिर भाषी। मैं हमने के लिए दुनियाँ में मदद करना चाहता हूँ। अगर तुम विज्ञान चाहते हो, तो तुम्हें विचार देने की क्षमता भी मेरे पास है। अगर तुम व्यापक बनना चाहते हो, तो उन्हें विचार भी मैं मदद दे सकता हूँ। इस दृष्टि से हम देखेंगे, तो हमें कुछ सत्यता और हम एक बाने तथा व्यापक बनने के लिए प्रदान, प्रदान के अभावपर विचार की समझें।

आन्दोलन से एक सार्वभारतीय विचारों के लिए आगे हैं। उन्हीं के लिए 'आन्दोलन' के लिए प्रदान का वह करके है। मैंने कहा कि 'वीन और आगतिक के लोगों को यह आगतिक नहीं कि साक्ष्य, अप मोन हमारे देश में आगे, हम आगतिक लागत करने हैं। यह विचार व्यापक लागत करने हैं। यह व्यापक भूमि रही है, इसीलिए अप नहीं सुखी से आगे। परी प्रदूषण का, विश्व मानव का करके है।' भूदान-विचार-मानव मानव आगतिक है। अप ने दिन लद गये, जब हम अपने अपने देश के बारे में अधिमान रखने लगे और करने लगे कि 'हारे सार्वभारतीय के अन्तर्गत'। कौन है कौनका हमारा है। यह हमारा नहीं होता, तो हम इसे 'हारे सार्वभारतीय' न करके। परी हम अलग अलग रहने हैं। कौन का हमने एक राष्ट्रीय मोन प्रदान। कौन कौन अपने देश का मोन करते हैं, तो हम मोन में एकते, मैं आगतिक आदि करने देवों को मानव मानते हैं। ये करने हैं कि हमारे देश में ऐसी-ऐसी क्षमता नहीं हैं, वैसी क्षमता हैं का कि दुनिया में हैं। मोन, हम लद पहले अपने देश का मोन तथा पहले देवों को कुछ मानव, प्रदान करने में व्यवन और साधारण हमें प्रदान होती भी, शक्ति आगतिक यह नहीं साधारण होती। यह अलग एक सार्वभारतीय आन्दोलन है। इसी धर्मधर्म पर हमें बाध करना है।

—निम्ना

देश

२२-१०-१७ केन्द्रीय सरकार ने मणिपुर का प्रशासन अपने हाथ में लेने का निर्णय किया।

२५-१०-१७ उत्तर प्रदेश सरकार ने दो रुपये सालाना तक की लगानवाली छोटी खेतों का पूरा लगान माफ कर देने का निश्चय किया।

२६-१०-१७ स्तालिन की पुत्री स्वेतलाना ने कालाकाँकर में एक मस्जिद बनाने व उसकी गवस्था के लिए १९ लाख रुपये देने की घोषणा की।

२७-१०-१७ कंग्रेस कार्य-कारिणी समिति ने अपनी जलपुर की बैठक में बैंकों के सामाजिक नियंत्रण का प्रस्ताव पास किया।

२८-१०-१७ बिहार के छात्र और आभूति मंत्री ने मुंगेर की सभा में कहा कि मिली-जुयी सरकार चलाना मेड़क होलने जैसा काम है।

२९-१०-१७ जलपुर के कंग्रेस अधिवेशन में दो प्रस्ताव पास हुए। एक में कहा गया है कि राष्ट्रीय एकता की शक्ति को सबल बनाया जाय। दूसरे में कृषि-उत्पादन बढ़ाने पर जोर दिया गया है।

विदेश

२२-१०-१७ सुरक्षा परिषद में मिल और इसराइल की ओर से शिकायतें पेश की गयीं। राष्ट्रबंधीय प्रेसकों ने रिपोर्ट दी कि इसराइल ने आक्रमण आरम्भ किया जिसने बाद में दोनों ओर से खबरदस्त गोलाबारी का रूप ले लिया।

२५-१०-१७ इसराइल ने मिस्र के तेल शोधक कारखाने पर आक्रमण करके कारखाने में आग भड़का दी।

२६-१०-१७ संघियत नौवेना के दत्ते मोर्टे सईद की ओर बढ़े।

२८-१०-१७ चीन ने आज घोषणा की कि यह इण्डोनेशिया स्थित अपना दुर्गास तथा वाणिज्य कार्यालय अल्साई तौर पर बन्द कर रहा है।

२९-१०-१७ कीनिया और सोमालिया ने अपने ४ वर्ष पुराने सीमा संघर्ष को समाप्त कर लेने का फैसला कर लिया है।

स्त्री-शक्ति के जागरण का एक अभियान वारह वर्ष की लोकयात्रा

भारत के इतिहास में बौद्धयुग के अन्त के पश्चात् स्त्रियों का सामाजिक तथा आध्यात्मिक क्षेत्र में स्थान नहीं रहा। कोई एक मीरा या लक्ष्मी निकन्ती थी, जो समाज के विनाशक बहावत कर अधस्तात के क्षेत्र में अपना स्थान पा लेती थी। लेकिन आम स्त्रियों को घर की चहारदीवारी के अन्दर ही बन्द रखा गया। जैन साधियों की अद्भुत परम्परा इस देश में अवरप चली है, जो आत्मविकास के लक्ष्य को लेकर प्रयत्न करती है।

विनोबाजी चाहते हैं कि लोकयात्रा के द्वारा स्त्रियों को ब्रह्मविद्या की प्रेरणा मिले और आत्मविकास के साथ साथ लोकहित का चिन्तन करनेवाली स्त्रियाँ समाज पर अक्षर डालें और समाज-परिवर्तन का काम करें।

हली लोकहित और समाज परिवर्तन के लक्ष्य को लेकर तीन बहनों की एक टोली ने बारह वर्ष की यात्रा का संकल्प लेकर २५ जनवरी '६७ को कस्तूरबामाम, इन्दौर से यात्रा का शुभारम्भ किया है। इस लोकयात्रा का उद्घाटन अक्षय की वरिष्ठ समाज सेविका श्री अमलप्रभा दास ने किया। यह लोकयात्रा टोली विनोबाजी की ओर से देश भर में घूमेगी।

लोकयात्रा का उद्देश्य है—लोकहित का नित्य चिन्तन करना, सत्य, प्रेम, कष्टना की त्रिमूर्ति की समाज में व्यक्त करना तथा महिला, सत्य आदि एकदश मंत्रों का सदैव समाज में पहुँचाना।

यात्रा का स्वरूप सांस्कृतिक या आध्यात्मिक रहेगा। सर्वप्रथम-समन्वय तथा पौष्टिकता छोड़कर शुद्ध आध्यात्मिकता की दृष्टि रहेगी। सत्र घण्टों के घर्मघर्मों के चुने हुए अंशों का अध्ययन चलेगा। लोक-जीवन में प्रचलित प्रथ्यों का पठन-पाठन होगा। उत्तर भारत में हुलमी रामायण, महाराष्ट्र में शनि-इरी, अक्षय में माधवदेव का नामघोषा तथा

मद्रास में विष्णुकुल जैसे प्रथ्यों का पाठ लोक-यात्रा का एक स्थायी हिस्सा रहेगा।

इस लोकयात्रा का प्रारम्भ, प्रारम्भ-स्वराज्य के क्रांतिकार्य में भी योगदान रहेगा। लोकयात्रा की कार्य-रेखा के दो बिन्दु होंगे, गाँव को एक परिवार बनाना और विश्व को एक देश, एक राज्य बनाना।

भारत की सेवा में स्त्री-शक्ति आगे आये, इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए लोकयात्रा के कार्यक्रम में महिला समाजों का विशेष स्थान रहेगा।

कार्यक्रम : यात्रा प्रातः ६ बजे शुरू होगी। १-८ मील की दूरी पर पड़ाव होगा। शॉव की आम सभा, कार्यकर्ताओं की गोठी के अलावा महिलाओं की सभा होगी। घर-घरहली का कार्य संभालते हुए समाज का कुछ कार्य करनेवाली बहनों से सम्पर्क कर उन्हें कार्यमग्न किया जाएगा।

यात्रा करनेवाली बहनों :

श्री हेम भारती (अक्षय)—यहाँ से समाज-सेवा का कार्य कर रही हैं। वह मोहरी विद्याविद्यालय की स्नातिका हैं। वह छात्री-कार्य, कस्तूरबा ट्रेस्ट कार्य, प्रारम्भिक कार्य, आदि विभिन्न रचनात्मक कार्यों में निरत रहती हैं।

श्री लक्ष्मी बहन (अक्षय)—विनोबाजी द्वारा चीन-भारत सीमा पर स्थापित "मित्री आश्रम" की सदस्या हैं। वह हिन्दी, संस्कृत और मराठी भाषा की अच्छी जानकार हैं। उन्होंने विनोबाजी की मराठी पुस्तक "आनन्द-वैचिनिता" का अक्षयमिया में अनुवाद किया है।

श्री निर्मल बहन वैद (पञ्जाब)—दिल्ली विद्याविद्यालय से समाज कार्य में एम. ए. तथा एम्. एल. बी. करने के पश्चात् कस्तूरबामाम में मुख्य सेविका प्रथिष्ठान विद्यालय में प्राध्यापिका का काम किया और अब गत दो साल से प्रारम्भिक आन्दोलन के कार्य करती रही हैं। •

भूदान-यज्ञ

[भूदान-यज्ञ की अवस्था, प्रारम्भिक क्रियाएं, कार्य-विधि, लक्ष्य, फल-फलानि, आदि]

इस दोस्ती को क्या समझें ?

किसी उम्मीद में ही ठीक दिन सब देह देश के राजनीतिक जीवन में एक नया ध्येय नजर आया था। समुच्च एक शौचक था कि कल तक जो साथ बैठ नहीं सके थे, वे अचानक एक-दूसरे से गले मिलने दिखाई पड़े। क्याद नहीं, निर्दोष आठ घंटे के यह सब हुआ।

पिछले चुनाव के बाद देश की राजनीति कई छोटी-छोटी ही बनी। नये नेता पहले के नेताओं के मुकाबले जनता के ज्यादा निकर थे। कई छोटे छोटे से जो भूमि हाराके के घरे से आने से जो हाराके के बाद भी जेल गये थे, किसान जनता को किसी भीय जो लेख गारे श्रमाये थे, प्रशासक को गण फादकर लिख थी थी, और अपने भाषणों में 'भूदान' का एक नया चिन्म लीन थी थी, और अपने भाषण में थे। जनता ने यह होखे से उन्हें हाराके में सेवा था।

हम जाते थे कि हाराके और बाजार के बीच होने क्यों से लगतार जो लक्ष्य दिखाई दे उतने 'दोस्तों की हाराके' की, क्योंकि उनका भीत पर करोही का येर डिमर था। लेकिन हम आज तक नहीं देख रहे थे कि नयी हाराके बाजार के मुकामिने सम्भूत जाइन हो रही थीं। बीच एकूने की आगे कोई उम्मीद भी नहीं है, क्योंकि उनके हाराके में कोई नयी दिशाएन नहीं है, शक्ति नहीं है। उन्के दिखाई पर दे रहा है कि जिस बाजार ने किसान और श्रादक को घुंके दोनो के मुँह पर भी मार रहा है। समाज ने किसी एक सम्पाशदा के तारे को यही मानकर अपनाया था कि सम्पाशदा की शक्ति बुँकीदार के आजार से नागरिक को रक्षा करेगी। कौन जाने, योभूदा दौरे में 'किसित विरोध का' नाश परिगाम की टडि से कठिन की भौक का कार्यकर्म साहित हो।

तब दिन बतारस में अपने एक पुराने मुलाकाती मिल गये। उनका राजन की हुकाम है। कुछस मगर के बाद मैंने कुछ "किसत कम से ही। काम आर को मिल आता है!" वाले, "ईमानदारी बाईं से ५५-६० से ज्यादा न मिले, लेकिन जरा साहित्वांगी से काम करता हूँ तो महीने में साढ़े तीन चार हजार का रोज़ा भी आता है।" "यह कैसे?" — मैंने फिर पूछा। "मिन ने उतार दिया, 'पहले एक चारों को चारा देता था तो बाकी एक मांने देते थे, अब चारा समान प्यार रखता हूँ तो सब सुख है, और मैं भी सुख हूँ।" "किसनेर बालतल है कि सतीनी-कब का मरमेकल करी है, साठकर सोर और नर्ग को साहित्वांग क।। सेठ बालक और नेमा के मरमेकल पर योर कर रहा है।"

राजनीति का यही पुराना सच है, यही पुराना सच है। सामंती की हुकामों (केनो कर्मकर्म) से जो दोस्ती पैदा हुई थी वह चला पाया जाइन हो रही है। एक हुकाम के बिलेने हुकाम ही, वे एक

भूदान-यज्ञ : हुकाम, ई मकब, '६०

दोस्तीए अवस में भी दोस्त है, यह गणिन योथा है। अगर नयी राजनीति में सम्पुच कुछ नये सुण आने दिखाई देते तो उम्मीद होती कि कुछ नयी तानक बन रही है, लेकिन दिखाई तो यह दे रहा है कि जनता की राजनीतिक बेनार तेजी के साथ 'राउट और 'रेफ' में डूब रही है, और लगता है कि ये दोनों शक्तियें देश को—एक-एक गोँव को—अधारा बना डालने के कुचक में लोडोडार भनी हुई हैं। पुरानो राजनीति मितनी बनता किम्पुन थी, दोस्तों को नयी राजनीति की उतनी ही दिशा-मुन सिद्ध हो रही है।

लभनक को आम दे नाए की पवित्रता। लेकिन क्या चोट को प्रेष करने के धम को रोकने की तरी हुनकी भी काँसाए दिखाई देती है? राजनीति अन्धकारयो तो परदे ही से चुभो थी, नये दोस्तों ने तो उते निचकुल बासाक बना डाला। मिनियूरी विधाश्रवाक का पुस्तार बन गयो है। बागदारी, नेकनीयरी, लैवे मूर्य, लोकनिभ, भादि यन्त पाण्ड कुछ दिनों के बाद राजनीति के कोप में भी नहीं मिले। पर के वाण्य के लिए एक बाजार तो था ही, विधाश के शौरण के लिए नयी राजनीति ने दुस्तार बाजार भी खाल दिया।

म किय हराकर परिचरन को समार परिवर्तन का पदण कदन मान बैठे थे, यह कहाँ है? कहां दे नरी केला, कहाँ दे नरी केला? मत्रियों के चारों धोर, और कनरी के दरभजे पर, यही सुभासदी और यही सुँहास लोग, जो पहले दिशाई देते थे, आज भी दिशाई देते हैं। क्या क्रांति, और क्या लोकतण और समाश्रवा, इन एकज लोत बनता है, लेकिन बर कहाँ है! उनादकल और प्रमाइलस भातीय जनता को क्या देनेवाले, उता देनेवाले, क्या देनेवाले थायी कहाँ है? जो लोग कल विरोध में थे आज कुँचिपो पर पहुँच गये हैं। जब जनता म शात्र कलेनेवा: कोई 'दिश' नहीं रह गया तो नशाकतादी में उपद्रव साक्षात् बिरोध का रूप घाराए कर लाने आते

नया। उन्के ने निरा सम्पच हुँच होती है यहाँ कानि पापद उतनी ही कम होती है। भारत केि देठ के लिए 'राजनीति कुछ दूसरी ही किय की चांरि। राजनीति का नहीं, देश का ही सकिप प्रतन चिह्न बनता था रहा है। इस पस का उतर लछा का साहित्वांगि न करवले नरी दे सकने, चाहे वे किसी सच या सच के हों, हसका उतर उते मिलेया भी हल स'के के सयप लोडविपान का मोद हाइडर कही नेडून कर ठकें। राजनीतिक प्रतनिपितन से हाराके परिवर्तन हो सकता है, लेकिन सपास परिवर्तन के लिए कसी नती है कि सया प्रास करने के लिए शूक से ही विरोध और लक्ष्य का देना। उतको भी देला, इनको भी देला, अर काम को देनेको भी कसाल है। यह बात की बात नहीं है। सपास यष्टुन देते हैं, देप के किसी कोने में जनता की योग, किन्तु सय्य और मुखपटिके कसि कल ६६५ रोनी चांरि। यही कसि देख को नया यथा दिशायेयो। इस हराकई 'दोस्तों म यष्टुन दन नहीं रहा। विश दोस्ती में दम न ही उते क्या खनही !

गांधीजी ने भाषा को दो शब्द दिये— एक 'सर्वोदय' और दूसरा 'सत्याग्रह'। इनमें से 'सत्याग्रह' तो अर्ध-वेबस्टर की अंग्रेजी डिक्शनरी में भी स्थान पा चुका है। इसमें 'सत्याग्रह' शब्द की उल्लेख नहीं है। वह उल्लेख अपूर्वता का चोकर है। किसी भाषा में इस शब्द के सहाय्यी भाव व्यक्त नहीं किये जा सकते। इसलिए वह शब्द क्यों का लो रखा गया। 'सत्याग्रह' शब्द किसी शब्द का अनुवाद भी नहीं है। उसका अनुवाद अब तक किसी और भाषा में नहीं हो सका है। 'सर्वोदय' शब्द भी अनुवाद तो नहीं है, लेकिन दूसरे एक शब्द-प्रयोग से गांधीजी ने इसको गढ़ा। अंग्रेजी में रस्किन की 'अनूद दिग्गस्त' किताब है। उस पुस्तक का गांधीजी ने 'सारास लिला गुजराती में, और उस गुजराती पुस्तक का नाम रखा 'सर्वोदय'।

सर्वोदय

यो 'सर्व' शब्द भी पुराना है, 'उदय' शब्द भी पुराना है। लेकिन 'सर्वोदय' शब्द का—सर्व और उदय, दोनों शब्दों का जब समास हुआ, तब उस शब्द का अर्थ कुछ सकेतिक होता है। अपना स्वतंत्र अर्थ है उसका। उदाहरण के लिए 'पीतांबर' शब्द से लीजिये। पीत=पीला, अंबर=कपड़ा। पीला कपड़ा पीतांबर है। लेकिन जब हम पीतांबर करते हैं, तो हमारा मतलब पीला कपड़ा नहीं होता है। विष्णु भगवान् को चक्र पहनते हैं, उसीको हम पीतांबर कहते हैं। इस तरह से जो नये सामासिक शब्द होते हैं, उनमें कुछ संकेत होते हैं। उनका जो शब्दार्थ होता है, उस शब्दार्थ से कुछ अन्वय संकेत करनेवाला अर्थ शब्दों में गर्भित होता है। उस तरह का अर्थ 'सर्वोदय' शब्द में है।

'सर्व' सर्वनाम है। सर्वनाम से मतलब ही यह है कि जो सबके लिए प्रयुक्त हो सके। संज्ञा में और सर्वनाम में यह अन्तर है। जिसका सबके लिए उपयोग होता है, वह सर्वनाम है। संक्षेप में 'सर्व' शब्द के लिए

एक दूसरा शब्द भी है—'विश्व'। 'विश्व' और 'सर्व' का एक ही अर्थ है। 'सर्वोदय' कह लें या 'विश्वोदय' कह लें। अर्थ एक ही है। 'अनूद दिग्गस्त' में जो भावना थी, उस भावना का योद्धा-सा विवक्षित किया, उसको और विस्तृत कर दिया, और फिर उसको 'सर्वोदय' संज्ञा से गांधी ने स्पष्ट किया। इसमें गांधी का मुख्य ध्यान मनुष्य-समाज की ओर था।

सामाजिकता

यह सामाजिकता मनुष्य को लेकर ही है। और सब प्राणियों के लिए तो हम 'समूह' कहते हैं, 'सूत्र' कहते हैं; लेकिन 'समाज' हमने मनुष्यों का ही माना है। यो चींटियों का भी समाज माना गया, मधुमक्खियों का भी समाज माना गया। लेकिन जब हम समाज का विचार करते हैं तो मनुष्यों के समाज का करते हैं, और मनुष्यों के समाज में भी सामाजिकता का आधार है समानता। 'समाज' शब्द तो समानता से निकला भी है। मनुष्य जब एक साथ आते हैं, एक-दूसरे के साथ रहने के लिए एकत्रित होते हैं तो समाज बनता है। लेकिन निजामें समानता होनी है, वे ही एकत्रित होते हैं। 'सृष्टाः सृष्टेः सह अस्तुजन्ति। गायत्रि गोविन्दुरगाम्भु ईशः।'—घोड़े घोड़ों के साथ जाते हैं, गाय बैल गाय-बैलों के साथ जाते हैं और मृग पशु-पशुओं के साथ जाते हैं। यह तो सुभाषित है। आगे उल्लेख यह भी कर दिया है कि 'मूलोद्यम मूलः'—मूलों लोग मूलों के साथ जाते हैं। जो समान-व्यक्ति होते हैं, उनमें सत्य होता है। हमने यह माना है कि इस प्रकार की समानता मनुष्यों में है। और इसलिए मनुष्यों का समाज बनता है। अरबू के जमाने से यह माना गया कि मनुष्य सामाजिक प्राणी है। सामा-जिक प्राणी से मतलब क्या है? यह अन्वेषण नहीं रह सकता। विविक्त जीवन, जिसे हम 'Isolation' कहते हैं, असम्भव है। यही मनुष्य की सामाजिकता का मुख्य लक्षण है।

मनुष्य अन्वेषण नहीं रह सकता है। इसके साथ-साथ मनुष्य में एक दूसरी सृष्टि भी है कि उसे दूसरे से डर लगता है। गो भेदे से कहती है, 'पक्षीसे भी जाकर दिशा-संकेत ले आ'। बैठा बहता है, 'अंधेरा है!' अंधेरे में कोई होगा। दूसरा कोई होगा, इस कल्पना से डरता है। छोटे भाई को साथ ले जाता है तो डर नहीं लगता। वह भी तो दूसरा ही है। फिर उससे क्यों डर नहीं लगता? यह दूसरा अपना है। जो दूसरा अपना लगता है, उससे डर नहीं लगता।

परायो को अपनेना के नाम सामा-जिकता है। जितना समाज शास्त्र है, उस सारे समाजशास्त्र का अर्थभ इस आकांक्षा से हुआ है, कि जो दूसरा है वह अपना हो जाय, जो परया है वह आत्मीय बन जाय, जो दूर का है वह नजदीक का हो जाय। यह सामाजिकता है और इसलिए जब हम कहते हैं कि सर्वोदय एक सामाजिक दर्शन है तो उल्लेख अर्थ यह है कि सारे विश्व को वह अपनाना चाहता है। रोड चन्द्रमा पर जाने की कोशिशें होती हैं, दूसरे ग्रहों पर जाने की कोशिशें होती हैं। इसका मतलब है कि यह सारी सृष्टि ही हमारा परोक्ष है। और जब सारी सृष्टि ही हमारा परोक्ष है, तब सर्वोदय में और विश्वोदय में अन्तर नहीं रह जाता।

व्यधिप्रता कौन ?

गांधी के जमाने उल्लेख यह था कि यह सर्वोदय करेगा कौन ? मनुष्य ही करेगा, लेकिन किसे नाप का मनुष्य ? अब इस पृथ्वी के नाप का मनुष्य क्या नहीं होगा। केवल पृथ्वी के नाप का मनुष्य अगर होगा तो वह विश्वोदय नहीं कर सकेगा। अब तो विश्व के नाप का मनुष्य चाहिए। और विश्व के नाप का मनुष्य वह होगा, जिसका मन विश्व के नाप का होगा। विश्व के नाप के मनुष्य के मन से मतलब है विश्वका मन किसी एक मत से, किसी एक सम्प्रदाय से सर्वोदित नहीं होगा। किसी एक दर्शन, दार्शनिक, विचार से विश्वास मन सर्वोदित नहीं है।

उपमा चित्त स्थिरतायी होगा है। कभी किसी विचार में उल्लास हुआ नहीं, किसी लक्ष्यता में कैद नहीं। इस प्रकार के चित्त का नाम है तटस्थ चित्त। ज्ञान के लिए तटस्थ चित्त चाहिए, इसलिए अपने चित्त पर किसी दरदल को पकड़ हो, किसी विचार में भावना चित्त कैद हो, किसी लक्ष्यता में सीमित हो गया हो, तो कृपया उसको उतार कर रख दीजिये।

सत्यनिष्ठा : बस्तुनिष्ठा

को हित के आकार का मनुष्य होगा उसमें दो गुण होंगे, एक, वैशमिक्त्य और दो, आध्यात्मिकता। वैशमिक्त्य से मतलब है बस्तुनिष्ठा। किताब बस्तुनिष्ठ होता है, विचार निष्ठ नहीं होता। यह पृथ्वी सूर्य के चारों तरफ घूमने है। यह विचार नहीं, बल्कि शून्य है। किताब विचारनिष्ठ होगा तो क्या हो जायेगा? मेरी बोली है सदा आठ काज की। सून में खनी है। पसीसा में प्रलय आया, पृथ्वी का आकार कैसा है? तो उसमें लिय रिता, पृथ्वी का आकार नारंगी कैसा मीठ है। पसीसा हो जाने के बाद रहने भयानी खड़ेने से कुछा कि हूँ क्या बिया। उल्लेखित यह कि पृथ्वी का आकार आम के फेरा है। लिपारा तो या कि पृथ्वी का आकार नारंगी कैसा है, फिर हूँ आम कैसा बने लिता। तो बाढ़ नारंगी मुने भागी नहीं है। आपने देखा। विचार बस्तुनिष्ठा को और बस्तुनिष्ठा को तुलना कर देता है। विचार और रसॉन (Phylosophy) मनुष्य की बस्तुनिष्ठा को और बस्तुनिष्ठा को तुलना कर देता है। इसलिए गोपी ने हमेशा यह कहा कि मैं मग की लोख कर रहा हूँ, किसी लक्ष्यता को नहीं। मुझे किसी विचार को स्थायता नहीं करनी है, किसी रसॉन की या नये लक्ष्यता की स्थायता नहीं करनी है। निर्मोहोकी की एक बस्तु प्रसिद्ध बाणेश्या है। एक अंधा अन्धकार को जाने बात में भरेने हमारे में जाने किन्हे की लोख में निष्ठा, और ऐसी किसी की लोख में को दे ही नहीं। निर्मोहोकी की देने अन्धकार इसलिए की कि विचार में अब मनुष्य उल्लेखित बात है एक बस्तुनिष्ठा को जानने, अन्धकार

को जाता है। तो, गोपी के बारे में सबसे बड़ी बात यह बतानी है कि गोपी का अन्धकार कोई विचार नहीं था। को बस्तुनिष्ठ होगा वह विचारनिष्ठ नहीं होगा। विचार अन्धको तप को हुनिया बनाना बाणेश्या है। दरदल और लक्ष्यता अपनी तप को पृथ्वी बदला जाहते हैं। लेकिन को बस्तुनिष्ठ और बस्तु निष्ठ होगा वह लय को और बस्तु को अपने आकार का बनाना नहीं चाहेगा। इसलिए वह आपने मुझ हीमा कि गोपी ने पहले कहा कि दरदल ही लय है। लेकिन उसने देखा कि दरदल तो एक है ही नहीं। बस्तुनिष्ठ में एक बैठा है, मरिदा में अन्ध बैठा हुआ है, और इनमें एकताव भी हो जाता है। दो मरिदा में बैठे हुए ईश्वर—एक तनी पर पर बैठा हुआ, दूसरा मरद पर बैठा हुआ—उनमें भी मुझ हो जाता है। अगर इनमें ईश्वर है तो सारे के सारे तो लय हो नहीं सकते। और, सो-वे तारे अगर लय हो तो इनमें एकताव नहीं जाना चाहिए। फिर वह लय नष्टी पर पहुँचे कि लय ही ईश्वर है। तो आम्हान या अन्धकार बस्तुनिष्ठ होगा और विचार बस्तुनिष्ठ होगा। लय निष्ठा में और बस्तुनिष्ठा में बित्ता बाध बन हीमा, उतना समान उल्लेख करेगा।

अब प्रश्न उठता है कि किताब तुम का अधिष्ठाता कोन होगा। एक ओरता मनुष्य होगा है। यह ओलख क्या है। पसीसा का 'रिबल' निष्ठा। ८०.९ प्रतिशत विचारों पर हो गये। ८० तो हम समझ लखे हैं, लेकिन ०.९ समझ में नहीं आता। ०.९ चौर विचारों नहीं हो सकना। यह तो कबना है। तो ओलख कोई शास्त्रिकता नहीं है, खवार नहीं है। हुने होने हैं आदर्श (Archetypes)। आदर्श का मनुष्य हम अपने सामने रखते हैं। पर आदर्श भी मनुष्य नहीं है, बहाना है। और जीवन बन्धन निष्ठ नहीं हो सकता। जीवन बस्तुनिष्ठ होगा। तो बाकी रहता है शास्त्राग। अब शास्त्राग क्या है। शास्त्राग यानी निवर्तक, धृष्ट, लक्ष्य प्रत्यक्ष। देखा मनुष्य किताब पीठे किसी प्रकार का विचार नहीं है, लाखि इनका। बारी शास्त्राग मनुष्य

खोजेन का अधिष्ठाता है। इस देश में सर्वोपरि बाद ऐला लादनी पैठा हुआ, जिमा नाम का मोहनाश बन्धनचक्र गोपी। उनमें ५४, जीवन ही लय है। अन्धकार मनुष्य जीवन ही है। इस लय में से जीवननिष्ठा और जीव निष्ठा, ये दो चीजें भायीं।

निष्ठापात्रिक सम्बन्ध

यह जीवन क्या है। मनुष्य का मनुष्य के तप का जो सम्बन्ध है उसका नाम 'जीवन' है। जीवन विविक्त नहीं हो सकता। हमारा बन्धन ही अन्धकार में नहीं होता। जीवन अन्धकार में सिद्ध नहीं होता। हमेशा खरपी में ही जीवन सिद्ध होगा है। इसलिए खरपी में ही सामाजिकता है। सामाजिकता का उपादान क्या है। लय, मनुष्यों के बीच के सम्बन्ध। अब कोनसा संलय सामाजिक है और कोनसा असाजिक। मनुष्यों को जोड़नेवाला, नगरीक हावैशाण श्री मन्त्र है वह सामाजिक संलय है। मनुष्यों के सर्वोपरि में विभक्त्य होनैवाण, मनुष्यों को जोड़नेवाला संलय सजासामाजिक है। मनुष्यों के खरपी को पकड़ा करनेवाला को तब है, उल्लेख नाम भगवान, उल्लेख नाम प्रेम है। प्रेम कोर विचार भावना नहीं है, विचार नहीं है। प्रेम मनुष्य का स्थायी माय है। मनुष्यों के बीच के संलय सम्बन्ध के लिए रोषक बने, इसके लिए क्या किता आया। गोपी ने लोख, मनुष्यों के सम्बन्ध एकदूरे के सम्बन्ध एकदूरे होने चाहिए। किन्हीं अन्धकारों के मोह का नाम हमेशा लोख है। लोख में हर भासिक लखे लिए होगा और पर एतेक के लिए हीने।

इस प्रकार के संलय किन्हे हैं वह सामान्य मनुष्य होगा है। यह 'fraction' अर्थात् नहीं है, 'integer' है, पूर्णक है, लोख मनुष्य है, इसलिए उल्लेख पर कोर लेख नहीं है। लेख कि पर लय गण, इनमें लक्ष्यता नहीं है। गोपी को लय पावने है, खोजि कर 'unlabeled' या, पूर्णक का।

को मनुष्य 'unlabeled' होगा, उसका संलय किन्हे होगा। एक लय है 'वर्गोकि-

यत'। पड़ोसी का अवलम्बित मतलब है सला। आज का प्रचलित अर्थ है पड़ोसी, पास रहने-वाला। अक्सर यह देखा जाता है कि पड़ोसी कभी मित्र नहीं होता। "अपने दोस्त और दुश्मन हम खुद बनाते हैं, लेकिन हमारी बगल में रहनेवाला पड़ोसी किसत का दिया हुआ होता है। यह हर कोई हो सकता है। इसलिए यह सब कुछ होता है। मानो हमारे लिए वह ईश्वर का दिया हुआ मानवता का नमूना ही है।" पड़ोसी का यह मार्मिक वर्णन चेत्यरत्न ने किया है।

दरिद्रनारायण की सेवा

गांधी ने कहा, सर्वोदय का आरंभ अंत्योदय से होगा। समाज में जिनका स्थान अंतिम है, अक्षय में उनका उदय ही सर्व के उदय का प्रथम चरण है। जो अंत्य है वही हमारा मानविक पड़ोसी है। इजलत ईला ने बर कहा कि अपने पड़ोसी को अपने जैसा प्यार करो तो उससे पूछा गया कि मेरा पड़ोसी कौन है? जवाब में ईला ने मुझ समरिजन का विस्मा मुनाया। बिस्से से उसका तात्पर्य यह है कि जो दुखी है, संकट में है, पीड़ित और दलित है वह हमारा पड़ोसी है। उसका अन्वय बंट लेना अवलम्बित पड़ोसित्व है। इसलिए गांधी ने मानवता की सेवा का मुख्य माध्यम दरिद्रनारायण की सेवा को माना। 'दरिद्र-नारायण' शब्द विवेकानन्द का है। गांधी ने उसे अपना लिया, आत्मसात कर लिया। गुण-देव रवि ठाकुर ने अपने एक प्रार्थना-गीत में इस प्रश्न का उत्तर दिया है कि भगवान का सिंहासन कहाँ है? वे कहते हैं कि जहाँ वे लोग रहते हैं जो सबसे पीछे हैं, सबसे नीचे हैं, जिन्होंने सब कुछ खो दिया है और जो स्वयं खो गये हैं, उनके बीच तेरा सिंहासन है।

सारांश यह कि दरिद्रनारायण ही हमारा वास्तविक प्रतिवेशी है। यही मानवता की स्युग मूर्ति है। इसलिए उसकी सेवा हमारा आद्य कर्तव्य है। प्रतिवेशी धर्म को ही गांधी ने स्वदेशी का नाम दिया है। इस अर्थक अर्थ में गांधी का 'स्वदेशी मन सामाजिक जीवन के लिए उनकी विशेष देन है।

विनोबा का स्वाम्य-शास्त्र

सम्पत्ति और स्वावलम्बन : सरकार और समाज

● समय और परिस्थिति के अनुसार व्यवस्था बदलती है, और बदलनी चाहिए। आज के युग में सुनिश्चित परिवर्तन सम्भव है। निदोष व्यवस्था की पंचतन बाहरी स्वरूप से अधिक भीतरी गुणों में है जो हर स्थिति में मौजूद रहने चाहिए। वे गुण ये हैं :

(अ) समाज में जो धन, बुद्धि या बल आदि से समर्थ हैं उनकी सामर्थ्य समाज की सेवा में लगनी चाहिए।

(ब) जनता में स्वावलम्बन और परस्पर-सहयोग दोनों हो। छोटी स्वायत्त इकाइयों में, संगठित समाज में यह सम्भव है।

(घ) नित्य के जीवन में सहयोग हो, और प्रसंग आने पर प्रतिकार की शक्ति प्रकट हो, लेकिन सत्कार और प्रतिकार, दोनों का आचार अद्विधा ही हो।

(ङ) बौद्धिक या शारीरिक भ्रम—प्रामाणिक भ्रम—का सामाजिक और आर्थिक मूल्य समान हो।

● समाज में बुद्धि और शक्ति की दृष्टि से समर्थ और असमर्थ व्यक्ति रहेंगे ही। यह सामर्थ्य स्वाभाविक है। सम्पत्ति से बनी हुई सामर्थ्य अस्वाभाविक है, जो बहुत दूर तक दूर हो जा सकती है। लेकिन जिसमें जो सामर्थ्य है वह सेवा के लिए है, वह मनोहेतु पैदा की जानी चाहिए। और राज्य-व्यवस्था भी ऐसी होनी चाहिए कि समर्थ की सामर्थ्य जनता की सेवा के लिए अक्षय अर्पित हो। लोकतन्त्र ऐसा प्रबल होना चाहिए कि जो ऐसा न करे वे अनराष्ट्री ठहराने जायें। ऐसे लोक-मत के आधार पर कानून भी बनाना जा सकता है।

● समाज ढूँढ के मग से एही राते पर रहेगा, यह अनुभव से मन्व सिद्ध हो चुका है, जहाँ अधिक उपयोगी लोकतन्त्र का मग या लोकमत का आदर सिद्ध हुआ है। कुछ ऊँचे उठे हुए या गिरे हुए लोगों को छोड़कर सामान्य जनता लोकमत का आदर करती ही है, और यही लोकमत कानून या अनुशासन का आधार होता है।

● आज का समाज चोर को तो चोर मानता ही है, पर कृपा को अपराधी नहीं मानता। ऐसा क्यों? कञ्चु चोर का बाप, और चोर कञ्चु का बेटा, यह मान्यता कानून में होनी चाहिए।

● सम्पत्तिवत् सम्पत्ति क्यों रखता है? क्या केवल रखने के संतोष के लिए, या प्रतिष्ठा, सुख, भाषी जीवन का आनन्दानन्द, संतान का पालन-पोषण और दानी बनने का पंथ—इतनी से कुछ या सबकी अधिकतया होती है। अगर सम्पत्ति रखे बिना वे दूसरी चीजें मित्र जायें तो किसीसे क्या आपत्ति होगी?

● पुराने जमाने में शिक्षक कौशलशुद्ध रहता था। वह आनन्दशुद्ध नहीं था, विना-शुद्ध था। ऐसे गुण को शिष्य की भद्रता और सेवा मिश्री थी, और छात्र भी उसका स्वीकार मानता था। आज का शिक्षक पुनः को का शिक्षक होता है, न कि शिष्यो को। उनके जीवन में न शिष्यों को स्थान है, और न शिष्यों के जीवन में उसे। क्या क्यों की पुत्रि वह पैरे से करता है, जिसे बीमारी आदि के बहाने डाक्टर, वैद्य, आदि उभरे पेट लेते हैं। नतीजा यह होता है कि उठे कोई काम नहीं होता, और यह आम जनता के लिए अर्थ महंगा विद होकर उसकी सेवा से बंचा रह जाता है। राज्य पद्धति यानी लोकतन्त्र रचना ही ऐसी होनी चाहिए कि हर एक व्यक्ति सहज ही यह अनुभव करने लगे कि छोटी का विशेष सत्कार सम्पत्ति बढोरने में क्या गुण है?

● बिना की तरह सम्पत्ति भी देने से दुनी बढ़ती है। आजकल हमें जो अर्थशास्त्र में 'जनता की अर्थशक्ति का बढ़ना' करते हैं। छाहूँकार कर्मदार को मजदूर बन देता है, और उसने यह अपनी सम्पत्ति की वृद्धि देवता है। उसमें भी अधिक वृद्धि सम्पत्ति के विनाभव से होती है। लेकिन उन्हे अनुभव नमाना-रचना होनी चाहिए। ऐसी समाज-रचना आरंभ राज्य-पद्धति में सम्भव है। ऐसा होगा

तो समाज व्यक्ति का वैक बनना, और व्यक्ति सुरक्षित रहेगा।

● मनुष्य मूलतः समाजप्रिय है। उसे अपने उपभोग करने में, दूसरों को अपने भोग में हिस्सेदार बनाने बिना, कभी सुनोय नहीं होता। फिर भी हम दखते हैं कि आम मनुष्य दूसरों के दुःख के प्रति लापरवाह दिखायी देता है। ऐसा क्यों है? क्या इसके लिए नहीं कि आम समाज में यह धारणा प्रचलित है कि हर व्यक्ति अपनी कमाई का हिस्सेदार और दूसरों के? हमने यथासक्ति कमाई करना जाननी चाहिए, जो हानि होते हुए भी कमाई नहीं करता। यह दूसरों नहीं हो सकता। लेकिन यह भी सही है कि यथा शक्ति कमाई करनेवाला कोई व्यक्ति सम्मानित कमाई का समाज हकदार है।

● राज्य-व्यवस्था श्लोघित है कि परिवार में जो आर्थिक व्यवस्था थोड़े-बहुत भय में संभ्रम पायी जाती है, उसे सारे समाज पर लागू करे। ऐसा करने के बजाय अगर राज्य-व्यवस्था विपत्तियों का ही निर्माण करे तो उससे अच्छी ब्याजबन्दी है। लेकिन आस्था का मान दिलाकर शासक अपना कुशल बनाते रहते हैं।

समर्थ समर्थ अक्षय है, लेकिन जिन्हें हम असमर्थ मानते हैं उनको सहायता के बिना समर्थ का काम नहीं चल सकता। इस अर्थ में समर्थ भी असमर्थ हैं। और जो असमर्थ हैं उनकी भी अपनी स्थिति सामर्थ्य होती है। उनके बिना भी राज्य-सत्ता नहीं चल सकती। समर्थ और असमर्थ दोनों एक दूसरे की मदद के बिना असमर्थ, और एक दूसरे की मदद के बिना मदद होते हैं। इसलिए दोनों के मिश्रण से दोनों का हित है—एक का हित दूसरे के हित का विरोधी नहीं है। सही राज्य व्यवस्था में यह मान रखनी होना चाहिए। अगर ऐसा हो तो राज्य-व्यवस्था का अधिकार समर्थों के हाथों में अक्षय किया जाए, पर यह जनता की कोलाहल से बचाव दे।

● अगर हम चाहते हैं कि समर्थों के हाथ में सेवा के अलावा दूसरी सत्ता न बन पाये तो यह आवश्यक है कि जनता निरी

अक्षय और दुर्लभ न रहे। इसलिए उसे स्वतन्त्रता होना चाहिए कि उसे अपनी स्वतन्त्र शक्ति का भोग रहे। इस शक्ति के लिए स्वायत्त उद्योग बहुरी है। हर एक गाँव को आर्थिक दृष्टि से, यहाँ तक सम्भव हो, एक स्वयंपूर्ण इकाई बन जाना चाहिए। ऐसी दृष्टि बननी चाहिए कि समर्थ अपनी दुर्लभ से जनता के साथ सहयोग करें। और जनता स्वतन्त्रतापूर्ण समर्थों को सहयोग दे। यह तभी सम्भव है जब कि जनता अपने पैरों पर खड़ी रहे। जीवन की प्राथमिक आवश्यकताएँ गाँव में पूरी होनी चाहिए, गौण आवश्यकताओं में से भी अधिक से अधिक उन्हीं गाँव में पूरी हों, जो आवश्यकताएँ जब उन्हें उनकी पूर्ति राज्य सत्ता समर्थों द्वारा कराये।

किमान के लेन की पैदावार से जो पका मान बन सके वह, यहाँ तक हो सके, उन्हींके घर में, और योग गाँव में बनना चाहिए। आज हाल बिल्कुल उल्टा है। किसान कच्चा माल पैदा करता है, और उसे बेचकर अन्नत की हर चीज खरीदता है। हर तरह से उसे धारा ही धारा होता है।

यह स्थिति न जनता के लिए अच्छी है, न समर्थों के लिए, न समाज के लिए। इसलिए आदर्श समाज-व्यवस्था का यह लक्ष्य स्वरूप होना कि लोगों के दूरक सामग्रीयों का बाजार सारे राष्ट्र में फैला हो, तथा उनके उत्पादन का प्रत्यक्ष राज्य-व्यवस्था करे। यहाँ की दूरियों को तार धन को घर घर में बोलने के लिए इससे अच्छी दूसरी कानूनी योजना नहीं।

● साम्यवाद की इससे उल्टी प्रक्रिया करती है, और बाद में उसे भाग्य बोटने की ओरिण करता है। यह प्रक्रिया आर्थिक दृष्टि से ज्यादा मरेनी है। इसमें विदेशी आक्रमण का ब्यादा खतरा है, क्योंकि समाजिक नन्दित रहती है। तीसरी, इस प्रक्रिया के कारण समाज की व्यवस्था इसनी अधिक हो जाती है कि क्व यह पैड बाय इसका ठिकाना नहीं। सबसे अच्छा यह है कि उत्पादन के द्वारा ही सम्पत्ति का समाज में बँटा हो।

● पारस्परिकता न बुद्ध अन्धी

धीन है, लेकिन वह स्वावलम्बी इकाइयों के बीच होना चाहिए। तबपार तीन पैरों पर खरी होनी है। तीनों पैरों में पारस्परिक सहयोग होता है, लेकिन तीनों पैर अपने अपने बल पर खड़े हैं। यह तीनों साथी

● समृद्धि इच्छा का बौद्धों की साथी योजनाएँ राष्ट्र-व्यवस्था पर बहुत दबाव डालती हैं, और अन्त वे हिंसा पर आधारित हो जाती हैं। अगर हिंसा को टालना हो तो हर वहाली किसान को अपना बाग़शाह होना चाहिए, और प्राणीयों का सहयोग बनी हुई स्थिति की नारा पैकना होना चाहिए। तब वह निदान और उलका गाँव मिनाकर एक सदन और करीब करीब स्वयं पूर्ण राज्य सत्ता हो पागी।

जो इस प्रकार स्वायत्त प्राणी का समूह बनती है वह है निमित्तमात्र प्राणीय सत्ता। ऐसे प्राणीयों का जो समूह बनती है वह निमित्तमात्र राष्ट्रीय सत्ता। ऐसे स्वायत्त प्राणीयों के परस्पर-सहकार का जो समूह बनती है, वह है निमित्त मात्र अखिल मानव सत्ता। इस सत्ता में रागद्वेषरहित प्रतिनिधिक प्रणितियों की परिपक्व होनी। इस परिपक्व के पास दृढ़ शक्ति श्रम और नैतिक नियमन शक्ति पूरी-पूरी होनी। ऐसी रूप्यता अथवा साकार बननी है। अब केन्द्रीय सत्ता शक्तों या शर ब्यादाधित की न हो, बल्कि नीतिवत्ता की हो। स्पष्ट है कि बलवत्क बनना स्वावलम्बी और सहकारी न होगी, तबतक यह तब की मानवता की रचना नहीं बन सकती।

—रा० मू०

नयी तालीम

शिक्षा द्वारा समाज-परिवर्तन की
संदिशनाहक
मासिक पत्रिका

साहजाना पदा : छद्द १०
सर्वे सेवा सध प्रकाशन
राजपाट, वाराणसी-१

शान्तिसेना

प्रिय मित्र,

३० जनवरी १९६८ को (जो कि राष्ट्र-पिता का मृत्यु-दिवस है) अन्तर्राष्ट्रीय-शान्ति-दिवस के रूप में मनाने के सम्बन्ध में यह पत्र है।

यद्यपि विभिन्न नगरों व गाँवों में अपने-अपने प्रकार से कार्यक्रम होंगे, फिर भी निम्नलिखित ३ कार्यक्रम सामान्य रूप से लिये जा सकते हैं :

- १-शान्ति-सुदृश
- २-प्रार्थना-समारोह
- ३-शान्ति-वित्तों की बिक्री

पहले हम इस दिन शान्ति-सेना रैली का भी आयोजन करते थे। इस वर्ष हम इस कार्यक्रम को परिवर्तित करके शान्ति-सुदृश के रूप में और अधिक व्यापक कर रहे हैं। जितना अधिक व्यापक हो सके उतना व्यापक इस शान्ति सुदृश को बनाने का प्रयत्न किया जाय। सभी नागरिक संस्थाएँ, शिक्षण संस्थाएँ ट्रेड यूनियन, क्लब तथा अन्य संगठनों से सम्पर्क किया जाय। साथ-साथ यह भी प्रयत्न किया जाय कि नगर के प्रमुख नेतागण भी इस सुदृश में सम्मिलित हों।

इस सुदृश को अन्त में प्रार्थना-सभा के रूप में परिवर्तित किया जा सकता है। प्रार्थना गीत हो सकती है अथवा विभिन्न धर्मों के कुछ उद्धरण बोले जा सकते हैं। अच्छे भवनीयों के द्वारा भजन गाये जा सकते हैं। सुने हुए गाँधीजी के वचनों को भी प्रार्थना-सभा में पढ़ा जा सकता है। प्रार्थना के पश्चात् सभा में व्याख्यान दिये जाने में भी कोई हर्ज नहीं है। परन्तु इस बात का ध्यान रखा जाय कि यह कार्यक्रम अधिक लम्बा न हो।

शान्ति-वित्तों की मौज प्रारम्भ हो गयी है। हम दुगुनी मात्रा में शान्ति-वित्तें छपाने का रहे हैं। लेकिन आप लोगों में से अभी बहुत से भाई जनवरी माह के आने की प्रतीक्षा में हैं। कृपया अपना आर्डर भेजने में विलम्ब न करें। शान्ति-वित्तें नम्बर में छपाये जा रहे हैं। आप लोगों को वित्तें भेजने में कुछ समय लग सकता है, जिनके आर्डर पहले आयोगें उनको हम परचे वित्तें भेजने की व्यवस्था करेंगे। अतः कृपया अपने आर्डर शीघ्र ही भेजें।

सलह

नारायण देसाई

भ. भा. शान्ति-सेना सम्बद्ध

शान्ति-केन्द्रों के संयोजकों एवं समस्त शान्ति-सैनिकों की सेवा में

प्रिय मित्र,

शान्ति-सेना की मूल कल्पना पूज्य बापू ने हमें दी और एक कर्मठ शान्ति-सैनिक की दृष्टिगत से केशे सेवा करते-करते देह-त्याग कर सकते हैं, उसका दिग्दर्शन भी किया। उनकी कल्पना की साकार और व्यापक बनाने के लिए पूज्य विनोबाजी ने इसके संगठन का प्रारम्भ सन् १९५७ में केरल प्रान्त से किया। तब से अब तक लगातार उसमें प्रगति हो रही है। परन्तु, उसमें अपेक्षाकृत जो सक्रियता आनी चाहिए थी, वह नहीं आ पायी। सक्रियता के बिना प्रगति सम्भव नहीं है। सक्रियता के लिए आवश्यक है कि

केन्द्रों की रिपोर्टें बराबर शान्ति-सेना मण्डल को प्राप्त होती रहें और मण्डल का केन्द्र के साथ सम्पर्क बराबर बना रहे। आपस में मिलना-जुलना भी आवश्यक अंग माना जाय, यह आवश्यक है। इससे संगठन की मजबूत होगा और कुछ कार्य भी दियेगा। परन्तु ऐसा नहीं हो सका। इसका कारण संगठन की कमी ही में मानता हूँ। अतः इस संगठन में जो कमी है, उसको दूर करने के लिए हम सब मिलकर प्रयास करें और अपनी कमियों को दूर करें। इसके लिये यह आवश्यक है कि आब की व्यवस्था से कुछ अधिक परिष्कृत व्यवस्था की स्थापना हो। इस दृष्टि

से मंडल ने ३०-३१ मार्च को हुई अपनी बैठक में कुछ निर्णय लिये हैं। उसके अनुसार अगर हर साथ कार्यक्रम चलता रहेगा तो हमारी शक्ति का मान हो जायेगा और संगठन को ठोस रूप भी मिल सकेगा। मैं मानता हूँ कि अधिक संख्या में आवृत्त अनु-पयोगी संगठन की अस्था कम संख्यावाला ठोस संगठन करी ज्यादा बलवान होता है। इसको आप भी मानते होंगे। हाँ, इससे एक बात जरूर होगी कि आब की वृहत संख्या कम हो जाय। पर उससे हमें चरबतना नहीं चाहिए। अतः आशा है, आप लोग नीचे लिखे निर्णयों पर ध्यान देंगे, उसके अनुसार कार्य करेंगे और संगठन को मजबूत बनाने में सक्रिय सहयोग देंगे। निर्णय निम्न हैं :—

१. सभी शांति-सैनिकों को एक बार अपनी प्रतिष्ठा दोहराएँ, यह काम 'सर्वोदय पत्र'-३० जनवरी से १२ फरवरी-के बीच एक बार प्रयाण कार्यालय को पत्र लिखकर किया जा सकता है। शांति-केन्द्रों पर वा रैलियों में एकत्र होकर एक साथ भी प्रतिष्ठा दोहरायी जा सकती है। इस प्रकार लिखकर वा समूह में पढ़कर जो शांति-सैनिक अपनी प्रतिष्ठा दोहरा न पायें, उनका नाम शांति सेना के रजिस्टर से काट दिया जाय।

२. हर शांति-सेना की अपनी रिपोर्टें नियमित रूप से भेजनी चाहिए। जनवरी महीने में जिन शांति-सेना की रिपोर्टें न आये उनके नाम शांति-सेना के रजिस्टर से काट दिये जायें।

३. आरे भारत में कुल करीब १३००० शांति सैनिक हैं और करीब १००० शांति-केन्द्र हैं। शांति-केन्द्रों के साथ करीब ६-७ माह से लगातार हम यहाँ से 'भूदान-पत्र' द्वारा संपर्क रखने का प्रयास करते आ रहे हैं। परंतु भेद है कि बहुत ही कम शांति-केन्द्र अपनी सूचना एवं रिपोर्टें कार्यालय को भेज पाते हैं। अब आशा रखता हूँ कि जनवरी में उक्त कार्य-क्रमानुसार सभी केन्द्र, रिपोर्टें तथा प्रतिष्ठा दुहराने की विधि पूरी करके हमें अपनाय कमाने की इजाजत देंगे। देश भर में इस संगठन को मजबूत, लोकप्रिय और अन्वित बनाने के-

भूदान-पत्र। नूतनवार, ३ मार्च, '६८

हिंसा का उन्मूलन सम्भव है

हमसे कोई उद्देश नहीं है हम हिंसा के युग में रहते हैं। जो कोई इस बात को स्वीकार नहीं करता वह या तो धर्मांध नहीं मानना अथवा उल्टा इस हिंसा से अलग ही कुछ-न-कुछ लाभ होता होगा।

यह हिंसा हमारे सामाजिक जीवन पर बुरा बुरा आघात किये जा रही है। विशेष कर हमने हमारे नन्हें-मुन्ने बालकों में खून खराबे की आदत बढ रही है।

न्यूयार्क शहर में ८९ वर्ष के बालक भी खून करने लगे हैं। ऐसे बालकों को हम बाल अपराधी कहते हैं। इन बच्चों का सुधार करने में भी हम अथ तक असफल रहे हैं। इसके अतिरिक्त साधारण हत्या के अपराधों की संख्या पहले से कुछ अधिक हुई है। अपराधों के आँकड़े बताते समय हमें सर्वत्र रहना चाहिए, साथ ही इन अपराधों से समाज के रक्त का भी पता चलना है।

हिंसा का प्रचार करनेवाले खालिफ तथा चल्चिक की तादाद भी बराबर बढ़ रही है। हाल ही में न्यूयार्क शहर में 'द डर्टी टखन' नाम के एक चल्चिक को समाजशास्त्र के तमय समीक्षक ने उस चल्चिक के विषय हिंसक, दुर्बल, कम सम्मोही, पागल तथा समाज विरोधी जैसे शब्दों का बार बार प्रयोग किया। हमने चल्चिक में क्या दिखाया गया था, इसकी कल्पना को वा सकता है।

इसी चिन्तन के बारे में एक दूसरे पत्र में लिखा था कि 'बालकों में तात्थि से इस चिन्तन का ऐसा मन्व खराब किया, जैसा कि आज तक किसी चिन्तन का नहीं हुआ है।' हमने बालकों की मनोदशा का पता चलता है।

युद्ध हमेशा हिंसा खिलता है। और विपत्तमान युद्ध हथका अत्याचारी नहीं हो

→जिद हम दोनों की हस्तुक घटि की अत्यन्त आवश्यकता है। आज की देख को परिस्थिति को देखते हुए एक संयुक्त नो डोल बनाना हम सबका कर्तव्य है। —सत्यनारायण

न. बा. शांति-सेना मजदूर नोट— प्रांतीय भ्रूतानकारक पत्रिकाओं में इस पत्र को अपनी भाषा में अनुवाद करके छापने की कृपा करें। ●

भ्रूतानकारक : टुककार, वे नवंबर, '६०

सकता। इसके अतिरिक्त इस युद्ध में हम अपनी निरदयता दिला रहे हैं कि अपनीआ की नैतिक रूपरेखा ही विकृत हो गयी है। इस युद्ध के कारण हमारे सुमस्तुत लोग भी बमबारी बन गये हैं। जिस ओर धोर से इस युद्ध को देखविचन पर दिन-रात दिखाया जाता है, उससे हमने हिंसा को सामाजिक मानकर स्वीकार किया है। किसी लेख अथवा चिकार की मॉति हमें यह युद्ध दिखाया जाता है। जिस प्रकार लेखों में लिखादियों के अंक बताये जाते हैं, उसी प्रकार इस युद्ध में माने वालों की संख्या बतायी जाती है।

हमसे कोई उद्देश नहीं कि हमें केवल सतहों बतों बतायी जाती हैं। इस युद्ध के कारण किसीकी बताये नहीं जाते। इस युद्ध में हमारी क्या जिम्मेदारियों हैं, यह भी नहीं बताया जाता। विपत्तानाम-युद्ध को पैसा कि मैंने समझा है तथा इसका जो चिन्तन लोगों के मन में है, वह कुछ कुछ इस प्रकार है, "हमने अपना पैर विक्रानाम की मदद पर रखा है और उलठे रहते हैं कि यह उठ बाप।" विपत्तानाम कहता है, 'मैं उठ तो शाऊंगा, किन्तु जब तुम अपना पैर हमामोने, तब तो उठ सऊँगा।' हमारा कहना है, 'पहले द्रम टडो, फिर मैं अपना पैर टारऊँगा।"

आज की इस हिंसा की मृष्टि का कारण क्या हो सकता है? क्या पहले भी इसी तरह की हिंसा थी? बात ऐसी नहीं है। आज की ऐतिहासिक परिस्थितियों के कारण आज हमारी हिंसा अधिक हो रही है। इसके आर्थिक और सामाजिक कारण कुछ भी बरी न हो, हमें यह मानना पड़ेगा कि हम बल के प्रयोग में ही विश्वास करने लगे हैं। यही कारण है कि आज मानव-जीवन का कोई मूल्य नहीं रहता है। मनुष्य के खून की अपेक्षा तेल को मूल्य अधिक है। जो विश्वास युद्ध को काम आये, उसकी आज भीमत है। जो भी नये आधिभार हो रहे हैं, उनमें अधिका हिंसक लोगों को मानने की समता है। हमनी हिंसा के बारे में मैंने आज तक जो खॉन की दे, उलठे में इन परिश्रामों पर पहुँचा हूँ।

● मानव हिंसा को समाप्तने के लिए उसकी तीन अवस्थाओं को समझना आवश्यक है— हिंसा के पूर्ण को अस्था, हिंसात्मक कार्यकार तथा हिंसा के बाद की अवस्था। अन्तिम अवस्था में यदि हथ पर नियंत्रण न किया जाए तो इसकी किसी-न-किसी प्रकार भविष्य में पुनरावृत्ति अवश्य होगी। यह एक वैज्ञानिक नियम है।

अचिन्तित हिंसा सामूहिक हिंसा से अलग रोते हुए भी इसके सिद्धान्त एक से ही होते हैं। उदाहरणार्थ—सामूहिक हिंसा को भी तीन अवस्थाएँ होती हैं। अतिविधेय की हिंसा तथा किसी देश की हिंसक विदेश नीति में भी कोई अन्तर नहीं होता। मैं यो यहाँ तक बौद्ध अन्तर नहीं होता। मैं यो यहाँ तक मानता हूँ कि हम यदि किसी देश को हिंसक विदेश-नीति को समझना चाहते हैं तो यहाँ के लोगों में जो हिंसा है, उसे समझना आवश्यक है।

मनुष्य में हिंसा की भावना सब ही पायी जाती है, यह मानना गलत है। यह हिंसा नर करना है, यह बाव अलग है। यामर आरुडे तथा जोरदार लॉरिज के जेठे मदान लेखकों ने भी अपनी पुस्तकों में यही मदान लेखकों ने भी अपनी पुस्तकों में यही लिख किया है कि मनुष्य में हिंसा की भावना हिंसक विदेश-नीति के कि उठे मिग्रास नहीं आ सकता। यह सही नहीं है, फिर भी आज की बढती हुई हिंसा को देखकर हम धीरे-धीरे इस बात में विश्वास करने लगे हैं कि हिंसा का उन्मूलन नहीं किया जा सकता।

अचिन्तित तथा सामूहिक हिंसा कम की जा सकती है, हतना हो नहीं, इसे पूर्णतया खत्म भी किया जा सकता है। यह केवल कल्पना न होकर एक वैज्ञानिक सत्य है। इससे कुछ प्रतिष्ठित पत्रों का कथन गलत साबित होता होगा कि मनुष्य तथा समाज हिंसा का त्याग नहीं कर सकता। मेरा इस बात में पूर्ण विश्वास है, क्योंकि यह केवल हिंसा का उन्मूलन हो सकता है। यदि हम यह मान लेते हैं कि हिंसा मिश्रणी नहीं जा सकती तो हम अपने सामाजिक उत्तरदायित्व से मुँह मोड़ लेते हैं।—डा० फ्रेडरिक थॉर्पे

['गंधी शांति प्रतिग्राम' के लेखक थे।]

शान्ति-केन्द्रों की गतिविधि

मीटिंग हुआ करते हैं। १५-१६ बापी इकट्ठे हो जाया करते हैं। गाँवों में घूमकर आमदान एवं सर्वोदय विचार प्रचार में संयोग देते रहते हैं।

नेपा

शान्ति केंद्र, पांगो : श्री हरि सिंह लिखते हैं कि प्रौढ़ शिक्षा में लोगों के बीच की गैरसहजिरी के बावजूद अच्छी प्रगति है। अमनेशाली को हिंदी तथा अंग्रेजी का ज्ञान दिया जाता है। ३२० रोगियों को दवा दी गयी। पशुओं की भी चिकित्सा की गयी। 'क्रिचन गार्डनिंग' के रेली में गोभी, मिर्ची आदि अच्छी तरह हो रही है। इसके बीच गाँव के लोगों भी में बाँटे गये। लोगों के मानस पर सार्द के बारे में भ्रम पैदा हो, इसके लिए केंद्र पर कुछ आयोजन किया जाता है। इसमें योग कारी दिखवस्वी ले रहे हैं।

शान्ति-केंद्र, खेन्सु : श्री सुप्रवेश कर्षक लिखते हैं कि मुख्य रूप से लोग खेती में लगे रहे। बीच बीच में महिलाएँ कपड़ा-सिलाई के लिए आती रहीं। बच्चों का स्कूल चलता रहा। सार्द आदि सार्वजनिक काम की भी योजना रही। आसपास के गाँवों का संपर्क किया जाता है और उनके मनोरंजन में भी भाग लिया करते हैं।

शान्ति-केंद्र, प्रागो (बानिनी) : सर्वेधी गोपीनाथ्य नाथर और ईंद्र सिंह : यर केंद्र कीमाधेश से डिस्टेंस २२ मील की दूरी पर है। यहाँ के लोगों के रहन-सहन, खानपान सब भिन्न हैं। यहाँ पर शिक्षा में प्रौढ़ एवं बच्चों के शिक्षण, ऐतली में मदद, साम-सन्नी उगाना और चीन्-विस्तारण किया गया। रोगियों को दवा बाँटी गयी। अब तक करीब १६०० लोग इसके लाभान्वित हुए। आवागमन के बाण्य खादी का काम शुरू नहीं हो सका, किन्तु बच्चों द्वारा कनी-उद्योग चलाया जाता है।

शान्ति-केंद्र, जेदुया : सादी का काम घूट-कार्द से लेकर अरमिया करपे से गामछा आदि बुना गया। बागवानी में केले तथा तरकारी के बीज बोये गये हैं। करीब ५०

मरीजों को दवा दी गयी। बच्चों में खेल-कूद कराया जाता है तथा लोगों के मनोरंजन-कार्यक्रम में भी भाग लिया जाता है।
विद्यार

शान्ति-केंद्र, करहवा : श्री अजबलाल सिंह : रिलोक के काम के सिद्धिमें लोगों में टाटस बंधाया गया। अन्य सार्वजनिक सेवाएँ भी की गयीं।

शान्ति-केंद्र, कल्याणपुर : श्री सीताराम लाल सरस्वती : लोगों को आध्यात्मिक शिक्षण मिले, धन, स्वाध्याय और सेवा का कार्य प्रचार रूप से हो सके। इसके लिए केंद्र में प्रयास किया जा रहा है।

शान्ति-केंद्र, जयप्रकाशानगर : श्री नारायण प्रसाद : अज्ञात-पीड़ितों की सेवा में समय अधिक गया। पुस्तकालय की समुचित व्यवस्था की गयी है। सामूहिक बैठक भी की जाती है। आमदान-अभियान में मदद और केंद्र के आसपास करीब १०० घरों चलाये जा रहे हैं। यह क्षेत्र बस और रेल की सुविधा से कारी दूर होने से यहाँ के हागड़े यहाँ पर निपट जाने में आसानी होती है।

शान्ति-केंद्र, विनोबातनगर : श्री सुंदर-दास : केंद्र में १३ सदस्य हैं। सब अपनी-अपनी काल करते हैं। हर सप्ताह मिलते रहते हैं। सामूहिक निर्णय के आधार पर कोई भी सेवा कार्य समय समय पर उठाया जाता है।

शान्ति-केंद्र, गाँधीग्राम, बेनीबादी : श्री बुद्धिनाथ सिंह : केंद्र में १५ सदस्य हैं। रोगियों को चिकित्सा, स्वाध्याय, आमदान-अभियान, खादी का काम, साहित्य प्रचार एवं निष्क्री, सर्वोदय-पाठ का काम केंद्र के द्वारा किया जा रहा है। गाँव के हागड़े आपस में ही मिटाने में संतोषजनक सफलता मिली है।

शान्ति-केंद्र, बरदाहा हाट : श्री भगवत बालम बंसारी : केंद्र में शान्ति-सैनिकों को

शान्ति-केंद्र, कैलाशपुर : श्री निरंज कुमार : अस्पताल में रोगियों की सेवा मुख्य रूप से की गयी। बाढ़-पीड़ितों को सस्ती रोटी पहुँचाने का तथा केंद्र द्वारा छोटी-मोटी सेवा भी की गयी।

शान्ति-केंद्र, चक्रचामु : श्री सोमदास : सदस्य-संख्या १३। केंद्र द्वारा भ्रम, सेवा, स्वाध्याय, आमदान-अभियान, खादी, साहित्य-प्रचार, सर्वोदय पाठ प्रचार रूप से चलते हैं। गाँवों के हागड़े आपसी समझौते पर निरस्तन में सहयोग दिया जाता है।

शान्ति-केंद्र, भागवाडुखुपे : श्री रामदुर्जन : केंद्र द्वारा भावपाल के गाँवों में सेवा-कार्य तथा विशेष एवं आदि में मांग लेकर लोगों का उलाह बढाने के साथ-साथ अपना विचार प्रचार भी करते रहते हैं।

क्षेत्रीय शान्ति-सेवा समिति, लोहरदगा : श्री कृष्णानंद गिरि : गांधी जयन्ती के अवसर पर ५ सेवा दिवसों का आयोजन किया गया। सेवा दिवसों में कार्यक्रम व्यस्त रहा। हरि-जन-वस्ती के बच्चों को नहलाने-धुलाने में विद्यार्थी लोगों ने कार्य दिखवस्वी से भाग लिया। दिवसों में स्कूल-कालेजों के ३०० शिक्षक एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया। इसी दरम्यान ५५० कपड़े बाँटे गये। यह सब स्कूल के विद्यार्थियों ने ही लोगों से माँगकर इकट्ठे किये थे। अन्य साधन-पदार्थों को भी अज्ञात-पीड़ितों में बाँटा गया। गांधी-जयन्ती के उपलक्ष्य में विचार-गोष्ठी का भी आयोजन किया गया था।

उत्तर प्रदेश

शान्ति-केंद्र, तिवारीपुर : श्री विजय शंकर तिवारी : केंद्र में नियमित रूप से स्वाध्याय, धार्मिक मंत्रों का नियम पठन, अलंकार, एन-पत्रिकाओं का वितरण चल रहा है। प्रौढ़-शिक्षा का कार्य भी प्रारंभ किया है। सार्वजनिक मंदिर स्थानों को साफ किया गया, संभावित सेवा-कार्य भी हुआ।

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, ३ नवंबर, '६०

शांति-केंद्र, आगमपुर - श्री देवाशोक मोहनजी : छद्म नाम ७ हैं । पदपात्र, कर्ण, हृत्क तथा आदि का विद्ये गये । स्थापना का कार्यक्रम सार्वजनिक चला है । श्रावण-अभिधान से पत्र प्रकाशन प्रारंभ हुआ । १०० रुपये की स्वामी कुटी खोली गयी । साहित्य विक्री हुई । रामपुर तथा कानपुर प्रान्तों में लोगों में विज्ञापन के योग दिया ।

शांति-केंद्र, चित्तौड़गढ़ श्री अमरसिंह कर्मा : प्रभाव सेवे के साथ दोनों बतौर मनायी गयी । केंद्र में कम सेवा कार्य भी संचय संचय कर विद्ये काहे हैं। सर्वोत्तम साहित्य प्रकाश हुआ । एक पुस्तकालय खोलने की योजना है । एक श्रीदुर्गा मठ श्री लोहने का स्थापना रखी है । आर्थिक रूप से सार्वजनिक काम नहीं हो सके । विचार-प्रचार का काम कुछ मात्रा में किया गया । केंद्र की बैठकें दोही रही ।

शांति-केंद्र, मुम्बय श्री राधाबा विद्या : गणपतिका १० । राधाबा, सेवा-कार्य ही रहा है । आधुनिक से सुभाष से प्रारंभ तक एक मार्क्सवादी लक्ष्य बनायी गयी । ७ महीने पदपात्र गये, १० पैके की साहित्य विक्री की । विद्योत्पन्न सच समाज, अर्थशास्त्र प्रतिरोध तथा लोक शांति के उद्देश्य से किया गया है ।

श्री श्री विचार केंद्र, कामूर : श्री विचार मन्सरी । विचार विभाग के साथ से छात्रवर्गीय, कानपुर, गाँवा, सैनपुरी और फर्रुखाबाद विभागों का दौरा कर शांति-केंद्रों तथा शांति केंद्रों के बीच में। छात्रों को कानून में उद्धे समझाया ।

सर्व १०५ इ० १० पैके की सेवा केंद्र द्वारा १९३९ इ० १९ पैके की साहित्य विक्री की गयी । श्वाधी सभाने सर्वोत्तम उ० प्र० ग्रन्थों को संचयन किया ।

सहायक
सदस्य शांति-सेना समिति : श्री संगम प्रकाश अग्रवाल : शिबपुर का विचार-विभाग

सूचना-पत्र : ३ गुड कपूर, ३ मजदूर, '६०

रार बना रहा । कुछ दृष्टिगौर शांति केंद्र बने हैं । गणपत के तीन धरतों में अशांति का यथासंभव बचा रहा । लक्ष्य शांति के लिए राति बर प्रयास किया । लक्ष्य शांति की श्वाधी अर्थोत्पन्न संचय हुई ।

गणपत इन विचारों के साथ पुस्तकों में एक नयी योजना का संचय हुआ है । अब तक कुम्वार ३१६, पुस्तक ५८, सौद ४६, साहित्य-केंद्रों की भर्षी की गयी है । कुछ गिनकर ४८१ शक्ति केन्द्र हुए हैं ।

शांति-केंद्र, शीत श्री मोहनलाल मन्नी काके के विचारों के बीच विचार संचय कर नाम हुआ । शिबपुरी का एक साहित्य विभाग गया । आधुनिक पदपात्रा करीब ८० पैके की हुई । १० कुम्वार साहित्य-केंद्रों की भर्षी हुई । ३ साहित्य सेवक बनाये गये ।

संज्ञा
शांति-केंद्र, सीत मन्सरी श्री पुमिका भगत कुल २२ गाँवों में सर्वोत्तम विचार प्रकाश, १५८ मील के पदपात्रा, १३३०००० पैके की साहित्य विक्री हुई । अब खोलने पर तथा सर्व प्रभाव में श्रावण अभिधान में योग दिया जा रहा है ।

श्री श्री शांति विभाग केंद्र, कानूर श्री मनेका प्रकाश ३०० परिवारों से १०००० की एक सचि सच से मिली । साहित्य पढ़ने को बंधे में दिया गया । विचार शिबपुरी से ७४५०० की स्थापना बेधी गयी । शीबपुरी लगभग सच तथा भीषण विचार सुभाषों के प्रकाश से कुछ कार्य इन्हें करने में गये । १५ दिन आधुनिक अभिधान में योग दिया । १० आधुनिक प्रकाश हुआ । 'सूचना सच' सार्वजनिक का प्रकाश बनाया गया ।

सैक्टर
शांति-केंद्र, कानूर ३ श्री शशीवर्षा श्याम साधक, श्री मन्सरी सदः 'सर्वोत्तम सच' मन्सरी गया । इस मन्सरी पर सच-कार्यकों में विद्ये, कर्ण, लोक-सच आदि कार्यक्रम स्थापना था । १० पैके की सुभाषा खोली गयी । सार्वजनिक तथा का भी आधुनिक किया गया था ।

अमेरिका की शांति-संस्था द्वारा शांति-प्रदर्शन

अमेरिका अभिधान सुविधा (अमेरिकन सुविधा संचय सेवा) संस्था ने, विचार संचय हाल ही में सामोरी शांति कार्य में लगे कार्यकर्ताओं के विभिन्न केंद्रों के एकीकरण करने के उद्देश्य से हुआ है, सैन्यीगो खान पर किए 'यू० एम० मेनर ट्रैनिंग सेक्टर' पर नियंत्रित होने के दिन स्थानीय मन्सरी का एक संचय बनाया निरवय किया है । आसपास लोग इससे के चार हजार अर्थियों के सचि मिल होने की आशा है ।

'कम्यून' आर० एम० संस्था की ओर से शान्ति आधुनिक शक्ति तथा कार्यकों के विचारों के निरवय सच के लिए चल रही अभिधान सच का निरवय बना है, इसकी सचों उनसे कर रहे हैं । उ होने एक स्थानीय केंद्र के सच में तथा अभिधान कार्यकों के सचों में एक सच में शांति-कारियों के सच को संचय किया है । के प्रभाव में शान्ति की शक्ति उनसे द्वारा शांति विचारों पर प्रभाव भी कर रहे हैं ।

(कम्यून) आर० एम० सूचन सच १९३९

शांति-सेना परिचय

लेखक - नारायण देसाई
प्रथम पुस्तक का चार सद्यों के अन्तर्गत शांति सेना का उद्घाटन परिचय बताया गया है । विचार, संगठन, अनुभव और संचय, वे चार सच हैं ।

शांति सेना बना है, उनका स्वयं सेवा संगठन, उनसे शान्ति के सचि बनने तथा, उनको शान्ति संगठन, इन सब का एक सच है । इस पुस्तक में संचयन संचय है ।

प्रकार की सच में इस पुस्तक का सूचन किया है श्री सुभाष, १९३९ पैके तथा सच है ।

सर्व सेवा सच प्रकाशन, छात्रप्रकाश, आगमपुरी ।

“मैं तुम्हें यह पत्थर फेंकने नहीं दूँगी। हाट दो उसे नीचे।” मैंने चौड़ी जैकेची आवाज में कहा।

“नहीं बहनजी, आप छोड़ दीजिये मेरा हाथ, और आप अन्दर चली जाइये। मुझे यह पत्थर फेंकना ही है। आपके हाथ बायगा। कृपया आप अन्दर चली जाइये।” दस बारह घात के उस क्रियार ने हट्टापूर्वक मुझे कहा।

मैंने उस लड़के का हाथ और जोर से पकड़कर कहा, “तुम किस देश के निवासी हो, जानते हो।”

“हाँ, मैं भारत का हूँ।”

“भारत किसका देश है।”

“गांधीजी का, नेहरू चाचा का।”

“तो फिर उन्होंने क्या सिखाया है।”

मैंने फलन किया।

“यही कि, अन्याय का प्रतिकार करो।” उसने उद्वेगपूर्ण आदेश से कहा, “वे अंधेरी की मशय बात सदन नहीं करते थे।”

“बात तो तुम्हारी सही है, परन्तु इसके साथ-साथ उन्होंने और भी एक बात सिखायी थी। उन्होंने कहा था कि अन्याय का प्रतिकार करो, परन्तु शांति से, अहिंसा से, करो। तुमने उनके आदेश का पूर्णार्थ याद रखा, उत्तरार्थ भूल गये।”

इतने में पुलिस की गाड़ी आकर लड़ी हुई और सारी भीड़ हड़ता मचाते हुए आगे चली गयी।

यूनिसर्विटी भावनगर में हो या राजकोट में, छोटा-सा सवाल, बातचीत से, चर्चा से, थोड़ी सी समझ से और थोड़ा-सा दिव बढ़ा कर देने से, हल हो जाय, देश नाचीन प्रसन।... परन्तु इल्य मच गया है। हिंसा के बीज बोये जा रहे हैं। प्रतिहिंसा के आगमन की राह देली जा रही है। नयी पीढ़ी के लिए नयी पशु। बय अवधान ॥ बय क्रिमन ॥

बहुन वेदना होती है। दस-बारह फुट चौड़ी छोटी-सी सड़क, दोनो ओर जैके-जैके मकानों की कतार। रास्ते पर आफिस में से

फेंकी हुई कुर्सी, टेबल, बड़े-बड़े गोदरेज के कपाट....। आग बल रही है। चारों ओर भीड़ लड़ी है। सिविल एयर लाइन्स की आफिस की लिफ्टकी में से एक-एक चीज भाग में फेंकी जा रही है। और चारों ओर इर्षानाद के साथ-साथ तालियों बजतीयां बा रही हैं। अग्नि-शिला और प्रखलित होकर भमक उठती है। मारनों कोर्दी होथी का लौदार मनया बा रहा हो। इतनी खुशी है, इतनी बेकिन्ती है।

मैं आगे बढ़ती हूँ। क्रेडिस आफिम आता है। सामने हैं जयी हुई कीमती चीजों के मग्नाबधेप। आधी जयी हुई, आधी टूटी हुई गोदरेज की आरुमारी का एक माग अवमुर्दी मानवता का प्रतीक बनकर लड़ा है। कह रहा था, “मुझे कितने बलया, मालूम है। किसी अमीर के लाइनों में नहीं, जिनके घरों में पाँच पीढ़ी तक ऐसे कपाट लगाये नहीं जा सकते ऐसे गरीब दीन दीन लोगों ने मुझे जलाया है।” कहीं कपाट है तो कहीं रेकिमेटर है, तो किसी रैक के सामने जले हुए मोटी के उड़ने हुए टुकड़े हैं।

और आगे बढ़ती हूँ, चारों ओर बिल्वे हुए टेलीफोन के तारों को पार करती, गिरे हुए लम्बे-लम्बे खम्भों से भागें निखलती हुई। आध फलॉग की दूरी पर बहुत बड़ी भीड़ है। आकाश में कुछ धुआँ-सा भी दिखता है। इतने में चार-पाँच बदनो से घिरी हुई एक कोर्दी की छाती पीटती हुई जा रही है, “मिरे बच्चे का मुँह कोर्दी मुझे दिखाओ, कहाँ है मेरा मुन्ना! मेरा मुन्ना!...” कुछ समझ में नहीं, आता है। आगे बढ़ती हूँ। रास्ते पर पानी-पानी है। एकदम अँसल बजने लगती हैं, उनसे आँसू बहने लगता है। किसीके घर के च्यूतर पर चढ़ जाती हूँ। उनसे को मिलता है, “दस साल का बच्चा है, उधर गिरा है, टीयर गैस का गोला उसके तिर में लग गया।”...और आगे बढ़ती हूँ। “बच्चे का क्या हाल है।”

“नहुत सीरियस है।”

और आगे बढ़ती हूँ। “बच्चे को लगा, सही बात है।”

“अरे, वह तो मर गया! उधर गिरा है।...”

दो-चार कदम से आगे अब नहीं बढ़ सकती। मुनसान रास्ता है। रास्ते के दोनों ओर के मकानों की लिफ्टियों मानव-चेहरों से भरी हुई हैं। रास्ते में फेंके गये पत्थरों के टेर के टेर पड़े हैं। एकाध फलॉग पर दिखायी देते हैं—चार-पाँच पुलिस के सिपाही। और इधर लोगों की भीड़।...हाँ, मुन्ना कि बच्चा तो मर गया, परन्तु इधर कोर्दी धरु का खराया नजर नहीं आता, न वेदना है, न रोप है। वहाँ तो खेत चल रहा है। गले में रुमाळ डाले हुए चार-पाँच अगुभा नोजवान हैं। कोर्दी विदायी नजर नहीं आता। किसी मकान का च्यूतरा, या बस-स्टेण्ड का च्यूतरा तोड़ा जा रहा है। उसके छोटे-छोटे टुकड़े कर रहे हैं। दो-चार टुकड़े नीचे गिरे। भीड़ में से आवाज आयी, “ठठाओ उसे अब। फेंको, फेंको, वह टिरा रहा है।” और एकदम पत्थर की वर्षा शुरू होती है। लिफ्टियों में से तालियों बजने की आवाज आने लगती हैं। सामने से प्रति-रक्षारमक पत्थर भी आते हुए दिखते हैं। भीड़ को और उत्साह दिया जाता है, “फेंको, फेंको, उनका ध्यान इधर नहीं है, चारों सामने हैं।...अरे, लेकिन उधरो, बेचारी कोर्दी बदन आ रही है, अभी कोर्दी पत्थर मत फेंकना। उस बुरट्टे को भी जाने दो।” वह बहन और वह बुरट्टा आगे गया और फिर पत्थरवाधी शुरू हुई।...“आप लोग क्यों पत्थर फेंकते हैं। फालग हो गये हैं क्या। यह सब बन्द कर दोजिये।” क्षी की आवाज को सुनते ही चिन्ता उमड़ उठती है, “अरे बहन, आप यहाँ सड़ी हैं। अन्दर चली जाइये, चली जाइये। आप इगारी मुशीबत बढ़ा देंगी, चली जाइये कृपया अन्दर।”...और फिर पत्थर चरे...तब तक चले...तब तक पुलिस के हाथ में उटायी हुई रिवाल्वर न दिखी।...और टीयर-गैस

का दौरा आया... पूछा। मुझों कैर गया।
सोफो में अथार कल्प समझी।

समाज में प्रतिबन्धी का, मरते हैं बन्ने।
कल्पों में मराने! तेली है मानकता।

"कथा बना उपाय। क्या निरा
कल्प!" राग को छोने भावों हूँ वो दिन
पर मे देसी हुई परनाई विनया वैधी तब
के सामने आ जाती हैं। अक्षरार सावरी हूँ
तो भागत हुआ बन्वा, भरा हुआ नी
बचान, कल्पे गये मुक्ति के उपायी, बने
हुए मरान बंद रहे प्रवर्तार में आकर लदे
होते हैं। बहुत वेचना होती है। अन्त
विक्रमता के विप्लवों को अथार वेचना
दाक क्वासी पदकर दिन लती भी, आन्त
मवतनर भी बचन क्वासी देखकर लाम
गयी।

कालि-मेना। हरी है पर। हम दो
पार हने मिली, टूटे टूटे लोग क्या कर सकते
मेना मरी है, वैमिक है। कुछ क्वाला
नहीं। हमने में अथार लुनामी देसी है,
कुछ अथार मरार की, कुछ अथारपर।
हम यह अथार क्यों हल करें। हमें,
कुछ बच नही रचना है, मूल क्वाली
क्यों हन्त रागाय जाता है। उनको ह्दयता
मनाने का अथार है, स्वात्म्य ही तो है,
को न चाहते ही उन्हें ह्दयता 'न मनाते
का' भी अथार और स्वात्म्य ही है ही
नहीं। यह तो ह्दयता मासिक स्वात्म्य हीना
का रहा है। यह क्वाली। "

एक आवाज, दल आवाज, एवाह
आवाज। अथार हुआ। कुछ दिन।
दिनारे विना विना, अन्ते आत। स्वयं अन्ति
कम से, स्वयंसेवक से।

मासिकों को, स्वतन्त्रता को, ह्दयमयी
को, अन्ति की मुखा को, कैरे ही। कुछ
समय हो। नीन अन्ति हो। वेते ही
रणा कानेशके, ह्दयता कानेशके, अन्ति
क्यों कानेशके को। नहीं-नहीं 'कम्पन
शक्ति' सुगमति हो, कल्प हो। अथार
क्यों हीमी है " और कोयों के अन्तिम्य के,
कोयों को एचना से, कोयों को कल्प से
मर्येति यह 'कालि मरान' का बन्त होना
है। अथार तो ह्दय लदे होते हैं। केवल

कालि मेना विचित्र में कल्पों का वैसा गल्लार
बला था। अथार समत है। प्रान होता
है, मथन क्वाला है, कुछ कल्पे को, कल्पे अन्ति
को अन्तिम्य नजर आती है। अन्त अन्ति
नहीं है, सुगम नहीं है।

कल्पित सामने से को अथार दोहता अथ
रहा है, वह बहा अथार है, नहीं अन्ति
भावी नहीं का क्वाली, हन्ती अन्ति है।
और यह तो कल्प ही का है।

"माई, यह सब क्वाली होना चाहिए।
नहीं न ह्दय, अन्ति को दमे मय में चल रहे
हैं, क्वाली के अन्ति हो भावी। "

"ओ माई, मोहा कोय लयी। निराशा
का कर्मयोग" क्वाली क्वाली हो। ह्दय तो मथन
प्रथार में अन्त होना चाहिए। अन्ति ह्दय
कितने हैं, हमें नीन क्वाला है। कोय क्वाला
बढ़ने दो। "

एचना बढ़ाने के लिए फिर ह्दयों के
कल्प-एन्टी मरान, क्वालात्म्य, निराशी
सम।

माथन ह्दय होत है। अन्तिम्य चन्ते हैं।
एचना लान आता है, "कल्पित अथार ह्दय यह
बन्तारे कि अब अथार हुआ है तो उन्त
अन्तिम्य के प्रतिभार के लिए ह्दय क्या करे।

कालि अन्ति, अन्ति, अन्ति क्वाला
हन्त क्वाली से ये माननेवाले हैं। नही
मानिये। ह्दयारी न- ह्दय की अथारों का
ह्दयता मरी बन्तार है। कल्प तक दमे नहीं
होते, क्वाला नहीं बन्ते, एन्तशशी नहीं
चन्ते, कोयेशरी नहीं तोय। तब तक काम
नहीं बनता। ह्दय बन्त करें। अन्तिम्य का
प्रतिभार कैरे करें।

पार्थिवी के मादेत का उचाराय अन्ते
देवा को हीनता बन्ती है। अन्त अन्त एन्तों
कोलने में चने मये। यह लीन लिय, केरिन्
अन्ति। ह्दय इन मर्येति में अन्त रहा है।

उत्तरार्थ क्या है। अथार का विचार है,
अन्तिम्य का विचार है। बहुत महारें तक
जाना चाहिए। कुछ न कुछ लाना क्वाला
चाहिये। एक क्वाला सय का ह्दय प्रतिभार
देख में चल रहा है, क्वाली का उचाराय कैरे
लोममन अन्त का उचाराय भी प्रतिभार है।

लिए होता रहता है। 'कोयों क्वाली पर ह्दय
मरने हुए हैं। लती अन्त बन्त है।

विनोद बन्ते हैं, अथार का प्रतिभार
नीन प्रभार से हो सकता है।

१ वैमिक वैमिक विप केरार क्वाले क
(कुपारें का क्वाली ह्दय से प्रतिभार
करें।)

२ वैमिक ह्दय विप ह्दय क्वाले म
(कुपारें का उन्ते ह्दय बन्त ह्दय से प्रतिभार
करें।)

३ वैमिक ह्दय विप मान-काले म
(कुपारें का अन्ति से प्रतिभार करो।)

४ वैमिक नाट ह्दय (कुपारें का प्रति
भार न करो।)

५ एन्ति अन्तिम्य मेन ह्दय वाह
कितना (विनोद क्वाला न विनोदों को
मर्येति करो।)

विनोद का विनोद बहुत दूर तक कैर
गया है। एत इन्त उन्ते बहुत दूर हैं।
प्रत्येक आन्तम्य म देख को अन्ति बहुत कुछ
लीला क्वाली है। काम स्वयंसेवक, कालि मेना
आदि को एक अन्तिम्य क्वाली उन्त वन्त लती
है, उनको देसी वर गौर मरते ही पूरा क्वाला
द्वैत मर कर लेना यह सब मर्येति ह्दय था है।
एत उन्त एन्तमें के एन्ते लीन में यह सब
मरती लान पक्ष है उनको दैते लोचन, मरी
मुक्ति है। मरी ह्दय, क्वाला लारी ह्दय
है। यह अन्त को परिचित है।

अन्त शार्दूल ह्दय, अन्त क्वाला क्वाला
और ह्दय ह्दय विचारों को विना में एन्त
पुनः अन्तिम्य क्वाला दमे विना चारा नहीं
हिलता। अन्त लीन को लती ह्दय म बढ़ने
को क्वाला अन्त मर, मरी लाना पक्ष है।

--भीरा

"गाँव की बात"

पाथिक पत्रिका

खालाना चन्तार चार २०

सर्व सेवा सय मन्तकन

एत एत, चाराशी-२

ग्रामदान : जय जगत : विश्व-शान्ति

आज दुनिया में गरीब मुल्कों के सामने समस्या है कि वे कैसे अमीर मुल्कों की बराबरी में आयें। अमीर मुल्क कुछ भिक्षा या सहायता देने को राजी भन्ते हो जायें, पर वे अपनी कमाई में गरीब मुल्कों को शामिल मानते या उन्हें अपनी बराबरी में आने के लिए अपना स्वामी लगाने को तैयार नहीं दीवन्ते। अमीर मुल्कों की आबादी दुनिया की कुल आबादी को तिहाई है, पर उनके पास प्राकृतिक साधन, जैसे—जमीन, खनिज सम्पत्ति—तेल, कोयला, लोहा वगैरह—गरीब देशों के प्राकृतिक साधनों से कई गुना अधिक हैं। उनके पास जमीन प्रति व्यक्ति दो गुनी और खनिज सम्पत्ति के भंडार दस गुना अधिक हैं। ये अमीर मुल्क गरीब मुल्कों को सिर्फ कुछ ढूँकी या मशीन की सहायता देकर यह मान लेते हैं कि गरीब मुल्क उनकी बराबरी में आ जायेंगे। इस कारण विश्व में गरीब और अमीर राष्ट्रों के बीच की दूरी कम होने के बजाय बढ़ती ही जा रही है। इस विषमता का बढ़ना अशान्ति का कारण बनता है और नयी-नयी अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं को जन्म देता है।

विनीवा ने इस समस्या को बुनियाद से ही हल करने के लिए 'जय जगत' का नारा सुलभ किया है। आज सारे विश्व को एक होकर सबके मुक्त-दुःख में शिरकत करना लाजमी है। वे कहते हैं कि जो हम विश्व में होते देखना चाहते हैं उसे पहले अपने घर से शुरू करें। इसी तरीके का नाम है ग्रामदान। ग्रामदान के मानी यह है कि छोटे पैमाने पर जहाँ-जहाँ हम रहते हैं, चाहे वह शहर का सुहला हो, अपना कारखाना या साथ मिलकर काम करनेवालों की ओर कोई इकाई या गाँव हो, उसमें रहने-वाले सभी लोग अपने को सारे समुदाय (कम्युनिटी) के लिए जिम्मेदार मानें।

विश्वराष्ट्रों में ग्रामदान सिद्धान्त

ग्रामदान के जो सिद्धान्त हैं वे ही जय जगत के भी हैं। अगर ये सिद्धान्त अमीर-गरीब राष्ट्रों की आगामी विषमता मिटाने में लागू करने हों तो राष्ट्रों से क्या होगा कि जो भगवान की देन हैं—धरती,

तेल, पेट्रोल, लोहा-कोयले की खानें आदि—उनके मालिक वे लोग ही नहीं हो सकते, जो उस राजनैतिक इकाई में रहते हैं जहाँ ये वस्तुएँ उपस्थित हैं। ये देन तो संसार के सभी लोगों के लिए काम आनी चाहिए। उनके स्वाभिव्यक्त विचित्रण सारे विश्व के हित की दृष्टि से यदि राष्ट्र आज नहीं कर सकता तो भी इस सिद्धान्त को मांग करे और प्रतीक के रूप में वीसवाँ या जो भी हिस्सा ठीक समझे, राष्ट्रीय सम्पत्ति के बजाय विश्व-सम्पत्ति मानकर उसका लाभ गरीब राष्ट्रों को दें। प्राकृतिक (ईश्वर प्रदत्त) साधनों में सब अत्याह के बंदों का बराबरी का एक हासिल है, यह माना जाना चाहिए और इस तरह बढ़ने के लिए यह पहला कदम उठाना चाहिए। बाकी भी जो प्राकृतिक साधन—खेती, जंगल, चरागाह की भूमि या वन्य तथा खनिज पदार्थों के स्रोत जिन जिन देश में हैं, वे उनका जैसा चाहें उपयोग करें, यह घूट नहीं दी जानी चाहिए। उनका उपयोग आज हर देश अपने लाभ के

लिए चाहे करतो भी रहे, पर उस क्षमति को बरबाद करने का एक उद्योग नहीं हो। अर्थात् विश्व का कौल सभी प्राकृतिक साधनों पर माना जाय। यह सभी सुमकिन है, जब हर मुल्क 'खेत गाँव का, खेती किसान की' वाली बात अपने प्राकृतिक साधनों के बारे में भी माँगें और विश्व की किमी वैज्ञानिक संस्था के नियन्त्रण में उनका उपयोग करने को राजी हो।

ग्रामदान का यह सिद्धान्त अमल में आने के लिए ईश्वरीय देन के अलावा अपनी मेहनत का भी फल गरीब के साथ बाँटकर खाया जाय, लाये; हर राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय आय का कुछ अनुपात, चाहे वह २ प्रतिशत हो या २ प्रतिशत, विश्व के गरीब देशों की तरफ़ी के लिए लगाये।

गांधीजी के बमाने में विश्व को भारत ने अन्मोक्ष देन दी, अत्याह के विचार की। अब विनीवा के बमाने में वही भारत विश्व को ग्रामदान-विचार की अन्मोक्ष देन दे रहा है।

—देवेन्द्रकुमार गुप्ता

चौदहवें राजस्थान सर्वोदय सम्मेलन का निवेदन

राजस्थान नशाबंदी समिति ने २ अक्टूबर, '६९ गांधी जन्म शताब्दि तक राज्य में पूर्ण शराबबंदी लागू करने के लिए २ अक्टूबर, '६७ से अत्याह का कदम उठाया है, राजस्थान समग्र सेवा सघ की कार्य समिति उसका हार्दिक स्वागत और समर्थन करती है। हम लोग हाथल सर्वोदय सम्मेलन एवं बोधपुर में हुई समग्र सेवा सघ की सभा के समय से ही राज्य में २ अक्टूबर, '६९ तक पूर्ण शराबबंदी लागू करने के लिए अपनी आवाज सुलभ करते आये हैं। जुलाई '६७ को दुर्गापुर की बैठक में इस संकल्प-पूर्ति की दिशा में अत्याह करने संबंधी नशाबंदी समिति के निश्चय को हमने पूर्ण समर्थन दिया था। २७ अक्टूबर को बधपुर की कार्य समिति की सभा में २ अक्टूबर, '६७ से अत्याह को अपना ही कार्यक्रम मानकर उठाने का निश्चय किया।

हमारा यह सौभाग्य है कि पू० विनीवाजी ने शराबबंदी अत्याह के कार्यक्रम को आधी-

वार्द प्रदान किया है, तथा यह आशा प्रकट की है कि इससे राजस्थान के कार्यकर्ताओं में प्राण-संचार होगा। पू० बाबा और भी बराबरवा बाबू ने इसे समर्थन देकर हमारी जिम्मेदारी बढ़ा दी है।

गांधी जन्म शताब्दि तक राज्य में पूर्ण शराबबंदी लागू हो, इस संकल्प से हमारा इस समय का कार्यक्रम और कर्तव्य हमारे गणने दाख है। हम उनको चाहिए कि इस कार्यक्रम को यशस्वी बनाने में हम अपनी पूरी शक्ति लगा दें। इस काम में श्री गोकुल-मार्द भट्ट तथा नशाबंदी आंदोलन समिति को मदद पहुँचाने के लिए मांग सदस्यों की एक समिति मनोनीत की गयी है।

प्रदेश के समस्त सर्वोदय सेवकों, सार्व-जनिक कार्यकर्ताओं, राजनीतिकों, रचनात्मक संस्थाओं तथा शराबबंदी में विरक्त रमनेवाले भारतीयों से अग्रणी है कि वे अत्याह का फल बनवायें तथा जो कार्यक्रम अत्याह समिति की ओर से समग्र-समग्र पर घोषित हो, उसे पूरा करने में प्राण-पण से जुट जायें।

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, २ नवंबर, '६७

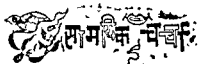
गाओं के वे निले
जिनमें १०० से लेकर ६६६ तक भामदान हुए हैं

गाँव	भामदान	महात्मा	समुक्त प्रजाप	१ कोटडा	
१ दुबरीबाग	८८५	१ बाग	६१८	२ दुधनपुर	५००
२ कल्याणगंगा	८१५	२ बांग	५६०	३ इशियानपुर	४२३
३ चण्डी	५९९	३ सुभिय	३७८	४ इलाक	३६२
४ सुबानपुर	५९५	४ ब्रह्मिणी	२७५	५ अमरा	४००
५ शरण	५९५	५ काहावा	२७५	६ बाजपुर	३५५
६ मालपुर	५९१	६ कुणवा	२०१	७ शिवर	३०५
७ मरुवा	५९५	७ अवाग	३३१	८ शिवानु	३००
८ श्याम	३३८	८ भागवती	३३०	९ रतन	३३०
९ बनबा	३५०	९ सुकाव	३३०	१० अमरा	३३०
१० मिर्चपि	३३०	१० बरीग	३३३	११ बपोपुर	३३८
११ साहाबा	३५५	११ बालाह (द्वार)	३५०	१२ बकुव	३५५
१२ मिना	३०५	१२ मध्यपुर	३००	१३ दुवा	३८८
१३ बालाह	३३०	१३ गंगामह	३००	१४ शिवगंगा	३८८
१४ देवाना	४३१	१४ गंगामह	३००	१५ शिवगंगा	३८८
१५ गंगाम	३०५	१५ गंगामह	३००		
१६ पुष्पपुरी	३३३	१६ टीरमपुर	३००		
१७ लखपुर	३३५	१७ दुवा	३००		
१८ बरीग	३०५	१८ बरीग	३००		



१९ बरग	३३०
२० बरग	३३०
२१ बरग	३३०
२२ बरग	३३०
२३ बरग	३३०
२४ बरग	३३०
२५ बरग	३३०
२६ बरग	३३०
२७ बरग	३३०
२८ बरग	३३०
२९ बरग	३३०
३० बरग	३३०
३१ बरग	३३०
३२ बरग	३३०
३३ बरग	३३०
३४ बरग	३३०
३५ बरग	३३०
३६ बरग	३३०
३७ बरग	३३०
३८ बरग	३३०
३९ बरग	३३०
४० बरग	३३०

भामदान मठों का नक्शा, १९००



सचेतकों की चेतावनी

दल-बदल के कारण अत्यन्त परिणाम, पांडेचेरी, मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश और मणिपुर में ब्रिटीश सरकारों का पतन हो चुका है। बिहार और बंगाल की गैर-ब्रिटीश सरकारों को उलटने के लिए प्रयत्न हो रहे हैं। भारत में दल-बदल पहले भी हुए हैं, किन्तु यह रोग जिस तीव्रता के साथ गत आमचुनाव के बाद फैला है, उमड़े देसी राजनैतिक अस्थिरता पैदा होना है। कित्त प्रान्त की सरकार कच बदल जाय, इसका कोई भरोसा नहीं रह गया है।

अनुर के प्रारंभ में दिमाग में दल-बदल की समझ पर विचार करने के लिए समेतकों का एक सम्मेलन हुआ। सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के मध्य मंत्री श्री परमार ने कहा कि दल-बदल को फेर से चुनाव लड़कर बनना की सम्मति लेनी चाहिए। सम्मेलन के अध्यक्ष श्री राममुगम सिंह ने कहा कि इस प्रवृत्ति से बनना का विधान लोकतांत्रिक प्रणाली पर से उठ जायगा। इस सम्मेलन में राजनैतिक दलों ने यह अनुरोध किया गया कि इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए वे मित्रकर एक आचार-संहिता बनायें।

गण १४ अक्टूबर को विधायक-मंडलों के अध्यक्षों के सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए लोकसभा के अध्यक्ष श्री नीलम संजीव रेड्डी ने कहा कि इस प्रवृत्ति से जनता-लोकतंत्र का विधास हो देगी। उन्होंने भी राजनैतिक दलों के नेताओं और जोड़नय में आस्था रखनेवाले लोगों से अनुरोध किया कि वे मित्रकर एक आचार-संहिता बनायें, जिसे ईमानदारी से अमली रूप दिया जाय।

बाबरू विधायिकाध्यय के उपकुलपति श्री गणेशमहकर ने आचार-संहिता द्वारा इस प्रवृत्ति को रोकने में आसंका प्रकट की है और

इसे रोकने के लिए कानून बनाने पर जोर दिया है।

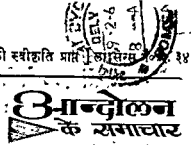
श्री जयप्रकाश नारायण ने विधायकों के दल-परिवर्तन को राजनैतिक भ्रष्टाचार बताया है। उन्होंने जनता से अनुरोध किया है कि वे ऐसे विधायकों को घेराव करके उन्हें पुनः चुनाव लड़ने को बाध्य करें।

श्री रं० रा० दिवाकर ने दल-बदल को मतदाताओं के साथ अन्याय बताया हुआ कहा है कि निर्वाचन-आयुक्त को दल-बदल विधायकों का खान रिक्त घोषित कर पुनः चुनाव कराने का अधिकार देना चाहिए।

श्री राजगोपालाचारी ने दल-बदल का स्वागत किया है। आचार्य कृपाशानी ने सामूहिक दल-बदल के पक्ष में तर्क देते हुए कहा है कि कुछ सदस्य अपने दल की नीतियों से अलग होते हुए भी अपने राजनैतिक जीवन को खतरे में डालने के भय से दल नहीं बदलते। लेकिन जब कोई पहल करता है तो वे सामूहिक रूप से उसके पीछे हो जाते हैं।

दैनिक 'हिन्दुस्तान टाइम्स' द्वारा दल-बदल पर विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं से राय माँगने पर स्वतंत्र पार्टी के अध्यक्ष प्रो० रंगा, स्व० डा० राममनोहर लोहिया, यामपंथी साम्बवादी श्री रामवर्ति और दक्षिण-पंथी साम्बवादी श्री मूषेस गुप्त ने दल बदल का पक्ष लिया है और इस प्रवृत्ति को प्रजा-तंत्र के लिए पोषक भी माना है। लेकिन जनसंघ के श्री बलराज मधोक ने सामूहिक दल बदल को एक अव्यवस्थित प्रवृत्ति माना है। श्री मधोक ने इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए सभी राजनैतिक दल के प्रतिनिधियों से अनुरोध किया है कि वे मिलकर एक आचार-संहिता बनायें। प्रजा समाजवादी पार्टी के श्री नाथ-पार्से ने दल-बदल को प्रजातंत्र के लिए खतरा माना है और इसे रोकने के लिए कानून बनाने पर बल दिया है।

पंजाब के मुख्यमंत्री श्री गुनगाम सिंघ और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चरण सिंह ने भी इस प्रवृत्ति को रोकने के लिए आचार-संहिता बनाने पर जोर दिया है।—'नम'



प्रखण्डदान : उत्तर प्रदेश का सीमांत जिला पिथौरागढ़ के अन्तिम प्रखण्ड तथा अनुमंडल घाटगुहा का प्रखण्ड तथा अनु-मंडलदान १५ अक्टूबर को घोषित हुआ। इसको शामिल करके इस प्रदेश में अब तक ९ प्रखण्डदान हो चुके हैं। इस प्रखण्ड में १३ गाँव हैं जिनमें से ८१ गाँव प्रखण्डदान में शामिल हैं। प्रखण्डदान में सम्मिलित गाँवों में भारतीय सीमा पर के १४ हजार फीट की ऊँचाई पर बसे हुए गाँव भी हैं।

—वेमाजी (असम) ब्याक के सुवर्णश्री अंचल के सर्वोदय, ग्रामदान तथा सरकारी कर्मचारियों का एक सम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में लक्ष्मीपुर जिला के उत्तराखंड प्रखण्ड में प्रखण्डदान-विधाक प्रसार की चर्चा हुई।

ग्रामदान : देहरादून जिले में दो और ग्रामदान मिले। प्रदेश में अब तक कुल ग्रामदानों की संख्या १५५४ की हुई है।

बलिया जिले के प्रखण्ड पट्टह में २२-२३ अक्टूबर के दो विशाल जनसभाओं से प्रखण्ड-दान का अभियान शुरू हुआ। इस ब्याक के कई गाँवों के प्रधानों तथा संरक्षक लोगों ने पोषणाध्य पर अपने हस्ताक्षर कर दिये हैं।

भू-वितरण : मध्य प्रदेश भूदान वसु पर्वद द्वारा प्रदत्त एक जानकारी के अनुसार गण माह मुरैना जिले की विवायपुर तहसील में ३ गाँवों के २७ भूमिहीन परिवारों में १,१३५ एकर भूमि का वितरण किया गया।

गुना जिले की अयोधनगर तहसील के एक गाँव में ११ भूमिहीन परिवारों में ६१ एकर भूमि बाँटी गयी। इसी जिले के मुंगायली तहसील के ४ गाँवों में १४ भूमिहीन परिवारों के बीच १०४ एकर भूमि का वितरण हुआ।

साहित्य-प्रचार : भू-वितरण के विषय में १६९,२८ पत्रों के सर्वोदय साहित्य की बिक्री हुई।

भूतान-यात्रा

भूतान-यात्रा में मिलने वाले अनेक अद्भुत दृश्यों का विस्तृत विवरण इस पुस्तक में मिलेगा।

सर्वे संकाय संस्था का मुख्यालय
साम्प्रदायिकता और राष्ट्र
 मुख्यालय : राममूर्ति
 वर्ष : १४
 १० पंचवट, १९७७ अंक : ६

साम्प्रदायिकता और राष्ट्र

इसकी और एक बर्तनितोपक रास के ये मानी नही होते कि उक्त रास के राज रास का मकर के भयना जाल न भवे। धर्म निरपेक्ष रास का मकर उक्त रास के हे को समी प्रभुको भी दिखान करता है, एक को नरकभद्राज काके हूरे को तपस्वती नही बरत और सुद रिती प्रभुव व पर को नही बरतना।

आज आज धर्मनिरपेक्ष के रूपके किसी और टन के राज को बात लेते तो आज वैदिक मास लेते ही कबेकभने बर मापे। हिन्दुमास में किसी और आंगन के बारे में सोचने का मतलब एक ही होगा कि हम एक दूसरे के मांग मांग होने का राजा पदों और नए दूसरी लालनाक बमबोरी होगी।

कल्याणकार का ली बहर दुसरे टन से वृत्त और लोको न भी पर कर बाव और इस तरह हमारे बीच में हिंदू, मुसलमान और अन्य धर्मधारणों के मूल्य मने हो गये, जो अपने आप में उल्लेखनीय साम्प्रदायिक हैं किसी सुविधा लीय थी। अन्ततः वे अपने आपको यही धरने हैं। ये अपने को राष्ट्रीय बन लकने हैं कबोके अतिरिक्त वे राष्ट्र के भीन ही धरने हैं। लेकिन इनकी राष्ट्रीयता के माने के नीचे भी आज आज इनको परस्पर देखने को तबतुद्ध दुसरी तो आज देखेंगे कि कल्याणकार एक निरपेक्ष साधारण चीज है क्योंकि पर हमारे देश की इतिहासी पंक्त को ही यह वे पाने को बलिष्ठ करता है।

यू कल्याणकार के मा भी हो उल्लेख करने में कमी नहीं लकी। चाहे वह साधारण, असाधारण हो उक्त में, पाद इस माति पर उक्त भाति के रूप में व और किसी भी बाने लमने आये, हमें उल्लेख साधन रहना चाहिए।

कल्याणकार एक नम और पूरा पैदा करनेवाली चीज है। आज की नयी दुनिया में उल्लेख किए कोई आए नहीं है। अगर हम अपने चारों ओर कल्याणकारी घेरे बनाते हैं हमारी उत्पत्ती नहीं हो लकी। पर फिर हिंदू और मुसलमान के बीच की समष्टि नहीं है बल्कि दूसरे पानी, पत्थर और लकीर बनाने की समष्टि ली है। एक बार अगर हमारे मीन पर कल्याणकार खेरा फल बरता है, तो हम नहीं बनते कि वह कहीं बाहर लाने रोम। और सब अपनी लकरी के किन्हीं भी खाने के पूरे होने की उम्मीद को ही छोड़ ही देना होगा।

दुनिया के दूसरे देशों में बलिष्ठकार की अन्तःकरण किन्हीं जैसे पैदा हुए उनमें और कल्याणकार में बहुत ही मिलती जुलती बाने मिलाने देखे हैं। कल्याणकार इत्यन्त बलिष्ठ नरक का किन्तुहासी रूप है। बलिष्ठकार के अन्तःकरण के मापे आये, पर हम देश लुके हैं। साम्प्रदायिक लकरी के मापन न बना दुसरोसे दार है, पर भी हम ही लुके हैं। हम हीको दुसराही का मकरधन अपने लक्ष्य न बाने किसी लकीने और लकने लकीना। उक्त लिखकर पर एक बारी और लोके के बानेबाने बरत है। लो आदमी की दुसरा की लकरी को उल्लेखनी है।

आज भारत के लोके में कल्याणकार के लकरीक तारे को कृष्ण का लिंग, लो पाद के भीन न फिर कानेकी लुकाकार की लकरीक हो लकीने, बलिष्ठ नर बारी दुनिया के किन्तुल अन्त बरु बरतना। सब दुनिया की नारी में भारत लोके गिर बाना।

— प. राजेश्वर लाल

प्रस्तुत धार में
 १४ नवम्बर : नेहरू खपती के अन्तःकरण पर हमने अपने देश में ऐसी से फल रही साम्प्रदायिकता की जड़ों को ब्यारनेकी औशिक्ष की है, कल्याण को प्रस्तुत किया है, सुशासन की दिशाओं का संकेत करने का भी प्रयास किया है। कल के धर्म-शास के उच्चात, आज के कल्याण के उच्चात, राष्ट्र और विश्व की किस सुविधा में रह रहे हैं, रहेंगे इनीको उल्लेख करने की चेष्टा की गयी है।—स०

इस अंक में
 बम, रास और लीक : अतिरिक्त २७
 नेहरू की नीतियों और अर्थशास्त्र की दुष्टि ६७
 मानवता का संकल्प : मूल्य की मानवता ६८
 एरि की समष्टि और लोकाय
 का लोका ६९
 कल्याणकार : लोके, लकरी और लोके ७१
 बलिष्ठ लोके लोके की बाने
 बलिष्ठ लोके १००
 एक लोके १००
 विवेक में : लोकायक लोके-
 १०० का ११ लोके का ११ लोके
 (एरि के लोके लोके के लोके)
 लोके-लोके लोके-
 लोके लोके लोके-१
 लोके लोके लोके

देश

३०-१०-६० : उत्तर प्रदेश के राक्षस मन्त्री ने प्रयाग में पत्रकारों को बताया कि सरकार प्रामाण्यताओं की बगौनी पर भूमिहीनों को बसायेगी।

३१-१०-६० : विद्रोही नागाओं ने सुदूर विराम की अवधि ३१ जनवरी '६८ तक के लिए बढ़ा दी।

१-११-६० : आज से आकाशवाणी पर विहापन का प्रसारण शुरू हुआ। नित्य ७५ मिनट के प्रसारण से सलाना ४५ लाख रुपये की आय होगी।

२-११-६० : भारत के शिक्षामंत्री ने कहा कि भारत में मंत्री बनने के लिए किसी राजनीतिक दल का समर्थन लेकर चुनाव जीतना जरूरी है, सिद्धित होना नहीं।

३-११-६० : मैसूर के मुख्यमंत्री ने कहा कि मायावी राज्य अगर देश की एकता के लिए सत्यानाह साबित हो तो उन्हें सत्तम कर देना चाहिए।

४-११-६० : पश्चिम बंगाल की संयुक्त सरकार के स्वास्थ्यमंत्री के त्यागपत्र देने से सरकार संकट में पड़ गयी।

५-११-६० : प्रधान मंत्री रूस की अन्तर्वर-क्रांति की ५० वीं वर्षगांठ-समारोह में भाग लेने मारस्को रवाना हुए।

विदेश

३०-१०-६० : मास्को (रूस) की घोषणा के अनुसार मानव-रहित दो अन्तर्िक्ष उपग्रहों में स्वचालित सम्पर्क और विच्छेद का प्रयोग सफल रहा।

३१-१०-६० : रूस द्वारा छोड़े गये दो उपग्रहों ने आपस में भिन्न-के बाद विदाई दी, और धरती पर सफुसल उतर आये।

२-११-६० : अमेरिकी राष्ट्रपति ने विपत्त-नाम सुदूर जारी रखने की घोषणा की।

३-११-६० : ब्रिटेन ने ६ सितम्बर '६८ को 'स्वाधी लैण्ड' को स्वाधीन करने की घोषणा की। 'स्वाधी लैण्ड' दक्षिण अफ्रीका के गणतंत्र से घिरा एक छोटा देश है।

जिस उद्देश्य से 'भूदान यज्ञ' के सम्पादन का परिवर्तन किया गया है, वह पूरा होता दिखाई दे रहा है। कुछ न्यायन लेकर यह पत्र सामने आया तो है, परन्तु कुछ रुढ़ियों से मुक्त होना अभी बाकी है।

प्रथम तो इसे सर्व-सेवा-संघ के मुखपत्र की सीमाओं में आबद्ध नहीं करना चाहिए। कितनी भी व्यापक क्यों न हो, फिर भी संघ एक संस्था ही है। संस्था का मुखपत्र जन-क्रान्ति का 'मैन ऑर्गन' नहीं बन सकेगा। क्रान्तिधारियों की जमात सर्व-सेवा-संघ रजिस्टर्ड संस्था से बाहर ही अधिकतर है, अतः मुखपत्र का यह वाक्य खटकने बैसा है।

द्वितीय, जब से मैंने 'भूदान-यज्ञ' का नियमित रूप से अध्ययन करना प्रारम्भ किया — पिछले आठ सालों से — तब से मैं देख रहा हूँ कि उनमें छपनेवाले लेखों के लेखकों का एक सीमित 'ग्रुप' है। उन्होंने चेष्टे प्रायः दिखाई देते हैं। खेल भी क्या, सर्वोदय-नेताओं के भाषण ही होते हैं वे! परन्तु समाज-परिवर्तन के सन्दर्भ में सोचनेवाले सैकड़ों लोग होंगे इस देश में, भले ही उन पर सर्वोदय का लेजुल न लगा हो। उनके विचारों को भी आमंत्रित किया जाय तो उससे न्याय-कृता ही आयेगी और मुक्त-चिन्तन के धितिव दिखाई देंगे। अग्यया सर्वोदय-चिन्तन का अर्थ विभिन्न विचारों का संघन न होकर एक स्वर प्रकार के 'डिप्लु सिस्टम' को खानना ही होगा। फिर पत्रकारिता का रक्ष्य प्रचारार्थक न होकर प्रकाशमूलक ही। यह तभी ही सकेगा, जब विभिन्न विचारों के 'शेड्यूल' एक केन्द्र पर पड़ेंगे।

—सर्वोदय-संघ-संस्था

जिला सर्वोदय मण्डल
पोस्ट बरया, जि० टिहरी गढ़वाल

४-११-६० : संयुक्त राष्ट्र महासभा ने ब्रिटेन से द० रोडेसिया के विपक्ष शक्ति-प्रयोग की खोरदार मौग की।

५-११-६० : अदन के राष्ट्रपति को क्रान्तिधारियों ने अन्दर कर दिया।

१३ अक्टूबर के 'भूदान-यज्ञ' के बीचों-घुट पर भी जयप्रकाश नारायण को सन् १९५६ में प्रजा समाजवादी दिखाना गया है। खालत में प्रजा समाजवादी पार्टी १९५६ तक नहीं बनी थी बल्कि १९४०-४८ में तो कांग्रेस से अलग होकर सोशलिस्ट पार्टी बनी थी और उसके कई वर्ष बाद १९५० के लगभग सोश-लिस्ट पार्टी व किसान मजदूर मंचा पार्टी (जिसके बहुत से सदस्यों की वर्तमान दल बदल करनेवालों के जनक कहना अधिक उपयुक्त होगा) का एकीकरण होकर प्रजा समाजवादी पार्टी बनी।

यद्यपि कम्युनिस्ट अधिनायकवाद की प्रतिक्रिया से प्रेरित होकर मार्क्सवाद के पंडित भी जयप्रकाश नारायण का १९५६ में हिंसक क्रान्ति के केवल उसी विकल्प की ओर प्यान गया जो मार्क्सने जर्मनी, इंग्लैण्ड आदि औद्योगिक देशों के लिए विधानवादी तरीक़ों द्वारा बतायी थी। अहिंसक सीधी कार्यवाही द्वारा क्रांति करने की सम्भावनाओं की तरफ उनका प्यान नहीं गया, किन्तु फिर भी १९५६ में जयप्रकाश बाबू को प्रजा समाजवादी कहना सही नहीं है।

—जीवारान

मिबिल ल्यान्डस, सुरादावाद

सन् १९५६ में भी जयप्रकाश नारायण को प्रजा समाजवादी दिखाने की इमारी दृष्टि पक्ष के चोखटे में फिट नहीं बैठेगी। हमने विचार-आरोहण की दृष्टि से उन्हें तबण समाजवादी, प्रजा : समाजवादी और नव समाजवादी माना था। ये तीनों कार्यकरण वैचारिक हैं न कि पार्टी-आधारित। —सं०

नयी तालीम

शिक्षा द्वारा समाज-परिवर्तन की संदेशवाहक मासिक पत्रिका
खालाना चंदा : छद्द ४०
सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
राजघाट, चाराणसी-१

हिन्दुस्तान की इयत्त ही रही थी। होना तो यह चाहिए कि छोटी-छोटी जातिवालों को सम प्रकार की मदद करने के लिए बड़ी को दौटना चाहिए। बड़े लोग पारमार्थिक नहीं रहते हैं, वे बड़े लोग भी बड़े स्वार्थी होते हैं। इसलिए उनका द्वेष करते हैं। इसका उपाय यही है कि बड़ी जातिवाले छोटी जातिवालों के साथ रहें, प्रेम करें, उन्हें लोभमं दे, प्रेम से उन्हें अपनी समीप का दिखा दें।

ऊँची जाति के लोग यह समझेंगे और उसके अनुसार चलेंगे तो उनके लिए आदर भाव फिर से बढ़ेगा। फिर वे बचेंगे और उससे समाज भी बचेगा।

इस भेद के कारण समाज का विकास आगे नहीं हो सकता। सारा समाज एक शरीर के समान होना चाहिए। शरीर में अवयव होते हैं उनके अलग-अलग काम होते हैं। हाथ, पाँव, आँख, कान इत्यादि का काम अलग-अलग होता है। उसमें हम ऊँच-नीच नहीं मानते, भेद नहीं करते। सबकी समान चिन्ता करते हैं। पाँव में काँटा लग गया तो हाथ उसकी सेवा में दौड़ते हैं। कान में दुख होने से आँखें रोती हैं। एक लड़का कान दुखने के कारण रो रहा था। मैंने उससे पूछा कि कान दुखने से आँख क्यों रोती है? वह मेचारा क्या बचाव देता? कान के साथ आँख की तीन सद्गुणभूति होती है। वे सारे अवयव एक-शरीर-में एक रहें होकर-रहते हैं। अपना अपना अलग-अलग काम करते हैं। सब एक देह के अवयव हैं, यह बात वे भूलते नहीं। इसलिए यह शरीर चर रहा है। यही दृष्टान्त समाज पर लागू होना चाहिए। समाज के सुखी अवयव दुखी अवयव की सेवा में दौड़ने चाहिए। जिस समाज में दुखी के लिए सद्गुणभूति होती है वह समाज जिन्हा समाज है, बर्तों ऐसा नहीं है वह समाज जिन्हा नहीं है।

तुलसीदास ने कहा था कि सारा त्रिगुवन मेरा है। परन्तु उन्होंने लिखा तो हिन्दू भाषा में; क्योंकि मानव की शक्ति मर्यादित रहती है। मानव का शरीर मर्यादित शक्तिवाला होने के कारण सेवा मर्यादित ही की जा सकती है। परन्तु शक्ति मर्यादित नहीं रहनी चाहिए।

कोई मेरे कर्तव्य क्षेत्र से बाहर गले ही हो, परन्तु अगर यह मेरी सद्गुणभूति के ओर विचार के क्षेत्र से बाहर हो जाता है, तो मैं अपार शक्ति खोता हूँ। मेरी शक्ति मर्यादित हो जाती है। चाहे सेवा का क्षेत्र मर्यादित हो परन्तु भावना वा और सद्गुणभूति का क्षेत्र अमर्यादित होना चाहिए। मनुष्य को मनुष्य के नाते ही देखो। नहीं तो हिन्दू धर्म की जो आत्मा है, उसे हम खोचेंगे। हिन्दू धर्म कहता है कि सब में एक ही आत्मा वास करती है। हिन्दू धर्म एक ऐसा विद्यालय धर्म है कि वह किसी भी तरह का संकुचित भाव नहीं रखता है। यदि हम इस बात को ध्यान में नहीं रखते हैं तो हिन्दू धर्म की बुनियाद को ही खोते हैं। हमारे शास्त्रों में कहा है कि 'एकं सद् विद्याः बहुधा वदन्ति' हिन्दू धर्म कहता है कि सब एक है, परन्तु उपासना के लिए अलग-अलग हो सकता है। उन्हीं 'मूर्तः बहुधा वदन्ति' ऐसा नहीं कहा। इसलिए ऐसी व्यापक शक्ति हो तो आप हिन्दुओं की सेवा कर सकते हैं।

प्रश्न: अगर किसी एक धर्म का दूसरे धर्म पर आक्रमण होता हो तो क्या उसको संगठित नहीं होना चाहिए?

उत्तर: यह सवाल हवा में नहीं पूछा गया है, जमीन पर पूछा गया है। आज हमें डर है कि यद्यपि हमारी संख्या बड़ी है, फिर भी सुसलमान हमें खतरम करेंगे, और सुसलमानों को भी

हमसे पैसा ही डर है। इसलिए पाकिस्तान की आमदनी का 50 प्रतिशत और हमारी आमदनी का 80 प्रतिशत सेना पर खर्च होता है। यह सौदा दोनों को बहुत महँगा पड़ रहा है। हम दोनों एक दूसरे के खिलाफ मग्न-वृत्त रहना चाहते हैं। वैसे भौतिक दृष्टि से तो चलवान नहीं हैं, लेकिन अमरीका और रूस जैसे भौतिक दृष्टि से चलवान देश भी एक-दूसरे से डरते रहते हैं। एक दूसरे के डर से दोनों शाखाएँ बढ़ते हैं। डर से डर पैदा होता है। जो गुण हम अपने हृदय में रखते हैं वह दूसरे में पैदा होता है। यदि किसी जानवर के सामने भी हम बिना डरे हुए जायें तो हमारी आँखों में निर्भयता देखकर वह हम पर हमला नहीं करता। इसलिए आज हमारा डर ही हमें डरा रहा है।

अमेरिकावाले समझते हैं कि रूस के सच लोग बदमाश हैं और रूसवाले समझते हैं कि अमेरिकावाले सब बदमाश हैं। इसी तरह पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के लोग एक-दूसरे के लिए पैसा ही खयाल रखते हैं, लेकिन यह गलत विचार धारा है।[†]

—चिनोया

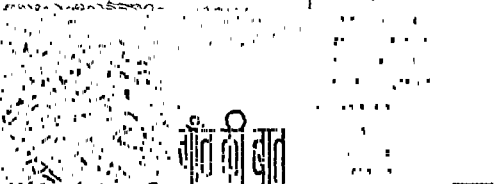
● २४-७-५१, सेलम, मद्रास.
† छलत्रकः १-५-५३

मानवता का भविष्य : भविष्य की मानवता १

आज अपने देश में एक अजीब परिस्थिति मनी है, और जो घटना बगैर बगैर साम्प्रदायिक उपद्रवों के रूप में लगी है, वह इस परिस्थिति का हिस्सा है। मैं चाहता हूँ कि आप इन घटनाओं से बरा पीछे हटकर नजर डालें और जो परिस्थिति पैदा हुई है, जिस खतर से आज हमारा देश गुजर रहा है, उसको समझने की कोशिश करें। यह खतरा हमारे अन्दर से पैदा हुआ है, यह खतरा हमारे दिमागों में है। भारत का बचारा यहाँ का इतिहास बताना है कि भारत के

दुश्मन भारत के बाहर से नहीं आये, अन्दर से पैदा हुए। जब हम एक थे, तो सिक्खर के सेनापति हेन्दुकुश को भी पराजित करके यहाँ से नीटाया गया, और जब हमारे आसप में शत्रु है हुए, हमारे अन्दर दूर हुईं, तो जो आवा हमें सात बारकर शत्रु, छद्म-पाठकर गदा। उन्ही तरह आज हमारे घाँव में, अपने देश में हम गुड़ ही अपने दुश्मन बन रहे हैं। जैसा कि मैंने ऊपर कहा, दुश्मन हमारे दिमागों में पैदा हुआ है। हमारे दिमागों में आज ऐसी एक इच्छा

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १० नवंबर, १९५०



शौच की बात

10-11-70 को अतिथि 34-1-70 (— १२-१२-७०)
 इस संक में स्वल्प और परिपुष्ट किए गए दर्शन के।
 अतिथि 34-1-70

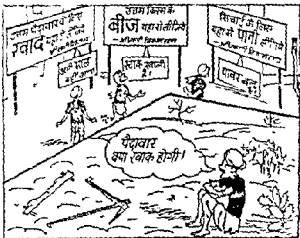
१० नवंबर, १९७०
 पृ. २, अंक ७ [१८ पैसे]

मन हल्का कर रहा हूँ

पिय रामदासजी,

‘शौच की बात’ पाठ हो पठता हूँ और कभी-कभी मन में याता है कि अपनी भाव को आपको लिखूँ लेकिन मेरी-बादी को डराने में इस तरह चैनला रखा है कि चाहते हुए भी लिख नहीं पाता। आज किसी तरह थोड़ा समय निकालकर लिख रहा हूँ। आप कहते कि क्या अपना रोना रोना है पर क्या कैसे? अपने घर को बोलेगी उसीको तो मादगी लिखेगा! तोबां बा कि पिछले साल के मुझे के बाद इस सात दम मन अनाज घर में आ जायगा, लेकिन सोचना किमो करन नहीं आया। शेकी भयवान् की हवा की मुहताज हो मो ही, अब भयवान् से बचकर ब्लाक को मुन्ताजो हो गयी। आपकी निरवास नहीं होगा, बंदी मुक्तिजल से राम-लेखनी की गुणामर करने लखानुप बन थोड़ा बोज लाया बा। मुना बा इस धात में आज ही धान होता है, और हृषिका के धानो का गुलाम भी नहीं रहता। लालत लगी, ले बाया। हूँ के पासवाले घर में खोला। मोषा, लखरत पड़ेगी तो थोड़ा-बहुत पानी भी दे हूँ। बोले की को तो रिया पर न पुते साद दे सना, न दवा लिखक मन्ना। आप पापद माँगे नहीं, लेकिन मैं तय बह रहा हूँ कि साद और दवा के लिए कुछ मिनाकर

में तरह बार ब्लाक होता हूँ। पलो के बार-बार मना करने पर भी पडोम के भास्तर चाहूँ से रूपसे उचार लिये। रोना पूरा धाम होगा तो साद और दवा का दाम निकल जायेगा, और रुपये चुका हूँगा। लेकिन नहीं मिली साद और नहीं मिली दवा लिखने की समीन। प्रामातंत्रिकी और ब्लाक के बाबू लोग कहते रहे कि मिलेगी, मिलेगी, पर नहीं मिली, नहीं मिली। घर का बूझ-कचरा जो डाल दबा डाल दिया। लखेटबाते पाद गीब में बेचन को लोपो को मिली—सभासमिजो को, और यकील चाहूँ को, जिन्होंने डमी सालसे सेना शुल की है। पहले सेठ बेटाई पर देते दे, इन बार बेटाईसारी को बैदसाल-



परेशान हूँ

कर दिया और ५-६ बीघे में अपना धान रोपवाया। हम कई छोटे खेतों इन लोगों से भी मिले, लेकिन काम नहीं बना। ये लोग मशीन-वर्ग रह कर ही से मँगवा लेते थे, और अपना काम करके छोटा-देते थे। माँगने पर कुछ-न-कुछ कह देते थे। हम लोग सिवाय कहते थे, और करते क्या? इसी तरह कहते-कलपते दिन बीत गये। एक दिन एक अंग्रेज साहब और एक देशी बाबू मेरा कुआँ देखने आये। सड़क से थोड़ी ही दूर पर है। सीमेंट की रिंगें देकर नया कुआँ गर्मी में बनाया था। मेरे बड़े पिताजी-कूएँ पर मौजूद थे। आते ही बाबू ने पूछा : "यह खेत-किसका है?" पिताजी ने कहा : "हमारा।" तब अंग्रेज साहब ने-सवाल किया : "ऐसा क्यों हो गया?"-पिताजी ने-जबाब-दिया : "सरकार, ब्लाक का बीज था। न खाद मिछी, न-दवा। इसमें रोग लग गया। पूरा सफ़ेद हो गया है। पुराना धान तो कुछ-न-कुछ हो भी जाता था।" कुछ-दूर-खड़े-खड़े देशी बाबू और अंग्रेज अंग्रेजी में बातें करते-रहे-उसके-बाद-चले गये। पिताजी ने घर चलकर कुछ-खा-पी सेने को कहा, लेकिन रुके नहीं।

मेरे ही नहीं, कई लोगों के धानका यही हाल हुआ। २२ घर के गाँव में कुल ८ घर के पास खेत है। बाकी मजदूर हैं। आठ में सिर्फ सभापतिजी और वकील साहब की खेती अच्छी है, और हम ६ लोग अपनी किस्मत को रो रहे हैं। गाँववाले कहते हैं, "कुछ-पढ़े-लिखे तो तुम भी हो।" मैं सोचता हूँ कि पढ़ाई-लिखाई भी सभी काम आती है जब पैसा होता है, और पहुँच होती है।

अब करना भी क्या है? आपको लिखकर मन हल्का कर रहा हूँ। क्या कभी इस मुसीबत का उपाय भी निकलेगा? आपका—रामगुलाम

प्रिय श्री रामगुलामजी,
आपका पत्र मिला। पढ़कर बहुत दुःख हुआ। आपने लिखा, बहुत अच्छा किया। आपका ही हाल न जाने और कितने छोटे खेतों का हुआ होगा! आपने हाल में यह भी जखर सुना होगा कि उत्तर-प्रदेश में इस बार जितने लोगों ने सकर बाजरा बोया था वह सब जहरीला निकल गया। खा लेने पर पशु और आदमी दोनों के मर जाने का खतरा है, इसलिए सरकार कह रही है कि खड़ी फसल खेत में ही जला दी जाय। कह देने में सरकार का क्या जाता है, लेकिन सोचिये हजारों किसानों के मन पर क्या बीतती होगी। यही क्या, अनेक बातें हैं जो किसान का दिल और खेती की कमर तोड़ देती हैं।

रामगुलामजी, इसका एक ही उपाय है, और वह है गाँव-गाँव का सगठन। गाँव में ही बीज का गोदाम रहे, खाद रहे, दवा रहे। ग्रामसभा की अपनी पूँजी हो, और ग्रामसभा गाँव के विकास की पुष्टि जिम्मेदारी ले। विनोबाजी ग्रामदान में ये ही बातें तो कह रहे हैं। इनके सिवाय दूसरा उपाय दिखायी नहीं देता। गाँव की रक्षा इगोमें है कि वह एक होकर अपने पैरों पर खड़ा हो।

इसी तरह समय-समय पर अपनी और गाँव को बात लिखा कीजिये।
आपका
जय जगद्व।
मन्नादेव

भरोसे की घात

अभी उस दिन की-बात है। हम लोग वस से सफर कर रहे थे। बगल में बैठे हुए एक महात्मा ने अपने दोष के विधायक से, जो उनके पड़ोस में ही बैठे हुए थे, पूछा "ये ग्रामदानवाले रोज हमारे गाँव में चकर लगा रहे हैं, भूमि का बीसवाँ हिस्सा माँग रहे हैं। गाँव-स्वराज्य तथा गाँव-सरकार की बातें करते हैं। मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता कि ये क्या कहना और करना चाहते हैं?" विधायक महात्मा ने उन्हें समझाया, "भाई, यह तो अपने देश की संस्कृति है

कि दान और धर्म द्वारा लोगों की मोह-वृत्ति पर अंकुश लगाया जाय। आप लोग तो जानते ही हैं कि ऋषु के समय तक मोह-मुक्त होने के लिए गो-दान आदि कार्यों की प्रथा है। आज देश में जो भ्रष्टाचार तथा तबाही फैली हुई है उसकी जड़ में स्वार्थपरता है। उसे ही दूर करने के लिए विनोबा ग्रामदान द्वारा दान की सतत धारा चलाते रहने का प्रयास कर रहे हैं। इसके द्वारा देश ही नहीं बरिफ दुनिया की समस्याओं का समाधान निकल सकता है।"

गाँव की बात



एक दूसरी नमस्कारवाड़ी

[बिहार में भूमिगत जिले के नवाबगंज इमरिया एवं सिमडा पंचायत में नमस्कारवाड़ी की तरह ही सृज-भाट की कारंवाईयाँ हुईं। उनके पीछे सोपन और दमन की एक लम्बी बटानी है। हमारे एक स्थानीय मित्र श्री स्वामिधुन्दर प्रसाद शुभ ने उन स्थानों पर जाकर बरिच की। सीपी से मिलकर दुर्घटनाओं की पूरी जानकारी प्राप्त की। 'शॉक की शक्ति' के पाठकों को सेवा में पुरी की पूरी जानकारी हम पेश कर रहे हैं। दो अर्थों में पुरी होनेवाली इस दुस्तरी नमस्कारवाड़ी की रिपोर्ट में जो सचाय सामने आयेगा उम्मा जवाब क्या है? क्या सचमुच से उसके मुलभाव का रास्ता निकल सकता है? निकलना चाहिए जल्द निकलना चाहिए। लेकिन अभी तो हम रिपोर्ट पढ़ें, स्थिति के पूरी जानकारी हो जाने के बाद इसका जवाब ढूँढने की कोशिश करने। —ए-०]

नवाबगंज में भूमिगत सिंह का कामच० है। उस कामच से करीब एक फालग की दूरी पर रामनगोना सिंह का कामच और नदी के पार भईया टोला के करीब रायबहादुर रघुवरा नारायण सिंह एवं रामचन्द्र सिंह का कामच है। सिमडा में मेगा सिंह का कामच है। कामचवालों के पास कामच की जमीन है। सिमडा को छोड़कर वहाँ के करीब मजदूर किमान उनके वेतों में काम करते हैं। कामचवाले परम्परागत नियमों के अनुसार मजदूरी एवं विमावी का दमन एवं सोपन करते हैं। कुछ उदाहरण :

विद्यले सात की शक्ति .

- नवाबगंज निवासी श्री मुकुन्दर भट्टल गत साल मछली मार रहे थे। बुधेश्वर सिंहजी ने मछली मंगा। नहीं देने पर श्री सिंहजी ने मछली की मुट्टी चढ़ाई की।
- श्री मूढ़ मछल की पत्नी सिंहजी के वेत में पाच काट रही थी। वेत रामनिहारी सिंहजी का था। उन्होंने पास जादने से मना किया और माछी-मछलीव किया। इसपर भीड़ी बात बची और निहारी सिंहजी ने उसको शाही बीचघर बेदुस्ती के साथ पीटा। वह बीचघर गर्भवती थी उसका गर्भ गल हो गया।

● 'कामच' वाली खुद सेवी कमानेवाले।

● श्री योगेन्द्र सिंहजी दुर्घमठल से दूध लेते थे। सयोग से एक दिन गाभ नहीं लगी और सिंहजी को दूध प्राप्त नहीं हुआ, इसपर सिंहजी ने मछलीजी की पीटाई की।

● जाबुन भगत हुकानदार है। सिंहजी उनके यहाँ उधार सोदा खाते थे। एक उधार का लकादा करते पर सिंहजी ने भगतजी को कपमानित किया, मारा।

● चाँदी ठाकुर सिंहजी के यहाँ नीकरी करते थे। किसी कारण चाँदी ठाकुर ने नीकरी छोड़ दी तो उनकी मिट्टी ने पीटा।

● मजदूरी को कम मजदूरी दी जाती थी। जनानों जन को खात आना रोज और भई की खात आना रोज एवं टीपन पाव पाव। नवाबगंज के मजदूरी ने मजदूरी बढाने की मांग की। मास्त्रिने ने मजदूरी बढाने से इनकार किया, तो लोगो ने काम करना छोड़ दिया। सब मास्त्रिको ने भईया टोला से मजदूर लाना शुरू किया और उन लोपो का काम चलने लगा। नवाबगंजवालों के मना करने पर श्री भईया टोलावालों ने काम करना नहीं छोडा। इसके बाद भईया टोला में भई कापड हुए।

—मिचारी मण्डल देवन मण्डल के लडके को वेत के बिनासे से भैस लेकर जाते समय उसे श्री रामनवम सिंह ने मारा।

—रामादेव राय को लडकी को भईया टोला के बासाभवाले श्री रामउदगार सिंह ने मारा।

—आला को जमीन को साहायाने ने खरीदा, बिमवर भईया टोलावाले ने निकम्मे लिखाया था। इस जमीन को कबाला खरीद के बाद भी भईयाटोला से खीन लिया।

—भईया टोला के बासाभवाले दुल्होय सिंह ने पिछले साल रामादेव राय को जमीन रुपये का बावव दिया और उससे एक की खया बमूल किया।

—हालो मिची से रामनवम सिंह ने जमीन का ब्याना धार हो रुपये में किया। खया ले लिया। लेकिन जमीन कवाला नहीं किया व खया ही लौटाकर दिया।

—भूजगी मिची सायना बोसा पर उधार सिंह एवं दुल्होय सिंह के यहाँ काम करता था, साडे तीन मन खयाव सिंहजी ने दया लिया।

● 'बासा' वाली दिन जेठो के सेत घर के धारी दूर हैं, उनको वेत पर राते की धाकती।

—पिमूल सिंह ने महेन्द्र मंडल के हाथ ११४ रुपये में जमीन को बिक्री किया। रफया लेकर सेत जोतने के लिए दे दिया लेकिन कवाला आज तक नहीं किया।

—इस वासा पर भी मजदूरी जनानी को आठ आना रोज सूखा तथा मर्द को आठ आना एवं तीन पांव सत्तु दिया जाता था इसलिए इन लोगों ने भी मजदूरी बढ़ाने की मांग की। मजदूरी नहीं बढ़ाने पर काम बन्द करने का प्रस्ताव वैसाख मास में रखा। लेकिन संगठित रूप से यह काम नहीं हो सका, छिटपुट रूप में हुआ। एक दिन श्यामदेव राय के भारकत श्री पबित्तार सिंह ने धारह आना रोज पर जनानी जन को चलवाया लेकिन शाम को आठ आना ही दिया।

—नया टोला के पास भी जमीन वासावाले की है। उस जमीन से मिट्टी लेकर घर में डालने पर वासावालों ने गालियाँ सुनायीं।

‘इस प्रकार शोषण और दमन का कार्य वासावालों की ओर से अनेक तरीकों से चलता रहा। और हमलोग भूक होकर सहते रहे।’ ऐसा ग्रामीणों ने बतलाया। राय बहादुर रघुवंश बाबू का कामथ पास में ही पड़ता है। उनके यहाँ मजदूरी जनानी को आठ आना और दिन का भोजन देते हैं, मर्द को आठ आना तथा दिन-रात दोनों समय का भोजन भी देते हैं। वासावाले अपने नौकरों को आठ रुपया महीना, ग्यारह पैसेरी अनाज—जिसमें चार माह के लिए शकरकन्द भी नापकर दे देते हैं। कभी-कभी सस्ते गल्ले की दुकान में मिलनेवाले बाजरे की दर से जितना अनाज देना होता है, उसकी कीमत जोड़कर दे देते हैं और कहते हैं कि सस्ते गल्ले की दुकान से अनाज ले लो। रायबहादुर के कामथ पर ऐसी बात नहीं है। वहाँ दस रुपया महीना, ग्यारह पैसेरी अनाज एक माह में दलहन और एक माह में अनाज तथा एक सेर नमक दिया जाता है। वासावाले शकरकन्द, जौ, खेड़ी ही मुख्य रूप से देते हैं। इस पर लोगी ने काम करना बन्द कर दिया। कुछ मजदूर औरतों के साथ वासावालों का रिश्ता गलत ढंग का बना हुआ है। इसलिए भी ग्रामीण शून्य हैं।

इस साल की कारवाँ :-

● बकरी के झगड़े में दहोगी मंडल की माँ को इस बेचूरी के साथ मादा कि उसके दाँव टूट गये। इस पर भदैया टोला, नवाबगंज, मिलकी, इमरिया एवं तिमड़ा आदि के लोगों

की पंचायत हुई जिसमें वासावाले मिहजी ने गलती स्वीकार की और इलाज के लिए कुछ पैसा देने का वादा किया। लेकिन मिहजी ने रुपया नहीं दिया और आपसी मतभेद बढ़ा।

● चांदपुर दीरा के एक लड़के को घास काटने पर मारा-पीटा गया। मोहन मंडल का बकरा एवं कंबूतर लोग मारकर खा गये। इमरिया वाले बलदेव मंडल को नाजायज ढंग से पीटा गया। सिधु ठाकुर के साथ जमीन सम्बन्धी झंझट वामावालों से हुआ। गिपटारा पंचायत के जरिये करना चाहें, लेकिन लोग विफल रहे। सिधु ठाकुर तथा सभी परीशान लोगों ने कम्युनिस्ट नेता वज्रगं सराफ को इसका न्याय करने का आग्रह किया। मजदूरी बढ़ाने की मांग इस जमाने के अनुमार ठीक ही थी। सराफजी ने इस मांग को उभाड़ा। बीती बातें दुहराई गयीं, उचित न्याय के लिए हिंसा के रास्ते पर चलने को बरख समझायी गयी, लोगों को उत्तेजित किया गया, विश्वास दिखाया गया कि तुम लोगों को शोषण और दमन से मुक्ति तभी मिल सकेगी, जब उनके लिए मर्घ्य करोगे।

गाँवों में बैठके हुए हैं। लोगों को संगठन बनाकर मर्घ्य की ओर बढ़ने का विचार समझाया गया। लोग आतंकित तो थे ही, सिर्फ नेतृत्व का अभाव था वह मिल गया। वज्रगं सराफ ने लोगों को समझाया कि वासावालों ने आपके बाप-दादों को ही जमीन हड़प ली है, आपके बाप-दादों तथा आप लोगों का शोषण और दमन करके उनसे बेगार कमवाया है। अब वह जमाना चला गया। आप लोग संगठन बनाकर उचित मजदूरी की मांग करें। आपको सरकार भी सहायता करेगी। इन विचार से लोग प्रभावित हुए और लोगों ने संगठन बनाने प्रारंभ किये। लोग जब संगठित होने लगे तो उनको हिंसा का मन्त्र दिया। कुछ लोगों ने विरोध किया तो उनको भी धमकाकर इस ओर लाया गया।

जब पुरी तरह हवा अनुबूल बन गयी तो उन लोगों को छाठी-माला लेकर जुलूस के साथ नारे लगाने हुए एक मना में आने के लिए कहा गया। निश्रय के मुताबिक दिनांक ५-१-६७ को भदैया टोला, चांदपुर दीरा, नवाबगंज, मिलकी आदि के लोग ‘माओत्से तुंगः जिन्दावाद’, ‘चाउ एन लाईः जिन्दावाद’, ‘कम्युनिस्ट पार्टीः जिन्दावाद’, ‘वज्रगं सराफः जिन्दावाद’ के नारे लगाते हुए नवाबगंज पहुँचे। महिलाएँ भी इस जुलूस में काफ़ी संख्या में थीं। वामावालों के काम ठप हो गये।

(प्रसन्नः)

हृदय-परिवर्तन का दस्तावेज

विनोबाजी के समस्त आत्म-समर्पण करनेवाले २० बागियो (बाकुओं) में से १६ छूट गये, ४ को आश्रम कारावास की सजा मिली, वे केन्द्रीय कारागार प्वालिपर के बन्दों हैं। उनमें एक श्री लोकमनजी के धनकाया के पुत्र बिन :

२७-९-६७ . आज श्री लोकमनजी को प्वालिपर जेल पर लेने गया। सड़के बाह्र बजे जेल के मुख्य-गेटवे में मुझ से कहा कि अभी ९ बजे में श्री लोकमनजी को आपसे सुपुर्न कर देना। ९ बजे जेल के गेट बाहर वारंट ऑफिसर लॉर्ड वेकर आया और मुझ से पूछा, "मैं श्री लोकमनजी को आपके सुपुर्न करता हूँ, आप इन्हें १० अक्टूबर को पुन १२ बजे दिन में जेल पहुँचा देंगे।" वारंट ऑफिसर ज्योति लोखमनजी को छोड़कर ऐसे ही लोकमनजी ने मुझसे कहा— "दादा, मैं आप से आज्ञा में हूँ, जैसा आप कहेंगे वैसा मैं करूँगा। जनरल साहब (मेजर जनरल श्री मनुमान सिंह) से भी मैंने यही कहा था और पुत्र काया (विनोबा) से भी यही कहा था और जीवन में उसका पालन करेगा।"

मैंने लोकमनजी से पूछा, "आपकी क्या इच्छा है।" उन्होंने कहा, "पहले मैं अपनी बहन से मिलना चाहता हूँ, उसके बाद अपनी माँ से मिलूँगा।" हम दोनों पहले प्वालिपर गये, जहाँ उनकी बहन रहती है। उनमें विवाह पर पहुँचा तो बहान, भाँती-भाँटि आदि देखते ही दौड़ आये। बहन बड़ प्यार से मिली और द्रवित हो गयी। हम दोनों ने वही भोजन किया। भाई-बहन का यह मिलान बहन के घर २० घण्टा बाद, १३ बर्ष बागी वेप में प्रगल्भ में और ७ बर्ष जेल में रहने के बाद हुआ।

मुझ धर्म के बाद प्वालिपर में ही भाई और बहन माँ में मिलने हम दोनों गये। उनका निवास हममें से किसीको मान्य नहीं था। बहन के यहाँ भाँटा बीमार था, इसलिए वे हम लोगों के साथ मकान तक नहीं जा सके। हम लोग बसबल पहुँच रहे थे। इतन में कुछ विद्यार्थी लोकमनजी को देखकर दौड़ आये, और बिपरत गये। पुछने लगे, गुलजी ! पुजारीजी ! आप कब भुटे ? क्या खाते ? ये विद्यार्थी प्वालिपर जेल में विद्यार्थी-जादो-लन के समय लोकमनजी के साथ बाकीको सजा करते थे, तथा आन-बधाई दिया करते थे। इनसे विद्यार्थी बड़े ही

प्रभावित थे। उन्होंने मैं से एक विद्यार्थी से हमें लोकमनजी की माँ से घर पर पहुँचा दिया।

माँ देखते ही रो पड़ी। कहने लगी, मेरा 'निकर' भा गया। और अपने हृदय से श्वा मिया। मैं-वेते वैदरर बर्चा करते लगे। बड़े भारर से लोकमनजी अपनी माँ को सात्वता दे रहे थे। माँ रो-रोकर, विनोबा को पार कर रही थी; उनके लिए आभार प्रवट कर रही थी, और समिति के लोगों को आनीय दे रही थी। कह रही थी, "मेरा निकर मेरी सेवा करेगा, और अंतिम धस्कार करेगा। वह विनोबा की ही श्वा है।"

माँ से मिलने के बाद हम लोग बस स्टेशन पर आये और एन्टर से बस द्वारा ४ बजे मिण्ड आ पहुँचे, रास्ते में लोकमनजी रामायण की चौराहवाँ आदि सुकाले और अग्रवृत्त बर्चा करते रहे। बस के ड्राइवर ने कहा, "बस में टुक बसाता था तो आपने मेरा टुक रोका था और जलत में ही भोजन कराया था। उन दिन आपके बहुत धर लगया था। आज नहीं लगता।"

पुजारीजी ने बताया "याँ का दिया हुआ मेरा नाम निकर है, स्थूल का नाम विद्याधरक दीक्षित है, और लोकमन हमारे अठार गैर के लीपर मानमिहारी का ररा हुआ नाम है। हमारे जगज के साथी और उम शीत की जनता हमें पुजारीजी कहते हैं।"

२-१०-६७ आज माथी जनती पर बम्बल घाटी शान्ति समिति की आर से आयोजित गोष्ठी में नातेज के सिस्वा बने के लोगों के बीच श्री लोकमनजी न रामायण पर बर्चा की, लीज उनमें प्रभावित हुए। उनमें से एक शिक्षक ने बागी बनने के बरखों बना उकातीय सुपुर्नभाँपर पार बर्चा करती घाटी। लोकमनजी ने कहा, "पह विद्याधर मैंने विनोबाजी से मिलने के बाद लडा ही है। वह बर्चाई अब हम नहीं करपा चाहते।"

२-१०-६७ दिन्की के माथी शान्ति प्रविष्ठान के सागिणी से बावबोध हुई—

प्रल - आप ४ माथी आरम कारावास में है, आपने कहा जाम कि एक को जेल भगतनी घतेगी, रोप ३ छोड दिने ज़ायिगे, लो दो में से जाम बिसे प्रलन करेगे ?

उत्तर : जेल भगतना।

प्रल : जगर आपको औकत भर जेल में ही रहना पड़े, लो क्या बम्बल घाटी शान्ति समिति के बारे में भार जगज सोचेंगे ?

उत्तर : मेरा भाई ही यदि समिति के स्थान पर होता, तो क्या मैं उसे भाई न मानता ?

प्रश्न : विनोबाजी ने आत्मसमर्पण के बाद आपको जेल में जाने का आदेश दिया और आप सभी छूट नहीं पाये, इसके आपके मन पर क्या प्रभाव पड़ा ?

उत्तर : यह तो एक अच्छा 'विजनेस' रहा। २० ने समर्पण किया उसमें १६ छूट गये तो लाभ ही लाभ रहा।

श्री लोकमनजी की जन्मभूमि बाह से ७ मील की दूरी पर है। उनके गाँव के सया सम्बन्धी लोग बड़े प्यार से काम तक मिनते रहे। समिति की बैठक में लोकमनजी ने अपने बच्चों के शिक्षण के सम्बन्ध में चर्चा की, उस समय बैठक में उपस्थित श्री पूनचन्द्रजी जैन ने आश्वासन दिया कि मैं राजस्थान मजदूरी सेवा संघ की ओर से संचालित शिवदामपुरा अभियान में उनके बच्चों को प्रविष्ट कराने का प्रयास करूँगा।

६-१०-६७ : ७ बजे की बस से हम लोग बाह से मिण्ड के लिए रवाना हुए। बस स्टेशन पर उनके गाँव के बिरादरी लोग एवं हरिजन तथा बन्धु मित्रों का आगमन हुआ।

मिण्ड के रास्ते में चम्बल नदी पार करनी पड़ती है। चम्बल पार आते ही श्री लोकमनजी ने कहा, "यह हमारी संमिनी है। १३ वर्ष इसी चम्बल घाटी में चम्बल मेया की गोद में रहा हूँ। आज स्नान-पूजा यहीं पर करने दीजिये।" हम दोनों उत्तरे। नहीं स्नान किया। उन्होंने यज्ञोपवीत—जो उनके परिवार के भाई ने दिया था, पहना और ईशु का ध्यान किया। जलपान किया। चम्बल पार प्रणाम करके चले गये। २ बजे मिण्ड पहुँच गये।

७ व ८-१०-६७ : आज अपने परिवार में रहे। दोनो दिन २ घंटे का कार्यक्रम हमारे छात्रावास में रहता था। उस समय नगर के लोग आया करते थे। प्रश्न का उत्तर सूत्र में दे देते थे। श्री का नाम की कविज के एक शिक्षक व प्राचार्य आये। एक शिक्षक ने प्रश्न किया—"आपने क्यों बंदूकें छाल दी ? देश में इस समय अंधकार है, उन्हें गोले से उड़ाना चाहिए था। हम भी आपके साथ होते।" लोकमनजी ने कहा, "बुद्ध है मास्टर साहब ! आप क्या कह रहे हैं ? क्या गोली से अंधाकार दूर होगा ? कितने अच्छे लोग भी तो गोली से मरते। क्या उसका प्रायश्चित कर पायेंगे ? विनोबा का विचार अच्छा है, पढ़ो और मानो।"

९-१०-६७ : आज प्रातः ६ बजे एत० वी० मिण्ड से मिले।

हृषि समाचार

शारवती सोनोरा

गेहूँ की एक और बीनी किस्म

दोने गेहूँ की एक और किस्म तिकाली गयी है। यह सोनोरा-६४ और लमारीह जैसी प्रचलित बीनी किस्मों से भी अधिक पैदावार देती है।

इस बीनी किस्म का दाना प्रचलित देशों शारवती गेहूँ से मिलता-जुलता है। इसलिए इसका नाम 'शारवती सोनोरा' रखा गया है। पिछले साल जिन किसानों ने इसे अपने खेतों में उगाया था उन्हें प्रति एकड़ २० क्विंटल या इससे भी ज्यादा पैदावार मिली थी।

शारवती सोनोरा गेहूँ में प्रोटीन की मात्रा सोनोरा-६४ के मुकाबले १५ से २५ प्रतिशत ज्यादा होती है। किमान तथा अन्य गेहूँ खानेवाले लोग शारवती सोनोरा को इसलिए भी पसन्द करते हैं क्योंकि सोनोरा-६४ के विपरीत इसका दाना बड़ा, शारवती रंग का, चमकदार और थोड़ा सख्त होता है।

शारवती सोनोरा किस्म भारतीय कृषि अनुसंधानसाल, नयी दिल्ली में निगमली गयी है।

लोकमनजी ने कहा कि मैं आपको धन्यवाद के साथ यह सूचना देने आया हूँ कि मैं कल प्रातः खालियर जेल चला जाऊँगा। एत० वी० साहब ने पूछा, "वासिज जाने में क्या लग रहा है?" लोकमनजी ने जवाब दिया, "मसबूबा से पता रहा हूँ, आप सबका दर्शन मिला, वहाँ मेरे ३ मोहरे (साथी) हमारा बापसो की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। उन्हें भी आज्ञाम पारा-बस है।" हम तीनों घर आये। परिवार की अनेक समझौतों पर विचार करते रहे। लोकमनजी ने कहा, "बड़ा सब ईश्वर पर छोड़ो। अब तो बापस जाने की तैयारी करनी है।"

१०-१०-६७ : प्रातः ६ बजे बस से मिण्ड से खालियर के लिए रवाना हुए। उनकी पत्नी व बड़ा लड़का भी साथ था। लडकर में कुछ लोगों से मिलने के बाद पत्नी व लड़का मिण्ड के लिए वापस हुए। हम दोनों एक बजे जेल पहुँचे। लोकमनजी नुरख जेल के फाटक पर गये। अंदर से उत्तर आया अभी आप ४ बजे तक बाहर रह सकते हैं। लोकमनजी ने कहा, "मुझसे दस्तखत एक बजे के लिए कराया गया है, इसलिए अंदर ही बैठेंगा। मेरे कहने पर भी वह नहीं रुके और जेल में अंदर चले गये।"

—प्रस्तुत कर्ता : तत्पुत्र

चोरबाजारी की नयी आदत

गाँव की चौपाल में एब एक करके लोग इकट्ठा हो रहे थे। जिस दिन सहर से गाँव का कोई भी आदमी अपना कोई काम निपटाकर लौटता है तो वह राय का अखबार बखर लेता आता है। इस तरह महीने में ४-५ दिन का ताजा अखबार गुरनामपुरा के लोगो को मिल जाता है। जिस दिन अखबार आने की बात मानूँ हो जाती है उस दिन गाँव के सास-सास किसान आने पशुओ को जल्दी बिला-पिलाकर चौपाल में इकट्ठा हो जाते हैं।

गाँव के चौधरी था सतपाल सिंह पेंशनवाला कौजी आदमी है। उन्होंने थपड़ा का जमाना देखा है। फिर पञ्जाब के बेंठवारे के बाद की मुदत की सियासी कथामन्थरा भी वे जानी आँखों से देख चुके हैं। चौपाल के लोग जबबर चौधरी सतपाल सिंह के आने की राह देखा करते हैं। उनके चौपाल में आते ही एब अर्धश-सी दिलचस्प चीजें छी जाती हैं।

३० अक्टूबर का अखबार मुख्यतः सिंह चौपाल में दे गये थे। गाँव के कुछ नौजवान उसे उलट-पलटकर देख रहे थे। इतने में चौधरीजी भी चौपाल में आ गये। "आजो चौधरी काका, तुम्हारा ही इन्तजार था।" एक बुबक ने सहज भाव से कहा। सतपाल चौधरी ने हँसते हुए कहा— "मैं खुद भी आने की जल्दी में था पर भेंट लगी नहीं थी इसलिए आने में थोड़ी देर हो गयी।"

चौधरीजी अपनी जगह पर बैठ गये। बुबक ने अखबार पढ़कर मुनामा गुल किया—

"हरियाणा के उप-साइमन्त्री राव मनिमण्डल से इस्तीफा देकर फिर से कांग्रेस में शामिल हो गये। अखबारवालों को अपना बयान देने हुए मन्त्री ने बताया कि अब विधान सभा में संयुक्त सरकार का बटमन नहीं रहा। उन्होंने यह भी बताया कि संयुक्त दल ने कुछ और भी सदस्य जल्दी ही कांग्रेस में शामिल होनेवाले हैं।" बुबक ने फिर मुनामा—

"हरियाणा के मुख्यमन्त्री ने स्वीकार किया कि पाय उपमन्त्री के त्यागपत्र से वास्तव में संयुक्तदल अल्पमत में रह गया है लेकिन दूसरे ही क्षण उन्होंने कहा, "यह स्थिति क्षणिक है। मैं शीघ्र ही विधायीदल का कोई न कोई सदस्य अपनी ओर फोड़ूँगा।"

चौधरी सतपाल सिंह के भतीजा श्री महिपाल सिंह ने कहा—

"आज के विधायक विचित्र जीव है, जिनके पास न कोई आदर्श है न कोई मिद्दान्त। ऐसे लोगों से जनता की क्या भलाई होगी?"

चौधरी सतपाल सिंह ने कहा— "जनता की भलाई खुद बनवा ही कर सकती है। नेता कहे जानेवाले लोग जनता की भलाई के नाम पर इतनी बुराई फँसा रहे हैं कि उससे जनता ही नहीं वे खुद भी चक्कर में हैं। भ्रष्टाचार, बाला बाजार और गैर कानूनी कारनामों की जड़ समाज में दिनों-दिन मजबूत होता जा रही है। आज के राजनीतिव नवा इन बुराइयों को दूर नहीं तक करेंगे— वे गुर इन बुराइयों के अगुवा बन गये हैं। सिछने २० सालों के दौरान जीवन न सदाचार, बाजार से सख्तवहार और सरकार से एवगार बराबर उठता जा रहा है।" गुरनामपुरा के दूसरे बुधुर्ग किसान हृदयपाल राम ने कहा— विधायका का मनमाने ढंग से दल बदलना भी तो भ्रष्टाचार ही है।"

"अजी यह तिक भ्रष्टाचार ही नहीं—सरासर चोरबाजारी है। केन्द्र और प्रदेशों की राजधानियाँ इस चोरबाजारी की नयी आदत बन गयी हैं।" मुख्यबन सिंह ने कहा— "एक दल दूसरे दल के विधायक को कुसल्लाकर अपने में मिगाने के लिए क्या-क्या उपाय काम में लाता है यह आम लोग नहीं जान पाते हैं। उन्हें तो बस इतनी ही खबर मिलती है कि पञ्जाब इस दल से उस दल में चले गये।"

'किसीको मन्त्री बनाने के बादे किये जात है, किमीको लालो रुपये की रिस्वत दी जाती है। राजनीति ना यह महारोग घड़े घड़े हर प्रदेश में फँलता जा रहा है। बच नहीं की सरकार गिरेगी और कहीं नयी सरकार बन जायेगी, इसका कोई ठिकाना नहीं है। एक तरफ दल-बदलनेवाला का बाजार भाव बढ़ता जा रहा है, दूसरी तरफ देग रमातल की ओर घेंतता चला जा रहा है।"

अमेरिका में सामूहिक जीवन के प्रयोग-३

शेकर

शेकर लोग समझते हैं कि सचा सामूहिक जीवन व्यक्तिगत परिवार की सीमा में असंभव है।

१८वीं सदी में एन ली के पिता ने उसकी इच्छा के विरुद्ध उसकी शादी करायी। जब एक के बाद एक उसके चार बच्चे मरे, तो उसने समझा कि ईश्वर उसे शादी करने के पाप की सजा दे रहा है। उसके दिमाग में विभिन्न प्रकार के दार्शनिक विचार आने लगे। कुछ दुःखी लोग भी उसके पास एकत्रित होने लगे। ये लोग अपने को "नया गिरिजा" कहने लगे थे। स्वभावतः पादरी-महंत उन्हें सताने लगे। वर्षों के सतत परिश्रम के बाद उन्हें "दिन्य-शान्ति" मिली। ये ब्रह्मचर्य तथा ईसाई साम्प्रदाय का खुलासा करने और दुनिया से अलग रहने पर विश्वास करने लगे। यदि विवाहित लोग उनमें शामिल होते थे, तो उन्हें एक दूसरे से अलग रहना पड़ता था। ये अपने सब सामान का उपयोग सामूहिक तरीके से करते थे। यदि पत्नी शामिल नहीं होना चाहती थी, तो ये उसके लिए "दुनिया" में रहने की व्यवस्था करते थे, यदि कोई समाज को छोड़कर जाने लगता था तो उसे अपनी जाय-दाद वापस मिलती थी।

धीरे-धीरे उनकी संख्या बढ़ती गयी। सन् १८२० के दरमियान ६००० शेकर्ज १८ परिवारों और १८ संघों में रहते थे। ये कृषि और उद्योग में बहुत दक्ष होते थे। उनके सदस्यों को संपूर्ण सामाजिक संरक्षण मिलता था। उन्होंने अनेक महत्त्वपूर्ण धार्मिक आविष्कार किये थे। ये बर्द्धगिरी का काम बहुत अच्छी तरह किया करते थे।

बूदरहोक

प्रथम विश्वयुद्ध के अन्त में जर्मनी में एक युवक ने सामूहिक भैतना का पुनर्विकास करने की आवश्यकता महसूस की।

इससे इस समाज का जन्म हुआ। हिल्टर के जमाने में उन सब को विलापत भागना पड़ा। लेकिन द्वितीय विश्वयुद्ध के दरमियान ये "यशु" माने गये थे। उन्होंने अमेरिका जाने का प्रयत्न किया। ये गृहस्थ जीवन बिताते थे, इसलिए शेकर्ज ने उन्हें अपने समाज में शामिल करने से इनकार किया। अखिर में ये दक्षिण अमेरिका के पुरेबे के घने जंगलों के बीच में बड़ी कठिन परिस्थिति में तीन गांवों में बस गये थे। बाद में संयुक्त राष्ट्र अमेरिका में उनकी एक शाखा खुली, जो अपने प्रसिद्ध "सामूहिक खिलौनों" को बनाने के जरिये अपना गुजारा कर पाती है।

वहाँ ये लोग अपने परिवारों के साथ एक बड़े आनन्ददायी वातावरण में रहते हैं।

शायद उन्होंने सामूहिक जीवन की आवश्यकता महसूस करके हम जीवन को अपनाया।

ये लोग अपने सारे जीवन को ईश्वर की इच्छा के अनुसार बिताने का प्रयत्न करते हैं। उनका धर्म उनके संपूर्ण जीवन में व्याप्त है। उपासना के लिए उनका कोई विशेष स्थान नहीं होता है। ये पूर्णतः साम्प्रयोगी जीवन बिताते हैं, और आपस में बहुत खुशे दिल में रहते हैं। ये एक दूसरे के लिए किसी प्रकार की ईर्ष्या या द्वेष नहीं रखते हैं। यदि दिल में कुछ हो, तो ये फौरन उनको सफाई करते हैं। सामूहिक धर्म, सामूहिक मिश्रकियत, सामूहिक श्रम, परिवार अपने अलग-अलग मकानों में रहते हैं। लेकिन ये दिन में दो बार सामूहिक भोजन करते हैं। छोटे बच्चों के पालन की व्यवस्था बालबाली में होती है। आठवाँ कथा तक ये अपने बच्चों के लिए अपनी पाठशाला चलाते हैं। बाद की इनके बच्चे साधारण पाठशालाओं में पढ़कर, अपने भविष्य के जीवन के, ढाँचे का निर्णय अपने आप कर लेते हैं। ये लोग कहते हैं कि जब दुनिया एक ऐसे भविष्य का सामना कर रही है जहाँ भयंकरता और सबन्यास सिर्फ भय की वजह से ही नियंत्रित हो रहा है, तो हम सबको ऐसे जीवन की सुगंध फैलाने का प्रयत्न करना चाहिए, जिसमें प्रेम और भाईचारा सिर्फ जीवन का एक पहलू न रहकर, हमारे जीवन का केन्द्र-बिन्दु बन जाता है, जीवन-पद्धति का आधार बन जाता है।

—सरला बहन

'गांव की बात'। वार्षिक चंद्रा : चार रुपये, एक प्रति : अठारह पैसे।

कीर्तिलाल बट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए संसार प्रेस, काशीपुरा, शारणसी में मुद्रित और प्रकाशित

पैदा हुई है कि हम अपने ऊपर क्यू नहीं रख पा रहे हैं। एक मानसिक आराधना भी कौनो हुई है और तरह तरह वे यह जरा बचना प्रष्ट हो रही है।

हमलोगों ने, किन्होंने भारत की आजादी की ज़ुबानें लूकी, अपनी आँकों के सामने जो छानना देखा था, जो बना भारत, स्वतंत्र भारत का चित्र देखा था, वह कुछ और ही था। अपने देश में गरीबी है, मरिगारि है, ऊँच-नीच का, गरीब अमीर का भेद है। यह सब दुख भी घातें हैं। इन सवालों का भी हल होना चाहिए और तबो से होना चाहिए। मेरे जैसे लोगों की अधिक से अधिक शक्ति इन सवालों को हल करने में लगी है। लेकिन वे बाँटे, किमी कदर कुछ बर्तान कर भी जा सकते हैं। परन्तु कुछ और जो बाँटे, जो छानाएँ अभी हो रही हैं, उन्हें खनन करना मेरे जैसे लोगों के लिए बड़ा कठिन हो जाता है। हम ऐसे देश के नागरिक हैं जिसका इतिहास बर्षों का गौरवपूर्ण इतिहास है, जिसमें मानवता ऊँचे ऊँचे चिखर पर पहुँची थी, जिससे राम और कृष्ण पैदा हुए थे, बुद्ध और महावीर पैदा हुए थे। गुप्तों के समाने में रामचण्ड और लामो विवेकानन्द पैदा हुए थे, महात्मा गांधी और लोकमान्य तिलक पैदा हुए थे। ऐसे देश में जहाँ गुप्तदेव (रवीन्द्र नाथ ठाकुर) ने सारी दुनिया को विद्व बचपुत्र का और मानवता का धेरा दिया, यूरोप और अमेरिका में बाकर उनके ससौरी राष्ट्रवाद का संज्ञन किया और उनसे कहा कि आपका ससौरी राष्ट्रवाद, आधुनिक 'मैजल स्पे' का विचार आपको और दुनिया को लभने में उल्ल देगा। उनको समग्रतया बाणी और वह मात्र गौरवमय इतिहास जब हमारे सामने आता है और दूसरी तरफ स्तनव मानने के नागरिकों के वर्तमान इत्य सामने आते हैं, तो दुख से भी भर उठता है। क्या हमीके लिए आजादी की सारी लड़ाई नहीं लड़ी गयी थी और वह सारा त्याग बलिदान किया गया था!

इतलिय भावको सोचना चाहिए। अगर हमारे राष्ट्रीय बीजन्त में, हमारे नाम

मुरान-यक्ष। छुटकार, १० नवम्बर, '६०

रिक्त चीजन में, सामाजिक और पारिवारिक बोका में अनुशासन नहीं होगा, यथम नहीं होगा, चीजन का कोई मूल्य नहीं होगा, जो चाहे आर दबीनियर हों, मैनेजर हों, कुशल नारीयर हों अथवा छायाण मजदूर हों, उधको कोई चीजन नहीं है। आपके चीजन का अगर कोई दृष्टिकोण नहीं है, आपके चीजन का दिया सूचक करनेवाला कोई भुवताया नहीं है, तो गया के पानी में बहते हुए काठ के टुकड़े की तरह हवा के सोंके से इषर-उषर डोलते रहेंगे, आपके चीजन की कोई दिया नहीं होगी। और, आपका यह हाल रहेगा तो भारत की पैदा नही किची किनारे लगनेवाली नहीं है।

भारत एक 'इंबोकि' नेशन' है, 'इन्जीमेटेड नेशन' है, समिलित राष्ट्र है। इव देय की एक विशेषता है, लघुविपत है और वर दे इसको 'मूनिगे इन डाइविटी'- विविधता में एकता। इस देश में किन्ती विविधताएँ हैं। लेकिन इन विविधताओं के बीच एक भारतीयता रही है। जितने सभ्य दाय, किन्ती भागाएँ, किन्ती सङ्घटित्य और किन्ते राज्य यहाँ रहे हैं। लेकिन सबके मानवत्त सवको यह एहसास होता रहा है कि हम एक हैं। गांधार से कम्पाकुमरी तक एक हैं। उत्तर में हिमालय है और दक्षिण में सुन्दर है और बीच में हमारा दश भारत है। ऐसा भारतीयों की भाव होता रहा है। चाहे हमारी विभिन्नताएँ कुछ भी हों, हम एक हैं।

भारत में और दुनिया म एक अरिस्तक समाज बने, "नाम वायमै होवादी" बने। यह हमारा उद्देश्य है। लेकिन वह पूर की बात है। आश तो हम चाहते हैं कि कम से कम एक सभ्य समाज तो बने, जिसकी अभिनी

दृष्टि की समप्रता और समन्वय का कोण

हमारे सामने यह समस्या है कि मनुष्यो के पारस्परिक व्यवहार में जितनी निकटता है, उतना लोहादे क्यों नहीं है? मनुष्यो की निकटता बढ़ रही है, मनुष्य एक-दूसरे के निकट आ रहा है। दुनिया छोटी हो रही है। एक भगद से दूसरी भगद जाना आसान

तो गया है। सभ्यचार एक भगद से दूसरी भगद अर प्रकाश की गति से होते हैं। हम प्रभाव करते हैं शब्द की गति से। और हमारे अन्ध हृदय और प्रभाव की गति से भी अधिक वेगवान् बन गये हैं।

अर मनुष्यो में इतना सामन्वय पानी

में 'विविध लोहादी' करते हैं। आपस में हमारा एक दूसरे के साथ सजना का पर्वान 'विविध बिरेथियर' तो। किची सभ्य समाज में जितने नागरिक रहते हैं, उतनेसे समाज के साथ एक 'अनरिडि कन्ट्रिस्ट' अङ्कित समझौता किया है, ऐसा मानना चाहिए। उ होने प्रशिक्षा की है कि मैं शांति रखूँगा। इतलिय समाज में जितने सभ्य होंगे, उनका हल शांति से होना चाहिए।

मानव शांति का मन्विष्य एकता में है। विशान और आत्मज्ञान, दोनों उस दिया की ओर उल्लेख करते हैं। जो कुछ भी इसके रास्ते में बाधक रूप में लड़े होंगे-राष्ट्र, भावि, यहाँ तक कि धर्म-यदि वह बन्नेवाला है-लेना कि सत्त्वा धर्म ही नहीं सफला-धनको लभ करना होगा। यह आशा थी कि भारत अपनी लामो विद्वबचपुत्र तथा मानवता की महान् परम्परा के कारण इतिहास की इव प्रक्रिया में महाचपूर्य योग देगा। पर ये हान की घनाएँ, ऐसे अर्थात् की खचना देती है, कि जमाने के हमारी सङ्घटित क उब मूल्यवान् घोषे को दसोक देना चाहती है जितने हम पतन के सुग में भी रही प्रनाय ठाकुर और गाँधी जैसे पुत्र दिने।

इतलिय हमारे सव पुत्राए देववाली इतको अण्डी तरह लम्प लँ कि अपने इन हृन्पदीन क्षामो से राष्ट्र, इस्वर और मानव को एक साथ ही वे अस्वीकार करते हैं।

इत प्रकार की वृष्टि का निर्माण हुनि बाटी मानव विद्या की प्रक्रिया दे जिसको हमें गभीरतयापूर्वक शाय में लेना चाहिए, तभी यह दुःखक हूँगा।

[५ व ३२ अग्रेल '६४ को जमशेदपुर में दिने गये भाषणों से।]

संश्लेष, एक दूसरे के साथ इतनी निकटता बढ़ रही है, तो फिर औदार्य क्यों नहीं बढ़ रहा है ? यह प्रश्न है । अगर कोई कहे कि हमारे घर में विराग भी जन्म रहा है और अनेका भी बढ़ रहा है, तो क्या कहा जायगा ? मनुष्यों में निकटता बढ़ रही है और अदालत भी बढ़ रही है । मनुष्यों में सम्पर्क बढ़ रहा है और अधिवास भी बढ़ रहा है ! यह क्यों ?

अपवक विज्ञान इसका उत्तर नहीं दे सका । इसका उत्तर देना विज्ञान के लिए संभव नहीं हुआ है । हमने मान लिया है कि विज्ञान उत्तर दे सकेगा, लेकिन वह नहीं दे सका है, तो इसका उत्तर कौन देगा ? इसका उत्तर मनुष्य देगा । इतने अंध में, और इस अंध में विज्ञान से मनुष्य बढ़ा है । विज्ञान यदि मनुष्य से बढ़ा हो जायगा तो विज्ञान मनुष्य को चलायगा; मनुष्य विज्ञान को नहीं चलायगा । विज्ञान का निवेशन मनुष्य करेगा या मनुष्य का निवेशन विज्ञान करेगा ? इस समस्या का उत्तर आज हम और आप बैठे साधारण मनुष्यों को देना है । कोई विशेष मनुष्य इसका उत्तर नहीं दे सकेगा । साधारण मनुष्य को ही इसका उत्तर देना है । जो दूसरे मनुष्यों के साथ रहना चाहता है । विज्ञान ने हमें यहाँ तक पहुँचा दिया है कि या तो यह दुनिया एक होकर रहेगी या बिल्कुल नहीं रहेगी ।

मनुष्य ने अब तक मनुष्य के पूरे-पूरे स्नेह को नहीं समझा । क्या मनुष्य में स्नेह की आकांक्षा नहीं है ? मनुष्य में स्नेह की आकांक्षा है । वह स्वाभाविक है । इसे कमाना या उपार्जन नहीं करना है । 'एकतापर' नहीं करना है । बुरे-से-बुरे और अदना-से-अदना मनुष्य का स्नेह हमारे लिए उपार्थ है । दुष्ट-से-दुष्ट मनुष्य का, बन्धुभाव और, दृष्टि मित्र प्रकार हमें मित्र लगती है, उन्नी मकर दुष्ट-से-दुष्ट और निहृष्ट-से-निहृष्ट मनुष्य का स्नेह और औदार्य हमारे लिए उपार्थ है, संग्रहा है । इसको हमें प्राप्त करना चाहिए और उसका संरक्षण करना चाहिए ।

मनुष्यता की प्रतिष्ठा का यह अर्थ है कि वह आपके विषय में अच्छी राय बनाता है,

तो उसका भी मूल्य है और बुरी राय बनावता है, तो उसका भी मूल्य है । उसकी अच्छी या बुरी राय से आप अपना सम्मान तो नहीं छोड़ेंगे, लेकिन उसकी राय को अच्छी तरह समझने को कोशिश करेंगे । यह आवश्यक है ।

मनुष्य और मनुष्य के बीच जो अन्तःकरण की वस्तु होती है, वह चाहे कितनी भी बड़ी हो, त्याग्य है । वह हमारे लिए कितनी भी पूर्य हो, त्याग्य है । यह गोपी ने परचाय लिया था । उन्होंने कहा कि 'मेरा धर्म सर्व-भोग्य है, भौतिक क्रीडाओं का बंधन मेरे धर्म में नहीं है । वह सार्वत्रिक है ।'

विज्ञान का यह स्वभाव है कि यह सार्व-भौतिक है और इस अनुशासिक की वजह से यह आवश्यकता पैदा हुई कि यह आविष्कार सारे देशों के उपयोग के लिए हो । धारे देशों के वैज्ञानिकों के सहयोग से यह हुआ । अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के बिना वैज्ञानिक आविष्कार अगर असम्भव है तो इस विज्ञानयुग में अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के बिना वैज्ञानिक जीवन भी असम्भव है । यह अनिवार्यता विज्ञान से पैदा हुई है । इसलिए अब हमारे मन में पूर्ण और सक्षम का भेद नहीं होना चाहिए । अब ऐसा एक भेद पैदा हुआ है कि गौरे मनुष्य को एक सृष्टि है, एक प्रकृति है, काले और भूरे आदिमनों की दूसरी सृष्टि है, दूसरी प्रकृति है । यह मानधारी सिद्धान्त है । गौरी को उन्मृष्टता गौरी लोग हमेशा मानते रहे हैं । आज का रंगभेद भी यही है । भारत की दुःआयुत भी यही है । उन्मृष्टता और निहृष्टता एक बगद देख-काल से आधी और दूसरी बगद जन्म से आधी । एक वर्ण-वाद बहलता है, दूसरा जातिवाद है जिसका आरम्भ जन्म से हुआ है । दोनों में एक समानता है कि वर्ण का सम्बन्ध भी बंध से है और जन्म का सम्बन्ध भी बंध से है । दोनों का सम्बन्ध विवाद से है । इसलिए काले और गौरी का अगर विचार होता है, तो सारे समाज में उसकी प्रतिष्ठा विरुद्ध हो जाती है । जो पहले निहृष्ट है—

वैशे नीमी, उनके विषय में आज भी प्रति-
कूलता है । रविवृद्धि की मानना मनुष्य

को मनुष्य में दूर करती है । अशुद्ध स्त्री किशका ? किशका एक हमारा रक्त नहीं है । इसके अन्धा हो कोई मतलब ही नहीं है ।

मनुष्य साधुदायिक अभिमानों में खो जाता है । मनुष्य का विचार नहीं होता । ये दोनों अलग-अलग हैं । मनुष्य का समुदाय में लीन हो जाना एक बात है और समुदाय में मनुष्य का लो जाना दूसरी बात है । गली समुदाय में लीन हो गया था, लो नहीं गया था । उल्टे व्यपने जीवन में दूसरी को शामिल कर लिया था । अपने जीवन में दूसरी को शामिल करना समुदाय कहलाता है, चारित्र्य कहलाता है । अपने जीवन के लिए और अपने साथ रहनेवालों के जीवन के लिए यह भी विभेदारी की भावना है, जो दार्शनिक की भावना है, यह मानना कहलती है ।

यह विभेदारी की भावना ही 'बन्धु' है, 'कैरेटर' है, चारित्र्य है । इसे ही सद्भाव, नीति कहते हैं । यह मूल मानव-धर्म है । प्राणिमात्र की विभेदारी से संकटा है तो कम से-कम मनुष्यमात्र के लिए संकट हो । मनुष्य-मात्र के लिए संकट हा सकता है, तो विज्ञान मनुष्य के लिए गौरव, आनन्द और जीवन के विकास का कारण बन सकता है । विज्ञान को गौरव, आनन्द और जीवन के विकास का साधन अगर बनाना हो, तो मनुष्य में इस भावना का विकास करना होगा ।

दूसरीदिए गांधी ने जीवन के सारे ए-
डमों को कमल की पहाड़ियों की तरह एक मान लिया । इसीको समझता की दृष्टि करने हैं । एक दृष्टि का नाम है एष्वकृष्ण की दृष्टि, 'कैरेटेर' की दृष्टि, जीवन के दुर्ग-दुर्ग करने की दृष्टि । दूसरी का नाम है समन्वयमक दृष्टि, समझता की दृष्टि । इन समझता में व्यक्ति भी पूर्ण है, समुदाय भी पूर्ण है । व्यक्ति भी पूर्ण है, समष्टि भी पूर्ण है । हर मनुष्य की व्यक्ति भी पूर्ण है । और सब मनुष्यों की विभेदारी का बर्त संश्लेष ही होता है, यह स्वभाव भी अपने में पूर्ण है । ७

—दादा धर्माधिकारी

● साप्ताहिक निष्ठा : १०, १२, १५, १७, २१, २२, २५, २७, २९ ।

मूलान-बन्धु । शुक्रवार, १० नवंबर, १९०

सम्प्रदायवाद : सुखौटे, नकाब और चेहरे

इतिहास में जिसकी जड़ राजनीति ने जिसे पानी से ही नहीं खून से भी सींचा। जिसने पिछले साठ सत्तर वर्षों में इस देश को बुरे से-बुरे दिन दिखाये, जिसके कारण हमने गांधी को खोया, और, जो आज भी हमारी पकता और राष्ट्रीयता की खडित और क्लृप्तित करती जा रही हो, यह सम्प्रदाय निष्ठा ऊँचे नारों और आदर्शों का 'वाद' धनकर अनेक लोगों के मन में इस तरह समा गये है कि वे इसे अलग रखकर किसी प्रश्न पर सोच नहीं सकते, कुछ कर नहीं सकते। उनके लिए सम्प्रदायवाद दूसरे सारे विचारों और सिद्धान्तों से ऊपर है—इतना ऊपर कि इसके कारण उनके अपने ही सम्प्रदाय को कितनी सति स्थिति में पहुँच गया है।

लेकिन कुछ अजीब सा है कि भारत के आधुनिक इतिहास में जन्म और विवास की दृष्टि से राष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता बहुत कुछ जुड़वाँ यद्दों जैसी हैं। साम्प्रदायिकता राष्ट्रीयता के साथ-साथ बढ़ी है। और, जरा राष्ट्रीय आन्दोलन सारा-य तक पहुँचा तो साम्प्रदायिकता ने देश विभाजन के रूप में अपनी बलि भेंट के तनाव और टकराव। यह भी है कि साम्प्रदायिकता मुख्यतः शहरों की चाज रही है। पैसा, पद, शिक्षा और प्रतिष्ठानालों की, भले ही आग भड़क जाने पर सामान्य लोगों ने आगे बढ़कर भँव चढाया हो। जकर, समय समय पर देहातों को भी उभावा गया है, और उभड़क उठाने भरपूर खून भी बहाया है पर गाँवों की सामान्य हृषा जातिवादी की ही है।

आज भी इस 'वाद' का लाभ कौन उठा रहा है? इस आग को कौन मद्धकता रहता है? और तुमकर देतने पर एक माइड होना कि साम्प्रदायिक नारों की यँत्र सवा और सम्यति के दो चारों ओर होनी रहती है—सवा कुर्सी की, सवा पैगों की, सवा मंडी, मदिरो या मदिबदों की। दशक-री को राज नीति तो सायद आतिवार और सम्प्रदायवाद के बोधन के बिना जिंदा ही नहीं रह सकती। उठने हन 'वादों' को लोकनय की प्रतिष्ठा प्रदान की है, और अब वह हँस विहाल और सुराचा की प्रकिया का अंग बनाकर पुत्र कर रही है। सम्प्रदायवाद विभिन्न सम्प्रदायों के ऐतिहासिक मेरों और तनावों से अतिरिक्त अब विभिन्न वर्गों के स्वार्थों से सुझकर बोलित है। सम्प्रदायवाद को आज लेकर प्रतिक्रियावाद पैज रहा है। परिवर्तनवाद और वृथीवाद, दोनों सम्प्रदाय निष्ठा का उद्योग बनाकर संगतित होना चाहेते हैं। चाहते ही नहीं है, तेजी के साथ ही रहे हैं।

या कोई समय सर सम्प्रदायवाद धर्म का आधार लेकर हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य तक सीमित था, लेकिन अब उलहा सेव आगक हो गया है। सम्प्रदायवाद को बाकूद का इस्तेमाल विदेशी साम्राज्यवादी तत्व, शासक और विरोधी दल, सामाजिक और आर्थिक निरिक्त स्वार्थ, मजदूरों का समजन होदने के लिए मालिक, देवत चौर अराजारी, पूषणार अधिकारी, उम और डाकू, उधमयाने मद्धकने वाले प्रार्थनकारी और नेना, सभी कर रहे हैं। साम्प्रदाय सम्प्रदायवाद के साथ हल अगन्ती के प्रारम्भ ने ही सुझा हुआ है, यजरी भाया वाद सम्प्रदायवाद से अगम भी बच सकता है। हिन्दूओं में ही हरिकर्म और सगलों के लेबर भावपी विरोध, मूषक (रस) को लेबर दक्षिण के प्रविध और उत्तर के आर्थ के विरोध सम्प्रदायवाद के अगमन है, फिर भी साम्प्रदायवाद अभी धर्म के ही साथ पुझा हुआ गया था रहा है, और उलहा नाम लेते ही हिन्दू-मुस्लिम हाकड़े ही तस्वीर हमने लिख बाड़ी है।

स्वतंत्रता के पहले मुस्लिम सम्प्रदायवाद की प्रचानता थी, और उते विदेशी साम्राज्यवाद का बल प्राप्त था। स्वतंत्रता के बाद हिन्दू सम्प्रदायवाद और मार रहा है, और उते देशी प्रतिक्रियावाद का समर्थन प्राप्त है। मुसलमान—हर मुसलमान, किन्तु इस्लाम कि यह मुसलमान है—देशात्रीही है, यह आवाज हिन्दू सम्प्रदायवाद की है, और यही कश्कर यह विद्युद राष्ट्रवाद की आवाज वाणी बन रहा है। समाज परिवर्तन की आतिन और लोकनिष्ठ राष्ट्रियेन को पीछे करके की नीयन से उसने 'देशात्रीय मुसलमान' का हीवा लड़ा किया है। इतना ही नहीं, राष्ट्रवाद के नाम में लोकतंत्र तथा शांति के मूल्यों को लम करके वैशिक वाद गने की उलकी घूरी तैयारी है। 'हिन्दू राष्ट्र' ऊँची आदर्शवादिता और प्रतिक्रिया वादिता का मिश्रतुण एक विचित्र प्रतीक है।

भारत यह है कि वे 'वाद' उ माफ बनते ही तब ही जब वे सामाजिक से अतिरिक्त साम्प्रदायिक, लेकिन व्यापक भरो और पूर्वमर्गों को इय कबा बना लेते हैं। अगम यह बात न होनी तो देश में आज इतनी 'पैनाई' देने बनती, और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के लामों पुस्य और मुसुदर सदस्य कैसे होते, जब कि बिशों और मुसलमानों के धर्म के ध्ये दो बार दर्जन पुसक का मिश्रता कटित हो चला है। यह समझने की बात है कि सम्प्रदायवाद पूरा—चाहे वह हिन्दू हो, मुस्लिम या ईसाई, मिसल धार धारसी हो—आकस्मिक विरोधी है, मिसल धार सम्पत्ति-परल्ल है।

अपने देश में मध्ययुग में हिन्दू और मुसलमान के सहसंलयन में ही कबीर और अकबर के द्वारा हिन्दू-मुस्लिम धार्मिक और सांस्कृतिक समनय की शिखर चारा का विकास हुआ उते हिन्दूओं की भाविमत्ता (पवित्रवाद) और मुसलमानों की कट्टरता (मुसलवाद) ने बढ़ने नहीं दिया। पूषकता बनी रही। उत बल भी हिन्दू और मुस्लिम साम्प्रदाय ने मितकर प्रयत्नियोंकता का गम होया—तीक उकी तरह जेते आश्र दोनो-सम्प्रदायवाद आतिनकारी प्रयत्निकता के विनाक हाथ पोहर पड़े हुए हैं।

अनेकी साम्प्रदायवाद ने भारतीयता की

इस - कमजोरी को पंचायता और युष्क निर्वाचन आदि अनेक तरह के सामूहिक इपक्यों से यह राष्ट्रीयता को तोड़ना ही रहा। सन् १८५७ से १९४७ तक का इतिहास राष्ट्रीयता और साम्प्रदायिकता का परस्पर-विरोधी धाराओं का इतिहास है। यह गांधीजी की विरुद्ध देन थी-कि-उन्होंने-सामंत-वाद-साम्राज्यवाद-सम्प्रदायवाद की समिन्धित शक्ति के मुकाबिले एकता और राष्ट्रीयता के मूल्यों की विनाश रखा, और क्रमिक के रूप में देश में एक ऐसी शक्ति बना दी-जिसके कारण हम सन् १९४७ में धर्म-सम्प्रदाय-निरपेक्ष संवदीय लोकतंत्र की स्थापना कर सके। कुछ भी हो, आज सारी पश्चिमी और अफ्रीका में भारत अकेला देश है। अर्थात् 'वोट' इस तरह मौजूद है, और सर्वोप-देशा मनुष्य को मनुष्य के नाते आदर देनेवाला न्यायक आन्दोलन चरु रहा है, और बोर पकड़ रहा है।

किसी समय धर्म और जाति के संगठन ने मनुष्य को सुरक्षा और समाज की सुरक्षा दे दी थी। भारत जैसे खेतिहर तथा विविध तत्वों और विश्वासों के देश में, इस तरह के संगठन सामाजिक विकास-क्रम में स्वाभाविक भी थे, लेकिन राजनीतिक और आर्थिक स्वार्थों के हाथ झुड़कर ये संकुचित निष्ठाएँ देश को विनाश की ओर ले जा रही हैं। अगर ये न

रही तो यह युद्ध, अराजकता, सन्निवृत्त, स्वतन्त्रता का अपहरण, आदि कुछ भी सम्भव है। जनता पागल-बनकर क्या नहीं कर डालेगी, और फिर पछताने बैठेगी।

प्रश्न है कि क्या इन खतरे के टाकने की शक्ति देश में है? क्या पैदा की जा सकती है? क्या यह शक्ति सरकार में है? नेताओं में है? जनता में है?

सत्ता की राजनीति, अभाव की अर्थनीति और नौकरी की शिक्षानीति में विघटन की शक्तियों को रोकने की शक्ति नहीं होती। उस शक्ति के दो ही स्रोत हैं—एक, सत्ता से अलग रहनेवाले लोकनेता, माव लोकप्रतिनिधि नहीं, दो, सामान्य जनता के सामाय्य गुण। आज एक जन-आन्दोलन द्वारा गाँव-गाँव में, शहर-शहर में, इन्हीं सामान्य गुणों की संगठित करने की जरूरत है ताकि जीवन की समस्याओं को सुरक्षाने के लिए पड़ोसीपन की शक्ति प्रकट हो, और यह अपने छोटे दायरे में विघटन के मुकाबिले में लड़ी हो सके। जरूरत है स्वार्थ का परां काड़कर सत्य की प्रतीति जगाने की। जो सत्य है उसका सीधा सम्बन्ध जनता की समस्याओं से है। जनता में अपनी समस्याएँ पहचानने की सज्ज सुझ होती है।

यह नयी चेतना, नयी स्फूर्ति और चेष्टा कैसे पैदा होगी? प्रश्न देश के भविष्य का है, लोकतंत्र के मूल्यों का है।

'प्रवन्ध-समिति का प्रस्ताव'

विविध कार्यक्रम के द्वारा देश और दुनिया के सामने अर्द्धमक समाज-रचना का जो चित्र प्रस्तुत हुआ उसकी क्रमिक सिद्धि की दृष्टि से हमने बलिष्ठा सम्मेलन में पंचायतों का प्रमदान प्राप्त करने का संकल्प लिया। यद्यपि आँकड़ों में यह लक्ष्यक अभी पूरा नहीं हुआ है, फिर भी ऊँचे हृदय ने आंदोलन के आयाम को बहुत ऊँचा उठाया, और उसके प्रेरणा पाकर पिछले अठारह महीनों में हमने जो पुराया किया उसके फलस्वरूप आज देश भर में प्रामदान के कई स्थान खोज निकल आये हैं, जिनमें प्रामस्वामित्व के आधार पर नयी समाज-रचना का विचार मान्य हुआ है, और प्रामस्वराज्य के लिए प्रारम्भिक लोकसमिति के रूप में बहुत-भूमिका प्रस्तुत हुई है। शरद है कि प्रामस्वराज्य के आरोहण में अगला अनिवार्य कदम यह है कि हम सर्वधर्म को संगठन और शक्ति का रूप दें, और इस दृष्टि से गाँव-गाँव में बननेवाली प्राम-समाजों को सामूहिक प्रामिति का विकास एवं प्रतिनिधित्व करनेवाली सशक्त, स्वायत्त इकाइयों के रूप में विकसित करें। इसलिए अब यह आवश्यक है कि जहाँ एक ओर प्रामिति का प्रयास अलग-अलग रहे, वहाँ पृष्ठि का काम तत्कालापूर्वक हाथ में लिया जाय ताकि प्रामदानों गाँवों और क्षेत्रों की समस्याओं के समाधान के लिए जनता के सामने प्रामदान-पद्धति तत्काल प्रस्तुत की जा सके, साथ ही प्रकटित पंचायती तथा प्रशासकीय व्यवस्था पर स्पष्ट प्रभाव दिखाई दे।

अन्या-अन्या राज्यों में शायदियों ने अपने लक्ष्यक की पूर्ति के लिए योजनाएँ बनायी हैं। १९६९ तक हमें देश के सभी गाँवों को प्रामस्वराज्य की क्रांति का प्रभावकारी स्पर्श करना है। हम कुछ ही महीनों के बाद सर्वोप सम्मेलन में मिलेंगे और मिच्छर आगे के काम के बारे में निर्णय करेंगे। इसलिए जरूरी है कि पिछले संकल्प की बची हुई सत्ता अन्त-से जल्द पूरी की जाय ताकि सम्मेलन में नया निर्णय नयी भूमिका और नये स्तर पर लिया जा सके।

(१२, १३ अक्टूबर '६० को वाराणसी में सर्व-सेवा-संघ की बैठक में स्वीकृत)

दृष्टिकोण...



विशेषांक
●
भूदान-यज्ञ
का
गांधी-निर्वाण-दिवस
के
अवसर पर
सत्याग्रह अंक
'सत्य' और 'आग्रह'
के बदलते स्वरूप
पठनीय माननीय।

भूतान-यात्रा

भूतान-यात्रा मूलक सामाजिक प्रयत्न अति सक्रम प्रवृत्ति का अत्यन्त आवश्यक साधन है

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सम्पादक : राममूर्ति

शुक्रवार

वर्ष : १४

१७ नवम्बर, '६७

अंक : ७

इस अंक में

हमने वे भी हल करे।

—उपाध्याय

परिचय की परिमिति

—भारत मन्त्रालय

निपटारा की कौड़ी रात नहीं

—रामचन्द्र 'राजी'

पहना सारा

—शोक तथा रोमी

मारी : जुनोरी हो जुनोरी

—परिचयों

अन्वयनमः

मुखक परिचय

पत्र-परिचय

आन्दोलन के लक्ष्यकार

सामाजिक चर्चा काङ्गि

भागीरथी आदर्श

विनय के नेता रामचन्द्र ने लोचें

कार्यक दायक : १० रु०

एक प्रति : १० पैसे

विदेश में : साधारण डाक-दुकर-

१६ रु० या १६ सि० या १६ डाकर

(इसमें डाक-दुकर दोषों के अनुपार)

सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन

राजघाट, बाराबंकी-१

बोन नं० ४४६८५

आर्थिक समानता का अर्थ है उसके पास समान समति का होना, यानी उसके पास इतनी सम्पत्ति का होना, जिससे वे अपनी कुदरती आवश्यकताएँ पूरी कर सकें। कुदरत ने ही एक भादमी का हाथमा अगर नाउक बनाया हो और वह केवल पॉच ही चीजों अल लता सके तथा दूसरे को बीस चीजों अल साने की आवश्यकता हो, तो दोनों को अपनी पाचन शक्ति के अनुसार अल मिलना चाहिए। तारे समान ही रचना इसी आदर्श के अनुसार पर राजी चाहिए। अर्थिक समानता का दूसरा कोई आदर्श ही नहीं सकता। पूँज आदर्श तक हम सापट न भी पहुँच सकें। अगर उगे नजर में एम्बर हम विधान बनायें और व्यवस्था करें। जिस हर तक हम इस

आर्थिक समानता का मार्ग

आदर्श को हम पहुँच सके, तभी हम तक हम मुन और लतीव प्राप्त कर सकेंगे और तभी हर तक सामाजिक अर्थिका विद्य हुईं बसी या सकेगी।

अब अर्थिका के द्वारा आर्थिक समानता कैसे लपी का बृद्धी है इसका हर विचार करें। लल दिशा में उठाया जानेवाला पहला कदम यह है कि बिचने इस आदर्श को अपनाया हो, वह अपने हीन में आवश्यक परिचयन करे। वर रि-दुशासन की कौन प्रथा के साथ अपनी दुन्दुना कम्के अपनी आवश्यकताएँ हल करे। अपनी वन कमाने की शक्ति को वर नियंत्रण में रखे, जो वन कमाने उगे इमानदारी से कमाने का नियम करे। कधी भी हृदय हो तो ललका लला करे। पर भी अपनी सामान्य आवश्यकताएँ पूरी करने आवश्यक हो लने और जीवन को हर तरह से लुपी बनाने। अपने जीवन में लपी समन

दुधार कर लेने के बाद ही वह अपने मिन्ने कुम्केसकी और अपने पक्षीकियों में समानता के आदर्श का प्रचार करे।

आर्थिक समानता की बड़ में धमिनरी का हूँसोन है। हर आदर्श के अनुसार पतिका को अपने पक्षीकी में एक कौड़ी श्यादा रखने का अविचार नहीं है। लव उतने पान को ब्यादा है, वह क्या उतने हीन शिया खाये। देला काने के शिया शिका का आशय लेना पहेगा। और शिका के द्वारा देला करना लवय हो तो भी वनाश को उल्ले कुड पतिका होने लाना नहीं है। बतोकि हमने वनय बइडा करने की शक्ति लम्बे लम्बे एक भादमी को शक्ति को लवना को देवेगा। इसलिये अर्थिक मार्ग यह दुभा कि जिनकी माँप हो सकें उनकी

आपनी आवश्यकताएँ पूरी करने के बाद को पैसा बारी बने, उतका वर प्रथा को और ले हूँगे वन थाप। अगर वह पानाशिका से ललका वनेगा तो को पैसा वह पैसा करेगा उतका कुल्यय भी करेगा।

किन्तु महा प्रलभ करने पर भी पतिका लम्बे अर्थ में ललका न हने और पक्षी मरने हुए बारीकी को अर्थिका के नाम से वे और अर्थिक कुल्यये भाते लन क्या किया थाप। हर पलन का उतार हूँदने में ही अर्थिक अलक्षयोग और ललनर काउल लल महा प्रथत दुभा। कोई वनवनाम गरीबी के लालोग के दिना वन नहीं कमा सकता। अगर वह लानू गरीबी में ललका वर थाप, तो वे लम्बान लने और आर्थिक समानता को, जिनके वे शिका बने हुए हैं, अर्थिक लयीके ले पूरा करना लोष लें।

—गार्गीजी

"हर सब एक शिका के बालक" : १५१५०-१६८२.

अं० ६७
प्रति
का
१
२
३
४
५
६
७
८
९
१०
११
१२
१३
१४
१५
१६
१७
१८
१९
२०
२१
२२
२३
२४
२५
२६
२७
२८
२९
३०

भी संपादकजी,
"भूदान-यज्ञ", वाराणसी।

आपके पुत्र

देवा :

१-११-१७ : उपप्रधान मंत्री भी मोरारजी देसाई ने घोषणा की है कि वे देश में कहीं भी ऐसे समारोहों में भाग नहीं लेंगे, वहाँ मद्यवितरण होगा।

०-११-१७ : सर्वोच्च न्यायालय ने आज घोषणा की कि राष्ट्रपति पर पर डा० आकिर हुसेन का चुनाव उर्ध्वपाथ है।

८-११-१७ : एक सरकारी प्रवक्ता ने कहा कि गोल अम्बुदा की रिहाई के मामले में सरकार ने अभी कोई निर्णय नहीं लिया है।

१-११-१७ : स्व० जवाहर लाल नेहरू भी बदन भीमती कृष्ण इथी सिद्ध का आज लण्डन में देहावसान हो गया।

१०-११-१७ : इन्दौर में हुए भारतीय क्रांतिदल के सम्मेलन में दल ने गांधीजी की राह पर चलने की घोषणा की है।

११-११-१७ : उप प्रधान तथा वित्त मंत्री मोरारजी देसाई ने कहा कि अन्न घाटे की अर्थमन्त्रालय की सुझाव नहीं है।

१२-११-१७ : कल से लोकसभा का अधिवेशन शुरू हो रहा है।

विदेश :

८-११-१७ : सोवियत संघ में हुई अन्नबूर क्रांति की ५० वीं वर्षगांठ के अवसर पर पेरिस में आयोजित विशाल रैली में अत्यन्त माओ अनुपस्थित रहे।

९-११-१७ : अमेरिका ने आज अपना विशाल सेटने राकेट चन्द्रमा की मानवसंहित परीक्षण उपकरण के लिए छोड़ा। यह राकेट १९७० तक चन्द्रमा पर मानवसहित यात्रा के लिए तैयार किया गया है।

१०-११-१७ : संयुक्त अरब गणराज्य के राष्ट्रपति ने कहा है कि मिल तब तक स्वेनबर्ग नहीं छोड़गा जब तक इथराल्ड सिनाई के रेमिस्तान से हट नहीं जाता।

११-११-१७ : अमेरिका में हिन्दुधर्म के प्रति आम लोगों की दिलचस्पी बढ़ रही है।

१२-११-१७ : जापान के प्रधान मंत्री की अमेरिका की यात्रा के विरोध में छात्रों ने जबरदस्त प्रदर्शन किये।

आपके जनप्रिय "भूदान-यज्ञ" के द्वारा बहुचर्चित विषय भूमि सुधार कानूनों को लागू करने के संदर्भ में कृतिपय सुधार जनता-जनार्दन के समक्ष प्रस्तुत करता हूँ।

(१) भूमि सुधार की आवश्यकता आज नहीं बल्कि स्वातंत्र्य युग की जबरदस्त प्राथमिक माँग है। जिसे कंत्रित जैसी सस्या भी दरकिनार नहीं कर सकी और कांग्रेसी सरकार ने भी उभरीक भूमि विषयक कानून को अपने टंग से बनाया।

(२) अधिकोत्यादन के संदर्भ में भी भूमि सुधार की अनिवार्यता स्पष्ट सिद्ध है, क्योंकि पर्याप्त सुव्यवस्थित बीज, सुधरे नये औजार, पानी और खाद के साथ ही लेनी करनेवाली की दिलचस्पी भी आवश्यक है।

(३) भूमि सुधार-योजना के कार्यान्वयन को अत्यावहारिक बनानेवाला तर्क खोखला है क्योंकि लेनी करनेवाले अपदनामस, पिछलग्गू, डरपोक और गंवार कहलानेवाले लोगों ने आज्ञाकारी प्राप्त कर यह बता दिया है कि उन्हें सिर्फ सुशा और दिल भीतनेवाला नेतृत्व चाहिए।

(४) युग-पुत्र संत विनोद ने भी अपने नेतृत्वानेों से साबित कर दिया है कि भूमि सुधार तो आवश्यक है ही।

अतः भूमि सुधार-योजना को शास्त्रपूर्ण तरीके से लागू करने के लिए निम्नांकित पद्धति सहज और समझासही हो सकती है :

(क) सर्वश्रेष्ठ प्रत्यक्ष, अनुमण्डल, शिक्षा एवं राज्य सहायक समिति का प्राथमिक गठन एवं प्रशिक्षण तथा इसका व्यापक प्रचार सरी-सरी दिशा में हो और कोई गलत कार्य बहवावे में आकर न करे।

(ख) निराधार ग्रामक प्रचारों का लण्डन करे।

नोट—मैंने प्रशिक्षणवाली बात नहीं सोई ही है। इसका कारण यह है कि एक ही बात को लोग कई टंग से समझते हैं। एक तो यह ऐसी बात है कि इसकी लिखापत्र करने वाले लोग संगठित होकर ग्रामक और उच्चक प्रचार करके जनमानस को गलत दिशा में ले

"श्री माई धोने के देहावसान के बाद वारे प्रदेशों के उनके-मित्र परिवारों से जो पत्र प्राप्त हुए उनको देखकर श्री धोनेजी की स्मृति-सुमनांजलि के रूप में एक चरित्र ग्रंथ प्रकाशित करने की कल्पना मन में आ रही है। १६ मार्च १९६८ को उनका प्रथम वर्ष आदि-दिन है। उस अवसर पर यह ग्रंथ प्रकाशित हो था, ऐसी इच्छा है।

श्री माई धोने का मित्र परिवार हर प्रदेश में बिलखा हुआ है। उनकी ओर से यदि सरणालिखित प्राप्त होंगे, तो एक सुन्दर ग्रन्थ तैयार हो सकेगा। आप भी इस कल्पना का स्वागत करेंगे, ऐसा विश्वास है। श्री माई के सम्पर्क में आने के कारण अनेक प्रकार के प्रसंगों और सरणों के माध्यम से उनके स्वभाव-विशेष का और कार्य-पद्धति का दर्शन आपकी नजदीक से हुआ होगा। उनकी लिपिबद्ध कृतके भेजने का स्वागत अनुरोध करने के लिए यह पत्र लिख रहे हैं। आप विश्वास भाग्य में सहज रूप से मिल सकेंगे उस भाषा में मिल कर भेज सकते हैं।

आशा ही नहीं बल्कि विश्वास है कि आप अपने ससाराण हमारे पास दिसम्बर '६७ तक जरूर भेज देंगे। विनीत

अपणा सहस्रमुडे
अप्यक्ष
महा धोने
दुर्डी

राजीव सेना संघ, सेवासाल, चर्चा, मद्रास।

[उक्त आशय के पत्र जिनके पास भेजे गये हैं, कृपया वे अपने संग्रामादि शीघ्र ही गांधी सेवा संघ के पते पर भेजने की कृपा करें।—सं०]

बाने की कोशिश करेंगे। यदि दूरी की तरफ से इसका संगठित और सरी-सरी जवाब नहीं दिया गया, तो बहुत सम्भव है कि वे लगे निरिध स्वार्थगीय लोग उतका नाजाना पापदा उठावेंगे।

भारत
—हरिनारायण स्वयं 'माधव'
मिला सर्वोदय मण्डल,
वेशमपर, भागलपुर-१

भूदान यज्ञ : शुक्रवार, १० नवम्बर, ६७

भूदान-यज्ञ

भारत के भूदान आन्दोलन के इतिहास के बारे में जानकारी के लिए यहाँ क्लिक करें

इतने से भी इनकार !

एवम् वा कि त्रिषु दिनेषु मे ते देवो जिहासी वैडे ये उद्यमि मे मी वैणः । दोनो पञ्चमी सुकृष ये—पीये । इन्ः कृष्टे इन्दु, स्वसु वद, बहो कालो भावै, गोपु वीरस, सुकृषपते रौव—दोनो एव सुकृषिणः वरते वरु ये ये । एक पहले मे विहार को जिले पीपी राज्य में था, दूसरा पहले बार विहार था रहा था । भारी भोगदुःख मे आगे बढ़ी तो दूसरा भोग "देशो, पर मिट्टी ती इमारि परार पी बेसी है । कही नही तो लपटे मे अच्छी है । लेकिन वक्त ।" पहले मे वहा "कलु का थ-अठी होगी । यहाँ किसान को लेती वक्त नही ।" दुखे मे वक्त "गिर कीन वक्त है" "बैरदार" उत्तर दिया "बैरदार वक्त !" उल्ले गिर वृष्टा । "बैरदार वक्त समीन पर लेती वक्त है वद जलकी ब्यपनी तरी दोली । वद यिसे दुखे मानिक को होली है । बैरदार रूकी लयाता है, मेहनत परस थै, और कलु होवेर आस अयात, वा इवने म्यारु को तर पी, शक्ति पराधिक को दे देता है" पहले मे हमसाले हुए वद । उनके साथी को वद वक्त हमस में लेती थावे । तबले कुछ छलसथर वद "क्या बात करते हो । गौन ऐसा मूलस होमा को रूकी लगाने, मेहनत थै, और वक्त होमे पर आस वरिण दे दे ।" और देते हुए पहले मे वहा "भरे थरद, मे टार काठ के वहाँ हू । मैंने कुछ काकर देगा, तुवा दे । मेरी बात मानो, यहाँ ब्यामतीर पर खेती हमी तरह होली है ।" "तुम वर रहे हो ती आन देगा हूँ, लेकिन वात गठे के नीचे नही ठकावो । इस तरह भी लेती होली है ।" वद थरवर दुखे मे थगकी लोत थो । शिरो विहाली । ब्यापी, दोनो मे कठ थै, और पूँआ लिकुके वे वार वृँक दिया । मैं अलवार देल रहा थ, लेकिन वाते अच्छी तरह लुर रह था । थर मैने लि वदवार, दुखे शिवासी को ठाठ देला और कड "वद भापके दोस को वर रहे मे, विण्डु लही वर रहे थे । यहाँ लेती हमी तरह रीकी है । यहाँ ही नही, ब्याम मे भी ।" वद भोग उठा "आर के ब्यापे मे भी ।"

अब उल्ले यहाँ वदुवर देल गिजा होमा कि हँ, आर के ब्यापे मे भी । यहाँ लेती वा देन ही वरी है । बैरदार लौर बोलवद है, मानिक को ब्याव वद, लेकिन उल्ले पाप कोर कादगी, ब्यापी लुकु नही वहा । मानिक वद चहे उले वेरवत वर लखता है । विद्या लेत का मानिक है, बैरदार और मयूर अलपी लोवद । इस लेती मे मानिक को लयाता हूठ नही है, वो मिथ्या है वर गुनारा तो गुनारा है । ब्यापीर तो टपने के वर बैरदार और मयूर को वृष्ट अरिणार देने के वरदनी भी बने । बैरदार मयामने टप मे वेरवत न जिहा वार, इतिव का अलने बने की ब्यापी वर वरि

भूदान वक्त : सुकृषवद, १० मयवक्त, १९७०

वार ही, सुमिरीन को भूमि मिले, लोवद मयूर को ब्यापे-ब्याम वरद दुपी निग हो, वरिद अनेक उदार कादुल कर्मि के राव मे बने । लेकिन वरद कर्दे को तरह सरकार भी येते म वद दिये गये । सरकार को दियत नही हूँ कि ब्यापे की ब्यापे हुए कादगी को लयु वर लहे । विहार मे कर्मिद किसानों की को, सरकार उनके हाथ मे थी । अनेको छव था, नेताओं को गरी मिथि । ब्यापे को इव लगी, लेकिन लेवे और लेविह के निच मैने वृष्ट हुआ ही नही ।

पिउले सुनार के वर विहार मे लिवर लकाई गी, यिसे मे अलगे की ब्यामता है । वरि जिमिहद कोपी और सपरके के पते मे आगे है । आस हूँ यी कि वारद ब्यामता वृष्ट आगे लिके और गरीब को उनके लो का वृष्ट वन मिले । ने-वे-ने वरद थी । उनका दिल ऐश है कि उनरी नेकरीवरी आवागदिवर को बने नही देती । उदोने वृष्ट मरिबो मे चर्वा चलयी और कर्मिद लकाके के ब्यापे हुए कादगी को वर दिगली । मैं लिह इतनी भी कि जो कादुल पहले मे बने रहे है वे लयु ही, कभीकि उदो लेव अरब के विरोधी हव, बानी बरिद को भी ब्या लकावक होमा । चर्वा गरी । पिउले गरीने एक दिन लकी हली को नेवक हूँ । भागली मे गरीमें के वृष्ट मे थरे नेताओं के दिव विण्डुकर ब्याम वर उतर आगे । एक लकावद मरिबि बनी । आस कमी कि वृष्ट होवे ।

वेडिन वृष्ट ऐश का कि दोरी वार दिन वर दे इवा बरने लकी । लिवर लकाके मे लारीक वक्त वृष्ट के लिकी मे ले लुवेमाय काना वृष्ट वर दिया कि अगर बैरदार की मयूर लयु किय वरया तो विहार मे वरदुष्ट ही ब्यामता । तब मे वरवार लर लयु भी वरि कर्दे वा रही है, और अलवारी मे मोट वीरके मे छव रही है । मानिक महान लयु बैरदार के वार वरि के समय मे कते आगे हुए मयुद वक्त भी वृष्टार ही वर रही है, और वर वर रहा है कि वृष्टने कर्मियों को वृष्टने दल से ही बरने देल मयुद के क-व्याप के थिद परम आलवक है । वरि लखे मे है, देव लखे मे है ।

वद बीच मयामनीको ने (को कागुमिल है) वार वर वहा कि बैरदार को वेरलनी मे ब्यामता सरकार वर कर्नेय है । उदोने आकासन दिव कि जे वृष्टारी मे लोदे कियत (वानी मानिक) को ब्यापी निबो कावत के लिद बैरदार के भूमि वारव देवे वर इव वरया । कियत और बैरदार के हागो को लव कर्ने के थिद अर, और उल्ले भी नीचे वॉव के वार वर कर्मिणी बनेनी । मैं व की अनेकी मे एक मतिनिवि बैरदारनी वर होमा, और एक किसानों का, और दोनो मिण्डर वद आरथ सुनेगे । कां मायमे लयकोने से हव वरवे कर्मियों का वर रैकवे वे । ने-वी-वी हउते थे कि वर कादुल कर्मिद लकाके के ब्यापे हुए है, और लिवर लकावक ब्यापे को कर्मिद वे कदी अर्थिक वरलिकीक मानती है, वो लोरे वरवत नही कि लव लव, लकाके और विरोधी मिण्डर और लोवद के वरि नरवाँके को भी लका, लव लोरे मे वरवरी के कर्मिद वर व निरकले वरवाँके को भी लका, लव लोरे मे वरवाँके को मुखादे देकें ।

अनी है वरवत की वरवनी मे लिखी वेक मे वती भूमि-मुणार

सत्याग्रह समिति' की पहली बैठक हुई। आश्चर्य कि विवाय कम्पु-
नियों तथा एक फर्मिष सदस्य के दूधर कोई सदस्य आया तक नहीं।
मिलकर राक्षा निकालने की बात तो दूर, समस्या को खींचार करने
और चर्चा करने से भी साफ इनकार।

जे० पी० का पावन प्रथम बग, जिसे उन्होंने बैठक में यह
कहकर प्रकट किया कि नवसालवाही बंधाईदार की न्याय देने से
रुकेगी, न देने से भड़केगी, मड़क कर रहेगी।

काश, जे० पी० की यह चेतावनी राजनीति की नाव में बैठकर
जमाने की लहरों पर तैरनेवाले नेता समझ लेते। उन्हें क्या मजदूम
कि उनकी नाव में नीचे छेद है ?

भारत-वैधे पिछड़े हुए देश में विरोधवाद की राजनीति से समाज-
परिवर्तन की शक्ति कभी निकल सकती है, यह मानना समझदारी का
लक्षण नहीं है। लोकतंत्र के प्रचलित चक्कर में सरकारें बदलेंगी, बदलती
जायेंगी, लेकिन अन्त में आयेगी तानाशाही। विरोधवाद 'स्ट्रेटको'
को पालता है, उसे बदलता नहीं। विरोधवाद के गर्भ से जन्मी हुई,
सत्ता के पीछे पागल राजनीति न्याय के रास्ते पर नहीं चल सकती।
वह 'लेफ्ट' और 'राइट' प्रतिक्रियावाद के मंत्र में फँस गयी है। काश
यह बात जनता समझ जाती।

यह काम अगर हो सकता है तो केवल ग्रामदान से—ग्रामदान
की क्रिया के बाद ग्रामदान की प्रक्रिया से। क्योंकि यह बोट और
कानून, दोनों की मुँहवाणी से मुक्त है। ग्रामदान मालिक, महाजन,
मजदूर, बंधाईदार को अलग-अलग नहीं खानता। यह बचक गाँव को
खानता है 'एक' मानता है। ग्रामधाम में बैठकर चारों को चारों के
कल्याण का सर्वमान्य रास्ता निकालना ही है। सब नहीं तो कुछ ग्राम-
धामाएँ तो यह रास्ता निकालेंगी ही। जो ग्रामधामाएँ रास्ता निकालेंगी
वे आन की हवा बदलेंगी।

संविद सरकार के लोग यह कहने लगे हैं कि क्या किया जाय,
'संयुक्त सरकार की मजदूरियों' बहुत हैं। हाँ हैं, लेकिन प्रधान की
मजदूरियों भी तो हैं। नवलालबाही के नारे लगनेवाले की निगाहें
कहीं और हैं, उनके सपने कुछ दूसरे हैं। अकेला ग्रामदान है जिसे
सामान्य लोगों के सामान्य सुणों में अब भी भरोसा है। लेकिन समय
भाग रहा है। कब ग्रामधामाएँ बनेंगी, और कब हम उनसे कहेंगे—
केवल कहेंगे नहीं, पूरा मंत्रण पैदा करा देंगे—कि सबसे पहले यह
सवाल हल करना है। हम सचाली को प्रस्तुत करके तो देखें।

क्रान्ति में चम्पकार का कुछ तत्त्व होना ही है। •

३० जनवरी १९६८ के अवसर पर

भूदान-यज्ञ का सत्याग्रह विरोधांक

● गांधीजी ने देश और दुनिया को एक महाभंडव दिया—
'सत्याग्रह'।

● सत्याग्रह जहाँ एक जीवन-पद्धति है, वहाँ एक कार्य-पद्धति
भी है और विशेष प्रसंगों पर एक उपाय-पद्धति भी है।

● लेकिन गांधीजी के कार्यकाल में देश परतंत्र था, और
स्वराज्य-प्राप्ति के लिए प्रयत्नशील था। आज देश स्वतंत्र है और
हमारी राज्य-व्यवस्था लोकतांत्रिक है।

● गांधीजी के समय विधान जहाँ तक पहुँचा था, आज वह इससे
बहुत आगे बढ़ चका है। उस समय का युद्ध मात्र जय-पराजयवाला
युद्ध था, आज का युद्ध विध्वंसक संशार-क्रिया है।

● तब सत्याग्रह का क्षेत्र प्रमुख रूप से देश के आन्तरिक दायरों
तक सीमित था, आज वह अन्तर्राष्ट्रीय क्षितिज तक फैला है।

● आज के अणुयुग की समस्याओं का आकार भिन्न है, भंगर
भिन्न है और स्वरूप भी भिन्न है।

● विनोबाजी की विचार-संरचना और कार्यशैली के कारण
सत्याग्रह की धारा 'अहिंसक प्रतीकार' से 'अहिंसक सहकार' तक बढ़ती

आयी, दूसरी ओर देश के कुछ राजनैतिक व्यक्तियों और प्रवृत्तियों के
द्वारा उपद्रवी लुटक, हिंसक प्रदर्शन, आतंकमय धर, घेराव और
पथराव तक को सत्याग्रह कहा जाने लगा।

● आज भी यह एक बड़ा प्रश्न है कि लोकतंत्र में सत्याग्रह का
सचमुच स्थान है भी या नहीं।

● फिर यह भी विचारारपद ही है कि अन्तर्राष्ट्रीय विवादों में
सत्याग्रह जहाँ तक उपयोगी है और उपयोगी है तो उच्छा स्वरूप
क्या होगा।

● गांधी के देश के सामने यह चुनौति है कि वह सत्याग्रह के
सिद्धि-विधे में आँल फूट कर नहीं चल सकता, उसे अपना उल्लर
देना होगा।

एच दृष्टि से गांधी-निर्वाण-दिवस—३० जनवरी १९६८—पर
भूदानयज्ञ का 'सत्याग्रह अंक' प्रस्तुत किया जायेगा, जिसमें गांधीजी
से लेकर आज तक के सत्याग्रह के विकास और इतिहास का परीक्षण
होगा 'सत्य' और 'आग्रह' के स्वरूप और बदलते विभिन्न परद्रुओं
का विवेचन होगा, और विदेशों के तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तरों के
सत्याग्रहों का रिहगाज्जोक्शन भी होगा।

विशेषांक ६४ पृष्ठ का होगा।

—संवादक

भारत में ग्रामदान, प्रखण्डदान, अनुमण्डलदान, जिलादान

दरभंगा में कुल ग्रामदान	१,७२०	प्रखंडदान	४४	अनुमंडल	१	जिलादान	१
बिहार में कुल ग्रामदान	१६,१०२	प्रखंडदान	१००	अनुमंडल	५	जिलादान	१
भारत में कुल ग्रामदान	४४,७५२	प्रखंडदान	२०२	(१ नवम्बर '६७ तक)			

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १७ नवम्बर, '६७

के मजबूत और स्थायी केन्द्र भी बनाते हैं। ये संविधान में हेरफेर करके, तथा मजबूत कानून बनाकर अपने मार्ग को प्रयास करते हैं। लेकिन हम अहिंसावाले अहिंसा के विचार का उद्घोषण तो करते हैं मगर उनके अनुसार संगठन का प्रयास नहीं करते हैं। संगठन के लिए साम्य हिंसा यानी शान्तिमय हिंसा के मार्ग को अपनाते ही कोशिश करते हैं। उस संदर्भ में हमारा चिंतन लोकमूलक नहीं है; बल्कि परंपरागत केन्द्रीय संघ मूलक है। इसलिए इस समय आवश्यकता इस बात की है कि हम अहिंसक समाज-रचना के लिए लोकमूलक शिक्षण आधारित संगठन का मार्ग खोजें।

अहिंसक समाज के लिए संरचनात्मक और निर्माण के प्रयत्न पर तो हम संपूर्ण उदासीन रहते हैं। स्पष्ट रूप से समझना होगा कि केवल वैधानिक प्रक्रिया से शान्तिमय समाज की स्थापना हो सकती है, अहिंसक समाज की नहीं। इस प्रयत्न पर हमारा दिमाग पूरा-पूरा साफ होना चाहिए। हमने कहा है कि अहिंसक शक्ति दंडशक्ति से भिन्न स्वतंत्र लोभशक्ति है। दण्ड की शक्ति सैनिक शक्ति है, जिसके लिए बंदूक, तोप, बम आदि शस्त्रों का संग्रह और निर्माण आवश्यक है। जिस प्रकार हिंसक कार्रवाई के लिए सैनिक के हाथ में भिन्न-भिन्न शस्त्रों की आवश्यकता होती है, उसी तरह अहिंसक कार्यक्रम के लिए लोक के जीवन में भिन्न-भिन्न गुणों की आवश्यकता होती है। लेकिन हम अहिंसक क्रांति के विचारों के, तथा जनता के गुण-विकास के कार्य का किसी भी प्रकार का संयोजन नहीं करते हैं। अहिंसा में पहले और पीछे का कोई स्थान नहीं है। अहिंसा में समप्रता होती है। उभयों हथियार का संग्रह और निर्माण, क्रांति का अभिकान और उद्घोषण, तथा क्रांति की निष्पत्तिका संगठन साथ-साथ करना होता है। इसको गांधीजी ने एक शब्द में "समप्र-सेवा" की संज्ञा दी थी।

अतएव आन्दोलन के वर्तमान स्टेज में कार्यकर्ता तथा जनता के गुण-विकास के लिए कार्यकर्ता के संगठन की अनिवार्य आवश्यकता है। सामूहिक पदयात्रा, लोकशिक्षण-समाज का

मुलाकात :

निराशा की कोई बात नहीं

स्वराज्यके बाद भी गांधीजी की रचनात्मक कार्ययोजनाएँ अल्पांश ही रही, जिन प्रदेशों में चल्ती रहीं, बढ़ती रही, उनमें बिहार प्रदेश का स्थान महत्वपूर्ण है। विनोबा तो बिहार को बाप की स्टेज ('बाप' का अर्थ 'बापू' से है) कहते हैं। उसी बिहार ने प्रामदान-रूपान की चुनौती स्वीकार की, और चुनौती ही नहीं स्वीकार की, बल्कि आगे बढ़कर प्रामदान-आन्दोलन को एक नया आयाम दे दिया : बिहार-दान की गुँज पैदा करके, जिलानाद का संज्ञानाद करके।

उसी बिहार का क्षेत्रकल और जन-संख्या में काफी बढ़ा, एक जिला है मुंगेर नाम का। स्वराज्य के पहले का, और स्वराज्य के बाद का भी मुंगेर जिले का इतिहास विविध आन्दोलनों की छोटी-बढ़ी तमाम पटनाओं से भरा हुआ है। प्रामदान-रूपान में भी मुंगेर महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर रहा है।

जब भूदान-आन्दोलन शुरु हुआ तो

संगठन तथा लोकशिक्षण केन्द्रों के अधिष्ठान की ओर हमें विशेष रूप से ध्यान देना होगा।

इस प्रकार के संयोजन द्वारा कार्यकर्ता तथा प्रामदानी गँव की जनता के जीवन में सत्य, प्रेम, करुणा, सयम, शील, शान्ति, सहकार और समवेदन आदि हथियारों का समवेद्य हो, उसका संयोजित प्रयास करना होगा। अपने हथियारों के संग्रह से ही हमारा साथी जब यह देखता है कि हिंसा के माननेवाले सक्रिय हो रहे हैं तो वह खबरदाजता है। घबड़ाहट इसीलिए होती है कि ये अपने हथियारों के साथ होते हैं और हम निश्चय होते हैं।

हथियार संग्रह और उत्पादन के लिए हमें तीन मोर्चों पर काम करना होगा— (१) देश भर में गुण-विकास के लिए उसी प्रकार की लोकयात्राओं का संयोजन करना होगा जिस प्रकार सन् १९५७ में किया गया था। इस मोर्चे को मुख्यतः बहनों को सम्मिलना होगा। (२) पूरे देश में

इसी मुंगेर जिले में श्री पीरेन्द्रमार्द ने अहिंसक क्रांति की प्रशिक्षण-काम युद्धशाला— 'भ्रमभारती' की नींव डाली। भूदान से प्रामदान-रूपान तक के व्यापक अभियानों में इस संस्था ने 'वार सेठ' का काम किया। सन् १९६१ में जब इस जिले के खादी कार्य को प्रदेशीय संगठन से विकेन्द्रीकरण योजना के अनुसार अन्त्य किया गया तो जिला प्राम-स्वराज्य संघ का संगठन हुआ। और तब से यह संस्था भी प्रामदान अभियान में अपनी शक्ति लगाती रही है।

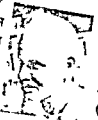
प्रामस्वराज्य संघ तथा जिला सर्वोदय मण्डल दोनों संगठनों के प्रमुख कार्यकर्ताओं को एक बैठक में जाने का मुझे मौका मिला। उस मौके का लाभ उठाकर मैंने जिले के पूर्व प्रमुख कार्यकर्ताओं से मुलाकात की। भार भी इनसे मिलें :

श्री रामनाथरायण बाबू : स्वराज्य आन्दोलन के पुराने सैनिक, बिहार बेसरी बाबू

स्थायी रूप से लोकशिक्षण-समाज का संगठन करना होगा, तथा (३) जगह-जगह लोक-भारती, लोक-शिक्षण-केन्द्र आदि की स्थापना करनी होगी।

प्रामदान प्राप्ति तथा उठरी पुष्टि का काम तो चलाते ही रहना होगा। लेकिन साथ साथ उपरोक्त त्रिविध कार्यक्रम पर विशेष ध्यान देने का समय आ गया है ऐसा मानना चाहिए। इस प्रयत्न पर अगर हम गम्भीरता से विचार नहीं करेंगे और इसके लिए सक्रिय ब्रह्म नहीं उठावेंगे तो प्रामदान की प्राप्ति बढ़ती जायेगी, पुष्टि भी हो जायेगी, लेकिन प्रामस्वराज्य की स्थापना नहीं हो सकेगी। प्रामदान को टिकाने के लिए भी अहिंसक शक्ति यानि स्वतंत्र शक्ति के स्थान पर सैनिक आधारित सैन्य-शक्ति का सहारा ही लेना पड़ेगा। अगर ऐसा हुआ तो परम्परागत वैधानिक लोकतन्त्र की कुछ बेहतर इकाई के विनाश आन्दोलन की दूसरी निष्पत्ति नहीं निकलेगी। ●

भीड़प्यविह के निक
तम सदयोगी, लेकिन
सवा मे अधिक सेवा
की ओर आकर्षित !
सन् '५१ तक नही हुआ
कि अरु सवा को गद्दी
में विभक्त्यो कर्मिष के



दायरे में रहकर बना रामनारायण बाबू
कहें, क्या न कहें ! इन्हें के बीच आया
का एक आधार दिखाई पड़ा 'भूदान
आन्दोलन'। आकर्षित हुए, होते गये और
एक दिन प्राम स्वायत्त के आन्दोलन में पूरी
तरफ हरी गये। स्वराज्य आन्दोलन के
समय बनने का बीड़ा था तो इस समय
गोदावा का होश था। अनवरत और अथक
आन्दोलनकारी रामनारायण बाबू जिसे के ही
नहीं प्रदेश के गिने चुने लोगों में हैं।

आन्दोलन की कल्पी, अनिश्चित और
अस्थिर जिन्दगी की सारी अनुविधाओं को
बिना किसी तनाव के हटाने खोजते बाना,
यह भी इच्छी उम्र में, मातृभूमि बाट नहीं थी।
स्वास्थ्य भी आपका कुण्ड रहता था, लेकिन
लिखते-लेखने सारों से अपेक्षित रहती
रही। मन ने मन का साथ नहीं दिया,
स्वास्थ्य बिगड़ता तो कई बार मौत की दहलीज
से छुड़सक लेना आये। स्वराज्य की इस
लक्षित के बावजूद आप प्राम स्वराज्य सप
तथा सशोचन मण्डल दोनों सगठनों के प्रमुख
की निमोवाणी निभा रहे हैं।

बातचीत के लिए अब मैं पहुँचा तो
कमरे में बैठे थे, उठकर दिवाल के छहारे
केट गये। स्वास्थ्य मनाचार जानने के बाद
हमारी मुख्य चर्चा शुरू हुई।

मैं देहा मर में पैनी लादी छलाओं में
आज लादी पर संकट की विन्ता ब्यात है।
बहो भी कार्यकर्ता हुए हैं, चर्चा का मुख्य
विषय होता है 'लादी को संकटमुक्त कैसे
किया जाए ?'

अपेक्षा नयी रास्ता खोजें और कारी
रदत केन्द्रों लाकर भी लादी-नहराणा के
समय में तो, देश नहीं लगता। आप इस
संकट को किस रूप में देख रहे हैं ?

रामनारायण बाबू : यो तो सब से
स्वायत्त के आन्दोलन में रणा, तभी से लादी
भूदान यथा : शुक्रवार, ११ नवम्बर, '५७

ही बात सुनता थाया हूँ, खरला भी चलना
रहा हूँ, लेकिन प्रयत्न रूप से लादी कार्य को
निर्मोदारी लेकर लादी कार्य करने का अनुभव
कुछ ही वर्षों का है। (कुछ कसर) लेकिन
आने अनुभव के आधार पर मैं कह सकता हूँ
(चेहरे पर कुछ हड़ता के भाव) कि लादी
पर कोई संकट नहीं है। मला लादी पर क्या
संकेत होगा ! संकट है लादी छलाओं पर।
क्योंकि उन्होंने लागी का काम छोड़ टग से।
किया ही नहीं। गांधीजी ने कहा था, 'कालो,
समझबूझकर कालो, जो बातें सो रहने, जो पढ़ने
बढ़ जाते।' गांधीजी की इस बात को किसने
सहीकरा ! लगे लादी का आधार करने।

मैं (साभर्य) इतने दिनों से चला आ रहा
लादी का काम आपके विचार से गांधीजी के
विचारानुसार नहीं चला, यह बात देरत में
उपलब्ध होगी। लेकिन क्या आप लादी की
सही दिशा की ओर कुछ संकेत कर सकते हैं ?
रामनारायण बाबू : लादी के लिए
जिज्जनी उपस्था विनोबाने की, उतनी जिम्मे
नहीं की। लागी की परिभाषाओं का पूरा
अव्याप्त और प्रयोग उन्हींने किया। लेकिन
उसके लिए कल्या चरणे नहीं है। लेकिन
बनाने निश्चल रहे। लादी तो गाँव की
अभ्यर्पना का आधार है, उसके लिए गाँव
चाहिए, आज सापूत गाँव नहीं है ही नहीं,
तो लादी कैसे करे ? किस आधार पर ?
लादी चलेगी तो प्राम स्वराज्य के आन्दोलन
के साथ सुदृढ़ ही। इलीगिए विनोबाजी ने
प्रिविष कार्यक्रम सुझाया है।

मैं (बिगाठा से) दरभंगा के पूरे जिने
का दान हो गया है। वहाँ लादी का काम
भी बहुत अधिक हुआ है। तो क्या यह आधार
को आप कि सही लादी कार्य का स्वयं,
बैला कि आप सोचते हैं, यहाँ बनना।
और अब तो लोग पूछने भी लगे हैं कि
दरभंगा का विचारान ही गया तो अब क्या
क्या परिवर्तन हुए ?

रामनारायण बाबू : प्रमन स्वाभाविक है
और उतमें अपेक्षा है वह भी। जबतक फुकर
गाँव या मण्डल इस आन्दोलन में छोड़े हुए
है, तब तक कोई चिप लड़ा करना सम्भव
नहीं लगता था। लेकिन अब अब पूरे जिने
का दान हो गया है, तब तो अवसर ही यहाँ

देखा काम होना चाहिए, जिसका समाज पर
कुछ 'इम्पैक्ट' (प्रभाव) दिखाई दे।

मैं : इसके लिए आपके मुझाव क्या है ?

रामनारायण बाबू : विचार को माय कर
लेना एक बात है, और उच्छी सीमा मण्डल
कर उसके लिए हर कुछ कर बालने की
तैयारी का हो जाना दूसरी बात है। लोगों ने
प्रामदान के विचार को कल्पनी चीज माना है,
लेकिन उच्छी रचना के लिए प्राम को गति
से आने बहने की तीव्रता अभी समाज में
पैदा नहीं हुई है।

बापस से कनता अकतुह भी बहुत पढ़ने
है, कि तु घोर उच्छीको देखी थी, लेकिन
आजि पिछले चुनाव में वह लिहाज देना
और कर्मिष को मारी पराजय मिली।
कनता का अकतोप्य थपनी सीमा पर कर
गया तो उसने कर्मिष को छोड़ा और चाहे

जिनको पकड़ा। अभी प्रामदान के लिए वह
परिस्थिति नहीं बनती है कि सभी पार्थिवों को
छोड़ो और प्रामदान को ही पकड़ो।

यह लिखित आये इसके लिए हमको
प्रयत्नपूर्वक कार्यय भी भावना से लुप्त
होगा। आन्दोलन में लगे सर्वोच्च प्रतिभा के
लोगों को प्रसन्नदानी क्षेत्रों में प्राम-स्वराज्य
की भूमिका बनाने के लिए निर्मोदारी-पूर्वक
लगना होगा। और दरभंगा में इसीके लिए
विनोबाजी कोर लगा रहे हैं।

हमारी चर्चा बढती जा रही थी। दिल
चल था, लेकिन हम विषय डेकर चले ने
लादी का, चले नये प्रामदान के विचार में।
इसलिए चर्चा को मैत्रि कुछ उद्योग में लाने-
की सोचिये की।

भी रामनारायण बाबू ने आन्दोलन को
थादी देर के लिए तयस् होकर देखने हुए
कुछ महत्त्वपूर्ण बातें बतायीं।

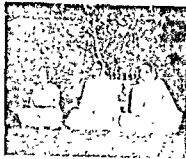
● भूदान आन्दोलन का तेज प्रगट हुआ
या सन् '५५ में। कपीन के मालिक मान बुके
थे कि कपीन अब उनके पाठ रहनेवाणी नहीं
है। भूमिहीनों को आस्था बनी थी।

● लादी और भूदान को कम्प्लिमेंट
अपने मार्ग का अवरदत रोड़ा समझने लगे थे।

● लेकिन बोधि कलम हम काट नहीं
सके। दात अस्ता किताओं के छम्प में
परिवर्तन नहीं हुआ।

पहला सप्ताह

२५ अक्टूबर को प्रयाग की मंगलवेला में कस्तूरबा प्राम की 'भूरी टेकरी' पर एक समारोह के साथ लोकयात्रा टोली की भाव-भीनी बिदाई हुई। कस्तूरबाप्राम परिवार, सर्वोदय मण्डल, विस्मर्जन आश्रम, इन्दौर महिला मंडल, स्वागत समिति की ओर से आशीर्वाद और शुभकामनाएँ टोली को प्राप्त हुईं। शहर के अनेक सज्जन इस आयोजन में शामिल हुए थे। सर्वप्रथम समन्वय की प्राथम्या के बाद श्रीमती अमलप्रभा बहन ने इस यात्रा का उद्घाटन किया। उन्होंने कहा, "आज देश भाषा, जाति, पंथ, प्रान्त और धर्म आदि के भेदों से जबर होता जा रहा है। स्थिति भयानक हो रही है। देश में सत्य, प्रेम, करुणा, संयम और शीलवश्या के लिए



यात्री बहनें

प्रयत्नशील होना अत्यावश्यक हो गया है। इस संदर्भ में लोकहित का चिन्तन करती हुई यह लोकयात्रियों की टोली घुमेगी, हमें आशा है कि भारत की बहनों में इससे जागृति आयेगी।"

अरुणोदय के साथ ही यात्रा शुरू हुई। एक साथ ठेकड़ों भार-बहनों के चरण आगे बढ़े। यात्रा का पहला पड़ाव इन्दौर तहसील में हुआ। उसके बाद यात्रा महु तहसील में आयी। दत्तोदा, जोशी गुराडिया, मिरोल, मेमदी, अम्भाचंदन, मंगारा और हरसोला गाँवों में पड़ाव हुए। मार्ग में कैलोद तथा धिवनगर भी पड़े थे। कुल २८ मील का मार्ग लोकयात्रियों ने पूरा किया। ऊँची-नीची पहाड़ों, नजार बाजरे के खेत, नवाकुरित हरी-हरी गेहूँ की लक्ष्मी यात्रा के आनन्द की द्विगुणित करती रही।

सब जगह पूर्व-तेवारी की गयी थी। पूर्व-तेवारी में इस टोली के सम्बन्ध में परचे हर गाँव में पहुँचा दिये गये थे। उसमें यह टोली विनोबाजी की ओर से निकली है यह बात लिखी हुई थी।



उद्घाटन

● आन्दोलन की प्रभावशाली शक्ति प्रगट करने के लिए हम कोई सघन-ध्वज अभी तक नहीं बना पाये।

● अकेले विहार में ३ लाख ११ हजार एकड़ से अधिक भूमि का वितरण हुआ, लेकिन इतने बड़े काम को दाताओं के कुछ छोटे दान-पत्रों ने टँक दिया।

● भूमि के मामले में सन् १९५७ तक परिचर्तन की मनोभूमिका भूमिहीनों और भूमिधानों दोनों की बन गयी थी। हम उसके लिए अनुकूल बहाने बनाने का दबाव सरकार पर डाल सकते थे। यह नहीं किया।

आशा निराशा की बहुत-सी बातें सुनते-सुनते अन्त में रामनारायण बाबू ने पुनः एक क्रांतिकारी मनोभूमिका में आकर कहा, "अब भी निराशा की कोई बात नहीं है। प्रामदागी गाँवों में प्रामसमाएँ संगठित हो जायँ और भूमि का वितरण हो जाय तो एक नयी शक्ति बनेगी, फिर आगे की लीगरी, चौथी मंजिलें पूरी होंगी। तब नया गाँव बनेगा, नया समाज बनेगा, बरकर बनेगा और तब न तो खादी पर संकट रह जायगा और न समाज पर।" (कमलाः)

—प्रस्तुतकर्ताः रामचन्द्र राहो

टोली की व्यवस्था में आगे पीछे प्राम-दानी कार्यकर्ता लगे हुए हैं। इसके गाँव के लोगों को शंका हुई कि ये नये रूप में नये ढंग से प्रामदान लेने आये हैं। टोली के पहुँचने पर गाँव में इसी विषय का मंथन ज्यादा चल्ता है। जब शंका दूर होती है तब लोग विश्वास और प्रेम से नजदीक आ जाते हैं। लेकिन जोशी गुराडिया में लोगों की शंका नहीं ही दूर हुई। इस 'लोकयात्रा' टोली का स्वरूप यद्यपि बहुत सीम्य है, फिर भी जनमानस को यह यात्रा बहुत प्रभावशाली लग रही है। जोशी गुराडिया के एक भार ने कहा—"राजपराने की तथा शिक्षित अनुभवों बने एक कठिन यात्रा पर निकली हैं। वे उठे अच्छा ध्येय मानकर निकली हैं तो मैं नहीं चाहता कि उनके पास आकर मेरे मुँह से कुछ गलत शब्द निकलें। मैं उनका दिग्दुलाना नहीं चाहता।"

धिवनगाँव में यात्रा टोली पहुँची, तो वहाँ भी लोगों का शंका हुई। इच्छालु सुल-आत में गाँव का कोई भी आदमी मिलने नहीं आया। फिर धीरे-धीरे हमारे साथ की बहनें गाँव में गयीं। उन्होंने लोगों से चर्चा की और तब धीरे-धीरे लोगों के मन की शंका दूर हुई। शंका भितनी दूर हुई, लोगों का प्यार उतना ही बढ़ा। अम्भाचंदन गाँव में बहनों की अच्छी सभा हुई। परन्तु भारदों से मिलना नहीं हुआ। मंगोरा गाँव में भी ऐसा ही हुआ। प्रामदान प्रचार की गलत-हमी के कारण काफी रूली-धुकी बातें की। गाँव से सफर होने के बाद वातावरण बदला। लोक-यात्री टोली द्वारा सभाओं में कथा-कीर्तन रामायण और नामसोपा का पाठ हुआ।



विदाई



प्रस्थान

प्रामदान नाम को छोड़कर अन्य टग से बनता के सामने बातें रखी जातीं।

मंगेश गाँव को छोड़कर अब गाँवों में माई-बदन स्वागतार्थ तैयार मिले। उन लोगों ने पूरा मेक-र, लिफ्ट लगाकर और भवन गाकर टोनी का स्वागत किया। गाँव के किसान माई बहनो का खेती के काम में अत्यन्त उत्सुक रहने के कारण दिनभर दर्शन होता नहीं। धाम को घर बाराह आते हैं और मोहन बगेरुद से निहाल होकर बातें सुनने के लिए इकट्ठा होते हैं। दिनभर के भय से थके हुए होने के बावजूद भी बाकी उद्युक्तता से और शान्ति से लग रमायी बातें सुनते हैं।

रोज सुबह ६ बजे यान छूट होती है। यात्रा से पहले सुबह की प्रार्थना होती है। रातों में कहीं शान्त पकान लो की समद देलकर हम सामूहिक अभ्यसन के लिए बैठती हैं। १५ २० मिनट का वह अभ्यसन कचमुच करता होता है। चलते-चलते कभी पुन, कभी भजन, कभी पुस्तक के रोक गाते जाते हैं। पहाज पर पहुँचने के बाद स्नान, भोजन और विभाम के बाद बन-सरक का कार्यक्रम चलाता है। पहाज पर भी सामूहिक अभ्यसन होता है, विष्णु वरुणनाम पाठ और साथ प्रार्थना होती है।

आमचम में कड़ी करी बनें को उपस्थिति कम रहती है और कभी गपटा रहता है। बरों बदनो में कठिन बगेरुद चलाता है, बरों की बनें कुछ कामत दोस्तती भूदान-यत्ना : शुक्रवार, १७ नवम्बर, १९०

है। सभा में श्री हेमचन्द्र बदन अपना भाषण अग्रिमिया में देती हैं और उसका अनुवाद स्वमीयबदन करती हैं। सायद लोगों के काम में दूध भाषा की चर्चा पलनी बार पड़ी है। लोक यात्रा का उद्देश्य, देश और दुनिया की परिस्थिति आदि समझाकर गाँव की परिवार बनाने में और विश्व को देश बनाने में क्या काम है वह बताते हैं। उसमें जिम्मेदार खान, अलग की ऐतिहासिक वृत्तमूर्ति, नामचर, नामपोषा भौगोलिक परिस्थिति, नाम घोष के तीन घोषा की ब्याख्या, रामायण के उत्तर-कांड में वर्णित रामचरित्र के प्रसंग आदि की लेकर भी निर्मम बदन बर्चा करती हैं। उठते साथ साथ ही प्रामाहित तथा लौ-शक्ति के आचरण की आवश्यकता और कैसे वह शक्ति आचरण हो सकती है, इन विषयों पर भी लोगों के साथ चर्चाई होती है।



पुस्तक परिचय

नव भारत

"दुनिया बहान साथी, राखतों का स्थान लोकतन्त्रो ने ले लिया, लेते जा रहे हैं, परन्तु हमारे विधि विधान अब भी यही पुरानी राजनीति के हैं। हमारे पठन पाठन, अभ्यसन अभ्यापन में लोकमोति नहीं, अब भी उसी राजनीति की प्रतिष्ठा है। अथवाज्ञ, समाज छात्र, सबकी वही इच्छा है।"

"द्वितीय अब ऐसे विकसुल नये छात्र को अपेक्षा है जो शास्त्रों की वेदावन्दी और धारितियों की दक्षीयवृत्त, दोनों से मुक्त होकर मानवनाच के अणुदण्ड का मार्ग प्रशस्त कर सके।"

"इस पुस्तककार्य में 'नवभारत' छात्राध्यक्ष होना" ऐसा लेखक का विधाव है।

५०३ छोड़ते इस बुद्ध ग्रन्थ 'नव भारत' के लेखक हैं—रामचन्द्रा शर्मा। ग्रन्थ प्रकाशित है—छारदा प्रकाशन, वाराणसी की ओर से। मूल्य है—मात्र पन्द्रह रुपये।

इस ग्रन्थ में लेखक ने 'गांधी विचार धारा का सर्वोत्तम पत्र शास्त्रीय अभ्यसन प्रस्तुत करने का दावा किया है। लेखक महोदय की नजर में वह रचना ५० वर्षों के

अब तक लोकयात्रा टोनी में रुक रुकती-दूर की एक विचारधारा है। बारह साल की यात्रा का निर्णय लेकर गन २६ ता० से रुक रुकती-दूर की अल्पाधिकारी भी देवी विद्यावती इस यात्रा में शामिल हुई हैं। पूर्व वैशाखी से २० बहनें रहती हैं। सामान के लिए एक बैगाकी माचला पचावतीराव प्रविशण छला से मिली है, पत्र प्रदर्शन के लिए गाँवी स्मारक निधि के एक माई भी हमारे साथ हैं।

अनेक छात्रों के चर्क में हमें आनन्द ही आनन्द का अनुभव हो रहा है। इस और अब क्या लिखें।

सबको प्रणाम।

—लोकप्रार्थी टोनी

(दिनांक २५ १० १७ से २ ११ १७ तक)

उनके निरंतर अभ्यसन और अनुभवों का प्रतिफल है।

वस्तुतः लेखक ने स्नातक एवं स्नातकोत्तर छात्रों में गांधीदर्शन, समाजशास्त्र, एव अर्थशास्त्र के समीक्षित अभ्यसन की आवश्यकता की ध्यान में रखकर अपना यह पुस्तक प्रणय प्रस्तुत किया है।

लेखक महोदय ने विषयों के वर्गीकरण और विवेचन में अपनी समता और पकड़ के अनुसार पत्र परिश्रम किया है किन्तु शिष्य के स्वी और बारीक विवेचन के लिए भाषा के विषय सुपरोपन और अति-व्यवसाय की माँग थी वह लेखक के पास नहीं है। इस कमी के कारण पुस्तक का विवेचन प्रायः छली और भ्रूयान प्रामदान के विवेचन में कड़ी कड़ी स्वरूप से अप्रामाणिक हो गया है। उदाहरणार्थ :

"अब विनोबाजी ने भूदान यज्ञ की घोषणा की, तो उ-होंने धर्मीनवालों को ह्म प्रेम पूर्वक भगनी पात्रिन धर्मीने वैश्वमीनवालों को देकर सामाजिक सुरक्षा और ध्म्यु-यान का कारण बनने की स्मरण दी।" (१४-२५२)

"अणुवि पर अ्मिक और समाज टोनी का समान अधिकार है। एक की पर्यया दूरते से कायम होती है। कोई किसीकी सीमा का अतिक्रमण न करे, दिन रहते हैं, युव और श्रुद्धि का रास्ता यही है।" (१४-१५२)

—राजिब

परिचय

खादी : चुनौती ही चुनौती

गांधीजी ने चाहे को अहिंसक क्रान्ति का प्रतीक माना था, यही समाज रचना के लिए सुझाये गये अपने रचनात्मक कार्यक्रमों के सौरमण्डल का सूत्र माना था; लेकिन चरमा हमारी नाबनाओं के पीछा की प्रतिमा बनकर रह गया। राष्ट्र के शित्त में गौरमण्डल का सूत्र 'सत्या' की तुलसी बन गया और चरमा एक छोटा उपासी चमक लिये हुए सिताता मात्र बनकर रह गया।

जिस समाज में अहिंसक क्रान्ति चाहिए थी, जिस नयी समाज की रचना के लिए चरमापूवक अर्थनैतिक का संकेत मिला था, वह समाज हमसे बलगत छूट गया और हम अपनी-अपनी संस्थाओं की चढ़ाई-उतारी में सिमटकर अब निस्तेज हो रहे हैं।

यद्यपि यह कहना कि इसकी सारी जिम्मेदारी खादी प्रामाणिकता के काम में लगे हम मोटे से लोगों की ही है, हमारे साथ अन्याय होगा। लेकिन यह भी सही है कि इसकी जिम्मेदारी के बहुत बड़े भाग में हम अपने कंधे नहीं कर सकते। हमें मानना ही पड़ेगा कि हमने प्रतिमा की उपासना भले की हो, चरमे को अहिंसक क्रान्ति का प्रतीक मानकर हम सही दिशा में भागे नहीं बढ़ पाये हैं।

और अब हम इस स्थिति में पहुँच गये हैं कि एक बार पिछले सारे अनुभवों के प्रकाश में हमें अहिंसक क्रान्ति के इस प्रतीक का सही स्वरूप देना है, इसके संकेत को समझना है, और समझकर भागे पड़ना है।

राजपुर सर्वोद्यम-सम्मेलन में हमने कुछ इसी प्रकार की घोषणा की थी, लेकिन हमारे अक्षरकर्म के प्रयास से हमें संतोष नहीं हो पाया।

वहीं हम कुछ साधियों के विचार प्रस्तुत करते हुए 'विचार-संघन' का प्रारंभ कर रहे हैं, इस माशा के साथ कि राधपुर की घोषणा और वर्तमान परिस्थिति की चुनौती के संदर्भ में हम अधिकाधिक सक्रिय होंगे।

—संवादक

तान चरण : तीन रूप

सन् १९२० में जब मैं छठवीं कक्षा में पढ़ता था, तभी से खादी पहनना शुरू किया। खादी पहनते मुझे अब चालीस साल हो चुके हैं।

सन् १९२० में जब मैंने खादी पहनने की शुरुआत की, तब उस समय एक मित्र ने जो हार्ड स्कूल में पढ़ता था, मुझे खादी की बात समझायी थी, 'गांधीजी का कहना है कि भारत के गरीब लोगों को जिया रचना और उनके मुँह में अन्न देना है तो खादी अवश्य पहननी चाहिए।' उस समय खादी को निहा के साथ समझ-बूझकर पहनना

कुछ अच्छी तरह समझा था। खादी द्वारा देश की गरीब जनता का उद्धार होगा, यह विश्वास मन में स्पष्ट हुआ था। धीरे-धीरे खादी के दूसरे स्वरूप का भी दर्शन हुआ, 'अंग्रेज सरकार एक चमक सरकार है। शोषण के लिए, और शोषण के जरिये, यह भारत में अपनी रक्षा जमा रही है। खादी को अपनाने से भारत शोषणमुक्त और शासन-मुक्त हो सकेगा।' यह बात सन् १९३०-३२ की है। सन् १९४० में जब भारत स्वतंत्र हुआ, तब दूसरे अन्य लोगों की तरह मैं भी यही सोचता था कि अब इस स्वतंत्र भारत में खादी को कोई जरूरत नहीं है। स्वतंत्रता के बाद खादी लाभ हो जायेगी, हो जानी

चाहिए। लेकिन उसी बीच मुझे सेवाभाव बुनियादी शिक्षा की आवश्यकता के साथ-साथ खादी की आवश्यकता के लिए खादी की जरूरत समझ में आयी।

इस प्रकार खादी के स्वरूपों के दर्शन करने में २० साल लगे। पहले बुनियादी शिक्षा, भूदान-प्रामदान आदि रचनात्मक कार्यों तथा प्रयोगों में लगा हूँ। नया मोड़, ग्राम इवाई, प्रखंड-दान के बाद ग्रंथ-इवाई आदि काम अभी चल रहा है, फिर भी आज खादी संकट में है। इस संकट की स्थिति से खादी का उद्धार करने के लिए हम सबसे खादी के उक्त तीनों स्वरूपों के स्पष्ट दर्शन होने चाहिए। अब तक जो खादी चली आ रही है, वह ब्यापारिक रूप में। प्रामाणिकता खादी के विचार में एक तीनों स्वरूप समाने हुए हैं। उस विचार को छोड़कर खादी टिक नहीं सकेगी।

—सदानंदन साठु, अध्यक्ष
उत्कल प्रामस्वराज्य विद्यालय,
गोपालवारी, कोरापुट

संकट : वाहरी और भीतरी

खादी और सूत के रटाक का बढ़ना खादी-काम के लिए आज एक कठिन समस्या उपस्थित करता है, क्योंकि तबका बुजुर्ग उपादन और संस्थाओं की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। पर इतना मात्र बर्नने मुझे और मान लेने से खादी की समस्या का अच्छी स्वरूप सबसे सामने नहीं आने पाता। चमक अन्य व्यवसाय के संकट के समान ही खादी की स्थिति मानने से उलका वास्तविक संकट अंतर्गत से ओसल होने की आसंका रहती है। यह बात ठीक है कि खादी का रटाक बढ़ा है और सूत का रटाक भी बढ़ा है किन्तु यह भी सही है कि किसी भी पिछले वर्षों की अपेक्षा बढ़ी है। किसी बढ़ने के बावजूद रटाक बढ़ा है तो उसके विशेष कारण रहे हैं।

इसमें सन्देह नहीं और परन्तु धारण यह रहा है कि रटाक-काई दूरी की गयी। इसके फलस्वरूप कठिनो की संस्था और जनता

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १० नवम्बर, १९७०

उदाहरण बंदना और स्वामी का 'न्याय' मूल बंदना विधि था। इस उन्ने हुए खुल की बुनारें न्यायशास्त्र में विद्यमान होना भी भावनात्मक नहीं था क्योंकि क्यारें बंदना सिद्धांत आगत है उनका बन चाहे बुनारें बंदना सम्यक् नहीं है। क्यारें और बुनारें के बीच के संतुलन को बिगाड़ने में बड़ी मदद करनेवाली दूसरी बात इसी अर्थ में है उन्ने बन का निर्णय रहा है। कर्मियों ने ही क्यारें बंदने के कारण उन्ने बन अपना लिया, उनके लिए वह सोझा सरल भी था। पर बुनारों के लिए इस तरीके प्रक्रिया को आगमने में अपनी चीजन भर की आदत की बदले का कथान था। उन्ने इस कथन में थोड़े आर्थिक प्रोत्साहन भी नहीं मिला। पर क्यारें बुनारें की दारी में रहित न बनने उनके प्रति एक अन्वय है। परन्तुमा खादी क्षेत्र में बुनारों का विद्यन सेना उन्ने एक प्रकार की मजदूरी को खादिर करता है तो इन सब परिस्थितियों के बावजूद कुछ बुनारों को अपनी खादी की बुनारें में उन्ने रहना उन्ने ही दूसरी प्रकार की मजदूरी का पौनह है। किन्तु इसका परिणाम यह हासल में क्यारें और बुनारें के बीच अलगुलन और धन के हानि को बंदने में होना अनिवार्य है।

चरमो बुनारें उदाहरण की विमोचनी करकार में अपनी मान रखी है पर बुनारों को महंगारें देने की तैयारी नहीं है। कर्मियों को दुःख दे देने में करकार की हदप्रति रही है पर उन्ने परन्तुमा उदाहरण बंदने में किन्दि आर्थिक नूँकी देना बंद अपना बन नहीं मानती।

जब वर लारी कमीशन के मार्गन करकारी आगों की विधेर लारी बनाने के लिए क्यारों पर और डाया। यद्यपि बा तो क्यारों के उपायों को खादी के साग पर अधिक धारि उन्न विद्यन में लगी। करकारी क्यारों के मातु का हानि एर्षयन हो गया तो करकार ने मातु लेने व बुनारों पर विद्यन। करकार के हत विद्यन के कारण क्यारों मुमोक्ष में रत नहीं। इनके साथ एक और सहायो क्यारों के मातु के योग्यता को है और दुनारी भाव बनती की म्योष की अवयवक

भूदान-पत्र : शुक्रवार, १० नवम्बर, '६०

विद्यन की लारी बनाना कठिन हो चला है। परीदु किसे हुए मातु का भुगतान करने में भी करकार की ओर से बड़ी दिगारें की जाने लगी है। लगीमा बंद हो रहा है कि क्षमन बुनारों उदाहरण रहे हैं और क्यारों लारें में भा रही हैं। और उन्ने से उन पर मातु न लेन पाये का हृदयम भी लगाया जा रहा है, विमोचनी विमोचनी बहुत कुछ करकार की माती का हकती है।

बलिन और बुनारों को रोचकार दिगमने के लिए करकार लारी में नूँकी सगमने का दावा करती है पर उन्ने हानि उदाहरण मातु की सगमने के लिए अनुदुक्त नीति बनाने और उन पर अग्रण करने की उम्मीद तैयारी नहीं है। एका है कि नैतिक और सामाजिक न्याय की दृष्टि से खादी के प्रति करकार की जो विमोचनी दारी है उन बंद उन्ने विमानों की तैयारी नहीं है। खादी के सम्यक उपायों अनेक कथनाओं के लिए जिगोरों करकार की नए उपायानुवि है। दरअसल मातु खादी के सतु का बलनी लक्ष्य कर रही है। यदि लारी लेगी के आर्थिक विचारों में उन्ने स्वतंत्रता है एक सामाजिक एवं विद्याल समानानुदुक्त खादी प्रागोच्य के हार्थकर्म के महारा को देश के वास्तविक हित की दृष्टि से करकार हीकर करे और उन्ने प्रति अपनी घरी नीति बनाने तो उन्ने के लिए आवश्यक नूँकी लुदान कठिन नहीं हो सकता। यह बात विमोचने लगे गरी उन्ने लकनी कि जो करकार लेन कुछ करकार लेगी के योग्यता के लिए करारी हानि बाहर से बन लकर लगी क्यारी है गरी लखार कुछ क्योदु करारा अतिरिक्त नूँकी के रूप में लखार लारी लेगी की पर धैरे इनको न्यूनतामा मात्र में हजारा देने में अक्षमपरी है। सामान्यतया किसी भी उपाय में विद्यन एका हदने या अत्यंत उच्चतम होने पर करकार मरद करने के लिए हीरकी है और वैसा बनान उन्ने भी मानता जाता है। किन्तु उन्ने मशर को विद्यन मरद क्यारें बुनारें व उदाहरण विमोचनी का संतुलन समझने तक लारी को देने में करकार शिष्टकरी है। करकार को यह उदाहरण। लुपि दृष्टि से और भी खादी की सिद्ध होनामती है क्योंकि उन्ने क्यारों बनना आन खादी

में लया हुआ है। इसलिए यदि मुद आर्थिक दृष्टि से भी देना बन तो खादी की करकार बनाने के लिए विद्यन मरद देकर लखार को अपनी नूँकी की सुरक्षा करारी की चाहिए। इसके अलावा यदि सामाजिक दृष्टिकोण से एक प्रश्न को तोलने की उदाहरण हो तो इस प्रकार की मरद क्यारी और अक्षरकार माती अक्षरकारी है। केवल करकार यह सब सुनने और हतु पर विचार करने की तैयारी नहीं है। खादी क्षेत्र के वरें से बने स्थितियों के प्रति उन्नेका दृष्टा धोखा नहीं होन पदता। कारण न आन खादी के हत पर लगे बड़ा नैतिक कथन यही है कि उन्नेने नेताओं की बात का बंधे लखार करकारी नीति एर्षय योग्यताओं पर नहीं बनना।

अब सवाल यह है कि इस कथन से मुक्ति कैसे मिले? अति-मुद लखार से विधिनाकर मरद लेने उन्ने में ही सम्मान की हानि सामाजिक ही है। उन्नेका विद्यन अक्षर नहीं है। खादीले यदि क्यारों लगे से मरद लेना अक्षर बननेमा मानते हैं तो प्रत्यार, सतुमा, प्राधि, आर्थिक नैतिक अक्षर एवं तथेता के साथ साथ कार्यकुशलता एवं धन धन के आधार ही प्राप्त बनना सम्भव है। खादी उन्नेका अपनी हीयारी के इन उपायों को योग्यता की स्वीकार करने भी न्यायस्य उद्य दिशा में गतिमान नहीं हो पाया, पर उन्नेका आर्थिक और सुविधापूर्व कथन है। एका है कि हत परिस्थिति का योग्य विचारक हुए विना विचार नहीं।

— श्रीनमल गोबंद, मजदूर

वाहितिकार... परिवर्तन... योग्यता

विद्यन खादी की मातीय बनना खादी के नूँके सगमने, उद्यम न स्वतंत्रता का बनना माननी थी तथा खादीबादी को खादी उपलब्धी मातुकर सम्मान को नख ले देलती थी, घरी अत्यंत अग्र उन्ने खादी को योग्यता का कथित सतु उन्ने खादीबादी को योग्यता का मातु कर लारा की नख ले देलती है।

● खादीमातु घने हत सगमने के नये नैतिकत करण को सामाज्य चादिर। आगों के नूँके लारी का मूपाधार कागामन

● मूल्य में सारी से मिल की स्पर्धा तो सदा रहेगी ही। इसलिए उसे किसी न किसी प्रकार का संरक्षण मिला जा चाहिए। संरक्षण देने का सबसे अच्छा रास्ता होगा, मिर्गों पर अधिभार्य टैक्स लगाना, ताकि गरीब लोगों से स्पर्धा न हो। — जेठालाल गोविंदजी

चुनौती स्वीकार करें

लाली परस्तराज्यमन के द्वारा देश को समृद्ध और शक्तिशाली बनाने का मार्ग प्रशस्त करती है। आज या दुनिया में जैसी जोर हिंसा और निराशा के अंधकार को दूर करने में दिव्य प्रकाश की सहायक दे रही है। इसके द्वारा लोकतंत्र को सतत और पुष्ट बनाकर जाति और अहिंसा को साकार करने में मदद मिल सकती है।

वहाँ उत्पादन का नेट्टीकरण होता है, वहाँ शक्ति के विचार-संचालन, कार्य-स्वातंत्र्य, निष्ठा स्वतंत्रता का दम होता है। इसके एक मात्र फलस्वरूप उत्पादन का निरिद्धीकरण ही हो सकता है। लाली और प्रामोदोगों का विकास परस्तराज्यमन द्वारा समाजशाही टंग का समाज बनाने की दिशा में एक ठोस कदम है।

जब हम अपनी भावप्रकृति की पूर्ति के लिए चीजें प्राप्त-प्राप्त की बनी लखी देते हैं तो पैसा प्राप्त कर गॉवों से रह जाता है। मिले गोविंद सुप्रसन्न बनता है। हाथ की बनी चीजें प्रत्यक्ष मर्दों द्वारा देते पर भी प्राप्त में लखी होती हैं। क्योंकि गॉव के जीवन की आवश्यकताएँ गॉव में पूरी हो जाती हैं। हम अगर मर्दों की चीजें लखी देते हैं तो हमारी भी मर्दों की चीजें लखी लखी देते हैं। एक प्रकार परस्तराज्यमन से हम गॉव को समृद्ध बनाते हैं। पर मिल की बनी चीजों के लिए अपनी मिलजुब से पैदा किया हुआ अन्न बेच कर हम पैसा प्राप्त करते हैं जो पैसा नहीं आता। गौबीवारी अर्ध-अवस्था का आधार गॉव है। उसका निर्माण गॉव की टोच नीच पर ही लखा ही सकता है, यानी सब नीचे से ऊपर की ओर बढ़ेगा, उसे ऊपर से लादा नहीं जा सकता है। स्वाभाविक गति से बनमानस को शिक्षित

पत्र परिचय

मित्र बन्धु,

शोषित और शक्ति अन्वेषणक मनुष्य दूरी का पञ्चम जीवन, अन्नदाता किसानों का कर्म से शोषित तथा दुष्ट दैन्य मरा जीवन, श्रीमानों की भयभीत तथा उदासीन और अनुदार निन्दा, सरकारी छेड़ों में पैसा दुष्प्रशासन तथा पूछवारी का चलाचल, बड़े और छोटे अधिकाधिकारियों की अहमंशता, सरकार की लाचारी, हम कार्यकर्ताओं की दयनीय और नेतृत्वहीन अवस्था, आदि आदि तथ्यों से उत्पन्न परिस्थिति ने बाध्य किया है कि हम निम्नांकित विषयों पर गम्भीरतापूर्वक चिन्तन करने हैं। हमारी समझ में अत्यन्त एक ऐसा समाज उपस्थित हो गया है कि यदि नीचे दी गयी विचारणीय समस्याओं का समाधान अहिंसा और सत्य के आधार पर नहीं किया

परिस्थिति के दृष्टांत

गया तो देश में हिंसा अपने भयानक रूप में उठ उठेगी। बिहार के पड़ोस दार्जिलिंग जिले के नक्सलाबादी आदि पार्यों में उत्पन्न परिस्थिति अधिक भयकर रूप धारण करेगी और समाज भयकर स्वरूप का शिकार हो जायगा। हमारी कल्पना में वहाँ पैस की गंगा बानी जायिद वहाँ शक्ति की वैतरणी बहेगी। अतएव हमारा समाज अनुसोच है कि एकपाटी की मयकता से पवित्र विचार को बचाने और

कर उसकी प्रामाण्य भावना का विकास करना जा-से-वक्रों का दुष्प्रकार न होना। इसके लिए बापू ने हममें विकास की दृष्टि से लाली की भावना को गॉवों में प्रतिष्ठित करने के लिए कार्यकर्ताओं को गॉवों में बैठने और अपने अपने को आत्मगत करने की बातें बड़ी थीं। आज वह समय आ गया है कि हम स्वयं एक कार्यकर्ता अपने को गॉवों में विरहित और बनाते हैं प्रामाण्य भावना पैदा कर परस्तराज्यमन से स्वदेशी की भावना समाज विकास दृष्टि से ऊपर है।

— बनारसी प्रसाद शर्मा
वि० सा० प्रा० सच,
सर्वोदय ग्राम, मुजफ्फरपुर

गरीबों तथा अमहानों को न्याय दिलाने के उपायों के बारे में लोचें और कदम उठावें। हम कुछ मित्र मुजफ्फरपुर जिला अल्पमत बनलाबाद आश्रम में एक परिस्थिति पर विचार करने बैठ विगत १ सितम्बर से ३ सितम्बर के बीच में मिले थे वहाँ हम लोगों ने निम्नांकित समस्याओं पर विचार किया और अपनी रायें सिर धी, जिसे भावकी और अपनी तथा विचार के लिए सेवा में प्रेषित किया जा रहा है। आपसे विवेक है कि आप

मन के उलझाव

एक समस्याओं पर गम्भीरतापूर्वक चर्चा विचारों और अपनी राय प्रकाशित की बड़ी नारायण सिंह, जमालाबाद आश्रम, मुजफ्फरपुर के पत्र पर जेठें १ विचारणीय युक्त नीचे मिले हैं —

● श्रीमदुत्तम विपक प्रगतिशील कार्यकों का कार्यालय देने काया जाय ?

● अन्वेषणक भ्रमशोषितों को अपनी मिहन्त का आयुष्काल पत्र कैसे मिले ?

● अन्नदाता किसानों के कर्म का बंधन कैसे देता उनका जीवन जैसे सुप्रसन्न हो ?

● श्रीमानों और बड़े कर्मियों को अपने प्रयास में शक्ति समाज ने आन्दोलन में कैसे लाया जाय ?

● सरकारी तथ को मन्त्र के टूट दूर करने के आयुष्काल कैसे बनाया जाय ?

● गौबीवारी शोषण से प्रभा की रक्षा कैसे की जाय ?

● नगालोरी का अभिभावक राज मर से कैसे दूर हो ?

उक्त विषयों पर आपको धौरता और गम्भीरता के साथ विचार करना है।

जिनकी
मार्गलाल केजरीवाल, बन्दोनाथपण सिंह
सत्यनारायण सिंह रामसेवक दुष्प्रम,
हरिद्विज रामदेव, लक्ष्मण वेम्प,
रामसेवक कानूर।

× × ×
मित्र बन्धु,
प्रिया,
ता० २५/११/६७ का मेला हुआ आधार
परिचय (पत्रांक-१२२) मिला। समाज के

भूदान पत्रा : शुक्रवार, १७ नवम्बर, '६७

जिस पिछड़े एवं उपेक्षित वर्ग की कठिनाइयों की आपने चर्चा की है उस ओर समाज के धीवस्त लोगों का ध्यान जाय, यह आवश्यक है। उन कठिनाइयों के निराकरण के लिए जिन मुद्दों पर राय स्थिर करने को आपने कहा, वे मुझे भी विचारणीय हैं। मुख्य बात यह है कि इन समस्याओं के समाधान के लिए हम कार्यकर्तागण अपनी शक्ति विश्व तरह लगायें। कार्यकर्ता ने नाते हमारी संख्या और शक्ति दोनों ही सीमित है। संख्या यदि अधिक भी हो तो भी हमारा काम एक सीमित दायरे में ही हो सकता है। हमारा (कार्यकर्ताओं का) रोल हर समय 'एज्युकटर' का ही हो सकता है, 'एजिटेटर' का कर्तव्य नहीं। हमारी समझ में इन समस्याओं का शीघ्रतम हल है प्रामादानी गाँवों में प्रामसभा का गठन एवं उनकी बैठकें।

समाधान के सुझाव

प्रामसभाओं को जो कठिनाइयों जिस रूप में होल पहुँचें, उनके हल के लिए अहिंसक और कारगर उपाय सुझाना ही हमारा काम हो सकता है। उन उपायों को वाणीगित करने में प्रामसभा आगे रहेगी, हम उनके साथ रहेंगे। हमने अधिक करने की चेष्टा यदि हम करेंगे तो अपनी स्वयंसेवा पर आघात पहुँच तो हमें होगी, पर उसमें 'लोक' पीछे हट जायगा और हम मात्र उत्तेजना फैलानेवाले (एजीटेटर) रह जायेंगे। 'लोक' को आगे रले बगैर हम शिक्षक (एज्युकटर) हो नहीं सकते। आदिरे दे कि प्रामसभा हमारी यही बात मानेगी जो उसे कारगर जेचैगी और उसे कार्यान्वित करने की क्षमता आगे आयेगी तब लोक-शक्ति प्रकट होगी।

प्रामसभा में किसान, मजदूर, उँटारदार और महाजन चारों का स्थान रहेगा। गाँव के कुछ शक्ति उररोक्त चार में से एक में अधिक हैसियत के होंगे। ये चारों सब एक साथ बैठें तो तब उन्हें सर्वममन निर्माण लेने और गाँव के सबसे कमजोर शक्ति का दिन सबसे पहले साधने का स्थान रखने को प्रेरित करना हम कार्यकर्ताओं का मुख्य काम होगा। हर प्रक्रिया में नये-नये प्रामदान तथा

प्रयत्नदान प्राप्त करना भी निहित है, तब तक, जब तक प्रत्येक गाँव का प्रामदान न हो जाय। इस तरह, मेरी समझ में, हम कार्यकर्ताओं का पहला काम है समाज की समस्याओं को अविचलित मन से समझना; दूसरा काम है गाँव के लोगों को इनके समाधान का मार्ग प्रामदान में किश तरह है यह समझना, तथा तीसरा काम है प्रामसभाओं को इन समस्याओं के निराकरण की राह दिखलाना तथा उनकी चेष्टा में साथ देना। इन्हें भिन्न-भिन्न दूरवा रास्ता मुझे बैचता नहीं।

प्रामसभा की जो शक्ति प्रकट होगी उसका अस्तर खरकाय, अपसद, कर्मचारी तथा सम्पन्न लोग, सभी पर पड़ेगा। प्रमसभा के बिना हम कार्यकर्ता संख्या का यह बल पैदा कर ही नहीं सकते जो इन समस्याओं के मुख्यभाव के लिए आवश्यक है। समाज में संख्या-शक्ति के दबाव का निर्माण हो जाने पर हमारा काम होगा उसे आपस में टकराने में बचाना और समाज रचना की दिशा में मोड़ने रहना। यह अपने-आप में इतना बड़ा काम होगा कि उन शक्ति को सही रास्ते पर बनाने रखने के लिए बड़ी-बड़ी हों जान की बाजी भी लगानी होगी। हम अभी जिनकी समस्याओं को अपना किर-दर्द मानते हैं वे उनके प्रति बेरोश हैं। समाज में जिनके कारण वे समस्याएँ पैदा हो रही हैं वे परंपरागत सोचय करने की लकीर को छोड़ नया रास्ता देख ही नहीं पा रहे हैं। अतः

हम कार्यकर्ताओं का काम है प्रामदान के बाद प्रामसभा बनाकर बेरोश लोगों को होय में लाना; माथिक, मजदूर, महाजन और उँटारदार को यह बतलाने रहना कि उनके सामने जो विचारणीय समस्या है उसको वे एक दूसरे के सहयोग से कैसे सुझा सकते हैं और अधिक सुनी तथा सम्पन्न किश तरह हो सकते हैं। इसी प्रक्रिया से समाज में चल रहे गलत मान्यताओं (भ्रात, खादि आदि में किजल-लखी) का निराकरण किया जा सकता है एवं नये मूल्या प्रतिष्ठित किये जा सकते हैं। किश मायदंड को सामने रखकर प्रामदान का विचार सामने आया है उसी मायदंड को सामने रख हम साथी-गण समस्याओं के समाधान पर चिन्तन करें तथा साथ बैठकर एक राय हो उन समाधानों को समाज के सामने रखें। जब तक हम लोगों की शक्ति 'मुँडे मुँडे मतिभिन्ना' होगी तब तक कच्चा से त्रिग होकर समस्याओं से हम चाहे कितना भी विचलित क्यों न हो उठें, कोई समाधान नहीं लोख पायेंगे। अतः मुझे शीघ्रतम प्रामदान और प्रामसभा निर्माण तथा उनकी बैठकों में समस्याओं के समाधान लोखने के लक्ष्य का बार्द दूसरा रास्ता नहीं रहता।

आशा है, आप प्रसन्न होंगे।

आरवा विभागी
—हेमनाथ सिंह

राजस्थान का मकराना विकास-ग्रन्थ

भूमि सम्पन्धी कुछ मध्य

कुल गाँव	१०१	आबादी, शान्ता, आदि	९,१७० एकर
नगर	१	गोचर	१०,०११ "
" पंचायतों	३१	राज. जल-निर्माण भूमि	१,८८० "
" परिवार	१५,०००	प्रादेशी जल	१५,३१३ "
" आबादी	७२,१२२	निर्माण जल	१,१५१ "
" पशुपन	१,००,०८०	कुल विपणन भूमि	१,८५,९१४ "
" किसान-परिवार	१२,५००	मिचर के कुएँ काट	४०१
" उद्योगकार-परिवार	२,५००	मिचर के कुएँ १ वर्ग एकर	२८५
" भूमिहीन-परिवार	२,०००	मिचर के कुएँ वर्ग एकर	७११
क्षेत्रफल	४२५ वर्गमील	भूदान भूमिपत्नी	१००
कुल बर्मीन	२,७५,३४९ एकर	प्रामदान संख्या	१७
पहाड़	११२ "		

नूतन-कल १० मध्य, १०

आन्दोलन के समाचार

कुलान अभियान

परमेश्वर ८ नवम्बर—हागदा ब्रिटे के नामरोदा तथा रैत विद्यालयों में आयोजित दो प्रदर्शनों के दौरान क्रमशः २६० तथा १०५ प्रामदान प्राप्त हुए। हागदा ब्रिटे में कुल मिन्चर ८७१ प्रामदान घोषित हो चुके हैं।

इदौर ९ नवम्बर—इदौर विद्यालय अभियान के प्रत्यक्ष रूप ब्रिटे की चारों तहसीलों में कुल मिन्चर अक्टूबर २४३ प्रामदान प्राप्त हो चुके हैं। और कई गाँवों में प्रामदान घोषणा एवं प्रस्तावित हो रहे हैं जिनका प्रतिफल पूरा होते ही वे भी प्रामदान घोषित किये जायेंगे। ब्रिटे में कुल १४० गाँव हैं।

बलिया ९ नवम्बर—बलिया में चौथे प्रपञ्च पढ़ में प्रत्यक्ष प्रदान-अभियान बेरो में चर्चा का रहा है। अक्टूबर १३ प्रामदान प्राप्त हुए हैं। बलिया में इसके पूर्व ब्रिटे के कुल १८ प्रपञ्चों में से १३ प्रमुख प्रपञ्चों का शान घोषित हो चुका है।

मुक्तनपुर : ४ नवम्बर—जिन्हा खजेंद मडल मुक्तनपुर की कार्य समिति की बैठक में सभी लोगों ने श्री ब्रजप्रकाश नारायणजी को दिवम्बर, '६७ में तीस हज़ार रुपये की पेनी एव तीन प्रर उदान से रवाना करने की योजना स्वीकृत किया है। प्रत्यक्ष प्रदान एव पैनी मद्रद के लिए प्रशास भी प्रारम्भ हो गया है।

बाराणसी ७ नवम्बर—बकिचा तहसील के नौसद प्रपञ्च में ५ प्रामदान हुए। प्रामदानी कार्यकर्ताओं का एक शिबिर हुआ। आगामी दस दिवम्बर से चालापुर और चिरद प्रपञ्च में अभियान चराने की योजना बनी है, जो प्रमुख स्थानीय समाज सेवी लोगों और स्वनामक कल्याणों के सहयोग से चरानी जायगी।

नशाबन्दी

बवपुर ९ नवम्बर—राजस्थान समग्र सेवा सच ने राजस्थान सरकार द्वारा १३ नवम्बर ६७ तक राज्य में पूर्ण शराबबन्दी की माँग स्वीकार न करने पर १४ नवम्बर से पुन २७५ गाँवी शराबबन्दी कल्याण प्रारम्भ करने का निश्चय किया है।

एल विन्चिने में कोई हल न निकलने पर सच कल्याण के तीन कदम आयोजित

करते का रहा है।

(१) १४ नवम्बर से विद्यालय, बवपुर के मुख्य द्वार पर १२ घंटे का सत्याग्रह होगा। उक्त दिन १०० छात्राप्रती शामिल होंगे। १५ नवम्बर से कम से कम ५ कल्याणों उशी प्रकार विद्यालय पर सत्याग्रह करेंगे।

(२) १४ नवम्बर से ही राजस्थान के कुछ जिलों में शराब के डीके की कुछ दुकानों पर विरहेयि शुम्भ होगी।

(३) ३० नवम्बर '६७ को राजस्थान के प्रत्येक तहसील क्षेत्र पर १२ घंटे ५ या उल्लेखे अधिक लोगों द्वारा सत्याग्रह होगा। राजस्थान प्रदेश नशाबन्दी समिति के वर्तमान कार्यान्वय का पता डा० बीरो, बि० भीलवाड़ा, राजस्थान।

शिबिर

मिमुकलला २१ से २५ अक्टूबर तक मुक्तो का एक अतिथि भारतीय शिबिर हुआ। शिबिर में 'दामि व का सवाल', 'दुल्लो का प्रश्न', 'युक्त और राष्ट्र' इन तीन विषयों पर तत्परपूर्ण विचार चर्चा हुई। शिबिर में द ग पर्मापिशाही आचार्य राम-मूर्ति, श्री मनमोहन चौधरी भी पूर्ण चर्चा जैन ने भी भाग लिया।

खगड़िया का अनुमडल दान

२१ अगस्त १९६७ को खगड़िया का अनुमडल दान श्री ब्रजप्रकाश बाबू को समर्पित किया गया। अनुमडल दान-समर्पण समारोह का आयोजन परवत्ता प्रपञ्च काशीय के प्राण में किया गया था।

इस अनुमडल के पूरक भागलपुर ब्रिटे का शिष्टर प्रपञ्च, बेगूसराय अनुमडल का साहेबपुर कमांड प्रपञ्च, उतरी सीमा पर दरभंगा जिला तथा दक्षिणी सीमा पर गंगा नगी है।

क्रमांक	प्रपञ्च	कुल राजस्व गाँव	मात राजस्व		प्रामदान जनसंख्या	प्रामदान में शामिल जनसंख्या	वत्त रुकवा	प्रामदान में शामिल रुकवा	प्रत्यक्षदान घोषणा की तिथियाँ
			लाँव	लाँव					
१	गोगरी	४०	२९	८९,८४४	७२,७७६	७८,७५७	४७,७७८	१५७६६	
२	चौधम	१८	१९	७४,८८५	६३,९७१	७०,७३६	६९,९८५	११११६६	
३	आखीनी	४६	३९	९५,२४०	७०,१३६	९०,९९१	८६,८६५	२२३६७	
४	वेङ्गदीर	३४	३१	६७,१९०	५०,८१५	६५,५२१	५९,५२१	१८४९७	
५	सागड़िया	४१	३७	१,०१,७४१	७७,१८२	१,०४,१८२	७९,९८२	११६-४७	
६	परवत्ता	६०	४६	१,०२,१४६	८४,४३२	१,०१,१४६	७९,९८२	११८३७	
७	गोग—	२४८	२०९	५,१७,०६६	४,३०,८११	५,७८,७९९	४,९२,९८०	११८३७	

मूद्रान पक्ष : शुक्रवार, १७ नवम्बर, '६७

प्रेषक सरयूप्र प्रमाद घोषित
जिला सर्वोच्च मंडल, मुक्तो

सामाजिक चर्चा

कानून और सरकार की सीमाएँ

बिहार में बंटारदायी की एक पुरानी प्रथा चली आ रही है, जिसके अनुसार भूमि का मालिक किसी अन्य व्यक्ति (बंटारदार) को लेनी करने के लिए जमीन देता है और फलतः तथा भूला-भुआल आधा-आधा बाँट लेता है। जमीन का मालिक जब चाहता है बंटारदारों से जमीन छीन लेता है।

बिहार में भूतपूर्व कांग्रेसी सरकार ने हटवड़ी, बंटारदायी, महाजनी कृषि मजदूरी और बाँधगीतों की जमीन से संबंधित कुछ कानून बनाये थे।

कानून को अमलीरूप देने के उद्देश्य से हाथ में राज्य सरकार के मुख्य सचिव ने प्रणवदस्तर तक के अधिकारियों के नाम परियत्र भेजकर बंटारदायी कानून का स्थि-करण किया है और उसे अमलीरूप देने के तरीके बताये हैं। इसके साथ साथ बिहार-सरकार भूमि-समस्या को लेकर एक अध्या-देश जारी कर रही है जिसमें इस बात की व्यवस्था होगी कि छोटे भूमिपति यदि कमी स्वयं लेती करना चाहें तो वे अपनी जमीन बंटारदायी से वापस ले सकते हैं।

भूमि-संबंधी कानूनों को सख्तापूर्वक

कैने लागू किया जाय, इसपर विचार करने के लिए भी जयप्रकाश नारायण द्वारा प्रेरित विभिन्न राजनैतिक दलों और सामाजिक संस्थाओं के नेताओं की बैठक मत १७ अक्टूबर को पटना सचिवालय में हुई।

इस बैठक में श्री जयप्रकाशजी ने राज-नैतिक दलों और सामाजिक संस्थाओं से निवेदन किया कि वे उक्त कानूनों को संयुक्त रूप से पूर्ण अमलीरूप देने का प्रयास करें। उन्होंने कहा कि यह कार्य बिना हिंसामय रास्ता अपनाये मेन-मिलान से होना चाहिए।

राज्य के मुख्य मंत्री श्री महात्माया प्रसाद सिन्हा ने कहा कि इस बैठक का निर्णय सरकार के मानने योग्य होना चाहिए। राज्य के राजस्व मंत्री श्री इन्द्रदीप सिन्हा ने कहा कि सरकार बैठक के मुद्दाओं पर विचार करेगी। उन्होंने कहा कि बंटारदायी कानून में छोटे और बड़े भूमिपतियों में भेद करना होगा। छोटे किसानों को अपनी जमीन बंटारदायी से वापस लेने की छूट देनी चाहिए, लेकिन बड़े भूमिपतियों को यह सुविधा नहीं मिलनी चाहिए। उन्होंने कहा कि हटवड़ी कानून में आवश्यक सुधार किये जायेंगे और इस कानून का पूरी शक्ति से अमल कराया जायगा। न्यूनतम-मजदूरी-छवाहरकर-समिितियों में कृषक मजदूरों के प्रति-निधियों को स्थान देकर न्यूनतम मजदूरों में सुधार किया जायगा।

चेक के माध्यम से उधार देने-के लिए कहना चाहिए।

बिहार प्रदेश कांग्रेस-कमेटी के अध्यक्ष श्री राजेन्द्र मिश्रा ने कहा कि भूमिरीन कृषक मजदूरों की आवाजों-न-बाँधगीत की) भूमि की रक्षा के लिए सरकार को शीघ्र कदम उठाना चाहिए। जनसंघ के भी राज्य प्रसाद ने कहा कि आवासीय भूमि से संबंधित भूमिरीन कृषक मजदूरों के नामों के पंजी-करण के लिए विशेष अधिकारियों की नियुक्ति होनी चाहिए। श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने कहा कि बंटारदायी कानून लागू करने की शक्ति सरकार में नहीं है। बंटारदायी के नाम पंजीकृत करते समय भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलेगा। उन्होंने हटवड़ी कानून में सुधार करने की माँग की। उपमुख्य मंत्री श्री कर्सी ठाकुर ने कहा कि इस बैठक के निर्णय और कानूनों के अमल के लिए संगठन करने चाहिए।

बिहार जनसंघ के मंत्री ने कहा कि इन कानूनों का अमल मैत्रीपूर्ण वातावरण में होना चाहिए। राज्य के श्रम मंत्री श्री जयान सिंह ने आश्वासन दिया कि नदर और नक-रूप दोनों में न्यूनतम मजदूरी-कानून का पूरी शक्ति से अमलीकरण किया जायगा।

बिहार सायबवादी पार्टी के मंत्री और राज्य परिषद के सदस्य श्री जगन्नाथ सरकार ने इस संघ में अनमत कायद करने की आवश्यकता पर धोर दिया।

प्रसोपा के मंत्री श्री प्रेम जमीन ने कहा कि अन्तोत्पादन की वृद्धि के लिए इन कानूनों को लागू करना बहुत जरूरी है।

लेकिन इस सम्बन्ध के बाद मुख्य रूप से जनसंघ के नेताओं ने विमर्श का उभर रवैया अपनाया है। परिणति में भारी परिवर्तन आ गया है। मत् ३ नवम्बर ६७ को पटना में इस सत्रसिधे की दूसरी बैठक में जेय-व सायबवादी दल के नेताओं और १ कांग्रेसी नेता ने भाग लिया। कुछ मिनटकर इस प्रयास की निणवति निराशाजनक ही दिवानी दे रही है। सरकार की शक्ति और धमती की सीमा का इन्हने दृढ उदाहरण और दूसरा क्या हो सकता है!—नम्र।

टिप्पणी...



पुलिस मंत्री श्री रामानंद विवारी ने कहा कि महाजन कृषकों को जितना छूट देता है उसके चौगुने पर दस्तखत करवाता है। श्री जयप्रकाशजी ने कहा कि इस सुधार से बचने के लिए महाजन की रूपये मनीभावन या

भूदान-श्रृंखला

भूदानस्य परिणामात् प्रजासत्ताकस्य विकासोत्तमोपयोगिनोऽस्माकं प्रतिज्ञा

सर्वे सेवा सोच का मुख्य पत्र

सम्पादक : राममूर्ति

शुक्रवार वर्ष : १४
२५ नवम्बर, '६७ अंक : ८

माखिरी वसोयतनामा

राजनीतिक स्वाधीनता प्राप्त हो जाने पर, शक्ति आदि कईमान स्वतंत्र और हॉके में सर्वांग प्रचार के धारण और लक्ष्मीय वच के रूप में अपनी सम्पत्तियों को देना है। भारत को सब ही मंगी और बारी के अन्तर्गत ७ अक्षरों के लिए सामाजिक, नैतिक और आर्थिक स्वाधीनता प्राप्त करनी है। भारत को अपने लोकप्रजासत्ताक देश को और प्रगति बनने में, वैदिक-शक्ति पर नास्तिक शक्ति को भेदना के लिए स्वयं करना अनिवार्य है। इसे राजनीतिक हस्तों और साम्प्रदायिक हस्तों की अक्षय प्रतिक्रिया के अन्तर्गत करना होगा। इस तथा अन्य कारणों से अनेक भारतीय बाल्य कालों सेवान्त आदि स्वतंत्रता को विचारित करने तथा निम्नलिखित विचारों के अन्तर्गत हमने परिश्रमिण स्वतंत्रता बनने के अधिकार के लिए लोक-सेवक दाय के रूप में विकसित होने का निश्चय कराया है।

पंच प्रकार आदि (जिनी या पुण्य) की, जो आत्मघनी का प्राप्त प्रकृत (किन्तु माइन्ड) की, मलेक पञ्चाक्षर एक इकाई बननी।

इस निष्कर्षों सम्बन्ध अन्तर्गत में एक नेता निर्वाचित कर उसके अधीन एक कार्यकारी दल चलायित करेगी।

इन इस प्रकार एक ही संघर्षों को आरम्भ, जो पञ्चाक्षर प्रथम सेको के नेता प्रकृत में दितीय भेरी का एक नेता सुनोरे तथा प्रथम भेरी के नेता निष्कर्षण (द्वितीय भेरी के नेता के अधीन कार्य करेगी। इसी प्रकार ही ही पञ्चाक्षरों का अन्तर्गत उत्तर की ओर दर्श एक होगा कि ये सम्पन्न भारत में हीन कार्यो तथा पञ्चाक्षरों का प्रत्येक दल प्रथम भेरी के नेता के चुनाव की मति प्रकृत दितीय भेरी का तथा नेता निर्वाचित करेगा। दितीय भेरी के सभी नेता अधिमिलित रूप से अन्तर्गत देश तथा अन्तर्गत रूप से अपने अपने क्षेत्र ही सेवा करेगी। दितीय भेरी के नेता आन्तर्गत प्रकृत पर अपने में से एक को प्रथम नेता सुनोरे, जो अन्तर्गत इच्छासुख सभी हवी का निश्चय और संघर्षण करेगा।

वेदों के इस दल को प्रामाण्य या दिव्य परिचयों में बाँधे का ओर प्रथम नहीं किन्तु मखर है। तथा सम्पन्न भारत में कार्य करने का अधिकार उन दल का हवी में विहित है, जो किसी समय उपरिष्ठ किये गये हों। यह बात प्रथम में सम्पन्न परिधि कि वेदों को यह संस्था अपने स्वामी, अन्तर्गत सम्पन्न भारत ही कार्य और बुद्धिमत्पुण्य की बलिदानों तथा के अन्तर्गत अधिकार अन्तर्गत कार्य प्राप्त करनी है।

प्रत्येक कार्यकर्ता आरम्भ, अपनी दाय से बडे हुए की अन्तर्गत अन्तर्गत भारत भारत का प्रथम प्रमाणित करनी प्रयोग तथा मखिर का कार्य सेवक न करेगा। यदि वह किन्तु होगा जो वह अन्तर्गत रूप से या परिहार में किसी भी रूप में अन्तर्गत का माय होगा। प्रथम होगा तथा वह आन्तर्गत देव्य, सभी वर्गों के मति सम्पन्न अन्तर्गत और मखिर और दिव्य किसी भावि, सब या जो पुण्य के अन्तर्गत के हवी के लिए प्रथम अन्तर्गत और किन्ति के कार्य में विहास करेगा।

इस अंक में	
दूँधी भावि, दूँधीबाद नहीं	११
—सारासंक्षेप	
कार्य के क्षेत्र सम्पन्नता से क्षेत्रों!	१२
—सिद्धार्थ इच्छा	
परमाणु युद्ध के परिहार	१३
—अन्तर्गत यक्षरा विना	
सम्पन्न-धौत	१५
—सुधाव किन्तु 'संवेत'	

अन्तर्गत सम्पन्न .
सम्पन्नार्थ इच्छाओं
अन्तर्गत पर
अन्तर्गत के सम्पन्नार्थ
सम्पन्नार्थी आन्तर्गत
सम्पन्न ही पर
विहास कार्यकर्ता आन्तर्गत!

कार्यकर्ता प्रकृत : १० ह०
एक मति : २० फेरे
विचार में : सारासंक्षेप कार्य-
१० ह० या १ फेरे या २४ कार्य
(२४वें कार्य-प्रकृत देना के अन्तर्गत)
सर्व-निष्ठा-सर्व-प्रकारण
सम्पन्न, सारासंक्षेप-
मौन व- १२५५

—मौन १५० गाँधी
१५१ १८

देश :

१२-११-६७ : उपप्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने अपना मुसुबा दुहराया कि नयाबन्दी के सवाल पर देश में जनमत-संग्रह किया जाय।

१४-११-६७ : श्री ए.ए. के. पाटिल और श्री गुलजारीलाल नन्दा ने कमिश्न-अध्यक्ष को सूचित किया कि यदि अध्यक्ष-पद के लिए चुनाव हुआ तो वे इस चुनाव में लड़े होंगे।

१५-११-६७ : प्रधानमंत्री ने लोक-सभा में कहा कि मंगला बाँध के बन जाने पर उन्होंने राष्ट्रपति अय्यर को बर्खास्त दी, इसका यह मतलब नहीं कि भारत ने पाक-अधिकृत कश्मीर पर अपना दावा छोड़ दिया है।

१६-११-६७ : डा० इशारी ने योजना-आयोग को दो गयी अपनी रिपोर्ट में बैंकों के राष्ट्रीयकरण के प्रस्ताव की पुष्टि की।

१७-११-६७ : परिचय बंगाल के मंत्रिमण्डल ने १८ दिसम्बर को विधान सभा की बैठक बुलाने के अपने पूर्वनिर्णय की पुष्टि की।

१९-११-६७ : चाँदनी चौक, दिल्ली में कपड़े की लगभग ७० दुकानें बलबल भरम हो गयीं, जिनमें कई करोड़ रुपये का कपड़े का स्तक था।

२०-११-६७ : भारत सरकार ने घोषणा की कि ब्रिटिश पौण्ड के अवमूल्यन के बावजूद भारतीय रुपये के मूल्य में कोई हेरफेर नहीं होगा।

विदेश :

१६-११-६७ : अमेरिका के राष्ट्रपति जॉनसन ने जापान को बोनिन टापू वापस छोड़ने की बात की।

१७-११-६७ : ब्रिटेन ने संयुक्त राष्ट्रसंघ में पश्चिम एशिया में समझौते के लिए एक प्रस्ताव पेश करके इसराइल और अरब राष्ट्री से उभे स्वीकार कर लेने का अनुरोध किया।

१९-११-६७ : ब्रिटेन तथा संयुक्त अरब गणराज्य ने आस परस्पर दूत-सम्बन्ध पुनः स्थापित करने की घोषणा की।

२०-११-६७ : ब्रिटेन ने देश की अर्थ-व्यवस्था को सुदृढ़ बनाने के लिए पौण्ड स्टर्लिंग में १४.२ प्रतिशत अवमूल्यन करने की घोषणा की।

भारतीय प्रधानमंत्री रूसी क्रान्ति के वर्षगाँठ-समारोह में

मास्को में बोलशेविक क्रान्ति के पचासवीं वर्षगाँठ-समारोह में भारत की प्रधानमंत्री उपस्थित रही। रूस की शक्ति का प्रदर्शन इस समारोह में किया गया। रूसी प्रधानमंत्री कोसीजिन तथा युगोस्लाव के अध्यक्ष मार्शल टीटो के साथ रूसी शक्ति के प्रदर्शन को भारतीय प्रधानमंत्री ने देखा और प्रभावित हुई। भारत छोड़ने के बाद इवार्ड अह्यूटे पर संवाददाताओं को उन्होंने मास्को के शक्ति-संचालन का महत्त्व समझाया। उन्होंने कहा कि प्रदर्शन में क्रान्ति का भाव अत्यन्त ही होता था।

रूस के साथ मैत्री के सम्बन्ध बढ़ाना और बोलशेविक क्रान्ति के पचासवीं वर्षगाँठ-समारोह में भारतीय प्रधानमंत्री का उपस्थित रहना, ये दोनों दो बातें हैं, जिनका एक-दूसरे से कोई मेल है। साम्यवादी शक्ति का महत्त्व तथा उसके परिणाम दुनिया के सामने रखने के लिए, तथा शक्ति और उसके परिणामों के प्रति दुनिया के मुक्तों का आकर्षण बढ़ाने के लिए मास्को में शक्ति-प्रदर्शन-समारोह किया गया था। साम्यवाद, चीन तथा रूस, इन दो शक्तियों में बँटा है। रूस चीन से ताकतवर है, और उसके पक्ष में सभी साम्यवादी मुक्त हैं, यह दिखाने का प्रयास रूस द्वारा बराबर किया जा रहा है। इस पचासवें वर्षगाँठ-समारोह में 'रूस में ही साम्यवादी शक्ति का प्राण है, वह चीन में नहीं है', यह दिखाने का प्रयास रूस ने किया। समारोह में शक्ति-प्रदर्शन का महत्त्व भारत की प्रधानमंत्री की उपस्थिति से और भी बढ़ा है। चीन और दुनिया के मुक्तों को रूस ने बताना चाहा है कि लोकतांत्रिक मुक्तों को भी रूस का आकर्षण है, और लोकतांत्रिक मुक्तों को भी वह अपने गुट में लाने की शक्ति रखता है।

रूस की शक्ति बढ़ती है या पतली है, यह एक अलग अध्ययन का विषय है। लेकिन भारतीय प्रधानमंत्री का रूसी क्रान्ति की पचासवें वर्षगाँठ-समारोह में उपस्थित रहना, भारतीय लोकतन्त्र की दृष्टि से सोचने का

आपके पुत्र

तथा अध्ययन करने का विषय अवश्य है।

बोलशेविक क्रान्ति का महत्त्व दुनिया मानती है। लेकिन इस क्रान्ति ने जो आदर्श प्रस्तुत किये, वे मानवता के आदर्शों से विचित्र अलग हैं, विपर्यस्त हैं। लोकतन्त्र तथा स्वतन्त्रता का मूल्य रूसी क्रान्ति में है, ऐसा कोई भी लोकतन्त्रवादी नहीं मानता। मार्शल टीटो के साथी (एक क्रान्ति के युगो-स्लाव के उपाध्यक्ष, अमी टीटो के हुसम से जेल काटकर बाहर आये) साम्यवाद को चुनौती देनेवाले विचारक मिलोवान बियाचाने ने 'द न्यू क्रायल' नामक अपने ग्रन्थ में रूसी शासन तथा आदर्शों का जो मूल्यांकन किया है, उससे पता चलता है कि व्यक्तिगत स्वातंत्र्य की रक्षा रूसी क्रान्ति में सम्भव नहीं है। मनुष्य की स्वतन्त्रता को जिस साम्यवाद ने रोक रखा है, उसका लोकतन्त्र में विश्वास नहीं रहेगा, यह विचित्र स्वभाविक है। लेकिन भारत जैसे लोकतांत्रिक राष्ट्र के प्रधान-मंत्री ने रूसी क्रान्ति के समारोह के अवसर पर उपस्थित रहकर साम्यवाद तथा रूसी क्रान्ति का महत्त्व तथा उसकी उपयोगिता को स्वीकार किया है। क्या आगतिक शक्ति और सहअस्तित्व का अर्थ लोकतन्त्र को नीचा दिखाना माना जायगा ?

स्वतन्त्र पार्टी के भी मणनी ने प्रधान-मंत्री को रूस जाने से मना किया था, लेकिन उस बारे में प्रधानमंत्री ने कोई भी स्पष्टीकरण नहीं दिया। कम-से-कम मैंने नहीं पढ़ा। क्या मतलब मानना चाहिए इसका ? ऐसे ही उदात्त सामने आते हैं, जो प्रधानमंत्री के उक्त समारोह में शामिल होने से रोक दिए हैं। कुछ भी हो, प्रधानमंत्री मास्को में क्रान्ति की वर्षगाँठ पर शक्ति-प्रदर्शन में शामिल हुईं, यह बात लोकतन्त्रवादियों को भारतीय लोकतन्त्र की दृष्टि से आश्चर्य देने योग्य है।

—बाबूबाबू चन्द्रावर
महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल,
बाबूबा, बम्बई-५०

भूतान-यात्रा

भूतान के विकास में भूतान के विकास में भूतान के विकास में भूतान के विकास में भूतान के विकास में

पूँजी चाहिए, पूँजीवाद नहीं

श्री अयोध क मेलता ने व्यापारियों को खराब ही दे कि और चीजों के साथ साथ वे गाँव के विकास में भी पूँजी लगाते। बहुत नैक सलाह दे पर। अर्थशास्त्रियों और योजनाकारों ने बार-बार कहा है कि इस 'पूँजी विपन्न' (देवियल ह्यूम) देश के विकास में पूँजी का अभाव सबसे बड़ी बाधा है। लेकिन एक बात को पूँजी लगानी चाहिए। क्या यह चाहते हैं कि पूँजीपति उधक, नरें, और ट्यूबवेल बनवायें? बीज-गोदाम, खाद डीपें, मोल्ड स्प्रेडर और अन्य मशीन खरीदें। या, बड़े-बड़े पार्स बनाकर देहा-निष्ठ यंत्रों के छोड़ते लेती हों और मुनाफे की लेनी का चानदार नमूना प्रस्तुत करें। या, गाँव के लैक्टियों के चिन्म भावना युद्ध पर कर्म की व्यवस्था करें। आखिर, भी मेहता चाहते क्या हैं ?

ऐसी बात नहीं है कि रिजलेट यंत्रों में पूँजीपतियों का ध्यान गाँवों की ओर गया नहीं है। हाल के बमाले में अग्रर की लेनी जिस सेबी के साथ बढी है उसमें हिमने केना लगाया है। बड़े शहरों के आस पास रुकनी और पत्र आदि की बढे बढे पाने पर जो लेनी हो रही है वह किलके पेते से हो रही है। इस तरह की व्यापारिक लेनी में व्यापारियों तथा सरकार के शिपार्स अधिकाशियों का बहुत अधिक पैसा लगा है, और लया रहा है। गाँव करने पर यह बात भी निक लेगी कि इस तरह की ऐसी ही बहुत कारी पैसा मुनाफापवारी और चोरबाबायी का लया हुआ है।

'हिन्दुस्तान होवर' जैसी व्यापारिक कम्पनी ने मन्त्र की लेती को बकरदस्त बढावा दिया है। आबकल्य बड़े शहरों में बीज बढा रहस्य होगा जिसके पर में 'हिमा नग' (हिमा पीव) का विकेन मिले। पञ्जान में तो शारी में डूँकर उठी तरह प्रतियु का चिल (रेशम विपन्न) माना जाने लगा है, जिस तरह पहले पोषा, हाथी या मोरन माना जाता था। आखिर है कि नयी पूँजी देश में पूँजीबारी लेनी (देवियल्टर एपीकचर) का नमूना पेश कर चुकी है, और हर बाह्य पूँजीपतियों की बहाल उठ और बाबाब बढ रही है, यहाँ तक कि नरनियों बनाकर लेनी करने की बात भी करी जाने लगी है। सरकार के 'विकेन प्रोमान' के सेवों में भी पूँजीबारी लेनी का चिन्म लागू दिनाथी होता है।

मोचने की बात है कि क्या हम गाँव में पूँजी इसी रूप में ले जाना चाहते हैं। पूँजी मात्र एक जनीति और अभाव्य, योग्य और मुनरागोरी, का माध्यम रही है : क्या अब भी हम पूँजी का जीवन में बरी स्थान देलना चाहते हैं ? क्या यह माना जाय कि भारत के प्रामीण विकास में पूँजीबारी शोर अतिवर्ष है। क्या उत्पादन शक्ति जीवन के मूल्यों की बीजल सुखने विना समव नहीं है ?

भूतान क्या : सुक्रुवार, २५ नवम्बर, १९७०

भारत को पूँजी-विपन्न नहीं, भ्रम ६५५ (लेबर रिच) मानके अन् और साथ के आधार पर गांधीजी ने समाज के चिन्म त्रिम ऊँची जीवन कला (मेग्ड डिजाइन पर लिबिंग) को योजना प्रस्तुत की है, उसमें चिन्म तरफ पूँजी का मानिक है, उसी तरह बुद्धि का मानिक है, और धर्म का भी मानिक है। तीनों 'मानिकों' के मेल से उत्पादन भी नयी और जीवन को सुन्दर सातेदारी बननी है। उनही योजना में 'मजदूर' दे ही नहीं। और, आब का प्रमाना भी ऐसा है कि मन मजदूर रुप की कलौड़ी से छुट्टा नहीं होगा, यह समता का शरीय चाहता है। नये बमाले की समलया गरीबी नहीं, विपन्नता है।

अब गांधी की योजना विनोबा की सपना में प्रकृ हुं है। उस सपना का नाम है प्रामदान। प्रामदान में 'गाँव की पूँजी' (ग्रामकोष) के प्रदन की नयी दृष्टि से देता है। जिस पूँजी का गाँव के किसान, मजदूर, श्यापारी और नौकरों करनेवाले अपनी बमार्द का एक अउर देकर बनायेने वह सबकी लेनी, सबके मन्त्र दे सकती है। किसान लगाने या उत्पाद प्रामदाय के प्रामकोष को मन्त्र बन सजना के गाँव में, जिसमें गांधी देता है कि रेडू हमार की ओर प्रति कीया अधिक नहीं, दम मन भी उषन ही तो एक फलव में गाँव के पास दस हमार की अपनी पूँजी हो बावनी, जो लेनी की उठन सुविधा होने पर दस फलव में बढेगी और हर सख बढती बावनी। अन् और नकद रुपये के अभाव्य गाँवों में पण और मनुष्य शक्ति का अभाव्य भागदार पहा हुआ है, लेकिन डूव है कि हमारे रूप में देलना गुरु ही नहीं किया है। उनके चिन्म धम केवल धन है, और पूँजी कुठ और है।

विज्ञान और विकास का उचित-रूप धारण कर सरकार के हर धन और प्रोत्साहन से प्रामीण क्षेत्र में केनेवाले नये 'पूँजीबारी' से आगाह ही बाने की सकल है। हमारा देश सचमुच छोटे लेति हों, छोटे शारीगरी, और गरीब मजदूरों का देश है। इन फाकों को छोड़कर विकास की गांधी दोहानेवाली योजना राष्ट्रीय नहीं करी जा सकती। प्रामदान पूँजी, अन् और बुद्धि को गुरुक शक्ति की रूप में देलता है। अगर केवल पूँजी को बढावा देकर हमने इन तीनों के धाचियों को एक दूसरे के मुकारिने में सहा कर दिया ता समता और समाधिक न्याय के चिन्म धर्म सर्वपर के शिषाय दुषर रास्ता नहीं रह बावना।

श्री मेहता की सलाह देय की उसी रास्ते पर ले बावनी। इच्छि हमें पूँजी तो चाहिए, मजदूर चाहिए, लेकिन पूँजीवाद नहीं चाहिए।



भाप भी हाप कमाव्ये !

कांग्रेस के नेता गम्भीरता से सोचें !

इतिहास में शायद ही ऐसी दुर्घटा मिलाऊ मिले जिसमें भारतीय कांग्रेस जैसे विद्यालय, पुरानी, और लोकप्रिय संस्था, जिसका अंगठन इतना न्यायक और गहरा रहा हो, जिसके प्रति एक कृपा राष्ट्र के भावज में इतना आदर और सम्मान हो, बीच बरस में ही लोकप्रियता के बिल्कुल दूरे छिरे पर पहुँच गयी हो। कांग्रेस की जो मौजूदा स्थिति उसकी अन्दरूनी हालत तथा बाहरी प्रतिष्ठा दोनों-वैधी है उसके बारे में चिन्ता कम बड़ा बाध उतना ही अच्छा है। आजारी के दिनों में जिन्होंने क्यों तक उसके नेतृत्व में काम किया, उनके लिए यह परिस्थिति साध तोर से बेदाना पहुँचानेवाली है। पर जो बलु-स्थिति है उससे इन्कार नहीं किया जा सकता।

कांग्रेस अन्य राजनैतिक पार्टियों की तरह एक पार्टी होती तो बात दूसरी थी। वैधी हालत में उसके बारे में क्यादा चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं थी। वह अपनी भीत व्याप भर आती। पर कांग्रेस का एक इतिहास रहा है। उसके नाम के साथ एक परम्परा जुड़ी हुई है। जिस तरह हजार मतभेद होने पर भी कबों से विचारित दम्पित सामान्यतया एक-दूसरे से अच्छा नहीं होते उन्हीं तरह आज भी वैकी-इन्कारों अथवा लोनों और राष्ट्र के सेवकों की मान्यताएँ तथा उनका मोह कांग्रेस के साथ जुड़ा हुआ है। यह धारणें हुए भी कि एक कांग्रेस का सुधार हो सकेगा या वह फिर से बन-मानस का आदर और ध्यान प्राप्त कर सकेगी, यह संभव नहीं है, और उसके जतिसे राष्ट्र की सेवा हो सकेगी की गुंथाइय नहीं है; ऐसे लोगों की शक्ति उस संगठन के साथ जुड़ी होकर बेकार भा रही है। इस ज्ञान में राष्ट्र का बड़ा नुकसान हो रहा है।

देश की राजनैतिक परिस्थिति दिनोदिन अस्तन् चिन्तनक होती भा रही है, यह हर कोई महसूस करता है। जो लोग यह समझते हुए भी अपने स्वार्थवच झुठारणों को रचना और जमीन में मुँह छिपाये रखना चाहते हैं, या जो लोग सोचने-समझने की शक्ति ही नहीं रखते, उनकी बात अलग है, यन्ना हर विचार-शील व्यक्ति आज की परिस्थिति से चिन्तित है।

एक तरह ऐसी परिस्थिती है जिनका दर्शन और मान्यताएँ ही उन्हें इस बात के लिए प्रेरित करती हैं कि मुक्त में दिशा कोष अराजकता का यातावरण पैदा किया जाए। दूसरी ओर ऐसे लोग और पार्टी हैं जो अत्यन्त संकुचित और साम्यवाधिक मनोहृतिवाले होने के नाते उनको ही विघटनकारी तथा खतरनाक हैं और सामाजिक, आर्थिक मामलों में प्रतिक्रिया-वादी भी।

पक्षों मेंगीवाले लोग या पार्टियों भी (चाहे दावा वे जो कुछ भी करें) लोकहित की दृष्टि से प्रतिक्रियावादी ही हैं। हमारे जैसे लोगों की, जो राजनीति की व्यथता मानते हैं और जो समझते हैं कि आज के युग में अब राजनीति के जतिसे लोकहित की संभावना नहीं रह गयी है, उनकी बात अलग है, क्योंकि ऐसे लोग तो सारी राजनीति को ही तोड़ने और उसकी बाह्य लोकनीति की स्थापना करने में लगे हुए हैं। पर संक्रमण-काल में, लोकनीति की प्रतिष्ठा होने तक, राजनीति चलेनाचाली है,

सिद्धार्थ दंडवा

यह ध्यान में रखते हुए राजनैतिक क्षेत्र में उत्प्रेरक दोनों प्रकार की प्रतिक्रियावादी ताकतों के अस्तित्व ऐसी तीखरी शक्ति का रोना बहुत आवश्यक है, जिसका विश्वास लोकतंत्र में हो, यानी जो मेनकेनपकरण-दिशा वे भी-सदा हथियारों की इच्छा रखने के बजाय भिन्न-भिन्न विचारों का आदर करनेवाली, सब धर्मों, विचारों आदि की एकता और समन्वय में विश्वास रखनेवाली, सामाजिक और आर्थिक बराबारी की दूर करने के लिए उत्तर और अपने निजी या दृढगत स्वार्थ के ऊपर समातद्धित को प्राथमिकता देनेवाली हो।

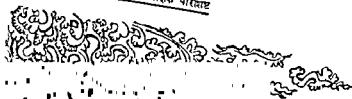
इस प्रकार की मान्यता रखनेवाले लोग आज विभिन्न ढलों में बँटे हुए हैं। कांग्रेस में भी वे काफी संख्या में हैं, लेकिन उनकी शक्ति एकत्र और संगठित नहीं हो पा रही है। कांग्रेस बर तक नहीं टूटती है तब तक उस हीलरी शक्ति का प्रबलत बनना संभव नहीं है। बहुत से अन्धे लोग जो गांधीजी के

विचारों से प्रभावित हैं, उदार हैं, दृष्टि हैं, सामाजिक दृष्टि से प्रगतिशील हैं वे पुराने मोहवश कांग्रेस के पास में बँचे हुए होने के कारण उसके दृष्टल में बँच गये हैं, पर (चाहे कुछ लोगों को यह बात कबूची लगे) कांग्रेस का नाम इतना बदनाम हो चुका है कि क्रोड़ भी प्रगतिशील या आगे की ओर देखनेवाला व्यक्ति या दल उनके कांग्रेस में रहते हुए उनसे अपना संबंध नहीं जोड़ना चाहता। स्वार्थी डा० मोरिया या आदर्शीय राव-गोपालचारी जैसे के मन में जो यह भावना बनी कि कांग्रेस को तोड़ना ही चाहिए उनके पीछे केवल राजनैतिक हेष, ईर्ष्या या नफे की भावना देलना राजनैतिक बचपन की निशानी है। उसके पीछे वस्तुस्थिति का दर्शन तथा देखादृष्टि की दृष्टि है, चाहे अन्य लोग उसके सहमत न हों। बंगाल, बिहार, उत्तर-प्रदेश, हरियाणा, मध्यप्रदेश आदि सभी प्रांतों में आज हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं कि बीच की उदार शक्तियाँ दाहिने-बाँचे दोनों ओर के प्रतिक्रियावादी दलों के साथ भिन्नकर चाल चलाने का खतरा उठाने को तैयार हैं, उदा रही हैं, लेकिन कांग्रेस के साथ मिलने की तैयार नहीं हैं, जब कि कांग्रेस में भी उदार तत्व काफी संख्या में मौजूद हैं।

इस धारी परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए आज यह राष्ट्र के हित में आवश्यक मादम होता है कि राजनैतिक पार्टी के रूप में कांग्रेस समाप्त हो। वेते तो वह खतम हो ही रही है, पर आज की तरह बाहरी प्रत्यावालों से और आन्तरिक हागहों से उसका धीरे-धीरे टूटना मुक्त की दृष्टि से अच्छा नहीं है। इस प्रकृति से उसके अन्दर के अन्धे तत्वों की शक्ति भी नष्ट हो जायेगी, वे जिन्होंने बर बल्लों और कायरा केवल दृष्टि और वाग्-धंधी प्रतिक्रियावादी दलों को होगा, क्योंकि इस बीच उनकी शक्ति बढ़ती रहेगी।

अतः अब कांग्रेस को बनाने रखना राष्ट्र के हित में मायक है, यह सब कांग्रेस के कम-पार्टी को समझना चाहिए और यह समझकर कांग्रेस को धीरे-धीरे टूटने देने के बजाय उन्हें स्वयं विघ्न करके उसका विघटन करना चाहिए। गांधीजी से बहुरक दृष्टि का स्वार्थक

भूशान-यज्ञ : शुक्रवार, २४ नवम्बर, १९०



गाँव की बात

२४ नवंबर '६७
 पृष्ठ २, अंक ८

इस अंक में पढ़ें—
 लगान क्यों ? क्यों नहीं ??
 अच्छी देती—सब की देती—सब की लेती
 'इस घर भी सोनोरा ६४ बोझा'
 धरती बेचने के लिए नहीं है
 एक दूसरी नक्काबनाई
 भरोसे की बात
 कुछ सास की, कुछ बहू की
 कानून की जकड़, गाँव की एकड़
 अमेरिका में सामूहिक जीवन के प्रयोग—
 मंगले अक का कार्यक्रम—
 गाँव का सवाल, गाँव का जवाब

२४ नवंबर, '६७
 पृष्ठ २, अंक ८ [१८ पैसे

लगान क्यों ? क्यों नहीं ??

गाँव के कई मित्र कहते हैं कि लगान उनके लिए कोई बड़ा मसदा नहीं रह गयी है। फिर सरकार के लिए क्यों बन गयी है ? वान भी सही है कि जब अनाज का इस तरह बड़ा हुआ भाव है तो थोड़ा लगान दे देना कोई मुश्किल बात नहीं है। और अगर थोड़ा कठिनाई हो भी तो क्या ? जो लोग चाहते हैं कि भूमि रखनेवाला हर हेक्टर कुछ-न-कुछ लगान जरूर दे वे कहते हैं कि देना जो भूमि को मुफ्त जोतने का किसीको अधिकार क्यों हो ? बागज की मालिकी भले ही अलग अलग किसानों की हो, लेकिन अतिम मालिक तो देना की सरकार ही हो सकती है, सरकार चाहे जो हो। वहाँ देना की भूमि की रखा बरती है। विभाग के साधन जुटाते हैं, और जनता के प्रतिनिधियों के निर्णय से जिस तरह का कानून चाहे बना सकती है। जब किसान की किसानों सरकार पर निर्भर है तो सरकार को किसान से लगान पाने का हक है, और होना भी चाहिए।

इस तिलसिले में बुनियादी महत्व का सवाल है कि जमीन का मालिक सचमुच है कौन ? धरती मनुष्य की बनायी हुई तो नहीं। भूदान-यज्ञ आंदोलन का नारा है 'सब भूमि गोपाल की नहीं निस्सीकी मालिकी। जब मालिक गोपाल है तो सरकार या किसी दूसरे मालिक' को लगान देकर उसको मालिको क्यों माने जाय ?

गोपाल का मालिकी का अर्थ क्या है ? गोपाल यानि समाज समाज ही ईश्वर है। इसीलिए ग्रामदान में गाँव के लोग अपनी भूमि की मालिकी ग्रामसभा को समर्पित करते हैं, और अपनी बर्माई का एक अंश देकर ग्रामकौप बनाते हैं। भूमि पर सरकार-स्वामित्व के स्थान पर ग्राम-स्वामित्व ग्रामदान की बुनियादी बात है।

तो, क्या ग्रामदान हो जान पर ग्रामसभा को पूरे गाँव की ओर से सरकार को लगान देने चाहिए ? आज हर किसान अलग-अलग सरकार को लगान देता है, उतने वहाँ अच्छा है कि ग्रामसभा इकट्ठा सबकी ओर से दे।

इसमें निश्चय तर्क है उनका जो लगान का दस्तूर हमीगा के लिए तय कर देना चाहते हैं। उनका कहना है कि छोटे-छोटे हेक्टर की जमीन में बचत क्या है कि वह लगान दे ? हमारे देना में जमीन का तोना है। इसने कई कारण हैं, लेकिन पाटे पर ध्यान बर्नात करनेवाले किसान से लगान की माँग करना अन्याय है। इसमें अलावा सरकार को मिलना भी दिवना है ? कुछ मिलाकर यह माँग अनुचित भी है, और बेकार भी।

लेकिन जब सरकार समाज की सुविधा और सुखबर्ना के लिए है तो ग्रामसभा सरकार को लगान दे या उतने खर्च के लिए निश्चित अनुदान दे ? सचमुच ग्रामसभा से लगान की नहीं, अनुदान को माँग होनी चाहिए। कोई बाराज नहीं कि—

अच्छी खेती—सबकी खेती—नयी खेती

खेती के इतने पहलू है कि अच्छी खेती के बारे में सोचना शुरू कीजिए और समाज के बारे में सोचिए, तो थोड़ी ही देर में गाँव 'समझ में' आने लगता है कि वही खेती अच्छी होगी जो सबकी होगी, यानी जिसमें गाँव के मालिक, महाजन, मजदूर, सबकी रचि होगी और सबकी सम्मिलित शक्ति लगेगी। इसका अर्थ यह है कि 'सबकी खेती' को 'नयी खेती' होना पड़ेगा और नयी खेती नये समाज में ही संभव है। इस तरह हमारे देश में खेती का प्रश्न सचमुच समाज-परिवर्तन के साथ जुड़ा हुआ है।

आज के समाज में अच्छी खेती का सीधा अर्थ है 'पूँजी-वादी खेती'। जिसके पास पूँजी है वही साधन जुटा सकता है। मजदूर की मेहनत खरीद सकता है, और बाजार में खड़ा रह सकता है।

नेती में पूँजी लगाने के बाद भी प्रकृति क्या करेगी इसका ठिकाना नहीं रहता। फसल होने पर बाजार में क्या भाव रहेगा, इसका तो और भी कोई ठिकाना नहीं रहता। खेती जूथा है। एक बड़ा जोखिम है। खेती और विवाह का एक ही हाल है। दोनों में भरोसा भाग्य का रहता है, जिसका पता नहीं रहता। खैर, खेती अच्छी तभी होगी जब दो चीजों का प्रबन्ध हो—मूल्य की गारंटी (उत्पादन का इतना दाम तो मिलेगा ही) और फसल का बीमा। चकबन्दी, सिंचाई, अनुकूल भूमि-व्यवस्था, मजदूर को अतिरिक्त उत्पादन में मजदूरी के अलावा हिस्सा आदि सब बातें जरूरी हैं, लेकिन आज की व्यवस्था में मूल्य और बीमे का महत्त्व किसीसे कम नहीं है। •

→ ग्रामदात्री ग्रामसभाएँ उचित अनुदान न दें।

इसी तरह अगर नीचे की इकाइयों के अनुदान से ऊपर की इकाइयाँ चले तो सरकार दमन और शोषण करनेवाली संस्था न रहकर जनता की सेवा और सहायता करनेवाली संस्था बन जाय। लेकिन अभी वह दिन दूर है। दूर है सही, पर उसे नजदीक लाना है। जनता की भुक्ति उसके नजदीक आने में ही है। पर तबतक सरकार यह कर सकती है कि लगान ग्रामसभा को ही वसूल करने दे, ताकि वह उसे गाँव के विकास में खर्च कर सके। गाँव की भूमि की आमदनी गाँव में खर्च हो तो बहुत अच्छा होगा। सरकार एक बार लगान ले और फिर विकास के लिए दे, यह दुहरा काम क्यों हो? •

'इस बार भी सोनोरा-६४ चोड़गा'

दिल्ली के किसानों में सोनोरा-६४ को लोकप्रिय बनाने के लिए पिछले साल भारतीय कृषि-अनुसंधान शाला की तरफ से इन्द्र सिंह के एक एकड़ के फार्म पर सोनोरा-६४ का प्रदर्शन किया गया था।

चौधरी के प्रदर्शन-प्लॉट को आसपास के किसानों ने देखा। उर्वरकों को पूरी मात्रा डालने पर भी फसल वही नहीं थी। मोल्हडबद गाँव में इन्द्र सिंह ने पहली बार सोनोरा गेहूँ बोया ही, ऐसी बात नहीं है। इससे पहले उनके पड़ोसी किसान रामपाल ने सोनोरा से फी एकड़ ५० मन पैदावार की थी। चौधरी इन्द्र सिंह ने साढ़े चार एकड़ में सोनोरा-६४ बोया था। सोनोरा-६४ के राष्ट्रीय प्रदर्शनवाला प्लॉट खरीफ में परती नहीं छोड़ा गया था। इससे पहले उसमें ज्वार की फसल ली गयी थी। सोनोरा-६४ की यह खूबी है कि हमें लिए जमीन को परती छोड़ने को जरूरत नहीं है।

इन्द्र सिंह ने अपने एक एकड़ के खेत में १० गाड़ों गोबर-कूड़े की खाद डालने के बाद कुल ८ जोताई की। इस प्लॉट में उन्होंने १२० पौंड नाइट्रोजन और ६० पौंड फास्फोरिक एसिड डाला था।

सोनोरा-६४ में देगी के मुकाबले बीज कम लगना है। एक एकड़ के प्लॉट में ३२ किलोग्राम बीज ही लगा, जब कि देशी में ५० किलो बीज लग जाता है।

वर्षा नहीं हुई तो क्या, ची० इन्द्र सिंह ने फसल को प्यामा नहीं रखा। उन्होंने पिछले-से-पिछले साल ही अपने फार्म पर नलकूप लगाया था। इसलिए सलाह के मुताबिक उन्हें पूरी ६ सिंचाई की।

प्रदर्शन के प्लॉट में फसल को कोई रोग और कीटाणु नहीं लगा, इसलिए कीटनासक दवाएँ इस्तेमाल करने की जरूरत नहीं पड़ी। हाँ, जोताई करते समय एक एकड़ के प्लॉट में १० किलो बी० एच० सी० ऐन्टिबैक्टीरियल भुरक दिया था। आखिरी जोताई से पहले उन्होंने फी एकड़ १० प्रतिशत बी० एच० सी० की १० किलो दवा त्रिक्लोरकार्बेन में डाल दी, जिससे फसल को दीमक और गुहिया कीटाणु न लग सके। फसल २२ नवम्बर १९६६ को बोयी गयी थी और उसकी कटाई ६ अप्रैल १९६७ को की गयी। पैदावार १९ बिद्यत्त १५ किलो मिली। भूसा २८ बिद्यत्त निरस्ता।

ची० इन्द्र सिंह का विद्वत्ता है कि सोनोरा-६४ से धर और भी ज्यादा पैदावार लगे। उन्होंने कहा, 'इस बार भी मैं सोनोरा-६४ ही चोड़गा!' •

धरती बेचने के लिए नहीं हैं

गन्ध प्रथम के हरिपुर गाँव में हमलोग पाँचवीं बार पहुँचे। कुल १० या १२ लोगों के बीच रामदास के सभी पट्टुओं पर चर्चा हुई। वैसे गाँव भी छोटा लगभग ३० घरों का है। बात समझने के बाद कुछ लोगों के हस्ताक्षर हुए पर बीच में एक नवयुवक ने शका उठायी, 'हमलोगों की यह शायी सम्पत्ति ही दास हो जायगी।' इस शका के साथ ही काम रूक गया। रामदास सन्तुष्ट बन शर्म पूरा पडा जाने लगा। उनकी म्यास्या बनने के लिए उसी गाँव के एक सज्जन की जो हीमगाई में थे बुलाया गया। उन्होंने कुछ पान लिट से पदमर मुनया तथा अपने टय से उसे समझाया।

हमलोग ने और स्पष्ट किया 'आप मास अपनी भूमि के सहायक वा अधिकार रामदास को देने का रहे है। साथ वह अधिकार आपन प्रवेगीय सरकार को दे रख है। यही कारण है कि उनके एजय में प्रवेगीय सरकार का कायद भी आपको मानना पडता है। बीच में एक शारमी ने पूछा तो क्या रामदास में शक्ति होन का बाद सरकारी कायद से छुटकारा मिल जायगा?' हमने बताया वास्तव में यह आन्दोलन राम-स्वराज्य के लिए है। आज से बीस बय पहले जो स्वराज्य हमें मिला था, वह बेचल अगली राज की अमद स्वदेशी राज माहित हुआ। स्वदेशी लोपन न उसी शासन के ढाँच को चलाया पुस बन दिया, बिसे अथवा ने अपने शासन और सोचन के लिए बनाया था। राम-स्वराज्य का आगमन ही यह है कि गाँव के दायरे में सरकारी हस्तक्षेप न हो। शासन और म्यास्या का निजमा काम गाँव में लोप हवन बन मवने है, उसकी जह आसुर स्वतंत्रता हो। राम-स्वराज्य आन्दोलन के सफल होने पर आज का प्रवासाकाय ढाँचा नहीं रह जायेगा। जो काय गाँव के लोग हवन नहीं कर सवने, उसे ब अवन उपर की इकाई को सौंप देंगे। रामदास को भूमि की शक्तिनी का अधिकार देन का मतलब ही यही है कि प्रांतीय सरकार के कायम में आगम गाँव का शासक एक तथा काम गया न राज में आन निज प्रकार अलग-अलग है, उसी प्रकार

रहेगा। रामदास के काम में ताप, जिज्ञा है कि बीसवीं भाग देने पर जो भूमि बनेगी उसमें प्रांतिनी की मन्त्री के दिना फेर-बदल नहीं हो सकेगा।'

आज की सरकारी रामदास का स्वरूप देखकर लोगों के मन में सन्देह होया है कि यदि इसी प्रकार रामदासों काय-समा को काम करेगी तो ह्यरथेय अथवा अधिकार उसे सौंप-कर और भी बुरे सँभेगी। हमने उन्हें बताया कि 'आज की सरकारी रामदास से रामदासों रामदासों कायकूल अलग प्रकार की होगी। उनमें बहुमत नहीं, बरिच सर्वानुमति से चुनाव और निर्णय होगे। गाँव का हर व्यक्ति अपना सत्य होगा और उसको अपनी राय देने का अधिकार रहेगा। जो भी निर्णय होंगे, उसको आजकारी सवने होगी। चुनाव को लेकर होवेवाली सन्धदी और पूर से गाँव को रखा होगी। किसी एक को माननाती नहीं सँभेगी।'

उस नवयुवक कायन ने दूसरे शका बना की—'साहब, आपके रामदास के काम में तो लिखा है कि रामदासों को अनुमति से ही अपनी जमीन बेच सवेंगे। इससे तो हमारा रोग ही बढ जायेगा।'

हमलोग इसका उत्तर देना ही चाहते थे कि बीच में गाँव का प्रधाग बोल पड—'आप लोग पूरा रहिये। इनको जवाब में देंवा। प्रधानी गाँव के बूढ व्यक्ति है। गाँव में सबसे अधिक भूमि भी उनके पास है तथा नक जदरत पर लोगों को कम भी दिया करते है। उन्होंने कहा, धरती बेचने के लिए नहीं है उस पर वेतों करो और बँधा करके साओ-पीओ। यह बडा कन्डा है कि अब लोग ऊल-ऊतुल कामों में जमीन वहाँ बेच सवने। मुसीबत या और किसी जरूरत के लिए या हमारी रामदास मदर के लिए रहेगी ही। फिर क्या जखल है कि जमीन बेची ही जाय?' इती बीर किसीन बीरे से कहा 'बेचवाँ दिखल देना भी परवा?' प्रधानी ने उस जोग के साथ कहा, 'टोक है, अपने गाँव के भूमिदोष मारयो के लिए हम जमीन नहीं देते तो बने देया?' गाँव के गरीबी का पयात और जोग करेता? हाशने साहब, कहाँ है घाम? मैं दलदल बरला हूँ।' और उन्होंने दलदल बनाने। इतना ही नहीं। उस को हमलोगों के निवास-स्थान पर पहुँचकर उन्होंने कहा, 'अपने गाँव का काम मैं पूरा कराऊँगा। मुस काम बीबिने। आप लोग दल-दल अब गाँव का काम कीबिने।'

—कमलागति

एक दूसरी नवसावाड़ी

(चिठ्ठे बंक से आने)

बासा पर काम करने जाना लोगों ने बिल्कुल बन्द कर दिया। पड़ोस के गाँव मिल्की में मजदूरी साधारणतः जनानी को एक रुपया रोज और मर्द को एक रुपया तथा दिन का भोजन देते हैं। इस माँग पर भी बहुत हुई। जब काम बन्द हो गया और बासावालों ने भी काम करने के लिए नहीं बुलाया तो पुनः ता० ७-९-६७ को लाठी-भाला के साथ नवाबगंज में बैठक हुई। जोर पहले दिनवाले नारे— 'माओसेतुंग : जिन्दाबाद', 'कम्युनिस्ट पार्टी : जिन्दाबाद', आदि बुहराये गये। इस बैठक में भी चाँदपुर दीरा, भदैया टोला, बघुया मिल्की, नवाबगंज के लोग शामिल हुए थे।

बैठक में कम्युनिस्ट पार्टी के प्रमुख कार्यकर्ता खाली, नव-गछिया आदि बड़ी जगहों से आये थे। जब बैठक हो रही थी, उसी समय कुछ गुण्डों ने, जिनके बारे में अभी तक पता नहीं चल सका है, दोनों पक्षों को भड़काने का काम किया। बैठक हो रही थी उसी समय उन गुण्डों ने बासावालों के पास जाकर कहा कि आप लोग निर्दिष्ट होकर बैठे हैं, और उधर सभा में इकट्ठा हुए लोग कुछ क्षणों में आपका बासा सूटने आ रहे हैं। यह सुनकर इस बासा के लोगों ने अपनी सहायता के लिए दूसरे बासावालों को बुलाया। खबर सुनकर नवाबगंज एवं भदैया टोला के बासावाले सूर्यनाथ सिंह के बासा पर जुट गये। लोगों का कहना है कि दूसरे बासावाले बन्दूक लेकर आये थे, लेकिन बासावालों का कहना है कि बन्दूक लेकर कोई नहीं आया था।

जिन गुण्डों ने बासावालों को बताया था कि सभा करनेवाले बासा सूटने आ रहे हैं, उन्हीं गुण्डों ने सभा करनेवालों को बलात्कार कि आप लोग यहाँ बैठकर मीटिंग काट रहे हैं उधर बासावाले आप लोगों का मुकाबिला करने के लिए लाठी-भाला एवं बन्दूक आदि लेकर तैयार हैं। इस पर बैठक करनेवाले लोगों में उत्तेजना फैली और सभी लोग बासा की ओर बढ़े। वहाँ उन लोगों ने रोड़े-मत्पर फेंके। बासावालों ने इन लोगों की भीड़ पर पटाखे फेंके, जिसके कारण धुँआँ छा गया। कुछ लोगों का कहना है कि हैण्ड-बम फेंका गया था, कुछ का कहना है कि बन्दूक की आवाज हुई थी, लेकिन इसका सही पता नहीं चल सका। कुछ लोग कहते हैं कि कम्युनिस्ट नेता-वज्ररंग सराफ, जयनारायण सिंह, नयन पंडित, सच्चिदानन्द ठाकुर आदि ने बासा सूटने का आदेश दिया था। कुछ लोग कहते

हैं कि इन लोगों ने बचाव का काम किया था! बासावाले कहते हैं कि इन नेताओं के अलावा नवाबगंज पंचायत के मुखिया ने भी सूटने का आदेश दिया था। कुछ लोग कहते हैं कि मुखिया ने बचाव का काम किया था। इन दोनों की बातों की सत्यता क्या है, इसका कोई ठोस प्रमाण नहीं मिलता।

दूसरे दिन नवाबगंज के लोगों ने सिधु ठाकुरवाणी जमीन में, जिसमें संवत् थी, खड़ी मक्के की फसल को सूट लिया। उसका रकबा २.५० एकड़ था। वह जमीन रामनिहोरा सिंह के कब्जे में थी। उसके बाद दूसरे दिन रामपरीसण सिंह की १.५० एकड़ फसल सूट ली गयी। ये घटनाएँ ता० ८-९-६७ एवं ९-९-६७ की हैं। सूट की इस घटना में भदैया टोला के लोग शामिल नहीं थे। इसमें मिल्की, नाजीव्यज, कारू मंडल टोला एवं नवाबगंज के लोग थे। महिलाओं का भी समूह था। भदैया टोला के पास लगभग ३ एकड़ की फसल की रात में चोरी हुई। इस प्रकार की घटनाएँ प्रति साल अंत क्षेत्र में मक्के की फसल के समय हुआ करती हैं। दिन-दहाड़े सूट की घटना भदैया टोला के पास नहीं हुई है। भदैया टोला के पास रात को फसल की जो चोरी हुई उसको जमीन राम-उद्वार सिंह की थी। नवाबगंज की घटना के साथ-साथ जय चोरी की घटना को भी दिन-दहाड़े सूट का संशय है यही और रामउद्वार सिंह ने थाने में रिपोर्ट देकर लगभग ३३ आरमियों का नाम केस में दर्ज करा दिया। याद थे और लोगों के नाम भी बोधे गये।

उसी जगह राय बहादुर का भी वामपथ है। अन्य सारों की अपेक्षा इस साल उनकी फसल की सर्वाधिक कमी हुई है, ऐसी जानकारी उनके यहाँ से मिली। उनका काम भी इतने क्षेत्र के जन-मजदूर लोगों ने बन्द नहीं किया है।

दो-चार दिन के अन्दर ही सिमरा में बोधाप मंडल की पटोह को घास काटते समय भूटा तोड़ लेने पर उसे बासावालों ने पीटा। उसी दिन बासावालों ने वादर कंबरण की भूजी की को घास काटते समय भूटा तोड़ने के अपराध में चार बड़े शान को पकड़ा और नौ बड़े रात तक बासा पर रखा, २५ रुपया जमाना भी किया। उनके पास रुपया नहीं था। केसी चौधरी ने रुपया चुकाने का वादा किया, तब उसको छोड़ा गया। वादर कंबरण ने वज्ररंग सराफ के पास जाकर अपनी विपदा सुनायी। वज्ररंग सराफ के साथी जयनारायण सिंह ने ता० ९-९-६७ को उस गाँव में आकर मना की और अगले दिन १० वारियों को बासावालों की अटारह एकड़ की फसल सूट ली गयी। पड़ोस में

रात की बात

दुरलभावाने बेवो चोपरी की जमीन पकड़ी थी, उनकी भी ₹ ५० एकड़ का लगभग फलत जुटी गयी। उस मूट में भदैया टोलाबाबा की भी बुकिया गयी थी। वे लोग भी उस मूट में शामिल थे।

कामपदालो ने पुलिस को धरप भी। पुलिस जायी और उनका दमन चूक चकने लगा। नेता लोग गिरफ्तार किये गये। बजरंग सराफ जननरक्षायण मिट्ठ तबन्द पडिल तथा मन्चिदानन्द ठाबुर के अलावा अरब लगभग पान्नीय प्रामोय पकड़ गये जिहे शेल भेज दिया गया।

इस घटना की खबर वेदनायक बाबू का क्षेत्रीय कागज नर्मोसे ने दी। वेदनायक बाबू 100 100 100 की तलाब भल गये। वहाँ के प्रामोयो की बुकिया गया। तैलिन बाट्ट या इन्ग्लि के लोग मिन्ने से कतपये। इछ लोग सामने जाये उनको बात सुनी गयी और बागयो समझोना कर देने का परामर्श दिया गया। उस दास के लोयो न जोर सनाया होपुटेशन में आये मन्चिस्टेट रामप्रसाद पाठे से मिले। उन लोयोने भी समझोना करने की बात की माग किया। गाम को चार बन्दे मिलकी में छेदी पायल के वहाँ जाकर उन लोयो का स्थिति की भा जानकारी नी गयी। गमनीता करने का बात का समन मन कठ से स्वेकार दिया। धनधार वर्षा हो रही था। उसी वर्षा में गाव पर पक्कर बंदगाय दासु तथा सर्वोयव मण्डल ने कमा बनिच्छ प्रसाद सिद्ध नियत गये। वहाँ एक विशाल वेठल प्रामोया की ओर से आयोजित की गयी। उसमें जनका यात सुनी गयी और उनने बाद फिर वातावाग में वादचोत हुई। दानो पाठी के लोयो न आपस में समझोना कर जन का नियम किया। वहा समझोना करने के लिए पूरो तरह अनुमूल्ता इन्पार्ड गयी। रात के करीब आठ बजे गाव में मिन्का होकर बापस चले गये। दूसरी जगह का बापयम था, इन्ग्लि वेठनायक बाबू मरमा टोला मर्दा का सके। क्षेत्रीय सफरक दसाग मुदर प्रमोय भूषा एव क्षेत्रीय कागज नर्मो महादेव प्रसाद भूषा भदैया टोला कवे अरद दोली पाठी की बात सुनकर उन जगना म भी गमनीता कर नेन का जाहद किया। वे लोग भी उस बाबू को मान लिये।

मूट-पाठ की यह जग अत्याचार के कारण ऊनी है। वातावालो का पुठनी गान—रम राजपूत है और ये गानजन है—भूय एव से यह भावना इस्के खोज रहा है। लोयो को मुठे मजदूरी नहीं मिली थी, इन्ग्लि

उन लोयो ने मजदूरी नमाने की मांग की उसके लिए हतहात की। फिर वेठ का मरमा समझे आया। वातावालो ने बाट्ट से मजदूर गुना गुलाकर काम कराया। समझा चटिल हुई। कम्युनिस्ट पार्टी के नेतावा ने हिता के बल पर न्याय दिखाने का प्रयोय दिया। इसलिए जग उथरी।

अपने वातावाले पुलिस के साथ भदैया टोला जाते हैं और पुलिस जब उह गिरफ्तार कर लेते हैं तो उनको जगना पर लया जाता है। वातावाले उनको पीटते हैं। दूसरे इलाके में काफ़ी शोक बढा है। भदैया टोला के वातावाले अन्दर न गमझोना करने की रजाय का दिखते हैं लेकिन बाट्ट न एसा रूप रखत है कि इह पुलिस की मदर न बुकाकर हो गये होंगे।

भरोसे की बात

एक दिन सच्चे ही हमलोग दामदान के फाम पर दरदमत मरान एक रात में पटये। लोग मरे ही मिठ पाते हैं। गांव में पहुँचते ही एक पुठने रईस मिले। उहोने अग्रदुखन अयेने यह माता ब भोजन कराया। बातचीत के लिए मिले। उन उहोने बहा दामदान में मुसले प्रविष कुछ रचना न लिया जाय पर भूमि के लिए मजदूर न किया जाय। बजरंग पुठने पर उहोने बताया कि पहले हम लोयो ने पात काफ़ल भुजिया। नये काफ़ल के अदुखर जमीन काबजारी को हा गयी। बाद में उहो लोयो न हमलोयो के साथ अतहवेष कर लिया। हाई घोयो कटार भरि सवने बाम बन्द कर दिया। जाय लोयो ने कहने से पवि हथ भूमिहीनो को बीसवर्ष भाय दे दें जो वे लोग भा हमलोयो का काम बन्द कर बेंगे फिर हथारी भेठीबारी भी बन्द हो जायेगी।

मैन समझना: वातबचारी ने जिन काफ़ल द्वारा आपका जमीन पर हक पाया उसके मूट में ही जमीनदार न बसना के बफेद की भावना बाम बन्द रही थी। पर दामदान—का भूमिदात सहयोग की भावना पर राजी है। जिनके पास जो कुछ है उसको वह एकदूसरे के सहयोग के लिए दान दत है। इस प्रकार इसमें क अतहवेष महा निकरया। दूसरी बात यह कि जब एव ही कमन पर भूमिदात भूमि देन का हस्ताभार करणा है और धनदान थप देन का तद जगना मन्चक ही यह ही जगना है कि दोना एकदूसरे का मदद के लिए राखी है। इन्ग्लि अब पुठनो बाळ गरी दुरलया मानया।

उन गजल ने हथ मजदूर किना और कटा कि यदि ऐसा बात ही तब जो दामदान में शामिल होने में कोई हथकड़ी है।

कुछ सास की, कुछ बहू की

मैं जानती थी कि चौबेजी के घर में सास-बहू के बीच अनबन है, लेकिन यह सोचकर मैं निश्चिन्त थी कि आखिर सास-बहू का झगड़ा किस घर में नहीं है।

लेकिन आज की ताजा खबर सुनकर मैं मोच में पड़ गयी। बात यहाँ तक बढ़ गयी थी कि बहू अब उस घर में एक बूँद पानी पीना पाप समझती है और कहती है कि इससे तो अच्छा है कि सामनेवाले पोखर में डूबकर जान दे दे। बहू ने दो दिन से एक दाना भी नहीं खाया, बल्कि अपने अबोध बेटे को भी परोसी हुई थाली से उठाकर, थाली को ठोकर मार दी। विधवा है तो क्या हुआ ? अपने इकलौते भैया और भाभी से भी मिलने शहर नहीं जा सकती ? माना, पहले कम जाती थी; इधर महीने में एक-आध चक्कर ही जाता है। लेकिन इसका मतलब यह थोड़े ही है कि शहर जाना ही गदी बात है ? जो ऐसी बात सोचने है उनके ही दिल में पाप है, चोट है। ऐमें के बीच जीने से जिन्दगी ही खत्म कर देना बेहतर है।

सास बहुत चिन्तित तो नहीं है, फिर भी वे सोच रही हैं कि आवेश में आकर बहू पोपर की ओर भाग न जाय और स्वाहमन्वाह जगहेंसाई न हो जाय। बहू के कमरे को बाहर से ताला लगा रखा है। लल्लन को मरे सात साल हो गये ! विधवा कमसिन है, बदनसीब है। रूँस के जिपा फट पड़ता है। लेकिन इसका मतलब यह थोड़े ही है कि वह मनमानी पर उतर आये ! भैया से मिलने शहर जाना बैसे कोई दोष नहीं है। लेकिन क्या बात है, भैया तो एक बार भी इधर फटकता नहीं, और यहाँ बार-बार दौड़ती रहती है ? और वह भी जब मर्जी आ जाय तभी ? जैसे कोई घर में फुछने-गुछनेवाला है ही नहीं ? खर। आखिर सास है। दो खरी-खोटी गुना दी तो ऐसा कौनसा आसमान टूट पड़ा जो इसने 'लक्ष्मी' की ठुकरा के सारे आंगन में दाना-दाना बिखेर दिया ? हद हो गयी। इस कम्बख्त ने लल्लन के बिटवा तक को खाने न दिया। बहू क्या हुई, आफत हो गयी। मैं चौबेजी के द्वार पर गयी। मेरे सामने ही बहू का

बंद कमरा खुला। बहू बाहर आयी। मैंने दोनों से अलग-अलग बात की। दोनों ने अपने-अपने मन के गुवार निकाले। आवाज की तेजी और बुद्ध का पाप जरा नीचे आया। लेकिन बहू इसी जिद पर अड़ी रही कि पल भर भी वह अब इस घर में नहीं रहेगी। ओर सास इसी टेक पर अड़ी रही कि बहू यह न भूले कि वह इन घर की बहू है। स्थिति देखकर मेरी निराशा बढ़ रही थी।

आखिरी प्रयत्न करने के इरादे से सास के साथ बात कर रही थी। उनके बोलने में आवेश नहीं था। ज़री के कमरे में बैठे थी। इतने में दरवाजे पर बहू को खड़ी देखकर मैं घबरायी। मुझे डर लगा कि अब दोनों का सामना होगा, दो बाहिनी को भिड़त होगा। सास अपनी सफाई दे रही थी। बीच में बहू ने सीधे सवाल दाग ही दिया—“क्या तुमने यह नहीं कहा कि मैं शहर में चकले पर जाती हूँ ?”

अब मैं विलकुल ही डर गयी। क्योंकि नंगे असलियान खुलकर सामने आ गयी। डेढ़-दो घण्टे की मेरी मेहनत अकार्य गयी। मैं हार गयी। अब तक भाशा निम्ने रही कि सुलह-स्मान्वना का कोई तो छोर हाथ लगेगा। सुलह की क्या कहूँ, यह तो सीधे संघर्ष की ललकार थी। मैं अन्दर हो अन्दर बाँप रही थी कि जाने अब क्या होगा !

सास पल भर चुप हो गयी। पता नहीं कि उनका मुँह खुलेगा तो क्या शब्द निकलेंगे। आरोप के समर्थन में कोई ऐमी-बैसी बात न बहू दे कि बहू को जिदगी ही उजड़ जाय। कुछ डर, कुछ खोश, कुछ अधीरता, और कुछ उन्मुक्तता के साथ मैं सास का मुँह देखती रही।

सीधे बहू को सबोधन कर सास ने कहा—“बहू, इनगान गुस्से में आकर जो न करे वही थोड़ा है। मर्द हो तो गुस्से में बल्लम मार दे और लास गिरा दे। लेकिन औरत के पाम तीखी जवान के सिवाय है ही क्या ?”

बड़ी सजीदगी और शान्ति के साथ सास के तौल-तौल कर कहे गये वे शब्द सुनकर मैं बाग-बाग हो गयी। अब बहू को समझाने में देर नहीं लगी कि बेमानी बातों का बुरा नहीं मानना चाहिए और सास की गुस्से भरी बार्न बार्न उबाल थी, उनके मन में कुछ नहीं है ! फिर सास को भी समझाने में दिक्कत नहीं हुई कि बहू पर इस प्रकार का लाछन नहीं लगाना चाहिए।

फिर दोनों को भोजन के लिए बेंदाकर, हलका बन लिये मैं वापस लौट आयी। •



कानून की जगड़, हाकिम की अकड़, गाँव की पकड़

इस दिने अपने यहाँ देर म पननेबावे घान की कटाई हो रही है। फाल-मठोस के गरिबों के मजदूर बनी सभ्या में घान फाटने के लिये जा रहे हैं, क्योंकि पजोसो गरिबों में अभी घान के पकने में ८-१० दिन की देर है।

सूरज दुग्ने-दुग्ने सेतो में काटा गया घान लल्लिहान में पहुँच जाता है। पूरे गाँव का हाजिहान एक ही जगह पर लगता है, इसलिए वहाँ दिने गाँव की चौपाल चौपट की घंटाक के बरते लल्लिहान में बँटती है।

गाँव में १५ परिवार हैं, जिनमें से २ परिवारों के पास ट्राक्टर रेडियो है। चौपाल में प्राय तिसी-चिन्नीस ट्राक्टर आ जाता है। मुनिवासी के लडके ने चौपाल में अवे ही साबा सगाचार मुनाम नि घान की बेनी आ रही है। बहु बरत मुने ही ट्राक्टर में उपस्थित घब लोग मुनिवासा के लकने के इर्द गिर्द झुंटा हो गये। लोगों ने बँटने के लिये घान के बोरे बिछा दिने सवे। एक आलटिन लाकर रख दी यदी। मुनिवासी के लटने ने बलाभा कि लहर प्रदेय मनि मरुत ने अय तय कर लिया है कि देर से पकनेवाली घान को फसल पर लेकी सोबे किताली से ही बसूल की जायगी। बगुने में घान का भाव रादे मेवाला से लेकर बहुरर रुपये बिचल तक तय किया गया है।

भोजा ने टुटवशाबर पूछा—“बैया, क्या घान की बेवी कमी किताली से बसूल होगी?”

मुनिवा ने बेटे ने कहा—“लेवी की बसूली सिर्फ उन किताली से ही जायगी, जिनके पास ५ पकने बीये से ज्यादा जमीन है।”

मुनिवाको अपने गाँव के सबसे बड़ कासकर है। इस लिये उनसे कुछ छोटे कामतजारों में से एक ने पूछा—“बेटा, तुम्हको कित्त हिसाब से बेवी बेनी होगी?”

‘कासकरी! मेरे पास १ एकड़ से ऊपर घान के सड़ हैं। मुने की एकड़ २ बिचल लेकी देनी पड़ेगी। जिनके पास दोष एकड़ सेक हैं उन्हे ५ बिचल, और जिनके पास पाँच एकड़ से ताडे सात एकड़ तक घेज है उन्हें डेड बिचल प्रति एकड़ के हिसाब से बेवी देनी पड़ेगी।”

इसकी बातचीत होते-होते चौपाल में गाँव के सभी छोटे-बड़े किसान एकट्ठा हो गये। मुनिवाको भी आ चुके थे। उन्होंने कहा— मरकार की बड़ किताली पर जगदा बडी नजर होखी का रही है। सरकार ने मान लिया है कि जिनके पास ज्यादा मैल है उसकी पैदावार भी उसी हिसाब से ज्यादा होखी है, जब कि अवस्थित यह है कि छोटे कामतजार ज्यादा अनाज पैदा कर लेते हैं।”

नेऊर राम गाँव का एक छोटा निघान है। उवाण कहा— “मुनिवासा यह सही है कि अपनी मेहनत के भरोसे छोटा बड़तकार छोटे मैल से भी बच्छे फसल के सेता है पर उसने पास सेतो की वे मुनिवासे नहीं होनी को बडे फासतकारों के पास है। अपने पास अपना बूझ और रहस्य है। घान की तिसाई के लिये आपका अनाज बॉम है। आपको अपनी जमीन की जमानत पर सेतो में लगाने के लिये बूझों की बडी रुकम भी भिज जायी है। हमारे पास तो सिर्फ अपनी मेहनत का बरोगा है।”

“बाबू लुम्हारा शोक है की—”मुनिवाको ने फिर हिसाबे हूण कहा हम बेवी की बसूली की परवाह नहीं करते अगर सरकार हमारे साथ शोक मतलक करती। अस्ती बेवी करले के लिये तिर तिर बंजा की अवरत परचो है जमने दूदने की पूरी शिमोवारी अगर सगकर जजये तो उसे बेवी बसूल करले का लकष हूब होजा है। पर देगा होजा कहां है? सरकारी अफिसारियो त देगा कि इस मात्र बर्वा मुण्ड इस से हई है तो मान लिया कि मवने पास बिबावार हो गयी। जिसको बीज की बयी परी तिय पाद नहीं दिगी, जिनसे मिचाई की तसिया नहीं है और जिनको फसल में बीमारी की रोक्कपास का इतजाम नहीं हो सका उसका कोई फाल सरकारी नियम में नहीं है। और तो और सरकार ने घान का डेट सादे संतालीम रूपे बिचल से लेकर बहुरर रुपये बिचल तक मुकदंर किया है। अब कितावा घान किये डेट में लिया जाय वह कपकारी अफिसारो ही तय करेगा न? का, बेदीताली और मुकमेरी के लिये एक और बीर-बेखासा बैवार हो गया। जो हफेठर लाहूब को घुगा करेगा, उसका घान पटिया बनें का होगा तो भी उसे ऊँची दर से तरीख जायगा, और अगर कितावे उठ घुगा नहीं किया तो अच्चे घान का भी कम घाम मिलेगा। जगपारी हजबे दावार-भाव से फल्लू खरीदता है। हमारी सभों होगी है जो हम बेचने हैं, यही तो नही बेचन, पर मरकारी कानून की अघोर के आगे हम मजबूर हो जावे है।”



अमेरिका में सामूहिक जीवन के प्रयोग-४

मोन्टी वर्दे

यह मित्र-मण्डल (वक्करों) का एक समाज है, जो मध्य अमेरिका के कास्टोरिका के जंगलों-पहाड़ों में ४-५००० पृष्ठ की ऊँचाई पर बसा है। कास्टोरिका एक ऐसा छोटा और दान्तिमय देश है, जिसमें वर्षों से भृत्यदण्ड की सजा बन्द है। उस देश के पास फौज नहीं है, एक छोटा-सा नागरिक सुरक्षा-बल है। वहाँ कोई बहुत धनी नहीं है, न कोई भूखों ही मरता है। शासन का जोर बहुत कम है। शायद वक्करों ने उस स्थान को इसीलिए पसन्द किया कि वहाँ पर उन्हें शहर-केन्द्रित समाज से छुट्टी मिल सकती है और सुरक्षा का कर देना नहीं पड़ता है। वहाँ बहुत-से ऐसे लोग रहते हैं, जो फौजी औद्योगिक संगठन और सरकारी व्यवस्था के मुकाबले में अपनी आन्तरिक आवाज को मानने के कारण लगातार वर्षों तक जेल में रह चुके हैं। उन्होंने नज़्मात से शायद यह भी सोचा कि वे वहाँ के निवासियों की थोड़ी-बहुत सेवा कर सकेंगे, और उनसे कुछ सीख भी सकेंगे।

वहाँ पर उन्होंने मुख्य तौर पर गोपालन का काम उठाया

→ "ठीक कहते हो मुखियाजी, पर हम अलग-अलग कुछ नहीं कर सकते, सिर्फ हाथ-हाथ कर सकते हैं।" उपवदन ने कहा।

मुखियाजी के लड़के ने कहा— "सरकारी कानूनों की नामुनासिव जकड़ और मरकारी अधिकारियों की बेरहम अकड़ का एक ही इलाज दिखायी देता है कि हम अपने गाँव का ग्रामदान करके अपनी ग्रामसभा को भजबूत बनायें। पूरे गाँव के लोग मिलकर पूरे गाँव की विकास-योजना बनायें। तब हम सरकार से यह कह सकेंगे कि हमारे गाँव की ज़रूरत भर गल्ला रखने के बाद जो वचेगा उसे ही हम बाहर जाने देंगे। गाँव की सेवों के साधनों के लिए भी तब हम ज्यादा संगठित ढंग से कोशिश कर सकेंगे। हम सबको इस बात पर मिलकर सोचना चाहिए।

गाँव की शक्ति बनेगी तभी हम हाकिम, नेता और पुलिस कचहरी के प्रहार से गाँव को बचा सकेंगे।" ●

है। वहाँ पहुँचने का मार्ग बहुत कठिन है। सबसे पहले वे तम्बुओं में रहते थे। बाद में उन्होंने अच्छे मकान बनाये। अब उन्होंने चिदान के कारखाने, बडईगिरी के लिए मकान, पानी से बिजली बनाने के यंत्र, टेलीफोन आदि की व्यवस्था की है। वे सड़कें भी बनाने लगे हैं। उन्होंने विशाखत से अच्छी नस्ल की गायें मँगवाई हैं। उनके कृषि के औजार देखी ढंग के हैं। वे बहुत अच्छा पनीर बनाकर बेचते हैं। उनके फल के बगीचे भी बहुत सुन्दर हैं।

उपसंहार

अब तक के किये गये प्रयोगों में हमने देखा कि किस प्रकार अमेरिका के कुछ लोग दुनिया की वर्तमान स्थिति के विरुद्ध विद्रोह करने की हालत तक पहुँच गये थे। समाज का प्रचलित ढाँचा उनके लिए बेकार-सा हो चुका था। वे हर प्रकार का त्याग करके, हर प्रकार का कष्ट सहन करके एक नया आदर्श जीवन विताना चाह रहे थे। यानी, उनकी एकता एक तीव्र अंतःप्रेरणण पर कायम थी। लगता है कि ऐसे प्रयोगों में सफलता पाने के लिए यह एक आवश्यक शर्त है। क्षणिक जोर के बदले स्थायी लगन, यही मुख्य बात है।

नेतृत्व का भी बवाल सामने आता है। इस सिलसिले में दुबोबोरों ने धोखा खाया। उन्हें दुःख सहन करना पड़ा, और ग़रत मार्ग में फँसना पड़ा। फिर भी, उनकी श्रद्धा अब तक नहीं डिग पायी है।

अब तक के वर्षण में आये समाजों में दुनिया के वर्तमान ढाँचे का विरोध करने की शक्ति रही। कुछ ने अपने दैनिक जीवन में गिशा इत्यादि में अपनी विशेषता दिखायी, यानी उनके आन्तरिक योग का कुछ बाह्य प्रतीक रहा। हमारी सफेद खादी इसी प्रकार हमारा बाह्य प्रतीक बन सकती है।

सब प्रयोगों में लोग कृषिप्रधान और उद्योगप्रधान रहे। उनके द्वारा वे स्वावलम्ब्यन साध सके हैं, और उन्होंने विशाल-शील वैज्ञानिक प्रयोग करने का दृष्टिकोण भी अपनाया।

शिष्टा में भी उन्होंने अपना स्वतंत्र दृष्टिकोण रखा, बग़ावत उन्होंने समझा कि बच्चों के भविष्य का जीवन मुख्य तौर पर उनकी शिष्टा की दृष्टि पर निर्भर है।

इन प्रयोगों का अध्ययन करने से हमें अपने देश में चलने-वाले ग्रामदान के महान प्रयोग को आगे बढ़ाने का पारंग प्रोत्साहन मिलता है।

[समाप्त]

—सरला पट्टन

'गाँव की बात'। वार्षिक चंदा : चार रुपये, एक प्रति : अठारह पैसे।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सत्य सेवा संघ के लिए संसार प्रेस, काशीपुर, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित

और चीन था ! पर आबादी मिश्रण के डर त बाद उन्होंने ही यह प्रस्ताव रखा था कि काम्रेल रासायनिक पाबंदी के रूप में काम न करे, यह अपने को विपणित वा रूपान्तरित करने में ही कितने दूरदर्शी थे यह आज साबित हो गया है । पर उध समय काम्रेल के नेतृत्वों की दृष्टि उतनी दूर उठ नहीं जा सकी । चाण्ड यह भी कहा जा सकता है कि हमने उनकी स्वायंभवाया और अप्रत्यक्ष रूप से काम कर रही थी । क्या अज आज भी, जब कि परिस्थिति प्रत्यक्ष इसारा कर रही है, अतिविक्रम के मौजूदा नेता अपने देरघरेम और हिममत का परिचय देते ! अज सवाल काम्रेल को गणनीयों की कल्पना के लोक से बंध छप या और किसी रूप में परि वर्तित करने का नहीं रहा । यह समय तो निकल गया । उध समय काम्रेल के पीछे नहीं की तरफला और बुझांनी से बचपन हुआ पुण था । यह हारी रूँती कल्पकालों में अपने ही हाथों नज कर दी । अज तो एक ही विफल है कि उधे विपणित कर दिया जाए, और उधके के लोग, जो विषय जाना चाहे चले जायें । इस विषय से वैज्ञानिकों, प्रतिस्पर्धावादी या कृत्रिमता तावों को भी पापदा ही होगा, क्योंकि कांक्ष में ऐसे तावों को बनाना नहीं है, जो इसके दृष्टने पर उनमें का निर्माण पर साथ भी ऐसे प्रगतिशील, उदार और लोकतन्त्र में आधार्य रखनेवाले ताव बिनाकी शक्ति आज वहाँ कुटित हो गयी है, और जो आज कांक्ष में केन्द्र हैं, आजाद हो चारंगे और कार्यक्ष के साक्षर समाजधर्मी तावों से मिलकर एक तीसरी नयी शक्ति देय में खड़ी कर सकेंगे ।

बहा का खतरा है कि फ्रांस के विधान से देश में राष्ट्रोत्क विचलता पैदा हो जाएगी । पर हर देश की नेतृत्ववादी है कैला नेदरलैंडों के बनाने में लोगों का यह डर कि उनके न अपने साथ होना । यह केवल मीकाता और अपने साथों को बचाने रखने का बयाना है । सारी परिस्थिति को देखते हुए देखाएल का उतना है कि बलिब के नेता दिग्भ्रम से काम लें और बलिब को बारी बारी बिलाने देते और इस प्रक्रिया में साथ ही साथ राष्ट्र को भी बिलाने देने के बजाय समाज-नृशर अपने हाथों से उतना निवर्तन कर दें ।

भूतान-यह : सुभाषार, २४ नवम्बर, १५

परमाणु-युद्ध के परिणाम

वहाँ लोगों ने युद्ध के मजलक परिणामों को प्रायक्ष नहीं देखा है, वहाँ के लोग इसका अनुमान नहीं कर सकते । जन अमेरिका ने विरोधिता पर एटम बम गिराया तो उसके कारण ज्वलमान एक लाल धारांनी मारि गये थे । जन आर० ए० ए० ने ड्रेडन पर बमबारी की, तो १,३५,००० बर्मेन मरे गये । जापनों ने ९,००,००० यूरुदियों को भीत के पाट उतारा था । अज यह बड़ा बात है कि अणुयुद्ध में २,५०,००,००,००० इत्यान मर सकते हैं । आज के विमान युग में युद्ध के क्या क्या मजलक परिणाम हो सकते हैं, कुछ इसका भाव होता है । पूरी बात सामने आये तो दिल मन से काप उठता है !

अगर कज अणु युद्ध और हाईड्रोजन युद्ध छिड़ जाय, तो चन्द्र की धनी में हममें से अधिक लोग क्षीयित नहीं रहेंगे । जो क्षीयित रहेंगे वे समजन बड़ी चाहेगी कि 'मर जाते तो अच्छा होता' ऐसी हास्य में हमारा

आमू प्रकाश जिया

कर्मणो हो जाता है कि उनके नाम पर को कुछ हो रहा है उसका विरोध करें । कुछ तथ्य साधारण विज्ञान में टी० एन० टी० रामें गैस में तबदील हो जाता है, जिसके इतनी शक्ति पैदा हो सकती है कि उधके हवाको मजलक गिराकर राख करी देर हो जायें । अणु बिल्को से भाग और घनाका पैदा होता है । यह विस्फोट इतना भयंकर होता है कि दरम शक्ति के केवल एक पाउण्ड मसाले से १००० से १०००० टी० एन० टी० की ताकत का प्रदर्शन होता है । हर प्रकार की भयंकर विस्फोट शक्ति के कारण अणु शक्ति का माप लील किमेटन से होता है । १ किमेटन = १००० टी० एन० टी० और १ मेगा एन = १०,००,००० एन टी० एन० टी० । इन्हें १९४१ में रुस ने ५० मेगाटन के प्रयोग गुना बढ़ गयी । गुना का रहर है कि अमीम शक्ति के अणु-बम की तैयार ही जुके है । जन अणु-बम का विस्फोट होता है तो पहले आरुड हर चीज को उड़ा देती है या छवव

देती है । एरुड इसका माप इतना ही प्रभाव नहीं होता, एक और भी विनाशकारी प्रभाव रहता है । एक प्रकार की घातक विरग दूर दूर तक फैल जाती है । इससे न ही आदमी छवव कर सकता है, न अणुविहीन होता है । इस घातक विरग का प्रभाव मानव शरीर के रक्त भाग पर होता है, जिससे मृत्युप घरे घरे विनाश की स्थिति में पहुँचना है । राजों और करोड़ों मनुष्य इस घातक प्रसार को गट में आ सकते हैं ।

हाईड्रोजन बम एटम बम के मुकाबले में बहुत ही अधिक विनाशकारी छिड़ होगा । इसकी तैयारी में सर्व्व भी कम होता है । एटम बम की राखद यूरेनियम २३५, प्लोनिजियम २३९ से बनती है, जो बहुत महंगी पदवी (Lithium deuteride) का उपयोग होता है । उधकी शीतल प्लोनिजियम (Plutonium) को अपेक्षा १/२००

अणु-बम खप ही अल्पत घातक और विनाशकारी छिड़ होता है, परन्तु उनकी शक्ति और बढ़ जाती है, बर उनको ठीक निशाने पर सेंकने के लिए आज के नवीन वैज्ञानिक खपनों का उपयोग किया जाता है । जिध मानव-कृतता के निर्माण में हवाको बर्ब लगे हैं उधे दहाने में कुछ ही छप गये हैं । आजाब से भी तब हवाई बहानों द्वारा वन कुलु शत्यों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सकेगा । सफेद मित्रुलुन द्वारा बड़े ठीका का सकेगा । इनकी सतुभी की नजर बचाकर खपुदी घनदुबिबों द्वारा भी ले जाया जा सकेगा और शरीर के नीचे से ही आने निशाने पर छोड़ा जा सकेगा । यह अपने निशाने से कमी चुँबे नहीं । रुस और अमेरिका के साथ बर्हा अणु-शक्ति के मजलक छवव हैं, वहाँ इन शक्तों को अधिक शक्ति धाली बनाने के लिए मित्रकीन भी की कमी नहीं है ।

पर अनुमान लगाया गया है कि इनमें से अधिक शक्ति देते हैं, जो १० लाख टी० एन० टी० के बराबर है और उनको १८

इसका मील प्रति घण्टा की रफ्तार से छे जाया जा सकता है।

रूस की अमरीका के अणु शस्त्रों का भय है और अमरीका को रूस का! न मानव किस समय युद्ध छिड़ जाय। इसलिये



विस्फोट

कोई-न-कोई हवाई अड्डा जिसमें अणु-शस्त्र रहते हैं, हमेशा आकाश में घूमना रहता है, क्योंकि अचानक युद्ध शुरू होने पर दूसरी पार्टी के लिए नीचे से अणु शस्त्र ऊपर ले जाने के लिए समय नहीं रहेगा।

अगर अमरीका और रूस की अणु-शस्त्रों की होड़ जारी रही तो दुनिया के विनाश का समय दूर नहीं। आज चीन भी इस होड़ में शामिल होने की कोशिश कर रहा है। हो सकता है कि दो छोटे-से छोटे देसों का आपसी युद्ध विशाल अणु-युद्ध में परिवर्तित हो जाय। जब अणु-बम की जाँच की जाती है तो हजारों वर्गमील भूमि क्षेत्र में कोई मनुष्य नहीं रहने दिया जाता। परन्तु युद्ध-काल में अणु शस्त्रों का उपयोग कौमी छावनियों, सैनिक-शस्त्र-उत्पादन-क्षेत्रों, याता-यात के साधनों, अन्न-वस्त्र के गोदामों और बड़े-बड़े नगरों पर किया जायेगा। अणु-बम के आक्रमण के पश्चात् रेडियो-किरणों का प्रभाव इतना मर्यकर होगा कि उसकी बरान्दगी किसी दूसरी दैवी आपत्ति से नहीं की जा सकती। केवल इतना ही नहीं कि यह आपत्ति स्वयं मर्यकर होगी, बल्कि दूसरी अनेक आपत्तियों को भी साथ लायेगी होगी।

रेडियो-किरणों के प्रभाव के कारण मानव

इतना धैर्य और लाचार होगा कि वह इन आपत्तियों का मुकाबला नहीं कर सकेगा। उदाहरणार्थ : स्ट्रॉन्शियम (Strontium) एक काले रंग की धातु; जब तक मानव-शरीर में प्रवेश नहीं करती, तब तक मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक नहीं होती; परन्तु जब इसके दिक्काने न देनेवाले अणु रेडियो-किरणों में प्रवेश करते हैं, तब वह अत्यन्त हानिकारक सिद्ध होते हैं। ये किरणें हठों, परशरीरों में से निकलकर बहुत दूर से मानव-शरीर में प्रवेश करके उसे रोगी बना देती हैं। अणु-बम के पहले घमाके में ये किरणें अधिक मात्रा में पायी जाती हैं। अणु-बम परीक्षण में इन किरणों से बचाव का उपाय सम्भव हो सकता है, परन्तु युद्ध-काल में यह सम्भव नहीं। अणु बम के घमाके से बचे हुए लोग कुछ ही दिनों के मेरमान होंगे और वे अपने आप को एक प्रकार के आग से तपे हुए तन्दूर में पायेंगे। इन किरणों से न तो किसी विशेष प्रकार के यन्त्र बचा सकते हैं और न ही कोई औषधि बचा सकती है। इन किरणों से प्रभावित वस्तुओं की जला देने से भी लाभ नहीं होगा; क्योंकि जली हुई वस्तुओं की राख में भी इनका असर मौजूद रहेगा। मानव के उपयोग में आनेवाली प्रत्येक वस्तु में इनका प्रवेश रहेगा। मनुष्य इन सब वस्तुओं को फेंक भी नहीं सकेगा।

दूसरे महायुद्ध में गैसों से बचने के लिए गैस नकाब (Gas mask) काम में लाये जा सकते थे। अणु-युद्ध में किरणों की जाँच करनेवाले यन्त्र लो रहेगे, जिनसे यह अनुमान लगाया जा सके कि मानव-शरीर पर इनका किन्ता असर पड़ा है; परन्तु अब तक ऐसा कोई यन्त्र नहीं बन सका, जिससे बचाव हो सके। जिन लोगों पर इन किरणों का प्रभाव आरम्भ में कम होगा, अन्त में यह प्रभाव बढ़कर उनके लिए भी मृत्यु का कारण बन जायेगा। किरण का प्रभाव कम हो या अधिक, इसका कुछ फर्क नहीं पड़ेगा। किरणें भाग में रेडियो किरण का किन्ता भाग बढ़ा है, यह अणु-बम के घमाके पर निर्भर करता है। अणु-युद्ध में लोगों को सँभलने का अवसर नहीं रहेगा। यह भी नहीं कहा जा सकता कि युद्ध

की पद्धति क्या होगी। केवल सेना पर, या नगरों पर, या आम जनता पर अचानक आक्रमण होगा। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि विशाल क्षेत्र को ध्वस्त करने के लिए अणु-बम बहुत ऊँचाई से फेंके जायेंगे। दूसरों का कहना है कि आक्रमण काफ़ी निचाई से होगा, ताकि रेडियो किरणों का अधिक से अधिक घातक प्रभाव हो सके।

कुछ भी हो, अणु-युद्ध में लाखों और करोड़ों लोगों की सुरक्षा का प्रश्न एक गम्भीर प्रश्न रहेगा। बचाव की कोई दूरत नहीं होगी। खतरे की सूचना देना कोई आसान काम नहीं होगा। सैनिक छावनियों, नगरों और ग्रामीण क्षेत्रों को एकसाथ सावधान करना सम्भव न होगा।

लन्दन की सिटी काँग्रेस ने २ अक्टूबर, १९५१ को जाहिर किया था कि अणु-युद्ध में लन्दन की जनता को किसी उचित उपाय से बचाना एक समस्या रहेगी।

अमेरिका के सरकारी अन्दाज के मुताबिक १० मेगाटन के २ बमों से म्यूचक में ६०,९८,००० आदमी मरेंगे, २२,७८,००० आदमी घायल होंगे। म्यूचक की जनसंख्या लन्दन के बराबर है। यह आशा की जाती है कि तीसरे विश्व-युद्ध में मुख्य निवासन नगर नहीं होंगे। हवाई अड्डों, राबेड, गोदामों और सैनिक छावनियों पर ही बम गिरायेगे। नगर सम्भल-वच जायेंगे। परन्तु इन निशानों से नगर और बस्तियाँ अवसर जुड़ी रहती हैं। उनको एक-दूसरे से अलग करना गम्भिर न होगा।

एक अमेरिकी वैज्ञानिक का कहना है कि



संज्ञा

३० मील की जँचारी से करनेवाले १० मैगाटन बम से भूमि के ५००० वर्गमील को बर्बा टाड़ने वाली हारर बीज ब्राँगा ।
 हमारे अक्षांश-पट्टास में १० मैगाटन का बम फट जाने पर क्या होगा !



ध्वन नगर

● ऑन की शपक से भी अधिक वेगवाली चमक होगी जो हमें यादें समय के लिए अच्चा बना देगी । दा-नीन सौ मील दूरी से भी यह चमक हमारी आँसों को बलासेवाली होगी ।

● तीन मील के क्षेत्रफल में ५० सेकेंड में ऑनो को अच्चा कर देनेवाला और हार का-वा गम आग का गोला निर्धार देगा । फिर कितनी जँचारी से वह पत्र दे, हस पर निर्भर करेगा ।

● २५० फुट गहरी, आधे मील से एक मील लम्बी ब्यालाशुवी दूट निकलेगी । घमाके की लहर बर्मीन के अन्दर तल्लानी में भी घूम बायेगी और बा लोग अपने आप को सुराख समझ रहे होंगे, उनको भी लम कर देगी ।

● २२ मील की दूरी तक रहनेवाले बिना बचाव के लोगों को सुअकर लान कर देगी ।

● २० मील तक मरकर आग लम बायेगी और २८ मील तक हलकी आग दिताई देगी ।

● यदि तीन मील के अन्दर प्रत्येक मनु मस हो जायेगी । यदि सात मील तक मकान टूट जायेंगे और १५ मील तक मकान निवास के योग्य नहीं रहेंगे । १० मील के क्षेत्रफल में तल्लानी में छुये हुए लोगों की १८ बात का -

मूदान यज्ञ सुअवार, -४ नवम्बर, '६७

सामा सुसाने न पायेगी

बर्मी इन्वान जिन्ना है ।
 तिगिर की मार पर उलत रोत्र
 हुल्लुल लूब धररायी ।
 भुवन ही पूँछ दगा क्या
 गान की शोय भररागू ।
 कहा चुपके से तब बाअर
 पवन क एक मोंक ने
 हवा लुने न पायेगी
 बर्मी तमगान जिन्ना है ।

बर्मा इन्वान जिन्ना है ।
 कहा ललकार जल तिधि न
 मगा दो मीन्म से बाअर ।
 पूरा छे साप बढ मन की
 गरम लूधान भरका कर ।
 मगर छल जायेगा तल में
 डुराना प प का पन् ।
 कर्मी मरने न पयरी
 बर्मी करमन जिन्ना है ।
 बर्मा इन्वान जिन्ना है ।

अमन-गीत

उन्हें अपने बर्मी पर
 होयग है तुम दान का ।
 परा मसूम का वीरान मर
 सडहर बनान का ।
 मगर इन्वान क गिल में
 भरग बाग हम पर्यी ।
 न शूदा राम भायगा
 बमन का गान किदा है ।
 बर्मी इन्वान जिन्ना है ।

बडला मानकर हमका
 उद अनुचम बनाने ग ।
 हुमा ने बार शल्लो
 दुर्मा भी मात्र जान दा ।
 क्या इन्वान के बर्मा की मेवा
 हम गिना देंगे ।
 परा जलन न पायेगी
 बर्मी बलिगन जिन्ना है ।
 बर्मी इन्वान जिन्ना है ।

—रुतुब मिह ताबे

पत्र देगा कि कहीं मकान ऊपर ही न गिरें ।

● चार मील तक बड़े बड़े लहड़े के मजबूत पुल गिर जायेंगे । चार मील की जँचारी तक उड़ रहे लोग भी उड़ते हुए मकानों के छीने रहें से घावक ही आयग । अमरीका के विविड डिने-ल विगियों का बहना है कि बड़े-बड़े पदाइ भी अनुबम की तबारी से लोगों को बहुत कम बचा लकने ।

● दस लाख की आबादीवाले नगर के लोगों में से चार लाख से सात लाख लोग या तो मर जायेंगे या डुरी तरह पचन हो जायेंगे ।

● यह सब बिनाशकारी कार्य केवल कुछ ही पलों में ही जायेगा । अनुमान यह है कि छोटे बर्मी को अपेक्षा बड़े बर्मी का उपयोग कम उपयोग में होने गये तो दुनिया को बिननी तबारी होगी, यह एक सोचने की बात है :

● आग का गोला आठ मील तक देगा ।

● २० मील के क्षेत्र में पकने मकान गिर जायेंगे ।

● चारों ओर आग ही आग लग जायेगी ।

● १५ मील तक रेडियो बिरणों से मौत या मरकर रोग हो जायेगा ।

● १००० वर्गमील में पचास इन्वान बोरदार होगा कि एक पन्ने में कराई आग्नी रेडियो रिजल से मर जायेंगे ।

● भी लोग अनु विन्को के कारण धमाके और आग से बच जायेंगे उनको तीवरी



प्रल लोग

विनाशकारी शक्ति रेडियो किरणों का सामना करना पड़ेगा। हजारों और लाखों टन रेडियम धूल चारों ओर बिलर भागी। रेडियम की लोभ उग्रमयी शताब्दी के अन्त में हुई थी। यह रेडियम-शक्ति छोटे-छोटे अणुओं में बँटी हुई जाती है। जब रेडियम अणु टूटते हैं तो वह न दिलाई देनेवाले दो प्रकार के अणु और वेटा किरणों में बँट जाते हैं। इसी प्रकार रेडियम न दिलाई देनेवाली गामा किरणों में बरल जाती है। प्रकृति में अणु-शक्ति का ऐसा निर्माण नहीं किया है। मनुष्य ने प्राकृतिक अणुओं को अनुसंधान करके अलग किया है।

अणु-विस्फोट केवल बड़े पैमाने पर अणु टूटने का दूसरा नाम है। रेडियो-शक्ति की धूल के २०० प्रकार हैं। इनमें से स्ट्रोनशियम और केसियम दो प्रकार अत्यन्त विनाशकारी हैं। धूल के ये ऋण तमी हानिकारक होते हैं, जब मनुष्य उनके नजदीक होता है या जब साँस द्वारा हमारे शरीर में पहुँचते हैं या हम भोजन के साथ उनके खाते हैं। गामा किरण दूर से हानि पहुँचाती है। अलग किरण तथा में केवल कुछ ही हथ और वेटा किरण २० से ३० फुट तक चला पाती है, आगे नहीं बढ़ पाती। गामा किरणों की मार बहुत दूर से होती है। पक्षी दीवारों, छतों आदि में से भी निकलकर मनुष्य के शरीर में पहुँच जाती है। शरीर में पहुँचकर इनका आक्रमण रडियो पर होता है। लहू का प्रभाव रुक जाता है और नया लहू बनना बन्द हो जाता है। रोग का मुकाबला करने की शक्ति कम हो जाती है। लहू का कैन्सर हो जाता है। इसी प्रकार रडियो की निर्माण-शक्ति कम होकर रडियो का कैन्सर हो जाता है। अनुसंधान में इनसे बचने का उपाय हो सकता है, बाहर नहीं। अणुविस्फोट के बाद कई वर्ष तक यह खतरा बना रहता है।

कहा जाता है कि अगर अणु शक्तियों के जलीरे का सन्तुचन रहेगा तो युद्ध की रोकथाम हो सकेगी। अणु-बाण किसके पास अधिक हैं, यह पता लगाना संभव नहीं। इसलिए अणु-बाण निर्माण की रोक चली है।

आन्दोलन के समाचार

तुफान अभियान :

कनाटक : १० नवम्बर। श्री गुण्डा-चार की ध्वजानुसार अब तक ३२० ग्राम-दान हो चुके हैं। ग्रामदान यात्रा चल रही है। अब तक ४ टोलियाँ घूम रही थीं, अब ८ टोलियाँ घूमनेवाली हैं।

उत्तर प्रदेश : बलिया का चौथा प्रखण्ड-दान १६ नवम्बर '६७ को गांधी आश्रम के श्री राजारामभारद्वी को समर्पित किया गया। १०% गाँव ग्रामदान में आये हैं। अब तक बलिया की २४% जनसंख्या ग्रामदान में शामिल हो चुकी। अब तक प्रदेश में ग्राम-दानों की संख्या १६२२ हुई। इसके बाद पंचवें प्रखण्ड नवानगर में अभियान शुरू हो रहा है। बांसडीह तहसील में अब दो ही प्रखण्ड बचे हैं। आजमगढ़, वाराणसी, आगरा, तैरागढ़, जगनेर, मधुपुर, अलीगढ़ में अभियान की योजनाएँ बनी हैं। कई बागह यात्राएँ चल रही हैं। उत्तरकारी जिले के कार्यकर्ताओं ने जिलादान-प्राप्ति का संकल्प किया है। — श्री कपिल भारद्वाज के पत्र से।

मथुरा : श्री जयन्तीप्रसाद के पञ्चानुसार १४ नवम्बर को एक विचार-गोष्ठी हुई। विविध कार्यक्रम की दृष्टि से प्रशिक्षण-अभियान चलाने की योजना बनी।

'भूदान-यज्ञ'

में विज्ञापन छापने का निश्चय

लेकिन

हम स्वयंसेवकों को उत्तेजन देनेवाले और समाज-हित-विरोधी विज्ञापन स्वीकार नहीं करेंगे।

क्योंकि

भारत जब भी मुख्य रूप से गाँवों का देश है, हजारों-हजार साल पुराने भारत के इन गाँवों का अपना एक व्यक्तित्व है, मानवीय जीवन-मूल्य है, संस्कृति की उदार, व्यापक और गहरी परंपराएँ हैं, जिसे सौ-दो-सौ साल की मुलामी ने तोड़ने की कोशिश की है, वर्तमान शोषणमूलक केन्द्रित अर्थ और राज्य-व्यवस्था ने भरपूर उपेक्षा की है।

'भूदान-यज्ञ' भारत की बुनियादी पुनर्रचना के लिए देश में चल रहे ग्रामदान आन्दोलन का सन्देशवाहक है। हजारों गाँवों और लाखों लोगों से इसका सम्पर्क है।

शहर आप और आपके प्रयास भी समाज-हित और देश के पुनर्निर्माण के लिए हैं, तो हस सन्देशवाहक को—

अपना भी सन्देशवाहक बनाइये।

अपना विज्ञापन दीजिये।

विशेष जानकारी के लिए लिखिये :

व्यवस्थापक, पत्रिका विभाग,

सर्व संचय-प्रकाशन,

राजघाट, वाराणसी-१

भारत में ग्रामदान-प्रखण्डदान (१ नवम्बर, '६७ तक)

प्रान्त का नाम	ग्रामदान	प्रखण्डदान	प्रान्त का नाम	ग्रामदान	प्रखण्डदान
बिहार	१६,१०२	१००	राजस्थान	१,०२१	—
उत्तर प्रदेश	६,५५८	३१	गुजरात	७५८	३
आन्ध्र	४,२००	१०	पंजाब	६२७	—
तमिळनाडु	३,३६६	२५	केरल	४०९	—
महाराष्ट्र	२,८९९	११	कर्नाटक	२२४	—
संयुक्त पंजाब	२,१००	७	दिल्ली	७४	—
मध्य प्रदेश	२,५५०	५	हिमाचल प्रदेश	१७	—
उत्तर प्रदेश	१,५५४	५	कुल :	४२,७५२	२०२
आसाम	१,५६३	१			

धीरूणन्द च मद्र, सर्व-सेवा-संघ द्वारा संसार प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१

भूतनाथ

भूतनाथ मूलक ग्रामोद्यान प्रधान अधिसूक्त क्रांति का सुन्दरवाहक - साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सम्पादक : राममूर्ति

शुक्रवार वर्ष : १४

१ दिसम्बर, '६७ अंक : ९

इस अंक में

राज हकी, प्रकृति बहुत — समादक्षीय ९१

सदाश्री की पदान्ति

— जयपकाश नारायण १००

लोकनाथ आशोधन की प्रकृति

— विनोद, चोरेन्द्रभार, सत्यादेवी १०१

विकास आर्थिक या सांस्कृतिक ?

— विधानाय प्रसाद बागसवाल १०२

सुरत की नयी शैली — सिद्धराज दहदा १०३

स्मृति की परत — रा० भू० १०४

कम्प्यूटर (गणक यंत्र) की कार्यप्रणाली

— स्वप्नान १०५

मान्य शैतियों के — सत्यनारायण १०६

अरिशा मित्र दृष्टिकोण से

— टी० के० मरादेकर १०६

शान्ति-केन्द्री की प्रतिबिम्ब १०८

५० अनाथ . अविहात की राजनीति

• — 'नम्र' ११२

आगामी अंकपर्यन्त

अन्तर्धर्म एक सामाजिक मूल्य

कीमती की विभाजन, न कि विहास की योजना

आर्थिक शक्ति : १०० द०

बुद्ध प्रति २० पीपे

विद्वान् में : साधनाय आक-शक्ति-

१४ द० या १ पीपेक या २१ आकर

(हवाई आक-शक्ति शैली के अनुसार)

सर्व-सेवा-संघ प्रकाशन

राजवाट, बाराणसी-१

फोन नं० ४२४५

स्वतन्त्र देश में शक्ति का अधिष्ठान

अब देश विदेशियों के हाथ में रहता है और आजादी हासिल करने का सवाल आता है, तब शक्ति का अधिष्ठान राजनीति में रहता है। अब देश स्वतन्त्र हो जाता है, तब शक्ति का अधिष्ठान बदल जाता है। तब शक्ति राजनीति में नहीं, समाज सेवा में रहती है, क्योंकि फिर समाज का ढाँचा बदलना होता है, आर्थिक विपन्नता मिटानी होती है। ये सारे काम सामाजिक क्षेत्र में करने पड़ते हैं। उनमें स्वयं के प्रयोग आते हैं, नष्ट खर्च करने पड़ते हैं, योग-सहायता की सहायता में रहना पड़ता है, वैधान की बरकरार पड़नी है। इसीलिए शक्ति इसी क्षेत्र में रहती है। लेकिन जिन्हें इसका भान नहीं होता, वे गणतन्त्रहीन में रहते हैं कि शायद शक्ति का अधिष्ठान अब भी राजनीति में ही है और वे उसी क्षेत्र की ओर टोढ़ आते हैं। वहाँ सत्ता तो रहती है, लेकिन शक्ति नहीं।

सत्ता और शक्ति में बहुत अन्तर है। सत्ता में एक पद प्राप्त होता है। सत्ता का श्रेय एक सीमित क्षेत्र होता है, उन्हीं अधिष्ठान और कानून की सीमा होती है, उसके भीतर रहकर मासिक जित तरह की सेवा आता है, उस तरह की सेवा उसे करनी पड़नी है। बन्द लोग ही नहीं भा सकते हैं। बाकी अधिक लोग को रह जाते हैं, उन्हें सामाजिक क्षेत्र में काम करना चाहिए और देश को आगे ले जाने की शक्ति निर्माण करनी चाहिए।

अब समाज की जो स्थिति है, उसे स्वीकार कर लेना करना सत्ताधारी के लिए भी सख्त नहीं है। जिसाल के तौर पर कोई भी सत्ताधारी सत्ता के आधार पर हिन्दुस्तान में रोड़ी बन्द नहीं कर सकता, क्योंकि आज का समाज उस बुद्धि मयद को छोड़ नहीं सकता। अमेरिका में आज शराबबन्दी नहीं हो सकती, क्योंकि वहाँ का समाज शराबबन्दी के लिए अनुकूल नहीं है। हिन्दुस्तान में शराबबन्दी हो सकती है, क्योंकि वहाँ की भूमि में उसके अनुकूल वातावरण मौजूद है।

नेरों को भिन्न भाव काम में है या समाजवादी पार्श्व में है, उन सबके मेरा कहना है कि जो लोग राजनीति में जाना चाहते हैं, उन्हें में 'ना' नहीं कहना, परन्तु बाकी सबकी समाज सेवा में लग जाना चाहिए, करना समाज की प्रगति कुठिल हो जायगी। हुना ही नहीं, समाज नीचे भी गिर जायेगा। इसीलिए एक बड़ी बलात् समाज में ऐसी होनी चाहिए, जो निरन्तर सेवा में लगी रहे, कामरुक्ता के साथ सेवा करती रहे। उसे राजस्व का भी अनुभव रहे, लेकिन सत्ता से अलग रहकर निर्दम्य के साथ तटस्थ मुद्रि से अपने विचारों को प्रसारित कर सके, विशिष्ट नैतिक असर उत्पन्न करे और लोगों पर पड़ सके। वही ऐसी बलात् हो सकती है जो सत्ता में न पड़े—सत्ता की समीक्षा समझकर—सत्ता से नहीं, बल्कि यह समझकर कि शक्ति का अधिष्ठान सत्ता में नहीं समाज-सेवा में है।

['लोकनीति' से, दृष्टि : १९३ १९५]

—विनोद

देश :

२०-११-६० : राष्ट्रपति डा० आरिफ हुसेन ने पश्चिमी बंगाल के मन्त्रि-मण्डल के दस अनुसूची को अस्वीकार कर दिया कि वे राष्ट्रपतियों के वैश्लेषिक अधिकारों पर सर्वोच्च न्यायालय की राय माँगें।

२१-११-६० : बंगाल के राज्यपाल श्री घमेश्वरी ने पश्चिम बंगाल का संविद मन्त्रि-मण्डल बर्खास्त कर दिया।

२२-११-६० : पंजाब की सीमा मोर्चा सरकार ने राज्यपाल को अपना हस्तौली का दे दिया।

२३-११-६० : केन्द्रीय मन्त्रि-मण्डल ने यह निर्णय किया कि कम्पनिओ द्वारा राजनीतिक दलों को चन्दा देने पर रोक लगायी जाय।

२४-११-६० : कलकत्ता तथा निकटवर्ती क्षेत्रों में पिछले तीन दिनों में हुए दंगों में ८ स्थल ६० से अधिक की संपत्ति क्षतिग्रस्त हुई।

२५-११-६० : रामभाषा-संघोषन विधेयक को लेकर कमिस संसदीय दल में मतभेदों का पैदा हो गया है।

२६-११-६० : उपप्रधानमन्त्री श्रीमोरोरारजी टेलार ने स्वीकार किया कि कांग्रेस-पार्टी अब गत वर्षों की भाँति उतनी लोकप्रिय नहीं रही। विवेक :

२२-११-६० : श्रीलंका ने अपने रुपये के मूल्य में २० प्रतिशत के अवयव्यन की घोषणा की।

२३-११-६० : पश्चिम एशिया की स्थिति पर सुरक्षा परिषद में सिनन का समसोता-प्रस्ताव स्वीकार कर लिया, जिसमें इराकल से कहा गया है कि यह अरब क्षेत्रों से हट जाय और पश्चिम एशिया में स्थायी शांति के लिए आक्रामक नीति को खत्म करे। राष्ट्रपति नाशिर ने घोषणा की कि संयुक्त अरब गणराज्य न तो इराकल को मान्यता देगा, न उसके समसोता-वातों करेगा।

२४-११-६० : इंडियन पत्रकार की चुनना के अनुसूचा उत्तर विधानमंडल के राष्ट्र-पति श्री-वी-विश्व कृष्ण अचल है और योग-द्वेषा से ही शासन-व्यवस्था का संवर्धन कर रहे हैं।

“भूदान-यज्ञ” के १० नवम्बर '६० के अंक में “सुभाष और समाचारियों” के सम्बन्ध में श्री योगेशचन्द्र बट्टगुण का प्रकाशित पत्र पढ़ा। उनका कहना है कि “भूदान-यज्ञ” को सर्व सेवा संघ की सीमाओं में आरम्भ नहीं करना चाहिए, सुसंयत का यह शासक-संघटन बेसा है। मैं निन्दन करना चाहता हूँ कि “भूदान-यज्ञ” कोई समाचार-पत्र नहीं है। यह एक वैचारिक पत्र है और देश में एक विचारधारा-विरोध का प्रतिनिधित्व करता है।

सर्व सेवा संघ के माध्यम से सर्वोदय-आन्दोलन का संवाहन होता है। ऐसी स्थिति में “भूदान-यज्ञ” को सर्व सेवा संघ का सुसंयत कहा जाय तो उसकी व्यापकता में कोई कमी नहीं आती और न ही कमकामिनी का “मैन आर्गन” बनने में बाधा पड़ती है।

बट्टगुणाजी की दूसरी बात से मैं सहमत हूँ। “भूदान-यज्ञ” में छपनेवाले लेखों के लेखकों का एक सीमित ‘ग्रुप’ है। यह स्थिति निम्न ही विचारणीय है।

जब हमारी कार्यकर्ता सर्वोदय के कार्य में जुटे हैं, तो निम्नलिखितों का सीमित ‘ग्रुप’ नहीं है, इसके बारे में सोचना ही चाहिए। यहाँ एक प्रश्न का उठना स्वाभाविक है कि “भूदान-यज्ञ” में हर सामग्री को तो स्थान नहीं दिया जा सकता है। मैं इसी बात को यहाँ साफ कर देना चाहता हूँ कि “भूदान-यज्ञ” के लिए सर्वोदय परिवार का जो भी व्यक्ति आसक्त हो, उसका सर्वोदय के मौलिक सिद्धान्तों से मतभेद नहीं हो सकता। अच्छा हो कि आलोचनात्मक लेखों को भी स्थान दिया जाय।

मैंने स्वयं भी एक बार राधाचन्द्र की बारे में एक लेख “भूदान-यज्ञ” को प्रकाशनायक भेजा था। लेख में सरकार की नीतियों की हीनी आलोचना की गयी थी। मगर उसे प्रकाशित नहीं किया गया और तब से आज तक मैंने कभी “भूदान-यज्ञ” को लेख नहीं भेजा।

किसी प्रसंग में एक हर तक आलोचनाओं की भी कीमत होती है। संभव है, सर्वोदय-परिवार के बाहरी क्षेत्रों के लेखकों को आमंत्रित करते समय हमें विदित ही अपनी मर्यादा और विचारधारा की दिशा का ध्यान रखना होगा। और कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि समकालीनक दृष्टिकोण के बावजूद लेख अस्वीकृत कर देने पड़ें। अपने वैचारिक दृष्टिकोण की मर्यादा के लिए ऐसा करना कुछ बेबा नहीं है।

प्रसन्नता की बात है कि अब “भूदान-यज्ञ” में नवीनता आती वा रही है। आशा है, मन्त्रि-मंडल में वह सब कर्तव्यों, जिनके कारण कार्यकर्ता को आरति दे, समाप्त होंगे।

—सखीचन्द्र
जिला सर्वोदय मण्डल
बमरोहा गेट, मुाराबाद

+ + +

१० नवम्बर का “भूदान-यज्ञ” का अंक देखा। पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई। आज जो साम्प्रदायिक भावना बुरी तरह से उभरी हुई खिलती है, इसके दूर में हिन्दुस्तान और पाकिस्तान के बीच का तनाव है। अगर दोनों देशों के बीच सौहार्द कायम हो जाय तो ऐसी साम्प्रदायिक कड़वा नहीं मिले। आज की विघ्न पद्धति में सहिष्णुता का समावेश है ही नहीं। पत्नी वर्ग के साथ ही साथ सरकार भी साम्प्रदायिक भावना को उभाड़ती है। देश के समाचार-पत्र भी या तो ऐसी भावनाओं को उगाहते हैं या तदनुसरते हैं। इसलिए विधित-वर्ग भी एकामि होता आ रहा है। देश में स्थिर वातावरण बनाये रखने के लिए अगर दुर्दरे विचार-पत्र भी आपकी सहयोग करें तो देश का कल्याण हो। —रामलोकान बाबा

मैसूर, मुंगेर (विद्यार्थी)

+ + +

“भूदान-यज्ञ” का नया आवार-प्रकार चिन्ताकर्षक है। विभिन्न प्रकार की पाठ्य-सामग्री से यह और ज्यादा रोचक हो गया है। यह बड़ा अच्छा है। —भी. दत्त. गंगा

भाद्रपूर, इंदौर

भूदान-यज्ञ : सुक्रवार, १ दिसम्बर, '६०

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ का अर्थ है भूमि का दान करना। यह एक ऐतिहासिक और सामाजिक कार्य है।

राह लम्बी, मजिलें बहुत

मध्य प्रदेश में तीन बहनों घूम रही हैं। सभी इन्दौर में हैं, गिर हूषी बहारों में घूमैंगी। दरमना में खरना नदन कुछ और बहनों के साथ घूम रही हैं। ये लोकगायत्री बहने गाँव गाँव में लोगों को, विद्येय क्लेश से बिरोगी को, विविध कार्यकर्म समाप्तारोगी, अरिशा के जीवन मूल्य बतायेंगी।

विनोबा ने इसे 'शोकरात्रा' कहा है। वर्ष १९५१ से आज तक बितनी परदापार्ये हुई हैं, और हो रही हैं, वे सब एक तरह की लोक वापार्ये ही रही हैं। वैदल गाँव-गाँव जाकर बनता को जन्ति की प्रतीति बराना खनडा लख रहा है। तो क्या यह वाया किसी विद्येय अर्थ में 'शोकरात्रा' है ?

हमारे देश में स्त्री के विविध रूप देते हैं। हमने उसका देवी का स्वरूप देखा है। उसने विद्वता में नर-नरुडे शास्त्रियों को पडाडा है, सभी तापी बनकर उनसे साधना की विमाल घेय की है। माता के रूप में यह पूजित हुई है। इसके विपरीत उसका राधेकी स्वरूप भी प्रकट हुआ है। इन नये बमने में हमने उसे अपना दूत और प्रचाय मंत्री ठुका बनाया है। यह सब तो हुआ है, लेकिन मितल के धीवन में कमी भी उसकी हैरिगत उँची नहीं रही है। और, लोकशिक्षा परप्राप्तो का यह रूप तो बिल्कुल ही नया है इसलिए इसे खी खी समझने में हमारा को समय लगेगा और इस हीन सभतर बर्तनय की मन्तव्यरहित्यें भी हो सकती हैं।

लेकिन यह लोकगायत्रा निरुद्ध, निराकार लोकशिक्षण के लिए नहीं है। वास्तव में यह नव धारण और स्त्री शक्ति के निर्माण का अभिमान है।

हर और है मौग मुक्ति की। भय और सापनों की मुक्ति स्वा-मित्य के, पुत्रक की मुक्ति अधिनायकत्व (अपारिग) से, और स्त्री की मुक्ति उसके मौल्य की परिशोभाओं और विधवताओं से। अमिक, समाज में ये तीनों खोत धल रहे हैं। उष सृष्टने का ही लक्ष्य है उनका व्यापक रूप से उन्मुक्त होना। अतएव इन धीवन निर्माणकारी शक्ति को का रचनात्मक स्वरूप न पकर ही तो समाज की नयी रचना क्रेते होगी।

साध्यकारी की और बहने अपनी बहद हैं, लेकिन उनको एक बहुत बड़ी ट्रेन यह है कि उनसे इन तीन शक्तियों को मुक्त करने का बहुत बड़ा काम बिया है, और इन्हें समाज की नयी रचना में समाया है।

साध्यकारी की 'दिशा' में जो रचनात्मक तत्व दिखायी देता है वह इन्हीं तीनों शक्तियों के सक्रिय होने के कारण है।

ग्रामदानमूलक क्रांति में तीनों की मुक्ति के तब एतद दिखायी देते हैं। हमारे इस पुष्य प्रधान समाज में ये तीनों अपना ब्यक्ति को बैठे थे, लेकिन ग्रामदान ने हर एक को नया क्रांतिकारी ब्यक्तित्व प्रदान किया है। स्वाभिल और अविचार, दोनों लक्ष्य प्रधान समाज के मुख्य लक्षण हैं। इनके कारण स्वाभावत समाज मुट्टी भर पुत्रवों के हाथ में है। उसमें स्त्री का क्या स्थान है ?

पुत्र्य वदा से धीवन के सपयं और कर्कशता के छेव में आगे रहा है। उस छेव में उसने स्वाभिल और अविचार का पूरा विकास किया है। बोलबाला स्त्री के निम्ने रही है, रसलेश कोमलता के साथ अधीनता टीक मानी गयी है। कर्कशता और कोमलता, सपयं और सृजन आचार पर बनी और विकसित यह अधीनता सब स्त्री को खोड्डार नहीं है। हो भी क्यों ? अमिक का शोषण, पुत्रक का दमन, और स्त्री की अधीनता इन सबका निरुल्लिख्य इन्डा समात होना चाहिए। क्या हम कभी सोचते हैं कि अगर हम मिया-मुल्की और परम्पराओं की परतें हटा दें तो हमें चाकू दिखायी देगा कि हमारी उदारता व्यवस्था, अमिक की विधवता और परिवार-व्यवस्था की भी अधीनता पर टिभी हुई है। क्या हम सामाने की समझ की आँधी में विधवता और अधीनता टिकनेवाली हैं ? नहीं या माता होने में को गौरव कमी था, वह भी हैरिगत से समाज की खाना इकाई बनकर रहना चाहती है।

पत्नी और माता बनकर स्त्री ने खँदियों में वेरा और त्याग के भी 'गुण' अर्जित किये हैं, वे अगर गुण हैं तो समाज में ब्यपक तौर पर मा घ नवी न हो। यह काम आसान नहीं है, लेकिन इसके बिना गुण भी नहीं है। यह तब होगा जब स्त्री सामने आयेगी और पुष्य प्रधान समाज को दिशा और कर्कशता से मुक्त करने के क्रांतिकारी अभिमान में आगे आयेगी। इन बहनों ने कुछ तबी तरह का हृदय उदाया है। राह लम्बी है, मजिलें भी बहुत हौसी, और कठिनाइयों की तो नात ही क्या ! बिल स्त्री ने छोटा परिवार बनाया, उसको अब माम-परिवार, और किसी दिन विध-परिवार बनाया है। उठ परिवार में परिवार, और किसी दिन विध-परिवार बनाया है। उठ परिवार में उष्य-स्त्री नहीं, इन्ड-पुत्रक नहीं, मानिक मजहूर नहीं, अतिक मनुष्योचित सम्बन्ध से मनुष्य रहेगा। ●

ये स्वतंत्रता ! हमारी और प्यार हो ! हम सोचेंगे के कोनों में, श्रुतिना के अधकार की छाया में लहे हैं, अविद्या और भ्रमान के अंधेरे में गिर दे, बनता हृदय पुत्रकार सामने रखते हैं, और उन मकानों से, जो अत्याचार के गुप्ता में छिपे हुए हैं, इन बहनों आत्माओं को गुप्त तक पहुँचाते हैं। देवों ये स्वतंत्रता ! हम पर बपत्ती करो, हम मनुष्य विद्यालयों और शिक्षणस्थलों में हैं देते हैं, परन्तु नहीं पाते। मिर्जाओं और ज्वालामुखियों में दुष्टता विद्ध नहीं मिळता। बदलोगे, न्यायालयों में दुष्टता नाम नहीं। हम पर क्या करो, ये स्वतंत्रता ! और हमें अतिक दिखाओ !

सह्यात्री को पहचानिये

सन् १९५४ में, जब मैं राजनीतिसे अलग हुआ, उस समय मेरे मानस में तो विचार चल रहा था, लेकिन मैं यह नहीं कहूँगा कि जो कुछ मैंने निर्णय लिया, यह केवल वैचारिक निर्णय लिया। मेरे दिल पर उस समय जो चोट पहुँची थी, उसका भी अंश था। लेकिन उतना ही नहीं था। एक वैचारिक भूमिका बनी और उस विचार के साथ बड़े पैमाने पर भूदान आन्दोलन में काम करने का मोक्ष मिला, यह बात भी उसमें शामिल है।

वैचारिक भूमिका में कई मुख्य बातें हैं, जिनमें एक मुख्य बात यह है कि केवल एक आर्थिक और राजनितिक संघ का ही नाम समाजवाद नहीं है। समाजवाद का अर्थ समाजवादी सभ्यता और समाजवादी मनुष्य से है। मेरे मन में यह बात है कि अगर समाजवादी संस्कृति का निर्माण करना है, समाजवादी मानव का निर्माण करना है तो यह काम कानून के जरिये नहीं हो सकता। समाजवादी पक्ष न हो, समाजवादी पक्ष का राज्य न हो, यह मैं नहीं कह रहा हूँ। आज अपने देश में सामन्तवादी-मनुष्य (प्यूटल-मैन) और सामन्तवादी विचार है, जातिवाद है, ऐसी स्थिति में अगर हमें सामाजिक और मानवीय मूल्य परिवर्तन का काम करना है तो केवल सत्ता को लेकर कानून तथा प्रशासन के जरिये समाजवादी रचना की बोधिश करने से नहीं होगा। यह न हुआ है, न हो सकता है। लेकिन दुःख की बात है कि आज कहीं 'इयंकल-सोशल्लिम' (नैतिक-समाजवाद) की चर्चा होती है, वहाँ कोई आन्दोलन नहीं है, कोई संगठित कार्यक्रम नहीं है। समाजवादिशों की तरफ से विद्यते भी संगठित कार्यक्रम है, सब सत्ता प्राप्त करने के लिए हैं।

आज जो लोग विचारनेवाले हैं, वे विचारते हैं, लिखते हैं, बोलते हैं। लेकिन इसके लिए एक व्यापक शैक्षणिक कार्यक्रम की आवश्यकता है। शिक्षण विद्यालयों का नहीं, मानव परिवर्तन का।

डा० राम मनोहर लोहिया से पटना में हमारी मुलाकात हुई थी, और वानी चर्चा भी हुई थी। हम क्या कर रहे हैं, मैं खुद क्या कर रहा हूँ, उसके पीछे क्या विचार है, क्या दृष्टि है, इसकी भी हम लोगों ने कुछ चर्चा की थी। हमें यह लया कि डा० साहब ने इसको न सिर्फ ध्यान से सुना, बल्कि उन्होंने अपने हृदय में लिया। इसलिए जब वे दिल्ली गये तो उन्होंने पत्रकारों की मुलाकात में कहा कि हम लोगों को जो बात हुई, वह अच्छी हुई।

तो अब बात ही बात नहीं करनी है, काम करना है। कई प्रदेशों में सोशलिस्ट लोग शासन में हैं। इसीलिए मैं उनसे दो बातें कहना चाहता हूँ। एक बात तो यह कि आप चाहते हैं कि जयप्रकाश नारायण आपका नेता बनें; लेकिन नेता बनकर करे क्या? करे और कहे वह, जो आप चाहते हैं!

जयप्रकाश नारायण

यानी जयप्रकाश नारायण अपना दिमाग कहीं रखकर भाए, उसे कहीं ताले में बन्द कर दें। आप उसके दिमाग को, कार्यक्रमों को, विचार को समझना चाहते हैं? वह क्या कर रहा है, वह क्या बोल रहा है, उसका समाजवाद से या जनता के भविष्य से क्या सम्बन्ध है? समाजवाद तो एक साधन ही है न? साध्य तो एक असुख प्रकार की समाज-रचना है। आपको कोई ऐसा नेता मिलेगा, जो आपकी शर्तों पर आपका नेता बनने की तैयारी होगा। मैं तो अपनी शर्तों पर नेता बनने को तैयार हूँ। मानिये मेरी शर्तें और चालिये गाँव में मेरे साथ। मैं जंगल में नहीं गया हूँ, हिमालय की गुफाओं में नहीं गया हूँ। पहले जितना काम करता था उससे ज्यादा ही काम करता हूँ और जनता के बीच ही काम करता हूँ। गांधीयन इन्स्टीट्यूट में कितान नहीं पढ़ता हूँ, या शोध नहीं करता हूँ। मेरी भावसे यही प्रार्थना है कि जो कुछ मैं सोचता हूँ, जो विचार रखता

हूँ, जिन कार्यक्रम में लगा हूँ, उसे समझने की कोशिश कीजिये। और अगर आप समाजवाद को भारत की परिस्थिति में समझते हों, तो आप सोचिये कि उसका भीर इसका कोई मेल होता है कि नहीं। लोकतान्त्रिक समाजवाद और सर्वोदय का आन्दोलन, दोनों एक-दूसरे की मदद करनेवाले हैं, एक-दूसरे को पुष्ट करनेवाले हैं।

हिन्दू-मुसलिम का सवाल हो, उत्तर-दक्षिण का सवाल हो, आर्य-अनार्य का सवाल हो, बंगला-असमिया का सवाल हो, बंगाली-बिहारी का सवाल हो, महाराष्ट्रीय-गैरमहाराष्ट्रीय का सवाल हो, ओ हो, जितने हद तक राजनीति हममें घुसो है, उतनी हद तक ये सवाल उलझते हैं। भाषा के प्रश्न को ही लीजिये। मेरा अपना निश्चित मत है कि जब तक इस भाषा के प्रश्न से राजनीति अपनी टाँग नहीं निकाल लेती, तब तक यह भाषा का सवाल हल नहीं होगा। और यह हल नहीं होता तो इस भाषा के सवाल पर इस देश के दुःखें होकर रहेंगे। राजनीति का अपना धेज है, उसका महत्व है, इसके मेरा इनकार नहीं है। लेकिन केवल यही एकमात्र धेज है, यही जाकर सबको काम करना है, और तभी देश का उदार होगा, देश की समस्याएँ हल होंगी, यह गलत बात है।

समाजवाद, लोकतंत्र, धर्म-निरपेक्षता, ये तीन और सर्वोदय का आन्दोलन 'केलो-ट्रेवलर्स' (सहयात्री) हैं। अच्छे मानी में 'केलो-ट्रेवलर्स' (सहयात्री) हैं। आज अपने 'केलो-ट्रेवलर्स' (सहयात्री) को पहचानने का प्रयास नहीं करते, तो ठीक है, मत पहचानिये। आप समझते हैं कि जयप्रकाश नारायण ने आपको छोड़ दिया तो मैं कहता हूँ कि हरामिज नहीं छोड़ दिया। जो मैं कर रहा हूँ, उससे आपको लाभ होगा—अगर आप सही टंग से काम करना चाहें।

[आचार्य नरेन्द्र देव जयन्ती के अवसर पर २१-१०-६० को बाराणसी में समाजवादी साधियों के बीच दिये गये भाषण से।]

भूदान-यज्ञ ! शुक्रवार, १ दिसम्बर, '६०

लोक-यात्रा : आरोहण की नयी प्रक्रिया

आज का एक मगल दिन है, क्योंकि एक मगल कार्य की आज शुरुआत हो रही है। बहनों की एक लोक यात्रा दलमाना जाने में प्रैणो, माइसी को बगलोगी, ठकरी भी साथ करके बहनों को। ऐसी ही एक भारतीय लोक-यात्रा को बंद दिन पहले हमने बिना की थी, वह यात्रा भी हन्दौर जिले में आज से शुरू होगी। इसलिए मैंने कहा कि आज का मंगल दिन है।

को बहनें इस लोक-यात्रा में आरंभ है, उनमें दो बहनें यहाँ भी हैं। उनके अन्धारा को नेत्रुव कर रही हैं, वह सल्ला देती हैं। आप लोग धारण्ड जन्मे जानते नहीं होते। वे हल्लेड की बहन हैं। २० साल पहले भारत में आयी हैं और भारत की सहाय सेवा करती हैं। जैसे तो उन लोगों के लिए हिन्दुस्तान की गर्मी सन करना कठिन होता है, लेकिन फिर भी यहाँ प्रैणो। बाइके के दिन हैं। इन्ने आया करनी खाएिए कि हल्ले विहार की बहनों में धारण्ड आयेगी।

अभी महारथों ने आशीर्वाद के तौर पर कुछ पद करे। सन् १९१० में यह घर से निकल पड़े हैं। अब यह २० साल की थी, जेन में भी था चुकी है, उस से आज तक २७ साल भारत की सेवा में ही उनका समय बिता है। उनको अधिकार है कि वे यहाँ आशीर्वाद दें। बहनों का धर्म यहाँ लक्ष्य होगा, लेकिन काम बरा कठिन है। क्योंकि यहाँ की बहनें विलक्षण जेल में हैं, यह मैंने देखा। एक मरेका में ही एक दिन है ही नहीं। कामन धारण्ड है। अन्तत्वे भारत की प्रधानमंत्री की है, फिर की प्रामोण जिलों की हाथ्य बहुत ही दुपनीय है, ऐसा करना चाहिए। उनसे सम्पर्क-सेवा का कोई साध कार्य बनता नहीं। इसका मतलब यह नहीं कि वे बेकार हैं। घर में वे अपना काम करती रहीं हैं, उनका विचार भी बड़ा बर करता है लव उम्भो कर ध्याता है। ऐसा अन्तर सेवा-कार्य करने को अगर बाबा को कहा जाय, तो बाबा वे यह बनेय नहीं। परंतु उन बहनों की

सामाजिक शक्ति कुछ नहीं है। सामाजिक शान कुछ नहीं है। पौक-सात दिन पहले कुछ जियाँ हमारे पास आयीं। हमने पूछा कि वे यहाँ से आयी हैं, तो वे धीरे दूर से नहीं आयी थी, यहाँ व्यक्तिगतारण्युपी से आयी थी। सातमर से बाबा यहाँ हैं, फिर भी उन बहनों को बाबा के दर्शन नहीं हुए थे। उस दिन कुछ मगल दिन था, इसलिए बाबा के दर्शन के लिए आयी थी। इसलिए मैं कहता हूँ कि लक्ष्मा काम बन्दिन है, लेकिन आशा करता हूँ कि जब कि गौतम गौतम में बहनें जाने के लिए निकरी हैं तो मजकूर-रूपया से बहनों की शक्ति बर्धो होगी।

—निताया

यह जो लोक यात्रा की शुरुआत हो रही है, यह क्षिति के आरोहण में कुछ नयी प्रक्रिया है। आरोहण की जिस मजिह तक हम पहुँचे हैं, उस मजिह तक पहुँचकर लोक विचारण के लिए लोक यात्रा की क्या आवश्यकता है, इसी पर कुछ विचार करना चाहता हूँ।

सर्वोप्य की शक्ति किसी विधिगत वर्ग को लेकर नहीं होगी, न ही नेताओं की आशंकाओं को अपनी आकलना माननेवालों की शक्ति। सर्व को, तथा सर्व के द्वारा शक्ति के मार्ग में एक बहुत बड़ी कठिनाई यह है कि इस सर्व की शक्ति में सबकी अपनी अपनी सामर्थ्याएँ, अपनी-अपनी समर्थ्याएँ सामने आयेगी शक्ति में सब आम आदमि का ही भिन्न भिन्न आकांक्षाओं, समस्याओं का समाधान और पूर्ति दे सकें, ऐसे शक्ति होनी चाहता है कि उनमें परस्पर विरोधी आकांक्षाओं की संघर्ष बहुत बन्नी है और वह विचार होता है जो उनके विचार में है, यह बात लोगों के सामने रखनी चाहिए। इसलिए हमने बड़ी म्यूह-रचना इस शक्ति में विचार की सकार है। उस विचार की सकार

के लिए समय लोक विचारण की आवश्यकता है। यह लोकविचार बनें होगा।

क्या उम्भे लिए मूक और आभार लोगों? उम्भे होगा। क्या छोटी-छोटी मोटियों से होगा? छाहित्य से होगा। इन सबसे कुछ-कुछ बन्य होगा। लेकिन सबसे जरूरी है सर्व के पास सर्व की शक्ति का विचार लेकर पहुँचना। यह लोक-विचारण की प्रक्रिया से समर है। लोक-विचारण की शक्ति सर्व की समस्याओं के साथ घर अस्पयन करता होगा। लोक विचारणों को लुप्त की भी सीधना पड़ेगा। सर्व के साथ सामिज्य होकर यह सीखना और सिनाता चाहेगा।

आ बहनें अपनी निश्चय रही हैं, वे दुम्भे बर रही थी कि सवाथ वाक्यता यह काम करने की नयी है। तब मैंने कहा, "योग्यता नहीं है यह ठीक है, लेकिन योग्यता हासिल करने के लिए भी एक यात्रा में निकलना होगा, योग्यता लगी हासिल होगी।" सर्वोप्य की शक्ति का मार्ग सर्व की अपेक्षाओं और आकांक्षाओं को समसकर निभायना होगा। विनोबामें, सारण्यकायसी वा मैं, धीरे धीरे जो कितना समता है, उनसे वे काम नहीं चलेगा, सर्व की पाठ को सर्व से समसकी होगी। इसलिए मैंने इस यात्रा को 'सारोहिणिया की यात्रा' कहा था। इस लोक यात्रा से अस्परी योग्यता बढ़ेगी, साथ साथ सर्व की भी योग्यता बढ़ेगी।

आज आवश्यकता इस बात की है कि हमारे देश में लोक यात्राएँ हमलों की सारण्ड में चले। जिस तादर में सन् १९५७ में भूदान यात्राएँ चली थीं, उन्ने अधिक तादर में लोक यात्राएँ चलनी की जरूरत है, अन्धका जैसा कि मैंने विनोबामें की जरूरत है, अन्धका भीनी हुईं हवाई भी हार जायेंगे। निगम कार्य चाहे कुछ न हो, लेकिन शक्ति का सख लक्ष्य लोक मानस में रख होना चाहती है।

अगर इस शक्ति का सख है लक्ष्यारी समाज बनाना, आम परिवार बनाना, वो सब की शक्ति के बिना बन ही नहीं सक्ता। इसलिए शक्ति की तरफ दिनों की लोक यात्राएँ अधिक-से अधिक सखपा में चलनी चाहिए। मैं यानता हूँ कि जियाँ 'एकसूत्रीमित' होती है, कल्याण में मेरे, मेम में भी, और कल्याण →

विकास : आर्थिक या सांस्कृतिक ?

“भूदान-यज्ञ” के अंक ३ (२० अक्टूबर, सन् १९६७) में “अधिक उत्पादन की मूल-मरीचिका” शीर्षक लेख में “भारतीय वाणिज्य उद्योग-मण्डल” के अध्यक्ष ओ एन.नीय्याल बिरला के कृपि-उत्पादन के सम्बन्धी सुझावों का उल्लेख है कि छोटे-छोटे किसान मेहनत, खर्च नहीं कर सकते। इनके खेतों की व्यवस्था कृषि-निर्णयों के माध्यम से बड़े-बड़े उद्योगपतियों द्वारा करायी जाय। कृषि-निर्णयों के प्रकल्प में हर हालत में आज जो किसानों को मिल रहा है, उससे कम मिन्टने की व्यवस्था नहीं रहेगी। इसका अर्थ यह हुआ कि आज जिस स्थिति में छोटे किसान हैं, रहेंगे ही। छोटे किसानों की स्थिति आज सर्वविदित है। कर्ज से टूटा किसान केवल अस्तरांजर मात्र रह गया है! वैसा कि ओ रुद्रभानजी लिखते हैं, और सही भी है कि किसान अपनी उपज का भाव निर्धारित नहीं करता, करता है व्यापारी और सरकार। गरीब किसान अपनी लागत-वर्च का हिसाब लगा भी नहीं पाता। इसका

→ भी। क्रांति में ‘एकसूत्रीय’ ही चाहिए। इतिहास यह लोक यात्रा अत्यन्त महत्वपूर्ण है। मैं आशा करता हूँ कि ऐसी हजार-दो-हजार टोलियों भारत में निकलेंगी, अहिंसक क्रांति की शक्ति बनाने के लिए, समाज के गुण-विकास के लिए। —धीरेन्द्र गन्धर्व

इतनी बहनें बिदा देने आयी हैं, हमलिये हृदय गर्दाद होता है। यह हमारे गाँव के सृजन का काम है, उसमें बहनें अपनी दिल-चस्पी बढ़ा रही हैं, ऐसा लगता है। जब तक बहनें नये आन्दोलन में भाग नहीं लेंगी, सामंशता को मदद नहीं करेंगी, भाइयों के बीच अपना विचार बतलाना नहीं सीखेंगी, सब तक साम-संराज्य सकल नहीं होगा। इस-लिए वे घर में चाहे जितना अच्छा काम करें, उससे काम पूरा नहीं होता है। अब उनमें सामाजिक शक्ति प्रकट होनी चाहिए।

—सरला देवी

नतीजा यह होता है कि किसान मुश्किल से ७-८ माह का अनाज रख पाता है, बाकी व्यापारियों के यहाँ पहुँचा देता है, और पुनः कर्ज पर निन्दा रहता है।

और जब हमारे उद्योगपति, पूँजीपति खेती करने लगेंगे, उस समय उपज का भाव व्यापारी या सरकार तय नहीं करेंगे, करेंगी खुद खेती करनेवाली कंपनियों और सरकार अनुमोदन का सोल लगायेगी। आज कल-कारखानों से उत्पादित वस्तुओं का दाम खरीदार तय करता है या उत्पादक ! फिर भी बाजारों में इनके दाम की दाम कहा जायगा या दूट ! एक ओर अपने उत्पादन को मनमाने दाम पर बेचते हैं, दूसरी ओर कृपि-उपज को कम-से-कम दाम देकर खरीदते हैं, और पुनः इस उपज को मनमाना दाम लेकर बेचते हैं। और जब इनके हाथ में कृपि-उत्पादन करने का काम दे दिया जायेगा, तब अनाज का दर्शन भी दुर्लभ हो जायेगा। और कहा यह जायेगा कि भारत अन्न के विषय में स्वावलम्बी हो गया है।

हम नम्रनापूर्वक सरकार और भारतीय वाणिज्य उद्योग-मण्डल से कहना चाहते हैं कि खेत गाँवों में हैं, खेती करनेवाले भी गाँव में हैं। गाँव से ही अन्न और अमिक नगरों को जाता है। गाँव के आदिमियों से ही कल-कारखाने भी चलते हैं। हर आदमी को मूल भोजन से पूरी होती है, और भोजन लेने से मिन्नता है। हमारा दावा है कि आज जो पैदा हो रहा है, उससे पाँच गुना तक सही प्रयास से किया जा सकता है। पर यह तब होगा जब हमारे महाजन यह समझने की कोशिश करेंगे कि राष्ट्र की उन्नति महाजनों के हाथ है। यह बात सदियों से चली आ रही है। इतिहास को देखें, रामायणकालीन भारत और महाभारतकालीन भारत को देखें और अभी के कुछ वर्षों पीछे महाराणा प्रताप सिंह और आमाशाह को देखें, जिन्होंने राष्ट्र के हित के लिए सब कुछ निःस्वार्थ किया।

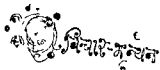
महाजनों को सार नम्रनापूर्वक हम अपने गाँवों में आमंत्रित करते हैं। उनकी पूँजी की सुरक्षा का मामरानी गाँवों में भरपूर स्थान है। हमें साधन दें, हम उन्हें कच्चा माल देंगे, और हमारे ही अन्न से पक्का माल तैयार होगा। उचित मजूरी और विक्री की व्यवस्था वे करें।

कृपि और उद्योग भ्रम पर आधारित है और भ्रम गाँवों में मौजूद है। खेती का स्थान अब उत्तम ही रहनेवाला है। और व्यापार मण्य है, जो उद्योग की बराबरी कमी भी नहीं कर सकता। केवल सांस्कृतिक विकास ही हमें सफलता प्राप्त करा सकेगा और तब हम अन्न-समस्या मुल्ला ही नहीं सकेंगे, बल्कि भारत को अन्न से परिपूर्ण कर देंगे। अन्यथा मध्यम विचार लेकर महाजन खेती भी अपने हाथ में ले लें। वे, खेतों के पबदारट से पशु किसान और अमिक को बेतार कर दें, और आर्थिक विकास करते रहें।

यहाँ अभी इस वर्ष सगुज्रा जिले में मारी अकाल रहा, बिदेशी या स्वदेशी अनाज नगरवातियों को सस्ते दाम पर दिया गया, जिन्हें दो अनाज का यहाँ बिक्रि करना आवश्यक है: पहला—चना, दूसरा—गेहूँ। चना ०-७२ पैसे, गेहूँ ०-८५ पैसे प्रति किलो पर खाने को दिया गया तथा इन्होंने दोनो अनाज को बीज के नाम पर किसानों को चना १)२५, गेहूँ १)३० प्रति किलो दिया गया। वह भी भरपूर मात्रा में नहीं मिल्य। मिन्ते मिलते ऊँची बतौन खल गयी, जब कि अनाज यहाँ के गोदामों में सड़ रहा है! यह सरकार की व्यवस्था है और इधर खमीरुप खेती में अपने हाथ में लेने की बात कर रहे हैं। रायण ने सोने की नगरी बनायी थी, जहाँ ह्छाणुसार सारा वैभव मौजूद था; फिर भी वह स्वर्ग तक रास्ता बनवाने का विचार रखता ही रह गया।

हम उस देश की उन्नत हैं, जहाँ वे बिध को मार्ग मिन्नता रहा है और यह केवल शुद्ध चिन्तन से बनता है। पैसे या शक्ति से नहीं। समय आ गया है, कृपा का। कृपा के सहारे ही हम अपनी सारी समस्या सुलझा सकते हैं। —विद्यानाथ प्रसाद जायसवाल

‘भूदान-यज्ञ’ : शुक्रवार, १ दिसम्बर ६७



सुदृष्ट की नयी शैली जनता की माँग सत्ता का संकट

मिले तो सब ठीक हो जायगा, वे लिफ्ट अपने स्वार्थ के लिए—छटा अपने हाथ में लेकर उन दूसरों के बहाय खुद उलका उपयोग करने के लिए—लोगों को पोसा देते हैं।

अभी तो बरस भी नहीं हुए सब इन्होंने नैष्ठिक में साम्यवादी पद्धत की बिकला के बाद बनकर सुदृष्ट ने यहाँ का शासन अपने हाथ में लिया था। हिन्दुत्वान में इस समय स्थिति क्या हम अनुभव कर रहे हैं यही स्थिति यहाँ थी। करीब पन्द्रह बरस से राष्ट्र पति सुदर्न की निरंकुश कला के सरक्षण में प्रशासकी व्यवस्था तथा भ्रष्ट राजनेता मिथ्या नाम बनता का मनमाना घालन कर रहे थे, लोगों को खाने के लिए चावल मिथ्या भी दुर्लभ था, सब कि ऊपर के लोग विलास की विदेशी वस्तु करते थे, बीमरों व्यापक हो चुकी थी।

येचारे लोगों ने जनता कि शासनकर्ताओं के बदल जाने से परिस्थिति सुधरेगी और इतलिय उ होने दिल् लोकर सुदृष्ट का सम पान किया। इकोमिथिया के छात्र छात्राओं ने उस परिवर्तन हाल से सब सुधरें और सुदृष्ट के बीच लला का किष्ट सधरें चल रहा था, सुदृष्ट की पूरी मदर को। अपनी भाव की पलायन न कर इन्वार्तो को लक्ष्य म छात्र सङ्घों पर निरक आये और खुने आम सुधरने के लियेक उन्ोंने व्यापक उठायी। उस समय उनका काय गयी था कि चीकों की बीमरें कम होने चांरिए, यह आगयी और गणक्याओं को, कि होने यह परिस्थिति देता को है, रट मिथ्या चांरिए।

जनसदास सुदृष्ट ने मोझे छात्रों की पीठ टोंको और सुधरने विरोधी भावनाओं की उमदली हुए तसोपर सवार होकर भान लोपना सुधरने का व्यवस्था किया और खुद शासनकद दुहा। पर सोमो ने देला कि दिन, मरिने और बरक नील रहे है, रेकिन भीमरें हो घटने के बहाय बढ्ती ही बा रही है। प्रशासक भी न्यो कान्यो थारो है। अभी आठ नवम्बर की घण्टा है कि मोझे छात्रों ने फिर सुदृष्ट के परिमण्डल की बैठक के समय चावल की बंदनी दुई कोसो और

भ्रष्टाचार के लियेक प्रदर्शन किया। वे माने छात्र समकते होमे कि इस बार भी सुदृष्ट उनको पीठ टोनेगे। पर इस बार कुछ और ही हुआ। सुदृष्ट ने छात्रों को उपदेश दिया कि "चीलने चिलाने और मांयें पेश करने से मखने इल नहीं हो सकते, इल छार प्रदर्शन करने के बहाय आप लोग टोल्थो बनाकर काम बीजिये, लिखे उलादान बदे।"

इस व्यवस्था से सुदृष्ट न होकर एक दूँठ नोबवान छात्र ने कहा—"लेकिन बसुपरिस्थिति यह है कि अदरर लोग—सोवियेतिम भी और सैनिक भी—अपने स्वार्थ के लिए निरन्तर प्रशासक, बेईमानी और अधिकारो का दुसपयोग कर रहे हैं, वे लोग घनी हो रहे हैं, राग ला कर रहे हैं, और दूसरी ओर भूले लोग चावल के लिए तरस रहे," तब सुदृष्ट ने बिद्यार्थियों की भीड़ को मापन देते हुए बताया कि चावल का अभाव तो चीनी न्यायार्थियों की समालोरी के कारण हुआ है।

सुदृष्ट ने यहाँ किया को हर राजनीतिक करता है, हो बरस पहले महेगार्द और भ्रष्टाचार की जिम्मेदारी सुधरने की थी, अब सब शासन खुद के हाथ में है तो उसका दोष चीनी न्यायार्थी का है। तब प्रदर्शन को चीलने चिलाने का, नारों का आर मांगी का शौचिय था, आश वे गेर जिम्मेदारी को निशानी है, आश तो मेरनत की आव इरकता है। समझना हो हमको, आशको, छात्र छात्राओं को, और मोली नेलकर बनता को है कि समस्या का इल छात्र के परिवर्तन में नहीं है, बल्कि लला के अस्तित्व को ही समा करने में है। समस्या की बद्ध आम की केंद्रित रचना है। उसको समा करने और लोगों की अपनी शक्ति बाल करने में ही समस्या का हल है। जो पर कहते हैं कि आश अष्टक म्यथि या पारो शासन में है, उसकी बहाय हमें यहाँ बैठने का मौक

बन तक समाज की सारी व्यवस्था और सत्ता केंद्रित है तब तक जिसे हम जनतक कहते हैं वह भी एक पोसा ही है, चार-पाँच बरस में एक बार मजदान करा लेने मात्र से जनतक नहीं हो जाता। यह तो ठीकी तरह से जनता को बहाने की चीज है, जिस तरह बच्चों के हाथ में सिनेमा देकर हम उन्हें बहानते हैं। लोगों पर यह छात्र झप्ली जाती है कि वे मजदान के बरिये व्यवस्था में परिवर्तन कर सकते हैं, पर चुनाव में हीनेबाके प्रशासक आदि को मत छोड़ दें तब भी पाठो-पद्धति के कारण चुनाव की बासुकिद्धा बहुत कुछ सतम हो जाती है और चुनाव क बाद ता बनला का अपने प्रतिनिधि पर भीद काफू ही नहीं रहता। हिन्दुत्वान में पिछले आम चुनाव और उसके बाद देव में का कुछ हुआ है तथा को रहा है, उधने यह बन सख हो जाती है।

इसके अलावा सब एक लला लफार के हाथ में है तब तक जनतक काय मतदान का बहुत अर्थ नहीं है। करने को रातय बनता के प्रतिनिधियों का होता है, पर जैसा अभी उस दिन नवाब अजी यावर जग है, जो मास के राबुत होकर अमेरिका बा रहे हैं, अपने एक भाषण में बताया था, सब कि-जनतक के टोक से सवाहन के लिए जनता को निमित्त प्रपत्तो और समस्याओं की सही सही और पर्याप्त ज्ञानवापी मिथ्या बहुत बकरी है, राष्ट्र की सुरक्षा और सुतवा के नाम पर बहुत ही बाले बनता है जिगयी भी जाती है, बिचके कारण बनता तन बासो पर न अपनी राय दे सकती है, न उन्हें प्रभावित कर सकती है। बास्तव में जनतक और केंद्रित व्यवस्था दोनों परस्पर विरोधी चीजें हैं। अगर सरकार पर ही हम सब कुछ सौपते बादीये या बनोचित के नाम पर सरकार धीवन के अधिकाधिक सेवों पर दखल काली बायपी तो नाम और सोचना चारे जनतक की हो,→

मूल्यानयक : सुकपाद, १ दिवसद, १६०

स्मृति की परतें :

आत्महत्या चल रही है

विरोध छूट के दिन बीत रहे थे। जल्दी-जल्दी 'एम्पोरियम' गया। मुझे ही व्यवस्थापक मिला गये। परिचित थे, मन में भरे लिए आदर भी रखते हैं। 'शय जगत्' के साथ भी मैंने पूछा, "कहिये, कैसा चल रहा है?" बोले, "आत्महत्या चल रही है!" मैं भींचका रह गया। समझ नहीं सका, उनका मतलब क्या था। फिर पूछा, "बिक्री कैसी है?" जवाब मिला, "कहा तो। बिक्री नहीं, आत्म-हत्या हो रही है!" पूछा, "कैसे?" कहा, "जो भी अच्छा ग्राहक आता है, यही पूछता है कि मद्रास की यह चीज है, पंजाब की है, राजस्थान की है? जोनपुर का तेल है? हम लोग करते हैं कि अपने राज्य की चीजें होविये। देखिये यहाँ की बोतों के, यहाँ का जाम है, यहाँ का विकला का तेल है, यहाँ का जाम है, यहाँ का विकला का तेल है। अपनी चीजें खोलियेगा वो कृतिन को, कारीगर को- पैसा मिलेगा। जवाब मिलता है, 'यदि दीजिये, अर्धशास्त्र मत समझाइये।' गोचिये, दूसरी जगहों की चीजों पर कमीशन खाकर हम लोग कब तक जिन्दा रहेंगे? इसीलिए मैंने कहा कि यह भीने का नहीं, मरने का घोदा कब रहा है!"

बात शमश में आ गयी। खादी का अर्धशास्त्र ग्राहक को अर्धशास्त्र लगता है। लगे क्यों नहीं? हमने 'एम्पोरियम' खोला ही इतनाएक कि लोगों को रुचि (देख) और रुचि (व्यापक) की चीजें मिलें। कहाँ खादी और कहाँ शीनीन की पसंद? अगर खादी का

→ जनता उद्योत्तर उत्पादितों की शुद्धता बनती बायगी। क्यों-क्यों सरकार की शक्ति बढ़ेगी, जनता की ताकत बढ़ेगी। इच्छित्य सरकार को केन्द्रित सत्ता को पग पग पर हमें सुनौती देनी चाहिए और उधे तोड़ना चाहिए। अगर हम वास्तव में जनतंत्र चाहते हैं तो हमें आर्थिक और राजनैतिक सत्ता का विकेंद्रीकरण करना होगा।

—सिद्धराज डड्डा

सम्बन्ध जरूरत से रहता तो बहो बनती बहो बिक्री। न बिक्री तो पसंद हो जाती। मरती भी तो शान के साथ मरती, गाँव के अर्धशास्त्र को बाजार के शोपण से बचाने में शहीद होती। आज की खादी तो मारी जा रही है—शुभो द्वारा नहीं, मिर्चों द्वारा।

रुकुन्तला कपड़ों की शोपण से निकलकर महल में पहुँचायी गयी, पर दुर्भय इतना लम्पट निकला कि उसे मूल गया।

कीमत कौन चुकाये ?

रहिया नही बरकी, लेकिन किसी तरह घान हो गया। उतना नही जितना सोचा था, फिर भी पास-पड़ोस के मुकाबिले में अच्छा ही हुआ। साथियों में प्रश्न उठा कि हाथ-कुटारें करायी जाय, या 'दुल्ह' में भेजा जाय। संकट का प्रश्न था। मैंने कहा कि दोनों तरह की कुटारें कराकर देला जाय कि लवच में जितना बनकर पड़ता है। देला गया। दुने का फर्क आया। हाथ कुटारें कराने में तो मन पीछे लगग्य दारें तो का नुकसान। हाथ-कुटारें मँहेंगी, हाथ-कुटे बालक का नाभार में भाव कम, रखने में कीर्तों का प्रकोप, भूखी बिक्री लायक नहीं। ओर स्वास्थ्य का भी क्या खवाल रहा? 'दुल्ह' में चारै बौली कुटारें कर लीजिये। सेविहार यह नुकसान कैसे पूरा करे, ओर क्यों करे ?

हम लोगों ने अपनी खेती के लिए माना है कि कैसे खादी बर चाहिए को शोपणमुक्त हो, उधे तरह खेती भी यही चाहिए को शोपणमुक्त हो। शुल में शोपणमुक्ति में हमने ये बातें मानी हैं : (१) खावी मजदूर को बहोँ सवा और डेढ़ दयमा रोज़ मिल रहा है, बहोँ दो और दारें बयये रोज़ तो मिले। आगे बलकर यानी दो तीन सव्य में, हो ये डेढ़ से २० महीना मिलने लगे। (२) मजदूर की उत्पादकता और ब्यवसाय-शक्ति में निरन्तर विकास हो। (३) सामान्य उत्पादन से अधिक उत्पादन होने पर अतिरिक्त उत्पादन में मजदूर को मजदूरी के अलावा हिस्सा (वेयर) भी मिले, शांति क्रमशः उधकी शेषित बड़के

और भ्रम का हिस्सेदार बन जाय। इत इति से अगर खेती करनी हो तो खेती की अर्थनीति पर नये धिरे से विचार करना पड़ेगा, और खेती के सन्दर्भ में प्रामोद्योग पर भी। खेती से अपेक्षा नहीं की जा सकती कि वह टैकी-चकी को 'अन्विदी' है। अगर खेती अपना खर्च निकालकर कुछ बचा ले, ओ आसानी नहीं है, तो उधे खयये पढ़े अपने मजदूरों और पशुओं के साथ होनेवाले अत्याय पर ध्यान देना चाहिए।

खन-खेती, अधिक-से-अधिक उत्पादन, अधिकों को भावयक सुरक्षा और उचित पारिभ्रमिक, गाँव की योजना और ग्रामसभा के द्वारा सार्वजनिक का संग्रह, तथा गाँव में सबको क्षम और दाय की गारंटी आदि ऐसी चीजें हैं, जिनको साथ मिलाकर ही प्रामोद्योगों पर विचार हो सकता है। गाँव की योजना में कौन जाने आष की टैकी और आष की चकी पूट भी थाय। पूट खात तो आसोस क्या !

—रा० म०

विहार में ग्रामदान-प्रश्नोत्तर

[१ नवम्बर '६७ तक]

जिलों का नाम	ग्रामदान	प्रत्येक ग्राम
दरभंगा	३,७२०	४४
पूर्णिमा	३,८८८	१७
मुंगेर	१,५५८	९
मुजफ्फरपुर	१,२९२	१२
मगध	१,१५०	९
इकारीबाग	८८५	२
संथाल परगना	८३५	१०
पलामू	६२८	४
सारन	५९९	३
भागलपुर	४९९	३
सहर्षा	३९९	३
बनारस	२४०	—
जनसद	२४८	१
हिंदार	१९२	—
शाहाबाद	१०३	१
रौंची	४४	—
पटना	३५	—

कुल : १६,१०२ १००

भूदान-संक १ दिसम्बर, ६७

कम्प्यूटर (गणक-यन्त्र) की कार्य-प्रणाली

भारत के निम्नित्त सस्त्रानों में आन एक हो से उजर कम्प्यूटरों का खरपाग किया बा रहा है । मन्वर के पदने लखार से रागकम्प-पुग्ग में राक्षत्रीय कम्प्यूटर केन्द्र का उद्घाटन हुआ । रागकम्पपुग्ग में अमेरिका निमित्त तीन कम्प्यूटर बिठाये गये हैं, ओ राक्षत्रीय तथा अराक्षत्रीय सस्त्रानों के गणना समन्वी बर्षी सत्यन करेगे ।

कम्प्यूटर कोरें होचने या बिचार करने वाली मशीन नहीं है, यवधि बर् वैज्ञानिक उगन्वाचकारों ने कल्पना की है कि आगे खन्जर कम्प्यूटरों बिगामी के दिमाग का सत्यन से लेगे । आरकलय का कम्प्यूटर यूल्य एक गणना करनेवाले मशीन है, ओ सधाराग यवधि की गणना और कुछ तार्किक निष्कर्ष बहुत बली और क्लिनुक सही रूप में प्रस्तुत कर देती है ।

राग इन्जीन्यूर से ओ कम्प्यूटर लगा है बह एक सेकेण्ड में बिगन भूय किसे दे लाग बोध और दे सत्य गुणा या भाग कर सकता है । एक ओसत गणित ओ पती ब्रज्य करने के लिए २० दिनों तक दिन रात गणना का काम करते रहता होगा ।

भीतर रखत कम्प्यूटर ओ सुवय रूप से ४ इकाइयाँ होतें हैं । पत्नी इकाई में, ओ सचन प्रज्ञा करनी है उतके समरग की सवस्था होती है । दूसरी इकाई में निर्देशनों का खनन रहता है । तीसरी इकाई निर्देशनों के अनुसार गणना करेते ओ निष्कर्ष निकालने का काम करती है । चौथी इकाई निष्कर्ष प्रका करने का काम करती है ।

आम तौर से एक कम्प्यूटर में ३० इकाय सन्धी क सचय की गुणाइय रहती है । यदि ओही स्यारा सन्धी के सचय की आरकयकता हा तं उतके बर्द लाग सन्धी तक बढ़ाया बा सकता है ।

प्रत्येक कम्प्यूटर से इतके क्लिद निर्धारित दैग से सचनार्थे भर दी जाती है । बह आम कम्प्यूटर का आकार (आकक)

करता है । इन सचनार्थों के आकार पर ही कम्प्यूटर पूछे गये सन्धी का उजर या सना पान बिगुन गति से प्रस्तुत कर देता है । इत सभय में एक बिधीय बाल ध्यान में रखने की है कि कम्प्यूटर से सने गणनार्थे या निष्कर्ष प्राप्त किये बा सकते हैं, जिनके बारे में उतमें पहले से ही गणना या निर्देशन मरा गया हो । ओ निर्देशन कम्प्यूटर को नहीं दिया गया है, उतके बारे में कम्प्यूटर कोरें उजर नहीं दे सकता ।

निर्देशन इकाई कम्प्यूटर को सतसे सुवय इकाई मानी जाती है । बह निर्देशन इकाई पदने से निर्धारित प्रोग्राम को अचुक सुसारा और बीज गति से दुरा करती है ।

प्रत्येक निर्देशन कम्प्यूटर को अपनी मारा के एक सन्द में सभरित हो जाता है । इत स्यार के सन्धी से बरबय बनाकर कम्प्यूटर का प्रोग्राम बनाया जाता है । ऐसे प्रत्येक सचय इतर एक निश्चित गणना करने वा निष्कर्ष प्राप्त करने का आदेश निरहित माना जाता है । इत तदद की गणना करने के लिए निर्देशन इकाई सचयों क सन्धी की एक-एक करके स्याज्या करती है और इतके बाद प्रत्येक सचय के सचय का गणना करनी हो बह करती जाती है । कम्प्यूटर को निर्देशन इकाई २ सेकेण्ड के पचास लाखमें माग में एक निर्देशन पूरा कर लेती है, जब कि तेक-से-तेक सचय का पता पढ़नेवाले का एक सचय पढ़ने में एक सेकेण्ड बा तीन सौ समरकतत है ।

कम्प्यूटर की बीमत २५ लाख सचय से डेकर २ करोड़ सचय तक है । कुछ बिबक्ति कम्प्यूटर की बीमत इतके बह गुना अधिक भी है ।

इसने दैग में सचयें तक कम्प्यूटरों का उतपयोग बीमित छेप में ही हो रहा बा । पर आन इतके उरबीग का सधरा फैलाव बा रहता है ।

बर्द इनी मिले, डेनिकम्प ट्रेनिंग इन्फी ट्यूटय, हिन्दुस्तान मशीन टूल्स (बंगलौर), बीजक बीबीमारिब बर्षीय (बालासो),

कम्पकता इन्जीन्यूक सप्लायर कम्पनी, टैलकी (बमबेरापुर), इन्गलत बीजक फेनड्री (पैरासुर) तथा अतुणुति आयोग में कम्प्यूटरों का बिबिध उतपयोग हो रहा है । बीग ही दिव्नी, इना, कम्पकता और देहरादून जैसे सन्धी में अमेरिका के बने १० आधुनिक कम्प्यूटर बिठाये बायेगे । इन सचनार्थों से बह सभय को बिठा दे कि इतरा दैग वलुन कम्प्यूटर सुग में प्रवेत कर सका है ।

जभी तक कम्प्यूटर प्रायः अमेरिका में मँगये जाते थे । हाज ही में अमेरिका और भारत को दो कम्पनिजें ने मिलकर भारत में कम्प्यूटर बनाने का समझौता पूरा किया है । इसके परिणामस्वरूप आनेवाले सन्धी में कम्प्यूटर का उतपयोग अधिकाधिक बढ़े पैमाने पर होगा, बह निश्चित है । —स्यभान

यन्त्र सलाह देता है

इत्तोनिवारें जनतन्त्र में सार्थ बिबकिजासक का गणक-यन्त्र बहुत सचके गणक-यन्त्रों में से एक है । बह बिबकिजासक के ६९ विभाजों के काम में आता है—बह सलाह देता है, इत करने के क्लिद पाठकम वेगार करता है, वैज्ञानिक बिषय से सभन्धित सामग्री सलने में सहायता देता है । बंवल १९६६ में इत गणक-यन्त्र ने ही से अधिक महत्त्वपूर्ण काम किये । यदि गणना के परमसगत सौकी का प्रयोग किया जाता हो इत काम में दक्षिणें बर्षे लगते । हाज ही में इतने तारु के समस्यार पत्र इराबी के बार्न के सभन्ध में आर्दे हुए पाठकों के पत्रों के पैना ओर सभन्ध-बर्ष के सलाहक मन्त्रक को बतत उतपत्थी लगा दी । अर पत्र की इत बतत का पता बन गया है कि पाठकों को दैथे सभन्धी में दिखसरी है और उतके क्लिद तदद प्रस्तुत करना चाहिए । बीजक गणक यन्त्र पुस्तक-४ की सहायता से क्लिद बह सभन्धन ने पत्रकारों में इतनी दिखवली पैदा की कि पाठको, डेनिनसार्द, आदेशक, सौकी, सभन्धयोग तथा सभन्ध सधिया इतके के बहुत सारे पत्रकार सार्न आ रहे हैं ।

('सुख दलन' से सभन्ध)

शान्तिसेना

शान्ति-केन्द्र के संपोजकों तथा शान्ति-सैनिकों की सेवा में :

प्रिय मित्रों,

आपको ३ नवम्बर का "श्रुदान-ग्रन्थ" एवं अलग से भेजा गया पत्र भी मिला होगा। आशा है, उसे पढ़कर हम लोगों को आपस में जुड़ने की आवश्यकता महसूस हुई होगी। संगठन में शक्ति अपने आप उत्पन्न हो जाती है। उसके लिए अलग से कोई प्रयास करना नहीं पड़ना। अलग-अलग कच्चे चांगे में अपनी कोई शक्ति नहीं रहती है। अगर यही कच्चे चांगे एकत्र हो जाते हैं तो मजबूत रखी बन जाती है। पानी की बूँदें अलग-अलग अपने में कोई शक्ति नहीं रखती, परन्तु एकत्रित होकर प्रचंड-शक्ति का स्रोत बन जाती है। हम लोग आज बिलंब पड़े हैं। सब लोग एकसाथ जुड़ जायें, तो देश की आशांति, अन्वेषणा और भ्रष्टाचार पनपने का साहस न करें। उसके स्थान पर समाज में हम लोग शान्तिमय तरीके और प्रेम की शक्ति से मानव-समुदाय को सुखाड़ा का अभयदान दे सकते हैं। सेवा के द्वारा धरती पर स्वर्ग ला सकते हैं।

कुछ लोगों से 'लबर मिनी' है कि कभी तो शान्ति-सेना का कार्य प्रारम्भ भी नहीं हुआ है, कुछ कार्य चलने दें, लोगों में इसके प्रति आस्था और दिलचस्पी जगाने दें, तब उनके नाम 'काउन्सेलर' या अ० भा० शान्ति-सेना मण्डल के रजिस्टर में नाम दर्ज करने के बारे में सोचा जाय, तो उचित होगा। इस बात को मैं भी मानता हूँ, परन्तु यह आँप भी मानते होंगे कि आस्था और दिलचस्पी पैदा करनी है, तो संगठित शक्ति तथा मुनिमोचित कार्य की आवश्यकता है। अगर हम अलग-अलग काम करते हैं तो बड़े काम को उठा नहीं सकते, और अपनी शक्ति के अनुसार काम भी लेते हैं, तो अन्य लोगों का सहयोग प्राप्त न होने से काम में सफलता नहीं प्राप्त होती। इसके परिणामस्वरूप हमारे अन्दर अशन्तोष तथा निराशा घर-घर जाती

है और हमारी धीचन की हड्डायें, आकांक्षाएँ समाप्त होने लग जाती हैं।

क्या इतने तक ही आप सीमित रहना चाहते हैं? मैं मानता हूँ कि आप इसके लिए तैयार नहीं होंगे, इसलिए हम सबको एक सूत्र में बँध जाना आवश्यक ही नहीं, अपितु अनिवार्य भी है। इसके लिए हर साल हम अपनी प्रतिशा एक निश्चित अवधि में दुहराकर ताम्रि कर लें और हर शान्ति-केन्द्र अपना कार्य-विवरण भेजकर सम्बन्ध बनाये रखें, यह आवश्यक है। आज हम लोग इससे भी दूर हैं। कदने के लिए हमारे संगठन में १००० शान्ति-केन्द्र हैं, परन्तु कार्य-विवरण १५-२० केन्द्रों वा भी प्राप्त नहीं होता। जो नहीं भेज पा रहे हैं, उनकी चया दिखते हैं, और वे किस तरह की मुशीबत में पड़े हैं, इसका पता नहीं चल पाता। इसके हमारी संगठन-शक्ति का अन्दाज भी नहीं लग पाता। परिणामस्वरूप

कोई ठोस कार्यक्रम हाथ में उठा नहीं सकते। इसलिए यह भी यह आवश्यक हो गया है कि हम एक सूत्र में बँधें। अच्छा होगा कि हर शान्ति-केन्द्र सक्रिय होकर अपने केन्द्र के साथ जुड़े शान्ति-सैनिकों को १० नववरी के दिन एकत्रित करके शान्ति-सैनिक प्रतिशा दुहरावें और एक प्रतिका-पत्र पर सबके हस्ताक्षर कराकर हमारे पास एक प्रति भिजवाने की व्यवस्था करें। जो शान्ति सैनिक अभी तक किसी शान्ति-केन्द्र के साथ जुड़े नहीं हैं वे किसी शान्ति-केन्द्र के साथ जुड़ें तथा उसके साथ सम्बन्ध बनाये रखें। अगर किसी शान्ति-सैनिक को किसी शान्ति-केन्द्र के साथ सम्बन्ध बनाये रखने में दिक्कत हो तो वे छिपे प्रतिशा-पत्र भरकर हमारे पास भेजने की कृपा करें।

आशा है, आप लोग प्रतिशा दुहराने की तिथि को याद रखेंगे, और इस शक्तिशाली संगठन को एक ठोसरूप देने में सक्रिय सहयोग देंगे। असीम आशाओं के साथ, आप स्वयंका सस्मेह सत्यनारायण

अ० भा० शान्ति-सेना मण्डल, राजघाट, बाराणसी-१

अहिंसा :- एक नये और कुछ भिन्न दृष्टिकोण से

[स्पष्ट चिंतन हेतु एक योगदान]

[श्री टी० के० महादेवन् गांधी शान्ति प्रबिष्ठान, नयी दिल्ली के एक प्राणनायक कार्यकर्ता हैं। प्रस्तुत निबन्ध में आपने अहिंसा को परिस्थिति के परिप्रेक्ष में परखने का प्रयत्न किया है। उनका विचार हम "श्रुदान-ग्रन्थ" के पाठकों और प्रामदान-भान्दोलन में छगे कार्यकर्ता साधियों के समक्ष सुनी चर्चा के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।—सं०]

मैं ये थोड़े विचार इस आशा से रल रहा हूँ कि गम्भीर दृष्टि रखनेवाले सभी गांधी-विचारसंपन्न लोग इस पर आवश्यक ध्यान देंगे। एक शक्की को दिमागी कसरत कहरकर नहीं चलेंगे।

● सही काम के पीछे विचार भी स्पष्टता होती है और स्पष्ट विचार सही शब्दों के प्रयोग से पैदा होता है। इस लड़ी का कोई हिस्सा छोड़ना कठिन है, क्योंकि कोई भी हिस्सा छूटगा, तो हमारे अंतर में कमी होगी। गीता के 'योगः कर्मसु कौशलम्' का मैं यही अर्थ करता हूँ।

● आदर्श के प्रति भद्रा अच्छी व बरूरी

चीज है। लेकिन उस भद्रा के साथ विचार का मेल जरूर होना चाहिए। जिसका भी यही भारतीय परंपरा है। हमें अपने आदर्शों का निरंतर विश्लेषण और परीक्षण करते रहना चाहिए। अगर सभी यह काम न कर सकें तो थोड़े से लोगों को यह जिम्मेदारी लेनी चाहिए और अपने दृष्टिगत नतीजों में दूसरों को भी शामिल करना चाहिए।

● अन्तर्द्वैत को स्मर चीज नहीं है। एकदम अच्छी वैसी कोई चीज है भी नहीं। जो एक शब्द में अच्छी चीज है, वह बर्गनी नहीं कि दूसरे में भी हो। आदर्श के बिना विचार है, सभी की सीमा है। वे भी परिपक्व

श्रुदान-ग्रन्थ : शुक्रवार, १ दिसम्बर, '६०

वे वैश्वी प्रभावित होते हैं, जैसे आदमी का शरीर। हम विनमता से यह मान लें कि हमारे विचार भाग्य के दिने नही हैं।

● आदमी के अथ दूरे विचारों को तरह ही अहिंसा भी कोई स्थिर वा पूर्ण चीज नहीं है। अहिंसा का मन्त्र ही है वास्तविकता से ऐसा समझना रहना। यह एक साधन, गतिशील चरित्र है। विद्युत् एवं वर्षा अहिंसा, जैसा कि कहते हुए गांधी कभी चकते नहीं थे, एक अद्यतन आदर्श है। अहिंसा से समझना किने बिना कोई व्यक्ति एक वैश्विक भी भीख नहीं रह सकता।

● यह सब तो प्रारम्भिक बातें हैं। हमारे सोचने-समझने में गलती तो तब आती है, जब जिनो के हर मिन्ट समझीते की तैयारी रहते हुए भी हम दूसरे मीलों पर एकदम स्थिर व कठोर दस अन्तर जेते हैं। अगर स्वयं आदमी का ही जीवन विद्युत् अहिंसा को पुराक व नहीं चल सकता, तो हम क्यों यह सोचते हैं कि आदमी की बनायी लसाल, संगठन बगैर चल सकते हैं ?

● हमारी बोधवाच की भाषा में अहिंसा मन्द ही रह बात थी स्क्रॉटि दे कि 'विना' जीवन का माध्याम नियम है। अहिंसा दस नियम से अलग पड़ती है। लेकिन यह नियम अपने इस रूप में सब तक रहता है, तब तक उसके इस रूप से हटकर भी आनेवाली कोई भी चीज एक हद तक ही अलग करेगी। यानी अतमान्य चीज कभी भी सामान्य चीज को पूरी तौर से हटा नहीं सकती।

● हल्के हमारी दुखी गलती को हमारे बीच बह पकड़ रही है, पर दे कि दिना एक निरपेक्ष और प्रामाण चीज है। धीरे धीरे एक पूरी तौर से निराला वा सकता है। यह चीज में से नसे नहीं उतरनी। हमारे सबसे करीब तो चन्द ही पड़ना है, बहों कस वा सफला है कि कोई दिना नहीं है। सत सोचिये, इसका मन्त्र क्या निरुपता है ? शास्त्र में सब हमारी धृष्टी चन्द प्राकृतिक वा मानवीय कारणों से बांद की तरह बेमान बन जायगी तभी, और केवल तभी ही दिना स्वयं होगी।

● क्या यह निराशापूर्ण सन्देश है ? कदापि नहीं। अभी तो जो दिना ही है,

उसका मर्म पर नहीं है कि हम दिना का एकदम सहाया कर दें, बल्कि बहों तक समन हो उठे कम करें, शरीर कभी नहीं, लेकिन साधारणतः विनाश अनावश्यक है और उसके बचावा जा सकता है। लेकिन कम करने की यह प्रक्रिया न तो सीमित है, न ही केवल एक दिना में आनेवाली। यह एक ऐसी प्रक्रिया है, जो सब तक इस दुनिया में आदमी और उसकी बनायी लसालें रहेंगी, चकती ही रहेंगी।

● लेकिन मौक्तिक रूप में दिना में कमी करना हमारा एकमात्र लक्ष्य नहीं है। दुखी जगता कसरी चीजें हैं, जिन पर ध्यान देना बहुत आवश्यक है। और यही हमारी तीसरी गलती को समझ मिल जाती है और यह है लोगों का यह बहुत हुआ निरशात कि 'क्या' से 'कैसे' जगता महत्वपूर्ण है। साधन की परवाह किने बिना, बिनाके प्रति गांधी की सखता प्रशिक्षित थी, साधन के प्रति हमारी बढ़ता हमें उन सामाजिक लक्ष्यों से दूर करती वा रही है, जिनकी प्राति इन देश में अत्यन्त कसरी है।

● हिन्दुमान में हमें केवल शारीरिक चोरा वा कष्ट के रूप में भी आनेवाली दिना से ही नहीं लड़ना है। आशारी के भीम सत्त बाद भी हिन्दुस्तान के शरीरों की मुनीबों का प्यास लबालम मर्रा हुआ है। हर कदम पर उन पर शारीरिक चोरा से भी नहीं दिना का हमना होता रहता है। ऐसी शान्त में साधन की बात कहना क्या एक तरह की नाजिमता नहीं है ?

● मैं जो कुछ कह रहा हूँ, उसे गलत दग से कहना भासान है। मेरा मतलब यही है कि साधनों से विचरते रह जाना उतना ही लजलाक और साधर जगता निरपेक्ष है, जिनान कि साधन से विचक जाना। साधन और साधन में अन्त तामने नैडमाना चारिए। केवल अहिंसा के पिय अहिंसा एक निरपेक्ष सामाजिक भी और ले जायगा। अहिंसा का यदि कोई सामाजिक अर्थ रहना है, तो उसे लरके अनुकूल होना होगा। भूले की भूल बन्देन्दे शिदा-को से नहीं जायगी। जैसा कि गांधी कहा करते थे, ईसा को भी देते भूलों के

सामने रोटी की शक्य में ही आना होगा।

● मैं यह नहीं कहना कि हम दिना से समझौता कर लें वा अहिंसा को इसका बना लें। मैं केवल यही दिवाने की शोध कर रहा हूँ कि हमारी अहिंसा में उसके उद्यम-साधन में तो मिश्रण हो ही गयी है। हमारा साधन जीवन दिना के साथ ताम-मेक पर निर्भर है। जैसा कि विनोबा ने साक्ष साक्ष कहा है कि अगर हम छो पीसरी अहिंसा तक नहीं पहुँच पाते तो भीत पीसरी अहिंसा मिले उसे छोटा न समलें। बोधा विकाश कहना से तो अच्छा ही है।

● एक चौथी गलती जो हम जोग करते हैं, वह हमारा यह समझना है कि दिना अहिंसा एक दुखरे के शिफाक चीजें हैं, एक-दुखरे को सन्नेवाले हैं। वात ऐसी नहीं है। ये दोनों ही सामाजिक परिवर्तन की माध्यम हैं। दिना से साधन समाना देता है और उसकी वजह से आदमी को कारी चीजें मिली हैं। ऐतिहासिक दृष्टि से यह सोचना गलत है कि दिना से कोई चीज मिचयी नहीं। गांधीजी का जोर केवल इस बात पर था कि विकसकतप में अहिंसा दिना से कहीं जगता उपाय-युक्त से सकती है।

● आज दुनिया में आदमी के सामने जो समस्याएँ हैं उनके हल के पिय दिना अहिंसा, दोनों को साथ साथ चरना होगा। जैसे यह अशुभ लग सकता है, लेकिन बात वैसी नहीं है। कापी लभे अमें तक हम यह मानने रहे कि दिना और अहिंसा साथ नहीं चल सकती। यह विधान इस बात पर भी आधारित है कि मीका पाते ही दिना अहिंसा पर हावी हो जायगी। वास्तव में यह गलत-समझी ही है, जिसे हम भूल जाते हैं कि कर्तार-भौ-पुराभो में येदाला जगती मानक विकसित होते होते केते भासक का सत्य मुसगठन सामाजिक मनुष्य बन गया। दिना अहिंसा, दोनों ने ही जीते जगने में जगना लएँ अदा किया है और मैं ही ऐला ही होगा। हमारे सोचने-समझने में इस सजान से ही गलत-समझी पैदा होती है कि दिना अथ पुरानी पद गयी वा इसके बिच कोई ऐतिहासिक आधार है नहीं।

● सवार्य व वास्तविकता किही भी शिदा-से अर्थक मन्-पूर्ण है। सवार्य को

शान्ति-केन्द्रों की गतिविधि

अक्तूबर '६७

अपने मतलब के अनुसार तोड़ने-मरोड़ने से कोई छोटी-मोटी विषय भले मिल जाय, लेकिन उससे कोई रास्ता निकलता नहीं। क्यूबा की क्रांति, अफ़्रीकियाई विद्रोह, वियतनामी युद्ध—इन तीन तथ्यों पर हमें गौर करना चाहिए, यदि हमारी छविलाहा का कोई अर्थ है। कम का ही उदाहरण लीजिये। हमें यह चाहे किताना सराब लगे, लेकिन अवलोकित मही है कि बिना उसके तीव्रता मर्यादित कम का हो गया होता, जिसका नतीजा इतना भयंकर होता कि उस पर सोचना मुश्किल है।

● हमारे सोचने-समझने में पॉवर्बी गलती तब होती है, जब हम कुछ खास चीजों के बारे में अपनी राय को सार्वजनिक मान लेते हैं। भारतीय चिन्तन में यह एक पुरानी कमजोरी है। अगर कोई एक तरफ़ीय एक स्थिति में या दूसरी में झुक हो जाती है तो हम तुरन्त नतीजा निकाल लेते हैं कि वह दूसरी या तृतीया दशाओं में सफल होगी। और जब हम पाते हैं कि ऐसा नहीं होता तो हम उस तरफ़ीय को नहीं, बल्कि उसे इस्तेमाल करनेवाले लोगों को कोसते हैं।

● अहिंसा में उन सभी अश्वर्यजनक विरोधताओं का अधिष्ठान मानकर, जो उनमें होती नहीं, हम उसके प्रति कोई न्याय नहीं करते। इस तरह हमारी निराशा और अवसाद बढ़ता ही जाता है, जिससे हमारा सामाजिक अक्षर और भी कम होता है।

● मैं ऐसी गलतफ़हमी की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहूँगा, जो आश्चर्य बहूत दिखायी पड़ने लगी है। यह गलतफ़हमी शान्ति व अहिंसा के बीच की है। इस विषय दुनिया में शान्ति पहला लक्ष्य ही ही नहीं सफ़ली, यह आसिरी हो सकती है। गांधी शान्ति के आदमी नहीं थे। तीस सालों तक उन्होंने इस देश में तूरान मचाये रखा, जब तक कि अमेरिच चले नहीं गये और अगर वे जिंदा रहते तो और बीच वर्षों तक वह तूरान मचाये ही रहते। हम लोगों में से कुछ जो प्रकृति की तरह ही शान्ति चाहते हैं वह गैर-गांधीवादी नहीं है, जिसका उस अहिंसा से कोई सम्बन्ध नहीं है, जिसकी विधा गांधी दिया करते थे। —टी० के० महादेवच

नेफा :

केंद्र : गाँव में बीमारी फैलने से ५ भक्तियों की पर्यु हुई। शान्ति सेनिकों की सेवा और प्रयत्नों से अन्य असह्य लोगों को राहत मिली। इस सेवा का प्रभाव अच्छा पड़ा। प्रार्थना, स्कूच आदि में गाँववालों की दिलचस्पी बढ़ी है। केन्द्र के साथ लोगों का संपर्क और सहकार भी बढ़ा है।

लुल : केन्द्र पर गांधी-अर्थेती तथा जय-प्रकाश-अर्थेती मनायी गयी। गांधी-अर्थेती के अवसर पर बहनों के लिए दो दिन का धिचिर आयोजित किया गया था, जिसमें १० बहनें उपस्थित थीं। क्लियर-वर्ग तथा बालवाड़ी ठीक चल रही है। बालवाड़ी में २० से ३५ बच्चे आते हैं। सुरी गाँव में बहनों के लिए एक वर्ग चलाया जा रहा है, जिसमें ५ बहनें आती हैं। अब ५-६ भाई भी आने लगे हैं। उन लोगों की अम-मिया भाषा सिलायी जाती है। उद्योग में हुनार का काम चालू किया है। विद्यापियों ने अलग से सन्धी-लेखी भी शुरू की है।

—दशपांडे

उत्तर प्रदेश :

डीडीहाट : यह केन्द्र अगस्त १९६७ से प्रारम्भ हुआ है, ६ सदस्य हैं। स्कूल-कालेजों से संपर्क किया गया, शान्ति-सेना का विचार सपसाया गया। धराश-बंदी अभियान में अधिक समय लगाया गया। सरकारी कार्य-कारियों तथा अधिकारियों से भी संपर्क किया है।

—भाषोसिंह

मुजानवी (महिला ग्राम) : केन्द्र के कार्यकर्ताओं के प्रयास से पारजुला प्रसंबदान हुआ। ४१ सर्वोदय-पत्र रले गये। ग्रामदान-पदथावा की गयी। शान्ति-केन्द्र की एक गांधी-पताम्नी समिति बनायी गयी है। उसमें ७ कार्यक्रम रले गये हैं : नरावंदी, ग्रामदान,

हरिहर-उद्यान, रञ्जता, कृषि की उपर बढ़ाना, शान्ति-केन्द्रों की स्थापना तथा नव-भागण। धराश की दुकानों पर धरना देने की तैयारी अभी से कर रहे हैं। १० जनवरी १९६८ को धरना देने की योजना है। —साता बहन

हमीपुर : सदस्य-संख्या १६ है। केन्द्र पर स्वाध्याय, भय, सेवा-कार्य यथासंभव हो रहा है। बीच-बीच में ग्रामदान-पदथावा तथा साहित्य-विही का भी काम चलता है। साहित्य-विही से लोगों तक पहुँचने का अवसर मिलता है। —भोमपकाश पाठीशाह

शौरगढाट : २१ नवम्बर से १ दिवंबर तक शान्ति-केन्द्र पर एक धिचिर का आयोजन किया गया है, जिसमें शान्ति-सेना के संगठन, प्रशिक्षण, डाकू-समस्या, ग्रामदान, छात्री-ग्रामीणों आदि विषयों पर विचार-विनिमय किया जायगा। —भोलाबाब रांडे

मुसकल : पुराने-नये मित्रक कुल ३६ सदस्य हैं। सार्वजनिक सहक के निर्माण में मदद की गयी। स्वाध्याय, विचार-मोड़ी आदि कार्यक्रम चल रहे हैं। सर्वोदय पात्र एवं साहित्य विही का भी काम शक्ति एवं भद्रा के अनुसार किया जा रहा है।

—बेचन सिंह, गदाधर मिद

कानपुर : प्रदेश के संगठन की मजबूत करने तथा शान्ति-केन्द्रों और जिंदा-कार के संगठनों में गति लाने की दृष्टि से पत्र-परचार तथा प्रसंग संपर्क का प्रयास चल रहा है। बरेली में सर्वोदय-सम्पन्न-धिचिर में भाग लिया। कानपुर के डी० ए० वी० मातेज में कार्यरत वनावपूर्ण वातावरण था। उसको शान्ति के रास्ते से सुझाने के प्रयास में संतोषजनक सफलता प्राप्त हुई। १९०० र० की साहित्य-विही हुई।

उत्तराखंड में योगेशचन्द्र बटुगुला के मार्गदर्शन में धिचिर-विचिरी का आयोजन

भूदान-रक्ष : शुक्रवार, १ दिसम्बर, '६७

होता रहता है। दरिद्री गृह में बुद्धिजीवियों की एक गोष्ठी तथा गाति-सेना देने का आयोजन किया गया। —विजय जवल्की विहार :

कारण्डवरा सन्तों की सख्या १७ है। गांधी जयन्ती के अवसर पर सारे शांति-सैनिक एकरित हुए थे। हर पंचायत में एक एक शांति-सेना सौन्दर्य के बारे में निर्णय लिया गया। रिश्ता के काम में लोगों को कन्या भौंग गया। इस बार नारियल में एक सड़क टूट गयी थी, उसको शांति-सैनिक भी राम पृथ सिंह के सक्रिय प्रयास से दुरुस्त किया गया। दो गाँवों में भ्रमार्ति का यान्त्रिक बन गया था, उसकी शांति सैनिकों ने बीच में पड़कर शांत किया। —जवल्की विहार

जयप्रकाशनगर (कोकराज) केन्द्र में २२ सत्य है। सड़क की मरम्मत की गयी। केन्द्र द्वारा रोगियों को सेवा को करती है। स्वाध्याय शाखागत बनता है। पत्र-पत्र तथा इमाननगर में छात्रों के अवसर पर हिंदू मुस्लिम भाईयों के बीच कुछ तनाव की परिस्थिती बनी थी, उसको दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। —नारायण प्रसाद गोविन्दपुर ग्रामदान के अधिनियम में न्याया समय दिया जा रहा है। केन्द्र के द्वारा गाँवों में होमियोपैथी दवायें छुद्र बाँटने का काम शुरू किया है। एक पुस्तकालय भी खोला रहे हैं। लेन-दूद का भी सामान एकरित किया जा रहा है, ताकि हर तरह के लोग केन्द्र पर आ सकें, और संघर्ष बंद करके गाँव के मुकदमों को गाँव में ही निपटाने का प्रयास साइ है। कई मुकदमों काटें से शांति भी कर लिये गये हैं। —रामसुन्दर प्रसाद

अन्तर (गांधी विद्या-केन्द्र) लखीमपुर पाप के विमानिके में २४० परिवारों से सरकें हुआ और १७५१०१२ वैसे का सभर्ष हुआ। विनोबा और गांधी जयन्ती के अवसर पर बच्चों के बीच कार्यक्रम रने गये थे। बच्चों ने दिव्य-शक्ति के साथ साज किया। ७७११६३२ के साहित्य-सभर्षे हुए। गृहरी में लखीमपुर अधिनियम पत्रने के बारे में न्याया कार देना

संघर्ष नहीं, समर्पण

एक दिन विचार करते करते मैं यह सोचने लगा कि एक बीमार अस्पताल में पड़ा है। उस बीमार से उभरा सड़क मित्रों की आशा है। लड़के को देखकर उसकी आँखें में आँसू आ जाते हैं। उस समय किन्ती पूनवान चीज बंद अपने सड़के को देता है। उसके पास और कुछ नहीं होने हुए भी यह बहुत बड़ी चीज है। यह पूनवान चीज—पेय बंद भगनों तक सीमित नहीं रहते, सड़के लिए, समाज के लिए ठहरे लीज है। अगर सामदान का विचार उसे आँखा हो तो यह बंद कर सकता है। इस उदाहरण से मुझे स्पष्ट प्रकाश मिला। पहले कृष्ण का पास मात्र था, अर नराना का साक्षात्कार हुआ। कुछ लोग ऐसे हैं, उनके पास देने की कुछ नहीं है पर एक विचार था। कम से कम मेरा इससे सुकार हो गया।

इतना शुरू में नहीं खड़ा था। यह तो दीलता था कि वर्ग खर्च नहीं, वर्ग निराकरण होना चाहिए। पर भीमानी से लेकर भूमिहीनों को देना है यह भेद तो था ही। यह भेद, यह विचार तकलीफ देता था। पर अर प्याज में आया कि एक से लेकर दूतरे को देने की बात नहीं, बल्कि सब लोगों को समाज के प्रति समर्पण ही करना है—तब से कल्याण का साक्षात् दर्शन हुआ। उसके विधान से शांति मिली, शान्ति मिली। परने तक वो विचार था वह भी गन्त तो नहीं था, पर एकगी था।

सबके पास कोरे-नकोर चीज है जो वे दे सकते हैं। आध मनुष्य के पास देने को जो है उसे वह परिवार तक रीके रलता है। यह शोध है। उसे वह चीज—पहोली फर्म और शरीर मर्षादा को प्यान रखते हुए—सारे समाज के लिए खोत्र देना चाहिए। —विनोबा

चाहिए ऐसा निश्चय हुआ। सामान्य अधिनियम में भाग लिया। नरिय २० गाँवों से सभर्षे हुआ। सभी गाँवों का सामदान हो गया। —सदर प्रसाद महरापुर

हाथों इस छात्र-५३ में अधिकांशतः कावेर के विद्यार्थी हैं, अनेक समुदाय के लोग इनमें शामिल हैं। हर सभर्ष निरमित रूप से बैठके हुआ करती हैं। जो और पढ़े फिरे लोगों के कारण चर्चा में अनेक गभीर चर्चाएँ होती हैं। सतोदर विचार का साक्षात् पढ़ने के लिए दिया जाता है। इनमें विचार समानों में लोगों की दिग्दर्शनी बढ़ रही है। आज पास के गाँवों में भी शांति सेवकों के संगठन की योजना बनी है। आज शांति सैनिकों के अवेदन तक मारकर भेजे हैं।

—टी० गो० पारले

मैसूर
बजारकोडू 'दिलीपिमा दिन' मनाया गया। उस दिन एक चर्चा गोष्ठी का आयोजन किया गया था। विजय या—भारत को अनुभरय से सत्यय रात्र बनना चाहिए था नहीं। कई विद्वानों ने भाग लिया। करी

चर्चाएँ हुईं। अन्त में सभर्षा मत विद्या गया तो भारत अनुभरय सत्यय बनना चाहिए, इसी पर बहुमत पाया गया। शांति सेना मारने को ओर से भेजे गये 'नी और रिहा दिया' किताब का पटन भी किया गया। इसका लोगो पर आन्ध्र अमर पड़ा। —५०५० विद्यालगाया

शान्ति-सेना परिचय

लेखक : नारायण देसाई

शान्ति सेना क्या है? उसके ऐतिहासिक रूप देने बने हैं। वे गाँवों में और शहरों में क्या करते हैं? गांधी और विनोबा ने शांति सेना का पटन क्यों उचित माना था। एस्तारपुलक में क० मा० शांति सेना सत्यय के ५०वीं की नारायण देसाई ने शांति-सेना की कल्पना, कार्य, चरित्र और स्थान-स्थान पर बिने गये सेवा कार्यों की जानकारी दी है।

१२० पृष्ठ की पुस्तक का दाम प्रचार की दृष्टि से बेधक कम बिते रखा गया। सर्व सेवा सघ प्रकाशन रायभारत, वायणसी-१

आन्दोलन के समाचार

विहार के १०० प्रखंडदान [१ नवम्बर '६७ तक]

प्रखण्डदान अभियान :

पद्मनगर : कागड़ा जिले के नगरोटा बगवों तथा रैत विकास खण्डों में २३ अक्टूबर से ७ नवम्बर तक गांधी सारक निधि के १५, ग्रामदान समिति के ७, भी गांधी आश्रम उत्तर प्रदेश के ९ तथा नगरोटा विकास खण्ड के २५ कर्मचारियों द्वारा ग्रामदान-अभियान चलाया गया। ६१० दशानिधि पटनायक, श्री ओंकारचन्द्र तथा श्री सत्यप्रकाश शर्मा के मार्गदर्शन में चले इस अभियान में नगरोटा बगवों में ३४३ किलो अनाज तथा १०६ रुपये ५० पैसे, और रैत में ३९३ किलो अनाज तथा ५२ रुपये २८ पैसे स्थानीय सहयोग के रूप में प्राप्त हुए। फलश्रुति इस प्रकार है :

विभाग	कुल खण्ड	प्राप्त ग्राम	संपर्क	प्राप्त ग्रामदान
नगरोटा	३२३	२८३	२६२	२५२
रैत	३२५	१३५	१०४	१०४
कुल :	६४८	४१८	३६६	

समालम्बा (तार से) : हिसार जिले के भीखानी प्रखण्ड में २९ ग्रामदान प्राप्त हुए।

—ओम्प्रकाश त्रिखा

खजुरीहाट (पूर्णिया), १६ नवम्बर : भरगामा प्रखण्ड में प्रखण्डदान अभियान काफ़ी उत्साहपूर्वक चल रहा है। कुल ७८ हजार आबादी में से लगभग ३५ हजार लोगों ने ग्रामदान के घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर कर दिये हैं।

पुलिया : जिले के टरिखेल विकास संघ में महाराष्ट्र के कार्यकर्ता प्रचार-दीर्घ कर रहे हैं। पूर्वतैथारी के समय परणकुली गाँव ने ग्रामदान का सकल किया।

ठाणा : ठाणा जिले की शाहपुर तहसील में भी एकनाथ भगत के मार्गदर्शन में ग्रामदान-पदयात्रा चल रही है। लखार तहसील में सर्वश्री डा० बापट, देवराज अंबरे, लोदावे, गोविंदराव आदि कार्यकर्ताओं द्वारा पदयात्राएँ हो रही हैं। जिले की ये पदयात्राएँ दिसम्बर माह के अंत तक चलती रहेंगी।

अंधराठाढ़ी
तमगाँव
खजोही
खुटीना (लोकही)
घोषरडीहा
जननगर
शंखारपुर
पण्डौल
बाबूबरडी
बादोपट्टी
विस्की
वेनीपट्टी
मधवापुर
मधुबनी
मधेपुर

दरभंगा

राबनगर
लटनियाँ
लोकही
दरभंगा
बहादुरपुर
वहेरी
विरोल
वेनीपुर
मनीगाछी
शिंपबाड़ा
हाथापाट
केकटी
घनरथामपुर
बाले
...

पूर्णिया

जलिया सहर
रूपौली
भवानीपुर
धमदाहा
बडहरा
मनमनखी
कल्यानन्दनगर
कसबा
अमोर
यापवा
वापसी
...

जिले में कुल : १७ प्रखण्ड

सहर्षा	हजारीबाग	शाहाबाद
निर्मली	प्रतापपुर	अचौरा
मरौना	पीरटांड	...
कुल : २	कुल : २	कुल : १

मुंगेर

गोगरी	लगड़िया	बेन्दौर
सारेवपुर	कमाल अग्नीही	बलिया
परनवा	चौधम	खुदानपुर

जिले में कुल : ९ प्रखण्ड

मुजफ्फरपुर

पाक	सकरा	वैरागिया
सुहरी (सु० पुर)	दोली	पुपरी
बौंचाहा	ओराय	नानपुर
खुदनी	बैचाली	बाजपट्टी

जिले में कुल : १२ प्रखण्ड

आनमगढ़ : २७ नवम्बर '६७—दोहरी-पाट में १९ से २६ नवम्बर '६७ तक चलये गये प्रखण्डदान अभियान में ११ ग्रामदान प्राप्त हुए। अभियान का पूरा आयोजन दोहरी-पाट के प्रखण्ड-विकास अधिकारी की ओर से हुआ था। प्रखण्ड-विकास और सर्वोदय के कार्यकर्ताओं के साप्ताहिक प्रयास का यह एक उत्तम उदाहरण है।

अब तक उत्तर प्रदेश में कुल ११ प्रखण्ड-दान और १०९८ ग्रामदान हुए।

—प्रजविहारी
मंडो, सर्वोदय मण्डल,
आजमगढ़

दिग्वि-सम्मेलन :

पुलिया : पुलिया जिले के ४० छापी ने पुलिया में गत ७ नवम्बर से ११ नवम्बर तक हुए किशोर छात्र-छात्रा दिग्वि में भाग लिया। उद्घाटन भी अमृत देवागटे ने किया। ११ नवम्बर को जिना महापत्नी परिषद हुई। पूना के श्री पोपटण्णवी द्वारा और वर्षा के श्री ठाकुरदासवी बंग आदि ने महाराष्ट्र सरकार की महापत्नी बागुत में दिग्वि करने की नीति की निन्दा की।

पुलिया छहर में ७ से ११ नवम्बर तक सर्वोदय के अनेक कार्यक्रम हुए और १२ नवम्बर से १० दिन की पदयात्रा सकी

भूदान यज्ञ : शुक्रवार, १ दिसम्बर, '६७

साक्षात्ता में हुई, जिसमें सर्वोच्च मोक्षियन्त्रण रिण्टे, ठाडुदास का, धर्मोदास का वृंदा का के भागदरान में सावधुदा सर्वोच्च मन्त्रण के कार्यकर्ता और भागदानी गाँवों के आदिवासी भाइयों ने भी भाग लिया।

अधमदासदा : २१ से २० अक्टूबर तक बाणक नदी के तट पर सर्वोच्च सत्कार विचार वृण, जिसमें १०० भाईयों ने भाग लिया।

दुम्बर : १ से ५ नवम्बर तक विद्यादान अभियान में लगे विभिन्न रचनात्मक धामाओं के ४० कार्यकर्ताओं का विचार हुआ, जिसमें प्रदेश के प्रमुख कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया।

मुम्बैनगर : राष्ट्रीय गांधी - शालाजी समिति की रचनात्मक उपस्थिति द्वारा उत्कल में गल ७ नवम्बर से १८ नवम्बर तक धामनगराधिगिरि हुआ, जिसमें सर्वोच्च १०० भागदानी कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

बुधमिच्छान (असम), ११ ११ १७ १२ १३ १४ नवम्बर को ठाडुपुर आध्यात्मिक सम्मेलन का भी आयोजन करा। प्रतिदिन सम्मेलन ५००० की संख्या में स्थानीय जनता ने इनमें भाग लिया। इस अवसर पर स्वामी परमेश्वरी, भागदानी, स्वामी दश शांति मेनन मोक्षी आदि कार्यकर्ता भाग्यी किा हुए। सम्मेलन का उद्घाटन स्वामी श्री भी मोक्षेन्द्रनाथ द्वारा किया के किया। स्वामी मोक्ष के मन्त्री, स्वामी हृदयमेन के क्षेत्रीय निर्देशक एवम् अन्य अधिकारियों ने भी आयोजन में भाग लिया। इस छोटी सी धाम में इतना बड़ा आयोजन और ऐसी श्रमसा परसे कमी नहीं हुई थी। यहको प्रार्थनाओं ने अत्यन्त सरके प्रदर्शन तथा विचार की वरवसा को। काविक मेनन को देनी में ५००० से अधिक लोगों ने भाग लिया। 'बाण रिण्टे' के दिन बरगुआड़ी के बरबो तथा स्वामीय स्तूब के वरबो का सांस्कृतिक कार्यक्रम बहुत ही आकर्षक रहा।

विशुध सप्तक अधिकारी तथा विन्धीया आदि को अवस्थिति तथा हर प्रकार के सत्कार ने आयोजन की सत्कार में योगदान किया।

आयोक्त का पूरा कार्य स्वामीय कन्दे से हुआ। कुल १५९ दिनों ११५ भाग व्यक्त तथा १५८८ बरने २१ से २१ सच हुए।

—सर्वोच्चनाथ

भूदान-समूह : शुक्रवार, १ दिसम्बर, '६०



‘सन्त-सुरभि’

• ‘विनोदा-चिन्तन’ में प्रस्तुत •

‘विनोदा-चिन्तन’ विगत डेढ़दो वर्षों से मासिक पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हो रहा है। इसका २०-२१ संख्या का सतुक्त प्रकाश इमारे सम्मुख है, जिसमें ‘सन्त-सुरभि’ शीर्षक से नरे साधुप का शीरोमेय विधा गया है, जो आचार्य विनोदा की मनन भाषा की धार से सुष्ण हो गया है। सभी की मीनी मीनी तुलण से इसका देण आम तक परिवर्धित होता और भी शक्ति देता आ रहा है। अन्य सभी धामपेठ से जान की सत्कार धाराई धारी पर प्रजाहित होती रही है।

इस प्रकाश में सन्त-सुरभि के दो सुमन, शान्देश और एकनाथ के मन्त्रिण, कर्मद एवम् आचार्य विनोदा ने अपने मनन प्रस्तुत किये हैं—शान्देश के सम्बन्ध में

शरानुबन्धी •

अधुन शरानुबन्धी संख्याग्रह आ-लोकात्मक लक्ष्मि के सर्वोच्च ओ मोक्षुधमाई यहू ने १६ नवम्बर '६० को अपने एक उक्तान में बताया - “सत्याग्रह १४ नवम्बर से आरंभ होता था। ११ नवम्बर को रामस्वामि मन्त्रि-सम्पन्न ने पूर्ण सत्याग्रहों को इसको मर्म के विचार में लोक-निवार किया। शिक्षक रूप में रामस्वामि सरकस इन्हीं सत्याग्रहों में भाग्यी है तथा उसे मन्त्रु काना धारती है, यह मन्त्रु मन्त्रण से मान्य किया है। धामन सत्कार एवम् पूर्ण सत्याग्रहों मन् '६१ के २ अक्टूबर तक विन्धीय धारणों से लागू नहीं कर सकेगी, पर समय समय पर व्यनमती रहेगी। अगस्त ११ मन् '६८ के पहले सत्कार को और से गांधी बना धामन। ठक पूर्ण शरानुबन्धी काने की योगता न की गयी और तलकी दुर्दिने से सत्कार ने सुधारण की शीत से लगे हुए किले में नरे विन्धीय रूप में मन्त्रु न सत्कार न की, तो ६ अक्टूबर '६८ से सत्याग्रह का स्थिति कार्यका प्रारंभ होगा।”

पौष और एकनाथ संख्याग्रह। इनके पदने से भाव-सुधार ने निरन्तर सच दोनों में का पूरा जिन सत्कार के विचार एवम् पर अर्थिन हो उक्तान है। शीविन एवम् में इनका समय दर्शन संभव नहीं, यहकर ही अनुभव होता है।

इस विन्धन से एक बात सर्वथा स्पष्ट हो धारी है कि सर्वोच्च के समय में मनसा, भाषा, कर्मसा आदिषु बर आदर्श विमानेवारे उक्तान नररतन जाननेव मिण्टे हैं, तो सत्याग्रह के बहुमुखी प्रयोगधारी के रूप में एकनाथ। आचार्य विनोदा ने दोनों के शीतन के से तो यह इत विस्तार में बड़े विस्तार के साथ चिन्तित किये हैं। एक मनोवैय और सत्कार ही है। इस अर्थ का मन्त्रु - एक रूपका, पूरा सत्कार तो।

—सर्वोच्च
‘विनोदा-चिन्तन’ पुस्तिका के रूप में आसिक संख्या २० '६१' ११ पेजों, १४५ (सत्कार) प्रकाशक सर्व सेवा सत्कार, वाराणसी। मूल्य - प्रत्येक प्रकाशक का उक्तान रूपे मात्र। इस सत्कार ११ १० मात्र।

मूर्ध्नि प्राणि सौर विनयन •

स्वास्तिन या अमनूरा मास में सुनेना किले की रसोपुर और विनयपुर सत्कार, विनयपुर किले की विनयपुर और पेशी तलवीन और सुना किले की सुना सत्कार से कुल १६ प्राणी के ३८ शरक, १२१ आदिवासी तथा ७० सच परिचारों में क्रमशः १६, ५६६ और ३३२ एकत्र मूर्ध्नि विनयन की गयी।

दुम्बरी विनय प्राणानु अभियान में विन्धीय मूर्ध्नि में ११ भागदान हुए।

विन्धीय •

इमारे : सार हुआ है कि शरुभागा प्रयाग समिति ने सौदर्य इति के सुशिक्षित स्याकसधर आचार्य द्वारा धर्माधिकारी को विन्धीय सतिषण में शैतिक प्रथ-सत्कार के उक्तान में “सदासत्ता गांधी सुररकार” प्रयाग करने का निश्चय किया है। इस सुररकार में लेवक को १५०१ रुपये मन्त्र और प्रयाग सच दिना बांटेगा। यह सुररकार तैरिन्धीय भाषी को दिना बांटा है तथा यह सत्कार सुररकार है। (नवेण)

सामाजिक चर्चा

गत २१ नवम्बर को पश्चिम बंगाल की 'सिन्धि' सरकार राज्यपाल द्वारा धरखास कर दी गयी और सोच ही कमिश्न-समर्पित १८ सदस्यीय प्रगतिशील जनतांत्रिक मोर्चा के नेता डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष के नेतृत्व में नये मंत्रिमण्डल के शपथ ली।

गत आम चुनाव के बाद पश्चिम बंगाल में गैर-कमिश्नी सरकार बनी थी। इसमें वाम-संघी साम्यवादियों का बहुमत था। इस सरकार ने पश्चिम बंगाल में कुल ८ महीने १६ दिनों शासन किया। इस शासन काल में पश्चिम बंगाल भारत की राजनीति का एक आकर्षण-केन्द्र बना रहा। नक्सलवादी के कुचक्र-आन्दोलन में जो हिंसक घटनाएँ हुईं, उन्हीं इस सरकार का परोक्ष समर्थन प्राप्त था। 'चिराव' आन्दोलन की इस सरकार ने प्रत्यक्ष समर्थन दिया। बंगाल के भ्रममन्त्री श्री सुरेश बनर्जी ने घेराव की घटनाओं में पुलिस को हस्तक्षेप करने के लिए आदेश भी दिये थे। कच्छका उच्च न्यायालय की विशेष बँव द्वारा घेराव को गैर-कानूनी तथा अवैधानिक करार देने पर तथा भ्रममन्त्री के संविधान की धीमा लाने के बारे में निर्देश देने पर सरकार ने घेराव का समर्थन बन्द किया। राज्य के संयुक्त मोर्चे की सरकार के

पश्चिम बंगाल : अस्थिरता की राजनीति

तत्कालीन साधमन्त्री भी प्रफुल्लचन्द्र घोष ने २ नवम्बर को हस्तान्तर दिया, जिसे राज्यपाल ने ६ नवम्बर को स्वीकार कर लिया। इसीके का कारण बताया हुए डा० घोष ने बताया कि वर्तमान सरकार को एक दिन के लिए भी चयना बंगाल ही नहीं, देश के लिए तथा जनतन्त्र के लिए खतरनाक है।

डा० घोष के इसीके के बाद १७ अन्य विधायकों ने भी लिखित सूचना दी थी कि उन्होंने भी अभय मुजर्मी की सरकार को समर्थन देना बन्द कर दिया है। इनमें से १५ ने यह भी इच्छा व्यक्त की थी, कि यदि डा० पी० वी० घोष के नेतृत्व में एक नये मन्त्रिमण्डल का निर्माण होगा, तो वे उसका समर्थन करेंगे। १३० सदस्यीय कमिश्न विधायक दल के नेता श्री के० एन० दास ने भी राज्यपाल को यह लिखा कि डा० घोष के मन्त्रिमण्डल बनाने पर कमिश्न दल उनका समर्थन करेगा।

राज्यपाल ने मुख्यमन्त्री को इस रिपति से अनमत कराया और उन्हें यह आश्वासना बताया कि विभास का मन प्राप्त किये जाने के लिए नियाम-सभा की बैठक शीघ्र बुलाना बहुत जरूरी है। किन्तु मुख्यमन्त्री ने ६ दसते

को मन्त्रिमण्डल बनाने के लिए आग्रहित किया। परन्तु श्री दास ने अवगत-संज्ञा प्रकट की, और प्रफुल्लचन्द्र घोष के मन्त्रिमण्डल को-समर्थन देने का आश्वासन दिया, जिसे आभार पर तथा मन्त्रिमण्डल बना।

पश्चिम बंगाल में राज्यपाल द्वारा उठाये गये इस कदम को समाजवादी, संयुक्त समाजवादी, दक्षिण और वामसंघी साम्यवादी दलों के नेताओं ने अशोकात्मिक और संविधान की लोचन करनेवाला तथा ताना-शाही को बढ़ावा देनेवाला बताया है; खर कि कमिश्न, जनसंघ और स्वतन्त्र पार्टी के नेताओं ने राज्यपाल के निर्णय का स्वागत करते हुए इसे बुद्धिमत्पूर्ण, साहसिक कदम बतया है।

सामाजिक 'दिनमान' ने पश्चिम बंगाल में जो कुछ हुआ, उसकी बहुत कुछ जिम्मेदारी वामसंघी मोर्चे के नेताओं और उनके अर्थिक भी अभय मुजर्मी पर थोपी है। अंग्रेजी दैनिक 'अमृत बाजार पत्रिका' ने इसे केन्द्रीय सरकार का साहसिक निर्णय बताया है। 'दिग्दर्शन राहस्य' ने लिखा है कि अगर भी अभय मुजर्मी ने राज्यपाल की सलाह मान ली होती तो समस्या का सुझाव शक्यता से निकल आता। 'स्टेड्समैन' ने भूतपूर्व सरकार के शक्ति-परीक्षा के लिए शीघ्र विधानसभा के न बुलाने के निर्णय से राज्यपाल के निर्णय को अर्थिक अशोकात्मिक बताया है।

प० बंगाल और हरियाणा में हुए एक दिन में दो-दो राजनीतिक परिवर्तनों की बागरूक नागरिकों के मानस में तीव्र प्रतिक्रिया हुई है, जो स्वाभाविक है। राजनीति में बढ़ती हुई हिंसा और लोचन में बढ़ती हुई वैयक्तिक शक्ति की महत्त्व मौजूदा लोकतांत्रिक शासन-पद्धति में 'लोक' की शीघ्र शक्ति का इशारा करती है। आर्य देश के सामान्य नागरिक की सुवान से उसकी विवश-आत्मा की आवाज बरकर सुनायी पड़ती है—'अच्छा हो कि ऐतिहासिक हो चाय'। खतर की चारों तरफ लगेवात बह रही है, जरूरत है कि लोचन में आस्थावान व्यक्ति अपनी पूरी समझ से लोक की शक्ति को खण्डित करने में धन पाएँ।

एटिकोण...



श्रीकृष्णदत्त भट्ट, सर्व-सेवा-संघ द्वारा संसार प्रेस, धाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, धाराणसी-१

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक-ग्रामोद्योग-प्रधान-अहितरत-व्रतान्ति-धर्म-सम्प्रदाय-हस्त-संज्ञा-पुस्तिका-हिक

सर्वे सेवा संघ का मुख पत्र

सम्पादक : राममूर्ति

शुक्रवार

वर्ष : १४

८ दिसम्बर, १६७

संक : १०

इस संक में

आर्थिकों की इच्छा से—उदिताराधन १३५

आर्थिक बनना, सुक्ति ज्ञान

—सम्प्रदाय ११५

एक नयी चाँदी का मनुष्य

—व्यथान ११६

बलवर्ध एक सामाजिक मूल्य

—विनोय ११८

बौद्ध की विद्यालय, न कि

विचार की शोधा

—शं. मू. ११८

राजभाषा-संशोधन विधेयक

—जि. १२०

अन्य स्तम्भ :

समाचार-आसरा

भास्करानन्द के समाचार

सामाजिक आन्दोलन

आन्दोलन की व्याख्या

विज्ञानमय

कार्यक दृष्टिक : १० रु०

पुस्तक मूल्य : १० पैसे

निवेदन में : साधारण डाक-दुफ्तक-

१० रु० या १ रुपय का १४ डाक

(इच्छा डाक-दुफ्तक देसों के अनुसार)

सर्व-सेवा-संघ सम्प्रदाय

राजपुरा, बाराणसी-१

बोन सं. ११६५

यात्रिक उद्देश्य और सांस्कृतिक जीवन

यत्र वे समय को अव्यर्थीय करते हैं, वन या विचार कल्ले हुए हा दृष्ट प्रकाश पर पहुँचे हैं कि हमारे जीवन में कुछ कम देखा है, जिसे हम आशाजनक समझते हैं, परन्तु वह आवश्यक है। कुछ कम देखा है, जो अव्यर्थ है। कुछ कम देखा है, जो जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए तो आवश्यक नहीं, पर जीवन निर्वाह एवं स्वास्थ्य के लिए आवश्यक है। ऐसा जीवन प्रकाश का अर्थ है।

कुछ अव्यर्थता कम देखा है, जिसे हम मजबूत से कहा सकते हैं, लेकिन आधुनिक स्वास्थ्य के लिए अव्यर्थता कम की आवश्यकता रहेगी। स्वास्थ्य रखने, पर हमने देखा नहीं आया। इसलिए उद्योग के साथ अव्यर्थता परिलक्ष्य होकर चलेगी। साथ-साथ साथ अव्यर्थता कम निकल देंगे, तो स्वास्थ्य का अर्थ कम करना होगा, इसलिए हमें जो-सी नहीं देखेंगे।

आवश्यक कम को मनुष्य परी परी यत्र को ही देना चाहता है। इसका नतीजा यह होगा कि परिश्रम और उपादान अल्प अल्प हो जायेंगे। परिश्रम में वे ही-मनुष्य क्या निकल आया। हम यत्र की विद्या परिश्रम ही-मनुष्य चलेते ही-मनुष्य विद्या परिश्रम रखते चलेते, हमने कोई सामाजिक आचार नहीं रह गया।

मैं कहता हूँ कि विद्या अनुसूक्त परिश्रम आवश्यक है, उसे उपादान के साथ निकालना चाहिए। इसके बाद ही स्वास्थ्य और लोक होगा। इसका अर्थ यह नहीं है कि स्वास्थ्य और लोक के लिए कोई अल्प नहीं होगा, लेकिन साथ-साथ होगा, इस पूरे मोक्ष और अर्थार्थ से छोड़ेंगे।

मनुष्य स्वभाव से अक्षय विद्य नहीं है, इतना करने से काम नहीं चलेगा। साथ ही साथ चलेगा, जो रूप होगा। जो मनुष्य को साथ मिलेगा। वह दृष्ट अल्प में प्रथम करेगा, नचिगा, ही-मनुष्य, जो इच्छा होगी, होगा।

हमने दिखना कहा है। दिखना वह है कि वह नचिगा, तो जीवन नाच नचिगा। नाच के लिए 'मीन' (विद्य) की आवश्यकता होती है। अल्प-मनुष्य 'विद्युत्' नचिगा। उद्योग का अर्थ 'मीन' नचिगा। जो वह 'मीन' करके ले जाता है। मनुष्य में वे आसानी या अल्प में वे आसानी। नाच के लिए 'मि' 'मीन' की, विद्य की अल्प-मनुष्य, वह विद्य की अल्प में वे आता है।

जो हमने का अर्थ देलिये। विद्याओं का अर्थ देलिये। जीवन की 'मीन' होती है अल्प में। अल्प नाच-चल, सीमा से अल्प-मनुष्य, उनके जीवन में वे 'मीन' नचिगा है। जीवन में वे अल्प का अल्प-मनुष्य होगा है, इसलिए अल्प अल्प-मनुष्य के अल्प नहीं होगी। अल्प का अल्प-मनुष्य के अल्प-मनुष्य होगा, तो अल्प अल्प-मनुष्य की आसानी, वह अल्प-मनुष्य के अल्प-मनुष्य। जो-मनुष्य वह है कि अल्प-मनुष्य अल्प-मनुष्य करे है, अल्प-मनुष्य अल्प-मनुष्य के अल्प-मनुष्य है। मान लीजिये कि अल्प-मनुष्य अल्प-मनुष्य। अल्प-मनुष्य में अल्प-मनुष्य अल्प-मनुष्य अल्प-मनुष्य। विद्य में जो अल्प-मनुष्य है, वह अल्प-मनुष्य में वे आता है। अल्प-मनुष्य का अल्प-मनुष्य है, वह अल्प-मनुष्य अल्प-मनुष्य है।

('अल्प-मनुष्य की अल्प-मनुष्य' से)

—द्वारा परमपिता

कार्यकर्ता की डायरी से

देखा :

२०-११-६० : चक्रवर्ती राजगोपाल-
चारी ने कहा कि भारतीय साम्प्रदायी दल
पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाना चाहिए ।

२०-११-६० : वाराणसी के छात्रों ने
राजभाषा-संशोधन विषयक के विरोध में
अंग्रेजी-विरोधी प्रदर्शन किया ।

२१-११-६० : संसद में कांग्रेस व गैर-
कांग्रेस सदस्यों ने माँग की कि सारे देश को
एक खास-द्वार माना जाय ।

२०-११-६० : एरमोंथ की नवहान में
स्वयं किया कि प० बंगाल का बोप-मंत्रिमंडल
संविधान के अनुसार स्थापित है ।

२-१२-६० : राष्ट्रीय विकास परिषद ने
योजना आयोग के वनाध्यक्ष श्री गाडगिल का
कृषि-आयुक्त सम्बन्धी सुझाव अस्वीकार
कर दिया ।

२-१२-६० : राष्ट्रीय विकास परिषद ने
चौथी योजना अग्रे १९६१ से आरम्भ करने
का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया ।

१-१२-६० : पश्चिम बंगाल के संयुक्त
सोवें ने १८ दिसम्बर से व्यापक सत्याग्रह
करने का निश्चय किया है ।

चिन्देश :

२१-११-६० : १२९ वर्ष की ब्रिटेन
की दासता समाप्त होकर दक्षिण यमन गणतंत्र
का जन्म हुआ ।

३०-११-६० : प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा
गान्धी ने आज घोषणा की कि भारत
सरकार ने दक्षिण यमन गणराज्य को मान्यता
दे दी है ।

१-१२-६० : ब्रिटेन के प्रधानमंत्री
श्री विल्सन ने घोषित किया कि पीड के
अवमूल्यन के प्रश्न को लेकर उनका सरकार
हस्तांतर नहीं देगी ।

१-१२-६० : अमेरिका ने घोषणा की
कि वर बागामी वार्स में भारत को २१ लाख
टन अनाज भेजेगा ।

१-१२-६० : सरकार के प्रश्न पर
मीड और तुर्की में समझौता हो गया ।

ता० १०-११-६० : लदनिया प्रखण्ड के
परिचरनी भाग में ग्रामदानी गाँव पदमा की एक
समा में ग्रामदान की घोषणा के बाद ग्रामदान
की पक्का करने और गाँव के विकास के लिए
नये नये फ़ंदम उठाने की चर्चा हुई । इस
असर पर आचार्य राममूर्तिजी ने बताया कि
ग्रामदान के बाद गाँव की जो ग्रामसभा बनेगी,
वह गाँव के सब इशकियों के विकास का ध्यान
उसी तरह रखेगी, जिस तरह एक परिवार में
प्रत्येक सदस्य के विकास का ध्यान रखा जाता
है । गाँव का सबसे बड़ा उद्योग खेती है ।
गाँव के बिन लोगों का जीवन खेती से जुड़ा है,
उन्हें हम नार तरह के लोगों के रूप में देख
सकते हैं । वे हैं : जमीन के मासिक, मेहनत
करनेवाले मजदूर, खेती में समय पर पूँजी का
सहाय देनेवाले महाजन तथा गाँव के उन
लोगों की जमीन की व्यापार करनेवाले

मंडाईदार, जो खुद अपनी जमीन नहीं खोते ।
इस तरह ग्रामसभा इन सभी लोगों के हित का
ध्यान रखकर यह व्यवस्था करेगी कि समाज के
हर व्यक्ति को ईमान की राँटी और इज्जत की
निन्दनी मिले ।

समा में निर्णय हुआ कि लदनिया प्रखण्ड
के सभी गाँवों में ग्रामसभाएँ संगठित की जायें,
जो गाँव-गाँव में ग्रामदान में प्राप्त बीधा-कष्ट
जमीन मंत्रियों । वर्तमान कलक से श्री ग्रामकोष
संभार करने का भी निर्णय हुआ ।

लदनिया की आम समा : लगभग २ हजार
लोग उपस्थित थे । श्री राममूर्तिजी ने कहा कि
सर्वसम्मति से गाँव-गाँव में ग्रामसभा का
गठन होना चाहिए तथा गाँव के हर व्यक्ति
को भोजन, वस्त्र, काम, बच्चों की पढ़ाई तथा
बीमारों की दवाई आदि का प्रबन्ध करने का
आवश्यक निम्नता चाहिए । उन्होंने कहा कि
यह काम जमीनवाले, पूँजीवाले, मेहनत और
मुदिनानों के मिलकर सोचने और समझ
लोगों के सहयोग से ही हो सकेगा ।

११-११-६० : पदमा से लदनिया बाँटे
हुए रास्ते में श्री राममूर्तिजी से लादेडोई
ग्रामसभा के सदस्यों ने भेंट की । ग्रामसभा

के उचरदासिन की याद दिलाते हुए
श्री राममूर्तिजी ने ग्रामवाचियों से कहा कि गाँव
के सभी लोगों को काम मिले, तथा सकेते पेट
भरने लायक अन्न गाँव में उपलब्धता का रहे,
इसकी व्यवस्था करनी है । खोदरय का मूलनय
है कि गाँव की आन्तरिक व्यवस्था में गाँववालों
का सहकार चले और भारी व्यवस्था उत्कार
करे । ग्रामसभा गाँव के लिए जो कुछ करेगी,
उसमें उसके भूलें भी हो सकती हैं, पर इसकी
चिन्ता नहीं करनी है । ग्रामसभा अपने काम
के सिन्धिले में यदि निम्नलिखित प्रापदण्ड रहे,
तो यह १०-१५ प्रतिशत भागचिन्ते से बच
सकती है । वे माप दण्ड हैं :

● ग्रामसभा सर्वसम्मति से कोई भी
निर्णय ले ।

● वह जो भी योजना बनाने, उसे
गाँव के सबसे कमबोर व्यक्ति का हित सबसे
पहले ध्यान में रखकर कार्यनिमित्त करे ।

—उदित नारायण,
लदनिया, पश्चिम

सूचना :

स्पाईड तथा अंग्रेजी-मुक्ति का प्रसारण

ता० १-१२-६० से १५-१२-६० तक आश्रम
पट्टीकवाणा, बिना करनाल में केन्द्रीय गांधी
स्मारक निधि की ओर से ग्राम-सकार्ड तथा
अंग्रेजी-मुक्ति का प्रसिंठण जायद हो रहा है ।
प्रतिघापी की योगताएँ नीचे लिखे अनुसार
हों : (१) हिन्दी-बोलना, पढ़ना तथा
लिखना अच्छी तरह आना हो । (२) अंग्रेजी
का भी थोड़ा ज्ञान होना आवश्यक है ।
(३) आयु १९ और २६ वर्ष के बीच हो ।
(४) गांधी विचार में निष्ठा हो ।

विद्यालय की ओर से प्रसिंठार्थियों को
नीचे लिखे अनुसार आवेदन दिये जाते हैं :-

(१) ६०० मालिक टाचकृषि मिलेगी ।
(२) आने-जाने का तीव्र दावे का
प्रभं व्यव दिया जायेगा ।
(३) प्रशिक्षण के बाद विद्यालय किसी
भी प्रशिक्षार्थी को कार्य देने के लिए मिलेगा
नहीं होगा ।

अधिक जानकारी के लिए आचार्य, लदान
विद्यालय, आश्रम पट्टीकवाणा, बिना-करनाल
(हरियाणा) से पत्र आचार्य करें ।

ग्रामदान-कक्ष : शुक्रवार, ८ दिसम्बर, ६०

देना :

२०-११-६० : चक्रवर्ती राजगोपालाचारी ने कहा कि भारतीय साम्यवादी दल पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाना चाहिए।

२८-११-६० : वाराणसी के छात्रों ने राजभाषा-संशोधन विधेयक के विरोध में अंग्रेजी विरोधी प्रदर्शन किया।

२९-११-६० : ससद में कमरेष व गैर-कमिश्न सदस्यों ने माँग की कि सारे देश को एक छाया-इस्करा माना जाय।

३०-११-६० : परमेश्री श्री चहान ने स्पष्ट किया कि प० बंगाल का बोप-मन्त्रिमण्डल संविधान के अनुसार स्थापित है।

१-१२-६० : राष्ट्रीय विद्रोह परिषद ने योजना आयोग के उपाध्यक्ष श्री गाडगिल का दृष्टि आयकर सम्बन्धी सुझाव भस्वीकार कर दिया।

२-१२-६० : राष्ट्रीय विद्रोह परिषद ने चौथी योजना अप्रैल १९६१ से आरम्भ करने का प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

३-१२-६० पश्चिम बंगाल के सशुक्र मोर्चे ने १८ दिसम्बर से व्यापक सत्याग्रह करने का निश्चय किया है।

चिन्देश :

२९-११-६० : १२९ वर्ष की ब्रिटेन की दासता समाप्त होकर दक्षिण यमन गणत्व का बन्म हुआ।

३०-११-६० : प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने आक्षेप बोधना की कि भारत सरकार ने दक्षिण यमन गणराज्य को मान्यता दे दी है।

१-१२-६० : ब्रिटेन के प्रधानमंत्री श्री विल्सन ने घोषित किया कि पाँच के अवमूल्यन के प्रश्न को लेकर उनकी सरकार हथौड़ा नहीं देगी।

२-१२-६० : अमेरिका ने घोषणा की कि वह आगामी वर्ष में भारत को ३५ लाख टन अनाज भेजेगा।

३-१२-६० : साहस्र के प्रश्न पर प्रीव और तुर्की में समझौता हो गया।

सा० १०-११-६० : रूढ़निया प्रखण्ड के पश्चिमी भाग के ग्रामदानी गाँव पदमा की एक समा में ग्रामदान की घोषणा के बाद ग्रामदान को पक्का करने और गाँव के विद्रोह के लिए नये नये कदम उठाने की चर्चा हुई। इस अरसर पर आचार्य राममूर्तिजी ने बताया कि ग्रामदान के बाद गाँव की जो ग्रामसभा बनेगी, वह गाँव के सब व्यक्तियों के विश्वास का ध्यान उठी तरह रखेगी, जिस तरह एक परिवार में प्रत्येक सदस्य के विश्वास का ध्यान रखा जाता है। गाँव का सबसे बड़ा उद्योग खेती है। गाँव के जिन लोगों का जीवन खेती से जुड़ा है, उन्हें हम चार तरह के लोगों के रूप में देख सकते हैं। वे हैं : बनीन के मालिक, मेहनत करनेवाले मजदूर, खेती में समय पर पँबी का सदादा देनेवाले महाजन तथा गाँव के उन लोगों की बमीन को आबाद करनेवाले नैटार्डार, जो खुद अपनी बमीन नहीं खेते। इस तरह ग्रामसभा इन सभी लोगों के हित का ध्यान रखकर यह व्यवस्था करेगी कि समाज के हर व्यक्ति को ईमान की रोटी और इज्जत की बिन्दगी मिले।

समा में निर्णय हुआ कि रूढ़निया प्रखण्ड के सभी गाँवों में ग्रामसभाएँ सजित की जायें, जो गाँव गाँव में ग्रामदान में प्राप्त बीघा बहा बमीन देंवायें। वर्तमान फसल से ही ग्रामसभा संग्रह करने का भी निर्णय हुआ।

रूढ़निया की आम समा : लयभार ३ हजार लोग उपस्थित थे। श्री राममूर्तिजी ने कहा कि सर्वसम्मति से गाँव गाँव में ग्रामसभा का गठन होना चाहिए तथा गाँव के हर व्यक्ति को भोजन, वस्त्र, काम, बच्चों की पढ़ाई तथा बीमारों की दवाई आदि का प्रबन्ध करने का आश्वासन मिलना चाहिए। उन्होंने कहा कि यह काम बमीनवाले, पूँजीवाले, मेहनत और बुद्धिवालों के मिलकर सोचने और तमाम लोगों के सहयोग से ही हो सकेगा।

११-११-६० : पदमा से रूढ़निया जाते हुए रास्ते में श्री राममूर्तिजी से लाइब्रेरीई ग्रामसभा के सदस्यों ने भेंट की। ग्रामसभा

के उचरदायित्व की याद दिलाते हुए श्री राममूर्तिजी ने ग्रामवासियों से कहा कि गाँव के सभी लोगों को काम मिले, तथा सबके पैर भरने लयक अन्न गाँव में उपजाया जा सके, इसकी व्यवस्था करनी है। सर्वोदय वा मूल्यव है कि गाँव की आन्तरिक व्यवस्था में गाँववालों का सहकार चले और बाहरी व्यवस्था सरकार करे। ग्रामसभा गाँव के लिए जो कुछ करेगी, उसमें उससे भूलें भी हो सकती हैं, पर इसकी विन्ता नहीं करनी है। ग्रामसभा अपने काम के सिलसिले में यदि निम्नलिखित मापदण्ड रखे, तो वह १०-१५ प्रतिशत आपसियों से बच सकती है। वे माप दण्ड हैं :

● ग्रामसभा सर्वसम्मति से कोई भी निर्णय ले।

● वह जो भी योजना बनाये, उसे गाँव के सबसे कमजोर व्यक्ति का हित सबसे पहले ध्यान में रखकर कार्यान्वित करे।

—उदित नारायण,
रूढ़निया, बरनगा

सूचना .

सफार्ड तथा भगी मुक्ति का प्रशिक्षण
ता० ११-६८ से १५-६८ तक आधुनिक पट्टीकल्याण, जिला करनाल में केन्द्रीय गांधी स्मारक निधि की ओर से ग्राम-सफार्ड तथा भगी मुक्ति का प्रशिक्षण चला हो रहा है। प्रशिक्षार्थी की योग्यताएँ नीचे लिखे अनुसार हों : (१) हिन्दी बोल्डना, पढ़ना तथा लिखना अच्छी तरह आता हो। (२) अंग्रेजी का भी थोड़ा ज्ञान होना आवश्यक है। (३) आयु १९ और ३५ वर्ष के बीच हो। (४) गाँधी विचार में निश्ठा हो।

विद्यालय की ओर से प्रशिक्षार्थियों को नीचे लिखे अनुसार आवेदन देने जाते हैं —
(१) ६०४-मासिक छात्रवृत्ति मिलेगी।
(२) आने जाने का तीवरे दरजे का मार्ग व्यय दिया जायेगा।
(३) प्रशिक्षण के बाद विद्यालय किसी भी प्रशिक्षार्थी को नार्च देने के लिए बिन्नेरार नहीं होगा।

अधिक जानकारी के लिए आचार्य, सफार्ड विद्यालय, आधुनिक पट्टीकल्याण, जिला-करनाल (हरियाणा) से पत्र व्यवहार करें।

भूदान सङ्घ : शुक्रवार, ८ दिसम्बर, ६०

एक नयी यांत्रिकी (टेन्नालाजी) का अग्रदूत

भारत में कम्प्यूटर का अपेक्षाधिक उपयोग का कुछ लक्ष्य हादिक स्थापित करना चाहते हैं और कुछ लक्ष्य एतथा निवृत्तित उपनाम करने के पक्ष में हैं।

कम्प्यूटर अनिपत्तित उपयोग जानेवाले का करता है कि कम्प्यूटर सिर्फ मिहलत और समय को बचत करनेवाली मशीन ही नहीं है, परन्तु कम्प्यूटर एक नयी यांत्रिकी (टेन्नालाजी) का अग्रदूत है, जो दश के लगभग उद्योगों के हाँसे को सुनिश्चित से बचाने की परिस्थिति पैदा करेगा। इस परिस्थिति का कुछ अनिश्चितता सामाजिक और साम्बोतिक परिणाम सामने आयेगे। भारत में कम्प्यूटर का व्यापक उपयोग किये जाने के पहले हमें आगेवाली परिस्थिति को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। कम्प्यूटर द्वारा प्राप्त सुविधाओं और उसके उत्पन्न होनेवाली समस्याओं, दोनों का ही हमें ज्ञान और भान होना चाहिए तभी हम उसके उपयोग की उचित सीमाएँ निर्धारित कर पायेंगे।

कम्प्यूटर का हादिक स्थापित करनेवाले करते हैं कि जिस तरह मशीन में आदमी को अप्रतिव धारोतिक भ्रम करने की लपचारी से मुक्ति दिखती है, उसी तरह कम्प्यूटर मनुष्य को नीरस और थकिल बौद्धिक कामों से छुटकारा दिलायेगा। अब जब कि दुनिया में मशीन और कम्प्यूटर के आपसी मेल से स्वचालित उद्योगों (साइबरनेटिक्स) का व्यवसाय हो चुका है तो पूरे मानव समाज को छुटकारा और आराम की बिन्दुगी बिताने की सुविधा पाना सिर्फ कल्पना की बात नहीं रह गयी है। मनुष्य के इस अपने को न्याय हादिक रूप देने की परिस्थिति कम्प्यूटर ने पैदा कर दी है। स्वचालित उद्योगों के प्रचलन से मनुष्यों का कहीं अधिक मानवीय उपयोग हो सकेगा। समाज में स्वचालित उद्योगों की स्थापना का एक यह भी परिणाम होगा कि जैसे अभी स्वतंत्रता पर मनुष्य का ज प्रथित अधिकार है, उसी प्रकार, जीवन के उपयोग, की आवश्यकता सामग्रियों पर भी

यह हकी प्रसार के समस्त अधिकार का दावा कर सकेगा। तब आब की तरह परिभ्रम करने और पचीहत सेलने की बल्लत ही नहीं रह जायेगी।

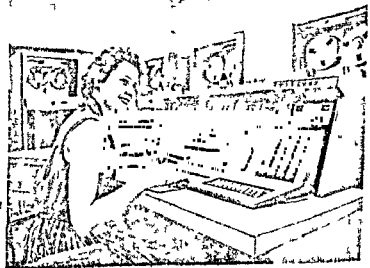
कम्प्यूटर के समर्थकों का यह आशावाद कहीं तक सही है, इसकी बौचना अभी समाप्त नहीं है। इसे किसराह हम एक मोहक और आकर्षक उपनाम मान सकते हैं। दुनिया के पूँजीवादी देशों में कम्प्यूटरों का उपयोग इसलिए किया गया कि यद्यपि शुरू में इसमें अधिक पूँजी के निवियोग की आवश्यकता पड़ती है, पर चूँकि कम्प्यूटर के कारण भारी सख्या म मकसूरों और अय कर्मचारियों के काम में लगने की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, इसलिए कारखानेदारों को अपने उद्योगों से भारी मुनाफा होने लगता है। पूँजीवादी देशों में बेकारी की समस्या हमारे देश के जैसी भीषण नहीं हो पायी है, क्योंकि एक तो उन देशों की जनसंख्या हमारे देश के जैसी विद्याल नहीं है, दूसरे औद्योगिक विकास में पिछड़े देशों से आगे होने के कारण उन्हें दुनिया के अधिककठित देशों के बाजारों में अपना

औद्योगिक सामान खपाने का सुअवकाश प्राप्त है।

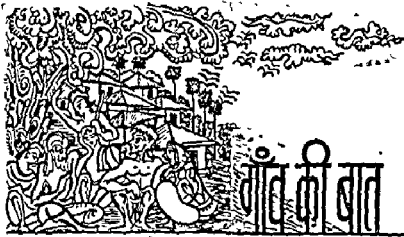
वस्तुतः दुनिया के व्यावसायिक लोग कम्प्यूटर के लिए अलग-अलग लिखित हैं, क्योंकि कम्प्यूटर उन्हें भारी मुनाफे को उभावना प्रदान करता है। इसके विपरीत मकसूर देशों के लोग कम्प्यूटर से भयभीत हैं, क्योंकि वह उन्हें बेकार बनाता है। अमेरिका में स्वचालित उद्योगों के प्रसार के कारण प्रति छात्र लगभग २५ हजार के खिचन से मकसूर बेकार होते जा रहे हैं।

बढ़ती बेकारी हमारे देश की सबसे तात्कालिक और कठिन समस्या है। यह देश समातार तीन पंचवर्षीय योजनाओं के दौर से गुजर चुका। अब चौथी योजना का दौर चल रहा है। प्रत्येक योजना में भारी मात्रा में देशी और विदेशी पूँजी का निवियोग हुआ है, फिर भी प्रत्येक योजना के अन्त में न केवल बेकार श्रमिकों की सख्या बढ़ती गयी है, बल्कि पढ़े लिखे बेकारों की भी संख्या बढ़ती ही गयी है। इस अन्तर्वि में देश में बितने तकनीशियन और इन्जीनियर पैषार हुए, उनमें से भी अधिकांश बेकारी के शिकार हैं।

● 'न्यूज वीक'—२५ जनवरी, १९७५



कम्प्यूटर। कम्प्यूटर पालिका



गाँव की बात

10 मिनट पुराने आँसू आँसू आँसू आँसू (— ३२ नंबर
 इस भाग में रसमय और परिपूरक विज्ञान का दर्शन हो।
 ...

इस संक में पढ़ें—
 सवाल जिसका, जवाब उसका -
 जनता की कृति ही प्रबल हो
 गाँव को संघर्ष से कैसे बचायें ?
 पूजा और नयान
 सबसे बढ़ा अन्याय
 गोबर : जलवन या त्याग ?
 हमचरन से मुलाकात***
 मगले संक का व्यकरण—
 बल्लवी सरकार
 धरती की प्यास, पानी का प्रवाह

८ दिसंबर, '६७
 वृत्त २, अंक ९] [१८ पैसे

सवाल जिसका, जवाब उसका

"मेरे बाबा ने काशेस में काम किया। उनके बाद मेरे पिताजी इन क्षेत्र के नेता रहे। मैं धन से कालेज की पढ़ाई खत्म करके आया हूँ, मेरे ऊपर भी बराबर पाठियों का जोर पड़ रहा है कि उनकी ओर से काम करें। लेकिन मैं अपने आरोओ ओर जो कुछ देख रहा हूँ, उससे मेरा जो प्रबल उठता है।"

नेपाल की सीमा पर एक गाँव में रहनेवाला वह मुक्क था। २२-२३ साल की उमर, पढा-लिखा, अच्छे परिवार का, देश-दुनिया को जानने-समझनेवाला। उसको बाबाओं से लगता था कि घून में बाबा और पिता का असर है, मन में कुछ करने की उमंग है। लेकिन घुटन महसूस कर रहा है, सोच नहीं पा रहा है कि क्या करे! उसकी बाबें मुनकर भिने कहा, "क्या हर्ब है? अपनी पसन्द को पाठों घुन छोड़िये, और इतरकर काम कीजिये। पशो को कमी नहीं है, पत्रमान को अपनी पसंद का पढा घुन लेना चाहिए।" उसने फौरन उत्तर दिया, "यहो करना हो तो किया जा सकता है। लेकिन अब से पर आभा हूँ, मैं यह देखकर हैरान हूँ कि पाठियों का यही संघा रह गया है कि गाँव-गाँव में झगड़ा लगायें। मेरे गाँव में पहली बार बाहामो और हरिवर्षों में

झगड़ा हुआ है। अब अदालत में मुकदमा चल रहा है। यही हाल उस कठेसर गाँव का है। वहाँ किसानों और बेटाईदारों में किसी दिन छिड़ सकती है। जधर एक महीने से मुगल बाबू वहाँ बराबर आते-जाते हैं। उन्होंने कहा कि एक महीने में यह गाँवत जा पाय तो अच्छा काम ही माना जायगा।"

"लेकिन, गाँववाले इस आशानी से पोखे में वा कैसे पाते हैं?" भिने पूछा।

"यह हो मानना ही पड़ेगा कि गाँव में जो बड़े हैं, धनी हैं, मालिक हैं, उनमें और छोटों में, गरीबों में सम्बन्ध अच्छे नहीं है। अन्याय भी बहुत है। और, अब गाँव में कोई ऐसा



नेवा गद्दी की होड़ में : जनता समझाने की जकड़ में

नहीं रह गया है, जिस तक जमाने की हवा न पहुँची हो। बड़ा जासान हो गया है कुछ 'खिलास' भड़का देना, जब कि होना यह चाहिए था कि। नेता गाँव में जाते, आग को बुझाते, और वहाँ जो संवाल हैं उनके गाँववालों को बताते।

“गाँव के सवालों का जवाब बाहर के लोग क्या सूझा-येंगे ? जिनका सवाल है उन्हींको जवाब देना पड़ेगा। अब बुद्धि अपनी लगाना सीखिये।” मैंने कुछ अधीरता के साथ जवाब दिया।

“कोई रास्ता सूझता नहीं। भेरे ही गाँव को लीजिये। नमसालवाड़ी की हवा प्रीणिया होती हुई भेरे इलाके में भी पहुँच रही है, और, उसके अन्दर में मालिकों और बंटाईदारों के तुनाब दिनोंदिन बढ़ते जा रहे हैं। कुछ दिनों में क्या होगा, कहाँ नहीं जा सकता। चिंता और भय-भरे शब्दों में उस सूबक ने कहा।

“अगर आपके गाँव में ग्रामसभा बन गयी हो तो तैयारी के साथ उसको बँटकर बुलाइये। वहाँ लोगों के सामने यह बात रखिये कि गाँव में कोई मालिक ही, मजदूर ही, महाजन ही, बंटाईदार है, सब गाँव के रहनेवाले हैं, पड़ोसी हैं। सबको ईमान की रोटी और इज्जत की जिन्दगी मिलनी चाहिए। यह कैसे होगा, सब लोग मिलकर सोचें।”

“बात तो अच्छी लगती है, लेकिन कोई अपना त्वाय छोड़ने को राजी नहीं है, और एक को दूसरे को नेकनीयती में भरोसा नहीं है। आपस में बात होना ही मुश्किल है। रास्ता तो अब निकले अब बात हो।”

“गाँव के जीवन में हरएक के लिए जगह निकालनी ही है, यह बात मजबूती के साथ सामने रखनी चाहिए। गरीबों की ओर से रोटी और इज्जत की माँग होती है तो उसे यह कहकर नहीं टाला जा सकता कि किसीके भड़काने से वे ऐसा कर रहे हैं। अगर दूसरों में उनकी बात सुनने की तैयारी हो तो इनसे भी कहा जा सकता है कि जैसे उनकी माँग है, उसी तरह जमीनवालों और पैसेवालों की भी माँग है। हरएक को उचित माँगों को सुनने और मानने की तैयारी होगी तभी कोई रास्ता निकल सकता है। जब किसीका दूसरे के बिना काम नहीं चल सकता, तो मिलकर रहने और काम करने का उपाय ही हो सकता है। मुख्य बात यह है कि गाँव में सबके सवालों को एकसाथ सामने रखकर सोचना

चाहिए। मालिक-मजदूर आदि के सवालों पर अलग-अलग सोचियेगा तो कदापि कोई रास्ता नहीं निकलेगा।”

“क्या कहें, गाँव का जीवन एक भयंकर जाल है। एक जगह छुड़ये तो सब तार एकसाथ झनझना उठते हैं।”

“यह कैसे ?”

“बात यह है कि लोगों ने नाचापज तरीके से जमानें लिखायी हैं, कर्ज में सूद-र-सूद जोड़कर उसे बढ़ाया है, अने स्वार्य के सामने किसी दूसरे को बात मानने की कोई तैयारी नहीं रह गयी है। कानून तक को नहीं मानते। ऐसी हालत में क्या किया जाय ?”

“एक बार कानून को अलग रखकर और गाँव को सामने रखकर सोचने को कहिये। गाँव में कुछ लोग तो होंगे, और इतने गाँवों में कुछ गाँव तो होंगे, जो आपसी रास्ते की अच्छाई को महसूस करेंगे। फिर उनको मिसाल फेंकीगी।”

“और जहाँ दूसरे गाँव के लोगों से हुज्जत हो वहाँ ?”

“वहाँ आपकी ग्रामसभा दूसरे गाँव की ग्रामसभा से बात करेगी। लेकिन आपकी ग्रामसभा में बात करने की शक्ति तभी लायेगी जब वह अपने वहाँ आपसी निर्णय से सही दिगा में कदम उठा सकेगी। शान्ति के तरीकों में यह शर्त रहेगी ही।”

“मुझे सन्देह होता है कि ऐसा करने से गाँव के दबे हुए शगडे भी उभर जायेंगे।”

“इसकी चिन्ता मत कीजिये। गाँव से बराबर कहते जाइये कि सवाल तुम्हारे हैं तो जवाब तुम्हींको देना होगा। पाँड़ियों को छोड़कर पड़ोसियों की ओर देखने की नयी हिम्मत दिखानी होगी। जवाब नहीं निकलेगा तो विस्फोट को रोकने का क्या उपाय है ?”

वह पूबक उठने लगा तो मैंने देखा कि उसकी आँखों में, कुछ चमक और चेहरे पर भरोसे की झलक थी।



गाँव को तो इनवाले बाहरी प्रहारों से गाँव की रक्षा का एक ही उपाय है : ग्रामसभा : सबकी सबके तिए, सम्मिलित शक्ति।

गाँव की बात

किताब के सेट में एक कट्टे में पंदावार	२३० मग
” ” बोपे में ”	६० मग
” ” ३०० बोपे में ”	१५,००० मग
बातेवर बाहु के ३०० बोपे में ”	१,२०० मग
देस के उत्पत्त में शक्ति	१६,५०० मग

जनता की शक्ति ही प्रबल हो

बहनों की लोकमान्य-टोली समग्र ५ बजे गजोली पहुँची। दिन के काम से थककर मुक्तिवात्री श्री राम-प्रसाद मिश्र हमारे साथ सभामें आये। वे बहुत समझदार, सेवाभावों और अनुभवों छोटे किसान हैं। वे बड़े धाव और धम्मा से अपनी देहाती बोली में अपने अनुभव सुनाते रहे।

“बहिनयो! इस गाँव में पुराने जमाने में हर लोगों ने मिलकर ‘मुक्तिवा’ के द्वारा जितने हो काम किये हैं। आस्पास के पाँच-छः गाँवों ने मिलकर ‘मुक्तिवा’ के द्वारा समस्तोगुर में बैक का भवान बनाने में बहुत मदद की। हमने झूल बनाया, हरिजनो के लिए बुए खोदे, कई छोटे-मोटे काम किये।” फिर उनके चेहरे पर कुछ निराशा दिखाई दी। “लेकिन बहिनयो, स्वराज्य मिलने के बाद ये सब काम ठप हो गये। अब कोई कुछ नहीं करना चाहता है।”

इस गाँव में एक बड़ी कोठी है। नील बाबे साहब यहाँ पर रहते थे। मैंने उसके बारे में पूछा कि इसे किसने खरीदा? और क्या हाथ है? श्री रामप्रसादजी ने उत्तर दिया कि यह कोठी बातेवर बाहु ने सात सौ बोपे जमीन के साथ साठ लाख रुपये में खरीदी थी। अब जमीन बेचते-बेचते तीन सौ एकड़ उनके पास रहे यहाँ है। लगभग एक सौ एकड़ बाहरवाले जोतेते हैं। बाकी छोटे किसान हैं, आम, एक-दो बोपे जोतेतेवाते। बातेवर बाहु ने इस गाँव में एक कट्टा जमीन भी मुदान में नहीं दी। वे कुबेंटी प्रकल्प में एक दूसरे बड़े स्टैंड पर रहते हैं। यहाँ कमी नहीं आते हैं। वे मजदूरों के द्वारा इमि का काम कपते हैं। इस वर्ष छोटे किसानों के सेठों में अमीत एक कट्टे में तीन मज मक्का हुआ, और बातेवर बाहु के सेठों में एक एकड़ में चार मज।

यहाँ में छोटे किसानों की पंदावार और बातेवर बाहु की पंदावार के तुलनामत्र अधिक दे रहे हैं—

बातेवर बाहु यदि उस जमीन को भूदान में देते तो वास्तव में यह एक सिरदर्द से छुटी पाते। यदि बैदाईयाँ जो दे देते, तो देस का उत्पादन बढ पाता, और बैदाईयाँ तथा बातेवर बाहु दोनों-को खायवा होता।

हाल ही में मध्यप्रदेश में घूमते समय हमें जनता की शक्ति का एक ऐसा ही अच्छा उदाहरण मिला था। ‘बहु’ के एक गाँव के लोगों ने सर्वसम्मति से अपना-अपना-प्रतिनिधि चुनकर एक अनौपचारिक ग्राम-संघावत बनायी।

उस गाँव में कुको पर पाम लगाने के लिए ‘बातीस’ किसानों ने बिजली के कनेक्शन के लिए दरवास्ता की-थी। इन्जीनियर साहब आये। पहले कनेक्शन देने के लिए एक किसान छे ३०० रुपये पर तीन सज हुआ। एक दूसरे किसान ने सोचा कि मुझे भीते नहीं पड़ना चाहिए, तो उसके १००० रु हत्यापरिहृत हुए। गाँव में यह खबर जान्य हुई तो ग्राम-संघावत की बैठक बुलायी गयी। सम्ती से उस क्षयाक को मिन्या हुई और सब हुआ कि या को सबको एक सामूहिक रंग से बिजली मिलेगी या तो किसीको नहीं मिलेगी। दरवाजात लेकर सिस्टमजनी जिवा मजिस्ट्रेट साहब के पास-पहुँची। जिला-मजिस्ट्रेट साहब ने मामला समझकर इन्जीनियर साहब को हुपस दिया कि उस गाँव में बातीस कुकों पर बिजली फौरन लगेगी, और कोई तेज-देन की बात नहीं होगी।

इन्जीनियर साहब ने फिर गाँव में जाकर कहा कि ठीक है, लेकिन फिर भी ३०० रु की व्यक्ति ही लगना ही। ग्रामसंघावत की बैठक फिर हुई। सब इनकार हुआ। इन्जीनियर साहब को एक पैसा नहीं मिला, लेकिन बातीस किसानों को बिजली मिल गयी।

उसके बाद संघावत की बैठक में एक और बात यह हुई कि सब किसान मिलकर एक ही कपयो को प्रम्प का आचरं भेजेंगे, चाकि इससे राम में कुछ कमी हो, और बाद की मरम्मत और देखरेक में सहूलियत हो।

गाँव को संघर्ष से कैसे चचायें ?

श्री सम्पादकजी,
"गाँव की बात"
महोदय,

पिछले दो अकों में प्रकाशित एक दूसरी नवसाल-वाडी (पूर्णिया) को विस्तार में प्रकाशित जानकारी पढ़ी । मालिक-मजदूरों के सम्बन्धों में जत्याचार, आतक और शोषण के फलस्वरूप जो तनाव आया, और उसका साम्यवादी लोगों ने जो फायदा उठाया, वह भी पढा । कुल मिलाकर गाँवों में संघर्ष की आग भडकी । कहने की जरूरत नहीं कि उस आग में पूरा गाँव जल सकता है ।... शायद जल भी रहा है । यह सिलसिला बबता गया तो किसी दिन भारत भी इस आग में जलता दिखाई देगा ।

लेकिन इस स्थिति में आप सर्वोदयवालों के इस समस्या के समाधान के क्या सुझाव हैं, प्रयास हैं ? कृपया इस पर कुछ प्रकाश डालें, क्योंकि संघर्ष की आग से गाँव और देश को बचाने की एक हल्की-सी आशा की किरण सर्वोदय और विनोबा में दिखाई दे रही है ।

—एक पाठक

× × ×

प्रिय मित्र,

आपका पत्र मिला । खुशी है कि आपने इस प्रश्न पर विचार किया । हर एक को करना चाहिए । इस प्रश्न के उत्तर पर हमारे देश का भविष्य निर्भर है । आज साफ दिखाई दे रहा है कि अगर हमने सदबुद्धि और सद्भावना का रास्ता छोड़कर संघर्ष का रास्ता पकड़ा तो देश गृहयुद्ध की आग में जलेगा, और वियतनाम की तरह बाहरी शक्तियों के संघर्ष के लिए अखाड़ा बन जायगा । तब हम न स्वतंत्र

रह सकेंगे, और न सम्य हो वन सकेंगे । इस सन्दर्भ में मैं चाहूँगा कि आप निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें, और सोचें कि आपने 'मालिक-मजदूरों के सम्बन्धों में अत्याचार, आतक और शोषण के फलस्वरूप' आये हुए जिस तनाव की चर्चा की है उसका कोई रास्ता इन बातों से निकलता है या नहीं । यह भी सोचिये कि क्या कोई दूसरा रास्ता भी है ।

(१) सर्वोदय सबका उदय चाहता है । वह मानता ही नहीं कि शोषक और शोषित जैसे कोई दो वर्ग हैं । जहर, समाज में कुछ लोग समर्थ हैं, और कुछ असमर्थ हैं । यह भेद है, जो साफ दिखाई देता है । यह भेद समाज की गलत व्यवस्था के कारण पैदा हुआ है । शोषण व्यवस्था में है । मनुष्य तो मनुष्य है, वह न शोषक है, न शोषित । इसलिए मनुष्य और मनुष्य के बीच संघर्ष का सवाल ही नहीं उठता ।

(२) सर्वोदय के लिए सब मालिक हैं । कोई पूँजी का मालिक है, कोई भूमि का मालिक है, तो कोई मेहनत का मालिक है । आप यह भी कह सकते हैं कि तब तो कोई भी मालिक नहीं है । सब धरती-माता और समाज के सेवक हैं ।

(३) मनुष्य और मनुष्य के बीच इस मूल एकता और समानता के कारण एक और दूसरे की कमर्सी में अधिक अन्तर नहीं होना चाहिए । खाना, कपड़ा, तथा जीवन की सामान्य आवश्यकताएँ प्रायः सबकी समान होती हैं ।

(४) अगर हम वर्ग-संघर्ष की बात विभाग से निकाल दें तो गाँव में रहनेवाले सब पड़ोसी दिखाई देने लगेंगे, और गाँव परस्पर-विरोधी स्वार्थों का अखाड़ा नहीं रह जायगा । तब हम समझेंगे कि गाँव का एक हित है—ग्रामहित ।

(५) ग्रामहित के नाते हमारी कोशिश होनी चाहिए कि गाँव में जितने सवाल पैदा हों वे सब गाँव के भीतर, गाँववालों की आपसी सम्मति से, हल हों । बाहर के नेता आयेंगे तो मालिक-मजदूर का झगडा लगायेंगे या पहले से लगे हुए झगडे का बेजा फायदा उठायेंगे । उनसे झगडा घटेगा नहीं ।

(६) गाँव में मालिक, मजदूर, महाजन सबके अलग-अलग सवाल हैं । सबके सवालों पर ग्रामसभा में साप विचार करना चाहिए, ताकि किसीको ऐसा न लगे कि वह छोड़ दिया गया ।

(७) पूर्णिया में जो घटनाएँ हुई हैं, उनका मुख्य कारण यही है कि गाँव के सवालों के बारे में गाँव के लोगों ने अन

गाँव की बात

पूरे गाँव को सामने रखकर कभी सोचा ही नहीं। नतीजा यह हुआ कि गरीब एक दिया में गया, और पनी दूधरी दिया में। जब, कि दोनों की कठिनाइयाँ हैं, और दोनों के पास ऐसी चीजें हैं—भूमि, पूँजी और मेहनत—बिनकी गाँव को बख़्त है।

(८) ऐसा नहीं हुआ वो झगड़ा हुआ। सपना भी हुआ तो होकर खरब नहीं हो गया, बल्कि झगड़े को बुनियाद पड़ गयी। ऐसा होना गाँव के लिए बहुत बुरा है। इसलिए अब होगा यह चाहिए कि ग्रामसभा को तुल्य बैठक हो और उसके सामने दोनों के सवाल पेश हो। यह मानकर सवालियों पर विचार किया जाय कि ग्रामसभा ग्राममाता है। और इस नाते उसे गाँव में रहनेवाले एक-एक व्यक्ति को रोटी और इन्जवत की गारंटी लेनी होगी। और योजना बनानी पड़ेगी।

सम्भावना न्याय के ही आधार पर टिक सकती है। अन्याय और भाईचारे में विरोध है, लेकिन सघर्ष से न्याय नहीं प्राप्त किया जा सकता। मात्र इतना हो सकता है कि एक अन्याय को जगह दूसरा अन्याय होने लगे और एक करने-वाले की जगह दूसरा करने लगे।

(९) कोई खास झगड़ा हो तो उसके फँसते के लिए चो का सहारा भी लिया जा सकता है। अदालत में जिन से झगड़ा बढ़ेगा और हमेशा के लिए दुश्मनी के बीज बँधायेंगे।

(१०) इस तरीके से तुल्य घान्ति हो जाय, तो गाँव गरीबी और आपसी दुश्मनी का स्थायी हल निकाले।

भूमिहीन को भूमि मिले। सबको कमाई से ग्रामकोष इकट्ठा हो, सब बालियों को मिलाकर ग्रामसभा बने जो गाँव की व्यवस्था और विकास की जिम्मेदारी ले। विकास के फल में भूमि, पूँजी और मेहनतवाले को उचित भाग मिले।

(११) इस तरह गाँव के सगठन के आधार पर ब्लाक और जिले का भी सगठन हो। इसी तरह होता चले। आप देखेंगे कि आज के सवालों का जवाब सघर्ष में नहीं है, बल्कि समझ और समझि-की-ब्रान्ति में है। उत्तर है: भ्रान्ति, मान्ति, घान्ति। ग्रामदान यहाँ करने की कोशिश कर रहा है।

आधा है, आप गाँववाले भाइयों के साथ इन बातों पर विचार करें, और फिर लिखें।

आपका
संपादक

२ दिसम्बर, १७

पूजा और नमाज

प्रातःकाल का समय था। अभी पूरा उजाला नहीं हुआ था, लेकिन पूरब की कोल में लाली-मिश्रित आभा प्रकट हो चुकी थी। पहलेजा घाट पर खड़े जहाज के प्रथम श्रेणी के 'डैक' पर एक-एक करके यात्री आने लगे। अभी सरदी पूरी तेजी पर नहीं थी, इसलिए ऐसे समय यात्रियों का बंद कमरे की अपेक्षा बाहर खुले डैक की ओर मुकाब होना स्वाभाविक था। एक सेठसाहब आये, खुले बदन पर कौमती शाल ओढ़े हुए। मासूम होता या कि नीचे गंगा में स्नान करने आये थे। कुली से सामान वहीं रखवाकर और तदा की तरह पैसे देने-लेने का उस और मुँह करके वे बैठ गये। उन्होंने पूजा का सामान निकालकर सामने सजाया—अर्घ्य के लिए तांबे का कलश, बदन पिलतने के लिए छोटा-सा पत्थर का 'चकला', एक-दो छोटी तस्वीरें—और पूजा के लिए बंद गये। उनी समय एक सफेद चाद्रीवाले मुसलमान भाई आये। सेठसाहब के पीछे की तरफ वहाँ लाली जगह थी वहाँ 'जो-नमाज' बिछाकर पश्चिम की ओर मुँह करके उन्होंने नमाज पढ़ना शुरू कर दिया। जहाज के खुले डैक पर, एक ही जगह, एक ओर पूरब की तरफ मुँह किये पूजा करनेवाले सेठसाहब, और दूसरी तरफ पश्चिम की ओर मुँह करके नमाज पढ़नेवाले 'मौलवीसाहब' का अपने-अपने विश्वास, तरीके और ढंग से उपासना करना मानो हमारे देस की संस्कृति, उदारता और स्वातन्त्र्य का प्रतीक ही था।

और मुश्किल पया की धार की ओर बढने लगा। हमारी ओर-वाला डैक का हिस्सा जो पहले उत्तर की ओर था, वह घूम-कर अब दक्षिण की ओर हो गया और जहाज मजबूत में साहब की नमाज चल रही थी। अचानक में घ्यान इस बात की ओर गया कि सेठसाहब जो पूरब की ओर मुँह करके बैठे थे, उनका मुँह अब पश्चिम की ओर था और मौलवीसाहब का पूरब की ओर। इस लीला के द्वारा मानो भगवान् मनुष्य को सबक दे रहा था कि मुसलमानों की उपासने के लिए पूरब की ओर पश्चिम, पूजा और नमाज सब एक ही है।

—सिद्धराज ठड्डा

अमोरो को है, गरीबों की सुनता कौन है ? गाँव में जलाकाले आते हैं । कहते हैं—बाग लगाओ, अनुदान लो, कर्ज लो, सेयरूजी जमा करो । किन्तु महाराज ! हमारे पास तो धन है नहीं, कैसे काम चलेगा ? साहूकार कर्ज का डर वताकर मनमानी करते हैं, देखते नहीं बट्टीसिंह के पिता को !

सबसे बड़ा अन्याय

राम अपने पिता का इकलौता पुत्र था । गांधीजी के सत्याग्रह-आन्दोलन में जेल गया । जो भी पत्रिक उपाजित संपत्ति थी उससे भी हाथ धोना पडा । आखिर सत्याग्रही राम की आजादी की आकांक्षा पूरी हुई । १५ अगस्त, १९४७ को राम फूला न समाया । वह खुशी में कहता, गरीब भारत का उदय होगा, भारत में गरीब अब नहीं रहेंगे । कभी-कभी भावनावश कहता—भारत माता की जय, गांधीजी की जय । स्वराज्य के बाद अपने पिता के दर्शनो के लिए गाँव को प्रस्थान किया । किन्तु रास्ते में सुना कि पिताजी परिवार में अब नहीं रहे ! वह सहम गया । राम का अपना व्यापक दायरा बनता जा रहा था ! गाँव के लोगों को एकत्रित करके उसने समझाया कि भारत में आजादी के बाद कैसे परिवर्तन होगा । उसने इस पर विस्तृत योजना बनायी ।

दिन बीतते गये, रातें कटती गयीं । रामू देखता क्या है, कि गांधीजी घुपचाप एक क्षेत्र में लोकप्रिय थे । उसी क्षेत्र के बट्टीसिंह काफ़ी धनवान व्यक्ति थे । जिन दिनों रामू सत्याग्रह में पकड़ा गया था, उन्हीं दिनों बट्टीसिंह शोषण-कार्यों में लगा रहा । घुनाव आया । अच्छा पैसा खर्च कर बट्टीसिंह ने उम्मीदवारी का टिकट पा लिया आर एम० पी० बन गये । बेचारे रामू ने देखा कि अग्रज की कुर्सी पर भारतीय साहब बैठ गये ।

देश की विकास-योजना बनी, ब्लाक बने, सड़कें बनी, अस्पताल बने, इन्टर से लेकर डिग्री कालेज और नये विश्व-विद्यालय खुले । साहूकारी समिति के द्वारा कर्ज वितरित किया गया । इस प्रकार की अनेक योजनाएँ चलने लगी । रामू की दृष्टि सदैव योजना पर थी कि कैसे गाँव के गरीब इस योजना से लाभान्वित होंगे । लेकिन गाँव में गरीबों को न कर्ज मिल रहा है, न तो अनुदान ही । रामू ने गरीबों के बीच जाकर उनको समझाया । पास बैठा बीनू सुहार बोला—महाराज ! सरकार तो

इस समस्या को सुलझाने हेतु रामू एम० पी० के पास जाने की तैयारी करने लगा । चलते-चलते रामू क्या देखता है कि बट्टीसिंह भाषण दे रहा है । रामू एक कोने में बैठकर सुनता रहा । बट्टीसिंह कह रहा था—इतनी लम्बी सड़कें बनी, इतने रुपये कर्ज व अनुदान के लिए वितरित हुए, बांध बने, डिग्री कालेज बने, विजली से कंती चमकदमक है !

रामू सोच रहा था—आखिर ये सहूलियतें किसको ? जिस गरीब के पास पैसा नहीं है, जिसके पास पूँजी नहीं है, उसे कर्ज व अनुदान कैसे मिलेगा ? जिसका बच्चा प्राइमरी में नहीं पढ सकता है, वह डिग्री कालेज का क्या करेगा ? जिसके पास लैम्प के लिए तेल नहीं, वह विजली क्या करेगा ? इसी प्रकार रामू सोचता जा रहा था । यही आजादी है ? इसीके लिए मैं जेल गया ? क्या इसीके लिए गांधीजी ने सत्याग्रह किया था ? रामू ने सोचा, क्या किया जाय कि गरीब गरीब न रह जाय । वह उठा, लोगों से इन गरीबों के लिए चर्चा इकट्ठा किया । जब काफ़ी पूँजी एकत्रित हो गयी तो लोगों को साहूकारों के कर्ज से मुक्त किया । तब साहूकारों ने देखा कि रामू उनका सबसे बड़ा शत्रु है । तो जब तक रामू नहीं बदलेगा, तब तक ये दममाम (मजदूर) हमारे काम में रोक अटकायेंगे ।

उन्होंने रामू को बुलाकर उसको आवश्यकतानुसार रुपये-पैसे की मदद देने की लालच दी, ताकि वह उनका सहयोगी बन जाय । रामू ने साहूकारों के प्रस्ताव को स्वीकार करने में यह कहकर इनकार कर दिया कि गरीबों की गरीबी बढ़ाने में भागीदार बनना सबसे बड़ा अन्याय है ।

—गुरुप्रसाद जोशी

“गाँव की बात” का विशेषांक

३० जनवरी '६६ गांधीजी के पुष्प-दिवस के अवसर पर 'सर्वसम्मति—गाँव का सत्य' विषय पर एक विवरणाक निकालने की योजना है । यह विशेषांक १६ पृष्ठ का होगा ।

—सम्बलपुर

गाँव की बात



गोबर : जलावन या खाद ?

“अन्वेषण होने लगा है। आकाश घुरं से भर हुआ है। हम घुट रहा है। कोषा (आवाज) के चारों ओर बैठे कुछ लोग गपवपन कर रहे हैं। ऐसे गप का न कोई मिलसिला होता है खोर न कोई विषय। मैं एक सम्मन्धी के गहाँ आया हूँ। मैं इन लोगों की बातें सुन रहा हूँ। मुन इन्किए रहा हूँ कि एक उत्पुक्ता है कि गाँव के लोग कौनो पाठें करते हैं ? मन हो, मन में सोचता हूँ कि कौनो साहिबाँत बाने को आ रही है। इतने में एक आगसेपकली आ पाते हैं। वह सरकार से निपुक्त हुए हैं। उन्होंने वहाँ बैठे हुए लोगों से कहा कि मलाक मैं रात आ गयी है। जिन्हें रात को जहरत हो, वे पतकर खाद ले सकते हैं।

अब खाद की बर्णों बात पड़ी। खाद के आने की मूचना से लोगों में बड़ी घुबो हुई। श्री टिमल महडो ने कहा कि हमें ५० किलो चाहिए। रामसेवक सिंह ने कहा कि हमें एक निन्दक चाहिए। कुछ और लोगों ने भी अपना-अपना कौदा तप किया।

श्री घनुरो गायर ने कहा कि हमें से कुछ खाद की जरूरत ही नहीं है। हमारे पास गोबर ही इतना अधिक होता है कि उसकी खाद हमारे लिए पूरे पड़ पाती है। उन्होंने आगे कहा कि मैंने पर में खेतों को मना कर दिया है कि गोबर नहीं जलाना चाहिए। गोबर से सिर्फ खाद ही बनायेंगे। मेटे और देखते हुए उन्होंने कहा—मैं एक सिविर में गया था, और वहाँ से गोबर की खाद बनाने का तरीका सीख आया हूँ। जब से खाद बनाने लगा हूँ, खाद की कमी नहीं पड़ती।

इतनी बात सुनकर मैं बोल पड़ा—आप बहुत अच्छा करते हैं। गोबर से बड़िया हुनरी कोई खाद हो ही नहीं सकती है। अगर गोबर जलावन न जाय और उसकी खाद बनायी जाय तो रासायनिक खाद की इतनी जरूरत नहीं रह जायगी। कुछ दिन पहले हो मैंने एक एजिक में पढ़ा—

“मैं कि पूरे देश में गोबर को जलाकर जितना मजबूत (वाइटीजन) नष्ट कर दिया जाता है इतना मिन्टरी जैसे १२ कारखाने खाल भर में बना पायेंगे। इतना मुबते ही कुछ लोगों ने बड़ी गहरी ताँस ली और बोल पड़े, अच्छा ऐसी बात है। फिर बोले, लेकिन लकड़ी की भी तो कमी है, हमारा भोजन बनेगा कैसे ? कहाँ से लायकी लकड़ी ? जीर, लकड़ी मिला भी नाम तो कहाँ से आयाया पैसा ?

मैंने कहा—“हाँ, आप ठीक कह रहे हैं। जलावन की समस्या बहुत कठिन है। लेकिन इतनी कठिन नहीं है जितना आप सोचते हैं। अपने देश में हर साल दो हजार लाख टन मुदा गोबर जलावन के रूप में जला दिया जाता है। जितना गोबर जलाया जाता है, उससे कतौन १५३० हजार टनमजबूत, २५० हजार टन फास्फोरिक एसिड, और १२०० टन पोटाश नष्ट कर दिया जाता है। इन तत्वों की कीमत रुपये में बँटती जाय तो लगभग ३८२ करोड़ ५ लाख रुपये है। इन दरवो के अलावा खनीन को गोबर से बँदिक पदार्थ भी मिलता है। अब सोचिये की इतनी कीमती चीज अपनी मजदूरी बटाकर जला देना क्या उचित है ?”

एक बुरा—“अबिर तो नहीं है, लेकिन आप ही बताइये कि गोबर के बरसे बना जलाया जाय ?”

मैं—“गोबर में न बहुत अच्छी चीज है। गोबर में से खाद में कोई कमी नहीं आती है और जलावन भी मिल जाता है। गाँव-गाँव में गोबर गैर बोखना चानु को जा सकती है। परन्तु वह घर-घर में सभव नहीं है। इस बोखना में लगभग १००० रु० लग जाता है। यह हर परिवार के बच को घाव नहीं है। हाँ, अगर सब मिलजुलकर बना ले तो बन सकता है और, ऐसा करना चाहिए। इसके अलावा कोपला और लकड़ी जला सकते हैं। अन्तरन को टाँचें लकड़ी के लिये कुछ पैसा लवा सकते हैं, परन्तु पूरे गाँव को एक योजना बने तभी यह सभव है।”



हमवतन से मुलाकात - गैरमुल्क में

हिन्दुस्तान में जब कहीं गोरी चमड़ी का कोई यूरोपीय आ जाता है, तो अलग से पहचानने में आता है, उसी तरह यूरोप में गैर-यूरोपीय पर बहुत जल्द नजर चली जाती है।

एक दिन मैं ओस्लो (नावों की राजधानी) के वेस्ट स्टेशन के बाहर एक बेंच पर किसी दोस्त की इन्तजारी में बैठा था। मैंने दूर से देखा कि एक काली चमड़ीवाला स्टेयान की ओर चला आ रहा है। वह ज्यों-ज्यों आगे बढ़ रहा है, वार-वार घूर-घूरकर मुझे ही ताक रहा है। जब वह रास्स विलकुल करीब आ गया, तो मुझसे न रहा गया सोचा कोई हिन्दुस्तानी होगा, जहर उसके ताकने का जवाब मिलना चाहिए। आखिर मैं उठ खड़ा हुआ और दो कदम आगे बढ़कर 'नमस्ते' कहा।

"नमस्तेजी, कहिये क्या हालचाल है ?" जवाब मिला।

'बस जी, सब मेहरबानी है', मैंने कहा।

"इधर किसी ब्यापार के सिलसिले में आये ?" सवाल था।

"नहीं जी, मैं इधर तालीमी तजुबों के वास्ते आया था, वह पुरा हो गया है, अब थोड़ा ही अरसे में वापस वतन को लौटनेवाला हूँ।" मेरा जवाब था।

"मैं तो तिजारत के सिलसिले में यहाँ आया था। यहाँ से मैनिस्को जा रहा हूँ। आप मुल्क में किधर से आते हैं ?"

मैंने कहा, "उत्तर के पहाड़ी इलाके में मेरा घर है, पिथौरागढ़ जिला कहते हैं।" मैंने पूछा, "आपका दौलत-खाना ?" तो बोले, 'कराची।' मैंने आगे पूछा—"युद्ध से ही कराची रहते हैं, या बंटवारे के पहले कहीं और थे ?" तो जवाब मिला, 'दरअसल मैं कराची नहीं, लाहौर से आता हूँ। बंटवारे से पहले मेरा धन्धा दिल्ली बंगरह में भी चलता था। तिजारत तो थोड़े साल पहले तक हिन्दुस्तान के साथ चल ही रही थी, मगर " कहते-कहते वे थोड़ी देर के लिए रुक गये। आगे फिर बोले, "क्या कहे, (राजनीति) सियासत की वजह से मुल्क तबाह हो गया। एक बहुत बड़ मुल्क के टुकड़े हो गये, हमारे कुछ पुराने लोगो की बेवजूफी को वजह

से हम सब बरवाद हो गये। वरना आज आपस में तिजारत चलती, उम्दा धन्धा चलता, देश तरक्की करता। जहाँ पहले कास्त होती थी, वहाँ अब लश्कर का अड्डा जमा है, "

मैं उनका पुरा कहना सुनने से पहले ही बोल बैठा, 'क्या बात है, जमीन तो अब भी एक ही है। हम लोगो की चमड़ी एक है, खान-पान एक है, दुनियावाले भी हमको एक जैसा ही देखते हैं। सरकारें दो हो गयीं, तो क्या हुआ ?"

मैं कुछ और कहनेवाला था, परन्तु वे फिर बोल पड़, "क्या नहीं हुआ जी ! बहुत हुआ। जहाँ पहले एक पालिया मेष्ट थी, अब दो हुईं। जहाँ पहले एक दफ्तर से काम चढ़ता था, अब दो-दो है। यही देखो न, दुनिया के हर मुल्क में दो-दो अन्वेसेडर है, दो-दो झण्डे लगे हैं। मुल्क में अवाम तो बड़ी है। सियासत की वजह से दो फौजें हैं। लश्कर बड़ रहा है, खर्चा बड़ रहा है। लश्कर भी क्या करे, उनको भी अपनी अपनी सरकार और लीडरो का हुक्म मानना पडता है। फौजी चाहे वे पाकिस्तान के हों, या हिन्दुस्तान के, वे लोग हैं तो आदमी ही, सियासत की वजह से दुस्मनी हो गयी है। यह सब अप्रेजो की बदौलत हुआ है। वे हमसे कहते हैं, तुन पिछड़ हुए हो ! सब तो खुद चूस-चूसकर ले गये, मुल्क को गरीब छोड़कर गये। इनकी तो पौलीसी ही ऐसी है, कभी गुलाम बनाकर हमारे माल को बमिधम, मान्वेस्टर को भेजकर वुटा, तो अब हमको लडवाकर अपने हथियार बेचकर लुट रहे हैं !"

मैंने बात का दौर बदलकर पूछा, "और भी कोई नई लोग मिले क्या ?" इस पर वे बोले—"बड़े तो मैं हर साल एकाध चकर अपनी तिजारत के सिलसिले में गैर मुल्को का दौरा करता हूँ, मगर इस मसबा तो आप ही पहले हमवतन मिले हो।"

"आप ही पहले हमवतन", ये दाव्य और इनकी भावना मेरे दिल को भीजती रही। अब क्या बोलूँ, यह मूझ नहीं रहा था। गने से आवाज ना निकलना मुदिकल हो रहा था। जब कुछ भी न कह पाया तो मैंने हाथ जोड़ दिये।

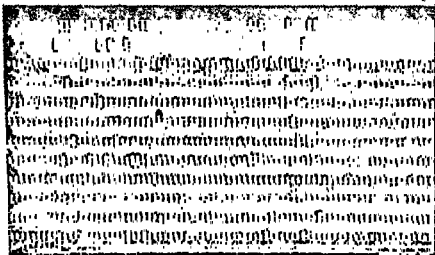
"खुदा हाफिज !" फिर कुछ रुककर, "आपका जो सफर खुशी से बीते", यह कहकर उन्होंने भी हाथ जोड़ दिये। इस पर मैं इतना ही कह पाया, "अल्ला हो अकबर"।

काश ! दूर स्केन्डिनेविया के छाट ओस्लो पहलू क दक्षिणी बन्दरगाह पर का तीसरे पहलू का दो हमवतनो ना यह मिलन स्वदेश में करोडो बिछुडे हमवतनो के प्रभाव मिलन के रूप में होता !

—बेवो पुरस्कार

'गाँव की बात'। वार्षिक चर्चा चार रूपये, एक प्रति अठारह पैसे।

श्रीकृष्णवत्स भट्ट द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए सप्ताह प्रेस, काशीपुरा, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित



कम्प्यूटर-कार्य

औद्योगिक विकास के मास्को का विनियम करते हुए प्रसिद्ध अर्थशास्त्री तुगारिस्तन ने विप्लवविधित्त विकास प्रकट किये हैं, जो प्रायः में रहने योग्य हैं—

“मातृक नैसर्ग देय, विशुद्ध मनोरंजन एक धर्मोन्मी के अन्त तक लक्षण प्रती हो चुकेंगे, अपनी धनदा के उदासी परे विषय अध्वन-धर को बहुत लम्बी अवधि तक लेंचा नहीं उठा सकता, यह तक कि उसके अधिपति का एक बड़ा भाग उद्योग धर्मों में नहीं लगाया जाता। भारतीय कृषि के क्षेत्र में कोई बिना उपजि हों, फिर भी यह बात सत्य हो गयी है।”¹⁾

तुगारिस्तन देवत में यह भी कहा है कि अर्द्ध-विकसित देश चारों दिशाओं में गति से अपना औद्योगीकरण का कार्यक्रम आगे बढ़ाये, आनेवाले कई पीढ़ियों तक वे अपनी अर्द्धवैश्वर्य अन्तः को प्रशस्तता प्राप्त नहीं दे पायेंगे। अन्तर दुनिया के विकसित देश अर्द्धविकसित देशों को आत्म के अधिक माथा से आर्थिक छायागत हैं, तब भी विपत्ति में कोई परतपूर्वक परिवर्तन नहीं हो पायेगा; क्योंकि आर्थिक धार्मिक बड़े पैमाने के उद्योगों में अविशेष को बड़ी संख्या की आवश्यकता नहीं रह पायेगी। जैसे-जैसे विदेशों की रूबि

अधिक उपलब्ध होती जाती है, वेतन देय में विपत्ति गहरे भेदित उद्योगों में देखी नये पधोनें विद्यार्थी कामें करती हैं, जिनमें इन उद्योगों में पहले से बहुत कम मतभूरी की अन्तः प्रवृत्ति है। इस जीवन के अन्तः प्रवृत्ति अन्तः प्रवृत्ति को रोका-गारी को सीमा नियुक्तों नहीं जा रही है।

इससे देव में कुछ उच्च अन्तः प्रवृत्ति मिली का मन् १९५० तथा उसके बाद नयीनीकरण हुआ है। भारत सरकार के अन्तः प्रवृत्ति को मन् १९६४ को विधोई में नवी-नीकरण काय-ची को अर्द्धवैश्वर्य प्रकथित हुए हैं, तबमें वे उपरोक्त विचार को पुष्टि करते हैं।—

वृत्ति क्षेत्र
रोडना काम करनेवाले मजदूर की संख्या
औद्योगिक उत्पादन
एक उद्योग
औद्योगिक उत्पादन

उपर के आँकड़ों से यह स्पष्ट हो जाता है कि नयीनीकरण के बाद वृत्ति मिली के उत्पादन में वृद्धि ६ प्रतिशत की हुई हुई, किन्तु उन्मी काम करनेवाले मजदूरों की संख्या १८ हजार चर गयी। ऐसे प्रकार उच्च के उद्योग में भी ६ प्रतिशत उत्पादन

रहा, किन्तु मजदूरों की संख्या ७ हजार चर गयी।

माँतर दे कि एतने देव के अर्थशास्त्री और उद्योगविदों को रूबिवादी देशों का इतिहास दुहराने का अर्थ नहीं मिलना चाहिए। इस अर्थः में केन्द्रीय सरकार को अपनी नीति स्पष्ट रूप से निश्चित कर लेनी चाहिए कि वह नयी धोमें में कम्प्यूटर के उपयोग की कम्प्यूटिंग देखी, वहाँ उनके काम देकारी को सम्भाला और प्रकट नहीं होये।

छोप लक्ष्यमोने तथा नवी पोषणा बनाने के कामों में शीघ्र से योग्य बनना करने की आवश्यकता अर्थशास्त्री होती है। इन धोमें में समय का बड़ा महत्त्व होता

वर्ष १९५०	वर्ष १९६१
८,४१,०००	८,२१,०००
१००.८	१०६.६
३,५०,०००	३,५०,०००
१८.७	१७.८

है, अतः देवें कामों में कम्प्यूटर के उपयोग का अनुपयोग्य विचार था उक्तता है। इसी प्रकार बन्द देशों करने या अन्तः प्रवृत्ति-अन्तः प्रवृत्ति योग्य से योग्य प्रवृत्ति करने जैसे कार्यों में भी कम्प्यूटर का उपयोग हो सकता है। —इदमन्त

¹⁾ इदमन्त-वक्त्र, प्रकृतात्, ८ विद्युत्कम्पर, १६०

प्रश्नोत्तर

ब्रह्मचर्य : एक सामाजिक मूल्य

परन : गाय का बच्चा सवाल देता में है। इसका हल कैसे होगा ?

विनोबा : वेदकाल में जमीन कान्ची थी। बंगल थे। गाय के पीछे से ही दीया बरता था। उल्ल या कोल्हू नहीं था। नेहरूजी एक बार मिले तो कहते थे कि अकबर के बमाने में मुस्लिम १ प्रतिशत थे, गो-वध बंदी तब आशान थी। आज की बात तो मेरी समस्त में स्पष्ट है कि संयम की शपना के बिना गाय तो कटेगी ही। इन्सान इन्सान को खायेगा। अभी एक अलखर में निकला है कि चीन के विपारियों ने मनुष्य को मारकर खा लिया। मुझे कान में हमारे विपारियों ने भी बताया कि जब रूसार्ड से भोजन नहीं आता तो दुश्मन के मारे हुए लोगों को खाते भी हैं। मैंने 'सितमल दर्शन' में इसका वर्णन किया है कि भ्रूणहत्या, भ्रूण बनने के पहले हत्या, बाद में लडवाई में मारना, अकाल, अविद्युति से मौत, ये सब मनुष्य के अवयव से ही पैदा हुईं हैं।

परन : आज आबादी की बढ़त से सब परेशान हैं, पर क्या संयम की बात लागू करना संभव है ?

विनोबा : विपारणिक के कारण आबादी बढ़ेगी तो अहिंसा पनप नहीं सकती। एक जमाना या जब ऋतुवर्ष का उपदेश श्रमियों ने किया था। उस समय उसका आध्यात्मिक मूल्य था, पर आज उसे सामाजिक मूल्य आ गया है। संयम के रास्ते आबादी की रोकथाम के संबंध में ये बातें मुझे यादवती हैं :

(१) तप करो कि ४ बच्चों में से २ ही शादी करोगे। बाकी २ ब्रह्मचारी रहेंगे। पर ये बाकी परिवार को अपना मानकर उनके पोषण में सहायता करते हुए गृहस्थ-जीवन बितायेंगे।

(२) २० से ४० वर्ष की आयु में विवाहसह्य मानकर बाद में समझौदा बान-प्रसूती बनें। आज जो १६ से ५६ का समय है, उसे २० से ४० का कर लिया जाय। रामायण-

पलों को हमसामो कि मर्यादापुस्योत्तम ने दो ही बच्चे पैदा किये, इस प्रकार वे भी मर्यादा में रहे। संयम और कष्टा, ये दोनों शुभ लोगों के दिलों में कितना बढ़े, यह मैं जानना चाहता हूँ। विज्ञान और अभ्यास, दोनों की माँग है कि विपारणिक कम हो।

परन : सिनेमा और दूसरे साधनों को पदलन न जाय तो यह संयम कैसे बढ़ेगा ?

जीने की डिजाइन, न कि विकास की योजना

यू० एन० ओ० के यूनेस्को ने 'डिजाइन फार लिविंग' का विचार प्रस्तुत किया है। यह विचार पहले पड़ल यूनेस्को की १४ वीं आम सभा में भारतीय प्रतिनिधि-मंडल ने दिल्ली में हुए 'नेहरू राउंडटेबल' की शिपारियों के आधार पर पेश किया था। विकास के सन्दर्भ में हल जमाने का नवीनतम विचार है यह। जब विज्ञान ने उत्पादन की क्षमता हल कर दी है, तब दुनिया दिनोंदिन नबरीक होती चली जा रही है, जब मनुष्य पृथ्वी का ही न रहकर नक्षत्रों का भी प्राणी बन रहा है, तो कोई कारण नहीं कि वह अपने में इतना सहीन और संकुचित क्यों बना रहे, और जो विश्वास और मूल्य पुराने पड़ गये और सध्याएँ निकामी छिड़ हो गयीं, उनका गुनाहम क्यों बना रहे ? क्यों न वह अपने भविष्य को अपने हाथ में कर ले, ठीक उसी तरह जैसे प्रकृति को हाथ में करता जा रहा है !

नये जमाने में पहले 'स्टैण्डर्ड्स आफ लिविंग' का नारा लगा। अभावप्रस्त मानव को लगा कि उसकी किस्मत न भी भरपेट खाना और भरपेट पदलना क्लिया है। गांधीजी ने कष्ट, स्टैण्डर्ड्स काफ़ी नहीं है, उधमें 'कवालिटी आफ लिविंग' होनी चाहिए। जीवन की क्वालिटी समझत से आती है। सर्वप्रथम के बाद 'विकास' की धूम मची—आर्थिक विकास, सांस्कृतिक विकास। पच-पचास योजनाएँ बनीं। अर्थशास्त्रियों, अधि-कारियों, इंजीनियरों ने बनायीं। निर्माय की

विनोबा : चाहिये मैं कामनासुक्त हो उठेना देनेवाला अंध पदया जाय तो यह संयम के लिए सहायक कैसे होगा ? आज भी संस्कृत में श्रद्धासहार और दरबारी चाहिये पदया बा रहा है। इहलिय हमें यह करना होगा :

- (क) विद्ययासह्य बनाना
- (ख) अस्त्रीकता मिटाना
- (ग) छाहित्य सुधारना

बिना संयम के केवल कष्टा नरी चली। प्राप्तयन के बाद संयम की दिशा में हमें समाज को बढ़ाना आवश्यक है।

सुचियों बनी, उन सुचियों में जीवन की क्या डिजाइन थी ? डिजाइन थी ईट-पत्थर की, सड़क और पुल की। यह मान लिया गया कि आर्थिक विकास के रूप में अतिरिक्त और असुलन के अधिग्रहण भोगने ही पड़ते हैं। विज्ञान के जमाने के लिये अभीन विचार था यह, लेकिन था इहलिय कि विशेषज्ञों की ओर से आया था। जीव क्यों के बाद, अब मादम पड़ रहा है कि 'बीने की डिजाइन' पहले बननी चाहिए थी, उलके बाद उधमें खेती, उद्योग, व्यापार, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि को उचित स्थान पर बिनाधान बना चाहिए था। आखिर ये सब साधन हैं, साध्य नहीं। अगर यह होता तो आज मूल्यों और सम-नों का भी संकट दिखायी दे रहा है वह न होता। अगर यह मानना सही हो तो डिजाइन बनाना विशेषज्ञों और अधिकारियों के वध की बात नहीं है। यह काम उनका है जो जीवन में मूल्यों का महत्त्व समझते हैं। बिना की खोपरी में केवल फाहल नहीं, बल्कि 'विभव' भी है।

बीने की डिजाइन हमारे पास मौजूद है। शुक 'जीवन की कल्पना मतसर्व ने दी थी, उसकी योजना गांधी ने दी, और साधन अब विनोबा प्रस्तुत कर रहे हैं। बीने की डिजाइन परंपरा, परिचय और युग की परि-स्थिति पर निर्भर है। निश्चित है कि भारत को अपनी ही डिजाइन विकसित करनी पड़ेगी। दूधरे देव की डिजाइन देखो की वही उधमें—

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, ८ दिसम्बर '६०

→ काम नहीं आवेगी। और, अब टेकनावाजी का प्रारंभ भी आगम हो गया है। डिबान उप हो थाय तो उसके अनुसार टेकनावाजी विद्येयों से तैयार करायी जा सकती है। कोई बकूत नहीं कि मशान एक दिया में बाय और मनुष्य भी माँ में दुखी दिया में।

आन्दोलन के समाचार

ग्रामदान-अभियान :

वाराणसी, ४ दिखम्बर : वाराणसी जनपद के चिारगँव और चोलापुर न्याके में 'ग्राम-स्वराज्य अभियान' सम्बन्धी कार्यकर्ता-शिबिर का शुभारम्भ शनिवार २ दिखम्बर को चौबेपुर रूबर कलेज के प्रांगण में नागरिक परिषद के प्रधान मंत्री श्री वंशीधर भीवास्तव ने किया। शिबिर-संचालक श्री रामश्री भार्दे ने बड़ी कुशलता से 'अभियान' के कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण किया। शिबिर का समापन करते हुए काशी विजपीठ के उपकुलपति श्री रामश्री राम शर्मा ने 'अभियान' को अपना आशीर्वाद दिया। यह अभियान ४ दिखम्बर से शुरू हुआ है। कुल १५ टोलियों पर विरद-गँव न्याके में ग्रामदान प्रामत्सव्य अभियान का रुद्देश पट्टियां ररी हैं।

थाना, २६ नवम्बर : महापद्म के ५० और गुजरात के २५ कार्यकर्ताओं का शिबिर थाना जिले में हुआ। दोनों राज्यों के सीमा प्रदेश में एकसाथ पदयात्रा का कार्यक्रम बना। उसके अनुसार २४ नवम्बर से थाना जिले की पालकर तहसील में और गुजरात के उबरगाँव तहसील में ग्रामदान-पदयात्रा शुरू हुई। इसका समारोह उबरगाँव में १ दिखम्बर को होगा। अब तक थाना जिले में ६६० ग्रामदान और ७ प्रखण्डदान हुए हैं। थाना जिलादान का सफल महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं ने किया है।

रत्नागिरी, २६ नवंबर : थानापुर तहसील के पाचत क्षेत्र के १० गाँव-ग्रामों का एक शिबिर १८ नवंबर को श्री गोविंदराव शिंदे की अध्यक्षता में हुआ। पदयात्राई और चर रही हैं। ७ दिखम्बर से बैठापुर क्षेत्र में पदयात्रा चलाने के लिए महापद्म उर्वरद मण्डल के अध्यक्ष श्री ठाकुरदास नग था रहे हैं।

सम्मेलन-शिबिर :

जयपुर, २८ नवम्बर : खादी प्रामोयोग संस्था एवं के प्रांगण में विदितस्थीय रायस्मान

गोवेला सम्मेलन का शुभारंभ श्री उ० न० देवर की अध्यक्षता में हुआ। सम्मेलन में गोवर्धन मठाधीश बगदुष्ट शकृत्तार्थ श्री निरंजन देवतीर्था, रायस्थान के मुख्यमंत्री श्री भूभिक्षणाल खलानिधर, श्रुतपूर्व केन्द्रीय स्वास्वामिनी डा० सुशीला नायर आदि के भाग्य हुए। एवं के अध्यक्ष श्री गोकुलभाई भट्ट ने संबन्ध स्वागत किया। स्वागतमें श्री श्री रामेश्वर अग्रवाल ने रिडके कामों की रियोट पढ़कर सुनायी।

मेवापुरी : यहाँ गांधी जन्म शताब्दी के सम्म में विभिन्न संस्थाओं के कार्यकर्ताओं को वेदोक्त एवं नागरिक प्रशिक्षण देने के लिए उ. प्र. गांधी-जन्म शताब्दी समिति की ओर से ५ से ११ दिखम्बर तक प्रान्तीय शिबिर का आयोजन हो रहा है।

वाराणसी : सर्व सेवा एवं श्री प्रबंध समिति की आगामी बैठक दिनांक २१ २२ जनवरी, १९६८ को वाराणसी में करने का निश्चय किया गया है।

साहित्य-सेवा :

हरियाणा में रोहतक जिले के डीठ गांधी-पुर शान्ति-केन्द्र के श्री सुकिया भगत ने गज अक्षरकार माह में १२७ मील की पदयात्रा द्वारा ४५ रुपये ६० पैसे की साहित्य-विभूति की। आठपास के गाँवों में उर्वरदप सुसकाय को पुस्तकें भी पढ़ने के लिए दी।

श्रीमती-नेना विद्यालक्ष्य, खादीप्राग, मुगरे के श्री देनबाय सिंह ने अक्टूबर '६६ से अक्टूबर '६७ तक की अग्रणी में अपने जिले में, "गाँव की बात", "मिथी तालीम" और "मूदान-पत्र" पत्रिकाओं के ७१ माहक बनाये।

श्री गांधी आश्रम क्षेत्रीय कार्यालय केरना, बलिया के कार्यकर्ता श्री त्रिवेणी साहा ने आतिरिक्त समय में गाँव में सगर्क और साहित्य-पत्रा का काम गत अक्टूबर माह से शुरू किया है। रेलेवे स्टेशन, ४४ स्टेशन पर हाकरी की तरह ज्योने के बीच पहुँचकर १०-१२ दिन में मूदान सम्बन्धी १००-१०० कोडर नेच डाके। शुरू में "मूदान-पत्र" पत्रिका अक्टूबर जेन्ने में दिख्क होती थी, अक्टूबर १५ साथी माहक ही बना लिये। फिर पाठ में निश्चय गाँव में भी १५ अंक देने लगे।

टेकनावाजी मनचाही बनायी जा सकती है, इच्छित्व तो आशा हुई है कि अब हर गाँव, जो जीवन की स्वाभाविक हकार है, जीवन के लेंके मूल्यों को सामने रखकर अपने निर्णय से अपने लिए डिबान बना सकता है। इसे नये विज्ञान ने ग्राम स्वराज्य को धमक बना दिया है। ग्राम-स्वराज्य के विना विज्ञान की नयीनम देते एक-एक मनुष्य के पास पहुँच ही नहीं सकते, और मानव सदा भूला ही बना रहेगा—कभी धारी से, कभी मन से, कभी आत्मा से।

क्या यह उचित नहीं होगा कि ग्रामदान के बाद हम मात्र शिक्षा के स्थान पर जीने की पूरी कला की बात छोड़ें? यह परवैयक्तिव व्यापार छोड़ेंगे और शिक्षा का मानवीय और शुभामक पहलू ब्यापार व्यवस्था के साथ सामने आयेगा। 'डिबान कार लिबिंग' का उर्वरद से मेल है। 'डिबान कार बाजार' का दूबीचाद से और 'डिबान कार व्यवहार' का साम्प्रदाय है।

—रा० मू०

आदिवासियों द्वारा सय-जियेय

निवासी : गत २८ नवम्बर को आदिवासियों का एक बहुत बड़ा सम्मेलन बनवासी कन्या आश्रम, निवासी (जिला पश्चिम निमाड, म० प्र०) में किया गया, जिसमें कबीर रो ह्वार आदिवासी भाई-बहनों ने भाग लिया। इस सम्मेलन में हर निर्णय किया गया कि आगामी गांधी-जन्म शताब्दी तक संघस जयद्वी की शपथ की हर दुकानें अहिंसा के द्वारा समाप्त करने का प्रयत्न होगा। पूरे क्षेत्र में कार्य करने के लिए मध्यामदी समिति का संगठन किया गया। यह सब कार्य करारवा दूख निवासी के अंतर्गत चलनेवाले गिरीधन संघ की तरफ से चला रहा है।

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, ८ दिखम्बर, '६७



राजभाषा-संशोधन विधेयक

गत २७ नवंबर को राजभाषा-संशोधन विधेयक अनेक विरोधों के बावजूद २५ के विरुद्ध १८१ मतां से लोकसभा में पेश हो गया। यह विधेयक मूलतः प्रधानमंत्री बजारलाल नेहरू द्वारा अहिन्दी-भाषी प्रांतों को दिये आश्वासनों को कानूनी रूप देने के लिए पेश किया गया है। संविधान के अनुच्छेद २६ बनवारी १९६५ के 'मातृहिन्दी को राजभाषा बनवाना' चाहिए था, किंतु बजारलाल नेहरू ने अहिन्दी-भाषी प्रांतों को आश्वासन दिया था कि वे जब तक हिन्दी को स्वेच्छा से स्वीकार नहीं कर लेंगे, हिन्दी उन पर राजभाषा के रूप में बहाल नहीं की जायेगी।

हिन्दी भाषियों को इस विधेयक की उधारा से अधिक चतुराई है, जिसमें हिन्दी-भाषी प्रांतों को अहिन्दी-भाषी प्रांतों के साथ पत्र-व्यवहार में हिन्दी के साथ अंग्रेजी का अनुदान भेजना अनिवार्य कर दिया गया है।

विधेयक पेश होनेवाले दिन सदन की बैठक शुरू होने के पहले कांग्रेस पार्टी की बैठक में कई कांग्रेसी सदस्यों ने इसका तीव्र विरोध किया था। इन सदस्यों ने कहा कि अंग्रेजी जारी रखने की विधि अक्षय्य रखकर उधे अनन्त काल तक बनाये रखने की साजिश हो रही है।

क्यों ही स्वराष्ट्रमंजरी श्री चड्ढा ने यह विधेयक लोकसभा में पेश करना चाहा, कांग्रेस संसद-सदस्य सेठ गोविन्दराव ने इसका तीव्र विरोध करते हुए कहा कि जो राज्य हिन्दी नहीं चाहते, उन पर हिन्दी न लायी जाय, लेकिन इसके साथ-साथ जो राज्य अंग्रेजी नहीं चाहते, उन पर अंग्रेजी भी नहीं लायी जानी चाहिए। उन्होंने इस प्रश्न पर राव्यों के मुख्यमंत्रियों से सलाह लेने का सुझाव भी दिया। श्री मधु लिमये ने सेठ गोविन्दराव का समर्थन करते हुए कहा कि किसी नेता को आनेवाली पीढ़ी को किसी व्यवस्थान से नहीं बर्बाद चाहिए। बदलते के भी कैबरेवाल गुप्त ने कहा कि यह व्यवस्था गलत है कि जब तक एक भी अहिन्दी भाषी राज्य चाहे अंग्रेजी चकती रहे। प्रमुख-नेता मनोरथ को भी इस विधेयक से संतोष नहीं रहा, उन्होंने संविधान में परिवर्तन करने की माँग करते हुए कहा कि हम केवल हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार नहीं करेंगे।

विधेयक पेश होने के दूसरे दिन ५० से अधिक कांग्रेसी संसद-सदस्यों ने प्रधानमंत्री से अपील की कि उन्हें इस विधेयक पर मतदान करने की छूट दी जाय। दूसरे दिन ५० अन्य कांग्रेसी संसद-सदस्यों ने इस अपील पर

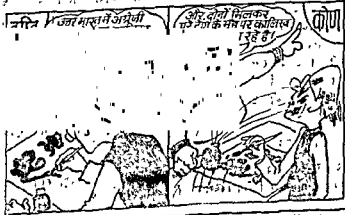
हस्ताक्षर किये। १२ सदस्यों का एक विधेयक भी प्रधानमंत्री ने लिखा। विधेयक ने माँग की कि किसी भी प्रदेश पर हिन्दी या अंग्रेजी अवर्द्धन न लायी जाय। सदस्यों ने कहा कि उनके निर्वाचकों का उन पर दबाव पड़ने लगा है और वे ऐसी स्थिति आ सकती है कि उन्हें अपनी-पार्टी और निर्वाचकों से किसी एक को चुनना पड़ सकता है।

ज्ञात हुआ है कि प्रधानमंत्री ने विधेयक के कुछ सुधारों पर राष्ट्रमंजरी से बात करना स्वीकार कर लिया है और स्वयं राष्ट्रमंजरी भी संसद-सदस्यों से बात करेगी। जिस समय इस विधेयक पर बहस चल रही थी, दिल्ली में ही राष्ट्रगोसावयारी ने हठे हरासर घोषा बलाते हुए अंग्रेजी को राजभाषा बनाने पर वीर दिया था।

इस विधेयक को लेकर अक्षय्य-वर्द्धन तीव्र आन्दोलन और सभाएँ हो रही हैं। २७ नवंबर को ही दिल्ली में हिन्दी के पत्रकारों, संग्राहकों और साहित्यकारों की सभा में उन हिन्दीभाषी संसद-सदस्यों को तीव्र भ्रमणों ने गये, जिन्होंने इस विधेयक का समर्थन किया था।

संसद-सदस्य भी प्रकाशवीर झाजी ने वाराणसी और इलाहाबाद में होनेवाली उभ प्रतिनिधिसभाओं का निष्ठ करते हुए प्रधानमंत्री को एक पत्र में आशंका प्रकट की है कि हिन्दी-भाषी राव्यों पर अंग्रेजी के अनिर्दिष्ट काल तक लादने से व्यापक रोप पैदा होगा जो स्थिति संभावनी सुविध हो जायेगी।

सांताहिक 'दिनमान' ने लिखा है कि यह बात अत्र स्पष्ट हो चुकी है कि यह विधेयक किसीको भी संतुष्ट नहीं कर पायेगा। दैनिक 'दिन्दुस्वाम' और 'भाज' ने इसे अलेक-ताधिक बताया है। दैनिक 'कवभारत राष्ट्र' ने हठे प्रश्न पर जनमत की माँग लेने का सुझाव दिया है। अंग्रेजी-सांताहिक 'मिन्-स्ट्रीम' ने हिन्दी को राजभाषा बनाने के लिए दक्षिणवालों को बोधा और समर्थ देने को कहा है।



श्रीकृष्णदत्त भट्ट, सर्व-सेवा-संघ द्वारा संसार प्रेस, वाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। पता : राजघाट, वाराणसी-१

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक आलोचना, प्रधान आहिसक क्रांति का सन्दर्भवादक—सायन्ता हिरा

सर्वे स्वैवा संधुः का मुखः पञ्च
 सम्पादकः राममूर्ति
 दुकानाः वर्षे : १४
 १५ दिगम्बर, '६७ अंक : ११

इस अंक में
 हिन्दी के हिमाग्री अन्धेर न हो
 —बन्धुवधु नागपन १२२
 शिव से हिन्दी का बन्धित —विनोबा १२३
 धन सह] —कल्याणजी १२४
 क्रमोपयोगी का विशेषण —विनोबा १२५
 कल्याण की शायदगी दिवा १२७
 उल्टी चान्कीति : छतरी का उल्टे
 —बन्धुवधु नागपन १२८
 श्लेषचारिक शोकाव और हिंस की राक्षसीति
 —मनमोहन चौधरी १३०
 विशुद्धान की मुक्ति हिन्दी... १३१
 'अद्वैत और कल'
 —संजय बहादुर साधु १३२
 ४० विमलनाथजी माखोज
 —विशुद्धान बट्टर १३२
 मानव ही भाषण है (प्रविद्या) १३३
 कल्प कल्पय :

कल्पार-कल्परी, नया कल्पान
 भावोत्पन्न के समाप्त, सामूहिक चर्चा
 धारणा की सम्पूर्णता
 पूरा रोड में उरक्युपयोगी का अन्वयन
 कालिक दुष्कः १०-२०
 एक प्रति : २० दिने
 विशेष में : साधारण का-दुष्क-
 १०-२० का १ दोषक का २६ काका
 (द्वार) का-दुष्कः दोषों के बलुसार)
 सर्व-विद्या-संश्लेषक
 राजवद, काशीकी-३
 कीर्तन ६० १२७५

हिन्दी और हिन्दुस्तान

विदेशी भाषा के माध्यम से कर्मों के विनाश को शक्ति बन दिख दे, उनके सामुग्रो पर अभावपत्रक होर दावा दे, उन्हें रट्टु और लकड़की बना दिख दे तथा लौकिक धारो और विचारो के लिए सर्वथा अयोग्य बना दिख दे। इसकी वजह से वे अपनी शिखा बन छुट अपने परिवार के छोटी तथा ब्याम बनता तक पहुँचाने में असमर्थ हो गये है। विदेशी माध्यम से हमारे मातृकी को अपने से पर में दुष्ट विदेशी बना दिख दे। यह सर्वतया शिखा प्रभावी बन सके बहन पाव है। विदेशी माध्यम से हमारी देशी भाषाओं को प्रकृति और विशाल को रोड दिख दे।

अपनी अन्तर्गर्हीय स्मारक की भाषा है, यह कृष्णोक्ति की भाषा है। उल्लेख साहित्यिक स्मारक बहुत समृद्ध है और यह पश्चिमी विचारों और सङ्कति से हमारा परिवेष पराती है। इच्छित इष्टमें से कुछ लौकिक के लिए अयोग्य भाषा का आम आवश्यक है। वे लौकिक राष्ट्रीय स्मारक और अन्तर्गर्हीय कृष्णोक्ति के विनाश तथा हमारे राष्ट्र को पश्चिमी साहित्य, विचार और विज्ञान की उल्लेख समुद्र देनेवाला विभाग बन सक्ती है। यह अपेक्षो का उचित उपयोग होना, यह कि आज अंग्रेजो ने हमारे इन्द्रो से विषय-वैयिष्य साधन इष्ट किया है और मातृभाषाओं को अपने अधिभार के स्तर से हटा दिया है। अपेक्षो को यह जो आध्यात्मिक स्यात मिल गया है, उसका फलन है अंग्रेजो के साथ हमारी अलगता सम्बन्ध। अंग्रेजो के ज्ञान के विना भी भारतीयों के विनाश का उल्लेख से उल्लेख विनाश होना चाहिये। हमारे लड़के और लड़कियों को यह सोचने के लिए प्रोत्साहित करना कि अंग्रेजो के ज्ञान के विना उद्यम छात्रों में प्रेषण नहीं मिल सकता, भारत के पुत्रवध और छात्र बनने कीजिये को दिख करना है। यह इतना सम्मानजनक विचार है, जो हमें हन नहीं किया जा सकता। अंग्रेजो के मोह से मुक्त्य राशन का एक आवश्यक और अनिवार्य तत्व है।

हिन्दुस्तान की धर्मो शक्ति, शिरिको की वजह रोमान विधि के विनाशोपेक्षी यह एक एक को बन्द बन सकता है, लेकिन बहना में यह भारतीयता नहीं हो सकता। उसे देवता भी नहीं चाहिये। करोड़ो लोगों को हमारा आशुकी नहीं बहना चाहिये कि अन्तः-अन्तः शक्ति ही न हो। हिन्दुस्तान में प्रकृति उपमायको को बरतने के लिए नहीं, बरिष्ठ एक आया से अन्तः-अन्तः शक्ति के साथ जगती शक्ति शक्ति का प्रयोजन प्रयोजन किया जा रहा है कि किसी समय करोड़ो लोग हिन्दुस्तान को जपानों की जगती अन्तः में होल सके। और देना कि रज्य है, उन्हें जपानों की वजह से जपान बनकर नहीं रहे जा सकें, इच्छित उन देशकों को उन्हें वर्तमान शील लेनी चाहिये, जो अपने देश-जिन के जपानो अने जपानो शील नहीं लगसके।

१ हिन्दी 'अन्वयन', २-१-२३, १ 'जग इतिहास', २-१-२३, १ 'परिचय लेखक', २३-२-२३

हिन्दी के हिमायती अंधीर न हों

—जयप्रकाश नारायण का वक्तव्य—

अभी तक भाषा के प्रश्न पर मैंने जान-बूझकर मौन साध रखा था, क्योंकि मैं महसूस करता था, और आज भी करता हूँ, कि हम इस विषय के बारे में जितना अधिक कुछ कहेंगे, उतना अधिक यह विषय उत्पन्नपूर्ण बनेगा। और जब इस विषय की चर्चा में राजनीति का प्रवेश हो जाता है तो उलझनों का अंत नहीं रहता। फिर भी सबद में राजभाषा विषयक के वेग होने के बाद एक ऐसा क्षण उपस्थित हुआ है, जब मैं महसूस करता हूँ कि मुझे अपनी आवाज़ उठानी चाहिए, जिन्हीं विवाद में सम्मिलित होने के लिए नहीं, बल्कि एक उत्कृष्ट निवेदन करने के लिए। मैं किसी दल की ओर से नहीं बोलता हूँ, और राष्ट्र के स्वार्थ के अन्वया मेरा अपना कोई स्वार्थ नहीं है। इसलिए मैं आशा करता हूँ कि सभी दलों के नेता मेरी बातों को सुनेंगे।

विचिन्ता में एकता, भारतीय इतिहास और समाज का प्रमुख लक्षण है, यह सब लोगों ने माना है। लेकिन यह भूल जाना खतरनाक होगा कि यह एकता हजारों वर्षों के दौरान इस देश की विभिन्न प्रकार की जातियों में पारस्परिक सहिष्णुता एवं सामं-बन्ध की भावना भरने से चित्रित हुई है। जब भी बन्धपूर्ण एकता कायम करने की कोशिश की गयी, उसका परिणाम हमेशा फूट और विघटन ही हुआ है। आज अगर राष्ट्रीय एकता के नाम पर जनता के अनि-च्छुक वर्गों पर कोई राजभाषा बन्धपूर्ण लाने की कोशिश की गयी तो उठी अनुभव की पुनरावृत्ति होगी।

एक हिन्दी भाषी राष्ट्र का होने के नाते मुझे यह कहने में कोई हिचक नहीं है कि अगर हिन्दी के उन्हासी समर्थक इतने अंधीर नहीं हुए होते और अगर उन्होंने समझते हुआने की प्रक्रिया पर भरपूर किया होता, तथा ऐसे क्षेत्रों में बर्हों के लोग हिन्दी सीखना चाहते हैं, चुपचाप हिन्दी का प्रचार करने की कोशिश

की होती, तो दक्षिण में हिन्दी का विरोध इतना उम्र कभी नहीं होता, जितना कि आज है। सम्भवतः यह प्रक्रिया अनिश्चित रूप से लम्बी जान पड़े, लेकिन योंही गहराई से विचार करने पर यह अल्पतम दील पड़ेगी।

साथ ही अगर हिन्दी के समर्थकों ने अपने उत्साह और जोश को यथासम्भव अधिकाधिक तेजी से हिन्दी को विकसित करने और प्रभावशाली ढंग से तथा पर्याप्त रूप से उसे हिन्दी राज्यों की राजकीय एवं बौद्धिक भाषा बनाने में लगाया होता, तो हिन्दी को राष्ट्रीय स्वीकृति मिलने की सम्भावनाएँ बहुत बढ़ गयी होती। इन मामलों में धार्की प्रगति हुई है, फिर भी वह बहुत ही अपर्याप्त एवं प्रभावहीन है। राष्ट्रीय एकता एवं हिन्दी के हितों की प्रगति के लिए हिन्दी राज्यों को, प्रत्येक विचारार्थी को, समुचित समय पर कोई दूसरी भारतीय भाषा, बेहतर तो यह है कोई दक्षिण भारत की भाषा, सिखाने का प्रयास गभीरतार्पूर्वक करना चाहिए था। अब तक इस दिशा में जो प्रगति हुई है, वह उल्लेखनीय नहीं है।

इन बातों को ध्यान में रखते हुए भारत

सरकार द्वारा संघद में प्रस्तुत राजभाषा-विशेषक का मैं हृदय से स्वागत करता हूँ। जैसा कि एहमन्त्री ने और बाद में प्रधानमंत्री ने उतावा दे, यह विशेषक स्वागतः हो आवश्यक विचारों के बीच समझौता है। वर्तमान परिस्थितियों में, कोई दूसरी चीज सम्भव नहीं थी। प्रसन्नवश, यह विशेषक स्वर्गीय प्रधानमंत्री भी नेरुजी और भी शास्त्रीजी के आग्रहों को स्थापित करने के साथ साथ दक्षिण भारत के लोगों के मानस में, केवल केन्द्रीय सरकार के प्रति नहीं, बल्कि उत्तर भारत के लोगों के प्रति भी जो अधिस्तात बढ़ रहा है, उसे मिगने में बहुत दूर तक सहायक भी होगा। भी ज्ञानापन के विशेषक की यह अतिरिक्त विशेषता उसके पक्ष में एक औरदार सकारिय है।

यह बड़े दुःख की बात है कि कुछ हिन्दी राज्यों में इस विशेषक के विरुद्ध इतना अंधिभ आंदोलन खड़ा हुआ है। इते में हिन्दी की एक कुटुंबा मानना हूँ। राष्ट्रीय एकता के हितों को भी हलसे खति हुई है। अब मैं अत्यन्त नज़तपूर्वक हिन्दी और अहिन्दी राज्यों से अपील करता हूँ कि वे राजभाषा-विशेषक को सम्मिलित रूप से समर्थन प्रदान करें। मैं, राजाजी से भी प्रार्थना करता हूँ कि वे अपना विरोध वापस लें और इस विशेषक को अपने आधीवार्द प्रदान करें।

पटना, ७ १२-६७

खगान्यार जयरी

देश :

४ १२-६७ . ससद के दोनों सदनों ने स्वीकार कर लिया कि पश्चिम बंगाल में घोष मन्त्रि मण्डल का गठन सवैधानिक है।

५ १२-६७ . केन्द्रीय कृषि तथा खाद्य मन्त्री श्री जगजीवनराम ने कहा कि चीनी के भाव फरवरी तक सामान्य हो जायेंगे।

६ १२-६७ . प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा, गांधी ने कहा कि भाषायी आन्दोलन से देश की एकता की रक्षा करना जरूरी है।

७-१२-६७ : श्री जयप्रकाश नारायण, ने अहिन्दी तथा हिन्दी भाषा-भाषी राज्यों से राजभाषा संगोपन विषयक वा समर्थन काने की अपील की।

८-१२-६७ . दोल अमृतका को दिव्ये में हृच्छन्द धूमने की छूट दी गयी।

९-१२-६७ . प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने कहा कि देश के सामने प्रमुख क्षण उत्पादन बढ़ाना तथा आर्थिक विकास की गति में पुनः तेजी लाना है।

विदेश :

५-१२-६७ : श्री लंडा की सरकार ने एक विशेषक स्वीकार किया, जिसके अनुसार केवल तिहरी और तमिः भाषाओं को सिखा के माध्यम के रूप में माना गया है, अंग्रेजी को नहीं।

८-१२-६७ : नेपाल ने भारतीय दूता के अनुप्राव में अपनी दूता का २६ प्रतिशत अमृत्यन कर दिया।

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १५ दिसम्बर, ६७

हिंसा से हिन्दी का महित

-विनोबा का वक्तव्य-

बस्तर में मेव के लिये नहीं बोझा हूँ, लेकिन आम का मेरा कल्पन लाभ मेव के लिये पहुँचाया था, 'देवा में बाराह हूँ।

राजभाषा में अंग्रेजी के स्थान के विषय में जो विवेक पार्लियामेंट के सामने पेश हुआ है, उसके सम्बन्ध में एक बरग्न बन-पकावती ने दिया था।

मुझे मिले, तो उन्होंने यह मुझे पढ़ने के लिये दिया। विषय रतना विश्वादास्यर दोहे और उन्होंने उस वक्तव्य में जो कहा, उसके साथ मैं पूरा सहमत हुआ, यह करने में मुझे सुशील होती है।

उस वक्तव्य का एक शब्द भी बदलने की आवश्यकता मुझे महसूस नहीं हुई। कल्पकथाओं के वचन जो लेकर पटना में कुछ नागसल लोगों ने छुद्रव निकाले।

कल्पकथाओं के गदार है, देव श्रोत्री हैं, हिन्दी के छत्र हैं, इत्यादि नारे लगाये गये-जैसा कि उनका हमेशा का 'कैम्प' होता है।

यह भी कहा कि पटने में कल्पकथाओं की कोई तथा नहीं होने देंगे। कल्पकथाओं के रतने के स्थान पर भी वे पहुँचेंगे, दया करने के लयाल थे।

लेकिन कल्पकथाओं की धरती नहीं थे। मैं चाहिए करना चाहता हूँ कि कल्पकथाओं के वक्तव्य के साथ मैं पूरी तरह सहमत हूँ।

मुझे आशा है कि यह करने के कारण हिन्दीवाले मुझे हिन्दी का हुआमन नहीं समझेंगे।

विषयक बिलकुल गादा था। प्रहित नेहरू और जलबहादुर शास्त्री ने जो वचन दिये थे, उनको पूर्ति करने के लिये विषयक था।

एक प्रश्न के साथ मेरी सम्मति आया है, इसलिए कुछ बातें बहना चाहिए हैं। हिन्दी के विरोध में तामिळनाडु में बच रहे हुए, उनको भयंकरता देवकर मुझे अनजान करने की प्रेरणा हुई, क्योंकि गन्तारामजी के व्यापार पर दिवा फूट निकली है, ऐसा मैंने देखा।

एसाय अनजान के विचार को मेरी बहुत ज्यादा मानसिक अनुकूलता नहीं है, फिर भी भन्दर से अनजान बादा गया, जो

सूदान-यज्ञ : छुकावार्, १५ विहसम्बर, '५६

पॉच दिन तक चला। नन्दाजी उस समय मेरे पास आये और उन्होंने सब प्रदेहों के मुख्य मंत्रियों के साथ चीन से बात की और मेरा विचार उनके सामने रखा। मैंने तीन बातें समने रखी थी : (१) इस प्रश्न को लेकर हिंसा का आश्रय न लिया जाय।

(२) अंग्रेजी न चाहनेवालों पर अंग्रेजी छादी न जाय। (३) हिन्दी न चाहनेवालों पर हिन्दी छादी न जाय।

ये तीन शर्तें उन प्रदेहों के मुख्य मंत्रियों ने मान्य की और मेरा अनजान टूटा।

भारत की जो विरोध परिस्थिति है, उसको न समझने के कारण यह सब होता है। योरप में हर भाषा का एक जगह राष्ट्र बनाया गया है।

रशिया एक बड़ा देश है, उसको छोड़ा जाय तो शरा योरप मिलकर जितना क्षेत्र है उतना भारत का है।

यहाँ १८-२० भाषाएँ चलती हैं। योरप में तो एक राष्ट्र वे दूसरे राष्ट्र में जाने के लिये 'वीजा' और 'पासपोर्ट' लयता है।

यारे योरप का शासन (कामन मार्केट) बनाने की कोशिश हो रही है, लेकिन वह बना नहीं।

विमान में योरप भरकर आगे है, लेकिन यहाँ हमारा शासन का विकास उतना नहीं हुआ।

भारत में यह बिम्बा उठाया है कि १५-१६ विभिन्न देश बनाया है। ऐसी स्थिति में तर्हिष्णुता (टोल्ब्रेन्ड) नहीं रखेंगे तो देश के टुकड़े होने और राष्ट्र से भी आक्रमण हो सकता है।

यह सामान्य धृष्टभूत (कामन सेन्स) की बात है। उन दिनों में तामिळनाडु में हिन्दी विरोधी सगड़े हुए, अब हिन्दीवालों ने ऐसे ही हमारे अंग्रेजी के विरोध में शुरू किये।

अंग्रेजी को-सदभाषा (एंग्लोसिपेटिव) का दर्जा (स्टेट) न दिया जाय, और दिया जाय तो निश्चित विवाद रखी जाय, ऐसा कुछ हिन्दीवालों का करना है।

अहिन्दी लोगों के मत का बहुत ज्यादा विचार नहीं करना चाहिए, यह भी उन्होंने

कहा। लेकिन जिस तरीके से हिन्दीवाले हिन्दी का आग्रह कर रहे हैं, उससे अहिन्दी लोगों को हिन्दी कभी भी स्वीकार (एक्सेप्टेबल) नहीं होगी। यह काम प्रेम से ही होगा।

मैं दक्षिण भारत में घूमा हूँ। परदावा में मेरे व्याख्यान हिन्दी में होते थे और उधका तर्हमा किया जाता था। एक स्थान पर मुझे कहा गया कि यहाँ लोग हिन्दो के सिराफ हैं, तो मैंने उसी विषय पर व्याख्यान दिया और सनशाफि का 'क्रिनेट में जैश्री पारी (रनिंग) होती है, जैसे उच्च और दक्षिण भारत में विचारों के आदान-प्रदान की पारी होती आती है।

उत्तर से दक्षिण में भगवान् बुद्ध और महावीर गये और उन्होंने बरुणा का छन्दे दिया। बाद में दक्षिण से उत्तर की ओर पारी शुरू हुई और आचार्य रामानुज, शुकराचार्य, बड्डामाचार्य, माधवाचार्य, आदि उत्तर भारत में आये और भौकिक के द्वारा उन्होंने प्रचार किया।

व्यपने प्रचार के लिये उन्होंने समुद्र भाषा का आधार बनाया, क्योंकि भारत में वह भाषा सब प्रदेहों में चलती थी। अगर वे अपनी मानुभाषा पर अड़े रहते तो प्रचार नहीं कर सकते।

उसके बाद उत्तर से दूसरी पारी शुरू हुई और रामानुज शरण, गोल्ले म, रानदे, विवेकानन्द आदि लोग दक्षिण में गये। अब दक्षिणवालों की पारी है कि वे अपनी पारी उत्तर में चलाये।

दक्षिण भारत में हर गाँव में मंदिरों के आसपास पवित्रता का वादाकरण है। उनके किन्देना में भी हिन्दी किन्देना की अपेक्षा अधिक पवित्रता दिखायी देती है।

आप लोग अंग्रेजी में प्रयोग हैं तो हिन्दी में प्रयोग बनने में आपको कम तकनीक पारी इकेंगी।" और मैंने देखा कि काफी घाति से लोगों ने मेरी बातें सुनीं।

वे लोग अनुचितसगत (अनरिजिबेबल) नहीं हैं, लेकिन हिन्दीवाले आग्रह रखेंगे तो वे मान्य नहीं। यह अंग्रेजी-विरोधी प्रदर्शन करके हिन्दीवाले नाटक में ही सहजतुर्ति को रहे हैं।

अपनी पदयात्रा में सारे भारत में घूमकर मैंने हिन्दी का जो प्रचार किया है, उतना साधव ही किन्ती दूसरे ने किया होगा।

पूजा रोड (दरभंगा), ८-१२-६७

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ आदि-वालों के आब हिन्दी के एक नये 'साम्राज्यवाद' की रोचक

अब वस !

भारत में अंग्रेजी राज की समाप्ति म लगे हुए लोगों म दो ऐसे थे जिनके मन में स्वतन्त्र भारत के निर्माण और विकास की ऊँची कल्पना और सोचना (ग्रैंड डिजाइन) थी। वे थे गांधीजी और नेहरूजी। गांधीजी तो स्वतन्त्रता देखकर ही चले गये, लेकिन नेहरूजी को स्वतंत्र वय का मोका मिला। उन्हें अशांतिपूर्ण लोकप्रियता, ऊँची आदर्शवादिता, और सुसंगठित सत्ता की विविध शक्ति उपलब्ध थी, बिना ये उन्होंने अपने सभ्य साधन-काल में नये भारत की नींव डाली। उनका नया भारत गांधीजी के नये भारत से मूलतः भिन्न था।

गांधीजी की 'डिजाइन' के तीन पक्ष मुख्य थे। एक था राष्ट्र की भाषा और राष्ट्र के शिक्षण का प्रश्न, दूसरा था विकास के रास्ते पर चलने को तैयार दश के अनुरूप प्रशासन, और तीसरा था नये मूल्यों का नया समाज। गुजामि में इन तीनों प्रश्नों का हल क्या हुआ था। स्वतन्त्र होते ही इनका हल आवश्यक था, ताकि देश का विकास सज्ज और स्वाभाविक हो। और, हल करने में कोई कठिनाई भी नहीं थी। देशा कोई प्रश्न नहीं था, जिसकी विलुप्त रूपरेखा कप्रिभ के प्रस्तावों में मौजूद न रही हो, या गांधीजी ने लिखकर छोड़ी न हो।

राष्ट्र बना, लेकिन उसकी भाषा नहीं बन हुई। हाँ, भाषावार राज्य बन गये। नतीजा यह हुआ कि भाषा राजनीति बन गयी, और देशों ने उसे अपनी सत्ता साधना का विषय बना लिया। शिक्षण का प्रश्न बुलन्द इरादों और मोटी फाइलों म पड़ा रह गया। प्रशासन का सुधार उस वक्त हाथ म लिया गया जब नौकरशाही देश की व्यवस्था अपनी मुट्ठी म कर चुकी थी। और समाज-परिवर्तन की बात तो कभी गमभीरता के साथ की ही नहीं गयी, जैसे उसका कोई महत्त्व ही न हो।

शिक्षण-परिवर्तन, व्यवस्था-परिवर्तन और स्वामित्व परिवर्तन : ये तीन राष्ट्रीय जीवन के ऐसे बुनियादी आधार हैं, जिनके बिना राष्ट्र के विकास के लिए जनता को न प्रेरणा मिल सकती हो, न दिशा, और न शक्ति। सविधान ने स्वायत्त राज्य तो बना दिये, लेकिन उन्हें एक अलग-अलग, सबल और रचनात्मक राष्ट्रीयता के घामे में पिरोनेवाला पागम नहीं बन पाया। जहाँ स्वतन्त्रता की लड़ाई में हारों-नालों 'राष्ट्रीय सेनिक' तैयार हुए थे, वहाँ स्वतन्त्रता के बाद 'राष्ट्रीय नागरिक' का उदय तक नहीं हो सका। हम सब अपनी-अपनी जाति, धर्म, भाषा, दल और राज्य के होकर रह गये, 'भारतीय' नहीं हो सके।

इसके विनाय दूसरा क्या कारण है कि हिन्दीवालों को, गांधी की 'हिन्दुस्तानी', जिसमें अस्वी पीछड़ी हिन्दी तथा केवल बीच पीछड़ी, उर्दू और अन्य देशी भाषाओं के शब्द थे, एक मिली जुपी राष्ट्र-भाषा के रूप म मान्य नहीं हुई। और, क्या कारण है कि कुछ

अधि-दीवारों को आब हिन्दी में एक नये 'साम्राज्यवाद' की रोचक आ रही है, और कहा जा रहा है कि अगर अंग्रेजी न रही तो देश दुकड़ों में टूट जायगा ! दुकड़ों की बन्द दिमाग में है, और जब देश का दिमाग एक नहीं है, तो दुकड़ों की बात क्यों न करी जाय !

हिन्दी किसलिए ? एकता और राष्ट्रीयता के लिए। अंग्रेजी किसलिए ? आधुनिकता और अलग-अलग के लिए। निश्चित का किन्ना मूर न्यय्य है कि जब देश के लिए चिन्ता हतनी न्यय्यक है तो देश की स्थिति हतनी चिन्तावत्तक हो गयी हो !

शिक्षण आयोग के बाद शिक्षण के क्षेत्र में और सवद के सामने जो विषयक पेश हैं, उसके कारण जो स्थिति पैदा हो रही है वह कुछ इस प्रकार की है। पूरा शिक्षण, नीचे से ऊपर तक, मातृभाषा और क्षेत्रीय भाषा में होगा। सरकारी व्यवहार हिन्दी और अंग्रेजी दोनों में होगा। गैर-सरकारी व्यवहार सामान्य जनता के स्तर पर हिन्दी में होगा, तथा विशिष्ट लोगों के स्तर पर अंग्रेजी में। इनमें शिक्षण तथा सरकारी व्यवहार सरकार के निर्णय से चलेंगे, लेकिन जनता का गैर-सरकारी व्यवहार अपने दम से चलाता रहेगा। धर्म और व्यापार आदि के लिए लोग आवश्यकता के अनुसार भाषा बना लेते हैं। कठिनाई शिक्षण, धर्म, व्यापार आदि के लिए तबनी नहीं है, जितनी कानून, नौकरी और बड़े अलबारों के लिए है। संघ के सामने प्रस्तुत विषयक हिन्दी राज्यों की हिन्दी में हस्ताक्षर नहीं करता। हाँ, कानून द्वारा अहिन्दी राज्यों से हिन्दी नहीं मनवाता। अब तक एक राज्य भी अंग्रेजी चाहेगा तब तक अंग्रेजी रहेगी। हिन्दीवाले चाहते हैं कि अभी ही तय किया जाय कि अंग्रेजी को दूसरी राजभाषा के रूप म कर तक रखा जायगा !

आखिर, कानून द्वारा हिन्दी को मनवाने और अंग्रेजी को हटाने का आग्रह क्यों है ? हिन्दीवालों की सख्ता अधिक है, इसलिए ? या इसलिए कि अंग्रेजी विदेशी भाषा है ? ये दोनों बातें चलेबाथी नहीं हैं। अगर सख्ता अपने में कोई शक्ति है तो उसे कानून और सरकारों बन्धुकी बलरत क्यों होनी चाहिए ? और अगर अंग्रेजी विदेशी भाषा है तो उसका मुकाबिला 'ल्लदेशी' की शक्ति से क्यों नरी रोता ?

हता साफ है कि अगर एक बार शिक्षण में क्षेत्रीय भाषाएँ आ जायँ, और राज्य सरकारें राज काज अपनी-अपनी भाषा में चलाने लग जायँ तो अंग्रेजी के लिए बहुत बगल नहीं रह जायेगी। अंग्रेजी के स्थान पर क्षेत्रीय भाषाओं के लिए रास्ता साफ हा रहा है। फिर यह आग्रह क्यों हो कि अंग्रेजी जाये तो हिन्दी भाये ? हिन्दी के लिए आग्रह अंग्रेजी के लिए आग्रह पैदा कर रहा है। राजनीति ने दोनों को लेकर दुरामह पैदा कर दिया है। अब हिन्द की खतिर हिन्दी को चाहिए कि अंग्रेजी का विरोध बन्द कर दे। हिन्दी कानून की दीवार खरी करना छोड़ देंगी तो उसके लिए छागों के दिनों के दरवाजे बाँधी खुल जायँगे।

हिन्दी विचार का प्रश्न नहीं रह गयी है। विचार ही नहीं, वह उभरे कहीं भागे बड़कर हँसपथर का विषय बन गयी है। हिन्दी के नाम में चलाया गया पथर हिन्द की आत्मा को आहत कर रहा है। बहुत हो सुभ—अब वस !

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १५ दिसम्बर, '६०

ग्रामोद्योगों का नियोजन

नीचे के लक्ष्य को न्यूनतम (Minimum) रूप में लेना, एक ही मुद्दे अधिक चिन्ता है। आज उद्योग दिखाने के लिए सन् १९८५ को तारीख बतायी जाती है। यह नहीं चलेगा। "उद्योगों की कल्पना, उद्योगों का काम" — दुष्कर का पद है, अर्थात् इनके बारे में तो सोच ही मदद मिलनी चाहिए, उद्योग उद्योग नहीं चलेगा। राष्ट्रीय न्यूनतम (National minimum) की बात इनके बारे में बचाने की बात है, उद्योग देर लगाना निश्चयता है। यह हमारी हर उद्योग को देखने की दृष्टि है।

सरकार के कर्तव्यों में लोगों को काम देना और शिक्षा, दोनों आता है। काम नहीं दे सकते तो खाना तो खिलाना चाहिए। पर हमें यह भी है कि उद्योग शिक्षाने का उद्योग इतना विकसित है, कि हर हाल में काम देना ही एकमात्र रास्ता है। लादी ग्रामोद्योगों को उद्योग के रखना चाहिए। यदि शिक्षाने वाली बाल में जो लक्ष्य होना, उद्योग मुकामों में लादी-ग्रामोद्योग पर सरकार का लक्ष्य काम होता है, तो लादी ग्रामोद्योग को ठीक मानना चाहिए।

लादी ग्रामोद्योग के काम में अद्यतन ही तो उद्योग समाप्त करना चाहिए। पूरा जो भी वह मजदूर होना चाहिए। एक मासिक के साथ में दूध मासिक, टीका मासिक, देखी मजदूरी को छोड़ने न चले। नहीं तो पानी का अधिक भाग खेत के बचाव नीचे की नाश में ही चला जाता है। बेकारी को काम देने में लादी-ग्रामोद्योग को छोड़कर और भी जो दूसरे उद्योग सरकार के पास हैं, वे सभी काम में लाने चाहिए। यहाँ तक कि बीसी बनाने के काम मिले तो उद्योग भी जियोप (Reiduary) माना जाय तो भी लादी का रचना माना जायगा। चारे हमने विचारों को अत्यन्त बढ़ायी हो तो भी देश की हालत में आज बर्फील का रकबा कम ही पड़ेगा। एक हजार एक से घोटो हुई भारत की बर्फील में इतिहास लादी डाक्टर बनाना फलक लेने का भूशान-व्यय। शुक्रवार, १५ दिसम्बर, '६७

• विनोबा •

लोग कहेंगे तो बर्फील की कल्पना ही होगी। इसलिए अन्ततः बर्फील पड़ेगी ही, इच्छा अथवा रोगा कि लेवी के अतिरिक्त दूसरे उद्योगों के आधार बढ़ाने होंगे। जो भी साल-वारिक उपयोग में आये उसका स्वागत ही, पर गाँव में ही चले फले। गाँववालों को गाँव छोड़कर जाना न पड़े, ऐसे उद्योगों को बढ़ाना मिलना चाहिए। मैं तो अनुशासिक के विचार की प्रतीक्षा कर रहा हूँ।

मुझे बताया गया कि अनुशासिक विवेचित हो सकते हैं। इच्छे मुझे बड़ी आशा है। एक गाँव द्वारा दूसरे गाँवों का शोषण न होने पाये तो किसी भी साल-वारिक का ग्रामोद्योग में स्वागत है। मैं विज्ञान को बढ़ाना चाहता हूँ। पर उसे बढ़ाने में विज्ञान को जो दिशा कात्र (राजनीतिक) दे रहे हैं, वही दिशा विज्ञान को बढ़ाने तो सर्वथा आ सकता है। यह गलत है। दिया देने का

वेकारी और सरकारी विमोदारी विकसित चिन्तन, किन्तु नकल नहीं। लादी : अकादी सिद्धान्त और सीमांकन।

काम तो आध्यात्मिकता की कल्पना ही होगी। विज्ञान में मुझे बहुत विश्वास है। मैं तो बहुत विचार से सोचनेवाला हूँ। मजल, कन्ट्र पर बाने की वेकारी में मानव को लगा है, उद्योग मेरी बड़ी आशा है। परमात्मा की वृष्टि में अन्त नहीं आता, पर हमारी इच्छाओं का अन्त है। हमारे यहाँ ग्रामी को ५ इन्चियाँ ही शाने प्राणी अगर ही तो उनके शाने वे हमारी योग्य हैं बढ़नी।

मैं जब ग्रामदान की बात करता हूँ तो भी अन्त "जब जगत्" का बोधवा हूँ। उद्योग चित्त विचार को हमारे यहाँ गुंदाप ही नहीं है। इसलिए मैं कहता हूँ कि कोई भी साल-वारिक गाँव में आ सकता है। उद्योग हमें विरोध नहीं है। पर यह बात स्पष्ट-लेनी चाहिए कि लेवी, स्थिति भाव है, उद्योग सरकार का लक्ष्य लादी-ग्रामोद्योग के क्षेत्र में पड़ना

नहीं, बढ़ना ही। गाँव में लेवीवाले सभी लोग शोष और कुल लोग पूरा समय उद्योगों में लगायेंगे, यह मैं मानता हूँ। हमको भी भी मदद करनी हो यह दिखानी जानी चाहिए। चाँडित में सन् १९९३ में पंडित नेहरू मुझे मिलने आये, तो ग्रामोद्योग की बात उन्होंने पूछी। मैंने उनसे कहा कि बर्फील का के विकसित चिन्तन में मुझे कोई उज्र नहीं है, पर जब तक यह विकासशील स्थिति हमारे देश में जाय नहीं की जा पावी, इस क्षेत्र की अवस्था में गाँववालों की मदद करने के लिए ग्रामोद्योगों की उन्नत से हमारा नहीं किया जा सकता। इस क्षेत्र के काम की अवधि ५० साल के कम नहीं है। मेरी यह बात नेहरूजी समझ गये। पर यह बात मानने पर भी उनका हल यह रहा कि बल्ल-से-बल्ल उन्नत करना है। बड़े शोषों के मुकामों में भारत आये, यह मजल है। १०-१२ साल यही बढ़नी है। पर बाद में उनके ध्यान में यह बात आयी कि पचास

सालक शासिक का सवाल... विज्ञान की विकसित चिन्तन, किन्तु नकल नहीं। लादी : अकादी सिद्धान्त और सीमांकन।

अर्द्धोद्योगी और वेरोद्योगी के बारे में पत्र विचार करते हैं तो मेरा मानना है कि सरकार के पास जो भी साधन हैं, वे सब काम में लेने पर भी बेकारी बढ़ी है और बढ़ रही है। ऐसी स्थिति में सरकार लादी को जोष नहीं सकती। हमने एक रात की लादी को "अकादी लादी" का नाम दिया है। यह मेरी अपनी लादी की दृष्टि पर नहीं है, पर सरकार की दृष्टि से यह प्रकार की राहल की लादी को विमोदारी उद्योग उद्योगों होगी। बह योगों को काम नहीं दिखाने का उद्योग, तो कुल-कुल साधन दिखाने जाने अत्यन्त आवश्यक है। नावा की लादी की

दृष्टि यह नहीं है। वह तो चाहता है ग्राम स्वराज्य की खादी में भी सरकार को मदद देनी होगी। गाँव घेर पर खड़ा हो, इसके लिए सरकार से ग्रामसभा को निम्न बातों में मदद मित्रनी चाहिए : (१) विकास, (२) प्रतिरक्षा, (३) राहत कार्य।

(अ) क्लार्क सिलाना

(आ) चरखा देना (किन्तु)

(इ) पूँजी की व्यवस्था

(ई) बुनाई मुफ्त देना

औजारों के बारे में मैंने कहा कि अम्बर उह तकिए का गाँव के लिए उपयोगी नहीं है। एक तकिएवाला अम्बर बनाने को मैं कहता हूँ। उसमें मादूली चरखे से पीने दुगना धत होगा और बहुत मजबूत होगा। इससे पुराने चरखे को बदलना चाहिए। बुनाने को बाना है, उसमें तीन चार साल लगेंगे। कुछ साधन परेश होंगे, कुछ गाँव के। घर घर में एक तकिएवाला चरखा पहुँचाना चाहिए और गाँव-गाँव में उह तकिएवाला। पूनी गाँव का उद्योग हो, वहाँ से वह गाँव में हर घर को दी जाय। जल्दी ही यह परिवर्तन हो। भी टेकर भार्ने ने कहा कि इस काम के लिए दस साल का समय लगेगा। उसमें कोशिश बरतनी चाहिए, यही मेरा अलुरोध है। दूसरे भी प्रथमे दस लाख उद्योग के साथ हैं—घोषी, रगरेव, मुनकर, बदई, सभी उद्योग इसके साथ आते हैं।

जो भी मशीनें आप गाँवों में दालिख करें, उसकी मरम्मत वहाँ गाँव में हो सक्ता चाहिए। मुनकर अथिक स्थानों में पैदा किये जायें। बुनाई के लिए दूर धत ले बाना पड़े, ऐसी स्थिति नहीं होनी चाहिए। मेरी दृष्टि से मुफ्त बुनाई की बात कायम की बात है, वह आरिजी बात नहीं है, बल्कि एक स्वाभाविक सुरक्षा के तौर पर रथायी कदम है। इस धन्दे को इतनी सहायता आपको देनी ही होगी। जैसे तालीम में आप बहुत ही बातें सिलते हैं, उनमें सब बातें आते चरखकर विद्यार्थी के काम में नहीं आती, पर वे होती हैं ऐसी जो उपयोगी सिद्ध हो सकी हैं। इन्स्पेक्ट में सबको तैरना, नाव चलाना सिखाते हैं, क्योंकि चांगी और समुद्र होने से

उसकी आवश्यकता पड़ सकती है। उसी तरह भारत के लिए सबको कलाई आनी चाहिए और हते शिक्षण में दालिख करना चाहिए। अगर भारत में लड़ाई शुरू हो जाय तो हम गिरिगो अहमशवाद आदि बड़े बड़े घड़ों में, वहाँ उद्योगों का के द्रीयकरण है, वहाँ उद्योगों को धति पहुँचनी है। उससे बचाव रहे और हमें नये रहने की नौखन न आने, उसके लिए अनाज और काड़ा गाँव गाँव में मिले, यह होना चाहिए। मुझे नेहरूजी बताते थे कि चीन के अदरुनी भाग में जो ग्रामो योग चल्ते रहे, इसीसे वह इतने दिनों तक लड़ सका। इसलिए प्रतिरक्षा काम के रूप में खादी ग्रामोयोग जरूरी है, यह समय में आ सकना चाहिए। इसलिए मेरा राय मत है कि हमारे देश में जो स्थिति है उसमें

दूर, अर बढ़ना चाहिए। मैंने के परते भारत में दूध का औसत ७ ऑंस प्रति व्यक्ति था, पर आज हमारा औसत ५ ऑंस ही है। कुछ प्रान्तों में तो यह मात्रा २ ऑंस ही है, जैसे बंगाल आदि में। इसलिए सिर्फ जीवन स्तर बढ़ाने से काम न चलेगा, विवेक करना होगा कि किन चीजों को बढ़ाना जाय और किनको प्रायमिकता दी जाय।

उद्योगों के बारे में मेरा सिद्धान्त है कि जो उद्योग बुनियादी आवश्यकताएँ पूरी करते हैं, जिनका कच्चा माल गाँव में उपलब्ध है, उनका परका मास गाँव में गाँववालों द्वारा बनना चाहिए। ऐसा धीमाधन ठीक होना चाहिए। अपनी आवश्यकता की पूर्ति के बाद बना मास बाहर चलेगा। पर अभी तक जो उद्योग बढ़े हैं उन्ही गाँव के एते

कैसा अर्थशास्त्र ?

मात्र अर्थशास्त्र नामक कौनसा शास्त्र है, यह मैं समझ नहीं पाया। गणित की तरह दस काल निरपेक्ष समानता सत्य (पूर्ण विज्ञान अर्थशास्त्र) है, पैसा में नहीं समझा हूँ।

प्रति में साधते हैं, जो मानते हैं कि अमराका का विश्व भारत में लाया जा सकता है। जब आपकी दृष्ट है कि अमराका में ४०० साल का जुगार भी नहीं है और भारत के मुद्राबलें यहाँ जमीन ३२ गुनी हैं। दुनिया का आयात माना समझ पाय है। प्य में अन्न मिहाल हम पर लागू किये जायें यह गलत होगा। बहुत अर्थव्यवस्था में कामता में बहुत हाथी है, पर हाना जो चाहिए यह कि अनाज बढ़े, मकान बढ़े। यह हा नहीं रहा, इसलिए अरा ममम में यह (स्वच्छिन्न अर्थ व्यवस्था) है। हम सारे में विचार किया जाना चाहिए।—विनाशा

कलाई शिक्षा में दालिख की जाय, जिससे मोका आने पर नग न रहना पड़े।

स्वाजाय की खादीमाल काम आप दर भुग जिते में कर सकते हैं। आपने बाना होगा कि यहाँ ५१ प्रतिशत घमोन के मालिकों और ७५ प्रतिशत वे ज्यादा लोगों के रक्षा धर ग्रामदान के पक्ष में आ गये हैं। अब इस क्षेत्र के विकास न कम बन हा, इसक लिए मेरी प्राथमिकताएँ निम्न हैं

- (१) अनाज, (२) वज, (३) पर,
- (४) काम करने के औजार, (५) आरोग्य,
- (६) टालीम, (७) मनोरंजन के साधन।

मुझे सवाल पूछा जाता है कि आप सर बढ़ाने के पक्ष में हैं कि पथने के। आपन-सर को बढ़ाने में यह विवेक करना होगा कि किस चीज का सर बढ़ाना उचित है, किसका पन्ना उचित होगा। विगरेट का सर बनना चाहिए,

उद्योगों को पकड़ दिया है—देती पावकमिप, चीनी मिर्च। इनसे गाँव के कच्चे माल का परका बनाने का काम हमने छोड़ा अन्न। नतीजा यह होता है कि मादगे पर हा अकमप आये—एक परदेय का मास था, दूसरे गाँव के बेरोजगार धर्मों का। इसलिए गाँव को उनके कल्प मास के पये देने का किए सुरक्षित करें और मादर में बंध पकें, जिनसे परदास का मास बाना एक मास। बड़े उद्योग विदुष्य से बानबान निवृत्त के मास का शकें। (स प्रे स)

नयी तालीम

शिक्षा द्वारा समाज-परिवर्तन की

मंथनशास्त्र

मासिक पत्रिका

संख्याना पन्ना : उह २०

सब-मेवा-मप-पत्रिका, वाण्यकी-१

उलझी राजनीति : खतरों का संकेत

हरियाणा और प० पगाल की हाल की घटनाओं से जो सैन्यात्मक संकेत देना के सामने उपस्थित हुआ है, उसके मूल में दो गहरी कमियाँ दिखाई दे रही हैं एक, संविधान के सम्बन्धित मामलों की स्पष्टता का अभाव, और दूसरी, राजनैतिक आचार मर्यादा का अभाव। यह सही है कि प्रत्येक पटना के बारे में काफी चर्चा हुई, काफी लिखा गया, लेकिन उन घटनाओं के सही मूल का विचार शायद ही किया गया—न केवल नैतिकता की दृष्टि से, बल्कि प्रजातन्त्र के मौलिक सिद्धान्तों की दृष्टि से भी। जैसे, राज्यपाल की, या मुख्यमंत्री की, या विधान सभा के अध्यक्ष की कार्यवाहियों को लेकर इस बारे में गरमागरम चर्चा तो बहुत ही गयी कि वे वैधानिक भी या नहीं, लेकिन किसीको इस बात की जिता नहीं हुई कि बहुमत से अर्थात् प्रजातन्त्र के बुनियादी तत्व के आधार पर इस विषय में निर्णय लिया जाय। इसमें कोई शक नहीं कि संविधान के तत्काली सुदौ का महत्व बल्लू है, लेकिन उलझे भी अधिक महत्व इस बात का है कि समय रहते, बहुमत रखनेवाले प्रतिनिधियों को काम करने का अवसर दिया जाय, इसके लिए, शासन पर उनके अधिकार को मान्यता दी जाय। ऐसा न करने, संविधान की धार के बाल की खाल उदारते बैठना और निर्णय के मार्ग में बाधा उपस्थित करना लोकतन्त्र के लिए घातक है और जनता की अवहेलना है। प० पगाल में, लोकतन्त्र की दामी भरनेवालों का यह त्वरित दायित्व है कि विधान सभा को इस मामले पर निर्णय देते हैं। इस दायित्व को, राज्यपाल की, या विधान सभा के अध्यक्ष की या पिछले या वर्तमान मुख्यमंत्री की सेवा निरूत्ता सिद्ध करने, आदि प्रश्नों से बद्धकर प्रधानता दी जानी चाहिए।

यहाँ तक प० पगाल और हरियाणा के राज्यपालों की कार्यवाही का प्रश्न है, चूँकि संविधान की तत्काली धारा अस्पष्ट है, इसलिए स्पष्ट ही है कि उस धारा की कई

तरह से व्याख्याएँ की जायेंगी और उन व्याख्याओं में परस्पर विरोध होगा। प्रत्येक व्यक्ति अपने दलित की दृष्टि से उसका भाव्य करेगा।

पूर्णतया तटस्थ दृष्टि से किये गये भावों में भी कई की गुंजाइश है, जब कि मूल अधिकारों के प्रश्न को लेकर सुप्रीम कोर्ट ने हाल में ही अपने ही एक फैसले को उलट दिया है। ऐसी स्थिति में मेरे जैसे एक पत्राशीत व्यक्तियों के लिए किसी बटना पर अपना निर्णय देना हितकिसाहट की ही बात होगी। फिर भी दो बातें मेरी दृष्टि में सफ हैं। एक, हाल के मतविरोधों को लेकर संविधान की जो अस्पष्टता और उलझाव सामने आया है, उसे संघटन को दूर करना चाहिए। दूसरी, संविधान में ऐसी कोई व्यवस्था होनी चाहिए, जिससे जन प्रतिनिधियों

जयप्रकाश नारायण

को अपने शासन करने के अधिकार का दावा करने में भाव की लचकरी दूर हो।

पहली बात के लिए मेरे दो सुझाव हैं : एक, राज्य के प्रधान को राष्ट्रपति अपने हाथ में लें, यह धारा शायद अवरुध रहे, लेकिन यह अधिक स्पष्ट कर दिया जाय कि किन्तु परिस्थितियों में वे उसे अपने हाथ में लें। दूसरा, संविधान में हटना सुधार करना चाहिए कि जन राज्यपाल को यह विश्वास हो जाय कि वर्तमान मुख्यमंत्री बहुमत को चुके हैं, तब उन्हें राज्यपाल परामर्श दे कि वे विधान सभा को अपने बहुमत का विश्वास दिला दें, और यदि मुख्यमंत्री इस बात से इनकार करते हैं, तो स्वयं राज्यपाल को यह अधिकार और दायित्व रहे कि वे बलात्क का निर्णय विधान-सभा में कर सकें। इससे बहुमत को लोचने हुए मतिमण्डल के बने रहने का भरपूर होने के अलावा राज्यपाल द्वारा मति मण्डल को ही बरखाए कर देने की यह अवधिजित और अस्वस्थ परभाव की घणायना भी टल सकेगी।

दूसरी बात के बारे में, मुझे यह उचित मालूम पड़ता है कि विधान सभा के बहुमत वाले प्रतिनिधियों को यह वैधानिक अधिकार दिया जाय कि वे आवश्यकता समझने पर विधान सभा के अध्यक्ष को स्थिति स्पष्ट करने के लिए कह सकें और अपनी हव माँग पर प्यान देने के लिए अध्यक्ष पर दबाव डाल सकें।

पिछले चुनाव के बाद यह अपेक्षा निर्माण हुई थी कि लोक-न्यायकार का स्तर ऊँचा उठेगा। इस अपेक्षा के दो कारण थे एक, कांग्रेस की जो करारी हार हुई, उसके आधा थी कि कमिश्नर सबक सोलोगी, और दूसरा, गैर कांग्रेसी पक्षों से आशा थी कि वे कांग्रेस की गलतियों से सावधान होंगे, और अपने न्यायकार का उच्च स्तर कायम करेंगे। लेकिन तुर्क की बात है कि वे अपेक्षाएँ न्यून सिद्ध हुईं। ऐसा मालूम होता है कि इन पक्षों को, जिनमें कांग्रेस भी है, सलाह इत्यादि करने के लिए लुप्तकर अपेक्षापूर्वक संपर्क करने के अलावा कोई दूसरा माध्यमपूर्ण काम है नहीं। क्या कांग्रेस और क्या गैर कांग्रेसी पक्ष, कबका प्रमुख काम एक ही है मया है कि विरोधी पक्ष को हर तरीके से विधायन बाध, चाहे इसके बिल्कुल राजनैतिक दृष्टि से अनीतिपूर्ण प्रश्न तरीकों और गैरविधायक दायरा नष्ट हारों को ही बचो न बनयाना पड़े। अब समय आ गया है कि देश में अपने प्रयास और लोकतन्त्र के फलनाग के लिए सभी पक्षों को साथ बैठना चाहिए और इस दिन के उपाय लोचने ही चाहिए। इस संघर्ष में मुख्य चुनाव आयोग (चीफ एलेक्शन कमिश्नर) ने हाल में जो बातें कही हैं, उन पर बौद्ध और गार्हस्थ्य से विचार किया जाना चाहिए।

दूसरा महत्त्वपूर्ण विषय जो भाव के लक्ष्य में सामने आया है, यह है कि कानून पर बलात्क-बलात्क अत्याचारों से निवारण करने का प्रयत्न करने होगा है। यह सिद्ध करने के लिए आवश्यक है कि राज्यपालों को गैर-विधानिक कार्य करने की शक्ति कमिश्नर की शक्ति कायम कर दी है, फिर भी यह उलझाव कुछ भी दर्शाए नहीं करती। यह मनायावामी को

मूलान-वृद्ध : शुक्रवार, १५ दिसम्बर, ६०

औपचारिक लोकतंत्र और हिंसा की राजनीति

प० बंगाल के राज्यपाल द्वारा संयुक्त मोर्चे को सरकार बरखाए जाने के लिए और डा० प्रफुल्लचन्द्र घोष के नेतृत्व में नयी सरकार को उत्तारदल बनाने के कारण एक बहुत ही शक्तिशाली पैदा कर दी गयी है। जब संयुक्त मोर्चा-मंत्रिमण्डल के समर्थकों का एक वाद्य बजा हिंसा उभरे अलग हो गया और इस स्थिति में विधान-सभा को बैठक खोलने की जरूरत सामने आयी तो संयुक्त मोर्चा-मंत्रिमण्डल ने इस लोकतांत्रिक परंपरा के प्रति नही के बराबर आदर्शवाद दिखाया। लेकिन, अचानक संयुक्त मोर्चा-मंत्रिमण्डल को बरखाए कर देना अलदराजी और अदूरदर्शिता का काम था। खास तौर से ऐसे हालात में, जब कि यह बात मातृम थी कि उसे उलटने की कोशिशें हुई थीं और हर दंग के ऐसे नाशकार तरीके अपनाये गये थे, विशेष्य आम लोगों की उल्लेखना बहुत बढ़ गयी थी।

राज्यपाल के कार्य यों तो बड़े स्वामिका-से लगे, लेकिन उनके पीछे राजनीतिक मन्तव्य थे और इसीलिए उनका विरोध होता ही था। दल परिवर्तन आदि के राजनैतिक जीवन की एक आम बात हो गयी है और हरेक राज-

नीतिक दल ने इस अनैतिक व्यवहार को उस हद तक बढ़ा दिया है, जब तक कि इसका नतीजा उनके ही खिलाफ न गया। इस व्यवहार का सबसे निम्ननीय पहलू यह है कि बिना लोगों के विचारों को चुनकर भेजा, उनके प्रति वह योद्धा भी आदर नहीं रखता। अपने कोर्टों को दिये गये वादों को वह तोड़ता है और वे बेचारा जनकर इस अयोग्य-नीय शक्ति के दशक बने रहते हैं।

इसमें कोई शक नहीं है कि लोग इस

मनमोहन चौधरी, अध्यक्ष, सर्व सेवा संघ

तरफ की बातों से ऊबते जा रहे हैं और यह आशा करना कि पश्चिम बंगाल की अत्यन्त वैतन्य, और सशक्त बनना इसके छक्कर कजल कर लेगी, एक निरर्थक बात है। हाँ, यह सही है कि हमारे मुकाम एक ऐसा तबका है, जिसका औपचारिक लोकतंत्र में नाम भर का विधास है। और वह इस लोकतंत्र का इस्तेमाल इसीको तोड़ने का काम में करना चाहता है। लेकिन लोकतंत्र के दम भरनेवाले हिमाचलियों के गलत कामों ने ऐसे

तबके के लोगों के हाथ और मजबूत कर दिये हैं।

डा० घोष ने अपने आपको संयुक्त मोर्चे से अलग होने के कारणों को स्पष्ट करते हुए गांधीवाद और अहिंसा का प्रश्न उठाया है। यह कहीं अच्छा हुआ होता कि उन्होंने एक राजनीति के समर्थन में एक दूसरे ही स्तर पर इस विचारों को न पथीरा होना।

जो लोग धार्मिकतापूर्ण उपायों में विश्वास रखते हैं, उनके लिए यह गरीब जनमानस का समय है। आम लोग अपनी तकलीफों, तपियों और पीशा लाने के मुझे दले के चपटे निरर्थक हिंसा को तबक दले रहे हैं। इस स्थिति से बाहर निकलने का रास्ता यह है कि सामाजिक उत्पीड़न का कोई धार्मिक तरीका ढूँढा जाए। इस देश में कानून और व्यवस्था लागू करने की कोशिश के साथ धार्मिक को अलग, धार्मिक का रास्ता नहीं है, क्योंकि कानून और व्यवस्था के नाम पर यहाँ सबसे घटिया दर्जे की अवमानता और गैर इस्तेमाल बरकार रखा जाता है। इस बात की सत्यता ही राजनीति होगी कि अधिकारी कानून और व्यवस्था लागू करने के वाकिल तरीकों के बाहर अपना कदम न ले जायें।

आज की परिस्थिति में धार्मिक में विश्वास रखनेवालों का सबसे बड़ा कर्तव्य यह है कि वे मुकाम के लोगों को हिंसा की लड़ाई और निरर्थकता की बात समझावें। हाल ही में भी गयी ५८ घंटे की आम हड़ताल का नेतृत्व प्रभाव नहीं अधिक हुआ होता, अगर उठक दौरान हिंसा की छिटकूट घटनाएँ न हुई होती। आनेवाले दिनों के लिए और ज्यादा बड़े प्रदर्शनों की तैयारियों को था रही है, और नैतिक के लोकतंत्र के समर्थन के लिए है, न कि उसे उलटने के लिए, इसलिए यह और भी बुरादा बकरी है कि हर चीज पर आम लोगों की तरफ से धार्मिक कारण रखी जाए। बिना सभा को आम तरीके से काम करने का मौका देना दोष और भी बुराक पैदा है, उनका हक धार्मिकतापूर्ण और धार्मिक तरीके से ढूँढा जाए।

कलकत्ता

२०-११-६७

अदूरदर्शिता का काम...निम्ननीय पहलू...लोकतंत्र का इस्तेमाल : लोकतंत्र को तोड़ने के लिए...गाहरी छानबीन का समय...हिंसा की निरर्थकता...पहला फलतय

→ और मुकाम नहीं तक ही छोड़ा। हर कोई जानता है कि जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में इस राज्य की वैसी निराशापूर्वी स्थिति है, इसकी आवश्यकताएँ क्रिंतनी थीं और बिना समास्याओं का सामना करना अभी बाकी है, वे क्रिंतनी भवनाक हैं। फिर भी बड़े खेद की बात है कि सरकार के सदस्य कैसे हुए पहिले को उठाने के लिए कन्वेन्शन-मिशन के बजाय, एक दूसरे का विरोध करने और उदात्त करने में अपनी शक्ति का उपयोग कर रहे हैं। अन्य बातों के साथ-

साथ इस स्थिति का भी प्रशासन पर भीषण उपद्रव पड़ रहा है। इसलिए मुकामपरी तथा उनके साथियों को मैं पूरी राक्षसता के साथ यह सलाह देना चाहता हूँ कि वे राज्य तथा अच्छी सरकार के हित में दूरक अपने आपको व्यवस्थित कर लें, और प्रत्युत समास्याओं का सामना करने के लिए मिल-जुलकर प्रयत्न करें। अगर वे अशक्त होते हैं तो पिछली सरकार का भाग्य ही उनकी किरात में भी लिखा है।

सिद्धांतद्वारा, २-१२-६७

‘अहिंसा और सत्य’

आधुनिक भारतीय इतिहास में गांधीजी की देन अत्यंत और अप्रतिम है। उन्होंने भारतीय जीवन के प्रत्येक अंग को स्वयं किया है। धर्म, शिक्षा, राजनीति, अर्थनीति, सार्वजनिक सदाचरण—प्रत्येक विषय में उनके अपने मौलिक विचार हैं। उन्होंने हमें अपने पैरों पर खड़ा किया, आजादी के दरवाजे तक पहुंचाया। एक राष्ट्र की जिन्दगी में यह बहुत बड़ी बात है, परन्तु गांधीजी ने इससे भी बड़ी जो बात हमें सिखायी वह ही इन्सान का इन्सान बनना। उन्होंने हमें बताया कि मानवता के मौलिक मूल्यों और गुणों से रहित होकर जीना जीना नहीं है, वही मृत्यु है। उन्होंने हमें बताया कि मानव-संस्कृति हिंसा, द्वेष, असत्य, अनैतिक और विनाशिता पर नहीं टिक सकती, वह केवल प्रेम पर, एक दूसरे के मंगल पर, समाज में सबके उदय पर ही टिक सकती है। हिंसा नहीं, अहिंसा मनुष्य की मूल प्रकृति है और असत्य नहीं, सत्य ही उसका धर्म है, गतव्य है।

इस समय हमें अहिंसा छोड़कर हिंसा का उपयोग करना पड़ रहा है। परिस्थिति ऐसी विषम थी, जिसमें इधरियों का उठाना आवश्यक हो गया। दो देशों के बीच में यदि तनाव हो और एक देश दूसरे पर आक्रमण करे तो अभी तक कोई अहिंसात्मक माधन ऐसा नहीं बना है, जिसका उपयोग किया जा सके। गांधीजी इस पर विचार कर रहे थे और सम्भव है, वे इसका कोई उपाय निकालते। फिर भी युद्ध करते हुए भी हमारी अहिंसात्मक वृत्ति बाधित रहनी चाहिए। हमारे आदर घृणा की भावना जाग्रत नहीं होनी चाहिए और हमें खुश्रा और शान्ति के लिए तैयार रहना चाहिए। अपने देश के अन्दर तो हमें सदा प्रयास अपनी समस्याओं को शांति द्वारा सुलझाने का ही करना चाहिए। यदि हम हथे कर सकें तो अहिंसा की बड़ी विजय होगी और उससे देश में सदा सुन्दर वातावरण बना रहेगा।

गांधीजी ने भारतीय जीवन और मानवीय

● भारत-पाकिस्तान युद्ध, सन् '६५।

आचरण, तथा सरकार सम्बन्धी प्रत्येक विषय पर इतना लिखा है कि आश्चर्य होता है। एक विषय पर प्रकट किये गये उनके समूर्ण विचारों को न जानने के कारण, या उनकी पूरी शक्त समने न होने के कारण लोग अक्सर उनकी बातों को छेड़कर भ्रम में पड़

जाते हैं। या उनसे सम्बन्ध में अपनी अपूर्ण या आंशिक धारणा बना लेते हैं। चूंकि भारतीय जीवन के प्रत्येक स्तर पर उनका गहरा असर पड़ा है, यह उचित होगा कि हम उनके विचारों का उनकी समप्रता में अध्ययन करें।

नयी दिल्ली
१२ नवम्बर '६५

—स्व० लाल बहादुर

स्व० चिमनलालजी मालोत

सार्वजनिक क्षेत्र में काम करनेवाले लोगों में से कुछ होते हैं, जिनकी कान्नी प्रसिद्धि मिल जाती है। बहुत-से ऐसे होते हैं, जिनका नाम लोगों के सामने ज्यादा नहीं आता, लेकिन उनका व्यवहार और उनका काम पश्चेवाली भेणों के लोगों से बहुत कम दर्जे का नहीं होता। बाँधवादा के भी चिमनलालजी मालोत ऐसे ही लोगों में से थे।

मेरा परिचय उनसे करीब २० साल पुराना था। सन् १९४६ में स्वर्गीय ठाकर बापा की अभ्युत्थता में जब राबल्लान तेजक स्व की स्थापना हुई तब वे भी उसमें मिले गये। बाँधवादा आज भी रेल से मीलों दूर है, उस समय और भी दुर्गम था। चिमनलालजी इसी क्षेत्र में सेवा कार्य करते थे।

चिमनलालजी के स्वभाव में थोड़ा आग्रह था। यह कहना मुश्किल है कि हममें से किसमें यह नहीं है। इतना ही है कि कुछ लोग अपने आग्रह का आग्रह बहुत आग्रह के साथ प्रकट करते रहते हैं, कुछ ऐसे होते हैं जो आग्रह तो रखते हैं, लेकिन उससे ज्यादा प्रकट नहीं करते। चिमनलालजी के स्वभाव के कारण तथा काम करने के उनके तरीके के कारण अक्सर लोग उनसे सहमत नहीं होते थे, लेकिन आदर्श के प्रति निष्ठा और काम की पुन वैधी चिमनलालजी म थी वैधी कम लोगों में देखने को मिलती है। वे उन लोगों में से थे जो रुढ़ि और परंपरा के खिणक हमेशा विद्रोह करते रहते हैं। वैद्यकुल में ब मे थे, लेकिन सारी उम्र उन्होंने हरिकर्मों और आदिवासियों में काम किया। हरिकर्मों

भी उनका कार्य मुख्य तौर पर भगियों के बीच रहा। बाँधवाड़े के भगी परिवारों के साथ उनका निकट सम्पर्क था। उनके पढ़ाये हुए कई भगी नौबतानों से मेरा परिचय हुआ था।

पिछड़े हुए वर्गों की सेवा भी चिमनलालजी ने कोई ऊपर-ऊपर से नहीं की। वे उनमें पुल-मिल गये थे। शादी भी उन्होंने एक आदिवासी महिला से की थी। (शायद यह उनकी दूसरी शादी थी ?) और भगियों के प्रति समाज की द्रोषा तथा उनके प्रति होनेवाले व्यवहार से वे इतने दुःखी हुए कि पिछले कुछ समय से उन्होंने छुट्टी ही बांधवादा भगी काम अगोकर किया था। उन्होंने जब भगी की नौकरी के लिए बाँधवादा की नगर पालिका के अधिकारियों को अपनी अर्जी दी तो वे समझे कि यह चिमनलालजी का कोई 'स्टट' या तरंग है। उनकी अर्जा स्वीकार नहीं की गयी, पर चिमनलालजी ने आग्रह किया और आतिशकार बाँधवादा की नगर पालिका के भगियों में उनको नौकरी दी गयी।

चिमनलालजी के बीमार होने की खबर अभी १५ नवम्बर को बचानक उदयपुर में डा० मोहनहिंदजी मेहता से मुझे मिली, बाँधवादा के मिर्षों को लिखकर उनके समाचार मंगवाये, लेकिन १० दिन बाद ही बाँधवादा में उनकी मृत्यु होने के समाचार मिले।

चिमनलालजी की मृत्यु से राजस्थान का निष्ठावान, ईमानदार, मूक और फ़ारिदगरी सेवक उठ गया।

—सिद्धराज डंडा

भूदान-पत्र : गुरुवार, १५ दिसम्बर, '६०

मानव ही भगवान् हे

सर्वोदय का एक अर्थ तो, योग और कुशल है।
 और दूसरा, आधुनिकता के अन्तरे का सुलभ है।
 नये धमानी की गंगा बह, बर-बरर में बान है।
 पर-भोगन जैसा ही दुहमें, प्यारा सकल प्रहान है।
 एक अर्थ तो, नयी क्रान्ति की मधुर-मधुर मुकामन है।
 और दूसरा महा मन्म, उल्लेख आगे प्रुनखान है।
 बाद, पथ, मधुरत के ऊपर, नूतन नव-आभियान है।
 नये क्रान्ति का नया बीज, बह नया-नया बहिरुतान है।
 एक अर्थ है उदय प्रुनखान, बनत सभी समान है।
 और दूसरा सम-वितरण का, नया-नया आभान है।
 देवदेव के बानेकाय, परती से भनबान है।
 भगर पया है, उते कर्ण, पर मानव ही भगवान् है।
 अर प्रेम से शिवे मनुज टो, बहली स्वर्ग-वमान है।
 सर्वोदय प्रुत प्रार-भान बह, बीचन भय विहान है।

दैनन्दिनी सन् १९६८

सर्व सेवा सच-प्रमाण दास प्रकाशित
 की गयी सन् १९६८ की दैनन्दिनी, को कानून
 और डिमार्स, दो सार्वभौम में प्लासिड के
 विचारकर्तक आचरणी के सच प्रकाशित की
 गयी है, उल्लेख एतुक अक समाप्ति की और
 आ रहा है। अतः सार्वभौम पर सर्वोदय-
 खादिल-प्रचारको से विवेदन है कि वे अपनी
 आपनकता-तुलार दैनन्दिनी की बीमर
 अग्रिम भिन्नकर मंगल से, अन्त्या स्तक
 की समाप्ति के बाद मात्र आदरणी की आर्षि
 करने में इन याद वर्ष को प्रति अन्त्या ही है।
 डिमार्स सादकः १^१ × १॥^{११} व ३-२५ प्रति
 कानून सादकः ५॥^{११} × १^१ व २-५५ प्रति
 संयुक्तक

—लक्ष्मी निधि सर्व सेवा संयुक्तकारण, धाराणसी-२

“मूदान-यज्ञ”

प्रातः मस्तुज हो रहा है
 गौरी-निर्वाण विगतः ३० जनवरी, '६०
 के अन्तर पर

सरगुदाह विद्योपांग

विद्योपांग, प्रविष्टको, विस्तको, योगकर्तको,
 मेवाको, रक्षाको, मुखाको, सेवको,
 जैको से बहल रहे जात के अन्तर् तागतिकी
 की सेवा में

'उपबस' से 'उपवन' तक
 'प्रतिहार' से 'संस्कार' तक
 कलाह की क्रान्तिप्रति विचारधारा के विस्तार
 का विमेलन, 'कन' और 'कलाह' के बरकते
 सत्य का विवेक,
 आम की शान्ति-अन्तर्गत
 संस्कार परीक्षित के परिषद में,
 प्रथम विद्योपांग आचार्य राममूर्तिजी
 के सहायकत्व में

पठनीय, मननोप, समर्पण
 ६२ दुर्गो के उल्लेख बह मूदान-यज्ञ एक वपरा।
 वार्षिक मूल-१० रुपये
 इमारत स्वपोष संविधि, इसको सद्योग दीर्घ,
 विचारन देकर, अपनी प्रविष्टी सुविधा काकर।
 धर्मस्यारक, सच का-विमान
 सर्व सेवा संयुक्तकारण, रावपार, धाराणसी-२

मूदान-यज्ञ : प्रकाशक १५ विस्तमद, '६०

नया प्रकाशन :

ख्रिस्त धर्म सार

(दी एसेन्स ऑफ क्रिष्टियन टीचिंग्स)

—दिलोबा—

'मनुष्य सत्रि संत गुणवती' इती
 ये शोई श्री अन्धी रात मिळीं दे तो इतल
 उले प्रथम कराना और अपने जीवन में उले
 उठामना विनोश की अपनी विद्योपांग है।
 एलो मानव से प्रेरित होकर उठोने विभिन्न
 धर्मों का, विभिन्न धर्मधर्मों का अर्थकागतः
 उनको मूल्यापानों में आपनन किया और
 वे ही परिणाम पर पहुँचे कि सत्य, प्रेम और
 कृपा का ही सच सभी धर्मों में विरोग हुआ
 है। विभिन्न धर्मधर्मों के अपनन का
 उठोने सर्वस्यारक के लिए नवनीत श्री
 मस्तुज किया है। ईसायस्योनिजिद, यीशु
 प्रवक्त, पण्यपद, बहुको, कुशलशास अदि
 प्रोत्तु इती में उठोने विस्त धर्म का सार
 एल अन्ते को संकलन में वर्णित किया है।

मस्तुज पुस्तक में विनोश है 'ख्रिस्त धर्म
 सार' नाम के पाश्चिम का नवनीत संस्कृत
 रूपों में रचकर सहायक धर्मधर्मों पर एक
 और उल्लेख किया है। इन रूपों को सार
 का अन्ते में ख्रिस्त धर्म का सार एक ही
 कण्ठल से बात है। रो-यक उल्लेख
 संविधि :

'अन तिले त्व विधि' इति लोमी
 धर्मिक की कथा है, शिवे प्रथम ईसा करते है—
 'पदि तू पूर्व होना चाहता है तो मेरे परत को
 कुछ दे, उले नेल जाल और साध पैसा
 गरीबों में बँट दे।' उले बने बाने पर
 उठोने अपने विद्योपांग पर—'तुम के सेवे से
 ऊँट अन्ते की निकल पाय, पर किसी धनी
 मनुष्य का सर्व के सन में प्रवेश नहीं हो
 सकता।'

'सर्वोदय कालवर्ष'—में बहविध की
 यह पण्डित बहानी है, शिवे धर्मिक का
 मानिक अन्तेरदय से प्रुत करता है। सारे
 अन्त में अनेकाने मनुष्य को पर उठनी ही
 मनुष्य देता है, विनोश सारे परते आने-
 वाले को।

येही अनेक कारणानि बहानी और
 उल्लेखों से श्री-योग मानव को उल्लेख उठाने-
 बल मनुष्य संकलन २५ दिहाकर, '६० को
 ईसा की प्रणयिप प्र मकाशित हो रहा है।

—श्रीदुष्पण्यक महु

आन्दोलन के समाचार

उत्कल : कुल ३१

कोरापुट : १९
नारायनपटना
बन्धुगोबि
लक्ष्मीपुर
कोरापुट
दशमचतुर
उमरकोट
हरिगा
दावुगोबि
रायगढा
पापादहाडी
बोरीगुमा (१)
बायपारीगुडा
शुद्धारी
सिमुलिगुडा
नानडपुर
चेन्नुलीखैदी
न-दाहाडी
पोटगी
कल्याणसिंगीपुर

तामिलनाडु : कुल २५

तिरुनेलवेली : १३
राधापुरम्
बल्लियूर
नांगुनेरी
कटफड
पलायनकोट्टाई
करन्गुलम्
विलयकुलम्
कयाथार
ओटापिट्टरम्
कोयलपट्टी
दुतिकोरिन
थीवारैकुलम्
पुडूर
मदुराई : ७
नाथम्
उत्तर मेळर
दक्षिण मेळर
अन्नारपट्टी
नङ्गमदुराई
युधियाम्पट्टी
सेदापट्टी
तिरुचि : ३
गारुनापुरी
केन्दुराई
मानिका-दम्
रामनाथपुरम्
परमाकुडी
कोयंबटूर
कुडीमंगलम्

विभिन्न प्रदेशों के प्रखण्डदान

[३५ नवम्बर '६७ तक]

महाराष्ट्र : कुल ११

ठाणा : ७
कोसा
वाघवान
तलाठी
मोलाडा
जवाहर
मनोर
विक्रमगढ़
धुलिया : २
मोल्गी
अकागी महाल
चाँदर : १
खिरीचा
अमरावती : १
धाणी

आन्ध्र : कुल १०

कडप्पा : ७
लक्ष्मीरेड्डीपल्ली
कमलापुरम्
कमलामाडुगु
पुल्लीमेण्डुडा
मड्बानूर
रामचौदी
विदाक्षतम्
महबूबनगर : ३
अचमपेट
कडुआडुथी
नगरकर्नूल

उत्तर प्रदेश : कुल ११

दलिया : ४
बाँसबीह
मनियर
नेरुआरवारी
पन्दह
उत्तरकाशी : २
भटनाडी
हुब्बा
आगरा : २
शमशाबाद
सैया-गक
कमौली : १
बोशोमठ
मिर्जापुर : १
वमनी
पिथौरागढ़ : १
पारसुला

संयुक्त पंजाब : कुल ७

रोहतक : २
मुंडलाना
क्यू
गुरुदासपुर : २
गुरुदासपुर
धारीवाल
जालंधर : १
गडकोट
करनाल : १
काहवाड
होशियारपुर : १
मुगा

गुजरात : कुल ३

वड्नौदा : १
भोरियाव
धलसाडु : २
अबाबागढ
नववाडी

महा-अभियान का आह्वान २ अक्टूबर '६८ तक विहार-दान का संकल्प

पूया रोड : ९ दिसम्बर—बिहार प्रामदान प्राति संघोजन समिति ने विनोबाजी के आह्वान पर आज यहाँ विहार दान का संकल्प किया। इस महा-अभियान को गति देने के लिए विनोबाजी हर जिले में एक एक मरीने का समय देंगे। इस मरीने के अन्त में विनोबाजी मुनकरपुर आ रहे हैं। उसके बाद पटना जायेंगे।

पंजाब में प्रामदान।

(१ दिसम्बर '६७ तक)

जिला	प्रामदान संख्या
फागवा	८७३
दिसार	१९३
रोहतक	१३०
करनाल	४०७
जौद	२२
अमाला	३४९
त्रिरोजपुर	१३७
जलंधर	१७५
कपूरथला	५४
छाबियाना	१८
होशियारपुर	२६२
गुरदासपुर	४२३
कुल : ३०४३	

मध्य प्रदेश : कुल ५

पश्चिम निमाड : २
निवाली
सैचवा
सियनी : १
कुरई
टीकमगढ : १
वीकमगढ
सरगुजा : १
रामचन्द्रपुर

असम : १

नार्थ लखीमपुर : छपदा

[विहार के १०० प्रखण्डों के नाम गत १ दिसम्बर के अंक में दिये गये हैं।]

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १५ दिसम्बर, '६७

ग्रामदान अभियान
चिरई ग्राम प्रखण्डदान-अभियान

बाराणसी, १९ दिसम्बर। ४ वें १० दिसम्बर तक बाराणसी जिले के चिरई ग्राम प्रखण्ड में ग्रामदान-अभियान के प्रथम में १९ टोलियों घुसीं। प्रखण्ड के कुल १८ ग्रामों में से १२ गाँवों की जनता ने ग्रामदान की घोषणा की। टीलों के सदस्यों की अनुभव आया कि गाँव की आम जनता ग्रामदान-प्रणाली के विचार को प्रशंसा करने के लिए तैयार है। देर विरई विचार को उन तक पहुँचानेवालों की ही है।

चिरई ग्राम के अन्ध-प्रमूख भी उद्यम नारायण, मान्य बनतेवी भी रामसूत मिश्र तथा सुभाष इण्डर इन्ड्रेज चंरैपुर के मार्चार्य भी रामदेव दुबे का अभियान में उत्कृष्टनीय सदस्यो प्राप्त हुआ। इन लोगों ने चिरई ग्राम प्रखण्ड के बारी गाँवों में भी ग्रामदान का सन्देश पहुँचाने की तीव्र इच्छा प्रकट करते हुए अपने भरपूर सदस्यो का आवाहन किया। १० दिसम्बर को अभियान-समारोह का समापन करते हुए बाराणसी नागरिक परिषद के अध्यक्ष भी रोहित मेहता ने अभियान टोलियों के सफल मार्गदर्शन के लिए भी रामजी भार्द तथा साय के अन्य कार्यकर्ताओं की धाराणा की।

उद्दिष्टियाः ३० नवम्बर। दरभंगा जिले के मधुपनी अनुमण्डल के चौथा खेरीय सद-निवा प्रखण्ड के अन्तर्गत लाजेडीह नाँववाली बाराणसी ग्रामसभा का गठन किया गया। ग्राम सभा ने ग्रामदान के बाद अब ग्रामकोष-मंडल का कार्य शुरू कर दिया है। २५ नवम्बर को सर्वोदय आश्रम, लाजेडीह के प्रयोग में इस प्रखण्ड के अर्थिकांश प्रमुख नरसिंह, राबन्नीतिक दलों के प्रतिनिधि, सर्वोदय के कार्यकर्ता, विद्या-अधिपतरी आदि के साथ मामीनी की सभा हुई।

उद्दिष्टियाः १५ नवम्बर। लखी रहलीक को ११ दिन की प्रदक्षाना में ११ ग्रामदान प्राप्त हुए। इसको प्रसार-यात्रा में महागुरु के प्रमुख कार्यकर्ताओं और ब्रह्मणी महाल के इबादों आदिवालों विरिबनी ने शिखर किया।

ग्रामदान-यज्ञः मुकबाब १५ दिसम्बर, '५०

सबको ग्राम दाराण्य उत्पायना करने के लिए क्षिपातक नदम उठाने की प्रेरणा मिली। औरगाभाद में १० दिसम्बर को ग्राम स्वराज्य परिषद के अधिनेताप का आयोजन किया गया है।

हाँसो. २२ नवम्बर। गत 'विनोबा-बयली, ११ दिसम्बर को हाँसो जिले में ग्राम क्षिपरी का ग्रामदान हुआ था, जिसके जन-संख्या ६०० और आबादी १०० एकड़ है। अब २० नवम्बर को ग्राम छकरा का उत्तर टोला 'पुरा'—जिसकी जन-संख्या ५०० और आबादी ८०० एकड़ है—का भी ग्रामदान हुआ है। व्यापार के ५ गाँवों में भी इला-अर लेने का कार्य चालू है। यहाँ अब तक ६ ग्रामदान हुए हैं।

आगरा : १ दिसम्बर। बगनेर और तैरागढ़ प्रखण्ड ग्रामदान-अभियान के लिए चुना गया है। इसमें पन्ना, दिमांचन प्रसद, राजस्थान और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के १२५ कार्यकर्ता भाग लेंगे। अभियान का संचालन डाक्टर दयानिधि पटनायक करेंगे।

प्रज्ञाचार विरोध :
चाकम्बू : १ दिसम्बर। पाकपू तशरीफ में भूमि-सर्वोदय के मकलों तथा नियमन की पद्युओं को लेकर कई तरह के प्रज्ञाचार हो रहे हैं। इस सबके खिलाफ गाँवों के शीख के सामने प्रदर्शन किया। राजस्थान समग्र सेवा सपू की मयी थी विवेकचन्द्र, वशीलक सर्वोदय मण्डल के सयोजक भी महेन्द्र-नुमार आदि कार्यकर्ताओं ने सबको प्रज्ञा-चार का विरोध करने और प्रारब्धियों के लिए जनता को सज्जित होने के लिए आह्वान किया।
—लोकनामती समाचार शह २२ नवम्बर। चमल घाटी ग्राम-समिति की अध्यक्ष भीमती आशादेवी आर्पनायकम्, सुभी निर्मला देसापाट्टे, सम्पन्नधारी बागी महाली की मुक्ति के सम्बन्ध में राबन्नाता क्षिपिया से भोपाळ में मिले। उन्होंने सब जानकारों युज ही और मुक्ति के सम्बन्ध में विचार करने का आराधना दिया।

पीस-मार्च : नेपल्स से रोम

इन्को में एक "शांति-अहिंसा सच" नाम की एका है, जिसके अध्यक्ष हैं आन्डो कारितीने। इन्होंने मुक्ति लिखा था कि मैं महोने भर के लिए इन्को आर्जे और यहाँ पर गांधी सत्याग्रह समिति का निर्माण करने में मदद करूँ। इसी तरह से यहाँ के एक और प्रसिद्ध सत्याग्रही नेना हैं—डेनियो बोल्की। उन्होंने नेपल्स से रोम तक एक 'पीस मार्च' (शांति यात्रा) का आयोजन किया था—गत २२ से २९ नवम्बर तक। उन्होंने भी मुझे इस 'पीस मार्च' में शामिल होने के लिए आग्रह किया था। इसलिए मैं यहाँ आया। 'पीस मार्च' में चार दिन रहा। बहुत ही न्यबसित मार्च था। इस 'मार्च' का मुख्य हम कल जब रोम पहुँचे तो दस हजार लोग इस 'मार्च' में शामिल थे। विपत्तान युद्ध के खिलाफ क्रिस्ता तीज समत है, इसका नमूना देखने को मिला। इन्को में रूस के बाद यूरोप की सबसे बड़ी कम्युनिस्ट पार्टी है। एक तरह रोमन केथोलिक चर्च और दूसरे छोर पर एक मजबूत कम्युनिस्ट पार्टी हमारे यहाँ रोम में भी रोमन केथोलिक बड़ी मात्रा में हैं और वहाँ कम्युनिस्ट पार्टी भी बहुत मजबूत है। यह एक दिखचरत अपावन का शिरा है।

१०-११-५० —तवीज कुमारे के पत्र से

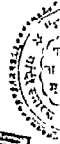
हमारी पत्र-पत्रिकाएँ

भूदान-यज्ञ : हिन्दी (साप्ताहिक)	१० ००
गौंज की बात : हिन्दी (साप्ताहिक)	२ ००
भूदान नदरीक : उर्दू (साप्ताहिक)	४ ००
सर्वोदय : अंग्रेजी (मासिक)	६ ००
नयी कालीन : हिन्दी (मासिक)	६ ००
न्यूज छेटर : अंग्रेजी (मासिक)	१० ००

सर्व सेवा संप्र-प्रकाशन
राजपाट, बाराणसी-१

भारत-राज

भारत-राज मूलक प्रामाणिक प्रत्यक्ष आर्थिक क्रान्ति का सत्य-प्राप्तिक साप्ताहिक



सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सम्पादक : राममूर्ति
 मुद्रकार : वर्ष : १४
 १३ अक्टूबर १९७७ अंक : २



जे० पी०

११ अक्टूबर, '६७ को आपने जोर के १५ मिनट पूरे किने भाईमक प्रान्त के श्रावण में आपके विचारों का प्रकाश और नेत्र का सम्पर्क वहाँ क्यों लक देता और दुनिया को मिला रहे हंग दुर्भक्तमन के साथ प्रस्तुत अंक सादर भेंट।

हस्त अंक में

इतिहास भी नवी भोग
 विचार-आरोहण की न किन्हे—३० पी० २०
 दर्द विचार को डायरी से
 अगले अंक का आकर्षण
 'भारत' का स्वाद, सामर्थ्य का विधेय
 अधिक उत्थान की दृग मरीचिषा
 सर्व सेवा संघ प्रकाशन
 राजघाट, काठमाण्डौ-१

नयी समाज-रचना का नया आयाम

उन समाज का रूप क्या होगा, जिसमें जनता के लिए अपने सामाजिक जीवन का स्वयं-संचालन करना और जीवन के उन समस्त मूल्यों का विकास करना समभव होगा, जो सदकार, आत्मतुष्टासन, उत्तरदायित्व की भावना आदि के रूप में समाजवादी समाज की विशेषताएँ हैं ! मानव-समाज इस तरह विकसित हुआ है कि उसमें आज की वेचोदा औद्योगिक सभ्यताएँ ही निकली हैं। इसमें शहर कदमनिवाले मनुष्यों के बड़े बड़े जगल हैं, आर्थिक और सामाजिक सम्बन्ध सर्वथा अत्यधिक और निष्पाण हैं, कार्य-प्रणाली बहुमाल्य और आनन्द एवं सुख-शक्ति की अभिव्यक्ति के अवसरों से वंचित है और केवल उत्पादन-गति और कार्यक्षमता के आधार पर ही मान्यता मिलती है। विज्ञान ने अमिन्न विषयों को निम्नोद्धार एक पक्षोत्तम बना दिया है। किन्तु मनुष्य ने एक ऐसी सभ्यता का निर्माण कर लिया है कि पक्षोद्धार ही अपरिचित बन गये हैं। इस प्रकार का वेचोदा और ऊपर से बोलित समाज अन्तर्जातीय, -व्यवस्थापको, यज्ञो और अंकशास्त्रियों के श्रिय वर्ग बन आया है। इस प्रकार का समाज एक बार नहीं बन सका, बहो मार्ग भी मार्ग भी तरह एक साथ रह सके।

समाजशास्त्रियों ने विज्ञान, उत्पादन, कार्यक्षमता, जीवन स्तर तथा ऊँचे-ऊँचे आदर्शवाले दल के नातों के नाम पर समाज के इस भ्रमशास्त्र को बिन्दुल जगो का नौ से लिया है और अब के आशा करते हैं कि हममें मार्क्सनिक स्वामित्व या जनता की सर्वश्री जोड़कर इसे समाजवादी बनायेंगे। मैं नवजातपूर्वक कहना चाहता हूँ कि इस प्रकार के समाज में समाजवाद कौन भी नहीं ले सकता। यदि मनुष्य छोटे-छोटे समुदायों में रहे, तो स्व शासन, स्व व्यवस्था, पारस्परिक सहकार और समानता, स्वतन्त्रता, स्वतन्त्र, इन सर्वत्र प्रयोग और विकास घेदारी के लिए ही सकता है। पश्चिम में भी दूरदृष्टिवाले विचारकों को अब देना कठिन लगा है।

इसके अतिरिक्त मनुष्य प्रकृति और सृष्टिगत दोनों की उपज है। इसलिए उसके सञ्चित विकास के लिए यह आवश्यक है कि दोनों के बीच समुद्र समतला पैदा की जाय। लेकिन पार्श्व और केरमें मार्गों के होते हुए भी कन्दन, वैरिज, न्यूयार्क, मासको जैसे आधुनिक सभ्यता के नेत्रों में एक प्रकार की समरसता क्षय्य करना संभव नहीं। इसीका परिणाम है कि आधुनिक मनुष्य का विकास विरुद्ध और एकजोरी हो गया है। प्रकृति और संस्कृति का एक विभिन्न अन्वेषण छोटे-छोटे समुदायों में ही समभव हो सकता है। एन्ड्रयुभम दम्पत्ये की 'शास्त्र विवर्धन एण्ड पीस' में आता है : "अब यह काली सत्य हो गया है कि मनुष्य की मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएँ, उसकी आध्यात्मिक आवश्यकताओं की क्षीन हुई, तब तक पूरी नहीं हो सकी, अब तक, ए. उसकी शारीरिक शक्तिगत स्वतन्त्रता और एक स्वशासन दल के रूप में एक-दुसरे के प्रति और पूरे दल के प्रति स्पष्टिगत उत्तरदायित्व न हो, २. उसके कार्य में एक साथ कोन्वर्ज की भावना और मानवीय गौरव न हो और अब तक ३. अपने प्राकृतिक वातावरण के साथ उसका केन्द्रीय और सहज अन्योन्याय्य सम्बन्ध न हो।"

इसी कारणों से गांधीजी रचना और देख सकते थे कि भारतीय ग्राम और ग्राम-स्वतन्त्र ही उनके भावी समाज की बुनियाद है। माइको की तरफ प्राग्निपूर्वक रहनेवाले स्वतन्त्र और समान अर्थिकों के समाज ने ही वहाँ गांधीजी का अभिभावक है।

—जयप्रकाश नारायण

वेधा :

१-१०-१७ : सखद सदस्या वेड गोविन्ददास ने सखद के आगामी अधिवेशन में लये जानेवाले भाषा विधेयक के सम्बन्ध में सखद सदस्यों से अपील की कि उक्त विधेयक के विरोध में अपना मत दें।

५-१०-१७ : सखद कार्यमन्त्री भी राम सुभग सिंह ने कहा कि अगर दल बदलने के सिद्धान्त को रामनीति का एक अंग मान लिया गया तो उससे सदैव सत्कारुण्य दल में फूट पड़ने का भय बना रहेगा।

७-१०-१७ : घेरान के बारे में पश्चिमी बंगाल की सरकार ने अपने अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे कानून की व्यवस्था के अनुसार कार्य करें।

८-१०-१७ . राष्ट्रपति डा० आशिर हुवेने ने कहा कि अग्रजी भारत की राष्ट्रभाषा नहीं हो सकती है। हिंदी को समकक्ष भाषा के रूप में इसलिए सरजीह दी जा रही है कि हिन्दी को समन्वयित देय में बहुत है।

प्रातः सूचनाओं के अनुसार अभी तक डा० मोहिया का स्वास्थ्य खतरे से बाहर नहीं हो पाया है।

विदेश :

२-१०-१७ : सोवियत प्रधान मन्त्री भी कीशीगिन ने कहा कि सोवियत रूस के सामने मुख्यतः दो ही अन्तर्राष्ट्रीय समस्याएँ हैं . विश्वतन्त्रता की लड़ाई बन्द कराने की और यूरोपीय देशों की तन्त्रतन्त्र घटने की।

१-१०-१७ . पाकिस्तान के राष्ट्रपति अब्दुल लॉ ने रूस से लौटने पर कहा कि जब तक शेख अब्दुल्ला को जेल से रिहा नहीं किया जाता तबतक कश्मीर में शांति नहीं हो सकती।

७-१०-१७ : सन् १९३३ के नोबल-पुरस्कार विजेता और प्रसिद्ध लेखक सर नार्मन एन्थन का लन्दन में देहान्त हो गया।

८-१०-१७ . म्रिटिया मजदूर दल के नेता लार्ड एटली की लन्दन के एक अस्पताल में ८४ वर्ष की अवस्था में मृत्यु हो गयी।

सुभाष चक्रवर्ती

● 'भूदान यज्ञ' के अन्वेषक से संतोष होता है। इसमें समस्यामूलक मौलिक विचार एक ओर बहुत बड़ा मूल देते हैं और दूसरी ओर उन समस्याओं के समाधान के सब्ज उपकरण भी पूर्ण विश्वास के साथ प्राप्त होते हैं। एक नया विचार नये समाज को नया जीवन देता है।

चिन्तन के लिए बहुत ही पौष्टिक सुराक 'भूदान यज्ञ' से मिलती है। सर्वोदय दर्शन हारी समस्याओं का समाधान देने में समर्थ है, ऐसा भाव 'भूदान-यज्ञ' हमें देता है। धोने में सुगन्ध का काम इसका सम्प्रादायिक भाग करता है। इसमें अत्यन्त उन्नत समस्थाओं का एक नवीन विचार प्रवाहित होता है, जो सभी के मन को स्याँ करता है और एक शक्ति तथा प्रकाश देता है।

अँलों देला अनुभव और वर्णन वास्तविकता और तथ्य से समुचित, मन को विस्तृत समाधानों का खल देता है।

आपके 'भूदान यज्ञ' के इन विविध पहलुओं पर विश्लेषण मैं नहीं कर सकता, क्योंकि इससे जो बल प्राप्त होता है, इससे पूर्ण तृप्ति प्राप्त होती है। इसीलिए यह मेरे मोह का कारण भी हो सकता है।

मेरी यही अभिप्राया है कि भगवान इस 'यज्ञ' के पुजारी को ऐसी शक्ति देता रहे, ताकि 'भूदान यज्ञ' में प्रति सदाइ कम से कम तीन-चार मनीषियों-विनोबा, दादा जर्माधिबारी, धीरेन्द्रभाई आदि के मौलिक लेख, सभासदक्रीय चिन्तन, उन्नत समस्याओं का समाधान तथा अँलों देली धनाओं का विवरण प्राप्त होता रहे।

—श्री० कृष्णाय चतुर्वेदी, भास्वार्थ

समाज-विज्ञान मन्काय, कातो विद्यापीठ

● ८ सितंबर का अंक सुभाष है।

—नवल टी शाह, बम्बई

● 'भूदान यज्ञ' में प्रश्नों के उत्तर देने से वह सचिकषक भी बनेगा और समस्या-पूर्ति का साधन भी होगा। चौथाई का समय से ही बर्तन प्रारम्भ किया जाय, पर यह

सम्भ गुरु होना चाहिए। मेरे एक कम्प निम्न मित्र करते हैं कि सर्वोदय आन्दोलन नहीं करता। इसका उत्तर मैं नहीं दे सका।

—बाबू राम गुप्ता, बेर

● 'भूदान-यज्ञ' में विडम्बे दस वर्षों से पढ़ता रहा हूँ। ८ सितंबर '६७ के अंक में एक लेख में सर धामन मोर की यूरोपियन का जिक्र है। वह बात सन् १९१६ की है। भारत में अब भी वैसी विचारधारा चल रही है। इस पत्रिका द्वारा जनता की कल्पना और सकल्प शक्ति दृढ़ करने की कोशिश होनी चाहिए। मैंने पत्रिका को गॉन्ग-गॉन्ग में तथा स्थानीय विद्यार्थी सभाओं में पहुँचाने का निश्चय किया है। गॉन्गों में लोग पत्रिकाएँ पढ़ें सुनें, इसकी भी कोशिश करूँगा।

—लखन सुशांत सिंह, सिरपुर, आगरी, बालाघाट (म० प्र०)

आवश्यक सूचना :

नये प्राहकों को विशेष उपहार

श्री जयप्रकाश नारायण के जन्मदिन ११ अक्टूबर '६७ से 'किरण मंड' २५ दिसंबर '६७ के बीच की अवधि में कम से कम एक साल के लिए प्राहक बनने पर

● 'नयी छाती' मासिक के साथ 'गॉन्ग बात' पाठिक के दो संचित्र, सम्पत्तीन विशेषण, ● 'भूदान यज्ञ' साप्ताहिक तथा 'गॉन्ग बात' पाठिक के साथ 'नयी छाती' का भाग विधेयक रिजिट अंक,

● 'सर्व सैण संघ म्यूज लेटर' अंग्रेजी मासिक के साथ गॉन्गी अल्पनी (२ अक्टूबर '६७) से नेहरू बन्दी (१४ नवम्बर '६७) तक की अल्पनी में, 'क्रीडन कार दी सासेन' और 'पीस मान जय' नामक दो महत्त्वपूर्ण अंग्रेजी की पुस्तकें,

सर्व सैण संघ प्रकाशन की भार से प्राहकों को उपहार में दी जायेंगी। —संपादक

नयी छाती	वा० मु० १००
गॉन्ग की बात	" " ४००
भूदान यज्ञ	" " १०००
सर्व सैण संघ म्यूज लेटर	" " १०००

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १३ अक्टूबर, ६७

तरुण समाजवादी

१९३६ : समाजवाद आर्थिक असमानता के कारणों का अनुसंधान करता है। राजाओं, जमींदारों, पूँजीपतियों और भ्रष्टारियों की उत्पत्ति के मूलधारों की खोज-खूँद करता है और खोज-खूँद करता है मानवी धोपणों के रहस्यों की। इस खोज-खूँद और जाँच पढ़ताल के बाद धन समाजवादी उसकी जड़ का पता लगा लेता है, तो उसे उखाड़ फेंकता है, वह सामाजिक बुराइयों के मूल पर ही कुठाराघात करता है।

लेकिन गांधीवाद इन प्रश्नों पर विचार करना भी जरूरी नहीं समझता। उसके मन में तो यह सवाल भी नहीं उठता कि क्या बात है कि मुठीभर लोग राजा, जमींदार



नयी पीढ़

और पूँजीवादी बनकर गुलछरें उड़ा रहे हैं और बाकी पूरा समाज या तो भिलायी बन चुका या बनने की तैयारी में है। वह समाज की नीची और जूँची सतह को स्थायी मान लेता है और वक्त यही चाहता है कि ऊपर की सतह के लोग नीची सतह के लोगों के अरा रहम का भतावें रहें।

एक समाजवादी के लिए यह पिलासकी घोलेबाजी है—बोदिनाबी अपने प्रति और शोषित बनता के प्रति। हम समाजवादी जंके की चोट यह कहते हैं कि जमींदारों और पूँजीपतियों का यह धन किसानों और मजदूरों को मेहनत से ही पैदा हुआ है। इस चोरी को छिमाना, इसे मूछे ताछे

चलने देना, इस पर पवित्रता का पुट देना नि स-देह घोलेबाजी है, भने ही यह घोलेबाजी आप अनजाने ही क्यों न कर रहे हों।

ये जूँची सतह के लग हिंसा के भी अपराधी हैं, क्योंकि इस चोरी के माल को ये हिंसा के बल पर ही अपने बन्धों में लिये हुए हैं। अगर सगठित हिंसा का और उसको सही साबित करनेवाले वर्गगत कानून का भय न हो, तो किसान और मजदूर कठ ही जमीन और करसानों पर कब्जा कर लें।

क्या किसानों और मजदूरों का धन पर उतना ही अधिकार है, जितना कि उनके मालिकों का? गांधीजी के पास इसको मान लेने का कौनसा प्रमाण है? यदि यह कहा जाय कि किसानों और मजदूरों का बराबर हिस्सा इसलिए है कि वे ही धन पैदा करने वाले हैं, तब वे अपनी पैदा की गयी चीज को दूसरों के हाथ में क्यों सौंप दें? क्यों उनसे कहा जाय कि इन्हें दूसरों के हाथ में सौंप दो, जो तुम्हारे लिए द्रुष्टी का काम करेंगे?

हम इस सवाल को दूसरे छोर से ही लें। ये धनी लोग द्रुष्टी का काम क्यों करें? वे ऐसा क्यों न करें कि यह धन हमारा है, इसे हमने अपने दिमाग और अपनी पूँजी से पैदा किया है और किसीको इस पर दावा करने का दम नहीं है?

यदि धनिकों का धन उनका अपना नहीं है, तो वह कौनसा न्याय है कि उन्हें उसे रखने और उसके बल पर उदारता दिखलाने के लिए उत्साहित किया जाय? और अगर वह उनका सही छोर के उ अधिक धन है, तो फिर किसीको क्या हक है कि कहे कि इसे तुम दूसरे को दे दो? अगर गरीब भूखों मरते हैं, तो मरने दीविय। हचमें पनी बेचारों का क्या कसूर है?

इस तरह यदि हम ब्यारिहार रखते हैं, तो गांधीवाद अपरधरूपों आर्थिक विन्धेपण, धूम और महान् सदि-छाओं और प्रभावपुण्य नैतिकता को एक खिचरी माच है।

सवाल नैतिकता या सदाचार का नहीं है, यह समस्या तो धन और उसके उत्पादन के वैज्ञानिक विश्लेषण की है। इस समस्या का हमें साहस से सामना करना चाहिए; न कि भावुकता के बुँके में उसे ढँक देना चाहिए। कार्ल मार्क्स ने पूँजीवादी धन का विश्लेषण करके, और यह साबित करके कि धन कमाले के लिए मजदूरों का शोषण आवश्यक हो जाता है, मानवता का महान् उपकार किया है।

द्रुष्टीधिय के सिद्धान्त को आखिर अमळ में किस तरह लाया जायगा? गांधीजी धनियों को गरीबों के द्रुष्टी बनने के लिए किस तरह प्रभावित करेंगे? क्या उनकी नैतिकता को अगील करेंगे, उनके दिलों के अन्दर पहुँचकर? उन्होंने जमींदारों से कहा कि मैं चाहता हूँ कि मैं आपके दिलोंमें समाज और उन्हें परिचित करूँ, जिससे आप यह अनुभव कर सकें कि वास्तव में यह धन आपकी व्यक्तिगत समृत्ति नहीं, बरन् किसानों का द्रुष्ट है और आप उहीकी भगार् में इसको खर्च करेंगे।

हमें शक है, हमारे कुछ भार्द रहे भी भारतीय सङ्कृति की दन समझेंगे। लेकिन सचार्द यह है कि दुनिया के सभी बड़े वार्मिक उपदेशकों ने इसी तरीके का हल्लोम किया था। उन उपदेशकों को हल्लोम कितनी सङ्कटा मिले, इसका साथी इतिहास है। अब गांधीजी अपनी भाङ्ग की छप्पे नेकर भाँपे हैं और एक नया इन्जाल हमें दिखलाना चाह रहे हैं। —जं० पी०

प्रजा-समाजवादी

१९५६ : हमें कहाँ जाना है यह मानने पर ही हम अपने रास्ते का चुनाव कर सकेंगे हैं। तो वह मजल्य खान हमारे सामने है, और चन्ने की दुग्धभत करने की जगह भी, यानी टेप की ताकालिक परिस्थिति।

● मन् १९३९ में प्रकाशित : 'गोबीन्द-समाजवाद' नामक पुस्तक के एक चित्रपत्र में।

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १३ अक्टूबर, १९६०

कलाश्री का धर्मा नहीं एकड़ता, और जिनकी धर्म बरवाद न होगी। क्या पता कसेस मरते-मरते इसे समझा हो, और जीविका छीननेवाले 'कल' के दरवाजे पर ही प्राण छोड़ने की बात उसके मन में आयी हो।

कसेस की लाश को एक बार, फिर कन्हाई ने उलट-पलट कर देखा, और अपने लाल साँके की कोर से आँसू पोछते हुए लावारिस लाश की रपट लिखाने थाने की ओर चल पड़ा। कन्हाई पगडंडी पर आगे बढ़ता जा रहा था, लेकिन उसका मन कसेस की लाश के पास ही भटक रहा था। न जाने क्यों आज उसे गाँव के भरे हुए कई लोगों की याद आयी। जैसे-जैसे आयी भुम्भन जुलाहे की, बेचारे की बलती चमिर में गाँव छोड़कर शहर के किसी कारखाने में नोकरी करती पंडी थी; क्योंकि सब लोग मिल के कपड़े पहनने लगे थे, उसका बुना कपड़ा कोई खरीदता ही नहीं था। उसे याद आयी गाँव के बुद्धन चडई और सुखर खुहार की, दोनों अपने-अपने पन्ने छोड़कर स्टेशन पर कुलीगिरी करते-करते खत्म हुए, क्योंकि उनकी बनायी चीजें विकती नहीं थी, गाँव में सब चीजें गहर से जाने लगी थी। लेकिन कन्हाई इन बातों को तब में नहीं आ सका।

वह नहीं सोच पाया कि विज्ञान के जमाने में पैसेवाले ऐसे-ऐसे कल-कारखाने बनाये हैं कि सबकी कमाई, सबकी मिहनत इन कल-कारखानों के मालिकों की जेब में आ जाय और किसीको पता भी न चले।

● कन्हाई नहीं सोच पाया कि ये कल-कारखाने पैसेवालों के हाथ के ऐसे साधन हैं, जिनके सहारे मेहनत करनेवाला बुद्धि रखनेवाला धनपत्र या पड़ा-लिखा, हर कोई इनका गुलाम-मजदूर वैसे बन जाता है।

● कन्हाई नहीं सोच पाया कि किस तरह कल-कारखानों के माफक इनके पीछे से मालिक हजारों-लाखों गाँवों के मालिक लोगों को लुभाते हैं कि अधिक पैसे इतने तरह कमाओ, उन तरह कमाओ, और फिर लोभ में पड़कर ये लोग शहरों में आकर मजदूर बन जाते हैं और शहर इन मोले-भाते लोगों की दिन भर की कमाई तरह-तरह की लुभावनी चीजों के बदले में हड़प कर जाते हैं।

● और कन्हाई को यह भी कहीं मालूम है कि जल भर धून पसीना एककर, जीजागर लगाकर जी कुछ निमान देना करते हैं, बड़े-बड़े गहरों में बैठे ये कुछ संत उसका मनपाना भाव तय करते हैं, और उसी भाव में गाँवों को पंदावार उनकी

कोठियों में जाकर बन्द हो जाती है। उसी चीज को बाद में वही उपजातेवाला किसान खरीदने जाता है तो दुगुनी-चौगुनी कोमत चुकाती पड़ती है और बावजूद सरकार की रीजान के यह मिलसिला बचता ही रहा है।

जमी सितम्बर महीने के पहले हफ्ते में दिल्ली में बड़े बड़े और भारी कल-कारखानों के मालिकों ने सरकार को यह राय दी है कि देश का उत्पादन छोटे-छोटे किसानों में नहीं बढ़ेगा। देगभर की खेती का काम बड़ी-बड़ी कम्पनियों को दे दिया जाय, उनका यह दावा था कि किसानों को आज जितना मिलता है, उतना तो मिलता ही रहेगा। बाकी अधिक पंदावार से देग की फ़ुद्धि-मिद्धि बढ़ेगी। देश की फ़ुद्धि-मिद्धि इससे क्या बढ़ेगी, यह भगवान् जाने, लेकिन अगर यह योजना देग में लागू हुई तो दो बातें बहर ही जायेंगी—एक तो खेती की सारी उम्मीद देश के कुछ शोषण सभ्यत्वियों के बन्धे में चली जायगी, और दूसरे भारत के गाँव—जिन्होंने देग के हजारों वर्षों के इतिहास में अपना जीवित और तृपान के छोले सारन हूई भारत की संरक्षित का कायम रखा है, मनुष्यता का विरासत रखा है, वे गाँव खत हो जायेंगे और उनकी जगह खेती की बड़ी-बड़ी दा गुरु बोटियाँ, उनके बरिन्दों व कुछ बगने और बायो मनुष्यों मजदूरों की बरिन्दों शोषण और दमन की पाक पर बरत खाती और चक्री में पिमती दिवारी देंगी। वरा गाँव के लोग इन बातों को समझ लें, तो यह सब हान पायेगा ?

तब ता पुर गाँव ने सब लोग मिलकर बहरी कि हम यह नहीं होने देंगे। जायें बड़े-बड़े बीवार और उजब बगने के साधन, लेकिन गाँव सब लोगों का भलाई को सामन रखकर फलदा करेगा कि बीव बीवार गाँव में रहे, बीवसे कम्प उसाई जाय, जितनी फलदा गाँव में रहे और जितनी गाँव के बाहर जाय। गाँव में न तो सरकार को मालिकों परत न तो बाजार के मुठों का कम्पनी-साला की मालिकों कम्प गाँव में ता मालिकों चरेंगी मिद्ध गाँव को, गाँव के उरि-उरि सब लोगों को।

आज नहीं तो बर, भारत के गाँव इन बात को समझ ही, और तब बगने मून पूक कर नहीं मरगा, भुम्भन मिद्धी का गाँव नहीं छोड़ना पड़ेगा, बुद्धन और सुखर का बुद्धी-संग बन करती पड़की। सब इमान को रीतो साधन, और इन्कर का विन्दते जायेंगे। ●

गाँव का धर्म

कहानियाँ : सज्जनता की

• तीन-चार महीने पहले की कहानी सुनिये । टीकमगढ़ की बात है ।

मध्य प्रदेश में प्रखण्ड विकास अधिकारी का पद समाप्त कर दिया गया है । विकास अधिकारियों को दूसरी-दूसरी नौकरियों में लगाया गया है । किसी-किसी को पहले की तुलना में बहुत छोटी नौकरी मिली है । एक व्यक्ति से मुलाकात हुई । वह अपने नये जीवन में मस्त थे । कह रहे थे, "गुट-गुट में मुझे बहुत फ़िर हुआ कि अब परिवार का काम कैसे चलेगा ? भ्रष्टाचार में तो फँसना नहीं था । परिवार बड़ा है । हमने एक गाय और एक बकरी खरीदी । बच्चे उनकी सेवा करते हैं । मैं उनके दूध दुहता हूँ । दूध से साठ रुपये की माह्वारी बचत हो जाती है । बगीचा बनाकर तरकारी लगायी है । परिवार के सब लोग मिलकर मेहनत करते हैं । साग-भाजी बिलकुल ही नहीं खरीदनी पडती । जाड़े के दिनों में तालाब में पानी कम था । किनारे-किनारे काफ़ी जमीन खाली थी । उसमें साल भर के लायक गेहूँ पैदा कर लिया । मैं चरखा लाने का विचार कर रहा हूँ । फिर हम सब लोग मिलकर वस्त्र-स्वावलम्बन का भी प्रयास करेंगे । बड़ी नौकरी छूट गयी तो क्या हुआ, पसीना बहाकर पेट तो भर ही सकते हैं !"

• उत्तर प्रदेश की बात है । एक व्यक्ति आबकारी निरोधक (इन्साइज इन्स्पेक्टर) थे । इस विभाग के लोगों को खासी अच्छी कमाई होती है । सरकारी वेतन से बहुत ज्यादा उन्हें घराब के ठीकेदारों और दूकानदारों से मिलता है । लेकिन यह भाई अपना काम ईमानदारी से करते थे, कानूनी मर्यादाओं को मानते थे । इसलिए उनके सहयोगी कर्मचारी और ठीकेदार उनसे चिढ़े रहते थे । आखिर उनका "नगाबन्दी विभाग" में तबादला हो गया । पहले जितना वेतन मिलता था, अब उसका आधा मिलने लगा । वह भाई गाम को, तथा छुट्टी के दिनों में, अच्छे-अच्छे विचारों का साहित्य बेचकर उसके कमीशन से कमी पूरी करने लगे । मन में समाधान भी हुआ कि इस तरह धोड़ी समाज-सेवा भी हो रही है ।

• हैदराबाद में एक मित्र ने स्वावलम्बो कृषि का प्रयोग प्रारंभ किया है । उनका दूध एक हलवाई के पास जाता है । हैदराबाद में दूध का दाम एक रुपये पच्चीस पैसे लीटर है । वह मित्र भी हलवाई को उती भाव से दूध दे रहे थे । गाय

मेरे गाँव का पुरुषार्थ चूँ जगा !

यहाँ पिछले साल तालाब सूख जाने के कारण १०० रुपये पीसरा चलाने में खर्च हो गये, क्योंकि तालाब पूरा भर नहीं था । भूमि की मेड़बन्दी होने के कारण तालाब में पानी आने के स्रोत बंद हो गये थे । इस वर्ष हमारे मन में आया कि किमी तरह तालाब को पानी से लवाब भरना चाहिए ।

एक दिन मैंने ग्राम के प्रधानजी तथा दूसरे प्रमुख लोगों से इस विषय में चर्चा की । एक सरकारी बाघ का अधिकारी सलूक से निकल जाता था । उस बाघ के अधिक पानी को एक नहर निकालकर तालाब को भरने के लिए प्रस्ताव किया । सबने इस मुझाब को पसन्द किया और मोना देवने के लिए लगभग १०-१२ आदमी चल पड़े । हमको ज्ञात देखकर और १५-२० आदमी तथा बच्चे साथ चल पड़े । जाकर मुजादता किया जोर हमारा प्रस्ताव सर्वसम्मति में पास हुआ और तय हुआ कि ९ अगस्त को गाँव के सब लोग आयें और नहर निकाली जाय ।

लेकिन ९ अगस्त को वर्षा गुट हो गयी और गाँववालों की हिम्मत टूट गयी । उनको प्रेरणा देने के लिए भूमिदान में शामिल होने की इच्छा रखनेवाले १० धर्मियों को साथ लेकर हम बरगाव में ही नहर खोदने लगे । हम काम करते हुए देखकर एक भूतपूर्व जमींदार श्री बरलू नम्बरदार ने भी मिट्टी खोदने में हमारा साथ दिया । उस तरह देवा-दनी ३ साथी और आ गये । कुल १४ आदमियों ने लगभग ९० फुट लम्बी नहर खोद डाली । बाघ का पानी तालाब की तरफ बहने लगा । हमारे सबके हृदय में उम्माह की छहर दोड़ गयी । ग्राम को सब गाँववालों का ध्यान इस तरफ गया । दूसरे दिन वहाँ के पुतान मुसियाजी ५० जवानों को लेकर नहर का गट्टी और चौड़ी करने में मदद गये । पानी नेत्री में जान लगा । दिनभर में आधा तालाब भर गया । दूसरे दिन देवा कि तालाब लवाब भर गया है । —**श्रीमद्वारा पाटीयाब**

का दूध था, फिर भी हलवाई ने मेम के दूध का दाम दना गुट ही स्वीकार किया था ।

एक दिन उस हलवाई महोदय का दोन जाया, "भाई, आपका दूध इतना अच्छा है कि उस एक रुपये पच्चीस पैसे में मेम अच्छा है, मैं आपकी गोपारा के दूध का दाम एक रुपये पच्चीस पैसे प्रति लीटर दूंगा ।"

आपको भी कुछ ऐसे अनुभव आते होंगे । बसो नहीं हल एक-दूसरे को मेम अच्छे अनुभव सुनें-सुनायें —**सख्त हल**

गेहूँ की खेती—१

भारत की रबी की फसलों में गेहूँ का मुख्य स्थान है। खाद्य की फसलों में इसका तीसरा स्थान है तथा पैदावार में चावल के बाद इसका दूसरा स्थान है। गेहूँ की खेती जितनी ज्यादा की जाती है, उस हिसाब से उसका उत्पादन बहुत ही कम होता है। भारत में गेहूँ की औसत पैदावार १०-१२ मन प्रति एकड़ है। आज गेहूँ की खेती पर जितनी खोज हुई है, अगर उसका ठीक से जमल हो तो उत्पादन चार-पाँच गुना बढ़ाया जा सकता है यानी जितनी भूमि हमारे पास है उतनी ही में पैदावार बढ़ाकर हम अब में स्वावलम्बी हो सकते हैं।

हम यहाँ गेहूँ की नयी किस्मों के बारे में जानकारी दे रहे हैं। भारतीय कृषि अनुसंधानशाखा ने सन् १९६५ में देश के अनेक भागों में जाँच की और मैक्सिको के गेहूँ की दो किस्में लेरमारोओ और सोनोरा-६४ बुजाई के लिए स्वीकृत की।

लेरमारोओ : यह ज्यादा उपज देनेवाली पिछेली किस्म है। इसे मौसम के घूट में बोना चाहिए। इसका पौदा चार फुट ऊँचा होता है। इसकी बालें ज्यादा लम्बी और दूबडागी होती है। इसका दाना कम लाल रंग का होता है। यह किस्म गेरुआरोधी और पीला गेरुआरोधी है। पंजाब और उत्तर प्रदेश में पीले के गेरुआ का प्रकोप होता है, इसलिए इन इलाकों के लिए यह किस्म बहुत अच्छी है।

सोनोरा-६४ यह अगेती और ज्यादा उपज देनेवाली किस्म है। मौसम के आरम्भ में बोने के लिए अच्छी है। जहाँ बुजाई जल्दवार के आसिरी के प्रथम सप्ताह में की जाती है, वहाँ सोनोरा-६४ को मध्य नवम्बर के पहले ही बोना चाहिए। जहाँ मौसम लम्बा हो वहाँ इसे देर से भी बो सकते हैं। यह बोने कद की किस्म है। इसकी ऊँचाई केवल ३ फुट होती है। इस किस्म के पौधे सूख खाद और पानी देन पर भी गिरते नहीं हैं। यह किस्म लगभग १२० किलोग्राम नाइट्रोजन प्रति हेक्टर (दार्ड एकड़) सह सकती है, जबकि ५० किलोग्राम नाइट्रोजन से अधिक देने पर पौधे गिर जाते हैं या रोमी हो जाते हैं। मान के बाद जब गरमी बढ़ती है और पौधों को पानी की बहुत जरूरत होती है तब गेहूँ की ऊँची कड़वाली किस्मों को पानी देने में कठिनाई होती है। इसलिए उर्वरक और पानी से

अधिकतम फायदे के लिए बोनी किस्म ज्यादा अच्छी है। ऐसी बोनी किस्में जापान में दूसरे महापुद्ग के बाद तैपार की गयी। सोनोरा-६४ किस्म सन् १९६३ में मैक्सिको से भारत में आयी। यह बहुत जल्द पकनेवाली किस्म है। देर से बुजाई करने के लिए भी यह बड़ी उपयुक्त है। इसकी बालें लम्बी नम और चौड़ी, सफ़ा मं ज्यादा होती हैं। इसका दाना लाल रंग का आयताकार होता है। यह किस्म गेरुआरोधी है, फिर भी पीला गेरुआ इसको हानि पहुँचाता है। इसलिए जिन स्थानों में पीले गेरुआ का प्रकोप होता हो वहाँ इसे नहीं बोना चाहिए। यह किस्म पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार, बंगाल, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र और उड़ीसा के लिए अच्छी है। इस किस्म को उर्वरक नहीं ज्यादा जरूरत होती है। इसके प्रयोग से पता चला है कि इस किस्म से आज के मुकाबले चार-पाँच गुना ज्यादा पैदावार ली जा सकती है।

सोनोरा-६४ को उपजाने के लिए नीचे लिखी कुछ बातें वातो पर ध्यान देना चाहिए।

१ नवम्बर के पहले सप्ताह में बुजाई पूरी कर लेनी चाहिए। बुजाई के समय भूमि की नमी का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

२ भूमि की नमी १८-१५ प्रतिशत से कम न हो।

३ बोंज धोड़ी गहराई में बोना चाहिए। लेकिन ८ मीटर-मीटर से जाँच गहराई नहीं होनी चाहिए।

४ एक एकड़ में ८५ म ५० किलो बोंज बोना चाहिए।

५ कतारों का फागला १५ से १८ सेंटीमीटर हो।

६ सिंचाई से पहले निराई-गुड़ाई और खरपतवार निगलना जरूरी है।

७. बाने के बाद पहली सिंचाई २५ दिन बाद करनी चाहिए। फिर आवश्यकतानुसार २५ दिन अन्तर पर सिंचाई करते रहना चाहिए।

८. प्रति एकड़ २०० किलोग्राम कैल्शियम अमोनियम नाइट्रेट अथवा २५० किलो अमोनियम सल्फेट की जरूरत होती है। १०५ किलो गुपूर फास्फेट को जड़तल पड़ता है तब १५-२० किलो म्यूरिएट आग पोटाश को।

९. फसल के पकने पर बुँकि बाँटियाँ फुट जाती हैं, इसलिए इनको बटाई फसल के सूखने के कुछ पहले करने।

इन किस्मों के बोंज के लिए फार्म मैनेजर, गेटनी डिबो-जन, पुना इन्स्टिट्यूट, नयी दिल्ली-१२ से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। •

दिल्ली और बच्चा

दिल्ली काल की गति की तरह हर समय भागती रहती है। पता नहीं वह क्या चीज है, जिसे सड़कों पर भागती गाड़ियाँ, गाड़ियों पर भागती सवारियों पकड़ लेना चाहती है। हर रोवाल, हर मोड़, हर गली दिल्ली की भागदौड़ में हर बच्चा बेचैन मालूम पड़ती है। दिल्ली हर देसावाजी के दिल की अपनी ओर रिशानी है, और रोसकर निकट आये हुए आदमी को, जारमियों को ऐसी भीड़ में ठेल देती है, जहाँ में कोई निकल नहीं सकता। उनके बस की बात निरर्थक श्रुती ही होती है कि भीड़ का दबाव उसे ठेलकर जिधर वे जाय, उधर अपने को जाने दे।

मैं भी ऐसे ही निचाब में दिल्ली आया था, लेकिन दिल ने यहाँ आदमी को जिनगी की दुर्दशा देखकर एकना कद्रूल नहीं किया। अब लोटकर वापस जा रहा हूँ गाँव को। गाँवो तुमने में अभी देर है। भूख लगी है, इसलिए पोस्टकाराम पर बिक रही रोटी-दाल खरीदकर अभी मामले रखा हो।

मैंने पाने के लिए कि कभी कितनीका हाथ अल-मुनिबन का चिनकवरा टेडा-मेरा कटोरा थामे सामने हाजिर हो जाता है। देगने ही चिड़ बँदा होनी है, झल्लाकर उठने के लिए सामने देखा है, तो मुँह पुसा का मुला रह जाता है, आवाज नहीं निकलती।



“बाबू, बच्चे के लिए...!” वह पुरी बात नहीं कर पाती।
 “यह बच्चा है या बच्चे की लाम है उसके कपो पर ?”
 “गायद अभी लाग नहीं बन पाया है, नहीं तो उनके लिए खाना क्यों मँगाने ?” अपना मत जपने ही मन से मवाल-जवाब करता है।
 “बच्चा तो बटून बोमार मागूम होता है, इधे रोटी नहीं मानी चाहिए।” उस औरत को समझाना है।

११ अक्टूबर, '६०

नेता और जनता

हमारे आश्रम में एक लड़का था। और था एक बिल्ली का बच्चा। वह लड़का उसी बिल्ली के बच्चे को अक्षर गोंद में लेकर घूमता-फिरता था और हमेशा सबको यह बताता था कि इस बिल्ली के बच्चे से आप कोई भी सवाल पुछिये, तो वह तुरन्त जवाब देगा। मचमुच ही हम जब कभी उससे कोई भी सवाल पुछने तो वह बच्चा 'भ्याउं' करते जवाब देता था। जाहिर है कि वह लड़का ऐसा कुछ करता था, जिससे बिल्ली का बच्चा मजबूर होकर 'भ्याउं' बोलता था। एक दिन हमने जांच किया तो पता चला कि वह लड़का बिल्ली के बच्चे को कपड़े से ढँक देता था, कपड़े के नीचे अपना हाथ उसके पेट पर रखता था, और जब कोई सवाल पूछता था तो वह तुरन्त उसका पेट दबा देता था। बिल्ली का बच्चा मजबूर होकर 'भ्याउं' बोलता था। तब वह लड़का सबको समझाता था कि यह बिल्ली का बच्चा आपके प्रश्नों का अमुक जवाब दे रहा है।

ठीक उसी तरह आज हमारे नेता जनता के पेट में जंगली गडा-बाझकर अपनी मतमानी का समर्थन करा रहे हैं। वह बेल देवत-देराते हम डब गये, लेकिन जि-होंने यह गेल रचाया है, उनको हमारी ऊँच की परवाह कहाँ है? — रासालचन्द्र दे

“बच्चा अभी गाना नहीं, पीना है। लेकिन दूध ही नहीं मिलता, जमाने को। एक गंठी दीजिये बाबू।” वह कहती है।
 “कितने दिन का हुआ ?”
 “दस महीने का।”

“दस महीने का बच्चा लेकर दिल्ली में भीग माँगने निकल पड़े ?”
 “नहीं तो बड़े-बड़े कौन विलासेषा ?”
 “बनो, बच्चे का बाप ?”
 “ !” वह चुप रहो।

समस्त गया कि यह दिल्ली की किमी सड़क का बच्चा है। बाप इसका एक ही है भयबान, जो देने दोनो बक्त रोटी का इन्जाम तो आकर करेगा नहीं, इसलिए भीम माँग रही है। दिल्ली, बम्बई, कलकत्ता जैसे महानगरों में न जाने कितने सड़कों के बच्चे हैं, बिनको राजधानी दिल्ली भारत का नागरिक मानने से तो इन्कार नहीं करती, लेकिन उन्हें नागरिक-अवतन का दर्जा भी नहीं दे पाती। गायद कभी दे भी नहीं पायेगी। —अ०

अमेरिका में सामूहिक जीवन के प्रयोग

मामदान आन्दोलन द्वारा भारत में एक लोकतांत्रिक समाज स्थापित करने का प्रयास हो रहा है। सवाल उठता है कि क्या दुनिया में कभी ऐसा और कोई प्रयास हुआ है? और क्या वही उस प्रयास को सफल भी सिद्ध करेगा?

नीचे हम ऐसे ही कुछ प्रयत्नों का विवरण दे रहे हैं। विवरण हमें मुझे मिला चदन से प्राप्त हुआ है। उनका कहना है कि अमेरिका में इस प्रकार के प्रयोगों का प्रयोग स्वैच्छा से हो चुके हैं।—४०

इस्पाता

लगभग सत्रह सौ साल पहले जर्मनी में एक सम्प्रदाय था, जो ईश्वर की प्रेरणा और साक्षात् दर्शन पर जोर देता था। उस सम्प्रदाय के लोग अपने दैनिक जीवन में ऐसा अनुभव करने का प्रयत्न करते थे—जैसे उनके सामने ईश्वर उपस्थित है। उन लोगो न जर्मनी से अमेरिका जाकर वहाँ पर एक समाज की स्थापना की थी। शुरू में उनका समाज ब्रह्मचारी भाई-बहनों का समाज था, लेकिन बाद में उन्होंने अपने समाज में विवाहित दम्पतियों को भी दाखिल किया। उन्होंने अपने लिए एकड़ी के मकान बना लिये। सिर्फ अतिथि गृह और उससे सटी हुई उबल रोटी बनाने की भट्टी पक्की थी।

ये लोग नम्रता, ब्रह्मचर्य, नशा-निषेध, सहनशक्ति और कठना को जीवन के प्रमुख मूल्य मानते थे। उन्होंने अपन दैनिक कार्यक्रम में गरीरभ्रम, ध्यान और उपासना को स्थान दिया था। शिवाई कटाई, सिलाई, चित्रकला, संगीत, कटाई, फल-संरक्षण, लेखन, दियासलाई, और मोमबत्ती आदि बनाने का काम किया करती थी। वे तरकारों के बगीचे में काम भी करती थीं। पुरुष बाहर का भारी काम तो करते ही थे, इसके साथ ही अपने गृहस्थी की व्यवस्था भी अपने ही हाथों से किया करते थे। वे बुनकर, दर्जी और मोची का भी काम करते थे।

उन लोगो ने ऐसे कल-कारखाने भी खोले थे, जिससे आसपास के देहातों का विकास भी हो। विशेषकर उनके चमड़ा पकाने तथा वाणज बनाने के कारखाने काफी बड़े। वे सिर्फ अपने आप में स्वावलम्बी नहीं थे। वे आसपास के लोगो

को भी मदद देते थे। वहाँ मरीजों की सेवा किया करती थी, जिसमें वे बहुत लोकप्रिय थीं। उनका संगीत बहुत प्रसिद्ध था। उनकी किताबों को चित्रकर्ता भी बहुत ऊँचे दर्जे की थीं।

इस्पाता के समाज का मुख्य लक्ष्य ईश्वर से योग साधना था। बारह बजे रात को उनकी मीठीय होती थी। उनका आतिथ्य और सम्भवा का बरताव प्रसिद्ध था।

उसकी स्थापना सन् १७२० में हुई, और १९२४ में उसका विसर्जन हुआ। याने वे दो सौ से ज्यादा वर्ष तक अपना यह प्रयोग करते रहे।

अमीग

इसकी स्थापना भी सत्रहवीं सदी के अन्त में हुई। ये समझते थे कि धर्म एक व्यक्तिगत मामला है, इसमें गिरिवा (ईसाइयो का मंदिर) या सरकार का दखल होना गलत है। ये शस् उठाने तथा कसम खान से इनकार करते थे। इसीलिए उन लोगो को पहाड़ों में छिपना पड़ा। सन् १७०७ में ये लोग अमेरिका चले गये। आजकल उनकी सख्या लगभग ५७,००० है। एक ऐसे इलाके में जहाँ चारों ओर औद्योगिक समाज का विलासितापूर्ण जीवन चलता है, ये लोग अपनी विरोधवा कायम रखे हुए हैं। यह इसलिए संभव हुआ, क्योंकि ये कृषि पर ही निर्भर हैं, और उनकी व्यवस्था पूर्ण तया स्वावलम्बी और देहाती है। उनके बस्त्र, धर्म और भाषा भिन्न हैं, इसलिए ये आसपास के समाज से बिल्कुल अलग रह पाये हैं।

उनकी शिक्षा लिखने-पढ़ने तथा साधारण गणित तक सीमित हैं। ये सब कृपक है, और उनकी कृषि से यह सारा इलाका काफी समृद्ध हो गया है। वे ऐसे औजारों का उपयोग करते हैं, जो मनुष्य से या पशु से चलने वाले हैं। उनके पाम न ट्रैक्टर है, न कार है, न दूध निकालनेका यंत्र है, न बिजली या टेलीफोन है, न रेडियो है। इष्ट-उत्पन्न, जाने में भी वे धाड़-गाड़ी का उपयोग करते हैं। हाँ, दूर जाने के लिए वे मोटर या रेलगाड़ी का उपयोग कर लेते हैं।

जबतक सरकार उन्हें धर्म-स्वातन्त्र्य देती है, तबतक उन्हें कर चुकाने में कोई एतराज नहीं होता है। ये अपन बच्चों को सरकारी पाठशालाओं में भेजने से इनकार करते हैं। झण्डे को सलामी देने से इनकार करते हैं। फौज में भरती होने से इनकार करते हैं, तथा सरकारी मदद या इमदद लेने से भी इनकार करते हैं।

‘गाँव की बात’। यापिक चन्दा : तीन रुपये] श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा सघ के लिए [इस अंक की छपी प्रतियाँ ४,२००

संसार प्रेस, काशीपुरा, वाराणसी से मुद्रित और प्रकाशित ।

तीन मंजिलें

यह चीनवा रास्ता है, जो मान की परिस्थिति से हमें हमारी आखिरी मंजिल तक ले जाएगा।

सबसे पहले, हमारे लिए साफ यह पता चाना अत्या रोमा कि अपने रास्ते का चुनाव करते समय हमें मार्ग से क्या मदद मिल सकती है। हेग में एर १९७२ में, पहली 'ईरनेशनल' की बैठक के समय मूल-रचना (टेक्स्ट) पर बोलते हुए मार्ग ने कहा था :

"एक न एक दिन कार्यकर्ता को राजनीतिक सफा पर बकर काबिल होना पड़ेगा, ताकि मजदूरी का नया संपन्न स्थापित हो सके... लेकिन हम और देकर यह नहीं कहते कि एक कदम तक पहुँचने का हर कदम एक ही रास्ता है। हम जानते हैं कि इसका विचार करते समय अन्ध-अन्ध देखी की वखाओं, रीति रिवाजों और तब तरीकों का लयाल रहना होगा। और हम इन कान नहीं करते कि उनिया में एरूप, अमेरिका और, यदि मैंने ठीक समझा है तो, हालैंड आदि ऐसे मुक्त हैं, जहाँ के कार्यकर्ता इस लक्ष्य तक घानिपूर्ण तरीके से भी पहुँच सकते हैं। लेकिन सभी देशों में ऐसी बात नहीं है।"

मार्ग ने यहाँ समानचार के लिए साफ-साफ दो रास्ते सुनाये हैं—एक घानिपूर्ण, दूसरा दिशापूर्ण। इन दोनों रास्तों में से चीनवा चुनाव बाय, यह देश की परिस्थितियों पर निर्भर करता है। रूप में लोकतंत्र नहीं था, इसलिए लेनिन के दिसक क्रांति का रास्ता अपनाया वहा। एरुप में लोकतंत्र है और मार्ग के समान की तुलना में उसका दायरा बहुत बड़ा गया है। एरुपे हम देखते हैं कि यहाँ मजदूर तब की लक्ष्य है, जो लोकतांत्रिक जरातों से समाजवादी कार्यकर्ता को व्यापक दारिक रूप दे रही है। यहाँ का बोर्ड मजान्य संघर्ष भी आज यह सनाना नहीं देत कथा कि यहाँ किसी दिसक क्रांति की आवश्यकता या समानता है। पिछले कई वर्षों से भारत एक स्वतंत्र लोकतंत्र के लिए संघर्ष करता आ रहा है।

भूरान-संघ : मुकबा, १३ अक्टूबर, '६०

यह लोग जानते हैं कि भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस इस संघर्ष की मुख्य शक्ति रही है। कांग्रेस के प्रवर्तकों ने इस देश को सत्ता प्रयागों से जो नतीजे खानने आये, उनको आधार पर हमारे समानवाद का रास्ता तय होगा। यह साफ नहीं हो सका है कि इसका नतीजा क्या सामने आनेवाला है। कुछ भी हो, इस प्रक्रिया में हम सिर समानाधीन नहीं हैं, बरिक्त सक्रिय रूप से अपना काम करते रहनेवाले लोग हैं और अपने कामों के बारे में अंतर दाखल उठे मनचारी सफल देने में लगे हैं।

समानवाद तक पहुँचने के समग्रण काल को समझा आश दो दिश्यों में दिखाये देती हैं। उसका पहला दिशा मुक्त लोकतंत्र की स्थापना से संबंधित और दूसरा दिशा उस लोकतंत्र को समाजवाद में रूपान्तरित करने से सम्बंध रहता है।

मैं समझा के पहले दिग्गों को पहले ले रहा हूँ। हम योही देर के लिए मान लें कि भारत में एक पूर्ण लोकतांत्रिक राज्य की स्थापना हो गयी है। यदि हम इतिहास की पन्नाओं को घान में खूब देलें या मार्ग लें तो मानना होगा कि यहाँ उर्तुआ भेगों के लोग उपर आ जायेंगे। ऐसी हाल में मजदूर और शरर तथा गांधी के गरीब लोग उर्तुआ वग के लोगों को दायर समाजवाद की स्थापना के लोको ? ये वद काम लोक शक्ति टग से करों या दिसक क्रांति के बारे में ?

यदि अपने लिए कदम हो तो मैं कहूँगा कि मैं लोकतांत्रिक तरीका उर्तुआ। यह पक्षिक कि मैंने जो बल्प चुनाव दे, वह लोक शक्ति समाजवाद का है। दिसक क्रांति और मजदूरों के अभियानकवाद का रास्ता समाजवादी लोकतंत्र की ओर ले जा सकता है; लेकिन बिना एक देश (लोकतंत्र रूप) में वह तरीका काम में लया गया है, उधरे

यहाँ उर और ही चीन सामने आयी है— एक नौकरवादी राजन विधमें लोकतंत्र का अस्तित्व नहीं है। मैंने इतिहास की इस पन्ना से कुछ सबक लिया है। यदि भारत में समाजवादी आन्दोलन को लोकतांत्रिक में समाजवादी आन्दोलन को स्थापना नहीं रही तो उर्तुआ समाज को नष्ट करने का किर्ण एक रास्ता रह जायगा—दिसक क्रांति और अभियानकवाद का रास्ता। लेकिन मैंने यह माना है कि लोकतांत्रिक भारत में लोकतांत्रिक राज्य का अस्तित्व सामने आयेगा।

ये बातें मुझे बिल निश्चय तक पहुँचानी हैं, ये वे हैं कि पूर्ण लोकतांत्रिक भारत में समाजवाद तक पहुँचने की सम्भव-काशीन प्रक्रिया घानिपूर्ण हो सकती है और दोनो भी चाहिए। रहने का मतलब यह है कि भारत की आनेवाली समाजवादी पार्टी—



नयी पीढ़ी के लिए विक्रम में वर्तमान कांग्रेस समाजवादी दल को अवसर की रण-भारित होना—सुजाग में बिजली टोकर विधान-सभाओं और राज्यों पर अपना कब्जा कमायेगा और उनका कानून टग से उपयोग करके नूतनवाद का निनाय करेगा और समाजवाद लायेगी। १०—जे० पी०

नव समाजवादी

१९५७ : विनोबाजी के आन्दोलन ने बहुत दिनों से जो प्रसंग में पूछ रहा था, उसका जवाब मुझे शरर दिया। प्रसंग था, क्या गोपीजी के लक्ष्यदान में सामाजिक क्रांति

● तन् १९५९ में 'जन्मा' में प्रकाशित एक लेख का अन्त : मूक समेतों से।

को पूरा करने के लिए कोई व्यावहारिक तरीका उपलब्ध है ?

यह एक दुर्घटा तरीका है। इसका एक पर्यटन चर्चे पैमाने पर प्रचार-कार्य है, जिसे गांधीजी परिवर्तन करते थे। दूसरे चर्चों में लोगों को, गर्म, पंच तथा अन्य प्रमत्तान्तरों का विचार न रखते हुए यह समझाने के लिए एक अति व्यापक प्रचार आन्दोलन शुरू करना है कि उन विचारों, जीवन के मार्गों और मूल्यों का परिचय करके, जो गलत और हानिकारक सिद्ध हुए हैं, उनके स्थान में कुछ दूसरे विचारों और जीवन मार्गों तथा मूल्यों को स्वीकार करें। इस प्रकार विचार और मूल्यों में क्रान्ति शुरू हो जाती है। इसके साथ ही नये मूल्यों और विचारों का चुनाव इस तरह होता है कि उनका किसी बड़ी सामाजिक समस्या से प्रत्यक्ष सम्बन्ध हो और उनके स्वीकार करने और उन पर अमल करने से उस समस्या के हल हो जाने और साथ ही-साथ समाज में एक मौलिक परिवर्तन हो जाने की आशा हो। यह परिवर्तन भी सम्भव है, इन लोग शक्तिगत रूप से भावी समाज के मूल्यों के अनुष्ठान अभी से जीवन विज्ञानात्मक कर दें। दूसरी क्रान्तियाँ इसीलिए असफल हुईं कि उनके वर्गधारों ने ऐसे साधनों का उपयोग किया, जो उनके छात्रों के अनुकूल नहीं थे। उदाहरण के लिए, यदि रक्षक एक सहायिणी समाज था, तो उसकी प्रकृति के साधन स्वयं राज्य की प्रतिरोधी शक्तियाँ थीं, यदि रक्षक बन्दूक था, तो माइनों के आपसी धर्म की साधन बनाया गया था फिर यदि रक्षक जीवन का सञ्चालन करनेवाली स्वायत्तरता से मुक्त होना था, तो समाज के कुछ वर्गों की स्वायत्तरता को सामाजिककृति का सञ्चालन करनेवाली शक्ति की तरह इस्तेमाल किया गया। लेकिन क्रान्ति की सर्वोदय प्रणाली में साधन और साधक एक ही होते हैं।

इस प्रक्रिया की दूसरी महत्त्वपूर्ण विशेषता यह है कि यद्यपि नये विचार और नये मूल्यों पर अमल करना कठिन दीर्घ पड़ता है तो भी इस प्रकार से कार्यक्रम बनाया गया है कि साधारण से साधारण व्यक्ति भी आसानी से

एक हीद्वी से दूसरी हीद्वी पर चढ़ते हुए अन्त में लक्ष्य तक पहुँच सकते हैं। उदाहरण के लिए, विनोबाजी अपने आन्दोलन के द्वारा इस विचार का प्रचार कर रहे हैं कि हम अपनी सम्पत्ति के दूसरी मान दें और इसलिये समाज हमारे हितों के रूप में हमें जो कुछ देता है, उससे कुछ भी अधिक पाने के इत्कदार हम नहीं हैं। इसीलिए वे हमें दृष्टियों की तरह रहने और हमारे पाठ जो कुछ है, उसे हमें बाँट लेने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। वर्तमान परिस्थितियों में यह एक अति दुर्गम मार्ग दिखाई देता है। विनोबाजी ने इसलिये इस यात्रा को और अधिक सुगम बनाने के लिए पहले पूरी सम्पत्ति के छाटे-बे छोटे अर्थ का वेंचारा करने की माँग की है। किसी एक व्यक्ति से यदि अकेले ही ऐसा करने का कहा जाय, तो इतना भी करना कठिन हो जाता। अनैतिकता के बीच नैतिक जीवन बिताना कठिन होता है। इसके लिए अधिक सबत प्रयत्नों और उच्च नैतिक साधनों की आवश्यकता होती है। किन्तु जब किसी व्यक्ति के चारों ओर अन्य सब लोग उसी क्षण में लगे हों, तो दुर्बल व्यक्ति के लिए भी उच्च उदना शक्य हो जाता है। इसलिये परिवर्तन का यह कार्यक्रम, यद्यपि रक्षक तो इसका व्यक्ति ही रहता है, जनव्यापी होता है।

इस तरीके का दूसरा परन्तु स्वावलम्बन और स्वशासन का एक ऐसा कार्यक्रम तैयार करना है, जिसके द्वारा लोग—पहले वे, जो छाड़ी बस्तियों में रहते हैं—अपनी व्यवस्था स्वयं करना छोड़ें और नये विचारों और मूल्यों से प्रभावित होकर सामाजिक जीवन के नये स्वरूप और नयी संस्थाएँ खड़ी करने में एक दूसरे के साथ सहकार करें। उदाहरण के लिए, ग्रामदान का कार्यक्रम है, जो एक नवीन वृषीय अर्थ-व्यवस्था है, ग्राम स्वराज्य यानी गाँव में गाँव का राज्य कायम करने का कार्यक्रम है। लोक शिक्षण द्वारा वैचारिक मान्यता और भूमि के प्रामाणिकरण तथा ग्राम-स्वराज्य के द्वारा स्थापित गाँव के बाह्य शासन में क्रान्ति, दोनों मिलकर एक सम्पूर्ण क्रांति का कार्यक्रम बन जाता है।

यह एक नयी प्रक्रिया है, जिसका दुनिया

को अभी कोई अनुभव नहीं है। नये विचारों के सम्भव से स्पष्ट और सकोच होना स्वाभाविक है। किन्तु हम भारतीयों के लिए, जिन्हें सर्वथा नये विचारों और नये तरीकों से—शुरू-शुरू में बिनबोही ही प्रकार थोड़े-थोड़े दृष्टि से देना गया था और बिनबोही मसाले बनाया गया था—राष्ट्रीय स्वतन्त्रता प्राप्त होते हुए देखने का सामान्य भाव हुआ है, किनोबाजी के नये विचारों और नये तरीकों को समझने और मानने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। वे आत्मिकार राष्ट्रपिता के द्वारा प्रयुक्त पहले विचारों और तरीकों के विकास और विस्तार के ही चोख हैं।

गत दश-बीस वर्षों में, सत्ता के द्राप्य सेना की अयोग्यता और अघराटा का काफी अनुभव झकट्टा हो गया है, इसलिये सेवा के लिए उत्तुक्त देशभक्त व्यक्तियों को बड़ी-बड़ी सफलता में अब सर्वोदय के क्षेत्र में आना चाहिए। ऐकनो सत्याग्रही लोक-सेवा सर्वोदय के क्षेत्र में पहले से आ चुके हैं। ऐसे सेनानों, हथारों लोक-सेवकों की और आवश्यकता है।

—जे० पी०

सर्वोदय-सरकार-शिविर

वाचक के तट पर उत्कलेश्वर (वाघ दशमाम, विद्या अहमदाबाद) में सर्वोदय कालेज के छात्र-छात्राओं के लिए ता० २१ अक्टूबर से २५ अक्टूबर तक शिविर हुआ है। इस शिविर में अग्रज, छात्राँ, लेखक प्राथमिक चिकित्सा, पोषासन, सर्वोदय विचार अभ्ययन, मनोरंजन, समाज सेवा, शान्ति सेना तालीम आदि का अभ्यास कराया जायगा।

सूल-कालेज के जो भार्गव-रक्षक इस शिविर में शरीक होना चाहते हैं, वे भीमती साहिबी न्यास, ७ प्रजा कोसपती, नवरामपुर, अहमदाबाद ९ (शुक्ररात) इस पते पर संपर्क स्थापित करें। शिविर शुक्र पंच बरपे है। पत्र लिखते समय नाम, पता, उम्र, अभ्यास, ग्रिय विषय लिखें।

—सावित्री व्यास

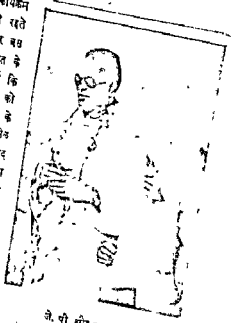
शिविर-संचालिका

● "समाजवाद से सर्वोदय की ओर" पुस्तक से
मूल्यान-यज्ञ / मूल्य ४४, १३ अक्टूबर, १९०

खुई फिदर की डायरी से

सन् १९४६ : नर्स में गांधीजी ने मुझे बताया था कि मैं उनसे महापुरुष को एक स्वास्थपद पराधीनता की संवत्नी में मित्रों। भारत के समाजवादी नेता भी बयपकाश नारायण और उनकी पत्नी प्रमावती भी गांधीजी से नहीं मिलनेवाले थे, एलबिड हम लोगों ने 'डेकन क्वीन एरठवेस' में नर्सों के पूना तक साध-साध पाया की। पूना से आये की यात्रा भी बयपकाश के लिए ठीक की गयी मोटर कार में शुरू हुई। कुछ ही दिने बाद गांधी खाया हो गयी। हमने देहाली ट्यूबके में चलनेवाली एक मोटर-गाड़ी एककी। समाजवादी पार्टी ने रातों के किनारे पर एकनेवाले गाँवों में, कुछ कुछ दूरी पर छोटी-छोटी स्वागत समारोहों का आयोजन किया था। बर्दो-भारों देखी समारोह तब की गयी थी, वहाँ वहाँ वह बल उबर जाती थी। मैं, बयपकाश और उनकी पत्नी नीचे उतरते और हम लोग मराठी भाषा में उनके प्रति बड़े गये स्वागत-उद्गारों को सुनते। जयपकाश माठा भाषा नहीं बोल पाते थे। वे थोड़े में हिन्दी बोलते थे, माठा में उरुहा भाषांतर सुना दिया जाता था। मधु में हम हीनों को खुशपूरा पूरों की भारी भाइयन माना वसना हो जाती थी, जो हमारे सुन्दों तक पहुँचती थी। इस तरह सुगन्धित फूल-मालाओं से लदकर, और अपने हाथों में गंध के फूल-पुल लेकर हम सब में पापव आ जाते थे। वर के चाइक तथा

अन्य प्राचीनग जब तक स्वागत कार्यक्रम लयथा या तब तक प्रतीक्षा करते रहते थे। दो घण्टे के भीतर हमें ६ बार बंध से उतटना पड़ा। कोई भी धिक्कावत के लिए नहीं चुनभुनाया। मैं पानता हूँ कि हमारे हठवादी इस होनेवाली देर को अपनी निरपेक्ष भावना और बयपकाश के प्रति आदरभाव के मित्रेसुवे कारणों से होत लीते थे। उन लोगों ने पहले सायद बयपकाश के बारे में कुछ नहीं सुना था। लेकिन जब बयपकाश का देखा स्वागत हो रहा था, तो उनके लिए भी सम्मान का भाव प्रदर्शन करना स्वाभाविक ही था।



सन् १९४८ : 'जे० पी०' जैते कि आमतौर पर उन्हें मुधार जाता है, एक मनोहारी व्यक्तित्व है, ऐसे को विरक्त भारत में ही होते हैं। वे पढ़ने के लिए सन् १९२२ से भारत से अमेरिका गये। उन्होंने डेलिगोर्मिया में जाकर फल तोड़ने का काम किया, फिर लोहा तथा विस्मन्निन विश्वविद्यालय में दाखिल हुए। अमेरिका में वे एक समाजवादी बन गये। लेकिन, जब वे १९२९ में भारत लौटे, तो उन्होंने कम्युनिष्टों की अनेकिक विचार दौली और निरकुश तरीकों को देखा। उन्होंने साम्यवाद को छोड़ दिया और लोकतान्त्रिक समाजवादी बन गये।

जे. पी. और प्रमावतीजी रहते हैं। परिवर्तनी विद्या और विचार-यत्र प्रथम करने पर भी वे ठेठ भारतीय हैं। जे० पी० एक गाँव में रह रहे हैं, यद कल्पना की जा सकती है। जे० पी० लोगों के नमदीक से नमदीक पहुँचाना चाहते हैं।

सन् १९५२ : बयपकाश नारायण ने २१ दिन का उपवास किया और वर उपवास ख्यात हुआ तो अंगरीने एक लेल में कहा— "इन्द्रायक भौतिकवाद" को देवी के मन्दिर में मैंने बहुत वर्षों तक उपासना की। प्रते यह स्पष्ट हो गया है कि भौतिकवाद चाहे बड़ किली भी प्रकार का हो, भादमी से उन्ना इत्यान बनने का बरिवा ही चीन जाता है।" इसीलिए उन्होंने अण्डार्ड को चुन लिया। उन्होंने भौतिकवाद के मुधारले मानववाद की प्रवृत्त किया।

जे० पी० पीमी आवाज में बोलते हैं। वे छोकी, विनम्र और संयमी हैं, निहाय रखनेवाले हैं; समन्यवादात्मक दयापूर्ण और आदरणीय भी हैं। जे० पी० में आन्तरिक शान्ति और दृढ़ता विमान है। जे० पी० की शान्ति के पीछे उनकी याँक छिगी हुई है। वे गहरे छल की लोच में ली

जयपकाशजी के निवेदन में उनके वैचारिक परिवर्तन की एक सुस्पष्टसित प्रक्रिया हमें देखने को मिलती है। उसकी मतिष्पति बहुतां के छदप में उभरजाती है। मेरा तो निरिपल मानना है कि अनेकविध दृष्टांगी लघुविचारधाराएँ, परिपक्वा की लयपाव बरांगें हुईं, मान्तिर सर्वोदय-समुद्र में विद्योन्न होनेवाली हैं।

—विनोबा

• 'दिल हब मवा बर'—जे० डरं विचार पूठ ११-१२, १२०-१२१, २०१-२०२।

दृष्टिकोण...



भूरान-बहा : शुक्रवार, १३ अक्टूबर, '६०

आन्दोलन के समाचार

ग्रामदान प्रखण्डदान

बलिया : ४ अक्टूबर। गोंसदोह और गाँवर प्रखण्डदान के बाद अब तीसरे प्रखण्ड 'बेहआरवाड़ी' का दान आज प्रखण्ड प्रभु भी रणशटर सिंह ने ३० प्र० ग्रामदान प्राति समिति के अध्यक्ष श्री कपिल भार्गव को समर्पित किया।

बेहआरवाड़ी प्रखण्डदान का विवरण

१०० से ऊपर की जन संख्या के ग्रामदान योग्य गाँव	६४
ग्रामदान में शामिल ग्राम	५४
ग्रामदानी गाँवों का प्रतिशत	८५%
कुल जन संख्या	४६,४६४
ग्रामदान में शामिल जन संख्या	...३९,३२५
शामिल जन संख्या का प्रतिशत	८१%
कुल सुविधोग्य भूमि	एकड़ १७,६९४
ग्रामदान में शामिल भूमि	" ११,२१०
" में शामिल भूमि का प्रतिशत	६४%

किये गये। अब किले में प्रखण्डदान की संख्या १७ हो गयी है।

विवरण	प्रखण्ड पट्टागो	प्रखण्ड कल्याण नरसिंहपुर
कुल गाँव संख्या	९९	२१५
ग्रामदान में शामिल प्रतिशत	८७	१८४
कुल जन संख्या	८७%	८६%
ग्रामदान में शामिल प्रतिशत	२८,४२५	३२,५७४
	२१,५००	२४,७६०
	७५%	७६%

मथुरा जदावाद तारीख में सर्वोदय आश्रम के तत्वावधान में 'सर्वोदय पत्र' मनाया गया। १२ सितम्बर से १ अक्टूबर तक कार्यकर्ताओं ने अपने क्षेत्र में ४० ग्रामों में पदयात्रा की। ३०० रु० की साहित्य विक्री की। भूदान पत्रिकाओं के प्रादूक बनाने।

धूमिया २ अक्टूबर। गांधी बचती के अवसर पर कृषक का दान १ सप्ताह के अन्दर प्राप्त करने का एकलव्य कार्यक्रमों में किया। २० पंचायतों में २० टोलियाँ सकल्प पूर्ति के लिए घूम रही हैं।

४ अक्टूबर '६७ तक

दरभंगा में कुल ग्रामदान ३,७२०, प्रखण्डदान ४४ अनुमंडलदान ३ जिलादान १ बिहार में कुल ग्रामदान १९,०९६, प्रखण्डदान ९७, अनुमंडलदान ५, जिलादान १ बिहार में सुष्टि हेतु समर्पणपत्र तयार ८२३ ग्रामदानी गाँवों के। भारत में कुल ग्रामदान ४४,११५, प्रखण्डदान १९६।

बेहारादन . ४ अक्टूबर। यह सपुर प्रखण्ड के १६३ गाँवों में से १२३ गाँवों का ग्रामदान घोषित हुआ। प्रखण्डदान का अधिदान २५ सितम्बर से २ अक्टूबर तक ६० दयानिधि पटनायक के नेतृत्व में चल, जिसमें प्रदेश की संस्थाओं के ९० अनुपरी कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया।

कोरानुड २ अक्टूबर। आज यहाँ एक एक जनसभा में दो प्रखण्डदान घोषित

गांधी जयती २ अक्टूबर को देश भर की रचनात्मक संस्थाओं में गांधी जयती 'चरला जयती' के रूप में मनायी गयी।

गांधी आश्रम के दरहुवा के द्र पर तथा धर्म समाज सहजुत डिग्री कालेज, अलीगढ़ में सर्वोदय साहित्य प्रदर्शनी लगायी गयी। तमकुडी रोड, देवरिया में विचार गोष्ठी हुई, गांधी आश्रम के विक्री केंद्र का उद्घाटन हुआ। श्री गांधी आश्रम दलीपपुर, पीलीभीत में सभा हुई। सुखन्दानहर में खादी प्रदर्शनी लगायी गयी। मथुरा में सुदहलौ में बारी बारी से अखण्ड सत्रय का कार्यक्रम ८ नवम्बर तक चत्रया बायगा। मथुरा खादी भवन में उत्तर प्रदेश के भ्रमन्त्री ने अपने भाषण में विक्री-दीकरण पर जोर दिया। हरिजन सुपुत्र, आजमगढ़ के सस्थापक श्री स्वयं में मुख्य मंत्री द्वारा लखनऊ में खादी भवन का उद्घाटन किया गया। सासना खिल गांधी आश्रम में आयोजन दूमभ्रम से मनाया गया। बरेली में सर्वोदय विचार का कार्यक्रम चलाया गया। उत्तर कला में सभी राजनीतिक दलों की समिक्रित सभा हुई।

बिहार के सुगरे जिले में १ प्राम स्वघन सघ ने घर पर खादी विक्री के लिए पेटो लगाने का कार्यक्रम रखा। दरभंगा से शैक्षणिक प्रखण्ड में सर्वोदय पाय रले गये। हारन में प्रखण्डदान सुष्टि की योजना बनायी गयी। जमशदपुर और नगर के दस स्थानों में विभिन्न संस्थाओं द्वारा गांधी बचती मनायी गयी, जिसमें छाति-सेना समिति के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। नरसिंहपुर, बिहार नुनहरपुर में २४ घंटे का सत्र यश हुआ। उड्ड, रौपि प स्थानीय शिक्षण संस्थाओं ने भ्रमदान का कार्यक्रम रखा। मोरिहारी में ५० लोगों ने २४ घण्टे का अखण्ड सत्र-यश चलाया।

राजस्थान में राधामन्द नामक स्थान पर आयोजित कार्यक्रम में अणुनर आन्दोलन के कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया। भरतपुर में चरानन दी के लिए सभा में प्रस्ताव पास हुआ। य० प्र० के गरोठ और डबारा में भी आयोजन उल्लासपूर्वक था। गरोठ में ग्राम दान याना शुरू हुई।

हिसार (पट्टा) में १४ नवम्बर '६७ तक डेढ़ लाख रुपये की खादी विक्री करने का कार्यक्रम बना। सेवानाम खिल 'भारतवर्ष भाई भवन' में गांधी सेवा सघ पुस्तकालय के बाल विभाग का उद्घाटन हुआ।

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक आभोग्य प्रधान अहिंसक क्रान्तिकारक संदेशवाहक - साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सम्पादक : राममूर्ति

सुक्रवार वर्ष : १४
२२ दिसम्बर, '६७ अंक : १२

इस अंक में

प्रज्ञाबलि — विनोद ११८

विचार का पौराणिक — सम्पादकीय ११९

लोकप्रियता-कार्य : दृष्टि और दिशा

— श्रीरंग मन्जुशर १२१

मन्य स्तम्भ :

समाचार कापी

आन्दोलन के समाचार

परिचिन्तन :

"गणित और वास्तु"

आत्मानन्द आचार्य

पूजा रोड में उपकृत-कारिणी का अभ्येनक
अभ्युक्त की विज्ञाप

कारिक टुकड़ें : १० रु०

पृष्ठ प्रति : २० पैसे

चिप्रेत में : महाशाला का-टुकड़ें-

१० रु० या १ दोसठ या १४ काकर

(हराई का-टुकड़ें : दोहों के अनुसार)

सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

राजघाट, बाराणसी-१

अंक नं० ११६५

हिन्दी लादी नहीं जायेगी

हिन्दी के बरिये छारे भारत को आत्मिक एकता बढ़ाने का शुभक महात्म्य गांधी ने पहले दिशा था। महात्मा गांधी की मातृभाषा हिन्दी नहीं, गुजराती थी। लेकिन लोगों के सामने उन्होंने हिन्दी भाषा रखी और प्रचार में हिन्दी भाषा के प्रचार के लिये अपने घेरे को भेजा। लोग प्रेम से हिन्दी सीखने लगे। हम देखते हैं कि दक्षिण में लोग प्रेम से हिन्दी सीख रहे हैं। लेकिन अब वे लोग परदाये हुए हैं, क्योंकि उन्हें भाषा हुआ कि फ़ार्म के बरिये हिन्दी भाषा हम पर लादी जायेगी। स्वाभाविक है कि लोगों में परदाइत आये। मैं अपनी तरफ से, भारत की तरफ से और सर्वोदय की तरफ से उन्हें निर्भय करना चाहता हूँ। हिन्दी भाषा दक्षिण प्रदेश पर अबरदासी नहीं लादी जायेगी और अगर वह लादी जायेगी, तो सर्वोदय उसके विरोध में खड़ा होगा। हिन्दी सीखना अच्छी बात है। लोग भी यह समझते हैं। पर अबरदासी से बचने की बात हो, तो लोग परदाइते हैं। इच्छिम हिन्दी कुप्रवृत्ता से, धीरे-धीरे आती चाहिये।

चंकराचार्य की मातृभाषा मलयालम थी। रामानुज भी मातृभाषा तमिल थी। लेकिन उनके विचार छारे भारत में खूब फैले, क्योंकि उन्होंने सरल भाषा का आशय किया, जो उस समाले की राष्ट्र भाषा थी। उन्होंने सरल भाषा में ऐसे अद्भुत ग्रथ किये कि काशी के विद्वानों को वे मान्य करने पड़े। इस तरह छारे भारत में विचार फैलाने के लिये अब हिन्दी का ही उपयोग होनेवाला है। किसीको विचार फैलाना हो, तो हिन्दी से उच्चत हुरार साधन नहीं है। पर वह धीरे-धीरे, प्रेम से समझा बुझाकर होना चाहिये, तभी वह एक लाकृत का साधन होगा।

बाबा ने दक्षिण की बाती भाषायों का अभ्युपन बहुत प्रेम से किया है। लेकिन बाबा पर अबरदासी की बाती, तो क्या बाबा देला करता। बाबा मज्जा-मज्जा भिरियाँ सीखने से बाध हो आँलें तक सारा दुई है, फिर भी प्रेम से बाबा ने सीख लिया। तो हिन्दी भाषा राष्ट्रमान्य होकर रहेगी, हमें मुझे उदात्त नहीं।

माना, हिन्दी मान्य होकर रहेगी, पर कौनसी हिन्दी मान्य होकर रहेगी? नहीं हिन्दी, बिकने आधान सरलत छन्द होगे और विचारिक प्रत्यय, किपापद के प्रत्यय हिन्दी के योगे, दृष्ट-दृष्ट-पुराने-कल्पने-के-चक्र-के-योगे-प्रतिष्ठा-के-योगे, पर हिन्दी-के-निम्न-के-योगे-धीरे-धीरे ही होनेवाला है। अबरदासी से बचने, तो बुद्धिमान होनेवाला है।

हम एक-दूसरे पर भिरदाइत रहते, हर बात प्रेम से लय करें। लय का ही आग्रह करने में हम न लगे। लय को ही अग्रत आग्रह करने दें। लय है, तो वह होकर रहेगा। हिन्दी भाषा का राष्ट्रभाषा होना लय है, तो वह लय लय ही करेगा, ये आग्रह नहीं करेगा। मैं किन्हीं प्रेम से समझाऊँगा। देला हो भी रहा है। कावों के बिनाये मरदाइत हमारे हुए, वे सब हिन्दी में हो रहे हैं। इसके कारण हिन्दी का प्रचार हो रहा है। यह तो भूदान का उपकृत है। लेकिन वह सब भाव से हो रहा है, प्रेम से हो रहा है। मैं जानता हूँ कि बाबा के प्रेम के लक्ष्य किये ही लोग हिन्दी भाषा सीखने लगे हैं। हमना ही नहीं, बल्कि नेरक में हमारी लय को भूदान चर्चकियाँ से, वे नरको की लोके से। वह प्रेम की ही बात है।

—विशेष

देख :

१०-१२-६७ : श्री मोरारजी देसाई ने कहा कि देश को आम संपर्क की भाषा हिन्दी ही हो सकती है।

११-१२-६७ : सातारा जिले के कोयना-नगर में भूकम्प के क्षरण १०० से अधिक भूकम्प मरे, १३०० घायल हुए और छेन के ८० प्रतिशत मकान गिर गये।

१२-१२-६७ : कामिष्ठ संवदीय दल की कार्यकारिणी ने राजभाषा-सशोधन विधेयक के संशोधनों को अन्तिम रूप दिया।

१३-१२-६७ : बिहार की संयुक्त मोर्चे की सरकार के प्रजा-समाजवादी मंत्रियों ने मंत्रिपद से इस्तीफा दे दिया।

१४-१२-६७ : उपप्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने बैंकों के सामाजिकरण की रूपरेखा पेश की।

१५-१२-६७ : वंगला उपन्यास 'मगदेवता' के लेखक भी ताराशकर बन्दोपाध्याय को १ लाख रुपये का भारतीय शानपीठ पुरस्कार दिया गया।

१६-१२-६७ : लोकसभा में राजभाषा-सशोधन विधेयक भारी बहुमत से पास हो गया।

१७-१२-६७ : उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ संयुक्त विधायक दल की साधारण समिति ने मुख्यमंत्री चरण सिंह का इस्तीफा नामजूर किया।

विदेश :

१४-१२-६७ : यूनान के सम्राट ने अपने प्रधानमंत्री के साथ अपने देश से भागकर रोम में शरण ली।

१५-१२-६७ : ब्रिटेन ने भारत को ११ करोड़ ६० लाख का एक ऋण दिया। इस पर ब्याज नहीं देना होगा।

१६-१२-६७ : अमेरिका ने भारत को २ लाख टन खाद्य गेहूँ खरीदने की अनुमति दी।

१७-१२-६७ : आस्ट्रेलिया के प्रधानमंत्री भी हेराल्ड होल्ड समुद्र में तैरते समय डूब गये।

वल्लभस्वामी की तीसरी पुण्यतिथि

हर महीने में यह जो मित्र-मिलन होता है, वह मुझे बहुत उसाहदायी मादम् होता है। वल्लभस्वामी के प्रयाण को आज दो या तीन साल पूरे हुए, लेकिन मुझे तो भाव ही नहीं होता कि वे गये। बिल्कुल मेरे पास बैठे हैं, ऐसा अनुभव होता है। मैंने किसीसे पूछा कि गीता के श्लोक कितने हैं, जानते हो? तो वे बोले ७००। फिर मैंने पूछा कि वल्लभस्वामी कितना जीये? उस भाई के लिए यह समझना मुश्किल था कि गीता के श्लोकों का वल्लभस्वामी कितना जीये, इस प्रश्न से क्या सम्बन्ध है। उस प्रश्न का मेरे मन में यह उत्तर था कि वल्लभस्वामी ७०० महीने जीये। वल्लभ का जीवन गीतामय था ही। अनेक बड़े-बड़े लोग दुनिया में से चले गये। सैन कहीं गये? आज वे कहा हैं? कुछ परमात्मा में विलीन हुए, कुछ स्वप्न देह में घूम रहे हैं, कुछ ऐसे हैं, जिन्होंने नये जन्म लिये। इस तरह अनेक प्रकार की गति जो जीवन जीवन समाप्त करके जाते हैं, उन की होती है। मैं सोचता था कि वल्लभ की क्या गति हुई होगी। तो अंदर से उत्तर मिला कि वह मेरे पास है और मैं जब चला जाऊँगा तब मैं जहाँ जाऊँगा वहाँ वह भी आयेगा, इतनी आंतरिक एकरसता मुझे महसूस हो रही है। इसलिए मुझे भाव ही नहीं होता है कि वे गये।

पूछा जाता है कि बड़े लोग किनको कहा जाय, तो कहा जाता है कि जिनकी सेवा बड़ी, वे बड़े लोग। मैंने इस सर्वज में एक एव बनाया है, सेवा का मूल्य जानने का। जो सेवा की गयी हो, उसको अहंकार की भाषा से छेद होता है। सेवा बहुत की और अहंकार भी भाषा भी बड़ी रही तो सेवा का मूल्य कम हो जाता है। लेकिन सेवा कम होगी और अहंकार शून्य होगा, तो उस सेवा का मूल्य अनन्त हो जाता है। आज जो पुस्तक

प्रकाशित हुई, उसमें कुंदर दिवाण ने अपने लेख में इस एव के सबष में लिखा है। इस एव के अनुसार वल्लभ की सेवा अनन्त राशि के मूल्य की है।

मैं अपने में देलता हूँ कि वल्लभ ने मुझ पर जो अद्दा रली, वही मुझे उन्नत बनाती है। मेरी अपनी खुद की जो भी स्थिति हो, लेकिन इस प्रकार की अद्दा उस स्थिति को ऊँचा उठाती है। वल्लभ मेरे पास था, सीसा, मैंने उसे पढ़ाया, उसकी सेवा की, इसके कारण उसकी जितनी उन्नति हुई होगी, उस दुःख में उठने मुझ पर जो अद्दा रखी और उसके कारण मेरी जो उन्नति हुई, वह कम नहीं हुई।

इस प्रकार हम एक-दूसरे पर अद्दा रखते तो उससे हमारी अपनी उन्नति तो होती ही है, लेकिन दूसरे की भी उन्नति होती है। मैं आशा करता हूँ कि हम जितने लोग विचार-व्यय, कार्यवश, जेहवश एक हैं, वे एक दूसरे के प्रति आदर और श्रद्धा बढ़ायें, तो उन्नति का मार्ग हासिल करेंगे।

पूजा रोड, ८-१२-६७ : —विनोबा श्याम साहे उह बने

राजभाषा-संशोधन विधेयक आन्दोलन

स्पष्ट चिन्तन में एक योगदान

भाषा-आन्दोलन के सम्बन्ध में दिये गये भी जयप्रकाशजी, विनोबाजी तथा सभापति 'महान यज्ञ' के वक्तव्यों की १० हजार प्रतियाँ वाराणसी नगर में गत १६-१७ दिसम्बर को वितरित की गयीं। शतव्य है कि इपर के अलबारी ने उन वक्तव्यों को पूरा पूरा न प्रकाशित करके भ्रामक लिपियाँ की थीं। नागरिकों के सामने वक्तव्य सही रूप में आये, इस दिशा का यह प्रयास पूर्ण सफल रहा। यद्यपि वर्तमान उल्लेख हुए आठवर्षीय याताचरण में यह कार्य खूबसे दे खाली नहीं था, फिर भी वितरण करनेवाले साथियों को दो-चार गालियाँ कहीं कहीं घुसनी पड़ीं, लेकिन प्रायः नागरिकों ने उल्लुकाय, सम्पन्न और सरादना का ही भाव प्रगट किया।

● "विद्युद्भ्रमण वल्लभस्वामी" मूल्य : दो रु० प्रकाशक : 'वल्लभ-निकेतन', छुमारकृपा, बंगलोर-१

महान-व्यस : शुक्रवार, २२ दिसम्बर, '६७

और उनके मार्गदर्शक, नामधारी नेताओं के उन्माद के पीछे क्या है ? योथे नारे, राजारू मूल्य, और अमर प्रदर्शनों के विषय और क्या है ? कहाँ है वह रचनात्मक चिन्त, रचनात्मक सम्बन्ध, और रचनात्मक कार्य को विज्ञान और लोकतन्त्र की भूमिका में सांस्कृतिक नव आगरण के तीन अनिवार्य तत्व हैं ?

सोचने की बात है कि देश की यह हालत क्यों हुई ? अगर स्वतंत्रता के बाद योग्य नेतृत्व मिला होता तो भी क्या देश दोना अनिर्वाह था ? निरुद्देश क्लृप्त हाथिहासकर पुनरुपुनरकर करेगा कि स्वतंत्र भारत को सही नेतृत्व नहीं मिला। मिले दल को स्वार्थी सिद्ध हुए। मिले सेवक को सज्जुचित सिद्ध हुए। राजनीति ने सरकार से बाहर समाज को नहीं देला, और रचनात्मक कार्यकर्ताओं ने सल्ला से बाहर समाज को नहीं देला। परिणाम सही हुआ जो आज हम अपनी आँखों के सामने देख रहे हैं। जनता ने गुलामी छोड़ी तो सुरताशी स्वीकार कर ली।

सबसे अधिक चिन्ता की बात यह है कि देश का नागरिक देश के जीवन से अपने को अलगा करता चला जा रहा है। विषय होकर वह देश को और अपने भाग्य को उपद्रवियों के हाथ सौंप रहा है। उचित अनुचित का विचार छोड़कर सामने को है वह उसे स्वीकार कर रहा है। यह 'स्वीडि' राष्ट्र का सबसे बड़ा सङ्कट है, क्योंकि जब सन्नग, सक्रिय लोकचेतना और लोकशक्ति सामने नहीं होती तो लोक विरोधी शक्तियों के लिए मैदान साफ हो जाता है। तब विशुद्ध

अराजकता, या नगा नासिस्टवाद, इन दोनों में से कोई मैदान मार सकता है। कौन जाने इन उपद्रवों के बहाने अथवा भाषा या अन्य किसी मोहक नारे की आड़ में सगठित और आक्रामक उपद्रव द्वारा सरकारी तंत्र को हथिया लेने का 'रिहर्षक' चर रहा हो ? अथ क्या नचा है जिसे उठा लिखा नहीं कर सकती ?

गांधीजी ने अपने वधीयतनामें में बिस टक्कर की चेतावनी दी है उसके लिए मैदान खन रहा है। देश में 'सर्व' की और 'सर्व' को विरोधी' शक्तियों में टक्कर अनिर्वाह माद्रूम होती है। पटना में उस दिन अथप्रकाशकी के प्रति भाषा के प्रदन को लेकर कुछ नामधारी विचारियों का जो क्रोध प्रकट हुआ उससे कम से कम सर्वोदय की आँखें अगर अभी खुलना बाकी हों तो अब खुल जानी चाहिए। सर्वोदय को सर्व की बात सही है, और सर्व की ही लड़ाई लड़नी है। नागरिक-शक्ति की इस लड़ाई में सर्वोदय या तो विषयी होगा या लड़ते लड़ते बीरगति प्राप्त करेगा। यही उसकी नियति है।

सर्वोदय की अभेय सेना गाँव गाँव में बिलरी हुई है। उसे सगठित करना उसका संकल्प है। अगर कहीं एक भी सपन क्षेत्र में नागरिक की सगठित शक्ति दिलायी दे जाय, तथा दलों की पुकार से अथा उसकी इत्की भी लककर गुनायी दे जाय, तो देशधारी उल और प्रपच का, स्वाधी और पक्षधर का, बिदे हमने भूलकर लोकतंत्र को राजनीति मान रहा है, पराँ पटवें देर नहीं लहेगी। यही काम करना है। समय इसके लिए बहुत कम है, लेकिन अभी है। पठित और उसके साथी प्रतोधा कर रहे हैं। *

गांधी-जयंती समारोह के अवसर पर 'मडल' का अभिनव प्रकाशन

गांधी : संस्मरण और विचार

- ★ यह ग्रथ गांधीजी की आगामी पुण्यतिथि पर ३० जनवरी, १९६८ को प्रकाशित होगा।
- ★ इसमें विश्व के महापुरुषों, भारत के राजनेताओं तथा समाज सेवियों के गांधीजी द्वारा लिखे संस्मरण होंगे। साथ ही गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के समय, अर्थात् सन् १९१६ से लेकर १९२२ तक के सुने हुए विचार भी।
- ★ ग्रथ डबल क्राउन अठपेजी आकार के ६०० पृष्ठों का होगा।
- ★ ग्रथ की छपाई सुसज्जित, कागज बड़िया, आवरण आकर्षक तथा जिद्द मजबूत होगी।
- ★ ग्रथ का मूल्य केवल ३०) होगा। लेकिन जो महानुभाव १५ जनवरी १९६८ तक अपनी माँग तथा मूल्य पेशगी भेज देंगे, उनको यह ग्रथ २०) में मिलेगा। भेजने का खर्च 'मण्डल' देगा।

यह विशेष रिवायत

केवल १५ जनवरी १९६८ तक प्राप्त माँग-पत्रों पर ही दी जायगी।
२० रुपये मनिआर्डर से भेजकर अपनी प्रति तुरत सुरक्षित कराइए।

न्यवस्थापक

सस्ता साहित्य मण्डल : नई दिल्ली
शाखा : बीरो रोड, इलाहाबाद

महान-यज्ञ : शुक्रवार, २२ दिसम्बर, '६०



गाँव की बात

२२ दिसंबर, १९७०
 वर्ष २, अंक १०

इस अंक में पढ़ें—

सब हमारे ही नाम में
 आप सब ठग हैं
 धरती की प्यास, पानी का प्रवाह
 धारणा... धारणा 'धारणा'
 गाँव की योजना में गाँव
 बिहार-दान हो
 कोई मेरा शत्रु नहीं

बगले अंक का आकर्षण—

रोटी या भाषा... भाषा या रोटी
 किताब नहीं, वादा

२२ दिसंबर, १९७०
 वर्ष २, अंक १०

[१८ पैसे]

सब हमारे ही नाम में

पंडित परगुराम ने जिस जगह नौकरी शुरू की उसी जगह बूढ़े हो गये। गर्मी में मिले थे तो कह रहे थे कि एक दिन वह भी था जब वह बरसाद के नीचे बोरा बिछाकर बंठते थे, और बहुत कोशिश करने पर मुस्किल से दो-चार बन्ने घोड़े देर के लिए आ जाते थे। कभी-कभी पंडितजी ३४ वर्षों की अपनी रामकहानी बड़े प्रेम से सुनाते हैं। आज भी गाँव के दस-बीस लोग शाम को उनके स्कूल पर—अब वह मिडिल स्कूल है, और पंडितजी उनके हेडमास्टर हैं—आ जाते हैं। पंडितजी घेंती-घायी, गाँव के राङ्गे-भगड़े, और तिलक-बिवाह से लेकर देसा-दुनिया की भरपूर चर्चा करते हैं, और एक-एक बात खूब समझाकर कहते हैं। जब से रामघनी कलकत्ता से छुट्टी पर घर आया है, वह बसबर बहों की बाँधें सुनाता है। इन दिनों हिन्दी की चर्चा में सबसे ज्यादा सजा कालेज में पढ़नेवाले विद्यार्थियों को आता है जो कालेज बाद होने के कारण घर आये हुए हैं। पर पर कोई काम है नहीं, इसलिए घाम होते ही सब स्कूल पर इकट्ठा हो जाते हैं। पंडितजी लकड़ी की एक बड़ा-सा बुझा जला देते हैं और उसके धारों और उनका 'शाम महाविद्यालय' शुरू हो जाता है।

रामघनी ने कहा, "पंडितजी, आसमान का हाल जाना जा सकता है, लेकिन कलकत्ता में कल क्या होगा, कोई नहीं कह सकता। हम लोग मुबद्द सोकर उठते हैं जो समझते हैं कि एक नया दिन सूर्योदय से बीता।"

पंडितजी—“धीरे-धीरे थुप देस कलकत्ता बनता जा रहा है। इतना बड़ा देस है तो हर दिन कोई-न-कोई सवाल पंदा होता ही रहेगा, लेकिन आश्चर्य तो यह है कि कोई ऐसा सवाल नहीं है जो आसानी से हल हो जाय। हर फोडा नामूर बन जाता है। राजनीति तो हर जगह घुसी हुई है।”

रामघनी—“लेकिन, पंडितजी, बगले के छोटे लोगों पर—विशेष रूप से आफिस के वाजुओं और कारखाने के मजदूरों पर—कामूनिस्ट लोगों का असर है। वे मोचते हैं कि यह पार्टी मरीबों की बात कहती है, उनके लिए लडती है।”



जनता का प्रतिनिधित्व

सोहन—“यह तो बताओ कि कौन पार्टी गरीबों की बात नहीं करती ? सब यही कहते हैं कि देश का भला करने, गरीबों का भला करने के ही लिए उनकी पार्टी बनो हुई है। क्या कोई यह भी कहता है कि उसने गरीब पर बैठने के लिए पार्टी बनायी है ?”

पंडितजी—“रामधनी, सोहन ने पते की बात कही है। गरीब की गरीबी और जनता को जनानी, बाबू है जो आंच पाते ही भडक उठती है। बस, इतना जानने की जरूरत है कि क्या कितनी आंच दिखायी जाय। अच्छा विनोद, तुम बताओ, तुम्हारे विश्वविद्यालय के युनियन में आग किसने लगायी ?”

विनोद—“विद्यार्थियों ने।”

सोहन—“विद्यार्थियों ने ? तो, युनियन किसका है ?”

विनोद—“जाचा, हमारे युनियन पर कांग्रेसी विचार के विद्यार्थियों का कब्जा है। जब विश्वविद्यालय में हिन्दो का आन्दोलन छिडा तो समुक्त समाजवादी, जनसघी विचार के विद्यार्थी सामने आये, और दो सप्ताह चार दिनों में उनको ताकत बढ़ गयी। नतीजा यह हुआ कि सबसे पहले उन्होंने युनियन के दफ्तर, कैंटीन और डाकखाने में आग लगायी। इसमें दो पुटे-पुटे राजनीति वि, और कुछ नहीं।”

रामधनी—“कुछ भी हो, हिन्दो का सवाल तो अपनी जगह है ही।”

पंडितजी—“रामधनी, सरकार कोई हो, बगल में गरीब का सवाल, जंता था, वैसा है; वल्कि सामद पहले से भी खराब है; क्योंकि बहुत-से मजदूर बेकार हो गये हैं, और चावल भाँस रुपये किलो एक किरा रहा है। उसी तरह अण्ड दूसरी भाषाओं के लोगों ने अपनी इच्छा से हिंदी को स्वीकार न किया तो हिंदी का सवाल आज वहाँ है वहाँ रह जायगा। कही इस तरह भी कोई सवाल हल होता है ?”

विनोद—“तो क्या इसका यह अर्थ है कि कुछ लोगों की जिद की सातिर एक विदेशी भावा को बदरित किया जाय ?”

पंडितजी—“नहीं। पढाई पढनेवालों की भाषा में हो, और सरकार का राजकाज जनता की भाषा में हो। अगर इतना हो जाय तो अंग्रेजी का उसी जगह इस्तेमाल होगा, जहाँ उसके बिना काम नहीं चलेगा। इस सवाल को हल करना मुश्किल नहीं है—अगर हल करने को नीयत हो तो—लेकिन असली सवाल दूसरा है। वह है कि अब हमें यह मानकर चलना चाहिए कि भारत एक मिश्र-भूला देश है। इसमें हिन्दीवाले हैं, अंग्रेजीवाले हैं, और दूसरी भाषाओं वाले हैं। अनेक भाषाएँ, अनेक धर्म, अनेक जातियाँ, अनेक विश्वास, अनेक विचार, और अनेक हित हैं। इनमें कौन कितने दबकर रहने को तैयार है ? क्या ऐसी हालत में देश की मजदूरी इसमें नहीं है कि वही बात सही मानी जाय जो सबको मान्य हो।”

विनोद—“यह ठीक तो लगती है, लेकिन अब जनता के नाम में नारा लगता है तो रहा नहीं जाता। हप लोग तो पहले ही दिन निकल पडे।”

पंडितजी—“यही तो बात है। दगा हो, तेल जलती जाय, दुकान सूटी जाय, आदि जो कुछ होता है सब हम जनता और देश के ही नाम में होता है। आप भेषो पर अलभतरा पोते हैं, मद्रासवाले हिन्दी पर पोते हैं, और दोनों मिलकर बुनिया में भारत का मुँह काला कले है। क्या, है ऐसी बात या नहीं ?”

सोहन—“ठीक कहते हैं, पंडितजी ! जनता, जनता, सब हर जगह जनता का ही नाम होता है, लेकिन जनता के जो दुल हैं उन्हें सुनने और दूर करने की भुसंत किते है ? नये-नये हमडे जनता के नाम में खडे होते रहते हैं। कई बार तो जनता जानती भी नहीं कि झगडा है कितलिया ?” •

सूचना : “गाँव की बात” “भूदान-यज्ञ” के परिशिष्ट के रूप में हर महीने दो बार प्रकाशित होती है। आगे यह स्वतंत्र पत्रिका में प्रकाशित हो, इसकी कोपिण हो रही है। बूँकि इस नाम से दूसरी पत्रिका वही से प्रकाशित होती है, इसलिए इसका नाम भी बदलनेवाला है। पाठक हमें दामा करने।

—सम्पादक



आप सब ठग हैं

बड़े व्यापारियों को एक टोली व्यापार के लिए एकसाथ पर से निकल पड़ी। बहुत दूर का रास्ता तय करना था उनको। रास्ते में डकैतों का भी डर था, इसीलिए उन्होंने बड़े बड़े निकलकर साथ होने के पहले ही लोटेने का कार्यक्रम बनाया। उसी मुताबिक लोग व्यापार का काम पतम करके सबेरे लोटेनेराले थे। बीच में उनको एक छोटे राज्य से गुजरना था और उसी राज्य में उस समय बड़ा अफ़ास पड़ा था।

सूरज उठने में अभी काफी देर थी, इसलिए वे आराम करने के लिए उसी राज्य के सुन्दर घासखन के तीर पर एक बड़े पेड़ के नीचे बैठे। बैठे, तो गप करने लगे। गप तो व्यापारियों की ही थी, तो वह लहज ही व्यापार के बारे में ही थी। किसको किसका गप्पा हुआ, यह हिसाब होने लगा। अपने को दूसरों से काबिल प्रमाणित करने के लिए मुनाफे के अंकड़े बढते जा रहे थे। जो व्यक्ति पट्टे में नीचे पड़ जाता था उसके मन में ईर्ष्या पैदा होने लगी और आखिर में जीतने-बाले पर टगने का इलजाम लगाया गया। इससे प्रायः पैदा हुआ और चोर का हल्का सबा। इतने में ही उस राज्य का राजा अपनी अफ़ास से पीड़ित प्रजा की हालत देखते हुए उसी रास्ते से निकल पड़ा और तीर मुनकर व्यापारियों के पास गया। राजा को जान्बुब हुआ कि वे लोग क्यों झगड़ रहे थे। मुछने पर राजा को पता लगा कि वे लोग एक-दूसरे पर ठगी का इलजाम लगाने में तयार हैं। इन लोगों में कौन बादी और कौन प्रतिवादी, यह भी पता नहीं चलता था। राजा सोचने लगा कि इन लोगों का हलका कैसे मिटाया जाय। आखिर उसको एक तरकीब सूझी और बोला—आप सब घालत हो पाइये। मैं अपनी पांच मिण्ट में इसका फैसला कर देता हूँ। आप सब घालत रहे। सब घालत हो गये। तब राजा बोला—आप सब लोग अपनी अपनी परिवार कागल पर लिखकर मुझे दे दीजिये। हर एक व्यक्ति ने अपने वयान में दूसरे को ठग या चोर प्रमाणित करके लिखकर अपना-अपना कागल राजा के हाथ में दे दिया। राजा ने सब कागल

एक-एक करके पढ़ा और आखिर में बोला—देखिये, आप सब लोग चोर या ठग हैं। राजा की राय मुनकर सबको गुस्ता जा गया और कहा—क्या आपकी राय में बादी भी चोर और प्रतिवादी भी चोर है? तब राजा बोला—आप लोगों में कौन बादी है और कौन प्रतिवादी? अगर आप बादी हैं तो दूसरे आपको प्रतिवादी कहते हैं। आप दूसरे को चोर कहते हैं तो दूसरे भी आपको चोर कहते हैं। आपकी बात सच है तो दूसरे की बात क्यों झूठ मानी जाय? इस पर सब चुप रहे। राजा बोला—अच्छी बात है। आप अभी अपनी निदांषवा प्रमाणित करके वयान लिखें। इस पर फिर सब राबनी हो गये और अपनी-अपनी लिफ्तों का वयान लिखार से लिखकर राजा को दे दिये। राजा पढ़कर बहुत पुर हुआ और बोला—क्यवाद। आप सबके सब महात्मा हैं। ऐसे ही साधु-महात्मा आप सब बने रहे। अभी आप पर जाइये और मिल-जुलकर रहिये। राजा को इस बात पर सबका मुँह उजर गया और उनके चेहरे पर नाराजगी झलकने लगी। एक व्यक्ति अपनी नाराजगी जाहिर करते हुए बोला—अजी, मैं साधु हूँ इसलिए क्या सबके सब साधु हो गये? राजा ने तुरत जवाब दिया—क्यों नहीं? अगर आप अपने वयान ने ही सबको चोर प्रमाणित करना चाहिये तो दूसरे भी चोर या साधु नहीं होते, यह सबक आप पहले सीख लें। अपनी कृति से ही सब प्रमाणित होया। अगर आप सब साधु है तो मेरे इस राज्य की भूखी प्रजा को सोझो मदद दें। आप सब तो घनवान हैं और काफी कमारे भी हैं। दो-चार खपये इन गरीबों के लिए दान दें। राजा को यह बात मुनते ही सब व्यक्ति छलांग मारकर उठ पड़े और चौतरफा भागकर भागने लगे थे।

राजा हैभकर अपने आप कहने लगा—यमान से तो अपने को साधु प्रमाणित करने के लिए इन लोगों ने कुछ भी साझी नहीं रखा, लेकिन उक्ति से ही सब व्यक्ति छलांग मारकर उठ पड़े और चौतरफा भागकर भागने लगे थे।

—रासलालचन्द्र ने

सादीग्राम

धरती की प्यास, पानी का प्रवाह

“यह कुआँ भेरा है। इसमें पानी की कमी नहीं है। हम कुँड से पानी निकालते हैं। लेकिन कितना निकालेंगे? कुएँ के ऊपर से बिजली की लाइन गुजरती है, अगर मोटर मिल जाय और बिजली लग जाय तो हमारे लिए पानी की कमी नहीं पड़ेगी।” मुझसे एक किसान ने कहा।

“यह नदी है। इसमें सालभर पानी रहता है। इसके दोनों तरफ हमारे गाँव की जमीन परतो पकी है। पिछले सूखे में नदी के दोनों तरफ की फसल सूख गयी थी। हम चाहते हैं कि हमारे लिए नदी से पानी उठाने के लिए मोटर का इतजाम हो जाय।” दूसरे गाँव के एक किसान ने कहा है।

“हम लोग तो यह चाहते हैं कि हमारे खेतों में जगह-जगह कुओं का इतजाम हो जाय तो हम पानी निकाल लेंगे।” तीसरे गाँव में मुझे भी कहा।

“यह बाँध हम लोगों ने अपने सामूहिक धनदान से बनाया है। यह नदी पहाड़ से निकली है। सालभर पानी बहता रहता है। जब से यह बाँध बना है तब से हम २५० एकड़ जमीन की सिंचाई कर लेते हैं।” चौथे गाँव में सुना।

“इस कुएँ को बनाये दो वर्ष हुए। जब से यह कुआँ बनाया है पैदावार दूनी हो गयी है। खादीग्राम से कुआँ बनाने में मदद मिली थी। कुएँ में लगाने के लिए रिग मिल गया था। इसका पैसा नकद नहीं दिया था। बोझ-बोझ करके दो फसल में वापस कर दूँगा।” पाँचवें गाँव में सुना।

“खादीग्राम के एक कार्यकर्ता ने हमें बताया था कि गाँवभर के लोग मिलकर सिंचाई के लिए पानी का इतजाम करना चाहे तो उन्हें खादीग्राम की मदद मिल सकती है। हम गाँवभर के लोग तैयार हो गये। खादीग्राम से रिग मिल

गया। हम लोगों ने नदी के किनारे यह कुआँ बनाया है। इससे हमें सालभर पानी मिलेगा। यह जो बाँध थाप देवते हैं, उसे हम लोगों ने धनदान से बनाया है। रिग का पैसा खादीग्राम को वापस कर देंगे। बस अब मोटर आ जाय तो हमारी कगाली, मरीची दूर हो जाय।” छठे गाँव में सुना।

खादीग्राम के एक कार्यकर्ता ने बताया, जो इस प्रकार है-

“खादीग्राम के पास के दो प्रखण्डों—शाहा और कभी-पुर—में पैदावार बढ़ाने की दृष्टि से हमने एक योजना बनायी है। ग्रामदानी गाँवों की प्रमुखता होगी। उपज बढ़ाने के लिए सात काम हमने जल्दी माने हैं—पानी, बीज, खाद, दवा, औजार, प्रशिक्षण और सेवा। (सर्विस)।

पानी—पुराने कुओं को गहरा करने, ताकि उत्तम पानी पर्याप्त हो सके। पहाड़ों में से जो झरने निकलते हैं, उनके पानी का उपयोग। अभी तक वह पानी नदियों में बह जाता है। थाने उस पानी का उपयोग सिंचाई में हो।

गाँववालों की हम सिमेंट रिग देंगे, बाहररहैट या मोटर (बिजली या डीजल का) उपलब्ध कराने की योजना है। आहर और तालाब भी सिंचाई के काम आयेंगे।

एक कुएँ में लगभग २० से २५ रिग लगते हैं। एक रिग की कीमत ४० रुपये जाती है। इस प्रकार एक कुएँ पर ४० × २० = ८०० रुपये के रिग लग जाते हैं। रिग का पैसा नकद न लेकर किरातों में लिया जायगा। इतना पैसा तो सरकार से मिल जायगा और गाँववाले को जाधा हो देना पड़ेगा।

बना-बनाया रिग मिल जाने से गाँव के लोगों को कुआँ बनाने की परिचानो बिल्कुल रास हो जाती है। गाँववाले कुआँ खोद लेते हैं और रिग के आकर कुएँ में डाल देते हैं।

बीज—गाँव के लोगों को अच्छा बीज नहीं मिल पाता है। इसलिए वे अपने खेत का ही बीज बराबर खोने चने जाते हैं। इसके कारण पैदावार में काफी कमी आ जाती है। हमने तय किया है कि अच्छा बीज इत क्षेत्रों में दिया जाय। इससे लिए इस साल हम लगभग ५० हजार रुपये का बीज-प्रोग्राम बनायेंगे। अभी धान का बीज खरीदना शुरू कर दिया है। किसान बीज का दाम किरातों में चुकायेंगे। मरीचों की बारी दाम में ही बीज मिल जाय, इसकी सङ्कल्पित दो आ सत्रों है। खादीग्राम की सेठी मुख्य रूप से बीज की तैयारी कर लिए करेंगे।

गाँव की बाढ़

औजार—गाँव में वही पुराने ढंग से, पुराने औजारों से सेतो हो रही है। उन्हें नये और सुगम औजार नहीं मिल पाते हैं। हमारा जो सरंजाम है, उसमें सेतो के औजार वनों, दस दृष्टि से उसमें काम का संयोजन कर रहे हैं। कुछ औजार तो यहाँ बन जायेंगे, और बाकी औजार बाहर से भी मँगाने का प्रयास होगा।

हमने आपको सात कामों में तीन कामों का जिक्र किया। बाकी चार काम बाद में शुरू करेंगे। पहले प्रशिक्षण का कार्य होगा। ग्रामसभाओं को कार्य-समितियों के सदस्यों के विवर एक सप्ताह से तीन सप्ताह तक के होते रहेंगे। उन विवरों में उन्हें जन्म कामों के अलावा सेतो के नये तरीकों, नये औजारों, वैज्ञानिक सेतो की जानकारी दी जायेगी। गाँव के युवकों का प्रशिक्षण कुछ ज्यादा समय का होगा। ये युवक गाँव के विकास में मुख्य भूमिका लेंगे।

हाँ, हमने यह तय किया है कि जो गाँव हमारी दस योजना में शामिल होंगे उन्हें सदस्यता-मुक्त देना पड़ेगा। यह सदस्यता मुक्त ५ रुपये से १०० रुपये तक हो सकता है। "आपने कहा कि इन सब कामों में ग्रामदात्री गाँवों को शामिल करना दो चायों, ऐसा भेद जाय क्यों मानते हैं?"

वे बोले, "हम आर्थिक विकास के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन चाहते हैं। हमारी रुचि सिर्फ आर्थिक विकास में नहीं है। आर्थिक विकास का काम तो सारकार कर ही रही है। ग्रामदात्री गाँवों ने वृंकि अपनी जमीन की मालिकी प्राप्त की है, २० एड़ों में एक कठ्ठा जमीन मुम्बिहीन को दी है और सब मिलकर गाँव के विकास का काम करते हैं, इसलिए हम मानते हैं कि गाँव के लोग अपने सामाजिक सम्बन्धों में परिवर्तन लाने के लिए तैयार हैं। मनुष्य के सम्बन्ध न बदलें और विकास हो जाय तो उत विकास का भोग और कुछ उससे बन्धित हो जायेंगे।"

एतौलिए हमारी योजना के तीन मुख्य अंग हैं—उत्पादन बढ़ाएँ, धनिकों को अविरतित उत्पादन में मजदूरी के अलावा हिस्सा मिले और किसान को विपरीतों कायम हो।

मैंने कहा—"आपसे बातचीत करके मुझे भरोसा हुआ। हर जगह हमें प्रकार को योजना बनायी जान तो कितना अच्छा हो।" मैंने उन्हें नमस्कार किया और वही हमारी बातचीत समाप्त हुई। •

२२ दिसम्बर, '६०

धारणा...धारणा...धारणा

दिल्ली जा रहा था। प्रथम दर्जे का टिकट लिया। गाड़ी आयी। अपने डिब्बे में पहुँचा। बेंठने को जगह नहीं थी। एक सीट पर एक सज्जन सेते हुए थे। मैंने उन्हें उठाना बसिष्टता माना। मैंने यह मान लिया कि वह सज्जन स्व ही मुझे पाड़े देखकर बेंठने के लिए कहेंगे। मैं तबदा रहा। गाड़ी एक स्टेशन, दो स्टेशन, तीन स्टेशन पार करती चली गयी और मैं सिध्दपारवत उतरा रहा।

जब काफ़ी देर हुई तो मुझे खीख होने लगी। मन ही मन मैं उस आदमी को चुन-भला कहने लगा—कितना अस्वस्थ है, अस्थि है, गँवार है, जरा भी तबीयत नहीं रखता, प्रथम दर्जे में यात्रा करने चला आया।

वह आदमी उठा, सीट के नीचे से पानी लिया और पीया। कुछ पानी उसके बिस्तर पर गिरा और कुछ नीचे। पानी पीकर फिर वह लेट गया। मैंने कहा, क्या गँवारपन है! मेरी नापजबो बढती जा रही थी। लेकिन बावजूद नाराजगी के अपनी नापजबो प्रकट होने देना नहीं चाहता था। सोचा, जब सामनेवाले को शक्ती भी तबीयत नहीं है कि बेंठने को जगह दे दो उसाये क्या बात को जाय।

इतने में वह आदमी घीरे से उठा। लज्जतझावा हुआ बापरुन को और बढा। दरवाजे पर पहुँचने-गटुचने वह गिर पडा। हृष से-तीन आदमियों ने उसे उठया और उसको सीट पर लिटा दिया। मैंने सोचा कि वह सामद अलवस्थ हो गया है। किन्तु दूसरे यात्रियों ने बताया कि वह अलवस्थ नहीं है, बल्कि अग्या आदमी है।

अब मैं सोचने लगा कि उस व्यक्ति के बारे में मैं कैसी गलत धारणा बनाये हुए था।

इसी प्रकार आदमी जनमान में कैसी-कैसी धारणाएँ बनाता रहता है। अगर स्थिति का मान हो जान तो आदमी स्थिति को स्पष्टता होयी रहे। इसीलिए जन्तो है कि परि-



गाँव की योजना में गाय

[सर्व सेवा सच की रूपि गो-सेवा समिति के तत्त्वावधान में यह २८ से ३० अक्टूबर तक यम्बई में एक महत्वपूर्ण भारतीय गो-संबर्द्धन सम्मेलन हुआ था। उस सम्मेलन में पूरे भारत के १०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने सम्मेलन के खुले अधिवेशन का उद्घाटन किया। अधिवेशन ने सर्वसम्मति से जो प्रस्ताव स्वीकार किया, उसका सारांश हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं।—स०]

हमारे देश की अर्ध-व्यवस्था ग्राम-प्रधान है। ग्राम-प्रधान अर्ध-व्यवस्था में गाँव के पशुओं का, और पशुओं में भी गाय और बैल का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

गाँव की सेती में गाय और बैल की जो उपयोगिता है, उसको ध्यान में रखते हुए हमारे देश के सांस्कृतिक नेताओं ने गाय को एक पवित्र और न मारने लायक पशु माना। यह सही है कि गाय के प्रति कुछ लोगों की धार्मिक भावना जुड़ी हुई है। गाय और बैल द्वारा समाज को जो लाभ पहुँचता है, उसको ध्यान में रखने से ही गाय के प्रति धार्मिक भावना बनी है। ऐसे समाजोपयोगी पशु का पूरे देश में बंध बन्द कराया जाय, यह भारत की आत्मा की अपेक्षा है।

भारत का सविधान बनानेवालों ने गाय की आर्थिक और सामाजिक उपयोगिता के देखते हुए संविधान की ४८ वी धारा के अनुसार गाय को संरक्षण देने की व्यवस्था की है।

ऊपर की बातों को ध्यान में रखते हुए अखिल भारतीय गो-संबर्द्धन सम्मेलन ने संपूर्ण गोवध-बन्दी की माँग रखी है। सम्मेलन की यह भी माँग है कि यदि इसके लिए सविधान में संशोधन करना आवश्यक हो तो वह भी किया जाय।

सम्मेलन ने यह भी जाहिर किया है कि सिर्फ कानूनी संरक्षण मिलने से ही गाय की रक्षा नहीं हो सकती है। गाय को रक्षा सचमुच उनी हो सकती है, जब कि देश गाय की रक्षा के लिए हृदय प्रकार की जिम्मेदारी उठाने को तैयार हो।

गाय के किसानों को भी यह बात समझ लेनी है कि आनेवाली कई पीढ़ियों तक उन्हें अपने कामकाज में पशुओं का उपयोग करते रहना है।

किसान के लिए गाय पालना एक घाटे का काम न हो, इसके लिए जरूरी है कि उसे परतेवाली गाय पालने में मदद मिले। परतेवाली गाय को प्राप्ति के लिए नीचे लिखे उपाय करने होंगे —

किसान की उन्नति होती चले इसके लिए यह जरूरी है कि वह ऐसी ही गाय पाले, जिससे उसे ज्यादा दूध मिले और ऐसा बछ्छा प्राप्त हो, जो हल जोतने और गाड़ी खींचने के भी काम आ सके। जो किसान मिली-जुली खेती करते हैं, उहाँको ऐसी गाय पालने में परता पड़ेगा।

यम्बई के बाद जयपुर में नवम्बर में राजस्थान गो-सेवा सम्मेलन हुआ। सम्मेलन में नीचे लिखे मुद्दायें स्वीकार हुए —

१—हर पंचायत में पंचायतों द्वारा गो-संबर्द्धन के लिए सामूहिक कार्य हो।

२—गाँवों में गोचर-भूमि की व्यवस्था हो।

३—ग्राम-पंचायतों को गोचर-भूमि का प्रबंध करें और उनके लिए गोपालकों से कर भी लें।

४—यदि गाँव में गोचर-भूमि न हो तो गाँव के लोग मिलकर अपनी-अपनी भूमि में से कुछ हिस्सा देकर गोचर-भूमि का निर्माण करें।

५—बेकार ताँडों को बधिया कराया जाय।

६—गाँवों में हट चारा और दाना मिलने का प्रबंध हो।



बिहार-दान हो

बिनोबाजी पूसा रोड में हैं। वे यद्यपि कुछ बोलते नहीं, तथापि दो शब्दों की याद दिलाते हैं : 'सूक्ष्म' और 'छः'। 'छः' महीने (उनके जाने के बाद) तो कब के बीत गये। आज बुनिया में जो उपल-पुल चल रही है, उसका असर हमारे देश पर कंसा पड़ रहा है, यह देखने-समझने की बात है। भारत में स्वराज्य हुए बीस साल हुए। आजादी-प्राप्ति के दिनों के त्याग और लगन की याद आज भी जाती है। आज की स्थिति देखकर मन दुःखी होता है। कुछ दिन पहले पश्चिम बंगाल के नवभारतवादी आदि तीन प्रखण्डों में भूमि-समस्या के समाधान की लेकर काशी खुन-खराबा हुआ। यद्यपि अहिंसा के मार्ग पर चलने का प्रयत्न करता हूँ, तथापि आज देश में हो रहे शोषण, अन्याय, गरीबी को मिटाने में होनेवाले खूनी शक्ति का विरोध नहीं करूँगा (यदि आज का अन्याय नहीं मिटा तो)। अन्याय के निवारण के लिए प्रेम, शान्ति के अथ अंगोपे है।

महात्मा गांधी ने कहा था कि भारत का स्वराज्य गाँव-गाँव के राज्य के आधार पर होगा। पर आज तो गाँव टूट-फूटे हुए हैं। आज जनमें संगठन नहीं है। ग्रामदान गाँव को शक्ति की संगठित करता है, विवरने से बचाता है। आज देश में भ्रष्टाचार व्याप्त है। गाँव का संगठन बनेगा तो यह भ्रष्टाचार मिटेगा। शिक्षात्मक रचनात्मक काम करनेवाली जनशक्ति ग्रामदान से निकलती है। राज्य पर निर्भर रहने-बसनेवाला जनता की शक्ति को सरकार के आधिपत्य करती है। ब्रह्म लोग मिलकर काम करने लगना स्वार्थ योग छोड़ने की लोकशक्ति बनेगी। यह लोकशक्ति कायम के जोर से पैदा नहीं की जा सकती है। यह शक्ति विचार से बन सकती है।

ग्रामदान में ध्यात्मक स्वार्थ और लोकशक्ति दोनों हैं। गांधीजी ने स्वराज्य को लड़ाई के समय हमें त्याग का पाठ पढ़ाया था। उस त्याग से जो शक्ति पैदा हुई, उसके आगे मुद्रक अर्थों में भारत छोड़कर गये। विवेकिय लोकात्मिक 'समाजवाद' और 'सर्वोदय' दोनों एक-दूसरे के नजदीक हैं। उन्हें है कि सर्वोदय राज्यसत्ता हाथ में नहीं लेना, वरन्

२२ दिसम्बर, '५०

लोकहृदय में प्रवेश कर समाज की समस्याओं को मुहसतावा है। जनता जो कुछ करती है कानून उसे मान्यता देता है, यह है सर्वोदय का रास्ता। ग्रामदान व्यक्तिगत मालकियत के स्थान पर ग्रामसभा को मालकियत निर्माण करता है। ग्राम-सभा गाँव की शक्ति का प्रतीक है। जमीन का एक हिस्सा दूसरे को देने से समाज को जोड़नेवाली शक्ति बनती है। छोड़ने से समाज की शक्ति टूटती है। दान की महिमा संसार के सभी धर्मों में है। दान-धर्म इस अर्थ में है कि इसमें समाज को धारण करने की शक्ति है। आज विज्ञान ने उन्नत जीव, खाद आदि के रूप में जो वरदान समाज को दिया है, ग्रामसभा उसका उपयोग करे। ग्रामकोष ग्रामसभा की पूँजी है, किसी दूसरे की नहीं। गाँव में फूट न पड़े, इसलिए सर्वसम्मत निर्णय का विधान है।

२ अक्तूबर '६८ तक बिहार-दान करने का संकल्प लिया गया है। बिहार-दान के बाद भी तीन-चार वर्षों में लोक-शिक्षण के द्वारा नयी राजनीति, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, शिक्षाशास्त्र का निर्माण करना है। जनसंख्या के हिसाब से बिहार भारत का दूसरा प्रदेश है, पहला है उत्तर प्रदेश। बिहार को ऐतिहासिक गौरव प्राप्त है। उस बिहार के संकल्प को पूर्ण यदि अगले दस महीनों में ही जाय तो नव-निर्माण के लिए एक अक्षर शक्ति प्रकट होगी।

शान्ति का बिगुल लेकर आप गाँव-गाँव में जायें और गाँव की शक्ति जगायें। इससे भारत को सोयी हुई शक्ति जागेगी। भारत में विविधता में एकता का जो गुण है उसे ग्राम-दान द्वारा प्रकट कीजिये।

बंगलूर, सुमेर, बिहार
१०-१२-'६०

[श्री जयभक्त्यारण्य के भाषण से]

बिहार-दान का प्रयत्न

२ अक्तूबर १९६८ तक बिहार-दान हो जाय, इसको कोषिय बिहार में चल रही है। कई जिलों में सपन प्रयास शुरू हैं। इस समय श्री जयभक्त्यारण्य तुरंत प्रदेश का दौरा कर रहे हैं।

सभी जिलों में जिला-दान की योजना बन रही है। २३ और २४ जनवरी को पटना में सभी राजनीतिक पार्टियों, रचनात्मक संस्थाओं तथा जिला सर्वोदय-मठों की एक बैठक बुलाई गयी है, जिसमें बिहार-दान की चर्चा होगी।

कोई मेरा शत्रु नहीं

[श्री पैन क्लिंसटॉक अपने को अमेरिका के औसत नागरिक बताते हैं। राष्ट्रपति जानसन के नाम लिखे अपने पत्र में विषयनाम में अमेरिका द्वारा किये जा रहे हिंसक और भ्रामानवीय कार्यों की निन्दा की है। उस पत्र की कुछ बातें हम यहाँ प्रकाशित कर रहे हैं।—सं०]

मनुष्य जीवन में सभी काम अपनी अंतरात्मा के अनुसार करता है। अंतरात्मा ही हमारी स्वतंत्रता की निताली है। मेरी अंतरात्मा मुझे चुप नहीं रहने देती। मेरी सरकार विषयनाम में जो कुछ कर रही है, उसके कारण मैं लजित हूँ।

मैं उन बहुत-से अमेरिकी नागरिकों में से हूँ, जो यह मानते हैं कि अमेरिका का विषयनाम में युद्ध करना गलत है। मैं सरकार की किसी भी धमकी से विवदा हूँ, इस मारकाट में, अपना सहयोग गृही दे सकता। मुझे अपनी अंतरात्मा के साथ जीना है। जिसे मैं अपने शत्रु की हत्या मानता हूँ उसमें अपनी सरकार से सहयोग करना मेरे लिए आध्यात्मिक हानि के समान है।

मैं यह मानता हूँ कि अमेरिका की विषयनाम में मध्यस्थी अन्यायपूर्ण है। अब मुझे क्या करना चाहिए? मैंने चुनाव में अपना मत ऐसे व्यक्ति को दिया था, जो यह कहता था कि एशिया के मामले एशिया स्वयं ही सुलझाये। किन्तु अब वह प्रतिनिधि, जिसे मैंने चुना था, ऐसी नीति अपना रहा है जिसे अंतरात्मा अवैध तथा अनैतिक कहती है। क्या इसके बाद भी मैं किसी दूसरे नेता का विश्वास कर सकूँगा?

मैं यह मानता हूँ कि अमेरिकी सेना जर्मन रूप से विषयनाम में घुसी है। वह वहाँ जो अत्याचार कर रही है, उनमें अनगिनत लोग चित्ला रहे हैं। सवार का एक घनादर तथा शक्तिशाली राष्ट्र एक छोटे-से अशक्त राष्ट्र को घेरे किष्टरता तथा हिंसा से मिटा रहा है। जिन लोगों को हम अपना सकते थे, उन्हींको हम मार रहे हैं, विकलांग कर रहे हैं। एक एक गाँव का ध्वंस कर रहे हैं। मेरी तरफ़ कई अमेरिकी नागरिक इस युद्ध के विरुद्ध हैं। इस संहार को रोकने के लिए मैं क्या कर सकता हूँ?

हमारी अवैध बनावारी से जो विषयनाम बालक पातक

होता है, उसके लिए मैं दवाई भेजने में अतमर्ष हूँ। इसका कारण यह है कि लड़का उत्तर विषयनाम में रहता है, उसके माँ-बाप राष्ट्रीय मुक्ति-दल के सदस्य हैं। मेरा धार्मिक विश्वास यह कहता है कि हम सब भाई हैं। एक पिता की सतान है। मेरी अंतरात्मा कहती है कि वह तपत्या हुआ पापल बालक अपना विकलांग विषयनाम की ओर मेरी शत्रु नहीं है। अपनी जन्मभूमि का अमेरिका से वंचित करने के लिए लड़नेवाला विषयकांग सैनिक भी मेरा शत्रु नहीं है। मैं यह मानता हूँ कि हम सब एक मानव-विवार के सदस्य हैं।

मुझे जो कर बसूला किया जाता है उसका अस्वीकार नहीं करता इस युद्ध पर खर्च हो रहा है। एक ओर तो अनगिनत राशि इस मारकाट पर खर्च हो रही है, दूसरी ओर बन-भूल से खर्च रहे हैं। बर्बाद परिवार बेघर हैं। यदि मैं बर्बर होने से इन्कार करता हूँ तो मुझे बिना पृष्ठ हो बलपूर्वक रिहा जाता है। इसके लिए मैं क्या कर सकता हूँ?

यदि अमेरिकी नागरिक को अपनी सरकार की निरा करने का अधिकार है तो वह बेचल बातों तक ही सीमित है। यदि कोई व्यक्ति सरकार से इस गुंज़ार योजना से असहयोग करता है तो सरकार तुरंत ही उस पर सामाजिक तथा जायिक दबाव डालती है। अमेरिकी नागरिक मात्र इसलिए जेल जाता है कि वह अपनी सरकार को बर्बर नीति का विरोध करता है। आज किस प्रकार अमेरिका अपनी सारी शक्ति से इस मारकाट में जुटा हुआ है वैसे किसी राष्ट्र नही किया होगा।

प्रत्येक अमेरिकी नागरिक जिनकी जतरा मा इस पत्र के विरुद्ध से उठती है, इस हिंसा की युद्धभूमा से बर्बर निरालना पाहता है। वह अपने मानवशुभ व साथ प्रेम से रहने के अधिकारों को मंग करता है। किन्तु इस काम के कारण आज उसकी सरकार द्वारा अवहृटना होती है। उस जेल जाना पड़ता है। वहाँ तक कि उस शत्रुदल को सुपडता पडता है। दूसरी ओर सरकार से सहयोग करने का मतलब होता है पाप से समझौता करना। और यदि वह सरकार का विरोध करने में अतमर्ष है तो उनके सामान एक वर्षी खला है। क्या हमारी स्वतंत्रता यही मानलब रखती है? क्या हमें अपनी अंतरात्मा के विरुद्ध ही मरणा का जाहा को पालन करना होगा? (श्री श्री क्लिंसटॉक के शोधक से)

—ज्ञान श्री० पैन क्लिंसटॉक

'गाँव की बात'। धार्मिक संसार : धार रुपये, एक प्रति : अटार्क पैसे।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सवें सेवा संघ के लिए संसार प्रेम, चाणोपुरा, बाघापती में मुद्रित और प्रकाशित

लोकशिक्षण-कार्य : दृष्टि और दिशा • धीरेन्द्र मजूमदार

सिद्धे अर्थों और मार्गों के मद्देन में दरमंगा जिसे वह दोष करने के बाद में किनोबाबी से मिल था और जिलादान की पुनः स्थापना पर चर्चा की थी। यह पुछने पर कि दरमंगा जिलादान की घोषणा के बाद युक्ति का काम तथा ग्रामस्वराज्य के विचार को लोकमानव में अभिविष्ट करने का काम कैसे होगा, किनोबाबी ने कहा था कि देवभार की सर्वोत्तम प्रतिमाओं (बेल टैटेल्ल) को अपनी-अपनी गणरी फँककर दरमंगा जिसे वे अब बना वादिए। उन्होंने लारी-प्रामोयोग, गोगलान आदि विधियों का किंचिद्विषय था और कहा था कि उन्हें अपने-अपने प्रयोग ही किये में करने चाहिए। मेरा प्रश्न इस प्रकार के प्रयोग के कर्मों में गयी था। मेरे मन में ग्रामदान और ग्राम-स्वराज्य के अन्तर को प्रतिपादन दिना हुआ है, उसके हर पहलू को बनना के लक्ष्में रखने का स्वागत था। इन्विय उनी समय मैंने इस प्रश्न पर विचार और देख कर था। किनोबाबी ने उसके नियम की सर्वोत्तम प्रतिमाओं (बेल टैटेल्ल) की बात कही थी।

जिसे के बोने-बोने में धूमने तथा हर लक्ष्में के लोगों के साथ चर्चा करने से प्रसन्न हो जिला दगा कि बहुत बोदे होने जिने लोग जेते हैं, जो आन्दोलन के कल्पितत्व को समझे हैं या समझने की क्षमता में हैं। धोरण-पत्र पर जो दस्तावज हुए हैं, के प्रमाण के लोके में हो हो गये हैं। लोगों के मानव, भावना तथा दृष्टिकोण को देखने पर दूसरों को कि वह धारणक का एक सम्पन्न है, और मैंने उनी समय कहा जो था। वस्तुतः कल्पित की गति को हली प्रकार की होती है। विषयदान के लिये जनता को भी प्रतिक्रिया (रिस्पांस) हुई, के उल्लस में अपने मन में विश्वास बसा रहा। इसको देल गया कि विषयदान को प्रत्यक्ष शक्ति और दिशा धारणक की गति रही है। लोगों ने

आयुष्मन् की एक अदृश्य प्रेरणा के प्रसार में, मानो जनमानस में ही दस्तखत कर दिने हैं।

दूसरा एक कारण है निरपेक्षात्मक (निरेषित)। दिव्युत्थान आवाद हुआ। लोगों को आया था कि आवाद भारत में देशीयों द्वारा परिकल्पित आशाएँ फलीभूत होगी और वे युद्ध और आराम की जगदीयों बिसावेंगे। यह हुआ नहीं। आम लोगों में दो प्रकार की निराशा है। पहले प्रकार की निराशा गांधी के उन चिन्तों से है, जो हिन्द स्वराज्य का संघर्ष कर रहे हैं। दूसरे प्रकार की निराशा विचार के हर प्रकार के प्रयोगों के नशीबों से है। राज्य द्वारा विचार की बही-बंदी योजनाएँ बनायी गयी। लेकिन वे योजनाएँ लक्ष्में मूल से निरालकर अनेक प्रकार के दक्षिणायनी चक्रमूह में फँककर

बाद है। जिसे के बोने-बोने में लारी-नेन्द्र और कार्यवाही मौजूद है, जो क्यों से लारी का नाम करते हैं, और स्वामीय प्रकृता से परिचित हैं। वन इनको बही जीव बिले भर में दौल गयी तो लोगों के धामने नृपान का दर्शन लक्षा हुआ।

यह हुआ, लेकिन वह बात नहीं हुई कि लोगों ने महसूस किया हो कि वे कल्पित के लिए काम करवा देकर हो रहे हैं। किनोबा जिसे समय-कालि (वेल्थ रिपोय्यूशन) करते हैं, वस्तुतः एहसास नहीं हुआ है।

इसीलिए घर में दरमंगा में अपने की न्यूर-रचना के बारे में किनोबाबी से बातें कर रहा था, वह गरी कहा था कि दरमंगा जिसे में ऐसे लोगों को अपना चाहिए, जो बिले की बनना जो ग्रामस्वराज्य के पब-नेशन, आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक पर-उत्थों को अन्वयित कर लक्ष्में लें।

किनोबाबी की प्रेरणा से अब उन्हें तथा सब ने दरमंगा जिसे को सर्वोत्तम-कालि के

जिलादान : कालपूर्वक की अदृश्य प्रेरणा निरपेक्षात्मक प्रथम-मुक्ति की कार्यात्मक लक्ष्में सेवा का प्रभाव लेकिन सम्प्र-कालि पत्र प्रकाश है।
अखिल भारतीय मोचनवादी प्रत्यक्ष संघर्ष और लोक शिक्षण के पहलू

बीच में ही लक्ष्में गयी। बनता तक नहीं पहुँच गयी। केवल-रत्न अपनी लक्ष्में बुद्धि से यह समझ रहा है कि इस चक्रमूह की मुख्य स्वभा दलान सार्वभौमि, नीकर-शाही और नृजीगर के द्वारा हुई है। कुछ लोगों के मन में देखे की प्रतिक्रिया हुई है कि इसका मूल कारण गांधी को मूल बना ही है। उनको किनोबा में गांधी का दर्शन मिय है और उनके मन में सर्वमानस लक्ष्में-कार्यनि परिस्थिति में शक्ति को एक कार्यात्मक लक्ष्में को बनी है।

तीसरा बड़ा कारण यह है कि इस बिले में व्यापक पैमाने पर लारी और चले का काम हो रहा है। लोगों ने देखा है कि यह लारी-बाके सिद्धे तीर्थ यात्रीय जाल से बना किन्ती यह का लता को आशावादी गयीभी को उदाहरण करते हैं, तो लक्ष्में रूप के मन में कुछ आया की वह लोच को काम कर रहे हैं, यह शान्ति-धर्म भर्त्सक

एक अखिल भारतीय-प्रयोग क्षेत्र के रूप में स्वीकार कर लिया है और जिसे के काम को अखिल-भारतीय स्तर पर मार्गदर्शन देते के लिए श्री चरणदास तारावत के नेतृत्व में दरमंगा जिसे ग्राम-स्वराज्य समिति का गठन किया है। ग्राम-स्वराज्य समिति के अध्यक्ष श्री चरणदास बाबू तथा सर्वेसेवा लक्ष्में के अध्यक्ष श्री मन्मोहन लोचरी ने देवभार के लक्ष्में कार्यकर्ताओं को निर्दिष्ट किया है कि वे अपने अपने स्वामीय आन्दोलन को संयमित हुए दरमंगा जिसे के पर प्रत्यक्ष तथा दीन नरती को अन्तःनिहित धारणके मार्गों और पर-व्यक्ति कर प्रो-रिस्पो को 'पदाव' कर और क्रम-लेखन लक्ष्में में दीन मर्दाने का कार्य हल काम के लिये अपना लें। युवाओं को बात है कि देवभार के कार्यकर्ताओं ने भी चरणदासजी के इस आभ्यन्तर को स्वीकार किया है और विश्व ग्राम-स्वराज्य समिति के साथ अन्वयित स्वीकृति में लक्ष्में रहे हैं।

वो लोग इस प्रकार से अपना समय दे रहे हैं, उनके लिए लोक शिक्षण का काम ही मुख्य काम है ऐसा माना गया है। उनके कार्य का क्षेत्र तथा क्रम प्राम-स्वराज्य समिति, प्रखण्ड के स्थानीय कार्यकर्ता और बाहर के आये हुए 'प्रखण्ड-सेवक' से चर्चा करके निश्चित करेगी, और उन्हें समय समय पर सलाह देती रहेगी।

दरमग में प्राम-स्वराज्य के लिए लोक-शिक्षण के बारे में मेरी दृष्टि और मुझसे निम्न प्रकार है :

● प्रखण्ड-सेवकों को पहला ध्यान इस बात का रखना है कि हर प्रखण्ड में कार्यक्रम चलायेवाले कार्यकर्ता मौजूद हैं और काम की मुख्य जिम्मेदारी उनकी ही है। उनका काम होगा कार्यकर्ताओं को सलाह देना तथा जनमानस में विचार की सफाई करना। इसके लिए उन्हें प्रखण्ड भर में निरन्तर पदयात्रा करनी चाहिए, और पंचायत स्तर पर विचार के लिए भागरूक तथा जिज्ञानु लोगों की विचार गोष्ठी करनी चाहिए।

● जनता के शिक्षण के प्रश्न पर मुख्य रूप से चार बातें ध्यान में रखनी जरूरी है :

(क) राजनैतिक पहलू : विनोबाजी ने 'स्वराज्य-शास्त्र' नामक पुस्तिका में राज्य और स्वराज्य का स्पष्ट विवेचन किया है। जनता को यह भेद उनकी ही भाषा में अच्छी तरह समझाये बिना लोगों को प्राम-स्वराज्य समझ में नहीं आयेगा। राजनीति के भिन्न-भिन्न पक्षों का विवेचन करके उनकी समझाना होगा कि किस तरह वर्तमान दलानत राजनीति अपने अन्तर विरोधों के कारण लोकतंत्र के 'लोक' को ही समाप्त कर रही है। इसलिए 'लोक' को अपने आप पर भरोसा करना और अपना स्वराज्य स्थापित करके पूँजीवादी और राज्यवादी दबाव से मुक्त होना है।

(ख) आर्थिक पहलू : हमने अपनी आर्थिक क्रांति को प्रामोद्योगप्रधान क्रांति की उद्घाटी दी है। लेकिन लोकमानस में, और अपने अधिकारी कार्यकर्ताओं की कल्पना में इतना ही है कि खादी से बेकार बनने की कुछ

काम दिखाना है, थोड़ी राहत दिखानी है, देश की जनता को प्रामोद्योग की कोई कल्पना का भान नहीं है। उनको समझाना होगा कि किस तरह केन्द्रित उद्योगवाद में यंत्रों की स्थिति सामान्य सुधार से बढ़कर आज 'ओटो-मेशन' और 'साइबरनेशन' तक पहुँच गयी है, और उसी कारण किस प्रकार मजूदरी भर मनुष्य और उनके दलालों के हाथ में जन-जीवन का अग प्रत्यक्ष कँस गया है, किस तरह कच्चा माल वैदा करनेवाले किसान बड़े-बड़े औद्योगिक नगरों के विराट शोषण खाल में फँस गये हैं। लोगों को यह समझाना होगा कि प्रामोद्योग जनता को उच्च शोषण के खाल से मुक्ति पाने का जरिया है। आज अगर वह देश के बेकार लोगों को राहत दे रहा है तो वह मुक्ति आन्दोलन के साथ साथ एक छोटी सी प्रारम्भिक निष्पत्ति मान है, रही सिलसिले में प्राम-मूलक खादी और प्रामोद्योग का महत्व समझाना चाहिए।

(ग) सामाजिक पहलू : राज्यवाद और पूँजीवाद के कारण समाज व्यवस्थाएँ-वर्ग, उदात्त वर्ग, मालिक वर्ग और मजदूर-वर्ग के रूप में उन्नत वर्ग भेद का शिकार बन गया है। इस बात की विवेचना करके जनता को समझाना होगा कि इस वर्गभेद के कारण देश में किस प्रकार विस्फोट की परिस्थिति पैदा हो गयी है, जिसका उभार बगर-बगह हो रहा है। उन्हें समझाना होगा कि वर्ग भेद की समस्या को भिगवने बिना प्राण नहीं है। यह भी समझाना होगा कि वर्ग भेद भिगवने के लिए किस तरह वर्ग संघर्ष आज की परिस्थिति में अपेक्षारहित हो गया है, अन्तिम निष्पत्ति के रूप में वह अथक भी सिद्ध हो रहा है और धार्मिकता समाज के सन्दर्भ में वह अव्यवस्थायी है।

पहले के जमाने में वर्ग-संघर्ष हुए, और एकल भी हुए, ऐसा लगता है, फिर भी वह जमाना आज नहीं है। पुराने दिनों में रूठ में वर्ग संघर्ष को माननेवाले एक पार्टी की, एक ही नेता (लेकिन) या! चीन में एक ही पार्टी और एक ही नेता (माओ) या! और इसी तरह बिन-बिनद मुस्को में इसका प्रयोग हुआ, यहाँ संघर्ष के लिए एक

पार्टी और एक नेता रहे हैं। लेकिन आज परिस्थिति बदल गयी है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर चीन और रूस की दो पार्टियाँ हैं और भारत में तो वर्ग-संघर्ष को माननेवाले पार्टियों का पक्षकोण बन गया है : कम्युनिस्ट (दक्षिण), कम्युनिस्ट (वाम), कम्युनिस्ट (उग्र), संयुक्त समाजवादी, प्रजा-समाजवादी, क्रांतिकारी समाजवादी और पार्षद-संगठक। ये सब बड़ी बड़ी पार्टियाँ हैं। इन्हें जलावा बहुत ही छोटी-छोटी पार्टियाँ भी बन गयी हैं। मजदूर-वर्ग की पार्टियों में भी आपसी-प्रतिद्वन्द्विता मौजूद रहे। जब कभी, जहाँ कहीं इस प्रकार के संघर्ष का उभार होता है तो उधमें हर पार्टी कूद पड़ती है। चारों इस उभार का पहलू किसी एक पार्टी द्वारा होता हो। फिर वर्ग निराकरण के लिए वर्ग संघर्ष पीछे पड़ जाता है और दल संघर्ष पृष्ठ पड़ता है। समाज में हित विस्फोट की न्यायक आग फैल जाती है। अतएव आज के जमाने में वर्ग निराकरण के लिए संघर्ष-मुक्त तथा सहकारमूलक क्रांति की आवश्यकता है। प्रामदान और प्राम स्वराज्य का विचार इस गोंग की पूरी करता है।

(घ) नैतिक और आध्यात्मिक पहलू : आज दुनिया भौतिकवाद के अन्ध में आकर नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों को भूल कर चली है। उसीके कारण समाज में दूध स्वार्थ और उसकी सिद्धि के लिए शोषण, अन्याय और अन्यायकार का साम्राज्य बना है। आज लोकजीवन में भ्रष्टाचार, अर्थात् आदि दुर्गुणों का मरना हो रही है, आदि जाती का विवेचन करके लोकशिक्षण भी प्रक्रिया से समाज में नैतिक और आध्यात्मिक गुणों का विकास हो, इसके लिए सर्वोत्तम परिस्थिति बनानी होगी।

“सर्वोदय”
 अंग्रेजी मासिक पत्रिका
 साखाना चंद्रा : ६ टपवा
 सर्वोदय प्रचुरालय
 तंजावर (मद्रास)

भूतान-यज्ञ : शुक्रवार, २२ दिसम्बर, '६०

आन्दोलन के समाचार

प्रामदान-अभियान :

गोरखपुर, १२ दिसम्बर । उत्तर प्रदेश का प्रामदान-आन्दोलन व्यापक बनता चला रहा है । पश्चिमी क्षेत्र के आगरा जिले में सिविर तथा अभियान १ दिसम्बर से १० दिसम्बर तक खैरागढ़ तथा बगनेर प्रखण्ड में १० कार्यकर्ताओं को ३० टोलियों द्वारा सर्वश्री डा० परनायक, राधायाम भार्गव और कपिल भार्गव के मार्गदर्शन में चला । इसमें ५ भार्गव साहबों, ९ भार्गव-बेटों पंचाब के और बाकी ७० प्र० के गोपी आश्रम तथा खोंद-कार्यकर्ता रहे । कुल १५३ प्रामदान प्राप्त हुए । बलिया जिले में पॉपुलर प्रोपेण्ड, नवानगर में १० टोलियों द्वारा प्रामदान प्राप्त तवा २ टोलियों द्वारा पुष्पि-कार्य चल रहा है ।

१० दिसम्बर तक २२ प्रभाषणों का राक्षस गौड़ों के प्रामदान प्राप्त हुए । दिसम्बर माह के अंत तक यह नवानगर प्रखण्ड-दान होने की उम्मीद है । मैथिली जिले के एक तथा खैरागढ़, इन दो प्रखण्डों में १५ दिसम्बर से १२ दिसम्बर तक और बलिया जिले के चॉकड़ा तहसील में ३० दिसम्बर से ७ जनवरी तक प्रामदान-अभियान चलेगा ।

उत्तर प्रदेश में अब तक प्राप्त प्रामदानों की संख्या २०१८ तक पहुँच गयी है ।

सर्व सेवा रूप के अन्धश्रम भी मनमोहन चौधरी की अध्यक्षता में वेवापुरी में ११ दिसम्बर को उ० म० प्रामदान-प्रति समिति की बैठक हुई, जिसमें आगामी जनवरी से अनेक के प्रयत्न छाड़ा एक ७० अभियान चलाने का निश्चय हुआ ।

—कपिलभार्गव

इंदौर, ११ दिसम्बर । मध्यप्रदेश खोंदपत्र मंडल द्वारा इंदौर जिले में चलाये जा रहे प्रामदान-अभियान के अन्दरगत खोंदर तहसील में आयोजित पदयात्राओं के प्रथम दौर में ७ नये प्रामदान मिले हैं, जिनके नाम हैं—
खिचौरा, सुपयनियार्व, हाहासेरी, माचन-तेरी, लामोद, कल्याणेश्वर तथा नारर-भूतान-रक्ष : मुकुन्दा, २२ दिसम्बर '६०

वेदा । इसके अलावा परमपुरी और चित्रपुरा के दो मन्त्रे भी प्रामदान में शामिल हुए हैं । पदयात्राओं का दूधरा दौर फिटदाल चल रहा है । उपरवात इंदौर तहसील में पदयात्राएँ होनी । (संक्षेप)

नागपुर, ११ दिसम्बर । मराठवाड़ा सर्वोदय मंडल द्वारा प्रसारित एक जानकारी के अनुसार हाल में ही याना जिले की बाढा तथा शावर तहसील में आयोजित पदयात्राओं के दौरान क्रमशः २२ और २५ प्रामदान मिले हैं । देवे ही सुकिया तथा तलागिरी जिले में भी पदयात्राओं के फलरूप क्रमशः १२ एवं ६ प्रामदान मिलने की जानकारी मिली है । यह उत्कलक्षणीय है कि शावर एवं गौनावली गुजरात के खोंदपत्र-कार्यकर्ताओं की सयुक्त पदयात्राएँ हुई थीं । (संक्षेप)

बंबई, ११ दिसम्बर । चन्द्रपुर जिले में कुल दोषा पंचायत समिति क्षेत्र के पिछक, एरचन, रामवेरक आदि कार्यकर्ताओं का एक सिविर गत २० नवम्बर को हुआ । माराष्ट्र सर्वोदय मंडल के श्री बाबुराव चन्द्रावर के मार्गदर्शन में प्रामदानी गौड़ों के पुष्पिकरण के बारे में चर्चा होकर तब हुआ कि जनवरी में यह कार्य पूर्ण किया जायेगा । घानोरा पंचायत समिति क्षेत्र में २७ नवम्बर से २३ दिसम्बर तक खोंदपत्राएँ हुईं । १७ दिसम्बर तक यह पदयात्रा चलेगी । ६ दिसम्बर को घानोरा में सिविर हुआ । चन्द्रपुर जिले में अगरी तक कुल १०० प्रामदान हुए हैं । बिला कलेक्टर, वरशौतदार, रेवेण्यू आयुक्तों की बैठक में माराष्ट्र प्रामदान बोर्ड के अध्यक्ष भी २०-३० पादित नये पुष्पिकरण का कार्य जनवरी से शुरू करने की दृष्टि से मार्गदर्शन किया ।

—बाबुराव चन्द्रावर

माराष्ट्र सर्वोदय मंडल, बंबई-५०

लखनऊ, ६ दिसम्बर । विकास संघ स्तलम के अंतर्गत प्रामदानी नाम खोला के प्रामदातियों से चर्चा कर भी मानव प्रुती ने उन्- प्राम-स्तरान्व की दिशा में मोड़ने का प्रयास किया । प्रामदातियों ने प्रामवर्षा के सगठन के साथ दृष्टि-लेना बनाने का

कल्प किया । समग्र विकास कार्य के अन्तर्गत पंचायत समिति भी गठित की गयी ।
—संगठक, समग्र विकास कार्यक्रम, लखनऊ

भूमिहीन किसान-समस्या :

जयपुर, ११ दिसम्बर । समग्र सेवा संघ के मंत्री श्री त्रिचोकचंद जैन ने एक प्रेस-विज्ञप्ति में कहा है कि राजस्थान का आन्द-भूमिहीन किसानों के पक्ष में होवे हुए भी राज्य की पाबित कमीन का अर्थव्यवस्था में भूमिहीन किसान गरीब होने के कारण राज्य की नीकर-शुल्क उम्मीद परवाह नही कर रही है और भूमि का क्लॉपेटेन्ट कमीनवाले प्रामाणवाही किसानों, व्यापारियों, कर्मचारियों, शिक्षकों अर्थात् नीरक्षारवर्गों को ही देता है और भूमिहीन अपनी अधिकारों लिये दर-दर पूछता रहता है, जिसमें कहीं गुनगामी नही होती । आखरी के बीच सर्व बाढ भी आब समाजवादी राज्य में किसानों के साथ इस प्रकार का अन्याय हो रहा है । वेद है कि अन्त-प्रतिनिधियों ने यह सब मादम होते हुए भी वे निष्पक्ष हैं । भूमिहीन किसानों का राजस्थानी आंदोलन अत्यन्त-प्रभावी हो गया है । अतः भूमिहीन किसानों को धमीन मिले, इसके लिए समग्र-सेवा-संघ ने आन्दोलन चला किया है । (संक्षेप)

दिवारि : सम्मेलन

बर्दई के उपनगर मुठुंड के खोंदपत्र मंडल की ओर से २३ दिसम्बर से २७ दिसम्बर तक चली विद्यालय, नेहरू रोड, इटुंड पश्चिम में पुत्रक विद्यार्थियों के एक दिवारि का आयोजन किया गया है । विद्यार्थियों की धनलाओं पर विचार विमर्श और अध्ययन करने हुए खोबने की बोधिका की बानेगी ।

स्वचना :

पिछले अंक में प्रकाशित ध्वनना के अनु-सार आगामी कारकलेन "एन रोड में वर-उत्कलितियों का सम्मेलन" इस स्थानाभाव के कारण इस अंक में नहीं दे पाये हैं । यह आगामी २१ दिसम्बर '६० के अंक में देवे ।

बिहारदान की व्यवह-रचना

बिहार ग्रामदान-प्राप्ति सयोजन समिति की बैठक के निर्णय

छद्मनीनारायणपुरी: ९ दिशम्बर। बिनोबाजी की उपस्थिति में हुई बैठक में मुख्य रूप से वो निर्णय लिखे गये, वे निम्न प्रकार हैं

(१) (क) २ अक्टूबर '६८ तक बिहार दान कराने की दृष्टि से जिसे जिले में सभी राजनैतिक पक्षों के प्रतिनिधियों, सत्याग्रहों के प्रतिनिधियों एवं अन्य सहयोगी मित्रों की बैठक बुलाकर जिले की अलग अलग स्थाव र्णवी योजना बनायी जायगी।

(ख) जिलों के कार्यकर्ताओं की बैठक हर जिले में की जाय, जिसमें जिलादान की व्यवह रचना तैयार की जायगी। इस बैठक में मार्गदर्शन के लिए सर्वोदय-अगत के वरिष्ठ कार्यकर्ता भाग लेंगे। जिलेवार बैठक की तिथियाँ भी निश्चित हुई।

(२) २३ जनवरी को पटना में राज्य के सभी रचनात्मक संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं जिला सर्वोदय मण्डल के प्रतिनिधियों की बैठक बुलायी जायगी।

(३) राज्य के सभी राजनीतिक पक्षों के प्रतिनिधियों की बैठक २४ जनवरी को पटने में बुलायी जायगी और उषी दिन अन्तिम बैठक में, जो रचना मूक कार्यकर्ताओं

एवं राजनैतिक प्रतिनिधियों की सम्मिलित बैठक होगी, जिनों की योजना के आधार पर २ अक्टूबर '६८ तक बिहारदान का सकल क्रिया बाय। २४ तारीख की बैठक में बाबा और जे० पी० भी उपस्थित रहेंगे।

(४) बाबा २९ दिशम्बर को पूसा से मुजफ्फरपुर चले आयेंगे और वहाँ २० जनवरी तक रहेंगे, फिर २१ जनवरी को पटना आ जायेंगे। तीन सप्ताह तक पटना में रहने के बाद दूसरे जिलों में जैसे—मुंगेर, सयाल परगना और पूर्णिया आयेंगे। फिर जब जे० पी० विदेश से लौटेंगे, तब बाबा बोधगया जायेंगे।

(५) ७ दिसम्बर को पूसा रोड में बिहार के विश्वविद्यालय के सभी उपकुलपतियों, सभी कॉलेज के प्राचार्यों की एक गोष्ठी हुई थी, जिसमें बाबा के दो भाषण हुए। इच्छे शिक्षा बगल में ग्रामदान के प्रति अनुकूलता की आशा बँधी है। मुजफ्फरपुर, पटना आदि स्थानों में बाबा विश्वविद्यालयों के अदार्तों में ही रहना पसन्द करेंगे, ऐसा संकेत मिला है।

—कमल नारायण

बि० प्रा० प्रा० सयोजन समिति, पटना-३

(३ दिसम्बर '६७ तक)	कुल ग्रामदान	प्रखण्डदान	अनुसंखलदान	जिलादान
दरभंगा में	३,७२०	४४	३	१
बिहार में	१६,३०२	३०३	५	१
भारत में	४६,४१०	३०८	५	१

प्रखण्डदान अभियान
मुंगेर, ११ दिशम्बर। १० दिशम्बर को वेगुलवाय की सभा में भी जयप्रकाश नारायणजी की बखरी और छुदाबन्दपुर का प्रखण्ड दान क्रमशः श्री रमाकान्त चौधरी, मधुी ग्राम स्वराज्य सघ और श्री अश्विनेश्वर प्र० सिंह द्वारा समर्पित किया गया। बखरी प्रखण्ड में प्रखण्ड-दान का अभियान गत ३० नवम्बर से आरम्भ हुआ। श्री रमाकान्त चौधरी के नेतृत्व में ग्राम स्वराज्य सघ के २७ कार्य कर्ताओं ने १० दिन तक काम किया। बखरी

प्रखण्ड की जनसंख्या १,१२,५५१ है, जिसमें से १२,८२१ लोग ग्रामदान में शामिल हुए। १४,२४१ एकड़ भूमि में से १३ प्रतिशत भूमि का रकबा ग्रामदान में पोषित किया गया। छुदाबन्दपुर का प्रखण्ड दान पहले ही पोषित हो चुका था। वेगुलवाय अनुसंखल में अब तक ४ और मुंगेर जिले में १० प्रखण्ड दान हो चुके हैं।

—रामनारायण प्रसाद,

जिला सर्वोदय मंडल, मुंगेर
जमनेदपुर, ८ दिशम्बर। चाँदिल प्रखण्ड में ३० गाँवों का ग्रामदान पहले ही हो चुका

था। गत १० नवम्बर को जिला शांतिसेना और ग्रामदान प्राप्ति समिति के ८ कार्यकर्ताओं ने पुन कार्य आरम्भ किया। फलस्वरूप २ दिशम्बर को चाँदिल का प्रखण्ड-दान पोषित हुआ।

निम्नाखिलित आँकड़ों से प्रखण्डदान की स्थिति स्पष्ट होगी—

गाँव	जनसंख्या	परिवार	ग्रामदान में शामिल	प्रतिशत
गुल	१०६	८३	७६	७६
खल्या	४५,३४८	३५,०११	७७	७७
परिवार	१,०४३	७७१	७७	७७

चूँकि इस प्रखण्ड के अधिक क्षेत्र में जंगल एवं पहाड़ हैं, फिर भी क्षेत्र की बर्मीन की ६० प्रतिशत भूमि ग्रामदान में शामिल हुई है।

—मु० अयूष वर्मा

जिला शांति सेना समिति, धमनेदपुर

बिहार में ग्रामदान-प्रखण्डदान (३ दिसम्बर '६७ तक)

जिला	ग्रामदान	प्रखण्डदान
पूर्धिया	३,८८८	१९
दरभंगा	३,७२०	४४
मुंगेर	१,५५८	९
मुजफ्फरपुर	१,२२३	१३
गया	३,१५०	१
इबारीबाग	८८५	२
सयाल परगना	८३५	१
पशमू	६१८	४
खरन	५५१	३
भागलपुर	४१४	३
सर्वान	३१९	२
धनबाद	२४८	१
बघाएल	२४०	—
बिहृरपुर	१६२	१
छाराबाद	१०३	१
रौंची	४४	—
पटना	४५	—
कुल	१६,१०२	१०३

श्रीकृष्णदास मंड, सर्व सेवा सघ द्वारा सत्तार प्रेस, धाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित। वला : राजप्रसाद, धाराणसी-१

आपके पुत्र

जय हिन्दी ! जय भारती !!

देवा :

१२-१२-६० : पश्चिम बंगाल में सयुक्त मोर्चे द्वारा शुरू किये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन के तिलतिले में भी अज्ञान मुलकों गिरफ्तार करते फिर रिहा कर डिये गये ।

१९-१२-६० : वीज-सरकार के विरुद्ध कलकत्ता में १०० से अधिक महिला स्वयंसेविकाओं ने सत्याग्रह क्रिया और वे गिरफ्तार की गयी ।

२०-१२-६० : श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश के राज्यों और राजनीतिक दलों से त्रिभाषा फार्मूला लागू करने में सहयोग देने की अपील की ।

२१-१२-६० : पश्चिम बंगाल में सयुक्त मोर्चे के समर्थकों ने आज चमों का सुन्दर प्रयोग किया ।

२२-१२-६० : तमिलनाडु में हिन्दी-विरोधी आन्दोलन ने आज हिंसक रूप ले लिया । दो रेलागाड़ियाँ जला दी गयी । राज्य सभा ने राजभाषा-संशोधन विधेयक को १४ मताँ के विरुद्ध ११४ मताँ से आज पारित कर दिया ।

२३-१२-६० : हैदराबाद में १ दर्जन किताब की दुकानों से तमिल पत्र-पत्रिकाएँ हिन्दी समर्थकों द्वारा फूँक दी गयी ।

विदेश :

१९-१२-६० : राष्ट्रपति की मुख्य राजनीतिक समिति ने अगले अगस्त सितम्बर में गैर परमाणु राष्ट्रों का एक सम्मेलन बुलाने का प्रस्ताव किया ।

२०-१२-६० : राष्ट्रपति ज्ञानचन ने वियतनाम में शान्ति के लिये वियतकांग और सैनिक शासन के बीच सीधी किन्तु अनौपचारिक बातचीत का प्रस्ताव दिया है ।

२१-१२-६० : सयुक्त अरब गणराज्य के सरकारों प्रवक्ता ने यह घोषणा की कि मिस्र कभी भी ऐसी यातायात या शान्ति सन्धि के लिये तैयार नहीं होगा, जो उस पर शोषी बाधगी ।

२२-१२-६० : चीन की सचिव जेनार्थ वियतनामियों के हितों की रक्षा के लिये आवश्यक कार्रवाई करने को तैयार है ।

कम्प्यूटरों का विरोध !

साध्यवादी नहीं, किन्तु जीवन बीमा निगम में कार्य करने के कारण अनचाहे अपकचरे साध्यवादी बने एक मित्र से चर्चा चल पड़ी . "कम्प्यूटर से बेकारी फैलेगी । पहले ही पहले लिले नेबारों की पीज इस देश में है । कम्प्यूटरों के लगने से लाखों लोग बेकार हो जायेंगे—सरकार अमेरिकी दबाव में आ गयी है ।" पचास रुपये मीटर का टेलीविजन पढ़नकर चार सौ रुपये लेकर तीन पन्ठे भी मुद्रिकण से काम करनेवाले, इन्जिनियर-विरोधी भांगना बरक करनेवाले एक व्यक्ति की आवाज को भन्न मेरा नैतिक समर्थन देते मिल सकता था । मैंने कहा, "आपसे मैं सहमत हूँ एक बात पर । यह बेकारी फैलते हैं । यहाँ तक अक्षरगत सत्य है, पर ऐसी बात कहने का आपको नैतिक अधिकार नहीं है । जब घानों को भगद आयल (तेल) मिल लगे । चरले और कापे के स्थान पर सिगनिंग, चीविंग (फटाई और तुनाई) मिल मुले, जब आपने विरोध नहीं किया; और न अब भी कर रहे हैं । इतना ही नहीं, आपके व्यवहार में आनेवाली कोई भी वस्तु ऐसी नहीं, जो कि हाथ से बनी हुई हो ।" कम्प्यूटर विरोधी लुप हो गये ।

मैंने कहा, "अभी समय है, अब हम अपने जीवन में यन्त्रों का उपयोग कम करने की आदत डालें । अन्यथा ये यन्त्र चाहे वे कम्प्यूटर हों या मिन्ट, देखतुव्य भारतवासियों को इतनी यन्त्रणा देंगे कि वे कराह उठेंगे । आश्चर्यजनक है हरक के राम को भगाने की, ठाकिय यन्त्र रूपी राक्षस को अपने उदात्त लाग और सतम से दूर भगायें, अन्यथा इस देश में वेद वधुर्विही की तरह बेकारी के पुन लज जायेंगे, जिन्हें राजनीतिक गद्देरिने चारा बगडर जगत् में चगाते रहेंगे ।"

—जगन्नाथ सेठिया

दक्षिण भारत का अहिन्दी भाषी बन में सोच रहा—

हिन्दी को यह भाषा कैसे है ? डाकघरों में भाग लगाओ हिन्दी है !

संस्थानों को तोड़ो तोड़ो हिन्दी है !

अपने दिले बहो भी अलकतरा पोतो, मिट्टी लीपो हिन्दी है !

स्कूल बन्द, कावेज बन्द नगर बन्द, डगर बन्द हिन्दी है !

अरे, हिन्दी क्या ऐसी ही है ! गुथामी, दमन, विपरन—

यह भी भाषा अमेझी आम लगाओ, तोड़ो पोड़ो, बन्द करो,

इसे करोगे हिन्दी ? मेरे देहे किन्ते ही भाई बरिन है,

जो नहीं आनते हिन्दी उन पर वृषणा जादो मत शोषो, उन्हें सिलाओ हिन्दी

अपनों ही चोखों को नह-भ्रष्ट, स्वारा करने से क्या हिन्दी आयेगी !

बिठियानी बिन्धी मुँह नोचे अपना मत करो चरितार्थ कहावत ऐसी !

—एन्ड

ग्राम-भावना (मासिक)

प्रकाशन का पौचवा वर्ष

पंजाब, हरियाणा और हिमाचल-प्रदेश की गतिविधियों का लक्ष्य का मासिक

एक इक ५० पैसे, वार्षिक १६०

पता : पोस्ट-परीकल्पामा, जिन बरक

उड़ीसा प्रान्तदान की ओर

दो साल पहले प्रलण्ड-दान एक नयी चीज थी। अब प्रलण्ड-दान आमफइम चीज हो चुकी है और पूरे देश में दो सौ से ऊपर प्रलण्डदान हो चुके हैं। अब तक हमारी यह चिन्ता छपकर लोगों के पास पहुँचैगी तब तक दरभंगा जिला-दान शायद भारत का एकमात्र जिलादान नहीं रह जायेगा। बिहार के पूर्णिया जिले और तामिलनाड के तिरनेल्लेरी जिले के बीच जिलादान में दूसरा स्थान पाने के लिए गदरी सर्पों हो रही है। महाराष्ट्र प्रदेश के थाना, मध्यप्रदेश के इन्दौर और आन्ध्र प्रदेश के मध्या जिले जिलादान की दौड़ में अपनी कतारों में हैं।

ग्रामदान की गणना तालिका में उड़ीसा के कोरापुट जिले का हमेशा अगला स्थान रहा है, और लोगों ने उम्मीद रखी थी कि वह आसानी से दूसरा या तीसरा स्थान पायेगा, किन्तु कुछ ऐसे कारणों से जिनकी चर्चा में हम नहीं पढ़ना चाहते, कोरापुट पीछे रह गया। फिर भी कोरापुट जिलादान की दौड़ से बाहर नहीं है। इसी बीच उड़ीसा का एक और जिला जिलादान के प्रत्याशी के रूप में सामने आया है—वह है मयूरभंज, जो प्रदेश के उत्तर पूर्वी छोर पर है।

पिछले महीने उड़ीसा के पूर्वी तथा अन्ध-अन्ध क्षेत्रों के ११५ कार्यकर्ताओं ने इकट्ठे होकर भविष्य की योजना बनायी। उड़ीसा के उपरोक्त दोनों जिलों का जिलादान न्यूह चार्जिंग की दृष्टि से कुछ बाद में होगा।

पिछले अक्टूबर तक उड़ीसा के कुल ग्रामदानों की संख्या ७८७० तथा प्रलण्ड दानों की संख्या ३१ थी। ४ वर्ष पहले, प्रादेशिक सर्वोदय सम्मेलन ने किनोपासी की मौजूदगी में प्रस्ताव किया था कि २ अक्टूबर १९६८ तक उड़ीसा के आधे यानी लगभग २४ हजार ग्रामदान कराये जायेंगे। २ साल बाद दूसरे सम्मेलन ने उस प्रस्ताव को पुष्टि की। उसके बाद से उस राज्य में ग्रामदान आन्दोलन ने बड़ी तरकीबी की और ग्रामदान की संख्या तिगुनी हो चुकी। फिर भी मजबूत अमीर दूर है। ठीक समय तक मुकाम पर

पहुँचने के लिए कहीं ज्यादा कोशिश करनी होगी। अब तो उससे भी आगे बढ़कर और आकर्षक मजबूत प्रदेश दान तक पहुँचने की बात धिधिर पर दिखायी दे रही है। इसीलिए प्रदेश सर्वोदय मण्डल ने अपनी ताकत बढ़ाने पर ज्यादा जोर दिया है। अब तक बितने ग्रामदान प्राप्त हो चुके हैं वे सम्भावित धरि के सबसे बड़े भण्डार हैं। उड़ीसा में कार्यकर्ताओं में तादाद बहुत कम है, जो संख्याओं से जुड़े हुए हैं। आन्दोलन को प्रायः ग्राम दानों की संख्या से स्वयं सेवकों के मोर्चे ही आगे बढ़ाना पड़ा है। कोरापुट म कुल १ हजार के लगभग नियमित शान्ति सैनिक हैं।

विद्यार्थियों को मिलाकर करीब ४०० स्वयंसेवकों ने मयूरभंज के ३ प्रलण्डदान प्राप्त करने में सहायता दी थी। इसलिए सर्वोदय मण्डल ने सबसे पहले ग्रामदानों की संख्या १० हजार शान्ति सेवक और सैनिक भर्ती करने का काम हाथ में लिया है और उ है

मनमोहन चौधरी

कुछ प्रारम्भिक प्रशिक्षण देने की कार्य-योजना बनायी है। यह काम बनवरी ६८ तक पूरा होने को है। इसी दौरान पूरे प्रदेश में तीन दिन के प्रशिक्षण शिविर भी आयोजित होंगे। ऐसे शिविरों की तादाद १५० होगी। ये शिविर ज्यादातर ५ जिलों—कोरापुट, गजाम, बालासोर, मयूरभंज तथा टेंकानाल में होंगे, बसों ग्रामदानों की संख्या ज्यादा है और आन्दोलन भी मजबूत है। सिर्फ कोरापुट में ही एक सौ शिविर संयोजित होंगे। ऐसी उम्मीद की गयी है कि शिविर के बाद ग्राम दान प्राप्त करने की धा नयी कोशिश की जायेगी, उसके नतीजे से और २ हजार ग्राम दान मिलेंगे और इस तरह प्रदेश के कुल ग्रामदानों की तादाद १० हजार हो जायेगी।

३० जनवरी को जिले के वेंद्रीन मुकाम तथा दूसरी जगहों पर शान्ति रैलियों होंगी और भुवनेश्वर के लिए वायाज तौर से एक शानदार रैली की तैयारी हा रही है।

पहली परवरी से कोरापुट तथा मयूर

भंज के जिलादान की पुरोर कोशिश प्रकृताने वाली है। कोरापुट जिले को आसानी ३५ लाख है, क्षेत्रफल ९९१९ मील है, गाँवों की संख्या ५८०० है और प्रलण्डों की संख्या ६३ हैं। बिस्में ग्रामदानों गाँवों की संख्या ४२०० तथा प्रलण्ड दान की संख्या १९ है। ७८ प्रलण्डों में ग्रामदानों गाँवों की लाखों संख्या तादाद है। बाकी प्रलण्डों में भी १२ को छोड़कर बाकी सभी कुछ न-कुछ ग्रामदान हुए हैं।

मयूरभंज जिले की जनसंख्या १२ लाख, क्षेत्रफल ४२०२ वर्गमील, गाँवों की संख्या ३९०० और प्रलण्डों की संख्या २१ है। यहाँ कुल १२ को ग्रामदान और ६ प्रलण्ड-दान हुए हैं। कुछ और प्रलण्डों में भी ग्राम दान हुए हैं। लेकिन जिले का लगभग ६६ तिहाई भाग आन्दोलन में अज्ञात है। फिर भी जिले में ग्रामदान का इतना मासूल अक्षर है कि कोई भी मयूरभंज का जिलादान होने में कोई बड़ी रुकावट नहीं देखा, यहाँ वहाँ बरूरी कोशिशों की जायें। नवनवान कार्यकर्ताओं की एक टोली ने लोगों के दिमागों में जगह बना ली है और अपनी मजा तथा उन्माह के भरोसे अपने जिलादान की शक्ति पर अपने आग्राम वेगिष्ठ कर लिये हैं।

ऐसी योजना की गयी है कि पाँच पक्षों के कुछ जिलों के कार्यकर्ता इन दो जिलों में आकर स्थानीय कार्यकर्ताओं को जिलादान अभियान में मदद करेंगे। अगले तौर से शिक्षक आन्दोलन के लिए मजबूत रहते आते हैं और कार्यकर्ता को बारी है कि उनसे इस काम में और ज्यादा मदद मिले। इसी तरह पचासवीं रावक का कार्यकर्ता से भी मदद ली जा रही है। इनमें से बहुत से लोग ३ दिन के शिविर में भाग लेंगे।

इन दोनों जिलों में जिलादान पूरा करने के लिए अभी तक समय की सीमा नहीं लग रही गयी है, लेकिन इसमें ३ महीने से ज्यादा समय नहीं लगेगा। परवरी में बिना समय प्रदेश सर्वोदय मण्डल की बैठक होगी, इसी समय आन्ध्र की बैठक होगी।

प्रदेश मण्डल ने १० हजार शान्ति सैनिकों की भरती पूरी होने, और १० हजार

शिक्षण : अहिंसक क्रांति के लिए.

। [मार्च ८-९ दिग्गमन '६० को बिहार के शिक्षा-मन्त्री को डाकुर की सद्बुद्धि में राष्ट्र के शिक्षा-विचारों का एक सम्मेलन का एक सत्र में भाग्य विनोद भावे को उपाधिपति में हुआ। सम्मेलन में शिक्षा की वांछना स्थिति पर गहरा चिन्तन हुआ, और उपनिषदी विचारों-सर्वोच्च विनोद, जयराज सायन और पीण्ड्र नरुमदार, ने शिक्षा के प्रश्न पर अपने विचार स्पष्ट किये, जिसे हम पाठकों को लेना में सहायित के लिए प्रस्तुत कर रहे हैं।—सं०]

शक्ति का स्रोत

हमें यह परिपक्व गम्भीर माध्यम से ही है। इसमें कुछ रसिकों को चोखना रोखी है। मैं याद कर रहा था कि हमारी मर्यादा का १५ साल की पदचाना में क्या शक्ति यह तरह की परिपक्व है, या गांधीजी के प्रमाणों में भी क्या हम तरह की कोई परिपक्व है या। मैंने खेत में मेरी पदचाना के समय एक कान्टेनर खर १९१० में हूँ था, लेकिन वह शिक्षा-विचारों की नहीं, बल्कि विद्याभिलाषियों की परिपक्व थी। उन्मेष की-० पी० आर्से० वे। यह तो विदुषु-परिपक्व है। भारत का पुराना इतिहास देखते हैं, तो उस बनाने में लुभावनी होती थी। भारत में दोन्नी बगढ़ इस तरह की सगति-परिपक्व-हूँ थी। लेकिन उनका साथ देना उतपन्न नहीं है।

→ सामदायन प्राप्त कर लेने के उपलव्य में २० बनवरी, '६८ की विनोदों को उड़ीशा में भामावित करने का निर्णय लिया है। मण्डक के एकत्र कार्यकर्ताओं की श्रावण खडकमत राय थी कि २ अक्टूबर, १९६९, राती गांधी-उवायटी दिवस तक उड़ीशा का प्रदेस-दान होना चाहिये, यदि विनोदों की प्रवेस में कुछ समय देना बचक करे। मुझे ख्याती-के मार्गदर्शन में उड़ीशा के नाग वधा एपान-रीतिव्य क्षेत्र में जो रात वेषा का काम किया गया, उसके कारण लोगों का सर्वोदय ही और हकान बढ़ा है और अब बन्द बिलों में आमदान को सारी व्यक्तियों दूर होनेवाली है, जो अब तक आमदान से प्राप्त आरुदा रहा है। आन्दोलन को भी नववर्षण चौपरी का, भूदान-यज्ञ : सुकना, २९ दिग्गमन, '६०.

यह एक विषय प्रथम में मानता हूँ। एक सा आभोजन क्यूरी डाकुर (शिक्षामन्त्री) बिहार) ने किया और उन्होंने यह भी जानकारी दी कि इस आभोजन में लकार का एक भी पैस लवने नहीं हुआ है। इसलिए यह एक विषय ही परिपक्व माननी चाहिये।

हमें हमें एक रसिकी आदेश दिशास्य देता है। मुझे लगा कि इस कार्यक्रम को हम प्रयत्न कर रहे हैं। बिहार की सभी सुनि-र्विधियों के प्रमूल लोग वहीं रहते हुए और उन्होंने शिक्षा के विषय में और विद्यार्थियों तथा शिक्षकों की समस्याओं के विषय में सोचा, तो मैंने माना कि मेरे लिए यह रसिक आदेश है। मुझे प्रेरणा है कि हम काम में मुझे पूरी मदद देनी चाहिए। मैंने बिना रसिकों के उन्मेष से शिक्षा में अहिंसक कार्य उठाया उसी उन्मेष से शिक्षा में अहिंसक

मात्र प्रथम प्राप्त है और राजनैतिक पक्षों के कारण जो आम निराशा फैली है, उन्मेष भी हमें मदद मिली है।

हाल ही में बिहार के हमारे साधियों ने विद्यार्थान का जो निर्णय लिया है उसे विनोदों की प्रथम वरीयता मिली है। इस निर्णय ने विनोदों को भगने कुछ मदीने, बिहार की यात्रा में ही विद्यार्थियों के लिए प्रेरित किया है। कोई नहीं जानता कि उन्हें कब समय मिलेगा और वे उड़ीशा आने के लिए राची होंगे। जो भी हो, उड़ीशा के सर्वोदय कार्य-कों आमदान क्रांति को आगे बढ़ाने का प्रयत्न इतना कर चुके हैं और बिहारदान का सहज उनमें अपने अभियान में और प्यार-शीते के साथ मुने की पैरान देना चाहिए।

क्रान्ति का कार्य उन्मेष उठाना चाहिए, यह आमाय अन्दर से हुआ। इसलिए हमें भी बहुत गम्भीर सोचना सप्रस्ता है।

इस (शिक्षा) कार्य को मैं बुनियादी मानता हूँ और आने वाले में सब सोचना हूँ, तो आमदान के कार्य के लिए मैं अपने को जितना साधक जाता हूँ, उनमें अधिक साधक इस काम के लिए जाता हूँ, क्योंकि अपने शीघ्र में मैं निम्नतर अप्यनशील रहा हूँ। आश भी तरह-तरह के काम हुए, गुनाकारों का दिष्ट, लेकिन आप के मामले अप्यन करके ही उपस्थित हुआ हूँ। मेरा एक दिन भी विना आपवकन के नहीं जाता। मुझे अन्दर से चित्तने भी संकल्प, आदेश, निर्देश, तरेष, उपदेश प्राप्त हुए, वे सब इस अप्यन के कारण हुए। मनुष्य के क्या कर्तव्य है, इसको शास्त्रकार एक के बाद एक बरके समझा रहे हैं। "सर्व-व स्वाम्याय प्रवचने च", "दमश्च स्वाम्याय प्रवचने च", "अभियथ स्वाम्याय प्रवचने च" का ही शासन, मत प्राति-के शासन, इतिव्ययन को शासन, अतिथि-व्यकरण की शासन इत्यादि हर शासन के साथ कहा कि स्वाम्याय और प्रवचन ही चाहिए। हर कर्तव्य के साथ स्वाम्याय प्रवचन का संयुक्त दिना। तो मैंने अपने लिए प्रचन बनाया— "भूदानयच स्वाम्याय प्रवचने च" "मामदान व स्वाम्याय प्रवचने च" "शासितरेवाय च आ स्वाम्याय प्रवचने च" "प्रानामिगुण-स्यारीकरणे व स्वाम्याय प्रवचने च" हर काम के साथ स्वाम्याय प्रवचन। शास्त्रकारों के इस आदेश का मुझ पर महान उपकार है।

राजस्थ के आन्दोलन में जिन नेताओं ने लोगों को स्पर्शित मिली, वे राजनैतिक नेता थे। लेकिन मैंने देखा कि सुख सुख में भी राजनैतिक नेता हो गये, वे अप्यनशील थे। इन दिनों की राजनैतिक नेता हैं, उनको अप्यन के लिए प्रकृत ही नहीं है। नाम मन्त्री हैं। मन्त्री बानी मनन करनेवाला। लेकिन मनन के लिए ही प्रकृत नहीं। पुराने नेताओं में जो आदि-प्रदान राजनैतिक क्रांतिवादी नेता थे, लेकिन अप्यन-सम्पन्न थे। वरीच २५-२० किताबें उन्होंने

लिखी है। लोकमान्य तिलक दिन भर राजनीति की चर्चा करते थे, लेकिन रात को सोने से पहले वेदाध्ययन करते थे। लेख में गये तो वेदकाल के सघोचन पर प्रमत्त लिखा। दूसरी बार जेठ में 'गीता रहस्य' लिखा। राजनीतिक आन्दोलन में पड़े थे, लेकिन हृदय स्वाध्याय-प्रवचन में था। महर्षि रानडे, एनी बेसेट, अजुब क्लाय आज़ाद आदि लोग मिलते राजनीति के क्षेत्र में मंजे हुए थे, उससे कहीं ज्यादा विद्या के क्षेत्र में मंजे हुए थे। ये सब ठोस ज्ञेता थे, पोल नहीं थे। दोल पोल होता है, इसलिए चोरदार आवाज होती है। ठोस ज्ञोज में से वैधी आवाज नहीं होती। तो, वे नेता केवल राजनीतिक नहीं थे। उनका जीवन विद्या प्रधान था। इन सबके सत्कार मेरे चित्त पर हुए हैं। मुझे प्रेरणा हुई कि शिक्षा के काम में आपकी मदद हूँ। बिहार में शिक्षा में अहिंसक प्रान्ति के लिए क्या करना होगा, इस पर योजना चाहिए। मेरे हृदय में जो उत्कृति हुई वह मैंने आपक सामने रखी। मैंने कहा कि मैं इस काम के लिए अपने को क्यादा लायक मानता हूँ। आप पूछ सकते हैं कि फिर यही काम मैंने क्यों नहीं उठाया? इसका उत्तर देना चाहता हूँ। उत्तर यह है कि इस काम में विद्वानों का सहयोग मुझे मिलेगा, इसका मुझे भरोसा नहीं था। दो विद्वान् एक जगह आ जायें और उनमें मतैक्य हो जाय तो बहुत बड़ी भटना हुई, ऐसा कहना चाहिए। "नेको मुनिर्वैद्य यच्च प्रमाणात्" कहा ही है। तुच्छोदासभी भी करते हैं कि "बहुमत मुनि बहु पय पुतानि, जहाँ वहाँ हज़ारों को गुरु कहते राम-भजन नीके, मोहि लगत रामकमरो सो" विद्वानों में कहीं मत नही, अनेक पथ हैं, बहो-तहाँ सगढ़ा ही-सगढ़ा है। गुप्त ने तुच्छोदास को आदेश दिया कि तुम रामभजन करो और तुच्छोदास कहते हैं कि मुझे वह राममार्ग लगा। फिर आगे आकर लिखते हैं कि "मैं रामचरित मानस लिख रहा हूँ, लेकिन विद्वान् लोग मेरी इस कृति पर हँसे, क्योंकि मैं तो कोई विद्वान् नहीं हूँ। लेकिन अगर मेरी कृति पर उनको हँसी आयी तो मैंने उन्हें हार्लय

प्रदान किया यह खाम होगा।" इतने नम्र ये तुच्छोदास। बहो विद्वानों से इतना डर तुच्छोदास को लगा, बहो बाबा की क्या दाख गल्लेवाली है। तो, शिक्षा का काम क्यों नहीं उठाया, उमड़ा यह एक कारण हुआ।

दूसरा कारण यह है कि बाबा के हृदय में कृपा का काम कर रही है। शक्राचार्य से बढ़कर तत्पक्षानी शायद ही कोई होगा, लेकिन उन्होंने प्रार्थना की है—"शिवियमपनय विष्णो वमय मन. शमय विषय-शृगण्णाय भूतदयां विचारय" "शक्राचार्य इतने जाननिष्ठ, लेकिन उन्होंने भगवान् से प्रार्थना की कि मेरे मन में भूतदया का विचार हो। मनुष्य का प्रमान करने क्या है इसके समस्तते हुए एक षड्य उन्होंने कहा, "बाग्येश्वरी शम्भुसरी शास्त्र-भ्याख्यान कोशल" ऐसे विद्वानों की विद्वत्ता किस काम की? ऐसे लोगों की विद्या

का काम छोड़कर बाबा विद्वानों के पीछे भागना तो विद्वान् प्यान नहीं हों यह बाबा ने माना। मैं भारत भर पैदल घूमा हूँ। कितनी हीन-हीन दशा भारत की है, वह सब आँखों से देला। बाबा ने भारत भर में बहुत कुछ देखा—खाने की अन्न नहीं, ओढ़ने की वस्त्र नहीं, घर पर छपर नहीं, बच्चों की हूच नहीं, बिच बमीन पर होखेय बनी है, वह बमीन भी उसको नहीं, दवा का प्रबन्ध नहीं, ताशेम का सवाल ही नहीं।

पंचकर्मों योजना के विचिन्तने में योजना बनने के साथ बात करने का मोक्ष मित्र। बाबा की यात्रा में अनेक पार्टियों के लोगों के साथ बात करने का मोक्षा मित्र। हर पार्टी में बाबा के मित्र हैं। कर्मिच, बनकर्मिच, स्वयं, एठ० एठ० पी०, पी० एठ० पी०, राष्ट्र-सेवक कम्युनिस्ट, और भी अनेक पार्टियाँ हैं, एक जे० पी० भी है—सबके साथ मैत्री

ईदरती आइरा "शिक्षा में अहिंसक प्रान्ति" शिक्षक निरन्तर अध्ययन शील हों मुख्य राजनीतिक नेता अध्ययनशील थे आज राजनीतिक नेता को फुसंत नहीं। "प्रामदान के कार्य के पीछे कृपा विद्वानों का धर्म" प्रामदान के कार्य के साथ शिक्षा में अहिंसक प्रान्ति के लिए मदद। भारतमन्तोय से बढ़कर कोई चीज नहीं शिक्षकों द्वारा शिक्षा में अहिंसक प्रान्ति "

"मुझमें न तु मुझमें" होती है। वनज्वाह पाने की विद्या है, वह मुक्ति के काम नहीं आती। ऐसी प्रलर टीका आचार्य करते हैं। मनुष्य में कृपा होती चाहिए। शक्राचार्य का वर्णन किया गया है—"भुक्तिश्रुतिपुतानां भाषय" और आगे कहा—"कृपाकथय"। उन्होंने १६ लाख भारत की यात्रा की, अग्र-अग्रह लोगों से चर्चा की, विचार प्रचार किया, यह सब कृपा की प्रेरणा के कारण हो सका। भगवान् बुद्ध अनेक विचारार्थत यज्ञपुत्र थे। लेकिन कृपा का नाम लेकर निष्क्रु पड़े। वे काष्णवाचक थे। इसलिए उनका भारत पर अक्षर रहा है। कितने भी महात्तानी विद्वान् कुछ हो गये, उन्होंने कृपा को मरग दिया। बाबा बहुत विद्वान् तो नहीं है। उसके पास कुछ विचार बल्लर है, लेकिन उसकी स्थिति "परबोअरि हुमापते" वैसी है। लोगों में कविता है, वो योद्धी विद्या के कारण बाबा विद्वान् समझा जाता है। लेकिन कृपा

है। मैंने योजनाबारी से पूछा कि सबसे शीघ्र को हैं, उनके लिए योजना में साध क्या प्रबन्ध है? योजना से सारे दण का बीज भीन कुछ बढ़ेगा यह ठोक है, लेकिन गरीब की अनुमान में क्या एक हागा? उन्होंने समझाया कि सबका घर बढ़ना तो नोबेरक का भी कुछ बढ़ेगा। मैंने हलसे "श्रीमी आर परबोअरि", ऐसा नाम दिया। ऊपर बहुत शीघ्र होगी तो बमीन के अग्रर कुछ पानी बावना। लेकिन कुछ बमीन में अग्रर पचान होती है, तो नोबे एक पूर ही गलती नहीं बाता। भारत में बाग्येश्वर, आदि क विषयमता, आदि अनेक पत्रांन हैं। वो मय का एबरेष बढ़ने पर भी गरीब को कुछ नही मिलेगा। लेकिन योजनाबारी को मुनिप क प्रगतिशील टगो की कृशर में भारत को बर-वे-बहद खन की हलष ही। नरिष क टागलाने में नोट टागधर बड़ी-बड़ी दन् क्राव्येन योजनाओं को हाप में लिख। अर

बालीन बोबना नहीं बनायी। भारत में नैपनक मिनिमम एवरेज या आर्थियम (अनुकूलन) की बात नहीं, बल्कि मिनिमम (कम-से-कम) इस भिन्ना, ऐसा पुकने पर करते हैं कि चापद एवं १९८५ में मिलेगा। इन्नेरवाल वाली से बाहर खींचने के लिए पुकारा जा रहे। उलके यदि कहेंगे कि परलो दुसे निकालें, तो किन्ना साधारण होगा। इलीयिद दुबहार में कहा है कि "उद्वारणी काय उधारीसे काम"—उद्वार के काम में उधारी नहीं चल्ती। एवं १९८५ में भारत की क्या दशा होगी, कौन कह सकता है। बाबा के हृदय में दर्द है। भारत की बनवा ने बहुत धन किया है। इलियिद शेषका धन होते हुए भी बाबा निकल पड़ा। धनी मजदूर का नहीं है। इलियिद कुदायी बहाकर गरीबी को प्रेरणा नहीं दे सकता है, उधरि कुछ कुदायी चचायी दे। फिर भी प्रामदान का काम छोड़ नहीं सकता। अन् उध काम के साथ विद्या में अरिषक क्रांति का काम भी विहार में होगा, ऐसा हृदय रोल रहा है।

लेकिन मेरे एक धर्म है। बाबा ५० लाख काम कर चुका है। जीवन के अन्तिम काल में आत्मचिन्तन में समय बनाया चाहिए। अन्तर के स्वयं में प्रवेश करना चाहिए, ऐसा शास्त्रकार करते हैं। अन्त बाबा स्वयं में गया है। फिर भी मदद कहेंगे क्या हैं, उलका मतलब आय समझ लीजिये। बाबा का आपसे ऊपर आक्रमण नहीं होगा। बाबा देहलन्त-कुछ (हर्म्न-पुस्तक) बैठा रसना। रेकलन्त-कुछ अल्लमारी में पकरी है। आप उपयोग करना नारींगी।

लकार भी मेरा उपयोग कर सकती है। धरकार को २२ टॉर्न है। २३ से, लेकिन एक टीका पर गया। इलियिद सरकार की स्थिति बड़ी कठिन है। उलके अनेक लोगों को साथ लेकर चक्का पड़वा है। मेरे धरकर के जेती उलके हालत है। मेरे देह को दरी अनुकूल है, लेकिन गले को अनुकूल नहीं। गले को दूध अनुकूल है, लेकिन लेट को यह अनुकूल नहीं। मानी मलबार के लिए अनुकूल है, लेकिन देह को अनुकूल नहीं है। एचकी हृद लेट को अनुकूल

है, लेकिन मलबार को अनुकूल नहीं; जो देह, गला, मलबार इन सभी अलग अलग स्थिति होते हुए भी बाबा कुशाब्दा से धारी से काम लेता है। जैसे सरकार की कठिन दशा होते हुए भी कर्पीवी विप बनकर आपसे काम लेते। 'एम सी केवल प्रेमविद्या' बनवा पर प्रेम करना ही राम पर प्रेम करता है।

बाबा की दुखी धर्म यह है कि कल्याण के वगेर विद्या कोई काम की नहीं। इलियिद बाबा के कल्याण-धर्म में आपका सहयोग मिलना चाहिए। विहार में १२-२३ गाँवों के विधे स्कूल हैं, विद्यक सब बगड़ हैं। गाँव गाँव में प्रामथम बनाने के काम में वे मदद करेंगे। वे यदि मार्गदर्शन का और नेतृत्व का विन्ना उठावेंगे तो शिक्षकों के द्वारा बहुत काम होगा। आचार्यों ने ही भारत को बनाया है। आधुनिक कर्मियों को शिक्षकों ने बनाया ऐसा कहा जाता है। आप यदि प्रामदान-आन्दोलन में अपना सुट्टी का समय देंगे तो आपके दिव्य भी सन्तोष होगा। दुनिया में आत्मसन्तोष से बड़कर कोई चीज नहीं है। दीन-दुखियों की सेवा से जो आत्मसन्तोष प्राप्त होता है, वही मनुष्य-कर्म में सबसे भेदक मानते हैं। अब विद्या-दान की बात हो रही है, इलियिद बाबा के साथ आपका दूध उपयोग मिलना चाहिए। आप अध्यापन का काम करते हैं। उलके साथ प्रामदान का काम भी आपका है। उलके साथ प्रामदान का काम करके तो अध्यापन का वायमाहक (उपबाव) बड़ा होगा। पदस्था में बाबा ने जो अध्यापन यह बाबा की पदयात्रा का वायमाहक है। और, कई दशक प्रारम्भने की वायमाहक से ही अधिक धाम होता है। तो, आप बाप माहक के तीर पर हठ काम को ठका लें।

अब तीजरी बात, आपको अपने को राबनीति से लेना चलना चाहिए। राबनीति का अध्यापन बल्ल करना चाहिए; चिन्तन-मनन होना चाहिए, लेकिन पार्टी-पब्लिकिस् (दलगत राबनीति) या पार-पब्लिकिस् (सजागत राबनीति) बिलको करते हैं, उलके अपने को ऊपर चलना चाहिए। इलीमें विद्यक का गौरव है। वैसा आप करेंगे तो पन्त दिनों में आपकी ताकत बढ़ेगी। आब

आपकी हेमिगत नीकर की है, यह गुरु की बननी चाहिए। जीवन में पब्लिकगत समझा उलके होनी है, वर गुरु की उपाह ली जाती है। गुरु उदम्य होते हैं, इलियिद भेद गलाह गुरु की मानी धारती है। आब किन्नेन विचार्यो अपने निजी घरला देकर विद्यक के पास करते हैं। मीराबाई के लोग में निर्मय करने का कठिन प्रयाग आया, तब यह इलियिदात के पास उलका गीनेन गयी। तुलसीदास ने लिख दिया—"आ के विप व राम देदेयी, मो प्रीनिके कोरि वरी मय, पबकि परम सनेही।" कि लिखा—"उमो पिता प्रसाद, बिभीपण शंभु, मरत मलकारी।" अन् में लिखा—"ए लो लो हमारी"—इतना मत यह है। आनको को बनना हो करे। तो, लेकी गुरु की है विपण विद्यको की होनी चाहिए। वह प्राबनीति से ऊपर उठने से और लोकविद्यक के कार्य से होगी।

दूध टोह, १-१२ '७७

—विनोबा

क्रान्ति का माध्यम

आब की हमारी सिखा पद्धति और समाज की स्थिति में बहुत निवगति है। हमारा देश अल्प-विकसित (अडर डेव-लप) है। हमारी विद्या-प्रणाली देखी होगी चाहिए कि उस प्रणाली की परिणति हो राष्ट्रीय विकास में हो। बाबाओं ने बहुत पहले दूध बात को रखा। फिर दूसरे शिक्षा-धर्मियों ने भी इस चीज को दोहराया। अभी भी कोठारी-अभिधान की रिपोर्ट प्रकाशित हुई है, उलके उलके और इधारा है।

लेकिन आब की विद्या-पद्धति नोकरों का पलायन देनाकी है। पढ़कर एम विद्याय या दूधकृत बने, इलके लिए कोई नहीं पढ़वा है। इस विद्या पद्धति से वे स्वतंत्र नागरिक का निर्माण ही नहीं होता।

मैं लिखा करता हूँ कि 'बनाक पद्ध-केहन' (शामान्य विद्यण) होना चाहिए। आब की विद्या श्रीकेवल (व्यावसायिक) है। एक केकर (टीका) बनाने के लिए यह विद्यण है। नतीजा यह हुआ है कि विद्या का स्तर गिर रहा है और अनुपातन हीनता

• प्रदान-यज्ञ : शुक्रवार, २९ दिसम्बर '७७

परिस्थिति का सामना करना पड़ेगा, उसको तैयारी कर देनी होगी। इसलिए विद्यार्थियों को अपनी भूमिका (रोल) और अपनी बिम्बो-बारी डीक्यूडीक समझनी होगी। समाज को बाल-मवाह के साथ ले जाने की बिम्बो-बारी विद्यार्थियों को है। समाज का नेतृत्व करने की बिम्बो-बारी विद्यार्थियों को है। विद्यार्थियों और प्रशासन, यह परस्पर-विरोधी चीजें हैं। एला रोड, ८-१२-१७ - धीरेन्द्र मजूमदार

निर्माण का आधार

एक घंटा पहले ही मुझे पता चला कि मुझे इस परिपक्व की अपेक्षा आम कर्मी है। अभी आपने धीरेन्द्रमार्द का मागण सुना। वे अच्छे विद्या-धारी हैं, यद्यपि वे पुराने अपने को विद्या-धारी नहीं मानते हैं। लेकिन यह उनकी गलत है। मैं उस ममदा के सवाल से नहीं, बल्कि बच्चरिपिथ के सवाल से कहता हूँ कि मैं कोई विद्या-धारी नहीं हूँ। फिर भी एक दो बातें आपके सामने रखना चाहता हूँ।

धार्मिक में मैं कभी डाक्टर को मुबारकनाद देना चाहता हूँ कि उन्होंने बिहार के सारे विद्यार्थियों (माचारियों) की गोष्ठी का यह आयोजन किया। आप लोग अनौपचारिक तौर पर यहाँ हज़ूँ हूँ, फिर भी आप लोगों में आपस में चर्चा की, चार गोष्ठीयों में मेरा भाग लेना और कुछ संश्लेषण मुझसे किसे पड़े। यह उपक्रम बहुत ही

बिहार प्रदेश के विद्या-धर को क्या हासल है, यह हम सब जानते हैं। यह अपने लक्ष्य हीनता बुलाया गया है कि उस हासल में सुधार का कोई मार्ग निकले। बिहार सरकार ने जो अपेक्षाएँ बायीं किताब है, उस सम्बन्ध में हम समय में नहीं बहूँगा। लेकिन आपके सम्मेलन में त्रिगुण खेन आये, अन्य विद्या-विद्यार्थी भी आये तो मैं आशा करता हूँ कि बिहार के विद्या-धर का नकशा कुछ सुधरेगा।

अभी धीरेन्द्रमार्द ने जो बात कही उसीको मैं दोष आगे ले बाहर करना चाहता हूँ।

सुधानन्द : शुक्रवार, २९ दिसम्बर, '६०

हूँ। यह मेरे अकेले का विचार है देखो बात नहीं है। शिक्षा साक्षियों ने भी इस विषय पर सोचा है। आम को विद्या-प्रणाली तक रही है वह अर्थों की कल्पना भी हुई है। यह नौकर देश करने की प्रणाली है। शिक्षण क्रियाएँ ही नौकरी के लिए। यह विद्यार्थी और नौकरी का सम्बन्ध तोड़ना चाहिए, तभी शिक्षा का उद्धार होगा। सरकार की तरफ से यह योजना की जानी चाहिए कि 'नौकरी के लिए, डिग्री का कोई मूल्य नहीं है। बिल पर के लिए हमें लेंगे चाहिए, उसका पित्त-पन हम निकालेंगे और उसके लिए क्या योग्यता चाहिए, इसका फैसला करेंगे। उम्मीदवारों की हम अलग से परीक्षा लेंगे और उन्हीं को उछल दोगे उन्हीं से लोको का चुनाव करेंगे।' यह चीज बब तक नहीं होगी तब तक चाहे बितनी बार विद्या-

शिक्षण-प्रणाली बदले... शिक्षा का सम्बन्ध नौकरी से नहीं... डिग्रीयों समाप्त की जायें... युवकों की स्थिति चिन्तनीय... हम सब जिम्मेदार... विद्यायक मोडू हैं... धर्म की बात... राष्ट्रीय एकात्म का बोध... कालेजों में तदर्थ शास्त्रि-सेना... उद्देश्य फायदा

सुधार की बात दोहराते रहिये, शिक्षा का उद्धार नहीं होगा।

इसका दूसरा पहलू यह होगा कि डिग्रीयों और परीक्षाएँ-समाप्त की जानी चाहिए। प्राथमरी से हाईस्कूल तक को भी आठ या दस साल रखने ही और उनमें प्राथमरी, सेकेंडरी, मिडिल इत्यादि को विभाग करने से ही बचें, लेकिन सर्टिफिकेट (प्रमाण पत्र) हटाना ही दिया बाव कि अग्रक बड़ाका हटने साल अग्रक विद्यालय में अग्रक विषय लेकर पढ़ा। इसके बाद उसको विश्वविद्यालय में जाना ही तो ब्रैड आब का ३ या ४ साल का अभ्यासक्रम है, उसमें वह पढ़ेगा। वहाँ बाव कि अग्रक विषय लेकर वह अग्रक हाउस में अग्रक साल पढ़ा। हटने प्रमाण-पत्र पर उस विद्यापीठ को नौकरी नहीं मिलेगी। उसको वहाँ नौकरी के लिए जाना होगा वहाँ उसको उस विभाग की परीक्षा देनी पड़ेगी।

एक शिक्षा में अन्य राष्ट्रों के अनुभव को अपने लिये। आम भी डिग्री कल्प के

बलाया अलग अलग डिपार्टमेंट (विभाग) को अपनी ट्रेनिंग (प्रशिक्षण) दे दी है। सरकार ऐसी विधि ट्रेनिंग रखे। तब विद्यार्थी को भी वह निश्चित रूप से प्राप्त होगा कि वह क्या बनने के लिए प्रशिक्षण ले रहा है। चीन ने परीक्षाएँ रद्द कर दी हैं। यह रेटिकुल (डुमिथादी) बात लगती है। लेकिन बापद यह अधिक व्यावहारिक है। मैं अपने देश के युवकों की हासल से बहुत चिन्तित हूँ। हमें युवकों का रोना नहीं है। युवक हमारे पास विद्यार्थी के लिए आते हैं। वे मिट्टी हैं और शिक्षक कुम्हार हैं। अगर ठीक नहीं बना तो कुम्हार का दोष है। आम युवकों की जो चिन्तानक हासल है उसके लिए अपना समाज, माता पिता, शिक्षक, युमिन्सिधियाँ, सरकार, सब बिम्बो-वार हैं। अन्य प्रदेशों को तुलना में बिहार

विद्या के मामले में और भी कमबोर है। बापद बिहार का नगर हमसे नीचे का होगा। यह प्रदेश वैश्व ही पिछड़ा है। शिक्षा की यही हासल रही तो और भी पिछड़ेगा। विद्यायक मेरा सुझाव है कि विद्यार्थियों को विषयक कार्य को दिया में भोजन चाहिए। राज्य की ओर से वह अतिव्यय न किया जाय, बल्कि टेन्क-कला बाव। यदि अच्छे छात्रने रखा बाव तो कुछ जुने हुए विद्यार्थी इकठ्ठा आश्रित हो जायेंगे और धीरे-धीरे आगे राह तुल पायगी। मुझ में भूजे वह छोटी चारा दिखे, लेकिन आगे चलकर वह गया का रूप लेगी।

अभी कुछ दिन पहले बिहार के अग्रक-प्रशासक विद्यार्थियों का एक विवरित अखिल भारत शास्त्रि-सेना मण्डल ने किया था। उसमें बिहार से और बिहार के बाहर से भी विद्यार्थी आये थे। रामजी भार्द (रामजी लिंग, माध्यायक, भागलपुर विश्वविद्यालय) के मार्गदर्शन में भागलपुर घेन में एक दोनो ने जो काम किया, उसमें विद्यार्थियों को अच्छा

शिक्षण मिला। शिक्षण के कार्यक्रम के साथ-साथ उन्होंने राहत और सेवा का काम किया। आश्रय होता है कि बिहार में कहीं-कहीं से लोग सेवा-कार्य के लिए आये थे। अमेरिका, इंग्लैंड, प० जर्मनी, आस्ट्रेलिया इत्यादि कई देशों के युवक यहाँ आये, तो हमारे देश के युवक क्यों न आये ? एक बगह पर गया मैं 'पीस कोर' का एक युवक मर्द की कड़ी धूप में चापाकल (हैंडपप) लगा रहा था। मैंने उसे कहा, "तुमको इतनी कड़ी धूप की आदत नहीं, सनस्ट्रीक (ख) तो जायगा। तुम जून के बाद आओ।" उसने कहा, "मैं सुबह ४ से १० बजे तक और शाम को ४ से ८ बजे तक काम करूँगा तो सनस्ट्रीक नहीं होगा।" गाँव के लोग देखकर ताज्जुब में पड़ गये। गाँव के किसान कहते थे, यह आदमी तो भूत है। हम छः आदमी कितना काम करेगे उतना वह अकेला कर देता है। तो मैंने बिहार के विद्यार्थियों के सामने बात रखी कि अमेरिका, इंग्लैंड जैसे दूर-दूर के देशों के विद्यार्थी हमारे यहाँ आकर काम करते हैं और हमारे विद्यार्थी आगे नहीं आते हैं, यह शरम की बात है। तब विद्यार्थियों ने कहा कि इस तरह शिक्षण की कोई व्यवस्था तो करें। उनका कहना ठीक था।

शांति-सेना की स्थापना गांधीजी ने सन् १९२० में की। फिर आजादी की लड़ाई के कार्यक्रमों में वे व्यस्त रहे। आजादी के बाद उनका जो बल्लवान हुआ वह आदर्श शांति-सेना का हुआ। इसी विचार को विनोबा ने आगे बढ़ाकर अखिल भारत शांति सेना मंडल का गठन किया। किशोर शांति दल का कार्यक्रम गुजरात में चलाया। गरम की छुट्टियों के दिनों में एक महीने का शिक्षण किया। बहुत खर्च रहा। इसके बाद शांति-सेना मंडल ने अखिल भारतीय स्तर का किशोर शांति सेना का शिक्षण हर साल चलाया। देश के विभिन्न प्रदेशों से विद्यार्थी आते हैं, एक-साथ रहते हैं, मिल जुलकर काम करते हैं, राष्ट्रीय एकात्मा का उनको बोध होता है, शांति की तरफ झुकाव बढ़ता है। यह शिक्षण केवल आंतरराष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि आंतरदेशीय भी हुआ। अगले वर्ष नारायण

में ऐसा शिक्षण करने का सोच रहे हैं। मैंने 'स्टूडेंट्स नेशनल रीकन्स्ट्रक्शन कोर' का विचार रखा उसीको मुख्यव्यक्ति रूप देने के लिए तरुण शांति सेना का यह प्रारूप बनाया है। अमेजी में इसे 'यूथ पीस कोर' नाम दिया है।

इस तरुण शांति-सेना की प्रथम भूमि आप लोगों के सामने रखें और इस काम में आपसे मदद माँगूँ ऐसा मैंने सोचा। हर कालेज में तरुण शांति सेना का केन्द्र बने ऐसा मैं चाहता हूँ। मैं इसको अनिवार्य बनाने के पक्ष में नहीं हूँ। जो चीज अनिवार्य की जाती है, उसमें आगे चलकर टोंग बढ़ता है। इसलिए इसको ऐच्छिक रखा जाय। मैं नहीं चाहता कि यह सरकार की चीज बने। बड़ी अजीब बात है अपने देश में कि अच्छी चीज को भी बन सरकार छूती है तो वह बिगड़ जाती है। जवाहरलालजी ने यही बात कम्युनिटी डेव लपमेंट के बारे में कही थी। इसलिए इस काम में मैं आपका व्यक्तिगत सहयोग चाहता हूँ। बिन लोगों को रूझित हो वे मुझे मदद करें। इसमें एक परधर्म में दो चिड़ियों मारना चाहता हूँ। एक चिड़िया है विद्या यिदो का चरित्र-निर्माण और दूसरी चिड़िया है बिहार का उत्थान। अपने देश में लड़कों विद्यार्थी और हारों शिक्षण है। आपके हृदय से प्रेरणा निकलेगी तब इस काम में बल आया। इसमें विद्यार्थियों को किसी तरह का प्रलोभन न दिखाया जाय। इसमें शरीक हो आगे तो सरकारी नौकरी में अप्रमत्ता हो जायगी, इत्यादि बातें न कही जायँ।

पूला रोड — जयप्रकाश नारायण

१-१२-६०

नयी तालीम

शिक्षा द्वारा समाज-परिवर्तन की सदेशवाहक

मासिक पत्रिका

सालाना चंदा : छद् ६०

सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन, राजघाट, चाराणसी-१

जागतिक संत्रास और आत्मा की घुटन

मानव मन : आतंक की कारा में

सम्प्रदायवादी
सत्तावादी
साम्यवादी
समुच्चिवादी

मुक्ति की तड़प और टूटते डैने

नेगी
डिजिलस
पेस्टरनाक
फ्रिटियर गांधी
साने गुडजी

अस्तित्वादा :

विनय आत्मा की आराज

साज
कामू

प्रिलवाद : विद्रोह की भटकन

दलों के दलदल
आक्यहीन नयी पीढ़ी
थाकोरा का उभाङ्ग
प्रक्षोभ का विस्फोट

सत्याग्रह : आरोहण का नया आपाण

सर्व का सत्य
सर्व की शक्ति
सर्व की मुक्ति

३० जनवरी '६८ को प्रकाशित हो रहे

'भूदान यज्ञ' के मागामी सत्याग्रह विरोधांक में प्रस्तुत होनेवाले एक निबन्ध का सक्षिप्त परिचय

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, २९ दिसम्बर, ६०



**★ कथनी और करनी
★ विकास वनाम-पिछड़ापन**

आवकल कियो भी विषय के आँकड़े

सबुक सोशललिस्ट पार्टी के भी मधु विभव ने भाषा-विचार के तन्मय ने बोलते हुए एक बहुत दिक्कत रात कही थी। आम तौर पर यह समझा जाता है कि हिन्दी का विशेष दक्षिणवाले या मैदानी प्रांतों के लोग करते हैं। पर भी मधु विभव के अनुसार हिन्दी के वास्तविक विरोधी हिन्दी-भाषी प्रांतों के ही "कोल", "सा", और "शिंह" जोग हैं जो सरकारी नौकरियों में ऊँचे पदों पर हैं और जिन्हें यह दर है कि अगर अंग्रेजी ही बनाए हिन्दी ने उसे थी तो सरकारी नौकरियों में-अंग्र भी उनका एकपिपत्य-सा है यह सतम हो साधना।

की कुर्सी पर से, हिन्दी का बोरदार समर्थन करते हैं वे ही बाल बच्चों को अंग्रेजी-माध्यम के स्कूलों में पढ़ाने के लिए अभ्यर्थित लाफ्ट रुडिया के एक संबाददाता ने दिल्ली शहर की अंग्रेजी माध्यम की स्कूलों का भ्रमण करके जो तन्मय प्रकाशित किये हैं, वे वहाँ एक ओर दिखवकर हैं वहाँ दुखी और भयानक आभ्यर्थनकर और रोदड़नकर भी। इस संबाददाता ने बताया है कि राजधानी के ऊँचे तबके के लोग-चाहे वे मजदूर हों, रावनीतिक हों या सरकारी अफसर-सब अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए अंग्रेजी-माध्यम के स्कूल पठव करते हैं। संबाददाता का कहना है कि "मैदा जोग अपने बच्चों को इन विशिष्ट स्कूलों में भर्ती कराने के लिए दर प्रकर के प्रभाव और दबाव को काम में लेते हैं। एक "करोना" या पाठरी स्कूल में बिलवे केवल १० स्थान हैं उसमें बनवरी से शुरू होनेवाले छन के लिए बड़े-बड़े लोगों के बच्चों की देद ही भर्तियाँ आ जुझे हैं। एक अन्य अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में हर स्थान के पीछे १० अर्धियाँ आयी हैं। अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ानेवालों में दिल्ली जनसचय के अल्पसं भी इददयाल देवगुण और जनसचय के तीन लोकसभा-सदस्य भी हैं, जब कि जनसचय हिन्दी के पक्षपात और अंग्रेजी के विरोध में हमीदा आगे रहता है। इसी प्रकार कनिष्ठी के कई मन्त्री और लोकसभा के सदस्य भी, जिनमें डा० रामशुभम सिंह, भीमनी तारेश्वरी सिन्हा, भी विजाचरण शुक्ल, भी बगभीनराम, भी के० भी० पत, भी भगत सा आबाद, भी नरसिंहाय, भी के० एल० भीयावत, भी नाथ पार्द और भी के० एल० शाह आदि हैं, आने-रने-ने को अंग्रेजी-माध्यम के स्कूलों में पढ़ा रहे हैं।"

देकर उसके मनपसन्द नतीजा निकालने की कला ऐसी विकसित हुई है कि उधरे भोले लोगों को आसानी से भ्रम में डाला जा सकता है। दूरे दूरों में और बिना लग-लगे के कई तो, उन्हें आसानी से बेवशूक बनाया जा सकता है। अलवार, रेडियो, टेलीवीजन, प्रसूचन ग्वापार आदि मचा के लपनों का प्रसूचन पढ़े लिले वगैरे के हाथ में होने से सचालन पढ़े लिले वगैरे के हाथ में होने से यह वगैरे एच को सरद और एवैद को स्वाद बनाकर जनसाधारण के योग्य के कैते कैते प्रसूचन तरीके इजाद करता रहता है, यह अभ्यपन का एक बड़ा दिलचस्प विषय है।

वास्तव में अंग्रेजी और हिन्दी का आग्र भी समझा चल रहा है उसके मूल में बहुत कुछ यह नौकरियों जाने का दर या नौकरियों पाने का साधक ही काम कर रहा है। वहाँ हिन्दी के विरोध के पीछे अहिन्दी-भाषियों का यह दर है कि वे लोग फिर अंग्रेजी नौकरियों में पाठे में रहेंगे, वहाँ देय के बलवान में हिन्दी को रागभया मान लिये बलवान में हिन्दी के पीछे १७ वर्ष में राग भी ओर से-ओर राग का मतलब ऊँचे अफसरों और राजनीतिक नेताओं का होता है-हिन्दी को आगे बढ़ाने के मामले में जो मूल में भी हम ऊँचे तबके के लोगों के अपने निहित स्वार्थ रहे हैं।

दिलों के अंग्रेजी टैकिंग 'ग्राम ऑफ रूफिन्दा' के ता० १ दिखकर के एक में रटन-विचारवाले के बारे में एक कथादक्षीय नोट है। मित भिन्न मुझों में वहाँ की संस्था के अनुपात में दौत के वाकर कितने हैं, इसके आँकड़े इस तरह से पेश किये गये हैं, जिनसे पढ़नेवाले पर देता अजर होता है कि हिन्दुस्तान और अंग्रेजी का एक इस मामले में कितने पिछड़े हुए हैं। "अमेरिका में हर १,६२० बच्चियों के पीछे एक दौत का डाक्टर है, जब कि एशिया में यह अनुपात १ : १००० और अफ्रीका में १ : ८१०० है; इस मामले में हिन्दुस्तान की स्थिति कुछ एशिया की अपेक्षा भी बदतर है। यहाँ ७५ एशिया की जिनकेवाले इस 'विधि' भाई की समझ में यह नहीं आता कि कौसी देप में डाक्टरों को या योगियों को चलना कम से-पिछड़ेपन की नहीं, बल्कि अन्धकार की निगाह ही सखती है। हर बात के बारे में यह नम बदा सा सकता कि उठमें 'पीछे' होना दुःख या बिता की ही बात है। बकि जुरी शायी में पीछे राना लतोर की और मोरव की बात भी ही सखती है।

सो तो सामान्य तौर पर आदमी की कथनी और करनी में अन्तर रहता ही है, लेकिन जब तक यह अन्तर समान दिशा की और बढ़नेवाली रेशाओं का अन्तर होता है तब तक वह इतना आभ्यर्थनकर या आर्पित बनक नहीं माना जायगा। पर आर के सार्वजनिक जीवन में मानों यह मान ही बिना गया है कि करनी का कथनी से मेक ही यह क्वट बकरी नहीं-बकि कथनी कथनी से बिबुद्ध उठती दिशा में भी ही सखती है। तमों तो जो लोग जुटतों और हमामों में या लोकसभा के मंच या शासन

में प्रवेश करने की कोशिश करते हैं, वे ही बाल बच्चों को अंग्रेजी-माध्यम के स्कूलों में पढ़ाने के लिए अभ्यर्थित लाफ्ट रुडिया के एक संबाददाता ने दिल्ली शहर की अंग्रेजी माध्यम की स्कूलों का भ्रमण करके जो तन्मय प्रकाशित किये हैं, वे वहाँ एक ओर दिखवकर हैं वहाँ दुखी और भयानक आभ्यर्थनकर और रोदड़नकर भी। इस संबाददाता ने बताया है कि राजधानी के ऊँचे तबके के लोग-चाहे वे मजदूर हों, राजनीतिक हों या सरकारी अफसर-सब अपने बच्चों को पढ़ाई के लिए अंग्रेजी-माध्यम के स्कूल पठव करते हैं। संबाददाता का कहना है कि "मैदा जोग अपने बच्चों को इन विशिष्ट स्कूलों में भर्ती कराने के लिए दर प्रकर के प्रभाव और दबाव को काम में लेते हैं। एक "करोना" या पाठरी स्कूल में बिलवे केवल १० स्थान हैं उसमें बनवरी से शुरू होनेवाले छन के लिए बड़े-बड़े लोगों के बच्चों की देद ही भर्तियाँ आ जुझे हैं। एक अन्य अंग्रेजी माध्यम के स्कूल में हर स्थान के पीछे १० अर्धियाँ आयी हैं। अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम से पढ़ानेवालों में दिल्ली जनसचय के अल्पसं भी इददयाल देवगुण और जनसचय के तीन लोकसभा-सदस्य भी हैं, जब कि जनसचय हिन्दी के पक्षपात और अंग्रेजी के विरोध में हमीदा आगे रहता है। इसी प्रकार कनिष्ठी के कई मन्त्री और लोकसभा के सदस्य भी, जिनमें डा० रामशुभम सिंह, भीमनी तारेश्वरी सिन्हा, भी विजाचरण शुक्ल, भी बगभीनराम, भी के० भी० पत, भी भगत सा आबाद, भी नरसिंहाय, भी के० एल० भीयावत, भी नाथ पार्द और भी के० एल० शाह आदि हैं, आने-रने-ने को अंग्रेजी-माध्यम के स्कूलों में पढ़ा रहे हैं।"

दिलों के अंग्रेजी टैकिंग 'ग्राम ऑफ रूफिन्दा' के ता० १ दिखकर के एक में रटन-विचारवाले के बारे में एक कथादक्षीय नोट है। मित भिन्न मुझों में वहाँ की संस्था के अनुपात में दौत के वाकर कितने हैं, इसके आँकड़े इस तरह से पेश किये गये हैं, जिनसे पढ़नेवाले पर देता अजर होता है कि हिन्दुस्तान और अंग्रेजी का एक इस मामले में कितने पिछड़े हुए हैं। "अमेरिका में हर १,६२० बच्चियों के पीछे एक दौत का डाक्टर है, जब कि एशिया में यह अनुपात १ : १००० और अफ्रीका में १ : ८१०० है; इस मामले में हिन्दुस्तान की स्थिति कुछ एशिया की अपेक्षा भी बदतर है। यहाँ ७५ एशिया की जिनकेवाले इस 'विधि' भाई की समझ में यह नहीं आता कि कौसी देप में डाक्टरों को या योगियों को चलना कम से-पिछड़ेपन की नहीं, बल्कि अन्धकार की निगाह ही सखती है। हर बात के बारे में यह नम बदा सा सकता कि उठमें 'पीछे' होना दुःख या बिता की ही बात है। बकि जुरी शायी में पीछे राना लतोर की और मोरव की बात भी ही सखती है।

मूरान-पक्ष। पुस्तकार, २९ दिक्कत, '६०

साधारण आदमी इन सब बातों से किर्तव्यपद्धत न हो तो क्या हो!

अमेरिका में अगर दर दर डाक्टर हमार न्दियों के पीछे एक दौत का डाक्टर है तो उसका हाल अमेरिका की प्रगतिशीलता नहीं, बल्कि यह है कि दौत के योग यहाँ बहुत देडे हुए हैं। ता० २० नवम्बर के अमेरिका साप्ताहिक 'न्यूयौर्क' में, (पृष्ठ १०) इस विषय को कुछ भीज्ञानेवाली जानकारी दी-

→ है। 'न्यूबर्क' ने लिखा है— "दौत के रोग अमेरिका के रोगों में पहले नम्बर पर है, तीन चौथाई अमेरिकन एक या दूसरे प्रकार के मधुहों के रोग से पीड़ित हैं। हर ओषध वालिग अमेरिकन के दौतों म से २० ऐसे हैं जो गन्धुके हैं, या तो कृत्रिम तौर पर लगाये हुए हैं या बिल्कुल लपता हैं।

यह सामान्य ज्ञान और अनुभव की बात है कि शहरी जीवन इतना अस्वाभाविक, कृत्रिम और प्रकृति से दूर होता है कि वहाँ रोगों की भरमार होती है। अब तो यह है कि हिन्दुस्तान में अचिगत सफाई को पर पराओं के कारण और शहरी सभ्यता अभी ज्यादा न फैली होने के कारण यहाँ दौत के रोग, तथा अन्य रोग भी, अमेरिका जैसे सभ्य कहे जानेवाले देशों की अपेक्षा कम हैं। हिन्दुस्तान में आज भी सभरे गाँवगाँव में लोग नीम या बज्ज या बौध आदि के दानुन करते दिखाई देंगे। यूरोप और अमेरिका में इस तरह दौत साफ करने की परंपरा ही नहीं रही है। कुछ वर्गों के लोग अब नग्न के धरिये करने लगे हैं, पर जिससे मधुहें कटते हैं, रोगों उल्टी वृद्धि होती है और दौत जल्दी टोले पड़ते हैं। अफ्रीका के निवासियों का जीवन भी अभी तक प्रकृति के इतना नजदीक है कि उनकी दवावली दुनिया की अन्य जातियों की अपेक्षा ज्यादा समान और मजबूत मानी जाती है। और डाक्टरों की सज्जा ज्यादा होने का मतलब यह कदापि नहीं है कि उसके कारण सामान्य जनता को अच्छी और भावुकक सेवा मिलती है। बल्कि आज के अर्थ और भोगप्रधान युग में जिस तरह शिक्षित (!) और हाथियार लोगों के हाथ में हर चीज भोली जनता के शोषण का साधन बन गयी है, उसी तरह डाक्टरों का पेशा भी।

जिस अमेरिका का 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के सम्पादकीय टिप्पणी के लेखक जैसे लोग उदाहरण पेश करते हैं, वहाँ सामान्य लोगों का जिस प्रकार शोषण होता है इसकी भी थोड़ी जानकारी वे साथ साथ लोगों को देने रहें तो अच्छा हो। 'न्यूबर्क' के अनुसार अमेरिका में बच्चों के दौत सीधे करने की नीस करीब दस हजार रुपये लग जाती है, अब

आन्दोलन के समाचार

ग्रामदान प्रखण्डदान अभियान

बागरा में अनुमण्डल दान आगरा जिले के खैरागढ़ तहसील में सैया प्रखण्ड का प्रखण्डदान गत ११ दिसम्बर को हो चुका था। इसके बाद इसी तहसील के दो अन्य प्रखण्ड—जगनेर और खैरागढ़ में २ दिसम्बर से १० दिसम्बर तक डा० पटनायक के नेतृत्व में ग्रामदान अभियान चला। पशुशुक्ति का विवरण यहाँ दिया जा रहा है।

विवरण	जगनेर	खैरागढ़	सैया
कुल ग्राम .	८९	७०	१०९
ग्रामदान में शामिल	८३	५८	९७
प्रतिशत	९४	८२	८९
कुल जनसंख्या	४१७२५	५३१७५	
ग्रामदान में शामिल .	३९५७५	४२१८५	***
प्रतिशत	८१	७९	३३
कुल भूमि (एकड़ में)	४७०७२	४५८७५	•
ग्रामदान में शामिल .	३२९९८	३०४३५	
प्रतिशत .	७०	६६	***
पूरी तहसील में कुल ग्राम	२६८		
ग्रामदान में शामिल	२३८		
प्रतिशत	८८	७५	

कि रोगी का खर्चा ठीक करने और दौतों को दुरुस्त करने के लिये ५ हजार डॉलर यानी ३७ हजार रुपये तक। दौत के डाक्टर लोगों को रोगों से डराकर जैसे दगते हैं उसका एक उदाहरण भी 'न्यूबर्क' ने दिया है। न्यूबर्क के एक एहलस को एक डाक्टर ने बताया कि उसकी दोनो लड़कियों को दन्त चिकित्सा की आवश्यकता है और उसका खर्च प्रति बच्ची दौई हजार डॉलर यानी करीब १८ हजार रुपये होगा। वह एहलस इसकी परेशानी में पड़ गया, एक ओर लड़कियों की चिकित्सा करना

इस तरह खैरागढ़ तहसील के क्षेत्रों प्रखण्डों में ८८ प्रतिशत से अधिक गाँव ग्रामदान में सम्मिलित हो चुके हैं। ओ क्विल भार्द की खचानुसार अब तक उत्तर प्रदेश म कुल १३ प्रखण्ड दान और १ अनुमण्डलदान हो चुके हैं। बलिया का नवानगर प्रखण्ड भी प्रखण्डदान के करीब पहुँच गया है।

—चन्द्रदत्त पांडे, बागरा

जमशेदपुर : १७ दिसम्बर । भागल विहार के भूतपूर्व मुख्यमंत्री तथा राज्य पचा यत परिषद् के वर्तमान अध्यक्ष प० विनोदा नंद झा की अध्यक्षता में शिष्टभूमि बिल्डे के राबनीतिक, सामाजिक, सस्थाओं के प्रतिनिधियों की बैठक बिष्ठा ग्रामिन्-सेना समिति के कार्यालय में हुई। बैठक में सर्वसम्मति से तय किया गया कि २ अक्टूबर '६० तक शिष्टभूमि का जिलादान हो जाना चाहिए। इस संकल्प को हाथ में रख कर अगले की योजना बनायी जा रही है ताकि २ अक्टूबर ६८ तक विनोदाजी के विचारानुसार बिहार दान के संकल्प के निष्ठ हम पहुँच सकें।

—छलनगाल (तह, जमशेदपुर)

मिरजापुर, १८ दिसम्बर । मिरजापुर बिल्डे की दुदडी तहसील के भोरोपुर प्रखण्ड में वनवासी आश्रम के सदस्यजन में गत १ से १५ दिसम्बर तक ९ टालियाँ ग्रामदान-पद यात्रा पर निकली। इनका गिरि १६ १० दिसम्बर को गाबिनदपुर में हुआ। तीन टोलियों को चार ग्रामदान प्राप्त हुए—करीबी (नरबीहा) अचौरा, लोडवा और बीरधरा (खुबरा)। अब तीसरी बार १२ टालियाँ पदयात्रा पर निकली हैं। इनका अगला

का कर्तव्य और दृष्टी आर इतना भारी लक्षं । सोमाय से उछने दूसरे एक बास्तर स सखा है ता माइम दुभा कि एक कदम को तो किसी प्रकार की साह चिकित्सा की जरूरत ही नहीं है और दृष्टी के लिये भी मामूली लक्षं होगा।

बाहिर है कि सज्जा पर भी धमक तुधानी पदवी है!

पटना —सिद्धराज इन्द्रा १८ १२ ६०

भूदान-यज्ञ : पुस्तकार, २९ दिसम्बर, '६०

विश्वि २-२ बनहरी) को बनवाओ केरा आभम गोविन्दपुर में रोना ।

—द्वन्द्वकारीन मित्र, मित्राग्रपुर
 मन्सखर ३-० दिवसम्बर । लोणपुर
 ब्रिज सरोवर मन्दल के अरुध मी विद्वत्-
 राव मद्रके श्री मेरासे के अन्कभेद तरलीक
 में बरामदान गीव से ब्रामदान-अभिप्राय को
 हतपत्र दुःख हुये है । —लक्ष्मा मन्सके
 सोरों : १४ दिवसम्बर । पाना बिदे के
 पारपुर तरलीक में बिप्रादान को दहि से ३ से
 १३ दिवसम्बर तक पदवाचार्ये पन्नी । वक्-
 लपत्र ३२ ब्रामदान प्राप्त हुये । अन्क तन
 पाना बिदे में ७११ गीव ब्रामदान में प्राप्त
 हुये है । —मुष्कलिय पन्ने, सोरों

भारत में ब्रामदान-प्रखण्डदान

(३ दिवसम्बर '६७ तक)

मन्स	ब्रामदान	प्रखण्डदान
विश्वि	१४,१०२	१०३
उत्तरक	१७,७००	३२
लाज	५,२००	१०
श्रीवन्मन्स	३,३१६	२५
अग्रक पञ्चम	३,५४३	७
भारपण्ड	२,८९६	११
मन्सपदेष	३,५५०	३५
उत्तर मद्रप	१,५६७	११
अग्रम	१,५६३	१
राजसूय	१,२२२	३
गुबरात	७५८	३
१० ब्राम	६२७	—
केस	५०९	—
बन्सोर	२२४	—
दिल्ले	७४	—
दियान्त वरुष	१७	—
कुः	५६,४१०	२०८

रंजण्डन :

विश्विपण्डतः २५ नवम्बर । पानक
 तरलीक के ब्रामदानो गीवो के एक की लया
 रूप के इर्योपिण पानक में हुये, बिदिते ब्राम-
 दानो गीवो के अरुध अरिचित हुये । कथा
 में निम्नलिखित निगम बिदे सोये ।

● हर मन्स में औप गयद किन बाय ।
 ● गीवो में लेली-बिदित के निद धरणी
 की आवलकना है । रिछले १ नयो में जल-
 तार अक्षर पन्ने से बिदानी के पाव मै-
 भोर्षणी नरी है । वैड-भोर्षणो के लिप व
 कुम्भो के लिप राज्य हरकार व प्यार सरकार
 से मन्स के लिप प्राचनन ओ बाय ।
 ● ब्रामदानो गीवो के विकास के निद
 तथा प्रामकनाओ के काप्यो के धरलरिक्त
 धरफेव के लिप हर अमरवला को ब्रामदान-
 समार्य आपोबित को बायणी ।
 अन्क की अथपत्ता धेरीप धमरक
 भी इगुलन प्रसद धर्मो में की । धनोमन
 धेरीप के बायकरक ओ बल्लण मखर समार्य
 कर रहे है । —लोकनारनी मयाकर

शक्ति-केन्द्र से :

द्विसम्बर (सुवेर) : २३ नवम्बर ।
 सौवा बदिपार गीव में दस बीपे धनीन की
 लेकर रो रह्ये—भी सोया कुँवर बौरद, जना
 गीव पवबता, मुगेर एव भी कुन्वेरवर विद
 बगौरद, मरेश्वरु शेख राजबान, गोमन,
 सुगेर के बीव लनावर्षी सिचित ने उन्न रूप
 पारक कर लिया । दोनो दलो के तरक में
 पातक अन्क-धरन से रीठ मीस एक हुये
 पक्ष पर प्रदर के लिप उन्नव से । उन्नी में से
 एक मुनेयुव अन्नन ने शक्ति केन्द्र में अग्रर
 एक नर-धरुन की वृलता री । एचन्वा पाने
 दो अखित भारतीय शक्ति-केन्द्र के अरर
 भी सुचनेवर प्रसद विद अपने धरिनिधि
 धरुपिणिनी—भी इमनवारी विर, मोय
 दाव, नारयण प्रसद विद—के साथ पारक-
 सत कर रह्ये । बर्रा जने पर रिणिते की
 अन्कविक बानभारी निखे । उन्नी तरक से
 लामय दार्य इबार शक्ति इच्छुहे से । लेन्क
 शक्ति-धरिण गेवो ने जगनी निरंलस हा
 परिचय दिया ओर सधम-मैदान में लड हटे
 तथा लोनी को छुदार्द न करने के लिप बाप्य
 बिदा । दोनो पक्षी के लोनी को उन्नी मैदान
 में जेयुर्षक वैरुष ओर कपदे का निरपठरा
 सामाजिक पञ्चम्य द्वाश रो, एरके लेख
 दोनो पक्षी को राखे किन । हट तरद उन्न
 रिन सेकरी लोनी को इराजत होने से बचा
 किन पना । —सुचनेवर ३० रिद, सरोवक

पानकल घाटो से :
 बाइ (आमरा), उदिसम्बर । गत ५ बौर
 ६ दिवसम्बर को नमक-पानी घेव, मित्र
 अरुध ओर इराध में विनोचारी द्वाश
 शक्ति चमकन पारो पालि-सिचिति
 के उन्नवपान में उन्न प्रदेश के धामस मंत्री
 भी उरित नारायण धरार्द का इराक वरिष्म
 रहा है । रामक-मन्वी ने विनोचारी के
 समक्ष जहमसधरम कानेपाने बायो भारदो
 से, ओ कि दस सम्व तुषरदो में गुज लेकर
 शक्तिमन आरिक्त ओम स्वकीत कर रहे है,
 पुगगुमान विद तथा शेखा घाटो में पेट को ।
 उन्के बडले हुये विचारो ओर ओवन से
 रामक-मन्वी को ओ बहुत प्रसन्नता हुई । चमक
 पन्नी शक्ति सगित द्वाश चन्पने लख रहे सारी-
 धामीपौव के शक्ति को मी मन्वी में देला ।
 चमक पन्नी शक्ति सगित के शक्ति एके
 बिकस लम्पनी कपिष्मो एव जगत में कर्द-
 नर्यामी के अति धन्ना और विधास को द्वाशक
 मन्वी को वे अन्क-मी कड अन्कियत किन ।
 साहित्य सेवक :

द्वीपर : गय में सर्वोदय साहित्य
 मन्सवर द्वाश पन्ने ६ नयो में आन्क तक कुल
 ३,६६,२०५ रु० की साहित्य-बिक्री हुई ।
 गय में शारिष भन्सवार के तीन केन्द्र-विश्वरुध
 आभम में कुम्भ १५ से, देमिलन रोड पर
 मद्र १६ है, मद्रास सापो रोड पर नमकर
 १५४ से पान रहे है । द्वीपर लेले मद्रेयन पर
 मी अग्ने १९६४ के साहित्य बिक्री का तेरके
 द्वाश कुम्भ है । भन्सवार द्वाश आगी तक
 १४० रिचार गीठिष्मो भी हुये । रिछले ६
 नयो में अन्नी तक दुल्लका रुई सेवा धन-
 प्रकणन का १,१,८२० रु० तक, लम्ब साहित्य
 पण्डन का १,५,७५६ रु० का और नववीरन
 दुल्ल का २६,४०० रु० पर साहित्य पना
 गया । मद्र १६ के अन्कदर १६० तक
 मद्रदारी पर कुल १५,००० रु० की ओर तेरके
 द्वाश पर ६,८४६ रुके को साहित्य-बिक्री
 हुई । वर्रा की बिक्री में ७० प्रतिशत पारो-
 साहित्य और सरोर-साहित्य द्वाश २६ प्रति-
 शत आयाजिन्स साहित्य रहा । रिछले ६
 नयो की साहित्य बिक्री में ६३ सेवा धन-
 प्रकणन का साहित्य ४३ प्रतिशत रहा ।

—सुचनेवरक

* मूशक-पण्डतः द्वाशपण्ड, २९ दिवसम्बर, '६७

आखिरी डाक से

ग्रामदान-अभियान :

सारन : १५ दिसम्बर । श्री जयप्रकाश नारायणजी को दाउदपुर के लोगों ने १२२२ रु० ४१ पैसे की पैकी भेंट की । रामने इकमा में श्री रामाभव सिंह ने १३१ रु० ११ पैसे भेंट की । खुनायपुर की एक बड़ी आमसभा में, जिसकी अध्यक्षता श्री रामदेव सिंहजी (स्थानीय विधायक) ने की, श्री जय-प्रकाशजी ने देश की समस्याओं के अनुकूल्य में ग्रामदान का विवेचन किया । स्वागताध्यक्ष श्री नारायण सिंहजी ने ५००१ रु० की पैकी अर्पित की । ८ बजे शाम को बिहार खादी-ग्रामोद्योग सच-धीनान के पागम में खादी एवं सर्वोदय के कार्यकर्ताओं के बीच उनका भाषण हुआ । उसी अवसर पर चरौली प्रखण्ड का प्रखण्डवासियों की ओर से दान भी शुक्रदेव सिंह ने अर्पित किया । बिहार खादी-ग्रामोद्योग सच की तरफ से भी रामवरण सिंहजी ने १००१ रु० की पैकी अर्पित की । साथ ही सीवान चहर की ओर से ७५१ रु० की पैकी समर्पित की गयी । इस प्रकार जिले में कुल ८,२०६ रु० ४१ पैसे की पैकी भी जय प्रकाशजी को भेंट की गयी ।

प्रखण्डदान चरौली का विवरण

खेतवाल, एकड़ :	६०१२५
भोत की बगीची :	३६६२५१०
ग्रामदान में शामिल बगीची :	२०५५७०९
शामिल बगीची का प्रतिदात :	५६१२२
कुल बनसख्या :	१२०२३६६
ग्रामदान में शामिल बनसख्या :	१२८८१
शामिल बनसख्या का प्रतिघत :	७८
रेवेन्यू गाँवों की सख्या :	११०
वैचरगामी गाँव :	१७
चिरामी गाँव :	१३
ग्रामदान में शामिल रेवेन्यू गाँव :	८५
कुल पचासवों की सख्या :	२४
शामिल पचासवों की सख्या :	२०
आधिक्य ग्रामदान में शामिल पंचायतों की सख्या :	४

—विश्वनाथ शर्मा, मंत्री

सारण जिला सर्वोदय मण्डल

कानाल : २१ दिसम्बर '६७ । लोक सेवा आयोग, समालोका के तत्वावधान में गत १४ दिसम्बर '६७ से २० दिसम्बर '६७ तक एक अभियान डा० दयानिधि पटनायक के नेतृत्व में चलाया गया, जिसमें उत्तर प्रदेश, राज-स्थान, पंजाब, हरियाणा के कार्यकर्ताओं के अलावा १५ स्थानीय कार्यकर्ता, इस प्रकार कुल ७५ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया । ३० गाँवों में ग्रामदान के विचार को समझ वृद्धकर ग्रामदान ग्राम स्वराज्य के घोषणा-पत्रों पर हस्ताक्षर किये ।

कदम चूम लेती है खुद आके मजिद मुसाफिर अगर आप हिम्मत न हारे ।
—मन्नाडन सिंह सोमर

भिवरणी : २२ दिसम्बर । चटपूर बिजे के आरक्षकों तथा चानोरा प्रखण्डों में गत १७ नवम्बर से १७ दिसम्बर तक ग्रामदान-पदयात्रा हुई । बारिदा के कारण पदयात्रियों को तत्कालीक हुई । आदिवासी क्षेत्र तो दे ही । लेकिन रास्ते नहीं होने के कारण अभावगमन में बहुत ही तत्कालीक होता है । पदयात्रा में कुल २३ गाँवों में ग्रामदान का उद्घाटन किया । सर्वश्री वावाजी वैष्णव, विहलराव टंडुलवार, १० ना० गोविन्दवार, कु० ना० गुसा, सगर सेलर, मन्नाडनराव अम्बेदार, पाटील, भांडारवार, बाबूराव चन्दावार आदि कार्य-कर्ताओं ने पदयात्रा की । पदयात्रा का सवोजन महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल की ओर से थी बाबूराव चन्दावार ने किया ।

पदयात्रा में युवक समा के उभापति, जिला परिषद तथा प्रखण्ड के कर्मचारियों का अच्छा सहयोग मिला । —बाबूराव चन्दावार

हमारी पत्र-पत्रिकाएँ

भूदान-यज्ञ : हिन्दी (साप्ताहिक)	१० रु०
गाँव की बात : हिन्दी (प्रांशिक)	४ रु०
भूदान खरौलीक : उर्दू (मासिक)	४ रु०
सर्वोदय : अंग्रेजी (मासिक)	१ रु०
नयी तालीम : हिन्दी (मासिक)	१ रु०
न्यूज लेटर : अंग्रेजी (मासिक)	१० रु०

सर्व सेवा सच-प्रकाशन राजघाट, वाराणसी-१

DAY-TO-DAY WITH GANDHI

'डू-डू-डे विथ गांधी' भाग १

लेखक—महादेवभाई देसाई

पुस्तक संख्या : लगभग ४००

साधारण संस्करण	६० १५-००
लाइब्रेरी संस्करण	६० २०-००

'महादेव भाई की डायरी', जिसे किन्ही में अब तक ५ खण्ड हमारे यहाँ से प्रकाशित हो चुके हैं, उसके पहले खण्ड का अगले संस्करण 'डू-डू-डे विथ गांधी' जनवरी १९६८ तक प्रकाशित हो जायगा । इस डायरी के अग्रिम भाइयों का शुक्र निम्न प्रकार है :

शुक्र-२४पे	संस्करण	खण्ड
१२०-००	साधारण	१
१६०-००	लाइब्रेरी	१
२२५-००	साधारण	२
३००-००	लाइब्रेरी	२

पुस्तक में साधारण संस्करण के पहले खण्ड की कीमत १५-०० और लाइब्रेरी संस्करण की कीमत २०-०० प्रति है । एक साथ १० या २० खण्डों के माहूक बनने पर उपर्युक्त पुस्तक की डायरी और साधकों के मण्डल को ज्यों ज्यों प्रकाशित होते चलेंगे, माहूक को घर बैठे वे रजिस्ट्री द्वारा प्राप्त होते चलेंगे ।

कृपया रकम अग्रिम भेजकर माहूक बन जायें ।

—श्रीकृष्णचन्द्र अह

सर्व सेवा सच-प्रकाशन राजघाट, वाराणसी-१

वाप्ययक खरना :

३० जनवरी '६८ को 'भूदान-यज्ञ' का विशेषक प्रकाशित होने का राह है । इसका नाममात्र १५ जनवरी '६८ का अंक नहीं प्रकाशित होगा । ३० जनवरी '६८ के अन्त-सं-विशेषक में ही १५ और २९ जनवरी तथा २ फरवरी '६८ के अंक शामिल रहते । इस प्रकार विशेषक के प्रकाशित होने के बाद यह पदका अंक १ फरवरी '६८ को प्रकाशित होगा । —मं०

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, २५ दिसम्बर, '६७

सामाजिक चर्चा

क्या इतिहास पीछे मुड़ना चाहता है ?

हमारा उद्देश्य धीमति था। मग १५ दिसम्बर '६७ को हम सर्वोच्च जयप्रकाशजी, चिनाबाजी और राममूर्तिजा (सभापदक 'भूदान-यज्ञ') के राक्षसाभा (सहायन) विधेयक आन्दोलन सभान्त्री वक्तव्यों के संघ सेवा सच द्वारा प्रचारित १० हजार पच्चे लेकर वाराणसी के आतंकमय वातावरण में निकले थे। हम चाहते थे कि उक्त वक्तव्यों को गार निरासियों के समक्ष मूल रूप में पेश करना।

वाराणसी इस आन्दोलन का उद्गमस्थल था, और उसका सबसे अधिक उमर रूप भी यहीं प्रकट हुआ था। शायद प्रदेश के और लाखों इस नगर के दा प्रमुख राक्षसीविक दलों-जनस, सवधाने इस प्रसंग का लुलकर अपनी शक्ति भर लेते हैं। अक्सर बनाया था। इतनीए भरनी उद्यम आवाज में उल्लेख का उद्घाष करनेवाले नेताओं ने एसी विना पैदा कर दी थी, जिसमें शोकाविकल का अनुभव उन्हीं तो भरपूर किया, लेकिन द्विती नागरिक की क्या मजाल ना अपनी उरान से कोई भिन्न आवाज निकाल सकें। 'शोक-चेतना', और 'शोकचिति' से हीन शिरोचवादी लोकतंत्र किंश तरद 'तत्रलोक' में बदल जाता है, और ऐसी अराजक परिस्थितियों में 'ताना

शाही' किंश तरद हावी हो जाती है, हमने इसका प्रत्यक्ष दर्शन वाराणसी म पिछले दिनों किया था। लेकिन अपनी बात कहने की मूलभूत आभादी और लोकतंत्र के बुनियादी विद्वान्त को अपना सश्ल मानकर, तथा वाराणसी के 'शोक' के प्रति आस्थावान होकर, हम इस काम के लिए निकले थे।

करीब ५ प्चियों ने लगभग साढ़े आठ घंटे पैदल घूमकर नगर के हर मुख्य क्षेत्र में उक्त १० हजार पच्चे बाँटे। छिपे दो चार जगहों पर गालियों सुनने को मिलीं, लेकिन एसे नागरिकों को बहुत बड़ी छव्या थी, कि हीने इस प्रसंग का हार्दिक स्वागत किया।

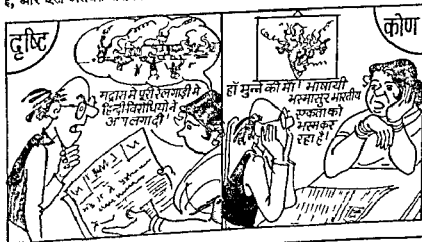
लेकिन बच सवधा नेता श्री राजनारायणजी द्वारा १८ दिसम्बर '६७ को दिहो में पत्रकारों के समक्ष और उसके बाद राज्यसभा में प्रकट किये गये उद्गारों को अपराधों में पटा— "वाराणसी स्थित गांधी स्वाध्याय सस्थान की ओर से अच्छे कागज पर २ लाख इस्तदार अमेजी के समर्थन में छपाकर वाराणसी की गलियों में बँटवाया गया है। सस्थान को इसके लिए विदेशों से मदद मिली है।"— तो दग रह जाना पड़ा। गांधी स्वाध्याय सस्थान (गांधी विद्या स्थान) की तरफ से

कोरं पत्रों नहीं छपा था, इहलिय विदेशी घन गौर २ लाख इस्तदार की बात भी राक्षनारायणजी तथा उनके साथियों श्री कल्पनाएँ थीं। शायद एक ओर अलतारी सनसाइट पैदा करने के लिए।

यह कितने दुःख की बात है कि महान् विमुक्तियोंवाले इस महान् देश के महान् राजनीतिक नेता अपने आपको खेरीयता, भातीयता भादि की अत्यन्त शुद्ध सीमाओं में आबद्ध करते बा रहे हैं, राष्ट्रीयता को जँचाई से भी जँचा उठने की तमना रखनेवाले देश म भाव बोने ही बोने नबर भा रहे हैं।

सदम के राक्षसाभा (सहायन) विधेयक पारित हो जाने के बाद कामेल-नेता श्री कामराज ने इसके विरोध में अपना भा बचन-य दिया है, शायद उसके प्रेरित होकर तथा उत्तर के उपद्रवों की प्रतिक्रिया-स्वरूप अब दक्षिण में हिन्दी-विरोधी नारे बग रहे हैं, श्वर की सारी घटनाएँ उबर नया बम ले रही हैं। २२ दिसम्बर '६७ को मद्रास में रेलगाड़ियों बल दी गयीं। अब किले क्या कई !

अज तो हम देश की बनता से, चाहे वर उत्तर की हो, या दक्षिण की, एक ही निषेधन करना चाहते हैं कि आब नेताओं द्वारा निर्देशित राह पर चलकर भारत मों के शिख के डुकड़े डुकड़े होने की को समझनाई दिहारा दे रही हैं, उई समत करने का एक ही उपाय है 'नेतृत्वमुक्ति'। इतिहास साक्षी है कि भाति, घर्म, क्षेत्र भादि के नारे लगाकर राजनेताओं ने हमेशा अपनी कलाकथा के हथोड़े से भारत के हृदय पर गहरे प्रहार किये हैं, और उते डुकड़ों में बिखेरा है, बिचके परिणामस्वरूप शीघ्र भारत की सहराण आत्मा गुलाभी की बलीरों में खपे-बपों के लिए बकड़ी गयी है। समय भा गया है, वर देश का 'सर्व' सगठित होकर 'सर्व' की बात सोचे और 'सर्व' के हित में लग जाय। वभी राक्षनीति की शुद्रता और नेताओं की लज्जा से समाज मुक्त होगा। —राती



भूदान-पत्र

भूदान-पत्र मूलक-प्रामोद्योग-प्रधान-आहिसक-व्याजि-व्यास-वृद्ध-साहित्य-रसा-नाटिक



सर्वे सेवा संघ का मुख्य पत्र
 सम्पादक : रामभूति
 मुद्रणार्थ वर्ष : १४
 ५ जनवरी, '६८ अंक : १४

स्वराज्य की राजनीति

जब हम लोग अंग्रेजों का साम्राज्यवाद तो समझें लक रहे हैं, उस समय हमने अंग्रेजों एक बुद्ध-भूत-बना ही थी। उस लड़ाई में नगर में लड़नेवालों को कुछ कृत्तव्य ही कहिए भी। बकील, डाक्टर, बल्लेज के प्राध्यापक और छात्रों ने निकलकर नगरों में ऐसा मोर्चा बना लिया था, जो अंग्रेज-का उखाड़ा था। समाज के मजबूत पर उठतीं ही लड़ाई शुरू कर देने में उन लोगों को शोभा या नशी के बराबर कम लगता था। इसी लड़ाई में अंग्रेजों का साम्राज्यवादी की उपायों पर हमला बोलने या अस्वयं के होनेवाले लोगों की किया करने में उन्हें बड़े बड़े लड़ते थे। एकीकरण उस अस्वयं की लड़ाई में ऐसे लोग बने। अस्वयं में अंग्रेजी जाने के और उन्हें सामूहिक अनुशासन को तालीम देने के लिए चरखा चलाने का प्रतिपादन दिया जाता था। इन सब हाथा को जिस हद तक कामवादी मिली ही कहिए। वे भारतीय गणतंत्र के उद्घाटन में प्रभावित कर दिखता है।

इस अंक में
 नये वर्ष की नयी शेर
 —सम्पादकीय १६१
 म्यूटर सर्वश्रेष्ठ के लिए
 —उत्तम शोध १६४
 महाभूतान अभियान आरम्भ
 —पाठो १६८
 गाँव की बात : परिशिष्ट
 अन्य उद्देश्य :
 समाचार-संग्रह
 आन्दोलन के समाचार
 आध्यात्मिक आन्दोलन
 समाचार के अन्त

हमने उस अस्वयं की वार कर लिया है और अब एक नयी परिस्थिति हमारे सामने है। अब हमारी समस्या एक विशेषी है। हमने बड़े बड़े लड़ने को लड़ी लड़ी। अब छोटे छोटे शेरको माल से गुनाही में लड़ी हुई सामूहिक शक्ति में अस्वयं-माल को एक साम्य-सम्पादनाके राह में चलना है, जो अस्वयं के देवा की विराटरी में अनुयायन उनके और इतरास्वयं की लड़ाई करते हुए सम्पत्ता को और भागे बचाने।

ऐसे वान सब पूरा करने के लिए जिन लोगों की अस्वयं है, वे अपने वान के विद्युत से कुछ लड़ते ही बग के लोक हूंगे। आज सब मास्कि का घाट देने का हक हाविय है। हरेक मास्की की शक्ति में मिलने होती है और ऐसे लोग को अस्वयं लताएँ पानी में है। एकीकरण आज हमारे गम्भीरता का अन्वयन लीने में अस्वयं-माल को गवाह है। आज हमारे समाज अंग्रेजों साम्राज्यवादी न होकर शोभा में लड़नेवालों की अस्वयं करनेवाले अस्वयं है। एकीकरण आज के राजनीतिज्ञ अगर अस्वयं-माल को गवाह है तो उन्हें देना ही बिनती का धारा अस्वयं अनुशासन होगा चाहिए। उनमें ऐसी कमिश्नर हामी चाहिए कि वे गाँव की लड़ाई को एकीकरण रूप कर सकें, जो गाँववालों को अस्वयं दे सकें और उनके अस्वयं सामूहिकों को सामूहिक और अस्वयं लड़ाई हो। इन उद्देश्य के लिए गाँववालों को लोकर और शीन उनके अस्वयं हाविय होगा ?

मासिक मुद्रक : १० ००
 एक अंक : २० पैसे
 बिक्री में : साधारण आंक-मुद्रक—
 १० ०० या १ शेर या २५५ आराम
 (इहाँ शहर-मुद्रक : देवों के अनुसार)
 सर्वे सेवा-संघ प्रकाशन
 रावपुर, बाराली-१
 फोन नं० ४२८२

यह बलाश्री की बात है कि एक एक को अस्वयं के एकीकरण और उद्देश्य के वार और राजनीतिक क्षेत्र के लक्षण में लड़ी अस्वयं। जिन लोगों ने अंग्रेजों साम्राज्यवाद को लड़ाई लड़ी, वे ही अस्वयं की लड़ी पर बैठें। इतरा वनीका यह है कि उनके अस्वयं-माल को अस्वयं-माल में अस्वयं लड़ी हो जाने है।

['बादो-बायोथोप विलस', गुलाई, '११, एक अंग्रेजी के] —१०० सी० गुलाय

देश :

२५-१२-६७ : विन्डहारजी रोसाण
गमवारसू में पयान का सिस्टो टूटा। सुभा-
राहू म धीमन। सुदिता गांधी उपनिषत् थी।
२७-१२-६७ : सुदिता गांधी आ-दोलन-
कारिणी ने गमेश्वरसू मन्दिर में पुष्पार हिन्दी
के वाचना का विद्यया जोर सहाय के क्लोड
पर सारवात पाठ दित।

२६-१२-६७ : प्रपान मन्त्री धीमती
सुदिता गांधी न थी राजगोपालाचारी का
उत्तर देना कि राजभाषा-संशोधन विधेयक
स्वीकृत कर। ने गौरहिन्दी राज्या में उत्तेजना
का बहावा मिलेगा।

२७-१२-६७ : भारतीय जासूस की
कार्यकारिणी सुमिति ने गांधी क्षीरो को समाप्त
करने का मुन्धन दिया।

२८-१२-६७ : उप प्रधानमन्त्री मोरारजी
देसाई ने बताया कि परिधान बपाल में राष्ट्रपति-
प्रागुन लागू होने की बोरे सम्भावना नहीं है।

२९-१२-६७ : अखिल भारतीय जन-
संघ के धीरासहायनगर के अध्यक्षेशन में प्रजाब
प १० बंगाल में राष्ट्रपति-प्रागुन की मांग
की गयी।

३०-१२-६७ : प्रजा-समाजवादी पार्टी
के अध्यक्ष श्री एन. जी शारे ने बेतानवी
की कि यदि राजनीतिज्ञ ने हिंसा का बहावा
दिया तो देश की एतना डिग्न-मिन्न होगी।

३१-१२-६७ : दिल्ली में सरकार की
आर से घापणा की गयी कि १० जनवरी
से देश में आपात स्थिति समाप्त होगी।

विदेश :

२५-१२-६७ : अमेरिका के परमाणु-
पक्षि आयाग में घबर दी कि चीन ने अपना
रातवा परमाणु-परीक्षण किया।

२६-१२-६७ : भारत और रूस ने
३०० करोड़ रुपये के व्यापारिक समझौते पर
हस्ताक्षर किये।

२८-१२-६७ : अमेरिका के निर्दलीय
विशय समन्धन ने आज्ञादी के पार्षिक लेख-
जोला में बताया है कि सरकार व नेताओं के
कार्यो से जनवरी की जनता म अक्षतोप है।

‘भूदान-यज्ञ’ से अपेक्षा

मुझ यथा सजाय हा रहा है कि ‘भूदान-
यज्ञ’ आज पुराने रथिपस्त दावरे में बाहर
आर जाना व्यापक स्थान बनाता जा
रहा है। ‘भूदान-यज्ञ’ की सफलता उसकी
व्यापकता में ही है, यानी बहुत सवें भेरा
सथ का एतमान मुख्य पन है। सवें ठेरा नथ
वा मुख्य उद्देश्य सशौर्य समाज की स्थापना
है—सशौर्य ‘सर्व’ के भातर जनी चतना
म ही सभन है। ‘सर्व’ की कुछ समस्ययाएं
हैं, उसकी कुछ हर्मियां और मायकाएएं
हैं, कुछ अपेक्षाएं हैं—उन तक पहुँचना और
उसको अहिंसक धानिके लिए प्रेरित करना,
यह दानित ‘भूदान-यज्ञ’ का अरता है।

मेरा विश्वास है कि अहिंसक मार्गि
जुड़ गिनी जुनी हसपाओ तथा उनके काय-
कतिया ने ही सभव नहीं है, वह तो नगूण
समाज को बदलने और इसके स्थान पर
नयी समाज-व्यवस्था खाने का उपयम है।

‘भूदान-यज्ञ’ की जबरदस्त सफलता में
तब मान्गना, जब वह सर्व को समस्वाया का
एक रचनात्मक समाधान ढूँड सके। यह तभी
सभव है, जब ‘भूदान-यज्ञ’ ‘सर्व’ तक
पहुँच सके। इससे पाठक और लेखक, मुन्धन-
कर्ता ‘सर्व’ के बीच के रहनेवाले हों और
‘सर्व’ की समस्वायो, वेदनाओ से ब्यथिन
हो रह हों।

आज सपूर्ण समाज एक ऐसे चौराहे पर
विचरतन्मसूस्ता की अवस्था में खडा है, जिसे
उठी मार्गदर्शन की आवश्यकता है। आर
मार्गदर्शन न मिला ता वह पतन की ओर ओ
मुस्रित हो सक्ता है, और हिंसा की तरफ
मुस्रित होना ‘पतन’ की आंर तो मुस्रित
होगा है न ?

‘भूदान-यज्ञ’ की अपनी, अपने परिवार
की स्वस्थ आलोचनाओ की सुनने के लिए
भी तैयार रहना है, नयोंकि यह उसकी
व्यापकता और ‘सर्व’ के मुस्रपन्न की
गनीरता को बढ़ाता है।

—पारसनाथ त्रिपाठी, अध्यक्ष
जिला सर्वोप्य मडल, जोगपुर

धामदाजी गाँवा म शायी का क्या स्वरूप
हा, इस सम्बन्ध में बिहार ग्राम-निर्माण
समिति, पटना के द्वारा जनवरी ६८ के अत
में आयोजित होनेवाली चर्चा-माध्री तथा
समस्त छादीप्रेमियों के समक्ष कुछ विचार
प्रस्तुत कर रहा हूँ।

शायी का सम्बन्ध हमें केवल ग्राम
दानो गाँवा से ही नहीं, समस्त प्राचीन
जनता से हो। छादी को अज्ञत, पूर्ण राजगारी
ओर विधेयत. (पूरक) रोजगारी के रूप में
गाँवो म प्रविष्ट कराने की बात सोचनी
चाहिँए। छादी का उत्थान व्यापार के नहीं,
आवश्यकता के दृष्टिकोण से हा। प्रतिपालिता
से छादी को अलग रखने के बारे में साध
जाय। छादी आधुनिकपूर्ण होने से महँगी
हांगी। अत ग्रामदात्री गाँवों में छादी का
स्वरूप आधुनिकहीन, सादा, जनप्राही यानी
दूसर धाव्दो में स्वावलम्बी होना चाहिँए।

—हरिनाथरायण साहू, ‘माधव’
जिला सर्वोप्य मडल, भागलपुर-२

नवानगर प्रखण्डदान

सुश्री निर्मला वहन को समर्पित

वलिया मे पाँचवाँ प्रखण्डदान घोषित

विवरण निम्न प्रकार है —

प्रखण्ड के कुल देवेन्यू ग्राम :	११३
वेचिराभी गाँव	२२
चिरागी गाँव .	६१
धामदान म शामिल गाँव :	७६
शामिल गाँवों का प्रतिशत .	८०%
कुल जनसंख्या :	१६,०८०
धामदान में शामिल जनसंख्या	१७,५५०
जनसंख्या का प्रतिशत :	६६%
प्रखण्ड का कुल रकबा -	४०,८१७
धामदान में शामिल रकबा :	२५,३४०
शामिल रकबे का प्रतिशत :	६०%

बखिया में २-१-६८ तक
कुल प्रखण्डदान—५, कुल धामदान—४२७

कम्प्यूटर : सर्वोदय के लिए

● प्रबोध चोकसी

['भूदान यज्ञ' के ८ दिसम्बर '९७ के अंक में 'कम्प्यूटर—एक नयी यांत्रिकी का अप्रदूत' शीर्षक श्री धरमान का लेख प्रकाशित हुआ था। उस लेख की पाठकों पर अलग-अलग प्रतिक्रियाएँ हुईं। २६ दिसम्बर के अंक में श्री जगन्नाथ सेठिया का पत्र हम प्रकाशित कर चुके हैं। हमारे एक अन्य प्रबुद्ध पाठक की कम्प्यूटर के सम्बन्ध में विशिष्ट राय है, जिसे हम नीचे प्रकाशित कर रहे हैं। —मं०]

१—कम्प्यूटर वा स्वामित्व करनेवालों में तरह-तरह के लोप है। उनमें से किसीकी दृष्टि के प्रति उसमें कदाई न्याय नहीं हुआ।

२—कम्प्यूटर का उपयोग असेम्बली (assembly) छात्रवाली तकनीक के बाद स्वामित्विक और मानवीय है। असेम्बली छात्र पर एक ही ढंग का कार्य अनवरत यंत्र की गति से करते जाना अनानुषंगी है, जिसे और अधिक स्वचालित (आटोमेटाइड) किया जा सकता है, किया जा रहा है।

३—कम्प्यूटर के प्रबोध में पूँजीवादी मुनाफे की ही प्रेरणा है यह बहला गलत है, क्योंकि साम्यवादी देशों एवं समाजवादी देशों में भी इसे अननाने वा आयोजन किया है।

४—बैंकारी की समस्या मूलतः यंत्र की नहीं, तंत्र की समस्या है, यह न देख सकने के कारण प्रतिरक्षात्मक मानववाद वा सर्वोदय के पैदा होता है। यंत्र तब मनुष्य का शोषण ही करता है, जब मनुष्य को सर्वोदय नाम का दास विषयकार देना है, काम और दाम का समीकरण स्वीकारने) जबदस्तो मनवा लेता है। यह और सेना के आध्यात्मिक है—काम दान से देना समीकरण। इसे सारे समाजवादियों ने निन्दितः नवतावादियों ने ललकारा है। मार्क्स

२५-१ को उसकी आवश्यकतानुसार (डू डू इंच शक्ति आयोग) कहें। रक्षित ने सातवाँ परमाणु काम के लिए समान दाम का २६ १२-१५ जिते माथीजी ने सर्वोदय की ३०० करोड़ रुपये दिया। कम्प्यूटरकु स्वचालन हस्ताधार किये।

२८-१२-६७ (स्वयमरण) पूँजीवाद शिक्षा संगठन ने आज पर पहुँचा दे रहा है कि जोधा में बताया है कि एन अब रह ही नहीं सकता। नार्थ के अमरीकी जनता व भी वही दिकानुस नार्थ के अमरीकी जनता व भी वही प्रेरणावाला) उनी

चल सकता है जब विद्यतनाम जैसा कोई युद्ध लगातार चलता रहे और समस्त परिवर्द्धित उत्पादनका को स्वाहा करता रहे। तिसरर भी ज्या-ज्यो सायबरदेशन के फैलाव के साथ-साथ उत्पादनका बढेगी, युद्ध की विनाशकता की मात्रा भी बढता चले जाना पड़ेगा, जो पूँजीवादी देश की जनता के लिए भी स्वीकार नहीं होता। राष्ट्रपति जाम्बुन इस बार दान्तिकार के कारण चुनाव म डर महसूस कर रहे हैं। यथाकि युद्ध में विरक्ति अनिश्चित सरति वा निकाल ही नहीं होता, जबानो की बलि भी देनी पडनी है। यदि युद्ध समाप्त करना पडा, तो अमेरिका में पुटला पूँजीवादी तंत्र रुक जायगा। आज अमरिका पिछले देशों में निकामी करके उसका लाभ समाकर अपना जीवन-मान बनाये रख रहा है, यह कहना तथ्यो के विषय में अज्ञान माना जायगा। कोई भी देश विज्ञान से चाहे बितना उत्पादन बढाकर, बिना नियत-न्याय के, अपना जीवन-मान ऊपर उठाये जा सकता है, यदि वह आन्तरिक उत्पादन-वितरण-उपभोग की माला अनिच्छ रूप से चलनी रख पाये। इसके लिए प्रति व्यक्ति भूमि की मात्रा भी उतनी अन्तित रूप में निर्धारक नहीं है, कि बिनीकी कि अस्तर हम मान लेते हैं। निर्णायक दायजल एक ही बात है। यत्र-तत्रकीका से वर्द्धमान उत्पादनका के साथ बढना की क्रमपतिक उसी मात्रा में बढे और सुवितरित हो। नयी नोकरीयाँ, नयी सराएँ, नये सेवे, पुतनी यत्नकारियो व नये बडे हुए नये उद्योगकारा प्रास (सपाट्ट) दाम, आदि वा उद्योगकारा प्रास में वृद्धि करने की तरीको से जनता की बाय में वृद्धि करने की (कर्त्तव्यतन) मुक्ति वारी सरराग को बब मानू है। इसका अतिरेक होना है, अर्थात्

प्रास अल तथा वस्तुओं के अनुमान में बाय में वृद्धि अत्यधिक हो जाती है अथवा बब अतिरेक होता है, अर्थात् बाय वृद्धि वा विपण वितरण होता है (जैसा भारत में हीन योजनाओं के बीच हुआ है) तब युद्धप्रति, महंगी और अक्षल पैदा हो जाते हैं। बड सारे समाज में नयी बाय का बितना सम-वितरण होगा, बैंकारी जितनी ही नये रोजगार में सोल ही जायेगी, उतना यात्रिक बिबाध सरल होगा, मानवीय भी होगा। यह 'आदर्शवाद' नहीं है, बल्कि एकदम यथावतारी मानवीय अर्थात्साध है। सर्वोदय को बब अर्थोपेजी सलतनत के दिनामाला प्रतिरक्षात्मक अर्थ विचार छोडकर इस दिशा में, हिम्मत से सोचना होगा। सिरक बचाव की ही बात सोचनेवाला अवयव हारना है। इस प्रागतिक वेगानिक सर्वोदय के अर्थात्साध में काम-नाम के पूँजीवादी समीकरण वा अस्वीकार होगा। 'काम दो, समतायुक्त दाम दो, और काम न दे सको तब भी दाम दो।'—यह नया सूत्र होगा। पूँजीवाद यह कर ही नहीं सकता। जन लोकनातिक समाजवाद ने सर्वोदय वा सख्य होगा। हरेक नये यत्र का, नयी यात्रीय का, नयी व्यवस्था वा, नये विज्ञान वा विरोध करते रहना, यथाकि उसमें मनुष्य को डर है, यह निर्बल बुद्धियों के बन्धो की बिन्ता वे चित्ताने रहने जैसा अर्थोपे प्राप्त है।

५—सर्वोदय मनुष्य वा 'आर्थिक प्राप्ति' नहीं मानना, न मानव जीवन की उत्पादन-उपभोग में शामिल रखना चाहता है। सर्वोदय चाहना है कि मनुष्य आर्थिकता को, बाहुकता को पार करके मारुद्धि एवं आध्यात्मिक लक्ष्यों की ओर बडे, मानव प्राचन की मार्यकता अल-वरनादि या एको युवादि के लिए ही खटते रहने में नहीं है। इसी मनुष्य व्यवस्था होत ही मन, अर्थिन, विज्ञान और आनंद के भाषों (अस्मकों) में मनुष्य को बदना है। और जब तक बर्ष एव नाम के धोरों में समी मनुष्यों का सुवृद्ध प्रबोध न हो पाये, तब तक कथप दूधक साम्यवादी अर्थिन्या में कुमत्ता है। जब तक समाज में कुल सधर्म बुद्धिगत है, एकी एव अर्थात्नाता वा है, तब तक मानव-विषय के लिए आर्थिक जाव व अर्थिकता को



इस अंक में पढ़ें—

सड़क या सदन
प्रतिनिधि - दल का नहीं, जनता का

गाँव की बात

‘नूतन यत्न’ पत्र के आगे आभार अनादुरा - १९६८
‘इस गाँव में स्वच्छ और परिशुद्ध जल का दर्शन हो।’

५ जनवरी, '६८

वर्ष २, अंक ११]

[१८ पंसे

सड़क या सदन

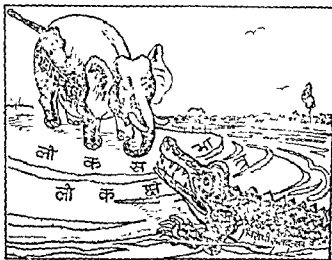
रामबदन कचहरी में मुकदमा हार गया। जज ने अपने पैसों में बास्ताब में इन्फाफ किया है, यह उसके गाँववाले भी नहीं हैं। लेकिन रामबदन को कचहरी के पैसों से सन्तोष क्यों? इनकी जमीन का लोग यह जज के पैसों से छोड़ दे? हरमिज नहीं। कचहरी में उनके हक में फैसला नहीं हुआ तो उसने कचहरी के बाहर गुन फैसला करने की ठान ली, और अपने ‘मुर्दा’ की एक दिन कुछ गुनै लनवाकर यात्रार के चौराहे पर पिटाई करना दी। गुणों ने रामबदन के मुर्दा पोलाबन की शक्ती पिटाई की कि वह मरते-मरते क्या।

आज रामबदन और घोरावन की कही नहानी देग भर में दुरागो का रही है। गमाब ने मभ्यता के विफल में और सडुदाग के हिल में घोरावन, वानुन, दर-विपल आदि बनाने। संविधान, सरकार, पुलिस-कचहरी आदि उनीके जंग है। रायाओं-महारायाओं का कमाना गया और लोतान्न जाया, याली जनता द्वारा गुने हुए प्रतिनिधियों की सरकार की, तो दुविधा ने माना कि मानव-मन्त्र प्रथ गुड और अतिक मभ्य हुआ है। अर लोडनभा में जनता के प्रतिनिधि आपस में बहल करके अधिकाय उलभनों का निपटारा

कर किया करते। उनकी लोतनभा में तप की हुई बाब जनता की ही बाब होगी, जनता उसे मानेगी।

मभ्यता की एक मोटोनी पहचान यह मानो जाती है कि जित समाज में डण्डे की जरूरत जितनी ही कम पड़ती है, वह समाज उतना ही अधिक सभ्य माना जाता है। लोकतंत्र की शासन-व्यवस्था, लोकसभा में बहन नरके जो बातें तप होंगी, उस निर्णय की शक्ति से चलेगी, डण्डे की जरूरत बहुत कम हो जायगी।

नैतिक ऐसा होता दिखाई नहीं देता। लोकतंत्र की बहल



अपना-अपना मैदान

के अलावा भी एन बहुत बड़ी शक्ति आज देन को नचा रही है, वह है विरोध और उपद्रव की शक्ति।

राजा की मनमानी स छुटकारा पाने के लिए जनता के प्रतिनिधियोंवाली व्यवस्था बायम हुई। लेकिन सभी प्रतिनिधि एव राय होकर ही कोई बात तय करते हों, ऐसी बात नहीं है। १०० म ५१ ने बात मान ली, तो वह निर्णय पक्का माना जाता है। परिणाम यह होता है कि बाकी ४६ लोग, जो उस निर्णय स सहमत नहीं होते है, वे उस बात का विरोध करते हैं, लोकसभा में भी, और जनसभा (यानी जनता के बीच) में भी। इसलिए धक्की सम्मति को शक्ति नहीं बन पाती। परिणाम यह होता है कि लोकसभा की बात को जनता के जीवन में लागू करने के लिए डण्डे की शक्ति का सहारा लेना पड़ता है। इस प्रकार सम्मति की शक्तिवाली कमी डण्डे की शक्ति से पूरी की जाती है।

तब यह विरोधवाली व्यवस्था क्यों बनायी गयी है ? क्यों न सब मिलजुलकर जो बातें तय करें, वही बातें मानी जायें, जिस बात में मतभेद हो उसे तबतक मुलतवी रखा जाय जबतक कि एक राय न हो जायें ? तबतक समझ और विरोधी दोनों एक-दूसरे की बात समझने की कोशिश करें।

जसल में यहा आज के लोचनन की सबसे बड़ी बमजोरी है। यह तो माना गया है कि राजा की मनमानी न चले, उसी तरह किसी दल की भी मनमानी न चले। लेकिन शासन उसी दल का होगा, जिसकी सख्या १०० म ५१ की होगी। और शासक दल को ठीक रखने के लिए दूसरे विरोधी दल होंगे, जो शासक दल को हमेशा ललकारते रहेंगे, उसका विरोध करते रहेंगे, चुनाव लड़ते रहेंगे।

सोचने की बात है कि लोकसभा में सभी जनता के प्रतिनिधि होते हैं, चाहे वे किसी भी दल के क्यों न हों। वे प्रतिनिधि जनता के हितों की रक्षा और नलाई व काम के लिए योजना बनाने तथा चलाने के लिए होते हैं। तो क्या जनता का हित में इतना अधिक् विरोध है कि उसके लिए वे हितचिन्तक और सरक्षक एक हो ही नहीं सकते ?

बात यह है कि जनता खुद अपनी समस्याओं पर आपस में मिल बैठकर विचार करती नहीं। जिनको यह काम सौपा जाता है,

वे देश के पडे लिखे समझदार लोग होते हैं। इन समझदारों लगे की अपनी-अपनी कल्पनाएँ होती हैं जनता की नलाई की। उसक लिए कुछ विचार होते हैं। वे कल्पनाएँ या विचार जनता के बीच मिल-बैठकर—उसकी समस्याओं, कठिनाइयों, जरूरतों को समझकर उनकी राय से, उनकी एकड़ में आ सकने लायक नहीं बनायी जाती, बल्कि किताबों, विद्वानों और विशेषज्ञों की राय से बनायी जाती है। इसलिए जनता बड़ी, उसकी जरूरतें बड़ी समस्याएँ बड़ी, लेकिन उसे हल करने में बराबर मतभेद बायम रहता है। क्योंकि जनता की वास्तविक समस्याएँ एक ओर रह जाती हैं, और दलों के नेता अपने विचारों का वाद लेकर आपस में झगड़ते रहते हैं।

विरोध की यह राजनीति अब इतनी नयबर हो गयी है कि लोकसभा की बहुत का तो जैसे कोई महत्व ही नहीं रह गया। मुल की-मुल राजनीति गलियों, सड़कों बाजारों, चौराहों पर और बायालों के सामने वे प्रदर्शन उपद्रव तोड़ फोड़, जागृनी तूटपाट आदि के भद्दे और हिंसक तरीकों में सिमट गयी है। अभी कुछ दिन पहले गृहमन्त्री श्री चव्हाण ने कहा कि सारे मामल विधान-सभाओं में तय होने चाहिए, और मस्यौदा नेता श्री राजनारायण ने कहा कि हम जनता में इसे देख गे। देश में यह नये प्रकार की गज और ग्राह की लड़ाई चल रही है।

आज की राजनीति में शासन से सम्बन्धित एक दूसरा दिलचस्प बात उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री चरण सिंह ने कहा कि सरकार की मुल आमदनी का सो में सत्ताधन रूप बवल राज्य के वरमचारियों के खर्च में निवल जाते हैं, और जिस पर भी सबसे अधिक् सुविधाओं की मांग यही लोग करते हैं। पर तो हुई बवल वरमचारियों की बात। मंत्रिया, विधायक तथा अन्य सरकारी खर्चों की बात अलग ही है।

श्री चरण सिंह की बात जानकर रामवदन और नगवन के गंगे की बात याद आ जाती है। बानूनी और संवैधानिक तरीकों से सत्ता हमारे पक्ष में नहीं हुआ ता क्या हुआ, गंग, सड़क, बाजार और चौराहे पर निपट लेगे। क्या सत्ता रास्ते पर चलकर लोचनन का विमान हारा ? समझाएँ मुलमेंनी ? जनता की नलाई हार्गी ? ●



अंधेरी हेरिद

दिसम्बर में कहीं हो जाने के कारण गाँव के रिमानों को सिखाई के काम से लुट्टी मिल गयी है। इन रिक्तियों को भी पुरनत ही फुरतत है। सर्क होने ही बोलहार में महक-महक बढ़ जाती है, क्योंकि वहाँ मसा नूतनेनाओ के लिए गन्ने का डेर लगा रहता है और तापनेभाओ के लिए जल का प्रबन्ध।

यद्युत सिंह के पुत्र रामायोग बाराणसी में अंधे हैं। वह गाँव के छात्र हैं। कोहलार से इनके आ जाने में सबकी बिलकली बढ़ गयी है। रामायोग के बच्चे में ट्राकिट्टर रेंडियो लटक रहा था। जब रामायोग कोहलार में पहुँचे उस समय रेंडियो पर 'विश्व भारत' का कोई कार्यक्रम चल रहा था। छोटी देर बाद ही ताबदा मयावार में अताया गया कि मध्यप्रदेश के विद्यार्थि-विश्वविद्यालय में विद्वय बिद्या है कि स्नातकों के प्राधि-वितरण के अवसर पर आने गाउन के बन्दे दुपट्टा उपयोग में लाया जायगा।

समाचार सुनते ही रामायोग का चेहरा घुमे से तमगया उठा। वह पुनःपुनः, "दोन् ईरिद्व हिन्दिबाद्वन आर आउट टु स्पॉल आर पब्लर।"

अविचार का सडवा राम स्वामी सुनियर हार्दिकृत के सातवीं कथा का विचारार्थ है। उसे रामायोग के कम्पों में से चिर्क दो शाब्द समक में आये—ईरिद्व और हिन्दिबाद्वन। राम के अंधे जो के सिधाद गीतम धोशास्व बन्नी-रुभी कथा में लिखे छानों को 'ईरिद्व' कह दिया करते हैं, इसलिये इस धार का आशय राम की समक में आ गया। 'हिन्दिबाद्वन' शब्द भी ध्वनि के कारण कुण्ड-कुण्ड उमरी समक में आ गया। उसने बबडे-बबडे पूछा—'रामायोग मैग, पीपर का क्या जर्म होख है?' रामायोग ने हँसते हुए कहा—'पीपर

और प्युपर, दो अलग-अलग धार्य हैं। प्युपर का मतलब है मरिष्य। मैं मानता हूँ कि हिन्दी के दुराधही मारल को नचो पीपों का भविष्य चौपट करता चाहते हैं।'

रामायोग की दो दूक बात सुनकर कोहलार के गम्भी लोग चौंरन्नी हो गये। श्री रामकृपाल श्दमरी वाटशाळा के सेवासुक्त अप्यासक हैं। उकसे रहा न गया। वे बोले—'जीरे खुं येदा!' अंधे जो के दो सी माल के सासन में हम अंधेजोप के उतने शुलाम नही हुए थे, वितने स्वर्धता ने वाद के २० वर्षों में हम। तुम अपने क्रांज में अंधे जो पदो और दोनो यह जो छीक है, रेन्निन वहाँ गाँव में उनको दू बो गोपे फिरते हो?'

राम ने कहा—'बराब, ई अंधे जो ने ए मारे बोळ्ड लज कि उन लोग कड बरिवासर हूँ नेहू न ब्रुक पावे।'

रामायोग ने कहा—'अंधे जो पढ़ने और बोल्ने दो ह्यार' ऐसी हेरिद हो गयी है कि चाहे या न चाहे अंधे जो मवान से निकल ही पचपी है। इतने हर्ष भी क्या है? हम अंधे जो क्या का उपयोग करते हैं। अंधे जो पदो मयाते है, अंधे जो मोटरो का उपयोग करते हैं। अंधे जो प्र मिर्क अंधे जो ही ही गही मारी बुनिषा के सग-मराओ और वैशान्विओ भी आया है।'

यार के निकलो और जो ० ० ० के वारोना श्री राममन्दन सिंह ने कहा—'ये अंधे जो जमाने में सिपाही पर और आसरल दारोसा हैं। मैं सारार और जनता दोनो भी अयकित देखता आया हूँ। ह्यारे देस में अंधे जो को हुटमा और उनके साध-माय उनके पुषों का भी देशनिकाश हो गया। यह गये अंधे जो भी पकायी हुई सिधा-प्रणाली और लोकरमाही, जिने अंधे जो ने प्र देस को अपनी मुट्टी में बनाये रखने के लिए गया था। आज की सिधा-अपाली और लोकरमाही पर अंधे जो जलनेकाते पूरी तरह कार्मिक है। उन्हें वहाँ से कोई टम में सन नहीं कर सकता।'

श्री रामकृपाल ने कहा—'बागेभाओ! माली वात कही है। रेविन क्या हयबा कोई उपाय नहीं है?'

श्री राममन्दन सिन्—'है बो नहीं। रेडिन यह उपाय दना आमत नही है त्रिकना हिन्दी के लिए साप्पोलन करकेवाने मान बडे हैं। हिना और उग्रव का रान्ना उपनाजे में हिन्दी-समर्थों को संस्था करने के बदाय पट रही है और आगे और पट सक्ते हैं। हिन्दी से प्रेन रानेभाओ को हिन्दी को उन्वि करके उपरंठ सकि का पचित्य देना चाहिए। मिल् अंधे जो-चिरीपी मारा खयाले में क्या होगा? •



पड़ोसी की चिन्ता

ईसामसीह ने पड़ोसियों पर प्यार करने की सीख दी है। यह बात सभी जानते हैं, पर उस पर अमल प्रायः नहीं होता। हम खादी पहनने को कहते हैं, भूदान की बात करते हैं। यह सब क्या है? यह सब वही बात है, जो ईसामसीह ने कही थी कि पड़ोसी की चिन्ता करो। पड़ोसी के पास जमीन नहीं है, हम उसे थोड़ी-सी दे देते हैं, तो उससे उसके चाल-चलने पहलेसे और हम सब मुझी होंगे। पड़ोसी की चिन्ता करोगे और एव-दूसरे की मदद करोगे, तो पूरे देश की ताकत बढ़ेगी। इससे बढकर कोई और ताकत नहीं हो सकती। भारत में छोटे छोटे गाँव हैं। यदि वे एव-दूसरे की मदद के लिए आगे आते हैं, एव परिवार व समान रहने लगते हैं, तो वे सब गाँव छोटे छोटे किले के समान मजबूत बनेंगे, उन पर किसी प्रकार का हमला नहीं हो सकता।

आज ईसामसीह के नाम पर दुनिया भर में उल्लव मनमाया जाता है, लेकिन वे ही लोग अपने अपने देश में हिंस्र शासकत्व बढ़ाते जा रहे हैं और एव-दूसरे से भयभीत हैं। अमेरिका रूस में डरता है और रूस अमेरिका से, हिन्दुस्तान पाकिस्तान में डरता है और पाकिस्तान हिन्दुस्तान से। अगर इस तरह हम एव-दूसरे से डरते ही रहेंगे और शासकत्व बढ़ाते जायेंगे, तो निश्चित मम-निकले, गरीब का भला नहीं हो सकता। कोई भी देश गरीब को बलि देकर ही शासकत्व से पूर्ण बनेगा। लेकिन हम जम्मीदारी करते हैं कि एक दिन ऐसा जरूर आयेगा, जब कि ईसामसीह की सिखा-वन काम करेगी। उसका असर होगा।

ईसामसीह ने हमें इनकी देन दी, लेकिन हमने उन्हें मूर्खों पर चढ़ाया। गांधीजी ने हम इनका प्यार दिया, उन्हें भी हमने गाला मार दी। महात्माजी के साथ हमारा बर्ताव ऐसा ही रहा है। फिर भी उन महात्माओं ने प्यार दिया। जब ईसामसीह का मूल्य पर लटकाया गया, उन्हें बहुत तबलीक हुईं। एवदम उनकी मृत्यु नहीं हुई। तीन चार दिनों तक तड़पते रहे। उस तबलीक में भी उन्होंने प्रभु से यही प्रार्थना की कि 'वे जनाती हैं, उन्हें

धमा करना।' ईसा का प्यार ऐसा था। हमने धक नहीं कि उन्होंने जो प्यार दिया है यह बेकार नहीं जायगा। आज जो अणु-युग आया है और बड़े पैमाने पर हिंस्र शासकत्व का आयाज हो रहा है इसमें मुझे बहुत गुस्सा होता है। मैं समझता हूँ कि जब छोटी छोटी लड़ाइयाँ व दिन लड़ गये। बड़ी लड़ाइयाँ वे दिन आये हैं। याने अब अहिंसा व दिन आये हैं, क्योंकि अब छात्मा ही होगा। इसलिए एसा को अहिंसा का तरफ लोटना ही होगा। आज तरफ हिंसा व थोड़े जितने लोगों में दोगे रहे हैं, जब उनसे ही जोर से अहिंसा को तरफ दोड़े आयेगे, एसा हमारा विश्वास है। इसलिए हम महाशुद्ध में उरते नहीं हैं।

इस सूत्रात्मक-आन्दोलन में अहिंसा व, धार्मिकपूर्ण ज्ञान व समाज का बढने की बात है। इस जगत् की मूर्खों का लक्ष्य नहीं है कि समाज का बढना ही रहा है, बल्कि मूर्खों यह है कि बढना प्रेम का ही रहा है। दुनिया बढी जाया व इस आन्दोलन की ओर दबा रही है कि हिन्दुस्तान प्रेम से, अहिंसा व, धार्मिक उपायों में अपना आधिपत्य समाप्त कर रहा है। एव भी-मन है और दूसरा दबा है। हमारा ध्यान दूसरी चीजें जता रहा है। एव मन्ना चाहते भी नहीं है। हमारा ध्यान पर बिस्वास का ही है। हमारा धार्मिक प्रेम का ही है। हिन्दुस्तान का अहिंसा व आन्दोलन मित्र, एव बात में बदला ही गया है। मैं कहता हूँ, दोस्तों! एवगु सूत्रात्मकता का परे बनना अहिंसा व रहा ही है इसकी योजना का है? महात्मा गांधी ने और प्रभु ने ही जो कहा था, वही हम कर रहे हैं। उम्मीद है, 'बढ़ावा' का प्यार वरता। इस तीन-तीन बातें ही आगे प्रेम व मीठा है और ध्यान रहे हैं, वरिं ना इनकार नहीं करता।

हमारा मान्यता है कि इस जगत् का अहिंसा व 'प्रेम का राज्य' जगत् पर जायगा।

—विष्णु

'गाँव की बात'। धार्मिक चर्चा : चार मन्त्र, एक शक्ति प्रकाश देव।

धीरुष्णरुच नट्ट श्याम सर-सेवा नव के निर-संस्तरान प्रस, मान्य-देव, वाग-मन्त्र व दृष्टि और प्र-दित

साक्षात् हुकर है। कुछ दिनों कबीर बनकर यतों में पुनराव करने हुए फरीदी में मन धरा करने हैं। किन्तु साक्षात्कार को छत्रछि को उरंभनी बनने के लिए अत्रान, दुनिया और बारांशिका को एकबारगी भगना होता। 'आत्मबन्धन' इसकी माया मान प्रविष्टा में पहली बार मनुष्य को दिखा रहा है, और साथ ही मुनाई को बेरामबाते परम्परागत रूपन अरंभगात्र की नीव को ही नाट रहा है। अत यह धर्मांध के लिए स्वाभाविक है। अंत मनुष्यिक के आग्रह ने विप्रमुक्त को अन्वयार्थ (पूरुता) बना दिया है, मानि को ज्ञान-भोग धर्मयोगीय भूय बनाया गया है, वंसे ही सावनेलेन (स्वभरण) पुंवीबात-सायाबाद, समाचान भादि दुर्भित-भुय को समस्त विचारधाराओं एवं अर्थांतों को भी अन्वयार्थ बनाने का रहा है।

इत दुगान्दरादो मनु को न समको हुए पुनाको भावनाओं से ही किनेके रहना, दुगान घेना ही पीते रहना, पीके छिचि च समाच छिद होण, अयोनी दुर्भित का, मन भित्तिका का अन्त उषके निहा है।

कम्प्यूटर धरानर नाता बाहरी है।
धरौदध धरानर वे नहे कि अरध लारै, मनुष्य के बन्ध के धरान अनापुणे बेभान चडा कीबिमे, ऊहो केवन मानवेन कायं दीबिने। इराम के काम तो कम्प्यूटर नहीं न कर धरना। अन्को की, भागीदो की, माह-गाओ की, बुद्धे, बीमार बन्धो-बद्धो को नेका तो कम्प्यूटर नहीं कर धरना। आज हूय उष इहा-ने काको में के निठना कम कर पा रहे हैं? और फिर धार-धर में नयो दुर्भित के उर-उर-हू के नवे हात को पुंवीकने का कार्य तो अभायो १०० छाल में एक करोड क्षोणे को कले पुंवीकने का नही? धर-वे धर हूय कहे कि दीबिने वे धरै काम लोको की। वन्दे हूय उर-हू को हस्तगतयो, हस्तित कलाको एवं ध्यामान-लेन भादि क्षोषनी-विद्याने नर नाम दीबिने। कम्प्यूटर धारै, केनिन लवारा, एक भी मनुष्य मुना, बेकर, दुग्नाय न लेने वाने। एक धाने वे योगार हो, दुग्नाय न खाने वे योगार हो, वेसो विप्रदाय मन्त्र-वे-अन्त्र दीबिने। बेधारे

भूदान-महा : शुद्धता, ३ जनवरी, १९८

एक क्रान्तिकारी प्रस्ताव

बिहार राज्य पंचायत परिषद् की कार्य-समितिका

बिहारदान के सम्बन्ध में

पंचायती राज का मुख्य उद्देश्य जनता की राई और कार्यक्रम को विकसित करने का है। ग्रामदान का आन्दोलन जनता की राई को जगाने का और संगठित करने का बुनियादी कार्यक्रम है। अतः वह पंचायती राज की नीव को मजबूत करनेवाला कार्यक्रम है।

बिहार राज्य पंचायत परिषद् ने शुरू से ही ग्रामदान आंदोलन का स्वागत और समर्थन किया है। अब राज्य विधायकी को प्रेरणा से २ जनवरी, १९८ तक बिहार-दान अर्थात् बिहार के सारे गाँवों का ग्रामदान का कार्यक्रम हमारे सामने आया है। बिहार राज्य पंचायत परिषद् इस कार्यक्रम का हृदय के साथ स्वागत करती है और इसी अपने मुख्य कार्यक्रम के रूप में स्वीकार करती है।

यह कार्य समिति अपने अंगभूत सभी स्तर की संस्थाओं से और कार्यकर्तों से अनुरोध करती है कि अपने हृदय संकल्प को सफल बनाने में अपनी पूरी राई लगाने और उसे के लिए प्रातःस्थापी परिधान चलाने।

पटना, २६-१-८०

के बीच को बरिसे प्रविष्टा और तब कम्प्यूटर को धरौदध का बायोबाँद है। धारो बल-बाबिने को उनके कल्पना में विकसित करिसे धारो धरै छोडे बायोरो को उन्निका आय देने का देना कीबिने, तब लारै कम्प्यूटर। हूय भी नही चाहते कि कम्प्यूटर, अनापुण की नदी धिलों में नयानो के साथ मजदूर लगे रहे और कन्वो बिनको में अपना जीवन जैसे-जैसे शिकावे। हूय चाहते हैं कि वे वैज्ञानिक विज्ञान बनें, साध-धुकरे धरौदे में खुले अनापुण का सेवन करो हूय पुनात कन्नोदकारिपोकावे उषम बरभादि निर्माण करें, सम्बन्ध को धरौदधोना करे। आय हूके के लिए एक गिह बाँद का उगतान करे और फिर धरै धरै अन्वयार्थ उरकोय मनुको को सावनेलेन में वेत करे।

मान रहा है कि अनुर-अनुर मजदूर ही, नोकरी या बेरोज नब तक मनुष्य नहीं करेगा, उसे पैसा नहीं मिलेगा और अब तक पैसा नहीं, अन-अन दुख नहीं। तो अब बेरोज कर रहे हैं। किन्हीं बेरोज करने का पीना नहीं बढ़ बेकार है, नर रहा है। तो धारो बेरोजो कीबिने यको को और मनुष्य को भागी-जागी धर्म-भित के अनुहार नाम करते रहने के लिए पूरी धीबिन मुँहेत बरिसे।

पूनी का प्रत्य फालगुनिक है। धरि उर-भोग है ही उरकोय के लिए-पूनी की कन्वो बापुण है नही, क्याकि पूनीक्य पुना उर-भोग-अभयता का धरैत बन है। जो मात सत्र बकता है उरकोय वेत करने के लिए अरिद्र मखो को ही मा धरौते है।

वाल जगत

अन्को की भाँतिक पाँचका

मानस-सायना-परन्ध, रो १२/५ राजेन्द्रधर, ऊधरु-५। पाँचक कुल : ६ क्षये
अब उक्त 'वात नवक' के ६ नक प्रजा-पित्त हो चुके हैं। अन्को को धर्म के अनुहार उरौय गुणार्थ, बसा धारन और अरिच को रयो धरौद 'नाल नवक' को अन्को विरोधार्थ हैं। 'बात नवक' के संतक को हृदयनापन 'ओकोको' तथा संकलिक धम्मकर भी दुबेर-भवार पुना का यह धर्मान्ध धारप्रयोग है।

आन्दोलन के समाचार

सर्वदलीय सम्मेलन

मुंगेर, २६ दिसम्बर। जिला सर्वोदय मण्डल, मुंगेर के तत्वावधान में मुंगेर जिले के सभी राजनीतिक दलों, रचनात्मक संस्थाओं एवं स्वयंसेवी संस्थाओं के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक २५ दिसम्बर को धीरूपायन सेवाश्रमण मुंगेर में श्री राममूर्तिजी के सभापतित्व में हुई। सर्वप्रथम बैठक में उपस्थित कार्यकर्ताओं को सम्बोधित करते हुए बिहार युवान-यत्र कमिटी के यंत्री एवं जिले के प्रमुख कार्यकर्ता श्री निर्मलचन्द्र सिंह ने बिहारयान की भूमिका में जिलायान कराने की योजना प्रस्तुत की। उपस्थित कार्यकर्ताओं एवं राजनीतिक दल के प्रतिनिधियों ने १५ अगस्त १९६८ तक जिलायान कराने का संकल्प लिया। जिले के कुल ३१ प्रखंडों में से १० प्रखंडयान की घोषणा हो चुकी है। दोप २६ प्रखंडों को १५ अगस्त १९६८ तक प्रखंडयान कराने की

योजना स्वीकार की गयी है। इस बैठक में श्री धीरेन्द्र मजूमदार ने कहा कि क्यों पहले लोगों को जब अयोग्याण होता था, तो धर्म और देवता पर विश्वास टिकता था। धर्म समाज की गति के साथ देवता और धर्म से विश्वास हटकर नेता और राजनीतिक दल पर गया। अब जनता का विश्वास नेता और राजनीतिक दल पर जाकर टिका, क्योंकि विज्ञान के विकास ने देवता और धर्म से एगमा की धृष्टा माइ दी। दलगत राजनीति ने नेता और दल से भी अंधधृष्टा पैदा कर दी है। इसका विकल्प धामदान और जनता का संगठन ही है। बैठक में बिछा सर्वोदय म ल ख गगोजक श्री रामनारायण सिंह, श्री ब्रजमोहन शर्मा, श्री इच्छाचक्र मेहता एवं अन्य लोगों ने भी जिलायान कराने की दिशा में कार्यक्रम यनाने में योगदान किया। बैठक ने फरवरी के अन्तिम मन्हाह तक जिलायान कराने के लिए एक हजार मन धान च द्रा के रूप में सग्रह करने का निश्चय किया है।

—पामनन्द मिश्र

बिहार प्रानयान प्राति समिति, पटना-२

साहित्य प्रसार :

मुठुवनी, १९ दिसम्बर। स्वानोय पूरतगज मुठुले में श्री विमिन विद्यपील्लक वनुपल्लाधिचारी द्वारा सर्वोदय साहित्य सदन का उदघाटन-समारोह हुआ। इस अवसर पर सर्वोदय विचारक श्री धीरेन्द्र भाई ने कहा कि बरभगा जिले के धामदान में धर्मापित हो जाने के परभाव आप लोगों पर सर्वोदय विचार को गिरान्वित कर परातल पर उतारने वा शायित जाया है। इस सर्वोदय-साहित्य सदन के निर्माण ने यह साहित्य निभाने में आपनो अनुपूलाता होयी।

बरभगा जिले के टुपि इच्छा सप क अध्याधी प्रगामभानु वर्मा ने अपने विचार प्रकट करत हुए टुपको की समस्तता उनके बीच सर्वोदय विचार के प्रचार की आरम्भकता पर बल दिया। उदघाटक श्री अनुपल्लाधिचारी ने अपने उदघाटन भाषण में सर्वोदय के नार्यों में अपनी पूर्ण सहमति तथा आस्था प्रकट करत हुए सतत सहयोग पाय में उद्यत रहने का आराखण दिया।

—वेदगानाथ भा

गांधी-जयन्ती समारोह के अवसर पर 'मण्डल' का अभिनव प्रकाशन

गांधी : संस्मरण और विचार

- यह ग्रंथ गांधीजी की आगामी पुण्यतिथि पर ३० जनवरी, १९६८ को प्रकाशित होगा।
- इसमें विश्व के महापुरुषों, भारत के राजनेताओं तथा समान-मयियों के गांधीजी द्वारा लिए संस्मरण होंगे। साथ ही गांधीजी के दक्षिण अफ्रीका से भारत लौटने के समय, अग्रार्थन सन् १९१६ से सन् १९२२ तक के पुनः दृष्ट विचार भी।
- प्रथम डवल काउन अटपती आकार के ६०० पृष्ठों का होगा।
- प्रथ की छपाई मुसुचिपूर्ण, कागज बढ़िया, आररण आरुर्षक तथा जिल्द मनुवृत होगी।
- प्रथ का मूल्य केवल ३०) होगा। लेकिन जो महानुभाव १५ जनवरी १९६८ तक अपनी माँग तथा मूल्य परगी भेज दगे, उनको रद्द ग्रंथ २०) में मिलेगी। भेजने का ध्वं 'मण्डल' दगा।

यह विरोप रियायत

केवल १५ जनवरी १९६८ तक प्राप्त माँग-पत्रा पर ही दी जायगी।

२० रुपये मनिआर्डर से भेजकर अपनी प्रति तुरंत मुरक्षित कराइए।

व्यवस्थापक

सस्ता साहित्य मण्डल : नई दिल्ली

शान्ता जीरो रोड, इलाहाबाद

पूर्णिमा की चिट्ठी

भूदान आन्दोलन में यह बिना विचार के सब बिलों में जल्दी वा और दस बिलों में सब तक भूदान में २५,०५४ एकड़ ३३ डि. ३०मी. बिनावाणी को धर्मांतरण की। भूदान में प्राप्त जमीन में से १४,००२ परिवारों में २६,५०७ एकड़ ४१ डि. जमीन का वितरण भी हो चुका है। लेकिन भूदान वा कृषामुक्त प्रेरणा है और उसने व्यक्ति के व्यक्ति का सम्बन्ध सुझा है। समष्टि की वाकाला समाज में परिवर्तन को होने है। उसकी पूर्ति हेतु सामदान का सफल बनाना ही है। समाज-परिवर्तन को प्रेरणा में यह धराज अपना मुख्य हिसाब बंध कर रहा है, जिसका शक्ति प्रतिवेदन निम्न प्रकार है।

ग्रामदान-प्रत्यक्षद्वारा :

सब तक दस बिलों में कुल ५,४२१ ग्रामदान प्राप्त हो चुके हैं। कुमाई १९६६ की ही किनोवाणी की उपस्थिति में पूर्णिमा पर १०० प्रत्यक्ष का प्रत्यक्षदान घोषित हुआ। उसके बाद अब तक कुल २२ ग्रामों का प्रत्यक्षदान घोषित हो चुका है। इस वर्ष दस धराज ने जिलादान का सफल किया है और २६ जनवरी, '६८ तक जिलादान घोषित हो जाया इस और सब प्रयत्नशील है। इस स्थान की पूर्ति हेतु ५ प्रत्यक्षों में एकबार अनिवाज पात्र है।

प्रत्यक्षदानधारा के अनुभवजन्य की घोषणा सितम्बर, '६७ में दस बिलों में हुई। सदर अनुसूचक के धारे, ११ प्रत्यक्षों में सत्ने राज की घोषणा की। कटिहार अनुसूचक का एक प्रत्यक्ष बराते को दोस्कर नामधर माहू के पूर्व ही धारे प्रत्यक्षों का नाम घोषित हो चुका है। जो अल्पकाल बाद वा धराज भी कटिहार अनुसूचक के साथ ही काठे-काठे हैं। येच निम्नमन्त्र और अर्जुन वा अनुसूचक २६ जनवरी '६८ तक घोषित हो जाया।

सम्पुष्टि-कार्य :

कुल ३०० गाँवों के वाज्य सम्पुष्टि के लक्ष्य अनुसार भूदान-वह कार्यक्रमों में शामिल किये जा चुके हैं। अभी तक इत्यान्वय प्रत्यक्ष के कुल प्राप्त २२२ धारणनी गाँवों में से

भूदान यक्ष : कुमाई, ५ जनवरी, '६८

१०७ गाँवों के वाज्य वीर हो चुके हैं और सदर पूर्व प्रत्यक्ष के कुल धारणनी २१२ गाँवों में से १०५ गाँवों के वाज्य सम्पुष्टि के लिए वीरार किये जा चुके हैं। इन सम्पुष्टि काम के हेतु २ प्रत्यक्षों में बनमन्त्री, बद्धरा, भगानीपुर, राजधाम और ब्लोने में कार्यकर्ता कार्यरत हैं। इन प्रत्यक्षों में प्रत्यक्ष में ४-५ प्राप्ति समिति द्वारा नियुक्त कार्यकर्ता तथा सम्य विवाज योजना के कार्यकर्ता कार्य कर रहे हैं। बिना आराम के २० गाँवों की, जिनमें ३०६ परिवार शामिल हैं, कायम द्वारा सम्पुष्टि हो चुकी है। इसके अलावा ३६ गाँवों के ११३५ परिवारों की सम्पुष्टि हेतु भीष्टि ही जा चुकी है।

संगठन :

जिले के स्तर पर आन्दोलन को वेग देने हेतु माध्यम वा हर वर्ष जमीनीकरण किया जाता रहा है।

(क) समन्वय समिति—जिले के ३० प्रत्यक्ष में यह समिति संगठित है और कार्यरत भी है।

(ख) ग्रामसभा—जमी तक कुल ९०६ धारणनी गाँवों में ग्रामसभा वा सफल हो चुकी है।

(ग) प्रत्यक्ष-सभा-ग्राम-निर्माणा समिति के सम्प्रदाय में सब तक बनमन्त्री, बद्धरा, भगानीपुर और ब्लोने में धारणनी गाँवों के प्रतिनिधियों की द्विदिश्रीय गाँवों का आयोजन कर प्रत्यक्षता का संगठन किया गया है। सर्वोच्च धारणन, धनीकरवा के विभिन्न विभागों में लगे कार्यकर्ताओं में इस वर्ष लगभग ४,००० रुपये सम्पुष्टिदान प्राप्त होगा।

शालि-कार्य :

पूर्णिमा जिला नेवाल, विचित्र और बवाल की संस्था में सटा रहने का वाज्य अन्तर्देशीय दृष्टि में महत्वपूर्ण है। बवाल के वाज्यधारा की वाज्य न जहाँ दुनिया का ध्यान बनने और छोवा, बर्दा यह बिला उद्योग पूरा सम्पुष्टि हुआ। मजल ने वहीं की स्थिति में अक्षय होने के लिए जिला समितिनेता के धारणनी की रामराज सिंह तथा श्री चौधरी-नाथ प्रत्यक्षों से उक्त क्षेत्र में भेजा और सबसे सटे प्रत्यक्षों में वही स्थिति पैदा न होने की दृष्टि से प्रत्यक्ष कार्यकर्ताओं को धारणन बनाया।

तिम्नेनवेली

भारत में दूसरा जिलादान

तिम्नेनराज राज्य के तिम्नेनवेली जिले के जिलादान को घोषणा सामवेतु-ज्यल्लो के बनहर पर २२ दिवसपर को की गयी।



दस बिलों का घोषण ६०७ वर्गमीटर है और लगभग २० लाख की जगमस्था है। दस बिलों में ३१ प्रत्यक्षों और ४७० पंचायतों हैं। कुल ३१७७ गाँवों में से २४२२ गाँवों का सामदान हुआ है।

यह सिन्दुलगाज का दूसरा जिलादान है। बिहार में दरभंगा जिले का जिलादान १६ फरवरी '६७ को हो चुका था। यह भारत के उत्तरी क्षेत्र पर नेवाल की सीमा से लगा है वा दूसरा दक्षिणी क्षेत्र पर समुद्र से सटा हुआ है।

सर्वोच्च-प्रयोग :

दस वर्ष धारणनी-विद्यो का विद्ये लक्ष्य-निर्धारित किया गया है, जिसके परिणाम-स्वरूप अब तक कुल धारणनी जिले ७ लाख ४० हजार रुपये की हुई है।

सर्वोच्च साक्षि-प्रचार :

सर्वोच्च विचार-व्यार की दृष्टि से सर्वोच्च सच को और ने सर्वोच्च साक्षि-प्रचार चालू किया गया है। कुल २०४१ रुपये ०४ पैसे का साक्षि-प्रचार हुआ।

—दासोदर प्रसाद 'काम', कार्यकारी सचिव जिला सर्वोच्च मजल, बनमन्त्र, धनीकरवा, पूर्णिमा



महात्मान अभियान प्रारम्भ विनोबा पूसा रोड से रवाना मुजफ्फरपुर में स्वागत

मुजफ्फरपुर : २६-१२-६०। बिहार ग्राम-दान का महान सफल पूरा करने के लिए आज विनोबा महात्मान अभियान का पुनारम्भ कर रहे हैं। पूसा रोड से बाबा को बिदा करने समय भी रामधेछ गाय अपने उद्गार प्रगट करते हुए कहते हैं, "फरसी समय तक हमें बाबा का साहचर्य मिळा, उनसे हमारा हार्दिक सम्बन्ध बना, हम उसे अपनी शक्ति मानते हैं। उसी शक्ति से हम आग की मजिलें पार करेंगे।" भी राय एक घाल पुरानो बातें याद करते हैं, "बाबा के आने से पूर्व हम ग्रामदान भी कराने की शक्ति अपने अन्दर नहीं महसूस करते थे, लेकिन आपके आने के बाद हमने हनुमान बनकर काम किया, और अधिक करने का उराहल अपने अन्दर अनुभव कर रहे हैं। हमसे मार्ग '१६' तक रामस्तीपुर अनुभवपर के सभी ग्रामदानी गार्थी की पुष्टि कराने का सफल बिचा है।

"बाबा जब यहाँ १० जुलाई १९६६ को आये थे, तो उन्होंने कहा था अब चिडिया भी ग्रामदान की बात बोल रही है। उस समय हमने इसका अर्थ नहीं समझा था, आज जिलादान होने पर हमें उसका अर्थ समझ में आया।"

भी राय की आखिरी बात, "विनोबा-निवास की 'स्मृति भवन' के रूप में बनाये रखने का हमने निश्चय किया है। जब भी हम यहाँ, सिधिलता या कमजोरी का अनुभव करेंगे तो विनोबा-निवास में सुरक्षित बाप (बाबा) की याद हमें स्मृति, पति और शक्ति देगी।"

विदाई-भारोह के अवसर पर आयोजित श्रम सभा में श्री इण्डिराजी मेहता कहते हैं, "हमें यहाँ की सामूहिक इच्छा-शक्ति और सज्जन-शक्ति ने प्रभावित किया है और प्रेरणा दी है। रामस्तीपुर ने 'समृद्धि' का म

किया है और उसका प्रभाव जिलादान के रूप में प्रगट हुआ है। जिलादान अब प्रान्त-दान के की प्रेरणा का आधार बन गया है। यह आन्दोलन को समस्तीपुर की विविध देन मानो जायगी।"

श्री महादेवी ताई श्री-शक्ति को सज्ज करने की आवश्यकता पर जोर देती हैं। और अब बाबा— "इस सप्ता का उद्घाटन मेरे द्वारा हुआ था। उस समय मेरा व्याख्यान ५ मिनट का हुआ था। अब यहाँ हम साल भर रह चुके, इसलिए पाँच मिनट भी बोलने की जरूरत नहीं रही।

"मुझे यह कहने में तुशी है कि भगवान शंकर ने साखड़ नृत्य शुरू कर दिया है। दक्षिण में नटराजन् का नृत्य शुरू हो गया। २४ लाख की जनसंख्या और ३१ प्रखण्डोंवाले जिले (तिरुनेलवेली) का दान हो गया है।

"जहाँ बैठे हैं वहाँ से १० घी मील दूर की अनुपस्थिति में जिलादान हो सकता है, तो जहाँ में २। साल से हैं वहाँ प्रान्तदान और पुष्टि के काम वेग से होने चाहिए।"

इसके बाद फिर आगे कदम बढ़ रहे हैं। महात्मान अभियान शुरू। चन्द, भाव, अर्थ और प्रेरणा में विराट, लेकिन स्वल्प में लघु। मोझे-मे लगी डाट आचर्य विदाई। बाबा की शारी के साथ दो-तीन मासियाँ रवाना होती हैं मुजफ्फरपुर की ओर।

१२ बजे के लगभग। सर्वोदयप्रथम, मुजफ्फरपुर। मोझे-मे जाने-पहुँचने लोग स्वागत में प्रस्तुत। बीच-बीच में कुछ उदास भी। बाबा एक छोटे-से धामियाने से मच पर पहुँचे हैं। सामने बिहार शाही ग्रामोद्योग रूप के कुछ बरिष्ठ लोग को उतुबे के अन्दर पर नडाई कर रहे हैं।

श्री ध्वजा बाबू बुधरा प्रखण्डान से बाबा का स्वागत करते हैं। पहले है, "बाबा एक ही भवन की एक कोठरी से दूसरी कोठरी में आये हैं। हम बाबा की प्रान्तदान की फरमाइश पूरी करने में लगे हैं। हृषीकेश जो विराचत है कि केवल सारी के सभी कार्य-परा ही ग्रामदान कराने में लग जायें जो आधा प्रान्त दान में जा जायगा।"

बाबा कहते हैं, "हय राखे से था रहे थे तो मोटर से बेंडे-बेंडे पदयात्रा के दिन याद आ रहे थे। यात्रा शुरू किये करीब १० घण्टे हो गये। पहले कुछ मुदान मिलता था, फिर ग्रामदान से स्वागत होता था, अब तो प्रखण्ड-दान से कम की कोई बात भी नहीं होती।

"पहले एक बसु मन में आती है, उसका मनन होता है, तब वह चन्द में जाती है, उसकी पुत्र हाठी है, फिर उक्ति में जाती है।"

सब है, प्रान्त-दान का मनन चन्द बन-कर हवा में गुज रहा है, देखो पर परिवे चकक रहे हैं— "विदायदान हो जायगा।" ग्रामदानी गार्थ से आये लोग वामो से आवाज और पहनाई की पुन के साथ ग रहे हैं, "विदायदान हो जायगा।"

—पद्मी

हुमरा प्रखण्डदान का विवरण

कुल जनसंख्या :	१,२६,५४८
प्रखण्डदान में शामिल जनसंख्या :	६५,०६१
शामिल जनसंख्या का प्रतिशत :	५१%
कुल भूमि :	४०,८४८.२५
शामिल भूमि :	२१,०३८.५१
शामिल भूमि का प्रतिशत :	५१%
कुल गाँवों की संख्या :	३५
प्रखण्डदान में शामिल :	६०

—पद्मी, जिला सर्वोदय मण्डल, मुजफ्फरपुर

भूदान-यात्रा

भूदान-यात्रा-मूलक-ग्रामोद्योग-प्रमाण-भूमि-संक-क्रान्ति-विचार-सन्दर्भात्मक-साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र
सम्पादक : राममूर्ति
शुक्रवार
वर्ष : १४
१२ जनवरी, '६८
अंक : १५

प्रेम : जीवन का उपादान

बाइबिल की पुरानी संहिता में एक आख्यायिका है कि आदम और ईव के दो पत्रों, केन और आबेल थे। भगवान् ने उनमें से एक को अपना लिया और दूसरे की जरा उधारा भी कर दी, तो उसमें ईर्ष्या पैदा हो गयी। बाद में वेन ने अपने भाई को गर्दन ही बाट दी। भगवान् ने उन्हें पूछा कि तुम्हारा भाई क्यों मर गया? भगवान् ने कहा, ऐसा क्यों किया, तो उन्हें उलटे उलटे पूछा कि ऐसा क्यों न कहे? क्या मैं उसका राखवाला हूँ? इस पर भगवान् का जवाब था कि तुम अपने भाई के रखवाते नहीं हो, परन्तु दोनों एक-दूसरे के दो, यह तुम्हारा ही और तुम उलके। तुम दोनों में अनेक घाव का अर्थ है, हिंसायनी या प्रतिपालक या रक्षक। बाइबिल की पुरानी संहिता में ऐसी ही भावना प्रकट की गयी है कि तुम परस्पर के राखवाले हो। बाइबिल की नयी संहिता में सेंट पाल ने इसे जोर और स्पष्ट पदों में प्रस्तुत किया है।

जीवन का उपादान प्रेम है और उसकी अभिव्यक्ति पारस्परिक सम्बन्धों में होती है। सामाजिकता याने मानव मानव के बीच के सम्बन्ध—रिश्तेदारता। प्रश्न उपस्थित होता है कि जनन कैसा हो, उसका औपचारिक स्वरूप क्या हो, जनता का रज और जनतन्त्र की पर्याप्त एव व्याप्ति किन्ती हो, लोकप्रता और लोकसत्ता के पारस्परिक सम्बन्ध कैसे हो इत्यादि। यही है कि मानव-मानव के बीच के सम्बन्ध कैसे हो।

राज्य-निरपेक्ष और तन्त्र-निरपेक्ष मानवीय सम्बन्धों को पारस्परिक व्यवहार की चर्चा हम कर रहे हैं। जाहिर है कि अभी तक इसमें से नागरिकता जरा भी विकसित नहीं हुई है। घारे विचार का एक राज्य बने, एक विश्व-सोकराज्य स्थापित हो एक लोग विश्व-नागरिक बनें, यह बात अल्प है और सारी दुनिया का, सभी लोगों का एक परिवार बने एक ऐसा समाज कौटुम्बिक अर्थार्थ 'कैमिनिस्टिक सोशलिस्ट' बने, यह बात जलम है। जाजरक सोच-चार घन्टे काफ़ी प्रचार में है, जैते कि कम्युनिस्टों के 'कम्यून'। इन कम्यूनों में पस्तर के साथ रहकर उत्पादन और उपभोग किया जाता है और यहोग करके ही सप्टर जीवन विताते हैं। इस प्रणाली में जय जो भी दोष हो, एक बरा दोष यह है कि उनमें कौटुम्बिकता या पारिवारिकता नाममात्र के लिए भी नहीं होती है। इसका कारण यह है कि वे मानते हैं कि दुःख-सन्ध्या मनुष्य को स्वयमेव पर आधारित नहीं है। इसलिए पारिवारिक सम्बन्ध मनुष्य नहीं है। उसका आधार एक एक विवाह-सम्बन्ध है। इसलिए पारिवारिक सम्बन्ध मनुष्य को बन्धन पर आधारित नहीं है और यही इसका मुख्य दोष है। कम्युनिज्म ने इसी कारण प्रथम में परिवार-रक्षणा का तीव्र विरोध किया। उसको मान्यता थी कि परिवार-सन्ध्या प्रणाली और अर्थव्यवस्था है, जो तब तक अस्तित्व में नहीं है। आज कम्युनिज्म नेता ऐसा नहीं मानते हैं, पर मुझ में यही ने कहा करते थे।

["लोकनीति विचार" : पृष्ठ १७-१८]

- इस अंक में
- रसदोर के दोर और सीमा के गाथो —धर्माश्रीय १७१
 - जयप्रकाश नारायण की विचार-वाचा —रामचन्द्रन सिंह १७२
 - अध्ययन + आनन्द = कौशलशास्त्रा —श्रीधरनाथिक १७३
 - विज्ञान और इराता —डॉ० आरमाराम १७५
 - पाठि वेतिहो के नाम —नारायण देसाई १७६
 - विकसनाय बनेरिया का सिद्धार्थ —धर्मनाथयण १७७
 - शूपाञ्जलि —डॉ० जयनारायण लाल १७८
 - दरभामा में तिथिरी की श्रद्धाका —उदयचन्द्र १७९
 - अन्य स्तम्भ : —गाविन्दराय देवगडे १८०

समाचार शायरी, पाठि-संज्ञो की गतिविधियाँ
आन्दोलन के समाचार, सामाजिक चर्चा
आगामी आकर्षण
३० जनवरी के अवसर पर. सत्याग्रह विरोधपर
मासिक मुद्रक : १० रु०
एक प्रति - २० पैसे
वित्त में : साधारण डाक-मुद्रक—
१८ रु० वा १ पोस्ट या २॥ डावर
(हवाई डाक-मुद्रक : देवों के अनुसार)
सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन
राजवाड़ा, भारतवासी-१
फोन नं० ४२८५

—दादा धर्माधिकारी

देश :

१-१-६८ : यूरोपीयन रस्न की नकल करके नयी दिल्ली के युवकों ने राजधानी के फेननेबुल इलाके में गुण्डागर्दी और हड़कदग किया।

२-१-६८ : सरकार ने रोड अब्दुल्ला पर से सारे प्रतिबन्ध हटा लिये।

३-१-६८ : बनारस हिन्दू विश्व-विद्यालय के मुख्य द्वार पर अग्नेजी-विरोधी प्रदर्शनकारियों और सशस्त्र पुलिस के बीच जमकर लड़ाई हुई।

४-१-६८ : छोपाया-नेता श्री मधु लिमये ने भाषा-समस्या के स्थायी हल के लिए एक गोलमेज सम्मेलन बुलाने की अपील की।

५-१-६८ : प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने घोषणा की कि कश्मीर के मामले में भारत की नीति में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है, लेकिन इसके अन्तर्गत अनेक सम्भावनाएँ हैं।

६-१-६८ : भारत सरकार ने पाकराजतमिक को २४ घण्टे के अन्दर भारत छोड़ने का आदेश दिया।

७-१-६८ : कांग्रेस के मनोनीत अध्यक्ष श्री निजलिगप्पा का हैदराबाद में दानदार जुलूस निकाला गया।

विदेरा :
२-१-६८ : दक्षिण अफ्रीका के अस्पताल में प्रो० बनाई ने दिल-बदल का एक और सफल आभार दिया।

५-१-६८ : तुर्की के परराष्ट्र-मंत्री ने आधा बयक की कि भारत व पाकिस्तान अपने मतभेद दूर करके मेल से रहेंगे।

७-१-६८ : यूरोस्लाविया के राष्ट्रपति वटस्य स्टुट के सन्निधर्षन के लिए भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, कम्बोडिया, इथियोपिया तथा मिस्र की यात्रा करेंगे।

८-१-६८ : जाईन नदी के दोनों किनारों से इसराइल और जाईन के तोपखानों का झट ३१ घण्टे बाद भी समाप्त नहीं हुआ, तब इसराइली युद्ध विमान लड़ाई में भेजे गये।

● पचायती राज की वर्तमान स्थिति

● गांधी-शाताब्दी तक सारे देश में त्रिस्तरीय व्यवस्था लागू हो

● सम्पूर्ण देश में लोकतांत्रिक विकेन्द्रीकरण की प्रक्रिया में जो निष्क्रियता आ गयी है, उस पर अखिल भारतीय पंचायत परिषद् की यह बैठक गहरी चिन्ता प्रगट करती है। 'बलवन्तराम मेहता कमेटी' ने त्रिस्तरीय प्रणाली के लिए सिफारिश की थी, जिसका राष्ट्रीय विकास परिषद् ने भी सन् १९५८ में अनुमोदन किया था, लेकिन आज भी बिहार, मध्य प्रदेश, मैसूर, तामिलनाडु, केरल, हिमाचल प्रदेश, जम्मू व कश्मीर और छपीय प्रदेशों में कार्यान्वित नहीं किया जा सका है। पंचायती राज में घासक दलों के विश्वास की कमी का इससे बड़ा खेदजनक उदाहरण और नया हो सकता है ?

● वैवल निष्क्रियता ही नहीं, बल्कि सारी प्रक्रिया को ही प्रतिकूल किया जा रहा है, जो गहरी चिन्ता का विषय है। उद्योगों में जिहा परिषदों को भंग कर दिया गया है, उत्तर प्रदेश में जिला परिषदों के कुछ महत्वपूर्ण अधिकारों को उनसे वापस लिया गया है, बहुत-से राज्यों में पंचायती राज के प्रविधायन केन्द्रों को बन्द कर दिया है, दिल्ली प्रदेश में कई पंचायतों को तोड़ दिया गया है, केरल व मैसूर में पंचायती राज कानूनों को पाश करने की ही उठा रखा है, जम्मू व कश्मीर की सरकार ने त्रिस्तरीय प्रणाली को स्वीकार करने से ही इनकार कर दिया है। ये कुछ बुरे लक्षण हैं, जो सचेत दे रहे हैं कि घासक दलों का जनता व उसकी घासक करने की क्षमता में विश्वास घटता जा रहा है।

● परिषद् का यह हड़कद मत है कि अब इस विपरीत मनोवृत्ति को रोचना और स्वायत्त शासन के लिए लोकेच्छा का प्रभावपूर्ण प्रदर्शन आवश्यक हो गया है। इसलिए परिषद् अपनी सम्बन्धित परिषदों से अनुरोध करती है कि वे राज्यों में सम्मेलनों का आयोजन करें और सचिव, जिला व राज्य-स्तर पर

प्रदर्शन करें, ताकि राजनीतिक व आर्थिक विकेन्द्रीकरण के लिए एक हड़कद अनमत तैयार किया जा सके।

● परिषद् की राय है कि २ अक्टूबर १९९६ को गांधी-शाताब्दी का मनाना अभी अर्धपूर्ण होगा, यदि उस समय तक विकेन्द्रीत राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक व्यवस्था के हठ आचार को रद्द दिया जाय।

इसलिए सभी राज्यों से अनुरोध किया जाता है कि गाँव, प्रखण्ड व जिला-स्तर पर स्वशासन की दृष्टादेशों को स्थापित करने के लिए उचित कानून पारित करें और उनके कार्यान्वयन की दिशा में बदन उठावें।

परिषद् इस अवसर पर विकेन्द्रीत शासन को सभी त्रेणियों से अपील करती है कि वे इस आन्दोलन को अपना समर्थन व हठ योग प्रदान करें।

[नयी दिल्ली में श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में अ० भा० पंचायत परिषद् की बैठक हाल में ही हुई थी। यह प्रस्ताव उभी बैठक में पारित हुआ था।] ●

वल्लभस्वामी की पुण्यतिथि :
धंगलोर, ११ दिसम्बर। बल्लभ-निवेदन में स्व० बल्लभस्वामीजी की तुल्यो गुण्यतिथि ८ ६-१० दिसम्बर को मनायी। ८ दिसम्बर को समापन समारोह हुआ। ८ दिसम्बर को बल्लभ-निवेदन की ओर से 'शिवुदाला बल्लभस्वामी' तथा श्रीमती साता ए० विहार द्वारा सृष्टित एव महिला अध्यात्म-परिषद् की ओर से 'ईशावास्योपनिषद्' पुस्तक का विविधव प्रकाशन श्री मुनिश्री बुधमल्लों के करवमलों द्वारा हुआ। भारत के प्रधानमंत्री, उपराष्ट्रपति के साथ ही अन्य गुण्यतिथि के सदस्य भी पढ़कर गुनाये गये।

—सीधाराण शर्मा

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १२ जनवरी, '६८

भूदान-यज्ञ

कश्मीर के शेर और सीमा के गांधी

बोध अनुकूल स्वतंत्र कर दिये गये हैं। पाप अनुकूल गणराज्य का भी स्वतंत्र है, लेकिन अपने देय में नहीं, अर्थात् पाकिस्तान में। विद्यो पक्ष के 'शेरे कश्मीर' को स्वतंत्र-भारत में कुछ मिलकर प्यारह वर्ष नज़रबन्द रहना पड़ा है। उद्यो तरफ़ जो एक समय 'शोमा का गांधी' था उसने स्वतंत्र पाकिस्तान के जेल में थगड़ साल बिताये हैं। 'शेरे कश्मीर' को भारत में ग़दर बढ़ा गया है, शोमा के गांधी को पाकिस्तान में। एक के मन में ग़दर बढ़ा गया है, शोमा के गांधी भाइयों के लिए विद्यो प्रेम है, और दूसरे के मन में पाकिस्तान की शाप-साप मारने भाई वीर पटानो के लिए। दोनों पक्षों में मुसलमान हैं, लेकिन मारा इस्लाम का नहीं उगाते, निष्ठा मानव में रखते हैं। दोष नेहरू के निच में, और शरीर तक कश्मीर के शासक, खान गांधी के साथी थे, और अहिंसा के उपासक। एक पहले से भारत का नागरिक है, दूसरा भारत आने को वैश्या है।

भारत के पाप से दो ब्याह हैं जो अपने प्रेम और प्रभाव से हिन्दू और मुसलमान के बीच, भारत और पाकिस्तान के बीच, बनने का राय कर सकते हैं। उनके पास दिल है जो देय की घोषणाओं से बड़ा है, मनुष्य का प्रेम है जो राजनीति से ऊँचा है। मान के जमाने में हर समस्या मुक्त मान-बोध है, इसलिए राजनीति और कानून की घोषणाओं से भागे बंदूक ही मानवीय हल ढूँढने की नीतिवादी हानी चाहिए। सफलता भी उधीते मिलेगी।

भारत में हिन्दू है, मुसलमान है, और दोनों कानून की दृष्टि में समान हैं, फिर भी हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल हो गयी है, ऐसा क्यों कह सकता है? यका, अविश्वास, बटुरान को कठोर रोनालों दोनों के बीच आब को उतनी ही ऊँची है जितनी कभी थी। हिन्दू मुसलमान नहीं बनता, मुसलमान अके ही देय का नागरिक हो, लेकिन अपने तप परीसे से निकलकर इस देश के मुसलमान के साथ अपने को जोड़ नहीं पाता। इस अलगाव में ही उकराव के साथ अपने को जोड़ बीबी को निराश बँकने में खेल साहब बहुत बदा रोल बदा कर सकते हैं। हिन्दू-मुसलमान एतना आब को हवासे राष्ट्रीय एतना को मुख्य समस्या है, समस्या ही नहीं, बचोटी भी है। अगर यद् एक एतना सय आब तो भाषा, धर्म आदि को एतना के लिए रास्ता

बुल मानया। इतना ही नहीं, भारत पाक क्षेत्रों के लिए भी दरवाजा खुला, जो दोष साहब का जीवन-कल्प है। ऐसी एतना के लिए कश्मीर से बंदूक दूसरा कोई क्षेत्र नहीं है, और यहाँ दोष अनुकूल का जबरदस्त प्रभाव है।

कश्मीर भारत में है, भारतीय सप का अय है, लेकिन कौन मानेगा कि कश्मीर का स्वातंत्र्य हल होगा? कश्मीर का स्वातंत्र्य पाकिस्तान की धनुष-मित्रता का स्वातंत्र्य है, पक्की मुसलमान देशों से सम्बन्ध का स्वातंत्र्य है, दोनों देशों के बजने हुए सैनिक-सैन्य, और उभरने कारण बजती हुई मरीची का स्वातंत्र्य है, भारत के विरुद्ध चीन-पाकिस्तान के शठमनन का स्वातंत्र्य है, और है एक हफ़ठठा जिम्मे जमेरिका, इंग्लैंड, और रूस को वारी-वारी भारत और पाकिस्तान को उभाड़ने के मौके मिलते रहते हैं। सबसे बड़े बात तो यह है कि एक-दोही कश्मीर पाकिस्तान के हाथ में है। क्या उस एक-दोही को छोड़कर, और बाहरी राजनीति के इन पहलुओं में खलि मुँदकर, लेना चाहते हैं कि कश्मीर का स्वातंत्र्य हल हो गया? हम मले ही हैं कि हल हो गया, लेकिन वह, जो उस कश्मीर को दो कश्मीरी दुबदों में देल रहा है, जितके सगे-सम्बन्धी उस पार हैं बँबे, कानेगा? दोष अनुकूल कहते हैं कि कश्मीर का स्वातंत्र्य हल होना चाहिए। वह नहीं चाहते कि कश्मीर भारत-पाकिस्तान को लड़ाई का अखास बन। वह भारत के साथ सम्मानपूर्ण, और प्रेमपूर्ण सम्बन्ध चाहते हैं। यह भारत के अहिंसा को बात नहीं है, वह जो कुछ पोकी टेक लगती मले हो दिखायी है। अगर दुनिया में रहता है तो हमें वह से आगे बचकर देखने की बाइत शालनी पड़ेगी। दुनिया हमारा मर्वाँ और हमारे इशारे से नहीं बचेगी।

कश्मीर पर आनमन करके पाकिस्तान के मौजूदा साथकों ने अपना साह छो दी है, अपनी सकीर्णता से हम उन्हें मुसलमानों का अकेला मित्र कहलाने का मोवा न दें। हर्षें इस छारे प्रन को सहानुभूति के साथ देखल चाहिए, और उदारतापूर्वक उभका हल निकालना चाहिए। अर्थात् पाकिस्तान, पाश्चान्तिस्तान, सिन्धत, सिन्धिम, मुसलमान, और शास्य पूर्वो पाकिस्तान से सब हवासे घोषा पर बिचरे हुए नेपाल, और शास्य पूर्वो पाकिस्तान से सब हवासे घोषा पर बिचरे हुए है, लेकिन अभी तक इन्हे हम अपना नहीं बना सके हैं। भारत केवल नहीं है, और न उदे अकेला रहता है। पूरे संधिणी एशिया को एक बदी विरादरी में हमारा भविष्य है। पाकिस्तान को उधी विरादरी में हैं। यह अलग कहीं जायगा?

दोष अनुकूल और खान अनुकूल गणराज्य का, हवासे पाप से दो जबरदस्त हिसारों है जिनको सॉफ़ि से बहुत बदा भाग हो सकता है। लेकिन ओद्यो राजनीति से जबर उठकर हम घोषें तब ली।

दोष साहब के सामने ऐतिहासिक जबर है। लेकिन बड़े अवसरों के लिए बड़े समय, तथा परिस्थिति और लोक-मानस को परब को जबरत होगी है। इन दुगों का जमाना छोटों में ही नहीं होगा; कई बार बड़े भी चल पाते हैं। कर्तव्यों के भाष्य को मया मोच देने का यह अवसर, आशा है, दोष साहब को साहब और सपन दोनों को प्रेरणा देगा।

भूदान-यज्ञ : मुकबाद, 12 जनवरी, '62

विहारदान के संदर्भ में :

जयप्रकाश नारायण की विहार-यात्रा

भारत-प्राप्ति के कार्य में तीव्रता लाने और धारणा-शील बहुराज्य करने के लिए श्री जयप्रकाश नारायण के दौरे का कार्यक्रमगत ६ दिसम्बर से १६ दिसम्बर तक विहार में विरहित किया गया था ।

यात्रा प्रारम्भ होने के दो दिन पहले याने ७ दिसम्बर को श्री जयप्रकाश नारायण ने लोहाचक्र में प्रखुर राजभाष्य (हकीमियत) विषयक एक तस्वीर-पीठ अन्वेषण पर एक वक्तव्य प्रकाशनायें समाचार-पत्रों में भेजा । वक्तव्य भेजने के बाद पूछा रोड के लिए प्रस्थान किया । ८ दिसम्बर को उनका वक्तव्य समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुआ । विधानसभा एवं अल्पमत-विहारवासियों या तो यह वक्तव्य उचित, सामयिक एवं भावपूर्ण प्रतीत हुआ, लेकिन कुछ तत्कालीन हिन्दी-पत्रिकाओं को एक वक्तव्य में हिन्दी-विरोध की गंध मिली, और वे भाववैध में आ गये । ९ दिसम्बर को ही पटना में विहार-हिन्दी-संस्थान सम्मेलन के अध्यक्ष श्री राम-दत्तात्रेय पाण्डेय के नेतृत्व में तत्कालीन हिन्दी-समर्थकों का एक जुलूस—“जयप्रकाश गद्दार है, जयप्रकाश मुर्दाबाद, जयप्रकाश-भारत छोड़ो, जयप्रकाश : चोर है” आदि नारे उठाते हुए उनके निवास-स्थान पर गया । प्रदर्शनकारियों ने निवास-स्थान के दरवाजे पर, दीवारों पर नारों की लिख भी दिया ।

रात्रि को इन घटनाओं की जानकारी हुई, तो उन्होंने श्री जयप्रकाश नारायण के एक वक्तव्य के सम्बन्ध में एक वक्तव्य दिया । प्रदर्शनकारियों की भावना एवं पटना की घटना जब समाचार-पत्रों में प्रकाशित हुई तो हम लोगों को सम्यक् हुआ कि अब श्री जयप्रकाश नारायण के दौरे के अन्त पर जगह-जगह काले झण्डों का प्रदर्शन होगा । लेकिन यही भी प्रवृत्त रूप से विरोध नहीं हुआ । केवल पूर्णिया जिले के फलक प्रसङ्ग के रूपीले गाँव की सभा में दो सज्जनों ने

पाँच पाँच से नौ बर्ष तक के लगभग आधे दर्जन बच्चों के साथ पीस्टर दिखाकर विरोध जाहिर किया ।

यह विरोध ऐसा तपथ था कि रूपीले के चलने के बाद जब मैने श्री जयप्रकाशजी का बताया, तब उन्हें इसकी जानकारी मिली ।

६ दिसम्बर में श्री जयप्रकाश नारायण का दौरा समस्तीपुर अनुमण्डल के सरायरजन से प्रारम्भ हुआ और १६ दिसम्बर को साहायद जिले के बंसुर अनुमण्डल के बीघा में अन्त हुआ । इस यात्रा में उनको पाँच प्रसङ्ग-दान एवं लगभग डेढ़ लाख रुपये का योग्य स्वस्ति किया गया । आमसभाओं में यत्र तो पडे तक के विहारदान की योजना, वर्तमान परिस्थिति में सामदान की आवश्यकता, विहार सरकार द्वारा स्वीकृत भूमि-मुद्यार वान्ग, भाषा विवाद एवं अन्य प्रश्नों पर विस्तार पूर्वक चर्चा करते थे । मोघ से तमकगत हुए विरोधी लोग भी उनके भाषण सुनकर प्रसन्न एवं विचारपूर्ण रम्यरी मुद्रा में पर लौटते थे ।

समस्तीपुर अनुमण्डल के सरायरजन प्रसङ्ग में ६२ हजार रुपये की पैली समर्पित की गयी । उची दिन सच्चा समय समस्तीपुर की आमसभा में क्षार जनसमूह उमड पाया था । वा घण्टे तक भी जयप्रकाश वाजू बोलते रहे ।

दूसरे दिन १० दिसम्बर को पूछा रोड के कार द्वारा बेगुसराय जाले समय मुगैर जिला के प्रथम गाँव नुहाह में लगभग साडे दस बजे एक आमसभा का आयोजन किया गया । उच्च गाँव के दानदर श्री देवनारायण चौधरी के प्रयास से १००० रु० का कोष समर्पित किया गया ।

सच्चा समय बेगुसराय के कपहरी-मैदान में एक आमसभा का आयोजन किया गया, जिसमें बखरी प्रसङ्ग का दात भी जयप्रकाश

यात्रा को समर्पित किया गया १०,००१ रु० की पैली भी दो गयी ।

११ दिसम्बर से पूर्णिया जिले का सां-यम मुसू हुआ । पूर्णिया जिले के सर्वोच्च-प्राथमिकी विहारदान के लिए बीघदा से लगे थे । अतः घनसमूह एक सभा आयोजन की विद्येवारी स्वयंसेवक स्वागत-परिषत् को छोड़ दी गयी थी । जिले की बीघर से दो प्रसङ्गदान एव ५,५३४ रुपये पैली समर्पित की गयी ।

१३ दिसम्बर को हुयलोग सूर्यो जिले में मुरलीगञ्ज एव विहारीगञ्ज गये । इन दोनों स्थानों में बही-थकी आमसभाएँ हुईं । १२,०५६ रुपये की पैली समर्पित की गयी ।

१४ दिसम्बर को हाजीपुर एव मुनाकर-पुर में आयोजित विराट आमसभाओं में श्री जयप्रकाश नारायण ने भाषण किया । ३०,००५ रुपये की पैली तथा हाजीपुर अनु-मण्डल का सर्वथा प्रसङ्गदान मिला ।

१५ दिसम्बर को सारल जिले में दो आमसभाएँ हुईं । ९,२०६ रु० ४१ पैरे की पैली तथा बरीली का प्रसङ्गदान समर्पित किया गया ।

१७ दिसम्बर को हुयलोग ट्रेन से घनबाद गये । घनबाद की आमसभा नहीं आनवार रही । दो पडे, बीस मिनट तक जयप्रकाशको बोलते रहे और घना में उपस्थित एक-एक व्यक्ति एकाधता से मुनता । सम्भाद में १५,७७२ रु० की पैली समर्पित की गयी ।

१८ दिसम्बर को घनबाद से वार झण्ड हजारीबाग के लिए प्रस्थान किया । उही दिन हजारीबाग जिले के प्रसिद्ध विस्फोटक कारखाना मामियों के मैदान में सच्चा ठाँवे पाँच बजे से एक जनसभा का आयोजन किया गया । मामिया में ५,५५१ रु० का पैली समर्पित की गयी ।

१६ दिसम्बर को साहायद जिले के पीरो एव चौरा में दो आमसभाओं का आयोजन किया गया । जिले का और से उन्हें १,००० रुपये की पैली समर्पित की गयी ।

—रामचन्द्र सिंह

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १२ जनवरी, '५८

अध्ययन + आनन्द = लोकयात्रा

[पाठकगण जानते होंगे कि महिला-जागरण के उद्देश्य से चार सदस्यों की एक टोली गत दो माह से इंदौर जिले में परयात्रा कर रही है। उन्होंने ही डायरी के कुछ अंश यहाँ प्रस्तुत हैं। आशा है, पाठकों को बोधप्रद लगेंगे।—सं०]

"अन्तर एक ईश्वरक दोषघोक नाता बाहिरल
अन्तर बोध बाहिरल जब प्राय।

बुद्धि समने तैत्रियोक, बाहिरल सग देवाघोक
एहिमाने राम लोक कुल बेडाईं ॥"

श्री रामचन्द्रजी को बगिचे में यह उपदेश
दिया था कि "अन्तर में एक ही परमात्मा

को दोषो, यद्यपि बाहर नामा दिखाई देते
हैं। अन्तर में बोध रहो और बाहर जब

प्राय समभो। बुद्धि से युक्त त्याग करो,
लेकिन बाहर से बाधित दिखाओ, इस तरह

लोगों में विचरण करो।" देना जाय तो
एह उपदेश इस दुनिया में विचरण करनेवाले

सबके लिए है। लोकयात्रा करनेवालों को
तो यात्राते हुए ही चलना है।

याना महो और शेषलपुर लक्ष्मीजन प्रम-
कर इन्दौर सहर होकर जब खरिद लखोल

में प्रम रहते हैं। रोज नये-नये गाँव में जाते
हैं, और ठेक नये-नये लोगों के दर्शन होते

हैं, परन्तु लगता नहीं कि हम नये लोगों के
बोच आयो है। बेहरे अलग-अलग जरूर है,

लेकिन यही प्रेम, यही भक्ति और धरदा।
जो अग्रम में है, यही मासवा में, जो पूरव

में है, यही परिचम में है, और यही सहर में,
यही गाँव में।

● कुछ दिन पहले हमारा पत्राव एक गाँव
में था। पात्र को सभा हुई। कम सभ्य में

पुस्तक-विप्री दकटठे हुए थे। विचार लोगों के
सानने रखा गया। रामायण को कुछ चौचौ-

दों बा अर्थ भी सबिस्तार समझाया गया।
समा समाच हुई। हम सोने के लिए यकी

गयीं। बोरो देर के बाद गाँव के चार-पाँच
प्रमुख लोग पत्राव पर पहुँचे और बहने लगे-

"आप लोगो बा यह कार्यक्रम एक दिन का
नहीं होना चाहिए। कम-से-कम दो-तीन दिन

एक ही गाँव में आप लोगों को रहना
जरूरत है।

चाहिए। तब ज्यादा लोगों को इसका फायदा
होगा।" वे बायह कर रहे थे एक दिन और

रहने के लिए। हवाग कार्यक्रम तब ही पुका
या धोर हमको बाधे बचना ही था। हमने

उनसे कहा कि इस प्रकार सड़विचारों के
जन्मसे गाँव में प्रेम, एकता खाना चाहते हैं,

तो उसकी व्यवस्था जरूर होनी चाहिए।
● और उस दिन इन्दौर सहर में गीग-

जयन्ती के अवसर पर गीता-भजन में महि-
लाओं को विशद समा रवो यो। समय कम

था, अतः पीछे समय में ही हमने बहनों के
सापने अपना विचार रखा। कार्यक्रम समाप्त

विचरण करो भिन्न चेहरे भ्रमिण दर्शन
विचारों की मूल प्रेम के मंदिरबाहक प्रेरणा के खोल

दुख वी भाषा पराक्रम के क्षेत्र 'धम धर्मिक का, भोग पनिक का ...पुषां
जागृति के लिए धामस्वामिन्व ...सृष्टि की स्वच्छता समूह की अस्वच्छता मंत्रमण-

वेला और तारिणी पक्षिक...

होने पर जब हम बचन के बाहर आयीं तो
कुछ महिलाओं ने और बालेज की छात्राओं

ने हमें घेर लिया, बोली— "हम आपसे बहुत
कुछ सुचना चाहती थी, परन्तु आपने बोड़े में

ही अपना प्रवचन समाप्त कर दिया।" नाद
ही जयना प्रवचन समाप्त कर दिया।" नाद

में जब परिशरो में भोजन के लिए गयो तो
वातबोध में एक गृहिणी ने कहा— "आपका

विचार और सुनना चाहते थे। आप लोगों
को सोलने के लिए बहुत कम समय मिला।"

कुछ बहनें तो हमें ज्यादा दिन सहर में रहने
का बायह कर रही थीं। यह सब देखकर

जगता है कि देश आज सड़विचारों का
भूरा है, देश की नाजुक स्थिति का भाव

सबको हो रहा है, लोग नये-नये मार्ग का
सोच में हैं। ऐसे समय केवल विचारों

के आकिये का काम करनेवाले लोगों की
जरूरत है।

● गाँव के मार्ग में जादिविचारों के दो-
चार गाँव मिले। एक गाँव में ईश्वरदो का

एक बायम था। वहाँ ईश्वरई-नर्म-प्रचारको
का प्रमिधाण होता है। उन लोगों से भिक्षो

का हमें मोना मिला। व्यक्तिगत सुख-स्वार्थ
का हमें मोना मिला। व्यक्तिगत सुख-स्वार्थ

को त्यागकर लोगों तक रंता का प्रेम-संदेश
को त्यागकर लोगों तक रंता का प्रेम-संदेश

पहुँचाने का मकलन नेकर भावे हुए दक्षिण के
पहुँचाने का मकलन नेकर भावे हुए दक्षिण के

देश में शास्त्रिमप ज्ञानि अवर जाना है तो
देश में शास्त्रिमप ज्ञानि अवर जाना है तो

ऐसे ही लखो स्वार्थ-त्यागी, नेवामानी,
ऐसे ही लखो स्वार्थ-त्यागी, नेवामानी,

निरहवारी नेवका की जरूरत है। इस दुनिया
निरहवारी नेवका की जरूरत है। इस दुनिया

में कौने-कौने में सेवा में रत ईसा के भक्तगणो
में कौने-कौने में सेवा में रत ईसा के भक्तगणो

से हमने त्याग कर पत्र-महन जरूर सीखना
से हमने त्याग कर पत्र-महन जरूर सीखना

चाहिए।
● सेवा की दरिद्रता की जानघाटी न सहर

के उच्च वर्ग के लोगों को है, न गाँव के
के उच्च वर्ग के लोगों को है, न गाँव के

भोज्यतो वो है। एक गाँव में हमारा पत्राव
भोज्यतो वो है। एक गाँव में हमारा पत्राव

एक श्रीमन्त (पत्नी) परिचार में था। गाँव
एक श्रीमन्त (पत्नी) परिचार में था। गाँव

में क्या, सारे जिले में यह पहले गम्बर का
में क्या, सारे जिले में यह पहले गम्बर का

बिज्ञान था। उसकी जमीन पर उस गाँव के
बिज्ञान था। उसकी जमीन पर उस गाँव के

७-८० मजदूर काम करते हैं, लेकिन उनकी
७-८० मजदूर काम करते हैं, लेकिन उनकी

हालत क्या है, उस तरफ उसका ध्यान नहीं।
हालत क्या है, उस तरफ उसका ध्यान नहीं।

मुबद्द-नाम भोग-विलास में, नये में रहता है।
मुबद्द-नाम भोग-विलास में, नये में रहता है।

अभी तक उसकी आँखें नहीं खुली हैं। इस
अभी तक उसकी आँखें नहीं खुली हैं। इस

तक बेधिम होकर भोग-विलास में, नये में
तक बेधिम होकर भोग-विलास में, नये में

जो लोग रहे, उनकी क्या दशा हुई?
जो लोग रहे, उनकी क्या दशा हुई?

● सहर की उच्च वर्ग की बहनें छात्रने
● सहर की उच्च वर्ग की बहनें छात्रने

बैठो हुई थीं। गाँव की दरिद्रता का अर्थको
बैठो हुई थीं। गाँव की दरिद्रता का अर्थको

देना हाल निर्मकबदन वर्णन कर रही थीं।
देना हाल निर्मकबदन वर्णन कर रही थीं।

मूल को पानी पत्रके परिचय करने के बाद
मूल को पानी पत्रके परिचय करने के बाद

भी गाँव के मजदूरों को जब पूरव-पूरव खाना
भी गाँव के मजदूरों को जब पूरव-पूरव खाना

नहीं मिलता है, तब उनके दिल के दुख को
नहीं मिलता है, तब उनके दिल के दुख को

किस भाषा में वे व्यक्त करते थे। वे कहते
किस भाषा में वे व्यक्त करते थे। वे कहते

थे— "जब मजदूरी करके पात्र को पर
थे— "जब मजदूरी करके पात्र को पर

लोटेते हैं और पर में पराकर खाने के लिए
लोटेते हैं और पर में पराकर खाने के लिए

पूरव बनाव नहीं रहता है, तब ऐसा लगता
पूरव बनाव नहीं रहता है, तब ऐसा लगता

है कि इस तरह जोने में परना ही अच्छा है।
है कि इस तरह जोने में परना ही अच्छा है।

एपास है ता हूम इ हूर बरल बा भरघक
 नरन करल बाटिण। मानव-बाबा ये
 नरन लक ५५ बा पुन आरररक है। विद्या
 न बसा रधा कोई आररि रंदा नती बा है,
 विद्युपमानवम अरधु सुन अरें, त लेवीमेंदेन-
 व रररक दबाद हूर है, बा बटुण हटा सक।

उभास धरना बा पुन मानवा है, हकमिए
 हमार लाम परमात्मा अ पूरे हए है। ररिब
 हन यमरन रंदा। यमरन-पुनर गुनभावा
 है। यमन रररर रि हन अता समन दूखरो
 को रना जगात। अरगत वरें, हूम विगत
 ओर देना रना क कुण रपासवक बाव
 ओर दास करर ररिदाने बाटिण। गाथावी
 बटा रना ये—रासवक रिउ हमार रागया
 भावतक विगत म ही प्रवत हावा है।
 इगत पहल रि हन जगा वरें रि लाम
 कुरिगारिवा। ररें ओर नगरिग रन बरनामें
 हन अने न महे नी पूर लें कि हयने बहो
 उरक उ होरा नी भाव-परवाण—भोजन
 करवा, भवान, चाना बांधिा मुखा प्रवान
 बा है।

दा म एका भावना नी अरवा है कि
 हर विद्या भाव रागी भावय अररु है।
 बा भावना हमार विगत ओर देना गयी
 बा भाव न नी है। यदि किरी भाव पर
 विरधी ताम बा दाण हा की उरके बिने
 में बाई अररन नही। स्वर्ग नी भावना
 बा स्वतंत्रता न पहल देना प्रवत पो, अब
 बहुत कम दिखावी देवी है। दादर उरके
 लिए गांधीजी बा किर भारतवष म जम
 रना हावा।

मे एक त्रिवेण अरन्य करना चाहेंग,
 विवेक पुन-मुनिरिग त रि ये बाद-विवादा
 ओर नारा में न परें। वरिण परिचम ओर
 समन बा इगत ओर कोई चीज यहा के
 मवनी। हन अपने म परिचमी जीवन की
 प्रवत भावना दिस करें। मेरी समक में
 अरुचे सुगद ओर उरके जीवन के लिए मुशा-
 पारी की बरनी महत्वाभावा पूरी करने बा
 यही तथवा हो सकता है। १३

ॐ ये जनवरी १९५५ न बादागधी में जाफेजिन
 भाखोम विगत बाधेक के पचपत्तें अधिपेचन
 में दिये गये अरुणीम भाषण बा सार।

शान्तिसेना

शांति-सेनिकों के नाम

त्रिप बायु

सन्नेह ब्रह्म वन।

बाव जाना ही है रि निरुद्धे बुद्ध यषो म राष्ट्रविता महात्मा गांधी की पुर्णविधि
 ३० जनवरी को हन 'शांति दिवस' न गात मनात जा रह है। निरुद्धे साक से उषे धाम
 प्यापक रूप से मनाने का निरुचय किया गया है।

शांति दिवस' न मुख्य कार्यक्रम तीन माने हैं

(१) शांति जुलूस, (२) प्रायना-सभा और (३) शांति बिल्ले को विनी।

शांति-जुलूस हर सारा हूम ३० जनवरी को शांति-सेनिका की रंले बरके वे।
 उमन वनम निरुद्धे शाक स हूम शांति जुलूस बा कार्यक्रम मुन्ना रहे हैं। शांति जुलूस में
 रंले बा निरुद्धे रूप मिथेगा। उमने नगर के शांति-सेनिका के अलावा नगर के सारे शांति
 सेमी नगरिग छात्र मयदूर महिलाए आदि भी शरीर होंगे। शांति-जुलूस हा नगर के
 दिवस प्रमुख मैदान म जानर प्रायना-सभा में परिवत हो, ऐसी बल्पना की गयी है। जुलूस
 न नगरिना स पह प्राथना की जाय कि ये वपासअव सकेर ककरे पहचकर ही जुलूस में
 गरीक हो। शरीर हानेवाले गंगा का सक्ता का दस्त हए व ३ ४४ वा ६६ को कगारें
 नी जाय। हर २५ सादन व नीचे ररु-रुक घोषररक (ले हाड) रखा जाय। ऐ-नाई
 पर जुलूस निश्चित सूत्र ही रिखे हा। सूत्र आम तौर पर नगर की प्रमुख भाषा वा भाषी
 म सुदूर दग म रिख हो। मुन्ना के लिए कुण सूत्र दिये जा रह है। लेरिण सार
 खेग चाह ना अय सूत्र भी रिग सकन है। जुलूस म को उदुवाय वरवाये बायें वे भी
 पहल स निश्चि हाने बाटिण। जुलूस म माने हा वा उनका आररुन अरुणा ओर जरी
 आवाज में गावेवालो ने करवाया जाय। यदि अमन हा तो माइनाररिग का उगरोम किंवा
 जाय। जुलूस बीच बीच न वि-जुन मोन रह ता भी अरुद्ध है। यदि अरुद्धे गां नी
 ध्यवाया न हा सके तो मोन जुलूस कराना ही अरुद्धा हावा। जुलूस बा माम पहले से सार
 करक घोषित कर देना बाटिण।

प्रायना और सभा ५ मिनट की मोन प्रायना वा सुवधम प्रायना हो। प्रायना के
 बाद प्रमुख नगरिना के ब्याख्यात भी रंखे जा सकत ह।

शांति बिल्ले शांति दिवस के बिल्ले हमारे पास एने हए रंवार है। हर बिल्ला
 १० पले में उबा जाता है। लेरिण २०० से बरिष बिल्ले मंथवायेवालो को हए उ पले के
 दिग्बाब से बिन्दे देी है। नकद पले दनेवाले वा बी० पी० पी० स मयानेनेवाले को ही परें
 स बिल्ले नेजे जाते हैं। बिल्ले फरवरी को १२ जारीत सक बेके जा सकन है।

आपनी पह पथ हए एन विषेय जिम्मेवारी सुदूर करने के लिए लिख रहे है। इन
 बाहले है कि भारत के सभी प्रमुख नगरों में शांति दिवस वा कार्यक्रम सानदार ढंग से मनाया
 जाय। आपने नगर का कार्यक्रम सफलतापूर्वक पूरा करने न हए आरुने अहोम चाहते है।
 जगत हमारी प्रार्थना है रि—

- आप अपने नगर के प्रमुख लोगों को इस कार्यक्रम की सूचना यात्रिने।
- उनका निरुद्धे रूप की योजना बनाइये तथा काम का रंटनाप कर लायिने।
- इस काम के लिए आवागक हो तो प्रवर्तवारी की सभा भी कोरिये।
- स्वाधीन अलबारा में प्रय कार्यक्रम की सूचना निरुद्धेगाइये। आवागक और दास हा
 तो इस कार्यक्रम की सूचना पर्यी या लाउरररीकर इतर भी दाहर में दीयिने।

भूदान-बादा शुक्रवार, १२ जनवरी, १९५५

यह हमारा कार्यक्रम देना भर में रके-छा-
 पूर्वक ही उद्योग या रहा है। जगत् के जय-
 देशों में भी इस कार्यक्रम के मनाये जाने की
 बाधा है। इसलिए इस कार्यक्रम के लिए
 जो खर्च हो, वह स्वानिक स्रोतों से ही करें।
 पान्ति-सेना मण्डल से आर्थिक सहायता को
 अवस्था रूपका न की जाय। मण्डल तो आप
 ही से आर्थिक सहायता की अपेक्षा रदना है।
 एक और श्रांथना। इसका कर ३१ जनवरी
 को एक पाठवारद द्वारा हमें इस बात की
 सूचना दीजिये कि आपके नगर में पान्ति-
 दिवस किस प्रकार मनाया गया। इस प्रकार
 बा पत्र हम आपके नगर के कुछ अन्य मित्रों
 को भी भेज रहे हैं। आप रूपका अपने नगर
 के सभी मुख्य लोगों का सहयोग प्राप्त
 कीजियेगा।

मुख्य कार्यक्रम शांति-दिवस बिल्के बेचने का
 है। वैसे यह कार्यक्रम देगने में छोटा है,
 लेकिन उद्योग व्यापक विचार-प्रचार की
 शक्यता है। छोटे-ठे बिल्के को लेकर स्वयं-
 सेवक पर-पर तक पहुँच सकते हैं, और
 उनकी बिल्के के माध्यम से गांधीजी के नाम
 का नाम की बातें भी लोग तक पहुँचा
 सकते हैं। आज तो देश के करोड़ों लोगों को
 यह मालूम तक नहीं रहना कि ३० जनवरी
 गांधीजी का निर्वाण दिवस है। ३० मा-
 शांति-सेना मण्डल ने इस कार्यक्रम को
 व्यापकता को देखते हुए पिछले कुछ वर्षों से
 रने उद्योग है। दस वर्ष गांधी-शांति-
 शक्ति की जन-सर्पक उप-समिति ने भी इसे
 पूरे जोर से उठा लेने का निश्चय किया है।
 गांधी-सामाज्यी तक अगर इन बिल्के की बिजो
 की हम लोग एक करोड़ तक ले जा सकें तो
 अपने में यह एक बहुत बड़ा काम होगा।
 इस कार्यक्रम की सफल करने में आपका
 सहयोग मागने के लिए यह यह पत्र लिखा
 जा रहा है।

शांति-दिवस का महत्व और बिल्के-बिजो के
 बारे में व्यापक प्रचार किया जाय।
 ● प्राचीन विभाग तथा शिक्षा विभाग
 से संपर्क करके उनके सहयोग से गाँव-गाँव में
 शांति-दिवस मनाये नए आयोजन करने हुए
 बिल्का-बिजो की व्यवस्था की जा सकती है।
 ● प्रत्येक व्यक्ति जो इसमें रुचि रखता
 हो तथा रचनात्मक मस्योजो के कार्यक्रमों,
 १००-१०० बिल्के बेचने का निर्णय कर लें,
 तो बिजो व्यापक हो सकती है।
 ● प्रातो में विभागीय स्तर पर इस काम
 को उद्योग का करना है। हर प्रांत अपना
 तय्य तय करें। उसको क्षेत्रीय स्तर पर शिक्षा-
 सस्थाओं से सम्पर्क करके बिल्का-बिजो का
 व्यापक रूप दे सकते हैं। हर एक पर में
 संपर्क करके व्यापक बिजो करने का तरीका
 अपने को धिन्ति हो है।

सस्नेह,
 नारायण देसाई, मंत्री
 ३० मा० शांति-सेना मण्डल,
 राजघाट, वाराणसी-१

- घोष-मलक (प्ले-मार्ड) पर
 लिखने के लिए कुछ सूत्र-चात्रय
- विद्वत शांति-दिवस ● मलय बहिष्वा
 - जय गांधी जय शांति ● शांति अमर रहे
 - हमें शांति चाहिए ● सत्य, प्रेम, ब्रह्मणा
 - हिंसा से कोई मसला हल नहीं होगा।
 - शांति से स्वराज्य पाया, शांति में उसे
 दियायेंगे।

शांति-दिवस के पुस्य अवसर पर

शांति-बिल्के का प्रचार कीजिये
 पिछले कुछ वर्षों से ३० जनवरी का
 दिन 'शांति-दिवस' के रूप में मनाया जा
 रहा है। आप इसीकार करेंगे कि राष्ट्रपिता
 महात्मा गांधी के निर्वाण-दिन को हमने
 बन्दो सम्रा नहीं ही जा सकती थी। शांति
 के लिए ही वे जिंके और पान्ति के लिए ही
 वे मरे। आज के युजो-युग अणु के लिए भी
 उनका जोरन पान्ति को दिया में रगारा
 करता है।

वैसे यह बिल्का १० पेंस प्रति बिल्के के
 हिस्सा ले बेबा जाना है, लेकिन आपको
 हम उसे ७ पेंसे प्रति बिल्के के हिस्सा से देंगे,
 ताकि उसकी बिजो से प्रति बिल्के ३ पेंसे
 आपको अपने काम के लिए मिल सकें।
 ३० जनवरी में अब देर नहीं है, इसलिए
 बिजो का सफल बनाने के रना उचिन होगा।
 बिल्का-बिजो का अभियान अभी से ही शुरू
 करके १२ फरवरी तक चलाया जा सकता है।
 शांति-बिल्के की बिजो के सम्बन्ध में
 कुछ मुअय प्रत्यक्ष कार्यक्रमों में उतरे हुए
 कुछ अनुभवों साधियों से रिबे हैं, उनकी
 नीय दे रहें हैं। इन्हें बिल्के की बिजो में
 सहायता मिल सकती है।

शांति-दिवस के कार्यक्रम में सिर्फ बिल्के
 की बिजो का ही महत्त्व नहीं है, बल्कि उसके
 उसके पीछे की भावना का महत्त्व है। सत्य,
 प्रेम और करुणा के माध्यम से विद्वत-शांति
 की रचना पूर्य बापू करते थे। उस विचार
 को व्यापकता और गहराई इस बिल्के द्वारा
 पर-पर और जन जन में प्रेषण करेगी और
 लोगों में अपने प्रति तथा देश के प्रति र्त्त-
 भावना को अगाने का एक महत्वपूर्ण
 कार्य करेगी।
 आपा है, आप इन कार्यक्रम का उल्लाह-
 पूर्वक अपना लें और देश के गाँव-गाँव में
 इन बिल्के को पहुँचाने में हमें सहयोग देंगे।

- स्थानीय अखबारों और रेडियो द्वारा

शांति-सैनिक याद रखें

- कि ३० जनवरी को विद्याल शांति-रली का आयोजन करना है,
- शांति-बिल्के का व्यापक प्रचार एक बिजो करनी है,
- हम-ने-कम १०० बिल्के तो अपने-अपने क्षेत्र में बिजो करें, सच ही
- नये शांति-सैनिक बनायें और अपना प्रतिज्ञा-पत्र फिर से भर कर शांति-सेना
 मण्डल के दफ्तर को भेजें।

'शांति दिवस' के कार्यक्रमों में से एक
 भूतान-युद्ध : सुफवार, १२ जनवरी, '६५

वियतनाम : अमेरिका का सिरदर्द

अमेरिका वियतनाम में कुछ सिद्धान्तों की रक्षा का बोधा उठाकर आया था। वह इस सिद्धान्त को रक्षा करना चाहता था कि प्रत्येक देश को अपने देश से जीवन बिताने का अधिकार है। यह यह सिद्धान्त चाहता था कि युद्ध का द्वारा किसी राज्य की स्वतंत्रता नहीं हूँगी जो सक्ती है। वह यह सिद्ध करना चाहता था कि सामूहिक सुरक्षा का सिद्धान्त व्यावहारिक है। इन तयान्वित सिद्धान्तों की रक्षा का समस्त भार अपने कंधों पर लेकर पाँच लाख से भी अधिक सैनिक उसने वियतनाम में उतार दिये। अत्या डालने का सैनिक-साहस-साधन वहाँ भर दिया और लाखों इंसानों को नारकीय जीवन बिताने को बाध्य कर दिया।

और अब अमेरिका क्या हुआ है कि वह उत्तरी वियतनाम पर सप्त तक बमबारी नहीं रोकेंगे, जब तक या तो यह पुनः नहीं डेक देता या सार्वतन्त्रता के लिए तैयार नहीं हो जाता। उत्तरी वियतनाम के लोग और दक्षिणी वियतनाम के विद्रोही वियतनामों ने तय कर रखा है कि वे अपने मूल की अन्तिम घूट तक सड़ते रहेंगे, अर्थात् अमेरिका के नामने पुटने नहीं देंगे। दोना और की इस हठधर्मों का परिणाम यह है कि आज वियतनाम में भीषण नरसंहार हो रहा है, सत दिन हा रहा है और पिछले दो वर्षों से लगातार हो रहा है। इस नरसंहार का दृष्टांत सभार के इतिहास में कहीं नहीं मिलता, द्वितीय विश्व-युद्ध में भी नहीं।

आज परिणाम सामने है। निष्पक्ष दृष्टि से देखने पर हर कोई यही कहगा कि आज

छा० जयनारायण लाल

अध्यक्ष, राजनीति विभाग, एम० एल० के०
बालेज, बलरामपुर (गुजरात)

स्वयं अमेरिका अपने इन सिद्धान्तों के सबसे बड़े शत्रु के रूप में दुनिया में आगे खड़ा है। अमेरिका के लाख सैनिक क्या दक्षिणी वियतनामों लोगों को अपने देश का जीवन जीने दे रहे हैं? लाखों के प्राण लेकर और

उसमें भी कई गुने अधिक रक्ताना को पशु, भूला, रेंगसा जगा, बहारा बनाकर वह किस गति का पाठ पढ़ा रहा है? सामूहिक सुरक्षा के सिद्धान्त की व्यावहारिकता पर वियतनाम बड़ा प्रश्नचिह्न तय हुआ है? स्पष्ट है कि अमेरिका अपने इन सिद्धान्तों में बुरी तरह अपथल रहा है।

अमेरिका अप्रत्यक्ष रूप से अपनी अन्त-राष्ट्रीय प्रतिष्ठा की भी रक्षा करना चाहता था और अपने मित्रों पर यह प्रकट करना चाहता था कि वह एक सच्चा और अच्छा मित्र है। विपत्ति के समय अपने मित्रों को मदद में बसा स बसा त्याग कर सक्ती है। क्या अमेरिका इसमें भी सफल रहा है? नहीं। वास्तविकता यह है कि वियतनाम-युद्ध ने

ऊँचे सिद्धान्तों की आज में भीषण नरसंहार स्वयं अमेरिका अपने सिद्धान्तों का शत्रु सामूहिक सुरक्षा? बाहरी शक्ति सुरक्षा में विश्व-विश्व में गुस्सिल्ले युद्ध को बढती प्रतिष्ठा चीनी विस्तारवाद साम्यवाद आतंशक के आधार-जनमत का विरोध प्रतिष्ठा पर डेस विपरीत परिणाम शक्ति-क्षय का अर्थ अमेरिका पर सकट ।

लागा पर यह रस कर दिया है कि कोई भी बाहरी शक्ति किसी भी देश की रक्षा नहीं कर सक्ती। अपनी इस प्रतिष्ठा की रक्षा तो अमेरिका कर ही नहीं सक्ता अब वह अपनी सेनाओं की प्रतिष्ठा भी खोता जा रहा है। वियतनाम में गुस्सिल्ला सैनिकों ने जिस प्रकार से अमेरिका की समय और मुष्कित सेनाओं के छत्रों छुड़ा रखे हैं उससे विश्व में गुस्सिल्ला युद्ध की प्रतिष्ठा बढ़ती जा रही है। चीन के पक्षों देश आज गुस्सिल्ला युद्ध से स्याचित है। वे अमेरिकी सहायता से अपने को आवस्यत नहीं कर पाते।

अमेरिका की विद्या-नीति—विशेषकर एशिया तथा अन्य देशों की नीतियों—का आधार माना जाता है, चीन की विस्तारवादी नीति को रोचना तथा साम्यवाद का प्रसार रोचना। जहाँ तक चीन की विस्तारवादी नीति को रोचने का प्रश्न है, अमेरिका ने उत्तरी वियतनाम को चीन के साथ अधिकाधिक चिन्तन रहने को विवक्ष कर दिया है। उसके सामने

और कोई रास्ता ही नहीं छोड़ा। चीन को विस्तारवादी नीति को जो भी देश दक्षिणों पूरा एशिया के पूरे क्षेत्र (बर्मा, मलेशिया, इण्डोनेशिया आदि) में लगी है, वह चीन की अन्धी नीतियों के कारण। जहाँ तक साम्यवाद को रोकने का सवाल है समस्त एशिया और अमेरिका के देश एक-दो को छोड़कर, इस बात पर सहमत है कि उत्तरी मुख्य समस्या गरीबी, भुखमरी, अविद्या और बेकारी जैसी समस्याओं को दूर करना है और ये समस्याएँ साम्यवाद को अधिक आकर्षक बनाती हैं। साम्यवाद को रोकना हमें तो अमेरिका को चाहिए कि वह इन समस्याओं के समाधान में मदद पुजवाये। ऐसे देशों का खाना चाहिए, पुस्तकें चाहिए, रक्षाएँ चाहिए सैनिक सामान नहीं। अर्थात् अमेरिका इसे नहीं समझ पा रहा है।

इन अक्षयताओं तक ही बात नहीं खती अमेरिका को निश्चित रूप से और भी हानियाँ उठानी पडी हैं। आज विश्व जनसंख्या अमेरिका के विपक्ष हो चला है और यह विरोध एशिया और अफ्रीका के देशों तक ही सीमित नहीं है यूरोप और दक्षिणी अमेरिका के देशों में भी बढ़े-बढ़े प्रदर्शन अमेरिका की वियतनाम-नीति के विपक्ष हो चुके हैं। अमेरिका के मित्र देश—ब्रिटेन और फ्रान्स—भी इस अन्याय नहीं।

यह अमेरिका का जनमत अमेरिकी सरकार के साथ नहीं। दुर्दिनीयों वय को कभी हा इस नीति का प्रति अपना विरोध प्रकट कर चुका है। जहाँ ता सामान्य जनता नी एतों सक्ता म प्रदर्शन कर रही है। अमेरिका के सामने व नागरिकों का प्रश्न है कि अपने सन्तानों को वियतनाम में क्या करना रहे हैं? बरसा डालकर क्या हत्या कर रहे हैं? वियतनाम-सामने क्या हत्या कर रहे हैं? वियतनाम-युद्ध में हतना क्यो नष्ट कर रहे हैं?

भूदान यश . शुक्रवार, १२ जनवरी, १९६०

एक राष्ट्रपति वास्तव की गर्दी में बस नीति का गुणोत्थान विचार ही रहा है। विरोध उनके प्रतिपक्ष तक पहुँच चुके हैं और सुरक्षा मंत्री रावट ने इन्हें मारा तो आगे बढ़ने में हाथ मोड़े तब की शोषण का गयो है। राष्ट्रपति जानसब की आत्मीय प्रतिक्रिया को जो टेंप लगी है, उसकी तो कल्पना नहीं की जा सकती है। समस्त विस्त में एक बानी जलना ही इच्छा की उल्लेख करनेवाले जानसब, जान मोड़ने में वैदिक प्रतिक्रिया के हाथ की इच्छुती बनकर रह गये हैं।

साखी विपत्तनामियो के साथ लेने, विपत्तनाम में अपनी कीर विपत्तनामियो की भरती की सम्पत्ति काट करने, साखा माधुमी की ज्ञान्य बनाने, विपत्तनाम की विपत्तनाम बनाने का वर्णनाम बना विक्रम है ? विपत्तनाम में प्रजातन्त्र सुदृष्टिमान हुआ या प्रजातन्त्र और प्रजातन्त्र के समर्थक अमेरिका के प्रति श्रद्धा की लहर उठाने हुई ? इतना निर्णय कोन करेगा ? साहित्य में बड़े विदेश विभागत-अधिकारी या अल्पम विपत्तनामियो की काहे और श्रद्धा ? आर जन्म-मन, प्रतिक्रिया की हानि और विपत्तनाम तथा विपत्तनाम की सुदृष्टि-भूति कोशर अमरिका की क्या विपत्तनाम ? क्या उद्योग विपत्तनाम बहू करने को देना है, जो अमेरिका चाहता है ? क्या विपत्तनाम की धारि पद रही है ? उत्तर है नहीं, नहीं। सुदृष्टिमा सुदृष्टि की शक्यता के पीछे धरंन बनना का प्रयत्नमे होता है। विपत्तनाम की धारि पद रही है, इस अम में वेबल अमेरिका के वैदिक-अधिकारी ही रह सकते हैं, दुसरा कोई नहीं। अमेरिकी मालाए के इस मानसिक और वैदिक दोषाधिकरण का परिणाम मनुष्य भवकर ही रहता है। वह एकमात्र के अंगे देण, अपनी बनता, अपनी प्रतिक्रिया और उन विपत्तनाम का साहित्य अल्पमात्र कर रही है, जिसको दुसरे देते हुए नहीं बनती। वह उनके लिए बना शक्यता में रही है। वह रहता क्या है ? इस उत्तर में निहित है कि यदि अमेरिका की दो क्राइड जलसम्पत्तनाम के उद्योग विपत्तनाम के, जिसके पद बनने अल्पमात्र तक नहीं है, मोर्चा लेने में रह गया हो रही है कि विपत्तनाम उद्योग

विपत्तनाम हो गया, बिना उद्योग हाथ छोड़ कर, उसकी बनता तथा सुरक्षा की मात्तनाम में बदले पर गयी और उद्योगी अल्पमात्रका सोचने लगी, तो उद्योग बनना हीगा, जब उद्योग बनता तब ही जन्म-मन रहता देता

मूर्ताञ्जलि

गांधी-विचार के सक्रिय समर्थन की प्रतीक

३० जनवरी १९६८ को देशगिता महात्मा गांधी की हृदय लाल हृदय पूरे २० वर्ष हो रहे हैं। १० फरवरी को उनकी वाद में उन सभी स्थानों पर, जहाँ उनकी अर्थव्यवस्था जल में प्रकाशित की गयी थी, सर्वोच्च-मते लोगों और लोग उन स्थानों पर गांधीजी के नाम से अद्वैतक के रूप में होकरने मृत की एक-एक गुणो भेंट करेंगे। इस एक गुणो मृत की कोमल शृंग गांधीजी है, शान्ति उद्योग पीछे जो जन्मता तथा अद्वैतक दिया हुआ है, यह मृत्यु है।

गांधीजी मरत और कहिला के आधार पर एक शोषणमयक प्रमाण का निमित्त बनना चाहते थे। वे चाहते थे कि श्रम की परिष्कार बने, उत्पादन के साधन उत्पादक के हाथ में रहे, समाज में समता, वैदिकता की धारि पद है। अमेरिका का जितना संभाव्यता हुआ है, उसको मनुष्य की धर्म-धर्मिक की परिष्कार पीछे है। वह विज्ञान की उच्चता का अल्पमात्र उद्योगों से पैसा बनाना किया जा रहा है, आज बड़ी समाज में विकास का साधन बन गया है। आज देश के उत्तर आर्थिक शक्यता भी बढ़ गया है। पूँजी की ऐसी व्यवस्था गांधीजी नहीं चाहते थे। वे चाहते थे कि हर एक मनुष्य को अपने हाथों तथा बुद्धि से जीवन-निर्वाह करनी तब तक जाने बड़े बर मौजा मिले। उद्योग जीवन शक्यतामी हो, वैदिक हाथोंके सक्रिय पर आधारित न हो।

गांधीजी ने धर्म-व्यवस्था की दो बनपता सुलभ शिष्टुत्तमान में रखी थी, उनको दुरा करने की जिम्मेवारी आजाद प्रारंभ की है। कोई शक्यता हाथ के लोकतन्त्र में नहीं, जिसके पीछे की धारि पदों पीछे में न बना रहे। जिन लोगों ने शक्यता करके अपनी

पीछे में सिद्धता पेशा, विचारों प्राण बनने एतदम कम, हाथीरुबन कम है या होने जा रहे है, उद्योग पीछे छात्र और छात्राव है; जिसने अपनी धारि पदों और अल्पमात्रका दूरी दिया में साथ लेते हैं ?

जमीन की मिलकालक प्रमाणों के हवाले कर ले, वे धर्म-व्यवस्था में बदले पा गये। विपत्तनाम में यह आर्थोत्पन्न लहरक इच्छा रास्ता बिलुक्त एक कर दिया है। इसमें श्रम के बुद्धिमानों का पूरा योग मिलना चाहिए। जन्मता विपत्तनामों वास्तव में विपत्तनाम हो चुके हैं। बुद्धि विपत्तनामों परिष्कार के नेता भी इस बात को मानते हैं कि जो बुद्धि आज तक उठाने किया, उसने जन्मता को बदले तक नहीं लीख चुके। गांधीजी को समझता और उनके अनुशासन बन कराना किसी भी शासनशासकों के लिए वैदिक नहीं होकर चाहिए। इस देश के मानस की गांधीजी ने समझ लिया था। वह देश जिस तरह बन सकता है, वह तरीका वही है वह बना गये। अक्टूबर ३० जनवरी के अन्तर्गत पर हम आत्म-निरीक्षण करें और शोषण-अल्पमात्रक गांधीजी का समर्थन अपनी हाथके दूर की एक गुणो देकर करें।

—उद्योगविपत्तनाम, पत्रकार-राजीव-धामोद्योग धारि पद आत्म-निरीक्षण, आत्म-निरीक्षण

१९६६ जिलादान अभिमान २० फरवरी १९६८ २० वर्षीय मरत देश समर्थने जा रहे दूसरी विपत्तनाम अभिमान के अन्तर्गत १६ से २२ जनवरी तक दूसरी उद्योगों में आर्थोत्पन्न शक्यता-अल्पमात्रक के दौरान १३ नवे पाठयक्रम मिले हैं। परमाणुओं का १४ प्रोसिद्धि में ३५ शक्यताओं में मान लिया। ३३ मोर्चा में बाका है। २० वर्षों २५ दिने बन शक्यता-अल्पमात्रक विपत्तनामों जिसके एक-एक शक्यता में बुद्धि अल्पिक शक्यता शक्यता में शामिल हो चुके हैं। दूसरी दिने में बुद्धि १५० पाठ है।

दरभंगा में शिविरों की शृङ्खला

“आप शिविरार्थी है, ‘भाउड-भोड-नही है। भोड के वाह्य आकृति का चित्र खींचन हुए कोई छोपी रेखा नहीं खींची जा सकेगी। भूमिति की जितनी आकृतियाँ हीं सकती हैं, उन सबका उपयोग करते हुए भी भोड का चित्र नहीं खींचा जा सकता। गिल्ली मिट्टी का एक डेला दिवाल पर फेंक मारो तो जिस प्रकार की आकृति दिवाल पर उठेगी, चायद, वैसे ही भोड की आकृति होगी। और भोड के अन्तरण का तो पता ही नहीं चलता। क्योंकि ‘ए भाउड हैज नो सोल’-समुदाय की कोई आराम नहीं होती, ‘एण्ड ए मोव हैज नो ड्रेन्स’-भोड की कोई दिमाग नहीं होता। किसीने कहा है।” वाक्य पूरे ही होने के कि कोई सत्तर-पचहत्तर ध्वकि विप्राहियों की-सी कतार बनाकर बैठ गये।

बकता आगे बोल रहा है, ए माव इज ए मेन विदाउट रीजन’, भोड माने अक्लहीन मनुष्य। वातिवकरक अक्लहीन होगा तो क्रांति नहीं जा सकेगा, यह स्पष्ट है। इस शिविर में हम लोग कुछ विचार करने इकट्ठे हो रहे हैं।’

इसारा चायद शिविरार्थी समझ गये। हरेक ने कागज कलम सम्भाल ली।

शिविर के सचालक समझा रहे थे—
“भाइयो! शिविर में सारे काम अनुशासन के साथ निरिबधत समय पर अगैर उभय मन्वाये, व्यवस्थित ढंग से होने चाहिए।”

काफो पुस्तक कायकम शिविर में रखा गया था। सुबह ४-३० बजे उठना, तब से १२ बजे तक का कायकम, अल्पक व्यस्त! एक घण्टा विधाम, और फिर कायकम। फिर एक घण्टा विधाम और फिर रात के १० बजे तक कायकम।

एक घण्टे का विधाम ने भला काम चलता है? लेकिन आश्चर्य! सुबह और दोपहर के बर्नों की उपस्थिति में कोई अन्तर नहीं था। बड़ी लगन के साथ सूचयक चल रहा था, शिविरार्थी वतारो से बेंटे क्रात रहे

थे। बकता समझ रहा था, “आम जनता की अपनी एक संस्कृति होती है—सामान्य मानवों की संस्कृति। तो जनता का सेवक कंसा होगा? गुणाल, वपु लखवान, पुर्तोलाल और पुस्त। कुलालान बताया रखने के लिए खेल और कवायद के कार्यक्रम रखे गये हैं।” और कवायद के समय देखा गया कि सारे शिविरार्थी वतारो में खड़े हैं। सभी दिल से हिससा ले रहे हैं।

भोजन के बाद क्या हो? टहलना? नहीं। पठना? नहीं। काम करना? नहीं। एक भाई घोषी नाराजगी के स्वर में कह रहे हैं, ‘प्रदन ही व्यर्थ है, भोजन के बाद एक ही कायकम होता है और उसका नाम है दायन। लेकिन शिविर-सचालकों ने बड़ी निपटुरता का व्यवहार किया, तुरत घण्टी बजा दी। एक दानोन बार सिटी बजा दो। अवाक हाकर भै दल रहा था, अब क्या होगा? किसीने बताया, अब हागी प्रयत्ना।’ सभी भाइ प्रायना म द्यालिन हा गये। एक शिक्षक भाई ने पूछा, ‘तो क्या प्रायना भी क्रांति के लिए जरूरी है? धर्म-निरपेक्षता के जमाने में आप प्रायना का आशम्बर क्यों खडा कर रहे हैं? इसका क्रांति का साथ क्या मेल?’

बकता समझ रहा था—“शरीर, बल तथा अनुशासन क लिए बसतत-कवायद, मनोरंजन के लिए खेल, आत्मबल के लिए प्रायना। हम मानवीय क्रांति को परित्याग करने निकले हैं। इसमें इन तीन प्रवृत्तिया का समान स्थान है। क्रांति का एक बिनाम होता है। उसको तीन गुनाएँ होती है। तो क्या वातिवकारी के जीवन में नम-वे-नम तीन गुणा की जरूरत नहीं होगी? मन, बुद्धि और आत्मा इनमें सामंजस्य की कोई जरूरत नहीं होगी?”

यह था हाजीपुर अनुमंडल का शिविर।

ॐ ॐ ॐ

समस्तीपुर अनुमंडल का शिविर पूछा गेठ में हुआ। निधि समूह करना था। जब प्रवासाजी को पैली भेंट करने थी। एक लाख रुपया इकट्ठा करना आवश्यक माना गया। प्रमुख कार्यकर्ता इस शिविर में उपस्थित नहीं रहे सब। शिविरार्थियों ने ओम तन आया पचोस स वन ही होगी। यह शिविर पाँच दिन चला। ‘सर्वोदय’ मन्दो तो खने मुना था, लेकिन उसका पूरा अब और व्यापकता घोषो का भागूम थी। इसलिए तो शमदान क्रांति का अर्थ समझने के लिए ये नवजवान इकट्ठे हुए थे। जमाना था—जब प्रविशाय शहरी बुद्ध नेताआ तक सीमित था, शिर शहरी कायकतओ तक आया और अब पाया नवजवानों तक पहुँच रहा है।

ॐ ॐ ॐ

एक भाई कह रहे थे, ‘यह क्रांतिया हा शिविर बडा टोप है। इसमें के कई कामरतों बडे कमठ और अनुभवो हैं। मधुसूनी अनुमंडल के सांख्यिकी जीवन क प्रोन’ ही धर्मनिधि। ध्वजाप्रसाद साहू शिविगणिया स कह रहे थे—‘शीला दिया तो रोना क्या रे!’ इस क्रांति में सक्ल भ्रमक दो, क्योंकि अब वह आनिचे चट्टान है, चायद हम लाग के लिए आनिचे रमड है—‘दि लास्ट एण्ड मस्ट’।

शिविरार्थियों ने कहा, ‘शिविर पाँच दिन का नहीं, सात दिन का होना चाहिए। सर्वोदय विचारो को सुनकर हम लामो स उचाह बडा है। लेकिन और कुल गुना धाहते हैं, और बुद्ध: विमान के अनुमंडल समपाचित और एक बरदम अनेशालो क्रांति की परिमाया से हम और गहुर परिषय पाना चाहते हैं। पाँच दिन काफी नहीं, छठ दिन चाहिए।’

शिविरों के साथ एक प्रदर्शनो चलने थी—वेदात से लेकर विमान तक क्रांति का प्रयास विचित्र करनेवाणी। जाना व क्रांति क विचार मुनना और आँखो क क्रांति क चित्र देखना, जितना ये क्रांति क दात बनन। ध्वज, वोलन और दर्शन जानों दाएत क बन्वास था—क्रांति का।

—गोविन्दय्य दशधर

भूदान-पत्र : शुक्रवार, १२ जनवरी, १६

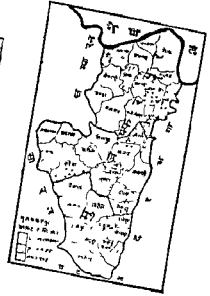
महात्मान्-अभियान : दरभंगा से मुजफ्फरपुर



पटना से विदाई



बिहार में सत्कार



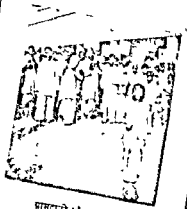
मुजफ्फरपुर की ओर

विहार-दान संकल्प-समारोह का आयोजन

आगामी २३-२४ जनवरी '६८ को पटना में राज्य के राजनीतिक दलों, पंचायत परिषदों, विविध स्वायत्त तथा रचनात्मक संस्थाओं तथा ग्रामदानी नेताओं की सभाएं आयोजित की जा रही हैं। विहार-दान के आह्वान पर उक्त संघटनों के प्रमुख लोगों ने महात्मान् अभियान में सक्रिय होने के लिए यह कदम उठाया है। २४ जनवरी की शाम को पटना की आम सभा में विहार-दान का संकल्प बहुरूपता जायगा। स्मरणीय है कि श्री जयप्रकाश नारायण विदेश-यात्रा पर निकल रहे हैं और विहार-दान संकल्प की भेंट के साथ उनकी विदेश-यात्रा के लिए विदाई दी जायगी।



प्रतीक्षा - सर्वोत्सवों के द्वार पर



ग्रामदानी गाँव का उद्घाटन



स्वागत-भुजा में (सर्वोत्सवों में)

भूदान-समय : शुक्रवार, १२ जनवरी, '६८

शांति-केंद्रों की गतिविधि

आजमगढ़ : सयोजक-श्री मेवालाल गोस्वामी । दोदुरीपाठ ब्लाक में प्रायदान-अभियान में ६१ ग्रामदान हुए । राजभाषा-विषयक विरोधी आन्दोलन के समय शांति-सेनिकों द्वारा आजमगढ़ में शांति के प्रयास किये गये ।

महाराष्ट्र शांति-सेना मण्डल, बम्बई । गत माह में पाँच सिविल हुए—एक नामरिकों का और चार विद्यालयों के । अकोला में दो और परभनी में एक विद्यार्थी शांति-पल केंद्र खोला गया । नासिक जिले के मालेगाँव में कुछ दिन पहले हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ था, वहाँ स्थायी शांति-सेना का समर्थन करने का घोषा गया है । अकोला जिले के सूळो में १३ धमाकें आयोजित की गयीं, जिनमें विद्यार्थियों ने काफ़ी रकम लिया और ५६ किशोर शांति-सेवक बने । अकोला जिले का एक जिला सम्मेलन करने का विचार है ।

पिथौरागढ़ : सयोजक-श्री रामलाल । केंद्र के शांति-सेनिकों के प्रयत्न से एक प्रखण्डदान प्राप्त हुआ । डीबीहाट क्षेत्र में नशाबन्दी अभियान चलाया गया । सर्वोदय-सम्मेलन तथा गोष्ठियों का कार्यक्रम रखा गया । स्थानीय प्रमुख समाचार-पत्रों ने भूदान-ग्रामदान और वर्तमान भूमि-समस्या और उसके उपाय के बारे में लेख प्रकाशित करने में सहयोग दिया ।

जेटुआ : सयोजक-श्री अशोक भकवाणा । केंद्र के आठ-पाठ के गाँवों में जहाँ पहले बिलकुल कर्मों का प्रचार नहीं

था, वहाँ प्रचार किया जा रहा है । लोग कपड़े खरीदते हैं । इन दो माह में ५५ रु ३७ पैसे के कागड़े बिके । शांति-केंद्र की प्रवृत्तियों में लोगों की रुचि अब दिखाई देती है ।

गार्धीमाम : सयोजक-बुद्धिनाथ साहू । गाँव में सर्वोदय-ग्राम रखे गये हैं । कलाई और बुनाई का काम चलता है । ग्रामीण पुस्तकालय का उपयोग होता है । रोगियों की सेवा, अस्व वगैरह के जरिये लोक-संपर्क आदि के कार्यक्रम चलते हैं ।

पोखारी : सयोजक-नागोदरवी शर्मा । बिहार के सूक्ष्मप्रद क्षेत्र में रिक्तों कमेटी की ओर से प्रखण्ड प्रभारी के रूप में सयोजक ने कार्य किया ।

खिमस्तीपुर संयोजक-अमर सिंह वर्मा । शांति-सेनिकों ने जनता में ग्रामदान का विचार फैलाने का, काम किया, सर्वोदय मित्र भी बनाये गये । गाँव में एक पुस्तकालय खोला गया ।

नदौरा : सयोजक-रूपलदेव सिंह । नदौरा ग्राम में सर्वोदय विचार साहित्य के प्रचार का कार्य हाथ में लिया गया । कुछ ग्रामजन शांति-सेनिक बने । एक और शांति-केंद्र की स्थापना की गयी ।

कँचागाँव : सयोजक-निर्मय सिंह । शांति-सेनिकों के प्रयत्न से गाँव में भ्रमों की सख्या कम हो गयी है और कचहरी का माध्यम लेना भी कम हो रहा है ।

हम आपको याद दिलाते हैं

“ कि “भूदान-यज्ञ” का अगला अंक “सत्याग्रह” विशेषांक होगा और ३० जनवरी १९६८ के अवसर पर प्रकाशित होगा । इसके साथ ही “गाँव की बात” परिशिष्ट का भी विशेषांक प्रकाशित होगा । दोनों अंक छपिन एक अभिव्यक्ति वी अन्य विषयों से युक्त होंगे । नोट कर लें १६ जनवरी वा अंक नहीं निकलेगा । विद्योपाक के बाद वा पहला अंक ६ फरवरी को प्रकाशित होगा ।

बपनो प्रति सुरक्षित करावें ।

कहाँ ऐसा न हो कि जब आप विद्योपाक प्राप्त करना चाहें, तो ‘बप्राप्य’ की सूचना आपको देने पड़े ।

दुरंगम आकर्षक मुखपृष्ठ पृष्ठ-संख्या ६४ : मूल्य सिर्फ १ रु० ।

खादी, सपाई, सेवा, लोकसपर्क के कार्य होते रहते हैं ।

तैलहाडा : शांति-सेनिकों की देखभाल में भारत सेवक समाय द्वारा संचालित एक मुफ्त भोजनालय चलाया गया । हर मकल-घार को रामायण पाठ, सर्वोदय इत्यादि किया जाता है ।

लोकवाणा

इंदौर १ जनवरी । देश में श्रो-शांति जागरण का मिशन लेकर थीं विनोबाजी की ओर से १२ वर्ष तक भारत में भूमिवादी महिला लोक-यात्रा को इंदौर जिले की यह, देवापुर और साँवर तहसील के गाँवों में पदयात्रा करते हुए दो माह से अधिक हो गये । इस अवधि में लोकयात्रा-टोलों के ५० पडाव और लगभग २२० मील की पदयात्रा हुई । लोक-यात्रिकों ने करीब १५० समानों और व्यक्तित्व सपर्क द्वारा महिला-जागरण का अपना संदेश पहुँचाया । ५ जनवरी को लोकयात्रा इंदौर तहसील में प्रवेश करेगी ।

खादी और धार्मिकों हमारे राष्ट्र की अर्थव्यवस्था के महत्त्वपूर्ण अंग हैं । इनके सम्बन्ध में पूरी जागरूकी के लिए पढ़िये ।

जागृति (पाठिका)

(सम्पादक जगदीश नारायण वर्मा)

हिन्दू और बड़े-ने में प्रकाशित प्रकाशन का भारतीय वर्ष

खादी और धार्मिकों का कार्यक्रम सम्बन्धी ताज़ा समाचार तथा योजनाओं की प्रगति का मौलिक विवरण देनेवाला पाठिका । ग्राम-विकास की समस्याओं पर व्यापक चर्च करनेवाला समाचार-पत्र । गाँवों की उन्नति से सम्बन्धित विषयों पर मुक्त विचार विमर्श का माध्यम ।

पाठिका शुल्क ४ रुपये एक अंक २० पैसे

अंक-प्राप्ति के लिए लिखें
प्रचार निदेशालय,
खादी और धार्मिकों वर्माशान, ‘प्रामोदय’
इलाहाबाद, बिल्डिंग (परिचय),
बम्बई-५६ पत्त

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १२ जनवरी, १९६८

आन्दोलन के समाचार

ग्रामदान-अभियान :

मैनपुरी में ३ प्रखण्डदान

श्री रामराम माई के पत्न्याचार—
उत्तर प्रदेश के मैनपुरी जिले की अहरारा तहसील में ३ प्रखण्डदान घोषित हुए हैं।
गोविन्दपुर : ३ जनवरी । उत्तर प्रदेश

गांधी स्मारक निधि के तत्वावधान में मौरवापुर जिले के मौरपुर प्रखण्ड में बाटू टोलियाँ गत १८ दिसम्बर से ३१ दिसम्बर तक की पदयात्रा पर निकली थी। इस तीरंघरे चक्र में चार टोलियों को नौ ग्रामदान प्राप्त हुए।

—देवादाँन
कालीकट ३० दिसम्बर। आज यहाँ दो नवे ग्रामदान की घोषणा हुई। ग्रामदान-नूतान अभियान में अब तक १४ ग्रामदान मिले। केवल में अब तक कुल ४१७ ग्रामदान

पूँगिया, २५ दिसम्बर। २२ दिसम्बर को पूँगिया के सर्वोदय-कार्यकर्ताओं एवं अन्य सहयोगी मित्रों को एक बैठक पूँगिया जिला परिषद भवन में हुई। बैठक में २६ जनवरी तक निदान करने के मकसद को दुहराया। अब तक जिले के ३८ में से २४ प्रखण्डदान हो गये हैं। ऐय १४ प्रखण्डदान २६ जनवरी, '६८ तक हो जाय, इस दृष्टि से सभी प्रखण्डों में दक्षिण आन्दोलन चलाने का निर्णय किया। २६ दिसम्बर से १४० कार्यकर्ताओं को दक्षिण कार्य में लग रही है। इसमें बाटू पुष्टि का काम उठा लिया जायगा, जिले २ ब्रह्मपुर, '६८ तक सम्पन्न करने की घोषणा की जायगी। ३० जनवरी से १२ फरवरी तक प्रत्येक प्रखण्ड में घोषणा-सह अभियान चलेगा। इस सीके पर जिले के सर्वोदय मण्डल के प्रमुख लोगों की ११ लोक-यात्राएँ घोषणा-सह रूप व्यापक विचार-व्यचार को दृष्टि से चलेंगी।

बाम्ब, २१ दिसम्बर। पूँगिया के इत्यानन्दनगर प्रखण्ड के सभी गाँवों को ग्राम-समाएँ लट्टि हो गयीं। उनके अन्धकार एवं

भूदान-मठ : गुरुवार, १२ जनवरी, '६८

मनियों का दो विशेषीय विचित्र वाद्य में धीरे-धीरे प्रसाद चौपरीजी के मार्ग-दर्शन में हुआ। करोड़ १०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ग्रामदात्री गाँवों का प्रखण्ड-समाज का सर्वसम्मत चुनाव हुआ। विचित्र का सर्वोद्योग श्री रामावतार भाई ने और समा-वन श्री निमल भाई, मन्त्री, बिहार नूतान-यम कमिटी के व्याख्यान से हुआ।

उत्तराकाशी । ग्रामदान-नूतान टोली उत्तराकाशी में दुल्हा विनाशखण्ड के प्रखण्ड-दान का कार्यक्रम पूरा कर अब दोमरा विनाश खण्ड नोगाँव में कार्य कर रही है। गत १४ नवम्बर को नोगाँव विनाश खण्ड में स्थानीय जनता का एक विचित्र क्रिया गया। बाद में दस ध्यक्त नूतान-टोली के साथ ग्रामदान के लिए निकल पड़े। पट्टाभ के दुर्गम रास्तों को पार कर गाँव-गाँव में ग्रामस्वराज्य का संदेश पहुँचा रहे हैं। विनाश क्षेत्र में ६ टोलियाँ घूम रही हैं, अभियान का मसाला भी मानसिद्धी रावल व भी दयालदासजी कर रहे हैं। अब तक २८ ग्रामदान प्राप्त हुए हैं। बीच में वर्षा न हिमपात होने के कारण काफी ठण्ड हो जाने के बावजूद भी टोलियाँ जवाहरपूँक जुटी हुई हैं। ३० जनवरी '६८ तक जिलादान का स्वरूप किया गया है।

—धनश्याम (नूटी, मन्त्री

जिला गांधी-समाज की समिति, उत्तराकाशी

विचार-सम्मेलन :

सेवापुरी, ३१ दिसम्बर। उ०प्र० गांधी-समाज की समिति को मौर से ५ से ११ दिसम्बर तक कार्यकर्ताओं का एक विचित्र समाज हुआ। गांधी-समाजियों के कार्यक्रमों को जाने बजाने के लिए कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करने, सर्वोदय आन्दोलन के तथ्यों एवं कार्यक्रमों को जानकारी देने तथा निधि कार्यक्रम को गति प्रदान करने के उद्देश्य से इस विचित्र वा कार्योपन किया गया था। प्रान्त की सभी जिला समितियों के मंत्रियों अथवा प्रतिनिधियों, जिला सर्वोदय मण्डलों व गाँव-सेना के प्रति-निधि, छात्री-सत्याजो व अन्य स्वभावक स्वस्थानों के प्रतिनिधियों को इस विचित्र में भाग लेने के लिए आमन्त्रित किया गया था। प्रदेश के ४४ में से ४१ जिलों से लगभग १२४

निधिराशियों ने भाग लिया, जिनमें १७ महिलाएँ थीं।

विचित्र विषयों पर व्याख्यान देने के लिए पूरे समय के लिए श्री नारायण देसाई उपलब्ध रहे तथा विभिन्न विषयों के लिए सर्वोद्योग विचित्र नारायण वर्मा, भा० गो० खेर, रामस्वरूप गुप्त, राधाकृष्ण, कपिल भाई, करण भाई, सुरेशचाम भाई, सरला बहू एव अमरनाथ भाई का सहयोग प्राप्त हुआ। निधिराशियों ने अपने श्रमदान से स्थानीय पुस्तिका तथा कन्पे राले को दुस्त किया। अन्तिम दिन निधिराशियों को शाही-मैत्रिक रैली निकटवर्ती गाँवों में निकली।

अपने-अपने जिलों में आयोजित करने के लिए गांधी-समाजियों कार्यकर्ताओं को योजनाएँ भी निधिराशियों ने बनायी, जिन्हें वे अपने जिलों की समिति एवं अन्य सहयोगियों के द्वारा कार्यान्वित करेंगे।

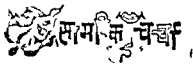
निधिराशियों की १२ टोलियाँ सत्य, प्रेम, मूल्य, प्रकाश, मैत्री, सर्वहारा, कल्याण, सौल, सत्याग्रह, अन्न्य और विजय नाम के बनी थी, जो विचित्र के सामूहिक ठेका के अर्थों में ह्राय भंडारों की थी।

घोषित-समाचार

श्री गांधी कायम, मगहर क्षेत्र के सहयोगी श्री रामयण सिंह का ४ जनवरी को रात्रि में एकाएक हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया। उनकी आयु ९० वर्ष की थी। उन्होंने काशी विद्यापीठ से 'विचारदर' की परीक्षा पाठ करने के बाद सन् '२६ में व्याजर्म में प्रवेश किया, तब से निरन्तर कायम के निवृत्त-मित्र प्रमुख पदों पर कार्य करते रहे। बहुत ही सरल हृदय के और सारो-जगत् के निष्कलन कार्यकर्ता रहे। जनता जगत् चम्पारन जिले में हुआ था और यह परिसर पत्रकार श्री देवजन शास्त्रीजी के कनिष्ठ भाजा थे। वे कने पीछे अपनी पत्नी और भाई का परिवार छोड़ गये हैं। इनके देहावसान से गांधी कायम की, विद्येपकर सारो-जगत् की, अग्रणीय धति हुई है।

मोरखपुर : ४-१-६८

—कपिल भाई



नये र्प की भेंट : दिल्ली की दिल्लीगी

आखिरी डाक से

प्रकृति की रचना भी बर्बोस है हर शक्ति नयी सुन्दर को जन्म देने और हर सुन्दर शक्ति बुझा लाती है। दिन चाहे जो भी हो, महोत्सव चाहे भी रहे, छात्र-पर-नाल गुजर जात है, कभी इस प्रेम में वादे नवरोध प्रगट नहा हाता ।

ललित मनुष्य चायद इस प्रेम की अपनी धोमात्रा में बाधना चाहता है। इस अपने अनुभूत बनाने के लिए उसने समय चक्रों में रात्र को अपना गति वा विभाजित कर दिया है। इस तरह न एन यंत्रद्वारे के अनुसार पुनरा शास जाता है, नया शास जाता है ।

सम्भवत वात वा हर नया धन हमारी पकड़ में नहा आ पाता, इसीलिए हम उसे एक साल की अवधि में पकड़ने की कोशिश करते हैं, या जगत के नयेपन क शास अपने अन्तर में प्रेरणाओं और अनुभूतियों में नवापन भरना चाहते है ।

फिन्तु गत ३१ दिसम्बर १९७ की रात को नयी दिल्ली के कनाट-स्टेज में जिस नयेपन वा द्यान हुआ, वह निहामत धामनाक और मानव की बहुत ही पुरानी अवस्था—जगल-युग वा परिचय देनेवाला है ।

भारत में मानव-अनुभूतियों की अभिव्यक्ति के माध्यम-स्वरूप कला की विभिन्न विभाएँ विचरित हुईं। केवल भारत में ही नहीं, दुनिया के कई प्राचीन स्थाना पर इन विभाओं वा विचारे रूप से चित्रण हुआ था। कला

की ये विभाएँ कला-शासकों द्वारा सामान्य मानव की अनुभूतिया को उन्पतर-विचर पर ले जाने और मुसकृत बनाने का माध्यम थी।

बाज यभाज म पूजीवादी व्यवस्था के अन्तगन जिस यन्त्रीकरण वा विकास हुआ है, उसने कला भी इन विभाओं पर भी अपनी हवा बरसायी है, और इसीलिए आज की पात्रिक-कला उमाद बढाने वा काम बर रही है, संस्कार-परिष्कार का नही। मानव-मन कुष्णोभो ने बोक से दबता आ रहा है। पाराब की पदहोपी से यह बोक हलका करने की सोच तथाकथित आधुनिकनम सम्पत्ता दे रही है ।

नयी दिल्ली में ३१ दिसम्बर की रात को एक डेड हजार मवहोग लोगो ने कनाट-स्टेज की सडक पर युवनिधा के साथ डेडखानी करने, उनके बपडे फाडने, निलज्ज व्यवहार करने वा जो नया प्रदधान किया है वह भारत की राजधानी नयी दिल्ली म नये र्प की नयी भेंट जो है ही, साथ ही दिल्ली क 'नाइट कलगे म चहारदिबारी के अन्दर सम्पत्ता के नाम पर जो कुछ होजा है उसकी एक मोडी अनुकृति भी है, लेकिन उसस अधिक देस के सजग नागरिको के लिए एक जबरदस्त चेलावनी भी है, कि जिस सम्पत्ता मे अभिव्यक्ति और अनुभूति की अवस्था म मनुष्य मनुष्य न रहे जाय, वह सम्पत्ता नवल के काबिल है क्या ?

—राही

● चरिमा, वारामशी म बाजाजित अभिपान में कुल १०० ग्रामदान हुए है ।

● महाराष्ट्र के रत्नागिरी, चांदा और ठाणा जिले में हुई यात्राओं में क्यश ६, २३ और ८८ ग्रामदान प्राप्त हुए है । महाराष्ट्र में अब तक कुल ३,०५३ ग्रामदान हो चुके हैं ।

● पलामू में जिलादान के सदभ में बाजाजित उचरलीय गांधी ने १८ बरलक तक जिलादान कराने का पंचला किया गया है । इसमें सहयोग देने के लिए सभधी छात्रुद्वयस बग और चन्द्रप्रकाशजी को ध्याजित किया गया है ।

● पटना गांधी-दल द्वारा आयोजित हर मुबारक कार्यक्रम में श्री जयप्रवाज नारायण ने धाति और अहिंसा के आधार पर नयी संधान रचना की अभिवापता बढायी ।

● सुगैर के नारेपुर नामक स्थान पर आयोजित सवदलीय बैठक ने २६ जनवरी ६८ तक बज्जारा और भगवान प्रलम्बदान कराने का पंचला किया है ।

● श्री कपिल भाई की सूचनानुसार उत्तर प्रदेश म जनवरी के प्रथम सप्ताह तक कुल २४४१ ग्रामदान हुए । मैंगपुरी के जसराणा तहसील म अभिपान का छिलखिल जारी है । १० १२ ग्रामदान और हो जाने पर तहसील-दान पोषित हो जायगा । ठर कुल मिजाकर उत्तर प्रदेश में ५ अनुमण्डल तथा १७ प्रलम्बदान हो जायेंगे ।

● ओपल, सिवाजिक हिल (हि० प्र०) में २ जनवरी को श्री गांधी उवा कार्यक्रम में सुप्रसिद्ध गांधीवादी अयनाडी स्व० वा० जे० सी० कुमारणा का जन्मदिन मनाया गया । स्मरणीय है कि श्री गांधी उवा आध्यम, ओपल की स्वामता ४०० जे० सी० कुमारणा की सहाह तथा योजना से हुई थी । आपको इस काम के लिए गांधीजी ने हर १९३१ में आपल दान में भेजा था ।

सर्व सेवा सघ न्युज लेटर (अश्वेजी मासिक)

द्वारा गांधी निर्वाण दिवस के अवसर पर प्रस्तुत हो रहा है,

'शांति अक'

हिंसा की ज्वालामुखी पर टिकी हुई भयन्नस्त दुनिया और देश-विदेश में धाति की आकुल चेष्टाएँ

पात्रिक शुल्क वस रूपया एक प्रति एक रूपया सर्व सेवा सघ, राजघाट, बाराणसी-१



भूषण-यज्ञ



जीवन ज्वन हुकाये जाय
करुणा धाराय एसो ।
सकल मापुरो हुकाये जाय
गोत नुधा रसे एसो ।

कम जन्मन प्रबल आकार,
गरजि उठिया ढाके चारिधार
हृदय प्रान्ते, हे जीवन नाथ !
शान्त चरणे एसो ।

आपनारे जने करिया कृपण,
बोणे पड़ेधाके दोन हीन मन
दुवार खुलिया, हे उदारनाथ
राज - समारोहे एसो ।

वासना जखन विपुल भुलाय
अन्ध करिया अबोधे भुलाय,
ओहे पवित्र ! ओहे अनिद्र
रद्रे जालोके एसो ।

जीवन रस जब सुख जाय
तत्र करुणा को धारा बन आओ ।
सकल मधुरता लुप्त होय तत्र
गोत सुधा रस बन कर आओ ।

धूम, प्रबल आकार धरे जब
धिर आये चहुओर गरजता ।
तत्र हे जीवन नाथ हृदय क
अन्दर शांत परण आ जाओ ।

दोन हीन मन निज को कृपण
बनो, कोने न कह्यो पडा हो,
खोल हृदय पल समारोह के
साथ उदारनाथ आ जाओ ।

विपुल वासना धल उड़ा जब
मुक्त अबोधको अन्धा कर द भेरमा,
दे तत्र हे पवित्र ! ओहे अनिद्र ।
तुन लद्रे प्रमा बनकर आ जाओ ।

[अग्रणी पत्र भविष्य की धम्मपुत्र
के निर्देश
अद्वैतवाचन में २४ म २० नवम्बर १९५० तक
बापू ने
उपरोक्त विद्या था । उक्त कर्मकर पर
(१) बापू ने
२५ को २४ पाठ इनामा था]

सर्वे सेवा संघ का मुख पत्र

सम्पादक : रामभूति

वर्ष : १४

शुक्रवार

२० जनवरी '६८ अंक : १६-१७-२८

इस अंक में

सत्य की खोज में हमारे यह अंक

—सम्पादक १८०

सत्याग्रह : प्रतिकार से पहलू तक

—ति० न० आश्वय १८८

बदलते 'धर्म' और बदलते 'आग्रह'

—रामभूति १९४

जागतिक सत्य और अज्ञान की पुटन

—समकाल गद्दी १९६

उपवास से उपवास तक

—शशि २०३

सत्याग्रहों का जीवन-चक्र

—दादा धनशिकारी २०६

विचार में सत्याग्रह के प्रयोग

—जॉन फारनर २०७

दिलोस की आतिथ्यागत और सत्याग्रह

—कल्याणुमार २१०

एक उपवास और कुछ प्रतिश्रियाएँ

—तीरा २१४

"और दिशा की धार कूटित हो गयी

—अनिकेत २१५

सत्याग्रह : द्विचक्र प्रतिकार का विच्छेद

—रामान २१९

कच और पावन की नीतिगत

—माचारे इतालनी २२३

अविद्या, हिंसा और अहिंसा

—काफ खलेकर २२४

सूक्ष्म के बीच जगत्समुत्थी

२२३

आन्दोलन के अन्धकार

२२६-२३१

गौतमी की बात : विनिपाक परिशिष्ट

सांख्यिक युक्त : १० ५०

१० पृष्ठे : इस अंक का : १ ५०

साधारण राश-मुक्त—

१ शीघ्र या २१ घण्टा

राश-मुक्त : बेगो के अनुसार)

सर्व-सेवा-संग-प्रकाशन

राजघाट, आगरा-१

फोन नं० ४२८२

विधायक सत्याग्रह

कुछ लोग कहते हैं कि सूक्ष्म, सूक्ष्म और सूक्ष्म प्रक्रिया निकालकर सत्याग्रह का विचार ही बना ने हुआ में उठा दिया। लेकिन सोचना चाहिए कि लोकसभा में, जहाँ मस्यदा का पूरा स्वातन्त्र्य है, पूरा अपिचार है, वहाँ विचार-प्रकार की स्वतन्त्रता न० १ में इच्छा में ही और न० २ में भाव में है—इसको विचार-प्रकार की नहीं स्वतन्त्रता है उस वातावरण में हमें सत्याग्रह-प्रक्रिया पर जरूर सोचना चाहिए और उसकी क्षमता करने चाहिए। इससे बात : विज्ञान के जमाने और क्षुण्डितान के जमाने में सत्याग्रह बदलते जाते हैं, वेते ही सत्याग्रह का जो रूप बदलता या नहीं? पाषोको बड़े परिवर्तनीय थे, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में हम क्या कर सकते हैं ?

मे यह कहना नहीं चाहता कि इस विषय का कुछ निष्पत्तिक रूप हमारे हाथ में आ गया है। बल्कि यह चाहता हूँ कि उदरग भाव से विचार होना चाहिए। यह नहीं मानना चाहिए कि विनोद से सत्याग्रह का विचार ही उठा दिया। उठे यह यह है कि सत्याग्रह का लोक समर्थन ही और उभरने तक अकुञ्चित रहे, इसके लिए विचारों का सजीव बनना होगा। अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में जब समझे उठते हैं या अमानि होवो है, उस तक यह आपसो ही सोचना होगा। और ऐसे अन्तर-अन्तर से सोचना नहीं होगा, नभे उभरे सोचना होगा। मे उठनी उकझाल में नहीं जा सकता। वह जो चर्चा का विषय होगा, लेकिन आग्रहधारी कार्य तो मैं उनको कहूँगा कि सुभ प्रेम से धारो। बातचीत के लिए धारो, या सकते हो। दूसरे अपने अपने मिलने के लिए धारो, करेंगे नहीं। हमारे बहनें उनसे मिलने के लिए धारो, करेंगे नहीं। हृय उनकी प्रेम के मुकाबले, पर वे कोई मजबूत नाम हमने करवाना चाहते तो हम कहेंगे कि हम इन नहीं मान सकते, चाहे हमने संभव कर दो। यह एक सोचने की बात है। यह कोई 'निर्देष्ट' सत्याग्रह नहीं, 'परिचित' सत्याग्रह है। नुरे काम में मान न लेता, इसको 'रेजिस्टेन्स' (विरोध) नाम देना गलत है। वह तो 'रेजिस्टेन्स' है, पूरे तरह है सावधानी को सोचने में। जब 'सावधानता' रहे कि 'अज्ञान' कि रहमें सुधारों भी सुधार है, वेर की सुधार है, परतते का भी सुधार नहीं चाहिए, तो यह काम 'रेजिस्टेन्स' के साथ नहीं है। मुझे तो ईसा का नाम इस नाम का भी बुलावा कर दिया कि 'रेजिस्टेन्स' का हीना विचार करो। कुछ लोगों ने सुधार के विरोध मत करो। लेकिन मुझे बड़े बड़े का ठेका पकच है, चाँकि जहाँ 'मित' का विरोध करने की प्रवृत्ति होती है, वहाँ बड़े 'मित' ही वेर में राखित होगा है। तो मेरे जो मिशाल उतर दो है, वह 'रेजिस्टेन्स' ही नहीं है। लेकिन लोगों में वृत्ति होगी है का उठाते है। लेकिन यह चर्चा का सवाल नहीं है, इसकी वृत्ति

(शोधुपी, वर्ष, ०-५-६४)

—विनोद

सत्याग्रह की उत्पत्ति

'सत्याग्रह' शब्द का निर्माण मेरे द्वारा दक्षिण अफ्रीका में उस दृष्टि के लिए किया गया था, जिसका पूरे आठ वर्षों तक वहाँ के भारतीय प्रयोग करते थे। उस समय इंग्लैण्ड और दक्षिण अफ्रीका में 'पैसिव रेजिस्टेंस' नाम से जो आन्दोलन चल रहा था, उससे भेद दिखाने के लिए यह शब्द बनाया गया था।

इसका मूल अर्थ है सत्य को पकड़े रहना यानी सत्यबल। मैंने इसे प्रेमबल या आत्मबल भी कहा है। सत्याग्रह का प्रयोग करते समय मैंने बहुत प्रारम्भ में ही देख लिया था कि सत्य के अनुसरण में अपने विरोधी के प्रति हिंसा करने को कोई स्थान नहीं है, बल्कि धैर्य एवं सहानुभूति के साथ उसे उसकी गलती से मुक्त करना चाहिए; क्योंकि जो एक को सत्य प्रतीत होता है वही दूसरे को गलती के रूप में दिखाई दे सकता है। धैर्य का तात्पर्य स्वयं कष्ट-सहन है। इसलिए इस सिद्धान्त का अर्थ हो गया—विरोधी को कष्ट या पीड़ा देकर नहीं, बल्कि स्वयं कष्ट उठाकर सत्य का रक्षण।

सत्याग्रह और निष्क्रिय प्रतिरोध में उतना ही अन्तर है जितना उत्तर और दक्षिण ध्रुव में है। निष्क्रिय प्रतिरोध की कल्पना तो एक निर्बल के अस्त्र के रूप में की गयी है और उसमें अपने उद्देश्य की सिद्धि के लिए शरीरबल या हिंसा का उपयोग वर्णित नहीं है, जब कि सत्याग्रह की कल्पना परम शूर के अस्त्र के रूप में की गयी है। और इसमें किसी भी प्रकार या रूप में हिंसा के प्रयोग के लिए स्थान नहीं है।

२५-३-१९२०

—महात्मा गांधी

सत्य + प्रेम = सत्याग्रह

लोग पूछते हैं कि आपको सहयोगी समाज बनाना है या सत्याग्रही? वावा नहता है कि भ्रूदान-यज्ञ सत्याग्रह का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। वावा गाँव-गाँव जाता है, भूमि की मालवियत गलत है, ऐसा जप करता है। व्यापक प्रचार करता जा रहा है। चाहे धूप हो, बारिश हो, वह घूमता रहता है, घूमता ही जा रहा है। यही तो सत्याग्रह है।

सत्याग्रह के मानो यही है कि सामनेवाले के प्रति प्रेम होना चाहिए। उसका द्वेष करना गलत है। अगर चिन्त में द्वेष है तो शस्त्र से रुढ़ना बेहतर है। इसलिए यह जरूरी है कि हम पहले अपने चिन्त से द्वेष हटाये। तभी हमारे सत्याग्रह में बल आयेगा। इसलिए महात्मा गांधी ने कहा था कि सत्याग्रह में एक पद अध्याहृत है। सत्याग्रह मध्यमपदलोपी समास है। सत्याग्रह यानी सत्य के लिए प्रेम द्वारा आग्रह। अगर हम सत्य और प्रेम, दोनों को झटका करेंगे तो समाज आगे बढ़ेगा, उत्पादन भी बढ़ेगा और समस्या भी हल होगी।

१६-१२-१९५५

—विनोदा

सत्याग्रह : प्रतिकार से सहकार तक

'सत्याग्रह' शब्द सत्कार को गांधीजी ने दिया। 'सत्य' और 'आग्रह', दोनों शब्द प्राचीन हैं, श्रुत्य का अपना अर्थ है और आग्रह का अपना अर्थ है, और इन दोनों शब्दों के मेल से बने 'सत्याग्रह' का अपना विशेष अर्थ है।

गांधीजी जीवन की ओर जिस दृष्टि से देखत थे, जिस प्रकार का जीवन जीने को कल्पना करते थे, और सामाजिक सम्बन्धों में जिस प्रकार की व्यवहार-नीति का पुस्तकार करते थे—इन सबको उन्होंने 'सत्याग्रह' नाम दिया।

सत्य एक आध्यात्मिक निष्ठा का विषय है। और पिछले दिनों अध्यात्म का सम्बन्ध प्रायः, नलती से, परलोक से अधिक रहा है। लेकिन गांधीजी का सत्याग्रह विचार अहिंसक समाज रचना के लिए आया है, उसकी दृष्टि पारलौकिक नहीं, ऐहिक ही है।

जीवन पद्धति

मानव के इतिहास में सत्यनिष्ठा नयी बात नहीं है। उपासियों ने सत्य की खोज करते हुए यम के द्वार पर तीन दिन तक भूख-प्यास से रहनेवाले नविर्बन्तों को सत्यभूति कहा गया है और इस सत्यभूति शब्द का अर्थ सत्यनिष्ठ या सत्याग्रही ही है।

सत्यनिष्ठा की खातिर सारे सांसारिक सुखों का और शरीर तक का त्याग करनेवाले सत्यवीरों की कमी नहीं है।

जीवन व्यवहार का आधार प्रेम है। गांधीजी कहते थे कि अहिंसा का भावरूप या विचारक रूप प्रेम है। मनुष्य को जाने के लिए शोभी-बहुत हिंसा करनी ही पड़ती है। यह हिंसा स्वभावगत है, अपरिहार्य है। परन्तु मनुष्य के पुत्रपार्थ वा विषय वह नहीं है। उस अपरिहार्य हिंसा की मात्रा को सतत कम करते जाना मनुष्य के प्रयत्नों का लक्ष्य है। मनुष्य को हिंसा से प्रेम की ओर कदम बढ़ाना है। यही सांस्कृतिक प्रगति या सम्पत्ता है। इसीको गांधीजी अहिंसा कहते थे और इसी प्रवृत्ति का विधात्यक पहलू प्रेम है।

मानव-जीवन के विकास की परिपक्वि

उसके आध्यात्मिक विकास की प्रगति में होनी चाहिए। केवल भौतिक सुख से उसका विकास पूर्ण नहीं होता, उसका नैतिक विकास भी अवश्य होना चाहिए। नैतिक विकास का अर्थ है—हृदयस्थ प्रेम भावना का विकास। इस नैतिक विकास को आध्यात्मिक विकास भी कहते हैं।

इस प्रेम-भावना के विकास के लिए युगो-युगा से महापुरुषों ने अनेकविध साधनाएँ की हैं और उनके जीवन में यह आग्रह स्पष्ट उबरकर दिखाई देता है कि ध्यानगत मुख की खातिर दूसरों के सुख की हानि कदापि न की जाय। सत्याग्रही जीवन-पद्धति का यह गर्भ है।

कार्य पद्धति

भौतिक सुख की प्राप्ति हेतु भाौतिक ज्ञान की भार्यदा न ही होती है। इसलिए समाज में जब इतनी सर्वाति निर्माण नहीं हो पाती कि सबको भरपूर सुख मिल सके, उस स्थिति में उस समय के महा-पुरुष स्वयं सत्याग्रह स्वीकार करते हैं और समाज को वैराग्य और संयम की शिक्षा देते हैं। मन्दासियों के इस प्रयत्न के फलस्वरूप समाज में विषमता की घार घाँसी-जड़त भाषी जरूर होती है, परन्तु सामाजिक जीवन की समस्याएँ ऐसे वैयक्तिक सत्यास में हल नहीं होती हैं। उसके लिए समाज की भावदयकताभर साधन-सम्पत्ति वा उत्पादन बढ़ाने का प्रयत्न करना होता है। इसलिए आध्यात्मिक विचारधारा वा 'वैकल्य सत्यास'-मार्ग सामाजिक विकास के लिए पर्याप्त नहीं है। इसके लिए कमनिष्ठ अध्यात्म चाहिए। और, गांधी के सत्याग्रह-विचार में यही बर्न और अध्यात्म का सम-वय है, जा उसकी महत्त्वपूर्ण विशेषता है।

सत्याग्रह मन्वाध नाग नहीं है, प्रखर सामाजिक कमयाग है। नागराशासक एरलव की माननेवाला और तदर्थ सामाजिक जीवन के समस्त धेया में समता स्थापित करना चाहनेवाला मानवतावादी विचार है। इसी-लिए वह मानव-मानव के बीच भेद निर्माण

करनेवाले सभी शक्तियों का निरसन करने को उद्यत है। राजनैतिक परतन्त्रता, धार्मिक विषमता, सांस्कृतिक उच्चनीचता जारि भेदभाव की समाजजीवन से दूर किये बिना अहिंसक समाज की निर्मित सम्भव नहीं है यह सत्याग्रही निष्ठा है।

इस प्रकार 'सत्याग्रह' शब्द एक विविध जीवन-पद्धति का और एक विविध कार्य पद्धति का चोतक है।

सत्याग्रह प्रसंग-विशेष पर एक प्रतिभार पद्धति भी है।

अहिंसा की अनिवार्यता

सत्याग्रह की मूलभूति अहिंसा है, प्रेम है। प्रेम का अर्थ है दूसरों को आनन्द देना। सामान्य मनुष्य अपने प्रिय व्यक्ति के सुख से सुखी होता है और उसके दुःख से दुःखी होता है। इससे आगे, जो व्यक्ति दूसरों के सुख में अपना सुख देता है और दूसरों के दुःख में अपना दुःख देता है, वह परमयोगी या विश्ववन्द्य कहलाता है। सत्याग्रही आत्मोपम्य की इस नृति को एक कदम और आगे ले जाता है। वह दूसरों के दोषों को अपना दोष और दूसरों के अशर्यों को अपना अपराध मानता है।

इसलिए सत्याग्रही परम हृदयगो हाता है। गांधीजी बहते थे कि सत्याग्रही का कोई वैरो नहीं है। सत्याग्रही की दृष्टि में हर एक अपराधी या अन्यायी व्यक्ति एक भद्रता, बहका, गुणभद्र भाई है। इसलिए प्रत्येक को निस्वार्थ सेवा करना, प्रतिप्रेम की ब्रह्मा रखे बिना प्रत्येक से प्रेम का व्यवहार करना प्रेमपर्यं वा अर्थात् सत्याग्रह का लक्षण है। अपकार करनेवाले का भी उपकार करना सत्याग्रही जीवन का नियम है।

गांधीजी को अहिंसा व्यापक थी। 'यह अनेक प्रवृत्तियों और अर्थमूलक थी। हिंसा भेदप्रवृत्त और स्वाधमूत्रक ही है। भद स जेभेद की धार जगमर हावा हो मानवाय प्रगति है। इसलिए सत्य का आश्रय वा अश्रय वा विरोध करत बरत निमी ना द्युक्ति का पारदर्शिक वा मानसिक हानि नही पहुँचना है। बर्नाकि अयाय वा अशर्य वा उठ स्वयं और ट्रेष है और स्वाय धार इय स ही हिंसा

के लिए महापुरुषों ने और समाज-मुधारकों ने यह धर्म स्थापित करने का प्रयत्न किया कि किसी भी दाय या अपराध का उचित ही दण्ड दिया जाय, अधिक नही। इससे पहले मृत्यु आदि दामनिक घमघुआ के ये उपदेश प्रसिद्ध हैं—'आईं पार आइ, दूष फार दूष' (जोख के बदले जोख, दंत के बदले दंत)। यानी चांद एक जोख पोडता है तो उसके बदले में एक (हो) जोख फोडी जाय, एक दंत तोडता है तो उसके बदले में एक (हो) दंत ताडा जाय। इसमें बदले में एक दंत ताडने का विधान नही, अनेक दंत तोडने की मनाही है। भारत में प्रचलित घमघुआ के पीछे भी यही विवेक रहा है, अमर्षाईं प्रतिकार को मर्षाईं में सीमित करने का प्रयत्न रहा है।

राजनीति के उपाय चतुष्टय सववित्तित है साम, दाम, भेद और दण्ड। इसमें

देने से उधरकी शत्रुता दूर हो सकती है। इस उपाय को 'साम' कहा।

अपर इमम काम न चला ता युद्ध करक दानो पशो की अपार हानि—मनुष्य का और धन की भी—करने की अपेक्षा शत्रु को कुछ देकर शत्रुत्व किया जा सके, तो क्या हानि है? युद्ध की टालने क लिए कुछ से-देकर सामला निपटा देने का यह उपाय 'दाम' कहा गया। सामोपाय से काम न चले ता दानोपाय से काम लेना चाहिए।

अपर इसमें भी काम न बना ता युद्ध का रास्ता है ही, लेकिन युद्ध करत समय अपनी पक्षि और शत्रु की शक्ति का हिमाव करना पडता है। शत्रु के बलाबल का विचार किये बिना युद्ध देखने में खतरा ही है। इसलिए दण्ड से पहले बेदनीति का विचार करना होता है।

भेद म मुख्य बात शत्रु की शक्ति तोडने

तुल्यबल से काले के प्रयोग का एक स्वरूप है।

पुराईं या हिंसा का तुल्यबल से प्रतिकार करने में वह निश्चय नहीं है कि हमें विजय मिलेगी ही। वही प्रतिकार जब अधिक बुराईं से करते हैं, तो विजय भी सम्भवता तो है ही। विजय पाने के हेतु ये ही, अधिक बुराईं का सहारा लिया जाता है, इसलिए वह परिणामसंप्रद है।

लेकिन तुल्यबल से प्रतिकार करने में परिणाम की निश्चित नहीं है, यह परिणाम निरस्य है। इसके पीछे यही विचार है कि विजय मिले या न मिले हम तो अधिक बुराईं का सहारा नहीं लेना है। दंत अथ में यह पौषिक उपाय है जब कि अधिक बुराईं अपामिक्त है। तीसरा प्रकार बुराईं के बदले भलाईं

इसके बाद तीसरा प्रयोग सामने आया— बुद्ध मध्यमालीन सत्त और यानी के युग में। इहाने स्पष्ट कहा कि बुराईं का प्रतिकार भलाईं से करो, बुराईं से नही। स तो क सामने यह प्रश्न था कि स्वयं हिंसा नही करनी है, तो दुजनों का प्रतिकार कैम हो। सववित्तित या तो यह वकाला है कि उसक सामने कोई दुजने है ही नहीं। लेकिन यह अरूप मानव की वृद्धि के बाहर की चीज है। मानक ता अरूप हा रहेनाशाल है समाज में दुजने भी रह्य ही, इसलिए प्रतिकार का क्या उपाय हो सक्ता है?

भगवान् बुद्ध और मध्यमालीन सत्ता के जीवन म हम देखते है कि उन्होंने बानो सववित्तित जीवन निष्ठा का प्रयोग दण्ड विधि में किया, उसका विनिषाम दोषत्रय के प्रतिकार के लक्ष में किया। बुद्धि बरपाने कर्ता स भी प्रम करना है और सववो आत्मबन्ध देखत हुए, हर प्रकार का दण्ड सत्त नरत हुए सववो सेवा करना सववित्तित निष्ठा का प्रमुख लक्ष्य है, इसलिए सर्जों के जीवन-व्यवहार स यह समीकरण सिद्ध हुवा कि दुजना के प्रतिकार का अर्थ है, दुजना का प्रतिपार, और इहोका अर्थ है बाहर दिखईं देनेवाली दुजना को अपने हृदय में सोजना। इस प्रकार दुजना के प्रतिकार का अर्थन का माय बनता है शमयउ



हिंसा के बदले हिंसा

यद्यपि दण्ड का अन्तिम यानो सबसे अधिक कारगर उपाय माना है फिर भी उसका अन्तिम मानने का यह भी आशय है कि और किसी दण्डनिष्ठ उपाय से काम न चले ता ही उसका सहारा लिया जाय।

जो व्यक्ति सज्जन है, त्यागनिष्ठ है, समझदार है उससे शत्रुता बहुत गलतफहमी के कारण होती है। इसलिए उसके साथ चर्चा करने से, उसे अपनी बात समझा देने से और उसके साथ मित्रता के प्रसंग निर्माण कर

की होती है। इसमें शत्रु के पथ म फूट डालना, नाना प्रकार के मतभेद पैदा करना, आमक घिझावों का प्रचार करना, ताकि उसका सामाजिक संपर्क डीला हो जाय, विभिन्न वर्ग विषह निर्माण करना ये सब बातें आती हैं। यह 'भेदोपाय' है।

यह भी काम न चले तो ही 'युद्ध' करना जो प्रत्यक्ष हिंसाकाय है।

इस प्रकार युद्ध का एक अनिवार्य बुराईं के रूप में मान्य करता बुराईं का प्रतिकार

रहना, बलेय सहन करना, उदात्ताव और निरुत्कार-वृत्ति रखना, नम्र रहना, अधीन्य भाँति, पुत्र हृदय और प्रबल-साहस्य रखना तथा काल-व्याप्य कृता ।”



हिसा के बदले हिसा नहीं

ध्यान देने को बात यह है कि यही सर्वो को जीवन-मदति रखी है और यही जनकी प्रतिहार-मदति भी रही है। मूल जीवन-मदति ही प्रथमपाद प्रतिहार-मदति के रूप में प्राक्लिप्त होती है, दोनों भिन्न नहीं हैं।

मानवान् दुष्ट ने कहा—‘अधोप से बोध को जोरो, साधुना के अवापुना को जोतो।’ इसी प्रकार ‘न पापे प्रतिपाप. स्यात्’ (पाप के बदले प्रतिपाप न हो) भादि व्यवहार-मूल बने।

इस बीच दो प्रकार सात पहले ईसा ने कहा—‘बुराई का प्रतिहार न करो।’ उसका प्रथम वाक्य है—‘निर्विक्र नाट इविक्र।’ प्रतिहारमिय लोको ने उस वाक्य का अर्थ यह किया कि बुराई का प्रतिहार बुराई से न किया जाय। लेकिन ईसा का वाक्य तो यही है कि बुराई का प्रतिहार न करो। ईसा ने उपदेश दिया कि ‘यदि कोई एक पाप कर सपष्ट मारे तो उसके सामने दूसरा पाप कर दो, कोई दुन्दुबे कोट मरि तो तुम उनको बरान् बुराई की उत्तरकार दे दो।’

भूतान-स्यः सत्यापद अर्थः ३० जनवरी, १६८

इसके बाद गांधी का पुत्र माना है। गांधीजी दुष्ट के समान बुराई का प्रतिहार मलाई से और हिसा का प्रतिहार अहिंसा में करने के पक्षपाती दिनाई बन्ते हैं।

इस प्रश्न का मार्मिक विस्तरेण विनोबाजी ने इन शब्दों में किया है —

‘प्रायः लोग यह एक श्लेषार्थ दिया करते हैं कि ईसा का यह उपदेश कि ‘कोई एक पाप पर सपष्ट लयावे तो दूसरा पाप आने करो’ अथवा एकनाथ का शरीर पर दुर्वर्तों के बुरकने पर बार-बार नहाना, अप्रतिहार-पुत्रक है, गांधीजी का उपदेश अहिंसात्मक है, लेकिन प्रतिहारमूल्य है। किन्तु मुझे इस श्लेषार्थ (विचार) में भ्रम भाङ्गन होती है। मार्मिक श्लेष ही श्लेष, तो ईसा के बचन में भी प्रतिहार दिखाई देता। ईसा का बचन यह नहीं कि ‘कोई तेरे पाप पर पाप लगावे तो तू उस ओर ध्यान न दे’ वा ‘दुष्ट रह।’ बल्कि यह है कि ‘दुष्टता पाप आती कर।’ जिन्हें ‘प्रतिहार’ शब्द के प्रति प्रेम है उन्हें इससे समझान हो सकेगा।

‘लेकिन मेरे समाल से यह समझान और यह श्लेष, दोनों सर्वथा विरुद्धोपी हैं। परिपूर्ण निर्धर और निर्दर पुष्ट का सद्बन व्यपहार



हिसा के बदले अहिंसा

भादे सधरा स्वका सक्रियता का हो, निष्क्रियता का या प्रतिक्रिया का. एकपक्ष ही होता है। दुर्वर्त शरीर पर प्रकृता है, तो कोई निर्दर पुष्ट स्वयं भी अपने शरीर पर प्रकृता है। इसका निर्दर पुष्ट कुच न करते हुए

रखा जाय तो भाव जो बुराई का सामास्य है, वह अपने भाव सफाया हो जायगा।

इसका सुन्दर उदाहरण गीतात्मिक धर्म प्रह्लाद में मिलता है। वह अपने साय पर बसिना रख, हर प्रकार का कष्ट सहन कराता

पुष्टकृता भावे बड़ जायगा। लीसप निर्दर पुष्ट एकनाथ महाराज के समान स्नान करेगा; तो बोधा निर्दर पुष्ट प्रथम मुष्ट से और आत्मोप मानना से सामनेवाले का बचन पकड़ेगा, ऐसी ही बलना की जा सकती है।”

शकित्त्व व्यक्ति-विशेष के वाचरण को बाधार मानकर विस्तरेण करने में विशेष धार नहीं है। शतवा विचार ध्यान में रख लेना पर्याप्त है कि दुर्जगता के प्रतिहार को जोख करते-करते विचार का किस रूप में विनाश होया गया है।

प्रतिहार को तीन अवस्थाएँ देखीं।

बहिष्क बुराई से प्रतिहार, समान बुराई से प्रतिहार, और मलाई से प्रतिहार।

चौथा प्रकार ‘बुधई की उपेक्षा

प्रतिहार का चौथा प्रकार ईसा के बचन के बहिष्क निकट का है। यह है बुराई का किसी रूप में प्रतिहार ही न करना। जिस प्रकार

अन्धकार मिथ्या है उसी प्रकार बुराई भी मिथ्या है। अन्धकार को मिटा देने का कोई

स्वतन्त्र प्रतिहारोपक कर्म नहीं होता। बत्ती

जलाता हो जाती है, उसी प्रकार बुराई को

सर्वथा उपेक्षा कर दो जाय और अपनी ओर

से मलाई का प्रेमवन्त कि...

वदलते 'सत्य' और वदलते 'आग्रह'

(कुछ पहलू)

१ स्वराज्य के पहले और बाद का 'सत्य'

स्वर्गीय डा० राम मनोहर लोहिया को सर्वोदय से एक शिक्षायत यह थी कि उसने गांधी को छोड़ दिया है। वह कहते थे कि गांधी के बाद सर्वोदय गलत पर काम, प्रेम पर अधिक जोर देने लाया है, और आग्रह को तो सर्वोदय जैसे भूल ही गया है। कहाँ वह किसी अन्याय का प्रतिकार करता है ? यह शिक्षायत डा० लाहिया को ही नहीं था, कुछ दूसरे लोगों की भी है।

डा० लोहिया उन लोगों में थे जिनका यह विश्वास है कि समाज-परिवर्तन केवल सरकार से नहीं होगा, उसके लिए जनता की शक्ति आवश्यक है। ऐसे लोग व्यापक धाम के किसी प्रश्न को लेकर चलाये गये जन-आन्दोलन को जन-समित्त सशक्ति करने का बहुत कारगर उपाय मानते हैं। वे चुनाव लड़ते हैं, सभ्य में भाषण देते हैं, लेख लिखते हैं, लेकिन शक्ति की असली शक्ति के लिए सधर से दूर समाज की ओर देखते हैं। कई लोग समाज की ओर देखते देखते 'मजक की राजनीति' में उतर जाते हैं।

डा० लोहिया ही नहीं, जब तो प्रायः सभी पार्टियाँ का यही मानना है कि प्रतिशर का आन्दोलन सधमुक्त बाहर होना चाहिए, अमृतली और पालियामेण्ट को उस आन्दोलन को यकीन पहुँचाने के लिए है। 'सत्य' दल का हो, और 'आग्रह' के दो मोर्चे हो, सधर और मजक, यह ही सधवाग्रह की नयी व्यूह रचना जो आज देश में देखने को मिल रही है।

डा० लाहिया 'गांधीवादी समाजवादी' बड़े जाते थे। उन्होंने गांधीजी के प्रभाव को देखा था, और उनके नेतृत्व में उनके तरीके से काम किया था। डा० लोहिया का हृदय गांधीजी के हाथ था। सोचने की बात है कि जिस व्यक्ति को यह भूमिका रही हो, उसके मन में तो वहाँ 'सत्य' का चिह्नका 'आग्रह'

वह चाहते थे, और 'आग्रह' का बीजका स्वभाव था जिते वह ठीक सगभते थे, और जिते सर्वोदय ने अभी तक ग्रहण नहीं किया है। गांधीजी ने 'सत्य' के प्रयोग' करके जितने 'सत्य' निकाले थे उनमें से देग ने 'अधोको भाष्य छोडो', के ही सत्य को सबसे अधिक उत्साह के साथ स्वीकार किया था, और इस सत्य को चिडि के लिए अग्रहयोग और अना आदि का विदेशी सता से टकर लेते का जितना शार्पस्य था उसे उत्साह के साथ अपनाया था। इस एक सत्य और उसके आग्रह के मिश्रण गांधीजी के दूसरे सत्यो को देग ने कभी नहीं अपनाया, यह धारने की बात है। जनता को जाने दें, राजनैतिक दलों ने गांधीजी के अन्तिम राजनैतिक सत्य को यकी नहीं स्वीकार

डा० लोहिया की शिक्षायत मौनसा सत्य किसका आग्रह मुकानिल लोहिया-ससा नया श्राति दगन

किया ? बाधित ने स्वतंत्रता के लिए त्याग और उपस्था की थी, और इस बल पर अन्धरी एक नैतिक शक्ति बढायी थी, इसलिए गांधीजी चाहते थे कि अनेक वषों के त्याग और उपस्था से जो नैतिक शक्ति बनी थी वह नैतिक-शक्ति के साथ रहे, राजनैतिक दूसरा के लिए छोड़ दी जाय। जो शक्ति स्वतंत्रता प्राप्त करे, वह उसका उपयोग न करे, बल्कि राजसत्ता के मुकानिले शोकमृता को मजबूत करने में लग जाय, यह सदा' मानि-दर्शन के सारे इतिहास में गांधीजी की चिन्तन थीर अमिनय देन थी। यह एक सत्य था जितने गांधीजी को इतिहास के दूसरे सब श्रातिशारिषों से अल्प कर दिता है। और, इनके दिनों बाद, जब लोग महगुस करने लगे हैं कि यह 'सत्य' लोकतन्त्र के विकास में एक नये अन्याय का शारस्य-विडु था। सन् १९८० की उनको यह बात उन तमाम लोगों पर लागू है जो जन-शक्ति बढाने राजनैतिक न विरासत करते हैं।

आखिर, गांधी के बाद गांधी का दूसरा कौनसा 'सत्य' है जितके 'आग्रह' भी बात बड़ी जाती है ? क्या सन् १९२१, १९३०, १९३२, १९४२ के 'सत्य' बोधदाने की बात है ? या २६ जनवरी १९४७ के सत्य की अमल में जाने की है ?

२६ जनवरी, '४८ वा यह 'सत्य' स्वराज्य के निर्माण और सगठन के लिए था, जब कि उसके पहले के 'सत्य' स्वराज्य की प्राप्ति के लिए थे। दोनों की एकतामि उपा प्रयोगन में अन्तर था। गांधीजी की कहना थी कि लोकतन्त्र के विकास के लिए जनता की सशक्ति नैतिक शक्ति को सशरार की शैतिक-शक्ति के ऊपर रहना चाहिए। यह सभी होता जब 'नेता' समाज में रहते, और प्रतिनिधि' सरकार में जाते।

देविन क्या बाधित, और क्या दूसरे दल, स्वराज्य के बाद सब नेताओं ने गांधीजी के सत्य से निम्न रास्ता पकडा। सदा में

मजक की राजनीति नयी व्यूह रचना अग्रहयोग और अजडा राजनैतिक न विरोधवाद का जन्म

पूडूकर बाधित ने लोकार्थिक की बात ही छोड़ दी। उनमें राजनैतिक दाय ला-रत्वाण की नीति और याजन बनयो, और उसीनी रीति-नीति का प्रचार करना शुरू किया। उसका दबबर्षण याचनावा न भूल सधो का स्वीकार कर 'श्रायो' दल को उठी 'लाक-न्यायवाद' में शरीक हो गये। इस तरह बाधित और उसका विरोधी दल मजकवाद और न्यायवाद के समान वर्ग में

लाहिया स विन अपने शार्वीतीर के लिए भारत का अना श्रातिशिक, नैतिक और श्रातिशिक स्वतंत्रता प्राप्त करना बारी है। लोकतन्त्र की चिडि में भारत अंग्रेजों के बड़े उमरो शैतिक (शिक्तिनी) उपा नागरिक (निविल) शक्ति में प्रमुखता के लिए टकर अमिनय ह था। उस टकर की सकेन्द्र दल और श्रातिशिक सगता' की हाथ न अवरज बनना चहिए। श्रातिशिक का सधवाजवाद, २२ जनवरी, '४८ (१) लाट्ट केन, १९८६) —हारा

भूदान-यदा : मत्याग्रह अंक : ३० जनवरी, '६८

एक बन गये। परिस्थिति तब बदली जब विरोधी दलों ने देना कि कांग्रेस गद्दी से हटती नहीं, और उन्हें परो पर बैठने का मोना मिलता नहीं। इस मन स्थिति में उग्र विरोधवाद का जन्म हुआ। विरोधवाद को मजबूत करने और पुनराजीवोतने की दृष्टि से जनता के प्रशोधन वा उल्लेखाल किया जाने लगा। नये प्रशोधन उभाते नये और पुनराजीवोतने नये, और बोधे दिलो में विरोध-वादी राजनीति उग्र प्रदर्शन से द्विपक्ष तोड़-फोड़ तक पहुँचा ले गयो। इस छोटी कार्रवाई को जन-आन्दोलन का नाम दिया गया। परोष की परोषी और अज्ञान की अज्ञानी, धाम और उत्तेजना के इस दो सारो का प्रभूत्व पायदा उखाया गया। लेकिन जनता की उत्तेजनोत्तमो और जनता की पेशाओ का दल के लिए सत्ता प्राप्त करने का हथकण्डा बनाया गया, न कि सत्ता की तुलना में जनता का मजबूत बनाने के लिए।

देना, इस 'शैल्य' और इस 'आपद्' का रास्ता सर्वोपय ने नहीं एकमा है। विनोबा ने भारत की परिस्थिति में सर्वोपय को एक नयी धारा बहायी है। क्या उजवा मेल माधोनी के 24 जनवरीवाले शैल्य से नहीं है? और, क्या दलों के 'शैल्य' का माधोनी अथवा देश को परिस्थिति के साथ मेल है?

माधोनी के जमाने में विदेशी साम्राज्य-वाद की जड़ें भारत के बाहर थीं। उसे भारतीय जनता की सम्मिलित या पक्षिक नहीं प्राप्त थी, कुछ सामन्तवादी दलों का हथकण्डा नले ही प्राप्त रहा हो। लेकिन स्वतन्त्रता के बाद जो सरकार धनी वह लोकप्रिय सरकार थी, और लोकतन्त्र के प्रबल और मान्य नियमों के अनुशासन वाली थी। उस लोकप्रिय सरकार को जनता के नाम में मोड़ने का उपाय ही अधिकांश या जिनका उपेक्षे विचारियो को। सन् 1943 के पहले जनता के नाम में चलने का अधिकांश केवल कांग्रेस को था, क्योंकि वह साम्राज्यवादी सरकार की विरोधी पक्षिक थी। यह अधिकांश उस समय की सरकार को नहीं था, वह सरकार दूसरी रही थी।

अपनी राज के अन्त के बाद देश को भूदान-यज्ञ : सत्याग्रह अंक : ३० जनवरी, '६०

जो मजबूत परिस्थिति (टोटल डिप्युएशन) भी उसीका एक अंग थी नये देतो सरकार। वह विजयगीम्य द्रव्य नहीं थी। इसलिए उमे हय उस तरह अलग करने नहीं सोच सकते जिस तरह हय विदेशी सरकार को अलग कर लेते थे। जाहिर है कि रोष विरोध-वाद न हमारा 'शैल्य' हो सकता था, और न हमारा 'आपद्' हो सकता था, हमारा नया 'आपद्'। तो, हम क्या करते? शिवाय इस तरह के 'आपद्' के? देना के किसी दल की राजनीति के पास जन-आन्दोलन का दूसरा नया तरीका कांग्रेस और सविद दोनों की राजनीति ने- यह सिद्ध कर दिया है कि दल की राजनीति और नागरिक की पक्षिक परस्पर-विरोधी तर्क है। राजनीति ने तो नागरिक का विलुक्त अलग कर दिया है, ठीक उसी तरह जैसे पञ्चवर्षीय दोदनाओं ने उसे अलग कर रखा

जनता की उजजवा - सत्ता-प्राप्ति का नया हथकण्डा सर्वोपय की नयी धारा अग्रणी राज के बाद तनाव-टकराव-पथराव-पेराव - नागरिक का दण्डमाल तानाशाही या सुलुठी अधातकता को आमरण है। मोनो नागरिक को दक्षेपाल बरतो है, उसकी स्वतन्त्र सत्ता को नहीं खींचार बरतो। सत्तावाद, बल्यापवाद, और विरोधवाद के अन्वय का सम्मिलित रूप से यह स्पष्ट परिणाम हुआ है कि सरकार की सत्ता और जनता की समत्या रा कोई सम्मत्य ही नहीं रह गया है। सत्ता और समत्या एउ-दूबरे से अलग हो गये हैं। भारत-भेते बने, विविध, अविस्फुट देना में सत्तावाद, विरोधवाद और बल्यापवाद का सीधा अर्थ है पक्षिक (स्टेटको) का सर्वधन तथा तानाशाही या सुलुठी अधातकता को युवा आम्भन। आज कोन करेया कि यह उग्र के किनार पर पहुँचा हुआ हमारा यह देना अब इन शर्ता से अलग रह गया है? आतिर, ऐसा हुआ क्यों? सीधी बात है कि देना के नेताओं ने स्वतन्त्रता के बाद का 'शैल्य' नहीं पहचाना। वे जल-जलम अपने-अपने दल ने 'शैल्य' को ही 'देना' का शैल्य मानते रहे, और उसीका

अपने-अपने ढंग से 'आपद्' करते रहे। उनकी छोटी पक्षिक सरकार-परिवर्तन में ही लगी रही। उन्होंने समाज-परिवर्तन पर ध्यान ही नहीं दिया। समाज-परिवर्तन के लिए आवश्यक या नेतृत्व (लोडरशिप) और सामिन्व (शेनरशिप) में परिवर्तन। हमारे नेता आज भी इसके लिए नहीं तैयार हैं। उनमें मध्यमवर्गीय राजनीति, मध्यमवर्गीय अर्थनीति, और मध्यमवर्गीय शिक्षानीति ने आगे जाने की पक्षिक नहीं दिखायी देती। स्वतन्त्रता इस सबका यह परिणाम हुआ कि सरकार बदलने के नाम में एक के 'शैल्य' को दूसरे के 'शैल्य' के साथ टक्कर हुई, और 'आपद्' ने तुले आपसी सत्य का रूप ले लिया। और, यह सारा व्यापार जनता के नाम में हुआ, और होगा क्या जा रहा है। बनना सरकार का शैल्य देख रही है। पर क बिनाय से घर में आग लग रही है। विपटन बरत सीमा पर पहुँच रहा है।

प्रश्न है कि क्या नागरिक पक्षिक के सपटन और विचार का कोई दूसरा रास्ता था? क्या सत्ता की राजनीति (पावर फालिटीव) के शिवाय और युग नहीं था? निश्चित रूप से वह उपाय यह था कि आज को मजबूत परिस्थिति (टोटल डिप्युएशन) को अस्वीकार किया जाय, प्रबलित अर्थनीति, प्रबलित राजनीति, और शिक्षानीति को एक-ही स्वराज्य के नाव का पहला 'शैल्य' थी। एक परिचित घरे के अन्तर राजनैतिक विरोध-वाद, या प्रतिभारवाद, या टकराववाद के रास्ते पर चलना एक बात थी, और माधो के बताने हुए, परिस्थिति के अनुकूल, नये रास्ते पर चलना दूसरी बात। दोनों विलुक्त भिन्न चीजें हैं। विरोधवाद का नाम सोड के उन्माद (मॉड रीजन) से चल उठाया है, लेकिन अस्वीकृति, और अस्वीकृति के आधार पर नयी इति, का हाथ लारु-आन्दोलन (माड-मूवमन्ट) के दिना नहीं चल सकता।

मिले, लेकिन मान्यता 'सर्व' की ही होनी चाहिए।

एक समय या जब 'सत्य' के लिए युद्ध (वार) करना पड़ता था। युद्ध टला तो संपर्प (कान्फ्लिक्ट) करना पड़ा। संपर्प कम हुआ तो दबाव (प्रेसर) की कार्रवाई से काम लिया गया। अब लोकतन्त्र में दबाव को जगह मनाव की सम्भावना प्रकट हुई है। और, जब ग्रामस्वराज्य की सहायरी, स्वाधायी, व्यवस्था में शिक्षण की दार्ष्टिक प्रकट होगी ता मनाव की जगह विचार काम करेगा। ग्रामदान-आन्दोलन में हजारों-लाखों लोगों का स्वामित्व-विसर्जन के कागज पर हस्ताक्षर करना इस बात का प्रमाण है कि 'सर्व' की बात कहनेवाले 'सत्य' का सहज प्रवेश लोकतन्त्र में होता है, जब कि एकांगी और आधिपक (सेक्सनल) मूल्य उत्तेजना और उन्माद पैदा करते रह जाते हैं। इस तरह के एकांगी सत्य से, चाहे वह साधक और सहीद का ही क्यों न हो, नये समाज का निर्माण नहीं हो सकता।

एक बार जब हमने लोकतन्त्र की यह बात मान ली कि 'सत्य' का कुछ अर्थ सर्वके पास है, और 'सर्व' की सम्मति में ही सत्य सर्वमान्य हो सकता है, तो सत्य के लिए 'आग्रह' का आग्रह छोड़ना ही होगा। जो सत्य ५१ के पास है उसे ४६ के ऊपर लादा जा सकता है, इस अव्यायपूर्ण और अव्यावहारिक पद्धति के लिए नये लोकतन्त्र में कतई गुंजाइश नहीं होनी चाहिए। आज हम सामाजिक विकास की जिस मजिल पर हैं उस पर समाज द्वारा मान्य हो चुके सत्य के लिए प्रसावध 'आग्रह' के नाम से प्रत्यक्ष कार्रवाई (डाइरेक्ट ऐक्शन) भले ही आवश्यक हो, लेकिन किसी नये सत्य को मनवाने के लिए आग्रह कदापि नहीं किया जा सकता। विज्ञान और लोकतन्त्र दोनों की 'स्तिरिट' सत्य को ग्रहण करने की है, न कि अपने 'सत्य' के लिए आग्रह करने की। इतिहास में आज तक सत्य को सामान्यत 'आग्रह' की ही दार्ष्टिक से मनवाया गया है। आग्रह में प्रयोग भव्य की दार्ष्टिक का है—भय नकं वा, मृत्यु का, यातना का, आर्थिक क्षति का, सामाजिक अप्रतिष्ठा

लोकहृदय में सत्य या सहज प्रवेश 'भय की मुक्ति' 'लोक की शक्ति' हृदय की, विचार की 'सर्ज' अणुयुगमा सबसे बड़ा 'सत्य' 'सही विचार'—समने पड़ा आग्रह' समाज-परिवर्तन की नयी दार्ष्टिकमिक्स ..

का, सुविधाओं के अग्रहण का, आदि। अब नये जमाने में सत्य को इसलिए मान्य होना चाहिए कि वह सत्य है। सत्य इस तरह मान्य होगा भी, वसतः भ्रष्ट सत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाय, और उसे जाति के द्वेषों, वर्ग के स्वार्थों, और दल के आग्रहों के साथ न जोड़ा जाय।

आज के जमाने का सबसे बड़ा सत्य 'सर्व' है। विज्ञान और लोकतन्त्र के युग में 'सर्व' का नाश, या 'सर्व' का उदय, इन दो के सिवाय कोई तीसरा विकल्प नहीं है। इस सर्व को 'स्टैट-लेफ्ट-सेन्टर' की राजनीति में, मार्क्समजदूर की अर्थनीति में, या जाति की समाजनीति में बाँटना, और मनुष्य के ऊपर तरह-तरह के 'लेबुल' चिपकाकर उसे दुराज या सहार का शिकार बनाना पोर 'बसत्य' नहीं तो और क्या है? बात यह है कि हमारे दिमाग अब भी उस बीते युग से चिपके हुए है जब राजा से अधिकार छीनने और वृद्धि-पति से मुनाफे के बंटवारे में लिए लड़ाई करनी पड़ती थी। हमारे देश में साम्राज्यवाद ने मुत्ता छीनने की अनेक बरों तक जो लड़ाई चली उसे बीत अभी थोड़ा ही दिन हुए है। उसी संस्कार और उसी दिमाग से हय 'सर्व' की समस्याओं को सत्ता की छीना-काटो के साथ जोड़कर हल करने का मिथ्या प्रयत्न कर रहे हैं। नीयत हमारी जरूर यह है कि सत्ता जनता की मुक्ति का साधन बने, ज्विन हम स्वयं मुत्ता के मद और माह स मुक्त नहीं होना चाहते। हम नाम लेते हैं 'राज' का, लेकिन उसकी दार्ष्टिक में हमें भरोसा नहीं है। लोक की दार्ष्टिक बन्दूक या कानून की नहीं हो सकती, उसकी दार्ष्टिक तो हृदय की, विचार की, ही होगी।

हम कब मानेंगे कि 'सर्व' दूट अणुयुग का सबसे बड़ा 'सत्य' और 'सही विचार' सबसे बड़ा 'आग्रह' है? 'सर्व' के साथ जुड़े हुए 'सही विचार' न मनुष्य का अदर पुष्टने की अद्विष्ट दार्ष्टिक है। इसलिए बावजूद

व्यवसायवाद, सम्प्रदायवाद, और सत्तावाद क कुप्रभावों के, विचार की शक्ति, यानी हृदय परिवर्तन, समाज-परिवर्तन की नयी 'शान्ते-मिष्य' बनकर सामने आ रही है। 'सर्व' के साथ जुड़े हुए विचार में जो दार्ष्टिक और आश्वासन है वह न छेठ की पूंजी में है, न मोटा के सत्य में। आज हर देश में सामान्य मनुष्य उसी आश्वासन का भूखा है। उसीकी उलगा में वह कभी छेठ के पास, कभी शैतिक के पास, कभी नेता के पास, कभी दासक के पास, तो कभी सन्त और साधक के पास, भटक रहा है।

आज की राजनीति और आज की अर्थ-नीति 'सत्य' को 'सर्व' के साथ नहीं जुड़ने दे रही है। इटोके कारण विज्ञान समाज का साथ नहीं जुड़ने पा रहा है। इन्होंने ही लेफ्ट-तन्त्र का 'लाक' से अलग कर दिया है। इनको जीवने का काम 'सर्व' का सत्य ही कर सकता है।

'सर्व' का सामने आते ही 'सत्य' का और उसका 'आग्रह' का स्वरूप बदल जाता है। अब प्रश्न केवल 'सर्व' के बल्याण का नहीं, 'सर्व' की मुक्ति का है। इस भूमिका में हम एक बार बदलते 'सत्य' और बदलत 'आग्रह' का सामने की शक्ति करें।

—राममूर्ति



सूचक—१ धरया

मरने-जात-मान-प्रदाशन
राजपाट, वाराणसी-१

जागतिक संत्रास और आत्मा की घुटन

“बचन और कथ जाने है। भीतर का 'मे' और दृष्टपटा है।... 'बेनियाँ' को सत्य और तेज होती है, 'गुणित' को बाबाब पुन. जंघो होती है। गुणों-गुणों से 'मे' मुक्त होता चार्टा है, लेकिन परवचता की शीशलें निरन्तर अनेक होती जाती हैं।

पाव में रूपों का 'मे' चीमता है।
 "Man is born free, yet he is every where in chains—यद्यपि मनुष्य स्वतन्त्र प्रन्मा है, तो भी वह हर जगह जंघो में प्रकटा हुआ है।"

लेकिन क्या मनुष्य का पैदा होता ही 'मे' के अस्तित्व को चीमाता में जकड़ने की मनदूर स्थिति नहीं है? एक दूसरी जुगोती धारण जाती है। मासिक बहता है—“मे इसी रूप से रह सकता है कि मैं अनुभव नहीं कि मैं अपने शरीर का हूँ, उसके साथ स्वयं को पहचानूँ, या कि मैं अपने शरीर को उप-कारण के रूप में इस रूप से पानूँ कि मैं उसके द्वारा दास बना लिया गया हूँ। उदाहरण के रूप में आत्महत्या के मामले में मैं स्वतन्त्र-पूर्वक अपने शरीर को समान करता हुआ देखा जा सकता है। किन्तु इन स्थिति में मैं दुःशासक भ्रम का शिकार बनता हूँ, और अपनी स्वतन्त्रता के सारासामक अर्थ में इन मुलावे को स्वीकारात्मक प्रतिबन्धन देने की संभावना है।” (‘विश्व एचिजर्नल’ विचिन्तित चिकित्सा पृ. १६)

‘मे’ के अस्तित्व के समस सारी है दूसरी 'जुगोती' 'पुरु' की। हीपर के अनुसार—
 “मे अपने सारे समाजवादी को पुरु में नष्ट होने देखा है, मेरो कि दूसरी को समाजवादी उनको जारी में नष्ट हुई थी। इस प्रभुन सम्भावना के समस दो सारे है—स्वीडिश या विभाजित।

जीवन और मनुष्य को अनिवार्य विषयका के बीच—“साथ छदार में मुझे अपने जीवन के लगावों और अर्थों से अलग करता है। यह मेरे सम्बन्धों और पूर्वसिंशारों में अन्त-निहित होकर मुझे इस मान्यता से अलग कर

देता है कि मैं उस निर्व्यक्तिकलात्मक दृष्ट निरन्तर, अप्रापिक अस्तित्व को जारी रख सकता हूँ, या मजान प्रत्यलो से 'मेरे स्वयं' अस्तित्व का संवितिक भार को सफा है, और यह (मेरा स्वयं) मैं किसी भी रूप में नहीं हूँ, किन्तु हमारा 'होअंता' हूँ, क्योंकि मैं बनने को आसा करता हूँ।”—हीपर की अनु-मूर्ति व्यक्त होती है।

मानव-मन तदपता है, 'जन्म', 'जीवन' और 'मृत्यु' के मास 'मे' का अस्तित्व क्या है, नहीं है, किस रूप में है, नष्ट सम्भता चाहता है, अपने होने की सार्यकता का अनुभव करता चाहता है, लेकिन आतक की कारा में अन्वयण और घना होता है, अन्यो मन रोसनी की एक-एक किरण के लिए अकुलाता है।

× × ×
 • बंधनों का कसाव मुक्ति की आशाज अस्तित्व की तरकड मस्तु की चुनौती स्वीकृति या विघ्नति अनिवार्य विघ्नना तिराहे पर भगवती भीष्ट भूख भूख भूख घटाघर की चेतावनी

घर के एक प्रमुख तिराहे पर भागवी भूई भौंड। गाडा कुदरा यातावरण पर एक बीकम्पा बनकर लट गया है। टिडुली ह्येतियो को जोबरकोट की बेन में गरम करने की चेष्टा करते हुए मैं श्रुती पर जा रहा हूँ। धीन को छरी से बचाने के लिए बान को मफकर मे बच्छो तरह ढक किया है—दानी अच्छो तरह कि घदर का सामान्य बोलाहल मुनारं नही पाव रहा है। पैदल जा रहा है, इसलिए मुख्य सारक पर नहीं, दापी पटरी पर चल रहा हूँ। बिलम्ब तो हो ही गया है, इसलिए पहुँचने की जल्दी है। ध्यान आहित की कादलो की भीर है। 'बास' की तल की नाती की अनुभूत दिमाग में अभी भी बाकी है।

बचानक पाँव में टाकर-नी लगती है, गिरवे-गिरते टेकोकोन के सभने का सहरा निकर बिशी तरह बच बाता है। और जब निगाहें भुक्तनी है, तो कुछ धायो तक भुक्ती

ही रह जाती है! यह एक मानव की छरी है, जो धारद लया नन चुरी है, या तो बननेवाली है। प्राय, नयो टाट के चिपपों में अचलिपटो। मानव-अस्तित्व पर एक मूर व्यय। पास का घटाघर... 'टा...टा...टा...' की मूज दम बार जनवरो की इस सर्द हवा में दुहरकर चुप हो जाता है, सिर्फ उसको प्रतिध्वनि मुझे आगे बढने को बाध्य करती है। मंटा एक पग उठता है, एक नदन फासला तप करने के लिए दूधरा जागे बढना चाहता है कि तयो उव छरी का मूसा हुआ एक हाय प्रयानपूर्वक मेरा सार्वा पाँव बकड तेता है। जिसे मैंने लाज मान लिया था, उसकी हरकत मुझे जद बना देती है। मयिपल-नी पलने से आधी बरी पीली जांगो के बीच टिको हुई पुनक्तिपों नेरो जोर निबर है, भाक-मुँह से भाकर बदन आ रही है, उनके होठो पर हल्की-नी हरकत होती है। धारद यह बुज बहना चाहता है। मैं यह नहीं समझ

पाता कि वह क्या चाहता है। घटाघर की चेतावनी याद वाली है, लेकिन मेरे बन्दर ब्यात जन्मा मुझे जाने बढने नहीं दे रही है। मूनाप्राय हाय मेरे पाँव में सला बेडी बन गये है। मैं शरद-उधर जाऊंगा हूँ। गामे हूर पर बेंडा एक भिखमना कीटी, जो कई घालो से इसी बगह भगनना की दुवारें देकर भोख भोगता रहा है, और बिचके टूटे अलमनुयिम के बटोरे में वेदन भिलने के दिन प्राय हर महीने में पाँव भेंडे दाखला रहा है, मेरी ओर देवकर कहाता है, 'जाते बाबूजी, जाये बाणी राह।' 'अब क्या?—'अब तो मेरा शरम है। 'साते का मूल मे, पीत लहरी में सुरामा के चौपट तक पहुँचा दिया है।... (उसकी आवाज कुछ और जेंडी हाथी है।) 'येत खपन है बाबूजी... अब मूल का सवाल उसके शानने न रहा... अब सब कुछ उसके लिए बेसार...! एक धाग के लिए उस दादी के विहद बेहरे पर हास्य का एक

मूर भाव भङ्गात्त है, और दूसरे ही क्षण वह पुनः भी अपने को धिया उतना है। मरा अन्तर बाँध जाता है। धटापर का टन एक बार फिर गुँजता है। लेकिन उस कणभेदी आवाज को लगना है—'भूल भूल भूल' को चीन्कार उत्काल निगल गयी। मरी निगाहें पुन मुचती हैं। उसकी नगी छाती पर उमरी हुई पछलियों के बीच एक पिपिल-सी धँचनी जा कुछ क्षण पहले चल रही थी, अब बन्द हो चुकी है। मेरे पाँव की पकड़ ढीली हो गयी है। उसके एक हाथ की मुट्ठी रोड की हड्डियों के बिपकी आँतों से जुड़ गयी है। उसका बिबन्ध नेहरा एक ओर लटक गया है। और बाँता की पुनलियाँ बेसी की बेसी ही टिकी हुई है। मेरा रोम रोम सिहर उठता है। कदमों के पास पडी रूह मेरे अन्तर को एँठ रही है। 'भूल' पटापर तिवारा गुँजता है। मुझे मेरे बच्चे याद आते हैं, मेरी बीबी याद आती है, बूठी माँ की भुक्तियाँ याद आती हैं और याद आता है 'बास' का तमपमाया चेहरा आफिस की टेबुल पर पडी पाइलो का डेर। भूल धटे को गुँज के साथ अब भी प्रतिबन्धित हो रहा है। मैं आफिस की ओर प्राय दोड़ता हुआ चल पड़ता हूँ।

× × ×

आत्मा की घुटन मन की तट्य और भूल भूल भूल। क्या जीवन यानी यह सपना, यह यातना। व्याकुल मन मानव अभिया के पदचिह्नो से सहारे पीछे लोटता है, सदियों पीछे।

गुफ और श्रम वहुते हैं—'नू नन्दर है, जगत् मिथ्या है। जो 'अमर' है, जो दाखर है, वह तो कुछ और है। वह 'है' और होकर भी 'नहीं' है। 'तू' उस एकमात्र शक्ति का कण्डुतला है, जिसकी मीठी रचना है यह 'जगत्'। गुफ और 'श्रम' की भांग्यताएँ विभिन्न शरलो में मानव मन की श्रियाँ बनती हैं, श्रियाँ जितनी ही हड़ होती हैं, मा-न्याएँ उतनी ही टोष होती हैं, और 'मानव' के अस्तित्व को नकारनेवाली भा-भताएँ जितनी ही टोष हानी हैं, जीवन उतना ही अधिक सन्निभ होता है, 'मानव' मानव से उतनी

ही दूर होता है। ये भांग्यताएँ एक के बाद एक नये-नये रगा में प्रगट होती हैं, गुफ और श्रम की ये भांग्यताएँ ही सम्प्रदाय का रूज लेती हैं, और दिखाई देता है कि मूरत शकल और भीतर की इच्छाओं-आवाधाओं की समानुरुपता के बावजूद मपूर्ण मानव-जाति एक नहीं है, अनेक है।

× × ×

लेकिन अपने अस्तित्व का बहुतीर चुनौतिया, भीतरी-बाहरी प्रहारों से सरक्षण प्राप्त करने क लिए मानव उस एक आदि और अदृश्य शक्ति की 'सत्ता' के सहारे बैठा गहो रहता, वह अपनी 'सत्ता' स्थापित करता है। अपने हित, न्याय और सुरक्ष के लिए मानव निर्मित इय 'सत्ता' का आधिपत्य करने वाला उस आदि इश्वरीय शक्ति का प्रतिनिधि माना जाता है। उसकी शक्ति को समवन देने और उसके नियमों को मानव-समाज में आरोपित करने के लिए हिंसा की एक ऐसी

के साथ होड कर, और जव चाँद पर पहुँकर वह अपना जीवन, उसका अस्तित्व साबक करना चाहता है, बार-बार पराजित हाती हुई भी उसको शक्ति वभी कभी बरपायेय माहूम होती है।

लेकिन वह क्या है कि वह भूल से लडा है। उमे मृत करने के लिए समुद्रि का डेर लगा लेता है। पूजो को एक नयी सत्ता पडी कर लेता है, लेकिन रजत-बीज को तद्द यह भूल पुन-पुन नये जन्म धारण करती ही जाती है।

क्यो वह अभावप्रस्त है? क्यो वह सुषित है, मुमुक्षित है चिरकाल से?

विशाल है 'ईश्वर' और 'राजा' की 'सत्ताएँ' मानव को इय चिरकालिक वसुधि से मुक्ति दिलाने में, और 'पूजो' की यह नयी 'सत्ता' भी।

मानव को एक सम्बो तखन के बार १६ बा सदी में शितव्य पर मुक्ति का एक

कदर्मी को जकड रही रूह आत्मा की घुटन गुरु और श्रम का सद्ग इच्छाओं आराधाओं की समानुरुपता के बावजूद अननता सम्प्रदाय की दीवाल सत्ता की रस्ताएँ चिरकालिक अवृष्टि और सत्ता' की विफलता मुक्ति का लाल स्य 'ईश्वर', 'राजा' और 'पूजो' की सत्ता को नयी चुनौती एक नयी 'दूँजना'

शक्ति समुचित टोते है जो मानव अस्तित्व को हर क्षण चुनौती दे सके, उसे नियमित कर सके। कैसी विडम्बना है, मानव-अस्तित्व का सुरक्षण के लिए, मानव-अस्तित्व को ही मिटा देनेवाली शक्ति। गुफ और श्रम की भांग्यताओं के आधार पर निर्मित सम्प्रदाय की दीवालें मानव को टुकड़ों में बाँटती हैं, सुरक्षा और न्याय के नाम पर निर्मित सत्ता की रेखाएँ शरतो को टुकड़ों में बिखेरती हैं।

छाल सूर्य उदित होता है साम्यवादी। नया मरीहा मानस बहता है 'मनुष्य का इतिहास वर्ग-सघर्ष का इतिहास है।' जगत् के मच पर प्रगट होती है सबहाउ को दानि सभता और ब-युता की बुनियाद पर एक नयी रचना का उद्घाषण सेर, 'ईश्वर' और 'राजा को सत्ता को चुनौती देर, गुफ के साधन उपलब्ध करने की माग्म 'पूजो' की नयी 'सत्ता' की यनु बनकर।

मानव अपने अस्तित्व को साधकता प्रदान करने की अनवरत चेष्टा करता है। वह मुनता है कि जगत् मिथ्या है, शरीर नन्दर है। अपनी निगाहो के सामने शरीरो की नन्दरता और जगत् के साथ के दूटते सम्बन्धों को वह देखता है, और देखकर द्वाप्य वह मानने को विवग भी होता है, लेकिन तब भी वह शकत नहीं। पाताल टाँककर, समुद्र को अलक गहराशनों में पेशकर और उसकी उताल तरणों पर तैरकर, हवा

अने अस्तित्व को साधक करने की खोज में मानव मानव से दूर हट गया था। सर्वहारा की क्रान्ति विभाजक-रेखाओं को मिटा देने के लिए इतकबल होती है। वह मानव मानव के बीच कोई व्यवधान बदाय नहीं करता चाहती। इतलिए वह ईश्वर से 'सत्ता' राजा को 'सत्ता' और पूजो को 'सत्ता को मिटा देना चाहती है। दुनिया के बहुत बड़े नृनाय में वह एषा करने में गफल भी हो जाती है, एभिन्न अन्धवाप!

मानवता के लिए एक नयी 'दुनिया' को जन्म देकर।

'जीवन' मुक्त होना चाहता है हर प्रकार के बन्धनों से। पित्रु के पक्षी मुक्त आवाज में विदग्ध उड़ानें भरना चाहता है। और मुक्ति के इस प्रयास में बंधन और अधिक कसते जाते हैं, जैसे दूधते जाते हैं। क्यों ? क्यों ? क्यों ?

प्रसन्न-चिह्न तुम्हारा बनकर मुझे घेर लेते हैं। कुछ कठिनाई के साथ पहचान पाता हूँ—प्रश्नों के इस झुंझरे में एक उलक रोमती है ह्येरिपल क्रांति के नायक एपरो नेपो की। एपरो नेपो कहता है

.....नेपो और देसो, कभी मैं ह्येरी का 'हीरो' था। ह्येरी की जनता की मुक्ति के लिए मैंने शपथ किया। ह्येरी की जनता सर्वथ में सफल हुई। मैं नये ह्येरी का प्रधान मनो बना। मैंने ह्येरी के विनाश-क्रम को नयी दिशा देने की बात कही। मैंने जून १९३३ में कहा, "हमें अपने 'जन-तन्त्र' (पौपुत्र डेमोक्रेसी) में विनाश की दिशा मुधारनी होगी।"

('एपरो नेपो डॉन चम्पुनिग्म' पृष्ठ ६१)

क्याकि जनता के सामने हमने चारे सिधे से कि वारिफ, राजनीतिक और हर तरह के अन्य विकास-नायक जनता के लिए होंगे, प्राय-निश्चय उबकी होंगे। लेकिन अपने इस आवाज के बलव्य के बाद मेरे सामने स्वच्छ हुआ कि जनता और क्रांति के 'नायको' के चारों के बीच 'दल' और 'सत्ता' की प्रमु-सजा है। मैंने जब 'लोक' को 'दल' के ऊपर मानने की चेष्टा की तब मैं 'गृह' पोषित हुआ। दुनिया जानती है कि मुझे अपनी 'मुक्ति' में शानो पयो, और 'लोक' 'दल' के नीचे दब गया, भार तक दबा दिया है।

"यह पुपोस्ताविया सरकार का कभी का उपाध्यक्ष है मिरोसल डिजिन्ग। वह 'दल' की सभ्यता में पल रहे एक नये वर्ग ('से नू क्लास') की नकार उतारने का स्वच्छ युपोस्ताविया के काएगृह में युगज रहा है।

डिजिन्ग कहता है :
"साम्यवादी निरुपुत्र कथिनायककार,

म्यान-यक्ष : सत्याग्रह अंक : ३० जनवरी, ६८

जो विज्ञान के नाम पर विचार का दातु है, और जनतन्त्र के नाम पर स्वावस्थ का दातु है, धोकरमानव को इशाने के सिवाय कुछ नहीं करता है। बड़े-बड़े पुंजीपति और सामन्त लोग कलाकारी और वैज्ञानिकों को पूंर्हाणा बन देने से और अपनी गर्जों से उनसे काम लेते थे, उनको झूट करते थे, साम्यवादी शासन में तो झूट्याचार उखी प्रचाधन-नीति का ही एक अविभाग्य अंग है।

"साम्यवादी नीति, कानून ऐसी नव प्रवृत्तियों को दबा देती है, और मिट्टी में गिला देती है, जो उसके अनुकूलन न हो, यानी जो स्वतन्त्र और मौलिक हो, दूसरी तरफ बिन्दे वह 'समाजवाद' के लिए लाभकर मानती है, यानी बुर अपनी 'नीति' के लिए अनुकूल मानती है ऐसी प्रवृत्तियों को पुरस्कृत करती है, प्रोत्साहित करती है, वर्षार्थ काराव में झूट करती है।

"पुडिबोबी का इस सत्ता के आगे, चाहे पित्रु के का पक्षी दूटे डैने" प्रश्नों का कुद्वय नकाव साम्यवादी निरंकुराना समार अवराय बदलेगा

साम्यवाद की इन अभिनव नाति को नैतृत्व देनेवाले साहित्य हस को महान् क्रांति के तीघरे महाभायक स्टालिन की मुणुको स्वैतलाना 'दल' और 'पाप' से बल बनर कभी क्वि और उपायावहार बारिस पेश्टरनाक के विचरनसिद्ध उपायाव "शास्टर विवागा" में अपने जीवन का दर्द अनुभव करती हुई कहती है

"ये, हवी साहित्यिक गहीयो। रियिचेर और विमोबिस्म के बाद भी कुछ भी नहीं बदला है। पहले की ही तरह अब भी कोई लेखक डूब लिखता है, तो उसको बासोचना का नाम सबसे पहले विवाही और पुलिख के हाथ में जाता है। आब ने पहले चारगाही में भी मोगल या ऐसे ही लेखकों को उनके तीमे और वैसाविक विचरों के लिए तथा हसी जीवन की अपयत्ना पर क्वि मने बट्टासो ने लिए कभी पंथी नहीं दी मयी थी, परन्तु अब काप सापारण थी एक नये वर्ग की स्वैतलाना का दर्द"

विचार के लिए हो, चाहे लाभ के लिए, घुटने टेकने के सिवाय दूसरा चारा नहीं है। यद्यपि यह जरूरी नहीं कि यह सत्ता सरकार की हो हो, फिर भी बड़ी सारी समाज-रचना में और मगलनो में हारी होंगी है। एक पध्द में रहना हो, तो सभी अनिम निरिभव उखी के हाथ में है।"

('द नू क्लास' पृष्ठ १४२-१४३)
पर भी डिजिन्ग को आया-सत्ता पुरमयी नहीं। वह कहता है

"हर हालत में सवार अथव्य बदलेना, अपनी वास्तविक दिशा में आगे बढ़ना, विचार बह वा रहा का, और जाना चाहिए-बढ़ है प्रयास एरुता, प्रथमि और स्वजडा को दिया। हर तरह के बुर और जप्य पतिवयो की जेवना सत्य हो, और जीवन को सक्ति सप ही बलगाव रही है, हिवी भी विज्ञात से वधिक शास्त्रिक रहे है।"

('द नू क्लास' पृष्ठ २१४)

अतिशयोक्ति के लिए गादी के निपाये बनाये जा सकते हैं, मामूली मुझबरे के लिए सोलचों में बन्द रिये जा सकते हैं।
"यारे शास्टर, यारे वोरिख लिबो निभो विच, यह छापीरिक मानना से नई गुना अधिक पोड्यावयक है। यह सब अग्रहीय है शास्टर, मगार का कोई मानव गृहण नहीं कर सकता, और इमीनिए मैं आज यहाँ है, यहाँ हस में नहीं। यह सब चलेगा, शास्टर, यह सभी और सब तक चलेगा ?"

(स्वीटजरलैंड में शिने गये 'सोबेथ रियु' के तन्वरर '६३ के अंक में सुव-प्रकाषित लेख में)

स्वैतलाना को दर्दमयी आशाच मानव-हृदय को फरुओरती है, और मध्ययवशासी, उपायावदी दुष्करीकरण के विचार सोमान्त गांधी को पुकार बनर को बंजा देती है—"आपने हमें अँधेरी के सामने डाल दिया।" उन्होंने भारत-विमानन के समय कहा था। परन्तु आज

की देशियों को चुनौती देनेवाले मुदाई विदमभारत पाकिस्तान की दूर में वपों तप यशसे गये, आज अगने वतन म दूर है, उनकी आस्था

"मेरी अहिंसा लगभग मेरी धड़ा बन गयी है। मैं कभी सोच नहीं सकता कि मेरा प्रदेश कभी हिंसा पर उतर आयागा। हो सकता है, मैं मुक्त जाऊँ और हिंसा मेरे प्रदेश को तबाह कर दे, तब मैं यही सोचकर गनोप दम्ब्या कि यह मेरे भाग्य का चकर है। लेकिन उसका यह अर्थ नहीं है कि मैं अहिंसा पर अपनी धड़ा छोड़ दूँगा, जिसकी मेरे लोगो को सबसे अधिक प्राथम्यकता है।"

सीमान्त गांधी की आस्था आज सीमा के पार मुक्ति के लिए सफल है। लेकिन मत्ता की पकित आज उम आस्था के मषर्द को दबाये हुए है, मुक्ति और शांति की मानवीय आस्था को।

प्रदो के कुहामे मे जान-अनजानी मृत और भीमिंत इतिहास की कितनी ही आकुल आत्माया के दमन हो रहे हैं, मुक्ति के लिए आकुल आत्माओं के। इन्हीं में से आकुलता की अछला रिपिन म पहुँचकर अपने को समाप्त कर देनेवाली एक विभूति—पाने मुहूर्ती, के अंतिम भाव सजीव बनकर सामने आते हैं "मेरा अन्तिम भक्ति, प्रेम तथा कुनज्ञता का मन्देग लोकमाही समाजवादी पक्ष म है। अजातीय और अहिंसक लोकमाही नया सत्याग्रही दृष्टि को अन्न अन्न हैं। भारत में रत्नपत्त के फिर ममाजवादा आना चाहिए। व्यक्ति-स्वातंत्र्य के साथ समाजवाद फूलना-फूलना चाहिए।

आखिर भगवान् की इच्छा।" (साने मुहूर्ती के अन्तिम पत्रों से)

क्या पूरी मानवता का इतिहास मुक्ति को तरुण का इतिहास है ? आकुलता और विषयता की कहानी है ? 'सम्प्रदायों', 'राज्यों', 'वादों' से प्रस्त मानवता का दस्तावेज है ?

जा पॉल सार्त्र—बीसवीं सदी का सर्वोच्च विवादास्पद व्यक्ति—किन्तु पान्त ही नहीं, पूरे अण्ड के बुद्धिजीवियों को चौका देनेवाली अपनी स्थापनाया के कारण

यहूषचित—कहता है "जब कोई व्यक्ति मर पापिय-अस्तित्वमय का बोध करता है—यह मेरे लिए अमूल्य अनुभूतिकता है, और दूसरे द्वारा मेरे स्वयं" का विगुद स्फाप्रित है। दूसरे आशय में वह अस्तित्व मय एक क्रम में 'मेरे स्वयं' की मोख साजता है, और पाता है। यह मरिंत पाय्य तभी है, जब मैं दूसरे के स्वातंत्र्य का अतभूत नर हूँ। अत 'मेरे स्व वा खोजने की मेरी योजना बुनियादी रूप म दूसरे को अल्पसखत करने की योजना है। (बाइग ऐन्ड नरिगनेस' पुष्ठ ३६५) सार्त्र आर उसकी दिसा के अस्तित्ववादी दारानिको क नाष से इन चष्टाओं को देखा जाय, ता वास्तव म वे दूसरों के स्वातंत्र्य को अन्तभूत करने की विप्लव चंष्टाएँ मात्र दिग्दर्श देगी।

लेकिन इस तरह की प्रतिक्रियावादी

— सीमान्त गांधी की पुकार आहुल आत्मा की अमूल्य दाना सम्पत्तियों, राज्यों, वार्दों स प्रस्त मानवता सात्र की म्भापनाएँ और मन की दार मानव विद्रोह और अनाथा न प्रतीक विदलन और हिंसीन मुक्ति का अभिधान और चेतना का मषय

स्थापनाओं मे मुक्ति की चेष्टा का इतिहास दब नहीं सकता। अपने अस्तित्व-प्राध क त्रिए मानव नहीं दिसाएँ दंडकर मानेया। उसने इश्वर की सत्ता को चुनौती दी राज्य की सत्ता को चुनौती दी पूजोवाद और साम्यवाद की सत्ताओं को भा चुनौती दी है।

आज मुक्ति की चेतना को दमानेवाले प्रहारी की प्रतिक्रिया मे मानव-विद्रोह अनाथा की चोटों पर पहुँच गया है। वतनमा योदर और हिंसी योको प्रनाक है। हिंसी गार्हन्निग आन्दोलन को मुख्य मा-यताएँ है, जिन समाज विगदना बहटा है, उन संवरता बहटा, एग जिले बुरा कह, उसे बख्शा कदो पनाद छोड दो, नोकरी छोड दो, परवार छोड दो, और हो सके तो अपने जानका भी छोड दो।" बुनियादी तौर पर हिंसी-आन्दोलन मनुष्य को मसान बनानेवाली अयनीय, उपकरण बनानेवाली यांत्रिकी, कण्टर करने वाले हर प्रकार के 'वादा जोर मानवता को ध्वस्त करनेवाले मुहूर्ती के सिन्ध एक

जेहाद है। उनकी मान्यता है कि राजनीति एक अथी गली (डेड एन्ड स्ट्रीट) है। हिंसीन का नरोसा है 'प्रेम' की पकित पर। वे प्रेम करना चाहते हैं, प्रेम पाना चाहते हैं, उसकी पकित और क्षेत्र को अधिक-से-अधिक गहराई और विस्तार देना चाहते हैं।

आज 'वादों' और दला के अद्वरन में वतमान पीठी का भविष्य बुरी तरह पन्न गया है। मुहूर्ती की काल्पी छाया युवा पीठी के भविष्य को डँकनी जा रही है। भविष्य हीनता के गिकार नये खून में अवर जाना वा उभाष होता है, प्रयास वा विस्फोट हास है, ता उसमें आदरव क्या है ? भारत म उपद्रव वा जाना नाष हा रहा है, वह स्वाभाविक है। दिसाहीन विद्रोह नदक रहा है, नवी मजिल तलाप रहा है एव अवरतर चुनौती ही उग थी।

क्या सत्याग्रह इस युवाता का जवाब

दे सकता है ? जाना को पुन और पुन की आग स जीवन को मुक्त कर सकता है ?

भारत के स्वराज्य आन्दोलन में उन निवेशवाद को चुनौतियों वा जराब संपादने दिया। लेकिन उपनिषद्वाद मे भारत हो नहीं, पूरे अर्ध-दिसा को मुक्ति के बाव हो चुनौतियाँ छापी हैं, उनका जवाब भी सत्याग्रह दे सकता ?

आज को समन्वार्धे जागरिक है। सभर जागरिक है। मुक्ति की चंष्टाएँ भी जागरिक होगी। तो, क्या सत्याग्रह का कोई जागरिक स्वप्न भी है, हा सकता है ?

मानव मुक्ति व अभिमान वा इतिहास मत्ता' और चेतना के सपथों वा इतिहास है। यद्यपि सत्ता' क विभिन्न रूप रहे हैं, और चेतना के भी, लेकिन समाज बुनियादा पर हुए दन सपथों में एक या एक न अधिक व्यक्तिया क विसो 'पम क अन्तर्गत रहा है। विमानिज मनुह का संपिण्ड बहटाका क आधार भी आदिग रह है, मषय नहीं।

राजनैतिक दल अपनी सेना चला रहा है। ये सेनाएँ अन्दर-अन्दर बना कर रही हैं, माझूम नहीं, लेकिन उनकी खबरी निगाह सत्ता की ओर है, यह निश्चित है। स्थिति ऐसी है कि 'टोड-फोड' हमारी राजनीति की मान्य पद्धति बन गयी है।

● अथर हम बारीकी से देखें तो हमें इस नक़्क़े देग में हिस्सा की ये धाराएँ दिखायी देंगी। (१) राजनैतिक हिस्सा। यह दो रूपों में प्रकट होती है—शहर में सरकार से टकराव और देहात में पगियों से टुराप। इनका उद्देश्य यह हाता है कि सरकार कमजोर हो, समाज आतंकित हो, प्रचलित लोकतन्त्र और उद्योग तरीकों पर से विस्वास उठे, तथा प्रत्यक्ष बार्ंबार्ड द्वारा आगे सत्ता प्राप्त कर लेने का पूर्व-अभ्यास हो। (२) तात्कालिक हिस्सा। इसमें सरकार मौन स्वीकार कर लेने के लिए विचर की जाती है। यह जोड़ इतनी आगे बढ़ गयी है कि दूसरे की ओर अपने को बड़ा डालने तक की बार्ंबार्ड की गयी है। गोवध-बन्दी के लिए, या विद्यालयों द्वारा की गयी हिंसाएँ, कुछ विशेष दम की हात हुए भी, इन्हें तरह की मानी जा सकती है। (३) सामाजिक हिस्सा। मालिक द्वारा मजदूर पर, पुष्य द्वारा स्त्री पर, प्रोड द्वारा बच्चे पर, जाति द्वारा जाति पर, ऊँच द्वारा नीच पर, और पत्नीयों द्वारा पड़ोसों पर, होनेवाली हिंसा हमारे जीवन का ताता-बताता बन गयी है। वह परम्परा द्वारा मान्य है, हमारी जीवन पद्धति का अंग है, इसलिए चलती चली जा रही है। जरूर इसके अन्दर शोष की जो आग छिपी हुई है वह अंधकर है। इन सारी हिंसाओं को मिटाकर ऐसा लगता है जैसे हमारे जीवन की ऊपरी छत्ट के नीचे जमी हुई हिंसा (फोर्जेन माइलिंग) रँबी पकी है जो हल्की भी बर्मी पाकर पिघल जाती है।

● यह ठीक है कि सदियों से अथपरी हालत में पड़े समाज में जब नयी चेतना की हड़बल पैदा होती है, और साक्षर बन हलचल आन्दोलन का रूप ले लेती है, तो किसानों भी कौंसिड की जाय समाज के जीवन की भीवरी परतों में रहे-पड़े

शोष हिंसा में पूट पड़ते हैं। जोर, जब देश के सविधान या लोकतन्त्र की प्रक्रियाओं में ऐसे रास्ते नहीं होते, या होते हुए भी कारगर नहीं होते, कि जनता को 'धाम' मिल सके, तो हिंसा के बाड़ होना अनिवार्य हो जाता है। यापीजी ने आन्दोलन की नयी पद्धति निकालकर तथा कई बार अपने प्राणों की बाजी लगाकर उन्होंने जनता के 'शोभो' की अभिव्यक्ति के नये रास्ते निकाले जिनके कारण हिंसा पर अकुच लगा, और शीघे प्रहार नहीं के बराबर हुए। स्वामी उपाय के रूप में उन्होंने 'आन्दोलनात्मक' कार्यों से अलग 'रचनात्मक कार्यों' द्वारा लोकतन्त्र को शांतिपूर्ण, विधायक आधारों पर समर्थित करने की कोसिड की। वे कहते भी थे कि रचनात्मक कार्य की परिणति ही सच्चा स्वराज्य है। लेकिन ये रचनात्मक आधार व्यापक और मजबूत नहीं बन सके।

बेचारी रेलगाडी प्रहार और पूजा के प्रतीक जनता और सरकार के बीच की दूरी निर्मम संघर्ष पराधी सत्कारा राजनीति की मान्य पद्धति 'हमारे जीवन

सन् १९४२ में जो टोडफोड हुई उसमें इन रचनात्मक आधारों का जनाय साफ-साफ प्रकट हुआ, और स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए टोडफोड उचित मानी गयी। वही हाल स्वतन्त्रता मिल जाने के बाद भी रहा, और आज तक है। स्वतन्त्रता के बाद तो सरकार-शक्ति से अलग लोकतन्त्र की रचनात्मक आधार और विद्या देने का काम हुआ ही नहीं। जो कुछ हुआ वह भ्रूयान-यामदान आन्दोलन से हुआ। आज हम देख रहे हैं कि सत्ता के साथ टोडफोड उधो तरह जुड़ गयी थी। हम यह भी देख रहे हैं कि लोक-मानव पर विद्युत् राजनैतिक नाश की प्रतिबिम्बा घांतिपूर्ण नहीं रह पाती। ऐसा लगता है कि शोष का ताता लोक-मानव के अनुकूल नहीं पड़ता। बारा चोरी उपाय की राजनीति का नही समक पाती। नतीजा यह हाता है कि जिस आन्दोलन या राजनीति में शोष ही शोष

है, दुश्मन कुछ नहीं, वह जनता के लिए उम्माद का विषय बन जाती है, और जब यह उम्माद होती है तो विषय की लोला में जुट जाती है। कई राजनैतिक लोप उसकी इस विषय-लोला को 'प्रापीय पुषान' या 'आनेवाली घांति की बूँद-तैयारी' का नाम देते हैं, और कुछ होते हैं।

● कुछ मिलकर उड़व हमारे जीवन में इस तरह स्वीकृत हो रहा है जैसे स्वास्थ्य के लिए आवश्यक पथ हो, जैसे नयी चेतना की नयी भाषा हो। इनकी जिम्मेदारी साफ-साफ घोषण की अनर्नति और विपटन की राजनीति पर है। राजनीति ने 'पेसेवर उपन्यासकारी' तक पैदा कर दिये हैं, और नवर्नति में प्रतिष्ठा-आत घोषण तो है ही। जब व्यापक सड, शहरो में छापो बेधवार लोप, प्रधाचार, निरुम्मा प्रयाघन, और बढ़ती हुई विपटा के कारण सामान्य व्यक्ति का जीवन दूर

का जाता है, और बड़े लोप आने लिये स्वाधों में ही निड दिखाई देने समते है, तो जनता अच्छा-बुरा नहीं सोच पाती। सपाज का ज्वालायुधो निरया, गरीबे, और याट की नयी से बनता है। हीन कहना कि हमारा समाज केनो के साथ पगलायुधो नहीं बन रहा है ?

● बने भी बने न ? विज्ञान ने बने में मदद की है, और लोकतन्त्र ने अजहर दिये हैं। विज्ञान ने बहाँ उत्पादन तथा कुछ सुविधा के सापन दिये हैं वहाँ पुँड के निज नये अरु-पारन, यानना (टारन) क अलवन् मुधम उपाय, तथा जनता क निज सुलभ हविधार भी दिये हैं, जिनक कारण आन्दोलन जोर उड़व का मेल उभरे में आसानी हुई है, और भीड की आसानी क साथ 'कडाक' कर रतो है। विज्ञान की इत दना क थाम 'दल या लोपजन तुम हुक' है। कदा बताते हैं कि राजनीति पुँड का हाँ दूधरा भाव है, जिनक रास्ते पुँड हुकर है।

राजनीति 'युद्ध' बन जाय तो समाज के जीवन में हिया निर्णय की दमिर्त के रूप में क्यों न दिखाई दे, और उसका सामाजिक परिवर्तन में स्थान क्यों न माना जाय ? हम देखते हैं कि हिया की दमिर्त से एक नया अनुदाय समाज में अपने लिए स्थान बना लेता है, क्योंकि जब तक वह 'कुछ' करता नहीं, उसकी बात ही नहीं सुनी जाती, और न्यो ही कर लेता है, मुझे ही जाती है। हिया वह मूल है, जो 'भेदा' को बनता के साथ जोड़ता है। जलतर घटना होता है कि 'नेता' अपने धर्म्य द्वारा प्रेरणा देता है, सिखाता वा जामा पहनाता है, और बनता स्वर उठाकर कुछ कर दिखाती है। हमारे देश में एक राजनीतिक विचार ऐसा है जो हिया को भारतीय हस्तुति की रसक-अभिन मानता है, और बहुत ही जिसके लिए भीष का हर उप-दर बनता को मुक्ति का अभियान बन जाता है। उसके लिए जनता तथा जनता (भेद, पोलुल) है, वह मानता ही नहीं कि भोड (मात्र) जैसी भी कोई चीज होती है। जो हिया कमी कल्पन में मानो जाती थी, वह सभ्य के नाम में जीवन और विकास का पावनत धर्म, एक स्थायी धर्मन, बन गयो है। हमारी राजनीति उसीमें दाली जा रही है।

● यह सही है कि हमारे जैन सामन्त-बादो, पूर्वोबादो समाज में मुक्ति के लिए 'अरस्य कारंशार्श' (कारंशटे ऐभउज) बन्ती है। जनता की मुक्ति का अभियान पंच साल में एक बार होनेवाले वोट से नहीं चलाया जा सकता। लेकिन मुक्ति के लिए विम समर्पित पालन की आवश्यकता होती है वह जनता की विचारों हुई हियक कारंशार्शो से नहीं बनती। अगर स्वयं जनता में 'विमार्ह-पानिन' भरती हो तो 'शक के पन्त्य' का टाला छाटना पडगा। बाली हिया से हियक दक सता में मले ही पर्वर बाय, वह जनता में दमिर्त नहीं नर सकता। तानाशाही पन्त्यवा नप्यान के काम बहुत नर सक्ती है, लेकिन जनता को स्वयं सता के दमन से नहीं मुक्त कर सकती। सता सदा जनता में छसक रहती है, इसीलिए वह जनता की हिया नहीं बन्दित नर सकती। तो, माय के आकतम

रचनात्मक कार्य की परिणति... सचा भ्रमण... राष्ट्रीय तुफान : विध्वंस-लीला... निशारा. गरीबी और वोट की त्रयो-विधान की सुविधा और दल-नश्र जनता बनाम सचा विकल्प की तलाश... मोहनसिंह लोकतंत्र में जनता 'जनता बनाम सता' का प्रश्न कैसे हल करेगी ? सता पर मुहान्त जनता स्वतन्त्र कैसे होगी ? और अणस में मणय करेवाले दल, तथा गरीबी और सदाई ने दूटी हुई जनता, सता द्वारा होनेवाले अविचार के दुष्परिणाम का मुनादिला नहीं कर सकती। उसके लिए यही रास्ता है कि वह लोकतन्त्र के अवसर का लाभ उठाकर अपनी घटान-पानिन समर्पित कर। जनता की सहकार-पानित रचनात्मक पानित है।

● पिछले बोध वर्ष में हमने अपनी आकाशवाणी की पूर्ति के लिए पूरे तौर पर सता पर ही भरोसा किया। हिया भी की जो उन भरोस के कारण ही की। हिया, प्रत्याचार, विरोध, जो कुछ विचार भरोसे के कारण किया। वह भरोसा पूरा नहीं हुआ। अब यह प्रश्न पूछा जाने लगा है कि हमें सरकार चाहिए, तो कितनी चाहिए ? यह प्रश्न लोक-वेचना में नये भोय वा सनेत है। जनता समझने लगी है कि मसम्पाने न उन बात से हल हामी, न उपनर स। तलाय करती है निष्ठी विपक्ष की। वह विरल्य बनता के बाहर नहीं है, उसके भीतर है।

मविधान के प्रचलित ढाँचे की अतिम मान लेने से काम नहीं चलेगा। उसे भीष में लाड टालने से भी काम नहीं चलेगा। हमें विरोधी बोर नपयों को हल करने के साहियुगों उपाय ईदने पडेगे। शांति की पानिन सविधान की दमिर्त ने बडी है। बडी दमिर्त विकसिता होगी तो छोटी दमिर्त उसके पीछे चलेगी।

उपवास से केतर उपद्रव तक जितने काम हुए है, उनमें वे नार्डी भी उम बडी दमिर्त का विकसिन करने में सहायक नहीं हुए हैं। नये जमाने की नुनोनिबो को स्वीकार करके सामया को आम बढाने में हिया की पानिन, और बांरे सविधान को सचित कितबो अग्रुं सिद्ध हो रही है, इनका प्रमाण हिया वा अन्तिम स्वरूप साम्यवाद है। अगर साम्यवाद से आगे जाना है तो हिया वे आगे जाना हो पडेगा। और अगर मविधान से आगे जाकर समाज की पकि विकसिन करनी है ता साकतमन का लाभ लिए स्वल्प विकसित करना पडेगा।

—सादिम

सर्व-सेवा-मध्य-प्रकारान की विशिष्ट भेट

तुफान-यात्रा
लतरक सुशामम



विनावाज न प्रामवात अ-दलन म 'गुरान' ला दिया, सर्व-सेवा-मध्य न गापुरी (चर्चा) अधिवेशन में। ११ शिवावर '६५ में विनोबाबाबो की दिशार में तुफान-यात्रा शुरू हुई। यात्रा यली २० दिशम्बर तक।

चार महीने की इस यात्रा की सीधे-मधुर बानगी श्री पुरेश्वरामाई ने सवाकर दियो है, प्रसोत्तर है, निनीद है—सब कुछ है। भेट-मुलागामे है, शार्कणजो का का रसावाद है। यह बोपक है, नवर्षा है, सचिबर है। लगता है बोर्डे उन्प्यास पया जा रहा है, लेकिन भीतर-भीतर भावनिष्ठा और मनाय-जानि का बीज अदुतिर हाग है।

मूदान-पद्य : मस्यामद अ.क. ३० जनवरी, '६८

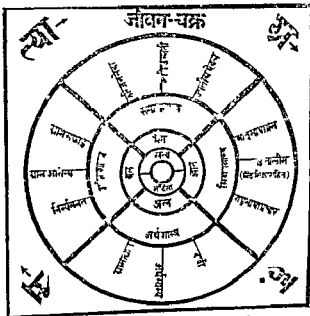
मूल्य ६० ३-५०

सत्याग्रही का जीवन-चक्र

यह जीवन चक्र सत्याग्रह दान व अनभवी प्रवृत्ता श्री विनोबा का बनाया हुआ है। पहली बार सजा होने के बाद श्री विनोबा ने नागपुर जेल में इस बनाया और बाहर आने

(३) निव्यसता। प्रगट है कि गराट-पुष्टि या नागरिक-सभ्य को बोधना गरीरिक और नागरिक गीव का महत्त्व अधिक है।

प्रम—भेदा में से अनेद की जार प्रगति



करना और अन्त में अद्वय सिद्ध करना प्रेम का ध्येय है। इसलिए प्रम मूलक समाज गान्ध म जाति मरवना चम भावना और स्वी-गुरुपवाद ना स्थान नहीं है। स्पग भावना के विकास के लिए हरिजन-सेवा पुरुष जाति के प्रशुत्प के निवारण के लिए नारी उन्नति और जातिभिमान के नाश के लिए त तीव्र प्रयत्न है।

ज्ञान—गिना गान्ध के अंगों की योजना भी

इसी प्रकार का है। इस चक्र में बादाग और व्यवहार में हमारे उर्र व और परिस्थिति में सामजस्य करने की चपटा है।

पर गांधीजी को दिखाया या जिसे पाठको के लिए यह यहाँ दिया गया है।

इस चक्र की व्याख्या करने की जरूरत नहीं है। श्री विनोबा ने उसे बनाया ही सत्य दम स है कि वह सबके लिए सुबोध हो।

जीवन का केन्द्र सत्य और अहिंसा है। सत्य और अहिंसा दो तत्व नहीं हैं एक ही तत्व के दो पहलू हैं। ये जीवन के आपारभूत तत्व हैं और उनका चरित्राण करने में ही जीवन की पूजता या सुखलता है।

बल प्रम गान और अन जीवन की चार विभूतियाँ हैं। इन चार विभूतियाँ की प्राप्ति द्वारा जीवन में सत्य और अहिंसा सिद्ध करती हैं। इसलिए इन विभूतियाँ की प्राप्ति के साधन भी तदनुसूत होने चाहिए। इस दृष्टि से श्री विनोबा ने यह चक्र बनाया है।

बल—ऐसा हो जा सत्य और अहिंसा के विकास के अनुसूत हो। इसी दृष्टि से गरीर पास्य के तीन विभाग निचे मये हैं (१) घाम-नवर्दी (२) घाम-आरोग्य,

नयाकि हमें अपनी परिस्थिति पर ही तो अपने सिद्धांतों को विनिमोण करना है। भारतवर्ष में शास्त्रिक पुनर्जीवन शास्त्रिक समचय और सावत्रिक शिक्षण के लिए सत्य और अहिंसा की मूलभूत नीति के अनुसूत मातृभाषा प्रम नयी तालीम और राट्टुभाषा प्रचार ये ही साधन उपयुक्त और व्यवहाय हैं।

अन्न—यहाँ भी वही न्याय लागू है। अयगान्ध दरबचल सग्रह का सम्पति के अवन का शास्त्र नहीं होना चाहिए। वह गरीर धारण का या अन्न वा ही धारण है। अपनी वतमान परिस्थिति में भारत जिन प्रवृत्तियों के द्वारा अपने जीवन में सत्य और अहिंसा के जय-नारण को कार्याचित कर सकता है उन प्रवृत्तियों का यहाँ उल्लेख है।

साराग हम अपनी प्राप्त परिस्थिति में अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक (राष्ट्रीय जीवन) में सत्य और अहिंसा का विचार करना है। यो ही जीवन एक और अलग है। परन्तु उसके जो भिन्न भिन्न पहलू हैं उनमें हमारे मुख्य साधन याने सिद्धान्त और साधात् साधन याने मायमम कोनछे हाने च लिए इसका दिवगान इस चक्र में कलाय गया है।

—दादा धमाधिराजी

इसी प्रकार का है। इस चक्र में बादाग और व्यवहार में हमारे उर्र व और परिस्थिति में सामजस्य करने की चपटा है।



के अन्तर्गत स आयाज निवली है भारत क लिए बन्धे का उदार का विराड का समुद्धि का और विरव-सेवा का यही एवमात्र रास्ता है जिसे दुनिया दिव-समचय के नाम से पहचानेगी। भारत के अजर समचय सिद्धि पायो ता भारत त्रिव की सजा सुखलता पूवन कर सवेगा।

पुस्तक १६ अध्यायों में विभक्त है। कुछ पीपक इस प्रकार हैं समचय की सुधना समन्वय दैर्घ्य सुधर्षण समन्वावी हिंदू-धर्म अनेवा-तवादी जन-धम अष्टागिन बोड धर्म उदार सुधमत, वि-दाहा इशाई धम नास्तिकता की समस्या गांधाजी और सुधनन सेवकुलरिज्म अय्यान और विगान मयनवाक वा दयन आदि। मूल्य वजन रु ४०

मूदान-यज्ञ सत्याग्रह अंक ३० जनवरी, ६१

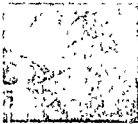
विश्व में सत्याग्रह के प्रयोग

सत्याग्रह केवल राष्ट्रीय ही नही है। न सत्याग्रह का विचार थोरा को देना है। अब-अब बला, सामान्य जन पर अर्थिक एव समाजवीय कामून लागनी एही है, तब-तब सामान्य जन के अक्षमाम्य प्रतिविधियों के विरोध का स्वर लोग किया है। हां, पागो और सभों ने सत्याग्रह को 'रेवोलूशन' का रूप दिया तथा उनके व्यापक बेमारे पर आक्रमणा, हमनें कहेहै नहीं। आर भी दुनिया के विभिन्न कार्यों में सत्याग्रह, अहमयोग एव



बहुतेक सत्य

में धरना दिने बैठे हो और पुच्छि करने तक प्रयोग में लगे हुवाये न प्रत्यक्ष कर गये हो, तब योग दिया और अहिंसा का प्रयोग मुहाविता देयने है। शरीरिका हिंसा अधिक सफाई है, पुच्छि, जेक और चीज उसकी रसा कसती है तथा पन और सजाव का समर्थन उणे प्राप्त है, वह निरसी हासी दिनावा देनी है, पर अहिंसा रसक कहेने है कि 'एक दिन हम अहिंसा का भी सफाई कर चुकेने और तब दिया का सफल उणे प्राप्त होना लीना।' जब ब्रिटेन में मजदूर-रसक की परनाम हुये के बाबजूद सुंवाविता ही कायदा पुरानेवाली धारम-वित्तियोगिता जारी रहनी है, तब बहुतेक मजदूर-रसक को हारमता का प्रभाव-पन विकसने वातावर के हुक्के को सारदा पार रूकने है। अणुप्रासके के कारागारों, भारतपर भारतन से कल्पन तक प्रतिवर्ष ६० मील

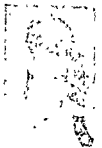


लेखक 'जॉन पापवर्थ'

अहिंसक सविहार के प्रयोग नर रहे है। हितकर उणे सुलार रिक्वेटर के अग्रेष को भी हुकरावे का हाइड देनाका के योगों में दिनावा या और रैनिड लोको के अहिंसक सविहार को उलटने या दवाने का दिनाव हितकर नै सम्पन्न कर दिया या।

प्रथम महाग्रह और हुकरे महाग्रह में कलेवाले देतो ने जब आगो जलता के लिए वेना में चली हुवा अतिवासे कर दिया, तब हमारी सुप्र-विरोधी, 'पेरिपिटिच' वेना में पाविल होने के बजाय वेना में गये, पर अले क्रमच भी हुकार को दबाकर सुद को एहीकी को स्वीकारा गही किन्तु। यह 'पेरिपिटिच' परमाणु बन चुकी है। बहुतेक सत्य के विचारवाली और सारनिक बाने सुप्र-विरोधी एव अणुप्रास-विरोधी अत्याचरों के हारदा देतो के सोचनी के पीछे बन्द कर दिने बाने है।

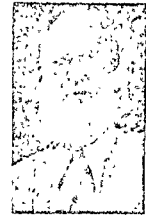
अब बहुतेक सत्य के केंद्र में हमारो अनेक सत्य के हुमाविड अक्षयार सत्यावर



केमिलो बोखनी

की परवादा करते हुवायो सारिवावे अणु-सत्ता के प्रति अपना विरोध प्रकट करते है।

केवल सुद के विरोध में गही, बल्कि गरीबी, विपत्ता और बीमारी के विरुद्ध अहिंसक-समर्थन का हितियुज कई रूप दिनावन गही है। अरीस के जल में जलना बीजन क्षम देनेकाके अक्षयट स्वाइलर को किया किन्तो विपत्तिवाइट के महान सत्याग्रही बहावा सकता है। विपत्ती (रसनी) के दवे हुए लोको को सफाई करके अणुप, शोषण और विपत्ता के विरुद्ध अत्यन्त सफाई करलेवाले केमिलो बोखनी के सत्याग्रह की महत्ता पत्रो हुए किन्तो भी रोसक ही माना स्वाभाविक है। पाप के लाजादेत वास्तो और आवे विपदरे का भी अत्याग्रह



लाजादेत वास्तो

के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान है। एंग्लो-बीच में हुकरत पयोग की अग्रगण्य को मुलमानेवाले विनोवा और मन्दिर के स्यामिल ही सुनि बेसमियों को दिनावे के लिए सत्याग्रह करेवाले जयसाम्यन् देते हत्याचरों को हुमादे साने है।

हालाग्रह के प्रयोग सम्पन्नित लेगों में हुए है और हो रहे है। पागो ने भारत को सफल करने के लिए जिम स्तर कोर देवाने पर सत्याग्रह का प्रयोग किया, समाज उद्यो स्तर और वेवाने पर अलेरिहा के गोरी बननी स्वाभाविक के लिए सत्याग्रह का मान्य जतये रहे है। मोटयोमरी नर का सत्य

बहिष्कार-आन्दोलन सत्याग्रह के इतिहास का एक अद्भुत अध्याय है। मार्टिन लूथर किंग ने अपनी छोटी-सी उम्र में बीसों बार जेल की यातना सह करके रंग-भेद को मिटाने के आन्दोलन को नया मोड़ दिया है। अमेरिका में यात्रा करते हुए इन सत्याग्रहियों के साथ सत्याग्रह करने तथा जेल जाने का मुझे भी अवसर मिला है और मैं जानता हूँ कि अमेरिका का नौरो धोरो और गांधी के सिद्धांत को और अधिक विकसित करने में क्या हुआ है। मैंने ऐसे अनेक सत्याग्रह-सूत्र देखे हैं, जहाँ-जहाँ नौरो-आन्दोलन के कार्यकर्ताओं को सहीनां तक अहिंसा, सत्याग्रह



मार्टिन लूथर किंग

अहिंसक प्रतिकार के तरीके भी अलग-अलग देशों की परिस्थिति के अनुसार अलग-अलग होते हैं। भारत और अमेरिका में जहाँ सविनय कानून-भंग का तरीका सफल हुआ, वहाँ वियतनाम के बोद्ध-बिद्युओ ने अपना देह-अभय करके अत्याय के प्रति न केवल विरोध प्रकट किया, बल्कि जन-चेतना का भी जगाया। पिछले २५ वर्षों से वियतनाम-युद्ध विश्व के शांतिवादियों एवं सत्याग्रहियों के लिए एक चुनौती रहा है। अमेरिकी शांतिवादी सौरमन ने अपने आपको अग्नि-समर्पित करके अमेरिकी नौनियों के प्रति विरोध प्रकट किया। विश्व-प्रसिद्ध अमेरिकी शांतिवादी ए० जे० मस्टे ने वियतनाम जाकर वहाँ अमेरिकी सैनिकों के



आचे पियरे

तथा अहिंसक प्रतिकार के सिद्धांत एवं व्यवहार का प्रशिक्षण दिया जाता है। मुप्रसिद्ध अमेरिकी गायिका, जॉन वायज जो अभी जेल में है, ऐसा ही एक 'अहिंसा-विद्यालय' कैलिफोर्निया में चला रही हैं। इतिहास में ऐसे कम उदाहरण हैं, जैसा कि आज हम अमेरिका में देख रहे हैं। कमी-कमी तो मुझे लगता है, मानो गांधी के बाद सत्याग्रह का संकेत भारत से उठकर अमेरिका चला गया है। आश्चर्य नहीं कि अचरक केन्द्रीकरण से पीड़ित अमेरिकी समाज गांधी के विकेन्द्रीकरण का भी अनुगामी बनता हुआ, मोड़े ही दिन में दिखाई दे।



जॉन बायज

अमानवीय कानों की निन्दा की। पर वियतनाम-युद्ध जिस पैमाने पर लड़ा जा रहा है, उसी पैमाने पर शांति-प्रयत्नों की आवश्यकता है। लगभग २५ ब्रिटिश शांतिवादियों का एक बल्वा वियतनाम और कम्बोडिया की सहरद पर काम कर रहा है, पर वहाँ हवागरो-हजार हिंसक सैनिक और कहीं से २५ शांति-सैनिक! काय ! भारत के शांति-सैनिक वियतनाम-युद्ध की ओर ध्यान देते और कुछ स्वयंसेवक अहिंसक प्रतिकार के प्रयोग की दृष्टि से वहाँ पहुँचें !

भारत में शान्ति-सेना की कल्पना एवं स्थापना निरवचय ही एक नयी सम्भावना का द्वार खोलती है। पर हम पश्चिम के शांति-



ए० जे० मस्टे

वादियों को भारतीय शान्ति-सेना के काम की बहुत ही कम जानकारी है। हमें मातृभूमी कि मोक्ष में जब सैनिक-नारबाई हुई तथा पाकिस्तान और चीन के साथ जब युद्ध हुए तब भारतीय शान्ति-सेना ने क्या किया ? शान्ति-सेना के विचार में असीम सम्भावनाएँ छिपी हैं। उन्हें प्रकट कर दिखाने की जरूरत है।

अमेरिका के हिप्पी-आन्दोलन को भी वे अहिंसा, शान्ति और सत्याग्रह के धारक आन्दोलन का ही एक अणु मानता है। सहरद-करण, केन्द्रीकरण और पर्यटन-करण से सबल, उन्ने, बके मानव को निष्का हिप्पी-

आन्दोलन के रूप में प्रकट हो रही है। मशीन की दायता के परिणामस्वरूप ११वीं हुई सम्मेलन और परम्परा का अस्वीकार करने 'बचपन', अनासक्ति एवं निर्वाण की खोज में निकले हुए 'हिन्दी' अपने आपको न केवल अहिंसावादी घोषित करते हैं, बल्कि सामान्य और स्वाभाविक स्वार्थ की धोर उपेक्षा करते हैं।

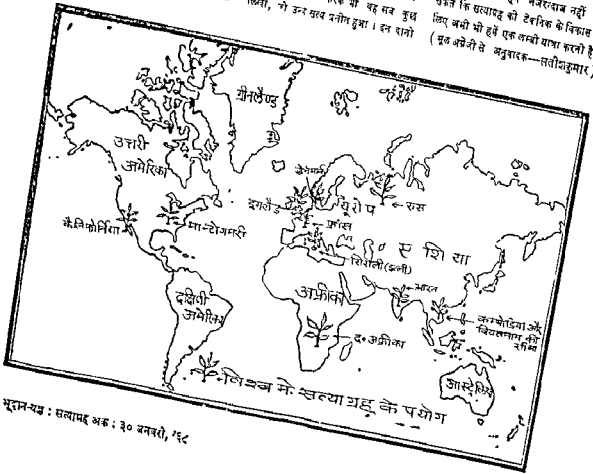
धरतिरफा २० करोड़ लोगों का देश है। भारत ५० करोड़ लोगों का और चीन ७० करोड़ लोगों का। इतने करोड़ों लोगों पर शासित, दिल्ली या पेरिस से शासन करना कतनुयः असम्भव हो जाता है। सत्ता और पूँजी का इतना व्यापक केन्द्रीकरण अन्ततः व्यापक अवलोकन को जन्य देगा है। एक पूर्वाचार्यी सत्तार है, इवय साम्यवादी सत्तार है और तीसरा अवादी सत्तार है, जिसे तटस्थ या 'नॉनएक्साइड' सत्तार कहते हैं। पर कतनुय के लोगों सत्तार एक ही ढंग पर चलनेवाले सत्तार है—नेग्रोकल्प ही इसका बुनियादी

आधार है। हम चाहते हैं एक चौथे सत्तार की रचना करना। इस चौथे सत्तार का आधार होगा, विवेकीकरण। मशीनों के दायन, सड़कों के तनाव और सत्ता के कुप्रयोग से दूर, एक मानवीय सत्तार। ग्रिटेन में इस तरह की समाज-व्यवस्था चाहनेवालों का एक दल 'बचपन नेजी' से उभर रहा है, और इन 'बचपन जागतिक' आन्दोलन में सत्याग्रह की टेकनिक का और अधिक विकास होने की सम्भावना है।

वैचारिक स्वतन्त्रता मानव प्राण की धारो है। इस धारो की रक्षा के लिए स्वयं के बुद्धिजीवियों ने पिछले दिना जा साहसिक काम किये हैं, उनको भी हम सत्याग्रह के इन व्यापक आन्दोलन के साथ जोड़ना चाहते हैं। डेनियल और मिन्योस्को नाम के दो प्रतिभा के धर्मियों का इतोलिए जेल मुगलतो पर रहो है कि सत्याग्रह सत्ता-अभ्यन्त राख-नेजाओ की वंशशा करके भी यह मन कुछ क्रिया, नो उन्न सत्य प्रतीक हुआ। इन रानो

बुद्धिजीवी लेखकों को जब से जेल की सजा मिली, तभी से सोवियत-सव के युवा लेखक-वर्ग में चेतना की एक लहर-भी पैदा हो पयी है। अभी-अभी हमारे सामने ऐसे कुछ तथ्य प्रकट हुए हैं, जिनमें साक जाहिर है कि स्वयं लेखकों एवं पाठितशादियों का एक 'अडर-पाउण्ड' आन्दोलन है, उनके समाचार-बुलेटिन निकलने हैं और अन्दर-ही-अन्दर ग्रिटेन सपटित हो रहा है। मले हो गांधी और मोरो की कड़ीटी पर से सब आन्दोलन सत्याग्रह न माने जायें, पर जब सत्याग्रह के विकास का इतिहास लिखा जायगा, तब इन सारी घटनाओं की भुजाया नही जा सकता।

बाबतूर इससे कि मानवीय चेतना ने व्याप, सत्य और बलराखा की पुकार की रक्षा के लिए अनेक अहिंसक प्रतिकार किये, पर इस तथ्य को हम नजरअन्दा नही कर सकते कि सत्याग्रह की टेकनिक के विकास के लिए अभी भी हमें एक लम्बी यात्रा करनी है। (मूल अंग्रेजी से अनुवादक—सतीशकुमार)



भूदान-ग्रह : सत्याग्रह अंक : ३० जनवरी, १९६८

निनोबा की क्रान्ति यात्रा और सत्याग्रह के प्रयोग

सरकारन प्रतिष्ठित क लिए गांधीजी ने देश में उपपत्तना पैदा की और कहा कि जाबाजी क लिए हिंसा उपाया वा अमल न ले जाने की जरूरत नहा है, बल्कि बहिष्कार पद्धति वा सहारा लिया जाना चाहिए। सरकारी बानूना का बरना ता हा, रेजिन सविनय हा। और, इसके लिए गांधीजी ने चोक-भोके पर सत्याग्रह का सहारा लिया तथा उसका मुद मागदशन किया।

गांधीजी क सत्याग्रहो वा अंग्रेजो पर अघर हुआ और भाविस्कार दश आजाद हुआ। अंग्रेजा सरकार दश के नेताओं को राज्य छोडकर चला गयी। अंग्रेजो के जाने पर गांधीजी ने स्वयं सरकार की गद्दी पर बैठना बजूल नहीं किया और कापेश से भी कहा कि उस घुत्ता म न जाकर खोडसेक सध क रूप मे दश में सगदित होना चाहिए। भारत विभाजन के बाद देश मे साम्प्रदायिक विद्वेष की जा आग लगी थी, उसे उभाने में गांधीजी कुट गये। गांधीजी के सत्याग्रह वा यह दुहरा चरण था। परन्तु ब ज्यादा समय तक बिना न रह सक। गांधीजी के चले जाने पर सरकार ने सखरीय लोकतांत्रिक प्रणाली अंग्रेजो और विनास की पचवपीय माजनाओ के द्वारा देश के विकास का कार्य गुरू किया। पचवपीय योजनाओ मे नतीजे ने देना वा औद्योगिक उत्पादक जरूर बढा, लेकिन देश की मूल समस्याएँ नहीं सुलक सक। बढती बेकारी की समस्या विकराल रूप पकडती गयी। इससे देश में गरीबी और निराशा बढी। रोटी की पैदावार भी जावादी क अनुपात में कम दखती गयी। ऐसी परिस्थिति में कही कही हिंसा आन्दोलन की धाग भी भडक उठी।

इसी दान कुछ दिवसोय घटना हुई। म १९४१ म विनाबाजी सत्यागा मे पद यात्रा कर रहे थे उस समय उह भूमिहीन

की समस्या का दशन हुआ और वह निरन्तर पड़े उस दशन के सहारे एक सत्याग्रही क रूप में उस समस्या वा समाधान ढूँढने। उन्होंने लोगो को समझाया कि गरीब और अमीर वा नेद मिठाना चाहिए, पर वह हिंसा से नहीं प्रेम स होना चाहिए, समझा-बुझाकर हाना चाहिए। गरीबी-अमीरी के भेद क मूल में सम्पत्ति की मालिकी है, इसीलिए वही समाप्त होनी चाहिए। इसके लिए मालिको वा समझाया जाय कि उनक धन में गरीबो वा भी हक है वा उहे मिलना चाहिए। जब तक यह गरीबी नहीं मिटती है एक भादमी भी जीविका के साधनो से वचित रहता है तब तक उनका समझाने की यह प्रमिया बन्द नहीं होगी। तब से विनोबाजी धपने सवतए के अनुसार सतत इस काय म लगे हुए है। वह मानते ही है कि उनकी यह यात्रा सत्याग्रह है।

विनोबाजी ने जब (१९५१) से भूदान यज्ञ-आन्दोलन शुरू किया तब से अब तक उनको सत्याग्रह की वह धारा बराबर प्रवाहित रही है। बीच-बीच म उहाने कुछ बय प्रचार क सत्याग्रह की भी पहत की।

मन्दिर-प्रवेश

वैद्यनाथ धाम म 'बड़े पण्डा' ने १९ सितम्बर '५३ को विनोबाजी को निमन्त्रण भेजा कि वे मन्दिर में आवें। जब विनोबाजी हरिजनो के साथ वहाँ गये तो पण्डा ने अज्ञानक उन पर तथा उनके साथियो पर छाडियो से प्रहार किया। उस समय पण्डो ने नारा लगाया कि अपर्ण का नाश हो और धर्म की जय हा। इस घटना वा उल्लेख करते हुए विनोबाजी ने कहा— 'गुरू में ही मे यह कह देना चाहता हूँ कि बिना 'मोगो' ने हम पर हमला किया, उहाने अज्ञानबदा ही ऐसा किया। इसलिए मैं नहीं चाहता कि इसके लिए उहें कोई सजा दी जाय।'

इस उक्ति में यह स्पष्ट अन्वयता है कि उह उस घटना वा त्रैदमात्र भी वंचित नहीं हुआ।

इसके बाद सन् '५५ में जब जयनाथपुरी में जगन्नाथजी के दर्शन के लिए विनाबाजी इसाद बहुत क साथ गये ता वहाँ भी उह प्रवेश नहीं मिला। वे विना किसी रज के वापस लोट अये और बोले कि विना भा नक वो भगवान क दर्शन से वचित नहीं किया जाना चाहिए। इसक बाद उह केरल के प्रसिद्ध तुट्टाबुदर मन्दिर में भी प्रवेश नहीं मिला। विनोबाजी अपने भूदान मिशन पर चलते रहे। उहाने मन्दिर प्रवेश का न आन्दोलन शुरू किया और न मन्दिरों के पण्डो के विरोध में मन्दिर के आगे घटना ही दिया। लेकिन २९ मई '५८ को पदरपुर के मिटल मन्दिर का दरवाजा सबके लिए खुल गया। यह सत्याग्रह की सौम्यतम पद्धति थी। इसका आभास नहीं होता था, परन्तु जिस राज पदरपुर के मन्दिर में प्रवेश मिला उस दिन सचकी आँखें खुल गयी।

आत्मसमर्पण

सन् १९६० म विनाबाजी के सामने चम्बलक्षेत्र के टाकुओ ने आत्मसमर्पण किया। विनोबा ने उस समय टाकुओ को डाकू नहीं कहा, उहे सज्जन कहा, बागी कहा। उन्होंने कहा कि किसी कोई गत्तो ही गयो हा तो वह निषङ्ग भावा के पास आ सकता है। विनोबा की बात वा अघर वागिणो के चित पर पडा। उहाने समझा कि वे उनका कुछ विचारनेवाले नहीं है। जहाँ सरकार के कानून और बजूर नाकामवाय रहे, वही विनोबा के प्रम वा शायो नामशाय हुई।

अज्ञातनीय पोस्टर आन्दोलन

सन् '६१ में विनाबाजी इन्दौर गये। वहाँ उहाने धहर में सिनेमा के बरामनाय और भूदे पोस्टर दिवालो पर देखे। वहाँ क नागरियो से वे बोले— 'क्रान्ति नगर में जो गदे इस्तहार है, उह हलाका। इस्तहारो की जगह अ-अधे सुन्दर सल यवन टिख रबो। इस सभा से जाते ही आप लोग यह गदे इस्तहार हटाने वा, एंग्रेजे का नाम करो।' उहाने फिल्म के प्रदर्शन बतौती तथा फिल्म के वितरको प कहा—

"मैं तो इस गण्य में प्रधानमंत्री के लिए आप तक, सबको नोटिस देना चाहता हूँ। इस कार्य में यदि आप लोगों की तरफ से बोल-चाल देना ही तो इस पर अखिल भारत छात्राध्यक्ष भी मुझे भरोसा है। १० वर्षों तक गलत छात्राध्यक्षों को लेखने की बौद्धिगत चलाइयाँ।"

विनोबाजी ने कहा कि अजापत्रीय रोटर हुआगी बोधा पर आक्रमण है। जब उसके पूछा गया कि इसके लिए इनका काम कया किया, तो बोले—“पुष्पा खाण यह है कि मैंने त्रिष गत्याग्रहा का जब तक रोना है, उनमें से कार्य भी गृहस्थाधम की प्रस्था की रखा के लिए नहीं था। सत्याग्रह के लिए इसके अच्छा विमल और क्या हो सकता है ?”

विनोबा का अनुरोध

सन् '६२ में माधव-विवाह को लेकर देश में ध्यायक द्विषक उपद्रव शुरू हुए, यहाँ तक कि मद्रास में आत्मदाह की घटना भी हुई। विनाबाजी उस समय पश्चिम में थे। उन्हें उपद्रव के इन घटनाओं ने अत्यंत खेद हुआ। १२ फरवरी '६१ का पश्चिम के सर्वोच्च-मैल में बोले हुए उन्होंने कहा—
 “मैंने यह तय किया है कि आज के भगत सिंह की स्मृति में से मनमान कहे। यह मेरा अन्याय बेतुक्त रहेगा। जब तक बिध को जानि नहीं मिलती तब तक रहेगा और भगवान की इच्छा रहेगी तब तक रहेगा।... मैं आज दुख से बोल रहा हूँ। मुझे उम्मा, जो मन में सबल हुआ है उसे आज के दिन आपक सामने प्रकट करूँ। उसक लिए माफो माफो है और भगवान साक्षी है। मैंने अत्यन्त प्रेम-भाव से इसको स्वीकार किया है। यह मेने अपना ओर से नहीं किया। मेरे पास क लोग जानते हैं कि ये उदात्त क विभाक हूँ और इन वर्षों में किसी भी शक्ति से और बढ़कर वे मे उपवास कर्ने, यह दाव्य नहीं हो सकता।”

पाँच दिन का यह उपवास १३ फरवरी '६१ को समाप्त हुआ। उन्होंने भावा-भूदान-यत्र : सत्याग्रह अंक : २० जनवरी, '६२

विचार को दूर करने के लिए तीन पार्सूले देश के गावने रखे। सभी लोगों के मुख्य-मंत्रियों ने पार्सूले को स्वीकार किया और देश में ही रहे द्विषक उपद्रव खत्म हुए। १७ वर्षों में यह पहला मोका था जब कि दवाहित में उन्होंने उपवास किया। दिल्लीवाजी के स्वभाव का देखन हुए विद्योती इस वतुशान की उम्मीद नहीं की। लेकिन उन्होंने बेतुक्त अन्याय को धोखा कर दी तो पूरे देश में मजहबान मच गया। सब काय परामन हो गये। दोग उपद्रव मलन हो और जानि को ग्यापना हो, इसका प्रत्यक्ष हाने लया। विनाबाजी को लग कि अब उपवास की आवश्यकता नहीं रही तो उन्होंने उपवास-समाप्ति की घोषणा की। उपवास के बाद व बोले—“अन्याय तो खानि का अनुभव थाया, आकाशकम्। उपवास कुछ परिणाम भी साथ साथ का निरला। लेकिन उस परिणाम का मनोभाव के चरणों में सम्पलन करके हममें से मैं मुख्य रा गया। अन्याय-समाप्ति के बाद कुछ चिन्तन चलन, यह व्यापारक दाम-विद्या का चलन।”

सर्वोच्च-आन्दोलन के अन्य सत्याग्रह विनोबाजी के द्वारा विवे इन सत्याग्रहों के अलावा सर्वोच्च-आन्दोलन में और भी अनेक सत्याग्रह हुए हैं जिनमें से कुछ को विनाबा की सम्पति प्राप्त हुई और कुछ को उनका लाघोवीय प्राप्त हुआ और कुछ को न सम्पति ही प्राप्त हुई और २ आघोवीय

वेदाली-आन्दोलन

जिस भूमि पर भूमिहीन क्यों से खेती करते आ रहे हैं या मकान बनाकर रहने आ रहे हैं, उन्हें उस जमीन पर मे हदाने का प्रयत्न जमीन के मालिकों की ओर से बिहार में जगद-जगद हाने लया था। पूरे बिहार में वेदाली की अनेक घटनाएँ हुईं। सर्वोच्च आन्दोलन के कुछ कार्यकर्ताओं का ध्यान इस ओर गया। यह बताया है, इसके विरोध में काबाज उदासी जानी चाहिए, इस जापय की अतीक निकाली गयी।

गदोदाम (गिहार) में सन् १९५५ में वेदाली-आन्दोलन शुरू हुआ। वेदाली विवे जा रहे भूमिहीनों के साथ कुछ कार्यकर्ताओं ने दोन पर जाकर चलना दिया। भूमिहीनों के साथ जेन गये।

कमिलनाथ में भी वेदाली के विरोध में १९ अगस्त '६० को मद्रास में १५ भौक दूर एक गाँव में भूदान-यत्र के कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह किया। इन सत्याग्रह में उन्हें सज्जना भी मिली। उन प्रकार वेदाली के विभाक अनेक छिटपुट प्रयत्न विवे गये।

सर्वांग-मनन की अनन्तरीयय यात्रा

आज आधुनिक बल्लो के कारण दुनिया बलन है और मानवाता का अन्विय अन्वय-कार-मय है। एक देश दूसर देश के मुखाविले गन्वात्य बडाये गये जा रहे हैं। मनुष्य स्व प्रयत्न से बर रहा है, लेकिन कुछ मनुष्य हैं जो मनुष्य का ही सुरक्षा के साथ पर भयभीत बनात चले जा रहे हैं। भी सही-सुभावा और भी प्रभाव मेनन के मत न यह सवाल पंदा हुआ कि क्या आधुनिक नि-सर्वोच्च-यत्र के लिए हथे कुछ नहीं बनाता चाहिए ? उन्होंने निश्चय किया कि क्या न दुनिया भर में वंरत प्रेम-भूमकर आप-विष-विस्थापक के सिलाक अन-वेगना पंदा करने का काम किया जाय ? उन लोगों ने विनोबाजी के सामने अपनी बात रखी तो विनोबाजी ने उन्हें अपना आघोवीय दिया। फिर दोन-यानी वंरत अनन्तरीयय पालि-मिशन पर निरल चले गये।

मैत्री-यात्रा

इस प्रकार एक दूसरी अनन्तरीयय मैत्री-यात्रा सन् १९६३ में निकली। उस समय चीन ने भारत पर आक्रमण किया था। अनेक देश ने दालि और अहिंसा में पूर्ण विभास रखने वाले लोग कुछ के कारण चिन्तन थे। वे मोच रहे थे कि इस परिस्थिति में क्या करना चाहिए। उनका मन अत्यन्त दुःख का और इस वातावरण में दुःख न कर सकने का मसाल भी था। कुछ लोग तो यहाँ तक मानने लगे थे कि यहाँ कुछ ही रहा है यहाँ पालि-वेनिक जायें और शानि का प्रयत्न

करे तथा इस प्रयत्न में उन्हें होम भी लेना पड़े था ही। परन्तु इसी व्यावहारिकता पर गौर धर्या हुई और उस प्रकार के बारी-श्रम की प्रायश्चित्त में सन्देह होने के कारण उस विचार का बारी व्यावहारिक स्वरूप नहीं देवार हो सका। तभी भारतीय वास्तु-मेना मर्याद तथा विचार वास्तु-निर्देश ने यह सब विचार विद्वानों के चेतन को एक मैत्री-पात्रा की जाय। यह निर्धार करने काग में बड़े महान का ऐतिहासिक विधान था, क्योंकि जिस मर्यादा का हल राज्या के राजपुत्र नहीं कर पा रहे थे, उतना हल राज्या की जनता के हाथ पर करने का यह प्रयत्न था। दोनों देशों की जनता के सामने मैत्री का विचार रखना था, उन्हें समझना था।

१ मार्च १९६३ को इस यात्रा का मुम्बई-मार्ग गांधीजी की समाधि में हुआ। इस यात्रा का नेतृत्व श्री यशराम देव ने किया। उन्होंने मैत्री-यात्रा के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा, "हमारा यह दावा नहीं है कि प्रस्तुत मैत्री-यात्रा जाब के सत्य-मर्यादा का कुछ निराकरण करेगी। यह प्रयत्न बचन है कि वास्तु और युद्ध मानव के मन की उत्पत्ति है। इस मन को, सामुदायिक चित्त को वास्तु-अभिमुख करना, स्नेह-अभिमुख करना, मैत्री-अभिमुख करना हमारी इस मैत्री-यात्रा का उद्देश्य है।" चीन-भारत के सत्य के सन्दर्भ में हमारा मुझका 'वार-रिजिस्ट्रेंस'-युद्ध-निरोध-नहीं, अर्थात् जो युद्ध-प्रयत्न चल रहा है, उतना विरोध करने-कलने का नहीं है, बल्कि भारत के सत्य का जेठे हो वैसे जरी बन हो और दोनों राज्यों के मातृकी के बीच स्वाधीन समाधान पैदा हो, यह हम चाहते हैं। दोनों प्रजाओं के बीच जितनी बड़ता कम होगी और मैत्रीभाव की मात्रा अधिक होगी, उतनी दानी के बीच समाधान की सम्भवा बड़ेगी और उतना दोनों के बीच सुख और स्वाधीनता प्राप्त होगी।"

वास्तु, स्नेह और मैत्री के द्वारा विद्व-परिवार के निर्माण की भावना ने अभिप्रेत होकर यह यात्रा दिल्ली से चली थी। युद्ध के वातावरण में मैत्री का यह अभियान एक

प्रयोगकार ही था। इतिहास में कभी भी ऐसा हुआ नहीं था। मैत्री-पात्रो विजय और पराजय की भूमिना से ऊपर की भूमिना में निश्चय से—निश्चयी विजय और निश्चयी पराजय। युद्ध का अन्त होना चाहिए और जो विचार है उसे परस्पर के विचार-विमर्श में विधाने का प्रयत्न होना चाहिए।

यह दुर्भाग्य ही बहना चाहिए कि पाकि-स्तान और बर्मा सरकारों ने मैत्री-पात्रियों को अपनी जमीन से हारकर चीन जाने की अनुमति नहीं दी, न चीन सरकार ने। यह यात्रा ३० जनवरी '६४ को समाप्त हुई।

प्रो० गौराजी का सत्याग्रह

विनाशकों की राय में भिन्न राय रखते हुए प्रो० गौराजी सत्याग्रह में बराबर रत रहे। कभी कभी पक्षों के भयों की मिलापे का प्रयत्न किया, तो कभी परिश्रमों की वास्तु-चीन के मिलापक प्रयत्न किया। एक के बाद एक प्रदर्शन उनका होता रहा। विनाशकों ने उन्हें सिर्फ इतना ही कहा—'आप विजय और नज्मा की भूमि है। इसलिए मेरा विचार है कि आप जो भी करम उठावेंगे वह अहिंसा की ही मर्यादा में नहीं होगा, बल्कि अहिंसा के लिए पोषक होगा।"

गुड-राउंडसारी के लिए सत्याग्रह

जब उत्तर प्रदेश सरकार ने गुड-राउंडसारी पर प्रतिबन्ध लगाया तो यह स्वाभाविक था कि जो लोग धर्मोपयोग के हिमायती थे उन्हें चिन्ता हो और उस प्रतिबन्ध को हटाने का भरसक प्रयत्न करें। उस अवसर पर विनाशकों ने कहा—'जो लोग युद्ध खाना चाहते हैं और युद्ध पैदा करना भी चाहते हैं, उन पर रोक लगायी जाय तो यहाँ यह चीज प्रामदान-विचार के और धर्मोपयोग-विचार के खिलाफ जाती है। हमारी ओर से यह विचार सरकार-राजको के पास पहुँचाने जाय कि इससे सबसे नीचे के तबके की राजी धोनी जाती है तो वास्तु कैसे रहेगी?' उन्होंने इस प्रतिबन्ध को नगरिक के व्यक्तित्व आजादी पर प्रहार कहा।

सरकार के इस कानून की सविनय अवज्ञा में भी विवेकी सत्य तथा श्री बोधप्रकाश

गौड़ गिरास्तार हुए। उन लोगों के इस प्रयत्न का सर्वोत्तम सत्य ने स्वागत किया तथा इसके समर्थन में उनके एक प्रस्ताव भी निवाला।

धाराबन्दी

कोई धाराबन्दी नहीं, क्योंकि इच्छे नैतिक पतन होता है तथा देश का वास्तु-विक्रम होता है। परन्तु जाब-युद्ध समझने के बीर कानून के भी लोगों ने धाराबन्दी नहीं छोड़ा। वर्षों से इसके लिए प्रयत्न हो रहे हैं। सर्वोच्च-अदालत में इस विषय पर अनेक मत हैं। किलोना बहना है कि धाराबन्दी कानून पर धरना दिया जाय, कोई बहना है सरकार पर कानून बनवाने के लिए दबाव डाला जाय तो कुछ यह मानते हैं कि इसे प्रामदान से अलग का कार्यक्रम न माना जाय। अनेक स्थानों पर धाराबन्दी के लिए धारा की कानूनों पर धरना दिया गया और सरकार पर दबाव डालने के लिए अनदान भी चले गये। अनेक ऐसे प्रयत्नों में सफलता भी मिली। परन्तु कुछ निराकरण आज भी धाराबन्दी न हो सकी, बल्कि कुछ राज्यों ने तो धाराबन्दी के कानून में कुछ ढील दे दी। धाराबन्दी के लिए जो प्रयत्न हुए उनमें मलयार (विहार), पौड़ी-नाडवाल (उत्तर प्रदेश) आगरा, आदि क्षेत्र हैं। गुजरात के सर्वोच्च कार्यकर्ता श्री आत्माराम मट्ट ने सर्वोच्च देश में धाराबन्दी के लिए १ जून '६३ से २३ जून '६३ तक अनशन किया। इस पर विनीतानी ने लिखा—

"धाराबन्दी का विषय केन्द्र के क्षेत्र में नहीं जाता है। इस पर सोचने के लिए जो अखिल भारतीय सम्मेलन हुआ था, उनमें अहाँ एकमे समझता हूँ, धाराबन्दी न करने की राय नहीं ली गयी है। अब प्रायोजी की सोचना है। कुछ प्रायोजी ने धाराबन्दी को ही, कुछ ने नहीं की है। ऐसे हालात में धाराबन्दी करने का काम उच्च-उच्च प्रायोजी में रहे। जवाहरलालजी (वर्तमान प्रधानमंत्री) को मोटिय देने का कोई मतलब नहीं।"

कभी राजस्थान में 'राज्य में पूर्ण धाराबन्दी' होइ सका प्रयत्न चल रहा है। २ अक्टूबर '६७ को मुख्यमंत्री के निवास-स्थान पर उपवास, भजन, प्रायश्चित्त आदि

सत्याग्रह हुआ। जयपुर-जगह धराय की दूतगतां १२ परला दिया गया। २ अक्टूबर १९६६ तक पूर्ण सत्याग्रह-बन्दी अवर नहीं हुईं तो सत्याग्रह करने का संकल्प भी है। राज्य में सत्याग्रह समिति का संयोजन हुआ है, जिसके संयोजक श्री गोगुलभार्ति मठ है। राज्य में नधानन्दी हीभी हो चाहिए, न ही तो सत्याग्रह किया जाय इसके लिए राजस्थान समग्र सेवा धर, सर्व सेवा सच, श्री जयप्रकाश नारायण तथा विनोबाजी का समर्थन और भागीदार प्राप्त है। विनोबाजी ने कहा है, "हूने राजस्थान में प्रायदान 'राष्ट्र भाग' किया है, इसलिए 'शोलाशुद्धी' प्रारम्भ-बन्दी को सहज ही है। राजस्थान निष्पाय पडा है, दुख जो जान जायगी। एक बगह जो उभेगा तो सब में प्राय-सचार होगा। आशा है, जब राजस्थान जाय जायगा।"

विनोबाजी ने इस आन्दोलन का अन्त आघीर्षित देते हुए यह कहकर कि राजस्थान में जान तो आयेगी, कृपा स्पष्ट कह दिया कि अगर प्रायदान का काम नहीं हुआ होता या होता रहता तो नधानन्दी के लिए क्षयाग्रह की सजावट उन्हें धायद ही मिलती। लेकिन प्रायदान भी नहीं और सत्याग्रह-बन्दी भी नहीं, यह ठीक नहीं। अगर प्रायदान नहीं तो सत्याग्रह ही रही।

राजस्थान में सत्याग्रहों के सत्याग्रहों में बहिष्कार और सत्य-शय लोकनिष्ठा का बाह्य है, इसमें यह सत्य चाहिए कि वह सत्याग्रह गसत दिया में नहीं जायगा।

तमिलनाडु का सत्याग्रह तमिलनाडु में पडो के पास अधिक जमीन है। उन जमीन की बन्दीबन्दी ठेकेदार करते हैं। इसके कारण किसानों का आदा घोषण होता है। श्री जयशायन्वी का कहना था कि जिन गाँवों में प्रायदान किया है उन्हें सीधे मटो को और ते जमीन कोठने के लिए मिलने चाहिए। इस पर परजम्पित राजी नहीं होने दे। श्री जयशायन्वी ने विनोबाजी से पचां को और उनकी सम्पत्ति पंगी। विनोबाजी ने उन्हें सत्याग्रह करने को हवाअव दे दी। उन्होंने कहा, "मैंने इसके लिए सत्याग्रह करने की अनुमति दी है। हुज

लोग समझते हैं कि बाबा सत्याग्रह करने के लिए अनुमति नहीं देता। मैंने पहले ही पूचना ही है कि जिस विषय को सब समझते हैं उस पर सत्याग्रह करना और जिस विषय को लोग नहीं समझते हैं उसका विचार प्रचार करना।"

१६ जुलाई '६५ को श्री जयनाथजी ने अनिश्चित काल तक का अनदान मुक्त किया। २२ जुलाई को सातवें दिन उपवास समाप्त हुआ। इनके पहले किसानों ने भी अनदान ग्रन किया था। बड़े पैमाने पर गिरफ्तारी हुई थी। मुख्यमन्त्री के आदेशानुसार पर श्री जयशायन्वी का अनदान समाप्त हुआ था। श्री कामराम ने इस मामले को अपने प्रयत्न में निपटाया। इस सत्याग्रह को उपलब्ध प्राप्त हुई। इस उपलब्धि पर विनोबाजी ने लिखा— "सत्याग्रह ही सफलता ली निश्चय ही थी, क्योंकि भीमाक्षी देवी का आशीर्वाद नि सत्य ही उनके पीछे था। मैं सर्वविधा का धन्यवाद।"

पूजान-यज्ञ के समय से लेकर आज धाम-यज्ञ तक आन्दोलन कभी वेगवान रहा, तो कभी भी थायो, और जितने ही प्रतिक्रिया के सिक्कार नो हुए, परन्तु इस आन्दोलन के प्रवर्धक और शान्ति के श्रेष्ठ विनोबा बगबर सत्य की शोक में लगे रहे। कभी प्रवृत्त हुए तो कभी मूकम में प्रवेत किया। कभी मूकम के वेग में आगे बढ़े तो कभी महा नूतन का अनेका भी महदुख किया, पर बानी राह पर आगे बढ़ते गये। लाखों एकर नूतन मिखा तो कहा—पूजान से काम नहीं चलनेवा, धामदान ही। धामदान हुआ तो कहा—प्रसन्नदान जिलादान का मन्त्र पूरा। और जब जिलादान हो गया तो विहायदान का मन्त्र सत्य और निराल पर। और जब निराल पर। इस प्रकार थायो के बाद सत्याग्रह की अक्षयघारा प्रवाहित है—जाने भी प्रवाहित रहेगी।

उत्तरप्रदेश कोओपरेटिव बैंक लि०
मुख्य कार्यालय लखनऊ
स्थापित १९४४

(संरकोर छात्रेयारी का सहकारिता
आन्दोलन की घोषण सत्या)

केन्द्रीय कार्यालय : कागरा, बरेली,
गोरखपुर, कानपुर, लखनऊ।
शाखाएँ : कागरा, बरेली, फैजाबाद,
गोपा, सीतापुर, कानपुर-नवीन मार्केट,
कानपुर बी० ए० बी० कॉलेज, रामपुर,
लखनऊ-महात्मा गांधी मार्ग, लखनऊ-नागा
हिंसाळ, पीलाभौत।

प्राय्य बच पूंजी -
नवीन पूंजी ४.१४ ङ० करोड़
निक्षेप ६६० ङ० करोड़
कार्यरत पूंजी १७५३ ङ० करोड़
४० ङ० करोड़

धरोहर पर हमारी व्याज की दरें

कानू खाता	४	प्रतिशत प्रतिबर्ष
नचन खाता	२	" "
सावधि धरोहर	४ से ८	" "
किरिर जमा योजना	७ से ८	" (बचत)"
धोरासिंह वमा		प्रधान प्रबन्धक
८० पी० सिंह		मधुरा सिंह
अध्यक्ष		उपाध्यक्ष

प्रचार चितक आचार्य दादा धर्माधिकारी
प्राय लिखित

प्रसिद्ध प्राम्ति
की
प्राम्ति

मुख्य : धार एवं
सर्व-सेवा-सच प्रायान,
रायपाट, गारायसी-१

भूदान-यज्ञ : सत्याग्रह अंक : ३० जनवरी, '६८

—तृष्णकुमार

एक उपवास और उसकी प्रतिक्रियाएँ

भावनपर—भारत का एक काना। पवित्रम दिशा के छोर पर बसा हुआ एक छोटा सा नगर। उर्ध्वो समस्त देश को स्पष्ट करनेवाले तीन प्रन्दो का लेखर एक शतबाहु बल रहा है। शतबाहु का माध्यम है उपवास। आनेवाला प्रत्येक क्षण उच्छ्वास को अधिक धीमा करता चला जा रहा है।

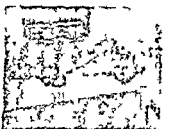
समस्या है भारत ज्योती, इसलिए माग भी है भारत-आपी निराकरण की। परन्तु व्यक्ति है भावनपर ज्योती, जोरपट्ट ज्योती, अधिक-से अधिक मुक्त-ज्योती। इस मार विना ज्योती विनावा द्वारा भी चले है क्या सारी दुनिया की गराब बन्दी क्यों नहीं सोचते? इसलिए कि सारे दुनिया में आगो वही नही और उतना। आगका अधिकार नहीं ऐसा स्वर धमके है। तो मे आगको मुक्त का कहता है कि सारे भारत के लिए भी आगका अधिकार नहीं है। वह अधिक-से-अधिक हा सता है, मुक्तता के लिए क्योंकि वही भी मानने कुछ देना भी है।

शतबाहु कोन कर शरता है और सचा यह वा क्षेत्र विज्ञता हो सकता है, उसका स्पष्ट संकेत एक श्रमण शतबाहु की उपपन्न धर्मो में से मिलता है। शतबाहु व निवार क्षेत्र के अधिकारो व्यक्ति भी मानमा देवार ने भी एही लिखा कि मुक्तता उनकी घेना वा क्षेत्र है। उपवास क म-प्राथम को मुक्तता के बाहर मर्यादा का बाको है।

परन्तु यह शतबाहु आत्माराम भाई भूट अपने नियम में अधिक है। उनक हृदय में एक वाय है। ज्ञापन को वे कन सहन नहीं करेगे। अन्वय का प्रतिहार करने को धाम-साक्षि सचा प्रति जनमा प्राण है। साथ साथ धार्मिक बौर बलिदान सा आनम का प्रतिहार करने की धार्मिक-विज्ञता भी उनकी प्राप्त हुई है। इसलिए—(१) सारे भारत में उपवास बन्दी, (२) जन्मदिन-विरोधी विज्ञानन क्षेत्र के मोहलम न लिये जाय और (३) समस्त धर्मो-समाज के लिए एक समान बाहुन लाय हो। इस प्रस्ता पर मान्य नहीं विना

जायमा तो मैं मान दूँ कि वे प्रश्न बलिदान भोग रहे हैं और इन प्रश्नो की मांग मे पूरा करणा। यह भी उनकी भूमिका। जोर-तात्किक राष्ट्र मे लोकहित विरोधी कोई भी चीज चले क्यों? किशो भी व्यक्ति को उसका प्रतिहार करने का अधिकार है।

आतित वृत्ति-विज्ञत समय पर परमेधर का नाम लेकर उपवास आरम्भ हुआ।



आमाया भट्ट

वैदुष्टुनि राधा धर्मविचारो के जिला मेरे धर्मो में जितनी धाम्य है उसका बलोरकर मे उनका अनुप्राण करता है कि वे बिना किसी शर्त के उपवास का मन्त कर दें। हूँ अपने बात दूसरो को समझने से ही सहीप मानना चाहिए। दूसरो से भी मेरी यही अपेक्षा रहती है कि वे मुझे अपना बात समझाने उठाए करें। मुझ मनमाने के लिए किसी ना प्रकार क बत का प्रयास-आध्यात्मिक चरित या जीति-न करे। इसलिए मे तब रिगो भी प्रकार क बत का प्रयोग नहीं करता।

प्रधानमंत्री धामका दरिवाको मे उहू लिखा बानो सोमा का मनमाने क लिए उपवास का शर्तका उन रिगो शोक का, जब हूँ एक विज्ञा राज्य क साथ घबरे कर रहे मे जो जना की दुःखका क प्रति बरकरार और बातर द। एतिस पूर्ण तरीके से अपना मर्ल देण करने क धर्मो रासत अब मनेक तात्किक क लिए कुले हुए है। हमारे अके क तात्किक मनन में धार्मिक मुधार का नाम अन्वत का विना और उते मे लेन व इकने क बत

साम्य कार्य द्वारा ही पूरा हो सकता है। ऐसी हान्य के मर्तो का मरूट कपने क लिए क्या उपवास का रास्ता बनना उचित है?

उप प्रधान मंत्री भी मोरदरो भाई भी यही संवेद करते है जोरपट्टो म रिगो भी बाहुन में कर करने का नाम सहर कर है। इसलिए सहर-सहरको भी बाहुन करना चाहिए। लोगपट्टो में अन्वत से कोई भी बाहुन नहीं हो सकता, ऐसा मे मानता है।

पहो बात धर्मो धार्मिक विज्ञता पर हमारे तत्किक धामने धोरदराने मरूट बायो तहू से समझते है— लोउज में शरदर की तीन विमोदरिणी हारी है (क) पाठन (ख) जन-व्यथा, (ग) लोउजिक मुधार।

(क) पाठन क लिए जना मे विज्ञितिको को पुनरार देना है उतना अधिकार बायो है। अन्वत और येन जायन रहते में, आहार निवारण में वा किसी प्रकार जसता को कुले मुधार के लिए राजम द्वारा एतउपध निवार उतना लोउजमम अधिकार है।

(ख) जन-व्यथा क लिए राम पूर्ण रूप से एतउपध निवार नहीं कर सकता। उस बनता भी अनुपुन कायनपण का प्यान रहना पड़ता है। लोउज मे 15 पट्टु पर भी मुरदरर क लिए हकी मर्तुत करती है।

(ग) धार्मिक मुधार के लिए किसी भी हान्य में शरदर एतउपध निवार नहीं कर सकता है। उतक विग विग मुधार का उग्रपण का प्रया में मुधार का है उग मुधार और मरदर क मुधार उग्रपण उचरने वरुन अधिकारी है। जब तक उग्रपण क मुधारको को उरत व वरुन की हान्य है—उतक शरदर और एतउपध निवार क मुधार मरदर एता है का वह किउत भा मरत नई, मरदर क उग्रपण अधिकार का मर्तुत क बाहर क का हान्य। इस हान्य मे उग्रपण का निर्दर उग्रपण क अतर्कीयत विरुत का बाहुन बन क लिए उग्रपण विना का उग्रपण क विन शरदर का उग्रपण को मनेक क लिए

मूदान-वर्ष सन् 1954 अंक ३, जनवरी 1954

निजी मो सुधार के निमित्त दण्ड-युक्ति का हस्त्यास करने के लिए विवश करने हेतु उपवास नहीं किया जा सकता है, ऐसा मे मानता हूँ।”

उपवास एक शासन हाथों भी वह अपने मन में वाता है। घोषण, घोषणार और घोष्यमन भूमिताना मे उपवास का स्थान काष्ठि का है। “मुझे अब खाया नहीं जागा, इसलिए मैं उपवास हूँ”, यह दण्ड अन्तम कदम को सूचिका हो सकती है। उल्लाप्य के इस माध्यम को अपनाते में यह प्रम-विशेक भग हो रहा है, इस ओर भी अनेक जागृते ने संवेत किया। बापू के साथो आचार्य कृपाशानीजी उपवास के अन्तिम घण्टे को अपनाते के पहले करने के बारे में जिंक करते हुए लिखते हैं कि “हमें अपने शरीर में भ्रिजि के लिए हमेशा परना नहीं है, किन्कि अक्षर सधर की भ्रिजि के लिए बागा-राय में निरना रहना है।”

अन्वय के प्रतिनार के बारे में प्रचण्ड प्रयोपक स्व० लोडियाजी ने लिखा “ मैंने पापीजी को तीन दिन तक सफाकार अपनी यह राय बजाने की हाथिया दी थी कि वे बार-बार उपवास करके देत को आत्मप्रबन्धना सिखा रहे है।” अपनी बात उदाहरण से, अपना उदाहरण और प्रचार के समय से अपना उदाहरण, प्रचार और कानून के त्रिनेनी साम से भ्रिजि को जाय। राजनीति के ओर विजने रास्ते है विनयों से कुछ हम लोगों के चर्चा में भी आप देन चुके है, अरनायें, लेकिन अपना उपवास जरूर छोड दें।” अपने वा उल्लाप्य के विचार-अेन में बताधिशाही बताते हुए प्रभतापूर्वक जय-प्रकाशजी एक पहलू की चीज की ओर प्यान दिखते है “मुझे लगता है कि हम सर्वोत्पवाले कोर सोनविशय के बर्दिन बायों की दण्ड प्रचार के आत्म-नलिदान के सकेयों द्वारा बर्दिनार कर देना चाहते है।”

पत्रों की बर्षा हुई थी। लिखे हुए तीन सवास ओर उल्लाप्य के विभिन्न पहलुओं को अनेक दृष्टिकोणों से देखा गया था। राज्य-सुधार, निरीध-पत्रों के अदण्ड्य विचारको तथा विभिन्न सामाजिक कार्य-शेको के अन्विष लेखनों

ने उल्लाप्य के विषय में उल्लाप्यों छानबीन की थी। निरार भी जो कुछ छुट गया था, उसे लख बार जो कुछ रखा गया था, उसका विस्तार अर्थ काके घोषाप्य के प्रमुख धी बनुमानें जाहने जगने सुन्दर बग से घोषापान विवचन किया कि सल्लाह के रिषाओं के लिए गो बहू एक उत्तम चर्च ही बन गया। उपवास के बहूत घारे दिना में अपनी नादुस्त तबीयत लेकर भी वे उपस्थित रहे थे और स्वाशाब्दशास की तल्लोक हान हुए भी आत्माराय भाई को सम्मन्ने क लिए पण्डा बालते रहते थे। परन्तु वह उपवासी ता अन्विष ही थे। “जब तक मेरो कुजि का बात बंचनी नहीं तब तक मैं उसे स्वीकार नहीं कर सकता”, यह जनकी दलील थी। और उपवास के दिन बरने गये। इसके पूर्व दुसर प्रदतो का लख आत्माराय भाई ने करीबन उस-बारह दशा उपवास बिचे थे। परन्तु अभी घोषीय उपवास से आगे बडना नहीं हुआ था। कुछ-न-कुछ समाधान ही जाना था। परन्तु इन बार तपस्या कठिन थी। चौबीस दिन ने आगे दिन बरने लगे। सिविल सर्जन, कलेक्टर तथा डी० एच० पी० साहब ब्रितित थे। सभी उन्हें सम्मन्ने का आने-अरने इन मे प्रयत्न बरने थे। परिवारवाले जो जगें सम्मन्ने की बोधिया छोडकर विषों सेवा और प्रभु-पार्थना के अन्विषारी रह गये थे। अंके-अंके दिन बरते जा रहे थे, आशा के आसार भी छूटते जा रहे थे। पायड इस्वर को सोचना में कुछ और हो है, यह मान बंटे थे।

उपवास का ३३वां दिन था। सकट-काल के घटा साथी वजुभाई तो सन्धिध में थे ही। उस दिन आत्माराय भाई के पण्डित विन और घोषाप्य राज्य के प्रभुपूर्व विधा-मन्त्री धी जायबजी भाई मोदी आये और एक अधिकायुक्त स्वर मे उन्होंने बहू, “मुझे और कुछ सम्मन् में जाता नहीं। मैं तो इस्वर के नाम से आपनो कहुना है कि यह उपवास छोड दीजिये और चले, हल दीनों साथ में काम करेंगे।” न मायुष वया चीज थी, जाहू या वा सम्मत्तर, परन्तु चीज

धी कोई कुजि थे गये। उस बात पर आत्माराय भाई ने मुद्रिभक्त से दो निवट विचार किया होगा और मान गये। बिज परमात्मा का नाम लेकर उपवास आरम्भ हुए थे, उभो परमात्मा के नाम पर उपवास नो लिखा नि “उन्होंने परमात्मा के नाम पर उपवास छोडने को मेरे पास बाव की ओर सेने अण्ण्य रीति ने वह स्वीकार कर ली। और उन स्वीकार बरने हुए मैं बिल्कुल हलका बन गया। पायड मेरा बलिदान परमात्मा का मजूर नहीं था।”

एक तरह में ३६ दिन को तपस्या में देता के घामने मोदुर प्रदतो को लेकर देत के एक कोमे में एक उल्लाप्य हुआ। सत्याग्रह का तीरना अन्विषन हाव हुए भी उचका उदरुप्य जगना नि स्वाधी और लोकद्विजनेक था कि उस उल्लाप्य के बहूत घारे घाषिणों ने पात्रनले बा अनुभव किया। निधर भी जब उपवास न टूटा तब उसके पितर भी एक शक हलका हा गया। “आनन्द” का अनुभव हुआ।

बाबा की बात याद आती रही कि “उल्लाप्य हो रहा है, ऐसा सुनकर ही मन में घालि हा, पीतलना का और कुछ बध्ना हो रहा है ऐसा मान उटना चाहिए, तभी बहू उल्लाप्य बहू जायगा।” यही उपवास टूटने पर ऐसे मान उडे। सपनुच में उल्लाप्य के तरोके के तीर पर उपवास का शासन आमलोको के लिए मानना ही नहीं चाहिए।

बहू जाता है कि स्थितप्रथा हाथ में लखार लेकर भी बाहिए रह सकता है, बंटे ही यह शासन भी स्थितप्रज्ञ के लिए ही सुरक्षित रहना चाहिए। अन्यथा यह शासन साथ ही मुण्डान बरता। तप्य पीठी के मन में उपवास के साथ-साथ उल्लाप्य के लिखाय की भाकना उठती। उल्लाप्य में अक्षरय में से शरय, अन्धेरे में से प्रकाश और प्रदुमें से अमरता की ओर के जानेवाले शुण्ण्य को शुण्ण्य-धीरध से बातावरण भर जाना चाहिए।

—मीरा

खरीदिये

भण्डू को आयुर्वेदिक, एलोपैथिक तथा बायोलाजिकल दवाएँ

ZANDU and Dhanvantari

Since 1910,
has been within
the reach of
every one, even in
the remote-corner
of our country in
Quality, Reliability &
Economy

This 55 years old firm
has been based on the
sound principles of
aid to the ailing
to restore the health, &
prosperity within
their means
In keeping pace with
the times, this
**Sign & Seal of
Confidence**



to-day is a leading
name in the
manufacturing of
**AYURVEDIC, ALLOPATHIC,
BIOLOGICAL, MEDICINES**



**ZANDU
PHARMACEUTICAL
WORKS LTD**
Gokhale Road South Bombay 28 (INDIA)

भण्डू फार्मास्युटिकल वर्क्स लिमिटेड
गोखले रोड (दक्षिण), चम्बई-५८

भुदान-संख्य - सत्याग्रह अंक : ३० ब्रह्मचरी, १

.. और हिंसा की धार कुंठित हो गयी

कलकत्ता से एम० बी० एम० करने के बाद जब डा० एम० के० माधवी ने प० बंगाल के बेदिनापुर जिले के एक छोटे-से गाँव में अपनी प्रैक्टिस शुरू की तो परवालों को बड़ी निराशा हुई। लेकिन कुछ दिनों बाद उसकी सेवाभावना के कारण पंसा तो कम, किन्तु उब इलाके के लोगों का स्नेह-मत्कार बरपूर मिलने लगा जो निराशा घटी, अग्रणीय कम हुआ। डा० माधवी का व्यक्तित्व जैसे कोई खास आकर्षक नहीं था, लेकिन उसके बन्धु के भावों को उसकी आँखों में झलककर जो भी देखता था, कुछ ताणों के लिए ही घटी, उसे अपना मान लेता था।

कमनाब छद्म छाल पहने ही एक घटना है। गाँव की एक विधवा बूढ़ा ने अपनी ७५ बीघे जमीन को गाँव के लिए दान कर दिया, वह जाहूती थी कि उसके बच्चों का एक स्तूल और गरीबों के लिए एक गुप्त खाना बनवाया जाय। गाँव की एक कमेटी बनो और अपने एक राय होकर इलाकी विधेदारों डा० माधवी की सेवा ही बाबत रूल और बसपता दोनों शुरू हो जायें, इसलिए वृद्ध जो-जान से विह्वल कर रहा था।

"आरये, घोष बाबू! आपकी कष्ट करने की क्या जरूरत थी, मैं खुद हाजिर हो जाता, आप लूचना भेज देते। कहिये, क्या सेवा करें ?"

"मैं जानता हूँ बाबटर। तुम एक विनय-घीन, सेवाभावी होनहार युवक हो। बुद्धि उम्मीद है कि तुम इस इलाके की ही नहीं, इस देश की बड़ी-बड़ी कीर्णार्ण पुरी बनोगे।"

खिचरी मुझों से इके होये पर नुस्कराद का भान साजे हुए घोष बाबू ने आगे बात बायी रखी— "युद्ध है जैसे दुबक को तेबकर हूँ मैं होजा है।" अपनी अभिव्यक्ति को प्रतिबिम्ब देहने के लिए साधर उठ्ठीने माहती के बेदरे की गौर से देखा। बाबटर नहीं बचक सवा कि घोष बाबू इध भूमिका

भूतान-बद्ध : सत्याम्ह अंक : ३० जनवरी, '६८

की बुनियाद पर क्या चीज प्रस्तुत करना चाहते हैं।

"मैंने सुना है कि तुम मेरे ताताब की परिचयवाली जमीन में स्तूल और बसपता बनाना चाहते हो।"

"जी हाँ। स्वर्णिय भाग्य नाजू की वृद्धा परंपरली ने पूरे ७५ बीघे जमीन का दान कर दिया है, वे मरने से पहले अपनी आँखों से देखना चाहती हैं यहाँ बच्चों को पढ़ते, गरीबों को दवा लेने।" माहलो ने उत्साह से कहा।

"या तो ठीक है बाबटर। लेकिन, साधर तुम नहीं जानते कि और तुम जानो जो बेंडे ? तुम तो जयपन से इस गाँव में रहे नहीं, बागुदा और बेरा एक-बच ऐसा था, जो छोटेदरों में भी बूझने पर कही मुश्किल से मिलता है। इलाके भर में हमारे राम-लक्ष्मण की जोड़ी मजाहूर थी। जेक बार मैंने आगुदा के साथ रामलीला में लक्ष्मण का पाठ दिया था।"

"ओ हाँ!" बाबटर ने इस दूरव्यपूनं भूमिका की मुनकर घोष बाबू के चेहरे से कुछ अन्वय लगाने की कोशिश की।

"अब सुपने बना दियाना, बरने ही तबके हो। माले समय आगुदा बनी तपो में थे, दवा-शरु का प्रकथ मैंने भरपूर किया, गाँव की तरह पंसा बहाया, लेकिन मेरी लक्ष्मण ने साथ नहीं दिया, आगुदा हूँ बाबटर की गौर से अपनी आँखें पोपी और कोले गये—"

"लोक-व्यवहार और लेन-देन का मायला-तबकी ने भाभी से कायब बनना लिये। कुछ धाउनमें मैं भी से सब करना पडा था।" लेकिन उस बेचारी वृद्धा की साधर याद भी न रही।

इस क्षणों का तसना करे और उसका दिल डुबे, यह तो मुझे न हो सकेगा बाबटर! लेकिन दुग्धी बजायो, जब रकम को बगुबी का जब एक ही साधर है यह जमीन,

विने उस वृद्धा ने दयापर्म की भावना ते प्रेरित होकर दान कर दिया है। मेरी भी इच्छा है कि गाँव में अच्छे के लिए स्तूल खुले, गरीब-बेचारी के इलाज का प्रकथ हो। मैं भी अब कितने दिन ना मेढ़मान हूँ ? बाबिर कुछ परलोक के लिए भी तो करना ही चाहिए। तो, मैं उसके लिए दो-चार बीघे जरूर छोडूँगा। कुछ नबद भी दे दूँगा। काम बाने बडेगा तो सरकार भी मदद देगी, भोर फिर ।"

"लेकिन..."

"लेकिन-लेकिन कुछ नहीं बाबटर। यह बात एकही रही। तुम अपने लडके हो, तुम जकरत पड़े तो सकोच न करना, बाबिर हूय तोय तुम जैसे होनहार युवक की सहायता नहीं करेँगे तो 'हाँ, क्या गाँववालों को समझ देना और उस वृद्धा को भी।" घोष बाबू मुस्कराने, धमकी संभावना और चल दिये। बाबटर की निगाहें टोनी-सी देखती रही।

× × ×

घोष बाबू की सालों जिकने मुर्गी, जनकी बदनोमती का उब विरोध निम्न। घोष बाबू ने शाम, दाम, दण्ड, भेद से काय निभावने की कोशिश की, लेकिन पाठ न बनी।

स्तूल और अस्पताल के छोटे-छोटे दो कमरे उस जमीन पर बना लिये गये।

कच्ची ईंट की दीवारें, गुनबन से दूध के छप्पर, जेजे के छोटे-छोटे घोरी ने पिण बागिन, बड, तेषार हो गया गाँव का आश्रम। दुर्गायना के दिन उद्घाटन की तैयारी होने लगी।

× × ×

दुर्गायना की तैयारियाँ चल ही रही थीं, सिर्फ एक दिन बाकी था। बाबटर माहती अपने पदासन में बैठ था कि एक लडका बीस्टा हुआ आया। वह मुझे तरह हाँक रहा था। रती मुश्किल से मनने की संभालते हुए उसने कहा, "बाबटर दा, मैं लोय का रहे है—" बाबटे चार सौ-गाँव सो होते। बब क्या होगा बाबटर दा... ?"

"कौन का रहे है ? क्यों का रहे है ? कही का रहे है ? तुम इतने परपोजन क्यों

हो रह हा ?" डाक्टर भी घबराया ।

"घोष बाबू के लटैत हमारे इस नये स्कूल और अस्पताल में आग लगाने, हमें टूटने—मैंने अपनी आँसो देता है—बापरे ! बन्दूकवाले नी है !" लडके ने जवाब दिया ।

डाक्टर को समझत देर न लगी कि यह घोष बाबू की बदनीयती का अन्तिम वार है । वह सोचने लगा—'क्या करें ?' 'मुक्ताबिला -?' 'कैसे -?' 'किनके साथ -?' कुछ धापो के लिए जैसे वह जड़ बन गया, फिर कुछ मूढग, बोला, "अनिल तू जल्दी जा । प्रवीण को साथ लेकर गाँव के युवक, बूढ़े, बच्चे, स्त्रियाँ जो भी मिलें, सबको आश्रम पर इकट्ठा करो । मैं अभी वहाँ पहुँचता हूँ जल्दी करो अनिल । आज हमारी दुम्हारी, सबकी अग्नि परीक्षा है । चूक हुई ता गये ।" अनिल दौड़ गया ।

डाक्टर आश्रम पहुँचा । गाँव में यह खबर बिजली की तरह फैल गयी । नव जवानों का खून उबल रहा था, तुल्हाडी, गंडासा, बाम, फावडा, जिसको जो मिला वही लेकर दौड़ा ।

"टहरो !" रास्ता रोकते हुए डाक्टर ने कहा ।

"दादा । बेचिकर रहो । आज हम घोष के बच्चे को मजा चखाकर दम लेंगे ।" जोर में सबकी भुजाएँ फटक रही थी । बोलें बगार हो रही थी । "लेकिन एक भी आदमी हमियार लेकर आये न बडे । अगर किसीने भी हथियार चलाया तो सबसे पहले तुम लोग अपनी आँसों के सामने अपने डाक्टर को लाम दखोने ।"

"यह क्या कहते हो दादा ! हम लुट जायें ? अपमानित हो जायें, पुपचाप कायर बनकर !" नवीन की बोलें भर आयीं ।

"यह मेने कब कहा ? हम न लुटेंगे और न अपमानित होंगे, हम उनका मुक्ताबिला करेंगे । गोद के बच्चे, घर तो बहुरें, बडी बूडो माताएँ, साठो टेकर चलनेवाले नूडे, और माप को आग में जल रहे तुम सब लोग एक साथ मिलकर, डटकर ! और जब तक हममें

मे एक भी जित्ना रहेगा, पाप बाबू की उम्मत सना बिजयो नहो होंगी !" डाक्टर ने भाव-वेष में कहा ।

लगभग पूरा गाँव जुट गया था । सब लोग निर्वाक खड़े थे । डाक्टर कह रहा था, "हम मुक्ताबिला करेंगे, लेकिन खुद भी उनकी तरह जगली पगु बनकर नहो, बल्कि इन्सान बनकर । हमें मौत का भय नहो करना होगा वह तो अपने निश्चित समय से ही आयगी । कौन जाने, हमारी सबकी जित्णो दुनिया को एक नयी द्दिक की प्रतीति प्रदान करने के लिए ही बनी हो ?"

लोग सन्न रह गये । गांधी की कहानी लोगो ने सुनी थी । दो बार ने वह दृश्य भी देखा था कि जवान सडकी-सडके हाथ मे तिरगा भग्ना लिये 'जय हिन्द' का नारा लगाते आगे बढ रहे है, सिपाहियो की गोलियाँ उढ भून रही है, लेकिन जब तक साँस रहती है भग्ना फुकने नहोँ पाता । क्या पुन वे ही दृश्य लौटनेवाले है ? किसको पता था कि अग्नेयो स्तूल में पडे लिखे इन डाक्टर के दिल में भी गांधी की बात जमी हुई है ।

आश्रम के चारो तरफ लोग नतार में खड़े हो गये । डाक्टर ने कीर्तन गाना गुरु किया । गाँववालों ने साथ दिया ।

× × ×

"जय बजरग बली की !"

"जल्ला हो अबबर !"

घोष बाबू की सेना सलकारती हुई जली आ रही थी । डेढ सी छत्राब की चोटलें और साडे सात सी नकद खर्च किया था उन्होंने । आखिर ७५ बोधे का मानसा था । घानेदार को भी अच्छी रकम भेंट कर चुके थे । वह सपपें का साम्प्रदायिक दने के रूप में रिपोर्ट करने के लिए तैयार था । इसीलिए घोष बाबू ने कुछ मुसलमान भी इकट्ठे किये थे, उन पर हुनो रकम सच की थी । और इतनी तैयारी कर चुकने क बाद इतमीनान से अपनी कोटी की जगरो छत्र पर बैठे घानेदार ग्राहब के साथ हुनरा गुटगुहाते हुए यह दृश्य देख रहे थे ।

उत्तेजित भीड आगे बडी, किन्तु सामने देखा ता सब स्तब्ध रह गये । "क्या इहो पर वार किया जाय ? गाँव के प्रतिष्ठित स्वर्गीय आंगु बाबू की पच्चासी वर्षीया धन पत्नी पर ? मुघीबत के वक बुलाने पर बाधो रात को भी हमारे घर दौडकर जाने वाले उस डाक्टर पर ? उसने वगत में खडी उसकी पत्नी पर ? मोद के नड सिंगु पर ? आखिर हथियार दिन पर चलानें ?"

प्रोध प्रोध की आग को भडकाता है, लाठी लाठी को उत्तेजित करती है, किन्तु किन्तु खाली हाथ ? नये सिर ? आदमक की अन्तरात्मा को पुकारते है उसके दिल की संवेदना को जगाते है उसकी बेहोश दसानियत को भक्तभोरते है ।

'क्या देखते हा ? आग लगा दो खून कर दो लूट लो !' दल वा नाम चिल्लाया और अपना भोटा-सा साटा पुनड ह्म आगे बडा । भीड खुद खिसनी गाँव बालो को नतार खडी रही ग्यो की लो भजन व ता रहा । "हट जा सामने के बायर बघोने !" लेकिन अजन चलता रह, लोग अपनी जगह अडे रहे ।

आक्रमणकारियो के पाँव धम गये । लण, जैसे इहोने आगे बढने से इवार कर दिया । गरदनें झुक गयी ।

"बापड लोटो !" मरो हुई आशाब ने नायक ने कहा ।

× × ×

"गांधी वा देग है ।" घानेदार के मुह से बरबख निचल पडा ।

× × ×

और डाक्टर माइनी गाँववालों क साथ आश्रम में सगे गांधीयो के चित्र के सामने खडा था । उसरो जौखो छे बांधू की पाटा बह रही थी । गाँववालो बा दिन एक अजीब अनुभूति से भरत हुआ था । दिन डल गया था, पधियों का बनर दूँद रहा था ।

—अनिरेंद्र

सत्याग्रह : हिंसक प्रतिकार का एक विकल्प

गिळत कुछ वर्गों में भारत के विभिन्न भागों में उपद्रव, हड़ताल और हिंसक प्रदर्शनों की इसी अधिक घटनाएँ घटी हैं कि वे जैसे नागरिक जीवन को तोड़घात की बातें हैं। उन घटनाओं के देग की शरारत की भारी बर्तनी को हूई हैं, इनके साथ-साथ उनके कारण दण की औद्योगिक व्यवस्था की नीच भी हिट उठी है।

उद्दर्श और हिंसक प्रदर्शनों के मोड़ कुछ ऐसी संश्लिष्ट घटनाएँ बर्बर रही हैं, जिनके द्वारा सामंतिज सत्ता की शक्ति में विश्वास रखती हैं। उन घटनाओं ने इन प्रदर्शनों में कुछ वास्तविक लाभ भी उठाया, पर कुछ निराशाजनक दण परिस्थिति ने भारतीय कार्यकर्ताओं के सामने एक प्रकाशित सहा कर दिया है कि क्या इनके चलते दण में विरोध भी बराबर की औद्योगिक व्यवस्था कायम रह सकेगी ?

वर्तमान समय के पाप हिंसक उपद्रव के निराकरण का एक ही संवैधानिक मार्ग है—एक धारा लागू करके उपद्रव का दानना और अगर इतने में परिस्थिति पर लागू न हो पाय तो वेना की मद्द्देना से कार्य लायना। इन संवैधानिक कदमों में उपद्रव की स्थिति कुछ समय के लिए अने हा दब जाती है, लेकिन उसका निराकरण नहीं हो पाता। यह परिस्थिति मोडूना सामने के सामने एक लता और कुनोओ बनकर उत्पन्न है। संवैधानिक लक्षण के सभी दुर्भावगतों को इन लताओं की किन्ना है। सामंतिजरी नागरिक ऐसे उपद्रवों में स्वयं घसीक न हों, किन्तु इतने से इन कुनोओ का सामना नहीं किया जा सकता। और संवैधानिक उपाय को लगभग नाशम हो जा सकित हो रहे हैं। इन प्रणय में एक बुनियादी समाज उठा है कि उपद्रवों और उपद्रव की स्थिति उललन होने का मूल कारण क्या है ?

जब किन्हीं परिस्थितियों के कारण समाज की दैविक-नीति और संरचनाओं की

बाध-उपशासा में भ्रष्टि की बुनियादी इच्छाओं को पूरि नहीं हो पाती तो उन परिस्थिति में एक प्रकार की उपद्राहट (र्वागिउलर) की सम्भावना पैदा हो जाती है। यदि इन तरह की उपद्राहट का पूरा करने का नागरिका का कोई सामंतिज रास्ता नहीं मिलता तो वह परिस्थिति जन मानस में अंतोण और आंतोण की जन-रत का कारण बनती है। व्यक्ति के आगेवा

का उमाहटन अपना उद्देश्य साधनसाम्नी संश्लिष्ट घटना के लिए एवम् परिस्थित मुद्राशा बदलर बन जाती है। स्वभावतः इसका तात्त्विक लाभ उठाकर अपनी सत्ता-प्राप्ति की कामना पूरी करने हैं। अब परिस्थिति का यद्यत् प्रभन उपस्थित होना है कि समाज में दीवदि उपस्थित होनेवालों उपद्रव की परिस्थितियों के निराकरण का क्या बाई सामंतिजुर्ण मार्ग नहीं है ? क्या वे उपद्रह इन प्रकार की परिस्थिति का सामना करने का बाई विकल्प है सकता है ?

मुद्राशा न उपद्रह लना गाधीजों के म-पापहट दर्शन का अविभाज्य (इटेकल) अंग है। गाधीजों ने साव के अपने प्रयाग द्वारा सत्याग्रह के इसी स्वरूप का विधान किया था। इनके द्वारा जद्दने सामाजिक उपद्रहय स दूजने और नयी सम्पादन-व्यवस्था स्थापित करने का सर्वमुक्त उपाय हुआ। स्तुतुतः सत्याग्रह के रूप में गाधीजी ने विश्व की आहिंसात्मक युद्ध की एक प्रयोग-विधि प्रकटीक ओट की।

गाधीजी के परिकल्पना का सत्याग्रही सम्पादी के प्रकाय की अपने भीतर लेकर अपने जीवन के अन्तरे कोनो की व्यवस्था कर लेता है। सम्पादी के प्रकाय में वह अपना आचरण सुट करता है, ताकि उनके द्वारा निर्मिता अहित न हो। ऐसा सत्याग्रही

निश्चयी की उपद्रहों का मुकाबिला अपनी विन्दनी की प्राणालिक दुट्टा से करता है। समान में जो कार्य बुराई रूप में माने जाते हैं, उनके विनाशक वह प्रतिहार

का मोधि बर्बरताई का नापोंजन करता है। सत्याग्रही अपने सम्पादी के साते पर बलकर लक्षणां के तहत हुए अपने भीतर और सत्याग्रहियों में व्यवहार द्वारा अपने विश्वासी को अपने मज के अनुकूल बना लेने में विश्वास रखता है। सत्याग्रही मानता है कि उसके सम्पादी, निर्भीकता, और गृहरी मजबूत उन बुराई का निराकरण करने की साम्यता और ताकि दती है, अपने ही शुभ में किन्हीं ही कठिनाइयों तक सामने आये।

युद्ध का विकल्प

गाधीजों मानते थे कि जब सामाजिक बुराईयों प्रकटी कुनोओ बनकर सामने आये, उन समय अहिंसा-आधारित सौम्य बर्बरताई या सामंतिजुर्ण प्रतिहार के विभिन्न तरीकें उपद्रव, हिंसक क्रान्ति या युद्ध का विरन्धन का मजबूत हैं। उपद्रह अहिंसा का एक विनाशक कदम है स्वीकार करने हुए उन सामाजिक प्रतिहार के माध्यम करके विनाश कि वह उपद्रह लेने की एक मौकिक प्रजाती बन गयी—एक ऐसी प्रजाती, जो उनके प्रदत्त सामाजिक रूप में किन्हीं की नहीं उपलब्ध हुई थी। जद्दने सत्याग्रह का बोर्ड मुद्द्दबांधन सामंतिज दाननी नैवार किया था। उनका मानने का सत्याग्रहक लक्ष्यसाएँ उत्पन्न होने की उम्मत उद्दने शक्य, अहिंसा और समता न बुनियादी विनाशक क म-दर्भ में सामाधान युद्ध की कोशिय की। सत्याग्रह उन्की दृष्टि में एक ऐश साधन था, जिसका आधार का विस्तार से उतना सम्भव नहीं था जितना गुणसम्पत्तों से। न मानते थे कि सामाजिक उपद्रव का सामना करने में सत्याग्रही को आन्तरिक ताकत चाहिए परिस्थिति में कही अधिक सहज रखती है। गाधीजों यह भी मानते थे कि एक नयी सामाजिक और अधिक समाज-व्यवस्था की रचना करने के लिए प्रतिकारालक या मोधि सहाई द्वारा युद्दने को बाहने का काम करना होगा, अतः कि उनके कारण नये ढांचे की रचना में बाध पहुँचती है। इसके ताक-साय उद्दालन माना था कि अपनी इच्छा में प्रेरित होकर समाज में छुलत उपद्रात्मक कार्य करते रहना सत्याग्रह का बुनियादी अंग

है, क्योंकि ऐसे रचनात्मक कामों से सत्याग्रही को सामाजिक दृष्टि बढ़नी है।

सत्याग्रह की व्याख्या

गांधीजी के प्रथम राष्ट्रवाणी सत्याग्रह आन्दोलन की सरकारी जाँच करते हुए पब्लिशर डॉक्टर ने गांधीजी से कहा कि वे सत्याग्रह की सहीत व्याख्या करें जो गांधीजी ने कहा था—“मह एना आन्दोलन है और पूरी तरह मजबूती पर काम है और हिंसा के उपयोग के एवज में चलाया जा रहा है।”¹

राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्रों में अनेक प्रयोग करके गांधीजी ने सत्याग्रह के दार्शनिक आधारों का खोज की और उन आधार पर सत्याग्रह को कार्यविधि और उसके बुनियादी मूल्यों का निर्धारण किया।

अतिगत आचरण सम्बन्धी कुछ बुनियादी मुद्दों को गांधीजी ने सत्याग्रह के लिए आवश्यक पाया। कोई सत्याग्रही अपने लक्ष्य में कहीं तक सफल होगा, वह इस बात पर निर्भर करता है कि वह सत्याग्रह सम्बन्धी उन मुद्दों में कहीं तक कुशल हो सका है। गांधीजी ने सत्याग्रह के उन बुनियादी मुद्दों को प्रयाग द्वारा प्राप्त किया और बताया कि सत्याग्रही जिन हद तक उन मुद्दों को मजबूत कर कुशलता के साथ उनका सत्याग्रह की कार्यविधि में उपयोग करेगा उनी हद तक उसका सफलता निश्चित होगा। सत्याग्रह के उन आवश्यक मुद्दों का ठीक ठीक न समझ पाने, और यह न पहचान पाने पर कि वे मुद्दों किस प्रकार सत्याग्रही प्रक्रिया के अविभाज्य अंग बन जाते हैं, गांधीजी का सत्याग्रह बाहर से सत्याग्रह जैसा प्रतीत होने पर भी भीतर से पुराने प्रकार के धरने, प्रदर्शन, उपवास या हड़ताल से भिन्न बस्तु नहीं रह जाया।

सत्याग्रह के बुनियादी मुद्दों

गांधीजी का सत्याग्रह-दर्शन वह स्वीकार करता है कि 'हरेक परिस्थिति पर दो परस्पर विरोधी दलों से विचार दिया जा सकता है। प्रत्येक हल अपने पक्ष को अपने और दूसरे पक्ष को पराये रूप में देखने का

आरो होता है। इस प्रकार परिस्थिति में एक प्रकार का दृष्टिभेद उपस्थित हो जाता है। यह दृष्टिभेद उस समय ही मिट पाता है, जब उस परिस्थिति को एक ऐसे नये परिदृश्य में देखने की कोशिश की जाती है, जिसमें देखनेवाले को दोनों दलों का दर्शन हो सके। इस प्रकार परिस्थिति का विरोध एक ऊँची चेतना स्थिति में पहुँचकर मुलूख जाता है। इस प्रक्रिया के अन्तर्गत गांधीजी ने एक ऐसी विधि ढूँढ निकाली, जिसके द्वारा किसी टकराव की स्थिति में पक्ष और विपक्ष के साथ स्वयं ही नये परिदृश्य का अनुभव कर सकते हैं। गांधीजी की इस विधि में दोनों का अहिंसा के सक्रिय अभ्यास से गुजरना पड़ता है।²

अब तक जो कुछ कहा जा चुका है, उन्हीं में यह तथ्य प्रकाशित होता है कि गांधीजी का सत्याग्रह व्यक्ति की सचेतनता का स्थान ले लेता है। इसका यह मतलब नहीं होता कि सत्याग्रही व्यक्ति का सचेतनता से उत्पन्न व्यवहार या प्रवृत्तियों के अस्तित्व को अस्वीकार करता है। बस्तुतः सत्याग्रहों विषय हतना ही मानना है कि अदम्य क पाम विवेक है, और यह कि वह अपने काम के कार्यनिष्पत्ति में अपने विवेक का उपयोग कर सकता है, इसलिए यदि तुराई मिटाने की किसी अहिंसक पद्धति का विकल्प उसके सामने पेश किया जाय तो उसकी चेतना पर उसका असर हो सकता है।

टकराव की स्थिति सामने आने पर किसी भी सत्याग्रही का पहला काम यह हो जाता है कि वह उस स्थिति की सम्पूर्णता का विवेचन करे। वह उस टकराव में अपनी स्थिति की सही भूमिका अवगत स्पष्ट करे और सम्पूर्ण परिस्थिति के मूल्यों में अपनी तात्कालिक लक्ष्य भी स्पष्ट रूप से समझ ले। किसी टकराव का सम्बन्ध चाहे विम स्थिति से हो, उनके समापन व लिए टकराव की आन्तरिक भूमिका और सत्याग्रहों का निर्धारित लक्ष्य का सत्याग्रही को अत्यन्त स्पष्ट बोध होना चाहिए। प्रत्येक सत्याग्रह में

टकराव की परिस्थिति को दृष्टात्मक परिदृश्य में देखना आवश्यक होता है। टकराव का तात्कालिक लक्ष्य यह होता है कि पक्ष और विपक्ष के परस्पर-विरोधी दलों को एक नये नये रूप में पुनर्गठित करना कि उनकी नया स्थिति दोनों के लिए सतोपजनक हो और साथ ही सत्याग्रह का दावा है कि अहिंसा भी इस कार्य प्रणाली से मानव की आवश्यकताओं की पूर्ति करनेवाले ऐसे साथ का प्रादुर्भाव होता है, जो दो विपक्षों के बीच परस्पर सम्तोपजनक समाधान के रूप में उत्पन्न होता है।

किसी टकराव में विजयी होना सत्याग्रही प्रणाली का लक्ष्य नहीं है, इस प्राथमिक लक्ष्य को सत्याग्रही को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। किसी भी टकराव की परिस्थिति में सत्याग्रही वा लक्ष्य परस्पर विरोधी दो पक्षों में मानवस्य स्थापित करना होता है। अब सत्याग्रही की सबसे अधिक चेष्टा यह होती है कि विपक्षों उसकी विचार-धरणी से सहाई को समझे। सत्याग्रही जिन समझ यह प्रयास करता है, उनी समय वह विपक्षों को इस बात का पूरा-पूरा अवगत द्या है कि वह भी अपने विचार को सहाई का प्रमाणित पर और सत्याग्रही के दृष्टिकोण का गलत मित्र करे। सत्याग्रही हर समय इस बात के लिए तैयार रहता है कि यदि विपक्ष उस उन्नतों भूल या भ्रान्ति का बोध कर दे तो वह विपक्षों के मत को बर्णोकार कर लेगा। यह स्थिति सदाय में या व्यक्ति रूप से सामने आ सकती है और इसके अनुसार सत्याग्रही अपनी धारणाओं में पूरी बदल कर सकता है। वह विपक्षों को समझने इस स्थिति को सही दृष्टान्तकारी से पक्ष करता है कि यह एकतरफा हार या जीत का आनायास न होकर दोनों पक्षों के लक्ष्य का मानवस्य का सम्बन्ध है। सत्याग्रह का मुख्य उद्देश्य परिस्थिति की नया रचना का होना है। दरमजद यह प्रक्रिया पर विचार प्राप्त करने का बदन टकराव की परिस्थिति पर विचार पाना चाहता है।

गांधीजी का सत्याग्रह-दर्शन की यह धारणा बिना रहती है कि वह सामाजिक टकराव

1. "सहायता" प्रथम खण्ड, से. 0. वी. जो 0 उल्लेख पृष्ठ: ३४०-३४३

2. कॉन्सिडर रिजाल्यूशन: पृष्ठ १६४

गया कार्य। गांधीजी ने अहिंसा की इस व्याख्या को ओर स्पष्ट करते हुए कहा—
 “जैसा ममता जाता है, अहिंसा ताई जड़ व्यवहार नहीं है। किसीका चोट न पहुँचाना निश्चित रूप से अहिंसा का एक अंग है। लेकिन यह अहिंसा का छोटा-छोटा हिस्सा है। कोई भी बुरा विचार, उदात्तलक्षण, मूढ़, घृणा और दूसरे का अहित बाहने की इच्छा से अहिंसा को अपायत पहुँचता है।”^१ गांधीजी ने कहा—
 “मैं अहिंसा को जो व्याख्या स्वीकार करता हूँ, वह किसीको चोट न पहुँचाने को नकारत्मक वृत्ति मात्र नहीं है, बल्कि वह सक्रिय प्रेम की एक विधायक वृत्ति है, जो बुराई करनेवाले की भी भलाई करना चाहती है। लेकिन इसका मूल्य यह नहीं है कि मेरी व्याख्या की अहिंसा बुराई करनेवाले को बुराई करने देगी या उसे चुपचाप बरदाश्त कर देगी। इसके बन्धे, प्रेम यानी सक्रिय अहिंसा बुराई करनेवाले से अपने को अलग करते उसकी बुराई का प्रतिरोध करेगी, भल ही इसके बावजूद सुखी करनेवाला चिद जाय या उसे शारीरिक क्षति भी पहुँचि।”^२

यस की धोज के अपने अनुभव का जिक्र करते हुए अहिंसा के सम्बन्ध में गांधीजी ने कहा है—

“बिना अहिंसा के सत्य का दूँडना और पाना मुमकिन नहीं है। अहिंसा और सत्य एक-दूसरे से हम तरह मिले-जुले हैं कि उन्हें एक-दूसरे से अलग करना लगभग असम्भव है। वे एक सिक्के के दो पहलू जैसे हैं या कदापि पाण्डित कि वे बिना कुछ अस्त्रि क्रिये हुए पाणु वे कैसे सिकके हैं, जिन्हे देखकर यह पहचानना मुश्किल है कि कौनसा सौधा हिस्सा है और कौनसा उलटा। फिर भी हमना कहा जा सकता है कि अहिंसा साधन है और सत्य साम्य। साधन ऐसा ही होना चाहिए, जो हमारी पहुँच के अन्दर हो, इन

नाते अहिंसा हमारा मुख्य कर्तव्य है। यदि साधन को फिक्र रखते हैं तो यह तब है कि अपने सत्य तक देर या संकेर पहुँच ही जायेंगे। जब यह रात्र हमारी समझ में आ जाती है तो बाकिरी विजय के बारे में कोई शक नहीं रह जाता।”^३

यदि मनुष्य की पूर्ण सत्य का साक्षात्कार करना है तो हमका रास्ता विभिन्न लोगों के यत्न दर्शन की याँच करणे हुए हो प्राप्त होगा। विभिन्न लोगों के सत्य-दर्शन की याँच उस अहिंसा के कर्माई स पालन करने पर ही हो सकती है, जो किसीको नुकसान पहुँचाने पर आपाहित न होकर प्रेम या आपाहित है। क्योंकि अगर हम दर्शन के लिए हिंसा का सहारा लिया जायगा तो वह हिंसा विपरीत के सत्य को ही सत्यात कर देगी। इसलिए अहिंसा से अचली मूल्य है, अचली कमीटी है, जिससे किसी मही कार्य-विधि की जाँच हो सकती है। गांधीजी की अहिंसा की इस व्याख्या ने सिर्फ शारीरिक चोट न पहुँचानेवाली अहिंसा ना स्तर बहुत ऊँचा उठा दिया।

स्वयं कष्ट-सहन

यदिगल रूप से अहिंसा का अर्थ है—
 स्वयं कष्ट-सहन। इसका मूल्य बुराई करनेवाले की इच्छा के आग ध्यान समरग करना नहीं है, बल्कि हमका मूल्य होना है कि क्षमा करनेवाले के खिलाफ अपनी पूरी आत्मशक्ति लगा दी जाय। अपनी इस जीवन-निष्ठा के बलिर्गम बाय करत हुए अकेले आरपी के लिए भी यह मुमकिन है कि यह बेद-नाशके के पूरे साक्षात्कम को चुनौती द सके।^४ इस सन्दर्भ में गांधीजी ने प्रेम की एक नयी व्याख्या की। उन्होंने कहा—वसत्या प्रेम की कमीटी है और वसत्या का अर्थ है स्वयं कष्ट-सहन।

योग-विधियों में वसत्या का एक विशेष स्थान है। उन्नत व्यक्तियों वसत्या जिसी विशेष उद्यम की प्राप्ति के लिए की जाती है। गांधीजी के सत्याग्रह में

स्वयं कष्ट-सहन विपरीत के वैदिक मूल्य के लिए किया जाता है—“स्वयं कष्ट-सहन अहिंसा का निचोड़ और सुखर का प्रति हिंसा का व्यवहार करने का विरतय भी है। ऐसा नहीं है कि मैं जिन्दगी की बीमड नहीं ममसता। इसलिए मत्याग्रह में सुखी-सुखी हजारों स्वयंसेवकों को अपनी जिन्दगी की कुर्बानी करने देना है, बल्कि मैं ऐसा इनाम होने देना है क्योंकि मैं जानता हूँ कि कुछ भिन्नकर इसके नतीजे से कम लाभ की है जिन्दगीयाँ बर्बाद होगी। और अगर वे यह भी है कि इनसे वे लोग ऊँचे उठते हैं, जो अपने जिन्दगी निष्कार करके दुनिया की वैदिक दृष्टि से जायें वे जाते हैं।”^५

निर्भयता

गांधीजी के सत्याग्रह में कायरा का स्थान नहीं है। उन्होंने लिखा है—“मैं मानता हूँ कि अहिंसा और कायरा के बीच एक को चुनना हो, वही मैं हिंसा या कुत्ता करने की सलाह दूँगा।”^६ फिर गांधीजी ने जोर देते हुए लिखा है—“अहिंसक आचरण कभी भी व्यक्त या मानसिक पतन नहीं करता जब कि कायरा से हमेशा यही होता है।”^७

“जो आरपी मरने से रता है और प्रतिवार के लिए ताकत नहीं रखता उसे अहिंसा की शालीय नहीं दी जा सकती। एक निरीह नूँहे को बिल्ली हमेशा मारकर खा जाती है, इसलिए वह अहिंसक नहीं है। अगर बूढ़ा बिल्ली को खा सकता तो वह उमर ऐसी कोशिश करता, लेकिन वह हमेशा बिल्ली के मानव से भाग खडा होता है। हम नूँहे को बापर भी नहीं बहाने, क्योंकि दुस्तर द्वारा उठ जैसा सत्याग मया है नूँहे हालत में वह दूसरे का का म्पटार कर भी नहीं सकता। लेकिन यवने का मानव होने पर अगर आरपी भी नूँहे को तरह भाग खडा हो ता उठ बापर नहीं ही ठीक है। यह अपने दिल में हिंसा और नफरत रखता

१. “काम मरवदामन्दिर”—मं० गांधी पृ० ७

२. “टीचिंग ऑफ मं० गांधी”

—जगज्वेक चन्दर, पृष्ठ ५१२

३. “काम मरवदामन्दिर”—मं० गांधी पृष्ठ ८

४. “मम इधिया”—११ अक्टूबर १९२०

५. “मम इधिया” २१ अक्टूबर १९२०

६. “मम इधिया”—११ अक्टूबर १९२०

७. “मम इधिया”—२१ अक्टूबर १९२०

है और जाने दुश्मन को जग मार सके तो मारने की भी इच्छा रखता है, बस तब मुझे उसे चोट न पहुँचे। ऐसा जादवी बहिष्मा के लिए बनना है।¹

जिस तरह गांधीजी की बहिष्मा में प्रेम और बद्धात्मता का समावेश है, उसी तरह स्वर्ण बट-सहज में साहज और निर्वेदा का समावेश निहित है। गांधीजी ने कहा है— "हिंसा के प्रविष्टिण में जैसे व्यक्ति को मारने की कला सीखनी पड़ती है उसी तरह बहिष्मा के प्रविष्टिण में व्यक्ति को मरने की कला हासिल करनी पड़ती है। बहिष्मा के अनुयायी को प्रथम से मुक्ति पाने के लिए ऊँचे-ऊँचे दर्जे का बलिदान करने की योग्यता प्राप्त करनी पड़ती है। विमते दूर तरह के भय से मुक्तकार नहीं बना वह बहिष्मा की प्रणवा का आचरण नहीं कर सकता।"²

सत्याग्रह में व्यक्ति की भूमिवा मत्याग्रह से व्यक्ति को भूमिवा का विकर करने समय गांधीजी ने कहा कि दुनिया को कोई धर्म किन्हीं आत्मी को उनको मर्जी के खिलाफ काम करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। सत्याग्रह के जरिये उन्होंने लोगों को वह अनुशासन और तरीका सिखाया, विमते अधिकार एक सक्रिय धर्म बन सके। स्वर्ण बट-सहज या अपने को बलिदान के लिए निष्ठावर कर देना सत्याग्रही को ऐसी ही धर्म प्रदान करता है। गांधीजी के लिए स्वतंत्रता और खरीनी बिच्छिष्टता ऊँचे मूल्य थे। इस प्रसंग में उन्होंने कहा— "जिसी मुलान के समय उसी समय बुल जाने हैं जब वह अपने को एक मुक्त शर्मा मसलने लगता है। वह अपने मालिक से सीधे हिसा में रहेगा— मैं इस क्षण तक आपका गुलाम था, लेकिन अब मैं मुजाब नही हूँ। यदि आप चाहते हैं तो मुझे फौज मार दे सकते हैं।"³

सत्याग्रह के रूप में गांधीजी ने हूवे बहिष्क प्रतिकार का एक बेबाइ बल प्रदान

दिया और जाने मजबूत परीक्षण और जीवन से इसे वैज्ञानिक रूप दिया। सत्याग्रह जीवन के प्रत्येक क्षण और स्वर को छूता है। यह समस्त जीवन का समाज-विज्ञान है। यह सामाजिक नुदायों और समस्याओं के निराकरण की ऐसी विधि है, जो उदात्त, उभाव और मर्त्य की परिस्थितिया में भरोसे के साथ इस्तेमाल हो सकती है। जब तक समाज में चारों ओर खरीनी

है, अत्याचार है, दलन है, उत्पीडन है, मुदर है, दबाव है और समाज सामाजिक विषमताओं से भरता है, जब तक गांधीजी की परिचलना का सत्याग्रह और सत्याग्रही मानव की मुक्ति का एक अयोग्य सबल है। गांधीजी ने कहा भी है कि यह हथियार अत्याचरजित सभी दुष्टों को दूर करने में काम आयागा।⁴

लक्ष्य और साधन की नैतिकता

सत्याग्रह मूल रूप में मानवीय बन्धुत्व, बहिष्मा और प्रेमों के प्रेम पर आधारित है। अपर मनुष्य बनती करते हैं, तो वह उनको अनियमित इच्छाओं, वाछनाओं और बदरसजितापूर्ण स्वार्थ के कारण है। विमता-तौर हो जाती है। व्यक्ति और समाज दोनों को पारस्परिक विद्या-प्रतिक्रियाएँ होती हैं। इसलिए दोनों का एक साथ ही समाज करना चाहिए।

सत्याग्रह की मान्यता है कि कोई भी व्यक्ति या वर्ग ऐसा पवित्र नहीं है, जिसे ठीक-ठीक व्यक्तिगत और सामाजिक प्रयत्न से न सुधार जा सके।

सही प्रयत्न घुषा और हिंसा के जरिये नहीं, बल्कि बुद्धि के जरिये, मनोवैज्ञानिक, नैतिक और जाघ्यातिक पुनरिधायन के जरिये होता है।

व्यक्तियों तथा सामाजिक पदस्थियों के प्रति अत्याचारे गये इस दृष्टिकोण में घुषा और हिंसा को स्वीकार नहीं है। जहाँ तक सामाजिक पदस्थियों का प्रश्न है, शपथ के लोग, जो शर्तें पचाते हैं या उनकी मजबूरियों में काम करते हैं, स्वर्ण बद्धात्मक रूप से जनशायी और निर्दयी नहीं होते। वे उन पदस्थियों के उतने ही विचार होते हैं, जितने वे जो उनके अंतर्गत रह सोचते हैं।

गांधीजी चाहते थे कि सामाजिक पदस्थि के सुधार के लिए काम करने की प्रक्रिया में लोग स्वर्ण की सुधार में। इसे करने का सबसे बच्चा तरीका बहिष्क विरोध और

रचनात्मक तथा संघर्षिक काम के जरिये सामाजिक अत्याच से बचना और सामाजिक नुदायों को ठीक करना है।

सत्याग्रह में व्यक्ति और सुधर के आचरण में कोई विरोध नहीं होता। दोनों का सम्बन्ध रूप से पारस्परिक सम्बन्ध है। एक-दूसरे पर उनको विद्या-प्रतिक्रिया होती है, इसलिए सामूहिक क्रियाशीलता ऐसी होती पाहिए, जो व्यक्ति का नैतिक पतन न करे। अपर ऐसा होना हा, जो व्यक्तिगत जीवन और सामूहिक जीवन, दोनों में लक्ष्य और साधन नैतिक होने चाहिए। अनैतिक साधन व्यक्ति और सुधर, दोनों के लिए नुरे कर्मी को रचना करते हैं।

इसका यह अर्थ नहीं है कि सत्याग्रही नुराई का विचार नहीं करता। वह नुराई का विरोध तो करता है और बड़न जोरों से करता है, लेकिन अनैतिक साधनों को काम में लेकर हिंसा और घुषा की गृहि नहीं करता। किन्तु समाज इस प्रकार सम्बद्ध तथा पुनरुद्धार है कि नुराई का घोषण चाहे कितने ही बहिष्क तरीके और विरोधों के प्रति कितनी ही बद्धमानता से बिना शपथ, उससे बुद्धन-कुछ हासिल तो उन व्यक्तिगत और वर्गों की हागी ही, जिन्हें उस अत्याचर-पूर्ण अत्याच से लाभ पहुँचा है।

प्राथमिक चर्चों और ऊपर से दिखाई देनेवाली विरोधों के प्रति अवररत्ती के लिए सत्याग्रही जिम्मेदार नहीं है। यही नहीं, वह

¹ "सक्रियता" भाग ४, संस्करण, १८ १९६

¹ "सक्रियता"—२० जुलाई १९३१
^२ "सक्रियता"—१ सितम्बर १९३०
^३ "सो पहातवा" भाग ४, संस्करण, १८ १९६

भूतान-यज्ञ: सत्याग्रह अंक: ३० जनवरी, १६८

तो अपने ऊपर बड़ और पीडा को आमंत्रित करता है। उसका मानना है कि अच्छे उद्देश्य के लिए पापी हृद पीडा उसे पवित्र बनाती है और तत्स्य व्यक्तित्वा और अन्तर चित्तोपियों के दिवो पर भी अनुभूत अन्तर झलकर मनोवैज्ञानिक रूप से प्रभावित करती है। वह एक हृद तक चित्तोपियों के सुधार का भी काम करती है। वास्तव में सत्याग्रही का असहयोग स्वतन्त्र तथा पूण सहयोग के लिए है।

बहुतसे लोगों ने, जो भारतीय स्वाधी

नता के आन्दोलन में शामिल हुए, इस भावना से सत्याग्रह नहीं किया। यह सच है, लेकिन इससे सत्याग्रह के प्रेम और अहिंसा के मूलभूत दर्शन शास्त्र में परिवर्तन नहीं होगा। अगर हम इसमें अन्य दूसरे विचार प्रवेश लेते हैं, तो हम गांधीजी के प्रति अन्याय करते हैं, क्योंकि गांधीजी ने ही व्यक्तित्व और समुद्र के अन्याया को रोकने के लिए इस हथियार का आविष्कार किया था।

('वगमपत्र पृष्ठ ३७ ५०)

—आचार्य कृपालानी

वल्लिदान, हिंसा और अहिंसा

दक्षिण अफ्रीका में सत्याग्रह के द्वारा विजय पाकर जब गांधीजी स्वदेश लौटे तब उन्होंने अहिंसक प्रतिहार की बात देश के सामने रखी। प्रारम्भ में उन्होंने कहा कि करोडों भारतीयों के सहायक के सामने मुट्ठीभर अश्वेज है। इह हृदयों के लिए मुद्र की बात करना हास्यास्पद है। हम ही सोचाने अपनी नमजोरी का कारण अश्वेजों को यहाँ रखा है। अगर हमारा निश्चय हो जाय कि अश्वेजों का राज्य यहाँ नहीं रखना है, तो मुद्र तो क्या, सत्याग्रह की भी जरूरत नहीं रहेगी। फिर एक नाटिक्य देकर उनको हम हटा सकते हैं।

× × ×

दक्षिण अफ्रीका के जेसे प्रतिकूल देश में, मुट्ठीभर पिछड़े हुए भारतीय मजदूरों को संगठित करके गांधीजी ने गोर्लों को सरकार का सामने विजय पायी थी। वहाँ के करोडों देशवासियों बिलकुल पिछड़े हुए थे। अफ्रीका हमारे लिए स्वदेश नहीं था। अफ्रीकावासी लोगों पर जिनका राज्य था वह डच और अश्वेज पूरे समय और राज्य करने में कुशल थे। तो भी वहाँ पर केवल सत्याग्रह के द्वारा अर्थात् सामूहिक बलिदान के द्वारा—गांधीजी ने ऐसी विजय पायी कि सारी दुनिया बकित हो गयी और देश-देशान्तर की दलित, पीडित जनता को आशा के किरण दीख पड़े।

इसीलिए जब गांधीजी भारत में जाये तब सत्यबल से ज्ञान्ति करने की इच्छा रखनेवाले भारतीयों ने गांधीजी का कर्तु भी विरोध नहीं किया। राष्ट्रीय वृत्ति के जोड़ उनके भेदे के नीचे जा गये। परमत्सल के जाना ने भी उन्हें आधीबिदि दे दिया।

अगर सचस सही बात तो यह कि हजारों वर्षों तक जो भारत में नहीं जो इतनी राष्ट्रीय एकता गांधीजी ने अपनी सवन्नाहक नीति से खरी करके दिखायी।

तेकदा वर्षों से जो हिन्दू-मुस्लिम वैमनस्य भारत में था उसे काफी नरस्य करके भेदीनीति कुशल अश्वेजा की प्रकट और सुगुी बरतुओं के बावजूद गांधीजी ने सारे राष्ट्र के भूँह से स्वराज्य की माँग पेश की। और सन् १९५७ को ही साल भी नहीं हुए थे, भारत को आजाद करके दिखाया।

यह बमलार कैसे हुआ ? गांधीजी ने राष्ट्र की वैमनसिता जापत की। क्षान्तेज की परिकृत किया (पातुवर्ष के कारण एक ही वर्ष की जिस क्षान्तेज की जिम्मेदारी थी, उस समस्त प्रजा का हृदय में जापत किया) और एक-दूसरे की निन्दा करके पल और गुट बनाकर एक-दूसरे को कमजोर करने की भारतीयों की सनातन आदत का बतनी उदारता और कुशलता से मुक्तम्पकर गांधीजी ने पहली दफा भारत में यह हृदय को एकता करार करवायी।

ऐसा करते गांधीजी ने अपने तत्त्वज्ञान का चार सिद्धांत भारतीय सङ्घर्षों को बुनियाद में ने निष्कलकर जोड़-दूर के सामने रखे। (१) वृट-वपट, बालबाजी और दगाबाजी का पूरा त्याग करनेवाला सत्य। (२) एक-दूसरे का श्रेण करनेवालो, निन्दा करके प्रसन्न होनेवाली, और परस्पर शक्ति को हत्या करनेवाली, हिंसा का निषेध करनेवाली धार्मिक वैमनसिता को जापत कर बलिदान का उत्सव बतानेवाली अहिंसा। (३) मानवता, राष्ट्रप्रेम, सेवा और उदारता को हृषेपा शोषण करनेवाली और समाज पक्ति को निर्वाय करनेवाली तदा बिकः शिता का निषेध करके तपस्या को, बहुपुत्री को और त्याग की शक्ति बतानेवाली संयम। (४) दलाली बलाकार और दुष्ट स्वाध को सिद्ध करने के लिए राष्ट्र शोह करनेवाली चारित्र्यहीनता को रक्षना कर त्याग, बलिदान और उदारता को बाने बतानेवाला समन्ययमुक्त सहयोग। इन चार राष्ट्रीय सङ्गुणों का स्वदेशी के द्वारा परिपोष करके गांधीजी ने सर्व-वर्ण-व्यम भाव को पुष्क से मान्य करनेवाली धाटी-ही बालेस को राष्ट्रव्यापी शक्ति बना दिया।

× × ×

गांधीजी के जीवन की तो समाति हुई, विन्तु उनका आठार-नाय समास नहीं हुआ। वह तो पुष्क ही हुआ। इस नये पोषे की पिछले बीच वर्षों में हम पूरा पापन नहीं दे सके, यही बात सही है। (१) स्वराज्य के साथ गांधीजी के सर्व-वर्ण-व्यमभाव का हृदय सम्भारण सही, लेकिन उसे परिष्क करने के लिए हमने काय ठरक दुष्ट नहीं किया। (२) स्वराज्य पाने के लिए जो सत्यपट्टी बलिदान की शक्ति गांधीजी ने खरी की थी, उसीको बाने बढ़ाने के लिए हम लोगों ने कुछ नहीं किया। नाम लेने के लिए धार्मिक-वेना का अपत्य प्रारम्भ था किया, किन्तु जबक पीछे स्वराज्य स्रकार या स्वराज्य का मानन्द चकनेवाली जनता ने शक्ति की उत्साह नहीं बतया।

—बाबा बालेचन्द्र

भूकम्प के बीच ज्वालामुखी

आज समाज की जो रचना है, उसीमें अन्वय निहित है और उसके खिलाफ वह धामदान-आन्दोलन है। जब तक समाज की रचना नहीं बदलेगी, तब तक उसमें दोष जो 'दुन्देरेष्ट' (स्वभावगत) हैं, उनको 'टाकरेट' (तहन) करना होगा। क्षमभला होगा कि समाज की रचना ही योमजुर्न है। वह रचना ही बदले, इसके लिए जोरदार आन्दोलन करने को पकड़त है। हमने तूचन को बाढ़ उठायी। हमारे तुलायल मे गापा है न :



"पत्नी पर तूचन मकेगा, दीन मनन व उखल करेगा,
छरपेव अन्धकार, कोपे मव भूक-अधिकर !"

भूमि-अधिकार छोड़ो, धरता मगन का दीन मुक जायगा
भीर पखी पर नृपजन मकेगा। तो ह्वने 'तूचन' शब्द ले लिया।
हम कहते हैं

"पत्नी पर तूचन मकेगा, दीन मनन व उखल करेगा,
कोपेव अन्धकार, दे दो मव भूक-अधिकर !"

तो तूचन राधा करता है। हम चाहते हैं कि चारो तरफ
भूकम्प हो और हम बीच में ज्वालामुखी की तरह हो, क्षमदान के
धिव की तरह नही।

—विजोरा

बिहारदान-अभियान : राष्ट्रीय पुरुषार्थ का विषय

सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति के लिए बड़े सलाहों का विषय है कि ब्रिटीश-सम्बन्धन में यापिन ग्रामदान प्राप्ति का लक्ष्यक पूरा हुआ। इतना ही नहीं, बल्कि आन्दोलन ग्रामदान और प्रखण्डदान से भी आगे बढ़कर जिम्मादान तक पहुँच गया है। दरभंगा और तिश्नेलवेल्सी के दो जिलों का दान तो पूरा हो ही चुका है। इस दिशा में जो प्रयत्न हो रहा है, उसके विश्वास होता है कि बगले कुछ महीना में यह सख्या काफी बढ़ेगी। इस बीच बिनावाजी ने 'बिहारदान' का आवाहन किया है, वह सर्वोदय आन्दोलन का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण और उत्साहप्रद कदम है। प्रबन्ध-समिति मानती है कि जिलादान के बाद राज्यदान अहिंसक क्रान्ति के आरोहण में स्वाभाविक क्यता कदम है, जहाँ पहुँचकर

राज्य पर लोकनीति का निर्णायक प्रभाव पड़ेगा तथा क्रान्ति के अन्य आयाम स्पष्ट रूप से प्रकट हो जायेंगे। बिहार के कार्यकर्ताओं ने बिहारदान का कार्यक्रम उठा लिया है, यह सलाह का विषय है। समिति बिहार के साथियों को विश्वास दिलाती है कि उनका निर्णय पूरे आन्दोलन का निर्णय है, जिसकी पूर्ति के लिए हर सम्भव देना और सहायता उपलब्ध कराने में समिति तत्पर रहेगी। समिति को आशा है कि देश के सभी भागों और विभिन्न प्रवृत्तियों में लगे हुए सभी रचनात्मक कार्यकर्ता साथी क्रान्ति के इस अभियान में बिहार के निर्णय द्वारा प्रस्तुत होनेवाले ऐतिहासिक अवसर का महत्त्व महसूस करेंगे, तथा इस अभियान को राष्ट्रीय पुरुषार्थ का विषय मानकर अपना योगदान देंगे।

बुनियादी जीवन-मूल्यों के

देय में लोकन्यायिता की अभिव्यक्ति की दृष्टि में सुलभ ग्रामदान, ग्रामाभिमुख खादी तथा शान्ति सेना के त्रिविध कार्यक्रम का ऐतिहासिक महत्त्व है। ग्रामदान-न्यायिता के फलस्वरूप प्रखण्डदान तथा जिलादान की उपलब्धि एवं बिहार के प्रेरणाप्रद सफल ने अहिंसक क्रान्ति की नूतन-रचना में एक नया आयाम जोड़ दिया है। ग्रामदान जैसा ऊँचा सत्य प्राप्त करने के लिए व्यापक जन-आन्दोलन की आवश्यकता है। और स्पष्ट है कि बुद्ध, व्यापक और समष्टि पालि-सेना इस आन्दोलन को जन-आन्दोलन का स्वरूप दे सकती है।

यद्यपि आन्दोलन को वर्तमान ऊँचाई तक पहुँचाने का मुख्य श्रेय रचनात्मक सत्याग्रहों के कार्यकर्ताओं का पालि-सेनिक की भूमिका को है, तथापि पालि-सेना के विविध सगठन पर विजना ध्यान दिया जाना चाहिए था, नहीं दिया गया है। आज देश में बढ़ती हुई हिंसा, अक्रान्ति तथा स्थिति-स्थापकता को सन्तुष्टा को मुक्त करने, तथ्यों तथा नगर-जीवन में सर्वोदय-विचार के प्रवेश के लिए तथा लोक-

संरक्षणार्थ : शान्ति-सेना

तन्त्र, स्वातन्त्र्य और सर्वसम-समभाव के बुनियादी जीवन-मूल्यों के संरक्षण के लिए पालि-सेना के सगठन पर विशेष जोर देने की आवश्यकता है और इस ओर पूरा-मुरा ध्यान दिया जाना चाहिए।

सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति समस्त रचनात्मक सत्याग्रहों, विराण-सत्याग्रहों एवं निद्र-विचालकों, समाजसेवी सगठनों तथा प्रादेशीय सर्वोदय भटकों से आग्रहपूर्वक निवेदन करती है कि वे देश में पालि-सेना के व्यापक सगठन के लिए देश के नगरों में तत्प-पालि सेना तथा ग्रामों में ग्राम पालि-सेना के सगठन पर जोर दें तथा पालि की शक्ति को सगठित करने के लिए एकत्रता तथा साहचर्यपूर्ण प्रयास करें।

इसके साथ ही प्रबन्ध समिति यह भी अपेक्षा करती है कि प्रदेशों में याम कार्यकर्ता पालि-सेना के काम में पूरा समय दें तथा हर प्रदेश कम-से-कम एक जिले में ग्राम पालि-सेना के व्यापक सगठन का प्रयास करें।

(दिनांक २१-२२ जनवरी, १९५८ को वाराणसी में सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति की बैठक में स्वीकृत)

ग्राम-स्वराज्य का पंचशील

- गाँव एक स्वायत्त इकाई
- ग्रामसभा द्वारा आयात-निर्यात का निर्णय
- दल-मुक्त प्रतिनिधित्व
- 'न्याय' की तरह स्वतन्त्र 'शिक्षा'
- पुलिस-अदालत-मुक्त समाज

गांधी-शताब्दी तक

ग्राम-दान की तैयारी

गांधी-जन्म शताब्दी के सन्दर्भ में उत्तर-प्रदेश का नेतृत्व इस कार्यक्रम पर विचार कर रहा है कि विश्व प्रचार सन् १९५६ तक ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का श्रेय उधर प्रदेश के १० हजार गांधी तक पहुँचा जाय।

दूसी दृष्टि से आगरा, बनगुरी, मुण्डू, बलीगढ़, एटा की अभियान-ग्रामों में एटा जिले की जलेश्वर सट्टोल में १५ निर्दिष्टों न्याय में राजस्थान, पनाब, बिहार, द्विमासक तथा उत्तर-प्रदेश के १७० कार्यकर्ताओं ने जनवरी १६ में २१ तक गाँव-गाँव और व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुँचकर ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का श्रेय मुनाया। फलस्वरूप देश के २५६ ग्रामों का ग्रामदान प्राप्ति हुआ। देश में जनमानस पर अभियान का उत्साहपूर्ण प्रभाव पड़ा है। उत्सुकता है कि प्रान्त के सभी रचनात्मक कार्यकर्ता इस कार्यक्रम के महत्त्व का समझकर अपने कुटुंबों में बिभाषना का सर्व स्थापना अवतार के सहायक से पूरा होना है।

गाँव ही बुद्धलक्षण के चारों जिलों में ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य अभियान-ग्रामों का नगर बनाने की योजना बनायी जा रही है।

—हरमोहन प्रसाद, सदस्यक
मंडल आगरा मण्डलीय ग्रामदान प्रतिनिधि,
श्री गांधी-आयतन, मुन्डूजनगर (८०२०)

विहार-दान की व्यवह-रचना

११ दिसम्बर १९६५ को बाबा बिहार बाबे और उनके गुरु १६ दिसम्बर तक बिहार के विभिन्न भागों की घूमन-यात्रा का एक दौर समाप्त हुआ। बाबे का कार्यक्रम बनाने के लिए ३, ४ एवं ५ जून १९६६ को बिहार के धामदान-कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन विनोबाजी के सांक्रिय में सर्वोच्च धार्मिक राजोपगत में एकलतापूर्णक सम्पन्न हुआ। चर्चा के निष्पत्त के रूप में प्रो० रामबो सिंह द्वारा एक निवेदन सम्मेलन के समस्त उपस्थित किया गया, जिसमें प्रत्यक्ष-दान एवं अक्षय्य धामदान-प्राप्ति पर उक्त विचार का हूर नैज धामदान को गयो कि जब तक बिहार का हूर नैज धामदान में शामिल नहो हो जाया है, उक्त तक इस कार्य में पूर्ण साफल्य वौर निष्ठा के साथ लगे रहते। अत्यन्त रूप से यह 'बिहार-दान' का प्रथम उत्कर्ण था, जब कि उक्त समय तक एक ही प्रत्यक्षदान हुआ था। उक्त सम्मेलन के बाद दरभंगा जिले को यात्रा का कार्यक्रम बना। बाबा को यह मन्त्र हुआ वौर बाबा ने यह एवज दिया कि बिहुर या युवा का प्रयास-बलुन बिहार-यात्रा का ही अन्तिम क्रम है, जिसका एकमात्र लक्ष्य है—बिहारदान।

२० दिसम्बर '६६ को इन्दिरा गांधी पूजा रात्रि पर्वणी। विनोबा से वातचौत के बाद इन्दिराजी आम सभा के लिए पूजा गयो। वहाँ उनका स्वागत करते हुए तत्कालीन मुख्य मन्त्री भी इच्छा बलम सहाय ने वटा कि जब बाबा बिहारदान को बात नहूँ है। इसके लिए प्रयास किया जा रहा है, और यह होकर रहेगा। बाबा को मुख्य मन्त्री के इस भाषण का जब पता चला तो बाबा ने कहा, "यो रूप्य बलम सहाय हूँ मैं उदनेवाले व्यक्ति नहो हूँ, जमीन पर चलनेवाले व्यावहारिक व्यक्ति हूँ। अत जब है बिहारदान को बात बरत है जो सुषमना काटिए कि यह अक्षय्य नहो है।" बिहारदान के सम्पन्न में प्रत्यक्ष रूप से यह प्रथम घोषणा थी।

सन् १९६६ को बरखात बिहार को योगा दे गयो। फलत सरा बिहार एक अन्तःपूर्व युवा के चपेट में आ गया। सर्व-प्रथम भी जयप्रकाश नारायण ने बिहार के गिर पर आनेवालो भवकर विविति को मद्द्गुष किया और प्रमर्ण कर दिया बाने का युवा से सजने के लिए। बिहार-रिडोफन-कैटो वा गटन दिया गया। देश-विदेश की मत्पाओ तथा कार्यकर्ताओं का आह्वान किया गया। बिहार के सर्वोच्च-कार्यकर्ताओं तथा समजनों ने भी अपना प्रथम सर्वेय्य रज विविति का मुकाबिला करना ही माना, फलत एक रात के लिए धामदान का काम रूहा, किन्तु रात बीच भी दरभंगा जिले में, तथा अनर-बिहारे के कुछ जिला में, नहो गूल की भर-बरता दक्षिण बिहार के मुकाबिले रम धो, प्रत्यक्षदान का काम होना रहा और दरभंगा का जिलादात तथा दरभंगा के अलावा अन्य जिला में दिसम्बर १९६६ तक कुल ६६ प्रत्यक्षदान हुए।

६ दिसम्बर '६७ को बिहार-धामदान-प्राप्ति-विविति को बेंटक बाबा के शान्निध्य में भी जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में लक्ष्मीनारायणपुरी पूजा रोड में हुई। उक्त बेंटक में बाबा ने ध्यान की परिस्थिति का विवर्तन कराते हुए २ अक्टूबर '६८ तक बिहार-दान करने के संकल्प की आराधना तथा को और कबेत किया। धो जयप्रकाश नारायण ने बाबा से हुई उनको बातों का हवाला देते हुए उपस्थित मित्रों को बताया कि यद्यपि वे बाबा के एक साल में बिहार-दान का राव से सहमान हैं, किन्तु विदेश-यात्रा के कारण वे साठे तीन महीने अनुपस्थित रहनेवाले हैं, इन्हिए बननी आर से साधियों को संकल्प लेने के लिए बहने में सघीय अनुपम वरते हुए उन्होंने प्राप्ति-प्राप्ति छ २ अक्टूबर तक बिहार-दान करने का निर्णय लेने की अधीत की। उक्त बेंटक में बिहार के अन्य नेनाओ के अलावा राज्य के श्रुतपूर्ण मुख्य मन्त्री

धो विनोदानन्द प्रभु एवं तत्कालीन उप-मुख्यमन्त्री धो कर्पूरी ठाकुर भी उपस्थित थे। उन्होंने भी धो जयप्रकाश नारायण को राव से अपनी सम्मति प्रकट की। उधो बेंटक में प्रो० रामबो सिंह ने बिहार-दान को एक व्यूह-रचना प्रस्तुत की। उक्त पर वे उक्त दिन की बेंटक में, और पुन ११ जनवरी '६८ को हुई बिहार-धामदान-प्राप्ति-संयोजन-समिति को बेंटक में बिलुन कार्यक्रम वेपार किया गया। तय हुआ कि हूर जिले में राजनैतिक पक्षों, मत्पाओ के प्रतिनिधियों, अन्य सख्योगी मित्रों को बेंटक मुलापो जाय तथा उक्त बेंटक में २ अक्टूबर '६८ तक जिला-दान करने की एक ऐसी योजना तैयार की जाय, जिसमें कार्यकर्ता एवं अभियान-सर्व के लिए अर्ज जिले में प्राप्त करने की बात हो। इस प्रत्याय के अनुसार अधिकाय जिलों में योजनाएँ बन चुकी हैं। पूर्णिया जिलासभ के बरीय है। मुनेर में १५ आलास तक जिला-दान का विषय लिया गया है। मुजफ्फरपुर में भी काफी काम हो चुका है।

३ जनवरी का सभी जिलों को प्राप्ति-समिति एवं गभारद-मण्डल के प्रतिनिधियों, रचवात्मक एवं अन्य स्वयंसेवकों सहायों के प्रतिनिधियों की वेंटक पहना में बुलायो गयो, जिसन बिहारदान का संकल्प पापिन हुआ। विनोबाजी के शान्निध्य में सभी राज-नैतिक पक्षों के प्रतिनिधियों की वेंटक बिहार-दान में उन्नी सहायता में वेंग देने के उद्देश्य से रावगृह में ३-८ फरवरी का भी बा रहे।

बिहार व सभी स्वयंसेवकों के उप-उपस्थितियों, शिक्षा-निदेशकों, जिला शिक्षा-पदाधिकाारियों की बेंटक रावगृह में विनोबाओ के शान्निध्य में बुलायो आनेवालो है। उक्त दिन के बाद, जब जिलों में काम प्रारम्भ हो जायका, तब सभी जिला के जिलाधिकाारियों एवं सरकार के सभी विभागा के सघीयों की वेंटक भी बुलायो जायगी।

जिलों में जिलादान-अभियान क विवितिले में कार्यकर्ता-गार करने एवं उन्हें प्रविशण देने के हेतु जिला-स्तर की गोपिधायी बुलायो जायगी।

भूदान-यात्रा : सत्याग्रह अंक। ३० जनवरी, '६८

धामदान, प्रत्यक्षदान, जिलादान एवं-

जिला	भा म दान		प्रखण्ड-दान			गठित ग्राम-सभा			
	गत माह तक	चालू माह में	कुल	गत माह तक	चालू माह में	कुल	गत माह तक	चालू माह में	कुल
पूर्णिमा	४,१७१	—	४,१७१	२२	२	२४	६६२	—	६६२
सहरसा	४६७	—	४६७	१	१	२	४२	—	४२
भागलपुर	४४८	—	४४८	३	—	३	२७	—	२७
सयाल परगना	८३५	—	८३५	१	—	१	—	—	—
मुंगेर	१,५५८	६०	१,६१८	६	१	७	१८	—	१८
दरभंगा सदर	—	—	—	—	—	—	१६०	४६	२०६
मधुबनी	३,७२०	—	३,७२०	४४	—	४४	१२०	—	१२०
समस्तीपुर	—	—	—	—	—	—	६७	—	६७
मुजफ्फरपुर	१,२६८	१६१	१,४२९	१२	२	१४	६०	—	६०
सारन	५८५	—	५८५	३	१	४	६८	—	६८
चंपारन	२४०	—	२४०	—	—	—	५७	—	५७
पटना	२५	—	२५	—	—	—	२३	—	२३
गया	१,१२६	—	१,१२६	—	१	१	१७	—	१७
वाहाबाद	१०३	—	१०३	१	—	१	—	—	—
पलामू	६१८	—	६१८	४	—	४	४५	६	५१
हुजारीबाग	८८५	२७	९१२	२	१	३	४	१६	२०
राप्ती	४४	—	४४	—	—	—	—	—	—
धनुबाद	२७३	—	२७३	१	—	१	३०	—	३०
सिद्धार्थ	१६६	२३	१८९	१	—	१	२१	—	२१
कुल :	१६,५६८	२१	१६,८३६	१०४	६	११३	१,६३१	७१	१,७०२

→ विहारदान सम्बन्धी 'फोल्डर' एवं 'पोस्टर' छापवाये जायेंगे। ग्रामदान के विचार-प्रचार की दृष्टि से मैजिक लाइट से गाँव-गाँव में चित्र दिखाये जायेंगे।

जिला-स्तर पर जिला ग्रामदान-समिति-समितियों को पुनर्गठित किया जायगा।

जिलों की बादा की उपस्थिति से प्रेरणा लेकर गठित जिले, इत्यदि निर्माण किया गया है कि बादा यमो जिलों में करीब तीन सप्ताह रहे।

२ अक्टूबर तक विहार-दान के लक्ष्य का पूरा करने के लिए करीब-करीब १५ लाख रुपये की आवश्यकता होगी। इसका संपादन करने के लिए एक उपसमिति गठित की गयी है।

— वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी

विहार-दान : जनक्रांति का मौलिक मार्ग

विनोबाजी की उपस्थिति में विहारदान का सफल

विनोबाजी मुजफ्फरपुर से गत २२ जनवरी का पटना पहुँचे और २३ व २४ तारीख को पटना में बहुत व्यस्त कार्यक्रम रहा। वे ३० तारीख तक पटना रहेंगे, ३१ को राजपुरह के लिए रवाना होंगे।

२३ तारीख का मुंबई बिहार राज्य पंचायत-परिषद् और सहायिका सच की सम्मिलित बैठक थी विनादानक मंत्र की अध्यक्षता में हुई। 'विहार-दान' २ अक्टूबर, '६८ तक करने के काम में पूरी सहायता देने का सफल इष्ट बैक में किया गया।

दोपहर में विहार प्रदेश का रचनात्मक सत्यामो क कार्यक्रमों का वृद्ध बैठक

हुई, जिसमें यमो सत्यामो न 'विहार-दान' के उत्तर में पूरी सहायता देने का निश्चय किया। दोनों प्रधानों में विनोबाजी यमो सत्यामो के लिए उपस्थित रहे, और इन दिवसों का स्वागत किया।

करने भाषण में विनाबाजी ने कहा, "पह गया-मुजफ्फरपुर का समय है। पंचायत परिषद् गया है और सहायिका-मंत्र वरुण। मांग बार-बार बढ़ते हैं कि हमारा हाथों के तुल्य बार निर्माण का भी हाथ पुष्ट हो जाना चाहिए, जिससे सच गाँव क सत्यामो का गाँवों क सत्यामो पर सत्यामो सत्य पर और काम में गति बने। अर्थ

ग्रामदान-प्राप्ति

प्रगति-प्रतिवेदन

पुष्टि हेतु गाँवों के तैयार कामजात			पुष्टि-पदाधिकारी के पास दाखिल कामजात			अभिपुष्टि गाँवों की संख्या			
पल माह तक चातू माह में	कुल	वत माह तक चातू माह में	कुल	पल माह तक चातू माह में	कुल	पल माह तक चातू माह में	कुल	अल्प	
४४२	—	४४२	३७०	—	—	—	—	नवम्बर	
६	—	६	—	—	३७०	—	—	नवम्बर	
४	—	४	—	—	—	१०	—	अक्तूबर	
११२	१२	१४४	११२	—	—	—	—	दिसम्बर	
४२	३	४५	—	—	—	—	—	नवम्बर	
६४	२६	९४	—	—	१३२	१०	—	अक्तूबर	
३०	—	३०	२१	३	—	—	२०	दिसम्बर	
१०७	—	१०७	—	—	—	—	—	"	
३८	३	४१	१६७	—	२१	—	—	अक्तूबर	
१४	—	१४	१८	३	१६७	४३	—	"	
४४	४	४८	—	—	—	—	—	दिसम्बर	
३३	—	३३	—	—	—	—	—	नवम्बर	
७	—	७	—	—	—	—	—	दिसम्बर	
१७	—	१७	—	—	—	—	—	अक्तूबर	
४	—	४	—	—	—	—	—	दिसम्बर	
—	—	—	—	—	—	—	—	"	
—	—	—	—	—	—	—	—	दिसम्बर	
१०	—	१०	—	—	—	—	—	अक्तूबर	
१४	—	१४	—	—	—	—	—	दिसम्बर	
—	—	—	—	—	—	—	—	"	
—	—	—	—	—	—	—	—	दिसम्बर	
११३	४४	१२२८	७१४	—	—	—	—	अप्रैल	
—	—	—	—	—	—	—	—	नवम्बर	
—	—	—	—	—	—	—	—	दिसम्बर	

—नेलास प्रसाद रामा, सदस्यजी, बिहार ग्रामदान-प्राप्ति संयोजन समिति

यह 'सुसमीयत-युव' (आयुष्क-युव) है। जमाने की माँग है कि जल्द-से-जल्द काम हो इसलिए दो साल-तीन साल नहीं, बल्कि २ अक्तूबर, '१८ तक पूरे राज्य की ग्रामदान में लाने का जो निश्चय किया गया है उसका विशेष महत्व है। वरु १९७२ में आषाढी चुनाव आनेवासा है। वरु, '१८ तक एक पूरा प्रत्या ग्रामदान में आ जाया है, तो आगे के ३ साल में ग्रामदान-विचार का प्रभाव आनेवाले चुनाव पर, और शासन पर दिखाई देगा।"

"हमने स्वराज्य का नारा लगाया तब गांधीजी ने उसीकी व्याख्या श्री-स्वराज्य यानी गलतियाँ करने का अधिकार। भेजे ग्रामदान यानी ग्राम स्वराज्य है, और गांधीजी को

बलती करके सुधारने का और अपने बल पर आगे बढ़ने का विशेष ग्रामदान के कारण मिलनेवाला है।"

ग्राम को सादेबार बड़े गांधी-मैदान में एक विराट धम्मा हुईं। इस सभा में विनोबाजी ने दो-तीन मिनट में आर्थावधारक भाषण देकर विदा ली। मुख्य मन्त्री श्री महाभाषा बाबू ने बड़े जीव के साथ ऐलान किया कि— "राज्य के मुख्य मन्त्री की दृष्टिगत से ही नहीं, बल्कि राज्य के एक नम्र सेवक श्री देवियल से मैं पोषणा करता हूँ कि जब एक घण्टे में प्राण है तब तक ग्रामदान के काम के लिए विनोबाजी के चरणों में बनती सेवा अर्पित करता रहूँगा।"

तोच साहब ने देश की गिरनी हालत का बिकल करते हुए आश्वासन दिया कि समयाने

और मुहम्मत के दाखले से ही घारे मसके हूव करने चाहिए।

जयप्रहासजी ने बापी देर तक शाय-दान की आवश्यकता और प्राथमिकता पर न मीदान से भागे है, न क्रांति के काम से मुझे है, बल्कि जन-पक्षि जागृति करने के फलित-नार्थ में पूरी बालि के धाय लगे है। सरकार कानून से कोई बोलिक परिवर्तन दख देन में करने की हिम्मत नहीं रखती है, चाहे वह नन्मुनिस्ट सरकार हो, चाहे धनुवत-वत की सरकार हो, क्योंकि उनका अपना तथ्या गलत जाने का बर है। देश को बनाने में सरकार का हिस्सा जरूर है, लेकिन यह छोटा है, जनता की ताकत ही बरा हिस्सा है।"

(विजय प्रतिनिधि द्वारा)

मुजफ्फरपुर में ४ नये प्रखण्डदान

● जिला सर्वोदय मण्डल के मन्त्री श्री बशीरारायण सिंह की सूचनानुसार मुजफ्फरपुर से विनोबा को विवाद के समय दिनांक २१ जनवरी '६८ को पाटी, गायपाट, रोगा और रूनीसैदपुर प्रखण्डों का दान घोषित किया गया। इन प्रखण्डों का अभियान क्रमशः सर्वोन्नीय गया प्रसाद चौधरी, कमवीर सिंह, सत्यनारायण सिंह आर राजकिशोर प्रसाद के अभिक्रम से सफल हुआ। प्रखण्डदान-प्राप्ति का विवरण निम्न प्रकार है :

प्रखण्ड	कुल जनसंख्या	ग्रामदान में शामिल	कुल ग्राम	ग्रामदान में शामिल
कांटी	१,३७,२५४	१,१६,२५०	१७६	१७६
गायपाट	६६,७७८	७४,६७५	८६	८१
रोगा	—	—	—	अज्ञात
रूनीसैदपुर	१,४३,०६२	१,११,६२४	१०२	१०२

● श्री निर्मलचन्द्र, मन्त्री, बिहार भूदान-यज्ञ समिती के अभिक्रम से, और संयोजन में बोधगया के पास भूदान-अदाता किसानों का एक भूमि-सेना शिविर आयोजित हो रहा है, जो १२ फरवरी तक चलेगा। शिविर में प्रदेश के हर जिले से अदाता-किसान जुलूस बनाकर अपने जिला की सीमा तक पदयात्रा करते हुए आयेंगे, उसका बाद

बाहन से बोधगया पहुँचेंगे। उनके साथ 'भूमि-सेना' 'बिहारदान' आदि के पोषक फलक होंगे। शिविर में दाता किसानों को भी समय-समय पर आमंत्रित करने की योजना है। दाता-अदाता किसानों में मधुर सम्बन्ध बनाने और भूदान किसानों को समर्थित तथा जागृत कर उन्हें 'भूमि-सेनिक' बनाने का यह एक बड़ा प्रयोग होगा।

उत्तर प्रदेश में तूफान अभियान

● बलिया जिले का परू-तिहार्द भाग ग्रामदान में शामिल हो गया है। १३ जनवरी '६८ को बांसडीह तहसील का दान पूरा हुआ। अब बलिया सदर तहसील में अभियान चालू है। पूरी उम्मीद है कि २ अक्टूबर '६८ तक बलिया का जिलादान हो जायगा।

● एटा जिले में १४ से २१ जनवरी '६८ तक चलाये गये ग्रामदान अभियान में कुल २०४ ग्रामदान प्राप्त हुए। अभियान ३ प्रखण्डों में चला। ५५ टोलियों में बँटकर १६६ कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

● बाराणसी जिले का पदला प्रखण्ड दान 'बहुनिया' २५-१६८ को घोषित हुआ। कुल १३५ गाँवों में से १२१ ग्रामदान हुए। अब उत्तर प्रदेश में कुल १८ प्रखण्डदान ३०४६ ग्रामदान हो गये।

(श्री कपिल भार्द्व के पत्रों से)

सूतांजलि से श्रद्धांजलि

खादी और चरखा गांधीजी के लिए वस्त्र और सगठन मात्र नहीं था। वह सभी भारतीय हृदयों का प्रेम और सहानुभूति का धारण में बाँधने के सूत्र की धाज था। उसके द्वारा अकिंचन भी श्रीमन्तों की बरबादों में निःसंकोच बैठ सकता था। मानव मानव की एकता के प्रतीक का सूक्ष्म विचार का स्वरण उसमें था। सूत्रयज्ञ के बिना वह किसी भी दिन राष्ट्र में विधाम नहीं करते थे। बतारों की जिया में ही व्यक्त रूप से ही उनका राम-स्मरण चलता था। इसी व्यापक कल्याण और विचार को स्थान में रखकर विनोबाजी ने उनके प्रति श्रद्धा प्रदर्शित करने के लिए भारत के सभी नर-नारियों से अपेक्षा की कि १२ फरवरी को जब गांधीजी की आठ त्रिंघ्रि प्रति वर्ष आया करे, उस समय सब माप अपने हाथ से काता हुआ एक गुग्गी मूत अर्पित किया करें अतएव उनकी पवित्र स्मृति में उल्लास और प्रशंसापूर्वक हरेक अर्पित की अपने हाथकटे मूत की १ गुग्गी १२ फरवरी को अपने-अपने जिले के निर्दिष्ट स्थानों पर समर्पित कर, राष्ट्रपिता के प्रति अपनी श्रद्धा अर्पित अर्पित करने का चाहिए।

—कपिल भार्द्व

सयाजक, सूतांजलि-सम्राट

खादी प्रामोद्योग समिति, सर्व सेवा संघ

—दत्ताचीन

एक अत्यावश्यक सूचना

'भूदान-यज्ञ' के इस सत्याग्रह अंक के बाद पूर्व सूचनानुसार अगला अंक ६ फरवरी '६८ को प्रकाशित होगा। चूँकि विधेयांक 'गाँव को दात' परिशिष्टांक सहित ६४ पृष्ठा का है, इसलिए अगले दो अंक ६ तथा १६ फरवरी '६८ के ८-८ पृष्ठों के ही होंगे।

—सम्पादक

खादी का स्थानीय अभिक्रम

भारत, जिसके ७५ प्रतिशत नागरिक गाँवों में निवास करते हैं, मूलतः गाँवों का देश है, जिसकी समृद्धि और आर्थिक विरासत खादी-ग्रामोद्योगों के काम और ग्रामदान के विचार में निहित है। राजस्थान खादी-संघ इस संघ की प्राप्ति में गंभीर अपना हृदयभंग अर्पित करता रहा है। अपने अपने समय का जिला और अब विनाश-आश्रय स्वर पर विकेंद्रीकरण बरक स्थानीय अभिक्रम को जागृत करने में पहल भी है।

राजस्थान खादी संघ, मगईनाग (जयपुर) द्वारा प्रकाशित

भूदान-यज्ञ : मत्याग्रह अंक : ३० जनवरी, '६८

हमारे कुछ विविध प्रकाशन

जीवन-साधना

(महापि पत्र-पत्रिका के योगसूत्रों का सरल विवेचन)
लेखक - बालकृष्ण भावे



महापि पत्र-पत्रिका के योग-सूत्रों के रूप में भारतीय विचारधारा को जो स्वरूप प्रदान किया है, उसे अपने आपसे अद्वितीय माना जा सकता है। मानव जीवन का सारा खेल विश-सृष्टियों का है। उनका निरोध ही जीवन की सच्ची साधना है।

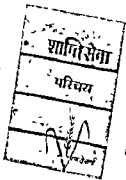
विनोबाजी के अनुसार श्री बालकृष्णभावे भावे ने प्रायद्विक साधकों की दृष्टि से अपने अनुसार के आधार पर योगसूत्र के आवश्यक अर्थों को इस पुस्तक में सरल व्याख्या की है। बालकृष्णभावे ने अपनी दृष्टि स्पष्ट करते हुए लिखा है "प्राचीन काल से यह धारणा चलती आयी है कि योगसाधन या ब्रह्मसूत्र साधकों और मुमुक्षुओं के लिए ही है। मुझे लगता है, यह धारणा उन सबके लिए उपयोगी है, जो समाज में ते चलने के अभिलाषी और प्रयत्नशील हैं। प्रस्तुत पुस्तक के पाठक अनुभव करेंगे कि प्रत्येक मूल बात अर्थ और विवेचन महात्मा जी की दृष्टि से किया गया है कि समाज-प्रवर्धन व्यक्ति के जितने जीवन में काम आ सके। पुस्तक का 'जीवन-साधना' श्रुत १९६४, मूल्य २० रुपये

विनोबाजी के अनुसार श्री बालकृष्णभावे भावे ने प्रायद्विक साधकों की दृष्टि से अपने अनुसार के आधार पर योगसूत्र के आवश्यक अर्थों को इस पुस्तक में सरल व्याख्या की है। बालकृष्णभावे ने अपनी दृष्टि स्पष्ट करते हुए लिखा है "प्राचीन काल से यह धारणा चलती आयी है कि योगसाधन या ब्रह्मसूत्र साधकों और मुमुक्षुओं के लिए ही है। मुझे लगता है, यह धारणा उन सबके लिए उपयोगी है, जो समाज में ते चलने के अभिलाषी और प्रयत्नशील हैं। प्रस्तुत पुस्तक के पाठक अनुभव करेंगे कि प्रत्येक मूल बात अर्थ और विवेचन महात्मा जी की दृष्टि से किया गया है कि समाज-प्रवर्धन व्यक्ति के जितने जीवन में काम आ सके। पुस्तक का 'जीवन-साधना' श्रुत १९६४, मूल्य २० रुपये

शान्ति-सेना परिचय

लेखक - नारायण देसाई

प्रस्तुत पुस्तक में शान्ति-सेना का संक्षिप्त परिचय धारणा के अंतर्गत किया गया है। विचार, संरचना, प्रयुक्त और साधन, वे चार खण्ड हैं। प्रचार की दृष्टि से इस पुस्तक का मुख्य लाक्षत से भी कम रखा गया है। मूल्य - ०-२५ पैसे।



स्वदेशी विचार

लेखक - विनोबा

स्वदेशी-विचार को प्रश्रुति मानने अनेक रूप-रंग में उभर कर इस रूप में सामने आये हैं। स्वदेशी का अर्थसाधन, मन-सुख और स्वदेशी, स्वदेशी-चिन्तन को नवी दिया, स्वदेशी का इतिहास, सामाजिक और अर्थ-व्यवस्था, सामाजिक स्वदेशी, स्वदेशी की महिमा और भेद-लक्षणा आदि स्वदेशी के विभिन्न पहलुओं का विनोबाजी के अर्थों में बुद्धिवादी सम्यक विवेचन प्रस्तुत करने का काम यह नवीन प्रकाशन स्वदेशी-उत्तराजान का स्वदेशी है। स्वदेशी श्रुत २५४, मूल्य ४ रु०

स्थितप्रज्ञ-रक्षाण

(शास्त्र विवेचन) लेखक - बालकृष्ण भावे
गौता के दूसरे अध्याय के अन्त में १८ श्लोका में स्थितप्रज्ञ का वर्णन आया है। गौता के इस अर्थ पर अनेक व्याख्याएँ, भाष्य और टीकाएँ लिखी गयी हैं। बालकृष्णभावे ने इस पुस्तक में सबसे अधिक भाग में भाष्य, ऐसी सरल भाषा में स्थितप्रज्ञ के लक्षणों को विवेचना की है।

श्रुत १५४, मूल्य १.२०

मुनी कहानी मनफर की

लेखक - प्रेमभाई

मनफर की बिहारी का पहला सामदानी गाँव होने का और मिला है। ग्रामशासन के बाद मनफर की हवा बिजली बरती, सरसार सैने बने, बहों के लक्षों के रह-सहन, सोनि-रिवाज, काम-धन्धे, सान-पान आदि पर कैसा प्रभाव पड़ा इसका भी प्रेमभाई ने सारासही विवरण दिया है। इस विद्यते १३-१४ अर्थों में मनफर के कादिवासी समाजों ने जो यशिल तप की बड़ बहाने अंकी भले ही न हो लेकिन देवने सम्पन्ने कामक चीज अत्यन्त है। गाँव के निर्माण, विकास और प्रगति की एक वयावर्-वादी अंत। श्रुत १५४, मूल्य १.००

उपवास से जीवन-रक्षा

लेखक - हर्बर्ट एच० टोल्डन

अमेरिका के एक प्रमुख वैद्यक विद्वान्द्रक द्वारा लिखी गयी इस पुस्तक में उपवास की महत्ता और बतलित लोगों में उपवास के उपचार का अनुभवपूर्ण विवरण प्रस्तुत किया गया है। अनुवादक महोदय ने, जो प्राथमिक चिकित्सा के महर्ग है, इस बात का ध्यान रखा है कि पुस्तक भारतीय जनता के लिए उपयोगी बने। आज भारत को परिस्थिति की दृष्टि से पाश्च-सागरी में आन-एक कथोचन कर दिया गया है। श्रुत २००, मूल्य १.००

सर्व सेवा संध-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी-१

भूतान-संघ : सत्याग्रह अंक : ३० जनवरी, '६८

काशी युगों-युगों से विद्या की नगरी रही है ।

और

यह प्राचीन परम्परा आज भी कायम है ॥

वर्तमान

विचार-क्रान्ति के दौर से गुजर रहे भारत में सर्वोदय-आन्दोलन
सत्याग्रह की नयी भूमिका प्रस्तुत कर रहा है



विद्या की नगरी काशी में इस विचार के प्रकाशन का केन्द्र है,
इस प्रकाशन को अपना हार्दिक सहयोग देते हुए बहुविध एवं
बहुवर्गीय दुरुस्त छपाई और चुस्त सेवा के लिए प्रस्तुत



स्वराडैलवाल प्रेस एवं पब्लिकेशन

मानमन्दिर • वाराणसी-१ • फोन • ४४३३

सर्वोदय-विचार क्रान्ति

की

सन्देशवाहक पत्रिकाएँ



SARVA SEVA SANGH

MONTHLY NEWS LETTER

सर्व सेवा संघ

२५, गेट २, अमरजी मासिक

सर्वोदय धान्दोलन की पत्रिकाविराजितियों
में

गणार्थ वा मासिक

वार्षिक मूल्य १० रुपये

एक प्रति वा १ रुपये

मूदान-तहरीक

(उर्दू मासिक)

में

बादो-बिबादो में फल दुनिया की

'उप जगत्' का मन्देश

वार्षिक मूल्य ४ रुपये

एक प्रति वा २० पैसे

नयी वालीम

(मासिक)

द्वारा प्रस्तुत होती है
सर्वोदय क्रान्ति की
दैनिक प्रक्रिया

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

एक प्रति वा ५० पैसे

SARVODAYA

(MONTHLY)

[सर्वोदय : अर्द्धमासिक]

आगतिक मन्देश में सर्वोदय

का योगदान

विश्वसेवासंघक सहायक के लिए

वार्षिक मूल्य ६ रुपये

एक प्रति वा : ४० पैसे

सर्व सेवा संघ प्रकाशन-राजघाट, वाराणसी

विश्व-साहित्य की अनमोल निधि

ऐतिहासिक आलेख और साहित्यिक प्रतिभा से समन्वित

महादेव भाई
की
डायरी
(१८८०)



DAY-TO-DAY
WITH
GANDHI
(५४०)

१९१७ से १९४४ तक

संस्करण १९४४

द्वारा अंकित

गांधीजी के जीवन का हर पल २२ दिन

- ७ राष्ट्रीय आन्दोलन का सही रूप
- ७ विचारों का प्रभाव में आने का योग
- ७ राष्ट्र-मानस का सजीव चित्र
- ७ अन्तराष्ट्रीय सन्धन और हलचलें
- ७ अहिंसा के अमर पथिक का प्रतिपादन

की

जीती जागती कहानी

विशेष जानकारी के लिए लिख -

सर्व सेवा सघ प्रकाशन

राजघाट . 'वाराणसी १'

ऐसा नहीं है कि गांव में पहले अनौचित्य नहीं थी, अन्याय नहीं था। या सही, फिर भी गांव के लोगों में एक आपसवारी थी, जिसके कारण रस्म रिवाज के अनुसार लोग अपने गांव का ख्याल रखते थे, और एक-दूसरे के सुख-दुख में शरीक होते थे। अब ऐसी बात नहीं रह गयी है।

जब स्वराज की लड़ाई चलती थी तो गांधीजी बराबर याद दिलाते रहते थे कि भारत गांवों का देश है, इसलिए भारत की स्वतन्त्रता तभी सुफल होगी जब एक-एक गांव स्वतन्त्रता का सुख भोगने लगेगा, और उसे स्वतन्त्र इकाई के रूप में विकसित होने का मौका मिलेगा। दुख की बात है कि देश के स्वतन्त्र होने पर भी ऐसा हुआ नहीं। न होने का कारण क्या है? सबसे बड़ा कारण है आज की राजनीति। इस राजनीति में जो जहर है उसके कारण जनता को शक्ति इस तरह टूट जाती है जैसे ऊपर से गिरकर बतारा टूट जाता है। आपस में लड़ना सिद्धान्त बन जाता है।

खुशी की बात है कि गांव के लोग राजनीति के उस चिप को पहचानने लगे हैं, और उससे बचने के लिए अधीर हो रहे हैं। लेकिन उनकी इस बेचैनी को सही दिशा मिलनी चाहिए। कोई समय था, जब धनी होने में सुख था। और बड़ी जाति का होने में बड़प्पन था। लेकिन अब समय इतना बदल गया है कि गरीब धनी को धनी रहने देने के लिए, या

जो नीच समझा जाता था वह ऊंच को ऊंच समझने के लिए, तैयार नहीं है। और, जमाना खुद भी धन या जाति के बड़प्पन को मानने के लिए तैयार नहीं है।

नया जमाना समता का जमाना है। समता तभी हानी जब हर एक का ध्यान रखा जायगा। जो भी काम हो सबों राय से हो, और सबकी भलाई का ख्याल करके हो। पुरोहित की बात चले, राजा, नेता, विद्वान या साधु की बात चले, यह अब होनेवाला नहीं है। जब लोकतन्त्र में सबकी वोट का अधिकार मिल गया, तो अब किसीको क्या महार बला किया जा सकता है? मेल में लोकतन्त्र की शक्ति है, और मिलकर रहने में ही सुख है। संपर्प में दुख ही दुख है। संपर्प भी न हो, और अन्याय भी मिटे, यह इस युग की मांग है।

गांव के लोग बहुत भूले, बहुत भटके। अब जगह जगह उनकी एक संगठित पुकार सुनाई देने लगी है। आवाजें अनेक हो सकती हैं, लेकिन पुकार एक हो, जैसे पत्ते अनेक होते हैं, पर फूल एक होता है।

'गांव की पुकार' नाम के इस छोटे नाटक में गांव 'सर्व' की आवाज है। वह आवाज हर जमान पर उठे, हर जमान में बूझे, हर दिल को छूये, तो गांव का सपना पूरा होने में देर नहीं लगेगी।

—राममूर्ति

बहुमत-अल्पमत नहीं, सर्वमत

अपने देश की जो पुरानी रीति थी, वही मैं ला रहा हूँ। पुरानी रीति 'पांच बोले परमेश्वर!' अभी तो तीन बोले परमेश्वर हो गया है। यह नया परमेश्वर परदेश से आया है। बड़ा खतरनाक है यह! जहाँ-तहाँ टुकड़े करना ही जानता है। मैं यह कहना चाहता हूँ कि बहुमत के सिद्धान्त के कारण हम अपना मूल स्वभाव ही छोड़ रहे हैं। हमारे मूल स्वभाव में यही है कि हम सर्वानुमति से काम करें। असल में न्याय तो परमेश्वर देता है। मनुष्य तो समाधान कर सकता है। न्याय अन्दर का उद्देश्य देखकर देना पड़ता है, जिसे एक परमेश्वर

के सिवा कोई नहीं जानता। इसलिए मनुष्य का परम न्याय देना नहीं, समाधान देना है। ईसा ने कहा है कि 'तुम न्याय दोगे तो तुम्हारा न्याय परमात्मा करेगा।'

ग्रामदान में सब मिलकर जो फेसला करेंगे, रही शांति। अगर गांववाले सब मिलकर सर्वसम्मति से तय करते हैं कि होली के दिन पूरे गांव को आग लगायें तो आग लगाने। फिर सोचने का सवाल बड़ा? सवाल एक मनुष्य का नहीं, सबकी सम्मति का है।

—विनायक

गांव की बात विनायक

गाँव की पुकार

(नाटक)

पूर्वकथा

बिहार राज्य में नवरंगपुर करीब एक हजार की आबादी का एक बड़ा गाँव है। गाँव में प्रायः छोटे-बड़े सभी वर्णों और वर्गों के लोग रहते हैं। कोसी के किनारे पर बसा हुआ, रेलवे स्टेशन से करीब मात मील दूर पीराम के ऊँचे-ऊँचे पेड़ों और बाँवों के घने झुरमुटों से घिरा हुआ नवरंगपुर दूर से बहुत सुभावना लगता है। शाम को जब मवेशी बाहर से चरकर लौटते हुए रंभाते हैं, बछिया-बछड़े उछल-कूद-कूदकर मूल उछाते हैं तो नवरंगपुर कन्हैया का गोकुल बन जाता है, कभी रह जाती है तो चिर्क ब्रजवासियों को नचानेवाली वंशी की धुन की। गाँव के उत्तर तरफ बना हुआ है एक हाईस्कूल। बहते हैं कि सन् १९४२ के स्वराज्य-आन्दोलन में धहीद हुए गाँव के रईम बाबू हरिनारायण सिंह के इकलौते बेटे कुंवरनारायण सिंह ने इसी जगह एक भोजपी डालकर 'जवाहर-आश्रम' की स्थापना की थी, और यही अपने साथियों सहित रेलवे स्टेशन पर धावा बोलने की योजना बनायो थी। स्टेशन पर स्वराज का झण्डा फहराते समय ही कमसनी कुंवरनारायण पुलिस की गोली का शिकार हुआ था। बेटे के शोक में बाबू हरिनारायण सिंह की जिन्दगी अममय ही मुरझा गयी थी। लेकिन चार साल बाद जब कुंवरनारायण के साथी उषसेन भा, दशरथ मंडल, अलीउद्दीन ताँ और खैरु आमचान जेल से छूटकर वापस आये, और बाबू हरिनारायण सिंह को यह सुनाया कि अमर शहीद कुंवरजी की याद में हम एक हाईस्कूल खोलना चाहते हैं, तो बाबू हरिनारायण सिंह के जीवन को जैसे एक संहारा ही मिल गया। कुंवरनारायण के ये चारों साथी इस इलाके के अलग-अलग गाँवों के युवक जिला-कालेज में साथ ही पढ़ने थे। गांधीजी के प्रभाव में जाकर इन्होंने आपसी जाति-पाति का भेद-भाव तो भुला ही दिया था, स्वराज के लिए अपनी जान की बाजी भी एकनाथ ही लगा चुके थे। नवरंगपुर गाँव में हाईस्कूल खोलने का निश्चय हुआ तो इलाके भर में उल्लाह की लहर दौड़ गयी। गाँव के अपने मजदूर नाथों को सोदईराम और नैहराम ने संगठित किया कि सब लोग हज़रत में एक दिन भ्रमदान करें। बरको मनोहर प्रसाद और सेंट रोलनराम ने चन्दा जुटाने का बिम्बा लिया। कमनोदानाथ

पात्र-परिचय

हरिनारायण सिंह . गाँव के प्रतिष्ठित और समुद्र व्यक्ति
मनोहर प्रसाद पहले बरको, फिर नारको, फिर गैरनारको नेता गाँव के सेंट

दोलत राम } धर्मो स्वराज्य- } बाबूजी }
उममेन ता } दशरथ मण्डल } जनताथो }
दशरथ मण्डल } अलीउद्दीन ताँ } मुस्लिम लीगो }
अलीउद्दीन ताँ } रमू पासमान } कम्युनिस्ट }
रमू पासमान } कमनोदानाथ } गाँव का मायक कवि, एक पाँच से कुछ संघस्य

सोदईराम } गाँव के गरीब शिक्षक-मजदूर }
नहराम

विद्युत अफिसारी } नवरंगपुर विद्यालय प्रयास के }
गंदू यादव } यादव टाले का मुखिया }
पंचानन } गंदू यादव का लडका }
लालीराम } हरिनारायण सिंह का मोहर }
झांगी का एक दल } बंध-बाजे के साथ }
तथा }
अलग-अलग राजनीतिक दलों }
और }
गाँव के अन्य लोग }

३० जनवरी, १९६०

ने तो अपनी कुल पांच घोषे जमीन में से दवाई घोषे स्कूल के लिए दान कर दी। मादव टोले के गदेलू ने भी धुव सहयोग दिया।

स्कूल बन गया गाँव के युवकों ने फसला किया कि हमारे स्कूल का उद्घाटन गुलाम भारत में नहीं, स्वराज के मुनहले प्रभात में १५ अगस्त १९४७ को होगा। बड़ी धूमधाम से तैयारियाँ होने लगी।

अक: १

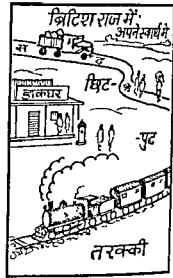
दृश्य: १

१५ अगस्त सन् १९४७ के दिन

(हाईस्कूल की नयी इमारत पर सफेदी हो चुकी है। कागज की भण्डियों और आम के पल्लवों से पूरे हाते में भरपूर सजावट की गयी है। स्कूल के सामनेवाले बरामदे के ऊपर एक बोर्ड टंगा है, जो सून के धब्बे लगे एक तिरों भण्डे से ढका है। बरामदे से करीब दस ही हाथ की दूरी पर एक गोल-सा चबूतरा है, जिसे फूलों से सजाया गया है। चबूतरे पर गड़े खम्भे में ऊपर भण्डा लहरा रहा है। जमीन पर इधर-उधर कुछ फूल भी बिखरे हैं। एक तरफ कुछ छात्रों का एक जत्था वेण्ड-बाजे के साथ खड़ा है। दूसरी तरफ कुर्तों पर बैठे खादी की सफेद पोशाक पहने, सिर पर गांधी टोपी लगाये वाबू हरिहर-नारायण सिंह दिखाई दे रहे हैं। उनके पास ही खड़े हैं वकील मनोहर प्रसाद, और उनके साथ युवक नेता उग्रसेन भा, दशरथ मंडल, अलीउद्दीन खाँ और खेडू पासवान। सबके सिर पर गांधी टोपी है। सामने नवरंगपुर तथा आसपास के ग्रामीण श्रोता बैठे हैं। पर्दा उठने के साथ ही वेण्ड पर राष्ट्र-गीत 'जनगण मन' की धुन बजनी शुरू होती है। और धुन पूरी होते ही वकील मनोहर प्रसादजी का भाषण शुरू होता है। युवक नेतागण बैठ जाते हैं।)

मनोहर प्रसाद :—वाबू हरिनारायण सिंहजी और प्यारे भाइयो! सैकड़ों वर्षों की गुलामी के अंधकार में भटकते-भटकते आज हमने आजादी का उजाला पहली बार देखा है, फिरगियों ने हमको बेडियों में जकड़ रखा था, हमने उन बेडियों को सदा-सदा के लिए तोड़कर फेंक दिया, अब हम स्वतन्त्र भारत के स्वतन्त्र नागरिक हैं, हम आजादी की हवा में साँस ले रहे हैं। (दर्शक तालियाँ बजाते हैं, एक युवक नारा लगाता है—'स्वतन्त्र भारत की' . 'जय' सब बोलते हैं। वकील मनोहर प्रसाद उत्साहित होकर कुछ ओर ओर से बोलते हैं।) लेकिन भाइयो, हम

यह नहीं भूलना चाहिए कि इस आजादी को हासिल करने के लिए लाखों-लाख भारत माँ के जिगर के टुकड़ों ने आजादी की वेदी पर हँसते-हँसते अपनी कुर्बानी दी है। वह इसलिए कि भारत में रहनेवाला हर आदमी आदमी की तरह मुय-शान्ति की जिनगी जी सके। हमें ऐसा भारत बनाना है, जिसमें कोई भूखा न मरे, नया न रहे। अंधेब हमारी नस-नस का खून चूसकर बिलायत ले गये।



हैं—) आज नवरंगपुर में नये भारत के नये बेंद्र की नींव डाली जा रही है, जहाँ से पढ़े-लिखे अच्छे नागरिक पैदा होंगे, और भारत का भविष्य उज्ज्वल बनार्ये। इन अवसर पर हमारे प्राणों से प्यारे अमर शहीद वाबू कृपंजी की याद आना मे आनू बनकर उमड जाती है, इस हाईस्कूल के साथ उमर आत्मा की याद जुडी हुई है। ऐसी वीर सन्तान के सिता वाबू हरिनारायण सिंहजी धन्य हैं। हम आप सबको ओर से वाबू हरिनारायणजी से प्रार्थना करते हैं कि वे इस हाईस्कूल का उद्घाटन करें।

(वेण्ड फिर बजने लगाता है। वकील मनोहर प्रसाद के साथ वाबू हरिनारायण सिंह उठकर जाते हैं और बरामदे पर टंग रहे

गाँव की बात : रिपोर्टर

घोड़ों में तिरंगा भंग (हटा लेते हैं। घोड़ों पर लिखा है—'अमर
 पक्षी कुंवर हांसूल नवरत्नपुर'।

घोड़ों पड़ते ही लोग हात्थियाँ पीटते हैं। गारे लगाते हैं,
 'अमर शहीद कुंवर सिंह' : 'विन्दावाद', 'अमर शहीद कुंवर
 सिंह' : 'विन्दावाद'। वात्र हृदियारथण सिंह धामस आकर
 कुर्सी पर बैठते हैं। धून के पम्बोवाला बहु भाड़ा उनके हाथ
 में है। सामने वाले ही उनको आंखों से आँसू की धारा बहने
 लगती है। वे भग्ने-महिल अपनी हथेलियों से एक बार मुँह
 दक लेते हैं। फिर आँसू पोखने हुए सड़े होते हैं।)

हरियारथण सिंह :—मेरे प्यारे भाइयो, मुझे माफ़ करे,
 बार का दिल टूटा, व मो-कमी कमजोर हो जाता है। (भग्ने
 को दिखाप डिए) आप देख रहे हैं, इस भग्ने पर धून के धम्बे
 हैं। ये धम्बे सिर्फ़ मेरे झलते-बेते कुंवर के धून के ही नहीं हैं,
 मेरे अपने अरसानो के धून के भी हैं, इतना ही नहीं, ये भारत
 माँ के दिल पर हुए गहरे घायो के निदान भी हैं। (बोलते-
 बोलते खलाई आ आती है) मैं इस वक़्त 'कुछ अधिक
 नोल' "नही सकूँगा। सिर्फ़ इतना ही कहूँगा कि भारत
 माँ के "दिल के घाव 'तभी मरेगे' अब हम एक बनेगे
 " बरक बनेगे "बोलिये, 'भारत माता की'।

'नय' ! (सब लोग दुहघाते हैं, इसी समय बमभोलानाय एक
 ओर से आते हुए दिखाई देते हैं, बमभोलानाय की दाड़ी बड़ी
 हुई है। बाव बिलते हैं। फटी पोती, फटी नमीन पहने,
 शिर पर लयड़ी बधि एक छाटके के सहारे लंगड़ाते हुए चलते
 है। बमभोलानाय गीत गा रहे हैं। दूर से उनकी आवाज
 धोनी मुग़ाई पड़ रही थी, जैसे-जैसे मंच के करीब आते हैं,
 आवाज सरक मुग़ाई देती है)

बमभोलानाय :—मुक किरण-की,
 रोष लिखा-की,
 रोषाओं की कातम,
 परवानो की आका।

बलवानुच्छा
 फिर-फिर बलन,
 जिमका बध दियहए है
 रोष नहीं लकी बन्देरे,
 बध उवा आकाव है,

हे रय बमन की किरणो,
 रोषाओं की कातम !
 परवानो की कातम !!
 मुक्त किरण-की "रोष लिखा-की" ।
 (गीत पूरा होता है और पर्दा गिरता है)

दृश्य : २

१२ साल बाद, सन् १९५६ में

(मेड दोन्तराम की गद्दी। सममद के महारे मेठवी बेंडे
 हुक्का कुण्डुदा रहे हैं। पास ही बेंडे हैं—दरारय मंडल, खेदू
 पासवान और अनीउडीन खाँ। दरारय मंडल के गिर पर काणो,
 खेदू पासवान के गिर पर लाल और अनीउडीन खाँ के गिर
 पर हरी टोपी है। सबके खेदूरे पर उम ही शीशुआ दिखाई दे
 रही है। बहल का दौर चल रहा है।)

परारय बडल :—आप बताइओ कुछ कहे संजनी, अगर सन्
 बालठ के अगले चुनाव में भी इन सफेद टोपीवालो का ही राज
 बना रहा तो देश और धर्म, दोनों रक्षातल को कते नार्थमें। न
 तो हिन्दू धर्म का नाम लेतेवाला कोई रह जायगा और न हिन्दु-
 स्तान का। मैं दावे के साथ बहदा हूँ कि देस को आजादी खतरे
 में है। इसलिए ह्वारो पार्टी को-

खेदू पासवान :—(बीच में ही बात कटते हुए) मैं कहता
 हूँ दरारय बडल ! इ यह कुर्वनगन छोडिये, अगर देस को बचाना
 है। मैं भी मानता हूँ कि देस ददो नाडुक दौर से गुजर रहा है,
 लेकिन इस हालत में देस को इतनी नोकता को बचाने का एक ही
 उपाय है—सर्वहारा को नार्थिन। आज नती उपनिवेशवादी देस
 अमेरिका के सुप ह्वें आर्थिक गुलापी की संभोटे में फिर से जकड़
 देना चाहते हैं। अगर देस को बचाना हे तो सबनोग लाल भग्ने
 के गोषे संगठित होकर इन्क़ाव का बिगुल बना दें।

अनीउडीन खाँ :—तनाब धाप दोनो हिन्दू की हाताओं के
 बरे में अपनी-अपनी गर्नी का बयान पेश कर गये। अब बरा
 हार भी गौर करनाइये :

हमें भी हल हे करने बखन के कालो दुर्बान पाने,
 मगर हिल हे फंग दलल में, जयें तो किरन कायें ?
 (सब लोग हँसते हैं, वाह-वाह की बात देते हैं।)

दोलतराम :—मगर, सौ साहब, आशिर दिल को पैमाने-
 बाने दलरल के पास आप कैसे पहुँच गये ?

अलीउद्दीन सा —सेठ साहब, मैं गाचीज नला ऐसी हिम्मत पेश करता ! बात यह है कि दलदल खुद ही दिल के करीब आ गया । सिर्फ मेरे ही नहीं, सबके दिल के करीब । मुलाहजा फरमाइये (सबके सिर की टोपिया की ओर इशारा करते)

बनो हम एक थे ये ताऊ सर के एक थे
वनन या एक सबका, और थे सब हमवनन,
मगर हम पँस गये है दल व दलदल म अभी,
कि सय बहुषपिये बहुटोपिये रगीन है ।

(एव जोर से उग्रसेन भा या प्रवेग होता है, उनके सिर पर सफेद टोपी है ।)

उग्रसेन सा —वाह वाह मिया । जवाब नहीं आपका ! (बाकर बैठते हुए) एव वार फिर इहुराइये मेरे दोस्त ! क्या फरमा रहे थे बहुषपिये बहुटोपिये रगीन ।

अलीउद्दीन सा —पंडितजी महाराज ! राजधानी की हवा 'नाते-खाते आपकी नजरो पर रनीनियों का नशा छा गया है । लेकिन कभी यह भी सोचते हैं कि आपकी हुकूमत जो कुछ भी कर रही है उसका अजाम क्या होगा ?

रोटू पासवान —अनाम इनसे नहीं, मुझे प्रिये वं साहब मुझमें । गोश्र ही इकलाव की तेज आनी आयगी और इनका बुजुबा सरकार की जड उखड जायँगी । भारत के मान पर सर्वहारा क्रान्ति का लाल मूरज चमकेगा, और इनकी मिट्टी पलीद हो जायगी !

उग्रसेन सा —बुप रह चीनी कुत्ता के दलाल ! आँसो से गदारी का चरमा हटाकर देख कि हमारी सरकार ने जनता की भलाई के लिए ही भाखरा तागल के बडे-बडे बाँध और बोकारो भिलाई के भारी भारी कारखाने बनवाये हैं । प्रखण्ड प्रखण्ड मे विनाश के लिए हर तरह की योजनाएँ चलाकर खेतों, उद्योग, पशुपालन आदि के कितने अविन वाम कराये हैं ! पूरे इलाके म बड़ी एव दो पले लिखे लोग मिलने थ, आज गाँव-गाँव मे बी ए एमे पाप लोग मिलते हैं । गाँवा की तरक्की देखना चाहते हो तो देखो, आज हर गाँव म धाम की लोग पटना रेडियो का चौपाऊ वायकम सुनते हैं । देस बदर रहा है, जमाना बदल रहा है कामरेड खेदराम ! तुम भी बदलो अपने आपको !

दशरथ मंडल —जी हाँ, क्या बहने ! चोरगजारी और भ्रष्टाचार का बोलबाला है, महँगाई जनता की कमर तोड रही

हे । एमे ची ए पास वरने लोग मक्की मार रहे हैं, हुविश मे भीख माँगकर भारत अपना पेट भर रहा है ! तरक्की नया पूछना । अरे एमेले महाराज, शुतुरमुर्ग की तरह तेम चोब गाडकर कब तक चैन की बगी बजाओगे ?

उग्रसेन सा —(क्रोधित होकर) खबरदार, अब जो ज्यार बढ-बढकर बाते की, तो अभी हाथ ठिकाने लगा दूंगा । वता अपनी काली टोपी की तरह मुँह वाला करो और भागे यहाँ से ।

दशरथ मंडल —(कुत्तों की बाँह ऊपर चढाते हुए) अवे पंडित के बच्चे, नू बहुत बहन रहा है, हद से बाहर जा रहा है हद तुम्हे (उग्रसेन पर भ्रष्ट पडता है । दोनों एक-दूसरे से भिड जाते हैं । खेदू पासवान भी उसम शामिल हो जाते हैं । हड दौलतराम और अलीउद्दीन वं किसी तरह बीच-बचाव करके सबको अलग करते हैं । तीनों तीन ओर चले जाते हैं ।)

अलीउद्दीन वं —(सेठ की ओर हल करने) देसा सेठजी इसे बहते हैं, दलो वा दलदल । स्वराज के पहले सब एव थे स्वराज होने पर देसा वो मजबूत और एक बनाये रत्नेरी बसम सवने एवसाध खायो, आज भी देस वही ममसाएँ वही लेकिन

दौलतराम —लेकिन सत्ता की कुर्मी ने सब दिना म दरारे पैदा कर दी यही न ?

अलीउद्दीन सा —अच्छा सेठजी, अब चलो ।

सेठ दौलतराम —अजी, आपस के भगदोर में नेताजी एम अपना चदा माँगना भूल गये, अपनी तो कुछ बचत हो गई लेकिन अब आप कम-से-कम पान का शौन तो बरते बाये (पान की तलही सेठजी खी साहब की ओर बढाते हैं और वं साहब पान मुँह म रखते हैं । पदाँ गिरता है ।)

दृश्य ३

सब देसा की भलाई के नाम पर

(प्रखण्ड विवास का कार्यालय । बीच की बुसों पर विनाश अधिकारीजो बोट-यैट पहले बैठे हैं, निर पर अर्बजो टार है । दायो ओर सड दौलतराम निर पर पगदी बाये, निरबई एदने सिल्ला का बुपट्टा बन्ने पर डारये बैठे हैं । उनके दाये हाथ में, वं विवास अधिकारी की भेज पर दिना है खने वा एक शाल बने है, बायी ओर बगड म एव वही दबाये हैं । विकास अधिकारी

गाँव की रात विनरड

की बायी ओर उग्रसेन भा बैठे हैं। वे सफेद दुर्गा-धोती पहने हैं, कुर्ते पर एक काली जवाहर जैकेट भी उन्होंने पहन रखी है, सिर पर गांधी टोपी लगाये हैं, हाथ में चमड़े का एक बैग भी है। परदा उठता है तो एक चपराबी चाय की ट्रे में तीनों ब्यक्तियों के लिए चाय मेज पर रख जाता है।)

विक्रम अधिकारी :—लौजिये एमिले साहब, पहले चाय पीजिये, गांधी बाते बाद की।
(सब चाय पीना शुरू करते हैं, बातचीत भी चल रही है।)

दौलतराम :—बाद की नहीं साहब, साथ ही साथ। वना चाय मेरे घने के ऊपर हो अटक चायपी।

उमतेन झा :—(हँसते हुए) भई गान गये, सेठ दौलतराम का लोहा। पहले खाने की बात, फिर पीने की बात। क्यों सेठजी कैसे हनुम करोगे दलनी दौलत? कोई आगे-पीछे भोगनेवाला भी तो नहीं है?

दौलतराम :—हे-हे-हे... हे क्या बहते हैं नेताजी आप भी! कानो-कौड़ी जोड़-जोड़कर किसी तरह गरीब की पुजार हो जाती है। हाँ, बस कभी-कभी आप नेताजी लोगों को सातिरदारी करने का सोभाय अपनेराम को मिल जाता है, वही बहुत है। (बुछ रनकर) 'उसका कुछ-कुछ जुगाड तो होवे खूना चाहिए न।

विक्रम अधिकारी :—हाँ, हाँ 'स्यो नहीं। आखिर नेता तो जन-सेवक है, उनको सातिरदारी सेठ दौलतराम जैसे लोग नहीं करेगे, तो और कौन करेगा? नहिये मेरे लिए क्या हुक्म है?
दौलतराम :—हे हे हे 'हे को-बींजो साहब, मुना है कि राजपुर के पान बरसाती नाले पर जो पुलिया बनेगी, उसका ठोका दो लाग का होनेवाला है।

विक्रम अधिकारी :—विलकुल गलत।
दौलतराम :—मजाक न नीजिये बीं-बींजो साहब, आज-कल मन्त्री जा रही है।

विक्रम अधिकारी :—बहा न, विलकुल गलत मुना। हे आपने। दो गद्दी, तीन लाख का ठोका है उसका।
दौलतराम :—(आँसे फाड़कर, भौंहे चढ़ाकर) ऐ-सब? सब तो हम उना का मुहल्ला मोना बीं-बींजो साहब कुछ खिदमतगार की ही खीरिये। लक्ष्मी माई की बचन। दौलतराम बहू इमाल दिसायगा कि तयोजत हूँ ही आपयो सरकार की।

३० जनवरी, १९६८

विक्रम अधिकारी :—(उग्रसेन का आर दृष करके) काहूँ नेनाजी, क्या हुक्म है?

उमतेन :—भई, इस मामले मे मैं क्या बहूँ? व्यवहार की बात है, जिस तरह मामला तय हो जाय, कर डालिये। (आँखों में विकास अधिकारी की ओर बुछ इनाार करता है।) हमें सब काम देना की रखा और जनता की भलाई के लिए ही करते हैं। हमारे बन्धों पर गम्भीर जिम्मेदारियाँ हैं।

दौलतराम :—मलाई के काम में कुछ मलाई भी मिल जाय तो आपको कोई एतराज तो नहीं होगा न?

विक्रम अधिकारी :—मलाई किसे अच्छी नहीं लगती सेठजी? बताइये हमें नितनी मिलेगी?

दौलतराम :—दूधर जितनी हुक्म करे। (बेली की मेज पर हल्के से टोकने हुए) नहिये तो पांच-पांच हजार जमी (उग्रसेन आँखों में विकास अधिकारी की बुछ इसारा करते हैं।)

विक्रम अधिकारी :—सेठजी, बाँटें मत बताइये, सीधे एक लाख की बचत है। तीन हिल्ले करते होंगे। मंजूर है?

दौलतराम :—(गिर्झगिहाकर) कबो मिहतत करनी होंगी सरकार, बुछ काम में काम नहीं चलता?

विक्रम अधिकारी :—यही सवाल मैं आप से कबूँ तो? (बीच में ही एक फटेहाल किसान-मजदूर नेकराम का प्रवेश)
नेकराम :—परताम सरकार! बडा सोभाय कि तीनों देवता का दर्शन एके साथ हो गया, हमारी एक अर्जो मुनी जाय।

विक्रम अधिकारी :—अभी हमारे पास फुरतन नहीं है, जो बुछ बहना हा, अपने यहाँ के ग्रामनेयक में लिपबचकर आफिस में किरानी बात्र को दे जाना। समझे? अभी जाओ यहाँ से, हमारा समय न बरबाद करो।

नेकराम :—सरकार, मुना जाय, वय पांच निमित।
विक्रम अधिकारी :—कह दिया न। अब फिर न खामो जाओ 'भागो (नेकराम मन मारकर चल बेता है।)

दौलतराम :—न जाने वहाँ से चले आते हैं हरामखोर, अर्ज है अर्ज है करते!

विक्रम अधिकारी :—सेठजी, पवरी बात बताइये भट्टाट, समय बहुत कम है।

उमतेन :—हाँ भाई, जल्दी करो! (पथी देवते हैं) मुझे बारह बजे की बच पकड़नी है।

दीलतराम :—जब आपलोगो की यही मर्जी है तो दीलतराम को वहाँ इन्कार ही सकता है ? (सब जाते हैं । कममोलानाथ गाते हुए मंच पर एक ओर से आकर दूसरी ओर को जाते हैं ।)

कममोलानाथ :—

बदल रहा भारत का नक्शा ।

त्याग-लपस्था मिली पूब में,

धर्म हुआ नाले का पानी ।

नेवस जनता भूखी-प्यासी

कुछ लोगो की कटती चानी ।

कुर्छे टोपी की खातिर मे

जुटा हुआ है धन का बक्सा ।

बदल रहा भारत का नक्शा ।

(गीत गाते-गाते प्रस्थान पदां गिरता है ।)

अंक . २

दृश्य १

सत्ता और समाज सन् १९६५

(बाबू हरिनारायण सिंह का बैठकखाना । पदां उठता है तो वकील मनोहर प्रसाद और बाबू हरिनारायण अखबार पढते दिखाई पडते हैं । वकील मनोहर प्रसाद लाल-हूरी दुरगी टोपी पहने हैं ।)

हरिनारायण सिंह :—(अखबार रखते हुए) वकील साहब, आपकी सरकार भी बड़ी मायावी है । कानून तो बनाती जाती है नित्य नये-नये, अच्छे-अच्छे, लेकिन धमल किसी एक पर नहीं होता है ।

मनोहर प्रसाद :—बाबू साहब, सफेद टोपीवालों की सरकार कानून और नारो के मायाजाळ फेलाकर ही तो इतने खाली से जनता का वोट बधोरती रही है । लेकिन (अचानक कोदई राम वा श्रवेश) कोदई राम गांव का एक मजदूर है । फटो धोती पहने, नगे बदन, सिर्फ कन्धे पर तार-तार हो रहा गमछा डाले है । उसकी खिचड़ी दाढ़ी घटी हुई है । आँखें धँसी हुई है, छाती की पसलियां साफ-साफ दिखाई दे रही हैं । मंच पर आते ही कोदई राम अपने कंधे का गमछा उतारकर बाबू हरिनारायण के पांव पर रख देता है, और हाथ जादकर कहता है ।)

कोदईराम :—सरकार, सूखो मर रहा हूँ, दम डलती उमिर

मे पापी पेट के खातिर गांव छोडकर जाऊँ भी तो वहाँ जाऊँ । बाल-बच्चे सूखो मर रहे हैं, रहने का कोई ठिकाना नहीं रहा । जाने का कोई जुगत बताओ महाराज ..

हरिनारायण सिंह :—क्यो कोदईराम, तुमने तो पांच बोधे जमीन बटाई पर लेकर खेती की थी, फसल भी इस साल अच्छी थी तुम्हारी, कौनसा नया सकट आ गया तुम्हारे ऊपर ?

कोदईराम :—कुछ न पूछें सरकार । सब तरफ से विपदा का पहाड एकसाथ ही टूट पडा । जपनारायण महोषो को जमाने दस-पन्द्रह साल से जोतता आ रहा था, सो उन्होंने जमीन बास ले ली । कहते हैं कानून बन गया है, वही तुम्हारी नीमत खाग हो गयी तो जमाने को आग लगी है, किसीका क्या भरोसा ? इतना ही नहीं सरकार, उन्होंने हमारा घर भी उजाड दिया । २५ साल से जिस जगह भोपडो डाले रहे रहा था, वही स खदेड दिया, फसल का जो हिस्सा मिला था, वह सेठ दीलतराम ने कर्जे की मूद मे खलिहान से ही उठवा लिया । सबक के बिनारे बाल-बच्चो सहित तीन दिनो भ भूखा-प्यासा पडा था । सोचा था इस गांव की इतनी खिदमत की है, किसीको तो दना आयगो ? (आँखो से आंसू बहते हैं, अपनी हथेलियों से आँखें पोछते हुए कहता है ।) मालिक दया-भाया नबरमपुर स उठ गया । शायद जमाने से उठ गया (गिबगिडाते हुए फिर हरिनारायण सिंह के पांव पकड लेता है) अब खातिरो भरोसा आपना ही है मारई-बाप ! रच्छा करो नहीं तो हम मर जायेंगे ।

हरिनारायण सिंह : (बँपे गठ से) मुन लिया नडाग आपने ? सरकारी बानून है कि पचवास की जमीन से बिनाता वेदखल नहीं बिया जा सकता, मूद भी दर निश्चित की गयेँ, लेकिन कोई मानता है सरकार ने बानून वो ? सरकार का नी दसनी परवाह है ?

मनोहर प्रसाद :—अजो साहब, दसोलिए तां मे बहमा हूँ कि 'कार्पेस हटाओ देस बचाओ' । जमी ब्या देखते हैं । अगर सन् १९६० के चुनाव म भी ये सफेद टापीवाले जात गयेँ त समझ लीजिये कि सत्यानास निश्चित है, देस वा ना लीं जनता वा नी ।

हरिनारायण सिंह :—हूँ नडागी महाराज ! सन् '६२ के चुनाव के पहले तक, जबतक आपको कार्पेस का टिकट सिद्धा रहा, और आप चुनाव जीतते रहे, सरकार टोक थी, दस लीं

गांव की बात . सिद्धा

देस की जनता उल्लति की राह पर दौड़ती हुई आगे बढ़ रही थी। '१२ के चुनाव में आपको कांग्रेस का टिकट नहीं मिला तो उल्लति की बहो दोड़ जनतति की ओर मुड़ गयी। अरे नेताजी, फ़ोड़िये सत्ता को कुर्सी का मोह, जनता के दुखदरद को समझने और दूर करने का कोई और उपाय तोकिये। अब सरकार के कुछ नहीं होने का।

कोर्दर्राय :-—सरकार, मेरे लिए कुछ ..

हरिनाथपण सिंह :-—कोर्दर्राय, सुन्दे गाँव छोड़ने की जरूरत नहीं, मेरी भीखाराली जैसी जमीन पर आकर अपना डेरा फाल मो। (घर की ओर रुख करके) अरे लाखीराम! लाखीराम! (भीतर से आवाज आती है—'जी मालिक, बनी आया')।

लाखीराम :-—(मंच पर आकर) बहू जाय मालिक।

हरिनाथपण सिंह :-—(कोर्दर्राय की ओर खँकेत करके) देखो, कोर्दर्राय बड़ी तकलीफ में है, इसे दो पत्थरी अनाज दे दो। (कोर्दर्राय की ओर देखाते हुए) तब तक नाम बचाओ, फिर कुछ इन्तेजाम सोचवा जायगा।

कोर्दर्राय :-—(हरिनाथपण सिंह के पाँव छुकर) हूँदर का एकबार बरा रहे। पन्ना हो मालिक, पन्ना हो।

(लाखीराम के पीछे-पीछे कोर्दर्राय भी जाता है।)

मनोहर प्रसाद :-—इस तरह से सन्स्था को दल हुई नहीं देती बाबू। इस देस में सरकार बदले बिना कुछ नहीं हो सकेगा। आप रुक रुक, और वहाँ तक मुझे का पेट भरते रहेये ?

हरिनाथपण सिंह :-—शुद्ध आपके नारों से नहीं मिटती नेताजी, उसके लिए अनाज चाहिए। मान लीजिए कि सरकार बदल भी गयी तो क्या नथी सरकार अनाज पैदा कर पर-पर बाँट जायगी ? सत्यसर्षे तो फिर भी बनो ही रहेगी ?

मनोहर प्रसाद :-—तो क्या आप मानते हैं, कि आज वेसा है वेसा ही चलता रहे ?

हरिनाथपण सिंह :-—नही वेसा नहीं चले, बलिक मैं तो चाहता हूँ कि पूरा समाज का बाँबा बदले; जिसे सरकार बदलने से समाज का बाँबा मही बदलेगा। हाँ, हो सकता है कि आपका हाँबा बदल जाय, और आप नेता से बनो हो जाये।

मनोहर प्रसाद :-—हरी बाबू, भाग मेरा नचाक उड़ाते हैं, लेकिन देस लीजियगा, सन् १९६० के चुनाव में क्या-क्या मुल फ़िअले हैं। (तनतमाये हुए जाते हैं।)

हरिनाथपण :-—देखो, जरूर देखेंगे। साहब, अगर ममवान में भौका दिया तो...

(पर्दा गिरता है)

दृश्य : २

सन् १९६७ का चुनाव

(चुनाव की सरगर्मी जोरों पर है। मंच पर एक दल के लोग आते हैं, नारों लगाते जाते हैं, दूसरे दल के लोग आते हैं, नारों लगाते आते हैं। बीच-बीच में कुछ निरन्त भो हो जाती है।)

(पर्दा उठता है)

(एक ओर से कम्युनिस्ट पार्टी का मण्डल लिये एक दल आता है, जिसका नेतृत्व कर रहे हैं कांभरदे खेदू पासवान। दूसरी ओर से जनसंघ का दल आता है, जिसका नेतृत्व कर रहे हैं दशरथ मण्डल। कम्युनिस्ट पार्टी के जुजुब में लोथ हरिधरा ह्यूड्या लिये हैं, और जनसंघवाले बड़े-बड़े दीये लिये हुए हैं।)

खेदू पासवान :-—(बायीं ओर से प्रवेश करते हुए)

'हैरिधरा ह्यूड्या'

दल के सब साथी :-—'बिन्दाबाद !'

खेदू पासवान :-—'सात भण्डा'

दल के सब साथी :-—'बिन्दाबाद !'

(सभी आगे बढ़ते हैं।)

खेदू पासवान :-—'जीवेगा भाई जीवेगा'

दल के सब साथी :-—'हैरिधरा ह्यूड्या जीवेगा'

दशरथ मण्डल :-—(जनसंघ दल सहित दाहिनी ओर से प्रवेश करते हुए बहकर) 'पहारो से हैरिधारा !'

दल के सब साथी :-—'बीनी टट्टू हैरिधारा !'

दशरथ मण्डल :-—(आगे बढ़कर) 'जीवेगा भाई जीवेगा'

दल के सब साथी :-—'दीपकबलल जीवेगा !'

खेदू पासवान :-—(ओर आगे बढ़कर) 'अपिलेकी कुर्सी'

दल के सब साथी :-—'मुर्दाबाद !'

खेदू पासवान :-—'लक्ष्मी-बाहूक'

दल के सब साथी :-—'मुर्दाबाद'

जनसंघवाले :-—(आगे बढ़कर) 'मारो बाजी के गधो को !'

कम्युनिस्ट दल :-—(ओर आगे बढ़कर) 'मस्त दो दीपक'

वतयली मो।

(बचावक भण्डाके को आगाज होती है, और मंच पर धूजा

छा जाता है, सब भागते हैं। कुछ क्षणों में धूँआ साफ होता है तो एक ओर से संयुक्त समाजवादी दल और दूसरी ओर स काग्रसे दल के लोग आते हैं। काग्रसे दल का नेतृत्व कर रहे हैं उपसेन और संयुक्त समाजवादी दल का नेतृत्व कर रहे हैं वकील मनोहर प्रसाद। दोनों दलों के हाथों में अपने-अपने दल का झण्डा है। संयुक्त समाजवादी दल का बायीं ओर से प्रवेश होता है।)

मनोहर प्रसाद :—'काग्रसे ने क्या किया'

दल के सब साथी :—'सारे देश को लूट लिया।'

मनोहर प्रसाद :—'बेलों को जोड़ी बिदक गयी'

दल के सब साथी :—'इदिरा की गद्दी खिसक गयी।'

सब एक साथ :—'जीतेगा भाई जीतेगा'

'भोपडीवाला जीतेगा।'

(काग्रसे दल का दायीं ओर से प्रवेश होता है।)

उपसेन :—'कौन सौचता देश की गाडी'

दल के सब साथी :—'केवल दो बेलों की जोड़ी।'

उपसेन :—'बहुचपियों की कौन सुनेगा'

दल के सब साथी :—'गोदद, कोवे, तीतर, बटेर।'

सब एक साथ :—'जीतेगा भाई जीतेगा'

बेलों की जोड़ी जीतेगा।'

(संयुक्त समाजवादी दल आगे बढ़कर)

मनोहर प्रसाद :—'किये-कराये पर फिर गया पानी'

सब एक साथ :—'काग्रसे की मर गयी नानी।'

उपसेन :—(दल की ओर चख करके) मारा दोगली

ओलादों को

मनोहर प्रसाद :—'मजा चखा दो गद्दारी को।'

(सभी झण्डों के झण्डे से एक-दूसरे पर प्रहार करते हैं। दो-

चार गिरते हैं, बाकी भागते हैं। पर्दा गिरना है)

दृश्य ३

चुनाव का तिकड़म

(गाँव के एक अहीर गदेलू यादव का भवान। हट्टा-नट्टा गदेलू बैठे रस्सी बँट रहा है। एक ओर से मनोहर प्रसादजी का प्रवेश होता है। मनोहर प्रसाद का सिर पर लाल टोपी है। कुत्ते की जेब पर उनके दल का चुनाव चिह्न कापड़ों का बिल्ला

लगा है। उनके साथ दल के तीन और कार्यकर्ता भी हैं। एक के हाथ में पोस्टर है, जिस पर लिखा है—'काग्रसे हराओ-देग बचाओ!' दूसरे के हाथ में संयुक्त समाजवादी दल का झण्डा है। तीसरा चुनाव के बहुत में पर्चे लिये है।)

मनोहर प्रसाद :—(मुस्कराते हुए) कहो गदेलू बाबू, समाचार तो ठीक है।

गदेलू :—(चौंकर) ऐ! कौन बबलार प्रवट हुआ भाइ, गदेलू को 'बाबू' कहनवाला? (सिर उठाकर देखता है) अर आप मनाहर बाबू! (बन्धे पर पडा गमछा उतारकर उमीन जमीन साफ करते हुए) बैठिये-बैठिये, धन्स भाग, जो आप जैस नेता मुक्त गरीब और छोटे आदमी की कुटिया पर पधारे। कहिये, क्या सेवा करूँ ?

मनोहर प्रसाद :—अरे गदेलू बाबू! आज के जमाने में कोई छाटा और कोई बडा नहीं है। सब बराबर हैं। बलिन बूटा जाय तो मच बात यह है कि अब छोटे लोग ही इस देश के भाग्य विधाता हैं। इस देश को बनाने बिगाडने की सारी जिम्मेदारी आप ही लोगों पर है।

गदेलू :—बाबूजी बात तो मजे की कह रहे हैं आप, चोट प जमाने में ना हम ही देश के सबसे बडे आदमी बन जाते हैं, इसमें क्या शक! बलिन हमारे ही चोट से जो सरकार बनती है, और हमारा ही टेकम में जो सरकार पलती है, वह हमारी ओर नभ ध्यान रही देती। मैंने तो माच लिया है कि अब चोट बिगावा दगा ह नही।

मनोहर प्रसाद :—हरे हरे! वैसी बात करते हैं, गदेलू बाबू, चोट देना तो आपना पैदाइशी हक है। अपना हक बनी नहीं छोडना चाहिए। यह तो बहुत बुरी बात है।

गदेलू :—हाँ हाँ पैदाइशी हक है, लेकिन क्या हक लहर चाटेगे? पेट भरंगा उसमें? हमारा दुख दूर होगा? बाट ब बाद हमारी कौन सुनगा?

मनोहर प्रसाद :—याद रखिये, जनता का मामें पूरा परन क लिए, महो मानी में जनता का राज बनाने ब लिए, हमने काग्रसे को छोड दिया है, और अब जनता क लिए मुक्त-मुविधा जुटाने और समता लानेवाली पार्टी में शामिल हो गय हैं। दनिय, इनालिए हमारी पार्टी में अपना चुनाव-चिह्न कापड़ा रखा है। कापड़ों, जिसमें भाख की गंधन जनता निवाज करता है।

गाँव की बात निजयाक

गंदेजू :-—गय बढ़ाने की बातें ऐसी बातों, प्रायःगताते भी ठोक ऐंभ हीं बहते हैं कि निगताओं को भुझाई कं लिए हमने अगता चुतान-बिहू रपा है बंलो को जोड़ीं। लेकिन इन्ते दिन हो गये, कापे सी लोगों को राज कउते, बलाइये न हमारै लिए उन्होने क्या किया ?

मनोहर प्रसाद :-—बिठकुल ठोक गंदेजू बाबू, कापेस ने आपके लिए, देग के लिए कुछ भी नहो किया। कापेसो राज ने जनता को भोया दिया। लेकिन हूय जनता के आदमी हैं, हम भंसा नहो होने देरे। हम तो जनता के लिए ही बिगये और जनता के लिए हो भरेये। वन एक बार भोका दीजिये गंदेजू बाबू, एक बार ध्पारी पार्टी की सरकार बन जाय, तो फिर देखिये हूय क्या-क्या कमाल दिखाते हैं !

गंदेजू :-—बहुत बारी किये ये रापे भी वेता लोग भी, लेकिन यजना-दिखी पहुँचते हो मवनी जालें बदल जाती हैं।

मनोहर प्रसाद :-—लेकिन हमने किफ बादा हो नहो किया है गंदेजू बाबू, काम भी किया है। यह देखिये (हाथ से लिखी बोट लिस्ट दिखाते हुए) हमारी पार्टी ने बोट देनेवालो की सूची बजार की है तो आप लोपो के नाम क आगे मावब गरी 'मिह' किया है, और आप कापेसवालो का बागज देल लीजिये, उगमे मवने नाम के आगे पादब, कुर्मी, भंडल यही मय लिया है।

गंदेजू :-—(आश्चर्य से) हैं ! ऐसो बात।

मनोहर प्रसाद :-—इसोलिए तो कहता हूँ गंदेजू बाबू, कापेस-प्रायः नकी जनता को, छोटे लोपो को इज्जत नहो देना चाहते। मवकी बहो न तहाँ रम्पना चाहते हैं, ताकि उनका उलू भोया होना नहो। येरो तसाह मानिये और कापेस को हराइये, देन यचाइये।

गंदेजू :-—तब तो आप निरख्वातिर रहिये बाबूजी, मादर और कुर्मी टोले का बोट तो आप ' (बीच में ही गंदेजू का रर बरन का लडका पंचानन स्कूल से पढ़कर लौटाता दिखाई देता है। उनके बररों पर स्थारी के घबले हैं, उनके दाहिने हाथ में कि गामे का बण्डल और जमे हाथ में रसाहो की दावात है। उने देगने ही गंदेजू पाम चुकास्ता है।)

गंदेजू :-—अरे बेटा पंचानन, यहाँ आ तो जरा, देस दल हागज में क्या लिया है ? (लडका धार अस्कर बैठ जाता है। गंदेजू मनोहर प्रसाद के हाथ में कागज लेकर उगे पढ़ने को देता है।)

पंचानन :-—(कागज पढ़ते हुए) मान मिह, उलद मिह, बंगलोचन मिह, गंदेजू मिह... (आश्चर्य से) यहाँ 'मिह' केले लिखा है बाबू ! हम तो पादब हैं।

गंदेजू :-—'पादब' मे अंग्रेजी राज में, कापेसी राज में, अब मनोहर बाबूवाली समता पार्टी का राज होनेवाला है। जो काय काय को इतने दिनों में नहो किये, मनोहर बाबू ने उसे बुटकी बजले कर दिया, अब हूय पादब नहो, 'मिह' है 'मिह' !

पंचानन :-—लेकिन यह कागज है केता ?

गंदेजू :-—बोट देनेवालो की सूची है, भोट-लिस्ट !

पंचानन :-—लेकिन यह हाथ से लिखा है। हमारे मास्टर हादब बहते थे कि बोट-लिस्ट सरकार तैयार कराती है, और छपवाती है।

मनोहर प्रसाद :-—अरे जा-जा बेटा, तु क्या जाने ये राजनीति की बातें। तु स्कूल से यका-यादा जाना है, जा भी से कुछ मंग कर खा-पी, बेल-कूद !

भंगुस :-—(पंचानन की पोट ओकते हुए) हाँहाँ, पर ना, तू अभी बच्चा है, बडो की बात कैसे समझेगा ?

(पंचानन जाता है)

मनोहर प्रसाद :-—पडकन बटा होनहार मानूम पडता है। किम दर्जे में है ?

गंदेजू :-—आठवो में है बाबूजी, एक डो बेटा है, छोचता हूँ एमे ओमे तब पढ़ा डाले। मते कुछ जमीन हो बंचतो पवे।

मनोहर प्रसाद :-—अरे, हूय किस दिन के लिए है भाई ! हाईस्कूल तक पढ़ले तो लड़के को भेरे हुराले कर दीजियगा, जाने जहाँ तक पढ़ सकेगा, यहाँ तक पढ़ाने की जिम्मेदारी मेरी—

गंदेजू :-—धन्य हो मनोहर बाबू ! थोड़ा जलवे मँगाले, कापेस देर हो गयी ?

मनोहर प्रसाद :-—नही 'नही' अभी ओर भी कई जगह जाना है, फिर कभी इमोनाल से बापेये तो खामेने-योमी... 'बय जरा अपनी 'भोचडी' का ध्यान रखियगा।

(उठकर माथियों सहित जाने लगते हैं।)

गंदेजू :-—(उठकर) एक बार बह दिया तो बह दिया, जाय निरख्वातिर रहिये बाबू, पादब और कुर्मी टोले का बोट अपनी 'भोचडी' में ही मिरेश। 'जच्छा परताय—'

मनोहर प्रसाद :-—(हाथ जोकर कुछ झुककर) बच्छा परताय !

(उधर मनोहर प्रसाद अपने साधियों सहित जाते हैं, इधर गदेलू भी घर जाते हैं, और तभी बमभोलानाथ पहले जैसे लिवास में ही एक ओर से गाते हुए आते हैं ।)

यमभोलानाथ :—(एक हाथ में डण्डा है, दूसरा हाथ बायी कनपटी पर ।)

देखो, आया है फिर मौसम यह चुनाव का,

जुलूस का, पथराव का ना !

घर घर घूमे नेता लोग

मार्गें भोट दिखा के लोम

ज्व गये वार्दों से सब लोग,

बढ़ा दिल में जन-जन के क्षोभ

जमाना फिर आया फरियाद का, बहकाव का,

जुलूस का पथराव का ना ।

(गाते-गाते दूसरी ओर चले जाते हैं । चुनाव के नारों की आवाज सुनायी पड़ती है, पर्दा गिरता है ।)

अंक : ३

दृश्य : १

वादे, कोरे वादे, और मिली-जुली सरकार

(नवरंगपुर हाईस्कूल के मैदान में रंगीन ऋण्डियाँ लगी हैं । चारों तरफ चहल-महल है । मैदान में एक सभा बैठी है, जिसमें मनोहर प्रसाद, दशरथ मण्डल, खेदू पासवान, अलीउद्दीन खाँ सजधजकर बैठे हैं । मनोहर प्रसाद के सिर पर लाल-हरी दुर्गंगी टोपी है । दशरथ मण्डल के सिर पर काली और खेदू पासवान के सिर पर लाल टोपी है । दर्शकों में एक ओर कुछ मासूस से उप्रवेन भी बैठे हैं; उनके सिर पर सफेद टोपी है । सबके साथ हरिनारायण सिंह बैठे हैं । पर्दा उठता है, तो वही भापण करते हुए दिखाई पड़ते हैं ।)

हरिनारायण सिंह :—भाइयो, भारत के इतिहास में एक नया मोड़ आया है । लगातार उन्नीस-बीस वर्षों के काग्रेसी शासन के बाद अब राज्य में गैरकाग्रेसी सरकार बनी है । खुशी की बात है कि यह सरकार काग्रेस को छोड़कर बाकी सभी दलों की मिली-जुली सरकार है, और उससे भी खुशी की बात यह है कि काग्रेस ने जो नहीं किया, यह सरकार उसे पूरा करेगी और भी जनता की भलाई के लिए कुछ नये-नये काम करेगी, यह हमारी आशा है, और यह नयी सरकार का दावा भी है ।

लेकिन यह सभा बुलाने का मेरा मनमद बहुत छोटा है । वाग्रेस ने भूमि-सुधार के कुछ अच्छे कानून बनाये थे, लेकिन वे केवल कानून बनाये थे, जो फाइलों में पड़े रहे । मैं इस नयी सरकार से प्रार्थना करता हूँ कि वह इन कानूनों को लागू करने के बारे में ठोस कदम उठाये, ताकि राज्य के किसान-मजदूरों की दयनीय हालत में सुधार हो । मैं खास तौर पर पाँच बातों पर तुरन्त सरकार से अमल करने का निवेदन करता हूँ : १-नास-भूमि सम्बन्धी कानून, २-भूमि-हदबन्दी कानून, ३-बँटाईदारी कानून, जमीन में अधिक उपज के बँटवारे के सम्बन्ध में भी, ४-महाजनी कानून, ५-खेतिहर मजदूर सम्बन्धी कानून । अगर ये कानून कारगर ढंग से और तेजी से अमल में लाये गये तो गाँव की बुनियादी हालत सुधर जायगी ।

मनोहर प्रसाद :—हमारी सरकार सभा को यह विश्वास दिलाती है कि इस मसले पर सबनी जो राय होगी, उसे अमल में लायगी ।

उपसैन :—इस काम में काग्रेस पार्टी का पूरा सहयोग मिलेगा ।

दशरथ मण्डल :—हमारी पार्टी का निश्चित मत है कि भूमि के मामले में कुछ रद्दो-बदल नहीं होनी चाहिए ।

खेदू पासवान :—यानी कि आपके विचार से ये कानून नहीं लागू होने चाहिए ?

दशरथ मण्डल :—हाँगज नहीं । अगर ये कानून लागू हुए तो ग्रहयुद्ध छिड़ जायगा ।

खेदू पासवान : लेकिन मैं बहता हूँ कि ये कानून लागू किये जायेंगे, और जरूर किये जायेंगे । हमने गरीब जनता के सामने वादा किया है ।

दशरथ मण्डल :—और मैं बहता हूँ कि ये कानून हम किसी भी कीमत पर लागू नहीं होने देंगे । हमने भी जनता के हितों की रक्षा का वचन दिया है, और हम अपना फर्ज निभायेंगे ।

खेदू पासवान :—तुम गद्दार हो, चीन के दलाल हो ।

दशरथ मण्डल :—तुम गद्दार हो, चीन के दलाल हो ।

मनोहर प्रसाद :—(उड़े होकर हाथ जोड़कर) साधियों, यह जनता की सभा है, विधान-सभा नहीं है । हमें संयम से बाम लेना चाहिए । आप लोग दान्तिपूर्वक हठी बाजू के सुभाव पर विचार करें ।

हरिनारायण सिंह :—(उदात्त होकर) भाइयो, हमने जित लिए वह मन्ना तुमको यो वह उद्देश्य पूरा होता दिखाई नहीं देता। और हम यह नहीं चाहते कि इस सवाल को लेकर यह नयी बहुरंगी सरकार डूट जाए। इसलिए हम अपना मुन्हाव बापत लेते हैं। और अब मन्ना को कार्रवाई समाप्त की जाती है।

{ अभी दसकों में से बमभोलानाथ खड़ा होकर गाने गगते हैं। सभी नेता उठकर जाते हैं। }

बमभोलानाथ :—

बदल गयो सरकार अमाना ना बदला।
पट्टी छाड़ि जने टोपिया बहुरंगी,
उजली हारी, बालो, पाव, हने जोयो,
नेहामी की पाठ महर है दोरयो,

स्वारथ में बरगुन प्रदा मारी फिरतो।
बदल गयो है तान, गीत पर ना बगला,
बदल गयो सरकार अमाना ना बदला।

एक पूर श्रेष्ठ :—जीयो बमभोला ! सचनी बात बहते हो,
सुर बरदा, गीत नही।

(पर्दा गिरता है।)

दृश्य २

सुकास चाल बसी

{ पर्दा उठता है तो मंच पर एक बुद्धिवा की लम्बा पथी दिखाई देती है। बमभोला एक ओर से कंगडाता हुआ आता है, 'बदल गयो सरकार अमाना ना बदला' का गीत गाने हुए। अभी उसकी निगाह लाल पर पड़ती है। }

बमभोलानाथ :—अरे, यह तो सुवास निघारित है, काहून रोने से बिपवा बुद्धिवा ! (हिल्ला-तुलकर देखा है) 'चरती योयो' सारा दुख दूर हो यमोम निगिगी भर दुख का बोझा मोते-कोते बक मयी की बेचारी' जाधिर अब तक झोड़ी > > रायनाथ नत्त हो गया जाधिर ! (दूधर और से हरिनारायण सिंह का प्रवेश)

हरिनारायण सिंह :—बया हुआ भोलेनाथ ?
बमभोलानाथ :—हुआ बया' राय नाम सत्त हो गया !
हरिनारायण सिंह :—(घोरकर) ये किसका ?
बमभोलानाथ :—सुकास भितारित का !

हरिनारायण सिंह :—पैचारी चाल बसी ! (पैठ जाते हैं)
अरे तो अब देव मया रहे हो, आओ युवा लामो"

बमभोलानाथ :—किसको युवा लाऊँ ? कोन है इसके रिस्ते मे ?

हरिनारायण सिंह :—अरे भाई और कोई नहीं तो गाँव के लोग हैं न ? क्या गाँव में लावारिस लाल पथी-पथी सड़ती रहेगी ? जाओ जल्दी करो, मैं जाकर कुछ बफन वगेरह का इन्तजाम करता हूँ। (दोनों भिन्न दिशाओ में जाते हैं। तेवय्य से 'रघुरति रायप रात्राराम' का पाठ सुनाई पड़ता है। कुछ ही पल में बमभोला कुछ लोथो के साथ और हरिनारायण सिंह बफन खादि सामान के साथ सोलते हैं। 'रघुरति रायप रात्राराम' का भजन अभी धीरे-धीरे चल ही रहा है। सब लोग मिलकर खास इममान ये जाने की व्यवस्था करते हैं। }

एक पाथीय :—तेकिन इमने काग कोन देगा ?

बमभोलानाथ :—जिसका दुनिया में कोई नहीं, उसका सहारा बमभोलेनाथ। (सब मिलकर काप उठाते हैं, और 'राय नाम सत्त हो' सोलते चले जाते हैं। पर्दा गिरता।)

दृश्य ३

गाँव बदल गया

{ बमभोलानाथ का मकान : बमभोलानाथ सिर मुड़ाये हैं, दाढ़ी-मुँह भी साफ है। एक साफ धोती आधी पहने लाधा ओढ़े वेडे हैं। गाँव के और लोग हरिनारायण सिंह, गदेलू यादव, दोलत राय, नेकराम, बोदई वगेरह वेडे हैं। आज सुकास भितारित का धाद-दिन है। गाँववालो की आपस में बात चल रही है। धीरे-धीरे कापडे रोग बचड़ा हो गये हैं। }

दोस्तराय :—अल समय में नितीके साथ कुछ आता नहीं। जीवनभर हाथ-हाथ करके मरो, तेकिन 'मुद्दी' दधिे आया अग में, हाथ पखारे जायगा !

हरिनारायण सिंह :—आन की बात है दोस्तरायनो, तेकिन जीवनभर ठिका रहे तन न।

बमभोलानाथ :—नेते टिका रहेवा, दुनिया का प्रबंध भापे पर पड़ा हुआ रहता है तो।

हरिनारायण सिंह :—बमभोलानाथ, दुनिया में हुल चकर है, तेकिन वह बेहद बड़ जाता है, अब आदमी आदमी को

नोचने की कोशिश करने लगता है, वना भगवान् ने क्या नहीं दिया है, काम करने को हाथ, सोचने को दिमाग, विद्यालय परती" जिस पर आदमी चाहे तो दूध की नदी बहा दे !

नेहरूम :—लेकिन वह खून की नदी बहाने पर ही तुला हुआ है भैयाजी।

गदेलू :—अब तो नवरंगपुर में यही होता दिखाई दे रहा है।

हरिनारायण सिंह —भाई, आपलोग हमारे एक नेक सलाह मानो तो गाँव का उधार हो जाय। सबके दुख दूर हो; जाना तो एक दिन सबकी है ही भगवान के पास, लेकिन जब तक ज़िन्दगी है कुछ ऐसा इंतज़ाम करें कि प्रेम से मिलकर रह सकें, सुख से जी सकें।

गदेलू .—यह सपना अब पूरा नहीं होगा बाबूजी, अब तो नयी सरकार को भी देख लिया। सब आपस में ही लड़कर मार रहे हैं, जनता के दुखदरद को कौन मुनेगा ?

हरिनारायण सिंह :—वही जाना नहीं है, किसीको देना नहीं है। पुत्र ही देना है, खुद ही लेना है। देखिये तीर-मोर की बुनियाद है 'खेत' की मेड़, यानी निर्जी मालिकी। इस अपनी-अपनी मालिकी को पूरे गाँव की कर दीजिये। सारे गाँव की एक ग्रामसभा बना लीजिये, और बोधे में बट्टा के हिसाब से अपनी-अपनी जोत की जमीन से लेती लायक जमीन निकालकर बेजमीनो को बंधे दीजिये। आखिर गाँव में रहनेवाले वेसहारा लोगो को गाँव में सहारा नहीं मिलेगा तो वहाँ मिलेगा ? कौन देगा ?

यमभोलानाय —बात तो आपकी ठीक लगती है, लेकिन इसे क्या सब लोग मानेंगे ?

दीलतराम —गाँव में जीना है, और गाँव में ही मरना है तो सबके दुख-मुख में शरीक होना ही आदमीगत की निजानी है यमभोलानाय। अगर गाँव के सबलोग यह बात मान ले तो गाँव की कायापलट हो जाय।

हरिनारायण सिंह .—हाँ सेंटजी, आप ठीक बहते हैं। एक जमाना था जब राजा और पुरोहित मिलकर जनता को सताते थे। अंग्रेजी राज हुआ तो देश की दीलत लन्दन जाने लगी। जनता के बन्धों पर अंग्रेजी राज चढ़ बैठा था। यह कुछ बोल नहीं सकती थी। पूँजी, बुद्धि और मेहनतवालों की नवेल अंग्रेजी शासन के कब्जे में थी। बेचारी प्रजा निर्बल और पसहाय थी। गांधी बाबा ने और दूसरे देश के नेताओं ने जनता को भकभोरा, जगाया। और जब जनता जागी, तो अंग्रेजी हुकूमत भागी।



हरिनारायण सिंह!—एक हीरे उपाय है 'कर बहियाँ बल आपनो, छाड विरानी आस !

नेहरूम :—यह तो कहावत हुई, कुछ उपाय भी है ?

हरिनारायण सिंह .—उपाय है, अगर सब लोग उसे अमल में लायें !

गदेलू :—प्रताड़ये न क्या उपाय है ?

हरिनारायण सिंह :—तो सुनिये, गांधी बाबा के एक चेला हैं विनोबा बाबा, विनोबा बाबा कहते हैं कि गाँव की रक्षा के लिए ग्रामदान करो।

सर :—(एक साथ चौककर) ग्रामदान ? गाँव विनवो दान कर दें ? बुद कहाँ जायें ?



गाँव की बात : रिप्रबर्क

बममोलानाम :- यह तो ठीक है हरो बाबू, कुछ मेरो नी तो मुनिवे :



गाँव बाबू उतर गये है जनता के बने ने, बाबा बाबू लेविन बड बंटे है अब आर मे !

हरिनारायण सिंह :- मोलानाय की बात गिलकुल ठीक है। इमोलिण्ड विनोबा बाबा का बहता है कि जय नेताजो का भरोमा छोडो, मरवार का महारा छोडो और गाँव-गाँव मे ग्रामस्वराज्य का नया आधार बनाजो। गाँव की मेहनत, गाँव की पूँजी, गाँव की बुद्धि, नरका सहकार गाँव के विकास के लिए हो। गाँव ही



दोहन सब दोस्रो जातो है गाँव छोडकर मरघो में, भूवे-भ्याने महनताय है चारे-फिरने हगरो में।



गाँव की योजना बनाये। न जरूरत है नेता की, और न गाँव का धन बूसकर शहर ले जानेवालों की, भ्रमडा-भ्रमदा की नीव गोद डालो, गाँव के विकास मे गाँव की मामूहिक गक्ति लगे, सबके हित के लिए काम हो। गाँव के लोगो का निर्णय ही गाँव मे गाँव का राज लायगा। इसलिए हमारी तो सबसे प्राथना है कि बाइये, हम सब इस मोके पर संवत्य करे और पोषणा करे कि 'हम अपने गाँव मे ज्ञान, भक्ति और कर्म का समय प्रवट करेये, ग्रामस्वराज्य लायेये।'



मईगाई आकाश पू रहो, नेता उलके बादो में, है विचार की भावा ऐसी, नोट नहे परनाला में, 'बाये' 'बाये' 'बाये' 'पीछे' दन की गहरो खाई है, जाये बनता किपर सब तरफ अविचारी फिर आयी है।



दीलतराम :- मैं तेवारा हूँ। बममोलानाय :- बममोला भी पीछे नहीं हटेगा।

गदेलू —यादव टोले की ओर से मेरा वादा है कि हम सबके साथ हैं।

नेकराम —और दुनाध टोले की ओर से मेरा भी

हरिनारायण सिंह —तो भाइयो, अबतक हम बोलते रहे अपनी-अपनी जय, फिर बोलते रहे राजनीतिक दलों की जय, अब हम बोलेगे 'नवरग पुर की'

सब एक साथ —'जय'

बममोलानाथ —'भारत माता की'

सन एक साथ —'जय'

(अचानक मनोहर प्रसाद का प्रवेश होता है। उनके माथे पर टोपी नहीं है, कुछ थके से हैं। उनको देखकर गाँववाले खामोश हो जाते हैं।)

हरिनारायण सिंह —कहिये मनोहर बाबू, एकाएक कैसे पघारे ?

मनोहर प्रसाद —हरीबाबू, हमारी सरकार पर संकट आ गया है। हम अपनी सरकार के समर्थन में जगह-जगह प्रदर्शन करना चाहते हैं, हमारा निवेदन है कि आप सब उसमें शामिल होइये।

गदेलू —माफ कीजिये मनोहर बाबू बहुत कर चुके परदर्शन, बहुत बहक चुके हम लोग आप लोगों के साथ अब हम आपके साथ नहीं जायेंगे, हम सब एक दूसरे के साथ रहेंगे अब अपनी टोपियों का रंग बदल-बदल कर आप हमें नहीं ठग सकते।

हरिनारायण सिंह —चुप रहो गदेलू, गाँव में आये किसी

आदमी का जपमान नहीं करते। हा, लेकिन मनोहर बाबू, आज नवरगपुर फिर जाग गया है। हमने एक वनने और नेव वनने का संकल्प कर लिया है। छड़िये न इस दल के दलदल को, गाँव के लोगों ने दिला को वाटनेवालों खेत की भेड़ों की तोड़ने का फैसला कर लिया है, आप भी दरार पैदा करनेवाली सत्ता की कुर्सी का मोह छोड़िये भाइये, इस ग्रामस्वराज्य को नयी यात्रा में शरीक हो जाइये, स्वागत है आपका !

बममोलानाथ — हा मनोहर बाबू, अब तक आप नेता लोग हमें अपने साथ इस-उस दल के दलदल में फँसाते रहे अब हमारी ओर हमारे गाँव की पुकार है, सुनिये, मानिये और साथ दीजिये।



मनोहर प्रसाद —(दोनों हाथों से माथा पकड़कर बैठ जाते हैं) आप लोगों की ही बात सही मालूम पड़ती है, भाइयो, लेकिन मुझे कुछ वक्त दीजिये सोचने का ! मैं बहुत परीक्षान हूँ।

बममोलानाथ — बत नहीं खतजार करता है

जो बचे साथ उड़ लेते बग करता है।

(पदां गिरता है)

समाप्त



इस अंक का मूल्य : चालीस पैसे

'गाँव की बात'। वार्षिक चक्र चार रुपये, एक प्रति अठारह पैसे।

श्रीकृष्णदास भट्ट द्वारा सर्व-सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं खंडिलवाल प्रेस, मानमंदिर, बाणगुली में मुद्रित

भारत-प्रश्न

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

सम्पादक : रामभूति

मुद्रकार

वर्ष : १४

९ फरवरी '६८

श्रंक : १९

इस श्रंक में

पत्रक : बाबू विद्यवा, साठ विमर्श ?

—सम्पादकीय २३५

श्री ६५ का विरोधी नही

—विमर्श २२६

मुर्खों की स्थानता अर्थात् शक्ति

—पूज्यपद बाण्डा २३७

बिहारदान के लिए

—सारासों के सत्य, प्रस्ताव २३८

शान्तेन्द्र के समाचार

२३८

गिफ्त की विरत-गाथा

—गोविन्द राव २४०

दूधना

भूदान-पत्र का अन्त आइ भी = पूर्ण
का हो होगा । —४०

भाषिक मुद्रक । १० ४०

एक मिन । २० मिन ।

विमर्श में : सारासों डाक-मुद्रक—

१८ ४० या ११ पोस्ट या ११। अन्तर

(हवाई डाक-मुद्रक : देशों के अनुसार)

सर्व-सेवा-संघ-प्रकाशन

राज्यपथ, पारसनी-१

फोन नं० ४२५४

बिहारदान : दलमुक्त प्रजातंत्र के लिए

बिहार के ७१ हजार गाँवों में के १६,५०० गाँवों ने शान्तेन्द्र के विदादान को मान्य किया है। मनाई करीब चोमार गाँव हैं, जिन्होंने पिछले कुछ वर्षों में इस विचार को मजबूत किया है।

उपरोक्त गाँवों की अर्थात् ध्वजिन-वर्ग न होकर सामाजिक होनी चाहिए। यह इसलिए कि प्रभु के हिंसा पैदा होती है। हम चाहते हैं कि जमीन की अर्थात् का अधिकार व्यक्ति के बजाय समाज का हो। उसके लिए आवश्यक को शान्तेन्द्र-विचार के लिए रायों करते हैं। अर्थात् .

(१) ध्वजिन-वर्ग मालिनी के स्थान पर जमीन की सामाजिक मालिनी मान्य की जाय। बर्तमान व्यक्ति के, विचार्य जमीन बेचने के, और सभी मुद्रकों अधिकार कायम रहें।

(२) अन्तरी वेतों सायक भूमि का जोधवां हिंसा शान्तेन्द्र की सुमिहीन के या शान्तेन्द्र के लिए अर्पण कर।

(३) जो गाँव १८/२० जमीन उसके पास बने, उसमें से मन्में वेर उरक तथा जो बेजमीन है, वे गाँव में एक दिन की मजदूरी गाँव के लिए दें। इस प्रकार सभी गाँवोंमें अपने पास जो है, उसमें से मन्थपूर्व दिग्वाक के गाँव को दें। इसमें शान्ति-योजना पर एक सायक, सामाजिक, सांस्कृतिक राजनीतिक प्रभाव पड़ेगा।

(४) हर गाँव में शान्तेन्द्र सपठिन हो, और उनके सर्वानुमति से निर्णय और सर्व हो।

१६,५०० बिहार के गाँवों के यह बात मान लो है। हमारा उद्देश्य है कि सम्पूर्ण बिहार-शान्तेन्द्र-विचार के व्यापक हो जाय। इसके लिए दूध २ अक्टूबर, '६८ तक पूरी ठाकुर स्थाने-गाँवों के, इसका अर्थ है कि बिहार की ७५ प्रतिशत गाँवोंमें, ५१ प्रतिशत अर्थात् गाँव भूमि इनमें आ जानी चाहिए। अब हम उसे बिहार-दान का नाम देंगे।

उत् ७२ तक हम चाहते हैं कि गाँवों में शान्तेन्द्र-वर्ग बन जायें। इनमें जो बाबाजी है, वह 'शान्तेन्द्र' (ध्वजिन-वर्ग) के अन्तर्गत ४२ यदि राजनीतिक प्रजातंत्र की सुमिहाक बन जाय, तो सन्तुष्ट प्रजातंत्र का स्वरूप सत्य हो सकता है।

आज जो स्थिति है, उसमें साम्यवादी भी शान्तेन्द्र के जमीन पर बंटवारा नहीं कर सकते। लेकिन शान्तेन्द्र शान्तेन्द्र के द्वारा यह काम और उसका वास्तविक विचार किया जा सकता है।

'शापी-वादि-शान्तेन्द्र की श्रमजोरी है कि वह केवल शान्तेन्द्र धर्म को ही प्रभावित करता है और अन्तर्गत की अन्तर्गत कोयेंतिक कोयेंतिक क्षेत्रों पर नहीं है।—यह मानने का कोई कारण नहीं है, क्योंकि जो काम बिहार तथा दूसरे राज्यों में हुआ है, वह बहुत पर भी मजबूत कर सकता है, करेगा ही।

वाद्यगण, २०-१-६८

—जयप्रकाश नारायण

२९-१-६८ : रूय और भारत के प्रथम मन्त्रियों ने दोनों देशों के बीच आर्थिक सहयोग बढ़ाने पर वल दिया ।

३०-१-६८ : हिन्दी-साहित्यकार श्री माखनलाल चतुर्वेदी का अष्टमवा वं देहान्त ।

३१-१-६८ : काशी में हिन्दी के प्रमुख विद्वान श्री पद्मनाभरायण आचार्य का देहान्त ।

१-२-६८ : राष्ट्रपति ने नयी दिल्ली में आयोजित समुक्त राष्ट्रीय व्यापार सम्मेलन में कहा, 'सम्मेलन के विचार-विमर्श से एक ऐसे विश्व-समाज के निर्माण में मदद मिलेगी जिसमें जनसाधारण को अपनी मेहनत का उचित हिस्सा मिल सके, तथा कर्मा व अभाव से मुक्ति मिले ।'

२-२-६८ : विश्व व्यापार व विकास-सम्मेलन के महासचिव ने विकसित और विकासशील देशों के मध्य व्याप्त विपत्तया दूर करने की जिम्मेदारी समुक्त देशों की बताया ।

५-२-६८ : प्रधान मंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का अष्टममान द्वापवासिका ने हार्दिक स्वागत किया । भारत के प्रधान मंत्री की यह पहली अष्टममान-यात्रा है ।

विदेश :

२९-१-६८ : अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा जून '६८ में समाप्त होनेवाले वित्तवर्ष के लिए १६ अरब ८० करोड डालर घाटे का बजट पेश ।

३०-१-६८ : इसराइली सेना ने स्वेज नहर के पूर्वी तट पर मिस्री जहाजों पर गोलाबारी की ।

३१-१-६८ : वियतकाम छापामारों के जबरदस्त हमलों के कारण आज सैपोन सहित सारे दक्षिण वियतनाम में युद्ध भड़क उठा ।

१-२-६८ : साम्यवादी वियतकाम छापामारों ने दक्षिण वियतनाम के प्रमुख नगरों पर अधिकार कर लिया ।

२-२-६८ : दक्षिण वियतनाम में अनेक प्रान्तों और २४ हवाई अड्डों पर वियतकाम ने अधिकार कर लिया ।

३-२-६८ : अमरीकी कमान के द्वि० जनरल ने कहा है कि इस समय ६० वियतनाम के उत्तर में भोपण युद्ध हो रहा है ।

आखिरी डाक से

● म० प्र० के पश्चिम निमाड़ वी पूरी सैपया तहसील ३० जनवरी को ग्रामदान में आ गयो । इस में ३ प्रखंड हैं । तहसील के लगभग ६०% गाँव ग्रामदान में शामिल हैं ।

● बिहार के—छारन जिले का उषका गाँव प्रखंडवान २२ जनवरी '६८ को विनोबा को सोनपुर में समर्पित किया गया ।

—गुणिया जिले का रानीगज प्रखंडवान २६ जनवरी '६८ को घोषित हुआ ।

● पंजाब में १०५ कार्यकर्ताओं ने सोनीपत और राई प्रखण्ड के ११७ गाँवों से सम्पर्क किया, ८३ ग्रामदान मिले । पंजाब में ग्रामदान की कुल संख्या अब ३२४३ है ।

● जनवरी '६८ में महाराष्ट्र के घाना जिले में ७१ ग्रामदान प्राप्त हुए ।

● जनवरी '६८ अब तक भारत में कुल—ग्रामदान : ५०,३७७, प्रखण्डदान : २५३, जिलादान : २; और बिहार में—कुल ग्रामदान : १६,८३९, प्रखण्डदान : १९९, जिलादान : १ ।

● राजगीर : ४ फरवरी '६८ । बिहार-दान के सर्भ में आयोजित बिहार राजनीतिक सर्वदलीय परिषद् में भाग लेनेवाले कापेश, जनसभ, प्रयोग और सघोष के नेताओं ने अपना-अपना सहयोग देने की घोषणा की । इन्हीं दिनों पटना हो रहे साम्यवादी दल के अधिवेशन के कारण साम्यवादी नेता इस परिषद् में भाग नहीं ले सके, इसके लिए दल के नेता ने पत्र द्वारा खेद प्रकट किया । अभ्यक्षता भी ब्यपक्रास नारायण ने की, आचार्य विनोबा ने परिषद् को सम्बोधित करते हुए कहा कि भारत की वर्तमान परिस्थिति आखिरी तपस्या की माँग कर रही है ।

विनोबाजी का कार्यक्रम . फरवरी '६८

८ तक राजगीर में, ९—बिहार शरीक, १०—बाढ़, ११—बड़हिया, १२ से २२ मुंगेर, २३—निर्णयाधीन, २४ से २६ बेतुहराय ।

पता: विनोबा-निवास द्वारा : जिला सर्वोद्य मण्डल, तिलक-मैदान, मुंगेर (बिहार) फो० न० २६४

अध्यापकों का संकल्प-पत्र

आज जब कि हमारे देश वा यांत्रिक भाति-भाति प्रचार की हिसात्मक घटनाओं से विपन्न और आतंरित हो रहा है और जिनका दमन करने के लिए पुलिड द्वारा विश्वविद्यालय के अहाती तक का अनिग्रमण होने लगा है, हम शिक्षकों वा यह प्राथमिक कर्तव्य हो गया है कि हम स्वयं अपनी शक्ति से उन सारे उपद्रवों वा दमन करें और अपने परिवेश में मान्ति को स्वायी रूप में सुप्रतिष्ठित करें ।

इससे भी अधिक हम अपने विश्वविद्यालय के अहाती में ही अपनी समग्र शक्ति को न नि दोष समझकर सारे देश की विश्वविद्यालय का ही प्रशस्त और विराट प्राण समर्थ और उसमें किछी भी प्रकार का हिसात्मक विलोड हो और पुलिड उसका दमन करने आये, इसका कभी अवसर ही न आने दें । हमारी दमन-शक्ति सर्वोपरि हो ।

यों तो न्याय-विभाग की भांति शिक्षा-विभाग की स्वायत्तता भी सर्वोप्य है, निन्तु उते सचचे अर्थ में उपलब्ध एव बाधित करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा सला के पीछे न भागकर स्वयं अपनी स्वतन्त्र शक्ति का नि उ क रे ।

उपरिनिदिष्ट प्राक्कथन से मैं सहमत हूँ और मन्त्र्य करता हूँ कि —

(क) में किछी भी राजनीतिक पक्ष वा सदस्य न बनाँगा और न चुनावों में किछी पक्ष विशेष का प्रचार हो सकेगा ।

(ख) सारे राज्य को शिक्षा का बाध-क्षेत्र मानकर विचार द्वारा अशान्ति के दमन वा प्रयास करेगा, किछसे अशान्ति के दमन के लिए दण्ड-शक्ति का उपयोग न करना पड़े ।

नाम
पता
हस्ताक्षर
तारीख.....

[विनोबा की उपस्थिति में मुजबकपुर में आयोजित शिक्षाविदों की गोष्ठी में तैयार किया गया सर्वल-पत्र, जिसे बिहार के शिक्षक त्वरा के साथ जाना रहे है ।]

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, ९ फरवरी, '६८

कोई हमारा विरोधी नहीं

अबो हम मजिल मकमूर के गजबदीक है, जहाँ हम पहुँचना चाहते हैं। लेकिन आसिरी मुकाम पर तो इस ज़िन्दगी में पहुँच भी नहीं सकते हैं। 'बरेवेति, बरेवेति'—सागहू साक तक चल्ते रहे। कुछ बात सोची भी थी और कुछ बिना सोची हुई। अब ऐसी जगह आपे हैं, जहाँ सीधी चट्टान चढ़ने की जरूरत है। पोशा साहज करने की जरूरत है, तो हम पहुँच जायेंगे। ओपप तो पिल्ला ही रहे है। सामरान ओपप है, जिससे जनता और हमारा स्वास्थ्य सुधरेगा। लेकिन पत्य को भी जरूरत है। सहृद के साथ ही दवा लो जाती है, जिसे अनुगाम कहते हैं। इस समय हमस कोई कदु शब्द नहीं निकलना चाहिए। कोई भले ही अपने का हमारा विरोधी माने, परन्तु कोई हमारा विरोधी नहीं है। सब हमारे भाई हैं। हम उन पर प्रेम ही कर सकते हैं। इसलिए किछीने विरोध किया, जो सामुहिक समझना चाहिए कि हम आपक विरोधी नहीं हैं, हम आपका पूरा भला चाहते हैं।

मनु महाराज ने कहा है कि बात ठीक लगे वा कहना चाहिए—'ठीक है'—'भद्र वेद'। लेकिन कोई बात ठीक न लगे तो कहना चाहिए 'ठीक है, ठीक है'—'भद्र भद्र दति ब्रह्म'—'ठीक है, ठीक है' वा बारा कहना चाहिए। अनेक पहलू मिलकर सत्य हाथ लगता है। सत्यामही का प्रथम सत्य का धाहो होना चाहिए। मरा ही सब सत्य, ऐसा सत्य का ठेका नहीं लेना चाहिए। ऐसी स्थिति में जीव नहीं भी लगे, सो कहना—'ठीक है, ठीक है'—'भद्र भद्र', नहीं तो कहना 'भद्रम्'। 'दू निर्गटिव मेसक पाजिटिव', यह भगिन सिखाता है, परन्तु यहाँ 'दू पाजिटिव मेसक निर्गटिव'। आपकी बात ठीक नहीं लग रही है तो भी कहना 'ठीक है, ठीक है'। मनु महाराज की बात इसलिए नह रहा है कि सब जगह कड़ुता वा बातवचन है। वहाँ मयुर व्यक्ति मिल

जाय तो घायी कड़ुता को जीतकर दुनिया को भी जीत लेगा।

दूसरी बात अपने मन य से भी वर्ग मेंद निकाल देना चाहिए। भगवान ने हर मनुष्य को नया पैदा किया है और नगा हो जाना है। इसलिए हर मनुष्य एक ही बग का है। वर्ग बनायेंगे तो एक छोटा भाई और दूसरा बड़ा भाई होगा। बेटों को कहना पड़ा—'बम्बेछास बननिछास' यानी न बाई बड़ा भाई, न छोटा भाई। हमको समझना चाहिए कि हम एक ही नौका में बैठे हुए हैं। यदि नौका डूबेगी वा सब डूबेंगे। साथ डूबने और साथ तैरनेवाले हैं, ऐसा वक्ता विश्वास रहना चाहिए। इसलिए नयी मल्ल धारणाएँ वैचारिक क्षेत्र में फैली हुई हैं—हिंदी का विरोध, जो नालपनिक है। यदि एव मनुष्य मजबूत हुआ तो दुनिया का अहित नहीं, एक सतुष्य कमजोर हुआ तो दुविधा का पारि लाभ नहीं, इसलिए हिंदी का विरोध नहीं है। हिंदीको

विनोवा

और विद्यापिपी के अलम-अलम सप बना है—एक-दूसरे से बचने के लिए। शिक्षक और विद्यार्थी मिलकर विद्या बनाते हैं, लेकिन दोनों के 'इष्टरेस्ट' बचाने के लिए दो तप बने। इसी प्रकार मालिक मजदूर, किसान-भूमिहीन आदि वा विरोध चलता है। यह कल्पना पुरानी पड़ गयी। अब चीन में कम्युनिस्टों के ब-दर-ब-दर कलेआम चल रहा है। मतभेद में लड़ने के सिवाय उनके पास दूसरा चारा नहीं है, इस वास्ते वपनेर को चलना करके कोई योजना बनती है तो आखिर तब ताअनी-नाअनी हो जाती है। लेकिन दुनिया वा जोडना है, इस स्यात स काम करना है।

तीसरी बात यह है कि अरन हिन्दुस्तान में हमारी कामिया के वादरुद अंधा विपमता मिटनेवाली नहीं। चीन ल्य और

दुनिया में कहीं भी विपमता मिटी नहीं। बाबा पर १॥ से २ सी रुपये तक का खर्च बाव है। तीन तोले अर्धल माह में आन का रस लिना था, तो बाट जाने हुए थे। और तीन तोले में ३० कैलरीज घक्ति मिलती है। बाबा रोज १२ सी कैलरीज लेता है, जिसे आप लोग बरखास्त करते हैं, लेकिन आप लोगो में ने भी ऐसे मेवक हागे, जिन्हें ११। सी माहवार हो बेतन मिलता है और उसमें ५ ब्यक्ति के परिवार वा खर्च चलाना पड़ता है। इस तरह विपमता रह ही जाती है। पोखे विपमता जायगी। लेकिन आसिरी विपमता आप लोगो में भी होगी, इसे सहन करना चाहिए। उस दिन वेद का वपन सुनाया। उसमें जो शब्द आये हैं—'गुरधाम', उसका वपन दो शब्दों में 'सर्ववीर सहावाव'—ये दो विदोपन उल्लोने दे दिये। ओ वीर होते हैं, वे सहन नहीं करते और सहन करते हैं, वे वीर नहीं होते हैं। एक सिंह दूसरे सिंह को सहन नहीं करता। इसलिए सिंह जाति दुनिया से व्यथ हो रही है। मात्र मनुष्य के नाम में 'सिंह' बच गया है। कश्मिराता में अब बेचल ५ सी सिंह बचा रहे हैं, जो ५ निनट में मारे जा सकते हैं। तब वे भारत से समात हो जायेंगे। केवल अनोखा मे बच जायेंगे। सिंह जैसी बीरता और पीठी जैसी सहनशीलता होगी, तभी हमारा काम चलेगा। ऐसी मिश्रता हो कि सभी 'पूछ' (एकट्टा) करे। तो बोझ-बहुत समता हो सकती है। फिर भी विपमता तो रह ही जायगी। लेकिन किसी अंधार का मत्सर नहीं होना चाहिए। ऐसा हांगा वा बल दूंगा। तो हमें ऐसी हालत में विपमता को सहन करना चाहिए।

मुझे लगा कि दा-बीन बाजें आपक सामने रतुं और आपका मार्ग दुखल हा। इन हागा में ४५ 'हीनें ने काम वा धार्यवम बनया है। उसमें पठली काम—'एक बने और नेक बने'। दूसरे काम—'दिरांगे' सामरान बन जाय। 'ओजूरी' बनने में 'ले ही दर री'। इतना हा गया तो दुविधाद बन जायगा। (दिनाक १६-६-५३ पूजा राठ)

मूल्यों की स्थापना अर्थात् क्रांति

एकनाथजी महाराज थे। उनकी बेटी-
 भूषा देवहार एक विदेशी ने दुर्भाग्यवश की
 की सहायता से उनसे दूध, "आप कौन
 हैं?" उन्होंने उत्तर दिया, "आप?" विदेशी
 खन्नर में दूध, "आप, अर्थात् मासिक, ता
 आपकी प्रकृति बहती है?" आपकी ने उत्तर
 दिया, "हमारा पत्रना कौन है?" विदेशी
 महसूस ने दूध, "मासिक की सेवा बहती
 है?" आपकी ने फरमाया, "दूधको भय
 बहती है?" अंत में विदेशी जिज्ञासु में दूध,
 "आप मासिक का पत्रना बहती है?" आपकी
 महाराज ने बहती, "दूधको खन्नर बहती है?"
 तीन प्रश्नों के तीन उत्तरों ने उस विदेशी
 को आपकी महाराज का भक्त बना दिया।
 ये ही मासिकी प्रश्नों के उत्तर।

क्रिया रहना है ता क्रिया रहने की
 की कला, अर्थात् मानसता सीखनी होती।
 श्रीरुद्र के मूल्य व मान्यताएँ हूँ मानसता के
 अनुसंधान बहती होती हैं। मानस विचारों के
 अभिव्यक्ति को आज किानी जादुकरपणा
 है। आज तक का सुश्रुत इतिहास त्याग
 और भोग के मर्त्य का ही ता विचार मास
 है। त्याग के कारण शांति का बर्चन का,
 तब उन्हींके विदेशी से राज्य चलते थे।
 और राजा-महाराजा विद्यालय जाने थे, अपना
 लोने थे। शास्त्र जब सत्ता के नीचे में भीती
 बन गया तो इन्द्र ने (अनुसू मानसता
 से, अर्थात् मानसता ही इन्द्र-अर्थ का पार्ष
 है) एकपद पर गया। इन्द्र ने माता दूध ले
 शांति गिर गया। तब महाराज से क्षत्रिय
 वर्ण में अर्थात् त्याग का मार्ग परका। क्षत्रिय
 के त्यागने के भोग व लक्ष शास्त्र की ही
 पर गया। त्यागी क्षत्रिय वर्ण और भोगी
 शास्त्र वर्ण का अर्थव्यवस्था का पार्ष
 परगण्य के दूध का है दूध। परगण्य ने
 त्याग के मानस मानसता का पार्ष
 त्याग ने परगण्य की वेदभक्त नहीं काके
 अर्थव्यवस्था के उत्पत्ति में उर्दी बहुत उन्नत
 ही और उन्नत मास का-अर्थव्यवस्था का मास

महाराज दिया। श्रीरुद्र राजा वर्ण (क्षत्रिय
 वर्ण का होता) भी सत्ता के पदभक्त में भीगी
 बना और मास-मूल्य के लिए सत्ता का इस्ते-
 फादा करने लगा। राजा के प्रयासक आपकी
 ने मासका इस्तेफादी यही कि राजा ही ईश्वर
 है और लोग मूर्ख का राजा का दर्शन करते
 ही भोजन करने की प्रतिज्ञाएँ या क्षीण
 लेते लगे। एक दिन भीगी राजा का भी
 पतन हुआ और उसका त्याग अपना अर्थव्य-
 वस्था उन्नत में लूटा देखेवाले त्यागी
 वेद ने लिया। बादशाह ने "शाही बदा
 बहलाया और बहती जाने लगा, "पदने पाह
 और वास में बजाया।" बादशाह में "बाद-
 शाह का समावेश अर्थात् दूध।

इतिहास साक्षरता के स्विधान में सु-
 श्रुत अर्थव्यवस्था में यह गारण्टी तो यही है कि
 क्षत्रियों को मान्यता बिना सुभक्त्युक्त युक्तियों यही
 ली जायगी। अब शाह, अर्थात् जनता का
 नेट मानसता (योगी, उद्योग, व्यापार म)
 त्यागी सामोपनि का भी भोग में दूधका
 प्राप्त हो गया है। आम लोको का पद
 वाली होने हुए भी अपनी मान्यता का
 प्रदर्शन करने से गौरव माननेवाले वेद म

विहार राज्य पंचायत परिषद् और सहकारिता संघ के संकल्प

हद समाज-मेरी मायाका का मुख्य
 अनुसंधान नरक स्वराज्य का पूर्वजाना तथा
 यज्ञ की क्षिति को विकसित करना है।
 सामान्य मानसता जनता के अधिपत्य की
 प्रदान तथा मर्यादा करने का बुनियादी
 सिद्धांत है। अतः अर्थव्यवस्था का
 स्वातंत्र्य ही मानसता तथा साम-स्वराज्य
 की नींव की मजदूर बननेवाला है।

समाज-मेरी तथा स्वराज्यक स्वराज्य
 के हीनता सामंती आर्थिक का समर्थन
 किया है। अब दूध विद्यापीठ की प्रेरणा के
 २ आनुभव, "दूध तक विद्यालय अपनी
 विहार के सभी गाँव का सामान्य का कार्य-

की सेवा का भी हीन ज्ञान उपयुक्त समा-
 नुसार निश्चित है। तब सत्ता भोग के ह्रास
 से निवृत्त कर सेवा करनेवाले त्याग के ह्रास
 में बली जायगी। वर्तमान सामंतीक शांति
 के अन्त में इतिहास पराध, ह्रियका, ह्रासका,
 चक्र, लोको की मान्य, भोगकी, वदकृत मासिक
 पत्र या समाज-विद्यो के विद्यो को स्थापन देना
 पत्र है। त्याग ने ही सेवा गये मूल्यों की
 स्थापना की है, यह सत्य है। वैदिक सिद्ध
 नहीं, अब उनके अनुसू प्रत्य-स्थापन की
 माप है।

मूल्यों की स्थापना तथा व निश्चय नहीं
 कर सकते। यह ता पुराणों ही कर सतना
 है। सत्ता सत्ता भी कर्मान्तरों बहती के
 पार्ष में बल सत्ता है, परन्तु वह नरको
 मूल्य है। मानसता ही सही मूल्य है। सत्ता
 के पूनक अर्थव्यवस्था यही हा सकते। सत्ता
 सत्ता का युवाही था, परन्तु सत्ता का
 दुःख? विचारक (दूध का युवाव्यवस्था
 में) सामंतीक हा सत्ता है, लेकिन मासिक
 काही नहीं हा सत्ता। बल का नहीं दूध,
 वह मान ही—वह 'साध-वेद' है। ह्येय
 दूध, नहीं हाहा रह—वह 'साध-वेद' है।
 आर्य के युग की माप—मानसिक मूल्यों की
 स्थापना करनेवाली प्राणि।

— सुश्रुत पर वाक्या, विचारक
 २२, विचारकपुत्री अयुक्त (संस्करण २)

अप ह्येय सामने बाधा है। विहार राज्य
 पंचायत परिषद्, विहार राज्य सहकारिता
 संघ, इस कार्यक्रम का हर्ष के मास स्थापन
 करने है और २५ अर्थ मूल्य कार्यक्रम का
 मंत्र व शीर्षक करत है।

विहार राज्य पंचायत परिषद्, विहार
 राज्य सहकारिता संघ की यह सहकारिता
 करने अनुसूत एको स्तर की शाखाओं से
 और कार्यकर्ताओं व अनुसूत करती है कि एक
 महत्त्व का मंत्र बनने में अपनी पूरी क्षिति
 लगावे और इन्हें लिए निष्पक्षक सामंतीको
 अधिपत्य परम है।

यह वेदक यह भी निश्चय करती है कि

विहारदान अभियान को सफल करने के लिए नोबे लिखे कार्यक्रम अपनाये जायें।—

(१) सभी समाज-सेवी और रचनात्मक संस्थाओं द्वारा आगामी २ अक्टूबर तक विहारदान संपन्न करने को एक समुक्त अपील प्रकाशित हो।

(२) विहारदान के लिए उपयुक्त वातावरण तथा जन-साहचर्य तैयार करने के लिए लोक-सिद्धि के निमित्त .

(क) ग्रामदान के सिद्धान्तों का व्यापक प्रचार किया जाय,

(ख) पोस्टर छापें और उन्हें गांव-गांव तक पहुंचाया जाय,

(ग) विहारदान को, इसे स्पष्ट करते हुए फोर्डर छापें और उनकी कार्यकर्ताओं तक पहुंचाया जाय,

(घ) प्रलम्ब-स्तर पर जन-सभाओं का आयोजन हो,

(ङ) प्रखण्ड-स्तरिय कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए प्रखण्ड स्तर, अनुप्रखण्ड एवं प्रखण्ड स्तर पर सिबिर के आयोजन हो,

(च) ग्रामदान तथा प्रखण्डदान के लिए नेता-वर्ग का विशेष दौरा हो,

(छ) पदचार्त्राओं के आयोजन किये जायें और जहाँ ग्रामदान या प्रखण्डदान हो चुके हैं, वहाँ निर्माण कार्य जल्द-से-जल्द प्रारम्भ हो।

(३) विहारदान के लिए सापेक्ष युताने के निमित्त प्रत्येक पंचायत क्षेत्र से कम-से-कम दो से छे रुपये कूपन के अर्धे भवित किये जायें।—संयुक्त बैठक में स्वीकृत संकल्प (पटना : २३-१-६८)

विहार की रचनात्मक संस्थाओं की सभा में स्वीकृत संकल्पपूर्ण प्रस्ताव

● १० प्रतिव्यय कार्यकर्ता निकालें।

● हर कार्यकर्ता २ मित्र बनायें, यानी कुल ५००० कार्यकर्ता २५००० मित्र बनायें।

● ५ गांवों के लिए १ साहित्य-सेठ और १ पत्रिका पहुंचावें तथा साप्ताहिक पाठन की व्यवस्था करावें।

● हर कार्यकर्ता १०० से २०० रुपये तक अर्ध-समर्पण करे। (पटना : २३-१-६८।)

आन्दोलन के समाचार

गया में जिलादान की योजना

गया : १७ जनवरी। गत १६ जनवरी को गया जिले के सामाजिक और राजनीतिक कार्यकर्ताओं की सम्मिलित बैठक हुई। सभा की अध्यक्षता खादी-प्रामोद्योग समिति, गया के मन्त्री श्री भीता प्रसाद सिंह ने की। विहारदान के निश्चित कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए 'गांधी जयन्ती' तक गया जिले के गांवों का ग्रामदान किये जाने के लिए कतिपय निर्णय सर्वसम्मति से लिये गये। सभा में श्री जयप्रकाश नारायण तथा विहार भूदान कमिटी के अध्यक्ष श्री गौरी चकर शरण सिंह उपस्थित थे। मुख्य निर्णय निम्न प्रकार है—

● राजनीतिक दलों के प्रतिनिधि, भारत-सेवक समाज, शिक्षक संघ, पंचायत परिषद तथा अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं को लेकर २१ सदस्यीय जिलादान समिति का निर्माण किया गया। श्री दिवाकरजी तथा श्री द्वारको भाई समिति के संयोजक चुने गये।

● जिलादान को सफल बनाने के लिए दो लाख रुपये के काप सहज का निश्चय किया।

● प्रथम चरण के रूप में ३१ गांव तक निमनलिखित १२ प्रखण्डान प्राप्त किये जायें—रजौली, ठिरपन्ना, गाकिचपुर, पकौरावावा, वारसलीगंज, अंकबरपुर, बारासही, मोहनपुर, सोनपया, मंगडुगपुर, नवोदन और कुटुम्बा।

● विहार रिजो कपिटी के प्रधानमंत्री श्री सिद्धराज डड्डा ने गया, पलामू और हजारीबाग जिले में जिलादान कार्यक्रम में संचालक को हैखियत से प्रांतीय ग्रामदान समिति के निवेदन पर काम करने को स्वीकृति दी है, तदनुसार एफ-विहाई समय श्री डड्डाजी का जिलादान समिति को मिलेगा।

● जिलादान के कार्यक्रम में सहायता प्रदान करने के लिए जिलादान समिति को और हे गया जिले के सभी शिक्षक, विद्यापी,

अधिकारी, व्यापारी, भूमिदान, भूमिहीन, मजदूर, डाक्टर, वकील आदि से एक अतील प्रसारित को गयी है।●

मुंगेर की हलचल

खादीग्राम : २५ जनवरी। मुंगेर में विनोबाजी १२ फरवरी को जा रहे हैं। इस बीच विभिन्न प्रखंडों में जिलादान की दृष्टि से चहल-पहल शुरू हो गयी है। इस सभ्यता में सबसे आकर्षक बात यह है कि खगपुर के मित्रों ने यह निश्चय किया है कि प्रखण्डदान-प्राप्ति कार्य वे पचासवां क्षेत्र के साधन और क्षेत्रीय कार्यकर्ता की सहायता से ही सम्पन्न कर लेंगे।

भूमिसेना विद्यालय, खादीग्राम के साधियों ने यह निश्चय किया है कि सन् १९६९ तक वे एक लाख रुपये का साहित्य बेचेंगे। स्मरणोप है कि अभी हाल में ही उन लोगों ने यह निश्चय प्रकट किया है कि अपने मार्च '६८ तक इन प्रकट में वे 'भूदान-यज्ञ' के एक सौ सहक बनायेंगे।

मुंगेर जिला सर्वोद्यम मंडल ने यह आदेशित किया था कि ३० जनवरी को जिले के हर प्रखंड में जिलादान प्राप्ति और पुष्टि का मन्त्र आम सभा में ठुराया जाय। जिन प्रखंड का प्रखण्डान अभी नहीं हुआ है, उनमें साधियों ग्रामदान-प्राप्ति में जुट जायें। जिन-जिन प्रखंडों का प्रखण्डान हो चुका है, उनमें ग्रामदान की पुष्टि, ग्रामरक्षा संगठन, ग्रामकोष मजदू बादि काम शुरू करने का आदेशित किया जा रहा है।

ग्राम-स्वराज्य-संघ के कार्यक्रमीण बेगूसराय अनुसूचक-दान प्राप्ति-नियंत्रण में श्री रमाकांत चौधरी, मंत्री, सच के नेतृत्व में लगे हुए हैं। स्मरणोप है कि मुंगेर जिले के बार अनुसूचकों में खगड़िया अनुसूचक का दान गत अगस्त में ही पोषित हो चुका। बेगूसराय अनुसूचक के स्यारह प्रखंडों में दिसम्बर '६७ तक चार प्रखण्डान हो चुके। आशा की जाती है कि विनावाजी के मुंगेर आने-जाते बेगूसराय के दोष प्रखंडों का भी प्रखण्डान हो चुकेगा और विनोबाजी के आगमन के समय बेगूसराय अनुसूचकान पोषित किया जा सकेगा।—ईमनाथ सिंह

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, ९ फरवरी, '६८

सरगुदा मित्रादान की तैयारी

४ प्रथमों की सर्वोपरि समिति की प्रथम समिति की बैठक हुई। प्रथम समिति के अध्यक्ष सरसों तथा उपसिद्धि के प्रमुख कार्य-कर्ताओं ने सर्वसम्मति से निर्णय लिया है कि भाष के सन्दर्भ में विज्ञापन के महत्व को विचार से समझने का प्रयास किया जाय। सरगुदा जिले की कुल जनसंख्या १२ लाख है, गाँव-संख्या २३६७ और २४ विधान-क्षेत्र; ७ तहसीलें, ४ अनुप्रमण्डल हैं। यह विद्यमान कर १६६७ तक सरगुदा जिले में ४४४ गाँव शामिल थे जो १९४७ के आदिनों की एक एक बिकरर लिया है कि कुल सर-गुदा जिला घासघासों बने। यह बात जिले के उच्चतम कार्यकारी के मन में बुरेसा पलकी पड़ी है। ५ जनवरी को साधारण कुल एक और सर्वोपरि-कार्यकारी की विस्मय-प्रसादको आमन्त्रण का पना पला कि समिति ने विज्ञापन के लिए निम्न किया है। यह समाचार पाकर भी जनप्रवृत्त ने अनिश्चयपूर्वक अनुभवक की पुनर्विचारों की निर्णयकारी से की है। बाद प्रथमों में क्रान-दानी गाँवों के प्रमुखों को जो विशेष निहित में आग लेने हुई घोषणादि करने में प्रयत्न-योग्य है।

जिनमें १६४७ गाँवों में आकारों है। यह एक घर अनुभवक के ११ में से १० प्रथम, विचारजन के ७ प्रथमों में २ प्रथम, अर्थात् के २ प्रथमों में १ प्रथम, इस तरह कुल ३० प्रथमों में से २१ प्रथमों का प्रथमप्रधान घोषित हो चुका है। बाेष १३ प्रथमों में से १२ प्रथमों में प्रथमप्रधान-अभियान का कार्य चालू है। लगभग २०० कार्यकारी अभियान में कामरत है। सभी प्रथमों में कुल-न-पुत्र प्राणदाय प्राप्त हो चुके हैं और निरत नरे प्राणदाय प्राप्त किये जा रहे हैं। अक्षर प्रथम में कार्य करनेवाले कार्यकारी के लिए साक्षात्कीय प्रथम के अन्तर्गत किसी गाँव में हुआ करती है। लगभग महीना-द्वय महीना एक प्रथम का प्रथमप्रधान पुरा करने में लगता है। जिस प्रकार में अभियान प्रारम्भ किया जाता है, वहाँ का प्रथमप्रधान पुरा होने तक कार्य चालू रखा जाता है। टोपियों का नैतृत्त्व मुख्य रूप से जिस सर्वोपरि मण्डल के कार्यकारी और सर्वोपरि आधम रानीतरक का समग्र विचार-योग्यता के कार्यकारीगत करते हैं। इनके व्यक्तिक अधिकार स्वाधीन नवे नोग बरबाद जिन प्रथमों में प्रथमप्रधान हो चुका है, उन प्रथमों में कार्य किये हुए कार्यकारी को दानियों में समितित विगत नया है। किसी प्रथम में अभियान प्रारम्भ करने के लिए प्रथम-प्रधान १४ धमा करके प्रथम के विद्यमानों के विचारों, पचास के सहायिकाओं, न-नायक कार्यकारी, टाकरीक पाठों के कार्यकारी आदि से उभर करके अपने उद्देश्य को कसेल को जाती है। साधारणतः वहाँ कोई समिति विशेष नहीं है। प्रथमों में कोई भी व्यक्ति कार्य को मीमात्र प्रथमों का कार्य करते हैं, अपना स्वयं सम्मिलित नहीं होकर कर्तव्य जाल छोड़े हैं। ऐसे लोग भी कार्यकारी को गाँवों में जीवन-निवास आदि की सुविधा देने का उद्देश्य छोड़े हैं। कई वृत्तों की हस्ताक्षर देने को उन्हाड़े देते हैं, अपना करते हैं, याच बना हस्ताक्षर टाकरी है।

गाँव कार्यकारी सहयोग तथा गांधी-निधि की सहायता से बना। जन-सहृद को भी जन-प्रथम बनाई की रास्ता में पूर्णता जिले में मात्र ५,२५४ ६० की बंधी मिल सकी है। सभी सर्वोपरि पत्र में का-सहृद को संवेचना की गयी है, पर विज्ञापन नक तक पूरा नहीं होने से यह पत्र में जन-सहृद में पूरी दक्षिण बनाने की आवश्यकता है, यह नहीं हो सकेगी।

आमदान-व्ययि के साथ आमदान-मुक्ति की दिशा में भी प्रयत्न जारी है। कुल २४२ गाँवों के आणवत विचार जिसे का चुके है, जिनमें से इत्यन्त-प्रथम एक सरगुदा प्रथम में ३०० गाँवों के आणवत विज्ञापन-युक्त कार्यकारी में शामिल किये जा चुके है, जिनमें से गाँवों के ३०६ परिवारों की सुविधा हो चुकी है पर १६ गाँवों के ११२४ परिवारों को भी निर्दिष्ट हो जा चुकी है।

—वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी

श्री कर्म-माचार

एक भारतीय मान्यता और मानवकाल ५४५० की ओर समाजात्मक विज्ञान की सुध-नगरवण कार्यकारी के निधन पर सुदान-युक्त परिवार की ओर से धन-प्रति।

× × ×

हमें बड़े दुःख के साथ सूचित करना पर रहा है कि पर २० जनवरी की प्रातः काल भीमली सुनिषा देवी जनस्यो का स्वर्गवास हो गया। उनको मात्र ६३ वर्ष की थी। वे स्वयं पुत्र भी विगत बरसों के साथ सरगुदा में कार्य-नगर-विकास केन्द्र में रह चुकी थी। हम को विश्व आई और उनके निधन के प्रति बहाने सहिदयार्थ प्रकट करते हैं, और विगत मान्यता की याद के लिए प्रार्थना करते हैं।

× × ×

२० जनवरी को भी एगोवर सिंह, मकी, जिन्हा सर्वोपरि मण्डल, सुकम्पदाइर का हृदय परिचय कर जाने से देहांतर हो गया। साथ स्वच्छन्द-समय के एक और सेवानी, जालकल कर्मा-सहकर और सुदान-युक्त कार्यकारी के रूप में प्रथमप्रधान-अभियान

गाँव है, जिनमें १६४७ गाँवों में आकारों है। यह एक घर अनुभवक के ११ में से १० प्रथम, अक्षर प्रथम में कार्य करनेवाले कार्यकारी के लिए साक्षात्कीय प्रथम के अन्तर्गत किसी गाँव में हुआ करती है। लगभग महीना-द्वय महीना एक प्रथम का प्रथमप्रधान पुरा करने में लगता है। जिस प्रकार में अभियान प्रारम्भ किया जाता है, वहाँ का प्रथमप्रधान पुरा होने तक कार्य चालू रखा जाता है। टोपियों का नैतृत्त्व मुख्य रूप से जिस सर्वोपरि मण्डल के कार्यकारी और सर्वोपरि आधम रानीतरक का समग्र विचार-योग्यता के कार्यकारीगत करते हैं। इनके व्यक्तिक अधिकार स्वाधीन नवे नोग बरबाद जिन प्रथमों में प्रथमप्रधान हो चुका है, उन प्रथमों में कार्य किये हुए कार्यकारी को दानियों में समितित विगत नया है। किसी प्रथम में अभियान प्रारम्भ करने के लिए प्रथम-प्रधान १४ धमा करके प्रथम के विद्यमानों के विचारों, पचास के सहायिकाओं, न-नायक कार्यकारी, टाकरीक पाठों के कार्यकारी आदि से उभर करके अपने उद्देश्य को कसेल को जाती है। साधारणतः वहाँ कोई समिति विशेष नहीं है। प्रथमों में कोई भी व्यक्ति कार्य को मीमात्र प्रथमों का कार्य करते हैं, अपना स्वयं सम्मिलित नहीं होकर कर्तव्य जाल छोड़े हैं। ऐसे लोग भी कार्यकारी को गाँवों में जीवन-निवास आदि की सुविधा देने का उद्देश्य छोड़े हैं। कई वृत्तों की हस्ताक्षर देने को उन्हाड़े देते हैं, अपना करते हैं, याच बना हस्ताक्षर टाकरी है।

गाँव है, जिनमें १६४७ गाँवों में आकारों है। यह एक घर अनुभवक के ११ में से १० प्रथम, अक्षर प्रथम में कार्य करनेवाले कार्यकारी के लिए साक्षात्कीय प्रथम के अन्तर्गत किसी गाँव में हुआ करती है। लगभग महीना-द्वय महीना एक प्रथम का प्रथमप्रधान पुरा करने में लगता है। जिस प्रकार में अभियान प्रारम्भ किया जाता है, वहाँ का प्रथमप्रधान पुरा होने तक कार्य चालू रखा जाता है। टोपियों का नैतृत्त्व मुख्य रूप से जिस सर्वोपरि मण्डल के कार्यकारी और सर्वोपरि आधम रानीतरक का समग्र विचार-योग्यता के कार्यकारीगत करते हैं। इनके व्यक्तिक अधिकार स्वाधीन नवे नोग बरबाद जिन प्रथमों में प्रथमप्रधान हो चुका है, उन प्रथमों में कार्य किये हुए कार्यकारी को दानियों में समितित विगत नया है। किसी प्रथम में अभियान प्रारम्भ करने के लिए प्रथम-प्रधान १४ धमा करके प्रथम के विद्यमानों के विचारों, पचास के सहायिकाओं, न-नायक कार्यकारी, टाकरीक पाठों के कार्यकारी आदि से उभर करके अपने उद्देश्य को कसेल को जाती है। साधारणतः वहाँ कोई समिति विशेष नहीं है। प्रथमों में कोई भी व्यक्ति कार्य को मीमात्र प्रथमों का कार्य करते हैं, अपना स्वयं सम्मिलित नहीं होकर कर्तव्य जाल छोड़े हैं। ऐसे लोग भी कार्यकारी को गाँवों में जीवन-निवास आदि की सुविधा देने का उद्देश्य छोड़े हैं। कई वृत्तों की हस्ताक्षर देने को उन्हाड़े देते हैं, अपना करते हैं, याच बना हस्ताक्षर टाकरी है।

गाँव है, जिनमें १६४७ गाँवों में आकारों है। यह एक घर अनुभवक के ११ में से १० प्रथम, अक्षर प्रथम में कार्य करनेवाले कार्यकारी के लिए साक्षात्कीय प्रथम के अन्तर्गत किसी गाँव में हुआ करती है। लगभग महीना-द्वय महीना एक प्रथम का प्रथमप्रधान पुरा करने में लगता है। जिस प्रकार में अभियान प्रारम्भ किया जाता है, वहाँ का प्रथमप्रधान पुरा होने तक कार्य चालू रखा जाता है। टोपियों का नैतृत्त्व मुख्य रूप से जिस सर्वोपरि मण्डल के कार्यकारी और सर्वोपरि आधम रानीतरक का समग्र विचार-योग्यता के कार्यकारीगत करते हैं। इनके व्यक्तिक अधिकार स्वाधीन नवे नोग बरबाद जिन प्रथमों में प्रथमप्रधान हो चुका है, उन प्रथमों में कार्य किये हुए कार्यकारी को दानियों में समितित विगत नया है। किसी प्रथम में अभियान प्रारम्भ करने के लिए प्रथम-प्रधान १४ धमा करके प्रथम के विद्यमानों के विचारों, पचास के सहायिकाओं, न-नायक कार्यकारी, टाकरीक पाठों के कार्यकारी आदि से उभर करके अपने उद्देश्य को कसेल को जाती है। साधारणतः वहाँ कोई समिति विशेष नहीं है। प्रथमों में कोई भी व्यक्ति कार्य को मीमात्र प्रथमों का कार्य करते हैं, अपना स्वयं सम्मिलित नहीं होकर कर्तव्य जाल छोड़े हैं। ऐसे लोग भी कार्यकारी को गाँवों में जीवन-निवास आदि की सुविधा देने का उद्देश्य छोड़े हैं। कई वृत्तों की हस्ताक्षर देने को उन्हाड़े देते हैं, अपना करते हैं, याच बना हस्ताक्षर टाकरी है।

भूतान-युक्त : सुकम्पदा, ९, फरवरी, ५८



कोयना की विपद्-गाथा और आपसे निवेदन

प्रिय बंधु,

आप जानते ही हैं कि महाराष्ट्र में भू-धाल के कारण बहुत बड़ी हानि हुई है। कई छद्म गाँवों में हजारों भकानों को क्षति पहुँची है। करीब २,००,००० लोग बेघर हुए हैं। सरकारी ज़ाक़ों के अनुसार ५० से लेकर ६०,००० मकान गिरे हैं। अभी भी भू-धाल के धके हाते ही रहते हैं, बार मकान भी गिरते हैं। दूसरा नुक़सान खेती के बाँधों को पहुँचा है। कई बड़े-बड़े बाँध भी टूट गये हैं। बहुत बड़-बड़े पर्यार नदियों में गिर पड़े हैं। नदियों का प्रवाह बदल गया है। नदियों के पानी का गाँवों में आने का खतरा उपस्थित हुआ है। खेती के बाँध सुरतत दुस्तत न किये जा सके तो इस क्षेत्र की कृषि नष्ट हो जायगी, और परिणामस्वरूप अकाल का संकट उपस्थित हो सकता है।

यह सारा क्षेत्र जंगली आर पहाड़ी है। कई गाँव घने जंगल के बीच बसे हुए हैं। डेढ़ घों से लेकर दो घों इंच तक वर्षा होती है। मुख्य फसल धान की होती है। धामोण उद्योगों का प्रयाण नगण्य है। लामा में शिक्षा का प्रसार जल्द है। बरसात के दिनों में अति-वृष्टि के कारण जमीन में से पानी के भरने ऊपर आने लगता है। कुल इलाका गरीब लोगों का है।

मकान गिर जाने से लोग खुली जगह में रहने लग हैं। ऐसी हालत में वे कृषि के धम-कार्य में ध्यान नहीं दे सकते हैं। सारा जीवन उड्डम गया है।

सरकार की आर ने राहत-धम का भरपूर प्रयत्न हो रहा है। कई सामाजिक संस्थाओं द्वारा राहत पहुँचाने का काफी बड़ा प्रयास हुआ है। राहत का एक पर्व करीब-करीब पूरा हुआ है, दूसरा पर्व शुरू होने जा रहा है। इसमें लंबे बरने के राहत-कार्य को योजना करनी पड़ेगी।

गत २५ दिवम्बर से महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल के तत्वावधान में एक 'सेवा-पथक' संगठित किया गया है। इस पथक में अन्य सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ता भी शामिल हुए हैं। कुल ७५ लोगों के 'पथक' द्वारा भूधाल-पीडित पाँच क्षेत्रों में काम चल रहा है। कई गाँवों में सर्वप्रथम सर्वोदय-कार्यकर्ता ही पहुँचे हैं। मुख्य रास्ते से दूर बसे हुए गाँवों में जाने का कठिन कार्य इन कार्यकर्ताओं द्वारा ही रहा है। हाल ही में दस क्षेत्र का तीन दिनों का दौरा करके मैं लौटा हूँ। जगहों में दूर-दूर बसे हुए गाँवों में जाकर वहाँ की स्थिति का प्रत्यक्ष देखने के बाद यह पथ आपकी सेवा में भेज रहा हूँ।

सरकार तथा अन्य संस्थाओं के प्रयत्नों के बावजूद जन-धनिक के संगठन के सिवा लोगों का पुनर्वसन असम्भव है। धनिप्रसन्न-धेय का निस्तार इतना व्यापक है, और धनि का प्रमाण इतना अधिक है कि लोगों को पूरी शक्ति इस काम में न लगी तो हजारों लोगों को भयंकर बर्षों का सामना करना पड़ेगा। 'सामर' गाँवों में रहनेवाले अल्पसंख्यक और गरीब लोगों को भय नभ संकट से मुजरता पड़ना। यह ध्यान में रखकर सर्वोदय मंडल की ओर से होनेवाले कार्य में— (१) गरीब-से-गरीब परिवार की तरफ ध्यान देना, (२) छोड़-धनिक जागृत तथा संगठित करना, (३) गाँव के 'रोजवाले' के दस्त बनाना, (४) सरकार तथा अन्य संस्थाओं के राहत-कार्य में सामंसेय लाना, आदि बातों पर विशेष ध्यान देने का सोचा गया है। हो सके तो गाँवों में भू-नेना का संगठन सडा करने का भी विचार है। राहत-कार्य का प्रथम पर्व समाप्त हाते ही, गाँव के मीजवानों के सिविर संगठित करने का भी विचार किया गया है। धाम-नेताओं की समार्ष करके पुनर्वसन की याचना में गाँववालों को बागे लाने का प्रयास करना है। कुल मिलाकर आज की स्थिति में से एक नया संगठित जागृत धाम-जीवन निर्माण हो, ऐसा प्रयास करना है। पूरा प्रयत्न हो सका, तो इस संकट में से ही नवजीवन खडा हो सना है। कृषि, उद्योग, मापालन, शिक्षा आदि पर ध्यान देना पड़ेगा। कृषि में सुधरे हुए पत्तों को दामिल करने हुए नयी वृष्टि का विचार हो, इस तरफ ध्यान देना होगा। नयी वृष्टि का अर्थ धाम-भावना हो, और वह धाम-स्वरूप में विवक्षित हो।

आपका मातृम हुआ होगा कि धी जयप्रभावमजी ने बिहार रिलीफ कमिटी की ओर से महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल को ५०,००० रुपये और बपडा, दूध-माउडर तथा सीमाविन तेल भेजा है। बरतन, कम्बल, सालटन खरोंदे गये हैं, और गाँव-गाँव में आवरपकटा-नुसार बाँटे जा रहे हैं। इसक लिए मगटन सडा किया गया है। उसका सब चलाते के लिए निधि भी अत्यंत आवश्यकता है। आपके प्रदेश में आप इस कार्य-हेतु कुछ निधि इकट्ठा कर सकते हैं। मैं बापका ध्यान इस बाड की तरफ बाधपित करना चाहता हूँ, और आपस प्रार्थना करता हूँ कि जल्द-से-जल्द आप कुछ निधि जमा कर-महाराष्ट्र सर्वोदय मंडल, ७२७, सदाविप पेट, पुना-२ के पते पर रवाना करने की कृपा करें। आपकी सहायता से सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को बल मिलेगा, और पीडितों को राहत पहुँचेगी।

धामदान-प्राप्ति के कार्य में बाधा न पहुँचाते हुए यह राहत-कार्य चल सके, ऐसी कीचिप महाराष्ट्र के साथी कर रहे हैं। बाबा है, आप मेरी प्रार्थना पर ध्यान देंगे। सविनय सदन के साथ उत्तर की प्रतीक्षा में,

आपका,

गोविन्द राम देसाय
महमकी, सर्व सेवा मय, वाराणसी

भूदान-ग्रन्थ

भूदान-ग्रन्थ-मूलक-ग्राम-विद्या-प्रधान-आर्थिक-क्रान्ति-का-प्राप्त-समाधान-सा-उपजा-दिव्य-

सर्वे सेवा संघ का सुख पत्र

सम्पादक : रामभूति

शुक्रवार वर्ष : १४

१६ फरवरी १९८८ प्रंक : २०

इस प्रंक में

एक बहुत प्रिय भी नहीं...

—मुझे राम २४२

सभी की विद्या और योग्यता

—समाप्तवरी २४३

प्रारंभिक पत्र : सम्बन्धित

—नरेश कुमार शुभे २४४

नया दौर : नये धुनिक

—एशो २४८

अन्य लाभ

समाचार-सचरी

साहित्य प्रसार

आगामी आकषण

विहार राज्य भूमिसेवा विहार :

बौद्धी देश हार

साहित्य शुक्र : १० ५०

एक प्रति : २० पैसे :

विदेश में : साधारण डाक-मुद्रा—

१८ ५० या १ पौण्ड या २११ डाक्टर

(हवाई डाक-मुद्रा : देशों के अनुसार)

सर्व-सेवा-उप-प्रकाशन

राजघाट, शारदाखो-१

बोन बॉ ४२६२

लोकतन्त्र में प्रतिनिधित्व और दायित्व का प्रश्न

जब कुछ लोग मानते हैं कि जागृताहो का अविनाशकम भाववत्क है।
 ६८ पोरुवे लोक उरासीन है, मूलं नही है। हुनिया में सब यह मही हाल है। बहते हैं
 कि अमेरिका वा आरपी राज्य करने के लिए साथ खुदों के पार बलया लीक वोट देवे
 के लिए चला नही पार (काय) करेगा ।

यह उदाहरणता परे बारी ?

लोकतन्त्र में मतदाता अपने वो जिम्मेदार नही मानता है। प्रतिनिधि ने भी
 अपने वो जिम्मेदार नही माना है। प्रतिनिधिक साधन में प्रतिनिधित्व है, दायित्व नही है।

प्रतिनिधि दायित्व का जिम्मेदार हो या अपने चुनाव क्षेत्र का, या अपनी पार्टी का,
 एडका नबाब लोकतन्त्र ने ब्रह्मरु नही रिया है। सम्बन्धवार पत्र का और प्रतिनिधित्व
 क्षेत्र का। प्रतिनिधित्व पत्र का नही। यह अन्तर्विरोध है। पत्र मान लोक में जाडा है
 तब मतदाता के मोट (मत) और 'ओपेनिकन' (विचार) में अन्ताराप पेट होता है।
 प्रतिनिधि सोचता है, 'मैं जिसका प्रतिनिधि हूँ—अपनी अन्तर्पणता वा या क्षेत्र का ?' क्षेत्र
 के प्रतिनिधित्व में भी बहुसंख्य और जलपक्ष के प्रतिनिधित्व का अन्तःक्रिया है। यह
 दोनो का प्रतिनिधि बनता है।

बहुसंख्य क्षेत्रों का राज हो, यह तो लोकतन्त्र का आवश्यक अंग नही है। बहुसंख्य
 का राज एक व्यापारिक दायित्व है, व्यवस्था है, विधान नही। बहुसंख्य की साथ
 मजदूर में लोकतन्त्रा नही है।

जब हुनिया में लोकतन्त्र जोडित यह चलना है वा नही, इस चुनाव पर आरक्षण
 का प्रश्न है। पूर्व में लोकतन्त्र के अविनाशकम का प्रश्न बाया है। लोकतन्त्र वा मुद्राजिवा
 अत्र लोक के अविनाशकम के है। कर् १९४६ का अरीनवी, मुक्त और विन्मनी चोड जाब
 हुनिया के दो प्रबल दायित्वों के बराबरी करारा है। परिचित में यह चुनौती है कि
 क्या लोकतन्त्रावास पत्र प्रगति कर सकता है ? भात बातर यह नही कर सकता तो
 लोकतन्त्र का अरण है। कलकत्ता ने माओ का अन्तर्पण करनेवालों ने यह अरण जिता
 है कि लोकतन्त्र में व्यवस्था हार नही होती है। मह परिचित दिखार हुए करने के
 परिचित नही संभलेयो, जिधं खोचता आयो ।

लोकतन्त्र में व्यक्ति का मूल्य है। समुदायिक—'सोडिय' (मतदान) नही है।
 उदाहरणतो वा अन्तर्पणकारे राज्य में व्यक्ति का अर्थ नही है। संख्या की बाल में मनुज
 मनुज नही रहा है। लोकतन्त्र में हरेक वोट का, उदाहरण वा मूल्य है। उदाहरण के
 लिए 'ओपेनिकन' (विचार) और वोट (मत) में अन्तर्पण चाहिए। प्रतिनिधित्व के
 साथ दायित्व चाहिए। दायित्व—मतदाता और प्रतिनिधि—दोनों का हूना चाहिए।

सम्बर्द : २२-१-९८ ।

—दादा धर्माधिकारी

आपके पुत्र

बंश :

६-२-६८ : श्रीमती इंदिरा गांधी ने पोट स्टेयर में कहा कि अग्धमान की घमस्याओ पर भारत सरकार सहानुभूति पूर्वक विचार कर रही है।

७-२-६८ : आचार्य विनोबाभावे ने राजनीतिक नेताओं से अपील की कि वे आगामी २ अक्तूबर तक 'बिहारदान' के संकल्प को पूरित के लिए प्रयत्नशील हो।

८-२-६८ : केन्द्रीय गृहमंत्री श्री यशवन्तराव चव्हाण ने जालन्धर में कहा कि कश्मीर भारत का अटूट अंग है।

९-२-६८ : उत्तर प्रदेश संयुक्त विधायक दल का जो संकट पिछले काफी दिनों से चल रहा था वह आज समाप्त हो गया।

१०-२-६८ : श्रीमती इंदिरा गांधी ने वैज्ञानिकों से अपील की कि वे प्राचीन आबादी के उत्थान के लिए अपने शो उत्सर्ग करें।

११-२-६८ : भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष श्री दीनदयाल उपाध्याय का शव प्रातः मुगलचराय स्टेशन के पश्चिम बैरिन के पास पड़ा मिला।

विदेश :

६-२-६८ : संगान तथा हुए में मित्रराष्ट्रों को बेहतर सहायक शक्ति के साथ-साथ साम्यवादी लड़ाई जारी रखे है।

७-२-६८ : विपत्तनाम-युद्ध में आज साम्यवादियों ने पहली बार टैंकों का इस्तेमाल किया।

८-२-६८ : संयुक्तराष्ट्र के महासचिव श्री जवाहर लाल नेहरू ने सहमति व्यक्त की कि विपत्तनाम के प्रश्न को युद्ध के बजाय बातों से हल किया जाय।

९-२-६८ : राष्ट्रपति जॉनसन ने अमरीका द्वारा खाद्यान्न सहायता देते रहने का बचन दिया है।

१०-२-६८ : अमरीकी वमान ने पोपवा की कि दार्शनिकों के निरुत्कर्षितां हवाई अड्डे पर हवाई हमले शुरू कर दिये गये है।

११-२-६८ : विपत्तनाम-युद्ध का शीघ्र अन्त हो इसके लिए रुचि चिन्तित है।

एक कट्टा भूमि भी नहीं...

'भूदान-यज्ञ' के सत्याग्रह विरोधापक को देखकर पाठक के मन में एक सवाल पैदा होगा। वह यह कि अगर सत्याग्रह केवल वही है जिसका इस अर्थ में प्रतिपादन किया गया है और जिसे सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने पिछले पन्द्रह-बोल्ह बरसों से साकार रूप देने की सतत कोशिश की है, तब उसका तेज प्रकट क्यों नहीं हुआ और इसका क्या कारण है कि न तो जनता की निगाह में सर्वोदयवाले गरीबों के हमदर्द माने गये और न अपनी स्वतन्त्र प्रकृति ही छुटो कर सके ? उलट, देश के अधिकांश भाग में वे सत्ता की सुरक्षित छाया में रहे और गांधी और विनोबा की आश में जनता से समरथ होने तक की परवाह नहीं की। अगर यही दर्रा चलता रहा तो कौन-सा 'सत्य' इस देश में प्रतिष्ठित होगा ?

मुझे याद आ रहा है पण्डित गोविन्द वल्लभ पन्त द्वारा सन् १९५० में कहा गया एक वाक्य—'स्वराज्य में सत्याग्रह के लिए गुन्दास नहीं है।' इस वाक्य से मुझे बहुत तकलीफ पहुँची है। लेकिन सोचता हूँ कि क्या, दूसरे मानों में ही रही, इसे हम लोगों ने अपना सो नहीं लिया है ? विनोबा की व्यक्तिगत सत्याग्रही हस्ती को छोड़कर घारे सर्वोदय आन्दोलन ने क्या एक कामगोमाइज की धारल नहीं ले ली है ? हजारों ग्रामदान पत्रों पर हम दस्तखत करा रहे है लेकिन स्वामित्व-निर्धन की बात तो जाने दीजिये भूमिहीन को कट्टामर जमीन भी नहीं मिल रही है। मुझे याद है कि प्रबन्ध समिति की भोडिंग में वा अन्य किसी मीटिंग में आपने प्राप्ति के साथ-साथ विवरण था, अगर 'आग्रह' घन्ट पर आपत्ति हो तो कहेगा कि 'अनुरोध' किया था। वह नहीं होता है तो 'सत्य' का दर्शन बच नहीं होगा और नैते 'सर्व' को मुक्ति मिलेगी ?

असंख्य लोगों की 'आग्रह' अक्षरता है

प्रायद इच्छाएँ कि वह दूसरे को मिटाने पर तुला है। लेकिन अगर युद्ध को मिटानेवाले आग्रह के लिए भी जगह आर नहीं देंगे तो डके का आकर्षण कैसे रोक सकेंगे ? लोक-विधायन जितना प्रचार से होता है उससे वही ज्यादा 'सुपरिग' (बन्ध-मूढ) से होता है जो मिटने की कला में निहित है।

ध्यान जाता है रोम के चर्च के इतिहास पर। ईश्वर-प्राप्ति और जीवन-मुक्ति के उसके भी बड़े-बड़े दावे रहे है। लेकिन रोम की सरकार से सदा उसने कामगोमाइज ही किया है। स्पष्ट है कि अगर सन् १९३२-४५ की लड़ाई में हिटलर और मुसोलिनी जीत गये होते तो चर्च ने फैसियस से भी कामगोमाइज कर लिया होता और मजे से चलता रहता। सवाल है कि अगर भारत में कोई तानाशाह गद्दी पर आ जाता तो क्या हम उसको बदस्तन न करते और खादी, ग्रामोद्योग आदि प्रवृत्तियों को उससे सहायता लेते हुए न चलाते रहते ? कामगोमाइज के इस तत्व ने हमारे घारे आन्दोलन को एक अजीब-सा रंग दे दिया है। जिसकी वजह से जन-जीवन पर हमारी प्रकट नहीं आ रही है। मेरी कामना यही है कि कम-से-कम बिहारदान पर वह रंग न चढ़े और अद्विष्टक मान्ति द्वारा हम नये मूल्यों को दाग-बेल डाल सकें।

—सुरेश राम

आवश्यकता

पचास प्रवेशितोत्तरी १८ वर्ष से ३० वर्ष के स्वरूप युवकों को, ग्राम सहायक कार्य के आगामी सत्र के लिए आवश्यकता है। छात्री, ग्रामोद्योग, सर्वोदय, ग्रामदानी गाँवों के उम्मीदवारों तथा महिलाओं को प्राथमिकता दी जायगी। प्रविशणापरियों को मासिक छात्रवृत्ति ५० रुपया मिलेगी। प्रविधायन की अवधि पान सहायक के लिए एक वर्ष, तथा क्षेत्रीय सपटन हेतु दो वर्ष। निम्नलिखित पत्रे पर २५ फरवरी '६८ तक योग्यता के अतिप्रमाणित प्रमाण पत्र सहित आवेदन पत्र पहुँच जाना चाहिए। प्राचार्य बिहार खादी ग्रामोद्योग विद्यालय (खादी) सर्वोदय आधन, पो-० राणीपत-० नूजिया

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १६ फरवरी, '६८

मध्यप्रदेश

अर्द्धवार्षिक कार्य-विवरण

(१ जुलाई से ३० दिसम्बर '६७)

सन् १९६७ का उत्तरार्द्ध मध्यप्रदेश में सर्वोदय आन्दोलन की दृष्टि से महत्वपूर्ण रहा। यद्यपि ग्रामदान-रूपान में अपेक्षित सफलता प्राप्त नहीं हुई, तथापि प्रखण्डदान, तहसीलदान, इन्दौर जिलादान-अभियान, महिला लोचनाना, ग्रामदानमूलक राहत-कार्य तथा प्रशिक्षण आदि के कारण आन्दोलन में गहराई और व्यापकता, दोनों ही आयी है।

ग्रामदान : प्रखण्डदान, तहसीलदान और जिलादान के विचार ने सर्वोदय आन्दोलन में गुणात्मक परिवर्तन किया है। इनके एक ओर कार्यकर्ताओं की दृष्टि व्यापक बनो है, तो दूसरी ओर जनसहयोग और जन-आन्दोलन की सम्भावनाएँ बढ़ गयी हैं। सर्वोदय मण्डल के निर्णयानुसार गत छ' माहों में टोकमगड, सरगुजा तथा इंदौर में सामूहिक शक्ति से अभियान चलाये गये। रतलाम, रायपुर तथा सीधी में स्थानीय मित्रों तथा छादी-सत्या के कार्यकर्ताओं ने अभियानों का सञ्चालन किया। टोमगड का दूसरा प्रखण्ड "बलदेवगड" प्रखण्डदान हो जाने से टीकमगड का तहसीलदान हो गया है। सरगुजा में यद्यपि अज्ञान-राहत-कार्य चल रहा था, लेकिन शक्तियों ने ग्रामदान के साथ राहत-कार्य को जोड़ा, जिसके फलस्वरूप रामचन्द्रपुर प्रखण्डदान भी प्राप्त हुआ।

इन्दौर जिले में विशेष शक्ति लगाकर जिलादान करने का प्रयास किया गया। प्रदेश के ५० कार्यकर्ता तीन माह तक सतत यहाँ लगे रहे। १५-२० गाँवों के क्षेत्र में केन्द्र स्थापित किये गये। व्यापक पैमाने पर सम्पर्क किया गया। पढ्यात्राएँ हुईं, जिसके फलस्वरूप मूह तहसील में २०, देवालयपुर तहसील में २४, गडबिर तहसील में १० तथा

इन्दौर तहसील में १३, इस प्रकार कुल ६७ ग्रामदान हुए। इस प्रकार अब इन्दौर जिले के ६४३ गाँवों में से २२७ गाँव ग्रामदान में आ गये हैं।

इस प्रकार प्रदेश में गत छ. माहों में प्राप्त जातकारी के अनुसार—टीकमगड में २१, सरगुजा में १९, इन्दौर में ६८, सीधी में ५, रायपुर में ४ तथा रतलाम में १ ग्रामदान हुए। बलदेवगड (जिला-टीकमगड) तथा रामचन्द्रपुर (जिला-सरगुजा) के प्रखण्डदान और टोकमगड का एक तहसीलदान घोषित हुआ।

अब प्रदेश में प्राप्त ग्रामदानों की संख्या २६३१ हो गयी है, जिसमें ६ प्रखण्डदान और १ तहसीलदान शामिल है।

प्रदेश में ग्रामदान : ३० दिसम्बर, '६७ तक

जिला	ग्रामदान जिला	ग्रामदान
पश्चिम निमाड	७०० छतरपुर	१४
सरगुजा	५२३ बैतूल	१४
टीकमगड	३५९ सतना	१२
इन्दौर	२२७ रोवा	१०
मुरैना	२०९ रायपुर	१४
जबलपुर	१६४ दुर्ग	१०
खिन्नी	६४ सीधी	१३
रतलाम	६२ बिलासपुर	७
मन्डलीर	५१ छिदवाडा	७
मण्डला	३५ होमगाबाद	७
घार	२७ देवास	३
वालापाट	२७ दमोह	३
नर्मन्हेरुर	१४ गुना	१
सागर	२४	

कुल २६३१

ग्रामामिमुख खादी : प्रदेश में लगभग ५० छादी-सत्याएँ हैं। लेकिन प्रदेश-स्तर की कोई बड़ी एक भी सत्या नहीं है। मध्य-भारत छादी संघ, खालियर तथा ग्राम-सेवा-समिति, रायपुर में दो बड़ी सत्याएँ हैं। गत छ. माहों में बढ़ते हुए मृत और गादी के स्टाक, पट्टी हुईं बिजने, बज्जी हुईं नरिनों और नुनकरों की बेकारी तथा पट्टी हुईं कार्य-क्षमता, समन्वयक कमजोरियों तथा

छादी पर्व व आयोग द्वारा समय पर सहायता न मिलने के कारण बनेक सत्याएँ परिस्थितियों की स्थिति में पहुँच गयी हैं। इस परिस्थिति का पूर्वाभास तो था और इसी स्थिति का सामना करने के लिए "समय विकास योजना" भी ग्रामदानों गाँवों को ध्यान में रखकर लागू की गयी थी। प्रदेश सर्वोदय मण्डल की विचारालय पर २६ प्रखण्डों में इसे शुद्ध किया गया।

शांति-सेना : गत माहों में बड़े तो सारे देश में अशांति और उपद्रव बढ़े हैं, लेकिन मध्यप्रदेश में साम्प्रदायिक उपद्रव, मजदूर तथा विद्यार्थी-असन्तोष, हिन्दी-आन्दोलन आदि का बिकसित हुआ। रतलाम के साम्प्रदायिक दलों में स्थानीय शांति-सैनिकों ने शांति-रखा और शांति-स्थापना का बहुमूल्य कार्य किया। इन्दौर में विचारियों के दो दलों अथवा दो बालेजों के ध्यान में सपनों की स्थिति में व्यथित रूप से शांति-स्थापना का प्रयास किया गया। नगर में गणमान्य सज्जनों ने बीच में पड़कर स्थिति सम्भालने का सराहनीय प्रयास किया।

श्री नन्दकुमारजी दानी के गुप्रयाशों से रायपुर जिले के एक जनपद में शिक्षकों का तथा गांधी-स्मारक-निधि के तत्वावधान में माचला (इन्दौर) में कार्यकर्ताओं के "शांति-सेना-विचार" का सफल आयोजन किया गया।

चम्बल घाटी शांति समिति ने वारमसमर्णकारी बागी भाद्यों की मुक्ति का प्रयास किया तथा भीमती आशादेवी शर्व-नायकम् के नेतृत्व में एक प्रतिनिधि मण्डल सविद की नेता राजमाता श्रीमती विजयाराजे विनियया व भी भागल में मिला। समिति चम्बल घाटी क्षेत्र में छादी ग्रामाचार्य की प्रवृत्तियों भी चला रही है। उत्तर प्रदेश के ग्रामदान-अभियान में कार्यकर्ता नेहरू सहयोग दे रही है, साहित्य प्रचार करती है और समय-समय पर शांति-विचारों का आयोजन करती है।

साहित्य-प्रचार : सर्व श्रेष्ठ रूप में विशेष प्रयास से तथा प्रदेश सर्वोदय मण्डल की साहित्य-

भूदान-पत्र : दुन्वार, १६ फरवरी, '६८

एकार समिति के सभोत्रक श्री लखनगरमण्य
 एका के छत्रोष से सिकनी, मालाभाट,
 दिरवाग, बबनपुर, साधर, भोगल, मण्ड्या,
 बिलासपुर, पावरा, नरसिंहपुर, रत्नाग,
 भंकेरा, धार, चम्बल, रायपुर, होरागवाड
 आदि जिलो की शिक्षण संस्थाओं, मुद्रापालको
 तथा सांस्कृतिक विभागों में विरोध प्रदर्शित किया
 गया। ३६के अलावा कुटकर साहित्य-विन्दी
 भी की गयी। श्री लखनगरमण्य तमों द्वारा
 प्रेषित ज्ञानघरों के अग्रगण्य १ जनवरी के
 ३० विद्युत् १७ तक साहित्य विन्दी नर
 विवरण इस प्रकार है

सर्व-ज्ञान-मण्डल-प्रकाशन :	१९,३३२-१५
सर्व-ज्ञान-प्रकाशन :	३,११५-०२
साहित्य-मण्डल-प्रकाशन :	३,५१२-२२
परदास-प्रकाशन :	६१-६८

कुल रु० २३,०४२-०७

इसके अलावा "सुराम-सत्र" के ६६,
 "गति की बात" के ८८, "श्रीगोपाल-विचार"
 के ६१, और "महादेवसर्ग" की ४४२ की
 के २२ साहित्य-विन्दी है।

श्री अरुणराज कर्मवीर श्री मुद्रापालपुर
 सर्वोद्योग साहित्य मण्डल, इन्दौर (१)ने इच्छा
 की किसे सहित। ४४४ रु० रुपये २०,२५५-
 ०१ की साहित्य-विन्दी हुई। स्वातिर तथा
 रायपुर के स्थले सर्वोद्योग साहित्य इच्छा से
 साहित्य-विन्दी के आर्षिक उपलब्ध नहीं हो
 सके। प्रेषण में छात्रो-भगवतों की साहित्य-
 विन्दी के लिए मोहाहित किया गया, जिसका
 अन्त्य परिणाम आया है।

श्रीगोपाल-विचार के धर्मपाल-संविधान के
 निम्न से प्रकार के पत्रों छापने हैं तथा गणनी-
 धर्मपालों के अलावा २५००० कायदेन उप-
 समिति द्वारा भेजे गये "प्रथमदान, साधु तथा
 साहित्य-विन्दी" के दोपत्र हैं। विवरण भी
 दिया गया।

श्रीगोपाल-विचार : मध्यप्रदेश का बहु-कोषाल
 है कि मध्य प्रदेशियों की उन्नति के लिए में
 महिला-मण्डल, मानवसक अलावा तथा
 लोकसेवा के उद्देश्य से १२ बनीं महिला-
 संस्थाओं का अग्रगण्य २२ अक्टूबर १९७

की कस्तूरबाबा (इन्दौर) के ही किया
 गया। दूसरे लिए यह भी बात है
 कि मण्डल की अस्मा मुदी निर्मलबहुत वेद
 इस ठोसों की एक अस्मा है। जो पर
 लोचनीया का अनुकूल प्रकाश है तथा
 श्रीगोपाल-विचारों में अलावा का वरपर ही
 रहा है। इस यात्रा के अन्ततः अग्र-
 गण्य में महिला-मण्डल का प्रारम्भ हो रहा
 है। जिसे में लोकसेवा का उद्देश्य २०२०
 गणनी स्थापक विधि, कस्तूरबा इच्छा तथा
 प्रेषण सर्वोद्योग मण्डल के अनुकूल प्रकाश से ही
 रहा है।

अज्ञान-राहुत : इस वर्ष प्रदेश के
 महाप्रदेश लोचन छत्रोद्योग तथा साधुओं
 राहुत-कार्य का संचालित प्रकाश किया गया।
 जेहा कि सम्पादन की, वर्षों में अज्ञान तथा
 साधुओं के अन्तर्गत में साधुओं की स्थिति
 काफ़ी बढ़ती हो गयी। अज्ञान में एक
 संचालित में साधुओं का राहुत-कार्य के
 अन्तर्गत साधुओं का संचालित किया गया।
 श्रीगोपाल-विचार संचालित की गयी
 तथा साधुओं की स्थिति में बढ़ती। अज्ञान
 से प्राप्त साधुओं, अज्ञान, अज्ञान तथा अज्ञान
 रूप में साधुओं की भी गयी, जिसकी
 अज्ञान तथा अज्ञान साधुओं ने ही
 किया। इसी प्रकार साधुओं की स्थिति
 अज्ञान-कार्य के अन्तर्गत में साधुओं की स्थिति
 प्रकाश से साधुओं का प्रकाशालो अज्ञान
 किया जा रहा।

राहुत-कार्य में विहार रिच्छा कमेटी,
 अज्ञान सर्वोद्योग मण्डल, गोविन्दराज सेवार्थिका
 द्रष्ट तथा अज्ञान संस्थाओं व महाप्रदेशों में
 उपलब्ध साधुओं का संचालित की। प्रदेश गणनी-
 विधि, सर्वोद्योग संचालित छत्रोद्योग, रायपुर,
 सर्वोद्योग आधुनिक, अज्ञान (साधुओं) ने
 विन्दी रूप से अज्ञान अज्ञान किया। यह
 अज्ञान-विन्दी है कि साधुओं में विहार रिच्छा
 कमेटी ने २५,००० रु० तथा १५,००० विच्छा
 साधुओं अज्ञान मध्यप्रदेश में राहुत-कार्य के
 लिए और भेजी है।

मण्डल की और से स्थानीय सर्वोद्योग
 अज्ञानों द्वारा साधुओं, राहुत, अज्ञानों तथा

छत्रोद्योग में पञ्चांगमण्डल प्रविष्टि केन्द्र लखनो
 या रहे हैं, जिसका कुल मिलाकर १२ विन्दी
 के पञ्चांगमण्डल और पञ्चांगमण्डलों के अन्तर्गत
 आता है। इन विद्युत् ४० प्रकाशन मुद्रापाल
 के लिए अज्ञान-विचारों में

मुद्रापाल-विचार : प्रदेश साधुओं की
 ओर से मध्यप्रदेश मुद्रापाल वरपर, विच्छा-
 प्रदेश मुद्रापाल वरपर बोर्ड तथा मध्यप्रदेश मुद्रापाल
 वरपर (साधुओं का साधुओं) के अन्तर्गत
 अज्ञानों की स्थिति साधुओं की जा चुकी है।
 प्रातः साधुओं के अज्ञान वरपर साधुओं में
 २० गा० मुद्रापाल वरपर द्वारा ३२७०
 एक मुद्रापाल ६६२ मुद्रापालों में विचारित किया
 जा चुका है। विचारित साधुओं में वरपर की १७
 एक का तथा मुद्रापाल भी मिला। इसके
 अन्तर्गत वरपर द्वारा ३० २१० २० वरपर
 साहित्य-विन्दी भी हुई। इसी प्रकार साधुओं
 साधुओं का साधुओं द्वारा २२३७० एक मुद्रापाल
 २०६ मुद्रापालों पर साधुओं में विचारित किया
 गया। विचारित साधुओं मण्डल की ६२ ६३
 एक का तथा मुद्रापाल भी मिला। अज्ञान
 मुद्रापाल बोर्ड से बोर्ड अज्ञानों उपलब्ध नहीं
 हो गयी।

संस्था-समन्वय : सर्वोद्योग मण्डल की
 साधुओं समन्वय की ही धारिका है। कार्यवाहियों
 में तथा संस्थाओं में समन्वय की आन
 अज्ञानों का अज्ञान है। यह साधुओं में
 समन्वय-समन्वय पर बहु-प्रकाश अज्ञान किया गया
 कि संस्थाओं तथा साधुओं की ऐसे अज्ञान
 उपलब्ध कराये जायें, जिससे वे एक-दूसरे
 के अज्ञान निच्छा अज्ञानों तथा एक-दूसरे के
 अज्ञानों। इस अज्ञान से प्रदेश में "मध्यप्रदेश
 सेवा संघ" को अज्ञानों का विच्छा अज्ञान है।
 अज्ञान इस अज्ञान का सर्वोद्योग हो गया है तथा
 इसके अलावा कार्यवाह्य कर दिया है।

संस्था : प्रदेश के अज्ञान १८ विन्दी में
 ही सर्वोद्योग मण्डल है। अज्ञान-समन्वय कार्य
 करने की अज्ञान से सर्वोद्योग मण्डल को
 अज्ञान प्रकाशालो तथा साधुओं अज्ञानों
 की साधुओं अज्ञान है।

—मोहन कुमार त्रिपाठी, अज्ञान
 मध्यप्रदेश अज्ञान मण्डल

शान्ति दिवस

३० जनवरी गांधीजी के पुण्य तिथि के अवसर पर देश के विभिन्न स्थानों पर बापू को श्रद्धाजलि-अर्पण के लिए तथा उनकी याद में वनेक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। जिन मित्रों ने अपने यहाँ के कार्यक्रमों की सूचना दी उन स्थानों का नाम तथा सम्पन्न हुए कार्यों का उल्लेख सहायक रूप में प्रस्तुत है :

उत्तर प्रदेश में : टिहरी, उत्तरकाशी, आगरा, मथुरा, सुपदावादा, बरेली और वाराणसी; मध्यप्रदेश में : छतपुर, इंदौर, अम्बिकापुर, रतलाम; पंजाब में : अमृतसर; विहार में : मुजफ्फरपुर, हाहाहा (सुपेर); लाहौर में : विश्ववादा; राजस्थान में : मकराना, बीसवाड़ा; असम में : कुमारी-कटा तथा हरियाणा में : हिसार आदि स्थानों में जिला सर्वोदय मंडलों, तथा अन्य रचनात्मक संस्थाओं द्वारा प्रभावशाली, शान्ति-जुलूस, साप्ताहिक प्रार्थना, साप्ताहिक सुवक्त्र, शान्ति-मिठों की धिकरी आदि का आयोजन हुआ। बीसवाड़ा और इंदौर में सर्वोदय-वर्ग भर पदमाया का भी कार्यक्रम रहा। इंदौर में गांधी-चित्र की प्रदर्शनी लगायी गयी। भद्राळ (सुपेर) में सर्वोदयीय सभा हुई जिसमें प्रसन्नदान के कार्यक्रम में शामिल होने का आश्वासन उपस्थित लोगों ने दिया।

फौजी कम्बल : बीस रुपये में

वे फौजी कम्बल खास तौर से गर्म व मजबूत बनाये गये हैं। जिन्हें हम जवानों के लिए प्रतिरक्षा-विभाग को ३७ रु० में दे रहे थे। मगर इसकी सीमा निकास है, ताकि कारीगरों को काम दे सकें, वे कम्बल केवल २० रु० में बेचे जा रहे हैं। अतिरिक्त इस अवसर का लाभ उठाएँ।

एक कम्बल का वजन ४ पौंड से ५ पौंड तक, लम्बाई ९० इंच तथा चौड़ाई ६० इंच है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें - मन्वी, खादी सेवा सच, काजी कोटी, जाल पर (पंजाब)। फोन नं० २३३३ प्रथम कार्यालय, जालंधर।

कमीशन एजेंटों की आवश्यकता

सर्व सेवा सच की हिन्दी, अंग्रेजी पत्र-पत्रिकाओं के लिए कमीशन पर विज्ञापन प्राप्त करने के लिए एजेंटों की आवश्यकता है।

इस काम में दिलचस्पी रखनेवाले व्यक्ति या एजेंटियाँ सम्पर्क स्थापित करें—

सञ्चालक

सर्व सेवा सच प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी
फोन ४२८५

सेवापुरी में :

चर्मोद्योग प्रशिक्षण

श्रीगांधी आश्रम सेवापुरी, वाराणसी में खादी-ग्रामोद्योग आयोग की ओर से चर्मोद्योग का एक वर्ष का प्रशिक्षण मार्च '६८ में शुरू होवेवाला है। प्रार्थना-पत्र २१ फरवरी '६८ तक व्यवस्थापक श्रीगांधी आश्रम, सेवापुरी, वाराणसी के पास आ जाना चाहिए। प्रतिभागियों को प्रशिक्षण-काल में २० रु० मासिक छात्रवृत्ति दी जायेगी। प्रार्थना-पत्र में नाम व पूरा पता, ज्ञाति और अनुभव यदि कोई हो तो प्रमाणपत्रों की सूची प्रतिक्रिया के साथ भेजना चाहिए। प्रार्थी को प्रत्यक्ष चर्चा के लिए कोई मार्ग व्यव नहीं दिया जायेगा। योग्यता हाईस्कूल अथवा उसके समकक्ष और आयु २० से ३० वर्ष होनी चाहिए। हरिजन तथा उसका वे आनेवाले उम्मीदवारों को प्राथमिकता दी जायेगी।

—डुनान प्रसाद वर्मा
ध्यवस्थापक

खादी-ग्रामोद्योग संगठक एवं

ग्राम-सहायक प्रशिक्षण

बतिल भारतीय खादी-ग्रामोद्योग आयोग द्वारा सञ्चालित, श्रीगांधी आश्रम खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय (खादी) धीगांधी आश्रम सेवापुरी का ११ वाँ सत्र आगामी १५ मार्च '६८ से शुरू होगा। आवेदन की तैयारी योग्यता हाईस्कूल, उत्तर बुनियादी अथवा उसके समकक्ष तथा उम्र १८ से २५ वर्ष तक की होनी चाहिए। नतीज एव चुनाव का ज्ञान रखनेवालों को प्राथमिकता दी जायेगी। खादी-ग्रामोद्योग में र्थच रखनेवाले ही आवेदन पत्र दें। शिक्षण-अवधि दो वर्ष की होगी। शिक्षण-काल में ५० रु० मासिक छात्रवृत्ति मिलेगी। आवेदन-पत्र सञ्चालक खादी-ग्रामोद्योग विद्यालय (खादी), श्रीगांधी आश्रम, सेवापुरी, वाराणसी के पते से २१ फरवरी '६८ तक भेजें। —सञ्चालक

श्रद्धाञ्जलि

● भारतीय जनसच के अध्यक्ष पं० दीन-दयाल उपाध्याय के अर्धाधिक निधन पर हम गहरे शोक प्रकट करते हैं। हम गहरे दुःख के साथ भारतीय राजनीति के क्षेत्र में (अथवा उनकी निर्भर हृष्या के पीछे कोई राजनीतिक कुचक्र है तो) शुरू हुए इस क्षत्रलाक और कुत्सित दौर के प्रति चिन्ता व्यक्त करते हैं।

इसके दिवगत आत्मा को धार्मिक प्रयान करे।

● इण्डियन-निवासी भी हलेवी ५ जनवरी '६८ को अपने बर्षों में फल लेने से सच्य छोड़ो से गिर पड़े और उनका निधन हो गया। भी हलेवी सन् १९६२ के मध्य से १९६३ के अन्त तक सेवाग्राम में वृषि-कार्य में प्रयोग किया। उन्हें इस बात की चिन्ता थी कि भारत की वृषि में उत्पादन बँने बढ़े।

हम उनके प्रति सर्वोदय परिवार और पूरे भारत की ओर से श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं। —सम्पादक

महात्मान-अभियान

नया दौर : नयी भूमिका

विनोबा का मुगै-अवेश

शांति-गीत की समवेत ध्वनि से आकाश प्रतिध्वनित हो उठा है। लगभग दो हजार युवा छात्र-छात्राओं को दीक्षितवती लखनगर रहे हैं, जोश के साथ होश के लिए।

आर० शो० ऐण्ड शी० जे० कालेज के प्राण में विशेष रौनक है, चहल-गहल है। दो हजार जोड़ी निगाहें विद्यालय-द्वार की ओर उल्लुकता से तिहार रही हैं। महा-विद्यालय के मुल्ल ६५ प्राचार्य सहित प्राध्या-पक दो बतारों में खड़े होकर बैसरी से इंतजार कर रहे हैं। व्यवस्था सैलानेवाले छात्र व्यस्त है।

“...भाई साहब बैठ जाइये...बैठो न ऐ महापयनी...ओ पैठवाले...सब लोग बैठ जायें, कालेज की इज्जत का प्रश्न है।” मै चुनता हूँ, घोचता हूँ, ‘जो छात्र कालेज-प्रतिष्ठा के प्रति इतने संवेदनशील हैं कि मैदान में कहीं कोई खड़ा न रहे, सभी अनुशासित ढंग से बैठ जायें, उन्हीं छात्रों में उपद्रव, पपराय और ध्यामजनी तक पहुँच जाने का उन्माद कहाँ से आ जाता है?’ ‘ओर तब दीक्षितवती के द्वारा गवाये जा रहे शांति-गीतों की महत्ता और श्रेष्ठ के साथ होइ संभाले रखने के निमित्त किसे गये उद्घोषों के प्रभाव की ओर मेरा ध्यान जाता है।

लेकिन ‘सत विनोबा : जिन्दावाद’ के उद्घोष की गगन-शेदी गूँज मेरा ध्यान खिंच करती है। ओर, ये कैमरा संभालते हुए गेट की ओर भागता हूँ। ‘...विनोबा आ गये। एक लहर सी दौड़ जाती है। फ्लग-इन्वीजन-वाले आन्दोलन के इस अविनव दौर को ध्यामन्त्र कर रहे हैं।

विनोबा मंच पर आते हैं। महाविद्यालय के प्राचार्य स्वागत करते हुए कहते हैं, ‘ज्ञान-भंगा की निर्मल धारा हमारे ध्यान में प्रवट हुई है, हमें इसमें जवाहन के

सुखसर प्राप्त होंगे...यह हमारा सबका सोभाग्य।’

मुगैर जिला सर्वोदय मण्डल के सयोजक जिवा की ओर से बेरिया बरियापुर का प्रखण्डदान समर्पित करते हैं। ‘...बेरिया बरियापुर—जिले का सबसे उद्बुद... सबसे समृद्ध प्रखण्ड !...ओर अब विनोबा बहते हैं, ‘डुहरी छुटो हो रही है। प्रखण्डदान की घोषणा नकद धर्म हुआ। ...आपके बीच १० दिन रहना है, हृदय के बन्ध दरवाजे खुलेंगे, हृदय ते हृदय जुड़ेंगे !...ओर अब सुवमोन व्याख्यान होगा...जिसमें सारो सकाएँ छिन्न होगी हैं !—विनोबा का जगत !’ मुदिफल से दो-दोन मिलट...मुझे याद आती है दो-दोई साल पहले रानीपतरा की बात, ‘अब हम प्रथम में प्रवेश कर रहे हैं, लेकिन धामदानाभिमुख रहेंगे।’ ओर वाज साफ खिाई दे रहा है कि विनोबा का

काल की पुकार

“इस वक्त पुटकर ओर छोटी-छोटी बातों को सोचने का वकत नहीं है, पुटकर कामों में हमें समय दरबार नहीं करना है। बस केवल एक बात ‘बिहारदान’। डिप्युट सचालों के प्रति उपेक्षा की सीमा तक उदासीन होकर खुद की सुखा-मुविधा और सुखा को जितना छोड़कर हमें इस अन्तिम लड़ाई में प्राणपण से जुटना है।” बिहार-भूदान-यज्ञ वमेटो के बन्धन थी भीरी बाबू ने ६ फरवरी ६८ को दोसवारा से गया जाते समय हमारे प्रतिनिधि के सचालों का जबाब देते हुए कहा।

“विनोबा श्रष्टा हैं, बहून दूर तक देख पाना उनके लिए सख्त है। हमारी निगाहें उतरी दूर तक नहीं पहुँच पायीं। ११ सितम्बर ६५ को जब उन्होंने बिहारदान की बात कही,

सूख-पवेश जन-आन्दोलन को व्यापक और विराट भूमिका प्रस्तुत कर रहा है !

× × ×

विनोबा-निवास की व्यवस्था का निरीक्षण करते हुए रामनारायण बाबू मेरे सचालों का उत्तर देते हैं, ‘मुगैर जिलादान के निकटवर्त होता जा रहा है। उम्मीद है कि विनोबा के रहते-रहते (२६ फरवरी ६८ तक) बेगू-सराय अनुण्डल पूरा हो जायगा। सर्गिया ही ही बुझा है। इस तरह उत्तर मुंगैर सपूर्ण हो जायगा। दक्षिण मुगैर के सड़गपुर, धरहरा और जमालपुर में अशियान चालू है। ...श्रीमी १३, १४ फरवरी को यहाँ जिले के नाम को ओर गति देने के लिए अभियान में १०-१५ वा बधिक दिन का समय देनेवाले २०० मिने तथा कार्यकर्ताओं का एक दिवस होने जा रहा है। इसने काम की गति तीव्रतर होगी।’ भोजन करते समय शमस्वरदाय्य सप के मनी रमाबात बाबू ने बातचीत होती है। बहते हैं, बिहार की राजनीतिक अस्थिरता आंदोलन के प्रति धारणांण बना रही है। सिफं हमको गांव-गांव पहुँचना भर है। काम पूरा होने में कोई तयज नहीं रहा।’ मुगैर दि० १२-२-६८

—राही

तो हमें बसम्भव बलना छी, लेकिन अब उसरी हाइ सम्भावना हमें दिखाई दे रही है। ...ओर समय है, ओ हमें पुकार-पुकार कर इव ‘वेस्ट ऐण्ड साउथ फ्रण्ट’ में जुट जाने के लिए आगाह कर रहा है, बन्कि बाध्य कर रहा है ऐसा कहना भी उचित ही होगा।”

“बसा बिहारदान के गदम में केवल विकास की ही गती, पूरे सामाजिक और राजनीतिक परिवर्तन की बात घोचना भी लाजिमी नहीं हो गया है ? ...बसा बिहार-दान से देस के सचिधान के भी प्रभावित होने की सम्भावना है ?” गया पहुँचते-पहुँचते हमारे प्रतिनिधि के इस शायरी सचाल का जबाब देते हुए श्री गोरी बाबू ने टङ्गभार्थक कहा, ‘निःशुद्ध ! बिहार-दान के अनिधाय परिणाम के रः में ये दोनो बातें प्रवट होंगी बाहिए...प्रवट होंगी !’

देरा :

१२-२-६८ : राष्ट्रपति डाक्टर जॉर्ज ह्युस के अभिभाषण के पूर्व सयुक्त सभानवारी, वस्तुनिष्ठ और कुछ निःश्रेणी सदस्यों ने वाक्-आउट किया ।

१३-२-६८ : श्री अटलबिहारी वाजपेयी जनसंघ के नये अध्यक्ष निर्वाचित हुए हैं ।

१४-२-६८ : भारत का मत है कि अमेरिका सामंति-वार्ता के लिए बिना शर्त उत्तरी वियतनाम पर दमकारी बन्द करे ।

१५-२-६८ : लक्ष्मीधराम स्टेवन पर साइन पार करनेवाले १७ यात्री दिल्ली से बलकृष्ण जायेवाली गाड़ी से कुचकर मर गये ।

१६-२-६८ : स्वराष्ट्रमन्त्री श्री चव्हाण ने कहा कि भूतपूर्व राजाओं के प्रिबीपर्स और उनके विधेयाधिकार समाप्त होंगे ।

१७-२-६८ : डा० कैलाशनाथ फाटजू को मृत्यु हो गयी ।

विदेश :

१२-२-६८ : रॉकिंग रेडियो के अनुसार चीन ने कम्बोडिया के सवाल पर वाकिस्वान का पूर्ण समर्थन किया है ।

१३-२-६८ : कनाडा के प्रधानमंत्री सेक्टर विवरणन ने कहा कि वियतनाम में परमाणु बमों का प्रयोग करना पागलपन होगा ।

१४-२-६८ : वेगान में थापलाकोन मित्रियों में १,५५,००० वारणाभी मर गये हैं ।

१५-२-६८ : दक्षिण वियतनाम की राजधानी सेगान में वस्तुनिष्ठों का कुछ और क्षेत्रों पर नियंत्रण हो गया है ।

१६-२-६८ : राष्ट्रपति तामिन् ने कहा है कि सयुक्त बरत गणराज्य, कल्पित तथा इसराइल अतिशुद्ध क्षेत्रों को सभयः युद्ध के बिना हल करना चाहता है ।

१७-२-६८ : अमरीकी प्रबन्ध के अनुसार दो सप्ताह की लड़ाई में ३७६६ वियतनामी नागरिक मारे गये और २०,५६६ घायल हुए ।

रंजकुट, १६ फरवरी : मिर्जापुर जिले की हुडो नहरील का म्योरपुर का प्रखण्डनाम पोषित हुआ । —देवसादीन मिश्र

मथुरा जिले में प्रामदान धामस्वराज्य-अभियान—सादाबाद तहसील में २० दवानिधि पटनायक के मार्गदर्शन में ३ से १० फरवरी तक प्रामदान-अभियान चला । ३-४ फरवरी को प्रामदान-अभियान में भाग लेनेवाले कार्यकर्ताओं का प्रतिक्षण-निर्वाह हुआ । इस दिवस में उत्तरप्रदेश के वितरिक्त पञ्जाब, हरियाणा, राजस्थान तथा मध्यप्रदेश के लगभग २५० कार्यकर्ताओं ने भाग लिया । ५ फरवरी को २०० कार्यकर्ताओं की ६६ टॉलियाँ तहसील के पूरे क्षेत्र में फैल गयी और ४०३ गांवों में प्रामदान-धामस्वराज्य का सन्देश पहुँचाया । ३३२ गांवों ने प्रामदान का शकल-रूप पर हस्ताक्षर किये । अभियान का समापन १० फरवरी को हुआ ।

धाना जिले में ७१ नये प्रामदान : महाराष्ट्र सर्वोदय मण्डल द्वारा प्रसारित जानकारी के अनुसार धाना जिलायत अभियान के अन्तर्गत हाल ही में ७१ नये प्रामदान मिले हैं ।

इंदौर, १४ फरवरी : मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल द्वारा प्रसारित जानकारी के अनुसार ३० जनवरी से १२ फरवरी तक सर्वोदय-पत्रवाडे के निमित्त महु तथा सावेर तहसील में कापोजित पदवाक्यों के फलत्वरूप ५ प्रामदान पोषित हुए । पदवाक्यों में सर्वोदय-नेतक श्री दीवरलाल मडहोई के नेतृत्व में गांधी-निधि के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया ।

अखिल भारत खादी-कार्यक्रमां सम्मेलन : बागामी ३ व ४ मार्च को खादी वापस, पानीपत (पंजाब) में अखिल भारत खादी-कार्यकर्ता सम्मेलन होने का रहा है । सम्मेलन में मुख्यतया खादी के स्वयं में सूरकार को गयी नीति तथा खादी के आगे के काम की दिशा पर रिवाज-विमर्श किया जायगा ।

प्रबन्ध समिति की बैठक : बागामी २५-२६ फरवरी को पानीपत में सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध-समिति की एक आवश्यक बैठक होने का रही है ।

म्यालिपर में प्रांतीय सर्वोदय-सम्मेलन : बागामी ६-१० मार्च को म्यालिपर (मध्यप्रदेश) में प्रांतीय सर्वोदय-सम्मेलन होनेवाला है । सम्मेलन की तैयारियाँ पूरे जोरजोर के साथ की जा रही हैं । मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल की ओर से सम्मेलन की व्यवस्था श्री जिन्मदारी स्थानीय जिला सर्वोदय मण्डल को सौंपी गयी है । सम्मेलन के लिए मध्यप्रदेश खादी सप के खादी-मदन का प्राण बुना गया है । सम्मेलन में लगभग दो को प्रतिनिधियों के भाग लेने की आशा है । उक्त सम्मेलन की अध्यक्षता सुप्रसिद्ध सर्वोदय विचारक प्रो० रामप्रदीप करेंगे ।

इन्दौर : १ फरवरी : देश में श्नी-राजि जागण के उद्देश्य में १२ वर्ष तक भारत यात्रा का मकरुण लेऊर विनाशनी के तत्वावधान में निकली महिटा लोका-यात्रा दल ने इन्दौर जिले की तीन माह की परक्षा नग २६ जनवरी '६८, लणतक-दिवस पर पहुँची थी । ११ दिन की अवधि में लोकायात्री दल ने जिले की चारो तहसीलों में ३०७ मील की पदयात्रा की । ७६ गाँवों में पडाव हुए । ६२ पचायत क्षेत्रों में यात्रा हुई । ३० शिला-समाओं तथा १२ आम-सभाओं को सम्बोधित किया । इस प्रकार जिले की लगभग साठ हजार जनता तक अपने मिशन का सन्देश पहुँचाया । लोकायात्री जिले के ग्रामीण अंचल में अनुरूप वातावरण बना है ।

विनोबाजी का कार्यक्रम २२ फरवरी तक—मुनेर, २३ फरवरी से ३ मार्च—वेणुपुराय, ३ मार्च—लक्ष्मीपुराय (मुनेर), ४ मार्च—भारीधाम (मुनेर), ५ मार्च—तातापुर (मुनेर), ६ और ७ मार्च तक—भागलपुर, ८ और ९ मार्च—शार्दवर्ष (मयाल परतना), १० मार्च—महिहारो (श्रुषिवा), ११ मार्च—रामोतठ (श्रुषिवा) ।

भूदान-यत्रा : मुजबार, २३ फरवरी, '६८

भूदान-यज्ञ

एकमात्र धर्मकारी ही भूदान के लिए योग्य हैं।

अभी और क्या-क्या ?

एक दल देना, दल का आकार देना, दल बनल देना, सघीर बनाने देनी। अभी और क्या-क्या देवना बाकी है ? गाँवों की राजनीति देना हो, मोलरी की देवना बाकी है। ऐतिहासिक वयो है, मुद्राकाज से गाँवों से हो चुकी है।

सांस्कृतिकता हटिया दिखाने रही है। स्वतंत्रता के लिए जो आन्दोलनारी देना मिलिये तो मोलरी का सहायक जिया, किन्तु उसकी विपत्तिका का अनुभव देना हो तो क्या और बहुत रास्ता दूना गया। सांस्कृतिकता के हिसाब कभी नहीं छोड़ी। गाँवोंको का कहिये की काली बाल सौत हिसाबका स विवरण नटना परा था—एक, सिन्धी मन्ना की हिसा, दो, सांस्कृतिकता की हिसा मोन स्वतंत्रता के समर्थन की हिसा। एक विधिय हिसा का मुद्राबिला करने एक गाँवोंकी की करना बडा। स्वतंत्रता की लडाई पर बहुत काशी दूर तक कहिये का रंग नडा गयो। विरसो सला भी कुछ कम मुद्राकाज नहीं हुई। ऐतिहासिक सांस्कृतिकता के आना रंग नहीं छोडा। उनसे उनसे गाँवोंकी को बाला सिधार बना जिया। ऐतिहासिक एक बहुत बरी मान बहुत ही राष्ट्रीय जीवन के एक प्रकृत विचारका ऐसी बहुत गरी सिन्धी कहिये की आनिकापक पकि का पककाता, और उनमें राष्ट्र की समर्थनका के समर्थन की समर्थन देलो। कहिये मैं भले ही कहिये की भडान न रही हा, ऐतिहासिक हिसा म उसका सिधार नहीं था, इन्हींपर बहुत हूँ एकका और सांस्कृतिक की देन द गयो, जो एक एक भी हमारी समन बनी चुकी है।

रंग-रंग के बार बहुत काया की कि राष्ट्रीय जीवन की सौधी पारंगों मोलरीका की बर्दासका में बंधन रहती। ऐतिहासिक बहुत नहीं हुआ। देन के जीवन पर राजनीति हानी हुई। लेखन दलो में बँट गया। राजनीति सला की भूय से पालन हौकर बँटिका बन गयी। मेरा और स्वतंत्रता की सारी बँटिका देन-देनने हुआ हो गयीं। बडा ऐतिहासिक, लनाक, प्रविष्टिका, मन्ना की ही बर्दास बन गयी। बने-बने के मुँह से सही भाषा निकलने लगते। लकने लगा बने बँटिकाका और सहायक हनने कभी आना हो न हो। इधरा हीका बर्दास बहुत बिकला कि जो मानने है बहुत 'दुयम' है, और जो लगे है बरी 'कन' है। 'दुयम' की समर्थनके और उने दोहन बनाने का काम बोन करे ? कायल बहुत लया कि उने काय बिना जाय—यस या बने से लारीकर, निष्कार, इतरकर, बन में लारकर। बिना कायल है बरता में उतर बरता।

उम दिन पर आनक भी दोहनकाकी की मुद्रा पर देवियो पर सहायक आना हो सिन्धी लोप बँटे मुद्रा रहे से सब एक साथ बन गयो—राजनीति को न करे। बर्दास बहुत सहायक नहीं हुआ है कि

और दोहनकाकी की हया निम्ने की, बयो की, किन्तु भी मुद्राके ही लोपो ने उम राजनीति के साथ जोड लिया। ययो ? इतिहास कि उम एक राजनीति जिस तरह लोकरकाज के साथ रोडकाज कर रही है उसे देखन हुए बहुत मान लेना मुश्किल नहीं है कि वह हया को भी आना माय माय बन लेयो। परम ने बनाया, सांस्कृतिकता ने बनाया, माया ने बनाया, भूय ने बनाया, ता राजनीति ही बयो गेयो रहे ? जो राजनीति ऊँची वेगगाए छोड चुकी हो, वह बयो-भुवी मन्नाका भी दोर दे और नवन नाम ताचने गयो, या उनमें कायबर्प बना है ? सला का सदा पून का सहायक पगद रहता है।

दुयम ही रही है कि एक दल बहुत दल का दुयम कायना है। उमके कम दुयमकी आने हो दल के भीतर एक देना और दूसरे नेतर में नहीं हुआ। परन्तु प्रविष्टिका कम भावना नहीं हानी। कासिया में इतिहास में लक्षण हनेका घट हुआ है कि का सौधी सिध पर लान कायबर्प गण लडते थे, कला मिल जाने पर एक दुगरे के दूत क प्याय हा लये। मन्ना के अम हिया मन्ना क मोल हिया बला का स्वयम हा है हिया।

देन क नडा क साथ हिया बड रही है। उनकी मुद्रा बिभनकारी राजनीति पर दे। क्या राजनीति ने नव बर लिया है कि उम आन-कन के उम पर का जलकर सहायक बिगमो बड गेना दूड गला, और बयो। मेरा जग कनकर पीछे दम जनता जग काये बडकर सिन्धी का दन।

मैं भी देवूंगा

हृदयको भी सहायकता मत बनना मा उडा।

देवना दूड मैं का सला मैं है विना लवापार।

किन्तु बरि ने ये बकियो उन देना गावो या जब भारत कर्षकी सांस्कृतिकता से आनी लनकाज क लिए सड रहा था। दन पकियो म ऐतिहासिक ने आनी हो नहो, भारत की आनका की सहायक प्रकट की यो। ऐतिहासिक बरकी सांस्कृतिकता न अतिम 'मे' की सला का और न भारत स्वतंत्रता क लिए बरि का विचार करनेका अतिम देना।

अधरीकी सांस्कृतिकता अधरी सांस्कृतिकता से सावर बडा अधिब बडोरे है, और इतिहास में कायल ग बरी अधिब जात की काये लगाने की दकि। विपत्तिका क मुद्रा और मुद्राको के हाथ में हथियार तो है ही, ऐतिहासिक अधिब अधिब उने बलेने में बीकाज है। उनके हथियार हाथ की दकि ने अधिब काया की दकि से बड रहे है। इस मुद्रा में आनका, अतिमका और विपत्तिका की बरिभाषान इतिहास में बनर रहयो। विपत्तिका क विपत्तिका और विपत्तिका ने तो मोन को भी बने मोन बना कला है।

अतिमका को आने विपत्तिका पर नाक है। ऐतिहासिक बहुत विपत्तिका बरकीका और ऐतिहासिक के आनकी को इतिहास बनने को सैनर नहीं है। जो, दूड भी नव दन देने विपत्तिकाकी विपत्तिका का विपत्तिका मानेदे।

(देन दूड २२२ पर)

आज की व्यापक गुलामी

पीने हुए जमाने की ओंश भाज के युग को अमर लोग स्वतंत्रता और जनन का युग नहीं है। हम लोग यह कहते, मुने और पढ़ने नहीं धकने कि पुराने जमाने में जनता गुलाम थी, पुराना जमाना सामन्तशाही का था, उग जमाने में लोग खरीदे और बेचे जाते थे, लोग राजाओं, नवाबों और बादशाहों के शासन में रहते थे, आज की तरह भाजाद नहीं थे, इत्यादि। यह सही है कि आज का जमाना कई अर्थों में पुराने जमाने की ओंश ज्यादा बढ़ता है, ज्ञान-विज्ञान का दायरा बढ़ा है, पुराने जखीरें टूटी हैं, और लोग अपने अधिकारों को ज्यादा समझने लगे हैं। पर थोड़े गहराई से सोचें तो यह भी स्पष्ट हो जायगा कि मनुष्य शायद आज के जितना गुलाम कभी नहीं था, इतना ही है कि उसकी गुलामी का स्वरूप आज प्रचलन है।

आज की गुलामी का एक स्वरूप देवों के बीच आवागमन और यात्रा पर सरकारों द्वारा लगाये जा रहे नियन्त्रण है। साधारण व्यक्ति तस्काथीन कापदे, कानून, नियन्त्रण, ध्यस्वभा आदि को मानकर चलना है, उनके बारे में प्रदन या शन्य सारी नहीं करना। पर आज की सरकारों ने अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा पर 'पासपोर्ट-वोसा' आदि के जो प्रतिबन्ध लगा रखे हैं, उनके बारे में हमें कभी यह ध्यान नहीं आता कि इस प्रकार के प्रतिबन्ध आज के इस नये और भाजाद बने जानेवाले जमाने की ही देन है। सौ दो-सौ वर्ष पहले इस प्रकार के नियन्त्रण नहीं थे। मारकोपोलो जब योरोप से चीन आदि देवों की यात्रा पर आया, या भारत से जब चंपिना आदि विदेश गये, या चीन से ह्युनसांग फाहियान आदि यानी भारत आये तो उन्हें पासपोर्ट-वोसा आदि नहीं लेने पड़े थे।

मुन्को के बीच आवागमन पर आज जो प्रतिबन्ध लगाये जाते हैं उनके औचित्य और कारणों के बारे में जो भी दलीलें दी जायें, तथ्य यह है कि इन नियन्त्रणों ने मानवजाति को दुकडों में बाँट दिया है और पृथ्वी पर घूमने-फिरने का तथा अपने भाई से मिलने का जो मनुष्य का नैसर्गिक और आध्यात्मिक अधिकार है वह सरकारों ने छीन लिया है।

आज की सरकारों का परस्पर डर और खिन्तवास ही इस प्रकार के अधिहास नियन्त्रण और रोक-ब्याम की जड़ में है। एक तरह से आज दुनिया में युद्ध या युद्ध की आगका हर देश के लिए एक कायमी स्थिति हो गयी है। वास्तविक शांति या सुलह कहीं भी बीच नहीं पड़ती। कई देना तो सत्ताधारी लोग जान-बूझकर युद्ध या युद्ध की आवाज सजी करते हैं ताकि वे अपनी सत्ता कायम रख सकें और अपने देश के अन्दर अशान्ति और विरोध को दबाये हुए रख सकें।

अमेरिका के राष्ट्रपति थो जहन्मन ने अभी हाल ही में जाहिर किया है कि वे अमेरिकन नागरिकों को विदेशयात्रा पर सीधे ही वैश्व आदि के जरिये कुछ नियन्त्रण लगाने जा रहे हैं। इसका कारण यह बताया जाता है कि अमेरिकन यात्री हर साल अपनी यात्राओं के दरमियान विदेशों में करीब दो अरब डालर (पन्द्रह सौ करोड़ रुपये) खर्च करते हैं, जिसका नतीजा यह होता है कि उतनी चीजत का सोना हर साल अमेरिका को आने स्वं-अण्डार से निकालकर देना पड़ता है और फलस्वरूप उसकी आर्थिक स्थिति दिन-ब-दिन कमजोर होती जा रही है।

पर एक तरह जहाँ जोहन्मन सालाना दो अरब डालर खर्चाने के लिए अमेरिकन

नागरिकों की स्वतंत्रता और आवागमन पर रोक लगाने जा रहे हैं, वहाँ वे ही तीस अरब डालर, यानी उससे पंद्रह गुना खर्च, सालाना विदेशों की उस लड़ाई पर कर रहे हैं, जिसके औचित्य और उपयोगिता के बारे में दुनिया के अन्य लोगों की राय तो छोड़ दीजिये, स्वयं अमेरिका के अधिकांश विचार-शील लोग शकित हैं। इतना ही नहीं, अमेरिका की सरकार हर साल हथियारों और सेना पर ८० अरब डालर खर्च करती है, जिसका कारण रूस का या दूसरे राष्ट्रों के हमले का डर है। इस तरह परराष्ट्र में भय के कारण दुनिया के छोटे-बड़े सब राष्ट्र मिलकर दुनिया की कुल सालाना उत्पादित सम्पत्ति का आधे से ज्यादा अंश आज हथियारों और फौज पर खर्च कर रहे हैं। इस आर्थिक बरबादी के अलावा परस्पर के अविश्वास, जासूस-परीरी और अपने-आपने नागरिकों पर लगायी जानेवाली तरह-तरह की पाबन्दियों के कारण होनेवाली मानवीय और सांस्कृतिक शक्ति अलग है। दुनिया में लाखों-करोड़ों सामान्य लोग कई-कई हर्षाण्य नहीं चाहते, वे एक-दूसरे के साथ मिलकर रहना चाहते हैं। जो थोड़े-बहुत लड़ाई की भावना आज के नागरिकों में पैदा हुई है यह भी सरकारों और निहित-स्वार्थियों के प्रचार के कारण है। परस्पर के अविश्वास और डर के कारण सदा के लिए अभाव की जिन्योग, अतंगल महंगाई और अतनी स्वतंत्रता पर तट-तरह की पाबन्दियों में वे मुक्ति चाहते हैं। पर वृत्ति आज हर देश में राजनीति, आर्थिक आदि सारी सत्ता-धारियों के हाथों में केंद्रित हो गयी है और जनता का सारा जीवन उनकी मुठ्ठी में चला गया है इसलिए सामान्य जनता उस मामले में निःसहाय है। यह आज की व्यापक गुलामी का दूसरा और सबसे भयकर पहलू है।

—सिद्धांत डड्डा

जिन राष्ट्रों को 'मूदान-यम' का अन्वय-यह नियोध-आहिर, के एक प्रति के लिए एक कथा में अरब मीग सचते हैं।

—व्यवस्थापक



२३ फरवरी, १९६८
 इस अंक में स्वस्थ और पसुष्ट वि. का दर्शन हो।
 १९६८-६९

दूस जन्म में पर्ये—
 बारू की नहर में बा
 रैनी पड़े, भाया बाद में
 फामदान फमदान
 भूमि-मना का सामूहिक धान
 सोच ही सोचनी रह गयी।
 छोरी की मती
 गाए का बड़ापन
 जगते अन्न का आनपंग
 प्रतिनिधि दूध का नदी 'जन' का

२३ फरवरी, '६८
 पृष्ठ २ अंक [४] [१८ पंक्ति]

सन् १६ के याद पहली बार

सन् १६ की याद पहली बार—पहला बार गाँव में बड़
 सज्जन ने लम्बी गाँव खेत बना।

बना याद पहली बार ? मैंने पूछा।

'पहले जो जग दस बक्क आया फामने उने है म १६ क बाद
 कभी एन जाह दहका नहा हुन थे। इतना दुःखता पार्टीकनी
 सुखममको को नि बोद विधीय दगता नर्ग चाहता था।

मेने बरत गया लोपा का दिन ?

'बद बाद फामदान क इन काबना साबिसा ने किया है।
 इहाने ही दुःखता को जन्म बनाया है।

मुल्लपुरा बर्निय निने का एक प्रमुख गाँव है। गाँव हजार
 स बीस आवादा है। ऐमा गाँव है जिनके एन स बर्निय
 कभीकारा पुताव म तने हुन थे। बीनता कडा है जो गाँव म
 नही पट्टता।

बोई बड़ गही सनता था नि कभी सुगपुरा म भा दग के
 तोडे हुए मिल निर एक हाने ? हमने सोची धर धर हूने एक
 एन से मिल। मिलते ही रहे समभाते ही रहे धामभावन
 जपाने ही रहे। समय लगा खेतिन लोपा ने महसूस किया नि
 गाँव बर्निय हो रहा है।

सोच मिलने लगे—कभी एन ने दखाने पर, कभी दूसरे ने

दखाने पर। जिगा दरगाने पर खेतिन हानी यह चाय विनाता,
 भाता करता। दिन नजरीन बाये। एक सुनरने में सुनह
 हुई। गाँव का बानावरण बदला। सपनन की सुनिवाद पठ रही
 है। सोचा जा रहा है नि बागे बदा काम निचे जायें। समय पहने
 फामद भागगी दय थे पकवनी बरते बा विचार किया जाय।

बहुन दुना है खेतिन लभो जमम भो बर्निय बरला बारी
 है। मत्र बड़ रहा है खेतिन सोता और खेतिनम के सखार
 उमड बाते है। बाव बरने-बनते रह जातो है। परोगी स बर्निय
 पार्टी और पार्टी का कडा बाद आ जाता है। गाँव ही हूभारी
 पार्टी गाँव ही हमारा कडा यह भावना बन रही है खेतिन
 अभा बरती नहा हुई है। कदम बड़ रहे हैं मिल गाँव हो रहे
 है। बुद्ध का आगीबाद मिल रहा है। कुछ बुद्ध के सेवार
 हो गये हैं जो बहते हैं 'हम पद से दूर पहने जिगा भेद भाव के
 गाँव की सेवा करेंगे। बुद्ध का आगीबाद और बुद्ध का
 उपराध कत ये दो बीने मिल जायें तो बचा बसा ?

फामदान की लडाईं सो मोर्चे पर होती है—विद्वान और
 विनात। हम एन-दुगरे पर विन्यास करें, और जीवन मे जिगा
 लभें तो बीनता ऐमा सवाल है जो विन्यास और विनात की
 खिनिगत कति से हक न हो ?

वापू की नजर में चा

[२२ फरवरी वा की पुण्यतिथि है। इस अवसर पर वा के जीवन की कुछ खास बातें गांधीजी के ही शब्दों में दे रहे हैं।—सं०]

“वा निरक्षर थी। स्वभाव से वह सीधी, स्वतंत्र और मेहनती थी। और मेरे साथ तो बहुत कम बोलती थी। उसे अपने अज्ञान से असंतोष नहीं था। मैं पढ़ता हूँ इसलिए वह भी पढ़े तो अच्छा हो, ऐसी वा की इच्छा अपने बचपन में मैंने कभी अनुभव नहीं की।”

“वा को पढ़ाने का मुझे बड़ा उत्साह था। लेकिन उसमें दो कठिनाइयाँ थी। एक तो यह कि वा की अपनी पढ़ने की भूख जागी नहीं थी। दूसरी कठिनाई यह थी कि वा पढ़ने के लिए तैयार हो जाती, तो भी उस जमाने में हमारे भरे-पूरे परिवार में इस इच्छा को पूरा करना आसान नहीं था।”

“एक तो मुझे जबरदस्ती वा को पढ़ाना था, वह भी रातों को एकान्त में ही हो सक्ता था। घर के बड़े-बूढ़ों के देखते कभी पत्नी की ओर देखा भी नहीं जा सकता था। तब फिर उसके साथ बातें तो हो ही कैसे सकती थी? उस समय काठियावाड़ में चैप्ट निकालने का निकम्मा और जंगली रिवाज था। आज भी बहुत हद तक वह मौजूद है। इसलिए पढ़ाने की परिस्थितियाँ भी मेरे विरुद्ध थी। इस कारण से मुझे स्वीकार करना चाहिए कि जबानों में मैंने वा को पढ़ाने के नितने भी प्रयत्न किये वे सब लगभग असफल रहे।”

“जब मैं विपश्य-भोग की नींव से जागा तब तो मैं सार्व-जनिक जीवन में, जनसेवा के जीवन में कूद चुका था। इसलिए मैं वा को पढ़ाने में बहुत समय देने की स्थिति में नहीं था। शिक्षक के द्वारा वा को पढ़ाने के मेरे प्रयत्न भी सफल नहीं हुए। इसके फलस्वरूप आज वस्तुतः कोई मुश्किल से पत्र लिख सकती है और मामूली गुजराती समझ सकती है। मैं मानता हूँ कि यदि मेरा प्रेम विपश्य-वासना से दूषित न होता तो आज वह विदूषी स्त्री बन गयी होती। उसके पढ़ने के आलस्य को मैं जीत सका होता। मैं जानता हूँ कि शुद्ध प्रेम के लिए इस जगत में कुछ भी असम्भव नहीं है।”

“मैं यह मानता था कि पत्नी को अक्षर-ज्ञान तो होना ही चाहिए और यह ज्ञान मैं उसे दूँगा। परन्तु मेरे भोग-विलास के मोह ने मुझे यह काम कभी करने ही नहीं दिया और मैंने अपनी इस कमजोरी का गुस्ता पत्नी पर उतारा। एक समय तो

ऐसा आया कि मैंने उसे उसके पीहर ही भेज दिया और बहुत अधिक कष्ट देने के बाद ही फिर से अपने साथ रहने देना स्वीकार किया। आगे चलकर मेरी समझ में यह आ गया कि ऐसा करने में मेरी मुसलता ही थी।”

“वा का सबसे बड़ा गुण मुझमें स्वेच्छा से समा जाने का था। यह कोई मेरी धीच-तान से नहीं हुआ था। लेकिन वा में ही धीरे-धीरे यह गुण खिल उठा था। मैं जानता नहीं था कि वा में यह गुण छिपा हुआ है।

मुझे आरम्भ में जो अनुभव हुआ, उसके आधार पर वहाँ तो वा बहुत हठीली थी। मैं दबाव डालता तो भी वह अपना सोचा ही करती थी। इससे हमारे बीच बड़ो या लम्बे समय की कड़वाहट भी बनी रहती थी। लेकिन मेरा जन-सेवा का जीवन जैसे-जैसे उज्ज्वल बनता गया वैसे-वैसे वा का मुझमें समा जाने का गुण खिलता गया और गहरे विचार के बाद वह धीरे-धीरे मुझमें अर्पित मेरे काम में समाती गयी। समय जाने पर ऐसा लगा कि वा के मन मुझमें और मेरे काम में, सेवा में कोई भेद नहीं रह गया। और ज्यों-ज्यों यह भेद मिटता गया त्यों-त्यों वा उसमें एकरस होती गयी। यह गुण हिन्दुस्तान की धरती को सायद सबसे ज्यादा प्रिय है। जो भी हो, वा की ऊपर बतायी भावना का मुझे तो यही सबसे बड़ा कारण मालूम होता है।

वा में यह गुण ऊँचों-ऊँचों सीमा तक पहुँचा। इसका कारण हम दोनों का ब्रह्मचर्य था। मेरी अपेक्षा वा के लिए वह बहुत ज्यादा स्वाभाविक सिद्ध हुआ। धुरु में वा को इतनी समझ भी नहीं थी। मैंने ब्रह्मचर्य के पालन का विचार किया और वा ने उसे पकड़कर अपना बना लिया।

इसका फल यह हुआ कि हम दोनों का सम्बन्ध सच्चे नित्रों वा हो गया। मेरे साथ रहने में वा के लिए सन् १९०६ से, तब पूछा जाय तो सन् १९०७ से, मेरे काम के साथ घुल-मिल जाने के सिवा या उसके बाहर कुछ रह ही नहीं गया था। वह मेरे काम से अलग रह सकती थी, अलग रहने में उसे कोई कठिनाई न होती, लेकिन नित्र होते हुए भी उसने स्त्री के नाते और पत्नी के नाते मेरे काम में समा जाने में ही अपना पर्य माना। इसमें मेरी निजी सेवा को वा ने अनिचार्य—अटल—स्वान दिया। यही कारण है कि मरते दम तक मेरी सुख-सुविधा का उसने हमेशा ध्यान रखा।” ●

रोटी पहले, भापा बाद में

सब जगह हिन्दी-सामर्थक और अश्रेणी विरोधी-आन्दोलन की चर्चा होती रहती है। वो लोग अश्रेणी लादे जाने के विरोधी हैं प्रायः पूछ बैठते हैं, क्यों साहब आपने जयप्रकाशजी ने तो भापा विभेद्यन वा समर्थन कर दिया, क्या यह न्याय की बात है? कोई बहला है, जयप्रकाशजी तो जो मन में धाता है वो लगे ही रहते हैं, पर विनोदाजी जैसे गम्भीर व्यक्ति से ऐसी उम्मीद नहीं थी। उन्होंने जयप्रकाशजी के वक्तव्य का आँख मूँडकर समर्थन क्यों कर दिया?

लोग हमलोगों के सामने ऐसी बातें बरते, उन सभी बातों का स्पष्टीकरण चाहते हैं, जो हमारे विषय बहते रहते हैं।

साईं गाँव में हरिजन लोग रहते हैं। अपनी दोही-सी सेती के बाद मजदूरी ही मुख्य रूप से उनके जीवन का साधन है। गरीब पीढ़ीवालों में एक-दो इष्ट-द्वारस्तूल में घर रहे हैं। शेष निरक्षर ही हैं। ग्रामदान में शामिल हैं। उस दिन इस गाँव में सपथन के लिए हम लोग गये तो वहाँ भी लोगों ने भापा का ही प्रश्न छेड़ दिया। गाँव का एक आदमी बलिष्ठा गया था। वहाँ कुछ सप्ताह नम्बर साईंनदों पर लीमा पीछी देख आया था। उसने पूछा, "भाईजी, यह कैसा आन्दोलन चल रहा है?"

मैंने कहा, "लोग यह चाहते हैं कि अन्न राज-नाश अश्रेणी की जगह हिन्दी में चले।"

उसने पूछा, "अन्न तो खले गये, पर अश्रेणी अभी तक क्यों चल रही है? क्या यह भी अश्रेणी की तरह फोस-बाटा रखती है, जिसने खिलाफ इतना बड़ा आन्दोलन करना पड़ता है?"

मैंने कहा, "नहीं भाई, अपना देन बहुत बड़ा है। हर जगह के लोग अलग-अलग भापा सोचते हैं। अपने देन में १४ भाषाएँ मुख्य हैं। इनके अलावा और भी कई भाषाएँ हैं। कोई एक भाषा ऐसी नहीं, जिसे सब लोग समझ सकें।"

उसने पूछा, "क्या, अश्रेणी भाषा देन के सभी लोग समझते हैं?"

मैंने कहा, "ऐसी बात नहीं है। उसे भी जाननेवाले कम लोग हैं। अश्रेणी पढ़नी पड़ती है।"

महँसू ने कहा, "जो हल्ला मचा रहे हैं वे सभी-तो पडे लिखे हैं। फिर इन लोगों को क्या दिक्कत है, जो आन्दोलन कर रहे है?"

मैंने कहा, "ये पडे लिखे लोग चाहते हैं कि पूरे देन में एक काम अश्रेणी में न होकर हिन्दी में हो। अश्रेणी भाषा सीखने में ज्यादा समय लगता है। हिन्दी में काम होने लगे तो सबके लिए अश्रेणी जानना जरूरी नहीं होगा।"

शेष में ही विश्वनाथ बोल उठा "भैया यह बात तो टीन है। हिन्दी में सब काम होने लगे तो हम भी देन के बहुत कुछ काम समझने लगेंगे। इसे सब क्यों नहीं मान लेते?"

मैंने कहा "चात यह है कि देन में जय लोग जो हिन्दी नहीं जानते और पढ़ने से अश्रेणी पढ़ने जाये हैं वे यह सोचने हैं कि वे अश्रेणी अक्षर जानते हैं। यदि अश्रेणी के अक्षरों में हिन्दी हो गयी तो वे नोकिया में निज्ज जायें और हिन्दीवाले बाकी मार ले जायेंगे। दूसरे ये जो अश्रेणी की जगह काटे साहब लोग हैं वे भी यह सोचने हैं कि हमारे बात-बच्चे तो बचपन से ही अश्रेणी पढ़ते आये हैं यदि वह पढ़नी रहेगी तो हमारे बच्चे ही गौरी-म आगे रहेंगे।"

महँसू ने पूछा, "ये जो लोग हिन्दी नहीं पढ़े हैं उन्हें अश्रेणी नहीं पढ़नी पड़ती?"

मैंने कहा "पढ़नी पड़ती है।"

महँसू "जब दोनो सीखनी ही पड़ती है तो उनसे लिए दोनो बराबर है, फिर अश्रेणी के लिए आग्रह क्या? सिर्फ इतनीगिए कि अपने स्वार्थ में देन की जगता पर विदेशी भाषा का योग लादे पड़ना चाहते हैं।"

मैं, "यही बात तो हमलोग बहते हैं कि देन को ही एक भाषा पूरे देन की भाषा हो। गांधीजी ने कहा था कि हिन्दी ही देन की भाषा हो सकती है। परन्तु वो लोग चाहते हैं कि हिन्दी नहीं पढ़ने उन पर हिन्दी बचरदली न लाये जाय। और साथ ही, जो अश्रेणी नहीं चाहते उन पर अश्रेणी न लायी जाय।"

साईं, "क्या भाईजी, हमारी बात मज्जा करनेवाला तक पहुँचा देगे कि हमें अभी रोटी चाहिए भाषा को बाद में समझ लेंगे।"

बाप, राजनीति के नेता शत्रुप्रतियन को पढ़वान लेने।

—बमरापति

ग्रामदान : प्रेमदान

जयनगर से चौदह मील पैदल चलकर आ पहुँचा हूँ लदनियाँ। दरभंगा जिले का नेपाल-सीमा में सटा हुआ आखिरी गाँव। रास्ते में घंटा भर राजकीय-अस्पताल के कम्पाउण्डर के घर ठहरा। उन्होंने पैर धुलवाकर तड़ाक पहनाये। स्वच्छ लीपे हुए फर्श पर हाथ से बुने हुए आसन पर बैठाया। जी-भर दही-बूँहा-गूड़ खाकर, सीधा हाईस्कूल पहुँचा। "विनोबा आयल छि", विद्यार्थी पहचान लेते हैं कि विनोबा का सेवक हूँ।

छब्बीस जनवरी का पर्व है। जाड़े की प्यारी धूप में, राष्ट्रीय ध्वज सामने, छात्र मेरे शांति-गीत सुनते हैं और साथ-साथ गाते हैं। मापण से वे उब चुके हैं। प्रधानाध्यापक का ग्रामदान में अच्छा सहयोग मिला है। संगठक श्री फलटन आजाद आचार्य रामभूतिजी के साथ खादीग्राम में पत्थर तोड़ते थे। आजादजी की जोर बरबस कम्युनिस्ट और सोशलिस्ट पार्टी के नोजवान लिचकर आते हैं। इस कम्युनिस्ट क्षेत्र में आजादजी सर्वोदय का नमूना खड़ा कर रहे हैं, जिसे देखकर धीरे-धीरे भाई और सुधी निर्मल वेद, दोनों प्रभावित हुए। पन्ना गाँव के बंकरदास ने अपने त्याग और सेवा से सहदेव ठाकुर जैसे कार्यवर्ता तैयार किये हैं। उसी तरह, जैसे कोइलख के दामोदर बाबू ने मोहन और बाबुधन जैसे नवयुवक ग्रामदान-आन्दोलन को दिये हैं।

खाजेडीह इस प्रखण्ड का आदर्श ग्रामदान माना जा सकता है। ग्रामकीय में 'मनसेरा' धान सब विसानो ने दान किया है। जयकृष्ण भक्त की अध्यक्षता में ग्रामसभा गठित हो चुकी है, जिसकी बैठक में मैं धारोक्त होता हूँ। सर्वसम्मति से वस्त्रस्वावलंबन और रेशा-उद्योग शुरू करने का निर्णय लिया जाता है। वर्ष में चार माह की आसिक बेकारी अम्बर चरने द्वारा दूर की जा सकती है। पूरव में त्रिशूला नदी है, पश्चिम में बमला नदी। उस पानी का सिंचाई के लिए कैसे उपयोग हों, इस पर चर्चा होती है मोहम्मद सलीम, जो कि ग्रामसभा के जागरक सदस्य हैं, ग्रामदान का सुझाव रखते हैं। यहाँ के हरिजन कार्यवर्ता मृगर पासवान, जो कि भूदान विसान भी हैं, पुष्टि का विवरण सुनाते हैं। गाँव की शान्ति-सेना की ओर से, रात को पहरा दिया जाता है,

है, मुबह भजन गाने जाते हैं। दो व्यक्तियों में एक वरस से भगड़ा चल रहा है, जिससे दिन-भर मेरी पूव चर्चा होती है। दोनों पक्ष मुकदमा वापिस लेने के लिए तैयार हो जाते हैं। ग्रामसभा का निर्णय दोनों को मान्य होगा। यहाँ यादव अधिक हैं, ब्राह्मण इने-गिने हैं। दोनों के दिल एक-दूसरे से दूर रहते थे। ग्रामदान के बाद स्थिति में परिवर्तन हुआ है। दोनों एक जगह बैठते हैं, बात करते हैं। ग्रामदान हुआ, मानो प्रेमदान हुआ।

—जगदीश धवानी

भूमिसेना का समूह गान

लाए लाए गाँववाला है हिंदुस्तान किसानों का।
करने को निर्माण चला है जल्दा बीर जवानों का ॥
भूमिसेना जिदाबाद, भूमिसेना जिदाबाद, भूमिसेना जिदाबाद...
सीच पत्तीने की बूँदों में धरती हरी बनायेंगे।
उत्तर बंजर, परती में भी फलें नगी उगायेंगे ॥
भाग्य बनाने चने आज हम तेनो का गलिहानो पा।

वरने को निर्माण...

भूमिसेना जिदाबाद...

राने को मुँह एक बिलु है दो-दो हाथ बगाने को।
भिक्षुक बनकर फिर क्यों जयें हम भोली पैलाने को ॥
रूप बदल देगे हम थम में उजडे रेगिफ्तानो का।

करने को निर्माण...

भूमिसेना जिदाबाद...

एक बनेंगे, नेक बनेंगे होगा जो करना चाहें।
एक दनें तो सट्टानो को होट सवंगी ये बाहें ॥
बदम हमारे रोफ नरें बरा साह्य है बूफदानो का।

वरने को निर्माण...

भूमिसेना जिदाबाद...

गूँज रही यो आज हमारे बण्टो में यह बानो है।
गाँव-गाँव हमरो लाना अब ग्रामराज्य कप्तानो है ॥
देग के नवने में रंग भर दें बागू के खरमानों का।

करने को निर्माण चला दे जल्दा बीर जवानों का ॥

भूमिसेना जिदाबाद, भूमिसेना जिदाबाद, भूमिसेना जिदाबाद...

—गमगोसाठ दीक्षित



‘भीष ही माँगती रह गयी !’

बस साल बाद वही परिचित आवाज फिर सुनायी पड़ी ‘दो बाला मौस’। मैंने जल्दी से उठकर देखा तो टूटिया थी। इतने दिनों में इसमें कितना परिवर्तन हो गया था ! मैं खीर से उभे देखती रह गयी। सहज ही मुँह से निचल गया—‘मुझ अब भी भीष माँगती हो?’ उतर दिया—‘हाँ बहिनी मैं सभी भी भीष ही माँगती हूँ और न जाने कब तक माँगती रहूँगी।’ मैं कुछ बचते ही जा रही थी कि टूटिया ने फिर बहना शुरू कर दिया ‘बहिनी जाग जागती हूँ बाबू के घर गोबर उड़ाने जाती थी। बाबू मुझे बहुत मानते थे। मैं कहाँ सम्भरी कि खातिर मेरा टलना ध्यान बना रखते हैं। यह तो एक दिन मगभी जब बाबू ने एक हाथ से मेरा मुँह बन्द कर दिया और दूसरे हाथ से मुझे सीकते हुए अपने कमरे में ले गये। उस दिन स मुझ पर उनकी बिगड़ बुझा रखते लगी। चार-पाँच महीने बाद मैं माँगना गयी कि अब मैं माँ बननेवाली हूँ। मैंने बाबू से कहा। बाबू ने मुझे अपने बाम से ही अलग कर दिया। मुझे माँ की और मुझे देस ही रही हो कि एक हाथ और एक पैर बाँटे हैं। बचपन से भीय माँगती थी, लेकिन फिर वो भीष माँगने ली नहीं जाते बनता था। जहाँ जाती, वहाँ कोई कुछ न कुछ बहता। अन्त में मेरे लखनू हुआ। गाँव के लोगों ने बाबू से कह-मुनकर अनाज खादि लिम्बाया। बाबू अब बहुत दूर-दूर रहने लगे। अथावक लड़का बीमार हो गया। दवा दाद भी न कर सकी। एक दिन बाबू गुप्ते से देखने आये। बाबू तो मुझ चले गये लेकिन बड़ एक दवा बच्चे को दे चके। खाने के कुछ ही देर बाद बच्चा मर गया। बच्चा उछरते बैसा था।

‘‘गुप्ते जानती खाति न छाठी क्या नहीं कर ली? कुछ नाम धपा कर ही लेती हो, रूप रग म तो मुझ झच्छी थी ही, मैंने कहा। टूटिया राती हँसी हँसे हुए बोली ‘बहिनी, मुन्दर होने में क्या?’ भीष आँसु की स्रजन करते हैं। मुझ-मे भीष घाटी बनता। इसीमे बचपन में घाटी गरी हो गयी। बच्चे के मर जाने के बाद माँ ने आनी खाति के ही एक आरमी से

घाटी कर दी थी। उमते एव लड़की हुई। बहिनी, वह भी छोड़कर बना गया। तब से बनी लौदा नहीं। लड़की सपानी हो गयी, घाटी कर दी, अपने घर आती जाती है। माँ मर गयी। मैं अवेनी माँगती-खाती हूँ। धमो मैं न जाने कितने दिनों तक जीती रहूँगी। जब से होय सभाका तब से भीष ही माँगती हूँ। माँगते-माँगते मर भी जाऊँगी। जीवन में कुछ समय के लिए अच्छे दिन भी पाये, लेकिन मेरा भीष माँगना न छूट। मैं माँगती ही रह गयी !’

खिचड़ी रो पड़ी

जमुना बाबू के घर गयी। देखा कि आँगन में कुछ सामान इस तरह रखा हुआ है जैसे अभी सुरत नहीं भेजा जायगा। सामान के पास ही अजुना बाबू की पत्नी उदास बैठी है।

जमुना बाबू को मरे कई साल हुए गये। उनको एक लड़का और एक लड़की है। दोनों की शादी हो चुकी है।

‘यह सामान क्यों के बाया है, मा बही जायगा?’ मैंने जमुना बाबू की पत्नी से पूछा। उन्होंने धीरे-से कहा—‘इसने लिप्लो आज घर में महाभारत हो गया। कभी-नभी ये खीर-दूध का एक आसन जैसे लगते हैं। खाए जानती हैं किचड़ी कितनी करीब है। अभी तक मिफिफिस को निचड़ी नहीं भेजी जा सकी!’ यह कहकर वह रोने लगी। कुछ देर बाद फिर बहना मुझ किया—‘देखिए इतना पोषा-खा सामान लड़का और बहू दोनों भेजना चाहते हैं। इस पर मैंने बहू दिया कि मेरे जोड़े जो इस तरह खिचड़ी नहीं जायगी। खातिर, इतना सब घर में मौजूद है तो क्या उस पर भेज करिधार नहीं है? कस दूती बाल पर बहू सगडा करते लगी। तब तक अनाज ने उठकर दो चोरे मुझे मार दिये। मैं चुपचाप उन दोना का मुँह देखती रह गयी। दोनों चाल दिये।

‘किन्ना बहते हैं उतना ही भोजिये जाने दीजिये। खातिर साथ बरेगी क्या?’ मेरे यह बहते पर जमुना बाबू की पत्नी बोली कि मुझिये, मैं सब कुछ कर सकती हूँ। मेरा हाथ सारी नहीं है। सोचा था कि अपने पाय कुछ खूना खादि, खाति कुझने में अपनी दज्जत रहे, लेकिन बह रहने के बाद मा आजा मेरी यही दज्जत है। मैंने बनी सोचा नहीं था कि मेरा लड़का भी ऐसा बरेगा।’ कहते-कहते बह आने हाथो आना मुँह दबाकर रोने लगी, खाति पड़ोस में कोई आन न जाय।

—विद्या

लोकरी की खेती

लोकरी गर्मी की एक महत्त्वपूर्ण सब्जी है। सर्दियों में भी जब सब सब्जियाँ समाप्त हो जाती हैं, तब भी यह मिलती रहती है। बेलवाली सब्जियों में इसका विशेष स्थान है। इसकी खेती करने के लिए उन्नतवर्गीय विधि नीचे दी गयी है:—

जलवायु व भूमि—लोकरी के लिए गर्म व नम जलवायु की आवश्यकता होती है। यह अधिक सर्दों सहन नहीं कर पाती, इस कारण सर्दों की शुरुआत में जहाँ अधिक सर्दों पड़ती हो, नहीं बोना चाहिए। इसकी खेती के लिए बलुई दोमट भूमि उत्तम रहती है।

उन्नत जातियाँ—भारतीय कृषि अनुसंधान शाला, नई दिल्ली ने लोकरी की दो उन्नत किस्में निकाली हैं:

१. **पूसा समर श्रोलिकिक लॉग**—इस जाति की लोकरी के फल ४० से ५० सेंटीमीटर लम्बे तथा २० से २५ सेंटीमीटर मोटे होते हैं। फल मुलायम आकर्षक व हरे रंग के होते हैं। खाने में स्वादिष्ट लगते हैं। एक बेल पर १० से १५ तक फल लगते हैं। इस जाति को गर्मी और वर्षा में बोया जाता है।

२. **पूसा समर श्रोलिकिक राजड**—इस जाति के फल गोल, इनकी मोटाई १५ से लेकर १८ सेंटीमीटर तक होती है। रंग हरा और सुभावना होता है। इसकी उपज लॉग से अधिक होती है। एक बेल से २०-२५ फल प्राप्त हो जाते हैं।

भूमि की तैयारी, खाद व उर्वरक—अच्छी खेती के लिए ५-६ गहरी जुताइयाँ काफी रहती हैं। लोकरी की बुआई समतल खेत में नालियाँ बनाकर, गड्ढे बनाकर की जाती है। कभी-कभी बीज को नर्सरी में बोकर भी रोपा जाता है। विभिन्न प्रकार से खेती करने में खाद व उर्वरक की मात्रा तथा उनके देने की विधि अलग-अलग होती है। समतल खेत में बुआई का ढंग अवैज्ञानिक है। इसमें पानी बहुत बचाव हो जाता है तथा खरपतवारों की नष्ट करने में अधिक व्यय करना पड़ता है। नालियों में बुआई

करने के लिए डेढ़ मीटर की दूरी पर नालियाँ बनायी जाती हैं। नाली की चौड़ाई आधा मीटर रखनी चाहिए। इस तरह से दो मीटर के फासले पर बीज बोये जाते हैं। गर्मियों की फसल में यह दूरी डेढ़ मीटर रखनी चाहिए। नालियों में मेड़ों की ऊँचाई बीस सेंटीमीटर रखी जाय। इन नालियों में ही गोबर की खाद और उर्वरक डालकर मिला देना चाहिए।

गड्ढों में बुआई करने के लिए तीस सेंटीमीटर गहरे तथा ४५ से ६० मी० व्यास के गड्ढे बना लिये जाते हैं। प्रत्येक गड्ढे में दो-तीन टोकरी गोबर की खाद डालते हैं। इन गड्ढों को बीच सिंचाई की नालियाँ बना ली जाती हैं।

एक हेक्टेयर (लगभग ढाई एकड़) में १५ से २० गाड़ी गोबर की खाद, १७५ से २०० कि० ग्रा० किसान खाद या चीनीवाली खाद डालनी चाहिए तथा २२० से २५० कि० ग्रा० कार्बो खाद डालनी चाहिए।

बीज की मात्रा और बुआई—बीज की मात्रा बुआई के समय पर निर्भर करती है। गर्मियों में बीज की मात्रा अधिक रखते हैं। क्योंकि गर्मियों में बेलें कम फैलती हैं तथा पूरे बीज भी अंकुरित नहीं हो पाते। गर्मियों में प्रति हेक्टेयर २.५ से ३ कि० ग्रा० बीज तथा वर्षाकालीन फसल में २ से २.५ कि० ग्रा० बीज पर्याप्त रहता है। बीज को बोने से पहले २४ घंटे तक पुनः पुनः पानी में भिगोना चाहिए तथा इसके बाद १२ घंटे मोटे कपड़े में लपेटकर ऐसे स्थान पर रख देना चाहिए, जहाँ काफी मात्रा में गर्मी मिल सके।

नर्सरी में बीजों को ८ से १० मी० की दूरी पर बोनी लाइनों में बोया जाता है। जब पौधे ३ या ४ पत्तियोंवाले हो जायें तो खेत में रोप दिये जाते हैं। इस विधि से बुआई करने में खेत अधिक समय तक नहीं धिरा रहता, खेत में ग्राहली खान नहीं रह पाता और उपज भी अधिक होती है।

एक गड्ढे में ४ बीज बोने चाहिए या ४ पौधे लगाने चाहिए। बाद में २ स्वस्थ पौधों को छोड़कर औरों को नष्ट कर देते हैं।

बुआई का समय—मुख्य रूप से दो फसलें बोयी जाती हैं—पहली फसल मध्य फरवरी में मध्य मार्च तक बोयी जानी है। इसमें अग्रेल मई में फल मिलने प्रारम्भ हो जाते हैं। दूसरी फसल, जून से जुलाई तक बोयी जाती है। इसके अलग या मिनट्मर में फल मिलने लगते हैं।

जहाँ पर पाला पड़ने की सम्भावना नहीं होती वहाँ अक्टूबर

बापू का चरुपन

बापू में जीवन को नगदीन से देखते हैं तो सामान्य मनुष्य से वे महाना किस तरह बन गये, इनकी बातें हम मिल जाती हैं। वाणी, विचार और व्यवहार, तीनों का उनसे जीवन में समन्वय था। ये जो सोचते थे, वही करते थे और वही करते थे। जो नहीं करते थे, वह नहीं करते थे। वही उनकी अमली ताकत थी, वही उनका सस्र था।

हम लोग अच्छे-बुरे विचार सोचते हैं। अच्छी-बुरी बातें करते हैं, लेकिन उनी तुलाविक व्यवहार नहीं करते इसलिए हम मिथ्य जाते हैं। सद्बिचार की बहुत कीमत है, लेकिन सदाचार की कीमत तो उससे भी बढकर है।

चोरों का नाम चुरा है, भूख बोलना चुरा है धसन करना चुरा है, निंदा करना चुरा है, ये सब बातें हम जानते हैं। मगर जब व्यवहार में लाने की बात आती है, सब हम उससे उल्टा ही व्यवहार करते हैं। उनीलिए समाज चुरा दिवता है। जाधिर समाज बना है व्यक्तिगत से ही, व्यक्ति समाजारी करने से तो समाज सदाचार की योग्यता।

शिक्षा का काम है व्यक्तिगत को सुधारने का। लेकिन व्यक्तिगत सुधारता है? जब वह शिक्षा में सदाचार देखता है तो उसने अपना पर भी उसका अच्छा असर पडता है। कल्या

आयम, मछी में मीने देता है कि लोग म लये आम के पत्र की सुगंध वही से सुननेवाले के मुँह और नार तक पहुँच जाती है। उससे सुगंध तो नाह में भर जाती है, फिर भी वही के सात सालों तक के छोटे बच्चे एक मो आम तोडकर खाते वही है, क्योंकि शिक्षण ने उनसे दिमाग में एक बात जोड़ी से वेडा दी है कि हम मनुष्य हैं पशु नहीं हैं। पशु जो देखता है, वह बिना मोचे खाता है। मनुष्य देखता है पर वह सब वही खाता है।

कन्या आयम, मछी की बुनियादी माला की बालिकाएँ 'राम-दुवान बलाती हैं। उम दुवान ने जो माल रूता है उस पर मात्र लिखा रहता है, लेकिन बाँटनेवाला कोई नहीं रहता। ती साल से यह दुवान चलती है, लेकिन न ती कभी माल दुप होता है, न एक पैसा तक कम आना है। सब कुछ भरासे पर चलता है। बिश्वास से बिश्वास बढ़ता है, इतने में सच्ची बुनियादी तालीम बहूँगा। बच्चों से दिमाग में यह बात बँट गयी है कि दो चार पैसे से हमारी शक्यत-आवक बढकर है।

लेकिन शिक्षण के जीवन में ऐसे मूल्य होये तथा बच्चे उस रास्ते पर चलते हैं। उनके प्रेम और चारित्र्य से नई विचारधारा का जीवन प्रेम से भर जाता है। —सबलभाई मेहता

ने भी फसल बोयी जाती है। पवलीम-शेरा म बुआई अर्सेल से मई तक करते हैं।

विप्राई तथा विप्राई गुडई—सर्वांशाले फसल में विप्राई बोये मा पर्वते दिव करना। होली है। सर्वांशाले फसल में धारम से अशिन वर्षा होने के बाद प्राय विप्राई की आवश्यकता नहीं पडती। यदि अशिन सर्वां पडने की सम्भावना हो तो विप्राई कर देनी चाहिए, इसके फसल पर सर्वां का प्रभाव नहीं होता। फसल अब छोटी हो तो विप्राई-गुडई द्वारा खेत खरपत बादरहित रखना चाहिए। बाद में यदि आवश्यक हो तो विप्राई की जा सकता है।

फल तोडना—जिम समय फल तुलाविक तथा दूरे बडे हो, उस समय तोड लेना चाहिए। क्योंकि धीरे बडे हो जाने पर उसका स्वाद अच्छा नहीं रह पाता।

२३ फरवरी, १६

विप्रायुक्तरी बीट और उनका दमन—मुष्ण रूप से दो बीडे बहल हानि पहुँचाते हैं

१ लौरी का लाल बीटा—यह बीटा दलियो को पाकर उनमें छेद बना देता है। इस बीडे की मुठियाँ (ब्रमा) फला में छेद करने मुम जाती है। इस बीडे को नष्ट करने के लिए एक प्रविधत लिण्डेन की धूलि की तुलना चाहिए या १ प्रविधत लिण्डेन का धोल छिडकना चाहिए। एक हेक्टेवर के लिए २० से २५ कि० ग्राम धूलि या २५० लीटर धोल काफी रहता है।

२ फल की मक्खी—यह बीट में पैगुडू फल के दूरे की खाते हैं। इसके फल अन्दर में गल जाता है। इस बीट की नष्ट करने के लिए वेटुस बना लेना चाहिए। इसके लिए डेड कि० ग्राम प्रोटीन हाइड्रेजीनेड तथा ३ २५ मिलो ग्राम मैगासियम ५० प्रतिशत, डब्ल्यू० पी० की आवश्यकता होती है। —भोगाल सिंह



पटने का मेला

हरिनामपुर में दरभंगा राज की एक पुरानी कचहरी है। कुसेसर महतो ने उठती जवानी के दिनों से ही वहाँ के बाराहिल का काम किया है। राज खतम हो गया तो भी वह अपने गाँव नहीं छोटे। गाँव का मुखिया तो कोई और है, लेकिन गाँव के लोग शाम को अक्सर महतो के दरवाजे पर ही जुटते हैं।

उस दिन जब बिहार की मिलीजुली महामाया बाहू वाली सरकार गिर गयी तो शाम को महतो की कचहरी में लगभग पूरा गाँव ही जुट गया, पटना का तमाशा सुनने के लिए। महतो 'आर्मावर्त' नामक बिहार का प्रमुख दैनिक अखबार डाक से मँगवाते हैं।

"स्वामी...भगाये गये!...को २० हजार रुपये देकर दल ने खरीद लिया।...पुलिस मंत्री और...में धक्का धुक्की।...को जान से मारने की धमकी...महामाया बाहू की सरकार उलटने के लिए...लाखों रुपये खर्च...!" महतो अखबार से सबरें पढ़कर सुनाते जा रहे थे। और लोग उत्सुकता और अचरज से सुनते जा रहे थे। तभी गाँव के रघू अहीर ने ऊँचकर कहा, "रहने दो महतो जी, कुछ अच्छी बातें अखबार में हैं तो पढ़कर सुनाओ। यही तमाशा देखना हो तो अगले साल सोनपुर के मेले में चले जाना।"

"रघू हमेशा टेढ़ी बात ही बोलता है। सीधी बात तो जैसे इसको बोलने जाती ही नहीं।" किसी ने खीभकर कहा।

"हाँ हाँ...मेरी बात टेढ़ी तो लगेगी ही, सच्ची बात टेढ़ी लगती ही है।" रघू ने जवाब दिया।

"लेकिन सोनपुर के मेले और पटना के राजनीतिक तमाशे का क्या मेल है रघू?" महतो ने पूछा।

"अरे महतो जी, यह पूछिये कि फर्क क्या है। सोनपुर मेले में मनैशियों की खरीद-बिक्री होती है कि नहीं?" रघू ने पूछा।

"होती है।" किसी ने उत्तर दिया।

"पटने में विधायकों की खरीद-बिक्री होती है कि नहीं?"

रघू ने पूछा।

"होती है?" महतो ने जवाब दिया।

"माई, मानना पड़ेगा कि रघू की बात टेढ़ी भले हो, लेकिन है सच्ची!" किसीने कहा।

"ठीक बात है। विधायकों और सोनपुर मेले के जानवरों में कोई फर्क नहीं है, यही बात देश के एक बड़े नेता ने भी कही है।" महतो ने कहा।

"लेकिन नेता लोग अपने गोशाला में जानवरों की संख्या बढ़ाने के लिए दूसरी गोशालाओं से जानवर खरीदने या चुराने से नहीं चूकते।" रघू ने कहा।

"लेकिन यह बताओ कि गोशाला का क्या मतलब?" किसीने पूछा।

"रह गये भोला भोड़ू ही। अरे ये नेताओं के दल क्या हैं? गोशालाएँ ही तो हैं!" रघू ने कहा।

"बात ठीक कहते हो रघू। लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इन विधायकों को हमने ही 'भोट' देकर चुना है।" महतो ने कहा।

"सो ठीक है। इन्होंने हमारी भलाई के वादे किये, और हमने इन्हे 'भोट' देकर चुन दिया। कोई दिल्ली गया, कोई पटना। लेकिन चुन जाने के बाद अब 'भोट' देनेवालों को कौन पूछता है?" रघू ने कहा।

"बेचारे निच-निचको पूछे। अपने 'दल' को, 'भोट' देनेवालों को, अपने 'बुट्टुमवालों' को, या 'अपने आपनों?' जरा सोचो तो सही। तीन-तीन, चार-चार पूछानेवाले को गरदन पर धवार हैं इनके।" महतो ने जरा समझदारी दिमाते हुए कहा।

"हाँ महतो, लेकिन भोट मँगते समय तो वादा होता है 'भोट' देनेवालों की भलाई करने का ही। सबलोग अपने नो त्यागी और जनता का सेवक ही बताते हैं।" रघू ने कहा।

"ये सब हाथों के दाँत वाली बातें हैं रघू। जपन और अपने दल के स्वार्थ में बिपके लोग क्या जनता पर मेधा करेंगे। अब तो कोई ऐसा उपाय सोचो कि 'स्वार्थी' और 'दलवाले' लोग चुने ही न जायें। जनता का प्रतिनिधि हो, जनता ही उसे उम्मीदवार बनाये और एक राय होकर उसे चुने।" गाँव के एक बूढ़ भजनन ने कहा।

"बात पते की नहीं है चौधरी ने। लेकिन होगा वैध?" किसी ने सबाल उठाया। ●

'गाँव की बात'। वार्षिक चंद्रा : चार रुपये, एक प्रति : अठाइस पैसे।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व-सेवा-संघ के लिए प्रकाशित एवं खंडितवात् प्रेस, मानमंदिर, बाणगसी में मुद्रित

विहार-भूमिसेना शिबिर : श्रेयचारा

दिनांक ३० जनवरी, १९६८ दिन
 मैं २ बजे पटना को और से बाहर गया
 नगरान पर पावो रकी : २५० किसानो का
 एक दल उत्तरा और 'मल्ल' किनोवा को जय'
 इस उद्देश्य से प्लेटकारमें गुप्त उठा। गाँवियो
 को भाँते उस और लय गयी। भाँति भाँति
 के गारे लपटा हुआ, यह दल स्टेशन व
 बाहर आया, वहाँ गया मगर के सर्वोप-
 कार्यालयों को एक टोली उभरा। स्वागत
 करने के लिए रकी थी। यहाँ से मुख्य-संस्थान
 जुद्ध के रूप में यह दल बाहुमंडल को और
 तथा वहाँ तथा समय सुप्रसन्न, प्रायणा व
 शार्वजनिक सभा का आयोजन था।

निर पर बेसारी कुमाल पतिवत्त म
 पाल, डोकक, मुद्रय, मजोर भाल गोचो की
 लय प्राप्त, कमाल का इत्यथा। पनाश्रदादि
 गण, पक्षि अग्नि, नही-नही बंदो की
 बाह-बार मोदार, पल-पल पानी की पत्रनी
 पुदार, सन-सन सूर्योले पुँर्यो पवन फिर
 को परदार दोषकर विहार राज्य व १३
 जिसो से काये हुए १३ शासियो में एक
 जाने-जाने रण विरये परिषय-मृत्तु लिये हुए
 जिनसे रामदास रामस्वराज्य के अ-नीतन
 सभयो उद्घाषा नायक सु-रतन भाषा
 म लिये थे। ऐसी कबो यो-मृत्तु म गहरी
 निठा जिने खम के सजय प्रदरा, ये भूमिपुत्र
 रूपन में पवन, गान-जयाने, नारे रणान
 चल रहे थे।

ये लाग कोन है ? कहाँ से आया ह और
 कहाँ जा रहे है ? यह जानने क किन लोगों
 के मन में हूँ विस्मय के बीच उल्लुपना तथा
 चिन्ता के भाव बगे और लगे देवने जुद्ध
 को। देवने-देवने दर्शनो की अथार भौक,
 जुद्ध के नाय-नाय एहन हीरर धाय हाय
 चलने लगी। जुद्ध मया को रनिवा से सुबर
 रहा था।

सोपो का पहले वे जान था कि विहार के
 बाहरय परिषदल द्वारा आयोजित कार्यक्रम
 के अनुसार पुँरवाचित बहुपुत्र एव बहुसंघिन
 भूदान-सभ : शुक्रवार, २३ फरवरी, ६८

आज 'विहार बंद' का दिन है। जुद्ध
 निकालने, उभा करने आदि की मनाही का
 एलाज हो चुका है। जगह जगह पुलिस
 नैताव है।

दूर के लोगों को विरास हो रहा था
 कि यह जुद्ध "विहार बंद" को गया दूर
 में सफल बनाने हेतु राजनीतिक दलों द्वारा
 धार्मिक क्षेत्र से लाये गये किसानों और
 मजदूरों का है। चर्चा हा रही थी— ये
 राजनीतिज्ञाने समाज की पाठ म दिन रात
 बुरारात को रातकर उलता चपाने है।
 सीधे-साधे किसानों को से टालियो जो
 गिमायो-परायो बोलिए बोल रही है, कालियो
 कायोंगो पुलिस को। बंद करा दूवान, सपेदा
 सामान से पैतान जिना परदान किये मानेगे
 नहीं, इनमे निबटना आधान नहीं, मानले है,
 बाबले, बहकर लाग उतावले हो रहे थे
 दुःखाने बंद करने का।

केलिन देवा, जुद्ध अथाय पति म सा-त
 बरमा आ रहा है। कोई धर-पकड नहीं
 तोर कोड तथा पुलिस का पता नहीं। जुद्ध
 के परिषय-मृत्तु को बाने लगे। 'छन विनावा
 की बय, एक बनेंगे तेक बनेंगे भूमिसेना
 बिदाबाद, 'अपयकासा का जीवनदान, वल
 बरेगा विहारदान' '२ बहकूर सन् ६८ तक

विहारदान'। तो लोग चिल्ला उठे। इरा
 नहीं। वाया किनावा को जयान है। फिर
 मया था, आतक आनद में बंदल गया।

पर और दरवाने, छाने और छाये, सडके
 और चोरदरे, काशाल-बुद्ध तर-भारियो से
 सनासध भर बने। धाये से भी कभी मरगोये
 से वाहर न भाँने-भाँने बलपुंडा, बयावुत,
 लज्जालु, लोल लोचनो क कलुत्त अरमान भी
 पारदनी परिषान को भान से बाहर निबल-
 कर ध्यान से तावने लगे और अपकक मलक
 भाँने लगे। अगली बॉकी भाँनी की। वे
 पूल गये कि उनके सम्प्रादिक दृष्टि निवेय पर
 भी कोई सापेक्ष मापेन कर रहा होगा।
 किन्तानो ने शानो बलम और छविहारो ने
 भाँने बँबरे संभाले और जुद्ध की विविध
 रूपा छरिदरा का धापाजिनो में अरर कर
 लिया। जुद्ध बरना आ रहा था।

जुद्ध के भाँने लकनी हुई गीत गाने
 वाली टोली जब चोरहो पर फिर विरखन
 नाच उठनी थी और नाचो की उच्च ध्वनि
 ने वातावरण गुँव जाया था, तो वारिद
 बालाएँ गगन-जग्य पर पुँषट पडा हवा-दूदा-
 कर छरीली प्रदा का दलने हेतु धटाटाकर
 नह जाती थी आर प्रभयाम सूँ उच्छीय
 उगीचकर सडका का इय रकार बीच दश
 यो कि न बीच हो हानी को और न पून हो
 रहती थी। लभमग ॥ बडे राम यह जुद्ध
 बापू मया म पदुँकर सभा के रूप म
 गरिबानि हा गया। —भाग्मोपासल दीक्षित

क्राम्पटन की सभी मोटरों में जापर वाइडिंग की गारटी है

क्राम्पटन मोटर

क्राम्पटन पम्पिंग सट मिजरी के मामान लेग्म म्यू य-लाइट
 एव
 क्राम्पटन पम्पे
 प्रधिवृत्त विक्रोता

मरास प्रोड्यूसर इन्सचेंज बाग्पोरेमान रिमिटड

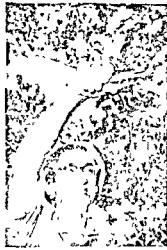
धावर हाउस
 धाराणसी कंट
 फोन-४१६४

शो रुम
 चौफ, बाधणसी
 फोन-३३१६

कर्मशील हल्लेजी

सन् १९५६ में सेनाधाम में खेती का एक क्रांतिकारी प्रयोग शुरू हुआ। काफ़ी सफलता मिली। दो-ढाई साल के भीतर दो-ढाई गुनी पैदावार होने लगी। १५वीं बीघ सन् १९६२ के मध्य में इसराइल तो एर वगैरे अनुभवों किमान 'श्री हल्लेजी' हमारे बीघ आवे। हल्लेजी तो हमको बनाया कि इसराइल में उनके पास २२ एकड़ जमीन है। इस जमीन से उनको प्रति वर्ष डेढ़ लाख रुपये की आय होती है। लगभग पन्द्रह हजार फसला वे प्रति वर्ष सरकार को कर के रूप में देते हैं। उनके पास ३२ गाँवों है और उनमें से कई गाँवों ४० लीटर तक रोबाना दूध देती हैं। घान, गेहूँ, मक्का आदि फसलों के अतिरिक्त उनके पास सेब, सतरा, अमूर आदि फलों के वृक्ष हैं। खेतों व गोशाला के अतिरिक्त एक मुर्गाशाला भी है, जिसमें लगभग डेढ़ हजार मुर्गियाँ पलती हैं। और यह सारा काम वे, उनकी पत्नी और दो लड़के

मिलकर करते हैं। उनके खेत में कोई मजदूर काम नहीं करता।



अमूर के बाग में

हल्लेजी नेवाधाम में हमारे साथ काम करने लगे और उनकी मदद। हमने बहुत मुन्दर टमाटर और बंगन की फसल उपजायी,

एक केले का बगीचा लगाया और अमूर को उपज भी देने लगे। हमारा विस्वास उन पर अधिक-से-अधिक जमने लगा। हल्लेजी उस समय लगभग ६० वर्ष के थे। लेकिन उनकी विद्येपता थी कि वे मुबहू ते घाम तक अथक परिश्रम कर सकते थे। जब कभी मे काम करने-करते थक जाता था तो उनका कार्य-कीलात मुझे और काम करने की प्रेरणा देता रहा था।

भारत में आने के एक माह के अन्दर ही वे यह सोचने लगे कि इसराइल के किसान भारत की कृषि को क्या देन दे सकते हैं? उन्होंने हमको हाइड्रोज ज्वार के बीज के बारे में बताया। उस समय भारत में हाइड्रोज ज्वार नहीं था। वे हाइड्रोज ज्वार का बीज इसराइल से लाये थे और उसकी भारतीयों से सफलता की देखकर हम लोग मुग्ध हो गये। छोटे-छोटे किसानों के उपयोग के और उनकी कार्य-शानना को बढ़ानेवाले बर्दे अत्यन्त सारे लेकिन बहुत ही महत्त्वपूर्ण बीजारा वे इसराइल से लाये। उनका बनाया हुआ एक

(पृष्ठ २५१ का विषया)

—विप्लवनाम के अमेरिका इसी सहाय-लीला क्यों कर रहा है?

क्या सिर्फ इसलिए कि विप्लवनाम को साम्यवाद से बचना है? एशिया को साम्यवाद से बचाने की टोकेदारी अमेरिका को बिसने चीनी? क्या एशियावालों के पास बुद्धि और विवेक नहीं है? और अमेरिका के पास साम्यवाद का विचार भी क्या है? क्या पूँजीवाद? क्यापाणकारी पूँजीवाद? टालकर के मद में पूँजीवाद? अगर एशिया के नव-स्वतंत्र देशों को अपने पूँजीवाद और साम्यवाद में से ही किसी एक को चुनना हो तो निश्चित रूप में जनता पूँजीवाद को नहीं चुननेवाली है। उसे अपने घर में जिस सामतवाद और पूँजीवाद का अनुभव हो रहा है, और अमेरिका को जिन ज़िरी और घुली कुत्तों और कुत्तों को वह देख और सुन रही है, उसमें उछके मन में पूँजीवाद के लिए जगह नहीं रह गयी है। रहनी भी नहीं चाहिए। साम्यवाद विप है, तो पूँजीवाद अमून नहीं है। साम्यवाद कम-से-कम नया विप तो है, जिसके नयेन में आशय है। उसमें पुराने विप का मुकाबिला करने और भर-मितने, ही शक्ति तो है! अमेरिका किस बचाना चाहता है—विप्लवनाम को, या अपने पूँजीवाद को?

हृद देश को आत्म-निर्णय का अधिकार है। उसे वैसी व्यवस्था पसन्द है, इसका निर्णय उसके सिवाय दूसरा कौन करेगा? साम्यवाद का होना दिखाकर अमेरिका छोटे देशों को इस स्वतन्त्रता का भी आह्वान कर रहा है। होना यह चाहिए कि विप्लवनाम का आत्म-निर्णय का

अधिकार मान्य किया जाय, और चीन या किसी देश द्वारा हस्तक्षेप न हो, इसकी व्यवस्था हो। लेकिन जब अमेरिका खुद अपने 'प्यार' से विप्लवनाम का खत्म कर देने पर उतारू है तो कोई निपटसा व्यवस्था कैसे हो सकती है?

अहम्य की गन्धिया का जाने दे विदर की सकिती नहीं है? नहीं है विदर की नागरिक चेतना जो विप्लवनाम की सहाय-लीला देख रही है, देखनी जा रही है। एक क्रोधी के चोर-दुरग के कारण होनेवाला महाभारत इष्ट नहीं, नृपस महाय-लीला के शानने बितना हन्ना और सखिब था?

बितना जम्दरी है कि एशिया की प्रतिभा इस समय साम्यवाद और पूँजीवाद दोनों का विचन दुँडे, और बिनागारनी विमान पर मानवता का अडुन लगाये।

यदा भारत पूँजीवाद और साम्यवाद दोनों का विपला दुँडे का काम कर सकता है? कर तो सकता है, पर उसका राजनीति, निपटसा होते हुए भी, उसकी भूगो-भोगी जनता को प्रच्छ 'अमेरिकावाद' और प्रच्छ 'चीनवाद' के नाकलान में बंधनी चली जा रही है। जो अर्थव्य संग अनी भी इन दोनों में अलग है वे निश्चल है, निश्चल है।

लेकिन हृद निश्चल पर नहीं उद्योग दिवायी दे रहा है। जनता में उसकी माँग है। परिस्थिति में अग्रसर है। उष्ट्र को चेतना 'सर्ग' के शय बुद्धि वाय तो विपल्य निश्चल आवे। ●

बहुसूत्रीय हल मात्र व्यवस्था की और तालपुर के कारखाने में बनना है और इन औजार को हिन्दुस्तान ही नहीं, मेघाल और सिक्किम के रिजानो ने भी हमारे द्वारा मंगवाना और उपयोग किया।

वर्ष १९६३ के आरिह में जब वे इस्पात जाने लगे तो मैंने उनसे यह भी कहा, 'मे कुछ दिवों में आपको देना चाहता हूँ, जिससे आपकी यादगार बाबू को इस्पात में 'रूढ़ धर' उल्टी सुरक्षा हो जाए, क्या सही हूँको दे दो।' मुझे आपसे बहुत। 'जहाँ देखने लगा। वे बोले, 'यूय सीय एवंग बॉर्ड जयगा नहीं कर रहे हैं। यह धर्य में ही बहुर करुण में खोजे जाती है। यदि इस्पात में हमारे पास क्या सही धर्य तो हम विशेष विनिर्माण को एक हरे चरे श्रेण में बरत



बर्षागाया में

के।' ऐसा था उनका विचार। वे बहुतों से कि हिन्दुस्तान को जमीन हलकी बन्दो है और नहीं पर जाने के और हलके अधिक है कि यह देश सारी दुनिया का भिला हके।

मैंने वे जाने के बाद वे इकोनॉमिक्स के बारे में कहाँ एक बहुत बरी इतिहासता का बखाना करने लगे। मेरे मन बाबा उनको हिन्दुस्तान को बरत जाती थी। उन्होंने मुझे लिखा कि यहाँ हाथन ही बरती है, मेरे मन बगवानाहूँ मैंने और अन्य सर्वोप कार्यकर्ताओं मैंने मेघालको बखाना की बहुत बरती है। उनके बाद वे दो बार हिन्दुस्तान आये और यह कोष में तो कि बड़ा इस्पात कारखाना और बागमन भारतीय के लोग विचार इस देश में इतिहास की कोई योजना का बखाना केर के इस्पात में। कर्ना में इस्पात विनिर्माण को मर

के हमने इस बर्तों को आगे बढाया, परन्तु इसी बीच इस्पात का धरत देनी के साथ कुछ दिव गया।

हूँकोभी तो १९९० बीच आने विदेश विचार से बर्तों की और करने के आसिरी पत्र में मुझे लिखा कि इस्पात का विदेश विचार यह माना। है कि शासकन आर्थिकन के साथ मिलकर इस्पात की संरकर एक इति विचार-बोर्डन बनाने में मदद कर सकती है।

इस प्रकार का बर्त-बर्तार उनके साथ मर रहा था। इसी बीच इस्पात के विनिर्माण का एक तार मिला कि हूँकोभी को १९९० बर्तों में एक दोहन मध्य कीडी से मिलकर मर गये। यह बर्तन ३ जनवरी '९० को भी और उनका तार मुझे बर्त दिव बाद सिन्धुपुर के मुख्य आधिकारी धीम में पूजन पूजने मिला। उस तार के कुछ ही दिव पहले मुझे एक पत्र मिला था, जिसमें हूँकोभी ने लिखा था कि इस्पात देश के साथ विचारों की एक टीम हमारी मदद के लिए शासक ही भारत का सनेगी।

इस्पात की विचार का उपराज तार मर म हलक रह गया। हूँकोभी इस दुनिया म नहीं रहे, इस बात पर विचार हो म ही होना था। क्या हूँकोभी के साथ जो हाता हमने सजोया था, वह बहुत ही यह बर्तन ? क्या भारत में काम करने की हूँकोभी को बर्तन सपूरी रहेगी ? क्या भारतीय विचारों को इस्पातों रिजानो का जो आहार वे देना चाहते थे, यह नहीं मिल सकेगा ?

हमारे बारे तक उनको ही हुई बनेक चीजें हैं—रिजानो, वेरगोथे इति-औजार, बर्तन-उपकरण (कि) मे एक चीजें हूँकोभी की काय को बकी मिलने नहीं देती। हूँकोभी विचार कार्यकीय बर्तन से और वे मरत धरप में भी काम करती-करते ही गये। उनके जीवन के समय ही उनकी गौरवपूर्ण धरु है।

हूँकोभी इस्पात के रिजानो की एक मंत्र भारत के विचारों को देना चाहते थे। भाषा है, उनका यह धरत गुरु हाता।

—प्रम भाई

पंडित दीनदयाल उपाध्याय

जन्म

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जन्म मधुप जिले के छह गांव के एक साधारण ब्राह्मण परिवार में मई १९१० में हुआ था। बचपन से ही उनके माता पिता का देहान्त हो गया था। उनके माता ने उनका पालन-पोषण किया। उन्होंने बाल्य में शिक्षा पयी। अध्ययन काल से ही उनका भावपूर्ण राष्ट्रीय स्वयंसेवक मण को आर था।

कृषि

श्री उपाध्यायजी की कृषि प्रारम्भ से ही साहित्य एवं प्रकाशिता में थी। सन ३३ से



प्रकाशन 'स्वदेश', 'राष्ट्रधर्म' एवं 'पंचमण्डल' जैसे पत्रों के उनका निरंतर का सम्बन्ध था। 'राष्ट्रधर्म' के वे बर्तों संपादक भी रहे।

प्रवृत्ति

वर्ष १९३१ में उन्होंने जनसभ को बनाया जोरक समर्पित किया। जनसभ के विचार-निर्माण का येव उपाध्यायजी की ही है। जनसभ की गरी बर्तन विचार के निर्वाह में उनका सर्वप्रमुख स्थान था। कई प्रश्नों पर जनसभ की विधि ही उन्होंने धार्मिक और डेकर उले प्रस्ता में साहित्य बनाया था।

गुरु

श्रीम बनना ही उन्होंने शीला ही नहीं था। भात-भात में विद भयन उनका स्वभाव था। भोजन में सारणी, कार्य के प्रति बहुत विद्य, धर्म के प्रति एवधरत और सरकर के प्रति विचारविमलित उनके बचकात गुरु थे।

प्रशान्त महासागर का स्वामी कौन ?.....

अमरीका के राजनीतिक नेता बार-बार यही बहते जाते हैं कि वे केवल अपनी ही सेना को विजयनाम मे क्यों हटायें ? इस प्रकार की एकपक्षीय कार्यवाही वे किसी हलाल में कर नहीं सकते। उनकी इस प्रकार की बातें न केवल विजयनाम की समस्या टाल देती हैं, वरन् लोगों को भ्रम में भी डालती हैं। यह तो हम सभी जानते हैं कि हटना तो केवल अमरीकी सेना को ही है। भला विजयनामो हटकर कहाँ जायेंगे ? वे तो अपने ही देश में हैं। यदि उनकी ओर से कोई विदेशी सेना छड़ने बायीं होनी तो वह अवश्य टोट जाती। इस प्रकार की सब बातें निरर्थक लगती हैं। इसमें विजयनाम-मुद्द का गलत इतिहास हमारे सामने आता है।

विजयनामो जयता अमरीका पर किसी प्रकार का आक्रमण करना नहीं चाहती। आज जो मरचें वहाँ के लोग चला रहे हैं, वह केवल अपनी राष्ट्रीय स्वतन्त्रता के लिए है।

यदि कोई यह दलील हर्ष देना है कि वर्तमान परिस्थिति में किसी भी अमरीकी राष्ट्रपति के लिए विजयनाम मे अपनी सेना हटाना सम्भव नहीं हो सक्ता, उन्हें मे यह उत्तर देना चाहना है। आज ममार कता प्रत्येक देश इस युद्ध का वद करने के पक्ष में है। इन देशों में कुछ तो अमरीका के अच्छे मित्र देश भी हैं। वे सब यही बहते हैं कि यह युद्ध समाप्त होना चाहिए। इतना ही नहीं, किन्तु अमरीकी लोग भी अब इस युद्ध को समाप्त करना चाहते हैं। अमरीका के राष्ट्रपति को विजयनाम से अपनी सेना हटाने की घोषणा पहले ही से करने की कोई आवश्यकता नही। उन्हें केवल इस प्रकार का आश्वासन विजयनामो जयता को रूप अपना दर्लकड द्वारा देना होगा। इस प्रकार का आश्वासन मिलते ही विजयनामो बातचीत करने के लिए तैयार हो जायेंगे। स्व तथा हिंसा विनोद-

ममभोजन के समुक्त व्यवस्था होने के नाते उनको मरचयों विजयनामो अवश्य स्वीकार करेंगे। अब अमरीका तथा विजयनामो लोगों के बीच इस प्रश्न पर बातचीत कुछ प्रगति कर ले सब अमरीका सेना हटाने के निश्चय के बारे में घोषणा करे।

इस चर्चा के साथ ही यदि हम इस बात पर भी विचार करें कि अमरीकी सेना विजयनाम मे क्यों है तो गलत न होगा। अमरीकी सेना की विजयनाम में उपस्थिति के कारणों के दो प्रमाण भेरे पाए हैं, जो मैं पाठकों के सामने रख रहा हूँ। अमरीका मगरा में अपनी गार्जभोम मक्ति बनाये रखने के लिए इस देश पर अपना प्राधिपत्य बनाये रखना चाहता है। सुदूर पूर्वी देशों पर अधिकार रखने के लिए यह महत्त्वपूर्ण देश है। यही कारण है कि पाषीमी सेना को हार होने तक अमरीकी सरकार उनका अस्ती प्रतिगत लर्च दे रही थी।

११ जनवरी १९६७ के 'न्यूयार्क टाइम्स' में एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण लेख छाया था। इसके लेखक भी सी. एल. सायमनगर की वास्टर रायटर्सन थे जो उन दिनों बातचीत हुई थी वह उन्होंने इसमें प्रकाशित की है। वास्टर रायटर्सन सुदूर पूर्वी मामलों मे जान्नी थे। यह बातचीत २२ अप्रैल १९६४ में हुई थी। इसी दिन पाषीमी सेना की विजयनाम में हार हुई थी। रायटर्सन ने उन अज्ञान दिन बड़ा था

"आज का दिन अमरीका के इतिहास का सबसे अग्रिम दिन है। हर्ष यह स्वीकार करना ही होगा कि हम किसी भी नोमस पर दक्षिण-पूर्व एशिया को अपने हाथों से निष्कल जाने नहीं देंगे। यदि पांच की इस युद्ध में हार हुई तो हमें हस्तक्षेप करना ही होगा। दक्षिण-पूर्व एशिया हमारे हाथ से निष्कल जाने से हमारी प्रतिष्ठा पर भी अधिक आघात। यदि यह देश कम्युनिस्टवादी हवा तो चीन की सभसे बड़ी विजय होगी। संकित

इति मे यह जगह जितनी महत्त्वपूर्ण है उन्नी ही कच्चे माल की इति मे भी है।"

उपरोक्त स्पष्टवादी कथन मे हर्षें यह समझा देना नहीं लगती कि अमरीकी सेना विजयनाम मे क्यों है। अमरीकी नेता जोन रस्क तथा जलनल कोरॉ के सामने भी बहते हैं उसके अग्रगण्य करते कुछ नहीं। उनको दुर्भाग्य वादों का दूसरा प्रमाण ३० मई १९६७ के 'लुक्' पत्रिका में छपी एक लेख में मिलता है। इसे 'लुक्' के विदेशी सम्पादक रायटर् मोस्कोन ने लिखा था "सुदूर पूर्व अब हमारा सुदूर पश्चिम है। अमरीका की पश्चिमी सीमा अब प्रशान्त महासागर के दूरस्थ टट पर है जो सानफ्रांसिस्को मे ८००० मील दूर है। एशिया महादीप मे कुछ दूर के छोटे द्वीपों को हमें अपने अधिकार में रखना है। इनमें कोरिया, विजयनाम तथा बायलेथ प्रमुख है। यहाँ पर हमारे तैब कात से कर्षक सैनिक हैं, हमारे वायुयान हैं तथा पश्चिमासी नौसेना की दुर्घटनाएँ हैं। हम—केवल हम ही प्रशान्त महासागर के स्वामी हैं और हम वहाँ मे हटेंगे नहीं।"

उत्तर विजयनाम के राष्ट्रपति ही बिभिन्न अमरीका की यह अधिकार-सौलुगा भावते हैं और यह भी जानते हैं कि अमरीका जितना पश्चिमासी देश है। विन्तु फिर भी वे तथा उनके देशवासी अपनी स्वतन्त्रता की बलिछाया बन्नी भी छोड़ नहीं पाते। जब तक अमरीका विजयनाम पर अपना अधिकार इतना पाहेगा जब तक यह युद्ध जारी रहेगा। यदि यह युद्ध जारी रहा तो उनके अग्रगण्य लोग मारे जायेंगे और वे यह भी जानते हैं कि यह युद्ध बन्द नहीं होगा। उन्होंने एक बार मूमने बड़ा पा कि युद्ध में हार मानने की मर्याद मे १४-२० वर्ष तक लड़ने रहेंगे और बल में बंगलों में बले जायेंगे। अब तक उन्होंने अपनी बात रखी है।

—रसूल जानमन

(गणनी धार्मिक प्रतिष्ठा के शीतल्ये छे)

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक आत्मोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक साप्ताहिक

सर्व सौजा र्शध का मुख पत्र

सम्पादक : रामप्रति

मुद्रणार्य वर्ष : १४
१ मार्च '६८ धक : २२

इस अंक में

नञ्च का समाप्त और राजनीतिक बराहेंचानी
—विडराज कड्डा १४८

'उत्तर प्रदेश दान' —सनातनीय २४६

ग्राम-परिषदों और रचनात्मक कामकाज
—टी० के० ब्रह्मदेव २६०

शु राजवत, स्व राज्य —विजोदा २६१

समाज परिवर्तन की भूमिका और मासम
का दृष्टिकोण —श्री० वि० के० नेडेकर २६३

'एक भारतीय क्रांति' की राह
—प्रभाकर जोशी २६६

साईं पाटने का धर्मना —उत्तरा देवदा २६७

बिहार भूमि-दान विचार पैसाका
—राही २६६

अन्य शतक
समाचार-सामय
मान्योलन के समाचार

साहित्य शुरु . १० ६०

एक प्रति : २० पैसे

बिना में साधारण डाक-मुद्रक—

१८ ६० या १ पीठ या २१ डाक

(इसका डाक शुल्क वेगों के अनुसार)

सर्व-सेवा-संग प्रकाशन

राज गेट, शारापली-१

कोल ६० ४२८४

खादी का आधार : समकदार नागरिक

मैं एक हिस्सा हूँ। मान लीजिये, १२ लोग खादी का कपड़ा खरीद कर लेते हैं। एक मनुष्य के लिए १५ गज खादी, यानी १२ मनुष्यों को १४४ गज खादी हुई। तो एक व्यक्ति को १२ महीना कपड़ा-खाता मिलेगा। पूरी इम्प्लायमेंट (रोजगी) मिलेगी। गरीबी में ही चुनाव होगा अभीसे से नहीं, लेकिन चुनाव ही जायगा। १२ मनुष्य अगर खादी इस्तेमाल करेंगे तो एक मनुष्य का चुनाव होगा। हिन्दुत्वान की तो बात ही क्या, यह मुझे मिला है, यही खादी प्रतिष्ठा है, खादी के लिए वहाँ आधार है, अगर वहाँ के ३० लाख लोग खादी इस्तेमाल करते हैं तो बाई हजार लोगों को 'इम्प्लायमेंट' मिलेगी और साथ जायते होंगे ३० लीजिये से कार-बहार बड़ा खोर ५० नेहरू को वह मानना क्या कि हिन्दुत्वान के सबसे नीचे के स्तर के मनुष्य की आयतनी १० ६० है। ऐसी हालत में १२ मनुष्य मिलकर एक मनुष्य को 'इम्प्लायमेंट' दे रहे हैं, ऐसा ही तो बहुत बड़ा काम होगा। हमें मानना होगा कि खादी से बड़ा 'इम्प्लायमेंट' पेटेन्टियल है।

फिर अगर कोई खादी इस्तेमाल करता है तो उसका सर्व-हितना अधिक रहेगा? मिल के रूपके के बदले खादी इस्तेमाल तो १२ या १४ रूपये अधिक खर्च करना पड़ेगा। एक मनुष्य में १४ ६० अधिक खर्च किया और उस आधार से एक मनुष्य की शांति-रक्षा खाता मिला, 'इम्प्लायमेंट' मिला, तो बिना-शुल्क, पवित्र दान-काम माना जायगा। ये लोग कुल-कुल दान तो बेचारे करते हो हैं, क्या बिना-दान करने विवेकी-संगम पर दान करेंगे, खाद-दान पर दान करेंगे, पिना को मनु पर दान करेंगे; हम यात्र लोगों को समझते हैं कि चाकी सब दान बंद कर और पहाड़ में तो चलेगा। मैंने दान देना? एक बात बताता हूँ। आप रोज समाज-कर्म लिये होंगे, तो शांति-रक्षा के रूपके का सर्व-संगमें लिखेंगे। मान लीजिये, आपने ३४ ६० को खादी खरीदी, तो बचता बाले २० ६० लिखिये और १४ ६० धान-दान लीजिये। उसकी दान के तौर पर तो प्रसिद्ध नहीं हुई लेकिन वह दान ही है, धान-दान। हमारे शांति-रक्षा तो लिख दिया है कि 'स्वायत्त-नववति'।

सर्वोत्तम दान कौनसा? जो दाता को श्रेष्ठ बनाता नहीं और जो लेनेवाले को दुःख बनाता नहीं। कर्तव्य-संपन्नों कि हम काम करते हैं। इसकी मजदूरी हमारी मिलती है। और साथ-साथ कि राष्ट्र के लिए मैं अपनी योगी सेवा दे रहा हूँ नम्रता से।

पहू शांति में इसलिए कहना हूँ कि जनता खादी खेने महान उद्योग को मरद देगी नहीं, तो खादी सरकार के आधार से खादी दिखेगी, ऐसे भ्रम में रहना नहीं चाहिए। खादी जनता से दिखेगी। इसलिए कानून बना चाहिए कि मैं खादी धरी-रखा हूँ यानी धरी-रखा का खादी-रक्षा दे रहा हूँ। खादी का आधार समकदार नागरिक है और प्रभाकर प्राचार्य, भाषा-विद्वान ही हैं। इनका काम है हमारे में ऐसे उद्योगों की प्रतिष्ठा बनाना। शिक्षा के साथ-साथ को 'शांति-रक्षा' देना।

(सूत्र : १२-१-६८)

—विजोदा

भी जमीन पाकिस्तान को देनी वड़े ऐसा फैसला हरगिज देग को नहीं मानना चाहिए। इस तरह हर वात पर बाल डोरना और तलवार की धमकी दिखाना पुराने जमाने की राजनीति है, आज के उद्बुद्ध और वैज्ञानिक युग के अनुरूप तो हरगिज नहीं है। अणुयुग में हम पुराने जमाने की मनोवृत्ति और तरीके पाय में नहीं ला सकते। आज के युग का यह तवाजा है कि राष्ट्रीय के बीच के विवाद जहाँ तक सम्भव हो, शांति से ही हल किये जायें। हर छोटे-बड़े खवाल की देत भी शांतिमयता (डावरेन्टी) का या उसकी इज्जत का खवाल बना देना उचित नहीं है।

लोगों की भावना उभाड़ना आसान है, पर फिर उनको नाबू में रखना मुश्किल है। देत की इज्जत तो इस बात में है कि 'जो बचन दिया गया है उसका पालन किया जाय। भारत के शासन इसके सिवा दूसरा कोई सम्मानजनक रास्ता नहीं है कि यह पंच-संघले की स्वीकार करे और उस पर अमल करे। इसके विपरीत कुछ भी करना असोमनीय ही नहीं होगा, बल्कि गैरनिष्पक्षकारी और अंतैतिकाता वा काम भी होगा।

अंतैतिकाता ही जब कि देत के राजनीतिक खंगों की असाइनाओं से छोड़ो तो सावधान हो जाना चाहिए और जो नैतिक और छोटी बात है उसका सम्मान करना चाहिए। बचन का पालन, नैतिकता और शांति की इच्छा कियी भी माने में गलत या बजबोरी की शोरक नहीं है, बल्कि मुन्फ की ओर जमादा मजबूत करनेवाली भीजें है, यह छोड़ो की हाए समझ लेना चाहिए। कच्छ के मामले को पंच-संघले के सुपुर्द कर निर्णय करके सब लालबहादुर शास्त्री ने अत्यंत बुद्धिमानी और राजनीतिक प्रोड्डा का परिषय दिया था। उनसे इत्ते हुए आर्यासतन के पीछे हटाना न शिष्ट उनके प्रति विश्वासपात होगा, बल्कि भारत की शुभिया की नजरों में भी नीचा गिरावेगा। अन्तर्राष्ट्रीय शांति का भी खराजा है कि भारत और पाकिस्तान दोनों इस पंच-संघले को मजूर करें, इसीमें दोनों देवाँ और उनका बगैरों प्रजा का हित है।

-मिद्वगत शृद्धा

कच्छ के प्रश्न पर अन्तर्राष्ट्रीय पंच-संघले ने जो फैसला दिया है उसके त्रयष में देत की कुछ राजनीतिक पाटियो और नेताओं ने एक आश्चर्यजनक विवाद खड़ा किया है। कच्छ की खाओं में हिन्दुस्तान-पाकिस्तान दोनों देशों के बीच की सीमा वहाँ मानी जाय, इस प्रश्न पर मतभेद बला था रहा था। इस विषय को लेकर दोनों देशों के बीच एक से अधिक बार काफी गभीर तनाव और संपर्क भी हो चुका था। आखिरकार दो वर्ष पहले दोनों देशों ने मिलकर इस विवाद को पंच-संघले के लिए सुपुर्द करने का स्वीकार किया और उसके अनुसार एक अन्तर्राष्ट्रीय पंच-संघले दोनों देशों की स्वीकृति से नियुक्त हुआ। पच्छ की खाड़ी का करीब ३५०० वर्गमील क्षेत्र विवादस्थ था। पाकिस्तान का इस क्षेत्र पर जो दावा था यह पंच-संघले ने स्वीकार नहीं किया, लेकिन दोनों देशों के बीच की सीमा का अधिक व्यावहारिक निर्धारण करते हुए जो फैसला दिया उसके अनुसार इस ३५०० वर्गमील में से करीब ३०० वर्गमील क्षेत्र पाकिस्तान को जायगा।

जिसी भी भगड़े को एक बार पंच-संघले के लिए सुपुर्द कर देने के बाद कोई भी सम्बन्धित पक्ष उसके निर्णय को सिफै इसलिए मानने से इनकार करे कि वह पूरा या कुछ अंशों में उसके सिक्का मथा है तो वह अत्यन्त गैर-निष्पक्षकारी की ओर अनुचित बात होगी। आखिर राजनीति में भी कोई नैतिकता हम वक्की छोड़ेंगे या नहीं, या जब जेसा हमको अनुकूल हो वैसा रख अन्तैतिकाता करेंगे? अगर पंच-संघले पाकिस्तान के विरुद्ध हुआ होता और उनसे उमे मानने से इनकार किया होता तो?

कुछ लोग यह दलील दे रहे हैं कि इस प्रकार के भगड़े को पंच के सुपुर्द करना ही गलत बात थी। जिसी भी राज-

नीतिक निर्णय के बारे में दो रथों हो सकती है, लेकिन देत की ओर से जिम्मेदार लोगों ने एक फैसला किया और उसके अनुसार दो वर्ष तक अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस विवाद की सुनवाई भी होती रही। अब जब पंच-संघले सुना दिया गया तब इस बात में कोई खार नहीं है कि मामला पंच के सुपुर्द करना ही गलत था। जनमष और सयुक्त-सोवियलस्ट पार्टी के जिम्मेदार लोगों की ओर से यह कहा जा रहा है कि वे इस फैसले को हरगिज नहीं मानेंगे और न केवल सयुक्त बल्कि 'सबकी पर भी' उसका विरोध करेंगे। अगर वे सच-सुच यह मानते थे कि मामला इतना गभीर है और उसको पंच-संघले के सुपुर्द करना गलत था तो गुरु से ही उन्हें उचित अमल का विरोध जारी रखना चाहिए था, वरनाय कोसिध बननी चाहिए थी कि भारत पैरथी में न जाय। अब पंच-संघले सुपुर्द अंशों में हजारे विरुद्ध होने पर इस तरह की दलील उठाना क्या एक बहाना मान गरी माना जायगा?

कुछ लोग यह दलील देते हैं कि पंच-संघले में न्यायाधीश ने दोनों मुन्फों के बीच शांति बनी रहने की भावना का भी उल्लेख कर दिया है, इसलिए पंच-संघले जानूनी या या न्यायिक न रहकर राजनीतिक हो गया है और इसलिए हमें उसे अमान्य करने का अधिकार है। यह सिफै बाल की माल निवालने जंघों बात है। पंच-संघले में अगर किसीने शांति की बात पर जोर दिया है तो उमे पैंगडे का दोष नहीं बल्कि गुण ही मानना चाहिए। एक-दूसरे से जमादा देगप्रेम और बहादुरी की होइ लगानेवाले लोग इस तरह की दलीलें दे यह आश्चर्यजनक तो नहीं, पर दक्षिणावृत्ती मनोवृत्ति का सूचक बकर है।

पंच-संघले का विरोध करनेवाले राजनीतिक नेताओं ने ऐसा वातावरण बनाया गुरु किया है जेते कि इस पंच-संघले को मानना मजूर बना देसोह होगा। इनका बहाना है कि एक इस

‘उत्तर प्रदेश दान’

दश

१९५६ चालू रिटोय बंध में संशोधन ने तब से किराने तथा मांस के भाड़े में वृद्धि को घोषणा की।

१८-५-६६ परिवहन बलाह में राष्ट्राधिपति का एक नाम पुरा किया गया।

२१-५-६६ भा. मनु नियमों में सरकार के बंध बना लगाने को माना कि नया मांस को भारत से अलग करने के प्रकार में भारत के बंधे नियमों का ह्रास है।

२०-५-६६ केरोय साधकों ने दिल्ली को आराधन दिया कि सरकार का भाव समूची मुद्रा के न के नहीं किया।

२२-५-६६ सोवियत इतिहास यात्री ने कहा कि कश्च संदेश पर भारत करने बंधन को पुनः बनाया।

२४-५-६६ उत्तर प्रदेश में राष्ट्राधिपति का एक नाम पुरा किया गया।

विद्वान

१८-५-६६ सोवियत प्रधान मंत्री ने सोवियत किया कि सोवियत बंध रॉय विधानमंडल में विधानों को बहाल कर रहा है।

१९-५-६६ एक अन्तर्राष्ट्रीय दिवसगत ने यह निर्णय किया कि क २५ के दल के विधानमंडल क्षेत्र का ६० प्रतिशत भाग भारतीय क्षेत्र है।

२१-५-६६ अफगानों को विधानों के ह्रास के राष्ट्री मंडल के बहाल पर जोर आ बहाली की।

२२-५-६६ उजान ने कहा कि उत्तरी विधानमंडल बहाली के बला होने पर ही कामिनीय सुख होगी।

२३-५-६६ विधानमंडल के बहाल के देश को राजकोषी बंधनों पर हस्ता कोन किया।

२४-५-६६ इस के तबे पर मनु नियमों का २६ तिन का बंधना कान को बना।

यह १४ १६ १७ परचरी को गांधी सामग्य मेरठ न एक बायकर्ता मोठी हुई। उभमें स्पष्ट इन हस्ता कि विधानमंडल के बारे में विचार तबहु दूरको जगह के छापीको के भी घोषणे का घराणा बंदल किया है। घोषणे की ऊबई होखल की चुनरी परी की विपत्ता गांधी का भरोसा बहू सब मेरठ को बंदल में देखने को किया। तब ही पत्रा कि उ० प्र० दान का भाग २ आबुवर १९९६ तक पूरा करना है। विनोबाजी का सभ्य का दान के सफल के विचार से ही मान्य हो रहा है। उ० प्र० के १२ परिषदी जिलों में काम शुरू हो चुका है और जोर पकड़ रहा है। पूर्वो जिलों में बर्न-बा वेको के साथ विधादान की ओर बन् रहा है। लमभय भाषा जिला प्रायदान का क्षेत्र बल चुका है दोष आधे में पहुचने की देर है। बादापली विजयपुर साधमान तथा बाजोपुर में मसिमान पलाये गये है। सीखा सामान्य हा चुके है। दन जिलों के अलगया दूधरे जिला में भी चिन्तारी मुलायमे की बीगिंग है। जो बपिल भाई और भी राजधाम भाइ कामे जनेक छापीको के साथ चिन्तारी मुलायमे के काम में तिन रात करे हुए है। ये लोग न छुन चल ल रहे है और न रात पर में चल दूध ६ हजार रचनायक बायनतिली को धर १९९६ तक बन लने दगे। और जब धार विधान उ० प्र० और पन्नाय के और उबर तमिलसाड और उभीसा में एकसाय दान का घोष होया तो दूरे देय में जेने प्रथम का जायका। उस प्रथम को हो ता अहरन है। हा तिन उभको राह देयो जा ग्यो है।

काम बहुत बडा है। एकाई बडी है। काले दान स्वराय से बंध का गही है। यह अ तम और सबभय लडाई भारत के हो लिए नही मजबूर हुए एगिज और बाजोका के लिए निर्वायक छुट्ट होबालो है। मडकनेपाला ह्यारा बाला बरेका रोग ग्यो है लकिड तथा रास्ता विनालने की सामान्य भारत के विधाय बडी और सिदारी ग्यो देयो। भारत के पास बरलिन समाधिधार है और है एड बला विरोध स्वार्थ मैत्रिक वेवुल। भारत ने देय किया है कि सब उभको राजनीति न राहाय रहे गयो है और न रचनायक। भारत की जनता को एक विधान को बेचने से तलग है। दान के रूप में ह्यारे पास बहु विपत्ता मोयू है जिसे ह्य मजबूत किनु ह्यारा के साथ देग के सामने प्रस्तुत कर रहे है।

दाल सधन है साथ है स्वराय काम-स्वराय। काम-स्वराय की रचनेका स्पष्ट रूप के जनय के साथने प्रस्तुत होयो साहित्य ताकि बहु दान के हस्ताधार में साथ स्वराय के लिए तयारता जोड सके। हने राजनीति अर्थनीति और इतिहासि तीनों को एक साथ काम-स्वराय के हॉय में डालना है। इतिहासि दान के समिधान में प्रचार प्रति और सुष्टि को सिवायक एक समन्वित प्रक्रिया बनानो है। सुष्टि के अर्थान छापीको और अधिक समीपय का प्रान उनवे का सदन बाद को कावेग सॉलन शकयताको के सदन और विधान के प्रान को दालने का बीई करण नही है। प्राति का विचार साथ को प्रयाय बने और साथ के बन में ह्य प्रति के सफल माध्यम तैयार करने सके दलना हो ह्य सुष्ठुत छावना है। इस सभ में ह्य को चोरकर दूररे को करने का काम नही उठना। प्रान के केवल समुचित समन्वित व्युत्प रचना का। तबिस को वेचन को जगता विचया पकरो है उजाना हो जम्बरी है उभ वेचना को वेपदा का रूप देते जया देते रहता। वेचन सिधो मो किनु पर पहुँकार निष्प हो सजयो है या सके उजाना दोहरार मजक सभको है। राष्ट्र की प्रतिनिधि में ह्य रे सिधु बरकर हो करने का काम नही उठना। इतिहासि काय को बंधनो की रूप ग्यो है। इतिहासि काम बह देयो के बंध पर मजबूती के साथ बहु इतरा ब्याव रचना है। उ० प्र० के माधिया को उभने निपट कर का-स्वराय बर्ता।

हय साथ है साथ बनने।

युग-परिस्थिति और रचनात्मक कार्यकर्ता

श्री संकररावजी ने कहा है कि प्रतीकात्मक कार्यों और निष्ठाओं के दिन अब सौत भुके हैं। बहुत समय से इस बात की कहने की आवश्यकता पक्षों आ रही थी। मैं मानता हूँ कि आज के रचनात्मक कार्यकर्ता के मानसिक अवरोध का एक बड़ा कारण यह प्रतीकचक्रता ही है। इसके कारण कार्यकर्ता सोते युग के साथ इस तरह मच जाता है कि यह वर्तमान युग की वस्तुस्थिति को सही-सही समझ नहीं पाता। वस्तुस्थिति और प्रतीकचक्रता की इस सीखतान के कारण कार्यकर्ता शान्ति का समुचित मूल्यांकन नहीं कर पाता। श्री संकररावजी के कथन से उत्प्रेरित होकर मैं नीचे की परिकल्पना में रचनात्मक कार्यकर्ताओं के लिए अपना चिन्तन प्रस्तुत कर रहा हूँ। मुझे आशा है कि इससे आज के रचनात्मक कार्यकर्ताओं के हृदिमर्द का अंधेरा कुछ हद तक कम होने में मदद मिलेगी।

रचनात्मक कार्यकर्ताओं को यह ध्यान रखना चाहिए कि जब गांधीजी अशोक से भारत आये थे, उस समय उनका दिग्गज विचारों से ओतप्रोत था और उनके हाथ कुछ करने के लिए उत्सुक हो रहे थे। उस समय मुस्लिमों ने गांधीजी को सलाह दी कि वे कुछ शुरू करने के पहले वे भारत की वस्तुस्थिति का सही ज्ञान प्राप्त करें। यदि गांधीजी एक व्यावहारिक और वस्तुनिष्ठ व्यक्ति न रहे होते तो उस परिस्थिति में उनका राजनैतिक प्रभाव उतना न हो पाता जितना हुआ और देश का नेतृत्व दूसरे लोगों को मिला होता।

जबकि वे कुछ अधिक वस्तुनिष्ठ होना धार्मिक जीवन के लिए हानिकारक वृत्ति नहीं है। गांधीजी की अहिंसा, कांग्रेस और उसके माध्यम से भारत की जनता को अपनी आदर्शवादिता के कारण नहीं जंच गयी थी; वह जैसी थी अपनी आस्तविक उपभोगिता के ही कारण। गांधीजी के रचनात्मक कार्यक्रम में कुछ आदर्शवादी प्रेरणा रही हो, लेकिन उसकी असली विद्योपता यह थी कि

वह लोगों की वस्तुस्थिति से जुड़ा हुआ था। गांधीजी के करियरे का यही रहस्य है। यदि आज भी हम लोगों की वस्तुस्थिति को धुंधली भाषा में बोल सकें जैसे गांधीजी बोलते थे तो हममें जरा भी संदेह नहीं है कि लोग उसी उत्साह से हमारी बात सुनेंगे। रचनात्मक कार्यकर्ताओं को यह समझ लेना चाहिए कि परिवर्तन की गति हर पीढ़ी के साथ बदलती रहती है। आज तक प्रायः हम मानते थे कि प्रायोगिक परिवर्तन के बारे में ही यह बात लागू होती है, किन्तु यह बात हर प्रकार के परिवर्तन के बारे में भी लागू होती है। आज की दुनिया बहुत तेजी से बदल रही है आज के प्रवाह से रचनात्मक कार्यकर्ताओं के विचारों पर जाने वा एक कारण यह भी है कि अनीत का बोध उन्हें बहुत दबाये हुए है।

इतिहास से हमने एक शिक्षा पायी है कि मनुष्य के विचारों का निरन्तर विकास हो रहा है। मनुष्य का विकसित होना अब भी जारी है; उसके बारे में अभी कोई आखिरी बात नहीं कही जा सकती। यह बात वैदिक युग के ऋषियों और गांधीजी के बारे में समान रूप से कही जा सकती है। ऐसी स्थिति में किसी भी व्यक्ति को विचार-धरति को विचार की अन्तिम स्थिति मानना इतिहास-विरुद्ध होगा।

ऐतिहासिक विकास-क्रम को स्वीकार करना इतिहास-श्रेणी की पहली शर्त है। ऐतिहासिक कालक्रम में कोई विचार कभी स्वीकृत और कभी अस्वीकृत होता रहता है। वह कभी भी पूर्ण रूप से स्वीकार या अस्वीकार नहीं होता।

विचार की लोक-स्वीकृति में भी उदार-पद्मन की स्थितिमा आती रहती है। यह एक वस्तुस्थिति है कि समाज के अधिकांश लोग भेद जने होते हैं, जिन्हें परिस्थिति के अनुकूल उदार या पद्मन की ओर ले जाया जा सकता है। हिटलर जैसे व्यक्ति ने लोगों को एक ओर प्रेरित किया तो गांधी जैसे व्यक्ति

ने दूसरी ओर। और अब चीन के माओ जैसे तीसरी ओर प्रेरित कर रहे हैं। इनका शाक अर्थ यह है कि सामान्य जनता कभी स्वयं ही नेतृत्व नहीं ग्रहण करती, उसे नेतृत्व प्रदान करना पड़ता है। यही कारण है कि जिसके चलेते जनमत को दिशित करने की जरूरत पड़ती है। जनमत को दिशित करके अपनी ओर मोड़ना ही वह तरीका है, जिसने कोई विचार समाज में सत्ताम्ब होता है।

वह कौनसी चीज है, जिसने हिटलर या गांधीओं जैसे व्यक्ति को अपने अमाने में स्वोकार्य बनाया? अनुकूल ऐतिहासिक परिस्थितियों और अपनी विश्लेषण सम्मोहन शक्तियों के कारण ये व्यक्ति लोकविद्यार्थक बन सके। यदि ऐतिहासिक दृष्टि से परिस्थिति अनुकूल हो और नेता लोगों को अपनी ओर सम्मोहित करने में समर्थ हो तो वह गतिचक्र जनसमूह को इच्छित दिशा में मोड़ लेता है। यदि इन दोनों में से कोई भी मौजूद न हो तो हमारी सारी कोशिशें पथर पर पथर टकराने जैसी साबित होगी है।

रचनात्मक कार्यकर्ताओं की स्थिति आज महाभारत के मोक्षपल अर्जुन जैसी हो गयी है। वे दो नावों पर सवार होनेवाले प्राणी की मुसीबत भेल रहे हैं। एक नाव है उनके प्रिय आदर्शों की, दूसरी नाव है वास्तविक परिस्थितियों की। यह उलभन इतिहास की कोई नयी चीज नहीं है। जब से आदमी में चेतना आयी तब से ही यह उलभन शिखो-न-शिखी रूप में उसके साथ रहती आयी है। उपल लोक-नीता की यह विद्योपता होती है कि वह इस उलभन की धार को मोड़कर उसे एक नये समाधान का रूप दे देता है, जैसा कि गांधीजी ने किया था।

—टी० के० मदानेवन्

पंजाब में ३२६६ ग्रामदान प्राप्तिप्राप्ता और खुदशरीखर प्रसन्नो में ७६ कार्यकर्ताओं ने अभियान में भाग लिया। ७० गांवों में सफल किया। ५९ ग्रामदान हुए। पंजाब में अब कुल ग्रामदान ३२६६।
—श्री भोमप्रकाश मिश्रा की २४ तारीख की सूचनानुसार (सार में)।

सुराज्य नहीं, स्व-राज्य

योग कहते हैं कि प्रामदान का जितना भी काम हो, पक्का हो, चाहे समय थोड़ा अधिक लगे। ठीक है, बाबा को धीरे-धीरे बड़ है। परमेश्वर पर भी उसका महारा विद्या है, इसलिए काम पक्का और धीरे हो, उसमें बाबा को कोई एतदान नहीं है। लेकिन बनाने का तबाना है कि धर-ले जल्द काम हो। गोरी बाबू परलों बात कर रहे थे और बड़ रहे थे कि देग में जो बन रहा है, वह देखकर जोने की इच्छा नहीं होती। मैंने उनको बताया ही कहा, 'दे भी दिन आयेंगे।' सार यह है कि यह बनाना 'सुनिलिख एज' का है, संभावनावाला नहीं। दुनिया बहाने कहां चली गयी है! एक घेर को मारने के लिए एक बनूक कारो होनी है। लेकिन मनुष्य को मारने के लिए यहाँ प्रति व्यक्ति हजारों एटम बम का ढेर लगा है या तो उनका विस्फोट होगा या अन्त होगा। बिहार दान कितने दिन में होना चाहिए, सब पर विचार करते बिहारवालों ने तय किया कि २ अक्टूबर, १९६८ तक पूरा हो। लेकिन बाबा को पूरा था, तो यह कहना 'एक दिन में होना चाहिए' और ठीक चलता है। एक निश्चित दिन पर सारे देग में दोकाली मनायी जानी है, एक निश्चित दिन पर दुनिया भर में क्रियमस मानाया जाता है, तो प्रामदान भी एक निश्चित दिन पर क्यों नहीं हो सकता है?

इस काम के लिए मुक, सन्, माल धन पड़ सकता है। कम्युनिस्ट, १०० एम० पी० एम० पी०, १०० पी०, बापस, जनशक्ति दल, एनएन और जनघण, वे हैं वे बड़। इन सब पार्टियों के नेताओं से मेरी बात हुई। मैंने उनसे पूछा कि क्या प्रामदान से वैदतर और आमान सौभाग्य भाव के समझे दल बनने का आन बता सकते हैं? यदि कोई वैदतर तीहा हो तो बाबा प्रामदान की बात छोड़ने को राजी है। यह बाबा का एक 'कंड' है, ऐसा आप समझते हैं, तो इसको मान कीजिये। तो सब पार्टीवालों ने कहा कि आपकी

बात ठीक है। प्रामदान से वैदतर और आमान दूसरा तरीका नहीं है। फिर मैंने दूसरा प्रश्न पूछा कि हिंदुस्तान के पनास मचले हैं, उनमें यह भी एक छोटा-सा मसला है, ऐसा आप मानते हैं या इसको बुनियादी मसला मानते हैं। तो सब लोगों ने कहा कि यह बुनियादी मसला है।

विनोय बाबू मेरे पास आये थे और वह रहे थे कि इतना प्रयाचार, महंगाई और लोगों की बर्जिआई बर गयी है, तो इसको पहले दूर करना चाहिए। मैंने उनको कहा कि सारी सुराज्यो को मैं वास्तु संयन्त्रा है इसलिए एज-एक धारा तोम्बे के बचले मूल पर ही प्रहार करना चाहता है। प्रामदान से उस मूल पर प्रहार होगा है। प्रामदान होने से इन सारी सुराज्यो का अगर परिहार होता है तो सब मिलकर उस

विनोय

मूल पर एतदाय प्रहार करें। जब बहा पत्तर उठाना होता है तो 'एक-दो-तीन,' ऐसा कहकर एतदाय सबका जोर लगाना पड़ता है, तब पत्तर हिलता है। इसलिए प्राम दान में सबका एतदाय जोर लगाना चाहिए। बहुत लोग मुझे कहते हैं, जहाँ प्रामदान हुआ वहाँ गुरलत निर्माण का काम शुरू होना चाहिए। आप जानते हैं कि घाटी के पट्टे कागजनिबध होगा है, बार में घाटी होनी है और उसके बाद सगरा शुरू होता है। मैंने

ये दिन भी जायते विशारदान प्रामदान एवमात्र मार्ग वाद का प्रश्न। प्रामसभा के हाथ

प्रामदान में प्राप्ति का अर्थ है कागजनिबध, जब घुटि का काम पूरा होगा तब घाटी पूरी होगी। उसके बाद ही निर्माण-काम का प्रारम्भ होनेवाला है। लेकिन निर्माण का कार्य केवल प्रारम्भ ही कर सकते हैं, उसका अन्त कभी करनेवाला नहीं है। वह काम अनादि-अनन्त चलनेवाला है। महाराष्ट्र के लोग सदासी पढ़ा कर बहुत मजदूर घण्टो

अपने जमीन में से सीधे-सीधे जिस्सा मानी बीजे में कट्टा देने के लिए अब बिहार में सबका मानस अनुकूल है। प्रामदान में विद्यान का कार्य का हक कायम है विद्यान का कायम है। बेचने का हक सीमित है, यह प्रामसभा को स्वीकृत से नहीं है। जमीन छोटे का हक सबको देना है। जमीन छोटे का हक सारा हो गया है। जमीन नाँव में और मानिक

वे, लेकिन वहाँ भी भूखण्ड शुरू हुआ। जहाँ भूखण्ड होता है, वहाँ निर्माण ही निर्माण करना होता है। इसलिए निर्माण के लिए मौके बहुत आनेवाले हैं। कभी बाढ के कारण, कभी सूखे के कारण या कभी राजनीतिक परिस्थितों के कारण, निर्माण के अनेक मौके आयेंगे। इन मसलों का ता जल कभी होने-वाला नहीं है। एक दिन हमारा ही मसला हल होगा। रामचन्द्रजी, भगवान कृष्ण, गौतम बुद्ध, महात्मा गांधी आदि अनेक लोग हो गये, फिर भी मसले कायम ही हैं। एक तरफ जनता और दूसरी तरफ सरकार, दोनों का सहकार कर्ते हो, हमारा काम इतना ही देवना है। फिर निर्माण-कार्य जनता और सरकार मिलकर करेगी। नावा का रोल घाटी में आधीवाँद देनेवाले ब्राह्मण जैसा है। घाटी के बाद सगरा चलाने में ब्राह्मण भी मदद नहीं पाय, तो यह उसका काम नहीं है। इसलिए प्रामदान आप लोगों को बरता है। बाबा का काम आधीवाँद देने का है।

घारे भारत में ७ दिन में 'ह्लेजमन' हो गया। अब 'ह्लेजमन कमिश्नर' बहता है कि चुनाव एक दिन में हो जाय, ऐसी हम कोशिश कर रहे हैं। तो इतने बड़े चुनाव का काम यदि एक दिन में हो जाता हो तो प्रामदान भी एक दिन में क्यों नहीं हो सकेया? अचरत है सबारी इच्छा-शक्ति इस काम में लगने की।

जमीन की विकल्पन को बाँटें तीन होनी है—एक कायम करने का हक, दो विरासत का हक, और तीन बेचने का हक। एक दिन में यहाँ की अनुकूलता जमीन नाँव के हाथ मिलानियत

प्रदान-पत्र : शुक्रवार, १ मार्च, '६८

घर में, यह जो आज की हालत है, वह आमदान से समाप्त होगी। मे हमें चा समझता हूँ कि जमीन गाँव के हाथ से और मिलियत आमदमा के हाथ से पकड़ना यह आमदान की सूची है।

पूरे बिहार का आमदान अल्प-से-अल्प हो जाय तो आगे के तीन साल में बिहार राज्य में ऐसी जन-शक्ति बनी हो सचती है कि जिसके कहे में बिहार राज्य का शासन रहेगा। मे हमें या बहुत ही कि सत्ता हमारे हाथ में लेने की आवश्यकता नहीं है। वह हमारे कंधे में रहे, तो बस है। आज भी कुछ लोगों ने कहा कि आमदान के बाद तुम्हें निर्माण-कार्य होगा तो लोगों पर असर होगा। लेकिन इसमें केवल दो आना तथ्य है। स्वराज्य-भाति के लिए हम कोविद्य करते थे, सब लोकमान्य ने एक बात कही थी कि स्व-राज्य की प्यास सु-राज्य ने बुझ नहीं सकेगी। अर्थों के रहते हुए अर्द्ध राज्य चलेगा और स्वराज्य राज्य बंध से चलेगा सब को अर्थों के साथ की अपेक्षा हम स्वराज्य को ही पसन्द करेंगे, क्योंकि वह सुनियारी चीज है। आज बंधेन आकर यदि पूछें कि स्वराज्य के बाद आपके यहाँ क्या अर्द्ध काम हुआ, तो हम उनको यही कहेंगे कि अर्द्ध या कुछ भी भी बनेगा वह हम बतायेंगे। स्वराज्य में बुद्धि का विकास होता है। इसीलिए हमको स्वराज्य चाहिए। गांधीजी को ६०० भगवानदास ने पूछा था कि आपके स्वराज्य की व्याख्या स्पष्ट करो। बार-बार पूछा गया। एक दिन गांधीजी की प्रतिभा जागृत हुई और उन्होंने कहा कि स्वराज्य याने गलती करने का अधिकार। तो आम-स्वराज्य में लोगों को गलती करने का अधिकार है। एक की गलती देखकर दूसरा मुस्र आया। अंग्रेज अगर हमसे यह कहते कि एक शासक में स्वराज्य का नमूना करके बताओ, तो हम उनको यही कहते कि आप पहले घले जाइये, हम अपना नसीब देखेंगे। इसलिए आमदान का नमूना देश करके बतायेंगे तो आमदान बढ़ेगा, यह मानना गलत होगा।

दरअसल आमदान की बचोटी क्या है ? उत्पादन शक्ति बढ़ना यह उच्चतर देरत नहीं है। बल्कि जिस प्रेम और करुणा की भावना से आमदान किया, वह भावना बढ़ रही है या नहीं, इस पर आमदान की कमीशरी होगी। यदि वह भावना बढी तो आमदान कमल हुआ, वह नहीं बढी तो निष्फल हुआ, ऐसा बहना होगा।

आप लाख कोशिश करेंगे तब भी अमेरिका की बराबरी नहीं कर सकते। उनके पास दुनिया का आधा 'पोर' (स्वर्ण) है। हिन्दुस्तान में प्रति व्यक्ति एक एकर जमीन है, अमेरिका में दस एकड़ है। दूसरी बात यह कि अमेरिका की जमीन चार बी साल की जोती हुई है, तो भारत की जमीन दस हजार साल की जोती हुई है। इसलिए उत्पादन प्रमाण में कम होगा। और तीसरी बात यह कि उनके पास विज्ञान अधिक है, जतना विज्ञान प्राप्त करने के लिए हमको पचास साल लगेंगे। इसके अलावा और एक बात विज्ञान के कारण हुई है। विज्ञान के बढने के कारण बच्चे जल्दी मरते नहीं, यह एक बड़ी आपन निर्माण हुई है। हमारे यहाँ बच्चे का नामकरण-विधि बारह दिन होगा है। मतलब यह कि बारह दिन के अन्दर-अन्दर शायद बच्चा मर जायगा। नहीं मरा तो फिर नाम रखा जाय। पहले की अपेक्षा भारत में सर्वाति अधिक हो रही है, ऐसा बर्बर से नहीं सोचना है। मृत्यु-संख्या घटने के कारण जन-संख्या बढ़ रही है।

सत्तर लाख शीमात मारे गये। कम्युनिस्टो ने जमीन परको बाँट दी। लेकिन अब कम्युनिस्टो में ही दो पक्ष हो गये। एक पक्ष कहता है कि कोशे जमीन व्यक्ति के पास होनी चाहिए, तो उत्पादन बढ़ेगा। दूसरा-दूसरा 'कलेक्टिव फार्मिग' न हो। इसके लेकर दोनों पक्षों में लड़ाई हो रही है। दोनों कम्युनिस्ट हैं, दोनों चीनी हैं, फिर भी एक-दूसरे का गला काट रहे हैं। एक खबर यह भी प्रकाशित हुई है कि एक पार्टी के लोगो ने दूसरी पार्टी के व्यक्ति को मारा हत्या हो नहीं, बल्कि उमका मांस पकाकर बडे आनंद से समारोह के साथ खाया। यह सुनकर मुझे आश्चर्य नहीं हुआ। मैंने 'सिपतप्रत दर्शन' पुस्तक में लिख रखा है १९४५ में ही, कि रूसई में लोग मारे जाते हैं तो मारने को अगर हम पाप कहें, तो वह हो चुका। अब मरे हुए लोगों को स्यामा जाय तो क्या हर्ष है ? लेकिन नहीं स्राते, क्योंकि एक भावना का प्रसव है। 'नास्तित, युटिड अशुतयम्', इस श्लोक पर वह व्याख्यान है।

आमदान के साथ-साथ हमको चार बातें समझनी होंगी। १. काम-यावता कम करो, २. पुष्टपाय बढाओ, ३. बाँटकर सजाओ, ४. सबकी राय से काम करो। इसमें से जो आनंद उपलब्ध होगा, वही सुख है। लेकिन पक्की बात समझ लो कि "कर मुजरात गरीबो में, हाँव मिले सबूतो में", वही आमदान के बाद की स्थिति रहेगी।

बहुत छुट्टी की बात है कि पंजाब-पुना

केवल दो आना तथ्य... सु-राज नहीं, स्व-राज्य... गांधी की प्रतिभा... स्वराज्य का अर्थ... कसौटी क्या ? ... भारत और अमेरिका... चीन का इन्द्र... गंगा-यमुना का संगम

आमदान के बाद आन भौतिक दृष्टि से सुख सुखी होये, ऐसा मानते हो तो बडे भ्रम में रहेंगे। आमदान के बाद लड़क, जलेबी नहीं मिलनेवाली है। जन-संख्या बड रही है, इसलिए जो भी कला-मुखा टुकड़ा मिलेगा, वह राम का है ऐसा मानकर बाँटकर खायेंगे, वही आमदान में होगा।
 चीन में सूनी भाँति हुई। एक करोड़

का समय हो रहा है। पंचायत परिषद गंगा है और सहकारिता सच समुदा है। दोनों मिलकर शासक-शासक बन संकल्प कर रहे हैं तो बिहार में तुम्हें काम होगा, ऐसी हम आशा करें।
 [बिहार राज्य पंचायत परिषद और बिहार राज्य सहकारिता संघ की संयुक्त बैठक में पटना में २२-१-१८ की विषय गये जायण से]

समाज परिवर्तन की भूमिका और मार्क्स का दृष्टिकोण

[तीन अंकों में समाज-परिवर्तन-सम्बन्धी मार्क्स के विचार और उस भूमिका से तब और चीन में हुए परिवर्तन का मूल्यांकन]

समाज-परिवर्तन का दृश्य

मनुष्य आज प्रकृति का स्वरूप छोड़ बहुत समानने लगा है। उसे ही जगने बिना का स्वरूप भी कुछ समझा है। उसे मान का आनन्द मनुष्य के प्रयत्न के बाद प्राप्त हुआ है। इस प्रयत्न में विनाय पुस्तकार करनेवाले लोग—प्राचीन युग में तथा मध्ययुग में भी—संसार के सभी देशों में हुए हैं। प्राथमिक युग में अनाज और न्यूनतम उसके बाद सिगोना हेनरीक शक्ति प्राप्त फल मानव और आर्स्टीन जगने का नाम विनायें आ सकते हैं। इन सबने मिलकर मनुष्य को प्रकृति का सम्बन्ध में तथा मानवीय जीवन का सम्बन्ध में एक दृष्टि प्रदान की है। इस दृष्टि का मानने के लिए किसी व्यक्तिगत विचार के साथ नहीं छोड़ें कि अन्तर्गतों ह। कर्म-सम्बन्ध में प्रतिक्रिया करते हैं।

मानव का उच्च स्तर पर और भय का सम्बन्ध में वस्तुविक्रम विचार देने के प्राथमिक विचारों का नाम मानव कर्मिता और पाठ इन तीन व्यक्तिगतों का नाम लिया जा सकता है—लैटिन रूप रखने के कि इन तीन व्यक्तिगतों के विद्यमान में विचारों का नाम कला, चित्रण, विचारों हुआ है। मानव ने कहा नहीं कहा कि जिसकी साथ उसकी भय बाधा विद्यमान परस्पर सम्बन्ध में व्यस्तता करना चाहिए। मानव ने कहा दिया और मानवता का सम्बन्ध नहीं किया है। बाद में मानवता का स्वरूप छोड़ने का बाद नहीं कहा है। लेकिन इन पर मानव के ही अन्तर्विद्यमान भावें जाते हैं। यह विचारों उनके विचारों बनाने पर अन्तर्विद्यमान नहीं हैं। इस दृष्टि के दृष्टिमान प्राप्त और वस्तु में इन दो और लोगों में सम्बन्ध कुछ है। यह भी

व्यापारिक ही था। मनुष्य अपना वस्त्रा पहनकर देखने का आरंभ होता है। पूजन को समाज रखनेवाले मानवीय मन के लिए ता यह मरणा है ही।

मनुष्य के विद्यमान और दृष्टिकोण का बारे में हुआ यह है कि उसके विचारों को तब ही उसके सम्बन्धों में भाँ आने करने करने से ही उसकी तरफ देखा है। प्राथमिकता का मानववाद सभी नेताओं का मानववाद बन्य देवों का मानववाद है। मानव के विचारों के सम्बन्ध प्रतिक्रम है। मानव के विचारों को मानववाद में हीन और मोहवार को देखा है। यह भी इतने ताह का एक प्रतिबिम्ब ही है।

प्रा० दि० के० बड़ेकर

इस उल्लेख ने बाहर निकलना भी कठिन है। परन्तु क्या प्रयत्न तो करता ही होगा। यह तभी समझ होगा जब हम में माह दार कि क्या चीन या किसी राष्ट्रविधि में होनेवाली किसी घटना की ओर अग्रणी दिशाकर वह कि यह देखो मानववाद का प्रवेश अवधार। द्वितीयमान का सहायलता दिशाकर हुए अग्रणीदिन का तब सम्बन्धोंवाले आर्स्टीन के मन

मन को समझा और बहुदली चरम मनुष्य के लिए माह सुक्ति समाज परिवर्तन जगने बुनियादी तौर पर परामर्श

को नहीं समझ सकते। लेकिन स्वच्छकर देखकर बाद का विद्यमान सम्बन्ध लने को हक नहीं मानी रखते। वहीं बात मार्क्स के विचारों के लिए माननी होगी।

मार्क्स समाज परिवर्तन मानविक मानता है लेकिन उसकी दृष्टि में समाज-परिवर्तन मात्र एक घातक है। हाथ तो सवका का मानव का परिवर्तन। इस परिवर्तन का

स्वरूप क्या है और मानव ने उसके लिए जोनवा मार्ग गुनाया रचना विचार हमें करता है।

यह तो कोई भी मानेगा कि मानव के बाहर बाहर के वा वेपथुय में परिवर्तन होने के ही कुछ नहीं होता और उसी प्रकार सम्पूर्ण रहने-रहने और संकेतों का बदल देने के ही वास्तविक परिवर्तन मही हो पाता। परिवर्तन होना है तो दृष्ट म ही होगा चाहिए। यानी मनुष्य के मन में दृष्टि में और भावनाओं में होना चाहिए। लेकिन क्या मनुष्य के मन में परिवर्तन जाने को जाव्यपस्था है? अगर है तो वह जाव्यपकत कब पचा हुई? यह बचली प्रश्न है। इसीका पक्ष सम्भव बना चाहिए। फिर इसका उत्तर देना होगा।

यह प्रश्न प्रश्नों के दार्शनिकों ने व्याज निकाला यानी इस प्रश्न को दिया म मानवीय मन का उन लोगों ने मोक्ष किया। मार्क्स ने पहल हेनरीक ने इस प्रश्न को अपने उच्च पर प्रस्तुत किया और मानव मन के परामर्श का विद्यमान घामने रखा। मानव ने यह विद्यमान मानव उच्च प्रश्न का अग्रणी पद्धति में तबे डिरे से प्रस्तुत किया। हेनरीक का प्रस्तुतीकरण विद्यमान का तो मानव का प्रस्तुतीकरण अग्रणीदी था। ऐसा भे-एने हुए भी परामर्श का तब हीने ते एक ही अर्थ में स्वीकार किया है।

परामर्श का प्रयाज अर्थों के एनोशन (Alienation) घात के

प्रतिबिम्ब—मात्र प्रतिबिम्ब उल्लेखन समाज परिवर्तन—मानव परिवर्तन का माध्यम परि

रिक्त किया है। मानव का मन जगनेपन प्रकृ मया है और दूसरी बाधा और परकीय बाधा की कारण इस हद तक गया है कि परलने ही उस के मन की प्रस्तुत-पूर बहिष्कार कर रहा है। मन की यह को मान्यतुक कृति है परल का ही कारण माननेवाले भाव है। वहीं परामर्श है। भारतीय सम्बन्धों को परिभाषा में ऐसा कहा

जाता है कि देह के सुख-दुःखों को ही सर्वस्व माननेवाला मनुष्य 'देहात्मबुद्धि' से ग्रसित है। इस विन्यास बचनना से मुक्त होकर आत्मा का स्वरूप पहचानने में ही मनुष्य का आध्यात्मिक श्रेय माना जाता है। 'परामर्शभाव' का विचार मूलतः भिन्न है। यहाँ आत्मा के स्वरूप का प्रश्न नहीं है, मनुष्यत्व का मानी मनुष्य के स्वरूप का प्रश्न है। मनुष्य जब मनुष्यत्व को भूल जाता है, और इस प्रकार की भ्रष्टा परामर्शता की धारण जाता है तब अर्थ का अर्थ होता है, मनुष्य स्वयं अपने जीवन के लिए परया हो जाता है। 'परामर्शता' ध्रान्ति है, परन्तु यह सही है कि वह मानव-मन को शक्ति करती है। इस भ्रम का निरसन ज्ञान से हो सकता है। मावर्ष को राय में उसका 'दर्शन' इस भ्रम-निरसन के लिए ही है।

'परामर्शता' को स्थिर करने के लिए दो साधारण दृष्टान्त हैं। जबल में पीपल, बड़ल, यद, नीम वगैरह कई वृक्ष होते हैं। प्रकृति की दृष्टि से सभी वृक्ष समाव ही हैं। लेकिन मनुष्य वहाँ जाता है तो अपनी बहना लेकर जाता है। चूँकि मनुष्य ने अपने मन में पवित्रता की एक बहना कर रखी है, इसलिए उसकी दृष्टि में सभी वृक्ष समाव नहीं होते। वह मानता है कि पीपल और बड़ का पत्र पवित्र है। इसलिए अन्य वृक्षों से वह इन्हें पृथक् मानता है और इद-गिर्द के पत्थर इकट्ठा करके, उन पत्रों के नीचे चत्रुता बनाता है। बीच में एक पत्थर रखकर उसे भगवान मानता है। पीपल की परिष्काम करने से, उस पत्थर को नमस्कार करने से स्वयं पवित्र और पुण्यमान बन आत्मा ऐसी श्रद्धा रखता है और वेशा ही करता भी है।

मनुष्य ने अपने अत-करणस्य पवित्रता की भावना को बाहर साकार किया और उसे 'पत्र' बहना मुक्त किया। बहने है कि मनुष्य को अपनी बुद्धि रहन नहीं रखनी चाहिए; क्योंकि अना स्वत्व, मन, बुद्धि और बहनाओं को रहन रख देना मनुष्य के मन की एक साधारण प्रयुक्ति है। यह अवजाने ही हो जाता है, क्योंकि यह स्वाभाविक है। 'मन एव मनुष्यका कारण बधमोक्षयो।' इस

बधन में यही अताया गया है। जो मनुष्य है उसे ही अ-मानुष और बाह्य मान लेता है, इसीलिए मनुष्य 'परत्व' के बदा होता है। 'परामर्शता' ही उसके मन को पत्र लेती है, ब्याप्त कर लेती है।

दूसरा एक ब्यावहारिक उदाहरण देखें। पर में माता-पिता, भाई-बहन आदि में पारिवारिक लेशह्युक ब्यवहार ही होता है। जैसे धन-विभाजन भी होता है, विपयता भी रहती है, परन्तु प्रतिस्पर्धा और लोभ नहीं होते। थोड़ा-बहुत हो तो भी प्रेम की छाया में, स्नेह की मयदा में ही होते हैं। शयने-वैते का ब्यवहार बाहर होता है, कौटुम्बिक नाते-रिस्ते में उसका प्रवेश नहीं है। परन्तु परिवार की लक्ष्यण-रेखा लापकर बाहर पडे कि मनुष्य पर पिये का भूत सवार हो जाता है। सनावन काल से सपत्ति की लालसा से मानव ग्रसित रहा है। पुराने जमाने में सोना, हीरा, मोती, माणिक, पत्थु, स्त्रियाँ, गुलाब आदि की लालसा थी और राज्य की

तुच्छता जगो तो वह अपनी सारी सम्पत्ति दान कर देता है और किसी भजन-कीर्तन में लगता है। परन्तु इससे मनुष्य सम्पत्ति को उस अमानुषी शक्ति के शिखरे से छूट नहीं जाता। गुरु से अब तक ज्ञात पस्कृति के मन्व निर्वप इतिहास में, राजर्वयो के और राष्ट्रो के उदान-यतन में ह्य देतवे है कि यही सम्पत्ति का भूत भाग्यशाली, पुष्पायी और पराक्रमी लोगों की मुट्ठी में रहा है। और शायहन, गरीब आम जनता को सम्पत्ति नवीबन होने से गरीबी, मुलामी और रोटी की विन्ता करने का 'बड़बाती' अध्यात्म बनाना पडा है। लेकिन शिका यह गुना अध्यात्म और धनियों का ब्याल अध्यात्म, दोनों आक्षि एक ही है।

कौटुम्बिक जीवन में मनुष्य, मनुष्य के नाते, मानवी वृत्ति से हादिक ब्यवहार कर सकता है। परन्तु वह अपने ही मन के सम्पत्ति की देवता का, शय्योगी परामर्शता का निर्माण करता है। देव और दानधों का

भ्रम निरसन का दर्शन "दृष्टिगत पृथक्ता" स्वयं की विचाराता "पत्र", लेकिन सतही "जड़वादी, गुंगा अध्यात्म" स्वनिर्मित अमानुष और चरन-सामर्थ्य

लालसा का अर्थ भी संपत्ति की लालसा ही था। कुक्षेत्र ने रक्षणन किया तो वह भी राज्य-लोभ से ही किया। आज गुलाबी की खरीदी-बिक्री नहीं होती है, राज्य-सिंहासन के लिए युद्ध नहीं होते, दलना अन्तर अवश्य है। परन्तु यह ऊपरो अन्तर है। उस समय सम्पत्ति का सचय वस्तु के रूप में किया जाता था, तो अब कागज के रूप में होता है। त्रिगुण रूप में वैशे के अग्रस्थ ब्यवहार में सचय किया जाता है। युद्ध होते हैं, परन्तु शक्ति के लिए होत हैं, शयिधों द्वारा प्राप्य स्वयं के लिए नहीं।

सम्पत्ति निर्माण करता है मनुष्य। परन्तु वह बाहर से अमानुषी शक्ति का रूप धारण कर मनुष्य पर ही हावी हो जाता है। इसका अर्थ यह कि मनुष्य सम्पत्ति को परामर्शता की धारण जाता है। धनी मनुष्य भी इस परामर्शता का गुलाम बना है। उसका मन सम्पत्ति के लोभ से भरा होता है। कभी किसी धनी के मन में लोभ के प्रति

निर्माण करके उनकी धारण जानेवाला यह मनुष्य अपनी उसी शक्ति से सम्पत्ति की स्वनिर्मित अमानुष बाह्य शक्ति की धारण जाता है। एक बार उसकी धारण जाने पर उसकी सारी पुत्रन-सामर्थ्य इसी शक्ति की सहायक होती है। वह मनुष्य के ही पुष्पाय पर भीती है, परन्तु मनुष्य को अधिपतिक शुरु बनाती जाती है। आज सम्पन्न देवो में भी लोभ सम्पन्न है। मनुष्य को पुत्र्य मानने की वृत्ति उनमें प्रबल होती जा रही है। वे किसी-न-किसी धर्म की आध लोत्र रहे हैं। इसका प्रतिबिम्ब और वेदना अर्थात् जीवन सूर्योप साक्षि में बड़ी उत्कटता के साथ शोष हो रही है। यहाँ के लक्ष्यव्यन में भी यह ब्याध मुत्तरि हो रहा है, स्वयं से शक्ति शक्ति का आग्रन मुताई दे रहा है। परन्तु गृहार्थ से देते तो मापूण होगा कि शयि-भ्यक्ति से बनी सम्पूर्ण मानव जाति ही आज 'मैं पत्र' को, स्वत्व को, मानवता को छोड़ देती है, दिग्भ्रष्ट हो बेटी है। यह आज की ही

‘एक भारतीय आत्मा’ की याद

“मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर तुम देना फेंक,
माटभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जायें वीर अनेक” !

दादा भी माखनलालजी चतुर्वेदी को राष्ट्रकवि तथा महान साहित्यकार के रूप में तो सारा भारत जानता है, किन्तु ऐसे भी लोग संख्या में कम नहीं, जिन्होंने उनके प्रेमपूरित हृदय तथा स्नेहपूर्ण मनमानस की निकटता का अनुभव किया है। उनके कोमल स्वभाव, स्नेहिल व्यवहार, उदात्त भावनाएँ, और सलायत मिलन ने उन्हें हजारों लोगों के प्रिय ‘दादा’ बना दिया था। वे अपनी युवानि के पहले दूसरों की सुनना चाहते थे। वे बन्सो के पित्र, बड़ों के मार्ग-दर्शक, युवजनों के हृदयसाथी, बच्चों के सम्बालीन तथा मुश्कलों में प्रोत्साहक थे। मानव-हृदय में गोत्रे लगाकर माँवों पुत्र खाने का इशम उन्होंने पूरे हासिल किया था।

वे नित्य ५ बजे सुबह भ्रमने जाते थे। एक ताँगा सुबह आता तथा उन्हें गृह के बाहर छोड़ देता। गृह समाप्त होने ही जहाँ खेन दिखाई पड़े, वहाँ दादा उतरकर खेतों में भ्रमने लगते। खेत के बड़े-बड़े डेले उनको लगते तथा कभी-कभी वे उनसे लड़खड़ा जाते थे। मैंने एक दिन पूछा, “दादा आप खेन चलने के बजाय गृह पर से क्यों नहीं चलते ?”

यह सुनकर दादा कहने लग, “गृह

→ मानवीय मन में है, उसके पुष्पायुष में है। इसलिए प्रत्येक युग का मानव आज तक का इतिहास बना सके। यह इतिहास ही मानव की सामर्थ्य का एकमात्र प्रमाण है और यही उसके मतिव्य का आधारस्तम्भ है। इसमें रहस्य कुछ नहीं है। इसमें अनुपम्यता को किसी भी ‘परिचाय’ छिपि का आनीतव्यता पाने का भुलावा नहीं है। मानव का मानवतावाद अनुपम्यता के इन प्रत्यक्ष आधार पर ही खड़ा है। उसका संदेश ‘परासता’ में गुहित पाने के लिए है, अनुपम्यता की पुनः प्राप्ति के लिए है। [समाप्त]

—ए० माखनलाल चतुर्वेदी के रास्ते शोधकर्ताओं के अत्याचार तथा शोषितों की नीचकारों से भरे हैं। वहाँ पारो और गन्दगी है। उन पर चलकर कौन स्वास्थ लाभ कर सकता है ? पर देखो, यह खेत की मिट्टी कितनी निर्दोष है ! इसमें हल-वाहो की पसीने की बूँदें पड़ी हैं। इसमें उन आये अनाज में हम सबका पोषण होता है। इसलिए मैं इसीकी तुलना में भ्रमना चाहता हूँ।” मैंने कहा, “अगर आप इस प्रकार चलने में कहीं गिर गये तो ?” वे कहने लगे, “अगर गिर गया तो क्या होगा ? माँ धरती की गोद में ही तो गिरूँगा। क्या अपनी माँ की गोद में जाने में बर्बाद हरका है ? हमारे सपने वस्त्रों में प्रेम का रंग बड़ने दो न !”

सन् १९५० में प्रामाण्य विद्वत्विद्यालय की पढ़ाई के लिए मैं भी जे० सी० मुम्बईवासी की सस्था मगनबाड़ी, बर्धा जाने समय दादा से मिला। मेरी बाने सुनकर उन्होंने अत्यन्त दुस्वी होकर कहा, “बेटा, गार्फी की राह पर चलनेवालों के लिए धाज के बावत में रुक, बरमान तथा भूखपरी के विवाय क्या मिलनेवाला है ? अथेज गार्फी की पणित को जानता था। गुलाम भारत में उछने गार्फी को न मारकर इतिहास में अपनी जाति को धानेवाले बर्धा में उलवित होने से बचा लिया, किन्तु स्वतन्त्र भारत ने वह कलक अपने माथे ले लिया। अब वो गार्फी को मारकर उसके सेदातिक कलेवर का ‘पोस्ट-मार्टम’ किया जा रहा है। जाने बानेवाला भारत गार्फी को शामाय्य मनुष्यों को श्रेणी में बिटाविया तथा उसके सिद्धान्तों को उसके अनुपम्यता ही निदाने में लगेंगे। उस समय सुभे एक, घुटन तथा शीघ्र गज अनुभव होगा। तुम जाना चाहो तो जाओ, परन्तु गार्फी का युग तो बहुत बड़ी-बड़ी ठोकरें खाने के बाद

ही आने का सम्भावना है।” और आंज ‘दादा’ की वह बात कितनी सही सिद्ध हो रही है !

जनवरी सन् १९६७ में मैं उनसे सख्तबा के अस्पताल में मिला। वे बहुत बीमार थे। बोलने में उन्हें तकलीफ होती थी। एक-एककर कुछ सांकेतिक शब्द बोलते थे। मुझे देखते ही उन्होंने अपने हाथ में मेरा हाथ लिया तथा हालचाल पूछा। मैंने कहा, “१४ वर्ष गाँवों में काम करने के बाद अब मैं एम० ए० कर रहा हूँ।” कहने लगे, “ठीक है।” फिर उन्होंने मुझसे कहा, “वेला करो।” मैंने कहा, “ठीक है, करता हूँ।” योही देर बाद उन्होंने फिर कहा, “जानता-सेवा।” आज भी मुझे उनके वे शब्द याद हैं। और उनके उद्देश्यों पर चलकर जीने में मैं सन्तोष तथा धार्मिक का धनुम्व करता हूँ।

दादा केवल एक भारतीय आत्मा ही नहीं थे, वे एक विद्वत्-मानव-आत्मा भी थे। उनका जीवन आदर्श एवं व्यवहार का सुन्दर समन्वय था। एक ओर गहन गम्भीर चिन्तन, तो दूसरी ओर बालमुग्ध हँसी देखते ही बनती थी।

व नक्षत्रों के इच्छा तथा नक्ष-साहित्य के श्रद्धा थे। वे एक ऐसे पुजारी थे, जिन्होंने अपने इष्टदेव की प्रतिमा स्वयं बनायी थी। उन्होंने उसमें प्राण-प्रतिष्ठा की थी। उसकी अर्चना में उन्होंने अपने काव्य-सुसुप्तों को समर्पित किया था। वे एक ऐसे भक्त थे, जिन्होंने साहित्य देवता को अनु-प्राणित किया तथा उसकी साधना में अपने प्राणों को भी न्योछावर कर दिया। कौता श्याम, रि गार्फी के विचारों को अपनी भावना के साथ जोड़कर जनहृदय तक पहुँचानेवाले ‘दादा’ का मीत नें पुण्यरा तो ३० जनवरी को ही, गज-निर्वाण-दिवस पर !

यौक २० साल बाद !! मानो, बापू २० साल के भारत की शासन मुनता चाने हों, इस कृति हृदय में !

—प्रभाकर जोगी

खाई पाटने का सपना

प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक 'मैट्टेडमैनेन' ने अपने 'अक्टूबर' विचारधारा में 'अक्टूबर' का परिचय करते हुए कुछ भी ही कहा है—
 'विकसित देशों की सरकारों ने अपने-अपने देश में से अल्पतः पाँच और अधिक प्रतिशत के बीच खाई को भरने का जो कार्य उपलब्धतापूर्वक विश्व है, आन्तरिकीय क्षेत्र में (जहाँ और गरीब राष्ट्रों के बीच को खाई को भरने का) जैसे ही कार्य को अपना 'अक्टूबर' में रखे जाती है।'

अतएव राष्ट्र मन्त्रा (यूने) ने यह माना है कि दुनिया में सबसे अधिक प्रतिशत करने के लिए अत्यधिक देश को राजनीतिक सहजता प्राप्त होने चाहिए और आन्तरिकीय क्षेत्र में सामाजिक तथा आर्थिक समानता को प्राप्त करने उद्देश्य चाहिए। राजनैतिक एवं नैतिक और सामाजिक क्षेत्र में मानव मनुष्यत्व के हित को सामने रखकर काम करने के लिए मनुष्य राष्ट्र संस्था में सहजता राष्ट्रों के बुद्धिपूर्ण प्रतिनिधियों को विभिन्न समितियों बनाये हैं। विकासशील देशों के हित में आन्तरिकीय सहयोग के विश्व व्यापार को संस्थाओं को सुनकरने के लिए १९६४ में 'यूने' (संयुक्त राष्ट्र संघ) में इस 'संयुक्त राष्ट्र व्यापार विकास सम्मेलन' की स्थापना की। 'अक्टूबर' (UNCTAD) इसी सम्मेलन का नया है। यह संघ 'यूनाइटेड नेशन्स ट्राकर्स' और 'वैश्व व्यापार संगठन', इन अमेरिकी संघों के साथ संस्थाओं के जोड़ से बना है। इनकी स्थापना में भारत का भी अत्यन्त अत्यन्त हाथ रहा।

यूने न घट १९६० से ७० तक के दशकों को धरती में गरीब देशों के विकास के लिए प्रयत्न करने का निश्चय किया और स्वयं ही नेहरूजी के सुझाव से इस काम का नाम 'विकास दशक' (डेकैडल रिवेज) रखा गया। इस 'विकास दशक' में गरीब और गरीब देशों के बीच की खाई को ज्यादा

में-अपना पाटने का विचार किया गया और विकासशील राष्ट्रों को ज. व. म. में प्रगतिमान जीवन बुद्धि करने का सपना रखा गया। इस योजना को लागू करने के लिए अमेरिकी संघों ने 'अक्टूबर' को स्थापना की और अपना पहला समिन्धेयन जेनेवा में करीब तीन सप्ताहों तक बना जिसमें दुनिया के लगभग १२० देशों ने भाग लिया था।

इस सम्मेलन में आठ आर्थिक द्वाय के तीन दिग्दर्शक बने ज. व. म. हैं—
 (१) विकास, (२) विकासशील और (३) समानता।

विकास देश में अमेरिका बनें। दक्षिण, पास अमेरिकी हस्तियों वस्तुओं यूरोप में देश और दक्षिण अफ्रीका और अण्डमान युद्ध है।

विकासशील देशों में एशिया और अफ्रीका के सब-संस्था देश और लैटिन अमेरिका पाँच दक्षिण अमेरिका के देश और मेक्सिको गिने जाते हैं।

समाजवादी देशों में अण्डमान युद्धो स्लाविया कर्मागिरी, हुगेने मेकोसलाविया आदि पूर्वी यूरोपीय देश हैं।

'विकास दशक' के बाद हाल ही में पारिषद की विकासशील देशों की स्थिति नहीं सुधरी। उनकी आर्थिक अवस्था नहीं सुधरी और व्यापार का विकास नहीं हुआ इसके कारणों का विचार जेनेवा-सम्मेलन में गहराई से किया गया और उनको निम्न बातों प्रथम में ध्यान देने हुए।

● उच्च और विकास के लिए जब बाहर से पानी की और तकनीकी ज्ञान की आवश्यकता है, तब अपना सामान बाहर भेजकर उसके बदले में वह सब मंगा करने की स्थिति उन देशों की नहीं रही है अर्थात् आयात के अनुमान में निर्यात के हानि नहीं हो सकी है।

● व्यापार की इस धारा का साने के स्तर के और विदेशी मुद्रा को छोटी-मोटी जमा पूंजी से प्राप्त नहीं हो सकता था। इसलिए ऐसी कुछ महत्व की चीजों का भी निर्यात करना पड़ा है, जो खुद के ही लिए आवश्यक है। इन्फ्लेक्शन सम्प्रदाय का सामना नहीं हो रहा है और विकासशील देशों का जो भी उद्योग चल रहा है। इसके अलावा इसी बीच बाहर के जाने वाली मुद्रा अनुमान का भाग पड़ा और बाहर के आयात को जाने वाले मशीनों इत्यादि का भाग बचना गया। इस कारण बहुत सारे विकासशील देशों की बाहर से मशीनों आदि मंगाने की क्षमता कम हो गई। इन सब मुद्दों को जब तक ध्यान में न लिया जाय और इनमें परिवर्तन न किया जाय, तब तक विकासशील देशों के विकास में और उनकी अर्थनीति को औद्योगिक मोड़ देने में बहुत सी दिक्कतें आयेंगी।

जेनेवा के इस सम्मेलन में १५ मुद्रास्वीकृत नीतिगत मन्त्रों की पारिषद, जिनके कुछ कुछ मुद्दों नीचे दिये जा रहे हैं—

● व्यापार के संबंध में प्रत्येक संस्था राष्ट्र का सामान आयात और निर्यात माना जाएगा। अत्यधिक देश में जनता का आत्म-निर्भरता का अधिकार माना जाएगा। किसी भी मुद्दे के आन्तरिक मामलों में हस्तक्षेप नहीं किया जाएगा।

● प्रत्येक देश को अल्प-अल्प आर्थिक और सामाजिक मान्यताएँ हैं और अपने-अपने देश में उद्योगों को साथ बढ़ावा देना चाहिए है उनके कारण आर्थिक सबको में कोई भेद न किया जाय।

● छात्र विकासशील देशों को और यूरोप दुनिया को बाँट तथा हित को ध्यान में रखते हुए आन्तरिकीय धन विभाजन की नीति लागू होनी चाहिए।

● विकासशील देशों का निर्यात-सुलभ भाग और व्यापार को विकसित करना चाहिए। विकासशील विकासशील देशों के अर्थों को सुधारे वर में प्रतिष्ठित उद्योगों में का काम कर दें, ताकि आयातों से वे बहुत व्यापार कर सकें। विकासशील देशों का निर्यात बढ़े और

उन्हें अच्छा बाजार मिले, इसका भी प्रयत्न विचारित देना या करना चाहिए। विस्व-बाजार-भाव में संतुलन टिका रहे, इसकी भी ये नीतिगत करें।

● जो सुविधाएँ विकसित देशों को आपस में उपलब्ध हैं, उनमें विभाष्यताल देना भी शामिल किया जाय और कुछ विशेष सुविधाएँ भी उन्हें दी जायें और इसके बदले में वे किसी विशेष सुविधा की माँग विकासशील देशों से न करें।

● आपसी करारों से बंधे हुए विकसित देश इस बात का ध्यान रखें कि अपने औद्योगिक सहयोग में होकर किसी विकासशील देश के व्यापार में क्षति न पहुँचे।

● विकासशील देश आपस में व्यापार, निर्यात और सेवाओं के अन्तर्गत (द्विपक्षान्) में लाभ उठावें।

● सामान्य और संपूर्ण निस्त्रुणत्व की दिशा में प्रयत्न करते हुए आय की जो बचत हो, यह विकासशील देशों की मदद में दी जाय।

मूल्य की नीति के अनुसार सम्मेलन ने औद्योगिकता की संपूर्ण समाप्ति को आर्थिक विकास के लिए अनिवार्य माना है और साथ ही यह भी माना है कि हर एक देश की प्राकृतिक संपत्ति पर पूर्ण अधिभार उठाना ही होना चाहिए।

भिन्न-भिन्न विकासशील देश विकास के विभिन्न स्तरों पर पहुँचे हैं। उनमें से किन्हींने कम प्रगति की है, उन पर विशेष ध्यान दिया जाय। समुद्र-तट के साथ जो देश जुड़े हुए नहीं हैं, उनके लिए भी कुछ विशेष सुविधाओं के बारे में निर्णय लिया गया है, ताकि वे माल-सत्ते (सामान) का आयात-निर्यात आसानी से कर सकें।

जैनेवा-सम्मेलन के समय ७७ विकासशील देश बलम से मिले थे और सयुक्त कार्यक्रम बनाया था। जैनेवा-सम्मेलन के तीन-आठे हीन साल के बाद यह देखा गया कि धनी और गरीब देशों की खाई कम होने के बजाय क्रमशः बढ़ रही है। कुछ महीनों के बाद दिल्ली में 'अक्टोड' का दूसरा सम्मेलन

होनेवाला था। उसमें 'बर्मा' के मुद्दे तय करने के लिए और परिस्थिति का निष्पत्ती बनाने के लिए उत्तर अफ्रीका के अलजीरिया में सन् १९६७ के अक्टूबर महीने में इन ७७ विकासशील देशों की साथ बैठक हुई और उन्होंने कुछ मुद्दों की घोषणा की, जो 'अलजीरिया का घोषणापत्र' (चांटर आफ अलजीरिया) के नाम से प्रसिद्ध हुई है।

इन ७७ देशों का कहना है कि आर्थिक और सामाजिक विकास के द्वारा शान्ति और समृद्धि प्राप्त करने में सह-प्रयास करने के लिए वे इच्छु हैं। अलजीरिया के घोषणा-पत्र द्वारा उन्होंने कुछ तथ्यों पर दुनिया के नागरिकों का ध्यान खींचा है, जिसमें से कुछ मुख्य मुद्दे नीचे दिने जा रहे हैं।

● आज आंतर्राष्ट्रीय व्यापार का जो प्रवाह चल रहा है, उसके परिणामस्वरूप विकासशील देशों के छोड़ कर उद्योग लोको की स्थिति दिन-ब-दिन बिगड़ती जा रही है।

● विकासशील देशों को आर्थिक प्रगति का मान कम था। घनी देशों के और उनके बीच की खाई बड़ रही है। धनी देशों को प्रति व्यक्ति औसत आयदनों की वृद्धि ६० डालर हुई है, जब कि इनको केवल २ डालर। (इन दिनों को श्रृंगवृद्धि हुई है उस हिसाब से देखा जाय तो प्रगति के बदले में अवनति ही हुई है।)

● सन् १९५३ में दुनिया के सारे निर्यात में विकासशील देशों का हिस्सा २५ प्रतिशत था और सन् १९६६ में यह घटकर १६.३० प्रतिशत हुआ है। सन् १९५२-५६ की और १९६५-६६ के बीच विकासशील देशों से निर्यात किये जानेवाली सामग्रियों के मूल्यों की तुलना भी जाय तो पता चलता है कि विकसित देशों के सामान में ६५ बिलियन डालर की, समाजवादी देशों के मूल्य में १० बिलियन डालर की, तथा विकासशील देशों के मूल्य में केवल ३ बिलियन डालर की वृद्धि हुई है।

● दूर आयातित वस्तु खरीदने की इनकी शक्ति घट रही है, इसलिए इनका

कर्म-क्रमशः इस ढंग से बढ़ना जा रहा है कि, अगर यही परिस्थिति चालू रही, तो उनकी अद्योगों में विकासशील देशों की सारी संपत्ति बाहर बिकी जायगी। आज भी इस कर्म का प्रभाव सारे दान और अनुदान की रकम के बराबर हो गया है।

● विकासशील देशों में 'साथान्त' के उत्पादन में खास वृद्धि नहीं हो रही है, जब कि आवादी तेजी से बढ़ रही है। इससे परिस्थिति और बिगड़ रही है।

इस आर्थिक और सामाजिक परिस्थिति से विकासशील देश बित्तही हैं और इसकी सुधारने के प्रयास में लगे हैं। 'अक्टोड'-१ में कुछ संज्ञात मान लिये गये थे, लेकिन उसके बावजूद कुछ खास काम बन नहीं पाया है। जिन राज्यों पर विकास के लिए धन की सहायता दी जा रही है, वे राज्यों क्रमशः भारी बनती जा रही हैं। अनुदानों का मान घट रहा है, कर्मों के व्याज भी बढ़ रहे हैं। कर्मों वापस करने के समय की अवधि घट रही है। जहाजराशि में भी भेदभाव पैदा हो रहा है और जहाजों में माल ली जाने के भाड़े में भी वृद्धि हुई है, जिससे परिस्थिति और बिगड़ बन रही है।

जैनेवा-सम्मेलन में यह बात सिद्धांत के रूप में मान ली गयी थी कि विकसित देश अपने राष्ट्र के कुल आंक का एक प्रतिशत विकासशील देशों की मदद में दें। (कुल राष्ट्रीय आंक की जी० एन० पी० बहते हैं। इस नेशनल प्रोड्यूसन के आधे अंशों से बना है।) लेकिन चार साल के अन्त में देखा गया कि फ्रांस और पोर्तुगाल के विधाय और किसी देश ने इस प्रस्ताव पर पूरी तरह बंधन नहीं किया है। फ्रांस और पोर्तुगाल ने भी उन क्षत्रीय देशों की मदद दी है, जो उनके उप-निवेश में था थे। फ्रांस ने यूरोपीय साम्य बाजार में भी इन देशों को खास सुविधाएँ दे रखी हैं। वस्तुतः दूसरे देशों ने इस मदद को ०.८७ प्रतिशत से घटाकर ०.६२ प्रतिशत तक कर दिया है। अलजीरिया के सम्मेलन में कुछ देशों ने जी० एन० पी० के १ प्रतिशत से बड़ाकर डेढ़ प्रतिशत तक मदद देने की माँग की है। खास तौर पर यह है कि-

बिहार भूमिसेना शिविर : शेखवाड़ा

"पटना में बाबा ने भूदान-क्रियानों के जाये का अधिभारन करते हुए कहा था, 'सब के राहों जाने मार से रिगत नहीं, बाबाओं के नाजबूद अन्ना बलब्य नहीं छोड़ेंगे। देखिये, प्रकृति आपका अधिभारन कर रही है।' इकट्ठि का यह अधिभारन ३० जनवरी '६५ को दिनभर चलना ही रहा। और अब क्या ते ३! को खाना हुए ही को आवाग यना नये, बरफला ही रहा।

"मे अतिरिक्त वे दिवसो पर भूदान रहा। शेखवाड़ा एक छोटा-सा गाँव है। सोभो ने छात्रों को पढाई और पुआठ से त्रिभू विवाह की रचना की थी, यह यानी के छात्रावर हो पुत्रा था। निशय

बिहारी देव विरायगील देवो के पदांत भास सरीरें, धुनी विलकुल न समझे का बहुत ही कम लगाने। इस तरह माल की बिनी में जो हास्य होया उने मरने के रूप ने साथ गया जाय। माल सरीरने में सुखी प्रतिनारिणा ही हो, कोई सामा शायर या युगने उजिनियो के लिए साथ पदरी न हो। निघों हुए देवो का विपति हाजी माया हो। निघों हुए देवो का विपति हाजी माया में निर जाने के हाथ उठें विरिय मरने देने का भी प्रभाव है।

इन सब बातों की बर्दा करने के लिए दिल्लो य रूपमन 1:३२ देवो के १५०० प्रति निषया का समेकन हो रहा है। हूयें इन समेकन में भावे हुए छात्री सुनिदा के (चीन, उच्च कोरिया और उत्तर विपनम को छोड़कर) राखनिकर कम्पनीविशेष के विगत और बखतों के सायस उजाना है। बिनी के प्रतिनिधि भी हेरामन पांडातुम ने कहा है कि 'विषय के काम में प्रकृति मदा हो रही है, इसके लिए सोना उखावदार है। विराय-शील देवों का यह साथ जरूर है कि सुनिदा के पत्नी और मरीह देवो के बीच की साई पढती आय। फिर भी वे जानने-जानने देव के मरन की भी और पदोस के बीच की

भूदान-यत्न . दुखवार, १ मार्च, '६५

और सभा नवन में कौचर-ही-कौचर पावो-ही-पावो। २५० छात्रोय भूदान विषयन बहो पदले वे ही पहुँच चुके हैं, अब यह २५० का जल्पा बहो आकर दिवेगा ? मोरम के छ सविभावन हायनम ने हूयें हेरामन कर दिशा था, लेकिन बाबा की बात कानो ने पूँज रही थी—बाबाओं के नाजबूद सब के राहों अपने मार्ग से रिगते नहीं। जिनर सरोजक और बिहार भूदान-यत्न बमेठी के मार्ग की निमलबन्ध ने जागगीती मुनयो। और ३१ जनवरी की गाडेवाने के साथ दुहुल घोषणया के लिए खाना हुवा। 'शांति क विवाही चले चले ।' उ मौल लम्बा माय मूँद उठ, हाई हो भूमिपुयो की शांति-गुजार से।

भाई का पगाने का बहुत बम प्रवल कर रहे हैं।"

बहुत धार्मिक की रात कही है उहुने। एक धीरे पर विरर के समान नागरिक मिलकर सुदुल राह के नेतृत् में समस्था का हूज सोज रहे है और धर, हुयेर धीरे पर बिहार, समित्वाज और उचीना की जमउर कायो तावाद में सामदान ने क्रिस्तान की ओर बने हुए पनो और परोक के बीच की साई की कम करते और धीरे धीरे मिटाने का सफल कर रहे है। सोर के स्तर पर, म्माक के स्तर पर और जिम्मा के स्तर पर धरर इयो तरह के छोटे-छोटे व्यापार और विराय-समेकन हा और सोर, म्माक और विस्तार-स्तर पर सेनी, उद्योग, व्यापार, तकनीकी साधन की वृद्धि और आवाग विपति की सारनाएँ बायो जाई और त्रिभू प्रचार काय रिचिड और पनो देगो वे, खुद शक्ति बढ़न करने की विरायगील देवो का माल सरीरने का आग्रह किया जाऊा है, उची प्रचार मगर गीह में बनी लागे और सोको टंग की बनगुण गहर के लोय सरीरें, तो हय 'निरर भ्यापार विराय-समेकन' से हूयें खुद वादर होना।

—उत्तर देसाई

५॥ बने सुबह

पया वे चले वे ११॥
बने बांधपया पहुँचे।
मरबंकर तीतलहारी,
किचीये तन पर पर्याप्त
नरवे नही। कल
रात भी भोजन की
कोई टीक व्यवस्था
नही हो पयो की



और इस वक्त दिन के निमल चन्द्र बारह बजे २५० व्यक्तियो के योजन के लिए बोधपया में उपलब्ध हो सवा ६ जिओ धुलु और १० जिओ कमरद। भूख ते सुखबुलायी अँगो को चातो वे छात्वन देतर बोधपया ते जल्पा निर चला टैकशा, पुन १ भील की पदमाथा पर।

शेखवाड़ा एक छोटा-सा गाँव। बिहार में सबसे पहले यहाँ भूदान की जमीन का विनाश हुआ था। इसी महत्ता को बिहार के भूदान विज्ञान महामुख कर सने, इसीलिए इनका पहेला निबिर भागोजित विषय मया का वेवतराया में। पहेलांतिा मरन और पचासत पर की घोषले सभो को नभो, बिना टपकर बी। दुगाल, बटाई विगत मरपायन करो बरसात की म्पायती को । खुवे बाँधन में बना पोवनालय को उपाय कर गया था।

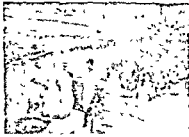
वहाँ है कि दिल में जगह हो तो दिगालों जंग जानी है। वेवनाय के परोक विज्ञानों ने कहा 'बिहार के जिलो जिलो के आये हूवारे मार्ग, हूवारे के अतिवि हुगे। बेकारो ने जाने मरेगिालों की वेक के नीचे बांध दिया, और उये हाक करते अनिधि पर बना दिया। हुवरो पयहू भी कही थी ?

✕ ✕ ✕
और १ सारोमन मे निबिर मुहो ही मया। छक्के मिलकर माया 'लाभ-लाभ गौतोला है दिहुलान विज्ञानों का ।' यम और उचसी रफिक की उपायया का मय मुहो हो गया। सोहूरा हा मय, सोहरे पदर बर्ष, माम को मरारकन । गौतो बयमन एक-दूवरे के दूरक । यम के साथ सगेर, जर्भर् में—गौर और सोवराओ को रिचिड, परका की राख-कानो और राजनीति के दौबर्भन, विरोहा का सामना और बिहार-दान का माया।

समाभजन में लगी हुई थी अजिल सेग
मुसा के चित्रो की प्रदर्शनी। गांव के अति-
क्षल और गंवार कहे जानेवाले किसानों ने

एवं दाति की बृहद्मयी आधारितलाओं पर
आधारित छोटी-छोटी बस्तियों के निवासी
भाई-बहनों की जोर से आपका हादिक स्वागत

“गति होगा विहारदान करते से
सोपग सामन गांव ने हटा के
छूकछूक के भेद मिटा के
ममता के राख बनावे से,
प्रेम के भाता जोड़े से,
गति होगा”



जे० पी० ने इस प्रामाण-शिविर की व्यवस्था देखी

कहा, “हमारी बसा, गांव की दुर्दशा और
नयी विन्धनी की आशा इन चित्रों से भ्रूंक
रही है।”

९ फरवरी को जे० पी० आये, सिर्फ
पांच मिनट के लिए। २५० सिविरार्थियों
तथा आसपास के २ हजार भूमिपुत्रों ने माटो
के बलात्पक मच पर खड़े जे० पी० को
गैजा, कुदाल और टोकरी उठाकर अभिवादन
किया।

आयोजन की ओर से थी दीक्षित जी ने
जे० पी० का स्वागत करते हुए कहा :

“बिहार राज्य के १७ जिलों में से १५
जिलों से आये हुए २५० भूमि-सैनिकों और
सिद्ध-मिथ रहन-सहन में पले, रीति-रिवाजों
में डले, सरकारी में बुरे-मले, भौगोलिक
विपत्ताओं में अन्धस्त, प्रकृति की सहन-
सुलभ उपलब्धियों में आशस्त, खिट्टा से
सन्नस्त, दुर्बलियों तथा बुट्टेओं में अस्त-व्यस्त,

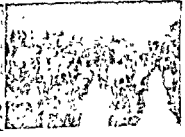
है।” जे० पी० ने कहा, “आपको देखकर
मेरा दिल भर आया है। अभी आप जो कर
रहे हैं, वह बुनियादी काम है। पटना-दिल्ली
में राजनीति तोड़ने का काम कर रही है,

दुदरे ने गाया -

“जिला-बिला के भूमि-सैनिक,
लिये उठाप नास,
बिहारदान वा।

मई अरी बीड़ गया जिल
रिमिमिद रिमिमिद बूंद बरबिहू
येर पटा पनपेरी,
अहो गया बिला !”

लिख नहीं करने, अक्षरों से आरिचित
है, लेकिन हृदय की अनुभूति मात्र शक्तों में



अमन के फरिश्ते की भूमि-सैनिकों की मलामी

और आप गांव में घाई जोरने का काम कर
रहे हैं।” आये से सिर्फ पांच मिनट के लिए,
लेकिन एक घण्टे २० मिनट तक।

सिविरार्थियों ने सामने समस्तार्थ देत की
गयी, उसके उलभाव प्रस्तुत बिये गये। और

गीत बन कर प्रगट होगी रही। इस अनुभूति
का केन्द्र था ‘बिहारदान’। छोथे ने अपनी
बलिदाई पेश की, आगों दाकि की चीनाओं
को मट्टूए दिया, लेकिन बिहारदान के गारे
के साथ आने को आरंभ हुए अतिरिक्त शक्ति
की मट्टूए की।

सिविर की समाप्ति हुई ७ फरवरी को।
प्रदेशीय भूदान समिति के कार्यकर्ता को दिन के
लिए और एक गये, आगे की योजना के लिए।

सिविर-आयोजक श्री निर्मलचन्द्र और
व्यवस्थापक श्री बडौं परर बाबू ने भावपूर्ण में
बनाया, ‘भूदान-निघान हए आन्दोलन की
सुरक्षात से ही जुड़े हैं। उनके दिल में इसके
प्रति एक अनन्यरत का भाव है। हम पैसा
सरोजन करने जा रहे हैं, हाकि बिहारदान
के मट्टूएदान अभिवादन में इनका पूरा सहयोग
मिल गये। बिहार भर में फैले हैं हजारों भूमि-
सैनिक हमारे आन्दोलन की शानरगेता—



श्रम की सफलता : आहर का निर्माण

कठिन श्रमशायम जीवन में गहरी निडा
लिये श्रम के सवग प्रहरी, गरीबी के घेरे में
हूँवती, अभावों में मुक्तपाती, धन-अन्तोय

मंपन बराबर बनता रहा। रात के मनोरंजन-
कार्यक्रम में मंपन गीत बनकर प्रगट होगी
वा। एक नै होली गाया :

विद्यार्थी की सक्रियता

● मुंबई से सोनिया हूए सखारपुर के पास हेलनाथ बाबा के आश्रम पर हुए परमपूजा पहुँचे। परिवेष हुआ—'थी गणेशाय नमः, शारंगाय, श्री रामचरित मिश्र, वै००० वर्षी, आध्यात्म, हरिश्चन्द्र मद्रासिय सप्त, सखारपुर, श्री सुवेद प्रसाद सयासवाध्यात्म, सवेद श्री हृदय विद्यालय, श्री महावीरजी प्रसाद सुखारपुर राज के सर्वो गण स्या विचार गण आण सखी सखारपुर प्रसाद सप्त यति अश्विनान को याचना बताया है। आण उषकी सुभजन हो रही है।

‘समस्तान ही देण की विषयी परिचिपिन को संभाली का सभसाण भाण है। समस्तान आध्यात्मिकता के सुख भादि का विचार है। समस्तान में गौर मराठी असाधार और सखी साणन में मुक्त होगा। समस्तान में गौर हर कोणा, ठाण अनीठा। हृदया विपिन है कि परमपूजा सौर के सौद इस भादि में गीने सही रहे।’ विचारण सभसाण का विचार का आश्रित करने में पूरी छविता और सभसाण से जुा गये थे। अत्र असा सर्वोदयवाली की सभा में आने वचन रहा है। गये और को सुभाए ही रहे है विचार में। मेरी हृदय ही कि समस्तान का अर्थ है देना काटने को का दूरी आश्रित करने। —कवित्रिज

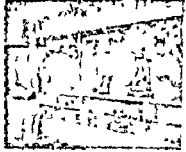
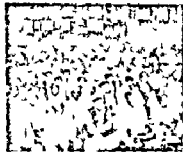
—है, विद्यार्थी एक सभे का विद्यार्थन का सार ही सवे सुख का साखन हो छुवेया। असाश्रितिकता का दूर भिन्न करने हुए सखी बापू ने कहा, “विद्यार्थन आत्मसंसाधन का नैतिक उपाय है। हूये इस काम में विचारण है।”

विद्यार्थन का सखी विचार आश्रित की जाली, अहमद, बापू ही एक को अर्थ के विचार में एक सभन प्रणेण है। सखी को बंद रही विद्यार्थ को विचारण में मुक्ति लिपने के विचार सखी के सुखों का एक साखन है। —सखी

अहमदाबाद • सन ३० जनवरी को सुखारण की सायागी अहमदाबाद के अने रेलवे स्टेशन के ध्वजधर्म न० १ पर सर्वोदय आश्रित स्टाल का उद्घाटन श्रीमती मराठम्या सोमनाथमण ने किया। आश्रित कहा कि इस विज्ञान के युग में सर्वोदय-माहित्य समाज जीवन का साधन विभावेण। सुखारण के सुम्भरणो श्री हित्तर देगाई श्री अतिवि विद्योप के छन में उपस्थित थे। इस सभार

आश्रित सखी दरनी का उद्घाटन सुखारण विचारालय का उद्घाटन की उभासाधर आईं बोणी ने किया। इस सभार पर श्री नारायण देगाई ने कहा कि सयासकी रेल में जगह की की अर्थमजाना है, उसे मिटाने की कामिता सर्वोदय विचार में है। सखी देना सभ का आश्रित मकलन की सफल सार में सखी देना संध एन सर्वोदय की प्रकृति का परिचय दिया।

—आर्भाई पन्ट, सखीय केन्द्र, अहमदाबाद-१



दुसार

उद्घाटन

‘सुभान-यज्ञ’ साप्ताहिक का प्रकाशन-व्यक्त

[सुखारण सखीविद्योपन देण (सभा न० ८ विद्योप) के अनुभाए हूए एए अत्रार के प्रकाशन का विचार आश्रित प्रस्तुत करने के साधनाय आने सभार में श्री यह प्रकाशन करने होनी है। सखीविद्योप यह परिचिपिन पनी की जा रही है। —स०]

- (१) प्रकाशन का समय : आश्रित
- (२) प्रकाशन का समय : सुभन में एए सार
- (३) मुद्रक का नाम : श्रीमतीय अहमद
- (४) प्रकाशन का नाम : आश्रित
- (५) संपादक का नाम : आश्रित
- (६) सभासाधन के संपादकों का नाम : आश्रित

ये आश्रित अहमद सखी विचारण करण है कि मेरी सयासकी के सुखारण उपाय विचारण सखी है। सखीविद्योप, १-२-१८

—अहमदाबाद अहमद, सभसाण

भूदान के समाचार

उत्तर प्रदेश

प्रदेशदान की पूर्वतैयारी

● मेरठ : १४-२-६८। उत्तर प्रदेश ग्रामदान-प्राप्ति संयोजन समिति के संयोजक श्री कपिल भाई ने उत्तर प्रदेश में प्रदेश-दान की पूर्वतैयारी का जिक्र करते हुए हमारे प्रति-निधि को बताया कि योराहमें सर्वेसर-मैप्लेन के सर्वेय मालिया में ग्रामदान की हलचल पैदा हुई थी। अब भासा और कपेशा की सोना से भाग जाकर आन्दोलन सफलता और व्यापकता की मजिले पूरी करता जा रहा है। आज प्रदेश में हर जगह कार्यकर्ताओं में प्रदेशदान की चर्चा है। अधिकांशों का पिलखिला जारी है। अब तक प्रदेश में कुल ३८०२ ग्रामदान, और २२ प्रखण्डदान हो चुके हैं। बलिया में तो १०-१० हजार की आबादीवाले गाँव भी ग्रामदान में शामिल हैं। हाल में चलते गये कुछ अधिकांशों के परिणाम :

● बलिया : बेरिया और बेलहरी प्रखण्डदान १२ फरवरी को हुए। अब बलिया के १८ प्रखण्डों में ८ प्रखण्डों का शान हो चुका। मुरलीधर प्रखण्ड में अधिकांश खल रहा है।

● आजमगढ़ : डेरुवा और, लालनज की ३२ स्वयं-सहायनी में कुल २३३ ग्राम-दान हुए।

● मीरजापुर : म्नीपुर प्रखण्डदान हुआ। बिले का सूचक प्रखण्डदान है। विवरण : कुल व्यापकदानों : २ कुल ग्रामसमाहों : ४५ कुल राजस्व गाँव : १०७ ग्रामदान में शामिल गाँव : ६८ कुल जनसंख्या : ६८,६७८ ग्रामदान में शामिल जन० : ४४,६४३ ग्रामदान में शामिल भूमि : ६२%

● मथुरा : गोन प्रखण्डों में ६६ टोलियों की यात्रा हुई। ४६८ गाँवों में से ३३२ गाँव ग्रामदान में प्राप्त हुए।

● एटा : तीन प्रखण्डों के अधिकांश में २५६ ग्रामदान प्राप्त हुए।

अभी सेदपुर (गाजीपुर), अलीनड, धोरजापुर, उत्तराखण्ड, बलिया में अधिकांश खल रहे हैं।

श्री कपिल भाई ने बताया कि उत्तर-खण्ड की बर्फीले पहाड़ों की चोटियों पर चले गाँवों में प्राकृतिक प्रतिद्वन्द्वताओं को सहन करते हुए कार्यकर्ता ग्रामदान का अलख जगा रहे हैं। मथुरा के अधिकांश में ६० विधवाओं ने भाग लिया। अधिकांश का उद्घाटन श्री विचित्र भाई ने तथा समावर्तन ठाकुर फूल सिंह (भू०५० उपमन्त्री, उ० प्र०) ने किया। एटा अधिकांश में केन्द्रीय रेल उपमन्त्री श्री रोहनलाल चतुर्वेदी ने पुरा सहयोग दिया तथा मथुरा-अधिकांश में श्री दो दिन शामिल हुए।

मेरठ में १५-१६ फरवरी को आयाजित परिवर्तनी जिलों के कार्यकर्ताओं की गोली तथा १७ फरवरी को प्रदेश के प्रमुख कार्यकर्ताओं को समा में प्रदेशदान की महत्ता महसूस करते हुए क्षेत्रवार अधिकांशों को योजनाएँ बनीं।

विहारदान की दिशा में

विहार ग्रामदान-प्राप्ति समिति पटना स्थित कार्यालय से प्राप्त जनवरी के अनुयाय जनवरी १६ तक विहार में :

कुल ग्रामदान-१७५३६; प्रखण्डदान-१२१; कुल गठित ग्रामसमाहों-१८७६; पुष्टि हेतु ग्रामदानी गाँवों के नैवार

कागजात-१३२१ गाँवों के; पुष्टि-अधिकांशों के पास दाखिल कागजात-७२६ गाँवों के तथा अधिसुद गाँव-१११।

● पलामू : १० फरवरी से १६ फरवरी तक श्री चन्द्रप्रकाशजी एवं श्री परमेस्वरजी वत म्ना, अम्यश जिला ग्रामदान प्राप्ति समिति, ने पाटन प्रखण्ड में जिलादान की दृष्टि से पर्यटका की :

● मुंगेर : १३-१४ फरवरी को विनावाजी के सामन्थ में मुंगेर जिलादान प्राप्ति कार्यकर्ता-विचार का आयोजन हुआ। विचारियों के बीच विनोदजी के तीन प्रेरक भाषण हुए। विचारियों में से लगभग १०५ कार्यकर्ताओं ने लगभग १५ दिनों तक जिलादान-प्राप्ति के लिए पूरा समय देने का निरवय दितकर घोषित किया। जनवरी १७५ कार्यकर्ताओं में १४४ कार्यकर्ता ग्राम-स्वराज्य तथा से सुभाषी आन्दोलन के लिए १५ दिन के लिए सेवाएँ देना २० जमा करने का निर्णय किया। १० फरवरी को आयाजित बरहिया पक्ष पर बरहिया प्रखण्ड के प्रमुख लोगों ने भावा के समार आयोजन में शामिल होने का सफल घोषित किया। श्री वैद्यनाथ चौधरी, श्री बिहार ग्रामदान-प्राप्ति समिति, के मुख्याय के अनुयाय लखीसराय, लखीपुर, छद्दपुर तथा ताणपुर में प्रखण्डदान के लिए तैयारी का काम आरम्भ किया गया है।

● रायपुर : १६ फरवरी। रायपुर जिले की महानुपुर तहसील के बगना प्रखण्ड में ७ फरवरी से १२ फरवरी तक के अधिकांश में ११ ग्रामदान प्राप्त हुए।

श्री जयप्रकाश नारायण की विदेश-यात्रा

दिनांक १६-२-६८ को श्री जयप्रकाश नारायण श्रीमती प्रभावती सहित लगभग दो माह की विदेश-यात्रा पर रवाना हुए। श्रीमती यात्रा के दौरान श्री जयप्रकाश नारायण बेकां, मिनापुर, मलेसिया, इन्दोनेसिया और जापान होते हुए १ मार्च ६८ को हैनगउठको पहुँचेंगे। दिनांक ४-४-६८ तक आर सचल राज्य अमेरिका में दौरा करेंगे। और १-४-६८ को लन्दन पहुँचेंगे। वहीं वे मास्को, वाशिंगटन, काहुल होते हुए आर दिनांक २५-४-६८ को दिल्ली वापस पहुँचेंगे।

भक्तान-आज्ञा

पुस्तकालय के लिए प्रेषित किया गया है। ध्यान दें कि पुस्तकें केवल आंतरिक उपयोग के लिए हैं।

राज्य सेवा सचिव का मुख पत्र

सम्पादक रामभद्र

शुक्रवार १४
८ माघ ६८ २२

इस क्रम में

कन्नड भाषण-संख्या
—मनमोहन चौबरी २०४

स्वयं और सम्मान का ध्वजा
—सम्पादक २०४

राज्य सेवा
—विशेष २०६

समाज-परिपालन की सुविधा और पास
का इतिहास — २१० दि. ०. बेबेकर २०६
सामुदायिक धार्मिक-विषय के सम्बन्ध २०६

अन्य सामग्री
समाचार-संग्रही
आपके पास
आपको हमने का समाचार

भारत दु. १० ५०
एक प्रति २० पैसे
विदेश में साधारण डाक शुल्क—
१० ५० या १ पोस्ट या २. भारत
(हमारे पास शुल्क देसों के अनुसार)
सर्व सेवाएं हम प्रकाशन
पाठकों के नामों के
कोष्ठ १०४२२

भ्रम विरोधी-अविरोधी

माधवी ने हमारे एक बात समझी कि हम को हर किसी काम में एक बात का समाज रहे कि हम को भी कर रहे है अपने मादों के काम में क्या करना मिलती है ? हर व्यक्ति सोचे कि मेरे लम्बे काम से मैं मरीचों को क्या करना है ? कामेज का प्रवेनर है और वह कामेज न सिखाता है तो उसके सोचना चाहिए कि अपने मरीचों को क्या करना मिल रहे है ? कामेज में तो बहुत विचारियों को निम्नलिखित और वे विचारों बाद में मीचरी पर आये है। ऐसे विचारियों को बहुत विचारों को विचारों को विचार देने में मरीचों का प्रभाव होता है क्या ऐसा प्रवेनर को सोचना चाहिए इसलिए उसे क्या करना चाहिए ? वह अपने विचारों को देवी विचार दे से वे बिना ही वग वग और अपने कुलव के समय में खुश भी बनाने बारे अपने काम में मत देने का विचार मरीचों को मरीचों विचारों में सम्मेलन हो इस तरह हर मनुष्य को सोचना चाहिए कि हम को भी काम कर रहे हैं उनके द्वारा मेरे जीवन में मैं मरीचों को क्या प्रवेन कर रहा हूँ और क्या प्रवेन करती मरु प्रवेन करती है ? माधवी ने हमारे सामने यह उचित है।

आज सुनिया मर में जो भी सबसे लगे है वे इसलिए लगे है कि बहुत से लोग धार्मिक भ्रम टालते हैं। लय को स्वर नहीं टालते मरीचिक माने को चाहिए। लेकिन विद्य परिषय मे अन्य पदा होता है उनका टालने है। उसकी प्रतिष्ठा कम है और उसकी मरुदूरी भी कम मिलती है। भ्रम की मरुदूरी कम धन की प्रतिष्ठा भी कम और जो परिष्ठा का काम है उसकी प्रतिष्ठा भी "साध और उसकी मरुदूरी को साध। इस तरह सुनिया में भ्रम की वरनिष्ठा हो रही है। लेकिन हर कोई जानता है कि विना मरीचक के अन्य पदा होता नहीं। इसलिए मरीचक को पहिना सबको मान्य करना चाहिए।

हमें यहाँ लगे २४ घण्टे तक माता-पिता का भार उठाने के लिये उन पर भार शकते रहते है। २४ घण्टे के बाद अपना मुक्त करते है और ४० घण्टे के बाद अपने वे उपकार करते में। ऐसी विचारों मरुदूरी देस में रहते कि विचारों उत्पन्न न कर गिनक उत्पन्न न कर काठक करके अपने-अपने घरों परकी भाविमरुदूरी मरुदूरी न करें भ्रम की उलारन न कर उलारन करेया कीन ? भ्रम सम्मने है कि भ्रम काम करते तो बहुत भ्रम करते की। साधने को भ्रम करते की सेवा नहीं करते। इस प्रकार यही काम करने वे मुक्त हो सके तो काम करते वा भार कम जाता पर बनिये। उचित समय आने में भाव्य है कि हम सब लोग विचारों मानने है मरीचकों करना नहीं जानते। मानव मानने है गुणवत्ता करना ही मानव।

भ्रम के दो प्रकार है। एक वह जो दूसरे के वष बा विषय करता है। एक को मिलता तो दूसरे को मिलेया नहीं। एक को भ्रम था दूसरे को भ्रम नहीं था यह भ्रम विरोधी भ्रम। लेकिन यहाँ जो भ्रम बनने का भ्रम है वह विषय विषय नहीं बनने सम्बन्ध अविरोधी भ्रम। अविरोधी विरोधी न हो। इस प्रकार भ्रम बनती मान्य। (अक्टूबर १९२२)

देश :

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष का निवेदन

२६-२-६८ : तमिलनाडु हिन्दी-विरोधी आन्दोलन परिषद् के छात्रों ने तीन दिन के बाद पुनः 'स्वतन्त्र तमिलनाडु' का आन्दोलन आज छोड़ दिया।

२७-२-६८ : कच्छ के मामले पर जन-सभ और संस्था ने लोचनबुधामें सरकार के इस्तीफे की मांग की।

२८-२-६८ : श्री चहलान ने आज राज्य-सभामें कहा कि सरकार देश में विभिन्न-सेनाओं की गतिविधियों के प्रति सतर्क है।

२९-२-६८ : श्री मोरारजी देसाई ने १६६८-६९ का घाटे का बजट पेश किया।

१-३-६८ : पश्चिम बंगाल के राज्यपाल ने सम्बन्धिता-सम्मेलन में कहा कि मुख्य चुनाव-आयुक्त पश्चिम बंगाल में सम्बन्धिता चुनाव के प्रश्न पर विचार कर रहा है।

२-३-६८ : रिजर्व बैंक ने आज से बैंक दर ६ प्रतिशत से पटाकर ५ प्रतिशत कर देने की घोषणा की।

विदेश :

२६-२-६८ : सैयान से ६ मील दूर विगतकाग और सरकारी सेनाओं के बीच भयकर लड़ाई होती रही।

२८-२-६८ : पूर्वी अफ्रीका के एशियाई आतंकियों पर रोक लगाने के प्रश्न पर कल ब्रिटिश लोकसभामें विलसन-सरकार की विजय हुई।

२९-२-६८ : कनाडा ने भारत की विभिन्न परिषदों के लिए ७१ करोड़ डालर कोष के उपयोग की अनुमति दी है।

१-३-६८ : अमेरिका और रूस, दोनों ही इस बात के लिए सहमत हैं कि यदि भारत के समझ परमाणु हमले का खतरा हो तो वे हथौड़ी ध्वंसात्मक से सजता है।

२-३-६८ : अमेरिका में गत वर्ष हुए जातीय भ्रमणों व दण्डों के लिए खेत लोगों की जातिवादी भावना जिम्मेदार की।

कच्छ के प्रश्न पर अन्तर्राष्ट्रीय पंच-समिति ने जो फैसला दिया, उसके कारण देश में एक आतंक की लहर उठी है। उसमें लोग और कई पक्ष उत्तेजित हो उठे हैं और आवाज उठा रहे हैं कि उस फैसले को मान्य न किया जाय। लेकिन एक बार उदारतापूर्वक कोई अन्तर्राष्ट्रीय वचन देकर फिर उससे इनकार कर देने में बड़कर राष्ट्र के मान और प्रतिष्ठा के लिए हानिकारक घुसा कुद्व नहीं हो सकता। हर कोई राष्ट्र मोक्ष-बहुत त्याग न कर सके के कारण यदि इस प्रकार वचन-भंग करता पाय तो अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को उत्तरोत्तर प्रभुत्व दाना अवस्था ही जाय। हमारी प्रधानमंत्री ने यह घोषित करके बच्चा ही किया कि भारत-सरकार का विचार अपने वचनों का आदर करने का ही है। लेकिन इससे पहले यदि उन्होंने तथा सरकार के अन्य कुछ प्रवक्ताओं ने अपने अस्पष्ट और उलझन में डालनेवाले वक्तव्य न दिये होते, जिनके कारण पंचले को खान्या करने की मांग को प्रोत्साहन मिला, तो अधिक अच्छा होता। लेकिन आशा है, जिन लोगों ने उस पैसले के प्रति अपनी असम्मति प्रकट की थी, वे अब सही और उत्तम निर्णय पर पहुँचेंगे, और पैसले को टुकुराने की मांग अब बन्द होगी।

नयी दिल्ली, २४-२-६८
—मनमोहन चौधरी



प्रिय साथी,

हर विचार और उसकी बुनियाद पर सञ्चित आन्दोलन समाज के जीवन में कुछ नयी स्थापनाएँ करना चाहता है। उन नयी स्थापनाओं का सदर्भ यदि मुख्य-परिवर्तन होता है, तो उसकी पृष्ठभूमि में अजीत का अवलोकन, सर्वमान का विस्तरेषण और सविष्य का अन्वेषण भी भिन्नता और नवीनता के साथ प्रकट होता है। इस प्रकटीकरण का माध्यम बनते हैं 'वान्द'। कुछ तो पुराने धार्यों के परिवेश में नया भाव मग जाता है, और कुछ नये धार्यों की सृष्टि होती है, वैसे भावों-विचारों को प्रस्तुत करने के लिए, जो पुराने ढाँचे में अटते नहीं।

सर्वोदय-आन्दोलन मानव-विकास का अभिन्न आरोहण है, और हम यह भी मानते हैं, कि बुनियादी तौर पर मूल्यों के परिवर्तन का आधिकारिक आन्दोलन है। सहज ही हममें सन्निहित भाव और विचार को प्रस्तुत करने में कुछ पुराने धार्यों के साथ नये अर्थ जुड़े हैं, साथ ही नये धार्यों की रचना भी हुई है।

हम चाहते हैं कि 'मूदान-यज्ञ' में वैसे धार्यों की ध्यास्या प्रस्तुत करें, ताकि एक सीमित क्षेत्र में बाहर के लोग भी उन धार्यों को सम्पूर्ण अर्थ के माय ग्रहण कर सकें।

आप सर्वोदय कार्य करते हैं, या सिके सर्वोदय साहित्य पढ़ते हैं; आप सबके सामने ऐसे धार्य आने होंगे। आपसे निवेदन है कि अपने सामने दाये दाये धार्यों की सूची बना-कर हमें भेजें। आपके इस सद्योग के लिए हम आभारी होंगे। पर्याप्त धार्यों का संकलन हो जाने के बाद हम हर एक में उसकी ध्यास्या प्रस्तुत करने में समर्थ होंगे।

आपका यह सहयोग सर्वोदय-विचार को स्थापनता प्रदान करेगा।
सस्नेह अथ जगत्,
आप सबका,
सम्पादनक

काशी : ८-३-६८
मूदान-यज्ञ : शुक्रवार, ८ मार्च, '६८

भारत-राज्य

स्वतंत्र और सम्मान का सवाल

पचो ने बम्बई के ३२० वर्षीयों पर पार्लियामेंट का एक सत्र किया है। पार्लियामेंट ने ३१०० वर्षीयों पर अपना दावा बताया था। इस तरह ३२०० वर्षीयों पर दावा करने की नीयत से ही उसने अपना दावा किया था। भारत में बम्बई का प्रजासत्तक के दिना, और अन्तिम पंचायत बम्बई में ही हुआ, लेकिन ब्रिटिश के शासन-काल से पचास कुछ हैं और पच-पैंसठे की नीयत आयी।

पचो ने जो पंचायत किया है वह भारत के पचास है। या पार्लियामेंट के, या पार्लियामेंट, इसके बारे में मतभेद है, और हमें पचास हो सके है। पचो ने पार्लियामेंट का पूरा दावा नहीं माना। उन्होंने भारत के भी पूरे दावे को नहीं माना। इस पर वह बहस का अपना है कि उसने पंचायत होकर सोचा और निष्पत्ति किया। और, कोई यह भी कह सकता है कि स्वतंत्र निष्पत्ति से अधिक उसने कुछ कुछ सोचो की देकर चुप करी की कीर्तिमान की है। सचमुच ऐसी चीज ही है कि उसमें हमें पचास ही कुछ कहने और करने की मुआवजा यह जानी है। भारत के लिए मुआवजा उपलब्ध भी है कि एक पच-ने, जो उनको सोचने में था, उसके ही दावे का माना है, पार्लियामेंट के दावे को नहीं।

भारत यह है कि भारत और राष्ट्र के बीच का अन्तर कदाचित्त ही नहीं है। जब मैं उसे दोनो रूपों में दुम्पनी चली था रही है, और उसके दूर होने के लक्षण भी दिखाई नहीं दे रहे हैं। पार्लियामेंट के दो रूपों में ही हो, अन्तर तथा कुछ और मानने को लेकर ब्रिटिश के खड़े ने जो भारत चुप नहीं रहा है। जिस तरह भारत की नीयत के सामने मुकाम पचास है, और अन्तर में हमारे अन्तर्गत भूमि और के बन्धने ने चली गयी है, उसके कारण भारत की अन्तर्गत की राष्ट्र-प्रवर्तन को भी देखा सके है। देखा ही नहीं सके है। लेकिन उसने मन में यह संदेह पुष्ट पचास है कि हमारी अन्तर्गत हमारी भूमि की रक्षा नहीं कर वा रही है, और भारत-प्रवर्तन पर उसको सुव्यवस्था और अन्तर्गत की बन्धनों के कारण भारत की सति उसकी पचो है। और अन्तर्गत के पूरे भीने पचो है। यह एक कि भारत-पार्लियामेंट का विपक्षी सार्वभौमिक हस्ता, उसने भारत के मन में भरोसा नहीं बना, जब कि दुम्पनी दे बन्धा कि भारत-पचास का पार्लियामेंट पचास। अन्तर्गत भारत-पार्लियामेंट पचो के लिए था, लेकिन दोनो ही चली ही

बारी ? भारत-पचास ने वे, वे ही सोच मान की है, और भारत ऐसे काम होते वा रहे है, जो पचो की समझ चुको लक्ष्य का भारत बन सके है।

विपक्षी यह वेना है कि भारत-पचास सार्वभौमिक पार्लियामेंट सारे बन रहा है, और ऐसी विपक्षी पचास पचास है कि भारत की उसकी पूरी गहरी तो कुछ बात माननी ही पचो है। इस भूमि में बम्बई के पच-पैंसठे के पचो भारत के अन्तर्गत लोग को भारत सरकार की अन्तर्गत भारत-राजनीतिक विपक्षी विपक्षी है। जिस पार्लियामेंट ने भारत के राष्ट्रीय हित को भारत-पचास पचो पचो की कीर्तिमान की है, उसने उस भूमि का कोई भी नाम विपक्षी विपक्षी भाव तक हमें माननी मानने में और जो हमारे बन्धने में भी यह बात लोगों के मन को सततो है। कोई भी राष्ट्र ही, वह अन्तर्गत-अन्तर्गत ने अन्तर्गत बन्धने सम्मान को सम्मान पचास है। इसलिए इस अन्तर्गत को देकर मान देना में जो विपक्षी-पचास है वह अन्तर्गत पचास मान दे, ऐसा नहीं कहा जा सकता। अन्तर्गत उन विपक्षी अन्तर्गत-राजी सुक विपक्षी बन्धने एते कि बम्बई का निष्पत्ति राष्ट्र का अन्तर्गत है। मैंने कहा, 'अन्तर पचो ने पूरे ३२०० वर्षीयों पर भारत का ही दावा मान लिया होगा तो ? जो लोक होगा' अन्तर्गत उताड़ दिया। मैंने फिर पूछा 'पचास पचो पचास का वेदना तभी माना पचास, जब वह भूमि-पचास हमारे पचास में होगा ? वह विपक्ष अन्तर्गत पचास में बोले मत सो नहीं कहना है, लेकिन ऐसा नहीं मैंने मान ?'

जब यही तो बात है कि पच-पैंसठे को भारत न मानने की बात नहीं मैंने जान ? जब एक बार हो चुकी यह हो चुकी। इस तरह पार्लियामेंट की बात मानने का अन्तर्गत उन्तर्गत नहीं है। अन्तर्गत यह मान का है कि जिस पचास को भारत एक बार मान चुका है, जब क्या बहस उन्तर्गत पंचो के मानने में इनकार दिया जाय ? भारत के हाम में अन्तर्गत-पचास पचास का है, या वेकार है, पार्लियामेंट अन्तर्गत अन्तर्गत या अन्तर्गत अन्तर्गत, ब्रिटिश की नीयत वेत भी वा बद, पचास अन्तर्गत अन्तर्गत यही किया था अन्तर्गत हमारी अन्तर्गत ने सचमुच अन्तर्गत पचास का यही काम किया, इस सबको को उसने का भीना कुछ बन नहीं है। अन्तर्गत इनका ही है कि हमने किया माने जिन पचो को माना, उसके पचो को मानने में इनकार मैंने किया का सत्ता है ? यह भी कोई भारतीयता है, जो भारत की बुनियाद की बन्धने में वेदना और मुकाम मानित होने दे ? नगा ऐसा देना भी बन्धने अन्तर्गत का सत्ता है, जो बन्धने सतों भी कर न कर सके ? पचो देना के लिए पचास के अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत है उसने नहीं अन्तर्गत अन्तर्गत ही बुनियाद में अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत। अन्तर्गत-पंचो को न मानने की बात बहस अन्तर्गत अन्तर्गत को ही ही रहे है, अन्तर्गत अन्तर्गत-पंचो अन्तर्गत अन्तर्गत ही मैंने दे रहे है। अन्तर्गत-पंचो यह तो न करे ? अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत अन्तर्गत, लेकिन अन्तर्गत पंचो की बात अन्तर्गत न हो। ●

गीता में मफ-लक्षण में 'मौनी' कहा है। उसका अर्थ मौनव्रत लेनेवाला, ऐसा नहीं। निन्दा-स्तुति के बारे में चुप रहेगा, दोनों से अलग रहेगा—वह मौनी।

मननशील वृत्ति

'मननात् मौनं'—मौन मनन से होता है। चिन्त में मनन हो और उसके परिणाम-स्वरूप मौन हो। उसको मुनि-वृत्ति कहते हैं। मौन का अर्थ मुनि-वृत्ति। मुनि शब्द पर से मौन शब्द निकला। उसका तर्जुमा चुप बैठना, या अज्ञेयी में 'सायलेन्स' करेंगे, तो अर्थ निकलेगा नहीं।

मुनि-वृत्ति यानी मननशील वृत्ति। हर बात में मननपूर्वक बोधना, क्योंकि वह सत्य को रखा नरेगा, सो सोचकर बोलेगा। ज्वादा शब्द नहीं बोलेगा। कालिदास ने वर्णन किया है—रघुवत्ता के राजा कैसे व्यवहार करते थे? तो कहा कि सत्यनारण के लिए मौन रखते थे। 'सत्याय मितभाषिणाम्'। क्योंकि जो अमितभाषी है, बेहिम्मत बोलता है, वह सत्य की फिज करता होगा, ऐसा मान नहीं सकते। इसलिए शयन-रखा के लिए नपे-नुके शब्द बोलने चाहिए।

अमृत-लहरी-समा शब्द

मानदेव महाराज ने वाणी का वर्णन किया है। वाणी कैसे होनी चाहिए? 'साच आणि मवाळ'—साच यानी सत्य, मवाळ यानी मृदु। 'मितले आणि म्माळ' मितले यानी नया हुआ और फिर भी रखाळ यानी रसमय। अन्यथा रसमय बोलनेवाला कम नहीं बोलेगा। रस में वह धामया। और जो नया हुआ बोलेगा, उसके बोलने में रस नहीं होगा। वैसे ही छत्र बोलनेवाला बर्कच, कठोर बोल देगा है और मृदु बोलनेवाला सत्य को जेब में भी रस सकता है। तो 'साच' और 'मवाळ' विरोधी हैं। 'मितले' और 'रसाळ' विरोधी हैं। इसलिए सत्य के साथ मृदुता होनी चाहिए और रसमय होने हुए भी बोलना नया हुआ चाहिए। 'शब्द जैमे फल्लोळ अमृताचे'—अमृत की लहरीयों के समान शब्द, तब शब्द-वाचि पैदा होती है।

शब्द-वाचि एक साधना

मनुष्य के पास शब्द-वाचि है। वह वाचि दूसरों को हामिल नहीं। वाणी लिखित-रूपेण होती है तो उसको लेखन-वाचि कहते हैं। बोलने में होती है, तब वाक्-वाचि कहते हैं। लेकिन मुनियामर के काम बनते हैं और बिगड़ते हैं वाणी से। वताने की और बिगाड़ने की, दोनों वाचि वाणी में है। इसलिए राष्ट्रो के बीच बातचीत के लिए सर्वोत्तम कुनल, योगपूर्वक टोक बात रखनेवाले व्यक्ति को रखा जाता है।

जो अकलवाले होते हैं, वे दूसरे देश के साथ बातचीत करने समय अपनी भाषा छोड़ते नहीं, लेकिन हिन्दुस्तानवाले 'यूरो' में अज्ञेयी में बोलते हैं। घाटी बात है समझने की, कि हमारा अभिप्राय हब अज्ञेयी में श्रेष्ठ प्रकट कर ही नहीं सकते। तो वहाँ हमारी 'शिवेण्टरो पीओयन' होगी। वे दौर होने और

निष्णात श्रद्धयुपशमाश्रयम् परब्रह्म मे वीर शब्दद्वय में निष्णात वीर शान्ति वा आशय-स्थान। शब्द-परिचय होगा बड़, गुण नहीं बन सकता। क्योंकि उसको अनुभव नहीं। नेत्रल अनुभव हो तो उसके आचरण से वीर जीवन से वापको वाणी लाभ हो सकता है, लेकिन वह गुण नहीं बन सकता, क्योंकि समझने के लिए शब्द-वाचि चाहिए, वह उसने पास नहीं।

महान् स्वामी को रखल न पहुँचे

सुख्य वस्तु, मे वह समझ रहा था कि मुनि-वृत्ति क्या होगी है और वह अपना राम शब्द है। जैसे ब्रह्मचर्य शब्द है। उसका तर्जुमा हो ही नहीं सकता। 'सिलेबो' वगैरह तर्जुमे में अर्थ नहीं। मौनी का सारा जीवन मनन पर खड़ा है। हरेक बदन मनन के साथ होगा। 'राम गहने घाट चाली'—रास्ता चलने-चलते जो रामजी का नाम लेता है। 'यस पाऊला पाऊली'—उसने बदन-

मौन शब्द की उत्पत्ति 'मौन मनन 'न निन्दा, न स्तुति'...नयी तुली वाणी चलना, दाँटना, काम करना मननपूर्वक

हम बिल्ली। मौनी भाषा को 'यूरो' में मानना पड़ा। परन्तु हिन्दुस्तान के लिए अज्ञेयी ही है। दूसरी सज्जासद बात है। नज्जासद ने अलावा मूर्खता है, क्योंकि उसके लिए उत्तम अज्ञेयी बालनेवाला दुँडना पड़ता है। अज उत्तम अज्ञेयी बोलनेवाला अकलवाला हागा हां, ऐसा नहीं। यानी श्रेष्ठ अकलवाला बहूँ जा नहीं सकता।

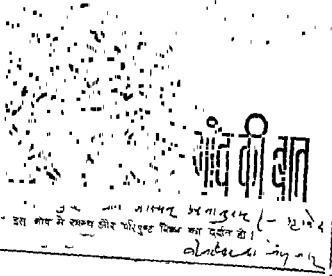
पामद्वय और शब्द-प्रद्वय
अपने यहाँ मुद-लक्षण शिष्य है, उनमें शब्द-वाचि की आवश्यकता मानी है। जानी को शब्द न भी हो, अनुभव हो। जिसकी जरूरत का अनुभव आता है, वह धाम्यजानी। गुण वह, जिसमें ब्रह्म-वाचि और शब्द-वाचि इकट्ठे हुई हो। 'तस्मान् गुरुं प्रपद्ये च जिज्ञासुः श्रेष्ठ उत्तमम्'—जा उत्तम ज्ञान चाहते हैं, उनको गुण की आवश्यकता में जाना चाहिए। और गुण किं हो? 'शाब्दं परे च

बदन पर यत ही रहे है। वह विचारपूर्वक चलना है।

ऐसा चलने लगा और बीच में एक मन्दा स्वामी दीत पड़े, मानदेव महाराज लिल रहे है, मानदेवरी में, तो—'द्विं सारी सायुता। इच्छिचि निचे'—पीरे मे पीरे पीछे लेता है। क्योंकि 'रामजीची निद्रा मोडेल'—स्वामी का निद्रा-सय हागा। और स्वामी शो रहा है? एक कोश। पाँच उग पर नरेगा ता दिशा ही हागी। लेकिन 'हृदय मापुत्रा निचे', क्योंकि आगाव हुई ता उसकी नींद में शकल पहुँचगी। और 'शचनेणा पडेउ हंरंगी हंरंगी'—उस स्वामी का शिष्य मन है, मुष्यपरिचय चिन्त में पड़ा है, उसमें शकल पहुँचगी।

इस प्रकार मे जानी हर इति-व्ययना, बोधना, काम करना, मननपूर्वक ही, तो मौनी शकल है। ●

१९६०-१९६१-६२



इस अंक में पढ़ें—
 तुम्हारी होन्ती !
 प्रतिनिधि 'दल' का नहीं, 'जन' का
 पहिल कौन, धारम कौन ?
 नियमा की भूमि आरा के अन्तर
 दिव का दर
 मिण्डी की पढी
 नैसर्गिक और साम्यवादीय आर
 विचार काना ही होगा
 मदद की मौज गुलामी के खतरे
 अगले अंक का आकर्षक
 गौर का एक मनवाना राजधानी दिल्ली में
 ८ मार्च, '६८
 पृथं २, अंक १५] [१८ पैसे

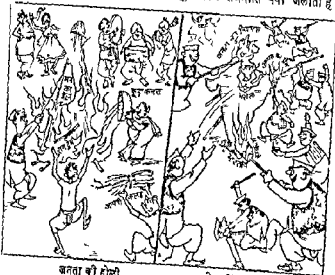
तुम्हारी होन्ती !

जबह जगह लकडो के डेर इकट्ठा किये गये हैं। होली तक ये डेर और बडे हो जायेंगे। कुछ लकडो मारगे जायगी, कुछ चुरायगी जायगी, और अन्तिम दिन सब जलायी जायगी। अगर कोई हिंसाब जोडे तो एन दिन ने जलनेवाली लकडी का टोटल पाखो मन हो जायगा। चित्रना बदा मुबसात है पह, लेकिन पर्व और परम्परा के नाम में हम न जाने क्या-क्या बरते छूते हैं, और सबको ठीक समझा करेते हैं।

पर की स्थियाँ बन्वो को, और बडो को, प्रबन्त लगाती हैं, और डो मेल निबलवा है उसे होली की जलती भाग में डाल देती हैं। यही मेल निकालने का काम पुराने सायद कुछ दूसरे ढंग से करते हैं। होली पावर, वकीर-जोगीया बहकर, फाली देकर पुराने अपने मन में इवढा मेल को बाहर बरते हैं। अन्दर-अन्दर जो रूढता है उसे प्रबन्त करते हैं। हो सकता है कि पुराने के मन की तहों में चुसकर बैठा हुआ जो पशु रूढता है उसे साल

में एक बार भी निरखने का मौकाना मिले तो बहुत जाने क्या करे ? जब मन भरती वाली बर चेता है तो बुद्धि ने लिय कुछ उपह निकल आती है, नहीं तो सायद बुद्धि भी जगह ही न मिले।

मन की होली साल में एक बार होती है, लेकिन राजनीति की होली तो नित दिन हो रही है, और बीस साल से लगातार हो रही है। हमारी-आपको होली में लकडी जलती है मेल जलता है, लेकिन राजनीति क्या जलाती है ?



अनता की होली

नेताओं की होली

सब द्वेप मिटायें होली में ।
आनन्द मनार्यें होली में ॥

कोई बेल मुदंग बजाये,
कोई अबीर गुलाल उढाये,
कोई नाचे ठुमुक हमजोली में !
आनन्द मनार्यें होली में ॥

गले मिले भाई से भाई,
मिलजुलकर पीयें टंडाई,
फिर गायें-बजायें टोली में !
आनन्द मनार्यें होली में ॥

भट-भर रुधिर रंग बिचकारे,
फाग मनार्यें पुर नर नारी,
सब अमरित घोले बोलो में !
आनन्द मनार्यें होली में ॥

—हृदभान

प्रतिनिधि 'दल' का नहीं, 'जन' का

कुसेसर महतो ने दरवाजे पर उस दिन शाम को महामाया बाबू को मिली-बुली सरकार के गिरने की खर्चा चल रही थी तो रम्भू अहीर ने कहा कि सोनपुर मेले में जिस तरह जानवरों की खरीद-बिक्री और ठगी-चोरी का तमाशा होता है, उसी तरह पटने के मेले में विधायकों की खरीद-बिक्री और चोरी-ठगी का कारोबार अमकर हुआ। उसी गाँव के बड़े चौधरी ने यह बात कही थी कि 'दल' के प्रतिनिधियों की सरकार से दूसरी कोई उम्मीद नहीं की जा सकती। वे तो यही करेंगे, जो आज कर रहे हैं, इसलिए कुछ ऐसा उपाय करो, ताकि सरकार 'दल' के प्रतिनिधियों को नहीं, 'जन' के प्रतिनिधियों को बने, तभी कुछ भलाई की उम्मीद हम कर सकते हैं। सवाल उठा कि बात तो बच्छी है, लेकिन यह हो कैसे ?

इस पर भोला ने कहा, "भाई, बहुत से दलों के उम्मीदवार चुनाव में खड़े होते हैं, किसको 'भोट' देना है, और किसको नहीं देना है, यह तो हम ही तय करते हैं न ? फिर हमारे 'भोट' से चुनाव हुआ प्रतिनिधि क्या हमारा नहीं हुआ ?"

"जब बात समझ में न आये, तो आगे-आगे 'फट्ट-फट्ट' बोलने से क्या फायदा भोला ? जितने उम्मीदवार खड़े होते हैं वे क्या हमारी मर्जी से खड़े होते हैं या 'दल' के नेताओं की मर्जी से खड़े होते हैं ? और फिर चुन जाने के बाद वे हमारे बड़े अनुसार काम करते हैं या 'दल' के कड़े अनुसार। 'दीपा' वाला 'भोपड़ी' वाले के दल में चला गया, 'भोपड़ी' वाला 'बरगद' वाले दल में चला गया, 'बरगद' वाला 'हंसिया-हंसोड़ा' वाले के दल में चला गया, 'द्वेल' वाला 'शेर' वाले के दल में चला गया, कुछ ने मिलकर कोई और विधान ढूँढ़ लिया, तो क्या यह सब अपने 'भोट' से पूछकर हुआ या केवल 'सत्ता की गद्दी' खातिर यह सब पैंतरबाजी हुई ?" रम्भू अहीर ने रोव के साथ कहा।

"पटने के 'दल-बदल' और रगड़े-भगड़े की बात तो ठीक है रम्भू, लेकिन क्या इस हरिनामपुर गाँव में ही एकता है ? यहाँ

गाँव की बात

अब तक अपनी होली में राजनीति ने क्या-क्या जलवाया है ?

देश की एकता, आपस का प्रेम, जनता का विश्वास—ये सब चीजें जैसे जलकर राख हो रही हैं। इतने पर भी राजनीति की होली की आग बुझती नहीं दिखाई देती, बल्कि उसकी चिन-गारियाँ दाहर-आहर और गाँव-गाँव में तेजी के साथ फैलती जा रही हैं। दक्षिण के हमारे कुछ देशवासियों ने राष्ट्रीय झंडा, और देश का संविधान तक जला डाला है। उनकी यही होली है ! जब झंडा और संविधान ही जल जायगा, तथा एकता और प्रेम ही नहीं रह जायगा, तो बचेगा क्या ? क्या हम ऐसी ही होली जलाना चाहते हैं ?

अब इस बात पर पानी डालने की जरूरत है। कम-से-कम हम अब तो कहें "राजनीति, तुम्हारी हो-ली !" जब राजनीति की होली जल चुकेगी तो जनता की रंगीन अबीर उड़ेगी, और देश की जनता एक कंठ से खुशी के गीत गाएगी। ●

क्या बलो की मसादेजानी नहीं चलती है ?" महलौ ने प्रश्न किया। "पहले तो रोना है महलौजी। अतः बात यही है कि 'पर-भूटे, जवार भूटे।' अब अपने में ही एकता नहीं है तो कैसे कोई नया बात हो सकती है ? जो दिल्ली में, बड़ी पटना में, बड़ी गाँव में।" रघू ने कहा।

"बात ठीक है तुम्हारी रघू। लेकिन, दिल्ली और पटना का 'भूटे' जाने वाह बड़ लोग हैं, वे आपस में लड़ भिड़कर मो मुप में रह ले सकते हैं। लेकिन इन हरिवामपुर में हम गरीब और छोटे लोग तो सबाह हो हो जायेंगे, अगर उनकी मरुन हूँ तो।" बूटे चौपरी ने किन्ना ने साथ अपने दिख की बात बड़ी।

"सबाह हो जायेंगे क्या, हा नहीं रहे हैं ? जिन हरिवामपुर में एक भी मुडरमा नहीं चलता या, बड़ी आय ६ ३ शुद्धमे बपने हैं। और इनमें से पाँच तो निश्चिन्त हो रिद्धे चुनाव में हुए मनुमुडाव के कारण मुह हूँ है।" रघू ने कहा।

"भाई, एक बात हमने सुनी है, अगर थप पहे तो उन बात की बापरे सामने रहुँ।" महलौ ने २२ माता के लड़के रामरोलावन ने कहा। रामरोलावन समसौदुर के एक स्कूल में पचरागी है।

"करो न रामरोलावन, तुम पेटिजे लोग की सर्पास म रहते हो। कुछ ज्ञान की बाँटें वृत्ते हाये। बूटे बीजरी ने कहा।

"अपपरगाव बाबू एक दिन समसौदुर आये थे। उनर बरत देर लख भाषण हुआ। हमारे मूल व मन लोग मुक्ते गये थे, तो हम भी चले गये। यह तो यही समझते रहे कि गाँव को एक बनाओ। जब गाँव एक बनेगा तभी नेह बनेगा। और जब गाँव एक और नेह बनेगा तो बाहर की सुरदाई गाँव का मुडरमा' न'ुँ बर सनेगी। इसके लिए उल्लेखे उपरय बनाया कि सब लोग एक रास होकर गाँव की सभा बनाये, उनको ही अपनी जमीन की मन्दिरी मौर दें, जोलने-बोने का हूँ आय जेसा है, सभा हो रहे, लेकिन मन्दिरी शलय-उलय न रहे, तो जालगी भग्ने के कारण निट जालगा। फिर सब लोग अपनी-अपनी सेकी हाया जमने में से बोये में बड़ा निकालकर बेजनीनवालो को दे दें। अपनी-अपनी बमारें का सीमवाँ हिसा देकर गाँव की मन्दिरीन पंजी नबायें, हर महीने, हो पाँके को पट्टे दिन पर

गाँव की सभा करें, और सब लोग निशवर सबके हिस की बात सोचें। भाई, बात मुझे बहुत अच्छी लगी। मुता है कि अपने दरभंगा शिला में बहुत सारे गाँववालों ने यह बात मान भी ली है।" रामरोलावन ने कहा।

"जरे महलौजी, यही बात तो विनोदा बाबा के जो ग्रामदातो, आदमी आये थे वे भी कहते थे। लेकिन उस समय चुनाव की अलावेजानी गाँव में चख रही थी, उनकी बात पर ध्यान ही नहीं दिया किन्तोने।" रघू ने कहा।

"अभी रास मत तो बानी ही है। अपपरगाव बाबू ने कहा कि सबरी रास से जो गाँव-सभा बनेगी, उनके प्रतिनिधियों की एक सभा बोनीय बनेगी, और वह क्षेत्रीय सभा गाँव के ही निम्नी मने आदमी को—जिसने लिए मरके मन में विस्वास होगा—एक रास में चुनकर पटना सरकार बनाने के लिए भेजेगी। जब ऐसा आदमी चुनकर आपगा तो उस पर क्षेत्र की सभा का पूरा असर रहेगा। अगर वह कोई गटली बरेया तो क्षेत्रीय सभा और अन्तता उससे जबाब तथय बर सनेगी। इसके अलावा वह आदमी दल' के हित भी बूटे, 'जन' के हित भी बात सोचिया। अपपरगाव बाबू ने कहा कि विनोदा बाबा चाहते हैं कि विहार के हूँ गाँव यह बात मान ले, और अपने-आपने गाँव की छोम बनाने में लग जाय ताकि अगले चुनाव तक 'दल' भी बूटे, 'जन' के प्रतिनिधियों की सरकार बन न।" रामरोलावन ने कहा।

"लेकिन बाबा विनोदा बीनती बात गाँववालों के सामने की बहते हैं ? रघू ने पूछा।

"पहले ग्रामदात की। और मुता है कि विहार नं १६-१७ हजार गाँवों में यह बात मान ली है।" रामरोलावन ने कहा।

"मिती बात मानो तो पर पर जाकर यह बात मगभाओ समयेलावन। धर में तो तनी वे विनारे का दरल हैं। न जाने कब गिर पड़े, लेकिन मेरा विरा बहता है कि मन्-मन्दाया बाबा विनोदा की बात ही अब गाँव को, देग को बचा सकती है। इसीलिए अपपरगाव बाबू पटना रिन्नी का मोटे छोडकर इन काम में लगे हैं कि गाँव बने, देग बने।" बूटे चौपरी ने कहा।

"ठीक है अब हरिवामपुर इनमें पीछे नहीं रहेगा।" सबके मुँह के आवाज निकली।●

पण्डित कौन, पामर कौन ?

पहला दृश्य

“ब्याज लेना ही है, तो फिर ग्रामदान क्यों किया ?”

यह किसी नेता का प्रश्न नहीं था, एक ग्रामदानी गाँव के एक साधारण अपढ़ किसान का उत्तर था। वह पूसा-क्षेत्र का एक छोटा-सा गाँव था, लगभग २०० आबादीवाला। वहाँ ग्रामदान की पुष्टि का काम चल रहा है। ग्रामसभा बन चुकी है। मैले कपड़े पहने, अधमंगे, विहारी नमूने का चेहरा बनाये उन ग्रामवासियों को देखकर मुझे जरा भी संका नहीं रही कि श्री रामजी (रामश्रेष्ठ राम) के बड़े में आकर इन लोगों ने ग्रामदान-घोषणापत्र पर हस्ताक्षर कर दिया है, वरना ये क्या समझे होंगे ग्रामदान को ! इसी संका से—नहीं, इसी निश्चय से मैंने उन्हें टटोलने की कोशिश की। उस ग्रामसभा की छोटी-मोटी जानकारी एक बूढ़े से लेने लगा। बातचीत के तिलसिले में मैंने पूछा कि ग्रामसभा की ओर से नये किसान को जब कर्जा देंगे, ब्याज का दर क्या रखेंगे ? इसी प्रश्न के उत्तर में उस किसान ने ऊपर लिखा वाक्य कहा था : सुनकर मैं दंग रह गया। दोखने को फूट्ट दोखते हैं, लेकिन विचार की इनकी पकड़ पते की है। मुझे लगा कि ग्रामदान में ये लोग और कुछ भी न करें, तो भी ब्याजमुक्ति ही क्या कम है ?

मेरे साथ एक भाई थे। वे सरकार के किसी इलाके में अधिकारी हैं। उनका भी पक्का विश्वास था कि देहाती लोगों में ग्रामदान के तत्व को समझाने की क्षमता नहीं है। लेकिन दूसरे एक गाँव में उनकी संका भी निर्मूल हो गयी।

पूसा-क्षेत्र का ही गाँव है। बड़ा गाँव है। दो-ढाई हजार की आबादी है। पढ़े-लिखे लोग भी हैं। वहाँ भी ग्रामसभा बन चुकी है। ८-१० लोग इक्का बैठे थे। मेरे साथी ने उनसे पूछा कि ग्रामसभा का कोई सदस्य बीघा-बट्टा जमीन न निकाले या कोप में हिस्सा न दे, तो वे क्या करेंगे ? हमने स्पष्ट ही पूछा था कि वे किस कोर्ट में जायेंगे ?

हमें जबवा दिया एक अशुद्ध उम्भ के भाई ने। कपड़े जरा उजले थे। छोटी-सी दुकान है। बड़े पैसेवाले नहीं हैं, फिर भी

नियत गरीब भी नहीं हैं। बाद में हमें मालूम हुआ कि इसी सेठ (?) ने पिछले दिनों दुकान की बाकी-बमूले के लिए रिस्वत के बल पर पुलिस से कड़ियों की मरम्मत करवायी थी। लेकिन इस समय उसी सेठ ने हमसे कहा—“भाईजी, हमने ग्रामदान किया है। कोर्ट क्यों जायेंगे ? सब मिलकर समझायेंगे। इस साल नहीं देगा तो दूसरे साल तो देगा ही !”

दूसरा दृश्य

दरभंगा जिले के हीपुर में ट्रेनिंग कालेज में सभा थी। श्री शंकररावजी का भाषण था। वे ग्रामदान और सर्वोदय-विचार समझा रहे थे। शिक्षकों की जिम्मेदारी बता रहे थे।

सभा-भवन भरा हुआ था। सारे शिक्षक थे। देखकर खुशी हो रही थी। सर्वोदय-विचार की शिक्षक-वर्ग समझ ले और गाँव-गाँव में फैलाने लग जाय तो कितनी बड़ी तावत बन जाय ? आजकल विनोबाजी ने भी शिक्षकों को दृष्टर खीचने की विशेष कोशिश शुरू की है। यह सब देखकर मैं सोच रहा था कि ये पढ़े-लिखे लोग भी अब चेतने लगे हैं।

इतने में एक प्रशिक्षक महोदय प्रश्न करने के लिए उठे हुए। मुझे प्रसन्नता हो रही थी कि अब कोई गम्भीर प्रश्न मुलाभने की है। लेकिन ? लेकिन प्रश्न सुनकर मुझे अपने कानों पर विश्वास नहीं हो रहा था कि एक विद्वान प्रशिक्षक ऐसा प्रश्न पूछ सकता है, बीर वह भी तब, जब कि ग्रामदान-सूदान आन्दोलन के चलते एक युग बीतने को आया हो। उस विद्वान की संका यह थी कि “इनसान समझाने से कहीं मानता है ? जब कि कंस और दुर्गाधन ने कृष्ण और भीष्म जैसे महापुरुषों के समझाने पर भी माना नहीं था ?”

मेरा जी रोने को हुआ। मेरी सारी आशा धूल में मिल गयी। तत्काल मेरा ध्यान उस बूढ़े किसान और अपेड़ सेठ (?) की ओर गया जो विद्वान नहीं थे, नयी पीढ़ी को शिक्षा देने के ठेकेदार नहीं थे।

आगे सभा की वार्डवार्ड में कोई रम नहीं रहा। लेकिन मन में अब भी यही बात घूम रही है कि पढ़ाई-लिखाई का यह बैसा फल है, जिससे हवा का रस समझ में न आये, इनसाननियत पर से भरोसा न रह जाय, भले-बुरे की परत तक करने की शक्ति न रह जाय ?

—कादम्ब

गाँव की बात



निराशा की भूमि : आशा के अंकुर

विपश्चरुच में कामसभा चल रही थी। वहाँ बाकी माना में आमी हुई थी। मैंने उनसे सर्वोप-याग करने की बात कही और सपनामी। कापी बहने ने सर्वोप-याग रखने की इच्छा प्रकट की। मैंने पूछा कि उसकी व्यवस्था की जिम्मेवारी कौन लेगी ? मेरे मन में येही हुई किशिरा बही सोच्य आवास में बोली, "मैं लूँगी।" उनसे मुँह पर भावि और सौम्यता की भला देखते हुए हृदय में आनन्द हुआ। ऐसा लगा कि यह विहार की बहने को बचपा और मेरे को प्रवीक है।

वसा के बादर बहु सुभे पहुँचाने के लिए सुहृन्मन्धुर तक साथ आयी। रास्ते में बसे बसती रही। साधारण पदार्थ क बाद बचपन में ही शाकी हुई। सेरिज उनसे बाद दरिदर ने बार पाप और चारिदाँ की। यह विन्दवामिनी बहन को बसन्द नहीं आया तो उन्होंने प्रति-न्यास किया। म्प्रथ था कि नहने के बारे में आडा होवा। मुनदमेवानी उन्हें बैकी नहीं। मरुते की गान्य भी नहीं थी। तो उन्होंने मलीने की सुभारर उगने बहा कि यह सब गुण आने चावा को आस दे बो।

कुछ दिनों के बाद 'इन्सेप्टेज' उनके दरवाजे पर आयी। उन्होंने सपनामी कि आप मेरे पास आकर ड्रेनिंग बीजिये। विन्दवामिनी यह किचिन चायी। सपुपलवाले बरत सोचने ? सेकिज इन्सेप्टेज ने कहा कि अज नहीं तो अंन में अरुको आना ही होवा। इन्सेप्टेज अमी आना अरुडा होवा। और उन्होंने जाने वा निर्णय लिया।

ड्रेनिंग के बाद जिल पाँच में बहु काम कर रही थी, उस गाँव में एक अनाथ दरिदर था। माँ-बाप नहीं, बच्चों को संभारनेवाला कोई नहीं। तो अपनी जिम्मेवारी मानकर उन्हें पाला-पोसा। बहु बहु रही थी, इनसे मेरी लाज बची। अज दुनिया में मेरे आने जग हैं।

जग दरिदर की रसायलगी बानने के बाद गाँव की एक बहन के मूँह में खचा रूप गया। डाक्टर ने घना किया कि उसे आने डे। माह वाले बच्चे को अपना रूप नहीं लिलावा

बाहिए। विन्दवामिनी बहन ने उस बच्चे को पाला। अब वह लगभग छह-सात साल का है। बहु बहु रही थी कि बहु बडा सम्प और अच्छा लडका है। अरने काम भाई-बहने की तरह आडापु और उरुड नहीं है। इससे सिवाय पाउसाला में पढ़नेवाले बरीय बच्चों को आवस्यता होने पर पेंसिल, निराम तथा सुन्व की व्यवस्था, जहाँ तक ही सक्ता है, अपनी तरफ से करता है।

विहार में ऐसे हजारों बहने एक संकुचित जीवन बीता रहे होगी, जिनकी सन्तियों का सपुपयोग इस प्रकार सम्भव न मही मिडा और मानवीय गुणों की मिडा देकर निरामी के नाम में ही सक्ता है।

असमान मिडा प्राप्त हुई बहनों की 'पियतपरखी' और 'बडोर हृदय' को देखकर जहाँ एक ओर निरामा पैदा होती है, दूसरी ओर वही काम पकी लिखी आमीय बहनों के गुणों को देखकर भाँस्य के लिए आया भी उपजती है। —सुरला देवी

दिल का दर्द

विछोने पास भियामयो की तरह हाथ बचो पैसावा जाप ? मैं मकी होता तो बहता कि अपनी रोटी आप ही पैदा कर लो। बपडे मो आग ही पैदा कर दरने हैं। मेरा अवंतास यह है कि मज करो और या करणे ही छाओ। दस बज अर्प किर् हकन-लीम नहीं है। वस वं अर्थ है पूरी मेहनत-मजदूरी बरफे ही रोटी बनाया। सर सोय अयर पुरजोस से एक-नी मजदूरी बरने लग, तो हिन्दुस्तान की सुरत ही बदल जाय। जहाँ-जहाँ तप्राज पैदा होवो है वहाँ मे उमे हटाकर अनाज को पाल पैदा की जाय। मोआराली साने वा दुखा है। जहाँ मारिबल, मछली और चावल की जिलनी भरना है। बरानों से चावल आप और मोआराली राडे, यह कैवो साने की बान है। और सर लीय बानें तथा अपने-अपने बपडे तीयर कर लें, तो मिल बाने-बार सनय ही आयगी। हमारे यहाँ कई की बृण पैदा होगी है। मगर मेरी बात मानता बोन है ? हमारे पास बरबो हाथ हैं। मिल म लो बरीय पूर ही आप्य आरमिणों की मजदूरी मिलनी है। हमारे लागो-बरोडो बेकार बँडे रहते हैं। सेकिज यह दिवाय अज कोई समझना ही नहीं चाहता।

[बेनिचापल, १०-८-१७]

—गायीत्री

बुवाई का समय बीज की मात्रा पौधे से पौधे पंक्ति से पंक्ति को दूरी की दूरी
 फरवरी-मार्च १०-१२ कि० घा० १५ सें० मी० ३० सें० मी०
 (गर्मी की फसल) प्रति एकड़
 जून-जुलाई ४-५ कि० घा० ३० सें० मी० ६० सें० मी०
 (बरसाती फसल) प्रति एकड़

भिंडी की खेती

भिंडी एक ऐसी फसल है, जिसे सभी लोग खाना पसन्द करते हैं। यह एक अच्छी सब्जी तो है ही, इसका डबल गन्ने के रस को साफ करने में भी काम आता है।

भिंडी में विटामिन 'ए' और 'बी' काफी मात्रा में पाये जाते हैं तथा विटामिन 'सी' भी थोड़ी मात्रा में पाया जाता है। इसमें प्रोटीन तथा खनिज पदार्थ पाये जाते हैं। अतः यह स्वास्थ्य के लिए भी शुण्णकारी है।

उत्तम आति : भिंडी को कुछ जातियाँ अलग-अलग प्रान्तों के कृषि-विभाग में चुनी हैं। यह सभी जातियाँ अपने गुणों के कारण बहुत अच्छी समझी जाती हैं। कुछ खास किस्में—लखनऊ ड्वार्फ, लांग ग्रीन, लांग ह्वार्ट, वेलवेट, पंजाब संकर १३, पूसा मखमली आदि हैं।

"पूसा सावनी" एक छूब उपजनेवाली किस्म है। इसको खतरनाक रोग नहीं लग सकता। इसके फल १५ से २० सें० मी० तक लम्बे, पाँच कोनोंवाले तथा सुन्दर हरे रंग के होते हैं। इसकी उपज २५० मन प्रति एकड़ तक हो जाती है।

भूमि की तैयारी : भिंडी प्रायः उन सभी खेतों में हो जाती है, जिसमें कि जल-निकास हो जाता है। खेत को तैयार करते समय पहली जुताई मिट्टी पलटनेवाले मकाले हल से करनी चाहिए। बाद की दो जुताई गहरी जुताई करनेवाले हल से करके फिर देशी हल से तीन जुताई करनी चाहिए। भूमि को मुत्सुरा करने के लिए पट्टेला चलाना अच्छी है।

बुवाई कब और कैसे ? : बुवाई करने के समय का बीज की मात्रा तथा उत्पादन पर बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है तथा पौधों की आपसी दूरी समय के मुताबिक ही करनी होती है। नीचे बुवाई के समय के मुताबिक ही बीज की मात्रा और पौधों की दूरी दी गयी है :

बुवाई करते समय एक बात विशेष रूप से ध्यान रखने की है कि गर्मी ऋतु की फसल का बीज बुवाई से पहले २४ घंटे तक और बरसाती फसल का बीज १२ घंटे तक अवश्य भिगोयें, क्योंकि इस बीज का छिलका अत्यन्त कठोर होता है और पानी को जल्द नहीं सोख पाता, जिसका नतीजा यह होता है कि बीज समान रूप से नहीं जमता।

बुवाई 'डिबॉलिंग विधि' से करनी चाहिए और बीज लगभग २.५० सें० मी० गहरा बोया जाना चाहिए।

सिंचाई और निम्न-गुड़ाई : पहली सिंचाई बुवाई के तुरन्त बाद कर देनी चाहिए। गर्मी की फसल में सप्ताह में दो बार सिंचाई की जाय। यह ध्यान में रखा जाय कि जल खेत में न रुक पाये, नहीं तो पौधों के सूख जाने का डर रहता है। बरसाती फसल में मिट्टी चढ़ाना चाहिए। मिट्टी चढ़ाने के लिए दोगों और को मिट्टी पलटनेवाला लोहे का देशी हल इस्तेमाल किया जाय तो काम तेजी से और कम खर्च से हो जाता है। निम्न-गुड़ाई 'प्लेटीवेटर' (गुड़ाई मशीन) से करनी चाहिए। गर्मी की फसल में पंक्ति से पंक्ति की दूरी कम रहती है, इसलिए फावड़े से गुड़ाई करना ही अच्छा रहता है। गुड़ाई अधिक गहरी न हो।

फल तोड़ना : भिंडी रात्रि में तेजी से बढ़ती है। इसलिए प्रातःकाल ही फल तोड़ना चाहिए। साधारणतया देखा जाता है कि पहले ४-५ दिनों में भिंडी की बढ़वार साधारण रहती है, लेकिन ६ठे और ७ठे दिन उसकी बढ़वार तेजी से होती है और उसके रंग व कोमलता पर कोई असर नहीं पड़ता।

कीड़े से बचाव : जैसिडस नामक कीड़े छोटे-छोटे हरे रंग के होते हैं तथा पत्तियों से रस चूसते रहते हैं, जिससे पत्तियाँ झुड़ जाती हैं। ये अप्रैल से नवम्बर तक हानि पहुँचाते हैं। इनमें बचाव के लिए ०.२% एण्ड्रिन (१०० मिलिमीटर २०% एण्ड्रिन का घोल १०० लीटर पानी में घोलकर) का छिड़काव ३५० से ४५० लीटर प्रति एकड़ की दर से कर देना चाहिए।

—भोपाल सिंह

गौन की बात

नैसर्गिक और रासायनिक खाद का मुकाबिला

बिहार प्रदेश के एग रासायनिक किसान श्री शत्रुघ्न प्रसाद का दावा हे कि नैसर्गिक खाद (बम्बोस्ट, हरी खाद, हड्डी, टट्टी, पेयाब आदि की खाद) से खेती मे अच्छे नतीजे आते हैं और वह रासायनिक खाद से अधिक अच्छी भी होती हे। बिहार के भूमि-संरक्षण विभाग के उपनिदेशक श्री शत्रुघ्न प्रसाद की इस बात की बड़ी तरह से जांच की। और उनकी जांच मे श्री शत्रुघ्न प्रसाद का दावा सही निकला। यह जांच की शत्रुघ्न प्रसाद के हुनारीकाग के १ एकड़ रोड मे किया गया। उन निदेशक से पहला परीक्षण 'सॉईनुस नेटिव' नामक धान की फसल मे किया। धान की फसल १२० दिव मे बनकर तैयार हुई। उपनिदेशक की उपस्थिति मे फसल तैयार की गयी। प्रति एकड़ मे ११ मन के हिसाब से उपज हुई। जमी रोड न धान की स्थानीय विस्म की पैदावार ४१ मन प्रति एकड़ तक हुई जबकि यही फसल आस-पास के खेतो मे १४ मन प्रति एकड़ से भी कम हुई। उपनिदेशक ने श्री शत्रुघ्न प्रसाद के खेतो बनने के तरीके भी प्रस्ताव की हे। इस तरीके से सफातार तीन वर्षो तक एक ही खेत मे सालभर मे ६ फसलो उपजायी गयी।

दोनों गांवो का मुकाबिला करने के लिए 'ताइबुम नेटिव' धान मे नैसर्गिक खाद और रासायनिक खाद का उपयोग किया गया। रासायनिक खाद डालने मे एकड़ मे १५० फ० का राबं आया। जांच के लिए तय किये गये खेत को वर्षा के आलावा ४ बार सींचा गया था और उसमे बीजे मारलेसाली दवा का छिड़काव भी किया गया था। प्रति एकड़ मे १८ किगो.मास बीज डाला गया था। खेत मे साधारण खेती के तरीके आया और बीजे खर्च नहीं किया गया। जांच के जो नतीजे सामने आये, उनसे यह बात साफ हुई कि नैसर्गिक खाद के मुकाबिले में रासायनिक खाद डालने से उपज में कोई लाभ पत्रं नही आया। श्री शत्रुघ्न प्रसाद ने जो खेतो का तरीका बताया था उसने मेरे भी खाद का पानी मारिणो के जरिये खेत हर वर्षोआया जाता हे। इस तरीके के बिचार्ई और खाद देने का काम एक ही साथ होगा हे।

(देविन 'स्टेट्समैन' के १६ जनवरी '६८ के अर में प्रकाशित लेख के आधार पर) ●

चिन्तार करना ही होगा

विनोबा विवाह से दो मील दूर हे, ग्रामदानी गाँव बन्ध्यापुर। प्रनारोड स्टेशन से उत्तर की ओर पड़ी सड़क जाती हे। बाँध, आम ताल, मेसे कीर खोसक के पने पेठ और धान के खेत मन हरा भर कर देते हैं। मुजरात के भाई खोलाघर और मैं सुनीय के पूव टहलने निचल पडते हैं। आग पर हाथ सेनते हुए शामीभ भाइयो से मासूम टूठा नि गाव मे लगभग ली घर हैं। बोडरी भूमिदार और बार शाच भूमिहीन दुसाध। एक चौथाई भूमिवाल ग्रामदान मे शामिल नहीं हुए हैं जिनके पास गांव की लगभग एक तिहाई जमीन हे। ऐसे एक भूमिवाल से जब हमने पूछा कि आपका मासूम है न कि आपका गाव ग्रामदान हुआ हे ? तो उनका उत्तर मिला हुआ तो हे। मगर उनका माने हम मानके नहीं।

हमने उन्हें समझाया कि माने हे सारे गाँव का एक परिवार की तरह मिलजुलकर भाईबारे से रहना। ग्रामदान होने से काम हुआ नहीं बल्कि आगे के काम के लिए एक बुनियाद बन गयी।

वह भूमिवाल भाई कुछ बैठे 'हम बीमबां हिस्सा भूमि विवाहालकर देना हीगा न ?'

हमने उनका डर मिटाते हुए कहा 'केवल आपकी ही नहीं, छोटे जमीनवालो को भी लीपे मे एक बड़ा जमीन भूमिहीनो को देना होगा। मन पीछे एक सेर जलान ग्रामसभा को दान होगा। नौकरीवाले या कारीगर महीने में से एक दिन की बचार्ई ग्रामसभ के लिए दान देंगे। इस रकम का उपयोग गाँव के भाने के लिए होगा जिसे ग्रामसभा सब-सम्मति से तय करेगी। जमीन देना बडी बात नहीं हे। प्रेय बढी बात हे। अगर आप गाँव भाई हैं और एक भाई बीपार पडता हे तो क्या कर उसे सहाय नहीं देते हैं ? उठी तरह ग्रामसभा आप सक्की सेवा हागी। दचार्ई, साने पढ़ने लिखने कामकाज दिखाने आदि का इन्तकाम होगा। काम सक्की एकताय से हागा। अगर ६० लोग ९९ म हैं और ४० विपस मे, तो यह काम होने पर वे ४० उस तीछने सगने हैं, पा सहकार नहीं देते। जब इन सबकी सम्मति न हो, तब सब उस काम को छोड देना ही अच्छा हे। मिलना मुजसान उस काम को छोड देने से होगा, उसत अधिक प्रेय क दूने से हागा।

—जगदीश शर्माजी



बकटेड-२

मदद की माँग : गुलामी के खतरे

दुनिया के प्रायः सभी देशों का एक मिलाजुला मंगलन है— 'संयुक्त राष्ट्रसंघ'। यह संगठन दुनिया के देशों की स्वतंत्रता, सुरक्षा, विकास और शान्ति के लिए काम करता है। दुनिया में अभाव, अज्ञान, और अन्याय दूर हों, और छोटे-बड़े सभी देशों के लोग सुख-शान्ति के साथ जी सकें, इसके लिए 'संयुक्त राष्ट्रसंघ' की ओर से बहुत सारे काम होते हैं।

अभी दिल्ली में 'संयुक्त राष्ट्रसंघ' की ओर से दुनिया के लगभग सभी देशों का एक 'व्यापार विकास सम्मेलन' हो रहा है। इस सम्मेलन में दुनिया के देशों को उनकी स्थिति के अनुसार दो नामों में बांटा गया है : (१) विकसित देश और (२) विकासशील देश।

विकासशील देशों में मुख्य रूप से एशिया और अफ्रीका महाद्वीप के देश आते हैं। जो विकसित नहीं हैं, लेकिन विकास चाहते हैं, और उस दिशा में कुछ कोशिश कर रहे हैं, ऐसे विकासशील लगभग सभी देश, विकसित यानी पश्चिमी देशों के वषों तक गुलाम रहे हैं, और पिछले करीब २० वर्षों के अन्दर उन्होंने राजनीतिक आजादी हासिल की है।

इन विकासशील देशों की माँग है कि—विकसित देश अपनी आमदनी में से एक प्रतिशत यानी सो में एक रुपया विकासशील देशों के लिए मदद के रूप में दें। आज दुनिया एक-दूसरे के बहुत करीब आ गयी है। जिस तरह गाँव में जहरतमन्द परिवार अपने पड़ोसी परिवार की मदद चाहता है, ठीक उसी तरह करीब देश दुनिया के दूसरे अमीर देशों से अपने विकास के लिए मदद की माँग कर रहे हैं। नाँग अबित है। दुनिया की सारी सम्पत्ति भगवान की ही देन है, और दुनिया के सभी मनुष्य उसी भगवान के बन्दे हैं। इसलिए दुनिया की दौलत पर सभी का हक समान है। लेकिन दुनिया की धरती को मनुष्यों ने टुकड़ों में बाँट रखा है, देश

के नाम पर, और अपने दिलों को बंद कर रखा है धर्म, सम्प्रदाय, रंग, राजनीति आदि के बहुत-से छोटे-छोटे घरोरे में।

विकासशील देशों की माँग तो पूरी की ही जानी चाहिए, और शायद की भी जायगी। लेकिन धरती के टुकड़ीकरण और दिलों के घरोरों के कारण इस मदद में से कुछ बहुत ही खतरनाक बातों को होने का भय है।

हर विकसित देश, जो विकासशील देशों की मदद करने की शक्ति रखता है, भाषण रखता है, वह विकास की कोई-न-कोई योजना, पद्धति और विचार भी रखता है। और जब विकास के लिए जरूरतमन्द देश को साधनों की मदद देता है तो उसके साथ अपनी योजना, पद्धति और विचार भी भेजता है।

मुख्य रूप से दुनिया आज दो विचारों के युद्धों में बँटी है। एक विचार के गुट में अमेरिका, इंग्लैंड, फ्रांस आदि देश हैं, और दूसरे विचार के गुट में रूस, चीन आदि देश हैं। पहला गुट मुख्य लोगों को सहारा देने की बात कहता है, तो दूसरा दुखी लोगों को सहारा देने की। जब भी और जहाँ भी इन देशों की मदद पहुँचती है, उस मदद के साथ ही उनके गुट की बात भी पहुँचती है और मदद हासिल करनेवाले देश भी गुटों में बँटते हैं।

चूँकि हर देश में मुख्य और दुखी लोग हैं, और दोनों की बकालत करनेवाले गुट के देश मदद करनेवाले हैं, करते हैं, इसलिए विकासशील देश मदद हासिल करने के साथ ही गुटों में बँटते हैं, और दोनों गुटों के सौझों का अखाड़ा बन जाता है वह देश। विपत्तनाम इसका जीता-जागता उदाहरण है। भारत में भी वह खतरा साफ-साफ दिखाई दे रहा है। इसीलिए हमें सोचना है कि विकास के लिए हमको मदद लेनी है तो लें, लेकिन अपने देश को चीन और अमेरिका के सौझों की लड़ाई का अखाड़ा न बनार्ये।

हाँ, हम करीब हैं, हमारे पास साधनों का अभाव है, लेकिन एक शक्ति तो है हमारे पास, जो बहुत है और जिसको संगठित किया जाय तो देश का नक्सा ही बदल जाय। वह शक्ति है धर्म की। यह अपनी शक्ति संगठित और सक्रिय हो जाय, तो विकसित देशों की मदद लेकर भी हम अमेरिकी और चीनी गुटों को लगायी जानेवाली आग में जलने से बचेंगे और उनकी गुलामी में जकड़े जाने के खतरे से भी मुक्त होंगे। ●

'गौँव की बात'। वार्षिक चर्चा : बार रुपये, एक प्रति : अठाएँ पैसे।

श्रीहृष्याक्ष अष्ट द्वाप सर्व-सेवा-संघ के लिए प्रकाशित पूर्व रचितज्ञात ग्रंथ, मानभक्ति, धारणसी में मुद्रित

समाज-परिवर्तन की भूमिका और मार्क्स का दृष्टिकोण

परिवर्तन का मार्ग

यहाँ तक हम बात की चर्चा हुई कि समाज का परिवर्तन किसलिग, किस शास्य की प्राप्ति के लिए करना है। मार्क्स का दृष्टिकोण परलक्ष्यता का निरूपण तथा मान्यता की पुनः प्राप्ति का है। केवल सत्ता प्राप्त करने कोई भी एक वग अधरा व्यक्तिसमूह मान्य-मान का आमूल परिवर्तन नहीं कर सकता। बल्कि परिवर्तन का यह लक्ष्य सामान्य न रखकर जो भी वान्ति होगी, यह केवल राज्य क्रान्ति सिद्ध होगी, समाज-क्रान्ति नहीं। इच्छिए मार्क्स ने यह कथो नहीं माना था कि राज्यवैधि सत्ता प्राप्त करने क लिए गुप्त षण्डन करके अपना दसल विजय करने स अपना लय सिद्ध होगा। उलटे, गुप्त सत्तल बातमय पद्धति बना कर समाज क्रान्ति करना चाहतवालो को

घोषं और साह्य से क्रान्ति नहीं की जा सकती और (२) अयाय का प्रतापार करने, स्तनयता और धेय प्राप्त के लिए शरय उठाना यदि आवश्यक हो तो उसे उठाने की इच्छा मान्यमान में स्वाभाविक हो सकती है। सभी लोग मानने हैं कि निययला गुण है और शोभना दाप है। पूण और शुद्ध अद्विषा सानो के लिए गौरवालय है और वादस के नान मान्यमान के लिए आवश्यक है। परन्तु समाज क्रान्ति में उगे मनुष्य के साधारण-योग्य तत्व नहीं रह सकते। एक ठोर पर साहसी द्विषाचारी माग और दूसरे छोर पर श्लो का अद्विषा माग— ये दो भाग मान्य के समय और काज भी लोगों के मानने प्रस्तुत है। परिवर्तन का

प्रा० दि० वे० वेठेकर

काय व्यक्ति तक ही सीमित रहना है, ता दोनों मार्ग बनाने जा सकते हैं। हमारे यहाँ के इतिहास में चाणक्य और चन्द्रगुप्त ने नन्दरा के माय के लिए पहला माग बनाना था। कद्विल्यावर्द ने राधोदा की दूसर माग से प्रसाकित किया। परन्तु समाज परिवर्तन की प्रथिय ऐसी नहीं है, कम-से-कम मार्क्स ने तो ऐसा माना नहीं।

मानव ने न कद्विषा को मूजन्शीत माना, न द्विषा को। मानव ने यह सत्य एतद किया कि काज तक के सभी परिवर्तन सत्यवक्त से हुए हैं। परन्तु उधने यह भी कहा है कि द्विषा या धाकि से नय निर्माण

समाज परिवर्तन समाज क द्वारा सनाप और आक्रोश समाज परिवर्तन क काम का क्रान्ति सफल होगी ?

नहीं होता। 'नकाज' पहले समाज क मभ में पलनी है, और उसके जय के समय द्विषा का नेचल डाई के रूप में अगमन होता है। यह भी केवल काज तक का इतिहास है, त्रिजालावाचित बटल नियम

नहीं है। मार्क्स को सारी भूमिकाओं को हिंसा-अत्य मानकर पटरासनाजे समके निरोधियों ने पंसा आभास पैदा कर दिया है कि माम्म मानता डी यह था कि दारै ही (हिंसाहृत्य ही) गभं धारण करती है और बही सुन्न करती है। यह अमानविक है। बकि इसके विपरीत, मार्क्स का विचार यह दिखाई देता है कि त्रिदेन, अमरीना भादि समरीय सांसात्रिक दशों में शांति मे, विधान और कानूनों क द्वारा समाज-क्रान्ति हो सकती है।

मानव के विराधिया को यह निपयंसा धारणा कि मानव केवल द्विषा की ही मनुता या समरु मे सा सकता है, परन्तु दुर्मिय की बात है कि माकक के बनेक अनुयायी भी इसी मन के हैं। वे भी मार्क्स के मनुष्यवक्त्य व्यैय का समभे नहीं हैं। उनको दृष्टि सत्ता प्राप्ति क आगे पहुँची नहीं है। इच्छिए मानव के विचारो का दय प्रकार द्विषय और वृद्ध ही निपयंसा मां किया जाता रहा है। टकीलिए इसके पीछे इतना सारा प्रयच रचना पडा है। परन्तु काज हमें द्विषा कि अद्विषा' इद वितथयवाद से परे जाना चाहिए तभी समाज-क्रान्ति का, मानव प्रणीत मार्ग का स्वयक स्पष्ट होगा।

हमने देला कि समाज-क्रान्ति का मानवं का क्या व्यैय था। नद समस्त मानव-क्रान्ति को परमात्मा के बधिधाप से पुन्य होने का मय बनाना चाहता था। नर का सिद्धासन हृदिमाने का माग उसे बयास था और बसे ही सनों का निरापवाद अद्विषा का माय भी त्वाय लगा। तीवरा

हिंसा और शक्ति मे नयनिर्माण नहीं। समूह के द्वारा भी गुयी

मनुष्य को अपना पूर्व-सकित परास्यता का सत्कार हटाकर मनुष्यता के लिए नया जीवन बनाना है तो उसके लिए समाजुप मार्ग उन्मोगी नहीं है। इसके दो कारण हैं— (१) मनुष्यो का पारपरिच प्रेम धरद भावना की बरहेकना करने अमानु

की भावना, ध्येय-दृष्टि और धैर्य चाहिए। केवल अध्याय के विषय संताप और धारोबी के कारण उत्सव होनेवाला विष्वसक छात्रोंका समाज-परिवर्तन के काम वा नहीं। उल्टे, वह मान्ति का बाधक हो सकता है। जब सामाजिक परिवर्तन का ध्येय साकार करने का धैर्य किनमें होगा? वह धैर्य तो व्यक्ति में ही हो सकता है और ऐसे धैर्यशील व्यक्तियों के समूह को समाज-मान्ति संभव करनी होगी। यह तो ठीक है, परन्तु तंत्र उठनी है कि जो मान्ति समूह को करनी है, वह क्या मजल हो सकती है? कुछ समय तक सफलतापूर्वक वह बनी रहे, तो भी क्या वह स्थायी हो सकेगी? किहासन में कुछ राजा को हटाकर उगमें बदले कोई धर्मिमा बंटोना है तो प्रजा को मानद होता है। परन्तु राजमत्ता को बनी ही नहीं है। ऐसी राज्य-मान्ति समाज-मान्ति नहीं है। यद्‌ एवं मान्ति ने देता कि बाज के समाज में सहरी धर्मिध वर्ग ही एक ऐसा वर्ग है, जो न केवल योग्य का मिशर है, परन्तु उगमें समाज-परिवर्तन का निश्चलन समझने की क्षमता भी है।

और उसके मुक्त होने का स्वप्न देव सवा।

संपत्ति और सत्ता की अमानुष प्रतिस्पर्धा में बाज सभी मनुष्य जैसी पर सृष्टी बाधकर पशुओं के समान दौड़ रहे हैं। बरा, धर्म, समूह और राष्टों के मामले में भी यही स्पर्धा जारी है। इस स्पर्धा में श्रमिक वर्ग शामिल ही है, मुनिधित वर्ग भी शामिल है। जा इस स्पर्धा में शामिल नहीं है, वे भावर्ष की सरह दुःख और बहस्य जीवन अनाते हैं। मान्ति या बला को, ज्ञान या गदाचार की जिनको पुन लगी हो, वे तो अवागम्यरम्भ होने हैं, दूसरे पड़े रहते हैं। उग प्रचार का बनबाध वे संचय्य में, ध्येय की मरुती में स्वर्य शोशार करते हैं। परन्तु दूसरा भी यह तरीकी पसर नहीं होती। वे स्पर्धा में मग रहते हैं। मग रहने हैं, इष्टीका ध्येय है कि बाज की वलागता का, अमानुषता का उगरे मान नही रहता, मान होने का मार्ग भी कुच्छिप होना है।

तो मजब-मंठली, हल्लाघाघय की पुषा, मनेगोखर, नाटक मन्ठली बनेरह 'साधुनिक' मनोरंजन में मग होना है; मुनिधित वर्ग के मनोरंजन में, ध्येयगो में रस लेने का प्रपल जाता है।

रस हारे-बने, मन्ठारा, धर्मिध वर्ग के लिए पाने जैसा कुछ भी बचा नहीं है। वह सुख हो तो पुषा है। जो भी है सब बल्पिध, आशोनिध, अमानुष ही है। परन्तु बर भी नहीं जानता। भावर्ष ने इस वर्ग का कोई पुषा-विषय नही बनाया। भावर्ष का तो यद्‌ रहना है कि इस वर्ग को मरदबम क्षमता परिवर्तन करना चाहिए। यह होना है लभी यह समाज-परिवर्तन का अद्यतन बागा। परन्तु धूमि बर मधरत का पुषा है, इमलिए 'नव' का वलागता का उगता है, धूमि परिवर्तन के लाने के लिए उगरे उग कुष बचा नहीं है, इमलिए परिवर्तन के लिए जो-जान के बर लक ठंकेता। धर्मिध वर्ग के

मरदबम और मरसा की अमानुष प्रतिस्पर्धा ... धर्मिध स्पर्धा में दूर-आदा बाम और बम दाम का मिशर मरदबम अरता परिवर्तन ... सामागता की मानव की मुक्ति.

शांति-केन्द्र : 'शांति-दिवस' के आयोजन

देग घर में दिवस शान्ति पर ३० जनवरी का दिन 'शांति-दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर प्रकाशकेतु, सामूहिक लकड़ी, प्राचीन-सभ्यता, सूत्रचक्र, यज्ञाभिलेख, सर्वोत्प-साहित्य का पठन-पाठन, लोक-नृत्यक, शांति दिवसों और सर्वोत्प साहित्य की विभिन्न श्रादि के कार्यक्रमों ने कतिरिक्त चित्र प्रदर्शनी, विचार-मोटी, शांति-सेवा रंली, भोज सुदूष, नवावनी श्रादि के विविध आयोजन भी किये गये।

उत्तर प्रदेश

बानुपुर : सोचन गांधी-शांति समिती के ८२ कार्यकर्ताओं का एक हलल विचित्र जनवरी में संचालन में हुआ। 'शांति दिवस' के अवसर में कार्यकर्ता और शांति-सैनिक सर्वोत्प-साहित्य लेकर घर घर पहुँचे, १०११ रुपये की साहित्य-विनिर्दू १—विनिर्दू कार्यकी आगरा शांति-सोचा सुदूष में सचलन पुलिष, होमगार्ड, एन सी और विविध मिनेच ने स्वयंसेवकों ने भी भाग लिया। पुलिष बनाना हॉलघर नीचे किये हुए चल

→ श्री। विज्ञान की शांति दायक से एक और निरन-सुदूष का उद्घाटन दिन, और दूसरी ओर विरन-सुदूष का भीषण विष, ये दो विष मात्र रूप देल रहे हैं, इसका आभास बीज के रूप में प्राप्त की सामने था।

पराशरा से प्राप्त की मुक्ति का मन्विष भी बहु बीज-रूप में ही देल पाया का और भाग सुभादे का भी बीज रूप में ही प्रकल किया। काल-दरुण एक बात है, मन्विष के शिष्य के मन्विष बनाते की दुष्काला जिलकुन हूँकी बात है। भादरुं शान्तिसोचा, मन्विषयकता नहीं। इसलिए 'पराशरा' के निरनन का उल्ला भीष, और समान-परिचलन के भाग में प्रत्यक्ष समाज की ध्यान में रखकर प्रयनशील होने का उल्ला मरने—सोनी बातों का विचार करने साधुनिर्दू इतिहास में उल्ला मन्विषन करना साहित्य।

(काले अक्ष में सहाय्य)

रही थी। शर्मदा तथा में ईसाई, विष, इलाक, पाणो और हिन्दू धर्म की शर्मदाएँ की गयी। केन्द्रीय हिलो मन्विषन के विदेशक डॉ० इवेस्वर कर्मा ने मन्विष के प्रमुल सेवा के रूप में और सुनूतुरें सपद-सदस्य तथा सर्वोत्प कार्यकर्ता भी सामुवाष चुनूरी ने समाज पर से बाहु के प्रति जननी यज्ञाभिलेखों के। जिते के रूप मरने तथा शर्मो में भी शांति-सुदूष विनाले गये।

आजमगढ़ १ जनवरी के पोली पाठ के समय शांति का आह्वान करने के लिए पारके छात्राकर विविदि किये गये। दो ग्राम दान प्राप्त हुए। —मेरालाल गोस्वामी दुइपादून कलन-कलन मन्विषों में सर्वोत्प-मन्विष के कार्यक्रम आयोजित किये गये।

१० का० की मूल-मालेज के पाणो की एक शांति-सेवा रंली हुई। —प्रेमलता सूर्यल दिहारी, रमाके की सोलनदुरी हाने पर जो काया विद्यालय की शांति-मेजिवाको, छात्राओं और श्रध्यापिकाओं ने शांति दिवसों के माध्यम से घर-घर प्रकर शांति का सुन्दरा पहुँचाया। —भगवान् दुष दौडीदाद, विधोएरदाइ 'शांति-दिवस' पर जिते के सभी शांति-सैनिकों ने विधोएरदाइ में एक देगी चरण की दुष्कान पर चलना दिया।

सुदुलपा अत्रावर में ७ दिन के प्रामदान-मन्विषान से ६२ शांतिवा मन्विष हुए। दिहन्वर से इलाहाबाद, पाणामरों और बाजमन्विष के सर्वोत्प कार्यकर्ताओं का एक तिचित्र हुआ। —शोभाचरण विहद

कीर्तिसार 'शुद्धील विज्ञान शांति कालेन' करने का निषयच किया गया। हार्दिल्ल के छात्रों ने विचार शांतिविल केर की सहायका की।

—माधव विहद मन्विषा - शर्मदा, शोठी और 'गोवा प्रनन' का मन्विषन जारी है। इस पारके फलने लगे है। —सोनीचरन विराटी

जयलनी : पारके का प्रचार, शांति विरुष का आयोजन और शोक-मार्गक विद्या मन्विष। —शोक-मार्गक मन्विष

बिहार

पटना : 'शांति दिवस' पर विद्योबाड़ी के निवास-मन्विष से एक विद्यालय सुदूष विकास मन्विष, जिसमें विविध सदस्यों और राज-नीतिक दलों ने भाग लिया।—नवलकिशोर विहद सुदुलकहापुर, पाणो शांति प्रविषलन केन्द्र के तालाजामान में शांति दिवस मनाया गया। शहर में १५४ छात्रों के बारण सुदूष नहीं निकल सका। —शोभाचरण पाणो

कुरसैली सर्वोत्प आश्रम सर्वोत्प-मेने में २२ जनवरी की बाग मन्विष में, सुनूतुरें मन्विषकी भी विनोदमन्विष का से प्राप्तवान के मन्विष पर प्रकाश देला। —अननल स्वामी हकमा मन्विषान में दी गयी भूमि का पुनर्निर्माण करने कोषों ने उल्लासपूर्वक साधु-दिन सेना का घोषणच किया। —अनल प्रकाश

पमौर। सुदुलकी मन्विषान के दो शर्मों में अशांति और विद्या मन्विष लखी की हकमाचरण का शांति-मेजिवा और पकाजल के प्रमुल शर्मों ने सर्वोत्प रूप से विरुषकल किया। —सुभूषण विहद

पोआरी : जनकसुदुष से विचार, बा सुणों का निर्माण एवं मन्विष की गयी। भागवान् अविज्ञान चलया गया। —गोएरवर शर्मो

दिल्ली। दो सौ शांति-यार्थियों की लेकर एक शांति-यात्रा दिल्ली-मन्विषान के निवेदन में लाल किले से मुक हाकर राजघाट, राधुपिना को समाधि पर मयास हुई। इस अवसर पर जयप्रकाशदासी ने चलया वि मूल और कालेज के १५ से २२ वर्ष की आयु के छात्रों के लिए भारतीय तरण शांति-सेवा का आयोजन किया गया है। विहार में सहाय शांति-सैनिक परतों प्रमोने को कायाद करने उल्लादन में से हल्लक के बन्धों को मुन भोजन देगे। अण्डरगारों ने शांति-सेवा का प्रविज्ञापन पत्र, विषको सभी ने सुदुषपा।

भिलाष, गांधी सेवा केन्द्र (बश्मीर) : मारी विषागत के बावदूद शांति-दिवस पर मन्विषानों ने उल्लाह के कार्यक्रमों में भाग लिया।

—ग. सादरनी (दीप सलने अक्ष में)

आन्दोलन के समाचार

विहारदान की दिशा में

● धनदाद : १५ जिले में दुर्गो का प्रखण्डदान हो चुका है। अब गोबिन्दपुर और विरसा इन दो प्रखण्डों में काम करने के लिए प्राति उपसमिति और भयोक्ता नियुक्त किये गये हैं। तय हुआ कि पहले एक प्रखण्ड में काम करनेवाले सब कार्यकर्ता एक ही केन्द्र में रहें और टोलियाँ बनाकर जाते जायें। गाँव के मुखिया और शिक्षका को सभाओं द्वारा सहयोग लिया जा रहा है। गोबिन्दपुर प्रखण्ड में ३० ग्रामदान हो चुके हैं, कुल २२४ गाँव हैं, जिनमें ११ बेचिरगो है।

● गया : जिलादान-प्राप्ति समिति ने सघन रूप से कार्य आरम्भ कर दिया है। प्रखण्डों में पचासों, कर्मचारियों तथा शिक्षकों की सभाएँ की जा रही हैं। प्रथम चरण में बुटुम्बा प्रखण्ड को प्रखण्डदान घोषणा के लिए निश्चित किया है। श्री विद्याराज गूढ़ ने फरवरी २१ को बुटुम्बा अचल और बोपगवा के; २२ को बुटुम्बा धीर देव प्रखण्ड के, २३ को वाराणसी और मोहनपुर अचल के शिक्षकों की बैठकों में ग्रामदान का महत्व समझाते हुए प्रखण्डदान के लिए आवाहन किया। जिलादान समिति के सयाजक श्री दिवाकरजी ने जिले की योजना बताते हुए अर्थ-संग्रह-कार्य को करने की अपील की। सजना सहयोग मिल रहा है।

गया जिले के अरवल गाँव की क्षममय एक हजार एकड़ जमीन कृषि के अयोग्य थी। भूमि-आलोक द्वारा भूदान में जमीन देने के बाद किसानों ने परिश्रम द्वारा उसे उपजाऊ बनाया। बिहार भूदान यज्ञ समिती द्वारा वितरित भूमि में लहलहाती फसल के उपलब्ध में प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी २६ फरवरी को एक विशेष समारोह का आयोजन अरवल गाँव में किया गया।

● राँची : जिले के सेहलरामा एवं

मन्दा प्रखण्ड के ग्रामपंचायतों के मुखिया, सरपंच, शिक्षक, भट्टोंगो सत्या के प्रतिनिधि एवं अन्य समाज-सेवियों की बैठक २२ फरवरी को सेहलरामा में हुई। बिहार धानदान-प्राप्ति समिति के सचिव श्री रामनरयण सिंह ने मार्गदर्शन किया। प्रखण्डदान-समिति का गठन किया गया।

ग्रामदान-अभियान

● दुर्ग, २३ फरवरी : जिला सर्वोदय-मठल के तत्वावधान में १५-१६ फरवरी को ग्रामदान की गाँव लाटाकोड में एक दिवस सफल हुआ। बाढ़ में ३५ गाँवों में ५ दिन की पदयात्रा हुई। फलस्वरूप बालोड तहसील में तीन गाँवों का ग्रामदान हुआ। विनिर का मार्गदर्शन धर्मश्री मरेड बुजे और रामानन्द बुजे ने किया। ५ शर्तों से उन्ही गाँवों में पुनः यात्रा चलेगी।

● फर्रुखाबाद, २२ फरवरी। कन्नौज में २० फरवरी को हुई बैठक में तय किया गया कि फर्रुखाबाद तहसील में ६ अप्रैल से १३ अप्रैल तक अभियान चलाया जाय, जिसमें लगभग ३०० कार्यकर्ता भाग लेंगे। सचालन श्री रामजी भाई करेंगे।

● अजमेर : अजमेर जिले का प्रथम ग्रामदान अभियान धीरे तहसील में फरवरी २२ से २६ तक चलाया गया। फलस्वरूप २३७ ग्रामदान हुए। अनेक ग्रामीणों ने अपना ग्रामदान कराकर दूसरे गाँवों में जाकर ग्रामदान कराया। सर्भीपस्य जिले के ग्रामदान की श्रेणी से कई ग्रामीण जाकर अभियान में शामिल हुए।

सरगुजा में महिला-लोकयाना स्त्री-शक्ति जागरण के उद्देश्य से बाढ़ वर्ष की भारत-यात्रा का संवलय लेकर आरम्भ महिला लोक-यात्रा का हदौर जिले के बाद दूसरा दौर २६ फरवरी महाविद्यारत्न पर्व से सरगुजा जिले में शुरू हुआ। यह यात्रा इस जिले में पूरे तीन माह चलेगी। लोक-यात्री दल में चार बहनें हैं। सरगुजा में लोक-यात्रा की पूर्वनिर्धारित एवं व्यवस्था यहाँ की सर्वोदय समिति कर रही है।

सर्वोदय-मठल : सूताजलि

उत्प्रेरित महात्मा गांधी के धाढ़-दिवस १२ फरवरी के दिन देग में विभिन्न स्थानों पर सर्वोदय-मठल आयोजित किये गये। इस अवसर पर पुस्तक, संवर्धन-प्रार्थना, मासुहिक कलाएँ, आम सभाएँ, पदयात्रा, साहित्य-प्रचार आदि कार्यक्रमों के साथ मुख्यतः हाथरते सूत की गुड़ियाँ छद्माजलि के रूप में सम्पन्न की गयी। आयोजनों का सशित विवरण :

मध्य प्रदेश में : सरगुजा जिले के मेड्रा, देवगढ़ व मरमना ग्राम में ३० जनवरी को सूत जलि-संवर्धन-समारोह हुए। राजघाट (बड़वानी) पर सर्वोदय-मठल में ४२५ सूत-गुड़ियाँ सम्पन्न हुईं। सर्वोदय-संस्थाओं के निमित्त श्री काशिनाथ त्रिवेदी के नेतृत्व में १३ पत्रावों पर 'पदयात्रा' हुई। ३०० पाति-बिल्लो को बिजोई हुई। रतलाम तहसील में पदयात्रा हुई। वित्तजय आधाम, इन्दौर द्वारा श्री दादामाई नाइक के नेतृत्व में सघन नगर-यात्रा की पूर्णरूपि हुई। १५१ गुड़ियाँ सूताजलि में सम्पन्न हुईं।

विहार में : सारन जिले में मैरौवा धाम के सर्वोदय-मठल ने जिले के विभिन्न भगनों के दो हजार गुड़ियाँ सूताजलि सम्पन्न हुईं।

उत्तर प्रदेश में : टिहरी नगर और उत्तर काशी में गांधी-विजय प्रदर्शन और जिले के गाँवों में ग्रामदान-अभियान की सभाएँ हुईं। चम्पल घाटी क्षेत्र के बाह, मिनाहट, जैनपुरकली, बेशुआ तथा फरकलगर विचार केंद्रों में पाति-दिवस तथा सर्वोदय-संस्थाओं मनाया गया। इस दिवसिले में पदयात्रा-टोलियों ने लोकसम्मर्ष किया तथा ६५० पाति-बिल्ले और ७५ शाये के सर्वोदय-साहित्य की बिजोई की। बाह में यद्वाजलि-स्वरूप आयोजित सूताजलि-संवर्धन कार्यक्रम में १२३ गुड़ियाँ एकर हुईं।

राजस्थान में : खैराठ धामोस्य सप, सारन की ओर से बेकरी ब्लॉक में पदयात्रा का आयोजन किया गया था। सर्वोदय आधम, चंद्रिया में ५१ गुड़ियाँ सूताजलि सम्पन्न हुईं। ●

भूदान-याज्ञ

भूदान-याज्ञ मूलक-प्राचीन-ग्रन्थ-प्रधान-विहित-कृत्वा-न्ति-क्रान्ति-क्रान्ति-सम्पत्-सिद्ध-वाक-सा-पुत्रा-द्विक

सर्वे स्वेया र्साध का मुख्य पत्र

सम्पादक : रामशुक्ति

शुक्रवार वर्ष : १४

१५ मार्च १९८८ संक : २४

इस पत्र में

देश साहस की विद्या

—मनमोहन घोषरी २२२

शासन व्यवस्था और समाजवाद

—भूमिदास २२३

नयी कहीवा प्रथम श्रेणी का सर्व

—शारी २२४

श्रेणी का सर्व परिहार-वास्तव का प्रतीक

—पुनवदन बाबु २२५

वेदान्त और अहिंसा

—विनोय २२६

समाज-परिवर्तन की बुद्धि का माध्यम

ना दृष्टिकोण—डा० दि० के० बेबर २२७

विप्लव का बुद्ध और शासन

का विप्लव —मनमोहन घोषरी २२८

बुद्ध तथा वैचारिक आधार

—राजशंकर देव २२९

परिचय 'वास्तविक' के आधार पर

अन्वय प्रमाण

समाज का परि

आन्दोलन के आधार

वास्तविक मुक्त १० १०

एक इति २० २०

विदेशों में तत्प्राप्त पत्र मुक्त—

१० १० या १ १०१० या २० २०

(१०१० या १०१० २०१० के अनुसार)

सर्व-समाज-समाज

समाज, भारत-देश

सं. १० १०१०

भूखिन्दन : समता का इजहार

होमों के लोहार में सन-वदन, उपकरण-वदन या स्वयं-वदन को बगल भूखिन्दन ना कहल है । सन और सनो के कारण मनुष्य को भी इतिव प्रविष्टा मिलतो है, सनार और निजोरी की बसोवत समाज न सने जो दन्त मिलतो है, उसे मुक्तार मनुष्य भी बुद्धि के समान नष्ट होवा है । असनो नारीगरी, कला-बोवत और उद्योग धने के छारे अधिमान को ताक बा रखकर जे छोट-जे-छोटे और हीन से-हीन मनुष्य के साथ भुवनेलसार आभोद प्रभोद करला है । एक दिन छारे भेदों को सुसकर विमान प्रभो के मनुष्य के साथ पकी भर मोज करतो है । आने-जाने विद्वानों, सनो, सनो और सनोभो के उपरर हीन-वीन समाज के साथ बराबरी के नाते पूल में बाकर बैसता है । दूसरे छारे लोहारों में बहुत शालियों को सामिल नहीं किया जला बा । वे तो समाज के सँदेके सारों के बाहर ही रह जातो है । उनके साथ मिलने-जुलने या बैठने-उठने का बँदेन समाज हो नहीं पा । भूखिन्दन का दिन सन्तुष्ट के साथ, सेवा साक करने-सालों के साथ, गम रोजकर बने-बागों के साथ मिलने-जुलने का दिन बा, इतिव जे दिन सवा भी सवारी के समाज समक गया ।

आभोद प्रभोद और मनोविन्दन के जो साधन ऊपर जो सनो के सनो को मदसर होते हैं, वे नीचेसालों को नहीं मही होते । वे तो पूल और बीच में ही सन करते हैं । मोरिया और मरिया, पेसाबन और साखने उनके सारोवत और सारोवत हैं । उन्हें मुक्तार और एन नहीं से नहीं हो ? जो लोग मुक्तार हैं वे सरोवो को वे सारी चीजें एक दिन के लिए छोड़ना सच हैं, तो भी उपरसालों को सन-जला साधन छोड़कर नीचेसालों की बगल सन सने की बरकत नहीं होतो । इतिव नीचेसालों को सन पर बाकर उन्हेके सनो से होतो सनस मुतावित समाज सवा और मुनि-वदन हीं होतो बा उपलक्षण सनस गम । उपलक्षण न मतलब है, किनी प्रथा या सनस के इरादे को सनसने-सने को दिनाती । भूखिन्दन होनी के मतलब को सनसने-सना विद्व का उपलक्षण है । होनी का मतलब यह है कि मनुष्य अपने सारे सनसिक भेद-सने को सुसकर समाज सुसका पर बराबरी के नाते एक-दूसरे के साथ हीं सनस करे, सँदे-सँदे सुसका सनस ।

होनी के लोहार का इरादा समाज के सनो सनो के सनो से मिलने सन बा । सनस सनस सनस-सना सनो । सनस शालियों के सनो से उदे बाहर सनस सनस बा । सनस का सनो के साथ सनो को सनस सनो सनस नही जला बा । सनो सन नि सनस सनो का सनस जो सुसका सनो सनो के प्रतिवृत्त सनसता बा । ऐसे सनस सनो के साथ सनस और सनस विद्व सनस पर ही सनस सन, उसे भूखिन्दन बा सनस सनस गम ।

भूखिन्दन का मतलब यह है कि सनस सने सने सने को सुसकर दूसरे सनसो के साथ सनो ।

सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष का निवेदन

देश :

३ मार्च : पागोपत में अ. भा. लादी और कामोचोग कार्यकर्ता सम्मेलन में राष्ट्रपति डा० जाकिर हुसैन ने कहा कि समस्याओं के समाधान के लिए गांधीजी का तरीका अपनाया जाना चाहिए।

४ मार्च : लोकसभा में माँग की गयी कि कच्छ-फौजले को छोड़ करके के लिए संघर्ष को स्वीकृत किया जल्दी है।

५ मार्च : रेलमंत्री श्री पुनावा ने लोकसभा में घोषणा की कि रेलवे सांख्यिक-मुक्त में प्रति रात्रि चार रुपये की सुविधा को घटाया जायगा।

६ मार्च : ब्रिटेन द्वारा केम्पा के भारत-संशोधन के ब्रिटेन जाने पर रोक लगाने के कारण भारत ने जवाबी कार्रवाई की।

७ मार्च : पंजाब विधान सभा के अध्यक्ष द्वारा विधान सभा की बैठक दो मास के लिए स्थगित हुई।

८ मार्च : हिन्दी के प्रसिद्ध लेखक तथा मूर स्मारक मंडल के अध्यक्ष डा. हरिचंकर शर्मा का देहान्त हो गया।

९ मार्च : हिन्दी भवन के एक और नभान विष्णुत हास्य लेखक श्री उज्ज्वल प्रसाद गोड 'शेख बनारसी' का प्रातः देहावसान हो गया।

विदेश :

३ मार्च : रूप ने अपना चौथा स्वयं-चालित अन्तरिक्ष-नेत्र जोन-४ अन्तरिक्ष में छोड़ा।

४ मार्च : कम्युनिस्टों ने दक्षिण विपत्तनाम के विभिन्न स्थानों में तीन बमरोकी हवाई बड़ों तथा छह अन्य संरचनाओं पर राबेटों, मार्टरो और रिक्वाडलेस राइफलों से भीषण आक्रमण किया।

५ मार्च : पाकिस्तान के पूर्वपूर्व प्रधानमंत्री श्री मोहम्मद अली ने कहा कि श्री ज़िन्नाह का अन्धोन्ध विदेशी दास के विरुद्ध था जब कि मेरी पार्टी का व्यक्ति भी तानाशाही के खिलाफ है।

शेख साहब की रिहाई, यद्यपि काफी विलम्ब से हुई, तथापि वह एक न्यायोचित और सद्भावपूर्ण कार्य था। इससे आता वैधी थी कि देश में सद्भावना का वातावरण बनेगा और कश्मीर की समस्या का हल खोजने की दिशा में आगे बातचीत करने का अवसर मिलेगा। परन्तु खेद की बात है कि इसके बाद जैसे ही दूसरे सद्भावनापूर्ण कदम नहीं उठाये गये। सरकार ने कुछ रक अवनाया। यद्यपि यह बताया गया था कि प्रधानमंत्री ने पत्रकारों से हुई पहले भेंट में कहा था कि भारत में कश्मीर के विलयन के लिये के भीतर हर सम्भव संघातिक हल खोजा जायगा। लेकिन पीछे वह दृष्टिकोण भी छोड़ दिया गया है और नये प्रयास की सम्भावनाएँ समाप्त हो गयी हैं—जैसा हाल में लोकसभा में दिये गये गृहमंत्री के कथन से स्पष्ट होता है।

इससे शेख साहब की स्थिति असह्योग हो जाती है। जब से वे जेल से छूटे हैं, वे अपने अनेक मापनों में देश की अन्याय बड़ी समस्याओं के प्रति—जिनमें कश्मीर-समस्या भी एक है, बराबर अपनी सजगता व्यक्त करते आये हैं। निश्चित ही उनकी इस बात का भी ध्यान है कि मुल्की को सुलभाने में काफी समय लगनेवाला है और इसके लिए वे काफी लम्बे समय से पीरज के साथ प्रयत्न

६ मार्च : इसरायली और जोर्डनी सैनिकों के बीच जॉर्डन नदी के आर-गार गोतियाँ लगी।

७ मार्च : सीरिया ने अरब देशों से वादाई करने से इनकार कर दिया।

८ मार्च : अमरीकी बमबर्कों ने उत्तर वियतनामी कम्पनी पर राबेटों और तोरों से हमला किया।

९ मार्च : लका के प्रधानमंत्री श्री सेनानायक ने कच्चाटिन्न द्वीप पर दावे के सम्बन्ध में कहा कि वह ऐतिहासिक दस्तावेजों पर आधारित है।

करते आये हैं और इसके लिए उनकी ईवायी है। लेकिन इस प्रकार बातचीत का दरवाजा एकदम बन्द कर देने का अर्थ उनके विवेक और पीरज की परीक्षा है।

दोस अम्बुला हाल में कश्मीर जानेवाले हैं और वहाँ उस्तुक जनता जिज्ञासा भरी आँखों से उनकी ओर देखेगी। तब वे उन्हें क्या देंगे ? भारत-सरकार के हाल के रवैये से आशा की कोई किरण दीप नहीं रह गयी है। तब भी शेख साहब उस जनता को पीरज और विवेक तो दे ही सकते हैं, जिसका पालन वे स्वयं अब तक करते आये हैं। नहीं ऐसा न हो कि सरकार के कड़े रख के कारण किसी व्यक्ति या समूह की नाणी या दृष्टि उप हो पाय, जिससे सुलभने और विफल की गुनाहश ही खतम हो जाय ! मेरठ तथा उत्तर प्रदेश सरकार के कुछ विरोध-प्रदर्शन के बाद-बूद देश की जनता ने शेख साहब के प्रति तथा उस जन-समूह के प्रति जिसका प्रति-निधित्व शेख कर रहे हैं, अत्यन्त सद्भावना व्यक्त की है। उस सद्भावना का अपत्यस, फिर भी वाक्शाली प्रभाव प्रस्तुत परिस्थिति पर पड़ना चाहिए और उस सद्भाव को सुदृढ़ करने और प्रसार के उपाय सोचने आने चाहिए। यह सभी सम्भव है जब कि पटना में शेख ने जो नैतृत्व दिया था, उसी दिशा में उनका चिन्तन अले और वे जनमत को मोड़ें।

हम भारत सरकार से भी निवेदन करते हैं कि वह अपने कड़े रख के कारण सम्भावित खतरों पर भी गौर करे। इस रख का परिणाम यह हो सकता है कि कश्मीर में दूधनेवाले उपद्रवी लोगों को पहल का मोर्चा मिल जाय और जिसमें वे शारी सद्भावना और धैर्य व्यर्थ हो जाय, जिसका प्रतिनिधित्व शेख साहब करते हैं। हमें आशा है कि भारत सरकार अपना रक बदलेगी और वहाँ से सूत्र को आरम्भ करेगी अहाँ स्व० श्री जवाहरलाल नेहरू और वास्कोवी ने छोड़ा था।

—मनमोहन चौधरी

होली का पर्व : प्रतिकार-शक्ति का प्रतीक

जनशक्ति के दो पहलू हैं—सहकार-शक्ति और प्रतिहार-शक्ति। भलाई से सहकार और बुराई से प्रतिहार, इन दोनों से मानव वास्तविक मानव बनता है।

हिरण्यकशिपु को घोर तपस्या के फल-स्वरूप भगवान से वरदान मिला कि उसे न कोई मनुष्य मार सकेगा और न कोई जानवर; उसे न शाल से मारा जा सकेगा और न व्यस से; उसे न दिन में कोई मार सकेगा, न रात्रि में; उसे कोई न परती पर मार पायेगा और न आकाश में। लघुमन मृत्यु जैसे ऐसे आरी वरदान-प्राप्त के पश्चात् हिरण्यकशिपु ने घोषणा की कि उसके स्वर्ग के बलावा कोई दूसरा भगवान नहीं है। उसका पुत्र प्रह्लाद भगवद्भक्त था। हिरण्यकशिपु के मना करने पर भी प्रह्लाद ने राम-रटक नहीं छोड़ी। फलस्वरूप उसने प्रह्लाद को नदी में बहाया, पर्वत से गिराया और भक्ति-भक्ति को पातनाओ से सताया। अंत में प्रह्लाद को आग से तप्त खाल सुर्ख स्तम्भ के आलिंगन की आशा दी और गर्द से तुर होकर हिरण्यकशिपु चिल्लाया, "बोल! अब तेरा राम कहाँ है? बुला तेरे भगवान को!" स्तम्भ पटा और नृसिंहावतार के रूप में भगवान प्रकट हुए। नृसिंहावतार (न मानव, न जानवर) ने अपने घुटने पर (न परती, न आकाश) हिरण्यकशिपु को रखा और राधा सभ्य (न दिन, न रात्र) अपने नाभुओं से (न शाल, न व्यस) से घोर हाहा और उसकी इहलौला समाप्त की। हो सकता है, हमें कोई घटित घटना न भी माने, परन्तु अत्याचार के विरुद्ध हर्याग्रह—संपूर्ण-प्रतिकार-पानित—की एक कथा अवश्य है। कही भी हिरण्यकशिपु का चित्र देखेंगे तो एक राक्षस रूप में उसे चित्रित किया जावेगा, परन्तु राक्षस के बेटे प्रह्लाद को आज तक न चित्रित राक्षस माना और न किसी विष में उसे राक्षस-रूप में चित्रित किया गया। सरह है कि अत्याचार अर्थात् राक्षस-नृसिं के

विरुद्ध प्रतिकार का यह एक उदाहरण है। इसी घटना की स्मृति में होली का त्योहार मनाया जाता है ऐसी एक लोकनाम्यता है।

गांधीजी ने कहा था कि अधिकार के दुष्प्रयोग के विरुद्ध जनता की प्रतिहार की शक्ति लोकरुत्र की नसीदी है, परन्तु हमारे शोड्डरुत्र में लोक की बड़ी शक्ति समाप्त हो रही है; क्योंकि आज 'लोक' की आत्मा दिन केवल ध्यागत व चापलूसी करने का प्रविषण दिया जा रहा है। 'लोक' नेता के मुँह की

आर एक भिलावी की भाँति ताकता रहता है। भारत का नागरिक आत्मा स्वल्प व सम्मान की रक्षा करने की शक्ति हो रहा है। अथर इसी प्रम से 'जनता' कमजोर व 'नेता' शक्तिशाली हिरण्यकशिपु बनता रहा तो जनता में से प्रह्लाद की अत्याग्रह-शक्ति नेस्तनाबूद हो जायेगी।

हिरण्यकशिपु ने समझा था कि: उसे अममभव मृत्यु का वरदान मिल गया, परन्तु बसंयोगी प्रह्लाद की प्रतिकार-शक्ति से अममभव लपती मृत्यु भी सम्भव हो गयी। होली के इस पुरोत अथर पर हमें प्रह्लाद की शक्ति प्राप्त हो। —मूलधर्म धारणा

नये कन्हैया प्रगट भयो !

वृन्दावन की गली न भायो,
दिल्ली पहुँच गयो !
तजि करील वृञ्जन के डगरो,
रस्तो सदन लियो !
मुनि घुन नयो फिदिम गीतों को,
मुरली पटक दियो !
श्याम सलोनी देह न भायो,
वाको मटक दियो !
स्वारिन भटक रही जंगल मां,
ताको सुधि न कियो !

उगे 'आउट आउ डेट' यशोदा,
वाको भूलि गयो !
वृष्ण नही कुसी नहावगें,
'रिटियो टाक' दियो !
बहुँदिस से नेतमण घाये,
गोपिन 'भेष' कियो !
बीस वरस से ऊपर बीतो,
बहु बिध ताप कियो !
बजहुँ न मुख दिखलाय वेदरदी,
राधा 'कैस' कियो !
—राही



समाज-परिवर्तन की भूमिका और मार्क्स का दृष्टिकोण

समाज-क्रान्ति के अनुभव

मार्क्स द्वारा प्रतिपादित ध्येय और मार्ग का उपर्युक्त विवेचन ध्यान में रखकर हम अरब रुब और चीन में हुए समाज-परिवर्तन की सद्यो में चर्चा करें। रूस और चीन की क्रान्ति जिस परिस्थिति में हुई वह विप्लवण थी : बाहरी अधिक अल्पवयस्क थे, एक प्राचीन सुलभ सत्ता थी, परंपरागत ग्रामीण जीवन और संस्कृति विराजमान थी, समाज-परिवर्तन के लिए देश के तथा देश के बाहर के भी अजर्जरवादी पूंजीवादी सत्ताधारियों का हित विरोध था। इस क्रान्ति की पार्श्वभूमि में दो-दो महायुद्धों के अनुभव थे। रूस की क्रान्ति को पचास वर्ष हुए हैं और चीनी क्रान्ति को १७ वर्ष पूरे होने को है। यह भी हम देख रहे हैं कि क्रान्ति के बाद दोनों देशों के सत्ताधारियों ने परस्पर भयानक प्रतिस्पर्धा होती रही है। और दोनों भे से किसी भी राष्ट्र के नागरिक को व्यक्तिगत स्वतंत्रता मिली नहीं है।

पूर्वी यूरोप, अफ्रीका आदि प्रदेशों की भी स्मिति रूस-चीन के ही समान है। इसलिए समकालीन मानव को कम्युनिस्ट समाज-क्रान्ति का चित्र हिंसायुद्ध और आतंकपूर्ण दीवता है, तो आश्चर्य नहीं है। तिसपर रूस और चीन का आपसी संबंध, तथा भारत पर चीन का आक्रमण देखकर उद्यम और अर्थिक दृष्टिक रूप स्पष्ट होता है, यह भी स्वाभाविक ही है। इसमें रही-सही कसर पूरी करने को भारतीय राजनीति में कम्युनिस्ट पक्ष का व्यवहार पचास है। नक्सलवाड़ी में जो घटनाएँ घटीं, वही सारे साम्यवादी तत्पक्षान की परिणति है, ऐसा यदि मुनिष्ठान लोगो को लगे, तो कोई आश्चर्य नहीं है।

अभी तक मार्क्स के ध्येय और मार्ग का प्रश्न है, उनका विवेचन उपर हमने देखा है, उसनी बात ध्यान में रखकर, आज हम यह

बहु सन्त है कि जिन देशों में साम्यवादी क्रान्ति हुई है वे देश, वहाँ के नेता और लोग पारंपरिक प्रतिस्पर्धी-युक्त विरुद्ध के युग-धियो से अभी तक अभी मुक्त नहीं हुए हैं। सत्ता की स्पर्धा में वेनेडो की अमानुष हत्या की गयी। इसका कारण यही है कि सत्ता के सम्बन्ध में मनुष्य के अन्दर अभी अमानुषता है। यह दुर्गुण जिस प्रकार अन्य देशों में है, उन्ही प्रकार साम्यवादी देशों में भी है और कम्युनिस्ट-संघटन में भी है। इस दुर्गुण का अत्यंत निर्धुण और भयानक स्वरूप वहाँ देखने को मिलेगा, क्योंकि क्रान्ति के आतंक और प्रक्रिया के कारण वहाँ की प्रतिस्पर्धी अधिक तीव्र है।

यहाँ हमें स्मरण रखना चाहिए कि स्पर्धा और हिंसा का वातावरण सद्यो से मनुष्य को, उसके पुष्पापको को कुण्ठित कर रहा है। इसमें स्पर्धा और हिंसा का समर्थन

प्रा० दि० के० वेडेकर

करने की, या साम्यवादी देशों की घटनाओं की भयानकता को सीम्य बनाकर दिखाने की बात नहीं है। केवल यही सूचित करना है कि जागतिक पार्श्वभूमि को नजरअंदाज करने जागतिक हिंसा-प्रधान सङ्कति का भय भूलकर साम्यवादी हिंसा को बलम करके देतना गलत है। मार्क्स की दृष्टि में, मनुष्य ने जब 'परात्मता' स्वीकार की, तभी हिंसा

रूस और चीन का समाज-परिवर्तन... साम्यवादी देशों में प्रतिस्पर्धी... परात्मता के साथ हिंसा... सत्ताधारी वर्ग हिंसक और लुटेरा... मार्क्स द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त...

स्वीकार की। मनुष्य को एत-दूर से सहयोग करने की, प्रेम करने की इच्छा होती है। परन्तु मनुष्य अपना यह स्वभाव ही भूल गया। संपत्ति और सत्ता के पीछे लगे गया। इस परात्मता का निराकरण ही प्रहोनेवाला

नहीं है और संवियत पद्धति में नूना नहीं है। स्टालिन ने वने गर्न के साथ कहा था कि 'हम नयी रचना के भागव है।' लेकिन सत्य यह था कि खुद उसकी रचना में ही, पुराने दोष अत्यधिक मात्रा में थे।

लेकिन इसका अर्थ क्या है? क्या समाज-परिवर्तन भ्रम ही है? समाज की घड़ी की सूई चाहे जब बदल लीजिये, लेकिन आप देखेंगे कि एक सत्ताधारी वर्ग रहेगा जो महाहिंसक और लुटेरा होगा, और उनको छेदी से चीरे हुए, मुर्दा मन लिये बीनेवाले लोग रहेंगे। मानो यह कोई बटल बभितान-बचन हो, जो सनातन बाल से मनुष्य-जीवन से चिरका हुआ है। सम्पत्ति का स्वामित्व सांभजिक बना देने पर भी सत्ता के बन्द को हाथ में रखनेवाला नया शासकवर्ग आता है। इसमें कुछ तो बटल है और परिवर्तन की यह दोषात्मिका बटल है। ये सारे विचार हमारे मन में सहज ही उठते हैं। अनुभवों, ध्येयनिष्ठ समाजवादी और मार्क्सवादी भी इन विचारों से परेशान है।

यहाँ मार्क्स के ध्येय का मर्म एक बार और जोच लें। हम आज भी देख रहे हैं कि पूंजीवादी व्यवस्था में जो संपत्ति का लोभ नंगा नाच करने लगा था, और जो हिंसा महायुद्ध में मानव-जीवन की बलि देने पर तुली थी, वह आज भी उन्ही रूप में- हम देखते हैं। लेकिन जब पूंजीवाद नहीं था, तब क्या यह लोभ और यह हिंसा नहीं थी? क्या ये ही प्रेरणाएँ समाज को घालना नहीं देती रही हैं? तब फिर ऐसा क्यों न धार्मिक कि ये प्रेरणाएँ ही मानव-स्वभाव का आधार हैं? फिर 'परात्मता' का सवाल ही क्या?

रहा? उलटै, यह मानने को जो करता है कि धूमि के प्रेरणाएँ ही मूलभूत हैं, इसलिए वर्तमान मानवीय संस्कृति ही मानवता के आवर्त चित्र है। परन्तु मार्क्स ऐसा नहीं मानता है। वह संपत्ति, सत्ता, स्पर्धा और

वियतनाम का युद्ध और आमदान का विकल्प

मित्रो,

मैं समझता हूँ कि आप लोगों ने वियतनाम के मयंक युद्ध के बारे में सुना ही होगा, जो गत १४ वर्षों से चल रहा है। वियतनाम एक छोटा-सा राष्ट्र है; वहाँ की जावादी लगभग तीन करोड़ की है। पहले वियतनाम पर, और उसके साथ लाओस और

→स्पर्धा मिटो, वही मही, बल्कि वहाँ के साधारण मनुष्य में भी विज्ञान-निष्ठा मरी हुई है ऐसा दीखता है। यह भविष्य की प्रगति का सूचक है।

एक और बात है, वह है समाजवादी देश के सामान्य मनुष्य का मानव-बन्धुत्व सम्बन्धी भाव। यह सही है कि गोरे लोगों की उत्कृष्टता, बर्कन की भावना और उन्माद आज समूचे संसार में ही पटा है। नासिक वरा के अभिमान के आघार पर नाभी पत लड़ा करने-वाला हिटलर जिस दिन खल हुआ, उसी दिन वंचभेद के अभिमान का आघार शिखक गया। फिर भी अन्य देशों में वंचभेद का अभिमान आज भी है। भारत में जाति-भेद का अभिमान जिस प्रकार गहरा जमा हुआ है, उसी प्रकार यह वंचभेद भी है। यह अभिमान लोग परस्पर बहुत सहजता से और समानता से व्यवहार करते गये जाते हैं। यह सभी प्रेदाक देखते हैं। वार के जमाने में मद्रुवियों से अत्यन्त भ्रूता के साथ बरताव किया जाता था और उसी द्वेष का कुछ अवशेष स्टालिन के जमाने में देखने को मिला। लेकिन इस अपवाद को छोड़ दें, तो वहाँ आज वंचा, वर्ण आदि भेद-भाव रहा नहीं है।

मार्क्स का ध्येय कि सारी मानवजाति परस्पर प्रेम से रहने लगेगी, संपत्ति और सत्ता के अमानुष पाप से बचने को युक्त कर नया इतिहास रचेंगी, वह आज प्रत्यक्ष कार्यान्वित नहीं हुआ है, न थोड़े समय में होता दीखता है। मनुष्यों को ही वह करना है। हो सकता है

कंबोडिया पर फ्रेंच लोगों की हुकूमत को। लाओस और कम्बोडिया वियतनाम से ही लगे हुए दो छोटे राष्ट्र हैं। इन तीनों को मिलाकर 'फ्रेंच इण्डोचायना' कहा जाता था। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद, भारत जब स्वतंत्र हुआ, उन्ही दिनों हिन्द-चीन के लोगों ने अपनी आजादी के लिए फ्रेंच लोगों से संपर्क

कि इसमें मानव एकल हो, या विकल भी हो। परन्तु वाच प्रत्यक्ष इतना तो दिखाई दे रहा है कि समाजवादी परिवर्तनवाले देशों में संपत्ति की प्रतिस्पर्धा और वंचभेद जैसी द्वेष-भावना नष्ट हो गयी है। केवल एक सत्ता की स्पर्धा नृसंघता के साथ चल रही है। उन देशों के नेताओं का व्यवहार इस प्रकार का होता है कि मानो उन्हें मार्क्स का ध्येय याद ही न हो। इसलिए समाजवादी परिवर्तन की ओर देखते समय हमें यह देखना चाहिए कि जो परिवर्तन हुआ है वह क्या वास्तविक है, मूलतः है, मार्क्स के ध्येय की ओर ले जानेवाला है? साथ ही सत्ता की स्पर्धा में और राजनीति में रूसी या चीनी नेता वहाँ मूल कर रहे हों, तो उसके बारे में स्पष्ट बोलना चाहिए। आज यह नहीं होता है। समाजवादी देशों की ओर देखते समय केवल नेताओं की ही देखा जाता है और उनके नाम की निन्दा या गौरव किया जाता है। वास्तव में जो परिवर्तन हुआ होगा वह पर रह जाता है और मार्क्स के ध्येय का विचार भी दूर ही रह जाता है।

या हम वास्तव में मानवजाति के मूल ध्येय का और भविष्य का विचार करते हैं? हम तो अपना, अपने समूह का, प्रदेश और राष्ट्र का ही विचार करते हैं। यह ठीक ही है, परन्तु मानवजाति का विचार करना भी आवश्यक है, उचित है। उसीमें व्यक्ति भी अपना स्वरूप समझ सकेगा। मार्क्स के ध्येय में समझ को ही सर्वाधिक महत्व है।

[मूल मसौदा 'समान प्रबोधन पत्रिका' से आया।]

किया। उनके उस स्वतंत्रता-संघाम के सर्वोच्च नेता डा० हो ची मिन्ह थे। वे साम्यवादी हैं और उस स्वतंत्रता के आन्दोलन में साम्यवादी पक्ष ने प्रमुख हिस्सा लिया था। इन विद्रोहियों का दमन करने के लिए फ्रेंच सरकार को अमरीका ने बहुत मदद दी थी। साम्यवादी शक्ति कही जीत न जाय, इस मय से अमरीका ने सैनिक सहायता भी दी थी। लेकिन वे सारी सहायताएँ बेकार हो गयीं और सन् १९५४ में हिन्द-चीन की जनता ने उनसगरी पैदा करनेवाली विजय प्राप्त की।

जिनीवा में बड़े राष्ट्रों का एक सम्मेलन हुआ, जिसमें लाओस, कम्बोडिया और वियतनाम की स्वतंत्रता को मान्यता दी गयी। लेकिन उस समय वियतनाम को दुकनों में बँटा हुआ था। उत्तर वियतनाम में डा० हो ची मिन्ह के नेतृत्व में 'लोकतांत्रिक संघ-राज्य' स्थापित हुआ था और दक्षिण पर राजपुत्रवादी बायो दाई का शासन चलता था, जिनको फ्रान्स सरकार का समर्थन मिला था। दोनों के बीच युद्ध-विराम की स्थिति बनाये रखने के लिए एक अंतर्राष्ट्रीय नियंत्रण-आयोग (इष्टतरेतान्त बन्दूक कमिशन) नियुक्त हुआ था। यह भी तय हुआ था कि दो वर्ष बाद, जुलाई १९५९ में एक क्षाम चुनाव हो, जिसमें उत्तर-दक्षिण दोनों भागों के एकीकरण के सम्भव में निर्णय किया जाय।

दक्षिण वियतनाम की पहली सरकार में जो लोग थे, वे सब साम्यवाद के विरोधी थे, धारने को लोकतंत्र और स्वतंत्रता के हिमायती बट्टे थे, लेकिन वास्तव में वे अत्यंत निम्न जाति के तानाशाह थे। वे साम्यवाद का विरोध केवल इसलिए करते थे कि बड़े लोगों को फ्रेंच हुकूमत के समय जो कुछ मुविपारों और मान-गमनाम मिलते थे, वे बँध के तैरे बने रह सके। उनमें कई तो ऐसे भी थे, जिन्होंने अपने ही देशवासियों के खिलाफ फ्रान्स के लोगों का समर्थन किया था।

अमरीकी सरकार ने दक्षिण वियतनाम में इन लोगों का समर्थन किया, उन्हें ही प्रोत्साहन दिया। उसे मय था कि यदि क्षाम-पुत्रवा होतें है, तो डा० हो ची मिन्ह के पक्ष के

इसकी प्रसार मिलन नहीं होने, वैचल्यपूर्ण दृष्टता ही है कि ये यथास्थिति को उठाइने के लिए वैधा करते हैं तो ये उसे बनाये रखने के लिए करते हैं ।

दूसरे स्तरका परिस्थिति को रोकने का एक ही मार्ग हो सकता है कि सामाजिक और आर्थिक भ्रान्ति का कोई अहिंसक तरीका व्यापक प्रमाण में अपनाया जाय, जो अन्य सभी तरीकों को निरर्थक करार दे सके । ऐसा एक मार्ग ग्रामदान है; सेवित राजनीति पर उसका अवर तमो पड़ सकता है, जब कम-से-कम पूरे एक प्रदेश में सफलतापूर्वक वह चले । इन पद्धतियों में, बिहार के कार्यकर्ताओं ने आगामी २ अक्टूबर तक बिहारदान का जो संकल्प किया है, वह निश्चित ही बड़ा ऐतिहासिक महत्त्व रखता है । मुझे यथा सच की प्रवर्धन-मिति ने उस संकल्प का स्वागत किया है और देश के समस्त सर्वोदय-कार्यकर्ताओं से बिहार के काम के लिए समय देने की प्रार्थना की, यह सर्वथा उचित ही था । आज देश जिस अथर्थाद हिंसा से आक्रान्त है, उसे रोकने का काम यह विहादान कर सकता है । इसलिए हम सबका यह बर्तव्य है कि ठीक समय से सकल्य की पूर्ति की दिशा में प्रयत्न करें ।

सेविन हूँ, बिहारदान का अर्थ जहाँ तक ग्रामवासियों की अधिकता सख्या का ग्रामदान-शोषणपर्यन्त रहता है प्रसन्न करना ही है, यह एक प्राथमिक बर्तव्य है, तथापि बहुत बड़ा काम है । भारत में अहिंसक शक्ति संगठित हो और हिंसक शक्तियों का ठीक से मुकामिल विचार कर सके, इसके लिए तो और भी बड़े बर्तव्य उठाने होंगे । करोड़ों लोगों में यह चेतना जगानी होगी कि अपना भाग्य-निर्णय करने की शक्ति खुद उनमें है, और उनकी उस शक्ति को वापसित कराना होगा । उनमें से लाखों लोगों को शान्ति-सेना में भर्ती करना होगा और अहिंसक विधाही के रूप में काम करने का प्रसिद्ध देना होगा । नयी युवक पीढ़ी की शान्तिवादी भावना और जीव को देना की इस शान्ति के काम के योग्य मोड़ देना होगा ।

ग्रामदान-आन्दोलन को यदि हिंसक शक्ति

ग्रामदान : रक्त-संचार के लिए

पूरा रोड़ रिक्त लक्ष्मीनारायणपुरी को एक छोटी-सी कोठी में बैठकर सब समस्याओं से मिलिष्ठ, परन्तु घारे विरक्त के सम्बन्ध में मुझ विचार करनेवाले विनोबा, सीमा-क्षेत्र के कामों की रिपोर्ट पढ़ने के बाद हाथ और पाँवों की उगलियाँ भगलते हुए पल्लते लगे, "जानते हो, क्या है इसका अर्थ ?"

इस सांकेतिक भाषा को समझने की मज-बूरी मेरे चेहरे पर भलक आयी, जिसे उन्होंने पुरस्त भाँप लिया, और बहने लगे, "यह हिमालय है, सीमा-क्षेत्र है ! बाबा रक्त सच-रक्त के लिए इन्हे भललता है, क्योंकि ये उठी रहती हैं । रक्त बनने का स्थान है हृदय । और यह अविश्व स्थान है, जहाँ रक्त पहुँचता है । मरने पर भी पहले हाथ-पैर उठे होंगे । तारा हिमालय प्रदेश उठा है न ! हृदय में रक्त बनेगा तो यहाँ भी पहुँचेगा । सीमा-

का हलाक और विकल बनना है, और अन्ततः नियन्त्रण की घटनाओं पर प्रभाव डालने की शक्ति प्राप्त करनी है, तो हमें उतने ही उमर और उत्साह से काम करना होगा, जिस उमर और उत्साह से विपत्तयाम की विद्रोही जनता लड़ रही है । हमें अपने अन्दर अधिक प्रतिभा, समर्पण, समझदारी, दयाता और सघटन-शक्ति का परिचय देना होगा ।

किर, हम केवल बिहार-दान की कल्पना तक ही सीमित न रह जायें । उसके आगे, अपने मन में अपनी शक्ति के एक ऐसे प्रच्छन्न सूरज की कल्पना रखें । जो समूचे देश में फैल जाय । सर्वोदय-आन्दोलन के अर्थ तक के इतिहास में गत दो-आठ वर्षों का समय बड़ा उज्ज्वल रहा है । इस अवधि में ग्रामदान-आन्दोलन ने ऐसी ऊँची उड़ान भरी है और महान् संभावनाएँ प्रस्तुत की हैं, जिनकी हम कल्पना नहीं कर सकते थे ।

पिछले दो महीनों में यह स्पष्ट हो गया है कि यदि हम सही दृष्टि और सकल्य-बल लेकर चलते हैं तो काम में बहुत बड़ी सफलता प्राप्त की जा सकती है । अकेले बिहार में नहीं, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और

दोनों का विकास नहीं हुआ, वे लौं बँट ही रहनेवाले हैं । बाबा मेना की बजह ने कुछ सड़कें बनाई हैं ।"

किर एक उंगली पकड़कर बहने लगे, "यह शक्तिमय है । स्वाभाविक तौर से ग्रामदान का ब्यापक आन्दोलन वहाँ होगा तो कलिभोग में खूब पहुँचेगा । अलगावों आदि लम्बे समय का काम (लाँग टर्म गौल) है । बालवाड़ी आपने शुरू किया, इसका मतलब क्या हुआ ? आपको काम मिला । २० साल में जब वे बच्चे बड़े होंगे और आप उन्हें अपने बंधु की शिक्षा देने का प्रयत्न कर सकेंगे, तब उसका परिणाम मजूर छीयेगा । नहीं तो इनका कोई धया नहीं । आपका विचार वहाँ के लोग अपना लें, इसलिए आपको अपना पूरा का पूरा क्षेत्र ग्रामरानी बनाना चाहिए ।" —सुन्दरलाल बहुगुणा

तमिलनाडु में भी ऐसीही कार्यकर्ता नियुक्त पड़े हैं, उन्हें अपनी शक्ति का भाव हो गया है और इनमें से कुछ प्रदेशों का गांधी-जन्म-यातावनी नरु प्रदेश-दान करा देने की भाषा के बोझले लगे हैं । उड़ीशा में केवल दो महीने की अल्प अवधि में ग्रामरानी गौल के लोगों के प्रसिद्ध के लिए १०४ किरिदगीय विचार आयोजित हुए और लगभग ६ हजार शान्ति-सेनिक और शान्ति-सेवक बनाये गये हैं । इन सबसे यही प्रमाणित होता है कि 'जहाँ चाह, वहाँ राह' । तो, हम इस पर बने पैमाने पर विचार करें, योजना बनायें और काम करें ।

इस आन्दोलन की प्रेरक शक्ति विनोबाजी रहे हैं । महान् ने महान् उपलब्धियों की दिशा में वे हमें धीरे-धीरे प्रेरित करते आये हैं । अरु समय आया है कि आन्दोलन स्वयं अपने बल पर आगे बढ़ चले । हिम्मत के साथ अब भारतदान की ओर और भी महान् कार्य की कल्पना संजोनी चाहिए । हममें यह दृष्टि और वह हिम्मत आये, तो अविश्व हमारे हाथ में है ।

आपका
मनमोहन चौधरी

कुछ नयी वैचारिक स्थापनाएँ

[कुमारिया ग्राम-स्वतन्त्र-संस्थाण गोडुल, दुर्गापुर, जगपुर के तत्त्वाधान में गत १५-१६ जनवरी '६८ को श्री राजराज देव के सालिष्य में लोकतन्त्र और लोकतन्त्र के विचारों के सम्बन्ध में एक विचार-मौखी का आयोजन किया गया था, जिसमें राजस्थान के तत्कालीन न्याय-सचिव श्री भाग लिया था। उस माध्यम में श्री राजराज देव को लोकतन्त्र की एक समग्र परिचयना पाठकों की सेवा में प्रस्तुत है।—ग.]

लोकतन्त्र केवल शासन-पद्धति नहीं है।

वह केवल धार्मिक पद्धति और केवल सामाजिक व्यवहार पद्धति भी नहीं है। जिस प्रकार पानी के बर्तन में पत्थर डूईं नक की रत्नी सारे पानी में घुस जाती है और पानी की सतह के अनुसार बनने के सारे पानी को प्रभावित करती है वैसे ही लोकतन्त्र प्रभावित करती है। लोकतन्त्र एक सम्पूर्ण जीवन पद्धति है। जीवन के हर एक क्षण में उसका होना अनिवार्य है। निम्नो हमारे देश में लोकतन्त्र का आरम्भ उल्टा हुआ है—पहले शासन पद्धति के लिए धार्मिक क्षेत्र में, और उसके बाद सामाजिक व्यवहार में और अन्त में अध्यात्मिक क्षेत्र में यानी जीवन में। परिणाम यह हुआ है कि यहाँ की सभ्यतात्मिक लोकतन्त्र की धुरी के समान प्राणविरहीत है। ईजिप्ट के पिरामिडों में जिस प्रकार शक्ति रत्नी जाती है, उसी प्रकार शासन का प्राणहीन शरीर भी मसाला ढालकर सदियों तक सुदृढ़ रखा जा सकता है, लेकिन यह शरीर जीवन की क्षमिकाएँ का माध्यम नहीं बन सकता। इसका कारण यह है कि यहाँ के लोकतन्त्र का जन्म एक जीवन-पद्धति के रूप में नहीं हुआ।

लोकतन्त्र के कुछ श्रेष्ठ मूल्य

इस देश में जो शासन चल रहा है, उसका उद्देश्य अधिम में हुआ है। वहाँ मनुष्य को, जो तपानुग (शान एन) के नाम से ज्ञात है, समाज डूईं और नये युग का आरम्भ हुआ तो उसकी वे 'रेनेसांस' की देन है। लोकतन्त्र उस प्रवाचन (प्रवचन) बट्टे है। लोकतन्त्र उस प्रवाचन की देन है। मानव जीवन का ही उगाधन के लिए ही है। सत्य को बढ़ाने की पवित्र केवल मनुष्य में ही है। सत्य को प्राप्त

करने की समझना का और उसका उपयोग करने की हर एक मनुष्य को पूरी आवश्यकता और लक्ष्य मिलना चाहिए। एकमात्र लोकतन्त्र में ही यह सम्भव है। और यही लोकतन्त्र का आत्मा है।

लोकतन्त्र का दूसरा मूल्य है व्यक्ति की प्रतिष्ठा। सत्य सम्मने की सत्य व्यक्ति में ही है। आर व्यक्ति की इस प्रतिष्ठा को समझ कर उसके साथ अपना सम्बन्ध और व्यवहार स्थापित करना सामाजिक जीवन की आधार-विद्या है। इसलिए सत्य सम्मने और सम्मान के लिए जिन मासकों की आवश्यकता होगी, उन मासकों की सत्य के लिए

राजराज देव

धर्म करना व्यक्ति का धर्म है, और वह धर्म करने पर व्यक्ति को वे साधन मिल सकें ऐसे व्यवस्था करना समाज का धर्म है। जिस समाज में इस धर्म का सम्पूर्ण पालन होगा, वही सच्चे माने में लोकतन्त्र स्थापित हो सकेगा।

सर्वदलत व लिए किसी मध्यम व्यक्ति को आवश्यकता नहीं है, यह सत्य है। लेकिन आज जीवन के सभी क्षेत्रों में पथों का पद्धति में जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में स्थिति ऐसी नहीं है कि सत्य की प्राप्ति मध्यम व्यक्ति के विना असम्भव हो गयी है। लेकिन मध्यम को स्वीकार करने पर जीवन के सभी क्षेत्रों में उत्तम काम भी चुकाना पड़ता है। सच्चा लोकतन्त्र इस पद्धति के खिलाफ एक बलका है, मोटे-टूटे है। यूरोप में जो प्रवचन हुआ उसका मूल स्रोत धार्मिक क्षेत्र

की पद्धति के विपक्ष हुए बलके में है। सच्चा लोकतन्त्र कहना है कि अपने-अपने गुण का विकास करते हुए सत्य का आधारभूत करने की सत्य व्यक्ति में है, इसलिए सत्य को प्राप्त करने की स्वतन्त्रता और साधन प्रत्येक को प्राप्त होना चाहिए। धर्म का उपासन, उसका विभाजन तथा विनिमय सारे समाज के हित की दृष्टि से हो, यह लोकतन्त्र का एक प्रमुख मूल्य है। सामाजिक राजनीति, धार्मिक, नैतिक तथा बौद्धिक क्षेत्रों में व्यक्ति की स्वतन्त्रता रहनी चाहिए। लेकिन वह स्वतन्त्रता इसलिए नहीं कि वह समाजविरुद्धी और आत्मनिर्वाह स्वच्छन्द जीवन बिना सके, बल्कि आत्मा को इसलिए कि वह व्यक्ति सत्य की शक्ति कर सके और स्वतन्त्रता से अपना जीवन समाज की सम्पत्ति कर सके।

लोकतन्त्र में व्यक्ति की प्रतिष्ठा का भी मूल्य है उसके मानी पड़ नहीं है कि वह सामाजिक जीवन का एक आवश्यक प्रतिष्ठित पदक बन जाय, बल्कि वह इसलिए है कि व्यक्ति विचारपूर्वक एक ऐसे सामूहिक जीवन का पदक बने, जिसमें व्यक्ति की पूर्ण स्वतन्त्रता हो और उसमें समाज का हित जुड़ा हो। यानी दोनों में सामंजस्य हो। लोकतन्त्र का यह दुर्निवार्य सिद्धांत है। जब तक मनुष्य स्वतन्त्र नहीं होगा तब तक उसकी पूर्ण सत्य का लाभ समाज को नहीं मिल सकेगा।

लेकिन सत्य के लिए हमें अपने स्वार्थों को छोड़ना पड़ता है। लोकतन्त्र का उद्देश्य सत्य के लिए ही है। यदि व्यक्ति अपने स्वार्थों को छोड़कर समाज के हित में सत्य के लिए ही जाता है, तो वह स्वतन्त्र स्वतन्त्रता का उपाय है। "बहुजनविचार बहुजनमुखाय" यानी धर्म के लिए ही है, तो वह स्वतन्त्र स्वतन्त्र एक युग सत्य में परिवर्तन हो जाता है।

जिसके पाठ सत्य और बुद्धि अधिक है, वह उसका उपयोग सत्य-बुद्धिवादी की बुद्धि और सत्य बनाने के काम में करे, क्योंकि व्यक्ति को जो भी बुद्धि और

घणित मिली है वह उसे समर्पित के एक पटक के नाते ही मिली है। जो वस्तु जिससे मिली है उसे उसीके लिए समर्पित करना बुद्धिमानी का लक्षण है। शक्ति और बुद्धि के भेद के कारण जीवन के उपयोग और विकास के साधन और व्यवहार-प्राप्ति के बारे में व्यक्ति-व्यक्ति के बीच विषमता पैदा न हो इसका यह एक स्वामात्रिक और सम्बन्ध मार्ग दिखायी देता है। मैं अपनी घणित और बुद्धि का उपयोग केवल अपने ही सीधे विकास के लिए करूँ, इसमें मेरी मानवता की छिद्र और कृतायता नहीं है।

विगत की देन
 प्राचीन युग के इतिहास में दो राष्ट्रों में लोकतांत्रिक प्रणाली के होने का प्रमाण मिलता है। एक है ग्रीस का नगरराज्य (सिटी स्टेट), और दूसरा है भारत का गणराज्य। हमें इन दोनों प्रयोगों का गहरा अध्ययन करना चाहिए। ग्रीस के नगरराज्य और आज के लोकतंत्र में एक बुनियादी फर्क है। उन नगरराज्यों में दो प्रकार के लोग थे—स्वतंत्र और गुलाम। उनमें स्वतंत्र लोगों को ही मतदान का हक था। लेकिन गुलामों की संख्या स्वतंत्र लोगों की अपेक्षा अधिक थी और स्वतंत्र लोग अल्पसंख्यक थे। इसी प्रकार हमारे यहाँ के गणराज्य में भी एक ही जाति का—शत्रियो का—ही राज्य था, जिन्हें संघनपरम्परा से राज्यता की सजा प्राप्त थी। उस क्षत्रिय जाति में भी विशिष्ट परिवारों का ही राज्य पर अधिकार होता था। इसलिए आज हमें देखना होगा कि उन नगरराज्यों और गणराज्यों में जो गुण रहे हों वे ही स्वीकार किये जायें और जो-जो दोष रहे हों उनका त्याग किया जाय।

सन् १६०० में स्वामी विवेकानन्द ने तिरुवागो (अमरीका) में एक व्याख्यान दिया था, जिसका विषय था—“क्या वेदान्त विश्वपथ बन सकता है?” उसमें उन्होंने कहा था कि अमरीका का धर्म वेदान्त हो सकता है, क्योंकि वहाँ लोकतंत्र है। इसका आशय यह है कि वेदान्त और लोकतंत्र का अविनाभाव सम्बन्ध है। क्योंकि वेदान्त में कोई ईश्वरवाद नहीं है, न अल्पप्राणाध्य

है, न ही पेंगम्बर को स्थान है। वेदान्त का कहना है कि स्वयं मनुष्य ही देवता ही ईश्वर है। बिल्कुल यही बात एक तरह से लोकतंत्र भी कहता है। लोकतंत्र में जो परमनिरोधता है, जो ‘सेषयुलरिज्म’ है, उसका अर्थ भी यही है कि यहाँ ईश्वर, धर्म या पेंगम्बर का प्रामाण्य नहीं चलता है, उसमें मानव ही अन्तिम मूल्य है। इसलिए वहाँ वेदान्त है, वहाँ लोकतंत्र होना चाहिए और जहाँ लोकतंत्र है वहाँ वेदान्त होना चाहिए। इसीलिए विवेकानन्द ने कहा था कि वेदान्त अमरीका का धर्म बन सकता है।

शासन-व्यवस्था नहीं, जीवन-व्यवस्था

धाम धोर पर लोकतंत्र का अर्थ माना जाता है—जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन। लेकिन यही कारण है कि आज के लोकतंत्र में घायन और सत्ता को इतनी प्रधानता मिली है। और इसीलिए सत्तार के सभी भागों में लोकतंत्र प्रष्ट हुआ है और सक्त में है। इसलिए मैं इस व्याख्या में शासन (गवर्नमेंट) की जगह “जीवन-व्यवस्था” (मैनेजमेंट) शब्द को और उसमें घणित अर्थ को अधिक पसंद करूँगा। इस रूप में हम यदि लोकतंत्र को स्वीकार करते हैं तो ही वह जीवन-मदति बन सकेगा।

प्रशासन तब की मूलभूत इकाई क्षेत्र और सत्ता की दृष्टि से ऐसी होनी चाहिए कि उस समुदाय की सर्वांगीण जीवन-व्यवस्था की जिम्मेदारी उसी क्षेत्र के लोग मिलकर अपनी बुद्धि से पूरे कर सकें। यानी क्षेत्र इतना विचार्य न बन जाय कि प्रशासन के लिए आवश्यक अधिकार जनता को दूसरे के हाथों, सर्वथा बुने हुए प्रतिनिधियों के हाथों सौंपना आवश्यक हो जाय। क्षेत्र के विस्तार और संख्या में अत्यधिक वृद्धि होने के ही कारण लोकतांत्रिक शासन में या व्यवस्था-मदति में चुनाव और प्रतिनिधित्व के तरीके अनिवार्य रूप से बदलते ही गये हैं। शुद्ध लोकतांत्रिक शासन-मदति की दृष्टि से जो एक दोष है, अल्पगुण है, वह धीरे-धीरे लोकतंत्र का अनिवार्य अंग बन गया, उसे लोकतंत्र का गुण माना गया।

हमने यह लोकतंत्र जिस परिधम से लिया है वहाँ उसका विकास दो-तीन सदियों से होता आया है। उससे परिणामस्वरूप पाश्चात्यो की प्रकृति में और परम्परा में जो गुण-दोष है, वे उनके लोकतंत्र में भी आये हैं और ऐसा होना अनिवार्य ही था। इसके बावजूद यह भी सत्य है कि वक्त दो-बाईं छी वर्षों में उन देशों के लोगों ने तथा वहाँ के लोकतंत्र ने एक-दूसरे का विकास करने में परस्पर सहयोग भी दिया है।

उनके गुण-दोषों के साथ परिधम में जिस लोकतंत्र का विकास हुआ है उसे ही भारत ने स्वीकार किया है। इसका परिणाम यह हुआ है कि लोकतंत्र को निभाने का वहाँ तक संबंध है हमारी स्थिति ऐसी ही हुई है, जैसे नावा का अंगरखा नाती पड़ने! इस लोकतंत्र का अङ्कुर भारतीय प्रकृति और भारतीय परम्परा में से नहीं पूटा है, न वह भारतीय वातावरण में फला है।

भौतिक अधिकार, किन्तु कर्तव्य का कलश!

भारत ने जो लोकतंत्र आनाया है, उसकी बुनियाद व्यक्तिगत भौतिक अधिकार है, व्यक्ति का हक है। परन्तु उस पर कर्तव्य का कलश नहीं पड़ पाया है। फलस्वरूप जीवन का लक्ष्य भोग बन गया है और इसी-लिए हर वहाँ प्रयत्नाधार फेल गया है। आज के नौकरशाही पुलिसराज्य को (वह भी परतीय) ही खोखल है। प्रजा के ही समान उसे भी लोकतांत्रिक शासन-मदति की जनम-पट्टी नहीं पिलायी गयी है।

इस सारी स्थिति को सुधारने का आज एक ही साधन है—विद्या। लेकिन केवल विद्या को ही ज्ञान नहीं समझना चाहिए, विद्या तो ज्ञान प्राप्त करने का एक प्रमुख साधन है। विद्या का सीधा और व्यावहारिक आशय यही है कि वह विधित को खाने तथा अपने समूह के जीवन की जिम्मेदारी उठाने योग्य बनाये।

बुनियादी इकाई, आकार और प्रकार

लोकतंत्र का मुख्य आधार-तत्त्व है लोगों की सर्वांगीण जीवन-व्यवस्था में लोगों का अधिक-से-अधिक योगदान (पार्टिसिपेशन)। इसके लिए लोकतंत्र की बुनियादी इकाई छोटी

होनी चाहिए और उनका काम लोगों को प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति करना ही होना चाहिए। ऐसा करने पर शारीरिक सगठन सघटन की दृष्टि से धोला होगा, और वहाँ की जीवन-व्यवस्था में लोगों का योगदान अधिक रहेगा। इसके मानी ये गद्दी कि देहाती जनता की आवश्यकता भी प्राथमिक आवश्यकता तक ही सीमित रहेगी या रहनी चाहिए। आज के युग में माणवीय जीवन की सगठन करना है तो उसकी आवश्यकताएँ बहुविध होंगी। लेकिन उन सबकी पूर्ति बुनियादी इकाई में ही करने की कोशिश होगी तो उसके लिए सघटन की मजबूत कल्पना रहेगी और तब जीवन में तीव्रता (इंटेन्सिटी) और प्रतिस्पर्धा बढे बिना नहीं रहेगी। परिणाम यह आया कि लोगों का जीवन में योगदान कम होगा और तब और तबको वा राज्य गुरु होगा। इसलिए मानवीय आवश्यकता की पूर्ति के काम में यम विभाजन आवश्यक होगा चाहिए और इस आधार पर गाँवों का यामो परिवारों का सहयोगी सघ बनना चाहिए।

पवित्रम में ज्यो-ज्यो बुनियादी इकाई बढी होती गयी, त्यो-त्यो उसकी व्यवस्था के लिए प्रातिनिधिक सस्था अनिवार्य होती गयी। मासतब में यह प्रातिनिधिकता लोकउत्पन्न का धर्म नहीं, आपद्धर्म है। इस बात को हमें याद रखना चाहिए। हमारे सन्निधान में जो निरंतरक सिद्धान्त (साधरेक्टिव प्रिन्सिपल) है, उनमें यह सिधारिया की गयी है कि लोकउत्पन्न की आधारभूत इकाई स्वयंसाधित पंचायतें ही। हमारे यहाँ पंचायती राज तो कायम किया गया, लेकिन उसके पीछे यह भी मसहद होना चाहिए था, वह नहीं रखा गया। राज्य-सरकारों ने अपने अधिकांशों में से कुछ अधिकार उन पंचायतों को दिये और उन्हें आत्मो योजनाओं को प्रचल में लाने का एक साधन बनाया। यही कारण है कि पाश्चात्य लोकउत्पन्न के मध्यमूल टोपों का निराकरण ये पंचायतें नहीं कर सकीं, यही नहीं, बल्कि हमारे यहाँ के भी सघ और उसमें बुद्ध भये।

आज का जीवन बगो जटिलताओं से

भरा है और उसके सुग और सुविधाओं के प्रकार भी बहुत बढ गये हैं। इसलिए आज की सारी आवश्यकताओं की पूर्ति करने की शक्ति, बुद्धि और साधन-सम्पत्ति इन छोटी-छोटी इकाइयों में ही ऐसी अपेक्षा रखना टीक नहीं होगा। यह असम्भव है। इसी कारण से सघात्मक सगठन प्रदेश के या धर्म, जाति यादि तत्वों के आधार पर नहीं, बल्कि सामो-जिक समीपता और भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने की क्षमता पर आधारित होगा। उस संघ में वहाँ की मौजिक आवश्यकताओं की पूर्ति करने योग्य साधन-सम्पत्ति होगी चाहिए और उनको उपयोग्य साधनों में रूपांतरित करने की शक्ति और बुद्धि होगी चाहिए। यह सघ 'बटिकल' (उत्पन्न इका) नहीं होगा, 'हारिजाल' (सम्पन्न) होगा। जेने गांधीजी कहते थे उस प्रकार स्वदेशी धर्म का आजाय यही है कि मनुष्य अपनी आवश्यकताओं और सवाओं को पहले अपने पदोमी से जाके। यह स्वदेशी धर्म दस सघात्मक सघान का धर्म होगा।

इस प्रकार यह सघान रचना आज की राष्ट्रीय, धार्मिक, सांस्कृतिक यादि सधों कीआओ को लाकर आगे बढ़ेगी। आज तक जो भी सघान धार्मिक, प्रादेशिक या राष्ट्रीय आधार पर बने हैं, उनके कारण मनुष्य को सुख और शान्ति नहीं मिली, जिसे प्राप्त

करने का उमे हफ है और जिसकी उमे आवश्यकता है। चूंकि ये सघान मेर पैदा करनेवाले हैं, इसलिए इनका बाहरी सघान के साथ सगर्भ निश्चिन ही था, परन्तु इनके अन्दर भी बई प्रकार का सघर्ष और तनाव उत्पन्न होता रहा है, जिसे ये सघान मिटा नहीं सके। इसका कारण यह है कि इन सघानों के और बाहर के सघान के हितों में विरोध तो है ही, इनके अन्दर भी मान्जिक हित विरोध बना हुआ है। इसका आयाय यह है कि सहकार और धार्मिक की स्थापना के लिए द्विरेष्यता (सादेडिडिटी आफ इम्परेस्ट्यु) आवश्यक है। सघान ऐसे ही लोगों का होगा चाहिए जिनमें द्विरेष्य हो, ताकि उस सघान से उनके हितों की पूर्ति हो सके। यह द्विरेष्य मानवीय आवश्यकताओं में ही हो सगता है, विचारों और कलगाओं में नहीं। केवल सावधानी इस बात की होनी चाहिए कि उन आवश्यकताओं की मात्रा और स्वरूप नैतानिक पद्धति से ही निर्धारित होने चाहिए।

जिस सघान में हर एक ब्यक्ति को आवश्यकताओं को पूरी करने के लय पर हर एक की धार्मिक और सगर्भता का सहयोग स्व-श्रेण्या और विज्ञान के आधार पर उपलब्ध हो सके, ऐसे सघान में ही सच्चा लोकतन्त्र प्रस्थापित और प्रतिष्ठित हो सकेगा। ●

वाचा रोता क्यों नहीं ?

इन दिनों वाचा हँसता ही रहता है। इसलिए हँसता है कि रोता वाजिब नहीं है, अगरचे हालत रोने लायक है। और इसलिए भी हँसता है कि वाचा को उमका उपाय सूझा हुआ है। वाचा दरुता है कि यह उपाय अगर लोगों को सुझेगा तो सारे भारत में आनन्द होगा। तो यह आनन्दमय निश्चित भविष्य ध्यान में रखकर वाचा हँसता है। और वह इसलिए भी हँसता रहता है कि यह इस दुनिया को निश्चिन्ता समकता है। बहुत श्यादा वागतिक अस्तित्व इसको है, ऐसा वाचा को प्रतीत नहीं होता।

सौर, मेरा मतलब है कि परिस्थिति बहुत सोचनीय है भारत की। क्या क्या भयानक प्रकार दिन्दुस्तान में हो रहे हैं, वेसा प्रश्न पूछने के बजाय यही पूछना बेदतर होगा कि चीनसे प्रकार नहीं हो रहे हैं! सावर्जनिक जीवन के विषय म अन्दर से बहुत वेदना का अनुभव होता है।

[विनोबा-विचार, मुंघेर : १९-२-१९०]

शान्ति-केन्द्र : 'शान्ति-दिवस' के आयोजन

देश भर में विभिन्न स्थानों पर गत ३० जनवरी का दिन 'शान्ति-दिवस' के रूप में मनाया गया। इस अवसर पर प्रभात फेरी, छात्रवृत्ति सभाएँ, प्रार्थना-सभाएँ, सूत्रयज्ञ, श्रद्धाजलि, सर्वोदय-साहित्य का पठन-मठन, जन-सम्मेलन, शान्ति-विकल्प और सर्वोदय-साहित्य की बिजो आदि के कार्यक्रमों के अतिरिक्त विचार-गोष्ठी, शान्ति-मेला रैली, मीग जुलूस, नयावन्दो आदि के विशिष्ट आयोजन भी किये गये। २० प्र० और बिहार के समाचार पत्रों के अंक में दिने गये थे। वेप वहाँ दिने जा रहे हैं।

गुजरात

अहमदाबाद : प्रार्थना-सभा में श्री नारायण देसाई ने बापू की शान्ति-श्रद्धांजलि पर प्रकाश डाला। रेलवे स्टेशन पर सर्वोदय-साहित्य के नये स्टाल का उद्घाटन श्रीमती मदालाखा वल्लभ ने किया। साबरमती आश्रम में हुई शान्ति-रैली को श्री काका साहब कालेलकर ने सम्बोधित किया। दो हजार की संख्या में शान्ति-जुलूस कोबरव आश्रम पहुँचा। सभा में राज्यपाल श्री श्रीमन्मारायण ने गांधी-मार्ग और सर्वोदय-अभूतियों की विवेचना की। वाक्यपत्राणी और सरकार के सूचना-प्रचार-विभाग का सहृदयी सहयोग रहा। जुने हुए प्रवचन-अंश रेडियो से प्रसारित किये गये। —रमण भाई

सुत और बलसाड : 'गांधी शाब्दों' के लिए निम्नलिखित कार्यक्रम तय किया गया : सारी शक्ति त्रिविध कार्यक्रम पर केन्द्रित की जाय, धामदान के लिए एक हजार कार्यकर्ता वर्ष में दो रहने दें, छोटी गाँवों में सम्पूर्ण वस्त्र-स्वावलम्बन किया जाय, एक हजार शान्ति-सेवक और एक सौ शान्ति-सैनिक भरती किये जायें, तन् १९७० के गांधी भेले के समय २५,००० कालेवालों का विराट इत्यादि-प्रदर्शन हो।

व्यारा, धाम मेवा-समाज : प्रातः ५। बजे वेडूवावर कन्या शाला के निकली ३० मील दाम्नी शान्ति-पदयात्रा धाम ५ बजे

हालपण में प्रार्थना-सभा में परिणत हुई, १९० भाई-बहनों ने यात्रा में भाग लिया।

—दन्तग्रिह रावत

मध्य प्रदेश

रायपुर : गांधी चोक में प्रार्थना-सभा हुई, जिसमें नागरिकों एवं राजनीतिक दलों के नेताओं ने भी भाग लिया। —मोतीलाल

सरगुजा : अम्बिकापुर का नगर-कार्यक्रम विधेय ध्यानाकर्षक रहा। अलग-अलग विधायन-संस्थाओं के शिक्षकों और छात्रों को एक रैली हुई। शान्ति-यात्रा में करीब दो हजार छात्रों, शिक्षकों, नागरिकों और शान्ति-सैनिकों की संख्या की। —छत्रराम गौड़

खलाम : सर्वोदय-मठ में टेलीफोनिक होकर गाँवों में पदयात्रा की गयी। —मानव मुनि

राजस्थान

पथवारी : शराब-बन्दी के लिए एक शरण भी दूकान पर खत्याण्ड किया गया।

—दरवार सिंह

नारलाई : सर्वोदय-पथ में जिता स्तर पर सर्वोदय तथा इयि-संगठन का कार्यक्रम किया गया। —राधेग्याम देवे

केशीपुर : प्राग-कोप के लिए १०१ रुपये एकत्र किये गये। —जितेन्द्र कुमार

बाँसवाड़ा : १७५ रुपये २५ पैसे का कोप एकत्र किया गया। —अनारायण

पंजाब-हरियाणा

प्रस्थान आश्रम, पठानकोट : पंजाब-हरियाणा सर्वोदय मण्डल की नवम्बर की बैठक में धामदान पुष्टिद्वारा और दोनों प्रदेशों की सरकार द्वारा धामदान-नातन निश्चित किया गया। आश्रम को सार्वजनिक सेवा का विशेषकेन्द्र बनाने के लिए निविर और बाल-बायी शुरू करने की स्मरणा बनायी गयी। एक कार्यकर्ता-निविर कवररी में रखा गया। कापज जिले में १०४ और हियाण जिले में ३६ धामदान मिले। कार्य की सुविधा भी छटि के प्रान्तीय शान्ति सेना मण्डल का प्रधान कार्यालय प्रस्थान आश्रम में स्थानान्तरित किया गया है। —मयापाल मित्तल

रेवाड़ी : जिला सर्वोदय मण्डल, पुष्पाय, शान्ति-केन्द्र, गांधी लक्ष्यम केन्द्र, गांधी छात्री मण्डार, जिला स्वतन्त्रता संघाम सेवानो सप और हरिजन सेवक सप ने मिलकर शान्ति-दिवस मनाया। शहीदों की चित्र-प्रदर्शनी का भी आयोजन किया गया। —शुशीराम

असम

कुमारीकट्टा (कामरुप) : विनोबापुर से १०० गांधियों का शान्ति-जुलूस १२ मील का रास्ता तय करते जब कुमारीकट्टा पहुँचा, तब गांधियों की संख्या एक हजार थी। घोषागरी, काठली बाजार भादि शान्ति-केन्द्रों पर भी आयोजन हुए।

चराइदुलनी : अथम के दो जिलों में धामदान-अभियान चलाया। दो शान्ति केन्द्रों की स्थापना की, एक को स्थापना शान्ति-दिवस पर की गयी। —कृषीपर हायरिका काठली बाजार : सेती-मुधार की बातो का प्रचार किया गया। सब धामदायिणों ने तय किया कि इसहा में एक दिन का उपवास करके सधमन्हीन श्रिस्तानों का उपन पुष्टाने के लिए पैसे बचायेंगे। —धैय बासुदेव पहाय

उड़ीसा

'शान्ति-दिवस' विधेय रूप से मगाने के लिए उड़ीसा प्रदेश सर्वोदय मण्डल ने जनवरी, '६७ में मुनेदर में हुई बैठक में तय किया था कि ३० जनवरी, '६८ तक एक हजार धामदान प्राप्त किये जायेंगे और दस हजार शान्ति-सैनिक बनाये जायेंगे तथा २० कवररी तर कोरापुट और मयूरभंज का जिलादान प्राप्त करयेंगे। इस अवधि में ६५७६ धामदान, जिसमें ३४ प्रथमदान है, प्राप्त हुए। ५१७५ शान्ति-सैनिक बनाये गये। छारे जिले में कुल मिलाकर इस वर्ष ११२ निविर संगठन हुए। कोरापुट, पुरी, गंगाम, बटक, डेकनाल, मयूरभंज, बालेदर जिले के विभिन्न स्थानों पर आयोजित शान्ति-मेला रैली में ३०० से १६०० तक शान्ति-सैनिकों ने भाग लिया। कई आदिवासी बालीय-बालीय मील से पदयात्रा करके शान्ति-यात्रा में सम्मिलित हुए।

कलकत्ता : १४४ धारा के शरण जुलूस नहीं निकल सके। १५ नये शान्ति-सैनिकों ने प्रतिज्ञापन परे। —वाकिरजन् दास

भूदान-यज्ञ : शुक्रवार, १६ मार्च, '६८

आन्त्र

द्वैपायदः प्रपूर्व शुद्धनी की युवनाचारी-
साल नया की अणुपणना में १५०० टाउन-
छात्राओं और नगरिकों का एक पालि-मुद्रक
विभाग। विभागियों में वनस्पत-सर्पों एवं बर्बा-
हवाओं के बायोडन हुए १-१००००००० नारायण

विश्ववारा 'शोध मार्ग' को आगामी
आन्त्र के सर्वोच्च-नेता का सुवर्णसदस्य और
यो लक्ष्य में ही। —नवार्दन स्वामी

त्रिवेन्द्रम (केरल) आन्त्र-सभा में
समाप्त १५०० नगरिकों, छात्रों, विद्यार्थी
और छात्रवृत्ति नेताओं ने की भाग लिया।

—**श्री. गोपीकांत नायर**
काउन्सिलर एक हजार लोगों ने पालि
पुस्तक में भाग लिया। —**श्री. श्री. जयशंकर**

इसके अलावा नीचे दिये गये स्थानों में
की 'पालि-सिख' उत्साहपूर्वक मनाये जाने
के समाचार प्राप्त हुए हैं —

भारत-रक्षा, सफा, आनन्दनगर, भारत
शोध, धर्म, सारवा, स्वयंसेविका,
वेतारो, जिवर बना, सफल माधव
सोपना, सिरु, गजोवर, रामराज, आदि।

—**श्री. आ. शांति-नेता बरालिय** में

३१ मार्च '६८ तक

"मूदान-सहरीक" (सर्वे पारिदाक)
के बाह्को को विचोप छूट

राणी-बागानी सर्किंग की जनक
सर्किंग की ओर में "मूदान सहरीक" के हर
नये बाहक को एक हजार 'सिपेट' (घु) **दें**
ने की घोषणा की गयी है। यह 'सिपेट'
११ मार्च '६८ तक ही जारी रहेगा। "मूदान
सहरीक" का सफलता पराकार बना है।
इसका सिर्फ तीन घण्टे भर बाहक से भेज कर
बाहक बनिये। —**सचवाक**

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, नारायणी-१

अन्टोलन के समाचार

भठारा जिला सर्वोच्च सम्मेलन

गत ३० जनवरी को आकोट गाँव में
पञ्चरा (महापट्ट) जिला सर्वोच्च सम्मेलन
हुआ। इस अवसर पर आकोट गाँव में भगी-
मुन्य छात्र उत्साहक ३० छात्रों बनाये।
सम्येक भी वापट ने नये विवरण प्रस्तुत
करते हुए बताया कि जिले में अब तक २२३
प्रामथन हुए, ८०० से अधिक भगी मुक
पलाये बनाये। पान-मुद्राई स्वामलन
सोचना २०० गाँवों में चल रही है। गाँवों
छात्रों तक सपूर्ण जिले में इत नगरी का
व्याप गये, इस पर भी वर्षा हुई। सर्वथ
बिना गया कि आगामी साल में ३०० गाँवों
का समलन हो, ५०० गाँवों में पानकुटाई
समलन हो, ५००० छात्रों कावये जायें,
१०० छात्रनी गाँवों का सङ्घेसन ही।

शामदान-अभियान

इन्दौर। मध्यप्रदेश सर्वोच्च मण्डल के
द्वारा प्रान्त के विभिन्न जिलों में चलाने का
रहे प्रामथन आन्दोलन के अन्तर्गत यानी हाल
में ही इन्दौर तथा दुर्ग जिले में पान-सिख
नये प्रामथन घोषित हुए हैं। इन्दौर जिले में
सर्वोच्च-सिख भी मकराक मकमोट के नेतृ-
में सलन पररचना चल रही है।



अ०भा० स्वामी प्रामोयोग द्वारा प्रमाणित
स्वामी प्रामोयोग भठारा में मिलता है

मासिंहपुरा, २० फरवरी। यज्ञाकोसल
शेन के १७ जिलों में जनवरी '६८ तक प्रामथन
में प्राप्त कुल १,१२,८०० एक एक भूमि
में से ४५,४२५ सुमिलन रूपको को
७७,३६६-३२ एक भूमि किलरि की का चुकी
हे और २१,८००/७६ एक सुमि विचारण
के लिए शेप है। प्रामथन द्वारा अब तक
१७,१२२ १० एक भूमि का प्रमाणिकरण
बिना गया तथा १२,६०२ ३२ एक भूमि
नार्मदुर की गयी है।

साहित्य-सेवा

● **सर्वोच्च-साहित्य-मन्दिर, आसदाबाद**
३० जनवरी से २१ फरवरी तक कुल
३१ दिन में ३,६८१ घण्टे ६४ विद्ये की
साहित्य-सिखी हुई। 'भूमिपुत्र' दसवारिक
के २ बाहक बने। कुल किलरि १५७७
व्यक्तियों ने साहित्य मन्दिर से किलारें
माये की।

● **बड़ीदा। जिला सर्वोच्च मण्डल**

कोर से मूलतः कटय मिस में ७,२५८ ६०
६२ १० के सर्वोच्च-साहित्य की जिली हुई।
जिले में पञ्चम प्रतिगत की साहित्य किल-
व्यवस्थाको ने स्वयं की ओर से ही।
इसी प्रकार सलगा जिले के बाघेरी और
पोसली काठको ने मूल में ही आयोजित
परमाणा के दौरान १३ टुकड़ियों ने
६२१ ६० की साहित्य विद्ये की।

गुजरात का आह्वान

● **बड़ीदा। गुजरात सर्वोच्च मण्डल** के
अणुपण ६० टाउनसरा ओगो ने गांधी जन्म-
सालानी तक प्रामथन के १६,००० गाँवों में
प्रामथन-आनन्दनगर का सर्वोच्च सङ्घाने एक
सोहसठमार्क की दृष्टि से ४०० निष्ठागत
नार्मथसिखी के लिए आह्वान किया है,
ताकि व्यक्तन पंचाने भर परमाणात् आयोजित
की जा सकें। उक्त मोजना को पारितार्थ
करने के लिए प्रामथन में १०० नार्मथसिखी
के लिए दो लाख रुपये की अर्पण की है और
मुम्बय है कि दुबारा की सलना में सर्वोच्च-
मिस ऐसे नार्मथसिखी की जिम्मेदारी उठा
लिये। इसके अतिरिक्त गुजरात सर्वोच्च मण्डल,
गुजरातप्रान्त, बड़ीदा १ के पने पर छोड़े
सलवली को भेजी का सजती है।

विहारदान की दिशा में

● बोधगया : २१ से २७ फरवरी तक गया जिले के १२ प्रखण्डों में शिक्षकों तथा पंचायत-मुखियों आदि की समारोह रकी गयी थी। रोज २ से ३ सभाओं में भ्रामदान का विचार लोगों के सामने रखा। अगले ६ महीने में ५०-६० कार्यकर्ता सतत जिलादान के काम में लगनेवाले हैं। जिले की खादी-संस्था तथा पंचायत परिषद् की ओर से काफी मदद इस काम में दी जा रही है। अगले महीने होली के बाद से जिला-दान अभियान जोर पकड़ेगा, ऐसी आशा है।

—सिद्धराज ठंडूदा

● भागलपुर : जिले के सदर सबडिविजन का नामनगर, सुल्तानगंज और साहनुपुर प्रखण्ड में प्रासिका कार्यात्म हो गया है। कार्य में गति प्रदान करने के लिए जिला सर्वोदय मंडल के अध्यक्ष पंडित बोधनारायण मिश्रजी एवं प्रोफेसर श्री रामजी सिंह ने अपना समय देकर हेतु दिया है।

—हरिनारायण साहू '५, धव'

● बगोदर, ८ मार्च जिला बोंदय मंडल द्वारा विभाग के कार्यकर्ताओं के प्र. स से जिले का बगोदर प्रखण्ड विधिवत् प्रखण्डदान घोषित हो गया। इस प्रकार हजारीबाग जिले का प्रतापपुर, पोर्टलाई, सिमरिया एवं बगोदर कुल ४ प्रखण्डदान की घोषणा विधिवत् हो चुकी है। —यामनन्दन सिंह

पारिवारिक खर्च का एक प्रतिशत विनोबाजी को भेंट

व्यापारियों का शुभ-संकल्प

पटना, १ मार्च। अभी हाल ही में बिहार-दान के सिलसिले में यात्रा के दौरान जिला सर्वोदय मंडल के तत्वावधान में मुंगेर पड़ाव पर आयोजित एक गोष्ठे में श्री विनोबाजी ने व्यापारियों की वर्तमान स्थिति पर चिन्ता प्रकट करते हुए उनके प्रति गहरी सहानुभूति प्रकट की और कहा कि "भ्रामदान-प्रखण्डदान के द्वारा हमारा प्रवेष्ट गाँव के किसानों और मजदूरों में हो रहा है, लेकिन गहूर के व्यापारी वर्ग से वैसा सम्बन्ध आया नहीं। मैंने अभी उम्मीद छोड़ी नहीं है। मैं चाहता हूँ कि एक-एक व्यापारियों के परिवार में बाबा का प्रवेष्ट हो। बाबा गाँववालों से उसकी भ्रामदानी का चाछीखाँ भाग माँगता है, लेकिन व्यापारियों से उनकी भ्रामदानी का हिस्सा नहीं माँगता। बाबा प्रत्येक व्यापारी के परिवार का एक सदस्य बनना चाहता है। इसलिए व्यापारों अर्थात् पारिवारिक खर्च का एक भाग बाबा के काम के लिए दान के रूप में दें, यह खेसा है।"

उक्त उद्घोषों से प्रेरित होकर मुंगेर के १४ प्रमुख व्यापारियों ने अपने पारिवारिक खर्च का एक प्रतिशत भाग प्रति वर्ष भेंट करते रहने का सामूहिक समर्पण-पत्र श्री विनोबाजी को समर्पित किया।

● जमशेदपुर। ३ मार्च '६८ को ईचागढ़ प्रखण्ड का बाबापता प्रखण्डदान घोषित हुआ। यह इस जिले का दूसरा प्रखण्डदान है। ईचागढ़ प्रखण्डदान में शामिल गाँवों का विलुप्त व्यौर इस प्रकार है - कुल ग्राम १३७, चिरागी १३२, बेचिरागी ५, भ्रामदान में शामिल गाँव १०७, प्रतिघात ८१, कुल जनसंख्या ५२७४३, शामिल जनसंख्या ४११४०, प्रतिघात ७८, कुल परिवार ११०००, शामिल परिवार-संख्या ८८४००, प्रतिघात ७८। —मुहम्मद अयुब खॉं

● पूर्णिया में सर्वोदय-पत्र : सर्वोदय-नेता श्री वैद्यनाथ बाबू की यात्रा ३० जनवरी '६८ से जानकीनगर से प्रारम्भ हुई और ११ फरवरी को कोसी-गंगा के संगम पर कुसेल में पूर्ण हुई। श्री वैद्यनाथ बाबू की यात्रा कुल ५ प्रखण्डों में हुई।

इस अवसर पर जिले में अन्य स्थानों पर पदयात्राएँ भी चलीं। कुल १४ प्रखण्डों में पदयात्रा भी गयी। १४६ गाँवों से सम्पर्क स्थापित किया गया। कुल ३६२ मील की यात्रा की गयी। ७२ ग्राम समारोहों के द्वारा लगभग ५,२०० लोगों के बीच गांधी और विनोबा के विचारों का प्रचार हुआ। यात्रा के क्रम में सर्वोदय-बोध में ४,४४८ रुपये ७५ पैसे नकद और ११०.८ मन धान प्राप्त हुआ। १६५ रु० ७४ पैसे के सर्वोदय-साहित्य की विक्री हुई और 'भ्रामोदय' के ४ पाठक बनाये गये। ८६५ मूल की पुस्तिकाएँ मृतमंत्रि में प्राप्त हुईं।

—दागोदर प्रसाद 'काम'

● गोशुखपुर। उत्तर प्रदेश में ७ मार्च तक ३४ प्रखण्डदान हो चुके हैं, जिनके भ्रामदानी गाँवों की संख्या ४,१५० है।

सर्वोदय आन्दोलन का जागतिक प्रभाव

विदेश में एक कारखाना मजदूरों को समर्पित

ज्ञात हुआ है कि हैबे इंजीनियरिंग कम्पनी, हैबे इलेक्ट्रोनिक्स लिमिटेड, हैबे (केन) के श्री विक्टर कामसन ने भारत में भ्रामदान-आन्दोलन के प्रणेता व्याधार्थ विनोबा भावे से प्रेरित होकर अपनी मालिकी को उक्त कारखाना उसमें काम करनेवाले मजदूरों को समर्पित कर दिया। इस सिलसिले में श्री विनोबाजी के नाम की कामसन ने अपने पत्र में लिखा है कि "सत-आठ वर्ष पूर्व मेरा एक मित्र मेम्बरु आपसे सदा पदयात्रा में रहा था। आपसे उसने जो कुछ सीखा, उसे मैंने भी समझा। आपकी फिलसफी ने मैं इतना प्रभावित हुआ हूँ कि मैंने अपना कारखाना उसमें काम करनेवाले मजदूरों को समर्पित कर दिया है। आप जो सिद्धान्त गाँवों पर लागू करते हैं, उसे मैंने अपने कारखाने पर लागू कर दिया है। मजदूरों की यह उद्दामगी-मद्वति यहाँ 'विनोबा-पद्धति' के नाम से जानी जाती है।"

भारत का नवोदय

20 MAR 19

भारत का नवोदय : आधुनिक भारतीय समाज के विकास के लिए साप्ताहिक

सर्व सौजन्य संघ का मुख पत्र

सम्पादक : रामभूति

शुक्रवार वर्ष : १५
२२ मार्च '६८ अंक : २५

इस अंक में

सुभाषचन्द्रबोस और रचनात्मक कार्यकर्ता

—उत्तर विचार समूह २६७

बहिया खरबे नमो ताज

—गांधीजी २२८

पापेट का अर्थवाच

—सम्पादकीय २६६

मनस की भलकिया

३००

बहुविधता के लिए बोध

—विनोबा ३०१

सादी शायरी का भावोक्ति

—इत्तीबा शरफाते ३०२

अन्य अंश

समाचार काव्य

आन्दोलन के समाचार

मान की बात परिवर्तित

आर्थिक मुक्त १०५०

एक प्रति २० पंजे

विदेशों में साधारण डाक-मुक्त

१८५० या १७५० का २११ अंश

(१५६६ डाक-मुक्त - देशों के अनुसार)

सर्व-सौजन्य संघ प्रकाशन

राजगंज, बाराकला-६

शास्त्रीय वृत्ति : 'कारक' की नहीं, 'ज्ञापक' की

इन दिनों मैंने मूल्य में प्रवेश किया है, यह बात जाहिर हो गयी है। मूल्य का प्रयोग पत्रकारिता के लिए। फिर मन में विचार आया कि मूल्य-समीक्षा होना चाहिए। विज्ञान में जैसे 'न्यूक्लियर एनर्जी' (अणु शक्ति) का जो है, उस के पत्र में काम है कि मूल्य के अन्तिम मूल्य मात्र ज्ञान पर परिणामकारी होते हैं। जैसे उद्योग के क्षेत्र में मूल्य मात्र विज्ञान है, वैसे अन्तिम के क्षेत्र में भी मूल्य प्रयोग हो सकता है। जैसे जैसे हाल बदलता है, हर सोच को हीन ध्यात्मन हुए। सामर्थ्य की हज़ार तरंगों में मानें तो भी १३-१५ हजार माध्य हुए। इसलिए मूल्य के जिनका जो सत्ता था हो गया है। अगर हमारे विचार लोग को जैसे, मान्य हो, तो अच्छी बात है, नहीं जैसे और उस पर अन्त नहीं किया, तो भी कोई लाभ बात नहीं है। जो शास्त्रीय होते हैं वे हाथ पकड़कर करवाते नहीं। साधनबोध दिखाता है कि यह सत्ता यहाँ से दरमग वा रहा है, कामको जाना है तो उस जाने से जा सकते हैं, नहीं जानी है, तो नहीं जा सकते हैं। साधनबोध ने अपना काम कर दिया। जो शास्त्रीय वृत्ति रखते हैं वह हमेशा 'ज्ञापक' होता है, 'कारक' नहीं। 'कारक' यानी करवानेवाला, 'ज्ञापक' यानी जतानेवाला, सुभाषितवाला।

पत्रकार में इन दिनों अनेक नये चारों की खोज हुई है। ऐसे करने विज्ञान का बहुविध विचार हुआ है। वह सब हमको धीमे-धीमे ही चाहिए। इस बात हमको कई नवीन नवी कीर्ति शीलनी पड़ेगी, हममें बर्तन दान नहीं। फिर भी भारत क कुछ करने भी विचार हैं, और वे प्राचीन काल से विकसित किये गये हैं। उन छात्रों में विद्या-दान एक है। यह एक ऐसा धारक है, जिसका भारत में काफी विकास हुआ था, उस सिलसिले में भी हमको कुछ नया सीखना है। दुनिया भर में मूल्य विचार हमारे पास आये हैं। हम सब विचारों का स्वागत करते हैं। लेकिन जो अपने पास हैं, उसे भी पढ़करना चाहिए, क्योंकि वह जो नहीं की परिवर्तित के अनुसार है।

तो, ऐसे का रूप सत्ता भाग में विद्या-दान के हैं, उन सबमें विरोधिता धर्म है परन्तु नव शोधितात्मन। उद्योग में विद्या के विद्या में मानस और अतिमानस, दोनों दृष्टियों से विचार किया गया है। मानस धारक को दृष्टि से शोधना विद्या के लिए बड़ा जरूरी होता है। उसके बिना विद्या साधन शुरू नहीं होता है। लेकिन शुरू के लिए पत्रकारिता मानस-धारक की जरूरत होती तो भी उसकी शोधिता नई-नई नहीं है, कहीं तक हवन वह लगे जानी है, यह समझने के लिए अति मानस ज्ञान की जरूरत होती है। दोनों दृष्टियों ध्यान में रखकर पत्रकारिता ने बहुत जोड़े में योगदान प्रस्तुत किया है। पत्रकारिता क्या करता है? वह परमात्मता को कुछ रूप में देखा है। परमात्मता प्राचीन ज्ञानियों का भी गुण है। मुझे बहुत जो भावपूर्ण वदने का मोक्ष मिला है, लेकिन मैंने यह कभी देखा नहीं, कि जो कर्म-धर्म में था किन्हीं मानस-धारकियों धर्म में, कि उनसे परमात्मता को कुछ रूप में देखा हो। परमात्मता की विद्या के रूप में तो ब्रह्मदेव देखा ही जाता है, मारा के रूप में भी देखा जाता है, लेकिन योगदान में मुझे के रूप में देना।

[पूरा रात, ७ १२-६७]

—विनोबा

देरा :

युग-परिस्थिति और रचनात्मक कार्यकर्ता

११ मार्च : फारस की राशि में से तेल निर्यात में मिली सफलता से भारत बच्चे तेल में आत्मनिर्भर हो सकता है ।

१२ मार्च : पंजाब के राज्यपाल डॉ० सी० पावटे ने राज्य विधानसभा का आज सभाबसण कर दिया ।

१३ मार्च : सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश धी हिदायतुल्ला, जस्टिस अमरनाथ घोषर तथा जस्टिस सी. ए. त्रिपाठीगम की आज भरी अदालत में सुनने से हत्या करने की कुषेधा की गयी ।

१४ मार्च : श्री मोरारजी देसाई ने आज लोकसभा में कहा कि आर्थिक मंदी को दूर करने के लिए पाठे की अर्थ-व्यवस्था के विवाय आज कोई दूसरा चारा नहीं है ।

१५ मार्च : दृषि-आयोग ने नयी रिपोर्ट में सिकारिस की है कि रेड्डी की वसुली-नाब मत बर्ष की तुलना में थोडा पटाया जाय ।

१६ मार्च : रबीवाले राश्यों के मुख्य-मंत्रियों के सम्मेलन में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर का एक बृहत् गैर-शेख बनाने का फैसला किया गया । विदेरा :

११ मार्च : रोडेशिया-सरकार ने आज प्रातः दो और अपनीयों को फाँसी दे दी ।

१२ मार्च : संयुक्त राष्ट्र सभ स्थित अफ्रीकी प्रतिनिधि रोडेशिया में हुई फाँसी के मामले को सुरक्षा-परिषद् में रखेंगे ।

१३ मार्च : अमरीका के ४६ प्रतिघत नागरिकों का गन है कि उसने विगतनाम-युद्ध में अपने को फँसाकर गली की है ।

१४ मार्च : मजबेसिया के प्रधान मंत्री ने ब्रिटेन से माँग की कि वह रोडेशिया को स्वतंत्र देश मानता है या उपनिवेश, घोषणा करे ।

१५ मार्च : अमरीकी तथा दक्षिण विषयनामों सेनाओं ने सेवान के पास के पाँच प्राप्तों में विगतनामों को हस्त करके लिए थडे पैमाने पर कार्रवाई शुरू की है ।

१६ मार्च : जनसभ ने विगतनाम में और सैनिक भेजना स्वीकार कर लिया है ।

धी टी० के० महादेवन का 'दृष्टिकोण'
१ मार्च '६८ के "भूदान यज्ञ" में छपा है । उन्होंने धी संकररावजी के शब्दों से प्रेरणा ली है । लेकिन यह स्पष्ट नहीं है कि संकररावजी ने किम सम्बन्ध में यह कहा कि "प्रतीकात्मक कार्यों और निष्ठाओं के दिन बीत गये" । इन शब्दों का अच्छा अर्थ लेना प्रतीक नहीं है। निष्ठा का अर्थ है कि पुराने हीतों के अमाने के काम के नहीं होते और पुरानो निष्ठाओं में भी परिवर्तन आवश्यक है । क्योंकि यह ठीक ही है कि कामकाजियों की तरह अमुक कुछ क्रियाकलापों में ही हमें बंधे नहीं रहना चाहिए और नित्य जीवन में प्रत्यक्ष सबध न रखनेवाले दार्शनिक तत्त्वज्ञान की लकीर के फकीर नहीं बनना चाहिए । लेकिन यह तो नहीं हो सकता कि रचनात्मक काम भी अपनी कोई 'निष्ठा' ही न हो, और वह किसी उन्नत समाज का दिसा-सकेत करनेवाला भी न हो ।

प्रायः यह देखा जाता है कि "दानात्मिक परिस्थिति" की दुहाई देकर जीवन के स्थायी मूल्यों की अन्वहेलना करने का फेगन-सा चल पडा है । लेकिन दिशाहीन जीवन-घारा के बजाय तागडब से हय लोग अपरिचित नहीं है । "पुराणमित्येव न साधु सर्वं" बहनेवाली बोटनिब-नीडी ने उसके रहे-उहे अग्रिपय को भी खूब बनावुत कर दिया है । जयपुर की एक गोष्ठी में कहा हुआ धी संकररावजी का यह बधन सम्भ मे आता है कि "रचनात्मक कार्य और सरवाओं का मगलत मानवीय द्वैतिय (आधेष्टिटी आप इन्धरेस्ट) के आधार पर ही, कोरे विचारों और बलनाओं के आधार पर नहीं ।" लेकिन इसका अर्थ बदापि यह नहीं हो सकता कि उस द्वैतिय के मूल में कोई 'निष्ठा' नहीं होगी ।

इस बात से कौन इनकार कर सकता है कि रचनात्मक कार्य द्वि-विरोध को पाल नहीं सकता, बल्कि सर्वोपनिरोधेन व्यक्ति-

सेवा करनेवाला होगा ? क्या यही लोबतत्र की मूल 'निष्ठा' नहीं है ? क्या यह व्यक्ति-सेवा सर्वविरोध का 'प्रतीक' नहीं है ?

अस्तर हर कोई अपनी बात के समर्थन में गाधीजी का नाम ले लेता है । गाधी-जन्म-शताब्दी ने तो अब उस नाम के उपयोग की 'विरोध छूट' दे रही है । लेकिन यह भूलने से कैसे काम चलेगा कि गाधीजी जब जिवित थे, तब हमारे देश में लोकतंत्र नहीं था ? हमने लोकतंत्र को स्वीकार किया है, तो कोई साधारण नाम नहीं दिया है, बरों जिम्मेदारी की है, सारा सम्बन्ध ही बदल दिया है । लोकतंत्र का मूल तत्व है नागरिक प्रतिष्ठा और इसीलिए आज 'वदमत' भी खपयान्त हो गया है । 'सर्वसम्मति' की दिशा में बढम उठ रहे हैं, ताकि अदना-ले-अदना राक्षस भी किसी व्यक्ति-विरोध के अंधुदा से न डबने पाय । ऐसी स्थिति में "सफल नेतृत्व" की नीमिया का युगमान मुनकर ही कचोट उटना है । क्या वास्तव में "लोग भेड लेते ही होते हैं ?" क्या लोक-तंत्र में भी 'लोक' के प्रति यही भावना रखकर काम करना है ? क्या दुःख होता है । शहरी भौड़ की ही देवकर लोक को भेड बना देना क्या कम प्रतीकपूजा है ? याद रखना चाहिए कि लोक को भेड मान-कर चाहे जैसा—भला या बुरा—भौड़ देनेवाला 'नेता' लोकतंत्र के नागरिक को बरदास्त नहीं हो सकता, न होता चाहिए ।

यह लिखते समय मुझे दस बात का भाव है कि हमारे देश के नागरिक को विविध दिशाओं में शिक्षित करने की बहुत आवश्यकता है । लेकिन शिक्षक और नेता एक नहीं हैं । बहुत सम्भव है कि कोई शिक्षक नेता के रूप में दिवार्डे दे, और कोई नेता शिक्षक-जैसा काम करे । लेकिन स-था शिक्षक नेतृत्व करते हुए भी 'दिव्यादिव्येद पराजय'

[घेय पृष्ठ ३०२, शालम ३ पर]

भूदान-याज्ञ : शुक्रवार, २२ मार्च, '६८

अहिंसा : सबसे बड़ी ताकत

जब तक अहिंसा की भावना करोड़े मी-
पुत्रों में प्रथम नहीं बन जाती, तब तक
शांति की पुहार एक लक्षणोद्भव ही रहेगी।

राष्ट्र के सुस्थ-नगर्ष में हुए सम्प्रदान
हो जाने है। लेकिन आदिम कर्णों उष सत्ता
सर्पन से किसी तरह रूप नहीं है। सुखक सत्ता
मार्गी एक शार्पी-विधिया है और शार्पिक सत्ता
में दिनों तक चलनेवासी शीश। युद्ध-माहित्य
बहुलानेवाले साहित्य में युद्ध के जो परिणाम
पाने में आते है, इनके दुपरिणाम उनके कम
भयानक नहीं है। हम इस दुपरिणाम (शार्पिक)
को शार्पिक मूल्य नहीं देते, क्योंकि हम इनके
प्राप्त प्रयासों के भारी हू खते है।

युद्ध विरोधी आन्दोलन सर्वथा उचित
है। मैं उद्योगो हस्तगत की भावना करता
हूँ। लेकिन आने में आने मन को सुरक्षित
बालों यह आशा भाव दिखे बिना भी नहीं
रह सकता कि यदि आन्दोलन सफल होगा
की दुष्टताओं के मूत्र भावन पर कुशाग्रता
नहीं करता, तो वह बचकल ही जायगा।

यस समयोत्तर, अनेक और परिचय के
अथ मयाए राष्ट्र सकारणिक अधिक दुस्त या
अथन आशियो वा गोचर जारी रखते हुए
को उस शांति ही साहित्य करने की भावना
का करने है, जिसके लिए शरा सत्ता
सत्ता रहा है। या नया बचरीका यदि
एक-दुदरे का भावना और आधुनिकिक रूपों
जारी रखी हुए भी बिना को शांति बनाये
रखने का आदेश देने की श्रुता करने ?

जब तक भावना नहीं बदल जाती, बाह्य
सत्ता को नहीं बदला जा सकता। बाह्य
सत्ता को खोले भावना की अभिव्यक्ति
मान है। जगदी तीर से हव सत्ता बल
सम्पने में भाव्य सत्ता ही आर्य, लेकिन यदि
भीरवी भावना शार्पिक रदे तो वह परि-
पूर्ण आधुनिकिक, नाममात्र भर ही होगा।
युद्ध ही युद्ध विचारों-विचारों-कम-आधुनिकिक
रख रहे भाव और अभिव्यक्ति ही शीतनी है।
१४, जुलाई '२९

पाकेट का अर्थशास्त्र

कई वर्ष हुए सरकार को एक बड़ी तीकरी के लिए बुनाय का इतराहू हा रहा था।
तीन परीक्षाओं में एक परीक्षा ऐसा था जस कदमप हूर परीक्षाओं के अन्तगारण कर ही
कोई-न-कोई पत्र बुद्धता था। स्वभावत जो परीक्षाओं अर्थशास्त्र नहीं जानते थे, बड़े
परीक्षण थे। इनमें एक परीक्षाओं की बुलाहूट हुई : वह वेचारा अर्थशास्त्र का दिवाली
मही था, दरला-दरला मया। उन्हेंको ही परीक्षाक महीण में युद्ध, 'या तुम्ह अर्थशास्त्र में
रख है ?' 'जी हाँ, बहुत जगता', परीक्षाओं के उत्तर दिया। 'अर्थशास्त्र की किस शाखा का ?'
परीक्षण के फिर युद्ध। 'शौण्ड, पाकेट के अर्थशास्त्र में, बलगत के साथ परीक्षाओं के
विनिन्दन किया। इसके बाद परीक्षाक के दूसरा प्रश्न ही नहीं युद्ध : परीक्षा-पत्र निकलता तो
इतराहू में इस परीक्षाओं को सबसे अधिक गम्बर दिखे थे।

शाल में एक रात अथ विभिन्न सरकारी के बजट विधान-सभा या मन्तर के सम्पने
पेश होने है तो विरोधक अर्थशास्त्र की दृष्टि से उनको खरीया करती है, पत्रकार बड़े बड़े लेख
लिखते है, व्यापारी खरीद-विक्री के लिए सदाक प्रीक करते है। लेकिन इस सबके अलग
शरीरो कर्माई से अपना और आलस्यको का पेट पाकनीवाला सामान्य नागरिक आर बाह्य
पाकेट देवता है, क्योंकि वह एक ही अर्थशास्त्र जानता है—पाकेट का अर्थशास्त्र। उसे
दरले से ही शीर्ष के कि उसके पाकेट में कितना शरा, और पाकेट में कितना पत्र। इस
अर्थशास्त्र का वह विरोध है। दूसरा हूर अर्थशास्त्र उसके मन्तर में अर्थशास्त्र है।

अपने १ अर्थाल में वह रस भर बड़ेगा तो किराया अधिक देना पड़ेगा आगे किसी
घम्त को ना पत्र लिखता अर्थशास्त्री कर्मचारी को कौन अर्थिक परिवारा। सोचो
जगह उसके पाकेट में क्याया पैसा जायगा। और जब बाजार में जायगा तो ? क्या बजट
के बार उमा होगा कि अगर वह कोई चीज बेचेगा ता पहले से ज्यादा दाम मिलेगा, या कोई
चीज खरीदेगा ता कम दाम देना पड़ेगा ? वह देखा तो यह है कि बजट काहे देखा हो, जब
व्यापारी दर खरीद करना चाहता है तो बाजार को मशर कर देता है और बेचना चाहता
है ता पत्र देता है। वहा जाता है कि सरकार के हाथ से दो अर्थियाँ हैं—जागो के लिए
बहुक, और बाजार के लिए बजट। इसलिए जब बजट पैसा छोला है ता नागरिक यह
देवता चाहता है कि सरकार के पत्र अलग का बाजार पर ना अर्थ हुआ है। अभी तक तो
देखा नहीं दिखाये देता कि बाजार को सरकार के बलता म हर हुआ हो। बाजार के पत्र
हजार आलस्यको है। सरकार के प्रश्नों से बचने को उसके पास एक नहीं, अनेक धार्के
है। क्या विधायकों के मने बजट में कोई पैसा बाव है, जिससे मरोसा हो कि अथ
बाजार के सुकारिके सरकार मन्त्रयुक्त पडेगी ?

जो बजट विलो म पैस हुआ है, उसमें माल सरकार की आमदनी तर्ष से कम
दिखायी गयी है। उर्ष अर्थिक, आमदनी कम का विनिमित्त बनता सा रहा है। कारिकर एवं
करा मरना या रहा है ? क्या इतना कि सरकार बनना की बलता के जो काम कर रही
है, उनका सार्ष बनता की कर्माई से निवृत्त नहीं या रहा है ? कुछ हूर तक यह बात बड़ी
हो सकती है, लेकिन इतले बड़ी बने बात यह है कि सरकार का अर्थशास्त्री अर्थ वेदिशास्त्र
बढ़ता या रहा है। आमदनी का बहुत बरा भाग सरकार के आर्थिकता के वेतन और टकरा
के लर्ष में निकल जाता है। अर्थ बड रहा है, और आबादी तथा बरालते बड रही है, अगर
पत्र रहो है ता काम की सत्ता। प्रश्न है कि तर्ष बडेगा ही रहे और काम पछता ही रहे तो
यह बडा हुआ लर्ष आयात नहीं के ? एक और सरकार को बर्षो है, तो दूसरी और बनता
की बर्षो है, सोचो वा मेल कैसे होगा ?
→

— ३०३ — साल के बजट की एक अच्छाई यह बतायी जा रही है कि घाटे की पूर्ति के लिए वित्तमन्त्री ने कुछ ज्यादा देन्य नहीं लगाये हैं, बल्कि उद्योगों पर लगे हुए देन्य का भार कुछ घटाया ही है। वह चाहते हैं कि उद्योगों के पास पूंजी अधिक बचे, और कई उद्योगों में जो मंदी आ गयी है वह दूर हो जाय। घोषे देर के लिए ऐसा करना ठीक हो सकता है, लेकिन इससे माल-माल बढ़ने हुए सरकारी खर्च का सवाल कैसे हल होगा? क्या अध्यापक नोटों द्वारा आयगी? तब तो बाजार और भी ज्यादा बेशाबू हो जायगा। बाजार के बेशाबू होने का अर्थ है कि देश के दस करोड़ परिवार, जिनमें से अधिनाय आज भी घाटे पर ही चल रहे हैं, और भी अधिक घाटे में पड़ जायेंगे। सरकार भी घाटे में हो और देश के परिवार भी घाटे में हों; इसमें बटकर आर्थिक संवत दूसरा क्या होगा? देश सरकार और जनता को मिलाकर होता है। एक का संकट दूसरे के संकट का कारण भी है और परिणाम भी। देश दोहरे घाटे को कब तक और कैसे बर्दाश्त करेगा?

सरकार बहती है कि धर्म की सुरक्षा के लिए नेता का खर्च अनिवार्य है। ठीक है, जब मनु है तो सेना भी होगी, जब तक कि देश प्रतिवार का दूसरा कारगर विचलन न बूँद ले। लेकिन इसका क्या कारण है कि हमारे आन्तरिक जीवन में भी सेना की जरूरत बढ़ती जा रही है? क्या गुलिन बेकार होती जा रही है? इसी तरह जब काम नहीं चल रहा है तो उत्तरवार के आदमी और नोकर क्यों बढ़ रहे हैं? काम का स्थान बाजार क्यों ले रहा है?

सुरक्षा ही नहीं, नागरिक जीवन के लिए भी सेना जरूरी हो; काम बंद या न बंदे, सरकार बढ़ती रहे, परिस्थिति की माँग कुछ

भी हो, मनधाना योजनाएँ और बेकरो राजनीतिक पैतरेबाजियों चलनी रहे, उद्योग घोटोने वारखानों में ही चलें और लाखों गाँव बीरान होते चलें जायें, यह सब होता ही रहे तो घाटे का ही क्या, कोई भी सवाल कैसे हल होगा? और, क्या बजट में कोई ऐसी बात है, जिसमें यह सबके मिले कि सरकार का ध्यान बड़े उद्योग को छोड़कर छोटे उद्योग या छोटे आदमी की ओर भी है? भारत में तो छोटे आदमी के लिए जैसे जगह ही नहीं रह गयी। जो सरकार देश की अर्थव्यवस्था की शक्ति और बुद्धि का धनाधार करे, और विदेशी बुद्धि और पूंजी की मोहताज बनी रहे उससे आशा भी कैसे की जाय कि वह किसी सवाल को हल भी कर सकेगा? जनता के पास जो कुछ है उसे लेने की सरकार के पास योजना नहीं है। अनुमान है कि अपने देश में दस करोड़ से अधिक लोग रोज बेकार रहते हैं। अगर प्रति व्यक्ति एक रुपया रोज के हिस्सा में भी कमाई जोड़ी जाय, और महीने में २५ दिन भी काम के माने जायें तो आठ देश एक साल में तीस अरब रुपये का नुकसान उठा रहा है। यह नुकसान न ही, इसका सरकार के पास क्या उपाय है?

बजट घाटे का हो या मुनाफे का, देश में अब शक्ति नहीं है कि वह भारी-भरकम सरकार, उधरी भारी-भरकम योजना, और सबके ऊपर भारी-भरकम राजनीति का त्रिविध बोध बर्दाश्त कर सके। परिस्थिति की माँग है कि सरकार अपने घाटे में अधिक बिना अपने आप को घटाने की करे। सरकार के 'बजट के अर्थशास्त्र' से ज्यादा जनता को 'पाकेट का अर्थशास्त्र' चाहिए। लेकिन उसके लिए तो जनता को कुछ और ही करना पड़ेगा!

बजट की भूलकियाँ

२६ फरवरी को अपने अन्त-दिवस पर वेन्द्रीय वित्तमन्त्री श्री मोरारजी देसाई ने सन् १९६८-६९ का जो बजट पेश किया, उसमें चालू वर्ष में ३ अरब रुपये का घाटा दिखाया गया है। नये बजट की, जिसके अन्तर्गत श्री देसाई ने वर्ष में ३१ अरब ३२ करोड़ की राजस्व-आय का अनुमान है, कुछ भूल-कियाँ इस प्रकार हैं:

● अजित और अर्जाजित आय पर, वर्गीकृत सीमा से अधिक पृथक् सरचार्ज नहीं लगेंगे। लेकिन मूल आय-कर के १० प्रतिशत पर मौजूदा विधेय सरचार्ज कायम रहेगा।

● निर्धारित वर्ष सन् १९६९-७० से सामान्य संपत्ति-कर की दर में वृद्धि इस प्रकार होगी।

१० लाख रुपये से २० लाख रुपये तक : २ प्रतिशत से बढ़कर २.५ प्रतिशत। २०

लाख रुपये से ऊपर सामान्य संपत्ति पर २.५ प्रतिशत से बढ़कर ३ प्रतिशत।

● करो की चोरी को रोकने के लिए भूमि, नवनों तथा अन्य संपत्तियों का मूल्यांकन कराने के लिए एक विभागीय समन्वय की व्यवस्था की जायगी। इसके अतिरिक्त :

● वड़े-से-बड़े ध्यापर या पेटे के लिए मनोविरोध सम्बन्धी व्यय की अधिकतम राशि ३० हजार रुपये होगी।

● अपनी वास्तविक आय या संपत्ति छिपानेवालों को कठिने-कठना अर्थ-दण्ड दिया जायगा। इसके अन्तर्गत अर्थ-दण्ड की राशि द्विगुणी गयी संपत्ति पर कम-से-कम १००

प्रतिशत और अधि-से-अधिक २०० प्रतिशत कर दी जायगी। नये बजट में कुछ अन्य परिवर्तनों से ४ करोड़ रुपये की हानि होगी। १५ करोड़ रुपये का जो अतिरिक्त राजस्व हाथ आया उसमें से ८.१६ करोड़ राश्यों को मिलेगा।

● नये बजट में कर-रहित नये पञ्चवर्षीय जमा-योजना की घोषणा की गयी है, जिसके अन्तर्गत जमा-कर्ता को ४.५ प्रतिशत वार्षिक व्याज मिलेगा।

● बजट में कुछ नयी वस्तुओं पर भी बंधों वमूल की जायगी। लेकिन इस वमूलों को संपत्ति क्षेत्रों तक ही सीमित रखा जायगा।

सामग्री	दर	उपलब्धि (करोड़ में)
मिष्ठान और चाकलेट	८० पैके प्रति बिलो.	२.४
चमड़े के कपड़े	२५ प्र० घ०	५.४
बाव और ट्राजिस्टर	नमदा. ३ और १६० प्रति	२.६



जीव की ज्ञान

जिसे कुछ भी प्रसिद्ध प्रमाणों पर - १९६८
 इस भाग में स्वयं और परिचित विज्ञान का वर्णन है।
 अठकालीन - १९६८

इस भाग में पढ़ें—

दहान और दिल्ली
 भ्रम इत्यादि की इमारत की तुलना
 वज्र पुनाओ
 यह दोग 'यद् ब्रह्मोमदा'
 भूमिमुपार आशयता और प्रथम
 'यद् विद्याता' अनदा 'कटिस्ती' नवा
 विद्यतास मुक्ति का माया वा कथाइत्याना

२२ मार्च, '६८

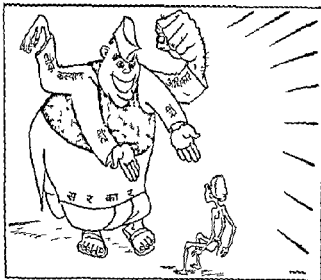
वर्ष २ प्रक १६] [१८ पंते

देहान और दिल्ली

सरकार का बजट भी बाढ़ आधी और तुपान जैसे प्राकृतिक प्रक्रियों की तरह एक प्रयोग ही है जो निमीतो तो पामाल कर देता है और किसीको सुवहाक और मालामाल। वेग में सब लोग काशका में दूते हैं नि पाता नहीं मया बजट निस्सवे लिए वरदान सामग्य और निस्सके लिए विपति। विपत मकी द्वारा पोषित नये-नये कर प्रस्ताव जहाँ कुछ लोगों की मठिनाटयों बगते हैं वही बजट म प्रस्तावित नये छूटें कुछ लोगों के लिए मुनाके भी बहार लाने की जरिमा बनती हैं।

प्रति वर्ष प्राय माच महीने म बजट मपन का अनुमान होता है। बाजार के बडे बडे ब्यापारी उन चीजों का रटाव जमा करने लगते हैं, जिनपर तये कर लगने का उन्हें अनुमान होता है। अगर उनका अनुमान सही हुआ तो वे भारी मुनाका बसा लेते हैं। अगर उनका अनुमान सही साबित नहीं होता तो धाधा उठाने का खतरा भी रहता है।

वित्त मन्त्राधी मोरारजी देसाई ने जिम दिव लोचसभा मे सन् १९६८-६९ का बजट पेश किया उस दिन में एक रात म था। रात के एक बजुर विन्दु दूरे विमान ने जब सुना जि लिफाका पोस्टफाइल और मकीजाइर की दर बडा दी गयी तो उमने बहा— प्राकृतिक प्रयोग स तो हम जुक लेते हैं और फोउ बट्टा अपना बचाव भी कर लेते हैं पर इम सरकारी प्रयोग के



सरकार के हाथ लेने के प्यु, देने के पयु

आगे हम साधारण लोगों की कुछ नहीं चलती है। सरकार जब जितना चाहती है वसूल कर लेती है। लेकिन यही सरकार बड़े-बड़े व्यापारियों और कारबारियों की जेबों को किसी तरह नहीं पकड़ पाती। वे अक्सर वजत में रखी गयी शियायतो का तो भरपूर फायदा उठाते हैं लेकिन जहाँ सरकार को कुछ देने की बात होती है वहाँ कानून की बाँध बचाकर टाल जाते हैं। हर साल आयकर की न जाने कितनी चोरी की रकम व्यापारियों की तिजोरियों की शोभा बढ़ाती है। कड़ी छानबीन करने पर कोई-कोई पकड़ मे आते हैं पर ऐसा बहुत कम ही होता है।”

उसी दिन गाँव के एक भोले किसान ने पूछा—

“भाई जी ! सरकार ने इस साल घाटे का वजत बनाया है। यह घाटे का वजत क्या होता है ?”

“अरे भैया, भाई जी से क्या पूछते हो ? मैं तुम्हे बताता हूँ—” एक मसखरे प्राणीय युवक ने कहा। “देखो ! जिस साल हम लोगों के यहाँ गुड़ की पैदावार कम होती है उस साल रस धोखे समय हम गुड़ में कुछ ज्यादा पानी मिलाकर रस पतला कर लेते हैं। इसी तरह जब सरकार के खजाने मे आमदनी कम होती है तो वह कागज के नोट छापकर खर्च का भुगतान कर देती है।”

“वर्गों भैया ! जब, नोट छापने से ही सरकार का काम चल सकता है तो वह हर साल नये-नये टैक्स क्यों बढ़ाती जाती है ?”

दादा आप बिलकुल भोले हो। जैसे गुड़ मे पानी मिलाने की एक हद होती है वैसे ही नोट छापने की भी। बहुत ज्यादा नोट छाप देने से मेंहगाई सुरक्षा की तरह बढ़ने लगती है।

श्री मोतारजी देसाई ने भारत सरकार का सन् १९६८-६९ का जो वजत लोकसभा मे पेश किया है वह लगभग गाँव के किसान जैसी मजदूरी और पिछड़ेपन का नमूना है। किसान की आमदनी का मुख्य भाग फौजदारी-दीवानी के मुकदमों, मकान, शादी ब्याह, जेवर और तीर्थ यात्रा में खर्च होता है। इन खर्चों के बाद खेती के लिए वह सिर्फ बीज और बेल का इन्तजाम ही कर पाता है। खेती के अच्छे और सुधरे हुए साधन जुटाने की उसके पास पूँजी ही नहीं रह पाती। इसी तरह आज की सरकार की आमदनी का इतना बड़ा हिस्सा फौज, प्रशासन, विदेश विभाग, शानदार इमारतों और बाहरी दिखावे के कामों में खर्च हो जाता है कि देश की पैदावार बढ़ाने और लोगों को काम काज में लगाने-

वाली योजनाओं और कार्यक्रमों के लिए सरकार के खजाने मे पैसा ही नहीं बचता। गाँव का किसान एक तरह के अज्ञान और पिछड़ेपन का शिकार है तो सरकार अनुत्पादक योजनाओं के भूलभुलैया में गिरफ्तार है। जिन कार्यक्रमों और योजनाओं में पूँजी लगाने से बहुत थोड़े समय में देश की पैदावार बढ़ सकती है (जैसे खेतों की सिंचाई और सुधरे हुए औजार) उनके लिए न तो किसान के पास पर्याप्त पूँजी है और न सरकार के पास।

खेती ही भारत की अर्थ व्यवस्था की बुनियाद है इसका ताजा प्रमाण इस साल की अच्छी फगल ने दिया है। बीस वर्षों और अरबों-खरबों की लागत से हासिल कल-कारखानों के उत्पादन ने हमें मेंहगाई और कर्ज के बोझ से दवा दिया है।

हमारे वित्तमंत्री बड़े सुलझे हुए और दूरदर्शी माने जाते हैं। वे आम जनता और सरकारी तन्त्र दोनों के गुण-धर्म के जानकार हैं। उनके द्वारा पेश किये वजत से देश की अर्थ व्यवस्था उन्नत होगी या बिगड़ेगी यह तो आनेवाला समय ही बतायेगा। हम तो आज साफ-साफ देख रहे है कि सरकार के कर मांगनेवाले हाथ जितने सक्रिय हैं, सुरक्षा तथा प्रशासन चलानेवाले हाथ जितने पुष्ट हैं, उसी अनुपात मे लोक-कल्याणकारी हाथ पंगु हैं। सरकारी तंत्र के इस बिरोधाभास को जब तक सरकार दूर नहीं कर पाती तब तक उसकी कार्यक्षमता कुटिल ही रहेगी और वित्तमंत्री के लाख संकल्प करने पर भी राष्ट्रीय वजत पाटे का ही रहेगा। ●

संस्मरण

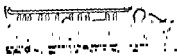
आवश्यकता से अधिक लेना चोरी है

एक दिन की बात है। गांधीजी दोरे पर थे। एक आदमी के घर टहरे थे। गंगा-किनारे का गाँव था। गांधीजी ने पानी माँगा। एक गिलास भर पानी लाया गया। गांधीजी ने दो-एक घूँट पी लिये और गिलास को बड़ी रस दिया। मेजवान ने गट गिलास में बचा पानी फेंक दिया। गांधीजी ने नाराज होकर पूछा, “भाई, पानी इस तरह क्यों फेंक दिया ? हमें कोई अधिकार नहीं है कि हम इस तरह पानी को नाहक खर्च करें।”

“लेकिन बापू, गंगा तो बहती है न ?”

“भाई, वह मेरे जकेले के लिए थोड़े ही बहती है ? आवश्यकता से अधिक लेना एक तरह की चोरी होती है।”

—‘गांधी जीवन दीपिका’ से



ग्रामस्वराज्य की इमारत की बुनियादे

ग्रामागम के बाद सुपपुरा गाँव में एक सवसम्भत ग्राम स्वराज्य सथा बनाने के लिए हत लोग बौगिण करते रहे । इसके लिए गाववालो की एव सथा २४ दिसम्बर ६७ को हत लोगो ने चुनावी । गाँव वा सबसे पवित्र स्थान यतीजी के मन्दिर पर लोगो को एकत्र होने को कहा गया था । काफ़ी प्रतीक्षा और कोगिण के बाद कुल १४ व्यक्ति ही आये जिनमे वरि ५० साल से ऊपर की उमर के ही लोग रहे होने । ऐसी स्थिति देखकर मत मे बड़ी निराशा हुई । १४ लोगो की उपस्थिति मे वैसे ग्राममता बनाने जाय यह एक प्रश्न था । फिर भी उदने ही लोगो ने मिलजुलकर यह सोचा कि इन १४ लोगो की एक तदथ समिति इस बात के लिए गठित कर दी जाय कि यही लोग गाँव भर के लोगो को बुटाकर ग्राम-स्वराज्य सभत बनाने की रिणा मे प्रयत्न करें । साथ ही साथ लोगों ने यह भी तय किया कि जनवरी के अन्त तय आजाय रामभूति को बुलाकर उनको उपस्थिति मे ही ग्रामतना के गठन की पोषण की जाय सथा उन्हीमे पहली बोझा की जाय । यह भी तय हुआ कि मन्विष्य मे तन्थ समिति को बैठक मुन्ने-मुहले हो सथा इन १४ सदस्यो मे जो आमतित बरे उसके दरवाजे पर ही । इस समिति के अध्यक्ष बपोयुद्ध बाबू हरिहर सिंहजी बनाने गये ।

अब पूर्वनिश्चय के अनुसार मुहलेवार बैठक होने लगी । शिश सदस्य ने यहाँ बैठक होती थी वह अपना यह फज समझता था कि सबसे चाय-नायता बराय सथा अपने मुहले के सभी धरो के लोगो को इकट्ठा कर । इस नायबय में हत लोगो को आणा वे बहुत सक्रिय सफलता मिली । लोगो ने बैठकी म उससहजुब भाग लेना शुरू किया । हर मुहले के लोगो ने कुछ ऐसे लोगो वा नाम पेश किया जो गाँव के नाथ में सक्रिय भाग ले सके । इसी बीच गाँववालो ने आचार्य रामभूतिजी का समय माँगा और उन्हीने २ फरवरी वा समय

भी दे दिया । इन आयोजन के प्रबन्ध का साथ जिम्मा भी गाँव के लोगो ने आपत म बाँट लिया । धीरे धीरे लोग वा उससाह यत्ना गया यहाँ तक कि एकदुबरे के विरोधी भी एकदुबरे के यहाँ बैठको मे याग लेने के लिए जाने लगे ।

इस प्रकार कुल ६ बैठके हुई । अन्त मे गाव के सभी लोगो की सम्मिलित बैठक भी हुई जिसमें यह तय किया गया कि गाँव के चारो मुहले से साय-साय व्यक्तियो को लेकर २५ लोगो की एव ग्रामस्वराज्य समिति बना ली जाय । इसमे चुनाव त करने जो लोग अपनी मज्जी से गाव की सेवा करना चाहते हो उनका नाम सवसम्भति से स्वीकार कर लिया जाय । स्थान तय हुआ यतीजी वा पवित्र चबूतरा यहाँ लोग सन्धे मत से अपना नाम दें । पहली फरवरी का दिन तय हुआ । गाव के उत्साही युवचो व बुढुरी ने बडे ही उत्साह से पूरे गाँव को एकत्र करने का अन्त परिधम किया और यह प्रयास निष्फल भी गयी गया । गाव को चार वजे से यतीजी के चबूतरा पर लोग जुटने लगे । २८ की जगह ४९ लोगो ने अपना नाम लिखाया । उस दिन इती काम मे बाफो देर हो गयी इस लिए अध्यक्ष और मंत्री आदि का चुनाव न ही सथा ।

२ फरवरी की माचायनी बाये । उनका स्वागत करने के लिए गाँववालो ने उत्साही युवक भी बाके सिहू की सलिया भेजा था । दिन भर उनका ब्यस्त कायबन्ध रहा । लोगो ने बडे चाब से ग्रामदान की बातें सुनी । अन्त मे यह महसूस किया कि वास्तव में गाँव की मलाई यदि किसी तरह हो सक्ती है तो ग्रामदान द्वारा ही । रात सत बने से पीछी एव प्रानोत्तर गुप्त हुए । बहुत समय लथा । अध्यक्ष वा चुनाव पुन टल गया क्योंकि देर हो गयी थी ।

पुरानी तदथ समिति विघटित हो गयी । आगे की गोछी बुलाने के लिए भी वीरे विहू को समोचन चुना गया । ६ फरवरी को पचासत घर मे बैठक हुई । इस बीच चुनाव की बारी बर्बा रही । यह असम्भव ही लगता था कि सारा काम निविरोध हो जायगा । इसका वातावरण बनाने बाय काम हत लोगो ने किया । अन्त मे निविरोध चुनाव हुआ । सवसम्भति से समिति चुनी गयी ।

इस समिति ने अथने बाय के लिए कुछ मुद्दे तय किये

१ गाँव के सयठन बी और भी मन्वकृत बनाने की सपनाधार कोनिग की जाय । पूरी तरह से गाँव अवालत मुक्त हो जाय ।

२. ग्रामदान में शतप्रतिशत लोगों को शामिल करने का प्रयास किया जाय।

३. आम रास्तों पर रोशनी का प्रबंध किया जाय।

४. शान्ति-सेना का गठन किया जाय।

इस कार्य-समिति का कार्यकाल १ वर्ष तक यानी होली-से-होली तक रहेगा। कार्य-समिति को बैठकें पाक्षिक एवं सभा की मासिक हुआ करेंगी।

गांव के शिक्षक-वर्ग ने भी इस कार्य को सफल बनाने में अग्रवर्दी की। इस समिति को दरावर शक्तिसाली बनाये रखने के लिए अब आगे भी वे कोशिश करते रहेंगे।

—कमलापति

गांधी-संस्मरण

कर्ज चुकाओ

एक दिन एक गौजवान गांधीजी से मिलने आया। पढ़ा-लिखा था, धनी घर का बेटा था।

गांधीजी ने पूछा, "बताओ, कितना पढ़े हो?"

"लातक हूँ विश्व-विद्यालय का।"

"तो तुम्हारी पढ़ाई का खर्च कितने किया?"

"घरवालों ने ही तो किया।"

"पैसा कहाँ पैदा होता है, जानते हो?"

"जी हाँ, व्यापार से।"

"नहीं, सही धन पैदा करते हैं किसान और मजदूर। सच्चा धन थम से पैदा होता है। उन्हींके पैसों से तुम्हारी पढ़ाई हुई है।"

"लेकिन बापू, इसमें भेरा क्या बसूर है?"

"मैं कहाँ तुम्हें दोषी ठहराता हूँ। किसीके घर में पैदा होना यह हमारे बस की बात नहीं होती। लेकिन एक बात जरूर है।"

"क्या बापू?"

"जिनके पसीने के पैसे से पढ़े हो, उनका भला भी तो कुछ करना चाहिए।"

"हाँ बापू।"

"तो क्या करोगे?"

"बापू, अब शहर का आदी हो गया हूँ, देहात में थोड़े ही जा सकूँगा।"

"नहीं जा सकते तो भले न जाओ, लेकिन कुछ तो चुकाओने कर्जा?"

"हाँ, बतलाइये, मैं क्या करूँ?"

"मैं बनिया हूँ, किसीको ऐसे-बैसे नहीं छोड़ूँगा। तो ऐसा करो न, तुम अपनी कमाई में से एक महीने की कमाई इनके लिए दे दो। कुछ बढ़ी बात नहीं है। अगर एक सेबक की जिम्मेदारी इस तरह के शहर के बाख्द-मन्त्रह लोग उठा लें तो गाँव की हालत जरूर बदल जायगी। जब शहर के लोग देहातों की ओर वहाँ के घरों की चिन्त करने लगेंगे तभी देव की हालत सुधरेगी, क्योंकि आगिर भारत देहात में ही तो बना है।"

—यदुनाथ धते

राष्ट्रीय गांधी शताब्दी समिति

जन-सम्पर्क-समिति : ४, राजघाट कालोनी,

नयी दिल्ली-१

भारत की गांधी-विचार की पत्रिकाएँ

पत्रिकाएँ	वार्षिक चन्दा	स्थान
१. मंगली न्यूज लेटर (मासिक अग्रेश)	१०.००	वाराणसी
२. गाँव की बात (पाक्षिक हिन्दी)	४.००	वाराणसी
३. भूदान तहरीक (पाक्षिक उर्दू)	४.००	वाराणसी
४. गांधी के पथ पर (मासिक हिन्दी)	४.००	सेवापुरी
५. आरोग्य (मासिक हिन्दी)	५.००	गोरखपुर

उपरोक्त पत्रिकाओं पर शाहको को २५ प्रतिशत की रियायत। कुपमा ३१ मार्च १९६८ तक चन्दा भेजकर इस रियायत का लाभ उठावें।



समा में आना चाहिए था। इस बात पर धोताओं की सली
 पोती देर नहीं लगी। मुसिया लोग कुछ सक्कना से गये।

कुछ समय बाद फिर वह समय आया कि दुबारा उस
 गाँव के पास ही के गाँव में उन्हीं बहिन भभी का आयमन हुआ।
 फिर गाँव में समा जुटी और इन बार में बहिनजी यह देखकर
 बहुत खुश हुई कि स्त्रियों का एक समूह-ना-समूह समा में
 उपस्थित है। वे उत्साहपूर्वक देव के निर्माण में बहिनो के योगदान
 की बात सुनाने लगी। देर तक यह समाकाली रही कि परदा प्रथा
 का अन्त होना चाहिए। स्त्रियों को पुरुषों के साथ कर्म-के-कर्म
 मिटाकर हर काम में साथ देना चाहिए आदि-आदि।

यह हॉम ! यह टफोसला !!

गाँवों में आरंभ भाँके घराना की स्त्रियों बाहर नहीं निक
 लती। यह भी कहा जाता है कि जिस घर में स्त्रियों जितना
 बच बाहर निकलती हैं, वह घर उतना ही कुलीन और ऊँचा है।

यदि किसी बहिन को घरों में बिनो बहिन स मिलने जाना
 हो तो वह सबसे शेर म स्त्रियण पूटने में पहले के अंपिगारे ब्रुट
 पुटे में या रात के पहले बहुर में घर में निरलपर उनी बिल्ली का
 तरह सपाटे में एन द्वार में कुतरे द्वार तक जायगी। जब दूसरे
 लोगों का आवागमन कम होता है उस समय उसकी कुछ हद का
 निर्भयता होती है। लम्बे वृष्ट के अलावा भारी चादर से देह
 को ढकरीमुपा बनाकर निरलना तो और भी ऊँचे शेर कुलीन
 वर्ग की निर्माली माना जाता है। ऐसी परदा प्रथा से पीडित
 उस गाँव में बिहार की एन पत्नी की आगमन हुआ।

अयोग-यमेश के गाँव के मुसिया लोगों ने उनकी समा का
 आयोजन किया था। कोई बहिन समा में बोलनेवाली है, यह
 भी सरकार के एक विभाग की पत्नी है इस उषर को सुनकर
 बर्फी मोड एनचु हो गयी थी। समा-मध पर स्थानीय नेताओं
 के पिरी उस बहिन पत्नी की वे आलावा पूरी समा में गाँव की
 दूसरी कोई स्त्री नहीं थी। समा में उपस्थित लोगों को एक बार
 गौर से देगनी हुई पत्नी की वे अवाजक सावाल किया—'तया
 इन गाँव में कोई बहिन नहीं रहती?' क्या यहाँ स्त्रियों की समा
 में आना मना है? यह वेना गाँव है, जहाँ पुरुष-समाज में उन्हें
 बहुरासीवारी में बेर कर रखा है? आश्चर्य है कि देसाभर म
 स्त्री-समाज देन के हर काम में पूरी तरह भाग ले रहा है, जोर
 दहाँ का स्त्री-समाज अभी तक जड़ बना हुआ है। आगे उन्होंने
 मुसिया से कहा कि वह आगे-आगे धरी में निवास को लेबर

समा विमान हो चुकी थी, बहिनो भी चली गयी थी।

मेरे मन में मुसिया परिवार की बहिनो से पर धर जावर
 मिलने की इच्छा हुई। आ मैं एन परिवार म गयी। मुसियाजी
 की धमपत्नी से मने बहा, यह चित्तनी खुशी की बात है कि
 अब लोग इस बात की आवश्यकता समझने लगे हैं कि किसी
 भी समाओं में उपस्थित होकर समाज के काम में भाग लें।'

इस पर मुसियाओं की धर्मपत्नी वीव में ही बोल उठी—
 'बहिन, क्या दिखाना। हम लोगों में मे कोई भी समा में नहीं
 गया था। हम लोग जा भी नहीं सकती। वह जो ओखो का
 मुष्ट था, हटिकवो की ओखो को गाँव पर दारुदा बरसे मेजा
 गया था, ताकि मँथी बहिनजी मुसिया लोगों को उठि नहीं।
 बहिनजी, यही सब तो 'पायसी डाँठ' है। जब कोई नेता जाता
 है तो समा में वारी पहिलवर जाती है और नीच जाति की औरतो
 को साडे पर दबड़ा बर देते हैं।'

मैं सुनवाए सुनती रह गयी। यह एन ऐसे रहस्य का
 उद्घाटन था, जिसने कनेन प्रन मेरे सामने खचे बर दिने।
 एन छुल-नी हुई वर। यह टोग, यह कलेव बब सिंठिया ?
 नव गाँव आगेना और सातव बब पुरानी स्त्रियों की छोडकर
 समसराती में साथ नवा समाज बनाने में लगेना ? बब आशिर
 बब ?

—प्रना



'थड्डकिलासी' जनता : 'फस्टकिलासी' नेता

गाड़ी में इनमीमान को जगह मिल गयी हो बहोरल ने सतोग की सत लेते हुए कहा, "देस ली न मुखियाजी, दिल्ली की दुनिया ? यही है हम लोगो के भायविपाताओ की इन्द्रपुरी। यही जाने के लिए नेताजी लोग पाँच साल में एक बार हम गतेवो के दरवाने की मिट्टी अपने सूतो की दृष्ट से खोद डालते हैं। पस, हमारी 'सेवा' का मौका पाने के लिए बेचारे इतनी मारधाड मचाते हैं कि दया आती है दस पर।"

"देस ली बहोरल, दिल्ली की दुनिया देख लो। जिनगी की साथ पूरी हो गयी। पुरसे लोग मरने के बाद इन्द्रलोक जाते थे, हम इस बलियुग में जीतेजी आये और रहनर अपने मृत्युलोक में लौट भी रहे हैं। बाहर री दिल्ली!" मुखियाजी ने गम्भीर साँस ली।

गाड़ी में भीड़ नहीं थी। नेता बाबू ने बड़ी अच्छी गाड़ी बतानी थी। बहोरल मन-ही-मन सोच रहा था। लेकिन मुखियाजी को यह बात अब भी सटव रही थी। उन्होंने जब नेता बाबू से पूछा था, "नेता बाबू, आपरो विरपा से हमलोग दिल्ली दूर भूमे, अब बताइये, घर जाने के लिए गाड़ी कौनसी ठोक होगी?" "जनता।" नेता बाबू ने कहा था। 'जनता गाड़ी ? क्या उसमें सब 'जनता' ही बैठती है, और बोर्ड नहीं ?" मुखियाजी ने अचरज से पूछा था। "जनता गाड़ी में सब 'थड्डकिलास' का डम्बा होता है मुखियाजी, इसीलिए उसे 'जनता गाड़ी' कहते हैं। भीड़ भी इस गाड़ी में बस होती है। आप लोग आराम से घर पहुँच जायेंगे।" नेता बाबू ने समझाया था। "तब तो आप भी दशो गाड़ी से घर आते-आते ही नेता बाबू ?" "नहीं मुखियाजी, बात यह है कि हम लोगो के पास 'फस्टकिलास' का पास होता है। इसलिए हम दूसरी गाड़ी से जाते हैं, जिनमें 'फस्टकिलास' का डम्बा लगता है। 'जनता' में 'थड्डकिलास' नहीं होता।" मुखियाजी के सवाल का जवाब

नेता बाबू ने दिया था। नेता बाबू को यह बात सुनकर बहोरल उमड्ड-गँवार की तरह कह बैठा था, "नेता बाबू, अपने देस की 'जनता' सचमुच 'थड्डकिलासी' है, नहीं तो आप 'जनता' के सेवन लोग 'फस्टकिलासी' कैसे बन पाते ?" मुखियाजी ने उस समय बहोरल को बुरी तरह डाँट दिया था। लेकिन दिल में वह बात तब से ही कुरेद रही है। "कमो-कमो लगता कि बहोरल ने ठीक ही कहा था, कि हमारे देस की जनता 'थड्डकिलासी' है, नहीं तो इसी जनता की सेवा का नाम लेकर 'थड्डकिलासी' लोग ही-ही में 'फस्टकिलासी' कैसे बन जाते ?" मुखियाजी सोच रहे थे, और गाड़ी दिल्ली के ऊँचे-ऊँचे महलों, भीड़भरी सडको और विजली की जगमगाहट से दूर भाग रही थी।

मुखियाजी गाँव से कमी इतनी दूर नहीं गये थे। लालसा दिल में बहुत थी कि शक्तिम समय में चारों धाम तीरथ बर ले, लेकिन न जाने क्यों, ऐन मोने पर बोर्ड-न-बोर्ड भ्रमणत वा ही आती थी।

मुखियाजी अब नाम के ही मुखिया हैं। वेते गाँव में लोग बडा आदर करते हैं। मुखियाजी का एच ही सडना था, जो सत्र '४२ की तोड-फोड में १५ साल की उमिर में ही पुलिस की गोली का शिकार हुआ था। मुखियाजी की पत्नी पुत्र विमोय अथिच दिने तब नहीं सह सकी थी, दुख-दर्द की काली छाया उनके जीवन पर पडी तो फिर हटो नहीं, और ३५ साल के अन्दर-अन्दर मुखियाजी की अवेला छोडकर वह भी चल बसी। तब से मुखियाजी अवेले हैं। दुस की काली रात या मुस की मुनहली मुबह, सब उनके लिए तब से बराबर हो गयी।

लेकिन इसके बावजूद मुखियाजी जीवतवाले जीव थे। दिल में दर्द पैदा हुआ, लेकिन सङ्कित नहीं हुआ। पूरा गाँव ही जैसे उनके लिए परिवार बन गया है। आसख में बोर्डे जितना भी भगदे, मुखियाजी की चौपाल ब आने पर सारे बैर भाव चमरोथे झूटे भी तख् बाहर ही छूट जाते हैं।

गाड़ी भागती चली जा रही थी। दूर-दरराज के गाँवो में जल रहे छिटपुट विरपा भिल्लमिला रहे थे। (ममय)





भूमि-सुधार : आवश्यकता और प्रयोग

आजकल भूमि-सुधार का नारा बहुत जोरों से चल रहा है। भूमि-सुधार से ही देश में अन्न की समृद्धि होगी ऐसा नेताओं का कहना है। यह बात सही है, परन्तु भूमि-सुधार का मतलब 'सीलिंग' लगाना या कानूनी मालिकपत्र आदि में परिवर्तन करना ही नहीं है। गाँव की जमीन की रचना प्रकृति के आधार पर करनी होगी। बरसात के पानी तथा जमीन के अन्दर की तरी (पनिहाई) के आधार पर भूमि को पुनः रचना करनी पड़ेगी। इस प्रकार की रचना तभी सम्भव है, जब कि जमीन की व्यक्तिकृत मालिकी खत्म होगी।

भूमि की वर्तमान रचना को कायम रखकर चाहे जितनी भी पंचवर्षीय योजनाएँ बनेंगी, अपना देश अन्न में स्वावलम्बी नहीं हो सकता। पानी के निकास की अच्छी व्यवस्था किये बिना फसल की वृद्धि सम्भव नहीं है। आज ऐसी परिस्थिति है कि एक एकड़ के पानी की निकासी की अच्छी व्यवस्था करनी हो तो पचासों एकड़ की वर्तमान जमीन की रचना तोड़नी होगी।

देश में करीब-करीब बरसात निश्चित समय पर आकर चली जाती है। 'सीलिंग' से या कानून से बरसात के समय में अदल-बदल नहीं किया जा सकता। यह तो प्रकृति का नियम है। आज भूमि की रचना ऐसी है कि २५ मिलीमीटर (१ इंच) वर्षा का पानी सहन नहीं कर सकती है। वर्तमान भूमि की रचना ही बाढ़ तथा अकाल के लिए बरदान है।

भूमि-सुधार, भूमि-समस्या तथा कृषि पर गहराई से अनुसन्धान करना होगा ऐसा विचार मेरे मन में बहुत दिनों से चल रहा था।

जब भारत-चीन सीमा पर लड़ाई आरम्भ हुई तो यह अन्दाज लगाना असम्भव नहीं था कि देश के खाद्यान्न पर बुरा असर पड़नेवाला है। अतः अपना फर्ज है कि अधिक

उत्पादन की व्यवस्था की जाय। परन्तु उसके लिए सिंचाई की व्यवस्था करनी होगी और थर्म-शक्ति का पूरा उपयोग करना होगा। ऊपर लिख चुका हूँ कि पानी के निकास की अच्छी व्यवस्था किये बिना फसल की वृद्धि सम्भव नहीं है। सोचते-सोचते एक माह निकल गया। पहले भूमि-सुधार का कार्य आरम्भ करना था। एकदम कृषि के अयोग्य धनघोर जंगल में भूमि-सुधार का काम ३-११-६२ के दिन रणरंग में आरम्भ हुआ।

मिट्टी काटकर १४३ हेक्टर (३५८ एकड़) भूमि समतल की गयी और घान रोपने लायक खेत बनाया गया। ०.४३ हेक्टर में ०.१५ हेक्टर गाँव की जिरायत भूमि है, बाकी जमीन खेती के अयोग्य जंगल थी, जो सरकार की थी। सरकारी आफिसरों से मिलकर बातचीत की। उन्हें दरखास्त दी, परन्तु उसका कोई परिणाम नहीं निकला। यह जमीन खेतों के इतनी अयोग्य थी कि यदि आदमी जंगल में घूमते समय गिर जाय तो ६०-७० फुट तक नीचे लुढ़कता चला जाय। छोटे-छोटे पेड़ आदि लगभग २०० थे। एक छोटा-सा नाला था, जिसके दोनों बाजू की जमीन की ढाल २० से ५० डिग्री तक थी। १० फुट तक ऊँची-नीची मिट्टी के ढेले थे। मिट्टी एकदम कनिष्ठ दर्जे की थी। कहीं-कहीं मुरम तथा कहीं-कहीं पत्थर के चट्टान भी थे। २५ × १० फुट मिट्टी की दीवाल जैसी थी। और २७ छोटी-बड़ी खाइयाँ थी।

१४३ हेक्टर भूमि के सुधार में ६,३७० रुपये का खर्च हुआ। ५ लाख ६८ हजार धनफुट मिट्टी काटी गयी।

कुल छोटे-छोटे १४ डूबड़े (प्लाट) थे। सन् १९६८ में सभी डूबड़ों में घान की रोपाई हो सकेगी। १५० मिलीमीटर (६ इंच) वर्षा का पानी सहन करने के बाँध बने हैं। सभी डूबड़ों में पानी के निकास की सुविधा है। पूरी जमीन में सिंचाई की व्यवस्था है।

—गोविंद रेड्डी



'यद्भक्तिवासी' जनता : 'फस्टक्लिवासी' नेता

गाड़ी में इनमोमन की जगह मिल गयी थी बहोरल ने सड़ोप की बात लेते हुए कहा, "देख लो न मुधियाजी, दिल्ली की दुनिया ? यही है हम लोगों के भाग्यविधाताओं की इच्छुरी ? यही माने के लिए नेताओं लोग गाँव साल में एक बार हूँ गरीषा के दरवाने की विन्तु अपने कुठो की राग से खोर बालते हैं। बग, हमारो 'देवा' का मोहरा पाने के लिए वेघारे इतनी मारघाट मचाने हैं कि इका आली है इत पर।"

"देख लो बहोरल, दिल्ली की दुनिया देख ली ! जिनिकी की राष पूरी हो गयी। घुरो लोष माने के बाद इतलोष माने के, हूँ दूध बन्धिया म जीनेकी आये और खूरर अपने मुखलीर में लोड भी रहे हैं। गाड़ी की दिल्ली !" मुधियाजी ने अन्धरी घोष ली।

गाड़ो में मोड नहीं थी। नेता बाहू ने बारी अन्धरी गाड़ी बगानी थी। बहोरल मन-की-मन घोष रूठा था। लेकिन मुधियाजी को यह बात अब भी साटक रही थी। उन्होंने खन नेता बाहू से पूछा था, "नेता बाहू, आरती रिखा से हमलोष दिल्ली शूर अब बजारो घर जाने के लिए गाड़ी कौनकी डीर होयी ?" "जनता !" नेता बाहू ने कहा था। "जनता गाड़ी ? क्या उतम हाव 'जनता ही बेली है, और कोई नहीं ?" मुधियाजी ने अन्धरन से पूछा था। "जनता गाड़ी में हाव 'घरुडकितासी' का इका होना है मुधियाजी इनीलिए उके 'जनता गाड़ी' बटने हैं। मोड भी इन गाड़ी में बच होनी है। काग लोग आराम से घर पूँच जायेंगे।" नेता बाहू ने छमममप था। "अब लो आग भी इयो गाड़ी से घर आते-आते होये नेता बाहू ?" "नहीं मुधियाजी, बात यह है कि हूँ मोघों के पाल 'घरुडकिताम' का पाम होना है। इसलिए हूँ दूसरी गाड़ो के जाते हैं, विषयें 'घरुडकिताम' का डिन्ना सपा है। 'जनता' में 'घरुडकिताम' नहीं होना।" मुधियाजी के उवाक का अन्धर

नेता बाहू ने दिया था। नेता बाहू को यह बात सुनकर बहोरल उबटुट-गैवार की तरह बहू खेड था, "नेता बाहू, आपने देवा की 'जनता' सचमुच 'घरुडकितासी' है, यही तो आप 'जनता' के मेघर लोग 'घरुडकितासी' बैठे बन पाते ?" मुधियाजी ने उस छमप बहोरल को बुधी तरह डाँट दिया था। लेकिन दिल में बहू बात तब से ही कुपेद रही है। 'बन्धो-बन्धो सगता कि बहोरल ने डीर ही बहा था, कि हमारो देवा की जनता 'घरुडकितासी' है, यही तो इयो जनता की सेवा का नाम लेबर 'घरुडकितासी' लोग हों-हीं में 'घरुडकितासी' बैठे बन जाते ?" मुधियाजी सोच रहे थे, और गाड़ी दिल्ली के ऊँचे-ऊँचे बहूला, मोडभरी गडबरो और बिजली की जगमगाहट ने दूर भाष रही थी।

मुधियाजी काँव से बन्धी इतनी दूर नहीं गये थे। लालघा दिल में बहूव की कि अन्धिम समय में पाया पाव हीरष पर लें, लेकिन त जाने गये, ऐन मोघे पर कोई-न-कोई भमट था ही जाती थी।

मुधियाजी अब नाम के ही मुधिया हैं। वेगै गाँव म लोग दवा आदर करते हैं। मुधियाजी का एक ही सडवा था, जो सड '५२ की लोड-पीड में १५ सान की उमिर म ही पुलिंग की गेली का विचार हुआ था। मुधियाजी की बली पुन विचोष अधिष दिवो तक नहीं सड सनी थी, हुन-दर-ही बाली छाया उनके शीबन पर पडे तो फिर हूरी नहीं, और ३५ साल के अन्धर अन्धर मुधियाजी को बनेरन छोडकर बहू भी चल बसी। तब से मुधियाजी अनेने हैं। दुप की बाली रात का मुष की मुगहली मुषू, सब उनके लिए तब से बरदाबर हो गये।

लेकिन इनके बावजूद मुधियाजी जीवटपाके जीव थे। दिल में दर्द पैदा हुआ लेकिन सगुचित नहीं हुआ। पूरा सड ही जेजे उनके लिए परिहार बन गया है। कागल में कोई चिन्ता भी भगडे, मुधियाजी की पीताल में आने पर सारे बँर माव बघरीये कुते की वखू बाहर ही छूट जाते हैं।

गाड़ी मालती बली वा रूठी थी। दूर-दराज के गाँव में जल रहे दिग्गुड विराग भिन्निता रहे थे। (अन्धर)





● अनगिनत घरों तथा गाँवों को ध्वस्त किया तथा कई लोगों को उनकी इच्छा के विरुद्ध घर छोड़कर दूसरी जगह जाने को मजबूर किया।

● ५ हजार लोगों को या तो अति निकाल दी गयी या उनको जीवित दफनाया गया।

● ३० हजार औरतों का शीलभंग किया गया, जिनमें अधिकांश वीध भिक्षुणियाँ थीं।

● हमारों एकड़ जोतने योग्य उपजाऊ जमीन को जहरीले रासायनों द्वारा बेकार किया गया। इसके कारण बहुत-से लोग तथा पशु भी मारे गये।

वियतनाम

मुक्ति का मोर्चा या कसाईखाना

पूँजीवादी देशों में सरकारी नीति के कारण नफाखोरी की प्रवृत्ति बराबर बढ़ती जाती है। यह भी सच है कि युद्ध के समय पूँजीवादी देशों के उद्योगपतियों का अधिक-से-अधिक लाभ होता है।

अपने देश से दस हजार मील दूर जाकर वियतनाम में युद्ध करने के कारण अमरीका का सैनिक-व्यय दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है। सन् १९३५ में अमरीका अपने राष्ट्रीय उत्पादन का १० प्रतिशत सुरक्षा पर खर्च करता था। किन्तु सन् १९६० तक इसमें इतनी वृद्धि हुई कि युद्ध में १० प्रतिशत की जगह ५८ प्रतिशत व्यय होने लगा।

आज वियतनाम में अमरीका प्रतिदिन ७ करोड़ रुपये व्यय कर रहा है। इस युद्ध में उसके १ लाख से अधिक जवान मारे गये। दूसरे महायुद्ध में अमरीका ने जितनी बम-बर्षा सारे यूरोप में नहीं की थी, उतनी वियतनाम जैसे छोटे से राष्ट्र पर की है।

अमरीका के प्रसिद्ध समाजविज्ञ डा० शोरोमिन ने अमरीका वियतनाम में क्या कर रहा है, इसका विवरण इस प्रकार दिया है :

- अब तक १ लाख ७० हजार लोगों को मार डाला।
- बमबारी द्वारा तथा यंत्रणा देकर ८ लाख लोगों को घायल किया।
- १ हजार कैदखानों में ८ लाख से अधिक बन्दी रखे हैं।

अमरीकों का ये स-सदस्य जार्ज ब्राउन ने अपने भाषण में कहा है, "मेरा देश वियतनाम में आज जो नीति अपना रहा है, वह हमारे इतिहास में सबसे दुःख एवं अनैतिक है। इस युद्ध द्वारा हमारे लोगों का चरित्र बिगड़ रहा है। उनकी नीच प्रवृत्तियाँ बलवती हो रही हैं। वियतनाम में चलनेवाली उड़ाई के लिए, जो इतनी दूर हो रही है, अमेरिका अपने युवकों को अनिवार्य रूप से सेना में भर्ती किये जाता है। यदि युवक इन्कार करते हैं तो उन्हें जेल भेजा जाता है। एक ओर अमरीकी युवकों को बलि पर चढ़ाया जा रहा है और दूसरी ओर उद्योगपति परिस्थिति का नाजायज लाभ उठाने दोनो हाथों से पैसा बटोर रहे हैं।"

"बिजनेस वीक" नाम के एक पत्र के अनुसार वियतनाम में युद्ध-सामग्री भेजकर कई उद्योगपतियों ने अपार धन कमाया है। बाज उन्हें दो रुपये की बस्तु के लिए सरकार की ओर से लगभग १७५ रुपये तक मिल जाते हैं।

लोगों पर युद्धकर लगाने के बदले सरकार सैनिक-सामान सामत मूल्य पर क्यों नहीं खरीदती? यदि अमरीकी जनता इस बात पर डट जाय कि जब तक युद्ध का सामान श्रममूल्य पर खरीदकर वह नफाखोरी बन्द नहीं की जाती, तब तक देश के एक भी युवक को अनिवार्य भर्ती नहीं हो सक्ती, तो उस के देश राष्ट्रीय दृष्टिकोण में महान परिवर्तन आयेगा। इससे उद्योगपति भी अपनी दैवभक्ति का परिचय दे सकेगे। हो सकता है कि सरकार की इस नीति के कारण वियतनाम युद्ध ही बन्द हो जाय, क्योंकि इससे नफाखोरी को स्वार्थ-पूर्ति नहीं होगी।
(गांधी द्वाारा प्रतिष्ठान के साजग्य से)।

'गाँव की बात'। वार्षिक चर्चा : चार रुपये, एक प्रति : अठाइरू पैसे।

श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व-सेवा-संघ के लिए प्रकाशित एवं स्वैच्छितान प्रेस, मानसमंदिर, बाराणसी में मुद्रित।

→बो भाषा में बहना हो, तो जो भ्रमवाचन के लिए 'नपुंसक' बना होगा, उगोना यह नाम है। ईश्वरमसीह ने बड़ा विलक्षण शब्द दस्तेमाल किया। ब्रह्मविद्या मन्दिर के जरिये मैं जो चाहता हूँ, वह यह चीज है। स्त्री-पुरुष दोनों को साधु होनेवाला यह शब्द है। अनाश्रयकर इजहार

एक बार रवीन्द्रनाथ ठाकुर के किसी उपन्यास का तर्जुमा हिन्दी में होने लगा। रवीन्द्रनाथ की सिखावन रही कि मूल उपन्यास में तो लिंग नहीं है, लेकिन अनुवाद में अलग-अलग लिंग दस्तेमाल किया गया है। बगाली भाषा में त्रियापद में और सर्वनाम में लिंग नहीं है (आजकल उन लोगों ने नाहक नया लिंग शुरू कर दिया है। जैसे- विद्यावान और विद्यावती। असमिया भाषा में भी यह शुरू हुआ है—'रसमय भक्ति' के बदले 'रसमयी भक्ति' कर दिया है।) उस हालत में उनका जो वाक्य बगता है, वह लिंगविहीन बनता है और उसका तर्जुमा जब हिन्दी में करते हैं, तब लिंगयुक्त हो जाता है।

हिन्दी में दो वाक्य होंगे—'भै जाता हूँ,' 'भै जानी हूँ।' गमन क्रिया के साथ-साथ एक अनावश्यक जाहिरात करनी पड़ेगी कि मैं 'स्त्री' हूँ या 'पुरुष' हूँ। किसी क्रिया के साथ-साथ स्त्री हो या पुरुष है, इसका इजहार करते जाना कोई अच्छा लक्षण नहीं है। लेकिन वह चलना है। हिन्दी का यह शोध बगला-असमिया में नहीं है। भाषा का विशेष मूहम प्रयोग है, इसलिए इसकी शुरु हो कह सकते हैं। लेकिन सस्कृत में यह सूची है कि उसको टालना चाहें तो टाल भी सकते हैं, रखना चाहें, तो रख भी सकते हैं। 'सः गतः', 'सा गता'। 'सः अगच्छत्', 'सा अगच्छत्'। अगच्छत् त्रियापद में कोई फरक नहीं हुआ। सस्कृत के टालनेवाले प्रयोग से बगला, असमिया निकली और रखनेवाले प्रयोग से हिन्दी, गुजराती, मराठी निकली। ये कहना यह चाहता था कि रवीन्द्रनाथ को हिन्दी तर्जुमा बड़ा विचित्र लगा। 'जहाँ मैं लिंगरहित लिख रहा हूँ और जहाँ लिंग बनाने की कोई अपेक्षा भी नहीं है, वहाँ नाहक लिंग दाखिल करते

खादी-ग्रामोद्योग की भावी दिशा

पानीपत-सम्मेलन के निर्णय

खादी आधम, पानीपत में गत २८ और २९ फरवरी को सर्व सेवा संघ की प्रबन्ध समिति और खादी-ग्रामोद्योग प्रामत्तराज्य समिति की संयुक्त बैठक हुई और उसके बाद वही पर २ और ३ मार्च को अखिल भारत खादी-कार्यकर्ता सम्मेलन भी हुआ।

नवदोषधाम (बगाल) में फरवरी, '६३ में इसी तरह का अखिल भारतीय सम्मेलन विनोबाजी की उपस्थिति में हुआ था और सरकार की सहायता, बिन्नी—'रीबेट' के बदले मुफ्त बुनाई के स्वरूप में लेने का निर्णय लिया गया था। खादी-कार्य की पटरी सरकारामिमुख या नगरामिमुख के बदले ग्रामामिमुख की दिशा में मोड़ने तथा परिवार में कटाई करनेवालों को बेचल रुई के दाम में खादी प्राप्त हो सके और क्षेत्रीय वस्त्र-स्वावलम्बन की दिशा में खादी का नाम तेजी से बढ़ सके, इस उद्देश्य से यह मौलिक परिवर्तन किया गया था। उसी सम्मेलन में विनोबाजी ने खादी की लड़ाई—अल्पिण और सर्वोत्तम—की क्रान्तिकारी घोषणा की थी।

पिछले चार वर्षों में उपर्युक्त उद्देश्य की दिशा में खादी-कार्य कुछ खाद्य प्रगति नहीं कर सका। इसलिए फिर ये सोचने के लिए यह सम्मेलन बुलाया गया था। खादी-ग्रामोद्योग के जैसे विकेंद्रित कुटीरोद्योग ही भारत की वर्तमान परिस्थिति में देश की बहुसंख्य ग्रामीण जनता को आर्थिक और

वृष्टि वदलें
मेरा ख्याल है कि उन्होंने ठीक कहा; क्योंकि उसमें वृष्टि का सवाल है, भाषा-प्रयोग का सवाल नहीं। इसलिए मैंने कहा कि तुम लोग नपुंसक बनो। अगर नपुंसकत्व समाज में रूढ़ होगा तो समाज में स्त्रियों के प्रति जो गलत धारणा रूढ़ हो गयी है, उसका निरासन हो सकता है।

३१-१०-'६४

सामाजिक स्वतंत्रता प्रदान कर सकती है, यह खादी-ग्रामोद्योग के पीछे दृष्टि रखी है। इस गठान और मौलिक दृष्टि को खादी-ग्रामोद्योग के सभी कार्यकर्ता ठीक तरह से समझ लें और एक ध्येयवाद सामने रखकर काम करें तो खादी-ग्रामोद्योग कार्य तेजस्वी रूप धारण कर सकता है, इस बात को स्पष्ट रूप से ध्यापित करने की आवश्यकता थी सरकारवा देव ने बैठक के सामने रखी।

सामोण जनता कृपि पर निर्भर है। और कृषि के साथ गोपालन, खादी, ग्रामोद्योग और अन्य छोटे-मोटे कुटीरोद्योगों के आधार पर एक समन्वित योजना गाँवों के लिए उपन्यास हागी, इस दृष्टिकोण को देखभाल देने बैठक के सामने रखा। आत्मनिर्भरता और आत्मगौरव की भावना देश में खानी चाहिए और आधुनिकतम विज्ञान की तथा अर्थ-दायित्वों की सम्मिलित शक्ति खादी-ग्रामोद्योग से खानी चाहिए, यह भी उन्होंने कहा।

उपर्युक्त दोनों बातों का एक प्राश्नकन के रूप में रमकर उनमें अमल की दिना बनानेवाला एक प्रस्तावबन्धुमा निवेदन प्रबन्ध-समिति और खादी-समिति को बैठक में तैयार किया गया। खादी-कार्यकर्ता सम्मेलन में उस पर विचार लिया गया और खदी स्वीदृति से वह सम्मत हुआ।

खादी-कार्यकर्ताओं ने पारदर्शक पण्टे तक तीन गोष्टियों में तीन विषयों को लेकर चर्चा की। वे विषय इस प्रकार थे : (१) उद्देश्य और दिशा की स्पष्टता, (२) कार्य-ध्वरुषणा, सुशोभन, और परपार सहकार तथा समन्वय, (३) वैज्ञानिक सहायता की दिशा और मर्यादा। इन तीनों विषयों में निहित अन्य उपविषयों की भी सूची हर गोष्टी को दी गयी थी। सर्वोपेय मनमोहन चौधरी, त्रिचित्रनारायण दास और अरुणाचलम् तमसा उपर्युक्त गोष्टी के अन्वय थे। गोष्टी को चर्चा के निष्कर्षों की रिपोर्ट

आन्दोलन के समाचार

विहारदान की ओर

भाभा प्रखंड-दान अभियान कुच्छ तथ्य

● उत्तर प्रदेश में १५ मार्च '६८ तक ४५२ ग्रामदान तथा २५ प्रखंडदान हो गये। —श्री कपिल भाई के पत्र से।

● गडौदगंघ (वाराणसी) : १३ मार्च को वाराणसी जिले के धानपुर प्रखण्ड में ग्रामदान ग्रामस्वराज्य अभियान का सभापन-समारोह श्री दत्तोबा दासानी की अध्यक्षता में प्रखण्डदार श्री श्रीपेणा के साथ सम्पन्न हुआ। सभापन क्षेत्र राष्ट्रीय गाँव, अजयपुर और जिला सर्वोच्च मण्डल वाराणसी के २२ कार्यकर्ताओं तथा १५० नागरिकों ने इसमें सक्रिय भाग लिया। इस प्रकार चहूँनिया के बाद धानपुर प्रखण्ड ने काशी के जिलादान का मार्ग प्रदस्त कर दिया है। —भारती डाक्टर

● वाराणसी : १६ मार्च : आचार्य श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी ने १० मार्च को काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के प्रांगण में स्थित मालवीय भवन में सर्वोच्च-माहिष्य-प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। प्रदर्शनी १८ मार्च तक चली।

● ठाणे : महाराष्ट्र के ठाणे जिले की ठाणे और वसई तहसील में गत १५ से २३ फरवरी तक १० टोलियाँ पूर्ण। ठाणे में ६ और वसई में ९, एक एक १२ प्राणदान मिले। २८६ ८० की साहित्य-विज्ञानी भी हुई।

श्री कपिल भाई

उत्तर-प्रदेशीय ग्रामदान प्राप्ति समिति के सचिवश्री श्री कपिल भाई गत १५ मार्च '६८ को मोरहापुर में पांचालय जाते समय हिसलकर गिर गये। उनके कार्य हाथ में कापी नूजन और दर्द है। डाक्टर ने जब के बाद बताया है कि हड्डी टूटी हुई नहीं मालूम पड़ती। पुनः जीव के बाद निश्चित पता चलेगा। नूजन और दर्द कम करने के लिए इलाज चल रहा है। श्री कपिल भाई को प्रदेश के दौरे के कार्यक्रम निवृत्त स्वयंसेवक करने पड़े हैं।

● गया : १२ मार्च। विहारदान के सुन्दर में गया जिले का ग्रामदान २ अक्तूबर '६८ तक सम्पन्न किये जाने के उद्देश्य से ग्राम-निर्माण मन्त्रालय-ग्रामोद्योग समिति, गया ने ३३ शायी-कार्यकर्ताओं को रोसा के लिए अक्तूबर, '६८ तक जिलादान समिति के जिम्मे सुपुर्द किया है। ऐसे सभी कार्यकर्ताओं का द्विदिवसीय सिमिर गया में श्री गिद्धरा इन्द्रा के मार्गदर्शन में ८ और ९ मार्च को सम्पन्न हुआ। —केशव मिश्र

● राप्तीप्रतार : ११ मार्च : गत १० मार्च को यहाँ से ३० मील दूर मन्दिहरी बल्लभस्वामीनगर में आयोजित पुर्णियाँ जिला सर्वोच्च सम्मेलन शान्तिपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हो गया। सम्मेलन का उद्घाटन श्री धीरेन्द्र मधुमदार तथा समापन विनोबाजी के भाषण से हुआ। सम्मेलन में जिले तथा प्रांत के लगभग पाँच सौ प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

द्विदिवसीय सम्मेलन के अंत में स्वीडिन प्रस्ताव में दस बात पर जोर डाला गया कि देश में हिंसक प्रवृत्तियों के बढ़ावे को रोकने की दिशा में जनता को उपमर्श एवं शिक्षित किया जाय। त्रिविध कार्यक्रम को कार्यान्वित करने के लिए प्रस्ताव में ग्रामदान-पुष्टि, स्वावलम्बी-शायी का प्रचार तथा पानि-जेना के संयोजन पर बिलार से कार्यक्रम तय किये गये।

● धनबाद : ९ मार्च। अब यहाँ मोरहापुर और निर्या प्रदर्शों का दान कराने का प्रयत्न हो रहा है। प्रखंड में ३६ ग्रामदान हो चुके हैं। शिक्षा, सरकारी अधिकाधिक्य और पंचायत के मुनिषों का दर्शयण प्राप्त करने के निमित्त एक क्षेत्रीय सभा बुलायी गयी। सभा में प्रखंड विकास अधिकारी, स्थानीय कालेज के प्राचार्य, प्रोपेटर, शिक्षा और मुनिषा, लगभग १०० सज्जन उपस्थित थे। सत्रने दर्शयण का पूरा आभारन दिया। —श्रीनलरमज्ज सायल

● संकल्प : १४ फरवरी '६८ को ग्रामदायी गाँवों के प्रतिनिधियों द्वारा मुंगेर में पूज्य बाबा के समक्ष प्रखंड-दान प्राप्त करने का संकल्प। पूज्य बाबा का आशीर्वाद प्राप्त।

● पूर्वनिायरी : १७ फरवरी '६८ को भाभा प्रखंड की प्रखंड विकास समिति की बैठक में जिला विकास पंचायतियों के प्रतिनिधियों को उपस्थिति में उपयुक्त संस्कार का सर्वसम्मत अनुपदेशन और प्रस्ताव पारित कर सभी मुनिषों और सरकारी कर्मचारियों द्वारा सहाय्य का आश्वासन।

● अभियान : २२ फरवरी '६८ को प्रखंडदान-प्राप्ति के लिए कार्यकर्ताओं की शीघ्र, उपस्थित कार्यकर्ता ११ टोलियों में निरले :

ग्रामस्वराज्य सप, मुंगेर के ...	३
ग्रामदायी गाँव के ...	५३
प्रखंड के शिक्षक ...	४०
प्रखंड के मुनिषा ...	५
ग्राम गाँवों के लोग ...	११
सरकारी कर्मचारी ...	७

● सहयोग : २६ फरवरी को भाभा प्रखंड विद्वदुपेटी भाभावं श्री कपिलजी के मार्गदर्शन में १० टीन दिवों तक सभी निशर्तों का एकत्र होकर प्रखंडदान-प्राप्ति के कार्य में सक्रिय सहयोग का संकल्प।

● निष्पत्ति :

कुल पंचायत :	
(यहाँ दोन विलकार)	२१
दायित पंचायत :	१७
कुल ग्रामगाया :	१८२
दायित ग्रामगाया .	१६१
कुल जनसंख्या :	६०,०००
दायित जनसंख्या :	७२,०००
(७२ प्रतिशत)	
कुल जमीन का रकबा :	१,०५,६२० एकर
दायित जमीन :	६५,००० एकर
(६१ प्रतिशत)	

● मसविन : ५ मार्च '६८ का भाभा प्रखंडदान यादीयाप पत्राच पर विनोबाजी की। —ग्रामदान मा

सामान्य जन की अन्तरात्मा की पुकार

क्रान्ति की आगाही

पाप में शामिल होने के लिए बाध्य करनेवाले

कानूनों की अवहेलना मानव का जन्म-सिद्ध अधिकार

विद्येके महीने अमेरिका के बोस्टन शहर की बगल में पाँच नागरिकों पर एक मुकदमा गुरु हुआ है। इन पाँच में एक डाक्टर, एक विश्वविद्यालय के पादरी, एक लेखक, एक विद्यार्थी और एक किसी सन्धान के व्यवस्थापक है। अमेरिका की सरकार द्वारा इन पर यह आरोप लगाया गया है कि वे "नोजवानों को सेना में भर्ती होने से इन्कार करने और भर्ती सम्बन्धी कानून भंग करने के पदच्यन में शामिल हैं।"

मानव मूल में स्वातन्त्र्य-प्रेमी जहर है, पर साथ ही वह सामान्य तोर पर अपने रोजमर्रा के जीवन-प्रवाह में विक्षेप नहीं चाहता। सत्ता, सम्पत्ति आदि के जरिये अपनी स्वार्थ-सिद्धि करनेवाले लोग सुगुणान्तर में मनुष्य की इस कमजोरी का फायदा उठाते जाते हैं। अक्सर यह वर्ग सामान्य लोगों के शोषण के लिए समाज-व्यवस्था के प्रचलित तन्त्र का उपयोग करता रहता है, और लोग यह समझकर कि उनका भाग्य ही ऐसा है, या प्रचलित व्यवस्था को बदलने में अपने की निःसहाय पाकर अन्त्या, शोषण और अत्याचार को बर्दाश्त करते जाते हैं। मध्यम वर्ग के अधिकांश लोग भी हर युग में सत्ता और सम्पत्ति के उपासक ही रहे हैं और आम जनता के शोषण में हिस्सेदार! इस प्रकार अन्त्या की चक्की चक्की रहती है और लोग उसमें पड़ते रहते हैं।

पर जब शोषण और अन्त्या अपनी सीमा पार करने लगता है और प्रचलित व्यवस्था असह्य हो उठती है तब आखिरकार मनुष्य की मूल चेतना, उसकी अन्तरात्मा जागृत हो जाती है और विद्रोह मुस्रित होता है, प्रचलित व्यवस्था से पायदा उठाने-वाला सत्तापारी वर्ग इसे 'अध्यात्म', 'कानून की अवहेलना', 'बगावत' आदि का नाम देकर हर सम्भव तरीके से उसे दबाने की

कोशिश करता है। युग-युग का यही इतिहास है। मुस्रत ने जब यूनान की सही परिस्थिति और सत्ताधारियों के अन्त्या का भण्डाफोड गुरु किया तब उस पर मुकदमा चला और उसे मृत्युदण्ड में अहर का प्याला पीना पड़ा। ईसापूर्व ही ने जब तरकालीन मन्दिरो, मद्यो और सत्ताधारियों के खिलाफ आवाज उठायी तो उसे सूची पर चढाया गया। देव-भक्ति, सुरक्षा आदि के नाम पर आज के सत्ताधारी भी न केवल युद्ध में हजारों-लाखों लोगों को होमते रहते हैं, बरिफ कानून और दण्ड के आधार पर लाखों नोजवानों को सेना में भर्ती होने और मार-काट में शरीक होने आदि के लिए मजबूर करते हैं।

अमेरिका के उपर्युक्त ५ नागरिकों ने अपनी सरकार द्वारा विधतत्ताम में निम्ने जा

चिन्तन-प्रवाह

रहे अन्त्यापूर्ण युद्ध और भीषण तरसहार से व्यक्ति होकर यह आवाज उठायी है कि जो नोजवान लड़ने को चलत काम मानता है, उसे बावजूद सरकार के अनिर्वाय सेना-सेवा कानून के, युद्ध में शरीक होने से इन्कार करने का अधिकार है। मनुष्य जिस काम को पृथित, चलत और पाप समझता है उसमें शरीक न होने का उसका अधिकार वास्तव में स्वयंसिद्ध है, लेकिन आज की सरकारें कानून बनाकर मानव के उस मूलमूल अधिकार को भी छीन रही हैं। किसीसे पाप का नाम जबरदस्ती कराने का अधिकार किसी दूसरे को नहीं हो सकता, चाहे वह सरकार या उसके द्वारा बनाया हुआ कानून ही क्यों न हो। अमेरिका के इन नागरिकों ने इसी अन्त्याय के खिलाफ आवाज उठायी है, और अमेरिकी सरकार ने उनके खिलाफ मुद

कानून मंग करने और नोजवानों को कानून भंग करने के लिए सहजाने का पदच्यन करने के आरोप में मुकदमा चलाया है।

इस मुकदमे ने अमेरिकन राष्ट्र में काफी हलचल पैदा कर दी है। समझदार लोग पूछने लगे हैं कि क्या जनतांत्रिक बड़े आने-वाले देश में उनके नागरिकों को अपनी सरकार के गलत और अन्त्यापूर्ण कानून के खिलाफ आवाज उठाने का अधिकार नहीं है? इन पाँचों में से एक अधिवक्ता, बेल विश्वविद्यालय के पादरी विलियम काफिन ने किसी भी प्रकार के पदच्यन का बगावत का इन्कार करते हुए अपनी घोषी और सरल भाषा में एक बुनिवादी प्रश्न उठाया है। उन्होंने कहा—“हम न अराजकता-वादी हैं, न क्रान्तिकारी हैं, हम तो सिर्फ ऐसे लोग हैं जो अपनी अन्तरात्मा को कभी भी राज्य या कानून के समर्पित नहीं कर सकते।”

काफिन ने ठीक ही कहा है कि चाहे सरकार ने किसी चीज को कानून का नामा पढ़नाकर उसे सामाजिक प्रतिष्ठा और नागरिक-कृत्य का दर्जा दिया हो, पर अगर किसी व्यक्ति की अन्तरात्मा उस नाम को चलत मानती है तो उस कानून या व्यवस्था को मानने से इन्कार करना मनुष्य का सहजचर्म है। इसमें अराजकता या क्रान्ति का सवाल क्या है? लेकिन वास्तव में क्रान्ति का आरम्भ युग युग में इसी प्रकार होता है, जब सामान्य माने जानेवाले मनुष्य को अन्तरात्मा अन्त्या को बर्दाश्त करने से इन्कार कर देती है, और उसके खिलाफ दण्ड प्रकाश सहज विद्रोह प्रकट होता है। इस अर्थ में काफिन और उसके सहयोगियों की आवाज एक क्रान्ति की आगाही देगी है। प्रचलित अन्त्याय और व्यवस्था के खिलाफ मानव की अन्तरात्मा की यह सहज पुकार है। जाया है, हर देश में मानवता के उपासक लोगों द्वारा उनके इस विद्रोह का समर्थन होगा।

जयगुर,

१६-३-६६

—सिद्धराज टट्टा

धार्मिक बदकर समाजवाद व भी सामान्य समाज को निष्ठा और निर्णय का विषय भी बनेगा ? बनेगा तो कैसे बनेगा ? समाजवाद की परिधि तो धन गयी, लेकिन जो धार्मिक-धार्मिक सामाजिक चरित्र चाहिए वह कदा ? नहीं है तो कैसे आयगी ? गाँव-गाँव में फैली हुई धार्मिक अंधविश्वास समाज-वादों को बनेगी, और गाँव-गाँव में समाज-वादी व्यक्तियों की सुधारा के लिये होगी ? क्या सरकार के कानून में यह करने की शक्ति है ? क्या नेताओं के भाषणों में है ? समाजवाद की चरित्र का खोज क्या है ? क्या जनता को समाजवाद की प्रक्रिया से अलग रखकर भी समाजवाद की स्थापना की जा सकती है ? समाजवाद का वह विषयक किन्तु विरोधरहित जन-आन्दोलन नहीं है, जिसकी कल्पना और कामना शं० लोहिया ने बार-बार की थी ?

समाजवाद में शक्ति है, बसंत वह सरकारवाद से आगे जाने को तैयार हो; लोकतन्त्र में शक्ति है, बसंत उसे दलवाद के धरिंदे के बाहर निकलने दिया जाय। वास्तव में भारत की परिस्थिति लोकतन्त्र और समाजवाद में एक नये साहसपूर्ण प्रयोग की माँग कर रही है। लेकिन अफसोस इस बात का है कि हकीसियों के अनुभव के बाद भी समाजवादों में उस प्रयोग के लिए तैयार नहीं दिखायी देते। क्या तब तैयार होगा जब सत्तालोलुप राजनीति देस को फासिस्टवाद के मूँह में पहुँचा चुकेगी ? अभी तो साम्यवाद और सम्यवाद के बीच में ही रहकर समाजवाद अपने विरोधवाद को कायम रखने की विफल कोशिश करता दिखायी दे रहा है। उसे दूसरी चीजों के लिए पुरवत नहीं ?

धामदान की शक्ति आज चाहे जितनी शीघ्र हो, लेकिन उसकी कोशिश यही है कि फासिस्टवाद के मुकाबिले गाँव-गाँव में लोकतन्त्र और समाजवाद की लोक-शक्ति संगठित हो। धामदान नयी व्यवस्था को सुधारा के लिए समाजवादों या अन्य किसी पार्टी को विजय या पराजय की राह नहीं देना चाहता। उसके लिए जनता का निर्णय काफी है।

धामदान : समस्या और संभावना-२

जिनका संकल्प, उन्हींके द्वारा पूर्ति

१४ फरवरी को मुंबई के पत्रों पर आभा प्रसंग के अंतर्गत धामदानी नागरिकों ने विनोबाजी के सामने प्रसंग-दान का संकल्प किया, और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया। ४ मार्च को लाठीधाम (मुंबई) के पत्रों पर उन लोगों ने अपने प्रसंग का दान समर्पित किया।

इस अभियान में कुल ११६ कार्यकर्ता लगे थे, जिनमें सत्या के कार्यकर्ता ३ थे, शेष ११६ थे समाज के सामान्य नागरिक।

प्रसंग-दान के बाद ये नागरिक कार्यकर्ता सोच रहे हैं कि प्रसंग में जो गाँव बच गये हैं, उनका धामदान पूरा कराकर पड़ोश के प्रसंग में लगा जाय।

एक समय या जब सत्या के कार्यकर्ता अकेले मरते थे, दूसरा कोई साथ नहीं देता था। फिर एक-दो भावनाशील व्यक्ति पास के गाँवों में जाने लगे। अब सामान्य धामदानी नागरिक भी उत्साहपूर्वक सामने आ

धामदान के सिवाय आज दूसरी कौन आवाज है जो निजी स्वामित्व और सरकार-स्वामित्व के अन्त की एक साथ पुकार लगाती हो, जो धामदान-मूल द्वारा सत्ता को प्रत्यक्ष जनता के हाथों में सौंपने की घोषणा करती हो ?

क्या मधुजी ने धामदान में धामदान के इन पहलुओं और प्रक्रियाओं पर कभी ध्यान दिया है ? क्या उन्होंने अभी यह सोचा है कि अगर धामदान सफल हो जायगा तो समाज-वादी दल भजे ही न रह जाय, पर समाज-वाद रहेगा—देश में रहेगा, जनता के जीवन में रहेगा, समाज की रचना में रहेगा ? अगर मधुजी समाजवादी दल की शीमाओं से अलग समाजवाद के लिए तैयार हो जायें तो धामदान का सही स्वरूप स्पष्ट हो जायगा, और धामदान लोकतन्त्र और समाजवाद के प्रारम्भ-बिन्दु के रूप में दिखायी देने लगेगा। वह रूप विपुल भारतीय होगा। लेकिन ज़रूरत है दल के रगीन चरने को उबारकर देखने की।

हम चाहते हैं कि देस में सच्चे लोकतन्त्र

रहे हैं। संयोजन और नेतृत्व अभी भी संस्था के ही कार्यकर्ताओं का है, लेकिन यह स्थिति भी शीघ्र दूर हो जायगी। 'विधायक-दान' के बारे में शक्ति की पद्धति में अवरुद्ध मोड़ पैदा कर दिया है। सन् १९७२ में प्रति-निधि प्रामसभाओं के, दलों के नहीं—यह पुकार छोटे लोगों में शक्ति, सम्मान और उत्तर-दायित्व की गयी प्रतीति जगा रही है। ●

अ० भा० सर्वोदय-सम्मेलन

१७वीं अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन इस वर्ष आठवें (राजधानी) में करने का निश्चय हुआ है। सर्वोदय-सम्मेलन की तारीखें ८-९-१० जून, १९६८ हैं। इसके पूर्व वही १२-१३-१४ जून, को सर्वे सेवा मण का वार्षिक अधिवेशन होगा। आठवें दल के लिए शिवालयी टिक्टा की सुविधा हेतु रेलवे-बोर्ड को लिखा गया है। जयम मिलने पर आगे की आवश्यक सूचना दी जायगी।

और सच्चे समाजवाद की स्थापना हो—ऐसा समाजवाद जिसमें समाज के हर सदस्य के लिए सम्मानपूर्ण स्थान हो। अगर समाज-वाद भी 'दुर्घ' के ही लिए हो, और उसे भी वर्ग-सर्प के ही रास्ते पर चलना हो, तो फिर साम्यवाद से अलग एक नया नाम और नारा बने ? शोषण-समाजवाद का आभरण ही यह रहा है कि वह "सर्व" के लिए है, और "सर्व" का उदय उषवा १९ है। किन्तु दल की बटोर शीमाओं में बँधकर समाजवाद अपना मूल आभरण और अपनी मानवीय प्रेरणा छो रहा है।

धामदान में "सर्व" का समाजवाद है। लोकतन्त्र का दूसरे किसी समाजवाद से मेल ही नहीं बैठता। किन्तु अच्छा होना अगर मधुजी इस तथ्य को पहचान ले ! सतोप है कि अब ऐसे समाजवादों निश्चय रहे हैं जो साहस के साथ इस तथ्य को पहचानने लगे हैं। हम अपनी धान भले ही मधुजी के पास न पहुँचा सकें, लेकिन परिस्थिति तो पहुँचकर रहेगी। ●

भूदान-व्याज : शुक्रवार, २९ मार्च, १९६८

पूँजी के 'शोर' में श्रम का 'जोर'

हमारे सामने प्रश्न है कि खादी का भविष्य क्या होगा ? इसके लिए हमको खादी के प्रामाणिक विचार को जानना होगा। सन् १९२१ में खादी विदेशों से प्रतिवर्ष आनेवाले ६० करोड़ रुपये के वस्त्र को रोकने के माधुनिक के रूप में चलती थी। सन् १९२७ में साबर-मती आश्रम में रहते हुए हम लोग सोचते और हिताव लगाते थे कि खादी बाजार में मिक का मुनाफिला कर सचती है। श्री मदनलाल गांधी ने हिस्सा लगाया था कि केवल २५ प्रतिशत ही खादी का अधिक दाम होगा। सन् १९३३ में गांधीजी ने सारे देश में हरिजन-यात्रा की। इसी सिलसिले में वह खादी-संस्थाओं में भी गये तो उन्होंने कहा कि "जीवन-मजदूरी" देना चाहिए और इस प्रकार जो भी दाम पड़े उस दाम पर खादी बिकनी चाहिए। सन् १९४४ में जब गांधीजी आंगणवाड़ी मजदूर खूटकर आये तो उन्होंने खादीवालों को समझाकर "जो काने सो पहने और जो पहने वह जरूर फाने" का नारा दिया। गांधीजी ने खादी द्वारा आर्थिक विपन्नता का निराकरण, अहिंसक समाज की रचना और विकेन्द्रीकरण पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि केवल कपड़े के रूप में खादी का उपयोग नहीं करना चाहिए। इतिहास का नया पन्ना

इसके बाद स्वराज्य आने पर खादी के इतिहास में एक नया पन्ना जुड़ा। सन् १९४६ की सरकार ने खादी के मुख्य मन्त्री श्री टी० प्रकाशम ने मद्रास में "किरका एम्प्लॉयमेंट स्कीम" लागू करके खादी-काम करने का कार्यक्रम बनाया। इस आधार पर मद्रास सरकार ने ऐलान किया कि जिस क्षेत्र में यह स्कीम लागू हो वहाँ मद्रास में बाहर से कपड़ा नहीं आयेगा। इस बात से इतना तहलका मचा कि टी० प्रकाशम को मुख्य मन्त्री पद छोड़ देना पड़ा। केन्द्रीय सरकार ने भी इस प्रकार की राज्यों की कार्यवाही को सविधान के विरुद्ध बताया।

'अम्बर' के जन्म की भूमिका

इसी बीच पूना में गांधीजी ने लोगों से कहा कि १५ गज प्रति व्यक्ति के हियाव से जितना कपड़ा लगता है, उसे कितने घरखे चलाकर तैयार किया जा सकता है। श्री कृष्णदास गांधी, मदनलाल गांधी आदि हिस्सेदार लोगो ने बनाया कि प्रति ५ व्यक्तियों के पीछे एक खादी लगेगा। गांधीजी ने तुरन्त कहा कि ऐसा चरखा नहीं चाहिए। मैं प्रत्येक परिवार में एक खादी से अधिक इस काम के लिए नहीं देख सकता। यदि हम यह नहीं कर सकते तो चरखा बन्द करने को कह देना चाहिए। 'अम्बर' घरखे के जन्म की शुरुआत यही से हुई।

आज भले ही यह सम्भव हो कि कपड़े की आवश्यकता के लिए हर घर में ६ करोड़ चरखा बसाकर पाँच करोड़ की आय, किन्तु भविष्य में मैट्रिक गुप्त महिला कदापि

अण्णासाहय सहृदयवृद्धे

चरखा नहीं चलायगी। इसलिए १ पच्चा चरखा चलाकर हर परिवार में वस्त्र की पूर्ति हो जाना जरूरी है, इसके लिए ६ को जगह जगह १२ तड़प का बम्बर चलाना पड़े या पावर का प्रयोग करना पड़े। यद्यपि मेरा सबसे मतभेद रहता है जो भी मेरी मान्यता है कि गांधीजी ने खादी के लिए जो तीन सिद्धान्त—(१) विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था, (२) योग्य-मुक्ति और (३) बेकारों-मुक्ति—बनाये थे, उनका पालन करते हुए हमें प्रत्येक सुधार अपनाने के लिए तैयार रहना चाहिए।

'श्रम' और पूँजी का शास्त्र

विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था के लिए हमें खेती पर जाना पड़ेगा। अभिष्य में छोटे-छोटे खेत, सबको काम, सचन खेती, किस फसल में कितने मनुष्य-श्रम लागें, इन सब बातों पर ध्यान देना होगा। बगले १० साल की योजना बनानी हो तो हमें भागना चाहिए कि

५० करोड़ की खादी में २५ करोड़ लोग काम करनेवाले हैं। कितनी धन-शक्ति किस काम में लगायी जाय, देना होगा। हाथ में काम करने में १०० करोड़ का वस्त्र तैयार करने पर १५० रुपये और मिलने १०० करोड़ का माल तैयार करने पर ६०० करोड़ की पूँजी लगती है। सबसे कम पूँजी खादी के काम में लगती है, किन्तु यह अर्थशास्त्र शासन-वर्ती अर्थशास्त्रियों की समझ में नहीं आता, और न हम उन्हें समझा सकते हैं, क्योंकि ड्रैज पुनियनवादी प्रदर्शन एवं 'बेराब' की भाषा हम नहीं जानते।

इस प्रकार पूरे देश की योजना तैयार की जा सकती है, जिसमें प्रारम्भिक आवश्यकताओं की पूर्ति हो जाय और कोई बेकार भी न रहे। अन्न, वस्त्र, शिक्षा और सुरक्षा, इन चार प्रारम्भिक बातों के लिए स्वावलम्बन का सिद्धान्त अपनाने में ही देश का हित निहित है।

'प्रदर्शन' और 'बेराब' की तैयारी

हमारी हालत यह है कि जहाँ सन् १९०० में ४० प्रतिशत कारीगर देश में थे, वहाँ आज केवल ३ प्रतिशत रह गये हैं। वर्तमान स्थिति बनी रही तो यह सख्या और भी कम होनेवाली है। इसके विपरीत ६० प्रतिशत के बजाय आज ७० प्रतिशत लोग खेती में लगे हैं। जमीन तो बड़ी नहीं, पर जमीन पर श्रम करनेवालों का शोक दिन-पर-दिन बढ़ता जा रहा है। इसे कम करने के लिए मानवीय श्रम-शक्ति के आधार पर योजना बनानी होगी। हम लगभग ४० हजार कार्यकर्ता खादी-काम में लगे हैं। कारीगरों को भी लगायें तो २५ लाख सख्या हो जाती है। इस प्रकार की योजना बनाने की जिम्मेदारी आज हमारी है। यदि सुनवाई न हो तो धाकार की घमक में आनेवाली अलश प्रदर्शन तथा वेतन की बढ़ति का उपयोग करने की भी तैयारी करनी चाहिए। दावा मिद्ध करना है

बच्चे माल का पक्का माल तैयार करने की नियम सामीप्य शक्ति के आधार पर बननी होगी। चरखे के एक तड़प को चलाने पर अब २५ करोड़ सचन होगा है वहीं मिल के

ग्रामदान के यूरोपीय संस्करण की खोज

● सतीशकुमार

बारा के अन्दर बेहद सिटुआ, भयंकर मशीनों से जकड़ा, और अनचाही व्यस्तता से जकड़ा यूरोप का आदमी, खास तौर से नोजवान एक बार फिर भारत की ओर आनामसी नजर से देख रहा है। भले ही महृषि भद्रेश के जाल में उसे फँसना पड़ रहा हो, या फिर प्यान और योग द्वारा निर्वण-प्राप्ति की आकांक्षा उस पर विजय पा रही हो, उसको नजर भारत पर हो है। बौद्धिक और हिप्पी आन्दोलन के लोग सितार की साधना करते हुए और गाजे का दम लगाते हुए इस मशीनी समाज से दूर भागना चाहते हैं। 'एल० एच० थो०' का सेवन करके या पॉपकला में अपने आपको भुला करके वे जवान आज की सपना, पर मशीन-यन्त्रित समाज-रचना को अस्वीकार कर रहे हैं। परन्तु यह अस्वीकार बयूरा है, नकारात्मक है। यदि इस अमानवीय और मशीन-निपन्न समाज को हम अस्वीकार करते हैं तो वह कौनसा समाज होगा, जा मानवीय आभार पर खड़ा होगा? इस सवाल का उत्तर यूरोप ढूँढ़ रहा है।

इस पृष्ठभूमि में यूरोप के अनेक बिन्दुओं की दृष्टि विकेंद्रित अर्थ-रचना को और खिंच रही है। ब्रिटेन के सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री रूमाथेर 'इंटरमीडिएट टेक्नोलॉजी' का विकास कर रहे हैं। अमेरिका के आर्किटेक्ट पॉल पुडुमेन राहरीकरण के अभिशाप से मुक्त छोटे और मानव-मुलम नगरों की योजना बना रहे हैं। लन्दन के साम्यवादी पत्रकार जोन पायवर्थ ने विकेंद्रोकरण के इन्हें-निर्देश धूमनेवाले विचारों का हेमासिक प्रकाशन: 'रोसजैव' प्रारम्भ किया है। यह पत्रिका अफ्रीको के बुडिजीकी पार्टी में बेहद लोकप्रिय हो गयी है।

जोन पायवर्थ ने हथें लिखा कि "गांधी की सबसे बड़ी देन विकेंद्रोकरण है। ग्रामदान उस विकेंद्रोकरण का आधार है। हम यूरोप-

वासी ग्रामदान के बारे में बहुत कम जानते हैं। इसलिए क्या थाप इम्प्लेंट आभार ग्रामदान आन्दोलन पर प्रभाव डाल सकेगा?"

जोन पायवर्थ ने यह बात 'कमिटी ऑफ ह्यूमंड' के मनी पीटर कजागन और 'नेशनल पीस कौंसिल' के मनी डोनाल्ड थूम की सलाह से लिखी थी। मैंने और ग्रामदान-आन्दोलन के मेरे साथी कार्यकर्ता अन्त में यह तय किया कि हम लोग इम्प्लेंट आभार ग्रामदान-आन्दोलन के बारे में खर्च करेंगे। "खास तौर से गांधी-रत्न-यात्रावादी को तैयारी में ग्रामदान को समझना हमारे लिए बहुत उपयोगी होगा", ऐसा पीटर कजागन ने हमें लिखा। गांधी-सलाहवादी की कभी ग्रामदान के साथ जुड़े, इससे अच्छी बात और क्या हो सकती थी!

अधूरा अस्वीकार अद्वैतकरण के हवाई-यात्रा 'असफलता को आभारित पदयात्रा 'इटली के गांधी' भारत में

२३ नवम्बर, १९६७ को हथ लोग भारत से रवाना हुए। इटली में हमारा पहला पड़ाव था। टंड से टिडुरे हुए रोम के हवाई अड्डे पर जब एयर इंडिया का ७०७ नम्बर का जेट विमान उड़ता तो महृष्य हुआ ही नहीं कि हम पिड़ले दस घंटों में पाँच हजार मील दूर पाप की धर्मनगरी रोम पहुँच गये हैं। मुझे माद जायो अपनी पिड़ली पद-यात्रा की, जब दोरे-धीरे बनों, पहला, रोगिस्तानों को पार करते हम यूरोप पहुँचे थे। मुझे माद आये वे अनुभव, जिन्होंने विन्त की एखलता का दर्शन कराया था। यह खुला आसमान, वे बहुते हुई मरियाँ वे सीधे-सरल लोग, वे अंगूरो और अतारों के बाग, वह अत्यन्त गतिशील हवाई-यात्रा फीकी-सी लगी।

रोम जिनमस की प्रतीक्षा में अना ५४ कार कर रहा था। रोमन एग्गार की गाथा की अना में दिनाये रोमवासी अपने चेहरों पर वाटिकन से उभार मापी हुई मुस्मान पोते हुए थे। बर्ष और बर्ष की अखफलता को दिनाये के लिए वाटिकन केचिड़ल का घटा अब भी पूरी मुँज के साथ बजता है, पर दुनिया जाननी है कि पवित्री यूरोप में इटली के कम्युनिस्ट सबसे अधिक प्रभावशाली, गतिशीली और अधिक सथा-वाले है। ३५ प्रतिशत वोट हाँसिल करनेवाली इटालियन कम्युनिस्ट पार्टी इटली की सबसे बड़ी विरोधी पार्टी ही नहीं है, वलिक बर्ष के खिलाफ नोजवानों के विद्रोह का सबसे बड़ा प्रमाण भी है।

'इटली के गांधी' की सला से मगहूर डेनलो डालची ने हमें लिखा था कि आप इम्प्लेंट जाते हुए इटली दकें और नेपल्स से रोम की गान्धि-पदयात्रा में भाग लें। उग्री के निमंत्रण पर हम इटली में थे। अतः रोप पहुँचते ही सीधे हम डेनलो डालची के पद-

अभिशाप से मुक्ति की अडुलाइट 'फीकी करने की असफल चेष्टा 'रोम की गान्धि-पदयात्रा' भारत में जवान नेता नहीं

पात्र-पत्राव पर पहुँचे। पदयात्री अधिपाप बजान थे—तुङके और लक्षिका, बागी और विद्रोही जवान। गाते-जगते हुए, सोनों को जगते हुए, गान्धि और आजादी के नारे लगाने हुए वे पदयात्री डेनलो डालची के पीछे-पीछे चल रहे थे। मुझे माद आये कौनों विनोवा-पदयात्रा की (करीब-करीब नैवा ही दरव था। डालची ने लिखे ही मुझसे कहा: "शोह, माप तो एखम पुत्रक है। मैंने तो

तोन, नहीं

रामदूर्ति : मर १९७२ के खुनाप में ग्रामसभाओं की अपने प्रतिनिधि भेजने हैं, न कि दलों के उम्मीदवाँ की वोट देना है। यद बात अब जोर देकर कदनी चादिए न ?

भूदान-यात्रा : शुनवार, २९ मार्च '६८

धोषा वा वि प्रामदान वा सुदेग लेकर कोई बुजुर्ग धरोराहुमार या रहे होंगे।" बालको के इस परिभाषा पर मैंने कहा "आपने देखा कबो अन्धान किया ?" मेरे इस सवाल पर बालको मुस्कुराये और बोले "जब मैं माता गया था तो मुझे देखा लगा कि धरोरस आन्दोलन का साथ लेकर एतान रूप से बुजुर्गों का ह्राप मैं है। मुझ एक भी जवान नेता नहीं मिला।" उनमें इस पक्षकी ही प्रशंसा के 'रिमाज' पर मुझ मान धानो पयो। पर मैंने समझते हुए कहा कि 'सब स्थिति बदल रहा है।"

धोषको की परधामा में अहिंसाधारी और कम्युनिस्ट, दोनों तरह के धार्मिक कार्यकर्ता शामिल थे। इस धाषा का मुख्य उद्देश्य था विधननाम धानि। जब धार रोम पहुँचे ता परधामिया को ख्याता ? 0 हजार तक पहुँच गयो की। फेनली डोलको के अहिंसावाचक विरोधान करनेवालो की ख्याता सुधिरल स ५० प्रतिशत रह्यो होयो। मेरे साथ रोम विरुधविधालय भी एा मुनहरे बालकोतान्गे सुबदुसत धाषा चल रही थी। बहुत कम लोग धोषको कोलेवाले थे, इसलिए इन सा धाना नाम की धाषा के साथ ही मैं बराबर चल रहा था। एक बार सा धाना ने कहा कि 'कोलको स्थितिगत रूप में एक महान स्थिति है। सबक प्रति इन धामा में बचन बाधर को है। परन्तु उनक लक्ष्या में सिधनो जते विपडे धोषा में धोषा-बचन सुधार भल हो हा जाय पर समाज-अधरथा में बुनिसारी धरि बचन लाने का नोड लोको बालको के पास नहीं है। इसलिए भ्रं हा विधननाम धानि के नाम पर धामधारी और गद-काम्यधारी समन्वित रूप में उनक साथ धानि-नाधा कर लें पर आम तोर न डोलको के साथ

तो पचीस

विरोधा ही रे भग्रा, बटनी हो नहीं, अभी न करने चाहिए। इस बार बुझ गये तो समझ ला पचीस साल तक गुडे कीं गुदेग नहीं। मने लाग हा, मला काम करने रह्यो, पर धानि का नाम नहीं ले पाओये।

भूतान था : सुबवार, २९ मार्च, '६८

ज्यादा जन-बल नहीं है।" सा धाना के इस रिभाषा में बाको हद तक सचाड है।

पूरे परिवनो धानि-आन्दोलन का अणर विरुधेपार रिया जाय तो यह बटना होगा कि उनके धामने किमो सत्य अधिक, राजनीति एव धाम्याधिक होने की कल्पना का बसाव है। परिवन का धानि-आन्दोलन युद्ध विरोध के साथ समाम हा जाता है। इस नया रा-भरक धानि-साध को तरफ आन का यूरोपीय युवक अधिक दिन जाहूड नहीं रह सकता। भारतिया से धानधान के दोषान में मैंने पूछा कि टटनी के युवक कम्युनिज्म को तरफ जिस तरह भाहूड हो रहे हैं, उध तरह धानि-आन्दोलन की तरफ भाहूड क्यों नहीं हात ?

भारतिया ने कहा 'धानि-आन्दोलन एक युद्ध विहान समझ का सत्य लेकर चलता है। यह अन्धता सत्य है। इस सत्य का द्वाधर धानि-आन्दोलन के पास युद्ध भी

आदर भी, अनाध्या भी सा धाना सुधार नहीं, समाम परिवर्तन प्रारम्भ विरोध से, अत धी विरोध में लक्ष्यसिद्धी के चार कार्ययम शातिवाले धामपन्थी राजनीति क मोहर प्रामदान के यूरोपीय समरूप की ब्रीड

अधर पर रोम विरुधविधालय में कुछ कार्य-धन आयोजित करने के समरूप में धान को तो वे जोले कि 'निश्चय ही जब जाने विरुध-विधालय में धानी विचार पर एव अन्ध-मा परिधवार बरला भाहूये। पर हम जो कुछ कर्यो, यह धानी भार से हो बर्यो। धानि आन्दोलन न साथ सहयोग करना हमारे लिए सम्भव नहीं होगा। क्याकि धानिवाले धामपन्थी राजनीति के माहुरे बने हुए है।" लगभग धारी बात पनारस विरुधविधालय के बुलधनि प्रो० देवीनो ने भी बहो। यधति रोम और पनोरस विरुधविधालय धारी विचार क प्रति काफो दिलबरी ले रहे हैं, पर काम। इस दिहबसो का लाग टटनी के धानि-आन्दोलन को मिल पाता।

एक अधिकक समाज का समप-धन धरि किधो के धामने है तो उनमें इधको के सत्य प्रतिध विधालयको धालको नातिनी का नाम लिखा जा सकता है। हाकि कि उनके पास भी कोई बूधरचना या प्रक्रिया नहीं है, पर वे यह जानत है कि 'आज के समाज

का दीबा ही युद्ध मंदा करता है। इसलिए एक विरुधिन एव बहूधिक समाम को रचना के बिना धानि की धामपना अणमक है।" शक्तिनो ने साथ धानो में मुझसे यह बात बहो। और धनी धन-में उन्हीने कहा कि 'धामो की स्वातन्त्र्य-सैन्यो को धानको के रूप में तो यूरोप जानता है, पर धानी ने कोई अधिक दीबा भी समाज के सामने रवा पा, यह बात विरोध प्रचारित नहीं है। बालन में यूरोप की परिस्थितियो क बटुमार हवें धामपान बैसा ही कोई रचना नरक कायकम चाहिए। प्रामदान में ही मुझे युद्ध का उतरर दिधाड देना है। अणर धामो धामानो के अणर पर हम धामधान के यूरोपीय संरुधर नो कोच करने में सफल हो जायें तो यह एक सफल धामो-धन माना जायगा।"

नहा है। किधो भी लक्ष्य का पाने के लिए धार काययम बाधय्यक होने है (१) समप दान (२) बूध रचना, (३) प्रक्रिया और (४) कारवाई। [(१) टोटक विरुधेपारी, (२) स्टुडन्टो, (३) टेक्नीक और (४) एगन]। ये धारी धोचें कम्युनिज्म के पास है। इसलिए वे युवको को धामने में कामयाब हाते हैं। भारोपिया का पद विरुधेपन धानि आन्दोलन को धोषने की धारी समधी दे गकना है। अन्धध धानि का धाम धामधारी आन्दोलन क साथ अधिक-ले-अधिक पुनरा बला जायगा। मैंने तो आज भी धामधारी धानि-आन्दोलन को धामने अधिक मजदूर है और इधलिए इटली में धानि' सन्द धारी पध हो गया है। जब ये राम विरुधविधालय के बुलधनि धो० दधर से मिला और धामो-नाधती के

हिमालय की घाटियों में ग्रामदान की गूँज ऊँची-ऊँची चोटियों पर तूफान के भोंके

हिमालय ठण्डा है और इस वर्ष जनवरी और फरवरी में अत्यधिक वर्षा और हिमपात के कारण तो चीन का प्रकोप भंग कर हो गया है। लम्बा-चोड़ा क्षेत्रफल और ऊँची-ऊँची चोटियों तथा गहरी घाटियों में बिखरी हुई यहाँ की जनसंख्या दूसरी विवेचना है। उ० प्र० के उत्तरी-पश्चिमी छोर पर बसा उत्तरकाशी जिला तेजी से जिलादान की ओर बढ़ रहा है। देस की दो पावन नदियों—गंगा और यमुना—का उद्गम उस जिले में है। इसके उत्तर में तिब्बत, पश्चिम में हिमाचल प्रदेश, दक्षिण में देहरादून का जौनसार बाबर तथा पूर्व में टिहरी गढ़वाल है। उत्तरकाशी की जनसंख्या डेढ़ लाख से थोड़ी अधिक है, परन्तु क्षेत्रफल ३ हजार वर्गमील से भी अधिक है।

३० जनवरी '६८ में ग्रामदान-तूफान की अधिक वेगवान बनाने की योजना बनी थी, परन्तु २७ जनवरी को ही हिमपात प्रारम्भ हो गया। यमुना के तट पर स्थित बड़को गाँव में शान्ति-सैनिकों ने शान्ति-दिवस मनाया। वे केवल ६ थे। सामने बर्फ से ढँके हुए गाँव और कार टाटनेवाली बर्फाली हवा थी, पीठ पर भोले लोहे, "हिम, आतप, वर्षा भी जिनके बढ़ते पैर न रोक सके" गाते हुए दो-दो की टोलियों में गाँवों की ओर बढ़ गये। थोड़े-थोड़े बरसद और थोड़े-थोड़े बरसद के गये। जिला गांधी-शाखा की समिति के मनो और लोकप्रिय लोचनराय और पनराम पाण्डे जौनसार बाबर ने मिले हुए गोबर शारद क्षेत्र में पहुँच गये। वर्षा और बर्फ ने वहाँ भी पीछा नहीं छोड़ा। ग्रामदान की वृद्धिवादी सभाएँ जूल्हों के आस-पास आग की पेरकर बैठे हुए लोगों के बीच हुई। अंकीमूर्तों के साथ "गौ-मा गौ स्वराज्य" का नया स्वर भी बुद गया।

परन्तु इस आनन्ददायक वातावरण के बीच अत्यधिक शीत और बर्फीली हवाओं के कारण लुकाम, खाँसी और बुखार ने भी

ग्रामदान-यात्रियों की परीक्षा की, और ५ फरवरी को तो एक भारी दुर्घटना हो गयी। बादलों के बीच से भोंकनेवाली चाँद की रोशनी में श्री ब्रजोदत्त काण्डपाल का पैर चट्टान से नीचे फिसल गया। वे बिचकू पास की भाड़ी में फँस गये। बहुत देर बाद कराहते हुए वापस आते ही अचेत हो गये। पसलियाँ दर्द से अकड़ गयीं। गाँव के लोगो ने उनकी सेवा-सुधुपा की। अब वे पुनः यात्रा पर निकल पड़े हैं।

जिला गांधी-शाखा की समिति ने जिलादान का संवत्स्र किया है। अल्पश ने नाते जिला मजिस्ट्रेट श्री गणाराम सर्वोदय-ग्राम के दोरान में अभियानवाले क्षेत्र में यात्रा पर निकलनेवाले थे, पर राड़ी की चोटी पर हिमपात के कारण यमुना घाटी का उत्तर-काशी में सम्बन्ध-विच्छेद हो गया। उन्होंने भागीरथी की घाटी में यात्रा की। परन्तु बर्फ पिघलते ही २४ फरवरी को सामी क्षेत्र आ गये। अगले दिन रामासिराजो पट्टे में में पैदल यात्रा के लिए निकल पड़े। ग्रामदान-अभियान को सफल बनाने के लिए अपनी अपील में वे पहले कह चुके थे—“देस की उत्तरी सीमा पर स्थित होने के कारण देशवासियों ने हमें सीमा का प्रहरी होने का गौरवपूर्ण दायित्व सौंपा है। ग्रामदान से गाँव मजबूत बनेंगे।” अपनी सभाओं में वे कहते हैं—“पहले गांधीजी के सपनों का रामराज्य छाने का रास्ता है।” सूचना-विभाग ने बामू और विनोबा की फिल्मों का प्रदर्शन किया।

सुरीला विभाग लखनौ की रामासिराजो पट्टी में १२० परिवारों का गुदियार गाँव यहाँ का सबसे बड़ा गाँव है, और कडियाल गाँव के श्री लामोराम सिंह सबसे बड़े भूमिपति। पहले ही दिन उन्होंने ग्रामदान के संकल्पनात्र पर हस्ताक्षर कर दिया। उत्तरकाशी जिले के प्रथम ग्रामदानी गाँव सेन के सभापति श्री पनराम सिंह यहाँ आये

और गाँव-गाँव में विनोबा का 'रेवार' (सन्देश) पहुँचा गये। पूर्वतयारी में पोरा गाँव का ग्रामदान हो गया था। अब पोरा से थोड़े-थोड़े और श्री विद्यानन्द अभियान के लिए निकल पड़े।

जिलागांधी की सभा गुदियार गाँव में सूर्यास्त तक चलती रही। ग्रामदान-यात्रियों ने तय किया आज रात कम-से-कम चार गाँवों में तो पहुँचना ही चाहिए।

रात को ही लोग घरो पर मिल सुनते हैं। सूर्योदय से सूर्यास्त तक का जीवन पहाड़ों के व्यस्त जीवन में अनमोल है। मिट्टी का तेल मिलता नहीं, अन्धेरे में कैसे जायें? चाँद की तेज जलनेवाली लकड़ी (दलों के छिलके) की मशाल लेकर तीन ग्रामदान-यात्री मुकेशरा की ओर निकल पड़े। कीचड़ और फिसलनवाले रास्तों से नीचेवाले तक पहुँच गये। एक माला पार किया, कुछ आगे बढ़कर कमल नदी पार करनी पड़ी। दलदलवाले खेतों की मंझो से रास्ता जाता था। पीठ पर सामान लदा हुआ था। जब गाँव के मुख्य व्यक्ति के द्वार पर पहुँचे तो अन्दर से आवाज आयी, “शतनी रात गये कौन?” और यात्रियों का उत्तर था—“विनोबा के शांति-सैनिक। ग्राम-स्वराज्य के रेवार (सन्देशवाहक)।” पुछनेवाली लकड़ी विद्यानन्द की भाँजी थी। माँ और पिताजी को पाया और उनके साथ दो अजन्मियों के आने की सूचना दी। विद्यानन्द ने कहा, “आज विनोबा का सिपाही बनकर आया हूँ। गाँव के लोगों को इकट्ठा करो।” और कुछ ही देर में सारा गाँव इकट्ठा हो गया। गवर्न-पत्र पर हस्ताक्षर हो गये, जो नहीं पहुँच सके उनके पास जाने के लिए कई टोली बन गयी।

अभियान इन दिनों अपेक्षाकृत निचले क्षेत्रों में चल रहा है। दूरमें १००-२०० नगर-शाशा का भारी समूह नहीं है। परन्तु ग्राम-स्वराज्य के लिए समिति ५-६ लोगों की एक टुकड़ी है। इनके पीछे लगे हैं विद्यानन्द-नारायण और निरमल और सदियों से पीड़ित और दलित ग्रामों की मुक्ति के लिए आकुल जागृक सामाजिक। हिमालय-→

अगला वर्ष पराक्रम का होगा

भारत में नयी समाज रचना का जो आन्दोलन देश के विभिन्न प्रांतों में चल रहा है, उसमें मध्यप्रदेश में भी अपना एक स्थान बनाया है। इस मार्च महीने के दूसरे सप्ताह में प्रदेश के ऐतिहासिक स्थान ग्वाल्थियर में कार्यकर्ताओं की तालीम और प्रदेश का जागे का कार्यक्रम निश्चित करने की दृष्टि से विधिवत और सम्मेलन के आयोजन हुए।

श्री देवेन्द्र कुमार शुभ ने अपने ताजे चित्त की में करते हुए विधिवत का उद्घाटन किया "बंगलादेश की गति पीपी है, इस्लाम उरफा जमान के साथ बसा सचप रहता है दो भी चलता है, परन्तु उनका सचप रेलगाड़ी में रहेगा जो वह जलकर साफ हो जायगी। इसलिए जितनी गति बढ़े, समाज में जितना विज्ञान बढ़े, उतना ही सचप कम होते जाना चाहिए, नहीं तो समाज सस्पीन्न होगा। हम दृष्टि के समाज में द्विधिविचार भी जगह द्विधिव्यय की स्थाना करना आज की अनिवार्य आवश्यकता बन गयी है।"

श्री नारायण देसाई ने क्रांति के विषय पदुल्लो को ध्याया करते हुए कहा

- क्रांति कोई पया नहीं, जन्मा करती है।
- आन्दोलन-कार्यक्रम केन्द्रित नहीं, समस्या-केन्द्रित चाहिए।
- आन्दोलन सहायगत भी न हो और सत्त्वामुक्त भी न हो।
- क्रांति की कार्यप्रणति लोकप्रेरक हो।
- नेतृत्व में गणतन्त्रत्व हो।
- सामन-मुक्ति का आधार हो।

श्री गोविन्दराव देसाई ने विधिवत के

→ में शम-स्वराज्य के द्वारा "कार्य, भाई और दाक की हुकाओं के क्षीय के मुक्ति" पाने का आश्वासन जन-जन के हृदय में बैठ गया है। उत्तरकाशी जिले के ६६२ लीचों में तो अब तक २४४ सामान हो चुके हैं। मुरील, उत्तरकाशी — सुन्दरलाल बहुगुणा

सामने देश के आन्दोलन कार्य के निरीक्षण में वे दो बातें रखीं

- कार्यकर्ताओं में परस्पर-स्नेह, कुप-लता, शयना आदि गुण विनोद करने चाहिए, उतने नहीं बर पावे हैं।
- जिन मूल्यों को हम समाज में स्थापित करना चाहते हैं, वे हमारे परिवारों में नहीं दोष पड़ते।

गुवराज सर्वोद्यम मण्डल के अध्यक्ष डा० जोशी ने अपने बीच का अतिनिरीक्षण प्रस्तुत किया। जीवन-परिवहन की उच्च रोकक और अनपेक्ष बहानों ने सबसे बड़ी प्रेरणा और बल दिया।

श्री मुखर्जी ने राष्ट्रीय एवता के मर्मों में भाग प्रश्न का स्वरूप और उसके हल के लिए अपने दृष्टि रखी। राष्ट्रनायक का पुरा भारत का उतर का एक दक्षिण पर केंद्रों प्रतिष्ठा करता है, यह विशालो म बनाना। उनके मनुलिन दृष्टि कोण से अविचलर लोगों को लया कि उतर के लोगों को दक्षिण की कम-से-कम एक माया सीखनी चाहिए।

श्री बनारसीदास चौधरी ने अपनी हाल ही की विदेश-यात्रा के अनुभव सुनाने हुए कहा कि विदेश के देशों की युजना में पूरे के देशों में छप्यावार ज्यारा होने का प्रमुख कारण राष्ट्रीयता की कमी है। इसलिए परिवार के प्रति ज्यारा लगाव है और उतमें से पार्द भोजीवार पतपता है।

विधिवत की चर्चाओं में प्रत्यक्ष कार्य में लगे हुए युवक निम्नो ने भी दिलचस्पी के साथ भाग लिया।

विधिवत के आयोजन के बाद प्रादेशिक सम्मेलन शुरू हुआ, जिसकी अध्यक्षता मुखरात की कार्यकर्ता बदन सुशी हरविहास शोह ने की। मण्डल-प्रवचन करते हुए डा० जोशी ने बताया कि सर्व-मुक्त के बाद अवि-मुक्त और उतके बाद स्वातन्त्र्य-युग आया, अब स्वा-नता का युग आया है। भारत में इस

उपकार्य के लिए विनाश ने धम मुक्त किया है। लोग बात दे रहे हैं, और हम कार्यकर्ताओं को तय करना है। मध्यप्रदेश में मध्य में हमारे की बचत से यहाँ विनाश काम बडेगा जवना

बसर उतर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम भारत पर पडगा। सुशी निर्मला चदन देसाई ने कहा कि अब हम प्रखरवान और ब्रि-लान की भूमिका पर पहुँचकर शास्त्रदान की आर बख्तर हो रहे हैं, और इसने देश में अब हन नयी अर्थांगीति और नयी राजनीति को मुखरात करने के लिए एवम ही सर्वोद्यम।

पत्राज, हरिणागा, द्विधिवल प्रदेश और उतर प्रदेश में युजना छान करने में विनका बसा हाय है उन डा० द्ययानिधि पटनायक ने उल्लाद्वेरेक वाणी में सम्मेलन को बंधारिक स्तूति प्रदान की। उन्होंने कहा "एक आध्यात्मिक गति है और दूसरी वैदिक। पापीयों आध्यात्मिक गति के मालिक थे। अपने इस देश में जहाँ कपडों हुई तक नहीं बनती थी, वहाँ रेल के इतिम और हवाई अड्डा बनने लगे हैं, और धान-माष हर रोज लाठी, मोली, अणु-मैस और दवा [४४] भी बनने लगे हैं। आध्यात्मिक आधार के बिना यही क्या होगी है।

"शामरान के आन्दोलन को जन-आधारित करना ही है, परन्तु उसके पदले, गांधी का नाम लेनेवाले हर व्यक्ति और सत्या के आधारित यह आन्दोलन करना है। शामरान, सारी, धाति-सेना—तीनों के कार्यकर्ताओं में अब तक क्रांती निकटता आयी है और अब से तो उनका मिलजुल एकूत्र हो जाना है।

"द्वारे देश में बुद्धि है, गति है, दिल है, रिणाग है, जयान भी बसे बन्धी है। अब जरूरत है मार्वेपारा बनाने की, स्थि से स्थि जोडने की। यह काम कोई भी सरकार तो नहीं कर सकती। हमें जा जाकर जनता को समझाना होगा कि तुम अपने ऊपर विश्वास करो और अपना ठोस साधन करके आगे बढ़ो तो कोई भी पया सामन में होगा तो भी उतकी प्रद्वीय देना पडेगा।"

बनमान स्थिति का म्यान करते हुए डा० द्ययानिधि ने बताया, "रुब और

धमरिका हूँ मदद दे रहे हैं और चीन नरकसल्लाहियाँ सही करने के प्रयत्न में हैं। तीनों भारत के लिए लाछायिन हैं। तीनों का अक्षर बढ़ता जायगा तो भारत में एक नहीं, हजार-हजार विपत्तमान बन जायेंगे, वृत्त की नदियाँ बहेगी। इन तीनों को अपनी-अपनी जगह रखकर हमें अपना भार निकालना है। इसके लिए बिनोबा ने देश के ग्रामों में ग्रामदान के रूप में कार्यक्रम रखा है। इस कार्यक्रम का महत्त्व हम समझेंगे और सबको समझा सकेंगे तो हमारा देश अपना सच्चा स्थान प्राप्त कर सकेगा।”

मिण्ड-मुरैना प्रांतिक-समिति के मन्त्री श्री महावीर प्रसाद ने बागी क्षेत्रों में किये गये कार्यों का विवरण पेश किया। २० आत्म-समर्पणकारियों में से १६ मुक्त हुए और ४ को आज़म कारावास दिया गया है। उनको मुक्त कराने के प्रयत्न की आवश्यकता बतायी। उन्होंने कहा कि ग्रामदान के कार्यक्रम में से पूरे बागी क्षेत्र की समस्या का हल निकल सकता है।

प्रदेश सर्वोदय मण्डल के मन्त्री श्री नरेंद्र दुबे ने सम्मेलन की ओर में निवेदन प्रस्तुत किया, जिसमें वर्तमान समस्याओं पर सर्वोदय का दृष्टिकोण पेश करने के साथ-साथ प्रदेशदान की ओर तीव्रता से बढ़ने का सबन्ध और आह्वान था। पूरे प्रदेश के हर जिले में समुद्र-हिक पदयात्राएँ चर्लें और ६ जिलों में जिला-दान का उद्यम प्रयत्न हो, ऐसा कार्यक्रम बना।

सुश्री हरविलास बहून ने सम्मेलन का समारोप करते हुए चार बातें रखीं:

- ग्रामदान की प्राप्ति के साथ-साथ उत्तनी ही गति से अपनी पत्रिकाओं के ग्राहक बनाने का और साहित्य-प्रचार का कार्य चलाने को अक्षरत है।
 - कार्यकर्ता-परिवारों में स्वेच्छक सतति-मार्वादा होनी चाहिए।
 - शिक्षित-सम्मेलनों में परिवारों की बहूँ विशेष हितसा हैं।
 - कार्यकर्ता एक-एक बन्ध भापा सोलें।
- श्यालपर के खादी-सदन में ३ मे १० मार्च तक आयोजित शिविर और सम्मेलन का मुक्ता हंचालन श्री काशिनारायणी त्रिवेदी

ने किया। श्री खोडेजी और श्री दादा-भाई नाइक की उपस्थिति ने भी आयोजनों की सफलता में सहयोग दिया। मध्यप्रदेश में अब तक २,७०५ ग्रामदात हुए हैं, जिसमें ७ प्रत्युद्दान और २ सहस्रीलदान शामिल हैं। इस सम्मेलन के संस्तर के अनुसार अब अगला साल पराक्रम का साल रहेगा।

—वसंत व्याम

‘पराक्रम-वर्ष’ के कार्यक्रम

गत १-१० मार्च को श्यालपर में आयोजित दसवें प्रादेशिक सर्वोदय-सम्मेलन में निम्नलिखित कार्यक्रम सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए:—

(१) इस वर्ष प्रदेश को समस्त रचनात्मक संस्थाओं, जिला सर्वोदय-मण्डलों तथा सर्वोदय-मित्रों के सहयोग से प्रदेश के सभी जिलों में गांधी-वादादी-शिविरों की श्रृंखला का आयोजन किया जाय। इसमें अर्जुन हर एक जिले में व्यापक पदयात्रा-अभियान आयोजित कर ग्रामदान प्राप्त किये जायें तथा जिले में ग्रामस्तराव्य की वृद्ध-रचना की दृष्टि से शताब्दी के कार्यक्रम की विकसित किया जाय।

(२) प्रदेश के ५ जिलों-इंदौर, परिचम निमाड़, टीकमगढ़, सरगुना और मुरैना-में ग्रामस्तराव्य का बिच छडा करने की दृष्टि से सजत अभियानों द्वारा जिलादान-प्राप्ति का प्रयत्न किया जाय।

(३) गांधी-जन्म-शताब्दी के सुन्दर में प्रदेश के नये कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण तथा पुराने कार्यकर्ताओं के पुनर्संस्कार प्रशिक्षण के लिए एक प्रवासी-प्रशिक्षण-विद्यालय चलाया जाय। सजत अभियान के क्षेत्रों में ही प्रशिक्षण विद्यालय के सज चलाने की व्यवस्था की जाय।

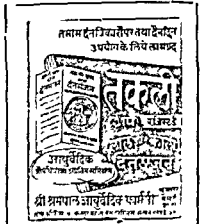
(४) अब प्रदेश में ग्रामदान-मुष्टि का अभियान प्रारम्भ करने की आवश्यकता है। इस दृष्टि से दो जिलों में, जहाँ सजत स्तर से सहस्रीलदान और प्रत्युद्दान हुए हैं, ग्रामदान-मुष्टि अभियान का भी संयोजन किया जाय।

मुष्टि-अभियान ने द्वारा ग्रामदानों गांधी में ग्रामसभाओं का गठन, ग्रामसभाओं के द्वारा खादी तथा ग्रामोद्योगों का सगठन, नगावदी, भागो-मुक्ति तथा विप रचनात्मक प्रवृत्तियों के सजत कार्यक्रम भी आयोजित किये जा सकेंगे।

(५) अर्थिक गति का शक्ति-स्रोत सर्वोदय-साहित्य है। इसने लिए इस वर्ष प्रदेश में गांधी-स्मारक-निधि द्वारा एक पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया जा रहा है। यह प्रयास किया जाय कि प्रत्येक ग्रामदानों गांधी में सर्वोदय-साहित्य के सेट के साथ इस पत्रिका का भी प्रवेश हो। प्रदेश में एक जिले के सभी गांधी में हमारी कोई-नकोई पत्रिका पहुँचे, इसका प्रयास भी इस वर्ष के हमारे कार्यक्रम का एक मुख्य अंग बने।

(६) नगरो में सर्वोदय-विचार के प्रवेश और शुभक-शक्ति के जागरण की दृष्टि से इस वर्ष तथ्य शान्ति-सेना के संगठन पर विशेष जोर दिया जाय। प्रदेश के सभी प्रमुख नगरो में तत्काल शान्ति-सेना के शिविर आयोजित किये जायें तथा केन्द्र स्थापित किये जायें।

(७) प्रदेश में खादी-ग्रामोद्योग की सभी संस्थाओं में मुष्टप रूप से तथा प्रदेश की विभिन्न रचनात्मक संस्थाओं में व्यापक रूप से समन्वय हो, इस पर विशेष जोर दिया जाय तथा खादी के लिए प्रात में समुक्त नेतृत्व विकसित करने का प्रयत्न किया जाय। ●



अ०भा० वादी-ग्रामोद्योग द्वारा प्रमाणित खादी-ग्रामोद्योग भण्डारों में मिलता है।

भूदान-यत्न : शुक्रवार, २९ मार्च, '६८

सुधी निर्मला देशपाण्डे : २१ वीं सदी का सपना

कार्टेड के प्रतिनिधियों को सतुष्टपणे बांधा चलन होने के पक्ष में था। बांध पर धेरा था। श्रात अठवार में समाचार था कि निर्मलाजी को मानवसुधी सुधी निर्मलाजी सर्वोपे कावचतामा को मनीषित करीगे। सेने शारी घन से दुरत्या के छत्र छावित कर उनेर बट करने का उभव मीमा : शरावत ६ बने हुके छम्भेकन के शरण में कारवित हुने की कथा था।

इत अठवार को मैं बडा उनुकता से प्रशोषा कर रहा था। आज से यहूद वय दूध की मेरे मणुविद्यालय का उभवोवन की मिकी चुकी सुविधा परत-परत वरने लगी थी। इत १६९१ २२ में हय मे इतर मीषिट का दान था। उने उभव सुधी निर्मला देशपाण्डे की विरतिन सारणु महा विद्यालय में सारनीविद्या के प्राध्यापिका के पद पर हुं थी। वे नवीनवी ही मायी थीं। मैत्रा नि छाको का बटबट सवाज हुला है छात्रण शरी ताक में वे नि विद्यापीठ पर श्रमा देव प्रयासे इसके पछे ही नवी प्राध्यापिका की जिरी तारु मरणाथ किया जाय। विन्दु निरालाजी के हाथ को हुदु और ही बाट हुई।

उदके सावनीयुग व्यक्तित में एक बनीम घोषणा थी विरिक्त क्षारण का वही तो लक्ष्मी ने यह धरने ही घोषण करनी थी वतनु सारनीविद्यालय के विषयों के विवेकात्मक एवं सहज भावपूर्णरिक्त रूप में अविवक्षित करने के उनेर मेवक वय के प्रथम भाषण सुनकर ही धरने हीम सुध हो गये। उभव का बहुकाल तक हुका अवधि पीरियड मसाल होने की घडी बनी।

सहृदु बनी के पत्रक वय मे वने लक्ष्मी (गालिदा) रिक्त सारी वयन के प्राणय में निरने मया तो मय में अवीर अवीर के स्वात उठ रहे थे। इत बनी में उनके व्यक्तित में उभ के द्विषय के हुदु

परिचयन तो हुए हैं किनु भावितर बराबर अधिक बहुराई तक चला गया है। उनेर शय-भाषण य मायी और निनाशकी मे अत्यास-पान की सुधी पूरे दान है। हय शय में दहने से अघित मायीय का पण है।

शरणन व उभवक में चर्चा करते हुए सुधी निर्मलाजी ने उतावा कि विरहात बिहार में हय कावचन को अधिक प्रोचान और बच मिक्त रहा है। विदने वगह नवी में शरण में लगभग १० हजार मे अघित धारवचन किये जा चुके हैं विनमें मे १६ हजार से भी अधिक धाम वेवत विहार राण में ही दान य प्रात हुए हैं। कमी मो बरीव १ लाख बीव और ४ करोड लग



देराक निर्मलाजी व साय

और रोव है। आयकी बहुवीर परिचय एवं लयन मे आयपाठी विध अवार व क्षमे मीषे को मायीजी ने सगने के अनुमान प्रतीशील एवं उन्परीशील बना धरने हैं इतका उवाहरण विहार उभ मे दरपना धादु के छत्रक माड मीर की दुरी पर निपत बौरा नामक वीम है। यही के लोनों ने छत्रकमण्डि से रोव का बनिवधन पुता तथा उनेर निमायी का भाषण में बटवारा किया पत्रकीय रोवन ए अनापन उदे विद्यावित विदा हवि अनसाम्य निता देरकत का को ऐकताम सहक निर्मात कारि का भाव जिना जिरी प्रशर को बाहरी काय निप हुए कर रहे है।

उदोने एत हुदुत उगाहरण प्राणगी धारवचनका व कायी की वरकला कर दिया। उतरराणी के मनीषी प्रकथ व शीम में विरिक्त क्षणालों में लगभग १४०० से भी अधिक गुणमे बच रहे थे। वैरिक्त समूय शीम व शरणन के अलयन का जाने के परकरवण शरी सुधने क्षणालों में वारस म निने गये मया उतावा विद्यालय माया में ही क्षणालों समीने मे विषय मय।

सुधी निर्मला देशपाण्डे का निराव है कि शरणन क दारा यह मान्योचन एत मया मीरक वान प्रावुत कर रहा है। मला में छायाधिक कोषित मीरि और उन्परीक मालि प्रम दया मृप और अह्मिने के विर सुधान विद्यालय के प्रतिपान मे हो का उताव है। और उव मात पुत्र पुत्र म प्रवर्तिन कारवित राणासुधी की छोटी पर अविनायक एवं अनासतुकर लेटी पनीमी दिका को अनातीने वपु व एत मायवीरिक्त विषय पर का बनिवधन भेजने दे छेला। बहु उभी उने मात को होके। मी म अह्मिने एत वारि का शीम उन्परी विषय का विषय।

निनसुल विहार शय में दरमिय विना विरलान के अलयन मय हो सुक्त है मया मनिवधन का निनेलेने विदा भी प्रावचन के अलयन का बुना है। धर उवना उराय विहार मरणन है। इसके अघिरिक्त दश निगा में विहार बडीला उतर प्रणे विद्यालय हरिवाण वपार सपिकताड महराष्ट्र हुदुत न एत लपयना मालि उन्परी में शरणन एत शरणन के विद मीत प्रयास किये जा रहे हैं एत हय सेकी म बारी उवाहरणक शरणन मित गयी है।

सुधी देशपाण्डे की एक पुताक विद्यालय हिन्दी मराठी गुरुछत्री वेदुत अथवी भाषा में प्रवर्तिन हुं है। उन्परी उन्परी एक छोटी लक्ष्मी की पारवर्तिन में पत्रका बुनकर अनासतुकर वपुय एत अह्मिनायक मालि का अविनव वनेम दिया है। —सुजेट विद्यारी वय १००

वीवीय पाठक अविद्यारी व्यावितर



गांधी : संस्मरण और विचार

प्रकाशक : सखा साहित्य मण्डल, कनाट सर्कस, नयी दिल्ली;

पृष्ठ : ६०८; मूल्य : ₹ ३०-००

प्रस्तुत ग्रन्थ का प्रकाशन सन् १९६६ में पड़नेवाली गांधी जन्म-शताब्दी को ध्यान में रखकर किया गया है। इस कड़ी में पहले एक ग्रन्थ 'गांधी : व्यक्तित्व, विचार और प्रभाव' प्रकाशित हो चुका है।

प्रस्तुत ग्रन्थ में दो विभाग हैं। पहले विभाग में गांधीजी द्वारा लिखे गये विभिन्न व्यक्तियों के सम्बन्ध में संस्मरण हैं और दूसरे विभाग में गांधीजी के विभिन्न विचारों का संकलन किया गया है। ये विचार सन् १९१५ से लेकर सन् १९२१ तक के हैं। गांधीजी सन् १९१५ में भारत छोड़ो के बौर उसके बाद उनका राष्ट्रीय कार्य-क्षेत्र दिनोदिन व्यापक और तेजस्वी बनता गया। बसहयोग तथा सविनय अवज्ञा जैसे आन्दोलन इसी काल के आन्दोलन हैं। सन् '२१ तो गांधीजी और कांग्रेस के इतिहास में अद्वितीय रहा है।

गांधीजी ने विभिन्न देश-सेवकों, साधियों, परिवार के सदस्यों, अंग्रेज शासकों, अधिकाारियों, विरोधियों आदि के सम्बन्ध में उनके व्यक्तित्व, त्याग, स्नेह, विद्वत्ता, रोहार्द्रां आदि की समय-समय पर अपने पत्रों में चर्चा की है, उनका मोरव किया है, उनको प्रोत्साहन दिया है और उनको सेवा में लगया है। गांधीजी मूलतः धार्मिक और आध्यात्मिक निष्ठा से ओत-प्रोत थे और जहाँ भी गुण का अणु-सा कतरा मिल जाता था, उसे बटोर लेते थे और उसको चमका देते थे। गांधीजी उन व्यक्तियों में थे जो साहित्य के लिए नहीं लिखते थे, बल्कि जो कुछ लिखते थे वह साहित्य बन जाता था। बहुत से लेखक संस्मरण लिखने की कला-साधना के पीछे वर्षों खपा देते हैं और तब भी उनकी लेखनी शब्दाढम्बर से अधिक कुछ देने में क्षमर्षर्ष रह जाती है। गांधीजी के संस्मरण अपने में ही एक कला बन गये हैं और उनकी

शैली वह शैली है, जो व्यक्तित्व और हादिकता से अलग नहीं की जा सकती।

इन संस्मरणों से हमें अनेक बातें जानने-सीखने को मिलती हैं। क्या वह जमाना था, जब ऊँचे-ऊँचे लोग भी सम्पत्ति और प्रतिष्ठा को छोकर मारकर स्वराज्य की और देशभक्ति की खाग में बूर पडे थे और एक लगीटीपारी प्रकार की आधाज पर सरफरीसी की समन्ना लेकर चलते थे ! ये लोग साहसी थे, धीर थे, विद्वान थे, सब बुद्ध थे। लेकिन उन्होंने देश-सेवा का प्रत लिया, फकीरी का बाना बननाया और निकल पडे। गांधीजी को अगर ऐसे सगो-सगो न मिले होते तो क्या गांधीजी के छाये स्वराज्य आ जाता ? गांधीजी की भी यह विरोधात् रही है कि उनमें लोक-संग्रह का बहुत बड़ा गुणा था। छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े व्यक्ति के गुणों का आदर करना, उसे अपनाना तथा मोरव देना वे कभी भूलते नहीं थे। इन संस्मरणों को पढ़ते ऐसा अनुभव होता है मानो हम किसी ऐसे उद्यान में बिहार कर रहे हैं, जहाँ देश-देश के पुष्प खिले हैं और जिनका आकार, रग और सुगण हमारे दिल-दिमाग को मस्त बना देती हैं।

दूसरे 'विचार' खण्ड में गांधीजी के सन् १९१५ और १९२२ के बीच के विचारों का संकलन है। इन विचारों में उनके धार्मिक, सामाजिक और राजनैतिक विचारों का दर्शन हो जाता है। सर्वप्रथमी राधाकृष्णन् ने अपने प्रस्तावना में ठीक ही लिखा है कि "गांधीजी के लिए स्वाधीनता केवल एक राजनैतिक तथ्यमात्र न थी। यह एक सामाजिक सच्चाई भी थी। यह भारत को विदेशी शासन से नहीं, अपितु सामाजिक क्रूरतियों और साम्प्रदायिक भगर्षों से भी मुक्ति दिलाने के लिए खडे थे। गांधीजी

समस्या को सतही स्तर से नहीं, षड से देखने के ओर उन्होंने भारतवासियों को जो निष्ठा दी है, जो सिद्धांत रिये है, जो मार्ग बताया है वह मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए है। यह मार्ग तात्कालिक नहीं है, शाश्वत है। इसमें सन्देह नहीं कि हमने उनके धरीर का अंत कर दिया, किन्तु उनकी आत्मा, जो स्वय एक देवी प्रकाश है, बहुत दिनों ओर बहुत दूर तक प्रवेश कर अमरत्व पीड़ियों को धेष्टता से जीवन-यापन के लिए प्रोत्साहित करती रहेगी।"

इस ग्रन्थ के सम्पादन-संकलन का दायित्व एक संपादक-मंडल पर रहा है। इसमें सर्ववी काकासाहाय कालेकर, विपोगी हरि, बनारसीदास चतुर्वेदी, डाक्टर केसरकर, हरिभाज उपाध्याय, विष्णु प्रभाकर तथा यशपाल जैन हैं। इन सबके कुशल तत्वावधान में इस ग्रन्थ का संपादन हुआ है।

बड़े आकार के, सुन्दर-आकर्षक छपाई से युक्त और बढिया मण्डने की निष्ठ के इस ग्रन्थ को अपने सहृदय रखने का और उसका अधिमान मानने का लोभ मरपण करना किशके लिए संभव होगा ? —जमनालाल जैन

× × ×
गांधी-जीवन दीपिका : लेखक-थी यदुनाथ दत्ते, प्रकाशक-महाराष्ट्र राष्ट्रमापा सभा, पूना-२, मूल्य ₹ ११००।

गांधी-जन्म-शताब्दी को दृष्टि में रखते हुए इधर जो साहित्य प्रकाश में आ रहा है, उसमें 'गांधी-जीवन दीपिका' एक बोधगम्य पुस्तक है। महाराष्ट्र राष्ट्रमापा सभा, पूना में गांधीजी के प्रति अपनी श्रद्धा प्रकट करने के लिए 'गांधी-जीवन-दीपिका' नामक परीक्षा का आयोजन किया है। इस परीक्षा की तैयारी के लिए विद्यार्थी उक्त पुस्तक से यथेष्ट चहारा ले सकते हैं। इतना ही नहीं, गांधीजी के जीवन-चरित्र से प्रेरणा लेकर अपने जीवन में अच्छा सत्कार हाकने में भी पुस्तक सहायक सिद्ध होगी। न केवल विद्यार्थियों के लिए वरन् सभी के लिए पुस्तक उपयोगी है। लेखक थी यदुनाथ दत्ते एव राष्ट्रिय कार्यकर्ता और सेवक हैं। पुस्तक की छपाई-मण्डन सुन्दर है।

—प्रमु

देश.

१७ मार्च. बरत का घाटा पूरा करने के लिए रेलवे मजदूर द्वारा तीस हप्ता तक लगायी रेल-नर्मन्नाधिको की छुट्टी का प्रस्ताव किया।

१८ मार्च. बिहार में ४० दिन की मजदूर-अपरवाह का पत्र, लखनऊ प्रस्ताव। १४ के विपक्ष १६२ मता के खोले गए।

१९ मार्च. प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी द्वारा पारसपुर मजदूरों की छुट्टी पर अकाउंटेंट सचिवों में रेल मंत्रालय के निष्काक उचित करने का आदेश पारसपुर।

२० मार्च. पालकियों (सेनुर), रेल दुर्घटना में ४७ व्यक्ति मरे और ४१ घायल हुए।

२१ मार्च. पत्राच में राष्ट्रपति गण्ड अरिहन्त शाहू बहने की भावधर्या में मारा।

२२ मार्च. चीन व पाक की पोरनी सैरारी के अन्त मध्य। भारत में सैरा के एको अन्तो को मुक्त किया जा रहा है।

२३ मार्च. सेठ बाबिदराय ने राज साध सरोवण बाबुन क विपक्ष भाग खींचने म्वाधातव में भारीभाविदा (रिट) दाखर की।

विदेश

१७ मार्च. परगुवा अर्पासिदर राधुनी को अरपास देने की अन्तरीकी म्को सधि पर यूरोकार्पासिदा ने हत्याधार न करने का निश्चय परत किया।

१८ मार्च. कविगण-अन्तेक में होने के ले तादु के भाव कायन करने का निश्चय किया गया।

१९ मार्च. राष्ट्रपति गण्डराय ने अणु पीन अन्तक के जाने सधो में कठोरी करने के लिए देशमारी प्रयास करने की अन्तरीकी, वार्कि विनवाण-युद्ध कोला का म्के।

२० मार्च. रोडेगियाई अन्तरीकी मुनिड अन्तकन के राष्ट्रपतिको ने मुनिड-युद्ध में १८ गोरो के मार काय।

२१ मार्च. इण्डोनेसी केरा का बोरेन पर हमला हुआ। सैन्य सैन्य में अन्तरीकी हुई।

भूदान-सक : मुक्त्या, २९ मार्च, ६८

पदवाधाओं के विरुद्ध आंदोलन

गोपी-गान्धी सर '६६ का युवराज के मोन-मोन में निवोसोनी द्वारा प्रकीर्ण विविध कार्यक्रम—मुम्बई कामगार, कामासिमुण सारी तथा वार्कि-सेक—का संघटन सृष्टि करने के लिए कार्यक्रम बनाया जा रहा है। इसके एव भाग के रूप में युवराज सरोवर मजदूर के उपायन से कामानी मर्द माह में मुल और सोरापुर के पीन बिलों में सांघटिक परधमभावा का आयोजन हुआ। इसके अन्तर्गत १ से ६ मर्द के सोराज मुक्त बिलों में १२०० सौदा में २५० पदवाधा-रुक्मिणी द्वारा प्रयासकाय का संदेश सृष्टिनाया जाया। इसके बाद १६ से २४ मर्द की संधि में सोरापुर विभाग में पदवाधाई होगी। इन पदवाधाओं के पूर्ण प्रवेक विभाग में सल्लुकी और बिल सारोप प्रशिक्षण विविधों का आयोजन को किया जा रहा है।

सरगुवा जिले में महिला सरोवारा

देव में सकि-बागल के उद्वेध से १२ वर्ष तक सारकभावा का मरतन अणु विनवो महिला सरोवारा का ससुद्धा बिले में २६ फरवरी क दिन स द्वितीय दौर सार पुणे जायन से आरम्भ हुआ। सर्वप्रथम अम्बिसगुड अण्डर में ११ भाग तक का कायमन रखा गया। पन्ध्र दिन की अवधि में कोकसोकी बहनें को अवको, अन्ती सहा विधियों को पार करने साठ मील की परधरणा कर चुकी है। चौध्र गीलों में अन्ते विगल का संदेश सृष्टिनाया गया। १७ महिला सरोवारा तथा १९ पान-सरोवारा को सरोविक किया गया। सांघटिकक दृष्टि से जिलागत के विर ससुद्धत वातावरण बन रहा है। इस सरोवारा के दौरान सात वाधरन सार हुए।

—अनुभव गोह

श्री सुरेशराम भाई का उपवास इलाहाबाद २४ मार्च। रबर मिली है कि साम्प्रदायिक तनावों को समाप्त करने के उद्देश्य से श्री सुरेशराम भाई ने १४ दिन का उपवास आरम्भ कर दिया है।

एक धारास्यक सप्टीशरग

“एम्बल आफ दि किडिचयन टोचिंगरा”
“मिस्त्रपर्म सार”

आ विनोसोनी द्वारा पत्रन किया गया बारकल का सार “एम्बल आफ दि किडिचयन टोचिंगरा” नाम के सार लेख सध प्रकाशन द्वारा प्रकाशित हुआ है। यही मुलन एन सात एहने सल्लुकि मरिद, पत्रकार द्वारा “मिस्त्रपर्म सार” नाम स स्रीमिन रविनी में प्रकाशित को गयी थी। आ विनोसोनी ने सल्लुक स्रोतों में जो बारकल पार सध सुधर के आरम्भ में लिखा है, उसका स्रोत “मिस्त्रपर्म सार” है। इलीयुए पत्रकार में प्रकाशित सुधर का नाम “मिस्त्रपर्म-सार” हो गया था का, लेकिन इन्ने पत्रकार की पारणा बन गयी है कि अन्तेको वाधरन-सार का ही हितो ससुद्धा “मिस्त्रपर्म सार” नाम से प्रकाशित है।

दायकल पत्रकार से प्रकाशन कोर सार लेख सध में प्रकाशित स्रोतों सुधनें सरोको में ही है। लेकिन नाम अणु-अन्त हो जाने से पालकसुधी को बारी है। कई माहों से हिन्दी विगलन सार को नांग काली सृष्टी है। पारक सृष्टया मोर कर में कि काइकल-सार का हिन्दी ससुद्धा सधो प्रकाशित नहीं हुआ है। जब हा जायना स उन्तो सृष्टया पालको को अन्तरीकी बानी। —संपालक सार सैवा सध प्रकाशन—वाधरगुसी १ नवरी सारणीय आभासिक सांला

नयी सारणीय सांघटिक सांला अन्ते, '६३ के सधो सारक निधि, पत्रा, सृष्टियाप सध द्विपारक प्रवेक के सारसंधान में बारी को गयी है। प्रवेक के सधन सधने को अन्तया ३ से ८ सध होनी चाहिए। अन्ते का मोन-सधे पालको को कन्-से कर २० सधे सांघटिक देना होगा। अणु वाधरन-सधो का खर्च सल्ला का होगा। अन्ते को अन्तरीकी (सुधरगु) २० मर्द, '६८ को सार काय होगी। विवेक वाधरगु के विर निधे, का निधे—श्री सल्लुप्रथम सध, सरी, सधो सारक निधि, सृष्टी-सुधरगु (कारकल)।

उन्नीसवीं के समाचार

विहारदान की ओर

● घोषणा : १० मार्च। घोषणा प्रखंड के मुखियो, सरपंचो तथा समाज-सेवो कार्यकर्ताओं को एक समा स्थानीय सूचना-केन्द्र में जिला पंचायत परिषद के अध्यक्ष श्री मुकुन्द प्रसाद वर्मा की अध्यक्षता में हुई। अध्यक्ष-पद से श्री वर्माजी ने विहारदान के महत्त्व को समझाते हुए कहा कि विहार राज्य पंचायत परिषद काफ़ी विचार-विनिमय के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँची है कि आज की परिस्थिति में ग्रामदान ही एक कार्यक्रम है, जिससे ग्रामीणों का संगठन हो सकता है और ग्रामस्वराज्य की स्थापना हो सकती है। प्रशासन को सुविधा दे गाँव है और सभी योजनाएँ गाँवों के लोप मिलकर ग्राम-स्तर पर ही बनायेंगे तो

प्रशासन सक्षम होगा, गाँवों का अभिन्नम जागृत होगा। इसी अभिन्नम के माध्यम से गाँव सुरी हो सकेंगे। ग्रामदान के सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक पहलुओं पर प्रकाश डालते हुए और दिया कि हम सभी गाँवों की स्वल्प को प्रखण्ड करने में जुट जायें। सर्वसम्मति से प्रखण्डदान प्राप्ति-समिति का गठन किया गया और प्रखण्ड को ६ भागों में विभक्त कर कार्य-योजना तैयार की गयी। इस अवसर पर प्रखण्ड विकास पदाधिकारी, समन्वय आश्रम के व्यवस्थापक व जिलादान प्राप्ति-समितियों के संयोजक ने भी चर्चा में भाग लिया।

● मधुबनी : ७ मार्च। २ फरवरी '६८ से दरभंगा जिले के अपराठाड़ी प्रखण्ड से ग्रामसमाज-अभियान शुरू हुआ। टोली में श्री रामचन्द्र सायक, श्री जगदीश बबानी और तीन विद्यार्थी हैं। सघन-यात्रा के दौरान फरवरी माह में बीस ग्रामसमाजें गठित हुईं,

माघें तक प्रखण्ड के सब गाँवों में गठित हो जायेंगी। नवे भूमिदानों के ग्रामदान-कार्य पर हस्ताक्षर भी रोज मिलते हैं। विटोली के सभापति सुखलाल महतो केजुएट हैं। मिथान के सभापति लालबीराम हरिजन हैं, मंत्री बाहाण, और कोषाध्यक्ष राजभूत हैं। तारापट्टी के सभापति रामपल हरिजन हैं, और मंत्री सुखदेव अमात्य बाहाण। नवटोली के सभापति नवकांत मिश्र, और मंत्री इशकान नवाफ जुने गये।

भण्डरिया का प्रखण्डदान

इस मास पलामू जिले में ग्रामदान में भण्डरिया नामक प्रखण्ड प्राप्त हुआ है। इस प्रखण्ड में कुल ६६ गाँव हैं, जिनमें से ५६ गाँवों का ग्रामदान हो चुका है। २४०० की जनसंख्या के गाँव भण्डरिया भी ग्रामदान में प्राप्त हुआ है।

—ठाकुरदास वर्मा

उत्तर प्रदेश

ग्रामदान-अभियान—मेरठ जिले के हाण्ड बहरीली के दो ब्लाकों में चिम्हावली तथा गन्धुकीचर में ६ से १३ मार्च होली का समय होते हुए भी, और चौपरी चरणाचिह्न और प्रकाशवीर शास्त्री के भाषणों से उत्पन्न परिस्थिति के बावजूद—जो अचूक नहीं थे, वस-न्याय ह्वार तक के बड़े-बड़े गाँव ग्रामदान में शामिल हुए। इनमें से अधिकांश गाँव मुस्लिम आबादी के हैं, जो साम्प्रदायिक दंगों के कारण क्षुब्ध थे। ऐसी परिस्थिति में भी उन्होंने ग्रामदान के विचार को स्वीकार किया। ६६ ग्रामदान हुए। —कपिलभाई

गुजरात ग्रामदान सम्मेलन

आगामी १८ अप्रैल—शुक्रवारति दिवस—को अहमदाबाद में गुजरात ग्रामदान-सम्मेलन आयोजित किया गया है। सम्मेलन में गुजरात के रचनात्मक, धैर्यगिक, सांस्कृतिक, राजकीय और सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र के प्रति-निधित्व भाग लेंगे। यह सम्मेलन गुजरात के राज्यपाल श्री बीमन्नारायण और श्री दादा धर्माधिकारी के सान्निध्य में होगा। ●

दरभंगा में पुष्टि-कार्य

(सदर अनुपण्डल की जनवरी '६८ तक की प्रगति)

प्रखण्ड	ग्रामसमाज संख्या	पुष्टि-कार्यक तैयार कुल गाँव-संख्या	पुष्टि-नवाधिकारी के महर्ता दालित गाँव-संख्या
बेठली	१७	११	७
धनरामपुर	२७	२०	५
पाले	३८	१२	४
दरभंगा घट	६	५	२
बहाडुरपुर	५	६	४
बहेरी	८०	१ पंचायत	—
		२ गाँव	
बिरोल	१२	२	—
जेनीपुर	१७	१५	—
मनीगाली	१६	८	१
सिंहवाड़ा	३०	८	२
हायापाट	३२	१६ गाँव	६
		१ पंचायत	
कुल	२६०	११० गाँव	३० गाँव
		२ पंचायतें	

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में १८ रु०; या १ पीण्ड; या २॥ डालर। एक प्रति : २० पैसे

श्रीगणेश भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं खंडेलाल प्रेस, मानमंदिर बागसमी में मुद्रित

ग्राम-स्वराज्य की घोषणा

ग्रामदान : ग्राम-स्वराज्य के लिए !

हम मानते हैं कि ग्राम-स्वराज्य की सिद्धि के लिए जिन संकल्पों की पूर्ति तत्काल आवश्यक है वे ये हैं :

१. स्वायत्त ग्रामसभा

ग्रामस्वराज्य के लिए गाँव एक संपूर्ण इकाई होगा। गाँव में बाज भेद है, विरोध है, संघर्ष है, लेकिन मूलतः गाँव को एक समुदाय होना है, जिसमें हित-विरोध न हो। इमका एक ही हित है—ग्रामहित। ग्रामहित की सिद्धि की दृष्टि से गाँव के विकास की जिम्मेदारी ग्रामदान के बाद बालिगों की ग्रामसभा पर हो। ग्रामसभा स्वायत्त हो, जिसके काम में सरकार की मदद तो है, लेकिन हस्तक्षेप न हो।

२. दलमुक्त ग्राम-प्रतिनिधित्व

अभी जो सरकार बनती है वह राज-नैतिक दलों के प्रतिनिधियों को लेकर बनती

“आज कन्याकुमारी के चरणों में हिन्द महाभाग के किनारे और मूर्ध्न भगवान् की उपस्थिति में हम यह प्रतिज्ञा करने हैं कि अब तक भारत में ग्रामराज्य की स्थापना नहीं होगी, तब तक हम उसीके लिए धूमते हुए प्रयत्न जारी रखेंगे। उसका सिद्धि के लिए हम भगवान् से बल-प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं।”
—(कन्याकुमारी, १५ अप्रैल '५७)

है। ग्राम-स्वराज्य गाँव को या नगर को सामाजिक सगठन की बुनियादी इकाई मानता है, इसलिए विधान-मण्डल में सगठित ग्राम-समाजों के प्रतिनिधि जाने चाहिए, न कि दलों के। सरकार ग्रामसभाओं तथा नगर-समाजों के प्रतिनिधि इन्हीं प्रतिनिधियों को हो, दलों की नहीं। गाँव और उनकी ग्राम-सभाएँ सत्ता की राजनीति और उसकी लड़ाई में न पड़ें। दल-मुक्ति लोकनीति के लिए अनिवार्य है।

३. ग्रामाभिमुख अर्थनीति

सरकार की नीति; और बाजार की नीति, दोनों गाँव के प्रतिरूप हैं। बड़े उद्योग और व्यापार, तथा शहरी अर्थनीति के हित में गाँवों का शोषण हो रहा है। यह समाप्त हो; गाँव अपनी आवश्यकताओं और साधनों को सामने रखकर योजना बनायें; सरकार

मदद करे। गाँव का लक्ष्य एक ऐसी स्वायत्त अर्थनीति हो जिसमें सबकी (अन्तिम व्यक्ति की) जीविका सुरक्षित हो, किसीका शोषण न हो, और सबके लिए भौतिक और सांस्कृतिक विकास का अवसर हो। यह अर्थनीति बाजार की नहीं होगी, सरकार की नहीं होगी, बल्कि भाईचारे (शेयरिंग) की होगी। स्वावलम्बन साधते हुए गाँवों का आपसी तथा शहरी के सम्बन्ध परस्परवलम्बन का होगा।

४. स्वतन्त्र शिक्षा

शिक्षा सरकार से पूर्णतः स्वतन्त्र होनी चाहिए, तभी वह समाज की आगे ले जाने वाली स्वतन्त्र और रचनात्मक बुद्धि का विकास कर सकेगी। लेकिन इतना तो तत्काल होगा चाहिए कि जिस तरह सरकार का विभाग होते हुए भी न्याय स्वतन्त्र है, उसी तरह शिक्षा भी हो। सरकार सहायता

करे, विन्दु सचालन और नियमन शिक्षकों और अभिभावकों के द्वारा हो।

५. पुलिस-अदालत-मुक्त व्यवस्था

पुलिस और अदालत के कारण होनेवाला नागरिक-शक्ति का हास्य सुरक्षित बन्द होना चाहिए। शान्ति, सुरक्षा और सुव्यवस्था के लिए गाँव-गाँव में पालि-मेना का सगठन हो। गाँव के भगड़े गाँव में ही तय हो, जो अदालत में जा चुके हैं, वे वापस ले लिये जायें।

६. सर्व-धर्म-समभाव

किसी धर्म को माननेवाला हो, कोई भाषा बोलनेवाला हो, भारत का हर नागरिक हमारा भाई हो हमारा, गाँव एक 'परिवार' हो, जिसमें सब समान हों, स्वतन्त्र हों, मुक्त हों।

हम इन सवर्णों की पूर्ति के लिए तैयार हो, और अपने गाँव को तैयार करें। उसी

शामसूक्ति : क्या हम निम्नलिखित ५ मुद्दों को ग्राम-स्वराज्य का सार मान सकते हैं, और ऐसा मानकर 'ग्राम-स्वराज्य की घोषणा' के रूप में जनता के सामने प्रस्तुत कर सकते हैं ?

- (१) स्वायत्त ग्रामसभा
- (२) दलमुक्त ग्राम-प्रतिनिधित्व
- (३) न्याय-विभाग की तरह स्वतन्त्र शिक्षा

(४) ग्रामाभिमुख अर्थनीति
(५) पुलिस-अदालत-मुक्त व्यवस्था
विनोबा : आज की परिस्थिति में एक छठवाँ मुद्दा आवश्यक है, वह है—

- (६) सर्व-धर्म-समभाव।

इन छ को मिलाकर ग्राम-स्वराज्य की घोषणा बन जाती है।

तर्ह जिला, राज्य, और अन्त में पूरा देश तैयार हो। हम मानते हैं कि ग्रामदान गाँव की मुक्ति का बान्धोहन है। वह मुक्ति सबके निर्णय से आयेगी, सबकी शक्ति से आयेगी, सबके हित में आयेगी। 'सर्व' का यह मन्त्र ग्राम-स्वराज्य की प्रेरणा हो।

ग्राम-स्वराज्य के हिन्द स्वराज बनेगा, और विश्व-परिवार बनेगा।

[६ अप्रैल हम 'ग्रामस्वराज्य-दिवस' के रूप में मनाते हैं। इस अवसर पर ग्राम-स्वराज्य की घोषणा उपयोगी होगी।—सं०]

भारत में ग्रामदान-प्रखंडदान

(३१ मार्च '६८ तक)

प्रान्त	ग्रामदान	प्रखंडदान
बिहार	१७,६३६	१४२
उड़ीसा	५,७७६	३४
तामिलनाडु	४,६६२	४४
आन्ध्र	४,२००	१०
पंजाब	३,२६६	६
उत्तर प्रदेश	४,४१२	२४
महाराष्ट्र	३,१२६	११
मध्यप्रदेश	२,६४२	६
आसाम	१,४६३	१
राजस्थान	१,०२१	—
गुजरात	७४६	३
बंगाल	६२७	—
केरल	४०६	—
कनटिक	३२४	—
दिल्ली	७४	—
हिमाचल प्रदेश	१७	—
कुल :	५३,८७४	२५४

उनके आने की खुशी क्या और जाने का गम क्या ?

ये सदिने की वेदक ! मायाय देव करार का रूप । शीतल ही लविको की मन
 परत बचने । इनका हाक २६ मास को 'कवटा' की वेदक बाल हो गयो । दिवको क एक
 श्रित्तु छाताहिक ने जाने मुलाएउ पर लिखा 'कवटा'] सन्द, सन्द, शब्द' ।

कीर्त श्रेया, इससे ज्यादा होखे क्या ? कीर्त श्रेया गरी, क्या कम या कि
 बुनिया के बने ने कान्ते परीय लिखेवारी को देस, और उनका दुल दर तुन ता लिखा ।
 जो शाने हुए है उनमें से शायद कुछ पूरे भा हो जायँ । मले हो कुछ बहुत न हो परे परे
 दाने के लिख भी हम उनके दुःख को न हो ?

आम की बुनिया काने और तरीय में बंदी हुई है । बुनिया ही क्या हर तीर मोर
 हुए देस में काने-मरीय की दोषको छात्रे होनी जा रही है । काने पर कानेकाने का विस्तार
 लय करीब है । रविण अमेरिका, अरोका, दक्षिण और दक्षिण पूर दक्षिण म गरीयो का
 छात्राग्य है । इस विद्यालय लुत्तान के बदली देसों ने काने देसों ने यह माग को भी कि
 काने राष्ट्रीय आम में म मनि नो लखे बीछे एक छात्रा हुई देसो । हम पूरे काहित,
 पसोत काहित । हम को सुसारी विद्यारो में आना चाहते हैं ।

यह और क्या है कि आम को काने है उन्होंने इहाँ मरीयो की बदोतन का
 बदोय है । दक्षिण रणा हुआ है, लेखिण विद्योको काने को वाप दिखाने से क्या
 कायस ? आम हम कुछ भी बने, मात ता यह है कि वोरण और अमेरिका से दुबारे मीय
 पूरी गरीयो होवेवाको है । श्रित्तु पूर करीदान है अमेरिका विद्यनयाम में दस हुआ ताह
 र्थन क्या है कि उके काने हाकर को ही बचाने की परे है । और माता के देसो का प्योन
 कायस के लेन-देन पर ही बहिक है । क्या बुनीयानी देस और क्या कस के 'एगाना' बरारी
 दस, एक एरिषा और अरोका की मोरारी बुनिया में अल्ला हाए लीकने जा रहे है । क्या
 ही, काने को मरीयो से मुह-मय बहुत है कानिण रूखा है मरीयो को मरीयो ही । पनी देसो
 को जमान में मरीयो देसो का आम है कृपा मात देस और नीवार दास लया । यह लय २
 योग्य का है । लेखिण बुनिया के बाजार में इससे निरत हुए होख गये ।

मरीयो देस चाहते हैं कि पनी देस उनका मात कानिँ ताकि उह व्यापार में
 पारत न हो । इनके अलावा उहे दुँकी और मरीयो भी दे ताकि वे अल्ला काचित रिक्तान
 कर कने । पनी देसो को वे दोसरे मनि मरु भी है । लेखिण उनको काने मरदुनियाँ है ।
 मरीयो देसो के पयस अमेरिका को क्या है ? श्रेयाविषय छोड दे तो कुछ कथा मात तुल हकके
 देवार कान, काय, लोको, भीयो, रबर के रिक्तान और क्या है ? काने देसो को अ पयस-हकका
 बदली का रही है । उनको उलायत-अकरीक बदली जा रही है । श्रित्तुनिन के अने-अने
 'पिथैयिक कायान' बराने जा रहे है । कहीं उनको रिक्ता और कहीं हमारो क्या ?

दिन्नी को वेदक में हमारो मीण पूरे गरी हुई, यह एक लख के अ-अ ही हुआ ।
 काहित, मरिष देसों के आने विगत का क्या विष बनया है ? क्या यही कि वोरण
 अमेरिका देस हो जायँ ? क्या इत जखल ने के अल्ला मरिषय रहने है ? एरिया और
 मरीयो के शासको ने काने-अने देस में सब लख बना लिखा है ? अल्ल कण, तुंग, का
 कानोका, छात्राधिक आर्याँ सब उ होने श्रित्तुने से मात काने को कानिण को है । श्रित्तुयाम
 क्या हुआ है ? मरीयो म यलात हुआ, पर का बुनीयार कानुन हुआ, कौहरागो कानय
 के सीने पर कानर हुई गुणवती और बेरारो का राज हुआ । एक के बाद दूसरे देस में
 श्रित्तुने, गरी कान रूपायी देस है । कौ, यह सब रिक्तान और रिक्तान के पयस में, कौर
 श्रित्तुने सहायको को मरद से हुआ, कौर हो रहा है । जो बराने हुदारे हमारो पाप कर
 रहे है वही श्रित्तु उके कडर, कानि हय काने लीका के छाप कर रहे हैं । हर जगद

अधिकार नहीं, कर्तव्य

मलर मर लेख नेकल कानिणारी का
 काएह रसो को कनीयो इर मोर न दे, सो
 पारी कान कने कडको कोर अकथरवा
 फेड कायकी । यदि कानिणारी के काएह ने
 कनीय हुएक काना कतय्यपालन को,
 तो मलय कानि म तुलद कयसका का शाय
 स्थानित हो जाय । यदि काय यह छात्रा
 काय छात्राक विद्यम माविको और
 मरदुको, कनीयारो कोर विद्यान हिन्दुका
 और मुकुलपनी पर लागू कर, ता देखें
 कि मातर और मलय के दुवार भाषा म
 जोनन और व्यसय में मात्र नको पाया
 जागे है वेतो कानिण और कान्यपालता
 पैदा किने किना कौनन के लयाम दोरो
 में अत्यन्त तुलव सवय स्थानित किने जा
 काने है । (श्रित्तुय, ९-५३)

कानि यही को कानिणैर अने हुए है ।
 मरिषकी देसो से मयो तक जो मरद किने है
 उनका बुद धुन कुकाना मुनिण हो रहा है ।
 यह जाके हुए भी कि मरिषको जोनन
 मरुदि और मरिषी हुदारे निण मरवा
 मरुदुलक है हय नमके बीछे लीक रहे है ।

हमने विद्यान के नाम में कानो जनता
 को छोड़ दिया है । उदकी धाम-कानि को
 उकेकी प्रतीका भी उके सरल और मरुदर
 की हमारो मरद में कौई नद रही । हमने
 जनता में-कान धम्मन और कानार पर
 मरयो किया है । हमने कानो मरिषकिण
 को परामय के मरुदर कानो नयो राय
 मीरि, नयो लयकोरि नयो श्रित्तुनिनि मीरि
 निराली है । हम विद्यालय में, श्रित्तुयको यह
 पदे । यह पदो कम्मन और मरुदि का नहीं
 है । अजाता द्वारा उलायत, जनता के निण
 उलायत—होए उलायत हमारो मुक्ति का है ।

कानर 'कवटा' मर मी हमारो कानि
 कोक दे तो हम मानते कि हम मरुदि का नहीं
 है कने कने अजाता हूँ निरत का ।
 यह कानोकी, यह मरीयो की क्या तो
 बुनिया रहेगी तो काने एक होके ।

धर्म और राजनीति

का विकल्प

अध्यात्म और विज्ञान

एक बात मैंने बोग्स वार अपनी यात्रा के दरम्यान दुइरायी और मुझे उत्तम प्रचारक मिले थे पण्डित जवाहरलाल नेहरू। उन्होंने मेरे नाम में वह विचार पलाया। जहाँ-जहाँ गये—रूस में, अमेरिका में, सब जगह मुनाया कि बाबा का कहना है कि सादस और स्पिरिचुएलिटी दोनों का इन्ट्रड्युक्शन चाहिए, भिन्न-भिन्न धर्मों की जगह स्पिरिचुएलिज्म आना चाहिए और पालिटिक्स की जगह साइन्स आना चाहिए, तब काम होगा। पालिटिक्स छाडना होगा, रिजिजन छोडना होगा, व्यापक साइन्स और व्यापक अध्यात्म का स्वीकार करना हागा तभी दुनिया के मसले हल होंगे, अन्यथा राज-नीतिज्ञ जो चीज एजन्टा के लिए करते जायेंगे

विनोदा

वह पूर डालने लगी ही बात हागी। उन्होंने बगला भाषा के दो टुकड़े कर दिये। उन्हें के दो टुकड़े कर दिये। पञ्जाबी के दो टुकड़े कर दिये। तीनों भाषाओं को ताकन सजिन को। जर्मनी और कोरिया के दो टुकड़े कर दिये, बलिन के दो टुकड़े कर दिये। वे टुकड़े करना जानते हैं, यह मानवर कि इधने एकटा पैलेगी। दुनिया में सब लोगो को मिलकर सामूहिक ढंग से चीचना होगा, तभी मसले हल होंगे। इसलिये छोडे-छोटी जो पालिटिक्स है, उनसे मुक्ति पानी हांगी और छोटे-छोटे धर्म-धर्मो से मुक्ति पानी हांगी। प्राचीन काल में यज्ञ में पी जलाने का का रिवाज था, धर्म था। क्या इग जमाने में यह धर्म माना जायगा? यज्ञ माना जायगा? जो अगर जलेगा तो लोगो की हालत क्या हांगी? उस जमाने में तो बनि

वजने के लिए पी था। जगलो ने जबल पडे थे, हजारों की तादाद में गाँवें थी, दम वास्ते पी उनका साधन था।

पुरानी बात है। ह्यार मित्र-परिचरार में एक वादी होनेवाली थी। पुरोहित ने कहा कि अग्नि में पी की आहुति देनी पडेगी। मैंने उनको धास्त्र समझाया। एक मुन्दर ताअराय लो। उस पर लिखो—“अग्नि।” माशी के तोर पर एक वहाँ दीया रखो। “अग्नेय स्वाहा” करके आहुतियाँ उम पात्र में डालो और जो पी जमा हागा उस सबको प्रसाद में दे दी। यज्ञ भी मागोपाग हागा और वेद भगवान् की तुर्जि हागी। गीमागासास्त्र में बर्चा है कि वरुण का क्या स्वरूप है? व-व-ग यानी देवता सारे अक्षरात्मक है। अग्नि-मात्र में पी डालकर काम हा सकता है। आगो में कड़ा, यह मुक्ति अर्पनी है। पुराने लोगो के प्रति आदर रखना चाहिए। वह भी इधमें नायम है और नये सभाज के लिए जो जरूरी बात है, यह भी इधमें जा जानी है।

नये युग में नया धर्म हां

धीरे जो पुरानी हो चुका, उन्हे धम के नाम पर बेने ही जाने गमना ना उचित नही माना जायगा। पहल के राजा दूरा खलने थे। पाण्डव हारे तो द्रापदी कोखा की दासी बन गयी। महात्-महात् पण्डित वही प। भीम थे। द्रोपदी ने सड़े होकर पूछा आप लोगो की राय में क्या स्त्री सम्मति है? सृन में लगायो जा सकते है? “भीष्म, द्रोण, क्रिदुर भये इतिमि।” क्रिदुर दाना बडा जानी था कि उगवे लिए पावनी का मूत्र बचाना पडा। दनब महान जानी भी इतिमिन् हा गया और निर्णय नही ले सका। आर का बच्चा भी निर्णय देगा—स्त्री पदा कोई खपति है, जो दून में लगायो जाय? इन्ड्रुल मण्डन काम।

गार यह है कि पुराने की विचारर हो गये हैं, उनसे विचारो की जग-जात्यो खोजार कर लेने में सार नही है। अजायब का अपार लेता कर्जि। आर-मर्जिद का तो बराने पानी कोई सुभल है ही नही लडक में। ‘शेखुर’ के नाम से एर बीज है, यह यह कि राम-पण विना नही सक्ते, बाविक

मिना नही सक्ते, कुरान मिखा नही सक्ते। फिर क्या मिखा सक्ते है? इधके लिए अडेओ में बहुत मुन्दर शब्द है—‘लिटरेचर’ के तोर पर रामायण का “पीम” हो सकता है। लेकिन यह ‘शेखुरिज्म’ का गलत समझल है। सर्वोदय, अध्यात्म जो भारत में था, उसका अध्यात्म-अध्यात्म स्कुलो में होना चाहिए और नाय-नाय भाडन साइस का भी अध्यात्म होना चाहिए।

“गिण्याराथे गुरोर्गुण्ड” गिण्य में अगर अगाराध हुआ तो गुण को दण्डित करना चाहिए। इस बात विचारियो के जिनने भी अगाराध हो, उनके जिम्मेकार निशर है, यह अपने वहाँ का ग्याय है। अगर टीज से तालीम रही और गिचारिदो को निशा में कोई सार मानूँ हुआ तो निश्चय है कि वे अध्यात्म बरता करेंगे। लेकिन आर की हालत को ऐसी है कि उनको गिशा परजलेष, निश्चक है। (पूजा रोड, ७-१२-१७)

ग्रामदान समस्या और गभावना-३

मूल्यांकन नहीं, संशोधन

राममुनि—ग्रामदान आन्दोलन सभी संजिले पर पंच गया है कि उसकी सम्-बन्धाओं और सम्भावनाओं का सोध और अध्यात्म तरंगल शुरू होना चाहिए। इसकी प्रकृत में मीजना व साथ महत्सम पर रहा हैं। यह काम आधुनिक ढंग के दण्डी गिधचं सम्पानों में नही हांता दिगाई देता। क्या यह टीज हांगा कि गुड दूगरे ढंग से काम शुरू करने की बात सोची जाय?

विनोदा—ग्रामदान के गिण्य का महत्सम अर्पनी है। आरबल जो बड़े दंडीदूत महर्गो में बन रहे है, उन पर काम की आगा नही की जा सकती। मे गा उने ‘गर्डी’ दंडीदूत बनना है। दण्डन पर लगे और अध्यात्म उने करना कर्जि जो लीने से उडे हुए हो, और जिनका दण्डन में गुण सम्भव हो। ग्रामदान के सम्भवयन पर काम हांगा दंडिकाली की बर्जिदणो की

.....



पीढ़ की जाति

विश्व को सुख देने के लिए हमें अपने अस्तित्व को समर्पित करना पड़ेगा। इस बात के स्वरूप और परिणाम विचार का दर्शन ली।

५ अप्रैल, '६८
 वर्ष २, संक १७] [१८ पंजे

बाजार के बैचर : सरकार के नागफौस
 रामबली और पेकनराम मेहनतार बाजार से लौट रहे थे।
 दोनों का चेहरा जैसा सुरमा था।

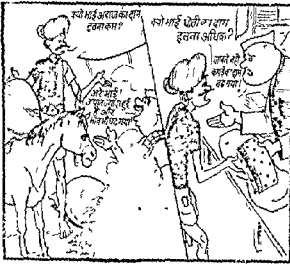
रामबली ने दो बीघियाँ गुलामार पर पेकनराम की ओर
 बसाते हुए कहा—

'कौन भैया, इन बीघीं ने धुरों से सच मन की बचपानहट
 पैककर उठा दीजिये। जैस तेब बजार से
 दीया तो बुझने लगता है लेकिन फल्ले की
 आग फावने लगती है, वैसे ही बाजार और
 सरकार के करतब से हम गरीबों की तो विपु-
 फनीद होनी या रहते है और सेठ-साहूवार
 आसार होने का रहे हैं।'

'बुझाते बात कुछ हद तक लेक है
 राम। बाजार मान विरले घर सिर्फे तिमारी
 का ही पाटा नहीं होगा, कई सेठ-साहूवारों
 का भी दिवाला निराल जाता है। हाँ, इतना
 नहीं है कि उनका बन्नी बन्नी पाटा होता है,
 लेकिन हमार तो घपा ही घाटे का है।'

'एक फरक और भी है पेंबन भैया,
 सेठ-साहूवार का दिवाला निराल कम तब
 भी उनके घाते से या रक्षा रक्षा कर काई

बात बसर नहीं होता। कम उनकी तिमारी ने घन को
 कुछ घटाती हो जाती है। पर हमारे लिए तो भाव कम होने का
 मतलब है घर के प्राणियों के लिए सावधारी की मुसीबत का बर
 जाना। तीन महीने पहले मैं यही बोरी लेकर खाने के लिए दो
 गरीबने आया था, उस समय मुझे पक्कीस रुपये में भी बोरी
 भरकर जो गरीब मिला था। अब जब कि हमारी पक्कल पैपार
 हो गयी तो उसने ही जो का भाव इतना कम हो गया कि पूरे



उन में कुछ और हैं, दन म कुछ भी.

अठा रहें रुपये भी नहीं मिले।" रामबली ने कहा।

"अरे रामू! बाजार-भाव भी समुन्दर के ज्वार-भाटे की तरह बढ़ता और घटता है, लेकिन एक फरक है। जब पुनवासी का चन्द्रमा आसमान में उगना है तो समुन्दर में ज्वार आने लगता है। इधर जब उल्लिहान में अनाज इकट्ठा होता है तो बाजार-भाव के भाटे का समय आ जाता है", फेंकन ने फिर एक लम्बी साँस लेकर कहा—“जब खेती में अधिक लागत और मिहनत लगाने के बाद आमदनी घट जाती है तो किसान का दिल बैठ जाता है। वह किसलिए ज्यादा भ्रमट और खर्च की वला भोल ले ?”

रामबली—“भैया! हमारी हालत साँप-छट्टेंदर जैसी है। न तो हमसे अच्छी खेती करते बनता है और न खेती से छुटकारा लेते बनता। खेती में बरकरत नहीं और खेती न करें तो पेट जो भ्राधानीहा भरता है वह भी न भरे।”

फेंकन—“भैया। बाजार के नागफाँस में हम किसान जकड़ लिये जाते हैं। बेचारे छोटे-छोटे रोजगारों और दूकानदार भी हमारी ही तरह भाव के ज्वार-भाटे में डूबते-उतरते रहते हैं।”

सरकारी केन्द्रों—राजधानियों और सचिवालयों—में शासन का रोजगार चलता है और बड़ी-बड़ी मंडियों और उद्योग-केन्द्रों में साहूकारों और पूँजीपतियों का। राजधानियों में नये सरकारी बनाने और ढल बदलने का काम चलता है तो मंडियों में दलाली और भाव के उतार-चढ़ाव का। दोनों में से कोई बोटर या खरीददार के फायदे की उतनी परवाह नहीं करते जितनी अपने-अपने फायदे की। जिस दिन गाँव-गाँव अपनी ग्रामसभा संगठित करके सारे भारत में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना के काम में जुट जायेंगे उसी दिन वे सचमुच बाजार के भँवर और सरकारी नागफाँस की जकड़ से मुक्त हो सकेंगे। तब अनाज का भाव अनाज की मंडियों के बड़े-बड़े व्यापारी नहीं तब करेंगे और न अकेले सरकारी खाद्यमंत्री, बल्कि देशभर की ग्रामसभाओं की भी राय लेना आवश्यक होगा।

जब देश में सभी चीजों के भाव ऊँचे हों, उस समय अनाज का भाव सिर्फ़ इस बहाने पर कम किया जाना कि इस साल फसल अच्छी हुई है—देश के करोड़ों किसानों के प्रति निराश्रयता है। किसान के लिए खेती भी एक रोजगार है, जिसमें वह अपना धन, अन्य साधन और अपनी मिहनत लगाता है। अनाज का भाव तब करते समय खेती के खर्च और किसान के

परते का भी विचार होना चाहिए, जैसा कि अन्य उद्योगी और रोजगारों के मामले में होता है। किसान को पहले से मालूम रहना चाहिए कि कौनसी फसल किस भाव पर बिकेगी, ताकि वह उसीके अनुसार अपनी रोती की योजना और तैयारी कर सके।

सरकार उद्योग और व्यवसाय में लगे हुए लोगों को तो अनेक प्रकार का सहयोग और संरक्षण दे रही है। विन्तु देश के मुख्य उद्योग में लगे हुए सबसे पिछड़े और संघ्या में अधिक लोगों को बाजार के भँवर में डूबने के लिए असहाय छोड़ देती है। गाँव-गाँव का ग्राम-स्वराज्य किसानों को इस भँवर-जाल से छुटाने का एकमात्र मार्ग दीख रहा है। इसीलिए सम्भदार किसान अपने यहाँ ग्राम-स्वराज्य को साकार करने के लिए पूरी शक्ति लगा रहे हैं। ●

आपके पुत्र

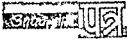
वही-वही लोग यह कहते हैं कि किसी ग्रामदानी गाँव को नमूने के रूप में बनाकर दिखाइये तो उसमें अन्य गाँवों को प्रेरणा मिलेगी। ऊपर से सुनने में यह बड़ना सही लगता है, पर समाज से कटा हुआ नमूने का कोई गाँव बननेवाला है नहीं। फिर भी ग्रामदान से गाँव में कैसे शक्ति बनती है, इसे जिनकी आँखें खुली रहती हैं, वे उभड़ती शक्ति को देख सकते हैं।

ग्रामसभा खाजेंडीह के निर्माण के बाद से ही इस गाँव के दो बुजुर्ग व्यक्ति ग्रामसभा की सही दिशा में ले चलने को तत्पर हैं। अब तक इनकी मिश्रल समाज-सेवा को देखते हुए गाँव के प्रत्येक परिवार ने इन पर भरोसा किया और धान की पिछली फसल में एक सौ मन धान ग्रामकोष में इकट्ठा किया। जिन्हें नमूना देखने की इच्छा होती हो, उनसे निवेदन है कि इस गाँव का ग्रामकोष आनंद देखें। जयनगर-मुटौना जिला बोर्ड की सड़क पर खाजेंडीह के ग्रामकोष का धान सड़क के किनारे ही बोपाध्यक्ष के घर के बगल में दखारी (बाग की पोटी) में जमा है। प्रखण्ड विकास योजना की शुरुआत से अब तक इस गाँव को इतनी बड़ी रकम विवास के लिए नहीं मिली है। ग्रामदानी ग्रामसभा की शक्ति का यह एक नमूना है।

घान : खाजेंडीह (दरभंगा) दिनांक : २६-३-६८

—देवनाथ

गाँव की बात



ग्रामसंस्थाओं की मजिलों : भूदान से प्रदेशदान तक

शिव भादुरी, बलुआ,

प्रथम जय जयन्त

आज ज्ञान है कि देश भर में भूदान ग्रामदान नाम से एक आन्दोलन चल रहा है। यह आन्दोलन १५ अक्टूबर १९५१ को शुरू हुआ था। आरंभ प्रयोग में एक किसान हैं तो गाना। बिना दिनों यह आन्दोलन शुरू हुआ उस दिनों बहो जमीन व मालिकों और वेतनमालियों में भयकर लड़ाई भगते चल रही थे। साम्यवादी उद्यम लड़ाई-जंगल का आरंभ में जलवन डालने का रास्ता बर रहे थे।

बिनाबा अब उपर से मुकदमे तो गैरगाना के दोषमणकी नामक शिव की समा में गाँव के लोगों ने कहा कि हम हम लराही तो बचावदे। जिनोबा बहुत सोच में पड़े। पता ला था ही कि सारे जंगलों की जड़ में जमीन है। उन्होंने वेतनमालियों की ८० एकड़ जमीन की चीन मुरी कराने की बात बहो। सोचा कि इनको मारदार में बहो पर जमीन दिला दे।

लेकिन जिनोबा की सरकारी नगरीवार से परिचित थे। उन्हे पता था कि यहाँ एक धने का नाम एन साल में हो जाय तो भी गैरगान हा हमभरा बाहिए। सो उन्होंने सोचा कि बोई और हा जाय दूँना बाहिए। मन में आया कि क्या बोई ऐसा गांधी नहीं होगा जो इन वेतनमालियों के लिए इनकी जमीन का दान दे दे ?

मन में आती बात को उन्होंने सचाम में देना बर दिया। मनोम ऐसा कि सभाम में शामिल एक आशुकी भी गानकदर देनी में १०० एकड़ का दान मुक्त जिनोबा का अर्पित बर दिया और इस आन्दोलन की गीतों प्रकट हुईं जो स्यातातर आगे बढ़ी और पैली जा रही है।

१ अक्टूबर, ५२

बिनीबा ने देश के बोने-कोने में पैदल घूमकर भूदान में जमीन मंगाना शुरू बर दिया। देश के हजारों गाँवमती उनको प्रेरणा से इस आन्दोलन की आगे बढ़ाने और फैलाने में जुट गये। कायो १९५३ जमीन दान में मिली और वेतनमालियों को बौटी गयी।

भूदान से ग्रामदान ग्रामदान से प्रदेशदान और प्रदेशदान से जिलादान और अग्र जिलादान से प्रदेशदान की आवाज देश की हवा में गूँज रही है। बिहार प्रदेश में बिहारदान के लिए जोरदार कोषों में चल रही हैं। बिहार के पचोसो उत्तर प्रदेश में भी अब प्रदेशदान के लिए देवी व साथ काम करने की हवा बह रही है।

गान भर में कुछ ही दिन अघिक हुए जब दरभंगा का पहला जिलादान घोषित हुआ था। उनमें पड़े जिलादान की बात बहुत ही बटिन मालूम पडती थी और प्रदेशदान की बात तो असम्भव हो मालूम पडती थी। लेकिन अब जिलादान उतना बटिन नहीं रहा। बिहारदान का उत्तर प्रदेशदान की बात असम्भव नहीं रही।

जिन्हे २९ सितम्बर ५३ को प्रथम प्रदेश के एक जिले का दान घोषित हुआ। जिले का नाम है निकलेकेला।

महाराष्ट्र में पाना आरंभ में बडिया उद्योग म बोरापुट और मयूरभज मध्यप्रदेश में इंदौर उत्तर प्रदेश में उत्तरकाशी और बिहार में मुकेशपुर मुनेर जैले जिले हैं जो बहुत ही तेजी में जिलादान का मजिल तक पहुँचन का कोषित बर रहे हैं।

बिहार का पृथिवी जिला और उत्तर प्रदेश का बलिया जिला एन-दा महीने के अन्दर हा जिलादान की मजिल तक पहुँचने वाले हैं। बसा गलते है यह सो उपर गुणिया बिहार प्रदेश का सबसे पूर्वी और आखिरी जिला और दूसर बरिया उत्तर प्रदेश का सबसे पूर्वी और आखिरी जिला। इन हलकाम की आपसो जानकारी मिल इसीलिए हमने सोचा है कि मोकेशपुर म चल रहे ग्रामसंस्थाओं के आन्दोलन की आलकवरी आने की हवी प्ररार आरंभो सेबा म भेजने रहे। हय आरंभ है कि आरंभो यह बात पसन्द आयोगी।

अगर आरंभो मन में बोई गान या जानकारी के लिए कोई सवाल पैदा हो तो अवश्य लिखें। हम आरंभो पत्र का हल जार बरेंगे।

शिव सक्ता,

गन्धारक

‘नेहरू-राजा’ की याद

गाड़ी छोड़े की पटरी पर सरमराती हुई भागती जा रही थी। स्टेशन आते, पोंड़ी देर के लिए पान-बोड़ी, चाय-सिगरेट का शोर मुनाई देता और फिर सब कुछ पहले जैसा हो जाता। गाड़ी छन-छन छर-छर करने लगती।

मुखिया को गाड़ी में नींद नहीं आती, लेकिन बहोरन की नाक ऐसी बज रही थी मानो ‘बटहा-बुलकुर’ गुर्रा रहा हो।

मुखिया को दिल्ली को वातें याद आ रही थी। दिल्ली आने से पहले उसने दिल्ली के जिस आकार-प्रकार की कल्पना की थी, दिल्ली उससे कितनी भिन्न निकली? उसने सोचा था, दिल्ली एक बहुत बड़ा गाँव होगा, बहुत सारी चोजों की दूकानें होंगी और सबके बीच अपने देश के राजा का महल होगा। उसने अपनी आँखों देखा था ‘नेहरू-राजा’ को। जब वह उसके गाँव से सात कोस दूर एक आश्रम में दस मिनट के लिए आये थे, तो वह भी अपने गाँव के बहुत-से लोगों के साथ बेलगाड़ी में बैठकर आश्रम में ‘नेहरू-राजा’ के दर्शन करने गया था।

‘नेहरू-राजा’ कहने पर गाँव के पढ़े-लिखे छोकरे उसे बहुत चिढ़ाते थे। कहते थे—“अब अपने देश में कोई राजा-रानी नहीं है। देश का कोई भी नागरिक नेहरूजी की बराबरी नर सकता है। सबको ‘भोट’ देने का बराबर हक है। बजुरी घमार, तेवर तेली, गंगुआ गोड़, और हरजंकर पंडित सबको एक ही ‘भोट’ देने का अधिकार है, नेहरूजी को भी। देश का कोई भी आदमी चुनाव लड़कर नेहरूजी की जगह प्रधान मंत्री हो सकता है।”

अब चुनाव के दिन आते हैं, और जब बड़े-बड़े नेता उसके गाँव के छोटे-छोटे लोगों की भी ‘चिरोटी’ करते-फिरते हैं तो मुखिया को लड़कों की बात कुछ-कुछ सही भी मालूम पड़ती है, लेकिन चुनाव के बाद का रंग-रंग देखकर वह यही सोचता है कि यह सब पाँच-गिरीब के गरीब-गाँवई मूरख लोगों को ‘मुतलाने’ की बात है। नहीं तो जिसके ‘भोट’ से लोग राजा बन जायें हैं, वह फकीरचन्द ही क्यों बना रहता है? कुछ तो उसकी हालत में सुधार होता?

मुखिया मानता है कि पुरखों की बातें भूठी नहीं हो सकती। भया ‘राजा’ भी कहीं आदमी के ‘भोट’ से बनता है? वह तो भगवान का भेजा हुआ प्रजापालक होता है। उसने पंडितों से, गाँव के बड़े-बूढ़ों से क्या-पुराणों की बातें सुनी हैं। उनमें कहा गया है कि ‘राजा’ के बिना ‘प्रजा’ अनाथ होती है। इसलिए प्रजा की देख-रेख के लिए भगवान ‘राजा’ को नेजता है। भला यह बात कभी भूठी हो सकती है? कहने के लिए चाहे ‘राजा’ कह लो या परधान मंत्री, उससे क्या फरक पड़ता है? नेहरूजी हमारे राजा थे। बिलायत के ‘लाट’ से लड़ाई लड़के नेहरूजी ने ‘राज’ लिया था, वह कोई हमारे ‘भोट’ में बने थे?

सिरी राम सिरी राम! मुखिया ने दुकती टाँगों को पसार लिया। उसका दिल मद्दह हो रहा था उस दिन की याद करके।

जब वह दल-बादल महित आश्रम पहुँचा तो देखा कि एक बड़े मरान के बाहर भौड़ लगी है। लोग भीतर जाना चाहते हैं, लेकिन लाल पगड़ीवाले उन्हें भीतर नहीं जाने देते। मुखिया को अपने गाँव के सोहूदे-छोकरे पर हँसी आयी, “लो देखो। तुम्हारे ‘भोट’ से नेहरू राजा बने हैं, तो फिर जाकर ‘वातचोत’ कर आओ न! तुम तो राजा बनानेवाले हो न? तुम्हें क्यों ‘रोज’ सकता है भला-?” है हिम्मत किमीकी? अरे, राजा जहाँ जाता है वहाँ अदली-मिपाही, चोकीदार, सप्त उक्कों घेरे रहते हैं। ‘राजा’ से हर कोई थोड़े मिल सक्ता है?”

लेकिन मुखिया को बड़ी लालसा थी ‘नेहरू-राजा’ के दर्शन की। उसके मन के विषों कोने में बात जमी हुई थी कि राजा के दर्शन करने से भगवान के दर्शन बराबर ‘पुन’ मिलता है। इसलिए वह भी उसी बड़े मरान की भौड़ में घुम गया। उसकी आँखें दरवाजे की थोर निहार रही थी, कि तभी भरभरावर भौड़ बाहर निकली। लड़के चिल्ला पड़े—‘चाचा नेहरू! बिन्दाबाद!’

इधर लाल पगड़ीवाले ‘रास्ता छोड़ो! रास्ता छोड़ो!’ चिल्ला रहे थे; अपना बेंत वा टण्डा घुमा घुमाकर भौड़ को भगाने की कोशिश कर रहे थे। मुखिया को एज टण्डे की गोर में जरा-सा भटका भी रग गया था, लेकिन वह हटा नहीं। उससे मुँह से ‘बीस’ निकल पड़ी—“हम अपने ‘नेहरू-राजा’ के दर्शन विषे बिना नहीं जायेंगे, नहीं जायेंगे।”

और तभी एक गुल्दर मुकुन्दार आदमी बहुत मारे गुलाबों को माला डिपे भोज मे हुए जाया । 'सो देखो, मैं ही हुम्नाश नेहू हूँ ।'

अपने बुढ़ा यमी थी मुखिया की । नेहू-राजा ने मुगल के मार फूल बाँट दिते थे । उसे तो पूरे एव मारा हू मिल गयी थी जिसे समने आज भी रतन की तरह 'अतन से रखा है । बहोतन ने मर उमे 'नेहू राजा क' 'मलजामी हूँ जाने की पारर मुनायो थी तो यह उमी मूखी माता को देखार फूल फूलार रोषा था ।

उमने धार से ही मुखिया के दिल म यह इच्छा जार मारनी रहा थी कि उमे भी हो बहू का बर लिली जार जायगा और नेहू राजा का मल्ल दर्शना ।

इसीलिए दिल्ली पहुँचने ही उमने अपने इलाके के नेता बापू य अपनी बहू इच्छा बाहिर ना थी कि वहने बहू नेहू राजा ना मल्ल दर्शना । नेता बाहू उमका मनलज तपक यये थे ।

मुखिया को अपार मुग्धा हुई था कि उमका बहुत दिनों का सपना सच हुआ । मेरिन लिता का आगार प्रसार और रूप रग देना बर वह मिलकुल हूा षवडा गया था । उमने अपने म भी गहरी मोचा था कि कोई ऐसी जगह भा हो सकती है जहाँ मल्ल-ही-मल्ल, आदमी ही-आदमी गांधी ही-गांधी विराधा दे । जहाँ ताभा दिन दोबाली मनयी जाता हो । वह सपना ही नहीं था रहा था कि इतने बड़े गहर म जहाँ इतने सारे लोग रहते हैं सड्ड-मैदान, गली-बूले म बहू भा ता बौई छेत्त था बाग-बगीचा शिवायी नहीं देता, क्या लोग अज नहीं खाते ? अकिर उमने लोगो का येद बर्ने मे मरता है ? इनकी बीलत बर्ती स आती है कि हर बौई बू चुर्न हूवागाडियो म भयलता विरता है । उनका सपना म बट भी नहीं आ रहा था कि इनम सार लोग बरखे बसा हूँ ?

उमने सुना था, दिल्ली अपने देश की राजधानी है । उमने मान लिया था, बसोनि शत साध की । राजप की है तमा तो 'नेहू राजा' बर्ती रहते थे । एरिन उमने माय एव दारी बल भी उमने मुनी थी कि बर्ती म देश की भलाई का काम भी लेक है । तो क्या उमने सारे लोग दार से भलाई के लिए ही है ? 'एव हू है ? ता फिर देश का भलाई होकी बने मल्ल ? 'मल्ल दिन गीर उमने का ना रहे है ' (कथा)

गांधी सत्यरथ

सान्त्वना की नहीं, हिम्मत की जरूरत

देश मे पाठीमता की आग भभक उठी थी । गांधीजी उमकी बुमाने की बोधित करने रहे । लोगो को समझते रहे । नोबोसाली मे धान्ति-धारा के निम्न निवृत्त पडे । देश मे बाँसू और खून की नियो बहूयो जा रही थी । लोग बेरुहम और बेहया बन गये थे । उन पर गैतानियन सवार हूँ गयी थी । गांधीजी लोगो को डिनाने एव जाने की बोधित कर रहे थे ।

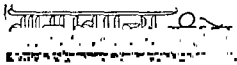
नोबोसाली के एव देहात की बात है । उम देहात के एव एव प्रया की जुकर मार डाला गया था । दीवारें खून से रग गयी थी । लड्डे-बच्चों के बर ओरल मालाशियो की छावनी म दारिल हो गया थी । गांधीजी के उम देहात मे आने की गवर मुनी तब वे सब उनके पास चली आयी । एक जहाने मे गांधीजी बैठे थे । उन्होंने आपनीतो मुनायो 'बापू हमारे भाई के बर पनि सवने मरखे मार डाला गया है । हमारा मन कुच्छ छीन लिया गया है । अब आपम सान्त्वना पाने के लिए हूय बहू भा पहुँचो है ।

गांधीजी ने धान्ति से उमकी बातें सुनी । फिर बोले, बरयो, मैं क्या सान्त्वना दे सकता हूँ ? मे तुम्हें सान्त्वना देने के लिए नहीं आया हूँ । सान्त्वना की बात छोडा । आर सान्त्वना की नहीं बलिन हिम्मत का और डाडम का आवश्यकता है । निडरता ही हमारी—जाने हमारी उजब की रखा बर मरनी है । मुँडा का डटकर सामना करना चाहिए । बायरता स मैं हिला की पलत करना हूँ । हाँ अगर धान्ति से मुझे का सामना किया जा सके तो सचम बडिया । एरिन विली भी हालत म डरार भायलता नहीं चाहिल ।

उकी गाम की गांधीजी के एव साधी ने प्रया बापू, के सिपयां आपने धान्ति पाने आयी थी रेडिन आपने उहे सान्त्वना देने म क्या इन्दार किया ?

गांधीजी ने बहू भाई सान्त्वना देने का यह सपन गहरी, हिम्मत बेयात कर है । धारो तरक सहार ही रहा हो, मर तरक अचरार्थ दद रही हो बुराई पलप रही हो, सब डाडम का बाबरतरता मानी है । हिम्मतदारो को हिम्मत देना बडा काम है । विरमस गोरे लोगो मे धामनि'बास पैदा करता होगा, तभी हूागा बरगेगी ।

—गणेश-वीरन सेरिना के



दुर्गादासिन : सच्चे अर्थों में ग्राममाता

विनोबा की आज्ञा से दरभंगा जिले के मधुवनी अनुमंडल में पाँच महीने से घूम रहा हूँ। आज तक जितनी भी ग्रामसभाएँ हमने बनायी हैं उनकी कार्य-समिति में किसी बहन का नाम नहीं गुफाया गया था। विनोबा कहते हैं कि बिहार की बहनें मानो जेल में हैं! आज उसी बिहार की एक बहन जेल से बाहर निकली। और उसे बाहर निकालने का श्रेय भी गाँववालों को ही है।

मधुकिया गाँव की यह बहन दुर्गादासिन, लगभग पैंतालीस बरस की है। बिहार की सौम्यता और शानि उसके चेहरे से झलकती है। उसके घर की मिट्टी की दीवार पर सफेद बेलबूटे और कुटिया की कफाई देखकर मुग्ध होना पड़ता है। सफेद कपड़े पहनी हुई साध्वी दुर्गादासिन ने मुझे बताया कि एक पुत्र होने के बाद वह ब्रह्मचर्य का जीवन विताती आयी है। पेट पालने के लिए पाँच कट्ठा जमीन जोतती है। साथ-साथ गरीब बच्चों की देखभाल, दवादारू, खाना सिलाना और सेवा करना उसने अपना मुख्य धर्म माना है। प्रेम भरा हाथ मेरे मिर पर फिराकर उसने आशीर्वाद दिया "जुड़पल रहव, आनंदित रहो, तुम्हें कोई कष्ट न हो।"

उस माता के आशीर्वाद पाकर मन रग्दग हो गया। उसने गोठे बोल, नेत्रों से टपकते हुए वास्तव्य, स्नेहिल स्पर्श ने मेरी माँ की कमी पूरी कर दी। माँ बरसों से बुलाती रहती है, और मैं जा नहीं पाता हूँ।

दुर्गादासिन सच्चे अर्थों में ग्राममाता है, सबको प्रेम देती है, सूखे दिलों को हरामरा कर देती है। गाँव में जो कलह और बड़ता होती है, उस पर प्रेम का मलहम लगाती है।

विनोबा ठीक यहूते है कि सर्वहारा कोई नहीं है। हरएक व्यक्ति कुछ-न-कुछ दे सकता है। लूला-लंगड़ा, अंधा-बहारा भी प्रेम दे सकता है। भगवान ने हमें जो क्षमता दी है, उसने हम

मालिक नहीं, सेवक हैं, धातीदार हैं। उसे खूब बाँटते चलें, प्रेम की गंगा बहाते चलें। यह सबक दुर्गादासिन से मिला।

मैंने विदा होते समय एक नम्र मुझ्ताव उसके सामने रखा कि गाँव में रोज बहनों की सामूहिक प्रार्थना कराये। उसने उत्तर दिया, "मैं तो अनपढ़ गँवार हूँ।"

मैंने पूछा, "मोराबाई किस स्कूल-कालेज में पढ़ी थी?"

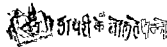
पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ, पंडित हुआ न कोय,

दाई अत्तर प्रेम का पढ़ूँ सो पंडित होय।

प्रेम के सामने ज्ञान हार जाता है।"

कार्यसमिति के अध्यक्ष ईश्वरगिरि, मंत्री जीवछ साह, कोषाध्यक्ष राजेश्वर ठाबुर और सदस्य दुर्गादासिन, सोनाप मोमिन, सदीक मिर्गों और तीन हरिजन संघसम्मति से बनाये गये।

—जगदीश थवानी



सरगुजा के सुसभ्य आदिवासियों के बीच

[विनोबाजी ने देश में महिलाओं की शक्ति जगाने के लिए महिला लोचयात्रा का मुभाष दिया। उनके विचार के अनुसार ३ बहनों ने १० साल तक देश भर में घूम घूमकर महिला जागण का काम करने का सरल्प दिया।

उन बहनों की ३ महीने की लोचयात्रा मध्यप्रदेश के इन्दौर जिले में पूरी हुई। भव वे बहनें मध्यप्रदेश के ही सरगुजा जिले में घूम रही हैं। इसी तरह विहार के दरभंगा जिले में भी सुश्री सख्ता बहन की लोचयात्रा चल रही है।

इन यात्राओं में लखपों गाँवों में पैंते अनपढ़, अज्ञानी, और असभ्य बड़े ज़ानेवाले लोगों में लोचयात्री बहनें मिलती हैं, और पाती हैं कि इन गाँवों में पढ़े-लिखे लोग कम हैं, पैसा इनके पास अधिक नहीं है, बहुत टीपटाप में रहना पड़े नहीं जानने, लेकिन इनका हृदय भावनाओं में भरा होता है : नेत्र, सहानुभूति और सद्धार की भावनाओं में। लोचयात्री बहनों की हाथरी के पन्ने उनके हृदय के धन में आराम परिचय करायेँ और आपको यश परिचय भायेगा, पैसा हमारा विद्रास है। —मं०]

सरगुजा जिले की रायगढ़, बिलामपुर, सीपी, राहडोल,

मिनापुर (उ० २०) पलामू (मिहार) इन छः जिल्लों में
 पेश्वर रखा है। परन्तु हम जिल्लों में प्रवेश करने का काम ही
 माग है—एक ठो मिहार के पलामू जिल्लों में होकर दूसरा
 पलामू होकर और तीसरा माग पहुँचो होकर। वर्षा ऋतु में
 एक माग को मरीच-मरुत बन्द रहता है। हम मिहार के पलामू
 होकर आगे भी। रास्ते में टीला-टेकरी जंगल तदी-माते पार
 करते हुए आगे। वहाँ जंगलों में साल कुश के बीच-बीच में
 जखरी तो लगे हुए अनेक कृषा भी देखने को मिले।

हम धार्मिकी क्षेत्र का भक्त बदन माता राजमोहिनी देवा
 के ह्यारा मिलना हुआ। बरौच सभह वय के पहले इस क्षेत्र में
 सराल पडा था। अराल का मामला करते समय एक दिन एक
 लज्जती से उनकी भट हुई। मज्जती से माता राजमोहिनी देवी
 ने लोभो के दुख का कारण पूछा। मज्जती ने कहा— तुम लोग
 पारान पोते हो ईश्वर की भक्ति नहीं करते और साध-मुचरे नहीं
 रहते। इसो दुख नहीं होगा जो क्या होगा? श्रामा सुनने के
 बाद वे गृहस्थों के जीवन में नहीं रह सके। वे पर-वार छोड़कर
 निकल पड़ी—वही माता जन जन को सुनने के लिए। तब न
 आप सभह सार आदिवासी लोग सरलुवा रायसद सी से और
 मिनापुर जिल्लों में घूमती आगे हैं। सभह न सविल्य न
 मनसुख मितभारी और धीर उम भक्त बहन की बातों को
 अनेक लोभो में माता और शारा मीग आदि छोड़ने लगे।

● २६ जनवरी महाशिवरात्रि का दिन था। सुबह ६। बने
 राधमुच आरम में प्राथमा हुई। माता राजमोहिनी देवी और
 उनके मलगण बाधम के बाधरतों गोव के लोभ प्राथमा म
 उर्मियन थे। सारल स्वचउ बातामग। प्रथान का समय था।
 लुं लुं लिंगा में उम रहा था। निज्य स्यारत माता
 राजमोहिनी देवी ने सगल बाधरत के साथ धार्मिकी को विदा
 दी। साध मागे बड़ी। साध-साध राजमोहिनी देवी और उनके
 भक्त्यय श्रय धामरगियो के चरणों आगे बडे। आगे
 अम्बिरापुर नगरप्रतिवासी ने टोली का स्वागत किया। दो दिन
 का प्रशाउ राह रहने में था। अम्बिरापुर इन जिल्लों का मुख्य स्थान
 है। जन-संख्या २४ हजार है। घहर छोटा है फिर भी दग के
 सब प्रान्ती के लोग यहाँ हैं। साध लिल्लों का मोहरा हल
 मिला। घहर की मल्लिए आगे संभार के द्वारा घहर तथा
 गाँव की देवा बरनाय पाहुनी है। घहर में सभ्य-सभ्य साधार
 बानेगा और सभ्य-सभ्य धर्म माननेवाले लोभो के साथ

मयक साधमा सारम-प्राथमा गति तथा शीघ्रता के
 बाधमक मल्लो के सामने रखे गये।

● आगे पाँच भोक्त का रास्ता था—जंगल में भरा हुआ
 और स्यात। बड़ो-बड़ो पक्षियों का बल्लय। चार भागी
 और एक मायदमन भाई। जंगल पार करने के बाद भी गाँव
 सिंघाई नहीं पडा। लेकिन स्वागत के लिए आगे हुए स्त्री-पुरुषों
 का सभह गाने-बाने के साथ जाता हुआ सिंघाई पडा।
 फिर चलते चलते गाँव नगदीन आका ताक मुषरा पसता।
 देववर हम वागत हो गये। लोभो ने कहा था कि यह आदिवासी
 क्षेत्र है। परन्तु उनका मल-मल घन-वार और श्वारार देववर
 तो कोई नहीं कह सकता कि वे आदिवासी हैं अमल्लुत हैं।

● हमारा पडाव रखा गया था एक खादी-बेड में।
 दोपहर के भोजन के लिए एक परिवार में हम गये। गाँव बासी
 पैला हुआ है। हम-बीच परिवार यहाँ बसे हैं तो दस-बीच
 परिवार प्राथम-बीच मीग दूरी पर। बिनवे घर में हम भोजन
 के लिए गये व उमका घर देवकर मुहने इसा राम। बिलवा
 मुन्तर व निबाय दूसरा बड़ "म" लिल्ला हो गही। मोर
 ने मिया हुआ घर। बड़ो भी लुं-वही बड़ो भी र गी नहीं। मर
 दोवार सभ्यता से सत्री हुई थी। छुई मिठी नामक एक श्रार
 को सभे मिठटा से यहाँ के लोग दोवारों को सभ्य करने हैं और
 सभे को करने समय उम पर सभकी बन्ना भी ब्रहित पर सेते हैं।

● उनके घर में एक बीत का चरना भी देगा। तिमिले
 उनका वता हुआ लुं लिल्लाया। लपने दस की बाल की अटेन
 में लपेटा हुआ मोटा मूत। शरी का कोई लिल्लाव महा लिल्लाव
 बदन का ही है।

हम तब सल्लुका बिल्लानिवासी नाई उहने व बीच में हमें
 पूसने का लोभाय प्राप्त हो रहा है। यहाँ व निवासियों का
 परिचय हमारे लोभो को तब हल भी उठी था। लेकिन एक-दो
 दिन में ही हम उनके परिवार में बत गये। अब परिचय को
 जल्लत भी क्या रही? अब ता साधरतने परिचयों में ही
 घूमना है।



दुनिया में कहीं भी किसीका बग जाना कोई गलत बात नहीं है। भगवान की ही बनायी यह धरती है, और भगवान के ही बनाये हम सब हैं।

रंगभेद का दानव : दाँत तोड़ डालें

इन धरती का एक बड़ा भूभाग है 'अफ्रीका' महाद्वीप के नाम से। इसमें बहुत से देश हैं। भारत की तरह ही इन देशों में भी सैकड़ों वर्षों तक विदेशी लोगों का राज बना रहा। लेकिन दुनिया में आजादी की लड़ाई का जोर हुआ तो उसका असर अफ्रीका पर भी हुआ और वहाँ के गुलाम देशों में भी आजादी की लड़ाई शुरू हो गयी। एक के बाद दूसरे देश आजाद होते गये।

पिछले लगभग साठ-सत्तर साल में दुनिया के गुलाम देशों में आजादी की माँग आँधी के वेग से आयी और गुलामी की जड़ें उखड़ गयीं। देश-देश में उस देश केवासियों का राज नायम हुआ। यह इतिहास का बहुत ही सुन्दर अध्याय है।

लेकिन इन्हीं दिनों मानव-विकास की बहानी में बहुत ही भयंकर और काली करतूतोंवाली घटनाएँ भी जुड़ रही हैं।

अधिकारशा गुलाम देशों में राज करनेवाले विदेशी अपने मूल देश के लिए धन हड़पने, चूसने और भोगने में लगे रहे, और जब उन्हें वह देश छोड़ना पड़ा तो छोड़कर वापस आ गये, बहुत हुआ तो उस देश को छोड़ते समय आपसी फूट-बेँर की आग सुलगाते गये। भारत सहित ऐसे अधिकारशा देश जो श्वर बीच-बचीश वर्षों में आजाद हुए हैं, इस आग में जन्ने हैं, अब भी जल रहे हैं।

लेकिन इससे अधिक खतरनाक हालत कुछ ऐसे देशों की है, जहाँ वे विदेशी बस गये हैं, यानी उसी देश के नागरिक हो गये हैं।

जिन देशों में राज करनेवाले गोरे लोग बस गये हैं, उनमें अफ्रीका के दो मुख्य देश हैं, रोडेसिया और दक्षिण अफ्रीका। दक्षिण अमेरिका, ब्राजील आदि और भी ऐसे अनेक देश हैं, जहाँ वे लोग बसे हैं।

लेकिन इस तरह के देशों में कुछ और ही बातें चल रही हैं। दुनिया में अपने 'रक्त की खेष्टता' का दावा करनेवाले और पूरी धरती पर अपने राज्य की स्थापना का सपना देखनेवाले हिटलर का नर-संहारी युद्ध का नंगा नाच इतिहास ने देखा। उम्मीद थी कि अपने अरमानों सहित हिटलर का अंत हो जाने के बाद दुनिया में फिर कभी 'रंग' की खेष्टता का अभिमान नहीं जायेगा और धरती पर यह आग नहीं भड़केगी, लेकिन यह उम्मीद नाउम्मीदी में बदल रही है।

अभी पिछले दिनों रोडेसिया में लगभग ४० लाख मूल निवासियों पर राज करनेवाली गिफें २ लाख जनसंख्या की प्रतिनिधि गोरी सरकार के प्रधान मंत्री ने रोडेसिया के ५ देश-भक्तों को फाँसी की सजा दे दी। और ऐसी व्यवहार है कि भविष्य में और भी ऐसे देशभक्तों को, जिन्हें अभी जेल में सजाया जा रहा है, फाँसी दे दी जायेगी। बात इतने तक खपनेवाली नहीं है, कोसिन यह हो रही है कि वहाँ के मूल निवासियों के ऊपर 'परिवार-निर्मातन' का कानून लागू कर दिया जाय, ताकि उनकी संस्था घट जाय, और दूसरी जोर गोरे लोगों को युवा-युवाकर बनाया जाय।

ब्राजील में तो वहाँ के मूल निवासियों को और भी कई प्रकार के भेद तरीकों से नगमग समाप्त ही कर दिया गया है। ऐसी ही कोसिन दुनिया के और भी अनेक स्थानों पर हो रही हैं। लेकिन इस समय रोडेसिया की गोरी सरकार का दानवी व्यवहार देखाकर दुनिया टिंक गयी है।

चमड़ी के रंगों की बड़ाई-छोटाई और 'पूत' की उच्चता-नीचता का यह दानव त्रिणी-त्रिणी रूप में हमारे गाँवों में भी दिखाई दे जाता है। क्या हमारी-आपकी यह जिम्मेदारी नहीं है कि हम सब मिलकर इस 'दानव' के दाँत तोड़ दें? यानी 'रंग' और 'रक्त' के भेद-भाव की भावना को समाप्त करके हर 'रंग' और हर 'रक्त' में रस रही 'आत्मा' को एक मानें, जिसे हम भगवान का ही अंश मानने हैं। ●

'गाँव की बात' : वार्षिक चंद्रा : पार रुपये, एक प्रति : अठाछ पैसों।

श्रीकृष्णदत्त मट्ट द्वारा सर्व-भेदा संघ के लिए प्रकाशित सर्व-सहिष्णुता प्रेम, मानसदिता, भाग्यमी में मुद्रित।

एकमात्र, उन्नी सलाखोंके के शम्भधान में मद्योपन देना, अन्धकारके के अन्धके में रात बनना । उनके विचारमें 'बेजिन' ठीक रखने का काम यह सफल कराते । मैं इसे 'शमोषण' कहता हूँ । मेरा एक पुत्र है कि 'शुश्रूषण' मन्त्री करता था। जो शक्ति के काम में लगे हुए है, उन्ध भूखानन की पुर्णत मन्त्री, और जो मन्त्री मने हुए है उनमे यह धरणा नहीं। ह्यार्य सत्यार्थ ह्यारी मनुज के बाद होगा। बुद्ध के उपदेशो की नृदाना मात्र इतने ह्यार्य क्यों बाद महत्पुन की था रही है।

ह्यार्ये लवकलाओंके में अन्धक को प्रति हन्ती चाहिए । सत्यार्थके में मद्य में जान ही चीज बाता पर जाते है

1—पञ्चकार्यके क शम्भो का अन्धकन
 2—अन विद्या, 3—मति । ह्यु बाता में अन्धक को लगी है । सपीकोके के अन्धक में मा अन्धकन दूना ही रहा । अन्ध यह काम हीना चाहिए । 'सामयान सशोषण' का इत काम मे मदर दर हजरा है ।

एक बान और । ह्यु सामयान क बाद की बात को सोचते हैं, लेकिन यह सून जाते है कि सामयान जाने में एक 'मूष' (मूष) है। सोन कहते है कि सामयान क बाद विद्वाना उपायन बना, विद्वाना अधिक विचारण हुआ किना सैरिषर्द साक विचार बना । मैं कहता हूँ, यह सब को भाष को शम्भक के अनुसार होगा, किन्तु अन्धी बाद को 'मूष' की है । देखना यह होगा कि सामयान किन किना मे विना गम है उनमे दुक्ति हुई है, या दूना । क्यार उन्ध और बनना को ही कृति यह मयो तो सामयान का था रहा । उन्ध मन्त्र को बचावर बना रहा चाहिए । 'सामयान सशोषण के' को ह्यु 'मूष' को गाने रखने का काम बनना चाहिए । इतना अन्धकन ही, सैयन के द्वारा इतना प्रकार ह्यु । सामयान में 'सैयन का ह्यु' है, मद्योपन और सत्यार्थ है । यह ह्यार्ये अन्धकन एक चीज के विचारण करीए ।

X X X

विशोषणो कहते है कि सामयान की

भूदान-यज्ञ शुभकार, ५ भाग, ६८

ममसाओ और सन्धकाराओ का अन्धकन पुन हीना चाहिए, साथ ही धर्मोपन जीवन का मद्योपन भी । बच, सैने, वही होगा, रहना कठिन है, लेकिन बिना हुए काम नही चलना, यह सत्य है । ह्यु बायेरती अन्धकन कर सका है उन्ध बनना गुन कर्ते लेकिन विद्वान्को और सत्यार्थो के जो किन रवि रखने ह्युं उन्ध भी साथ ले । अन्धकार, सत्यार्थविद्वान, सत्यार्थकारके के बुद्ध जान कर किने में ह्युने ह्युनकन के अन्धकन दिखायी देने लगे है । क्या ह्यार्य मे सत्य, 'सत्य' पामित्य (सून ही सत्यार्थ) 'विन द्विजिने' (यज्ञ सत्यार्थ), और वार

मयोप' (बुद्ध-यज्ञ) के ही काम आर पुने, या 'शोषण को मयोपन' (विद्वान वार -पू निरिण) पर भी ध्यान देने ? बाजार की अन्धकार (पूयोपन) दुनिया ने देत की सत्यार्थ को अन्धकार (सत्यार्थ) भी देत की और अन्ध विचार को देत रहा है । इनके सबके लक्षण क्या 'सत्यार्थ' (सत्यार्थ) को भी शोर्द 'अन्धकार', राजनीति, सामयान-नीति वन सत्यार्थ है ? अन्ध दुनिया को सत्यार्थ देत है तो अन्धी चाहिए । अन्ध नही तो 'अन्ध' किसलिए ? सामयान का 'अन्ध' शिष्टार्थ पर निरिण के मदमें में अन्धकन ह्युन चाहिए । ●

आधकी अपेक्षाएँ : हमारी सीमाएँ

मिय साधो,

अन्धमें से यह साधको क पत्र आत रहने है । उनमे आगकी सत्यार्थता को रक्षो हा है, साथ ही सुनार रहते है और अन्धकार भी रहते है । ह्यु बहुत चाहते है कि सत्य-यज्ञ ऐसा मिलके विश्वमें मे सारो कीमें रहे, जिसे आप चाहते है । उन्ध विचारको को सा वर' दर माता है कि 'सत्य-यज्ञ एक फल-यज्ञक सत्यार्थ साहित्यिक के रूप में निकले । सत्य उन्धके लिए को फल-यज्ञक सत्यार्थक और फल-यज्ञक सत्यार्थ चाहिए । इनमें कोई गल नही कि यज्ञा ह्यार्य विचार है उन्धके अनुसार यह कहते मन्त्री है । कि तु यह सत्यार्थ सुभ-यज्ञे सौमिक के अन्ध को बूझ के बाहर है । सरी पिना उन्ध बात को अन्ध है कि अन्धको अन्धकारे पूरे ह्यु को सामयान नहीं है, और अन्धकाराधिक भी नहीं है । लेकिन क्या ह्यु सत्यार्थ मोगार्थ हत्यो बन्दे है कि उन्धको भी नहीं होने देती है । अन्ध चाहते है कि पिनाय के अन्धकन ह्यु । अन्धकन यह वे नहीं रहे है । अन्धकारे ह्यु है, लेकिन उन्धको विचारिक को अन्धकारा नही हो वा रही है । अन्धकारे है कि पत्र में विचारता ह्यु । विचारता बहुत सचीली ह्युयो है । फिर, अन्धकारे माय है कि सत्यार्थक के सत्यार्थक पुन दिने मय्ये । ह्यु को यन्त्रे है कि अन्ध 'सत्य-यज्ञ' इतना भी नहीं करेगा तो करेगा क्या ? लेकिन अन्धकाराधिक सत्यार्थको देग मय मे फल ह्युको सत्यार्थ अन्धको सत्यार्थ ह्युन ह्युन में भेजे तो क्या खने ? सत्यार्थको ह्युको क सत्यार्थक चाटे पर सत्यार्थक ह्युन-यज्ञ अन्धको सत्यार्थ के विचार पुनयार्थ करेगा ?

इस हीके ह्यु का ह्यु सौमिक कर रहे है कि सत्यार्थक के सत्यार्थको के सत्यार्थको विचार प्राप्त किने जाते । सामयान की सत्यार्थता और सत्यार्थताको को सही सत्यार्थ में सत्यार्थ विचार माय । सत्यार्थ विचारण और सत्यार्थकारके के सत्यार्थ में सत्यार्थविचार विचार के लिए सामयो लुगनी जाव । ये सब सत्यार्थको मान में है । वे पूरे सत्यार्थको सत्यार्थकारा पुन सत्यार्थको मिलेगा । 'सत्यार्थ' का सत्यार्थ मानिये, अन्धको सत्यार्थ विचारिये उन्ध सत्यार्थको सत्यार्थकारे । 'सत्यार्थ-यज्ञ' का सत्यार्थकारे, यह सत्यार्थके सत्यार्थ और सत्यार्थकारे । गम सत्यार्थके लिए ह्यु उन्ध मन्त्री सत्यार्थ । क्या इतना भी सत्यार्थ नहीं होगा ? अन्ध मन्त्र ।

साधना,
 ह्युमन्त्र

२२-२६

शान्ति हेतु पन्द्रह दिन का उपवास

सर्वोद्योग-जगत् के सुगमिन्द्र लेखक श्री सुरेशचाम ने २५ मार्च, '६८ से इलाहाबाद में उपवास प्रारम्भ किया है, उससे सम्बन्ध में प्रकाशित जनका वक्तव्य :

होली के त्योहार के तीसरे दिन और उसके बाद इलाहाबाद नहर में जो घटनाएँ हुईं, वे बहुत दुःखर होने के साथ-साथ चिन्ताजनक भी हैं। दस दिन बीत जाने पर भी हालत ठीक नहीं कही जा सकती। वैसे तो दुकानें खुल गयी हैं और मेल-मिलाप के कार्यक्रम भी सम्पन्न हो गये हैं, लेकिन समीचों के बल पर और भी १०-१५ की छुट्टाया में ही। नगर के विभिन्न मुन्हालों में घूमकर आर अनेक लोगों में मिलकर सारे मामले को समझने की मैंने शक्ति की। जगह-जगह जो बर्बादी हुई वह भी देखी। बड़ा कष्टनामय दृश्य था।

परिस्थिति का अध्ययन करने के बाद मुझे ऐसा महसूस होता है कि होली का रंग तो एक बहाना मात्र था। असल चीज है आपस का अविश्वास और मन का डर। हिन्दू को मरोसा नहीं है मुसलमान पर और वह उसकी देशभक्ति पर दाक करता है, और मुसलमान को अरोमा नहीं है हिन्दू पर और वह उसकी वैकल्पिकता पर दाक करता है। इस प्रकार के दंग के लिए प्रायः अणामाजिक तत्त्वों को दोष दे दिया जाता है। मुझे वह सही नहीं ज्ञेयता। जिरहे 'कुशा' कहा जाता है वे तो इनगत हैं श्रीमानों के हाथों में—जिनके पास पैसा है, शक्ति है, शक्ति है और नसा भी है या सत्ता की आकांक्षा है। चाहे अपने कारोबार के कारण, चाहे अपना अखर बचाने के कारण या चाहे चुनाव जीतने के कारण, वे उनको आश्रय और सह देते हैं। बाद में वे उठ्ठीने उठ्ठीने मोहनात्रमे बन जाते हैं और इस तरह कुचक्र चलता है, जिसमें दोषी मान्यते हैं। अगर दसका पल भोगना चरना है काम आसमी को, मजदूरी-पैसा मारी को, विमर्श रोशी मारी जानी है और जिनके आश्रय देने-उठ्ठीने के लिए तरस जाते हैं।

बड़ी अजीब बात यह देखने में आ रही

है कि एक धर्म या मतवाले नैर को दोष देने नहीं सकते। अपनी तरफ से जो बुरे हरकत भी हुईं हों उसे छोटा और दूसरे की बुरा-भी चीज की भी पहाड़ बनाकर पैसा करते और प्रचार करते हैं। बेलाग होकर मानवीय दृष्टिगोण या इन्सानो नर्मयि से सम्भने और स्वीकार करनी तैयारी नहीं है। अगर यही, हालत बनो, रही तो समाज पर सकीर्ण, स्वार्थ-प्रधान और अनैतिक तरफों का अहुता बढ जायगा और क्या हमारी स्वतन्त्रता, क्या हमारा प्रजातन्त्र, और क्या हमारा सङ्घर्ष—सभी एतरे में पर जायेंगे, जिससे देन को आजायी और एतता दिव्य-भिन हो सकती है।

इलाहाबाद के वर्तमान साम्प्रदायिक विस्फोट की यह मुझे बड़ी चुनौती है। इसका मङ्गलमार्थक सामना तभी किया जा सकेगा जब यही शक्ति की, अहिंसा की, कृपा की शक्ति सखी होगी। आज भी यह कुछ जग में, मोझूर तो है, लेकिन उसकी आत्मी कोई हृत्ती नहीं है और यह हिंसा या दण्ड-शक्ति की दामों के सा में है। हाहा बाहिए उसका रानो, ताकि क्या समाज का व्यवहार, क्या शासन और क्या राजनीति, सभी उसके आधिपत्य में चले और जनतन्त्र की मूल्य सब दूर पले।

इसकी दूर करने की जिम्मेदारी हर भारतीय की, हर नागरिक की, हर टाटा-बाद-बाठी की है। हम अपना-अपना दिव्य टाटोले और मानने में पूर्ण कि बना मेरी तरफ से कोई मजदूरी बाय सो नहीं हो रहा है। अगर नहीं हो रहा होगा तो न अमानि होशी, न कोई पत्रबर्ग मचनी। दृष्टिपर ही सोचकर निरासता होगा और आना मन दाक बनना होगा। सभी पक्षीयों के, दूरधर्म के, सबके दिव्य शास होने और जो लोग पर छोड़कर भाग लये हैं वे वारिष्ठ आश्रय नहीं और अक्षरी अमन और सखी शक्ति हृत्ती।

संस्मरण

असहिष्णुता की वलिवेदी

११ फरवरी की रात। तारे में बड़े बुद्ध जनमयी धार्यवर्ता काउन्सिलीकर से ५० बौद्धवालों की उपाध्याय की निर्भय हत्या की खबर दे रहे थे, उनकी जुबान में वेदना में अधिक प्रतिशोध की तैयारी थी और उल्टाया से अधिक राजनीतिक भावना। वे लोग आम हज्जाल रखते थे शोक-सभा में अधिक मर्यादा में गम्भीरता होने के लिए लोगों में आग्रह कर रहे थे, यह मम रात को न जाने कब तक चला, प्रातः विज्ञाना छोड़ने में पूर्व भी वही आशय भाव में आ रही थी। परिणामतः १२ फरवरी को नगर में हत्याल रही, शोक-सभा में उपस्थित अक्षरी थी। जनसभा धार्यवर्ता जन-भक्ति का मोड़ आनी तरफ देखकर सन्तुष्ट दिष्टे, पर मुझे पर गज अटपटा-मा लग रहा था।

देग के किसी भी नेता की निर्भय हत्या-प्रकरण को उनमें सारांश अनुयायी दलबंदी मानकर बरने के लिए उपयुक्त माने, यह न माननीय दृष्टिकोण रहा जा सक्ता है, न राष्ट्रीय दृष्टिकोण। साम्प्रदायिक असहिष्णुता की वलिवेदी पर बल प्रहाया पायी जा वलितान हुआ था और आज सम्भवतः उसी रात को उपाध्याय गये, अन्त-अक्षरी लगा कि आज सुबहको उपाध्याय होडी और उनमें पर को गयी असहिष्णुता की महापारी के मोह शास के उपाय निदिधन विमो जाते, परन्तु राष्ट्रीय हार्ति की आश में दलबंदी और दल की आश में निहित-धर्यायें। मेरे मन में प्रश्न था कि देशी हितधारक या असहिष्णु भावना की संरक्षण न करने हृत्त भया बहरी के रहते ?

—सगवानाम

यह मज शीघ्र-विचारकर, आम सुद्ध की शक्ति मेरे उपाध्याय करने का प्रेरित था। पर उपाध्याय बक दोहरा हाट बने में दुःख हुआ। पन्द्रह दिन चलेगा। दृष्ट श्रेण में निरन्तर पानी और उनके साथ भीड़ का गंधे का प्रयोग करनी।

—सुगुणाम

इलाहाबाद, २२ मार्च, '६८

उद्घोषणा के समाचार

विनीवाजी द्वारा समाचार उद्घोषणा

दश

२१ मार्च जिनोय राष्ट्रिय व्यापार व विहाय सम्मेलन में मुख्य प्रश्नों पर सम्मेलीता बनिषाते।

२२ मार्च नापासद में अल्प राज्यापाल की भाँग। मानवता की परभाव से पूर्वांचल में सतार।

२६ मार्च मगध में छात्रों व बह बन्धुधारियों में सभ्य। गैल के विरुद्ध बादूनी कारवाई करने के लिए सवर्ण-मन्त्र्या ने भाँग की।

२७ मार्च देशाहिणो की कुचल देने की चन्दाप द्वारा सतावनी। सामान्यो कम्पनिस्टो पर प्रविषय की भाँग।

२८ मार्च राज्य के अधिहार करने के सम्बन्ध में विनीवाजी सतारो की भाँग चन्दाप द्वारा दृष्ट।

२९ मार्च बिहार विधानसभा में काषयो सत्य ने कम्पुनिस्ट सत्य पर कुर्सी बसा।

विदम

२४ मार्च पाकिस्तान को इतली के १०० एक नेच जाने की बमालिका ने अनुपदि रो। अरब प्रशराल में पुन बड़े पवाने पर बुद्ध की क्षाँता।

२५ मार्च सुरसा परियः द्वारा जोडन पर इधराइली हलने की निन्दा।

२६ मार्च चीन इल वध सन्धियो में प्रयोगास चोरेगा।

२७ मार्च जनरल सुभाषो इवोनीग्या के सन्धुनि बने। प्रपय अन्तरिक्षको गणा रिच को हवाई-कुपडो में प्रयु।

२८ मार्च अरब-राजसूत लेवासा व जोडन नरो के विरुद्ध १ घंटे तक सभ्य।

२९ मार्च जोडन नरो के किनारे पुन पुन टको का प्रयोग सुरू।

३० मार्च एडन के टेकोस्टिक भागन में भाषायी १७ वा १८ वर्ष की ४० भाषी की प्रतिभा का अनावरण होगा।

भूतन-यश सुब्बावर, २ अप्रैल, १६८

नवसतवाडी क्षेत्र में ग्रामदान कयच्छा २७ मार्च। सर्वोन्म-नाय

कर्नाडा द्वारा उत्तरी बंगाल के नवसलवाश क्षेत्र में व्याक्त अधिम्यान बारम्भ करने के बाद नेतुगाबुट गौन धामगान में प्राप्त हुआ। नवसलवाडी क्षेत्र में जहाँ भूमि को सेक्टर

ट्रिगक उपग्रह हुए थे पर पट्टा धामगान है। नेतुगाबुट की तरह और भी कुछ धामगान मिलने की सम्भावना है। ऐसा अनुमान है कि विनीवाजी भी गौन नवसलवाडी की यात्रा करगे। (सप्त)

१८ अप्रैल ६८ तक

उत्तरकाशी जिलादान वा सत्यप उत्तरकाशी। गा २० मार्च को यहाँ

मगध हुए रचनात्मक कायकर्ताओं के माधो काली सिधिर में उत्तरकाशी जिल के जिलादान १८ अरल ६८ तक करने का

निष्पत्त किया गया। अब तक उत्तरकाशी जिले के ६ गाँवों में से ३६ गाँवों का सामान्य हो चुका है। (सप्त)

गजरात म १०३ ५३० एकड़ भूदान प्रांत

गुजरात सर्वोदय मगध द्वारा प्रशासित एक जानकारी के अनुसार गुजरात में अब तक कुल १०३ ५३० एकड़ भूदान में भूमि मिली है जिसमें २५ ६६६ एकड़ जमीन तत्कालीन सीराष्ट्र सरकार ने भूदान में दी थी। सेप ५८ ३५० एकड़ भूमि २० हजार ३६ २०० एकड़ और सरकार द्वारा प्राप्त भूदान में से १५ ६१५ एकड़ इल प्रकार कुल ५० ६८५ एकड़ भूमि १० २७० मृगिहीन परिवारों में विभारित की जा चुकी है। सीराष्ट्र में १६५३ में भूदान-पुष्ट पारित हुआ तब से विवरण का काय सीराष्ट्र भूदान बग सामान्य कर रही है। परन्तु सेप गुजरात के लिए कोई भूदान-नगून नहीं बना है अत उत्तम काय गुजरात सर्वोन्म मगध सन्धुस रहा है। (सप्त)

४ मार्च का विनीवाजी ने धादोपम मूगेर में प्रभाराल का उद्घोषण किया। इस धमगालो की प्रभाव का खीत था १३ फरवरी वा मूगेर वा क्षाय यथा में विनीवाजी का भाषण जियम उद्घाने चीन में चलनेवाले हाक हाक स्टूला वा बिक्र किया था। धमगाल में विनीवाजी के लिए ६ घण्टे काम और २ घण्टे पगई होती है।

दारीक श्रम व द रे में विनीवाजी ने कह कि यह अधिक है और उगोने से ३० घण्टे श्रम के बाद पगई से मन ने वायकम जगने का सुमात किया। उन्होंने कहा कि कुछ को नियु के पात्रय की कामना करनी चाहिए।

—पारसु भाई

सर्वोदय मासिय प्रदर्शनी

● वागणसी १ मार्च। वारणसेय सन्धुत विस्वविद्यलय म २७ मार्च के ३०

मार्च तक हर नेवा मय का अर स सर्वोन्म साहित्य परधान २ अ कागत किया गया था। प्रदर्शनी के अधिसूक्त प्रतिनिध माधो विचार तथा सर्वोन्म-नवधिधन विषयों पर

विद्वानो के भाषण भी हुए। परधानी का उद्घोषण करने हुए वागणसेय सन्धुत विस्वविद्यालय के अनुकल्पने डा० गौरीनाथ शाहो ने कहा कि नरो बाना का भाषण में लाने के लिए सर्वोन्म-मासिय का प्रचार आवश्यक है। स्वामी प्रकथाय सभापस कल्याणनि विपडा अर विद्वानो के भी भाषण हुए।

वादी एक विक्वाम कायवताओ का गमगान मगज

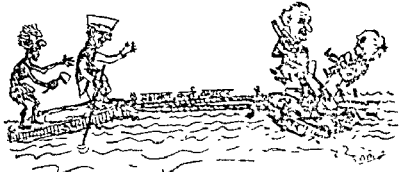
इ दौर। सत्यय विवचन व्यापन में दिनाक २३ २५ मार्च का कायाजित को विस्वविद्य सम्मेलन में प्रवेश की ३० सादी हत्यामा ५५ प्रतिनिधिया तथा ५५ स्थायी कायकर्ता ने भाग लिया सम्मेलन की अध्यक्षता प्रांत के सुगमिड सर्वोन्म-सेवक श्री बैजनाथ सन्धुस ने की। (सप्त)

बिहारदान की ओर

● शनीपतरां, १२ मार्च : कल यहाँ पहुँचने पर बिनोबाजी ने कहा कि यह सोमा-कोम होने में विशेष जिला माना जायगा। यहाँ अगर अनेका पूर्ण हुई तो हमें धूमना नहीं पड़ेगा। हर गाँव में कम-से-कम १० शान्ति-सेनिक हों। गाँव के मगडे अदालत में न जायें।

● गया, २६ मार्च : होली के बाद आमनिर्माण मंडल की खादी-उद्योग समिति के ३२ कार्यकर्ता जिले के कई भागों में विभक्त होकर काम में लग गये हैं। श्री मिटरराज डड्डाजी के पिछले दिनों के भ्रमण से जिले में ग्रामदान के लिए अनुकूलता पैदा हुई है। विशेषतः शिक्षक, ग्रामपंचायतों के कार्यकर्ता सक्रिय हो रहे हैं। स्थान-स्थान पर प्रचण्ड विकास पदाधिकारियों की मदद के कारण सरकारी कर्मचारी वर्षों महायत्ना कर रहा है। जिलादान-प्रति समिति के संयोजक दिवाकरजी १६ मार्च से दक्षिणी क्षेत्र का व्यापक दौरा कर रहे हैं। सोलोदेवरा माथम के मंत्री श्री विजुरागे दारण ने गोविन्दपुर प्रखण्डदान के लिए दौरा जारी किया है। धारानट्टी प्रखण्डदान समिति का गठन हुआ है। जिले के तथा प्रांत के प्रमुख नेताओं से निवेदन किया गया है कि अप्रैल माह में कम-से-कम तीन दिनों का समय यहाँ के ग्रामदान-अभियान के लिए दें।
—नेत्राय मिश्र

अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा-मंडल पर श्री मनमोहन की चेतावनी



शमी काटो

३१ मार्च '६८ तक

दरभंगा जिलादान में :	प्रखंडदान ४७	ग्रामदान ३,७२०
तिरुनेलवेली जिलादान में :	प्रखंडदान ३१	ग्रामदान २,८१६
बिहार में :	जिलादान १, प्रखंडदान १४२	ग्रामदान १७,९३६
भारत में :	जिलादान २, प्रखंडदान २=४	ग्रामदान ४३,८७४

बिहार में ग्रामदान-प्रखंडदान

(३१ मार्च '६८ तक)

जिला	ग्रामदान	प्रखंडदान
पूर्णिया	४,१७१	३७
दरभंगा	३,७२०	४४
मुजफ्फरपुर	१,६६६	२०
मुंगेर	२,११८	१६
गया	१,१२६	१
हजारीबाग	६१२	४
मध्याक परमना	८३४	१
सारण	६६०	४
बलामू	६१८	४
घनवा	२६१	१
मिर्जापुर	२६६	२
सहर्षा	४६७	२
भागलपुर	४८८	३
साहायदा	१०३	१
रांची	४४	—
पटना	२४	—
धनारण	२४०	—
कुल :	१७,६३६	१४२

● जमशेदपुर, २६ मार्च। ग. द. मार्च से जिला शान्ति-सेना समिति के कार्यकर्ताओं एव स्थानीय गांधी-स्मारक निधि द्वारा मंचालित माथम नयागाँव के कार्यकर्ताओं की काफी यत्न प्रखण्डदान-अभियान में लगे। फरवरी २४ मार्च को विद्वमान श्रि वे वा नीमरा प्रखण्ड मन्गीव प्रखण्डदान घोषित हुआ। ६८ गाँवों में से ६४ गाँव, याने कुल गाँवों के ७४ प्रतिशत गाँव एव ७६ प्रतिशत परिवार ग्रामदान में शामिल हुए।
—मु० अयूबखान

उत्तर प्रदेश

● लखनऊ, २४ मार्च। बानपुर, पनेहपुर, उनाय, रायबरेली, लखनऊ, हरदोई, सोनपुर और भीरी जिलों के १७ वरिष्ठ कार्यकर्ताओं एव नेताओं की एव संज्ञ २०-२३ मार्च को बानपुर में हुई। सर्वसम्मति से निर्णय हुआ कि ग्रामदान धारारतगंज आन्दोलन की व्यापक बनाया जाय। इस दृष्टि से उजयुंन जिले के प्रति-निधियों की "बानपुर क्षेत्रीय ग्रामदान धारारतगंज समिति" का निर्माण श्री ब्रजमोहन त्रिपाठी की अध्यक्षता में किया गया। श्री हरिप्रसाद, कल्याण, जिज्ञा परिवार पनेहपुर दखरे मंत्री मन्गीनीत हुए। जिला समितियों के गठन तथा धारारत-अभियानों के संयोजन की योजना भी बनायी गयी। प्रत्यक्ष यह है कि २ जनवरी '६६ तक उ० प्र० के सभी धारों में धारारतगंज का संदेश पहुँच जाय। —सर्वसाक्षि प्रसाद

● गार्दाबाग (जयपुर), २४ मार्च। सर्वसम्मति से राजस्थान खादी संघ के अध्यक्ष श्री विद्वरुध डड्डा, उपाध्यक्ष रामेश्वरजी अचराल और मंत्री श्री दीनारामजी गोयल चुने गये।

भूदान-आश

भूदान-आश-संघक-आ-मी-धी-अ-प्र-य-द-अ-स-क-उ-प-नि-अ-स-द-अ-वा-व-द-सा-अ-ज-ना-दि-द-के

सर्व सौजा संघ का मुख्य पत्र

वर्ष : १५ क्रम : २८

शुक्रवार, १२ अप्रैल, '६८

इस प्रंक में

- शहीद का सुन या मार्गिक का निर्णय
—आमर्षि ३२८
- वानसभ 'स्वयं' या मार्गिकस ?
—प्रधानमंत्री ३३०
- बाबाओं का वंश
—विरोध ३३२
- प्रदोष, वरना और वेपसा
के बाद ?
—उनीठ दुवार ३३४
- परिष्कार शायी गौरवपूर्ण प्रीति,
नेतिन परिष्कार ?
—सबरदास देव ३३६
- मनोहर घोषी ३३८
- प्रमथन ३३६
- 'पति को मृत्यु के लिए बेरो बेरोगी है'
—धीमरो किंग ३४१

अन्य सामग्री :

माधो विचार
श्याम-आवरी
बापूजीन के सुभाषार

सम्पादक
पञ्चमभूषि

सर्व सौजा संघ प्रकाशक
राजभाट, शारदापुरी-१, उत्तर प्रदेश

कष्ट-सहिष्णुता से ही दमन-उत्पीड़न का मुकाबला

नीचे जाति, जो किसी जमाने में एक अछूत या मान्यताहीन भी, आज तकनीक, आधुनिक और आर्थिक क्षेत्रों में काफी भाग बट चुकी है। इसलिए बहुत से लोग मार्गिकों को यह समझ होना है कि कहीं भी लोग बंदूक कुल्हाड़े पर उतरा न हा भागे। अब वह नीचे लोगों का काम है कि वे उन संघर्षों से बचाने को यह समझें कि कठोर तरीके को कोई बदल नहीं है कि नीचा लोग परिष्कार को समझते हैं और इसलिए वे हम कुछ माफ करने के रहे हैं और जगत का प्रगति करने के लिए तैयार हैं। नीचे लोग केवल स्वयं प्राप्त करने को चिन्ता कर रहे हैं और वह स्वयं भी तोना के लिए—जाने लिए ही नीचे सेनाओं के लिए भी। अहिंसा के विद्वानों पर बलवानों का एक स्वतंत्र आन्दोलन यह विचारना है कि आज में अहिंसा होने के बावजूद किंग तमसु अन्धकारिता नहीं छोड़िए। यह विचारना मुमुक्षु के सामने प्रथम इस बात का भी करना है कि अगर इस प्रकार का आन्दोलन प्रतिपादित करना है तो यह नीचे लोग का उपयोग विचारना चाहिए। यह विचारना कि उद्योग के उदय में प्रथम ही जायना। अहिंसा मुमुक्षु के उस समय को ही कहनी है, जहाँ कानून नहीं पहुँच सकता। जब कानून के द्वारा मुमुक्षु के अन्धकार पर विचारना लगाया जाता है, तब वह कानून अत्यन्त रूप से जनताका ही मोक्ष का काम करता है। कानून का शासन कानूनमान मान्यता में एक सामंजस्य परिष्कार का ही तरीका है। पर कानून भी किसी भी तरह लागू है। एक व्यापक आधुनिक स्तरों में समन्वय के लिए आदेश दे सकता है। परन्तु लोगों के मन के भाग को विचारने के लिए, पूजा को दूर करने के लिए, हिंसा एक स्तरों में समन्वय के बिना क विच्छेद सेते हुए अनुचित लोगों को विचारने के लिए और जाति के नाम पर हमला को मुकुक्षुन पहुँचानेवाले लोगों के हृदयों में अविश्वास-अहिंसा के लिए वना हिंसा का सकता है ? कानून के प्रति आदर पैदा करने के लिए तथा कानून का शासन करवाने के लिए यह आवश्यक है कि लोगों में उनके मते होने पर विचारण पैदा हो।

डा० जेनेम श्यामर्षि ने बड़े प्रेक्षक शक्तों में कहा है, "बर्बरता और अविश्वासिता, विद्वानों और अन्धकारपूर्ण हृदयों का एक ही नाम है जो उठकर हमना करने का प्रयत्न करती है कि उस हृदय के स्थान पर ही नीचे अन्धकारको उन अन्धकारों का मित्र बनने के लिए प्रयत्न कर रहे।"

अब इस अन्धकारपूर्ण अन्धकार, अन्धकारिता और अन्धकारिता से नीचे की प्रति के साथ दमनकारिकता का मुकाबला होगा, तब अन्धकारिता की प्रति ही से भी अन्धकारिता के लिए विचारण हो पायेगी। इन दमनकारिता को अब दुनिया के सामने और ईश्वर के सामने अपने आदर्शों के लिए वे राते हुए प्रथम के काम करने होंगे के लिए प्रयत्न होगा प्रयोग, तब वे अपने आकाश ही हृदय सेनाओं को दृष्टिकर्षण करने में सक्षम होंगे।

('आदर्शों की अन्धकारिता' से)

—मार्गिक दुवार

शहीद का खून या नागरिक का निर्णय ?

गोरो के नाम

मानवता की अमर अपील

समाज शहीद के खून में बदलेगा या नागरिक के निर्णय से ?

१ अप्रैल जलियाँवाले बाग के शहीदों की याद का दिन है। उनका मृत ४८ साल पहले हुआ था। अपने लिए नहीं, देश के लिए बहा था। लेकिन क्या आज हम यह कह सकते हैं कि उन शहीदों की याद देश को है ? याद कुछ यूँ ही होगी या उनको होगी जो इतिहास से परिचित होंगे। लेकिन उनकी संख्या कितनी है ? सच बात तो यह है कि देश उन शहीदों को याद रखने की जिम्मेदारी इतिहास को सौंपकर स्वयं निश्चित हो गया है। याद आती है भारत की जीवन भर सेवा करने के बाद धोमती एनी बेसेण्ट की एक बार की बही हुई यह बात कि भारतीयों की सबसे बड़ी विशेषता है, अकृतज्ञता। अपने शहीदों को भूलनेवाले,

राम और हृषण यो हम नहीं भूले है। तुलसी, कबीर और चैतन्य हमें खूब याद है। हो सकता है, भारत की राष्ट्रीय प्रतिभा घटना से अधिक महत्व भावना और साधना को देती है। सामाजिक विकास को जिस मजिल पर यह देश पहुँच गया है, तथा लोकतन्त्र और विज्ञान के कारण जीवन का जो सन्धर्भ बनना जा रहा है, उसे देखते हुए ऐसा लगता है कि अब परिस्थिति शहीद के बलिदान की आवश्यकता से बही आगे निकल गयी, अब उसे आवश्यकता है नागरिक के सही, सामूहिक निर्णय को। शहीद अब भी अपनी आन पर कुर्बान हो सक्ता है, लेकिन नये जमाने की आग्नि राह देत रही है नागरिक की विद्रोह-शक्ति की, जो साहस-पूर्वक और विवेकपूर्वक यथिय के समाधान के लिए वर्तमान का मागोधन कर सके।

दूसरे ही संघ से सही, रिद्धले चुनाव में नागरिक का निर्णय बिना अग में प्रबट हुआ था। उमगे नहीं अधिक बह प्रबट हो रहा है देश भर में हानेवाले हजारों धामदानों के रूप में। धामदान में सामान्य नागरिक का भागित्वारी निर्णय ता है, लेकिन उसमें अर्भो बह शक्ति और तेजस्विता नहीं है जो शहीद के मकल और समर्पण में हानी है। उस तेजस्विता के बिना मात्र निर्णय एव शहीद आह और ऊँची आवा के सिवाय दूसरा क्या होगा ?

जलियाँवाले बाग के शहीदों के घटा-पूर्वक स्मरण में हृदय ऊँचा उठा है। लेकिन अब कामना यह नहीं होनी कि बिचो दूसरे को शहीद होते देखना पड़े या मुझ शहीद होने की नोचन आये। वास्तव में शहीद को शहादत प्राप्त और समाज की व्यक्तता में पुष्टी हुई घोर खंबंटा और अज्ञान का प्रमाण है। अगर नागरिक अपनी नागरिकता को पहचाने और उसकी जिम्मेदारी निभाये तो नये बिचो शहीद होना परे ? लोकतन्त्र को दायित्व नागरिक के विवेक और निर्णय की दायित्व है। उसको जमाना नये जमाने के भागित्वारी का काम है, फिर सोचना और

कष्ट देने की आपकी शक्ति के मुकाबले हम अपनी कष्ट सहने की शक्ति का प्रयोग करेंगे। आपके दुराग्रह का मुकाबला हम सत्याग्रह में करेंगे। हम आपसे घृणा नहीं करेंगे, लेकिन अपनी समस्त आत्मचेतनाओं के साथ हम आपके अत्याचारपूर्ण कानूनो का पालन भी नहीं कर सकते। आप हमारे प्रति जो भी करना चाहें, बीजिये, हम फिर भी आपसे प्रेम करेंगे। हमारे परो पर बम-बिस्फोट कीजिये, हमारे बच्चों के लिए खतरा पैदा कीजिये, नकाबपोज हिंसा के दूतों को हमारे मोहल्लों में भेजिये और हमें सड़कों पर मार-पीटकर, अथमरा बनाकर पसींठिये, हम फिर भी आपसे प्रेम करेंगे। किन्तु हम सौंप ही आनी कष्ट-संरिपुणा की शक्ति से आपको पना देंगे। फिर अपनी स्वतन्त्रता जोतकर हम दस ताह आगमें पना आपमें कि आरों हृदय और चेतना में नया परिवर्तन आ जायगा। इस प्रकार हम ही आप पर विजय प्राप्त करेंगे।
—मार्टिन लूथर किंग

नून बहाना नहीं। यह ठीक है कि आज की समाज-रचना में नागरिक की समकृषिया अनेक है, लेकिन यह भी उतना ही सही है कि अगर लोकतन्त्र और विज्ञान को बनाये रखना हो तो उन समकृषियों को दूर करने का सबसे सुरल उपाय है, नागरिक का निर्णय और उस पर चलने का संकल्प। नागरिक का विज्ञान मानासाह नहीं है, शहीद भी नहीं है।

दुनिया मुझसे देमक आउगावियो और तानाशाहों और उनसे बनाबोध कर देतेवाले पारलामो को देल चुकी है, अब बह सामान्य, पबोली के साथ चकतेवाले, कर्णप्राप्ति, शीम्यन्त, नागरिकों को देवता बाहूटी है।

२५५५

चिन्तन-प्रवाह

अपने राष्ट्रपिता को गोली मारनेवाले देश के लिए अगर यह कहा जाय तो गलत क्या होगा ?

दसो महीने के १८ अप्रैल को मुवावि-दिवस है। १७ वर्ष पहले विनोबा ने इसी दिन पापना की थी कि इस देश की मुख्य समस्या भूमि की है, इसी देश की नहीं, तमाम एशिया की। भूमि का ही प्रश्न एशिया के जीवन-दान (आस्ट्रेलियाजी) और उर्वरक (टेबनालाजी) दोनों को स्थिर करेगा। भूमि भारत और एशिया के भविष्य का आधार है; करोड़ों-करोड़ लोगों के जीवन-भरण का प्रश्न है। एशिया किधर जायगा, इसका निर्णय भूमि ही करेगी, दूसरी कोई चीज नहीं। ऐसे कानिकारी महत्व के दिन की याद—याद सौंठिये जानकारी भी—बिजने लोगों को है ?

क्या अब यही सुनना बाकी है : अज्ञानज्ञे, तेरा ही दूसरा नाम भारतीय है ? नहीं, याद एक दूसरा पहलू भी है।

कर्तव्य और अधिका

जिसे मैं धार्याग्रह का राजा कहना हूँ, वह कर्मोंको जो दूरी तरह समझते और अपने पैदा होनेवाले अधिकारों के उत्पन्न होता।

उदाहरण, एक हिन्दू का जाने मुसलमान बंधों के प्रति क्या उन्हें है? उधका पत्र इनका के नसे उन्हे दोस्ती करना, उन्हे मुसलमान से भरीक होगा है। नर नये अपने मुसलमान बंधों को ग वने ही बरतान की जगना रखने का हक होगा, और बहुत बरते उधको तरह से आयातकार ही उन्ने मिलेगा। मगर मान लीजिये कि बहुतसे हिन्दुओं के ठीक बरतान का जो-ने मुसलमान सेवा ही बरतान न दें और हर काम में सराई का ही कस दिखाएँ तो यह उनको पर इसकानियन की विनासी होगी। सब ब्यवस्थाक हिन्दुओं का बना बनें होगा। मन्वस ही बन्धों के एगुबने से उन्हें दसा देना हिन्दुका का बर्न नही होगा। उनका फन होगा कि वे मुसलमानों के पर इसकानियन के अग्रहार को उन्ही तरह रोके, जिध तरह वे अपनी छगे आशों के ऐसे अग्रहार को रोयें।

('हरिवन्', १०/५०)

नम्रता

बयदको भी नगर मन्ही है जो मुस नहीं है। जो नम्रता और धर्म की भावना से पोषा-सा त्याग करता है वह उधकी अलगाव को बन्धी ही अगुन कर लेगा है। एक बार त्याग के माग पर अगदर ही जाने पर हय कपने त्याग परायणता की भाषा का जगना लता ली है और फिर नसे अगुनार अर्थिक बनिशान करी दुहा काहिए और जब मनुयें आयातकारों को जगद, उर तक धनपे यह मानना काहिए।

('धम सुधिका', १२२-१२३)

जानसन : 'त्याग' का प्राथमिक ?

केनेदी मर तो छही दुवा। मरने पर बहुतेको ने यह कहा कि केनेदी को महात्मन दूमें नही थी कि जीने को उम्ने अरतो मरतना मिद कर ली थी, बरिद इमें भी कि मगर वह सहीपण की चेरी पर बलि न मसा दिहा मना होता तो न जाने किसना मदान होता। केनेदी के बारे में यह बात छही जो सचकी है, भासिक उधमें महात्मना के अदूर ध। अर्थिक कौन जाने ? अमेरिका जो गजरीयि वम और उधकर का गज देहा बिपयण थोक है जो महात्मना के मानसिक स्थान को धार प्रबट नही होने देता।

जायदा राष्ट्रपति की हैषियन से महान रही हा सगा। उधकर उधमें से मरगति माग डालन, जिदका भावजन के बाद दुगा मन्त्र वा बमजोर दुवा। और उन्ही के उधम अमेरिका ने देला कि ल्यामिभाव अनुभव के परिहार में बुनिया का बहुत विद्याल जनमन मसा है। एक ओर जनमन, दुगों ओर विद्यालय के पुस्तकें और दुगतिबों का सक्ता मिक जो दूर हार को बीत और हर मनुष्य का जोषन बनाती रहेगी है। जानसन न डालन की प्रतिष्ठा बसा सगा न बम का भव जग सगा। डालन और बम से अर्थिक अमेरिका का सासक—जगता नही—जगता सगा है ? मर कहा जा रहा है कि चुनाव में खरा न होने की घोषणा करके जनमन सल्लमि के पर में उन्को उठकर राष्ट्रपिता हा मगा, और विपणन को बसवारी का न्यादा से न्यादा बन्द करके उधमें विपणन भी हलवाना का प्राथमिक कर दिया।

प्राथमिक दुका या गही यह ना बंधिम बतयाया। किनु जानसन क 'त्याग', प्राथमिक या चुनाव में हार जाने वा अखरा टाकने की सार्वजनिक बुद्धि से अमेरिका को बुना ता बसा ही दिहा कि उधक को जगता अतोय प्रोसिक वेमर और बुनिया को आम्पवाइ से बचाने की ठीकेचो—वीरो आकाशाका की पुर्ण एक थाप नही हा सक्ती। कुनेर का सन भी एग विविध शक को नही बरिजन कर सचना।

जानसन ने कहा है कि उधन यह न्याय मण्ड को उधका और विपण को मालि के लिए दिया है। एका अमेरिका ही न। सबके लिए जल्दी है। मानि बुनिया के लिए जोबा मरण का प्रब है। पर वह एक मिन काम को नो हुणे उधकर आर दिहा का कारण बने, और यह गांर रिश काम की जिदके अन्धकार के लिए अग्रहार सागरण हो। मगर जानसन के इध इमम से उमगा वेध यह मनीहून से कि अमेरिका का बम और डालन की भाषा दोबरी काहिए तथा मिन्मन्तरिार से प्रीयता का स्थान जाने के लिए पर और बाहर मरो राष्ट्र-भीर्ता अरतको काहिए ता निविध एग से जानसन की पाषाण कापडन से नही बरिच महात्त सिद्ध होगी। यह एक बहुत बम होगा, और इतिहास जानसन के मर को सकोरन बरसा।

धक और महादत्त...

या ० विग की तया की खबर ने नवीनर धम दू मरी।

पाम रोष यह सिद्ध होता का यह है कि सम्पना का विधान अहिया के साध बुधा दुहा है न कि मरार्द-मरार्द म। इधका मानो अर्थिक मनुयिणों से रही है। अहिया वालो को बुनी भुगी दिहा के मूर्त् में जाने के लिए तैयार होता पडेगा। माध जो यह जान की है कि मर अत्याय ही मरार्द दिहा ने नही बसा जा सक्ता। अहिया का खर्च ही होय काहिए, अत्याय ने मुजिद। अत्याय मन्वस की रबनार में है। मन्वसों में है, मर में है। इधका खर्च है रोयण देवाप्यार तक मनुयों को मनुय के तांर अर्थिक हो उठे। अहीर होने को अग्रसरतना बर उर बने रहेगी ?

मुझे भाषाओं के प्रति अत्यन्त प्रेम है। मैंने भी अनेक भाषाओं के अध्ययन की कोशिश की। हिन्दुस्तान की भाषायुक्तों में १५ भाषाओं के नाम मीठूत हैं। उन सब भाषाओं का अध्ययन वाबा का दृष्टा है। उसके बाद परियन और अरबी, दोनों भाषाओं का अच्छा अध्ययन वाबा ने किया है। अरबी भाषा का तो वाबा पठित ही बड़ा जाया और उसने कुरान का एक सार भी निबाला है। फिर हमने चीनी और जापानी भाषाओं का सोडा-सा अध्ययन करने की कोशिश की। जापान के एक भाई मेरे यहाँ आये थे और महोनामर उन्होंने मुझे जापानी सिखायी। मेरे ध्यान में आया कि अगर नामरी लिपि भारत में चलेगी तो जापान के लोग भी नामरी लिपि का स्वीकार कर सकते हैं, क्योंकि वे लिपि की तल्लास में हैं। एक बड़ी बात मैंने पायी कि उनकी भाषा की रचना भारतीय भाषा की जैसी है, यूरोपियन भाषा की जैसी नहीं। शब्द तो उनके अलग हैं, लेकिन रचना वैसी है? 'इन दि रूम'—यह इंग्लिश रचना है। 'कोठरी में'—यह भारतीय रचना है। यानी अपने यहाँ 'प्रोपोजिशन' होते हैं, 'प्रोपोजिशन' नहीं होते। 'प्रोपोजिशन' माने सजा के पहले चन्द्रयोगी अव्यय रखता। उसे सजा के बाद में रखने की 'प्रोपोजिशन' कहते हैं। हम 'में कोठरी' नहीं, बल्कि 'कोठरी में' बोलते हैं।

फिर हमने चीनी भाषा का अध्ययन करने की कोशिश की। उसके लिए एक चीनी भाई भी मेरे पास आये थे। बड़ी ही विकट भाषा है। उसकी सूची यह है कि वह विच-भाषा है। विच-लिपि के कारण उसमें हज़ार-बारह घो सज़ाएँ हैं। ये सारे प्रतीक सीखने के बाद भाषा आती है। वह लिपि ऐसी है कि उससे आप अपनी भाषा भी पढ़ सकते हैं। मान लीजिये कि बाप का चित्र आपके सामने खड़ा कर दिया, तो इंग्लिश में कहेंगे 'टाइगर' और हम कहेंगे

'बाघ'। चीनी भाषा में एक सूची है कि चीन में अनेक भाषाएँ हैं, लेकिन उनकी एक लिपि—विच-लिपि—हूने के कारण चीनी लोग अपनी-अपनी भाषाएँ पढ़ लेते हैं। मैंने उसमें से भरती पढ़ना शुरू कर दिया।

भाषाओं के प्रति आदर

तारार्य यह है कि मैंने भाषाओं के लिए काफी परिश्रम किया और मुझे उनके प्रति काफी आदर है। इंग्लिश ता मैंने बोडी सीखी है, फ्रेंच सीखी है। मेरी पदयात्रा में एक जर्मन लड़की आयी तो उससे जर्मन सीख लो। इंग्लिश और फ्रेंच, दोनों जानता था, जिन जर्मन सीखने में ज्यादा विहतत नहीं हुई। एक महानि के अन्दर जर्मन सीख समा है। उसके बाद लेटिन का भी थोडा अध्ययन कर लिया, बस है। एक भाई आये और बोले कि अध्ययन तो आपने वाकी किया, लेकिन एक भाषा का अध्ययन नहीं किया और इस वास्ते आपका ज्ञान बहुत ही कमजोर है। बोले, आपको 'एस्पाण्टो' सीखना चाहिए। मैंने कहा और एस्पाण्टो' का शिक्षक मिल जाय तो सीत सकता हूँ। युगोस्लाविया ने एक शिक्षक भेजा। मैं उन दिनों पंजाब में पदयात्रा कर रहा था। तो मेरे साथ पदयात्रा में वह आदमी रहा। बीच दिनापे 'एस्पाण्टो' मैंने सीख ली। मुझे भाषाओं के प्रति अत्यन्त आदर है। आज भी कोई भाषा सिखानेवाला मिल जाय और जरूरत पड़े तो मैं नयी भाषा सीख सकता हूँ। इस वास्ते भाषा के बारे में मैं जो कहूँगा, उसमें किसी भाषा के प्रति पूर्ववद होगी, ऐसी चान नहीं।

सान बिदेशी भाषाओं का अध्ययन हो

अप्रेजी के बारे में मैं एक बाल कहना चाहूँगा है। बहुत लोगो का कहना है कि अप्रेजी भाषा के बिना शिक्षा लपूरी रहेगी, क्योंकि वह दुनिया के लिए 'विण्डो' (खिड़की) है। यह बान मैं मानना हूँ, लेकिन मैंने ऐमे

पर देखे कि उन परबालो ने एक ही दिना में एक ही खिड़की रखी थी। तो परिणामतः उनको चारों तरफ का दर्शन नहीं होता था, एक ही तरफ का दर्शन होता था। वैसे ही अगर आप हिन्दुस्तान में एक ही 'विण्डो' (खिड़की) रखेंगे तो सवांग-दर्शन होगा नहीं, एक ही अंग का दर्शन होगा। तो कम-से-कम आपको सात 'विण्डो' (खिड़कियाँ) रखनी होगी—इंग्लिश, फ्रेंच, जर्मन, रशियन, ये चार यूरोप की। चार्लीन, पापानीन—ये दो 'फार ईस्ट' (गुदूर पूर्व) की, और ईरान के लेकर सीरिया तक जो सांग हिस्सा है, उसके लिए अरबी। ये सात 'विण्डो' बाप रखेंगे तो आपका काम ठीक होगा, अन्यथा एक 'विण्डो' आपने रखी तो बहुत एकांगी दर्शन होगा और दुनिया का सही, सम्यक् दर्शन होगा नहीं, गलत दर्शन होगा।

यह मैं मान्य करता हूँ कि हमारे यहाँ इंग्लिश सिखाने की सुरुलियत काफी अच्छी है और इस वास्ते इंग्लिश सिखानेवाले लोग ज्यादा निकलेंगे और दूसरी भाषा सिखानेवाले कम निकलेंगे। लेकिन इन सान भाषाओं के उत्तम जानकार अपने यहाँ होने चाहिए। सभी भारत का काम ठीक चलेगा। नहीं तो भारत के लिए खतरा है।

अगर आठ साल की शिक्षा हम बच्चे को देंगे तो उसे आठ साल के अन्दर अप्रेजी, फ्रेंच या जर्मन आदि 'विण्डो' (खिड़की) रखना बेकार है। उसकी जरूरत नहीं है, क्योंकि वे तो आठ साल की परीक्षा पास करके खेती में जायेंगे या अपना-अपना काम करेंगे। उन सब लोगो पर इतनी भाषाएँ सादना ठीक नहीं है। संरहन की विनोदता

वो विचारवादी हिन्दी सीखेगा, उसे संरहन भी सिखानी चाहिए। संरहन में जिते छन्द-शाधनिश करते हैं, वह हमारी सब भाषाओं का आधार है। वह घारी शब्द-साधनिका उनको सिखानी चाहिए। विगल के तौर पर योग, उद्योग, सयोग, प्रयोग, वियोग, यमिनीय, प्रविनीय—ये सारे शब्द 'योग' से बने। फिर योग्य, अयोग्य—ये वियोग्य बने। पुष्क, अयुष्क, आयुष्क, प्रयुष्क—ये दूत-

दृश्य बने। योगी, विवागी, सबोगी—
 इकारि रूप बने। योग, योगीय, योगी-
 नाय इकारि सार बने। एक 'सुन्द' धातु
 पर से हम ने कम ४०० ध्वन् दिन्दी में चलो
 हैं। वे मरुत्त माने जायेंगे, लेकिन वायु की
 बल्लट (बाबराय) डेटे की होती ही है। ता
 सभूट के बिना दिन्दी का जान एरन्तम मरुत्त
 रदेया और दिन्दी भाषा सर्व विचार प्रकाशन
 में समर्थ नहीं होगी। यह बहुत जरूरी है
 कि तार-साधिका उनको विप्रायो जाय।
 धम प्रकार एक ही धातु से इनने सारे धाम
 बनते हैं और वे धाम भाषाकी मर्यात है।
 सभूत्त को बहु धाम-साधिका दिन्दी भाषा
 के बधायन का एक माग होना चाहिए। उसके
 के बिना दिन्दी भाषा का अध्ययन दुसरा, ऐसा
 मानना नहीं चाहिए।

'सुन्द मंगलम मन सभाजू,
 जो जन जगम तीरथ राजू।'
 सब में इनका मरुत्त बहूना है—
 'सुन्द मंगलम स सत समाय ,

यो जगत् अर्थात्ति तीरथ राज ।'
 यानी उ होने मरुत्त ही निगा है।
 भोगो को उच्चारण जान नहीं थे इस
 वास्ते लोगों को समझाने के लिए जगता की
 भाषा में बोने। बगली लोग बहते हैं कि
 हमारी भाषा में तीर 'स' है। स—स—स,
 यानी तीना 'स' है। उच्चारण में कोई एक
 नहीं। उरामने-उराम बर्ण जो हो है,
 उनका काम भाषा विमला नहीं, बल्कि धर्म-
 विचार सिखाता था। उन्होंने लारु भाषा में
 जो प्रयुक्त उच्चारण है, वह उच्चारण मान
 करते तरुत्तार लिखा है। लेकिन जा लिखा
 है वह जगत्तार सभूत्त में मिला दुसरा ही है।
 रवि ठाडुर की भाषा पर क्या बहू जाय ?
 "जगमपनमर्धिनयक" किताब बरा समाल
 हो गया। रवि ठाडुर की भाषा में बहुत
 मरुत्त धाम् भाषाकी मिलेगी। हमारी बहूना
 सारी भाषाओं में सभूत्त पायो जानी है।
 मातृभाषा में सिद्धय

किर एक प्रथम ज्ञाता है कि मातृभाषा
 के द्वारा शिक्षा दी जानी चाहिए कि नहीं।
 यह दो बरा शिक्षण विषय है। जिसमें दो
 सार हो होगी ही नहीं चाहिए। गंध के बन्ने
 मूद्रान यत्त गुजरात, १२ अप्रैल, '६०

से अगर पूछा जाय कि तुमको गंध की भाषा
 में ज्ञान देना चाहिए कि सिद्ध की भाषा में,
 तो क्या कहेगा कि सिद्ध की भाषा चाहे जितनी
 अच्छी हो, मुझे तो गंध की ही भाषा समझ
 में आयेगी। तो यह जाहिर बात है कि
 मनुष्य के हृदय को सधुषा करनेवासी जो
 भाषा है वह मातृभाषा है, तो उसीके द्वारा
 शिक्षा होनी चाहिए।

अब सरास उठना है कि कितना समय
 इसके लिए लिखा जाय ? चार साल या
 पाँच साल ? कनासान की नो रिपोर्ट है,
 उसमें है ज्याऊ-मे-ज्यादा दस साल। उन्होंने
 जो 'जर्मनेट' दिया है, वह गणों अच्छा
 'जर्मनेट' है। मेरी अपनी राय है कि पाँच
 साल में भाषा की मरता है, अगर पूरा यत्न
 किया जाय तो। मातृभाषा के द्वारा ही

सम्पन्न

चीर-फाड़ पसन्द नहीं

आपरे'गन का लवाना हा० लाहियाजी की
 शरा० लयना का बहु सिद्धान्त उनके
 निष्ठापन थे। मैंने उनमें एका तथा वह जुदे ने
 डरते हैं ? यह मरुत्त मने ऐसे आरधो में निष्ठा,
 जिसे जित्तयो म छिगी तरह के डर का
 एहसास न था।
 उन्होंने कहा—'ऐसा नहीं है।'
 'क्या इसका हिंसा और बहिष्ता से
 सामुद्रिक है ?
 उनका कुछ स्नेह की श्रुत सुस्कारन में
 विल गया—

'तुमने बास टीक एकवीं। यह चीरने-
 चारने की भाव मुझे पसन्द नहीं आती। मुझे
 समझ में नहीं आता कि तुम लोग छिद्य तरह
 मुर्सी, मरुत्ती और जीवित जानवर खाते
 हो और फिर बटलारे भी मारते हो।'
 उन्हें नेत्रों की बालाएँ आदता भी नहीं
 नहीं भाषा। बहुत दफे उन्होंने मुझमें शिक्षा-
 यत्त को कि माली झालें खाट देना है। मैं
 उनसे कहा करता, 'यह वेजो के मले के बास्ते
 है, खाट खाट से वे बाने है।'
 'अगर तुम्हारे हाथ-पैर बट दिये जायें
 तो तुम्हें कैसा लगे।'

पहले से आखिर तक सारी जालाम हो
 जानी चाहिए इनमें कोई छत्र होना नहीं
 चाहिए।

मैंने अमरिषा प्राण वा अध्ययन किया
 और मैंने पाया कि वह धर्मय भाषा है।
 उसमें 'शाश्व' (विज्ञान) के शब्दों की
 बरुत्त होगी ता धोर-धीरे 'शाश्व' के शब्द
 बनाने जायेंगे और जब तक नहीं बनें, तब
 तक इन्लिश शब्द इस्तेमाल करेंगे। 'हार्द
 ड्रोजन' दो भाग और 'आक्रीजन' एक
 भाग लेकर पानी बनता है, यह पताते समय
 'हार्दड्रोजन' और 'आक्रीजन' के लिए नामे
 शब्द बनाने तक रहने को जरूरत नहीं।
 हमारी भाषाएँ आज भी काफी विकसित
 हुई हैं और वे जागे और भी समृद्ध होंगी।
 (७ १२-१७, सुधा रोड के भाषण से)

आपको यह सुचना सही नहीं है, मैं
 कहूँगी। जीवित प्राणों के प्रति किसी
 भी प्रकार की निर्ममता उनके स्वभाव के
 प्रतिफल थी। वही बनेले आदमी थे, जिन्होंने
 हिंसा को छेहर जान और माल के बीच
 डरक किया।

'माल इस देश में ज्यादा रस्ताया रहा
 है, वह अध्ययन में बहते, 'मनुष्य को भविष्यो
 की तरह है, जो उसके मरने की कितनीको
 बगों पत्ताहा हो।'

['बन' के सप्ताह]

—रमा मित्र

नीमो मल्याप्रठ की मार्मिक बहानी,
 ए०० मार्टिन लुथर किंग की बहानी।
 अमेरिका में काले गोरों का भेदभाव
 बरतनेवाली बग के बहिष्कार के लिए
 सन् १९५४ में मीटिंगोमरी के गोपों समाज
 ने श्री मार्टिन लुथर किंग के नेतृत्व में
 छत्यापद आन्दोलन प्रस्तावा था। उस
 आन्दोलन की दिक्कत जानकारी के लिए
 पढ़ें—

आजादी की मंजिलें

ए०-कमला २००

पृष्ठ ४)

सर्व संवा संघ प्रकारान
 रात्रपाट, बागमनी-१

प्रदर्शन, धरना और जेलयात्रा के वाद ? ? ? नकारात्मक शांतिवाद

जोन पापबर्ग इंग्लैंड के विस्फोट वेलाक १० २ माने जाते हैं। मघानीकरण के इतिहासियों पर जोन ने बहुरा किन्नन किया है। क्यायुधय वशते हुए गहरो और मानवीय भावनाओं को खोमित कर देनेवाले उद्योगों पर विस्फोट वेलाक के वाद जोन पापबर्ग ने सबसे तीव्र प्रहार किया है। सत्ता और शक्ति के घोर केन्द्रीकरण में जीनेवाले समाज को हुईसा पर उन्होंने पूरी शक्ति के साथ हमला किया है। 'पीस यूथ' के पाठक उनको कलम से सच्ची तरह परिचित है और इस समय तो वे स्वयं एक द्रिमासिक पत्रिका का प्रकाशन कर रहे हैं, 'रीसर्च' के नाम से।

हमारा इंग्लैंड का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ—१८ दिसम्बर, '६७ से १ फरवरी, '६८ तक का लम्बा कार्यक्रम। १४ दिनों के अन्दर हमने पूरे ब्रेटवैट को यात्रा की। ३८ दिन तो हमने सिर्फ लन्दन में ही बिताये।

लन्दन में मैने जॉर्ज मार्शलवेटन के साथ मुलाकात की। गांधीजी के साथ उनके सम्पर्क अपने आपमें एक पुस्तक का विषय है। वे गांधी-जन्म-दाताजी के अवरुध को ब्रिटेनवासियों के लिए गांधी-विचार के सही मूल्यांकन का अवसर मानते हैं। 'इंडिया लीग' के अध्यक्ष लार्ड सोरेनसन भी गांधी-जन्म-दाताजी को बड़े पैमाने पर मनाने की बात सोच रहे हैं। मुझे लार्ड सोरेनसन ने बताया कि "टाबिस्टोक स्वभाव में गांधीजी की मूर्ति खड़ी करने की सारी वैचारिकीय पूर्ण हों चुकी हैं और गांधी-दाताजी वर्ष प्रारंभ होने के पहले-पहले हम मूर्ति की स्थापना कर देना चाहते हैं।" ब्रिटिश कोल कोर्ट के श्राविक सलाहकार और सुप्रसिद्ध अर्थशास्त्री ई० एफ० गूमाखर के साथ भी लम्बी बातचीत की मैं मूल सही जाऊँगा। गूमाखर ने कहा कि "एशिया,

अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के देश वसी-बड़ी मशीनों के लिए जिस तरह उतावले हो रहे हैं, वह दूरदर्शितापूर्ण नहीं है। सौती का 'मिनेनाइजेसन', मघानीकरण और टूटकर से धार इन विवादास्पद देशों को उसी दुष्कर में फेंका देना, जिसमें हम फँसे हुए हैं। यद्वात है 'इंटरमीडियेट टेक्नोलोजी' की। 'हाई टेक्नोलोजी' के लिए इन विकासशील देशों के पास धनो नहीं है, इसलिए वे परिचय के ५-६ देशों की सहायता पर निर्भर करते हैं। और उसी पर निर्भरता के कारण कर्म-दार एव शोषण के शिकार बनते हैं।' गूमाखर केवल बातें करनेवाले धादमी नहीं हैं। उन्होंने 'इंटरमीडियेट टेक्नोलोजी इन्स्टीट्यूट' की स्थापना की है और 'प्रगति

सतीश कुमार

के बीजार' नाम में एक बहुत ही सुन्दर मार्गदर्शिका का प्रकाशन भी उन्होंने किया है। धामदानी गाँवों के लिए यह मार्गदर्शिका अत्यन्त उपयोगी साबित होगी।

३८ दिन के लन्दन-निवास के बाद हमने अपनी माधव-यात्रा शुरू की। दक्षिण, मध्य और उत्तर इंग्लैंड के अतिरिक्त हम लीड्स इकाटलेड भी गये। एडिनबरा और स्कॉटलैंड में स्काटलैंड को आजादी के लिए आन्दोलन करनेवालों से भी हुए मिले। ग्रेटब्रिटेन मुख्य रूप से इंग्लैंड, वेल्स और स्काटलैंड, इन तीन भागों में बँटा हुआ है। वेल्स और स्काटलैंड को स्वतंत्र करने का आन्दोलन करनेवाले सत्ता के विरोधीकरण की बात पर काफी जोर देते हैं। वेल्स और स्काटलैंड को भाव्य अर्थों से काफी भिन्न है। १६ दिनों की इन भाषा-यात्रा में हमने २१ भाषण किये। भाषणों के मुख्य विषय थे—गांधी-दर्शन, क्या गांधी-विचार आज के अमीन-युग के अनुकूल है? अहिंसक क्रान्ति की संभावनाएँ, अहिंसा का भविष्य, सत्य की

वाक्य और सत्याग्रह, विद्रोही भाषा, धामदान आन्दोलन, शान्ति-सेना, आदि।

धामनी दय यात्रा में मैने पाया कि ब्रिटेन-वासी धामदान आन्दोलन के बारे में काफी जागते हैं। साथ ही उनके मन में इस आन्दोलन के प्रति एक गहरी रूचि और आशय है। एक स अधिक व्यक्तियों ने कहा कि "अहिंसक क्रान्ति का सन्नाह दिखाने और उसके लिए नेतृत्व करने के लिए हम भारत की ओर आध्यात्मिक नजरो से देखते हैं। धादय धामदान हमारे उस आशा को पूर्ण करेगा।" 'चार ऑन वाय' नाम की संस्था के अनेक लोगो से अपह-अपह भेंट हुई। ७५० धामदानी गाँवों को इस सत्ता की भाग्य-भव ४५० गीठ प्रति गाँव के हितार्थ से मद भेजी जाती है। इसलिए यह स्वाभाविक हो या कि इस दरपा के लोग हमसे धामदान के बारे में ज्यादा धवाल पूछते। उन लोगों को यह शिक्षावत भी थी कि धामदान के बारे में, साथ तोर से उन गाँवों के बारे में, चितकी 'चार ऑन वाय' से मद मिल रही है, उन्हे बहुत कम जानकारी मिलती है। अन्ध पराधि जानकारी मिले तो और अधिक मद भेजना सम्भव हो सकता है। बहुत से लोगों के विभाव में धामदान का काम एक 'केरिन्टो' का काम है, ऐसी कल्पना भी हमने पायी। कुछ लोगों ने हमसे अधिक यदि सम्भाव है, तो वह भी इतना भर कि यह एक धाम-न्याय या धाम-निर्माण का काम है। जब मैने कागो समाजों में धामदान के शक्ति-कारो एव समाज-निर्माणकारो स्वरूप पर प्रकाश डाला तो लोगों की दिलचस्पी और अधिक बढ़ी।

सत्ता और सम्पत्ति के विरोधीकरण को जब भी हमने बर्षा भी तब लोगों ने यह तो महतुम किया कि बाबू वा अमीन केन्द्रीकरण मानव के मूलमूल स्वतन्त्रता का हनन कर रहा है, पर "अहिंसक इनको वैधता और ह्राय से बाहर हो चुकी है कि अब हमारे अर्थ में युध भी दिखाने नहीं देना। विपत्ति निर्माण से दरे वा चुकी है।" यह अग्रहाम्य-अस्था लोगों को उद्योगधरोन कर रही है। जब वे सन् १९६३ में दार्जिलिगंगा के दौरान

पक्षी आया था तब मैने देखा था कि जालि के छपरबंद एक बूझ ब चपों के बिचद भावो लिन होनेवाले प्रदर्शनों में १० से २० हजार एक सोंगो की मोड़ क्या हो जाती थी । पर जोग सन् १९६८ में बह उल्हासद बंध पर गया है । आज के प्रदर्शन सौन्दोनी भा गराडा सीधनाथपर हमारनाथ वी लोभ बना कर पाते हैं । अनेक छात्रियास्थी में हुमने कहा कि 'हम प्रदान करते है, धरना देने है, लेल जाते है, पर टहने कापो गया ? हमारा उल्हाद टडा पर रहा है । इस प्राणि प्रान्दोत्तन का कोर् मैथय नही दोखता ।'

ब्रिटेन का धानिवाड गुक से ही नमालसक रहा है । यहाँ के धानिवाडियो ने बुद्ध के लिखाक तो नारा दिख, पर रिशी रचनासक कावत्य के अभाव में यह नारा नारा दूर तक चल नही पया । काचित बुद्ध के बाराण स्था है, जदरही सोम दिने

कोई कार्यक्रम नहीं है । यादर धानवान ने रिशी धुयोयो हस्तकला वी बहूँ भी लगाया है ।

ब्रिटेन के धानिवाडो नेला और कापवर्ता किमोन्त किमो रूप में जाने-बजने दग से विभिन्न प्रकृतियाँ लोर सफाई चला तो रहे है, पर उनमें आसक का हावभाव लोर सफाई पावोत्र न होने से एक के काम में दूसरे लो चल नही पहुँचा । सभी जाने-बजने काम को सभने बाधिक आवस्यक एक शेट मानते है । बुद्ध लोभ राग लयनाथ के बाम में लवे हे तो कुल लोभ मान बुद्ध बिरोधी प्रचार म लगे है । बुद्ध लोभ मान अनुभव विरोध का ही आवस्यक माने है और उयोडे लिग मरना पला रह है, तो कुल लोभ हमार प्रदान लोर लोडलन बारवाडो में लुडे हुए है । वे चमो सफाई दरभलक एव दुबो की बुद्ध है पर पूरक बन नही रही है । अवर ब्रिटेन को धानिवाडो सरयामो को सुषो कयायी

ब्रिटेन म गांधी साहाय्री की मैयारी समीचीकरण का कुञ्चक नमालसक धानि आन्दोलन का भारतीय युवा धानिवाडियो का पिन्तन समोदय आन्दोलन के चिपकियित मित्रिधा साथी

बिन और उन कापो का निवारण क्वि बिन लोर बुद्ध विरोधी प्रदर्शन कितने दिन उल्हाद कायम रल सकता ? चाकेकोर् लोर नुर्सेस में विपरदिवालय के धानो ने बुधने कहा कि 'ससार में किडोने भी बुधिसे तो जलर किलेग कि सभो धानिवाडे है । बूध और विनाम कोर् नही पाहता । फिर बुद्ध कौ लो जाते है ? बन लक लक सहाक का उतर हूय नही बूडे लेने सब लक धानि कौ बौते कोपो कोने ही पहुँचो ।' बारकोड विचरदिवालय के जा बुद्धकी तो मिडिन से ले बहा कि 'हमार धानवा का मोष की बुद्ध सेवा करनेवाला र्थना है । हूय एक बुद्धय धानवा में रह रहे है । अकरर ही एक धानिवाड या लोडलन धानवा ररना को । ठक के लिङ्ग दुडे बाके को लो बनना दरीया ।' को मिडिन ले को बलो में बुके एक लोमनुवरी इडि नबर भावो । पर उनके हाथने उस धानिवाडनाथ का लिङ्

धानिवाडियो में चल रहा है, यह देखकर सुभो हुई है ।

मडियाय में योमनी काय रिचरण एव धानवा कोउरलार्ड ने पिलकर बजने बालर में पापो-बनायो सभने के लिए एक समोटी बनयो है । यह समोटी उलवा लोर समयोटी कौ मालमो नही, बनिङ सट्टो बर्न में धानिवाडो को सभनेवालो सभयो का कायो-बत करेयो ऐसा विपयग किरा का सरता है । मडियाय विचरदिवालय की धानवा धारा बलो लोर सिमवत बर्न में परि रूथ को ।

दुरे विदित धानिवा सोनन को लोर नैगापी-भडाओ के समोकेक का काय सेगावठ यर कर रहे है । सेगावठ हमार सक्की का दालन के बिचरदिवाडो है । वे रिशी भी भारतले से बाधिक मालमो लोर रिशी मो सक्कीये से बाचित करोटी है, ऐसा बहू काय तो कोर् बनयुि नही होयो । उल्हादे सभना लोवण मारल लोर सवोरेद दिवार के लिए लोडन किरा है । हमारो माना भी घक-कला का थप मो उलोको है ।

हव तो भारत ले सीन सौद सेकर बले थे । नडाव लारी सगामोथ सण ने हमारो बरक बना दिने वे लोर रिशी तरह किमो के महोम व जालन लक को इराई-बाधा का किपोय हनेले बुडया था । बाकी ब्रिटेन म पूरे बाडिष लोर मर का प्रबाध सेगावठ एव बय धानिवाडो किमो ने किरा । न हा हव किमो सरना का प्रतिनिधित्व कर रहे है, लोर न हूय किमो धिमायदल के रूप में यही है । पूरे तरह स क्यविगन धारको के काधार पर लोर क्यविगन किमोनेपरी दर बल रही एव पाथा का लोवण लोर अनुभव किय गढुई है हवें पात हो रहा है, वह मरदा प्रतिनिधित्व एव विचरणको में बहू ?

[१३ अ १६, मैथिल]

पुनर्मुद्रण
 * श्रीवाला प्रवचन (हिन्दी) *
 २१ वां संस्करण
 सितंबर २०० अक्टूबर २००
 सत्य मैवा संघ प्रकाशन, धारणासी-१

परिचर्चा

खादी : गौरवपूर्ण अतीत, लेकिन भविष्य ?

पिछले महीने २-३ मार्च को पानीपत में खादी-कार्य में लगे देशभर के प्रतिनिधि कार्यकर्ताओं का एक सम्मेलन हुआ था। सम्मेलन में 'खादी' से लेकर 'गादी' तक के ऊँचे-से-ऊँचे नेता उपस्थित थे। सबसे सामने खादी एक समस्या और एक चुनौती के रूप में खड़ी थी। एक ऐसी समस्या, जिसका समाधान लाख हाथ-पाँव मारने पर भी निकलता दिखाई नहीं देता; एक ऐसी चुनौती, जिसे स्वीकार करने का साहस नहीं होता, और मुकर जाने की गुंजाइश भी दिखाई नहीं देती।

सम्मेलन में भाग लेनेवाले संस्थाओं के प्रतिनिधियों की आराधों और नेताओं की अपेक्षाएँ कितनी पूरी हुईं, कहना मुश्किल है। खादी का काम कानेवाले एक बड़े प्रदेश के बड़े नेता में अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की कि 'समस्याएँ लेकर आये थे, उलमन लेकर जा रहे हैं!' हम नहीं कह सकते कि सम्मेलन में भाग लेनेवाले सभी साधियों की राय इसमें मिलती हुई ही होगी। लेकिन इतना जरूर कहना चाहते हैं कि संयन की आवश्यकता अभी भी अवश्य है।

इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर हम इस परिचर्चा का प्रारम्भ चिन्तन को उभाड़नेवाले तीन महत्वपूर्ण लेखों से कर रहे हैं। हम चाहेंगे कि यह परिचर्चा चालू हो, मजबूत का रूप चले और सह-चिन्तन से समस्या के सही स्वरूप और समाधान की वषयुक्त दिशा निकल सके। —सं०

पुरुषार्थ को चुनौती

खादी अहिंसा का साधन थी। अहिंसा और सत्य पर आधारित, जिसमें छद्म समता और स्वातंत्र्य सबसे मिलेगा ऐसा एक समाज—जिसकी अर्थव्यवस्था में 'इंग्लोटेरियन सोसाइटी' कहेंगे—निर्माण करने का खादी एक अहिंसा थी। खादी केवल कपड़ा नहीं थी। यह कम्युनिटी डेवलपमेंट का एक मुख्य आधार थी। खादी एक शक्ति थी और इस शक्ति से दुनिया का जो सबसे बड़ा साम्राज्य था उसके खिलाफ हम खड़े हो गये, और सफलता से हमने उसकी हटाया। खादी में एक महान शक्ति है, यह दुनिया को हमने दिखाया। आजारी और खादी का साध्य-साधन सम्बन्ध था।

जब ऊँचे स्तर पर होते हैं तो उसके जो साधन होते हैं, वे भी ऊँचे बन जाते हैं। जब ३२६

लक्ष्य छोटे हो जाते हैं, तब उसके साधन भी छोटे हो जाते हैं। पुराने समय होने हुए भी—सर्वजनों के गाँवों में गाँवों होते हुए भी—बार में वह शक्ति नहीं रही थी। वैसे ही खादी बनी है, हम भी बने हैं, लेकिन वह प्राथमिक, वह जान, वह शक्ति खादी में नहीं है जो पहले थी। क्योंकि अब हमारा जो लक्ष्य है वह छोटा बन गया है। आजारी हासिल की, "व्हाट वेस्ट?"—बार में क्या—दस्ता छोटी जवाब खादी से बनना को नहीं मिलता है। आजारी तब साम्य था, जान केवल साम्य है। हाँ, कुछ लोग मानते हैं कि आजारी मिली, सब काम समाप्त हो गया, सब क्या ? अभी कुछ नहीं, भोग ही भोग है। अभी कुछ करने को नहीं है, मोलाना ही बानी है। लेकिन गाँवों का यह क्षयाल नहीं था और न जनसामान्य का ही। आजारी मिल गयी, अभी करने को बाकी कुछ नहीं रहा, ऐसा को मानता है वह तलाय

गुलाम हो गया। पुरुषार्थ के लिए अस्तित्व प्रयत्नशील रहने की प्रेरणा जिस आजारी से नहीं मिलती है, वह आजारी नहीं है, वह गुलामी है। आज कहेंगे कि खादी आजारी की दिशाली बन गयी है तो उसकी क्या नहीं फेंकते हो ? मैं नहीं फेंक सकता हूँ, क्या करूँ ? जैसे मैं अपनी जान को नहीं फेंक सकता, प्राण को नहीं फेंक सकता, वैसे ही खादी को नहीं फेंक सकता। वह मुझे अलग नहीं है। यह मेरी हालत होते हुए भी मैं आपसे ताकत बनना चाहता हूँ कि उस आजारी का, जो हमारा के लिए चरनेवाली प्रक्रिया है, खादी आज सामन नहीं रही है।

गांधीजी ने 'रचनात्मक कार्यक्रम' नाम का एक छोटा पैम्फलेट लिखा है। उसको प्रस्तावना में उद्धरण किया है कि उद्यम में जो रचनात्मक कार्यक्रम दिये हैं, वे उदाहरण के तौर पर दिये हैं। इनमें सारे रचनात्मक कार्यक्रम को पेश्वरिस्त पूरी नहीं हो जाती। कोई भी काम जो नवराष्ट्र के निर्माण में योगदान देता है वह रचनात्मक कार्य है। उनको पेश्वरिस्त का अन्त नहीं है। गांधीजी की राय से खादी इन कार्यक्रमों में सूर्य के समान थी। क्या आज खादी के बारे में हम यह कह सकते हैं ? जैसे सूर्य के साथ अन्य ग्रह चलते हैं, वैसे आज खादी के साथ राष्ट्र-विकास के सब काम चलते हैं, ऐसा खादी-कार्यकर्ता और खादी-संस्कार दाते के साथ क्या कह सकते हैं ? अगर नहीं चलते हैं, तो खादी भी नहीं चल सकती।

इसलिए निवेदन में कहा गया है कि ऐसी जहाँ-जहाँ प्रवृत्ति होगी, उन सबको सर्वोदय को दृष्टि से अपने साथ लेना होगा। अगर वह सर्वोदयी नहीं है तो उसको बनाने को कोशिश हम कर सकते हैं, इतना आत्म-विश्वास आवश्यक होना चाहिए। हमारे दिल में दर है कि उनको सेते तो हम अपने को सो बँटेंगे। लेकिन खादी पहले से ही तो यानी है, अभी सोचना बाकी क्या रहा है ? नदियाँ मिलनी भी महत्वपूर्ण हैं, उनको अपने में समा लेने का भय सागर को कभी भी नहीं छगता है। क्या इतनी महानता आज भी खादी में है, यह एक सवाल है।

‘पावर’ का प्रश्न

कुमारप्पाजी ने अपने “चिरस्थायी अर्थनीति” पुस्तक में बताया था कि क्रिश्चियनता दुनिया में कई धातु, दूसरे कच्चे माल तथा तेल, कोयला आदि जैसे ‘पावर’ के लिए आवश्यक जलन पदार्थों की धाती सीमित है और उनके सममाना उपयोग के कारण यह धाती खतम होतो जा रही है तथा इस गति में आगे बढ़ा आर्थिक सकट पैदा होना अनिवार्य है। इसलिए नित्य नये उत्पन्न होनेवाला कच्चा माल तथा निरंतर मिलती रहनेवाली दक्कन-स्रोतों के ही आधार पर आर्थिक रचना बनानी चाहिए। दूसरी मामूला यह रही है कि जब तक सब गाँवों में सब लोगों के लिए बिजली या अन्य दानि उल्लभ्य नहीं होनी, तब तक कुछ के लिए दानि का उपयोग विपमता को बढ़ानेवाला सिद्ध होगा। इसलिए उस समय तक न्यायो-धामोद्योगों में दानि का उपयोग नहीं होना चाहिए या बहुत सीमित रूप से होना चाहिए।

यह सही है कि आज दुनिया में कच्चे माल तथा दूसरे प्राकृतिक संपदाओं के बेरोकटोक उपयोग के कारण कई चीजों का अभाव महसूस होने लगा है और विनाशजनक स्थिति पैदा हो रही है। तेल आदि के स्रोतों पर अधिकार के लिए बड़े संघर्ष चले हैं और चल रहे हैं। इस समस्या की ओर दुनिया का ध्यान जाने लगा है और प्राकृतिक संपदाओं के संरक्षण के उपाय सोचे और काम में लाये जा रहे हैं। बेशक पृथ्वीकाठी अर्थव्यवस्थाओं में इस प्रकार संपदाओं के बेठहारा उपयोग के लिए एक अन्तिमिहित प्रेरणा है, और मुझ की तैयारी से भी इनकी अधिक बढ़ावा मिलना है। चिरस्थायी अर्थ-रचना के लिए इस सवाल को गंभीरता से ध्यान में लेना चाहिए। पर इसका अभाव यह नहीं होना चाहिए कि पृथ्वी पर सीमित प्रेमने में उपलब्ध संपदाओं का उपयोग ही न किया जाय। येने आज अनुमानित के आदिपचार ने दानि का नया और बड़ा-होत खुल गया है। मूल्य तथा समुद्र की वजार को दानिनी

के उपयोग की भी तरकीबें निकल रही हैं। इस तरह कोई बजह नहीं कि प्राकृतिक दानि का उपयोग बिलकुल न किया जाय।

दूसरी संज्ञा है कि भागों के पक्षे दोड़ने के कारण ही वस्तुओं को आवश्यकता बढ़नी है और इसका ‘पावर’ के उपयोग का प्रश्न खड़ा होता है। आध्यात्मिक और सरल जीवन के लिए अपने शरीर को दानि ही पर्याप्त मानो जानो चाहिए। विनोवाओं के द्वारा अनु-दानि के स्वागत तथा गाँव-गाँव में उमकी मदद से जल्द-से-जल्द बिजली पहुँचाने की भाँगे के बाद इस सम्बन्ध में कुछ अधिक कहने की जरूरत नहीं होगी चाहिए थी। फिर भी मैं इस सम्बन्ध में एक दृष्टि रचना चाहता हूँ।

शायद बनाईं शा ने कहा है कि आध्यात्मिक विकास के लिए बहुत सारी साधन-सर्जित चाहिए। अभाव में वह सभ नहीं सकता। मैं देने बाकी हूद तक सही मानता हूँ। रेगम के कपडे, सोने के गहने या चांदो के वस्त्रों से आध्यात्मिक विकास में मदद नहीं होनी। पर, नितावो से और अलबावो से होती है, और वंचे प्रेमने पर दानि प्रदान और प्रचार बहुत सारे आधुनिक तकनिकों पर तथा ‘पावर’ के उपयोग पर दखलियन है। तार, टेलीफोन, रेडियो आदि के द्वारा हमारा आज कुल दुनिया के साथ निवट का सम्बन्ध बना है। रेल, जहाज और जेट विमान ने, जो एक दिन दूर का था यह निवट का बन गया है। आज इनके कारण संघर्ष बड़ा है, पर साथ-साथ उस संपर्ष का निराकरण करनेवाली जागतिक दृष्टि का विकास भी हो रहा है। यह जागतिक दृष्टि एक आध्यात्मिक प्राप्ति ही है।

फिर आधुनिक विज्ञान ने मनुष्य को निर्र भौतिक मुक्त-संपदा के साधन उपलब्ध करधे हो, इनका ही नहीं, बेंनात्मिक ज्ञान ने मनुष्य की दृष्टि को शायक और सूक्ष्म बनाने में मदद की है। उसके हृदय को विज्ञान और मानवाओं को गहरी बनाने का समाला उपलब्ध कराया है। इलेक्ट्रान अनुविद्यम ने सूक्ष्म-से-सूक्ष्म वस्तु का तथा रेडियो दूरबीन ने विज्ञान महाविद्यम का रहस्य मनुष्य के

हाथ लग रहा है। ये तो विज्ञान के अस्वय चमत्कारिक कृतियों में से दो ही नमूने हुए। विज्ञान की ये सारी सफलताएँ तकनीक के ऊँचे-ऊँचे स्तर के साथ जुड़ी हुई हैं। उच्चतम तकनीक ने अभाव में ये हाथिलात मजबूत नहीं कीं। इस तरह विज्ञान और तकनीक (टेक्नोलोजी) को हम भौतिकता का ही प्रादुर्भाव कहकर अलग नहीं रख सकते। मानव समाज के आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक जीवन के साथ ये अंतर्प्रोत है।

व्यावहारिक स्तर पर कार्य तो यह स्पष्ट है कि भारत के गाँव के लोगों के लिए जो मूलभूत मनुष्यतृता तथा सुनी जीवनमाना चाहिए, कम-से-कम जिस स्तर का जीवन हम कार्यकर्ता-वर्ग को उपलब्ध है उसे जनता के लिए उपलब्ध करने के लिए मनुष्य तथा पशु-शक्ति के अलावा काफ़ी मात्रा में ‘पावर’ का भी उपयोग चाहिए। इसलिए आज यह आवश्यक है कि जहाँ ‘पावर’ उपलब्ध है, वहाँ उसका उपयोग सारी और धामोद्योगों में भागकर हो। ऐसे में कोई एक न टाली जेनेबाकी बुराई के साथ समझोते के रूप में नहीं देखता हूँ, बल्कि मानव समाज की आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और भौतिक प्रगति के बढ़ते हुए कदम के रूप में देखता हूँ।

बेशक इसमें हमने जो मर्यादा मान्य की है, वह जरूर ध्यान में रखनी होगी कि ‘पावर’ के उपयोग के कारण बेकारी न पैदा हो और शोषण न हो। इस सिलसिले में दो सवाल सामने आते हैं। एक यह कि कुछ जगह ‘पावर’ मिलती है और बाकी जगह नहीं, इस हालत में हम उसका उपयोग करने हे तो उसमें विपमता बढ़ेगी। इसलिए जब तक सबके सब ताँकों को ‘पावर’ उपलब्ध नहीं होगी, तब तक उसका उपयोग नहीं करना चाहिए।

दूसरा बाँधन एक विद्यम के प्रति ने शायतन ध्यान दिलाऊँगा। आर्थिक विकास का सिलसिला बरचिन ही ऐसा हो बनना है कि कोई नया साधन या सृष्टिलियन सब जगह सबको एकसाथ मिले। प्राकृतिक, तादात्मिक तथा वैज्ञानिक दूसरे कारणों में विपमता पैदा हुई है और होगी जा रही है। इसका हलक यह

हे कि किसी अज्ञान मूहलियन के कारण किसी भाषि या कर्मन को उत्पारन-उत्पारन और सामन्तो बन्नी है तो उस अधिक आयननो का कुछ हिसाब बन्स कम भाग्यवान व्यक्ति तथा सभ्यता के विकास में लिए मिले। यह विचार आज को दुनिया में बर्द स्तर पर मान्य हो रहा है। आजने तथा दूसरे देशो की कर-बन्सो को भीति में यह मान्य है। अंभी सामन्तो पर अधिक आयकर होता है। निचुडे हुए रोन तथा सभ्यता के लिए उनने शिक्षता कर के रूप में मिलता है उससे अधिक सब करने का सिद्धांतिया कुछ हद तक मान्य है। जसो दिल्ली में बलनेवाले 'अन्वर्डा' सम्मेलन में जाने नडे हुए तथा निचुडे हुए देशो के बीच में यही सिद्धांत लागू करने का प्रथम चर रह्य है। पारपरिक बरसे और आन्तर बरने को भाडी की नीयत को 'पूतित' बरने ह्य यही प्रथम कर रहे है कि अन्तर बरने का अधिक उत्पारन का साम पारपरिक बरसे की कतिन को मिले।

सरकारें यह वेदनाया कर-बन्सो के द्वारा बरना चाहती है और हम चाहते हैं कि सोय यह स्वेच्छता से करे। कानून के बरने कठनाय बरने, यही पररु है। कठनाय से विषमता मिटादे की ओर आगे बजने का मार्ग भूदान प्रामदान ने बता दिया है। उद्यय अधिक विहास बरने जाना होगा। बाढो बायोधोनों के सपठन में 'पूतित' के बडे हुनरे उपायो को हुंकर बरने में मान्य होगा। कानून का जो उपाय-नीयन म बरना मन्थकपार बरान है। यामन्थकपय में हो स्वेच्छिक बरने और कानून में पररु हा कम रह आयगा। —नमसोहन चौधरी

प्रौद्योगिकी के अनेक आयाम

मानव-विकास में पहली बार ऐसो रिफॉर्म बने है कि मनुष्य द्वारा रिने ज्ञानके धय के स्वरूप में सशोनों का उपयोग किया जा सकना है। अब प्रत्येक यह नहीं उठा करता कि क्या यह काम हल यहाँ द्वारा कर सकते हैं? बल्कि प्रत्येक यह पूछा

करता है कि क्या ऐसा करना सम्भवे उचित होगा? इस प्रकार की प्रौद्योगिकी की बुनियाद उद्योगीय छात्रावृत्ति में पडे, जब कि विज्ञान के विकास का सम्बन्ध उद्योग की श्रमिकाओं से स्थापित हुआ।

अग्रपद्धती छात्रावृत्ति की तरह इन दिनों किसी एक व्यक्ति के प्रतिभूपण प्रयत्नों के परिणाम से प्रौद्योगिकी का विकास नहीं होता। अमेरिका के 'पैत्राजिक घोष और विकास कार्यक्रम' के निर्देशक यो युग ने कहा है कि आज हमारा ऐसा विवेक है, जो हमारी अन्तरन के अनुसार प्रौद्योगिकी का नयुनन पैष कर सकते हैं। आरम्भ की स्थिति के द्वारा होनेवाले हूट प्रकार के कामों को करने के लिए आज हल निपत्तित और स्व-प्रावित उपकरण उपलब्ध हो सकते हैं।

प्रौद्योगिकी के हूट वैज्ञानिक विकास कम में वैज्ञानिक और तकनीकी विवेचनों का का मूल्य प्रत्या प्रदा उठना जा रहा है कि मनुष्यसाम्य अमेरिका जैसे देश म पैवेर वैज्ञानिक और तकनीकी विवेच्छा एक नये प्रकार के प्रशासकीय अधिकारियों का दर्जा स्थापित करते जा रहे हैं। प्रत्येक यह उप निष्कर्ष होगा है कि क्या नयी प्रौद्योगिकी द्वारा सभ्यता अधिक मलबोच बन सकेगा, भवदि क्या नयी प्रौद्योगिकी के बरिये मनुष्य और मनुष्य के बीच नये सम्बन्धों का निर्माण हो सकेगा?

प्रौद्योगिकी के मन्थोन्वय द्वारा यहाँ एक अन्तर मन्थकपारना टीसनी है कि बिना अम निवे मनुष्य उपयोग की वस्तुएँ का सके, यही हुनरो ओर उसके अन्तिमे एक नये प्रकार का मान्यमान भी बिना है—यह मान्यमान है, विकेन्टिन छात्रावृत्तित जीवन-यद्धति का। प्रौद्योगिकी के नवस्थापन का साम उदाहरण कोद्योगिक बुधिक-उत्पादन की छात्रावृत्तित रिफॉर्म और मनुष्यकित जीवन-यद्धति में परिचलित बिना जा सकता है। इस नयी मान्यता में प्रौद्योगिकी का उपयोग ऐसो सेवो और कार्यक्षमों में बिना जा सकता है, निचुडे मानवीय कार्यक्षमों और मनुष्यों को भरपूर नडाया बिलगन रहे।

प्रौद्योगिकी की हम बिना में उपयोग बरने

के मार्ग में क्या-क्या कठारों अथवा बाधाएँ का सकते हैं? बहुत ही बाधाया और कठारयों को अम मनुष्यों के आन्त्र के आन्त्रने के तरीके और मनुष्यान्त्रन प्रयासों में मोडुर है।

आज के मनुष्यों का विज्ञान उपयोगिता-वाद पर बसावृत्तित है। उपयोगितावादी दर्शन मानता है कि जीवन की कार्यक्षमता कम्मे कम तकलीफ बेलने और ख्याय-ले-ग्यादा सुख पाने में निहित है। अत अधिक-नी-अधिक छोणो को अधिक-में अधिक सुख मिलना सम्भवे अच्छी बात है।

बुद्धि अन्त्र प्रौद्योगिकी समाज पर हावी है, इसलिये सुख और आनन्द की अनुभूति मनुष्य की मान्यकित उपलब्धि के बन्डे सुख और प्रसन्नता पाने के बाहरी साध सामानो पर निर्भर होती जा रही है। सुख और मान्य बिलानेवाले ऐमे सामन-सामानो के प्रकार के निरन्तर बृद्धि होती जा रही है, जि-हुँ आदमी सचको विवेच्छे हुए अपनेमान बरना पारत करे। मनुष्य को सुखी बनानेवाले ये सामन-सामान आरम्भ की भीतरी बाधा की पूति करने में अधिक बाहरी रिवाये के काम आते हैं। से स्थापन ऐमे है कि जिन पर बाहुर से श्रमशक्ति करण के तरीको का मान्यो तो उपयोग हो सकता है।

हमारे पास प्रवति की कोई कपरेशा नहीं है और न ह्य उसको कोई कपरेशा निर्धारित ही कराना चाहते हैं। ह्य अपने आनको प्राप्त प्रवाह और परिस्थितियों के अन्तर आन के तरीके षोड चुके हैं। ह्य परिस्थितिया के बदल में बहते हुए उपाय-मन्थकित सामन-सामान को विविधताओं में बरने की उलकाते पले जा रहे हैं। ह्य हम मानने लग है कि जैसे बजार की चीजों को तोषा और नाश राखा जा सकता है, उषी तरह सुख मान्य, मेरवा और उदरपेय की भी नाश-बोस की जा सकती है। यह ह्यस की बात है, लेन्चिन यमण्य है कि ह्य प्रौद्योगिकि उपयोगितावाद को नैतिकता और देवता को बरबारी में स्थिति कराना चाहते हैं।

आजकल को प्रौद्योगिकी द्वारा जो सुख की कार्य-समर्थक होता है वह बिचो-न बिचो

भूदान-यज्ञ : शुद्धनारा, 12 अक्टूबर, '52

निर्धारित 'डिजाइन' को पूर्ण के लिए ही होता है। इस प्रसंग में सबसे अहम और मानवीय प्रश्न उठता है कि 'डिजाइन' किसलिए? इस प्रश्न का सम्बन्ध एक इच्छे 'मो अहम प्रश्न के साथ जुड़ा हुआ है कि आदमी किसलिए है?

प्रौद्योगिक उपयोगितावाद के माप सबसे बड़ी विद्वत्तना यह है कि उसके हिमायती यह माने बैठे हैं कि उन्हें यह मालूम है कि आदमी किसलिए है। वे मानते हैं कि आदमी इसलिए है कि उसे सिलाया जाय, उसे खुशहाल बनाया जाय। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए वे आदमी को ऐसे साधन जुटा देना चाहते हैं, जिससे उसे सुख मिलता रहे। उपयोगितावाद के हिमायतियों के लिए दार्शनिक और दृष्टात्मक प्रश्न बेमानी हैं, क्योंकि उन्होंने सिर्फ सच्चा और उत्पादन सम्बन्धी प्रश्नों को ही लिया है।

प्रौद्योगिकी का मानवीय लक्ष्य की पूर्ति में उपयोग हो, इस दिशा में सोचनेवालों के सामने एक जटिल तथा मनोवैज्ञानिक माया यह आती है कि आज भी बहुतसे अव्युत्पन्न और अभावपूर्ण लोगों के लिए स्वयंभरित प्रौद्योगिकी द्वारा उपलब्ध होनेवाली उपयोग की प्रचुर सामग्री की समाधान एक चर्चामर है। मानव-आवादी के इतने अधिक लोग अभावग्रस्त हैं कि उनके अभाव की पूर्ति के लिए तत्काल कोई कारगर उपाय होना ही चाहिए।

अभावग्रस्त लोगों के अभाव की पूर्ति होनी ही चाहिए, यह स्वीकार करते हुए हमें उन लोगों की स्थिति भी ध्यान में रखनी होगी, जिनके जीवन में भौतिक साधनों की प्रचुरता से अनेक नवी परेशानियाँ पैदा हुई हैं। भौतिक माधवों से सम्पन्न लोगों में पायी जानेवाली, बेचैनी, विलास-आसक्ति, शराब-खोरो, प्रमाद और नाश प्रकार की मानसिक अव्युत्पन्नता के बहिष्कार प्रौद्योगिकी द्वारा प्राप्त होनेवाले सुखों की तरह ही जाहिरा तौर पर नापे जा सकते हैं। उपयोगितावाद का मूल्यांकन करते समय उपयोगितावादी समाधान के अन्दर जो सम्प्रदाय उभरकर सामने आये हैं, उन्हें हीकों से ओझल नहीं किया जा सकता।

उपयोगितावादी दर्शन में मनुष्य का कल्याण हो सकता है, यह मान लेने पर मनुष्य को उपयोगितावाद पर आधारित मार्गोन्नी-उत्पादन की सम्मति की परीक्षानियाँ बतूल करनी ही पड़ती हैं। जब मनुष्य का मानवव्यव मर्यादा निर्धारित करती है, तो मनुष्य को एक मर्यात मान हो जाता है।

एक ऐसे विद्वत्-समाज में, जहाँ अलग-अलग शताब्दियों की सङ्कतियाँ साथ-साथ मौजूद हैं, कोई भी प्रौद्योगिकी सबके लिए समान रूप से उपयुक्त नहीं हो सकती। ब्रिटेन के अर्थशास्त्री श्री ई. एफ. यूमास्टर ने अमेरिका जैसे देशों पर आरोप लगाया है कि उन्होंने उन देशों में जहाँ मध्यवर्ती प्रौद्योगिकी की भारी जरूरत थी, वहाँ उच्चस्तरीय प्रौद्योगिकी का प्रवेश कराया। श्री यूमास्टर के अनुसार विकासशील (अर्धविकसित) देशों में उच्च-स्तरीय प्रौद्योगिकी का प्रवेश लाभदायक होने की बगल हानिकारक प्रभाव पैदा करता है। जिन क्षेत्रों में मिहनत करनेवालों की श्रमशक्ति की पूंजी बहुतायत में मौजूद है वहाँ अमेरिका जैसे देशों ने ऐसी प्रौद्योगिकी बँटायी, जिससे मिहनत करनेवालों की धान-धानि की जरूरत न पड़े। इसका यह अर्थ हुआ कि उस देश के लोगों को रोजगार मिलने के बदले उनकी बेकारी बढ़ी। ऐसे देशों में जरूरत इस बात की थी कि वहाँ लोगों की आवश्यकताओं की सामग्री तैयार करनेवाले ब्रोजारों को पूर्ण करनेवाली प्रौद्योगिकी प्रस्थापित की जाती। जहाँ की जनता अभी तक वृषि और हस्त-उद्योग के युग में ही है, वहाँ के लोगों के लिए मध्यवर्ती यानी हस्तोद्योग पर आधारित प्रौद्योगिकी ही मौजूद हो सकती। लुइस हर्वर नामक विचारक ने उन देशों की जनता के लिए, जो अभी आज उच्चस्तरीय प्रौद्योगिकी प्रचलित है, हस्त-उद्योग-केन्द्रित प्रौद्योगिकी की भारी हिमायत की है।

स्वयंभरित प्रौद्योगिकी चाहे जिस हद तक समाज के सब लोगों के लिए प्रचुर सामग्री जुटा सके में समर्थ हो, फिर भी उसके अन्तर्गत जीवनयापन करनेवाले लोग अपने को पराधीन और पक्षिहीन समझेंगे। जिस व्यवस्था में आदमी के योगक्षेम के लिए

ऊपर में परिचालित अथवा कानूनी पद्धति अनायी जायगी उसमें पराधीन मनोभावना उत्पत्ती होगी। वस्तुतः मनुष्य के मानवीय होने की संभावना ऐसी परिस्थिति में ही सम्भव है, जिसमें वह स्वेच्छपूर्वक निर्भीक स्वयं-निर्देश के लिए परस्परआधारित जीवन-पद्धति अपनाये।

प्रश्न उठता है कि प्रस्तुत परिस्थिति में रचनात्मक परिवर्तन कैसे लाया जाय? गांधीजी ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम के लिए जिन सिद्धान्तों को अपनाया, जिन्हें इटली के श्री डोलो को सिलीविया गरीयो के उद्धार के लिए उपयोग में ला रहे हैं, और जिसे विनोबा और जयप्रकाश नारायण अपने सामुदायिक प्रयत्नों में उपयोग में ला रहे हैं, उसे अपनाकर ही परिस्थिति में ऐसा परिवर्तन लाया जा सकता है। गांधी के रचनात्मक सिद्धान्त के अन्तर्गत मनुष्यगण इस बात की तरास करते हैं कि कैसे वे उपयोगितावादी योजना के बाँकड़े बनने से मुक्ति पा सकते हैं और अपने साथ ही अपने भीतर से स्वतंत्रता और समता का साक्षात्कार कर सकते हैं। ऐसे लोग ऊपर उठने पर समाज के ऐसे अग्रुधा बन जाते हैं, जो किसी बनी बतानी कल्पना की कल्पना नहीं होते। ऐसे लोग अपनी आवाज खुद बुलन्द करते हैं और उसके फल के लिए खुद ही कदम उठाते हैं।

(अर्थी साप्ताहिक "मनस" — रूद्रभानु में प्रकाशित एक लेख का सारांश)

समाज-विकास-पर-तत्कालीन-उपयोग-के-निये-उत्पन्न

श्री प्रभुपानु प्रायुर्वेदिक धर्मशास्त्री

ज. ० मा. ० खादी-धामोद्योग द्वारा प्रमाणित खादी-धामोद्योग मण्डलों में मिलता है

इलाहाबाद के साम्प्रदायिक दंगे के खिलाफ सिले में श्री सुरेशराम भाई द्वारा १५ दिन का विराम दिया गया उपवास ८ अप्रैल को दिन में १२ बजे उनके निवास-स्थान पर समाप्त हुआ।

उपवास की समाप्ति के अवसर पर नगर के प्रमुख नागरिक उपस्थित थे। सर्वोदय के प्रमुख विचारक दादा यमाधिकारी ने अपना आशीर्वाद श्री सुरेशराम भाई को देते हुए कहा कि हम लोगों का हृदय आज इतना मुदर हो गया है कि समाज में चल रहे अवांछित प्रसंगों का अवर हथ पर नहीं होता है। श्री सुरेशराम भाई के दिल पर यहाँ की हिंसक घटनाओं का अवर पडा और उन्होंने उपवास का व्रत लिया। यह इनके दिल की

घटपटाहट, उकड़ता तथा सौत्र सवेदना ही थी, जिसके कारण इस लम्बे उपवास के बाद भी वे हमें स्वस्थ दिखाई दे रहे हैं। सही आशीर्वाद यही रूप में हो सकता है कि इस नगर में फिर इन्हें इस प्रकार का प्रायश्चित्त करने का अवसर न आवे।

नगर के प्रतिष्ठित नागरिक श्री छोटे मिर्चा साहब ने श्री सुरेशराम भाई को सतरे का रस पिलाया। शांति-सेना के घण्टक श्री ब्रह्मलोचन दुबे ने नगर में शांति-स्थापना में योग देनेवालों तथा इस अवसर पर उपस्थित सज्जनों को धन्यवाद दिया।

—अमरनाथ,
शांति-सेना मंडल, बाराणसी

दल-बदल या दलातीतता ?

चीजे आम चुनाव के बाद जनता ने सोचा कि यहाँ स्वल्प लोकतंत्र और विद्युत् लोकतंत्र प्रस्थापित होगा। इसीलिए उन्हें अनेक नये खून के नेता चुन दिये। 'संयुक्त विधायक दल' के रूप में विभिन्न राज्यों में उनका शासन भी चल पड़ा। फिर कुछ ही महिनो में लगभग वे नयी-नयी शासन-स्थापना दृष्टी गयी और लोकतंत्र का सर्वथा विरोधी राष्ट्रपति-शासन उन-उन स्थानों पर लागू हो गया या लागू होने की दिशा में है।

वस्तुतः विचार करें तो लोकतांत्रिक शासन भी राष्ट्र की अपनी विशेषताओं के अनुसार विभिन्न राष्ट्रों में विभिन्न प्रकार का हुआ करता है। ऐसी स्थिति में हम भारत में बिना किसी बिग्न-बाधा के लोकतंत्र चलाना चाहते हैं तो उसमें इस देश की विशेषता को देखते हुए अपेक्षित परिवर्तन करना अत्यावश्यक ही कहा जायगा।

अवश्य ही विरोधी दल लोकतंत्र का एक अंग माना जाता है। पर भारतीय शासन में उसको कोई खास आवश्यकता नहीं मालूम पड़ने। जब किसी भी विषय में चर्चा चल पड़े तो जिस विधायक को जैसा पसन्द पड़े, उस विषय में अपना मत प्रदर्शित करे। अन्ततः बहुमत से, और अच्छा तो यह है कि मनाकर प्राप्त किये सर्वमत से, उस विषय का निर्णय किया जाय।

इस प्रकार अन्ततः यहाँ का लोकतंत्र दल-निरपेक्ष शासन के रूप में परिणत हो जायगा। इस प्रकार काम चलाने पर शासन से स्वीय अनुचित महत्त्व भी रहन ही जाता रहेगा। हमारा तो यह दृढ़ मत है कि भले निर्वाचन के समय अनेक राजनीतिक दल बने रहें, विन्तु निर्वाचन हुए विधायक शासन-संचालन के समय अपना दलीय आवरण समझाकर उतारकर दल निरपेक्ष बन जायें।

—गो० न० वैजापुरकर

खादी और ग्रामोद्योग हमारे राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग हैं
इनके संबंध में पूरी जानकारी के लिए पढ़िये

खादी ग्रामोद्योग
(मासिक)

सम्पादक
जगदीशनारायण वर्मा

जागृति
(पाठिक)

हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित।

प्रकाशन का चोखट्टा वर्ष।

विश्वस्त जानकारी के आधार पर ग्राम-विकास की समस्याओं और सम्भाव्यताओं पर चर्चा करनेवाली पत्रिका।

खादी और ग्रामोद्योग के अतिरिक्त ग्रामीण उद्योगीकरण तथा सहरीकरण के विकास पर मुक्त-विमर्श का माध्यम।

ग्रामीण उत्पादन में उच्च तकनीकालो के समावेशनार्थ अनुसंधान कार्यों की जानकारी देनेवाली मासिक पत्रिका।

वार्षिक शुल्क : ₹ २० ५० पैसे

एक अंक : २५ पैसे

हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित।

प्रकाशन का चोखट्टा वर्ष।

खादी-ग्रामोद्योग कार्यक्रम सम्बन्धी ताजा समाचार तथा योजनाओं की प्रगति का मौलिक विवरण देने-वाला पाठिक।

ग्राम-विकास की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करनेवाला समाचार-पत्र।

गांवों में उन्नति में सम्बन्धित विषयों पर मुक्त विचार विमर्श का माध्यम।

वार्षिक शुल्क : ₹ ४ ८०

एक अंक : २० पैसे

अ-श्राप्ति के लिए लिखें

● प्रचार निर्देशालय ●

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन, 'ग्रामोदय'
हर्ला रोड, विलेपार्ले (पश्चिम) बम्बई-१६ एएस

आन्दोलन के समाचार

३१

३१ मार्च - दल बदलुभा के अभिमान से मुक्ति के लिए स्वराष्ट्र मन्त्रालय द्वारा जन प्रतिनिधि समुह में संसोधन का प्रस्ताव।
४ अप्रैल लोकसभा में नयी अध्यात्म नीति की घोषणा, प्राथमिकता प्राप्त दल उद्योगों व लिए गांव प्रतिष्ठान निर्माण अनिवार्य।

२ अप्रैल लोकसभा में इस बात पर बल दिया गया कि प्राथमिक पाठशालाओं के शिक्षा-स्तर में सुधार होना चाहिए।

३ अप्रैल प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी ने लोकसभा में कहा कि भारत और बर्मा बतानी-बतानी सीमाओं पर नागाओं को रोकने के लिए प्रयत्नशील है।

४ अप्रैल शक का अवतीर्ण सुद शायदी दिरे जाने पर भारत सरकार द्वारा विना व्यय।

४ अप्रैल - नीची नेता डा० किंग की हत्या पर प्रचारकर्त्री इंदिरा गांधी द्वारा लोक-सभा में घोष व्यय।

विदेश

३१ मार्च - सुरसा परिवर्त में अमरीकी प्रतिनिधि कार्प गोलडवर्ग ने इधरायन जोर्डन सीमा पर प्रवेक रोकने की मांग की।

१ अप्रैल - अमरीकी राष्ट्रपति जानसन ने उत्तर विषयताम में बमबारी बन्द करने की घोषणा की।

२ अप्रैल विपतनाम में राष्ट्रपति जानसन की शान्ति घोषणा पर राजनीतिज्ञ-वार्ता करने का भारत का प्रत्यय।

३ अप्रैल अमरीकी बन्द करने की घोषणा पर ह्तोई अमरीका से वार्ता करने की तैयारी।

४ अप्रैल - विपतनाम-शान्ति के लिए अमरीका द्वारा ह्तोई से हथकं का प्रत्यय।

४ अप्रैल - गांधीवादी नीची नेता डा० गार्डिन लुसर किंग की मेमोरियल (देवेची) में कम एक गोरे ने गोली मार कर हत्या कर दी।

मूरान-यश : शुभवा, १२ अप्रैल, '६८

विधोरागढ़ जिलादान का सकल्प

● विधोरागढ़, ३० मार्च। शीरीष्टाट में २७ मार्च को सवात हुए रचनात्मक कार्य बर्ता विचिर में सकल्प किया है कि आधामी 'विनोय-जयन्ती', ११ जितम्बर '६८ तक सीमान्त जिला विधोरागढ़ का जिलादान सम्पन्न किया जाय। इस सवरा को पुष्टि जिला गांधी जम शतागरी समिति ने भी की। जिले के सभी राजनीतिक पक्षां के मुख्य कार्यकर्ताओं एवं समाजसेवकों ने शान्त-व्यभिचान को सफल बनाने के लिए कर्मील भी निकाली है। २४ २६ मार्च को शीरीष्टाट एवं विधोरागढ़ की शान्त-व्यभिचान समितियों में सुभी निर्मला देवगण्डे ने बताया कि शमदान से न केवल देय की सुरक्षा, विनास और लोकतन्त्र की सम्स्थाएँ ही हल होगी, बल्कि चिन्तशान्ति का मार्ग भी प्रस्ताव होगा।

मीरजापुर में ७ ग्रामदान

● गोविन्दपुर, २ अप्रैल। मीरजापुर जिले की सुदी तहसील में ७० प्र० गांधी स्मारक निधि बनवायी सेवा का प्रथम ४ कार्य-कर्ताओं को ६ टोलियाँ प्रत्यय में ग्रामदान व्यभिचान पर गत १६ मार्च से निकली की। उनका विचिर शान्तिदपुर में १ अप्रैल को हुआ। मार्च महीने की पद्याथा में कुल ७ ग्रामदान प्राप्त हुए। इस प्रकार जिले में २ प्रत्ययदान तथा कुल २१७ ग्रामदान हो चुके हैं। टोलियाँ पुन व्यभिचान पर निकल चकी हैं।

—इवावादीन मिश्र

रतलाम प्रसुषणदान का सकल्प
● इन्दौर २७ मार्च। रतलाम संघ सेवा सप के तलावधान में १७-१८ १६ पर्यं ने भी बनवायीलाक चौधरी परिवार के शान्तिधर्म में प्रत्ययदेय के रचनात्मक कार्य-कर्ताओं के पारिवारिक विचिर का आयोजन किया गया है। २ अक्टूबर '६८ तक रतलाम प्रसुषणदान करवाने का सत्य रतलाम उद्योग-परिवार के कार्यकर्ताओं ने किया है।

मनमोहनजी की नेफा-याना

● हुमारीकाटा, ३० मार्च। एवं सेवा सप के अध्यक्ष की मनमोहन चौधरी ने भी रजोत्र भारी तथा धनोक्त भारी के साथ २३ मार्च से २६ मार्च तक नेफा स्थित शान्ति-नेट्रो का दौरा किया। २४ मार्च को शान्ति-नेट्र जेठुभा और २६ मार्च को केजू केन्द्रों में धामीयो से मिले। रात को गाँव-प्रमुख तथा अन्य लोगों के बलावा नोजवानों से वार्ता हुई। दूसरे दिन गाँव की परिव्राम कर शान्ति-नेट्र के कार्यकर्ताओं से बातचीत की। रात को लोधा में वहाँ के दरसारी व्यक्तियों से नेफा की सम्स्थाओं, सम्भावनाया तथा शान्ति-नेट्रों के तवप में विचार-विमर्श किया। अपने शान्ति केन्द्रों के काम से सतोष प्रवट किया। कार्यकर्ताओं को सम्मनाया कि ग्रामदान के कई तवप यहाँ मौजूद हैं, वे ग्राम-स्वराज्य की स्थापना करने की कोशिस करें। —श्रीधरनाय

शरावतन्दी के लिए लोकवापा

● बरबई, २६ मार्च। महाराष्ट्र सरकार की शरावतन्दी-नीति के प्रति विरोध प्रदर्शन करने की ब्राजुराज चदावार आदि कार कार्यकर्ताओं ने पूना जिला स्थित तोपंजेन वाडवी से लोकविशेष करने हुए लोवापा १८ मार्च से आरभ की। ६ अप्रैल को बम्बई पहुँचकर मुख्यमंत्री से मिलकर जनता की मनोव्यथा प्रकट करेंगे। शराव-बन्दी रोकने की हदित से अनवायी गयी नीति पर पुनर्विचार करने के लिए मुख्यमंत्री को पत्र भी लिखा गया।

विहारदान की ओर

● लठेरियासहाय, २६ मार्च। दरभंगा सदर अनुषणन्तीय शान्त-स्वराज समिति की बैठक २७ मार्च को यहाँ हुई। २४ मार्च तक हुए कार्य का व्योरा—
कुल गठित ग्रामधमा ३०६
पुष्टिलाक तैयार गाँव १४६
पुष्टि-पदाधिकारी के यहाँ
शान्ति गाँव
शासिक तैयार गाँव ३३
।

—रामप्रताप ठाकुर

पूर्णिमा का जिलादान पूर्ण

बिहार के नकशे पर दूसरा और भारत के नकशे पर तीसरा जिलादान

महात्मान् अभियान ने सफलता की एक और मंजिल पूरी की

पूर्णिमा, ६ अप्रैल। आज पूर्णिमा के कुल ३८ प्रखण्डों का दान सम्पूर्ण हुआ। १८ अप्रैल को महात्मान् अभियान की प्रेरणा के प्रतीक साचायं विनोबा भावे की पूर्णिमा का जिलादान समर्पित किया जायागा। पूर्णिमा के बरिष्ठ कार्यकर्ता श्री बेंटनाय प्रसाद घोषरी की अनवरत सेवा और विचार की अखंड साधना के परिणामस्वरूप पूर्णिमा में इस ऐतिहासिक संकल्प की पूर्ति हो चुकी है। विनोबा ने पूरी आशा व्यक्त की है कि पूर्णिमा में प्राप्ति की तरह ही पुष्टि का काम भी महात्मान् का गति से होगा और ग्राम-दान की यात्रा वही प्रकट होगी।

इस सम्बन्ध में स्मरणीय है कि पुष्टि के लिए बिहार भूदानपत्र कमेटी की ओर से २ पुष्टि-अधिकारी और ११ कार्यकर्ता सघन रूप से कार्यरत हैं। फिलहाल २ प्रखण्डों—हरयानन्दनगर तथा पूर्णिमा पूर्व—में सघन



रूप से काम कर रहे हैं। अब तक पुष्टि के लिए ७०० गांवों के वापसात प्राप्त किये गये हैं, १२४ गाँवों की पुष्टि हो चुकी है।

—विशेष संवाददाता द्वारा

२ अक्टूबर '६८ तक बिहारदान की लक्ष्य-पूर्ति के लिए

७० प्रखण्डदान प्रति माह पूर्ण करने की आवश्यकता

पटना, ४ अप्रैल। प्राणोप ग्रामदान-प्राप्ति संयोजन समिति की बैठक में बिहार की व्यूह-रचना पर सविस्तार चर्चा हुई। बैठक की अध्यक्षता श्री मनमोहन चौधरी ने की। बिहार के बरिष्ठ और प्रमुख सर्वोदय-कार्यकर्ता छात्रियों के अतिरिक्त समिति के सदस्य चर्चवी जयन्तय सरकार, मन्वी, बिहार साम्यवादी दल, हरिना नारायण सिंह, जगन्नाथ, बिहार जनसच दल, राजेश मिश्र, मू०पू० अध्यक्ष, बिहार कांग्रेस कमेटी, विनोदानन्द का आदि बिहार के प्रमुख राज-नीतिक नेताओं ने भी भाग लिया।

बिहारदान-प्राप्ति की गति को तीव्रतर करने के लिए सभी तबके के लोगों से सहयोग लेने, आर्थिक मदद प्राप्त करने आदि के लिए

विस्तृत योजनाएं बनो। बिहार गांधी-शताब्दी समिति की मदद से हर जिले में एक-एक ग्राम-स्वराज्य निविद आयोजित किये जायेंगे। सुगन्धित सर्वोदय-विचारक आचार्य दादा भर्माधिकारी ने इन निविदों में मार्गदर्शन हेतु

३१ मई तक का समय दिया है। बिहार ग्रामदान-प्राप्ति संयोजन समिति के सहमंत्री श्री कैलाशप्रसाद दामा ने बताया कि २ अक्टूबर '६८ तक बिहारदान के लक्ष्य की पूर्ति के लिए ७० प्रखण्डदान प्रति माह प्राप्त करने की आवश्यकता है। अब तक बिहार के कुल ५८७ प्रखण्डों में से १४६ प्रखण्डों का दान हो चुका है।

२२ अप्रैल को श्री जयप्रकाश नारायण विदेय-यात्रा पूरी कर वापस लौट रहे हैं, समिति ने निश्चय किया है कि उनका स्वागत ५० प्रखण्डदान और ७२ हजार रुपये की धैली से किया जाय। पटना के नागरिकों की ओर से स्वागत-समारोह का भी आयोजन किया जा रहा है।

सीमा-क्षेत्र में लोकयात्री महिलाएं

हरनिया बस्तूरबा आधम की तीन महिला कार्यकर्तायों श्रीमती मनदा बरुण, श्रीमती स्वर्ण देवी और श्रीमती भारती देवी, जिन्होंने महिला जागरण और संबन्ध के लिए लोकयात्रा प्रारम्भ की है, दिनांक २२-२-६८ को गोहाटी में जनसम्पर्क किया। अब बृहद गोहाटी के सीमा-क्षेत्रों में घूम रही हैं। इस महिलायत्री ने धान्तिपुर, भरालमुख, कुमार-पार, माधकोबा, कैमी बाजार, ताकोबाटी, अण्णून, सतरीबाटी, फ़ागिल और कासा पहाड में लोकयात्रा की और अब देहाबाटी क्षेत्र में प्रवेश किया है। ग्रामीण महिलाओं में उत्साह देखा जा रहा है।

—कु० समीरण दास



भूदान-यात्रा

भूदान-यात्रा मूलकाय-सिद्धि-प्रधान-शिक्षण-प्रणालि-द्वारा-संयोजित-सामुदायिक-साहित्यिक

सर्वे सेवा संघ का मुख पत्र
 वर्ष : १५ अंक : २९
 बुधवार, १९ मार्च, '६८

श्री ७८
 भाग्यश्री २५५५ अमर शहीर ०० भिम
 की यात्रा



हो गवता है कि यह (रागरिच
 परिवारा की पालिमाप लार्ड) सुभे
 सुधी पर बडा है। हरि में लखे लखे
 खत रहे ता लोग समये-नय यह ता
 हरेवे कि बहु लोगो की आहाद करने
 द लिए बडा। —मार्तिन सुपर किंग

सम्पादक
 राकेश चन्द्र

सर्वे सेवा संघ प्रकाशक
 पणवट, बाराकली-१ उत्तर प्रदेश

डा० किंग : मानवता की अंतराष्ट्र-उपेक्षित

● अभी एक आश्चर्यजनक नयाकार किया है। डा० मार्तिन सुपर किंग
 ही हुआ कर दो गयी। ३६ साल का उमर। दुनिया में पहिल हुआ।
 मारो का प्रिय बना। 'गतिरूप काय रिया। इतने लिए जोसल प्राइड
 किया। उसे एक दुखे भयान में गोली मार दी।

हमें बच्चास और बिलान रोनी को बोझा है। रोनी परबतपूरक है।
 पर दो प्रकार के होते हैं 'गिरासक और बलिपयक। हमें रोनी चाहिए।
 बच्चास विचारपूरक है और बिलान गतिरूपक। आज मरतीरा के पाठ बिलान
 है बस बात-पकता महसूस हो रही है बच्चास को। नहीं सुन को बहुत बडा
 और बगालिनी।

वहाँ जीवन में सुगन्धी-मृग है मोग ही काम है दुपचाप नहीं उठ जीवन
 में कोई राह नहीं।
 —विनीश

● डा० मार्तिन सुपर किंग का दुःख देहाकलान बहसमा साथी की शहादत
 की सुरासुति ही है जो नर बल के दुःख को बहुत साधारण पहुँचानेवाला
 है। साथीकी के सजान डा० किंग ने मानव-मानव के 'छात्र' की सिद्धि के
 लिए प्रमात्र जीवन समर्पित किया था और साथीकी के ही सजान के जो निमग
 रूप की स्वास्त के विचारर हुए।

उल्लेख ऐसी सभसमा की हाथ म लिया था जो मतमात मसार की कलक
 विफोटक समसामों में से एक थी और बहु थी काले-मोरे का बण श्रिय।
 मरतीरा म बहु विद्वेन अपनम उप कवस्था में पहुँचा है लेकिन उठ सभसमा
 के मभसायन के लिए डा० किंग ने बरलरी के अनुभवों की बालकपयो के
 वारम सासा साथी की कि बिल रपमक पर बटनेवाली बलनाका को खरी दिया
 देने में वे बहुत बहायक हो सके। डा० किंग जिन्हें महान् शिखर पर जा
 पहुँचे थे उसकी तुलना में कभी कबरासा अपनत की और सजार की सासा
 की कि योग बाल तक वे सतत जोरन जोसे। परन्तु एक पागल दुपुन्य ने
 सारी सासाओं पर पानी फेर दिया।

डा० किंग प्रेम और देव की सभसमा के बलनाक तक जा पहुँचे थे। प्रेम
 शक्ति पर उनको थडा इतनी मुटा थी कि बलनाक-मै-बलनाक बलनाक के
 बरबरा पर भी बहु विचलित नहीं हो सकी थी। वही उनको बहादुरता और
 यतिन का सल्ल था। शक्ति ऐसी बहाद में सब शुकु सारेर का बल हो जाने
 के बावजूद बने रहने की और सक्ति रहने की मरुतुम 'गिरि है इन्फि' इतने
 कीई संका नहीं कि डा० किंग द्वारा बलामी हुई बहु पडा-गतिन न जाये रई
 सार्वी एक मानकम को सृष्टि प्रणत बरती रोनी और यह साहायिन
 बली रहेगी।
 —मनमोहन चौधरी
 मध्यम, उर देश

“अव किंग !

सक्रिय अहिंसा

● 'दुष्टता के विरुद्ध सब प्रकार की मनुष्यी लड़ाई का परिचालन' अहिंसा नहीं है। इसके विपरीत, मेरी कलना की अहिंसा प्रतिगोष की अपेक्षा अधिक सक्रिय और दुष्टता के खिलाफ मनुष्यी लड़ाई है, क्योंकि प्रतिगोष बुद्धिहीन तोर पर दुष्टता को बढ़ाता है। मेरा इच्छा अनाचारों का मानसिक और इच्छा नैतिक विरोध करना है। मैं अत्याचारी की तलवार को बिल्कुल मोड़ती कर देना चाहता हूँ। यह काम मैं मुझसे भी अधिक तेज तलवार का उपयोग करके नहीं, बल्कि उसे इस बात में निराश करके करूँगा कि मैं उसका पारिरीक विरोध करनेवाला हूँ। मैं आत्मा द्वारा जो प्रतिरोध करूँगा, वह उसे धरना देगा। पहले तो उसे इससे चकाचौंध होगी और अन्त में वह उसे मान लेने को मजबूर हो जायगा, ऐसा बरके यह उल्टी नहीं होगी, बल्कि उल्टा उल्टा।

● सक्रिय अहिंसा का अर्थ जान-पूर्वक कष्ट-महन है। दुष्का मतलब यह नहीं कि दुराचारी को मरजी के सामने पुनर्वास मारन भुका दी जाय, परन्तु इसका मतलब यह है कि अत्याचारी की मरजी के विरुद्ध अपनी आत्मा की सारी शक्ति को लगा दिया जाय। जीवन के इन धर्म का आचरण करते हुए एक अनेके व्यक्ति के लिए भी यह सम्भव है कि वह अपने सम्मान, अपने धर्म और अपनी आत्मा की रक्षा के लिए एक अत्यापी साम्राज्य की सारी ताकत का मुकाबला करे और उस साम्राज्य के धर्म या पुनर्-कार को बुनियाद डाले।

१. 'यंग इन्डिया', ८-१०-२५
२. 'यंग इन्डिया', ११-८-२०

२० साल पहले गांधी, और अब किंग ! दोनों उम्माद के विचार हुए। मनुष्य के उम्माद के—जिसे मानवीय बनाने की साधना दोनों ने अपने जीवन की हर छोटी के साथ की। मनुष्य, मनुष्य के लिए मनुष्य का प्रेम किनाया मनरणाक हो सकता है। सुकत और ईसा से लेकर आज तक मनुष्य का सबसे बड़ा व्यराय चापद यही माना गया है कि वह हर मनुष्य को मनुष्य माने और अपने से बहकर दूसरे को प्यार करे।

अनी ७ अप्रैल को रामनवमी के दिन इलाहाबाद के शान्ति-कुटूब में नारा लगाया जा रहा था। 'हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, बापस में है भाई-भाई'; अपने देग में पिछले वाली-वन्वास धर्मों से यह नारा लगाया जा रहा है। आज भी लगता ही जा रहा है। इतने पर भी रोज भाई भाई से दूर होता जा रहा है, और यह कहने के लिए भी कि हन बापस में भाई-भाई है, किसी-न-किसीको शहीद होना पडता है। गांधी ने और क्या किया था शिवाय यह कहने के कि हिन्दू-मुसलमान भाई-भाई है? और किंग ने क्या किया था शिवाय यह कहने के कि काले और मोरे भाई-भाई हैं? जो भाई है, उन्हें भाई कहना ब्यास्य है!

कैसी है यह हिंसा जो अहिंसा की बड़ी-से-बड़ी बलि लेकर भी तुल्य नहीं होती? कितनी है उसको प्यास जो धरने जान और विज्ञान, साधना और सुधार, शौल्य और सम्पदा के होते हुए भी बुझना नहीं जानती? क्या हिंसा का अन्तर्वर निवास मानव के मन में ही है, जिसके फूट पडने की रोकना मनुष्य की शक्ति के बाहर है? या, समाज की रचना ही ऐसी है कि उसकी उल्लेखनाएँ मनुष्य-मनुष्य के सम्बन्धों को बड़ी और शम्कित रहने नहीं देती, और तब मनुष्य भय, अहंकार और अरक्षा में जीवन की उसी दिशा में लौट जाता है जिसे वह सदियों पहले छोड़ चुका। रह-रहकर पशुना की ओर लौटने का यह क्रम कब रुकेगा, कब रुकेगा? मनुष्य में इतनी महानता और इतनी दुस्तरता क्यों है?

गांधी की हत्या हुई तो हमने सोचा कि भारत रूडियों में जकड़ा हुआ ऐसा देश है, कि गांधी को पचा नहीं सका। लुपुली के अनीना का भी यही हाल था। लेकिन जब अमेरिका जैसे विज्ञान और वैभव में गिरमोर डालर के ढेर पर बनेवाले और चन्द्रलोक की शेर करनेवाले देश में, काले मोरे जैसे प्रदल पर किंग की हत्या हुई तो यह मानना पडा कि इस विज्ञान और वैभव में ही कहीं कोई जहर है जो मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने दे रहा है। क्या है वह जहर? कबे निरलेगा? क्या विज्ञान के साथ विकास का दूसरा मो को कोई तरव चाहिए जो अब तक पाया रहा है?

देश-देश में इन क्या देखते हैं? युद्ध का बही तत्र (बार मयोन), सत्ता की जहो होड (पावर फालिडिब), व्यवसाय की बड़ी माया (बिग बिजनेस); इन्ही चीज पर आधुनिक सम्पत्ता और समाज की रचना बढी हुई है। इस रचना के पूरे ताते-ताने में हिंसा है। हिंसा ही हिंसा है। इस निविध हिंसा से अन्तर मुक्ति पानो हो तो सम्पूर्ण अहिंसा चाहिए। अहिंसा मानी मयो प्रेरणा का जीवन और नयो बिज्ञान का समाज चाहिए। जब प्रश्न मूल्यों और सम्बन्धों का है। मात्र साधनों और तकनीकों का नहीं। नये अक्षाने की शान्ति की यही पाण है। इसीमें मुक्ति है।

गांधी में लेकर किंग तक के बीच धर्मों ने यह सिद्ध कर दिया है कि हिंसा के साथ विज्ञान किनाया सोसला, समता कितनी निरर्थक, और वैभव कितना सुनिश्च है। अहिंसा से उभरकर ही मनुष्य के लिए विज्ञान, समता और शम्कित को शान्तिता है। अहिंसा पस की आकाशा नहीं, नागरिक की आदरपत्रता है। ●

संगीय डा० किंग • अहिंसक आन्दोलन का भविष्य ?

मुझे यह अनुभव करने का निमित्त मैंने विन मास्केल को पान किया तो उन्हें बताया कि ५ अंग्रेज का एक श्रेणी तथ्य ने पार्लियमन्ट खूब किया की गया कर दी। डेलीफोन हाथ का हाथ में रह गया। इतना अनपेक्षित समाचार !

मन पर गहरा आघात लगा। अमेरिका के सारे अहिंसक आन्दोलन का भविष्य तो काला दिखाई देने ही लगा था। डा० किंग के अपने व्यक्तिगत धर्मधर्मों के कारण भी मेरा मन बिल्कुल हलचल रह गया। सबम पहले मैं डा० किंग से वर १९५६ में मिला था उसके बाद १९६१ में अमेरिका में उनके अपने गृह गृहस्था में हमारी लम्बी बातचीत हुई थी। फिर मैंने उनके अनेक व्याख्यान सुने थे। उन्होंने अपनी पत्रको पुस्तक 'टुडै डुडैड रोडम मुके भट की थी। मैंने 'वाजादो की मजिल नाम से उस पुस्तक का हिन्दी में अनुवाद किया है। इन दिनों मैं डा० किंग की जीवनी लिखने में व्यस्त था। इन्होंने अपने धर्म के कारण उनके साथ एक व्यक्तिगत आजीवन-सौ ही गयी थी। अचानक ऐसा लगा कि उस समाज को क्रिश्चियन बेरहमी से छोड़ दिया।

अमेरिकी-अहिंसक आन्दोलन की अपने में भी यह क्षालक नहीं रहा होगा कि केवल ३६ वर्ष की उम्र में बनकर नेता उनमें खीन किया जायगा। इसलिए इस सक्के को बढ़ावा देने की समझ विकसित करने का उन्हें अवसर नहीं मिला। उबर लोके कारलाइके बनें हाथिक बगलार दिखाने वाले नेता के लिए यह सही समय होगा कि पोलिस दमिस्त पीपिय और निराशा नीची समाज को हिंसक प्रतिकार और बदला देने के लिए उरबाधना वा सके।

धर्मों तरफ लम्बी हुई बगार छापना और जैसे रहन-सहन के बीच नतीज नीचो को जिस मानविक पीडा का अदर पीना पडा है उसको बरना ही नो वा सक्की है। यदि यह नीचा निराशा में बन्दकर

हिंसक प्रतिकार का रूप ले ले तो उसे असम्भव नहा कहा जा सकता। डा० किंग की हत्या ने बाद यदि अमेरिका का शेताप समाज एक बरका महसूस करे या अपने नीची समाज के प्रति जो अन्याय किया है उसे समझने की सोचिया करे या कम से कम बड़े नून-तरावे का हो उर महसूस करे और नीची विरोधी पूर्वाग्रहों का यह त्याग करे तो सायद पार्लियमन्ट खिय नो वर बलिगत एक नसोदहन बनेगा। यद वर १९६० की तरह जब कि प्रीन्स बोरो नगर ने नीची युवकों पर रगने धाननेवाले रेततरा न प्रवेग करने पर खेतगो ने हमला मेल दिया था या दमिस्त नगर में डा० किंग के अनुयायनबद्ध अहिंसक सयाग्रहियों पर शेतगत पुलिस ने निकारी कुस छोड दिने से सब भी नीची-दमन की नीतियां चलने वाली हामी तो अमरिका न केवल सुदुष्यद बर्कि गुरिला युड का भेदान बनेगा ऐसी आशंका आजायायिक नहीं।

सतीशकुमार

जाने विरोधियों के प्रति पूरा श्रम व और शाप्य की मति ही साधना को पवित्रता में विश्वास के साथ-साथ अपने भविष्यारो न लिए सय और शाय प्राप्त करने के लिए आग्रह और निष्ठा का मेल बढाने में डा० किंग ने बहसुन सक्कना पायी थी। वे अपने पीछे एक ठोस ऐतिहासिक उपलब्धि छोड गये हैं। जो हिंसक शान्ति का विकल्प दुर्दमा की विनमारी छोड गये हैं। यदि कुछ समय के लिए स्वीकते कारलाइके नीची युवकों की भावनाओं को हिंसक मोड देने में सफल भी हो गये तो डा० किंग द्वारा प्रस्तुत अहिंसक विरूप हूबेया महल पूण रहेगा नयाकि हिंसा नयी हिंसा को बज देती है और आखिरी समाधान लाने में यह असफल रहती है। डा० किंग के विचार अनयोरी धराय की अपने पूर्वाग्रहों के मुन

होने के लिए अब भी प्रेरणा देने और इत रत्नाद का बन्त होगा। पिछले साल ने दगो पर राष्ट्रपति ने जो क्रमोत्पन्न बैडगा था उसने एक महसूस रिपोर्ट बना कर दी है और यदि रूप ने बज शय रिपोर्ट में दी गया यथाशक्ती को ही बना लिया गया तो एक नये परिवलन का प्रारम्भ होगा।

जहाँ गोरागाही के पूर्वाग्रहों ने अग्रय और अनानवीय तरीके अनाये वर्त डा० किंग ने नेगुत्र में तीरा समाज ने सग्य और मानवीय तरीके से उनका प्रतिकार किया। डा० किंग ने अपने इस शान्तिवादी बहिंसक आन्दोलन की प्रथा गाथी से गाथी की। मोर हाउस कालेज से शिरो पाने के बाद किंग चेस्टर नाम के एक नगर में जब पिबोलोरी (अध्याय विद्या) पत्र रह थे तब उन्होंने हींगल कट और गाथी न दानजिक तथो की गवेधना की और उन्हीं लगा कि दानजिक विचार केवल एकेटमिक बहस और सुविचारिता की चीज नहीं बल्कि शोभनी की समस्याओं के साथ उनका साधा सम्बन्ध है। साथ ही तो उन्होंने महसूस किया कि धीमिस्त कानूनी तरीका से नीची बदल का विरोध मात्र मनबन्धन और नवी तक एक व्यापक मान मनबन्धन और नवी समाज रचना का एक साधक बिज पत्र नहीं किया जाता तब तक नीची-दमन का एक क्षण हो रहनेवाला है। चेस्टर को पणर्द सभास करने के बाद किंग ने बोस्टन विज विद्यालय में दास्टर की शिबो हाकिम की और मोटमोमरी नगर के एक पट्टाहूर चच के पाठो मन गये। इस बीच उन्होंने बोरेटा स्कूल के साथ विवाह कर लिया था।

नियन्त्र १९५५ में अनावक डा० किंग को एक अरवाजित शपथ का नेतृत्व करने की क्रिमिन्सारी शल दी। एक हसी महिला रोजा पानथ को मॉटमोमरी नगर की वय सविध के नियमादुगर एक बनेताप गाथी क लिए सीट छोडकर सग हो जाना चाडिय था पर उसने इस नियम का शासन नहीं किया और परिणामस्वरूप उसे गिरफ्तार किया गया। इस गिरफ्तारी ने एक अनुग्रहन बद्ध नय-अहिंसक सयाग्रह को बज दिया

जो ३८२ रिशो तक चला। डा० किंग इस बच-बर्हिष्कार सत्याग्रह-नामिति के अध्यक्ष थे। उनकी 'स्पूटैजो' ने सत्याग्रह को पूरी सफलता दिलायी और आगिर मोटोमोरी की बसों में रंग भेद समाप्त किया गया। इस सत्याग्रह के दौरान डा० किंग के पर पर बम पंजाप गया, और उन्हें गिरफ्तार भी किया गया, परन्तु न्याय की विषय हुई, अहिंसक-अंगणों के रास्ते थे। इसके बाद तो 'पीडम मार्च' तथा विभिन्न प्रकार के सत्याग्रहों के लिए रास्ता ही मूल गया। डा० किंग ने 'विद्यार्थी अहिंसक-सपर्यं सच' की स्थापना करके सुबक-धार्मिक को समर्थित किया। सन् १९५५ और ५६ में विद्यार्थियों द्वारा आयोजित विभिन्न सत्याग्रहों ने दुनिया का ध्यान नौधो-आन्दोलन की तरफ आकृष्ट किया। तब आया सन् १९६१ का बर्मिथम-सत्याग्रह। इस सत्याग्रह ने न केवल अन्तरराष्ट्रीय समाचार-पत्रों के कालम भरे, बल्कि स्वयं नौधो-आन्दोलन के लिए अतिपरीक्षा का अवसर प्रस्तुत किया। डा० किंग ने बलबारी के हाथियों पर एव 'टापलेट पेपर' पर नौधो-आन्दोलन का समग्र दर्शन प्रस्तुत करते हुए जो 'पत्र' लिखा वह एक ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में दुनिया के सामने आया।

डा० किंग ने घोषित किया कि कमजोर अहिंसा हिंसा से बढतर है। मोन रहकर हिंसा को सहना स्वयं हिंसा करने से बढतर है। इसलिए मोपरी अहिंसा हमें नहीं चाहिए।

इस तरह अहिंसा और धार्मिक, दोनों का मेल बेटानेवाला शास्त्र बर्मिथम की जेल में लिखा गया। इस सत्याग्रह ने राष्ट्रपति केनेडी और अमरीकी सरकार को भी जगया। नागरिक-अधिकार कानून की रचना की गयी। इसी बर्मिथम सत्याग्रह की नोब पर सन् १९६३ में 'बासिगटन मार्च' आयोजित किया गया, जिसमें लाखों स्वातंत्र्य-संग्राम के समर्थकों ने भाग लिया। लिफ्तन सेनोपियल पर खड़े होकर डा० किंग ने जो भाषण दिया, वह 'विद्युत्-ज्वला' चित्रित कर रही थी डा० किंग के उस सपने को, जिसमें काले और गोरे भाई बनकर रहेंगे।

डा० किंग का मानना था कि दमन और अन्याय के विषय हमें बड़ जाना है।

अमेरिका को कञ्चवटिब यानो अनुदार-वादी साप्ताहिक पत्रिका 'टाइम' ने डा० किंग को सन् १९६३ वा हीरो घोषित किया।

मार्टिन जिन्दा है... जिन्दा है !

तिमिर ने शाय दो गोली

उजाले के कलेजे पर

और तपनत ने घोषी ने

मुहब्बत को मारा चांटा

लेकिन फिर से अंधेरे

और तपनत के दावेदार

भूल गये कि महापुरुष की रोशनी

कभी बुफनी नही

और मुहब्बत नफरत से

ढरती नही।

महापुरुष जो जिन्दागोभर

जीकर नही कर पाता

वही उधको शहादत

पल में कर जाती है।

बफ्फोस, कि सूनी हाथो के धब्बे

धुल गही पाते कि दूसरा धब्बा

लग जाता है,

लेकिन सुनो इत बात की है, कि

'महापुरुष का उजाला

बेदाग बच जाता है।'

इसीलिए तो मरकर भी

ईवा जिन्दा है

गांधो जिन्दा है और

मार्टिन भी जिन्दा है...

जिन्दा है !

—गोपाल भट्ट

सन् १९६४ में उन्हें नोबल शांति-पुरस्कार दिया गया। अब तक नोबल शांति-पुरस्कार पानेवालों में डा० किंग सबसे कम उम्रवाले थे। अमेरिका में और अमेरिका के बाहर

नौधो-स्वातन्त्र्य और डा० किंग एक-दूसरे ने पर्यायावा की बन गये थे। पर दुर्भाग्य से गोरे रंग के अङ्कार ने तथा अमरीकी सरकार की हिलाइयो ने डा० किंग को समाप्त कर दिया है तथा नौधो-शोष को भङ्गकने के लिए अवसर दे दिया गया है।

दुनिया में जनतन्त्र की रक्षा करने के लिए युक्तिसेमन की तरह चौकौदारी करने-वाली अमरीकी सरकार, अपने राजनैतिक हितों के लिए, दुनिया की गरीबी मिटाने के नाम पर करोड़ों-अरबों की विदेशी सहायता भेजनेवाली अमरीकी सरकार, विश्व भर के प्राइतिक सजानों को अपने कब्जे में रनकर और दुनिया के सर्वश्रेष्ठ क्षेत्रों में से एक क्षेत्र में रह कर सर्वाधिक सम्पन्नता का दावा करनेवाली अमरीकी जनता क्या अपने दो करोड़ काले नागरिकों के भिन्न कुल भी नहीं कर सकती? यह एक सवाल है, जो डा० किंग अपने पीछे छोड़ गये थे।

नौधो-मुलाम-प्रया के अन्त की चारसोवी जयन्ती डा० किंग के नेतृत्व में प्लोटीटा में मनायी गयी। प्लोटीटा पूरी तरह से रण-भेदावादी नगर है। वहाँ के शार्बजनिन स्थानों पर प्रेमाक्रमण करने और रण-समन्वय करने के इस आयोजन को भी काफी सफलता मिली। सन् १९६५ में 'सैलमा-मार्च' भी अपने विविध प्रभावों और सफल परिणामों के लिए मशहूर हुआ। इस मार्च में भी डा० किंग पर हमला किया गया था और उन्हें गिरफ्तार किया गया था। डा० किंग ने सन् १९६६ में मिसिसिपी राज्य के कुलसच पलान नाम की रणभेदवादी जमात की बरिन्धों में प्रदर्शन विये, जहाँ तीन 'स्वातंत्र्य-सैनिक' मारे गये। डा० किंग की अन्तिम जेलयात्रा पिछले वर्ष बबटूर में हुई थी। और इस वर्ष वे नौधो-समाज की क्रायिक दुर्दवा के सुधार के लिए वासिगटन-मार्च की योजना बना रहे थे।

जिसने बन्दूक ईजाद की, उसने शायद ही सोचा हो कि उसको बन्दूक का इन्तेमाल लेकिन, गांधी, केनेडी और किंग को मारने के लिए किया जाया। बामा ! पिछोती बन्दूक बनाना ही म थाया होता। ●

उठे, मयाल रर छिटक गयी और मुक्ति की उस प्रतिमा की आँसों से आँसुओं की धारा बह निकली और बह-बहकर डा० किंग की लास को गहलाने लगी, गंगाजल की तरह अशुजल का अन्तिम और पवित्र स्नान ।

गिस्तोल की जो गोली गांधीजी के सीने का रून पीने के बाद रूख नहीं हुई, वह टाइटन किंग का रून पीकर सन्तुष्ट हो जायगी और फिर, दुनिया में यह वृक्षत्व सदा-सदा के लिए धन्द हो जायगा, इगमे संका है। नेफिन जो पशुता गांधीजी की हत्या करके भी उन्हें दुनिया के करोड़ों लोगों के दिलों से नहीं निकाल सके, वह पशुता डा० किंग की गिर्फ ३६ साल की कठनी उम्र को चवाकर भी मनुष्य होने के नाते मनुष्य की आजादी और ममानता की माँग को खत्म नहीं कर सकेगी, मनुष्यता को धरती से नहीं मिटा सकेगी, हर्गिज नहीं ।

महामानवों के रक्त में मोची जा रही मानवता को पौद एक-न-एक दिन सम्पूर्ण धरती पर शीतल छाँह फैलायेगी, और इस पशुता का, हिंसा का अन्त होकर रहेगा ।

श्रद्धाञ्जलि

एक और गांधी की हत्या

उम दिन भी अहिंसा के हत्यारे ने गोली दागी थी और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी शहीद हुए थे ।

अहिंसा के हत्यारे ने फिर गोली दागी थी, राष्ट्रपति केनेडी शहीद हुए ।

इस बार की गोली गांधी के महात्त्व सिन्थे मार्टिन लूथर किंग के बपाल को फाड़ती हुई निकल गयी ।

इस में लेकर लिंकन, गांधी, केनेडी और अब किंग को सामने खड़ी अवाल मौन को गले लगाना पड़ा ।

परन्तु अहिंसा का मार्ग खत्म नहीं हुआ, वह और भी पक्का हो गया । डा० किंग की पत्नी श्रीमती किंग उस मार्ग पर लाखों लोगों के साथ आगे बढ़ रही हैं । उन्हें परमात्मा में पूरा विश्वास है ।

सन् १९६३ के अगस्त महीने में दो लाख लोगों का वह निराद्वैतवादीक जुलूस क्या कभी भुलाया जा सकता है, जो नाशिंगटन की सड़कों पर मार्च करता लिंकन की समाधि पर पहुँचा था । जहाँ अमरीकी समाज से डा० किंग ने कहा था,

‘वह दिन आयेगा जब कि पुराने गुलामों की औलाद और पुराने गुलाम मालिकों की औलाद आपस में मिलेंगी और एक भेज पर भाईचारे के साथ बैठ सकेंगी ।’

कोई देश किसी बात में नेकनाम होता है तो कोई बदनाम भी होता है । अमरीका संसार में सबसे धनी देश है । परन्तु उसने दो बातों में बदनामी हासिल की है । पहली बात तो यह है कि उसने विपतनाम में बमबारी की और दूसरी बात है कि उसने इनसान-इनसान के बीच फरक पैदा कर दिया—यह काला है, यह गौरा है । चमड़ी के रंग में अन्तर हो जाने से क्या आदमी आदमी नहीं रहता ? गोरों ने कालों पर जानवरों के जैसा, वल्कि उसने भी गिरा हुआ बरताव तथा अत्याचार किया । आज भी वह खत्म नहीं हुआ है । लेकिन हिंसा के मुकाबले गांधी की अहिंसा को खड़ा करनेवाला दलित-पीड़ितों की आजादी का अलंबरदार नीग्रो नेता डा० किंग खत्म हो गया । लेकिन उनका सपना कि नीग्रो और खेत जनता के बीच समानता कायम हो, हर क्षेत्र में हम बराबरी से हाथ मिलायें, कभी खत्म नहीं होगा, वह पूरा होकर रहेगा । उनका यह सन्देश कि गुलामी से मुक्ति पाने का मार्ग हिंसा नहीं, बरत् अहिंसा है, अमर है ।

महात्मा गांधी नहीं हैं, लेकिन यह देश है । इस देश में कभी अछूत सम्भवे जानेवाले, बुरी नजर से देखे जानेवाले लोग आज भी हैं । बापू ने उन्हें ‘हरिजन’ कहा और सबने माना कि उन्हें भी जीने का समान अधिकार है । अछूतों के लिए बापू ने बड़े-से-बड़े कष्ट सहे और उनके रास्ते के अंगारों को फूलों में बदल दिया । मगर अभी भी हमारे हरिजन भाई दुःख और अपमान का जीवन जी रहे हैं ।

उसी प्रकार अमरीका में नीग्रो लोगों के साथ दमन-उत्पीड़न का बरताव चल रहा है । डा० किंग अब नहीं रहे, लेकिन नीग्रो जाति के लिए जो कुछ भी उन्होंने किया, उसने सारे संसार में प्रकाश फैला दिया । उन्होंने बता दिया कि समान नागरिक-अधिकारों के लिए किस प्रकार प्रातिपूर्ण तरीके से लड़ा जा सकता है और किस प्रकार सत्याग्रह से बढ़कर दूसरा कोई हथियार नहीं है ।

एक मूट-द्वैतधारी गोरों ने अमरीका के मेमफिस नगर में उन पर मोटर में से गोली चला दी । वे मकान के छज्जे पर गड़े थे । हत्यारा भाग गया । वह अभी तक पकड़ा नहीं गया है ।→

गाँव की बात

आजादी की राह पर

डा० माटिन लुथर किंग गोरी जाति द्वारा कुचली रीढ़ी गयी वाली जाति के नेता थे। दरअसल वे नीचो पापी थे।

बिजला बड़ा देहा है अमेरिका। विभी चीज की बची दही मही। लेकिन बहाने के लोग ऐसे हैं जो जि बेचल झपटे हो मुक्त व लिए बोना चाहते हैं। अपनी थाबादी को ही आजादी समझते हैं। एक आदमी से इतना दर गये कि उसको बहोने साथ ही कर डाला। मलय क्ताइये गोली मार मारकर बरा समार से सचवाई क रास्ते पर चलकर जग्याई और प्रम करने चाहे छ म किसे जा सक्ती है ?

डा० किंग व गान का जो जूलम निरकला उमम समार भर क देणो क प्रतिनिधि शामिल हुए। अमेरिका क अये रहे गोय ऊँचा जातवाले गोरी चमडीवाल क्या गोरे क्या जाने सभी सिर मुकाये हुए थे। किमती की गानो थी जिस पर उनका गव ने जग्या डा रहा था। दो अक्षर गाने खोख रहे थे। गरीबो को सम्मान क साथ रोटी रोटी मित्राये शीर मरवा मित्राये क लिए वे लखर-गोडिया का प्रदान करनेवा थ

डा० किंग व शन को भतलाना मयर म कत्र म दफना गिया गया। बही पास मे उनक दादा की भी कत्र थी। डा० किंग जीवन भर आजादी क लिए लडे। उनकी कत्र पर गिला गया— हे परनामा! आखिर घुके आजादी मिल गया भाववद तुम्हे पयवाव

वे अपने पीछे दो प्यारे बच्चे और दो सलामी शिष्या छाव गये हैं। और छोड गये हैं अपनी ही तरह बहादुर अपना ही तरह गरीबी क हको के लिए लाने व बरवान होनेवागे साहसी

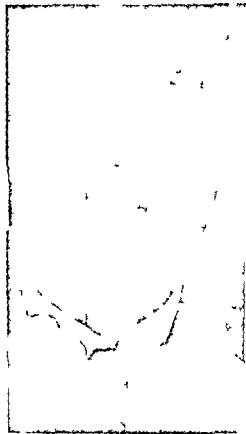
सन् १९५६ मे वे गामों क सपनी वा भारत देलने के लिए भाये थे। उन्हीने देवक ३६ वष की उमर पायी। बार साल पहले उन्हे गोबेड गानि-मुस्कार प्रमान दिया गया था। हिन्दी म उनकी बड़ी मागूर विचार है आजादी की मजिल जिसको पानर दृश्य रो परता है।

हमें यह गाँव से छुन-अछुन लैव-नीच और जल-पात की भावना को मिगानर पायी के मदान् अनुपायी डा० किंग को सचकी सदाकल अर्पित करनी चाहिए।

—प्रमु

पत्नी। सोच गये हैं वे एक अछुत रास्ता एक बड़ा मिगान जिस पर तमाम दुनिया की आजादी के दीवानो को हमे व वापको सबको चलना है चलते रहना है।

डा० देवरन माटिन लुथर किंग का जय अलकाला (जाडिया) मे १५ जनवरी सन् १९२९ को हुआ था। आपने वास्टव विषयविचारण से समाजशास्त्र म पीएच० डी० की उपाधि हासिल वा की। आप एक पापये थे। आपका तारा था— दुनिया म गये जाति में राम करो जाने वा अमिबार मत्री को है।



मेरा एक मयना है कि मिनिशियो म अन्तारागत म गजियर म एक नि सौटे नीको लाने और सन्निवाँ छोने गोरे लाने और लडगिया के साथ हाथ म हाथ लेकर भाई-बहन के रह सके।

—माटिन लुथर किंग

२८ अपरल १९६९

कहाँ है कानून, कहाँ है सरकार,
कहाँ है धर्म, कहाँ है मनुष्यता ?

१६ साल का नवयुवक। पिता मर चुका। अकेली माँ और उसका एकलौता बेटा—उसके जीवन का सहारा।

लड़के के हाथ पीछे पीठ पर बांध दिये गये। उसके बाद वह एक सम्भे से बाँधा गया। लगातार डेढ़ घंटे तक उसके ऊपर डेढ़े बरसते रहे। वह पीड़ा में कराहता रहा। लोग खड़े तमाशा देखते रहे। देखते ही नहीं, खुस भी होते रहे। लड़का चिल्लाता था, और बेबस माँ रोती थी, सिर धुनती थी, छाती पीटती थी। तमाशा देखनेवालों में एक भी नहीं था, जो पास जाता और कुछ कहता।

कहने को बात तो दूर, एक ने दियासलाई जलायी और लड़के की कमोज में आग लगाने की कोशिश की। कपड़े ने आग नहीं पकड़ी तो एक युवक दौड़कर एक डिब्बा मिट्टी का तेल लाया। पूरा तेल उसके शरीर पर छिड़क दिया गया। तीन आदमियों ने तीन दियासलाईयाँ जलायी और तीन तरफ से लड़के की कमोज और नेकर में आग लगायी। कपड़े से छपटे उठने लगी। लड़का जल-जलकर छटपटाता रहा, पुकार लगाता रहा अब भी कोई नजदीक नहीं गया। उठती लपटी से लड़के को बांधनेवालों रस्सियाँ जलकर टूट गयीं। तब तक लड़का बुरी तरह जल गया था। शरीर पर एक सूत नहीं, विलकूल नंगा था। लोग चारों ओर खड़े नाटक के बदलते दृश्य देखते रहे।

लड़का घायल, जला, नंगा, किसी तरह भागकर लगभग सौ गज दूर सड़क पर पहुँचा। वहाँ से एक फलाँग दूर एक डाक्टर की दुकान पर गया। डाक्टर ने यह कहकर भगा दिया कि सरकारी अस्पताल में या पुलिस में जाओ।

गाँव के बाहर का एक रिवादावाला था। उसने उसे पुलिस के धाने में पहुँचाया। इतमीनान के साथ पुलिसवालों ने रिपोर्ट लिखी और उसे सरकारी अस्पताल भेजा, जो वहाँ से १२ मील

दूर था। अस्पताल में वह पूरे १८ घंटे पड़ा रहा, न डाक्टर ने देखा, न दवा मिली। यों ही पड़ा छटपटाता रहा। अन्त में वहाँ से ३० मील पर बिजयवाड़ा अस्पताल भेजा गया, जहाँ मृत्यु ने कृपा की और वह इस जीवन की यातना से मुक्त हुआ।

मनुष्य बर्बरता में वहाँ तक पहुँच सकता है, इसका अन्दाज इससे लगेगा कि जब लड़के पर मार पड़ रही थी तो उसकी जेब में कुछ रुपये थे। जो तीन व्यक्ति उसे मार रहे थे, उन्हींने रुपये निकाले, नजदीक की शराब की दुकान पर गये, खूब पी, और लौटकर फिर मारना शुरू किया। अन्त में इन्होंने तीनों ने लड़के की कमोज में आग भी लगायी।

आन्ध्र के कंचिकचेरला नाम के जिस गाँव में यह घटना हुई, वह बिजयवाड़ा के बड़े शहर से केवल २० मील दूर है। 'नेशनल हार्ड वे' पर है, और १० हप्ता की जनसंख्या है। आमदनी के कारण कंचिकचेरला बड़ी पंचायतों में से एक है, और बड़ी पंचायत समिति का कार्यालय भी है। गुन्तूर के बाद यह तम्बाकू की सबसे बड़ी मंडी है। एक एकड़ से तम्बाकू का किसान दस हजार रुपये तक कमा लेता है। अधिकांश भूमि कम्मा जाति के लोगों के हाथ में है। गाँव में एक हाईस्कूल भी है, और लोगों के पास रेडियो और ट्राजिस्टर तो कितने ही हैं। गाँव में पांच मन्दिर हैं, और तीन जगह महात्मा गांधी, नेहरूजी और धी रंगा की मूर्तियाँ खड़ी हैं। आखिर वह अपराध क्या था, जिसके लिए इस लड़के को यह दण्ड दिया गया? वहाँ जाता है कि फरवरी में उसने एक जोड़ी चप्पल चुरायी थी। इस पर लोगों ने उसे तम्बाकू के गोदाम में बन्द कर दिया था जहाँ से वह खिडकी के रास्ते बूद कर भाग निकला। बाद को उसने पीतल के दो जग और गिलास चुराये, जिन्हें बाजार के होटलवाले के हाथ डेढ़ रुपये में बेचा। वर्तन एक पचपन वर्ष की धनो कम्मा महिला के थे, जिसके पास तम्बाकू के ४० एकड़ खेत हैं, जिनसे लगभग ४ लाख की सालाना आमदनी होती होगी। इसी महिला ने २४ फरवरी को, पड़ोसी के लड़के के बताने पर इस लड़के को पकड़वाया, हाथ बँधवाया, पिटाया, और सोरी बमूल करवायी। उसके बाद वह औरत होटलवाले के यहाँ गयी और पीतल के वर्तन बरामद किये। वर्तन मिल जाने पर वह लड़के को वापस ले गयी, अपने घर के पीछे एक सम्भे में बँधवाया, और दण्ड लगवाने शुरू किये। इस कीर्तिया

में कि वह गाँव में हुई दूखरी चोरियों को भी कट्टा कर दे।
उसीने कहने पर लड़के की बर्फीय में आग भी लगामी गयी।

कोठ्या (सरनेवाले लड़के का नाम) हरिजन खेति
हूँर मबहूर था। उस गाँव का भी नहीं था, दो मील दूर दूमरे
गाँव का था। क्विनवेरला में जहाँ यह मयबर नाड
दूया, नासोस और कम्पुनिरट की पुरानी दुल्मनी है। गाँव के
कथा और कानू आति के लोग काप्रेसो है और १६०० हरिजन
कम्पुनिरट है।

अब पता चल रहा है कि तम्बाकू के इन क्षेत्र में इन तरह
की बर्बरतापूर्ण घटनाएँ अक्सर होती हैं। पुलिस के अधिवायों
पेशान हैं। उनका बहना है, और उनका बहना टीन भी
है कि पचासते तम्बाकू के पानी निशानी और ध्यागरियों का
हाथ में है, और वे खुदकर 'प्याय' के नाम में अपने अधिवाय
का दुस्प्रयोग करते हैं।

जाति, पन अधिवाय, धाराव—इनमें से एक का ही क्या
बाकी है, पर जहाँ चारों मिल जायें, वहाँ दिमाग कैसे यही
रह सकता है ? अगर समाज की पुष्पनी बुनियादें न बदले, और
उन्हीं बुनियादों पर दर-दरती की राजनीति बलायी जाय विचार
के नाम में शोषण के वायव्य चलाने जायें, और लोचनव के
नाते गाँव के प्रभावशाली लोग के हाथ में अधिकार दिखे जायें,
तो युद्ध के निवास दूसरा बरा होगा ?

युद्ध समाज की बायी रचना में ही घुसा हुआ है। अहिंसक
हान्ति की शांतिव वाप में तनकर ही भारतीय जीवन का सीना
निखरेगा, बमकेगा। पाप में पुष्प का मेरुद लगाते रहने में
बाध नही चलेगा। ●

शाम-गीत

गाँव गाँव का शामदान कैसा जित दिन हो जायेगा
गायों के खपनों का भासत, वस उसी रोज बन जायेगा।
रामराज की गाँव गाँव में, गगा बहती जायेगी
उसी रोज यह अपनी धरती, स्वर्णलोचन बन जायेगी।
पनी और निषेध का वस दिन, भेद भाव भी नहीं रहेगा
मेघ और भारीघारे कर, गाँव-गाँव में फूल मिलेगा।
कुम्भ में दूध जाये जोरत में, हम देखा बधियान करने
घारा के वष पर चल कर, हम गाँवों का उत्थान करेगे।

—श्री० सलिल

गांधी-संस्मरण

क्या काला, क्या गोरा

आदमी तो आखिर आदमी है !

'मिस्टर, अब आग तीसरे दर्जे के डिब्बे में जाकर बैठें तो
अच्छा। टिकट चेकर ने कहा।

मिहिरान, मैंने भी पहले दर्जे का टिकट खरीदा है और
जबहु सुरक्षित बर रही है। भला मैं क्यों तीसरे दर्जे के डिब्बे
में चला जाऊँ ? गांधीजी ने कहा।

काला आदमी गोरे आदमी के डिब्बे में सफर नहीं कर
सकता, चाहे किसी दर्जे का उम्मा टिकट क्यों न हो ?' टिकट
चेकर ने कहा।

गांधीजी ने डटकर कहा मैं यहाँ में अपने आप हार्जिन नहीं
हूँगा। फिर आप चाहे जो बने।'

फिर क्या था ? आज तक इस तरह गोरे को आग्रा मानने
में किसीने इनकार नहीं किया था। पुलिस बुलायी गयी।
गांधीजी खुद डिब्बे में निवल्ने से इनकार करते थे, इसलिए
पुलिसवालों ने उन्हें पसीवकर बाहर निकाला। उनका सामान-
बसबाग भी निकाल कर फेंक दिया गया।

चार्ज टाऊन जाते समय घोडागाडी में भी ऐसा ही कुछ
अनुभव हुआ। जोहामसबर्ग में भी इसी तरह अपमानित होना
पडा। इनमान से इनवान ही इन तरह सेर इनकानी बर्ताव
करे, यह गांधीजी की बल्बना में बाहर बोल था।

यह शांति बल्बनी होगी। लेकिन कैसा बरती जायेगी ?
गाँव और दलिन अन्वय का सामना किन वन पर बर सर्वेने ?
बोई-न-बोई रास्ता बूँद दिवालना ही होगा। इस तरह
इनसानियत खोकर जाँव भला क्या जीता है ? ने सोचने के
वि भने ही चमडी का रंग बाला, पीला या मूषेद ही, लेकिन
आखिर आदमी तो आदमी है। उसने इन्वत के साथ रहने का
मोकर मिल्ना ही चाहिए। ●



कौआकोल प्रखण्ड में निर्माण-कार्य

गांवों में पूंजी-निर्माण तथा किसानों-मजदूरों के बीच की खाई पाटने के तरीकों की खोज व प्रयोग।

गाँव में महिला-उत्थान की समस्या

मिथिला के गाँवों में घूमते समय उधर की वहनों के प्रेम-भरे स्वभाव और सौम्यता का अनुभव बराबर मिलता रहता है। लेकिन समाज को उसका कोई लाभ नहीं मिलता है और न बच्चों को। गाँव का पारिवारिक जीवन टूटता जा रहा है और गाँव के बच्चे आवारा-सा हो रहे हैं। जैसे ये माँ की गोद से अलग होते हैं, वैसे-वैसे ये गाँव में झुण्ड-के-झुण्ड घूमने लगते हैं। जब भूल लगी तो घर में आकर खाना खाया और साकर फिर बाहर भाग गये। घर में उनके लिए कुछ भी रोचकता नहीं रहती है। माँ-बच्चे का आपसी सम्पर्क बच्चों को खिलाने-पिलाने और कपड़े पहनाने तक ही सीमित रहता है।

दुनिया भर में यह समझा जाता है कि दंश की सभ्यता और संस्कृति को बनाये रखना और बच्चों को अच्छे-अच्छे संस्कार देना माताओं की ही जिम्मेवारी है। माँ की लोरियों के द्वारा बच्चों की तोतली बोली में मिठास आती है। बच्चे मुद्र उन गीतों को दोहराने लगते हैं। उस उम्र में बच्चे बहुत जल्दी-जल्दी सीखते हैं और उनके जीवन पर उस समय के वातावरण का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है।

जिन गाँवों में स्त्रियाँ अनपढ़ हैं और परदे में रहती हैं, वहाँ स्त्री-पुरुष के बीच अनेक तरह की न होने लायक बातें होती रहती हैं। अच्छे सम्बन्धों का सिलसिला टूटने का असर हमारे विवाह-सम्बन्धों पर भी पड़ रहा है।

स्त्री-जाति के लिए दहेज की प्रथा से ज्यादा अपमानजनक रिवाज क्या हो सकता है? लेकिन आजकल के विवाह-सम्बन्धों की मुख्य चीज सन्तति, जापदाद और दहेज ही रह गया है। दुल्हिन का आदरभाव उसके शील और चरित्र के आधार पर नहीं होता, उसके मायके से मिले दहेज के अनुसार होता है। इससे पति-पत्नी के सम्बन्ध गुरू से ही भौतिक (यानि शारीरिक) बन जाते हैं।

श्री जयप्रकाश नारायणजी द्वारा स्थापित ग्राम-निर्माण मंडल, सर्वोदय आश्रम, सोखोदेवरा (गया) में इस वर्ष प्रति एकड़ ६० मन २० सेर मेक्सिकन प्रकार का लरमारोहो गेहूँ पैदा किया गया। वर्तमान बाजार-दर से गेहूँ और भूते की कीमत २,७२० रुपये हुई, जब कि कुल लागत-खर्च ७५० रुपये मात्र हुआ। इस प्रकार प्रति एकड़ १,९७० रुपये की बचत हुई।

यहाँ की भूमि जंगल के किनारे ऊँची जगह पर है। आज से १२ साल पूर्व यह जमीन अत्यधिक ऊँची-नीची और भ्रष्टोदार जंगल से ढँकी थी, बंजर थी, जिसे तोड़कर खेत बनाये गये और अब यहाँ खेती की जा रही है।

इस इलाके में खेती में अधिक-से-अधिक उत्पादन और अविन-से-अधिक गाँवों में पूंजी-निर्माण तथा किसानों एवं मजदूरों के बीच की खाई पाटने के तरीकों की खोज और प्रयोग हो रहे हैं। इस वर्ष ग्राम-निर्माण मंडल की योजना है कि कौआकोल प्रखण्ड में दो हजार किसानों के बीच विकास तरीके से खेती का विस्तार किया जाय। इसके लिए मंडल 'आवसफेम' नामक संस्था की सहायता से पानी, खाद, बीज, दवा और खेती की जानकारी देने की व्यवस्था कर रहा है। कौआकोल गया जिले का पहला प्रखण्डदान है। ग्राम-निर्माण मंडल का मुख्य कार्यालय सर्वोदय आश्रम, सोखोदेवरा इसी प्रखण्ड में है।

सर्वोदय आश्रम,
सोखोदेवरा, गया

—त्रिपुरारिदारण
मंत्री

ऐसी हालत में गाँव की स्त्रियों को जगकर पारिवारिक और राष्ट्रीय जीवन में उनके प्रेम और सौम्यता का सदुपयोग कैसे किया जाय, यह देश के भविष्य के लिए एक मुख्य समस्या है। बिहार में जिलादान और प्रान्तदान के बढ़ते हुए कदमों के साथ इस समस्या पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

—सरलादेवी

गाँव की बात

समस्याओं में उलझे गाँव

और

गरीबी में जकड़े ग्रामीण

[पाठकों को यह होगा कि चार लोकगायत्री बहन मध्य प्रदेश क विछड़े हुए बिचे—संघुआ, के गाँवों में परभाव कर रही हैं। विछड़े अरु में लोकगायत्रियों की शायरी में आने क्या था, 'सुमन्य आदिनामी क्षेत्र में।' हम अरु म पद—उस क्षेत्र की गरीबी का हाल और वसध की छे पैदाल लोगों को हित पुट शर्वें।—सं०]

● एक दिन रातले में देखा कि एक दस-बाराह सात का ककना रनडी का बोक उठकर बाहर जा और जा रहा था। साप में बहनें भी थी। बिचोने हाथ में दातौन तो बिसोने हाथ में पत्ता। एक छोटे लकड़े के कचे पर जगदा बजल का भार देकर हाथ में ले एन ने पूछा कि नहीं जा रहे हो ? इसको बेचने में बिलने ऐस मिलेने ? घर में बोई बचे नहीं है क्या ? जवाब मिला, ' बिलाओ नहीं हैं, मखिमसपुर बाहर जा रहे हैं, एक छपा या उगय हुप कम मिलेगा ।

● पुरण हो या रसी हो, कमीनभो में अपनी दस की बात बताने हमारे पास आते हैं। एक दिन चार-पाँच बहने मजदूरि आये और बहने लगी— क्या लोगो में येन का परिवार बजाने को बड़ा है लेकिन श्रम मुनेपा ? जमीन कौन देगा ? हम न काम मिलता है न धया। और अगर काम मिलता भी है तो पूरे मजदूरी बड़ी मिलतो है ? लाना नहीं, बपडा नहीं और रूने वा मदान नहीं। नियकी जमीन पर धरकनाकर रह रहे हैं, वे बहनें है कि घर उठाकर ले जा, नहीं तो लीउ दूँगा। इतने बाल-बच्चा के साथ बैसे जौयें ? हमको योली के धार दाने तो अच्छा है, मुद मरे भी दैने ?" बीलडे-बीलडे उन्की आँसो से आँसु बह निकल। बेचारी बेदना को दया न सनी।

● आय मभा के बाद पीछो में धाम-धरवार, धाम-धरवार की रागो चर्चा होनी है। स्वाभिन विमर्न, बीलडी हिस्ता

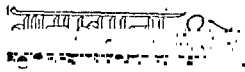
भूमिहीनो को देना, सामयमा बानाओ और गाँवकी मामूहिन यूँको अथवा राम कोठी बराना, इन चार काता म से पढ़नी दोता बातो की छोडकर राम कीठी बनाने में और धामसभा बनाने में धनो लोको का बजारो असाह देला जगा है। एते दम चरह गुप्ता-त्याग की बात को बूले देपरर अनेक बार लगता है कि अगर में लोग परिस्थिति के अनुकूल होकर नहीं चलेंगे तो दु सितो के आँसु बभौन-नभो अगर बन जायेंगे। फेद की जो आय नभो ठडे आँसु के रूप में बिरुली है, आगे कमी वह शोला बनकर भडक सकती है।

● एक दिन हम मिशन और विद्यार्थियो के आयह में एक प्राथमिक शाला देगने गयो। बच्चे उस शाला के बगीचे में काम करते है और उनके फल का उपभोग भी बच्चे ही करते है। जब धोडा ज्यादा पैदा होता है, तब उस पैस में गरीब बच्चो को मदद भी देते हैं। बच्चो में माण हूने काठ-लीन धुन की। अच्चा से पूछा, हमारे दस का नाम क्या है ? जवाब मिला मरगुजा। प्राथमिक भासा के बच्चे अपने देस का नाम बता नहीं सके। फिर बात बोल के दोरान पडोती देस का नाम भी पूछा गया। उस गाँव के पास 'कडी नाम का एक गाँव था। बच्चो में जवाब दिया पडोती देस का नाम बडी।"

● होली में वो दिन हमारा पढाव एक गाँव में था। शून धरान पीनेवाले लोग है होली के समय दादव पीकर लोग मनवाने होमे दमनिय बापतरता उस गाँव में पडाव रखने से हिनकिचा रहे थे। रोपिन हमारा पूर्ण विस्वास था और थडा भी कि पूरे गाँव के लोग बभो पैसा नहीं बर सकेते हैं। आविर उन दो बिनो में न तो हमे धारा पीकर मतधाने होने वाले लोग बिबाई दिने न अरथीक बरुबाब करेराते मिले। होलि में रग में गे हुए लोग भगवान का भजन-कौंठेन करने गाँव में भूमे, और थडा भक्ति से बाबिरो के चरणी में लवोर पढावर प्रथाम बिया।

—सहमी





लदनिया की ललकार

“ग्रामस्वराज्य को साकार करने के लिए विभिन्न प्रकार के संगठन खड़े करने होंगे। जो संगठन अभी हैं, उन्हें इस दिशा में मोड़ने की जरूरत है। युवक-संगठन सबल बनाने का मैंने बीडा उठाया है।” लदनिया (दरभंगा) के संगठक श्री पलटन आजाद ने मेरे कन्धे पर हाथ रखकर कहा। उनकी वाणी में आत्म-विश्वास के साथ ही एक ललकार भी थी।

इस प्रखण्ड की कुल आबादी सत्तर हजार है, और भूमि का कुल खन्वा उनसठ हजार एकड़ है, जिसमें से आधी भूमि प्रखण्ड के बाहरवालों की है। उद्योग की दृष्टि से बहुत पिछड़ा हुआ क्षेत्र है।

दरभंगा के जिलदान के बाद ही रही लगातार कोशिशों के कारण अब हर गाँव ग्रामदान की बुनियाद बन रहा है। पदयात्रा, गोष्ठी, नभा, शिविर आदि कार्यक्रमों के मार्फत स्थानीय नेतृत्व पैदा करने का प्रयत्न हो रहा है। लोकसक्ति प्रकट करने के लिए अप्रैल के अन्त में प्रखण्ड-मेजक आचार्य रामभूति के मार्गदर्शन में तीन दिनों का एक शिविर होने जा रहा है, जिसमें हर गाँव से दो-तीन नौजवान, ग्रामसभाओं के अध्यक्ष-मंश्री, अपना-अपना राशन लेकर शामिल होनेवाले हैं। आजादजी का कहना है कि “जब तक गाँव-गाँव में सेवा और समर्पण की भावना लेकर नौजवान नहीं निकलेंगे, तब तक ग्रामस्वराज्य की दिशा में कोई काम नहीं होगा। ग्रामदान आन्दोलन को जन-आन्दोलन बनाने का तरीका क्या होगा, यह प्रश्न बहुत महत्व का है।”

बिहार खादी ग्रामोद्योग संघ ने निश्चित ग्रामदान-आन्दोलन को जितना सहारा दिया है, उतना भारत के अन्य प्रांतों में किसी संस्था ने नहीं दिया है। यहाँ खादीवाले-सबौंदपवाले दोनों एक हो गये हैं।

“आप लोगों में बुराईयाँ हैं, मगर अन्य दलों या संस्थाओं से कम”, ऐसा जनता के मुँह से कम सुनते हैं। अब इस आन्दोलन को जनता अपने कन्धों पर उठा ले, यही कोशिश यहाँ चल रही है।

इस प्रखण्ड के गाँव-गाँव में ग्रामसभा का गठन कर सारा कार्य उन्हें सौंप दिया गया है। अच्छी ठोस ग्रामसभाएँ बननी हैं। सभी बगौं और जातियों में से अध्यक्ष-मंश्री आये हैं, जैसे पद्मा के श्री वंकरदास और चन्द्रोत्तर भा, नाथपट्टी के महम्मद ईशाक और सत्यनारायण सिंह, मिर्जापुर के हाफीज अहमद हुनीफ और रामचन्द्र।

अभी ग्रामदान-पुष्टि-अभियान जारी है, पंडित उग्रनाथजी के सुयोग्य नेतृत्व में लगभग तीस कार्यकर्ता प्रखंडभर में लगे हुए हैं। पुष्टि-कार्य ग्रामसभाओं द्वारा नहीं हो सका, यह हम लोगों की कमजोरी है। शिविर चलाकर ग्रामसभाओं की सेवक-समितियों को अधिक कुशल और क्षमतावान बनाने की कोशिश हो रही है।

धरमबन, भुतहा, चिकलोटवा, महथा हर जगह रात को हम कीर्तन-सभा कर गाँव के विभिन्न दलों और दिलों को जोड़ने का प्रयास करते आये। एक तरफ सिपप के नर्माजी हमें अपने घर से जाने नहीं दे रहे थे, और पुनः जाने की प्रतिज्ञा करवा कर छोड़े, तो दूसरी तरफ, चिकलोटवा में सनुआ सावर सो जाना पड़ा। धरमबन के सुखदेव मंडल हाथी पालते हैं, घर में दो चार बकैती हुई है, हमें शुक्र में टिकने नहीं दिया। लेकिन हमने उपवास किया, तो उन्होंने कहा “मैं भी नहीं लाऊँगा।” आखिर मैं उनका प्रेम उमड़ ही पड़ा।

—जगदीश थवानी

‘गाँव की बात’: वार्षिक बंधा : चार रुपये, एक प्रति : अठारह पैसे।

श्रीकृष्णदास मस्ट द्वारा सर्व-सेवा-संघ के लिए प्रकाशित पर्व स्वदेशवाल प्रेस, भाजन्दिर, धाराणसी में मुद्रित।

अरियल विहार आचार्यकुल : उद्गम एवं विकास

मुनिपादो विद्या ने वर्षांधार राष्ट्रपति
 ५० बारिह दूहेन अब गित्ते बाल आचार्य
 विनोबा ने मिले सब और एमसाबो के अति
 रित्त सिधा एव शिक्षा को समस्तबो पर
 भी चर्चा की। अन्धकारों की कर्मगत दुःख
 वसा से दुखो होकर राष्ट्रपति ने आचार्य
 विनोबा से इष्ट विद्या ने मार्गदर्शन की अपेक्षा
 की। विनोबाजी ने इन सर्वों स्वीकार
 किया। विहार के तत्कालीन शिक्षा-मन्त्री
 श्री कर्पूरी ठाकुर ने दशको मुखभार मान विगत
 ७-८ दिसम्बर '६७ को पूरा रोड में विनोबाजी
 के उपकुलातिथि, प्राचार्यों एव प्रमुख सिधा
 विनोबाजी को एक विद्या परिषद् का आयोजन
 किया। केन्द्रीय शिक्षा-मन्त्री श्री विष्णु सेन
 ने परिषद् का बजटदन किया। परिषद् को
 श्री अमरनाथ नारायण एव श्री धीरेन्द्र गजु-
 मयार का भी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

दर्शन होता चाहिए, लेकिन आज ये 'पाठे-य'
 सोचे हुए है, और एक सामान्य नोकर की
 हैविषय में आ गये है। यह शिक्षा जगत् का
 दुर्भाग्य है कि जो स्वतन्त्रता व्याप विभाषा का
 है, जगती भी स्वतन्त्रता सिधा विभाषा को
 नहीं है। भाषा विभाषा की सरकार से ऊपर
 एक स्वतन्त्र हल्की है। यह सरकार के सिद्धांत
 भी फंसला दे सकती है और उस पैमाने का
 अवल उने काना पड़ता है। यह भाषा विभाषा
 का प्रतिष्ठा भाषा दखन है। पचाति उनको
 तनमशद सरकार को मोग म मिलतो है।
 लेकिन वे सरकार व मान्य नहीं है। वेते ही
 शिक्षा को वा सरकार का आर से तनकहात
 मचे ही मिले, गंगाक सरकार लोपो से ही
 लकर देतो है, लेकिन आजकी तनक
 हस्ती होयो न हिए और भाष दश के माग
 दर्शन है, ऐसा इनात चाहिए।

शिक्षकों ने गुण

शिक्षकों के जीवन में शांती की प्रथा, सब
 का शील और भाता की बरखा का हस्तुट
 चाहिए। विनोबा ने हृदय में विद्यावियों के
 प्रति प्रेम, अनुकरण एव शास्त्र-व के साथ-साथ
 मुनियों की तरह निरन्तर अध्ययन अप्यायन
 अपेक्षित है। चाहे शल्य की छात्रता हो या
 मन धार्ति की, चाहे इन्द्रिय-दमन की साधना
 हो या अतिथि-अन्तर की, जीवन की हर
 साधना के साथ स्वाध्याय एव प्रवचन का
 योग आवश्यक है। 'शल्य व स्वाध्याय प्र-
 वचन व। समस्त स्वाध्याय प्रवचनो व।
 दमस्त स्वाध्याय प्रवचनो व। अतिथिप्र-
 स्वाध्याय प्रवचनो व। उष्ट उकट शान
 पितामा के साथ शिक्षाको ने हृदय में नरणा
 की अष्ट धारा बहती रहे, अन्धकार जग एव
 विद्या लुप्त रहेगी। यही कारण है कि परम
 तत्त्वज्ञानो राक्षसाचार्य ने अपवाय से प्रार्थना
 की की कि 'भूत दया का विस्तार हो।

शुक्र की हंसियन

विनोबाजी ने शिक्षाको वा उनके कर्तव्य
 के प्रति उद्बोधन करते हुए उनको स्वतंत्र
 बनित करके देने के लिए हृदयभंग्य होने की
 प्रेरणा दी। उन्होंने बताया कि शिक्षा-शास्त्र
 पर सख्त भाषा में जितने श्रम है उत उन सब
 में पियरेमिड रूप है पत्रजलि का 'योग जालन।
 उसमें सिधा के विषय में मानव और अति
 मानव, दोनों हीटि से विचार किया गया है।
 'शास्त्रोन्निबन्धी' सोचना सिधा के लिए
 बहुत जरूरी होता है। बुद्धियों के मूलरूल
 बंधे बरता आब और बुद्धियों से परे बंधे
 हुआ भाष, वे दोनों शानें उसमें बताया है।
 परमात्मा की पिता एव माता के रूप में दो
 देखा ही बताता है, परन्तु पत्रजलि में परमात्मा
 की बुझ के रूप में देखा है। परमात्मा परम
 शुद्ध है। वह सिधा देता है। हमको उधका
 अनुकरण करते सोचना है, पिताता है। उष्ट
 बध्पत्त तदर्थ होकर सिधाका है। वह कोई
 भोज छाटा नहीं। आप धारे लोच शुक्र की
 हंसियन रखते हैं। यह बहुत बड़ी बात है।
 शिक्षा-विभाषा की स्वाध्यायन।
 शिक्षकों के हाथ में धारे देव का भाग-

राजनीति में मुक्त सोचनीति में श्रुत

परन्तु शिक्षा विभाषा की स्वाध्यायन सच्चे
 अर्थ में अवलम्ब एव नाबन्धित बनने के लिए
 यह आवश्यक है कि शिक्षा सत्ता के पोषेन
 भागकर स्वय बननी स्वतंत्र शक्ति का विकास
 करे। इसलिए शिक्षाको को वग एव मेरमाव
 सत्ता एव सफल की बहुमुक्ति राजनीति से
 मुक्त होकर, सर्वोर्ष गतवादी से ऊपर उठकर
 विस्वव्यापक मानवीय राजनीति तथा जन-
 शक्ति पर आधारित लोकनीति को अपनाता
 होना। राजनीति से अलग हुए बिना राज
 नीति पर कसर नहीं पड़ेगा। पहले राजनीति
 के अलग होना पड़ेगा। आज स्थिति ऐसी है
 कि राजनीति किछोने कल्पना ही नहीं की कि
 'पाठे-यातिविषय' के बिना राजनीति हा
 सकती है।

'अतिथि मनय विष्णु भूत दया विस्तार

सद्यः साधना ' बुद्ध के हृदय में भी खड़ी
 कथना थी। इसी सदर्भ में विनोबाजी ने
 शिक्षाको का ध्यान आश्रय में व्याप्त दुःख-
 क्षात्रिष, कलह और पूट तथा शिष्य प्रति
 बारी हुई शिक्षा की ओर खींचे हुए उन्हें
 इसके लिए अपना पुरस्कार और परामय प्रक-
 करने की प्रति किया। माधर्न अर्चना का
 शिक्षको से बनाया, ऐसा कहा जाता है।
 भारत को तो आचार्यों ने ही बचाया है।
 इसलिए शिक्षाको को विद्यालयों के बहू-
 सभाय के प्रति धरना क्षात्रिष बरचना
 चाहिए। इसीको विनोबाजी ने 'विष्णु व
 अतिथि शानन

आज 'हेलोगेटेड रिमोन्डेडो' है 'पाठेधि
 शेटिन रिमोन्डेडो' नहीं है। अगर लिखक
 ऐसा मानते हैं कि हमने खुल-बाजेबा में पडा
 रिया, अब ह्यापन मोर्द कर्तव्य नहीं है तो
 चलेगा नहीं। शिक्षाको का बनता से सगर्क
 होना चाहिए। जनता के साथ संपर्क न हो,
 तो राजनीति पर कसर नहीं पड़ेगा।

पूजा राह ग विनोबाजी बुवाकगु
 मये। वही शिक्षा विभाषा का उ-
 दुष्प्रति एवं प्रमुख प्रवर्धन। इ वीर लि-
 विद्यालयों के बहू-सभाय के प्रति धरना
 हलमोप का बहू-सभाय के प्रति धरना
 बहू, 'बहू-सभाय के प्रति धरना'
 के उर्ध्व में बहू-सभाय के प्रति धरना
 बहू-सभाय के प्रति धरना

काम करती है तो वह आचार्यों एवं शिक्षकों के लिए साक्षर है। आचार्य, लोगों को विचार समझते हैं, विचार-परिवर्तन करते हैं, हृदय-परिवर्तन करते हैं और जीवन-परिवर्तन को दिगा दिखाते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन करनेवाली शिक्षकों की जमात पुलिस-विभाग को आवश्यकता भारत में रहने दे, यही साक्षर है। भारत का नागरिक शान्ति से चलता है। अपने हक और कर्तव्यों पर जागरूक है। जो कुछ भी करता है, समझ-बूझकर करता है और पुलिस की जरूरत रहती नहीं। यदि सभाज में कही बसाति हुई तो शिक्षक अपने विचार एवं नैतिक शक्ति द्वारा बसाति-धमन करें, ताकि सरकार की दंड-शक्ति को अशान्ति-धमन के लिए भोका हो न मिले। इस प्रकार भारत पर मैं धमन का भ्रमण ही न आये, सिर्फ धमन से काम हो। उसके लिए शिक्षकों को अशान्ति-धमन के लिए कुतर्कत्व होना चाहिए।

अध्यापकों का संकल्प-पत्र

अध्यापकों को सर्वप्रथम अपनी स्वतन्त्र हस्ती का भान होना चाहिए और तदर्थ होकर देश की समस्याओं का मार्गदर्शन करना चाहिए। उन्हें यह धोषित कर देना होगा कि शिक्षक किसी दल-विशेष के बन्दी नहीं, किसी राजनीतिक पक्ष की कठपुतली नहीं और किसी शक्ता के आश्रयी नहीं। इन्हीं उदार भावनाओं में प्रेरित होकर मुजफ्फरपुर के अध्यापकों ने एक संकल्प-पत्र बनाया एवं लगभग १५० अध्यापकों ने निष्ठापत्र पर हस्ताक्षर किये। पटना में भी इस निष्ठापत्र का विश्वविद्यालय के शिक्षाविदों ने स्वागत एवं समर्थन किया। फिर विनोबाजी मुंजेर कालेज में दस दिनों तक शिक्षकों के बीच रहे तो वहाँ के अध्यापकों ने अपने लिए एक विस्तृत कार्यक्रम तथा संगठन की रूपरेखा भी बनायी। वहाँ यह भी तय हुआ कि हर जिला इस संगठन की इकाई होगी, जिसमें प्राइमरी से लेकर विश्वविद्यालय-स्तर तक के सभी शिक्षक शामिल रहेंगे। हाँ, विश्वविद्यालय की विशेष समस्याओं पर विचार करने के लिए विश्वविद्यालय-स्तर पर भी इसकी एक कड़ी रहेगी।

आचार्यकुल की स्थापना

६-७ मार्च को जब विनोबाजी भांगलपुर पधारे तो विद्वानों के साथ इसकी संगठन एवं कार्यक्रमों के विषय में विस्तृत चर्चा हुई। वहीं अखिल बिहार आचार्यकुल नाम प्रकट हुआ। ८ मार्च को प्राचीन विक्रमशिला के समीप कहेते मुनि के नाम से प्रसिद्ध नहलगौरव में "आचार्यकुल" की स्थापना की घोषणा विनोबाजी ने की। इस प्रकार शिक्षकों के जीवन-निर्माण की दिशा में एक नया आरोहण आरम्भ हुआ।

निवेदन

शिक्षकों को नैतिक प्रतिष्ठा देने और बड़े एवं उनकी सामाजिक हैसियत का उन्नयन हो। न्याय-विभाग की भांति शिक्षा-विभाग की स्वायत्तता सर्वमान्य हो। हिंसा-शक्ति की विरोधी और दंड-शक्ति से मिला लोक-शक्ति का निर्माण हो। विश्व-शांति के लिए आवश्यक वृत्ति एवं दृष्टिकोण बने तथा शिक्षा में अहिंसक प्रान्ति का शीघ्रगण हो, ऐसे कुछ उद्देश्यों से आचार्यकुल का प्रारम्भ हुआ है। शिक्षकों से निवेदन है कि वे इन पर गहराई से विचार करें। गुप्त की आवश्यकता और अपने महत्ता महसूस कर अपनी बनें। अध्यापकों का संकल्प-पत्र भरें और साथ बैठ कर अपने कार्यक्रम तथा सयोजन के बारे में सोचकर निर्णय करें।

—कृष्णराज मेहता

विनोबा-निवास, बिहार

ग्रामदान-प्रखण्डदान	
(३ अप्रैल '६८ तक)	
भारत में	
ग्रामदान :	५६,२१४
प्रखण्डदान :	२८७
जिलादान :	२
विद्यार में	
ग्रामदान :	२०,२७६
प्रखण्डदान :	१४६

अध्यापकों का संकल्प-पत्र

प्राश्नकथन :

बाज जब कि हमारे देश का वातावरण भिन्न-भिन्न प्रकार की हिंसात्मक घटनाओं से विषाक्त और अशान्ति हो रहा है तथा जिनका दपन करने के लिए पुलिस द्वारा विश्वविद्यालयों के अन्दर तक का अतिक्रमण होने लगा है, हम शिक्षकों का यह प्राथमिक कर्तव्य हो गया है कि हम स्वयं अपनी शक्ति से उन सारे उपद्रवों का धमन करें और अपने परिवार में शांति को स्थायी रूप में सुनिश्चित करें।

इससे भी अधिक हम अपने विश्व-विद्यालय के अर्थात् में ही अपनी समग्र शक्ति को निरधीन नहीं समझेंगे, बल्कि सारे देश को ही विश्वविद्यालय का प्रदत्त और विराट् प्राण समझेंगे और उसमें किसी भी प्रकार का हिंसात्मक विरोध हो और पुलिस उपका दमन करने आये, इसका कभी भ्रमण ही न आने देंगे। हमारी धमन-शक्ति सर्वोपरि हो।

यो तो न्याय-विभाग की भांति शिक्षा-विभाग की स्वायत्तता भी सर्वमान्य है, किन्तु उसे सच्चे अर्थ में उपलब्ध एवं कार्यान्वित करने के लिए यह आवश्यक है कि शिक्षा सत्ता के पीछे न भागकर स्वयं अपनी धमन शक्ति का विकास करें।

× × ×

उपरिनिर्दिष्ट प्राश्नकथन में मे सहमत हूँ और संकल्प करता हूँ कि :

[क] मैं किसी भी राजनीतिक पक्ष का सदस्य न बनूँगा और न चुनावों में किसी पक्ष-विशेष का प्रचार ही करूँगा।

[ख] मुझे राज्य की शिक्षा का कार्य-क्षेत्र मानकर विचार द्वारा अशान्ति के धमन का प्रयास करूँगा, जिससे अशान्ति के दमन के लिए दंड-शक्ति का उपयोग न करना पड़े।

पूरा नाम.....
 घर का पता.....
 संस्था का पता.....
 अध्यापन का विषय.....
 हस्ताक्षर.....
 तिथि.....

भूदान-पत्र : शुक्रवार, १९ अप्रैल, '६८

पूरुगिया की उपलब्धि

और

हमारा दायित्व

१ जून '६६ को तानीपतुर में ही जब हजारीबाग जिले के प्रतापपुर प्रखण्ड का पहला दान विनोबा को समर्पित किया गया था, तो विनोबा ने कहा था, "प्रखण्डदान की मुख्यता हो गयी, अब तो यहाँ 'भेड़ियाघसान' काम होना चाहिए।" और मधुसूदन विनोबा को बात को सार्थक कर दिखाया बिहार के लोगों ने।

उसके बाद हुआ था—दरभंगा का जिलादान। उस समय विनोबा की माँग थी कि उत्तर बिहार के लगभग सवा करोड़ की आबादीवाला पूरा क्षेत्र ग्रामदान में आवे, 'सर्वोदय-क्षेत्र' बने। और, जब जब कि पूरिया का जिलादान १८ अप्रैल, '६८ को समर्पित किया जा रहा है, उस समय विनोबा की माँग बढ़ गयी है, 'बिहारदान' तक। सूफान से महासूफान का लक्ष्य कम चल रहा है। विनोबा की माँगें बढ़ती जा रही है, बिहार के लोग उसे बढ़ाते जा रहे हैं। जैसे-जैसे सफलताओं की मजिर्तें बंध रही हैं, होसले का आवेग बढ़ता जा रहा है। साप ही पुष्पाय के लिए चुनौतियाँ भी बढ़ती जा रही हैं, क्षाति की सामयानाओं का वित्तिज सप्टर होता जा रहा है।

सम्भव है पूरिया की पूर्णता पर विनोबा कुछ और माँग पैदा करें। या कम-से-कम 'भेड़ियाघसान जिलादान' की ही माँग करें। 'के बाद' का प्रत्य 'बाद बालो' के लिए धोड़कर विनोबा ने क्षाति की 'क्षेत्र' देल और बुनिया के सामने रख दी, तथा खुद इस क्रम में प्रवर्तन के प्रतीक बन गये। तथम पीड़ी और आगे खानेवाली नयी पीड़ी हल करे उन सवालो को। सवाल है, और उन्हे हल करने के फार्मुले है। चाहिए, बस, अन्याय और सतत्य की लगन !

कहाँ से आवेगी यह सगन ? तथम पीड़ी और आगे खानेवाली पीड़ी का रख तो किसी और ही दिया की खोर है। मन में था कि बिहार के ग्रामदान आन्दोलन की रीठ बनकर काम करनेवाले बुजुर्ग श्री वैशनाथ बाबू के सामने यही सब मन की उलमनें पैदा पड़ेगी। लेकिन ठाकुरसज में जब उनसे चर्चा के लिए सामने-सामने बैठा तो लगा कि 'के बाद' की बातें और 'मन की उलमनें' हम बुजुर्गों के लिए चुनौती होनी चाहिए, और मार्ग ढूँढने की जिम्मेदारी हमारी होनी चाहिए। सवाली और उलमने को बुजुर्गों के सामने रख देने मात्र से हम इस जिम्मेदारी से मुक्त नहीं हो जाते।

इसलिए उन बातों को मन के अन्दर ही रखने दिया और हमारी शतकीत पूरिया की पूर्णता के अनुभवों तक की सीमा में ही सिमट भायी।

श्री वैशनाथ बाबू ने जिले के काम को यत्नुरलगा-प्रतिपूरता को चर्चा करते हुए कहा, "पूरिया भदर पूर्व, झुलानन्दनगर, बनमन्गी, अमदाबाद और सन्धिहारी प्रखण्ड सामाजिक चेतना की दृष्टि से जिले के प्रमुख प्रखण्ड हैं, और हमारे काम के लिए सबसे अनुरल है। इलके को नेतृत्व देनेवाले प्राय सभी गाँव ग्रामदान में बाँ चुके हैं। अमदाबाद में तो ३२ हजारों ग्रामदान में आवे हैं। इस इलाके के १८७ गाँवों के गाजग पुष्टि हेतु दाखिल हो चुके हैं। प्राति-क्षय में स्थानीय कार्यकर्ताओं—मुखसलानो का भी, सक्रिय सहयोग मिला है। सबसे कटिन प्रखण्ड साबिब हुआ है 'जोकीहाट'। सन् '६६ में जब विनोबाजी वाये थे तो पूरिया के सभी प्रखण्डों में ग्रामदान हुए थे, सिर्फ जोकीहाट में नहीं; और जब जब सन् '६८ में विनोबाजी आवे तो जिले के सभी प्रखण्डों का दान हो चुका था, सिर्फ जोकीहाट का नहीं।

'पूरिया का पहला प्रखण्डदान १ जुलाई '६६ को हुआ था और प्राति-अभियान पूर्ण हो

रहा है १८ अप्रैल '६८ को। अभिपान के क्रम में लगभग १००' से २०० कार्यकर्ता लगे। स्थानीय लोगों में मुख्य रूप से निरानो का सहयोग मिला। प्राति-अभियान के लिए सर्वे की व्यवस्था बाहरी चन्ने आदि से लगभग एक लाख ८० अरु करती पयो, लेकिन स्थानीय सहयोग इसके अधिक भाषा में ही मिला।

"स्थानीय सहयोग में स्यास जान यह रही कि अधिकतर पनी लोग योजना और विचार-पूर्वक शामिल नहीं हुए। जमीन के सम्बन्ध में सपर की कुछ विसिष्ट परिस्थितियाँ हैं, जिनमें 'बासा'वाये न्हे भूमि-मालिकों की बड़ी सख्या का होना मुख्य है। बंटांरासे के सपन पर साम्यवादी भयपं भी काफी सक्रिय रहा है।"

इसी चर्चा में पूरा समय गुजर गया और शेष प्रवर्तन की चर्चा के लिए फिर कभी का वादा लेकर हम अलग हुए।

१८ अप्रैल - भूमि-आन्ति दिवस की ऐतिहासिक उपलक्ष्यो में पूरिया की एक और नयी जुग गयी है। पूरिया की पूर्णता पूरे ग्राम-स्वराज्य आन्दोलन को पूर्णता की मजिल तक पहुँचाने की प्रेरणा देगा इसमें कोई संक नहीं। —राही

शोक-समाचार

● छारा, ११ अप्रैल। श्री ब्रज शर्मा के पत्र से ज्ञात हुआ है कि छारन जिले के एक कार्यकर्ता श्री बंजू शर्मा ११ अप्रैल '६८ को पेट्टर के कारण देहासमान हो गया। श्री बंजू शर्मा के देहासमान के कारण एक निष्ठावान कार्यकर्ता छावी को अपूरणीय क्षाति हुई है।

इस अंक में

स्वर्गीय डा० किंग !
अखिल बिहार भाषाचर्यकुल
पूरिया की उपलब्धि
गाँव की बात : परिशिष्ट

सर्वोदय-क्रांति का संदर्भ : 'में' और 'वाले' की भूमिका

श्री धीरेन्द्र भाई से प्रश्नोत्तर

प्रश्न : सर्वोदय में जिस तरह के लोग मिलते हैं, देखकर दंग रह जाना पड़ता है ! मुझे ही कई सज्जन चकमा दे गये हैं। ये बातें नयी नहीं हैं, हृदयरे समाज में होती ही रहती हैं। मैं स्वयं ही एक अस्पष्ट घोषण को नीचे पर अनेक लोगों के साथ खड़ा हुआ आराम से रह रहा हूँ। लेकिन ये ही सब बातें जब सर्वोदयवालों में भी देखने को मिलनी हैं तो दंग होना स्वाभाविक ही है।

एक छोटी-सी बात याद आती है। चर्हों दिनों अमेरिका ने हनीई और उसके आस-पास के इलाकों में बमबारी शुरू की थी। इस लड़ाई के प्रति मेरे मन में आरम्भ से ही शोक था।जो अज्ञानक मिले तो किसी चर्चा के दौरान मैंने उनसे कहा, "अमेरिका वियतनाम की पीडा को बढाता ही जा रहा है। अब उसने अमुक-अमुक जगह भी बमबारी शुरू कर दी है।" इसके जवाब में श्री..... जी ने बड़े तपक से तथा अत्यन्त निलिप्त भाव से कहा— "अमेरिका तो सैनिक बख्शों पर बमबारी कर रहा है। इसलिए नये इलाकों की बमबारी में कोई नयी बात नहीं है।" आसय उनका यही लगा कि जो हो रहा है

वह ठीक हो रहा है। आगे कोई चर्चा बहाने की हिम्मत मेरी नहीं हुई। अन्तर से मेरी तबियत बुझ-सो गयी। खाली हुआ कि इस युग के इस व्यापक और भयानक संगठित अत्याचार के प्रति यदि सर्वोदय-दिग्गजों की यही भावना है तो सर्वोदय के (यानी इन लोगों के) साम्प्रदाय से इस देश का नल्पाण असम्भव है।"

उत्तर : सर्वोदय के लिए तुम्हारी परेशानी भाळूम हुई। वियतनाम या अन्य ऐसे ही प्रदन पर भिन्न-भिन्न लोगों की अपने अध्ययन, चिन्तन और विचार के अनुसार भिन्न-भिन्न रायों का होना स्वाभाविक है। कोई व्यक्ति हमसे भिन्न राय रखता है और वह सर्वोदय-विचार के अनुसार कुछ बुनियादी कार्यक्रमों में लगा है तो सर्वोदय से कुछ मला होना असम्भव है, ऐसा नहीं मानना चाहिए। अगर साम्यवाद की स्थापना साम्यवादीयों द्वारा होगी, 'कासिगम' पास्टिस्टों द्वारा आयगा, यानी कोई भी विशिष्ट 'बाद' उसी 'वादी' द्वारा संकल ही संवेगा, तो समझना चाहिए कि सर्वोदय की सफलता सर्व द्वारा ही सम्भव हो सकेगी। और सर्व में सब प्रकार

के विचारवाले आयोग चाहें वे परस्पर-विरोधी विचारवाले ही क्यों न हों। तुम्हारे दूसरे व्यापारी साथी तुमको भी तो सर्वोदय बखाल ही समझते हैं। वादमूलक आन्दोलन का सरकार हम सब लोगों में है। इसीलिए सर्वोदय की यह बात पचने में कठिन होती है।

एक और बात समझ लेनी चाहिए कि "सर्वोदय में" या "सर्वोदय वाले" की संज्ञा अर्थहीन है। वस्तुतः मानव समाज के लिए "में" और "वाले", ये दो शब्द बहुत बड़े अविभाज्य के रूप में हैं। सारे भगड़े और अनेक प्रकार की विश्वनामों की जब वे ही दो शब्द हैं। अगर इतिहास के पन्नों को देखा जाय और उन पर थोड़ी गहराई से विचार किया जाय तो स्पष्ट समझ में आयगा कि मानव-समाज में विजयी क्रान्तियाँ हुई हैं, उन सबको 'बिट्टे' करनेवाले ये ही "में" और "वाले" रहे हैं।

यही कारण है कि विनोबा ने आरम्भ से ही किसी संस्था, दल और नेता को अपना आधार नहीं बनाया। उन्होंने एक विचार का उद्घोष करके चलना शुरू किया और देश के हर व्यक्ति और संस्थाओं को इसमें शामिल होने के लिए आह्वान किया। आज ये खादी तथा अन्य कार्यक्रमों की लेकर विजयी संस्थाएँ बनी हैं, उन सबको आह्वान करते हैं, हर राजकीय दलों से बहते हैं, पचायत के लोगों से बहते हैं, राजकीय वर्ग-चारियों से भी बहते हैं कि आप इस काम को उठाइये।

जब कोई भी क्रान्ति विविष्ट नेता के नेतृत्व से तथा किसी एक दल के समुच्चय से चलती है तो विद्य अनुपात में उस क्रान्ति की उपलब्धि होती है, उसी अनुपात में वह उपलब्धि उस नेता और दल के लिए निहित स्वार्थ 'वेस्टेड इण्टरेस्ट' की चीज बन जाती है। फिर क्रान्ति की मूलधार छूट जाती है, और उपलब्धियों को अपने हाथ में रखने की प्रिक बड़ जाती है। सर्वोदय की क्रान्ति जब सर्व की है, तो इस क्रान्ति के संदर्भ में "में" और "वाले" की छिट्टि की बहरी कोई गुंजायश नहीं है। [प्रेषक : नरेन्द्र]

कश्मीर में भी ग्रामदान की ज्योति जली

मैं अभी स्टाक लेने धीनपर गया था। १०-४-६५ को वहाँ शुक्र ग्राम में जाने का अवसर मिला। वहाँ के मुख्य-मुख्य लोगों को दृष्टा किया और उनके सामने विनोबाजी द्वारा बताये गये ग्रामदान के विचार को रखा। वहाँ के मुख्य-मुख्य ग्राम-निवासियों ने नीचे लिखी घोषणा की है :

अनाथ विनोबा भावे साहबजी,

नमस्कार ! हम बासीन्दीग्राम शुक्र, तहसील पुलवामा-कुलअफराद (११६ पर) तहरीर करके लिख दे रहे हैं और अहद करते हैं कि हम विनोबा भावेजी साहब के ४ बगूलों को, जो कि हमने सुने हैं अमलन दिशा के रहेंगे, जिसमें हमारा ही पायदा है।

बासीन्दीग्राम शुक्र बजरिमे, गुजाम मुद्गमद भट्ट
कम्बरदार-शुक्र, पो० तहसील-पुलवामा, पामपुर (कश्मीर)

उपरोक्त घोषणा गांधी आश्रम के साथी श्री मोहनलाल बरसी व श्री नन्दलाल रैना के सम्मुख सभी निवासियों ने डुहरायी। घर-घर जाकर हराक्षर लेने का अभियान जारी है। हर घर से ग्रामकोष के लिए १०० नया पैसा प्रतीक के रूप में इकट्ठा कर रहे हैं। हर घर में १ मोटर खादी लेने का वायदा भी हुआ है। —शिवप्रसाद गुप्त

आचार्यकुल की आत्मज्योति प्रकट हो • विनोवा

२० साल पहले थापू की मृत्यु के बाद मुझे अपना एकाग्र-साधना का स्थान छोड़कर लोगों में जाना पड़ा और तब से आज तक बीस साल हुए, सतत आत्मिक्रम जारी रहा। भ्रमण के नाम से आन्दोलन शुरू हुआ, जिसका आखिरी दौर अभी चल रहा है। विहारदान का संकलन हुआ है। उसमें यहाँ के सब नेताओं ने सम्मिलित होकर निर्णय लिया कि २ अक्टूबर १९६८ तक विहारदान करना है। अन्नदाता-नगं की भारत में अत्यन्त उपेक्षा हो रही है। उनको ऊपर उठाने के लिए कोशिश चल रही है, अन्न उत्पादन करनेवालों के लिए कोशिश चल रही है।

लेकिन विद्वानों में प्रवेश करने का मोका अभी तक मिला नहीं था। वह पूजा-वात्परिस में मिला। उनसे परिचय हुआ। हमको उससे बहुत खुशी हुई और अनुभव आया कि ये सारे विद्वान्, आचार्य, प्राचार्य—जिनसे मिलने का मौका मिला था उनको मैं बात कर रहा हूँ—बहुत उत्सुक है आत्मदर्शन के लिए, अपने स्वरूप का दर्शन करने के लिए। सुलसीदास ने जागृति का एक पत्र लिखा है :

जागु, जागु, जीव जड़ !

ओहे जग-जागिनी

देह-नीह-नेह-जानि

जैसे धन-दागिनी । ('विनयाजलि' १६)
वेद कहते हैं, ओर बुद्ध कहते हैं एक ही बात कि स्वप्न के दोष के लिए ओर स्वप्न के लिए सर्वोत्तम औषध जागृति ही है, जागृति ही सर्वोत्तम उपाय है। न जागते हुए स्वप्न के अन्दर जितने उपचार किये जायेंगे, उतनी स्वप्न-मूर्च्छ लम्बी होती जायेंगी। इसलिए जागृति ही सर्वोत्तम उपाय है। हमें बहुत खुशी है कि विद्वानों की जमात में यह भाव अब आने लगा है।

मनुष्य के मन में सशय तो होते ही हैं। उसके लिए किसीको दोष देना ठीक नहीं। धीरे-धीरे दाकाओं का निरसन होता है। एक नया आन्दोलन शुरू हुआ है तो उसमें दाकाएँ उलान होना स्वाभाविक है। धीरे-धीरे वे

दूर होती जायेंगी। प्रयत्न हो रहा है कि अखिल विहार 'आचार्यकुल' की स्थापना हो। एक बड़ा आरोग्य-कार्य अध्यापकों के द्वारा हो रहा है। 'कुल' शब्द परिवारवाचक है। हम सारे आचार्यों वा एक ही परिवार हैं। ज्ञान की उपासना करना, वित्तमुक्ति के लिए प्रयत्न करना, विद्यार्थियों को वास्तव्य-भाव से सतत समझाने का प्रयत्न करते रहना, सारे समाज के सामने जो समस्याएँ आयेंगी, उन पर तटस्थ भाव से चिन्तन करके अपना निर्णय समाज के सामने रखना और समाज को भागदरशन देना, हत्यादि काम करते वा रहें हैं। 'शिक्षक सारे', इसमें परिवार की भावना है।

'कुल' शब्द परिवारवाचक है। उसको जलवा भरवी के साथ उसका मेल बैठता है। ऐसे कई शब्द हैं, जो सस्कृत होते हुए भी अरबी से मिलते हैं। कुल यानी कुल—

अन्नदाता वर्ग की भारत में अत्यन्त उपेक्षा : 'उनको ऊपर उठाने की कोशिश ... जागृति : सर्वोत्तम औषध और उपाय ... अखिल विहार आचार्यकुल : एक बड़ा आरोग्य-कार्य अत्यन्त ही जागृति और हैमियत के लिए ... निद्रायात्मक बुद्धि : कर्मयोगी की पहचान ...

कुल के कुल, ओर कुल मानो परिवार। आचार्यों का परिवार और कुल-ने-कुल आचार्य। परिवार में उच्च-नीच और छोटे-बड़े को भावना नहीं होती। जैसे छोटे-बड़े सारे आचार्यों आदरणीय हैं। सबका सम्मिलित प्रयत्न होगा, तब यह गोचर उठेगा। आज जो समस्याएँ हैं, उनसे बलग रहने से काम होगा नहीं। गीतम बुद्ध ने कहा है—नर्बल-सिखर पर बैठा हुआ आरभी भूमि पर नया चल रहा है, यह देखना रहा है और मादरेव देता है। ओर 'उलकुल टोक ऐषो ही माया वेद में आयी है : जा त्वंतां के सिखर पर चढ़ गये हैं, वे सेवकों की सफल-शक्ति बढ़ाते रहते हैं, जिनकी प्रेरणा क्षीण हो गयी है, उनको प्रेरणा बढ़ाते रहते हैं। स्वयं आचरण करने की दृष्टि से ऊपर चढ़ने की शक्ति हुई, लेकिन लोगों के हजर पर बाहर खोचते हैं और लोगों की ऊपर चढ़ाने की कोशिश करते हैं।

यह आचार्यकुल की स्थापना हो रही है, यह अपने अधिकार प्राप्त करने के लिए नहीं है। उसके लिए संघ बगैर होते हैं, उससे हमारा विरोध नहीं है; लेकिन यह अपने कर्तव्य की जागृति के लिए है। और उससे सारा शिक्षक-वर्गमात्र यानी हैमियत पायेगा। महाभारत में वर्णन है : एक दया धर्मराज के मुख से सदृश्य बचन निकला। परिणाम यह हुआ कि उनका रथ, जो भूमि से चार शयुल ऊपर चलता था, वह एश्वम नीचे गिर गया और घरातल पर आ गया। तो शिक्षकों का मनोरथ भूमि से ऊपर था, लेकिन आज नीचे गिर गया है और सामान्य घरातल पर आ गया है। लेकिन यह मान मनुष्य को जित दल हुआ, उही क्षण वह मुक्त हो गया। मुक्ति का संकलन अर्थ है अपने को पहचानना। जिनसे आत्मा को जाना, वह नया मानव बना। दृष्टि आ गयी, तो मूर्च्छ का रूप बदला। 'यथा दृष्टिः तथा गृहिः'। तो यह जो नया रूप आ

रहा है, मुझे आशा है, उसमें वे अनेक समस्याओं का हल निजलेंगा। बीच-बीच में हम मिलेंगे, साराएँ दूर करेंगे। लेकिन दाकाओं के बावजूद दृढ़ निश्चय हा जाय। गोता ने कहा है : 'बहुपाशा सनसारन बुद्ध-बोधव्यवसायिनाम्' (२.५१) जिसका निश्चय नहीं होगा, उसको बुद्धिवा क्षत्रं होनी है और जो एक निश्चय पर एकाग्र होते हैं वे कर्मयोगी होते हैं। यह तरह गोता ने निश्चयवाचक बुद्धि पर जोर दिया है। और हमारी निश्चयवाचक बुद्धि ही, ऐसा निश्चय करेंगे तो हम तीर्थगं धनित्र लक्ष्मी करने में समर्थ होंगे। तीर्थगं धनित्र नोनघी ?

बहु ही दृष्टि-वाचि की विशेषी, दण-पुक्ति से भिन्न साधकति। लोगों ने आधी धम्मति से व्यवस्था के लिए आधुनी और पर जो अधिकार दिया है, उसका नाम

दगमणि है। यह लीटरी एजि दग-मणि को विरोधी नहीं, खुदकुल को नहीं, बिल है और दूसरी दगि—द्विजा दगि—को विरोधी है। ऐसी लीटरी एजि मारी करने को नोबिता हो रही है। और एजिदिय भाग उन लोगों का आधादन रिवाज आ रहा है। यह शुभ वष है।

ये प्रकाश के मार्ग है। एक ही धुआं धारा—लक्ष्मी वर को धार पर चलने जायें। इति मार्ग है। दूसरा मार्ग विद्यार्थी का। धर्ममार्गे दगुल वेग में, देव करनेवाले को भी वेग में धर्ममार्गा। 'धर्ममिर्मोय का नेने न एवनेक एनेदिह' (भागवत ११ २ ३१) ऐरा मार्ग है कि कौनों बर करने कीने चले जायें, देव नहीं लगेने। कौनिक एगने लीला है नहीं, एगने ही है। वेग में लुहूत करना है, दुष्का का इतिहास एगुला से करना है, राम का प्रतिकार धारा में करना है, ब्रह्मा का प्रतिकार धारा में करना है। भाव मुचने मिलीने दगुल का कि फारी और मरकार एगने है, कैं काम करे। हुचने एहू कथेरी को देवता चाँदिए। एक मनुष्य मूर्त के विद्या, एगने पर कथेरी का, उच कथेरी में विद्या। यह धारने लया, गिठला बनार एगने है एहू। इगने काए बनार काँदिए। उचने बनार लीला। मुक विद्या। मोर-मोरकर पर गला, पर कथार कम नहीं हुका। उचने लीटरी को आधारी मुन-कर मन्त्रीबनाने पर से एक आधारी केने के लिए एगने में समनेन सेकर बाहर-बाया, तो एगनेन साए कथार गावने हो गला। कौनिक एगनेन बाया, तो प्रकाश जाया। प्रकाश के क्षणके क्षणके विद्या नहीं। और कथार विद्या पुठना हांग, उगने कथिक कथार है। एगनेन हुका में हीगने हांग का कथार है। भाव 'एगने सेकर जाइने, तो एगनेन साए लयन हुका। प्रकाश के अमरता और रिनी उगने के एगने से बहु लयन मूर्त लीला, कथिक कथेरी का इतिहास हो नहीं है। ऐसी प्रकाश से इतिहास शास होता है। भावम में कथेरा इतिहास है कि प्रकाश है नहीं। हुकारी को आधारीक है, यह कौनिक है। प्रकाश विद्या, विद्या,

भवन है। यह को गकि है, उचने काने कौनको गकि दिनेकी ?

और यह भवन में एजिने कि हुजिया मन्त्रीक का रही है, मानव-मानव मन्त्रीक का रही है। आकाश और अथवाय कम पर रहे है—एगने अथवाय 'आधारी' कथेरी बर रहा है। अर्थात् विद्या एगने बका बना है, बर्ही दिक छोटा रहा, तो मनुष्य के जीवन में विद्यवार बना हुआ और भाव हुजिया में जो कथेरी चलते है, ये सारे एग विद्यवार के कारण है। कौनिक हुजि कथेरी बनी और दिक छोटा रहा। अथार एगने विद्याम मो छोटा होता और दिक छोटा होता, तो इगने एगनेसाए नहीं होनी। धार का विद्याम भी छोटा होता है और दिक भी छोटा होता है। आर धारने-लीने को मिल गया तो उचने कथेरी है। हुचने ठीक का बका होता, कथेरी अथवाय पितनी कथेरी है, इगने उचने विद्या नहीं। लेकिन मनुष्य को हाएन बदा हुई

'हृद भावने के', 'हृद विद्या के', यह कथेरी नहीं। यह अथार। हृद विद्यामनव है। कथेरी में एगने अथवाय 'विद्यारमनुष्य', इनके विद्या एजि नहीं।

यह को विद्यामनुष्य को शैविय है, यह अथवाय कीने न हो, तो विद्यारी हो ? अथ जनता की तो हो नहीं कथेरी। इतिहास मिसलने वा दिक बना हुआ चाँदिए। आरकी जयल विद्यारमनव के, अथवायदुल को एगनेन हो, उचने कथेरी गकि कथेरी हो, तो विद्यारी का एगनेन बरन जायगा। एगनेन बुद महावीर, गायकवय, जनक, अथार सारे देव रहे है कि हुकाए कथेरी बना करने का रहे है ? कथेरी में यहगुण कथेरी है कि इन कथेरी आधारीक रही भाव हो रहा है, इगने मुने तथिक को धारा नहीं।

एक बात और बहनी होगी। एग कथेरी के लिए मनुष्य को कुछ धन इकठ्ठा करना होगा, ताकि एक एगनेन हुआ और मुक

लीटरी शक्ति द्विजा शक्ति-विरोधी, इहू शक्ति से मिस लोक-शक्ति दुष्टता या प्रतिकार मायुवा मे अजे के अविनाश पर प्रकाश का प्रकाश दिक छोटा, रिमाग बदा तो विद्यारद विद्यारमनव की मूकिका

है ? रिमाग एगने अथवाय हुका है कि मनुष्य में महामुनि धार अथवाय जेमे मन्त्राग एगने बने है। उनको विद्याम गाव या, उचने मनुष्य अथवाय गाव आर हुकाए कथेरी को है। गाव एगने विद्यार हुका और दिक छोटा रहा। हृद कथेरी ? मूकिका। यह इतिहास, यह विद्या, यह आकाश। हृद इन पाठों के, हृद उच पाठों के। हुचने एक कथिना बकारी है—जति, कथेरी, वय, भावा, गग, गग, एग कथेरी कथेरी कथेरी। ये छोटी-छोटी कथेरी हुकाए दिक मे परी नहीं और मनुष्य को प्रतीक पर विद्याम उरकथ रहा, तो हृद इगने कथेरी के लयक नहीं रहने। तो कथेरी कथेरी ? या तो विद्याम छोटा करे, या दिक बना करे। विद्याम छोटा करना या तो 'आधारी' का शीघे हलना। यह अथ हो नहीं कथेरी। 'आधारी' को शीघे हलने में क्षार नहीं। यह हुकेम नहीं, अथवायन काये बनेगा। तो कथेरी हुकाया उगने है विद्या एगने दिक कथेरी कथेरी ?

कथेरीकथेरी कथेरी होने। येने शुभाया है कि 'आधारीक' के जिकने उरकथेरी होने, ये कथेरी केनेन का एक प्रतिकार दान है। भाव लीटरी कि ५०० ६० वेगन है, तो २ ५० देना होगा। छोटी-सी एगने है। अथवा की अकल को नहीं। एगने 'आधारीक' का कथेरी आधारीक बन कथेरी है।

[आधारीक और विद्यार की बोली में, भावमनुष्य (विद्यार) ७-१-६०]

विद्या के आधार पर स्वराज्य की रचना

कथेरी लीटरी का उरकथेरी-कथेरी में केंडे हुए मोद कथेरीके से नहीं हो कथेरी। उरकथेरी कथेरीके शीघे से प्रतीक कथेरी के कथेरी काय करण होगा। कथेरी हृद कथेरी है कि एगनेन को एगनेन अथवाय के अथवाय पर की भाव, तो हृद कथेरी को उगने अथवाय एगने देना होगा।

—म० गांधी

हड़ताल का सीजन : गैरजिम्मेदार नेतृत्व

कभी-कभी यह दावा होने लगता है कि इस देश में बसनेवाले लोगों का दिमाग दुबस्त है या नहीं। यह सही है कि इस प्रकार की दावा करनेवाले व्यक्ति के खुद के दिमाग के बारे में भी यह दावा की जा सकती है। वह कहावत मजबूत है, जिसमें पागलों के दिमाग में जा चढ़नेवाले व्यक्ति को ही पागल करार दिया गया था।

इस सप्ताह में बिहार के दरभंगा जिले के गाँवों में भ्रम रहा है। बिहार के शिक्षकों की राज्यव्यापी हड़ताल चल रही है। जगद-जगह स्कूल, विद्यालय बंद पड़े हैं। लड़के बेकार घूमते-फिरते हैं। शिक्षक जेलों में भर रहे हैं या आचारणार्थ करते फिरते हैं। बिहार के एक जिले की स्थिति का आनंद के अक्षरों में इस तरह वर्णन छाया है : "दाहाबाद जिले के करीब-करीब २० हजार शिक्षकों की १८ दिन की हड़ताल ने इस जिले की शिक्षण-व्यवस्था को करीब-करीब टपक कर दिया है। ६ डिग्री कालेज, २१० माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्कूल, ७०० मिडिल स्कूल और करीब ४ हजार प्राथमरी स्कूलों में पढ़नेवाले (?) प्राथमरी, माध्यमिक, उच्च माध्यमिक, कालेज आदि स्तर के २ लाख छात्रों का शिक्षण रुक गया है।"

स्कूल-नालेज खुलते हैं तब उनमें प्रती के लिए विद्यार्थियों का ताँता लप जाता है। कई जगह तो स्कूल-नालेजों में भी आजकल बिना शिक्षारिषा के या पैरवी के प्रती होना अशुभम हो गया है। जब प्रती का 'सीजन' खत्म हो जाता है तब उस काम से छुटी पाकर विद्यार्थी आज इस, तो बल उस बहाने हड़तालों का ताँता गुरु करते हैं। विद्यार्थियों की हड़ताल का 'सीजन' खत्म होना है और उन्हें परीक्षा के लिए कुछ पढ़ने का ध्यान आता है तब शिक्षकों की हड़ताल का 'सीजन' गुरु होता है, क्योंकि शिक्षक समझते हैं कि ऐसे ही बचन पौड़े दिन की हड़ताल भी समाज पर ज्यादा दबाव लाती है। हमारे देश के स्कूलों और विद्यालयों में बने भी पढ़ाई के दिन साल में १८० यानी साल

में ६ महीने से ज्यादा नहीं होते हैं, और दिन भी मुश्किल से ३-४ घंटे का होता है। फिर ऊपर से ये हड़तालें! मैं हैचन होकर कभी-कभी किसी परिचित विद्यार्थी से पूछता हूँ कि इस सारी परिस्थिति में पढ़ाई क्या और कैसे होती है और कैसे वे लोग पास हो जाते हैं। अक्षर विद्यार्थी हँस देते हैं और गुपु रह जाते हैं। एक विद्यार्थी ने एक दिन हँसते हुए मुझे बताया कि "हर साल बोर्ड की परीक्षा में बैठने के लिए जो परीक्षा होनी है और जिसके आधार पर विद्यार्थी 'शेण्ट-अप' होते हैं वह परीक्षा इस साल नहीं ली गयी और हम लोग 'शेण्ट-अप' कर दिये गये हैं। बोर्ड की परीक्षा की तारीख भी दो बार तो बदल चुकी है, गावद उनमें भी हम बिना बैठे ही पास कर दिये जायें।" और विद्यार्थी यह माँग क्यों न करें कि साल

चिन्तन-प्रवाह

भर हमारी पढ़ाई नहीं हो सके, शिक्षा ने भी समय पर हड़ताल कर दी, इसलिए हमें बिना परीक्षा लिये ही उच्चोर्ध्व माना जाय, करना हमारा एक साल बरबाद होगा।

और, इसमें हर्ज भी क्या है? पढ़ाई तो आजकल योग्यता बढ़ाने के लिए गही होगी, नोकरी पाने के लिए होगी है। और नोकरी भी अधिकतर छिपारिषा या पैरवी से ही मिलती है। इसलिए विद्यार्थी ने पढ़ाई की है या नहीं, इसका विशेष प्रयोजन क्या है?

आज कमोबेश सारे राष्ट्र में यही हो रहा है। और इस पढ़ाई (?) के लिए बरौडो रकमा राष्ट्र खर्च करना है। सारा राष्ट्र इस परिस्थिति को बर्दाश्त करता रहता है। न विद्यार्थियों ने न शिक्षकों ने, न नेताओं से बौई बनाव-उलब करनेवाला है कि मरौब देय के दुल्लेब साथनों का यह पौर अख्यय बचो हो रहा है? पूजनेवाला गावद समझदारों की इस दुनिया में पागल ही माना जायगा।

अगर शिक्षकों और विद्यार्थियों को अपनी माँग सम्बन्धित अपिहारियों या बपों से मनवाने के लिए हड़ताल करनी ही हो तो भी क्या यह नहीं हो सकता कि हड़ताल के दिनों में वे संगठित होकर निर्माण के किसी काम में लगे, जो जगद-जगह काम करनेवाले हाथों को बाध दे रहा है? लेकिन तब तो घायद हड़ताल की 'गुर्दिग्य वेल्डू' हो खतम हो जाय और देश के व्यवस्थापकों को मोजूदा शिक्षा-मणाली—जिसके बारे में त्रिगुण सेन ने लेकर रास्ते चलते थपिन तक का फनवा है कि वह निश्चयी है, लेखिन करना जिसके बारे में कोई कुछ नहीं—को समनात कर देने का सूत्र जाय।

पर विद्यार्थियों या शिक्षकों को क्या बाध, देश की व्यवस्था का खालन करने का दावा रखनेवालों को राजनीतिक पाठियाँ हैं वे भी पौड़े नहीं है। सरकष के तिकारिषियों को तरह एक-ने एक बडकर बनरी कना से वे लोगों को धुष करना चाहते हैं, ताकि उन्हें बाँट मिल सके। राजनीति के मंदान में बनने प्रतिशुद्धियों को फोडा दिवाने के लिए ऐसी-ऐसी घोषणाएँ और माँगें पेश करने हैं, जिनके बारे में वे भी समझते बडकर होते हैं उन पर अमल नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए मधुबन गोपालिस्ट पार्टी ने बनने पिदले राष्ट्रीय सम्मेलन में एक बाधपूनी बार्थमज की घोषणा की थी, जिसकी प्रति के लिए उन्होंने १००१ मई से जन-आन्दोलन करने की धमकी दी है। इस बार्थमज की कुछ मर्द इस प्रकार हैं—बोर्ड भी ब्यक्ति १५०००० महीने से ज्यादा खर्च न कर सके ऐसी पाबन्दी लगाना, बारमानों में बने माल और सेनी के उगादन की बीमती में सार्थजस्य लाना, बारमाने के माल की बीमन उसके निर्माण की लागत में ५० प्रतिशत से ज्यादा न हो, प्राथमरी शिक्षा के ढंग में सबके लिए समायता हो, मंत्रियों और बडमर्दों के मिलाप बिधी भी सामरिष द्वारा की गयी विचारणों की जाँच के लिए स्रारबार-उम्मुकन आयोग का संस्था की स्थापना हो—इत्यादि। ये उदाहरण मलत

अहिंसक क्रांति : प्रक्रिया या परिणाम ?

● सतीशानुसार

सुरजित श्यामलिन केवल भारतीय का कथन है कि "जबे ही जल से अन्न का अ-निरिक साग्रज्य भी होता है, तबने जलाना बौद्धिक साग्रज्य जसो भी बंजा रखा है।" मुझे ज्ञाने वैरिण निवास में यह बात प्रक-प्रतिबल सही महसूस हुई। सन्ने, मानोयज और निरंतर प्रभु को ने बिण वंशोष्ठी प्रविद्या का विचार प्रकथा या उणे साम्य, शाप, तेषी सृजि, विनो व खेडना, वेने और उनी वरुह के प्रथम शरी के साहस्यशरने ने कुछ प्रवाद हो प्रवश्या है। माशीय वनप्रखील शक्ति पर शारीली खेडन और अतिक्रमवार शक्तिगत प्रभाव है, उतना शायद ही अन्य विशी लेखन का हो। अन्दन के प्रकल्प स प्रकथा अग्रगणित और राजनीतिक साधनार्थ के उजने के साथ वैरिण के साहित्यिक, साहित्यिक एव वसतलक साकारण में बरय साजिने के साथ शोध को बर साती है। बिबत का उपबन्ध बला-अग्रहालय मुने हू कुछ' और शारादिविधुत श्याकय वा तमसा शोचसम' बर्न के सामने विज्ञान को राज वैरिण शर्म बोशी शारुम देती है।

मेरे लिए वैरिण का ऐतिहासिक महत्व है। राष्ट्रपति विद्याल की जेल में बन्दे हुए दिनों की दिखलत सादे और रिखोल का निघरना बन्दो-बना बन्दे के शोभाचरणी अभरण मुझे ज्ञानो विरर साहित्य-शाखा के दिनों की ओर ले बणे। उम समय के निशा से कुछ निमकर बरार ब्यपद हुआ।

मान बौद्धिक प्रतिभा व निरर विद्यमान ही जल और पिनील का सामना—एक युवागी वाद मानवीयता व ममत्त वनेर समाज अहिंसक शक्ति रर अधिव्य और माधो नमशशा ही अग्रधम आक गयी' तस्विधामुसा गयी के गद्दे पण चेदरे

अन्तरनीय खेडन के उ हमारे लिए एक वाट्टी का आभोवन किया था। खेडन समाज भन ही एक शोका-सा श्वाभ है, ए-साधनरिण मेदा और सुधार के शर्मो में हतेना सन्धि बनेने के कारण सारे बिबर में उजरी अविद्या है। बिबत की लक्षण सको प्रभुल साधनरिण में उनके अंतरराशोय के उ है और बिबत व बिखो भी कोने में शोडि और शक्ति सको की सुहावना व लिए ये लोग दोरबर शूकने है। शर्मो कि बिदिवय।

धर्म की ही यह एक धारण है, पर धर्म वका बबता इच्छता से दूर मानवीय गुणो की उगाठना करनेवाला यह श्वाभ है। गयी विचार के अखल निरर भिरे शोई श्वाभ परिणम में है, जो यह खेडन-श्वाभ ही है। प्रथम एव द्वितीय महायुद्ध के दिनों में खेडन-श्वाभ के शोषो ने ही युद्ध में भाग लेने से अन्तर करने जेन जाने और इय राहु 'धार्मिकशरी' उरवा का नेतृत्व करने में प्रवृल भी थी। हाशेय खाने उर दोराण शून, मान्य शास्त्र, नैषात्र आदि ह्वाभे शरीरप-

सायजय के पीछे अवर सवभुव शोई भयोस्ता है जो मशीण के नेलाओं को बरने श्वाभे बारह के बजाय एक ही कार्यम रखना शर्मो का कि श्वाभ की शोडुग अग्रसा का सामुल परिशरने किया जाय।

अवर शेती परिशरिण में शोई यह वगने कि इय प्रनार के सनर और शोषणार्थ वैवल यमता को गुलावे में शारने के लिए है जो श्वाभ वैर-नाजिब गेही होगा। और यह वैवल सलोप नी बात गरी है, आज हर राजनीतिक शर्मो शोही इय इय-इयनर येने अरवल मरन बरने और श्वाभवाई बरती है, यह अजने हू मो कि के उद्दे पूरा गरी बर बरके।

श्रेष्ठिवाक्याय —मिद्वारा इच्छता १४६

साधनरिण के बिदेयी शर्मो खेडन ही है। वैरिण के बनेर-ने उ हमारे लिए निध शोषो का आभोवन किया था, यह श्वाभ शरल रती। हतेने अहिंसक क्रांति के मविषय के लक्ष्य में गयी वताली के खेडन का उशोय बने रिण जाय इय श्वाभ में शर्मो निवार नरन बिने।

शर्म के लक्षणरिण साहित्यारी और अर नशारी नेण सुद सुनर अंश मोशो में उर विनय है। उ शोम गयी गानो की शरकारी धार उशवे और रिशावे ने शाने की शो उनेन इरते हू इय कि "अज नी शरकार प्रकथा मखन पूरा बरने ने बिण और प्रकथा में लोरेविद्य जने रहुने के लिए किरी भी प्रशुन नरिण की श्वाभक्ति जारो और पर बरिण बर देती है

उनके आचारण उय शक्ति शरवा विररीय होने है श्वाभ के श्वाभो- इरल को का-

-मशी है। शारी गुनि को होनेो चाडिद, पर श्वाभक बुद्धिवाला श्वरिण भी सयम इरता है कि इय राहु भी बरिने वा सजल अलग बरन पूरा गरी को का सको है। शर्दे पूरा कला हो तो यह किरी शरबार के निवलाड अन्-अन्वेलन करने मा उरको शर्मो देने वे नहीं हो इरता, यह ही राशीय वनप्रखल सनर और प्रवाल से ही शर्मन है। आज की कैरिड और कैरिण श्वाभो हुई (शर्मोनेडेड) श्वाभरा में का श्वाभ शारी शर्मो से विरोध इय श्वाभ की शर्मो के पूरि होने की शोई मुजाहर है ? हमने से पर-एक इरल भी ऐश है कि उने पूरा कला हो तो प्रचलिण श्वाभ-अग्रसा को बरुन बने किना श्वाभ यह पूरा गरी हो बरने। 'शर्मो' के इय बररहुती

बाहिए। यदि इस तरह की गांधी-शताब्दी मनायी जानेवाली हो तो मेरे चयन में अपनी पूरी चर्चित के साथ लगाने को तैयार हूँ और यदि इस महान् अवसर को एक सरकारी तमाशा मात्र बनाना हो, तो मेरी उसमें कोई रुचि नहीं है।”

मांस में एक संस्था है, जिसका नाम है—“फेण्डस आफ गांधी।” इस संस्था की स्थापना मसहूर फ्रेंच लेखिका कामी द्रोवे ने की थी। कई सौ सदस्य इस संस्था में हैं और वे यथा-कदा मिलकर गांधी-साहित्य का अध्ययन करते हैं, अपना गांधी-विचार पर चर्चा करते हैं। कामी द्रोवे ने फ्रेंच भाषा में गांधीजी के जीवन और उनके विचारों पर विभिन्न प्रकार की आठ पुस्तकें लिखी हैं और सभी प्रकाशित हो चुकी हैं। वे काफी बूढ़ हो चुकी हैं, फिर भी पेरिस के बुद्धिजीवी-वर्ग पर काफी प्रभाव रखती हैं और सभी को काफी सक्रिय है। मैं उनसे उनके घर पर भी मिला था और वे गोष्ठी में भी भागी थी। उन्होंने इस बात पर बहुत जोर दिया कि “परिवर्तन के लोगों ने गांधी को अपने-आपने उग से तोड़-मरोड़कर समझने और समझाने की कोशिश की है। यहाँ लोगों ने अपनी-अपनी सुविधा के अनुसार गांधी का चेहरा रच डाला है। यदि हम गांधी के साथ न्याय करना चाहते हैं, तो उन्हें उनके सही परिदृश्य में देखने समझने की कोशिश करनी चाहिए। यदि गांधी को सही समझने की कोशिश नहीं की गयी तो गांधी के नाम पर भी एक सम्प्रदाय सृष्ट हो जाएगा। यह सम्प्रदाय गांधी की तारीफ करेगा और उसके नाम पर रोटी खायेगा।”

उदार वंशीजी और फ्रांटिस्वादी त्रिविक्रमजी ने ‘फैलोशिप ऑफ रीफ्लेक्शंस’ नाम की एक अन्तर्राष्ट्रीय संस्था बना रखी है। पाण्डवों की शाखा के वार्षिक अधिवेशन में मुझे भी आमंत्रित किया गया और मैं भी भाग लेने का अवसर मिला। अधिवेशन में सुझावों को ही प्रतिनिधि भाग ले रहे थे। वे भी विषय था : क्रांति की आवश्यकता और क्रांति प्रक्रिया। विभिन्न गोष्ठीयों में भी मैंने अधिवेशन में यह काम था कि गांधीजी के विषय में जिस तरह के शोध एवं

आर्थिक विपणन के दौर से गुजर रहा है, उसमें क्रांति आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य और अपेक्षित भी है। पर क्रांति की प्रक्रिया पर सभी लोग सहमत नहीं हो पा रहे थे। एक कैथोलिक पादरी बड़े तोरना के साथ इस बात की बकालत कर रहे थे कि हम क्रांति की प्रक्रिया को ज्यादा महत्व न दें। किसी प्रक्रिया को यह नहकर अस्वीकार न करें कि वह हिंस्र है और किसी प्रक्रिया को यह नहकर भी स्वीकार न करें कि वह अहिंस्र है। प्रक्रिया का हिंस्र या अहिंस्र होना उनका महत्वपूर्ण नहीं है, जितना इस बात का कि वह हमें सफलता प्रदानती है या नहीं। साथ ही प्रक्रिया का निर्धारण इस बात पर भी निर्भर करता है कि वह किस परिस्थितियों में प्रयोग में लायी जा रही है। दूसरे पादरों में इन पादरी महोदय का बचन यह था कि साधु का महत्व है, साधन का नहीं। यह बात एक कैथोलिक पादरी के मुँह से सुनकर मुझे बड़ा अचरित लग रहा

क्रांति की आवश्यकता और प्रक्रिया ‘महत्त्व प्रक्रिया का नहीं, परिणाम का?’ ‘गांधी की प्रयोगशाला—पेरिस में एक हज़ार किन्टोग्रेटर दू।’ ‘कैथोलिक स्टार्ट में जीवन की साधना’ ‘स्वातन्त्र्यी आग्रह’ ‘अहिंसक पर मानवीय गुण : शान्तरक्ष की बाक्ती नहीं’

था। वे सत्रह एक वैचारिक पत्रिका भी प्रकाशित करते हैं, जिसमें उद्योग प्रसार के विचारों का विस्तृत प्रतिपादन रखा है। यह पत्रिका काफी लोकप्रिय भी है। पाण्डव मुन्धन : नीचोत्तिक धर्म का माननेवाला देश है, पर यहाँ भी इटली की मॉडर्न नैशनल समाज बन्धुनिष्ठ पार्टी है, ब्रिटिश नैशनल-सुनिष्ठ पार्टी है, बन्धुनिष्ठ विचारधारा का काफी प्रभाव है।

मांस आग्रह एवं गांधीजी के अनुयायियों का देल बालों के आग्रह में न जायें, ऐसा कहे हो सकता था। हालाँकि वे पेरिस के समय एक हज़ार किन्टोग्रेटर दूर रहते हैं, फिर भी उनके मिलने हुए गये। ल. फ्रांज़िस नामका एक छोटा-सा रेलवे स्टेशन दक्षिणी मांस की पदाहियों में पड़ता है। इस स्टेशन पर विभिन्न एक आरसी रहता है, जो स्टेशन मास्टर से लेकर बपटाणी तक

को गारो जिम्मेदारियाँ पूरी करता है। उस दिन इस स्टेशन पर उतरनेवाले विभिन्न हम दो ही यात्री थे—अनंत और मैं। ऐसा लग रहा था मानो यह स्टेशन यात्रियों के लिए तरल रहा है और यथा-कदा किसी यात्री को पाकर स्वयं को परिपूर्ण समझता है। स्टेशन पर लाजा के ‘शर्ब-आयतन’ का कोई नियाम नहीं। स्टेशन मास्टर ने हमें एक छोटी-सी पगडण्टी बतायी और इतारों ने समझाया कि इस पर चलते चले जाओ, आग्रह पहुँच जाओगे। एक छोटे-से पात्रों के ताते के किनारे-किनारे, पहाड़ी के बीच में और ऊँच पेड़ों के अन्दर व यह तीन फुट घेरी पगडण्टी नीरव वातावरण में अरेली बजती चली जा रही थी, जिसने हमें लाजा के आग्रह तक पहुँचाया। १२०० एकड़ में फैला हुआ १०० सदस्यों का यह आग्रह किसी भी गाँव-आग्रह को पार दिना देता है। बिजली यहाँ पहुँची है, पर आग्रह

‘महत्त्व प्रक्रिया का नहीं, परिणाम का?’ ‘गांधी की प्रयोगशाला—पेरिस में एक हज़ार किन्टोग्रेटर दू।’ ‘कैथोलिक स्टार्ट में जीवन की साधना’ ‘स्वातन्त्र्यी आग्रह’ ‘अहिंसक पर मानवीय गुण : शान्तरक्ष की बाक्ती नहीं’

यात्रियों ने ‘कनेक्शन’ बाट डाला है। वे कैथोलिक (मांसरत्नी) के प्रकाश में उदात्त प्रसन्नता पाते हैं। आग्रहवागी अपने-आपने परिवार के साथ रहते हैं। मुखर का नाम और शांति का भोजन परिवार में बनते हैं। बैकल लीवर का भोजन सभी आग्रहवाहियों का सामूहिक होता है। बच्चों के लिए आग्रह का आना सुरु है। बर्तार-कुली और लेनी, आग्रह की वे तीन प्रमुख प्रणियाँ हैं। आग्रहवाहियों अपनी भाषा में उनी बपटा बना लेते हैं कि आग्रह की प्रकल्प पूरी करने के बाद वे बाहर भी भेज सकते हैं। सुंदरी के रंगरार पर आग्रह का शाखा खर्च चलता है। हमारे यहाँ सभी की आग्रह प्राप्त बाहर के पैसों पर निर्भर करते हैं। किन्तु लाजा के पैसों का आग्रह की स्वातन्त्र्यी बना डाला है।

लाजा देल बपटो इटली के एक शहर—भद्रान सङ : अग्रहार, २६ अक्टू, १९८

आर्थिक समस्या और चलन-शुद्धि

[श्री अप्पासाह्य अरसे से चलन-शुद्धि के कार्यक्रम में लगे हुए हैं। इसी काम के लिए मतत और मर्यत्र घूमते रहने का आपने निश्चय किया है। दीर्घ चिंतन और निरीक्षण के बाद उनके परिपक्व विचार और भावनाओं का सार यहाँ प्रस्तुत है।—सं०]

आर्थिक समस्या क्या है ? अर्थ के मानो पैसा, सिक्के, 'मनो' (Money)। ये सिक्के ब्याजखोर हैं। धातुपूर्व संपत्ति—अनाज, पल, दूध, पशु, इत्यादि—सारी नष्ट हो गई। उसका हृद से ग्यादा करते तक संग्रह नहीं किया जा सकता था। फलतः अतिरिक्त अनाज दान-धर्म के द्वारा समाप्त करना पड़ता था, और धारण महीने में कोई पड़ोसी चार मन अनाज उधार लेकर काफ़िक महीने में नयी पसल आते ही वापस देने का वादा करता, तो स्वामी, लोभी साहूकार की सवाये की दाँत लगाये बगैर उसको उधार दे डालते थे, क्योंकि यह पुराना, मड़नेवाला अनाज देना था और नया अच्छा अनाज पाना था।

लेकिन यह हुई धातु-पूर्व काल की बात। धातुओं के और सिक्कों के उदय के बाद धातुओं के अशय सिक्के बनने लगे। तब से स्वाभाविक तौर पर दान-धर्म मिट गया और बिजो शुरू हुई। और सिक्के सभे नहीं, इसलिए उनका ब्याज देने-लेने की प्रथा जारी हुई। अनाज, जमीन, कल-कारखाने—ये संपत्ति के सारे प्रकार अब पैसों के ही अलग-अलग रूप बने और अनाज की सवाई, जमीन की बँटाई, मजानो का किराया, और कल-कारखानो का मुनाफा या 'डिविडेंड'—हब जारी हुआ। सोध में पूँजीवाही पैदा हुई और पतनपती गयी। छूट-मार की जगह आपसी दोगध गुरू हुआ और उसमें से विपयता और कर्न-विषय बढ़ा। इस कारण ही पूँट को, अपार्न दोगध और कर्न-विषय को कैसे मिटाया जाय ? यही ही आर्थिक समस्या है। सिक्को की ब्याजखोरी में से यह समस्या पैदा हुई। उसके तीन हल बताये जाते हैं : साम्यवाद, ट्रेस्टीशिय, पूँजन। नैसर्गिक चलन-शुद्धि

लेकिन भगवान की इया से—पाहे

'निसर्ग की' भी कह सकते हैं, पिछले कुछ सालों से पैसों का स्वरूप और स्वभाव आप-लाभ बदल गया है। हज्जारों सालों से पैसा सचन, बनर धातुओं के सिक्कों का चलता था, अब उसने बदले नरम बाग्यो नोटों का बन गया है—न केवल भारत में, बल्कि सारी दुनिया में। किसी भी देश में किसी भी नये बाग्यो चलन या विरोध या बहिष्कार नहीं किया, बल्कि सारे समयन लोगों ने इस नये चलन का स्वागत किया या भाग भी की। अप्पने-अपने सोना-चादी के सिक्के सभों को बेचकर बाग्यो नोट ले लिये, क्योंकि तिगुना-चारगुना तक मिने। चादी के एक रुपये के बदले चादी के चार रुपये प्राप्त किये गये।

अप्पासाह्य पटवर्धन

ख० किशोरलाल मधुवाल ने इस सार्व-

त्रिक और सर्वसंगीतन घटना के आधार पर आर्थिक समस्या मुलक के लिए एक अनोखी योजना सुझायी थी। साक्षात्क अखेरी "हरिजन" पत्रिका के १६ मितम्बर '५८ और २१ अक्टूबर '५८ के अंकों में उल्लेख "चलन की समस्या" और "अपने आप घटनेवाला चलन", इन दोषों के दो महत्व-पूर्ण लेख लिखकर अपनी योजना भारत-सरकार के सामने रखी थी। छोटे तौर पर उनकी योजना इस प्रकार की :

(१) सरकार हर नोट पर इसका रकमो हब का एक टाया दे। हर हब के नोट उद्यो हब के दरमियान (बाह्य महीनों तक) चलें। स्पेह्वार में रखने पर नोट बाह्य महीनों में जीर्ण हंते हो हें, इसलिए इस हब के नोट आपने हब में जीर्ण और रर

टहराये जायें। उनका नूतनीकरण किलहाल सरकार खुद होकर मुपज में, अपार्न जनता के सच से करतो है उसके बजाय नोटधारतो के सच से हो किया जाय। उसका शुनक, रुपये में एक आना रहे।

(२) लेकिन बचत करनेवालों के लिए साध व्यवस्था की जाय कि अगर वे अपनी बचत पर में रखने के बजाय सरकारी बैंक में बायम (डिपॉजिट) रखें तो उनको, वे अपनी रकम वापस लेना चाहेंगे तब, पूरी रकम वापसी के हब के नये नोटों में मिले।

(३) इसी सरकार को बिना ब्याज 'लिाबिट' मिलेंगे। फिर सरकार सब सरह के लोकायोगी उलाहको की बिना ब्याज के तबावी दे।

इसी योजना को मैंने "चलनशुद्धि योजना" नाम दिया है।

अनवधान

दुईय को बात है कि इस सरल-शोम्य, लेकिन बहसोर योजना की तरफ किसी के ध्यान तक नहीं दिया। न भारत-सरकार ने दिया, न हम समाज-सेवकों ने दिया। यह मामूली-सी तीन पृथो की योजना भूमि-समस्या की, आर्थिक समस्या की और सर्वसंय की पामी है। लेकिन हम ध्यान दें तब। यह योजना मानो ईस्वरुन चलन-मुधार का हकीकार और बमल है। उस चलन-परिवर्तन का सब लोको ने अकानी रकागत मले नु भी किया हो, तो भी श्रमिय रवागन किया भी था। मात्र सारी दुनिया की समार्ण इस विचरकवापकारी ईस्वरी चलन-मुधार को तोड़ डालतो है, इन निर्दोष नोटों को बलाग, हटाग, घुनरेंगे थे, बन्नाय से इंगित अपार्न चबन और ब्याजखोर बगाठी है। धायर इवें लिए मगवान् ने इन दिनों राज-सता को भी सरकारी के हाथो से लीनकन जनता के हाथो में दे डाला, गरिब जनता ही अपने पञ्चायित मनियरलो के द्वारा इस योजना का हकीकार और हटगाना पूँजी-वाही, टोपन, विपयता और कर्न-विषय इत्यादि अनयो का परिहार कर सके। यह काम उम्मी हो सकेगा अब जनता को इस चलन-परिवर्तन का मर्म और उद्योग बनाव

प्रभुत्व और ब्रह्मत्व मानना जाय। लेकिन ब्रह्मता के नेता मेरुत या सिद्धक बुद्ध ही इस यात्रता का भारी महत्व और मौलिक नहीं समझते हैं, या समझकर भी आतिथिवीनी कर रहे हैं।

इस यात्रायात्रा में बुद्ध किशोरालालजी भी, मुझे लगता है शामिल हैं। उन्होंने अपनी योजना चलन-चुड़ि महर्षिदंड और जिने हुए पंजे इन्होंने उपलब्ध में पेश की है। अपनी यात्रता की भारी सम्भावनाओं की तरफ बुद्ध उनका भी ध्यान नहीं गया है। उन्होंने उक्तों 'कौली की दया बहुहर पेश की जब अमल में वह ठो० बी० की दया है। मातृली कौली के लिए अपनी भारी दया की अकलत भी नहीं है। सरकार बुद्धों बेहिसाब, निराधार नोट लगाता बन करके चलन-चुड़ि और महर्षिदंड विदा उक्तों है। उसके लिए चलन-चुड़ि जैसे मनमन्त्रये योजना की अकलत नहीं है।

भारी सम्भावना

माल-सरकार अगर अनुभव तान काम जारी है तो उससे निम्न परिणाम आयेंगे

(१) सोप बिना व्याज के या नाम मान के व्याज पर बज अने-नेने लगेंगे। सरकार बिस्वुल व्याज नहीं देगी और पर में रखें तो रख्य पटली जयपणी इस परिस्थिति में सोप बननी बचन परीक्षियों को हीन प्रस्थित व्याज पर जो बज में देंगे। नियमनों के बिना ही व्याज के माह नीचे उतरने और साहसकारों के प्रति कर्जदारों में ड्रेम-भाज नहीं रहेगा।

(२) बँडारदार बँडारों की जयोन मासिक को दोष देंगे बिना व्याज को तबानी मेहर और जयोन सारो-रार स्तन सेगी कृषि और परमाणुमान बँडारों जिनेगी ही किन्तु सरकार को देख दुप बनों के व्याज ही बननी जयोन के मासिक बन जायेंगे। उनी साहू किण्वार बनने-बनने मरानों के और मजदूर बननी-जयोन वैशरी के मासिक बन सकेंगे।

(३) मासिकों को बननी जयोन बुद्ध बननी होगी, बननी जयोन बुद्ध बननी भूतान-यज सुकवार, २६ फरवरी, १६

होगी। धीरे धीरे सारे एर वगैरे मासिक धर्मिक बन जायेंगे।

(४) उद्योग बड़ेगा आलय निकल जायगा और दम-मलहू मिट जायगा। नाव बन में ऐकव धारि-मणुडि होगी। साम्राज्य मजबूत बनेगा।

(५) दूसरे राष्ट्र भी धारे धीरे भारत का अनुकरण करेंगे। दुनिया भर में सत्यर युग प्रकटेगा।

दिव्यत, ससट और उनका परिहार सरकार जब इस योजना को प्रमल में लायगी तब एक मंत्रट पेश होनेवाली है। लेकिन उससे परबन्ने की या हार मानने की अकलत नहीं है। एक उगाहरण की मण्ड से इस मण्ड का स्वकम समय में आ जायगा—

सो रुपये का एक नाट है। इन के अल में वह रुट होगा और ३१ दिवम्बर क दिन जिसके हाथ में होगा उसको मरकार में प्रह करके माने होंगे। लेकिन सरकार के सामने परपकट सखा होगा कि उस प्रकार अकेल से दूरे ६ रुपये बँने समूल करे ? हास्यर में जिन जिन लोगों के हाथों में ये वह नोट पजरा उनके नाम पाम सरकार सोज नहीं सखती। वे बनने-बनने उकिन हिस्से से पूर जाते हैं। फिर अकेल आथियो बादभी ये पूर पुनक लेना अयाव होगा। इसलिए व्याज सरकार बिना पुनक के उक्ते नया नोट देती है। यह है सरकार की निश्चत।

यह निश्चत पुलमणों आ उक्ती है। सरकार एक नियम जारी करे जिससे व्याधर पर मान में ता० १ जनबरो के दिन किसी गिणक को निवम्बर के वेतन में छो रुपये का एक नोट मिला। उसने उस नोट को १५ दिन आने पाण रखार १६ जनबरो के दिन बड़ी माट देकर एक मासिक सारी को वह गिणक भी रुपये के बनतावा सो रुपये का १५ दिनों का 'बँडार' २५ पंजे धारिजिणकले को दे अनेबासा भी ले। साधनशाला भी एक पहीने के बाद १५ जनबरो के दिन नवी साधनिले कौलीसे उपव फँकारीशालों को केड नहीने के प्रस्थान बाहू जाने दे। अर्थात् सास्यर में किसी भी पहीने को किसी

भी सारीन की पैसो की लन पैन बजट वान रकम के साथ उस रकम का बडाव भी रकम देनेवाला दे खीर लोखाला भी लें। इस नियम के लागू होने से सरकार को निश्चत मिट जायगी।

ऐकिन लोगों के लिए पैसो के हर ब्यवहार में बँडार लेन-देन को एक नवी मण्डत पुनक होगी। लेकिन वह मण्डत हलकी बनायी जा सकेगी। सरकार इन सँग के लपसोलागर कोटक बनाये और उनका

सारथिक प्रचार करे ताकि हर ब्यवहार में बँडार का गणित न करता रहे। हर नोट की सिद्धी बाधू पर भी उस नोट क बँडार का कोटक सुधरे में प्रपराया जा सकेगा। और हृयारे देग में जो कबोको बिलकुल अनवरत लोग है उनकी जानकारों के लिए धानीण रँडियो-नायकधों में हर दिन सुधर ही आज का बँडार जाहिर किया जाय।

कैनेडर साधरिय पचाय इत्यादि में भी फिर दमिक बडाव बढाया जायगा और वृत्तधों में आज का बँडार भी बनकाया जायगा। सस्थाका और परराणी रणरो के नाटियारोषो पर भी आज का बँडार जाहिर किया जायगा। टेलीफोन एम्पबेन के भी पैसा पुनक जा सकेगा कि आज का पलानी रकम का बँडार कितना होना है ? मिटि मिटि में बदलते हुए टाडम से जैसे लोक परेजिन नहीं होने उकते बननी पहीनों में सेबेपे का बाण भी हुए बँडार क भी ये जानी बन जायेंगे।

यानवर यह कि लोगों को भी इस बँडार की मण्डत में हार मानने की आवश्यकता नहीं रहेगी। ईश्वरी योजना

चलन-चुड़ि-यात्रता कोई मा-गानी या मोट्टण मानव-स्वभाव से अनुविन अपेक्षा रखनेवाली योजना नहीं है। वह वसुधुविध, ब्यवहाय मोक्ष बनन उपवाय होने लायक समानहितकारी योजना है। लेकिन वह बनयन बानिधारो भी है। सारे स्थिर सामनों का एक एकपरिचय को तरार ही रख है। इतलिन बार्डि या पाथन बुद्ध



तमिल प्रवेश : नागरी लिपि

ले० : रा० शंकरन्, मूल्य : दो रुपये

प्राप्ति-स्थान : सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, चाराणसी-१

इन दिनों भाषा के प्रदन ने एक जटिल समस्या का रूप धारण कर लिया है। भारत विभिन्न भाषा-भाषी प्रदेशों का एक मानव-समुद्र है। निम्न भाषी भारतीय व्यक्ति एक-दूसरे के साथ वार्तालाप किस भाषा में करें ? प्राचीन काल में संस्कृत भाषा अखिल भारतीय सम्पर्क-भाषा थी। अंग्रेजों के आने के बाद इंग्लिश भाषा को वह स्थान प्राप्त हुआ। लेकिन आजारी को लड़ाई के साथ-साथ स्वदेशी भाषा का प्रेम भी हिंदी के रूप में अभिव्यक्त होता गया। उत्तर भारत के मराठी, गुजराती, बंगाली-भाषी आदि व्यक्ति हो, या दक्षिण के कन्नड़ी, तेलुगु, तमिल-भाषी आदि व्यक्ति हो, जहाँ कहीं भी वे मिलते, अंग्रेजों के अलावा हिन्दी में ही बात कर सकते थे। इसलिए आजारी के बाद हिन्दी भाषा भारतवर्ष की सम्पर्क-भाषा बनेगी, यही सबर्षी स्वाभाविक धारणा थी। स्वतन्त्र भारत के संविधान में घोषित किया गया था कि १५ साल के बाद हिन्दी राजभाषा का स्थान लेगी। माना यह गया था कि बीच के समय में हिन्दी धीरे-धीरे अंग्रेजी की जगह ले लेगी। हिन्दी भाषा को सफल और पुष्ट बनाने की दिशा में जितनी तत्परता के प्रयास होना चाहिए था, वह नहीं हुआ। सरकारी स्तर पर केन्द्र में, और प्रदेशों में भी, अंग्रेजी का ही अधिक

→ होकर उसका अमल नहीं करेगा। स्व० किशोरलालजी ने भी लिखा है कि "वर्तमान अर्थशास्त्री और शासन के आर्थिक सलाहकार भी ऐसी-किभी योजना को व्यवहृत्य नहीं बतायेंगे कि जिसको लेकर उन्होंने परम्परा-प्राप्त सुख-साधनों में कटौती होगी।" लोक-तन्त्र के इस युग में मतदाताओं को विनिश्चय करके उनके संप्रति बल से इस योजना को सरकार से मजूर करवाना होगा। ●

व्यवहार होता रहा। फिर अधिक राज्य बने। हर प्रदेश अपनी भाषा ही उस प्रदेश की सरकारी भाषा घोषित करने की दिशा में बढ़ने लगा। वह ठीक भी था।

लेकिन राजभाषा के प्रदन का कानूनी विचार भाषा-विधेयक के रूप में लोहसम्राट में आते ही भाषा के प्रदन को राजनीतिक रूप आ गया और वह प्रदन उभ बन गया। हिन्दी के सम्पर्क के वास्तवपूर्ण रूप की प्रतिबिम्ब दक्षिण के लोगों पर तीव्र रूप से हुई और 'उत्तर भारत विच्छेद दक्षिण भारत', इस तरह का प्रतिबन्दी स्वप्न भाषा के प्रदन के कारण देस में खरा हुआ। इसमें देस की एकात्मता ही खतरे में आ गयी।

भाषा एक-दूसरे के हृदय में प्रवेश पाने का माध्यम होती है। एक-दूसरे के प्रति प्रेम और सहृदयता राष्ट्रीय एकात्मता की नींव है। इसलिए अखिल भारतीय सम्पर्क-भाषा के प्रदन का विचार करते समय प्रेम की जगह द्वेष नर्थापन न लें, इसकी सावधानी रखने की आवश्यकता सर्वप्रथम है। भाषा का माध्यम प्रेम-सम्बन्धक साक्षित होना चाहिए। दक्षिण के लोगों को हिन्दी सीखना चाहिए, ऐसा जब हम कहते हैं तो उत्तर के लोगों को भी दक्षिण की कोई एक भाषा सीखनी चाहिए। दक्षिण के लोगों के हृदय में उनकी भाषा के द्वारा जल्दी प्रवेश पा सकेंगे। जबरदस्ती ने नहीं, बल्कि प्रेम और आत्मोपार्जा की भावना से जब हम एक-दूसरे की भाषा सीखेंगे तभी एकात्मता बढ़ेगी।

दक्षिण की भाषाओं में तमिल समुच्च और मयुर भाषा है। वह बहुत पुरानी भाषा है और उस भाषा में साहित्य भी विबुल है। इस भाषा का अन्वयस सरल बनाने की दृष्टि से सेवाधाम-आश्रम के एक तमिल-भाषी

कार्यकर्ता श्री शंकरन्जी ने सन् १९५५ में ही 'तमिल प्रवेशिका' नागरी लिपि में प्रकाशित की थी। लिपि और भाषा, दोनों अपरिचित हो तो सीखने में कठिनाई होती है। निम्न भाषा नागरी लिपि में लिखी हो तो पढ़ने में बहुत आसानी हो जाती है। तमिल भाषा हिन्दी भाषी छात्रों को पढ़ाते समय भी सहज होनी को जो अनुभव आते, उनके आधार पर उन्होंने पाठ तैयार किये। एक-एक पाठ पढ़ाते-पढ़ाते पचीस पाठों की यह पुस्तक बन गयी है। तमिल के उच्चारण नागरी लिपि में प्रकट करने के लिए उनको स्वतन्त्र टाइप भी बनवाने पड़े हैं।

आज की राष्ट्रीय परिस्थिति को देखते हुए तमिल भाषा का अध्ययन करने के लिए लोक-मानस तैयार करने की दिशा में विचार-रक सोच रहे हैं। इस प्रयास में यह पुस्तिका उपयोगी होगी। इसलिए सर्व सेवा संघ प्रकाशन के द्वारा इस नागरी तमिल प्रवेशिका को हमारे सभी साहित्य-अपठारों में उपलब्ध कराने का विचार है। तमिल भाषा में प्रवेश पाने के लिए यह प्रवेशिका बहुत ही उपयोगी साक्षित होगी। इसलिए सर्वोदय-साहित्य के सभी भण्डारों से और साहित्य-प्रचारकों से प्रार्थना है कि इस पुस्तिका का स्वयं अध्ययन करें और अपने मित्रों में भी इसका प्रचार करें। —दोषोबा दामाने, संवाचक सर्व सेवा संघ प्रकाशन

नयाम ईश्वरिचरितपरतया देवर्षिद्वय उपयोगे किये व्याख्य

तमिली

आयुर्वेदिक

श्री शम्भुपाद आयुर्वेदिक परामर्शी

म० आ० सारी-प्रामोयोग द्वारा प्रमापित स्वारी-प्रामोयोग भण्डारों में मिलता है

उत्तर प्रदेश : प्रश्नों के बाद प्रश्न

पर १८ असेल को लोकसभा में उत्तर प्रदेश में विधानसभा के विघटन तथा मन्पा-वधि पुनरावृत्ति के लिए राष्ट्रपति की उद्घोषणा का अनुशासन कर दिया। राष्ट्रपति ने ११ नवंबर को राज्यपाल को १२ वीं वृत्त से उत्तर प्रदेश का विधान सभा को बन किया था। राज्यपाल श्री गोपाल रज्जु ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि वे सखिद बनवा बाधित के बहुमत के राबो स समुदा नही थे।

राष्ट्रपति की घोषणा के उत्तर प्रदेश के बाबत विचारक दल के नेता श्री चन्द्र भातु गुप्त को कोई आश्चर्य नहीं हुआ। उन्होंने मान लिया कि इतने ब्रतिरिक्त नगर चार नही था। सखिद-सुरहार के पूरूपत दुष्पनभा श्री चरण सिंघ ने भी अपना हजीरा देन के बाद मन्पावधि पुनरावृत्ति की सफ़ा राज्यपाल को दी थी।

राष्ट्रपति की घोषणा के अनुसार विधान-सभा के वर्तमान अन्वय नवी विधान-सभा के निर्माण तक भावने पर पर बन रहे थे। यह १६ असेल को न शीय प्रुदमनी श्री चड्ढान की राष्ट्रपति की घोषणा तथा राज्यपाल की रिपोर्ट की प्रति प्या ही को-कसा न पटल पर रखी, विरोधी अरखा ने वर्न-वर्न के बारे लगाये।

यह १८ असेल को जनसभ के श्री अटलबिहारी वाजपेयी ने लोकसभा में राष्ट्रपति को उद्घोषणा के विरोध में एक प्रस्ताव पेश करत हुए कहा कि इतने चतर प्रदेश में जनसभ और सविधान को हरा हुई है। उन्होंने राज्यपाल की रिपोर्ट को हास्यकार बजात हुए कहा कि दर बाग का निर्णय ही बना चाहिए कि कियो राज्य-सरकार के मन्प का निरन्तरा विधान-सभा में होना या राजसभ में।

ही वाजपेयी का सनयन करते हुए प्रुदु नैश भी सविधान ने कहा कि राज्य-

पाल के अधिकार व कानूनी को स्पष्ट ध्यात ही जामी चाहिए। शीवनी सुचता छपा लानी ने कहा कि राज्यपाल का कानव को सरतार बनाने का नाता देना चाहिए था, नतीके सखिद में पूट हो गयी थी। साम्प-नारी नेता श्री दाम ने कहा कि सखिद में पूट है या नही, यह देखा राज्यपाल का काम नही है। किमा मो पावों की सविन-परीक्षा विधानसभा में ही हो सकती है। सघोरा न सखर श्री अर्जुनसिंह मन्टीरिया ने कहा कि उत्तर प्रदेश के राज्यपाल एक गुम्पतविन को लद नही, बरिक्त गुम्पतको या गुम्पतविन को लद स्पष्टार बन रहे है। निरन्तरा सखर आचाय यो-ओ छपाजानी ने कहा कि राज्यपाल का काम सिर्फ यह देखना है कि सरतार सविधान के पुसाधिक चल रहा है कि नही, वह भावियो नही है, का विरोध सखर के स्यामित क बारे में सविधानयो करे। निरन्तरा सखर श्री प्ररन्धरीर शाज्वा ने वर्तमान वर्न-पटा क लिए बेन्द्र को राषी तड्ढाण हुए सवदलाय सरतार क निर्माण पर चल दिया थार कहा कि दको पुसाजान नखर हामी चाहिए। कबल एक बासमी सदस्य ने श्री जिनन्दाशयण का छोड़ बाबा बाधित सदस्या ने दर घोषणा का सनयन दिया। श्री जिनन्दाशयण ने हत घोषणा का जवाबतरा निराय करते हुए कहा कि गुप राज्यपाल निरन्तरा वी लद काय करे लगे है, विध पर राष्ट्रपति का बाल मुंदार मुहर नही लगाना चाहिए।

राष्ट्रपति का भाषणा का सनयन करते हुए प्रुदमनी श्री यड्ढान ने कहा कि छापा दम विपति में यह बात सही है कि बहुमत का कौणका विधान-सभा ही बन सकती है, पर उत्तर प्रदेश की विधान-सभा की बैठक बुलायी ही नही का सखी की, नतीके जेरे बुलाने का निवहार केवल गुम्पतकी ही है,

बौर उत्तर प्रदेश में कोई गुम्पतकी नही था। राज्यपाल के राबों की तविधानाविन बनाने हुए उठोहे नही कि इतने अनिर्वाक कोई चारा नही था।

सखिद पर "हिन्दुमान" ने इप पटना पर भर प्रचत करत हुए जनता से अशील की है कि नद देया मयायन वने, जिमाने माया के लिए सखिद तथा सविधान विपति न रहे।

देविक "आज" ने लिखा है कि ह्य पदो जाला करत है कि बागी नेकनीनी सखिन बनने का जो अन्तर राजनीतिक दलो बौर भासो विचारका को मिला है, उतना वह दुष्पान न करे।

सखी देविक "टाइम्स आफ इंडिया" ने लिखा है कि राज्यपाल के पाठ इतके विचार बाद-अध नही था।

अपनी देविक "अनूत बाजार पत्रिका" ने लिखा है कि क्या इतके पाठो ही कि मन्पावधि पुनरावृत्ति के बाद की सरतार अधिक टिकाऊ होगी ?

—नाम

तरुण सति-सना सखिद

अ-० भा-० सति-सना मसल द्वारा तरुण सति-सना के सखिद पर २६ कीपासनाय में सखीविन निय वने ह। पयम सखिद ११ मई से १ मई ६८ तक मडुआई (मडार) में तथा हृषर सखिद ११ जून व २६ जून '६८ तक राजनकाट (पनाब) में हुआ। जनवज, सनयन सनयन तथा राष्ट्रीय कासलता विधानसो सखीविन के हारत तथा विस्त्र-विधानसभ सखर के द्वारा सखीविन में भाग लेंगे। एक सया सविम बेजकर सखी, सखिद लेना मखर, राजनकाट, कारागघो-१ से सखिद में सविनित्त हारे थे लिए आने-जन सया दिया था सखता है।

सखिदसखियो द्वारा कावतर-जन मखर मडुआई सखिद के लिए ३० असेल तक सया राजनकाट क लिए ७ मई '६८ तक सखिद लगे पर प्रुदु जने बाहिए। —अनानाय

अ-० भा-० सखिद नेता मखर राजनकाट, सखिदसखी-१

उत्तर प्रदेश में तूफान-अभियान

● प्रदेश में १५ मार्च से १५ अप्रैल के बीच २६५ नये ग्रामदान प्राप्त हुए। अभी तक पूरे प्रदेश में २६ प्रखण्डदान और ४७१७ ग्रामदान प्राप्त हुए हैं।

● मिर्जापुर में ८ अप्रैल तक २४ ग्रामदान दुदुई प्रखण्ड में और प्राप्त हुए हैं। यह मिर्जापुर का तीसरा प्रखण्ड है, जहाँ प्रखण्डदान अभियान चल रहा है। अब तक जिले में २३४ ग्रामदान हो चुके हैं।

● श्री मंगलचैतन लाल-पदयात्री गठ १३ अक्टूबर '६७ से "गीता-प्रवचन" और सर्वोदय-विचार का सतत प्रचार करते हुए पूर्वांचल प्रदेश के क्षेत्र में पदयात्रा कर रहे हैं।

फर्रुखाबाद जिलादान की ओर

● फर्रुखाबाद, १४ अप्रैल। इस जिले में अप्रैल ६ से १३ तक ग्रामस्वराज्य सन्तान में मुहम्मदाबाद कमालगंज एंव बदापुर ब्लाकों में ग्रामदान ग्रामस्वराज्य अभियान नवयुवक कार्यकर्ता श्री रामजी भार्दे के नेतृत्व में चलाया गया। फर्रुखरूप १६८ ग्रामों ने ग्रामदान की घोषणा की। अभियान में जिला परिषद के १४४ शिक्षक, ३० पंचायत-सेक्रेटरी, ६४ छात्रो-कार्यकर्ता सम्मिलित हुए। इसके अलावा कई वकील, प्रोफेसर, डाक्टर, टेलिग्राफिस्ट, लेखक, गीत-गायक और ग्रामदान प्राप्त किये।

१३ अप्रैल को समान-समारोह में क्षेत्र के सैकड़ों कार्यकर्ता एवं जिले के नेताओं ने भाग लिया। सम्पूर्ण फर्रुखाबाद के जिलादान की योजना बनायी गयी। जिलादान की महाअभियान समिति का गठन किया गया। समारोह की क्षणशता धीनमंदा प्रसाद अवस्थी ने की। प्रातःकाल नगर में शांति-सेनारेली निकाली गयी। जनता में ग्रामदान, ग्रामस्वराज्य के विचार के प्रति बहुत उत्साह पैदा हो रहा है।

—उद्दीप्त शंकरा

बलिया जनपद में ग्रामदान के बढ़ते चरण

● बलिया, १७ अप्रैल। जिले में ग्रामदान का कार्य बढ़ता जा रहा है। चौधरीह तहसील के सभी प्रखण्ड, जिनकी संख्या ६ है, १९६७ में ही ग्रामदान में शामिल हो चुके हैं। नये वर्ष में बलिया शहर तहसील में कार्य प्रारंभ हुआ है। तहसील के ४ प्रखण्ड—बैरिया, बैलहरी, गुरलीझर तथा दुबहड़ का प्रखण्ड-दान पूरा हो चुका है। पाँचवें प्रखण्ड हनुमानगंज में, जहाँ सोलहवाँ सर्वोदय-सम्मेलन संपन्न हुआ था, कार्य चालू है। पचास प्रतिशत कार्य पूरा हो चुका है। २० अप्रैल तक प्रखण्डदान हो जाने की पूरी उम्मीद है। तदनुसार शहर तहसील के शेष दो प्रखण्डों—मंझार और सोहाय—में २१ अप्रैल से कार्य प्रारंभ होगा।

भई के प्रथम सप्ताह में रतन तहसील के पाँच प्रखण्डों में एकठाया काम प्रारंभ करने की तैयारी हो रही है।

दुबहड़ प्रखण्डदान का विवरण कुल राजस्वग्राम-१३६; नाबिस्तानी (५२), छोटे (=) कुल ६०; ग्रामदान में शामिल ग्राम-७०; ग्राम का प्रतिशत १०%; प्रखण्ड की कुल जनसंख्या-७०,५००, ग्रामदान में शामिल संख्या-६१,८७६, जनसंख्या का प्रतिशत ८८%, प्रखण्ड का कुल रकबा-३१,२२८, कृषियोग्य भूमि-२४,१०८; ग्रामदान में शामिल रकबा-१५,५६१; रकबा का प्रतिशत ६३%। बलिया जिले में अब तक ग्रामदान ६१६, प्रखण्डदान १०, तहसीलदान १

—रामचंद्र शाही

खादी और ग्रामीणों हमारे राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग हैं

इनके संबंध में पूरी जानकारी के लिए पढ़िये

खादी ग्रामीण

(मासिक)

सम्पादक

जगदीशनारायण वर्मा

जागृति

(पाठिक)

हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित।

प्रकाशन का चोदहवाँ वर्ष।

विश्वस्त जानकारी के आधार पर ग्राम-विकास की समस्याओं और सम्भाव्यताओं पर चर्चा करनेवाली पत्रिका।

शारी और ग्रामीणों के अतिरिक्त ग्रामीण उद्योगीकरण तथा शहरीकरण के विकास पर मुक्त-विमर्श का माध्यम।

ग्रामीण उत्साह में उच्च तन्नासायी के समावेशनायें अनुसंधान कार्यों की जानकारी देनेवाली मासिक पत्रिका।

वार्षिक शुल्क : २ रु० ५० पैसे

एक अंक : २५ पैसे

हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित।

प्रकाशन का बारहवाँ वर्ष।

खादी-ग्रामीणों कार्यक्रम सम्बन्धी ताजा समाचार तथा योजनाओं की प्रगति का मौलिक विवरण देने-वाला पाठिक।

ग्राम-विकास की समस्याओं पर ध्यान केन्द्रित करनेवाला समाचार-पत्र।

गाँवों में उन्नति के सम्बन्धित विषयों पर मुक्त विचार विमर्श का माध्यम।

वार्षिक शुल्क : ४ रु०

एक अंक : २० पैसे

अंक-प्राप्ति के लिए लिखें

● प्रचार निर्देशालय ●

खादी और ग्रामीणों कमीशन, 'ग्रामीण'

इलाहाबाद, बिल्डिंग (पश्चिम) बम्बई-४६ परस

पूणिया का जिलादान विनोबाजी को समर्पित

१८ अप्रैल की पूणिया जिले के जिलादान समारोह की अल्पशता दादा धर्माधिकारी ने की। श्री बंधनाथ प्रसाद चौधरी ने पूणिया जिले के आन्दोलन का परिचय देते हुए कहा, "पूणिया-दान की घोषणा से धाम-स्वराज्य के चित्र की मूर्तरूप देने के लिए मुश्किल कार्यों का मास द्वार खुला है। यह स्पष्ट है कि धामस्वराज्य को मूर्तरूप देने का काम केवल सर्वोदय आन्दोलन में जुटे चौड़े-से कार्य-क्रियकों के द्वार न तो सम्भव है, न वांछनीय है।" पूणिया जिले में जिलादान की घोषणा से धामस्वराज्य की स्थापना के लिए अनुकूल स्थिति निर्माण हुई है। इस महान कार्य की सफलता से न केवल पूणिया का भला होगा, बल्कि पूणिया जिले का यह कार्य निम्न-दृष्टिगत में उसकी एक अमर देन होगी।

इसके बाद दादा ने अपने अल्पशोष प्रवचन में इस बात की ओर इशारा किया कि इसे अपने कार्य का प्रारम्भ मानना चाहिए। ओर आज से त्रिभेदारी वा ओर चिन्ता का आरम्भ मानना चाहिए। उन्होंने कार्यकर्ताओं का धर्ममन्दन करते हुए कहा, "आपसे निवेदन करता हूँ कि आज के शुभ अवसर पर आप इस आन्दोलन की जो मर््यादाएँ हैं, उन मर््यादाओं का विवतन करें। उन मर््यादाओं

पूणिया : जिलादान के बाद

● पूणिया जिले में गोधन का बड़ा हास है। वृषि की उन्नति के साथ गोधन की उन्नति आवश्यक है। अतएव गोधन की विकास-योजना पर विशेष ध्यान दिया जाय। प्रत्येक वतुमण्डल में एक समुन्नत गोशाला हो, जिसके द्वारा नरल-मुषारा के कार्य दिये जायें।

● वृषि-गोपालान एवं पामोद्योग के आधार से समन्वित धामविकास-योजना की जाय।

● संगठन एवं विचार-शिक्षण की दृष्टि से प्रत्येक गाँव में कम-से-कम १० सर्वोदय-नाथ वा सर्वोदय-मित्र २० ३-६५ वार्षिक के बनाये जायें। उस ढाँच से प्रत्येक गाँव में एक साप्ताहिक ('श्रुदान यज्ञ' वा 'धामोदय') पत्रिका दी जाय। दोष रकम का उपयोग सर्वोदय के संगठनात्मक लक्ष्यों के लिए किया जाय।

● प्रत्येक प्रखण्ड में एक सेवा-केन्द्र हो, जहाँ ३-४ कार्यकर्ताओं की टोली आकर प्रखण्ड में ग्रामवानी गाँव के सपठन, सिपाय एवं निर्माण कार्यों में धाम-सहायों को सहाह-सहायता देने का कार्य करे।

—श्री बंधनाथ प्रसाद चौधरी द्वारा प्रस्तुत जिलादान के बाद के कार्यक्रम

को कार्यान्वित करने के लिए धोत्र-जीवन में ओर अपने जीवन में भी, उन मर््यादाओं को चरितार्थ करना पड़ेगा, उनका गभीरतापूर्वक आज से विचार करें।"

विहार के मुख्यमंत्री श्री मोला पाटवान सास्त्री ने कहा, "इस धामदान-योजना का कार्यन्वय होना चाहिए, तभी गाँवों का समग्र विकास, सर्वोदयी विकास सम्भव है।" परन्तु आज समय का जो मानस वन है, उसे देखते हुए मुख्यमंत्री ने कहा कि आज समाज में प्रेम का अभाव है, बरफा का अभाव है। प्रेम से जो कुछ भी करने जाते हैं, वहाँ बाधा

उपस्थित हो जाती है। उन्होंने कहा कि मुख्य-मन्त्री की हैसियत से तथा इन जिले के निवासी की हैसियत से, जो भी आपकी बलना के अनुसार करने की आवश्यकता पड़ेगी, उसे करने का प्रयत्न करना। उन्होंने दावा भी जिले का दान समर्पित दिया।

बाधा मच पर खड़े हो गये। उन्होंने जिलादान के काम में परिश्रम करनेवाले कार्य-कर्ताओं को धन्यवाद दिया। बाधा ने इस बात पर जोर दिया कि जो लोग आज धामदान में शामिल नहीं हुए हैं, उनके पास फिर से जाना चाहिए और प्रेमपूर्वक समझना चाहिए। यह विवतन होता चाहिए कि आज जिसे भगवान नारायण ने प्रेरणा नहीं दी उसे बल देना। हमारे बाद गमारोह की पार्ववादी स्थापना हुई।

—गणेश्वर



● सुधियात्री, ४ अप्रैल : संघाल परपना में जिलादान का प्रथम कार्यक्रम है। अबल सारठ में कार्यकर्ताओं की एक टोली भूम रही है। महाराष्ट्र के धरिठ कार्यकर्ता श्री मंडुनोरजी के साथ अन्य कार्यकर्ता प्रचार-यात्रा कर रहे हैं। तीन गाँव धाम-दान में मिले हैं।

जवरदस्ती, असहिष्णुता नहीं

हमारा अत्याचार, अगर हम अपनी इच्छा दूसरों पर लाँटें, उन दुष्टोभर अथेको के अत्याचार से हजार गुना सख्त होगा, जिन्होंने नोकरदाही को जन्म दिया है। उनका आतंकवाद एक ऐसे अत्याग का लावा हुआ है, जो विरोध के बीच में अस्तित्व के लिए सघर्ष करता है। हमारा आतंकवाद बहुजन का लावा हुआ होगा, इसलिए वह उसमें ज्यादा बुरा और सघर्ष ज्यादा धानवी होगा। इस-लिए हमें अपने संघर्ष में से हर प्रकार की जवरदस्ती को निकाल देना चाहिए। अगर हम असहयोग के सिद्धान्त पर स्वतंत्रतापूर्वक अटे रहनेवाले चोड़े ही लोग हों, तो हमें दूसरों को अपने विचार के अनाने की कोशिश में मरना पड़ सकता है। अगर यह तो कहा जायगा कि हमने अपने पदों का अनाथ और प्रतिनिधित्व सचाई के साथ किया।

अगर हम असहिष्णुता से दूसरों के मत का दमन करेंगे, तो हमारा पक्ष पिछड़ जायगा। कारण, उस मूल में हमें यह कभी मालूम नहीं हो पायगा कि कौन हमारे साथ है और कौन हमारे विरुद्ध। इसलिए सफरता की अतिरिक्त घातें यह है कि हम अधि-अधिक मज-स्वातन्त्र्य को प्रोत्साहन दें। अपने मौजूदा 'स्वामियों' से हमें कम-से-कम इतना सघर्ष तो सीख ही लेना चाहिए। उनके अत्याग कीजदारों में उनके खिलाफ राय रखने के लिए सख्त सजाएँ रखी गयी हैं। और उन्होंने हमारे देशवासियों में से कुछ अत्यन्त उदात्त व्यक्तियों को अपनी राय अतिरिक्त करने के कारण गिरफ्तार किया है। हमारा असहयोग इस प्रथाओं के विरुद्ध एक मुला विरोध है। मत पर समझे गये इस प्रतिबन्ध के विरुद्ध लड़ने में हमें यही प्रतिबन्ध दूसरों पर लगाने का आराधनी नहीं बनना चाहिए।

इसके बाद किसका नम्बर ?

मत १६ अप्रैल को रेडियो पर तीन खबरें एक साथ आयीं। एन, पूर्णिया में मुख्यमंत्रीजी ने जिलादात समर्पित किया; दो, गुजरात के राज्यपाल ने अहमदाबाद के ग्रामदात-सम्मेलन में सन् १९६६ के लिए ग्रामदात के हट्ट कार्यक्रम पर जोर दिया; तीन, मध्यप्रदेश सरकार ने गांधी-जन्म-याता-वती के उपलक्षण में उन तीन आडुओं को छोड़ दिया जिन्होंने धात वर्ष पहले विरोधियों के नामने आत्म समर्पण किया था।

ये तीन खबरें एक साथ सुनायी गयी, लेकिन कोई मजहब ही है? देखने में दून में से कोई भी ऐसी घटना नहीं है जिसका देश के आज के जीवन में कोई महत्व दिखायो देता हो, लेकिन क्या इतना भी मानना मलज होगा कि ये लक्षण है उस राष्ट्रीय वेनना के जो परीक्षण है किधो चोख की सलाह है नभो रोमनी की। यह देख चुकी है कि नभे यजालो के लिए पुराने तरीकों को नहीं, नभे तरीका की अक्षरत है।

भारत का नागरिक ग्रामदात-दिलदात-राज्यदात की खबरें अतन्तर ने पढ़ता है, रेडियो पर सुनता है। वह जवर देजता है और सोचता है, यह सब मे क्या सुन रहा हूँ? क्या देख रहा हूँ? वेबल जाने दुखों का बूर उपहास, कुछ भ्रमिन्त आदतवाचियों का मिथ्या प्रयास, या सघर्ष मुक्ति का कोई नया रदेश, जिधकी चकन को अभी मेरी अंतिम पकड़ नहीं पा रही है? उसने आशाभरी निग हों ने आनन्दन को देखा मुद्र कर दिया है।

बिहार के १७ जिलों में से दो जिलों का दान पूरा हो चुका, १५ बाकी है। और, बिहारदात के लिए घोषित गारोल के पूरा हान में बाकी है सिर्फ ५ मई ने और कुछ बाकी दिन। ये जिले मिल गये, इधने ज्यादा गुणा इस बात की है कि अब सिर्फ पन्द्रह रह गये हैं। पन्द्रह में अटी पांच-टह और आठे। क बाकी का सकोष देना-देतने टूट जायगा। और, अगर बिहार आ गया तो दूसर राज्य क्या बंटे देता रहेग? बिहार के अलगा नई जिलों का और दान हो जाय तो एक तो दो आनदार गन्ना पूरी हो जाय। १९६६ के लिए इधने बड़ा दूसरा क्या सखल हाना? उत्तर प्रदेश ने तो 'उत्तर प्रदेश दान' की बात सानी भी है।

अभी 'दान' पूरा हा रहा है, दान पुरु हाना बाकी है। हम इतना ही सघर्ष कर सकते हैं कि हूवे लाज-दुःख में प्रवेश मिल गया है। जिधो उनग देगा सगने छया प कि लोच हृदय का रास्ता हमारे लिए बर हा गया है, लेकिन 'द न' से सिद्ध हो पाया कि भारत की आशा अभी जीवित है। उधने अन्तर अक्षर मोई उगीत जल रही है जिधो अन्तर सिधो राग यह गयो है। उवे टटा ही अनाि चकन उठतो है।

सर्पण का इतन भले ही मुख्यमंत्री या राज्यपाल के हाथों समन हा, पर एव समर्पण के पीछे जिस सखल की घोषणा है उसको पूर्ण जनता का ही बाध है। वट बस काय है; बहुत बडा है, इतना बडा है कि छोड़ो की गर्तिन के बिना पूरा हो नहीं पाया। गुण की घारा बढलने की गर्तिन छोटे लोगो में ही होतो है। गोवर्धन के उठाने के लिए शालवालो का हाथ लगना जरूरी था। पुराहित ने क्या बह दो, यजमान ने धडा के साथ सुन लो, लेकिन सुनने के बाद की सारी शांतिना यजमान को होंगे गयी बरनी है। प्रातिन के दान यज में यजमान जनता है। जिदादान होंने हो आदिन कार्यक्रमों की प्रतिन के वादर चली जानी है। यह कार्यक्रमों का गौरव है कि उधने प्रातिन को जनता के पाव पहुँचा दिया। अब कार्यक्रमों दृष्टि देगा, और जनता अपनी दानि से नवी मुद्र बरेगी। यह मुद्रि की क्या? गौन-गाँव में सखरान, इधने कम बुद्ध नहीं। एन १९६७ को स्वतंत्रता में 'स्व' नहीं प्रकट हुआ था, इध बार वह पीछे न रहने पाये।

पूर्णिया के बाद किसका नम्बर है ?

—सामर्थी

औजार बनाये वह इतिहास वा कर्ता नहीं है, इतिहास का विषय है।

ग्रामसदर के पीछे सहजीवन की यथार्थ आशाता

य ममान का यह अन्दोलन इतिहास के उस भागो विधाता को खोज के लिए है। 'लोक' घन्ट के दो अर्थ है। एक तो व्यक्ति और दूसरा समुदाय। 'लोक', 'पिपुल', 'पब्लिक' वह समुदाय है, जिसका कोई एक मन होता है, जिसमें सहजीवन की आकांक्षा होती है, सहजीवन का संकल्प होता है। अवेजी में इसे 'कम्युनिटी' भी कहते हैं। हमारे यहाँ उसे 'ग्राम' कहते हैं। केवल कुछ भोगद्रव्यो का समूह, थोड़े-से मनुष्यो का झुंड, ग्राम नहीं है। ग्राम मनुष्यो वा वह समूह है, वह समुदाय है, जो एक-दूसरे के साथ रहना चाहते हैं। आपने बाबा को कई बार यह बतते सुना होगा कि अगर दरअसल, यथार्थ ग्राम-संरूप है, उसके पीछे सहजीवन की यथार्थ आकांक्षा है तो जहाँ भूमिदान हो चुका है और जमीन वा वितरण हो चुका है, वहाँ बेदखलियो होनी ही नहीं चाहिए। संरूप में अड्डुन शक्ति होनी चाहिए। शक्ति की अपेक्षा, कानून की अपेक्षा, विधि-विधान की अपेक्षा, राज्य-सत्ता की अपेक्षा और धन-सत्ता की अपेक्षा मनुष्यो के सामुदायिक संरूप में अधिक शक्ति होनी चाहिए। सामुदायिक संरूप में जो शक्ति है, मित्रो वह कानून में कभी आ ही नहीं सकती। कानून दो तरह का होगा है। कुछ लोग विधिवरामण, कानूनपरस्त होते हैं। मउलत यह है कि बगैर दंड के भय के वे नियमो वा पालन करते हैं। सम्प्रदा के सहकारो के धारण नियमो वा पालन करने हैं। दूसरे कुछ लोग होते हैं, जिनका नाम है कानूनबाज लोग। अवेजी में उन्हें 'लिटिगेंट्स' कहते हैं। एक टुक़ा ऐसा हुआ, दो बकील एक-दूसरे के अलग-अलग में रहने थे। एक दोबारा दोनो के घरों के बीच में गी। वह दोबारा गिर गयी। जिध बकील की दोबारा की उसकी छत पर नहीं गिरी, दूसरे की छत पर गिरी। अब दग बकील ने उसको नोटिस दिया कि आपकी दोबारा का झण्टा →

क्रमिक विकास

	क्रमिक विकास	ग्रामदान	प्रखण्डदान
१.	पुराने ग्रामदान : राज्यसम्मेलन के पूर्व	२४	—
२.	मुलम ग्रामदान : जे० पी० की यात्रा (१ दिसम्बर '६३) में	११	—
३.	" " मई '६५ तक	२६	—
४.	विनोबा के बिहार-आगमन (११ दिसम्बर '६५) तक	६०	—
५.	विनोबा के रामीपतरा-निवास (१ जुलाई '६५) तक	१,६६६	१
६.	विनोबा-आगमन (११ मार्च '६८) तक	६,१०२	२६
७.	६ अप्रैल '६८ तक	२३५	१
		कुल : ८,१५७	३८

प्रखण्डदान के आँकड़े

प्रखण्ड का नाम	प्रखण्ड की कुल		ग्रामदान में शामिल	
	जनसंख्या	रकबा	जनसंख्या	रकबा
पूर्णिया सदर अनुमण्डल				
१. क्लीली	७६,६२२	६१,२१६-००	६१,६१०	५,५००-६५
२. भवानीपुर	५०,१३०	३६,८६८-५०	४२,७५२	३,५६०-६०
३. धमदाहा	६६,६६२	८७,१३०-६५	७५,३५४	६,५६३-७८
४. बड़हरा	७५,३५६	५५,२२३-५५	५६,७२६	७,०५६-२५
५. बनमनखी	१,१३,५०७	६५,१६२-०१	६१,३७३	१५,५५१-१५
६. सदर पूर्व	७५,४०५	१,१२,६००-१७	५६,६६५	६,२६५-११
७. दृत्वानन्दनगर	६५,७०२	३३,२६२-५८	५७,२७५	२५,६६१-८०
८. बसवा	७७,११८	६६,२८६-७४	६२,५११	७,८५०-१५
९. वायखी	७०,६८१	११,६५७-६६	५८,६३५	८,५८०-२२
१०. बैसा	४६,६५३	५६,५६६-६५	४७,५७७	८,७७६-१७
११. अमीर	६०,०६६	५३,६६६-००	५२,७६६	१०,३७६-१०
	कुल : ८,०५,५१७	६,७३,२१५-७२	६,५६,०५६	१,०५,७५३-३०

कटिहार अनुमण्डल

१. मनिहारी	७१,५०२	६२,३०७-१३	५५,८११	८,६६२-३०
२. बरगरी	१,१५,८००	२०,२६८-६६	६०,८५६	१७,२५६-६५
३. आमदाबाद	५६,६७५	६७,५३०-००	५६,७५१	६,२५५-०३
४. वारखी	६१,१३८	१५,३८८-५५	६६,५२८	१०,०५६-७७
५. बटिहार	६२,८०७	१५,७०६-३२	५७,६२२	११,६३३-६२
६. बलरामपुर	५०,५२२	५,६२५-६०	३८,६३१	५,११०-३३
७. प्राणपुर	५५,३२१	६१,६५५-५०	५६,२३५	७,३३५-८२
८. बड़वा	७६,८६०	१०,८६५-७६	६०,५१७	६,०११-०५
९. फलवा	६६,५५६	६२,५६६-१७	५६,०५८	५,६०६-६१
१०. आरमनगर	८६,९०८	३५,५५०-१५	७०,३५७	१६,७३५-५५
११. कोडा	७२,५३१	५२,३७५-१८	५७,५३६	१६,८६३-३०

कुल : ८,०५,५१७ ३,६७,६६५-३३ ६,५२,०८८ १,११,७५७-३३

मार्च १९६८ में आया। पहले तूफान में तो वारिसकोत बच गया था, लेकिन हंग तूफान में नहीं बच सका।

लेकिन दोनों तूफानों में एक बहुत बड़ा फर्क है। वह तूफान आया तो लोग थर्रा उठे। धून बहा, तीर और डेले परवर से लेकर गोली तक चली। उम तूफान ने दिल्ली की सरकार के कान छेदे कर दिये। पुलिस के दस्ते बाये और तूफान के नामन का बीर घुस हुआ। कुछ लोग जेलों में भरे

गये। कुछ लोग जंगलों में छिप गये। पूरा इलाका भय में कांप उठा, कोई कम्युनिस्टो के भय से, तो कोई पुलिस के।

धीरे इस तूफान के बाद आया दूसरा तूफान, लेकिन ऐसा जिसके आने से न मालिक डरे, न मजदूर डरे, न शरावा चौकी। पुलिस की दस्तुक, मजदूरी के डेले-परवर, आदिवासी के तीर-नमान और मालिकों के घर छोड़कर भागने की कोई जहरत नहीं रह गयी। वह दूसरा तूफान है ग्रामदान का।

पहले गाँव-गाँव में ग्रामदान के पोस्टर चिपकाये गये। कार्यकर्ताओं ने गाँव-गाँव, घर-घर जाकर लोगों के मन की बातें सुने, और अपनी बातें बतायीं। उन्होंने मालिकों से कहा, "गरीबी रहेगी, बेजमीनवाले रहेंगे, दुःख रहेगा, तो आपकी अमीरी, जमीन-जायदाद और भुज-भुविघाएँ नहीं रहेगी। दुःखन आपसे मजदूर नहीं, उनको गरीबी है।" मजदूरों ने कहा, "जो आम आप सुलगा रहे हैं, भट्टा रहे हैं, उममे आप नहीं जलेने, ऐसी निश्चिन्तता कहाँ है? नेताओं की जलार पर पदोन्नियों के घर पहुँचनेवाले का सुर बा घर भी जलार राग होगा। यह ठीक है कि आज के ज़िन्दगी में बेहतर है अच्छी ज़िन्दगी की कोकिस बरते-बरते मर जाना। लेकिन हंग कोनिस में सुनो-सुनो सबको ज़िन्दगी स्वाहा हो जाय तो हमें बुद्धिमानी की बात नहीं मानी जायगी।" फिर दोनों तबके के लोगों को उन भाषा, "आज की हादरा तो नहीं ही चलनेवाली

ग्रामदान

ग्रामदान का चले नूदान,
गाँव में जाये नवी ज्ञान।
मिलकर सभी अमीर-गरीब,
गाँव में लाये ग्रामदान।
नवदुग को है बडी पुकार,
गाँव-गाँव में ग्राम परिवार।

— पद्मचम धंग मनीरप मन्डल

ग्रामदान

ग्रामदान का चले नूदान
गाँव में जाये नवी ज्ञान
मिलकर सभी अमीर-गरीब
गाँव में लाये ग्रामदान
नवदुग को है बडी पुकार
गाँव-गाँव में ग्राम परिवार

— पद्मचम धंग मनीरप मन्डल

नवसाहस्राड़ी चित्र के गाँव-गाँव में ये पोस्टर बगला और हिन्दी में लगाये गये।

हमारे आदमी हैं

गांधीजी ने कोचरव में एक आश्रम बनाया। दिनभर चर्चाएँ चलतीं। अभ्यागतों से बातें होतीं। स्वराज्य के लिए तैयारी हो रही थी। गांधीजी के बारे में लोगों को कौतूहल-सा रहता।

वल्लभभाई पटेल अहमदाबाद में बकालत करते थे। गांधीजी की बातें जब शाम को क्लब में निकलती तो वे तिल्ली उड़ामा करने। लेकिन अपने हृदय में खिचाव महसूस करते थे। वे चरखस बहाँ जा पहुँचे। देखने क्या हैं कि गांधीजी सरकारी वाद रहे हैं और देश की स्वतंत्रता की बातें कर रहे हैं। अजीब-सी बात थी। लेकिन वल्लभभाई के दिल पर गांधीजी की सबाई का बहुत प्रभाव पड़ा। वे अनजाने ही गांधीजी के हो गये।

आश्रम चलता था और स्वराज्य की बातें चलती थी। अंग्रेज सरकार को बात बखरती थी। यह कोई मामूली आश्रम नहीं है, ऐसा उसको लगता था। गांधीजी के जाल में अगर इत सख नौजवान फँसते गये तो अंग्रेजों सलतनत को धोखा होगा, ऐसा डर उनको लग रहा था। गांधीजी को किस्तीन-बिस्ती बहाने अगर जेल में डूँ दिया जाय तो ये सब लोग तितर-बितर हो जायेंगे, ऐसी थाप्ता सरकार को थी। सरकार ताक मे थी ही और गांधीजी को गिरफ्तार किया गया। छत पर बैस चलाया गया। उममे भी कुछ अजीब-सा वर्तान गांधीजी ने किया। जो रास्ता लोग अख्तियार करते थे, उससे बिलकुल जुदा ही रास्ता उन्होंने अख्तियार किया।

जब ग्यावाधीश ने उनसे पूछा, "तुम कौन हो?" सड्डा भाव से गांधीजी ने कहा, "बुनकर और निसान हूँ।" सब देखते ही रह गये। कैसा गजब का आदमी है! इंग्लैंड में जाकर वेरिस्टरी पास कर आया है, लेकिन अपने को किसान और बुनकर कहलाते झे दाम नहीं आती।

फिर ग्यावाधीश ने कहा, "आप अंग्रेजी सलतनत के तिलाक लोगों को महका रहे हैं, यह जुर्म है।"

गांधीजी ने कहा, "यह शैतान सरकार है और इग्नो मुवालिफत करना मैं अपना धर्म मानता हूँ। लोगों में इतने तिलाक असंतोप पैदा करना मैं अपना फर्ज मानता हूँ।"

ग्यावाधीश ने कहा, "जातते हो इसका क्या फल होगा?"

गांधीजी ने कहा, "हाँ-हाँ, जानता हूँ। मैं तो आपसे प्रार्थना करता चाहता हूँ कि अपने देश के लिए काम करना अगर आप गुनाह समझते हो तो मैंने जान-बूझकर वह गुनाह किया है और आपके बल मे हो उतनी ज्यादा सजा आप मुझे दें। हाँ, अगर आपको लगे कि जो कुछ मैं कर रहा हूँ, वह ठीक है तो आपको चाहिए कि आप इस्तोफा देकर मेरे साथ हो लें।"

ग्यावाधीश महोदय ने छ. साल की कड़ी सजा देकर गांधीजी को जेल की दीवारों के पीछे बन्द कर दिया। लेकिन इपर देश के करोड़ों लोगों के हृदय में गांधीजी की श्रुति बिराजमान हो गयी। कैसी निडरता है! कैसा साहस है! सारे देश में एक नयी शैतना दौड़ गयी। अंग्रेजों सलतनत की घारी साध एक छोटे-से आदमी ने धाक मे मिला दी। गांधीजी की गिरफ्तारी का देश के कोने-कोने मे असर हुआ। गांधीजी की सजा की खबर आग की तरह सब दूर तक फैल गयी। बंगाल के एक गरीब नौकर को उनके मालिक ने रोता हुआ देखा। मालिक ने पूछा, "क्यों भाई, रोते क्यों हो?"

नौकर बोला, "गांधीजी गिरफ्तार हो गये हैं। छ. साल की कड़ी सजा उन्हें दी गयी है। अभी यह खबर सुनी तो बाप-ही-आप आँसू आने लगे।"

मालिक ने कहा, "खरे वेक्कफ, गांधीजी तेरे कौन होते हैं जो तू रो रहा है?"

नौकर बोला, "गांधीजी हमारे आदमी हैं। उन्होंने ग्यावाधीश को बताया कि—'मैं एक बुनकर हूँ, किसान हूँ।'"

गांधीजी सचमुच ही श्रमियों के आदमी थे। वे कहा करते थे, "मैं दखिनाराज्य का उत्पासक हूँ।"



बहुगुणी लोविया

लोविया एक बहुगुणी फल है, क्योंकि यह फल हफारे अत्यन्त फलमयी है।

लोविया दाल के लिए, चारे के लिए और हरी खाद के लिए उगाते हैं। लोविया का चोया लाभ यह है कि वह खेत की उर्वरा शक्ति को बढ़ाती है। लोविया की जड़ों में पाये जानेवाले कीटाणु हवा से नम्रजन लेते हैं और खेत को देते हैं, साथ ही खेत के माइक्रोवाइल जीवाणु के भी सक्रिय हो जाने से खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ती है। फलमयी बट जाने पर उसमें बोयी गयी फसल को विशेष तत्त्व मिलता है। यदि लोविया की फसल जोरदार रही हो तो १० से १२३ पौण्ड तक अतिरिक्त नम्रजन मिलता है। यदि लोविया हरी खाद के रूप में प्रयोग की जाय, तो २०-२५ पौण्ड नम्रजन प्रति एकड़ मिलता है।

लोविया का एक और भी गुण है। उसकी फलियों की बहुत अच्छी तरकारी बनती है। इन ५ विशेष गुणों के कारण लोविया की खेती बहुत ही लाभदायक है।

बोने का समय : लोविया सिंचाई के साधन होने पर जायद में मार्च के प्रथम सप्ताह या खरीफ में जून-जुलाई में बोयी जानी चाहिए।

खेत का चुनाव : खेत विशेषकर दोमट तथा अच्छे जल निकासवाला चौरस होना चाहिए।

खेत की तैयारी : भारी पैदावार लेने के लिए खेत में ७५-१०० मन गोबर की खाद, २० किलो से २ मन 'मुपरफास्फेट' और ३५ किलो 'म्यूरियेट आफ पोटाश' देना चाहिए।

यदि खेत सूखा है और नमी कम है तो पलेवा करके खेत की जुताई करें। इसकी पहचान गूल निकासने समय हो जायगी। यदि मिट्टी गुरगुरी हो और हल से गूल की मिट्टी दोनों ओर चिपक जाय तो पर्याप्त नमी है। यदि ऐसा न हो तो गोबर की खाद छिन्नकर पलेवा करें। ओट आने पर मिट्टी पलटनेवाले हल से एक जुताई करें। पाटा लगाकर हेरो चलाने पर खरपतवार इत्रा करें, फिर पाटा लगाकर ३-४ बार देशी हल से जुनाई

करें। दोमक की रोकथाम के लिए आखिरी जुताई पर खेत में १५ किलो बी० एच० सी० चूना १०% बुरके।

किसमें : पूसा सावनी, पूसा बरसाती, टाइप-५२९६, टाइप-५२६६, बल्यानपुर गूदेदार, टाइप-५६०३ ए०।

बीज-शोधन : भारी उपज के लिए बीज को कैप्शन या विराम १ भाग दवा ४०० भाग बीज मिलाकर चोयें। १/३ चाय की चम्मच दवा १/२ सेर बीज के लिए काफी है।

बीज की मात्रा :

हरे चारे के लिए—१०-१२ किलो

हरी खाद के लिए—८ किलो

दाल तथा हरी फालियों के लिए—३-४ किलो

जुनाई : चारे और हरी खाद के लिए बीज विशेषकर बो सकते हैं।

या फिर हल के पीछे कुंड में बोइये। परन्तु दाल अथवा हरी फलियों के लिए बीज को लाइनो में २ फीट के अन्तर पर बोइये। बीज देशी हल के पीछे बोइये और दूसरे हल से रासायनिक खाद बीज से हटकर ३-५ इंच की गहराई पर नाई या चोगा द्वारा डालिये। बीज जम जाने पर पीधे-पे-पीधे एक फुट रखकर बाको पीधे निकाल दीजिये।

सिंचाई : बोने के बाद पहली सिंचाई १४-१५ दिन में जरूर करे। जायद में हर १० दिन बाद सिंचाई करें। खरीफ में १५ दिन पर सिंचाई करें।

निराई-गुड़ाई : पहली सिंचाई के बाद तुरंत ओट आने पर निराई गुड़ाई करें। फिर फसल के अनुमार करते रहे।

कीड़े व रोगों से बचाव : जब फसल एक वारिगत की हो तो उस पर कीड़े तथा रोगों से बचाव के लिए प्रति एकर ४०० ग्राम कुमान, ६४० सी० सी० इंडिन, २० ई० सी० दवा की ४०० लीटर पानी में घोलकर छिड़किये करें। इससे पौधों में रोग नहीं लगता है तथा बल्ले और गति बहुत निबलते हैं। जलटा तथा जड़-सड़न की बीमारी का भी कम प्रकोप होता है।

भाहूँ लग जाने पर फसल पर १ लीटर डायजिनात या ८० सी० सी० डाफमेकान या नुवान दवा की ४०० लीटर पानी में घोलकर छिड़किये। पत्तियों का पीला पड़ना या धब्बे के रोग में जिनेब ८००-१२०० ग्राम या कुमान १ किलो; २ किलो पुरिया राब के साथ ४०० लीटर पानी में घोलकर छिड़किये। यदि खेत में छोटे-छोटे सफेद या हरे बुनगे हों तो १ लीटर इंडिन इट्टी दवाओं में मिलाकर छिड़कें। दवा छिड़कने के १५ दिन तक

पत्नी न खाये न पारा हो जानवरो का विगार्ये, क्योंकि दवायें
बहुरीसो हाती हैं।

हरी खास के लिए रतिवन जाइत, टाइन २ कोटिया बोधये।
इससे लगभग २० २५ पीण्ड नवनन खेत को प्रदान होया।

हरे बारे के लिए टाइन २ टाहा ५२६६ तथा रतिवन
जाइत बोधये। इससे लगभग ३०० १०० मन हरा पारा मि पा।

हरा फसिया के लिए घुसा धानको बरमाण प्रेदार या
टाहा ५२६६ बोधये। इससे लगभग ८० १०० मन हरी पत्तियां
मिलयी २५ ३० मन तक धाना किलेया। पैसाधार के लिए
५६०३ ए जाति भी बहुत अच्छी है। —महेश चरण सरसेना

आपसे निवेदन

हम गीतो के बारे में उपरोक्तो ज्ञानकारी दन की कोशिश क न
है। समस्त गाँव व लोगों को अधिक-से अधिक लाभ हो यह
हमारी मया रहती है। व ज्ञानरतिया हम अधिकतर पत्नी व पार
में प्रयोग और लोग बरचनाली समझी भी लोगोँ से मिलतो
है। समस्त अधिकतर सामायिक स्वार्थों और अथनी दवाओं के
इसोमाल से बात कियो होती है। इन खादी और दवाभा का
मिश्रण साधारण रिमानी के लिए सासान नहीं हाता बरिह
अधुनक मा हाता है। हमने साय ही बड़े पैमान पर खता कवन
पर इन वीरों से क्या लाभ हाति होगी इसका अनुभव पूरा पूरा
नहीं हाता है।

हम जवने हकि गाँवों में कुछ रिमान अपनी सुमिया पृथ
और अनुभवसिद्ध पत्नी की विपय ज्ञानकारी रखते हैं। वैसी ज्ञान
कारी और अनुभव हमारे रिमान भाइयों के लिए बहुत उपयोगी
साबित होगी।

हम अपने निरादन करते हैं कि आप किसान भाई का पार
सिद्ध गाँव को जलो के माकर अपने अनुभवों का लाभ दूरा क दूसर
निसान भाइया तक पहुंचाने में हमारी मदद कर और अपने अनु
भव हम लिख भेज। —सम्राटक



इस प्रकार किसानों की आय

पहले इनकार, फिर स्वीकार

एक दिन हम कुछ साफो धानपुर की गिबिर में बहुरे हुए
थे। नवरीन व ही गति हुरहा के कुछ लोग घुन की गडा लेकर
आये। एकरा पते का हतमाते के बाव जप खादी मठार के
व्यवस्थापन नहीं पहुँच तो पोत्री काना फूली मुलु हो गयी। एव
मे बहुरा ये खादी मठारवाले दिन रात भूट बाल-बोलकर हम
लोगों को बरेगात्र करते रहते हैं और मास कमने म सगे रहते
हैं। बहुरे मजज ने हमलोगों की बोर धारा बरके कहा।

सर्वीय तथा धामदानवा के लोग भी तो अवय-अवय बहु कर
तथा जाली निगम उमान बनबावर लोपा को धोखा दे रहे हैं।
कुछ देर बाद जब बालो का दौर कुछ धोखा पडा तो मैं भी
धाना भोग तोया। यह बात आप लोगो की बिल्कुल छठी है।
बाप सय काम धाम छोडकर लगभग २ पते में बैठे हुए हैं खादी
बदलन के लिए। हमारी एक सलाह है बाप लोगों से कि यह
खादी मठार आप अपने गाँव में ही बनायें। धामदान में पूरे
खादी-काम को गाँव में हो ख जाने को बात है। बाप दिगोके
भरोसे अथवा इतजार में पते बने शिवाये ? आप अपने गाँव
में धामद्वाराज के पत्नी जाये। 'धार की रानी' यात्र का बाल,
गात्र गात्र में हा स्थापन ' मरे इस सुभाब का लोगो ने स्थापत
रिया और बहुरा तिष्ठित हो इससे बोर हल्लोगो का भला
नूहा हो सके ।। खेतों के ताप प्रायोगोको को खडा करने में ही
सब प्रकार की मलाई है। फिर देर तक सवाल जबाब होता
रहा। तब तब खादी मठार के व्यवस्थापन भी पहुँच गये।
सबका काम भा हो गया। खेतों समय में लोग धामदान के
कुछ पंच-गोमर जादि भी गये गये। एक मीठ मल्लिना ने पत्रकर
अपने गाँव के लोको को समयाया हमने ती सब प्रकार से
अपना तथा गाँव का ही क्षित है। ये लोग बहुराँ कुछ से जा
रहे हैं ?

जिस हुरता यात्र के लोगो ने गिठने टाल प्रबन्धनन अमि
धान का बंद कराय बड़े गोरा के भरे हुए बामजत भी बाविस
करवाये उनी गाँव के कुछ जगाही मजबुत तथा श्री मल्लिनाई
धामदान बरतने में चुट गयी। —गामदाद सहा

वाईस गाँवों की सभा

एक-दो नहीं, पूरे वार्ड्स गाँवों के लोग आये हुए थे—हर गाँव से दो-चार। लगभग सब गरीब लोग थे। कुछ ही कमीज या कुर्ता पहने हुए थे। जिन्हे सफ़ेदपोश कहते हैं, वे तो शायद दो या तीन ही थे।

उस प्रारण्ड का दान हो चुका है। लंग अपने-अपने गाँव में ग्रामसभा बना रहे हैं। जो ग्रामसभाएँ बनती जा रही हैं वे अपने-अपने गाँव में ग्रामकोष निकलवा रही हैं, भूमिहीन को बोधा-कट्टा जमीन दिलाने की कोशिश कर रही हैं, और लोगों से कह रही हैं कि अब पुराने भग्ने आपसी ढंग से हल कर लिये जायें, और नये भग्ने पुष्टि अदालत में न जायें। भग्ने रहेंगे तो ग्रामदान नहीं चलेगा।

उस दिन 'प्रखण्ड मित्र-मंडल' की बैठक थी। जब प्रखण्ड के आधे से अधिक गाँवों में ग्रामसभाएँ बन जायँगी तो उनके प्रतिनिधियों को लेकर प्रखण्डसभा बनेगी। तब तब यह मित्रमंडल प्रखण्ड-स्तर पर काम करेगा। उस दिन बैठक खास तौर पर प्रखण्ड के भूदान किसानों के (जिन्हें भूदान में मिली भूमि दी गयी है) सवालियों पर विचार करने के लिए बुलायी गयी थी। ग्रामदान के बाद सबको एक-दूमरे के सुख-दुख में शरीक होना है, इसलिए भूदान-किसानों का दुख केवल उनका नहीं है, वल्कि प्रखण्ड भर की जनता का है। ग्रामदान मानता है कि मालिक, महाजन, मजदूर में से चाहे जिसका सवाल हो, सबको मिलकर सोचना है, और रास्ता निकालना है।

दो गाँवों में भूदान-किसानों को वेदखल कर दिया गया है, और बहुत-से भूदान-किसानों को प्रमाण-पत्र तो मिल गया है, लेकिन सरकारी तौर पर दाखिल-खारिज नहीं हुआ है। बरमा से कानज बी० डी० ओ० के दफ़तर में पड़े हुए हैं। वेदखली और दाखिल-खारिज का न होना—ये दो सवाल थे। लोग सोच रहे थे कि क्या किया जाय। अंत में तय हुआ कि वेदखली के मामले में सबसे पहले वेदखल करनेवाले मालिकों से मिला जाय और मालूम किया जाय कि दान देकर उन्होंने दान वापस क्यों लिया? दूमरे पक्ष की बात सुना ज़रूरी है। पूरी जानकारी कर लेने

के बाद दूसरी बैठक में तय किया जायगा कि आगे क्या करना चाहिए। कुछ भी हो वेदखली को मानकर चुप नहीं बैठना है।

आदिवासी गाँवों की समस्या बड़ी विकट है। आज कितने दिनों से ऐसा होता आया है कि पैसेवाले लोग पैसा देकर, फुमलाकर, डरा-धमकाकर, मुकदमों में फँसाकर, आदिवासी किसानों की जमीनें लिखाते आये हैं, और उनका जमीन पर कब्जा करते आये हैं। इधर कुछ दिनों से उनमें कुछ चेतना आ रही है। सोचने-समझने के कारण वे अपना जमीन की माँग करते हैं, और कभी-कभी जबरदस्ती कब्जा की हुई जमीन पर लगी हुई फमल काट भी लेते हैं। इस पर उनके ऊपर मालिक लोगों की ओर से पुलिस-अदालत में लूट-पेस कर दिया जाता है। एक नहीं, कितने ही लूट-पेस चल रहे हैं। जंगल-विभाग की ओर से चलनेवाले मुकदमों अलग हैं। आदिवासी को जंगल के शेर-भालू का डर नहीं है, डर है तो इन 'दिवङ्ग' लोगों का जो मनुष्य के भेष में शेर-भालू बने हुए हैं।

जंगल में बीड़ी का पत्ता तोड़ने-बेचने के लिए 'सहकारी समितियाँ' बनी हुई हैं। बीड़ी का बहुत बड़ा रोजगार है। हजारों मजदूर बीड़ों के कारखानों में काम करते हैं। मालिकों की कोठियाँ खड़ी हो गयी हैं। पत्ते का मुत्ताफा लेता है ब्यापारी, और इलाके के नेता, लेकिन पत्ता तोड़नेवाला मजदूर क्या पाता है? महँगी हज़ारों पर, उसकी मजदूरी नहीं बढ़नेवाली है। फिर ये सहकारी समितियाँ किसलिए हैं, नेताओं के भाषण और नारे किसलिए हैं, और सरकारी दफ़तर किसलिए हैं? ग्रामदान के बाद इन गवालों का भी जवाब देना है।

तब तक क्या किया जाय? पत्ता तोड़नेवालों का संगठन किया जाय? न्याय की माँग है तो संगठन क्यों न बनाया जाय? ज़रूर बनाया जाय, लेकिन किसका? केवल पत्ता तोड़नेवाले मजदूरों का? नहीं, बैठक में तय हुआ कि जिन ग्राम-सभाओं में ये मजदूर रहते हैं, उन ग्रामसभाओं का—केवल मजदूरों का नहीं—सम्मेलन बुलाया जाय। सम्मेलन में तय किया जाय कि क्या करना चाहिए। लेकिन दो बातें तय हैं: एक, यह 'लड़ाई' ग्रामसभाओं की है, केवल मजदूरों की नहीं; दो, सबसे पहले ग्रामसभाओं के प्रतिनिधि पत्ते के सरोदारों में मिलें और उनसे चर्चा करें। कोई बार-बार एतदस्ता न की जाय।

१८ ता० की बैठक में इतनी चर्चा हुई। दूसरी बैठक भाग्य में २ मई को बुलायी गयी है। ●

'गाँव की बात' : वार्षिक चंदा : चार रुपये, एक प्रति : अष्टाष्ट पैसे।

श्रीकृष्णदास भट्ट द्वारा मर्च-सेवा-संघ के लिए प्रकाशित एवं स्वैच्छेवाज प्रेम, मानमंदिर, वाघाणमी में मुद्रित।

विहारदान की दूसरी मंजिल

प्रदान का नाम	प्रदान की कुल		समयान में गणित	
	जनसंख्या	राज्य	जनसंख्या	राज्य
विशालगढ़ अनुमण्डल				
१ विषलवाक	४७ ६०१	२० ११२ ६४	४१ ०५३	१६ ४६४ ४४
२ बटुडुवाक	७६ ८२४	३२ ०६० ६१	६३ ४४४	२१ १३८ ०६
३ देवापाठ	४३ ४२३	२८ २४४ ०७	३४ ०५१	२१ ०२६ ४
४ घोसिया	६६ ६६२	३६ २०५ ३६	४ २६६	१९ ३ ४३६
५ ठाडुवाक	७६ ४८८	३१ ३२२ ६५	५७ ७४८	१६ ७ ८ ६६
६ विद्यानाथ	२२ ४६३	६ ४७१ ०४	१७ ७७०	४ ८० ० १
७ भावापाठ	८१ ६८४	२२ ६६१ २२	६४ ८७७	१ ८६१ ७१
कुल	४१८ ७६८	१६० ४८६ ७३	३ १६० १२४ ७२	०
अरधिया अनुमण्डल				
१ रामीपत्र	१ ६ ६०४	१ ६ २२२ २८	८४ ७६६	११ ६ ७६ ६
२ मरवासा	७२ ६३८	६२ ४७४ ०५	५४ ४८६	४ ६ १ ४४
३ मरवासा	१ ६ ६३६	६६ ८६ ३६	८३ १७७	१६ ६ ७६ ३
४ मरवासा	१ ३३ २०७	६५ ८०० ६२	७० ६६४	२७ ३४ ६ ६४
५ अरधिया	१ ०३ ६३६	६० ७४० ००	८० ३८४	३६ ८०७ ६४
६ विहारी	४४ ६१२	४६ ७६४ ३६	३६ ८२३	१४ ४ ७ ६६
७ मरवासा	६६ ७७०	६१ २०३ ००	४६ २०३	१७ १६६ ३६
८ बुधिया	४३ १४१	४० ४१ १७	२६ २६	१२ ४१४ ०८
९ मरवासा	८५ ४६२	६५ ६६ ००	६६ १६	२२ ४६८ ४७
कुल	७३२ ४५३	६७८ २८६ १६	५ ८३ २३७	७ ७१ ४६६ ७४

→ हमारी धन पर पदा हुआ है कर्मी हवा नीचिने नही तो हम क्रिया के लिए नासिग दापर करेगे। दूसरे ने नोटिस दिया कि हमारा इमला कपरी धन पर महीनों से पदा हुआ है जब ज तो सोटापे नही तो हम हरन के लिए दावा करेगे। सोनो कानून जानत थे। कानून मनुष्यों को निशा नही सत लखन म राक सत है। कणल बगल में बरे हवा मनुष्यों को एक-दुसरे से लखने मे राक लखनी ही शत्रुता की मर्दान है। मनुष्यों को मिलना बिषो शत्रुता की मर्दान मे नही आता।

मनुष्यों को मित्र न रा भा दोस्त न रा तु हम रा हर अदात्मन मनुष्यों को मित्र न का था लन र के थो मायिक है उनको के जो गर भासिक है उनके ताप माण्डिवन के निर कारण के द्वारा मिलाने के इस बाता न रा नय प्रमाण कोर भूत न का लन है। मर्दान कान हमारी धदा कुटिल हो ज ती है मानव निष्ठा कुटिल हो जाती है हमारी काना गिक कुटिल हो ज ती है और हम कहने लगते है कि मह ऐषा अवसर है जब कानून को मंद कोर जाय प्रवर्तनी अनिवाय है। बिषो यह अनिय गान बदा मरमान है यदुत मयानक है। क्रिसी कुर ई को हप अनिवाय मानकर आनी अला तथा रा खमका लेते है। धीरे धीरे ब रा काजा है र कुराई की मानना उधर म निष्क जानी है अनिवाय की ब रपा ही दोष रह ज ती है। कोर जर अनिय बरा ही दोष रह जाती है तो मुम मर रा सुमात हो जाता है। इधलिए हपकी बटुा स रान रदते हो क अवापगत है। कानून ले हिय ते मनुष्य त मनुष्य कभी नही मिला।

हमारा आरोकन अर मनुष्यों को मिल ने बा है तो उरका बा र कैलर मही हो सता। हम कहते है नि इतने समय ने होना चाहिए। यह हमारी उरदता बा दोरक है। जब हम कहते है कि अणुभर तक हाया चाहिए तो उरदा एक ह मतलब है नि एक क्षण में हो जाना चाहिए बाक हो जाना चाहिए। बासिक के कलर में उरने पचाय में बाक →

हुन योग ३७ ८१ १८८ १६ ०६ ६८० ६७ २२ १३ ४४१ ५ २२ ७२१ ३४
 प्रष्टय पहरी जनसंख्या को बाक कर दोर जनसंख्या में से ७५ प्रतिगत के हलाकर एव व केर धामानी गरक बा टोल क (उन गरक में बगने जाले) प्रकितानी से उस गरक बा टोले में आने निर के जमीन की ५१ प्रतिगत जयान धामान में ग मिक कर प्रदा वान कराया गया है। आरों को देखने से जिले के हुन रकजा बा बटुा हो कम माय प्रसभदान में धर्मिलित हुआ है। इसका सुख नारण यह है नि प्र म न में धर्मिलित न विगों की अरिभाषिक बनीन दूसरे गरकों में भी पवनी है बिष गरक के धामान में यह धामिल मही हुन है एव ह्य मिल में अविहाग जमीन दूसरे जिले क लोपो की है बिनाक यही कायत होना है।

धामदान सम्पुटि की तैयारी
 विहार धामान अधिनियम के अउतन प गिन धामदान की गाकारी मायता दिवाने के स म में ५६ गरकों क कायप्रदा तपार दिने गये एव सम्पुटि क विहारी क कायप्रदा में ३०० गरकों के न पशा न कायत दिने गये। सम्पुटि-नकाशिकारी द्वारा ४१ गरकों को ले गयी विरहित के बा ६७ गरकों की भूमि की ध्यनितन म लक्षिक धमयान में लनिहिन की बा कुरी है तथा इन गरकों को विधिवत् प्र वतनी गरक प विर काने की न तपत्र शारवा की जा री है।

→ नारायण प्रसाद महल मकोरक जिला यकीय मंडल सुविधा

भूदान-यम शुक्रवार, ३ मार्च १८

श्री जयप्रकाश नारायण

का पटना में भव्य स्वागत

पटना : २८ अप्रैल । ७० दिनों की विश्वयात्रा में वापस लौटने पर यहाँ श्री जयप्रकाश नारायण का भव्य स्वागत हुआ। बिहार प्रामदान आन्दोलन की ओर से उन्हें ३१, २२६ रुपये की मंजूरी तथा २० प्रत्युत्थान समर्पित किये गये। श्री जयप्रकाशजी ने दोपहर को रात्रि की विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों के बीच दो घंटे भागवत पाठ किया। शाम को एक विद्यालय जन-सभा भी हुई।

श्री सुरेश्वराम भाई द्वारा

पुनः उपवास

इलाहाबाद : २३ अप्रैल। नगर को अज्ञात और कुलद स्थिति से व्यथित होकर श्री सुरेश्वराम भाई ने आज दोपहर से पुनः उपवास शुरू कर दिया है। इससे पूर्व ८ अप्रैल को उनका १५ दिना का उपवास पूरा हुआ था। उपवास को भोषणा करते हुए श्री सुरेश्वराम भाई ने अपने वक्ताव्य में कहा है कि आरंभ हालत सुधरती है, और नगर में स्थिति सामान्य हो जाती है, तो वे उपवास समाप्त कर सकते हैं।

इलाहाबाद में शांति-प्रवास के लिए कुछ शांति-सैनिक सज्जित हैं। कुछ प्रमुख नागरिकों को बारा से कोलिया बल रहा है कि हिन्दू-मुसलमान सम्भावना के प्रतीक-वस्तु बालों तरफ से दृष्टि-पूर्वक के लिए कुछ कार्य किये जायें।

सुधारगतता अभी उनका स्वास्थ्य ठीक है, लेकिन बचन तन्वी से गिर रहा है।

एक आधिकारिक सूचना के अनुसार २६ अप्रैल को श्री जयप्रकाश नारायण इलाहाबाद जानेवाके हैं। उस समय तक नगर को स्थिति सामान्य हो जाने और उसके फलस्वरूप श्री सुरेश्वराम भाई का उपवास समाप्त हो जाने की आशा की जाती है।

उपवास : तीव्र संवेदना का व्योतक

सुरेश्वराम भाई ने २३ अप्रैल की दोपहर से आभरण उपवास शुरू किया है। उन्होंने इसके पहले १५ दिन का उपवास किया था। उस उपवास वा पाण ८ अप्रैल को हुआ। उस दिन मैंने उनकी जो स्थिति देखी, वह काफी अच्छी थी। मन उनका बिल्कुल सचेत, जागरूक और स्वस्थ था। शरीर कमजोर था, लेकिन बहुत स्वस्थ था, और समस्या की तरफ देखने की उनकी जो वृत्ति थी, वह भी पुनः बहुत उदात्त मान्य हुई। मैं ऐसा समझता था कि उनकी इस तपस्या के बाद, चायद वहाँ की परिस्थिति सुधरती चली जायगी। परन्तु कुछ दिन की शांति के बाद फिर घटनाएँ होने लगीं सुरेश्वराम जी की ओर दूसरी तरफ की। उनके मन से मान्य हुआ कि दो बड़े मुसलमानों को बहिस्त भेज दिया गया। एक कम्युनिस्ट तरुण और एक दूसरे तरुण जो दोनों हिन्दू थे, उनको भी

मार डाला गया। पत्र १८ तारीख का था। उसमें उनके चित्त की व्यापक व्यक्त की गयी थी। लेकिन वल मान्य हुआ कि उन्होंने आभरण उपवास शुरू कर दिया है। वे शांति-सैनिक हैं; उन्होंने यह लिखा है कि वहाँ हम रहते हैं वहाँ अगर ऐसी परिस्थिति पैदा होती है, जोर उस परिस्थिति पर हम किसी तरह काय्य नहीं पा सकते हैं, तो हमारे जीने में क्या अर्थ रह जाता है? सोनभ मल्लव रह जाता है? ऐसे उनकी उत्कट भावना है। वह तत्रन्त इस उपवास के रूप में प्रकट हुई है। यह उपवास स्वयत्पूर्व प्रार्थना है। यह उनको अपनी तीव्र संवेदना का जोर होना भी पोषा का चोतक है। हम भी प्रार्थना करें कि उनकी यह प्रार्थना शीघ्र ही फलदायी हो और उनका उपवास सफल होने की परिस्थिति शीघ्र ही प्रस्तुत हो।

पटना, २७-४-६८ — दादा धर्माधिकारी

तीन दागी भाई जेल से मुक्त

आगरा, १८ अप्रैल। जेलवासी के दागी भाइयों की मुक्ति के लिए २६ जुलाई '६७ को श्री हृषिकेश सहाय, (गांधी स्मारक निधि) तथा कु० शम्भूजी निगम (नटिया गांधी विचार परिषद) ने राष्ट्रपति बा० जॉर्जि ह्यूबेन से मिलकर प्रार्थना-पत्र दिया था। गांधी जन्म मताश्री के उल्लंघन में मध्यवर्ध के राज्यागत ने १५ अप्रैल '६८ को शांतिपर जेल के बन्दी सर्वो भीषणन उर्फ लुरा, भगवान विह, तेज सिंह इन तीन दागी भाइयों को बिना कठिण पत्र के सुभक्त सम्भोचन करने का आदेश दिया है। इन भाइयों ने विनोदाजी के मन्थन चर्चल पाटो में दत्तव्यमार्ग किया था।

मीन शांति-जुलूस

रहताम, ८ अप्रैल। यहाँ नगर शांति-मण्डल के तत्वावधान में श्रीरामत्रय महाराज और सुहृदों के पवित्र पत्र पर हिन्दू-मुसलमान सम्भावना सद्भावना हेतु ७-८ अप्रैल को मीन शांति-जुलूस का आयोजन किया गया। इसमें सभी जाति, धर्म और सम्प्रदाय के पयुव और प्रतिष्ठा नागरिकों ने भाग लिया। जुलूस में शांति-मण्डल के फोस्टर के जुलूस में सम्भव दो गो नागरिक भाई-पहनी ने भाग लिया। (समेन)

एक अवश्यन सूचना

'भूदान-यज्ञ' का ७ जून '६८ का अंश निर्धारण होगा।—५०

भूल मुधार

(भूदान-यज्ञ : १८-४-६८ के अर्थ में पृष्ठ ३८६ : बालन तीन में)

"अविनयमनय विद्यो दमय मत्त राभय विषय भूगटपण्णु।

भूदद्यां निम्नारय तारय संसार-मागतः॥"

पूक के लिए धन्य करें।—४०

वार्षिक गुरुक : १० रु०; विद्या में १८ रु०; या १ पीण्ड; या २११ टालर। एक प्रति : २० पैसे
श्रीकृष्णदक्ष भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित धर्म रत्नमाला में, मानसिंदा, दारापत्ती में सुद्वि

आलोक और उन्माद

'आलोक' का अर्थ है प्रकाश। उसका काम है अंधेरा दूर करना। वह न तो शीर्षे खोलता है और न चलने के लिए कहता है। इनके लिए व्यक्ति को स्वतंत्र छोड़ देता है। इसके विपरीत 'उन्माद' का अर्थ है नया या प्रागल्भ्य। वहाँ अंधिमा को चेतना पर कोई बाधा शक्ति हावी हो जाती है।

धर्म, राजनीति, कला, साहित्य आदि संस्कृति के सभी तत्वों में दोनों रूप मिलते हैं। उन्माद जन्म आलोक के रूप में होता है, किन्तु अज्ञेय या परम्परा बनकर वे ही उन्माद हो जाते हैं। आलोक प्रगति का प्रेरक है और उन्माद प्रवाह का।

दूसरे द्वारा कही गयी बात कितनी ही अच्छी हो, उसे कितनी ही आकर्षक शब्दों में प्रकट किया जाय, जब तक जीवन में नही उतरती, अनुभव नहीं बनती। और जब तक अनुभव नहीं बनती उसे आलोक नहीं कहा जा सकता। तब तक वह बोर उन्माद है। भगवान बुद्ध ने कहा था, 'आजो और परीक्षा करके देखो, किसी बात को तब तक स्वीकार मत करो जब तक बुद्धि में न उतरे।' उनकी धोपया थी कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना दीपक स्वयं बनना चाहिए। भगवान महावीर ने उधी बात को दूसरे शब्दों में प्रकट किया। उन्होंने कहा, 'अरे मानव पू हो तेरा मित्र है। यहार क्यों बूँड रहा है?' उपनिषदों ने इसी तथ्य को ध्रुवण, मनन और निदिध्यायन के रूप में उपस्थित किया। उन्होंने कहा, 'दूसरे की बात सुनो, किन्तु सब तक न...मानो जब तक तर्क की कसौटी पर न उतरे।' बुद्धि में उतर जाने पर उसे जीवन में उतारो, तमो सत्य का साक्षात्कार होगा।'

सर्वो, तत्त्वित्वों और श्रुतियों ने धर्म को आलोक के रूप में उपस्थित किया। वे दीर्घा और बसो बनकर स्वयं जले। पद्य आलोचित किया। लेकिन धीरे-धीरे आलोक समाप्त होता गया और परम्परा के रूप में वे उन्माद बन गये। उनका नाम लेकर धर्मकार को भूँट होने लगे। अनुयायी धर्म

पागल होकर नारे लगाने लगा, ढोल पीटकर नाचने लगा। दूसरी परम्पराओ पर मालियो की वर्षा करने लगा। परस्वरूप धर्म-संस्था वरदान के स्थान पर अभिवाप बन गयी और नव-मानव स्वागत के स्थान पर उससे नाए जाने का उपमा बूँड रहा है। नीति-कुशल जन-नायकों ने इस उन्माद का प्रयोग अपना स्वार्थ-सिद्धि के लिए प्रारम्भ किया। वे तरह-तरह के चोगे पहनकर, समक में न आनेवाली माया में कुछ गुणगुनाकर, पागल की तरह नाचकर तथा अन्य चेष्टाएँ करके भोली-भाळी जनता में उन्माद उत्पन्न करने लगे, जो वर्तमान विश्व की विकृत समस्या बने हुए हैं।

धार्मिक उन्माद के पुस्तक, ईस्वर, प्रवर्तक, गुण, वेदभूषण, क्रियाकांड आदि अनेक रूप हैं। कुछ धर्मों ने पुस्तक-विशेष का नाम लेकर कहा कि उसमें लिखे हुई

चिन्तन-प्रवाह

बात को असायाः सत्य मानना चाहिए। वह बुद्धि में उतरे या न उतरे। इतना ही नहीं, उसके विकृत सोचना भी बड़ा पाप बजया। जो बात समक में न आये उसके लिए अपनी बुद्धि को दीप देने के लिए बड़ा। दूसरी ओर स्वतन्त्र बुद्धि से काम लेनेवालों के लिए नास्तिक, मिथ्यात्वा, नाकिर, ऐथिस्ट (Atheist) आदि शब्द पर लिपे। इतना ही नहीं बुद्ध परम्पराओं ने ही उस पुस्तक का पढ़ने और अर्थ समझने तक का अधिकार वर्ण-विशेष तक सीमित कर दिया। इतर वर्ग का धर्म एकमात्र उस वर्ग की आकांक्षा पर चलना हो गया।

कुछ परम्पराएँ धर्म-विशेष को अपना केन्द्र मानने लगी। उनका कथन या कि वह ध्यक्ति स्वयं परमात्मा या उसका अवतार है। उसको प्रत्येक चेष्टा तथा प्रत्येक हलचल धर्म है। समने लड़ाई लड़ी, दूसरी को धोसा दिया, भूँड बोला, प्रेम-स्वीकाराएँ कीं, नामुक्ता

का प्रदर्शन किया, इस सबको धर्म मान लिया गया। वहाँ अपने आप में जनैतिकता या दुराचार नाम की कोई वस्तु न रही। उस व्यक्ति की प्रसंघा करते रहना तथा उसके प्रति प्रेम प्रकट करना ही एकमात्र धर्म का आधार हो गया। ऐसे सत्यय भी चले जहाँ यह कहा गया कि सवार में पुण्य एक-मात्र बही है। समस्त व्रत अपने आपको स्त्री उमकें और उसे रिमाने का प्रयत्न करते रहे। फलस्वरूप भक्तों में गिनती कराने के लिए पुण्य भी छाड़ी पढ़ने और स्त्रियों के समान चेष्टाएँ करने लगे। परस्पर-व्यवहार में स्त्रीलिंग का प्रयोग होने लगा और महीने में बार दिन रजस्वला रहना भी प्रारम्भ कर दिया।

बन्धुकी में मोहम्मद के बाल को लेकर आतंक फैल गया। हज्रत मोहम्मद भूँड, पोगी, रजिबहार तथा वेईमानी को बड़ा पाप मानते थे, किन्तु अनुयायियों ने उन्हें इतना दुरा नही समझा, जितना उस बाल के गुण होने को। भगवान बुद्ध का दाँत छन्दन से भागत छाया गया, एक वर्ष तक लुपूय निकलते रहे और करोड़ों ध्वजियों ने दर्शन किये। वे सभी उन्माद के ब्रिचिच रूप हैं।

प्रत्येक धर्माचार्य अपने परम्परा को ईस्वर, उसके अवतार एतन्मात्र या समकथ व्यक्तित्व को जोड़ता है। यह धोपया करता है कि मैं उसका उत्तराधिकारी या वंशज हूँ।

राजनीति के क्षेत्र में यह उन्माद विध्या प्रदर्शनों, जापोले नारो और अजीउ नज गौरव गागर उत्पन्न किया जाता है। अपने में गुन न होने पर भी पूर्वजों के गुण गाये जाते हैं। धर्मको वर्ण भी वीत जाने पर भी किसी अजीउ महापुरुष के साथ अपना सम्बन्ध जोड़कर अद्वारा न अनुभव किया जाता है और उतने मात्र मे अपने आगरी उच्च समक लिया जाता है। भोनी जनता रिबेक और उन्माद में बही पगनी है। पाठन में देना जाय तो ध्वजिता का सुवर्णन नित्री गुणां के आधार पर होना चाहिए। रप प्रकर के उन्माद उत्पन्न होने पर हृष्टि सत्य को नही पढ़वाना पानी।—इन्द्रचन्द्र शास्त्री एम० ए० पी०एच० डी०

शान्ति-सेना

दुस्रो को अतिरिक्त दण्ड से घालन करने के लिए दिन में तृतीयो अहिंसा होनी चाहिए, ऐसी अहिंसा जो दीपी-दण्ड का भी वेधपूर्वक अन्वितन करती है। ऐसी वृत्ति एकाएक नहीं पैदा हो सकती। यह सभी का सारो है, जब उसने लिए धीरज के साथ अपना प्रयत्न किया जाय।

शान्ति-सेना के भावों विपरीत को अपने पास में लपटावित भुषण के सहारे सारा में बना और उनसे परिचय बढ़ाना चाहिए। वह उसके और सब उससे परिचित होने चाहिए। और उसे अपनी वेधपूर्वक और निस्वार्थ सेवा द्वारा अपने हृदय और जेने चाहिए। सरकार का कोई हिंसा दाना हुआ और हलका न बना जाय, विशेष से प्रोत्सहित न करें। अपने धाराय से नहीं टारक गये और न वे भुषण की तरह जमीन से निकल सके हैं। वे समाज का दुःखसहारा को ही उनके हैं और दुःखिए उनका अन्वितन के लिए समाज जिम्मेदार है। दूसरे शाखा में, वे हमारे समाज के रस की निरानी सम्मले जाने चाहिए। तब को दूर करने के लिए पहले हमें उसके अन्वले कारण का पता प्रकर लपाना चाहिए।

जब के सभ्य ने कोई यह न समझे कि प्रहिंसक सभा (शान्तिसेना) उन्हां लिए चुनी है जो अपने शोक में अहिंसा के भीतर रहे तथाक अन्वले का पता के न स एवम करत है। यह उन सबके लिए चुनी है, जो उन सबों का ही सार करत है और उन पर ध्यान करने का अन्वेषाधिक प्रयत्न करते हैं। अपने अतिरिक्त लोग भी शान्ति-सेना कभी नहीं बनये। यह उन्हां समाज को शक्ति, जो अहिंसा व शासन की इमानदारी के भीतन करत है।

१ 'शान्ति', १५५ १०१
२ 'शान्ति', १५५ १०१

क्रितीनी क्रान्तियाँ, लेकिन क्रान्ति कहाँ ?

अगर सरकार की साथ सच हो तो स्वतंत्रता के बीस वर्षों में कई क्रान्तियाँ हो चुकीं। वर्षों पहले जब सांप्रदायिक विकास-यात्रा का उद्घाटन हुआ था तो यह सच था कि यह नये भारत की नयी शक्ति है। पचासवीं राज की भी शक्ति का हो साब रिया गया था। भाषरा मजल को तो वैहकमी ने स्यालम शोध-प्रदान हो रहा था और, पंचवर्षीय यात्रा में तो समग्र शक्ति की दृष्टि में कोई कमी को नहीं रहते।

ये 'क्रान्तियाँ' हो चुकीं जो जब एक पारसी विदेशी पंचवार ने भारत के बारे में लिखा कि यह एक ऐसा देश है जो एक नहीं, आधे दर्जन शक्तियों के लिए परा हुआ है, लेकिन आश्चर्य है कि एक शक्ति भी नहीं हो रही है।

यह भी एक स्रोत नहीं है कि क्रान्तियों 'क्रान्तियों' होये हैं उन सरकार पक्षा केवल सरकार को रहना है, दूसरे किसीको दूनी से भी नहीं मिलती।

इस (दुःख) दिनों के देशों में हीनेवाको एक शक्ति को बर्बाद जोगों से पल रही है। कोमुट्टुण बीज (बहरत शोध) उस शक्ति का नाशक है। चाय, गैरों और मन्के के कुछ ऐसे बीज निकल आये हैं कि-हैं अगर उनिन माना में राष्ट्रीयक खाद और पानी मिल जाय तो उनका बहुत बड़ जाती है। इसके अलावा यह भी सच हो परा है कि पानी और खाद के मिलने पर एक शोध से को तीन फलमें का जा सकती है। इन बातों से यह सचा है तो है कि यह दिन सब दूर नहीं है जब भारत को विदेशों से अलग नहीं मंगाना पड़ेगा, बल्कि परत दूसरे देशों को अलग भेज सरेगा।

देशा दिन को आयेगा यह शोधक कितने चुनीं नहीं होगी ? हम तो यह सोचते हैं कि यह दिन का परा : विदेशा स अलग मंगाना तो मात्र, सभी सच कर देना चाहिए। सचसे अर्थ और बहुमो शक्ति यही है कि भारत के पास को कुछ है—और यह कम नहीं है—उसे अंतर लाना शीर्ष, और अंतर लाना ही ही तो इन्वितन के साथ परता जायें।

कवरा ता इस वचन को दूसरे देशों को भेजा जा रहा है, लेकिन सच उनसे से ही हम मान ले कि 'कवरे को शक्ति' हो गयो ? लार्डो करीको नमो पीठें बिल्ला बिल्लाकर यह रही है कि यह शक्ति प्रती है, भूमी है। शक्ति ती सब मानो 'अप' अब शीठें डेके।

नये बीज, राय धीनक सार, ट्युबेकल और नहर का पानी, सरकार से मिलनेवाली पूँजी आदि के अन्वेष पर सेमी में 'क्रान्ति' को जो बाध रहते जा रहते हैं उसके देव में उत्पद्यक तो वा नाशक, इसमें सच नहीं, और उत्पद्यक बढ़ेगा तो विदेशी मुद्राओं को निभेगी, पर प्रयत्न यह है कि क्या हुआ उत्पादन भुषी और नेकार जनता के पैट में बैठे रहेंगा ? दुयमे अलग देहावी कैसे विदेशों ? उत्पद्यक के पोषण का कितने अन्व होरा ? विपणन से मुक्ति कैसे मिलेगी ? समाज की और कदम कब बढ़ेंगे ? और, साधनों के विकास में साथ साथ समाज का शुभ विकास कैसे होगा ? क्या इन सच की उत्पद्यक-वृद्धि, में यह सच होगा ?

अगर केवल उत्पद्यक ही कियो तबू बरादा हा तो यों नहीं सुरुकर भुषीसद और शान्ति-सेना, और नयो गहा साम्यवाद ? सामाजिक सुधो को अलग उत्पद्यक मात्र, उत्पद्यक-वृद्धि को मान करना भी स्याल यह के भी बात है—विलकुल पुरानी और विहम्नी। साधनों का अन्व से उत्पद्यक में रहना जगाने से अन्वित मुद्रा है। अन्वित अन्व सामाजिक-व्याय और उत्पद्यक का मेल विमाना है। भारत की सभी मेल को बहरत है।

लेनी में सरकार को यह सारी शक्ति समग्र विधानों को लेकर की न सच है। इन बातों है कि देव के ती सच में ५० शीठों से बलादा 'पुनर का शीर्ष' करत है।

आलोक और उन्माद

'आलोक' का अर्थ है प्रकाश। उसका काम है अंधेरा दूर करना। वह न तो झिंझि झोलता है और न चलने के लिए कटुता है। इनके लिए व्यक्ति को स्वतन्त्र छोड़ देना है। इसके विपरीत 'उन्माद' का अर्थ है नशा या पागलपन। वही व्यक्ति को चेतना पर कोई बाह्य शक्ति हावी हो जाती है।

धर्म, राजनीति, कला, साहित्य आदि सस्कृति के सभी तत्वों में दोनों रूप मिलते हैं। उनका अन्त आलोक के रूप में होता है, किन्तु रूढ़ि या परम्परा बनकर वे ही उन्माद हो जाते हैं। आलोक प्रगति का प्रेरक है और उन्माद प्रवाह का।

दूसरे द्वारा कही गयी बात किन्तु ही अच्छी हो, उसे कितने ही आकर्षक शब्दों में प्रकट किया जाय, जब तक जीवन में नहीं उतरती, अनुभव नहीं बनती। और जब तक अनुभव नहीं बनती उसे आलोक नहीं कहा जा सकता। तब तक वह कोरा उन्माद है। भगवान बुद्ध ने कहा था, 'आजो और परीक्षा करके देखो, किसी बात को तब तक स्वीकार मत करो जब तक बुद्धि में न उतरे।' उनकी घोषणा थी कि प्रत्येक व्यक्ति को अपना दीपक स्वयं बनना चाहिए। भगवान महावीर ने उसी बात को दूसरे शब्दों में प्रकट किया। उन्होंने कहा, 'अरे मानव तू ही तेरा मित्र है। बाहर क्यों ढूँढ़ रहा है?' उपनिषदों ने इसी तथ्य को श्रवण, मनन और निदिध्यासन के रूप में उपस्थित किया। उन्होंने कहा, 'दूसरे की बात सुनो, किन्तु तब तक न मानो जब तक तर्कों को कसौटी पर न उतरो। बुद्धि में उतर जाने पर उसे जीवन में उतारो, तभी सत्य का साक्षात्कार होगा।'।

सूत्रों, तपस्विभ्यो और ऋषियों ने धर्म को आलोक के रूप में उपस्थित किया। वे दीपों और बत्तियों बनकर स्वयं जले। पथ आलोकित किया। लेकिन धीरे-धीरे आलोक समाप्त होता गया और परम्परा के रूप में वे उन्माद बन गये। उनका नाम लेकर अंधकार को पूजित होने लगी। अनुयायी धर्म

पागल होकर नारे लगाने लगा, दोल पीटकर नाचने लगा। दूसरी परम्पराओं पर गालियों की वर्षा करने लगा। पल्लवरूप धर्म-सत्या चरदान के स्थान पर अधिशास्य बन गयी और नव-मानव स्वागत के स्थान पर उससे प्राण पाने का उपाय ढूँढ़ रहा है। नौदि-कुशल जन-नायकों ने इस उन्माद का प्रयोग अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए प्रारम्भ किया। वे तरह-तरह के षोभे पहनकर, समझ में न आनेवाली भाषा में कुछ गुनगुनाकर, पागल की तरह नाचकर तथा अन्य चेष्टाएँ करके मोली-माली जनता में उन्माद उत्पन्न करने लगे, जो वर्तमान विश्व की विकृत समस्या बने हुए हैं।

धार्मिक उन्माद के पुस्तक, ईश्वर, प्रवर्तक, गुरु, वेदाभूषण, विद्यादाता आदि अनेक रूप हैं। कुछ धर्मों ने पुस्तक-विशेष का नाम लेकर कहा कि उसमें लिखी हुई

चिन्तन-प्रवाह

बात को अक्षरसा सत्य मानना चाहिए। वह बुद्धि में उतरे या न उतरे। इतना ही नहीं, उसके विच्छेद सोचना भी बड़ा पाप बताया। जो बात समझ में न आवे उसके लिए अज्ञानी बुद्धि को दोष देने के लिए बट्टा। दूसरी ओर स्वतन्त्र बुद्धि से काम लेनेवालों के लिए नास्तिक, मिथ्यावाद, कांफिद, ऐपिस्ट (Atheist) आदि शब्द पढ़ लिये। इतना ही नहीं कुछ परंपराओं ने तो उस पुस्तक का पढ़ने और अर्थ समझने तक का अधिकार वर्ग-विशेष तक सीमित कर दिया। इनर वर्ग का धर्म एशमात्र उस वर्ग की आज्ञाया पर चलना हो गया।

कुछ परम्पराएँ अज्ञान-विशेष को अपना केन्द्र मानने लगी। उनका कथन था कि वह व्यक्ति स्वयं परमात्मा या उसका अवतार है। उसको प्रत्येक चेष्टा तथा प्रत्येक हलचल धर्म है। उसने लड़ाई लड़ी, दूसरों को पोषा दिया, भूख भोला, प्रेम-सीधएँ मी, बागुठटा

शान्ति-सेना

दलों को अधिकृत रूप से शान्त करने के लिए रिक में सचची अहिंसा होगी चाहिए, ऐसी अहिंसा जो राष्ट्रीय-धर्म का भी प्रेरणापूर्ण अतिगमन करती है। ऐसी वृत्ति एकाएक नहीं पैदा हो सकती। वह सभी का धर्म है, जब उसके लिए धीरे-धीरे के साथ लम्बा प्रयास किया जाय।

शान्ति-सेना के भाषी विद्यार्थी की अनेक परमाओं के लक्षणों में प्रथम के गहरे मतों में आना और उनके परिचय बनाना चाहिए। वह अपने और सब अपने परिवर्तित होने चाहिए। और उनके अपनी प्रेरणाओं और निस्वार्थ सेवा द्वारा अपने हृदय को नये रूप में परिवर्तित करना चाहिए। समाज का कोई हिस्सा इसका सुन्दर और हृदयानुभवात्मक भाग न हो सके। सुखे आकाश न नहीं टूटने परने और न वे दूसरे की तरह प्रतीत हो सकें। वे हैं। वे समाज की सुन्दरता को ही उपलब्ध हैं और इसलिए उनके अस्तित्व के लिए समाज जिम्मेदार है। दूसरे पक्ष में, वे हमारे समाज के रूप की निर्धारणी विशेषताएँ हैं। समाज का हृदय बनने के लिए पहले हमें उनमें अपनी भावना का पता भरकर लगाना चाहिए।

जब तक के बचन तो कोई शब्द न समझे कि अहिंसक समाज (शान्तिसेना) उन्मुखतापूर्वक सुनी है जो अपने जीवन में अहिंसा के भीतर रहे तथापि व्यर्थ उन कष्टों के साथ प्रयत्न करत है। यह उन सबके लिए सुनी है जो उन व्यक्तियों का हृदय भरते हैं और उन पर अत्यन्त करत है। अहिंसक प्रयत्न करते हैं। पूर्ण अहिंसक लोग तो शान्ति-सेना क्या नहीं बनोगी। वह उन लोगों को हारि, जो अहिंसा का धर्म को ईशान्वरों से कायिग करतें।

१ 'दृष्टि', १३ अ. १०।
२ 'दृष्टि', २१ अ. १०।

सम्पादनीय

फिक्तनी क्रान्तियाँ, लेकिन क्रान्ति कहाँ ?

अगर सरकार की आज सब हो तो स्वतंत्रता के बीच सचों में कई क्रान्तियाँ हो चुकीं। वगैरह जब सामुदायिक विकास-योजना का उद्घाटन हुआ था तो कहा गया था कि यह नये भारत की नयी क्रान्ति है। पचासवीं राज को भा क्रान्ति का ही नाम दिया गया था। नावराज्यल को तो नेहरूजी ने साक्षात् तोय-स्नान ही कहा था और पंचवर्षीय योजना में तो सम्पूर्ण वारि-की टटि से कोई कमी की ही गयी।

ये 'क्रान्तियाँ' हो चुकीं या जब एक पारसी विदेशी पत्रकार ने भारत के बारे में लिखा कि यह एक ठेका देग है या एक नहीं, भारतीय विदेशी पत्रकार ने भारत के बारे में लिखित व्यक्तियों है कि एक क्रान्ति भी नहीं हो रही है। यह भी एक कौतुक ही है कि विदेशी 'क्रान्तियाँ' हानी है उन सरकार पता केवल सरकार को खूना है दूसरे किशोको टूटने से भी नडा निकली।

इस कौतुकपूर्ण बोज (वगैरह सोड) उन क्रान्ति का नाटक है। धान, गेहूँ और मक्के के कुछ ऐसे बोज निकल जाय है किन्हे अगर उचित मात्रा में रासायनिक खाद और पानी मिल जाय तो उस बड़ा बढ जाती है। इसके अलावा यह भी समझ हो गया है कि पानी और खाद के मिलने पर एक छेत्त से दो तीन फसलें लाय सकती है। इन बातों के यह असा हता है कि वह दिन अब दूर नहीं है जब भारत की विदेशी से अन्त नहीं मंगाना पड़ेगा, अन्त भारत दूसरे देशों को खाज्य भेज सकेगा।

ऐसा दिन भी आयेगा, यह सोचकर किसे सुनी नहीं होगी ? हम तो यह सोचते हैं कि वह दिन आ गया। विदेशी सचक मंगाना तो बाज, अन्तो बन्द कर देना चाहिए। सबसे बड़ी और पहली क्रान्ति यही है कि भारत के पाठ को कुल है—और वह कम नहीं है—उने गान्धेय सवा सीधें और अन्त मरना ही हो तो इन्तर्गत के साथ मरना नहीं।

क्या तो इस अन्त को दूसरे देशों का भेजा जा रहा है, अन्त नया उतने से हो हम मान लें कि 'क्रान्ति की क्रान्ति' हो गयी ? लाठी-कपड़ों की पीटें किताब-किताब नये बोज, राय अन्त खाद, टयूबवेल और नहर का पानी, सरकार से मिलनेवाली पुँजी आदि के अन्त पर सेनी में 'क्रान्ति' की जो बात बड़ी या रही है उसने देश में उत्पादन तो बढ जायगा, इन्तमें सच नहीं, और उत्पादन बढ़ेगा तो विदेशी मुद्राओं की निम्नो, पर फल यह है कि बडा हुआ उत्पादन सूची और बेकार जनता के घट में बढ़ेगा ? उसने 'नायक बेकारी के निम्नो ? उत्पादन के साथ ही फल होगा ? निम्नो से साथ साथ समाज का गुण विकास बने हाया ? या इस तरह की उत्पादन-वृद्धि से यह उद होगा ?

अगर वेतन उत्पादन ही निम्नो तरह बढ़ाना हा तो वगैरह मुद्रा मुँजीबाद और पानि-बाद, और बनी नई मायबाद ? सामाजिक दूषण को अन्त राखर माय, उत्पादन-वृद्धि की बात करना तो साल पहले की बात है—विशुद्ध पुँजी और निम्नो, नावराज्य समाज का उत्तरदाई में बढ़ना उतने से अन्त मुँडना है—क्याक या सामाजिक न्याय और उत्पादन का सच मिलाना है। भारत का उद्योग क्षेत्र की बकल है।

ये में 'न्याय' का यह धार क्रान्ति अन्त किशोको को अन्त का ना टटि है। इन बातों है कि दस व से उठटें में २० चीपटी स प्यदा 'गुड बा चीनी' करत है।

उनको औजात इतनी छोटी है कि इस खेती से उनका ३० दिन १२ महीने दोनों बचत पेट नहीं भरता। इस खेती में श्रान्ति बच और बँसे होगी ?

सरकारी 'श्रान्ति' पेट की नहीं, पैसे और मुताफे की खेती को बढ़ावा दे रही है। जो सम्पन्न हैं उन्हें और अधिक सम्पन्न बना रही है। सम्पन्न किसान मजदूरों को अपनी ओर मजदूरों को निकालते जा रहे हैं। पिछले वर्षों में बड़ा किसान, व्यापारी, अधिकारी और स्थानीय नेता, इन चार का गीन-गाँव में ऐसा जबरदस्त गुट बन गया है कि सामान्य किसान, शरीर या मजदूर बनने लिए नहीं स्थान नहीं देवता। इन चार बड़ों का पचासवोराज अभिघात बन गया है। सरकार और बाजार के सम्मिलित प्रहारों को बर्दाश्त करने की क्षमता में नहीं रह गयी है। इच्छे अलावा सरकार की यह नयी 'श्रान्ति' पूरी खेती को बाज से बड़ी अधिक तरवार और व्यापार की मुहताज बना देगी, और उत्पादन-वृद्धि का यह नारा देवम्यापी गये पूँजीवाद का अन्वयता सिद्ध होगा। अपर पढ़ी श्रान्ति है तो फिर प्रतिश्रान्ति क्या है ?

विज्ञान और विकास के छलिया मार्गों से गाँव तक तक ठगे जायेंगे ? एक ओर शासनों का विहास हो, और दूसरी ओर समाज जातिगत, वर्णगत, क्षेत्रगत विपन्नताओं को सधर्मों में डूबता जाय, तो ऐसी श्रान्ति किस नाम की ? श्रान्ति उसे बड़े के विश्व में विज्ञान और समता के समन्वय से जीवन का एक सपूर्ण नया नमूना विवक्षित है। लेकिन यह श्रान्ति दरदरों से नहीं निकलेगी, उगना उदगम जन-जीवन में ही बड़ी होगी। ●

किसकी जिम्मेदारी,

कैसी कुण्ठा ?

जगदीश : देश में जो दृष्टा और तोड़फोड़ की प्रवृत्ति बढ़ रही है, क्या यह गांधी-विचार माननेवालों की शिफलता का फल और परिणाम है ?

विनोय : इसकी जिम्मेदारी भारत के पचास करोड़ लोगों पर है, जिनमें 'शाबा' भी शामिल है। शाबा के करोड़ शिभीमार है। कुल जिम्मेदारी पचास करोड़ जनता पर है। प्रथमतः की ज्यादा है, शरीर जनता ने उन्हें चुना है, वे मात्र एक व्यक्ति नहीं है। उन राजनीतिज्ञ दलों की भी ज्यादा है, जो सरकार बलाते हैं, जीवन-विचार माननेवालों की जिम्मेदारी है, वे शल गांधी-विचार माननेवालों की ही नहीं।

शिश्कों की नैतिक जिम्मेदारी

जनता के साथ सीधा सम्पर्क आवश्यक प्रभाव की शक्ति पैदा हो

विश्वको वा नही पड़ेगा, वो विधका पड़ेगा' अगर उनका नैतिक प्रभाव न पकवा हो, वो शिश्को को मानना होगा कि उनको कमी है। कही दगा हुआ, और बुलिय बानी, वो बापको नोकरो से 'सर्वेभ' किया ऐदा नहीं होगा। लेकिन बाप मानेंगे कि वह बापको नैतिकजिम्मेदारी है, नाकामयाबी है। अगर बापके विचारियों में से बहुत ज्यादा 'परसेट' विचार्यों परीक्षा में एक हुए, तो बाप यह बापको जिम्मेदारी मानेंगे या नहीं? वैसा ही यह है।

विनोय : 'पाकिदिसिपस' का तरीका है कि वे दुकड़े करना जानत है। इस शक्ति को तोड़ना ही, तो दूसरी शक्ति खरी होनी चाहिए—पौर की शक्ति। एक विचारों की शक्ति खरी हो और दूसरी विचारों की, जिससे की शक्ति खरी हो। दोना की बावस्यता है। उपनिषदों में बादेग दिया—

अग्न ऋषि व्यवजानान्, अग्न वदु कुर्वन्ति।
(अप को बड़ा समझना चाहिए, और उसे बजाना चाहिए।) शेरों को जेपेगा भी, तो लडाईं भी जीती नही जा सकती। दूसरी शक्ति है जान की। शैतन को बाकार देने का काम बापको हीना गया है। यह जो शिश्कों की हैशियन थी, उसके बजाय शिश्क बाप सामान्य हैशियन में आ गये हैं। शिश्कों में विभाग हुए हैं, विचारियों में विभाग हुए हैं। फिर विचार्यों विधक शिश्क, ऐसे विभाग हुए हैं। दोनों मिलकर होनी है विद्या शक्ति। पर उनसे बाव अलग अलग विभाग हो गये हैं। जिनका 'स्ट्रेट' बावतव में एक होना चाहिए, वे अगर जाने-जाने बावतव-अवग सप बनार्यों, तो शक्ति कैसे खरी होगी? इन सारे प्रसनों का उत्तर कहीं हो सकता है, तो वह विद्वान में ही हो सकता है। और वह हाणा राजनीति से अलग होने से और लोकनीति से जुड जाने से।

पडा दिया, अब हमारा कोई कर्तव्य नहीं है, तो चलेगा नहीं। बापका 'मायेभ' के साथ 'कस्टेट' होना चाहिए। 'मायेभ' के साथ 'कस्टेट' न हो, तो राजनीति पर बापका अगर कही पड़ेगा।

प्रश्न फिर लोकनीतियाओं का भी एक दल बनेगा।
विनोय शक्य वा भी एक दल बनेगा, ऐसा बापका कहना है?

प्रश्न राजनीतिगुरु और लोकनीतिगुरु किस तरह के आचार्य द्वारा बन सकते हैं?

विनोय इसका निर्णय विद्वान खुद तय करें कि क्या कोई उनको 'स्ट्रेट' करे? बापको 'शान्दरेन्स' होगी, सेमिनार होगे, उसमें बाप सचसम्मति से अपनी राय प्रकट करेंगे। विद्वानों की सचसम्मति से राय प्रकट हाती है तो वह भी अगर बाल्की है। ये शीर्षक कैसे करना, यह डिटेल् का विषय है। प्रथम यह ध्यान में आ जाय कि हमारी एक स्वतंत्र छाकन है, जो हमने खोयी है, उसको जागू करना है, नै शिश्को को आदेय हुआ नहीं, बल्कि वे देय की आदेय हैं, गेवा में चाहूंगा।

प्रश्न अस्पान्ति-शमन की जिम्मेदारी उठाने का मतलब तो 'ला एण्ड आर्डर' की जिम्मेदारी उठाने जैसा है।

विनोय 'जा एण्ड आर्डर' की जिम्मेदारी बाप पर नहीं, बाप पर नैतिक प्रभाव की जिम्मेदारी है। कम्युनिस्टों का मानना है कि 'स्टेट' बल विवर बने। पानी हर कोई जानना-जानी जिम्मेदारी समझेगा और जोक व्यवहार करेगा, तो 'स्टेट' की आवश्यकता ही नहीं रहेगी। अब इसके लिए नैतिक प्रभाव की आवश्यकता होती है। बापको सोचना होगा कि नैतिक प्रभाव

प्रश्न मनुष्य-स्वभाव सराई है, वह इसकी ओर कैसे मुड़ेगा?

विनोय बापका यह बजान बजाने के लियेलाक है। स्वार्थ छोडने की बारा कमी नहीं कहता। स्वार्थ स्वार्थ माने, इतना ही कहना है। बाप यह सोचें कि अपना स्वार्थ ठीक तरह से कैसे खेपेगा? बापके पूछने का मतलब यह है कि बापका 'गुण ह्युमन नवनीटिज' चाहता है क्या? बाप मानते हैं कि मानव का स्वभाव है कि वह अपना-अपना स्वार्थ खोसता है। मैं उल्टा मानना हूँ। मानव स्वभाव कौटा है, इसका निरखन उतप-वे उतम काटून में खोसता है। बाप लीजिए कि शक्य पर चलते हैं, तो जानूँ मैं बापका नहीं है। शक्य पर मनुष्य पकवा, तो उसका टेलीशान नहीं बापका। शोरी का टेलीशान बापका और काटून सजा होगी। बल्ल हूँ तो अस्वाभो की टेलीशान बापका, बल्कि वह मानव-स्वभाव के लियेलाक है। कही माता ने लडके पर प्रेम किया, ऐसी शबर 'पेररो' में नहीं जाती, क्योंकि प्रेम करना मानव के लिए स्वाभाविक है। दूसरी बात बोट में जो बावलेन लगाया है, उसको साबित करना पडता है, और 'बायट' का काम मुबारिय को मिलता है। बतने शक्य से खुशी होना पडु का स्वभाव है। दूसरों के सुख से खुशी होना और दूसरों के दुख से दुःखी होना मनुष्य का स्वभाव है।

राजनीतिगुरु और लोकनीति-गुरु होने में काम है। राजनीति से अलग हुए बिना राजनीति पर अगर पड़ेगा नहीं। पहले राजनीति से अलग होना पड़ेगा। फिर हमसे बावस्यति की बात कही हो है। बाव सिधिन ऐसी है कि शक्यो विद्योने बनना ही नहीं की, कि पार्टी-पार्लियमन के बिना राजनीति हा बननी है, यह विद्योने घोषा तक नहीं। बाव 'डेमोक्रेटिज डेमोक्रेटिज' है, 'पार्टीपार्लियम डेमोक्रेटिज' नहीं है। अगर विचार ऐश मानें कि हमने स्टूडन्ट-बालेको में

[भागलपुर विश्वविद्यालय के प्राचार्य बादि के साथ दिनांक ६-३-६८ को हुई चर्चा से]

सामान्य नागरिक के आत्मप्रत्यय का आधार

लोकसत्ता

पूर्णिमा जिलादान-समारोह में दादा धर्माधिकारी का अध्यक्षीय भाषण
(उत्तरांश)

सन् १९८६ में पहली बार जब 'स्वास्थ्य' शब्द का उच्चारण राष्ट्रपितामह दादाभाई नौरोजी ने किया, तो तीन शब्द उन्होंने दिये : 'गजुनेट, पत्रांटेट, ओमंडइज'—लोक-गिरण करो, आन्दोलन करो और संगठन करो। ये तीन प्रक्रियाएँ भिन्न-भिन्न नहीं हैं। एक ही प्रक्रिया के ये तीन अंग हैं और तीनों साथ-साथ चलाने चाहिए। आज हम इस ओर चीन की क्रांति के बाद, फ्रांस की क्रांति तो पुरानी हो गयी, ऐसे युग में आ गये हैं कि जब क्रांति की प्रक्रिया में से ही लोक-गिरण होना चाहिए।

जिनके पास सम्पत्ति नहीं है, जिनके पास स्वामित्व नहीं है, ऐसे व्यक्तियों की संख्या समाज में अधिक है। जो समाज में बहुसंख्य हैं, जिनको वोट का अधिकार प्राप्त है, जो अपने वोट से दिल्ली के तख्त को उलट सकते हैं, पलट सकते हैं, इनकी शक्ति जिनके वोट में है, और जिनकी संख्या समाज में बहुत अधिक है, उनको अगर आपने हिंसा के और कुसंस्कारों के पाठ पढ़ा दिये, तो समाज का कोई हिस्सा कभी नहीं हो सकता। लोकसत्ता हमेशा के लिए विरोधित हो जायगी। उनको हिंसा का पाठ पढ़ाने की आवश्यकता नहीं है। जो पढ़ाना चाहते हैं, मैं समझता हूँ वे निराश हो गये हैं, 'लोकतात्मा पर से उनका विश्वास उठ गया है, मनुष्यता पर से विश्वास उठ गया है। क्या वे यह मानते हैं कि हिंसा में सच्चा उनके हाथ में जायगी, जिनके हाथ में आज कुदाली, कुदाड़ी और हल है ?

इंटा चलेगा तो सत्ता उसके हाथ में जायगी जो इंटा चलावे में सबसे अधिक नियंत्रण होगा। और जो इंटा बुझाकर उसे हाथ चला सकेगा, उसके हाथ में अगर सत्ता और सम्पत्ति जायगी, सत्ता, सम्पत्ति, धन, तो निःसंभलक साधन जिस व्यक्ति, या व्यक्तियों के समूह के हाथ में जायेंगे, क्या वह देशद्रोही का समूह होगा ? क्या वह परिवर्तन का समूह होगा ? उसमें न 'लोक' रहेगा और न 'लोक-चारित्र्य' रहेगा। जिसे आप 'विश्वल करैक्टर' कहते हैं, नागरिक-चारित्र्य कहते हैं, उस नागरिक-चारित्र्य की दोषा भाँति की प्रक्रिया में से ही दोषा जाती चाहिए।

आत्मप्राद का संस्कार :

लोक-चारित्र्य का निर्माण

परराज्यत दान में और इस दान में बहुत बड़ा अंतर है। परराज्यत दान संगठित और स्वाभिमूल्य के संरक्षण के लिए था। जो निधन है, जो दरिद्र है, जो स्वाभिमूल्य नहीं है,

उनकी सम्हालना प्राप्त करो, सम्हालना इसलिए प्राप्त करो कि सुन्दारे धन और सुन्दारे स्वाभिमूल्य का संरक्षण हो। आज एक का दान यह था, लेकिन यह दान बहुत है कि सभी छोटे-बड़े, सभी मालिकों का दान करना है। स्वाभिमूल्य छोटा-बड़ा नहीं होता, स्वाभिमूल्य स्वाभिमूल्य है। यह कोई छोटा या बड़ा हो। यह अनसंयुक्त है। सभी को स्वाभिमूल्य का संरक्षण करना है।

पहले-पहले जब मैं यशवीर भावा, बहुत पहले की बात है, तो एक बूढ़े गुरुन पर्यटाला में मिले। हमने पूछा कि क्या रिताजी का धाऊ बनने काय है ? कहा नहीं, हम तो यशवीर देखने आये हैं। मैंने उनसे पूछा कि आप कैसे काय है ? कहने लगे, मैं अपना ही धाऊ बनने आया हूँ ! पहले-पहले यह बात मुझे थी। मुझे साजुब हुआ कि यह आदमी होय में है या नहीं ? अपना धाऊ कैसे करेगा ? उठो न कहा, नहीं हमारे बेटे बने-ह सब नागरिक हो गये हैं, हमको

पता चल गया है कि वे हमारा धाऊ नहीं करनेवाले हैं, इसलिए हम अपना ही धाऊ करने में लिए आये हैं और इस आत्मप्राद से हमें स्वर्ग प्राप्त होनेवाला है ! गया भी आपके बिहार में ही है। यही पर दो महापुरुष हुए, जिनके नाम सान्नीम है— गोनमुद और अगोका। राजाओं के अगोका और गतों में, महात्माओं में, गोनम बुद्ध। वे दो पुरुष ऐसे थे, जो सार्वभौम माने जाते हैं। देशकाल, मर्यादा-निश्चय मान्यता जिनके लिए समार में है, ऐसे वे दो ही महापुरुष हैं और वे आपने बिहार में हुए। मैं समझता हूँ कि उन महापुरुषों का तर्जुन ब्रह्म, स्वाभिमूल्य जिन लोगों के पास में है, चाहे अन हो या मर्यादा, उन लोगों के आत्मप्राद से ही होने-वाला है। उनके लिए यह मुर्दा है। और गोनोहित्य ऐसा पवित्र पुरुष अगर करता है तो बिहार के लोग का प्रयत्न होना चाहिए। बिहार-निवासियों के लिए अत्यन्त पुण्य का यह अवसर है। इस दान में एक उत्सव निहित है। इस जिया में वे जो संस्कार होगा, उसमें से लोक-चारित्र्य का निर्माण होगा, और उस लोक-चारित्र्य का यह प्रभाव होगा कि अंत में आपनों राज्यसत्ता और विधि-विधान के अन्तरे के बिना लोकतान्त्रिक, प्रभावदायी लोकतान्त्रिक जागृत करने की सामर्थ्य और प्रयत्न प्राप्त होगा।

निधो, यह लोकतान्त्रिक अत्यन्त शक्ति होरी है। कहा यह जाना है कि मानावरण में एक 'स्वयंसेवक' इस के लिए मोहल गीर 'सेवक' होगा है। हमको और आपनों यह निर्धार नहीं देना। इसी तरह लोकतान्त्रिक प्रभाव, लोकतान्त्रिक का एक अत्यन्त दयान होता है। यह साधन-सामर्थ्य के जागृत होता है।

मिस्टर 'नीलेश्वरी' :

पर्यमान भाषण का सार्वभौम भाषण दान में मैं एक बात कहूँगा : एक दान का बुद्धिमत्ता में बहुत बल पकी, विचार दिया। एक का दर्शनियर, दुर्गम का सर्व-बहा भागी सर्वज्ञ, दीक्षा का मुक्ति का इवनेटर जनरल, और एक चले गुरुन वे जिनके स्वाभिमूल्य का विचारों बना नहीं था। चर्चा का विचार था—साहित्य में कहा गया

है कि जब होगा और आरम को भगवान ने
 पंदा किया तो पहले आरम को पंदा दिया
 और उसी पक्षी में से यह होना पंदा
 हुआ। अर्जुन कहते लया, 'अब सबसे पहले
 मुझे पंदा किया होगा।' नहीं तो पक्षी में
 तो निश्चय ही किसने होगा? वही तो मैं ही
 रहा होऊँगा सबसे पहले। इसलिए मेरा जो
 पंदा है वह सबसे पुराना है।' इन्दीवर
 कहने लगा, 'रहने दीजिये, उषको रखा वहाँ
 होगा पहले? पहले तो भीषणो बनानी पड़ी
 होगी। यह वगैर इन्दीवर के हो सकता
 है? तुमने पहले मैं रहा होऊँगा।' तीसरा
 कहने लगा कि 'इसके लिए कम-से-कम धार्मिक
 तो चाहिए? किसी से सपना न हो पर न
 हो, इसलिए अन्तर्यामी आवस्यता ही।
 सबसे पहले मैं अन्तर्यामी पुलितवाना रहा
 होऊँगा। तुम लोग नहीं।' और यह चौथा
 को अनाधिक था, यह कहते लया कि 'अन्तर्यामी
 के लिए पहले अज्ञानकता का निर्माण करना
 जरूरी है यह किसने पंदा की होगी? अगर
 मैं नहीं रहा होऊँ?' यह जो विस्टर को बड़ी
 हयारे देना में है, आज यह ईश्वर ने भी
 अधिक धर्मयोगी है। मोटरे किन्ते जलजली? जाप
 किसने लगायो? दुःखानो के कवि
 किसने सोये? दने में किन्ते मरे? किन्ते
 मारे? हर पाठों वह देगी, हमने नहीं
 किया। विद्यार्थी कहते, हम नहीं थे। नेता
 कहेंगे, हम नहीं थे। पुत्रे कहेंगे, हम भा नहीं
 थे। तो माई फिर भी तो हमारी मोटर
 हरी, हमारी सब जसो, हमारा महान
 गिराया गया। यह सब किन्ते किया?
 विस्टर 'ओ बड़ी' ने। यह कहा है ही नहीं।
 सर्वत्र है और बड़ी नहीं है। यह जो
 'अनाधिक' है, विस्टर 'ओ-बड़ी' है, उसकी
 घटा जब तक है सब ठक जोनमसा का
 काबिर्मान नहीं होगा। उषको वता अन देना
 में और दुनिया में बड़ी बड़ी पक्षी चाहिए।
 संक्षेप ही जब आराचार्य
 और निराटन संस्थाएँ
 माटिन भूवर किंग को हत्या हुई। पता
 नहीं है किन्ते हत्या को। और मारपीट हो
 रही है। महान जजको आ रहे हैं। साधारण
 नागरिक आतङ्कित हैं। उषको संस्थाएँ की

आकाशा है। सराधण कोई नहीं दे सब रहा
 है। राजघटा सराधण नहीं दे सक रही है।
 धर्मरक्षा को बिल्कुल निष्प्राण हो रही है।
 लोचरता ही एकमात्र ऐसी सत्ता है जो
 साधारण व्यक्ति को, साधारण नागरिक को,
 फिर भी आत्मप्रत्यय दिख सकती है।
 यह जो लक्ष्यकता है वह व्यक्तिगत भी
 है और सामुदायिक भी है। जबल सामुदायिक
 होगी तो शून्य होगी, केवल मावसाधक होगी
 एक 'निदान' होगा, कल्पना होगी। वह
 निदानी सामुदायिक है, उनतो ही अतिरिक्त
 भी है। दलीलिए माने देना होगा कि
 लोचरता में जिस राज्य का निर्माण होता है
 वह सामुदायिक सत्ता का प्रतीक हास्य है,
 लेकिन व्यक्तिगत मन उषको सबसे पहले की
 वस्तु होती है। उषका अंतिम अर्थप्राप्त
 है। लोचरता के इस अर्थप्राप्त को, इस
 'सौचरता को' स्थापना अगर हमको करनी
 है तो मैं समझता हूँ कि इसका एक प्रधान
 प्रायण विनोबा का यह धारणा है। इसलिए
 मुझ जेता व्यक्ति, ऐसी व्यक्ति जो साधारण
 से-साधारण, अरुनाये अरुना नागरिक है,
 जिसका किसी घटना, किसी समझन धिदु,
 कोई प्रत्यय या शौर्यवार्तिक सम्बन्ध नहीं है,
 ऐसी व्यक्ति आपके सामने हाथ जोड़कर यह
 निवेदन करते आता है कि इस देश में और
 दुनिया में लोचरता की स्थापना अगर होगी
 तो वही मर्वादाओ में होगी, जिन मर्वादाओ
 को वह धारणा आन्दोलन मानता है। इन
 प्रक्रिया में होगी या नहीं, इसी विधि से होगी
 या न होगी, यह समझना जानता है। लेकिन
 या न होगी, यह समझना जानता है। लेकिन
 जिन मर्वादाओ में होगी, जिन मर्वादाओ को,
 इसलिए आज के इस युग अन्तर पर मैं आप
 सब लोगों को अपार्थि देना हूँ। आपका
 अभिनन्दन करता हूँ और आपसे निवेदन
 करता हूँ कि आज के इस युग अन्तर पर आप
 इस आन्दोलन की जो मर्वादाएँ हैं उन
 मर्वादाओ का विनमर करें। उन मर्वादाओ को
 कार्यान्विन करने के लिए, लोचरता में और
 जाने जीवन में भी उन मर्वादाओ को
 परिधाय्य करना पड़ेगा, उनका शमीरतापूर्वक

धानापुर प्रपण्डदान : कुछ तथ्य

- पूर्वतैयारी : २६ फरवरी को सवालक थी रामजी माई अपने छद्मोपियों के साथ यशोवन्ताएँ पधारें। १ मार्च से १३ मार्च तक अभियान का कार्यक्रम बना। १५ से ३ तक प्रयुज वर्ग ने सपनाक, ४ से ५ तक गिबिर हुआ। प्रारम्भिक विद्यालयों, निम्न माध्यमिक विद्यालयों, इंटरमिडिएट कॉलेजों के समस्त अध्यापकों का सम्मेलन हुआ। तबपन रवि मातबर किन्ते में धाम-गीतो से गाँव-गाँव प्रचार किया। ७ मार्च को शेष निष्ठा समिति के सदस्यों की घणा हुई। विभिन्न एव सामान्य नागरिकों से सम्पर्क स्थापित करते रहे।
- अभियान : ६ से १२ मार्च तक धामदान घोषणापत्रों पर हस्ताक्षर हुए।
- सहायोग : क्षेत्र के सन् ४२ के जाति-सैनिको बसोन्ट मैत्रा जो कर्मजा प्रचार विद्यार्थी ने शारे क्षेत्र में दौरा किया। सर्वश्री रामजी माई, अन्तक प्रमुक्त उपपन्न अदि, सचन क्षेत्र के संघालर भवानीचरकर अदि, कार्यकर्ताओं ने काफ़ी प्रचार-कार्य किया। उपन क्षेत्र विकास समिति यशोवन्ता, अन्तरण और जिला सर्वोपिय मडल धारणपी के २२ कार्यकर्ताओं तथा १५० नागरिकों ने सहिय भाग लिया।
- निष्पत्ति : प्रसन्न के १२ मर्वादाओ पचापत्रों को कुल कार्यान्वयता १२२ में से ६३५ प्रतिशत, पानो ११४ गाँव धामदान शामिल हुए। धामापुर प्रसन्न की कुल मारारी २३, ६२० है।
- घोषणा : १३ मार्च को सर्व वेका तप के सद्मयी धी रत्नोम दास्ताने की अध्यापना में हुई अभियान समापन घडा में प्रसन्नदान की घोषणा हुई।

—भवानी शंकर

मूदान-पत्र : शुभवार, १० मई, १९६८

नक्सालवाड़ी : अशान्ति के क्षेत्र में प्रशान्ति की चेष्टा

३० जुलाई, १९६७ के 'दिनमान' में श्री इन्द्रलाल ने दो दूक बात कहते हुए मूदान की सीमाएँ बतायी थी और यह प्रश्न उठाया था कि क्यों नहीं विनोबा नक्सालवाड़ी जाते ? पढ़कर एक तीव्र प्रतिक्रिया मन पर हुई थी, 'विनोबा क्या सचमुच कोई दमकल है कि जहाँ अशान्ति की आग लगे वहाँ पहुँच जायें आग बुझाने ? और, क्या श्री इन्द्रलाल जैसे दो दूक बात कहनेवाले लोगों का फर्क और जिम्मेदारी बस इतनी भर है कि विनोबा को आगाह कर दें, ललकार दें या अप्रत्यक्ष सिद्ध कर दें ?' बात वेतुकी मालूम हुई थी।

विनोबा ने बहुत पहले से प्रामदान को 'दिनेस मेजर' कहा था, और घारे देस के प्रायः सभी दलों के नेताओं के सामने भी (सन् १९५७ के एलवाल प्रामदान काण्ड में) यह बात रख दी गयी थी। नेताओं ने इस आन्दोलन को अपना पूर्ण समर्थन भी दिया था। लेकिन इसके बाद किसीने अपनी समिति ब्राह्मण करने के बाद का कोई कदम नहीं बढ़ाया। फुरसत ही जिसे रक्षी गरी को उपायना करने से।

विनोबा ने सन् १९५७ में यह बात कही थी, और ठीक दस साल बाद सन् १९६७ में जब नक्सालवाड़ी में उग्रता की आग जली, और चीन ने उग्रता खाने 'रेडियो वेरिना' के मोर्चे से जोरदार समर्थन दिया तो नक्सालवाड़ी के आदिवासियों को हतकतों ने दिल्ली तक के कान खड़े कर दिये। और दस उग्रता मा मातित को दवाने के लिए सरकार दौड़ पड़ी। समस्याओं के समाझ को समस्याओं की उह में गये बिना दबा देने की बीविया गुरु हो गयी।

लेकिन विनोबा मानते हैं, और यह साक दिखाई दे रहा है कि इस दबाव से नक्सालवाड़ी की क्षण कुम्भपो नहीं आ सकनी, उग्रता एक ही उपाय है कि समस्याएँ हल हों। संघर्ष का समाझ ही समाझ कर दिया जाय।

प्रामदान इसके लिए विफल रूप में प्रस्तुत है। लेकिन इस विफल की समझनाओं को मान्यता देकर भी नेताओं ने इसके किशान्वयन में अपनी राहित नहीं लगायी। 'यह दबाव एक ऐतिहासिक समय ही रहा, प्रामदान की अपनी राहित के विनायक के हक में।' यह बात स्पष्ट हुई थी दरभावा के जिलादातन की पोपया से, और स्पष्टतर हो गयी बिहार-दातन के संकल्प से। इस संकल्प की प्रति के हो रहे बिहार के प्रयत्नों में गति देने के लिए



नक्सालवाड़ी का आदिवासी :

तीर-धनुष की भाँति

विनोबा ने कुछ मूदाना गुरु किया और उगी कम में जब पूनिया पहुँचे, तो सन् १९६७ के अगस्त और १९६८ के आर से मिथिल, बिन्दु अन्दर से अगान्त और सनिय नक्सालवाड़ी ने उन्हें भी खाने बगीच गीच किया।

गुरु की समस्याएँ—विनोबा हल अतिउग्रता के लिए अतिबाधें हो जाँजा है, अति-बागी को खानी और बीबनी ही है।

विनोबा नक्सालवाड़ी के बगीच पहुँचे हैं, तो बड़ी कुप होना। क्या होगा ? यही प्रश्न मन में लिये जब हम ३ बनेल की गाम की टाकुराँच पी० डब्ल्यू० डी० के दाव-बँपले पर पहुँचे (जहाँ विनोबा की बा

पड़ाय था) तो एक छोटे-से हाल में गोठी जमी हुई थी। विनोबा से भाँककर देखा तो अन्दर बड़ी पगढ़ नहीं थी। बाबा की दरान की मूलकर वही खड़े-खड़े गोठी का आनन्द लेते लगे।

"बाबा की ४० दिन की जेल बकूल करो।...जिसे यह जेल बकूल हो, वह हाथ उठाये एक नहीं रे भइया, दोनों...दोनों हाथ" (गुरु दोनो हाथ उठाकर) इस तरह।

'सिर पर बाँध काठन जो निकले, विन सोचे परिणाम ?' विना कुप सोचे बाबा की यह जेल बकूल करोने तो नक्सालवाड़ी का काम बरसय होगा। इसका प्रभाव पूरे बिहार, मगाल पर पड़ेगा। पूरे देस पर पड़ेगा, पूरी दुनिया पर पड़ेगा।"

बाबा कहते जा रहे थे, "...नक्सालवाड़ी को एक हवा बननी, समस्या पुनीती खनकर आयी। अगर हवा हल नहीं होगा तो अशान्ति बड़नी जायगी। लेकिन अगर शांति की राहित से यह काम हो सकता है तो दुनिया में अहिंसा की राहित पर विश्वास बढ़ेगा। यह मरोगा पैदा होगा कि अहिंसा की राहित ने दुनिया के मगले हल हो सके हैं। जिसकी आर दुनिया की मगु अरतल है।...हिंसा ने दुनिया के मगले मुलमते गरी, उलमते ही है।"

दिर पोपया हुई, "पालीय दिनेर जेल रीबार।" लेकिन जेल की अवधि ४० दिन की ही थी ? बाबा बताते हैं इस ४० दिन की महिमा—'गुड, मोशेस, ईसा ने पालीय-पलीय दिनों का उपाय, द्रन आदि किया था। अगर महिमा है पालीय दिन की।

बाबा ने बहुत पहले इस नक्सालवाड़ी क्षेत्र को भारत की गर्दन को मगनी भी है। और आर वहु मगना सार्थक सिद्ध हो रही है। दोनों (पारिणतन और चीन) और से गर्दन दवाने की चेष्टाएँ अल रही हैं। नक्सालवाड़ी के बाप मुहाराँच के उग्रता इस कार्यना का मानक दे रहे हैं।

नक्सालवाड़ी के कुछ प्रमुख लोगों के

साथसे स्याम ने तुम्हारा विषय 'प्रथमसालावर्षी' के अग्रगण्य विद्यार्थी के प्रशस्ति निवेदन की स्थापना' का । यह प्रशस्ति निवेदन मालिनी-निवेदन का एक कर्म है । स्तम्भ हो उभारा एक 'कल्पवृक्ष पूर्वनिवेदि' (सांस्कृतिक विचारविचारण) का । उपरोक्त प्रवृत्तियों स्थायी परिशिष्टों का अन्वयन करते उपरोक्त साधारणताओं, सपर्यायों को ज्ञान में रसकर निविदा है ।

साहित्य निवेदन ने बाबा की पुकार सुनी है, और इस कल्पवृक्ष के साकार होने की सम्पूर्ण सम्पन्नता प्राप्त हुई है ।

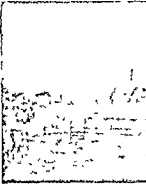
× × ×
 खंडों के लिए सम्पूर्ण लेख की अग्रगण्य को प्रशस्ति में बदलने के लिए सांस्कृतिक विचारविचारण की सम्पत्ता पर कुछ क्षण एक मुझे अन्वय-री-अन्वय हींती जाती रही, उपहास और अस्वीकृता का कुछ क्षण जिसे कायर एक अन्वयपूर्ण (है) । "जिन्हें वेद करने की बात चाहिए उनको वही से भाव के बदले री-उपहास की भीड़ से बाधनी है । लेकिन फिर पूरी तरह कष्टपूर्व नहीं कर या रहा था कि साक्षात्कृत की सुनी के साथ ऐसा नशाक करे । अन्वय इसकी तब मैं कोई क्षम था । ऐसी लेकिन इस सम्पन्न में कुछ सुखी का साहस भी नहीं हो रहा था ।

दोपहर की इस गर्मी के बाद बचपों देर तक इसी उपहास में टहलता रहा । जब बाप के साथ दोपहर एक को घड़ी की बाजे हुएपत्ता रहा ।

फिर सवाल था 'श्रुति का साहित्यिक स्वरूप साधक साहित्यिक रूप पर ही क्या हो सकता है । साहित्य की वेदना 'श्रुति' के साथ जोड़ने पर साधारण उभारा स्थिति हीमा कतिबासी हो जाता है । सम्पन्न साहित्यिक साधक एक स्थूल उपरोक्त-व्यक्त हीमिन नहीं है, लेकिन के जिसे साधक शक्ति के साथ ही युवा हुआ है । साधारण हीमिन विरोध में एक सम्पन्नताओं में सामान्यता का दृश्य बना करने के लिए बन ल के साहित्यों में 'श्रुति' की जेठ बन्धु बचपों की ओर भाव इस प्रशस्ति निवेदन को बात बंद रहे ।' इस अन्वय ने कुछ सहाय दिया ।

फिर तो जेठ-जेठे सोचता गया 'श्रुति की लेख और प्रशस्ति निवेदन का 'मेठ' बेटका गया ।

× × ×
 छोड़ते रहूँ हूँ मित्रे बगल के दो प्रमुख सम्बन्ध पार-हस्त साधिका से ।
 बुजुर्ग की पाठना और तरण की शिरीषा, दारों नशाकव्यारों के उन्मत्त पर बंद हुए हैं अन्वय साहित्यो बहिन । विरोधना की उन्मत्तियों धामणी सम्पत्तिरा दीरी (मसालिका, कल्पवृक्ष दुष्ट, पं. बगल भासा) की दुष्ट की सेविता बदलने के साथ अग्रगण्य पर प्रशस्ति का प्रलेप करने के गुप्त गये हैं ।



प्रामदायी श्रुति वाचिमतोत
 साहित्य सम्पन्न की श्रुति
 की पाठना ने जन्मकारी सी, इस लेख

में साधकवरी सज्जन बहल ठीक है । 'कोर' साहित्यी है । नशाकव्यारों में अग्रगण्य की सुविचार है साधकवरी और साहित्य । बगल की सुखल भीनी साधारण बनी, उन्मत्त ठीकरी मदीने सुसाण साधकविका में सम्पूर्ण सुख हुआ । शीत मदीने तर की सुविचार-कार-बंद नहीं हुई, पूरी साधकवरी नहीं । उन्मत्त साधक सुविचार की कार-बंद पुन हुई ।

'साहित्य विवेक ऐसी है कि किन्तु इन लेख अन्वयों में ही 'श्रुति' 'श्रुति' । एक 'श्रुति' की सुभाषी की शक्ति बन में सन्वय के लिए बन के सम्पन्न साधक अन्वय साहित्य । इनमें से एक भी 'श्रुति'

'श्रुति' स्थायी निवेदियों का नहीं है, एक साधारणता के हैं । मेरी के साधक बनी हुई ज्योति पर को सम्पूर्ण बौद्ध का है, उन्मत्त साहित्य वेदल बनी रहे हैं ।

'साधक' 'श्रुति' में हमने यहाँ काय सुख किया जो साहित्य-वेदों को स्थापना की । पक्षी मार्च ६५ में करोड़ ६० कार-बंदी उभ लेख में बाप कर रहे हैं । हमारे बाप का लोको पर अन्वय प्रभाव बंद रहा है । शीत के सुख ३०० गीतों में हमारे कार-बंद नहीं ब चुके हैं । 'श्रुति' साधक अन्वयन के साधक सन्वय गये हैं । इस अन्वय के हीम भी श्रुति ही गये हैं । हमारे अन्वय में उन्मत्त सम्पत्तिरा है ।

'और मेरेगा ?' एक तो यह है कि साधक प्रेरणा ही मुख्य है । साहित्य सम्पूर्ण इस सहस्र कर रहे हैं कि इस काम में हमारा मत्त होगा । सुविचार की कार-बंदी का बाद तो बंद एक एक साधक पर ०७ के 'श्रुति' पर बंद रहे हैं । हमने में ३-३ बार अन्वयन बना पटना है । साहित्य कोई शिरीषी शरीरानी उभारा है ।

'सुखा की श्रुति से विवेक साधक का लेख है यह । श्रुतिवेदा सुख कारिदारा से साधक हुआ है और नशाकव्यारों नेवक से । दोनों में बीच किन्तु १२ मील का वातावरण है । इनको साथ साधक को मदीने बहूँ ने । नशाकवरी साधकविका, श्रुतिवेदा—यही तो मुख्य अन्वय है सम्पूर्ण के । हमारी निदा के साथ ही उन्मत्त साधकविका । एक साधकवरी गति की सुख २२० मीने बचपों में से २२० बहल ज्योति निदाकी गयी है । ज्योति वेदों की है ।

'ज्योति' बहल रहे हैं । बचपों का यह ने नशाकवरी में है । ज्योति अन्वय गयी है कि साधक नशाकवरी का साधकवरी काय । प्रमुख लेख शरीर की बने हैं । अन्वयन सुख-साधक साधकविका पर साधकवरी रहे हैं, प्रमुख लेख सुख साधकवरी के और साधक के साधारणता में सुख गये हैं । हमने उन्मत्त साधक साधकवरी की बगल रही है । और सुख साधकवरी रहे हैं ।

कि जगमें देशीय (भागीदारी) का भाव जगमें। स्वामीय मध्यम श्रेणी के तरंग लोगों को आना याची बनाकर उनको मार्गदर्शन हो सारा काम करने को बोधित कर रही है।

“इस समय गरीबों में मायूनी है, भय है, हिचकिचाहट है। कुछ दिनों तक लगातार संपन्न करने और कुछ काम करने पर ही वे खुशो है। प्रगादजोन (नवसालवासी के पाप का एक गौर) के बहुराज-नेन्द्र को उन्होंने बहुत खोशिय है। लोग अब डर के मारे



प्रगादजोन का कानूना मेवा-नेन्द्र उपद्रव में दिलासा

गाँव छोड़कर भाग गये थे तो घर-घर जाकर उन्होंने बच्चों को गमाला पा। लोगों के मन में उत बहरो के लिए बड़ा आदर है।”

दिलीपदा ने नवसालवासी के पूरे साम्यवादी आन्दोलन को चर्बी करते हुए बताया, “बानु साम्याल (जो यहाँ का मुखिय नेता है) ने करीब १७ साल से इस क्षेत्र में गरीबों के बीच काम किया है, उसकी जानी कोई घर-गृहस्थी नहीं है। उसको सेवा का प्रभाव और यहाँ के लोगकी चरम सीमा ने ही इस संपर्क को जन्म दिया है। पापबगानो के कारण अष्टमी खेती लायक जमीन यो ही कम है, सरकारी जमीन (वेस्ट लैंड) भी घनी लोग ही हथ लेते हैं। यह क्षेत्रमीन गरीबों की मिलनी चाहिए। लोगों ने अफि-गन भगड़े को भी इस संपर्क में छोटा है।”

गम्भीर चेहरा और कुछ दर्दमयी आवाज में जो दिलीपदा ने कहा :

● जिनके लिए यह आन्दोलन है, उनकी गतिपत्ता अभी तक नहीं बढ पायी है। हमारा काम अभी आन्दोलन का ही नहीं है भाषा है।

● हमें दिया और दयावत् ने मुवन धाति का समय बिच लोगों के सामने रखना चाहिए।

● क्षेत्र के लोगों के गाव हमारा महत्त्व का सम्बन्ध और प्रेम का भाव बढना चाहिए।

● आनिपारी प्रतिभावाले लोगों का इस क्षेत्र में आना चाहिए और एर टीम बनाकर काम करना चाहिए।

● जमीन की समस्या हल होनी चाहिए और उम्मेने साथ ही उन्नादन-गुडि का योजना भी बननी चाहिए।

× × ×

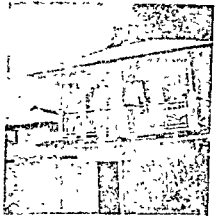
और, जब हम थोड़े समय के लिए नवसालवासी पहुँचे, तो इतनी चर्चा के बावजूद वहाँ ने आरिचिन्त नहीं रह गये थे।

नवसालवासी के गवानी की अधिकतर छाडो की बनी दीवारों पर रामदान के बंगला और हिन्दी के पोस्टर्स कुछ बरगस्त में धुले, कुछ तूफान में उड़े अथर-उपर दिखाई दे रहे थे। बाकी सब कुछ साफ था। लोगों के जीवन में कोई अस्वाभाविकता नहीं थी।

कुल चार घंटों के उस प्रयास-काल में हम नवसालवासी के शांति-केन्द्र प्रगादजोन के बहुराज-नेन्द्र और वारिसजोन नाम के रामदानी गाँव में गये।

वारिसजोन नेपाल से गाटा हुआ गाँव है। और प्रगादजोन से करीब १ मील दूर है। कुल २२ परिवारों के इस गाँव में १ परिवार भूमिहीन है, २-३ के पास २५ से ३० बीघे जमीन है। बाकी लोगों के पास थोड़ी-थोड़ी जमीन है। गाँव के एक प्रमुख व्यक्ति थोरे रघुनाथ मिश्र थे जब मैंने रामदान के पीछे क्या प्रेरणा है यह जानने की कोशिस की, तो उन्होंने बताया, “आज जो हालन है, वही बना रहेगा, तो आग फिर भड़केगा। भलाई इच्छीमें है कि सब लोग मिलकर सब गाँव का सोचें।” फिर उन्होंने रामदान की बातों को दुहराते हुए कहा, “हमारा गाँव का लोग की सभमें अपना हो भलाई दिखाई

पड़ा है। है भी अगल में रामदान खतरा भलाई के लिए। छूटागत करने में न तो गरीब का ही भलाई होता है, न अमीर का ही। गरीब सोचना है कि मरना है तो मार-कर ही मरेगा, अमीर खोचता है, जान जाय तो जाय, लेकिन घन नहीं छोड़ेगा।” लेकिन सब दोषों को जीने का वास्ते रामदान का बात समझना पड़ेगा, मानना पड़ेगा। आज नहीं मानेगा क्यों तो बल मानेगा। नहीं मानने से बँने होगा ?” (बगाली-हिन्दी में)



नवसालवासी का शांति-केन्द्र : अशांति में प्रशांति

इस रामदानी गाँव के एक व्यक्ति की आस्थापूर्ण ये बातें सुनकर हमें बहुत खुशी हुई। १० बगाल के उस क्षेत्र में काम कर रहे साथियों की विचार-विमर्श में पहलू पर जायसकता की भलक मिली। अब तक उनकी मिहनत का मुफल निम्न प्रकार है :

प्रामदानी गाँव	आना परिवार-संख्या	
१. केतुगपुर जेत	नवसालवासी	६४
२. भेलटा जेत	”	२१
३. मोदा जेत	साकोबाड़ी	६४
४. वारिच जेत	”	२३
५. मदन जेत	”	६
६. रघु जेत	”	२२
७. बटुमनि जेत	”	२४
८. दुवा जेत	”	४१
९. बुधिया जेत	”	१८

रघुजोन, बटुमनिजोन और बुधियाजोन के रामदान में शत-प्रतिशत लोग सामिल-

विश्वास है कि गाँव-गाँव में अपनी योजना बनेगी, अगले चुनाव में लोकनीति का दर्शन होगा और खास विकास के साथ-साथ चित्त-पुष्टि के द्वारा भक्ति बढ़ेगी, अन्तरिक विकास होगा।

क्रान्ति की भागीरथी

जिफ्ट के चमोली जिले के साथियाँ ने अपने अन्य कामों को समेटकर २० जून तक चमोली जिलादान करने का संकल्प लिया। श्री वधीप्रसाद भट्ट और उनके साथियों को विश्वास है कि जिस जिले में उत्तराखण्ड प्रथम प्रलक्षदान हुआ और वह भी भारत का मुकुटमणि बदरीनाथ का, वह जिला अधिकतम क्रान्ति में पीछे नहीं रहेगा। फिर सीघरा सीमावर्ती जिला—पिथौरागढ़—वैने पीछे रह सकता है? श्री कृजवालजी के सयोजकत्व में उस जिले के साथियों ने भी ११ सितम्बर, '६८ तक जिलादान करने का संकल्प लिया। कैलाश और मानसरोवर जाने का प्राचीन पथ, इस जिले में है। गंगोत्री और बदरीनाथ के साथ-साथ कैलाश भी कदम मिलाये। उत्तरकाशी के जिलाधीश ने अन्य दोनो जिलाधीशों को सन्देश भेजकर इस गाँधीजी के काम की याद दिलायी थी। इसलिए दोनो जिलों के जिलाधीशों ने जिला शाशी-जातादी समिति को बैठकें आयोजित कर, पास के सहयोग का आश्वासन दिया। पिथौरागढ़ के जिलाधीश श्री वासुदेवन् तमिलनाड के मुक्क है, और तमिलनाड की भक्ति-परंपरा में पले है। बाहते है कि जिले का हर गाँव धामदान हो और साथ-साथ गाँव में सामूहिक प्रार्थना का कार्यक्रम भी चले। पिथौरागढ़ के सभी राजनीतिक पक्षाँ के नेताओं में एक आवाज से धामदान के लिए अग्रणी निकली।

गाँव-गाँव में गाँव का राज

श्रीमा-क्षेत्र की प्रेरणा सर्वत्र पहुँचने लगी। टिहरी के साथियों ने भी उत्तराखण्ड सर्वोपय सङ्गठ के नये अध्यक्ष, उत्साही युवक श्री योगेश बहुगुणा के साथ प्रलक्षदान का पक्ष्य बंदम उठाने का संकल्प लिया और टिहरी बाहर के नागरिकों ने क्रान्ति में पूरा सहयोग देने का आश्वासन दिया। भूतपूर्व नगराध्यक्ष,

एम्बोरेट श्री महाधीर प्रसाद गैरोला मानते है कि धामदान के द्वारा देश का आध्यात्मिक उत्थान होगा। लोकप्रिय कवि श्री पनरधाम रचूरी बचली बजाकर 'गाँव-गाँव में गाँव का राज' गाते हुए अलख जगा रहे है और निमला बहुगुणा, राधा भट्ट जैनी निष्ठावान बहनें अपनी सेवा के द्वारा काम में बल प्रदान कर रही है। बहा जाता है कि, 'योगेश्वरत्र दुर्लभ'। फूल बिखरे पड़े रहते है, लेकिन पिरोनेवाला पागा चाहिए। वरघो से बखण्ड तपस्या करनेवाले श्री सुन्दरलाल बहुगुणा जैसे युवाक योजक उत्तराखण्ड को प्राप्त हुए है और इस घारे काम के पीछे सरलादेवी की प्रेरणा है, जो उत्तराखण्ड के कार्यकर्ताओं के लिए मातृव्यान है।

सूझान की गति बढ़ रही है, उत्तराखण्ड-दान भी अब बहुत दूर नहीं है। जगह-जगह लोग पुद्धे है, 'विनीवाजी यहाँ कब आयेगे? उन्हें एक बार तो आना चाहिए, हिमालय में।' सुन्दरलालजी भारी पिटूह उठाकर यात्रा आरम्भ करते हुए अजाब देते है—'बाबा हिमालय में नही तो और कहाँ है? जिस हिमालय में भारत के अगणित ऋषि-मुनि साधु धन, साधक-योगी, सन्यासी रहे थे, और रहेंगे, उस हिमालय में बाबा के आने की क्या आवश्यकता? हाँ, सुना है कि एक बार हिमालय आने पर वे वापस नही जायेंगे, इस दुनिना के सवालो को हल करने के लिए।' यह सुनते ही प्रदन्कर्ता कह देते है, 'तो फिर बाबा बिहार में ही रहे।' ●

खादी और ग्रामोद्योग हमारे राष्ट्र की अर्थ-व्यवस्था के महत्वपूर्ण अंग हैं इनके संबंध में पूरी जानकारी के लिए पढ़िये

खादी ग्रामोद्योग

सम्पादक

जामुति

(मासिक)

जगदीशनारायण वर्मा

(पाक्षिक)

हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित।

हिन्दी और अंग्रेजी में प्रकाशित।

प्रकाशन का बोधहर्ष वर्ष।

प्रकाशन का बारहवाँ वर्ष।

विरहलत जानकारी के आधार पर ग्राम-विकास की समस्याओं और सम्भाव्यताओं पर चर्चा करनेवाली पत्रिका।

खादी-ग्रामोद्योग कार्यक्रम सम्बन्धी ताजा समाचार तथा योजनाओं की प्रगति का मौलिक विवरण देने-वाला पाक्षिक।

खादी और ग्रामोद्योग के अतिरिक्त ग्रामीण उद्योगीकरण तथा वाहरीकरण के विकास पर मुक्त-विमर्श का माध्यम।

ग्राम-विकास की समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करनेवाला समाचार-पत्र।

ग्रामीण उत्पादन में उष्ण सफलताओं के समावेशनायक अनुसंधान बाधों की जानकारी देनेवाली मासिक पत्रिका।

गाँवों में उन्नति से सम्बन्धित विषयों पर मुक्त विचार विमर्श का माध्यम।

वार्षिक मुल्य : ₹ ६० ५० पैसे
एक अंक : ₹ ५ पैसे

वार्षिक मुल्य : ₹ ६०
एक अंक : ₹ ५ पैसे

अन्य-ग्रान्ति के लिए लिखें

● प्रचार निर्देशालय ●

खादी और ग्रामोद्योग कमीशन, 'ग्रामोद्योग'
इलाहाबाद, विलेपारल (पश्चिम) बम्बई-२६ पपस

सहर्षा में ग्रामदान-तृप्तान

सहर्षा प्रविष्टा दरभंगा प्रायत्पुर मुनेर के बीच ग स्थित है। उत्तर में नेपाल है। दरभंगा और प्रविष्टा का जिलादान हो चुका है। प्रायत्पुर और मुनेर के जो क्षेत्र इस जिले की सोचा पर पडते हैं उनका भी ग्रामदान हो चुका है। सहर्षा बीच में परतो पडा हुआ है।

बिगोबाजी ने अपनी आकांक्षा व्यक्त की कि सहर्षा का जिलादान दो महीने के अन्दर होना चाहिए। जिले के आयुक्तजी ने उत्तर दिया है कि ३० जून तक सहर्षा जिले का ग्रामदान पूरा हो। श्री महेश्वरारायणजी के सयोगजन्य में यह काम आरम्भ हो चुका है। योंही जिनो के परिश्रम के फलस्वरूप एक प्रस्तावदान हुआ।

सहर्षा जिले में आन्ध्रजन का नाम कमी भी गणितान नहीं हुआ था। इस जिले में बायकर्ताओं की कमी तो है। साथ ही पसे की लगी बहून अधिक है। अर्ध-समूह का प्रयत्न हो रहा है परन्तु अभी कुछ मिला नहीं है। जो महेश्वरारायणजी ने बताया कि १००० रुपये तक मिल जाने की संभावना है।

अबल को जिला ग्रामदान प्राप्ति समिति को एक बैठक हुई थी। उस बैठक में श्री बरनाथ प्रसाद चौधरी तथा श्री कृष्णराज मेहता शामिल हुए थे। जिले के काम को तेज रफ्तार देने के लिए क परम को निम्नलिखित कारणों का तैयार हुआ है —

(१) राजनतिक पंचायत रचना पर एक सर्वोप-कार्यकर्ताओं गिरीश को सर्वोप-प्रमियों तथा अन्य समाज सेवकों को लक्ष प्रयत्न के लिये अतुरल स्थान पर दो जिनो का ग्रामदान प्राप्ति प्रतिष्ठान तिविर किया जाय।

(२) तिविर में यात्रा की सहाई पंचायती योजना लागू बनोचोग भू मल लोचन सयोग सपात्रकार साम्प्रदायिक शिक्षण ग्रामदान प्राप्ति प्राप्ति विद्या पर दो में प्रमाण प्राप्त जाय। साथ ही सर्वोप तथा प नमान सम्य भी सर्वोप

नारे नाटक तथा प्रहसन आदि के भी सम्पादक बचाये जाय।

(३) तिविर के सीधारे तिन चार-पाँच छात्रियों को छात्रिया बनाकर हर पचायत में या दो-तीन पचायतों में विचार-प्रचार तथा अप्य सव्द करने हेतु छात्र तिनो की यात्रा को जाय।

(४) छाठन या नौच दिन किसी छात्र अनुसूल जगह पर एक दिन की समीक्षा तक बैठकर नये जाय। इस बैठक में सभी ग्रामदान प्राप्ति यात्रा-टोलियां अपनी रिपोर्ट देने तथा प्र त अनुभव के आधार पर जागे की कार्य-नीजना बनाने के लिए उत्तरित रहे।

(५) हर टोली में एक नायक और चार पाँच टोली-नायकों पर एक नेता बनाया जाय।

बायकर्ता मिलें जो प्रस्ताव-नेता के नेतृत्व में कार्य करते।

जिले की ओर से हर प्रयत्न को १००० बायकर्ता मिलने जब ऐसी बात मैने सुनी तो मेरे मन में कुदहल पडा हुआ कि इतने प वकर्ता कहाँ से आ जायेंगे ? जिले के सयोगक श्री महेश्वरारायणजी से मैंने पूछा कि इतने बायकर्ता कायप कहाँ से ? उन्होंने बताया कि इम्प्लायमेंट एक्चम्ब्र में हजारों लोगों के नाम दर्ज होते हैं। उनमें गिनाब साहब के लोग भी होते हैं। इम्प्लायमेंट एक्चम्ब्र के अधिकारी से उन्होंने बात चीत की कि ग्रामदान के बाय के लिए २५० बायकर्ताओं की आवश्यकता है। उ २ लोक शिक्षक बहा जायगा। अधिकारी ने ५०० लोगों को पत्र लिखा है। इनका इटन्सू मू के पदों सताह में करेंगे। उनमें से जो उनके काम के बरुलर होंगे

गावा का पुरुषाथ जगानर स्यावलम्बन वडाये

दे। जिनो की समझता वदेगा कि भाग्य को पुष्पाय से बदल जा सकता है। देव-देव तो अ लगी चुका रता है। मुख्य काम गाँवों का पुष्पाय जगाकर उनका पराज लम्बन मिना है और यह काम गाँववालों को खुा करना होगा—उनकी अपनी योजना से ही बने दूर करना होगा। सरकारी योजना का उद्देश्य तो स्टम्पड बनाना होता है। इसका अय होता है कि स्टम्पड बनाने की होइ में आने पड विधियों को सूटते हैं। मुख्य सवाल रोमी रोटी स्वास्थ्य शिक्षा और आवाज से वाँच सव्य तब होने चाहिए। पचायतों या सरकारी बाँकडों से नई ब्यक्ति से शील कला होगा। ब्यक्ति को प्लागिने से ही गाँव की प्लागिने निकलती और गाँव की प्ल निग से छ डे क्षेत्र को।—वीडनाथप्रसाद चौधरी

(६) हर टोली-नायक को पम्पलेट्स वोस्टस साहित्य फोन्सस सूचन तथा दान-ग्रन्थ दिये जाय। साथ ही इनका टीक डीज दिवाब रखा जाय।

(७) हर पचायत से कम-से-कम एक ही रुपये सपट्ट करने का प्रयास करना चाहिए। यह ध्यान रखना चाहिए कि पचायत के सभी टोली में रुपये सपट्ट किये जाय और एक ही रुपये सपट्ट किये मनोआश्रय द्वारा जिला ग्रामदान प्राप्ति समिति को भेज दिया कर।

(८) कुल २१ प्रयत्नों में प्रस्ताव-नेता बनय। १२ प्रयत्नों में नया जुन चुके हैं।

(९) हर प्रयत्न को जिले से १०

उहाँ प्रस्ताव-नेताओं को मन्त्र में भेज दें। प्रस्ताव-नेता के साथ काय के साथ साथ इनका प्रतिगण होगा। प्रस्ताव-नेता की रिपोर्ट के आधार पर उन तक गिनायों को ३० रुपये से ७ रुपये तक की आर्थिक मदद करेयें।

श्री महेश्वरारायणजी ने उ-उठाही नौचवान हैं। जितना जगह है इतने पाया जना ही असाह उनके कुछ अन्य बायकर्ताओं में भी पाया। जब प्रस्ताव-नेता आने-जाने प्रस्ताव को रिटर्न हुआ रहे थे तो सबने आना बरोता और बिचसाव व्यक्त किया कि क्षेत्र में गिनायें जाने पर को देर है। ग्रामदान-ग्रन्थ पर हस्ताक्षर करने के लिए लोग तैयार हैं।

—कृष्णकुमार

भूदान-ग्रन्थ सुन्दार, १० मई, '६८

आन्दोलन के समाचार

विहार में ग्रामसभा-गठन तथा पुष्टि-कार्य की प्रगति (मार्च १९६८ तक)

विहारदान की ओर

—मुंगेर जिलास्वयं सचिवालय का कार्य

चल रहा है। जिले में कुल ३७ ग्रामपंच और ४ अनुपग्रह हैं, जिनमें उत्तर मुंगेर के २ अनुपग्रह—सर्पिशा और वेणुग्राम का स्वन समर्थ हो गया है। मार्च महीने में ४ ओर प्रगति में १ ग्रामपंचान शुरू हैं। अब दक्षिण मुंगेर के छतर और खुई अनुपग्रह में परिष्करी हैं। अभी तापपुर में अभिमान चल रहा है। जिले के कुल १० प्रखरी का स्वन समर्थ हो गया है। १३ प्रखरी का स्वन भी १३ प्रखर तक समर्थ हो जाए इसके अभिमान हो रही है। —उपमहासचय सिंह

—धर्मपुर, १ मार्च। अखिल '६८ तक इस जिले में ४०० ग्रामपंच एवं १ प्रखरदान हो चुके हैं, जिनमें विद्यार्थी अखिल में ७३ हुए हैं। विरहा तथा गांधीपुर प्रखर में काम चल रहा है वृत्त तक सोने प्रसंगी का प्रखरदान हो चलागा। पुष्टि के लिए ३७ गांधी के प्रगतता तैयार हो चुके हैं। इन सब बावों में २० कार्यवाही चलाने हैं।

—द्विपिंडीय प्रसाद

—पूर्विका जिले के वलका ग्रामपंचालय घोषणा एवं कला घोषणाओं को के दो ही परिवार का मात्र अभिमान में स्वाहा हो गई। वलका ग्रामपंच अधिपति तथा प्रमुख अध्यक्षता विशेष अधिपति के माजी भी विषय-य का को प्रतीक पर गांधी के प्रमुख लोगों के अभिमानित परिवारों की प्रगतता को।

—नागिराज झा

कृषिप्रभाई या स्वास्थ्य

उत्तर प्रदेश ग्रामपंच अधिपति के माजी प्रकी की अभिमानों पर १६ मार्च '६८ को विश्वकर्मा गिर ने थे, उनको बहि करे भी में से हुं। का हुआ मधु वृद्धक जन्म हो गया था, एडिक्ट बहि पर सती का के लिए प्लास्टर लगाया गया था। किंतु प्लास्टर करने के बाद भी अभी ताजेत दूर नहीं हुई है।

जिला	पुष्टि प्राप्त ग्रामपंच	पुष्टि हेतु गांधी के तैयार हुए गांधी	पुष्टि परामर्श करने के लिए कालित गांधी	अभिमानित गांधी की संख्या	निचे
१ पूर्णिया	७२०	१७५	४६०	२४	मार्च तक
२ धरौली	४२	६	—	—	अप्रैल
३ भागलपुर	३३	४	—	—	मार्च
४ लखाल परगना	३०	१२६	१२६	१०	मार्च
५ मुंगेर	४२	४६	—	—	अप्रैल
६ दरभंगा छतर अनुप०	३२३	१२६	४२	—	मार्च
७ मधुबनी अनुप० (रखगना)	२२६	४६	२३	२	अप्रैल
८ धनबाद " "	२३७	२६७	१७२	५०	फरवरी
९ मुजफ्फरपुर	६०	४६	६०	१३	मार्च
१० सारन	७०	१६	—	—	फरवरी
११ जहानाबाद	३०	४३	—	—	मार्च
१२ दरभंगा	२३	१३	—	—	मार्च
१३ गया	१७	७	—	—	मार्च
१४ बलसौर	—	१०	—	—	अप्रैल
१५ दरभंगा	३६	११	—	—	फरवरी
१६ हजारीबाग	७६	५३	—	—	मार्च
१७ रोहो	—	—	—	—	अप्रैल
१८ धनबाद	३०	१०	—	—	मार्च
१९ मिर्जापुर	३१	१४	—	—	मार्च
कुल	२,१००	१,४४३	६१०	२३६	

—समस्तगामना

उत्तर प्रदेश

—३० अखिल तक उत्तरप्रदेश में ग्रामपंचालयों की संख्या ५,२७७ हो गयी है। देशविश्व के अधिमान में ६० ग्रामपंच तथा दुर्धी मिर्जापुर में २० ग्रामपंच प्राप्त होने लगे हैं। देशविश्व में गांधी का स्वन के तीन जिलों, बलौ, घोषपुर और देशविश्व के ४० कार्यवाही तथा स्वनपंच परदेशी कास्टेज के ३० व्यक्ति मिलकर २३ रोहिता गांधी में गयी थी। उदाहरण ही अस्वस्थता की रासनी बर्षों में को और मात्र में अतिवृत्त तथा रासनालचतुर्दशी को अधिमानित हुए। उत्तरप्रदेश के दुर्धीज देशविश्व जिले में लगभग को माजी स्वनपंचों का स्वन स्वन में चलाने होने लगा है। अधिमान में

उत्तर और घोषपुर जिले में चल रहे अधिमान में अभी ६० ग्रामपंच प्राप्त होने की सूचना मिली है।

—अभिमान

पञ्जाब घाटी में स्वन

—आजरा जिले की मात्र तहसील के ३० गांधी में ग्रामपंच अधिपति करने विशेषज्ञों के मार्ग पर हुए कर कला। प्रथम स्वन क्षेत्र के २० गांधी ग्रामपंचों के स्वन १६६० में ग्राम के स्वन कला स्वन-उत्पन्न करने उठाया था। इसमें से १६ को अस्वस्थ ने सुन कर दिया, क्षेत्र ४ से से ३ को स्वनप्रदेश के स्वनपंच में स्वन के अधिमान स्वन होने के ६ दिन पूर्व ही सुन कर दिया, यह एक स्वन क्षेत्र ही है।

—अभिमान

राजस्थान

एकता के पौधे को मुहब्बत से सींचें

— १ मई से जोयपुर की मञोर

श्री सुरेशराम की उपवास-समाप्ति पर जे० पी० के उद्गार

डिस्ट्रिलरी पर राजस्थान सभ्य सेवा सभ के अल्पसंख्यक श्री यज्ञरत्न उपाध्याय के नेतृत्व में चंदाबन्दी सत्याग्रह अभियान चालू कर दिया गया है। आगे की खबर है कि डिस्ट्रिलरी में माल न जाने देने के लिए सत्याग्रहियों को ट्रक के सामने लेते जाना पड़ा ! डिस्ट्रिलरी में चोरी से माल भेजने का प्रयत्न किया जा रहा है।

—सरदारमल्ल जैन

—जयपुर, २६ जून्। राजस्थान धाराबन्दी सत्याग्रह समिति के संयोजक श्री पीकूलभाई भट्ट ने एक प्रेस-वार्ता जारी कर कहा है कि हम भोटवाड़ा जंटी सफलता पाते-पाते राजस्थान के सब केन्द्रों के काम को बन्द करवायेंगे, अब तक कि राजस्थान-सरकार गांधी जन्म-शताब्दी अर्थात् २ अक्टूबर, १९६६ तक पूर्ण धाराबन्दी लागू करने के बारे में एलान न करे और उसके अनुसंधान कार्यक्रम न बनाये। —ज्ञानचर्चा टंकिलिया

अ० भा० सर्वोदय सम्मेलन

इस वर्ष अखिल भारत सर्वोदय-सम्मेलन आगामी ८, ९ तथा १० जून को आबूगढ़, जिला-सिरोही (राजस्थान) में हो रहा है। इसके पूर्व दिनांक ६, ७, ८ को उद्योग स्थान पर संघ का वार्षिक अधिवेशन भी होगा।

सम्मेलन में भाग लेने के इच्छुक व्यक्ति २५ मई, '६८ तक मनी, सर्व सेवा सभ गजघाट, नारायणी-६ के नाम से पौब रखा प्रतिनिधि-मुक्त भेजकर प्रतिनिधि बन जायें। रेलवे-टिकटों से इस अवसर पर सम्मेलन में आनेवाले प्रतिनिधियों को विधायित्तियों के साथ रेलवे-कनेक्शन (एक तरफ के तिराये में ही जाने-आने) की सुविधा प्रदान की है। प्रतिनिधियों के टहराने की व्यवस्था आबूगढ़ स्टेशन के समीप ही जहाँ सम्मेलन हो रहा है, धर्मशालाओं तथा विद्यालयों की इमारतों में भी गयी है। अबू स्टेशन दिल्ली-अहमदाबाद मोटररोड लाइन पर है।

—राधाकृष्ण, मनी, सर्व सेवा संघ

इलाहाबाद : २६ अग्रेल '६८ । "अभी मे विदेश से घूमकर लौटा हूँ। यह तो आप जानते ही हैं कि विदेशियों की निगाह में भारत का चित्र कोई विशेष आकर्षक नहीं है। हम अपने छाने का अनाज तक पैदा नहीं कर पाते और बाहर से मंगाते हैं ! खपा भी बर्ज लेते हैं और उखवा सूद चुकाने के लिए नया ऋज लेते हैं। लेकिन इससे भी ज्यादा दुःखायें बात यह है कि हमारे यहाँ धर्म, जाति या भाषा के नाम पर देव मार-काट होते हैं। यह सब देखकर विदेश के लोगों को बड़ा आश्चर्य होता है और आज भारत उनकी दृष्टि में एक प्रदलित बन गया है।"

उपरोक्त उद्गार बल सार्वभ्य-कुटी में श्री जयप्रकाश नारायणजी ने प्रकृत किये। वहाँ वे श्री सुरेशराम भाई से मिले, जिन्होंने नगर की साम्प्रदायिक स्थिति से दुखी होकर पहले १५ दिन का उपवास किया था। फिर गत २३ अग्रेल से आनन्द उपवास शुरू किया। श्री जयप्रकाश बाबू के आगमन के अवसर पर प्रतिष्ठित नागरिक और आम लोग (हिन्दू तथा मुसलमान दोनों) कागो सादा में मौजूद थे।

श्री जयप्रकाश बाबू ने आने मागण में कहा कि इलाहाबाद से मेरा भी निकट का सम्बन्ध रह चुका है। यहाँ पर दंगों का सुनकर मुझे बहुत ब्याया हुई।

श्री जयप्रकाश बाबू ने कहा कि बाबुल में परम पूज्य साधु अच्युत पन्थार साई साहब से मैं मिला था। उन्होंने बड़े दुःख के साथ कहा कि एकता का जो पौधा महाराज गांधी ने अपने छून से सींचा था, वह मुट्ठका रहा है, क्योंकि उसे मुट्ठकत का पूर नहीं मिल रहा है। देव की स्थिति बड़ी भयानक है। हमारा और आप सबका उत्तरदायित्व है कि देने संभालने में जुट जायें।

इस अवसर पर भजन हुआ और कुलान तथा काइबिल से प्रार्थना भी की गयी। इलाहाबाद विविजन के कमिश्नर श्री राम सहाय ने कहा कि मुझे इस शहर में आये हुए अभी ग्यारह दिन ही हुए हैं। वास्तव्यमान का जो काम था उसमें तो मैं सफल हो चुका हूँ। लेकिन असली वास्तव्य पुलिस के बल पर २५ प्रतिशत ही लायो जा सकते हैं, बाकी ७५ प्रतिशत तो लोगों द्वारा पारस्परिक विश्वास और सहमानता से ही आ सकती है। ७५ प्रतिशत काम अभी बाकी है। मेरा धनी है कि श्री जयप्रकाश बाबू के आने से इस काम में मदद मिलेगी।

श्री करण भाई ने कहा कि सर्वोदय, वास्तव्यमान के काम से जो सुविधा बनी है, उसे अगे बढ़ाने में आप योगदान दें।

डा० श्रीमती राजेशकुमारी वाजपेयी ने कहा कि एक नागरिक और सार्वजनिक कार्यकर्ता के नाते सो मैं विद्वले डेड महीने की घटनाओं से दुःखी हूँ। इस विद्वले वातावरण में सुरेशराम भाई ने नैतिक साह्य का परिषय दिया और हम सबको हिम्मत आयी। उनको मैं यहाँ देती हूँ। अब हमको दिल-दे-दिल जोहन का काम करना है।

मौलाना मुहम्मद गिवाँ पत्रदनी ने कहा कि दिल दे-दिल जोरने का काम बहुत जरूरी है। लेकिन उसमें हम सभी कामयाब हो सकते हैं जब हमारा दिल एक हो। आने अन्दर की गरमाई होने ही उमगा अतर बाहर पकने लगता है। मैंने दस्तेदुआ है कि हम नेचरियली के साथ शहर की हवा बदलने के काम में लग जायें।

श्री जयप्रकाश बाबू ने सुरेशराम भाई को अपने हाथ में पत्तों का रस दिया और उन्होंने अपना उपवास समाप्त किया।

—अपत्योचन दूबे

वार्षिक शुरुक : १० रु०; विंशम में १८ रु०; या १ पीण्ड; या २॥ डालर। एक प्रति : २० पैस
भीष्मपुत्रक भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के जिए प्रकाशित एवं खंडितवाचक प्रेस, मानमंदिर, वाराणसी में मद्रित

भूतान-यात्रा

भूतान-यात्रा के आदिवासी जीवन की शक्ति का सत्य प्रकाशित करने का प्रयास है।

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र
 वर्ष : १४ अंक : ३३
 शुक्रवार, १७ मई १९८८

इस अंक में

समाचार सततबन्धी समाचार — १ पृष्ठ ३१५

पूर्विक चरित्र का हो — १५ पृष्ठ ३१६

विदेशीय विचार ? — १६ पृष्ठ ३१६

परिणाम-विशेष : समय और स्तर की मूल्यांकन — १७ पृष्ठ ३१७

यह क्यों कहिये ? — १८ पृष्ठ ३१८

संज्ञा : परिणाम — १९ पृष्ठ ३१९

उत्तरदाता में सततबन्धी समाचार — २० पृष्ठ ३२०

— २१ पृष्ठ ३२१

— २२ पृष्ठ ३२२

अन्य सूचना :

मायो विचार

आन्दोलन के उदाहरण

सम्पादक
 रामचन्द्र प्रसाद

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
 रामचन्द्र, आशापुरी-१, उत्तर अंचल
 कोल : २०२६

पेशे का चुनाव : मानवता की कमीटी

हर दुख का, जो जीवन-यात्रा शुरू करने वाला है और वह चाहता है कि मानवता के लक्ष्य में अपने योगदान को निर्यात न हो, वह सर्वप्रथम यह चुनाव करेगा कि वह क्या करेगा। हर व्यक्ति का एक लक्ष्य होता है और वह उसी लिए महान होता है। और यदि महानता विनाश और दुख के अन्ततम को प्राप्त कर लेता है तो महानता का अर्थ ही नहीं रहता।

प्रकृति किसी सामाजिक प्रणाली को बनाने के लिए हमें निर्णय लेना पड़ता है कि हमें क्या करना है। हमारे मन में बहुत सारी बातें हैं, जो हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। लेकिन हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं।

हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं।

लेकिन हमें यह ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं।

ऐसे पेशे को चुनना चाहिए जो हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं।

किसी पेशे को चुनने से पहले हमें यह ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं।

हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं। हमें यह भी ध्यान रखना है कि हमारे मन में जो बातें हैं, वे हमें निर्णय लेने में मदद करती हैं।

(पत्र में की गई बातों में कितने ही बदलाव हैं)

— आर्य समाज

गांधी जन्म-शताब्दी तक भारत इस दुर्व्यसन से मुक्त हो

राजस्थान शराबबंदी-मल्यामर के सिलमिले में
सर्व सेवा मंत्र के प्रधानमंत्री श्री गांधाट्टण की अपील

देश के रचनात्मक कार्यकर्ताओं में काफी अग्रमे से यह एक अंतोप का विषय रहा है कि देशव्यापी शराबबंदी के लिए रचनात्मक संस्थाओं के द्वारा जितना प्रयत्न किया जाना चाहिए था, वह नहीं किया गया और इण्डो-उधर कुछ स्थानीय प्रयास के अतिरिक्त कहीं कुछ विशेष काम नहीं हो पाया।

प्रादेशिक सरकारों ने पहले से चली आयी नीति को और भी ढोली करना शुरू किया। केरल में श्री के. वेल्लण्ण के नेतृत्व में राज्य-सरकार को नीति के विरुद्ध 'पेक्टिंग' अर्थात् कार्य दृष्ट, मेसूर में श्री आर्थोलन चला, और श्रीमती यशोवर्षा दासपत्नी ने सरकार को नीति के विरोध में मंत्रित्व का त्याग भी किया, महाराष्ट्र में श्री भीवराज मेहता और अय सावित्री ने अन्नपूर्णा से मुख्यमंत्री के निवाग के सामने मोन प्रार्थना का आयोजन किया था। इन सब प्रयत्नों के बावजूद राज्य-सरकारों की नीति में कोई परिवर्तन नहीं आया, बल्कि मद्रास के श्री अण्णादुरे के अत्याबा और वही शराबबंदी की नीति के प्रति विशेष आस्था भी नहीं दीगयी है।

भारतबंदी की नीति को ढोली करने के पक्ष में राष्ट्र की आधिक-उत्पत्ति की दुहाई दी जाती है। यही नहीं, बल्कि मध्याह्न को प्रणति का चिह्न मानकर उभे प्रोत्साहन देने की बात की जाती है। जहाँ तक सरकार को आम का प्रश्न है, प्रायः यह तथ्य भुला दिया जाता है कि सरकारी खजाने को प्राप्त होनेवाली रकम से कई गुना अधिक रकम, जोष के ठेकेदारों की जेब में जाती है, और वह सारे रकम अक्षि-शरीरो से ही आनेवाली है।

एक और अपने वर्ष सारे राष्ट्र में गांधीजी की शराबबंदी मनाने का विचार आयोजन हो रहा है, तो दूसरी ओर मध्याह्न

की छूट बढ़ती जा रही है। इस परिस्थिति को सहन न कर सकने के कारण राजस्थान के कार्यकर्ताओं ने श्री गोड्डुलमाई मट्ट के नेतृत्व में राजस्थान में पूर्ण शराबबंदी के लिए सत्याग्रह का जो आंदोलन शुरू किया है, वह स्वाभाविक और उचित ही है।

देश में आज जनता को सरकार पर तथा सरकारी कानूनों पर कोई भरोसा नहीं रह गया है। अब समय आ गया है कि केवल शराबबंदी के ही क्षेत्र में नहीं, बल्कि राष्ट्र जीवन के सभी क्षेत्रों में जो भी नीति निष्पत्ति करना है और उसे वास्तविक बनाना है, वह स्वयं जनता को ही करना है। शराबबंदी की नीति को आज की स्थिति देशवासियों के लिए चुनौती ही है।

सर्व सेवा सच ने दो वर्ष पहले अपने पटना अधिवेशन में अपना अतिमत्त स्पष्ट किया था, कि शराबबंदी का काम सरकारी कानून का नहीं है। क्योंकि यह स्पष्ट है कि शराबबंदी का कार्यक्रम मूलतः सामाजिक मूल्य-परिवर्तन का और नैतिकता के प्रचार का कार्यक्रम है। अतः यह विमुक्त को-सिन्धुपण का काम है। रिश्वेटिंग, घराना, सत्याग्रह आदि विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम उद्यो को-सिन्धुपण के ही अंग के रूप में चल सकते हैं और यह को-सिन्धुपण का कार्यक्रम देग भर में चलना चाहिए। इस दृष्टि में राजस्थान का यह कार्यक्रम स्वागत-योग्य है।

आगामी माघ में राजस्थान में सर्वोदय-सम्मेलन होने जा रहा है। पत्त सम्मेलन उत्तर प्रदेश के बलिया में हुआ था, तो वहाँ के साधियों ने दौ-नीन भाग पहले से जिले भर में अपने धामदान-अभिप्राय का आयोजन करके धाम-स्वराज्य की जापूति के प्रयाग में सम्मेलन का स्वागत किया था, उद्योके परिणामस्वरूप अब एक-दो महीने में

गांधी-विचार

शराब की बुराई

मे शराबपीयो को चोरो और शायद व्यभिचार करने मे भी अधिक निन्दनीय मानना है। क्या यह क्षणर इन् दोनों को जननी नहीं होती ? मेरा अनुरोध है कि आप शरब को आमदनी का अस्तित्व मिटा देने और शराबखानो को उठा देने के काम में देश का साथ दें।
('पग दृष्टिया', ६-६-'२१)

शराब और नशीले द्रव्य, जिन्हें उनका व्यसन है और जो उनका रोजगार करने के दोषो को गिराते है। शराबी आदमो पत्नी, माता और बहन का भेद भूल जाता है और उगे गुलाह कर डालता है, जिन पर वह अपनी शान्त अवस्था में लम्बा अनुभव करता है। जिसका मजदूरी मे कुछ भी सम्भन्ध आया है, वह जानता है कि जब वे शराब के पैगाचिक प्रभाव के अधीन होते है, तब उनकी क्या दशा हांते है। दूसरे वर्गों के व्यक्तियों पर भी उसका प्रभाव ऐसा ही होता है। मैंने एक जहाज के बन्धान को नदी की हालत में बेभुष होने देवा है। जहाज की क्रिम्मेदगो उगरी दस हालत के कारण प्रधान अधिकारी को मौन देनी पड़ी थी। वेरिस्टरो को शराब पीने के बाद नालियों में लुट्टुने देना पया है।
('पग दृष्टिया', ४-२-'२६)

बलिया जिले का जिलादारन पोषित होने को परिस्थिति निर्माण हुई है। उमी प्रकार यह प्रमत्तना को बान है कि इस बार राजस्थान शराबबंदी-सत्याग्रह के नैतिक आंदोलन के माध्य सम्मेलन का स्वागत कर रहा है, तो आगामी है कि उग सत्याग्रह का प्रभाव देग पर अवश्य पड़ेगा और गांधी जन्म-शताब्दी तक भारत इस दुर्व्यसन से मुक्त हो पड़ेगा। ●

जिम्मेदारी किसकी ?

प्रश्न : ग्रामदान होते हैं बहू-ने, दरभंगा का, बुधिया का जिलादान भी हुआ, तो इसके आगे की कार्रवाई क्यों नहीं की जाती है ?

उत्तर : पहला प्रश्न है, यह आन्दोलन आनका है या मेरा ? दानो का है न ? आप आने को भी शामिल करते हैं, तब प्रश्न सबका हो जाता है। दत्तका जबकि हम सबको खोजना होगा। हमने क्या माना है कि विनोबा ने ग्रामदान, जिलादान कराया। अब यह आगे का क्या नहीं करा रहा है ? मैं यह जिम्मेदारी विनोबा की नहीं मानता। वह तो पकीर आदमी है और कल मर भी सकता है। गांधी को मारा गया तो हम क्या बहें कि अब हम विधवा हो गये ? इसलिए हम जो चाहते हैं, हम ही को करना होगा। आज यह नहीं हो रहा है। यह इसलिए नहीं हो रहा है कि उसके लिए जो साधन चाहिए, वे हमारे पास नहीं हैं। तीन साधनों से यह काम हो सकता है। एक तो, पुष्टि के लिए सरकारी कामज चाहिए। मेरा खुर का अनुभव है भूदान के जमाने का। मेरे साथी भूदान लाते थे। नाम दर्ज कराने के लिए मैं मिनिस्टर के पास जाता था। वह कलेक्टर को फोन कर देना था, कलेक्टर तहसीलदार को कहता था। उस समय बी० डा० ओ० नहीं था। बस, सबकी फोन होते थे और पटवारी काम ही नहीं करता था। वे सारे बच्चे हमारे कार्यकर्ता बन नहीं सकते हैं। गांववालों में यह दम नहीं है कि त्रिपको हमने जमीन बाँट दी है, उसको कोई बेदखल न कर सके, और वह पटवारी इस गाँव में रहकर वे सारे हकतों कर सपटा है।

गाँववाले उदासीन हैं। उनको आपन करने की शक्ति हममें नहीं है। इसलिए फिर दूसरा तरीका हमने अपनाया। अगर सारा बिहारदान हो जाता है तो इतनी तो हवा बन जाती है कि इन लोगों के पैर उसकूने लगते हैं। एक गाँव टाणू रह जाता है तो छोटा रह जाता है। जिहा हो जाता है

तो कुछ ओर हवा हो गयी। और प्राप्त हो जाता है तो कम-से-कम ये चीकने तो हो पायेंगे। इनके दरवाजे पर हमको नहीं जाना पड़ेगा बार-बार। दूसरी चीज, हमारे पास पैसा नहीं है, जो इसके लिए आवश्यक है। उसके लिए हम या तो गांधी-निधि के पास निर्दुगियाँ या सरकार के पास। और बल जो मिनिस्टर कह गया वह काम जरूर हो जायगा, ऐसा आज है नहीं। लेकिन उसीकी पुष्तामद करनी पड़ती है। यह सब हमसे होता नहीं। अब होगा तो लोकप्रति से होगा, नहीं तो कुछ नहीं होगा। तीसरे, डके से काम हो सकता है, लेकिन डके से काम हम लेना नहीं चाहते। तो तीनों साधन हमारे पास नहीं हैं। इसलिए जिलादान हो जाता है और आगे का काम रह जाता है।

हमारा निवेदन इतना ही है कि जिलादान की परिस्थिति जो है, इस देश में कौन-सी ऐसी पार्टी है कि उन परिस्थितियों को नहीं चाहती ? आप जोर-जबरदस्ती से बिलकुल नवग्रामवासी के तरीके से काम चाहें तो भी यही कहेंगे न कि छोप तैयार हो जायें वगैरे नवग्रामवासी से, और वगैरे वानू से। अगर लोग तैयार हो जाते हैं, स्वामिन्स, विसर्जन के लिए, तो जो इतना करता है, आप उसीमे पूछते हैं कि आगे का क्या नहीं करता ? अगे का तुम क्यों नहीं करते ? हमारे लिए तो हम साफ कह दें कि यह हमारे ताकत से बाहर है। ग्रामदान, जिलादान, बिहारदान करोगे तो सुदहारी, लोगों की ताकत बढ़ेगी। यह चीज है। इने समानिये और समझाये।

मेरे मिन एक गाँव देखना चाहते हो वे, जहाँ यह हुआ है। मैंने कहा, दिना हो सकता तो क्रांति हो जाती ! विनोबा यहाँ तक लाया है। दूसरों के पास तो खाल ही खाल है। विनोबा ने लोगों से इतना तो बहलवाया कि हम जमीन देते हैं। और, जितनी जमीन कोई नहीं बँटवा सका इतनी जमीन बँटवा भी दी। अब यह जमीन को

दिलवा दे और वह जमीन कोई खीनता है तो मरने के लिए भी बह जाय ! यह कुछ समझ में नहीं आता। कभी ऐसी क्रांति हुई है दुनिया में, दूसरों के मरने से ? शयन हम जनता को बिलकुल बेकार, पगु बना देने हैं। हम तो जनता का समर्थ बनाना चाहते हैं। यह खाल सारे देश के सामने है। शैवे, स्वराज्य मिला और उसके बाद कुछ बयो नहीं हुआ, खाल सरकार बन गयी, मेरा भी है, जो अभी रोज बनाता है और जिगाइता है। वह गरीब पहना है—स्वराज्य हुआ मेरा तो कुछ हुआ ही नहीं। फिर वोट क्या दे रहा है ? वोट और गालियाँ साथ-साथ दे देता है। उसको यह समझाने की आज जरूरत है। —दादा धर्माधिकारी

सहारा, १६-४-६५

रूस में गांधी-शाताब्दी समारोह

यूनेस्को के रूसी आयोग ने सन् १९६६ में महात्मा गांधी शताब्दी समारोह का आयोजन करने के लिए एक विशेष आयोग गठित किया है। इस आयोग के सचिव श्री एम० वामुनेत्र ने विश्वा मन्त्रालय के सचिव श्री प्रेम कुमाल को लिखे एक पत्र में इस बात की जानकारी दी है। इस विशेष आयोग के अध्यक्ष रुच की विज्ञान अकादमी के एचियाई लोगों के सहायक के अध्यक्ष प्रो० बी० जी० भाकरोव होंगे। महात्मा गांधी के विलम्बित लेनिनपाइ और तादावद में कई विचार-समाधानों का आयोजन किया जायगा, जिनमें रूस के प्रमुख वैज्ञानिक, कलाकार और युवकों तथा जनता के प्रतिनिधि भाग लेंगे। इसी प्रकार, मास्को में जनता के प्रमुख वर्गों के प्रतिनिधियों की एक विशेष दल या आयोजन किया जायगा।

महात्मा गांधी को समर्पित पुस्तकों की प्रदर्शनी का आयोजन मास्को में किया जायगा तथा शामुग्रामा फोसियाना में सालस्ताइ स्मारक संहालय में "महात्मा गांधी और तालस्ताय" नामक प्रदर्शनी का आयोजन किया जायगा। इस अवसर पर कई एक पुस्तकें प्रकाशित की जायेंगी तथा रेडियो और टेलीविजन पर विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए जायेंगे। (पृ० ३०)

परिवार-निर्याजन : संयम और स्नेह की भूमिका में

हमारे कार्यक्रमों को सफल से जोना सोचना चाहिए और संयम का विचार करना चाहिए। मैंने कई दफा कहा है कि अगर व्यवस्था न हो, तो अहिंसा ही नहीं बनती। इस तरह सोना मेरे हमारा ध्यान खींचा है।

“प्रत्यक्ष अहिंसा का शारीरिक तत्त्वत्व” शारीरिक तत्त्व में प्रत्यक्ष और अहिंसा को इन्हें रखा दिया। अगर सोनी का इन्हें नहीं रखा, तो दोनो को एक नहीं समझे और मानेंगे कि विषय वास्तविकता का अर्थ और फिर भी अहिंसा रहे, तो वह होगा नहीं। इसलिए हमारे स्वामी ने अहिंसा पर जोर दिया और उनके साथ व्यवस्था पर जोर दिया। इसलिए कुछ ने गुणात्मक पर जोर दिया। वे भी अहिंसा का मानने से। इसलिए गीता ने अहिंसा का एक प्रकरण को रखा। इसलिए अहिंसा। एक यह अर्थों में अहिंसा के साथ व्यवस्था को रखा दिया।

मैंने कुछ प्रयोग किया था कि जयान है, उनको या सन्तानों में वृत्ति माननी चाहिए। फिर उन सन्तानों को परदेवर की प्रति समझकर उनके लालन पोषण, निष्ठा को आर ध्यान देना अपना काम है। उनमें, तो वास्तव पर बहुत अर्थ। बापू। पर बहुत साना होगा। यह जरूरी नहीं कि पति-पत्नी ईश्वर होयें। अहिंसा को साथ लेकर होयें तो संयम की सहाय मिलेगी। अहिंसा की उपस्थिति प्रत्यक्ष की उपस्थिति समझकर उन्हें आने और पत्नी के बीच सुलाना चाहिए। इसमें प्रेम और संयम दोनों।

किन्तीने बड़ा था कि तीन-चौ मानना चाहिए। लेकिन मैंने कहा कि माता पिता मिलकर दा है, तो दा ही बच बच बच। तीन होने तो दा हुआ संयम बढ़ेगा।

संयम की ऐश्वर्य का। माता जाना है कि रामजी की शांति में, भयाना माई के अर्थ प्रेम है, अहिंसा में संयम। तो संयम ही है। उही ही संयम में संयम माना। तीन ही संयम में संयम

था। तब सोनाजी भी साथ जाने के लिए निकली। रामजी ने उह समझना कि वरो मरे साथ आती हो यहाँ रहकर देखरखो की सेवा करा, मे अमी या रहा है। अभी सोनी बाहू वप। लेकिन बहुत समय चौधे वप नहीं कहा, 'संयम वपा' कहा। बाल्मिकि रामायण में यह आया है। कम संयम बनाया मान्य, इतिहास 'नो पांच वप' कहा। गीता ने बड़ा—संतानकारिणी का म म रे वि पनि डिम घम का आवरण करा है उछोका वर कर। तब रामजी ने उठ आने साथ ल लिया। चौदह साल जगत् में प्रपने रहे चौदह साल रामजी ने ब्रह्मचर्य का पालन किया, अहिंसा के संयम रहे। गीताजी ने आ ब्रह्मचर्य का पालन किया। फिर जब बास आये, राज्या भिन्ने हुना, तब दो ब बे हुए और मायला संयम कर दिया।

निगोषा

उन दिनों नारमन का अर्थ होता है। हमारा लोकायत है कि दो बच्चों में समाप्ति मानना तो इत लोकायत का अर्थ होगा। अंतर यह न माना जाय, तो उस लोकायत का अर्थ पड़ता। यह मेरा साथ सुभाष है। इस पर आप लोग लगे।

कुछ लोगों को लगता है कि पत्नी की सम्पत्ति न मिले, तो पति बाहर जायगा, दूध-सिन्धु के साथ सम्पत्ति रखता। बर दूध-सिन्धु होता है कि दो बच्चों की माता माना जाय पत्नी मान्य की प्रेरणा दे, तो एकर उह बड़े-सा गोपना (अभिचार) करेगा। ऐसा उह उह न मन में होता है, इतिहास में स्मरण दे देरी है। हमारी सोचना चाहिए कि हम बाहर जाने हैं बड़ आना बड़े के लिए जान है कि वास्तव यह के लिए। उह उह न मन में, न परमात्मा सा है, उनको सेवा के लिए हन जाते हैं। बाहर की दृष्टि हमारे लिए तारक हमारी

बाहिर मारक नहीं। आप सर्वप्रथम हीन नहीं, विचारनी लग है। इसलिए संयम की बुनियाद को छोड़ना नहीं चाहिए।

नयम की बात चली तब किन्तीने बड़ा था कि दल लया तो जगदा लालक्या की साधारणता है। वहाँ नयम की बात कैसे होगी? लेकिन इत्यादिवादी को जगदा लोकायत की आवश्यकता है ता भारत की भी ही ऐग माने। यह भी आध्यात्म नहीं कि इत्यादि में अहिंसा लागू था आन व्यवस्था है, तो इत्यादि न ही लागू बने चाहिए। मनुष्यधर्म का पाठ यह हुआ है। अब अहिंसा बचाने की आवश्यकता नहीं। अभी एक इतिहास पति पत्नी में पाठ लय था। उन्होंने वहाँ भी एक बच्ची का पाठ लिया। गरीब था, भूखा था, ता इत लोगों ने उसे अपना लक्ष्मी मानकर पाठ में रख लिया। वे सोने बहुल दुष्टों के और वरु लक्ष्मी एकदम वाली। यह अहिंसा नहीं था कि उनको इतिहास लक्ष्मी ही मिले। एक लक्ष्मी मिल गयी, बच ही गया। इत्यादि अपने लोकायत बड़ाना चाहिए हो, तो भारत के साथ भाग करे कि हमें एक लाख गने जा सकते हैं। इत्यादि की अन्ती लोय पेंडाइय हो, यह जरूरी नहीं। मोलाद सब उल्लेख है। अपनी ही मोलाद बड़ाना जातीयवाद है। और अपनी ही मोलाद बड़े, ऐसा जो सोचने होगे, वे जरूर मार जायेंगे।

किस चाहता है कि लोग बड़े, दाई ईल चहुँदा है कि लोग बड़े, चीन चाहता है कि पत्नी। तो सारे देवों के साथ इन्हें हीकर प्रस्ताव करें कि चीन के लोगों की आत्मुलिया में बसाया जाय, पत्नीने देय के लोगों को पत्नीने देय में बसाया जाय बचोहा।

आपकी यह का जमाना है, उपके सब-लोग मिलकर प्रत्याय पाय करें कि दो बच्चों में संयम माना जाय तो समाज पर उभरा अर्थ पड़ेगा।

(राजगुरु बिहार में एक बच्ची 'दस को सम्भर के कार्यक्रम' साधिका से हुई बचो)।

यह अजीब विरोधाभास !

देस भर में अधिक मन्दी की जो लहर फँस रही है, उसकी तरफ आपका ध्यान गया हो होगा। बेकारी बढ़ रही है, विशेष रूप से शिक्षित लोग अधिक संख्या में बेरोजगार होते जा रहे हैं। बताया गया है कि आज देस में लगभग दस हजार इंजीनियरों के पाठ काम नहीं हैं। कई उद्योगों का उत्पादन घटा दिया गया है और कामगारों को काम से अलग होना पड़ा है, क्योंकि उस माल की खपत नहीं हो पा रही है। इस कारण हस्ताल, पेराम और अन्य नागा प्रकार के हंगामे होने लगे हैं। कीमती तो ऊँची ही है, और सामान्य जनता को गहरी चोट सहनी पड़ रही है।

कई राज्य-सरकारों का खजाना खाली हो गया है और विकास और कल्याणकारी योजनाओं का सचं एहदम बन्द कर दिया गया है। सरकारी कर्मचारियों को वे बरखास्त नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि वेग्रा करने से बड़ा होहल्ला मचेगा; इसका अर्थ यह है कि बड़े विभागों में कर्मचारियों के पास केवल दिन पाने के सिवा और कुछ काम नहीं है। सन् 1९६६ में तीसरी पंचवर्षीय योजना समाप्त हुई। अभी तक चौथी योजना नहीं बनी है। आया की जा रही है कि अगले वर्ष तक बन पायगी।

नष्ट-भ्रष्ट अर्थव्यवस्था

जब से हमारे नेताओं ने देस के विकास और समृद्धि के शापक के रूप में पंचवर्षीय योजनाएँ बनायीं, तभी से देस के उपा विदेश के भी कई विशेष और विवेकहीन स्पष्टिक उन योजनाओं के और देस की अर्थ-शक्ति के घोर असन्तुलन की आ-शेषता करते रहे हैं और उनके संभावित दुष्परिणामों की ओर इशारा करते रहे हैं। उनमें जो विशेष उप विचार के हैं, वे यहाँ तक बढ़ते आये हैं कि देस की सारी अर्थव्यवस्था टूट हो जानेवाली है। ऐसा मान्य हो रहा है कि बुरी-से-बुरी आघातों की सच होने जा रही

है और सारी अर्थव्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो रही है।

कृषि की उपेक्षा

अत्यन्त महत्वपूर्ण विफलताओं में एक यह है कि हमने कृषि की उपेक्षा की। देस के ८५ प्रतिशत लोग आज भी ग्राम पर निर्भर हैं और यह भी बिल्कुल स्वाभाविक है कि देस के अधिकांश उद्योग इन लोगों की आवश्यकता पूरी करके ही समृद्ध हो सकते हैं। इस-उपर नहीं उल्लेखनीय प्रगति भले हुई हो, फिर भी कुछ बिल्कार कृषि हमारे देस में जहाँ के सहाँ ही रह गये हैं। इसका कारण आज सब जानते ही हैं। जिन के नीचे की परती के तीन-चौथाई हिस्से में सिंचाई का प्रबंध नहीं है। कृषि की उपज के भाव के साथ ऐसा कुछ किया जाता है कि किसान की आय का अर्धदा खारा हिस्सा कर्म चुकाने में ही खर्च हो जाता है। कृषि से सम्बन्धित जो बर्जों सरदार की ओर से दिया जाता है वह भी साहूकारों और महाजनों के ही हाथों में छोपा गया, जो अपने बर्जदारों का बराबर चूसते ही रहे हैं, इत्यादि अनेक कारण हैं।

दूसरी भूल यह भी गयी कि देहानों और सहरो में पड़े हुए सामान-करोड़ों बैंगरों और अर्बबैंगरों की उपेक्षा की गयी। उनके हाथ में कोई उत्पादक उद्योग देने की दिया में नहीं के बराबर प्रयत्न हुआ। इस कारण लोगों की अर्थव्यवस्था कम हो रह गयी।

पूँजीवादी अर्थव्यवस्था

तीसरी भूल, जो कि गम्भीर अधिक महत्व की है, यह है कि देस की अर्थव्यवस्था का स्वरूप पूँजीवादी बन जा रहा गया, जिसका एक अनिर्धार्य दोष है आय के विचलन की असमानता। अनेक अलौबर्गों ने इन बातों की ओर खेन किया है। स्पष्ट रूप से यह इस प्रकार है : पूँजीवादी रचना में उद्योगपति व्यक्तिगतिक मुनाफ़ा बनाना चाहते हैं। इसका अर्थ है कि बन्तु के

उत्पादन में अपना कच्चा माल, मजदूरी, व्यवस्था आदि में जितना खर्च हुआ होगा, उससे अधिक दाम पर माल उन्हें बनना होगा। इसका अर्थ यह है कि कच्चा माल पैदा करनेवालों, मिल-मजदूरों, व्यवस्था विभाग के कर्मचारियों आदि सबको कुल मिलाकर जो आमदनी है—देस भर के उत्पादन की जो आय है—वह उत्पादित माल के दाम से कम ही रहेगी। इसलिए जितना माल तैयार हुआ है, वह पूरा-का-पूरा खरीदने की स्थिति में लोग नहीं रह जाते हैं। इसलिए उत्पादन के अगुा एक हिस्से की बिक्री के लिए देस के बाहर बाजार खोजना पड़ता है। इसीलिए इंग्लैंड, फ्रांस, ट्यूनी वगैरे पूँजीवादी राष्ट्रों को दूसरे राष्ट्रों पर बच्चा करना पडा था और अपना साम्राज्य खडा करना पडा था। उन्हें इन देसों को लावश्यकता दोगी रूप में थी कि अपने यहाँ के तैयार माल के लिए बाजार मिले और यहाँ के कच्चा माल सस्ते में प्राप्त कर सकें।

नेत्री-मन्दी का व्यावसायिक चक्र

इस तरह के पूँजीवाद में, अर्थव्यवस्था में बार-बार तेजों और मन्दी भी आया करती है। इसे 'व्यावसायिक चक्र' (ट्रेंड साइकल) कहते हैं। कुछ वर्षों तक बनी तेजी आ सकती है, मीग पूर यद् यहाँ है, उत्पादन बढ़ सकता है, गये उद्योग खों हो सकते हैं, लोग फिर मन्दी मुक्त हो जाते हैं। मीग घट जायगी। दाम फिर जायेंगे। उत्पादन घटाना पड़ जायगा। और बेकारी बढ़ने लग जायगी। बिल्कुल यही आज हम लोग रहे हैं।

विदेशी व्यापार पर निर्भरता

हम बढ़ते की तो समाजवाद की बातें बट्टन बढ़ते हैं, लेकिन हमारे यहाँ की अर्थव्यवस्था बिल्कुल पूँजीवादी बन की ही है। इसीलिए हमें सारे परिणाम हमें मुलतने पड़ रहे हैं। दिन-ब-दिन हम विदेशी बाजार पर अर्बब निर्भर होते जा रहे हैं। हमारे देस में पैदा होनेवाले बर्तों पदार्थों की मीग देस के अन्दर नहीं है। आज, चीनी,

बयेंद हर्ष चीमों के लिए, जिनकी भाज देस में कपी है, विदेशी बाजार सोचने की दिशा में हमारे उद्योगाधिकों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, क्योंकि वर्तमान पूंजीवादी ढाँचा ही यदि बना रहा तो आखिर सोल घारा उत्पादन कभी सधा ही नहीं चकेंगे। हाल में हमारे उप-प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने बलकृष्ण के एक भाषण में सुभाष रिया है कि इन्डोनिशियाण उद्योग के लिए विदेशी बाजार खोजना चाहिए।

यह एक अन्वीय विशेषाभाव है कि जब कि देस के बजरो लागो को काम देने के लिए नई उद्योगो की आवश्यकता है, उत्पादन बढाने के लिए मुख्यतः जोजारों और उत्तन उद्योगो की आवश्यकता है जब कि कुल योग की तीन चौथाई अर्थात् विचाई के प्रकथ से अधिक है, लासो गाँवों में बकरी चरकें नहीं हैं, और भी कई काम हैं, जो जलगा की सोरो ही उच्चति के लिए ब्याप्य करते हैं, तब भी देस के सब हज्जार इन्जीनियरों को बेकार रहना पर रहा है और इन्जीनियरो उद्योग की रक्षा रहना पडा है।

विदेश-यापी अर्थसङ्घट
पूँजीवादी राष्ट्री की अर्थव्यवस्था पर सकट बार बार आता रहा है। सन् १९२९ में एक बार मुख्यतः सङ्घट आया था। वह अमरीका में शुरू हुआ और घारे पूँजीवादी अर्थ पर दस गया। उसके परिणामस्वरूप करीबो लोगो की सारी कुल आय तकलीक योग्यो परी थी। अन्ती कुछ सतप्त पहले सघार पर जो हालत का सङ्घट उठ कर में मरक उठा, यह उसी प्रकार के विवशधारी अर्थसङ्घट का सूचक है। यद्यपि राष्ट्र-नायकों ने उस सङ्घट का निराकरण हथ लीगो की आस्थाएन दिया है, फिर भी हमारे देस को उस सङ्घट का दुपी तरह विचार रहना ही पड़ेगा।

हम दिन-ब-दिन विदेशों पर अधिकारिक महसूस कर रहे हैं। इतके दो कारण हैं, एक यह कि जैसा ऊपर लिखन किया है, हमारी अर्थव्यवस्था पूँजीवादी ढग की है, और दूसरा यह कि देस को निरन्तरि प्रगति

के लिए देस में पड़े हुए साधन सोचो का समुचित विनियोग हथ कर नहीं पाये। इन विदेशी उद्योगो और विदेशी व्यापार, इन दोनो पर अत्यधिक निर्भर रहे। इसलिए हथ आने पड़े के हर काम के लिए परिचयों इकठ्ठपन पर आधिपत रह गये। इसी पराधीनता के कारण शय्ये का प्रत्युत्पन्नने उनके सुभाष के सामने हर्में पुटने टेकना पडा, जिसका परिणाम बस बुरा हुआ। आज हमारी दया पहले से अधिक विगड गयो। अमरीका तथा अन्य परराष्ट्री ने अपने पड़े के अभाव पर काफ़ी रोक लगा दी, पर्वटन पर नियन्त्रण लगाया, सहायता देना पडा दिया और यह सब अपने पड़े की अर्थव्यवस्था को उन्मुक्त करने के लिए किया, लेकिन आगे चलकर दसहा दुपरिणाम हमारी अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा ही।

यह भी सही है कि हमारी अर्थव्यवस्था के विगडने के और भी अनेक कारण हैं। लगातार पिछले दो बरों में काफ़ी अरबों में मुसा पडा, पाकिस्तान के साथ दुर्भाग्यपूर्ण संधर्ष हुआ, शय्ये का प्रत्युत्पन्न, सङ्घट विचारक दलों की सरकार की नीतियाँ भी कुछ ऐसी ही रहें, इन सब पर दोष देना होगा। परन्तु इनमें से अधिकारिण कारण तो दोजना की प्रथमूत फलनी की ही छायाएँ हैं, उसकी ही वजह से पैदा हुए हैं। सूखे का परिणाम दसगा अयागक इसीलिए हुआ कि गन २० बयों में खेरो की भारी खोसा हुई, हिन्द-याक संधर्ष हमारे पड़े आये दिन हो-शामे येतायों और टगो का ही एक प्रकार-विशेष था, सङ्घट विचारक दलों की नीतियाँ बाकिच महानति के कारण उजनी नहीं थी, जितनी कि परिणाम थी।

'मूल्य-नीतियाँ' अपनायी जाय इस सङ्घट से कैसे उबरत जाय ? पूँजीवादी अर्थनीति के पुटाने ठरीके हैं ही। पूँजीवादियों को 'अतिरिक्त' करने के लिए उन पर से करमार घटाया जा सकता है। औद्योगिक मजदूरों की मजदूरी की हदबन्दी भी आ सकती है, अर्थात् बढने से रोकता जा सकता है। ऊँच-उत्पादनों के दाम बढाने के लिए देस में पड़े हुए साधन सोचो का समुचित विनियोग हथ कर नहीं पाये। इन विदेशी उद्योगो और विदेशी व्यापार, इन दोनो पर अत्यधिक निर्भर रहे। इसलिए हथ आने पड़े के हर काम के लिए परिचयों इकठ्ठपन पर आधिपत रह गये। इसी पराधीनता के कारण शय्ये का प्रत्युत्पन्नने उनके सुभाष के सामने हर्में पुटने टेकना पडा, जिसका परिणाम बस बुरा हुआ। आज हमारी दया पहले से अधिक विगड गयो। अमरीका तथा अन्य परराष्ट्री ने अपने पड़े के अभाव पर काफ़ी रोक लगा दी, पर्वटन पर नियन्त्रण लगाया, सहायता देना पडा दिया और यह सब अपने पड़े की अर्थव्यवस्था को उन्मुक्त करने के लिए किया, लेकिन आगे चलकर दसहा दुपरिणाम हमारी अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा ही।

लिए 'प्रत्य-नीतियाँ' अपनायी जा सकती हैं, ताकि उद्योगों को कच्चा माल सस्ते दामों पर प्राप्त हो सके। विदेशी बाजार खोजना या सकता है और पैसाया जा सकता है, जैसा कि ऊपर कहा गया है। इन सारे बरनों से अर्थ-व्यवस्था सुधर सकती है, परन्तु इसके लिए आम जनता की जिन्दगी को कीमत चुकानी होगी। हम ऐसे सकेत देस भी रहे हैं कि परिस्थिति को सँभालने के लिए इन बरनों का तथा ऐसे ही अर्थ उदायोग का समर्थन दिया जा रहा है और वे जानाये भी जा रहे हैं।

स्वतंत्र कृषि-औद्योगिक अर्थव्यवस्था
दूसरा भाग अर्थनीति को सामुदाय बदलने की है, जिससे राष्ट्रीय आय का समान वितरण होने लगे देस की अर्थ-व्यवस्था सुधर जाय। इसके लिए मानिताएँ परिवर्तन करने की आवश्यकता होगी। इस परिवर्तन को सुनिश्चित करने पर हमें इच्छा होगी, क्योंकि हमें और पिछड़ी जनता का अधिकतर हिस्सा गाँवों में ही बसा है। देस के एक विस्थात अर्थशास्त्री डा० बी० एन० गायुलो ने कुछ समय पहले कहा था कि देस की राष्ट्री अर्थनीति के साथ हमारे गाँवों का आज बिलकुल बढ़ी स्थान है, जो स्थापत्य प्राप्ति से पहले अर्थशास्त्री के साथ रहा है। यानी त्रिव प्रकार इन्फ्लेण्ट के लाभ के लिए तब गाँवों का शोधन हुआ करता था, उसी प्रकार आज पहरो के लाभ के लिए गाँवों का शोधन हो रहा है। इसलिए अर्थ-नीति में सामुदाय परिवर्तन करने की दिशा में पहला कदम यही होना चाहिए कि गाँव अपनी स्वतंत्रता के लिए कसर बचें। गाँवों की पूँजीवादी ढग से भिन्न, अपनी स्वतंत्र इन्-औद्योगिक अर्थव्यवस्था विकसित और समर्थित करनी होगी। ठगी, कुछ हथ तक वे पूँजीवादी व्यवस्था के भ्रमनाल से मुक्ति पा सकेंगे। पूरे राष्ट्र ही तभी मिल सकेगी, जब गाँवों की नयी रचना मजदूर ही जायगो और देस को सम्पूर्ण अर्थनीति को प्रभावित और परिवर्तित कर सकेंगो। सामुदाय आन्दोलन का यह एक प्रमुख उद्देश्य है।

सूत्रान-यक : शुक्रवार, १० मार्च, १९६८

यह अजीब विरोधाभास !

देश भर में आर्थिक मन्दी की जो लहर फैल रही है, उसकी तरफ आपका ध्यान गया ही होगा। बेकारी बढ़ रही है; विशेष रूप से शिशित लोग अधिक संख्या में बेरोजगार होते जा रहे हैं। बताया गया है कि आज देश में लगभग दस हजार इकोनियरो के पास काम नहीं है। कई उद्योगों का उत्पादन घटा दिया गया है और कामगारों को नाम से अलग होना पड़ा है, क्योंकि उस माल की खपत नहीं हो पा रही है। इस कारण हड़ताल, घेराव और अन्य नाना प्रकार के हंगामे होने लगे हैं। कीमतों से ऊँची हो गई हैं, और सामान्य जनता को गहरी चोट सहनी पड़ रही है।

कई राज्य-सरकारों का सजाना सार्वो हो गया है और विकास और उत्पादकता को योजनाओं का सख्त एहदम बन्द कर दिया गया है। सरकारों के कर्मचारियों को वे बरखाए न नहीं कर पा रहे हैं, क्योंकि वेग्रा कार्ले से बचा होल्ला मन्थन; इसका अर्थ यह है कि कई विभागों में कर्मचारियों के पास केवल वेतन पाने के विना और कुछ काम नहीं है। सन् १९६६ में तीसरी पंचवार्षिक योजना समाप्त हुई। अभी तक चौथी योजना नहीं बनो है। आया की जा रही है कि अगले वर्ष तक बन पायगी।

नष्ट-भ्रष्ट अर्थ-व्यवस्था

जब से हमारे नेताओं ने देश के विकास और समृद्धि के साधन के रूप में पंचवार्षिक योजनाएँ बनायीं, तभी से देश के तथा विदेश के भी कई विशेषतः और विदेशीय व्यक्तित्व उन योजनाओं के और देव की अर्थ-नीति के धोर अक्षुण्ण की भागी बन कर उठे रहे हैं और उनसे समाधि दुःखारिणियों की ओर इशारा करते रहे हैं। उनमें जो विशेष उद्य विचार के हैं, वे यहाँ तक बहने आये हैं कि देश की सारी अर्थ-व्यवस्था टप हो जानेवाली है। ऐसा मान्य हो रहा है कि बुरी-से-बुरी आयाही सब होने जा रही

है और सारी अर्थ-व्यवस्था नष्ट-भ्रष्ट हो रही है।

कृषि की उपेक्षा

अत्यन्त महत्वपूर्ण विषयताओं में एक यह है कि हमने कृषि की उपेक्षा की। देश के २५ प्रतिशत लोग आज भी कृषि पर निर्भर हैं और यह भी बिल्कुल स्वाभाविक है कि देश के अधिकांश उद्योग इन लोगों की आवश्यकता पूरी करने ही समुद्र हो सकते हैं। इधर-उधर वहाँ उल्लेखनीय प्रगति भले हुई हो, फिर भी कुछ मिलाकर कृषि हमारे देश में जहाँ के तहाँ ही रह गयी है। इसका कारण आज सब जानते ही हैं। जोत के नीचे की धरती के तीन-चौथाई हिस्से में विचारों का प्रथम नहीं है। कृषि की उपेक्षा के भाव के साथ ऐसा छल किया जाता है कि किसान की आय का अर्धदा साया हिरवा बर्न चुकाने में ही सर्व हा जाता है। कृषि से सम्बन्धित जो बर्न सरकार की ओर से दिया जाता है वह भी साहूकारों को महाजनों के ही हाथों में छोटा गया, जो अपने बर्नदारों का बराबर भूयते ही रहे हैं, इत्यादि अनेक कारण हैं।

दूसरी मूल यह भी गयी कि देहागों और माहरो में पड़े हुए सामो-जरोहो बैकानों और अर्बेकारों की उनीशा की गयी। उनके हाथ में कोई उत्पादक उद्योग देने की दिया में नहीं के बराबर प्रयत्न हुआ। इस कारण लोगों की धनपति कम हो रह गयी।

पूर्वजादी अर्थ-व्यवस्था

तीसरी मूल, जो कि गन्ने कृषि महत्व की है, यह है कि देश की अर्थ-व्यवस्था का स्वल्प पूर्वजादी टप का ही रखा गया, जिसका एक अनिर्णय दोष है आय के वितरण की अधमानता। अनेक अन्वेषकों ने इन बात की ओर सनेन किया है। स्पूक रूप से वह इस प्रकार है: पूर्वजादी रचना में उद्योगपति अधिकाधिक मुनाफा कमाना चाहते हैं। इसका अर्थ है कि वस्तु के

उत्पादन में अर्थात् कच्चा माल, मजदूरी, व्यवस्था आदि में जितना खर्च हुआ होगा, उससे अधिक दाम पर माल उन्हें बेचना होगा। इसका अर्थ यह है कि कच्चा माल पैदा करनेवालों, मिल-मजदूरों, व्यवस्था विभाग के कर्मचारियों आदि सबकी कुल मिलाकर जो आमदनी है—देश भर के उत्पादन की जो आय है—वह उत्पादित माल के दाम से कम हो रहेगी। इसलिए जितना माल तैयार हुआ है, वह पूरा-का-पूरा खरीदने की स्थिति में लौग नहीं रह जाते हैं। इसलिए उत्पादन के अगुक एक हिस्से की विश्वी के लिए देश के बाहर बाजार खोजना पड़ता है। इसीलिए इन्फेड, फान्स, टटली वगैरे पूर्वजादी राष्ट्रो को दूसरे राष्ट्रो पर बच्चा करना पड़ा था और अन्तः साम्राज्य खडा करना पड़ा था। उन्हें इन देशों की आवश्यकता इद्यो रूप में थी कि अपने यहाँ के तैयार माल के लिए बाजार मिले और यहाँ के कच्चा माल संस्ते में प्राप्त कर सकें।

नेत्री-मन्दी का व्यापक आर्थिक चक्र

इस तरह के पूर्वजादी में, अर्थ-व्यवस्था में बार-बार तेजी और मन्दी भी आया करती है। इन 'व्यापक आर्थिक चक्र' (ट्रेड साइकल) कहते हैं। कुछ वर्षों तक बढी तेजी का सङ्घट्टी है, माँग पूर बढ़ सङ्घट्टी है, उत्पादन बढ़ सङ्घट्टी है, नये उद्योग खरे हो सङ्घट्टी हैं; और फिर मन्दी घुस हो जाती है। माँग घट आयगी। दाम गिर जायेंगे। उद्योग बन्द पड़ जायेंगे। उत्पादन घटाना पड़ जायगा। और बेकारी बढ़ने लग जायगी। बिल्कुल यही आज हम सब भोग रहे हैं।

विदेशी व्यापार पर निर्भरता

हम करने को तो समाजवाद की बातें बटन कहते हैं, लेकिन हमारे यहाँ की अर्थ-व्यवस्था बिल्कुल पूर्वजादी टप की ही है। इसीलिए उसने हमारे परिणाम हमें मुगलने पड़ रहे हैं। दिन-ब-दिन हम विदेशी बाजार पर अधिक निर्भर होते जा रहे हैं। हमारे देश में पैदा होनेवाले बर्न पदार्थों की माँग देश के अन्दर नहीं है। बरफा, धोनी,

बोर्ड बर्न चीजों के लिए, जिनकी आज देना में कमी है, विदेशी बाजार खोजने को दिशा में हमारे उद्योगियों को प्रोत्साहित किया जा रहा है, क्योंकि वर्तमान पूंजीवादी संकट ही यदि बना रहा तो आखिर लोग धारा उत्पादन कभी खोए ही नहीं सकते। हाल में हमारे उप-प्रधानमंत्री श्री मोरारजी देसाई ने बल्लूका के एक भाषण में सुभाष दिवा है कि इन्वीनिशियल उद्योगों के लिए विदेशी बाजार खोजना चाहिए।

यह एक अजीब विगोथाना है कि जब कि देश के बरतों लोगों को काम देने के लिए नई उद्योगों की आवश्यकता है, उत्पादन बढ़ाने के लिए सुधरे ओबारे और उन्नत उपकरणों की आवश्यकता है, जब कि कुल योग को हीन बोवाई अभीन विचारों के प्रबन्ध से बचिन है, लालो गीसों में अच्छी तरह नही है, और भी कर्न काम है, जो जनता की योगी सी उच्चरि के लिए बबन्ध करने के है, तब भी देश के दस हजार इन्वीनिशियल उद्योगों को रका रहना पडा है और विदेशी बाजारों अर्थात्सहट

पूँजीवादी राहों की अर्थव्यवस्था पर संघट भार-भार आता रहा है। सन् १९२६ में एक बार भयकर महट आया था। यह अशरीषा में घुस हुआ और घारे पूँजीवादी जघन पर छा गया। उनके परिणामस्वरूप बरतों लोगों को भारी कुस आर तालोक भोगनी पची थी। अथो कुस उरदह पहले सवार पर जो डालर का सघट उर कर् में पडर उरद, यह उरठी प्रधार के विरधभावी बर्षणरुषा म सुखर है। यद्यपि राष्ट्र-नायकों ने उर सघट के विरगीर हल लीयों को भारसाधन दिया है, फिर भी हमारे देश को उर सघट का कुरी उरद विचार होना हो पड़ेगा।

हम दिन-ब-दिन विदेशों पर अर्थकरुषिक भारसिबन हो चले है। इसके दो कारण हैं, एक यह कि देश ऊार निरिधन दिया है, हमारी अर्थव्यवस्था पूँजीवादी रग की है, और दूसरा यह कि देश को निरासिबत प्रगति

मूरान-यक : दुकानार, १० मई, ६८

के लिए देश में पड़े हुए साधन खोजने का समुचित विनियोग हल कर नहीं पाये। हम विदेशी उद्योगों और विदेशी व्यापार, इन दोनों पर अर्थकरुषिक निर्भर रहे। इसलिए हम खाने यहाँ के हर काप के लिए पत्रिकी हुसूचन पर आधिन रह गये। इसी परत चीनता के कारण धन्ये का मूल्य पडाने के उनके सुभाष के सामने हमें पुटने टेकना पडा, जिसेवा परिणाम बडा कुरा हुआ। आज हमारी दसा पहले से अधिक बिगड गयी। जपकीरका तथा अन्य परराष्ट्रीय ने अपने यहाँ के आयात पर काफी रोक लगा दी, पर्यटन पर नियन्त्रण लगाया, सहायता देना पडा दिया और यह सब अपने यहाँ की अर्थव्यवस्था को अनुचित करने के लिए किया, लेकिन आगे चलकर इसका दुपरिणाम खोजनी अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा ही।

यह भी सही है कि हमारी अर्थव्यवस्था के बिगडने के और भी बनेक कारण हैं। लगातार पिछले दो बर्षों में बाकी प्रदेशों में सूखा पडा, पाकिस्तान के साथ दुर्भाग्यपूर्ण सन्धर्ष हुआ, धन्ये का मूल्य पडा, उरकुस विधायक ढलों की सरकार की भोतिवा भी कुस ऐसी हो रही, इन सब पर रोप देना होगा। परन्तु इनमें से अधिकतर कारण तो खोजना की मूलभूत मलजों को ही सासाएँ है, उसकी ही बबह से पंसा हुए है। सूखे का परिणाम इतना भयानक इशोकिए हुआ कि गत २० बर्षों में खेती को भारी पेशता हुई है-दिए-नाक सन्धर्ष हमारे यहाँ आये दिन होते-बिधेय था, घणुक विधायक ढलों की नीतियाँ आर्थिक अवनति के कारण उतनी नहीं थी, जितनी कि परिणाम थी।

“मूल्य-नीतियाँ” अपनानी जाय इस सघट से कैंसे उबरर जाय ? पूँजीवादी अर्थनीति के पुताने उरीके है हो। पूँजीगतियों को “बैरिड” करने के लिए उन पर से कर भार पडया जा सकता है। बाँयोगिक मजदूरों की मजदूरों की हदर-री की जा सकती है, अर्थात् इन्हे से रोक जा सकता है। इति-उत्पादनों के साम पडाने के

लिए “मूल्य-नीतियाँ” अपनायी जा सकती है, ताकि उद्योगों को कृपा माक सन्धे दायों पर प्राप्त हो सके। विदेशी बाजार खोजा जा सकता है और पेशावा जा सकता है, जँसा कि ऊार कहा गया है। इन घारे कर्षणों से जर्न व्यवस्था सुधर सकती है, परन्तु इसके लिए आम जनता की जिन्दगी को कीमतें चुकानी होगी। हम ऐसे संचित देय मो रदे है कि परिस्थिति को संभालने के लिए इन कर्षणों का तथा ऐसै ही अन्य उपायों का समर्थन किया जा रहा है और वे अपनाये भी जा रहे है।

स्वतंत्र कृषि-औद्योगिक अर्थ-व्यवस्था दूसरा मार्ग अर्थनीति को आधुनिक बदलने की है, जिससे राष्ट्रीय साथ का समान वितरण होने होते देश की अर्थव्यवस्था सुधर जाय। इसके लिए प्राथिकारों परिवर्तन करने की आवश्यकता होगी। इस परिवर्तन को सुनिवार्य गाँवों पर खरी करनी होगी, क्योंकि कुली और पिधभी जनता का अधिकतर हिस्सा गाँवों में ही रहा है। देश के एक त्रिकुशात अर्थशास्त्री डा० बी० एन० माणुजी ने कुस सन्धर्ष पहले कहा था कि देश की राहरी अर्थनीति के साथ हमारे गाँवों का नाब-रिहलुक बढ़ी स्थान है, जो स्वातन्त्र्य प्राप्ति से पहले अर्थव्यवस्था के साथ रहा है। यानी त्रिष प्रकार इलेण्ड के लागू के लिए तब गाँवों का घोषण हुआ काता था, उसी प्रकार आज सन्धर्ष के लागू के लिए गाँवों का घोषण हो रहा है। इसलिए अर्थ-नीति में आधुनिक परिवर्तन करने की दिशा में पहला कदम यही होना चाहिए कि गाँवों की स्वतन्त्रता के लिए कर्नर बस छें। गाँवों को पूँजीवादी रग से मिन्न, अपनी रकनर कृषि-औद्योगिक अर्थव्यवस्था विकसित और पराधिन करनी होगी। तनी, कुस हल तक वे पूँजीवादी व्यवस्था के अग्रमाल से मुक्ति पा सकेंगे। घुरी राहन तो हमी थिल सन्धेकी, अरब गाँवों की नवी रचना मजबूत हो जायगी और देश की सम्पूर्ण अर्थनीति को प्रभावित और परिवर्तित कर सकेगी। आधुनिक आन्दोलन का यह एक प्रमुख उद्देश्य है।

—मनमोहन चौधरी

परिचर्चा

पाठकों को स्मरण होगा कि हमने "भूदान-यज्ञ" के दिनांक १२ अप्रैल '६८ के अंक में एक परिचर्चा शुरु की थी, यह उसी परिचर्चा का दूसरा भाग है। इसमें प्रस्तुत है, बिहार के प्रमुख कार्यकर्ता माथियाँ की सर्वसम्मत राय और योजना, श्री गांधी आश्रम, उत्तर प्रदेश के एक पुराने खादी-कार्यकर्ता तथा खादी-जगत के वरिष्ठ साथी के विचार।—सं०

खादी :

ग्रामदान के संदर्भ में

[गत २२ से २४ जनवरी तक श्री राममुरण डिण्डाला, उलाव (मुंगेर) में बिहार के खादी के कुछ प्रमुख कार्यकर्ताओं को चर्चा ग्रामदान की गाँव में खादी के स्वरूप पर हुई। चर्चा में सर्वोच्च वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी, रामप्रेम राय, हरिहरम्व ठाकुर, कैलाश प्रसाद शर्मा, निर्मल चन्द, पीयूषचन्द्र बाबू, खादी-विज्ञापन पदाधिकारी, राज्य खादी बोर्ड, आदि ने भी भाग लिया था। चर्चा की सर्वसम्मत निष्पत्ति निम्न प्रकार है।]

नये गाँव में खादी

ऐसे गाँव से नत्पन्न उन गाँवों से है, जहाँ ग्रामदान तो हुए हैं, पर खादी का काम प्रारम्भ न हुआ हो या ग्रामोद्योग की योजना नहीं चल रही हो।

(क) प्रारम्भ : ग्रामदानों गाँव से स्वायत्ती एवं स्वावलम्बी समाज की रचना की आशा है, इस कारण इन गाँवों के निर्माण की दिशा कल्याणकारी विकास की प्रक्रिया से भिन्न होगी। सरकार एवं उत्पाएँ इनके अधिक्रम को प्रकट करने में सहायक होंगी। स्पष्ट है कि सेवा की आवश्यकता में हम अपनी योजना वाले विनयों को मँबी हुई बनायें, गाँव के ऊपर न लादें। पहली आवश्यकता है गाँव में योजना की मूल पैदा करना।

(ख) पूँजी : योजना गाँव की होगी एवं दुर्घर्ष गाँव का, तो स्पष्ट है कि पैसा

भी गाँव का ही होगा। कोई भी योजना उसके सम्पूर्ण आयोजन को एक कड़ी होगी। समस्त है कोई गाँव अपने आर्थिक विकास का शीर्षगणेश खादी-ग्रामोद्योग से ही करे।

कृषि योजना गाँव की आर्थिक विकास की एक कड़ी है, इस कारण इसका आर्थिक दायित्व एवं लाभ भी गाँव का ही होगा। कोई भी बाहरी सहायता या ऋण गाँव को प्राप्त होगा। गाँव योजना प्रारम्भ करने के पहले अपनी जिम्मेदारी अच्छी तरह समझ ले। आज किसी योजना के लिए कोई-न-कोई अनुदान या उपादान प्राप्त है, कुछ नहीं मिलनेवाला है, फिर भी योजना गाँव के हित में है तो गाँव को चलाना है।

कोई गाँव आज नितान्त विपन्नतास्था में है। वैया गाँव सरकार या संस्था से खादी-ग्रामोद्योग की किसी योजना को चालू करने के लिए आग्रह कर सकता है और इहे वैसे गाँव की मदद में जाना चाहिए, पर संस्था या सरकार को अपनी ओर से वहाँ किसी उद्योग का संचालन गाँव के निर्णय के अनुसार ही करना चाहिए। ऐसे भी गाँव होंगे जहाँ सेवा-सत्पाएँ या सरकार प्रारम्भ में अपनी ओर से व्यवस्था की समय-समय पर जानकारी देगी, पर गाँव निर्णय देने में असमर्थ होगा। गाँव की विपन्नता के कारण उद्योग या शीर्षगणेश तो कर दिया जाय, पर जितनी जल्दी गाँव अपनी साठी टेक ले, उतनी जल्दी सेवा की कार्यकर्ता सिद्ध होंगी।

(ग) कार्यकर्ता : (१) कीर्तन-योजना गाँव की, पूँजी गाँव की तो कार्यकर्ता भी

गाँव के, तभी सत, मन और धन, तीनों गाँव के निर्माण में लगा माना जायगा। गाँव के कार्यकर्ता से अर्थ—गाँव का कोई व्यक्ति आर्थिक या सम्पूर्ण सेवा वैतनिक या अवैतनिक नियमित रूप से देने का सहज करता है। कोई बाहर का सेवक, जो अपने को उस गाँव की सेवा में लगाना चाहता है और जिसे गाँव ने स्वीकार किया है। गाँव किसी व्यक्ति की सेवा अमुक अवधि के लिए कृपण से करता है।

(२) कैसे—गाँव जो भी उद्योग चलाना चाहता है उसके लिए गाँव को व्यवस्थापकीय एवं तकनीकी ज्ञान का कार्यकर्ता चाहिए। ऐसे जानकार कार्यकर्ता गाँव में मिल भी जा सकते हैं, लेकिन कार्यकर्ता तैयार भी करने होंगे। उद्योग के लिए समय-समय पर व्यवस्थापकीय या तकनीकी प्रशिक्षण या टिचिरी में भाग लेना, उद्योग के ज्ञान, प्रत्यास्मरण एवं समीपनों के लिए आवश्यक होगा। आज ऐसे प्रशिक्षणों के लिए सरकारों विरतचित प्राप्त है तथा शिक्षण-युक्त भी नहीं देना पड़ता। अग्रे यह सुविधा नहीं भी मिल सकती है। आज भी कुछ वैसे लम्बे दिवसों की आवश्यकता महसूस होती है, जिसमें ग्रामीणों को छोड़े समय में कुछ मीठी जानकारी दी जा सके। ऐसे दिवसों के संशोधन में अर्थात्मात्र के कारण भाषा साठी है।

गाँव को अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी। अमुक व्यक्ति को अपने काम के लिए तैयार कर रहे हैं तो उसको रोटी का उत्तर-दायित्व गाँव का है। प्रशिक्षण के लिए सारी सुविधा प्राप्त भी है, उसके लिए भी जमानत-जमा या गणपेय, उपर-मर्ष आदि-बा सँ सम्भने आता है। गाँव प्रतीक स्वरूप इस प्रकार के लुचकें वा बहुत अपने कोप में से करे या प्रयोजन के लिए गाँव के चन्दा इकट्ठा करे। इन्हें गाँव तथा व्यक्ति, दोनों का नैतिक उत्तरदायित्व बनना है।

ऐसे प्रयोगयोगी प्रशिक्षण जिनके लिए कोई महायान उपलब्ध नहीं है, गाँव अपनी आवश्यकतानुसार वैसे प्रशिक्षणों का काम सारा कार्य देकर भी प्राप्त करेगा ही।

पुराने गाँव

पुराने गाँव से ताज़ा उद्योग गाँव से है
 वहाँ ग्रामजनों के पहले से या ग्रामजनों क
 बाद भी किसी सरसा ने आने को रोते थे वहाँ
 बावो धामोयोग का नाम प्राप्त किया।

सम्भव है कि उस गाँव को कोई प्रहयोग
 समिति भी उद्योग चला रही हो। इस
 सम्भव में मान इत्यादी कहना है कि
 उद्योग गाँव की योजना का स्वरूप ले।
 गाँव के मुखिया को सफल रहने के। यदि
 सरसाएँ उद्योग चला रही हों तो मानना
 चाहिए कि वे गाँव का काम कर रहे हैं तथा
 सीधे गाँव इसके लिए जिम्मेदार होकर लडा
 हो जाय इसकी योजना हो। यदि गाँव की
 सहकारी समिति है तो वह पूरे गाँव में
 व्यापक हो तथा सहकारी समिति का क्या
 पूरे गाँव की योजना का अंग बने। सारी
 की सहयोग समिति बनी है पर उसका
 सम्भव तैयार मजदूर से नहीं होता ता
 नहीं चलेगा। पान बुझाई एवं उद्योगों को
 क्षत-विक्षत सहयोग समितियों पूरे गाँव के
 आधिकारिक संयोजन के अभाव में आने वाली
 बगल अनुभव रहेगी।

नये गाँव में धारो धामोयोग की
 प्रक्रियाएँ एवं निष्ठाएँ वही होती जो ग्राम में
 ही नये गाँव के लिए लागू गयी हैं। पुराना
 काम नये प्रारम्भ के लिए सुलभ सुयोग
 सिद्ध हो।

यय

यय के सम्भव में दो प्रश्न आते हैं
 (क) केन्द्र या विरेचिन
 (ख) हाथ तथा गुणवत्ता या विद्युत
 शक्ति।

केन्द्र या विरेचिन यय के दो अर्थ हो
 सकते हैं—एक अर्थ में यय को मातृसिन
 गाँव को हो। अर्थात् गाँव की अर्थ-व्यवस्था
 में नियोजित उत्पादन के लिए मजदूरी करता
 है। उद्योगधारा—गाँव की व्यवस्था में
 चले पड़े हैं। अर्थात् निरिक्षित लवण पर
 आकर मजदूरी करता हो। दूसरी अर्थाना
 यह भी हो सकती है कि गाँव के चले पड़े
 हैं अर्थात् कारखानाधारा आने लिए
 मूरान अथ कुम्हार, 10 मई, '६८

उत्पादन करे; केन्द्रिय या दूधरा अर्थ
 उसने आकार या उत्पादन-शीलता होना है।
 यय एक हूँ तक इतनी उत्पादन-शमता का
 हो जो उत्पादित वस्तु को मिल के मुकाबले
 उपभोगता को उपलब्ध हो। प्राय इन्हीं अर्थ
 में विद्युत-गन्विन के प्रयोग का प्रश्न आता है।

यय में इन धारे पहलुओं पर विचार
 विचार के बाद एकमत से यह राय निवार हुई
 कि वस्त्र उद्योग में कलाई-युव प्रतिया मानने
 कई सोलसा गुनाई एवं समन धा तो पुरी
 तयार करने तक का नाम केन्द्रिय उत्पादन ला
 में यदि बिकली उपलब्ध हो तो विद्युत शक्ति
 से किया जाय। कलाई गाँव एवं-शक्ति को
 पुर्नियुगाधार धमगाळा या घर घर में हो।

अथ उद्योग के लिए प्राय स मुहूर्तिक
 उत्पादन की नीति माय्य की गयी। प्रत्येक
 दगा में आधुनिकतम सुपरे टुप बीजार गाँव
 को सुलभ हो। सरसाओं की पुरानी विम्मे
 वारी या व्यवस्था के अभाव में पुराने या
 घटिया बीजार का योग्य भाव पर न हो।

करणा सामुहिक या व्यक्तिगत हो सकता
 है पर सारी केन्द्रिय उद्योगाळा में
 तैयार हो।

जिन गाँवों में परम्परागत चरखे चल
 रहे हैं वहाँ का प्रश्न जटिल है। प्रथम तो
 यह कि परम्परागत चरखे का वस्त्र मीलह
 आने स्वावलम्बन के लिए हो। दूधरा यह
 कि परम्परागत चरखे का सूत्र कच्चा होता है।
 इसलिए उनके मूल को या तो कृत्रिम से सूत्र
 करा लिया जाय या सरसा सूत्र करार
 बुझाई करे। इन प्रक्रिया में शोरी भी इलाई
 से बहूत बडी कम्बोरी आती है।

कामगार-प्रशिक्षण

गाँव का कार्यकर्ता शिक्षण-प्रशिक्षण
 प्राप्त कर गाँव के कामगारों का प्रशिक्षण
 करेगा। गाँव के आकार के अनुसार वह
 पूरा समय आंगिक या अर्थिक प्रशिक्षण का
 काम करेगा। प्रशिक्षण आने पुरी बीजिका
 के लिए प्रशिक्षण तथा व्यवस्था—दोनों का
 काम करेगा या प्रशिक्षण के साथ-साथ आता
 उत्पादन कर पुरी बीजिका प्राप्त करेगा।
 उद्योग प्रसार अर्थिक गाँव के द्वारा निवृत्त

मजदूरी अर्थिक लेट या गन्विन द्वारा
 नियुक्त कार्यकर्ता के रूप में करेगा।

दुग्ध कामगारों का सीधा प्रशिक्षण सरसा
 के द्वारा हो सकता है। गाँव के दो चार
 अर्थिक बुझाई-बुझाई का नाम सीवकर पूरे
 समय का धारा करने। सरसा आना यय
 गाँव में प्रेरक वहाँ कामगार तैयार कर
 गाँव के पास यय हो देगी।

गाँव के कामगारों का प्रशिक्षण उत्पादन
 सह-प्रशिक्षण केन्द्र में हो जहाँ प्रशिक्षणार्थी
 उत्पादन की क्षमता से बीजिका के लिए
 आबल हो जाय। घाटे के आधार की
 छात्र उन पर कलाई न पड़। सम्भव हो तो
 उद्योग की दशा में मो लागे बदकर क्या
 कर लाने का प्रयोग प्राप्त हो।

उत्पादन की स्वतन्त्रता

धामोय अर्थशास्त्र में उद्योग का सन्तरे
 बडा आधार स्वावलम्बन एवं परस्परव्यवस्था
 है। स्वावलम्बन का अर्थ अर्थिक एवं धाम
 स्वावलम्बन दोनों से है। धाम की परिस्थिति
 में गाँव की गरीबी के कारण परस्परव्यवस्था
 जो कि गाँव की आर्थिक सहायता का योग्य
 दूधगामो आवश्यक है दुग्ध हो जाता है।
 गरीब आरामी इसको गूस्ता भी नहीं समझ
 पाता या न्य-वहारिक रूप से यह समन नहीं
 हो पाता कि यदि राम धाम के मईगा
 कपडा सारीगा तो धाम भी उम्पता वेत
 सारीगा। आरोग्यता गाँव जब तक इसे
 नहीं समझेगा गाँव में काम-अर्थिक दगा
 नहीं आ सकती।

दूधरा प्रश्न गाँव की बेकारी निवारण
 का है। बेकारी-निवारण की अर्थव्यवस्था एवं
 स्थिति आवश्यकता को मद्दुग्ध करते हुए भी
 सबसे बडी कठिनाई यह है कि गाँव के बेकारा
 को काम देने का नाम आज की विवक्षा
 वस्था में गाँव बृद्ध सीमित धारे में उद्योग
 चलता है। बेकारी अर्थिक है दीव शोरी में दगा
 दगा किभी प्रकार गुन्धार करने जैसी है। इस
 कारण प्रथम धाम में व्यक्तिगत स्वावलम्बन
 तक ही आने सीमा माननी होगी। इसी
 अर्थ में दुग्ध लोगों को बेकारी निवारण की
 सय चलती है।

है। इसलिए सारी की बिजली को, उसे साम लोभो द्वारा अपनाये जाने की धमकी है। यही नहीं, बल्कि बुनने में भी बहुत तकलीफें हैं। बहुत मर्दों ने बुनाई लेकर भी अच्छा बुनकर उसे बुनने को तैयार नहीं है। जब तक यह हासल कायम रहती है, सारी के भी, जिधो भी रूप में व्यापक नहीं हो सकती। इसलिए सारी के पूत की बिल के पूत को तरह मजबूत और सघन होना चाहिए। उसे बिल के पूत से बहुत महंगा भी नहीं होना चाहिए। काले-बुनने में आसान इस तरह के पूत से बनी सारी अपर बिल-बन्धन से थोड़ी मर्दों भी हो, तो घर घर में पक्के-बालो रानी को तरह बह लोगों द्वारा धाँस हा सकेगी।

इसके लिए यह बहुत जरूरी है कि सारी-व्यवसाय में उत्तमोत्तम तकनीक पालित की जाय। छोटे-छोटे हाथ से चलनेवाले ऐसे घरों में, जिनकी न बिकने वाली की बिल अच्छी हो, बिल्किले चलने में भी आसान हों। यह विज्ञान का युग है और सभी बालों गति से होने की ओर रचनी है। अब उसके विपरीत जाना विरक्त मान लेना होगा। आज के सुन्दर विरक्त घरों में पहले कदम की सफल में टोक रहे थे। पूती बनाने का काम तो छोटी मशीनों में तारक वा इलेक्ट्रिक करके 'आटोमेटिक' होना ही चाहिए, तभी वह सघन, साफ व खली हो सकेगी। भी मनमोहन माई का यह बात ही प्रियदी सही है कि आचार विरक्त का बिलबिला बाली ही ऐसा हा सतना है कि कोई नया साधन या सहायता सब बसवृत्त सबको एकाग्र मिले। इसलिए यह सोचना कि सब सभी जगह बिजली पहुँच जायगी तभी उजगा इतनाय टोक होगा, बस ही सोचना का सब है, मान्य इस व सोचना है। बाली मिलने के द्वारा सारे जनसमुदाय को बेकार बनाकर सके बसा सोचने तो आज जारी हो है। अब बिजली का बिलबिला बाली मिलना ही यह काम विवेकिय रूप से करना है, उजगा ही मिलने का बसा सोचना न होगा। इसलिए बहा

भी सम्भव हो, बिजली का उपयोग सुलभ होना चाहिए। उर्दय बिक्रम यही रहे कि काम व्यापक और विकेंद्रित हो। छादी-विद्योत पाठे जो कुछ कहें, हम धीरे धीरे बाध्य होकर उसी तरह जा भी रहे हैं। यदि सारी की जिन्दा रखना है तो उसी रास्ते जाना ही पड़ेगा, बाड़े हथ उद्धारोह में पकड़ जान उसमें देर भले ही रखो न लगायें। इस पत्नी आबादीवाले देश को अपर जिन्दा रहना है तो सारी कभी मर नहीं सकती। हाँ, यह अलख है कि काल व परिस्थिति में प्रुाबिक वह अपना रूप बदलकर नें सामने बाये।

उत्तमात्तम टेकनालाओं की सहायता प्राप्त, सुन्दर हुए भीजनों और बिजली की शक्ति से चालित विवेकित छादी-काम को भी सामयिक की परिस्थिति में देना भर में लागू करने के लिए हम छादी-कार्यकर्ताओं की विद्याल सेना की आवश्यकता होगी। इसमें एक नहीं कि बिना श्रेय निष्ठ कर्मि के वाहक कार्यकर्ताओं द्वारा उन्नत नयी रचना सम्भव न हो सकेगी।

—सुमनारायण चौधे

खादी का विस्तार : योजना की सीमा

गांधीजी ने खादी-काम को सुदृढत मिल के पूत की बुनाई से की। वलन निर्माण में पूत की परावर्तनबिना हटाने के लिए ही मूल-बुनाई का काम उन्होंने शुरू नहीं किया, बल्कि यह सोचकर कि बुनारों का राजपार में ही प्रारंभ करवाया कि नतीज पर निर्भर है उगी प्रारंभ मूल भी अपर ही प्रकाश घटते से निष्का रहेगा तो एक प्रकार से यह अर्थ निर्भर बृति एक-दूसरे के अंत से परतेगी सारी के साथ साथ प्राकृतिक समय में मूल उत्पादन होगा और एक रोजपार, नत्थो रत्न गीर के लिए सुस्थित हो जायगा, गीर गीर का आर्थिक बोध कुछ परिमाण में हट सकेगा।

तो मजदूर समूहों के आधार पर एक

हजार फुट बतारके पुल आज बंधे जाते हैं कि जिसका बोध भीके उतारने के बजाय ऊपर ही ऊपर रखकर जन में रा विरों के सामने पर पहुँचाया जाता है। सांघिकी विज्ञान को करामात आज जगह जगह हम देखते हैं। पर घर का आर्थिक बोध गीर के बर्ष-संपन्न के पहियों पर उतारने का तंत्रगुप्त काम उन्होंने बरल तथा करके द्वारा गुप्त किया।

सारी के काम को प्रमुख दिया नहीं है, ऐसा हम कह सकते हैं। अतः इनके साथ ही-साथ चलते के अन्य गुण भी प्रकाशित होने लगे जिनमें अक्षय्या का उद्धार और स्वाभिमान, रक्षित नाम, वैदो सघन सुधार के प्रमुख पहलू अर्थसाधक साध होन गये और स्वाभाविक ही है कि सघन नें उजारी उठा लिया जनयाय और आज एर १९६८ में मानों यही बतलाया कि इस गवाह पंजे रोजपारों के साथ-ही-साथ बल सावत्तमन का काम बना रहेगा केवल सावत्तमन का काम बन नहीं सकेगा और पूर्ण रोजपारों के लिए भी कलाई का काम अत्यन्त मान्य में ही होगा। कलाई के लिए कुछ विभाग, सपोजन तथा समक भी आवश्यकता रहती है। यही कारण है कि चीन बिसारी को बह काम एकाग्र बाइठ नहीं करता।

एर १९६०-२० में गांधीजी ने सारी काम व्यापक में शुरू किया, उस वक्त तो बह काम के व्यक्तियों के लिए भी अपेक्षित था। धीरे धीरे बह काम आकार प्रसार तथा विस्तार म बसा गया और अब पञ्चसार्थिक योजना बनने की स्थिति पर हमारे देत की तबारी हो गये, उस समय बह ६० लाख बपनीय गज तक बट गया था और आज एर १९६५ की सुझान में बह ६०० लाख बपनीय पर गज रहा है। अतः सावत्तमन की सारी के साथ बर्षों-बर्षों से ३२ लाख बपनीय पर पहुँच गयी, सांघिक एक की बृद्धि दस गुना हो गयी और दूधरे की सार पुनः।

बहुते मिलोपयोगी बाली की विस्तार 'अधिक सेहा समिति' ने वाहिर की है। वे कहते हैं कि एर १९६३ में सावत्तमन—

भूदान-रक्त सुधार, १० मई, ६८

राजस्थान शराबबन्दी सत्याग्रह

[हमारे पाठकों और साधियों को भ्रमण होगा कि राजस्थान में शराबबन्दी सत्याग्रह ६ अप्रैल में शुरू हुआ है। राजस्थान के साथी इस महत्वपूर्ण कार्य में पूरी शक्ति से जुटे हुए हैं। विनोबा ने इस सत्याग्रह को पूरी सहमति दी है, और देश भर में फैले हम कार्यकर्ता साधियों का नैतिक बल तो उनके साथ है ही। हम यहाँ राजस्थान के दो प्रमुख साधियों के इस सत्याग्रह के सम्बन्ध में कुछ विचार प्रस्तुत कर रहे हैं।—सम्पादक]

कार्यक्रम विरोधात्मक नहीं

शराबबन्दी का कार्यक्रम गांधीजी का अप्रत्यक्ष प्रिय कार्यक्रम था। उन्होंने यहाँ तक भी कहा था कि आवकारी को आय एक वेईमानी को आय है। किसी भी सरकार को आवकारी की आय से शासन चलाने का अधिकार नहीं है।

भ्रष्टाचार, बदालती मुकदमे या नीति-स्तर की गिरावट का एक बड़ा कारण शराब है। शराबबन्दी के बिना अपराध-नियंत्रण होना संभव नहीं है, क्योंकि शराब अनेक पाप-कर्मों की बननी है। ऐसी सब चीजों का स्वीकार करते हुए भी हमारे देश के कई प्रान्त अभी शराबबन्दी का कुछ भी विचार नहीं कर रहे हैं। यह अत्यन्त सोचनीय बात है। इसीलिए मत् १२, १३, १४ अप्रैल के अखिल भारतीय नशाबन्दी सम्मेलन में ठीक ही कहा गया है कि गांधी जन्म-शताब्दी महोत्सव शराबबन्दी कार्यक्रम के बिना निरर्थक व फीका रहेगा।

→ खादी बुल उत्पादन के करीब दसवाँ हिस्सा ची, और सन् १९६० में यह केवल पचीसवाँ रह गयी।

सन् १९२० में स्वावलम्बन-खादी का जो दाय-प्रतिदाय परिमाण था, उसकी तुलना में आज यह केवल पचीसवाँ भाग ही रह गया, ऐसा नहीं कहा।

साथ-ही-साथ खादी-नमोशन की मदद से राहन का खादी-जाम प्रचलनवा करने का कार्यक्रम था, यह बात भी उस कमिटी ने दृष्टि से ओझल कर दी।

—ना० रा० सोवनी

हमारे देश में गुजरात तथा मद्रास प्रान्त ऐसे हैं कि जहाँ पर बन्दी के साथ सफलता-पूर्वक शराबबन्दी चल रही है। इसका मतलब कोई यह न करे कि इन प्रान्तों में अवैध शराब बतई नहीं चलती है। चोरो तो कुछ अंश में जहर होती है, परन्तु अधिकांश लोग शराब से मुक्त हैं। और इस कारण उनकी आर्थिक हालत सुधरी है, उनके बच्चे सुखपूर्वक रहते हैं। परिवार बलेबिहीन है। वे अपनी रोटी बटे चाव से और मेलजोल से खाते हैं। महाराष्ट्र में एक तरह से शिथिलता आयी है। वह प्रदेश नशाबन्दी मानता तो है, पर किन्हीं कारणों से उन्होंने अपनी नीति में ढिलाई बरतने का फैसला किया है, जिसके बुरे परिणाम भोगने पड़ेंगे।

हमारा राजस्थान अलग ही चित्र पेश करता है। उसने पूर्ण शराबबन्दी की अपनी नीति कुछ महीनों पहले घोषित की है और उस दिना में कुछ सराहनीय कदम उठाये हैं। परन्तु वे ऐसे सांख्यिक नहीं बने जा सकते, जिसने शराबबन्दी माननेवाले को पूरा समाधान हो जाय, क्योंकि राजस्थान-सरकार अधि का ऐलान नहीं करती तथा पूर्ण शराबबन्दी का अधिक कार्यक्रम भी नहीं बनाती। इसलिए सफा-आसका का वातावरण पैदा होता है। इसी कारण राजस्थान में शराबबन्दी-सत्याग्रह दिनांक ६ अप्रैल से पुनः आरम्भ हो गया है।

भोटवाला (जयपुर) शराब उत्पत्ति-केन्द्र पर सत्याग्रहियों की चौकी बैठी है। वे शराब के साधन-सामग्री न बाहर से आकर जाने देते हैं और न आकर से बाहर आने देते हैं। क्योंकि वे मानते हैं :

'अनिष्ट है शराब का व्यापार नीच कर्म है। रोकना उते जरूर मानवीय धर्म है। प्रण हमारा एक है, काम पाक-नैक है। दासबन्दी का प्रचार साधना व टंक है ॥'

इस भावना और विचारधारा को लेकर सत्याग्रही भाई-बहनों का जल्पा नोतिमय, न्याय-संगत तथा सविधान के निर्देशन को क्रियान्वित करने के लिए इतसङ्कल्प होकर बैठा है। बीच-बीच में सत्याग्रहियों को कुछ कमीटियाँ होती रहती हैं। समकियाँ भी दी जाती हैं। पर 'हुटे नहीं, बटे रहे, नार्थ में लगे रहे', इस प्रणवाले सत्याग्रही अपने नाम से केने हट जायेंगे ?

राजस्थान का शराबबन्दी-सत्याग्रह सरकार को बल पहुँचाने की प्रक्रिया है। यह विनोधात्मक आन्दोलन नहीं है। पर हमारे मित्र जहाँ सरकार में जाकर भटक नहीं, इसलिए उनको लक्ष्य-सिद्धि पर लाने का प्रयत्न कार्यक्रम है, जिसमें भाग लेनेवाला अपने ऊपर आपत आमंत्रित कर रहा है, बट भेलता है, तपस्या करता है, भूप-छाँव, पीत-आगत को बरदाश्त करता है, अपने परिवार-जनों से दूर बैठा है। पर के मुन अवसरों में भाग लेने से बट यथित रहता है, क्योंकि उसको शराबबन्दी-सत्याग्रह एक धर्म-कार्य महसूस हुआ है। मित्र के चलत काम से परावृत्त करना मित्र अपना परम कर्तव्य मानता है, यह मूल भावना हमारी है। राज्य में बैठे साधियों को बमजोर करने की भावना नहीं है। इसलिए हमारे उप-प्रधानमंत्री, शराबबन्दी के मुख्य पुरस्कर्ता श्रद्धेय मोरारजी भाई ने तथा हमारे सत्याग्रह शासन को जानने-वाले मार्गदर्शक गुरु विनोबाजी ने अपना आशीर्वाद तथा पूर्ण सम्मति प्रदान की है।

—गोडुलभाई भट्ट

क्या यह शक्य है ?

"ये कश्चि हाला छो कई ?"

"भाई भूँ तो दासबन्दी हाला छी। म्ही मैं छमी सामन छी—अधि हाला भी छी— जो दासबन्दी बराबां भावे छी ॥"

मैं तो बल ही सत्याग्रहियों की टोली में

भ्रान्त-यज्ञ : शुक्रवार, १० मई, '६८

गायिक हूँगी या। श्री मोहलभाईजी और श्री यमदत्तजी की टोलियाँ १२ वर्षों के बचपुर्-खिटरलरी के सामने सत्याग्रह में खलम थीं। श्री यमदत्तजी सत्याग्रह समिति के नियंत्रण के अग्रगण्य बोधपुर खिटरलरी के सामने सत्याग्रह चालू करने की दृष्टि से बोधपुर के लिए बल ही रवाना होनेवाले थे। इसलिए मेरी टोली यहाँ श्री मोहलभाईजी के साथ शामिल हो गयी। श्री यमदत्तजी तथा उनके पाँच साथियों को विदा करने के लिए बचपुर्-खिटरलरी सेले स्टेशन पर हम सब एकत्रित थे। गांधी जीने में देर थी। गाँव के पार-यात्रि लोग प्लेटफार्म पर बैठे थे। उनके पास में चला गया और बातचीत चल पड़ी। मैंने उन्हें दारबन्धन के सत्याग्रह की ओर सत्याग्रह क्यों किया जा रहा है, यह बात सबने में समझायी। उन्होंने बनी ध्वज और ध्यान से सुना और अन्त में एक बरिष्ठ बालीय ने पूछा "कबरी पण या बाण होलीकी काई?"

मैंने उसे तो जवाब दे दिया—“साई, बाण सब लोग चाहेंगे और बोधित करेंगे, तो बरक हो जायगी।” इतने में गांधी जी नवी होकर हम लोग आने धाँपियों की विदा करने में लग गये और वे गाँववाले भी खिटरलरी में बैठ गये।

पर मेरे मन में यह प्रश्न चलता रहा—
‘कबरी पण या बाण होलीकी काई?’

दारबन्धी की सभस्था बहुत ध्याकर और गहरी है। साराज था अग्रहार इन देग में हज़ारों बर्षों से चल रहा है। राजमन्त और राजमन्त से लेकर बली से हुए जगल में शशि-नैवर की मोराही तक धाराज ध्यवहार में आती है। राग्य ने साराज के जराय और धाराज पर एकाधिकार करने करेही धरये बाधिक की आपरवी सरी कर रही है। सभ्यन से लेकर गरीब-भे-गरीब तक कुछ 'शेवन' के कारण, कुछ शौक के कारण, कुछ भाव से राजमन्त में ही लामो आरपी, धावर पीने होने। फिर गांधी-गह में, कुछ में, चुनाव में, मोर-सगरीह में यहाँ तक कि यही में भी इसका जग्योय बेतयाप बनता

जा रहा है। जगाने की हवा धाराज के पक्ष में भाजून होयी है।

फिर हम कितने-से लोग है? कितनी-सी हमाररी संख्या और कितनी-सी हमाररी ताकत है?

मुझे सुरतल मोहम्मद सादब की एक कहानी याद आयी। कहा जाता है कि एक बार बनी मन्थामें हुल्लनोंसे मुकाबला पया। वे केवल दो ही साथी थे। उस साथी ने मुहम्मद सादब से कहा, "हजरत, हम तो केवल दो ही हैं, इतने लोगों का मुकाबला कैसे करेंगे?" हजरत मोहम्मद ने सुरतल जवाब दिया, "हम दो कैसे है? हम दो तीन है!" साथी ने पूछा, "तीसत कहाँ है?" मोहम्मद सादब ने आश्चर्य की तरह इशारा करते कहा, "वह तीसरा है, जो हम दो ते और उन से श्रेष्ठ से पया है। उसीकी ताकत से हम जीयेंगे।"

तो मुझे लगा कि दारबन्धी आन्दोलन की सफलता हमाररी आनी समित से नहीं, मसजद की हुमा से ही सम्भल होगी। फिर सवाल खरा हुआ, "अबतान क्या और उसकी हुमा कैसी?" सुरतल गांधी और ईशा के दो वाक्य साधने आ गये। एक ने कहा था "साय ही ईश्वर है।" दूसरे ने कहा था, "प्रेम ही ईश्वर है।" गांधी ही विश्वके के दो पहलू है।" मुझे प्रतीति हुई साय और प्रेम ही ईश्वर है। हम लोग सच्चाई और मोहब्बत से जितने आतंगत होगे उनके ही हए" ईश्वर के अधिक निरुद्ध होने, उतनी ही ईश्वर की हुमा हम अधिक प्राप्त कर सकेंगे।

इसके सिवाय एक बात और है। जब यह प्रश्न उचकतय से लेकर निम्नउप बनीं तक के लोगों को बर्सा करता है, तो उन सबकी प्रहासुमिन्त बात किये बिना यह काम आने नहीं जा सकता। हमें सुष्पयन्तो, मसिणय, राजगायिहारी, राजनीतिक नेता, सिगायिद, सजाज सुधारक, इतर-नैज जादि सभी तक पहुँचना है। और सभी का ध्यान इस एक सोचवा है, सभी का प्रेम और प्रहासुमिन्त हमें प्राप्त करनी है। वसु वा

विरोधी को साया में हम बीच भी नहीं सकते। यदि भी धाराजबदो के सचाज-हितेषी, धार्मिक तथा सुष्पयय कार्य का विरोधी नहीं हो सकता। कोई स्वयं धाराज पीता हो तो भी नहीं हा सकता। किसीका धाराज से जगाना आर्थिक हित सपना हा तो नहीं हो सकता, बर्षानि बुद्धि चाहे स्वायं को और भुक्तो भी हा, पर मनुष्य का अन्त-काय, जहाँ मसजद का निवाग है कभी गुराई का पूरा और सम्भ सपनय नहीं कर सकता।

हम सभ्या में कम है। इसलिए दूध में जामन की तरह हमारा काम हो सकता है। जरा सा दही बहुत सारे दूध को दही बनाने की प्रक्रिया का आरम्भ कर सकता है। मुझे लगा कि निश्चय ही धाराजबन्धी का महत्वपूर्ण कार्य राजस्थान में सम्भल हो सकता है, क्योंकि स्वयं पीछे गांधीजी जैसे सुष्पयय की तरफवा है, निनाज जो जिते सन का अयोर्बाद है, मोधराजी जैसे नेताओं की हितहायवा है, जो गांधुजभाई भट्ट जैसे साल हृदय बुजुर्ग केवक का सभजन है और स्वयं राजस्थान तरदार का सन्त इमर्ष धार्मिक है। सबसे बड़ी बात यह है कि लक्ष्यों गरीब परिवारों, उनके घरों की सिचो और बच्चों की आहें और विधविधों है। सावय कता केवल इस बात की है कि उन्हें सब दो-बन्धे सुव सचें और समभ सचें।

—जवाद लाल जैन



पुद्गल यन्त्र सुधारक, १० मार्च, १९२८

४० भा० साधो धामादाग धारा यथायित
सादी-मासोयोग भयकारों से मिलता है

अ० भा० सर्वोदय-सम्मेलन आवू रोड (राजस्थान)

प्रतिनिधियों के लिए आवश्यक सूचनाएँ

कार्यक्रम :

इस वर्ष १७वाँ अ० भा० सर्वोदय-सम्मेलन ८, ९, १० जून, १९६८ को आवू रोड (जिला-मिरोही, राजस्थान) में होने जा रहा है। सम्मेलन के तुल्य पूर्व, वहीं पर ता० ६, ७, ८, जून १९६८ को संध का वार्षिक अधिवेशन तथा ५ जून को संध की प्रबन्ध-समिति की बैठक भी होगी।

प्रतिनिधि कैसे बनें :

१. सम्मेलन की कार्यवाही में भाग लेने के इच्छुक भाई-बहन २५ मई, '६८ तक मंत्री, सर्व सेवा संध, राजघाट, वाराणसी-१ के पते पर पांच रुपये मात्र प्रतिनिधि-शुल्क भेजकर प्रतिनिधि बन सकते हैं।

२. सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रतिनिधि बनना आवश्यक है।

३. सम्मेलन में आनेवाले लोक-मेमबरों, जिला-मंडल के सभोदय-प्रतिनिधियों तथा संध सदस्यों के लिए भी प्रतिनिधि बनना आवश्यक है।

४. प्रतिनिधि बनने के लिए प्रांतीय सर्वोदय-सम्मेलनों से भी सार्क किया जा सकता है।

रेलवे-कन्नेशन :

१. सम्मेलन के सिलसिले में आवू रोड आनेवालों के लिए एबतरका किराया देकर चापको टिकट की सुविधा रेलवे बोर्ड की ओर से प्रदान की गयी है।

२. तृतीय और द्वितीय श्रेणी में २०० किलोमीटर के आर सफर करनेवालों को ही यह सुविधा प्राप्त हो सकेगी।

३. चापको टिकट की यह सुविधा फर्स्ट क्लासवालों को उद्यो हारत में मिल सकेगी, जब उनका किराया ४०० किलोमीटर के दो सेक्ण्ड क्लास के पूरे किराये से कम न हो।

४. जिनको मासिक आय एक हजार रुपये के अन्दर है, उन्हेंको रेलवे-कन्नेशन की सुविधा प्राप्त हो सकेगी।

५. समय से क्रोडन सटिफिकेट की

प्राप्ति के लिए प्रतिनिधि-शुल्क के पांच रुपये २५ मई, '६८ के पहले मनी, सर्व सेवा संध, राजघाट, वाराणसी-१ के पते पर भेजना चाहिए।

६. प्रतिनिधि-शुल्क भेजते समय नाम और पता सफ-माफ लिखें, ताकि भागे की कार्यवाही में असुविधा न हो।

निवास-व्यवस्था

घर्मों का भोग्य होने के कारण गरम कपड़े साथ लाने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु यदि रात्रि-निवास पहनाई आदि पर करने का विचार हो तो कुछ गरम कपड़े साथ लाने चाहिए। जैसे निवास का प्रबन्ध आवू रोड स्टेशन के पास घर्मशालाओं तथा विद्यालयों को इमारतों में किया गया है।

मार्ग :

आवू रोड अहमदाबाद-दिल्ली मीटर गैज लाइन (पश्चिम रेलवे) पर अहमदाबाद से १८६ किलोमीटर तथा दिल्ली से ७४६ किलोमीटर है। मद्रक से आनेवाले दिल्ली, जयपुर, अजमेर, अ्यावर, पाली, दिव्यज तथा सिरोही होकर आ सकते हैं। मम्भलन स्टेशन के पास ही होगा।

भोजन-शुल्क एवं व्यवस्था :

सबकी सुविधा के लिए तथा भोजन व्यर्थ न हो, इस विचार में यह तय हुआ है कि भोजन-शुल्क अथिज जमा कर दिया जाय। इसलिए ८, ९, १० जून का प्रा-न के नाश्ते के साथ तीन दिनों का भोजन-शुल्क ९ रुपये मात्र मनी, स्वागन-समिति, १७वाँ अ० भा० सर्वोदय-सम्मेलन, आवू रोड (जिला-मिरोही, राजस्थान) के पते पर भेज दें। १२ वर्ष तक की आयु के बच्चों का भोजन-शुल्क पाँच रुपये मात्र होगा। मात्र एक पूरे दिन का भोजन चार रुपये होगा।

भोजन में यदि कोई विशेष आग्रह हो, अथवा बीमारी या अन्य किसी कारण से बिना नमक-भिन् की सब्जी या किसी विशेष

प्रकार के भोजन की आवश्यकता हो तो उसकी सूचना मनी, स्वागन-समिति, १७ वाँ अ० भा० सर्वोदय सम्मेलन, आवू रोड (मिरोही) के पते पर भेज दें।

दर्शनीय स्थान :

१. आवू रोड से ४ मील पर से ही आवू पर्वत-श्रेणी के लिए चढ़ाई प्रारम्भ होगी है। पूरी दूरी १८ मील है। इस क्षेत्र में दिलशाहा के जैन मन्दिर, जो शिला-कला के विश्वविख्यात मन्मूने माने जाते हैं, अलकान्ठ, गुधघर, अंधेर देवी, सनयोत, पौराणिकन की भ्रिल आदि अन्य कई दर्शनीय स्थान हैं। आवू रोड से आवू जाने के लिए मोटर-बस का रास्ता है। किराया १-०५ है। जाते समय १-०० यात्रीकर प्रतिव्यक्ति अनिश्चित लगता है।

२. आवू रोड में दक्षिण की ओर १४ मील के फासले पर पहाड़ों में अम्या माताजी का प्रसिद्ध मन्दिर है और वह गुजरात के पाना तालुका में स्थित है। उसके ईश्विंद कुम्हारिया वा जैन मन्दिर भी देखने लायक है। आवू रोड से बस को पूरी सुविधा है।

३. आवू रोड से दिल्ली की ओर लोदनेवालों के लिए फाल्गना स्टेशन से राजपुर में कलापूर्ण जैन-मन्दिर है।

—राधाकृष्ण, मन्त्री, सर्व सेवा संध रेलवे कन्नेशन-भार्ग-मन्त्रवी सूचना

आवू रोड (राजस्थान) में होनेवाले १७ वें अ० भा० सर्वोदय-सम्मेलन के लिए जो गुजरात जाना चाहे उनको रेलवे कन्नेशन-भार्ग प्रदान तापील्य, वाराणसी से मंगाने की बजाय अपने नजीक से, ही लेने की सुविधा हो जाय, इस दृष्टि से ये कन्नेशन-पार्ग निम्न स्थानों पर भेज दिये गये हैं :—

- (१) श्री दिलोचन्द जैन, राजस्थान एबद सेवा संध, जिरोर निवास, त्रिलोपिा वाजार, जयपुर
- (२) श्री अणु मोदी, गुजरात सर्वोदय मंडल, गुजरात पाग, बड़ोदा .
- (३) श्री राम देवगण्डे, बंई सर्वोदय मंडल, 'मणिभवन', सेवरतम रोड, बंई-०

राजस्थान में शराबबन्दी

सत्याग्रह

● जयपुर - श्री गोडुलमार्दं मट्ट ने राज्य के अल्प क्षेत्रों के कार्यकर्ताओं को मुमगन दिया है कि वे अपनी इच्छा के विचार वा प्रचार करते हुए सत्याग्रह की कुतूहल भूमिका प्रभावों। उन्होंने कहा है कि जनता के सत्योप से धीरे धीरे सत्याग्रह वा शोध बढ़ाया जायगा। मोटराशा ने—जहाँ डिस्ट्रिको पर सत्याग्रह चल रहा है—गाणिकों ने इस सत्याग्रह के प्रति आभार प्रकट किया है।

● एक सूचना के अनुसार भरतपुर में श्री सत्याग्रह-समिति का निर्माण हुआ।

● सत्याग्रह-समिति ने वार द्वारा भारत के राष्ट्रपति से निवेदन किया है कि वे राज्य सरकार की गांधी जन्म स्मृतिवादी तक पूर्ण सत्याग्रहिक के निर्णय हेतु प्रेरित करें।

● ४० भा० नवाबन्दी परिवार के महायज्ञों के राजस्थान के सत्याग्रह आन्दोलन का पूर्ण समर्थन करते हुए अल्प प्रदीपण तथा अन्य समितियों को राजस्थान के सत्याग्रह में हार प्रचार से सहयोग देने की अग्रील की है।

● राजस्थान मन्त्रालय के अध्यक्ष श्री गा० काटिलिये ने कहा कि २० वर्षों में पहली बार राजस्थान में एक सत्याग्रह का शराबबन्दी सत्याग्रह देखा है। उन्होंने

- (४) श्री एननाथ मगर, महात्मा गांधी सेवा मंदिर, इसाभी विवेकानंद भवन, बांस, बर्द-२०
- (५) श्री आनंदराज किणा, पञ्जाब सर्वोच्च मन्त्र, पट्टीबलगाणा, जि० बनारस
- (६) श्री हनुमन्त पट्टनायक, उत्कल सर्वोच्च मन्त्र, घोसियागढ़ी, बडवा १
- (७) श्री प्रभाकरजी, आम प्रदेश सर्वोच्च मन्त्र, 'शांती भवन', हैदराबाद
- (८) श्री नटराजन, तमिळनाडु सर्वोच्च मन्त्र, मयुराई (तमिळनाडु)
- (९) श्रीनेत्रकृष्ण, मध्यप्रदेश सर्वोच्च मन्त्र, ५६ पल्लवीहर काठामो, इंदौर
- (१०) श्री बन्नी, विहार सामान्य प्राथमिक शिक्षण, बरभुआ, रंगना-३

सूत्रान-यज्ञ : शुक्रवार, १७ मई, '६८

कहा कि इन सत्याग्रह के दूरगामी परिणाम होने।

● मई दिवस के जोधपुर स्थित मंडोर डिस्ट्रिको पर भी सत्याग्रह प्रारम्भ हो चुका है।

● श्री मिट्ठराज इच्छा ने राजस्थान के मुख्यमन्त्री से तार द्वारा सत्याग्रह समिति की माँग को पूर्णतया समर्थन देने की इच्छा की।

● गांधी स्मारक निधि के मंत्री श्री देवेन्द्रुमार ने राजस्थान-सरकार को तार भेजकर शराबबन्दी के लिए तत्काल कदम उठाने हेतु अग्रील की है।

● इसी तरह रैग के विभिन्न क्षेत्रों से १५ मगद-मदर्यों ने सत्याग्रह-समिति की माँग का समर्थन करते हुए, उचित हल निकालने की अग्रील राज्य के मुख्य मंत्री को तार भेजकर भी है।

एवं आवश्यक सूचना

पूर्वोक्तों के अनुसार "सूत्रान-यज्ञ" का अगला अंक १६ पृष्ठों के परिशिष्ट 'गाँव की बात' अंकित २४ पृष्ठों का होगा। उसके बाद सर्वोच्च-सम्मेलन के अगस्त पर ७ जून का विशेषक प्रकाशित होगा। विशेषक के बाद का अंक २१ जून को सम्मेलन-समुच्चयक होगा। ३१ मई और १४ जून के अन्तर्गत प्रकाशित होगा।

—सम्पादक

रायपुर के शिवाजी कोर्टक का निधन मध्यप्रदेश के रायपुर नगर के सर्वोच्च सेठक श्री विद्याजी कोर्टकका ३० अगस्त '६८ को मंत्री (मूल) स्टेशन पर हृदयघात करने के निष्पत्ती हो गया। कुछ वर्ष पूर्व से आम अपना सामान समय सर्वोच्च प्रदर्शियों में ही दे रहे थे। रायपुर स्टेशन पर सर्वोच्च-सहित का स्टाल आने के ही पुत्र पला रहे हैं। गत वर्ष दिसम्बर में इन्दौर जिले की शराबान-यात्राओं में भागने अल्पसंख्यक हान हुए श्री मद्रासमूल सहयोग दिया था। मूलक जिले की स्थान कामदान-यात्राओं में सम्मिलित होने के लिए ही वे आ रहे थे कि शान्ति में मडा स्टेशन पर 'हाट अट्क' हुआ और वे पला अने। मगसन् उन्की आत्मा को 'गान्ति' प्रदान करे।

—मॉन्ट्र टुडे

जयप्रकाशजी की ग्रामदान-यात्रा

दिनांक २२ मई से २७ मई तक गया जिले में श्री जयप्रकाश नारायणजी की शराबदान-यात्रा हाने जा रही है। २५ कार्यक्रम में वे २२ ता० को मधुबनपुर की एक आम सभा में प्रपण करेंगे। मधुबनपुर प्रमण्ड के शिक्षक समाज की तरफ से कामदान-अभियान चलाया जा रहा है और २२ मई को श्री जयप्रकाशजी की सभा में प्रमण्डाल घोषित हो, इसकी तैयारी की जा रही है। इस कार्य के लिए स्थानीय गांधी राजनीतिक दलों के कार्यकर्ताओं और पञ्जाब के कार्यकर्ताओं प्रयत्नशील हैं। इसी तरह २३ मई को प्रमण्डाल की घोषणा हो सके, एतदर्थ बारानसिरी में जयप्रकाशजी का कार्यक्रम है, और २४ मई को कोटिलिन्पुर की सभा में प्रमण्डाल घोषित करने का अभियान चलाया जा रहा है। कोटिलिन्पुर प्रमण्डाल-प्राप्ति के लिए सर्वोच्च आधम शोकोदेवरा के कार्यकर्ताओं स्थानीय सभी प्रमुख लोगों के सम्मिलित प्रमण्ड से प्रयत्न कर रहे हैं। श्रीनी प्रमण्डो में अधिपन्नान बने भूमिवालों ने सामान्य के समर्थन पर पर हस्ताक्षर करने आने प्रमण्ड के नागरिकों से सामान्य योजना की माँग के नगरिकों को सामान्य की बुनियाद मानकर इसमें जायब होने की अग्रील की है।

२४, २६ मई की ताकोदेवरा आधम में जयप्रकाशजी उद्घरणे। इस बीच जिले की रचनात्मक सम्पात्रा की अनेक रचनाओं में वे भाग लेंगे। पुन २७ मई को गया नगर में जिले के सभी कार्यकर्ताओं को संबोधन हामी, जिसमें श्री जयप्रकाश आर्क को उपस्थिति में विशालान के कार्यक्रम से सम्मिलित करने की योजना बनायी जायगी। इसी दिन सभा में आत्रादा प्राप्त गया के मेदान में आम सभा का आयोजन किया जा रहा है, जिसमें मुख्यतः के निराण-यात्रा के अनुभव बतायें।

—दिवाकर

उत्तर प्रदेश का पहला जिलादान श्री १ ही दूसरे जिलादान की पूर्ण सम्भावना

देश की सर्वाधिक जनसंख्यावाला प्रदेश राज्यदान की ओर

करने का महाविधान १६ मई से होने जा रहा है जिसमें लगभग षाई सौ कार्यकर्ता लग रहे हैं।

बलिया-सम्मेलन के समय उत्तर प्रदेश में नूतन की जो लहर दौड़ी थी, उसने आधुनिक-सम्मेलन तक महाभूदान का रूप ले लिया है।

आगामी ३० मई को प्रदेश का पहला जिलादान उत्तरवासी घोषित होने जा रहा है। भारत की दो पवित्र नदियों, यमा-यमुना के उद्गम-स्थल पर होने जा रहे इस क्रांतिकारी निर्णय की स्फूर्ति निश्चय ही सारा देश महसूस कर सकेगा।

उत्तराखण्ड के प्रमुख कार्यकर्ता राधो श्री मुन्दरलालजी ने एक मीट में बताया है कि इस जिलादान अभियान के सफल सूत्र-संचालन का काम जिले के पहले सामुदायीय कामसभा के गभापति श्री घनश्याम सिंह के द्वारा हुआ है।

श्री मुन्दरलालजी ने बताया कि ३०-१-६८ वर्गमाल का यह क्षेत्र तिरुवल की सीमा से जुड़ा हुआ होने के कारण बहुत ही महत्वपूर्ण राजनीतिक स्थिति का है।

उत्तरवासी में पहले-महल १६ नवम्बर '६४ को २ धामदान उत्तरालीन मुख्य मंत्री श्रीमती मुनेला हृषालीनी की उपस्थिति में घोषित हुए थे। और अब ३० मई १९६८ को निलासी की ऐतिहासिक दाहीद भूमि पर जिलादान की घोषणा होने जा रही है, जो सम्भवतः श्री जयप्रकाश नारायण की उपस्थिति में होगा।

एक अवसर पर उत्तरवासी के जिलाधोग महिन्द्र जिले के सहाय्यी सरपंचों, प्रतिनिधियों, नेताओं, कार्यियों को हृष बधाई देने हे, जिनके सहाय्य से जिलादान की सफलता पूर्ण हुई है।

इसी निमित्तों में यह उल्लेखनीय है कि उत्तर प्रदेश का सार्वभौमिक बलिया का जिलादान भी आधुनिक-सम्मेलन तक पूर्ण होने

की पूरी आशा है। जिले की दो तहसीलों का दान पूरा हो चुका है। तीसरी ओर आखिरी तहसील-दान की १० दिन में पूर्ण

सन् १९६६ तक तमिलनाडु दान का संकल्प

तमिलनाडु सर्वोदय संघ का क्रांतिकारी निर्णय

देश की खादी-संस्थाओं के लिए सर्वथा अनुकरणीय—

आगे बढ़ने की आवश्यकता : धन इंतजाम का पथ नहीं

बाराणसी, ६ मई। आज तमिलनाडु सर्वोदय संघ के मंत्री, खादी-जगत् के कर्मठ कार्यकर्ता राधो तथा खादी-सामुदायीय धाम-स्वराज्य समिति (सर्व सेवा संघ) के मंत्री श्री सी० रामचन्द्र ने कहा, "देश में तमिलनाडु सर्वोदय संघ पहले संस्था है, जिसने धामदान के आरोहण की प्रवेश-दान की सफलता तक पहुँचाने में अपनी पूरी शक्ति लगा देने का निश्चय किया है। सर्वोदय संघ ने अपने एक प्रस्ताव द्वारा २ जनवरी १९६६ तक प्रदेशदान की सफलता पूर्ण करने के लिए ७ लाख तक की पूंजी अर्जित कर दी है। और प्रदेश भर में सादा के काम में इसे संस्था के लगभग २ हजार कार्यकर्ताओं में से १ हजार कार्यकर्ताओं को दूर कार्य में लगाते जा रही है।"

विस्तृत बात-बारी देते हुए बन्धुन लगाह-पूर्ण मुद्रा और मोहरों-सामग्री में भी रामचन्द्र ने हमारे प्रतिनिधि को बताया, "राज्य-सम्मेलन की प्रेरणा और धामदान आन्दोलन की भाषा को देखते हुए संस्था ने यह निर्णय लिया है। संस्था ने यह अनुमान किया है कि एक प्रत्यक्षदान प्राप्त करने में लगभग २ हजार रुपये का खर्च आया है।"

तमिलनाडु के राजनीतिक दलों की प्रतिनिधियों के सम्मुख में पुरे गये एक प्रश्न का उत्तर देते हुए श्री रामचन्द्र ने कहा,

"प्रदेश में राजनीतिक दलों का कोई विरोध नहीं है, और वे मानते हैं कि जो कार्य सर्वोदय के कार्यकर्ता आज कर रहे हैं, वे बड़ी-बुराई हैं, हम (राजनीतिक दलवाले) नहीं कर सकते।" "और प्रेरणाओं ने 'स्वैर-आउट' किया है, यह तो आपकी मातृभूमि ही है।"

प्रदेशदान की व्यूहरचना के बारे में वर्षों पहले हुए आरंभ बताया, "मई-जून-जुलाई, इन तीन महीनों में प्रदेश के हर प्रसंग में विचार के प्रचार और विद्यमान का व्यापक अभियान चलेगा और उसके बाद पुनर्जात के लिए शीत-शीतल 'पावेट्स' बनाये जायें, यह निर्णय किया जायगा। दूसरी योजना है कि २ जनवरी, १९६८ तक राधाया-पुरम, मधुराई और विचयनगरी जिलों का दान हो जाय।"

निम्नलिखित का दान पहले ही हो चुका है। दोप ६ जिलों का कार्य हम २ जनवरी '६६ तक पूरा कर लेंगे। प्रदेश में अभी के ६ सौ कार्यकर्ता धामदान-पूरा में लगे हैं, यह संख्या तीसरी ही १९२० के कनिष्ठ पहुँच जायगी। कार्यकर्ताओं के प्रशिक्षण के लिए टिमिलनाडु सर्वोदय मण्डल के पास एक पूर्ण प्रशिक्षण-दोनों है, जो लगा-तार विभिन्न-मोर्चियों द्वारा विचार-विमल का कार्य करती रहती है।" ●

खेत और अखाड़े

खेत और अखाड़ा, दोनों में धार्मिक परिधम किया जाता है, किन्तु लक्ष्य में बहुत भेद है। खेत में जो परिधम किया जाता है उसका लक्ष्य दूसरे को पछाड़ना अथवा धार्मिक हकित का प्रदर्शन नहीं होता। किसान खल चलाता है, जमीन साफ करता है, बीज बोता है, सिंचाई करता है, देखरेख करता है, फसल काटकर भूसे और अनाज को अलग-अलग करता है और अपने दीर्घ-कालीन परिधम का फल दूसरे को खीर देता है। उसे केवल जीवन-निर्वाह के लिए थोड़ा-सा मूल्य मिलता है, न मर्याद मिलता है और न प्रतिष्ठा।

इसके विपरीत अखाड़े में जो परिधम किया जाता है उसका लक्ष्य उत्पादन न हाकर प्रदर्शन होता है। पहलवान दड पेलता है, बैठकें लगाता है, मुगदर पुमाता है और कुचली लड़ता है। इन अखाड़ों के द्वारा वह विश्व ज्ञान का संचय करता है उसका एक-मात्र उद्देश्य दूसरे को पछाड़ना और अपने अहंकार का पोषण होना है।

किसान-मजदूर जब सड़क पर चलना है, समाज उसे तिरस्कार भरी दृष्टि में देखता है। पट्टी पगड़ी, पट्टी बमोज और पट्टे जूने यही उसकी वेष्टभूषा होती है। दगके विपरीत पहलवान अपना प्रदर्शन करता हुआ चलता है, डोला-डाला लम्बा चोगा पहनता है। उसको हुई माननेसिवाी विज्ञापन करती रहती है।

प्रस्तुत दो विन महत्त्व की दो धाराओं को प्रवृत्त करते हैं। धर्म, राजनीति, साहित्य, कला आदि सभी क्षेत्रों में दोनों विन मिलते हैं। प्रथम विन उन भवभावियों का है, जिन्हें न मर्यादा प्राप्त होता है और न अमान। जीवन-निर्वाह के लिए भी धरा कठिनाई बनो रहती है। किन्तु समाज का जीवन सहोदर पसीने पर निर्भर होता है। दूसरा विन उन व्यक्तियों का है, जो दुःख निहालते हैं, मर पर सड़े होकर बड़े-बड़े मायण देते हैं, समाचारपत्रों में विष्य टारते हैं। किन्तु समाज-निर्माण का कोई कार्य नहीं करते।

धार्मिक अखाड़े के पहलवानों को साधु, सन्त, महाराज, गुहजी आदि शब्दों द्वारा पुकारा जाता है। वे भी विशेष प्रकार की वेष्टभूषा रखते हैं। इतना ही नहीं, प्रत्येक अखाड़े की वेष्टभूषा निश्चित है और वह प्रत्येक सदस्य को धारण करनी पड़ती है। कोई सिर मुथाता है, कोई जटाएँ रखता है, कोई सिर मुथाकर दाड़ी रखता है, कोई भगवे कपडे पहनता है, कोई सकेद, कोई पोले और कोई काले। कुछ अखाड़े ऐसे भी हैं जहाँ पुरुष स्त्रियों के कपडे पहनते हैं। साथी और बुरियाँ पहनकर परस्पर शकीलिंग में शोषिताडाह की बातें करते हैं।

इसके विपरीत कुछ शक्ति ऐसे होने हैं, जो किसी अखाड़े के साथ सम्बन्ध नहीं जोड़ते। विचारों में सबका मला आहते हैं, ईमानदारी से रहते हैं, अपने परिवार का सन्तोषपूर्वक मरण-जीवन करते हैं। न चहें

चिन्तन-प्रवाह

जयनाद की इच्छा होती है और न किसीको पछाड़ने की। ऐसे व्यक्ति सन्तान तथा परिवन व्यक्तियों के लिए उत्सहारों के रूप में जो धरोहर छोड़ जाते हैं वही दसक जीवन की सुराक बनती हैं।

राजनीतिक क्षेत्र में किसी अखाड़े के पहलवान सदैव टोपी और डोला-डाला कुर्ता पहनते हैं। वे बात-बान में गाँवों की दुहाई देते हैं। किसी अखाड़े के लाल टोपी और पट्टी टाग का पापनाम पहनते हैं। ऐसा पहना करते हैं, जैसे उन्हें दुष्ट पेट शीला पड़ना हो, पहनने के लिए बाजे भी न मिलने हों। वे सेनिन, स्ट्राइन, और कोणा की बाउंते करते हैं। पूर्वोक्ति, कुतुआ, मजदूर, सोमण आदि इन्ध उनकी अमान पर पडे रहते हैं।

तोवर अखाड़ेवाले टोपी पहनने हैं। तारात्री और राणा प्रदान की दुहाई

देते हैं। ऐतिहासिक तथ्यों से भारित्व होने पर भी बात-बान पर हिन्दू-संस्कृति का बसान करते हैं। उस युग के स्वप्न देखते हैं जब वैदिक सम्प्रदाय और संस्कृति का समस्त भारत पर आधिपत्य हो जायगा और अन्य विचार-धाराएँ समाप्त हो जायेंगी।

विद्याध्ययन सत्य की पहचान के लिए किया जाता है। किन्तु वहाँ भी अखाड़ेवाज सत्य को छोड़कर बड़बुल धारणाओं की रक्षा में लग जाते हैं। दार्शनिक क्षेत्र में एक पहलवान धरुदाचार्यों को महत्व देता है, दूसरा रामानुज को, तीसरा दिव्याग और धर्मश्रीति को। तीनों में से कोई दूसरे की बात समझने के लिए तैयार नहीं है। प्रत्येक परम्परा अन्य परम्पराओं का लडन करने के लिए अपने हृदियार पने करती रहती है।

वाक्य के क्षेत्र में धामावाद, रहस्यवाद, हासावाद, राष्ट्रवाद, साम्यवाद, उच्छृंखलाता-वाद, मानवतावाद आदि को छेकर अखाड़े बन गये हैं। कोई निराला का उपासक है, कोई पत का, कोई वेष्टक का और कोई वेष्टर का। इन अखाड़ों में भी प्रत्येक की अपनी-आपनी विविध वेष्टभूषा है, कविता-पाठ और बात-बान का अपना-आपना संघ है। हाणावारी रीया प्रदर्शन करते हैं जैसे अमी खीर उठे ही। बिचरे हुए बाल, अल-अलत बाड़े और बेटों। उन्हें अवरथा अच्छी नहीं लगती। निरासावारी उस पार की माना करते हैं। इन जीवन से उजवाले रहते हैं और समाज से विडे हुए। हाणावारी युष्ण के बाजे पहनते हैं, किन्तु मुल पर रानी की दाया लाने का प्रयण करते हैं। राष्ट्रवादी जोध में मरे रहते हैं, जंगे रणयात्रा की तैयारी कर रहे हों।

राजीत एवं अन्य अखाड़ों में भी अखाड़े बन गये हैं। फलफलन के जीवन की अमानिधत बनने के स्थान पर उवे विषय-म बनने लगे हैं। अचरनरता इग भाउ की है कि अलाधों को सत्य बनने लगे की प्राण-प्रतिष्ठा की जाय। सभी मानवता युष्ण-पूर्वक हो सकेंगी। —डा० अरुणभद्र शर्मा

मूदान-पडः दुःखारा, २४ मई, '६८

ग्राम-स्वामित्व, ग्राम-नेतृत्व

देश की स्थिति के बारे में हमारे बाह्य जो विचार हों, इस बात से इनकार करना कठिन है कि आज जोयत व्यक्ति पहले से नहीं अधिक विकास का द्युक्त (डेवलप मारकेट) है। यह जो कृषक से चलाता है। आज उसे व्यवसायिता का मरुप्र प्रयोग करना और इस्वीटि) पहले से नहीं अधिक सख रही है। वह समाज में जाने लिए सम्मान और सुरक्षा (सेक्योरिटी) का स्थान चाहता है।

जिनसे भीय बर्षों में जिए तर्ह की विकास-योजनाएँ चली हैं, उन्होंने समाज में नीचे के लोगों को बहुत बरी सखा जो विरास की परिधि के बाहर छोड़ दिया है। उत्पादक की, सुख सेनी में, धोर उवेसा हुई है। इसके कारण एक और विषयता बनी है, और दूसरी और बुजुर्गों की योग्य करने की शक्ति। ऐसा लगता है कि आज हमारी समस्या गरीबी से अधिक विषयता की है। इसका अर्थ यह है कि अगर गरीबी दूर करने हो तो गरीबी और विषयता, दोनों को साथ दूर करने की कोई सम्मिलित शकिया निकासनी होगी।

यह कार्य मात्र उन्नत शासनों से नहीं होगा। आज की व्यवस्था में उन्नत शासन-व्यवस्था के साथ पहुँचकर रह जाते हैं। इसलिए अब बापे की विकास-योजना में शासन और सम्पन्न (इम्प्लोयेड एण्ड रिसेटलवण्ड) दोनों को साथ और स्थान स्थान देना होगा। मालिक-मजदूर के सम्बन्धों के परम्परागत बरातल पर अब उत्पादक को उन्नत शासनों के लिए उत्साह नहीं रह गया है। वे सम्पन्न बरतने चाहिए, और मालिक-मजदूर दोनों में समता और साधेदारी को प्रतिष्ठा बननी चाहिए।

सम्पन्न कैसे बढ़ेंगे ? शासनों का निजी स्वामित्व (प्राइवेट ओनरशिप) रहेगा तो सम्पन्न की मालिक-मजदूर के हो रहेंगे। सामाजिक सम्पन्न मूलतः शासनों के स्वामित्व के चारों ओर निर्मित होते हैं। इसलिए निजी स्वामित्व का अन्त विनाश की ही नहीं, बल्कि नये सम्पन्नों के समाज के निर्माण की पट्टी पर है।

निजी स्वामित्व के स्थान पर स्वामित्व का हीनका नमून (पैन्ट्रल ऑन ओनरशिप) भारतीय समाज के लिए अनुकूल होगा।

परिहार-स्वामित्व (बुजुर्गवार)
 घरदार-स्वामित्व (सामान्यवार)
 विधिवत स्वामित्व (कानूनव्यवहार)

भूतल-व्यव : शुक्रवार, २५ मार्च, '६८

या भारत की परिस्थिति में इनमें से कोई उपयुक्त होगा, या नया नमूना—ग्रामस्वामित्व ?

अगर परिवार स्वामित्व रहेगा तो गरीबी और विषयता के विरुद्ध लड़ाई में हार निश्चित है, अगर सरकार-स्वामित्व होगा तो तानाशाही अनिवार्य है, और, अगर बहुजनता राजनीति (यन्टी पार्टी-पॉलिटिक्स) ने राष्ट्र-स्वामित्व विभिन्न स्वामित्व चलेगा तो बराबर भ्रष्टाचार व्याप्त होगा, तथा सत्ता का राजनीति (पावर पॉलिटिक्स) और युक्त की अर्थनीति (फ्राइड इकॉनामी) के कारण सामाजिक समन्वय (इंटीग्रेशन) कभी सम्भव नहीं हो सकेगा। ऊपर बल में जनता मुक्ति के लिए सेना की ओर मुड़ेगी। सत्ता है कि ग्राम-स्वामित्व में पारिवारिक अस्मिन् तथा सामूहिक हित और संयोजन का खेल बहुत अच्छी तरह मिलेगा या सत्ता है, और करोड़ों लोगों की विकास के "इंटेन्सिव" में घरेलू शिवाय सत्ता है। इस तरह गाँव की शक्ति से गाँव को समस्ता को गाँव में ही हल तथा सङ्गठन के अनासक्त अभित पो वे बन जायगा, लेकिन तथा सङ्गठन और समुन्नत शासनों के सुनों के गाँव-गाँव में फैलने से गाँव 'सामूहिक' बन जायेंगे। परिणाम यह होगा कि एक-एक गाँव 'ऐरोईडिडियल' जीवन तथा सङ्गठन का इकाई बन सकेगा। गाँव के बनने से देश बन जायगा।

अगर ग्रामस्वामित्व मान्य हो तो उसे प्राप्त करने की 'राजनीति' क्या होगी ?

राजनीति—दलमता की या शक्तिशालि की ?

अर्थनीति—सर्वाधी की या स्वाधीनता की ?

विधानीति—सुसङ्गठित या स्वयत्प्रधान ?

समाजनीति—जातिमूलक या मानवनिष्ठ ?

अर्थनीति—समस्या की या सार्वभूमि की ?

ग्रामस्वामित्व की शक्तिनीति में अर्थ-अर्थ का क्या स्थान होगा ? क्या अर्थ-अर्थ तथा 'राष्ट्र' और 'लेट' की राजनीति के कारण पाँच लाख गाँव इकाई के रूप में बने रह सकेंगे ? अर्थ-अर्थ, दल-अर्थ और जाति-अर्थ के क्या परिणाम होंगे ? क्या शक्ति के अर्थ-विकास है तो विज्ञान और लोहउद्योग के उत्कर्ष में रह क्या होगी ?

ग्रामस्वामित्व की व्यवस्था और विकास-योजना के लिए आवश्यक है सामाजिक जनता की दोनों शक्तियों का समन्वय—धन, पुँजी, बुद्धि। तीनों का समान दर्जा हो और तीनों की सुखद साधेदारी हो। बुद्धि की समानता हो, न कि एक का दूसरे पर हावी हो।

इस नयी राजनीति-योजना में हमारा क्या रोल होगा ? कानून रोड वसोदर-सम्पन्न के अन्त पर हम अपना विचार करें। जगते ७ जून के विदेशों में इसी विषय पर विज्ञान के लिए कुछ विज्ञान समारंभ और विचार हम सम्पन्न करने जा रहे हैं। ●

तब अशान्ति के दूत : अब शान्ति के आराधक

आजगीवन वागवाम की सजा मे मुक्त वागियों मे एक दिलचस्प मुलाकात

३ मई के अब में एकर छपी थी कि चम्बल में पाटी विनोबाजी के समथ जिन वागियों ने आत्म-मर्णाप किया था, उनमें ने चार गांधी जन्म-नातन्त्री के उपलक्ष्य में प्यालयर जेल मे बिना किसी धर्मोत्सवित कर दिये गये। यही चारो बागी भाई ८ मई को रानीपतरा में विनोबाजी मे आशीर्वाद लेकर अपने-आपने घरों को लौट रहे थे। और यहाँ जाने हुए रास्ते में बुद्ध पथो के लिए वायापथी टहरे थे।

जय मे उनसे मुलाकात करी जा रहा था तभी श्री लखू दादा ने, जो कि स्वत को उन्ही में से एक कहकर अपना परिचय देते है, हिदायत दे दी थी कि भाई, उन लोगों को बीते दिनों की याद न दिलाना। लोग जाने क्या-क्या घुटनघड़ किया करते है। परन्तु थोड़ी देर की चर्चा में ही उनकी आत्मीयता ने मुझे गद्गद ही आवाग लिया। और उन लोगों से बातचीत का सिलसिला जो शुरू हुआ तो रटेगन पर विदाई मे शायो तक चलता ही रहा।

चारो बागी भाइयो में मे एक राधा प्रताप-सो मुद्दोमाले हूँसुप नोजवान ने अपने गोंग के गददार रणा के बड़े भाई कन्हैयालाल, रणा के दाहिने हाथ तुवरा, अरु लोहरमन और तेज मिह का परिचय देने के बाद अपने बारे में बताया कि मैं अब भगवान गिहू नहीं, भगवान 'दाग' हूँ, राधा मे भगवानदाग। 'गिहू' मे 'दाग' विनोबाजी ने कर दिया।

'विनोबाजी से आप मिले तो उन्होंने आप लोगों से क्या कहा?' मैंने राधा मे भगवानदाग से पूछा।

'विनोबाजी ने तो हमसे बहुत कुछ कहा, मगर सबसे अन्गी बात उन्होंने जो हमसे कही, वह यही है कि उन्होंने हमें 'पुत्रवत्' कहा। जोने, तुम लोग हमारे पुत्रवत् हो। अब हँसना का विभवन करो और परिभ्रम करने लगे जीवन का निर्माण करो। वन यही वाच हमें लग गयी है।'

मैंने टभी वच में प्रसन्न रिपार कि, मान

लोचिये, आपको जाने इलाके में जमीन नहीं मिली। वही और जाना पड़ा तो क्या वहाँ जाकर खेती-बिखानी करेंगे? इस प्रश्न को सुनकर कन्हैयालालजी ने एतदम कहा, 'नहीं, नहीं, दूर नहीं पगन्द करेंगे।'

लेकिन भगवानदासजी ने बताया कि देग के किसी भी कोने में जहाँ भी विनोबाजी चाहेंगे, हूग रहेंगे और परिग्रम करेंगे। तब कन्हैयालालजी ने दृष्ट बात का समर्थन किया और मौन रह गये। उन्हें आशा है कि उन्हें उनके इलाके में ही जमीन मिलेगी।

भगवानदासजी ने आठवें दर्जे तक शिक्षा पायी है। शिक्षा तथा साहित्य में उनकी रुचि है। उनके गाँव गोट में करीब २०० पुस्तको का एक पुस्तकालय है। सामने लगे बिच में गांधीजी को बरतना चलाने हुए देखकर स्वामी भगवानदास ने कहा कि, 'अब हम भी चरना चलाने को तारी पहँचेंगे।'

कन्हैयालालजी कुछ दूर बंटे हुए पुनमुना रहे थे। ध्यान देने पर सुनाई पडा, 'जीते लखी, मरने लखी, अबब तमासा लखी वा।' जीवन में लक्ष्मी का रिजगा मर्त्य है, रघना कोई प्रगण उन्हें मिल गया था, उसी पर वे आत्मसुख हो पुनमुना उठे थे। लोहरमन के गले में पडा हुआ अजीज और गोट बंधो हूँ चोटी उनके श्रापमन का परिचय दे रही थी। 'मनुष्य वा जीवन वादा-वार नहीं मिलता', दग माय वी उन्होंने गद्गदा ही हुदरावा। तेज गद्ग मे सुना तो वे मेरी और देगवर कुछ दग तरह से कहुने लगे मानो वे अपना मातार व्यक्त कर रहे हो कि ही भाई, मच ही कहा है, यह जीवन बडा कोमली है।

स्वामी भगवानदास रिषत्रगजी गारे माहूल में कुछ अलग ही मातृप पड़ेने, एक गम्भीर मुनरागट्ट उनके बेहूरे पर गंग बाजी, जो उनका अन्तरमपरिचय दे देतो कि दग छोटी जगस्था में ही जीवन के सभी उन्ना-चडाव देव लिये और अब मरने उबर है, लखी वा एत सुनरागट्ट जो

उगरी बयो-बयो मुद्दों में दिदा नहीं पाती, उन राणा प्राण-भी मुद्दों में।

'तो आप लोग खेती-बिखानी करेंगे, मेहनत करेंगे, और तपकर जाने जीवन बंद नये ए-रग में बिखार देंगे, ताकि आपके जैसे तमाम लोगों के लिए एग रास्ता माफ दीग पडे, एक चपतरता हुआ, आलोकी बिखेतरा रास्ता...।' मैं उनसे वह रहा वा।

स्वामी भगवानदास ने बताया, 'हम लोग तो विनोबाजी के सिध्य हैं, उनके रास्ते पर चलकर यहाँ तक आये है और आगे भी यही मार्ग हूँ रास्ता दिलायेगा।'

'यह देखिये, विनोबाजी ने हमें आठ पुस्तकें दी है।' भगवानदासजी ने सभी पुस्तकें मेरे सामने रख दी और कहा, 'उन पर हमारा गग लिख दीजिये।'

'मुचिता मे आत्मबर्चन', 'सामनाग एक चिन्तन', 'जपुत्री', 'गगल प्रभात', 'वाग-माला', 'विनोबाजी' और 'गीता-प्रबचन'; इन पुस्तको को विनोबाजी के आशीर्वात के रूप में भगवानदासजी ने बगड़े में बांधकर इस जनन मे रखा है कि लगा, यही तो अब इनके लिए सर्वस्व है।

दृष्ट बीच बच्चो ने उनहें आ पिरा। बच्चे तरह-तरह के उशाल करते लगे। कोई बच्चा कुछ पूछता, लेकिन कुछ गृहमकर फिर चुग हा जाता, तो भगवानदास उगे उ। शायो, 'पूरो और पूरो, जो कुछ भी पूछना है, मच मे मत रमो।' प्र-यैव वचन मे बन्ने, 'पुत्रों क्या पूछना है, बोलो।'

बचन अपिबनर मचाल करो, 'आग लोग क्या पीते पर खबर कहुने से?'

पीते का नाम सुनकर, भगवानदास रंगने, 'नहीं बन्गो, हूग पील ही भागो-दोड़ने मे।'

'पेटल-पीलल, जगल-जगल, वार के!'

बच्चे सामनाग हा बने।

एग बच्चा भगवानदास की गारा में आकर बंटे गया। वट्ट दम अपिबनर मे आ अंठा दा, जैसे वट्ट उनके गद्ग परिचय रमडा हा। अंबकन मे भगवानदास ने कहा, 'यट्ट जो है न, गी वे जो गापी गद्गया के गग मे महुने देगाई, उनका नाकी है।'



संयुक्तांक

इस अंक में

विधान सभा में प्रतिनिधि पौन ?
सुकरकायु का प्रथम व्याख्यान
सायदान पराशरदान क्या है ?
हमारी जीवन यात्रा में पानी का महान
समन को अग्नि
रागत का प
रोटी का सवाल नये बीतों का कण्ड
सफर सड़के की गली
भारत की धात्रनीति
शाही न्याय
एरुनिया मासभारथ की ओर

२४ सड़के, '६८

वय २ प्रक २० २१

मूल्य ३५ केने

गाँवकीबात

विधानसभा में प्रतिनिधि कौन ?

गाँव के हमारे भाई-बहन,

जय जगत !

इस पत्र के पहुँचते-पहुँचते रोहित नक्षत्र आ जायगा, और आप लोग धान-तेती में लग जायेंगे। मेड़ बनायेंगे, बीज डालेंगे, और अगर पानी होगा तो हरी खाद के बीज भी बाँटेंगे। आशा है, इस साल वर्षा पिछले साल से अच्छी होगी, और फसल में कोई कमी नहीं रहेगी। लेकिन वर्षा पर अपना ध्यान तो है नहीं। कितने कौतुक की बात है कि प्रकृति की बार-बार छोटे खाने पर भी हमारा किसान हर साल नयी मृष्टि करता है। हिम्मत हारना तो वह जानता ही नहीं। शायद वह दिन दूर नहीं है जब विज्ञान इतना अधिक बढ़ जायगा कि हम प्रकृति को आज में वही ज्यादा अपने अनुरूप बना सकेंगे।

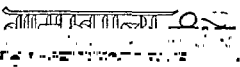
जिस तरह माहम के साथ हम हर साल नयी नयी कमलें बोते हैं, उसी तरह क्या हम यह नहीं सोच सकते कि एक नया समाज भी बनाने की कोशिश की जाय ? आज का समाज में जो गरीब है वह तो दुःखी है ही, जो गरीब नहीं है वह भी कितना परीशान है। एक धनी दस-गैस को गरीब बनाकर धनी होता है। इसीलिए समाज में इतनी अधिक गरीबी, बंकागी और विपत्तियाँ दिनायी देती हैं। गरीबी से कहीं अधिक गलनेवाली चीज है विपत्तियाँ। परिवार की मिलावट से लीजिये। परिवार में एक भाई की कमाई अच्छी हो, और बाकी दो की न हो, तो उन दो का दिल ईर्ष्या से जलता रहता है। अगर ऐसा न भी हो, और तीनों की कमाई अच्छी हो, लेकिन आपस में प्रेम न हो, तो भी परिवार बहुत दिन नहीं चलता। इससे उलटी हालत उग परिवार की होती है जिसमें धन-बोलत भंगे ही छोड़ी कम हो, लेकिन आपस में प्रेम हो तो वह परिवार सुखी होता है, टिकाऊ होता है। यही हाल समाज का है। समाज वह सुखी होगा जिसमें सबके पास अपना काम होगा, कमाई होगी, विपत्तियाँ कम-से-कम होंगी, और लोगों में आपसी सम्बन्ध अच्छे होंगे। आज का समाज ऐसा नहीं है। क्या आपकी दृष्टि नहीं होनी

कि एक अच्छा समाज बनना चाहिए ? आप कहेंगे—'क्या समाज भी बनाया जा सकता है ?' 'हाँ, बनाया जा सकता है।' 'कौन बनायेगा ?' 'आप बनायेंगे, हम बनायेंगे, सब मिलकर बनायेंगे।'

कैसे बनायेंगे ? ग्रामदान का नाम आप सुनते होंगे। ग्रामदान के बाद अब आप जिलादान का नाम भी सुनने लगे होंगे। हों सरता है राज्यदान की बात भी कान में पडती ही। यह ग्रामदान, जिलादान, राज्यदान क्या है ? यहाँ समझिये कि नया समाज बनाने की कोशिश और योजना है।

इस वकन देशभर में ५६ हजार ग्रामदान हो चुके हैं। गाँवों का हों नहीं, चार पूरे जिलों का दान हो चुका है। इनमें एक जिला तिरुनेल्वेली मद्रास में है। इसी जिले में रामेश्वरम का तंत्र्य है। दो जिले दरभंगा और पूर्णिया बिहार में हैं। दरभंगा जिला तो बहुत बड़ा है। उसकी जन-संख्या ५० लाख से ज्यादा है। चौथा जिला उत्तरवासी का उ० प्र० में है, जिसमें बदरिकाश्रम का तीर्थ है। पाँचवाँ जिला उ० प्र० का बलिया है, जिसका दान मोक्ष पूरा होनेवाला है। उत्तरवासी और बलिया के दो जिले स्वतंत्रता की लड़ाई में बहुत प्रसिद्ध हुए थे। इन दोनों जिलों में क्रान्ति की परम्परा है, इसलिए आश्चर्य की बात नहीं है कि इन्होंने क्रान्ति के इस नये विचार की भी गहरा पटलें बनाया।

बिहार के मुल १० जिलों का दान २ अक्टूबर १९६८ तक पूरा करने की कोशिश हो रही है। उ० प्र० बिहार से तिमुरा बड़ा है, इसलिए उ० प्र० सोचता है कि अगर बिहारदान १९६८ में पूरा होता है तो १९६९ में उमरा दान पूरा हो जाय। उधर दक्षिण में मद्रास में अभिमान चग रहा है। वहाँ के मित्र सोचने हैं कि मद्रास और उ० प्र० का दान गाँव-गाँव पूरा हो। मध्य प्रदेश और उड़ीसा में भी जोर की हवा बह रही है। ऐसा लगता है कि १९६९ तक, जब गाँवों की जन-सत्तावही मनायी जायगी, कई राज्यदान हो जायेंगे। जिसे तो हों ही जायेंगे। ग्रामदान के विचार की ओर लौट पुर रहें हैं



मुजफ्फरपुर जिले का प्रथम ग्रामदानी गाँव

१७वीं अप्रैल के अपराह्न ग्रामदानी गाँव खजूरी के खजूरी आश्रम में भूदान-किसानों की एक आवश्यक बैठक सभा के सभापति श्री रामफल सावजी की अध्यक्षता में हुई, जिसमें १२वीं अप्रैल भूक्रान्ति दिवस के पुनीत अवसर पर, सदर अनुमण्डल (मुजफ्फरपुर) के भूदान-किसानों का एक सम्मेलन आयोजित करने की जो पूर्वनिर्धारित योजना बनायी गयी थी, उसकी समुचित व्यवस्था के बारे में विस्तार से चर्चाएँ हुईं तथा सुबह से ही धर्मदान करने का एक कार्यक्रम बनाया गया। कार्यक्रम को पूरी मुस्तेदी से सम्पन्न करने हेतु ग्रामीणों में काफी उत्सुकता तथा चहलपहल शुरू हो गयी। सबसे अपनी-अपनी जिम्मेदारी महसूस की और अपने-अपने काम में लग गये।

१८वीं अप्रैल भूक्रान्ति दिवस की पावन तिथि! प्रातः ५ बजे प्रार्थना के बाद टोकरी कुदाल लिये हुए नवीन समाज के निर्माता खजूरी के ग्रामीणों ने पोलरा खोदना शुरू किया और उस मिट्टी से सड़क का निर्माण करने के लिए मुबह ६ बजे से ११ बजे की अवधि में सिर्फ आध घंटे जलान के छोड़कर साढ़े चार घंटे तक लगातार धर्मदान करते ही रहे। बीच में खंजरी पर ताल देते हुए सभापति श्री रामफलजी गा रहे थे— 'वीरों की यह बाट है भाई, कायर का नहीं काम रे, चलता मुगाफिर ही पायेगा, मंजिल और मुकाम रे।' कवि दुःखावल का यह गीत कितना समयानुकूल-सा लगता था, यह गीत शायद इसी मौके के लिए बनाया गया हो।

अपराह्न ३ बजे में सभा की कार्यवाही शुरू हुई। सभा की अध्यक्षता कर रहे थे ग्रामदानी गाँव सिमराडोह के तपोनिष्ठ तेवक तथा हमारे पुत्रों साथी श्री रामेश्वर मिश्रजी। प्रारंभ में सभापति श्री रामफल सावजी ने आगत अनिधियों का स्वागत

निया और अपने हाल की ह्री बोखधरा (गया) यात्रा का औषो-वेगा हाल सभा को सुनाया। खजूरी आश्रम का संक्षिप्त इतिहास तथा भावी कार्यक्रम की रणरेखा आश्रम के प्रभारी श्री गंगा प्रसाद सहनी ने प्रस्तुत की। फिर कुछ भूदान-विमानों ने अपनी-अपनी समस्याएँ रखी, जिसके समुचित हल का आश्वासन उन्हें आश्रम की ओर से दिया गया। अन्त में आगत सज्जनों का प्रवचन हुआ। फिर सभापति के अमृत्य दिसानिर्देश के बाद सभा की समाप्ति हुई।

रात्रि में प्रार्थना तथा एक भजन के बाद सिर्फ भूदान-किसानों की बैठक हुई, काफी विचार-विमर्श तथा अपनी भावी कार्यक्रम की योजना बना लेने के बाद हृदय-मंचन का क्रम शुरू हो गया।

खजूरी गाँव के श्री बोधकृष्ण लालजी ने, जो इस क्षेत्र में मुंदीजी के नाम से मशहूर हैं—सर्वप्रथम सभा के सामने प्रतिज्ञा की कि मैं शपथ लेता हूँ कि आज से शराब-ताटी और मान-मछली का सर्वथा त्याग कर रहा हूँ। उनके इस साहमपूर्ण निर्णय के बाद सभा में एक नया बंध गयी और पूरे खजूरी गाँव के अशिक्षा लोगों ने प्रायः सभी दुर्व्यसनों की छोड़ने का साहमपूर्ण निर्णय लिया। इस प्रकार खजूरी के पिछले १४ वर्षों के इतिहास में यह अभूतपूर्व सम्मेलन था जिसका असर गाँव के अलावा इस इलाके में उपर जदरदस्त रूप में हुआ।

खजूरी गाँव की संचित जानकारी

सन् १९५४ में मनआरी (मुजफ्फरपुर) के महंत श्री दर्शन-दानजी ने भूदान आन्दोलन से प्रेरित होकर अपनी पूरी जमींदारी (खजूरी गाँव की) दान में दे दी, जिसमें दो सौ बीघे जमीन के अलावा कचहरी, हल-बैल तथा अन्यान्य सभी सामानों का दान कर दिया। तब वह गाँव मुजफ्फरपुर जिले का प्रथम ग्रामदानी गाँव बना। ४६ भूदान-किसानों के बीच १८५ बीघे जमीन बाँट दी गयी। आश्रम के नाम पर १० बीघा हैं और रोप में मवान आदि हैं।

सम्मेलन में २५० भूदान-किसानों ने भाग लिया। वे गदर अनुमण्डल के ११ गाँवों से आये थे। गाँव की व्यवस्था खजूरी आश्रम की ओर से तथा जनाधारित रूप में हुई।

—गंगा प्रसाद सहनी

हमारी जीवन-यात्रा के साथ-साथ जंगल और पहाड़ : नदियाँ और मैदान

[हमारे देश के जीवन का आधार है खेती। खेती का शरीर और प्राण है—मिट्टी-पानी। जंगल, पहाड़ और नदियाँ उपजाऊ मिट्टी के मैदान बनाती हैं। उन मैदानों की कुछ समस्याएँ अभी भी बहुत विरट हैं, उन्हें हल करना है। बिना हल किये कोई चारा नहीं। इस लेख में इसी सवाल पर विस्तार में मोचा और सुझाया गया है।—सं०]

मनुष्य के जीवन के लिए दो बहुत ही आवश्यक तत्व हैं—हवा और पानी। खुराक और वस्त्र के बिना मनुष्य काफी दिनों तक जीवित रह सकता है, लेकिन हवा के बिना सिर्फ कुछ क्षण तक जीवित रह सकता है और पानी के बिना मुश्किल से एक-दो दिन। पानी सबसे पहले प्यास बुझाने के लिए चाहिए, फिर कृषि और गोपालन के लिए। व्यक्तिगत और सामाजिक सफाई के लिए, मकान और बरतन बनाने के लिए, खाना बनाने के लिए, भाप से चरनेवाली मशीनों को चलाने के लिए, गरमी में ठंडक लाने के लिए, और इसी तरह के कितने ही कामों के लिए पानी आवश्यक होता है। दुनिया की सतह पर सब जगह हवा सब लोगों के लिए काफी मात्रा में मौजूद है, और अभी तक किसी भी अभागों के मन में ऐसा विचार भी नहीं आया है कि हवा पर उमका व्यक्तिगत अधिकार रहे। लेकिन पानी सब जगह नहीं है, और कुछ जगहों में एक मौसम में बहुत ज्यादा है, और दूसरे मौसम में उसका अभाव है। मनुष्य को आबादी बढ़ा रहे और उसकी वमा हालत हो, उसकी व्यवस्था कैसी हो, यह एक बड़े अंश में पानी के स्रोतों पर निर्भर है।

दुनिया की सभी पुरानी सभ्यताओं का विकास नदियों के किनारे-किनारे हुआ है। गिंधु नदी, चीन की बड़ी नदियाँ, इफ्रात और डजला तथा नील नदी की घाटियाँ मानवीय इतिहास के जन्म-स्थान रही हैं। धीरे-धीरे विज्ञान के विकास के साथ-ही-साथ मनुष्य ने सिंचाई की व्यवस्था के द्वारा रेगिस्तान को आबाद करना सीखा, और विकास की व्यवस्था के द्वारा दलदलों को भी आबाद करना सीखा। मुसलमानों ने बह नदियों और भरतों पर निर्भर रहा, लेकिन सीधे ही उसने

कुओं के द्वारा धरती के अन्दर के पानी का उपयोग करना भी सीखा। इसी प्रकार बढ़ती हुई आबादी के साथ-साथ उसमें नयी जगहों को आबाद करने की शक्ति आयी।

विज्ञान की बढ़ती हुई रफ्तार में सिंचाई और विकास के लिए बड़ी नदियों की धाराओं पर बांध बनाकर सिंचाई की बड़ी-बड़ी योजनाएँ बनी हैं, उनसे बिजली भी मिलती है। इन योजनाओं में कुछ सफल रही, कुछ असफल। पुराने जमाने में सिंचाई के द्वारा इफ्रात और डजला नदियों की घाटी बहुत उपजाऊ बनी, लेकिन आधुनिक बड़ी नहरों के द्वारा की हुई सिंचाई में ईराक के रेगिस्तान में कुछ ऐसी गड़बड़ी हुई कि सारी भूमि ऊसर हो गयी। अब लोग ५००० वर्ष पुरानी नहरों की खोज कर रहे हैं, जिनके द्वारा २-२ हजार वर्ष तक यह घाटी बहुत उपजाऊ रही थी। पंजाब और सुरेना के नहरी इलाकों में भी यही स्थिति पैदा हो रही है, इसलिए भविष्य में सिंचाई की योजनाएँ बनाने में हमें बहुत सावधान रहना पड़ेगा।

अमेरिका में प्रयोग

अमेरिका की दो बड़ी नदियाँ—मिसिसिपी और मिसूरी—मिलकर एक विशाल डेल्टा बनाती हैं। वे पहाड़ी क्षेत्रों में जमीन को बाटकर अपने साथ काफी मिट्टी बहा ले जाती हैं। इससे सारे डेल्टा का क्षेत्र मिट्टी से भरकर मलेरिया का दलदल बना। लातो एवड़ भूमि खरबाद हुई, और हर माल काफी तेजी से उम दलदल का फैलाव होता रहा। बीमारी भी व्यापक पैमाने पर फैल रही थी। इसलिए वहाँ 'टेनिसी वेल्थी डेवलपमेंट बोर्ड' (टेनिसी घाटी का विकास संघ) बनाया गया, जो इन दो नदियों की पूरी घाटियों के लिए कृषि और भूमि-संरक्षण व्यवस्था की योजनाएँ बनाता है। पहाड़ों में जंगल लगाने—ऐसा जंगल जिससे मिट्टी का घटाव रुक सके तथा पहाड़ों में नदियों पर छोटे बांध बनाकर पानी के तेज बहाव को रोककर छोटी-छोटी बिजली की योजनाएँ बनायी गयीं, ताकि रोसनी और उद्योग के दृष्टिकोण में पहाड़ों में सस्ती बिजली मिल सके।

देखा के दल्ल्या म पानी के निगाह की ओर लिया की लच्छी म बेडी हुई मिट्टी को निगाहने की धरला हुई। ऐसा दल्ल्याम हुआ कि लिया का वदना हुआ पानी गाँने गुलु तर आगामी म फुल जाय। अर दल्ल्या गुलु तर उपराल मिट्टी पा क्षेत्र वत गया है और म दल्ल्या अर गुलु तर अर्धरिक्त वा एर वदुन अरुता एर दल्ल्याम क्षेत्र वत है। वद मर वाय वहाँ के लोगो की मिनी-गुनी गच्छि मे दू पाया है।

चीन की समस्या

चीन मे बहुत लम्बी और लम लियाँ ह। उनम व एर नयी का नाम हूँगेयो है। उसका अलपर चीन का दुल (दी सारो अर चाइना) है। चीन जंग गिगल लेख म यदु लियाँ यातायात का वास साधन हैं और वाफा गेग जावन भर लियाँ पर तावा मे रने हैं और डा लियाँ मे हो गुगारा वा बहुत वना हिस्सा (मरुती) पाते हैं तर गेमी वना और उपरोती ली चीन वा दुग देके वनी? इलियाँ कि वद पदार्थ की मिट्टी को अन्तर मे आनी है जो उपरी लच्छी म पैठा रहती है। एमी पानी वा वाज पौमा हो आना है और वाय-बीच म यह ली अपना मर। वरु दने ह जिसम हलाय वनकी की मूनि वरवाय वरती है।

चीन की पुरानी अरवाय सुन एर के निरेत्रित की। नेम म मरुत वा शासन मरुत और उपरीन वा लच्छि सदिया से वद ह म चला रहा। नेनिस साम्राज्य सरकार बनने पर उन्हेने इम समय का हूय करने का काम अपने हला म लिया। निगालो को हूँग ल्यादी यमी। निगाल हूगारा की लामा म कना अरुत लिय वर वावा वरुत अरुये और वने जोर मे एरवाय निरुत अपनी मिहल से उ होने उन नदी के लिए एक निरुत हूगार रास्ता लो लिया अर हूयनेने वद ल्याताउर उठ मा स व ती रहती है। अर उठ चीन वा दुल गहा रही।

म अरिठ युग की चुनौती

आधुनिक युग म विज्ञान हम चुनौती दे रहा है कि ए दलिया व निगालो हूय एर वनी और लेव वनी अरेरिवा (दूशाश) और चीन (साम्राज्य) गेमी मे लोग लम प्रार वग चुनौती वा उत्तर दे रहे हैं। नेनिस भारत में ग्या हावने है। आरुत हूयने पूर की भागला इन्मी वर रही है कि एर प्रान्त मे एर नम के माए की अन्तर उन मर

समुद्र म वर लिया गार्ज उगला पानी ग देग व ल गुगरे प्रान्त की म विरु मने। ग वान म हूये दलिया मे सामने विनल लिय होना वलिय?

निस अर ल पूर और मे' की भारत मिठ वरमी ऐमी आग हा री है। उर भारत म चार प्रान्त म आन्तल की अर लका व व नेग आग रा नयी अन्त लियारी व रही है। अर लीया गिगर उचर प्रान्त और वजत वर प्रावन्तल हो वायवा मर वासतिव प्राम लरान्त की स्वागना हूमी, और तर हूय आग वर वरने कि निमालय मे पहाडी उगने के वार म अरुत जा वरुत नीरियाँ वर रही हैं जिसम लेनी की वरवाय और उमाय वर वरुत लेमी म वर रहा है वह समाल होय।

हिमालय म व ड की ह लम

नियाम व पहाडी वना व लेमी वनियोवने वेठ हूने ले। उरमी वेग लू म गायल और पविश वा की लेव धारा वा रोडवर उमे हूय लम म मिट्टी पर लिये देती है। इसत वद पानी पाणी मिट्टी मे गुलता है। उर वने की लेनी हुई उरो की वरुत म निगे पोनी रहती है। वे पतिव गिरवर जमीन पर दर के मर मे वेगी र ती हैं जिससे नेच की उमाय से और उपरी वरी मे मिट्टी लेव लूर मे लय से मी वरुतिल लती है। वे मिरी हुई पतिव पानी की वरुत ने नीचे वहने स रोड देती है। एमी उम क्षेत्र मे जमीन म वरती की मरुत ऊनी रहती है जिससे साम भर सोतो म पानी रहत है। हरी पतिव लूमी की गुगार वे काम मे आनी है और लेग मूवी पतिव वा वगारा म बिछाते हैं जिसम अन्डे जिसम की वाद जदो हूी पार हो जाती है उर वेने के नीचे नदी और उगी मिट्टी मे वास वा वगा हूमी है छोटी पतिव के साह लेने और छोडने व हूय मे वमी और उर रहती है। इनसे बीच-बीच म मर्व हूमी और वरुत भी वरुत पाती है।

इर वने म वरुत के वापी लय होत है अरिठ वरुतार को उरुत व निग और कोडे विगे लयवनी गही हूमी है। आधुनी म गेम व इरिया वरुतार मे छाटी पतिवोमने वने को वादवर लिय वे लिय कोड वे वने को ल्याय। चीन मे वेड की पतिव गही हूमी एर प्रार वा वरुत (नीडल) निगे निरुत वरुते हैं होउत है। वे निरुत वरुत की धार की रोड ली पाते। वरुत की लेव धारा सीटी जमीन वर

है। द्रमो साय-माय से पेड लम्बे होते हैं। फैले हुए नहीं रहते हैं, इनमें उनकी जड़े भी फैलने के बदले में सोधे गहराई में जाती हैं, और जमीन मग्न रहती है। उनके सूखे पिच्छल 'लिसे' को बजह से चिकने होते हैं। पानी उनके ऊपर और उनके नीचे में, और नीचे एवम घाटी की ओर नीचे वह जाता है। यह सूखी मिट्टी को अपने साथ बहाकर ले जाता है। और वह मिट्टी तेजों से बढ़ती हुई नदियों में आगे बढ़ती है। जब समतल मैदान में पहुँचकर नदियों का तेज बहाव कम हो जाता है, तब यह मिट्टी नदियों की तली में बैठने लग जाती है और नदियाँ छिछली होती जाती हैं। नदियाँ जैसे-जैसे मिट्टी से बढ़ती जाती हैं, वैसे-वैसे मैदानों में बाढ़ का क्षेत्र बढ़ता जाता है।

पिच्छलों से वातावरण सूखा रहता है, 'लिसे' के कारण जल की मजता भी नहीं। वरमात कम हो जाती है। पशु पिच्छल नहीं खा सकते हैं, और उन पेड़ों के नीचे घास बहुत कम होती है। इसलिए चीड़ के वन कुपि और गोपालन, दोनों के दायु हैं। इनके नाथ-नाथ, उनकी बजह से स्थानीय पानी के खेतों की सतह नीचे चली जाती है, और गर्मी के दिनों में तो ज्यादातर वे तोत सूख जाते हैं।

चौड़ी पत्तीवाले पेड़ों के वनों में जड़ी-झटियों की संख्या अधिक होती है और उन्हें इकट्ठा करना और उनका पक्का माल बनाना नयी ग्रामसभाओं की समृद्धि को बढ़ाने का एक अच्छा साधन बन सकता है।

मैदान की हालत

बाढ़-निवारण की योजनाएँ आम तौर से छोटे पैमाने पर बनती हैं। अनेक बार देगा जाता है कि एक इलाके को बाढ़ से सुरक्षित करने में दूसरा इलाका दूब जाता है, क्योंकि पानी के निवारण की व्यवस्था न करने, उनके मार्ग को रोमने की व्यवस्था होती है। शायद रेल-मार्ग और मैदानल हाइवे आदि के बनने से यह समस्या और भी बढ़ गयी है। कहीं-कहीं दस मीटर तक भी रेल-मार्ग पर पानी के निवारण के लिए कोई व्यवस्था नहीं है। बिनेपकर उत्तरी विहार में जयनाड मिट्टी नदियों से नेपाल से बहायी हुई तथा बाढ़ के द्वारा फैलायी हुई मिट्टी है। लेकिन जब तक पानी के प्राकृतिक बहाव को रोकना नहीं जाता था, तबतक बाढ़ का पानी दो चार दिनों में आगे वह जाता होगा, और इसलिए कुपि के लिए लाभदायक होता होगा।

अब जगह-जगह पानी के रोक से महीनो बाढ़ का पानी जमा रहता है, और सारी फसल चौपट हो जाती है। यह इलाका एवम सपाट और समतल है, इसलिए नदियों का बहाव बहुत धीमा है और सदियों की मिट्टी जमने से नदियाँ छिछली होती जा रही हैं। इससे कभी-कभी इधर की नदियाँ भी चीन की 'हिबेंगो' की तरह अपना मार्ग बदलती हैं।

जहाँ विहार में इनी प्रसार हर साल बहुत बड़े हिस्से में सर्रीफ की फसल ज्यादा या अनियमित वर्षा के कारण जलमग्न होकर नष्ट हो जाती है, वहाँ पर रबी की फसल पूरी तरह आकाश के पानी पर निर्भर है, और कई बार वही फसल वर्षा के अभाव में चौपट हो जाती है। इसलिए बाढ़-निवारण के साथ-ही-साथ ऐसी योजना बनानी चाहिए, जिससे बाढ़ के दिनों में व्यापक पैमाने पर सिंचाई भी हो सके।

उत्तर विहार में विस्तार अमराइयाँ और बांस की झाड़ियाँ हवा को रोकने का काम करती हैं, और तूफानी 'पछुआ' से मिट्टी का संरक्षण करती हैं। लेकिन बाढ़-पीडित क्षेत्रों में धीरे-धीरे सब पेड़ सूखते जाने हैं। बाढ़ से सब पोखर मिट्टी से भर गये हैं, और सिंचाई के अभाव से गर्मियों के मौसम में कोई मिट्टी को ढँकनेवाली फसल नहीं रहने से वृक्षों के अभाव में बाढ़ में हलकी बनी हुई मिट्टी और रेत तूफान में उड़ती रहती है। इस प्रकार हवा से मिट्टी का पटाव तेजी से होता रहता है।

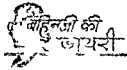
व्यापक योजना की आवश्यकता

इस प्रकार के क्षेत्रों में सही विचारों के लिए एक समग्र वैज्ञानिक योजना की आवश्यकता है, जिसमें पहाड़ी वनों की योजना से लेकर गामर तक निवास और नदियों को गहरा बनाने की व्यवस्था करनी होगी। द्रमो देश की ध्रममालि का बहुत उपयोग हो सकता है। यह देश का बहुत महत्व का सवाल है। इसलिए द्रमो बहुत अधिक ध्यान देना गलत नहीं होगा।

पहाड़ में चौड़ी पत्तीवाले वनों के विस्तार के गव-माय छोटे पैमाने पर विजली की योजनाएँ भी बनानी चाहिए, ताकि छोटे-छोटे उद्योगधंधे भी गाँव-गाँव में चलाये जायें। इन योजनाओं के सफल होने पर भारत भीय माँगकर जीनेवाला बंगाल नहीं रह जायगा। लेकिन जरूरत है इनके लिए व्यापक जन-जागरण और संगठन की।

—मरला देवी

गाँव की बात



लगन की अभिन

रथान्त में जब मैं बाहर आयी तो मरे आँसु-सीधे अचट्टे पाया था। यो ! अचिन्तित रूप में गहरा म गहरा गैर रहे थे। प्रायः सबक साधक बाप और विस्तर का बोध था। बाबाएर म लाते पर सात्त्विक हूया कि दमो मरदास दम नहीं लाया। बाबाएर म पित्र मर दमदा था। मन्ना यात्री अर्धकाल उ गिराया तब बन्दर बाले थे पर वह रात्रा नहा हा रहा था। वह कह रहा था कि पाया मदा हुआ है स्वर्ण लेनात धन क बाप ही बहा जलवा। बसन्तमन पर वृष्टे म ही भागी भौंड झाड़ी था। मह ह्रात देवधर में कृष्ण परमात्मी अमम कन रहा ही कि एक विवाहा अयात हुआ विवाही गिणः विवाहा पाव आया तो मैं लगे राखपुर हा खूबाने की वहा। विवाहाने दे राखपुर कन्वले का विवाहा पदहू म्पाव बनाया। विवाहा मुनकर मुझे वदा खुसा बाया। मैं बोली किने का विवाहा माव रहे हो या देवने का ?

विवाहाने मे बहा बहिनकी आवा बहू वरने लगत है। आत्म वरत्र रात्रा माव रहा है और वार्दे होना तो बीम रात्रा मे कम नहीं लेता

विवाहा पर विवाहाका दम रात्रे म राखपुर वहुवाने की रात्री हुआ। राखपुर व भी वेदारनाथ ने बटे आहादने माव अरती देगे की का ! ब बोले पर मुझे बन्धा था। मुझे उहाले दम गिन वद ही जाने ब गिण विवाहाका विवाहा पर मैं म्पना पहने वदु रने ग मकर पर।

राखपुर जाने समय विवाहाका मे बन्धा कि उहा व वारक कन्वले का भाव अला जाने से बाहर एक रात्रा कीने हो गया है। दम वदो वदो मेखे की भी नही है। लगन पर घटे म मे राखपुर काका। भी वारनाथकी लहरी दे विवाहा का श्रम वरत म ब्यत मे। उनने वागमणैय के भी वाव आम्बो अनाम म म्पे थे।

था वेगारनाथकी पा रात्र लम्बा बलनाथ अभी तर अने गहर मे नहा था बाया था। तत्र रात्र उभरी राह देव रहे थे। दामा के गिण वनी और द्वाकिण्डर अने का बाप उभरी विधे था। वेगारनाथकी की वनी विवित था कि धगर वारनाथ समय मे त वदुवा तो दामा? विवाहाकी पर वना गिण बाया? मैंने बहा भाभी अमर आज एरि और द्वाकिण्डर नही आ बाया है तो वाम म भी हा दे पावत हा ?

अबो मेकी वल महु म न दिवलागे। मे बीन न दी गला तो म्परावने क्या बन्ने और मण वणैय व गीण भी वरा तावने ?

था वेगारनाथकी मे पानेपाल का बाया अनाम अनाम विवा था। लम्बा व गिण उनाम आती और मे बड गहने आ अवाये म। उना हीने पर भा उ म दव वात का विवाहा था कि दामा की अण वण और द्वाकिण्डर न दे मक तो मुम विवाहा म विवत होया

मैं बोली मेवा हूम गीण नाग उना के रात्र की दम पर, वहु उव वाने वन्ने ? गिण्डर उकर विवाहा के का भावनात आति पुगने विवाहा के साप तत्र पनी सादिक और द्वाकिण्डर नेने री ववां विवाहाकी भी मुण्ड गयी। यह बोके आगिर वत्रा वर वदने बाया होया ?

वेगारनाथकी मे बहा बहिन यह बोध ही अमरु मे गया है। विवित प्रतिम के नाम पर हूम दम नो रहे हैं। वार्दे उवाप भी नो नही है।

मैं बोली उवाप मो है विवित उमे अगाने वा साहाय आगरो कला होया। उवाप पनी कि अनी आगत न बाहर गाले वा मच न बलाय रात्र और गिवाहे की बीओ वर महु व म विवाहा आया। गिवाहे की बीओ के वन्ने पारणादिक अन्धर और मद्भावात की वैवाहिक म्पण की उवाप गहनाय गावा लम नो विवाहाका नो परार ही बन्ध बापकी।

में बड़े उत्साह से मंसद का सदस्य हुआ था और मुझे के दिनों में बड़े चाव से मंसद-भवन जाया करता था। एक दिन मुझे लोचरामा जाते समय मैंने देगा कि सड़क के किनारे का एक गुन्दर, हरा आम का पेड़ काटा जा रहा है। आश्चर्य हुआ, कि इतना अच्छा पेड़ क्यों काटा जा रहा है! मैंने सोचा, होगी कोई जरूरत। दूसरे दिन फिर वही बात। एक दूसरा हरा पेड़ काटा जा रहा था। मुझे बहुत बुरा लगा, लेकिन मैं फौरन सोच नहीं सका कि किया क्या जाय ? तीसरे दिन जब फिर एक तीसरा पेड़ बटता दीख पड़ा तो उग दिन अपना गुस्ता नहीं रोक सका। मैं तुरत लोकसभा के कार्यालय में गया और एक काम-रोक प्रस्ताव लिखकर दे दिया।

मैं अपनी जगह बैठे हुआ था। इतने में कोई आया और उसने मेरे कंधे पर हाथ रख दिया। देगा तो मुझे मंत्री महोदय थे—वही जिनके विभाग से मेरे काम-रोक प्रस्ताव का सम्बन्ध था। स्वीकार करते—‘आप मेरी पार्टी के मेम्बर हैं। मुख्य सचेतक (चीफ क्लिग) को बताये बिना आप यह प्रस्ताव नहीं ला सकते।’ मैंने कहा—‘इन वारीकियों के लिए समय नहीं है। तीन दिन में तीन पेड़ बट चुके हैं। अब यह नागमनी फौरन बन्द होनी चाहिए।’

मेरा हल देपकर मिनिस्टर साहब बिना कुछ और नहे चले गये। दस ही मिनट बीते थे कि वह वापस आये, लेकिन इन बार चेहरे पर तनाव नहीं था। बोले—‘मैंने अगर वी फोन में कह दिया है, अब और अधिक पेड़ न काटे जायें।’ उनके इस आश्वासन पर मैंने अपना प्रस्ताव वापस ले लिया।

लोकसभा में आते-जाते कुछ दिन बीत गये। एक दिन एक डिप्टी मिनिस्टर साहब आये और मेरी बगल में बैठ गये। थोड़ी देर बाद मुझसे हुए बोले—‘अगर आप किसीसे न बतें, तो आपको एक भेद की बात बताना है।’ मैंने उन्हें अच्छी तरह विश्वास दिलाया कि किसीसे नहीं कहूँगा। उन्होंने बताया कि ७ साल पहले लकड़ी की तंगी हो गयी थी तो तय किया गया था कि इस मोटाई से ज्यादा के पेड़ काट लिये जायें। लेकिन ७ साल तक पेड़ों की काटल घूमती रही। घूमते-घूमते ७ साल बाद वह नीचे के एक अधिकारी के पास पहुँची। उसे गढ़ा बुरा हुआ कि इतने दिनों तक सरकार के हुसाम का पालन नहीं

● उत्तर प्रदेश का क्षेत्रफल पूरे देश के क्षेत्रफल का लगभग ६ प्रतिशत है और जनसंख्या देश की कुल जनसंख्या का १७ प्रतिशत है। इस राज्य की आबादी सन् १९०१ में ४ करोड़ ८६ लाख से बढ़कर सन् १९६७ में ७ करोड़ ३७ लाख हो गयी। एक अनुमान के अनुसार इस समय इस राज्य की जनसंख्या ८ करोड़ ४५ लाख तक पहुँच चुकी है।

● नव पाषाण युग के अंत में दुनिया को आबादी ५० लाख से लेकर १ करोड़ के बीच थी। ईसायुग के आरम्भ में दुनिया की आबादी २० करोड़ से लेकर ३० करोड़ के बीच थी। आधुनिक युग के आरम्भ में दुनिया की आबादी लगभग ५० करोड़ थी, जो सन् १९६२ में बढ़कर लगभग ३ अरब हो गयी।

● भारत का क्षेत्रफल कुल दुनिया के क्षेत्रफल का २.४ प्रतिशत है, लेकिन आबादी १४.६ प्रतिशत है। भारत की आबादी पिछले कुछ सौ वर्षों में बहुत तेजी से बढ़ी है। सन् १९६७ में भारत की आबादी ५.२ करोड़ तक पहुँच चुकी थी। यदि आबादी की वृद्धि को यही रफ्तार रही तो सन् १९६४ में भारत की जनसंख्या १ अरब हो जायगी।

● सन् १९६१ और १९६५ के बीच देश की जन्म-दर लगभग ४१ और मृत्यु-दर १७.२ प्रतिशत थी।

● कालेजों और विश्वविद्यालयों में सन् १९६७-६८ में छात्रों की संख्या १७,२८,८७३ से बढ़कर १९,४६,०१२ हो गयी। चारू वर्षों में कालेजों की संख्या बढ़कर २,७४६ हो गयी, जब कि विश्व-विद्यालयों की संख्या बढ़कर ७७ और विश्वविद्यालयों के समकक्ष संस्थानों की संख्या बढ़कर १० हो गयी। यह जानकारी शिक्षा मंत्रालय की सन् १९६७-६८ की वार्षिक रिपोर्ट में दी गयी है।

(पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार के मोजन्वय से)

हुआ। बस फौरन उसने आदमियों को पेड़ काटने के काम में लगा दिया। और, अगर मेरी ओर से बार्बेडन की गयी होती तो न जाने कितने पेड़ काट डाले गये होते।

कागज की सरकार को क्या मतलब पेटों में, आदमियों से ? कुछ भी हो, कागज का पेट भरना चाहिए, आदमी का भरे या न भरे।

—बी. शिवधाम

('ओरिजिनल' में शामिल)



संकर मक्के की खेती

हमारे देश में बड़े क्षेत्र में मक्के की खेती की जाती है। इसकी औसत पैदावार करीब ६३५ क्विन्टल प्रति हेक्टेयर (१० मन प्रति एकड़) है। पश्चिमी देशों की पैदावार का यह केवल चौथाई है। इतनी कम पैदावार का मुख्य कारण अच्छे बीजों की कमी है। अब हम इसकी पूर्ति संकर मक्का की विभिन्न निस्मों से कर सकते हैं। इन उन्नत निस्मों से ३७४०-७४५० क्विन्टल प्रति हेक्टेयर तक (४०-८० मन प्रति एकड़) पैदावार ली जा सकती है। आजकल अमेरिका में प्रायः संकर मक्के की ही खेती की जाती है। अच्छी पैदावार के लिए हमें बीज के अलावा उचित फगल-चक्र, अच्छे बीज, बतारों में बुआई, समय से मिर्चाई व निराई, गोडाई और खाद के गठी प्रयोग पर भी जोर देना चाहिए।

गंती की पैदागी

मक्के की खेती कितनी भी प्रारंभ की भूमि में की जा सकती है। किन्तु दोमट भूमि, जिसमें जोषास परदाय की मात्रा काफी हो, इसकी खेती के लिए चट्टन अच्छी रहनी है। भूमि में पानी की निकासी का उचित प्रवण्य होना चाहिए। गंत में पानी रजने से पीछों की बाढ़ रुक जाती है। खेती की मिर्चाई करके दो तीन बार जुताई करनी चाहिए। हर जुताई के बाद पाटा लगाना चाहिए। पाटा लगाने से मिट्टी सुरभुरी हो जाती है।

खाद

मक्के की फगल को अधिन खाद की आवश्यकता होती है। संकर मक्के के लिए करीब १२-१५ टन गठी हुई गोबर की खाद के साथ-साथ ८०-१०० किलोग्राम नाइट्रोजन, ६० किलोग्राम सुपर फास्फेट और ४० किलोग्राम पोटाम प्रिन हेक्टेयर के हिसाब से खेत में डालना ठीक होगा। बीज बोने से १८-२० दिन पहले ही गोबर की खाद को डालकर खेत में जकड़ी तरह मिला देना चाहिए। फास्फेटकारी तथा पोटामसारी उर्वरकों की मक्के की बोने के पहले या मक्के के बीज बोने समय ही नाड़ी के जरिये डाल देना चाहिए। उमीरे साथ-साथ नाट-

ट्रोजन की एक-तिहाई मात्रा को भी खेत में डाल देना चाहिए। याकी बची हुई दो-तिहाई मात्रा दो भागों में बांट लेना चाहिए। एक भाग को जब बीधे घुटने तक के हो जायें, उस समय देना चाहिए और दूसरे भाग को नर-फूल निकलने को ही तभी डालना चाहिए।

समय पर बोआई

संकर मक्के की बोआई जून के दूसरे या तीसरे सप्ताह तक कर देनी चाहिए। बोआई बतारों में करनी चाहिए। बतारों के बीच का फागला प्रायः ६० से १०० मी० होना चाहिए। जब बीधे १५ से २० मी० के बगीय ऊँचे हो जायें तब बीधे के बीच का फागला २५-३० से १०० मी० तक कर देना चाहिए। बीज को ५ से १० मी० में अधिन गहरा न बोवाये। संकर मक्का गंगा-२ का १५ किलोग्राम बीज १ हेक्टेयर के लिए काफी होता है। इतने बीज से प्रति हेक्टेयर करीब ५० टनार बीधे मिल जाते हैं।

फगल चक्र और फगल-मिश्रण

(१) पहले साल खरीफ के मोगम में मक्का बोआयें, इसके बाद खरी के मोगम में गेहूँ बोये। दूसरे साल खरीफ के मोगम में मक्का और बरबटी मिलाकर बोये और खरी के मोगम बोये।

(२) पहले साल खरीफ में मक्का और खरी के जो उगायें। दूसरे साल खरीफ में मक्का और खरी में मटर उगाये।

(३) पहले साल खरीफ में मक्का और खरी में घना उगाये। दूसरे साल खरीफ में मक्का और खरी में गेहूँ उगायें।

(४) पहले साल खरीफ में मक्का और आगू उगाये, दूसरे साल खरीफ में मक्का और खरी में जो उगायें।

(५) पहले साल खरीफ में मक्का और खरी में अलग-अलग उगायें। दूसरे साल खरीफ में बाजरा और घना उगायें।

विशेष

समा-१ —पहले विस्म ८० से १०० दिनों में परतन देना ही जानी है। यह विस्म संघा गिण्टु के मैदानों भागों के लिए, हिमाचल प्रदेश के तराई क्षेत्रों के लिए और मुख्यतः क्षेत्रों के लिए उपयुक्त पायी गयी है। इसके दाने छोटे होते हैं। यह विस्म देसी जातियों की अपेक्षा १५ से २० प्रतिशत ज्यादा उत्पादक और २० से २०० प्रतिशत तक ज्यादा खरी देता है।

समा-२०६:—पहले विस्म १५ से १०० दिनों में परती है।

इंग्लैंड में फिर एक बार !

गांधी-वचन गांधीजी के बाद इंग्लैंड में ब्रिटिश सरकार ने एक परिपक्व बुलायी। जो लड़ाई में गंवैया था, परिपक्व में हासिल करने की गालाबी अंग्रेज करना चाहते थे। गत्याग्रह-संग्राम में देना एकात्म विराट पुष्प की तरह उठ गया हुआ था। दुनिया के मामले अंग्रेज विमान चाहते थे कि असल में बात बेसी नहीं है। हिन्दुस्तान में बड़ी फूट है और अंग्रेज अगर यहाँ से अपना घासन उठा ले तो देन के दुकड़े-दुकड़े हो जायेंगे, अराजकता फैलेगी। इस चुनौती का क्या जवाब दिया जाय ? इस परिपक्व में गांधीजी को बुलाया गया था। वृत्त गोचर-विचार के बाद गांधीजी ने जाना तय किया। दुनिया के मामले अपना पहलू रगने का यह एक अच्छा मौका था।

बम्बई से जहाज द्वारा गांधीजी ने जाना तय किया। दैयारियाँ होने लगीं। गांधीजी का सारा समय अपने साधियों से विचार-विमर्श करने में ही व्यतीत हो गया। गांधीजी के निजी सचिव श्री महादेव भाई देसाई बाकी तैयारी कर रहे थे। हिंदायतें देनेवालों की कोई बर्मी नहीं थी। इंग्लैंड के जाड़े की सबको बड़ी चिन्ता थी।

गांधीजी जहाज पर सवार होने तक बड़े व्यस्त रहे। जहाज खाना ही गया। तब गांधीजी को जाकर पता चला कि बहूत गारा सामान साथ में ले लिया गया है। ऊनी कपड़ों की बड़ी भरमार थी।

गांधीजी ने महादेव भाई को बुलाया। पूछा, "महादेव, यह खाना सारा सामान साथ में क्यों है ?"

"बापू, इंग्लैंड में बड़ी सर्दी पड़ती है। ऊनी कपड़ों के वगैर कैसे चलेगा ?"

"अरे भाई, मैं इंग्लैंड में रह चुका हूँ। इतने सब कपड़ों की कोई आवश्यकता नहीं है। एसाब जनी गम्कल हो तो काम निकल जायगा।"

"बापू, मैंने बहुत मना किया, वित्तने ही कपड़े में वही छोड़ थाया, लेकिन लोग मानते ही नहीं थे।"

"महादेव, भारत के दम्बिनारायण के प्रतिनिधि के नाते हम जा रहे हैं। इस तरह अनावश्यक सामान अनायास के डेर-

के-डेर ले जाना ठीक नहीं है। अनावश्यक सब सामान हमको वापस भेज देना चाहिए।"

"जी हाँ, बापू, अरन से वापस भिजवा दूँगा।"

और अरन से सन्दूकें वापस भेज दी गयीं।

इंग्लैंड में गांधीजी साहो मेहमान थे, लेकिन उन्होंने वह मेहमानदारी बखूल नहीं की। गरीब मजदूरों की वस्ती में श्रीमती म्युरियल लिस्टर तथा उनके साथी सेवा-कार्य करने थे। उनके चारों ओर गरीबों में विरे हुए क्रिस्ते हल में उन्होंने रहना तय किया। वहाँ जब कभी गांधीजी को अकाल मिलता, गरीबों की पुछताछ करने निकल पड़ते।

वस्ती के बच्चों को गांधीजी के बारे में बड़ा सुनहल था। बच्चे आपस में एक-दूसरे के बारे में बाने करते, गांधीजी को 'मिस्टर गांधी' के बदन बच्चों ने अपना चाचा बनाया। 'अबल गांधी' के नाम से वे पुकारने लगे।

बच्चे अपनी शिक्षिका के बार-बार उनके बारे में चर्चा छेड़ते।

"वे ऐसे नंगे बदन भला क्यों घूमते हैं ?"

"भारत में गरीबी बुरा है।"

"भते ही देश में गरीबी रहे लेकिन गांधीजी तो बैरिस्टर हैं, उनको किस बात की बर्मी ? हम क्या उन्हें कोट, पतलून उपहार दे ? बेचारे मारे बर्मी के छिडुखे होंगे।"

"गांधीजी ने अपने को गरीबों की सेवा में समर्पित कर दिया है। गरीब जब तक सुपुगे नहीं होते तब तक वे पूरे कपड़े बेमने पहन सकते हैं ? उन्होंने गूद बगुद गरीबी को अपना लिया है।"

"वे हम बच्चों में भय का क्यों नहीं मिलते ?"

"बहुत काम में पैसे रहते हैं।"

"वाह, यह भी खून नाया रहे। अपने गरीबों से मिलने की भी कुरगत नहीं है।"

"तुम बड़े धैरान लडके हो। जाओ गेलो। िमी दिन तुमगे उन्हें मिला दूँगी।"

फिर एक स्थान पर गांधीजी से मिलने का कार्यक्रम बना। पूरा हाल बच्चों से सचास्य भरा था। गांधीजी ठीक समय पर आये। आने समय बीच ही में एक लडकी अपने छोटे भाई को गोदी में लिये हुए खड़ी थी। गांधीजी ने उसे प्यार से चुटकी ली, बच्चा हँस पड़ा।

गांधीजी ज्यों ही मुर्गी पर बैठे कि बच्चे सबान घुलने लगे। उम बच्चों ने पूछा, "बाचाको, अह्मा का मतलब क्या है ?"—

हमलोग बड़े लोगों से दूतने सताये गये हैं और उराये गये हैं कि आज भी उसका डर बना हुआ है और आये दिन भी कुछ ऐसी एकाध घटनाएँ हो जाती हैं जिनसे भय खाना पडता है। धीरे-धीरे हमें परिवर्तन आयगा।" (इतना कहकर हाथ जोड़कर बैठ गया) ।

इन दोनों की बातें सुनकर बड़ी प्रगन्नता हुई। यही है गाँव की जागृति, जिसमें से गाँव की शक्ति प्रकट होगी ।

शिविर में आये हुए लोगों से बातचीत करने पर निराश मन भी आशावान होता है। एक ग्रामसभा के मंत्री जो काफी धनी हैं और समझदार भी हैं, बोले कि जब से प्रखण्डदान हुआ है, यहाँ की हवा बदली हुई है। हम जो शिविर में आये हैं यही सोचा करते हैं कि गाँवों का नक्सा कैसे बदले। इसके पहले हम राजनीति में ही पड़े थे ।

जिन्हें यह लगना है कि ग्रामदान और जिजादान योगस है वे शायद अन्त तक योगग, योगग ही कहते चले जायेंगे और गाँवों का नक्सा बदल जायगा । उसीसे से उस जन-शक्ति का उदय होगा, जिसे ग्रामदान के द्वारा पैदा करना चाहते हैं ।

प्रखण्डदान व बाद इस लदनिया प्रखण्ड में सतत लोक-शिक्षण वा काम होता रहा है। ग्रामदान वा विचार लोगों तक पहुँचता रहा है। अभी धीरेन्द्र मजूमदार ने १० दिन की वहाँ यात्रा की है। और यही कारण है कि हम ब्लाक में ६८ ग्रामसभाएँ गठिन हुई हैं। अगर लोक-शिक्षण का यह गिलमिला हर प्रखण्ड में धायम रहे तो ग्रामदान-गुष्टि का बाध आगान हो जाय आर कार्यकर्ता की परीशानी मिट जाय ।



‘गाँव की बात’ : वार्षिक चंद्रा : चार रुपये, एक प्रति : भजारू पैसे ।

श्रीकृष्णचंद्र भट्ट द्वारा सर्व-सेवा-संघ के लिए प्रकाशित एवं रविशंकर प्रेम, सातमंदिर, बाराणसी में मुद्रित ।

रहना व हुआ, धोड़े ही समय में गयी
मा या ने इस प्रकार बच्चों के ही गरी, बचि
गयी किरणोपमा के ग पत्रिका का नाम
बोध लिया।

गंगा बायीं भाइया ने परिवार व किम
छत्र मेंवा घर के सभी बापबान्ना की एक
समा हुई। धी लम्बे वारा ने परिवार देर हुए
रहा कि, यदि हम लोग बुदे लोभा के साथ
रहा सोच ले तो उनही बुगई अथवा ही हू
हो जायगी। नेर सभाक म ही हय सदैव ही
रहना चाहते हैं। क दो लोभो को बुगई
ईको रहनी है, इनकी प्रवृत्त हुई है, उन यही
रनी है।'

लम्बे वारा ने अपने गणित बन्धन में
बनया कि गणित परिभाषा व बच्चा का
एक रूप हम चलाने है, विषय लाभमन
तथा उनका परिभाषा ने बच्चा के तीन चहुँवर
एक दिन रहा। या कि वे तो हवादे ही बच
ई, इनकी जि। आदि का समा प्रय व हुना
गिर। बच्चा का बाहर को रगे आ
उनी भाँ देकर हय वगी भाइया वा
भाँ सर भाँयो की।

सौम्यमनो से जब विवेकन तथा गया
कि वे भी सर सेवा मय परिवार क बीच
कुछ बर को लोचनम रही विनयमा के साथ
बड़े सरल माय मे हाथ आकार गये ही गये।
और सभी की उहीन मय म दिया। उ
सार म में उ हाँने इतना ही कहा—

'शोध बाल बुदे आरमिया के बीच रहा
है, किर्तिवाह्य हाना है कि इही आग अन्तो
लोभो के बीच में कोई चुँयो बाल मुह मे म
निश्चल जाय। ज वना प्रेम कोर भागीरथी
हर मय बना रहे, यी चाहते हैं।'

वे अपने सभी साधिया ही भाय व इतना
बहुतर पुत्राय भेट गये। मय वतण्य
की कि मे बुध वने कुत्र सधिका ही हई।
पम्पु उरन उरन चय सभीने प्रम्पु
भावाय को भाषणो का दिया। सभी वारा
हो को।

पौराणिकसभी वृत्त ने भावक से अंध
के हुए मरणाव प्रभु मयन में गुने व कोर
निवेदन किया कि 'क व मय काय व मित्रार
मा रहे है हय साथ व वने पनि मभावाय

पूरान मय शुक्रार, २७ मई, '६८

पाठ करें कि भाषा आने का जीवन एक
नया जीवन हो, मुन्नी, परिधनी और प्रेरक।
बन्धन क्षेत्र को गान्धियुगमा को मुक्ताने
में उगो प्रकाश दिते।'

गान्धियेन वारा के वनी गायक
देगई न गंगा म उरा का यह गटो हू कि
पित्रीवादी ने भावकी पुकार रहा है, बाएव
आय हमारे माई ही है गान्धियय के

नेमरिया एमाल भेंट दिये। वे म्माल उनके
मय में दिख उडे। उनको आगे ही इतना
साँ रीलो भी।

जल में गणो रोग पर गरी इन्स्टी-
पूट के थी रबेन म्माल य ने लम्बे गारा से
कहा कि यदा वे का माई आके चा
रीर है, जो सगी मायका के लिए आलोह
बिगरेन।

—प्रभु

विश्व-शांति के लिए युवक सक्रिय हों

गद्दर पार्टी के संस्थापक अध्यक्ष दाश मोहन सिंह भायना ही अध्यक्ष
बन्धुवृत्त में सभी गान्धियेन प्रियेयन के
प्रमुख कार्यकर्ता से बातचाय करने हुए

भारतीय स्वतन्त्र-संघम व इन्दियन में
आन्दोलन महत्वपूर्ण तथा रचनेवाली ऐतिहासिक
बदल पाई है। स्वतन्त्र-संघम वारा साउन
मिह मायका ने कहा कि विश्वशांति के
लिए दुनिया के नरकमनो को उन्मिय होना
चाहिए और मानवता का समाप्त कान-सालो
हाथगरो का होर को प्रतिबन्धन वरने के
लिए पूरी गान्धियेन चाहिए। उन्होंने
कहा कि सता १२ अधिकांश वनाये रचने

क लिए अतिव्यय गन्धायन किया दिन पूरी
धरती का रक्षण कर सकत है। आख
की ना कभी उगने में भी बगु १२माणु वयो
क वनाये तो मान नही शाकनी चाहिए।
आयन के पुत्रको मे उराने अनील को कि
दे किसी प्रकार को अराण्य हररनी में
भाग न लेन हुए पूरे वयन ही एहता,
गान्धियेन वारा को प्रतिबन्धन वरने के
वाशको ने जयमकाय मायण दाग हो रहे
वि व गान्धियेन के कार्यो की म्महता की।
भी कना को उच हय कना है।●

एक दुर्लभ अवसर थोडे समय के लिए,

७५ रुपये की चुनौ हुई ताम पुस्तको का हेर पर-बदे ५०० ६० वें
माय हो ६०० रुप का वृङ्ग मय बिना मूय

गान्धी जन्म-शताब्दी समारोह व उपलब्ध में

महाद्विय के प्रकाश व प्रकाशक

सस्ती साहित्य मण्डल की जन्मण भेंट

२ अक्टूबर १९६८ तक मद्राय बन जाने पर

- मद्रयना मुक के १० ५० और पुत्राण के भेट के अधिय पुत्र के भेट ५० ६०
तन्त्राल भेद है। धाये मिलने ही मण्डल आने ताँने पुत्राँ ५६० ६० की
की० पी० के भेद देगा।
- २ मजुवर १६६८ का प्रकाशित हुनेवाले ६०० रुप के एक 'गान्धी १२ और
विचार' की एर प्रिन्टिंग मेट-मन्त्र भेद की जायगी।
- मण्डल' का मासिक पत्र 'जीवन साहित्य सल्ला' को नि मुक्त मिलेगा।
- बाँये होनेवाले प्रकाशन पाँने धाच में।
एक माँने विचारक योमदा से सचिवन वक्क तथा पाम अदि धंका कोबिने।

मन्त्रा साहित्य मण्डल, नयी दिल्ली

भूदान-पत्रिका

भूदान-पत्रिका-संस्कृत-प्रधान-अधिसक-का-सन्देश-सप्ताहिक-साप्ताहिक



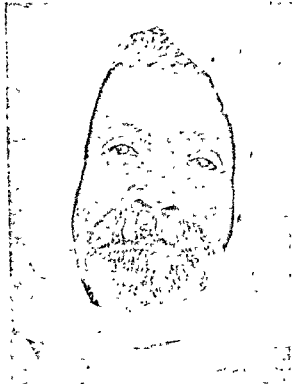
समुदाय (गाँव) स्वामित्व
लोक प्रतिनिधित्व
विशेषांक

७ जून १९६८: वर्ष १४: अंक ३५-३६..

सत्रहवें सर्वोदय सम्मेलन के अध्यक्ष

श्री शंकरराव देव : जीवन-परिचय

३० जनवरी सन् १८६५ को महाराष्ट्र की एक रियासत के ग्रामीण इलाके में श्री शंकरराव देव का जन्म हुआ। बचपन के दिन गाँव में बीते, विद्यालय की शिक्षा पूना में हुई और विश्वविद्यालयी शिक्षा बड़ोदा और चम्बई में सम्पन्न हुई। बड़ोदा के अध्ययनकाल में विनोबाजी, १४० श्री धोत्रे और काकामाहव गाडगिल आपके सहाध्यायी थे।



श्री शंकरराव देव : स्वामनम्

सन् १९६२ में भारत पर चीनी आक्रमण होने पर शंकररावजी ने अन्तर्राष्ट्रीय दिग्दर्शन-मैत्री-यात्रा का नेतृत्व किया था।

श्री शंकररावजी का कार्यक्षेत्र राजनीति में रहा है, विन्तु उनके जीवन की प्रेरणा और अधिष्ठान आध्यात्मिक है। 'उपनिषत्सार' पुस्तक की प्रस्तावना में आपने लिखा है—“मुझे और पढ़ने को नहीं मिले, और निरंक उपनिषद् ही मेरे पास रहे तब भी जीवन का उच्च आनन्द और रम मुझे अगण्ड मिलना रहेगा, मेगा मुझे लगता है।”

युवा काल में आप पर लोकमान्य तिलक के 'गीता रहस्य' और श्री विवेकानन्द व श्रीअरविंद की रचनाओं का प्रभाव था। इन दिनों श्री जे० कृष्णभूति के तत्त्वज्ञान का आप के मानस पर गहरा अमर है।

के उदय के लिए कोई अपना अस्त होने नहीं दे सकता। इसलिए 'सर्व' की प्रतीति शायद की परिस्मिति की भाँति है। ऐसा विचार-परिवर्तन क्षयिणीय होना वा सम्भव है। अगर शान्तिपूर्ण विचार-परिवर्तन सम्भव न हो तो विज्ञान और योग्यता का अर्थ क्या रह पायगा ? आज के जगाने में स्वार्थ भी सामूहिक ही होगा।

इस तरह के अनुयाय सत्ता और शान्ति 'सर्व' के हाथ में रहनी चाहिए, ताकि उनमें सर्व वा हित एक सजे। सर्व वा अर्थ है प्रत्यक्ष जनता, न कि उसके नाम में काम करनेवाली कोई पार्टी, या उस पार्टी (एक या अधिक) द्वारा संचालित सरकार। कोई भी पार्टी हो, वह स्वयं 'पीपुल' नहीं बन सकती। इसलिए सामंशिक में 'सर्व' यानी 'सर्व को इकाई गाँव' वा स्वामित्व है, और उसीका नेतृत्व है, दल वा नहीं। दुनिया ने जिसे रक्षात्मक देखा है, उसने सरकार-स्वामित्व भी देख लिया। एक में पूँजीवाद है, दूसरे में साम्यवाद। पूँजीवाद में भयकर शोषण है, और साम्यवाद में सर्वत्र दमन। पूँजीवाद में पूँजी की शक्ति बुद्धि और श्रम का शोषण करती है, साम्यवाद में जनता के राज्य के नाम में पार्टी के माध्यम से पूँजी और बुद्धि की शक्तियाँ मिलकर श्रम का दमन करती हैं। पूँजीवाद में रोटी का टिकाना नहीं है तो साम्यवाद में स्वतंत्रता से वंचित होना पड़ना है। शोषण, और दमन वा यह दुष्पन्न चलता ही रहता है, और 'विरोधियों' का सहार कभी बन्द नहीं होता। जनता के नाम में दल ही सत्ता और शान्ति दोनों पर हावी रहता है। वही तय करता है कि कौन शान्ति वा मित्र है, और कौन शान्ति वा शत्रु।

अगर रोटी और स्वतंत्रता का मेल मिलाना हो, अगर दलगत, पूँजीगत, बुद्धिगत से एकसाथ मुक्त होना हो तो ग्राम-स्वामित्व और ग्राम-नेतृत्व के ही आधार पर ग्रामस्वराज्य की व्यवस्था विकसित करनी पड़ेगी। 'सर्व' की ये छोटी-छोटी इच्छाएँ ग्राम-स्वराज्य

की भी इच्छाएँ बन जायँगी, अपने मे पूर्ण, फिर भी एक-दूसरे के गुँथी हुई। गांधी के समय के अनुसार एक देग में लाखों 'ग्रामराज्य' होंगे। हर राज्य की जनता अपने राज्य का संचालन अपनी सह-कारणित्व से करेगी। इस तरह ग्राम-स्वामित्व और ग्राम-नेतृत्व में जनता की एक नयी अर्थनीति, नयी राजनीति, नयी विज्ञाननीति पुनः होगी। 'सर्व' को 'सर्व' के साथ जोड़नेवाला जीवनरत्न, समाज-वर्तन बनेगा। वह साम्य और शान्ति का दर्शन होगा, जिसमें शान्ति के बाद सहार नहीं होगा, और स्वयं शान्ति में शरण नहीं होगा। समाज को सर्व से मुक्त करने के लिए शान्ति में सर्वयं अनिवार्य है, यह वाच अब पुरानी पड़ गयी है। सर्व-मुक्त शान्ति, और सहारयुक्त समाज में ही 'साम्य' सम्भव है।

स्वामित्व और नेतृत्व के प्रश्न एक-दूसरे से अलग नहीं किये जा सकते। दोनों एक ही हाथ में रहेंगे, दो हाथों में नहीं रह सकते। इस जगाने की यह तय करना है कि वे हाथ किसके होंगे। हमने 'पालिगणित' के नाम से तय किया कि वे हाथ साम्यवादी पार्टी के ही हों सचते हैं, क्योंकि वही शान्ति का वाहन थी, चीन ने नाम तो लिया 'पीपुल' का, लेकिन सौगा पार्टी को ही, यानी उसमें शान्ति का निर्णय और नेतृत्व किया था। सर्वोदय की शान्ति का नियम गाँव-गाँव की जनता के मुहूर्त है। जनता ने अपने निर्णय से शान्ति की पहल की है। इसलिए उसका ही स्वामित्व, और उसीका नेतृत्व होगा। ये ही नयी शान्ति के नये मूल्य। शैतन अभी मूल्य शक्ति प्रस्तुत हुए हैं, उनका बर्णनाय बाकी है।

ये प्रश्न ऐसे हैं जिनके बारे में बहुत सोचने-समझने, और बर्णना की जरूरत है। इसी दृष्टि से वर्तमान आन्दोलन की समीक्षा सक्षित देश की, विदेश की, कुछ नयी, कुछ पुरानी बातें प्रस्तुत की जा रही है। जाने और की जायँगी। तबतक यह विनम्र प्रयास इस ज्ञान के प्रस्तुत है कि दूसरे दिशाग चलेंगे, दूसरी पलमें उठेंगे। ●

जोड़ना है नयी-पुरानी पीढ़ी को

हमें नयी पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी को जोड़ना है। पुरानी पीढ़ी नयी पीढ़ी को मुक्त संसार का मोका नहीं देना चाहती, नयी पीढ़ी इनकी परवाह नहीं करती। वे इनकी भ्रमण समझते हैं, ये उनको धार्मिक पाँडों समझते हैं।

परशुराम भी नारायण का अवतार और राम भी। परशुराम पुराना, राम नया। नारायण का पुराना अवतार नारायण के ही नये अवतार को नहीं समझ सका। जब धनुर्धर हुआ तो रामभा कि यह नया अवतार है और वह उसके लिए अवरास छोड़कर चला गया।

पुरानी पीढ़ी के पाठ अनुभव-संस्कृत होता है। उसको नयी पीढ़ी के लोग छोड़ देंगे, तो प्रगति नहीं होगी। मूलिक के सिद्धांत में बुद्ध जोड़ने के लिए पहले उसे समझना जरूरी है। इसलिए पुरानी पीढ़ी का अत्यादर नयी पीढ़ी द्वारा न हो।

पुरानी पीढ़ी नये को समझदार मानती नहीं, तिरस्कार करती है।

गुणों का विरोध होता है तो बहुत हानि होगी है। इसलिए पुरानों के अनुभव और नयी के पराक्रम को जोड़ना है।

उत्पादकों का समाज

और

लोकस्वामित्व की बुनियाद

आगे आनेवाले समाज में जो श्रमिक होगा, वह उत्पादक होगा। उत्पादक और श्रमिक सभी होंगे, अनुपादक और केवल परिष्कृत न करनेवाला श्रमिकोंको कोई नहीं होगा। वह उत्पादकों का समाज होगा। जो उत्पादक है, वे उपभोगी होंगे, और जो उपभोगी है, वे उत्पादक होंगे। इसलिए इस समाज में औद्योगिकी की भी प्रविष्टि होगी और मनुष्य के भाव बीजादी का सम्बन्ध होगा। उत्पादक और अनुपादक, यह अर्थ के समाज का जो भेद है, वह नहीं रहेगा।

इस समाज में स्वामित्व का नया रूप होगा? मार्क्स ने 'डिस्टेरियाण आफ दी पालियारियन' का विचार रखा। उसके बाद राज्य और समाज एक हो जाता है। पार्टी और राज्य एक, पार्टी और समाज एक। टीका है यह विचार। लेकिन तानाशाही समाज में राज्य-स्वामित्व ही लोक-स्वामित्व है। उगम से लोकनायिक समाजों ने एक साम्य विद्याला—राज्य स्वामित्व नहीं होगा, लोक-स्वामित्व होगा। लोक-स्वामित्व विद्युत्का होगा, स्वायत्त संस्थाओं का; 'बाल्टरी एम्प्लोसिएन्स', 'कारपोरेसन'। इसे 'कॉन्सिस्टेंट सोसाइटी' कहते हैं। एक पालियारिट एक ही 'फंक्शन' के लिए। अलग-अलग मर्यादा समाज में है, अलग-अलग 'गणराज्य' के लिए, अलग-अलग नामों के लिए। उन 'कारपोरेट-सोन' का स्वामित्व रहता है।

ये कारपोरेटसम कैसे बने होंगे? अलग-अलग देशों में समाजवाद का अलग-अलग तरह से विकास हुआ। दम्नेड में एनर्जि से एक चीज निकली, जिसका नाम था कारपोरेसन। और कारपोरेसन के साथ-साथ दूसरा एक तरीका आया, जिसे 'कोन्सिस्टेंट-

विजम' सहकारितावाद कहते हैं। यह सब 'कलेक्टिविजम' के मुकामिले है। इगर्म में वेन्द्रीयकरणवाद में वे 'वेलफेयरिजम' कल्याणकारी राज्यवाद का एक दूसरा रास्ता आया। स्वायत्त संस्थाओं का सहकारितावाद आया और 'वेलफेयरिजम' आया। अब खाल यह है कि राज्य-स्वामित्व भी नहीं चाहिए और संस्थाओं का स्वामित्व भी नहीं चाहिए। हम पाटने हैं लोक-स्वामित्व। संस्थाओं का भी स्वामित्व क्यों नहीं? इसलिए कि संस्थाओं के स्वामित्व में से व्यवस्थापक समाज बनेगा। और व्यवस्थापक समाज 'कल्याणल सोसाइटी' में सार्वजनिक विद्याल नहीं होता। तो इसके लिए बिज प्रचार की मालकियत की आवश्यकता होगी? गांधी ने यह सोचा कि जो छोटे-छोटे क्षेत्र बनेंगे, जिनको हमने साम्य-स्वामित्व का क्षेत्र कहा है, इन साम्य-स्वामित्व के क्षेत्रों में जो जन-गण होंगे, इस जनताकि भी प्रातिनिधिक संस्था का स्वामित्व होगा। लेकिन स्वामित्व से यह मनलब नहीं है कि गांधी की मालकियत हो गयी, तो एक गांधी की जमींदारी हो गयी। इसका तो अर्थ यह होगा कि व्यक्तिगत जमींदारी की जगह साम्य-वायिक जमींदारी आ गयी। फिर हमारे गांधी में ज्यादा चावन् हुआ तो अमेरिका की तरह हम समुद्र में डाल देंगे, लेकिन गुप्तकों नहीं देंगे, या देंगे तो फिर गुप्तों दाम में देंगे, पीछे दाम में देंगे। लोक-स्वामित्व का अर्थ ही यह है कि स्वामित्व नहीं है ही नहीं। मनुष्य अधिकारी उपयोग का है।

दादा धर्माधिकारी

मनुष्यो का नियमन नहीं होगा, वस्तुओं की व्यवस्था होगी। लेकिन वस्तुओं की व्यवस्था है इगर्मा अर्थ ही यह है कि व्यवस्था जितनी है, उतनी भागी वस्तु। भागी व्यवस्था में अधिक जितनी चीजें हैं, उन पर व्यवस्था की अधिकार नहीं। लेकिन व्यवस्था के लिए जितनी चीजें व्यवस्था चाहिए, उतनी पर भी व्यवस्था व्यवस्था अधिकार नहीं है। व्यवस्था व्यवस्था की व्यवस्था पूरी नहीं होगी।

स्वामित्व किसका है? तो 'सबसे भूमि गोपाल की' जैसे कहें, जैसे ही हम कहेंगे कि 'महान्त ईमान की, दीलत भगवान की।' और भगवान से मतलब है मनुष्यमात्र की।

आज की दुनिया में, विज्ञान के युग में अगर मनुष्य दुली है, हीन है, दरिद्री है, तो उसका कारण यह है कि उत्पादन का बंटवारा नहीं होता। आस्ट्रेलिया में अगर आदमी कम है, और जमीन ज्यादा है तो क्या बंटवारा है कि वही लोग जाकर नहीं रहें रहने? अमेरिका और रूस में अगर अब अधिक है, और खानेवाले कम हैं तो क्या बंटवारा है कि यह हमसे खरीदना पड़े और दाम में भागना पड़े? उत्पादन होता है तो वितरण होता ही चाहिए और वितरण की कोई धरतें नहीं, आवश्यकता के सिवाय। आवश्यकता ही वितरण की योग्यता है, पात्रता है। ये धरतें भ्रम सभार में होनी चाहिए। मार्क्स की तीन प्रतिज्ञाओं में एक प्रतिज्ञा थी कि राज्य-संस्था विलीन हो जायगी। यह जागतिक राज्य होगा। राज्य रहेगा नहीं, जागतिक समाज बनेगा। उस राज्य में क्या होगा? प्रयासन मनुष्यों का नहीं, गिर्न वस्तुओं का नियमन।...

मनुष्यो का नियमन नहीं होगा, वस्तुओं की व्यवस्था होगी। लेकिन वस्तुओं की व्यवस्था है इगर्मा अर्थ ही यह है कि व्यवस्था जितनी है, उतनी भागी वस्तु। भागी व्यवस्था में अधिक जितनी चीजें हैं, उन पर व्यवस्था की अधिकार नहीं। लेकिन व्यवस्था के लिए जितनी चीजें व्यवस्था चाहिए, उतनी पर भी व्यवस्था व्यवस्था अधिकार नहीं है। व्यवस्था व्यवस्था की व्यवस्था पूरी नहीं होगी।

गांधी की मालकियता का अर्थ होता है मनुष्यमात्र की मालकियत, मानव समाज की मालकियत। किसी देश की मालकियत नहीं। तो ये साम्यराज्य और साम्यविचार अलग में गुप्त रूप है, फिर बुद्धत्व है। फिर-बुद्धत्व, 'वस्तुओं के गुप्तत्व'। हमारी एक गान्धी है, इसका मनुष्य का साम्यविचार है। साम्य स्वामित्व उसका मनुष्य का है।

यूगोस्लाविया : लोक-साराज्य का देश

पामदान और 'शाम-स्वराज्य के यूरोपीय संस्करण की एक भाँकी' मुझे यूगोस्लाविया में देखने को मिले। 'हज़की-सी भाँकी' बयोजि भारत की एवं यूगोस्लाविया की परिस्थितियों में दर्शन और चिन्तन में फर्क है, साथ ही हमने जिन साधनों पर चलकर साम-स्वराज्य की मजिद तक पहुँचने का फ़ैसला किया है, वेंसा कोई फ़ैसला यूगोस्लाविया ने नहीं किया था। परन्तु यूगोस्लाविया का रास्ता स्टालिन का रास्ता नहीं है, माओ का रास्ता भी नहीं है और चे गैबारा का रास्ता भी नहीं है। जनता स्वयं अपने सर्वोच्च और कार्ययुक्त का निर्धारण करे तथा उन कार्यक्रमों के अन्वये या तुरे परिणामों की जिम्मेदारी को स्वयं ही उठाये, इस नीति पर चलकर यूगोस्लाविया ने स्टालिन से विरोध मोल लेकर भी 'लोक-स्वराज्य' का प्रयोग किया।

'लोक-स्वराज्य' की योजना यहाँ 'डेलफ़-मैनेजमेंट' के नाम से जानी जाती है। खेत, कारखाने, बन्दर, स्कूल, चिकित्सालय, न्यायताल, बिजली पर भी राज्य का सत्ताधिकार नहीं और न 'स्टेट मैनेजमेंट' के लिए कोई अपाह है। काम करनेवाले जिगानों का भूमिहीन को कोई वेंदी-वेंदापत्ती राशि 'वेतन' के रूप में नहीं दी जाती। जिनका पैदा किया, जिनका कामया, उस हिस्सा से उपवर्गी प्रपना-प्रपत्ता रिस्सा मिल जाता है।

वेलेट देरने की उद्युक्तता उतनी तीव्र नहीं थी मेरे दिल में, जिनकी जि जिमी ऐगे प्रोजेक्ट को देखने को, जहाँ इस लोक-स्वराज्य का 'डेलफ़ मैनेजमेंट' का स्वरूप समझ सकूँ। इसलिए यूगोस्लाविया और ह्यरी की धीमा पर स्थित 'जिगाना' पार्क देखने गया और पार्क के अदृष्ट, ५५ वर्ग के उद्याही किगान भी उद्वेगान मिलान से बाँके करने का अदरक मिला।

उन्होंने बताया कि इस पार्क की उद्याना १६५५ में हुई। उनके पहले यहाँ के फामिस्ट भूमिस्वामी अपना के परिगम

पर अपना स्वार्थ साध रहे थे। युद्ध की सपत्ति और साम्यवादी क्रांति की उपलब्धा के बाद १० हेक्टर में अधिक की सागी व्यक्तिगत भूमि का राज्य ने राष्ट्रीयकरण कर लिया और पाँच वर्ष तक यह पार्क राज्य के हीथे निवेषण में था। चार हज़ार छह सौ हेक्टर के इस विशाल पार्क की सारी जिम्मेदारी, देखभाल, योजना, उत्पादन, वितरण, बजट आदि कृषि मंत्रालय के अधीन था। पार्क पर काम करनेवाले चार सौ आदमी प्रति माह अपना वेतन पाने थे और निविचन रहने थे। पार्क की जिम्मेदारी और जिन्ना से मुक्ति तो थी, पर पार्क में किसीको रिक्तपत्ती भी नहीं थी। एक लम्बी 'यूरोप्रेसी' और सरकार-निर्मिता का पदा पार्क में गले दर रत्ता हुआ था।

मनीज कुमार

मेरी उद्युक्तता बढ़ी। मेने यह जानने की इच्छा प्रकट की कि जब मेल्क मैनेजमेंट' काय, तैने और नये युग्म हुआ तथा उसके नया परिणाम थाये। उन्होंने कहा, 'मेल्क मैनेजमेंट गुन हुआ, तब हमे लगा कि अब क्रांति वेलेट में चलकर जिगाना पार्क पर पहुँची है। एक नया जीवन हमने आने चार सौ कार्ययुक्तों में देया। जो अबतक सरकारी पार्क पर काम करनेवाले धर्मिक मास थे, वे पार्क के अधिपति-परिचरक एक पार्क की उपलब्धियों के हिस्सेदार बाने वा रहे थे। स्व-माया का लोभसागन की यह योजना १९५० में प्रारम्भ हुई। प्रवेक घटत्य को लेकर 'पार्क एम्प्लोजे' बनायी गयी। इस एम्प्लोजे ने २ साल के लिए ३५ घरत्वों की कार्यकारिणी का चुनाव किया तथा ११ घरत्वों का व्यवस्थापक-मण्डल उस कार्यकारिणी में से बनाया गया। तैजि प्रारम्भ ने ही, घरत्वच कार्यकारिणी मण्डल 'जार्क एम्प्लोजे' हीगा और कार्यकारिणी एक व्यवस्थापक-मण्डल 'पार्क-

एम्प्लोजे' के निर्णयों के अनुसार चलेया, ऐसी नीति निर्धारित कर ली गयी।'

मेने बीच में एक निरा भौतिक रुकावट उठायी कि १९५० में इस पार्क का उत्पादन जिन्ना था और १९६० में जिन्ना था। यह मे जानना चाहूँगा या कि लोक-सागन के परिणामस्वरूप उत्पादन वितान बढ़ा है। उद्वेगान मिला। मुस्कानते हुए उठे और बुक-केल्क में से १९६७ की पार्क की रिपोर्ट निकालकर उन्होंने मुझे बताया कि १९५० में रेहुँ का उत्पादन एक हज़ार चार सौ टन था, तथा १९६७ में रेहुँ का उत्पादन नौ हज़ार तीन सौ बीस टन था। उत्पादन-वृद्धि का यह अंकड़ा निरचय ही मेरा समायान करनेवाला था। लोक-सागन की इस नीति से सरकार की भी आत्मी बहूत-सी उलभमें और परेजानियाँ बच गयी है। ये अपने पार्क की योजना स्वयं बनाते हैं। उदाहरण के तौर पर—इस साल 'जार्क-एम्प्लोजे' ने तय किया कि चार हज़ार पाँच सौ बिलोशाम रेहुँ प्रति हेक्टर पैदावार होनी चाहिए। अब बरिग काउन्सिल तथा विभिन्न विभागों में काम करनेवाले ५२ तकनीकी विवेयनों का यह काम है कि वे इस लक्ष्य तक पहुँचने के उपाय सोचें। सरकार तथा बैंक की रूहें पूरी मदद मिलती है। जिधर पर पर किसी बरारताने की चूण वेक तै मिल उपता है, उमी दर पर किसी पार्क की भी चूण मिल उपता है। फिर कार्ययाने के बने हुए गायान एवं पार्क से पैदा किये हुए सामान को बीसवीं में मनुष्यद रकमें में भी सरकार की मदद मिलती है, इस तरह सरकार की भूमिवा एक सहयोगी की भूमिवा है। मासभकारी बोवत-गडनि के बारे में गुणगारों, समायार, दर्यादि देनेवाले एक विचार की भूमिवा है, बाकी रोजमर्रा के काम में सरकार का कोई दखल नहीं है। भूमि पर कोई सरकारी लगान नहीं है। प्रवेक देवगामी पर एक ही स्तर का इन्डमटैरिज है, जो गयी है, कारखानेवादी में भी और पार्कवाली में भी, सरकार बहुत बरती है।

'जिगाना' पार्क में सत्यय काम के →

इसरायल : सामुदायिक स्वामित्व के प्रगतिशील प्रयोग

अधिकार को लक्ष्य मनुष्य बनादि काल से लगना आ रहा है। इस लक्ष्य के पीछे प्रेरणा स्वार्थ की बिलती रही है, उसमें नहीं अधिक परस्पर की रही है। इसलिए देश और जनता के न्याय के लिए नाहतरह की साहायता का अनुरोध है। अधिकार के दो मीदान रहे—एक राज्य, दूसरा भूस्वामित्व। प्रारम्भ में राज्य की लेकर बड़े बड़े युद्ध हुए। लेकिन उस समय भूमि की प्रतियुद्ध थी। भूमि के लिए युद्ध अगर करना था तो प्रश्रित से। मनुष्य जगल शाक करता था। बहुत बड़ा पराजय का वह। पीरे पीरे परिस्थितियों रदती। साथ ही बड़ी। भूमि के लिए चीना भाटो गुन हई। इन्हीं से राज्य तथा देश की सीमाएँ बनीं।

एक देश नि सहाय है कि अंततः वह युद्ध कर नहीं सक्ता। इसीलिए सभ्य और राज्य की स्थापना की गयी। और इसीके माध्यम से अपनी स्वतंत्रताओं की भूमि मनुष्य करता सा रहा है।

न्याय तथा न्याय के लिए राज्य बना। इन संस्था ने मनुष्य को बड़ी बड़ी तब में की। पर मनुष्य के स्वार्थ के बावजूद ईश्वर को पर ही भू-हूँ हई कि उसे मिटाने में ही पुरो तक लगनी पड़ी। इन भू-भूमि में

→ चण्डो की विनती महीने के अंत में बरके बराम ने चण्डु स्वर्ण के लिए शर्मण्ड से पैसा उठा लेते हैं, पर असली बेलेंग साल के अंत में निजाला जाना है और काम के चण्डो के अनुहार कुल उपायन सभी चरणों में बाँट दिया जाता है।

दिने १० साल से वह प्रयोग चल रहा है। जिसका फार्म दो एक नग्रा है सारे देश में यही यन्त्र अपनायी गयी है। धारन माल में धारणा और काम स्वराज्य की माश में यूरोपेलीदा के अनुसर 'मोल के पत्थर' की तरह यद्गोनी हो।

(अर्थ, २१ '६८)
भूदान यत् ' भूस्वकार, १ जून, ६८

धारन स्वामीयक महत्व की भूल है—भूमि के अंतर व्यक्तिगत स्वामित्व की स्थापना। बर्बाद शीमें से फिर अथ सांग सामाजिक सुरासर्वा पनवी।

इस मूल का मिटाने के प्रयास में स्व ने वृत्त की हांसा गयी, चीन ने लापो शशी को भीत के पट उतारा। इतना ही नहीं, बल्कि उधने तो गु अक्षर तक को अक्षी पार किया। दुनिया में हर जगह यह समस्या खोपौर दिखाई दे रही है। इस समय के समाधान के दो रास्त आगामे बने। एक, शास्त्रवारी और दूसरा, प्रजा तांत्रिक। प्रजातांत्रिक दिशा में भी अहंदा माग सामदान आ-वाहन के रूप में सामने आया है।

दुनिया में तीन प्रकार के लाग है। एक तो व जो दुवरो की भूज न हो भीवने

रवीन्द्रनाथ उपाध्याय

है, दूसरे वे जो आसर्ग भूज उ पाया है, तीसरे व जो किसी भी हासज में स्वयं नहीं सीलते-छिछाये जाते हैं।

साम्यवादी देखा की जनता ने सीवरी से स्वकार किया, जो वह विषाये जाने के रास्ते गयी। भारत की जनता अपनी मूल के धीमहर सुधार कर रही है। इन दोनों के मित्र दमराज्य ने आने को रखा। और दूसरी की भूल से मिना लेकर अपनी भूमि व्यवस्था की।

यहूनी लोग दो हजार वर्षों से दमराज्य से बाहर लदेते हुए हैं। वे दुनिया भर में फैलकर व्यापार करते हैं।

अब इसरायल की पुन आना देग बनाने का अवसर मिला तो उन्हें दूसरा की भूज में लिया की और व्यक्तिगत स्वामित्व की जगह सामुदायिक स्वामित्व की स्थापना किया। भूमि की मालिकी दूरे देश की एक वैश्वकारी सरणा (केनेल बेनेग) के हाथ में की, जो भूमि की

अलग-अलग बरिगो ने सुपुर्न करतो है, तथा आवस्यक धन में सहायता करतो है।

दमराज्य में ३०० के लगभग एने गाँव वने, जहाँ सभी मिश्रण वाली धारणा तथा सामना के अनुहार काम करत है और वाक-व्यक्त के अनुसार उपमाग करत है। दूर से मुननेवाले तर्ह-तर्ह की सजाएँ तथा विगसाएँ व्यन करते है। पर वहाँ जाकर देलने से यह महज मानून जाना है। उपस्वार्द हर उपस्था में आती है और उनका निर-करण हाता है। व भी पैसा ही करते है। एलिन इनता ० होनी किया है कि व्यवस्था की बम स नम आवस्यकता रह जाय। उग प्रकार की बलियो काम 'किडुज' (सहजीवी जननी) दिया है। किडुज' हिरू पन्त है। इसका अर्थ होता है—'सहजीवी बस्तो'।

पूरे गाँव क व्यवस्था की उमा होनी है। यह उमा प्रति सहाह वैदती है, और खेती तथा गाँव के अन्य कारे काम की याचना बनती है। अपनी योगता तथा गाँव की अवस्था का के अनुवार लोग काम करते है। ऐसी में काम करनेवाली खेती में, मायनास्य-वाले भोजनानलय में, पुगार्ईसले गुजार्द-परा में मिश्र विद्यालय में चिन्तक चिन्तकालयो में कामना जाना काम करने जाते है। इस प्रकार लोग आभी-आनी काम की योजना बनाकर काम करत है। वहाँ दूरी बानन मुक्ति भी रहती है। पंते की विषीको आवस्यकता रही पनवी। उपपर पर भोजनानलय में जाकर भोजन कर लिया, चिन्तकालयो से दया ले ली, स्टार में बनते ले सिने, आदि। यहाँ तक कि पत्थालन ने पत्र से दिया, आवस्यक शान टिक्ट दवार में लगाकर पत्र का डाक में डाल दिया। इस प्रकार गाँव के जीवन में हमे की कोई आवश्यकता ही नहीं रहने दी है।

भूमि सरोपने वा विधो करने की बस्तु है, यह में लोग नहीं जानते। राष्ट्रीय स्तर पर केनेल बेनेग (राष्ट्रीय शो) भूमि प्राप्त कर गाँव को दे देता है। और गाँव के लोग अपने टग की व्यवस्था करते है। इन बलियो ने बनाने में व्यक्ति

ईवातन्त्र्य का भी पूरा ध्यान रखा है। ऐसे लोग भी उस देश में हैं, जो ज्यादा आजादी चाहते हैं। अतः समय से काम पर आये, ऐसे खुद की इच्छानुसार कार्य करेंगे। ऐसे लोगों के लिए आजादी है कि वे अपनी पसन्द की दस्ती बनायें। इन लोगों में जो बस्ती बनायीं, उसमें जमीन को जॉन्स (Holdings) बनाकर परिवारों को बाँट दिया। परिवार खेती करता है और गाँव के विद्यालय, चिकित्सालय आदि के लिए उत्पादन का एक निरिवत अंश देता है। खेती मजदूर तो नहीं करा सकते। बीमारी आदि के कारण काम करने की स्थिति में नहीं रहते पर गाँववास से रहना होगा। ग्रामसभा काम करा देगी और उत्पादन में से बाटकर काम करनेवाले को चुकाने की जिम्मेदारी भी ग्रामसभा की होगी। इन बस्तियों का नाम 'मोसव आरहिम' है। यहाँ भी आवश्यक शिक्षा मनोरंजन, चिकित्सा आदि सबकी सुव्यवस्था मिलती है, और खर्च का बोझ प्रत्येक परिवार पर उसकी आय के अनुसार पड़ता है। जमीन बेचने का विषयको अधिभार नहीं है। इसका बंटवारा भी नहीं हो सकता। धर्म उदारित बरतुरे, अन्न, पशु, पक्षी आदि बाँट सकते हैं या बेच सकते हैं।

इनके अलावा तीसरे प्रकार की बस्ती उन लोगों ने बनायीं, जो उत्पादन में तो किबुस की पद्धति चाहते थे, पर उपयोग व्यक्तित्व पसन्द के अनुसार करते थे। उस प्रकार की बस्तियों को 'मोसव चानूकी' कहते हैं। इन तीन प्रकार की बस्तियों में हर गाँव की व्यवस्था में भी कुञ्ज-कुण्ड अन्तर है। पर भूमि की मालिकी समुदाय की है, सरकार की नहीं। रोज के जीवन में सरकार का दखल नहीं है। इनका बड़ा हस्तक्षेप ही या सरकारों आन्दोलन होने हुए भी हमरायत-सरकार के सहकारी विभाग में रजिस्ट्रार से लेकर खपसमी तक की कुछ संस्थाएँ एक दर्जन से ज्यादा नहीं हैं।

वना यह सब भारत में भी हो सकता

है? या अन्य देशों में भी सम्भव है। मुझे भरोसा होगा है कि हाँ, यह सम्भव है। पर सरकारी चक्रुल से भूमि का मुक्त होना इसकी पहली शर्त है। ग्रामदान का यह पहलू बड़े महत्व का है कि सरकार को आवश्यकता भूमि के सम्बन्ध में करीब-करीब समाप्त हो जाती है।

बसरायल की परिस्थितिवाँ भिन्न रही है। उन्होंने नये सिरे से देश बसाया है। भारत की परिस्थिति भिन्न है। अज. राठवा और उसके स्वरूप में भी अन्तर होगा। पर यहाँ भी अखिल भारतीय स्तर पर गैर-सरकारी समूह हो सकता है, जो गाँव-गाँव तक फैला रहे, कृषक तथा अन्य मजदूरों के हक़ों का संरक्षण करे, परस्पर-सहकार का माध्यम हो, तथा साथ-साथ जिम्मेदारियों को

भी उठाये। जिस प्रकार दसगायल का मजदूर-संगठन 'हिस्साकुत'-राष्ट्रीय स्तर पर काम करता है। हर राजनीतिक दल के लोग अपना राजनीतिक भेद भूलकर यहाँ मिलते हैं, और मजदूरों तथा कृषकों के हक़ों की रक्षा के साथ-साथ उनके लिए रोजगार का नियोजन करते हैं। इस प्रकार अधिभार और कर्तव्य की भावनाएँ समानान्तर हैं। भारत के मजदूर-समूहों में आपूँ ही इस तत्त्व को लागू चाहते थे। अहमदाबाद के मजदूर-आन्दोलन के अन्तर पर इसे स्पष्ट किया था।

सूत्रामित्तव को सामुदायिक मालिकी में सम्भावनाएँ हैं, जो सरकार को जनता के नियंत्रण में लायेंगी। जनता सरकार मुसोपेक्षी न होकर स्वाभवी तथा खुद के परामर्श पर विस्थाप करेगी। ●

ग्रामदान-प्रग्रन्डदान-जिलादान

भारत में		बिहार में			
प्रान्त	ग्रामदान	प्रग्रन्डदान	जिला	ग्रामदान	प्रग्रन्डदान
बिहार	२२,४५०	१५२	शुणिया	८,१५७	३५
उड़ीसा	८,८७६	३६	दरभंगा	३,७२०	४४
तमिलनाड	५,१६५	४६	मुजफ्फरपुर	१,६८४	२३
उत्तरप्रदेश	५,१६८	२४	मुंगेर	२,११८	१८
अंध्र	४,२००	१०	हजारीबाग	१,२४०	४
पंजाब	३,२६६	६	गया	१,१२६	१
महाराष्ट्र	३,१२६	११	गयाल परगना	८३६	२
मध्यप्रदेश	२,७०५	७	सागर	६६०	६
असम	१,४६३	१	पलामू	६३४	५
राजस्थान	१,०२१	—	मृगधर	४६७	२
गुजरात	८०३	३	भागलपुर	४४८	३
बंगाल	६४६	—	शिवभूमि	३२७	४
केरल	५०६	—	धनबाद	३१७	१
कर्नाटक	३२५	—	दादरबाद	१०३	१
दिन्की	३६	—	धनबाण	७८०	—
हिमाचल प्रदेश	१७	—	रोपी	६६	—
			परना	७८	—
	कुल : ४६,७७२	३०३		कुल : २०,४४०	१४२

विनोबा निवास, २७ मार्च '६८

—शुभगात्र मेदना

सोचियत संघ :

सरकार-नियंत्रित सामुदायिकता

सावित्त सघ की सम्पत्ति पट्टी के कायम के अनुसार सम्यक्साय सव रिमान का भूमि देता है। खेती की उल्लिखित में उनको सहयोग करता है। उनको प्रेम के प्रयत्नों को उनको ह्दय के मुक्तिक सहकारी सघों में समाहित करता है। उन्हें आधुनिक इति मशीनों तथा कृषि ह्दय द्वारा सुविधाएँ पहुँचाना है। उनके धन का अति उल्लिखित नवाता है और भूमि की स्वतंत्रता में वृद्धि करता है।

बोल्लोज़ और सारराज

कोल्लोज़ द्वारा सामुहिक काम का इति आरंभ और सोवियत यानी रासविय काम। बड़ी तर्क उनके सामाजिक तत्त्व का सम्बन्ध है। एक-दूसरे से मिल गये हैं। व छोटो छोटो रिमान काम के सम्यक्साय पुनर्स्थापन की प्रक्रिया के दौरान व सगठित विधेयों है और वे सामाजिक सम्पत्ति को परलक्ष्य पर आधारित है—सहकारी सामुहिक सम्पत्ति और रासविय (साव्यविक) सम्पत्ति।

सामे में भूमि बनाने की साधारण साधारण साधन में सामुहिक धारों का प्रारम्भिक रूप थी। इन सम्पत्तियों में जा रिमान सामिल होने से व प्रायः अन्ती भूमि और बनने धन का सङ्ग्रह कर लने के सून बगदों पर खेती के जालधरो और कोल्लोज़ का था सङ्ग्रह हो जाता था। उन सारराज के सम्यक् सामुहिक भूमि का सामे के उल्लिखित नवनों और खेती के क्षेत्रों द्वारा सामुहिक रूप से जोवन खेती से। काम की विगत और साधा व अनुसार व सार रिम नाम का जाता था।

ऐसी सम्पत्तियों को आधुनिक का एक साधन टुम्बर (रुमर इन) तथा इति का सम्पत्तिक सम्पत्ति नवने नव लय था। जैसे जैसे इन सम्पत्तियों का विकास हुआ और सव उद्योग एक जव सार पर पहुँचा वने-वने उनका रूप इति क्षेत्रों में बदल गया और रासविय ह्दय पर सामुहिकता

लक्ष्य होने के पश्चात् बहुत जल्द सहोते सोवियत सघ के देशकी सेवा में सामुहिक उद्योग की एक अ पारभूत पत्र हस्तिल कर ली। सामुहिक कोल्लोज़ व स्वर में बड़े इति अतल है जो रिमाना को स्वरुद्ध के मुक्तिक सगठित करत है। इति-भोज में व उल्लिखित सहकारी सघ की सविय सम्पत्ति है।

वाल्खाना ना जाधिक और व्यवस्थाम्म आधार

सामिल—कोल्लोज़ उल्लिखित के साधना के सामुहिक स्थापित और अपने सङ्घना के सामुहिक रूप पर आधारित है। वे सघ के वारने नियुक्त उद्योग के लिए प्राप्त साधन ज नरक भूमि पर खरी करत है। इति अतल के प्रतिमान नियमा के आधार पर अपने सङ्घना को काम वरक में निष्पत्ति नियमा

अवय प्रसाद

के अनुसार प्रत्येक कोल्लोज़ का कायवलय नियमित होता है। इन प्रतिमान नियमा के अ पारमन सिद्धांतों को वृष्टि सावियत सरकार द्वारा भी जा चुकी है।

कोल्लोज़ों की पन्वार साव्यविक पराति होता है। इन सङ्घना के आधार के मुक्तिक के पन्वार का एक प्रायः गम्य को खेव देते हैं और उनका एक प्रायः गम्य काय अयव्यवस्था को विगत करने और एक प्रायः सामुदायिक सभा व सौ में लगते हैं। निम्नो सब के लिए सामुहिक धारों का नियत रूप साव्यविक धारों का म लगे हुए सम्पत्तों के काम की साधा और विगत के अनुसार नवने का जानी है।

कोल्लोज़ का साधारण काम अरक द्वारा निरिक्त विधेय ह्दय नियम के अनुसार उद्योग सम्पत्तियों का उद्योग विधेय साधना रमनेशाल क मा मे ही खेव पर काम लिया जा है। निम्नो सङ्घनापर परिनिधि म सङ्घने देकर सङ्घना काम पर लपाये जाते

है अर्थात् उद्य सघप वव अयव्यवस्था काम पन्ना अयव्यवस्था है नि वरु निरिक्त समय के अन्तर पूरी सक्ति लगाने पर भी कोल्लोज़ के सदस्यों द्वारा पट्टी पूरा किया जा सकता।

सामुहिक खेती रिमान के निम्नो ह्दय को मारा जाता था सङ्घ के ह्दय के सम्बन्ध कर देतो है। सामुहिक खेती इति उल्लिखित में सुधार और वृद्धि करती है और पूरे सभा के लिए वृद्धि ह्दय गिद्ध हातो है।

सामुहिक स्थापित व अ अतपन का लमाय हो रिमाना की अय नो के प्रथम प्राय है। यह कि सोल्लोज़ परिनिधि में वृद्धि निम्नो खेत सम्पत्तियों को रिमाना की अयव्यवस्था पूरी करने में सहायक होते हैं। प्रथम परिवार के प्राय यो, या निम्नो खेव लोसा है रिमाना अयव्यवस्था और विगत पर रिमान विगतने जानवर रम मरना है। यह नियमा द्वारा निष्पत्ति कर दिया गया है। सन् १९६३ में कोल्लोज़ के रिमानों (१६१ लाम परिवार) के निम्नो खेती का तुल सङ्घना ५१ साल हेक्टर या रिमन ५२ साल हेक्टर इत्ये भूमि थी। अने निम्नो सभा में रिमान सम्पत्तियों पर अने दूध वगदर पन्ना करने हैं बिना सामुहिक काम अरक तर्क पर्याप्त मात्रा में नहीं पन्ना पाये हैं।

कोल्लोज़ों का रिमान का मुक्तिक साधार उल्लिखित का सम्पत्ति है। सामुहिक रूप से तुल के सारों में साधारण पूरा गाव एक कोल्लोज़ में गाविल होता था वने गाव के लिए वरु कोल्लोज़ वन गिद्ध ज वने थे। सन् १९६२ में एक सारराज में अयव्यवस्था ७१ परिवार ५४४ हेक्टर खेती की सामुहिक सन् ५२ गाव वल साविय है। सन् १९६३ में एक कोल्लोज़ में अयव्यवस्था ५११ परिवार और ५६६ हेक्टर खेती की सामुहिक सम्पत्ति सामुहिक स्थापित में ६४४ गाव-वलय आति थे।

सहकारी इति मरणाएँ हाते के कारण कोल्लोज़ों का प्रथम जनसङ्घना गरीब म होता है। कोल्लोज़ क इत्ये की काम अरक सारराज का सङ्घना प्रकथित निम्नो है। नियमों के अनुसार काम अरक हो टर

कोलमोज के साथ मगला को तय करने के लिए प्रायश्चित है।

सोवसोज में उत्पादन-व्यवस्था

सार्वजनिक (राज्य) स्वामित्व पर आधारित सोवसोज बड़े-बड़े इपि-उद्योग है। सोवसोजों के उत्पादन के साथ ही उनकी सारी पैदावार सोवियत राज्य की संघदा होती है।

देश में सोवसोज मुख्य समाजवादी उद्योग है, जिनके विभिन्न सार्वजनिक क्षात्र-व्यवस्थाओं की पूर्ति के लिए उच्च कोटि की इपि पैदावार उत्पन्न करना तथा कोलसोजों के लिए सामाजिक उत्पादन के प्रगतिशील, वैज्ञानिक और आर्थिक दृष्टि से लाभदायक तरीकों और धन की उच्च उत्पादन-क्षमता का नमूना पेश करना होता है।

सोवसोजों का प्रथम आर्थिक स्वावलम्बिता के सिद्धान्त पर आधारित है। अपनी पैदावार सरकार के हाथ निष्पक्षित दामों पर बेच देने के बाद उत्पादन और बिजली का सर्व शोरसोजों को वापस हो जाता है। अपने उत्पादन को सोवसोजों लाभकर बनाने का प्रयत्न करते हैं। मुनाफे का एक हिस्सा उन्हें पैदावार में वृद्धि करने तथा सोवसोजों के मजदूरों तथा कर्मचारियों के जीवन-स्तर और उनके सांस्कृतिक प्रतिमान को ऊँचा बनाने के लिए मिलता है। मुनाफे का बाकी भाग केन्द्रीय स्तरों के से राज्य के बजट या सम्बद्ध आर्थिक निकायों द्वारा बँट जाता है।

सोवसोजों को अपने कार्य-काल को लाभकर बनाने के लिए पूरी-पूरी आर्थिक स्वतन्त्रता प्राप्त है और उन्हें आवश्यकतानुसार राज्य के बराबर आर्थिक और सापेक्षता की सहायता मिलती है। सोवसोज प्रशासन मजदूरों और कर्मचारियों की नियुक्ति करता है, उत्पादन और आर्थिक योजना पूरी करने में क्रियाशील रहता है और पैदावार की विपरीत ब्रादि प्राबन्ध करता है।

राज्य से प्राप्त धन द्वारा सोवसोज का चालू खर्च पूरा होता है। फलन स्टाक की बमूरी का दाम चुकाने के लिए ऋण की

चीन का कम्यून : दलवादी समूहीकरण

वर्ष सपथे, उत्पादन-वृद्धि, तथा समाजवादी प्रयोग। चीन इन तीनों का मेल गिलाना चाहता था। उद्योग बोधिम में 'कम्यून' का जन्म हुआ।

देश में हर नागरिक को किसान, धर्मिक, सिपाही और विद्यार्थी (मात्रो द्वारा दिये गये साम्यवादी सिद्धान्तों का) एक-साथ बनाना था। माना गया कि कम्यून द्वारा ऐसा करना सम्भव था।

प्रति व्यक्ति औद्योगिक ५ बिस्वा मूमि, जनसमूह अति अधिक, भूमिहीनों और छोटी जेतनाले उत्तर प्रतिगत, पूँजी का अन्ध व, विचारों के साथ नही, खेती अत्यन्त विपरी

एक विद्यार्थी

हृदय—समस्या की कि एसी पत्नी वैसे उठायी बाप ? खेती की उत्पत्ति एक ओर, तथा वही, बुनियादी उद्योगों का प्रदन दूसरी ओर, दोनों को मिलाकर सैनिक-राजिन के लिए साधन जुटाना था और देश के लाखों-लाख युवकों को सैनिक-प्रशिक्षण तथा साम्यवादी दर्शन में दीक्षित करना था। यह लक्ष्य अत्यन्त काम था, लेकिन कोई-न-कोई सरता रकम खर्च की जाती है। सरकार द्वारा सोवसोजों को दिया जानेवाला धन सोवसोजों के अत्यन्त उत्पादन और उसकी कार्य-व्यवस्था में परिवर्तनों के अनुसार निरिधत दिया जाता है। अन्य उद्योगों के साथ सोवसोजों ठीको वही व्यवहार रहता है। और अपना काम इन ठीकों के आधार पर चलाता है। वह राजकीय त्रय-नेत्री में भी पैदावार पहुँचाने के ठीके लेता है। सोवसोज की आर्थिक व्यवस्था और राज्य के साथ उनके आर्थिक सम्बन्ध बराबर उत्पत्ति कर रहे हैं।

राज्य के अधिकार में अन्य उद्योगों की तरह सोवसोज भी अपने मजदूरों और कर्मचारियों के काम के सुसंचालन तथा उनकी सांस्कृतिक उत्पत्ति और बहवाण की

निहायना हो था। सन् १९५६ में साम्यवादी साधन के कवम होते समय सरकार की राक्षि नहीं के बराबर रह गयी थी। साम्यवादी साक्षात्कारियों के पास उनकी साक्षात्कारी सेवा थी, मुख्य ये, हर बक दमने के लिए तैयार अचूक बन्दूक थी, और था मरीचों की सम्भावना का अपरिमित बल।

सन् १९६४ के बाद सात-आठ वर्षों तक 'परस्पर सहयोग' (म्युचुअल एड) तथा सहकारी समितियों संगठित करने की नीति हुई, लेकिन ग्रामीण विकास की कुँजी नहीं मिली। अन्त में विचारों की सामने रखकर आहू, पोखर, पदम, सालाब आदि के निर्माण का देश-व्यापी अभियान शुरू हुआ। गाँवों की सारी भवन-रक्षि जुटा दी गयी। जगह-जगह मजदूरों की टोलियाँ साप रहने और काम करने लगी। दिन-रात भी मेहनत से खेती के साथ पानी के साधन तैयार होने लगे।

साथ काम करने, और करो-कहो साथ रहने और खाने-पीने के सन्दर्भ से 'समूहीकरण' का विचार पनपा। अल्प-अल्प मेहनत करने से क्या होगा, और अल्प देखरेख के लिए, उनके सहयोग के साथ एक प्रधान व्यक्ति द्वारा प्रबन्ध के सिद्धान्तों के अनुशासन करते हैं। सोवसोज का प्रधान अधिकारी संचालक होता है।

सोवसोज की साधारण और उनके पशु-पार्थम्य उत्तरोत्तर आर्थिक स्वावलम्बिता के आधार पर चल रहे हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि उन्हें अपना खर्च खुद पूरा करना होता है और साथ-साथ मुनाफा भी दिखाना पड़ता है, जिसका एक भाग मजदूरों को उनकी सामान्य मजदूरी के अलावा, मिलता है। उससे अर्थव्यवस्था में तरफती होती है और लोगों में कार्य की ओर अनुप्रेरण उत्पन्न होती है।

[व० अन्नामोव : 'इपि की अर्थ व्यवस्था तथा उसका संगठन' के आधार पर प्रस्तुत।

भूतदा-यज्ञ : शुक्रवार, ७ जून, '६८

और उसकी सरकार ने हाथ में ही रहे, जैसे हमेशा थे, लेकिन वे अब अधिक अव्यक्त हो गये।

चीन की खेती टभी नये ढंग से हो रही है। कामूना का डोना कायम रखा गया है। वम्पून और रिपेड का काम है, नीचे की उत्पादन-टीभी की मदद करना। लेकिन मधुद्वीकरण की नीति हमेशा के लिए छोड़ दी गयी है, ऐसी बात नहीं है, 'निजी प्लट' और निजी बुरक उत्पादन के द्वारा पूँजीवादी तत्त्वों के लौटने का दर है, हालाँकि सहकारी समितियों द्वारा खरीद-बिक्री की व्यवस्था है। यह भी बोधित चल रही है कि निजी उत्पादन भी अधिक-से-अधिक 'सामूहिक' ढंग से हो। समाजवादी लोक-शिक्षण पर बहुत जोर है। पार्टी के सदस्यों को आदेश है कि वे नियमित रूप से जनता के साथ उठके 'धम' में सरीक हो, ताकि साम्यवाद। पहले वे कुछ घनी और बड़े किसानों के पास उत्पादन की जो प्रतिभा है, उसका इस्तेमाल निर्माण में होना चाहिए, हमारी विस्थापित निर्माण में कीजा है, लेकिन कोमिया है कि मशीन और निम्न गण्यप वर्ग के क्षेत्रों को जपारा यथाया दिया जाय और उन्हींको आगे बढ़ाकर पूँजीवादी तत्त्वों को समाप्त किया जाय।

मेनी में मेन और मेनिहर का क्या सम्बन्ध हो, जनता और पार्टी का क्या सम्बन्ध हो, मशीनीकरण का क्या स्वरूप और सीमा हो, आदि प्रश्नों पर बराबर म्यान चल रहा है। परिस्थिति में सीलने की उपायों है, लेकिन साम्यवाद के आदर ही।

चीन के अनुभव सभी मेनिहर देशों के लिए उपयोगी हैं। उगमें कुछ आनाने लायक है, कुछ नये द्योड़ने लायक। उनके त्रिविध रूप है : वर्ग-घर्षण, उत्पादन और जीविका, साम्यवादी प्रयोग। हमारे-उपके दूसरे और तीसरे उमान हैं, लेकिन हमारा तरीका वर्ग-घर्षण का नहीं हो सकता। हब वर्ग-विमर्जन के अन्तर्गत में लगे हुए हैं। यह अन्तर निम्नने में एक है, लेकिन यही तो सब कुछ है ! ●

राजनीति-मुक्त अधिकार और दायित्व

प्रश्न : राजनीति से मुक्त रहने का मतलब क्या बोट न देना है ? यह तो मनुष्य के 'फ़ाउमंडल राइट्स' पर बन्धन है।

विनोबा : आपका हक है, इयमें कोई शक नहीं। आपकी 'उपुटी' क्या है, यह आप तय कर रहे हैं। मुझे भी हक है 'इलेक्शन' में भाग लेने का। 'कान्स्टीटुशन' ने अधिकार दिया है। मैं उसका उपयोग करना ठीक नहीं मानता। उससे ऊपर उठना चाहता हूँ। तो हक है, यह छोटी चीज है। हक तो बेवकूफ को भी है और बकलवाले को भी है ! बकलवाला तय कर रहा है कि मैं नहीं बहूँगा ! मैं शोर बहूँ ? आपको कोई मारने के लिए आया, तो 'सेल्फ-डिफेंस' के अधिकार से उसको मारेंगे, या आप गुलत नहीं करेंगे, लेकिन मैं बहूँगा कि बुल्लगिन के माते आपने ठीक नहीं किया। आपकी तो योग्य बिरत को ध्यान में रचना चाहिए। बेम से सम्माना चाहिए और आवश्यकता हो तो मर मिटना चाहिए। 'सेल्फ-डिफेंस' के अधिकार का उपयोग करना आपका हक है, लेकिन वह इस्तेमाल नहीं करना चाहिए ! आपकी इच्छान में सड़े होकर, मुष्मसवी बनने का भी हक है, लेकिन सोचना यह है कि मुष्मसवी बनने से आकी हृमियत उँची होगी है, या आप त्रिष हैशिवत में है, उसीमें जैने होने है।

प्रश्न : हमारा अवर न पड़ा तो ?

विनोबा : अवर न पड़ा तो तपस्या बढायें। शब्द-शक्ति का यह उपाय है। शब्द-शक्ति कम पड़ने के तीन कारण हैं : १—तपस्या की कमी, २—'प्रिमाईज' शब्द बोलना आता नहीं, और ३—समझाने का स्तर बना नहीं। अवर ये हो, तो रूप बहेने 'ग्राई जेन'। ईसा मसीह से पूछा गया कि एक बार क्षमा करने से शाननेवाला न माने तो क्या करें ? तब उन्होंने कहा कि मैं फिर से क्षमा करूँगा। फिर नहीं माना, तो फिर से क्षमा करूँगा। कितनी बार ? तो कहा—'किंव्दी टाइम्स सेवन (सात गुना सत्तर दफे)। और कहा कि क्षमा-मन्त्र ऐसा है कि काबिर उसमें आप कामयाब होगे ही। यह थड़ा ईसा मसीह ने दी। चक्राचार्य से पूछा— आप समझेंगे, और कोई न समझने ? तब उन्होंने कहा कि एक बार समझने में, न समझा तो दुबारा समझाऊँगा, दूसरी बार न समझ, तो तीसरी बार समझाऊँगा, चौथी बार समझाऊँगा, और समझता ही रहूँगा। यही मेरा धर्म है। और किसी शब्द पर मेरी थड़ा नहीं। शोर काँटे न गमके, तो गोबूँगा कि समझाने की कुशलता बढावों है।

[भालगुर विद्वत्विद्यालय के प्राध्यापि आदि मे दिनांक ६-३-६० को हुई चर्चा में]

गुलता का संकल्प

बम्बई विद्वत्विद्यालय के उपकुलपति डा० गजेन्द्रगडकर के आह्वान पर बम्बई महानगर में १६ मई में २४ मई तक विद्वत्विद्यालय के प्राध्यापकों और छात्रों का एक अग्निल भारतीय निविर आयोजित हुआ, जिसमें भाग ले विभिन्न विद्वत्विद्यालयों के ५०० प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

२४ मई को (निविर-समापन के दिन) डा० गजेन्द्रगडकर के नेतृत्व में सभी प्रतिनिधियों ने विचारों और हृदय निवेदन के साथ भारत की एकता और आजादता की रक्षा करने का संकल्प लिया। प्रतिनिधियों ने औद्योगिक जीवन-शक्ति, वायु-सम्पन व्यवस्था, धर्म निरपेक्षता और साम्यवादिष्ट सम्भावना को मुद्दु बनाये का भी संकल्प किया। इसके साथ-साथ उन्होंने विद्वत्विद्यालय-यागण को मनुष्यिक शक्ति में अलग रखने के विचार को बन्तुल किया और राजनीतिक दलों को यह सम्झाने का निवेदन किया कि वे विद्वत्विद्यालय के छात्रों को राजनीतिक दाय-धर्म का साधन न बनायें।

व्यक्ति, गाँव और समाज : नयी भूमिका में

आजारी नीचे गुरु हानो चाहिए। हरक गाँव में प्रजातन्त्र या पंचायत का रात्र होगा। उसके पाप प्रो सता और साकत होगी। इसका मतलब यह है कि हरेक गाँव को अपने पाँच पर सजा रहना होगा।
 ऐसा समाज अनिश्चित गाँवों का बना होगा। उसका नेलाज एक के ऊपर एक का दम पर नहीं, बल्कि
 सहरों की तरह एक के बाद एक का बल में होगा।

समुद्र की सहरों की तरह जिनकी एक के बाद एक घेरे की शक्ति में होगी और व्यक्ति उसका सम्बन्ध
 होगा। यह व्यक्ति हमेशा अपने गाँव के प्रति मित्रता की तैयार रहेगा। गाँव अपने आस-पास क गाँवों के लिए
 मित्रता की तैयार होगा। इस तरह आस-पास समाज ऐसे लोगों का बन जायगा, जो उठान बनकर कभी किसी पर
 हकला नहीं करते, बल्कि हमेशा तय रहने हैं और अपने में समुद्र की उम्र मानने में मग्न रहते हैं, जिससे वे एक
 अविश्राम बन हैं।

गणसत्तकत्व : प्राचीन परम्परा

में मानता है कि गणसत्तकत्व की महिमा भारत में प्रचलित होगी और ध्यान में आया कि बड़े बड़े नेता भी
 महामुल्य होते हैं, महामुल्य गणसत्तकत्व ही हो सकता है। उनमें नेतृत्व के लिए स्थान ही नहीं।
 मेरा जो चिन्तन का दम है, उसमें थोड़ा मतभेद प्रकट करते हुए हमारे एक साथी ने कहा कि गाँवों की सगठन
 (कार्यवाहक) में विद्वान्तर करते थे, पर बाबा नहीं बना। साधर इन्हीं कारण से हमारी चर्चा प्रकट नहीं हो
 रही है। फिर आपका एक प्रसिद्ध वाक्य उद्धृत किया 'आपादनेन इव वि टेट आकान्त-वायले-य'—महिमा
 की कमी ही संकट में है। लेकिन इस वाक्य का अर्थ लोग जिस तरह समझते हैं, मैं उसमें बिल्कुल उलटा ही समझता
 हूँ। वेने, गाँवों के साधर का अर्थ बने का कोई योग्य साधक नहीं है, मैं उसमें बिल्कुल उलटा ही समझता
 हूँ। यह उलटी बात बोलना है। 'नान्त-वायले-य' यानी महिमा। वह किसी पर कोई दबाव डालेगी नहीं और इसलिए
 अगर वह अहिंसा सम्प्रदाय है तो सगठन 'रिया' नहीं आया, सत्तकत्व में 'होगा'। और मिलित्व का सगठन जितना
 मजबूत होता है, उसमें ज्यादा मजबूत होगा तो वह अहिंसा की कमी, यानी हममें अहिंसा जितनी है, उसकी
 कमी ही होगी।

सगठन दो प्रकार के होते हैं—एक व्यक्ति से, अनुयायन सादर करने, और दूसरा प्रेम से। प्रेम से सगठन 'होने'
 है, व्यक्ति से सगठन 'करने जान' है। अब सवाल यह है कि जेने व्यक्ति सामूहिक तो पर काम कर रही है, वेने
 सामूहिक तो पर प्रेम काम कर सकता है क्या? इसमें प्रेम की कमी ही है। इसका आशय यह कि गणसत्तकत्व में
 मजबूत आधार प्रेम का रहेगा। और इसलिए नेतृत्व की अपेक्षा बहुत ज्यादा व्यक्ति उसमें आयागी और वह मातृ की
 आगो साधक है।

राजनेतिक एका को पुराने जमाने में ज्यादा महत्त्व ही नहीं था। आज महत्त्व आया है, क्योंकि सारी
 सारत सरकार में केन्द्रित होगी है। पहले तो भारत एक था, इसलिए भारत में मिल-जुल-जुल में अलग-अलग
 राज्य बने थे। लेकिन कुछ जनता, उत्तर में दक्षिण तक बिल्कुल अलग-अलग थे। यह गणसत्तकत्व के आधार पर बना। बिल्कुल वैदिक
 और दक्षिण में कल्पद्रुमारी—यहाँ तक मान एक बना। वह गणसत्तकत्व के आधार पर बना। बिल्कुल वैदिक
 जमाने में भी अलग-अलग था क्या? यहाँ तक मान एक बना। यह गणसत्तकत्व के आधार पर बना। बिल्कुल वैदिक
 है। मगल, हमारे गण में कोई मजबूत गणसत्तक नहीं, मजबूत गणसत्तक है। साधरों में मजबूत से प्रार्थना की तो
 भी बुद्धि की प्रेरणा दे' नहीं रहा, 'हमारी बुद्धि की प्रेरणा दे' रहा। तो उस जमाने में गणसत्तक था। यानी
 उनका विकास था। फिर कुछ और महावीर ने गणसत्तकत्व स्थापित किया। उसके बाद और और संकट में तो कुछ
 भारत में जो काम किया, वह नेतृत्व के आधार पर नहीं, गणसत्तकत्व के आधार पर किया।

—विनोबा

साधारण मनुष्य के सत्व का विकास :

समन्वित संस्कृति के लिए

संस्कृत उच्चारण मही लिया जाता है। वहाँ गंभीर उच्चारण लिया जाता है, वहाँ जीवन उच्चारण लिया जाता है। और वहाँ जीवन उच्चारण लिया जाता है, वहाँ जीवन की सारी प्रकृतियाँ उच्चारण ली जाती हैं और वह क्रांति भी नमद क्रांति नहीं होती, उच्चारण क्रांति होती है। इस दृष्टि से जब मैं विचार करता हूँ तब मैं मानता हूँ कि आज हम देश में जड़भूल से अगर कोई आन्दोलन लोचरुता को स्थापित करने की कोशिश कर रहा है, तो यह धामदान का आन्दोलन है। इस आन्दोलन में यह कोशिश हो रही है कि लोचरुता की जड़ें मजबूत करें। लोग कहते हैं कि जहाँ पर परित्यक्त जाने की हिम्मत नहीं करेंगे, वहाँ मूल चला जाता है। वही ऐसा सिद्ध न हो। इसको गंभीरता से सोचने की आवश्यकता है। आपने बहुत बड़ी हिम्मत की है, दुस्साहस किया है एक तरह से। और दुस्साहस की आवश्यकता है। "रेडिकल डिजिनेज रिक्वायर रेडिकल रेमिडीज।" व्याधि जिनकी दुर्दम होगी, उपचार भी उतना ही तीव्र चाहिए। तो यह उपचार ऐसा है, जिसके प्रचार में लोचरुता की विरच्यारणी व्याधि का उच्चारण हो सकता है। आज लोचरुता की यह व्याधि विस्तारवादी है। लोचरुता में तीन व्याधियाँ होती हैं : 'एथ्यूज'—एक व्याधि, 'करप्शन'—दूसरी व्याधि, 'नेक्रास'—तीसरी व्याधि। ये तीन व्याधियाँ दुर्निवारण के लोचरुता में पैली हैं। ये तीनों चीजें आज हमारी लोचरुताही में हैं। ये तीनों चीजें अगर बरती ही गयी तो लोचरुताही को 'समन्वित' हो पायगा। ये तीनों चीजें लोचरुताही के लिए बर्णानान-विन हैं। और इनका प्राथमिक आग्रह इस देश में हो गया है। इसलिए आज पाठियों में कहिये, एक-दूसरे से कहिये, पाठियों एक-दूसरे से कहें, हम एक-दूसरे से कहें, और हम भी एक-दूसरे से कहें, तो हमने क्या होगा ?

छात्राणं में दूसरों से दोषों का ध्यान तो

होगा ही नहीं चाहिए, अपने भी दोषों का ध्यान नहीं होना चाहिए, मनुष्य कार्यरत होना चाहिए। ध्यान किमीके दोषों का नहीं अपने भी नहीं, दूसरों के भी नहीं। इसमें से चित्त मुक्ति होती है। इसे तटस्थता कहते हैं। इनकी संभावनाएँ में इस आन्दोलन में देवता हैं।

यह क्रांति विघातक पुरपाय की भाँति है। आज उच्चारण में एक ऐसी प्रक्रिया की शोच है, जो प्रक्रिया एक साधारण मनुष्य के पुदपाय के अनुरूप होगी, जिससे दारुण, सर्पित और सत्ता—तीनों की सन्निधो के लिए कोई अक्षर नहीं होगा, कोई आवश्यक नहीं होगा। इस प्रकार की एक प्रक्रिया का प्रयोग आज किनोवा कर रहा है। उसे बालात्मा का प्रतिनिधि कह लीजिये, लोचरुता का प्रतिनिधि वह लीजिये। बालात्मा की आव-

दादा धर्माधिकारी

धरणाएँ, लोचरुता की आकाशगर्भ, इस पुरुष में हम प्रक्रिया में अभिव्यक्त की। इसलिए ये समझना हूँ कि आज हमारे लिए बहुत बड़ा अक्षर है। एर गेरी सक्ति का, एक ऐसी प्रक्रिया का प्रयोग हम करें कि उच्च प्रयोग में से साधारण मनुष्य के शरत् का विश्वास हो। एक भाष्यजिस्ट ने बर्णन किया है मनुष्य का। मनुष्य की परिभाषा की

है। 'मैन इज दि क्रिस्टोलाइज्ड पीटेन्सी आफ एनिमस्टेन्स।' जीवन के पनीभूत वीर्य का नाम पुरपाय है, मनुष्य है। जीवन का वीर्य पनीभूत हो गया और उच्चता नाम वीर्य रखा गया। यह जो मनुष्य की सत्भावनाएँ हैं, इन संभावनाओं के लिए यहाँ अक्षर है। लेकिन इसके लिए शक्ति का रूप बदलना होगा, उनका शायदबल बराना होगा। इन शक्ति का शायदबल बर्णन करना ? तो वे बरेंगे, जो शक्ति में रहने हैं। सिस्टर निवेदिता ने भारत-वर्ष की प्रतिभा, जीनिफर के तीन लक्षण बताये—'सेण्टीमेंट आफ कौन्टीटी' : बभुल की भावना, 'इन्स्टिबुट आफ सेन्टेन्टिक' : समन्वय की गहन प्रेरणा, 'माइण्ड आफ कोआइनेशन' : संगतिकरण का मानस। जो अज्ञान से मिश्र-भित्त प्रवाह जीवन में मानस होते हैं, उन सबमें संगतिकरण का प्रयास है। यह वर्णन उच्च भारतवर्ष की प्रतिभा का किया है। अगर भारतवर्ष की कोई विशिष्ट प्रतिभा है तो वह विनित प्रतिभा इन तीन चीजों में है। इनका विकास हमको धाम-स्वराज्य में करना होगा।

शापी ने पहले-पहले धामो की तरफ ध्यान दिया और उच्चने यह कहा कि धामो का विकास होगा तो जब की योग्य मिलेगा, और जड़ की जब योग्य मिलेगा तो यह धो हमारे देश की मरुति—धुलरका सहजोब—शुभक मरुति, समन्वित मरुति है, उच्चता विनाम होगा। और यह समन्वित मरुति धामनीय मरुति है।

उत्तरकाशी जिलादान के लिए शुभकामना

मुझे प्रमत्ता है कि उत्तरकाशी में धामदान-आन्दोलन पूरी तरह फैल गया है और ३० मई, '६८ को उत्तरकाशी जिलादान की घोषणा होनेवाली है। आशा है कि यह आन्दोलन सामुदायिक विभाग की एक नयी प्रक्रिया शुरू करेगा, जिनमें परम्परागत सामुदायिक सम्बन्धों को नयी सक्ति प्राप्त होगी। इस आन्दोलन का सबसे अच्छा पहलू यह है कि यह लोगों के दृष्टिकोण को बदलेगा और हर चीज के लिए मरवार के बरंगे रहने की उन्नी पराश्रयिका को दूर करेगा।

इस अग्रसर पर आन्दोलन की सफलता के लिए मैं अपनी शुभकामनाएँ भेजता हूँ।

—डी० गोपाल रेड्डी

लोक-नेतृत्व की नयी आधार-भूमि

सोपगहन, लोहापिच तथा अहिंद्रक जीवन-व्यवस्था का निर्माण करना हमारा लक्ष्य है, जो वाज की घट्टरी, केन्द्रित और हिंसा पर आधारित राजनैतिक, समाजिक और आर्थिक समाज-व्यवस्था का स्थान ले सके। इस जीवन व्यवस्था की आधारभूमि इकाई ग्राम होंगे। 'हर्म प्रम' शब्द के सबसे 'स्प' हो जाना चाहिए। यह उपर्युक्त व्यवस्था की सबसे छोटी इकाई होगी। आज की व्यवस्था के गाँव, कस्बे तथा घट्टरी के टोले, मोहल्ले-वाडें, ये सब 'ग्राम' में शामिल होंगे। राष्ट्र की सारी जनसंख्या ग्रामों का अंग होगी। आबादी के लिहाज से अनुमानतः एक हजार बालिगों का सामान्य परिमाण और न्यूनतम इकाई एक स्थान पर बसे हुए सौ बालिगों की माना जा सकता है।

हमारे देश में इस प्रकार के 'ग्राम' को ग्राम-गणतंत्र कहा जाय और हमारा देश इस प्रकार के लोकतांत्रिक ग्राम-गणतंत्रों का भारतीय संघ के नाम से जाना जाय। इसके प्रत्येक सदस्य को अंग की तरह नामांकित न बहकर प्रामोण या प्रामिक कहा जाय।

आज की दुनिया में चाडू शब्द राज्य, राजनीति, नागरिक, नागरिकशास्त्र आदि है। ये शब्द पश्चिमी यूरोप से दुनिया में फैले हैं। मूलतः ये शब्द प्राचीन यूनानी और रोमन नगर-राज्यों के हैं—पोलिस (Polis) और सिविटास (Civitas) ये उन नगर-राज्यों के इतिहास के सूचक हैं और संस्कृति के सूचक हैं। और ये ही क्रमशः पश्चिमी दुनिया की घट्टरी, केन्द्रित, सौंपण्युक्त तथा हिंसा पर आधारित समाज-व्यवस्था के सूचक तथा प्रतीक बन गये हैं। अतः यदि हमें इनसे अलग नयी संस्कृति और नये दर्शन को प्रतिष्ठित करना है, तो इन मूल शब्दों को भी बदलना होगा और नयी भावना के सूचक नये शब्दों को प्रयुक्त करना होगा। इसका असर सारे विचार और विचार पर

पड़ेगा। इस दृष्टि में 'ग्राम' शब्द को व्याकरणम अर्थ में प्रयुक्त करना चाहिए।

भारत के ग्राम-गणतंत्र सारे राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक तथा नैतिक अधिकारों के मूल स्रोत तथा भण्डार होंगे। ये ग्राम-गणतंत्र सविधान परिषद में एजेंडित होकर अपने अधिकारों, नसियों तथा बाधों में से निरचित अधिकार और दायित्वों प्रयोज्य, जिलों, राज्यों तथा संघ को प्रदान करेंगे। जो अधिकार और शक्तियाँ इन बाहर के संघटनों को दे दी गयी हैं, उनके अतिरिक्त सब विशेष अधिकार और दायित्वों स्वाभाविक रूप से ग्राम-गणतंत्रों में मौजूद रहेंगी। यह मूल-शक्तियों परिवर्तन नयी सविधान-परिषद बुलाने की विद्या जा सकता है और वर्तमान सविधान में संशोधन करने की संभव है।

जवाहिरलाल जैन

ग्राम-गणतंत्र में सभी बालिग स्त्री-पुरुषों से मिलकर नयी दृष्टि ग्रामसभा को संघोदित संघटन माना जाय। उसके अध्यक्ष तथा उपाध्यक्ष को सर्वसम्मति, सर्वानुमति या निर्विरोध तरीके से चुना जाय। अब और जहाँ यह संभव न हो, वहाँ ७५ प्रतिशत मत की निर्णायक माना जाय। यह मत हाथ उठाकर भी लिया जा सकता है और प्रुप्त पर्वों द्वारा भी। किसी उम्मीदवार को स्पष्ट ७५ प्रतिशत मत मतदान में प्राप्त न हो तो दुबारा मत लिये जायें और प्रत्येक बार में आखिरी उम्मीदवार को जिते सबसे कम मत प्राप्त हुए हों, मुकाबिले में से हटा दिया जाय। इस प्रकार ७५ प्रतिशत या ६६में अधिकतम उम्मीदवार का चयन कर लिया जाय।

शामान्यतः ग्रामसभा का अध्यक्ष वहाँ का कार्यकारी प्रमुख हो और उपाध्यक्ष उपरी अनुपस्थिति में स्थानापन्न और उपाध्यक्ष में उसका महायुक्त हो। अगर गाँव में बाहरी

देशीय संघटनों में अन्यथा कार्यकारी चुना जाय तो उपाध्यक्ष कार्यकारी अध्यक्ष के रूप में ग्रामसभा का कार्य करे।

प्रत्येक की ग्रामसभाओं के अध्यक्षों से मिलकर प्रसंग-सभा बने। इनका प्रदान तथा उपप्रदान उपर्युक्त रीति से ही काम करे। इसी प्रकार प्रसंग-सभाओं के प्रधानों से मिलकर जिला परिषद बने और उसके प्रमुख तथा उपप्रमुख चुने जायें।

राज्य-सभा तथा संघ-सभा में भी उपर्युक्त पद्धति लागू की जा सकती है। पर इसके बारे में और भी सोचने की आवश्यकता है। इस बारे में इन सभाओं के विधि, निर्माण और कार्यकारी स्वरूप की दृष्टि से भी सोचना होगा।

इस प्रकार ग्रामसभा के अध्यक्ष-उपाध्यक्ष के चुनाव ही प्रत्यक्ष रूप से होंगे। बाकी सब अप्रत्यक्ष चुनाव होंगे। इसके आम चुनाव के वर्तमान तर्ज, भ्रष्ट पद्धतियों, प्रकोपनों आदि सबसे मुक्ति मिल सकेगी। दूसरी विशेषता यह होगी कि प्रसंग-सभा से लेकर ग्रामसभा तक सभी में ग्रामसभा के अध्यक्ष ही सदस्य होंगे। इस प्रकार एक छोटे-छोटे ग्राम गणतंत्र का अध्यक्ष भी संघ के जैच-से-जैच पद और स्थान तक पहुँच सकेगा और उसका संचालन कर सकेगा तथा ग्राम का शीघ्र सगर्व और प्रभाव संघ तक रह सकेगा।

इस प्रकार की व्यवस्था में राजनैतिक दलों को स्थान प्रायः नहीं रहेगा। जब तक कोई राजनैतिक दल ५-६ लाख ग्राम गणतंत्रों तक न पहुँच जाय। अगर पहुँच भी जाय तो नवोन्निमित्त या ७५ प्रतिशत मतदान में बह विवर जायगा। इस प्रकार जानना कि मत या बहुमत (कमिटी) का मतभेदात्ता ही कार्यकारी होगा। राजनैतिक संघटन इनका व्यापक हा जाने में एकाधिकार की प्रवृत्ति नहीं बनेगी और गणतंत्रों के अध्यक्षों को ठेठ तक पहुँचने से सबसे गंभीर असर मिलेगा और घट्टरी एकधिकार समाप्त होगा तथा घट्टरी प्रभाव सीमित और जाने अनुपात में रह जायगा। राजनैतिक नेतृत्व के बजाय लोक-नेतृत्व की शल मिलेगा। ●

नैतुत्व : परिवर्तन की प्रक्रिया

धर्मोत्थ आंदोलन की एक विशेषता है कि धारणाओं में से नया नैतुत्व पैदा होना और दूसरी विशेषता यह है कि इस नैतुत्व का स्वरूप सामूहिक होगा, नगण वेदकर्म का होगा।

नैतुत्व नया उसने परिवर्तन की प्रक्रिया को समझने के लिए समझना ही उद्योग नित्यि को भी समझना चाहिए जिसमें से यह पैदा होता है। सामाजिक संघर्ष के आदर उसका बहिष्कार नहीं होता। परिवार से लेकर राष्ट्र तक समाज की एक बड़ी गूँथला हानी है और उस समाज के नैतुत्व का बीज-रूप तब तक उद्योग इतना में परिष्कार होता है। नैतुत्व और अनुपामों के बीच य मजबूत रहता है, जैसे ताना और धागो।

समाज के विकास के चार चरणों में प्रथम चरण, समाजवादी आदि युगों में बढते का रिनाम प्राप्त होता है। ये हम माते तोन पर, कामचलाए टाँटें, माय कर सकते हैं। साम्यवादी माने जनोदार, राधा, मटा राजाओं का ब्रह्मना। धर्म में राजा या सामन राज्य का शासक होता है। प्रजा के जीवन पर साम्यवादी अधिकार उभरे हैं। यह एकदम मनमाना शासन चलता है। प्रजा में मान्यता होगी है कि राजा उनका पिता है। पिता के समान उसे प्रजा का पालन करना चाहिए और प्रजा को अच्छी शानत को जानि उसका आदेश सिंगेय बनना चाहिए।

यह प्रकार का चर्क ऊपर का लारो हुई नहीं होगी। इसकी पर डेड उस समाज को परिवार-तराया में पावो बावणो। एदे समाज में परिवार निगु प्रथम होगा। पिता को उभरे सारे अधिकार होंगे। वह अपने परिवार का दोहान्या चरान रासा ही होगा। भारो पत्नी तथा धरान के जीवन के हर निमय में पिता का आधिपत्य पंचगुण होना। अब तक पिता मात्रा परिवार में होने उभरता सके सके को का बालिका होने पर भी अधिकार नहीं होगा। ब बला

होकर या अलग बनने हो बला स्वयं कर्तुत्व इस प्रकार परिवार में प्राप्त कर सकते। पर वे भी स्वयं होकर अपने पिता के जेसा ही व्यवहार करेंगे। परिवार रचना की यह परंपरा ब्रह्मण्य धारू रहेगी, जब तक वह बदल न पाव।

अंत में परिवार में, वंश राज्य में पिता के कर्तुत्व को धरेला होगी है। लोग मानते हैं कि जैसे बाप के बिना परिवार नहीं चलता, वैसे राजा के बिना राज्य। ऐसे समाज में राज्य और परिवार के बीच गाँव तथा दूसरी दशादशों के मुनिवे भी इशो प्रचार एकदम अधिकार रखनेवाले होने हैं। यह मान्यता या मानसिक बाधन न बदलने तक नैतुत्व का स्वरूप बदलना संभव नहीं होगा, भले ही व्यक्ति बदल जायें। इत्यंश और भाव में राजाओं

मनमाह्वन चौधरी

के सिद्धांत बनावते हैं, पर उनके स्थान पर जो जैसे, नामकेल और देवगोय, उनका तोर-तोरका राजाशा का जेसा ही रहा। सब में स्थापित के मानने म भी बंधा हो हुआ।

निगु प्रधान समाज के विहाय-जय में ये बालें स्थापना है। इसलिए मान्यता बदलने के लिए परिवार का स्वयं बदलना पडरी है। वह किसीको दुष्ट बुद्धि को उभर नहीं है। बन्ने छोटे होने हैं, ता मठा रिना को उदे संभालना पडता है। उनको धोर से माता पिता को निगण लेने पडते हैं। बन्ने भी उनके आश्रय से दुलदा होन हैं। पर उनमें स्वामन्य की प्रेरणा भी होगी है। माता पिता को टोक-ठीक मान धोर समझ ही तो वे बच्चा की स्वचरणा के बिना के लिए अधर देगे, उभरे मट्ट चरेंगे, नही तो उन पर अपना नैतुत्व चलाते रहेंगे। वह बालिका होने पर भी नए। धामें।

बच्चों में स्वचरणा का विकास की प्रक्रिया डेड नाँ ब हूय के साथ पुष्क होगी चाहिए,

'माते तु पादो बर्गे' नहीं। मोर के बच्चे को भी दुःख मिलाव या टट्टी कराना समझ में उद्य पर आनो इच्छा रासना चाहूँगी है या बच्च को इच्छा प्रसिद्धा, उभरी भंग-दुःख लगाने का म्याल प्रयोग है, नया उलाने व्यवहार का बलाय करोगे है? यहाँ व नैतुत्व का विहाय पुष्क होना है। समाज के नैतुत्व के स्वरूप में परिवर्तन के लिए यहाँ ता पडूँवना पडगा—धानी तायोग के हर स्तर में इसका बलाय रचना पडगा।

पर इतना ही नहीं, परिवार से ऊपर बडे समाज में दूसरे समाज भी सज टाँटें है। मानमें का यह सोचना चलता है कि आविर्क स्तर के साथ समाज का स्वयं बहिष्कार रूप से जुगा हुआ होता है। इतिप्रथम समाज का स्वयं साम्यवादी हो, ऐसी नाई कायना नहीं है। ऐजावोलामी की नाई की किताब उठा लगे तो पना चलेगा कि एक हो आविर्क स्तर के पचाय ब्रह्मना में पचाय ब्रह्मण्य-भला प्रचार की समाज रचनामें भा मिलती है। बडे ऐसी स्वयं मिलांगे है, किनमें बिलकुल आदय लोकतन्त्र का प्रा दर्शा है। इतिहास के माता रहने है कि उतर भारा के कुछ हिस्सों में लोकतांत्रिक राज्य प्राचीन बनाने में भी थे।

पता नहीं, दुनिया में साम्यवाद हो बने ज्यादा फंका, लोकतांत्रिक रचनाएँ बने नहीं केले? याद बडे राज्य या साम्राज्य के लिए आवश्यक राज्य-तन्त्र, पंच आदि के हायन के लिए साम्यवादी राजा अधिक उरवोगी है। यानी उतरा नम ता हुआ एर साथ सामाजिक यदभ से सं, पर आद्य जाकर बड राज्यवादी कोर साम्यवादी बग के लिए उरवोगी कोर साबिन हुई और फिर उ हाने उरवो पडता।

सं, समाज के हायन म रो प्रचार के नैतुत्व की आवश्यकता होगी है। एर को प्रेरणा का नैतुत्व कर सकते हैं। समाज में बुद्ध तथा काम पुष्क बनने, अधर्य बन्ने, तथा स्वयं स्वयंवादी बनने या पुढला लागने के लिए लामों को प्रमावित करने का, उनके सामने नया दुःखम रचने का काम बनना होगा है। नवी पदल कोनी है, पचक छोरीनी

है, पुनः के दिन प्रत रररना है, बच्चों की स्कूल भेजना है, या भूतान में बसौन देनी है—एक प्रकार के काम तो हरेक के लिए अलग करने के होते हैं; नेतृत्व का काम होता है बहुत सारे लोगों को इनके लिए प्रेरणा देने का।

अधिकार और प्रतिष्ठा

भेद का उद्भव

पर दूसरे प्रकार के काम होते हैं साथ मिलकर करने के। लड़ाई करनी है, सड़क बनानी या नहर खोदनी है, हाथी पकड़ना है, सेन्ट्रैट्रिबट चलाना है—ऐसे काम में एक समय एक साथ बहुत सारे लोगों को एक निश्चित प्रणाली से काम करना होता है। इसमें संगठन के सारे सवाल खड़े हो जाते हैं। निश्चित समय पर निश्चित सभ्या में लोग इकट्ठे हो, निर्देश के अनुसार अपने-अपने हिस्से का काँटा ठोक-ठोक कर, यह अच्छी होता है। हरेक के पास मूखना या आदेश पहुँचाने के लिए समय तत्र की जरूरत होती है।

इन सब कारणों से समाज में अधिकार-भेद और प्रतिष्ठा-भेद का उद्भव हुआ। कुछ बगों को आदेश देने का अधिकार और कुछ को पालने का कर्तव्य। सारे समाज में बर्ग या जातियों में प्रतिष्ठा का ऊँच-नीच का निश्चित हुआ, जिसमें हुनम देने की ओर हुनम सामील करने की निश्चित शुल्लता कायम हुई। सामंतवादी या परंपरागत समाज में यह प्रतिष्ठा-भेद (हयारार्क) बस या जन्म के आधार पर तय होता है। राजा का लड़का राजा, कोतवाल का लड़का कोतवाल, किसान का किसान।

इसीलिए उस वृद्ध भूमिहार या राजपूत किसान ने अनास विरोध स्वयं किया था कि—“आप लोग हमारी जमीन से लेंगे इसके लिए मैं तैयार हूँ। पर वे मजदूर मेरे साथ एक ही सड़क पर घामघमा में बैठेंगे, यह मैं जब तक बिदा हूँ तक नहीं होने नहीं दूँगा। मजदूर निर्धन लेनेवाली और आदेश देनेवाली अनास का नहीं है। उसमें

उसके शामिल होने से तो सारे समाज को रचना हो टूट जायगी!

प्रेरणा या सवाल

दूसरा सवाल है प्रेरणा का। काम ठोक-ठोक करने के लिए प्रेरणा कैसे मिले? परंपरागत समाज में परंपरा के लिए आदर हो प्रेरणा का स्रोत होता है। जिसका जो परंपरागत कर्तव्य है, वह करने रहना चाहिए, यही तो मार पड़ेगी, पर जलेगा।

पूँजीवादी समाज के व्यवस्था-तंत्र में रथान जन्म या बस से तय नहीं होता, योग्यता से बाँटा जाता है, ऐसा कहते हैं और यह कुछ हद तक सही भी है। क्योंकि पूँजीवादी के साथ लोकतंत्र भी ऐतिहासिक संयोग से जुड़ा हुआ है। इसके अलावा पूँजीवाद उद्योग, व्यापार आदि के संगठन और संचालन में खास योग्यता, ज्ञान और अनुभव की जरूरत होती है। परंपरागत आदर्श से काम बहुत कम चलता है। इसलिए पूँजीवादी रचना में सामान्यतया उच्चतर कर्तव्य के साथ उच्चतर योग्यता जुड़ी हुई होती है। पर इस योग्यता की माप पैते से होती है और योग्यता प्राप्त करने के लिए काफी पैते की जरूरत होती है। इसलिए पूँजीवाद में पैते के आधार से समाज का प्रतिष्ठा-भेद बनता है।

पूँजीवाद में कर्म-प्रेरणा का नियंत्रण पैते से होता है। अच्छा काम करने पर ज्यादा पैसा मिलता है, काम ठीक न करने पर कटौती होती है।

साम्यवादी तंत्र की रचना—एच तथा दूसरे योरोपीय राष्ट्रों में—पूँजीवादी तंत्र से मिलती-जुलती है। धुरु में कर्म-प्रेरणा के साधन के तौर पर पैसे का उपयोग सनम करने का ध्येय रखा गया था। पर बाद में वह छोड़ दिया गया। चीन में यह प्रत्यक्ष चालू है, पर उसके बारे में जानकारी कम मिलती है।

साम्यवाद में एक यह सूत्री है कि मेहनत करनेवाले स्तरों में से कम्युनिस्ट पार्टी की मार्गदर्शनकार जवानों को मर्ती बरके अच्छी तालीम देने की व्यवस्था यहाँ है।

इसलिए अगर के कर्तव्य के स्वार्थों पर सामान्य जनता में से जितने लोग पहुँच पाये हैं, उतने और किसी व्यवस्था में नहीं। हाँ, पूँजीवादी युक्तों में भी कुछ ‘मोबिलिटी’ होती है, याने निचले स्तर के लोग अगर के स्तर में पहुँच जाते हैं। पर उसका पैमाना बहुत कम होता है।

नये नेतृत्व की आयाम

अब नये नेतृत्व की चर्चा करेंगे तो उसके कई आयाम ध्यान में आयेंगे। एक तो यह कि हम चाहते हैं कि गाँवों में कर्तव्य-साधन और अभिमान पैदा हो। अगर की ओर न ताकते हुए अपनी सुन से वे अपनी तरकीब के लिए काम करें। इसके लिए बाह्य तंत्र का ढाँचा हमने विकेंद्रिकरण का सोचा है—यानी गाँवों के पास अधिक-ने-अधिक कर्तव्य हो। पर यह बहुत संभव है कि विकेंद्रित गाँव का नेतृत्व पुराने सामंतवादी तंत्र का ही हो, और कई सामंतवादी गाँवों में भी यही देखने को मिला है। इसलिए नये नेतृत्व का दूसरा आयाम कि वह किसी बर्ग, जाति या बंध के हाथ में न रहे, सारे समाज का उपमें हिरसा हो, सबका समान कर्तव्य हो, यह ध्येय रतने से संभव नहीं है।

पुराने नेतृत्व को हटाने के लिए कई जगह हमारे साधियों में यह बोधित की कि नये लोगों को हर प्रकार का संघर्ष देकर पुराने नेता के सामने खड़ा किया जाय। इसमें जहाँ संघर्षता मिले, यहाँ नेता तो नये हुए, पर उनके काम करने का ढग पुराना ही रहा और कई जगह अपने साथी से पुराने नेता की शक्ति अधिक सावित हुई और कार्यकर्ता की भी भागना पड़ा।

पुराना ढाँचा बदलने के लिए पुराना मान्यता बदलनी पड़ेगी। साम्यवादी बस साधियों को संकर करनेको। इस मिश्रात के प्रकार से तो सबसे सोचने के अधिकांश का उद्योग होता है, पर सोचने में सब सामिल होते हैं ऐसा नहीं। अंधेरे-अंधे घामघाम में भी तो बहुत घामघाम में विरली ही आती है। वैसे भूमिहीन मजदूरों का भी योगदान कम रहना है। गुर रिमाय चला का कुछ

योगदान करने का तथा निर्णय में अपनी राय भी शामिल करने का अधिकार और वर्तव्य, इनसे से उनसे प्राप्त वारंवारिक और बीमारी बीज नहीं बनते। अपना माध्य बलक उरना है और उसे बदलने में अपना भी कुछ बल है यह मान जब तक न हो, माने जीवन को बदलने की आवश्यकता अब तक पैदा न हो, तब तक नागरिक उपन्यास का अधिकार कोरे कायम पर ही रहेगा।

घान देने की बात है कि बड़ी साम्य बादी या दूसरे सामगरी पाठियों लोगों में साम्य बतती है बड़ी आचर माने साम्य बदलने को यह आकाशा पैदा होगी है, उसे बदलने की अपनी ताकत का भी बोधा मान होगा है। बहु इत्यन्ति कि वे सपर्य पर, लक्ष करने हासिय करने पर, और देते है। धाम दान आन्दोलन में जमीनवाली की और ही हमारा ध्यान होगा है। वे मान सं तो भूमि हीनो को अधीन मिल जानी है। इत्यन्ति इसकी प्रक्रिया में भूमिहीनता का आत्म बिराद्य और अधिकतम प्रदाने की शोध प्रक्रिया सा-साध नजर नहीं आती, लेकिन है।

परम्परा के खिलाफ एक शान्त यागायत

एक तो यह कि जैसे सामयान-पुनराय के पहले क्षण में विचार में भूमिहीनों के छोटे-छोटे टोले ही सामयान में आये। उस समय कसोरी को लया कि यह बेकार भी बात है और आन्दोलन के साथ गिलकाइ ही हा रहा है। पर बास्तर में यह पुनानी मायाशाओ को सोझनेवाली एक मद्दत की प्रक्रिया थी। परीक सापों ने जब तक गाँव के बड़े लोगों, प्रतिष्ठित नेताओं ने बिना पूरे या उनकी इच्छा के प्रयोग में कोई काम किया ही नहीं था। इसलिए भूमिहीन परीको की यह साम-दान बोधना इन वरपर के खिलाफ एक शान्त ब्यापार हो थी। उनमें कटुता दूरी और आँसिर बड़े लोग भी सामयान में आये। यह उनके आत्म-विश्वास और नीति-निर्बंध बनाये में बहुत कारगर साबित हुआ होगा। दूसरा साधन है बचपन में सर्व-साम्य के नियम का। पहले परक को सर्व-

सम्पत्ति इसी प्रकार होती होगी कि गाँव के दण-प्राय मुक्त लोगों ने जो कुछ प्रस्ताव रख दिया उसीमा समर्पण सब कर देने होंगे। मजदोर होना होगा तो इन्ही पाँच दण के बीच। पर बाकी लोगों को—साथ बजने जब तक दबे हुए परीक और भूमिहीन लोगों को—आनी दधि, आनी गाँव, आने मुसाब, सामयान में रखने के लिए प्रेरित किया जाय तो यह सर्व-सम्पत्ति का नियम पुराने ढाँचे को परिवर्तित करने का एक 'लोचर' बन सकता है। क्योंकि उनमें परीक मजदूर वगैरे की सम्पत्ति का अभाव एक 'चीटो' का काम करेगा। उनमें बिना निर्णय स्थपित रहेगा।

सायगाँव, मानसिक आदर्शें बदलने लगेंगी तो घर की तालीम भी कुछ हद तक अपने आप बदलेगी। फिर 'जैवे' लोगों के सामने पुनरुत्तर बरनाय करने की, उनके सामने मुँह न खोलने की तालीम बच्चों को नहीं मिलेगी। फिर भी परम्परा का साया दबाव हटाने के लिए तालीम के दूर स्तर पर मौलिक परिवर्तन करना परेगा। यह बहुत ही महत्त्व का विषय है।

नेतृत्व के विविध पहलू

आजकल समाज विज्ञान में नेतृत्व के विविध पहलू का पुनरुत्तरण किया गया है। बर्षों के विषय में सर्वविध जानकारी मुहैया करता, नीतिगत सूचना स्पष्ट करना, आक-होसिक योजना बनाना और कार्यान्वित करना, प्रोत्साहन देना, आसय के समर्थों को विचारकर सामंजस्य स्थापित करना यदि बर्षों भूमिपार 'नेतृत्व' के वर्णन आती हैं। जार की योग्यताओं अलग-अलग व्यक्तियाँ में विविध मात्राओं में होगी है। हरेक को अपनी योग्यता और क्षमता के अनुसार सूचना देना करने का अवसर देकर सबके सामंजस्य के काम चलाना मण-वेवकाल या सामूहिक नेतृत्व को मांग है। इसके विचार का कोई बना-बनाया तयारी किसी के पास नहीं है। दृश्य में तो प्रयोग और अनुभव के आधार पर आगे बढ़ना होगा। बेवक, सपना विज्ञान की मदद हममें आदिर्घ्य होगी।

निर्णय लेने तथा काम अंशाम करने में

विचार, जानकारी और बुद्धलता का बहुत अधिक महत्त्व होता है। नेतृत्व तक्ति के विचार के लिए आवश्यक है कि ऊपर की वे तीन बातें लोगों के पास पहुँचाये जायें। जन-प्रतिनि के बारे में एक धारणा यह है कि जनता जाच्य होगी और पुनराय करे लगेगी ता सारी समस्याएँ हल करने की पक्षित उद्यमे आने काय नियर उठेगी। लोगों को महत्त्व बुद्धि ही पर्याप्त है। यह एक बर्ष प्रत्य है।

प्रणय जन-पुनराय का अतीति दर्शन सम्भव

अब तक लोगों में आत्मविश्वास का पुनराय नहीं होगा तब तक उनकी सह-मुक्ति का भी उपाय करने का उनको शून्ता नहीं। एव बार अग्रहायता और पर निर्भरता की बुद्धि खत्म हो जाती है तो बुद्धि काय करने लगती है, नयी-नयी सूक्ष्म पैदा होती है। सोचो हई पुनराय-दक्षिण एवमय आम उठे तो प्रवण्य पुनराय का अतीतिक सा दवान हो सकता है। पर इस पुनराय को सही दिशा में प्रेषित करने के लिए, विचार, जानकारी और बुद्धलता को जरूरत है। जनता में उगतव्य सह-बुद्धि एक हद तक ही आध्याय को समस्याओं को हल करने में मदद कर सकती है। उनमें आगे उठको सक्ति बजाने के लिए ऊपर की तीन चीजें उठको उलम्ब्य होनी चाहिए। जनता देंगे, इन प्रयोगों परिकाले बरको बँडे छोटे से नाते पर विहाय-मण्डाले पुन नहें। अपने पुनराय का सुन्य को रो ताइ के पैर हालकर पुन बनका लेने में एक दिन मो न लया। पर बकी नदी पर पुन बांधना ही तो यह सह-बुद्धि और सूक्ष्म पर्याप्त नहो होगी। हाँ, यह साक्ष्यानी रखनी होगी कि विचार या सहकीक लोगों पर सारी न जाय।

नये नेतृत्व की नईव समाज के विविध क्षेत्रों में तथा उच्चतम स्तर तक होना आवश्यक है, यह ध्यान में रखना होगा। निर्देशीय और साक्षरताय की काय हूय

सोचने हैं, तो गाँव में हर एक को 'पार्टी-मी-पेन' का मोका मिले और स्वयंसेवक प्रत्यक्ष लोचनता का दावा विकसित हो, यह भी सोचने हैं। हमारे सोचने की दिशा यही रही है कि गाँव का तब ऐसा हो, जिसमें जिम्मेवारी बियरी हुई रहे, जिसी व्यक्ति का व्यक्तिगत के हाथों में रूप-रस-रस रहे। गाँव के स्तर पर यह टीका भी है। पर गाँव के ऊपर के स्तर पर व्यक्तियों के हाथ में निर्णय तथा मंचालन की जिम्मेवारी देने की आवश्यकता अधिक रहेगी। नेतृत्व के सारे दूसरे 'कार्यक्रम' की भी इन स्तरों में, तथा सासन, उद्योग-धर्म, संस्कृति, तालीम आदि हर एक क्षेत्र में आवश्यकता होंगी। जिम्मेवारी के हरेक स्थाप्य पर योग्य मनुष्य को चुनकर पहुँचाने की प्रक्रिया का महत्त्व तो ही ही, साथ ही समाज के महत्त्वपूर्ण स्तरों से पर्वत सम्झा में लोग ऐसे स्तरों पर पहुँचने की योग्यता प्राप्त करें और वहाँ पहुँचें, इसकी प्रक्रिया या तब का भी विचार करना पड़ेगा।

पैसे का सम्बन्ध तोटना है

आर्थिक दृष्टि से आगे बढ़े हुए देशों में इस प्रकार के कुछ लोग तो "नीचे" के स्तर से ऊपर के स्तरों पर पहुँचते रहते हैं, पर पूँजीवादी समाज में, उस समाज के गुण के अनुसार उनका सम्बन्ध "नीचे" वर्गों में बँट जाता है। वे ऊपर के वर्ग में शामिल हो जाते हैं। मैंने पहले कहा है कि साम्यवादी देशों में भेदभाव जनता में से होंगौर सुख-सुविधाओं को चुनकर यही जिम्मेवारियों के लिए नैतिक किया जाता है। इस प्रकार के तब और उपर्युक्त प्रक्रियाएँ यहाँ भी पड़ी बरती होंगी।

पर साम्यवादी राष्ट्रों में भी एक बार ऊपर पहुँचने हुए लोग वही स्तर हो जाते हैं। उनके बच्चों की सामान्य लोगों की तुलना में तालीम आदि की सुलभियतें अधिक मिल जाती हैं और वे भी वही स्तर जाते हैं और इस तरह वहाँ भी इनका स्थायी स्तर बनना जा रहा है।

इसके साथ कर्म-प्रेरणा (इन्फ्लूएंस) का गुणाल जुड़ा हुआ है। आधुनिक समाज

में योग्यता ही अधिक जिम्मेवारी के स्थान पर पहुँचने का मानदण्ड है, पर योग्यता का मानदण्ड पैसा है। अधिक जिम्मेवारी के साथ अधिक मेहनताना जुड़ा हुआ है। रस आदि में इतने टालने का प्रयत्न हुआ, पर सफलता नहीं मिली। नेतृत्व और जिम्मेवारी के साथ धर्म, वन का सम्बन्ध टूट चुका है। अब उसके साथ पैसे के सम्बन्ध को तोड़ना है। हमें दृष्ट में सफल होने के लिए क्या क्रम होना ?

स्तर-भिन्नता और कर्म-प्रेरणा

पिछले हुए देश में दृष्ट में एक साथ कठिनाई है। आधुनिक युगल संगठन की जिम्मेवारी के पद को समालने के लिए जिस तरह साथ योग्यता की जरूरत होती है, उसी तरह साथ-साथ कुछ विशेष भौतिक साधनों की भी। ऐसे साधनों का होना—जैसे टेलीफोन, मोटर या मंग-कुर्सी—उसके और जनता के जीवन-मान में भी काफी फरक पैदा करता है। यह फरक कुछ अधिक सम्पन्न देशों में उतना नहीं होता, जितना विपन्न देशों में होता है। कोरापुट का सामान्य आदिवासी आज जिस स्तर पर जीवन बिताता है उसी स्तर पर रहकर एक बोअर-पेट्रिट वा मंत्री भी जाना वाम व्यवस्थित रूप से और युगलतापूर्वक कर नहीं सकता। इसलिए जब तक जनता का सर्व-सामान्य जीवन-स्तर काफी ऊँचा नहीं उठता तब तक विकास की प्रक्रिया में इस प्रकार की विपत्तियों का पैदा होना अपरिहार्य होगा। पर बावजूद इसके अगर जीवन-मान और भौतिक साधनों का सम्बन्ध प्रतिष्ठा और कर्म-प्रेरणा से तोड़ा जा सकेगा तो हमने होनेवाली हानि टल सकती है। फिर कर्म-प्रेरणा निम्न रूप से ही बाध, यह सवाल बाकी रहता है। सर्वोच्च क्षारोलन या दूसरे बड़े समाजसेवी तथा राजनीतिक मण्डलों में पद के साथ पैसे का सम्बन्ध नहीं होता। उसमें पुरपाय के लिए, अपनी सामर्थ्य प्रदर्शित करने के लिए जो अवसर मिलता है, दूसरों में जो बाध मिलता है, उसीमें से पदार्थ कर्म-प्रेरणा मिलती है। सामाजिक मनोविज्ञान के तर्कों

का कटा है कि मनुष्यों में ये दोनों प्रेरणाएँ सर्वत्र काम बरती हैं। यहाँ तक कि पूँजीवादी समाज में—वहाँ मुनाफे की प्रेरणा मुख्य मानी जाती है—वहाँ भी ये दो प्रेरणाएँ काम बरती रहती हैं। अब सवाल है कि इनको व्यापक समाज के संगठन की बुनियाद में कैसे ढाला जाय। समाज की मान्यता में परिवर्तन का महत्त्व तो ही ही।

नेतृत्व की अदला-बदली

समाज के आर्थिक ढाँचे में से पूँजीवाद का तत्त्व निरूल जायेगा तो उतने से पैसे की प्रेरणा-शक्ति खतम नहीं होगी। रूप में खतम नहीं हुई है। अपन देश की खासी-घामोचोगो की संस्थाएँ उग दिशा में एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग है। उनके ऊपर के नेतृत्व को पैसे की प्रेरणा गमप-सी रहती है। उस परम्परा को अधिक मशम और पुष्ट करके आर्थिक क्षेत्र में व्यापक करने पर एक हल मिल सकता है।

फिर समस्या है कि 'ऊपर' के स्तरों पर पहुँचने हुए लोगों का वर्ग स्थायी रूप से खलम और पक्का म बन जाय। नेतृत्व के स्थान पर नीचे में नये-नये लोग आते रहें और युगाने नेता समाज में आने पुगने स्थान पर वापस आते रहे, इसीमें इस समस्या का समाधान है। अगरी का आदि में ऐसा होता है। सरकार के ऊँचे-ते-ऊँचे पद पर काम किया हुआ मनुष्य वापस जाकर किसी बालेज का प्रोफेसर या उद्योग का मैनेजर बनना है या अपने काम पर घेती पुनः करता है। पर पिछले हुए देश में दृष्ट में बह भी एक दिक्कत है। क्योंकि ऊँचे स्तर की सामर्थ्य एक सुव्याप्य थीज होती है।

एक सामर्थ्यशाले मनुष्य को फेरकर दूसरे को ले लेना सामान्य नहीं होता। फिर सम्पन्न-जाल में जितने भी सामर्थ्यवान् लोग तैयार होने हैं, सब वाम में लग जाते हैं। सामर्थ्य की तालीम भी काफी सर्वाली होती है। इसलिए अदला-बदली के लिए अवसर कम रहता है। तो, इस मामले में भी एक समाजवादात्मक विधि पैदा होने के लिए एक लम्बी धरति चाहिए।

है, और चलेगी भी तो उस सरकार के द्वारा देश की किसी समस्या का हल नहीं हो सकता है। आज देश की विभिन्न पाटियों को जो स्थिति और रवैया है, उसे देखकर हमें इसी मतीजे पर पहुँचना पड़ता है। और आज इसका कोई लक्षण नहीं दिखाई पड़ रहा है कि निश्चय भविष्य में कोई एक पार्टी स्थिर सरकार (राज्य में तथा केन्द्र में भी) बनाने में समर्थ हो सकेगी।

इस वस्तुस्थिति को पृष्ठभूमि में विनोबाजी ने २ अक्टूबर १९६८ तक बिहारदान पूरा करने का आह्वान बिहारवासियों को किया है। उन्होंने इसे 'लाइट एण्ड बेस्ट पाइप' की भी संज्ञा दी है। उनका मानना है कि २ अक्टूबर '६८ तक बिहारदान पूरा होता है, तो १९७२ के चुनाव के पूर्व ३ वर्ष का समय रहेगा, जिसमें पूरी शक्ति लगाकर धामदान की बरतना के अनुसार धामो का मगहन सड़ा किया जायगा।

धामदान की योजना में गाँव का प्रत्येक आदमी गाँव के सब लोगों की चिन्ता करेगा, फिर गाँव का कार्य आम लोगों की राय से चलाये का अन्वेष करेगा। इस प्रकार से सफाई धामसभाओं (विभेद रिपब्लिस) के प्रतिनिधि १९७२ के चुनाव के समय अपने चुनावक्षेत्र के लिए आमराय से अपना प्रतिनिधि चुनाव में खड़ा कर सके हैं। निश्चय ही, इस प्रकार से जो उम्मीदवार खड़े किये जायेंगे, भले ही उनका राजनैतिक विचार कुछ भी हो, उनके लिए यह अनिवाय्य गर्न होने चाहिए कि वे किसी पार्टी के उम्मीदवार न बनें, ताकि वे पूर्ण रूप से अपने चुनावक्षेत्र के धामसभा-सदस्य के प्रति ही उत्तरदायी रहे और उसके हित के लिए अपने विवेक से कार्य कर सकें। यह बहने की आवश्यकता नहीं है कि सहयोग एव रणाय के आधार पर गठित धामसभाओं के प्रतिनिधियों द्वारा पक्ष-निरपेक्ष जो उम्मीदवार चुनाव में न खड़े किये जायेंगे उन्हें विधीके लिए पराजित करना बर्जित होगा।

हम बताना करें कि पूरे बिहार के लगभग सभी क्षेत्रों से यदि ऐसे प्रतिनिधि चुनाव विधान-सभा में आ जाते हैं, तो जहाँ

उत्तरकाशी जिलादान

—जयप्रकाशजी का संदेश—

उत्तरकाशी की जनता को जिलादान के लिए हार्दिक बधाई। विनोदकर उन समाज-सेवियों को बधाई, जिनके अथक परिश्रम का ऐसा महत्पूर्ण परिणाम हुआ है। उत्तरकाशी उत्तर-प्रदेश का एक पिछड़ा और उपेक्षित क्षेत्र रहा है, फिर भी यह गौरव उसको प्राप्त हुआ है कि अपने विशाल प्रदेश का गांधी-विनोबा के मार्ग पर वह ऐसा अग्रणी बना है। मुझे आशा है कि उत्तर-प्रदेश के अन्य जिलों के लिए अब द्वार खुल गया है।

जिलादान जितनी प्रसन्नता का विषय है, उतनी ही जिम्मेदारी का भी है। जिलादान केवल भित्तिमात्र है, जिसके ऊपर नव-समाज तथा नव-जीवन की रचना करनी होगी। २० मई के जिला-सम्मेलन में इस ओर विशेष ध्यान देना होगा।

अपनी हार्दिक मुन्नकामनाओं के साथ,
पटना, १६-५-६८

—जयप्रकाश नारायण

आज का मुम्बयनी आनी एक पार्टी का नेता होना है, चाहे पूरी विधान-सभा की दृष्टि से उस पार्टी का अस्तित्व कितना ही नगण्य क्यों न हो, और जिसके समर्थकों की संख्या के घटने-बढ़ने पर सरकार का अस्तित्व निर्भर करता है, और जिसके कारण ही आज यह दल-बदल का युक्ति खेल भी चल रहा है—उसकी जगह पूरी विधान-सभा की आमराय से चुनावी नेता मुम्बयनी होगा। वैसी स्थिति में आज की अस्थिरता को गुंजाइश ही नहीं रहेगी। फिर दल-बदल के लिए भी स्थान नहीं रह जायगा।

यह बड़ा आ सफला है कि इस प्रकार की परिस्थिति के निर्माण से ही आज की दलगत-राजनैतिक व्यवस्था की जगह सच्चे लोक-प्रतिनिधित्व के आधार पर सच्चा लोक-राज्य स्थापित हो सकेगा। उस सरकार के नियम दूटने-बनने का खतरा नहीं रहेगा। जो पार्टी राज्य में है, उसके अतिरिक्त सभी पार्टियों विरोधी ही मानी जायें, यह स्थिति भी बदल जायगी। विरोधी पार्टियाँ आज सभी अन्धे-बुढ़े शायों का हथकाल, प्रदर्शन, सत्याग्रह दुराग्रह, पेशवा आदि के द्वारा विरोध करके

अपने नाम को सार्थक बनाने में प्रयत्नशील रहनी है और इससे देश में आज जिस परिस्थिति का निर्माण हुआ है उससे सभी परिचित और परेशान हैं। लेकिन इस नयी योजना में विरोध के लिए विरोध-प्रदर्शन की न तो आवश्यकता रहेगी और न गुंजाइश। इस पक्ष-विपक्ष की सद्बधाई में देश की शक्ति का जो अव्यय हो रहा है उसकी जगह इस पद्धति में पूरी शक्ति का साम मिलने की संभावना पैदा होगी।

आशा है, शोबन्तन में (मात्र पार्टी-जन में नहीं) निष्ठा रखनेवाले लोग सच्चे लोक-प्रतिनिधित्व के आधार पर लोकराज्य की स्थापना के प्रयत्न में गहनतक बनेंगे और विनोबा के आह्वान को सार्थक बनाने में अपनी पूरी शक्ति लगायेंगे। निश्चय ही अगर १९७२ के चुनाव में धामदान, बिहारदान का 'सम्प्रेषण' नहीं हो सके और आज का ही मातृक दुःखदायक गया तो शोबन्तन का वर्तमान ढाँचा भी कायम रह सकेगा, यह बहना अत्यन्त बर्जित है। और उनीलिय विनोबा ने दिये अर्द्धशायों को 'लाइट पाइप' की संज्ञा दी है। ●

परमजिन अध्ये इरानो का बुधाम्भक' (ट्रेवेडी
आव मुद्र इटैंग्वांश गैल्फ-डिरीटेड) होकर
रह जाय ?

मे प्रश्न इसलिए उठते हैं क्योंकि यकी
तक यह आन्दोलन हमारे मन से चला है,
जगता की भाग से नहीं। जगता के सामने
हमने एक विशार रखा, उसे समझाया-
बुझाया और उमका हस्तक्षार किया, जिसे हमने
उत्तरी धर्मप्रति का प्रतीक माना। कभी-कभी
हमको इतना भी नहीं बल्का पड़ता, कि
भौ हस्ताक्षर मिल पाया है! बाका शोती
है कि क्या इस स्थिति को वास्तविक माना
जा सकता है ? क्या कार्यकर्ता, और क्या
जनता, इन हस्ताक्षरों के पीछे 'मिस्टिफेण्ड'
किसका है ? वह नौनवीं शक्ति हांभी जो
धामदान की इस अत्यन्तक स्वीकृति को
सफल मे परिणत करेगी ? भाषण, सिद्धि,
नेमिभार, परमात्रा, हस्ताक्षर आदि जितनी
भी पश्चिमाएँ हैं, वे सब प्रतीक हैं। क्या
इन प्रतीकों और प्रविष्टियों को अपने में
पूर्ण, वास्तविक, धार्मिकताको जिया मान
लेना भूल नहीं है ? यह भूल क्यों हो रही
है, और कैसे इसका परिमार्जन होगा ? इसमें
बाधक नहीं कि जिस हृद तक हमने प्राप्ति के
कार्य में इतनाई बरती है, और मन में किसी
सदह काम पूरा कर लेने की आलस्य नहीं
है, उस हृद तक हमने आन्दोलन का नम-
जोर किया है। इस भूल का सुधार अब
तत्परतापूर्वक होना चाहिए। विचार-निरपेक्ष
धामदान का कोई अर्थ नहीं होता। अब
समय सही धामदान प्राप्त करने का है, माय
धामदान की हवा बनाने का नहीं। हम
कब तक कहुते रहेगे कि हवा बन रही है ?
धामसभा में अन्तर्विरोध

प्राप्ति के बाद पुष्टि के कार्य के जो अनुभव
जा रहे हैं उनकी और हमारा ध्यान जाना
चाहिए। सबसे मुख्य बात है धामसभाओं
की। एक-एक धामसभा हमारी शक्ति की
एक-एक सेल है। लेकिन हम देख यह रहे
है कि बन जाने बाद जो धामसभाएँ मुझ भी
सन्निध होने की शोचिग कर रही हैं उनमें
एक अजीब उलझन पैदा हो रही है।
अगर यह उलझन न मुझमें तो धाम-

सभाओं की समाप्त कर देगी। वह
उलझन यह है कि धामदान का माधुषण
पाकर जहाँ एक ओर मजदूर और वैंदाईदार
सञ्ज (काम्यस) होने दिवायी देते हैं,
वहाँ भासिक विन्तित (गैंग्रस) हा जाने
है। एक की चेतना दूसरे की विन्ना
धन जाती है, स्फूर्ति नहीं बन पाती।
परिणाम यह होता है कि एक-दूसरे के नरीब
जाने की जगह दोनो मन में एक-दूसरे से
अलग हो जाते हैं। मालिक-मजदूर का यह
अलगभाव, जो पहले से ही बन नहीं है,
तुरत नग्राय बन जाना है। मालिक
की धामसभा सत्वरनाक लगाने लगती है,
और मजदूर की बेदार। मजदूर और वैंदाई-
दार का मध्य होना, उनमें नयी प्रतीति का
पैदा होना, अपने में एक सुभ लयण है,
लेकिन धामदान के मच पर द्विती के
सुघर्ष की नहीं, द्विती की एकता की जिग,
दिशाओं देनी चाहिए। वह नहीं दिवायी दे
रही है। धामदान की यह मुख्य मुलकनी
चाहिए। मेरा म्याल है कि इस वयन
धामसभा के धामने दमसे बड़ा दूसरा बोध
प्रदन नहीं है। अगर हम यह मानने हो
कि धामसभा का मोर्चा भी प्राप्ति की ही
तरह किसी तरह हल हो जायगा, तो यह
प्राप्त भूल होगी। अग पायीग जीहन
के अन्तर्विरोधों का हल करने का रास्ता न
निकला—और शीघ्र न निबटा—तो गान के
लोग धामसभा से अपना हाथ खीन लेंगे।
और, सब हमारे आलोचक भासिगों और
मजदूरों दोनों से बहेगे। 'हम तो पहले ही
बहुते थे कि इस भ्रमजाल से क्या होने-
बाला है ?' इसका हमारे पास क्या उत्तर
होगा ? इसलिए हर दृष्टि से धामसभा एक
अत्यन्त ताजुक मोर्चा है। उगे विचार के
जल से सौंकर बढ़ाने की बला हमारे पास
नहीं है। उगे प्राप्त करने में देर नहीं बननी
चाहिए।

रचनात्मक कार्य के नये आयाम

वस्तुतः धामसभाओं का प्रदन तिराग
और सगटन का है। लेकिन मिशग नोन
करे ? बहूँ है वे कार्यकर्ता जिन्हे अपने

आन्दोलन के वैचारिक और द्वावहारिक
पट्टुओं का इतना अन्वयास हो कि वे लोच-
वेचना की 'सुल्लिगेट' कर धामसभाओं के
अन्तर्विरोधों को दूर कर सकें ? जब लोच-
मिशग को सबसे अधिक आवश्यकता है
तो उसका पूर्ण अभाव दीवना है। वास्तव
में यह काम कार्यकर्ताओं से अधिक स्वयं
गान के सगम नागरिकों का है। ऐसे सगम
नागरिक गौधों में है भी, लेकिन उनमें और
हम गस्था के लीगों के बीच शरा और
दुराव की एक ऊँची मनोबैज्ञानिक दोवाल
सखी है। हम अपनी अनुभ्राई छोड़ना नहीं
चाहते, और वे हमारी अनुभ्राई में आगे बडना
नहीं चाहते। अन्वय के कुछ अनेमिने शोचों में
जहाँ इस स्थिति में बाधा सुधार है, और
लोकनिष्ठ, सर्व-सांशक शक्ति बनाने की
एसी भी शोचिग हुई है, वहाँ कुछ लोग
उभरने हुए दिवायी देते हैं, लेकिन यह प्रदन
बना ही हुआ है कि उभरनेवाले को टिराया
और बडाया वेने जाय। प्राप्ति के तूफान में
पुष्टि का उषान (अपमूर्ज) वेने आवे,
इस पूरे प्रदन पर विचार होना चाहिए।
यमें द्विग और जाति द्विग के स्थान पर
सामूहिक धाम-हित विरक्तिग हा, तथा सर्व-
सम्पनि मे सब अपने का सुरतिग महसूस करें,
इसकी श्रिया टडनी चाहिए, क्योंकि अग
सामूहिक धाम-हित नय पुधन.बं की प्रेरणा मे
बना का धाम-सामिग्य धार धाम-न.पुव, यानी
धामस्वरज्य के दोनो पैरों, के टिकने के लिए
धरती नहीं रह जायगी। देर की मुजादा
नहीं है। अनुभव बना रहा है कि अधिग के
प्रयोगों में समय निर्णायक तरह सिद्ध
होता है।

धामद्विग का जिगय और धामसमिति
का सगटन रचनात्मक कार्य की एक बिलकुल
नयी दिशा है, लेकिन है दूसरी गत्र रचराओं
की बुनिमद। इस तरह का रचनात्मक
कार्य हमने गौधों में बना किया नहीं है।
हमारे वे गौव—मिषिग जानियों के गौर,
दमन और गीयग मे जर्जर गौव, अ.पुनिव
सहासरो से बचन गौव, प्रमाद वे मिशार
गौर—एक हीरर छाती धमसभाओं का पैने
सुराबिला करें, यहाँ मुख्य मधस्ता है।

यह गभीरतम समस्या हमारे बरिष्ठतम छात्रियों के लिए चुनौती है। हमारे छोटे छात्रों काय बल सहाते हैं किन्तु इन प्रश्न पर नज़र नहीं दे सकते। समस्याएं वे अनुभव में साधनमात्रा की सामग्रियां पानि यानी रचनात्मक भाषा से पहले रचना में निष्ठा और रचनात्मक प्रवृत्ति का दान। शिक्षण के क्षेत्रों में मिल इस और हमारा ध्यान तज्वाल जाना चाहिए।

जनशक्त्या के साथ भाग विरोध तक हम पहुँच नहीं पा रहे हैं। उनके अलग रहने के कारण सामंजस्य इष्टता करने तक में कठिनाई हो रही है। दरमिया में प्रश्नों से सरला रहन का अनुभव है कि सामंजस्य में घर का अभाव या पना देने से वे इतना करती हैं। यही हाल गाँव की समाज-सेवा का है। यद्यपि प्रतियां प्राप्त विन ध्वनियों के माध्यम से हस्त प्रतियां व लिए सब तरफ गाँवों में प्रेषण कर रहे हैं उनसे प्रेरणा प्राप्त करने की दिशा में गाँव के युवा नए हैं। उनका सामने प्रत्यां व युवा दूधर साधन प्रस्तुत करते रहेंगे।

कुछ विचारकर हम कुछ पादकृत क्षेत्र में बनाने रहेंगे किन्तु प्रामुखाता का समर्थन प्रामुखिता का विभाग अथवा अथवा की माध्याम पुस्तक-अवलोकन युवा स्वयंसेवा समान की सामुहिक रूप से बनाया हमें शिक्षण गति सेना-तकन तथा गति का हित्य समन द्वारा लोचनियन आदि के क्षेत्र और प्रयोग सुनिश्चित रूप से करने रहेंगे। अगर रचना में बित्त के निर्माण तथा रचनात्मक सम्बन्धों के विकास में काम करता सरलता की मिल जाती है तो समाजिय प्रतिभा युवा और पञ्चजन इनके माता में उत्पन्न हो जायत कि सेना छात्री सामुहिय आदि रचनात्मक भाषा हमारी बिन के विरुध नहीं रह जायत कि हमारे नए छात्रियाँ। लेकिन अगर यह हो सका तो परम्परागत रूप तक छात्रों में बंधे रहकर हम गाँवों को छात्राग और बाजार के समन्वित प्रसार तथा व त्रिक विपटन से विरोध सहा नहीं बना सकते। सामान्य

उत्तरकाशी जिलादान

—विनोदा का संदेश—

उत्तरकाशी का जिलादान होना एक बहुत ही प्रेरणादायी घटना है। अखिल भारत का यह महान् यथास्थान है। अन्तर्गत हमारे यह हमारा प्रदेस भी है। दोना दृष्टिया से उन क्षेत्र का जिलादान सारे उत्तर प्रदेश को ही नहीं बल्कि सारे भारत को गतिमान करेगा। दान देनेवाला घण्यवाद। रानीपतरा १०५ ६८

—विनोदा का जय जगत

जो अब अहिंसा की व्याख्या-नुद्धि और व्यवहार शक्ति को प्रकृत है।

ग्रामप्रतिनिधित्व की पूर्व-दीपारी

जब स विश्वारदान के सम्भ में दल प्रति निधित्व के स्थान पर सामप्रतिनिधित्व की बात बही जाने लगी है और १९७२ का हवाला दिया जाने लगा है तब से जहाँ-तहाँ लोग के मन में एक नयी हलकल पैदा होने लगी है। घटनावाद की राजनीति से परी-पारी मल हो रही है। लेकिन उसमें एक लगन है जो युवा नहीं। लोकनीति तो सभी समक्ष में आयी नहीं है लेकिन दलनी मय मिलने से कि सामान्य में भी युवाज जादि जेही कुछ चरपटी भी है वेन लोग के निम्न परिधि निम्न में काम करन स्पे है। विद्यो उद्य किष्को गिराया की बातें जवान पर जाने और जान में बही जाने लगी है। लोकनीति के सही शिक्षण द्वारा हम धर्म का गही शिक्षा में योग्यता चाहिए नही ता स्वाध्याय मह-चाराधार्य नपयी और उनके साथ साथ दोस्तो दुस्मनो के परमलिन तरीकों का बहासा मिश्रण और सामुहिकता का वातावरण दूधित होना। अब तक का अनुभव हमारे लिए पर्याप्त चेतावनी होना चाहिए।

अखिल भारतीयता का बल

सही समयान सामंजस्य का समर्थन सामंजस्य का निर्माण सध समर्थन और समुहिक सम्बन्ध का विभाग, लोकनीति का सामुहिक स्वस्थ साम्नि तथा व्यापारिक म-मेलन के लिए रचनायि व विधि अथवा आदि जो भी प्रवृत्ति है वे स्वानीय नहीं है।

व्यापक होने के कारण उनसे समाधान व लिए अखिल भारतीय प्रतिभा की आवश्यकता है जिसका हमारे आन्दोलन में अभाव है। कई बार तो ऐसा लगना ही नहीं कि हम कोई अखिल भारतीय आन्दोलन बना रहे हैं। विभिन्न राज्यों में होने वाले काम तथा उनमें लगे राष्ट्रियो समर्थन और सामवायों की प्राथमिक सुधारों तक हमें नहीं मिलनी सध शक्ति का एक शत हो जायेगा। बेगन हम सबकी प्रत्यां व मानवीय द्योत विनोदाजो तब है दृष्टि हमारा प्रयोग उध प्रानि विचार के प्रति है निचने दस यामा में हम सबके सहाय्यो बनाया है। इत है कि उध यह भी प्रवाति सभी अन्तर्गत ही है। अखिल भारतीयता की जीवन प्रदीपि के बिना प्रति की रचना प्रुमिल रहनी यामता निधित्व रोगी और सामना एकायी रहनी। यह तरह एक काम करते हुए भी अगर करने वाले अलग-अलग रहने तो शक्ति की शक्ति कैसे प्रकृत होगी? कई बार जिनोदा की शक्ति को हम अपनी शक्ति मान लें हैं और सध शक्ति की उध प्रकृत ही नहीं महदुधुय करते। अखिल भारतीयता के अभाव का अन्तर सुदूर गाँव के नाम पर भी पड रहा है। छोटे-छोटे गाँव की छात्रा शक्ति का सहाय्य चाहिए मने ही बह अक्षयण हो।

अन्तोलन के सम्बन्ध में वे युवा विचार शोय रहते हैं। इन्हें बई मह वृष्ण रहते ही है लेकिन हमने यहाँ कुछ घ-ए-म-पद-का का ही उ-लेख किया है जो गाँव के नाम में प्रथम रूप से हमारे ध्यान आये है।

लोकतंत्र के विकास का अगला कदम

भारत में ही नहीं, तमाम दुनिया के लोकतंत्र में जन-अन्वेषण को बढ़ाने की जिम्मेदारी निभायी है। लोकसभा और विधानसभाओं की चहारदीवारी में स्थित लोकतंत्र एक भ्रमपूर्ण और अज्ञान राजनीतिक संघर्ष है, जिसमें जन की आकांक्षाओं की पूर्ति नहीं हो पाती।

संसदीय लोकतंत्र आज जिस रूप में साम्प्रदायिक और सामूहिक जाया रहा है वह यूरोप के बुर्जुआ या वर्चस्व-युग का लक्षण है। यह जन पर जन के नाम पर चलानेवाले वर्ग का साधन है। यही कारण है कि जहाँ आधुनिक संसदीय लोकतंत्र का जन्म हुआ, उस स्थिति और भाव द्वारा बड़े-बड़े साम्राज्य स्थापित करना सम्भव हो सका। इन देशों के लोग अपने-अपने तत्कालीन लोकतंत्र का कुछ भोगते रहे और अपने-अपने देशों में तानाशाही चलाते रहे।

आज हम देखते हैं कि लोकसभा और उसके सदस्यों के महत्त्व में कमी आती जा रही है। इसके मुख्यतः दो कारण दिखायी देते हैं।

पहला कारण है—जनको घोट देने के अधिकार का प्रचलन, जिसके कारण विभिन्न दलों का अस्तित्व सामने आया। दूसरा कारण है—राजनीतिक दल सत्ता हथिया लेनेवाले वर्ग बन गये और उन्होंने लोकसभा को केवल राजनीतिक दलों का डिब्बा पीटने का साधन बना दिया। इस कारण सन्नत या राष्ट्रपति के नाम पर अर्द्ध-तानाशाही स्थापित करने लगी। लेकिन इन राजनीतिक दलों ने सिर्फ सत्ता ही नहीं हथिया ली, बल्कि उन्होंने लोकसभा को भी अकारगर बना दिया। इसके अलावा आज का संसदीय लोकतंत्र यंत्रण की राजनीतिक संस्था है, जिसके बारे में यह मान लिया गया था कि जैसे यदि किसी यंत्र के विभिन्न हिस्से ठीक से बँटाये गये हैं और यंत्र को ठीक से काम में लाया जाता हो, तो वह यंत्र भले ही घुमे

चले, लेकिन चलेगा जरूर। जबतक चल रहा तबतक यह लोकतंत्र चलता, लेकिन अब हम अणु और जेट युग में हैं। प्रौद्योगिक प्रगति के साथ-साथ राजनीतिक संस्थाओं को भी विकसित होना होगा। इस संदर्भ में मानस बहाने सही थे और उनकी बात सुनी जानी चाहिए।

जेट युग में गति मानव-जीवन का आवश्यक तत्व है—सिर्फ भौतिक क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि भावना, बुद्धि और आध्यात्म-क्षेत्र में भी। आज यह आवश्यक हो गया कि जन की भावनात्मक, बौद्धिक और आध्यात्मिक आकांक्षाओं की सीमाओं के साथ पूर्ति हो, लेकिन हमने जो लोकतांत्रिक पद्धति बिरासत में पायी है, वह बहुत घुमी गति से काम करती है। अ. आ. विधानसभाओं में जो लोकतंत्र चल रहा है, उसी पूर्ण विधानसभाओं के बाहर जन-सक्रियता के द्वारा

शंकरराव देव

करनी होगी, ताकि लोकतंत्र की प्रक्रिया तेज हो सके।

अ. आ. बुनिया में दो नहीं, बल्कि तीन प्रकार के देश हैं। वे अपनी प्रौद्योगिक प्रगति, साम-सामान और विविध प्रौद्योगिकी के उपयोग करने की क्षमता के अनुसार विकसित, विकसित-अथवा अविश्वसित विधि में हैं। ऐसा होते हुए भी इन देशों ने जन की आकांक्षाएँ अल्प-अल्प प्रकार की नहीं हैं, बल्कि दरअसल बुनिया एक ही है। इसलिए विकसित गति का ही नहीं, बल्कि जन के सम्मोच का भी ध्यान होना आवश्यक है। ऐसा नहीं होता तो, विकसित और अविश्वसित देशों में संसदीय लोकतंत्र एक वाम-विशेष के लिए ऐसी विनाम की चीज बन जाता है, जैसे जन बर्बाद नहीं कर सकते।

मे मानना है कि जन-सक्रियता (ऐशमन) निरिच्छन रूप में शान्तिपूर्ण और रचनात्मक

होनी चाहिए, ताकि वह लोकतंत्र की जड़ों को मजबूत बनाये और उसके मूल्यों को समृद्ध करे, क्योंकि ये दोनों चीजें मनुष्य के विकास के लिए आवश्यक हैं। जन-सक्रियता से मेरा आशय विकसित विभिन्न प्रकार के प्रदर्शनों से नहीं है, बल्कि उस सक्रियता से है, जिसमें जन रचनात्मक कृति से प्रेरित होकर सीधे कार्रवाई करते हैं।

गणेशजी ने लोकतंत्र की आस्था एक विज्ञान और सरकार चलाने की कला के रूप में की है, जो राष्ट्र के सभी प्रकार के लोगों को राजितियों को सबकी भलाई के काम में लगाता है। आज की गुटबन्दी और मतभेद-आधारित संसदीय राजनीति इसका ठीक उल्टा काम करती है; पारो के विभिन्न वर्गों को एक में जोड़ने की जगह यह उन्हें विभक्ति-मिश्रित करती है।

जन-सक्रियता के स्वप्न के बारे में मेरी राय है कि उसमें किसी प्रकार के पारो-रिक्त दबाव को स्थान नहीं है। पारो-रिक्त दबाव की प्रक्रिया का ही एक विरोध प्रकाश है। इसका अस्तित्व उस समय किया जाता है, जब कि विरोध प्रकट करनेवाले अल्पमत में हो। यदि वे बहुमत में हों तो वे रचनात्मक अस्तित्व का रूप अपना सकते हैं, जो परिस्थिति में चुड़टा जाता है और जो आज के वैधानिक ढाँचे में भी माया है।

जन के हाथों में एक बहुत बड़ा अस्त्र यह है कि वे बुलाई करनेवाले को उस सामाजिक, मातृ-निक और आध्यात्मिक आत्म-प्राप्त करने से वंचित करें, जो समुदाय के अन्तर्गत उसे प्राप्त होने हैं। मे इसे सामाजिक बहिष्कार नहीं कहूँगा, क्योंकि बुलाई करनेवाले के खिलाफ बौद्धिक पारो-रिक्त दबाव काम में नहीं लाया जायगा। उसके जितने के लिए विभिन्न भौतिक चीजों की जरूरत होगी वे सब उसे प्राप्त रहेंगे। लेकिन समुदाय यह घोषणा कर सकता है कि भूकिक अतुक समुदाय का सदस्य नहीं रह गया है, इसलिए समुदाय का सदस्य होने के नाते जो सुख-सुविधाएँ उसे प्राप्त होंगी, वे वापस ली जा रही हैं। ●

सन् १९७९ : क्रान्ति की कसौटी

लक्ष्य और प्रक्रिया

—भीरतेन्द्र भाई से कुछ महत्त्वपूर्ण प्रयत्नों पर—

मृत पलायन, विद्रोह से भी मागे हुए विश्वास की आश पर रहे क्योंकि वे भागे हुए यह कहा जा सकता है कि आमजन आन्दोलन को गति बांधी देना है। एतिस न। एति देनाएर यह माना जा सकता है कि इस आन्दोलन में उचित धारणा भी का रही है ?

उत्तर जैते भीतिर विमान में एति के गति आनी है और एति के एति देना होनी है उनी ताउ सुमान विमान में की एति कोर एति न की गतिन है। विचार न। उर्भ कोर परिचिति की आराएरना में गतयन आन्दोलन को गति की है। यह एति को तेर हो रही है, इसीके गतिन भी देना हो रही है।

विदेने एतक आर और नई में जैसे शरयत दिने न। एता विमान पर उत उतयन करने कद्रुपन के आधार पर कहा जा कि आज शरयतन एक एति मान है। उत गतन की न रूप विमान है और न। उत में उतका मान हो सकता है। लेकिन जैसे कि जैसे कसे कहा है वन की अनिरूप आर एतयन के कारण केवल आ. में की अर विनि भाषी है और उरु तेके ये बर रही है। इत ए. आर की अरय में सुशरी एतके ते

शरयत में आन्दोलन की इति के अरि आम जन नरु हुआ। लेकिन आर उनी में गति नहीं रही—नैतक अने ही नहीं रही उतके देको भी नहीं है, उतके आम जन को भी शरयतन का विचार करने आर एतयन की कोर जा रहा है। इत एतयन एत एतक के वीरे में सुकोरी हुआ, एतयन एत एतक बर न. विनि एतयन में आरयतन एतक अरिगणन वताएर एतके भुविगणन एति शरयतन के एतयन एतयन में एतिन नही हुए ये एतयन गतिन होने पये। यह एतयन हुआ कि आन्दोलन को गति के शरयत उनी एतयन कोर नैत हो रही है किसे

शरयत पडे एति कोने व अनेके भुविगणनों को धारित होने के लिए गतिन विचार है।

इत बात की शरयतने के लिए और अरिग एतके के विचार करता जाति। जैसे भीतिर विमान का उतयन एतयन है। उतके लिए एक एतयन उतयन एतयन—कोर अरयने के लिए एतकी देनी कही से वन बरके अरयने का शरयत की इति है। उतके शरयत की कोर एतके की गति देने की धारणा होनी है, एति कोर एतकी को गति ही देने को धारणा करने पडेको है। और यह नही एतिन उतके माने गति देनी है। उनी एतयन के अरयतन के लिए एतकी का विचार निरकत की एतयन विमान एतयन एतयन एतयन कोर एतयन में एतिर एतकी कोर शरयतन एतके के एतयन है। उत एतिन के अरयतन एतयन को गति की और जैते जैते गति तेर होणे एतकी जैसे-जैसे आन्दोलन में एतयतन वताओ के कारण के अरि न. एतके के रूप में अने एतिन देना होनी पति, एतके एतके का उतयन को नही एति निकली नही और एतके एतयन उतके अर नैते का रही है।

उनी एतयन, नैतक कि एतयन एतयन के अरयतन का एतयन है किसे कोर एतके में आन्दोलन की गति में जो गति हुई है उतके एतयन एतके के गतिन तथा एतयन एतयन को धारित होने के लिए एतिन करने के उतयन को एति की है। अर उनी कोने में गति एतका अरयन विमान के शरयत के लिए आरयन एतयन रहे हैं। एतकी एतके आन्दोलन को और कोर एति देनी एतके कोर है नही है।

एतयन आर दिने एतिन का शरयत मांने ?

उतयन किनी भी का नैतन का गति एतयन उतके एतयन एतयन करता है। भुविगणन तथा का विनि कोने की धारणा

विमान एतके के एतयन करने के परिणाम पर निर्भर करता है। आरयन में अनेको एतके को शरयत करने की और अने एतका में निरी शरयत एतयन अरिगणन शरयत करने को गति अरिगणन का भुविगणन मानने के लिए एक एतयन अरयतन पर निर्भर रही। हमारा आन्दोलन किनेको भुविगणने में रही है। यह आन्दोलन अरिगणन शरयत के अरयतन अरयतन के एतयन और अरिगणन के लिए शरयत एतयन का एतयन हो गया है उतके भुविगणन का है। भुविगणन के लिए एतके अरयतन के आन्दोलन किने का शरयत है वतयन शरयत उतयन का भुविगणन करने की गतिन की हो सकती है। कोर उ है किनेको शरयत मानने को आरयतन एतयन की प्रक्रिया भी हो सकती है।

भुविगणन विचारयतकी अरिगणन, एतके अरयतन के हो सकता है। उतके लिए एक एतयन शरयत एतयन शरयत का शरयत शरयत एतयन है, उतयन की शरयतने वतयन के अरयतन कर उसे। लेकिन शरयतने एतयन के लिए भुविगणन में एतिन का कोर तथा शरयतन की एतिन का एतयन करना होना है, एतके शरयतनेको शरयत अनेके कोरयन कर शरयत हो उतके। एतके एतयने में एतके देनी और एतकेके विनि कर उतके है किनेको और उतके कोर एतयन द्वारा भुविगणन नहीं करने हैं। एतकी एतके को अरिगणन कर शरयत को एतके देने हैं तो उतके एतयन का एतयन एतयन शरयत यह है कि वे भुविगणने को धारित हो ही एतयन एतिन मानने हैं।

अरिगणन एतके को अरिगणन "अरिगणन" नैतक, अरिगणन है यह तो आम एतके देना के अरयतन-आन्दोलन की देतन हुए एतके रूप के एतयन हो सकते हैं। तो आन्दोलन की एतिन बर रही है, एतका उतकी एतयन एतयन अरयतन में अरिगणन एतिन का एतयन हो। अरिगणन एतके के अरयतन एतके अरिगणन को शरयत एतयन कर रही है। यह आन्दोलन के अरिगणन एतके पर एतयन है।

लेकिन ऐसा कि मैंने अभी नहीं है कि परम्परागत-विचार के कारण लोग पुगने ढंग में सोचते हैं, वे मुकाबिले की दृष्टि को ही ध्यान में रखते हैं, वे यह भूल जाते हैं कि विद्वान के रूप से अगर मुकाबिले को मानि तो प्रक्रिया मत भी जाय तो भी आज की परिस्थिति में यह सम्भव नहीं है। जिन तत्वों के हाथ में समाज की बागडोर है और जो अब पूरे समाज के अग्र-प्रत्यक्ष में प्रवेश कर जनता का बोध और निर्देश कर रहे हैं, विज्ञान में उनके हाथ में अत्यन्त शक्ति छिपी है। जनजीवन का कोई भी हिस्सा उनकी नहीं रह गया है, जो इस तत्त्व के बन्धों में नहीं हो। अतएव आज के जमाने में कोई ऐसा तत्त्व समझित करना असम्भव ही है, जो अपने मरोखे जनता की ओर से रुढ़ मने। मैंने अभी कहा है कि पूरी जनता किसी भी मुद्दाबिले की प्रक्रिया में शामिल नहीं हो सकती है। उसके लिए जनता में से कुछ ऐसे तत्वों का—जो हिंस्रता और बोध हो, मजबूत आवश्यक है, जिसे धार देना बह मफने है। ऐसी प्राद्वैत सेवा के लिए सफल बटोरकर अत्यन्त सहायक तत्वों के साथ मुकाबिला करना असम्भव ही है।

अगर तर्क के लिए यह माना भी जाय कि एक महानिष्ठा अंगीकार सेना जनता की ओर से मुकाबिला कर विजय प्राप्त कर सकती है, तो ऐसी महानिष्ठा विजयी सेना ही दूसरे रूप में जनता की छाती पर बैठ जायगी।

अतएव विचार और व्यवहार, दोनों दृष्टियों में "मुद्दाबिले" दृष्ट आन्दोलन की प्रक्रिया नहीं है। दूसरी अनुमान प्रक्रिया विचार प्रणाली (चन्द्र-गाम करने) की है। अगर आप देखते हैं कि ग्रामदानी गाँव गांधी मिलकर छोटे-से-छोटे भी अपना निर्णय करते हैं और उसके अन्त में प्रयास करते हैं, तो समझना चाहिए कि इस आन्दोलन में दृष्टि का विचार ही रहता है। एक वाक्य में ग्रामदानी गाँव के स्वावलम्बन का संकल्प और पुनर्वास का जागरण इस क्रान्ति की दृष्टि का लक्षण है। क्योंकि ऐसा करके जनता अपने जीवन को उपरोक्त तत्वों के बाहर निकालकर उन्हे अनावश्यक बना देती

है। स्वभावतः समाज के लिए अनावश्यक तत्त्व अनेक-आर विचारों पर जाते हैं।

प्रश्न : क्या यह सही है कि जनता अभी भी ग्रामदानी को कोई संघीय चीज नहीं मान रही है ? देखने से तो ऐसा ही लगता है। अगर सचमुच ऐसी बात हो तो मैंने माना जाय कि सन् १९२२ तक जनता, ग्रामीण ग्रामदानी ग्रामसभाओं, अपने सर्वसम्मति उम्मीदवार लेकर दलों के मुकाबिले खड़ी हो जायगी ?

उत्तर : यह सही है कि ग्रामदानी-प्राप्ति के अभियान के समय जनता इस आन्दोलन को बहुत गम्भीर चीज नहीं मानती है। लेकिन जो दखलत करते हैं, उसके पीछे काल की अन्ध प्रेरणा तथा विफल के लिए एक काल्पनिक समाधान है। ग्रामदानी का सफल और घोषणा हो जाने पर अन्तर्गत में चिन्तन का प्रारम्भ हो जाता है। और जैसे-जैसे प्रचलित समाज-व्यवस्था तथा संस्थाओं से अग्रगण्य होता चला जा रहा है, जैसे-जैसे जनता ग्रामदानी को एक गम्भीर चीज मानने लगी रहती है। जगदीश दिव्यवर्षी के साथ विचार की स्पष्टता के लिए जिज्ञासा भी बढ़ रही है। यह अनुभव मुझों दरभंगा जिले के एक स्थान के अन्वय से हुआ। अगर आप किसी क्षेत्र का लगातार अध्ययन करते रहेंगे, तो आपको भी इसका अनुभव होगा।

इस प्रकार सन् १९६० में जब ग्रामदानी गाँव के लोग आन्दोलन की गम्भीरता में सोचने की नीतिगत क्रिया लगे हैं, तब चार साल में दलगत राजनीति की अभिविचयन के कारण उन पर ब्रिज तरह मजबूत का बोधा बढ़ना चला जा रहा है, उसी मुक्ति की नीति आकाश पंदा होना असाधारण बात नहीं है। चूंकि सर्वसम्मति उम्मीदवार-पद्धति दलगत राजनीति का प्रभावशाली तथा व्यावहारिक विफल है, इसलिए जनता इस पद्धति के अन्त में लिए तैयार हो जायगी, इसमें शक नहीं करने का कोई कारण नहीं है।

लेकिन आप लोग सर्वसम्मति उम्मीदवार-पद्धति का जो नारा लगा रहे हैं वह सौतेला तर्क से कानटेवाली तलवार है। अगर विचार की सफाई के लिए जो जिज्ञासा पैदा हो रही है उसे समाधान देनेवाला दावी

वापसता सफल धूमने नहीं रहेंगे तो जनता सर्वसम्मति उम्मीदवार-पद्धति को प्रचलित राजनीतिक तथा व्यक्तिगत दृष्टि के अन्तर्गत पहाड़ी राजनीति के रूप में एक वैधानिक गुणार मात्र समझ बैठेंगे। फिर उठा की सफाई इस प्रक्रिया में दाखिल हो जायगी और ग्रामसभाओं में फासिद्वारा तत्त्व हावों हो जायेंगे। आन्दोलन के कार्यकर्ता भी, जो आज सत्ता से अलग रहकर सेवा द्वारा जनता के विश्वासघात करने हुए हैं, सत्ता के लोभ से प्रेरित होकर अपने सर्वसम्मति उम्मीदवार चुनवाने के प्रयास में सफाई का विचार बन सकते हैं। इस आन्दोलन का लक्ष्य ऐतिहासिक-साधारण, दृष्टवादी राजनीति तथा वैधानिक या राजकीय बाजार की अर्थनीति और वैधानिक सत्तावादी व्यापकीति से मुक्त होकर स्वावलम्बी समाज का अग्रगण्य बनना है। जिज्ञासा के समाधान में इस बात की आवश्यकता होती चाहिए। अगर हम दलगत राजनीति के बदले सर्वसम्मति उम्मीदवार के विचार को स्वीकारें तो यह बात प्रचलित व्यवस्था के अन्दर आन्दोलन को शक्तिशाली बनाने के लिए सन्धिवादी तथा सामयिक प्रक्रिया है यह स्पष्ट होनी चाहिए, नहीं तो आपका यह नारा सशुभ आन्दोलन को समाप्त कर सक्ता है।

प्रश्न : क्या आप मानते हैं कि हमारे रचनात्मक संस्थाओं, सत्ता और दलगत के प्रचलित ढाँचे पर शूल प्रहार करने के काम में सशुभ हो पायेंगे ? अब आगे इन संस्थाओं का इस प्रकार में क्या भवता है ?

उत्तर : हमारे आन्दोलन में सत्ता और दलगत के प्रचलित ढाँचे पर शूल प्रहार करने का कोई स्थान ही नहीं है। इस सन्दर्भ में "मुद्दाबिले" और "विचार प्रणाली" के विज्ञान का मैंने पहले ही काफी विचार में विवेक किया है। हमारी रचनात्मक संस्थाओं धीरे धीरे सत्ता और दलगत के प्रचलित ढाँचे का ही अप बतती चली जा रही है, इसलिए अब अपने दल-कर्मियों के अन्त में इन संस्थाओं का विचार रोल नहीं रहेगा। अन्त में सत्ता समाप्त में पैले

उत्तरकाशी का उत्तर प्रस्तुत

३० मई '६८ को उत्तर-प्रदेश के माने पर घामस्वराज्य का मिलक सम गदा। उम दिन जिले की जनता ने तिलाठी के महीरों की याद काने हुए यह मामुहिक पंगणा की :

“आज माहीर-दिवस के अन्तर पर हम आने उन महीरों के प्रति भद्राञ्जलि समर्पित करने हैं, जिन्होंने आने बलितान से इस भूमि को परित्र किया है। ऐतिहासिक स्वयं की रक्षा के लिए उन्होंने आने प्राणों को आहुति दी उसको स्थापना अभी पूरी नहीं हुई है। वह पूरी नब होगी जब गांव गांव में घामस्वराज्य आगया तथा गांव गुर आने विनाश और बवस्था को शिम्भारी लेगा। उन घामस्वराज्य के लिए ही हमने आने गांव का घामदान किया है। हम मानते हैं कि गांव की परित्राण बनाने की जो भावना है, उमके विनाश के लिए जरूरी है कि हम बिना किसी भेद-भाव के एक दूसरे के मुग-दुग में सारी हों। इसलिए आज के दिन हम मन्वस करते हैं कि हम सब गांव के रहने-वाले मालिक, महाजन और मजदूर भाई-भाई की तरह रहेगे, तथा घामदान की भावना की भावने हुए घामस्वराज्य की दिशा में मिलकर दटना के साथ आगे बढ़ेंगे।”

यह विद्यो आदर्चर्ष की बात है कि भोग वर्ष के बाद भी हमारे गांव के लोग घट प्रल नहीं पूरने कि जो स्वराज्य घट १९४७ में देश में लाया वह अभी तक हमारे गांव में क्यों नहीं पहुँचा ? वह क्यों रुका हुआ है ? बिद्यो रोक रखा है ? कने आगया ? कुछ भी हो, अब गांव-गांव में स्वराज्य लाने का काम शुभ होगा चाहिए। उममें देर की गुंजायस नहीं है। आने गांव में स्वराज्य हमें खुद लाना है। दूसरा कौन लायगा ?

घामदान घामस्वराज्य आने का प्रकृत पदम है। गांव एक ही जाय और नेत्र ही जाय तो आने एका और सगठन की गति ने वह आने गांव की व्यवस्था कर सक्ता है, विनाश कर सक्ता है। गांधीजी पाठों पे कि हर गांव एक गणराज्य बने। घामदान मालिक, मजदूर, महाजन सबको मिलकर 'गण' बने और गांव की एक 'राज्य' बनने का रास्ता छोड देता है। पूरे गांव का एक हित हो, तो घामस्वराज्य का आना निश्चित है। अगर हम सबपं का रास्ता पचरेगे तो एक-एक गांव वर्ग-सबपं और जाति-सबपं की आग में जलकर सस्न हो जायगा। उत्तरकाशी की जनता ने श्मे मसूह किया है और बीच माल के स्वराज्य के बाद की इस स्थिति को बदलने का संकल्प लिया है, और इस समारोह को माहीर-दिवस के रूप में मनाया है। परिस्थिति तो आज की गहावत की गति कर रही है, लेकिन बदले हुए संशर्ष में माहीर चाहिए, जो खोबिन रहकर जीवन को गति दे सके। पून से छीने दमे स्वराज्य के पीछे की घामस्वराज्य के रूप में पलविन और पुष्पित होने के लिए दहते हुए कंधर की नहीं, अमरदो की जरूरत है।

पूरा समय देनेवाले मिर्क ६ कार्यकर्ताओं ने जिलादान तक की मजिज तय कर लो, यह उनके लिए गौरव की बात तो है ही, लेकिन उममें भी अधिक गौरव की बात आन्दोलन के लिए है कि यह जिलादान त्वात्तरि-नरिरे से सम्भर हुआ है। सरकारी अधिकारी, कर्मचारी, घामनेवक से लेकर जिलाधोग तक, स्कूल-मिधको से लेकर समाज-सिधको, सेवकी, नेताओं तक सबने इस गौरव की उठाते में अपना खोर लगाया है। उममें अधिक इस अभियान को जद-अभिन्न का रूप दिया है घामदानो गांव के लोगो ने। जिले के प्रथम घामदानी गांव की घामस्वराज्य सभा के अध्यक्ष थी पनस्याम सिंहजी ने ही एक दिन कार्यकर्ताओं से कहा था, “इस तरह फुटकर घामदान कब तक

करते रहेगे ? पूरा जिला ही घामदान में आ जाय, इसकी कोविम क्यों न हो ?”

हमारे कुछ मापियों की यह बिना होगी है कि जिनका यह आन्दोलन है, ये ही सक्रिय गही है। बिना व्यक्त करनेवाले मित्र के मन में यह 'धैर्य' घामद उम समय भूमिल-यी रहती है कि यह आन्दोलन 'जिनका' नहीं, 'सबका' है। “लेकिन 'जिनका' से मानलब अगर भावाय या नीचे के स्तर के मरीचों में होना हो, तो उनकी चिन्ता कर के के लिए भी उतरकाशी के घामदानी गांव के ये अधिक मापिण के सदेशवाहक समाधानकारी उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। जिला घामदान-प्राति समिति के संयोजक, और घामदानी की गांव की घामस्वराज्य सभा के अध्यक्ष थी पनस्याम सिंह के मरीर पर जो पटे पुराने कपड़े भूजने रहते हैं, ये उनकी आर्थिक स्थिति का इन्हार करते रहते हैं। लेकिन आर्थिक विपन्नता पर हृदय की सन्मत्ता हाथी रहती है, और इसीलिए आज वे इस अभियान के एक सक्रिय, सभ्य और सफल आरोहक हैं।

उत्तरकाशी अनेक विविधताओं से युक्त है। ३०१८ वर्गमील के इस क्षेत्र में ८३.२% भूमि कीमती जंगलों से ढकी है। गाँवों की उर्वर भूमि उरदावन के नये-नये कोविमना स्थापित करती है। १४० मन प्रति एकड़ तक गेहूँ और ११७ मन प्रति एकड़ तक मक्के को फसल पैदा की जा चुकी है। फिर भी उच्चर विखर पर रहनेवाले निवासी 'लेंगड़ा'—एक प्रकार की वनशक्ति—उबालकर या जानबरी का निकार कर आना पैठ करते हैं। प्रत्येक खेतल कृषिक आप १२६ रुपये है। १९८८ परिवारवाले एक गांव में एक भी लास्टेन नहीं, छोटे-छोटे गांव तो बनेक हैं जहाँ प्रकाश के लिए चीख के दिल्के जलाते हैं। पाराब का दर जोरों से चलता है। स्थानीय जन कारलाओं के लिए सरोद कर बाहर चय आता है। सूती कपडों के के द्वारा कमाई मिल-मालिकों की तिजोरियों में पहुँच जाती है। और इस प्रकार दारिद्र्य का कुहरा और पना होता जाता है।

ऐसे क्षेत्र में घामदान की हवा ने लोगों

को सम्यक विद्या है, गाँव गाँव में यह सावाज
 १-बो है—भगते, बगते और दाह (धराव)
 को दूकानें बन करेगे। इस दिशा में भगवादी
 प्रस्था के लोगों ने महत्वपूर्ण काम किया है
 भगद की दुकान (बजारत) के १०५ मुकदमे
 बाध करेगे और राजीनामे से भगवा की
 मुकामा करेगे।

उत्तराखण्ड समरप्रभाओ और सम्भावनाओ
 से भरा हुआ विद्यादान है। पूरे प्रदेश का
 विज्ञान प्रवेशदान की ओर तेजी से होगा,
 यह उत्तराखण्ड का पया समुदाय के उत्तम
 रवक का संदेश है। क्या यह संदेश अन्ततः
 धारणा ?

वलिा की भेंट : आबू को

और यह एम सुतापण ही है कि उप
 संदेश को प्रेषण से काविरी जिले ने मुन को
 लिया है। मुल और कातिर व विमुओ को
 ओनेवाओ रेमा कब बनगी है इतरा ही
 बन इनार है।

बलिा ने अबू सम्येक को अतो भेंट
 की है। एसा लयना है कि सभार को
 सोलहरी स लविाह ने सभर्यों का आंगेलन
 के जीवन का एक नया अध्याय ही उद्धार म
 प्रस्तुत किया है।

बलिा सम्येक के समय मुक्ति ल से
 २० सामान हो गये थे। वे २० सामान
 को अनवरती ६६ से सम्येक के समय तक
 दिने गये सैरों कायवर्ताओ के अथक पुत्रय
 और धीरे ३ मई कलि माई आदि व
 भवि का व प्रभाव व परिणाम थे।

केविन सम्येक के बाँ अविधान में
 पूरान की गति आओ और ३ जून ६७ को
 सभारह का पहल प्रमणन ३० पी० को
 मन्विन किया गया। पूरी बलिाह लहलाल
 का प्रायस्क पूरा हुअ १४ जनवरी ६८ को।
 पूरा न होकर होना था। १६ जनवरी ६८
 से बलिा हर लहलाल में अविधान
 हुअ हुअ और १२ मई तक, कुल बार
 महीने में ही पूरी लहलीय का काम पूरा
 हो गया, और अविरो प्रार्थ—उद्यम
 लहलीय की—ना १६ मई को हुअ हुई और

सूत्रान-यत्र शुक्रवार, ७ जून, '६८

५ जून को अविधान पूरा हुअ। हुअ बन
 ही चुकी थी, भावसरता थी, गाँव-गाँव तक
 पहुँचने की। पूर्वी धार के करीब डई की
 कायवर्ता मित्र गये अवरयता के व बजूर
 कलि माई के रामपुत्रिओ की जुग गये।
 और बलिा भी जिलादान के पाँच नम्बर
 पर आ गया। सम्येक व समय बलिापालो

ने इस कानि की प्रेणा के रात विनोवा
 का २० सामानो को भट देना चाहू या
 बहुत कायह किया या कि आग पधार
 बिले को बनता को निगाह लवपी जाउ
 जोह रही है लविन साक्ष बढ़ने पर
 भी बाबा नही लये थे। अब बलिा
 ने दो साल में त्रिष दुपुषय का परि
 पय लिया है उछने आना का भारो सर

आवश्यन सूचना

'भूतान यज्ञ का अगला अव १४
 जून का और २१ जून का एवसाय
 'सर्वोद्यम-सम्मेलन' जर्न के रूप में २१ जून
 को प्रकाशित होगा। १४ जून '६८ का
 अन् नही प्रकाशित होगा। अन्वशापक

विनोवाजी का कार्यकम

४ जून '६८ से १८ जून '६८ सहर्षा
 पता विनोवा निवाग
 मा० म्हार प्वादी प्रामोद्योग राय
 सहर्षा (बिहार)। पान न० ६५
 १६ जून ६८ से २४ जून ६८
 हासोपुर। (आवश्यनानुसार पडाव की
 अवधि कट सक्ती है।) १० जुलाई ६८
 से १५ जुलाई ६८ बलिा (उ० प्र०)

सत्यापन दिव्यो पर पुन्सि की जपारती

जोपुग, २६ मई। नापुग को
 मशोर रिक्को पर २५ मई को रजि के
 के १ बने पुन्सि ने दिवादिगो न व अविनि
 सशनायक ने सार प्रदिगो को रिक्को के
 सार पर लिया। अविनायीय गति का
 बाहर के लामे हुए बन्ने माल म्दून व
 कोला काि की रिक्को में ल जाना
 कट्टे थे। सत्यापही टूट के सामने ल
 बने। पुन्सि ने उह पक्षीय और अवररन्ती
 आने बाहूने में सालहर से नवे और उहे

भीन लिया है। वे आ रहे है बलिा,
 १० से १५ जुलाई '६८ तक व लिए।
 कोसिा हो रही है कि उस वकन हर
 पायदानी गाँव। दो बार प्रन्सिपि आँगे,
 और सामानो गाँवो ने प्रतिनिपिर्षी की एत
 विशाल रैली और उमा हो।

बलिा ने भी पूरे प्रदेश को नीचे ले
 भनभोरा है। देग की सन्ने बरी रचनात्मक
 सत्या भी गापी कायम ने पुन आना प्राति
 ना आना धारण कर लिया है। इसलि
 पूरे प्रदेश म हायन है। महदुव कानेनाले
 वो २ अक्टूबर ६६ तक प्रदतदान की
 एमानना अवश्यन बनाना नहा लय
 रही है।

—राही

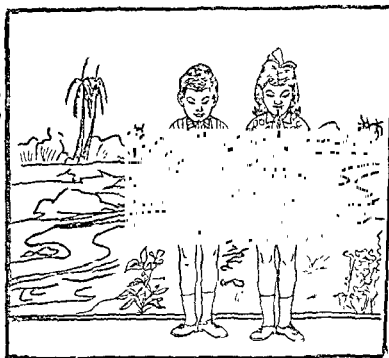
विहारदान हो जायगा'' के उद्घोषक श्री कमलधारी बाबू का निजान

८ मई १९६८ को ग्रान को भयल
 चारो बाबू का निजान अचानक हत्य को
 गति वग हो जाने के कारण हो गया।
 १६ जुलाई ६६ को एक सलट ३ में अवरक
 परिषय बनाये गयेसुवकमाल का प्रात
 प्रमणन विनोवाजी को समानि कसत हुए
 की बननशारी बाबू ने दर विवाक क साथ
 कहा या कि आज हुअ लोग बाबा का
 प्रमणन समानि कर रहे है वृत्तिन डूर
 नही जब सुवेर जिला ही नही पुन विहारदान
 हो जायगा। उचन्सि से विहारगन ही
 बायगा का बाबू सही लोगो ने विर पर
 बरदर कोलने लगा। २ अक्टूबर ६८
 तक विहारगन का सगन सामने है। उमरी
 पुनि से भी बनलधारी बाबू की भाँना को
 वालि नही।
 —सामनासिपय मिं,

नयी सूचना !

नयी सूचना !!

नयी सूचना !!!



१ जनवरी १९६५ से

इण्डियन आयरन एण्ड स्टील कं० लिमिटेड

बंगाल, बिहार, उड़ीसा, असम और मध्यप्रदेश के लिये
गारंटी ब्रोकर नियुक्त किये गये हैं ।

ईस्ट इण्डिया मेटल सिण्डीकेट

९, वाटर लू स्ट्रीट, कलकत्ता—१

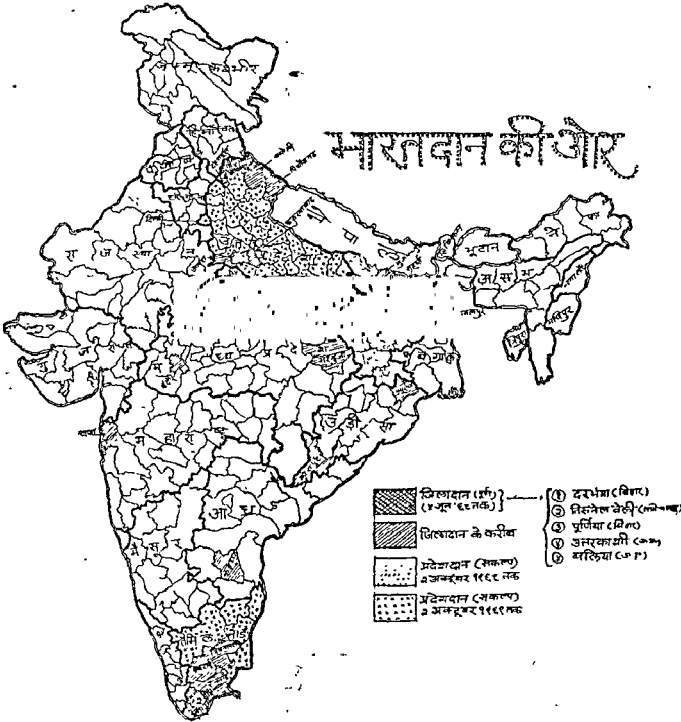
टाटा आयरन एण्ड स्टील कं० के गारंटी ब्रोकर का कार्य हम १९५४ से करते हुए
लोहे के व्यापारियों की सेवा कर रहे हैं ।

आन्दोलन की प्रगति का एक वर्ष: मार्च १९६७-६८

- ३१ मार्च '६७ तक
- ३१ मार्च '६८ तक

दिल्ली	७४
मेरठ	३१७
केरल	७१८
प-कम	७३५
सुजराप	७५४
राजस्थान	१,०१४
असम	१,४५०
म.प्र.देस	२,३४३
महाराष्ट्र	३,१००
बिहार	३,२७४
आंध्र	४,१५४
उत्तर प्रदेश	४,७२७
मिडिया-म	५,३५५
उड़ीसा	६,३५४
गिवा	८,५०८

भारतदान की ओर



वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में १८ रु०; या १ पौण्ड; या २॥ टाडर। एक प्रति : २० पैमे
 श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व्व सेवा मंच के लिए प्रकाशित एवं खंडेलवाल प्रेस, भानुप्रद्वार वाराणसी में मुद्रित
 इस अंक का मूल्य : २० पैमे

भारत-यज्ञ

द्वितीय संस्करण का प्रथम अहिसक प्रोत्तिके का सन्देशवाहक साप्ताहिक

राज्य सेवा संघ का मुख पत्र
 वर्ष : १४
 संयुक्तक : ३७-३८
 शुक्रवार
 २१ जून, '६८

अन्य पृष्ठों पर

सम्मेलन का निवेदन	५५०
एक सद्भावना-प्रस्ताव	५५०
सम्पादकीय	
निवेदन	
विद्रोही युवक	५५१
बहिचे तबिन घमभकर	५५१
बाप को दूर-रचना	५५२
परावर्तनी के लिए प्रस्ताव	५५३
बनिया से प्राप्त तक	५५३
—मनमोहन चौधरी	
वेत और दुनिया	५५५
—अय्यरबाग मरायण	
हम पाहले क्या हैं ?	५५७
—राधा वर्मापिनारी	
राजधान के आघात	५६२
—राममूर्ति	
रक्षाह्वार में शान्ति-मेला निविर	५६७
उत्तरवा-नी प्रामदान से विज्ञान तक	५६८
बनिया विज्ञान का विवरण	५७०
पा-डोन के सपाचार धारि	५७२

सम्पादक राममूर्ति



सर्व सेवा सप प्रकाशन
 राजगट, बाराहली-१, उत्तर प्रदेश
 कोच : ४२६४

सौम्य और उग्र सत्याग्रह

समाज में क्या चल रही है। लोग समझते हैं कि विषमता कायम रहते हुए हम क्या कर सकते हैं। परन्तु वह क्या घर प्राप्यत है। घर समता की जरूरत है। समता लाने के लिए ही सामरान चल रहा है। निर्वर प्रतीकार और सत्याग्रह का यह एक मग है।

दूसरों को तकलीफ दिये बगैर-खुद सहन करना और समझाना ही सत्याग्रह है। सत्याग्रह का नाम लेकर मैं कोई धमकी की बात नहीं कर रहा हूँ। मैं जानता हूँ कि सत्याग्रह का दुस्वयोग हो सकता है, और इन दिनों वो भ्रमर हो रहा है। लेकिन मैं मानता हूँ कि सत्य का भावण्य प्रायदुर्बल करना चाहिए, ठाकि सामनेवालों के हृदय पिघल जायें। इसके लिए चाहे जिस त्याग के लिए तैयारी हो वही सत्याग्रह है। मैं यह भी मानता हूँ कि भ्रमर एक भी सच्चा सत्याग्रही दुनिया में होगा तो उसका भ्रमर दुनियापर पर पड़ेगा और दुनियाभर का हृदय पिघलेगा। लेकिन उससे मग म दुनिया के प्रति प्रेम होना चाहिए।

लेकिन भ्रमर वो दोड़े-दोड़े कायों के लिए उपवास होते हैं, यह सारा गलत है। क्योंकि हम देन रहे हैं उससे ऐसी प्रतिनियार्ण होती है जो पूल उद्भव से सर्वथा भिन्न होती है। जहाँ उपवास का परिणाम सबसे बिल मे प्रेमभाव निर्मल होने में होता है, वही सच्चा उपवास है। लेकिन जहाँ उनकी विपरीत प्रतिनियार्ण होती है, प्रेम-भाव और भ्रमर भ्रमर होते हैं, यह उपवास गलत है। उपवास तो वही होगा चाहिए, जहाँ जिसके विरोध में बह किया जाता हो, उसके प्रति हमारे मन में प्रम हो और उन वास के बाद सामनेवाले को गर्म मानुम पड़े। उसे ऐसा लगे कि मैंने दुष्टता की, गलती की। मैं बिलके विरोध में उपवास या सत्याग्रह करना हूँ, भ्रमर उसके मन मे ऐसी भावना म डाली, तो मैं कच्चा सत्याग्रही साबित होऊँगा। सामनेवाले के मन म जब यह भावना हो कि इस व्यक्ति के मन में मेरे लिए प्रम है, तभी मैं सच्चा सत्याग्रही साबित होऊँगा।

इसलिए जब मैं सत्याग्रह की बात करता हूँ तो बहिये नहीं। यह मैं बिचार की सफाई के लिए कह रहा हूँ। मेरा तो मानना है कि हमारा जो काम चल रहा है, यह एक क्रिम का सत्याग्रह ही है। हमने सत्याग्रह का अर्थयन किया है इसलिए हम उसे कुछ तो समझते ही हैं। सत्याग्रह का यह धर्म नहीं कि किसी एक मोके पर किसीके विस्तार कुछ करना। इसलिए हमारा जो काम चल रहा है—गाँव-गाँव जाकर लोगों को बिचार समझाना, प्रामदान मिलाना—यह सारा सत्याग्रह ही है।

—बिनोबा

यह सही है कि वे विरोधी युवक प्रथो धरनी विद्रोह-भावना को कर्म-कारिता स्वरूपमक वक्ति नहीं बना पा रहे हैं। उदाहरण उन्हें सफलता भी नहीं मिलनेवाली है। धधीर होकर उन्होंने उपद्रव भी कर डाले हैं। यह सब सही है, लेकिन सबसे अधिक यह सही है कि उनके प्रयत्नों ने दुनिया के कान खड़े कर दिये हैं। सभ्रत मानव को एक नयी दिशा, एक नया प्रकाश दीजने लगा है। लोग भ्रमरुने लगे हैं कि नये सवालो के लिए नये तरीके चाहिए। ह्दसान को रोटी तो चाहिए, लेकिन रोटी के नाम में उसे देर तक ह्दसानियत से वचित नहीं किया जा सकता।

विद्यार्थियों के प्रयत्नों ने समाज के सवालकों के मन में (वाल्डेयर के शब्दों में) यह प्रश्न तो पैदा कर ही दिया है : 'अगर वे सोचने लगेंगे तो हम कदा रहेंगे ?'

युवक सोचने लगे हैं। उनके प्रश्न मजबूत प्रहार बनेंगे। प्रतिनिधियों के पदार्थों को टूटना पड़ेगा। मानव मुक्ति के लिए ध्दानुर हो उठा है। युवकों के प्रश्न पच्छिम और पूरव के नहीं हैं, मनुष्य और मनुष्यता के हैं। युवकों की पुकार उस दुनिया की है जो नरों में है, सब बाहर धाना चाहती है। ऐसी दुनिया जो 'जीवन की एक नयी डिजाइन' दे सके। मनुष्यता धीरोगिक मज्जता के प्रतिम चरण में गुजर रही है। कौन जाने युवक के विद्रोह से नयी मज्जता या पहला ध्माप्य घुछे हो। •

कहिये, लेकिन समझकर

'सर्वोदय मूणनरीचिका है। वह वल्गुस्तिष्ठि से दूर हट गया है। स्वावलम्बी गाँव की बात बाजार की धर्षनीति के ह्दय मूण में प्रसयन है। भूदान का विचार बच्छा था, लेकिन उसका भी क्या हुआ ? क्या भूदान की जमीनों में प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ा ? ह्दकारों धामरानी गाँव हैं, लेकिन उनमें भी सहकारी जीवन-यदति का विकास नहीं हुआ। सब भी सर्वोदय के लोग नहीं समझते कि उपदेय से काम नहीं चलता। अगर कुछ धामरानी गाँव नूने के बनाये जा सके तो उपदेय देने की जरूरत ही नहीं रह जायगी। धमी धानू-सम्भलन में जो भाषण हुए उनमें यह जानने की कोसिप नहीं है कि नयी कदा है। धामरने है कि धामरान के धनुमव के बाद भी सर्वोदय के कुछ लोग मगररान की बात करते लगे हैं। सचमुच, उनही उदात्त को बोर्ड सीमा नहीं रह गयी है। बच्छा होजा कि सर्वोदय धामरानलन कुछ छोटी धोमनार हाँव में सेता।

'जो लोग मुद कुछ नहीं कर सके वे सरकारी धोमनार की धानी-पना बनें हैं। धी बज्ररकाव नापमय को बर है कि मेरी में एव वक्त जो प्राति हुई है वह मगर जारी रही, धीर 'राजनीति' दक्षि में पस्वितन न हुआ सो गरीबों का धीर भी उदात्त धीगणु होना। एव धामरानेता का बोर्ड धामरान नहीं है। देहाती धीनों में जहाँ-जहाँ प्रति एकड़ उत्पादन बढ़ा है वहाँ मजदूर की मजदूरी बढ़ी है। राजनीतिक परिवर्तन हो या न हो, उत्पादन बजने से किमीका क्या नुष्पान हो सकता है ? उच्छे, धामे धनकर इमवे सररी मणुडि बजनेवाली है। सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को चाहिए कि वे सहकारिता

का विकास करें, ताकि नयी धीजत का म्वायपूर्ण बंटवारा हो। लेकिन सर्वोदय धामरानलन तो उव लोकरमानव को प्रभावित कर सकता है, जब वह खुद तय कर ले कि किस चीज का पहले स्थान है, किसका बाद को। नशाबन्दी के मामले में राज्य-सरकारों को बोध देने से क्या प्रायदा ? सर्वोदय-कार्यकर्ताओं को धामरने-धामरने पूरुषता चाहिए कि क्या कारण है कि नशाबन्दी के धीयो में ही सबसे ज्यादा भर्षव धायव वनी। जो धामरानलन देस के जीवन को बदलने का दावा करता है वह सचनों को लेकर नहीं चल सकता। जब धीयो में काम ही काम है तो कोई कारण नहीं कि नशाबन्दी के सत्याग्रह में समय गंवाया जाय। जिस काम के लिए ममभगना-धुभाना ज्यादा धारगर हो सकता है उसके लिए कानून का सहारा लेना इस बात का प्रमाण है कि सर्वोदयवालों को सर्वोदय के धामरनों में ही विश्वास नहीं रहा।'

ये केवल विचार नहीं हैं, विचार के साथ नेक सवालों भी हैं। उन नेक सवालों के लिए जिनका इतना ह्दय काय धांसा है। लेकिन धामरनेव तो यह है कि जिन धामरानलन के धामरनेताओं को सवालों दी गयी है, उन धामरानलन के काम धीर तदय के बारे में देस के एक प्रमुख पत्र, 'टाइम्स धाय इण्डिया' को इतनी बम जानकारी है। लेकिन क्या सचमुच जानकारी बम है, या दिग्धम के कुछ धीर धाँवें हैं, जो सवाई को समजने नहीं देती ? जिनकी धार वठाया गया है कि भूदान में जिनकी जमीन भूमिहीनो में बँटी है उननी २०-२१ वनों में मरधार धाय नहीं बँट सकी है, धीर बँटी हुई भूमि में प्रधिवात पर धामराना मनी कर रहे हैं, लेकिन धायजब धामरने के वे ही मवान धार-धार पूरे जाने हैं। लगत ही दुनमें भी बोर्ड रात्र है।

एक धम बडा अवरधन है जो दूर करने पर भी दूर नहीं हो रहा है। हम कैसे समझाए कि सर्वोदय धामरानलन मरकार के 'बन्धुनिटी केवलरमेधे धीधाम' का धार-मरकारी का कारण नहीं है। इगणिए यह मवान ही नहीं उठता कि हम धीरी छोटी धीमनारों के धार नमूने वेत करने किये। क्या धामी में रवतत्रता का बोर्ड नमूना वेत किया था ? क्या कौन प्रातिन पहने से प्रातिन का नमूना मवार ररनी है ? धीर, हम नमूना धामरनेकापि ही धीन ? हम मवाने हैं कि ह्द गाँव धानी मणुडिधक मकि से मयन को धामरनेगा। धामरनेता बनाये, मरधा या परधार बनाये, इग परधरता को, इग धधिधामरान को, धामरान हमेसा के विन्धु मयान बनना चाहता है। उनका भी प्रातिन नमूना मयन से नहीं जयेगी। वह बँटी मणुडि प्रातिन के धामरान में। धामरान बही बन रहा है।

धव समय का गया है कि मयान के धीरता दक्षि को व धामराने नेता, धामरान, धवकार, विधान धीर विधियन सर्वोदय धामरानलन को उव्य कगीर में मयमने की कोसिप करें। उव के मणुडिधुनिधुवर्ष मयमने के लिए कगीर धामरने, धीर मिनिन धामरने का धामरान उदात्त-कर मयानय जलदा की ह्दति में धीनों की दमिण का उच्छे धामरने-धामरान वना धव जयना के धामरान देस में बन्धुनिधुवर्ष करा है, धीर उव स्थिति में सर्वोदय के विचार विधियन में धामरान, धा मयन है।

सर्वोदय में धमनी बात बजने की मरवी मूट है, लेकिन उव मूट के साथ इतनी विमनेधारी की है ही कि बजने में रहने मयमने की कोसिप तो भी प्राय। •

यलिया से आबू तक

सर्वे सेवा संघ के अध्यक्ष श्री ममोहन चौधरी द्वारा आबू रोड संघ-सचिवालय में १ जून '६८ को प्रस्तुत धारावीयन का गिहायलोनन

एक साल हुआ हम सब तिवरामपत्नी में मिले थे। बलिवा-गमेलोन में मिले थे तो उस समय प्रणयदान नदी थी। बलिवा-गमेलोन में बाद दो साल थी। इस बीच में अपना धारावीयन प्रणयदान से जिलादान और भव हो प्राप्तदान तक घाने का चुका है। बलिवा सर्वोप-सम्मेलन में सारण किया था कि १०० प्रणयदान तथा ५०,००० धामदान करेंगे। उस समय तक जिलादान नहीं निकला था। तिवरामपत्नी में कई प्रणयदान तथा दरमगा का जिलादान हो चुका था। ५०,००० धामदान प्राप्त करने का संकल्प पूरा नहीं हुआ था। उस दिना में प्रयत्न चल रहा था। पर इस समय प्रणयदान पुराना हो चुका है, जिलादान भी पुराना होने जा रहा है, क्योंकि देस भर में कुल ५ जिलादान हो चुके हैं। जिलादानों की संख्या और भी बढ़नेवाली है। इस समय तक प्रणयदान ३०० से अधिक हो चुके हैं। इन बीच नये २२,००० धामदान तथा १५०

प्रणयदान, और ५ जिलादान साल भर में तिवरामपत्नी संघ-सचिवालय में बाद हुए।

धर्म विहारवानों ने विनोबाजी की प्रेरणा से संकल्प लिया है कि २ आबू रोड १९६८ तक प्रदेशदान पूरा करेंगे। उनसे लिए वहाँ प्रयत्न चल रहा है। वहाँ साधियों की पूरी लगन सगी है बाबा भी मदद दे रहे हैं। बिहार की प्रेरणा से और प्रान्तों—उड़ीसा, उत्तर प्रदेश तथा तमिलनाडु—में भी राज्यदान का संकल्प कर लिया है। तमिलनाडु से सन् १९६९ तक मानी गांधी-जन्म शताब्दी तक प्रान्तदान पूरा करने का संकल्प लिया है। वहाँ की लक्ष्मी की बड़ी संख्या तमिलनाडु सर्वोपन मण का सहकार इस काम में मिल रहा है। धामदान धारावीयन के लक्ष्य के लिए ६ लाख रुपये उन्होंने मंत्र करिगे हैं। उसी तरह, गुजरात नहीं उत्तर प्रदेश में बाकायदा संकल्प हुआ है या नहीं, पर, उत्तर प्रदेश का राज्यदान सन् १९६९ की २ धनुषवार तक पूरा करने का तय हुआ है। उत्तर प्रदेश का कुचकाणं जाग उठा है, इस-

→गांधीजी के शताब्दी-दिवस, २ धनुषवार, '६९ नजदीक घाने के साथ देस भर में शारावन्दी जन्दी-जे-जन्दी लागू की जाने की मानना तीव्र हुई है। राज्यस्थान में तो वहाँ के सर्वोप-संगठन और नगारवन्दी समिति के लक्षावधान में शारावन्दी-सत्याग्रह भी आक्रमण कर दिया गया है। सत्याग्रह के धारण के साथ राज्यस्थान-सकारण ने राज्य में पूर्ण शारावन्दी के श्रेय की शोकार मित्र है और उससे लिए बचनबद्ध हुई है, यह स्वागत योग्य है। विन्तु शारावन्दी लागू करने के लिए निश्चित प्रथमिय व नमरद्ध सुनिश्चित कार्यक्रम घोषित नहीं किया गया, इससे सरकार की उक्त घोषणा का व्यावहारिक मूल्य बहुत कम रह जाता है। गांधी शताब्दी-दिवस से बकर इत सुभ कार्य के लिए और कौनसा भवसर हो सरता है ?

अब राज्यस्थान नगारवन्दी समिति तथा समग्र-सेवा-संघ की यह मांग सर्वथा उचित है।

लिए अब सन्देह नहीं कि इस धारावीयन में सर्वोप घाने उत्तर प्रदेश रहेगा। धर्मो बुद्ध दिनों पहले उड़ीसा में प्रान्तीय सर्वोप मन्मेलन हुआ था, वहाँ भी इसी तरह का संकल्प हुआ है कि गांधी-जन्म-शताब्दी तक उत्तर में राज्यदान में सारण लगे।

इत से वहाँ में प्रणयदान से जिलादान, जिलादान से राज्यदान तक हमारा माफिना पहुँच चुका है। राज्यदान का विचार धारा तो नया धायाम प्रवट हुआ। धारा जो सारा संघोचन चल रहा है, उस पर दिन तरह धरन डाल सकते हैं, जो राज्य-व्यवस्था चल रही है उन पर किस तरह भ्रसर डाल सकते हैं? कार्यकर्ताओं में नया उत्साह धारा है, क्योंकि धामदान-धारावीयन प्रव सिर्फ एक एक गाँव मिश्रकर सो-हजार या पाँच हजार के पौर एन-एक गाँवों के धायिक और नैतिक विकास का मान एक कार्यक्रम नहीं रहा, उससे धर्मो बकर सारे देस की धायिक, सामाजिक रचना बरत डालने की जो शक्ति इस धारावीयन में निहित है, उसकी संभावना और दिया सबके ध्यान में धारा चुकी है। एक नया संकल्प हुआ है।

कई समाप्तार्थों भी हमारे सामने खड़ी हैं। उनका सामना हमें करना होगा। एक तो सामन्या यह है कि जन-धारावीयन की व्यापकता के साथ-साथ गहराई कम होने की संभावना उनमें पैदा होती है, जन्दी में पैने से फिर यह खतरा उत्पन्न होता है। इसलिए हमको सोचना चाहिए कि-किस तरह से विस्तार के साथ-साथ इसकी गहराई भी कायम रहे, ताकि उससे से जिस शक्ति का दर्शन प्रेषित है उस शक्ति का दर्शन उनमें से हो। मैं समझता हूँ कि सबसे महत्व का प्रश्न इस सम्बन्ध में है कि जिस तरह धारा जो साठ हजार गाँव इतमें धार्ये हैं, जिसे धव लाख तक पहुँचाना कोई मुश्किल बात नहीं है, उसी तरह इन लाखों गाँवों में उनकी शक्ति खड़ी हो, स्थानीय नेतृत्व, सेवकरन उन गाँवों में कैसे पैदा हो, गाँव में जाणुति धार्ये और गाँव संगठित तथा शक्तिवाली बनें, यह कोशिश हमें पूरी शक्ति लगाकर करनी है।

धामयनभाषों के संगठन पर हमें ध्यान देना होगा, क्योंकि तिवरामपत्नी में तद

(६, १० जून '६८ को आबू रोड संघ-सचिवालय में छवीठ)

का काम बठिन परिस्थितियों से मुजर रहा है। उरदान बहुत घटा है। देश की आर्थिक मदी का सम्बन्ध तो उखले है ही; उसके साथ-साथ हम जिस काम को धान तक करते प्राये, अब उसको एक भाषाया भा गयी है। इस तरह से अब प्राये नहीं बढ़ सकेंगे। पहले ही विनोबाजी ने चेलावनी की थी, वह सब साजित हुई। खादी में क्या चितवन चला है। पानीपत में एक प्रस्ताव पास हुआ। कुछ दिवा-भूतन हुआ। इमारत यहाँ भी सोचना है। अपनी नीति इस बारे में तय करनी है कि खादी-प्रामोद्योग के बारे में कंठे प्राये बंधेंगे।

भारत सरकार ने झण्डक भेहता की अध्यक्षता में एक कमेटी विठायी थी। उसकी रिपोर्ट भी धा गयी है। उसमें भी कुछ महत्व के सुझाव दिये हैं। उस कमेटी के सुझावों से पूरा संतोष नहीं है। पर वह हमारी कमेटी तो नहीं थी। खादी को माननेवाले और खादी को न माननेवाले ऐसे सब लोगों की मिली-जुली वह कमेटी थी। इसलिए उसमें जो खादी के बावस नहीं हैं ऐसे लोगों ने जिस हद तक हमारी कुछ नगिं स्वीकार की हैं उसका भी काम की विद्या पर अक्षर होनेवाला है। इस बारे में भी यहाँ चर्चा होनी चाहिए।

एक समस्या जो इन दिनों खरी हो रही है, वह शराबकरी की है। एक तरफ माँग हो रही है कि गांधी-जन्म शताब्दी तक पूर्ण शराबकरी ही, दूसरी तरफ जहाँ शराबकरी लागू थी वहाँ डीली होयी जा रही है! अब इसको लेकर कुछ प्रांतों में सत्याग्रह भी चला है। कुछ केरल में चला, कुछ उत्तराखण्ड में चला। अभी बड़े पैमाने पर सत्याग्रह राजस्थान में चल रहा है। इस सत्याग्रह को विनोबाजी का प्राणीर्षद मिला है और उनकी पूरी सम्मति मिली है। यह बड़ा मोरना यहाँ खड़ा किया गया है। इसमें वे जनसत्तिका का दर्शन होगा। इस प्रांत में इस मोरचे पर सफलता मिली, तो दूसरे प्रांतों को भी इससे मार्गदर्शन मिलेगा। इसी प्रकार उत्तराखण्ड में भी सत्याग्रह चला है, शराबकरी का आन्दोलन चला है। भाषा दर्शन शराब की दूबानें बन्द हो चुकी हैं। जहाँ जन-आन्दोलन चल रहा है। यह समझी भी चली है। अपने प्राय यह ऊपर उठा है।

राजस्थान में इस चुनौती को उठा लिया है। मैं आशा करता हूँ कि यह आन्दोलन प्राये बढ़ेगा। दूसरे प्रांतों में भी इसकी योजना क्या हो, इस पर हमें सोचना है और सोचकर इस दिशा में प्राये बढना है।

देश की परिस्थिति और दुनिया की परिस्थिति को देखते हुए आज शक्तियों का, पक्षों का बँटवारा हो रहा है। इसकी योजना है। दबी हुई जनता में जागृति पैदा हो रही है, इस जागृति को विधायक दिशा में प्राये बढाना है। इसके लिए हमको त्रिपिध कार्यक्रम के सिवा दूसरा कोई नारणर रास्ता हमारे सामने दीखता नहीं है। हमारे काम में कई समस्याएँ

प्रायी हैं; गतियाँ, कमजोरियाँ प्रायी हैं। और नजदीक से देखते हैं तो ये गतियाँ, ये कमजोरियाँ दीखती हैं तो समता है कि इस तरह वहाँतक पहुँच पायेंगे? इसमें से क्या निकलेगा? लेकिन परिस्थिति की माँग रखकर सोचते हैं तो इसके सिवा दूसरा रास्ता दीखता नहीं। हम यहाँ देश की परिस्थिति की समीक्षा करते। आस में विचार-दिनिमय होना। मैं चाहूँगा कि देश की परिस्थिति के सम्बंध में प्राये आन्दोलन को देखें, उसको तेज-दी करके के लिए जो भी परिवर्तन करना हो करे, और प्राये साल के लिए एफ्ट टिट्ट, एफ्ट विचार लेकर हम यहाँ से जायें।

आन्वू रोड की डायरी से

५ जून : सायबान ! खादी-प्रामोद्योग प्रदर्शनी के उद्घाटक (राजस्थान सरकार के एक मंत्री महोदय) बहुत विलम्ब से प्राये। इसलिए, उद्घाटन-समारोह के अन्त में जे० पी० को दो शब्द कहने थे, लेकिन उद्घाटन के पूर्व ही उन्हें भाषण देना पडा। उद्घाटक महोदय के विलम्ब की प्रातिप ज्यो ज्यो बढनी गयी, त्यो-त्यो जे० पी० को 'दो शब्दों' वाले भाषण की प्रातिप भी बढनी पडी।

६ जून : रात्रि। सर्वं देशा साथ वे रात्रि-कालीन प्राधिवेशन में बड़ी गिनती तक बसतार्थों और श्रोताओं का महा घमास रहा।

उसो सभा में सप के प्रायस महोदय मन पर नगें बदन बँट थे। दादा ने देश की आर्थिक परिस्थिति का जिक्र करते हुए कहा, 'देश भ्रष्टा है, नगा है। हमारी सभा का प्रायस इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है।'

८ जून : मुगद। डा० गुणीला नैम्बर का महाबन्दी पर एक औरदार भाषण हुआ। भाषण मुकबर एक श्रोता ने विगिनत प्रदन पूछा, 'जब प्राय सरकार में मंत्री थी, जब प्राये नचों नहीं गरबारा से इन विषय पर मनभेद जाहिर किया?' इस प्रदन का उत्तर देते हुए डा० गुणीला नैम्बर ने कहा, 'प्राय

सर्वोदयसलो में एक Spiritual affo-gance प्राय कर रहा है। समझते हैं कि सिर्फ इन ही सही काम करते हैं।'

उसी सभा के अंत में सप का निवेदन प्रस्तुत करते हुए जय निर्मला कहने में उत्तर-बाणी वे जिवाशन में प्रगट हुई लोबसत्तिका का जिक्र किया तो श्रोता प्रतिनिधियों का दिल उखल पडा और जब उन्होंने जागतिक परिस्थिति का जिक्र करते हुए स्वर्गीय कंगेडी बणु को माँ के हृदय की बरण पुजार गुनायी, तो प्राय सबको र्शितों में धाँसू छलक प्राये।

९ जून : मुगद। दादा का भाषण शुरू हुए कुछ ही समय बीता था, भूमिका प्रस्तुत करने के बाद दादा मृत विषय पर प्राये ही वे कि प्रायस महोदय भी पडी बनी, और वाक्य जहाँ-ना नहीं छोड़ कर दादा 'मादर' के नामने से हट गये।

सम्मेलन की रगी प्रागिरी सभा में सम्मेलन अध्यक्ष ने प्रायना गुनारोप-भाषण शुरू करते हुए कहा, 'सभी जे० पी० ने कहा कि प्राय तो प्राय 'डिस्टेट' ही गये हैं! मुझे यह गुनकर दुप हुआ, यह कहें श्रो उन्हें सुल होगा, इसलिए नहीं कहूँगा...लेकिन मैं कहना चाहता हूँ कि मुझे दुप हुआ है।'

देश और दुनिया के वर्तमान सन्दर्भ में भारतदान एक विकल्प

संघ-अधिवेशन में श्री जयप्रकाश नारायण का भाषण

जय मुवह मुझे बोलने के लिए बढ़ा गया तो मैंने यिसे से कहा कि मुझे क्या सीखने विषय के बारे में। जो विषय बताया गया वह विषय तो बहुत बड़ा है और वह ऐसा विषय है जिसमें हमसे तो कोई भी परिचित नहीं होगा। हम सब समाज में ही हैं। कार्यकर्ता हैं, एक फुल्लिहाथे प्रादोशन में लग हुए हैं, जो देश दुनिया में बया चल रहा है, इसके बेवबर होकर हम अपना काम कैसे कर सकते हैं? वेग की क्या परिस्थिति में जगता जोडा-सा जिक्र मनमोहन भाई ने किया है। जो परिस्थिति में धरती नहीं है यह तो स्पष्ट ही है। राजनैतिक धार्मिक अथवा सामाजिक, सब कुछ अगर धार समावेश कर दें तो किसी भी गले में परिस्थिति प्रकटी नहीं दिखाई देती है, बल्कि इस परिस्थिति में जो योग्य से लोग सर्वोप के मने के नीचे हैं और कुछ मसामो के द्वारा निष्पुट वेका का काम कर रहे हैं वह एक धारा की किरण जेते हैं।

जिन्ना काम रिद्धे दो बरों के मने में बलिया के धार से जो चुरा है उसकी कृपा मुझे भी नहीं थी। एक बहन बडा काम हुआ है। जो हम करना चाहते हैं और जो हमारा उद्देश्य है, उसके मुताबिक में तो कुछ भी नहीं है बहून कम है ऐसा मानना चाहिए। फिर भी, ६० हजार सामान हो जायें ३ ती प्रलयप्रदान हो जायें ५ विराटान हो जायें, ये कोई छोटी छोटी घण्टाएँ तो नहीं हैं। गुजे तलना है कि जो देश का विराट हुआ है, उसके मुताबिक लिए जोडा सा काम बन गया है। देश सब बढ़ा जागा, फिर आगरा, यह तो प्रान विज के रूप में लडा है, और धार का विराट लेने हैं और धारने समय में बना करने हैं उन पर बहुत उद्य निभर बरवा है। यो तो मैं समझता हूँ कि क्या बन रहा है बालन है और सामाजिक जीवन दूट नहीं हुआ है साजिक तन दूट नहीं चुका है, उनमें सबसे बडा कारण हा दग की जनता है। इनके साबडर लोगों की घनेड प्रकर के धोर

बहुत धरा में प्रसह्य कट है। फिर भी हर कोई अपने बाप सघे में लगा है और जो कुछ बन पड रहा है वह कर रहा है। इस प्रकार से करोडा लोगों के धामने धरने काम में लगे रहने के कारण -मते हो वह काम बाल बच्चे के भरपूर पोषण का हो, या धोर बच हो, उनसे वाहर निकलकर यह सारा जो काम चल रहा है इसके चलते देग बन रहा है। और यह हमारा भीभाग है कि इन देश के लोगों में धनी तक धानी समक है और इनका पंय है धोर इनका परचम है। हम बकर धधीर हो जाते हैं, इस विन्ना म कि देग में गति नहीं है और प्रकति धीमो ही रही है यह बात टीक है। जिस गति की कमी हम देखते हैं वह सामूहिक गति है महाधोरी गति है। फिर वह भी किसी दद तरथा ही जाती है। लोग मिलकर काम कर लेते हैं। याव धाज भी खदे हैं। साडे पाँच लाख गाँव हैं-उकंठी हो जाती है, और कुछ भी हो जाग है, मडरो में भी यह बन ही रहा है। इनके वाक्यद हम प्रकार के धोर भी धनया धारि हैं।

युक्त धाा है कि देग की जनता को धार कोई ऐसा मार्ग मिला है जिससे देग को बिलकर नवाने की गति बँडा हो जाडी है तो हम अन्तिय धाता बना लेगे।

गैरहाथेती शासन की निरुपेक्षित रिद्धे नवान के बाद हमारे रिद्धे ही घुलने मित्र जो राजनैतिक परिद्धा के बडे बडे नेता हैं उनको हमने लघाओं में दद के साथ बहने हुए युवा, धोर एक बार नहीं धनेक बार बहने हुए गुना कि प्रजाय से खलें जौन केवल तक पुर्व से परिग्रिय धोर जनर में बरिएत तक, तो बही भी धारय का राज्य नहीं मिलेगा। दद देरिने, ताराबया हो गया? १२ १५ महीनो के धाउर किना उल-पेर हो गया। वह सारी जो धाराएँ बँडा हुई थी, बट धी, जनता की नयी धाराएँ बँडा हुई थी, बट

धब मिट गयी और एक राजनैतिक परिस्थिति जो बँडा हुई थी, वह कुछ धोर भी गढ़ी हुई। और वह मध्यवर्ध युवाय धब कई जगह होनेवाला है। इन भवों में नाशने के मुताबिके में कोई भी गति पडा के रूप में, बनी ऐसा दीलना नहीं है। साम्यवादीयो की गति भी मिलर गयी है।

जो कार्यकर्ता होय, धोर साधारण लोगों में भी अधिक प्रभावी है जो धारयधी हैं, उनके धरर बगल में दूट हो चुकी है धोर बडी दूट है। समाजवादीयो का भी हाथ बुरा है, ऐसा बहना चाहिए। अलग पार्टी भी गति दुर्बल हुई है। उनमें कुछ दूट धोरजन के युवाय को लेकर बँडा हुई है। और एक जो दुर्बलता धारय में देती गयी-धुप्राशन की कमी, धोर नैतिक धाधार कमजोर धोर दुर्बल, यह दूर पल में हम देखते हैं। कोई भी जो गंद-कायेती पल में है, ऐसा धारा नहीं कर सता कि हमारे रूप में धोरशासन है। धारय के विरोध में या कायस में प्रतिष्ठित कोई दूसरी धार्य नहीं बन गयी धनी तक। ३० एम० के० है, तो एक प्रादेशिक धार्य है। यह जरूर है कि धनेके धारय को उनसे धारयध किया धोर धारय के दद पर बँडी धोर यह धार्य धाज भी धनया राज्य कर रही है।

जो भी धिन सीधा गया या धारयधो के अरिधे धोर धारय के नदामो के धारा - ३० एम० के० का बँधा का तो देता नहीं। धानी धाराधुवाई धारेरिवा में गये, तो वहाँ तो कुछ उठने बडा उस पर से हरजिन नहीं लगता है कि यह बोद चीजन नला ये, धामिनाय, भावा धम दद के बारे में धारय विचार उठान बडा, यह धारय बात है। दूहमन को दुर्गिया पर बँडा हो तो सब कायस के विरोध में है, इनालिए धन मित्र सबते हैं। कोई जनिय पर है कि कोई धाराबन पर है कोई एकधम पूर्य है धोर कोई एकधम परिधम। इनका पक है तोनो में नाय पोस धोर। इनका पक है तोनो मला की मूय है। यह धारा है कि ये कुछ पर संरय मुक्त मातृय नहीं कि ये कुछ पर गति में बना बनेले? कुछ कोधिय बरेंय गाया। धारिध के निजनिधयण शाहव ने मुने न बहा कि धि-धारा। बर्यद से बहून जगाय धधक हके नो लेना चाहिए। कुछ दग का उठाए दने ५ पा

है। १००० घण्टे का प्रोग्राम ही हृदयमत् है वेदन्त में, तो वहाँ भी कमजोरी है, दुर्बलता है। 'कन्वैन्टिव लीडरशिप' नहीं है, यह भी एक दुर्भाग्य है। श्रीर मेरा न्याय है अंदर अंदर दाँवपेंच भी जो करनेवाले हैं, वे करते ही हैं। तरह-तरह की प्रफवाहें हम सुनते हैं। सब प्रफवाहें सही नहीं हैं, लेकिन इतनी बात तो सही है कि हृदयमत् कमजोर है। फंसते कर नहीं पाती है। ऐसी परिस्थितियाँ बन जाती हैं, जिनका भयूर जवाब जल्द न दिया जाय तो स्थिति विगड जायगी। भव नागालैण्ड के 'सीजफायर' को चार वर्षों से काम नहीं हुआ।

अभी तक नागालैण्ड का सवाल हल नहीं हुआ। चल ही रहा है। श्रीर प्रायः प्रवचनों में देखते ही होंगे कि वे लोग चीन जा रहे हैं। श्रीर चीनवानो ने धारावासन दिया है कि हम हथियार देंगे, ट्रेनिंग कर देंगे। परिस्थिति दिन-ब-दिन बिगडती जाती है। श्रीर में मानता हूँ कि इस परिस्थिति में जनता कुछ हमारी तरफ देखनी है, यह कुछ प्रतिशयोक्ति होगी। हमारी तरफ माने सर्वोदयवालो की तरफ देखते हैं, यह प्रतिशयोक्ति होगी।

इस राजनीतिक परिस्थिति में, जब पक्षों की तरफ से—पहले तो कार्यक्षेत्र के विरोधी पक्ष थे तो उनकी तरफ कुछ देखते थे, शीट भी भाये थे, काफी विजयी हुए थे, काफी राज्य हाथ में भाये थे और जो उससाह मनाया गया उस समय सखनऊ मे, कलकत्ता में, पटना में, पंजाब में, चण्डीगढ़ प्रादि में यह सब भापके ध्यान से होगा, इतने बड़े हीरो माने गये थे वे सब लोग, प्रायः परिस्थिति बदली है, —अज्ञता प्रायः कुछ ऊँच-सी गयी है। जो प्रायः राजनीति है, राजनैतिक पक्षों की भापसी सदाश्रयों हैं, पक्षों के भगडे हैं और इनसे कुछ निराशा है, वो उससे से हम एक मौका मिलता है।

परिस्थिति की हमारे काम को चुनौती

भव जिनता मनमोहन भाई ने कहा यह बहुत बड़ा काम हुआ। लेकिन उस काम में हमारे काम को एक चुनौती है। श्रीर उसरी बरपता करके शरीर बरप उठता है कि यह कैसे होगा भव! मायूम नही कि उभयै पुरी बरपना भी हम सबको है या नहीं है,

भव विहारदान २ प्रवचन तक न भी हुआ तो मान लीजिये ३०-३१ दिसम्बर तक हो। जब भी हो, होगा। विहारदान के साथ मेरा नाम जोड़ा जाना है। उसका श्रेय हम नहीं लेते, वह वो बाबा के ही काम करने से हुआ, श्रीर, विहार में जो लोग हैं—बंदनाथ बाबू, श्रीर बाकी विहार के लोग हैं।

भव तिरनेलवेली का जिलादान हुआ, उत्तरकाशी का जिलादान हुआ, बलिया का हुआ, तो वहाँ कोई बड़ा नेता तो नही था। बाबा तो वहाँ थे नही। इसका बहुत बड़ा महत्व है। जिलादान हुआ भी बहुत बड़ा लोभ नही प्राया मानिये। लेकिन एक प्रदेश-दान हो जायगा तो फिर वह सारा बोझ कचे पर प्राता है—प्रायिक, राजनैतिक सारे निर्माण का। भव यह कहना कि हमारा काम हाय फैलाने का है, उसके बाद दूसरे करेंगे। दूसरे करनेवाते हैं, वे तो कर ही रहे हैं। उभी बग से होगा २ दूसरो को मिलाता पड़ेगा कि कैसे करें। कौन किसको सिलायेगा? कोई कसेबकट, ए० डी० प्रो०, बी० डी० प्रो०, पटवारी, तहसीलदार को मिलायेंगे। जनता को सिखायेंगे कि गाँव के अंदर से कोई शक्ति पैदा हो सकती है, जो बुद्धिजीवी हैं, धोखा-बहुत लिचे हैं। वे बहुत ज्यादा तो लिचे नही है अभी। श्रीर इसमें से एक समस्या पैदा हुई, कि भव जिस जिले का दान हो गया तो उस जिला में दो-चार मसले हैं। भव उनका क्या होगा।

शहरों में हमने शराबबंदी कर ली, कभी पाप ना काम कर लिया, कभी पोस्टर बंगरह का काम कर लिया, तो ठीक है। हम किसी बुनियाद के काम में तो गये नहीं, जैसे ग्राम-दान किसी हद तक बुनियाद में जाता है। प्रायः राजनैतिक पार्टियाँ जहाँ तक जाती हैं, उससे अधिक ग्रामदान जाता है। लेकिन ऐसा कोई कार्यक्रम शहरों के लिए हुआ नहीं।

भव विहारदान हो जायगा, फिर सन् '७२ का चुनाव होगा और सन् '७२ के चुनाव में फिर बड़ी संख्या निकलेगी। तो उनसे क्या माने होंगे? भव दूसर तो विहार का ग्रामदान हुआ और उधर शासन बगता है, मिड शासन से इतना बरने मतलब नहीं है। भवना दलों का शासन, दलों की भवनी-भवनी नीतियाँ हैं,

उनको जोड़कर भवना १७ सूत्रीय या २० सूत्रीय कार्यक्रम बने, वह बनता है तो उसमें से कितना जमीन पर उतरता है और कितना कामज पर ही रह जाता है, वह तो देखते से मजूम होता है। यही नहीं रहेगा तो क्या होगा। तब कुछ मुद्दी भर लोग तो सब कुछ कर नहीं सकेंगे। प्रायः जो देश की राजनीतिक परिस्थितियाँ हैं, उस परिस्थिति में यह जरूर मानना चाहिए कि हमारे काम को सरलता हुई है, भौका मिला है और भव हम अधिक उरसाह और भारतीयशास से और अपने विचार को भवधी तरह से समझकर काम करना चाहिए।

शहरों में लोग काम में लगे हैं, उधरनि काम के विचार को वहाँ तक समझा है और उनकी भासमगी में धान्दोलन के काम में क्या बरबादपन रह जाता है, इस पहलू पर हमें भरपूर ध्यान देना है। इस धान्दोलन की यह बुनियाद पैदा होना हुई। पहने लोग बहा करने थे कि साहब, प्रायका काम तो बहुत बरछा है, लेकिन विलम्ब से होता है। भव उनके मुँह बंद रहते हैं। भव वे बोल नहीं सकते। उत्तर प्रदेश में हुई प्रगति का प्रबंध समिति के सामने माने जो नकशा खींचा या शहरराजकी वे तमिलनाड में जाने के बाद जो वहाँ प्राकाशा पैदा हुई, उससे यह नहीं लगता कि हम बहुत दूर की बात कर रहे हैं, जो ५० वर्षों के बाद हमारी बकड में धारेगी। प्रदेशदान हो जाने के बाद तो हम यह नहीं बह सकते कि जो यह नीचे से काम हो रहा है, इसमें देर लग रही है। यह तो जल्द-जे-जल्द होना चाहिए, नही तो काम बिगड़ेगा। काम तो नीचे से ही हो रहा है। ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य, प्रवण्डदान, प्रवण्ड-स्वराज्य, जिला स्वराज्य फिर विहार-स्वराज्य। लेकिन ऊपर से भी कुछ करना चाहिए, यह भी प्रावश्यक है।

कुछ राष्ट्रीय महत्त्व के प्रश्न

सेवाग्राम में शहरराजकी की प्रेरणा से एक गोष्ठी हुई थी। गोष्ठी में बाकी लोग भाये थे। उस गोष्ठी ने भी बाकी नेतृत्व दिया और गोष्ठी में जो निर्णय हुए, उन पर कुछ कार्य हुआ। जैसा कि मनमोहन भाई ने कहा,

यह प्रयत्न किया जाय कि पाठियों के पारस्परिक भेद के होने हुए भी कुछ राष्ट्रीय महत्त्व के प्रयत्न हैं, बुनियादी प्रयत्न, जैसे देश की एकता। यह प्रयत्न किया जाय, वा सेकुलरिज्म का प्रश्न किया जाय, धर्म विरोधिता या इनके लिए कोई शब्दा सा शब्द निकालना चाहिए—द्वितीय, मराठी, बंगला, चाहे जिन भाषा में हो, पर शब्दा-सा मन्दर निकालना चाहिए। यह प्रयत्न किया जाय। डेमोक्रेसी का प्रयत्न किया जाय। यह खतरों में है। राष्ट्रीय एकता भी खतरों में है। बाहर से नहीं, भीतर से। भीतर की ओर राक्षस पैदा हुई हैं, उससे से। अतुष्टि का खतरा है। इसका सामर्थ्य कम हो चुका है। इनके खतरों में, बंगला में, मेरठ में, इलाहाबाद में, और भी कई जगह हुए, कहीं सामर्थ्यमयता को भाग फूट जाती है तो नजर घाटा है।

लोकतन्त्र जो चम रहा है उसकी जो दुबलताएँ हैं, और जो भाषा-संविधान है, इलेक्शन का जो कातून है, पत्रों के जो भावों का पारस्परिक व्यवहार है, इनके बारे में कुछ सोच विचार हो कि जो भी राजकीय बदलि धार है उसका कोई कानि-कानि परिवर्तन भयान न भी होता हो कि पाण्डित्य सिस्टम से सामर्थ्यमय विस्तार हो या पत्राचार सिस्टम हो, और कोई सिस्टम हो, कोई कानि-कानि परिवर्तन न होने हुए जो उभो-उभो पर जो खतरों घाते हैं निम्नलिखित पुनाब के बाद से, तो उन खतरों का जिस तरह से मुकाबिला किया जाय, कथे किया जाय ? इन प्रश्नों के ऊपर तो कोई पार्टी ऐसी नहीं होगी जो कहेगी कि हम नेशनलिस्टों के सिन्धु हैं। सेकुलरिज्म के बारे में चापल्य बनाने का ही हवाला दिया नहीं है हमने। मैं नहीं कह सकता हूँ कि कोई ऐसी पार्टी—सोशलिस्ट हो, गैर-सोशलिस्ट हो, किसी भी विचार की पार्टी हो।

मुझ के भाविक प्रश्नों के बारे में हम 'अवग्रह' लाने की कोशिश करें। चाहे वह चापल्य का प्रश्न हो, विदेशी बर्न का प्रश्न हो बेकारी का हो। कुछ ऐसे खतराने लिये जायें जिससे दरवाजा करीबों लोगों का सम्बन्ध को घाटा हो। उनमें से कुछ 'कमेन्स' निकाला जाय, एक राय निराली जाय।

एक राय न भी हो तो भावनामय विकासों का।

इसी तरह भाषा का प्रश्न है। यह तो स्पष्ट है कि हम प्रश्न पर ध्यान नहीं होती है। इनमें देश के विपटन के बीच भरे हुए हैं। भाषा-प्रश्न का सरकार कहती है और भाषा-प्रश्न को भाषा-पार्टी कहती है कि यह तो हम भाषा नहीं कर सकते हैं कि एक राज्य के अन्दर कोई एक भाषा और राज्य हो। चाहे उसको उपराज्य (सब स्टेट) ही क्यों न कहा जाय यह हम मानने को तैयार नहीं। क्यों भाषा मानने को तैयार नहीं है ? भव इस प्रश्न को लेकर उठते हैं। तो मेरी अपनी दृष्टि में एक राय है, इनके बारे में सच की क्या राय है, मुझे नहीं मालूम। और इस पर कभी चर्चा हुई है, यह भी मुझे नहीं मालूम और इसके ऊपर कोई कमेंटस होगा, यह भी मुझे नहीं मालूम। शान्त मालूम है कि लोग विदेशीकरण चाहते हैं सत्ता का और शासन का उनके अनुकरण यह विचार है हमारा। और यह विचार यह है कि भारतीय केतीय राज्य को जो काम करना है उसका भर उसके पास रहना चाहिए। राज्यों के पास विदेशी-शक्ति रहनी चाहिए। राज्यों का बल रहा है, वह जल्दी ही गमा वह रही है। यह नहीं होने का है।

केन्द्र और प्रदेशों की जिम्मेदारियाँ ?

जब तक केन्द्र में भी और हर प्रदेश में केतीय राज्य का तब तक तो ठीक था, हालाँकि उन समय भी मानते होते थे। प्रश्नी प्रश्न यह है देश की सुरक्षा का नाम, विदेशों के साथ सम्बन्ध रखने का नाम विदेशों के साथ भाषा-निर्माण इत्यादि का काम। हमारे दम का एक निष्कर्ष रहे 'पासमेंट का काम रहे और इस तरह से और काम उनके होने चाहिए। बाकी सब काम राज्यों को जानना चाहिए। और यह सभी सम्भव होगा जब सब लोगों की एक राय होगी। लेकिन इसका प्रयत्न कुछ न-कुछ करना चाहिए और मैं यह मानता हूँ कि हमारा सपना का और सुनिश्चत, जो सुनिश्चत भाग इच्छित है,

एक सुनिश्चत रिजिजनलिज्म, एक ही प्रकार का सम्भव रहे (केन्द्र का हर राज्य के साथ) एक होना नहीं चाहिए। केन्द्र और राज्यों का सम्बन्ध निम्न निम्न हो सकता है, भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में। उल्लेख लिए हमारा काठोटीयूएन न लचीलापन होना चाहिए। और यदि विकेंद्रीकरण की तरफ हम जाते हैं तो वह भावों का ही जाता है। लेकिन तब वह प्रयत्न गोल बन जाता है। लेकिन निश्चित यह है कि भाग सरकार के पास बाहर का काम है। जब भारत सरकार से प्रश्न आते हैं कि हमें क्या मिलेगा, मदद मिलेगी, उल्लेख लिए सब उनके दरवाजे पर दौड़कर जाते हैं। राज्यों का कुछ भाग स्वतन्त्र हो तो उनका भी एक निश्चय हो जाय। राज्य को मदद मिलने उसकी ही केंद्र देना। अपनी और से भाषा नहीं। और यह सब प्लानिंग इत्यादि के बारे में भी होना चाहिए।

इसकी नीति तय करने क लिए देश के राजनीतिक नेताओं को और कुछ डूबने लोय हैं, जो राजनीति में नहीं है, फिर भी देश में जिनका ऊंचा स्थान है, समान से जो माने गये हैं, ऐसे लोगों को बुलाया जाय, ऐसी कोई बड़ी बड़ी मीड इक्विटी नहीं की जाय, १०० भावनों ही। उसको एक नेशनल कन्वेंशन कहा जाय, उसकी पूर्ववर्ती हो और उसके इच्छित बनें, उसके लिए उपर उभारें, और चर्चा करके उसके से कुछ निकाला जाय। तब बात का प्रयत्न किया जाय कि उसमें जो तय होता है, उस पर सब प्रयत्न करें।

६० हजार भागदान होने के बाद और ३० करोड़ प्रत्यक्षदान होने के बाद राजनीतिक क्षेत्र में, हम कुछ कर सकें, इसकी एक स्थिति पैदा होती है। लेकिन प्राथमिक क्षेत्र में तो हम बहुत दुर्बल रहे। और जो यह त्रिविध कायन्तम बना, उसमें जो जिस प्रकार हो पाती का काम होता रहा उसी प्रकार होता रहा। सबाने बहा को नया मोड़ दिया। लेकिन वह जो निष्कर्ष ही हमारा, साथी कोई बहुत प्रामाणिक हूँ मैं नहीं सम्प्राप्तियुक्त ही हूँ और उल्लेख न करने ज्यादा हम कुछ कर नहीं पाये। परन्तु यह हूँ हूँ तो चापल्य हम भयान भाव पर रहे होते।

श्रृंग-विकास की धीमी रफ्तार !

धार्मिक क्षेत्र में जो स्थिति है, उसमें भगवान् की हारा से विघ्ने घाल की फलत अच्छी हो गयी। एक तो वरसात अच्छी हुई और दूसरी एक बात और हुई। इसमें किसानों का भी हाथ है और सरकार का भी हाथ है। और कुछ बिदेसी एजेंसियों का भी हाथ है, और सबसे बड़ा हाथ तो विज्ञान का है। जो चमत्कार हुआ है, वह नये योजों के कारण हुआ है और उसरी सम्भवा बटूत बड़ी है। श्रृंग का अगर कुछ हो, और श्रृंग की जो कल्पना है, तो प्लानिंग बनीराम ने बहुत विचार करके भी, भारत की श्रृंग के बारे में जितना गाडगिल साहब समझते हैं, उतना पहले के लोग, जो उपाध्यक्ष होते थे, नहीं समझते थे। लेकिन भावतूट इसके उनको हिम्मत नहीं हुई, इससे ज्यादा कहने की कि पांच फीसदी हमारा श्रृंग होगा श्रृंग में प्रति वर्ष। पांच फीसदी। भय कोई तथा दो, डारि फीसदी भावतूट बढ़ जाती है तो, पांच फीसदी अगर बढ़ती है तो, धार्मिक विकास के लिए कोई भूमिका संभार नहीं होती। उसमें से इतने 'सरपस' नहीं निकलते हैं, कि जिनसे धार्मिक उद्योग बन सके, और बचा मात्र बन सके। यह बहुत 'स्लो गेट' है। लेकिन बहुत सोच-समझकर क्या उन्होंने, क्योंकि अब तक सारे तीन परसेंट के मात्रात्मक लक्ष्यता रहा है वह। तो डेढ़ परसेंट बढ़ाया है। उद्योग-धंधों का 'मोचरेंट' भाव से सब प्रविशत में करना चाहते हैं। अब हम उसके अधिकारी नहीं हैं, कि उनका प्रयोजन बना दे, अभी तो चौथी योजना बनी नहीं है। लेकिन प्लानिंग बनीराम ने जो 'भरोच टु धी फोर्थ प्लान' के नाम से एक छोटा सा विवरण निश्चाला है, उसकी कोई एनलिसिस नहीं की है। उसमें बताया नहीं है कि क्या कारण है कि इससे ज्यादा नहीं होगा, कम नये होगा, वर्गरेह।

तरुणों की विद्रोह की भावना

भारत के दशकों में आजकल जो कुछ चल रहा है—राज करके विचारियों में—वह भी धारके समने है। हमें लगता है कि बहुत सारा लाभ तो इनका राजनीतिक दल उठाते हैं। कुछ मन्त्रे स्वतन्त्र रूप से भी। हम

तो देखते हैं कि विहार में दल से भी ज्यादा कुछ जातिवाले फायदा उठा लेते हैं और जातिवाद के आधार पर भी विचारियों के संगठन हो गये, भंगड़े हो गये या तो बतल हो गये। विद्यार्थी ने विद्यार्थी का बतल कर दिया। दो दबग जातियाँ हैं विहार में, जो जमान के मालिक हैं, जिनके हाथ में जमीन है—भूमिहार और राजपूत। जब इन दोनों जातियों का भावतूट का झगड़ा होता है तब दोनों के साथ दूसरी जातियाँ हो जाती हैं। कुछ इधर गये, कुछ उधर गये। लेकिन मुख्य इनका भगडा चलता है। तो स्कूलों, बानेजों में जानि का यह सारा झगडा है। लेकिन फिर भी प्रसतोप और भी बारणो से है।

वे कुछ समझ पाये हैं कि किसलिए है, ऐसा तो नहीं कहेंगे, लेकिन शिक्षा की जो बुराईयाँ हैं, शिक्षा-व्यवस्था की जो बुराईयाँ हैं, जिस प्रकार की उनको शिक्षा दी जाती है, रहते-रहते की सुविधाएँ जैसी उनकी हैं, शिक्षा प्राप्त करने के बाद उनके जो मौके हैं, नौकरी बगैरह के, इन सबका मेल होकर एक विद्रोह की भावना है। फरक यही दखता है बिदेसी तरुणों के विद्रोह में कि उनके काम के उद्देश्य भी जातिकारी हैं। और हर कुछ मिलाकर यह नहीं कह सकते कि प्रमुख पाठियाँ हैं, जो इनका 'एक्स्प्लैट' कर रही हैं, कम्युनिस्ट पार्टी हो या और पाठियाँ हो, इनके लोग होये हममें। लेकिन कुल मिलाकर एक जातिकारी मादोलन है, बल्कि बहुत करके बड़े-बड़े नेता 'एनाबिस्ट' लोग हैं। लेकिन उनके साथ जो इस्टैब्लिशमेंट है, उसके प्रति विद्रोह है। जो एक्स्प्लैट सासाइती, एक सुखी समाज बना विद्रोह उसके प्रति है। जो यह टैकनालाभी है, डेमोक्रेसी है, इन सबको वे 'बैबेच' कर रहे हैं। सम्प्रदा की पुनर्नी प्रपनी टुनिपा जो है, उसकी भी बर रहे हैं। हमने थियरी भी बनायी है और एक जमाने में यह बतत कही गयी और उसमें यह बात सत्य भी है कि समाज में जो शक्तिकारी वर्ग है, वह सर्वहारा है। और फिर सर्वहारा में मजदूर, और औद्योगिक मजदूर हैं—वह उस समय भी बहुत सत्य नहीं था जैसा लेनिन ने कहा भी था। लेकिन आज तो इनका कहना है कि जो मजदूर वर्ग है, वह शक्ति का प्रयुक्त नहीं

बन सकता। और यह तो धार देखते हैं प्रमेरिशा ट्रेड यूनियन मूवमेंट, फ्रांस का ट्रेड यूनियन मूवमेंट, इंग्लैंड का ट्रेड यूनियन मूवमेंट, जर्मनी का, ये सब कमरवेरिडिबल हैं।

जो कम्युनिस्ट ट्रेड यूनियन मूवमेंट है, फ्रांस की टी० बी० टी०, वहाँ भी रोक-पाम कर रहे हैं। तो यह भी एक इन्टे-विलियमेट बन गया है, समाज का एक मजबूत पाया बन गया है। एक पावर बन गया है, जो ब्रिटेन की शक्ति के मुकाबले में उसकी बराबरी में, सतह में बैठकर धमक कर सबकी है। ऐसी शक्ति उनको बन गयी है। एक 'वेस्टेड इन्टेरेस्ट बन गया है। 'वेस्टेड इन्टेरेस्ट' बन जाने से फिर शक्तिकारी शक्ति नहीं रह जाती है। यूरोप के नौजवान कह रहे हैं कि जो प्रगती शक्ति होनेवाली है, वह 'इन्टेलेक्चुरलप्रथ' की शक्ति होगी। विद्यार्थी उसके 'भात' होगे और शक्तिकारी जो विचारक होगे, उसका नेतृत्व करेंगे। जैसे लेनिन ने कहा कि सर्वहारा तो मात्र विद्रोह वा आधार होगा, नेतृत्व तो बोलचालिक करेंगे। याने एक, एडवोकेला-जिबन पार्टी बनेगी—बाहरे नेशा उसके किसी वर्ग से बाये हो। हमने देखा कि जो शिक्षा-पद्धति है, उसमें क्या दोष बगैरह हैं, इस सवाल में इन्को बसकर चर्चा होती है। योशो-सी सस्थाएँ हैं, जो घोषा-बहुत कर रही हैं। उनकी कोई छाप पढी नहीं है। और इससे हम एक सबक तो सबते हैं।

नगरों में जो बुद्धिजीवी वर्ग है और विद्यार्थी जमात है, उसको हमने बहुत दुभा नहीं है। हमने उनके बीच में बहुत ही कम काम किया है। इन काम के लिए भारतीय तरल शक्ति-सेना एक माध्यम हो सकती है। अमेरिकी युवजन विद्रोह की प्रष्टभूमि

अमेरिका में प्रष्टिपक-समाज-शक्ति की सम्भावनाएँ, इस विषय पर जहाँ-जहाँ भेरे भाषण हुए। शिक्षा-सस्थाओं में भाषण हुए, विरलविद्यालयों में हुए, कुछ और स्थानों में भी। वहाँ लोग धारते थे और सुभते बहते थे कि दो-तीन वर्ष पहले भारतयह बात बड़ी होती तो हमारा कोई विशेष प्यान मात्रकी पार्टी की तरफ नहीं जाता। लेकिन आज हम अमेरिकियों के लिए एक गभीर प्रश्न हो गया

है कि इन देशों के प्रचुर, जो प्राणि-द्वाराओं
 है या हो रही है, वह प्राणिव्यय याति होगी
 या द्विप्रमाण प्राणि होगी। यह प्राण हमारे
 लिए एक दीर्घ प्रश्न प्रश्न, तात्कालिक
 प्रश्न बन गया है। इसलिए हमारा बहुत
 इच्छा है जो प्राण कह रहे हैं उमने।

विज्ञाननाम की लडाईं में युवकों की मर्तों
 हो-इसके लिए अमेरिका में सिनट्रिवल ला है
 तिरीरिडन रिफ्लेक्ट ला है। मानव मरकार
 को मान्यता है कि जितने प्राणी को निवृत्त
 करते कह सकती है कि मानवो लडाईं म
 जाना होगा। प्राण ला उसके अन्दे हैं—
 इस प्राण ला के त्रिषोप म (क्रिष्ण विरोध
 करने के लिए प्राण वप की सत्ता सजा है और
 इस प्रकार तार का युवांनो है।) बहुत
 घारे मनुष्यको है, जिषायियों न प्रश्नना
 प्राण काय पाठकर फेंक दिया और प्राण
 गया थी। पहले गये। एक को तो सोच व
 की सजा हुई थी। मेरी युवाकात भी हुई
 ऐसे बहुत मारे लोगो से। जमीने के युवा
 छात्रों द्वारा सबसे पहले यह काम शुरू हुआ
 और कई जगह बना। यह सब, युवांनो
 किया, बेको-नोतायिया, पोतलको और इत जते
 बन्धुनिष्ठ देगो में कभी कभी उभरता है।

युवकों की जो नाति यूरोप में हो रही है,
 वे मानते क्या है? उनकी जो मान है वह
 इभीकती है। प्राण की इभीकती को वे इकार
 करते हैं। वे कभी इभीकती चाहेते है? वे
 प्राणीविदेयी इभीकती चाहेते है, जिससे
 जनता का हाथ हो, जनता का राह, जनता
 के लिए प्राण नहीं। जनता के द्वारा जनता
 के लिए और जनता का। जनता के लिए
 है, इस कि विवाद हो जनता है।

हमारे हृदयों
 प्राण दान लोगो के प्राण में यह बात
 नहीं कभी है कि जहाँ एथिज, लेनिन, माथी
 प्राणि के राते पर बनकर नाति हों
 है उनके प्रधान में बेरोलोकारिया है युवा-
 स्थायिया है, पोन्ट है, वहाँ भी मान्यता
 की बात लेने के लिए युवक लड़ रहे हैं,
 युवक कह रहे हैं। इन्हीं बात द्विप्रमाण
 की समझ में नहीं आती है कि द्विप्रमाण प्राणि
 हो जायगी, लेकिन हर द्विप्रमाण का जो प्रश्न

म परिणाम निष्पत्ता है, वह क्या होगा? जो
 द्विप्रमाण प्राणि वर सजना है, सफरता जेहे ही
 मिलती है। लडाईं प्राण म हुई। इस म प्रो
 चीन म चल रही है, वहाँ प्राणिप्राणियों की
 लडाईं है प्राण की। प्राणो एक तरफ है, युवा
 दूनवो तरफ है। तबवार में प्राणि हो जाती
 वार बनकती है। उनकी द्विप्रमाण बन जाती है।
 और फिर उस प्राणि म स एक नवी प्राणि-
 हो, उसका एक तबारा रह जाता है। तो यह
 बात उनकी सज्ज म प्राणियों। लेकिन यह
 परिस्थितियाँ ऐसी हैं, जिनका कोई प्राण
 विकल्प हव लोगो न मही दिया है। चीन के
 और पाकिस्तान के युद्ध के समय भी, हव
 प्राण तोरे से रक्षायी बने रहे।

जि जिन कुंज दूसरी भाषा में मोतन की
 द्विप्रमाण की, वह सब अनादर न ही प्राण बन।
 कोई युद्ध का विकल्प हवने लिया, ऐसा तो
 है नहीं। लेकिन कुछ सामाजिक परिवर्तन का
 विचार हव ल स सकते है प्राण देवो-प्राण
 का वह भी हुआ है ऐसा हव मानते नहीं है।
 उसकी तरफ हमारे तरफ वर रह है इतना
 ही सिक हव कह सकते हैं। यह जो सजा
 हजार प्राणदान हव गव ही, तो इन्हीं तरीका
 धर्मो होनाचाली है। और इनम क्या क्या है
 वर सब तो सामन प्राणिया।

लेकिन उह सज्जता हम देश में होती
 है तो सारी दुनिया को इयन बन मिलता
 है, क्योंकि वहाँ सब जगह यह प्रश्न सजा
 है, जहाँ कि यही की का कोई प्रश्न नहीं है,
 उस भीतर समान धर्मो। हमारे सब धर्मो
 इस बात का उत्तर नहीं है कि इस देश में जा
 पूरणीयारी है या पूजोवाही नयता है, उसका
 क्या हाथा? परिवर्तन का नारा लगाने स तो
 कुछ नहीं होगा। उसके कुछ काम हुए, उसमें
 का कुछ कठिनाइयाँ हुईं उसकी चका बजायिने।

ऐसी मान्यता हो सकती है माने लागो में,
 इस देश म, कि भारत में जो प्राणि हो
 सचती थी, उसकी धार हव सर्वोपर्यताम लोग
 सोचती कर रहे हैं। और ऐसी धारोनाम
 की जाय, तो जिनकुन नैर जिन्मेवारी कइकर
 उसको छोड़ नहीं सजते। तो इसका मतलब
 यह है कि अगर कोई विकल्प है तो उसको
 तभी से कलना चाहिए।

बच में अमेरिका में था, तो गृहयुद्ध
 म प्राणियों हुईं वह अमोदिक पार्टी की थी।
 उमने मेकाथों की नियम हुईं और उस प्राणी
 नियम का अर्थ हव कि जितनी देना हो तो
 मैं मेकाथों को दूँगा और जितनी नहीं।
 क्योंकि वह प्राणियों किनारे पर अंतर देना
 सजता है कि वह फिर जानी है। उह नियम
 करण बंटता है और तब वह हवा उसम।
 इसलिए कुछ मान घटा हमारा, लेकिन उस
 प्राणियों न द्विप्रमाण करके रास्ता चोना। वह
 प्राणियों की प्राणि तो प्राण्य। युनिवर्सिटी न
 स्टुडेंटन में वह सारा नाम किया गृहयुद्ध
 युनिवर्सिटी के प्राणो में प्रोड हुएन। न।

वह बाइ जन बंदी गयी तब मरदा खयान
 है कि अमेरिका की तरफ प्राणि वा या
 तरफा के का प्राणन का एक प्रयत्न परिणाम
 हुआ कि जन मानमन न दला कि ये युनि
 वर्सिटी के विद्यार्थी ही नहीं है। बल्कि ये जो
 कुत्र वर रहे हैं फरदा सकर प्राण प्राण चल
 रहे हैं उनके पीछे बोस है मतलब है,
 मान अमेरिका के नागरिक है। एक बहुत
 बडा परिवर्तन हुआ है। प्राणों जितने उमने
 सजा परिवर्तन हुआ है। एक बहुत
 नियम किया कि हव युवांनो नहीं सजा।
 विज्ञान म की सचि का प्रस्ताम किया।
 उमका कुछ तरफा के ऊपर का प्रस्ताम किया।

निष्ठावियों ने जो कुंज इजोपमिया में
 किया वर मन सव सव सामन है। धर्म
 उनकी शक्ति फिर से लकी गयी है। मिनी
 टरी डिपार्टरिष क्या कर रही है और प्राण
 क्या होगा, मानूँ नहीं।

हमारे वाम की सम्भावनाएं
 भारत के हमारे तरफा के लिए प्राण
 तो हव नहीं कह सकते है कि उन्होंने
 उस प्रकार का किया, लेकिन सामन-साम
 एक नातिप्राणी प्राणि इसकी जन सके और
 विधायक प्राणि इसकी हो, यह प्राण प्रयास
 करने के लिए हमें एक मोबा मिला है
 और प्राणों से जो तरफ है, उनका प्राण्य
 म कलना चाहता है। मैं हव तरफ नहीं है,
 फिर भी मैं हव माने में कलना चाहता है कि
 मैं यह समझता ह कि प्राण जो परिस्थिति
 है, हम देखकी, उसमें मैं मानता ह कि प्राण और
 हव कुछ प्राण बनें। उन्ही हव तरफ प्राणि-

हम चाहते क्या हैं ?

सम्मेलन के अन्तिम दिन दादा धर्माधिकारी का भाषण

सत्याग्रह के कुछ प्रतीकों का स्वरूप का एक प्रतीक है। स्वाधीनता के दो चीजों का होता है—एक वक्तो का और दूसरा का। तो एक-वक्तो का जहाँ तक सम्बन्ध है, मैं अपने मानकों को थोड़ा-बहुत रोक सका हूँ। लेकिन दूसरे के स्वाधीनता के विषय में अब तक कमी नहीं कर सका हूँ। इसलिए कोशिश में पा कि यहाँ वंश-वंश दादा-धर्म का कुछ पालन करें। लेकिन धार्मिक कमजोर भावना हैं, बहुत धार्मिक किया गया और उन लोगों ने धार्मिक किया, जिन लोगों के कर्षण पर आज चल रहा है, कल चलना पड़ेगा, धर्म-एवम् उस धार्मिक को टाल नहीं सके। और अगर भावकों में राय यह भाषण सुनना पड़े रहा है, तो कमरबंद तो जरूर हैं, लेकिन क्षमा का पात्र इसलिए है कि उसमें कमरू मेरा जग भी नहीं है।

हम और आप सबके सामने आज सबसे बड़ा सवाल यह है कि हम चाहते क्या हैं ? और हमसे मेरा मतलब यह है कि उसमें मैं भी हूँ। मैं 'हम' कहता हूँ तो अपने को शामिल करता हूँ और इसलिए शामिल करता हूँ कि अपने स्वयं का भी मान रहे। इतना भी स्वयं का विकास अभी मुझमें नहीं हुआ है। एक समुदाय में बैठना हुआ है और आप सबके साथ सोचना चाहता हूँ कि धार्मिक हम कहीं पहुँचना चाहते हैं। तो अभी थोड़े में यह रख देना चाहना है कि हम कहीं पहुँचना चाहते हैं।

→को मोड़ सकते हैं, जिससे सारे समाज के परिवर्तन में हम जो काम कर रहे हैं, उसमें तपस्वी की मदद मिले। हमारा प्रवेश इस प्रकार हो सकता है कि सारे विश्व-विद्यार्थी, उनके लक्षण, शिक्षा और उनमें कुछ सुखमें हुए दिशागत, गैर-गैर-गैर जैसे लोग, उपायकर जो भी जैसे लोग और ऐसे अन्य अपने लोग और उप-कुलपति लोग अगर साथ आयें, तो एक ऐसी दक्षिण बन सकती है, जिसका प्रसार पार्लियामेंट पर हो सकता है, देश की राजनीति पर हो सकता है। जो पतन दिन-पर-दिन हो रहा है, उस पर उनका बल हो सकता है। हमें इस बात की

एक वे हैं, जिनके पास मेहनत ही मेहनत है, और एक वे हैं, जिनके पास पुस्तक ही पुस्तक है। एक वे हैं, जिनके पास मेहनत के साथ मानकियत नहीं है, दूसरे वे हैं जिनके पास मानकियत के साथ मेहनत नहीं है। एक वे जिनके पास काम-ही-काम है, दूसरे वे हैं, जिनके पास धाराम-ही-धाराम है। तो हम चाहते यह है कि काम, धाराम, मेहनत, मानकियत, वक्त, पुस्तक, सबका बँटवारा हो। सवाल यह है कि यह बँटवारा कौन करे और कैसे हो ? धारसे कहा और मैं भी मानता हूँ कि जो मेहनत करता है, वह मेहनत का मालिक है। मुक्तिक यज्ञ है कि जो मेहनत का मालिक है, उसको बाजार में मेहनत बेचनी पड़ती है और जो पूँजी का मालिक है, उसको बाजार में कुछ नहीं बेचना पड़ता। वह मेहनत का लक्ष्मीदार है। जो मेहनत का मालिक है, वह बाजार में बैठे है, जो पूँजी का मालिक है, वह भी बाजार में है, लेकिन ग्राहक बनकर बैठे है। इसको अपने धारसे बेचने की जरूरत है, उसको लक्ष्मीदार की जरूरत प्रत्यक्ष है, लेकिन वह तो लक्ष्मी के बाप जैसा है। धारों की जरूरत लक्ष्मी, लक्ष्मी दोनों को है। लक्ष्मी उम्मीदवार है और लक्ष्मी उस उम्मीदवार की दरखास्त को स्वीकार करनेवाला है, मजूर करनेवाला है। इसलिए आप उस धारों में न रहें कि जो मेहनतकर है, मालिक होते हुए भी उसके

धिकारत रही है कि इस और धर्म ध्यान दिया गया। धारों में कुछ इसका दूसरा पहलू भी सामने रखा है, उसको तरफ जमात ध्यान गया है। लेकिन भारत में तबए धार्मिक-केवल की तरफ कम ध्यान गया है। धार्मिक-केवल और भारतीय तबए धार्मिक-केवल दूसरे के दूरक हैं। यदि धार्मिक-केवल में धार्मिक गैर-गैर-गैरक से लेकर और सबको सामने का हमारा प्रयास ही और फिर इन लोगों की एक धार बनने तो हमें बहुत बड़ी सफलता मिलेगी, और तब हम अपने सारे राष्ट्रीय जीवन को एक मोड़ दे सकते हैं, ऐसी हमें प्रार्थना है।

[भाइयों, ६ जून '५८]

पाँच विभिन्न प्रकार की 'दक्षिण' हैं, किसी प्रकार का सवाल या सामर्थ्य है।

इस चीज को हम बदल देना चाहते हैं। सवाल इतना ही है कि कौन बदलेगा ? जिसको जरूरत है, वह बदलेगा। जिसको जरूरत नहीं है, वह नहीं बदलेगा। उनको मानना पड़ेगा, उसको समझाना पड़ेगा। जरूरत दोनों को है। लेकिन एक को जरूरत का एहसास है, दूसरे को जरूरत का एहसास नहीं है। इनमें एक तीसरा है, जो यह कहता है कि हम तुम दोनों का इनजाम ठीक ठीक कर देंगे। मालिक बनना चाहते हैं, जिसको मालिक की जरूरत हो, वह हमको लक्ष्मी दे। इसका नाम है 'द्वैतधर्म का मेनीपरेटो'—पुनर्जात की घोषणा। तो एक तीसरा है, जो इनजाम का उम्मीदवार है और उसे किमीने मुख्य धारा और मुख्य प्रवाह कहा है। इससे प्रत्यक्ष, और इससे प्रत्यक्ष इसलिए कि आज तक दुनिया में जिसका इतिहास बना है, उस इतिहास को या तो तत्कालीन राजा का बनाया है, अथवा मठ या मन्दिर में रहनेवाले सत या सत्यासी ने बनाया है, या फिर किसी और पुरुष ने बनाया है। अब यह युग आ गया है कि इतिहास के विभाजन इनमें से कोई नहीं है। अनुपधारी राम नहीं, सुपान चरधारी श्रीरघु नहीं, गौतम बुद्ध नहीं, ब्रह्मचारी ईशान नहीं, मुहम्मद नहीं, तिब्बत नहीं हेलीवान नहीं, सिक्कीम नहीं, प्रयाग नहीं, भवानी-सलवार नहीं, मल्लोरी भी गया नहीं। इतिहास का विभाजन वह होगा, जिसके हाथ में बुद्धों की बुद्धि है, परमा-कथा है, हनुमान-कथा है। यह भयानक का युगावसर है। हमारे कलम का यह ध्वजार है।

परचुराम लक्ष्मीदास नहीं था, लेकिन बुद्धों के हाथ में था गयी तो लक्ष्मी की जगह भयानक को बाटने लगा। श्रीरघु का बड़ा भाई बलदास विद्यान नहीं था, हल हाथ में आ गया तो लोगों के घरों पर से पत्ताने लगा। दलत धार्मिकों के हाथ में गत भोजार गये। ये सब हथियार नहीं थे, भोजार थे, फिर भी दिशाग सही नहीं था। तो इस मताने में हम यह चाहते हैं कि धार्मिक भी सही हो, भोजार भी सही हो, और

घोषणा की है कि अग्रर देश में नयी शक्ति पैदा करनी है तो प्राज की राजनीति और प्राज की विकास-योजना को जल्द-से-जल्द बदलना चाहिए। दलबन्दी की राजनीति का क्या हाल है, और किस तरह गाँव-गाँव में राजनीति भ्रष्टे और अशान्ति का कारण बन रही है, इसे आप देख रहे हैं, जान रहे हैं। जो भेदभाव गाँव में पहले से मौजूद थे वे राजनीति के कारण बहुत बढ़ गये हैं, और बढ़ते ही जा रहे हैं। जब यह हाल है तो किस तरह गाँव के लोग मिलकर अपनी किसी समस्या को हल कर सकेंगे? नेतिन सवाल तो यह है कि राजनीति कैसे बदले, और बदलते पर नयी राजनीति कौसी हो? यह सवाल आसान नहीं है। सर्वोदय के साथियों ने सोचना शुरू कर दिया है। इतना तय है कि अगले चुनाव में एक निर्वाचन क्षेत्र को सब ग्रामदानी ग्रामसभाएँ मिलकर अपना सर्वमम्मत उम्मीदवार विधानसभा और ससद में भेजे, और किसी दल के उम्मीदवार को अपना उम्मीदवार न मानें। जब गाँव की जनता का खुद अपना आदमी होगा तो दल के उम्मीदवार को कितने वोट मिलेंगे? राज-नैतिक दलबन्दी गलम करने का यह एक रास्ता है। इस तरह विधानसभा में ऐसे लोग पहुँचेंगे जो सरकार में ग्रामदान की बात कहेंगे, और ग्रामदान का काम करेंगे। तब जनता की माँग और सरकार के काम में अन्तर नहीं रह जायगा। गाँव में ग्रामगभा जो काम करेगी उसमें मदद करना, उसे आगे बढ़ाना, सरकार का काम होगा। ग्रामदानी सरकार ग्रामदानी ग्राम-सभाओं के काम में हस्तक्षेप नहीं करेगी। गाँव में तो ग्रामसभा ही गाँव की सरकार होगी, जो गाँव की व्यवस्था और विकास के लिए जिम्मेदार होगी। आज नेतृत्व दल का है, तब नेतृत्व गाँव का होगा।

ग्रामदान की व्यवस्था में गाँव के लिए ग्रामसभा ही एक तरह में सब कुछ है। गाँव के लोगों ने अपने निर्णय से श्रेष्ठ बनाया है, उसे जमीन की मालिकियत गाँवी है, और गाँव के विकास के लिए ग्रामकोष बनवा दिया है। इतनी शक्ति ग्राम-सभा के पास है। पूरे गाँव के लिए ग्रामगभा गाँव के विकास की योजना बनायगी। गाँव-गाँव की योजना के आधार पर ही ऊपर की योजनाएँ बनेंगी। आज टीक इगने जल्दा होता है। तभी तो इतने वर्षों में गाँव के सामान्य लोग विकास से अछूते रह गये हैं।

ग्रामगभा के हाथ में गाँव का स्वाभित्व हो, और ग्रामसभा के ही हाथ में गाँव का नेतृत्व हो—ये दोनों बातें निवेदन में नहीं

गयी हैं। इन दो बुनियादों पर ग्रामदान-आन्दोलन ग्राम-स्वराज्य की बात कहता है।

आयु के सम्मेलन में एक दूसरी बात भी देखने को मिली, जिसका पूरा पता आपको शायद अभी नहीं होगा। हमारे राज-स्थान के साथियों ने शराबबन्दी के लिए सत्याग्रह छोड़ रखा है। राजस्थान के हमारे बुजुर्ग साथी श्री गोकुलभाई भट्ट तो इतने जोश में हैं जैसे जवान हो गये हों। उन्हें किसी तरह यह बर्दाश्त नहीं है कि गांधीजी के देश में सरकार शराब का व्यापार करे और हजारों घरों को बरबाद कर अपनी कमाई बढ़ाये। सत्याग्रह इसलिए है कि सरकार शराब के व्यापार से अपना हाथ हटा ले।

ग्रामदान, शराबबन्दी, शान्ति-सेना और चादी, ये चार सवाल सम्मेलन के सामने सबसे बड़े थे। नागालैंड के दो नया मित्रों के आ जाने से सम्मेलन का ध्यान नगर-समस्या की ओर भी गया। हमारी सरकार में नगा लोगो के मतभेद है, लेकिन गांधीजी में उनकी अटूट श्रद्धा है, और वे सर्वोदय के काम को शान्ति और मित्रता का काम मानते हैं।

६ दिन तक हमलोग आयु रोड में रहे। वहाँ काफी बड़ी भीड़ थी। सबके लिए निवास, पानी, ट्यूनिंग-शाय, आदि का सफाई के साथ प्रबन्ध करना, ठीक समय पर सबको नाश्ता और भोजन देना, सभा की व्यवस्था रखना, यह सब काम अच्छी तरह हुआ। आयु रोड कोई बड़ा जगह नहीं है, फिर भी रहने के लिए कोई टट आदि नहीं गाड़ने पड़े। स्त्रूल, धर्मशाखा, मन्दिर आदि में काम चल गया। सब काम स्थानीय नागरिकों और युवकों ने किया। नगरपालिका के अध्यक्ष से लेकर छोटे लड़कों तक सब मुवह में शाम तक लगे रहते थे। सब धककर चूर हो जाते थे, लेकिन बेहरे पर शिकन नहीं दितायी देती थी। क्या मिलता था उन्हें? प्रतिबिम्बेया वे आनन्द के सिवाय दूसरा क्या?

अगला सर्वोदय-सम्मेलन नवम्बर १९६६ में राजशुह (विहारी) में होगा। उसी समय राजशुह में बीड लोगों के नये स्तूप का उद्घाटन भी होगा। बहुत-से विदेशी भीड़ आयेंगे। दोनों उत्सवों को मिलाकर अगला सम्मेलन अन्तरराष्ट्रीय जमा हो जायगा। कितना अच्छा हो, अग्रर उस सम्मेलन में ग्रामदानी गाँवों में भी हजारों प्रतिनिधि आयें! सर्वोदय का बड़प्पन इसीमें है कि उनमें 'सर्व' का दर्शन हो।



आपके पुत्र

एक किमान पाठक का पत्र ज्यो का-त्यो

सम्पादकजी

गाद की बात

निवेदन यह है कि मैं गाँव की गाद ३५६८ के ग्रह का पत्र उसमें खेती के अनुभव आपने माँगा है उसमें पढ़कर मुझे लगा कि ग्रहण भी सेती काम का प्रयोग आपको हूँ श्रीर माया है ग्रहण विज्ञान का इस अनुभव को अपनायेगा तो लाय प्रत्यस्त हूँ ही जानगी।

पहला प्रयोग वम बीज बोना — हमारे यहाँ बीज बोने की रीति यह है एक कि बीगा सेन म येडू एक मन से कम है वः ३० मेर बीज बोव जाने है पूरे भारत में इसी अनुपात म बहो १ मन हो बहो ३० सेर बोना जाऊ है। ग्रहण इसका बोवाई बीज बोना जाव तो सेन में बहने की अपेक्षा छोटा सेडू पत्र होगा

बीज नम बोने की विधि — समार सेत बीज बोने का विध हो गया हो तो कूड की बोवाई ब रनी चाहिए जो हल में सेत बोवा जाव। एक हल के पीछे एग भादमी बीग भादे और दूसरा हल बोवाई करेगा। उगने कूड म बीज नही पड़ेगा। नरीन ६ दन सेत पूरा जायगा। इतने यह हुआ कि माया बीज को ही क्या और बोवाई कि कूड म जो बीज पुराने तरीके से जितना बोवा जाला है उसका भावा बीज निरे। इस तरह से कुल १० मेर बीज उभेगा। इतनी लाइन-सोडण भी कह सकते है।

माउई — ग्रह यह लाइन भी हो गयी। ६ दूच की दूरी जो है अपनी माउई होनी चाहिए। हैएकहो मे दो या तीन भादमी भी लग सकते है एग बीजे भी माउई म। हल को एग बीया में दो म दमी माउई कर लेते है। मिमाई समय समय पर होनी चाहिए

२१ इग ६८

कम बीज खर्चा नूरा खलव काय काय यह कि माय का ३० सर प्रति बीया बीग बचा। सेत का हवा पूव दूर सरेयो। पीया स्वस्व और मजदूर होत। पीया म जाने वाली भावा म निचलनी। पीया मजदूर होगा तो भार पनी बग होगा। बाका मोद बीर बननी होगा।

बीज बचा फलत दूनी — समार ग्रह ग्रहण बीज बचा न और फलत दूनी हो गयी तो आप विदेशो के सु हताज न रह्ये। मेरा दावा है कि समार भारत का जो जायज बीज लगता है वही सब साथ तो भारत गने की बु हताजी से बच जाय। उपरोक्त बात केवल पुरानी पद्धति से योग्य पत्र पडा है। इतने ही वे कायजा जाय है यह सरल है मुविधाजनक है। वम साथ का है इन तरीके स पूरी छेती सज्जी बीया प्रादमी कर सकता है।

ग्रह तन हगने साव पानी बर जिन नही निश तो हसास भउसव यह वही विज्ञान का साथ न विदा जाय। सोबर की साव तथा उष्णगति साव का भी आप इस्तेमाल कर्ये ता बीया में पीहवा वाली बात होगी वमन तोन मुनी बीपनी बडती है। यह सब हमने करके देवा है और कर भी रहे है।

हिनार की बुवाई से बहुत कम बीज लगता है। २५ सर का बीया पर ग्रम उसमें उगादा पडता है। मजदूर ज्यादा लगने है और उसमें धान की भी बरकर लगती है। ग्रहण म बोवा गया तो सेत माती यह जाता है इसलिए ज्यादा खेती क गिए साइन सोडण ही लाभदायक है ग्रहण हम धान की खेती का तरीका रिलने

भाषका

भयानी प्रसाद सिंह

ससहिवा भावभगड।

[नोट—शाम बरने से वदा निकल सादमी नडू है। धर पर ही कुछ बीया हू बिना गुए के चलिए माय समार कर ल। पर मेरे प्रयोग सफल है]



१७१

गांधी भी गँवार थे

मुखिया के दरवाजे पर अच्छी खासी भीड़ इकट्ठी हो गयी, दिल्ली के किस्से-कहानियाँ सुनने को। वैसे तो गाँव के कई पढ़े-लिखे लोग दिल्ली घूम आये थे। दो-तीन तो वहाँ नौकरी भी करते हैं, लेकिन गाँव का कोई अनपढ़, बूढ़ा और पूरे गाँव भर के साथ जिनका घपनापन हो, वैसे आदमी मुखिया ही पहली बार गाँव से दिल्ली देखने गया था। इसीलिए दरवाजे पर बड़े-बूढ़े और छोटे बच्चों की भीड़ अधिक थी। इन लोगों ने दिल्ली घूमकर आनेवाले जवान लोग उस तरह की बातें नहीं करते, जैसे वे लोग सुनना चाहते हैं। शहर से घूमकर आनेवाले जवान लोग तो अक्सर सिनेमा के अभिनेताओं और राजनीति के नेताओं की ही बातें करते हैं, वह भी ऐसी बातें, जो न किसी बूढ़े आदमी की समझ में आती हैं, और न किसी बच्चे की।

मुखिया अभी हाथ-मुँह धोकर सुस्ताने ही जा रहा था कि बच्चों ने उसे घेर लिया, "मुखिया बाबा, मिठाई मुखिया बाबा, मिठाई!" बात यह है कि मुखिया जब भी गाँव में बाहर जाता है तो आते समय पास-पड़ोस के बच्चों के लिए कुछ-न-कुछ खाने की चीज अवश्य लाता है। जब बच्चे उसे घेरकर चिल्लाने लगते हैं, "मुखिया बाबा मिठाई मुखिया बाबा मिठाई" तो उसे लगता है कि १५ साल की उम्र में ही जीवन सुना करके बाहरी हो जानेवाला उसका रामकिशोर भी इन बच्चों के साथ-साथ उसमें मिठाई पाने की जिद कर रहा है।

इसीलिए मुखिया ने 'चार आने में पाँच बोरस, आप भी लाइये, बाल-बच्चोंके लिए ले जाइये' कहकर लेमनचूस बेचनेवाले सरदारजी से मुगलसराय में ही आठ आने का दस बोरस खरोद लिया था। 'चार आने में पाँच बोरस' की बात सुनकर मुखिया को बहुत हँसी भी आयी थी, सोचा था, "ठीक ही तो वृत्ते हैं सरदारजी। महंगाई ऐसी ही बढ़ती गई तो किसी रिश चावल-नेहूँ भी ऐसे कामज की पुडिया में बेचा जायगा और उसी पुडिया की बोरस कहा जायगा। आठ ढाई मन का बोरस होता है, तब ढाई छट्ठारू का होगा।" गाड़ी में बंटे-बंटे मुखिया को ऐसा लगा था कि जमाना इस 'जनता गाड़ी' से भी तेज भाग रहा है। 'जनता गाड़ी' तो हवड़ा जाकर रुक जायगी, अपने मुराम पर

"मुखिया भाई, क्या सोचने लगे? अरे इतने दिन पर आये हो, कुछ हालचाल तो बताओ।" पड़ोसी हरखूराम ने मुखिया का ध्यान तोड़ा। हरखूराम और मुखिया की बचपन से ही घूब जमती है। गाँव के ही नहीं, इलाके के लोग भी यह बात कहते हैं कि सहोदरों में भी उतना प्रेम नहीं होगा, जितना मुखिया और हरखूराम में है। मुखिया को कोई नयी बात मालूम होती है तो उसे हरखूराम को बताये बिना पेट का पानी नहीं पचता है। हरखूराम की भी यही हालत है।

मुखिया ने जनता गाड़ी से लेकर इडिया गेट के सामनेवाली 'अग्नेज लाट' की मूरत तक की कहानी सुना डाली। सुनकर हरखू बोला, "राजा-राजा सब एक होता है मुखिया भाई, क्या 'मानदानी' राजा, और क्या 'भोट' का राजा! गांधी महात्मा थे इसीलिए तो वे राजकाज के काम से मुराज मिलने पर भी अलग थे। भला सप्त महात्मा को राजगद्दी से क्या लेना-देना? हाँ, तो अब वही 'तीरथ' वाली बात बताओ। यह सब सुनकर तो जी जलता है, सत पुरुष की बात से ही शांति मिलती है।"

मुखिया की आँखें भर आयी। "मैं भी यही सोचकर वहाँ गया था हरखू, लेकिन क्या कहूँ, कुछ कहते बनता नहीं। तांगा-वाले को यह मालूम ही नहीं था कि विडला-भवन कहाँ है? वडी मुश्किल में पहुँचे-पुछते वहाँ पहुँचे। सोचा था, कोई साफ-मुथरी अच्छी-सी जगह होगी, लेकिन काहे को? वहाँ तक पहुँचने के लिए वडी सड़क छोड़कर जब गलियोवाली सड़क पर पहुँचे तो वहाँ सफाई तक नहीं, जगह-जगह गन्दगी, और जब तांगा में उतरकर 'प्रार्थना-भूमि' तक पहुँचा तो कुछ न पूछो हरखू। अपने यहाँ के 'काली-थान' जैसी भी सफाई और सजावट वहाँ नहीं थी। जिस जगह बापूजी को गोली लगी थी, वहाँ तुलसी-चौतरा जोसा बनवाया गया था, जिम पर एक सूया पोथा लगा था, न फूल, न पत्ती। चौतरे पर शायद सड़कों ने जगह-जगह तकरीने खीच दी थी। किसीने चौतरे के उस मूले पथे पर प्रथसुगा गेंदे का फूल खोस दिया था। हम लोगों जैसे ही वही दूर में आये हुए गाँव के चार छ' लोग चौतरे की परिकरमा' कर रहे थे। वहाँ नेहरू राजा का महल, वहाँ 'इडिया गेट' के पाग वाला राजभवन और 'लाट' की मूरत, और कहाँ यह बापूजी की 'प्रार्थना-भूमि'। मैं वहाँ अधिक देर तक नहीं ठहर सका हरखू भाई। हृदय में इतना दु:ख हुआ कि उसके बाद दिल्ली में एक मिनट के लिए भी रहना 'पाप' मालूम होने लगा....." हाँ 'पाप'।"

"तो, मुराज के बाद हमारे गाँव की जो बुद्धिशा हुई, वही बुद्धिशा हमारे उदार की बात कहनेवाले बापूजी की हुई।" हरखू ने कहा।

"ता...ता...हरखू भाई। बापूजी 'सरगवासी' हो गये। उनकी गाँव की बात



गो-पालन या भैंस-पालन

सुदूर भारत में दुग्धक जलनरो-गाय घोर भंग-की सख्या २२ करोड़ जूती जाती है, जिनमें चौबिस १७ करोड़ घोर भंग तथा ५ करोड़ है। मोजा में भैंसों की सख्या ७ करोड़, गायों की ५ करोड़ घोर बछड़े बछड़ियाँ की ५ करोड़ है। यद्यपि गाय बीनन में प्राथिक रूप से अनुपादक है, मगर उनके प्राथिक इच्छे देख देखें हैं। घोर घासिन में वे बसाईयन में धनी जाती हैं। एम पशुओं की सख्या राज ३० हजार की प्रदाय की जाती है। सवाल यह है कि यदि गोरों की सख्या बरती है, तो एम एम करोड़ अनुपा। ना प्रत्यक्ष सोचना हाया जो धारा सावधर म नाट जाते हैं। इस सम्बन्ध में विचारकी बा मत है कि उनको सम्भल में हीना की सम्पदा कम तथा मारी मायो की धमिन है जो अनुपादक है धर्मात्तु रूप नही देती।

सजाम है कि क्या न दूध देनेवाली मायो ना बाल के लिए मजबूर किए जात के बजाय उपाय नोई सेवी, उद्योग के नाम लिए जा सकते हैं। जिनमें उनको काक के अनुपादक जालनर नाम लिया जा सके? मैमूर में यह प्रथा है। घोर भी स्वला पर घोड़े बहुत माया के बहु शवा चल रही है, पर धमिन वयन के कारण सर्वमाय नही है। क्या ठीक न हीषा कि घोधन नियम के बाट में विचार १ रवे समय दूध 'धम' वयन को समात किया जाय? क्योंकि सजाम बहु धर्मन में सहायक साधित होगा है।

दुग्धमा बनसलाय नोन जनमा है इस धरती पर? विडम एम बाट जाकर है। म समय यमा है कि पुराण के बाट जिन मायो के 'भोट' में छत्रार बनती है, जिनके पसीने की बसाई में देसत बा केट मरता है। जिन गोरों के जन्मारी स फीज बनती है। देसत की रसा होती है, उन मायो की उम देख में बोई 'बदर' नही है। 'भोट' माननेधरि किमी नेता को इन्की कुससन नही है कि मायो की दुग्धमा के बारे में सोचें। बागुमी देताय की बाट बनते हैं, नेसायो की राजगदी बा माह छोडकर बोन धीन में जाकर बांन के उदा। बा बागम करने की बज्जे हैं। हायद इन्कीदे नेसायो के बागुमी को भी देहायो मंगार' मान जिमा, घोर भूत गये उनती बागो को उनको बहीध होनेकने देसत के ताकने 'पकिरा' स्थान को। सब चीज है गं धूमरि बारे में सोचें? बागुमी बा बहना माने? " धूमिया हमने धमिन कुछ नही जाल मरता।

बहुनाय देला का सवाल है उनको सख्या ठीक है। नयोकि प्रति १० एमए पर यदि एम नोडी बेल ना हितान सें तो भी देसत की ३० करोड़ एमए भूमि की जोत के लिए ३ करोड़ घोड़े प्रधात्त ५७ करोड़ बोन चरिए। दिम पशु की प्राप्ति क्षमता गिनती है बहु टिन नही भता। मंग धमिन मिले, पर भंता अनुपयोगी होने म बस'पन में ही मर'जता है (या मरने को मजबूर किया जाता है?) माया बा भी बड़ी दिमाय है। मुजरार जही घोधन के मय की विन्तुन मकारी है, वहाँ भी माया की सख्या ६८ माग है जबकि देला की ३० माग है। इतना भी बररक बड़ी है कि अनुपादक मायो की देसतमाग पूरती न होने में उनमें प्रमु माया धमिन है।

धमिन माया में घोर धमिन विरनाईरामा दूध होने के कारण भंग का राखजाना चट रमा है और इतने माय भी हानत भीर भी रमाय हुई है पर नुस छीन ऐम है जहाँ घीने के लिए माय बा ही दूध उपयोग में लेते हैं। राजकोट बाहर के भीर नजानता में श्री बा निहाई दूध माय बा ही जाता है। विहा, जगाव में तो रिवाज है कि घीने बा दूध माय बा ही, मिटाई धारि दजान में भंग के दूध ना उपयोग भरो हो। एम वे दूध की बंमल उम भंग के दूध के बम दी जाती है तो हमसे भी घोधन में हानत होना है। इसलिए घोधन की प्राथिक विधिन मजबूत यमाये जिना गोबध ना विरान सभन गही।

यदि भंग के दूध की बहावा देते तो माय मरेंगी ही और र्थल के लिए दूधने के भा'भे बहना देला। वेडा (मुजरार) जिस्त जो डेपर) रोम में धाये धाया है तथा जहाँ धमल के दूध बा बाररामा है वहाँ भंग का राखय पक्का है। उसमें ७७ हजार भंगे है तथा मंगे के लिए जिमा हर सात २-३ हजार बेल बाहर में मंगारता है। इस प्रकार सभी सध्या को ध्याय में रखकर माय को देसत की सम्भोति में राखिन निये जिमा देकव मायबामक गोधन नियम-मायोना वेमालो सिट होमा।

—देवेन्द्रकुमार गुप्त

हम किधर चलें ?

मैं रेल और मोटरो की मड़कों में दूर, दरभंगा के घनस्यामपुर प्रखण्ड में घूम रही थी। यह वाढप्रस्त क्षेत्र है। चौमामा मे तीन-चार महीनो तक ग्राने-जाने का एकमात्र साधन नाव ही है। सब गाँवों में और छोटी-छोटी नदियों मे नावें पड़ी रहती हैं। पोखर और कुएँ मिट्टी से भर गये हैं। जाड़े के दिनों में सिंचाई के माधन नही रहते हैं। पीने के पानी के लिए कल (हैण्ड पम्प) लगे है। कुछ बड़े किसान किलोस्कर वाले बिजली के पम्प लाकर नदियों में निचाई करते है। इससे मजदूरो की सिंचाई करने की मजदूरी भी बन्द हुई है। सब जगह झाटा की चक्की और धान बूटने की मशीन चलती है। मजदूर वहाँ बाली बँधी रहती हैं। बरखा नाममात्र चलता है। वह भी व्यापारी एक साडी पाने के लिए चार-पांच गेर रूई कातनी पडती है।

मैं विलायत की कुछ खबरें पढ रही थी। वहाँ पर श्रव कृषि और पशुपालन के बारे में लोग एक नयी दिशा में सोचने लगे हैं। श्रव काफी लोग समझने लगे हैं कि एशिया और अफ्रीका के पिछड़े देशों का कल्याण ट्रंक्टर और रासायनिक खाद या मशीनो से नही हो सकेगा। ऐसे देशों में मनुष्य-शक्ति का पूरा उपयोग होना चाहिए। प्राकृतिक कृषि की और बढना चाहिए। मनुष्य को प्रकृति का विजेता नही बनना चाहिए। पुराने दिनों के श्रपि-मुनियों की तरह प्रकृति से सीगना चाहिए। प्रकृति के कार्य-कलापों को समझकर उसके अनुसार चलना चाहिए। पशु-पक्षियों का ठोस पुराक खिलाकर उनकी प्रजनन-शक्ति को बढ़ाने के कृत्रिम और यांत्रिक उपायो को छोडना चाहिए। इस प्रकार के सगठन श्रव विलायत में बनने लगे हैं कि फसलों, पशुओं और भूमि के साथ श्रव करुणा-प्राधारित पद्धतियाँ चलनी चाहिए। इस प्रकार विचार की दिशा बदल रही है। पढकर खुशी हो रही थी कि आगिर में पटरी बदलने की कुछ योजनाएँ बन रही हैं।

इतने में एक "प्रगतिशील" जवान किसान आकर गप्प लगाने लगे। पहले तो चौमासे की वाड़ और जाड़े के सूखे का रोना धोना चना। उसके बाद वे श्रागे बढ़े। पम्प उनके पास है। उनके गांव में पिछले साल रासायनिक खाद डालकर फसल अच्छी आयी। इस वर्ष एक किसान ने चार सौ रुपये की खाद खरीद कर खेतों में डाली, और काफी सिंचाई भी की; लेकिन फसल घाधी आयी।

चारो ओर गोबर के उपलो का ढेर पडा था जिन्हें देखकर दिल में श्रयन्त दु:ख होता है। मैंने सुझाया, "श्ररे भाई, रासायनिक खाद के बदले में कौयला खरीदते तो सालभर में चार सौ रुपये का कौयला थोड़े ही लगता, और यह सारा पोबर खेतों में जाता, तो उपज बढ़ती, घटता नही।"

"नही, फसल खाद में पराव नही हुई, पडुआ से पराव हुई। (हालाकि श्रन्य खेतों में पडुआ से नुकसान नही हुआ)। "असली बात यह है कि हमे छोटे-छोटे ट्रंक्टर चाहिए और योरिंग चाहिए। फिर रासायनिक खाद से खूब फायदा होगा।" उस युवक किसान ने कहा।

मैंने सोचा, श्रव सरकार की विकास-योजनाओं के द्वारा फंलाये हुए इस गलत विचारधारा से छुट्टी पाने का समय आ गया है। उत्तर भारतवान (उडीसा, बिहार, उत्तर प्रदेश और पजाब) से एक नयी दिशा खुलनी चाहिए। श्रव हम शहरो और नगरो से सरकार को उठाकर उसे गाँवों में खाने जा रहे है तो पूँजीपतियों को फायदा पहुँचाने वाली योजनाओं पर भी फिर से विचार करने की जरूरत है। ट्रंक्टर और रासायनिक खाद के प्रसार से पूँजीपतियों को और शहर के मजदूरो को भले ही लाभ हो, लेकिन उनसे देहाती लोगों की पूँजी और भूमि को उर्वर-शक्ति-समाप्त हो जाती है। श्रव हमे अपने-अनुभव से गाँव की बात



अब हम छोड़ देंगे

(राजस्थान गान बन्दी शान्दोलन का प्रेरक श्रुतमन)

हम भोदवाडा गांव में प्रवार को निराते। ४-२ गहिन वेदी थी। बच्चे भी थे। हम साठ पर उनके घर बैठ गये। मैंने पूछा, "यहाँ काग्न दिन मरान में खपित की जाती है ?" उषारे में यह घर उद्योग बना दिया। १०-१२ मिनट उनमें बर्बा बरते के बाद हम घर मरान में पहुँचे, जहाँ दास खपित की जाती थी। दोनो भाई पौर में बैठे थे। उनको पालिया भी थी और ०२ बच्चे भी थे। सबसे सल्लिपनर बना रहे थे कि यहाँ दास का साधारण है। मैंने कहा, "भाई क्या धाप अपनी शास पीन की धादत से मुक्त है ?"

"बदलनी हम को नहीं पति।"

'भाई मूठ न वाली, हम धाराप जिले को धासकी तिकनी धार मूठ मोलना पडेगा।'
सब गन बोला—'हाँ, पीने है जो।'

"गानवा स्वास्थ सपने खदिर विरल हुआ है। म्पोनचने को क्या मिलते हो ?" धारो की टोचरी मामन पची थी, बोरे—'दे बादे।"

"भाई बहु सुन रही गुप्तारे खदर वा दास राजम मोन रडा उगा। पूग मान हो गया है। यह धासुनिरता मनी, दकिधा म्पोपन है। पविचय म लम दस बात की धच्छी सगह सभमे लप है। व प्रनुमन बरने सभम बुने है। हम भी योडा धनुभव हुआ है। धाप उन मोरे बात में बचने का समय सा गया है।"

"बहु बहना सडी है कि इन समय देस की मुख्य समस्या है कि हमारी मनुष्य शक्ति का पूरा उपयोग कैसे हो ? हमारी भूमि की उर्वरा-शक्ति कैसे बढ़े ? हमें क्या बचानेवाली मरी, धम बढानेवाली धाडसवाली भी धावबनता है।"

शाम स्यराज्य की बोवना में सर्व प्रथम बात उद्योग और पुराक में बच्चे मान को पकड़ा मान बनते थे उद्योगों को फिर पति बाली के हाथों में लाता चाहिए। सब मजदूरों को मिस मजदूरी मिलने से साथ ही साम वीजिय गुणन भी मिस सनेमी धोर धन परोध और धमोर विचार सनुमित और वीजिय सुधार के धमाम में बढनेवासी बसयोनी धोर धोभासिको से बच साने। धासिक-धदनि के धारो हो हमारी धुराक के धसवी धक्ति बढाने वाले धाल्य बनकर धाक हो साने हैं। —मरता देवी

२१ जून '६८

है। ये धापके सक्के निरुत के प्राप्ती हैं। क्या दनरो सुप पहुँचाना तुम्हारा काम नहीं ?"

बड भाई की बहु सुप न रू सकीं, "दिलिजी हमारे जी जानने है हमन उरुत दुग भोग उनरो धारको म। १ गाव नर मी को न पड रहे, तर बडी धर दम तो है।" १८ साप ना गन सदनर बा। उनका स्वास्थ घोर था, उनको खारार—'यह दास के बचा है सामी भयभानु का प्रयाद सभमनी है।' छोटी का पति भी मामन ही देता था। यह धपनी जवान सडरी का मिर मूवनी जानी थी और पति के मामन देप-देवनर देमनी जानी और बन्नी जानी, "पूरी, हम का गनी हैं भन गुन पीरो।" न मालूम बहु धपने पति से विरुनी धारासि थी। पर हृदय की वेदना हमने छिपी न रही, धाप उनको सीनी होनी जा रही थी।

भाई मेरे एक बाग बेगन बहना सानवर मी बडूँ सो बरने क्या। निरान देवा दास म बच प रता चाहो, उन पैसो का रूप, पन मिठाई सपा देव उपाड बचना के दिण बतिपदत से धापे। सबके साथ बँडार बचको को दुय, मिठाई तिसार गुप सप भी धापे। दैसो, तुम्हें बिलना धास-सन्धो होना। धारकने तुम्हें तिनका धार देगे, तुम्हारी मडन बरने। गुप्तार्य स्वास्थ भी सुपन बाधया। नसा उतने पर जो पन्चासस तुम्हें होना है, उसस भी बधाये।

'धाप डीन ही बहु रही है। हम धम छोड दगे। बहु धुरी भोग है। यानी सुपन सुने हैं।' हम उनसे धर से निरने। नुध सगतिबा हमारे पीछे-पीछे धासो रही। वे भी धपना ददे गुनार जो हल्का बरता जाह रही थी। धपने-धपने दु प मुतले। पून बोरी, "दिलिजी, धारने धर ने निर नन ही दोनो भाई बहने नगे, दिवो सने धर की व बढने हमारे दु ध से निरनी दु बो है। निरने मम से हमारे साथ बात की। हमें धन धार छोड हो देनी चाहिए।" हम निधर से निरपठे, हर बच्चे के मुँह पर धार धा—'दास पीना छोड दो, जीवन सपना भोड दो। मैं मन ही मन दुधारे दे रही थी, "भगवान्, इन बच्चों के जीवन में यह धारा सदा के निरु धकित हो जाय।"

—सुशीला गृधारी



कलवटी का डेरा

“पटवारीजी घर पर हैं ?”

“कौन है रे भाई ! वह तो कलवटी के डेरे पर गये है ।”

“क्यों गाँव मे उनकी यह चिट्ठी आयी है । वहाँ पर उनका रिश्तेदार सस्त धोमार है । आज ही बुलाया है ।”

“यह चिट्ठी भी बड़े भाड़े समय आयी है । गाँव मे पिछले तीन दिन से कलवटी का डेरा आया हुआ है । उमके चलते दम मारने तक भी फुरसत नहीं है । आज कौन जा सकते हैं ?”

× × ×

“आज घर में तीन आश्रमियों का खाना और बनेगा ।”

“बयों, आज और कौन-कौन आ रहा है ?”

“नामय तहसीलदार, कानूनगो आदि आर्योगे । दाल-भात के साथ एक-दो सब्जी भी बना लेना । देखना किसी चीज की कमी न रहे जाय, ऐसे मीके बार-बार नहीं आते ?”

× × ×

कलवटी का डेरा आज जानेवाला था । लेकिन अपने परिवार के सदस्यों के कहने पर कलवटी साहब ने एक दिन का समय और बढ़ा दिया । रुकने पर कुछ-न-कुछ करना जरूरी है । इसलिए एनाक के दपत्तर, आने और एक दूसरे गाँव के दौरे का प्रोग्राम बन गया ।

सबसे पहले ब्लाक के दफ्तर का दौरा शुरू हुआ । कलवटी साहब ने दो-चार मिनट धूम-फिरकर देखा । एक-दो फागजों का मुआयना किया, दो-चार हिदायतें दी और जलपान कर दूसरी जगह का मुआयना करने चल दिये ।

× × ×

यह है एक गाँव की बात, जहाँ पर कुछ हफ्ते पहले कलवटी यानी जिला मजिस्ट्रेट का कैम्प लगा था । लेकिन यह बात

सिर्फ उसी गाँव की नहीं, उन गाँवों की है, जहाँ पर ऐसे डेरे लगते-हते हैं ।

एक जमाना था जब हमारे देश मे बादशाह लोग खुद भेष बदलकर मुआयना किया करते थे । इससे सरकारी मशीनरी के पुर्जे तो चुस्त रहते ही थे, लोगों का भी भला होता था । लेकिन आजकल तो मुआयने सिर्फ ‘खानापूति’ के लिए किये जाते हैं । ऊपरवालों को इन मुआयनों मे भत्ते और नजराने के रूप मे अच्छी-भासी आमदनी ही जाती है । नीचे के लोगों का, जिनके जिम्मे मारा काम रहता है, कई सी रुपया मेहमाननवाजी मे उट जाता है । जाहिर है कि नीचे के लोग यह पंजा अपनी जेब मे देने से रहे । वे भी इसे कही-न-कही से निकालेंगे ही ? इस तरह इन मुआयनों का उद्देश्य तो पूरा ही नहीं पाता, उल्टे भ्रष्टाचार पनपता है और गलत परंपराओं को बढ़ावा मिलता है ।

डेरा लगने का समय पहले मे ही निश्चित रहता । इसलिए दौरे के समय उन यामी-खराबियों को दूर कर दिया जाता है, जिन पर नजर पडने का अदेशा होना है । जिन लोगों को कुछ शिकायतें होती हैं, वे भय के कारण अपनी बात नहीं कह पाते और फिर उनकी मुनने का समय भी जिसके पास होता है ! इसके विपरीत उन लोगों की बाधो धन आती है, जो पेट-पूजा करके साहबों को मुश करने की टोह मे रहते हैं ।

साहब कुछ सख्त भी हुआ तो भी नजराना किमी-न-किसी रूप मे दे ही दिया जात है । कोई बात नहीं बनी तो कही-न-कही से कोई जान-पहुचान पंजा कर सी जाती है । फिर लेने-वाला सख्त होते हुए भी यह साबकर भंट स्वीकार कर लेता है कि जान-पहुचान और धारी मे सब चलता है ।

दौरे अपने मे बुरे नहीं हैं, धन के आवाज और गाँववालों के साथ मिल-बैठकर उनकी समस्याओं और दिक्कतें दूर करने के लिए किये जायें । जब तक दौरे द्वारा यह ‘खानापूति’ और आँकड़े भरने का काम जारी रहेगा, तब तक गाँवों में सच्चा स्वराज्य आने का स्वप्न, स्वप्न ही रहेगा !

—विनोद ‘विभाकर’

‘गाँव की बात’ : वार्षिक अन्धा : चार खण्डे, एक प्रति : अठारह पंजे ।

भोट्टलबंस भट्ट द्वारा सर्व सेवा सेंप के लिए इंडियन प्रेस (प्रा०) लि०, बाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित ।

अवना है, पदचानना है, यह आस्तिक है, धारै ईश्वर को मानना हो या न मानना हो। जो मृत्यु को नहीं जानता, धीर सिक्के कीमती को जानता है, उमचा नाम नास्तिक है, मित्र है; हर चीज की बीमन-ही-बीमन मानता है, उमरी वड्ड नहीं करना जानता, यह तीसरी चीज परिवार मे है। इन तीनों को हम समाज मे दागिन कर देना चाहते हैं। परिवार की दो घुसायो को छोडकर। परिवार में दो घुसायो हैं। संघति के सम्बन्ध धीर दूररे एक के सम्बन्ध। एक वा संस्वन्ध स्वायत्त नहीं है।

सालंटी नहीं है। साम्प्रतिक सम्बन्ध मनुष्य को एव-दूररे से धराण करते हैं। धगर राज्य धीर नभन नहीं होना तो कौंसी धीर मयरा के लिए कोई धवदार नहीं होना। वही भी ऐसे भाइयों के बीच, जिन भाइयों ने कभी तलत की उमरीदबारी नहीं की, कभी कोई हवेकदान-भेनीकेन्दो नहीं निकाला। उन भाइयों के बीच में भी कौंसी धीर मयरा था सकी, तो कौंसी धीर मयरा नहीं थी, वड्ड सगति थी। परिवार मे से पारिवारिक सगति धीर एक-अन्धको को हटा देंगे तो बाहर नागरिकता धीर गहुर्यना हैं। परिवार में रिश्तेदारियाँ हैं। परिवार की रिश्तेदारियाँ सड्यना धीर नागरिकता की जगह ले लेंगी, तो साय मनुष्य-नमात्र विश्व दुडुम्ब में बरिसान हो जायगा।

इन मनुष्यो को समाज मे दागिन करने मे पडला कदम क्या होगा ? मनुष्य धीर मनुष्य के बी ब में संघति धानी है, स्वाभिसव धाना है, राता धानी है। ये तीन चीजें ऐसी हैं, जो मनुष्य को मनुष्य मे प्रलग करती हैं। कोई भला धायमी गही चाहना है कि उसके धीर हमके बीच मे ये तीनों चीजें भायें। कोई भला धायमी नहीं चाहना। जहाँ सगति धायी, गना धायी, वहाँ भाई भाई को मार देगा। माधी माधी को मार देगा। चाहे वह भाई पीरानिजक काल के हो या ऐतिहासिक बान के, धीर चाहे कम्पुनित भसलके के हो, या सिधिम के हों। राना ऐसी चीज है, जो मनुष्य को मनुष्य से धसग करती है। हम स्वतंत्रता चाहते हैं, हम मनुष्य-मनुष्यो के बीच सगति चाहते हैं। जिसकी बुद्ध धानी दुडुम्ब-सत्या मे दिखई देती है।

[धातु रोड, १० जून '६५]

आचार्य राममूर्ति द्वारा सर्वोदय-सम्मेलन में दिग्दिशत

राज्यदान के आयाम

नया सत्य, नयी शक्ति

१७ वर्षों में ग्रामदान पाण्डोलन के धायाम धपमा एक-दूररे के बाद प्रकट होने गये हैं। ग्रामदान वा जो दूकान हमारे मन मे है वह समाज मे नहीं है। ग्रामदान धीर प्रकण्डदान के जो धानरे हमारे सामने प्रस्तुत किये गये हैं वे निश्चित रूप से हमारे उमगाह को बडानेवाले हैं। ये धानरे कहीं से वहाँ पडेंगे गये। लेकिन यह सवाल हमसे बराबर पड्डा गगा है कि ग्रामदान के माये धाम के रचनात्मक कार्य वहाँ हैं, मयावबधी वहाँ है, नयी तालीम वहाँ है; भगी-भुक्ति वहाँ है; धामोचोग वहाँ है ? बडा जाता है कि इन कार्यों के जिना धामदान में माधी का दर्शन कहाँ होगा है ? राजनीति के हमारे कई मित्र कट्टे हैं कि पाकिस्तान मे प्रलग रड्डर तुम लोग क्या कर सकोगे ? वारासाही के इधारे एक मित्र ने एक गोगी मे यहाँ तक कहा कि सन् १९४२ के बाद तुम लोग इतनी जम्ही नपुमक हो जाओगे ऐसा नहीं सोचा था। राजनीति वालो से मित्र धार्मिक धुरि के लोग पूछते हैं कि सामदान मे वह नया लोक-धित (न्यू माडण्ड) वहाँ है जिसे बिना गये युग की किसी गयी तुगीरी का घुसाविना नहीं किया जा सकता ?

ये सब सवाल धयनी जगह सही हैं। लेकिन जब हम लोग ग्रामदान के वाम मे लगे तब यह मानकर नहीं लगे कि हम उमर-खैवाम हो जायेंगे धीर धयने मन की धुनिषा बसा दावेंगे। हमने यह देला वा कि गायपी की के बाद उनका कोई सत्य या उनकी कोई धहिषा समाज के पास नहीं रहे गयी थी। जो बुड्ड था वह सधामो धीर सरखारो के पंत गभा था। जनता के पास न कोई सत्य था, न धहिषा थी। धी केवल गायपी की मार। हम गायपी के सत्य धीर धहिषा को सधाज मे देवना चाहते थे। हम तलास कर रहे थे एक नयी नागाजिक गति-धीगता (सोशल डाइरेक्शिस) की, एक नयी धाक्ति की जो सधाज की धुनिषा को, बदल सके। यह नाक्ति नहीं थी ?

इतने वर्षों में धामदान, प्रकण्डदान, जिनादान, राज्यदान तक हम पहुँच गये हैं धीर धव भारतदान तक का नाम लेते लगे हैं। इन धारोहणे से धहिषा किनी बनी है, मानव किन्ना बना है, धारि प्रयत्नों की धान-वीन की जानी चाहिए। धम-मे-कन इतना तो हथा ही है कि जहाँ रकमपरा ने जाति की बात की, साम्यवाद ने वर्ग की बान की, दल ने 'बहु' की बान की, वडी धामदान ने 'सर्व' की बान की। हम देख रहे हैं कि हमारी 'सर्व' की धम बात को जनता धुन रही है। बिनी धामदानी गाँव ने जमीन वाटी धा नडी वाटी, लेकिन सधने 'सर्व' की बान तो मान ही ली। इस 'सर्व' में चडाल, पूँजीधित, या धल्प-मत्तवाला, कोई वडिपड्डन नहीं है। यह 'सर्व' मत्य या माधी का जिसे धामदान ने लोक-मानम तक पहुँचाया है।

वर्ग संघर्ष में धानि का खोल है, यह हम जानते थे, मानते थे धीर बडते चले धाये थे। वर्ग-सधर्ष के सिवाय दूसरी कोई सामाजिक धाक्ति मुझको नहीं थी। धर्ष-मधर्ष के विचार में इतनी धकडई तो थी ही कि उसके द्वारा साम्यवाद ने हिमा की एक रकनस्यक धाक्ति बना दिया था; हिंसा को एक सामाजिक लख मिल गया था। लेकिन जय हम भाँवो मे गये तो हमने देखा कि सधर्ष मे अन्ति एक दख भी धाये नहीं वडनी वलिक संघर्ष अन्ति-जनता की धानि, को राना जानेवाली चीज है। हम सोच नहीं पाते थे कि संघर्ष मानिक धीर मजदूर शेरों को बहाँ ले जायगा। गाँव के जीवन मे जातिगन धमन धीर धर्षगत धोपण का जो ताना-बाता है वह संघर्ष से कैसे सग्न होगा ? धीर सधर्ष भी बिन जिस में होगा ? जाति जाति में धनी गरीब में, दल-दल मे या एक साय सयमे ? सधर्ष मे धर्षनाज न भी हो, धीर विजय कितीकी हो, सधाज की रचनात्मक धाक्ति तो सधाज ही ही जायगी। फिर धानिग सधारा हिंसा का रड्ड गगना- राज्य की हिंसा वा। लेकिन

अप्रत्यक्ष। यह नये प्रतिनिधित्व की बुनियादी बात है, जिगरी तकनीक बनाती होगी।

राज समाज का नेतृत्व व्यवसाय (बिजिनेस) और राजनीति (पॉलिटिक्स) का है और लोकमानस इनी व्यवसाय और राजनीति के नेतृत्व में बन बिगड़ रहा है। इस त्रिआकारी नेतृत्व के रहने नया चित्त कैसे योग्य? इसलिए इन दोनों का नेतृत्व खत्म होना चाहिए। आम प्रामदास का जो काम हो रहा है वह नये स्वामित्व और नये नेतृत्व को कायम करने की प्रक्रिया है।

सन् १९७२ के चुनाव में इनी के उम्मीदवार खड़े होने का प्रामसमाधो के? प्रवक्ता हनुने दूसरी की प्रतिनिधि बनना, अरु हम चाहे हैं कि प्रामसमाधो अपने प्रतिनिधि खत्म कर दें। इस दृष्टि से प्रामदान-माओलन ने गाँव को व्यक्तित्व दिया है, उत्पादन और उपभोग के साथ-साथ उसे सोचसूच की बुनियादी इकाई बनाया है। यह नमात्र-दमन सर्वोप की पूर्वीवाद और साम्यवाद दोनों से अलग कर देता है।

संघर्ष नहीं, साम्यवाद

प्रबल हो सकता है कि हम जिन प्रामसमाधो की बात करते हैं वे प्रामसमाधो अभी हैं नहीं? नहीं? बनाता है। हम प्रामसमाधो बनाने का काम कर रहे हैं? वानुव के अभाव में ये प्रामसमाधो अभी प्रामसी है, उन्हें वानुवी अधिभार नहीं प्राप्त है। इन प्रामसमाधो को प्रगामन (पेरिनिमिस्टिक) और प्रतिनिधित्व (रेप्रेसेन्टेशन) दोनों काम अपने हाथ में लेने हैं। गाँव में सरकार भी नहीं, और राजनैतिक दल भी नहीं। लेकिन बडिनाई यह है कि हम एक-एक गाँव एक-विशेष प्रकार के प्रामसमाधो (इतर कास्ट/विधान) का विकास है। मातृ-मजदूर एक-दूसरे से अलग हैं; अलग ही नहीं, परस्पर-विरोधी हैं। इस अन्तर्विरोध को कैसे दूर किया जायगा? प्रामसमाधो के विलन के धरातल को कैसे उठाया जायगा? अगर हनुने कही यह मान लिया कि मातृ और मजदूर में बुनियादी संघर्ष है तो हमें यह भी मानना ही पड़ेगा कि इस संघर्ष का अन्तिम में कोई उपाय नहीं है। कम-से-कम अपने देव

में तो दिखाई नहीं देता। अगर संघर्ष नहीं है, और उनमें बुनियादी संघर्ष है, तो संघर्ष के अन्त के लिए संघर्ष ही करना पड़ेगा, परिणाम उसका चाहे जो हो।

हमने अपने देव में सोचसूच की जो पद्धति बनायी है वह हिन्दी की अनुचित करने में सफल नहीं हुई है। उल्टे हिन्द विरोध बढ़ा है। दलदली के मोहन में नयी दूरी क्या पद्धति निकलेगी? बात यह है कि मातृ और मजदूर में बुनियादी विरोध की बात का प्रामदान में भेज नहीं है; अन्तिम से भेज नहीं है। इसी नजर में मजदूर मजदूर नहीं है, मेहनत का मातृ है, मातृ की मातृ, और मजदूर भी मातृ। और जब मजदूर भी मातृ है तो अन्तिम के मातृ को से यह मातृ की हैमियन से बात कर सकता है। यह एक नया वानिदमन है जो मजदूर को नेतृत्व का मातृ मानना है। मानेदारी (रोयलि) गमान योग्य में ही हो सकती है। उन्नी दान का मतन दान म् विना यानी ममान हीमा, नहीं ही दान मिशा होकर रह जायगा। इसलिए प्रामदान में मातृ, पदान, और मजदूर यानी तीनों 'मानितो' की गामेदारी शुरू होगी चाहिए। तीनों की प्रतिभा और सामर्थ्य प्रामदान को मिलनी चाहिए। अन्त एक के द्वारा दूसरे का दमन और तोषण हो रहा है, यह व्यवसाय का योग है, व्यवसाय ऐसी होगी चाहिए, जिसमें बुद्धि, पूँजी और श्रम समान हों, और इन सबका सम्बन्ध हो। लेकिन यह बात जब जनता के सामने रखी जाती है तो मजदूर में बेतना घापी है, पर मातृ में त्रिना पंदा होने लगती है। मातृ की अन्तिम देव में उन्नी बडिनाई नहीं है, उन्नी मजदूर को गमान इमिन्द देवें में। यह एक 'वापु'-विधान है। इस अन्तर्विरोध के दूर हुए बिना प्रामदान गाँव में सबसे काम, श्रम और धाराम की गारुटी बंधे दे गयेगी; मजदूर से कैसे बच सकेगी?

रचनात्मक कार्य का नया आयाम

प्रामसमाधो की इस नये वानिदमन में दीक्षित करने का काम बुनियादी मजदूर का है। मजदूर का ही है ही, मजदूर की है।

प्राम-स्वामित्व और प्राम-नेतृत्व के अन्तर्विरोधों के मिटने को सम्भावना प्रस्तुत हुई है। उस सम्भावना को सामने रखकर शिक्षण और संगठन की योजना बननी चाहिए। इसके लिए साधियों की बनी है, यह दूर होगी चाहिए। इसके लिए विविध, धार्मिकों आदि का प्रामोचन करना होगा। बहुत बड़ा काम है सोचविशेष का, धोकराति मगठित करने का! यह रचनात्मक कार्यम का बिसतुल नया आयाम (इम्पेन्शन) है। १८ परिचित रचनात्मक कार्य अन्तिम जगह हैं; अगर प्रामसमाधो का संगठन हो जाय तो उन सबको प्रामसमाधो उठा लेगी—नयी तात्वी, नताद्वी अन्तिम सबको। प्रामसमाधो के गान-दली का बडिनाई होगी कि वे मजदूर और दली का बिना काम अपने उभर उठा लेती है। रचनात्मक कार्यम के तीन पद हैं—

- रचनात्मक चित्त,
- रचनात्मक सम्बन्ध और
- रचनात्मक कार्य।

ये तीनों तब गये जब प्रामसमाधो प्रामदान की पद्धति (प्रामदान से) में काम करने लगे; सरकार के दमन, राजनीति के संघर्ष और व्यवसाय के तोषण में मुक्त होंगे की दिशा में चल पड़े। रचनात्मक कार्य का यही नया आयाम है, और यही बुनियादी भी है। अन्तिम भारतीयता का बन

अन्त में हमारा एक और बात की और ध्यान जाना चाहिए। गाँव की छोटी-से-छोटी मजदूरी ही नयी होगी अन्तम इस धारो-लन का अन्तिम भारतीय रचना नहीं प्रकट होगा। इसी धारो-लन में विकास की धार में है, लेकिन अन्तिम भास्वीरदा के भार की बनी है। इस बनी को धारन दूर होना चाहिए। त्रिनाशद और अन्तर्विरोध की मजदूर मजदूर से यह धारो-लन नहीं बढ़ेगा। त्रिनाशद और अन्तर्विरोध का यह अन्तर्विरोध ही मजदूरी है कि मजदूरी त्रिनाशद पर अन्तर्विरोध ही उन्नी उन्नी धारो-लन पर ही होगी है, उन्नी धारो-लन पर ही होगी है। गाँव को प्रवद, अन्तर्विरोध में त्रिनाशद और अन्तर्विरोध का दल चाहिए। इस दृष्टि में प्रामसमाधो अन्तर्विरोध का और धारो-लन

जाते हैं क्योंकि पाँच जो ब्रह्मछे हैं, वे किसी भी तरह की जोखिम या धरना उठाने से डरते हैं। इस तरह पाँच के इंसारे पर सत्र काम होता है। लेकिन अगर ब्रह्मछे लोग उठ खड़े हो और हिम्मत से काम लें तो उनके धारों बुरे लोगों को नहीं चलेगी और सारा बचाव-वपण बदन जायगा। प्रायः यह मत भूलिये कि जितने बड़े-बड़े काम हुए हैं वे चन्द्र लोगों ने किये हैं और दुनिया ने उनका माया दिया है। इसलिए संस्था का कोई सकल आपने नामने नहीं उठना चाहिए और अगर मानि-मनिक भन्ने तादाद में छोड़े हो अगर सत्रन से छुट जाते हैं तो धनस्य गरुन और यशसी हूँ।

इनाहास बुनिवमिटी के उर्दू विभाग के प्राध्यापक डा० आशिल रिजमी ने कहा कि "हम बार के दो ने एक ऐसी किताब बना दी है, जो पहले कभी नहीं थी। भारत में पाठ्यपुस्तकें और डर पंदा हो गये हैं। लेकिन मेरा मतलब है कि यह कोई टिक्का चीज नहीं है। यह दौर उर्दू ही सत्रन होगा। इनका नामना करने का सबसे बेहतर तरीका यह है कि लोग समझावभर और नेवनीयनी ने मिलकर रहें। सत्रे सुणी है कि देहाको में इनका कोई धरन नहीं है और यहाँ धारणी तानुबास वहुने जंमे घबड़े बने भाते हैं। धरनी शिष्टनी देहाज में है और वही हिन्दुस्तान की रूह है।"

विश्वेक की आशयशक्तता

दुसरे दिन भी चर्चा का समारोह बरगे हुए थी विश्वभारतस्य पाठ्ये ने बरा कि, "हर धर्म या मन्त्र में दो चीजें होती हैं। एक तो उसके बुनिवामी उभूत और दुसरे उसके रीति रिवाज और बर्तमान। दुनिया के सारे धर्मों के भूत मिश्रण एक ही है, लेकिन जन,राज्य और परिस्थिति के कारण बर्तमान या सारक धरन-धनन हैं। बदलिनी यह हूँ कि लोगों ने इन रीति-रिवाजों को ही धर्म समझ लिया और इसी वजह से मंशीलता और पाबन्ध के निवार हो गये और भारत में लड़ने लगे। इसलिए हमारा-पाना यह फर्क होता है कि धरन के गुरे और सहर के निवर्त में मन्त्रीय करना नीचे और धरनी विश्व-बुद्धि के गुरे को

ब्रह्म करे और छिन्ने को फेंक दें। अगर हम इस तरह का प्रन्यास करते हैं, तो धरने को ऊँचा उठा ले जायेंगे और उभरनी की राह खुल जायगी। तब हम महसूस करेंगे कि ईश्वर प्रेरकचक्र है या प्रेम ही ईश्वर है।"

अधिकार बनाम कर्तव्य

तीसरे दिन, २६ मई को प्रातः बाल चर्चा का विषय था - जनतन्त्र, धर्मनिरपेक्ष राज्य और हमारा कर्तव्य। विषय-प्रश्नस्य करते हुए डा० अजहर अन्वारी, इनाहास बुनिवमिटी के इतिहास विभाग के प्राध्यापक ने कहा कि, "जनतन्त्र की सफलता तीन बातों पर मुतावर है - धरने हक की हमें जानकारी हो, धरने फर्क को हम समझें हो, और लोगों की मित्राचारी को दूर करने का एक यत्ना रास्ता हो। हमारे देश का दुर्भाग्य यह रहा कि हम धरने हक के लिए तो इनेना दावा या चोर करते रहते हैं, लेकिन धरने फर्क या कर्तव्यों की तरफ कोई ध्यान नहीं देते और न मित्राचर्य दूर करने का ही कोई रास्ता निकाल पाते जिससे सत्रको दुर्मिमान हो। यही वजह है कि धरने उद्देश्य या मन्त्रीयों को हासिल करने के लिए लोग धारो दिन दिग्ग पर उताव हो जाते हैं। सतिमान की हति में हम धर्मनिरपेक्ष या मेरतूनर जन्म हैं, लेकिन धरन में नहीं। इस सबसे कारण धरनी है कि हम पंदा परतन और रवर्षीय या सदनजं बन गये हैं। एक-दुसरे की शिन्ता करता छोड़ ही दिया है। मेरे मतलब में यह धर जन्मी है कि छोटे छोटे हर्नों या दल्लों में सत्र नेता का काम उभर में और एक-दुसरे के दुसरे में शामिल हो। मुझे दूर भरोसा है कि अगर धरनि-मेना इन दिना में बरन बढाकी ले तो लोगों के दिन में लनी उम्मीद पंदा बनेगी और सत्र कुछ बरमान भी हासिल कर सकेगी।"

आर्थिक स्वायत्तस्यन जरूरी

गुणवत्त विदास और बरतुड मन्त्रीयों प्रोफेसर गरीमचन्द्र देव ने सत्रुदु बानी में बरा कि, "हम जद सतिमान बनने बंटे हो धनेक देनों के सतिमान माधने रल दिने और उभर में एक-दुसरे पाठ छोड़े गये और धरना में बरद देते दरे। दन बरतुड र्धनी रीउ की

प्रतिया से संबिधान बनाया, न कि धरने विकास की प्रतिया द्वारा। यही कारण है कि अमेरिका के सतिधान ने विद्यने लगभग दो सौ वर्षों में जितने परिवर्तन नहीं किये गये उतने ज्यादा परिवर्तन हमें धरने सतिधान में बीस साल में करने पड़ गये ! अगर मुझे धरना करेँ अगर मैं यह निवार रूँ कि बनी लक्ष हमारी जनतासिक बुनिवाद ही जन नहीं राणी है। प्रायः मेरे मत में सत्रन उठा करना है कि क्या भारत में धर्म-निरपेक्ष जनतन्त्र टिक सकेगा ? क्योंकि प्रवक्तक देश धार्मिक दृष्टि में स्वावलम्बी नहीं हो जाय तब तक धर्मनिरपेक्ष जनतन्त्र की स्थापना हो ही नहीं सकेगी। लेकिन मैं जन्य का धरना-बारी हूँ और यह उम्मीद करता हूँ कि यह देश एक तेजा ररन पंदा बनेगा जो धरानी धन माधने में जन-धीर, धर्म, भाव और रीति रिवाज धारि के भेदो को तोटना तथा सत्र को सत्रोकादि सत्रय की और से जायगा। यही कारण है कि मेरे मत में शानि तेजा के प्रति बहन धारन है और मैं शिराम बनता हूँ कि हमने काम की गुणवत्त दूर-दूर तक फैलेगी।"

समायवन समारोह

निधिर का समायवन-समारोह निरिषयक बनेत्र के टकर हाज में हुआ। इसकी सध्य-क्षता हरिकत सध्यय की सतिनी धीमरी रामादेकी मुस ने की। साबपाट डिडी बनेत्र के सत्रुदुं प्रधनाचार्य श्री प्रेमचन्द्र मुन ने सत्र में कहा कि शिन्ता या स्रिक के सत्रेता सत्र में कोई सत्रन सत्र नहीं हो सके। हमें शानि का धर्म सत्राया होना और धनेके लिए धरना जीवन धरन बदनता होना। मेरे मुसो की सत्रुदुशादी की स्रमल बनना होना। प्रेम, दया, बरना धरन मुसो का दिवाय धर बहन सत्रनी हो गया है। शानि-मेना दन दिना में प्रत्यन्तित है और धरनी श्री गुनेम राम ने की सत्रि स्रिभर्षी ने जो सत्रुदुद काय बिना उभरे शिन्ता हम बने धरानी हैं। हमारा कर्तव्य है कि धरनि-मेना की हद बरान की सत्रुदुशा करें।

हार्दिकी के स्रिन और सत्र के मुनिबिद मेरक सत्रय बनेत्र सत्रुदुद सत्रय

बलिया जिलादान : संक्षिप्त विवरण

१२ दिसम्बर '६५ : ग्रामदान अभियान की योजना बॉम्बेईह में ।

१ जनवरी '६६ से कार्य प्रारम्भ ।

३० जनवरी '६६ को जयप्रकाशनगर का प्रथम ग्रामदान घोषित ।

१७ फ़रवरी '६६ के सर्वोदय-सम्मेलन तक २० ग्रामदान प्राप्ति ।

१५ मई '६७ से पुनः अभियान प्रारम्भ ।

३ जून '६७ को बॉम्बेईह का प्रथम प्रत्यक्षदान घोषित ।

१२ जनवरी '६८ को बॉम्बेईह तहसील का प्रथम तहसीलदान घोषित ।

१५ जनवरी '६८ से बलिया तहसील में अभियान प्रारम्भ ।

१० मार्च '६८ को जयप्रकाशजी के गाँव-बाना मुस्लीछपरा प्रत्यक्षदान ।

१५ मई '६८ को बलिया तहसील का तहसीलदान घोषित ।

१६ मई '६८ से रामडा तहसीलदान-महाभियान प्रारम्भ ।

३ जून '६८ को बलिया जिलादान की घोषणा ।

जबराद की जनसंख्या प्रत्यक्षद्वारा प्राप्तमात्रे १३,३८,००० १८ १,०८६

• कई बारपूर्व से उत्तरप्रदेश में ग्रामदान का कार्य मन् '५२ के बाद मन् '६५ तक रुका

→ ४ जनवरी, '६८

श्री गणारामजी, विनायकीन द्वारा ग्रामदान के लिए भर्षी ।

१४ से १६ मार्च, '६८

मुथी निर्मला देवगण्डे की द्वारा यात्रा; निर्मलकान्त एच गांधी-भारत निधि के साथी श्री देवेन्द्रगुप्त गुप्त द्वारा गांधी-यात्राधी विवरण को सम्बोधन ।

३० मई, '६८

नितारी के पेशान में जिलादान-समर्पण समारोह ।

उत्तराखण्ड में सर्वोदय-आन्दोलन

जिलादान — उत्तरखण्ड

प्रत्यक्षदान — बीलाम, धारजुना

अन्य जिलों में ग्रामदान

टिहरी गढ़वाल : ४० घण्टी : १४८

गढ़वाल : १२ घण्टी : ४०

विशालगढ़ : १०

रहा। उत्तराखण्ड, मिज़ोरि, छत्तागढ़ के क्षेत्रों में भी कार्य चल रहा। इसी बीच १६वीं संविधान-सम्मेलन बलिया में करने का निश्चय हुआ। श्री धीरेन्द्र भाई ने समझाया कि सर्वोदय-सम्मेलन के अवसर पर थोड़े मोर्चे पर कार्य हो। एक मोर्चा ग्रामदान के प्रारम्भ का हो, दूसरा सर्वोदय सम्मेलन की तैयारी का। उनके इस मुझव को उत्तरप्रदेश ने मान लिया और श्री कविन भाई ने ग्रामदान के मोर्चे का नेतृत्व सुझाया।

• श्री कविन भाई के प्रयास में १०, ११, १२ दिसम्बर '६५ को बलिया के बॉम्बेईह क्षेत्र पर पूर्वी उ० प्र० के सर्वोदय और श्री गांधी आश्रम के कार्यकर्ता एकत्र हुए। श्री कविन भाई के साथी श्री रामभूतिजी, श्री देव-बरण मिश्र, श्री बरण भाई, श्री यश्री भाई आदि मुख्य लोग उपस्थित हुए।

इसी अवसर पर आचार्य रामभूति ने बलिया ग्रामदान अभियान की एक पूरी योजना प्रस्तुत की, जिसे पूरी करने की जिम्मे-दारी उनर प्रेक्षीय गांधी-निधि और श्री गांधी आश्रम प्रचारक व संयोजक क्षेत्र ने मुख्य रूप से उठाया। ग्राम की अन्य समस्याओं के संशोधन का ध्यान रखा गया। परिणाम-स्वरूप १७ वीं जनवरी '६६ से बलिया में

शारायकरी
टिहरी गढ़वाल, पत्रगाना, बादगढ़ीघोष, और लखौली
जलोरी व इन्द्रपुरी बर्माव, बर्माव
घण्टीघाट गण्ड, बघराही
विशालगढ़ का

सरोही (टिहरी गढ़वाल) व रोहीगढ़ (विशालगढ़) में जन-प्रस्तोचन कार्य है।

शक्ति सहकारी समितियों

मन्ना नागपुर धर्म मठिका गढ़वाली समिति वि०,

मोहनपुर : जंगल के टैंके

केसर अर्थिक सहकारी समिति, निजाग : निकालनाम के ठीके ।

प्रन्तीय स्तर पर ग्रामदान-अभियान प्रारम्भ करने का निश्चय हो गया।

• दिग्दर्शन के मध्य में ग्रामदान अभियान का कार्यालय बलिया में प्रारम्भ हो गया। आश्रम के मुख्यालय भी यश्री भाई अभियान के संचालक नियुक्त हुए, रामभूति भाई को कार्यलय का भार दिया गया। श्री कविन भाई ने नेतृत्व सम्भाला, तथा आचार्य रामभूति के मार्गदर्शन में सभी समस्याओं के संशोधन से अभियान कार्य चल पड़ा। १७वीं जनवरी '६५ को ग्रामदान के कोने-कोने में विभिन्न समस्याओं से ग्रामे सारी कार्यकर्ताओं के सिधिर से ग्रामदान-अभियान का कार्य प्रारम्भ हुआ। सिधिर की श्री जयप्रकाशजी, श्री धीरेन्द्र भाई व श्री कविन भाई का मार्ग-दर्शन मिला। जिले के पञ्चसरोही प्रयत्नों में १८ टोलियाँ प्राप्त करा गये। ग्रामदान विवरण यहाँ।

• टोलियाँ गाँवों में भूमती रही। १५ दिन बाद एक-दो दिनों के लिए विनकर ग्रामे भी योजना बरती रही।

• श्री धीरेन्द्र भाई, श्री रामभूतिजी व श्री कविन भाई जिले के सभी क्षेत्रों पर घूम रहे।

• धीरे धीरे जिले के प्रत्येक क्षेत्र में ग्रामदान का विचार फैल गया। ३० जनवरी '६६ को जयप्रकाशन गाँव के गाँव जय-प्रकाशन नगर का प्रथम ग्रामदान घोषित हुआ। ग्रामे के सर्वोदय सम्मेलन का पुनः २० गाँव ग्रामदान में प्राप्त हुए। धीरे धीरे ग्रामदान की गता निजान गयी। धीरे धीरे बढ़ती गयी। उम समय तक पूरे उत्तरप्रदेश में ४०६ ग्रामदान प्राप्त हुए थे।

• सर्वोदय सम्मेलन के बाद १४ मई '६६ को पुनः गांधी कार्यकर्ता बलिया में एकत्र हुए। श्री कविन भाई की उपस्थिति में आचार्य रामभूतिजी ने ग्रामे के कार्यक्रम की एक बरतना प्रस्तुत की। उसे मानकर कार्य-क्रम घोषित हुआ। पूरे दिन का कार्य सम्पन्न हुआ; बुने प्रयत्नों में कार्य करने की योजना कयी। एक मुख्य रूप से श्री गांधी आश्रम तथा गांधी-निधि के सहयोग ४० कार्यकर्ता अभियान में रह गये।

• एकपक्ष एक वर्ष तक चली प्रयत्नों

• ग्रामदान-व्यय : एकपक्ष, २३ जून, '६८

भूदान-यज्ञ के समाचार

आजमगढ़ जिलादान का संकल्प

आजमगढ़ जिला सर्वोदय मंडल एवं जिला गांधी-शाखाओं के तत्वावधान में जिले की प्रमुख वैधानिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं की एक विचार-मैत्री थी चीरेट्ट भाई मन्मदार की अध्यक्षता में वन २२ मई को हरिजन युक्तुल गांधीग्राम दोहरीपाट, आजमगढ़ में हुई। गोरी में सर्वसम्मति में यह निर्णय किया गया कि २ अक्टूबर, '६६ गांधी-जन्म-शताब्दी के पहले ही आजमगढ़ का जिलादान घोषित कराया जायगा।

सिंहभूम जिले में ग्रामदान-कार्य

सिंहभूम ग्रामदान-प्रति समिति के कार्यकर्ता श्री प्रमोदकुमार ने शुरुआत किया है कि इत जिले में ग्रामदान-प्रयोग के लिए पत्र लिखा है। ३१ मई तक जिले के ३२ प्रखण्डों में ४ प्रखण्ड एल. ३६५ गांधी का दान बांटा घोषित हो चुका है। जिले के तीन प्रमुख शहर, सिंघभूम एवं सराय-नेला में मे सरायनेला को लक्ष्मीनगर प्राति का कार्य किया जा रहा है। इस प्रमुख शहर के ८ प्रखण्डों में से ३ प्रखण्ड-बांडिल, ईचागढ़ एवं तीमडीह-का दान हो चुका है। गभरिया प्रखण्ड में ३ जून से कार्यकर्ता मंडी तारकरता से लगे हुए हैं। जून के अन्तिम सप्ताह या जुलाई के प्रथम सप्ताह तक इस प्रखण्ड का भी दान घोषित हो जाने की धारा है।

प्राति-कार्य में निश्चित रूप से दो टोलियां कार्य कर रही हैं। एक टोली, जो भू-प्रमुख श्री की देखरेख में है, जीर, साउंड-नवीकर एवं एच एच के साथ प्रखण्ड के गांव-गांव से भूम-युक्तकर मुनिय्या, मरुपच एवं अन्य लोगों से सहयोग प्राप्त कर रही है। इसे प्रचार-टोली कहा जाता है। यह टोली समय नितांतर भूमिगत के दूसरे प्रखण्डों में भी प्रचार करने वाली जाती है। दूसरी टोली जो श्री तारकरता

प्र० सिंह के निर्देशन में कार्यरत है, प्राति का काम कर रही है।

भयं संग्रह का भार समिति के संपोजक श्री स्वामिबहादुर सिंह ने अपने ऊपर लिया है। कार्यकर्ताओं की एक बैठक में उन्होंने सुझाव दिया कि प्राति-कार्य के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में सर्वोदय-समन, तथा 'ग्रामीण' एवं 'भूदान-यज्ञ' के ग्राहकों की संख्या बढ़ाने की भी कोशिश की जाय।

— ससनलाल सिंह

चम्बल घाटी में १०४ ग्रामदान

चम्बल घाटी प्राति-समिति ने तत्वावधान में गांधी-जन्म-शताब्दी कार्यक्रम के अन्तर्गत मिष्ट जिले के घाटेर विकास सड़ में आयोजित पदयात्रा-प्रमियाण के फलस्वरूप १०४ ग्रामदान प्राप्त हुए। समरलीय है कि मिष्ट जिले में यह प्रथम प्रयास था। उक्त प्रमियाण का मार्ग-दर्शन उत्तल विद्वत्विद्यालय के स्थापनाज्ञ विभाग के भू० पू० अध्यक्ष डा० दयानिधि पटनायक एवं भ० भा० प्राति सेना विद्यालय, बनारसवासा इन्दौर, की सहायिका सुधी निर्माता-दयचण्डे ने किया। प्रमियाण में गांधी-माध्यम उत्तर प्रदेश एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र की अनेक वैधानिक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। (संग्रह)

रायपुर में १५ ग्रामदान

रायपुर में २१ से ३० मई तक वरुण सांठि-सेना गिबिर और पदयात्रा-प्रमियाण संघर्ष हुआ, जिसमें छत्तीसगढ़ समाज के वृत्त-कार्केणों के लगभग १० विद्यार्थी और कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। गिबिर का सुमंगलित मध्यप्रदेश सांठि-सेना के प्रमुख श्री चमूच पाठक ने किया। गिबिरकारियों को सर्वथी नरेन्द्रकुमार दुबे, दाशभाई नाईक, कावीप्रसाद पाण्डे (विधानमन्त्री के अध्यक्ष), धारि के स्मारकानों का नाम भी, निता। तसए सांठि-सैनिकों ने १३ टोलियों में विनाशित होकर ६० गाँवों का परिष्करण किया और १५ ग्रामदान हासिल किये। (संग्रह)

गांधी-शताब्दी प्रशिक्षण विद्यालय

मध्यप्रदेश गांधी-स्मारक निधि द्वारा संचालित गांधी-जन्म-शताब्दी कार्यकर्ता-प्रशिक्षण विद्यालय का १०वीं छत्र प्रणामों १ जुलाई, '६८ से टीकमगढ़ में शुरू होने जा रहा है। विद्यालय का सत्र कुल डेढ़ माह का होगा तथा प्रशिक्षण-काल में प्रत्येक प्रतिभागियों को ६० से ८० माहवार छात्रवृत्ति दी जायगी। विद्यालय में बौद्धिक पाठ्यक्रम के साथ ही प्रत्यक्ष क्षेत्र में कार्यनिष्ठता का शिक्षण भी दिया जाता है। विद्यालय का उद्देश्य गांधी-शताब्दी कार्यक्रम की दृष्टि से कार्यकर्ता प्रशिक्षित करना है। जानकारी के लिए प्राचार्य, गांधी-शताब्दी प्रशिक्षण विद्यालय, द्वारा—जिला सर्वोदय मंडल, ताल दरवाजा, टीकमगढ़ (म० प्र०) के पते पर संपर्क करें। (संग्रह)

"शताब्दी-संदेश" का प्रकाशन

मध्यप्रदेश गांधी-स्मारक-निधि के निष्ठा-पुनार गांधी-शताब्दी के संदर्भ में मासिक "शताब्दी संदेश" का विधिवत् प्रकाशन दशों से गत १ जून से आरंभ हो गया है। प्रथम और द्वितीय अंक समुदाय के रूप में प्रकाशित हुआ है, जिसमें प्रात और देन-विदेश में गांधी-शताब्दी कार्यक्रम के विषय में महत्त्वपूर्ण जानकारी दी गयी है। पत्रिका का वार्षिक मूल्य पंच रुपये है। प्रदेश के सुप्रसिद्ध गांधीवादी विद्वान श्री बालिनाथ त्रिवेदी अपने मूल्य सहायक हैं। इनके सहाया डा० रामचन्द्र बिल्लोरी, श्री प्रेमचन्द अंन और श्री महेंद्र कुमार सहायक-सदस्य हैं। देश में शताब्दी-कार्यक्रम की दृष्टि में यह एकमेव मासिक पत्रिका है। (संग्रह)

श्यामा-याचना

दाऊ रोड सर्वोदय-मार्गमलन की वरह में तथा प्रेस के परिवर्तन के कारण यह एक पाठकों के हाथ में कुछ दिनभर में पहुँच रहा है। इसका पाठन-गणना समा करें। सर्वोदय मंडल के श्री भाग्य तथा पूर्ण रिपोर्ट हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे।—गु०

एशिया की गरीबी

जड़ कहाँ है ?

हमारी गरीबी हमारे लिए चिन्ता और पश्चिम के विद्वानों के लिए शोध और अध्ययन का विषय बनी हुई है। अभी स्वीडन के एक प्रसिद्ध धर्मशास्त्री ने दस वर्ष परिष्करण करके भारत, पाकिस्तान, लद्दाख, बरमा, थाईलैंड, मलयेशिया, हिन्देशिया, फिलीपीन, लाओस, कम्बोडिया और दक्षिणी अफ्रीका की गरीबी का गहरा अध्ययन किया है। इनमें से भारत और पाकिस्तान का उपादा यह है। उनके ग्रन्थ का नाम है : 'एशियन ड्रामा : राष्ट्रीय की गरीबी की जाँच।' यह बड़े महत्व का ग्रन्थ है। वो तो पूरा ग्रन्थ पढ़ने और मन करने लायक है, पर भारत के सम्बन्ध में कहीं हुई बातें हम सबों में यहाँ दे रहे हैं। प्रोफेसर मुन्नर माधरअल इस नवीन पर पढ़ें हैं कि ग्रामनौर पर यह माना जाता है कि दक्षिणी एशिया में देश पूँजी की कमी के कारण पिछड़े हुए हैं, लेकिन सचमुच वे इसलिए पिछड़े हुए हैं कि उनकी दृष्टि प्राविधिकपूर्ण है, जो सत्कार्य दक्षिणाग्रही है। (इस्लामन ऐटीट्युड्स ऐण्ड आउटगोइंग इस्टीमेट्स)। वह हमारे विकास के लिए संस्थागत परिवर्तन (इस्टीमेट्स ऑन वेज) को बुनियादी महत्व देते हैं। उनका यह धारणा है कि इन देशों के लिए जल्दी है कि वे अपने सामने कुछ निश्चित लक्ष्य रखें, जिनमें से मुख्य है—विकास तथा सामाजिक और प्राणिक समता।

शुरू की मूल

विश्वस्य बहुत कुछ सरकार की सही नीतियों तथा उचित कार्यान्वित करने की उसकी शक्ति पर निर्भर करता है। एशिया में एक बात यह हुई है कि स्वतंत्रता के साथ राष्ट्रीय एकता और समृद्धि नहीं प्राया है। दूसरे देशों की अपेक्षा भारत में यह अनुकूलता थी कि स्वतंत्रता के साथ उसे ऐसे नेता मिले, जो राजनीति का अनुभव रखते थे और सामाजिक-प्राणिक मुद्दों की आवश्यकता महसूस पहचाने थे।

पाकिस्तान, हिन्देशिया और बरमा में लोकतांत्रिक सरकारें बिकन हुईं और उनके स्थान पर कभी राजशाही का गयी। लद्दाख में भी साम्प्रदायिक उद्वेग बराबर बना रहा, लेकिन संविधान-दानव विरुद्ध इसलिए नहीं हुआ कि सेना स्वयं तैयार नहीं थी। भारत की सरकार सबसे अधिक उचित साबित हुई। अंग्रेजों राज की समाप्ति और बटवारे से पैदा होनेवाली समस्याओं का उत्तम सूत्री के साथ मुकामिला किया, तथा 'प्लानिंग' को सरकार की एक माध्य प्रवृत्ति बना दिया। लेकिन इतने बड़े कमी यह रही कि स्वतंत्रता के उत्तरदा का नाम उठाएर बुनियादी सामाजिक और प्राणिक मुद्दों का मूख्यत नवी क्रिया गया, जिसका परिणाम यह हुआ कि श्रीरे-धोरे सरकार दक्षिणाग्रही और प्राविधिकवादी लोगों के हाथ में चली गयी।

पूरे दक्षिण एशिया के क्षेत्र में उठती ही प्राणिक जीवन का धारा है, इसलिए खेती के उत्पादन से विकास का अनुमान हो सकता है। जमीन थोड़ी, सपन खेती का धन्य, प्रति एकड़ उत्पादन कम : ये हैं हमारी खेती के मुख्य लक्षण।

विदेशी बाजार का भरोसा नहीं

खेती के अभाव हमारी प्राणिक धर्मस्था का एक और बड़ा बड़ा लक्षण यह है कि हाल के वर्षों में इन देशों में बाहर में मांस प्राणिक योग्यता है, और अपना मांस बाहर बेचकर कम कमाई की है। मध्यिम में यह स्थिति और भी खुरी होनेवाली है, क्योंकि हमारे मांस की माँग बन्दे की जाती नहीं है। हमें अपनी ही भोज देखना पड़ेगा। पश्चिम के बाजार में हम अपने लिए स्थान नहीं बना सकते; और भारत धान की तरह हमें विदेशी कर्म और अनुदान मिलना भी पड़ेगा तो उनके मूल और मूल की प्रदायगी को रकम उठनी बड़ी होवी जायगी कि सहायता का मूल्य जनता कम होता बना जायगा। इसलिए 'विदेशी बाजार' पर भरोसा करके एशिया के देश अपना विकास नहीं कर सकते। क्यों? प्राविधिक राजनैतिक ढाँचा, सोभित मूल, खेती के बढती हुई जन-संख्या, मत्स्यम गिरा हुआ जीवन-स्तर, तथा स्थिर प्राविधिकीय सामाजिक और प्राणिक रचना और व्यवस्था। एक और तो वे कठिनाग्रही हैं, दूसरी ओर हमें ऐसी दुनिया में रहना है जो दरारर बदलती जा रही है। हमें अपने अरोके अपना नई जमाना है।

पश्चिम की नकल

परिचम के देगों में प्लानिंग विकास के बाद प्राची, जब कि हमने और पड़ोसियों में प्लानिंग को विकास के लिए अपनाया। इतनी कम्युनिस्ट देशों से समानता है। स्वतंत्रता के बाद हमने कोशिश की कि एक विकसित लोकतन्त्रवादी राज्य (वेलफेयर स्टेट) की स्थापना करें, जिनमें यह सोचें हुए कि लोकतन्त्रवादी राज्य के लिए विकसित प्राणिक स्थिति और प्रवृत्ति की समानता की आवश्यकता होती है। राजनैतिक दृष्टि से भी हमने पश्चिम सत्कारों और माध्यमों के संचि में अपने सोच-तक को डालने की कोशिश की। नतीजा यह हुआ कि बेल भारत, लद्दाख, मलयेशिया सप और फिलीपीन में राजनीय पदवि रह गयी है। जहाँ हर जगह तानाशाही नाम ही गयी है। इनमें उस प्रकार की सरकारें स्थापन करके हैं, वहाँ कठिन है। एशिया में समानता की बहुत चर्चा होती है, लेकिन व्यवहार में यह विचार उन्हीं देशों में सामू हुआ है, जिनमें जिन प्राविधिक (प्राविधिक इस्टीमेट्स) का अभाव रहा है। प्राणिक सेक्टर के उद्योग, प्राविधिक सेवाएँ, बहुत बड़े कल-कारखाने, बैंक, बीमा और कुछ व्यापार के अलावा खेती में गमाउरार नहीं दिखायी नहीं देता। दक्षिणी एशिया में अभाववाद का मोटे तौर पर धर्म है। प्राणिक और-उद्योगों तथा योजना के लक्ष्य के रूप में समझ की माध्यता। लेकिन हुआ कुछ यह कि स्वतंत्रता के बाद विपत्ता पटी नहीं, बड़ी है, बेल सका को छोड़कर। प्रोग्राम-→

बेराग मात्र हो गए भी धारणो संगया कि
द्वय बात्तन मे पारिभारिका है ।

युद्ध-ये लोग मुझे बर्तने है कि धारण
बहना कभी-कभी उपरपता जाता है । हो जाता
है कभी-कभी बेराग, वेदान, धेयूर । लेकिन
परिवार का एक भाई धारण भाइयो के साथ,
बहनों के साथ धारण रहता है, यह समझकर
धारण मुझे तो उस वेदान, बेराग मे भी
धारणो जीवन का बुद्ध शरणा होगा, ऐसी मुझे
पटा है और ऐसा विश्वास भी है । परा एक
बात में धारणो कह देना पारता है कि जब
धारण मुझे तो इया करके उस पर गुनते गुनते
मुष्तापीनी मन कीत्रियेगा । क्योंकि धारण मुष्ता-
पीनी करेगे तो मुझे नहीं । कुछ विचारो का
रमरल करेगे, रफरारका भी मुझे नहीं ।
इसलिए मुष्तापीनी मन कीत्रिये । राम मत
बनाये । हाँ भी मत कहिये, ना भी मत
कहिये । मुनिये । एक वेवल मुनते की त्रिया
चने तो धारण मे जो सत्य है, उसकी धनुभूति
एक बार मन की होगी । मुनते नहीं
है, इसलिए धारण मे जो सत्य है उसका
धनुभव नहीं धारता । धारण मे सक्ति है,
धारण मे सत्य है । धारण मे से ही सारी मृष्टि
का निर्माण हुआ है । इसलिए धारण मे सत्य
है, लेकिन उस धारण का धनुभव नहीं धारता,
इसलिए कि जब हम मुनते हैं तो हममे सत्य
होगा हम भावना से हम नहीं मुनते ।

गिरुं मुननेवालो का ही दोष है, ऐसा
नहीं । मुननेवालो का भी ज्यादा दोष हो
सकता है । कम-मे-कम यह मैं अपने लिए
कह सकता हूँ । धारण मे जो उच्चारण होता
है, धारण मे जो सत्य होता है, उसको प्रकट
करने के लिए योग्य विभूतिमय 'इटीप्रैट' के
परमनासिटी करेक्टर' की जो धारण्यवता
रहती है, वह मुननेवालो से कभी-कभी बहुत
कम होती है ।

इतिहास को पुनरावृत्ति
मृष्टि की परिवर्तनशीलता

इतना कहने के बाद मैं जरा धारणो
इतिहास मे ले जाना चाहता हूँ । धारण
कहिये कि इतिहास मे जाने से क्या लाभ
है ? नहीं है, इतिहास मे जाने से बहुत लाभ
नहीं होता है । एक विश्वास से गरज गीलने
की इच्छा, धनुभूतिवा होते हुए भी उसका

साम दंगल बहुत कम पटा जाता है । इति-
हास मे कुछ लाभ होगा है, यह भी सही है ।
इतिहास मे पुनरावृत्ति होती है । तो जिसकी
पुनरावृत्ति होती है उसको धारण करने मे कोई
लाभ भी नहीं होता; जिसको पुनरावृत्ति होती
है उसको रबीबार करने से कोई लाभ
होनेवाला नहीं है । जो नया है उसको ही
रबीबार करेगे, तो उसमे लाभ होगा और
वह मृष्टि का, सकार का धर्म है, स्वभाव है ।
गुर परिवर्तनशीलता उसमें है । लेकिन
उसको गिन इनकी मद है कि वह जो परि-
वर्तनशीलता है, उसका भी भाव करवाना
पडता है, धारणो धारण नहीं होता । लेकिन
इतना एक ऐसी सक्ति है कि मृष्टि की जो
परिवर्तनशीलता है, उसमे हजार गुना परिव-
र्तनशीलता का मकती है ।

धारी और धारणा का सम्बन्ध हम तोड़
नहीं सकते हैं । जिन्होंने यह तोड़ने की
कोशिश की, वह महाभूतभाव धारण हुए ।
लेकिन धारी और धारण जो धारण है कोई चीज,
उसका नाम मैं नहीं लेना चाहता, उसमें
एकता होते हुए भी उसमे धारण है वह । धारण
उस धारण्यन का भाव जब इतना की हो
जाता है तो वह धारी इनकी गति दे सकता
है कि जिसका हियाव धारण्यन के हिसाब मे
भी नहीं हो सकता । इसमे गांधीजी का
विभूतिमय प्रकृतीय है, धारण्य है धारण्य
कि धारण्यन के कहा था, धारण्य भाषा में कहा
था, मैं उनकी भाषा मे नहीं कह रहा हूँ, कि
'धारण्य धारण्यवाली पीढ़ियों हम पर विश्वास नहीं
करेगी कि एक ऐसा धारण्यधारी धारणा इस
दुनिया मे प्रमता था ।' वह धारण्यन का
प्रकृतिक था । उसने गांधीजी के बारे मे यह
लिखा ।

फरवरी १९४८ को शुभ कल्पना
धर्ममाल का धारण्यन

हमारे सामने कुछ भाई बैठे हैं, उनका
सम्बन्ध यह था कि गांधीजी के साथ कर्णो
कर रहे । लेकिन धारण्य धारण्य है, उसका
धर्म है । गांधीजी का धारण्य धारणा के साथ,
'निर्विद' के साथ किन्ना भी सत्य हुआ
हो तो भी, उसका धर्म होनेवाला ही था ।
जिस जीवन के लिए जिस सत्य के लिए
गांधीजी प्रतीक थे, गांधीजी के बाद उसकी

ज्योति बिन तरह प्रकृतित रहेगी ? हम
बिलकुल दुबले, कमजोर लोग, जो उनके साथ,
उनकी सक्ति के आधार पर चलते थे, उनके
लिए कोई रास्ता बन सके तो धारणा होगा,
ऐसी बात हमारे बुल दिनों के दिनों में भी
और चाहते थे कि गांधीजी मे होते हुए यह हो
तो बहुत ही धारणा । इसलिए सोचा था कि
वेदाधाम मे फरवरी सन् १९४८ मे हम सब
सोच इष्टता होगे । २० वर्ष हुए उसको । वह
सबल दिल्ली मे हुआ था, गांधीजी की
उत्सविति मे हुआ था । और गांधीजी ने
उसको सम्मति दी थी कि हाँ, जरूर हो ।
लेकिन जो पटनाए पटी थी, वह नहीं पटती,
तो जैसे धारण्य प्रकृतितनी ने कहा, यह
भारत ही नहीं, दुनिया भी एक धारणा सत्य
मेती धारण्य हमारे दिल में कोई शका नहीं;
लेकिन जो सत्य हुआ, उनको कडुनी मे एक
धर्ममाल रह था । गांधीजी सेधाधम नहीं था
सके । धारण्य की इच्छा थी धारण्य तीव्र इच्छा
थी । यह भी जानते थे कि यह महान् धर्म
है । मेरे जीवन का जो सत्य है, वह प्रतीक
है जिस जीवन का, उस जीवन को जीना
कोई धारण्य चीज नहीं है । इसलिए जिन्होंने
हमारे साथ कर्णो तक सम्पित होकर काम
किया, उनके लिए मैं कोई धारण्य बना सकता
हूँ, तो कीर्ति कर्णो धारण्ये की ।

धारण्य जानते हैं वह 'कार्ण्य' हूँ, उसमे
कुछ माल रह भी थे । सेनाधाम मे जो
कार्ण्य हूँ, उसने हमको विनोबाजी की
दिया; हमको ही नहीं, दुनिया को दिया ।
जवाहरलालजी, मोलाना अबुल कलाम
धाजद, राजेन्द्र वाङ्ग, धारण्य कृपालानी,
जयप्रकाशजी ऐसे महान्-महान् नेता जो
राजकीय क्षेत्र मे, रचनात्मक क्षेत्र मे गांधीजी
के 'कलीम' थे, धनुषाधी थे, उपस्थित थे,
उन 'कार्ण्य' मे । और धारण्य भी मुझे
याद है कि मोलाना, पठितजी सवने कहा कि
विनोबाजी जो कह रहे हैं, वह पूरा धारण्य
हम न कर सकें, उतना धारण्य न कर सकें, तो
भी जो 'रास्ता बनला रहे हैं, वहीं सही रास्ता
है, यह हमारा दिल और दिमाग कहता है ।
इस देश मे वह धारण्य जिसकी जिन्दगी मे
समाप्त और मोक्ष, धारण्य धारण्य भक्तिवता
का मित्रन हुआ है, उस धारण्य के धारण्य-

मोक्षार्थी, संन्यासी, गौतम के वाहर रहता है, २४ घंटे गाँव से जाँव की तरफ जाता है। लेकिन जब वाहर बनते हैं, तो उसके पंर गाँव की तरफ भापसे भाप चलने लगते हैं, भापसे भाप। यह भूड कहनेवाले कहते हैं कि यह माया है। लेकिन भौतिक जो हैं, वह जिनना धार्मिक है, उतना ही 'दूष' है, सत्य है। तो भूडा क्या है? भूडी सारी चीज हमारे मे है। वह है हमारा मन। कबीर की याद भावी है हमेशा। शरीर का मोह है, वह धोने के लिए साबुन है, लेकिन मन को धोने के लिए कौनसा साबुन है? भ्रमुड है, उनको शुद्ध करने के लिए कौनसा साधन है? शरीर शुद्ध है, भ्रमुड नहीं है वह चीज।

मन की शुद्धि

सत्याग्रह का साधन

गाधीजी ने कहा कि मन को धोने के लिए हमारे पास एक साबुन है, उसका नाम है सत्याग्रह। शरीर का एक अस्तित्व है। धारमा के 'एक्जिस्टेंस' को मानकर जो चल नहीं सकता है, मन उसमे दोनो में कुछ भूट का भाव भर देता है। यह सत्य का धारह है कि यह जो शरीर के बारे मे, मन मे, धारमा के बारे मे, जो धारकाएँ हैं, वह है कि नहीं, और जो है, वह इतरा है, यह मलीनता है, इसको धोने के लिए धाफको साबुन चाहिए, तो वह साबुन सत्याग्रह है। क्योंकि दोनो को सत्य समझकर, दोनो को साथ लेकर चलने की कोशिश विसीने की हो, तो वह गाधीजी ने की। उन्होंने शरीर को इन्कार नहीं किया। जारमा का और शरीर का, दोनो का जो सम्बन्ध है, उस सम्बन्ध के बारे मे मन मे भ्रमुडि है, धारमा है, उनको धाफको साथ ढूँढना है। तो, सत्य का धारह जिसको कहते हैं, वह सत्याग्रह उससे शुरू होता है। हम धाफस मे जो सपर्य मानते हैं, इत मानते हैं, उस इत को बनानेवाली चीज है हमारे मन मे, उस मन को शुद्ध करने के लिए अट्ट मे जाना चाहते हैं, जाना भावस्वक है, और गाधीजी कहते थे कि 'भाई विलीभ इन अट्ट मुनिटी'—और 'मुनिटी' के भापी 'मुनिवर्ष भूमिटी'। साधन उसका सत्याग्रह है, जिसमे महिषा पतित हो रही है, और होगी।

वह नया मानस है जो राम का, रहीम का, आईस्ट का नाश नहीं चाहेगा, विरोध नहीं चाहेगा, वह उससे ऊपर जाना चाहता है, और उसको धानेवाली जो शक्ति है, उसमे मैं जाना चाहता हूँ। उसको भ्रमुडि में नहीं, जगल मे नहीं, पहाड़ में नहीं, व्यक्ति और सामूहिक जीवन में लेना चाहता हूँ। और तब नये समाज का निर्माण होगा। नये जीवन का जब हम निर्माण करेंगे, तब नये समाज का निर्माण होगा। उस दृष्टि से भी धाफ तोग सोचें, अपने प्रोधाग के बारे मे। तो हमको सगता है कापी चीजें हैं, जिस पर हमको सोचना है।

धरखारवालों की उदासीनता

शक्ति का सवाल

हम धरखारवालो को शिकायत करते हैं कि वे हमारे काम के प्रति उदासीन हैं। लेकिन शिकायत करने से ही नहीं चलेगा। उनको सोचनेवाली शक्ति हम जागृत नहीं कर सके हैं। इसलिए हमको अपने बारे मे सोचना चाहिए। उनको गातियाँ देने से काम नहीं हो सकेगा। वे धरमा सोचें कि वे ठीक कर रहे हैं कि नहीं ठीक कर रहे हैं। उनको सिपारिस करने हम नहीं जायेंगे कि वे ठीक कर रहे हैं कि नहीं कर रहे हैं। वह इमको समझें, यह उनका काम है। मैं जानता हूँ उनमे वह शक्ति है। गाधीजी ने हमको यह बतसाया था। गाधीजी के पीछे लोग दौड़ते थे। क्या गाधीजी को बुलाना पटना था कि प्राधो में धा रहा है? क्योंकि एव विश्राम, श्रद्धा थी कि जिनमे लिए वह दौट रहे हैं, वह चीज हमारे लिए भी है। वह सोचता धात्र हमारे धार्यम में नहीं है। इमका भाव हमको होगा, तब हम कुछ धागे बड सकेगे।

गाधीजी ने सभी चीजों को एक्गाय जोड दिया था। धात्रापी, खाडी, 'अनटपविनिटी' (आधुप्यता) धारि सबको।

जब विनोबाजी का भूदान शुरू हुआ, 'इट बेकड वी बाल्येम इन धात्र' मानना होगा। और सबको, देन को बडल देगा, ऐसी धात्रा बनी। धात्रा नुबड विचित्र भाई कह रहे थे कि 'बायलेंस' बढ़ती जा रही है। जो सामाजिक धार्या है, धात्रा और विपमगा है—धात्रिप-सामाजिक सब तरह की, वह धात्र 'बायलेंस'

ही है, हिंसा है। वह हिंसा पूटती है, जो कुछ तोड़-फोड़ होता है। 'सम टाइन धारि विज कनिट इट'। धारिटर जिदा हैं तो रास्ता बनयेंगे कि नहीं? जो नये हुए हैं वे क्या करेंगे? विनोबाजी स्टार्टड भूदान। इट धान भूदान, इट बाज नाट धामदान, इट बाज नाट विहारदान, इट बाज नाट भारदादान, इट बाज धोनली भूदान, वट देयर धात्र बन नारा-दानं समविभागः।' ('विनोबा ने 'भूदान' शुरू किया। वह भूदान था, धामदान नहीं, विहारदान नहीं, भारदादान नहीं, केवल भूदान था, और एक ही नारा था—दान समविभागः।) धमो तो धात्रबल वह नारा में तो कभी नहीं सुनता। समविभाग धमो वह नहीं रहा है। धमो नहीं रहा है? सोचना चाहिए। कब धार्या, कब साना ठीक होगा, वह भी सोचना चाहिए। तो वह नारा नहीं है। भूदान घोषणा लेकिन उसके पीछे 'पोटेशियनिटी' इतनी भरी हुई थी—समविभाग, 'गभी भूमि गोवाल की'। धमो हम गोवाल की बात नहीं कर रहे हैं, मुझे भाफ कीजिये, हम धामदान की बात कर रहे हैं, हम भूमि के धाम-वामित्व की बात कर रहे हैं। सभी भूमि गोवाल की है, और सभी भूमि एक गाँव की है, उसमे परक है। उनको धाफ नहीं समझेंगे, तो धाफको समझना भावस्वक है।

नवसालवाडी की सफलता हमारी शक्ति की क्षीणता

पन्द्रह साल के बाद नवसालवाडी की छोटी-सी सफलता हुई। मानना होगा कि पिछले पन्द्रह वर्षों के अन्तर वह श्रद्धा, यह विश्वास, हमारे भीतर बरता जाता, तो यह नवसालवाडी नहीं हो सकती थी। जंसा धमो बदिल भाई मे कहा कि धमो एम० एम० पी० की तरह से उत्तर प्रदेश मे कोई धार्याश्रट होनेवाला था बलिया में, वह नहीं हुआ। वट्ट भव्यो वान है। लेकिन इम बारे में मोचना चाहिए। धमो इमरो चर्चा बटून कम होती है कि पन्द्रह वर्ष के बाद हम भूदान के विहारदान तब धा गये हैं, तो फिर नवसालवाडी क्यों होयी है? उक्तो पन्धर मानना होगा कि पन्द्रह वर्ष के बाद जो श्रद्धा थी, नि सर्व भूमि गोवाल की, दान समविभाग,



निर्मला बहन : ऊँचे लक्ष्य



सिद्धराम दहदा : टोप संगठन



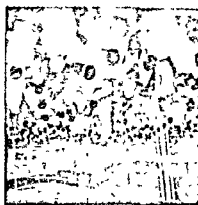
वैद्यनाथ बाबू : बिहारदान



सद्य के द्रष्टव्य का भाषण : सफलता की राया



पुरसत के वण



← भोता-प्रतिनिधि →

'आदर्श' की रचना के लिए सम्पूर्ण क्रान्ति अनिवार्य

—सर्वोदय-सम्मेलन में जयप्रकाश नारायण का भाषण : ६ जून '६८—

मुझे प्रायः सब पर दया आती है कि इतनी गर्मी है, और कल से आज तक प्रायः बंदे हैं और आपके कानों पर प्रहार ही हो रहे है, कभी कुछ मधुर संगीत का, लेकिन बाकी तो आपके हमारी बातें ही सुननी पड़ती हैं। मात्रम नहीं कि ऐसे भाईचारे के लिए यही तरीका ठीक होगा या कुछ और हम लोगों को सोचना चाहिए। वस, हम बैठकर लेखन ही सुनाते रहे आपके। इतनी दूर से भाये हैं आप लोग तो किसलिए ? ऐसा लोग पूछना भी चाहते हों, पापद कुछ लोग बोलना भी चाहते हों। नरेन्द्र भाई से मैं चर्चा कर रहा था कि भाई, आप लोग बैठकर कुछ रास्ता निकालो। दूर-दूर से लोग आते हैं तो आपस की भी चर्चा हो। मैं तो यह समझता हूँ कि आप पर यह जुलूम है।

मुझे कुछ कहने को बाकी है नहीं। अल्पश्रीय भाषण से लेकर और उसके पहले भी, सब-प्रतिवेदान मे भी, कितने सुन्दर-सुन्दर भाषण हुए। एक-से-एक अच्छे भाषण हुए हैं, और तत्परान्त की भी उंची बडान हुई है। मैं तो यही चाहता था कि छुट्टी मिले मुझे, मध-प्रतिवेदान मे कुछ बोल चुका था। प्रदर्शनी के उद्घाटन के समय भी कुछ कहा था। लेकिन कुछ बघुषो की राय है, दबाव है और कुछ मित्र पढ़े हैं, जैसे हरकिलान वहन, कि हम आपकी यात्रा की कुछ चर्चा सुनना चाहते हैं। अगर कोई समय मिला नही तो कहा गया कि इसी समय कहूँ। यह बेवकूत राहनाई जैसी लगती है।

नमूनावाद के नमूने जो विषय मेरे लिए रखा है, उस पर काम चर्चा हुई है, लेकिन वह एक बहुत बड़ा विषय है, और धारणा मे बूझिये तो मैं कोई विचार्यो नहीं। याने कोई एक गहरा विचार्यो नहीं हैं विश्व-शांति के प्रश्न का। धर्मदेशीय एक समाज के अन्दर सामाजिक क्रान्ति किम प्रकार होती है, मार्क्सवाद के जमाने मे कुछ

अध्ययन किया और कुछ अध्ययन कर रहा हूँ, इस समय और कुछ अनुभव कर रहा हूँ। लेकिन उन प्राति की अनेक चर्चाएँ हुई और बहुत उत्तम चर्चा हुई यहाँ। उन चर्चाओं पर से कुछ विचार मन मे उठते थे तो लोगों को सुनने का वक्त होगा तो बोलूँगा। बहुत सारी हमारी बातें रामभूति भाई कह गये, और कुछ और भाई कह गये। दो विषयों पर मैं विश्व-शांति के विषय से भ्रमण चर्चा करना चाहता हूँ। एक तो अपना पुराना परिचित विषय है। कितनी चर्चाएँ हुई हैं, उस पर, लेकिन मेरा ख्याल है कि विमग साफ नही हुआ। दरमना प्रामदान होने के बाद भी हमारे नरेन्द्र भाई जैसे युवक, पुस्तक्याँ वहाँ काम कर रहे हैं। उन्होंने कुछ चर्चा-प्रतिवेदान मे कहा। कुछ इशर-उपर चर्चा हुई। वह मेरे कानो तक आयी। मैंने सोचा कि उसके सम्बन्ध मे दो शब्द कहूँ। यह चर्चा प्रारम्भ से ही चल रही है, और हमारे जैसे छोटे लोगों के बीच ही नहीं, विनोबा और कुमारग्यात्री के बीच भी चली थी। मैं समझता हूँ कि यह बढ़ना चाहिए कि यह एक विचार है, जिसका संघर्ष में नमूनावाद का नाम दिया जा सकता है कि जो भी आपका दर्शन है, विचार है, उसका कहीं नमूना बनाकर दिखा दीजिये। एक नहीं, जितने हो सके छोटे-बड़े नमूने बनाइये, तो फिर समझ में आयागा। आपमें से किन लोगों मे अध्ययन किया होगा इस विषय का, उन्हें मात्रम होगा कि संकड़ो वर्ष से दुनिया मे ऐसे प्रयोग हुए, आदर्श ग्राम बने, सघुदाय बने, चम्पुनिटी बने, काजोनीज बने। उनकी कुछ बहानी आपको पाठे इतिवर्षिया में मिलेगी, विचार उनके पीछे जो हो, कुछ उसके उदाहरण मिलेंगे। इनका क्या परिणाम हुआ है घब तक ? विदेश-यात्रा के कुछ अनुभव

हम लोग अब लगभग २५ से ३० वर्ष के यूरोप की यात्रा पर, वह यात्रा कुछ संभव मात्रा थी,

इस माने में कि मन में कुछ उमंग थी कि कुछ सर्वोदय का संदेश वहाँ सुनायेगे और यूनान की चर्चा वहाँ करेंगे। इसबार भी मेरी यात्रा हुई। वह विफल हुई। अगर लोग पूछते थे कि आपका इस यात्रा का 'परण' क्या है तो मैं कहता था कि यह 'परण' नहीं है। स्वतन्त्र, सुखाय प्राया है। अपने पुराने स्थानों को देखने के लिए और कुछ आपके सुनने के लिए, जानने के लिए आया हूँ। उस समय हम लोगों ने इन आदर्श कालोनीज मे से कुछ कालोनीज देखी। 'ब्रदरहुड' अमेजीमे कहते हैं। 'ब्रदरहुड' प्रत्यक्ष मे देखा इन्लैण्ड के दक्षिणी भाग मे एक आदर्श जीवन है। मुझे नहीं मात्रम कि भारत के किसी आध्यम मे ऐसा जीवन है। कुछ परिवार हैं, कुल मिलाकर शायद दो ही। जितने लोग थे सबमे आपस का भाईचारा था। वैयक्तिक कोई संपत्ति नहीं थी, किसीको कोई मजदूरी नहीं मिलती थी। खाना एक जगह, कपडे पुलते थे एक जगह, काम मिलकर आपस मे बाँटते थे, एक मर्यादा थी कि उसके बाहर उल्लास नही करना है, जीवनमान का एक स्तर है, उसके आगे नहीं जाना है, यह भी एक अन्वयण था उनका, कुछ राजनीति भी थी कि हमें टैक्स नहीं देना पडे। ईश्वरदास में बर्द विद्युस देते, वहाँ कुछ दिन रहे। इस तरह से यूरोप में, दक्षिण अमेरिका मे, अमेरिका मे, बर्द कालोनीज इतिहास मे रही और आज भी है। और अद्भूत है उनका काम। जैसे आज आप्रम के प्रहाते मे हम बन्द हैं, वैसे वे अपने कालोनी मे बन्द हैं। उनके आराध्यण उस नमूने का कुछ साक्ष्य अच्छे नहीं। समाज का कोई जीवन बदलता नही है। नमूना ही बनना हो, तो बनाइये। लेकिन उसके समाज की शक्ति नहीं होगी, उसके पूर्ववर्ती की शक्ति नहीं होगी, जीवन की शक्ति नहीं होगी। धार्मिक रचना, राजनीतिक रचना, सामाजिक रचना, इन सबका परिणाम नहीं होगा। ये कोई विवादास्पद बात नहीं। फिर हम उसको दुहराना चाहते हैं यहाँ, तो दुहराये।

विनोबा ने अपनी पीठ मोड़ी इस मोह की ओर से। यह मोह है। हम अपने को वापस नही चाहते हैं। यह विचार है अति-

पड़ा धीरे में सोचता रहा। मेरी समझ में था कि क्या बात विनोबा ने कही है! विदेशी कारकों की होली हुई। नीचे से कागज धीरे ऊपर से विदेशी करों से धीरे धीरे लगे वी देग के बड़े नेता ने। भाऊ-भाऊ भागे के भाड़े पर स्वयंसेवक भरती हुए, धीरे मित्र यही उमापकरजी वीसिन, डिपटेटर, तृती बजती थी उनकी बम्बई में उस समय। सारे प्रउर-प्राउण्ट धादोलन के बम्बई के वे नेता थे। एक प्रमुख समय पर ये स्वयंसेवक निकले हैं कण्डा लेकर। क्या वह प्रच्छाया? क्या वह सरप्राह्र था? लेकिन वह हुआ। यहाँ तक कि 'पग इंडिया' या 'हरजन' भी छिपकर छाया। कुछ लोगों ने उमका समर्थन किया धीरे कुछ लोगों ने उसका विरोध किया।

तूफान की प्रकृति

तूफान धारा है, तूफान नो एक बुद्ध हवा होनी है। हवा भरने प्राय में बुद्ध ही होनी है। लेकिन तूफान में क्या मिलावट नहीं होनी? धूल नहीं होती? सूधी पत्तियाँ नहीं होती? तो कोई कहेंगे कि यह तूफान नहीं वह रहा है, इसलिए कि यह बुद्ध हवा नहीं है? वाद धारा है तो क्या होता है? बुद्धजन होता है? न जाने कितनी गदगी बहकर उस पानी में जानी है, कितने पेड़ टूटकर पानी में यह जाते हैं, यह होता है। हिनक कानियाँ हुई हैं, बहुन-भी श्राति हुई। एक चमत्कार हुआ, एक उम्म्वन श्रानि हुई, जिम्ने दुनिया की हिना दिया। 'टेन डेज : दैट शुक्र ही बरुं'। इस पुस्तक का जो मेरे ऊपर जो प्रहर हवा में धारसे बवाल नहीं कर सक्ता धीरे उस काल के मुन्को पर भी उसका प्रहर हुआ। सारी दुनिया को हिना देनेवाली वह श्राति हुई। उसमें गुण्डे, बधमाप, सुटेरेवहीं श्रातिम हुए। होते हैं। तो मैं धारसे यह मन्त्र निवेदन करना चाहता हूँ कि जब भूदान हुआ तो यावा की सब मेट मिल गया है, सब पहाड मिल गया, जंगल मिल गया है, धीरे जमीनशरो को सम्भारकर बड़े दाल ले जिने कि जमीनशरी तो सरकार में जानेवाली थी, सरकार में मिलनेवाली थी, किनीन होनेवाली थी। उन लोगों ने दे दिया, उन लोगों ने कौनसी उदारता की, क्या दान किया? सिर्फ धारवा 'कमन-

सेशन' का लयाव बाध धार्ये। ठीक है। वह हुआ। लेकिन उस २१-२२ साल जमीन में से विषर्ण साडे तीन लाख एकड़ जमीन हग बाट पाये विहार में। वह खेती के लयक जमीन बाँटी है। ठीक है कि २ एकड़ जमीन बाँटने के लिए धः-धः, साठ-गात एकड़ जमीन छाँटी है। लेकिन उसमें वे जमीन मिली धीरे डेड लाख एकड़ जमीन धीरे मिल जायगी। इस प्रकार पाँच लाख एकड़ जमीन उस भूदान धादोलन से प्राप्त हुई। जाँच हुई थी भूदान समिति की तरफ से कुछ जिलों में तो यह मानूँ हूँ कि जो जमीन दी गयी थी भूमिहीनों को, उनमें से ७० जमीन से लेकर ८० जमीन पर उनका कथना है। २० से लेकर ३० फीसदी बेदारल हुए हैं। विहार में जमीनदारी, शालुकेशापी, मालगुजारी की प्रथा थी। धारको मानूँ हूँ कि सरकार के पास लच्छ रेकार्डस नहीं होते हैं। मैं धारका समय नहीं लूँगा वह टेनेंसी सिस्टम समझने में। तो रेकार्डस नहीं है जमीन के। बेदखली होती है।

३०-३० वर्ष से घेरी कर रहा है बँदाई-दार, धीरे बेदारल हो गया। एक पुर्जा नहीं, जिसमें उमका नाम हो 'केम्पुन' सर्व के नाम चड जाना है, मासिक मुचदमा पर सिविल पूट में जा करने धारिक कर देने हैं। इसलिए बेदखली हुई। महामाया प्रमाद सिंह की हूतन में जो राजज्व मंत्री थे श्री इन्दीवी बाबू, वह कम्पुनिट पार्टी के विहार के सबसे बड़े नेता, विहार कम्पुनिट पार्टी के जनरल सेक्रेटरी हुआ करते थे, एक बहुत तेज नीजवान, फाट नलास फाट, एम० ए० इकोनामिक्स में हुए, ३०० क्षानचन्द्र के बनेने धारिदों के पटना बालेज में। उनसे मैंने पूछा, उनकी हूतन उसने के करीब एक माह पहले कि इन्दीवी बाबू, थीवानू के जमाने से लेकर धारके जमाने तक विहार में बानूतन से किनीन जमीन का पुनर्विचार हुआ। पुनर्विचार वह रहा हूँ ध्यान दीजियेगा। साम महीन जमीन, सरकारी जमीन का विकरल नहीं, 'इन्दीवीमगन प्राफ गवर्नमेंट लच्छ' नहीं, 'री इन्दीवीमगन'। पुनर्विचारण, जमीनवाते से जमीन बेदारल होने से देना। मैंने पूछा कि दस हजार एकड़ जमीन पुनर्विचार हुई होगी? तो इन्दीवी बाबू ने कहा कि पाँच हजार एकड़ भी नहीं हुई

होगी। ये जवाब निष्पत्ति है। वीस वर्ष के स्वराज्य, मनाजवाद, साम्यवाद धीरे सब बादों की निष्पत्ति है यह।

सरकारी सीमाएँ

उस मिनिस्ट्री में, धीरे ध्रुव जो भोला दाळी की मिनिस्ट्री वनी है उसमें, जनसंघ को छोड़ करके बाकी सभी हमारे पुराने साथी, हमारे साथ काम किये हुए, समाजवाद के हमारे वर्गों में छोड़े हुए हैं, वह पुराने कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी के जमाने से। इसलिए बहुत पनिष्पत्ता, समीपता थी। कुछ पुने हुए घोड़े के सोप धार्ये थे। हमने उनसे कहा था कि कांग्रेस में कुछ पच्छे-पच्छे बानून बनाये हैं गरीबों के लिए, उसने उन पर प्रमल नहीं किया। क्योंकि कांग्रेस के धर जो निर्दिष्ट ध्वार्य है, उतोंने प्रमल होने नहीं दिया धीरे जो सरकारी सब है, उसमें जो निहित ध्वार्य है, उसने नहीं होने दिया धीरे तीसरे, भ्रष्टाचार ने नहीं होने दिया। बड़े सोप रिश्तद दे सकते हैं, घोडी जमीनवाते जमीन नहीं दे सकते हैं। उन्हें बहा उताह हुआ धीरे, हमने कहा कि बूँक यह धारसे का बनाया हुआ बानून है, उनको भी धार मुलादये। तब धारिदों धीरे धारसे के नेताधो भी गन्धवालप में धँठक हुई धीरे मुखध भरी ने उमका सभा-पतिलव किया। सबसे माध्य दिया कि यह बहुत प्रच्छी बात है। बानून बना हुआ है नया कुछ करना नहीं है। तो हमने कहा कि जो श्रातिकारी बानून नया बनाना हो, बनादये। मेरा समर्थन है। समय सधेया। वह दीजियेगा। विहार के गरीबों को धार भी जानते हैं धीरे मैं भी जानता हूँ। एक श्राति हो जायगी। गरीब की धानी पर में एक धरपर उठ जायगा। धारादी की माँ से सधेगें। परपु के कुछ दे कर पाये। ध्रुव वह सम्को कहाँ है कि क्या कुछ नहीं कर पाये। वह खुद मानते हैं कि क्यों न कर पाये। धीरे जगह है कि नहीं, मुन्को पता नहीं भारत में। यह हालत है विहार में। मैं मानता हूँ कि गरीब करीब सब जगह यह हालत होगी। किमी विचार की जमीन है, धीरे उसमें विधी गरीब की भोरनी है। ती थीवानू के जमाने का बनाया हुआ बानून 'त्रिविनेत्र परमन

सर्व सेवा संघ के संगठन का स्वरूप बदले ग्रामदानी ग्रामसभाओं की टोस बुनियाद वने

—श्रावू-सम्मेलन की रिपोर्ट पर विनोबा की प्रतिक्रिया—

'जरा धीर जोर से बोलिये, प्राय एक बहुरे को गुना रहे हैं।' विनोबाजी ने कहा, तो स्मरण प्राया कि इसी विहार प्रदेश के वैद्यनाथधाम देवघर में मंदिर-प्रवेश के समय उनके कान पर एक षण्डे का जोर था डण्डा पड़ा था और उनकी श्रवण-शक्ति कम हो गयी। मैं बोड़ा और सिमलकर विनोबाजी के कान के पास सटकर बैठ गया और १०वें सर्वोदय-सम्मेलन की रिपोर्ट सुनानी पुरु की।

सम्मेलन के समय ही सर्व सेवा सघ की प्रबंध-समिति और उसके दो दिन पहले सच-दायित्वदाय चलता रहा था, उसकी भी सक्षिप्त जानकारी थी। मैं सुनाता जा रहा था कि सघ प्रबंध-समिति ने सम्बल घाटी प्राति समिति का पुनर्गठन किया है, भारतीय खादी-आभो-योग सघ, 'सेवाधाम नदी तालीम समाज और कृषि-मोलेखा सघ के स्वतंत्र स्वायत्त संस्थाओं के रूप में पञ्जीकरण का निश्चय हुआ है। प्रगत, '६८ में नेतान्त कर्षेदान सुलाने, उपमे राष्ट्रीय प्रन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति के चिन्तन-मनन करने तथा धाराणी नवम्बर १९६६ में राजगीर में विश्व पाति के सदसं मे विश्व सर्वोदय सम्मेलन सुलाने का ठप हुआ। पञ्जाव खादी-आभोयोग सघ के टुस्टी मण्डल की निवृत्ति, प्रुणिया जिना ग्राम-म्बराण्य समिति प्रादि की घोषणाएँ हुई हैं।

सघ दायित्वदाय के बारे में विनोबाजी ने पूछा—'कितने लोग प्राये थे?'

'बाबा, लगभग १०० ही लोक-सेवकों और सघ-नगदर्यों ने सघ-दायित्वदाय में भाग लिया। ६ जून से ८ जून, '६८ तक तीन दिन दायित्वदाय चलता रहा, जिसमें धाम्पोलन की प्रतिनिधि, राष्ट्रीय-प्रन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति और नराधन्दी के बारे में चर्चा और प्रस्ताव हुए। विभिन्न प्रदेशों के कार्यकर्ताओं ने अपने-अपने प्रदेश के उत्साहवर्धक प्रमुनव सुनाये। विहारप्रान के साथ-साथ उत्तरप्रदेश, उड़ीसा और तमिलनाड के लोग भी प्रदेशदान की श्रुद्वरचना में सये हैं।

"सर्वोदय-सम्मेलन में प्रमथय थे संकर-रावजी। उन्होंने नया मन व नया मानस बनाने और 'सिन्दरिचुमल कर्दनदी' (भाष्या-त्मिक बहुल) की स्थापना पर बल दिया, भूदान की सराहना की और 'सर्वं भूमि गोपाल की' की भावना को न भुलाने की बात कही। प्राचार्य रामभूति ने एक प्रन्त रत्ता कि प्राखिर प्राज 'गोपाल' कौन है? उसकी क्या दास है? ग्रामसभा ही गोपाल है, इसलिए गाँव में 'कन्सट्रिक्ट रिसेसनशिप' की म्थापना की जहरत है। मजदूर भी थम का मालिक है। प्राचार्य दादा धर्माधिकारी ने मालिक और मजदूर के सम्बन्धों का विश्लेषण करते हुए कहा कि ठीक है, मजदूर मेहनत का मालिक जकर है, पर मुद्रिकल यह है कि जो मेहनत का मालिक है, उसको बाजार में मेहनत बेचना पडती है और जो पूँजी का मालिक है उसको बाजार में बुध नही बेचना पडता। जेनेट्रजी ने 'पावर' और 'प्रापटी' के साथ 'परमनैलिटी' को भी जोडते हुए कहा कि हरत का सर्वत्व मे लीन होना ही सर्वोदय है। चादकद मण्दारी ने नवमाल-बाडी का मार्मिक चित्र लीचा कि वहाँ जन्म-जन्म से बेंटाईदार है। जी यप्रजात नारायण ने नमूनावाद का सणन करते हुए कहा कि नमूना चाहे जितना ही प्रसन्न क्यों न हो, फिर भी वह पूरे समाज को परिश्रित करने की शक्ति नहीं रखता। समाज की डिशा बदलने के लिए तो म्थाक प्राति चाहिए। श्री उ० न० देबर ने बडे ही करण सभ्दों में कहा कि प्राज गांधीजी होते तो वे बुध न बेंडते। प्राज जिस तरह की सरकारी चसती हैं उनके रहने नहीं चल सचती थीं। श्रीमद्राजरायगुजी ने प्रासवगदी का समर्पन करते हुए उसे प्राधिक समुद्रि के म्पनं कृ जयनेवाला जन-जीवन का मुरान बताया।" मैं इस तरह बहता चला जा रहा था।

बीच में श्री बजित प्रार्दे ने, जो धाम ही बेंटे हुए थे, एक टिप्पणी की कि "बाबा,

प्राको सम्मेलन में जरूर दायिल होना चाहिए। प्रापकी उपरिस्थिति में चर्चाएँ, व्यवस्थित और एवमुधता मे प्रावृड रहेगी। धमी प्रलग-प्रलग विचार मुनकर कार्यकर्ताओं में थोडा बुद्धिभेद होता है। वे प्रेरित नहीं हो पाते।"

विनोबाजी हंसकर कहते सये—'मिरी उपरिस्थिति के प्रायदे बता रहे हैं, प्रनुपरिस्थिति के लाभ बताइए।'

हम सब चुप रह गये। भला उनकी प्रनु-परिस्थिति का क्या लाभ बता सजते थे?

विनोबाजी ने ह्मय बहना घुछ किया : 'बाबाइये, वाई हरार लोग सर्वोदय-सम्मेलन में प्राये, धमी तक किसी नेता ने जीते जी 'कान्फरेन्स घटेण्ड' करता थन्ड किया? सचको इतनी बड़ी भीड में जाने की प्रावासा रहणी है, प्राचरण्य रहता है कि जाकर वहाँ पर बुध मोड़ दें। पर मोड़ने के बजाय उरटे तोड़ताइ पुरु हो जाती है।'

'प्रन्त तक जो प्रूल प्रायं मे पेंते रहते हैं, उनकी बहुव सुरी दया होती है। देग मे स्वतंत्र बुद्धि पनरणी ही नहीं। मैं दगीलिए पम्निक मीटिंग मे प्रय नहीं बीनता। 'प्राइवेट टायर' होती हैं, वह भी पडुन सीमित। प्रन्-बन्डरार बन्ड किया है, धमवार भी पडना बन्ड। वन्ड, प्राय-म्याग रादरों का एक ह्मन्-तिलित धमवार मेरे लिए रोज तैयार होता है, जिसे देखने मे तीन घार मिनट लगने हैं। बाद का मारा समय वेदाभ्यास के चिन्तन मे बीतना है और म्थानिगन रूप से थोडा-बहुन तिसाने में।

"बापू का नियम मया चिन्तन मया बरता था। धाराडी के बीम माल धाद धात्र के बना बन्डे, इगवा धमधारा हम धाद नहीं लया सजते हैं। बावक एम० व० गांधी मे म्हात्मा गांधी तप का धौयन मगन प्रायण्चका का इतिहास है। उनरे जने के धाद लोंगों की धमन टकरादी। गजारी, नेटमरी, क्तातानी, जयप्रजात, एवएकून्नेरें की बरबर बरनेबाते। गांधी रिडि मे 'गांधी पीछ पाठकमेगन' बना है। उपने ठप किया है कि उपने कामेवर्ता प्राटी-मानित्त्रिम में प्रग न सें। पर उय पीछ पाठकमेगन के मुणिया प्राटीबाने ही है।

भना हो। लेकिन धात्र मारी दुनिया में चलता है कि पहले मेरा भला हो, फिर दुनिया का हो। इसी तरह अपने भ्रातृदोलन में भी, पहले मैं और बाद में बाबा। बल्कि कभी-कभी तो लोग सोचते हैं कि सब मेरा भला करें। सबसे पीछे मेरा भला हो और सबसे पहले दूसरों का हो, यह सर्वोत्थ है।"

विश्व में को तो बहुत है, अनेक प्रसंग हैं, पर सबसे बड़ी बात यह है कि इन दिनों विनोबाजी का स्वास्थ्य बहुत धच्छा है, कोई किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट नहीं है, बल्कि धीरे-धीरे निकाल दी हैं, दिलकुल बेहतर ही बदल गया है। इन दिनों सगं के भजन बड़ी गहती से गाने रहते हैं। गाते-गाते नाच उठते हैं, भाव-विभोर हो जाते हैं। जब चलने लगते तो देखा कि सभ्य के ७ बजे वे सोने जा रहे थे और जोर-जोर से ताली बजाकर गारहे में

भन का बोझ भरपट छोड़ा, मार लिया मीठाम दे।
कीरों की यह घाट है भाई,
कायर का नहीं काम दे ॥
चलता हुआ मुस्ताफिर ही पाता है,
मंजिल थीर मुकाम दे ॥

१८ जून, '६६ सहरता - गुधमरण

भ्रामनेतृत्व गोष्ठी

भाग्यी ५, ६, ७ जुलाई '६६ को सर्व रोषा सभ के प्रधान केन्द्र-नारायणों में सम्मेलन के सदर्भ में 'भ्रामनेतृत्व' विषयक गोष्ठी होने जा रही है।

गोष्ठी में अयप्रकाश नारायण तथा अन्य प्रमुख सर्वोत्थ-विचारकों के अलावा इन विषय के मुख्यतः लोगो को भी भाषित किया गया है।

आवश्यक सूचना

"भूदान-पत्र" के अगले ५ जुलाई '६६ के अंक के साथ त्रामानुसार "गौव की बात" का अंक भी जाना चाहिए, लेकिन सम्मेलन की पूरी मामली ५ जुलाई '६६ के अंक में चली जाय, इसलिए "गौव की बात" का अंक "भूदान-पत्र" के ५ जुलाई '६६ के अंक के साथ नही, बल्कि १२ जुलाई '६६ के अंक के साथ जायगा। -स०

ग्रामदान-प्रखंडदान-जिलादान

भारत में	बिहार में
मांत	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
बिहार	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
उड़ीसा	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
उत्तरप्रदेश	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
तमिलनाडु	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
ग्रामदान	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
स० पञ्जाब	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
महाराष्ट्र	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
मध्यप्रदेश	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
असम	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
राजस्थान	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
गुजरात	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
वंगाल	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
कर्नाटक	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
केरल	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
दिल्ली	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
हिमाचल प्रदेश	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
जम्मू-कश्मीर	ग्रामदान प्रखंडदान जिलादान
कुल : ६२,२०६	कुल २३,६६६

जिलादान में प्रखंडदान : ७४	ग्रामदान : ३,७२०
पूरुषिया " " " : ३६	" " " : ६,३५७
तिरनेलवेली, " " " : ३१	" " " : २,६६६
वलिया " " " : १६	" " " : १,४६६
उत्तरकाशी " " " : ४	" " " : ५६६
बिहार में जिलादान : २	ग्रामदान २३,४६६
उत्तरप्रदेश में " : २	" : ६,६००
तमिलनाडु में " : १	" : ५,३०२
भारत में जिलादान : ५	" : ६२,२०६

विनोबा-निवास, १८ जून '६६

—कृष्णाज मेहता

१० जुलाई '६६ को विनोबा के वलिया-आगमन पर

जिलादान-समारोह का विराट आयोजन

वलिया। प्रायः जानकारी के अनुसार विनोबा स्वगत-सम्मिलन वलिया की ओर से १० जुलाई को स्थानीय टाउन डीडी बालेव के मंडान में विराट जिलादान समारोह-समारोह का आयोजन किया जा रहा है।

जिने के गौव-गौव से ग्रामदानी प्रतिनिधि और जिने की जनता ग्रामदानी-प्रतिनिधि को इन सामूहिक धोपला में सत्रिय भाग लें,

इसकी पूर्वतयारी में २५ जून से ही कार्यकर्ता गौव गौव में फेज गये हैं। इन अग्रवर पर स्वागत-सम्मिलन एक विशेष प्रकार के विरले का व्यापक प्रचार कर रही है।

इसी समय उत्तरप्रदेश का प्रातीय-सम्मिलन भी होने जा रहा है। आशा है कि इस सम्मेलन से उत्तरप्रदेश का आन्दोलन और सत्तिकायी एवं गतिशील बनेगा।

वापिक शुरुक : १० रु०; विदेश में १८ रु०; या १ पौण्ड, या २॥ डालर। एक प्रति : २० पैसे

भ्रूटपत्रक भट्ट द्वारा सयं सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं प्रिंटिंग प्रेस (प्रा०) लि० वायणसी में मुद्रित

कृषि-क्रान्ति : गेहूँ और किसान

दस साल खरी की फसल बहुत अच्छी हुई है। इतनी अच्छी हुई है कि भ्रष्टाचार के लोग और सरकार के लोग भूले नदी समा रहे हैं। एक सरकारी तस्वीरदार गाहक एक दिन कह रहे थे कि इस साल किसानों के पास भूसा रखने की जगह नहीं है। मैंने पूछा कि ऐसा क्यों है तो बोले कि जिस जगह वे भूसा रखते थे वह धनाज से भर गयी है। और, सरकार तो इतनी चुन है कि उसने डाक का एक नया टिकट निकालने का निर्णय कर डाला है। टिकट पर गेहूँ की तस्वीर बनी रहेगी और लिखा रहेगा 'शेती की क्रान्ति १९६८'। सरकार के लोग कहते लगे हैं कि दो-तीन साल बाद विदेश से धान मंगाने की जरूरत नहीं रह जायेगी। कितनी अच्छी बात होगी यह! सचमुच भारत का भाग्य खुल जायेगा, और उसकी इज्जत लौट आयेगी।

यह सब तो ठीक है, लेकिन उस दिन बिप्लवेद बाबू अपने छोटे भाई से यह क्यों कह रहे थे कि भगाली बार गेहूँ की शेती बन की जाय? मुझे यह सुनकर बहुत अचरज हुआ। मैंने पूछा भी "जब प्रति एकड़ गेहूँ की उपज इतनी अधिक बढ़ गयी है, तो प्रायः गेहूँ की शेती कम करने की बात कह रहे हैं। क्या रचना रखने की भी अगह नहीं मिल रही है?" कहते लगे "एक दिन मण्डी में चलिए, तो पता चल जायेगा कि मैं रोधा क्यों कह रहा हूँ। गेहूँ में मेहनत लगनी है मजदूर की, पूँजी लगनी है हथारी, बाजार बनना है सरकार का, और मुनाफा होना है ग्याहरी का। जब मैं यह देखता हूँ तो सोचता हूँ कि धरार बाजार के व्यापारियों और सरकार के अधिकारियों की ही खेब भरनेवाली है तो हम अधिक गेहूँ पैदा करने के पीछे रागल क्यों हो? गेहूँ कम होगा तो राधा अधिक मिलेगा। सरकार जब रक्षा नहीं कर पानी तो हम उसकी वाज क्यों मानें?"

यह कैसी बात है कि गेहूँ कम होगा तो राधा अधिक मिलेगा! गेहूँ कम होने पर अधिक राधा कौन देगा? ग्याहरी देगा। ग्याहरी को अधिक राधा कहाँ से मिलेगा? गाहक देगा। किसान गुप्त हो जायेगा। लेकिन प्राज क्या हो रहा है? गेहूँ ग्यादा हुआ, इतना ग्यादा हुआ कि दोने के लिए टुकें नहीं मिल रही हैं, गोशामों में जगह नहीं रह गयी है, लेकिन गाहक को मिलनी रहान मिली है! बहुत कम। किसान के गेहूँ का दाम घट गिरा, लेकिन गाहक के गेहूँ का दाम उतना नहीं गिरा। क्योंकि बाजार न उत्पादक के हाथ में है, न गाहक के। और सरकार तो साम्राज नहीं बिचके हाथ में है! द्रोपदी के तो पाँच ही पति थे, सरकार के तो पचास हो गये हैं!

एक बात धीर है। यही किसान जब गेहूँ बेचकर बाजार में जाता है तो देखा है कि हर चीज का दाम ज्यों का त्यों है। गेहूँ की देखा-देखी किसी दूसरी चीज का दाम नहीं घटा, बल्कि बढ़ी चीजों का तो बिल्कुल कुछ दिनों में बढ़ गया है। मदी का ग्याहरी गेहूँवाने को कम दाम देना है, और चहर का ग्याहरी अपनी चीज के लिए उठते

ग्यादा दाम देता है। उस बेचारे पर दोनों धोर से मार पड़ती है। चहर गाँव को लूटे, मिल-मालिक व्यापारी को लूटे, व्यापारी किसान को लूटे, बड़ा किसान छोटे किसान को लूटे, किसान मजदूर को लूटे, बनिमा गाहक को लूटे, और गेहूँवाला राज्य दूसरे राज्य को लूटे। वस, लूट का मोबा मिलना चाहिए हर एक लुटेरे के लिए तयार बैठा है। अगर गेहूँ की बहानी लिखनी हो तो लूट की भाषा में लिखी जा सकती है। धाँसें खोल देनेवाली बहानी होगी।

हरियाणा में गेहूँ सड़ रहा, और प्याल-उडीसा का परीब धन के दिना भर रहा है। क्यों? क्या गेहूँ पैदा करनेवालों का एक देश है, और गेहूँ के लिए तरसनेवालों का दूसरा?

गेहूँ अधिक-से-अधिक पैदा हो, यह कौन नहीं चाहेगा, लेकिन, केवल इतने से सवाल हल नहीं होगा। गेहूँ जितना ग्यादा पैदा होगा भाँग जतनी ही ग्यादा बढ़ेगी कि गेहूँ में सबको हिम्मा मिले। हरएक यह उयाल पड़ेगा कि उसे क्यों नहीं मिल रहा है। यह सवाल ही तो इन जमाने की सबसे बड़ी मुसीबत है। और, धीरे-धीरे हर प्रादमी सवाल पूछना सीखता भी जा रहा है।

एक बात पछी है कि प्राज की सरकार और प्राज के बाजार के पाम दम सवाल का कोई जवाब नहीं है। लूट बन्द करना उनके पाम की बात नहीं रह गयी है। लूट न तानाशाही में बन्द हो सकती है, और न नेनाशाही में। उसे बन्द करने के लिए कोई तीमरी शक्ति चाहिए। भगवान की शक्ति कहाँ है, वह कब धीर कंधे मिलेगी, रक्षा पता नहीं है। सरकार में शक्ति नहीं रह गयी है, यह पूरे तीर पर मान्य हो गया है। मजबूत शक्ति दब्य जलता में है, लेकिन उसे उसका पता नहीं है, और धरार बन्धी-बन्धी पता ही भी जाता है तो यह अपनी शक्ति सही ढंग में प्रकट नहीं कर पाती।

गेहूँ गाँव में पैदा होता है। यही गेत है, यही खेन के मालिक है, यही खेन के मजदूर हैं और यही से गेहूँ मदी में जाता है। जब इतनी चीजें बूटें तो गाँव के लोग मदान क्यों नहीं पूछते और धरने सवाल का जवाब क्यों नहीं बूँडते? जवाब उनके पास है। धरार गाँव की अपनी सरकार बन जाय, और अपनी बाजार बन जाय तो समझ लीजिये कि सवाल बहुत कुछ हल हो गया। गाँव में रहनेवाले सब एच. ई. गेटे थे मेहनतवाले मजदूर हों, चाहे खेतवाले मालिक, और चाहे पंजीवाले महाजन और ग्याहरी। किसी एक का भी नाम दूसरे दोनों के दिना नहीं बस सकता। जब ऐसी बात है तो उनके एक होकर गाँव गाँव में संगठन कर लेने में बहिर्नाई क्या है? गाँव का सवाल संगठन, प्राज्ञा कौप हो, और सबकी राय से प्राज्ञा निर्णय हो, तो गाँव की शक्ति बनने में कितनी देर लगेगी? जब गाँव अपने लोगों के गिरावों के बाद बेवेग, अपनी गोदाम में प्राणों के लिए रखकर बेवेग, अपनी रोज की जरूरत की चीजें गुप्त बनायेगा, वसारी की हैतियत से चहर से दान करेगा, सरकार में अपने प्रादमी बेवेग, धरार और ग्याहरी का मुँहनाम नहीं रहेगा। प्राज यह सब कुछ नहीं है, अभी तो लूट के लिए चुनी लूट है। बात यह है कि गाँव के धरमी सड़ अपनी 'ब' पहचाना ही नहीं, इसलिए गाँव में स्वराज्य पैदा नहीं। क्या धर भी नहीं पहचानेगा? *

सर्वोदय-सम्मेलन में व्यक्त उद्गार, अनुभव, उद्बोधन

जनशान्दोलन और राज्यदान की सम्भावनाएँ

यहाँ घारे भारत का दर्शन हो रहा है। इसके पहले बिहार, उड़ीसा, उत्तर प्रदेश की जनता घोर कार्यकर्ताओं का दर्शन हुआ। उड़ीसा में देखा कि यहाँ के कार्यकर्ताओं में जरासा ही विरासत है, निराला है, उड़ोने की शक्ति प्राप्त का स्वरूप लिया है। कोरापुट की जनता सब बात तो जल्द राज्यदान ही सकता है। रामदासी गाँवों से एक ऐसा भिन्न सच हो रहा है। कार्यकर्ताओं में यह बात मान ली है। वया घोर यमुना के तटों से बन होगा। यहाँ बिचौरी की ताकत भी है, जो देश में कहीं भी नहीं है।

नासलवाड़ी में शासन मिल रहा है। धार बाहु राम की तरह काम कर रहे हैं। उन्हें पानी लेना भी पारदर्शकता है। जो जनता हिनक शक्ति के लिए दूर रहे, वह दूसरा पहिना का रास्ता धारवाली से पकड़ सकती है। इसलिए मेरे मन में धारवाली के विचारवाली का पूरा भाग राज्यदान में धारा चाहिए। नाशनवाड़ी एक चुनौती है, चुनौती के दौर पर यह कार्य पूरा करना चाहिए।

पूरिया में रामदासी सब बात रहे हैं। जनता का बढ़ा संयोग है। यह मुझे अच्छा लगा। मुझे पूरा विश्वास है कि बिहारदान तो जायगा। यहाँ बाबा है, तमिलिचारी ने भी दे, जनता भी साथ है।

बनिया में सम्मेलन हुआ, उसके बाद विराटन हो गया। यहाँ भी सम्मेलन ही रहा है यहाँ भी शासन और पकड़ना चाहिए।

महाल में काम बढ़ रहा है। रामदासी विजयो के दिने बढ़ा कि हूयेर जिने में सप्त-पन्द्रह दिन के लिए धारा चाहिए। २०० दिनों में भावना सम्यक दिना। मनुदाई से उत्प्रेरनेनी रहे।

धारापान होने ही शक्यता बने। प्रत्यक्ष-पान में प्रकाश-मन्य का आरोपन करने में तो बढ़ा रहे हैं। सभी जिने का सम्मेलन नहीं हुआ है कलाप बाधो है। जब तक लोग धारों कोर नहीं है ह्यार्य विचारान हो गया, तक

जनता को मनुष्य होगा, कि ह्यारा बाजोलन है। इसमें से बाजिउकारी ताकत निकलेगी। जैसे ह्यारा सम्मेलन होता है, वैसे धारोण जनता का एक-दो दिन का सम्मेलन होता पाहिए।

एन तरह के सर्वोदय-सम्मेलन में भी रामदासी गाँवों की जनता की भागा चाहिए। यहाँ बाजोलन में लगे बायबर्ता प्राते हैं, पर धारदान विचारन भी सम्मेलनों में प्राते तो ताकत बंधा होती। प्रातेले सर्वोदय सम्मेलन में यह होना चाहिए। हर प्रात में सम्मेलन में धारदान-विचारन प्राते। इस बाजोलन का सबसे काम जनता के साथ जल्द-से-जल्द पहुँचना चाहिए। हर कदम पर प्रभावदान विचारान के लिए कोशिश होनी चाहिए। गुटि काम के लिए भी कोशिश करने चाहिए। हम लोगों की कई सम्भावनाएँ हैं। सभी सरकार/बनो मद्राश प्रातेवाले हैं। मेरे मन में यह दुःख है कि 'शित शासक' है। धारमन्य के बरिने कति होजाती है। निर्माण काम में भी लोगों का 'रेडिटर पार्टी'कियेप्रा' होना चाहिए। गुटि का काम भी साथ-साथ होना चाहिए।

तमिलनाडु में धारदान का सफल विचार है तमिलनाडु के लोगों में जाताह है। यहाँ जनता का सम्मेलन हो सकता है, इसलिए प्रासतन का सकता दिया। तमिलनाडु का प्रासतन हो सकता है, इस पर मात पूरा करोला है।

—ए.ए.० जयशाम्भू

उड़ोसा में जनशक्ति का दर्शन

सभी बोधे दिन पहले उड़ोसा का पुरी-सम्मेलन हुआ। जयशाम्भूजी ने धार-सतन की। जयशाम्भूजी के मनुभव पर से ह्यार्य जलाह बना घोर राज्यदान का सफल दिया गया।

३०-१०-१९५० प्राते वे जो ह्यारी निराला हुए हैं भी, लेकिन पूरा विश्वास नहीं बंधा हुआ था। जब हल चीनने लगे हैं कि जनता घोर विचारियों को साथ खड़े किया जाय। विचारों के प्रत्येकन हुए थे। सन् '६१ से

सब तक १२-३० विचार हो चुके। ६,००० से ज्यादा व्यक्तिय प्राय धारि-नेतर में प्राये हुए हैं। विचारों में प्रातेवाले प्राते साथ साथ में कर प्राते हैं। इस सर्वोदय सम्मेलन में भी जनता सर्व-नेकर कुछ प्रासतनी गाँवों के साथ प्राते हैं।

सन् '६२ से ही ह्यार्य कोशिश कर रहे हैं कि जनता की, तथा उरएणों की शक्ति हल प्राय में लगे। इनमें जगदा सुध नहीं हुआ है, लेकिन ह्यारी कोशिश बल रही है। कोरापुट में घोर नवरगपुर में धारि-नेता खेती हुई, नयापुक्ति प्रथम पुक्ति के लिए प्राते लगाये गये। धारमन्यो धारोण्य जब प्राते हैं तो धारोण्य सम्प्राण्य सामने प्राते हैं, घोर सर्व-समाधान का रास्ता सुध दूड़ते हैं। इन पर हल दूड़ने का भार नहीं प्राते। यहाँ बाज की शक्यता प्राणन की सम्प्राण्य, नया की सम्प्राण्य, प्रथम की सम्प्राण्य को हल करने के लिए काम प्राते बडता है, जो धारदान के काम में गति प्राणी है। यहाँ दुग्धिप्रा है यहाँ भी लोग प्राते प्राते हैं। पधुकर, अंधेतर में एक एक धारन में यहाँ धारमन्य प्राया था यहाँ सबल बनाने का काम किया। सपदन हो जगता है जो यह काम प्रासतन हो जगता है। गापी-रातायवी तक राज्यदान हो जाय ऐसा सफल हमने किया है। बाजेर के विचारियों को सामने लाये की कोशिश कर रहे हैं, वे हाकने का प्रायेये दो चीम ह्यारा काम हो जायगा।

—सुभांशु मोरार दास

हरियाणा में सतदाता शिखर का काम : एक नया अनुभव

सर्वोदय विचार ने एक काम होने सम-भायो है कि इस इलाक की इलाक समकता लीले। यहाँ इस पर प्रहार होता है यहाँ काम करने की जरूरत होती है। हल पैदा रहे हैं कि इस पुन में इलाकिसत की विजयो मिट्टी बनो हो रही है उजनी मोर बनी नहीं हुई होगी। घोर यह काम की राकशीय के बतते हो रहा है।

काम आगते हैं कि सतदाता मोरे की इरादा है। शीतलन को बचाना है घोर उजकी रसा करने हैं। ठी मोर की इरादा को मनिगनी बनाना होगा।

मंतदाता इंशान है। लेकिन मंतदाता को हम चुनाव के समय इशान नहीं मानते। बोली बोली जाती है - ४०-५०-६०-७०। वोट बिकता है। नवाब्दी की बात हम करते हैं, लेकिन चुनाव में टाबाब की नदियां बहती हैं। बंगल में शरान रखी जाती है। कोई भी पानी की तरह लेकर पी सकता है। नुमादन्दे जाति को सामने रखकर तय किये जाते हैं। कौन नुमादन्दे कहां जीतेगा—भावा, जाति, रिपयूरी, धर्म का ध्यान रखकर इस पर विचार किया जाता है, और इनका जहर फंलाया जाता है। उम्मीदवारों के साथी एक-दूसरे के खिलाफ माकी बचते हैं। चारों तरफ चुनाव में अनैतिकता और भ्रष्टाचार का बातावरण रहता है। इस दृष्टि से हमने हरियाणा के मध्यवर्ती चुनाव के समय मंतदाता शिराया का काम किया।

२१ चुनाव-खेमे में से २२ में हमने काम किया। जुजुब निकले, पोस्टर्स, लिफलेट्स वगैरे तथा मुलके हुए कार्यकर्ताओं में सर्वोदय-विचार की लोकनीति का विचार समझाया। गीतों के माध्यम से भी प्रचार किया। 'ए कोड ध्राफ वण्ड' तैयार करके दलों के नुमादन्दों से मनवाकर उनके हस्ताक्षर से सबके पास धारावाकर भेजा। ऐसे कामों में हमारे कार्यकर्ता पशुमुक्त हो, इतना ध्यान भवचय रखत चाहिए और हमने इसका ध्यान रखा।

हर पार्टी के कार्यकर्ता, उम्मीदवार और जनता ने इस कार्य को पसन्द किया, लेकिन विचस्पत की, कि यह काम देर से शुरू हुआ, दो महीना पहले शुरू होना चाहिए था।

—प्रोमप्रसास त्रिप्या

नगरों की ओर भी निगाह करें

हमें गहरो की समस्याओं को भी लेना चाहिए। ग्रामीण समस्या को दूर करने से गहरो की समस्या दूर होगी, ऐसा मानना ठीक नहीं। हर गहरे में सर्वोदय परिवार बनने चाहिए। एक-दूसरे को जोड़ने का काम से परिवार करें।

गहरो में वर्ग-संघर्ष चलता है। मजदूर १८ मन्तिको को उद्योगदान की बात भी

समानाभी चाहिए। मालिक और मजदूर धामने-सामने होंगे तो टक्कर होगी ही। मजदूर-मालिक का मत कराना होगा और उद्योग की कमाई में दोनों को हिस्सा मिले, यह परिस्थिति सानी होगी। ऐसा नहीं करने पर व्यक्तिगत और सामूहिक पूंजीवाद बड़ेगा।

घान्ति सेना के विचार, एक दिन का कैम्प, सफाई, ब्याख्यान धादि के कार्यक्रम चलाने चाहिए। शाम में एक बार गहरे में पढयाथा भी होनी चाहिए। —हरीश व्यास

नवसालवाड़ी के अनुभव : प्रगति की ओर

नवसालवाड़ी में जब उपद्रव जारी था, तब सर्वोदय-मण्डल के मंत्री और भूदान-कमेटी से दो गांधी वहाँ भूमे गये। बहुत मतरा था। मनशी की कि वाहर के लोगों को खाना न दे, उनसे बात न करें। फिर भी सताह भूमे। उनकी मुलाकात काद्र सन्धान से हुई थी। जब मुक्ति-येकदान हुआ, तब मनमोहन भाई, भ्रम्हासिका बहन, पक्ति बानू और मैं वहाँ गये थे। विनोद ने नवसालवाड़ी की घाण्ति का विवरण पूछिया के जिलादान और नवसालवाड़ी के धामदान की बतया। लेकिन जितनी तावत से दूसरे राग्यों में १०० धामदान होते हैं, वगाल में उतनी तावत से १ धामदान होता है। यह स्थिति है वहाँ की। मैंने वहाँ भेल से रहने की बात समझयी। भूमे धूमते धामदान की अनुभूतता भी दिखाई दी। १ मार्च '६८ से धामदान धमियान शुरू हुआ। १० कार्यकर्ता वहाँ गये। ११० गांव नवसालवाड़ी में हैं। फेब्रवर, लिफलेट्स १० हजार की संख्या में वगैरे गये। इस तरह हमारा प्रवेद हुआ। वहाँ दो घान्ति नेट स्थापित हैं। उनके कार्यकर्ता काम करने लगे। मनमोहन भाई भी गये थे। हमारे गांधी-नियम के २० कार्यकर्ता लगे। १७ धामदान भव तक हुए हैं। वहाँ के दो नवमुनिस्ट कार्यकर्ता सर्वोदय का काम करने लगे हैं।

नवसालवाड़ी ऐसा इलाका है, जहाँ नेपाल और पाकिस्तान की सीमा है। पूरिया के

पूषविहार तक २३० किलोमीटर की दूरी है। चौड़ाई सिर्फ १५ मील है। वह 'बाटलनेक' है भारत का। बाबा ने वहाँ घान्ति-निवेतन की ओर से प्रशान्ति-निवेतन की स्थापना की बात बनी है। उस दिशा में काम चल रहा है।

—चारुचन्द्र भंडारी

हिंसा और अशान्ति की चुनौती

हम 'चुनौती' शब्द का प्रयोग करते हैं। चुनौती किम बात की है? मूल्य-परिवर्तन की चुनौती है। हजारों वर्षों में जो परिवर्तन नहीं हुआ, वह विद्युते तातान्द्रियों में हुआ, तातान्द्रियों में नहीं हुआ, वह दलको में हुआ। चुनौती साधन की है, परिवर्तन की है। जो इस दुनिया को मूल्य देने प्राये, वे प्राधिक दिन रह नहीं सके। कभी-कभी ऐसा लगने लगता है कि हिंसा के प्रागे प्राहिंसा कहीं छित तो नहीं जायगी? गांधी ने, माटिन लूथर किंग ने जिन मूल्यों की स्थापना करनी चाही, हम उनको स्थापना की कोशिश करीये या साक्षी ही रहेंगे? प्राय की परिस्थिति में हम साक्षी बनकर नहीं रह सकते।

प्राय उदासीनता का धर्म दूसरे पद में सहायता करना होगा। भयर उदासीनता न दिखायी गयी होती, तो श्टिटर पैदा होता ही नहीं। घान्ति की भावना हम लेकर रह जायेंगे या इसके लिए क्रियानील होंगे? पत्रिमी घान्तिवादी मुष्ट रोक्ने में प्रयत्नगील हैं। हम ऐसी समाज-रचना करता पावते हैं, जिमसे घान्ति, मुष्ट रह ही न जाय।

मनराधामों के प्रति हमें चिन्तित होना चाहिए। प्राभी हमारे भन्दर इनकी तीव्रता नहीं है। जर तीव्रता होगी, तब हमारी उल्लंघता बनेगी।

—नारायण देसाई

चंडौली तहसीलदान

सा. २८ जून '६८ की वाराणसी जिले की चण्डौली तहसील का तहसीलदान श्री धीरेन्द्र मन्थनदर को समर्पित किया गया। वाराणसी जिलादान की दिशा में यह एक महत्वपूर्ण उपलक्ष्य है।

नीतिक, जो 'कॉन्ग्रेस' है, हार्दिकभाण्ड है, जो नेत्र मझल है, उन तक वह मोहित रहेगा और वहीं टिकट का बंटवारा, वही पंसा, वही प्रचार, वही एक दूसरे के ऊपर शोषारोपण, सोनतंत्र और जनता के नाम पर। दुनिया भर में, कोई भारत की पाटियों का नहीं कह रहा है, जहाँ यह पत्रो भी प्रथा है, मैं देखता हूँ इसका सत्कार भंगर होगा नया, तो पार्टी-लेस डिमोक्रेसी की तरफ होगा और सम्भव है कि यूरोप-श्लाविया में सबसे पहली मिसाल हमें 'पार्टीलेस डिमोक्रेसी' की मिले। क्योंकि कुछ बुनियादी कायम की हैं उन्होंने 'कम्मुनिस्ट' के अन्दर, 'सोशल इष्टरप्रोडज के अन्दर, मिटी कमिटियों इत्यादि के अन्दर।

वे छोटे छोटे समुदाय, जिनका एक महासचय यूरोप-श्लाविया है—जैसे ग्रामराज्यों के समूहों का महासचय भारत हो, ऐसा निवेदन मे कहा गया है कि यादी हा सना था, और जैसे प्राये आकर विद्य-ध्यायी एक महासचय के 'स्माल कम्मुनिटीज' का, उसकी सम्भावना प्राज नहीं है इस हृषियारन्द समाज के अन्दर। प्राज तो भय है एक-दूसरे से, भारत को भी भय है। कोई अमेरिका को ही भय है, ऐसा नहीं। हिन्दू को भय है, मुसलमान को भय है, हरिजन को भय है, ईसाई को भय है और सबको भय है।

मित्रो, बहुत मैं अचर-उधर वहका। लेकिन बात आपसे यह कह रहा हूँ कि हम नमूने बनाने में उठेंगे तो समाज जायगा अपनी पति से, उसको बदल नहीं सकते हैं। नया मानव बनाने की बात ठीक है। नया मन बनाना, चित निर्माण करना। लेकिन उन विषय पर बोलने का अधिकारी मैं नहीं हूँ। ऐसी चर्चा होनी है तो मैं मूक बन जाता हूँ। और इसके जो सब जासकार हैं, बिनाम तो नहीं कहूँगा, जिनका चित स्वयं शुद्ध है, उनके सामने हमारा मस्तक झुकता है, उनसे कुछ सीखता हूँ। लेकिन स्वयं चुन रहा हूँ। इतना ही जानता हूँ कि दूसरों का चित-निर्माण उपदेश से मैं कर नहीं सकता, अपने जीवन के उदाहरण से कुछ कर सकता हूँ। कुछ मेरे अन्दर है तो होगा, नहीं तो नहीं होगा। मेरे भाषणों के द्वारा चित निर्माण हासिल नहीं होगा। इस

विषय पर भाषण का हक है दूसरो का, मेरा नहीं।

ग्रामदान धान्दोलन
'मेन स्ट्रीम' : किनारा नहीं

इतना मुझे नहीं बोलना चाहिए था, कहना इतना ही था कि चाहे उसमें कितनी भी धूल हो, मिट्टी हो, गन्धी हो, भूत हो, फिर भी मूलत सत्य है—यह जो ग्रामदान का धान्दोलन और ग्रामदान की शक्ति चल रही है। डेरर भाई अक्सर हमसे कहा करते हैं कि प्राय लोगों को चाहिए 'मेन स्ट्रीम' में प्राना। शैल अन्दुला साहब जब पटना गये, विनोबाजी से मिलने, तो एक ग्रामसभा थी, बाबा भी बीच मिनट के लिए प्राये थे। मुख्य वक्ता तो मैं था। जनता ने चाहा कि कुछ शेष साहब बोलें। बहुत अक्षय भाषण दिया उन्होंने। शायद वही एक स्थान भारत में होगा, जहाँ 'शैल अन्दुला जिनदावाद' के नारे लगे, न कि 'शैल अन्दुला मुर्दावाद' के। प्रथम उस भाषण में कहा उन्होंने कि ये तो किनारे पर खड़े हैं अयप्रकाश। यह जो राजनीति की गया वह रही है उसमें क्यों कूद नहीं पड़ते ? इनको क्या भय है ? तो हमने कहा कि जिसको धार गया कह रहे हैं वह तो मुझे कुर्पा दीख रहा है, कुर्पा, और जहाँ प्राज हम हैं वही 'मेन स्ट्रीम' हमें दीख रहा है। मैं आपसे पूछता हूँ, कि जमाने की पुकार की वजह से, कुछ सत्त की, विनोबा की दृष्टा से मान तो विहारदान हो गया, तो उन विहारदान के बाद सर्वोदय धान्दोलन 'मेन स्ट्रीम' में रहेगा कि बिनारे पर पड़ा रहेगा ?

उपहार हजारा गाँव हैं। पचास हजार गाँवों में भी ग्रामदान हुआ, तो सन् '७२ तक, अगले चुनाव तक—अगर बीच में मध्यवर्ती चुनाव न हो गया तो, सन् '७२ तक पचास हजार ग्रामसभाएँ बन जायेंगी और बाकी उभरीय हजारा ग्रामों में से न जाने कितने और प्राय प्रा जायेंगे। और इन पचास हजार ग्रामसभाओं की लोकनीति जो होगी, वह एक नयी 'पार्लियामेंट डिमोक्रेसी' होगी, जिसकी चर्चा राममूर्ति भाई ने की। और भी चर्चाएँ हुईं। राममूर्ति भाई 'पार्टीसिपेटरी डिमोक्रेसी' कहते हैं, सही-मुद्द अन्दर वही है, जिसकी

माँग ये नोजवान प्राज कर रहे हैं अमेरिका के, योरप के। प्राय ऐसा ही जायेंगे, हममें से जो बड़े सभाने लोग हैं, तत्त्वज्ञान के जानकार हैं, उन विद्यापियों से बातें बरें, उनकी 'मैथ्योरिटी', उनकी समभदारी, उनका सयानावन देखेंगे तो, ईरान हो जायेंगे कि कितना अध्ययन किया है इन लोगों में, कितनी जानकारी है इनकी।

मैंने कहा यह का कि यह सारे 'उचना-ताजिकल सिविलाइजेशन', यह नयी 'इंडस्ट्रियल सोसायटी', जिसके बारे में डेरर भाई ने बल जानदत की किताब का जिक्र किया था, उसकी तरफ पीठ मोड़ी है इन लोगों ने। हमको 'रिजैक्ट' किया है, रद्द किया है। उनको समान्य है, यह 'एपयुटेड सोसायटी'। समान की यह आर्थिक रचना मान्य नहीं है, लेकिन नयी रचना कैंसे करनी है, यह नहीं जानते हम भी नहीं जानते। यह हमें भी नहीं मान्य है कि जो हम करेंगे, उसका क्या स्वरूप निकलेगा। जब उसका अर्थसत्त करेंगे, कुछ काम करेंगे, नगरो में भी इन विचारो का प्रवेश जब होगा, सर्वोदय के विचारो का, दृष्टीगतिक के विचारो का, सहयोगी-सहकारी जीवन का, लोकनीति का, तो उससे हम मीलेंगे। काम से ही तो सीखते हैं।

अपार का सामाजिक दायित्व

मैंने एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी की थी, सोशल 'रिस्पान्सिबिलिटीज' प्राय विजिनैस। अर्नेस्ट मार्डर, जार्ज स्वायडर, डेविड ग्रूम इत्यादि कई बाहर के मित्र, विचारक उनके ऊपर बार्थ करनेवाले और देय के कुछ विचारक इबट्टे हुए। मानिकतला पथिनपर, अम्बई ने 'सोशल रिस्पान्सिबिलिटीज' प्राय विजिनैस के नाम से रिपोट निकवाती। 'न्यू पारम' प्राय अोरिएण्टल' नाम से सर्व सेवा सभ ने भी प्रकाशित किया। एक प्रयास था यह, लेकिन उस पर भी जो प्रतिज्ञा-पत्र उगमे में मान्य हुआ—जबनासाल धनान रूज प्राय मनेज-मेन्ट, बलबत्ता; स्कूल प्राय मनेजमेन्ट, अहमदावाद से ही कोई नहीं प्राया था। यही यही अम्पनिमो के लोग थे वही, जो टाटा की तरफ से, मण्डलाल की तरफ से, इन सब लोगों ने मिलकर एक प्रतिज्ञा-पत्र निकाला—वह हमने सबके पास भेजा। कोई भी

कि किस प्रकार से इस इलाके के किसानों के मन में धोम है। यह इरिरा गांधी ने क्या किया है, हमारे देश का हिस्सा कैसे दे दिया? और किस धृष्टि से, किस प्रेम से उस शिक्षा जगत्प्रामुखी ने उनको समझाया कि मुझसे जो किसानों के बीच झगड़ा होता है तो क्या करते हो? पंचायती मे नहीं देते हो, मुकदमे में लोग बरखाद नहीं हो जाते? घर-बगोर सब विक्रि जाता है, तो थोड़ा समय। उन लोगों ने। तो इस प्रकार से कुछ है, लेकिन समुक्त राष्ट्रस्य का बहुत चलता नहीं। बहुत माने में वह आज निर्बल है। एक प्रयास यह हो सकता है वासिप्रिय देशों का, कि समुक्त राष्ट्रस्य को और सबल किया जाय। कैसे होगा? दोष का विषय है। बहुत लोगों ने चिन्तन किया है, और बहुत-से प्रस्ताव हुए हैं इसके बारे में। चाटर्स के 'अमेन्डमेण्ट' के और दूसरे। और यकी-यकी कई सभ्य हैं—बल्ले गवर्नमेण्ट की हैं, 'कामनवेल्थ केडरेटान्स' की हैं और कई सभ्य हैं दुनिया में बनी हुई, जो विश्व समुक्त को बदानी है, 'बल्ले विटिजन्स' बनाती हैं, विधायनपरिक्रम बनाती हैं, यह सब भी काम चलता है।

'नेशन स्टेट' की समाप्ति
विश्व-परिवार का प्राधार

लेकिन मेरा ऐसा पक्ष निग्रय है कि जब तक यह 'नेशन स्टेट' कायम है, सब तक विश्व वासि कायम नहीं हो सकती। आज के ये जो राष्ट्र हैं, ये अभिदाप हैं मानव के लिए। आज का विज्ञान मानव को बहुत दूर ले गया। आज कोई अत्यन्तता नहीं है इन धरती की। कैसे 'नेशन स्टेट्स' का धीरे-धीरे विघटन होगा?

जब मैं सूत्र माननवासे था तो अचदय नया विचार था कि 'कम्पनि-म' स्टेट्स को सतम करेगा। 'नेशन स्टेट्स' पूँजी के प्राधार पर 'इंडस्ट्रियल कामिनिज्म कॅपिटल' के प्राधार पर, उन शक्तियों की प्रेरणाओं से कायम हुए और उसका प्राधार विट जायगा तो विश्व परिवार बन जायगा। परन्तु कम्पनिज्म स्वयं 'नेशन स्टेट' का विकार बन गया। रूस, चीन, पूर्वी यूरोप के सभी कम्पनिस्ट देश, एक-एक करके आज जो कुछ नहीं

चल रहा है उसमें बहुत कुछ राष्ट्रवाद है। इन देशों ने, बग-भे-कम चीन और रूस ने, बहुत से छोटे-छोटे 'नेशनल्स' को हजम करके रखा है, उनमें से एक 'नेशन' को मैं देख करके घाया, उन्पेविस्तान को। ऐसे प्राधार दिखाई देते हैं कि इन सब 'नेशनल रिपब्लिक्स' में राष्ट्रवाद पनप रहा है। पाकिस्तान में पन्तुनिस्तान का प्रश्न उठा, यकोचिस्तान का प्रश्न उठा और शायद कल सिन्ध का भी उठे। क्या होगा तीव्रपाय का, क्या होगा सिन्ध का, क्या होगा भीतरी मंगोलिया का, मकुरिया का, मैं नहीं कह सकता हूँ। साम्यवाद ने 'नेशन स्टेट' की दीवारों को तोड़ करके कोई नयी प्रथा कायम नहीं की। इस्लाम भी अज गिरपन हो गया 'नेशन स्टेट' की 'माइथियोलोजी' में। अरब जातिके लोगों के आज कई 'नेशन स्टेट' हैं और परस्पर उनके द्वन्द्व है। इस्लाम उसका 'सानवेण्ट' नहीं बन सकता।

हमने प्रावसर्षम में तीन दिन एक सम्मेलन में भाग लिया। गांधीजी के उन छोटे छोटे स्वतन्त्र समुदायों का, जो विश्व-समुदाय के 'योसियायिक सॅकिल' के विन्दु होगे, उन नवी चर्चा थी और 'नेशन स्टेट'

का धीरे-धीरे कैसे 'इरोजन' होगा, इस पर चर्चा थी। आज तो भारत में कहीं तो देशद्रोह का मुकदमा चल जाय, लेकिन जहाँ लोग बैठे थे, प्रावसर्षम यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर भी थे, पत्रकार भी थे और भी विद्वान थे। ये यह कह रहे थे कि वेल्स को अधिकार होता चाहिए, इन्ग्लैंड से, प्रेटेब्रिटेन से भ्रमण होगा चाहे तो वेल्स हो जाय। स्कॉटलैंड भ्रमण चाहता है भ्रमण होना तो जगको अधिकार है होने का। 'नेशन स्टेट' यह होने देगा? इस प्रश्न का स्वातन्त्र्य तो लोगों को तब भिसेना जब यह सेना नहीं रहेगी। जब लोगों का मानन नहीं बदलेगे तो यह कैसे होगा? यह हमारा काम है कि राष्ट्र-स्वायं विश्व स्वायं कंठे बने, व्यक्ति-स्वायं समष्टि-स्वायं कंठे बने, इन प्रश्नों का उत्तर जौं।

उत्तीसवीं मदी के योरप का जो राष्ट्रवाद था वह आज श्रमजी का मे, एशिया में नूब तेजी के साथ प्रागे बढ़ रहा है, आज हम उनके विशार हो रहे हैं। हर कोई कहेगा—यह हमारा, यह हमारा, यह हमारा और फिर हम मिलेंगे भी, तो नहीं होगा। दुनिया कंठे मिलेगी? (समाप्त)

सर्व सेवा संघ के आबू रोड अधिवेशन में

व्यक्त कुछ विचार, सुभाष, मन्तव्य

ग्रामदान

नरेन्द्र दूवे :

● हमारा 'ग्रामोच' 'गात्रिठिब' होना चाहिए, 'निगॅटिव' नहीं। आज दुनिया में मयन चल रहा है। नयी चुनौतियाँ सामने धावी हैं, नये मूयों की रोज भी शुरू हुई हैं।

● अर्थो देश में लोभतन्त्र के विभिन्न प्रयोग चल रहे हैं। नये प्रयोगों के लिए हमें अपनी मनोभूमिका बनानी चाहिए।

● 'धर्म-निरपेक्षता' को जगह 'सर्व धर्म-मनमाना' शब्द प्रयोग से लायें। निरपेक्षता से हमारा मन्तव्य पूरा नहीं होता।

सी० ए० मेहनत :

सम्मेलनों में अथ विनोबा नहीं पाते, वह प्रावर्षण नहीं रहा। अथ हमें प्रापन में

चर्चा करके, नये निरचय और प्रावविश्रास के साथ लौटने और क्षय में जाकर उस्ताह से जुटने लायक स्फुनियय वातावरण बनाना चाहिए। विनोबा जिन तरह दृढ निरचय के साथ बटे हैं, उन्नी तरह हमें भी उटना है। विविध चर्चाओं को छोड़ें और प्रापने को 'बिहारदान', 'भारतदान' के तदय पर वेन्द्रित करें।

अनन्त :

पश्चिमी देशों में ग्रामदान के विचार के प्रति लोगों का प्रावर्षण बढ़ा है, जिशासा यकी है। हमें इस प्राग्गोलन को दुनिया के स्तर पर फैलाना चाहिए, उसकी अनुकूलता है।

नरेन्द्र भाई :

क्रातिके मूयों का अथमूयन नहीं होना चाहिए। कायम और प्राग्गोलन

है, "दो सितारों-से मेरे ताल बहाँ गये?" इस पुराने का उत्तर प्रहिषा की राक्ति से ही दिया जा सकता है।

दीपक को प्रधेरा नहीं सूझता, जहाँ जाता है वही रोतनी फँसता है। हम वैसे ही दीपक बनें !

खादी

विचित्र भाई :

खादी की दिशा जो थी वही रहनी चाहिए। वीन बीच में बदल जाती है, यह ठीक नहीं है। सम्राज में जो समस्याएँ हैं, उनका हल निकालना है। प्रगर प्रहिषा की राक्ति से नहीं निकलना, तो हथकोई प्रधिकार नहीं है कि दूसरे माग पर जानवालों को रोकें-टोकें। हिंसा में राक्ति की वर्षाई है, इसलिए हमें प्रहिंसा के रास्ते जीवन के प्रसनों का हल प्रस्तुत करना है।

ध्वज वादू :

प्रापका भानीपत का प्रस्ताव मिला हांगा। 'प्रसाक महता कमेटी' की रिपोर्ट पर भी प्राप चर्चा करेंगे। भानीपत के प्रस्ताव में कान्ही कार्यन्वयताओं को दिशा मिली थी। साधन 'प्रसाक महता कमेटी' की जो रिपोर्ट प्रायी, उसे देखकर उसमें कुछ सुभाव देना हांगा। उसमें से 'खादी' का नाम ही निकाल दिया गया है, दिना ही बदल दी गयी है। 'खादी' का नाम छोड़ देना और उसे मान लेना एक बड़े 'खरल इडरट्री' में धा जाता है, ठीक नहीं। 'खादी' का नाम छोड़ना खादी का प्रतीक कर देन के बराबर है। प्रत. सर्व सेवा सच को गभीरता से सोचना चाहिए कि 'खादी' का नाम क्या छोड़ा जाय ! इस रिपोर्ट का हमें प्रानी सहमति नहीं देनी चाहिए। प्रगर महता कमेटी' इससे प्रभावित नहीं होंगी हो तो हम प्रखा सच को उरह एक गैरसरकारी सगठन खड़ा करके खादी का काम चलाना चाहिए।

फार्लि भाई :

अभी तो प्रामदान का काम पूरा कर लें। उसकी हवा बना लें। फिर उसमें खादी भी जोड़ेंगे। विचारों की हवा ही बगली है। प्राज की जो हवा है उसमें दुनिया का दम घुट रहा है। उस हवा को हम बदल देना

चाहते हैं। प्रगर ध्वज लोग एक साल तक विनोवाजी की जेल कदूल कर लें, तो देना और दुनिया की हवा बदल जायगी।

प्रणासाहव सहस्रबुद्धे :

कुछ बड़े उद्योगों को सीमित करना पडेगा, और खादी-ग्रामीणों को लिए वह क्षेत्र सुरक्षित करना पडेगा। कच्चे माल का पक्का माल गाँव में बनेगा, तभी शोपण समाप्त होगा। गाँव में प्रभी तो कच्चा माल रह ही नहीं पाता। जिस तरह प्रामदान में जमीन को गाँव में रखने का उपाय निकालना गया है, उसी तरह गाँव में हमें कच्चा माल कैसे रहे और उसका पक्का माल गाँव में ही कैसे बने, इसका कोई मार्ग ढूँढना होगा।

'प्रसाक महता कमेटी' ने बड़ा प्रच्छा काम किया है कि खादी-काम में लिए भविष्य में सरकारी सहायता नहीं मिलेगी। हमें ध्वजा बाजू में सुभाष पर गभीरता से सोचना चाहिए।

देवेन्द्र गुप्त :

खरखा उत्पादन का यत्र है, लेकिन उत्पादन उसका मूल मत्र नहीं है। प्रामदान और खादी, दोनों का मूलमत्र यही है कि लोगों के जीवन में सहकार बड़े।

करण भाई :

खादी-कमीशन १२ वर्षों से काम कर रहा है। यह जिस ढंग से काम कर रहा है, उसकी चर्चा नहीं करूँगा। प्रागे हम सोच रहे हैं कि खादी का काम कैसे प्रागे बढ़ाया जाय। पालियापेट में भी खादी के काम को बढ़ाने के लिए सोचा जा रहा है, उसीके आधार पर १५ लोगों की एक कमेटी बनी प्रसाक महता के नेतृत्व में। उसकी रिपोर्ट वा गयी है। देश में जो कुछ हो रहा है, उसीको ध्यान में रखकर उन रिपोर्टों में कहा गया है।

सर्व सेवा सच को इतना प्रधिकार हो कि वह 'प्रमीच' तय करे और सरकार के सामने रखे।

शांति-सेना

सुब्बा राव :

शांति-सेना के सगठन को सुदृढ़ करने के लिए शांति-सैनिक बनाने और प्रशिक्षण

देने का काम शांति-सेना चाहिए। सबसे प्रच्छे कार्यन्वयताओं को शांति-सेना का प्रशिक्षण लेना चाहिए। हर शहर में शांति-सेना का सगठन हो और प्रधिक-से-प्रधिक लोग उसमें शामिल विचे जायें।

नारायण देसाई :

विभिन्न कार्यन्वयता की विभूति में एकत्र वा प्रदान नहीं करेंगे, तो काम नहीं बनेगा।

गया-यमुना के सगमस्थल पर क्या शांति-सेना लुप्त सरस्वती है ?

क्रान्तिमन में नये बून, नये प्राण को लाने तथा हमारे शरों को कार्यन्वय तक ले जाने का काम शांति-सेना द्वारा हो सकेगा।

शराव-बन्दी

डा० सुनीला नायर :

राजस्थान में शराव बन्दी के लिए सत्याग्रह चल रहा है। विनोवाजी का प्रतीकीय मिला है। मोरारजी भाई का प्रातीकीय भी मिला है। प्रामदान हो स्वराज्य प्राप्ति हो, प्राधिक विकास की बात हो, सबका ध्येय है जन जीवन स्वस्थ बने, गुच्छो बने। सापू हरेक व्यक्ति को लेकर जो काम देते थे, उसमें यह निहित रहता था कि हर व्यक्ति का सपूर्ण विकास हो।

सन् १९४० में हमारी दूरमते प्रायी, पर वह उत्साह नशाबदी के लिए, व्यक्ति के विकास के लिए नहीं रहा। दो राज्यों—मद्रास और बम्बई में सपूर्ण नशाबन्दी हुई। सन् १९४७ के बाद मद्रास में सपूर्ण नशाबन्दी लागू कर ली। सन् १९४७ के बाद जहाँ नशाबन्दी हुई, वहाँ प्राधिक रिचित बेहतर है। मँमूर उत्तरप्रदेश की सरकारों पीछे हटें। जनता के हृदय में प्राज नशाबन्दी के लिए प्रयत्न है। मत्री लोग कहते हैं कि सब ठीक है, पर वैसे कहाँ से सायें ?

राजस्थान-सरकार ने भी कहा कि हम पूर्ण नशाबन्दी की बात स्वीकार करते हैं। कुछ जिलों में उन्होंने नशाबन्दी की भी, और कहा कि प्राहितता प्राहितता करेंगे ! वे कहते हैं, जहाँ नशाबन्दी की है वहाँ क्या सफलता मिलती है, उसको देखकर प्रागे यदेंगे। राजस्थान के प्रायियों ने कहा कि यह हमको मान्य नहीं।

सर्वोदय-सम्मेलन : सहचिंतन के लिए प्रस्तुत कुछ मुद्दे

घातू रोड सर्वोदय-सम्मेलन को सम्पन्न हुए लगभग एक महीना पूरा हो रहा है। वहाँ की प्रखर धुप घोर गरम हवाओं की तपन ध्रुव हम भूल चुके होंगे, निवासी की खिलरी व्यवस्था घोर उत्तकी प्रभुविद्याओं, राजस्थान के साथियों की गराजवन्दी-सत्याग्रह के कारण अतिव्यग्रताओं के वायव्य स्थानीय सहकार से भी गयी तयार व्यवस्था घोर तीन हजार के लगभग प्रतिनिधियों के 'सम्मेलन' की चहल-तहल, प्रदर्सनों के इर्दगिर्द की राजस्थानी रौनक घोर हर रात के मनोरञ्जक कार्यक्रम सभी स्मृतियों ध्रुव विस्मरण के अक्षकार में समा रही होगी। ज. गायद हृदय में एक नयी उमर का संचार करनेवाले, कभी पंजा घोर उत्तमन बढ़ानेवाले, कभी सशक्त जगत् को एक नया धामार देनेवाले बहुविध भाषणों के कुछ भाव, सम्भवत कुछ वाक्य भी अभी हमारी याद में ताजे होंगे। घोर म निरंक हमारी याद में ताजे होंगे, बल्कि ह्मको काम करने में स्फुति, गति घोर दिशा भी देते होंगे।

प्रतिनिधियाँ विभिन्न होंगी, घोर उनको किसी एक प्रकार का धारार देना सम्भव नहीं है, प्रावश्यक भी नहीं है। लेकिन धरने मन की कुछ बातें साथियों के सम्मुख प्रस्तुत करना चाहता हूँ। ह्म इच्छा को बल मिला था, सम्मेलन में ६ जून की शाम को जब श्री अयप्रकाश नारायण ने धरना भाषण शुरू करते हुए कहा था कि 'मुझे तो धारा लोगों (योत्ताओं) पर दया घ्राती है।' सचमुच विम समय उन्होंने यह बात कही थी, ह्म ह्म दश के अक्षिकारी थे। सम्मेलन के समारोह-भाषण ने अग्र्यथा थी गकरताव देव ने जब 'अनकमिटेड बदरहूड' की बात कही तो अन्दर की प्रतिनिधिया घोर अक्षिक तीत्रे हुई थी, घोर धामिर-धामिर में जब सम्मेलन की रिपोर्ट सुनने के बाद वादा ने धरणी प्रतिनिधिया जाहिर की तो यह माहस हो गया कि धरने मन की बात धरण के सामने रखी घोर धामरित कहे धार साथियों की राय की, प्रतिनिधियों को भी। धामिर, हनारी

भावनाओं घोर हमारे विचारों के धादान-प्रदान का माध्यम 'भूदान-यग' को बनाना चाहिए न।

सम्मेलन में लौटने समय गाडी में एक बहल से चर्चा चल पडी। परिषद से पता चला कि वह बहुत कानपुर के सर्वोदय कार्य में काफी मदद करती हैं, घोर इत विचार से बहुत धारकित हैं। विचार का प्रभाव-क्षेत्र बढ़ाने की दृष्टि से वे अग्रने परिचितों वा एक छोटा-सा 'धुप' लेकर सम्मेलन में धावी थी।

चर्चा चल पडी घोर मन की बातें कुछ खुलकर सामने धरने लगीं तो मुझे लगा कि शायद ऐसी ही प्रतिनिधियाँ लेकर काफी लोग सम्मेलन से लौट रहे होंगे। उस बहल को निरादा थी कि सम्मेलन में धारकर कुछ सफाई नहीं हुई, बल्कि 'कनपयूशन' घोर बढ़ा। उनकी कुछ शिकायतें इम प्रकार की थी

- सर्वोदय-सम्मेलन में भी हमारे सम्मेलनों की तरह नेताओं घोर धारकितों की बीच एक कानिना रहना है, जिनके कारण अग्ररमना नहीं घ्राती।

- चर्चा कम होती है, भाषण अक्षिक होते हैं।

- प्रदर्सनी घोर प्रदर्सन पर व्यय पंजा बर्बाद किया जाता है।

- स्पष्ट, सुव्यवस्थित घोर सर्वगम्मत कार्यक्रम घोर विचार सम्मेलन द्वारा धारकितों घोर देश की जनता के सम्मुख नहीं रमा जाता।

- विविध प्रदर्सनों घोर क्षेत्रों में काम करनेवाले धारकितों की धारप्रदाारी नहीं विवमित हो पाती, परिषद घोर अग्रक तक नहीं हो पाता।

- सम्मेलन में कुछ ऐसा सामूहिक घोर 'मिम्बानिक' काम नहीं होता, विमने यह धने कि यह सम्मेलन सर्वोदय का है।

उस बहल की चर्चा में व्यक्त उद्धार हमारे-धरण के भाव की भी व्यक्त करते हों, यह जरूरी नहीं है। लेकिन कुछ सोचने की मजबूर धरव्य करती है ये बातें।

पहली वात :

नया सर्वोदय समाज-सम्मेलन का यह सिलसिला इसी रूप में चलना चाहिए ? घोर इस सम्मेलन का रूप जो 'अनकमिटेड बदरहूड' का न रहकर 'धामदान धाम्योनन' के प्रति 'कमिटेड' लोगों वा होता जा रहा है, वह क्यों ? क्या ध्रुव सर्वोदय-समाज सम्मेलन धामदान-सम्मेलन में समा गया है ?

सर्वोदय-समाज सम्मेलन के पीछे कल्पना थी कि कुछ धामरत मूल्यों, जैसे : धरिणा घोर सत्य, में निशा रखनेवालों का यह एक धारि-धारा होगा। उमी रूप में सम्मेलन वा यह सिलसिला शुरू हुआ, लेकिन धूदान शुरू हुआ तभी से यह सम्मेलन उगका एक अक्षिल भारतीय मव बन गया। सवाल यह है कि कुछ मूल्यों के प्रति निष्ठावात लोगों की निष्ठा में से उन मूल्यों को समाज के जीवन में धाकिल करनेवाली एक धारि की धारा प्रबट हुई तो क्या उन मूल्यों के प्रति निष्ठावान लोगों की निष्ठा में यह धारिधारा कही धाधक होगी ? धोर वह धारा जैसे-जैसे ध्याकित होती जायगी, धंने-धंने उस ध्याकितता वा धभाव उम धारिधारे के गमाज में दिशाई देगा वा नहीं ? धामदान धरार उन्ही मूल्यों को जन-जीवन में उतारने के लिए है, जिन मूल्यों के प्रति ह्म निष्ठावान हैं, तो फिर इमने राजनीतिक वा साम्प्रदायिक 'कमिटेड' की धुगंध क्यों धरनी धारिष्ट ? अग्रर ध्राती हो, तो उमका परिष्कार होना चाहिए।

दूसरी वात :

श्री एम० जगन्नाथन् घोर श्री मनमोहन घोधरी ने सम्मेलन में विधे गये धरने भाषण में इत धान धर जोर दिया कि हनारे सम्मेलन में धामरनी गांरों में लोगों को धामरत होना चाहिए ? धामदान में जो नया नेतृत्व विवभिन हो रहा है, उमे धरव्य ही हमारे सम्मेलन का प्रतिनिधि घोर धोगदायक यनाना धारिष्ट।

सोचने की बात है कि गांध, प्रथप्ट, विना, प्रदेय घोर देश के स्तर पर जो धामरदारी गगटन सजे होंगे, उजकी धरनी गमग्याँ होंगी, वे धरनी गमग्याधों वा हन हूँटना धारिष्टें। हें सजता है कि इम धरिधिया में वे 'मूल्यों' की निष्ठावाती धारा से कुछ

विचार विना की ओर भी दृष्ट करना चाहें या
कर लें, वंशों विमति में हमारा 'रोल क्या
होगा ?

हम मानते हैं कि हम अपने वो होनेवा
गिझक की भूमिका में रहेंगे तो क्या हमारा
ओर धारणाकी छगठनों के प्रतिनिधियों का
हमकेतन एकमात्र होगा या भारत प्रलय
होगा ? क्या स्थानीयता से मुक्त फिर भी
समस्याओं से प्रभुवर्चित वि-जन ही विचार्यक
दिना देने के लिए जरूरी नहीं होगा ? क्या
समस्या निरास मूल्य वि-जन ओर मूल्य-
निलेश समस्याका के समाधान का क्या
चलना है या हमने परिवर्तन करना है ?

ओर भारत जान की कल्पना के साथ ही
यह हमारा देश किसी रूपरे एक सीमित नहीं
रह जावा, ओर जब हम सबकी ही इसने
जोड़ना चाहते हैं तो प्रत्याग का सवाल ही
बढ़ा रह जाता है ? बरिफ इस दृष्टि से तो
शासकानी प्रतिनिधियों को शामिल करने की
यह स्वागत-योग्य है, विनोदा ने तो शासकानी
समाजों की ही सब सेवा-सय की सुनिवादी
हवाई बनाने की बात भी कही है ।

सम्भेदन के मय से कुछ सबसम्भत
(प्रतिनिधिया द्वारा) विचार कायकम ओर
वसम्भ देर ओर दुनिया की समस्याओं के
सहम में प्रस्तुत किये जावें, या मुक्त वि-जन
प्रकट किये जाय ओर जिसकी निज विचार
से प्रेरणा लेनी हो से इसकी छूट रखी जाय ?

क्या यह ठीक होगा कि अधिवेशन की
सभ्यि कुछ तन्वी हो व्याख्यान उपरम में
हों, भाग लेनेवालों की सख्या अधिक हो तो
'युप' में चर्चाएं हों, पूर मयन चले, ओर
उत्तम से जो नजदीक निकले उसे सम्भेदन के
मय से देर ओर दुनिया के सामने रखा जाय
ओर बार में इजाजत से, रेडिउ होकर उवने
भाषीयय की कीर्णण हो ।

य, मोझ ओर विद्विष्ट प्रतिपादों के
मायस्यन, निचकण ओर नेगुव मचातन से
मुक्त 'य' की रूप से 'य' की शक्ति
उत्पादने की दिशा में क्या यह एक प्रयोग
भासा का सहा है ?

बरा ली, अधिवेशन, ओर सम्भेदन
धूरान कय गुरुवार, ५ जुलाई, '६८

कारि के ऐसे कार्यक्रमों में राष्ट्रीय-संघिकों
की रंती ओर साप्टिक धम के युप
कायकम, जिनमें सब लोग शामिल हों
ओर भाग लेनेवालों में समरसता का प्रभुभव
रखे जाने चाहिए ?

कभी कभी लगता है कि सर्वोदय विचार
के खेद-बाहरी में किसी जमाने में यों के
प्रति प्रति निश की तो भारत-व्यति उद्योगी
भावा-उपेगा की सीमा तक-है । रामपुर
का सामरप यह मानने की विचार करना
है कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से मनोजल
पुत्र होता है । एक नयी उमग का सकार
होता है ।

पंचवीं बात

कायक अधिवेशनो ओर सम्भेदनो
की तरह हमारे सम्भेदनो के साथ
प्रधानी लगानी जाती है । जिसे जमाने म
मुप्य रन से लादी ओर युप यों से यानो
योगो को पुनर्जीवन देने के लिए ऐसी प्रया
दिवो का बहुत प्रयत्न था । लेकिन भाव हम
देखते हैं कि प्रभावितो में विजयी की
जगमगावट विन्मो गीता की गूज ओर लादी
तथा मय्य प्रकार की सुदूरगो ओर प्रायक
हुकमों के प्रनाश लास मुप्य ररना नहीं ।
एक मेला या रदुहा है लोग प्राते हैं पुमकर
चले पाते हैं ।

हम सपान को बनना चाहते हैं । यदी
रचना करना चाहते हैं तो यह जरूरी है कि
भाब की रचना के उत्तमनों ओर सखटों का
निरनेरण जनता की प्रायो के सामने विरिन
विषयो के माध्यम से प्रभुवर्त किया जाय ।
भार प्रगणी कर्मो है तो क्या म छोट
रुप में ही सही विचो कारि के माध्यम से
इही चीजो को प्रभुवर्त किया जाय ? प्रार
हम इतिम तागति नियमन के विचार से
सहमन नहो हैं तो क्यों उसका प्रकार हमारी
प्रगणीय हो ? हम दसगत राजनीति की
नहीं मानते हैं तो क्या हमारी प्रगणीय म
विचो पार्टी का कल्पना सहाराये ?

अने सरकारी या धर्म-सहायी सत्यामों
की मन्द का मोह हमें छोड़ना पड़े, यो न हम
देग के बलाकारा के सामने बरान विचार
रहें, जो विचार के सहयोग हो उद्द मान

दिश करें ओर उनकी उन कथा-कथियों की
प्ररणीय लगावें, जिनमें हमारे विचार की
प्रथिन्यक्ति हो । (यह एन सुभाष है, विचार
के ओर भी सोचा जा सकता है ।)

यय यह होगा है कि अपने 'युप'
के साथ प्राते है अपने ही 'युप' के साथ
पुमने फिरते हैं ओर अपने ही 'युप' के साथ
गप्य करते हुए सोट जाते हैं । क्या ऐसा नहीं
हो सकता कि अधिवेशन में गोष्ठियो का
तयोजन इस तरह से किया जाय कि हर
प्रदेग के कार्यक्रमों-कार्ययो को भारत में
विचार ओर भाव सन्धय विवक्षित करने का
भवसर मिले ?

साठवीं बात

बूँ कि इन ओर बढ़ाते तरह की ओर भी
जातो पर विचार अधिव्य में कायक सन १९६६
के होनेवाले सर्वोदय-सम्भेदन के सडम में ही
विषया ताया का प्रभो से क्या ऐसी योजना
नहीं बनायी जा सकती कि सन १९६६ से गधी
जय गतागनी के समय देग के कोने कोने से
शासकानी प्रायो के जयने द्वारा की शासक
के पदत्याग करते हुए अपने प्रदेय की सीमा
तक या सम्भेदन-मयल तक भावों और
सम्भेदन-मयल तक पहुँचकर यह सख्या कम-ये
कम १ लाख तक पहुँच जाय । भारत की
ओर से बाउ के सपना को साकार रूप देने के
इस तकल्प ओर उसकी घोषणा से बगुकर
ओर कीतकी सखी यवाजवि होगी उनके
प्रति भाउ रोड-सम्भेदन से निवर्तन में यह
सनेत है भी । मेरा ख्याल है कि यह कार्यक्रम
अधिक प्राति से इतिहास में ही साय माय
की बोदि का हो सकता है ।

माउठी बात

हवारे जो भी भावोन्नत हो मोझी गिबर
सम्भेदन उनमें कम सपदावाता की ही छही
एक प्रय दीम धारय बनायी जाय । हर रोज
की चर्चाओं ओर निपायो का सार देत के
धयवराओं ओर स्याचार एजेंसियों की संघार
करने कीम-वे-कीम भेज देने का काम बड़
टीम बरे । कर्त, एक तो भवचार हवाई ओर
न उपासीन रहने हैं, कभी इस ओर सप
करते हैं तो छही भीज उनकी पकट में प्राती
नहीं परिणाम यह होता है कि भावोन्नत

सरकारी हठ : सत्याग्रही गिष्ठा

“गांधी के देश में शरावबन्दी के लिए सत्याग्रह करना पड़े, यह दुःख की बात है।” १७ वें सर्वोदय-सम्मेलन के लिए गांधू रोड जाते समय ५ जून, '६८ को अजमेर स्टेशन पर यद्ये ही दुःख भरे हृदय से श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा, तो राजस्थान शरावबन्दी सत्याग्रह समिति के संयोजक श्री मौजुलभाई भट्ट बोले—“गांधी के देश में शराव चलती रहे और हम देखते रहें तो हमें गांधी-जन्म-पिताम्ही मनाने का कोई हक नहीं है। राजस्थान सरकार द्वारा हमारी माँग अनसुनी करने पर हमने आखिर में सत्याग्रह का रास्ता अपनाया है।” विनोबाजी का आजीवन मित्र है। उप-प्रधानमंत्री श्री सुरारजो देसाई ने लिखा है। “मैं देश में शराव पर प्रतिबन्ध लगवाने के लिए सत्याग्रह आन्दोलन करने के विचार से पूर्णतया सहमत हूँ। वास्तव में उसे एक प्रावश्यक कदम मानता हूँ।”

सर्वोदय-सम्मेलन के मंच से गुजरात के राज्यपाल श्री श्रीमन्नारायण ने कहा : “मुझे खुशी हुई कि मुझे यहाँ एक कार्यक्रम के सम्बन्ध में लोगों में जोर दिखाई दिया। जोब के बिना काम नहीं होता। देशभर में शरावबन्दी किये बिना हमारा आर्थिक विकास नहीं हो सकता।”

तेजी से आगे बढ़ रहा है बिहार, उड़ीसा, तमिलनाडु और उत्तरप्रदेश में, और 'टाइम्स आफ इण्डिया' के महामतावाद-संस्करण में खबरें छपती हैं कि 'इन प्रदेशों में सर्वोदय का काम ठप हो रहा है।’

ये कुछ बातें कार्यकर्ता साथियों की सेवा में इस दृष्टि से प्रस्तुत करने का साहस किया, कि आप लोग भी अपना चित्त इन पहलुओं पर लिखकर भेजें, ताकि 'मूदान यज्ञ' के माध्यम से अगले सम्मेलन के लिए कुछ ऐसी रूपरेखा हम तैयार कर सकें कि सम्मेलन से बापब जोड़ते समय हमारे मन में शिक्षावत के लिए एक इच्छा स्थान रिक्त न रहे, अन्तर एक नयी चेतना, स्फूर्ति, प्रेरणा और पुरस्कारों की उमग से लबालब हो। —राजचन्द्र राठी

“१९५७ के बाद जिन प्रदेशों में पूर्ण नशाबन्दी हुई वहाँ की आर्थिक स्थिति आज बेहतर है। सर्वोदय तो नशाबन्दी के बिना भा ही नहीं सकता...” डा० सुरीला नैयर जब कह रही थीं तो हम सुननेवालों के मन में आया कि सरकार नसबन्दी का जितनी जोरों से प्रचार कर रही है, नशाबन्दी को तो उससे अधिक जोरों से धरनाना चाहिए।

सर्वोदय-सम्मेलन में इस बार नशाबन्दी की सूख गुंज थी। सब निवेदन पर बोझते हुए सुश्री निर्मला देशपाण्डे ने उत्तरालम्ब में शराव की दूकानों पर महिलाओं के द्वारा की गयी 'पिकेटिंग' का बहुत ही सुन्दर अनुभव सुनाया और कहा कि वहाँ से दूकानें हटवाकर ही लोगों ने चंन सी है और सरकार को भी मजबूरन वहाँ की प्रजा की यह बात माननी ही पड़ी। इसी तरह उड़ीसा की श्रीमती मालतीदेवी चौधरी ने वड़ी तेजी से मंच पर भाते हुए आधेघण्टे की बन्दी के कहा कि उड़ीसा में नशाबन्दी के लिए जन-जन से जोरदार माँग उठी है।

राजस्थान में ६ अगस्त, '६८ से पूर्ण शरावबन्दी के लिए आतिथ्यपूर्ण अहिंसक सत्याग्रह चल रहा है। जयपुर-जोधपुर के बाद ५ जून, '६८ से अजमेर में श्री हरिभाऊ उपाध्याय के नेतृत्व में तीसरा मोर्चा खुला है। और श्रीमंगलनगर, कोटा, दो अन्य डिस्ट्रिक्टों पर सत्याग्रह आरम्भ करने की पूर्वतयारी शुरू हो गयी है। सरकार अब डिस्ट्रिक्टों की सख्या ६ से बढ़ाकर ९ करने जाती है और सत्याग्रही यही नशावत सिद्ध कर रहे हैं कि—“जस-जस सुरसा बदन बढ़ाना, तासि दुगल कपि रूप दिखावा।” सत्याग्रही अब डिस्ट्रिक्टों पर ही नहीं, बल्कि राजस्थान भर की शराव की दूकानों पर 'पिकेटिंग' का विगुल दर्जानेवाले हैं, हर नागरिक से इसके समर्थन में हस्ताक्षर कराकर सरकार के सामने हस्ताक्षरों का ढेर लगा देनेवाले हैं। और साथ ही-साथ हर घर से एक रुपया या एक किलो भनाज इस शुभ कार्य के लिए दक्षिण

में प्राप्त करनेवाले हैं। प-खायों और नगर-पाणिशालों से प्रस्ताव कराने शुरू कर दिये हैं तथा दनादन सत्याग्रहियों की भर्ती और प्रशिक्षण जारी है। सर्वोदय के ये सेनानी हनुमान की तरह जबर बुद्ध कर दिखानेवाले हैं। इन्हें जामबत ने इनकी मक्ति का प्रामाण्य करा दिया है।

श्री पुलिस चार-छ दिन की अवधि से घाती है, सत्याग्रहियों को रात को गिरफ्तार करती है और दो-तीन घण्टे बाद दूर से जाकर छोड़ देती है। इस बीच में कच्चा मात भीतर और शराव की बोमलें बाहर। लेकिन सत्याग्रही भी खूब अपनी धुन के पक्के हैं। फिर पदयात्रा करते हुए, गाना गाते हुए उसी स्थान पर पुनः आ जाते हैं।

जोधपुर में तो काली बडी सख्या में पुलिस ने मजिस्ट्रेट के साथ आकर सत्याग्रहियों की 'कोर्डेन' किया। पर पुलिस डाल-डाल तो जनता पात-पात। अब हजार-हजार नागरिक डिस्ट्रिक्ट पर आकर पहरा देने लगे हैं। उनको लगा है कि यह उनका काम है। शरावबन्दी में उनका और उनके परिवार का भला है। पुलिस के सामने समस्या है कि अब किसको किसको पकड़े। एक डिस्ट्रिक्ट पर हजार-हजार लोगों की भीड़ का समारा देखने आनेवाले भी अपने दिलों में गुदगुदी अनुभव करते हैं और तुद पहरा देनेवालों में शामिल हो जाते हैं। तमाशापी तुद तमाशा बन जाते हैं। बड़े ही मजे में और हिम्मत के साथ यह सत्याग्रह-परिमाण चल रहा है। इसे स्वीकार करने के मलामा सरकार के सामने दूसरा कोई चारा नहीं है। केन्द्रीय सरकार ने पचास प्रतिशत पाठ्यपुस्तिका प्रास्तावक दिया है। पर राजस्थान-सरकार शत-प्रतिशत अनुदान की माँग पर धड़ी है, जिससे उसे हटकर गम्भीरतापूर्वक शरावबन्दी लागू करने काय की बर्मी की पूर्ति के लिए प्राय के दूसरे सापन खोजने होंगे।

ऐसा प्रतीत होता है कि विपना सर्वोदय सम्मेलन बलिया में हुआ तो दो साल के भीतर बलिया का जिलापाल हुआ और अब राजस्थान में इस बार सर्वोदय सम्मेलन हुआ तो सब सम्पूर्ण राजस्थान में नशाबन्दी होने ही जाती है। —गुदशरय

मंडोर में लोकशक्ति का अद्भुत दर्शन

भारतपुर में सत्याग्रह शुरू

जन १८ नून की जग है। लोगहर की तेज पूर व घोषी में सरदार के साराव के कारवाने के सामने निर्र २ बहनें और ५-६ सत्याग्रही भाई बैठे थे। गाँव के कुछ वाक बड़े सेत रहे थे। स्वामीय जूटे मानी स्वस्वकी 'राधेश्याम राधेश्याम' बोलते हुए पानी पिला रहे थे, कि ठीक ५ बजे दो ट्रकें पुलिस-जवानों से लदी हुईं जोधपुर की तरफ से एकाएक भासों और घाते ही घाता एवान होने लगी। पुलिस के घागमन की देगने ही हम जो भी भाई-बहन उपस्थित थे सबने वधो सहित कारवाने के सामने कतार बनाकर 'सारा का स्यागर बरू करे सरदार,

जगता की मयभीन करने का प्रयत्न किया जा रहा है। भिन्न भिन्न प्रकार के भय सतये प्रसोभन भी दे रहे हैं।

प्राथ सुचना के अनुसार २७ जून '६० से भारतपुर में भी शरावजन्दी सत्याग्रह शुरू हो गया है। इस सत्याग्रह में राजस्थान के प्रमोक्ष के अध्यक्ष सा० धर्मचिन्देश्वरी भी तत्पिन भाग ले रहे हैं।
— दुर्गाप्रसाद

“सारा का कारवाना टटा दे सरदार, जोर जोर से नारे लगाते लगे। बच्चे दुखत गाँव की गलियों में दस्ताना कत्ते बीड़े। रात की-आरत में १०-१५ मिनट में गाँव के लड़कों नर-नारी व नवयुवक कारवाने के सामने घासने हुए। बीरतो ने घाते मारा कतारें बना लीं, उनके सामे बच्चों ने कतारें बना ली और उनके सामे हम सब खड़े हो गये।

सा० १६ की राति में गाँव के मुख्य लोग ने एव 'मंडोर मंदिरा त्रिमंग-शाखा हटावो समिति' के सदस्यों ने मिलकर कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये। उन्होंने ता० २४ नून ने शरावजन्दी सत्याग्रह की सफलता एव 'भारतपुरा हटावो' निमित्त सत्याग्र व हरि-कीर्तन प्रारम्भ करने का तय किया तथा समिति ने सदस्यों ने हररोज दो १० सदस्य २४ घण्टे के लिए सत्याग्रहियों के साथ उपदिन रहे ऐसा निर्णय किया। इसके अलावा कल से धर्म मण्डल प्रारम्भ करने का भी निर्णय लिया।

महिला सम्मेलन, रतनपुर का निरवचय

रतनपुर (जोधपुर)। भारतपुरा केन्द्र पर एक महिला-सम्मेलन का आयोजन जिला शर्मोय मण्डल, जोधपुर में किया जा, जिसका सभाकर्म और संचालन शोमती भाय्यमानी देवी ने किया। प्राथ ६ से १२ और साय २, ५ तक प्रतिनिधि बहनों की बैठक पत्नी। वे ५ तक प्रतिनिधि बहनों की बैठक पत्नी। उसके बाद ५ बजे साय में सुना सविधायन हुआ, जिसमें जोधपुर जिले में सरदार की तरफ से पूर्ण न्याय-निर्णय लागू करने की माँग की गयी तथा सरदारी भाटदों की इन बुरी शरारत के विरोधक बना लगे पर कि वे भारत वीठे हैं जबकी पतिव्रता व्रत और उजवाए रखें और अग्रर सरदारी भाई नहीं मानता है तो महिला उद्यतन समिति के द्वारा गाँव की सब महिलाओं का मण्डल करके उपवास और इन का शिवसिता चारू किया जाय इसके बाद में गाँव की तरफ से उन व्यक्ति का सामूहिक वक्तव्य करने का भी निरवचय हुआ।

इस प्रकार सरदार की सन्धी ने हर कदम से सामीय समाज पूरी ताकत के साथ अपने उद्देश्य प्रति हेतु तयगित होगा जा रहा है। मंडोर की जनता का शौर्यता काफी बढ़ चुका है। पीछो ने निर्भयता दर्शायी है। इसलिये मंडोर की जनता की सगठन शक्ति की जोत प्रबल-भावी है।
२० ६-६०

— श्रीप्रसाद स्वामी

मंडल शरावजन्दी के नारों से गूँज उठा। कुछ देर बाद पुलिस व न्यायाधिकारी भी पहुँचे। शहर से श्री आरुन्धती अपने प्रेम प्रतिनिधि एव अन्य साथियों सहित सीधे पर पहुँच गये। श्री तियागराजजी करमावट व अन्य तबीयत साराव लीने हुए भी सरालन भा गये। मंडल में एक नेता भा सय गया। २ घण्टे तक शक्तिकारीयण शारी गुणगुन करने रहे। सन में ७ बजे बिना किसी कार्रवाई के बाकि लौट गये। पुलिस के ली-सवा की जवान, जो घाते थे, वे सतार सार भर खड़े रहे। जब गाँव के सरदारी भी सार भर बरदार होते गये।

सा० १८ की राती हुईं तैयत पुलिस अभी भी अँधेरी-अँधेरी कायम है। सपिनारियों का कहना है कि कारवाने की सुरक्षा के लिए इन्हें तयगत गया है। कारण कुछ भी हो, परन्तु इतनी बड़ी तयार में पुलिस की इतनी रण से यहाँ तैयत कर

२४ जन १९ : दुर्गाप्रसाद, ५ सुनार, '६०

शर्मनाक कुकुरय

जसोही शैव के लोहमेवक थी शालवृष्य जो० धानयो ने पुलिस के दमन का शौचो देया हाल बताने हुए कहा कि, "१४ नून को भारतरूढ़ में सादे तौन बन बर्य-हर न्नी और चित्तचिन्ताली धूम में शालव उपादान बेंद्रन के बादर हम सत्याग्रहियों को मँहटा की सल्या में धार० २० की० और पुलिस के बचावों ने जोधपुर के कार्यवाहक जिलाधीश श्री जे० पी० चंशानी की उपस्थिति में ७ नर को सड़क, बाँध के दुकान व कंकड़ से भरि जमोन पर मरे हुए जानवरों की भोजित चणोटा, इतना ही नहीं, बल्कि हम सत्याग्रहियों के हाथों, पैरों व शरीर के अन्य भागों पर लाटियों के हुन्दरों तथा मुक्कों से मझार किये गये। हमारे बात सारके गये हमें पारायिक दग से बार बार सड़क पर पटक पटककर साना गया और इतन में आज भी भारी पीडा है। हम तो पीडा सहने ही यहाँ जाये हैं। और यह निरवचय कर चुके हैं कि हम अपनी आखिरी ताँप तक शरावजन्दी कारवाने बनाने दूँगे।"

साम्प्रदायिक उपद्रवों की नयी चुनौती

—जयप्रकाश नारायण—

विद्येने कुछ महीना के दौरान हमारे देश में बिजनी जदवी-जदवी साम्प्रदायिक उपद्रव हो रहे हैं, मागपुर के साम्प्रदायिक उपद्रव ने इसकी मही याद दिवायी है ।

कुछ वर्ष पहले तक भारत में होनेवाले साम्प्रदायिक उपद्रव की व्याख्या पाकिस्तान में होनेवाली घटनाओं की प्रतिबिम्ब के रूप में देना की जाती थी । इस तरह की व्याख्या नबी मानने सायक नहीं थी लेकिन इस तो बोर्डे बहुत पुरानी धारणा की यह नहीं बह गफटा, क्योंकि विद्येने महीनों में पाकिस्तान में बरी भी बोर्डे ऐसा उपद्रव नहीं हुआ ।

एक भारतवासी के नाते इन घटनाओं के लिए हमें नमं धानी चाहिए और परिस्थिति की गम्भीरता भी समझनी चाहिए । इनके कारण हमारे देश का भविष्य इसकी मजिदर राष्ट्रीयता, जोरजाकि संस्थाएँ, सम्पत्ता, संरक्षित, शिक्षा, प्रगति और मुगण, सारे लिए गलता पैदा हो गया है ।

जय हानी गरी चीजों पर पाना है, तब यह पाठको की बात होगी कि मनी तर्के के मयभार लोप, और ऐसे लोग बरी ताराह मे हैं—उन मीके पर बेकार, ममान-गीर बने रई और सरकार बनवान और बेमपर गाडिन हो । उपद्रव की साक को भइरों की प्रेरणा देनेवाले और उने मान-मानेवाले बाटे जो भी लोग हैं, वे वागन में देगडोरी हैं और उनके साथ जनता की सरकार को ऐसा ही व्यवहार भी करना चाहिए ।

साम्प्रदायिक उपद्रव मामूली-नी घटनाओं के चलते प्रारम्भ होते हैं और जंगल की घास की तरह फैल जाते हैं । उन पर बाध देने के लिए सरकार के हस्तक्षेप की जरूरत पडती है । इस तथ्य से इन बात का मनेर मिता है कि कुछ मजिनी धारणा एडर और हिंसा के बीज बोने में सफल हैं ।

अरुणीय मजिनी प्राय, रई की शोट में काम करनी हैं, लेकिन वे गुनेप्राय भी बायंरत रहनी हैं । अगर सरवार मयमुच मभीरता से काम करने का इरादा रखनी है तो उने धननी मुनकर व्यवस्था की और मजदूर, और तेज बनाना होगा ताकि दिखरर काम करनेवाले संगठनों का पना मगाकर उने नरु करने की शक्ति हासिल हो सके । और जहाँ तक मनेप्राय काम करने की बात है, मरकाम को मनें काम करने के मजदूर इगरे की जरूरत है । मियाल के लिए भारतीय भागामों में ऐसी कुनके और पन-प्रियायें काम नहीं हैं, जो बिना छाड या दिवाड के धरना उरर मना रहनी हैं । ऐसे प्रकामनों को उमरकरी के साथ दमाने में प्रेग की मयनता का कोर्टे प्रयन मानने नहीं पाना ।

इस प्रसंग मे मैं उन धापोनों के व्यवहार की बरी विदा करना मानता है जो ऐसे उपद्रवों के कारणों और उनको बाध में करने के मरीहो की जीव करने के लिए बंडाजे गये हैं ।

जहाँ इन बात की मयन जरूरत थी कि ऐसे धापोनों के पंजने उगी मानने धाने, ताकि उनकी जीव मे इस मयनकार बीमारी को पंजने मे उरर रोता जा सकया, इन धापोनों के ध्यानमल जोरक उदासी-उदास मान्य विनारे की कोणिल की ।

मुनकर मियाय को नये विरे मे मयिन दमाने के साथ-साथ कामकी व्यवस्था की संरचना को भी सुनाले की मान जरूरत है ।

जो चीज प्राय धारवाड मय में पडित होमी है, उने का के म्गु विविध व्यवस्थायक बन मय दिया जा सकता है, धाने लड मही उगाड मने उरने । इन उरने के प्रमय में जोर देकर मैं बताना चाहता हूँ कि जहाँ तक मीमदी-मयकरी का लेन है, उरने म्गि लरु की ठररगरी की विचार नदी बनने देना

चाहिए । कानून और व्यवस्था का कामकाज चलानेवालों को ऐसे बंग का प्रतिपाद्य देना होगा कि जन्में रवस्य राष्ट्रीयता, निष्पत्ता और सम्पूर्णता धाये ।

श्री चौहान ने पाठ्यपुस्तकों की जीव के बारे में हाल मे जो बक्तव्य दिया है, मैं उसका स्वागत करता हूँ । लेकिन मैं यह भी खबत करना चाहता हूँ कि राष्ट्रीय एकीकरण (इटीफिकेशन) के विभिन्न पहलुओं पर विद्येने कुछ वर्षों में कई मुणोय समितियों ने धानी रिपोर्टें संवार की हैं, जिनमें प्रोके धन्य मुनाव भी हैं । धब यह समय धा गया है कि मुहनी तथा राज्यसरकारों का उन पर ध्यान जान ।

मेरे बहूने का यह धगर नहीं होना चाहिए कि साम्प्रदायिक रंगों की समया विरं सरवार द्वारा हल हो सक्ती है । इसका प्रथिम उत्तरदायित्व राजनीतिक बलों, सामा-जिक बायंबनियों, निधलयों, विद्यापियों, धमभदार नागरिकों, धमाधार पको पर है ।

मय धायय में मिलाकुलकर और हर मयन उपाय से एक राष्ट्रधारी धैसिक और बायंब-बारी बायंबम चलवाये, मियाय न मिरं म्गु और मुनसमता में, देग की मानी जमानों के बीच मयुर सम्कथ स्थापित हो यो । और धब धब में मैं शीतमय में हूँ म्गुय एरता म्गुय के बारे में बहूँ । यदि वेटीधारी प्रादेसिक सरकारों के मनी मुगण सोा उरर मयिदि मे गदर है, इधमिग मान-पीड की उरर तनका और विपारित मीनिनों को म्गु करने और उनको धादीरित करने पर होना चाहिए । मेरु बहूने का मयनय यह है कि धबमें मे ही मान की मरी कुछ मीरिणी है, म्गुं बररई और ताकन के साथ धमय में धाने की बरनन है ।

मगवार का धरने मयारिकों के प्रनि लरु प्राथमिक कर्तव्य है कि बहू मरकी म्गुय की म्गुयवाणी संसाधन । धब धब यह काम सरवार ने म्गुय टाउट विना उरने बरी म्गुय म्गुयता और धमया मे करने की धाडरकरता है, म्गु उरने म्गुय टाउट है ।

बड़ा भावस्थ यह है कि राजनीति के इन सौदागरों की बातों पर लोगों को भरोसा हो जाता है !!

एकता कहाँ ?

फभी कुछ दिन हुए एक गांव में राजभूतो और हरिजनों मे फीजदारी हुई। किसती ग्यावनी थी, यह सवाल दूसरा है, लेकिन फीजदारी में कई हरिजनों को गहरी चोटें घायी। उन पर लाठियों और भालो से प्रहार किया गया, और उनके कई घरों मे धाग लगा दी गयी।

जिन इलाके में यह घटना हुई उसमें तीन राजनैतिक दल हैं। तीनों समझित हैं। तीनों के दपतर हैं, कार्यकर्ता हैं। गांव का एक युवक एक दल के दपतर में गया तो पूरा हाल बताने पर जवाब मिला : 'भाई, चुनाव करीब आ रहा है, हमलोग इन ऋण्डे मे नही पडेंगे।' दूसरे दपतर मे गया तो उत्तर मिला : 'ग्यावनी जकर हुई है, लेकिन जुलम करनेवालों का जुलम देवें या उनका बोट ?' तीसरे दपतर मे गया तो जवाब मिला : "तुम लोग हमे बोट देने का वादा करो तो हम लोग तुम्हारी पूरी मदद करेंगे।"

यह कोई बहानी नही है, घटना है एक गांव की। और फभी हाल की है। उस क्षेत्र में जो दल हैं वे सविद-सरकार मे साथ रह चुके हैं। इस वक्त सब मध्यावधि चुनाव की तयारी मे जुटे हुए हैं। तीनों के नेता श्रीनगर में हाल मे हुई राष्ट्रीय एकता की कांग्रेस में भी शरीक हुए थे, और राष्ट्रीय एकता पर सबके भाषण हुए थे।

लेकिन गांव गांव है और श्रीनगर श्रीनगर। एक समुद्र की घरातल से बहुत नीचे है, और दूसरा बहुत ऊपर हिमालय की गोद मे, अत्यन्त सुन्दर और मनोहर। एष की बात दूसरे पर नही लागू होती। गांव मे राजनीति चलती है, और श्रीनगर मे राष्ट्रनीति। गांव मे राजनीति का जो धेर रहता है उसे नाश्ते में गीदड रोम चाहिए, जब कि श्रीनगर मे देवाभक्त का काम सिर्फ एक तदतरी पुलाव से चल जाना है। इस वक्त हाल यह है कि कांग्रेस कोई ऐसा गांव है जिसमे दल की दाल नही गलती तो वह दो मे से एक उपाय करता है—या तो बिचो तरह कोई नया भगडा पंदा कर देता है या पुराने भगडे मे पडकर किसी दल को मिला लेता है। गांव मे एष दल की दिसाकर उसका बोट लेने का सबसे प्रासान उपाय है कि गांव मे जो भी एकता है वह तोड़ दी जाय। जहाँ दिख होंगे वहाँ दल की कंठे चलेगी ?

गांव का प्रभुत्व यही बता रहा है कि एकता और राजनीति का सह-परिचितल असभव है। लेकिन अब इस देश में गांव की एकता का महत्व माननेवाले नेता रह बितने गये हैं ? 'नेता तो इतना जानता है कि गांव मे बोटर रहते हैं और ग्यापारी जानता है कि गांव मे प्राहक रहते हैं। प्राधिकारी जानता है कि गांव मे करदाता रहते हैं। इनमे से किसीके लिए गांव का इमते प्राधिक कोई महत्व नही है। भावस्थ है कि ये ही लोग जब ठवी जैवी जगहो मे पहुँच जाते हैं तो राष्ट्र की एकता और जनता के कल्याण की बातें बरने लगते हैं। इच्छे भी

यया फभी यह जानना बाकी है कि यह राजनीति एकता के मार्ग मे सबसे बड़ी बाधा है ? राजनीति को जनता की एकता में बंधि है या अपनी सत्ता मे ? राजनीतिक नेता अगर कहते भी हैं तो देश की भौगोलिक एकता की बात कहते हैं, देश मे रहनेवाली जनता की बात नही। हर दल यह मानता है कि एकता तभी सुरक्षित रहेगी जब सत्ता उसके हाथ मे होगी। जनता को भलग हटाकर हमारे दल राष्ट्रीय एकता की विख्या बातें करते हैं। जो राजनीति दिन-रात जनता को यही सिखा रही है कि वह जाति से भलग-भलग है, भाषा-क्षेत्र से भलग-भलग है, कर्म सह्यति से भलग भलग है, प्राकृत्याप्राप्ती और परम्पराओं से भलग-भलग है, वह राजनीति यह कैसे बहेगी कि देश के करोडो लोग एक हैं, और कहेगी भी तो उसने कहुने का प्रसर क्या होगा ? भेद और भलदाव तो राजनीति के पीवक तत्व हैं। तरह-तरह के प्राग्यायों को उभाडकर भेदो को बायम रलना उसका रोज का बायम है। ऐसी राजनीति को छोडे बिना एकता बही ? *

ग्राम-स्वराज्य की भूमिका और स्वत

['शुदान पत्र' के ५ अप्रैल, ६८ के अंक में पृष्ठ ३२२ पर ग्राम-स्वराज्य के ६ मुद्दों का उल्लेख किया गया था। श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में, गांधी विद्या स्थान द्वारा आयोजित गोष्ठी में उन्होंने ६ मुद्दों की परिष्कृत ब्याख्या 'ग्राम स्वराज्य के सत्व' के रूप में स्वीकृत हुई, जो प्रस्तुत है।—सं०]

भूमिका

भारत गाँवो का देश है। देश का विकास उसके लाखों गाँवों के विकास पर निर्भर है। इस मूल सत्य को पहचानकर ही गांधीजी ने कल्पना की थी कि स्वतंत्र भारत में गाँव देश की प्राथमिक इकाई बनेगा—हर इकाई अपने में भरी-पूरी, स्वायत्ती और स्वायत्त, पर एक दूसरे से सहकार के धागे में बँधी हुई, और सब मिलकर पूरे देश और प्रसित मानवता से अनेक शक्तों में जुड़ी हुई। लेकिन स्वतंत्रता के बाद यह नही हुआ। प्रांतीय राय मे गाँवो के विघटन का जो त्रम सुरु हुआ था, वह जारी रहा। नयी सरकार की नयी रीत-नीति में—पंचायती राज और सांभुदायिक विकास योजनाओं और भावस्थों द्वारा गाँवो के विकास की कोशिश भी गयी। लेकिन उसमें मजबूतता नही मिली और गाँव दिनोंदिन प्राधिक घसटाय होते गये, टूटते ही चले गये, यही तक कि प्राज गाँव घरों के समूह मात्र रह गये हैं। उनका कोई 'स्व' अंते है ही नही। स्वभावन: जब गाँव टूटे तो देश गिरा।

यह त्रम तभी रुनेगा जब एष एक गाँव में स्वराज्य पहुँचेगा। वह एक समपूर्ण इकाई माना जायगा, उसका 'स्व' उते शारत मिलेगा। यह अपने निर्णय और अपनी शक्ति मे अपने जीवन का नियमन और सवालन करने को स्वतंत्र होगा।

ऐसे प्राय-स्वराज्य का मार्ग है प्राय के शक्ति मे सामूल परिवर्तन—

प्राणायन और प्रतिनिधित्व में, धर्मनीति में, निष्ठा में, धरमे। जब तक ध्यान और शोषण की व्यवस्था का अंत नहीं होगा, गाँव की प्रतिभा और शक्ति को प्रकट होने का, तथा धरम और समता के नये मूल्यों के प्राचार पर हर व्यक्ति को नय जीवन का, प्रवर्धन नहीं मिलेगा।

धाम स्वराज्य की शक्ति प्रायः प्रायः से युक्त हो गयी है। प्रत्येक ग्रामको, बिलो, और नई राज्या में व्याप्त परिष्कार की प्रविष्टि बन रही है। इससे गाँव में प्राथमिक हस्तकर्म के प्रमाण दिखाई देने लग रहे हैं। प्रभो हँके ही सही, पर जितने ही क्रम धाम बनने को तैयार हो

वो धर्मोत्पन्न बहोरो को दूग जो देग के पूरे जीवन को बदलने-बनाने का दावा करे, जो बिहार को ही सर्वोपरि शक्ति माने, उसके प्रायों और दिशाओं के बारे में धरु से ही अधिक से अधिक स्पष्टता होनी चाहिए। मनुष्या की तरह शक्तिभी भी प्रकट जाती है। धाम देग को प्रतिनिधि है उसे देखते हुए यह पुनः प्रायः नहीं है कि उभरती हुई लोच वेजना सही शाले से हट जाय, और अमान के जलन में भूजनी मटाती किरे। उदात्तक भाति मे मूल्यों और विचारों की प्रविलता घातक हो जाती है।

राज्य

(१) स्वायत्त प्रायसभा :

प्रायसभा के प्राचार पर बनी हुई हर प्रायसभा शांति, न्याय, धाम समोजन, तथा सांस्कृतिक शिक्षण के क्षेत्र में प्रभो भीतर की व्यवस्था और जीवन-शक्ति के विकास के लिए धरनी सामर्थ्य तथा व्यापक द्विती मर्यादा में, स्वायत्त होगी। सर्व का निष्ठा, धरम की शक्ति, सर्व का द्वि, यह समस्त प्रेरणा मूल होगी। उसके कार्य सर्व समर्थि प्रथमा सर्वानुमति से होय। गाँव एक सुधी, शांत समाज परिवार बने, यह धरमकी वेदा होगी। भीतर प्रहारा, बाहर सरकार सम प्रचार सरकार प्रकट शक्ति के रूप में गाँव की संहार शक्ति को बढ़ावा देती।

ऐसी इच्छाएँ अधिक से अधिक स्वायत्त, किन्तु देग के हदमें में परस्परानुमती होगी। यह भाग देगा कि देग एक प्रकट बनी इच्छा है जिसके प्रति हर छोटी इच्छा उत्तरदायी है।

(२) दलमुक्त प्राय प्रतिनिधित्व :

देग की साम-व्यवस्था के प्रवर्धन विधान-सभाओं में गाँव की प्रवृत्त का प्रतिनिधित्व उनकी प्रायसभाओं के द्वारा होगा। जनता के समीपत्वार उनकी धरनी धाम समर्थो द्वारा मनोनीत होने, न कि धाम की तरह धरमनैतिक शक्त के द्वारा। चुनाव के कारण धाम-सभा धरनी एकात्मिक नहीं होने देती।

मुरारिभक्त - धरमकार, १२ अक्टूबर, '६८

(३) बुलिग अदालत-निरीक्ष व्यवस्था :

धाम सभा की सत्ता सामान्यतः नैतिक होगी। सहाय, शांति और मुन्यवस्था को दृष्टि से वह धरनी शक्ति बना समर्थि करेगी। न्याय-व्यवस्था उसकी धरनी होगी, जिसमें कायूती निर्णय से अधिक और धरणी समर्थी और समायान पर होगा। प्रवर्ध होगा कि गाँव में कोई मनीर प्रस्थापन न हो, किन्तु यदि हो गये तो देग के कायूत समूहों। तथा उनके अनुसार मर्यादा को धरनी धरम से कार्याई करत का अधिकार होगा।

(४) ग्रामामिसुध धर्मनीति :

परिचार की तरह धाम सभा गाँव के सब सदस्यों में समुचित मरुण शोषण की बिना करेगी - स्वभावतः सबसे गरीब और प्रमहाय की सबसे पहले। हर व्यक्ति का विकास हो, और उसके जीवन के हर पक्ष का विकास हो, धरम दृष्टि में धाम सभा गाँव की बुद्धि, शक्ति, समान हो तथा विरमता धरम धरनी चले। इस धरम में धाम सभा समय-समय पर प्रकट होनेवाले विचारों और विरोधों का धरमदिन की दृष्टि में साम्प्रदायिक, पर न्यायोचित हत विचारणीय।

(५) स्वतंत्र शिक्षण :

धरणीय शिक्षण गाँव के जीवन और विकास से अनुबन्धित होगा, तथा निष्ठा में निष्ठा, प्राथमिक और शिक्षणों की धरमिलित केंद्र प्रकट होगी। धरमनैतिक नैतिकता और शिक्षा धरमने धरम में निष्ठा के लिए उत्तरदायी होगी, और उन्हें नैतिक धरमिधरम में प्रयोग की पूरी दृष्ट होगी। निष्ठा पर सरकार का एकाधिकार नहीं होगा। लेकिन न्यायीय धरमिधरम की धरमिधरम में धरम और शोष की धरनी उमने बराबर रहेगी।

(६) सर्व धर्म-समभाव :

सब धर्मों की समानता सर्वमान्य होगी। धाम-सभा के द्वारा धर्म के प्राचार पर किसी प्रकार का प्रभाव नहीं होगा। हर मरुणिक को धरने विरलत और उपासना विधि के अनुसार धरमरुण की दृष्ट धरने, धरमने उमने धरमनैतिक नैतिकता लखिन न होती हो। स्वभावतः देगे यातावरण में धरमरुण के लिए कोई स्वयं नहीं होगा, धरम न वो इसरो को धरने धरम में मिलाने की कोशिश होगी। एक दुबरे के धरम के प्रति धरमर का भाव रखते हुए लोग धरमनीयन का जीवन चलायेंगे। इसी धरमर पर धरमने देग की सहायि विनिमित्त हुई है, और इसी विद्या में देग का अधिकार भी है।

सर्वोदय समाज-के निर्माण की प्रेरणा

भौतिक नहीं, नैतिक और आध्यात्मिक

—श्याबू रोड सर्वोदय-सम्मेलन में श्री शंकरराव देव का समारोप-भाषणा—

हम सब लोग जानते हैं, मानते हैं, कहते हैं और दावा भी करते हैं कि हम एक नये समाज का निर्माण करना चाहते हैं। सर्वोदय-समाज का धर्म यी यही है। नया समाज का निर्माण धातुजल किसी एक देश से नहीं हो सकता, चाहे वह महात्माओं का देश हो या सामान्यो का देश हो। आज दुनिया जिस परिस्थिति में है, उसमें नये समाज का निर्माण-क्रम धारण पीछे जैसे रेलगाड़ी के टक्के होते हैं, वैसे हो सकता है, लेकिन गाड़ी एक ही होती है, और एक ही माथ चलती है, चाहे टक्के 'एयर कण्ट्रोलिन' हो या 'बर्ड क्वाल' के हों। आज कोई यह कहेगा कि हम हमारे देश में एक नये समाज का निर्माण करना चाहते हैं, दुनिया का क्या होगा, दुनिया हमारे साथ होगी कि नहीं होगी, इसकी हमको परवाह नहीं, धातुशक्ती भी नहीं सोचने की, तो मैं नम्रता से कहूँगा कि सत्य की छोड़कर माथ मोच रहे हैं, कर रहे हैं। इसलिए दुनिया में एक नया समाज निर्माण करना है तो इन नयी दुनिया की मांग पर आप छोड़ा गौं। यह मांग गरीबों की और से आ रही है, ऐसा नहीं है, गरीबों से ज्यादा धनीरों की ओर से आ रही है एक सोचने की बात यह है कि आज तक दुनिया में गरीब चाहते थे कि एक नयी दुनिया बने। तो धनीरों भी नयी दुनिया क्यों चाहते हैं? उन्होंने कहा, 'हम थक गये हैं। विपुलता है, रोटी की कोई चिन्ता नहीं है, लेकिन फिर भी 'मैन टूड नाट लिब वाई टू ब्र प्रसीन'।

मोगलिज्म, कम्युनिज्म, कैपिटलिज्म इनके दिन खतम हुए। पेड़ की जड़ जब मूलभूत सतही हैं तो कुछ दिन तो पेड़ हटा-भटा ही दीखता है, लेकिन जब नीचे से देखते हैं तो मात्रम होता है धातु नहीं, कल यह तो मूलभूत-नाला है। क्योंकि पेड़ को औबन-रस मिलता है जड़ों से और उन जड़ों की ही औबन-रस नहीं मिल रहा है। जब पेड़ मूल पाता है तो उसके भी कुछ उपयोग होते हैं, बहुत धातुस्यक ऐसे उपयोग होते हैं। 'कम्युनिज्म' से 'कम्यु-

निज्म' तक, धातुखर इंसान की बनायी चीजें हैं। तो उसमें ऐसी कुछ चीजें तो जरूर होंगी कि जिन्हें इंसान धारण भी ले जा सकता है। लेकिन उसमें मैं इतना विदवास नहीं करता हूँ। ये पुरानी चीजें हम साथ ले जायेंगे तो नये युग में नये युग का धर्म जो है, उसका हम पासत कर सकेंगे कि नहीं कर सकेंगे, इन बारे में मेरे दिल में शक है।

माथसं ने 'इकात्मिक इन्टरप्रिडेशन फाक हिस्ट्री' से कहा कि कम्युनिज्म मानेवाला है। क्योंकि इतिहास कह रहा है। लेकिन ने नया नहीं किया इसके लिए? लेकिन क्या हुआ? मानसं के अनुसार कोई नया रास्ता नहीं निकल सका। बतलाने की जो कोशिश की उसमें वह सफल नहीं हुआ। आज भी लोग यह मानते हैं कि 'टाइट टू द डिफरेन्स 'विटवीन कैपिटलिज्म एण्ड सोशललिज्म एण्ड कम्युनिज्म' दो ठेक बतार धातु मशीन' धनीरों धनीरों और रुस में जो होश है वह कम्युनिज्म की 'थियरी-प्राइडिफिकेशन' और कैपिटलिज्म की 'थियरी-प्राइडिफिकेशन' से नहीं, टेक्नालोजी में है कि कौन धारण बढ़ता है?

आज सबसे बड़ी समस्या यह है कि मृत्यु के दुख के दौरान में मूल के प्रभानजाल का हम दानं करने के लिए संघार है कि नहीं? यह चॉलेंज है 'म्यूटेन'। यह साइस बोल रहा है। सर्वोदय समाज का निर्माण तकनीक, कार्यधर्म में सीमित नहीं है। 'समाधिग मोर दैन टेक्निक एण्ड प्रोग्राम'। विनोदाजी धानी भाषा में बोलते हैं वेतन से चेतन वा धार्य! 'देन टेक्निक विल कम, प्रोचाम विल कम धातुट धातु दि नीर, नाट धातु दि हेड'।

इसको भूलकर सर्व में विपन्न, प्रवेदा, 'डासकामंडन' वा 'इन्स्टिट्यू' हो सकता है क्या? 'मंटेरियल इन्स्टिट्यू' से कुछ उपर वा 'इन्स्टिट्यू'—इंसान में हम जाशुत बर सकें कि जिससे स्वयं को सर्व में विलीन करने की शक्ति उसमें आ जाय, वह सहज किया हो

योग। धर्मधर्म, प्राणधर्म, मनोधर्म से वह धर्म मानेवाला जो युग है वह है—विज्ञानधर्म। मनोमय तक पशु और मनुष्य में फरक नहीं है। इसलिए यह सर्वोदय समाज के लिए एक चुनौती है और सब दुनिया के लिए वह धातुधर्म हो सकता है। जब सर्वोदय समाज का निर्माण 'मंटेरियल इन्स्टिट्यू' से नहीं, 'मारल एण्ड थियरिचुपल इन्स्टिट्यू' से हो। 'थियरिचुपल मिन्स युनिवर्सल यूनिटी'। 'एण्ड मारल मिन्स ह्यू मैन कण्डक्ट वेन्ड धान दैन युनिवर्सल यूनिटी'।

१० जून '६८

विनोदाजी का कार्यक्रम

- १० जुलाई से १५ जुलाई तक बलिया
- १५ जुलाई की रात धातु बजे ट्रेन से बलिया से छपरा पहुँचना
- १७ जुलाई को प्रातः ३ बजे छपरा से रवाना
- १७ जुलाई को प्रातः ४ बजे सीवान पहुँचना
- २१ जुलाई को प्रातः ३ बजे सीवान से रवाना
- २१ जुलाई को प्रातः ४ बजे महाराजगंज पहुँचना
- २२ जुलाई को प्रातः ३ बजे महाराजगंज से रवाना
- २२ जुलाई को प्रातः ४ बजे छपरा पहुँचना
- २३ जुलाई को प्रातः ३ बजे छपरा से रवाना

पत्र श्रवणहार वा पत्र।
विनोदा निवास, बिहार सादी-धामोद्योग सय, रघुपा मार्केट, छपरा, जिला सारण (बिहार)

तमय इतिहासकारों तथा वैदिक उपयोग के डिपेंडेंट प्रोड

तरकली

आधुनिक धार्मिक उपयोग के डिपेंडेंट प्रोड

श्री प्रमण्डल आधुनिक धार्मिक

ध. ० मा. ० सादी-धामोद्योग द्वारा प्रमाणित गरीबी धामोद्योग भण्डारों में मिलता है।

किसान सरकार और बाजार, दोनों तरफ से घुटा जा रहा है। किसान प्रनाज की उपज कम कर दे तो उसे उचित दाम मिल जायगा या उसकी खूट बन्द हो जायगी ऐसी बात नहीं है। प्रनाज का सरकारी ढाँचा, और बाजार की मुनाफे की नीति कायम रही तो किसान कभी भी उनके चंगुल से नहीं निकल सकेगा।

किसान बाजार और सरकार के चंगुल से निकलना चाहता है तो प्रनाज का व्यापार व्यापारियों के हाथ से निकालना होगा, सरकार के हाथ से भी। कोई ऐसा तरीका निकालना होगा कि गाँव-गाँव और शहर-शहर में प्रनाज का गोदाम हो। गोदाम न सरकारी हो, न किसी व्यापारी का। क्यों न ग्रामदानी गाँवों की ग्रामसभाएँ अपनी गोदाम रखें? किसान अपनी प्रनाज गाँव की गोदाम में पहुँचायें। ग्रामसभा अपने कोप से प्रनाज का पैसा देगी। ग्रामसभा के पास अपनी कोप तो होगा ही। इस प्रकार किसान का काम निकल जायगा और उसे किसी बाजार में या मंडी में जाने की जरूरत नहीं रह जायगी। अगर प्रनाज गाँव से बाहर ले ही जाता है तो ग्रामसभा ले

जाय। फिर ग्रामसभा को प्रनाज बेचने की न मजबूरी होगी और न उसके साथ किसी प्रकार की पापली हो सकेगी। बड़े-बड़े शहरों में भी प्रनाज का गोदाम उत्पादकों का होगा, न कि व्यापारियों का। परन्तु यह सब तब होगा जब गाँव की सहकारी शक्ति प्रकट हो।

ग्रामदान के माध्यम से इसी शक्ति को प्रकट कराने का काम यिनोबाजी कर रहे हैं। किसी भी समस्या का समाधान जिनकी समस्या है वही खोज सकते हैं। क्या आप सोचते हैं कि गाँव-गाँव की ग्रामसभाएँ जब अपनी उपज पर नियंत्रण करने लगेंगी तो बाजार जो खूट है वह कायम रह जायगी?

हाँ, एक बात पर विशेष ध्यान देने की है। कहीं उत्पादक भी व्यापार न करने लग जाय। जब उत्पादक व्यापार करने लगेगा तो वह भी उपभोक्ता को लूटेगा। इसीलिए मैंने उत्पादकों के संघ बनाने की बात नहीं कही है, बल्कि ग्रामसभाएँ इस काम को अपने हाथ में रखें, जिन ग्रामसभाओं में उत्पादक, उपभोक्ता सब होंगे।

—सं०

चिकित्सा और स्वास्थ्य सम्बन्धी ग्रामोपयोगी पुस्तकें

नीम के उपयोग	११००	ग्रामचिकित्सा	०५२	देहातियों की तन्दुहस्ती	०७५	प्राहार सूत्रावली	०५०
मट्टा या छाछ के उपयोग	११००	घारोग्य सेवात्रलि	११००	सिद्ध मृत्युञ्जय योग	११	अनुभूत योग: तीन भाग	३००
प्राहार सूत्रावली	०५५०	टोटवा विज्ञान	०३७	प्रारम्भिक स्वास्थ्य	०३७	योग रत्नावली	३१
भोटापा कम करने के उपाय	११००	व्यायाम और शारीरिक विनास	२५०			रसायन सार	८१

घरेलू चिकित्सा में मसालों के उपयोग की १२ पुस्तकें

हल्दी	प्रदरख	धनिया	अजवायन	मेथी	राई
लहसुन	तेजपात	जीरा	सोंफ	होंग	मगरैला

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य केवल तीस तीस पैसा

मसाले सभी खाने हैं, परन्तु इनसे बहुत प्रकार के रोग भी दूर किये जा सकते हैं; यह सभी नहीं जानते। ये पुस्तकें घरेलू मसालों से रोगों के सरल इलाज के लिए गाँव गाँव और पर-पर में रखने योग्य हैं। मसालों से रोगों के इलाज, उपचार, परहेज और पथ्य आदि की जानकारी प्राप्त करके इन पुस्तकों से लाभ उठायें।

स्वस्थ जीवन के लिए नित्य सेवन योग्य श्यामसुन्दर आयुर्वेदिक चाय ०४० पैकेट

श्यामसुन्दर रसायनशाला

गाणघाट, वाराणसी-१

ग्रामदान आन्दोलन । जनता का, जनता के द्वारा, जनता के लिए

ग्रामदान में काम करनेवाले लोगों का एक शिबिर चौधुर (वाराणसी) में हो रहा था । उसमें मैं भी शामिल हुआ । दो दिन का शिबिर था । शिबिर में कुछ ऐसे लोग भी थे, जिन्हें ग्रामदान के विचार को पूरी जानकारी नहीं थी । कुछ ऐसे थे जो शिलकुल ही ग्रामदान के बारे में नहीं जानते थे । चार-छह लोग उन गाँवों से प्राये थे जिन गाँवों का ग्रामदान हो चुका था । वे लोग सादिवासी थे । प्रभु इनका रंग रूप सादिवासी का था, वेसभूषण मजदूर बा-पा था । इनमें से कोई भी पढा लिखा नहीं था । जाते का समय था, लेकिन उनके पास धोखे के नाम पर सिवाय एक सूनी चादर के दूसरा बपटा नहीं था । वे लोग शिबिर में प्राये थे और एक कोने में बैठते थे । शिबिर में जो भी चर्चा होती थी, उते ध्यान से सुनते रहे—गाँव में पढ़ने पर जिससे पहले मिलें, उतसे क्या बान रहें, किन्हीं बात कते, क्या कहे और क्या न कहे प्रादि । कुछ प्रश्न भी हुए, जिन्हा उत्तर उन लोगों ने दिया जिन्हें ग्रामदान विचार की कुछ विवेक जानकारी थी ।

कोने में बैठे लोगों में से एक मादमी राडा हुआ । लोगों का ध्यान उसकी ओर गया । न जाने वह क्या बोलिया । कुछ बोलिया भी । उसने कहा, "हम तो निपट्र भारी हैं, गंवार हैं, हम जानते हैं कि गाँवों महात्मा एक सचक बनने रंग से बना रहे थे । लेकिन वह सचक पूरी भी नहीं हुई कि वह हम दुनिया से उठा दिवे गये । वह सचक मपूरी रह गयी । प्राय विनोबा साभा वही मपूरी सचक बना रहे हैं । हमें भी इन काम में लगना चाहिए ।" सादिवासी गाँव का एक निपट्र भारी बोच रहा था, लेकिन उसके दिल से विश्वास और श्रद्धा की प्रावाज निचल रही थी ।

जब ग्रामदान प्राप्ति के लिए टोलियाँ बनने लगी तब वे भी टोलियों में गये । उन लोगों ने ग्रामदान प्राप्ति का कार्य दिया । ऐसे लोग भले ही पढ़े-लिखे नहीं होते, पर उनके बहने से भी ग्रामदान के काम पर हस्ताक्षर होता है ।

प्राज्ञ रोड के सर्वाय सभेवन में इस बात पर चर्चा हुई कि ग्रामदान के लिए कार्यकर्ता कहाँ से प्राये ? तमिलनाड के श्री जगदाश्रुती ने बताया कि जिन गाँवों का ग्रामदान हुआ है, उन गाँवों के लोगों से कहा जाय कि वे दूसरे गाँवों का ग्रामदान कराने के लिए अपना समय दे । उन्होंने इस तरह का प्रयास किया था । उन्हें इसमें सफलता भी मिली । तिरनेलवेली जिल्लादान में मदुराई जिले के ग्रामदात्री गाँवों के २०० लोग ग्रामदान के कार्य में शामिल हुए । वहाँ पर इसी ढंग से काम करने का आयोजन वह प्रागे भी करनेवाले हैं । कुछ प्राय स्थानों में भी इसी प्रकार के प्रयास होते हैं । क्या इसी तरह सब जगह प्रायोजन नहीं हो सकता है ? ग्रामदान का कार्य सिर्फ बोर्ड-से कार्यकर्ताओं का ही तो नहीं है । ग्रामदान में कोई शामिल हो सकता है, कोई भी ग्रामदान का कार्य कर सकता है । और जब ऐसा होगा तब ग्रामदान प्राप्ति के लिए कार्यकर्ता की कमी नहीं रहेगी । फिर तो जितना ही ग्रामदात्री गाँवों की संख्या यही जायगी, ग्रामदान के काम करनेवाले कार्य-कर्ताओं की संख्या बढ़नी जायगी । प्राय ग्रामदान का प्रायोजन तब बनेगा जब ग्रामदात्री गाँवों के लोग इस आन्दोलन में भाग ले । ग्रामना काम करते हुए वे ग्रामदान के कामों के लिए समय निकालें ।

जब इतना हो जायगा तब यह बहने की मजदूरा नहीं रह जायगी कि इतना धीरे धीरे बचकर कैसे रहोगे ? धीरे धीरे उतने ही समय तक होगा, जितने समय तक कार्यकर्ता हो इस कामों की जरूरत रहेगी ।

ग्रामदान से जनता की शक्ति प्रकट नहीं हुई, जनता का पुरस्कार नहीं जगा, परंपर ने सहकार की भावना नहीं बनी, मईचारा नहीं प्राया, अपने प्रायरी सम्भालने की चेन्ना नहीं प्रायी तो उस ग्रामदान का काम क्या ? दूसरा हमारी मसाई सोचे, हमारा भला करे—बदलक ? •

मंदारपुर के बावूसाहब

जिसीको भरोसा नहीं था कि मंदारपुर के बावूसाहब दस्तखत करेंगे, और दस्तखत भी उस कागज पर, जिस पर लिखा हुआ है : "हम अपनी भूमि की मालिकियत अपनी ग्राम-सभा (ग्रामस्वराज्य सभा) को सौंपते हैं ।" इतना बड़ा मालिक अपनी मालिकियत गाँव की ग्रामसभा को सौंप देने को राजी हो जायगा, यह कौन सोच सकता था ? लेकिन उस दिन जब हमारे साथी ने ग्रामदान का कागज उनके सामने रखा तो ऐसा लगा जैसे वह दस्तखत करने के लिए पहले से तैयार होकर प्राये हो । हाथ में कागज लिया, ऊपर से नीचे तक निगाह दौड़ायी, जब से कलम निवाली, और यह कहते-कहते हस्ताक्षर किया : "अब मैं भी आपकी विरादरी में शरीक हो गया । नेताओं की बात हो चुकी, अब संत की होने दीजिये ।"

कानों कान खबर फैल गयी कि बावूसाहब ने हस्ताक्षर कर दिया । एक आदमी ने सुना तो बोल उठा : "क्या सचमुच ? ग्रामदानवालों ने बावूसाहब को भी फोड़ लिया ?" "जब उन्होंने मान लिया तो कौन नहीं मानेगा ?" दूसरे ने कहा । मेरे साथी ने कहा : "बावूसाहब, अब आपकी पूरी पंचायत का दान होना चाहिए ।" उत्तर मिला : "आप पंचायत की बात कर रहे हैं । आप तैयार हों, परसों से मैं आपके साथ ब्लाक की हूर पंचायत में चल्ंगा । बात सीधे जनता से करनी चाहिए ।"

बावूसाहब के अपने गाँव और अपनी पंचायत का ग्रामदान हो गया । बावूसाहब दूसरी पंचायत में जा रहे हैं । जब कार्यकर्ता ज ता था तो लोग तरह तरह की बातें कहते थे । लेकिन अब कोई क्या बहे ? कोई यह तो नहीं कह सकता कि बावूसाहब ग्रामदान को समझते नहीं, कोई क्या कहकर हस्ताक्षर करने से इनकार करे ? हवा बन रही है, बनती जा रही है । आज इस गाँव का ग्रामदान हुआ, बल दूसरे का होगा, परसों तीसरे का । पूरे ब्लाक का हो जायगा । बावूसाहब की एक ही बात है : गाँव के सर लोग आपस में भई-भाई । भेदभाव छोड़कर अपने गाँव का संगठन कीजिये । संत की बात मानिये । गाँव में स्वराज्य लाने की तैयारी कीजिये ।

सचमुच ग्रामदान का आन्दोलन गाँव के लोगों का है । अब तक ग्रामदान की बात गाँव-गाँव में पहुँचाने का काम कार्य-

कर्ता का था । लेकिन अब बावूसाहब की तरह कुछ सभ-समर्थ और प्रभाव के लोग भी सामने आने लगे हैं । नेता कुछ भी कहें और भले ही कुछ न करें, लेकिन कार्यकर्ता—हूर पार्टी के कार्यकर्ता—जो गाँव में रहते हैं, वे ग्रामदान के काम में मदद करते हैं, और अगम चर्चा में घुले दिल से स्वीकार करते हैं कि राजनीति से गाँवों का भला नहीं होगा, उलटे राजनीति गाँव की बची-खुबी शक्ति को भी समाप्त कर देगी ।

ग्रामदान के बाद कई गाँवों में नयी ग्रामसभाएं बन रही हैं, कहीं महुआ, कहीं अनाम, कहीं नवद खया ग्रामकोप में इकट्ठा हो रहा है, कहीं मुरुदमे कचहरी से उठाये जा रहे हैं । यह इसलिए हो रहा है कि खुद गाँव के कुछ लोग उत्साह दिखाने लगे हैं । जिस दिन एक-एक ग्रामदानी गाँव से दस-दस, बीस-बीस लोग पड़ोस के गाँवों में जाने लगेंगे, जैसे वे उड़ीसा और तमिलनाडु में जा रहे हैं, उस दिन ऐसा लगेगा कि सनातन में एक नया उषान आ गया है, सोयी हुई शक्ति जग गयी है । कौन इस शक्ति के सामने खड़ा होगा ? जो काम बरसों में नहीं हुआ, उसे यह नयी शक्ति घंटों और दिनों में कर डालेगी ।

ग्रामसभा की डायरी

घमना (आग्रा, मुंगेर) की ग्रामसभा की बैठक : ८ अप्रैल, १९६८

तीन सदस्यों ने अपनी हिस्सा ग्रामकोप में जमा किया :

श्री भुनेश्वर मण्डल	१०-००	दो दिन की मजदूरी
" बाबुकी रावत	१०-००	चार दिन की मजदूरी
" रामेश्वर मण्डल	२-००	दो दिन की मजदूरी
	२२-००	८ दिन की मजदूरी

अब तक ग्रामकोप में कुल जमा :

नकद	२४-४७	
महुआ	-	६ सेर
जौ	-	७ सेर
धान	-	१ सेर
कुलदूरी	-	१० छटांक
खेसारी	-	१ सेर
चना	-	१० छटांक

बलिया जिलादान की ऐतिहासिक भूमिका

बलिया उत्तर प्रदेश के पूर्वी छोर का प्राचीन जिला है, जिसने सीमा विहार के सारण घोर छाटाबाद जिने की सीमा से मिलो हुई है। गंगा नीर घाघरा नदियाँ इन जिने से होकर पश्चिम से पूरव की मोर बहती हैं। इन नदियों के कारण हर साल खेती साधा भूमि का बहुत बडा क्षेत्र बाढ में डूब जाना है। नदियों को घारा झपर-उपर सिपहले रहने के कारण नदियों के किनारे की जमीन कभी इस प्रदेश की उस प्रदेश में नीर कभी उस प्रदेश की इन प्रदेश की सीमा में मिली रहनी है। जिने की जमीन पर जनसख्या का भार बैसे ही प्रथिक है, ऊपर से बाढ घौर बटाह के चलते भूमि पर जनसख्या का भार घौर अधिक बढ जाना है। जिने की जनसख्या के लगभग ७३ प्रतिशत लोग घेठारों की समस्या का विहार हैं। जिने में इन्हें काम देने साधक ंयोग नहीं है। इन कारणों से बलिया के प्रथिवर लोग हर साल रोजगार की उतास में दूसरी जगह जाया करते हैं। घौर इसीलिए बलिया उत्तर प्रदेश का केसल बहा जाना है।

बलिया में ८८ प्रतिशत गाँव जिनादान में सम्मिलित हुए हैं। बलिया की सामाजिक आर्थिक रचना जिस रूप की है उसकी रूपान में रमा जाय तो यह बात बडा पक्कि करनेवाली है, लेकिन इनमें विमशर को कोई बाज नहीं है। राष्ट्रीय आन्दोलन के समय से ही बलिया जिने की घायनी एह परम्परा रही है। सन् १८५७ के सेनातो कुँवर विह, घौर सन् १९४२ के स्वाधीनता-संग्राम के नेता धी चित्तू पाण्डेय का नाम मुनकर मात्र की बलिया निवासियों के मन में देश प्रेम घौर रसाग की भावना का उचार उमरने लगता है। सन् १९४२ में चित्तू पाण्डेय के नेतृत्व में बलिया जिने का प्रशासन एक सहाह के तिरु जनशा से नियन्त्रण में आ गया था।

बलिया के लोग दक्षिण के उपासक रहे जाते हैं। मश बामदान द्वारा दक्षिण क्रांति करने की बाज उन्हें सहू ही घायनी घौर खीच ले गयो। जो लोग गाड घोड की राजनीति को मानतेराले हैं घौर उनमें सेो हुए हैं, उन्होंने भी बलिया में बामदान का विरोध नहीं किया, बलिक समर्थन ही दिया। इससे यह बाज जाहिर होती है कि उन्होंने मात्र की जिने की सत्ता से बामदान में दक्षिण दक्षिण की समारना देगी। उन्होंने यह समक लिया कि उनके बिना भी जिनादान होगा। इन

जिलादान के अधिधान में आगे माना (नेतृत्व लेना) बहो उपासक बुद्धिमानी का काम होगा। वे समझ गये कि उनके पिछपने पर जनता उन्हें छोडकर आये बढ जायगी।

मश तक राजनीतियों की राजनीति से छला गया सामान्य जन भयना भविष्य आमदान में पक्षिक सुरक्षित रहता है। 'परि आमदान ज्यादा सभ्दा विरलय प्रदान करता है तो हमे उसे प्राप्ति करना चाहिए'—आमदान की स्वीकृति के 'पीछे यही भावना काम करती दिखायी पडती है। लेकिन इसके साथ ही यह ध्यान में रहना है कि आमदान की स्वीकृति यू ही नहीं प्राप्त हो सगे, आमदान सम्बन्धी आरमिक विरोध घौर सहायो पर चर्चा करके सपा मनी प्रहार सम्भल-सुभाकर घौरे-घौरे विरलय प्राप्त की गयो। आरमिक विरोध मिटने घौर सहायो के समाप्त होने पर ही लोगों ने आमदान को स्वीकार करना मुक किया।

जिलादान अधिधान की सफलता के पीछे आमदान के काम में लगे बहो के कार्यकर्ताओं का भी महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है। कार्यकर्ताओं ने जिस सुनिश्चित घौर मुख्यबिषय बूह रचना के सम्बन्ध में दो वर्ष तक तुलना अधिधान का समोजन किया उसीके ततीजे से जिलादान सम्पन्न हुआ। —सहितान्त मिय

पाकेटमार ने कैसे वापस किये

२५ मार्च। राजनगर स्टेशन के टिकट घर की पिछड़ी पर बीड में मेरी जेब से दो रुपये निफस जाते हैं। मैं पाना, पीना, रोज उस मोल बलते चलते घेर सारा, मश मधुवती ८ मोल पैदल जाना होगा, एक बँक पर जरा मुलागे ने लिए आ बैटा। इनने मे पाकिटमार बन्धु मायी मायते हुए मुने दो रुपये लौटा देते हैं। उन्हें अपनी गलती पर पछाया होगा है।

याद आया सन् '६१ में वाराणसी के बरनाम मुहल्ले में घायने सान्ति विद्यालय के विद्यार्थियों सहित जाता था, तो भूवी-भटकी बहनें 'श्रीदा प्रबचन' पढीरती थीं, "सर्वोपर पान" रसो थी। कोई तिवना भी "दुर्जन" हो, उसमे कुपन कुड सजना प्रयास दिगी होती है घौर कोई तिवना भी सज्जन हो, उसमे कुड व कुड दोष भवदन होते हैं। मश इनमें से किये क्षमा, अपने लिए म्याप।

'यद्यपि ऊपर से भाव लगता है कि भारत का नैतिक स्तर बहुत नीचे गिर गया है, लेकिन उसके अन्दर प्राध्यात्मिक इष्टि मनी बापय है।'—विनोबा ने सही क्रीा हा है।

—जगदीश शरमा



वर्षा का पानी : भूमि का संरक्षण

भूमि मानव-प्रमाण का प्राण या आधार है। वर्षा से भूमि का कटाव दिनोंदिन तेजी से होता जा रहा है। इस कारण बहुत-सी भूमि खेती के योग्य नहीं रही और पैदावार घटती जा रही है। पैदावार बढ़ाने के लिए खाद, सिंचाई, बीज, जुगाई आदि साधनों की सुविधाएँ समय-समय पर उपलब्ध होनी चाहिए, परन्तु भू-सम्पत्ति का संरक्षण यदि न हुआ, तो वाक़ी सब सुविधाओं का कोई मूल्य नहीं रह जायगा।

भारत में औसत-वर्षा ३७ इंच होती है। इसमें से २२ इंच पानी बहकर समुद्र में चला जाता है। १२।७ इंच पानी फसल को मिलता है। जमीन के ऊपर और अन्दर फालतू पानी बहने से खेती का कितना नुकसान होता है, यह नीचे के प्रांकों से स्पष्ट है। ये प्रांकों मध्यप्रदेश के 'फिसानो समाचार' से लिखे गये हैं।

'समाचार ४-५' इंच वर्षा हो जाने से एक एकड़ में से २०६० मन मिट्टी बढ़ सकती है। उससे साय-साय २५० सेर नाइट्रोजन (१६५० रुपये का), ७२ सेर फास्फोरस (७२ रुपये का) और २१६२ सेर पोटेश (२१६१ रुपये का) भी बह जाता है। इस प्रकार मिट्टी को छोड़कर कुल ३६१२ रुपये का नुकसान होगा।" इस नुकसान को १८ माह के अन्दर जुगाई आदि से प्राप्त कर सकते हैं। मगर वर्षा तो हर साल जारी हो रहेगी, अतः जमीन की क्षति भी जारी रहेगी। इसलिए जमीन की रचना की ओर विशेष ध्यान देना प्रति आवश्यक है। इसने लिए नीचे लिखे उपाय हैं :

सिर्फ मेढ़ डामने से ही मिट्टी का संरक्षण नहीं होता। मेढ़ के साथ-साथ नीचे लिखे प्रमुख पानी के विकास की योजना करना भी जरूरी है—

(१) जिस बाँध के हिस्से से पानी का विकास हो, उस पर मारवेल पास लगानी चाहिए। पानी पास के ऊपर से बहेगा तो मिट्टी नहीं बटेगी। वाली मिट्टी का बाँध हो, तो पास लगाने प्रार बाँध को मिट्टी में घुसना या रेत मिलानी चाहिए, क्योंकि वाली मिट्टी का बाँध फटता है। फटा हुआ बाँध बरसात के आरम्भ में बहुत रिक करता है।

(२) जहाँ पानी का विकास हो, वहाँ पत्थर अच्छे तरह

रख दें। लम्बाई की दोनों दिशाओं में और अपने खेत की तरफ भी मारवेल पास ही लगायी जाय।

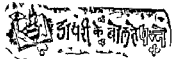
(३) ८-१० फुटी गेलेनाइज मोटा टिन मोड़कर पाइप बनायें। दोनों सिरों पर और बीच में लोहे का गोल रिंग बिठायें, जिससे टिन का पाइप काफी बजन सहन कर सके। जहाँ पानी का विकास हो, वहाँ यह पाइप लगायें। अन्दर की ओर पाइप के चारों ओर भी मारवेल पास लगायें। बाहर की ओर पानी गिरे, वहाँ १-२ गाड़ी पत्थर डालें। आजकल सिमेंट के पाइप मिलते हैं, मगर उन्हे जोड़ना पड़ता है। जहाँ पानी गिरता है वहाँ की मिट्टी अकसर बरती है, तब जोड़ा गया पाइप निकल जाता है या टूट जाता है।

(४) पानी के आचक प्रमाण और पानी धाने का रकबा देखकर बाँध छोटा बड़ा बाँधना चाहिए। पाया पूरा मजबूत हो। पानी की निकासीवाला बाँध पत्थर का पक्का हो। छोटी दीवारें हों। दोनों किनारों को बाँध से जोड़ते हुए तिरछी ढालदार दीवारों के द्वारा जोड़ दें। दीवाल की ढाल बाँध की छोटाई और मोटाई के अनुपात में होगी। वर्षा का पानी दीवाल पर से गिरकर बह जायगा। जहाँ पानी गिरे, वहाँ दीवाल पर से लगाकर दो-तीन पक्की सीढ़ियाँ बना देनी चाहिए, ताकि गिरनेवाला पानी खोदकर मिट्टी बहा न ले जाय। इस प्रकार के बाँध हजारों एकड़ तक बहते पानी का दबाव सहन कर सकते हैं।

(५) जहाँ पानी का विकास करना हो, वहाँ खेत के किनारे से २०-२५ फुट दूरी पर ४-५ फुट व्यास का पक्का कुआँ बाँधें। पानी जाने की तरफ कुएँ से १००-१५० फुट की दूरी पर समतल के बराबर कुएँ की गहराई हो। कुएँ के अन्दर का भाग भी पक्का हो। नीचे से २-३ फुट का गोल या चौरस पक्का बाँधते-बाँधते ऊपर तक जायें, सड़कों के पुलों के दोनों ओर जैसा बाँधते हैं, वैसे पक्की नाली बाँधें। वर्षा का पानी कुएँ में गिरकर नाली में होकर चला जायगा। कुआँ जमीन से हमेशा ६ इंच ऊँचा हो।

इन पाँच मसूनों में पहला-दूसरा नमूना, जहाँ जमीन सम है और थोड़ी ढाल है, एक एकड़ अन्दर के रकबे में चलेगा। तीसरा नमूना ४-५ एकर का पानी सहन कर सकता है। चौथा हजारों एकर का पानी संभाल सकता है। ऐसे बाँध मीने ४-५ बचे हैं। पाँचवाँ नमूना १०० एकड़ का पानी संभाल सकता है। चौथा और पाँचवाँ बाँध बाँधने में सैफ़ा-हुजारी रुपये का खर्च आया।

—गोविन्द रेड्डी



मेरे पति से शराब छुड़वा दीजिए

शाम सभा के बाद सियों की सभा हो रही थी। उनके साथ यहाँ (मरुतजा, मयदेश) की विशेष समस्या को लेकर ही बर्तें दुरु होती हैं। यहाँ की प्रमुख समस्या है 'शराब', और उसीसे सारा दुख का निर्माण। 'शराब पीने से गरीब होने हैं, घर में बसह होता है, लोग अपनी भूमि को खोते हैं, कोई भी ऐसे मनुष्य की इज्जत नहीं करता है हित अहित का ज्ञान खानम होता है। ऐसे मनुष्य जानबूरे से गवे बोते हो अते हैं।' ये सारी बातें विस्तार से समझा रही थी। और गौर में शराब को मिटाने की तथा भूरी को दण्ड करने की सत्याग्रही युक्ति भी समझा रही थी। खुद शराब मत पीओ, बच्चों को मत खिलाओ, घर में शराब मत बनाओ और अपनी तरह से पति को समझाओ। घर में शराब न मिलेगी तो पति भूरी में जाकर शराब पीयेगा, फिर घर आकर पाना मंगिया, तो शराबी को खाना मत खिलाओ। वह भण्डा करेगा, मारेगा, पीटेगा, तो उसको उसके बच्चे, घर बार, सब कुछ सौंपकर राम राम करके एक ही दिन में सब शराबियों के घर से बहने निकल जाओ, जगल में रहो, खाना न मंगिया लो एक दो दिन में कोई मरेगा नहीं, लेकिन लौटकर न आना। अखिर बचेली प्रादमो घर कैसे सम्भातेगा ? वह नञ्जता से शराब के पान जायें और क्षमा माँगकर, शराब न पीने का शपथ लेकर बुलाकर लायेंगे। इतना साहस करोगी तो वे शराब छोड़ेंगे और भूरी से अपने प्राण ही हट जायगी।

सत्याग्रह का यह तरीका उनको बसंत प्राण। प्रव उन पर साहम से कदम रखने की बात है। ये सब बतें उन्हें चालित से सुन रही थी। सभा समाप्त के बाद एक वहन सामने प्रायो और कहने लगी कि "श्राप समझा रही थी और मैं अपनी दुख ली कहानी स्मरण करके रो रही थी। शराब के कारण मेरे घर में तिनना दुख का निर्माण हुआ। मेरे पति से समझाकर अगर प्राण शराब छुड़वा देगी तो मेरा दुख हलण होगा।" सबकुच तिर्यों को शराब के कारण तिनती पादनाई भूगवती पडती हैं।

बसे ही शामरानी गत्रि के लोगो के साथ शामदान के बाध ग्राम-न्वराज्य स्थापना की चर्चा हो रही थी, चर्चा में एक भाई ने कहा कि— " २० लोगो का मन एक होगा तब तो काम प्रये बडेगा। कुछ लोग शराब पीते हैं और वे दूमेरे दम से सोचते हैं, तो कैसे काम किया जाय ? " चर्चा चलती, लोगों से पूछा गया— "शराब पीने से दुख बढ़ता है, गरीबी बढ़ती है, मान सम्म न खोते हैं। यह सब जानते हुए भी क्यों शराब पीते हैं ? " जवाब मिला— "बुद्धि ने तो ये बाने समझ ली हैं, लेकिन दिल ने बात को पकडा नही, इसलिए छेड नही पा रहे हैं। " अखिर शाम स्वराज्य स्थापना के पहले कदम के तौर पर लोगों ने शराब छोडने का सामूहिक सहज किया।

यहाँ की प्रतपड़ बहने के दिल में भी आध्यात्मिक बुजिशाद है। एक दिन एक बूढिया आथी और हमारा विचार सुनकर गववाओ को समझा रही थी— "मानव का एक ही धर्म है, वह है सब पर प्रेम करना, समय पर मदद करना। कोई ५० रुपये कीमती कपडा पहनने से ही भगवन् के पास जा नही सक्ता, पुण्य कर्म के द्वारा, प्रेम के द्वारा ही भगवन् को पा सकता है। " और ऐसे भी लोग मिले हैं, जो शिक्षित हैं, वे धार्मिक ग्रन्थ का व्यापार लेकर कहते हैं, "शराब खाना र बेचना भी स्वधर्म है, क्योंकि यहाँ के निवासियों के लिए शराब जरूरी है। इसलिए हम शराब का व्यापार करते हैं। हम शराब का व्यापार जितना हो सके उतना निर्मल करते हैं। क्या सज्जन कसाई ने मौम बेच बेचकर मोक्ष प्राप्त नहीं किया या ? "

श्राजकत अधिातर लोगों को जगल में देखा जाता है। रात को महुए के फूल खिचते हैं और सुबह के समय भरते हैं, तो पुरुष ली, बाल बच्चे, सब महुआ चुपने के काम से व्यस्त रहते हैं। महुआ से केवल शराब बना सकते हैं, यही हम जानते हैं। लकिन अब पना चला कि महुआ परीन लोगों का साथ भी है। दो तीन महीने लोग महुआ खार ही शुबारा करते हैं, तो महुआ चुनना माने एक प्रकार का पसल पाटना जैसा ही है।

— १३३



सारी दुनिया के विद्यार्थी एक हैं !

पिछले महीने फ्रांस के छात्रों ने अपने राष्ट्रपति देगाल के नेतृत्व में चलनेवाली सरकार को उलट देने का संकल्प किया। सारे फ्रांस में एक हलचल पैदा हो गयी। कुछ लोगों की निगाह में यह एक नयी सामाजिक फान्ति का उफान था। कुछ लोग इसे गृहयुद्ध मानते थे।

फ्रांस के छात्रों का प्रदर्शन शुरू शुरू में पेरिस के लात्रीनी मोहल्ले में हुआ। जल्द ही छात्रों के इस आन्दोलन को फ्रांस के मजदूरों का भी समर्थन मिल गया। छात्रों के नेतृत्व में ५ लाख से अधिक फ्रांसीसी मजदूरों और अन्य नागरिकों ने पेरिस में भारी जुलूस निकाला।

फ्रांस के युवा छात्र-नेता कोहन वेंदि की आयु २३ वर्ष की है। वेंदि समाजवाद के छात्र हैं। इनके पिता जर्मन यहूदी थे। वेंदि फ्रांसीसी और जर्मन दोनों भाषण अच्छी तरह बोल लेते हैं। कोहन वेंदि ने फ्रांसीसी छात्रों को पुरानी शिक्षा व्यवस्था और पूंजीवादी समाज का विनाश करने के लिए विद्रोह करने की प्रेरणा दी। छात्रों ने सर्वोच्च विद्यालय पर बरका कर लिया। मजदूरों ने अनेक बड़े-बड़े कारखानों को अपने अधिकार में ले लिया। देश भर में रेलगाड़ियाँ रुक गयीं, डाक-व्यवस्था टप हो गयी, और चारों ओर उथल-पुथल का भय फैल गया।

फ्रांसीसी छात्रों ने माँग की कि उनके देश की पुरानी और दखियानूनी परीक्षा-प्रणाली जल्द-से जल्द खत्म होनी चाहिए। शिक्षा की पुरानी प्रणाली के कारण विद्यालय ऐसे बारखाने या फैक्टरी का रूप ले चुके हैं, जहाँ से निजलनेवाले छात्र जिन्दगी भर चापलूस और मशीन के पुर्जों से बनकर रह जाते हैं।

हमारे महायुद्ध के बाद दुनिया भर में प्रथिष्ठों और बूढ़ों का महत्व बढ़ा है। युवकों की शिक्षित होने, और विकस करने का प्रयत्न तो मिला है, लेकिन उनका भाग्य देश के राजनैतिक, सामाजिक और प्रायिक तंत्र के साथ बंधा हुआ है। इस तंत्र

का व्यवस्था पर समाज के प्रथिष्ठ और बूढ़े लोग पूरी तरह काबिज और हावी हैं। वे अपनी सत्ता और निर्णय करने के अधिकार को न तो बाँटना चाहते हैं, न श्रौरी को सौंपना ही चाहते हैं। चाहे अमेरिका हो या फ्रांस, ब्रिटेन हो या जर्मनी, जापान हो या युगोस्लाविया, चेकोस्लोवाकिया हो या पोलण्ड, भारत हो या अफ्रीका, एशिया हो या दक्षिणी अमेरिका, हर जगह लगभग यही हालत है। हर जगह छात्रों में परिस्थिति के विरुद्ध गहरा असन्तोष है।

अमेरिका के छात्रों में अपनी सरकार की वियतनाम सम्बन्धी नीति के खिलाफ गहरा असन्तोष है। ब्रिटेन, फ्रांस, जर्मनी, इटली, चेकोस्लोवाकिया, पोलैण्ड और युगोस्लाविया के छात्र अपने देश की केन्द्रित व्यवस्था से असंतुष्ट हैं।

सारी दुनिया के छात्र-आन्दोलनों और भारतीय छात्रों के आन्दोलन में एक बड़ा फरक यह है कि विदेशों में छात्र आन्दोलन किसी एक राजनैतिक दल या उसकी नीतियों के समर्थन में नहीं हुए। विदेशी छात्रों ने अपने देश के सामाजिक-राजनीतिक अधिग्रहण (व्यवस्था, इन्स्टीट्यूशमेंट) के विरुद्ध प्राचाज बुन्द की। मत: उनके आन्दोलनों का दुनिया पर बड़ा प्रभाव पड़ा है।

बाक्स-महासमिति के पिछले प्रधिवेशन में उपस्थित कुछ नव-जवानों ने चेतावनी दी थी कि नेता वर्ग चेला नहीं तो फ्रांस जैसी हालत भारत में भी होगी। यहाँ के विश्वविद्यालयों में हुए उपद्रवों के निम्न आंकड़े इस तरह संकेत करते हैं। सन् १९९३-९५ के बीच हमारे देश के विश्वविद्यालयों और कालेजों में कुल १,६१७ हड़तालें हुईं, त्रिनका वर्षवार विवरण इस प्रकार है:

सन्	संख्या
१९९३	११६
१९९४	२६१
१९९५	१,२३७

'गाँव की बात': काविक शब्दा: चार रुपये, एक प्रति: छटाह रुपये।

श्रीकृष्णवस भट्ट द्वारा कबे लेवा संघ के लिए इंडियन प्रेस (प्रा०) लि०, चारखानी में मुद्रित और प्रकाशित।

शुभं कामना, चेतावनी, निर्देशन सर्वोदय सम्मेलन, आठ्वं रोड १० जून '६८

स्वयं का विसर्जन ?

जो भाग्य मुझे एक दो उससे लगा कि सर्वोदय बड़ा है श्रमदान हुए है। इससे उल्लास हुआ। फिर भी लगता है कि उसमें गायी थी है लेकिन उसमें कुछ खो गया है। कहीं कुछ घोर है। प्रगर गायी प्रकट नहीं है तो उसके लिए नीति क्या होगी ? गायी के धमने में जो अहिंसा की शक्ति प्रकट हुई वह हिंसा के लिए चुनौती थी। प्रग जो बह हिंसक शक्ति है उसमें हिंसक शक्ति को बाँधने की जरूरत नहीं पड़ी है। अहिंसा चलती है गाँवित धमनी है लेकिन हिंसा वा श्रमदान डोना नहीं है। अहिंसक नीति में से शक्ति जो उसका क्या उपाय है ? मैं इस स्थिति पर पहुँचा हूँ कि जो अहिंसक हिंसाएँ हो रही हैं वे जिस सम्मना का कुछ पहले विकास हुआ उसका परिणाम हैं।

पावर श्रांती परसन विरोधी इन तीनों का भाव स्वयं से भा जाता है। हम जिस प्रवाह में भा रहे हैं वह स्वयं की दिशा में ही भा रहे हैं। यह स्वयं भाव दूसरे से टकराता है। स्वयं का उपाजन नहीं करना है स्वयं का विसर्जन करना चाहता है। स्वयं को धर्म में विश्वीन करते हैं। स्वयं के निजीनीकरण के धमने में गायी शक्ति प्रकट नहीं होती है।

सकोच होता है कहीं में कि श्रमदान और सर्वोदय में जो कुछ हुआ है सुनकर आनंद होता है लेकिन उसमें एक गप है।

कहीं ऐसा तो नहीं कि अहिंसक शक्ति का अभाव है तो सर्वोदय विचार का स्वयं का धमने में विसर्जन नहीं हो रहा हो ? कहीं ऐसा तो नहीं कि धर्म में धर्म धमने की बजाय धमने से स्वयं का निराप हो रहा हो ?

—जैनेन्द्र कुमार

खादी का संदेश

जून १९५८ के बाद '२८ तक का हिंदुस्तान धरने सारे दूरे करने में एक साल से लगा हुआ हिंदुस्तान था। हाँ कि हिंदु

स्तान का विभाजन हुआ था और हिंदुस्तान के दो बड़े टुकड़े भूत से भरे थे। साथ पचास निरक्षर गया था और बंगाल में ३०५० लाख रिपब्लिकी आदर से धमने थे। फिर भी एक उदाहरण की हवा थी भागा की हवा थी। हिंदुस्तान जन्म प्राप्ति बड़ा है जहाँ तक उद्योग का सवाल है। लेकिन किन्हीं भी हिंदुस्तानी से पूछा जाय कि धमने बड़ा है कि नहीं तो ऐसे हिंदुस्तानी कम मिलेंगे जिनको सजोप होगा। हिंदुस्तान छोटा-प्रकार दूसरे मुक्त मे चने जायेंगे जो धन धान्य से भरे हैं और जहाँ सर्पति की कोई सीमा नहीं है वहाँ धर्म और अमेरिका में भी लोग धमना महँगूस बर रहे हैं कि मानव समाज का क्या होयेगाता है ? प्रगर मभी गगद यह हालत है तो इनका कोई गहरा कारण अंतर होगा और है ही।

पहलि की रचना मे एक खास चीज है कि दूरक चीज जो पग हाती है उसके साथ साथ उसके गुण भी पग होती हैं और उसका स्वभाव भी निर्माण होता है। कोणित होगी है उसमें गुण बसने की उमरा स्वभाव बसने की लेकिन प्राय तक जितनी कोणित की गयी कोई संकटगत नहीं मिली। कोई नमक का गए बदलने की कोणित करे तो वह नीचा नहीं हो सकता धीरे चीनी नमकीन नहीं हो सकती। इमान की भी एक खातिरत है उसका भी एक स्वभाव है। उस स्वभाव से उठता प्रगर स्वभाव की छोट एक तरह से दूसरी बाजू जाने की कोणित करता है तो उसको फिर बड़ी धमना पड़ता है जहाँ से धमन रास्ता धमतिधार किया था प्रगर उल्टा रास्ता धमतिधार किया था तो। हजारों सान का मानव-समुदाय का यह धनुजब रहा है।

हिंदुस्तान मे धमने जो गायी को छोड़कर धम मुक्त की सपने से बना सकता है ? हिंदुस्तान की सपना गति ? हिंदुस्तान की सपना ? कोई राजनतिक दल ? यह बाहर का जो सपने है वह तक पहुँचे हुए जदर

धोर विषमता का सपने है। जो हिंसा धम उभरने लगी है वह तो एक वादर की मोडी थी हिंसा है हिंदुस्तान के रग रग में, हिंदुस्तान के बंद बंद मे नगरी हुई हिंसा जो है, जब प्रकट स्वयं गेगी तो एक बाजू पीता के ११वें अध्याय में विवध स्वयं का धमन होगा। दूसरी बाजू प्रभुन काँपता खाटा होगा। कहीं है हिंदुस्तान प्राय ? किन्हीं का मुँही हिंदुस्तान की नगन पर है क्या और जो नहीं ताकत है जो स्थिर रख सके प्राणी प्रभुनी हिंदुस्तान की मज पर ? प्राय प्रगर हिंदुस्तान में गाँवित है उसका धम हिंदुस्तान की जनता की है। और हिंदुस्तान की जनता मे हानि सहिष्णुता नहीं होती और सास तीर से जो धर का बोम उठा रही हैं वहन उनमें प्रपनी त्याग धृति पर निर्भर सहिष्णुता नहीं होती तो गाँव हम गाँवित से बँकर इतनी चर्चा नहीं कर पाते।

विषमता से भरे हुए इस मुक्त में अहाँ इतनी वैश्वविषय है कर्णविषय है परेसानी है जहाँ लाखों धामदी किकर मे पड़े हैं कि हमार बवनों को सुली रोटी मिल खेती कि नहीं लागे की तादाय मे उन लोगों के किकर का बोम उठाना आता नही है। लेकिन उन किकर के बोम की हम किकर धर रहे हैं उनको विरवास रिताने की कोणित हम क्या कर रहे हैं ? प्राय गापीनी जिवाँ होते तो धन से बढें क्या ? दिल्ली और धमन-धमन रा-पों में जो सरकार बड़ी हुई है और धमना काम कर रही है वे काम कर सकती क्या ? और भारत में इतनी सहिष्णुता नहीं होती तो सरकार टिक सकती क्या ?

हम मानते हैं कि भारतीय धम कारण का खवाल प्रातिक नहीं है नविक है दला नियत का सवाल है। कहीं तक यह प्रातिक भाजी चलती रहेगी ? कहीं तक यह खोवली पचनार्थक योजना की बात चलती रहेगी— प्रगर इसमें हानिविषय की भावना नहीं भरी रहेगी ? प्राची बात है भासरा गवस हो गया प्राची बात है क्या कारणने हाँ गये प्राची बात है हिंदुस्तान में दलने करोड़ बने पड़े हैं प्राची बात है इतने राते बप रहे गये लेकिन धुमियादी बात की छोड़कर हम प्रागे जायेंगे तो धम जिस भूत का—

राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति

प्रधान केन्द्र

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति

१ राजघाट कोलोनो, नयी दिल्ली-१

दुर्गलिया भवन, कुन्दीगरो की भेरोँ

फोन : २७६१०५

जयपुर-३ (राजस्थान)

फोन : ७२६८३

अध्यक्ष : श्री डा० जाकिर हुसैन, राष्ट्रपति

अध्यक्ष : श्री मनमोहन चौधरी

उपअध्यक्ष : श्री बी० बी० गिरी, उपराष्ट्रपति

संजी : श्री पूर्णचन्द्र जैन

अध्यक्ष : कार्यकारिणी :

श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधानमंत्री

संजी : श्री भार० आर० दिबाकर

गांधीजी के जन्म के १०० वर्ष २ अक्टूबर, १९६६ को पूरे होंगे।

आइये, आप और हम इस शुभ दिन के पूर्व—

(१) देश के गाँव-गाँव और घर-घर में गांधीजी का संदेश पहुँचायें।

(२) लोगों को समझायें कि गांधीजी क्या चाहते थे ?

(३) व्यापक प्रचार करें कि विनोबाजी भी भूदान-ग्रामदान द्वारा गांधीजी के काम को ही आगे बढ़ा रहे हैं।

यह सब आप-हम कैसे करेंगे ?

- यह समझने समझाने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति ने विभिन्न प्रकार के फोल्डर, पोस्टर, पुस्तक-पुस्तिकादि सामग्री प्रकाशित की है। इसे आप पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ने को दें।
- इस सब सामग्री और विशेष जानकारी के लिए उपसमिति के ऊपर दिये गये जयपुर कार्यालय से पत्र-व्यवहार करें।

→ दुष्परिणाम मात्र भुगत रहा है, भारत को भी भुगतना पड़ेगा। हमारी दृष्टि से खंडनात्मक शक्तियाँ जो मात्र हिन्दुस्तान में बड़ी हैं, उनका प्रत्युत्तर रचनात्मक काम है, और रचनात्मक काम की बुनियाद खात्री है। यह सदैव हमको पहुँचाना है जनता के घर घर में।

—स० न० देबर

रचनात्मक कार्यक्रमों की महत्ता

तीन पंचवर्षीय योजनाएँ पूरी हुईं, चौथी योजना शुरू होगी। इस बीच काम काफी हुआ, लेकिन फिर भी लोगों में मनमोहक कारी है। और मैं तो योजना-आयोग के सदस्य की हैसियत से बहुत घुमा हूँ अपने देना में। मैंने यह भी देखा है कि जहाँ ज्यादा काम होता है, किसी 'कास्टीट्यूएसी' में मिनिस्टर साहब बने रहें तो काम काफी कर लेते हैं अपनी 'कास्टीट्यूएसी' में। उनके यहाँ जाएँ तो उनमें भी ज्यादा मस-तोप है। लोग कहते हैं कि इतना किया, इतना नहीं किया, तो इतना और कर दीजिये।

भाज हम बुनिया में देखते हैं, घमेरिहा भादि देशों में देखते हैं, वहाँ के लोग बिल्लाकर कह रहे हैं, कि ये जो मटनाएँ हो रही हैं, और की, हिमा की, वह 'डुंजो भाक एन्जुयेंस' है। भायिक सम्बन्धों की कृष्ण-कृपा है। लोगों के दिल में भाज एक भूल है नति-कता के लिए, और ऐसी सरकार चाहते हैं, जो कुछ सत्य है, उचित है, उसको करे।

भारत में हमने कहा कि 'बेलफेअर स्टेट' हम काम करेंगे। उसका भी भाज कुछ चला नहीं। फिर हमने कहा कि 'सोसलिज्म' हम यहाँ लाना चाहते हैं—समाजवाद, 'सोसलिस्ट हेव्युलर डिमोंसेसी।' उसका भी कोई जानू नहीं चला। लोगों में सर्वतोप है, लोगों में एक धाकाशा है कि हमारा देश जिस तरह से चलना चाहिए, उस तरह से चल नहीं रहा है। मैं जितना ही सोचता हूँ, उतना ही मर्दसूष करता हूँ कि अगर भारत को सही दिशा में जाना है तो, भाज अपने ही कुछ लोग समझें कि गुजानी, बातें पढ़ गयी हैं गांधीजी के भादसों की और सर्वोप की, लेकिन, बिना तो सही है, और उसी तरह जाना होगा।

विनोबाजी अगच्छ कहते हैं, कि ग्रामदान →

आन्दोलन के समाचार

पंजाब में गति

चण्डीगढ़ से प्रेषित श्री मोन्प्रकाश मित्रा से तार द्वारा सूचना मिली है कि शिमला के पास बमूमनति प्रलम्ब में 21.5 ग्रामदान, भीर कोंटरापुरा प्रलम्ब में 22 ग्रामदान प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार घब तक पंजाब में कुल 3,633 ग्रामदान हो चुके।

टीकमगढ़ जिलादान-प्रमियान

श्री काशिनाथ त्रिवेदी ने मध्य प्रदेश के ग्रामरोलन की प्रगति का बहुराज्य देते हुए हमारे प्रतिनिधि को बताया कि प्रदेश में 20 अप्रैल से पूर्व कुल 2,700 ग्रामदान थे। उसके बाद के चत्वार्य मधे ग्रामदानों में 290 ग्रामदान 1 जुलाई '61 तक प्राप्त हुए हैं। इस प्रकार घब मध्य प्रदेश में ग्रामदानियों की संख्या 3,024 हो गयी है। आर्यने बताया कि टीकमगढ़ में जिलादान का प्रमियान चलता जा रहा है। उसी क्षेत्र में विनोबा द्वारा संवाचित लोकयात्रा भी चल रही है। भीर गांधी-जन्म शताब्दी समिति के विशालय का नया सत्र भी शुरू हुआ है। इन प्रकृतियों का भी प्रत्यक्ष लाभ जिलादान प्रमियान को मिल रहा है।

बुलन्दशहर में 121 ग्रामदान

बुलन्दशहर जिले की धनूपगढ़ तहसील के डिवाई, दामपुर, प्रमूपगढ़ तथा ऊँचा गाँव विकास-खण्डों में प्रमियान गत 15 से 21 जून तक सम्पन्न हुआ, जिसमें हिमांचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान तथा उत्तर-प्रदेश के 224 कार्यकर्ताओं ने 80 टोलियों में विभक्त होकर गाँव-गाँव में ग्रामदान के नास्तिकारी विचार को धर-धर एवं व्यक्ति-व्यक्ति तक पहुँचाया। फलस्वरूप 121 गाँवों में अपने-वही ग्रामस्वराज्य स्थापित करने के उद्देश्य से ग्रामदान की घोषणा की।

देहरादून में ग्रामदान

देहरादून जिले के डौईवाला प्रलम्ब के 24 ग्रामों में अपनी ग्रामदान घोषित किया है। मई 20 से 27 तक कई ग्रामों के 74 कार्यकर्ताओं ने ग्रामदान-प्रमियान में भाग लिया।

स्मरणीय है कि जनवरी '60 में गांधी-जयन्ती के अवसर पर सहमपुर प्रलम्ब के 120 ग्रामों के ग्रामदान की घोषणा पहले ही की जा चुकी है। इस प्रकार जिले में कुल 232 ग्रामदान हो चुके हैं।—लक्ष्मीन्द्र शराश

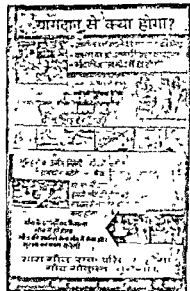
फर्रुखाबाद जिलादान की भीर

फर्रुखाबाद जिले में 6 अप्रैल से 13 अप्रैल '61 तक ग्रामदान प्रमियान चला। 126 ग्राम ग्रामदान में सम्मिलित हुए। यह प्रमियान मुहम्मदाबाद, बडपुर तथा क्वालक ब्लाकों में एरसाय चलता गया जिससे ब्लाक के 250 ग्रामानों तथा स्थानीय सर्वोद्योगी कार्यकर्ताओं एवं गांधी आश्रम के 100 प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। पूर्व उलगाह को देखकर पुनः राजेपुर ब्लाक में 2 जून से 10 जून '61 तक ग्रामदान-प्रमियान चलता गया, जिसमें 100 ग्रामानक 40 गांधी आश्रम के कार्यकर्ता तथा स्थानीय साक्षी व पड़ोसी जिले के कार्यकर्ताओं ने भाग लिया। ब्लाक के 177 गाँवों में (जिनमें से 20 गाँवराजों गाँव थे) से 120 गाँव ग्रामदान

में सम्मिलित हुए। इस प्रकार एक तहसील के पूरे ब्लाको में प्रमियान चलता गया। घब जिले के साक्षियों तथा जनता में ग्रामदान-विचार के प्रति आस्था जमता जा रही है, जिसे देखकर कनौज तथा छिब्रगामज तहसील में बारी बारी से प्रमियान चलकर जिलादान की भीर सुकानी गति से बढ़ने का प्रयत्न हो रहा है।

—सुशमा प्रसाद, श्री गांधी आश्रम

चार रंगी पोस्टर



यह चित्र 'ग्रामदान से क्या होगा?' पोस्टर का है, जिसमें ग्रामदान से गाँव में क्या-क्या होगा, इसका दर्शन कराया है। चार रंग में छाया, 20" x 30" आकार का यह पोस्टर गाँवों में, बसबों में और विभिन्न क्षेत्रों में दीवारों पर चिपकाये योग्य है।

इसका प्रकाशन गांधी जन्म शताब्दी की गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति की धोर से हुआ है।

ग्रामदानी क्षेत्रों तथा संभाव्य क्षेत्रों में प्रचार के लिए इतना सफल करें—

संघाटक, सर्व सेवा संघ-प्रचारण
राजघाट, पारास्यनी-1

—कैलाश प्रसाद शर्मा
सहस्रंकी, बिहार ग्रामदान प्रासि समिति

वार्षिक शुल्क: 10 रु०; विदेश में 20 रु०; या 28 शिलिंग, या 3 बालर। एक प्रति: 20 पैसे
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्वे सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इंडियन प्रेस (प्रा०) लि० बाराणसी में मुद्रित

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र
 वर्ष : १४ अंक : ४२
 शुभवार १६ जुलाई, '६८

अन्धरे के बीच का उजाला

देश की बहुत पुरानी सत्या जिम्की दुनिया प्रगता करती है उनका पुभता नाम ह जनपद'। जनपद म रोग अपना कदम नहीं खता था।

वे की प्राथना म यह बात कही गयी ह कि—

हमारे गाँव मे समय विश्व का दग्ग हो परिपुष्ट और रोग टव हर गाँव क्षुण्य प्रागेयमय। इतनी प्राचीन सत्या जनपद है। उनके जो कल्या होते थे प्राय भवित्ति की ओर से उत्तम और पुष्ट प्रजाय नू काम करता था। पाच जना म पशुक्षय नाव क प्राँच जन। उनके अनुकूल काम करेगा गाँव का हर बुद्धिमान मुख्य।

यह हमारा तारा प्रद'न जनपद जगती का है। देश म जनपद मजदूत था। जब बाहर मे प्राचमय दृष्टा तब देश परकीयो के हाथ में खला गया। यानी देश पराधीन हो गया। लेकिन उस समय तक भी गाँव के जनपद स्वाधीन थे। उसके पहले से पराधीन काल तक देश भी स्वाधीन थे गाँव भी स्वाधीर थे। देश नो नाममात्र का स्वाधीन था अनेक राजयो म बडा था फिर भी नाँव भारत एव था। गाँव के जनपद पून स्वाधीर थे। हिमानन्द से ब'याजुभागी तक भारत भूमि प्राणदायक कर रही थी क्षुधिया की दृष्टी ऊची कल्पना थी। लेकिन तब बडा विनात नहीं था। प्राय विनात है।

जब अग्रज अये तो उन्होंने आधोनन नियोजन अधुनी तरह से किया। इस दृष्टि मे कि गाँव गाँव मे कल्या माल निकाल सक उनका शोधय कर सकें। इनम के सकल हो गये गाँव-गाँव टूट गये। गाँव पराधीन हो गये देश भी पराधीन हो गया।

राधीन और उनक साथी इण्डोलाजीनी अम क्षुधियो की वोगिय म देश स्वाधीन हुआ लेकिन गाँव पराधीन रहे।

पराधीन गाँवो का स्वाधीन देश इसकी क्या हाजत रहेगी? इसका भना हम क्या करे है। अब और नडा बाद्धि। गाँव भी स्वाधीन देश भी स्वधीन ऐसी स्थिति नती है। गाँव म जनपद को स्थापित करना ह—

देश बनेगा विरय भारत बनेगा प्रान्त
 जिला बनेगा तहसील गाँव बनेगा परिवार
 तब हीदी दुनिया में शान्त।

एक बात याँ भी बात। उत्तर प्रेण म १ माल १० हजार गाँव ग्रामणत म प्रा थाये यह भाषा अय बोल रहे हैं। हर गाँव को ग्रामणत में शामिल करना है। एन शक्ति म काय होना है। हर गाँव म अग्रधी जन पहुँचे विनात का स्वभ्याय हो इसके बिना काय का फम हू जायगा।

जिन्नी को आवाज गाँव गाँव मे पहुँचनी तो देश काबा' हो जसह। प्राय शक्ति प्राय सडी नदरी है नो विचार के स्वप्नाय की योजना चलाती होगी।

(बतिया १० ७ ६८)

-बिनोबा

अन्य पृष्ठों पर

शामदात प्रादोपन की समयत	
—प्राचाय कृपालानी	५१५
हमने वो सिफ ग्रामणत किया था	
—मध्याधीय	५१५
दलियो में ग्राम-स्वराज्य का	
सापुहिक सकल्प	५१६
सापुहिक सदल्प की प्रावकनना	
—दिनोबा	५१६
ग्रामणत विषमता का उपाय	
—अपप्रवाय मारावण	५१७
विनात की िना नया हो ?	
—परिचर्चा	५२०
आपारिधी के लिए अनुकरणीय प्रयोग	
—सिद्धार्थ कडवा	५२१
ग्रामणत क युरोशीय सम्कारण के लोच	
—सतीश कुमार	५२३
जिनातन का उगाह	
—नीलाय प्रगा' शर्मा	५२५
उ० प्र० दान के सकार' की प' दना	५२८

सम्पादक
 राममुनि

सर्व सेवा संघ प्रकाशक
 राजपट्ट बराल्पानी-१ उकर प्रदेश
 फोन ४२८५

शाचार्य कृपालानी की उद्घोषणा

१२ जुलाई की उत्तर प्रदेश के सर्वोच्च-कार्यकर्ताओं के सम्मेलन की द्वितीय बैठक में देश के व्योमूख नेता-द्राचर्य कृपालानी ने कहा कि ग्रामदान-आन्दोलन को मेरा पूर्ण समर्थन प्राप्त है। इसीलिए हमारे गांधी आश्रम के कार्यकर्ता इस आन्दोलन में लगे हुए हैं।

अपनी चिरपरिचित लोकप्रिय विनोदपूर्ण शैली में आपने कहा कि स्वराज्य के आन्दोलन में एक ही नेता था—महात्मा। वाक्य हीम सब उसके अन्तर्गत थे। महात्मा के जाने के बाद उन कर्तव्यों ने अपने को नेता मान लिया, इसीलिए वास्तविक स्वराज्य हुआ ही नहीं। आपने कहा कि जीवन से सम्बन्धित विचारों की क्षेत्र से हम उदासीन नहीं रह सकते। राष्ट्र के जीवन का कोई भी पहलू छोड़ा जायगा तो वही से धोखा हो सकता है। इसीलिए महात्मा ने पाखाना-सफाई में लेकर अंग्रेजी सरकार को भगाने तक के मारे काम किये।

आपने एक दूसरे प्रश्न का जवाब देते हुए कहा कि भूदान-ग्रामदान कोई अनेकी चीज नहीं है। जीवन का हर क्षेत्र उसमें जुड़ा हुआ है। देश के विकास के लिए गुलामी एक जबरदस्त रकावट थी, वह हटी, लेकिन उसके बाद के मारे काम उभरे के स्रोत अभी पडे हैं। उन्हें करना है।

इस प्रश्न के उत्तर में कि आप अपने विचार के अनुसार कोई नया संगठन क्यों नहीं खड़ा करते आचार्य कृपालानी ने कहा कि विनोबा का वह जो काम कर रहा है उसे करो। मेरी उमर अब ८२ साल की है। अब नया संगठन में क्या बनाऊँ ? विनोबा जनशक्ति की बात करते हैं। वह जनशक्ति वही तो समाज बदलेगा, सरकार भी अपने आप खत्म होगी।

एक श्रोता ने जट्टा कहा कि फिर आप इस काम में क्यों नहीं लगते तो आचार्यजी ने कहा कि मेरा स्वयंसेवक राजनीति है। मैं सन् १९२६ में दाम लगा ही। इसे छोड़ नहीं सकता। लेकिन दरवाजे और रास्ते

बिन्दू होते हुए भी हमारी धीरे-धीरे विनोबा की मजिल एक है। हम मजदूर में रहेगे और आपकी भावना उदासीन।

यह पहला प्रश्नर है जब आचार्य कृपालानी ने सभा के मुख से ग्रामदान-आन्दोलन को अपना पुत्र समर्थन दिया। माथा है, इनमें न केवल उत्तर प्रदेश के काम में, बल्कि पूरे देश के ग्रामदान-आन्दोलन में अति धीरे गति धायगी।

+ + +

सवाल : स्वराज्य की लड़ाई में आपने हमारा नेतृत्व किया था, ग्रामस्वराज्य की लड़ाई में आप हमारा नेतृत्व क्यों नहीं करते ?

जवाब : गलत बात है कि मैंने नेतृत्व किया। नेता एक था—महात्मा। मैं उनका एक बन्दर था, गिपाही था। देश का बुरा हाल इसीलिए है कि जो गिपाही थे वे अपने को नेता मानते लगे।

सवाल : यह सब सुनकर तो आपको निराशा ही ऐसा लगना है ?

जवाब : निराशा बिल्कुल नहीं है। गांधी पहले खुद कुछ करता था तब चला था। मेरी कुछ करने की स्थिति नहीं है, अब, इस लिए कहूँ क्या ? गांधी की याद गवके लिए उपगम्य है। उनको पढो और करो।

सवाल : क्या ग्रामदान से देश बनेगा ?

जवाब : भाई देखो, कन जयप्रकाश ने कहा कि यह श्रमदान है। खाली एक चीज से काम नहीं होता। गांधी ने कहा कि चरखा बलाओ। चरखा एक प्रतीक था, उसके साथ बहुत सारे काम चलते थे। गांधी ने सरकार के जुलूम के विरुद्ध लड़ाई लड़ी और पाखाना सफाई का भी काम किया—जीवन का, राष्ट्र का, कोई पत्तू छोड़ नहीं। जब बीजों जखरी हैं, उसे छोड़ नहीं सकते। जिस चीज को छोड़ेगे वह अधिक भोजन दे सकती है। विरुद्ध विदेशी सरकार ही जातिम नहीं होती, स्वदेशी सरकार उभरेगी भी अतिक्रम जातिम हो सकती है। जातिम सरकार को हटाने का काम महात्मा नहीं उठाया तो चरखे भादि की बात

नहीं रही मुजगा। इसीलिए अपने पाखाना-सफाई से लेकर सरदार को निरालने तक का काम किया। अगर आप भी चाहते हैं कि देश बने तो सभी काम करने होंगे। भूदान-ग्रामदान का मतलब यही है। वह अनेकी चीज नहीं है। जब बीजों एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं। मरदाभा बहटा या जि जो चीज हमारी जिन्दगी से जुड़ी हुई है, जिनमें हमारा दखल है, उसे हम छोड़ नहीं सकते। वह आजादी इस वास्ते थी कि देश आगे बढ़े। गुलामी एक रकावट थी, विचार के रास्ते में, इसीलिए उभरे हटाया; लेकिन रकावट हट गयी तो हमने समझा कि काम खत्म हो गया। इसीलिए आज भी समझाएँ जहाँ की नहीं है।

हमारे देश-जिन्ना दोग दुनिया में कहीं नहीं है। जो शराबी है, वही शराबबन्दी के लिए हाथ-पैर करना है। बाब यह है कि स्वराज्य अभी हुआ ही नहीं। उसके लिए आपकी काम करना है।

सवाल : विनोबा, जयप्रकाश को आप यह बात क्यों नहीं समझाते ?

जवाब : मैं तो आपको समझा रहा हूँ। विनोबा को मैं क्या समझाऊँगा ? उनको तो गांधी ने पहला सत्याग्रही बनाया था। वे खुद देश की स्थिति समझते हैं और उनके लिए काम कर रहे हैं।

सवाल : देश के विकास के लिए आप कोई टोस संगठन क्यों नहीं करते ?

जवाब : यह जो प्रवाल हो रहा है विनोबा का, आपने द्वारा, वह तो ही हो रहा है। उसे करो। मेरी उमर अब बयो है नया संगठन बनाने की। धीरे, फिर दो-दो पाठियाँ बनाकर तो मैंने देना दिया।

सवाल : क्या आपका समर्थन ग्रामदान आन्दोलन की प्राप्ति है ?

जवाब : मेरा पूरा समर्थन प्राप्त है। नहीं होता तो आश्रम के कार्यकर्ताओं को उन काम में लगने क्यों देता ? विनोबा पहले हैं जनशक्ति की बात, वह जनशक्ति वही तो यह सरकार अपने आप खत्म होगी। हमारी मजिल एक है, लेकिन दरवाजे और रास्ते भिन्न हैं।

सवाल : तो आप इसमें का क्यों नहीं जाते ?

→

'हमने तो सिर्फ धामदान किया था !'

बोला व लामा वा यह बहुत सही था कि उरुमि केवल धामदान किया था। हमने हमन-मंगा कुछ करने की कहा नहीं था। धामदान और दान तो हमारी धर्म की गतिन व हमारा जिने के शक्ति तरह जानने नहीं थे। कुछ धम कुछ मय कुछ खिच कुछ धामपय जिलाल को लेकर एव मिला गुला भाव लोग व मन में पैदा हुआ। जिनम जो रहा तो बुद्ध ल समन था। हर एक कला था जहर कुछ हो रहा ह। वह कुछ बरा ह धम भी हाट नहीं है लेकिन निगाह धामे देवन लकी है। बलिधा क ही। "न वक्त नाम के बावर्ता व हम वक्त सार्थक व बावर्ता है। उस वक्त जिन की सत्ता छोटी गयी थी हम वक्त पूरा जिया ही दान में ले लिया गया। दान शान व मोर ४२ की या" म रियाय म एव धत्रीव लामा बाबा बुन दिया। इसलिए धरर जनना ने ४२ धोर दान की मिलाकर मोच लिया कि जिलाल भी कोई उमो तरह की धमानव घटनेवाली घटना है तो मनोबानिक दृष्टि में कोई धामपय की बान नहा है। धामपय की तो नहीं है लेकिन हमारी प्राँल छोलेनेवाली जहर ह। हमने साफ सफर यह है कि धम हम जनना के मानने एव धामेन के बने धामपय तथा गुणायक घटने प्रसून कला चाहिए। धामदान धोर धाम-स्वराय म वही मन्त्र घ हे जो किमो समय नमक बनाने धोर स्वराय की लवाई म था। धामदान धाम-स्वराय का नमक है। गाँव-गाँव की जनना को महसूस होना चाहिए धोर जो महसूस तब होगा जब हम उस महसूस करायें—कि धामदान करते वहाँ धाम-स्वराय की लवाई म करीक हो रही है गाँव प्रबल जिला धोर राय उस लवाई म करीक है धोर उनके दान धामेन की गतिन है।

→ जवाब मेरा स्वर्ण यह नहीं है। हमें मिल रहा है। यह कर हम पर बाँट लाना। इसे मने ही हमारी कमजोरी माननी लगी। मैं धामदान म रूँगा धोर धामपय धामदान नहीं तक पढ़नाउगा। लेकिन इन काम को पूरा नमयन प्राप्त है हमारे बावर्ता उन काम को कर रहे हैं।

सवाल विदेशी सहायता से विकास के जो काम हो रहे हैं, उनसे धारे में धामपय क्या विचार है ?

जवाब हम विचार ही मने हैं। मिया रिपो को बना मिला है ? छात । यह धामदान-मय : एकवार 18 जुलाई, '६८

लोचगतिन स। हम दृष्टि स बाप इयागना ने जिनादान-मनारोह न धमरन पर हनेवान उतर धम के रचनात्मक बावर्तामि न मन्त्रमन म बहुत बौर रहा कि रचनात्मक बाप का मुख्य उद्देश्य है गतिन का निर्माण। धरर गोर की शक्ति व गनी तो रचना क्या हुई ? यह हमारी बान ह कि उन लोचगतिन के बाप इयागना इस सरकार का उद्योग विनोदा गौर के जीवन से स्वय सरकार की उद्योग—एव धारे जिनकी सरकार ही—मानन मुनिन की मिया म काम दायम। बाप दाना म गुणात्मक धरर है। एव म तन्त्राज मुगाय की योजना है धरर म स्वरान का मुासा। एक मानना ह कि मुगाय के वा स्वराय धामवा दूराय कला ए कि स्वराय ही मुगाय है स्वराय के धम मुगाय ममर नहीं। कुछ भी हा लोचगति के जिना न एव मयना न हुआ। उनी दृष्टि म बाप ने एव प्रल का उतर दते हुए कहा मग हम धामेन का पूरा समय है तभी तो धारे सादी हमन लगे हुए है।

वर्तमान व जिलालन ने उतर प्रमन दान क प्रान को बावर्तामि व धामन प्रसून कर दिया है। धोर उहीन समय भी लिया है कि सागी रचनामो का धामा है लोचगति धोर लोचगति का धामा है धामदान। गतिन धामदान का घटी धामम है धोर धाम स्वराय के शुभात्मन ने लिए रायदान चाहिए।

२१ वनी तब इस देश म दया का स्वराय देना—एक ल्प का हमरे लक व मिला मुने दलो का। उनन देव दिया कि दलो का स्वराय कला ह। इसलिए जब दान इयागना न कहा कि धमी स्वराय मिया नहीं है जो एव एव मिन उनक माप बोल पडा। जनना का स्वराय ही तो धाम स्वराय है म्याकि एव देश में गाँव जनना क जोनन की बुनियाँ लवाई ह।

जिम गिन गाँव क मरर से यह धामान निकलेगी कि धाम स्वराय हुआ। ज पमिद छपिधार ह उस गिन जनना क स्वराय को बुनियाँ एव जपनी। यह धामदान जिनादान क्या है ? वत उस दिन को धोर लान का प्रन न है। तब बलिधा की जनना जब स बट्टेगी कि उसन कल धामदान नहीं किंश था। ०

साय हो गयी। पैना हम मिला लेकिन हमारा मियाय लाम हो गया। मेरा तो जिन तरह धामपय सरकार से विराम उठ गया था जनी तरह हम सरकार से भी उठ गया है।

सवाल फिर धाम हने धोर कथों नहीं लेते ?

जवाब मने तो कई धार छोड़ने की कोशिश की लेकिन के लोग मुझे नहीं छोड़ते। बाबा की लगीटी बाबा को नहीं छोड़नी लगी तरह।

साखिरी धाम धी मरट एडुईट धरर मारतल।

यदिवा में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना का सामूहिक संकल्प

त्रिनादान की घोषणा के लिए जिसे अरु ने अपने हुए प्रभावशाली भाषने ह्वारो प्रति-निधियों ने स्वर्णिम सुरभीमणोर शक्ति (श्री कर्ण के महा-भजन से सामर्थ्य प्राप्त की घोषणा करने हुए सम्पूर्ण सभका गीत)। सामर्थ्य का महाभजन भी बलिदान देने किया। यदिवा के प्रथम ग्रामराजी शक्ति के मार्गिक की हेतुवश में श्री जयप्रकाश नारायण ने महाभजन की घोषणा (श्री धोर सब लोगों ने उसे दुहराया। घोषणा में कहा गया —

“ग्राम पुत्र विभोवाजी के समस्त त्रिनादान समर्थों के धनधर पर यदिवा जिनके के प्रारम्भशरी गीतों के हम निरासी पर्ये इच्छा होकर सामूहिक रूप से ग्रामराज में आपसी विश्व घोषित करते हैं। ग्रामराज में स्वयं, प्रेम और कल्या की जो पुनीत भावना है वह हमें पूर्णतः माध्य है। हमारा पूरा प्रयत्न होगा कि हम अपने सामूहिक निर्देश से अपने गीत के अर्थन का शिष्टतम और संघायन करें, गीत के निहाय में अपने दुःखी, शरीर भाइयों का लक्ष्य पहले ध्यान करें, अनीति और अत्याचार से बचें, तथा बिना किसी वैश्याय के मार्गिक महाभजन समूह सब मिश्रकर गीत की एक शक्ति, युक्ति, समाज परिचय बनायें। इस प्रकार हम अपने इस जिले के गाँव-गाँव में ग्राम-स्वराज्य की स्थापना करेंगे। ग्राम-स्वराज्य हमारा अन्तर्गत अर्थिक है। हमारा विश्वास है कि प्राची-नी के बहाये हुए ग्राम स्वराज्य के मिषाय हमारी मुक्ति का दूसरा मार्ग नहीं है। इस पर मिश्रकर पदार्थक चयन की शक्ति अत्यन्त हमें दे।”

मोम की प्रतिपूजना के कारण सभा-भजन में धारोवन किया गया था, लेकिन उसमन्त्रा हुआ १० हजार का जनमूह मन्त्रा हाल में बढ़ी तप सत्ताना। महाभय विनीत और श्री जयप्रकाश नारायण खादि नेनामी के दर्शनार्थे प्राणुर जनता की धारत रखता बहुत बठिन था,

लेकिन कार्यन्वय की सुरक्षा के साथ ही सत्ताना की महाभयि 'बलिदानित जनता' ने जिन सत्ताना का परिषद दिना यह शिष्टतम हो सत्तानीय है। कार्यन्वय की सुरक्षा करने हुए थी लेकिन भाई ने कहा कि ग्रामराज में सब लेने होवेंगे कार्यन्वय है। देना है तो किन्तु भय, अज्ञान धोर इतना। इन सत्तानीय के द्वारा हमें देव की इतना धोर दीवना खादि में पुत्र करता है।

सामूहिक मन्त्र की घोषणा के बाद जिले के पुत्र प्रमुख लोटे-पदे भूमि-मात्रिकों ने आपसी भूमि का बीसवाँ भाग भूमि-हीनों की क्षम में देने की घोषणा की।

सभा की अन्तर्गत त्रिना परिषद् के सायना धोर एक प्रमुख ग्रामराजी गाँव के मार्गिक भी जवाहर मिह ने की। अपने अपने भावपूर्ण भावण में बढ़ा कि स्वयं, प्रेम और कल्या की इस क्षमि में शामिल होने से हम अपने को रोक नहीं सकते। ग्रामराज की मानवीय क्षमि का विचार ह्वारों

सामूहिक संकल्प की आवश्यकता

बहुत ध्यान हुआ, आपकी यह पुत्र पाया गुनकर। आपने एक बहुत गुनकर महत्त्व किया धोर उसी पुत्र की। उस महत्त्व की आपने अभी दुहराया। यह ऐसा नाम हुआ है, जिनसे भगवान् प्रगन हुए हैं धोर उनका मागीवीर धाय सबको प्राप्त हुआ है। भगवान् के मागीवीर से प्राप्त सब लोगों को पूर्ण प्राणु प्राप्त होगी। यह प्राणुवर्धक कार्य आपने किया है। यह कार्यन्वय जिन्दगी को बढ़ानेवाला है।

जब मनुष्य के सामने कोई श्रेय होता है, मिशन होता है, तब उसके जीवन में प्रेरणा होती है, उत्साह वा संघार होता है, धोर उसे पूर्ण प्राणु प्राप्त होती है। यहाँ

ह्वार लोगों के दिनों की महाभय रहा है। बलिवा दुखी है, शरीर है, यह मुक्ति कल्या है। ग्रामराज में मुक्ति की शक्ति हमें विचार दे रही है। हम जिने की जनता की धोर ये यह त्रिनादान विनीतानी को समर्थित करते हैं धोर धारा करते हैं कि ह्वारों पूरे ह्वारों की करणा के जल में सोवने के लिए वर्षों की तरह धारा हर मल यहाँ गपरे।

विनीतानी में ग्राम-स्वराज्य के इस माधु-रिक्त संकल्प का हृदय से स्वागत किया। (पूरा भाषण नीचे दिया है।)

बाबा के प्रवचन के साथ ही जयप्रकाश नारायण ने दो घंटे तक भाषण किया, जिसे उपस्थित जनमूह एकत्रशब्दों में गुनता रहा। (पूरा भाषण पुष्ट ५१७ पर देंगे।)

प्रदेश भर से आये हुए लगभग डेढ़ हजार स्वनामक कार्यकर्ताओं, तथा यदिवा तथा पड़ोसी धारा धोर गाजीपुर के ह्वारों प्राचीणों के सामन से सम्मेलन-स्वरूप पर दिने भर बैठल-पहल बनी रही। ग्रामराज, त्रिनादान क्या है, इसकी जिज्ञासा, मंत्रय पैदा करनेवाले प्रथम धारा इन हलके के लोगों के सामने है। इन प्रश्नों धोर रासामो का सब धान करनेवाले १० हजार पंचे विनाशित विषे गये।

विनीत

भी ऐसा अनुभव था रहा है। कर्ण भाई जैम वृद्ध पुत्र जबान हो रहे हैं। कारण भगवान् के कार्य में वे निमित्त बन गये हैं। कार्य तो भगवान् ही करता है, लेकिन कुछ निमित्त मात्र होते हैं। जो निमित्त मात्र होते हैं, उनका जीवन धय्य होता है।

धयना यह बहुत बढ़ा देता है, प्राचीन काल से यह पुत्र-भूमि कहलाया है। हम सबका विश्वास है कि यह पुत्र-भूमि है। धोर यह भावकल वा विश्वास नहीं, पुत्रने जयने से चला धारा है। एक पुराना वाक्य है—“दुर्लभभ भारते जन्म; मातुपी तप दुर्लभम्” हर एक देश के लोग अपने-अपने देश का गुणगान करते हैं धोर प्रतिभा

रखते हैं। लेकिन यह जो अभिमान है देश के लिए, यह गारी दुनिया में अद्वितीय है। इसमें प्रथम वाक्य है—भारत में जन्म पाना दुर्लभ भाग्य है, और दूसरा वाक्य है—उसमें भी मानव जन्म पाना उनसे भी ज्यादा दुर्लभ भाग्य है। मानव-जन्म पाना दुर्लभ भाग्य माना, परन्तु यह हुआ कि भारत में कीड़े मकौड़े का जन्म मिले तो भी भाग्य है, ऐसा मानते थे। अनेक सन्नों के बरत-स्पर्ध से यह प्रति पवित्र हुई है। लेकिन फिर भी भारत की परिस्थिति में हमें समझना चाहिए कि पुरानी संस्कृति में कुछ दोष भी हैं।

हमारी पूर्व संस्कृति में कारण हममें कई गुण आये हैं, जो विरासत में हमें मिले हैं। वे हमारी कमाई नहीं हैं। उनमें कुछ गुण भी हैं जो कुछ दोष भी हैं—दोष वे हैं कि हम लोगों में सरल-शक्ति क्षीण हो गयी है। इस संकल्प गृही करने हैं। जीवन घल रहा है, जो होता है सो होता है। सोच विचार करके, सरल करने जीवन पथवाया ऐसा व्यक्तित्व ध्येय में भी नहीं दीखना और सामूहिक जीवन में भी नहीं धोखला। भौतिक मार्ग के अन्त प्रचार के कारण हमें और बेवश्या मिला है। लोग कहते हैं—सब कुछ भागवान् करेगा हमारे हाथ में क्या है? एक धर्म में यह बात सही है, और दूसरे धर्म में यह बात सही है, धर्म में सही है कि सब कुछ भागवान् ही करता है। दूसरे धर्म में सलत है क्योंकि हम भी तो भागवान् के भय हैं। इसलिए हम धारणा करने पर सोच विचार करने करना चाहिए। उनके बराबर भागवान् पर ही सारा ध्यान रखना ही और सामूहिक नकप की बहुत बहलत है। लेकिन इस देश में जिसे सामूहिक नकल्प कहते हैं—एक शक्ति या संपन्न भाग्य है। ऐसी क्षमता में अपना बड़ा सफल भाग्य रख रहे हैं, यह हिन्दुस्थान के लिए धारणा धारणावाची बात है।

महं बलिमा एक दिने में ही और दूसरे दिने में यद्यपि है। मारे भारत में अष्ट मात्रता की बहुत ही है। जगत्पद्मिनी से हने पत्र मिला—उनको एक मात्रा धारणा, विषय में प्रयत्न नष्टराज्य रूप कर रहे हैं अथ

मधुली उनके धामधाम भाव रही हैं, बाग्य भी उसमें है। ऐसा स्वप्न उग स्वप्नदर्शी को हुआ। इसका धर्म समझना चाहिए कि धामधाम की बात नष्टराज्य ही अविनाश म बोध रहा है। इस तरह वे सारे भारत भर में यह हवा चल रही है।

धामदान सामाजिक और आर्थिक विपन्नता का उपाय

बाबा के धारणीबांर जिले। प्रायः सबने उनके प्रेरणादायी शब्द सुने। मैं प्रायके सामने तीन बातें धामदान के अर्थ में पेश करना चाहूँगा—उद्देश्य यह है कि भारत में साठे पांच लाख गाँवों में धामदान हो जाय, धामधामगाय हो जाय। मैं लोक विचार के अन्त, राजनीतिक विचार के अन्त गाँव के दिन को सामने रखकर धामके सामने निवेदन करूँगा।

दिष्टिसे प्रायः दुताव के बाद अपने देश में एक राजनीतिक अधिष्ठाता पैदा हुई। भारतके प्रदेश में दो पत्रि मण्डल बने और दूटे और विहार में तीन तीन बार मंत्रि मण्डल बने और दूटे। यहाँ एक धाम दुताव होनासता है। हरिमाया में धर्मो एक दुताव हुआ है। पञ्जाब की स्थिति भी धारणीय है। इस परिस्थिति में किमोको मायुष्य नहीं कि बना होगा। धाम के कानून हैं वे बनते या नहीं। ऐसी परिवर्त परिस्थितियों में यह धामदान का धामदोलन और भी महत्त्व का बन जाता है।

एक हजार मीन दूर वे नहीं धाकर प्रवेने के राय किता था। उन्होंने तोषा रि इन्की दूर से हम राय कर रहे हैं तो इन्की जड़ गहरी चाली चाहिए। उन्होंने ऐसी नीतिना परिष्कार की कि जिसे जनता कि शक्ति बन हो जाय। किमो धम को बाँध दिया जाय और उग धम के रूप न किया जाय और कुछ महँगे बाट उने लायें तो वह धम विधीन हो जाता है। जिसे धरनेरी में 'एडोनी' बहते हैं। इस देश का एडोनी हा गयी है। जिस पत्रि के कारण यह देश दुनिया में चमका था वह धमि धमने के गयी। उन्होंने ऐसा बाया-

धामने यह जो संकल्प किया उसे नमः से नमः उत्तर प्रदेश तक धाम करने ही। प्रायके इस नये सामूहिक संकल्प के लिए धामको धरवाय, और भागवान् का धारणीबांर तो धामको मिला ही है। इसलिए बाबा का भी धारणीबांर धामने प्राप्त ही।

● जयप्रवारा नारायण

नरप पैदा किता जितने राज शक्ति मन्व-शक्तिमान हो।

गांधी के बाद का भारत

हमारे सामने अब इस देश को बनाने का काम है। यह देश बनना नहीं जब तक कि प्राय और विभाग कि शिविलना दूर न हो। यह सन् '५७ में पहले भी धारणीबांर ने इस देश को बना था और बाद में भी बहला था। वे जीवित होने को एक दूसरी जान इस देश में होनी जिनसे दुनिया को भी रास्ता मिलना। वे बने नये। देश सतपण बहो है जहाँ उग सतप था। जन-शक्ति का देशभर में घमाव है।

जवाहरलालजी गाँधीजी के बाद देश के सबसे बड़े नेता थे। उनके दिन में किमोकी वे धाम जलपी धो—इस देश के धारणीजी के लिए, गाँधीजी के लिए। वे इस देश के अन्त-दर प्रशिक्षण लोगों को गयी दूटे। सन् १९४७ ई० में उन्होंने देश के सामने माधु शक्ति विरात-योजना रखी। ऐसा लगना था कि वे एक नवी कर्तव्य का धामदान कर रहे हैं। परन्तु प्रायः दूर एक के बुँटें ने युव सोचिए कि वह प्रयत्न नहीं है, जन मन्त्रोय न धरवाय में वह विघ्न रही है।

अब हजारावती ने बबलराय मेटंग बनेगी बनयो—धामोय धोके के विक्रम की योजना में जन-मन्त्रोय बने किता जाय, इसकी सोच के लिए। इस रिपोर्टे के धारवाय पर १९४९ में देश में पञ्जाबी राज कायम हुआ। तीव्र स्तर पर इसका सफल किता गया—धाम पञ्जाय, प्रमण की पञ्जाय, और किता धामि। दूसरा दुताव धारवाय रूप से करने का निरास रिता गया। उर न नो बय हुए। स नो धारो

का प्रमुख बना है ? क्या जो नित मिट गयी थी वह पंचायत-राज के द्वारा जागृत हुई है ?

सांसाहिक संकल्प का प्रभाव

यदि सामूहिक संकल्प-शक्ति होती तो जितना स्वयं स्वयं हुआ उतने गांव का चित्ता चित्त हो गया होता ? संकल्पों गति तो दली ने जामा के खेती है, कर्षी गमं हूय तो जलता शोभेगी । केवल जामन ही बार-बार चलेते तो उगमं वस्तु प्राप्ति । अष्टाचार प्रादि की वही वस्तु प्राप्त था रही है ।

उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में भयंकर गुला पका, बिटार में भी पड़ा । जितना प्रमत्ताय पायः हमने उन गांवों के लोगों को । हम प्रामत्त्यराज का पुत्राणा इतिहास पढ़ो है । प्रफाल पड़ा । गमा हुई । तात्पर्य बनाने का प्रमत्ताय हुआ । एक लाभ रुपये बज्र के रूप में नगर-मेड के लेने का नय हुआ । यह भी तय हुआ कि बज्र ३० वर्षों में चुका दिया जायगा । गांव-मन्त्रा के मन्त्रापति ने नगर-मेड से एक साख रुपये बज्र लिया । यह प्रतिष्ठा उस समय की गांव-मन्त्रा की थी । तत्प्राप्त्य बहना है कि एक-एक पैसा उस गांव ने वापस लिया । प्रय बौनगा ऐसा गांव है इस जिले का ? प्राय क्या जिले के प्रधान को भी पंचायत के प्राय मय पर कर्ज मिल सकता है ? वहाँ ऐसा संगठन है, और वहाँ ऐसा नैतिक बन है ?

भारत के इतिहासकारों ने इस बात को मानित किया कि जहाँ दुनिया को मन्त्र-साधन प्रमत्ताय हुई, भारत का प्रामत्ताय कायम रहा है । गेड को मीठी उखाड़ लेगी, पर पाँवों के तबों की घात को कोई नहीं उखाड़ सकता ।

गांव मजबूत बने

गांव की दसा २१ वर्षों के स्वराज्य के बाद विगडनी ही जा रही है । धनेक भेद है गाँवों में—पदा-भेद, जाति-भेद, धर्म-भेद, धर्म-भेद, सर्व-प्रार्थन भेद, भूमिहीन-भूमिवात भेद । गांव प्राय दुर्बल ही समा बना हुआ है । प्रोपदी का नीर-हृषण हो रहा है । गीम, सहदेव, नरुज प्रादि बडे हैं । भूमिहीन को

भूदान में मिमी हुई जमीन ने वेदगत दिया जा रहा है ।

धर्म तो यह प्रमत्ताय प्राप्ति तक ही है । अगत्या न बने रि वही हाता रि-नी में हो । मान लीजिये प्रफाल मन्त्री और उप-प्रचार मंत्री विदेश जायें । धर्म-रिवा में जाय रिमो उद्योग के लिए वा प्रत्य रिमो मन्त्रा-मन्त्रा के लिए जाय बरें और उगी समय उगें । खरन मिगे रि उनवी मन्त्रा वा पतन हो गया, तो उस समय भ्रमन की क्या हापा होगी ?

मोचनन के बारे में मैंने एक चित्ताय रिमो थी । उसे जवाहरलालजी की पदने के लिए दी थी । उन्होंने क्या था, कर्ण हमारे लोचनन की बुनियाद मजबूत रही तो देग मजबूत रहेगा । पहले हम बने ये—बुध बात है कि इन्हीं मिटनी नही हमारी, धव यह हस्ते मिटनी जा रही है । धर्म के प्रति जो श्रद्धा थी यह मिटनी जा रही है । वह प्रामत्ताय भी मिट गया । हमारा की पदने क्या चीज गिरेगी ? छन, किन दीवारें, लेविन सैरडो वर्षों के बाद बुनियाद गिरेगी । यदि बुनियाद मजबूत होगी तो वह सैकड़ों वर्षों तक कायम रहेगी । इस देग की बुनियाद को हम मजबूत करें, चाहे रिमो पाटी के हो । नैतिक उत्थान का श्रीमंगल

जब यह पंचायतीराज बन रहा था तब हमने बजा था कि हम इसके द्वारा वन-मान गाँवों के टाँके में कोई परिवर्तन नहीं कर रहे हैं । प्रापस के सम्बन्ध को हम रदि नहीं बदलने तो उगने लागे हो बडे़ने । प्रव वह परिवर्तन प्रामदान के द्वारा होने-वाला है । उगने गाँव के लोगों के मानसिक और पारस्परिक सम्बन्धों में परिवर्तन प्राणा है ।

प्राय हमारे जीवन का कीतसा क्षेत्र है, जहाँ धर्म-निका नही है ? पित्रा के क्षेत्र में प्रमत्ताय है । हर जगह प्रमत्ताय है, प्रापस में भगडे़ है, स्वार्थ और मोक्ष की लडाइयाँ हैं । धर्म-मीरना लाभ हो रही है । धर्म डंग बन रहा है । धर्म-कण्ड यह गय, वातनिकता मयाप्त हो गयी है । एक छे-डे-ने हिस्से में एक प्रारभित धर्म में, इस नैतिक

उत्थान का श्रीमंगल प्रामदान ने होता है । प्रामदान में कुछ ऐसे गुण हैं, जिनमें नैतिक उत्थान में मदद होगी । बराबर संकल्पों की प्रति प्राप्त करने रहेगे ।

सामाजिक और धार्मिक भेद

प्राय भारत दुनिया का गरीब-भेद-भेद और धर्म-रिवा दुनिया का धर्म-भेद-धर्म-भेद देग है । किन्हीं धर्म-रिवा के गरीब और धर्म-भेद में जो धर्म-भेद है उगने बडे़ गुना धर्म-भेद भ्रमन इन देग में है । २१ वर्षों के स्वराज्य के बाद वहाँ है सामाजिक न्याय ? धर्म-पूवता के धर्म के लिए दापू ने जो महान प्रयाग किया है वह दुनिया की अनांगी मिमल है । कानून ने धर्म-पूवता उठ गयी है, वह धर्म-भेद मानी गयी है, वाद-भेद इनके प्राप्ति में एक हरिजन को जिदा जगा दिया गया । प्राय हरिजन गाँव के मयाज वा मय नहीं बन पाये हैं ।

धर्म भूमि-धर्म-धर्म का बात लीजिये । पंडितजी ने चित्ताय जोर दिया था 'सीलिंग' पर । सोचना-प्रायोग ने भी जोर दिया । मयाजवाड का नारा दिया । दो समाजवादी पाटियाँ हैं । दो साम्भवादी पाटियाँ हैं, भीगी वन रही हैं । मैं जापान पत्रक प्राया । वर्ष २०० एवड वा एक को प्राप-रेटिव फार्म देवा । वहाँ पर प्रति परिवार दोई एवड जमीन है । 'भोलांग' में धर्म-धर्म-धर्म एक परिवार के नाम ३ एवड जमीन रह सकती है । पहाडी जमीन ७ एवड तक । उनका वकनाप देवने गया था । उनमें जितने ही श्रीगार भरे पड़े थे । बिहार के एक मन्त्री, श्री इन्द्रवीप वायू ने बताया कि बिहार में 'भोलांग' के कानून के वाद-भेद एक परिवार के प्राय २० हजार एवड जमीन है । प्रव इन तरह की हाजूर रहेगी तो प्राति कैसे रहेगी ?

भूदान की निष्पत्ति

हिमालय ने उन पार लोण है, जिन्होंने सामूहिकरण किया, 'बम्भुन' बनये । उन्होंने प्राजादी हमने एक साल पीछे पायी, लेविन उनका चित्ताय चित्ताय हुआ ! वे बहाने-कहाँ पहुँच गये । इस देग के गरीब न्याय भाग रहे हैं—सामाजिक और धार्मिक

श्याम । बालू से यह व्याप नहीं मिला । जब मैं मातृ-विष्ट पार्टी का कार्यक्रम था धोर विनोबाजी के पास था तो मिना ने कहा कि जेरी आपने यह क्या किया ? भूमि का पुनर्वितरण तो बालू से होगा । भला भीष्म मांगरुण यह क्या होगा ? हमने कहा कि बालू न किए गए हैं ही भूदान से भाषाका रास्ता ही भाक होगा ।

विहार में महाभाषा बालू की विनियुक्ति में इन्डोनी बालू राजस्व मंत्री थे । उनमें मैं एन टिन पूछा कि बालू से विनोबा जमीन भूमिहीनों को मिनी होगी ? भाषाजन कुछ हद तक एनडोनी बालू ।

विहार में भूदान आंदोलन के द्वारा तीन लाख बालूनी हद तक एक जमीन बैंक चुकी है जिसमें ७० से ८० प्रतिशत भूदान विनोबा का विनोबा हैं । २० से ३० प्रतिशत तक केवल विनोबा हैं । यह वेदछत्री कुछ तो सोचने के धोर धर्मिकतर सरकार द्वारा जलो दालिन कारिज न करने व हट्ट है । भूदान में विनोबा जमीन मिली है जिन ७ एकड़ में से एक एकड़ जमीन सेती के साथ नित लगी है । इन तरह से अभी लगभग डेढ़ लाख एकड़ जमीन धोर बंट जायगी ।

विनोबा भाई से हमने पूछा कि उ० प्र० में सीनियर बालू के जरिये विनोबा जमीन बंटो होगी ? विनोबा भाई ने कहा कि दरका दिशाव धारा उ० सावून नहीं है फिर भी जमीन मुक्ति से बंटो होगी । सीनियर वा बालू जब काला जा रहा था तो ब दान लयाया गया था कि सारे अरु में पांच लाख एकड़ जमान इनम मिलनी धोर जका बटवारा होगा । लेकिन धारा देवोनी कि बरन विहार में ही भूदान का धारा पांच लाख एकड़ जमीन का बटवारा हुआ धोर यहाँ उ० प्र० में बरन लाख एकड़ जमीन का धोर गोरन को बालू है । बट गायी धोर विनोबा की बाकि है हम लोग तो विनियत मात्र है । विनोबाता का जवाब श्रामदाज

बहुर में क्या हुआ ? कुछ राहू-नरकर हुआ, परंतु जिनमें कोई विनोबा साम नहीं हुआ । धारा तो धर्मिकता उद्योग पाठे में ही बनते हैं । सार्व व धुराने ही है । बर देवा

दशा में धुरी धरुन बवालें धुरा नहा बँडे । उहाने नममानाउरी तक कुछ करामते दिमाधी । मैं नहीं चाहता कि यहाँ के गाँव गाँव में धून-सराओ हो । मैं यह मानता हूँ कि उनमें पाठोका वरुन भला नहीं होनावा है । लेकिन हम उसको राक भी नहा सक्ते । जमाने की सीमा है कि हम सेती के कदम बाने हूँ हमन में थ तो उहाने सोपण रोक्ने के लिए कीजये बालू बनये ?

कपल वा १६ वर्षों तक धुषुण रावण रहा कि भा वरु धुषुण विनोबा बर सको । ऐसी परिस्थिति में जनता को न्याय दिलाने का कदम नहीं उठता है तो प्रथिम धरकार मय है । फिर दिशावत व पार की प्राय यहाँ धाराया । नेपाठ में तो वे भर गप है । कलमनू से लेकर काठारी बरु पर हर उरुह माधो के वडे बडे विनोबा हूए है । लेकिन नेपाठ सरकार की दिग्भन नहीं कि वरु कुछ बर वस ।

जब बानी लोग नेपा से वापस गये तो हम नका धोर बोमदिला गये । वहाँ से धारा समद पौडी जोक क डारवरने हमने पूछा कि क्या हम कुछ बरु सक्ते हैं । मिन कहा कि जरूर तुम विहार धोरर तक कुछ बरु सक्ते हो क्योंकि मैं वी सरकार में हूँ नहा । उनने कहा कि धारा हमारे धारिपरो के भेज को देल तालिय धोर हम 'योगा के भेज को देव सीनियर । जितना धरवर है । कट पर लउने वा हम हैं वे धरपनर ता पाठे रहते हैं । सेना के विनोबा के व सार है । उनको माद्रुम दे कि सीमा व पार दय तरुह वा बई तक नहीं है । धरपनर धोर विपारी पीने एक ही भेज में भोजन करते हैं । यह मायाजिक धरपनर सीमा व उन पार नहा है । व बाने बग इन देश के गराओ के बाना में नहीं बर रहते हैं ? बकी-बकी सनाएँ हम बना दें । उनको सता का भय नहीं है । हमारी सेनाएँ उनको रोक सती सिनियर दय विचार को कोई नहीं रोक सकता । सना क दित को धेर कर देता है । यह प्रथम बरन है लेकिन विनोबा बस

कोई मालिन नहीं, सब पातोदार

पत्तोजी ने एक विचार इन देश को दिया कि जिसमें पांच जो सपति हैं उनमें वह मालिक नहीं पत्तोदार (डूटी) है । पत्तोदार वा कान्ठ है धरने धोर बाउभरुचों के लिए वम से बम लेना धोर देप भगवान का नमोपि कर दता । विमान जो सेती का नमोपि कर दता है उनमें सेती के धोरपरो पर बरई की मेहनत है सुदर की मेहनत है धोर फिर सबसे धर्मिक नमवाव की धारा है । लेकिन विमान इतना हूँ कि यह सारा हमने पैदा किया । इसी तरह नारबाले म भी धन, बुद्धि धोर गपने ने ही नहीं बल्कि सवान के योग वाम व धोर भगवान् का हटा से होला है ।

जिन गाँव की जमान गाँव ने बहर बनी गयी वह गाँव सुभक्त हो गया । बालू न उ दान देग म जमीन की बिक्री बट हो जाती च दिए । यह मेरी राय है । यह धूप परि वगत बालू से नहीं होगा विचार से होगा ।

लोकतंत्र में बहुमत नहीं, सर्वसम्मति

पश्चिम का तोचनर हमें सिखाता ह— बटुमन का राव ११ 'योगा एक तरफ धोर १६ 'योगा डूरी तरफ । वहाँ तक कि २५ प्रतिशत की नोट स जीनेवाला भी धरने धोर का प्रतिनिधि बन जाता क । यह सवान का तोउने की बाण हैं । धरमदाजी गाँव की नमा विनोबा वम से बँडेगी । विनोबा सव-सम्मति से वा नवविमति स करेगी । विहार में बालू के द्वारा ६० जखिलत का राय मधुगुमति मानी गयी है ।

वे बाने जिन गाँव में हागी वह गाँव जान होगा धोर उनमें धामराज होगा । यह गाँव गाँव लाल गाँव में ही वापया तो हयागी सुभियद पकरा होगी ।

सभी राजमालिन पार्टियों को पण भेद भुषकर इन्के विचार म योगदान देने के लिए निर्मणु ह । हम सना सभ्यन चाहते हैं । किसी पार्टी के मानन दनम महत्वपूर्ण कोई काम नहीं है । हम जिने को जलना को धियाना चाहते हैं । उनको शक्ति को प्रकट करना चाहते हैं । हम चाहते हैं कि इन जिने का विकास हो । (सीनियर १० जुलाई १६)

विकास की दिशा क्या हो ?

[१० जुलाई को विनोबाजी की उपस्थिति में बलिया में हुई
विकास-गोष्ठी का संक्षिप्त विवरण]

शाम को धार बने विवास-गोष्ठी हुई। इस गोष्ठी में जिनके नामरिको राज-नीतिक दलों के कार्यकर्ताओं, और सरकारी अधिकारियों ने भाग लिया। गोष्ठी की अध्यक्षता सर्व सेवा संघ के अध्यक्ष श्री मन-मोहन चौबरी ने की। गोष्ठी का शुभारम्भ करते हुए प्राचार्य रामभूति ने कहा कि ग्रामदान में विकास की दो दिशाएँ हैं, एक यह कि सरकार की शक्ति को कम करें, दूसरी यह कि गाँव खुद अपनी शक्ति का विकास करें। सरकार की शक्ति बढ़नी है तो समाज की शक्ति है, क्योंकि सारी जिम्मेदारी सरकार की मान कर सोम निश्चित हो जाते हैं। आज गाँव में जो भी काम की शक्ति है, हुनर है, पूँजी है, सबका समुद्र होना चाहिए, और हमसे विकास का काम शुरू होना चाहिए।

ग्रामसे विवचना की प्रस्ताव बनाते हुए कहा कि हमका नियंत्रण होना ही चाहिए। विधान के साथ उदात्त-वालों की तोड़ने-भोड़ने की प्रतिवर्धता मिट्ट करते हुए ग्रामसे कहा कि गाँव की तोड़ने और पून-पाली प्रवृत्तियाँ हमें बन्द करनी हैं।

गोष्ठी की चर्चा का भाग बढ़ते हुए आचार्य विनोबा ने कहा कि आज तो गाँव हैं ही नहीं, सिर्फ परिवार हैं। ग्रामदान से गाँव का निर्माण होगा है। सब हमें गाँव-गाँव से 'स्वराज' की शक्ति विकसित करने हैं। विनोबाजी ने सरकार की विनाश-योजना को उपासी-योजना और दुःख-संगीति को बदलागी का परिणाम घोषित करते हुए जब कहा कि सरकार की सब की एक रायों की नोट टालने में जो मेहनत करनी पड़नी है, उतनी ही मिहनत जो करने की नोट टालने में करनी होनी है। लेकिन १ गैर-सनातन जिनकी मिहनत में पैदा होगा है, १०० गैर-सनातन उपायों में उनसे कोसुनी मिहनत करनी पड़नी है। विनोबाजी ने इन विनोबा

पर मना-भवन में चेतना की नयी लहर दौड़ गयी। विनोदपूर्ण मुद्रा में विनोबाजी ने कहा कि 'ग्रामसे देश में 'सुवचन योजना' चलनी है। भारत को 'वृद्धिप्रधान देश' कहा जाना है, 'उद्योगहीन भारत' बहने में बचने के लिए। और वृद्धिप्रधान देश में वृद्धि की सबसे अधिक उम्मीद की गयी। विनोबाजी ने कहा कि जहाँ शून्य विद्युत् होना है, वहाँ काम शुरू होना है। लेकिन ग्रामसे देश में विपत्तियाँ हैं—पानी की भी, मत्त की भी।

महाभारत युग के गाँवों की रचना के बारे में बताने समय विनोबा ने पत्रकारों की ओर इशारा करते हुए दो बार यह बात दुहरायी कि 'पत्रकार महाशयो, यह स्वर्ण-दारी में जिस लो, 'असह्य हाथ खेती से लुप्त नहीं होता, यह हमारी समिति का सद्स्य नहीं होता।' यह उम समय के प्रामोण्यो की मानियों का नियम था।

ग्रामसे योजनाओं की विवचनाओं का विवरण शुरू करते हुए योजनाकारों की दिव्यी में बहुरंग प्रमेयिकी तथाप करने की प्रवृत्ति को गलत बताया।

उपवास से जीवन-रक्षा

समय: हरबट्ट १०० सोपन, हिन्दी प्रमुशारक; श्री चर्चकार सरावणी
इस उपाय का ध्यान प्राइडिब
विश्राम-प्रणाली की ओर ठेकी से जाने लगा
है। प्राइडिब विचित्रा प्रणाली समुद्र,
विचित्रा नहीं है, बलिक जीवन जीने की एक
पद्धति है। वेपन की एक पुष्टक है: 'प्राइडिब
नैन सेब मोर साइड'।

इस पुस्तक की धमेरिका आदि देले में
सामों प्रियाँ हावीं हाथ विक रही हैं।
इनीका यह हिन्दी प्रमुशारक प्रमुशु है।

इस पुस्तक में भारतीय परम्परा, धार-
हवा, धार्मिक मान्यताएँ, सेटी-सारी आदि
की परिधि-विशेषों की ध्यान में रखकर उपाय
के द्वारा जीवन की रक्षा करने ही सकती है,

ग्रामदान की तीन प्राथमिक बातों—
ग्रामदान, वीषा-वृद्धा के शान, और ग्रामसेय
को बुनियादी काम बताने हुए ग्रामसे धन-
में कहा कि जहाँ जानि, सम्प्रदाय, पंच, पर
आदि खलन होते हैं, वहाँ सर्वोद्य शुरू होजा
है। लेकिन राजनीतिवालों के लिए तो यह
मन कुछ चाहिए।

बलिया के जिला नियोजन अधिकारी
ने जिलादान के बाद स्वावलम्बन की ओर
बढ़ने का निश्चय प्रकट करते हुए इस दिशा
में पूर्ण सहयोग देने की घोषणा की।

गोष्ठी में सब ने समता और भारतीय
सम्पुनित पार्टी (दक्षिण पक्षी) के स्थानीय
नेताओं को भी अपनी रायें जनता के समत
प्रस्तुत करने के लिए आमन्त्रित किया गया।
गन्ना-नेता ने गोष्ठी शर्यों में और सम्प-
वारी दल के तरण नेता ने तीव्र शर्यों में
पानी टाहाएँ ध्याक की।

इनकी टाबाओ का जिला जिनगी प्रचार
के नाना और दोष में बढ़ी ही सोप्य भाषा
में प्रवृत्त श्री मनमोहन चौबरी ने उत्तर
प्रस्तुत किया। ग्रामसे कहा कि हम सभी
भी विचार मधन से पबहाते नहीं, मदेव
सबको समतने और समतने के लिए प्रस्तुत
रहे हैं। उज्जीने कहा कि सम्पवारी नेता भी
समोद्य के विचार को समतने का कुछ
प्रयाग करें।

(१० प्रे० १००)
बलिया, १०-७-६८

प्रमुशारक; श्री चर्चकार सरावणी
इसका विवेकन किया गया है।

सर्वकार के-अपकर और असाध्य माने
जातेवाये संग भी उपाय के हाथ हुए ही
सकते हैं। यह बात धनेक उदाहरणों द्वारा
समझनी गयी है।

पुस्तक में ३५ अध्याय हैं, जिनमें उपाय
के महार टपा विभिन्न रोगों में उपाय की
धमेवि, मर्दा, लडि, परिणाम आदि पर
प्रयाग हाजा गया है। हर घर में यह पुस्तक
विश्रामक का काम देती और उदा-कारणों में
होनेवाले सधें से बचावनी।

पुस्तक-मूल्य: २००, प्रमुशु हीन राये
सर्व सेवा संघ प्रकाशन, बारायसी-१

व्यापारियों के लिए एक अनुकरणीय प्रयोग

सर्वोदय आन्दोलन के सम्बन्ध में अन्तर एक चर्चा होती है कि उनका कार्यक्रम जमीन की व्यवस्था, ग्राम-संगठन और ग्राम-जीवन आदि तक ही सीमित है। दूसरी की अवस्था पहरी जीवन और उद्योग व्यापार आदि पर सर्वोदय का क्या अन्तर होगा और सर्वोदय व्यापार की दृष्टि में जल्दा क्या स्वरूप रहेगा इसके बारे में सर्वोदय आन्दोलन के सभी बोर्ड स्पष्ट चित्र प्रस्तुत नहीं किया है। एक माने में यह धारणा नहीं है, हालांकि सर्वोदय समाज-व्यवस्था की संस्था ही ग्रामप्रधान विवेचन समाज रचना की है। और यह स्वाभाविक है कि उनका पहला और मुख्य कार्यक्रम उर्जा स्तर से शुरू हो। फिर भी उद्योग तथा और दूसरी जीवन की धार भी हमारा ध्यान जाना आवश्यक है।

कुछ दिन पहले श्री जयप्रकाश नारायण की प्रेरणा से 'उद्योग-व्यापार की सामाजिक जिम्मेदारी'—इस विषय पर एक गोष्ठी आयोजित की गयी थी। इस गोष्ठी की कार्यवाही भी प्रकाशित हो चुकी है। उद्योग व्यापार आदि का मुख्य उद्देश्य धन कमाना है और, निम्ना उन कार्यदे-आन्दोलन के पालन के जो राज्य द्वारा बनाये गये हैं, उद्योग-तथा या व्यापार में लागे हुए लोगों का समाज के प्रति और कोई जिम्मेदारी है ऐसी मायता आज ग्राम दौर पर नहीं रही है। सामाजिक जिम्मेदारी की भावना के अभाव में एक ओर तो उद्योग व्यापार में स्वैच्छाचरिता बढ गयी है, दूसरी ओर ग्राम दौर पर यह धारणा बन गयी है कि व्यापार और ईमानदारी परस्पर विरोधी तत्व हैं, ईमानदारी से व्यापार नहीं चल सकता। उद्योग-व्यापार में सरदार क प्रभावशाली दल, नियंत्रण, लायसेन्स, परमिट आदि के जरिये भी उत्तरोत्तर ऐसी स्थिति बनती जा रही है कि धाम-खा बेईमानी और भ्रष्टाचार करने का प्रलोभन व्यापारी को होता है।

पिछले वर्षों में सरकार ने प्रभाव के मायागमन पर जो विविध प्रकार के नियंत्रण लगाये हैं—एक जोन से दूसरे जोन में, एक

प्रदेश से दूसरे प्रदेश में, और यहाँ तक कि कहीं कहीं एक जिले से दूसरे जिले में भी बिना लायसेन्स या परमिट के याना को ले जाना मना है—उनके कारण भ्रष्टाचार की कितना प्रत्याहृत मिला है यह खद जानते हैं। इस रोकथाम क कारण प्रदेशों के सीमावर्ती क्षेत्र में दो बार मील की दूरी पर ही गांवों में इतना बड़ा अन्तर हो जाता है कि मानान्य आदमी के लिए अन्तर से उभर याना के जाकर मुनाफा बनाने के प्रलोभन में बचना संभव नहीं होता। न सिर्फ किमान सरकारी भावों से १०-२० टपया या और अधिक दाम प्रति किन्टल लेकर याना अनाज चोर-बाजार करनेवालों के हाथ बेचता है, बल्कि प्रदेशों की सीमाओं पर रहनेवाले लाखों शरीर लोग दूसरे से उभर अन्तर पहुँचाने के तथा-नियत चोर व्यापार में लग जाते हैं। चार-बाजारी के अज्ञान नीजों में मिलावट सेलटैक्स इन्सपेक्शन आदि की चोरी आज के उद्योग व्यापार का एक सर्व-ग्रामान्य भ्रम हो गया

सिद्धराज ढुङ्गा

है। नतीजा यह हुआ है कि कोई व्यापारी ईमानदारी से काम करना चाहे तो उनके लिए यह संभव नहीं है।

उद्योग-व्यापार की इस विषय और अनामानिक स्थिति में देश की भिन्नता मुकाम पहुँच रहा है इसका अभाव लगाना कठिन है। चारबाजारी को प्रत्याहृत मिलने के कारण बेईमानी, भ्रष्टाचार और धूलखोटी उत्तरोत्तर बढती जा रही है और भविष्य की भावना समाप्त हो रही है। नीजों में मिलावट के कारण जनता का स्वास्थ खतरे में है और रोगों की उत्तरोत्तर बढ़ती हो रही है। टैक्स की चोरी के कारण जतनी ही प्रायदनी के लिए सरकार को चीजुने, दसगुने टैक्स लगाने पड़ते हैं, जिसका बोझ भ्रष्टोद्योग परीव पर पड़ता है।

टैक्स की चोरी कितनी व्यापक है उनका अनुमान भी कुछ उदाहरणों से स्पष्ट हो जायगा। सरकारी घाँकड़ों के अनुसार प्राय

प्रदेश में सन् १९६४-६५ के वर्ष में ७८,५२,००० टन चावल का उत्पादन हुआ था। सामान्य तौर पर धान की पैदावार का ५०% बाजार में बिकता है, शेष ५०% किसान अपने खाने या बीज के लिए घर में रखता है, अर्थात् १९६४-६५ में भारत में करीब साढ़े २४ लाख टन चावल बाजार में बिका। उन प्रदेश में प्रचलित विक्री-शरी के हिसाब में प्रति टन धान पर कम-से-कम १५ रुपये विक्री-कर के प्राप्त होने चाहिए थे। अर्थात् साढ़े २४ लाख टन धान की विक्री पर कम-से-कम ३ करोड़ ६७ लाख रुपये विक्री कर के रूप में मिलना चाहिए था, पर उस वर्ष सरकार को धान, चावल, गूना आदि सब पर केवल ४२,२५,००० रुपये विक्री-कर के रूप में प्राप्त हुए थे। याने जिसना टैक्स सरकार का कानून से मिलना चाहिए था उसका केवल ११ से १२ प्रतिशत ही मिला, शेष ८८-८९ प्रतिशत टैक्स की चोरी की गयी। इसी प्रकार मिहल्ट पर १९६५-६६ वर्ष में आंध्र-प्रदेश की केवल ६० लाख रुपये विक्री-कर क रूप में मिला, जब कि उस वर्ष के उत्पादन और भावों की ध्यान में रखने हुए सरकार को कम-से-कम ६ करोड़ रुपये टैक्स का मिलना चाहिए था। इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि अन्तर टैक्स की चोरी न की जाय तो धान की अभाव चोपाई से भी कम टैक्स की दरों से राष्ट्र का नाम चल सकता है।

इस प्रकार ईमानदार व्यापारी और परीव उपभोक्ता को कई गुना अधिक टैक्स का भार बढन करना पड़ रहा है। इस दुष्कर के अन्त में क्या कोई उपाय है? करो के अत्यधिक भार, महंगाई, चीजों के अभावशाली और अस्वाभाविक अभाव, खाने की नीजों, दवाओं आदि में मिलावट आदि के कारण भारत की जनता का ध्यान जो अन्तर चोपाय हो रहा है, उनसे उनका बचान करने का क्या कार्य उपाय नहीं है?

भारत-प्रदेश के रेल मिला के गध की ओर से अभी हाल ही में एक प्रयोग किया गया, जिसमें यह मिहल्ट होता है कि व्यापारी और उद्योगपति स्वयं अन्तर काई और कोषिय करें जो इस परिस्थिति में बहुत

कुंड सुधार कर सकते हैं। हैदराबाद और मिरन्दराबाद में कुल ५१ तेल-मिलें हैं। अन्य उद्योगों और देश के अन्य भागों की तरह इन उद्योगों में भी बाकी वेईमानी और टैक्स की बोरी चलती थी। व्यापक चोर-बाजारी के कारण ऐसी परिस्थिति थी कि कोई व्यक्ति ईमानदारी से काम करना चाहे तो भी उसके लिए वह संभव नहीं था, क्योंकि टैक्स इत्यादि की चोरी तथा अन्य प्रकार की वेईमानियों के कारण मिडान्टीम व्यापारियों का इतना मुनाफा होता था कि ईमानदार व्यापारी वा उनके मुनाफिने में टकराना संभव नहीं था। ईमानदार व्यापारी को निर्री-रर, बाजार ही लाग, सैम, उत्सादन-कर, चुगी, इन्कम टैक्स, गम्पसि टैक्स, तरह-तरह की लाइसेन्स फीस इत्यादि देने से प्रभावित सरकारी विभागों में तरह-तरह की परेशानी भुगतनी पड़ती है, जब कि वेईमान व्यापारी जगद-जगद घुस देकर इन सब टैक्सों और परेशानियों से बच जाता है।

इन परिस्थिति से प्राण पाने के लिए हैदराबाद तेल मिल साथ से सम्पदा में करीब करीब २ माल पहले इन प्रान्त की हाथ में गिया। श्री टोकरसी शाहजी बापदिया के नाम से बहुत से लोग परिवर्तित हैं, हैदराबाद ही नहीं, बाहर के व्यापारी समाज में भी उनकी बख्शी प्रविष्टा है। सार्वजनिक काम में भी वे काम करते हैं। तेल-मिल मंत्र के सम्पदा के नामें भी टोकरसी आई में तेल-मिल मालिकों में संकलित किया और उनमें सामने यह सुझाव रखा कि अगर सब लोग संगठित कर से प्रदान करें और ईमानदारी के साथ व्यापार चलाने की कोशिश करें तो निर्गमों मुक्तमान नही होगा, बल्कि समाज में उनकी भाव्य बोगी, जिसके कारण सम्पदावाला उन्हें लाभ ही होगा। ५१ में से ५० मिलों में सब का सदन्य होना और कामकाज में ईमानदारी चलना स्वीकार किया। संगठनीय में लगे हुए दालों को भी सब का सदन्य बताया गया और उनमें भी सद्गोण की प्रार्थना की गयी। हर दाल से यह प्रस्ताव रणी गयी कि वह उनके अधिक होनेवाले मिलहन की सररी बिरी की रिपोर्टें प्रतिदिन सब को दे। इस प्रकार तेल-मिल

भी अपनी सररी बिरी की सामाहिक रिपोर्टें सब को भेजने हैं। हर महीने को १७ तरीक तक मिलवाने निछने महीने को धरनी कुल तिलहन-सररी की रिपोर्टें सब को भेज देते हैं और साथ में उन सररी पर त्रिनता सेलटैम बाजिब होना है उसी ररन वा चेक भी भेज देने हैं। सब के दसर में दलालों और मिलवालों की सब रिपोर्टों के छाभार पर जांच-नड्डाल करके एक सताह के धरर बेचेर सरवार को भेज दिये जाते हैं। धरर किसी सदन्य के बारे में यह पाया जाता है कि उनमें टैक्स बचाने की बंगिसा है तो उसे चेकानदी दी जाती है और सुधार वा मोहा दिया जाता है। धरर हर पर उनमें कोई ध्यान नहीं दिया तो व्यापार से उगहा बहिष्कार किया जाता है।

तेल-मिल के मालिकों और व्यापारियों कादि के इन स्वेकिज्ज और गम्पसि प्ररन का एक ही बर्ष में धारवर्तनन परिणाम सामने आया है। जून १९६६ में मई १९६७ तक के बर्ष में जब कि सरवार के विभाग द्वारा गीने बिरी-रर की वगुणी की जाती थी तब धौमन ७७,००० रु० मासिक बिरी कर के वगुणी होती थी। उन बर्षों में कुल ६ लाख रुपये बिरी-रर के वगुल हुआ था। जून १९६७ में जब से, सब न बिरी कर की वगुणी धरने हाथ में ली तब ग मासिक वगुली धौमन गादे गीन लगभ में ऊपर हुई है और मई १९६० तक के १० महीनों में कुल ७३, २८,००० रु० बिरी-रर मंत्र की धौन में सरवार में जमा कराया गया है। इन प्रकार पहले ही बर्ष में तिलहन बिरी कर में सरवार को गिछने बर्षों की धौना पांच मुली तक बिरी है।

हैदराबाद में तेल मिल मालिक मंत्र का यह प्ररन उद्योग-स्यारर के क्षेत्र में एक मुगानरबारी परिवर्तन माना जायगा। त्रिमुगान के गारे व्यापारी समाज के त्रि-मर बदन्य धनुस्पोन है। समाज के बिबिन बर्ग मीरुया बानुनी के ररुडे हुए भी धरर स्वेकगुणिक और मिशरर प्ररन बने तो यह बिन तरह धारर की बिन परिवर्तित कर कानु का सदन्य है, उगहा एक सम्पदा उदारण हैदराबाद के इन व्यापारी-मंत्र के प्ररुड

किया है। टोकरसी आई की इन योजना में सुरु में तो उपहाम और उगेसा तथा निहित स्वार्थों द्वारा विरोध होता स्वाभाविक था, पर उनकी मित्रा और धौन का फल सम्पदावा विना और धारर सरवार में यह मंडूर किया कि तेल-मिलों से बिरी-रर की वगुली गीने उनके विभाग के बर्नवारियों द्वारा न होकर सब के द्वारा हो। एक ही बर्ष में इन योजना का जो परिणाम आया वह धौनें तोरने-पाला है।

तेल-मिल मालिकों को भी इन योजना में लाभ ही हुआ है। यह सही है कि पहले उनकी बिरी कर में सब पैसा देना पड़ता था। लेकिन बचनेवाली ररन वा बटन-गा हिम्मा से घुस में बला जाता था, साथ ही रात-दिन बिना को तलवार से मर पर लटनरी ही रहती थी। घुस देने के बाबदूर अधिधारियों से पन-पन पर दबा पड़ना था। समाज में बख्शी गी भी ही। इनमें कोई सन्देह नहीं है कि धरर गिाव लनाया जाय तो व्यापारी भी पावंग कि कुल मिलारर से पड़े की धौना बहुत अधिार रहे में है। मंत्र के इन सब बदन्य म ही उगरी जा प्रमिडा बरी, उगहा नतीजा यह हुआ है कि व्यापारियों की दुगरी ररगारियों भी बम हरी लगी है। धरर सब सम्पदावा की उपलब्धि में तेल-मिला का बारी ररार हारी थी। मंत्र के इन सामन का भी रलने अधिधारियों के सम्पदा उगहा और पत्रररर धरर रीणों की गीण और उपलब्धि मंत्र का द्वारा हारी है, त्रिनम तल की निरगनी सामान और निर-विन हारी जाती है।

श्रा टोकरसी आई में हैदराबाद के इन धनुसब व उपलब्धि होकर भारत में बराती समाज में धनुसब किया है कि यह इन प्रकार सम्पदावा धरन मंडना और मंत्र के द्वारा सरार में त्रि म सबने और उबन धरररर धरिण कर है। यह गरी है कि बंभर व्यापारियों के प्रब न में गरी परिवर्तित में घुसर होना संभव नहीं है। समाज के दुगद बरी और सरवार का भी धरर व ररर और नीरियों के परिवर्तन बरदा हुआ। इन व्यापारी समाज के त्रि-मर बदन्य में पड़ने बरदा सामन है और धरनें सब बर्न मर नही

ग्रामदान के यूरोपीय संस्करण की खोज

मदि प्राबलिक वैभव पञ्चमी सोदय धीर जलजयो की सम्पदा के माध स्वर्ग की बलया वा बोई सम्बध है वो निवटवर्ण धरती पर म्पय वा एक दुकन है। नीले धीर स्वचज ग्रामदान की भयला क्या होती है, म्पकी मदी कल्पना तिव्त्ररलट देखे जिना मायव सम्भव ही नही है। वीतवी हुई सान्दो वा उजला मूरज जब चमजती हुई दफ पर विज्य हो एव मूरज के सही स्वध का दान होता है।

जिनीया मे जय हय पत्रुते तव धीमी धीमी बूई वज रही थी। पर बोई ही देर मे मूरज विज्य धीर ऐसी मात मे निज्या कि एसे स्वमूरज मूरज वा दान एवदय नय-मा लय रहा था। ऐसा ल्या मानो मीने पट्टी वार मूरज देसा हो। १० मील लम्बा-नीच जिनीया का जलमय मूरज की विरयो माने मे ऐसे समेते हुए वा मानो एक लम्बे विछोह के बाद उने धाना प्रेमी मिल गया हो। मैं स्वभाव मे छायावाणी मदी हूँ पर जिनीया सीक के निजारे बाधा बोई भी म्पकि भाजुक एव टायवादी बने जिना नही रहेगा।

मन् १९३० मे रवीन्द्रनाथ टयोर ने २ महीने जिनीया मे रहकर धाना नेमनकार्य करने का करो निणय किया होगा इसका रहस्य मदी की स्वच्छ हवा का एक छोटा वा लेने मात मे मारुप हो जाता है। हम भी उनी म्पाम मे टहरे यही रवि बावू रहे थे। वातावरण का मापान बिया वा म्पज

—है कि वे धरर म्प तरह पहल करने है तो मरकार को भी धानी नीच धीर बावू मे गुपार करना परेगा धीर उनका माज की तरह म्पमानी बलया धममव हो जादस। ईसावा के ०९-१०धोय ने एक टेमा माय प्राम्वजिया है जिनाका म्पुकरण हय धाना करते है देग के म्पय म्पामारी भी जगह जगह करेये धीम मरने धारको तथा दग को एक बने मरने मे ब्यादीय।

२८ १ १८

कउरव धीर हरी मरी बाटिया वा मुहामना एन रवि बावू को प्ररिठ करने मे म्पामाव हो यह कोई भयमे नी बात नही। जहाँ हम बडे है एन रहे हैं छापी रहे हैं वही कमी महाजिव रवीन्द्र भी बडे होये म्पारे पीने रहे होये। यह सोचकर मुझे बन्ग मुप मिल रहा था।

रवि बावू की मन्त्रि के रूप मे काम करने वाली विम्वार बहन मागारिट निपेल के माय हमने बने बतचीन की। उनके मन मे एक एक रमनि ऐसी मानी है मानी सब कुज नल ही घटा हो मानी धर्मभी रवि बावू रवाना होकर गये हो। धीर मागारिट उन्हें पट्टाकार ही थापन या रही हो। एक भोये सपने की तरह का-सा साप वागावरण था। मन दे जिना क ने मे भी दयाय वा उरोजना नही थी। वाटर के वागावरण की धान्तरिक धानि के माय विम्वार महरा म्पबध है दन्वी म्पुभूति हर पल हो रही थी।

सतीश कुमार

निवटवर्ण की निपनि विषय मे एकदम निराली है। यह देग संदुक राष्ट्र म्प का सम्प्य नही है। यह देग कमी जिनी पुज मे धानिक नही हुया। म्प देग के लोगो के म्पि रान्नीति मह्वहीन है। म्पियो को न बोड देने का बानवी 'म्विधार है धीर न म्पों की म्पिवी म्प म्विधार को म्विधार की म्पना देती हूँ। जब म्प कोई म्विधार ही न्प तो उने प ने की भागनेड करने का प्रय ही वहाँ पना होता है? म्प जगे म्विकि के म्पि जिमके देग की प्रयायमी एव सी हो यह म्पमने मे कटिनाई हो रहा। धी कि जिना एक भी सी क हय देग की कोरना म्प नी लम्पी हुगी। म्प क जिमी मानाय नागरिक को इमवी ब्रुन बम पववाह होनी है रि उनका राटानि कौन है वा प्रयाय मर्पी कौन है। य म्पारे म्प माज म्विधा धीर स्वधम्या क िन है, म्पना वा म्विधार ने उनका विम्व म्पबध नही।

हय देग में राजनैतिक प्रदर्शन विरोध वाद धीर म्पिनारमूलक वारवाशी नही के धरावर है। हय देग की धावादी भारत के जिनी एक जिने में म्पना सक्ती है। फिर भी म्पों २२ झलग झलग राज्य हैं धीर ये राज्य भारत के राज्मो वे वही ज्वादा स्व-मा सित एव स्वतंत्र हैं। स्विटजरलंड इ राज्मो का सप नही वनिक के-रेन' है। सता का ऐमा विम्वीकरण राज्मो वा दुनया स्व विचार का ग्राम-स्वर म्प से हय मेल ला म्पना है। हय देग ने ग्राम-स्वराज्य की यह विधि स्वन विम्विन की है। धीर उनके म्पिने फलो का ग्रामद भी यह भोग रहा है। १० लख लोगो की म्पय दी वा यह देग फव जर्मन एव इटालियन म्पपाओ को बर करी का हक देकर हट नागरिक की स्वैज्य' क धरर कर रहा है।

जिनीया एक तरह मे विषय की धर्मो प्वातिक रान्धानी वा दर्जा हासिल कटया वा रहा है। म्पनराष्ट्रीय म्पाने धरर राष्ट्रीय नि म्पवीकरण धरर राष्ट्रीय म्पजद सच धररराष्ट्रीय रेन्सक धीर न जाने इमी तरह क कितने धररराष्ट्रीय माधकरो एव म्पजनों का यह प्रधान कम्प है। धररर राष्ट्रीय धानि धा-बोवन मे सम्बाधित धनेक म्विकियो से हमारी गट हुई। विम्वेय रूप से रेने बोर्गार्ड एव रोस्टर जुतो के साप की मुलमसान स्मरणोय है। ये दोनो म्पजन माधो विचार से बहुत परिचिन हैं। रेने बोर्गार्ड तो मन् १९४० मे मेकाधाय के म्पानि म्पमेलन म भी भाग लेने गये। उन्हें जब मीने दसमान माधो-म्वानेक धर्धावि धाददान एव उनकी उजल म्पय के बारे म वदाया भी वे बोने इधर पत्रिय मे मादी वा नाम म्पी म्पजने है। उनके नेतत्व मे भारत ने धररजनी की जो म्पनक ल्काई म्विधक धरिने मे लजा बहु भी जानत है। पर उनक धररना बोई जानारा हय नही जिनी। माधी ने एक धररज उन्प हूण रहा। पर बहु धरर ऐन्जिमिन मह्वन की मीमा मे धागे नही धरगा। माधी के वाम बोई धाधित रचना वा निदालन भी धा यह ब्रुन बम लोभा को म्पामुप है। माध ने बोई दया जिना धाम्य जिना यट भी धरर

के मनाज को मातृत्व नहीं है। अतः आज की समस्याओं और आज के प्रश्नों के साथ गांधी का नाम जोड़ पाने में बर्हिनाई होती है। यदि ग्रामदान, ग्राम-स्वराज्य, ग्राम-मण्डल आदि की बातें प्रकाश में लायी जायें तो हमें बाकी सोचने-गमनसे और कुछ करने की सामग्री मिल सकती है।"

स्वतन्त्र-भारत संघ, जिनीवा के अध्यक्ष और इन्स्टीट्यूट फॉर इन्टेलिजन्सल हायर स्टडीज के प्रोफेसर गिल्बेर्ट एटोन के साथ भी हमारी बातचीत हुई। प्रोफेसर गिल्बेर्ट कई मामलों तक भारत में रह चुके हैं। उन्हें ग्राम-दान आन्दोलन के बारे में जानकारी तो है, पर उन्हें इस आन्दोलन की सफलता के बारे में संदेह है। वे बतते लगे कि "समस्या का परिमाण जितना विस्तृत है और भारत की प्रगति में गवाह जितने उलझे हुए हैं, उन्हें देखते हुए गांधी आन्दोलन की क्षमता एवं उसकी सम्भावनाएँ बड़ी सीमित हैं।"

स्वतन्त्र-राजधानी बर्न में मैंने कुछ घंटे ही बिताये। यह एक शान्त और शोभापूर्ण छोटा नगर है। जिनीवा और ज्यूरिख स्वीटिस के दो पल्लवों की बीच समुद्रतल से सन्तुलन साधनेवाला यह 'मुट्टे' की तरह से महत्वपूर्ण नगर एक साफ-सुन्दर स्थान है। वहाँ से हम ज्यूरिख आये। यह शहर एक तरह से व्यावसायिक एवं शैक्षणिक केन्द्र है। यहाँ के लोगों की शक्ति की चोभा और बुद्धि की छटा का ध्यान लेने के लिए पुरगत नहीं है। ज्यूरिख को दुनिया की 'वर्कशॉप' कहा जा सकता है। विश्व के लगभग सभी और पूँजीगत ज्यूरिख की बेंचों में अपना पैसा जमा रखते हैं। यहाँ के बैंकों में तिजरा रखना धन जमा है, यह कोई भी व्यक्ति पता नहीं लगा सकता। स्वतन्त्र-भारत की इस मामले में कोई दखल-दखली नहीं कर सकती। इसलिए पूर्व और पश्चिम के देशों में बड़े-बड़े धनी यहाँ अपना धन जमा करते हैं। ज्यूरिख की स्वर्ण-सिरी विश्व भर में मशहूर है।

"ग्राम-भाषा" के दूसरे मसूदारी सम्पादन की हरिकण्ठपत्र ज्यूरिख में श्रीमती धार्लिंग ह्यूरर के साथ रहते हैं। वे यहाँ गाँव गिरिजा इन्स्टीट्यूट के कार्यक्रम के सन्तुलित छात्रों के और सब पुस्तकालय विभाग

का वर्क कर रहे हैं। पुस्तकालय विभाग का अध्ययन करने के साथ-साथ वे एक पुस्तकालय में कार्य भी कर रहे हैं और उनके कारण पुस्तकालय में विनोदा तथा सर्वोप-आन्दोलन पर कुछ पुस्तकों ने स्थान पाया है। श्रीमती ह्यूरर का उनको पूरा सहारा मिला है। वे पत्नी को अपने पुत्र की तरह प्यार करती हैं और अपने घर में पत्नी को रहने और पढ़ने की सुविधा उपलब्ध देती है। हमारे ग्रामदान-आन्दोलन के एक पुराने कार्यकर्ता से ज्यूरिख में भेंट करते बड़ी खुशी हुई।

पत्नीजी ने हमें ज्यूरिख में त्रिज घनेक लोगों से मिलवाया, उनमें प्रोफेसर बर्न के साथ की मुलाक़ाल विषय स्मरणीय है। फोटोग्राफी के विकास में प्रयोगों में लगे हुए इन ब्रिटिश प्रोफेसर महोदय ने हमें बताया कि उन्हें तेलोरेटरी धारि की जो सुविधाएँ यहाँ प्राप्त हैं तथा यहाँ पर दान काम के लिए जितना वेतन मिलता है, वहाँ तक ब्रिटेन में नहीं होने में उन्होंने यहाँ आकर रहने और काम करने का उप विचार था। हमारी वापसी का प्रयोग यह था कि वहाँ पर एक साल ब्रिटेन के अच्छे प्रतिभाग्यमन्त्र वंशान्तिक धर्मोपचार, जर्मनी और स्विट्ज़रलैंड चले जाते हैं और वहाँ काम करने लगते हैं। "यह समस्या ब्रिटेन की समस्या नहीं है, क्योंकि पूरा दुनिया की समस्या है। प्रतिभा-सम्पन्न एक बुद्धिजीवी लोग प्रायः अपने पड़ोसी-धर्म को भूलकर अच्छे 'स्ट्रेट' या अच्छी तन्त्राह के लिए अपना वन छोड़ देते हैं, जब कि वास्तव में उनकी सेवाएँ अपने वन के लिए धिपक आकर जाती हैं। पिछले एक वर्ष में भारत और पश्चि-स्थान के १५ शीट ब्रिटेन आकर बने, जब कि ब्रिटेन में भारत की 'महापला' नाम पर २ शीट बने।

"दूसरी तरफ़ हमारे छोटे परिभाष में देखें तो गाँव में शहर की ओर जानेवाले को सहा भी बहुत बड़ी है। यहाँ पर विचार लेने के बाद हमारी क्षमता की छेड़कन बिगो बड़ी जगह में जोड़ी देने की कोशिश करना है जिसका और गम्भीर जोखिमों के नाम पर शहर में ब्रिटेन शहर सम्पादन का ईर्ष्यान्वित बर्नो-

क्षेत्र में भेजे जाते हैं उनकी संख्या का अनुपात, गाँव से शहर जानेवाले छात्रों सम्पादन की या ईर्ष्यान्वित को तुलना में बहुत छोटा है।" स्वयं के अनुभव पर आधारित प्रो. बर्न के ये विचार जलकर खुशी हुई।

"वैसा बुद्धि का प्रवाह देहात से दिल्ली, दिल्ली से लखन और लखन से न्यूयार्क की तरफ़ है, वैसा ही संगति का प्रवाह भी उसी दिशा में है। पिछले साल १२ विद्वान् देशों की प्रति व्यक्ति पीछे आनेवाले २५ पाठक की और १६ अधिविद्वान् देशों की आनेवाले सिर्फ़ २ पाठक हैं। बुद्धि और सभ्यता के इस गलत प्रवाह में कारण गाँव जिले पर निर्भर है, जिसे प्रदेश में सहायता माँगना है, प्रदेश केन्द्रीय सहायता की वाचना में लया है और दिल्ली का हाथ बिदेसी सहायता के लिए पगला हुआ है। यह पर-निर्भरता गरीब समाज के बच्चों को खोखला बना देती है। यह समस्या केवल भारत की नहीं, बल्कि एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के लगभग सभी देशों की समस्या है। प्रोफेसर बर्न एक विद्वान् महाशय की भाँति अपने विचार रख रहे थे। वे पिछले दिनों दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों की यात्रा पर थे और इस यात्रा में बाद उन्हें इन सारी समस्या का अध्ययन कराया गया था।

दुनियाँ की सारी समस्या में एक प्रयास पाया जाये दुनियाँ की समस्त राष्ट्रीय दुनियाँ के लोगों में यह विवेक बिना है कि २ अक्टूबर १९६० में २ अक्टूबर १९६१ तक का समय 'गाँवो-सर्व' के रूप में बताया जाय। दुनियाँ का प्रयास केन्द्र देशों में है और यहाँ में एतन्त्र विभाग को सहायिता कुसारी देने में मिला था, तो उन्होंने बताया था कि "हम गाँव गाँवो-सर्व पर अक्टूबर १९६१ में एक सम्पूर्ण राष्ट्रीय मेसिजर आन्दोलन करने जा रहे हैं। साथ ही हम ध्यान करने हैं कि दुनियाँ की राष्ट्रीय सभ्यताएँ अपने अपने देश में पूरे रूप का कार्यक्रम बनाईगी। इसी कारण वे साथ ज्यूरिख में निम्न दुनियाँ के प्रभावकारी था में शहर में बर्न शरीर वापसी हुई। उन्होंने बताया कि 'भारत

जिलादान का उरसाह

बाबा ने सारण और बलिया के बाद चम्पारण जाने की इच्छा व्यक्त करते हुए कहा, "जानते हो नैरोजिनन की हाट बाटरघु में क्यों हुई? यह सिर्फ़ मूल मितल की देर हुई उसे मदर पहुँचने में। पड़र नही के किनारे शकवगना में काम के समय हमारी पुर पडाव पर बाबा मुना रहे थे। मैंने उनसे कहा, '२ भवतूर तक जिलादान ही जायग, ऐसा धर वहीं के कार्यकर्ता बोलते लगे हैं।'" "२ भवतूर चरी बहते ही, तीन सताह के बाद बर्हा पहुँचनेवाला हूँ और तीन सताह रहूँगा। कम छ सताह में काम समाप्त करवा है।" बार देकर बाबा बाग छे के मानो छ गताह बहुत अधिक समय दे रहे हो, नही ता बाटरघु बनते बा चाररा है।

गांधीजी ने चंपारण में सत्य एवं अहिंसा का जो प्रयोग किया एवं सदियों से पीड़ित दलित, प्रतिस्पर्धात्मक मानव में अचानक के अचानक खड़ा होने का जो पथ प्रकाश वह दुनिया के इतिहास में उस क्षण एक अमोक्षी मियाल थी। वह प्रयोग भारत के राष्ट्रीय संघाम के मानिसोपे दिना में प्रेरणा, उम्माई तथा भाग दान प्रदान करता रहा। उस समय भारत ही नहीं, दुनिया के लोगो ने चंपारण का नाम मुना।

डैलिब्रिडन, सनाकार पत्र तथा विश्व विद्यालयों से इन दिनों में सरक सत्ता का बुझा है और उनल पूरा महयोग प्राप्त हान का धारसालन हूँ मिला है। रिजम्बर लंड एक छाया-भा देल है पर गांधी के जीवन और अहिंसक में हमारी विश्वस्तरी धारण रहते है धन जिउना भी हमारी मानस्य और भावना के धनुषार भाषी को प्रत्येक मितल-नागरिक तक पहुँचाने के लिए हल कर सके हैं जजना करने में कोई कमर नहीं रमगे।"

एम तग्ह २६ म २५ फरवरी की हमारी २ जिलो को बहू गतिम विभव-योगा बर्ही धनुषार-विनी एक सान रहो। •

चंपारण नेषान के पडोस में स्थित बिहार का धान और ईन पैदा करनेवाला जिला है। पहा के विनासी ग्राम जिलो के मुनाबिने बडे नीने तादे हैं। कोई धादोनन अधिसदान मुख इप जिने को छू नही पावा है। अधिसदान धादोनन का तूफान बिहार में मरु १९६५ते चल रहा है। १९६५ में बाबा की यात्रा भी इस जिले में हुई किन्तु तूफान का चंपारण पर कोई धपर नहीं हुआ। चम्पारण गहरी नीर में मोना रहा। फिर बिहारदान की घोषना यनी। बिहार क क्षत्री जिला में हजयत प्रारम्भ हो गयी। धर भी चम्पारण शात र.।। चम्पारण के मराट्टर नराधो में विदित बाबू (धर बूडे हुए) भात भी हैं। और विभूति मिश्र तो रिस्पी म कायम एक समडे नेना माने जाते हैं। यहाँ के धर पपी के नी नेना बिहार की राजनीत में सक्रिय भाग लेते हैं। यह सब होत हुआ भी विनोबाजी के प्रान्दोनन के प्रति चम्पारण उदासीन हो बना रहा। पच्छे तो बाबा चम्पारण की गांधीजी के नाम पर छोडते गये किन्तु जब उत्तर बिहार के दो जिला का टाल हो गया तथा साथ जिलो के जिलादान की हलचल धर चम्पारण में चम्पारण बन नहीं सवा। हम लोगो की इन मलाह को कि बाबा बिहार के हर जिल में सान-सात दिनों का समय दें सवा य करके सूर्यमा सारण और चंपारण में जाने का निर्णय बाबा न किया।

लगात है बाबा के सुधामात्रण का गहरा धन पडा है। बाबू रोड समिनन के धनकर पर सम्मेलन में उपस्थित चम्पारण के सारी के कार्यकर्ताओं में तप किया कि मुगोली प्रथमदान जयपराप नासयण को समर्पित करेंगे। चम्पारण में धादोनन की जो धर तक गति थी उनमें हो यह सत्य बनि हो दीख रहा था। किन्तु भीतर ही भीतर कोई धधक शक्ति काम कर रही थी। विदित बाबू का पत्र भेकर भी धनुषा

रोड धनुषार एम० एल० ग० बाबूरोड में जयपराप बाबू से चंपारण के लिए उनका कार्यक्रम प्राप्त करने पहुँचे थे। समोना के गवा सत्यवेदकजी भी जे०पी० के कार्य-क्रम की माँग बर्ही भूतीने छ कर रहे थे। जे० पी० का कार्यक्रम बना और वाद-वर्ताओं में जमाह की लहर दोड गयी। बाबू सम्मेलन से वापसवाँ भारतदान का मथ लेकर लौटे। उम्माह की बडी थी सही। सवोजन किया तथा २३ जून से धामदान का हस्तान्तर प्रारम्भ कर दिया गया। ६० जुलाई को जे० पी० मुगोली पहुँचे तो १५ पचावा। एव ५० राजन्व धाम तथा ७७,२८२ जनकमदादान प्रसड मुगोली उहाँ समर्पित किया गया, साथ ही ६ हजार की सेवी भी समर्पित वा गयी, जो मुख्यत सारी के वापसताभा द्वारा एव सय्या, दो सय्या के तूफन बन कर एकत्र की गयी थी। उस रोज चम्पारण जिया भर क करीब १५० वापसताभा ने जे० पी० का धनुषिदायक भावण मुना तथा अधिसदान की गति में तीव्रता प्रदान करने का संकल्प किया।

मुगोली चम्पारण जिला का बडू ही जायरह क्षेत्र है। श्री बिक्रमा पाण्डेय ने, जो बिहार सारी प्रामोयोग सध के इस जिले के लिए धेकीय निर्देशक है तथा जिला के घर भी इनी जिल में है, इन अधिसदान का मुख्य सवोजन धान भनिने सारी समनिहामन सिंह एव इन्द्रदेवी के सहयोग से किया। मर उदर संघार कन म जिने म धादे का नाम पलाया जा रहा है। मरधभा धनुषारदाय, मगल-प्रसाद, संतसहस एवं विनयकर प्रसाद का अधिय सहयोग उहाँ जगल्य है। रमार्पित बाबू बीच बीच में पडुवरर दानि प्रदान करत है और कार्यकर्ताओं को प्रेरित करत रहते हैं। बाबा ६० जुलाई की चम्पारण पहुँचने वाले हैं। बाबा के लालत की ठंठारी हो रही है। उह भा मरधदान एवं सय की सेवी समर्पित करन की मोखता है। विदित बाबू सनिने होये पैदा धारसालन उहोने दिया है।

—संकाय प्रसाद सानी, सहसर्गो बिहार प्रायदान शक्ति धनिनि

गया जिले में भूदान-प्रामदान ग्रामदोलन की प्रगति

भूदान आंदोलन के प्रथम चरण में गया जिले के कुल ६,२३३ गांवों में से ५,३०० गांवों के १७,८६७ दाताओं द्वारा भूदान में १ लाख ५ हजार एकड़ जमीन का दान हुआ। प्राप्त जमीन में जाँचकर क्रिययोग्य कुल भूमि २४,५०० एकड़ का वितरण २,७५६ गांवों में १४,२०० भूमिहीन परिवारों के बीच किया गया। वितरित जमीन पर ७० से ८० प्रतिशत भूदान-किसान सफलतापूर्वक सेती कर रहे हैं। हाल में वाराणसी, बोधगया, मोहनपुर और कोमकोल में भूदान-किसानों की भूमि के सुधार, सिंचाई आदि का सधन श्रेयास 'सावित-फंड' आदि कई अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की सहायता से हो रहा है। भूदान की जमीन पर ३०० परिवारों की १२ मही वसतिगो बसायी गयी हैं। मकान बनाने, खेती सुधारने और साधन आदि के लिए इन पर ४ लाख ६० लाख हैं।

ग्रामदान में अब तक कुल ४६ प्रखंडों में से २६ प्रखंडों में १०१७ गांवों का ग्रामदान हुआ है।

कोमकोल प्रखंड का प्रखंडदान पहले ही हो चुका है। पिछले दिनों मखटुमपुर, वाराणसी और मोहनपुर प्रखंड में जिले की सारी शक्ति केन्द्रित कर प्रखंडदान-प्राप्ति का प्रयास विशेष रूप से किया गया है।

समाज-हितविवेकपूर्णतथादिनदिन
उपयोगके लिये स्वयंसेवा

विकर्या

आयुर्वेदिक शोधिका प्रतिष्ठान

श्रीश्रमपाल आयुर्वेदिक फार्मसी

६० भा० सादी-प्रामोयोग द्वारा प्रमाणित
खादी-प्रामोयोग भयद्वारा में निरसता है

मखटुमपुर में १५ से २२ मई तक जिला विद्याभ्यासधिकारी, अनुमंडल निशा-यादाधिकारी आदि के नेतृत्व में तमाम शिक्षकों की प्रभुवाई में ग्रामदान-प्राप्ति का प्रयास किया गया। इस दौर में जिला पंचायत परिषद के अध्यक्ष श्रीगुरुदेव प्रसाद वर्मा और विहार रिजर्व कमीटी के प्रधान मंत्री श्री सिद्धराज दंडा ने मार्गदर्शन किया। कुल ३२ गांवों में शोरो का हस्ताक्षर अभियान प्रारंभ हुआ जिनमें करीब ६०० परिवारों के हस्ताक्षर प्राप्त हुए।

वाराणसी प्रखंड में भी इसी अवधि में प्रखंडदान-प्राप्ति के प्रयास-रखवा काम हुए। एक पूरे पंचायत का ग्रामदान संभव हुआ। एक पूरे पंचायत का दान पहले ही हो चुका है। ग्रामा है, शीघ्र ही वहाँ प्रखंडदान हो सकेगा।

वाराणसी प्रखंड में दिवाकरजी, सयोजक जिलादान-प्राप्ति समिति श्री जगदेव सिंह और

श्री श्रीधर नारायण का विशेष योगदान रहा। मोहनपुर प्रखंडदान-प्राप्ति में सौरीदेवरा प्राथम के प्रधान मंत्री श्री त्रिपुरारिसरण और प्राथम के सौदी-विद्यालय के प्रशिक्षार्थी और अध्यापनगण विशेष रूप से ध्यानचौल रहे। श्री रामभरणा तथा नई पंचायतों के मुखिया और पाठशालाओं के अध्यापकों की सराहनीय मदद से प्रायः प्रगट का दान पूरा होने को है।

— दिवाकर

प्राकृतिक चिकित्सा की सुविधा
प्राकृतिक चिकित्सालय, बापूनगर, जयपुर (राजस्थान) में निम्न रोगों से ग्रसित मरीज रोगियों को निःशुल्क उपचार एवं भोजन देने की व्यवस्था की गयी है। दमा, मोटापा, गैस्ट्रिक, रक्तचाप, एडिमा आदि। निम्न पते पर पत्रव्यवहार कर जल्द रोगों से निःशुल्क स्वामी स्वस्थान प्राप्त करें 1-स्वस्थान, प्राकृतिक चिकित्सालय, बापूनगर जयपुर-४

भारतीय शिक्षा

भारतीय शिदक संघ (ए० आर्इ० एफ० ई० ए०) की मासिक मुलपत्रिका

- प्रारंभिक पाठशाला से विश्वविद्यालय तक भारतीय शिक्षकों को राष्ट्रभाषा हिन्दी के माध्यम से एक क्षेत्र में ध्यादित करनेवाली एकमात्र पत्रिका।
- संयुक्त शिक्षण-सेवा के लिए शिक्षक-नालक संगठन का प्रथम प्रयास।
- सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं विद्यालयों की वार्षिक सदस्यता के लिए सर्वथा उपयुक्त।
- केन्द्रीय शिक्षा मन्त्रालय का वरदहस्त तथा प्रविद्यालय राज्यों की स्वीकृति-पत्र।
- सेवा के चौथे वर्ष में प्रदेश के उपलक्ष्य रूप व्यापक महत्व का पहला विद्येयक शीर्षक राष्ट्र (संयुक्त राज्य, रूस, जर्मनी, जापान) के शिक्षक तथा शिक्षक संघ।
- संपादकीय परामर्शदात्री समिति तथा प्रवाची प्रतिनिधि मण्डल के सशय सहयोग से देश-विदेश के हिन्दी संघियों का सशय सहयोग प्राप्त : अज्ञात हमारा विद्येयक (जुलाई १९६८)... विदेशों में हिन्दी (शिक्षा, शिक्षक, साहित्य)।
- तीन हजार प्रतिशत : शिक्षकीय विज्ञान का महत्वपूर्ण माध्यम। धर्मतनिक संपादक तथा प्रकाशक : काजिदास कपूर, कपूर कुटी, १ इरवोई मार्ग, खज्जिन-३।
- साहज : बिनाई प्रयोगी, पृष्ठ संख्या ६०, वार्षिक शुल्क : मात रुपये, मुद्रित एवं सुन्दर छपाई, प्रकाशन : प्रतिमास की २६ तारीख।

सेवाग्राम में आर्यनायकम्-पुण्यतिथि

सेवाग्राम माश्रम के बिल कमरे के पायन-पङ्क्तियों रहते थे, वही एक छोटा सा दीपक हुआ के भीरो से लट रहा था। ऐसा लगता था कि बुझबुझकर ही जल आने का क्रम इनका कभी खत्म नहीं होगा, रापन प्रकृतियों की प्रकृति की तरह। पाठे पुष्पों के दोष्कारण कर रहे थे, विष्णुमन्त्रनाम, ईशानागोविन्द का पाठ हो रहा था। सुनारिनि के डेर लगे हुए थे। बरामदे में बरफा बन रहा था। प्रथम वार्षिक पुण्यतिथि होने के कारण, आगारेवी धीवका गयी हुई थी। निर्वाणदहन कायी सारी क्रिष्णकारी गम्हाल रही थी। सत्यनायकी एव विद्यासय की बानसोना सेवा में रख थी।

सेवाग्राम-माश्रम से आधा मील दूर पहाड़ी पर गणपतिस्वान है जहाँ सोनेकी झूठी बार्मि 'दादू—गाधीजी के कायीबा के मायी ओड पडिन सर्वानद कोमवी ओर धार्मनायकमयी की गमाधिया हैं। तापक्रमकी की समारिष साज-नाजे पारलों के उपर सारी है, कायी गिना, प्यावल्पा। बाहर से ऐसा ही धुरदुरा प्यरिज या नायकमयी बा। किन्तु भीतर से वे नागिषा की नाति कोमत थे। अन्वय देनकर उनगे रहा नहीं जात बा। सुर्वीत्य के ताप साप सर्वधर्म शर्येना की गयी। "निर्वन के वन राम" भजन के पारचार 'राध की गाराम' की स्वनि गूँज उठी। सब सोनों से समारिष पर पुण्यारण किया।

निगमर कमाड सुनयन और सुनार्ड हुई। सुर्वान्त के समय था काउडर हय मोग पुन आरिगिना के बीड्डे 'पुण्यति रापन' " गापी हुए समारिष पर माये। कमार से मनी समारिषि—साकपाड, देहुडी—रुई गापी, नेहुक, गाधीजी की समारिषों की माय रिगानी हैं। पर यह काउडर नहीं, सेवागार है। सत्तागत रचाव बहों, विनये रुई कायीबा की, धीर एक ही भावनों से सर्वधर्म शर्येना के पारचार, घाली धनुषिनि घरिज की—गुन काउडर, पूर काउडर, हार की समार मागन बावकाएँ कर्मरिष कर।
—अपरीश घशानी

राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति

प्रधान केन्द्र

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति

१, राजघाट कालोनी, नयी दिल्ली-१

टुकलिया भवन, बुन्देलखरी का भंरो

फोन २७११०५

जयपुर-३ (राजस्थान)

फोन ७२६८३

अध्यक्ष : डा० जाकिर हुसैन, राष्ट्रपति
उपाध्यक्ष : श्री श्री० श्री० गिरी, वरराष्ट्रपति
अध्यक्ष : बार्थेनारिणी :

अध्यक्ष श्री मनमोहन चौधरी
मंत्री श्री पूर्णचन्द्र जैन

श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधानमंत्री
मंत्री : श्री भार० आर० दिशाकर

गांधीजी के जन्म के १०० वर्ष २ अक्टूबर, १९६६ को पूरे होंगे।
आइये, आप और हम इस शुभ दिन के पूर्व—

(१) देश के गाँव-गाँव और घर-घर में गांधीजी का संदेश पहुँचायें।

(२) लोगों को समझायें कि गांधीजी क्या चाहते थे ?

(३) व्यापक प्रचार करें कि विनोयजी भा भूदान-श्रमदान द्वारा गांधीजी के काम को ही आगे बढ़ा रहे हैं।

यह सब आप-हम कैसे करेंगे ?

- यह काम अपने समझने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम उत्समिति ने विभिन्न प्रकार के फोल्डर, पोस्टर, पुस्तक-पुस्तिकादि सामग्री प्रकाशित की है। इन्हे आप पत्रे और दूयारों को भी पढ़ने को दें।
- इस सब सामग्री और विशेष जानकारी के लिए उपसमिति के ऊपर दिने गये जयपुर कार्यालय से पत्र व्यवहार करें।

“उत्तर प्रदेश” दान के संकल्प की घोषणा

धर्मिया : १७ जुलाई, ६८ । प्रायः सुबह पिपनी १० जुलाई से चल रहे प्रदेशीय कार्यकर्ता-मण्डलन के अन्तिम दिन कार्यकर्ताओं ने प्राचार्य विनोबा भावे की उपस्थिति में हाथ उठाकर ‘प्रदेश दान’ (अर्थात् प्रदेश के हर एक गांव की भूमिदान में लाने का) का संकल्प लिया। प्राचार्य विनोबा भावे ने इस अवसर पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि हमारी यह यात्रा पर्वनारीहण की तरह है। हमें दिना सही रखनी है और एक-एक बचम भागे बढने जाना है। जैसे-जैसे हम भागे बढेंगे, नये नये शिगतो का दर्शन होगा। प्रतिम सिखर पर पहुँचने के बाद नया दर्शन होगा, यह हम भभी नहीं ममस सकते। भभी तो हमें एक के बाद दूसरे सिखर का आगेहण-अम जारी रखना है। अपने देश को सजिन करनेवालों प्रवृत्तियो का निरु करतें हुए कहा कि समाज को यह भाशा बनी है कि “हमारी जमात” जोड़नेवाली है, तोड़नेवाली नहीं। इन प्रेरणा के वनने में हमारा पुरपार्य कम है, लोगो का अधिक है। क्योंकि और सब जगहो से धोर निराशा हुई है, इसलिए हम प्राशा के केन्द्र बने हुए हैं, लेकिन हमें अरमस्त मनक रटना है कि यह प्राशा सजित न हो। “हमारी जमात” की अस्था बरते हुए प्राचार्य भावे ने कहा कि कल्या, कोशगिष्ठा और अहिंसा में आस्थावान दुर्निग का हर अस्थि हमारी अथात में है। हमारी कोई चटारदीवानी नहीं है।

इनने बडे संकल्प के कारण कार्यकर्ताओं में व्याप्त गंभीरता को दृढता प्रदान करते हुए सर्व सेवा सच के अग्रगण्य श्री मनमोहन घोषी ने कहा कि जिस तरह फ्रांस की रोगमनासि का सन्मन डेनिस वेल्ने की एक छोटी-सी जगह पर किया गया था उसी प्रकार उत्तर प्रदेश दान का यह संकल्प इस छोटे-से

नगर के एक कालेज की नक्षत्रालया में किया जा रहा है। और यह प्रातिवाला इतिहास बतायेगा कि यह संकल्प फ्रांस की त्रासकालान्त में मरल से जून भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। दशियों ध्रुव की खोज में निकली एक टीम की साहसिक यात्रा की कहानी सुनाते हुए आपने कहा कि रात्रियों का जहाज दूट चुका था। मजिल तक पहुँचने के लिए एक बारह हजार फुट ऊँची बर्फीली चोटी पार करनी थी। जब वे पाम को उस चोटी पर पहुँचे तो उतरने का वक्त नहीं रह गया था। उस बर्फीली चोटी पर प्रायणत साधनों के कारण उनकी मौत निश्चित थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने बना बहुत देर इंतजार किये चढाई में काम भागे वाली रनिचो की कु इडवाँ बनायी और उन्ही पर प्राँव भूँद कर बैठ गये तथा भगवान का नाम लेकर फिलजना शुरू कर दिया। १२ हजार फुट

की उतराई उन्होंने ढाई-सीन मिनट में पूरी की। हमारा देश आज ऐसी चोटी पर पहुँच गया है कि अगर इन इंतजार करेंगे। तो फिर तबेदा देलना हमारी नसीब में न होगा। इसलिए बलबुद्ध सारी कठिनार्यों के हमें भागे बढना है और बिना किसी संशय के बडते ही जाना है।

श्री विचित्र भाई ने इस संकल्प की अत्यन्त गंभीर और जिम्मेदारीपूर्ण बताते हुए कहा कि इतिहास के आदित्याल से गंगा-जमुना और राम-जुष्ण के इस प्रदेश ने देश को मोडने का नाम किया है। यद्यपि आज यह प्रदेश बहुत बदनाम है, लेकिन बदनामी के इस मिलमिले को और अधिक बढाना नहीं है। बल्कि एक प्रादि वाली ऐतिहासिक परम्परा को पुनर्जीवित करना है। आपने कहा कि भूमिदान जनहृदय की पवित्र गंगा को प्रवाहित करने का अभीरथ प्रयत्न है। भगवान हमें इसकी पूर्ण करने की क्षमता दे।
(१० प्रे० स०)

चाराणसी जनपद में चन्दौली का प्रथम तहसीलदान घोषित

चाराणसी जनपद के चन्दौली तहसील-दान की व्यूह-रचना गत रात्रि १५ जनवरी '६८ को चहिनिया क्षेत्र से प्रारम्भ हुई। जनवरी माह में चहिनिया का प्रसङ्गदान, मार्च में घानापुर का प्रसङ्गदान व मई में नियामतावाद का प्रसङ्गदान घोषित हुआ। जून में एकसाय भेष तीन प्रसङ्ग—बराहनी, चन्दौली व सकसडीहा—के प्रसङ्गदान की लेकर छः प्रलम्बो में पंती हुई तहसील चन्दौली के ११६ गाँवों में से ६०६ गाँवों में प्राप्त दान की घोषणा की है। इस प्रकार चन्दौली का तहसीलदान (८६ प्रतिशत) अवसयमेव चाराणसी जिलादान के प्रथम चरण का साहसिक कार्य सम्पन्न हुआ है।

तहसील के बयोदुष्ट सेवक रामनूरजी मिश्र तथा नामता प्रसाद विश्वार्थी, सचन क्षेत्र प्रमरगा व पहीर गाँव के मवालय

रघुनाथ पाण्डे, भवानीचन्द एवं वहाँ के सभी कार्यकर्ता तथा जिला सर्वोध्य मरल ने सरजू प्रसाद शर्मा तथा प्रसन्न भाई और उत्तरप्रदेश सादी कमीशन श्री धोर से तृप्तानी कधि मातवर चिन्म मुलू ने सातिरतक जी-जान से जुटे रहे हैं।

चन्दौली में २८ जून '६८ को तहसील-दान घोरेण भाई को समपित किया गया। इस अवसर पर प्राप्त दान के विचार का सही-कल्या करते हुए घोरेण भाई ने कहा कि भूमिदान का काम जो हो रहा है, वह बात-पुष्ट कर रहा है। सचय के हितव से समाज को चलने और नियमित करने के जो प्रय तक के दण्ड और बाधन के तरीके रहे हैं, वे सभी पढ गये हैं। लोग जीवन को प्रय वे पच नहीं सकते।

गोहत्या की क्रमिक योजना

परिवार-नियोजन का देश को निर्माल्य बनानेवाला कार्यक्रम

“अगर भारत के लोग, जो गाम का मांस नहीं खाने हैं, खाने के बजाय उसका अन्य देशों को निर्यात करें तो देश की रक्षा पर जितना खर्च धारा हो रहा है वह भारा-का-भारा गैरमांस के इस निर्यात से कमाया जा सकता है।” यह देश के उन “प्रयुक्त प्रयं-शक्ति” का मत है, जिन्होंने सरकार द्वारा पिछले जून में नियुक्त की गयी गो-रक्षा समिति के मामले अपने बयान दिये हैं। समिति प्रथम तक ऐसे ५५ “विशेषज्ञों” की गवाही ले चुकी है और इनमें से अधिकांश विशेषज्ञ गायों के बचन पर प्रतिबन्ध लगाने के विरुद्ध हैं। इन लोगों का मत है कि बेकार पशुओं को खिलाने में जो खर्च होता है वह देश का अत्यधिक और अशुभ प्रयास थाटा हो रहा है। इन विशेषज्ञों की राय में भारत के मौजूदा पशु-धन में केवल १०% ऐसे पशु हैं, जो “उपयोगी” कहे जा सकते हैं। इन विशेषज्ञों ने यह मुझाया है कि “ये १०% पशुओं को खतम करने की एक क्रमिक योजना बनानी चाहिए।”

उपर्युक्त मवाद अग्रणी के प्रतिष्ठित दैनिक “स्टेट्समैन” के २ जुलाई के अंक में प्रकाशित हुआ है। इन मवाद पर अधिक टीका-टिप्पणी करने की आवश्यकता नहीं है। इन देश का यह दुर्भाग्य है कि उनमें प्रशासन की बागडोर राज ऐसे ही “बुद्धिवादीय और विशेषज्ञों” के हाथ में है। और ऐसे ही लोगों की राय का महत्त्व है, जिनका इन देश की सभ्यता, परम्परा, जीवन-भूत और उनके प्रायिक जीवन की वास्तविकता धारि से कोई वास्ता नहीं है। वे लोग हर चीज को स्वयं-भोग के दृष्टिकोण से ही देखते हैं और स्वाह की संकेत और संकेत की स्वाह दिखाने की बौद्धिक कलावाली में निपुण हैं। गोपाम खाने से परहेज करना दखिानूसीपन की दिवानी है, इनका कहने की हिम्मत तो इन विशेषज्ञों की शायद नहीं है, लेकिन उनका यह कहना है कि हमें गोपाम खाने से परहेज है तो हम उसका निर्यात

करके पैसा क्यों न कमायें, उनकी इस भावना का मकूल है। उनकी नजरो में गाय को न मारने और न खाने में बहुत के प्रस्ताव और ब्रियो तर्कपूर्ण या बुद्धिवादी की बनीन का भान होना तो वे ऐसा बेधाम और उपहास करनेवाला मुझाव न देते। देश का विकास चाहनेवाले और देश की कमाई बढ़ाने के लिए इच्छुक इन योजनाकारों, विशेषज्ञों और बुद्धिमानों की धोर में यह मुझाव धाना और वाकी है कि देश की कुल जनसंख्या के उन १५-२० फीसदी बूढ़े, बेकार, अघाटिज, जूले-संगडे, तपेदिक बैंगर या कोड धारिज लाइलाज रोगों से पीडित लोगों को समाप्त करने की क्रमिक योजना बनानी चाहिए, ताकि उनकी जीवित रखने और निभाने में जो व्यय वा खर्च राष्ट्र का ही रहा है वह बच सके। पराबन्दी जेमे काम से करोड़ों रुपये की “हानि” होगी, इस दलील का अर्थ प्रब लोगों की समझ में अछी तरह से घा जाला चाहिए। हमारे देश के इन अर्थशास्त्रियों और विशेषज्ञों की इस बात से मतलब नहीं है कि

कमाई और धन की बचत दिन तरीकों में होनी है। वह चाहे गोमास बेचकर हो, कराव वा व्यापार करके हो, लोगों में जुगालोरी बढ़ाकर हो, वेग्यालय खोलकर हो, भूगहना करके हो, चाहे बूढ़े और अघाटिजों जैसे अशुभयोगी लोगों को मारकर हो—कमाई और बचत होनी चाहिए, ताकि हमारे इन रासकों, योन्तवाकारों, अर्थशास्त्रियों, विशेषज्ञों राजनीतिक नेताओं, उद्योगपतियों, व्यापारियों और पडे-लिखे लोगों की अघनी “वाल-रोटी” का खर्च चलाने के लिए हजारों-लाखों रुपया माहवार मिलता रहे।

× × ×

प्रसिद्ध भारत सारखड पाटी के अरुस धारिवासी नेता श्री मुजनी वा कहना है कि भारत प्राकृतिक साधनों से समान और अगुपूरा है, लेकिन वह दुर्भाग्य कि वात है कि उन साधनों वा उपयोग परीवी की मिटाने में बरने के बजाय इस देश की नेत्रिय और प्रांतीय सरकारें परिवार-नियोजन जेमे कार्य-क्रम में अघनी पूरी शक्ति लगा रही हैं, जो कार्यक्रम “सधु की कमजोर और निर्माण करनेवाला है।” लेकिन हमारे बुद्धिमानों और विशेषज्ञों की राय इस सोचे गये धारिवासी से भिन्न है।

—सिद्धराज इह्या

टीकमगढ़ जिलादान अभियान

निवाडी तहसील में ६४ ग्रामदान प्राप्त

टीकमगढ़, १३ जुलाई। मौसम की पहली बारिश और सूफान के साथ ही जिले की निवाडी तहसील में १ जुलाई से जिलादान अभियान शुरू हुआ। सर्वप्रथम निवाडी में दो-दिहसीय सिविल हुआ। तत्पश्चात् प्रखंड के गांव-गांव में ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य का संदेश पहुंचाने के लिए १६ टोलियों के प्रखंड में ५० भाई-बहनें पांच दिवसीय पदयात्रा के लिए निरल पडीं। इन पदयात्रा-टोलियों के देश के लगभग ६० गांवों का अभिगत विधा, फलस्वरूप ५० ग्रामदान घोषित हुए।

जिलादान-अभियान के प्रथम दौर के पूर्व निवाडी तहसील के तरीचरवाला गांव में पूर्ववर्तीरी वा एक दूसरा सिविल संघल

हुवा, जिसके धर्मनय देश के १४ गांव ग्रामदान हो चुके हैं।

टीकमगढ़ जिलादान अभियान में १० प्र० गांधी-स्मारक-निधि, मर्दोव मंडल, गांधी ग्राम्य के कार्यकर्ता और शानि-नेता जिलालय मन्सूरवाला गांधी बहनों के अलावा स्थानीय शिक्षक भी भाग ले रहे हैं। अभियान वा मार्गदर्शन भी गांधी निर्मला देशपांडे स्वयं कर रही हैं। अभियानों वा संयोजन और गवा-लन निधि के वरिष्ठ सेवक श्री. रामचन्द्र भागवत कर रहे हैं। जिले के १००१ गांवों में से प्रथम तक ४२५ गांव ग्रामदान में सम्मिलित हो चुके हैं, जिनमें टीकमगढ़ का तहसीलदान भी शामिल है। [अग्रय]

ग्रामदान-पत्र : शुक्रवार, २६ जुलाई, '६०

उत्तर प्रदेश दान का संकल्प इतिहास का संकेत

विषय इतिहास के मन्त्रालय का नाम है कि कामरम से दुनिया में जीवन की महार दौलती है और कुछ मन्त्रीय मामलों निजनापी है प्रथम मूलतः अपनी रिखा एक होती है प्रकृति एक होती है। पिछले कुछ दशकों में कामरम इतिहास विषयवस्तु के समय जब कि साम्राज्यवादी शक्तियों को नज़ीबार से टकराव लेनी पड़ी दुनिया में उपनिवेशवाद से मुक्ति की छटापट्टा बहुत ही तीव्रता के साथ पैदा हुई और दुनिया के मलक्चि से उपनिवेशवाद को बागो छायी दुन मन से मगात होने लगी। उषवे साथ ही स्वच्छलन राष्ट्रो मे लोकतांत्रिक कमान चरता को जबरदस्त प्रकाशा भी पनी और प्रथम ही सुरमात हुई तथापि बहुमो बाहरी और भीतरी विपत्तियों के कारण प्राय हर देश में लोकतंत्र की यह रचना कम फल निम्न हुई और सैनिक तानाशाही से उन पर प्रान्त एन जमा किया। इतने बरा परछ रहे इसो हृष उममे न जाकर सिर्फ इन बन की और खेन बरना बाहरी है कि दुनिया को प्राकाशा और उनका प्रखर प्रशंश प्राय समात रहा।

अमेरिका और यूरोप ने कुछ धुवा देवों मे विनियत इन लत रीय लोकतांत्रिक प्रथाको वा दुनिया में ध्याक प्रसार होने से उसकी नीमाएँ और विपणनिय भीषण स्पृष्टा के साथ विषय के निचालो मे लेकर सामान्य जनता तक की निगाहों के सामने धा रही है। और यही कारण है कि वर्तमान काल मे दुनियाँ इष्टाओं की निगाहें धानुता क साथ निरन्तर की चलान सामान्य मनुष्य के मन प्राप्ति है कि लोकतंत्र की विफलता सामान्य मनुष्य के मन को प्राप्ति का और भीष रही है। और लोक इतिहास की बान धाने लगे हैं। इतने देत में भी हय धनरुको वा सम्पन्ना की बान धाने लगे हैं। इतने देत में भी हय धनरुको वा सम्पन्ना की बान धाने लगे हैं। इतने देत में भी हय धनरुको वा सम्पन्ना की बान धाने लगे हैं।

एक तरफ यहाँ इन तरह की मनोभावनाएँ बढ़ी ह बही दुनियाँ को न कवन विरोधा हो विफलता एन गिना से लान है।

एक तरफ में विषय इतिहास के मूल्य विज्ञान और कोटी के विचारक डॉ॰ मार्क्स डायनको वा टिप्पणी से प्रभावित बनने की दैनिक रि टिप्पणल दारुण ' के इ युनाई डेड के संके में प्रकाशित एक लेख 'मानव जाति की धामा का एक विरासत'—(A pyramid of hope for mankind) धारण महत्त्वपूर्ण है। डॉ॰ टायनको वा कहला है कि अिन मन्त्रियों मे मानव प्राने कारोबार को व्यर्थीयन करने

में प्रयत्नशील है उनसे वे माल्य प्रान्तुण है। उनका मन है कि 'राष्ट्रीय सरकार' (National state) पद्धती सदी को मन्त्रिय प्रान्तुण को देन है 'समय' 'रे वा सदी की भारतीयताणा है विनिर्माण का मूलभूत माध्यम स्वयं' मूलभूत विधान और बना की चीज के समय में ही बल रहा है। इन सारे साधना वा प्रयोग वनमान धारणिक और कम्यूटर युग म भी पहले की तरह हो किया जा रहा है। अब कि वनमान स्वकच म ये पारम्परिक मन्त्राएँ और अवधारणें बिलकुल ही मन्त्राव्यवहारिक है और इनसे मात्र के अभिलक्षित प्रयो जन निम्न गयी हो सकते।

डॉ॰ टायनको के अनुसार इन युग को धारणताओं को पूर्ण ऐसी ही रचना म सम्भव है, जिनमें मनुष्य का मनुष्य ने मीमा सम्बन्ध भावे। विचार को भाषी राजनीतिक रचना को बुनियादी इकाई अपनी ही बही हो सकती है जिनमें मनुष्य का मनुष्य मे तीव्र सम्बन्ध बने और कथम रहे। इन बुनियाद पर ही विचारधारा की भासिरी मजिल टिकेगी। सबसे निचरी बुनियाद और सबसे ऊपरी निरे के बीच का सम्बन्धन बताये रखने व लिए मन्त्रियाँ इकायनी बनायी जानी चाहिए।

डॉ॰ टायनको का यह वाक्य—ग्रामस्थान सबसे निचले स्तर पर और विषय-प्रकार सबसे ऊपरी स्तर पर (Village Communes at the bottom and a world government at the top)—धारास्वरूप क विचार को ही मूलभूत मन्त्रात्मक बनाता है। (विरोधाजी ने तो जाप ही दिया है हमारा तब प्रगमल हमारा मन जय जय ।)

डॉ॰ टायनको ने अपने निष्कर्ष का धारित म स्पष्ट कहा है कि यह केवल कोरी कल्पना नहीं है बल्कि युग की मांग है और बिना बल लोप इन रिणा म दुनिया को लेनी से धारो बढ़ना चाहिए। धारणा 'दुनिया जागतिक धारावर्तना की निवार हो जायको और यह धारावर्तना करने को धारावर्तना की माननेवाले युगों पर लोपा क लिए भी धारणीय होगी।'

डॉ॰ टायनकी का मन्त्र हमारे गिना एक महत्त्वपूर्ण विचारनी है। विनोता मे दुनियाँ और महाभूतल की जो बान बही है वह इतिहास की मांग है। इसी मांग ने उल गिन १२ युनाई डेड को बनिया म विनोता क मन्त्र उल्लेख्य क कथकर्ता भासियों को २ धमयूदर १६ तक उल्लेख्य-दान क लिए सर्वज्ञ होने की प्रणाली जिसे लन विषय मच क धरणा मनोभावना चोपरी ने धाम की दामयन्त्रात्मक क सत्य की कोटि का बागाम।

यही प्रणाल्य देव क हर प्रण्य मे पैदा होगी और जमा कि विनोता मे बनिया मे बिदा होने समय बरदा—'मन्त्रीय मजिल स बरदा के माधुनिक मुक्तकाल को प्रारंभ करने क लिए प्रभावशाली मो प्राने से साथ लता देता है इन प्रारंभ हर कार्यकर्ता मनुष्य होकर काम बनेगा—मैनी मजिल हयि अभावशाली देना महत्त्वपूर्ण विचार धारा है। •

एक नयी शक्ति के आविर्भाव की सम्भावना

[दिनांक १४-७-६८ को बलिया में उत्तर प्रदेश के कुछ शिक्षाविदों की गोष्ठी आचार्य-कुल की स्थापना के संदर्भ में खिलोवा के गान्धिवन में हुई। उक्त गोष्ठी की गतिमत्ता का पता प्रस्तुत है।—मं०]

प्रारंभ में आचार्यकुल-गोष्ठी के अध्यक्ष-पद के लिए श्री कृष्ण भार्गव ने कानपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति, आचार्य जुगुन बिष्टा का नाम प्रस्तावित किया। इसके बाद श्री वीरेश्वर श्रीवास्तव ने गोष्ठी में भाग लेनेवाले उपकुलपतियों, डिप्टी चांसलर के प्राचार्यों और अन्य विद्याविदों का स्वागत किया और आचार्यकुल की योजना की एक संक्षिप्त जानकारी प्रस्तुत की। आगे आचार्यकुल की संरचना के चार मुख्य उपाय बताये :

- (१) सामान्यतः शिक्षा,
- (२) दलपन राजनीति-मुक्त विद्या,
- (३) अध्ययन-भाषागत की मुद्दों की,
- (४) नैतिक शक्ति के निर्माण द्वारा समाजिता का ध्यान।

आपने कहा कि इन्हीं चार लक्षणों के चोखे के भीतर गोष्ठी की आचार्यकुल का निर्माण करना है। लेकिन यह सरल-रेखा नहीं है। विद्वत्-जन इसके बाहर जाकर अपने विचार प्रकट कर सकते हैं।

आचार्य जुगुन बिष्टा :

घाज की परिस्थिति में गिराने को गोचन होमा कि उनका क्या वर्णन है। पुराने समय में शिक्षकों का बड़ा ही ऊँचा स्थान था। परन्तु घाज यह स्थान ह्रासित हो गया है। शिक्षकों की मान्यताएँ घाज घटती गयी हैं। घाज की जो नयी मान्यताएँ हैं, उन पर सोचना चाहिए। नयी मान्य-ताओं को हम अपने जीवन में दाखिल करने और निष्पत्तियों में तथा समाज में हमना प्रचार करें। नयी मान्यताओं के आधार पर ही नया समाज बन सकता है, और रोप दूर जिंदा जा सकते हैं। थ्यडेय विनोबा ने जिक्र किया है कि शिक्षण-पर्याप्त शालनमुक्त हो। लेकिन जब तक शासन है, तब तक उनमें

विद्युत् मुक्त होना सम्भव नहीं लगता। समाज में दलपन, सामंजस्य के अनुसार समाज हो, तब शिक्षा शासन-मुक्त हो सकती है और शिक्षा स्वायत्त रूप से काम कर सकती है।

हमें सोचना होगा कि समाज का ढाँचा क्या बनना चाहिए, जनशक्ति के संगठन हो। समाज में जनशक्ति की प्रधानता हो, तभी शिक्षण संस्थाएँ शासनमुक्त हो सकती हैं। समाज का ढाँचा बदले बिना शिक्षण-संस्थाएँ शासनमुक्त नहीं हो सकती, किन्तु प्रश्न है कि वह ढाँचा क्या हो।

आज समाज में शोषण की शक्तियाँ भी बड़ी हैं। उन्हें भी दूर करना है।

जनशक्ति को बढ़ाने के लिए २० वर्षों में कुछ भी प्रयत्न नहीं हुए, लोकतंत्र कमजोर हुआ। अधिकारों की तरफ ज्यादा ध्यान दिया गया है। घब बर्तणों की ओर ध्यान दिया जाना चाहिए। आज शिक्षा बंद रही है, लेकिन साथ ही भ्रष्टाचार भी बढ़ रही है। इन भ्रष्टाचार और हिंसा को खत्म करना होगा। नये समाज का निर्माण हमारे अन्दर में ही होगा। बाहरी परिस्थितियों से नहीं।

विनोबा :

मुझे कोई त्याग सम्भावना प्रवचन करने की आवश्यकता नहीं। हम वारे में कई भाषण कर चुका है विहार में। इगकी छोटी-सी पुस्तिका बनी है, वह भाषणों की मिस्री होगी। जिन्हे वह न मिली हो, वे प्राप्त कर सकते हैं।

इसकी कल्पना कैसे उचित हुई, इसका विवरण इस पुस्तिका के पोछे में मया है। बिहार में आचार्यकुल की स्थापना हुई है, यहाँ भी प्रायः स्थापना करना चाहते हैं। मच्छा है। पूरे भारत में इसी स्थापना होनी चाहिए।

इसमें छोटे शिक्षक का भी समावेश हो, इस तरह का प्रश्न उठा। इस पर मैंने सोचने की आवश्यकता महसूस की। मैंने सोचा भी है। यह भाषण के सामने रखना है। 'आचार्य' शब्द का अर्थ, रामानुज आदि के लिए इस्तेमाल हुआ है, लेकिन इसमें नीचे सर्वमान्य शिक्षक के लिए भी 'आचार्य' का इस्तेमाल हुआ है—'मानु देवो भव, शिवु देवो भव, आचार्य देवो भव।' इस तरह मात्रा और विद्या के चार शिक्षक के लिए 'आचार्य' शब्द का इस्तेमाल हुआ। आचार्य बहते हैं कि विद्यापियों को हमारे जो सुचरित होयें, उनही उपायना करने हैं, अन्य की नहीं। आचार्य हो गये तो गलत काम करते नहीं, ऐसा नहीं। अच्छे काम करते हैं, गलत काम भी करते हैं, लेकिन अनुकरण अच्छे काम कर सकता है, जो सर्वमान्य है। गलत काम का अनुकरण नहीं करता है।

तो मैं वह रहा था कि 'आचार्य' शब्द पुराना है, और व्यापक अर्थ में इसका उपयोग हुआ है। इसलिए इसको ही मानना ठीक होगा, 'गिहश' शब्द को नहीं। क्योंकि 'गिहश' का मतलब शालीम दिवेवाला होता है। मजेजी में दाखल के लिए 'टीचर' शब्द का इस्तेमाल हुआ। 'टीचर' यानी 'टीचने' वाला। यह नया शब्द है, बनाया हुआ शब्द है। 'टीचना' यानी सिखाना। अंग्रेजी में दो बिदाएँ हैं 'लनिंग' और 'टीचिंग'। हमारे यहाँ कितनी भी भाषा में 'टीचिंग' और 'लनिंग' अलग-अलग नहीं है। 'टीचिंग' शब्द है ही नहीं, 'लनिंग' ही 'लनिंग' है। हमें शिक्षकों को बिदादरी नहीं बनानी है। शिक्षकों को बिदादरी तो सारा समाज है। आचार्यों को बिदादरी इससे भिन्न है। बिहार में—भागलपुर, मुंगेर, मुजफ्फरपुर और पटना यूनिवर्सिटी में—इसे मान्य किया है।

मेरे पास भी गजनेत्रशब्दर (बम्बई विश्वविद्यालय के उपकुलपति) घाये थे। उन्होंने आचार्यकुल के विचार को पठन-पिया और वे चाहते थे कि मैं बम्बई में होने-वाली विश्वविद्यालय के विद्यापियों को शिक्षकों की गोष्ठी में बचूँ। पर मैं नहीं गया। मैंने माना है कि एक ही सारे सब सारे। सामंजस्य मेरा मुख्य काम है। बिहार-



इस अंक में पढ़ें

बलिया का जिलादान

पाँच की बातें

प्रति बीस से अधिक और परिपूरित मित्रों का दर्शन हो।
 २६ जुलाई, '६८

२६ जुलाई, '६८

वर्ष २, अंक २४ [१८ पृष्ठे

बलिया का जिलादान

आपने सुना होगा अभी १० जुलाई को बिनोबाजी बलिया आये थे। १० से १५ तक ६ दिन रहे। १५ की शाम को छत्रा गये।

पूरे ६ दिन बलिया में तूब चहल-बहल रही। पहले दिन जिलादान समारोह था। उगो दिन तीसरे पहर विकास-सम्मेलन हुआ। दूसरे दिन मित्रकों का सम्मेलन था। तीसरे चौथे दिन उत्तर प्रदेश भर से आये हुए सेरकों कार्यकर्ताओं ने अपना सम्मेलन किया। पाँचवें दिन, १४ ता० को कई विद्वान्बिद्यालयों के उप-कुलपति तथा प्रोफेसर आये, सर्वा को घौर बिनोबाजी के सुभाव पर एक नया सत्राटन बनाया—'आचार्य-कुल', यानी आचार्यों का परिवार। १५ ता० को प्रतिष्ठित कार्यक्रम था। मुबई पार्लि-सेना की रेवी विहली शेखर की बैठक में राज्य-भर से आये हुए कार्य-कर्ताओं ने 'उत्तर प्रदेश

दान' का सत्य किया। तीसरे पहर बिनोबाजी भी बिबाई हुई।

इन कार्यक्रमों में घारीक होने के लिए समयम हट मिले से कार्यकर्ता आये थे—युवक कार्यकर्ता, वरिष्ठ लोग, पुरप, सिपाया, सब। श्री गांधी आश्रम और स्वराज्य आश्रम आदि छात्री-छात्रीयों का काम करनेवाली, गांधी स्मारक निधि, बनारसवा, गांधी जन्म-संस्था, पार्लि-सेना, आदि सभी सत्पाथों के लोग थे। सर्व-सेवा-सत्य के सध्यर और मंत्री थे। जुहुओं में दास्य कृताज्ञानी थे, जो सय ८२ साल के हो गये हैं। आसि से कम दिखारि देत। है, लेकिन आवाज में वही तेजी है, और दिल देत के दर्द से भरत हुआ है।



उनके बार के लोगों में श्री जयप्रकाशजी थे, जिन्होंने पूरे तीन दिन का समय दिया, श्री घोरिन् माई अत्यन्त हीने हुए भी दरभंगा से आये घौर पाँच दिन रहे, श्री विविध माई, श्री पतिप माई, ऊबुर देवकरन मिह, श्री राज-राम माई और श्री करप माई पूरे समय डटे रहे, घौर पूरे कार्यक्रम की संभारते रहे। कुल मिला-



आमदान के बाद यह आपस की लड़ाई खर होगी, सेन भास्य बर्दा।

आम स्वराज्य में इत राज्य संघ का बन्धन टूटेगा, सय मिलकर काम करेंगे। 11

कर बहुत अच्छा जमपट था। बहुत दिनों से उत्तर प्रदेश के इतने रथनारमक कार्यक्रमता एक जगह नहीं इकट्ठा हुए थे। रामभग सबके मन में यही समन थी कि किस तरह उत्तर प्रदेश में ग्रामदान का काम बढ़ाया जाय, ताकि बलिया की तरह दूसरे जिलों का भी दान सन् १९६६ तक पूरा हों जाय।

१० ता० को साढ़े दस बजे टाउन डिप्टी कलेज की बड़ी 'नाटकदाला' में जिलादान समारोह शुरू हुआ। स्वागत-समिति के अध्यक्ष ने, जो जिला परिषद् के भी अध्यक्ष हैं, स्वागत-भाषण पढ़ा, श्री विनोबाजी को जिलादान समर्पित किया। उन्होंने बताया कि जिले के लगभग साढ़े सोलह सौ गाँवों में से लगभग साढ़े चौदह सौ गाँवों का ग्रामदान हो गया है। एक नयी चेतना पैदा हुई है। अब उनकी शक्ति प्रकट करना है। बहुत अद्भुत दुःख वह था, जब समर्पण के बाद श्री जयप्रकाश नारायणजी उठे, ग्रामदान की निष्ठा घोड़ी-घोड़ी, धीरे-धीरे पढ़ी और ग्रामदानो गाँवों से प्राप्ति हुई जनता ने उनके पीछे-पीछे दुःख था। श्री जयप्रकाशजी खुद बलिया जिले के हैं। उनका गाँव ३० जनवरी १९६६ को सबसे पहले ग्रामदान में शरीक हुआ था। जयप्रकाशजी के बाद लगभग एक दर्जन ग्रामीण भाइयों ने शरीक शरीक उठकर घोषणा की: "मैं अपनी भूमि से से दीक्षा-बिस्वा के अनुसार...बिस्वा भूमि अपने गाँव के भूमिहीन भाइयों को देता हूँ।" कितनी बड़ी बात है कि जिस भूमि के लिए प्राप्ति क्या नहीं कर डालता, उसीके एक टुकड़े को ग्रामदान के बाद वह खुशी से दे रहा है। घोषणा करनेवाले अपनी भूमि फसल बटने के बाद दे देंगे। यह ग्रामदान का दान कैसा धनोष्ठा है कि सब सबको देते हैं, और सब सबसे पाते हैं।

विनोबाजी ने बलिया की जनता के सामूहिक संकल्प की प्रशंसा की, और बताया कि संकल्प में बड़ी शक्ति होती है, जो गाँव के विकास के लिए बहुत आवश्यक है। अन्त में श्री जयप्रकाशजी ने उठ पड़े के भाषण में बताया कि किस तरह सौ में कम-से-कम पचहत्तर लोगों के तथा गाँव में गाँववालों की जो भूमि हो उसका सौ में ५१ हिस्सा ग्रामदान में शामिल हो जाय तो गाँव का ग्रामदान होता है; बल्कि वही ७५ प्रतिशत जनता ग्रामदान में आ जाय तो ग्लोबल होता है, और जिले के सब वर्गों का दान हो जाय तो जिलादान माना जाता है। जिलादान का यह अर्थ नहीं होता कि तुरन्त सारी व्यवस्था ठप हो जायगी, या बदप्रमनी फैल जायगी, या बाहर से कोई आकर

जिले पर कब्जा कर लेगा। जिलादान का अर्थ यह है कि जिले का हर गाँव ग्राम-स्वराज्य सभा बनाये, ग्रामकोष इकट्ठा करे, शान्ति-सेना का संगठन करे, रगड़-भगड़ गाँव में ही निवटायें, और गाँव के लोग सर्व-सम्मति से, सबका ध्यान रखकर, अपना भीतरी काम चलायें और सबके विकास के लिए योजना बनायें। जयप्रकाशजी की बातें सुनकर सबको भरोसा हो गया कि जिलादान में डरने की कोई बात नहीं है। सचमुच ग्रामदान-जिलादान राज्यदान, आदि एक नयी व्यवस्था की सीढ़ियाँ हैं। उस नयी व्यवस्था को, जिसमें राजनीति नयी होगी, पर्यनीति नयी होगी, शिक्षा-नीति नयी होगी, ग्राम-स्वराज्य कहेंगे। ग्रामदान ग्राम-स्वराज्य की पहली सीढ़ी है।

विनोबाजी ६ दिन रोज बोलते थे। भाषणों के प्रलावा सुबह से शाम तक कार्यक्रमता, अधिकारी, जिले या शहर के लोग मिलते रहते थे और ग्रामदान-प्राप्तोत्सव के बारे में चर्चा करते थे। विनोबाजी और जयप्रकाशजी की चर्चाओं और भाषणों से जनता के दिमाग की सफाई हो गयी। बलिया में कुछ लोग यह सोचने लगे थे कि जिलादान के बाद न जाने क्या होगा, लेकिन विनोबाजी और जयप्रकाशजी के भाषणों से मन का सन्देह निकल गया, उल्टे एक नयी आशा जग गयी, एक नया विश्वास पैदा हो गया कि ग्रामदान में उन सब प्रश्नों के उत्तर हैं, जो आज जनता को परीदान कर रहे हैं।

अब उत्तर प्रदेश दान के संकल्प के बाद जिले-जिले के कार्यक्रमता अपने अपने जिले में लोगों से मिलेंगे, और मिलकर जिलादान की योजना बनायेंगे। वे गाँव-गाँव जायेंगे, आपके सामने ग्रामदान-ग्राम-स्वराज्य का विचार रखेंगे, और आपके ग्रामदान के घोषणा-पत्र और समर्पण-पत्र पर हस्ताक्षर करने को कहेंगे। आप उल्टा के साथ ग्रामदान में शरीक हो, और दूसरों से शरीक होने के लिए कहें। पड़ोस के गाँव में जायें और वहाँ के लोगों से हस्ताक्षर करायें।

उत्तर प्रदेश के ५४ जिलों में से २ जिलों का 'दान' पूरा हो चुका है। सिर्फ ५२ जिले और बचे हैं। अगर सब जिलों में एक साथ काम शुरू हो जाय तो सालभर में 'उत्तर प्रदेश-दान' का संकल्प पूरा हो जाना मुश्किल नहीं है।

यह आन्दोलन जनता की मूर्खता का है। बस एक बार यह समझ जाय कि ग्रामदान मूर्खता का द्वार है तो उसे ग्रामदान की अपना लेने में डेर नही लगेगी।



कैसा परिवर्तन, कितनी सज्जनता !

(एक)

दरभगा जिले के मधुबनी समुण्डल का गाँव धगजरी ।
 १० मार्च को ग्रामसभा गठित करने हम था पहुँचते हैं ।
 ग्राम्यता हुए नवन कामत (हरिजन) और मत्री सकुन भण्डारी ।
 गाँव के एक सौ घरों में अधिक घर केवटों के हैं । कुछ लडके
 हाईस्कूल और कालेज में पढते जाते हैं । गाँव के मुकुन्दभे,
 ग्रामदान होने के बाद, कचहरी से उठा लिये गये हैं । अपनी
 शोधण-भुक्ति-समिति बनाकर सब लोगों ने श्रमयज्ञ किया,
 जिसमें तालाब की कुम्भी-सफाई की और एक फर्लाग लम्बी
 नहर खोदकर धान सीचा गया । उसना ही लम्बा एक बाँध
 भी बनाया है । अब फिर सामूहिक पुष्पाय से नहर को गहरा
 करता है । ग्रामकोष में १३ मन धान इकट्ठा हुआ है ।

वकरीद है, मुसलमानों के घर जाकर 'ईद मुबारक' कहता
 हूँ । मैदा चीनी के अभाव में उनका त्योहार सूखा है, मुझे सुपारी
 ही दे पाते हैं । गाँव का कट्टा अमीन सबको भूदान में मिली
 है । उनकी पत्नी में सन्तोष है, "कर गुजरान गरीबी से !"
 एक बहन से जब हाथ चाल पूछता हूँ, तो कहती है, "धे
 (हिन्दू) हैं, तो हम हैं सरकार !" बच्चों से पूछता हूँ कि वे
 पढ़ते हैं या नहीं ? उत्तर मिलता है, हाँ । तबलीम पढता था,

जो धव भैंस चराता है । गाँव में हिन्दू-मुसलमानों का परस्पर-
 प्रेम देखकर, मुझे वरेली के चुन्नी मिर्चा वा स्मरण हो प्राया,
 जिन्होंने एक साथ रूपये का राधाकृष्ण मन्दिर बनवाया है और
 जो अपने को चुन्नी भाई कहलवाना अधिक पसन्द करते हैं ।
 और यह भूदान-कार्यकर्ता सकुन भण्डारी, जिने उसके सनातनी
 चाचा ने तीन वर्ष बहिष्कृत कर दिया, चूँकि वह मुसलमानों के
 घर जाता, खाता है ! अब उसने चाचा का प्रेम पुन प्राप्त कर
 लिया है ।

(दो)

रोज नया पडाव, रोज भगवान् के नये रूप के दर्शन !
 सुबह गाँव में ढोल पिटवा देते हैं, शोधर के बाद पचास-सौ
 ग्रामीण जुट जाते हैं पेड़ तले, सामूहिक भजन, प्रार्थना और
 मैथिली गीतों के बाद बैठक दो-तीन घण्टे तक चलती है । कभी
 कोई भूमिदान भोजन कराता है । कभी भूदान निगाल 'मुठिया'
 इकट्ठा कर दाल-भात, फ्रासू खिलाते हैं । कभी सनुआ, तो
 कभी मल्लप्रान-बावा (शकरकद) । विठौली में उस दिन भूसे
 रहना पडा, ग्रामसभा नहीं गठित हुई । रात को एक भूमिदान
 ने प्राकर कहा : "भाप भूले रहेगे तो हमारे गाँव को पाप
 सगेना । मेरे घर चलिये । मगर, हाँ, ग्रामदान पर मैं दस्तखत
 नहीं दूँगा ।"

भला धार्मिक सुबह चुपचाप दस्तखत देता है, गाँव के
 लोग उसे ही ग्रामसभा का अध्यक्ष चुनते हैं । कैसा परिवर्तन !

— जगदीश धबानी

दो साल पूरे हो गये

इस अंक के साथ ही 'गाँव की बात' के प्रकाशन का दूसरा
 वर्ष पूरा हो रहा है । इन दो सालों में कार्यकर्ता साथियों,
 पाठकों और गाँव के भाई-बहनों ने इसे जिस हाँदिका से सप-
 नाया है, स्नेह, सहानुभुति और सहकार दिया है, उसके लिए
 हम आभारी हैं और तीसरे वर्ष के आरम्भ के साथ ही हम
 कुछ और अधिक निश्चला की माया करते हैं ।

'गाँव की बात' के प्रकाशन के पीछे मशा यह रही है कि
 आन्दोलन के विचार को गाँव तक पहुँचाने का काम अधिक
 बुगजला के साथ किया जा सके । उसदिशा में प्रगति धीनी
 है, यह विला का विषय है । बलिया में विनोबाजी ने कहा
 कि हमारा विचार गाँव गाँव तक पहुँचने और उसके सामूहिक-
 धारण की व्यवस्था हो, तभी आन्दोलन की बुनियाद ठोस बनेगी ।

यह तभी हो सकेगा, जब गाँव-गाँव में फैले हम सब साथी इन
 काम की ओर भरपूर ध्यान देंगे । क्यों न हम यह लक्ष्य बनायें
 कि जिस गाँव का ग्रामदान होता है, उस गाँव में 'गाँव की बात'
 का कम-से-कम एक प्राहक तो हम बनायें ही । इसके काम को
 गति मिलेगी, यह वायद बिलने की अकूत नहीं है ।

'गाँव की बात' को प्रलग पत्रिका के रूप से निकालने के
 लिए दो साल से कार्यवाही चल रही है, अभी तक प्रेस रजिस्ट्रार
 की ओर से स्वीकृति नहीं मिली, जिसके कारण काफी
 कठिनाई हो रही है । देखें कब तक दिल्ली के दायर का दरवाजा
 खुलता है !

पुन भार सबसे प्रति आभार प्राप्त करते हुए, सबैव,
 सहयोग की प्रासा में — सम्पादक



भूमिहीनता का कलंक

में रिश्ता में बैठकर बैतून से करजपाव जा रही थी। रिश्ता बीच-बीच में खराब हो जाया करता था, और रिश्ता-वाला परेशान था।

“क्यों भाई, यह रिश्ता तुम्हारा अपना है, या किराये पर है ?” मैंने पूछा।

“किराये पर है।” वह बोला।

“किराया रोज कितना देना पड़ता है ?”

“दो रुपये।”

“औसत कितना कमाते हो ?”

“कभी छह रुपये, कभी प्राठ रुपये और कभी-कभी दस रुपये तक भी। लेकिन रिश्ता की सारी मरम्मत हमारी तरफ है। मेरे पास एक अच्छा रिश्ता था। लेकिन २०-२२ दिन से बीमार रहा, तो किसी दूसरे ने उसे उठाया है। आज इसे निकाला है। इसे मैं वापस दे दूंगा। साला अपने आप उसे ठीक करे !”

“आजकल रिश्ते की कीमत कितनी होती है ?”

“लगभग २५० रु०। (काफ़ी गौरव से)। मेरा अपना रिश्ता अभी तक होता, लेकिन यहन की शादी हुई, और फिर मैं बीमार पड़ा। इसलिए बहुत खर्च हुआ।”

“यह बतलाओ भाई, तुम बैतून में रहते हो, या गांव में ?”

“बैतून मे ही।”

“लेकिन कितनी गांव में जमीन तो होगी न ?”

“अजी, बाहिनजी ! मैं क्या कहूँ ? हमारे परिवार में बहुत जमीन थी। १०० बीघे थी। लेकिन मेरे बाबूजी ने सब बेच दी।”

“क्यों बेच दी ?”

“क्यों बेचा, हम क्या जानें ! परन्तु उन्होंने हम लोगों पर बड़ा अन्याय किया। यह किसान का जीवन कितना अच्छा होता ! खुली हवा में, मजे से श्रम करते, काम को स्वस्थ थकान होती। अपने खेत का प्रानज, तरकारी खाते, दूध पीते। अच्छे स्वस्थ और सज्जन रहते। अब क्या करें ?”

“पिताजी खुद शिक्षित नहीं थे। हमें भी शिक्षा नहीं दिलायी। हम दोनों पति-पत्नी दिन भर मेहनत करके खुद खाएँ या बच्चों को तिलायें ? बच्चे बीमार पड़ेंगे, तो इलाज के लिए खर्च कहाँ

से आयागा ? यह सब सोचकर गुस्सा आया। मैंने नसबन्दी करी ली। ठीक किया है या नहीं ? मेरे भाई के बच्चे तो हैं ही। [मेरे पिताजी के दो भाई थे। क्यों, क्या ३० बीघे जमीन पर हम लोग मजे से नहीं रहते ? १०० ग्राम के पेड़ थे। (गौरव से) अब भी दो ग्राम के पेड़ हमारे नाम पर हैं। लेकिन कौन इतनी दूर देखने जाये ! साला, जो साला होगा, मजे से खाये।”

बड़ी गंभीरता से विचारने के दो मुद्दे सामने आये।

(१) जमीन बेचनेवाले को उसकी सन्तान कितनी कोसती है ! बाबू ने १०० बीघे जमीन बेची और वेदा अपने लिए रिश्ता खरीदने में असमर्थ है। परेशानी में अपने को सन्तानहीन भी बनाया। भूमिहीन की परिस्थिति कितनी तेजी से बिगड़ती है !

(२) २५० रुपये की पूंजी लगाकर रिश्ता का मालिक अपने घर में बैठकर साल में ७०० रुपये से ज्यादा कमाता है, याने ३०० प्रतिशत व्याज। रिश्तेवाले अपनी सहकारी समिति बनाकर और अपनी दैनिक कमाई की एक निश्चित रकम जमा करके साप्ताहिक पूंजी का निर्माण करके धीरे-धीरे धारी धारी से खुद रिश्ता-मालिक क्यों न बने ?

गरीबों की गरीबी यदि मिटानी हो, तो उनके लिए संगठन कितना आवश्यक है ! वास्तव में, जंजीरों के सिवा उनके पास और क्या है, धोने के लिए ? आपसी फूट और स्पर्धा, किञ्चित् खर्च, रुढ़ीवादी रीति-रिवाजों से यदि वे मुक्त हो पायेंगे, तब उनकी परिस्थिति सुधर सकती है।

ग्रामदान की व्यवस्था में जमीन को बेचने पर जो प्रतिबन्ध है वह किसान की सन्तान के लिए कैसा बरदान है ! भविष्य में क्या १०० बीघे कमानेवाले किसान की सन्तान को इस प्रकार रिश्ता खरीदने के लिए तड़पना पड़ेगा ? क्या वह अपने को सन्तानहीन बनाने में मजबूरी अनुभव करेगा ? आजकल १०० बीघे का मालिक अपने को बड़ा किसान समझकर कभी-कभी जमीन बेचने की पाबंदी का विरोध करता है, लेकिन इस प्रत्यक्ष उदाहरण से स्पष्ट है कि इसमें वास्तव में उनकी संतान के लिए कितना संरक्षण है !

—सरला देवी



की मदद करते हुए उन्होंने कुछ दवाएं और पैसे लिए। इस ग्रहणसमय ग्रहदोलन के साथ सम्बन्ध रखने की दृष्टि से 'सूर्य सेटर' मासिक पत्रिका ने भी ग्रहण बने।

लोकयात्रा के कुछ अनुभव

संयुक्त विद्ये की भौगोलिक स्थिति एवं विशेष प्रकार की है। एक क्षण में दूसरे क्षेत्र में जाता हो तो घूमना आना पड़ेगा, या तो पहाड़ पार करने जाता पड़ेगा। पहाड़ पार करना है तो कई जगह पड़ाव रखने के लिए गांव ही नहीं हैं। इसलिए घूम कर नये क्षेत्र में प्रान का कार्यक्रम यहाँ के कार्यकर्ताओं ने बनाया। शरीर ७०-८० मील का चक्कर काटकर गाड़ों से हमने नये क्षेत्र में प्रवेश किया। गाड़ों की यात्रा भी प्रभाव की बंला में ही हुई। जगहों में भी गाड़ों का रहना था। उस समय मुक्तता से बिहार करनेवाले हिरणों का दर्शन हुआ। रात में ही हिरण खाते थे। गाड़ी नजदीक पहुँची। हिरण पतंग मारकर जंगल में पकड़ ही गये।

× × ×

हिन्दू, ईसाई, इस्लाम, ऐसे तीन धर्मों के परिवारों में हमारा पडाव होता है। एक दिन केवल ही एक इस्लाम परिवार में हमारा पडाव था। बिहार से पनेत्र लाग पाकर यहाँ बने हैं। यह परिवार भी मात्र से ४० साल पहले यहाँ आया था। और, घर यहाँ का निवासी हो गया है। इस परिवार ने अपनी सेवा यहाँ के गाँव की समर्पित की है। सबके साथ धुन मिल गया है। लेकिन उनकी विद्या घर भी पढ़ें में, चारदीवारी के चन्द्र है। इसलिए एक ही घर में रहते हुए भी उनके घर की बहनों से बिदेस रूप से हमारा मिलना नहीं हुआ। दूसरी बहनों के साथ समा में भी नहीं पायी।

दूसरे एक गाँव में धार्मिकता से धारण सबहूँ क्यों ले भारत की सेवा करनेवाले एक ईसाई परिवार से मिलना हुआ। संयुक्त जैसे दिन में, जहाँ आशासन के विशेष साधन नहीं हैं, जहाँ शाक-तार की भी अच्छी व्यवस्था नहीं है, एक-एक पत्र पाने में महीनों लग जाते हैं, ऐसे स्थान में धारण हम परिवार ने सबहूँ क्यों से अपनी सेवा यहाँ के गाँवों की, यहाँ के निवासियों की समर्पित की है। अपनी कठिनाई में रहते हुए भी उनके चहरे पर हमने समन्वय नहीं देखा, समन्वय, सहायता देखा, स्वीकृति देगी, विचार के आशय रखने से हमारे मित्र बने, तोहफा

हिन्दू, इस्लाम, ईसाई-तीनों धर्मों के उपासकों में मिलना हुआ है। तीनों उपासकों की उपासना पद्धति भिन्न प्रसंग ही सरती है। लेकिन साक्षर सब एक ही भगवान के भक्त हैं, इस लिए भक्त के जो लक्षण हैं, किसीसे छुपाना, सबसे मैत्री करना, दया भाव रखना, धरना पराया भेद न रखना साक्षर लक्षणों का सब भक्त अपने में विकसित करें और उसके द्वारा समाज का भेद मिटाकर एकता का अनुभव करें ऐसा विचार उन लोगों ने सामने रखा गया।

यहाँ भगत श्रीर सगत (सगत माने जो सभी तक भगत नहीं बने हैं) के बीच में भी बहुत बड़ा भेद है। जो-जो भगत बने हैं उन्होंने दारुण और माताहार छोड़ा है, स्वच्छता के कुछ नियमों को अपनाया है, लेकिन जो भगत हैं वे अपने ही ढंग से रहते हैं। इसलिए दोनों के बीच में खाना पीना, शादी व्याह आदि नहीं होता है। इससे प्रतावा सद्भावना भी परस्पर कम हो रही है।

गरमी हो, बारन हो, तूफान हो, लोग तीन चार मील दूर-दूर से विचार सुनने की भाँते हैं। चैन सन्नति के दिन गूर जोर से तूफान भाया था, तो भी लोग डटकर बैठे रहे थे, और विचार सुना था। बाजार में भी सन्नति से लोगों ने विचार सुना था। यह सब देखकर लोग नये विचार की खोज में ही ऐसा लगा।

इस घान द मात्रा में एक दुख की घटना भी पडी थी। यात्रा की पूर्वतैयारी करने के लिए भाते समय दस-दुर्भाग्यना से श्री सन्तुष्टाई की वाप्य हाथ में चोट लगी थी, जिससे उसकी शारीरिक पीडा से अधिक सेवा-साधना लक्षित होने की चोट दिल की पड़ोसी थी।

कृषि-मोडेवा-साहित्य

आपान के कृषि-मोडार	भाहन परीय	३-५०
गाड और वेड पीपों का पोपण	मधुरादास	१-००
खेती के अनुभव	गोविन्द रेडडी	०-८०
मुधरे हुए खेती के मौजार	षदन सिंह	०-५०
गाँव-गाँव में कुर्	बनगरील त चौधरी	०-००
घामजनी गाँवों में खेती और गाय	५० म० पारनेकर	०-६०

सर्वे सेवा संघ प्रकाशन, राजपाट, बाराणसी-१

एक किसान का पत्र ज्यों का त्यों

श्री पंजाब कृषि,
"गांव की बात"

राज से ५-६ साल पहले की बात है। मैं बेइच्छी सर्वोदय-सम्मेलन में गया था। वहाँ मैंने प्राथमिक के प्रासपात धान के कटे हुए खेतों की देखा। पौधों की जड़ जमीन में दूर-दूर थी। उस पर कुछ सोचा और तय किया कि भ्रम की खेत में कम बीज बोकर मैं भी देखूँगा और वैसा ही किया, जिसका इतिहास नीचे है :—

मेरा पच्चीस बिस्वा का एक नम्बर था। खेत में कुछ खाद-गोबर डालकर दो बार जोताई कर दी। खेत में वही पुराने ढग का हेंगा-पाटा कर दिया। खेत समयर भिन्नमत हो गया। बीज 'घान' घर से २५ सेर आ गया था, क्योंकि हमारे यहाँ बिस्वा सेर बोने का रिवाज ही था। बीज उसी हिसाब से आया था। मैंने झूँड़ खुटहर की बोवाई की याद दिलाया और कहा जैसे जी-गेहूँ बोते हो उसी तरह बोओ। दो हल चलने लगे। झूँड़ में प्रकेला बीज बोने लगा। यह देखकर घर के लोग और सत्योगी मजदूर सभी कुढ़ने लगे। जुताई दो हल की, बोवाई एक हल की, बीच की जमीन परती पडती देखकर सभी घबड़ाने लगे। मुझे 'डिब्टेटर' बनना पड़ा तब कही खेत बोया गया। बीज केवल ५ सेर पड़ा, बाकी २० सेर बीज बचाया। घर वापस गया तो फसल कम होगी यही सब लोगों की चिन्ता थी। भीतर-भीतर मुझे भी डर लगने लगा था जैसे सीता की निजटा का सपना प्रमाणित करने पर हुआ था। मन माता था कि अगर फसल ठीक नहीं हुई तो फिर क्या होगा!

छह-सात रोज में बीम ऊपर आ गये खेत में। लाइन-ने-लाइन मिलती-जुलती थी। पर लाइन की दूरी एक फुट से कोई कम न थी। नतीजा यह हुआ कि अब तक घरवालों की गाली सुनता था, और अब बाहरवालों की भी गाली सुनने लगा। इसी बीच भगवान का भी प्रकोप चला। १५ दिन तक वर्षा नहीं हुई। पौधों में बीमर लगने लगे। बहुत-से पौधे सूख गये बीड़र में भी बीड़र हो गया। मैं भी पचड़ाने लगा, पर जल्दी ही बारिश हो गयी। बीमर रुक गयी।

पड़ोस के खेत घने पौधों से भरपूर और अच्छे लगते थे। मेरे खेत में लाइन छोड़कर सब परती फूहर मादुम पड़ती थी। फिर संयोग से दूसरी बार बारिश हो गयी और आकाश साफ हो गया। तीन दिन बाद मिट्टी उभरी, गड़ने काबिन हो गयी तो उसकी गुड़ाई कर दिया। जो खरपतवार लम रहे थे खेत में, सूत गये, केवल धान के पौधे रह गये। फिर चार रोज बाद बारिश हो गयी। पानी के साथ हेंगावन कर दिया। इसकी हमारे यहाँ 'लेव' कहते हैं। खेत समय होकर दब गया। एक सेर बिस्वा के हिसाब से खेत में प्रमोनियम सलफेट छोड़ दिया। दो-चार रोज बाद रग बदलने लगा। पौधों में गाँछ आने लगे। बड़ी-बड़ी लम्बी पैठो हुई पत्तियाँ निकलने लगी। पड़ोस के खेत पीले-पीले छोटे-छोटे पौधे से भर गये और धास की भी कमी न थी। मेरा खेत केवल धान के पौधों से सुहाना लगने लगा। इसी बीच बारिश रुक गयी तो मैंने दूसरी गुड़ाई कर दी। सोहाई की कोई जल्दत ही नहीं हुई। गुड़ाई में ही सोहाई हो गयी।

अब घर के लोग जो मुंह फुलाये रहते थे, खेत पर जाते और लौटकर घर आते तो अदब ब लिहाज से दबकर आपस में चर्चा करते कि बड़ा अच्छा धान होगा। गाँव में बया, पास पड़ोस में भी ऐसा धान नहीं है। बाहर के जो लोग गातियाँ दिया करते थे, उनके मूल से आशीर्वाद निकलने लगे। प्रशंसा में वे कहने लगे— 'कभी-कभी धूमने जाता है तो कुछ सीर कर आता है। जितना धूमने पर खर्च किया है उससे कई गुना तो इसी फसल में निकाल लेगा।' लोग कहने लगे कि अब अगले साल से हम भी इसी तरह धान ही खेती करेंगे मेरे खेत की फसल पड़ोस के खेत से चौगुनी हुई।

इस रीति की बोवाई को लाइन-सोईंग भी कहते हैं। दो हल की सीधो लाइन की जोताई हो। एक हल के पीछे बोवाई हो, यानी एक हुराई वाली जमीन रहेगी, जोड़ाई-बमाई के वास्ते। रोपाई भी की जा सकती है, की जाती है, पर उसमें थोड़ा ज्यादा ज्ञान की जरूरत है। बेहने' २० दिन से २५ दिन के अन्दर रोपी गयी तो धान हो सकता है। लाइन-सोईंग से १०-१५ दिन बाद में परेगा। इस मियाद के बाद की रोपाई अच्छी नहीं होती। क्योंकि पौधों की उमर बढती जाती है। रोपाई के बाद धान थोड़े ही दिन में पूटने लगता है। ३-४ दाना की बाली निकलती है। इसलिए इसमें देर हुई तो घाटा-ही-घाटा होने लगता है।

लाइन-सोईंग सरल तरीका है। फसल जमने, लगाने का सब एक ही बार हो गया। उसकी फसल, हेंगावन, खेत से

बच्चे का साहस

स्टेशन मास्टर की भ्रममनसाहस

भाद्राण्य मासासामय,

रात ३-१ मई को अविद्या जिले के एक छोटे से ग्राम चैन-
प्यारा से मेरा एक १५।। वर्ष का पुत्र शिवनाथ शतुर्वेदी अपने
चचेरे भाई के साथ कलकत्ता के सिपु प्रयाण किया। पूर्वी
रेलवे के बसन्त स्टेशन पर उनका एकलोन उन्हें मिली।
बरेवाल स्टेशन पर लड़का (शिवनाथ) पानी पीने के लिए
पानी से उतरे। दुर्भाग्यवश पानी छूट गया। मरन मोदत अपने
छोटे भाई का भी टिकट तिम मागो में बैठे चले साथे और
बचना बड़ी छूट गया। बच्चे का क्या है कि मैं तो पहले बहुत
धरमया, पर छोटी ही देर में मुझे मूक प्रणयी धीर में सीधे स्टेशन
मास्टर के पास गया। उनसे क्षारी पटना बहु मुनाये।
मेरी बातों को सुनकर स्टेशन मास्टर ने कहा कि रेलों बन्द,
मैं भी जब लम्हारी उत्र का वा सो बिना टिकट दित्तो गया
या, इलाहाबाद में पकडा गया और मेरी एक साल की कैद
हुई। पर तुम भी एकपय साल जेल में रह पाओ। इस पर

—ही जाती है क्योंकि सभी पीछे जमीन में साफ जाते हैं। उनमें से
इसके बरते निरस्त हैं। नवी सौर पैदा होती है। लाइन सीरप
की शून्ये गौडई क्रीडाबले देना से भी की जा सकती है।
उपसे यून लाय होता है। और कोई चर्च नहीं। लाइन सीरप
में यह प्राचयानी रलनी चाहिए कि बोवाई के बाद हलकी
बारिप होकर प्रागल नाक रहे तो क्रीडामने हूँगा ने हूँगाकर
पीरपी कोड वी जाय, ताकि बीज निरूपन भाषे नहीं तो बीज
पीर-ही भीतर लमकर सिनुड जायंगे। धर लर ओ दुष
लिखा है यह सब भादो कवार के बीज पकनेवाले पानो के बारे
में। प्रयहन में पकनेवाले पार भी रीगई जरुगी है क्योंकि
वह बनारी पार से २ माह पीछे पकता है। इसकी उमर क्वारी
घान से २ माह अधिक होती है। गांव की बात पकनेवाले
सभी किसान भाई तथा लक्ष्मीयो (भक्तूर) भाईने ती मेरी
विनप्र शर्चना है कि मेरी में मन, मन और साधन लयाकर
वात्र करे। जय वयपु।

बच्चे का उत्तर था कि 'देविमें, भावने बदनामी की थी, इस-
लिए भावनी जेल हुआ। मैं तो बदनामी की नहीं, फिर भाव
है जेल क्यों भेजेंगे ?

'भाव क्यों रहते हैं कि मैंने बुरा काम किया है। मैं अपने
भाई के साथ कम्पेसन टिकट लेकर बसन्त स्टेशन पर जाही
पकडा हूँ। यदि भावकी विश्वास नहीं हो तो भाव बसन्त से
पना लगा सकते हैं कि मेरे नाम का पकडा बहो कम्पेसन
टिकट लिया है कि नहीं।' बच्चे की बातें सुनकर स्टेशन
मास्टर को विश्वसुत निरकासो गया कि लदना राव बोले
रहो है। सीप एक टी० टी० आई० के साथ बच्चे को लना
रिया और बोले कि बच्चे को पानी दित्तो एकप्रेश का रहो है
उसको हावका पहुँचा दीजिए। यहाँ कम्पे भाई मिल लयाया।
यदि न मिले तो इति स्टेशन से बाहर करा दीजिए। इस
मदनमोहन (बच्चे का भाई) जय हावका पहुँचा तो स्टेशन पर
एनाउन्सर से बोला गया कि बुझावा छोटा भाई दित्तो एक
प्रेश से छा रहा है उसे शप में लेकर जाओ। दोनों भाई
स्टेशन पर मिले और साथ भाये।

मैं लम्हारा कि पटना जान देने पर प्रायकी और
प्राचय होगा कि से प नान प्रायकी प्रायकी कयो निप रहा है।
यह पटना और प्रायसे तो बोई सम्पथ नहीं।

दातासमयी इसका प्रादा धम भावने कठोर परिश्रम का
है। मैं रोज सोचा बनना था कि बच्चे में ऐवब साहस कैसे
भाया। प्राय लचानक मेरे मन से भाया कि यह लाहल
विनीजा साहित्य से भाया है और साहित्य व चानेकले प्राय हूँ।
इकलिए प्राय मेरे हादिन प्रायवद को श्रवद इकीकार करें।
मयवान से मेरी पही प्रायव है कि से प्रायकी बोपाम और दादि
प्रदान करें, ताकि प्राय प्राय से अधिक प्रायों में विनीवा साहित्य
को पुँचकार, पनाम और देव को ऊंचा उठाने में सहायता
होय।

भावनका सुपेनु
मुकेश्वर जीके

दातासमयी
भवानी प्रसाद सिंह
वसुदेवना आचमगप



ईश्वर कहाँ रहता है ?

मेरे पिता एक ऐसे गाँव से आये जहाँ सरल लोगों का निवास था। उलझने नहीं थीं। वह आधुनिक सभ्यता से दूर था। वहाँ के ग्रामीण अपना अन्न उपजाते थे और खाते थे। एक दिन वही से कुछ मनुष्य कार में आये। उनके साथ बहुत-से कपड़े और दवाएँ थी। उन्होंने घोषणा की कि वे थे चीजें बीमार और जरूरतमन्द व्यक्तियों को देंगे। किन्तु उनसे मिलने कोई नहीं आया। समाज सेवक बीमार और जरूरतमन्द व्यक्तियों को खोज में गाँव का चक्कर लगाते रहे, पर उन्हें एक भी वैसा व्यक्ति नहीं मिला।

उन्होंने कुछ व्यक्तियों को, जो अज्ञान थे, दस्त्र देना चाहा, पर उन व्यक्तियों ने नम्रतापूर्वक कहा कि हमें दस्त्रों की तनिक भी आवश्यकता नहीं है। हम अपनी वस्तुओं का ही व्यवहार करेंगे। ग्रामीणों ने उनके साथ श्रद्धा व्यवहार किया, उन्हें नारियल का पानी दिया। ग्रामीणों ने उनकी कारों और वस्तुओं को बड़े मौत से निहारा। वे लोग व्यस्त आदमी थे। उनके पास अनावश्यक बातों के लिए समय नहीं था। गाँववालों के पास समय बहुत था। इससे वे लोग बड़े परेशान हुए और भ्रूलगये। उन्होंने सूनें, अनवान और जाहिल बहते हुए अपनी वस्तुओं के साथ वापस हो गये।

एक सप्ताह बाद एक घूल से भरा हुमा वस्त्र पहने एक थका-भाँदा व्यक्ति इसी गाँव में आया। वह एक मिशनरी था। उसके पास समय भी लूब था और धैर्य भी। उसका काम करने का तरीका भिन्न था। वह अपने साथ उपहार नहीं लाया था। वह एक वृक्ष के नीचे बैठ गया। ईश्वर के सम्बन्ध में बातें करने लगा। जीवन, जन्म और मृत्यु के रहस्य बताने लगा। ग्रामीण उसकी बातें दिन भर सुनते रहे। शाम को उसे पता चला कि उन्होंने कोई बात नहीं समझी। उसने इस बात पर सोचना प्रारम्भ किया। इन लोगों को समझदार बनाने के लिए महीनों श्रम करना पड़ेगा।

इसी समय कुछ घटना घटी। चोल-पुकार, कुत्तों का भूँबना और साथ ही बहुत-से मनुष्यों को इधर-उधर भागते उसने देखा। लोग एक दिशा में भाग रहे थे। पादरी भी उनके पीछे-पीछे दौड़ा। छोटी-छोटी भोंपठियों की एक ज़रत में आग लग गयी थी। इसमें से एक स्त्री की चीख सुनाई पड़ रही थी। ग्रामीण पानी लाने दौड़े। दो आदमी धुआँ और ज्वाला के

बीच घुस गये। पादरी के पास खड़े एक बूढ़े ने इस घटना की जानकारी उसे दी। एक स्त्री और उसके दो बच्चे बीज की भोंपड़ी में थे। उसका पति कहीं गया था। उनकी रक्षा करनी थी। कोने में खड़ी और भयभीत दो स्त्रियाँ उन दोनों रक्षकों की पत्नियाँ थी, जो आग में चले गये थे। शंवातु पादरी ने पूछा कि इन दो स्त्रियों ने अपने पतियों को इस बर्तन कार्य से क्यों नहीं रोका? बूढ़े ने उत्तर दिया—“श्रीमान् हम लोगों में ऐसे विचार नहीं आते और ये तो दो नासमझ स्त्रियाँ हैं।”

लोग आग को घड़ों के पानी से बुझा रहे थे। इसी बीच एक व्यक्ति उस आग की लपटों में से उन दोनों बच्चों को लेकर वापस आया। प्रतीक्षा करती महिलाओं के हाथों में बच्चों की सौंपकर वह धरती पर गिर पड़ा और अपने कपड़ों में लगी आग को बुझाने की कोशिश करने लगा। अन्य लोग दूसरे व्यक्ति की प्रतीक्षा करते रहे। कहीं कोई चील-पुकार नहीं, केवल श्मशान-शान्ति थी। दूसरा व्यक्ति भी एक महिला को लिये आ पँचा। महिला अचेत और जली हुई थी। वह व्यक्ति भी पहचाना नहीं जा रहा था। वह कुछ क्षणों तक छटपटाना रहा इसके बाद इसके प्राण-पखेरू उड़ गये।

ग्रामीणों ने शान्तिपूर्वक आग बुझायी और तब दूसरे नाम की घोर मुड़े। कुछ लोग बच्चों और महिला के उपचार में लगे और कुछ लोग दाह-संस्कार का प्रवन्ध करने लगे। मृतक के पाम उसकी विधवा बैठकर धीरे-धीरे रो रही थी।

पादरी ने यह सब देखा। वह भी शान्त था। वह धीरे से उठा। उसने सिर भुकाया और जाने की राह पकड़ी। वृद्ध व्यक्ति उसके साथ चलता रहा। उसने आर्षणा की कि कुछ अन-जल ग्रहण करें।

“किन्तु मैं इस दुर्घटना के बाद कैसे कुछ ग्रहण कर सकता हूँ ?” पादरी ने प्रश्न किया।

“श्रीमान्, दुर्घटना जीवन का एक अंग है। भोजन व्यक्ति के लिए अनिवार्य है। हमें ईश्वर के सम्बन्ध में कुछ विस्तार से बताने की कृपा करें।” वृद्ध व्यक्ति ने उत्तर दिया।

पादरी ने वृद्ध ग्रामीण के सम्मुख सिर भुकाया। उसने कहा—“मित्रवर, आपकी मेरी आवश्यकता नहीं है। ईश्वर तो यहाँ स्वयं रहता है।” वह पादरी वहाँ से चला गया। वृद्ध व्यक्ति आश्चर्यचकित नेत्रों से खोज रहा था कि किस भोंपड़ी में ईश्वर रहता है।

—पेरिन सी० मेन्टा

‘गाँव की बात’ : यापिक चन्दा : पार रचये, एक प्रति : पढाएँ वेंने।

श्रीकृष्णचल भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए इम्प्रिन्ट प्रेस (प्रा०) लि०, बाराणसी में मुद्रित और प्रकाशित।

दान वा सहज है। वहाँ जाने पर इसमें व्यवधान होता। आचार्यकुंज तो भेरे कार खाने का बाई प्रोवन्ट है। उन्हे अपनी गोष्ठी में इमे स्वीकार किया है। कुछ प्रतिपाद की है। अनेक प्रस्ताव किये हैं। बहुत अच्छे प्रस्ताव हैं। लेकिन सबको मैं मान नहीं करता। उनमें कहा गया है कि हम सबसे पहले भारतीय हैं उसके बाद भी भारतीय हैं और सब तक भारतीय हैं। यह भी नहीं मानता हूँ। हमें विद्यमानुष बनना है। यह माइस का जमाना है। हमें विरजित के प्रतिरोधी राष्ट्र मेवा कानी होगी। राष्ट्रीय मन डाउट डेडे है। इन्वॉल्वेड भारत में राक्षस पर सबप्रथम प्रार रवि बाजू ने किया है। गांधीजी न भी देग की जो मेवा की बड़ विध्वंस की प्रतिरोधी थी। एन गांधी के क्षय मुझे मोका मिला पाकिस्तान जाने का। वहाँ भी मुदान हुआ। उसका प्रथम जो पहना था पडा। समा में ज्योप लोप माने थे मुगलिय जना घाते थे। यह स्वाभाविक ही था। मैं वहाँ मोन प्रायना कगना था और जय जगद कलाना था। दो-तीन दिन तक पाकिस्तान जिदगारा के तारे उहोने लगाये। चौथे दिन पाकिस्तान जि दामाद का तारा बंद हो गया। अगरे में जय हिंद या जय भारत कहता तो कोई नहीं सुनता। जय जगद कहा तो बड़ पाकिस्तान में बल गया। उनका तजमा बिबा जय तो बड़ चीन में भी चल सकना है और दूसरी जगह भी चल सकना है। मैं भारत का ही हूँ। यह मुझे माय नहीं। बाबा भारत को मणपि पुष्प भूमि मा शा है पर भारत विधुभूमि का ही माग है।

अपने देर में पुष्पी-मूक हूँ भाग्यमूक नहीं। हम उन पक्षी की बचना करते हैं जिसमें माना था है। जहाँ विविध भाषाएँ बोली जाती हैं—भाषासंगोभा पृथिवी विज्ञानसंग। भारत की परम्परा है कि उसने भारत का ही शेरव नही माना पुष्पी का शेरव गाया है। उसके लिए कगुर्ब बुडुबसम्प सारी पुष्पी घोटा या परिवार है। गणकथाय ने कहा कि हम मनवविषय के मनउ संरंगोवने समुद्र में लीन हो रहे हैं उठ रहे हैं। यह भारत का

किना विशाल या चिन्तन—वेद से एकदम बाप तक, और आज तक।

आचार्यकुंज की परंपरा बहुत ही उज्ज्वल है। उसकी शक्तिव्यवधानी है। शिक्षा क्षेत्र में भी यंत्रि पार्टीपारिपत्रिक चनेरी—विज्ञानय ही इस पार्टी में और उन पार्टी में जाय और इतना नीच चिन्तन थले तो हम होन बनते हैं शीन बनते है। पुराने समय में आचार्यों पर किसी का प्रकुण चलता ही नहीं था। हण्य को गुण के पास मेवा। (डिग्री की जो उत्तर है न ?) गुरु ने उगे एक दरिद्र ब्राह्मण के साथ एक कमरे में रहा। दोनों को जगल से लकड़ी लाने का काम दे दिया। कहाँ एक राजा का बंटा कही एक गरीब ब्राह्मण का बेटा। यहाँ की विज्ञानवृद्धि पर सहयोगी का समुदाय गही था। जो गुरु देगा वह शिक्षा। गुरु की सेवा करके बने समय में शिक्षा। गुरु की यह हृदियत भाषको प्रति हो सकनी है। जिण प्रकार यह विज्ञान प्राप्त से और राजनीति में स्वतंत्र है उनके प्रमुदा में मुक्त हैं उगो प्रकार शिक्षा विभाग की भी प्रलय होना चाहिए। भाप राजनीतिकों से यह व कि वे राजनीति की शिक्षा-सम्पत्थो से बाहर करें। बाहर उनके लिए बड़ अवद है। भाप यद्युक्त राजनीति को मानेगे। यद्युक्त राजनीति ही लोकनीति है। राजनीति का अध्ययन करने राजनीति में पदने लही।

आचार्यकुंज के लिए भाप अपने वेतन से कुछ हिस्सा देना शुरू करें। एक आ पक्ष हो। सब काम के लिए एक भावनी रहे। भाप समय समय पर मिलने रहे। बीच-बीच में परिषद् और उपनिषद् करें। जब शिक्षक इच्छते हागे तब वह पररु ह गे। लेकिन जब नजदीक बैठकर चर्चा करते वह उपनिषद् होगी। उपनिषद् यानी नजदीक बैठकर चर्चा। उममे लाउड-स्पीकर लही होश। भारत और विश्व में जो सम्बन्ध रहे वेदा होगी उर पर भाप धरनी एकमत राय व। जहाँ एकमत न हो उमे चर्चा करके जोड़ दिया जाय। और जिस पर एक मत हो उमे स्थित किया जाय।

बाबा शायदान के काम में लगा है। हमें प्रायकी महायना चाहिए। भाप बाब

बाब में जाकर विचार फँसना। बाबा आचार्य कुंज के लिए अपने को जितना अधिकारी मानता है उतना आनंदान के लिए नहीं मानता। बाबा बचपन से प्राय तक अध्ययन ही करता रहा। प्राय भी अध्ययन करके यहाँ आया है।

किर शान के प्रामदान का काम बने उठाया? इसलिए कि यह कल्याणय है। वह नहीं हुआ तो आचार्यकुंज भी सन। भाप ब्रह्म। जब द्रष्ट कम होगा तो कलह होगा भाईबारा सतम होगा प्रेम नही रहेगा। इंगीलिण द्रष्ट बढाने का नाम बाबा नही है।

बाबा भाषको अपनी पक्ति इस बाप में लनी देगा जितनी भाप चाहेंगे।

तक्षण शाक्ति-मेवा का काम भी इन लोगों में उठाया है। "समे लक्ष की भी कुछ मयरी है। शिक्षक इह बरम को कर लकी हैं। भाषको इनमे सहयोग देना चाहिए। सबको प्रणाम। जय जगद।

श्री राजाराम शास्त्री

विनोबाजी के भाषण से हमें स्तूति मिली। हमने कोई मनमेद हो नहीं सकता। सम्बन्ध है कि शिक्षा को सरकार ने स्वतंत्र कने कराये? विनोबाजी ने 'याप से मुक्त' की। यह दटना एक हृद तक लही है। परन्तु भाप जिस विषय में शिक्षक हैं उनमे उधका हाय सरकार को बनाने में उनसे देना लेने में विना पटति को लेकर उनस सम्बन्धित होगा है। इस विषय में विनी प्रयोग की गुन्नादाय नहीं रह जावो है। जब तब घर वार की चकुरी नहीं होगी तब तक बुद्ध होगा नहीं। मा मता के भागे कुछ चलता नही। विद्यार्थी को क्या चाहिए वह विना मायता से मिलता नहीं। उमे प्रमाण-यथ चाहिए।

शिक्षा प्रांतीय विपण्ड है का केन्द्रीय विषय? केन्द्र को निर्देश देने का अधिकार है, लेकिन लागू करने का अधिकार है राज्य सरकारों को। इस पर स्वयं शिक्षा मन्त्रयमा म बोधोपादानी है।

शिक्षा सरकार से मुक्त हो तो सपेदे नहीं कि शिक्षक का स्तर ऊँचा हो और उसकी प्रशिक्षा बढ़े। भाप तो शिक्षक पर से विश्वास

छठ गया है। परीक्षाओं में बाहर से निरी-
दार बुलाये जाते हैं।

श्री रोहित मेहता :

शिक्षा के बारे में विनोबाजी ने जो मार्ग-
दर्शन हमें दिया, उस पर चर्चा शुरू हुई है।
हमें सोचना है कि कौसे हम शिक्षा में फर्क कर
सकते हैं। यदि भारत में २० वर्ष में कुछ
नहीं हो सवा तो इसका सबसे बड़ा कारण
यह है कि शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नहीं किया
गया। शिक्षा के क्षेत्र में जब तक परिवर्तन
नहीं आयेगा, तब तक शैक्षिक, सामाजिक
परिवर्तन नहीं आ सकता।

हमें सोचना है कि हमें किस दिशा में
जाना है? विनोबाजी की बातों हुई दिशा
में जाना है या नहीं? अगर इसकी तय
किये बिना समझाओं व कार्यकों पर
सोचेंगे तो उलझ जायेंगे।

हम आचार्यकुल की स्थापना करना चाहते
हैं—विहार और बम्बई के संकल्प-पत्र हमारे
सामने हैं। दोनों को मिलाकर हमें कुछ दिशा
मिलेगी। लेकिन केवल संकल्प-पत्र से कुछ
नहीं होगा। हममें 'निगेटिव' कन्स्टेड है,
'पॉजिटिव कन्स्टेड' चाहिए।

राजनीति और शासन में शिक्षा को तो
मुक्त होना ही चाहिए, लेकिन विद्या-मंस्थानों
के अन्दर के वातावरण को भी राजनीति से
मुक्त करना होगा।

जिस समाज में हम जी रहे हैं उसमें
आचार्यकुल की व्यापक व्याख्या करनी होगी।
उपनिषद् में 'इष्टीयैटेड' शिक्षा की चर्चा की
गयी है। आज भी हम 'इष्टीयैटेड' शिक्षा की
बान करते हैं।

विज्ञान और अंधधर्म का आचार्यकुल
में समावेश होना चाहिए—दोनों का मिला-
जुटा आचार्यकुल। अगर ऐसा नहीं होगा तो
शिक्षा में हम बहुत आगे नहीं जा सकेंगे।
शिक्षा जीवन में प्रलय नहीं है। शिक्षा की
दृष्टि और जीवन की दृष्टि हम प्रलय नहीं
कर सकते।

मूल्य परिवर्तन करना है। कौन करेगा ?
आचार्यकुल करना, लेकिन वह आचार्यकुल,
जो व्यापक होगा।

आज का युग गतिप्रदान है, लेकिन गति
के साथ दिशा आवश्यक है। राजनीतिवाले

गति दे सकते हैं और आचार्यकुल के द्वारा
दिशा मिल सकती है। उत्तर प्रदेश में आचार्य-
कुल की स्थापना करने के विद्यार्थी परिवर्तन
की वंशिश हम करें। लेकिन यह तब संभव
है, जब विनोबा ने जो दिशा दी है, उस दिशा
में हम काम करें।

बैठक के निर्णय :

१. आचार्यकुल के इस सम्मेलन में
एकत्र उपकुलपति, प्राचार्य और शिक्षा-प्रैमी,
हम लोग प्रस्ताव करते हैं कि हम उत्तर प्रदेश
में आचार्यकुल की स्थापना करेंगे।

२. 'आचार्यकुल' के लक्ष्यों में हमारी
आस्था है। अतः उनकी प्राप्ति के लिए हम
आचार्यकुल संविद्या तैयार कर, तदनुसार
आचरण करेंगे।

३. आचार्यकुल के तात्कालिक और दूर-
गामी कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार करने और
उसे कार्यान्वित करने के लिए, प्रादेशिक स्तर
पर, नीचे लिखे सदस्यों को एक 'मंचालन
समिति' प्रस्तावित की जा रही है, जिसे और
सदस्यों को मनोनित करने का अधिकार
होगा :

१. आचार्य जुगल विश्वर, उपकुलपति,
कानपुर [अध्यक्ष]
२. उत्तर प्रदेश के अन्य सभी विश्वविद्यालयों
के उपकुलपति
३. आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, वाराणसी
४. श्री रोहित मेहता, वाराणसी
५. डॉ० वी० चक्रवर्त, वाराणसी
६. डॉ० अनन्तराम, वाराणसी
७. आचार्य रामभूति, वाराणसी
८. प्रोफेसर डॉ० आनराजी, लखनऊ
९. श्री रामचन्द्र शुक्ल, लखनऊ
१०. प्रोफेसर धीरज प्रसाद, मेरठ
११. श्रीमती मुन्दा लैलंग, वाराणसी
१२. श्रीमती लीला शर्मा, वाराणसी
१३. डॉ० राजनाथ सिंह, वाराणसी
१४. श्री द्वयवास चतुर्वेदी, वाराणसी
१५. प्रोफेसर मुगल दामगुसा, वाराणसी
१६. श्री बंगीधर श्रीवास्तव, वाराणसी

[संयोजक]

४. फिलहाल इस समिति के कार्यक्रम
की रूपरेखा इस प्रकार रहेगी :

(क) समिति अध्यक्षों और प्रोफेसरों
से मिलकर आचार्यकुल के तदम और कार्य-
क्रम के सम्बन्ध में विचार-विनिमय करेगी
और संकल्प-पत्र तैयार करेगी।

(ख) छात्रों से मिलकर उनकी सम-
स्याओं पर चर्चा करेगी और उनके सहयोग
द्वारा धार्मिकपूर्ण ढंग से समझाओं व निरा-
करण का प्रयास करेगी।

(ग) शिक्षा-मंस्थानों के अधिशासियों
से मिलकर संस्थाओं के वातावरण को परि-
वर्तित करने के साधनों पर विचार-विमर्श
करेगी।

(घ) आचार्यकुल के तात्कालिक और
दूरगामी कार्यक्रम की योजना प्रस्तुत करेगी।

५. चूंकि इस समय विश्वविद्यालयों
और डिग्री कालेजों की धुलके के कारण प्रदेश
के अधिकांश उपकुलपति और प्राचार्य सम्मि-
लन में उपस्थित नहीं हो सके हैं, अतः प्रकृत, २६६८
में लखनऊ या कानपुर में फिर आचार्य
कुल सम्मेलन बुलाया जाय, जिसमें मंचालन
समिति द्वारा प्रस्तुत तात्कालिक और दूरगामी
कार्यक्रमों को अन्तिम रूप दिया जाय। •

मध्यप्रदेश के धार जिले में बड़ी प्रशंसादान घोषित

विवाह खंड की सशिम जानवारी इस
प्रकार है .

कुल गाँव ६१, ग्रामदानी गाँव ५३,
ग्रामपंचायतें १८, जनसंख्या ३५,०००,
आदिवासी जनसंख्या ३१,००५, क्षेत्रफल
१,१८,२७५ एकड़, कृषि का रकबा ४३,५४१
एकड़।

अधिमाम की सफलता में विरामसंड के
सभी कर्मचारियों का नर्राहतीय सहयोग
मिला। डूडी-नरेश श्री देवीसिंहजी एवं
श्री वं० डी० रामनाथी, क्षेत्रीय संयोजक,
विवाससंड, डूडी का सहयोग विशेष रूप से
उल्लेखनीय है।

डूडी मध्यप्रदेश में छांटवी प्रशंसादान है।
इसके पूर्व ५० निमाड में ३, टीपमगड में २,
मिकनी में १ तथा नरगुडाम में १ प्रशंसादान
हो चुके हैं। (नरम)

शान्ति-सेना तथा धामदान की प्रगति

निवारणमण्डली सप्त-आधिवेशन के बाद धानू रोड सर्वोदय-सम्मेलन तक के पूरे एक साल में गुजरात में त्रिविध कार्यक्रम के अन्तर्गत जो कुछ काम हुआ, उसकी कुछ झलकी प्रस्तुत है।

शान्ति-सेना

विचार विचित्र हमारे आन्दोलन का एक महत्व का अंग है। इसलिए विभी न विभी सीके पर हम विचित्रों का आन्दोलन करते रहते हैं। तबल शान्ति-सेना ने विचित्रों के द्वारा गुजरात के विद्यार्थी जगत् से अछूत मण्डल बन रहा है। इस साल में करीब साठ-सौ विचित्र हुए। विद्यार्थियों में सर्वोदय-विचार को समझने की और शान्ति-सेना के कार्यक्रम को समलक्ष्य बनाने की दिलचस्पी बढ़ रही है। संसार की भयानक, खरबों बर्गह की दृष्टि में रक्तनी ही पठनी है। इसलिए शांती विद्यालयों को विचित्र में प्रवेश नहीं देने वाले हैं यह कुछ की बात है। गुजरात के विचित्रों का सन्तान मुश्किल अवसरोधभाई लायिका करते हैं।

अगस्त '६० में पहलमध्याह्न में गुजरात माधी स्मारक निधि और गुजरात सर्वोदय मंडल के तत्वावधान में एक धर्म्यास विचित्र बहून अछूत हुआ था। इसमें गुजरात के विविध क्षेत्र के करीब १२३ भाई-बहनो ने भाग लिया। समाज के हरेक अंगों की रूपरेखा करनेवाली विविध मसहामों पर चर्चाएँ हुईं। विचित्र-अन्वयण की नारागभाई देखाई ने किया था।

अन्ततः के बाद सुभी विमया बहून अन्तर ने वेदयाजा जिले में बा मनदाना-सिखण विचित्र लिये। इस विचार को आत्मज्ञान देन के लिए बर्त एक अछूत एव बना है।

सिखण और बहूनी की समझाधो की नेत्र नहिदायो का भी एक विचित्र अछूत विमया मार्गदर्शन भी सुभी विमया बहून ने किया।

भूराण पत्र : एप्रिल, २६ सुवाई, '६८

३० जनवरी से १२ फरवरी तक श्री नारायण भाई का गुजरात में मुश्किल मुश्किल बहूनी में प्रथम कार्यक्रम हुआ। धाम का के शान्ति-सेना के धारे में उनके अन्वयण न हुए। उनमें प्रथम कार्यक्रम से शान्ति-सेना के कार्यक्रम को यहाँ प्रति मिल रही है। गांधी विद्यापीठ देहली म जून '६८ से शान्ति-सेना विद्यालय खोलने का तय हो चुका है।

३० जनवरी की अन्वयणवाक में शान्ति-सेना का आयोजन किया गया था। साव-मनी धामधर्म में शान्ति-सेना देली जिले के बाद यहाँ से बोचरधर्म धामधर्म तक शान्ति-सेना शुरू की जिसमें करीब दो हजार लोगों ने भाग लिया। इसमें प्रथमवाक के मेजर डा० वासुदेव रिपाठी और मजदूर नेता श्री धामधर्मवाद देवावडा भी थे। पू० कर्णक माहव और गुजरात के राज्यपाल श्री श्रीनारायण देवगिरह ने शान्ति-सेना में भाग लेनेवालों को सम्बोधन किया। नारायण भाई ने शान्ति-सेना का संवाहन किया। साहित्य प्रचार

गुजरात में 'भूमिपुत्र' और साहित्य के द्वारा विचार प्रचार के ठोस प्रयत्न की किमे जाते हैं। इस साल करीब ११ १२ हजार व्यक्तियों से मन्त्र किया गया और 'भूमिपुत्र' पत्रके लिए उन्हें प्रेरित किया गया। कर्णक बहून और डा० नवीनी भाई पौनदर करीब-करीब अन्ततः पूरा समय इस काम के लिए देते हैं। पदवाजा में भी 'भूमिपुत्र' और साहित्य का काम अछूत होता है। श्री नानुभाई मजदूरदार और बड़ीका बहून के बाधकनीयण यन्त्रे विमंग प्रस्तो ने साहित्य जिको का काम करते रहते हैं। इस साल में 'भूमिपुत्र' के १६ हजार प्रक रहे। साहित्य जिको करीब ३० हजार रुपये की हुई।

३० जनवरी की धर्मवादवाक तबले स्टेशन पर 'मरीय साहित्य भिदर' का उद्घाटन हुआ। यहाँ हर रोज करीब भी रूपये की साहित्य विभो हो रही है।

धामदान

बलगाठ जिले में बरमपुर तहसीलवात हुआ है। गल साल यहाँ भी अन्तर अन्तर था। हमारे कार्यकर्ताओं ने गाँव-गाँव में जाकर लोगों को धामदा, कपडे बर्गह की मदद यहाँवालों कोर उनके रोजगारी बराबर मिले, इसके लिए भी शोचिक थी।

सिधने २३ यहाँनी से धर्मपुर में पुद्दिकार्य करने का भी धारम हुआ है। करीब १२० धामधर्मभाओं की रचना हुई है और ३० गाँवों के व्यक्तित्व समयण पत्र भरवाते गये।

२६ से ३० जनवरी तक धामधर्म धारा धामधर्मभाओं की बड़ीका बहून में निम्नित किया गया था। वर्तमान परिस्थिति और शोचिकारी के सदर्भ में उनके अन्त्रे व्यञ्जान हुए।

डा० जोषी के नेतृत्व में धामदान पदयागाएँ भी होनी रहीं। पदयागाओं के द्वारा धामदान का विचार प्रचार अन्तर हुआ, निम्न धामदान शान्ति बहून कम हुई। धामी मूलतः जिले में १ मई से ६ मई तक १५० टोलियों में पूरे जिले में पदयागा थी। इनके अन्वयण के लिए अछूत भूमिपुत्र पत्रके में मदद मिली है। रचनात्मक कार्य-कर्ताओं में और कार्यके के कार्यकर्ताओं में उन्माह का सत्कार हुआ और यह खान लोगों ने बहूने के लिए धामधर्मवाक जगा। पदयागा के दौरान कुल ४५ धामदान हुए। कुल मिलाकर पूरे साल में ९१ धामदान हुए हैं।

रीपार के गाँव जिलों में मई की १२ से २२ तारीख तक पदयागा का आयोजन हुआ। धामधर्म पदयागाओं के लिए धर्मपुत्र बनाकरले बने, एव दृष्टि ने १८ धर्मपुत्र को गुजरात के विविध क्षेत्र में काम करनेवाले लोगों का धामदान कम्पेनन श्री नारायण भाई की अन्वयण ने मुलादा था। प्रतिदिन विविध के रूप में श्री श्रीमधर रावण भी अन्वयण रहे थे।

अगस्त, '६० में भावार्थ रत्नमूर्तिनी की धामधर्मभा में गुजरात का सर्वोदय-सम्मेलन हुआ था। उनके प्रयागाएँ और वेचक बन्धनों में बड़ीका अन्तर हुआ।

धनपुर में पू० विनोबाजी के पाम प्रसा
रोट में हम २१ कार्यकर्ता भाई-बहन समाह
मर के लिए गयी थी। गुजरात के बारे में
पू० बाबा के साथ काफी चर्चाएँ हुईं। उस
सन्दर्भ में सपन बाबू की दृष्टि से सूरत,
बलसाड़ जिले में काम कर रहे हैं। वहाँ
हमारे काम के लिए काफी अनुकूलता है।
त्रिणा पंचायत और अन्य सभी लोगों का
घण्टा साथ मिल रहा है।

थी बरलभाई महेता ने भी मूरत जिले
के गिविर और सहसील को सम्प्रेलन में
अपना समय देकर कामदान की बातें बही।

५० गाँवों के बीच एक वायवर्ता की
दृष्टि में गुजरात के करीब २० हजार गाँवों
के लिए ७०० कार्यकर्ता सर्वोदय-कार्य के
लिए होने चाहिए ऐसी बात पू० बाबा ने कही
थी। इसके सन्दर्भ में अभी एक मी कार्य-
वर्ताओं की योजना हमने बनायी है। गुजरात
सर्वोदय मण्डल के आर्थिक निभाव के लिए
हर साल चन्दा इकट्ठा कर लेते हैं। वन मार्च
महीने में थोड़ा कार्यवर्ताओं ने इसके लिए
कोमिष की। बड़ोदा जिले का रंगपुर पाम-
दानी क्षेत्र भी हरिवन्धन परीक्ष के मार्गदर्शन में
ग्राम-स्वराज्य की दिशा में आगे बढ़ रहा है।

बलिया-सम्प्रेलन में ५० हजार पामदान
की प्राप्ति करने का पूरे देश का जो संकल्प
हुआ था, उसमें गुजरात ने अपना हाथ बम
बँदाया है, उसका आत्मोप हूमे जहर है,
लेकिन साथ-साथ दिल में ऐसी आशा छिपी
हुई है कि यहाँ भी सजग लोग सुपराम्ये जुटेगा
तो सभी ग्राम-स्वराज्यी लक्ष्य अटूट करके
जबर सफल होगा। —कान्ता-हरबिलास

अद्वाञ्जलि

बलिया के उत्तर प्रदेशीय सर्वोदय-
सम्प्रेलन में दिनांक १३ अप्रैल को बनसूबा
ड्रस्ट, उत्तर प्रदेशीय शाखा के पत्रना केन्द्र में
दो साल से प्रगतिपत्र प्राप्त कर रही हरबोई
जिने की बहन प्रभुपूर्णा देवी का आकस्मिक
निधन हो गया। ईश्वर उनकी आत्मा को
गन्धि प्रदान करे।

राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति

प्रधान केन्द्र

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति

१, राजघाट कालोनी, नयी दिल्ली-१ टुंकलिया भवन, बुन्देलखण्ड का भेंरों

फोन : २७६१०५

जयपुर-३ (राजस्थान)

फोन : ७२६८३

अध्यक्ष : डा० जाकिर हुसैन, राष्ट्रपति
उपाध्यक्ष : श्री बी० बी० गिरी, उपराष्ट्रपति
अध्यक्ष : कार्यकारिणी :

अध्यक्ष : श्री मनमोहन चौधरी
मंत्री : श्री पूर्णचन्द्र जैन

श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधानमंत्री
मंत्री : श्री आर० आर० दिवाकर

गांधीजी के जन्म के १०० वर्ष २ अक्टूबर, १९६६ को पूरे होंगे।
आइये, आप और हम इस शुभ दिन के पूर्व—

(१) देश के गाँव-गाँव और घर-घर में गांधीजी का संदेश पहुँचायें।

(२) लोगों को समझायें कि गांधीजी क्या चाहते थे ?

(३) व्यापक प्रचार करे कि विनोबाजी भी भूदान-ग्रामदान द्वारा
गांधीजी के काम को ही आगे बढ़ा रहे हैं।

यह सब आप-हम कैसे करेंगे ?

- यह समझने समझाने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति
ने विभिन्न प्रकार के फोल्डर, पोस्टर, पुस्तक-पुस्तिकादि सामग्री
प्रकाशित की है। इन्हे आप पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ने को दें।
- इस सब सामग्री और विशेष जानकारी के लिए उपसमिति
के ऊपर दिये गये जयपुर कार्यालय से पत्र-व्यवहार करें।

वार्षिक शुल्क : १० रु.; विदेश में २० रु.; या २५ टिकिण, या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे

श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्वे सेवा संप के लिए प्रकाशित एवं इन्डियन प्रेस (प्रा०) लि० बाणगरी में मुद्रित

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ (मूलक गाराडो) का प्रधान अधिसूक्त कानून का सन्दिग्धवाहक साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १४ अंक : ४४

शुक्रवार २ अगस्त, '६८

इतिहास की प्रेरक आवाज

अन्य पृष्ठों पर

लोकदास जनत के आराध्यदेव	
—मो० क० गादी	५३८
' में शिक्षक हूंगा	
—रामपारकीय	५३८
गाँव गाँव और घर घर को छोड़ना	
सक्य	—नितीश
	५४०
विश्व छात्र धादोलन एक सुपरानु	
—प्रधान	५४१
विनापनबाणी के मुक्त सुशोभविद्या	
—सनीज कुमार	५४२
११ सितम्बर ६८ तक पूर्ण सफल	
की प्राप्ति	—गायत्री प्रभात
	५४४
भारतबन्दी सत्याग्रह वापस	
भारतवास के न इन्हें प्रथम शक्ति	
संचालित हो	—मानमोहन चौधरी
	५४६
सारी की दिशा	५४७
भादी-सम्पाधो के लिए धाधार-सहिता	५४८

अन्य शब्द

धारके पत्र

धारा १०२ के सम्बन्ध

सम्पादक

राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

गाराडो, बाराणसी-१, उत्तर प्रदेश
कोड २२८५

लोगों में मेरी जो प्रतिष्ठा है, उसका आधार भेग परिवर्तन है। इस राजनैतिक अभियोग में डर जाना मेरे लिए सम्भव है। यदि मैं दूरे गया तो मेरे लिए पूना में रहने या अण्डमान में, दोनों एक ही-से होंगे। यदि हमें राजनीति में भाग लना है तो ऐसे सक्तों के लिए सदा उद्यत रहना चाहिए। सरकार का उद्देश्य हमें जनता की दृष्टि में गिराना है, परन्तु मुझे विश्वास है कि वह हमें सुनाने में सफल नहीं होगी। वह हमें ऐसा बचा बॉस न पायगी कि जरा से शक्ति से टूट जाय। हमें यह भी तो याद रखना चाहिए कि अन्त में हम किसी हद तक जनता के सक्क ही तो हैं। यदि नाजुक समय आने पर हम लोग भाग निकलेंगे तो यह जनता के साथ विश्वासघात और द्रोह ही तो माना जायगा। यदि मुझे सच हुई तो देशवासियों की जो सहायता मुझे प्राप्त होगी, वह मुझे सहारा देगी।

मैं बस इतना कहना चाहता हूँ कि यद्यपि जूरी ने मुझे दोषी ठहरा दिया है, किन्तु मैं मैं हदतत्पूरक कहता हूँ कि मैं निर्दोष हूँ। सत्तार का शासन करने वाली शक्ति इस अदालत से बहुत ऊँची है और समस्त भगवान की यही इच्छा है कि मैं जिस ध्येय का प्रतिनिधि हूँ, वह मेरे स्वतन्त्र रहने की अपेक्षा मेरे जेल के दुःख उठाने से अधिक फल प्राप्त करेगा।

समय की मार्ग है कि केवल शब्दों का भारसा न करके हम निया द्वारा अपने भावों को व्यक्त करें।

सफलता दो प्रकार से प्राप्त होती है—या तो स्वाधनता के लिए यत्न करने वालों को किसी उदार और प्रबल शक्ति की सहायता मिल जाय अथवा जब वे अपनी सारी शक्ति को लक्ष्य के प्राप्त करने में लगा दें। स्वायत्त अधिकार प्राप्त करने के लिए प्राणों तक की आहुति देने के लिए उद्यत होना चाहिए।

हम जो कि भये विचार के लोग हैं अपना भ्रष्टा स्वभाव से एक इच्छ भी नाच नहीं गाँवें।

स्वातन्त्र के विना हमारी जिन्दगी और हमारा धर्म शून्य है।

स्वातन्त्र हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है, और हम उसे खोए नहीं होंगे।

—भाल गाराडो तिलक

'लोकमान्य तिलक और उनका युग' पृष्ठ १-१०२, २-१६१, ३ १२१,

लोकमान्य : जनता के आराध्यदेव



लोकमान्य तिलक

एक ही था। लोगों ने उन्हे जो पदवी दी, जो सम्मान दिया, वह राजाओं के दिये गये खिताबों से लाख गुना कीमती था। देश ने पुण्यतिथि : १ अगस्त आज वह याद सिद्ध कर दिलायी है। उनके आखिरी दिनों में जो दुःख भिने देला, वह कभी भुजाया नहीं जा सकता। लोगों के उस प्रेम का वरुण करना धमम्भव है।

लोकमान्य जनता के आराध्यदेव थे, प्रतिमा थे। उनके ध्वज हज़ारों के लिए वेदवाक्य थे। पुरुषों में पुण्य-सिंह ! देश-भक्ति उनका धर्म हो गयी थी। जितनी स्थिरता और दृढ़ता के साथ उन्होंने स्वराज्य के लिए काम किया, उतना और विश्वास नहीं किया। उन्होंने निःसन्देह स्वराज्य की प्रवृत्ति कई वर्ष कम कर दी। भारत की भावी सभ्यता के हृदय में यही भाव बना रहेगा कि लोकमान्य नवीन भारत के निर्माता थे, वे उनका यह कहकर स्मरण करेंगे कि एक पुरुष था, जो हमारे लिए ही जन्मा और हमारे लिए ही मरा।

लोकमान्य का देशवासीयों के हृदयों पर ऐसा गहरा प्रभाव था, उनका कारण क्या था ? मैं समझता हूँ, इसका उत्तर मरत है। देशप्रेम उनके हृदय की सबसे बड़ी शृण्णा थी। वही उनका धर्म था। वह जन्म से ही जनसत्ता पर विश्वास रखते थे। उनकी बद्धपत्र पर इनकी गहरी आस्था थी कि मैं कभी-कभी उसमें डर जाता था। परन्तु वही तो लोकमान्य के प्रभाव का आधार था। उनकी अद्वैत-शाक्ति फौजद के समान थी, जिनका उन्होंने देश के लिए उपयोग किया। उनका जीवन धुली पुस्तक के समान था। उनके शोक अत्यन्त मादे थे। उनका निजी जीवन निष्कलंक और मुक्त था। लोकमान्य ने लोकनिर्मायी शृण्णों का उपयोग अपने देश के लिए किया। जितनी दृढ़ता और स्थिरता

ने स्वराज्य-धर्म का प्रचार लोकमान्य ने किया उतना और किसी ने नहीं किया। यही कारण था कि उनके देशवासी उन पर पूरी श्रद्धा रखते थे। उनका सहज कभी लज-लबाया नहीं, और उनका आशावाद अदम्य था। उन्हें ध्याता थी कि स्वराज्य उनके जीवन-काल में आ जायगा। नही ध्याता तो इसमें उनका कोई दोष नहीं। यह अमदिग्ध है कि उनके प्रयत्नों से स्वराज्य कई वर्ष पास आ गया है।

हमारी धर्म और ज्ञान की परम्पराएँ

अत्यन्त प्राचीन हैं। धर्म और ज्ञान के सम्बन्ध में हमारी परम्पराएँ अन्य किसी भी देश से घटिया नहीं, अपितु उच्चत ही होगी। यदि हम उन परम्पराओं को छोड़ दें तो हमारी जाति को परस्पर जोड़ने का कोई ताकत न रहेगा। प्राचीन मान्यताओं को तोड़ने का परिणाम यह होगा कि जाति का गौरव विनष्ट जायगा। हमें सदा ये बातें याद रखनी चाहिए।

तिलक-गीता का पूर्वार्द्ध है, 'स्वराज्य मेरा जन्मनिष्ठ अधिकार है', और उसका उत्तरार्ध है, 'स्वदेशी हमारा जन्मनिष्ठ कर्तव्य है।'

— मो० क० गांधी

पत्नों से परे होकर काम करूँगा

गुजरात के प्रमुख नेता श्री इंदुलाल याज्ञिक की घोषणा

महागुजरात जनता परिषद के अध्यक्ष श्री इंदुलाल याज्ञिक ने कहा है कि सर्वोदय आन्दोलन की तरफ मैं अपना मन एकाग्र करना चाहता हूँ।

श्री याज्ञिक ने कहा है कि मुझे व्यापक पैमाने पर रचनात्मक कार्य करने की भूख लगी है। जनता के सर्वे सगठन के लिए यह कार्य मुझे प्रतिवर्ष लपता है। इसके लिए मैं सब पक्षों का सहकार लेनेवाला हूँ। आज कांग्रेस मताम्बु है, और विरोधी पक्षों की निगाहें भी सत्ता की गद्दी की ओर ही लगी हैं। गांधीजी और सर्वोदय-नेताओं की नीति के मुनाबिक जनशक्ति को जागृत करने का काम कोई पक्ष आज करना नहीं है।

सर्वोदय की प्रवृत्तियों में भाग लेनेवाले शक्ति को राज-नत्ता को छोड़ देना चाहिए, ऐसा एक मत है। और दूसरा विचार है कि इन काम को करने रहे, लेकिन रचनात्मक प्रवृत्तियों को राजनीतिक रण न दिया जाना चाहिए। मैंने सर्वोदय-नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने इस मस्य-ध में मार्गदर्शन माँगा, तब उन्होंने मुझे राजनीतिक और मतात्मक कार्य करने रहने की सलाह दी, तथा लोड-समा का सदस्य भी रहने की सलाह दी।

श्री याज्ञिक ने कहा है कि भूदान, सर्वोदय, स्वदेशी, गौन-साद तथा विविध च-

नात्मक कार्य करने के लिए छाति-सेवा दल खडा करना चाहता हूँ। यह काम मैं स्वदेशी मत्ता द्वारा करूँगा।

आपने यह भी कहा है कि किसी भी पक्ष से परे होकर जब मैं नया कार्य आरम्भ करने का निर्णय कर रहा हूँ, तो मुझे ऐसा लग रहा है कि मैं जीवन की उत्तम परम्परा का अनुसरण कर रहा हूँ। मैंने किसी पक्ष की कड़ी बाँधी नहीं है और उसे तोड़ने का भी कोई सवाल ही नहीं खडा होता। गांधीजी के पास से आहिमा की दीशा ली, उसके बाद विभागों की किसी प्रकार की भी उदरल गुपण में हिंसा का कभी विचार ही नहीं किया है, इसलिए आहिमा की नवी प्रतिज्ञा लेने की अप्पत्त नहीं है। अनेक पक्षों के साथ निश्चित ममान भूमिका पर मसुक्त मोर्चों में मैंने काम किया है और उनका मुझे पश्चात्ताप नहीं है। धन से सब पक्षों में परे होकर गांधीजी और विनोबाजी के बचावे हुए मार्ग पर आगे बढ़ूँगा। कोई भी पक्षवारी और दूसरे हिंसाई सहकार दोगे तो मैं बन्धुन करूँगा। मैंने सर्वोदय से रचनात्मक कार्य में उठे हुए मैं किसी वर्ग के पक्ष को टीका नहीं करूँगा, भयर उसकी नीति-नीति को जरूरी टीका करने में मुझे हिचक भी नहीं होगी।

— गुजरात समाचार

गाँव-गाँव और घर-घर को छूनेवाला संकल्प

उत्तर प्रदेश के बलिया नगर से विहार वापस लौटते समय

विनोबा का विदाई-भाषण

घाट यहाँ पर जो एक भयंकर प्रातिकारी और बहुत बड़ा भगल कार्य का संकल्प हुआ, उसका मेरे हृदय पर इतना प्रभाव पड़ा है कि मेरी बाबा कुशित-सी हो गयी है। १८ अप्रैल १९२१ को बाबा को पहला भूदान मिला और उसको ईश्वर का इशारा समझकर ईश्वर के माथ बातचीत के बाद, बाबा ने उस काम को उभी दिन से उठाया और दूसरे दिन मे भूदान माँगना शुरू किया। जिसको खयाल था कि मगह माल के बाद वह भूदान का छोटा-सा बीज, जो उस वक्त बोया गया था, उसका ऐसा मरदान् वृक्ष बनेगा और प्रातदान तक बात या जायगी।

मनु १९४२ मे 'Quit India' (भारत छोड़ो) का संकल्प भारत ने किया था। अगर तुलना करके देखें तो वह संकल्प, तुलना मे आज के संकल्प मे आसान था, और यह बहुत बड़ा संकल्प है, गाँव-गाँव को छूने-वाला, घर-घर को छूनेवाला संकल्प है। 'भारत छोड़ो' के संकल्प मे, अंग्रेजो को छोड़-कर जाना था। हम ही ने उनका राज्य चलाया था, हमारे ही आधार से उनका राज्य चलता था, हमने वह आधार छोड़ दिया तो उनकी यहाँ से जाना ही था। इसलिए वह 'निगेटिव' (अभाववादी) काम था। लेकिन इस संकल्प में गाँव को अपनी जमीन संपर्क करनी है, गाँव का परिवार बनाना है और इस आधार पर स्वयंसेवात्मक कार्य बनाना है। ऐसा संकल्प गाँव मान करोड़ की आवादीवाले प्रांत के लिए करना, बहुत बड़ी बात है। गाँव सात करोड़ का प्रदेश यूरोप मे तो एक राष्ट्र माना जायगा। 'इण्डिया' को छोड़कर, यूरोप के सब राष्ट्रों में, उत्तर प्रदेश बड़ा है; आस, जर्मनी उत्तर प्रदेश से छोटे है।

हमारा भारत एक बहुत बड़ा देश है, इसलिए उत्तर प्रदेश को प्राप्त माना जाना है, लेकिन यूरोप मे उत्तर प्रदेश नंबर दो या

राष्ट्र माना जायगा। ऐसे राष्ट्रिय प्रांत मे यह संकल्प किया है कि हम जमीन की माल-वियत प्राप्तिका को समाप्त करेंगे।

ऐसा गुप्त संकल्प, अपनी ताकत के बाहर का संकल्प, सब मिलकर करते है तो वह भगवद्गीता ही होता है और उनकी कृपा से ही किया जाना है। जब मनुष्य अपनी ताकत के अंदर का संकल्प करना है तो भगवान् कोई खास तकलीफ नहीं उठाते है, कोई खास मदद नहीं देने है, शीरसागर मे रोपसायी भगवान् मोते रहते है। लेकिन जब भगवान् देखते है कि अपने भक्तो ने अपनी ताकत के बाहर का संकल्प किया, सम्मिलित, सामूहिक संकल्प किया और सबकी सम्मिलित ताकत के भी बाहर का संकल्प किया, तब वे रोपसायी भगवान् न रहकर, उचित होने है, प्रागे-पीछे, ऊपर-नीचे घूमने रहते है, भक्तो को हँसा उल्लाह देने रहते है, यह भक्तो का अनुभव है और यही अनुभव हमें इस काम मे आयागा।

इसमें कोई शक नहीं है कि अपनी नाक

सरगुजा जिले में महिला-लोकयात्रा की फलश्रुति

इन्दौर, १६ जुलाई। देश मे स्त्री-शक्ति जागरण के उद्देश्य मे गत वर्ष इन्दौर से पू० विनोबाजी के तत्वावधान मे प्रारम्भ हुई। चारह वर्षों महिला-लोकयात्रा मे चार माह सरगुजा जिले मे पदयात्रा की, जिसकी फल-श्रुति उल्लाहपूर्ण रही।

जिले की चार प्रहमिली के प्रत्यगंत १८ विकास-सदो की १०५ ग्राम-पंचायतो के ५१७ गाँवो मे संदेश पहुँचाया। १०५ पञ्च और ५६२ गीत भी पदयात्रा हुई। १०५ ग्राम समारोह, ८६ गाँवो, ८१ महिला समारोह और स्कूल-पालेजो मे २६ व्याख्यान हुए। ३६७-५००० के सर्वोप-साहित्य की विनी

से हम ऐसा संकल्प करनेवाले थे ही नहीं। फल तक बात क्षेत्र की चल रही थी, प्रात को नहीं चल रही थी। भ्रमल-भ्रमल क्षेत्रवालो ने अपना कुछ कार्यक्रम बनाया था। प्रात हमें जाना था, भगवान की एक विचित्र शक्ति जाग गयी और विचित्र भाई के मुख से ही निकला कि बाबा आप सबसे हाथ उठाकर देख लीजिए, संकल्प हो सकता है। और मीने बैसा किया। अगर विचित्र भाई के मुख से यह बात नहीं निकलती तो बाबा बैसा कराता नहीं। पर उन्होंने कहा, इसलिए बाबा ने किया। और मेरा खयाल है कि उनके मुख के मन मे भी पाँच मिनिट पहले वह बात नहीं थी, अचानक ही यह बात उन्ह मूसी। इस पर से ध्यान मे आता है कि यह ईश्वर का कार्य है और हमें निमित्तमात्र बनकर करना होगा, ऐसा उग्रे भी हुता। बहुभूत मे एक भूत आया है—'आत्मनि चर्च विनिभावहि'। (श्र० मू० २-१-२८) प्रात्या मे विचित्र शक्ति होती है, उसका दर्शन आज हुआ। परमात्मा की विचित्र शक्ति ने एक संकल्प यहाँ कराया। इसलिए हम प्रत्यन्त निर्भय, निश्चिन्त होकर यहाँ से जा रहे हैं। यह भाववद संकल्प है, अपनी प्रेरणा से इस काम मे सबसे दो हाथ लगेंगे और भगवान के भी दो हाथ जुड़ जायेंगे। तो हर कोई चतुर्भुज होकर काम करेगा, ऐसा विश्वास लेकर हम जा रहे हैं।

(बलिया १५-७-६८)

हुई और लोकयात्रा-सर्व हेतु जनता-जवादेन से ३,७६० टो का दान मिला।

उक्त अवधि मे छेह माह तक प्रदेश सर्वोप मंडल और गाँवो-स्मारक-निधि के तत्वावधान मे जिलास्तर-प्रशिक्षण भी चलाया गया, जिसके फलस्वरूप १०५ नवें ग्रामदान मिले। सरगुजा जिले मे सब ६५० ग्रामदान मिल चुके हैं।

यह उल्लेखनीय है कि सरगुजा में लोक-यात्रा का शुभान मनोबल और व्यडिध्या सर्वो-दप-ममिनि सरगुजा मे की। सरगुजा मे बाद लंवायाका २ जुलाई, '६८ मे टीरमगड़ जिले मे मुक्त हुई है। [मंत्रेस]

में प्ररतन रूप से निर्णायक भूमिका भदा करने का भवसर मिल सके ।

हमारी यूरोप-यात्रा—५

विज्ञापनवाजी से मुक्त यूगोस्लाविया

और

भारत की भ्रामक तस्वीर

यह सही है कि छात्र-नेताओं में से अधिकांश प्रगतिशील दृष्टिकोण के हैं, अल्पसंख्यक तंत्र के हिमायती हैं और आम तौर पर समाजवादी लक्ष्य के प्रति निष्ठावान हैं, पर इसके आधार पर यह मानना भ्रमगत है कि वे किसी राजनैतिकवाद विशेष के पक्षधर हैं ।

यूरोप घषवा समस्त विश्व के छात्र-भ्रातृदोलन पर इस परिप्रेक्ष्य में विचार करने पर यह साफ दिखाई देना है कि आग्रूल सामाजिक परिवर्तन की मांग प्ररतुन करनेवाला यह भ्रान्दोलन केवल उन्हींके सूत्र पर पूरी तरह कारगर नहीं हो सकता । छात्र-भ्रान्दोलन पर्याप्त कारगर हो इसके लिए यह जरूरी है कि समाज की अन्य विधाएँ प्रवृत्तियों और लोचनान्नात्मक शक्तियों का भरपूर सहयोग उन्हें प्राप्त हो । वहाँ इस प्रकार का सहयोग सहज रूप में उपलब्ध नहीं होगा, वहाँ यह भ्रान्दोलन हवा के रस की ओर संवेन करनेवाला गर्द-गुबार मात्र बनकर रह जायगा । युनिया के हर देश का आर्थिक, सामाजिक ढाँचा थोड़ी-बहुत विभिन्नता रखता है । भ्रमः प्रत्येक देश का छात्र-भ्रान्दोलन अपने अधिष्ठान के सन्दर्भ में सत्रिय होता दीखता है ।

लैटिन अमेरिका में, जहाँ भाज भी राजनैतिक और आर्थिक पराधीनता का बोल-बाला है, वहाँ छात्रों को दुहरे मोर्चे पर लड़ाई लड़नी पड़ रही है । एक ओर उन्हें सत्ता-भारी शासकों से झूठना पड़ रहा है, दूसरी ओर उन्हें राष्ट्रीय स्वातंत्र्य और नये सामाजिक ढाँचे के लिए बचमबच करनी पड़ रही है । स्पेन के छात्रों की भारी बलिदान करके वहाँ के प्रतिनिधायवादी सैनिक-शासन के सिन्नाफ मावाज उठाते हुए वहाँ की बुडुंगा धार्मिक रुझानिता के विरुद्ध भी सपर्य करना पड़ रहा है ।

विश्वविद्यालयों की स्वायत्तता

प्रघोषित राजनीतिक दासता से मुक्ति

यूगोस्लाविया, पोलेण्ड, और चेको-स्लोवाकिया जैसे दम्युनित देशों की स्थिति ऐसी है कि वहाँ राजनैतिक विरोध जंगी किसी प्रवृत्ति का अस्तित्व ही नहीं है । इन देशों में एक ऐसा लोचन-शासकरी राज्यवाद जन-

पत्तिका यूरोप के नूनीवादी देशों में पूर्वी यूरोप के सामरवादी देशों में भाते ही एक परिवर्तन-सा महसूस होता है । तुरन्त ध्यान घ्राह्य करनेवाला पहला परिवर्तन विज्ञानों की चकाचौंध का भ्रम है । ज्यो ही विज्ञान से यूगोस्लाविया के प्रथम गहर लुब-लिथाना तक की यात्रा पूरी करके हम स्टेदान पर उतरे तो वातावरण में एक प्रकार की शांति का धनुभव हुआ । कुमारी मुदिता, जो स्टेदान पर हमारी भ्रगवानी करने श्रायी थी, ने हमारा सामान कार में रखा और घर की तरफ प्रयाण करते हुए पृष्ठा : 'केना लगा भ्राणको हमारे देश का प्रथम दर्शन ?'

विज्ञापन की चकाचौंध

सुविधायाना विश्वविद्यालय की यह छात्रा शापद ऐसी घ्रासा नहीं कर रही होगी कि मैं सबसे पहले कहीं का भिने ही पत्रिम के लोग इस 'भ्रभाव' की पिठकृपण कहे, पर

जीवन पर मजबूती से हावी है, जो विश्व की ध्राधुनिक परिस्थितियों में भी अपनी सामाजिक, राजनीतिक सत्तना में किसी प्रकार का हर-केर नहीं करना चाहता । इन देशों के छात्रों की नवनेनना की लहर लोक-कल्याणकारी राज्यवाद की मजबूत सृष्टन से टकराकर उसमें दरारें पैदा करने का प्रयत्न पूर्व प्रभिक्रम दिता रही है । विशेष रूप से चेको-स्लोवाकिया और पोलेण्ड के छात्रों में यह उद्योग बुलद करने का साहम बिया है कि विश्व केवल जो को राज्य की बोधित राजनीति की दासता से मुक्ति मिछनी चाहिए ।

एशिया और अफ्रीका के कई देशों में द्वितीय महायुद्ध के बाद स्वातंत्रता पायी । नव-स्वतंत्रता का प्रसाद पाने के साथ इन देशों के छात्रों में विचारान्मुल मशुद्ध जीवन की भाकाशा ध्यापक रूप में फैलती गयी ।

मेरी दृष्टि से यह 'भ्रभाव' मानव स्वभाव के ज्वादा करीब है । कोमो ब्रेड (रोटी) खाये, कौनसे भाकं का पानी पीये, कौनसे सिगरेट पीने से हम ज्वादा 'माइडं' माने जायेंगे और हमारे घर का हर सामान पुरानी फेंशन का हो गया है, इसलिए हमें नया सोफा, नया रेडियो, नये बतन और चापद नयी पली तथा नये बन्धे भी प्राप्त करने की कोशिश करनी चाहिए, ऐसी सुपत की नेक सलाह देनेवाला मुनाफ खोरी का ध्यापार पश्चिमी यूरोप में छाया हुआ है । वहाँ के लोग इसे 'प्रगति' का प्रतीक मानते हैं ।

कुमारी मुदिता के साथ हम इस विषय पर पूरे रास्ते बात करते रहे । घर पहुँचते-पहुँचते मुदिता ने कहा कि "जब मैं रोम में थी, तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि लोग सामान इसलिए नहीं खरीदते कि धमुख बस्तु की उन्हें मचमुक जखरत है । बरिफ सामान पैदा करनेवाला धप्रत्यक्ष तरीके से अपने

दमोलिए, भारत, पाकिस्तान, मिश्र और तद-अफ्रीकी देशों के छात्रों के भ्रातृदोलनों में शैक्षिक सुविधाओं के दिस्तार, परीक्षा-पद्धति के सुधार और विश्वविद्यालय की बहार-दीवारी के भीतर के लोचनान्नात्मक अधिबारी की भांग का स्वर सुखरित हुआ । यूरोप के छात्र-भ्रान्दोलनों द्वारा अधिगत वे प्रति जो सौर और व्यापक क्षीम उभरकर मानने प्राया है, उसकी नव-स्वतंत्रता-प्राप्त छात्र-भ्रान्दोलन से तुलना नहीं की जा सकती है । नव-स्वतंत्रता पानेवाले देशों के छात्रों की स्वतंत्रनेनना धभी प्राय भ्रद्वंवायन ही है, इसीलिए यह प्राय सत्ता, निहिन स्वाधं, और पसर-राजनीति का मोहरा बना हुआ है । रिन्तु यह बहुत दूर नहीं है, जब नि-नव स्वतंत्र देशों का छात्र-भ्रान्दोलन भी विश्व छात्र-भ्रान्दोलन का सहयात्री बन जायगा । —रुद्रभात

मानस को हम तरह-थोड़े लेवा है कि आप उन सामान को खरीदने के लिए बाध्य हो जाते हैं। उन सामान के प्रभाव में आप अपने आप ही हीन और बिलो स्तरक मानने लगते हैं। पर यूरोपियनरिया में कोई एक भारतीय तो मुताबक बसानेवाणा है नहीं। जो उलाटिक है वही उरभोला भी है और इन्डलिंग विमानों की खवाबीय इत तरह के समाज के लिए अनजानक है। इन्डलिंग प्रभावों में वे इन्डो प्रोम टेग्रीडिबन पर प्रख्या गडकों पर पवित्रिणी वगैरे विनापन आप नहीं देना रहे हैं। प्रमल में विज्ञानकारों मानस को एक नयी तरह की गुलामी में खंखाने का तरीका है। मानस प्रतिक्रम के 'क्रीडा' बनने उमे तक विज्ञान शिक्षा में खीच लेने बनि विनापनबानो में में बहुत बरती है।

मासोपमा की भी गुजाईश

हमारी सुनिष्ठा में हमारी पहली गुला बान रोम में ही हुई थी। यह एक प्राकृतिक प्रवृत्ति की महिष्ठा है और भारत में एव साम्प्रदायी सरकार की मासोपमा भी है। यूरोपियनरिया इत सामने में प्रत्ये साम्प्रदायी देशों के बाकी भागें बड़ा होता है। यहाँ के लोग बाकी सुलकन बाजोपमा करते हैं और सोचों में मुझे भड़े पडावे सतराही जवाब भरे हुए नही है। मुदिता में जहाँ साम्प्रदायी जालविधियों की तारीफ की बड़ी म्यूराचनी म ब्याप्त प्रक्रमधत्ता प्रालय बुद्धिहीनता प्रादि होना की निदा भी की। रोम में ही हमें सुनिष्ठा की इस समालोकक प्रवृत्ति का प्राप्ताम मिल गया था। उमने हम सुभ ग्निधाना माने और उमके पर पर घातिव बनने का निमबल गिया हलिले हम यूरोपियनरिया में सवने पहुंचे सुदिता के पर पर टहरे। उमके माला निता पबनी नहीं जाना में मत्र सुदिता हमारापिना का सारिकर भी पूरा कर रही थी। हमने २४ चने सुनिष्ठा के साथ विनाकर मूयात्तर प्रातिभ्य का प्राप्ता विवा।

प्राकृतिक ईश्वर गुणक से मुताबक

गुणविधाता से हम जागरेक तप के मगर में बने। यहाँ हम यूरोपियनरिया के विना विदुष ब्रह्मिक ईश्वर गुणक से

मिलने के लिए बने थे। प्रातिगुण बापों ने किए प्रमुद्रति का प्रयोग किया आप इस विधात व विनाथ करनेवाले दुनिया भर के ब्रह्मिकों ने पगतम नाम की एक संस्था बनायी है। स्वर्गीय ज्ञान भाषा भारत की तरह से हम संस्था के सदस्य में और उन्होंने कुछ वर्ष पहले उदयपुर म पगतम ब्रह्मिकों का एक सम्मेलन भी बुलाया था। श्री ईश्वर गुणक ने पगतम की ओर स हमारे टहरेने की व्यवस्था एक होटल में की थी और दो श्रमजी जाननेवाली बहनों ने हम आगरेक शहर के दान कराये। आगरेक विधवाशाला में ब्रह्मिकों का विश्रम भी है जहाँ भागीय भावापरी और भारतीय दानों की पढ़ाई होती है। गांधीशालाओं के प्रभार पर इंडोनेजी विमोष की ओर से एक लंबे परिचार की योजना बनावी जा रही है।

ईश्वर गुणक से हमारी तबो जातचीन हुई। उन्होंने कहा कि प्रागुत्तर मगर बड़े देना विधवाजनम की परमाई बने विना प्रम। और तभी से आप लेन रहे हैं जब कि प्राति विधवा के विभिन्न राष्ट्र के बीच प्रातिक समाधान। विकल्पहीन देशों में प्रातिक शोधन समाप्त करने ही सम्भव है। तभी शोधन प्रवृत्ति प्रादि महत्त्वपूर्ण प्रम द्वितीय महायुद्ध के बाद म उत्तरे ही जा रहे हैं। मुझे लगता है कि ये तथ्यकथित बड़ देश सवार की समरथाओं से काम चिन्तन हैं और प्रापनी प्रतीन मत्ता एव संप्रमना कायम रखने के लिए प्रातिक चिन्तन है। प्रम इन देशों की नीति पर म दिन प्रतिदिन मेरा विचारात उठता जा रहा है। 'छादे देग वासों को प्रम स्वय ही प्राणी मन्द करने का समारा की शम्प्राओं की हल करने का कोई दांता विकल्पना प्रादि है।

और तब हम केन्द्र प्राये। बेलदक में 'यूरोपियन प्राति-मना' के प्रातिधि के रूप म रहा। यह प्राति-मना किमी के प्रमुद्रित था पर-कम्पुनित प्रातिमार्थी सम्भार के साथ तुरी हुई नहीं है और न रिती प्रतारोधीय प्राति-मरवा की बाँच ही है। स्वान और उदय नीति के प्राधार पर इस संस्था का काम चलता है। लेखक म

यूनेस्को छात्र सुनिधर तथा विद्यार्थियों में हम प्राति-मना में मेरे कायम रहे थे। भारत के बारे में गलत धारणा

जहाँ भी मैं गया, खंख भारत के बारे में धनेक सवाल पूछते थे। यूरोप में काम और पर ऐसी प्राणा हैं कि भारत म बड़ी बेकाम गायों की तान बहूत ज्वाल है और वे मुनी सडकी पर प्रमनी हैं। भारतवासी गाय को पवित्र मानकर उनको पूजा करते हैं। यूरोप के धनेक देशों म तान मुसले बहते हैं कि यदि भारत को जतना प्रती है तो शर छोड मने क्यों प्रावे ? मयद ही एसा कोई दिन जाना होगा किम दिन मुझे इस सवाल का सामना नहीं करना पडना होगा। दूसरी बात जो पूरे यूरोप म सुखी नहीं आती है, यह यह है कि भारत की प्रवृत्ति में हिन्दू धर्म के सत्कार बहुत बड़ी बाधा है। प्रा किर लोगों की यहाँ पर यह भी प्राणा है कि जब तक प्राति निरमन नहीं हुआ तब तक भारत की समस्था ना कोई हल नहीं है। एक रहलक में मुझे भाषण देन के लिए कुठारा एक था। बच्चे में मैंने मरुत ही पूछा कि 'आप खंख भारत क बारे में क्या जानते हैं ? प्रापनी में दसवी बराम में बच्चे मेरे सामने थे। एके में कहा प्रावित्र गाय दूधने में कहा गाधुओं और बकीरों का देण लेमने में कहा गरीबी मूलचरी और मितमपी बोये में कहा धनेक घनी राने महराजे। प्राचने में कहा गण और राजमहल छडे में कहा नेहद और बानी हुई जनमया इगर्ग। उत्तर मुसकर मुझे प्राथम्य हुआ। हाता कि वे सभी बातें मही हो सती हैं पर किम परि प्रम में और किम भाषा म यूरोपवासी इन बानों को जानते हैं यह मार मत्त है। पर पगतमों को तो प्रमबचरी बान पपटी प्राणा म डार-डार से देखकर निशने में मत्रा माना है और प्राय उमकी इनी बान का बेचन भी मिकता है। यही परिप्रम और तही प्राणा में जलवारी देने का काम प्राय हमारे दूतनामों की बरता प्रादि है। पर प्रत्येक मोटी बुद्धि के शूरेकटम हमारे दूतनामों म भरे हैं और दानर में देवक के सामने बड जाना कुछ इटीन विद्विवा प्रावा मारवादी मूल की प्राणापुत्रि कर देना

११ सितम्बर '६८ तक पूर्ण सफलता की आशा

टीकमगढ़ मध्यप्रदेश के रीवा सम्भाग में एक महत्वपूर्ण प्रशासनिक इकाई है। यह जिला उत्तर-पश्चिम में उत्तर प्रदेश के झांसी जिले से घिरा होने के कारण सीमांत जिला है। जिले का अधिकांश भाग जंगलों, नदियों और छोटे-छोटे नालों से भरा हुआ है। भावागमन के साधनों की कमी है। गाँवों में शिक्षा का अभाव और बेरोजगारी है।

यह जिला ७५ मील चौड़ा तथा ५० मील लम्बा है। इनकी जनसंख्या ५ लाख है। जिले में कुल १००३ गाँव हैं। टीकमगढ़, निवाड़ी तथा जतारा; तीन तहसीलें हैं। टीकमगढ़ तहसील पूरी भ्रामदान में था चुकी है। इस तहसील में बलदेवगढ़, टीकमगढ़, दो विनाम-खण्ड हैं। जिले भर में बलदेवगढ़, टीकमगढ़, निवाड़ी, पृथ्वीपुर, जतारा तथा पलेहरा, ये छ. विकास-खण्ड हैं। इन जिले से बड़े वास्तुकार नहीं हैं, विपणनता कम है। भूमिहीन भी बहुत ज्यादा नहीं है।

मध्यप्रदेश सर्वोदय-मण्डल के निर्णयानुसार तथा टीकमगढ़ जिले के साक्षियों की सलाह से जिलादान अभियान यहाँ चल रहा है। शान्ति-सेना विद्यालय, बलूचखाम्पा, इन्दौर की बहनें बड़े उत्साह तथा लगन से अभियान चला रही हैं।

दोलियाँ अक्षरक पाँच दिन तक गाँवों में घूमती हैं। तल्पत्रान् सभी टोलियों का दो दिवसीय शिविर किया जाता है, जिसमें टोलियाँ अपना-अपना अनुभव तथा फलश्रुति सुनाती हैं। शान्ति-सेना विद्यालय की बहनें

→ उनके लिए पर्याप्त होता है। इनके बाद पाटियाँ, सराव, रात्रि-कलत्र और मस्तो! यही है दूतावली का रस।

केलम्रेड-प्रवास के दौरान मुझे सुप्रसिद्ध राजनैतिक विद्वेष्टी और विचारक मिलावान जिला से भी मिलने का अवसर प्राप्त हुआ, उन्होंने विनोबा, जयप्रकाशजी तथा भ्रामदान आन्दोलन के बारे में जानकारी माँगी। उन्होंने कहा कि "यदि भ्रामदान से समाज को के ही परिणाम प्राप्त हो सकें, जो साम्यवादी

भ्रामदान लेकर लौटनी हैं तो उनके चेहरो पर मुस्कान तथा आत्मविश्वास की रेखाएँ झलकती रहती हैं। खेतों का मौसम होने के कारण लोग खेतों में काम करने चले जाते हैं। पर शान्ति-सेना विद्यालय की बहनें वहाँ भी उनका पीछा नहीं छोड़ती। खेतों पर डट जाती हैं और धोयपा-पत्र पर हस्ताक्षर करवा कर ही हटती हैं। यदि बहनों को भूख लगी रहती है तो खेत पर धायी हुई रोटी में हिस्सा भी बँटाती हैं।

भ्रामदान अभियान का चौथा दौर पृथ्वीपुर विकास-खण्ड के शेष गाँवों में १७ जुलाई से शुरू हुआ है। कुल २१ टोलियाँ निकल पड़ी हैं। १५ अगस्त तक अभियान का काम चलाना जायदा।

टीकमगढ़ जिलादान अभियान में मध्य-प्रदेश सर्वोदय-मण्डल, मध्यप्रदेश गांधी स्मारक निधि, शान्ति-सेना विद्यालय की बहनों, गांधी-शांतादरी विद्यालय के छात्रों, गांधी आश्रम के कार्यकर्ताओं के अलावा स्थानीय शिक्षक भी भाग ले रहे हैं। अभियान का मार्गदर्शन श्री काशिनाथ त्रिवेदी तथा सुश्री निर्मला देशपाण्डे कर रही हैं। इसका संयोजन और संचालन मध्यप्रदेश गांधी-निधि के वरिष्ठ कार्यकर्ता श्री रामचन्द्र भार्गव कर रहे हैं।

जिले के प्रमुख साधो सर्वश्री चतुर्वर्ग पाठक, बेमिक ट्रेनिंग कालेज कुण्डेश्वर के प्राचार्य श्री प्रेमनारायण रुसिया और श्री अमना प्रसाद रावत, श्री दामोदर प्रसाद शक्ति के बाद धाम तोर पर प्राप्त होते हैं, वार्षिक दोषण से मुक्ति, तब ही दुनिया का ध्यान इस आन्दोलन की ओर जायदा, अन्यथा एक सुन्दर आदर्श के रूप में यह आन्दोलन भी खटिखट की जोड़ बन जायदा। मैं इस आन्दोलन के परिणामों की प्रतीक्षा कर रहा हूँ कि क्या प्राप्त लोग भ्रामदान के परिधि भारतीय जनता की नमसुख 'निबन्ध' कर सकेंगे?"

—सतीश कुमार

पुरोहित एवं श्री हरमोहिन्द त्रिपाठी "पुण्य" का सहयोग सराहनीय है।

एना देखने में छाया कि जिला टीकमगढ़ के अन्दरत चल रहे भ्रामदान-अभियान में प्रथम सार्वजनिक कार्यकर्ता, नेता एवं गांधियों के साम्यवादी शिक्षकों का तथा प्रगतिशय महाविद्यालय कुण्डेश्वर के प्राचार्य व छात्रों का सहयोग निःसन्देह प्रशंसनीय है। पृथ्वीपुर इण्टर कालेज में दो दिवसीय शिविर सम्पन्न हुआ। यहाँ के शिक्षकों तथा छात्रों ने भी उत्कलनीय सहयोग दिया।

जिला टीकमगढ़ के जिलाधीश श्री दी० सी० मसीह एवं प्रथम शासकीय कर्मचारियों का भी सहयोग उत्कलनीय है। जिलाधीश ने स्वयं बिपार-गोष्ठी एवं सभाओं का आयोजन करने में पूर्ण सहयोग दिया। भावागमन एवं टोलियों के ठहरने यादिक की समुचित व्यवस्था का उन्होंने पूर्ण ध्यान रखा और अल्पने नीचे के अधिकारियों को भी समुचित व्यवस्था करने के लिए सूचित किया।

इस जिले में कांग्रेस और पी० एल० पी० का मुख्य रूप से प्रभाव है। वरिष्ठ का पूरा सहयोग कई कारणों से नहीं मिल पा रहा है। कहीं-कहीं तो विरोध भी कर रहे हैं। कांग्रेस के लोगों को शक है कि जिलादान का अर्थ पी० एल० पी० को मिलेगा। यहाँ का जनमानस इस आन्दोलन के वाधी अनुसूल है।

अभियान को वार्षिक सहायता देने में भी टीकमगढ़ जिले के विद्यालयों का सहयोग प्रशंसनीय है। इस अभियान के लिए शिक्षकों ने एक-एक रुपया तथा सहर्ष स्वीकार किया है। स्थानीय जनता गल्ले के रूप में मदद दे रही है। १२ किबटल गल्ला इस अभियान के दरम्यान मिला। गांधी आश्रम उत्तर प्रदेश ने ५०० रु० की सहायता जिलादान-अभियान के लिए दी है। श्री राजाराम भाई ने बलिदान में सुश्री निर्मला यदुन को आश्वस्तन दिया है कि गांधी आश्रम के सात-आठ कार्यकर्ता जिलादान-अभियान के लिए दौरे। पर कुल शिक्षक जिलादान-अभियान बनाने के लिए वार्षिक कटिर्दा भी रही है। इस सपरदा से समाधान में ही नरेन्द्र दुबे प्रवर्ती शोशी फेलाकर पुन रहे हैं। →

भारतदान के सन्दर्भ में ग्राम-शक्ति संगठित हो

बलिया और झाड़ रोड के बीच के दो वषों निश्चिन्त ही सफ़लताजनक रहे हैं। चौबीस हजार के लगभग नये ग्रामदान मिले, जिन्हें मिलकर ग्रामदान की कुल संख्या ६० हजार में अधिक, प्रबंधन की संख्या २६० में अधिक हो गयी है, और पाँच जिले ग्रामदान में आ गये हैं, यह बेसाक बहुत बड़ी श्राकषक संख्या है। इसमें भी अधिक श्राकषक तो वह संकल्प और प्रात्मनिश्चय है, जिससे यह उपलब्धि सामने आयी। इसे कई राज्यदान के संकल्प ने अधिक स्पष्ट कर दिया है। विनोदजी की प्रेरणा से बिहार में पहल की। इससे प्रेरित होकर दूसरे प्रदेशों में भी राज्यदान की होड़ शुरू हुई और मद्रास तथा उत्कल ने अपनी ओर से राज्यदान का स्वरूप किया, यद्यपि यह एक वषों बाद, गाँधी-जन्म-शताब्दी तक पूरा करने की बात है। उत्तर प्रदेश ने भी १५ जुलाई को बलिया में विनोदजी की उपस्थिति में विधिवत् सन्कल्प घोषित किया है। राज्यव्यापी ग्रामदान की सूची में उत्तर प्रदेश का नाम सबसे अग्र में था, परन्तु अपनी दृढ़ता और उत्साह के चल पर अब वह बिहार के निचट पहुँच गया है।

भारतदान का लक्ष्य

जनशक्ति का सम्बल

इस प्रकार भौतिक उपलब्धियों की अपेक्षा मानवीय प्रेरणा और स्थिति से प्रेरित होकर देश के बाँटी कौनों से हमारे साथी कार्यकर्ता झाड़ रोड आये थे। नारा यातावरण शान्त उत्साह और विश्वास से स्फुटित हो रहा था। उत्तर प्रदेश और मद्रास के छात्री-कार्यकर्ता के कारण, जो कि ग्रामदान के काम में गहरे लगे हुए हैं, एकात्मता और पारस्परिकता का दर्शन पहले से कई गुना अधिक हो रहा था। इनलिखें यह स्वाभाविक ही था कि सम्मेलन ने भारतदान का लक्ष्य तय किया और उनके उपाय और साधन खोजने का प्रयास किया।

स्वाभाविक ही लोगों ने मत्स्य किया कि ग्रामोद्वेग की शक्ति का मूल स्रोत और बड़ी निधि तो स्वयं ग्रामवासी गाँवों की जनता ही है। उन्होंने कई रायों में अग्रो प्रकार से अपना सत्व सिद्ध करके दिखाया भी है। सम्मेलन ने इस महान् शक्ति को संगठित करने और सही दिशा में मोड़ने पर टीका ही जोर दिया है। ग्रामदान-ग्रामोद्वेग देश के पाँच लाख गाँवों को ग्रामदान में लाने के अपने ध्येयि सवर को इस नये लोक-नेतृत्व की शक्ति से ही मिद्ध कर सवेगा।

उपेक्षितों की मांग

सम्पन्नो की परीशानी

इसके कार्यक्रम का स्वरूप यहाँ होगा कि गाँवों में ग्रामसभा और ग्राम सार्वभौमिकता का मठन हो और वे मज्जित हो। जहाँ-जहाँ ग्रामसभाएँ गठित हुई हैं, वहाँ एक समस्या खड़ी हो रही है, जो धनितेक्षित नहीं थी, कि अब तक जो भूमिहीन और गरीब किसान दलित और उपेक्षित थे, वे अब अपनी हक समझने लगे हैं और ग्रामसभाओं में अपनी गाँव साफ़ सार्वभौमिक में पेश करने लगे हैं। इससे माँग के उच्च समझे जानेवाले लोगों को परीशानी होने लगती है जो आज तक ग्राम के धार्मिक और सामाजिक जीवन पर अपनी सत्ता पीछे छोड़ने में चलाते आ रहे थे।

जो कार्यकर्ता ग्रामदान के बाद गाँवों में सौहार्द को प्रोत्साहित करते रहे हैं, वे ग्राम-सभाओं के एक सत्त्व और संघर्ष की देखकर घबड़ा जाते हैं। लेकिन धनवानों की बात नहीं है, गाँवों के विभिन्न स्तरों और तबकों के लोगों का भागीगी सम्बन्ध रहा है, वह मदियों के प्रोत्साहन और विषयता से विपत्तित हो गया है। मदियों ने गरीब और पिछड़े लोग अपना मुँह खोलने या अपनी कोई हक खतने की हिम्मत नहीं कर सके थे।

जीवन की नयी प्राकाराएँ

प्राया की नयी किरणें

उनका जीवन जानवरों से बचकर था। अब ग्रामदान ने उनमें नयी भासा की किरणें

जगायी है और उनके अन्दर प्राकाराएँ उत्पन्न की हैं। समूचे गाँव ने एक नया जीवन जोने का और उन दीन-हीन प्राइयों को समाज साथी के रूप में देखने का संकल्प किया है। कई मदियों के अलगाव के बाद अब ग्राम-समाज के विभिन्न तत्व प्रासमना में सम्मिलित के स्तर पर ग्रामने-सामने आ रहे हैं। लेकिन पुरानी धारणें और वृत्तियाँ मुश्किल से ही टूटती हैं। इनलिखें कुछ-न-कुछ संघर्ष का होगा स्वाभाविक है। यद्यपि इसके घबड़ाने की कोई बात नहीं है, फिर भी इन सम्मस्याओं को हल करने की मोर पर्याप्त ध्यान देना भी जरूरी है। नहीं तो गाँवों की उस प्रातिकारणी शक्ति को बाहर आने देना और प्राधोद्वेग की प्राप्ति से जानेनाले सामूहिक नेतृत्व को बालना देना सम्भव नहीं होगा। उन ननाव को ग्रामदान की प्रक्रिया और भावना से ही मिदाया जा सक्ता है और उसीसे मिटाना चाहिए। उसमें तीन बातें हैं।

पहली बात, प्रत्येक व्यक्ति प्रयत्न परिवार के साथ कुछ-न-कुछ प्राजित्त्व स्थापित करना है। आज उनमें संघर्ष दिखाई देने लगा है, परन्तु उसे सब मिलकर तभी हल कर सके हैं, जब सम्मस्याओं में सब अपना दिन और दिनाग लगायें।

दूसरी बात, सबका उत्तम कल्याण प्रत्येक व्यक्ति और प्रत्येक परिवार उत्तम ढंग से तभी कर सकता है, जब उनका स्वायत्त विगत हो, पूरे गाँव की ही परिवार सम्भव कर सकें जैसे की बात सोचें; यह नहीं कि हल कोई अपने-अपने संकुचित स्वायत्त तक ही सीमित रह जाय।

तीसरी बात, प्रत्येक को अपने काम को कुछ है उसे दूसरों के साथ बाँट देने की वृत्ति को जीवन का मूल मिद्धान और समयाओं के परिवार का मुख्य बिन्दु समझना चाहिए। और वेलाक, सामाजिक और धार्मिक गमना हथारा मुक्त लक्ष्य है और उनोंने लिए हमें प्रयास करना है।

रवायों का विलोकीकरण

समस्या का समाधान

उन तीन मिद्धानों को लागू करने का प्रयत्न है कि किसी समस्या को दबा नहीं पायें

वा किमी। दृष्टि विशेष की आवश्यकता नहीं
 कर सकते। जो भी दूरगमल गणना करना
 उगने वाले म ठरकता के साथ सुन्दर चर्चा
 करनी होगी, ऐसी सुनी चर्चा ही त्रिमयें
 सब इतना समझें कि सबसे पार कुष्ठ-
 कुछ काश्चित् स्यात् है फिर भी समुदाय के
 मने के लिए सबसे धरना बनाया निवृत्ति हेतु
 साहित्यिक कार्य में शामिल कर देना चाहिए,
 उनमें समीप बना देना चाहिए। सभी समस्या
 का समाधान मध्य हो जाएगा।

हम समझ देना चाहिए कि किसी को
 मरणा का अन्तिम समाधान एवम समय तक
 कर्मिण प्रविष्टा द्वारा ही सम्पन्न है। अन्तिम
 समाधान-मरण सुखी खाना मंत्र में प्राप्त
 नहीं हो सकता। उदाहरण के लिए मान
 लीजिए, मनी की मरुद्वी की दर ब्रह्मन की
 भगवता प्राप्तमान के समान वेग है। जब
 प्राप्तमान को यह तो निगारिण करनी ही
 चाहिए कि समाधान अन्तिम समझ हो अन्ती
 मरुद्वी ब्रह्मदी ज्ञान बलि साथ ही समाधान
 दृष्टि की भी योजना बचाने का प्रत्य
 करना चाहिए जो कृति उत्पादन को दृष्टि के
 साथ जुड़ी है।

दूसरा उदाहरण में। सुनि का योगवा
 रिप्या जो निराना ज्ञान है वह गात्र के
 सभी सुनिष्टो को किण पवति होता होगा
 ऐसी सम्पत्तिका सुदुर्लभ रूप गात्रो में होगी।
 लेकिन अपना धम यह रही कि इनके लिए
 कुछ उपाय किया नहीं जा सकता। बीमर्वा
 रिप्या समीप निराना तो प्राप्त है। गात्र
 तथा को वैद्यक विचार करना चाहिए कि
 परिवार जमीन निराना जा सकती है या नहीं।
 धनेक गात्रो का प्रत्येक उदाहरण हमारे सामने
 है कि अब ज्ञान जमीन की जरूरत पड़ी तो
 बर्षों के भारी सब सुनिष्टन लोगो ने विवेका
 के और सुधा म बीमर्वा रिप्या म अधिक
 जमीन निराना दी। फिर जहाँ ज्ञान जमीन
 नहीं निराना था मने बर्षों पर संस्मरणा
 को तब सुनिष्टन लोगो के लिए हमने उद्योगो
 का प्रयत्न किया होगा।

एसी महत्त्वाकांक्षा का हृत् करने में प्राप्त
 पात्रि-सत्ता बहुत बढ़िया काम कर सकती
 है। वह गात्र म परिष्कृतता का वातावरण
 निर्माण कर सकती है सामन्तधर्म में नहीं

खादी की दिशा

सर्व सेवा मण्डल प्रबंध समिति द्वारा ५-६-७-८ जून, १९६८ को
 झारखण्ड की बैठक में स्वीकृत प्रस्ताव

मानव सम्भार द्वारा थी प्रयोग महाना
 को सम्पन्नता में नियुक्त की गयी सारी
 सामोद्योग बहिरी की रिपोर्ट तथा विचार
 रिप्या पर सब सेवा मण्डल प्रबंध समिति में
 विचार किया गया।

सारी-सामोद्योग बहिरी की निरूपणा
 पर स्वाभ विचारों पर ४० भाग सारी सामो
 योद्योग बोड सारी सामोद्योग बहिरीगत भाग-म
 कारी तथा भाग-मन्त्रालय द्वारा विचार रि।
 आपदा। यह भागा की जाती है कि इन तरह
 के विचार के निर्माण में किसी न किसी समय
 सब सेवा मण्डल में भी परामर्श किया जायगा
 और उसकी तथ्य और मन्त्रालय मंत्री बरसी।
 इसलिए प्रत्येक समिति मंत्र तत्कालिण इन
 रिपोर्ट पर तत्परीनत विचार करने की बात
 स्पष्टित करने वाली समिति प्रविष्टिका
 मंत्रो रूप में उत्पन्न करना चाहती है।

प्रत्येक समिति को धारा ७० कि यह
 बहिरी देन की पूर्ण सब प्रवर्द्धोत्तमारी की
 विकास एवं जटिल संस्था का देखते हुए
 उनी विस्तृत पैमान पर प्राचीन क्षेत्र में प्रकृ
 उद्योगो का हृत् क्षेत्रो का प्रयास करेगी।
 देन को सारी सामोद्योग बहिरीगत तथा स्थल
 इन्फ्रस्ट्रक्चर ज्वानिण नमिदी का प्रयत्न कर
 अनुभव है। राष्ट्रीय प्रायोजन म सब कर्मो की
 पूर्ति करने में एक मंत्री खाई बनी हुई है,
 यह बात सार स्पष्ट हुआ है कि जिन उद्योगों
 के साथ-साथ बड़े पैमाने के उद्योगो की स्तने
 के साथ उत्सर्जन करी होगी है उनका सब तथ्य
 महत्त्व के रूप में स्वीकृत नहीं किया गया है और
 जिना में भीक म चर्चा को हमने मध्य कर
 मन्त्रो है गात्र में अन्तिम विचार ही, उनके
 विचर्चों का काम कर सकती है। उन्हें हृत्
 सब कामों का ६-बहिरी। प्रविष्टिका देना
 चाहिए। इन प्रकार सामन्तधर्मो के मन्त्र के
 साथ-साथ प्राप्त सामन्त-मैना का मन्त्रो भी
 होना ज्ञान चाहिए और उनके प्रविष्टिका का
 मन्त्र भी प्रत्येक प्रयोग में प्राप्त होना
 चाहिए।
 —सन्तोहन चौधरी

यदि किया भी गया है तो रिप्या सार सुन्दर
 बनी उन स्वीकार नहीं किया गया है। प्रत्येक
 समिति को धारा ७० कि उद्योग उद्योगों
 का विचार करने छे उद्योगो का उत्पादन
 का क्षेत्र सुनिष्टन करने का उद्योगो सारण
 देने के रूप पर सम्भार उद्योगो एगरीन
 बहिरी तथा सामन्तधर्म और प्राधिकारी
 की इन प्रकार स्पष्टता करेगी कि उन नीति
 के साथ में सामोद्योग-धर्मो का विचार और
 महत्त्व मन्त्र हो गये।

यह मनी है कि बहिरी ने मरणा के
 रिप्या को मान लिया है। रिप्या यह स्पष्ट
 है कि सामन्तधर्म उद्योगो में सन्तोहन सुन्दर
 रचना का सब कामें और उद्योगो पर्याप्त
 सारण देन की सामोद्योग नीति उत्पादन द्वारा
 परिष्कृत रिप्या देना प्राचीन उद्योगो का
 विकास बदायि सम्पन्न नहीं है। प्रत्येक समिति
 की यह सुनिष्टित रूप है कि आन्त के कृषि
 पर निम्न रिप्या बड़े हृत् देना की मन्त्र
 करने तथा लोगो की पूर्ण रोजगार क्षेत्रो
 करने की दृष्टि में क्षेत्रो सम्पन्न करने
 निर्माण पर प्रायश्चित्त विविध प्राचीन
 सामोद्योगिक नीति स्वीकार करना होगा
 और हम मन्त्र में सन्तोहन क्षेत्र की ऐसी
 सारी समुद्योगो के उत्पादन का सार प्राचीन
 क्षेत्रो म करना होगा जिनके लिए उद्योग क्षेत्र
 के बच्चा मान उपलब्ध हो। वीरे ही हृत्
 विविध उद्योगो के लिए कच्चा मन्त्र उप
 एवम बनाने उद्योगो का क्षेत्र सुनिष्टन करने
 और हृत् उद्योगो को सारण देने के साथ-
 साथ ही मन्त्रो की निश्चित कर्म उद्योगो होगा।
 सामोद्योगिक चर्चों को उत्तमता में मन्त्र र यदि
 इन तथ्य को स्वीकार नहीं करेगी तो केवल
 प्राचीन उद्योग प्राचीन का मन्त्र करने के
 प्राचीन क्षेत्रो के सारणीय विचार के उद्योग
 को पूर्ण बदायि नहीं हो सकेगी।

इन सबके वास्तव यह समिति प्राचीन
 उद्योग प्रायश्चित्त के विचार का स्थापन करनी
 है। समिति को धारा ७० कि यह मन्त्र विचार—

खादी-संस्थाओं के लिए आचार-संहिता

खादी-ग्रामोद्योग ग्राम-स्वराज्य समिति की

१६, २० नवम्बर, '६७ की बैठक में स्वीकृत

संस्थाओं के संचालकों की जिम्मेदारी

१. ट्रस्ट वा पैना जिस काम के लिए अंकित कर दिया हो, उसी काम के लिए खर्च होना है या नहीं इसकी जानकारी रखना, और नहीं होना है तो उसे रोक लेना।

२. जिस काम के लिए 'ग्राण्ट' वा 'लोन' वाहुर से मांगा जाता है वह उस कार्य में खर्च होता है कि नहीं। यदि नहीं होता है तो उसे रोकना।

३. ट्रस्ट वा पूरा लक्ष्य विधान और उप-विधियों का अद्ययन करना और उसके अनुसार ट्रस्ट चलाना है या नहीं, उस बारे में जागृत रहना।

४. प्रमाण-पत्र के नियमावली वा पालन पूर्ण रूप से होना है या नहीं, उस संबंध में जानकारी रखना और जागृत रहना।

५. ट्रस्ट की जायदाद और मुद्र पैना आदि का ठीक ढंग से ट्रस्ट के काम में उपयोग होता है या नहीं उसकी देखभाल करना।

६. ट्रस्ट वा पैना सुरक्षित रहे, उनके लिए जागृत रहना और घासिक जिम्मेदारी अपने ऊपर लेकर उसे पूरा करना और बनाना कर्तव्य मानना।

→ममी सवधित पक्षों द्वारा स्वीकृत हो जाने के बाद भारत सरकार उनका ठोस रूप निश्चित करेगी और तत्पश्चात् उद्देश्य से काम करनेवाले विभिन्न संस्थानों को एक संघ के अन्तर्गत लायेगी।

यद्यपि हम रिपोर्ट का अपना मूहल है, फिर भी यह समिति एक बार भी नष्ट करना चाहती है कि खादी और ग्रामोद्योग कार्यक्रम की सफलता अन्तर्गत प्रथम समिति की पानीपत्र-बैठक की सिफारिशों के अमल पर निर्भर करती है। खादी ग्रामोद्योगों के कार्यक्रम की सफलता की बसोटी

ट्रस्टी मंडलों का कर्तव्य

१. ट्रस्टी मंडल की नियमावली पूरी तरह से ध्यान में रखकर कामकाज की देखभाल करना।

२. हर साल का काम पूरा होने के पहले अगली साल के बजट तैयार करना और उसका अद्ययन करके स्वीकार करना और अमल में लाना।

३. बजट में उल्लेख न की गयी बातों को अमल में न लाना और बजट के अनुसार काम होता है या नहीं उस बारे में साल में कम-से-कम दो बार 'रिव्यू' करना और उस मुवाबिक कार्य करने की घोषणा करना।

४. बजट में स्वीकृत पूँजी से ज्यादा न लगाना और यदि कम-से-कम चलाना हो तो बजट 'रिवाइज' कर पुनर्विभाजन करना।

५. उचित समय पर मासिक रिपोर्ट बनाना, उनका प्राडिट करवाना और प्राडिटरो के आगेप की दूर करने हिसाब ठीक कर सब ड्रिडिटोय वा कार्यकर्ताओं को पहुँचा देना।

६. प्रमाण-पत्र के नियमों के अनुसार उचित प्रमाण में ही 'माजिन' रखना और उसी प्रकार खर्च को भी सीमित रखना।

७. बजट के बाहर 'लोन' और 'ग्राण्ट' न लेना। जो लिया गया है उसे निर्मित समय पर वापस करना।

बैठक उत्पादन वृद्धि में नहीं है, बल्कि देश की आम जनता में एक नयी छाया वा सकार, भारत-निर्भरता की भावना एवं आमभावना के निर्माण करने में है। इसलिए खादी और ग्रामोद्योगों का विचार आमजन, राजकारण और स्वयंपूर्णता के संश्लेष में करना होगा।

यह समिति पानीपत्र-सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव की दोहराने हुए देश के सभी स्व-सहाय कार्यकर्ताओं से अनुसंधान कार्य की दिशा पानीपत्र के प्रस्ताव में अंकित कार्यक्रम को अमल बनाने में वे अपनी सक्ति बँटाने करें। (पुनः अर्पणों से)

८. अतिरिक्त मुनाफा हो तो उसका उपयोग प्रमाण-पत्र समिति के नियमानुसार और समिति की मलाह पर खर्च करना, अंकित करना।

९. प्रमाण-पत्र के नियमानुसार कामगारों को उचित मजदूरी देना और खरीदारी को उचित ढांच पर बेचना।

१०. साल की शुद्धता अन्त-प्रतिपत्त हो, उस बारे में मन्त्र देख-रेख रखना। •

शाहाबाद जिलादान के प्रथम चरण की पूर्वयोजना

ग्रामदान-कार्य के लिए कोय-गमह हेतु श्री ध्वजा प्रसाद साहू, अय्यवा, बिहार राज्य खादी-ग्रामोद्योग बोर्ड वा समय चार दिनों के लिए १२ से १६ जुलाई तक इस जिले को मिला। जिले के हर अनुमंडल में एक एक दिन वा उनका कार्यक्रम रखा गया था। हर अनुमंडल में सागरिकों, सर्वोद्योग और खादी कार्यकर्ताओं की एक-एक गोष्ठी हुई जिसमें ग्रामदान के संबंध में श्री ध्वजा साहू ने खर्च की। ग्रामदान कोय के लिए उन्हे इन प्रकार अर्थिया समर्थित की गयी

बनार अनुमंडल—	७५५ ६०
अभुषा	— ८५० ६०
सागरााम	— ३१६३ ६०
भारा महर	— ५१५ ६०
कुल—	५०७१ ६०

उन्के अर्थिया पढाव पर आग में १६ जुलाई को जिला सर्वोद्योग मंडल की बैठक श्री हरिहरप्रसाद साहू की अध्यक्षता में श्री ध्वजा प्रसाद साहू और श्री बंजारा प्रसाद शर्मा, मन्त्रों की, ग्रामदान-आमि सर्वोद्योग समिति, पटना की उपस्थिति में हुई, सर्वोद्योग समिति में श्री आर-के-शर्मा प्रसाद जिला ग्रामदान प्राथि-समिति के सर्वोद्योग निर्यापित हुए और वीच प्रसंगों की सफल रूप में ग्रामदान का कार्य करने हेतु अयन किया गया, अतिरिक्त ११ अगस्त, १९६७ तक इन प्रसंगों के दाव की घोषणा की जा सके।

—अंजी
जिला सर्वोद्योग मंडल, शाहाबाद, बिहार

श्री रामानन्द जी

भूदान यज्ञ

श्री रामानन्द राहो ने सर्वोदय-सम्मेलन के मन्वष में महबिचन के लिए जो मुद्दे ५ जुलाई के भूदान यज्ञ में प्रस्तुत किये हैं वे प्रशस्त ही विचारणीय हैं। धार्मिक सम्मेलन का प्रायोगिक रूप क्या करने है? क्या निष्कर्ष निकालें कि धर्मों के बिना किमी टिकावणी से बड़े बड़े नेमासों के भाषण सुनने रहें जिनके भाषण बराबर किमी-न किमी मन्वष से सुनने की मितने ही रहते हैं? वास्तव में जे० पी० ने अपना भाषण प्रारंभ करते हुए हमारी हंसार प्रायकर्मियों के मन की बात कही थी। उन्होंने नरेन्द्र भार्दे से कहा था कि कोई रास्ता ऐसा दिखावना चाहिए कि जिनके प्रतिनिधियों की निष्क भाषण की छुट्टी ही नहीं मिया की जाय।

श्वर सर्वोदय प्रा दोनन निष्क हवा और पाठशाला में उसके कुछ शाशवत भू-सो को फनाने तक ही सीमित नहीं है। उनकी कृपाया श्वर हजारी हजार गाँवों में शाशवत के रूप में भूमि पर उतर रही है। ऐसी परिस्थिति में कायकर्मियों के मन में श्वर शाशवत की काना को साकार करने की स्पष्टता है। वारा कृते हैं कि हम सो समरवाए पैदा करने जाते हैं। बात झिलझुल ठीक है। जते जते शाशवत प्रा-दोनन की प्रगति हा रही है प्रायकर्मियों के सामने एक के बाद दूसरी समरवाए सन्धी होती जा रही हैं। समरवाओं में सत्र-सुत्रने जब सर्वोदय सम्मेलन में कार्यवाही पहुँचना है सो एत उम्मीद में कि देश के कोने कोने में घबे हुए प्रतिनिधियों के साथ चर्चा करने की शान्ति समरवाया का कुछ हल ढूँढने में सफल होगा। किन्तु जब उम्र बहान की तरह सत्र-सुत्रने का बोझ गिर पर लेपर प्रायकर्मियों सम्मेलन में नो-डा है तो क्या मन्वष बिना की बात नहीं है? हो सक्ता है जो सुनके निमित्त के कायकर्मों हैं उन पर यह लागू नो होना ही ब कामा करने।

विद्यारदान का सक्रमण किय गया।

बाबा के सूचन की प्ररणा जे० पी० के नेत्रुव एव हभागो हनार छोटे बड़े कायकर्मियों की मेहनत से यह सक्रमण पूरा होने में कोई शक नहीं है भवे ही समय कुछ धोर रूप जाय। उत्तर प्रदेश और तमिलनाड के राज्यदान का नियम लिया जा रहा है। हम कृत करतें हैं कि रामानन्द के बाबा रामान की शासन व्यवस्था पर शासनदान का प्रभाव पडनेवाला है और यह भी कहते हैं कि प्रवपनों के पत्नी जनता के प्रतिनिधियों के हाथ में प्रयागन होगा। क्या इस सबष में सम्मेलन में घोषो भी चर्चा हमने की? हरियाणा में मन्वषावधि चुनाव हुआ उत्तर प्रदेश और बिहार में होनेवाला है जहाँ हमारी शासनन हो चुके हैं बिहार न भी हो चुके हैं। मन्वषावधि चुनाव में इन दोनों में हम क्या करनेवाते हैं? क्या हम निष्किय और उत्साही रहेंगे क्या सिक्र जे० पी० प्राचायकों जैसे नेताओं के भाषण में इतका जिष्क मान होने से कायकर्मियों का दिमाग इस मुद्दे पर सफट हुआ? कहने क मतलब यह कि देश की जो आत्मा सिक्र समस्याए हैं, उनको तो हम छूने नहीं किन्तु अपने प्रा-दोनन की भी जो आत्मासिक समस्याए हैं उसे भी नून से बतवते हैं।

इस मसिल भारतीय सर्वोदय-सम्मेलन में हमने भारतवाय का एश्वय तप किया और उत्तर दस के घलबारी ने हमको कोई नीटिय ही नहीं थी धार्मिक यह क्या सिक्र जनक ही शेष है हमारा नहीं? हमें यह बोचना चाहिए कि कैसे देश के प्रसों तक हम पयनी सही यान पहुँचा सक। क-य-ने नम सम्मेलनो के श्वरपर पर हो प्रयाय करना ही चाहिए।

उम बहान के उस धनुमन— निष्किय प्रशेओ और छाशों म काय करनेवाते कायकर्मों की धारनननो नहीं किरिय हो पायी परिचय और मन्वषक तक नहीं हो पाता —को हम निष्क एक धर्मिक वा धनुमन कृत्कर दान नहीं मन्वषे। हमने सो महम्मूत किना कि धनने-पयने दोन में बरी जगन निष्क

धोर सूत्र-सूत्र से काम करनेवाले प्रतिनिधि सम्मेलन में झगडा होने हैं किन्तु कुछ भाषा की कर्मि ई के कारण भी धाना विचार नहीं रख पाते हैं। क्या कुछ ऐसा संघना जा सक्ता है कि भाषा की कर्मिनाई के कारण किसीको भी सम्मेलन में अपना विचार रखने में सक्षीय न हो? बासकर दक्षिण के प्रतिनिधियों के सम्बध म तो प्रषषय ही उम पर सोचना चाहिए।

धोर भी बहुत सारी बातों पर विचार किया जा सक्ता है। बीवा सो बीवा घाने वाले घनवनों पर हम चूकें नहीं इतका प्रयाय किया जा सकता है। सभी सो बीवाओं को मिताना जचिन नहीं दीसता है। किन्तु मन्वष यह है कि सम्मेलन के तुरत बाद हम बात की जितनी चर्चा हो रही है और हमने महत्व दिया जा रहा है वो हम मारे पुराने मनुभव रूठ जायेंगे और फिर वही परंपरा गन गन से सम्मेलन के सारे प्रायोगन होने पता नहीं सम्मेलन के पहले मन्वष सच की प्रमथ सतिवि में सम्मेलन को प्रभावकारी बनाने के सबष में चर्चा होनी है या नहीं? हमारी सलाह है कि इस सबष में जो भी मुद्दाय प्राय उ हे प्रवष कर्मिण को सभी स भोट कर लेना चाहिए और श्वरपर पर उम पर मन्वष में लाने के लिए एक उप सतिवि प्रा गटन कर उनके माफक सजोन करना चाहिए।

धाराता

कैलाश प्रसाद शर्मा पटना

× × ×

भूदान-यज्ञ के ५ जुलाई १८ के शक में श्री रामानन्द राहो का सम्मेलन के मन्वष में विचारप्रस्तुत लेख पता। इन पर विचार होना चाहिए।

— मोर-दुधे इन्दीर

पटनीय	मननीय
नयी तालीम	
शैक्षिक क्रांति की अग्रदूत मासिकी	
वार्षिक मूल्य १ रु० एक प्रति। ५० वैसे	
सबसे सेवा सप प्रकारान	
राजगढ, बाराणसी १	

सफाई विद्यालय का नया सत्र

सफाई विद्यालय, गांधी स्मारक निधि, पट्टीकल्याण [बरनाल] का अगला प्रशिक्षण-सत्र दिनांक १५-८-६८ से ३१-१०-६८ तक निधि के ग्राममेवा केन्द्र, गाँव व पो० डेरा-बस्ती, जिला पटियाला [पंजाब] में आरंभ होने जा रहा है। जो व्यक्ति सफाई तथा मंत्री मुक्ति का वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं, वे विद्यालय के प्राचार्य में प्रवेश-पत्र मंगाकर अनुमति प्राप्त करें।

प्रशिक्षार्थियों को प्रशिक्षण-अवधि में ६० ६० मिनट छात्रवृत्ति तथा आने-जाने का तृतीय श्रेणी का मार्ग-व्यय दिया जायगा। प्रशिक्षार्थी हिन्दी अथवा उर्दू के माध्यम से स्वकीय तथा तर्क योग्यता (प्रमाणपत्र सहित) रखता है। अधिक जानकारी के लिए प्राचार्य से पत्र-व्यवहार करें।

नोट — डेराबस्ती अम्बाला से १६ मील चण्डीगढ़ की ओर और चण्डीगढ़ से १२ मील अम्बाले की ओर बग-मार्ग पर स्थित है।

प्राचार्य, सफाई विद्यालय,
प्राथम्य पट्टीकल्याण [बरनाल]

भूदान तहरीक

उर्दू भाषा में अहिंसक मोर्चा की
संदेशवाहक पाठ्य
वार्षिक मुक्त ४ रुपये
सर्व सेवा संप्रदाशन,
राजपाट, बाराणसी—१



प० भा० शाही-भामोदोग द्वारा प्रकाशित
शाही-भामोदोग भरद्वाजों में सिद्धवा है

राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति

प्रधान केन्द्र

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति

१, राजघाट बालोनी, नया दिल्ली-१

टुंकलिया भवन, कुन्दीगरो का भेंरो

फोन : २७६९०५

जयपुर-३ (राजस्थान)

फोन : ७२६८३

अध्यक्ष : डा० जाकिर हुसैन, राष्ट्रपति

अध्यक्ष : श्री मनमोहन चौधरी

उपाध्यक्ष : श्री वी० धी० गिरी, वरराष्ट्रपति

मंत्री : श्री पूर्णचन्द्र जैन

अध्यक्ष : कार्यकारिणी :

श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधानमंत्री

मंत्री : श्री भार० आर० दिवाकर

गांधीजी के जन्म के १०० वर्ष २ अक्टूबर, १९६६ को पूरे होंगे।
आइये, आप और हम इस शुभ दिन के पूर्व—

(१) देश के गाँव-गाँव और घर-घर में गांधीजी का संदेश पहुँचायें।

(२) लोगों को समझायें कि गांधीजी क्या चाहते थे ?

(३) व्यापक प्रचार करें कि विनोबाजी भी भूदान-ग्रामदान द्वारा
गांधीजी के काम को ही आगे बढ़ा रहे हैं।

यह सब आप-हम कैसे करेंगे ?

- यह समझने समझने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति ने विभिन्न प्रकार के फोल्डर, पोस्टर, पुस्तक-पुस्तिकादि सामग्री प्रकाशित की है। इसे आप पढ़ें और दूसरों को भी पढ़ने को दें।
- इस सब सामग्री और विशेष जानकारी के लिए उपसमिति के कार दिये गये जयपुर कार्यालय से पत्र-व्यवहार करें।

पूर्विया की प्रगति

ग्रामदान-समृद्धि

मार्च '६८ तक जिले में समृद्धि के लिए ५७८ ग्रामदानी गांवों का कामज नंबर हो चुका था, जिनमें से हमने ४६० ग्रामदानी गांवों का वयार कागजात पुरि कामो के वाले जिला ग्राम-व्यव कमीटी को सुपुर्दे कर चुका था। ३६ ग्रामदानी गांवों का कामज भी समुद्धि हो चुका था। ग्रामदान समुद्धि कांय के लिए पहले बिहार ग्रामदान प्राप्ति समिति पटना से प्राथिक मन्द मिलती थी, परन्तु फरवरी '६८ से ही वहाँ ने प्राथिक मदद मिलना बन्द हो गया था।

२२ मार्च '६८ को जिला धारी धामो-योग समिति की बैठक सर्वोप्य धामय रानी पवरा में श्री गोपाल शा 'शाही की अध्यक्षता से हुई। ग्रामदान समुद्धि के काम को तेजी से चलाने का निष्पत्त किया गया। तब हुआ कि चलाने ग्राम दवाई योजना में लगे १६ कार्यकर्ताओं की संक्ति इन काम में लगायी जाय। मार्च '६८ से इन कामों में कुछ कार्यकर्ताओं की संक्ति लगी। विभागीय कार्यों तथा जिम्मेदारियों को समालने हुए डिप्टी-सुड इय में कुछ कार्यकर्ताओं में भ्रमना समय इन कामों के लिए दिया। फल सम्बन्ध धरले, '६८ से सुन, '६८ तक १७ ग्रामदानी गांवों का कागज तैयार किया गया। १७ ग्राम-समाप्तो का निर्माण किया गया। १७ ग्रामदानी गांवों में ११४ दानाओं को १३ एकड़ ७ डि० जमीन का चितरले ११२ ग्रामिण परिवारों से बिधा गया। पूज्य श्री बंदाय बाबू के सद्प्रयास से जिले के बराररी, फलरा, रानीगंज एव सरररुव प्रमड में प्रमंड इ-प्रमणररर समिति का मजु किया गया। जिले में पहले से ही ९ प्रमंडों में प्रमंड ग्राम-व्यवस्था समिति का पटन हो चुका था। प्रगति प्रविबेदन को प्रमंड में कुल ४ प्रमंड ग्राम-व्यवस्था समिति का पटन किया गया।

प्रमंड संयोजन

जिले में ग्रामदान-प्राप्ति तथा ग्रामदान समुद्धि के कामों में बिहार ग्रामदान प्राप्ति समिति, पटना में पहले प्राथिक मन्द वी जानी थी। सन् १९६८ से ही वह सहायता बन्द हो गयी। ग्रामदान प्राप्ति एव ग्रामदान समुद्धि के कामों की सारी जिम्मेदारी जिला सर्वोप्य मंडल के कंधों पर धा पड़ी। प्रमंड की कमी के कारण ग्रामदान के कामों में थोड़ी निमित्तता आना स्वाभाविक ही था। लेकिन जिसने इन पृथ को सदा ध्याने धुन और पत्ती से सोचा है वह इने सुझावा दिया कैसे देख सकता है? इन मंथों और इन बीडड समय में भी इन पृथ के पोषक मन्ड श्री बंदाय बाबु ने बनमनही, रानी गंज और सररिया से सुदूर देशी में उन

प्रख्यात जर्मन पत्रकार और प्रकाशक श्री गांधी के देश की तीर्थयात्रा

श्री राल्फ हिडे, जिन्होंने गांधीजी की पुस्तक-सर्वोप्य और रिचाट वी० ग्रेग की पुस्तक गावर कांक नातवायनंम का जर्मन भाषा में प्रकाशन किया है, प्राग्गामी २० सप्टेम्बर ६८ को 'गांधी के देश की तीर्थयात्रा' पर कार से रवाना हो रहे हैं। उनके साथ ३ व्यक्ति और होंगे। आपकी यात्रा का विशेष उद्देश्य है भारत के विभिन्न स्थानों पर ग्रामदान के काम को देखना और ग्रामदानी कार्यकर्ताओं से मुराफात करना। जर्मनी में आप केनैगट, सोफिया, इन्सब्रुक, प्रंकार, बयराट, तेहरान, काबुल, राबॉपिडी होने हुए ५ नवम्बर '६८ को दिल्ली पहुंचेंगे। ६ दिसम्बर ६८ तक प्रायः भारत के विभिन्न क्षेत्रों का भ्रमण करेंगे।

कान्टिक में आन्दोलन की प्रगति

(१४ नवम्बर '६६ से सई ' ८ तक)

जिला	गांवों के मन्ड	साहित्य विमो	चरिया के ग्रहव	प्राप्त ग्रामदान
घारवाड	१ १८२	१४,०८८ ३६	८८५	३९०
बारलार	३८८	५ ४६६ ३४	२७५	४४
कुल	१ ५७०	१९,५०४ ७०	११६०	४०४

कार्यकर्ता चितिर—४, प्रमंड मोटिया तथा परिधचरि—७
—गुरदाया

धूप और गर्मों के समय में दो-दो दिना की यात्रा की। बनमनही से २७ मन मनाज और तगद ७५ रुपये सररिया में ७४ मन धनाज एक रानीगंज में १४४ मन पनाज प्राप्त हुए।

—दायीदर प्रसाद 'आम'

४०० सं० जिला सर्वोप्य मंडल, पूर्णिया
एकमा सारण जिले का
नीवा प्ररएडदान

विनीगंज, बलिया जग समय तथा सही से लोपडे समय माएण जिले में कुल १४ दिन रहूरे। उनका सर्वोप्य पूरे जिले में बना था। उनके धुमने के कारण जिनादान की हवा बनी है। कार्यकर्ताओं में उत्साह छाया है। विनीगंज की एकमा का प्रमंडदान मण-नित किया गया। ७ सप्टेम्बर तक जिनादान का अटूट प्रयन हो रहा है।

चलो देहात (पारिक)

सर्वोप्य बाधम सादाबाद की ओर से 'चलो देहात नामक एक पारिक पत्र श्री जयन्तो प्रसाद के सम्पादनक से पिछले वर्ष से प्रकाशन हो रहा है।

पृथ्वी क्षेत्र की जनता को देश की सामान्य, सारभूत कामकारी देने, गांधीजी की मन्डेन नर जन तक पहुँचाने तथा जलक बरी सा-दोलन को मजुत बनाने के उद्देश्य से इस पत्र का प्रकाशन हो रहा है।

आज पूरे के इन पत्र का वारिक मुक्त सं० ३-०० है।

प्रकाशक

सर्वोप्य बाधम, सादाबाद (उ० प्र०)

बिहारदान की दिशा में : प्रगति के आँकड़े

मई १९६८ तक

जिला	ग्रामदान	प्रत्यदान	गठित ग्राम गभाएँ	पुष्टि हेतु गाँवों के संख्या	पुष्टि पदाधिकारी के नाम	प्रभियुक्ति गाँवों की संख्या	विशेष
१. पूर्णिया	८,१५७	३८	७३६	५८६	५६०	१६६	मई तक
२. सहरसा	७२८	२	५५	६	—	—	जर्मन
३. भागलपुर	५६५	३	३३	५	—	—	मई
४. गयाल पंगना	८६८	२	३८	१६६	१६५	१५०	मई
५. मुंगेर	२,०५५	१६	५२	७६	—	—	मई
६. दरभंगा सदर अनुमंडल	—	—	३२३	१५६	५२	—	मार्च
७. मधुबनी अनु० (दरभंगा)	३,७२०	५५	५८३	६३	३५	३३	मार्च
८. समस्तीपुर ,, "	—	—	२३७	३५३	१०७	६	अप्रैल
९. मुजफ्फरपुर	२,२०६	२३	६०	५६	३५	१८	मई
१०. सारण	७६६	७	६८	५०	—	—	मई
११. चंपारण	२५०	—	५७	५३	—	—	मई
१२. पटना	५६	—	२३	१३	—	—	फरवरी
१३. गया	१,१५८	१	१७	७	—	—	अप्रैल
१४. घाहावाद	११३	१	४०	२३	—	—	अप्रैल
१५. पलामू	६३५	५	५५	११	—	—	फरवरी
१६. हजारीबाग	१,२७३	५	८१	८५	—	—	अप्रैल
१७. रोसी	५५	—	—	—	—	—	अप्रैल
१८. धनबाद	५३८	१	३०	२०	—	—	मई
१९. सिद्धमि	३३०	३	२१	१५	—	—	मार्च
कुल	२३,३७६	१५२	२,५३१	१,७१६	८७१	३६८	

—बिहार ग्रामदान प्राप्ति संयोजन समिति, पटना

“मण्डौर डिस्ट्रिक्टरी हटाओ”

आन्दोलन स्थगित

मण्डौर (जोधपुर) के प्रतिनिधि मंडल से दो दिनों की बातचीत के बाद मण्डौर डिस्ट्रिक्टरी, धराब बनाने के कारखाने का प्रत्यक्ष निरीक्षण करने के बाद राजस्थान के मुख्यमंत्री श्री मोहनलाल सुबानिया ने मण्डौर की जनता की शिकायतों को सही पाया न जनता को आश्वासन दिया कि मण्डौर डिस्ट्रिक्टरी पर धराब बनाने का कार्य पुनः प्रारम्भ नहीं होगा।

सरकार को इस आश्वासन के बाद यहाँ चल रहा “मण्डौर डिस्ट्रिक्टरी हटाओ” आन्दोलन समाप्त कर दिया गया।

इसके अलावा कि प्रान्त भर में धराबबन्दी सत्याग्रह स्थगित हो जाने के बाद भी मण्डौर डिस्ट्रिक्टरी पर यहाँ की जनता द्वारा ‘डिस्ट्रिक्टरी हटाओ’ आन्दोलन जारी रखने का निर्णय किया गया था।

“मण्डौर डिस्ट्रिक्टरी हटाओ” की यह माँग यहाँ की जनता की बहाने पुरानी माँग है। इस डिस्ट्रिक्टरी के कारण यहाँ सुर्खें सब खराब

हो गये, पानी पीने की बात तो दूर, सिंचाई के काम करने लायक भी नहीं है, क्षेत्र बरबाद हो गये। वरती को इन समय तीन मील दूर से पीने के लिए पानी लाना पड़ता है। अपने इस दर्द को यहाँ की जनता ने कई बार अधिकारियों के समक्ष रखा, पर सुनवाई नहीं हुई। बीच में एक बार भूखे मुख्यमंत्री श्री जयनारायण श्याम ने इन माँग तक धनको जरूर बन्द रखा, पर फिर पुनः यह बाधू कर दी गयी।

—सरदारमल जैन
राजस्थान शा. (अध्यक्ष) सत्याग्रह समिति

वार्षिक बजट: ₹० रु०; विदेश में ₹० रु०; या २५ शिलिंग, या ३ डालर। एक प्रति: ₹० चैडे
श्रीकृष्णदास मठ द्वारा सर्वे सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इन्डियन प्रेस (मा०) लि० वाराणसी में मुद्रित

भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक गानोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देश मानकर साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र
 वर्ष : १४ श्रंक : ४५
 शुक्रवार ६ अगस्त, '६०

अन्य पृष्ठों पर

- नीरवराही की जड़ता का नभूता
—सिद्धराज ठुगु ५५४
- बसूक का दार्शनिक कादर
—सम्पादकीय ५५५
- घा-दोकन का दोलन बारिदो
की निगाहों में —परिचर्या ५५६
- बो बंधो —रवीन्द्रनाथ ठाकुर ५७
- मोशमडी घनुमदलनन के माँकेडे ५५६
- अन्य स्तम्भ
- भा दीवान के सभाचार
प्रधान के प्राकडे
- उत्तर प्रश्न की चिह्नी
- परिशिष्ट
- 'गाँव की बात'

आवश्यक सूचना

१६ अगस्त '६० के वार में भूदान-यज्ञ का प्रकाशन शुक्रवार के बन्ने सोमवार को होगा। इस निगमन घनुमदलनन १६ अगस्त ६० के वार का धरु शुक्रवार रानी २३ अगस्त ६० को नहीं सोमवार रानी २६ अगस्त ६० को प्रकाशित होगा।
 —अध्यक्षभाषक

सम्पादक
 राममूर्ति

सर्व सेवा सम प्रकाशन
 राजघाट, बाराणसी-१ उत्तर प्रदेश
 फोन : ३२८५

उत्साह के साथ सातत्य भी

एक बात समझने की है। उ माह की कमी भारत के लोगों में नहीं। हम लोगों में उत्साह सामान्यतया कमी नहीं थी न आज है न पहले थी। कमी है मात्रत्व ही उत्साह सतत टिकाने की। भाव जाते हैं कि नया दृश्य देखने से बच्चे भी दाघने लगते हैं। उ माह वो है लेकिन वह सतत टिका रहे और काम के बाहिर के गिरे का जब तक वजन नहीं हुआ तब तक काम जारी रखें बराबर इनको कहते हैं मानव योग। और गीता ने तो उसके लिए एक प्रणय ही स्नान कर दिया है और वह है—
 धनस्यकेन सतत यो मां स्मरति नियस्य —जो भेरा निय स्मरण करये। फिर कहा— सततम् । निय भी कह दिया फिर सतत भी कहा दोनों में फरक नहीं। लेकिन जोर देने के लिए यहाँ सतत भी कह दिया।

मैंने कहा निय' और सतत में फरक नहीं है। लेकिन गीता ने दो शब्द इकठ्ठे रख दिये हैं तो जिस विचार करता ही है कि दो शब्द क्यों रचे। निय मानो हमेंगा और सतत यानी प्रतिक्षण। हम हमेशा भोजन करते हैं प्रतिक्षण तूरी करते। लेकिन रोज चलता है तो भोजन-नाम निय है लेकिन सतत नहीं प्रत्येक क्षण उगमे लगा नहीं है। भगवान का स्मरण सतत यानी प्रतिक्षण करें और निय करें। फिर कह दिया चित्त अनन्य होना चाहिए चित्त दूसरी बातों में जाना नहीं चाहिए। निय सतत कहकर दृष्टि नहीं होनी थी तो कहा धनस्य निष्ठा।

और उसके लिए यकी मुण है धय। धृति। शीरज। शरीरी में मबर कहते हैं। मबर बन। चार दिन काम किया परिणाम आया नहीं। उत्साह घट गया। धरे भय। चार दिन में नया होता है ?

माहिव भिन्ने सङ्घी में मन लागे फार बकीरी में।

आपको कहींगे में लगना होगा। गाँव-गाँव में जाना होगा। और कितने दिन हुए ऐसी विनयी नहीं करनी होगी। सतत काम में लगे रहना होगा।

गीता ने कहा सात्त्विक कर्मा वैसा होता है ? धृति और उत्साह दो गुणों से युक्त होता है यह भाविक कर्मा होता है। गीता ने हमारे नाडी परख ली थी कि इतने उत्साह तो है ही लेकिन भीरव की जडनर पत्रगी। इसलिए कहा—

धृयुमाह ममभित्त कर्मा माँकिक उच्चने ।

हम भाग्य करते हैं—आज सब लोग उत्साह काम में लगे रहेंगे। मद्र १६७२ पर काम करना होगा। मद्र १६७२ में युधिष्ठि। सब तक नावों में सम्पर्क कर गनी भी मति लड़ी न रानी होगी। आज सरकार पर शहरों का रव है। यह कि ०० प्राकृतिक मन गाँव के होते हैं। तो गाँव के रव से सरकार रवे। चार सान पीरव के साथ काम करना होगा। और समनयुक्त करना होगा। समनयुक्त नीत ? युधुगों का काम धनस्य धनस्यन का होगा। बायकर्ताओं की ममशाना होगा। इसका सान प्रयोग स्वच्छ होता चाहिए।

—विनीश

मोतामरी बायकर्ताओं के बीच ता० २२-७-६० को किये गये भाषण से।

नौकरशाही की जड़ता का नमूना

सरकारी नौकरशाही की भाग्य-गदलि चिन्ता जोड़ तथा दुर्भाग्यपूर्ण है, इनका एक नमूना भारत सरकार द्वारा खादी-शामोयोग नाम के विहायलोकन के लिए नियुक्त कमिटी की रिपोर्ट से मिलता है, जो अभी हाल ही में प्रकाशित हुई है। यह सर्वविधित है कि शुरू में प्रदत्त खादी-शामोयोग बोर्ड तथा खादी-शामोयोग कमीशन की नियुक्ति पूज्य विनोबाजी के मार्गदर्शन में सर्वे सेवा संपन्न और सर्वोद्योग-जगत को निष्कारण के अनुसार भारत सरकार ने की थी। यह भी सब जानते हैं कि खादी-शामोयोग का काम सरकार के दूसरे कामों तथा योजनाओं की तरह का काम नहीं है, बल्कि उसका एक विशेष लक्ष्य और पृष्ठभूमि है। और इसलिए देश में खादी-शामोयोग का जो काम चल रहा है उसका नैतिक मार्गदर्शन पूज्य विनोबाजी करते हैं। खादी-शामोयोग कमीशन भले ही मर्यादों या अर्थात्कारी संस्था हो, पर कमीशन के अध्यक्ष तथा सदस्य प्रायः बराबर विनोबाजी से सहाह लेकर काम का मजालन करते रहे हैं, यह सर्वथा उचित भी है।

भारत सरकार अपनी अन्य योजनाओं के अनुसूचित में खादी-शामोयोग के काम के लिए बहुत नगण्य-सा खर्च करती रही है। इसलिए खादी-शामोयोग के काम को समीक्षा के लिए उसने समिति नियुक्त की, यह तो ठीक है, पर समिति के अध्यक्ष तथा उसके कार्यालय में नीचे लिखी घटना के संदर्भ में जिस जड़ता तथा भावभ्रमता का परिचय दिया है वह भी प्राश्नोत्तरक है। उन्होंने अधिष्ठ विषयों की दृष्टि से सिद्ध नहीं किया जा सकता। समिति के एक सदस्य डा० महादेव प्रसाद ने जाहिर किया है कि खादी-शामोयोग के काम के बारे में समिति के सदस्य खास तौर से विनोबाजी के विचार जानने के लिए ७०० मील का विमान, रेल, तथा मोटर का प्रवास करते जहाँ उन समय विनोबाजी के वहाँ प्रसारोड में भागे। दो

दिन तक कई बैठकों में समिति ने उनके विचार सुने। समिति की ओर से विनोबाजी को पूछा गया कि खादी-शामोयोग के बुनियादी दृष्टिकोण के बारे में उनकी क्या राय है, तो डा० महादेव प्रसाद के अनुसार विनोबाजी ने "बहुत विस्तार से और अत्यंत सरल भाषा में उत्साहपूर्वक अपने विचार व्यक्त किये। हम सब संभ्रमण होकर सुनते रहे, क्योंकि हमको ऐसा लगा कि उनके मुँह से एक ऐतिहासिक वक्तव्य निकल रहा है।" लेकिन यह अत्यंत दुःख का विषय है कि विनोबाजी के इन वक्तव्य को प्रसारण नोट या रेकार्ड नहीं किया गया। विनोबाजी के विचारों को जानना इनका आवश्यक और महत्वपूर्ण माना गया कि दूसरे लोगों को राय हो समिति ने उन्हें दिल्ली में बुलाकर सुनी, लेकिन विनोबाजी की राय जानने के लिए समिति मग अपने मंत्री, दो उप-मंत्री और एक स्टैनोप्राफर के प्रसारोड विहार में गयी। यह भाषा करना स्वाभाविक ही था कि समिति ने विनोबाजी जैसे व्यक्तिके विचार प्रसारण: रेकार्ड करने का इन्तजाम किया होगा, ताकि रिपोर्ट लिखते समय समिति के सदस्यों के सामने विनोबाजी के पूरे विचार रहें, पर जब डा० महादेव प्रसाद ने समिति के कार्यालय से विनोबाजी के वक्तव्य की माँग की तो उन्हें बताया गया कि समिति के पास हिन्दी स्टैनोप्राफर नहीं था, इसीलिए विनोबाजी के विचार प्रसारण लिपि-बद्ध नहीं किये जा सके। जब डा० महादेव प्रसाद ने इन सम्बन्ध में अपना विरोध नोट समिति की रिपोर्ट के साथ दिया जब समिति के अध्यक्ष, भारत सरकार के एक मंत्री, श्री अशोक मेहता ने भी डा० महादेव प्रसाद के प्रश्न का सीमा जवाब न देकर अपनी ओर से सपाईं में यह नोट लगा दिया कि "मैंने इन बातों की पूरी दिलजवाब न ली है कि समिति के सदस्यों ने भाषार्थ विनोबाजी के साथ जो विचार-विनिमय किया

उसका सारोड ठीक-ठीक नोट किया गया था। वह सारोड समिति के सब-सदस्यों को तथा श्री विनोबाजी भावों के विरोधी मंत्री को भेजा गया था। उस नोट को विधि प्रकार का केरफार करने की विनोबाजी ओर से कोई सूचना नहीं मिली।"

हमारे देश की सरकार और योजना बनानेवाले लोग किस प्रकार काम करते हैं, उसका यह नमूना भाँखें खोलनेवाला है। यह अपने आप में एक आश्चर्य की बात है कि भारत सरकार की जिम्मे समिति की नियुक्ति एक ऐसे काम की समीक्षा के लिए हुई थी, जिसका सम्बन्ध मुख्यतः गाँवों से है और जिसका प्रथिकाश व्यवहार हिन्दी में या अन्य प्रादेशिक भाषाओं में चलता है, उसके दायर में केवल अंग्रेजी का स्टैनोप्राफर रखा गया। इसका यह मतलब तो स्पष्ट है कि जब समिति के सामने अंग्रेजी में विचार व्यक्त करनेवालों की बातें ज्यों-की-त्यों प्रसारण नोट की गयी, हिन्दी में बोलनेवालों को बोलने नहीं की जा सकी; हालाँकि जो लोग खादी-शामोयोग के काम से सीधे सम्बन्धित हैं वे अपना सारा काम हिन्दी में चलाते हैं। स्पष्ट है कि समिति की नजरों में इन लोगों की राय का उतना महत्त्व नहीं था जितना खादी-शामोयोग के काम से सम्बन्धित न रखनेवाले अन्य "अर्थशास्त्रियों और विशेषज्ञों" का।

यह जो कुछ भी हो, पर जब समिति के सदस्य विनोबाजी के विचार जानने के लिए खास तौर से प्रसारोड गये तब भी समिति का दायर इनकी भी सूझ-बूझ नहीं दिखना सका कि उन समय के लिए कम-से-कम विशेष तौर पर हिन्दी के स्टैनोप्राफर का इन्तजाम करता। इससे अधिक कल्पना-शून्यता और जड़ता का परिचय और क्या होगा? हिन्दी का स्टैनोप्राफर उपलब्ध नहीं था तो टैप-रेकार्डर से भी काम लिया जा सकता था। अन्य बातों के लिए तो विज्ञान के युग की दुहाई बहाने दी जाती है और विज्ञान के नाम पर मानवीय मूल्यों को उन्मूलन की जाती है, पर जहाँ विज्ञान का उपयोग करना चाहिए वहाँ नहीं किया जाता, यह विज्ञान की दुहाई देनेवालों की धलौली प्रतीतना का सूचक है। जैसा डा० महादेव प्रसाद—

बन्दूक का अन्तिम फायर

किस दिन पहले-पहले मनुष्य ने पत्थर का एक टुकड़ा उठाकर दूसरे मनुष्य को मारा होगा, उस दिन उसे क्या पता रहा होगा कि कोई दिन ऐसा भी आयेगा जब लाखों वा सत्तर एक लाख भासमान से एक छाटा या बम गिराकर जिया जा सकेगा, और बम गिरानेवाला जालेवर भी नहीं कि उसने बम से जल्दकाले मरनेवाले, बीत है, और उनको उसने क्या दुःखितो है।

६ फरवरी १९४५ को जब पहला अणुबम हिरोशिमा पर गिरा तो दुनिया में व्यापक सत्तर का पड़ता, हवाका, प्रभुत्व किया। तब से अब तक के बार्डेन-बेईम क्यों म युद्ध का विलोक इतना बदल गया है, और सत्तर जीवन के इतने करीब पहुँच गया है कि विजय के पैमाने पर जीते और मरने के बीच की रेखा घटतन क्षीण हो गयी है। जायद इतनी क्षीण हो गयी है कि रू ही नहीं गयी है।

अणुबम का पर्यटन व्यापक सत्तर के मिश्रण द्वारा क्या होगा? सम्भव इस प्रतीति से कि अन्तिम की वाह पैदा हुई है। अणुबम की इतनी देन तो माननी ही चाहिए कि जमाने मनुष्य को अहिंसा के बन्दु बरौब पहुँचा दिया है। हर देश वा मायाय्य नागरिक अन्तिम चाहता है जब कि उसकी सरकार युद्ध को पढ़ता स्थान देती है, और कहती है कि नागरिक की सुरक्षा इतनी है कि सरकार युद्ध के लिए हर बत्क हर सामान के साथ तैयार रहे। अणुबम और सत्तराद सगे आई है—दोनों अन्तिम के बन्दु।

६ अगस्त १९४२ को जगनेवाला 'भारत छोड़ो का नारा भारतीय सद्गीतना का नारा था। उसी पहले भारत सद् नहीं था, भारत देश था—सभान और स्वतः सोनो से बचिये, दूर हुपा, बुद्ध हुआ। युद्ध के सत्तर म सदीर का फल होछ है, गुलाबी म भाग्य था। इन दोनों में एक को बुझना ही हो तो मनुष्य सत्तर को बुझेगा, गुलाबी को नहीं। 'भारत छोड़ो का नारा अन्तिम प्रयत्न था भारत की स्वात्ता को मर जाने से बचा सने का।

भारत से ही नहीं, दुनिया में गुलाबी के दिन ही साथ हो गये, लेकिन स्वातन्त्र्य के घनी नहीं बाम हुए है। सत्तर और स्वातन्त्र्य

दोनों साथ मोदुर है—यावर पहले में अधिक सगति, अधिक ध्यान। लेकिन एक वाद हुई है। मनुष्य की मुक्ति की चाह भी पहले से अधिक सगति और ध्यान होयी जा रही है। उने सत्तर का भय नहीं है। वह मुक्ति के लिए सवीर हो फडा है।

अणुबम स्वातन्त्र्य का टुक है और हृषियारवन्द सत्तराद का पोरक। अगर स्वातन्त्र्य सत्तराद तो सत्तराद किसी तरह नहीं देगा। किसी देश का दूसरे देश पर जाति का जाति पर, वर्ग का वर्ग पर, धारि जिनो भी सत्तराद वा स्वातन्त्र्य रहेगा तो सर्वप्र मनिवाय है और यदि सर्वप्र हुपा तो सत्तराद होकर ही रहेगा।

सामोरी ने कौशिक की की स्वातन्त्र्य प्रमाननकारी में बदल जाय, और उग्र सत्तराद 'स्वदेशी में, मानो पशोभोजन में। लेकिन उनकी बात उनके जीते-जी नहीं सुनो गयी। उनके बाद अपने देश में स्वातन्त्र्य की बड़ा और उग्र सत्तराद भी। सत्तराद ने सद्गीतना का वाया पढ़न किया है।

सत्तराद भी अन्तिम है और अन्तिम भी। तो अन्तिम का अन्तिमाल गुरु कहाँ से होगा? पश्चिम की दुनिया में स्वातन्त्र्य (भाविक, राजनैतिक, धार्मिक) के विरुद्ध उपात उठ रहा है, भारत में 'स्वातन्त्र्य' के विरुद्ध दूधान चल रहा है—एक रूपान जिनसे स्वतन्त्र होगी ऐसी व्यवस्था की जो स्वातन्त्र्य से मुक्त होनी। पश्चिम के नागरिक प्रस बूछ रहे हैं भारत के गाँव निरुद्ध कर रहे हैं। वामपान की धीगणना में स्वदेशी का सकल्य है 'स्वदेशी में अन्तिम की गारठी है।

माने को कायम रखने के लिए स्वातन्त्र्य बम बनाना है। अपने को मुक्त करने के लिए मनुष्य बन्दूक चलाना है। बन्दूक बम की जन्मी है। जब तब मुक्ति चाहनेवाले के हृदय में बन्दूक रहेगी, तब तक सत्तराद करेवालों के हाथ में बम रहेगा। इसलिए बम को रूढ़ना चाहिए या नहीं, यह निणय उनसे ही हाथ में है जिनकी पहुँच बम तक नहीं है। यानी बम का निरुद्ध नागरिक के हाथ म है। अयर नागरिक बन्दूक फेंक दे (देना, पत्थर मय मनुष्य की ही कोटि में है) तो सैतिक का बम बरा रह जायगा। बम बन्दूक का पानिम फायर है।

द्वितीयवा का नहीं उत्तर है, बन्दूक फेंक देने म, 'भारत छोड़ो की सार्वजनिक पुति है स्वयं स्वातन्त्र्य छाड़ देने म।

सत्तराद और स्वातन्त्र्य अब तक रहेगे, साथ रहेगी और अब जायेगे ही साथ आयेगे। •

→ने कहा है समिति के सामने विनोदवादी का बल्य एक ऐतिहासिक बल्य मय, यह धार्य की बा नहीं है। स्वातन्त्र्य का कि ऐसे अमर पर सारी धामोयोग के नियय पर विनोदवादी, विरुद्ध सिद्धे ५० बरौब वा सारी-धामोयोग के काम और विचारों से सद्द सव्य रहता है, और जो काम सामोरी के तथा उनके जीवन-दर्शन का केन्द्रबिन्दु है,

धमना सारा अन्तर उद्वेगकर रण देते। समिति वा समिति के सदस्यों के हाथ में विनोदवादी का उम ऐतिहासिक बल्य के अमर के जो भी बनी रही हो, सारे-मादी धामोयोग-जगद के लिए यह धमना धमन्य के विचारधारा के लिए यह धमना धमन्य दुर्भाग्यपूर्ण है। समिति के अमर धमोह मेरुता स्वय एक विचारक है। समिति के धमना में माने मत ही उन्हाय समिति की रण धमन्य धमनी-दुर्भाग्य वा बसाय किया हो, लेकिन के सुरु सगती तरह मपसते होगे कि उप बल्य के अमर देवाई की बनी जिनो भी साराय में पूरी नहीं की जा सकेगी। हम मरौबे रण का न युत है कि हम विनोदवादी के उम 'ऐतिहासिक' बल्य से कथित रहे है।

—सिद्धराम सद्द

आन्दोलन : आन्दोलनकारियों की निगाहों में

[हजारीबाग रौड स्टेशन के नजदीक ही सरिया में बिहार के कुछ तरय कार्यकर्ताओं की एक विद्वितीय विचार-गोष्ठी दिनेक २८, २९, ३० जूलाई की आयोजित की गयी थी। गोष्ठी की अध्यक्षता भी थी थी स्वामी महादुरजी ने। भाग लेनेवाले अन्य लोग थे : सर्वश्री हरिकृष्ण ठाडुर, स्वामी प्रकाश, सु० अयूष, बन्ने बाबू, लक्ष्मण सिंह, शिवेन्द्र शरण्य, देवसिंह, रामनन्दन सिंह, कंसाक प्रसाद शर्मा, लखन चोप्य, वैपनाथ ठाडुर, कर्णवी घोर रामचन्द्र राहो। खुले मन से इन मौन दिनों में सभी ने अपनी प्रतिक्रियाएँ व्यक्त कीं, चर्चाओं में विरलेपण प्रस्तुत किये घोर संत से महावितन के तीर पर कुछ सुन्दे निर्णय में आये।

आन्दोलन में क्या नहीं हुआ है, क्यों नहीं हुआ है, क्या होना चाहिए, इन पहलुओं पर काफी विस्तार से चर्चाएँ हुईं। और हमें कुछ करना है, इस तरह की मित्रो-मुत्रों अन्तर्गत भी अंतिम दिन सुनाई पड़ी, जिससे आशा की जा सकती है कि जो नहीं हो सहा और तिन कारणों से नहीं हो सका, उस दिशा में कुछ संशोधन भी हो सकेगा।

लेकिन एक विषय चर्चा से परे रह गया। अंतिम की शक्ति प्रगट होनी है अंतिम कार्य में लगे हुए व्यक्तियों के समर्थन और जनता के सक्रिय समर्थन से। इस समर्थन के लिए समर्थन चाहिए और समर्थन के लिए जैसा कि विशेषज्ञों ने साक्षात्कारी में कार्यकर्ताओं के बीच बोलने हुए कहा है (देखें) एक संक का प्रथम शृङ्खला, असाह भी चाहिए और साहाय्य भी चाहिए। बिहाररक्षण और तत् १९०२ का चुनाव, ये दो युवावर्तियों बिहार के साक्षियों के सामने हैं, बहिक पूरे देश के साक्षियों के सामने हैं। क्या यह आशा की जाय कि हजारीबाग में संभव का जो प्रथम प्रारंभ हुआ है, उसमें आन्दोलन के सक्रियवर्तन-देण्ड पोषक सवनीत निकलेगा। अगली गोष्ठी शायद इसका प्रथम प्रयत्न कर सके।

हृदना स्वयंसे है, कि संभव चलने रहना चाहिए, तथा आन्दोलन की चयनेवाँ हम पूरी करने में समर्थ हो सकेंगे। — तत्पश्चात्]

सरिया (हजारीबाग) में आयोजित यह गोष्ठी महत्त्वपूर्ण थी है कि साम्यवाद की प्रगति जिनवादान तक हुई, राज्यदान का प्रयास था रहा है, लेकिन समाज में उनका प्रतिष्ठित प्रभाव (इन्फ्लेन्स) नहीं दिखाई दे रहा है। गोष्ठी में भाग लेनेवाले माथी इनके कारणों की तौर, विरलेपण घोर निदान-वर्णन निम्न निम्नो पर पढ़ें हैं :

सूचनाजन

• भ्रष्टान की अर्थात् प्राप्त करनेवाली ने हमें मन का प्रयास माना, इस आन्दोलन से वे धन्य रहे, उनको शक्ति नहीं बन पाये। साम्यवाद में भी दावदाजी तौर आन्दोलन के बाहर नहीं बन रहे हैं।

• जन-जीवन के अन्य क्षेत्रों में जो अन्वेषण है, संघर्ष है, उनको हमने समर्थ नहीं किया। इस रूप पट्टु पर पूर्ण उदासीन रहे।

• बड़े हुए प्रतिष्ठित प्रभाव तो पया है, लेकिन बह मात्राही है, घोर समाजकारिजन की शक्ति उनमें से निकलेगी, ऐसा भरोसा नहीं किया जा सकता। इसका कारण यह है कि हमारी शक्ति पर्याप्त नहीं है। घोर साम्यदान की प्रतिष्ठित के साथ ही साम्यदान के बिचार के आधार पर लोगों के पुनर्गठन का प्रयास नहीं हुआ है।

• साथ ही जो माँग इन काम में लगे हैं उनमें से परिष्कार की बहू-सी बमर्जितगी है, समाजवाद घोर अन्वेषण दोनो प्रकार की, जिसका परिष्कार यह होता है कि शक्ति की अर्थ धन्युरी रहनी है, घोर विचार की तुरी मन्वर्द नहीं की जाती, गोष्ठी के सामने साम्यदान की गली घोर अन्वेषणकार के सक्रिय विचार को देना करने में का जो हो क्या

है या हिचकते हैं कि पूरों मान साफ होने पर शायद हस्ताक्षर न मिलें।

• देश की घोर दुनिया की चिन्तन धारा पर सर्वोदय आन्दोलन का प्रभाव पया है, घोर इस तरह धारणा भी बढ़ा है।

विश्लेषण

• हमारे आन्दोलन के संगठन शक्ति निधि से जुड़े रहे, संस्था-निरपेक्ष आन्दोलन नहीं हुआ नहीं, यह एक परिच-दोष है इस आन्दोलन का।

• कार्यकर्ताओं के पूर्ण समर्थन से ही गाम्निधारी आन्दोलन की शक्ति बढ़नी है, इनका काफी हद तक प्रभाव रहा है। जो कार्यकर्ता है उनके सक्रिय का दर्शन कार्यकर्ताओं के जीवन में नहीं होना।

• आन्दोलन का समाज पर प्रभाव प्रभाव पड़ा है या नहीं पया है, इन पर विचार करते समय यह भी गान्धना चाहिए कि हमारा अन्तना चित्त इनके विरतना प्रभावित हुआ है।

• सर्वोदय-दानों के अनुगुण समाजकारिजन का चित्त धरती तक हम नहीं संसार कर पाये हैं। यह ठीक है कि आन्दोलन के प्रभाव विचारण का माध्यम चित्त बना हो रहा है, लेकिन यह हम जित्त मात्रिक पर पढ़ते हैं, वही यह परिष्कार हो गया है कि समाज रचना का समय चित्त प्रयुक्त किया जाय।

• भ्रष्टान में जो कुछ देना-लेना गणार्थ हो होता था, प्रभावजन से बँगा कुछ उभारत होता नहीं। साम्य तथा समाजिता हो तो उनके द्वारा प्रभावकारी बहम उदाये जा सकते हैं, लेकिन बह भी बह उदा दिया नहीं जा सका है।

• हम अपने आन्दोलन का जो धार्मिक दैवत है घोर दुग्ने का अन्वेषण। हमें अपने अन्वेषण का भी परिष्कार करने पड़ा चाहिए।

• अन्वेषण प्रवर्तन में एक हद तक समाज है, लेकिन बह इतना अ कइ जाय कि उन्वेषण ही ही जित्त जाय, इतना ही ध्यान रखें।

संशोधन, सुधारण और सुधारण

• बली की शक्ति की जो 'दुग्ने' अन्वेषण के अन्वेषण को जाती है, वह 'दुग्ने'



द्वारा पुत्र आने आसिए अनापुत्र - ३२ वेद
इस गाँव में स्वस्थ और परिपुष्ट विश्व का दर्शन हो।
अनापुत्र - ३२ वेद

इस अंक में पढ़ें

कब तक चेतने ?

गाँव की मुख्य समस्या

ग्राम-पान के बाद प्रायसमा १

'बाई' विधायी कब बंदी ?

तेनासी में सर्वोत्तम पान की प्रकृति प्रगति

एक सत्र एक पत्र

सुवर्णोत्सव इनकार महाद्वेने हुए ?

६ अगस्त, '६८

पृष्ठ ३, अंक १]

[१८ पैसे

कब तक चेतने ?

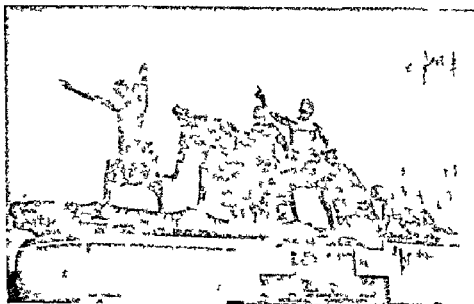
ग्राम से २६ साल पहले ६ अगस्त १९४२ को अपने देश में एक भयंकर उद्वल-पुत्रत्व मनी थी। तब भारत में अंग्रेजी राज था और भारत के लोग उससे छुटकारा चाहते थे। इसीलिए ६ अगस्त १९४२ को देश के कोने कोने में वह आवाज गूज उठी थी— अंग्रेजों भारत छोड़ो ! गलामों की अजीबों से जड़का हुआ भारत सिंहासन करके बंधन की सारी बड़ियाँ तोड़ फेंकने के लिए आतुर हो उठा था।

ग्राम भी पटना की वह पटना याद धाने पर नमों का मून तेजी से चौकने लगता है रोंगें सडे हो जाने हैं। मून से सचपय उत विद्यार्थी के प्राण-पथे उठने ही थाने थे। पटना-सचिवालय के सामने अंग्रेजों भारत छोड़ो का नाप लगते समय वह पुलिस की गोली का शिकार हुआ था। मरते मरते पूछा था गोली मेरी पीठ में लगी है या छाती में ?

छाती में। किसीने धाँवों से उमड़ने हुए धाँवुओं को रोककर कहा था। और तब

उसका बेहरा खुशी से खिल उठा था अंतिम बार ! उसकी लडवडागी आवाज से अंतिम गन्तव्य निकाला — व ३ मातरम् ! उस आजादी के परवाने को सतोप था कि उसने भागते हुए गोली नहीं खाओ है अत्याचारियों का सामना उसने किया है !

एक नहीं अनेक राहियों की यादें इस ६ अगस्त के साथ जुड़ी हुई हैं। पूरा देश ही एक तरह से आजादी के लिए जान की बाजी लगा चुका था और तब आकर १५ अगस्त १९४७ को हम आजात हुए थे। पटना सचिवालय के सामने बनाया



पटना सचिवालय के सामने का राहोद स्मारक



गया 'शहीद स्मारक' उन बीती हुई कहानियों की हर वक्त याद दिलाता है। और, रह-रहकर यह सवाल पूछता है कि 'क्या अंग्रेजों के भारत छोड़कर चले जाने के बाद भारत पूरी तरह आजाद हो गया? क्या देश का छोटा-से छोटा आदमी 'आदमी' की तरह जीने का अवसर पा रहा है? क्या अंग्रेजों हुकूमत में रौंदा गया, कुचला गया, बूसा गया भारत जैसा का तैसा

अणुबम के गिरने पर बना रहेगा? आजादी के लिए लूट बहाने में जो देश पलभर को नहीं पीछे हटा, देश बनाने के लिए पसीना बहाने में वह आगे क्यों नहीं आता? क्या अब देश के जवानों में 'जवानों का जोश' खत्म हो गया?

× × × ×

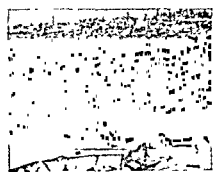
६ अगस्त १९४२ के ठीक तीन साल बाद ६ अगस्त १९४५ में दुनिया ने युद्ध की एक संहार-लीला देखी थी। जापान के हिरोशिमा नगर पर अणुबम गिरा था, और पलभर में पूरा नगर घघकती चिता बन गया था। दुनिया की भोली-माली

जनता के जीवन को जुए के दाव पर लगानेवाले शासनकर्ताओं के भगड़े ने हरे-भरे चमन को रमशान बना डाला था। आज भी उनकी तड़पती आत्माएं चीख-चीखकर कह रही हैं कि यही सिलसिला चलता रहा, जनता शासन करनेवालों के हाथ की कठपुतली बनी रही, तो एक-न-एक दिन यह पूरी धरती हिरोशिमा की तरह रमशान बन जायगी! विनाश के इस सतरे से मनुष्य को बचना है तो आज दुनिया का जो भी ढांचा है उसे बदलो। आदमों को सीधे आदमी के साथ जुड़कर रहने लायक नयी दुनिया बनाओ। तरह-तरह के बहवावे में भरमार धरती को घघकती चिता बनाने की जोर-शोर से तैयारियां करने-वाले शासनकर्ताओं से दुनिया को आजाद करो।

× × ×

अंग्रेज भारत छोड़कर चले गये। लेकिन भारत का जन-जन आज भी प्रभाव, प्रत्याय और प्रज्ञान की गुलामी में जकड़ा हुआ है। भारत के गाँव आज भी घूसे जा रहे हैं, कुचले और रौंदा जा रहे हैं। आखिर यह सिलसिला कब तक चलेगा? ६ अगस्त १९४५ के अणुबम के गिरने से जो हिरोशिमा वीरान बन गया था, उसे लोगो ने दुबारा एक सुन्दर नगर बना दिया। रमशान फिर चमन बन गया। लेकिन कब तक बना रहेगा?

६ अगस्त और ६ अगस्त हमने ये सवाल पूछे रहे हैं, और नयी पीढ़ी को चेतावनी दे रहे हैं। हम कब तक चेतेंगे?



नगर रमशान बन गया



अधमरे लोग



एक पक्षे की लारा

'स्वराज्य' हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

'ग्रामस्वराज्य' हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है।

गाँव की मुख्य समस्या

एक विदेशी मित्र कुछ महानों से हमारे देश में पूछ रहे हैं। सहरो को छोड़कर विशेष रूप से गाँवों को ही देग रहे हैं। कहते हैं कि शहर हर जगह सगमग एक ही तरह के हैं, घर घर मन्दर है तो गाँव में। कई राज्यों में पूमकर घाने के बाद हमसोनों के केन्द्र पर कुछ दिन ठहरे। चाहूँ ये कि यहाँ रहकर पाय प्रहोम के गाँवों को जरा गहराई से दगों, और जय भीहा मिते तो हमसोनों से चर्चा भी करें। यह रोज सुनह हमारे एन साधो को सेजर निकल जाते थे, और कई गाँवों में पूमकर दोपहर तक सौते थे। फिर सोमरे पहर जाते थे और घाम को प्रयेरा होने पर सौते थे। कई दिन तक यही उनका रोज का क्रम रहा। रवि का भोजन नहीं, घाराय का सौहा नही, जान-महचान व लोग नहीं, फिर भी वह मस्त थे, और सुब पूमते थे। उम्र से ही नहीं, दिल और दिमाग से भी नय और ताजे थे।

गाँव छह दिन के बाद वह एक दिन तीसरे पहर चर्चा के लिए घाये। सोन 'घामरे विचार में यहाँ के गाँवों की मुख्य समस्या क्या है ?'

मैंने उत्तर दिया 'मुख्य समस्या यह है कि गाँव के लोग गाँव की बात सोचते नहीं, जानत नहीं, कहत नहीं।'

'क्या मतलब ?' उन्होंने फिर पूछा।

मैंने कहा 'गाँव के लोग इतना ही जानते हैं कि उनके गाँव में पचान पर हैं, लेकिन सब पचान पर एक ही गाँव के हैं, यह उनकी चिन्ता में नहीं आता। गाँव एक है, घर भिन्न हैं। गाँव एक है, इसलिए उसमें उसकी एक ही बात होनी चाहिए। एक बात होने के लिए एक दिन होना चाहिए। लेकिन गाँव

में ऐसा नहीं है। उतरे यह है कि कितने घर हैं उतने दिन हैं, और कितने दिन हैं, उतनी रातें हैं। पूरे गाँव की एक बात गाँव में ही हो नहीं।'

'घामका मतलब यह है कि गाँव के लोग गाँव की एरना नहीं महसूस करते। एक का दिन दूसरे के दिन से दूर है, एक की बात दूसरे की बात को बाटने के लिए हातो है। क्यों, यही न ? उसने समझन की नोयत से कहा।

'हाँ यही बात है। जिस दिन गाँव के लोगों का मन में गाँव की बात कम जायगी, और वे गाँव की बात सोचना लगेंगे, उस दिन एक नयी आगुति, एक नयी राति, दिग्गयो देन सगेगी, और गाँव परों का समूह न रहकर एन इकाई बन जायगा। फिर बीतना ऐसा सवाल होग, जिम्मे लिए गाँव की याकि कोः न कोः रास्ता नहीं निकाल सगी ?' मैंने समझते हुए कहा।

यह मित्र हम बात को घच्छी तरह समझ गया। फिर उन्होंने घामदान घाम्नेसन के बारे में पूछा। घामदान की घते क्या हैं, घामदान कैसे होता है, घामदान होने पर क्या होता है, घामदान में घाम स्वराज्य केन घायगा, घामि प्रशन पटे भर तन घुदते रहे, तमभने और तिसते रहे। और, जब मैंने यह कहा कि हमलोग गाँवों के लिए 'गाँव की बात' नामकी एन पत्रिका निकालते हैं तो बहुत खुश हुए।

उन मित्र को गये हुए महानों हो गये। यह यहाँ से यह संतोय लेकर गये कि हमारे गाँव प्रय घमनी बात तमभने सगे हैं। उन्हें यह एक चिन्ता जट्टर यो कि 'गाँव की बात गाँव के घाम्दर से नहीं निकल रही है, बलिक बाहर से गाँव में पहुँचानी पड रही है। जो चिन्ता उस मित्र को थी वह चिन्ता हम सबको होनी चाहिए।'

'गाँव की बात' गाँव में कब पहुँचेगी ?

"गाँव की बात" वे तीसरे वर्ष का पहला अंक आपके हाथ में है। बड़ी ही खुशी है कि हम सोच से इतना स्वागत हुआ है और इसे भरपूर प्रशंसा मिली है। हमारा प्रयत्न रहता है कि "गाँव की बात" गाँवों के लिए ज्यादा उपयोगी बने और इसके निम्न धार्मिक समस्याएँ हों और इसकी भाषा इतना सरल रहे कि गाँव के साधारण पढ़ लिख सक्षम ता समझे ही, जो नहीं पढ़े लिखे हैं वे भी सुनकर समझ सकें। परन्तु बड़ी चिन्ता की बात यह है कि चाकरुद इन सारी बातों के "गाँव की बात" गाँवों में बहुत ही कम पहुँच रही है। गाँव में "गाँव की बात" पहुँचानेवाले हमारे साथी भी इत और उतना ध्यान नहीं दे रहे हैं, जितना उन्हें देना चाहिए। आशिया क्या कारण है कि "गाँव की बात" घामदान की गाँवों में भी नहीं पहुँच रही है ? क्या घामदान की गाँव शहर की बात पर आगे बढ़ें ? अगर घामदान की गाँव भी "गाँव की बात" नहीं समझेंगे तो उनकी राकि कैसे बनेगी ?

आज हमारे गाँवों में कितनी भा गिरावट आयी हो, उनमें कितनी भी शारीरी, बेकारी, घामीरी और पून हो, लेकिन हमने इनकार नहीं किया जा सकता कि अभी भी उनमें राकि बाकी है। उसे जगाने के लिए "गाँव की बात" गाँव गाँव पहुँचानी चाहिए। बताइये कब पहुँचेगी ? कैसे पहुँचेगी ?

—सम्पादक

ग्रामदान के बाद ग्रामसभा—१

प्रश्न—ग्रामदान में इतनी बड़ी-बड़ी बातें बतायी जाती हैं। कहा जाता है कि ग्रामदान के बाद गांव का संगठन होगा, भूमिहीन को बीया-कट्टा, भूमि मिलेगी, ग्रामकोष बनेगा, शान्ति-सेना खड़ी होगी, गांव के भगड़े गांव में ही तय हो जायेंगे, जमीन के कागज गांव में रहेंगे, यहाँ तक कि गांव के विकास की योजना गांव के लोग खुद बनायेंगे, और सरकार उसमें सलाह और साधन से मदद करेगी। यह सब सुनकर ऐसा लगता है, जैसे गांव में गांववालों की अपनी एक नयी सरकार बन जायगी। क्या सचमुच ऐसी बात है ?

उत्तर—वर्षों, प्रादुर्भाव की क्या बात है ? गांव का काम कैसे चलेगा ? आप देखते नहीं हैं कि गांव में वे सब काम होते हैं, या होने चाहिए, जो सरकार में होते हैं ? गांव के लोग अपने गांव को, अपने को, अपनी आवश्यकताओं और अपनी शक्ति को अच्छी तरह समझते हैं। इसलिए अच्छा होगा कि उनके गांव में उनका ही निर्णय चले, उनकी ही व्यवस्था चले। लेकिन आज की सरकार और गांव में गांव की सरकार में, एक बहुत बड़ा अन्तर है।

प्रश्न—वह क्या ?

उत्तर—आज की सरकार पुलिस और फौज रखती है, टैक्स वसूल करती है, और जो उसका आदेश नहीं मानता उसे दण्ड देती है। जहाँ डंडा है वहाँ भय है। यह सरकार भय की शक्ति से ही चलती है।

प्रश्न—और, हमारी ग्रामदानी सरकार कैसे चलेगी ? हम सरकार के पास इतनी शक्ति है तब तो इसकी बात लोग मानते ही नहीं, तब हमारी सरकार की बात मानेगा, जिसके पास कोई शक्ति नहीं होगी ?

उत्तर—यही बात, समझाने की है। मान लो कि ग्रामदान के बाद जो ग्रामसभा बनेगी वह गांव की सरकार होगी। अपने तथा गांव के लोगों ने अपने निर्णय से ग्रामदान

किया है; ग्रामदान के बाद सब वालियों को मिलाकर ग्रामसभा बनायी है। यह ग्रामसभा दुर्गों की तरह ग्राम-माता होगी। ग्राम-माता के पास पुलिस का डंडा नहीं होगा। वह जबरदस्ती टैक्स नहीं वसूल करेगी। गांव का हर परिवार गांव के काम के लिए, यानी अपने काम के लिए, उसे 'दान' देगा, ग्रामकोष बनायेगा; सब लोग एक जगह बैठकर चर्चा करेंगे, और सबकी भलाई का ध्यान रखकर सर्वसम्मति से निर्णय करेंगे, और उस निर्णय को ग्राम में लायेंगे। ग्रामसभा की शक्ति प्रेम की होगी, डंडे की नहीं। दूसरे ढंग से कहे तो वह सकते हैं कि गांव में सरकार नहीं होगी, सहकार होगा, और सहकार की शक्ति से चलनेवाली व्यवस्था होगी। गांव के भीतर सहकार, गांव के बाहर सरकार, यह ग्राम-स्वराज्य का शुरू का मंत्र है। कुछ भी हो, अच्छा काम भले ही रुक जाय, लेकिन गांव की एकता न टूटने पाये, बस अगर इतनी बात का ध्यान रहेगा तो ग्राम-सभा की शक्ति बढ़ती चली जायगी। सबसे मुख्य बात है गांव की एकता।

प्रश्न—फिर भी गांव में विकास के, व्यवस्था के, अपने काम होने, जिन्हें करने के लिए ठोस संगठन की जरूरत होगी। वह कैसे होगा ?

उत्तर—हर हालत में संगठन जरूरी है। संगठन के प्रश्न को अच्छी तरह समझ लेना चाहिए। यो तो ग्रामसभा ही गांव का मुख्य और बुनियादी संगठन होगी, पर गांव की व्यवस्था के रोजमर्रा के कामों को चलाने के लिए एक कार्य-समिति बनानी होगी। वह संगठन की पहली बड़ी होगी। उसमें ५ से १० तक सदस्य हो सकते हैं। कार्य-समिति को पूरी ग्रामसभा सर्वसम्मति (या सर्वानुमति) से चुनेगी। यह कार्य-समिति ग्रामसभा की ओर से गांव का काम करेगी, और अपने काम और हिंसाव का ब्यौरा हर महीने ग्रामसभा के सामने पेश करेगी। कार्य-समिति के भ्रमण-भ्रमण सदस्य भ्रमण-भ्रमण काम देखेंगे, जैसे—कोई खेती-सिंचाई का काम देवेगा, कोई उद्योग का, कोई शिक्षण का, कोई स्वास्थ्य का, प्रादि। लेकिन सब मिलकर जिम्मेदार होंगे। असली शक्ति है मिलकर काम करने में।

प्रश्न—यह बहुत जरूरी चीज है। लेकिन गांव के सामने बहुत बड़ा सबाल होगा है आपसी भगड़ों का। उनका निबटारा कैसे होगा ?

उत्तर—गांव के भगड़े गांव में ही तय हो, यह मानकर चलना होगा। मान लो कि, मोहन और सोहन में भगड़ा हुआ।

इस भगड़े की खबर अपने-भाप, या मोहन और सोहन में से किसीको बहने से, कार्य-समिति के उस सरस्य (मनो) को मिली, जिसकी गाँव की दानि और न्याय का काम सौंपा गया है। खबर मिलने पर न्याय मनो मोहन और सोहन से क्या कहेगा ? वह कहेगा, "भाई देखो, भगड़ा बढाना ठोक नहीं है। जो भी भगड़ा हो, दानि के साथ तय कर लेना चाहिए। सबसे अच्छा तो यह होगा कि तुम दोनों खुद बैठ जाओ, और दिल खोलकर प्रायसे मे चर्चा कर लो, और मन की गठि खोल डालो। अगर यह न हो सके तो तुम दोनों किसी एक व्यक्ति को चुन लो, और वह जो फैसला कर दे उसे मान लो। एक व्यक्ति को न मानो तो गाँव या गाँव के बाहर के पाँच व्यक्तियों को चुन लो। वे पाँचों एक राय से जो कह दे उसे मान लो। 'पंचपरमेस्वर' की बात पक्की होगी। अगर यह भी न कर सको तो वही हम कार्य-समिति से कहें। कार्य-समिति से सन्तोषन हो तो पूरी प्रामत्तमा की बैठक बुलाओ जा सक्ती है। गाँव समा कुछ पंच चुन देगी जो दोनों के बीच पचापन कर देंगे। इससे भी माने तुम लोग चाहो तो पबोती गाँवो के कुछ सज्जन बुलाये जा सकते हैं, जिसमें तुम्हारी राजो खुतो हो यह किया जाय।

मन—ठीक है, लेकिन गाँव के लोग कानून तो जानते नहीं।

उत्तर—कानून नहीं जानते तो क्या हुआ ? गाँव में कानूनी न्याय की जरूरत भी नहीं है। गाँव में उस न्याय की जरूरत है, जिससे लोगों की समाधान हो। आजकल अदालत में कानूनी न्याय मले ही होता हो, लेकिन उससे किसीको समाधान नहीं होता। उस न्याय को मन नहीं मानता। इसलिए अदालत के न्याय के बाद भी भगड़े को प्राय वनी ही रहती है।

मन—एक संगठन व्यवस्था और विकास के लिए हुआ, दूसरा न्याय के लिए हुआ, क्या सीमरत भी कोई होगा ?

उत्तर—हाँ, दानिसेना। हर गाँव की अपनी दानिसेना होनी चाहिए—प्राय दानिसेना। १६ साल से ४४-५० साल के लोग प्राय दानिसेना में भरती होते। गाँव में कम से कम १० का एक दस्ता होना चाहिए। प्राय वसकर १० से १५ की प्राय के सदस्यों का एक दस्ता प्रलय हो सक्ती है, १६ से २५, २५ से ३५, और ३५ से ऊपर की प्रायवालों के दस्ते प्रलय-प्रलय बन सकते हैं। तियों के दस्ते भी बन सकें तो बहुत अच्छा होगा।

मन—इस प्राय दानिसेना के काम क्या होगा ?

—(उत्तर भगड़े अंक में)



“भाई, बिचारी कबै करो ?”

ता० १६ को पृथ्वीपुर (टीकमगढ़) में बनिता बहन की टोली का अनुभव बड़ा दिलचस्प रहा। बनिता बहन ने कहा कि मैं ग्राम मुडारा के ग्रामदान के लिए गाँव में गयी थी। वहाँ के भाई लक्ष्मण प्रसाद दुबे मुझे रास्ते में मिल गये। बड़े प्रेम से हम लोगों को अपने यहाँ ले गये और ठहरने काटि की सम्बन्धित व्यवस्था की। दुबेजी ने रात का भोजन अपने घर करने के लिए हम सबसे प्राग्रह किया और अपने खेत पर चले गये। रात उगते खेत पर ही रहना पड़ता था।

दुबेजी की पत्नी रात में बनिता बहन के पास घायो और कहते सगी. “भाई, बिचारी कबै करो ?” (भाई, रात का भोजन कब करोगी ?) बनिता बहन सबई की रहनेवालो बुन्देली मापा को समझ न सकी और “बिचारी” शब्द का अर्थ बिबाह से समाकर उत्तर दिया “जब मेरी मरजी होगी तब करूँगी।” प्रातो में टोली की बहनो से प्रसन्न यह पूछा जाता है कि बिबाह किया है या नहीं ? नहीं किया है तो कब करोगी !

बेचारी दुबेजी की पत्नी भोजन करने की प्रतीक्षा में रात भर बैठी रही, पर बनिता बहन की टोली भोजन करने नहीं गयी। मेखवान और मेहमान, दोनों रात भर प्रतीक्षा में बैठे रहे। बनिता बहन की टोली भूख से रात भर करवटे बदलती रही। सुबह दुबेजी खेत पर से पर पढ़ते और पूछा, ‘बहनजी, रात कोई तकलीफ तो नहीं हुई न ?’ बनिता बहन ने कहा, “कोई तकलीफ नहीं हुई। सर्क भोजन नहीं मिलता।” दुबेजी बहुत दानिदा हुए और अपनी पत्नी से पूछा तो पत्नी ने बताया कि ‘बिचारी कबै करो’ मीने पूछा तो उन्होंने कहा कि जब इच्छा होगी तो करेगी। प्रस्त में ‘बिचारी’ शब्द का अर्थ स्पष्ट हुआ तो सारी बहनें हँसते हँसते लोट-पोट हो गयीं।

—गायत्री प्रसाद शर्मा



एक खत, एक पत्र

भाईजाजू,

आप को मेरा यह खत पाकर कुछ ताज्जुब होगा, और खत के साथ साथ यह 'राखी' तो आपको बिलकुल ही हैरत में डाल देगी। शायद आप सोचेंगे कि यह फातिमा मुझे भाईजाजू कहती है जरूर, लेकिन है तो आखिर यह मुसलमान की बेटी। इसने राखी क्यों भेजी? यह पर्व तो हिन्दुओं का है न।

कितना अज्ञा होता कि न मैं किसी मुसलमान की बेटी होती और न आप किसी हिन्दू के बेटे। हम दोनों ऐसे मां-बाप के बेटे बेटी होते, जो अपने को धर्म की शोषालों में नहीं घेरते, मु

बल्कि आदमी के नाते दुनिया के हर आदमी के साथ मिल सकते, बिना किसी हिचक के, बिना किसी भेदभाव के। और, भाईजाजू वह तो हमारे बस की बात नहीं थी, लेकिन क्या एक मुसलमान बहन की राखी एक हिन्दू भाई अपने हाथों में बांधेगा, तो अपवित्र हो जाएगा? मैं तो सोचती हूँ कि दुनिया के किसी कोने से कोई बहन दुनिया के किसी कोने के किसी भाई को गृहस्वत के इन धागों को भेजती है तो वह बिलकुल पवित्र है। आज दुनिया में ज्यादातर मनुष्य के दिल को तोड़नेवाली बातें ही चल रही हैं, जैसे मे आगर दुनिया की हर बहन धर्म, देश, जाति आदि की छोटी-छोटी बातों से छोड़कर भाइयों को प्यार की राखी भेज तो दिलों को जोड़ने का एक बड़ा काम हो सकता है।

यस, इससे अधिक तो एक बहन का प्यार अपने भाई के लिए 'राखी' के इन धागों के रूप में उसके सामने है ही।

गुना का साया मेरे भाई के सर पर बना रहे, इस पारखु प्यार सहित, आपके बहन फातिमा

×

×

×

प्यारे बहन फातिमा,

सुन्हाए पत्र पढ़कर मेरी आँखों में आँसू धक्क आये, दुख के नहीं, सुख के।

बचपन में महारानी कर्मवती और हुमायूँ की कहानी पढ़ी थी। सफ़ट के समय सहारे के लिए महारानी ने हुमायूँ को राखी भेजी थी। एक हिन्दू महिला ने मुसलमान पुरुष को अपना भाई बनाया था। और वह मुसलमान बादशाह अपनी हिन्दू बहन को मदद देने के लिए तुरत चल पड़ा था। हिन्दू-मुस्लिम का भेद खत्म हो गया था। तभी से मन में साथ उपजी थी कि मेरे कोई मुसलमान बहन होती, जो रक्षाध्वज के दिन मुझे राखी भेजती। आज तुमने मेरी वर्षों पुरानी साथ पूरी कर दी।

भाई बहन के प्रेम का यह पर्व किसी धर्म का नहीं है, दुनिया के हर भाई और हर बहन के लिए है। और देवा जाय तो हम न हिन्दू की सतान हैं और न मुसलमान की, हम तो ईश्वर की सतान हैं, अल्लाह की मौलात हैं। इसीलिए बहन, मन में इस तरह का कोई भाव मत रखना कि धर्म भेद अब हमारे दिलों को टुकड़ों में बाँट सकते।



बहन भाई को राखी बाँध रही है

बाद हमारी गुडिया लीची अब फातिमा बनकर आ गयी है। इसीलिए तुम्हारा पत्र और राखी पाकर मेरी आँखें भर आयी।

फातिमा, तुमने राखी तो भेजी ही, लेकिन उसके साथ जो भावना तुमने भेजी है वह तो बहुत ही अधिक महत्व की चीज है। एक जमाना था जब बहन अपनी रखा के लिए भाई को राखी बाँधती थी। समाज की रचना ऐसी थी कि बहन अपने को धरक्षित मानती थी, धरक्षित वे थी भी। लेकिन अब हमें समाज की रचना बदलनी है और ऐसा समाज बनाना है, जिसमें कोई अपने को धरक्षित न महसूस करे, सब सबकी रखा करें।

माया है, एक बहन का प्यार एक भाई को, और एक भाई का प्यार एक बहन को बराबर मागे बढ़ने की शक्ति देगा।

स्नेह सहित, तुम्हारा भाई
कृष्ण

तुलसीदास इतना महान् कैसे हुए ?

तुलसी-रामायण हिन्दी-भाषी लोगों का एक धर्मग्रन्थ है। सारे भारत में इतनी लोकप्रिय पुस्तक दूसरी नहीं है। वैसे गीता भी है। दर्शन के रूप में यह हमें बोध देती है, लेकिन रामायण धरेलू चीज है, उसने घर-घर में प्रवेश पाया है, यह मेरा अपना अनुभव है। मेरे दो सगे भाई हैं, लेकिन मुझे उनके विषय में उतनी जानकारी नहीं, जितनी लक्ष्मण और भरत के बारे में है। वे दोनों हमारे भाइयों से भी अधिक निकट हैं। इस प्रकार लोक-जीवन में इस महान् ग्रन्थ ने प्रवेश पाया है।

यह क्या ऐसी है कि छोटे बच्चों से लेकर औरतों और ग्रामीणों तक को—जिनमें ज्यादा संस्कार नहीं है, उनको भी सुनने और गाने में आनन्द आता है। जिनको गहराई में पढ़ने की भावना है, उनको तो वैसे भी पढ़ने का मौका मिलता है। इस तरह तुलसीदासजी ने हम सब पर बड़ा भारी उपकार किया है।

तुलसीदासजी, जो वाल्मीकि के भक्त थे, वाल्मीकि से भी आगे बढ़ गये। मेरा खयाल है कि उत्तर प्रदेश में बुढ़ भगवान् के बाद जनहितकारी तुलसीदासजी सबसे महान् हो गये।

गलो जो है, पौच जो है, दहिनी जो धामरे—सबके काम की चीज तुलसीदासजी ने दी, जिसके आघार पर सज्जन आत्मानन्द पाते हैं, जिनके आघार पर दीन-हीन, पतित आश्वसन पाते हैं, जिसके आघार पर यका-माँदा किसान प्रान्त चिन्ताओं के बावजूद रात को गहरी नीद सो पाता है, जिसके आघार पर आप देखेंगे कि यूनिवर्सिटियाँ चलनेवाली हैं, राष्ट्रमापा का प्रेम भारत में फैलेगा और भारत एकरस बन जायगा।

इतना सब तुलसीदास कैसे कर सके ? वे इतने ऊँचे कैसे हुए ? क्योंकि वे अपने को सबसे नीचा मानते थे। गणिका, भ्रजाभिल तथा दस-बीस और नाम लें। वे सब तुलसीदास की दृष्टि में उतने पापी नहीं, जितना वे स्वयं को मानते हैं। हम जरा कुछ अच्छा काम कर लेते हैं, या जो सहज परिस्थितिवश हमसे बन पड़ता है, तो उसके लिए हमारे मन में कितना अभिमान होता है ! यद्यपि हम कई पाप करते हैं, पर उन्हें छिपाते रहते हैं। तैर, छिपायें, लेकिन रामजी से कैसे छिप सकते हैं ? किन्तु 'तुलसी' तो सारा पाप खोलकर रख देते हैं। इस तरह उनमें नम्रता चरम सीमा पर पायी जाती है।

कोई भी पूछ सकता है कि क्या सचमुच केवल धारम-समाधान के लिए उन्होंने रामायण लिखी ? लेकिन तुलसीदास जब यह कहते हैं कि, मेरे जैसा 'प्रकट-पातकसम' तर गया तो क्या हम यह समझें कि वे अपने निज के लिए, अपनी दुःख देह के लिए यह सब कर रहे हैं ? नहीं वे समाज के अत्यन्त पापी और पतित का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। जैसे गांधीजी ने धारमण दरिद्र-नारायण का प्रतिनिधित्व किया, वैसे ही तुलसीदास ने सबसे अधिक पापी का प्रतिनिधित्व किया। उसके पाप उन्होंने अपने निज के पाप महसूस किये। इसलिए उनके स्वान्तःसुख (अपना सुख) में सारे विरव का सुख समा गया।

श्री भारतन् कुमारप्पा जेल में मेरे साथ थे। उन्होंने मुझे हिन्दी सीखने की इच्छा बतायी। उनकी मातृभाषा तो तमिल थी, पर इंग्लिश के उत्तम ज्ञाता थे। मैंने कहा : 'मैं हिन्दी क्या सिखाऊँ ? मेरी भी मातृभाषा हिन्दी नहीं है।' यों कहकर मैंने तुलसी-रामायण उनके साथ पढना शुरू किया। उसका महत्व समझते हुए मैंने उनसे कहा था कि तुलसीदासजी की रामायण यानी शंखसपिथर और बाइबिल, दोनों की मिलाकर समझ लो।

तो, तुलसीदासजी की साहित्यिक योग्यता मुझे सर्वथा मान्य है। फिर भी मेरा कहना है कि करोड़ों को जो पाल्ति उन्होंने दी है, उसे देने की शक्ति शंखसपिथर में नहीं है और वही तुलसीदासजी की महान् शक्ति है। साय-साय साहित्य की भी शक्ति उनमें आ गयी। और भी कई अन्य गुण उनकी वाणी में आ गये। इसका सार मैं यही निकालता हूँ कि जो परमेश्वर का आश्रय नेता है, उसके लिए सारी चीजें सहज-लभ्य हैं।

हिन्दुस्तान के लोग सिर्फ एक ही राजा को जानते हैं : 'राजा राम'। अब भी वे उसीका नाम लेते हैं। हिन्दुस्तान की जनता की यह हालत है कि वे लोग प्रकबर को नहीं जानते, जानते हैं संत पुरुषों को ही।

इस दृष्टि में इतिहास में जो लिखा जाता है कि 'प्रकबर के जमाने में तुलसीदास हुए', यह हमारी समझ में नहीं आता। क्या वह जमाना अकबर का था या तुलसीदास का ? यहाँ यह कह सकते हैं कि तुलसीदास के जमाने में प्रकबर नाम का कोई एक बादशाह हुआ और उसने प्रजा पर अपनी सत्ता चलाने की कोशिश की और उसके बंगनों ने भी काफी प्रयत्न किये सत्ता चलाने के, लेकिन आश्रित्वार वे मिट गये। बावजूद इसके कि तुलसीदास कायम रहे और उनकी श्रद्धा आज भी लोगों के हृदय पर कायम है। —विनोबाजी के मापस से

दो पंखी

विजड़े का पंखी था सोने के विजड़े में,
 बन का पंखी बन में ।
 एक समय ही गया मिलन दोनों का,
 पदा जाने था विधवा के क्या मन में ।
 बन का पंखी बोला, 'विजड़े के पंखी भाई,
 चलो, चलो हम बन में ।'
 विजड़े का पंखी बोला, 'भायो तुम बन के पंखी
 विजड़े में रहें विजल में ।'
 बन का पंखी बोला, 'ना मैं ज़ादों में
 नहीं कमी एकदाँगा ।'
 विजड़े का पंखी बोला, हाथ में धन में
 कैंसे बाहर होऊँगा ।
 बन का पंखी बाहर बैठ-बैठकर धाटा
 बन में जितने गान ।
 विजड़े का पंखी बुढ़ाया करना हरदम
 सिखा सिखाई बात,
 दोनों की भी दो योजियाँ ।
 बन का पंखी बोला, विजड़े के पंखी भाई
 धन के गान जा गाथो ना ।
 विजड़े का पंखी बोला, ऐ बन के पंखी भाई,
 गीत सीख लो तुम भी भ्रम विजड़े के ।
 बन पंखी ने कहा 'बाहिए नहीं मुझे
 गीत ये सीखे सिखाये ।'
 विजड़े का पंखी बोला, हाथ में

गाँव बन के गीत, तो कैसे ।'
 बन पंखी ने कहा, 'बने निलास्वर में,
 है नहीं कहीं कोई धाधा ।'
 विजड़े का पंखी बोला, 'किस तरह मुझ खल
 दका हुआ है
 विजड़ा मेरा सबी चोर ले ।'
 बन पंखी बोला, 'अपने की तुम मेधा में,
 सूर्यो रुद से छोड़ दो ।'
 विजड़े का पंखी बोला, 'हस निजंन सुख के नोने मे,
 खुद को तुम भी बाँप दो ।'
 बन पंखी ने कहा, नहीं मैं वहाँ
 उड़ कहीं पाऊँगा ।'
 विजड़े का पंखी बोला हाथ मेघमाळा में,
 थँड कहीं पाऊँगा ।
 करते बहुत प्यार ये पंखी एक दूसरे को
 पर निकट नहीं था पाते ।
 विजड़े के झिंझों से काने एपसों और
 बस नयन नयन को ही निहारेते जाने ।
 सप्तक नहीं पाने दोनों, दोनों को,
 और नहीं रोनों ही सुद को ।
 दोनों कलम कलम मारते भपट्टे पत्तों के और,
 कातर स्वर में फड़ते धाधो निकट ।
 'ना विजड़े का कमी बंद कर देगा दूरवाजा पंखी कइता धन का ।
 हाथ ! नहीं उड़ने की मेरी शक्ति,
 बोलता पंखी यह विजड़े का ।
 २ जुलाई, १८६२

—रविन्द्रनाथ ठाकुर
 —अनुवादक अश्विनेत

→ ही समाज की बहुत हद तक प्रादोक्षित करनी है। वर्तमान समय में जीवन के हर क्षेत्र में जो घुटन और नयाम है, जोषण और जर्जरिजन है, सर्वोदय की शक्ति उससे मुक्ति का मार्ग प्रस्तुत करती है और एक नयी वैकल्पिक समाज रचना का समय निश्चय पेश करती है। इस प्राथम्य का सर्वोदय पोषण-पान पीप्राविषीय हीनार करना है।
 • जीवन की प्रभावित करनेवाले हर सम्बन्ध क्षेत्रों की समस्वामी के प्रति हमें यत्न रहना है। प्राथम्य के प्रतिनार के लिए स्थानीय गति और नेतृत्व विकसित करना है और स्थानीय समस्वामी को हल करना है। प्रयोगों का प्रतिनार करना है। प्राथम्यधर्मों की इतना सहाय बनाना है कि सरकारी तंत्र उनके अनुसार काम करे।

• सरकार पर भरोसा न करते हुए उसकी शक्ति और मापनो का दलेमान करना है। मस्वामी की शक्ति और साधन का भी दलेमान करना है उनके प्राश्न नहीं रहना है।
 • कार्यकर्ता और कार्यक्रम में भेद हो कार्यकर्ता पूर्ण सपर्यग भाव में लगे, इनके लिए प्राथम्यक शैक्षणिक और समन्वयक काम करने हैं। प्राथम्यो क्षेत्रों में प्राथम्यधर्मों के लोग संगठन का और उनके मार्फत उचित, उद्योग और शिष्य के क्षेत्र में कुछ प्रयोगिक काम भी करना है। ऐसे स्थानीय कार्यकर्ता तैयार करने हैं, जिनके प्राथम्य के सोल स्वतन्त्र हो, और जो लोग इन विचार के प्रति भावपिठ हों। कुछ प्रबलजो में सत्य प्रयोग भी करने है।

• हमें यह ध्यान रखना है कि हम राजनीति को बदलना चाहते हैं, सिर्फ प्रभावित करना नहीं। हमें उतरे लिए काम करना है।

• प्राथम्यजो को बालना देने के लिए उद्यम संगठन खडा करना है, तब तक के लिए जब तक कि नीचे से बुनियादी लोग संगठन नहीं बन जाय। संगठन के स्वल्प में बारे में मुझसे देने के लिए दौड़ो के जो शक्ति करी थी, मोठी उनमें भी मुझसे तैयार कर प्रदेय के कामकाशों के समर्थ प्रस्तुत करने की शिफारिश करती है।

• प्रबलजो और जितनाजो की पोषणा की शक्ति की पुष्टि हुई या नहीं इसकी कथं शोषणा से पुब को जाय, और धीपथा के→

**संभारण जिले का
मोतीहारी प्रखंडदान घोषित**

कुल का कुल रकबा : ६७,८०८-७० एकड़

सरकारी जमीन :	३,१४७
मोतीहारी नगर का क्षेत्रफल :	६,७१७
गैर-सामान्यी :	५,३३२
बाहरवालों की जमीन :	६,२७६
कुल :	२१,४७२

कुल जोत का रकबा :	४६,३३३
प्रखंडदान में शामिल रकबा :	२७,३६५-०६
शामिल रकबा का प्रतिशत :	५६
पंचायत-संख्या :	१६
प्रखंड की कुल जनसंख्या :	१,२०,३२३
मोतीहारी नगर की जनसंख्या :	३२,६७२
शेष ग्रामीण जनसंख्या :	८७,६५१
प्रखंडदान में शामिल जनसंख्या :	६७,२७५
शामिल जनसंख्या का प्रतिशत :	७७

संयोजक, ग्रामदान प्राप्ति समिति

—प्रखंड विकास पदाधिकारी, मोतीहारी

**सारण जिले का
घोषित एकमा प्रखंडदान : आँकड़े**

कुल गाँव :	६२
ग्रामदान में शामिल गाँव :	७५
कुल पंचायत-संख्या :	२२
ग्रामदान में शामिल :	१८
कुल क्षेत्रफल, एकड़ में :	३८,१७५-००
जोत की जमीन, एकड़ में :	२५,६७६-२५
ग्रामदान में शामिल, एकड़ में :	१३,३४६-६३
कुल जनसंख्या :	६०,४५६
ग्रामदान में शामिल जनसंख्या :	७०,८४२

—मंत्री, जिला ग्रामदान-प्राप्ति समिति, सारण

→ग्रामयोजन में क्षेत्र के सीपों की अधिक से अधिक शामिल करें।

• पूरे राज्य में लोक शिक्षण और विचार प्रचार के कार्यक्रम को अधिक गति से बढ़ाना है और, उसके लिए ठोस संगठन करना है।

राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति

प्रधान केन्द्र

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति

१, राजघाट कालोनी, नया दिल्ली-१

टुकलिया भवन, कुन्दीगरो का भेरो

फोन : २७६१०५

जयपुर-३ (राजस्थान)

फोन : ७२६८३

अध्यक्ष : डा० जाकिर हुसैन, राष्ट्रपति
उपाध्यक्ष : श्री वी० वी० गिरी, उपराष्ट्रपति
अध्यक्ष : कार्यकारिणी :

अध्यक्ष : श्री मनमोहन चौधरी
मंत्री : श्री पूर्णचन्द्र जैन

श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधानमंत्री
मंत्री : श्री आर० आर० दिवाकर

गांधीजी के जन्म के १०० वर्ष २ अक्तूबर, १९६६ को पूरे होंगे।
आइये, आप और हम इस शुभ दिन के पूर्व—

(१) देश के गाँव-गाँव और घर-घर में गांधीजी का संदेश पहुँचायें।

(२) लोगों को समझायें कि गांधीजी क्या चाहते थे ?

(३) व्यापक प्रचार करें कि विनोबाजी भी भूदान-ग्रामदान द्वारा
गांधीजी के काम को ही आगे बढ़ा रहे हैं।

यह सब आप-हम कैसे करेंगे ?

- यह समझने-समझाने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति ने विभिन्न प्रकार के फ़ोल्डर, पोस्टर, पुस्तक-पुस्तकादि सामग्री प्रकाशित की है। इसे आप पढ़ें और दूसरों को भा पढ़ने को दें।
- इस प्रकार की सामग्री और विरोध जानकारी के लिए आप अपने प्रदेश की गांधी-जन्म-शताब्दी समिति तथा प्रदेश के सर्वोदय-संगठन से सम्पर्क व पत्र-व्यवहार करें।

उत्तर प्रदेश की बिड़्डी

भारत में ग्रामदान-प्रखंडदान-जिलादान

आन्दोलन की प्रगति

भागना जिले की फिरोजाबाद तहसील के फिरोजाबाद तथा कोटला प्रखण्ड में २१-२२ जुलाई को शिविर हुए और २३ को अभियान शुरू हुआ, जिसमें २०० कार्यकर्त्तों ने भाग लिया। २८ जुलाई को अभियान का समापन हुआ। उस समय तक फिरोजाबाद में ११६ तथा कोटला में ६५ ग्रामदान हुए। सर्वश्री डा० दशनिधि पटनायक, रामजी भाई, राजाराम भाई, निर्मला देगपडे का अभियान ने सक्रिय सहयोग दिया। स्थानीय महिला इन्ड्री कालेज और हाईस्कूल की प्रशापिकाओं के बीच सुश्री निर्मला देगपडे का प्रभावकारी प्रयत्न हुआ।

इटावा जिले में २६ जुलाई को गांधी-शाखाएँ समिति के तरशावधान में ग्राम-स्वराज्य मोर्चे हुई और भागमो २१ से २८ सितम्बर '६८ तक शिविर तथा अभियान चलाने का निर्णय हुआ।

गाजीपुर जिले में भी गांधी-शाखाएँ समिति के तरशावधान में २८ जुलाई को बंटक हुई और वहाँ के कार्यकर्त्तों ने ११-१२ अगस्त से सादात ब्लॉक में अभियान चलाने का निश्चय किया।

कैजाबाद जिले के पूरा ब्लॉक में भी १३-१४ अगस्त को शिविर होने जा रहा है, उनके बाद वहाँ अभियान शुरू होगा।

अजमेर जिले की डेराडू तहसील में भी एक नामक खाल पर अभियान की पूर्व-तैयारी के लिए ३-४ अगस्त को शिविर हुआ।

महाराजपुर जिले के रडकी तहसील में २०-२१ अगस्त को अभियान की पूर्वतैयारी का शिविर होने जा रहा है।

दिनांक ३१-७-६८ —कृपितभाई

सेवापुरी प्रखण्ड में

२ न्याय-पचायतों ग्रामदान में

बाराणसी जिलादान की मुक्ति में चन्दौनी तहसीलदान के बाद बाराणसी

भारत में	ग्रामदान	प्रखंडदान	जिलादान	जिला	ग्रामदान	प्रखंडदान	जिलादान
१ बिहार	२३,४६६	१६५	२	पुणिया	८,१५७	३८	१
२ उड़ीसा	८,५०६	३६	—	बरभंगा	३,७०२	४४	१
३ उत्तर प्रदेश	६,६००	४१	२	मुजफ्फरपुर	२,२०६	२७	—
४ तमिलनाडु	५,३०२	५०	१	मुगेर	२,११८	१८	—
५. आन्ध्र	४,२००	१०	—	हषातीवाग	१,२७३	४	—
६ सं० पंजाब	३,६३३	७	—	गया	१,१४३	१	—
७ महाराष्ट्र	३,१२६	११	—	संघाला वरगना	६३६	२	—
८. मध्यप्रदेश	२,८०६	७	—	गारण	७७६	७	—
९ आन्ध्र	१,५८६	१	—	पलामू	६३४	५	—
१० राजस्थान	१,०२१	—	—	सहरसा	६६७	१०	—
११ गुजरात	८०३	३	—	भागलपुर	४६५	३	—
१२ बंगाल	६४४	—	—	गिरिभूमि	३३०	४	—
१३ कर्नाटक	४१०	—	—	धनबाद	४०४	४	—
१४ केरल	४१८	—	—	शाहाबाद	११२	१	—
१५ दिल्ली	७४	—	—	बम्बाराण	२५०	—	—
१६ हिमाचल प्रदेश	१७	—	—	रांची	४४	—	—
१७ जम्मू-कश्मीर	१	—	—	पटना	३८	—	—

कुल ६२,५५२ ३३३ ५ , कुल : २३,४६६ १६५ २

दरभंगा जिलादान में प्रखंडदान : ४४ ग्रामदान : ३,७०२

पुणिया " " " : ३८ " : ८,१५७

सिन्हेनेवेली " " " : ३३ " : २,८१६

धक्षिया " " " : १८ " : १,७१६

उत्तरकारी " " " : ४ " : ५६६

बिहार में जिलादान २ प्रखंडदान : १६५ ग्रामदान : २३,४६६

उत्तर प्रदेश में " २ " : ४१ " : ६,६००

तमिलनाडु में " १ " : ५० " : ५,३०२

भारत में " ५ " : ३३३ " : ६२,५५२

बिनावा-निवास, दिनांक ६ जुलाई, '६८

—कृष्णराज मेहता

वहमील की लिया गया है। इनमें सेवापुरी प्रखण्ड में ३ दिनों का अभियान चला और २ न्याय-पचायतों में अब तक १५ ग्रामदान मिल चुके हैं। १५ अगस्त '६८ तक ब्लॉकदान पूरा करने की कोशिश में ५ टोलियाँ भ्रम रही हैं। सीध ही १० टोलियाँ और अभियान में लपने वाली है।	फिरोजाबाद-अभियान की उपसंहिय प्रखण्ड : कुल ग्राम प्रात प्रतिशत
	फिरोजाबाद : १४१ ११६ ६६%
	कोटला : १५६ ६५ ६५%
	कुल २८७ २१४ ७५%

—अध्यापक सिंह —चन्द्रमान सिंह, मं०, अभियान आगस्ट से

वार्षिक शुल्क : १० रु०, बिदेश में १८ रु०, या १ पीण्ड, या २॥ बाहर । एक प्रति : २० पैसे
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्वे सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इतिहास प्रेस (प्रा०) लि० बाराणसी में मुद्रित

भूदान-यज्ञ

दिनांक १५ अगस्त १९५५

भूदान-यज्ञ मूलक आन्दोलन प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्दिग्धवाहक साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र
 वर्ष : १४ अंक : ४६
 शुक्रवार १६ अगस्त, १९५५

अन्य पृष्ठों पर

गोखरी धारा
 एक मित्र दूसरा पड़ोसी
 — सम्पादकीय ५६३

एक ब्रह्मचरि क्व चुनोती
 — मनमोहन चौधरी ५६५

स्वामिन्व नाम्ने री प्रोर प्रमानतदायी
 — विनोबा रामपूति मकड ५६६

विपत्ता मे मापी विनोता की या
 — मनीषकुमार ५६७

हजारोवाग मोक्षो का निष्पन्न ५६८
 भागत म ध्यान प्रादोन्न

— परिचय ५६९

महत्ता ममिति का प्रतिवेदन सारोक्ष ५७०
 प्रदीपका मे प्रथमक्ष पद का चुनाव
 — उद्भू० ए० स्वातंत्र्य ५७३

अय स्वतन्त्र

आपके पत्र
 प्रादोन्न के समानार पुस्तक परिचय

आवश्यक सूचना

इस अंक के बांध में भूदान-यज्ञ का प्रकाशन शुक्रवार के बन्धे सोमवार को होगा। इस दिवस के अनुसार प्रथमा अंक शुक्रवार यानी २३ अगस्त ६५ को नहीं सोमवार यानी २६ अगस्त ६५ को प्रकाशित होगा। — व्यवस्थापक

सम्पादक
रामपूति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
 रावतनगर धाराधामी-३ उत्तर प्रदेश
 फोन : ४३२५

गुलामी : एक नये प्रकार की

प्रश्न रूस पाकिस्तान को शरणागती की मदद कर रहा है। इस सम्बन्ध में आपको क्या राय है ?

उत्तर इसमें हमारी राय का क्या ताला है ? हमसे पूछकर तो काम किया नहीं। जिनसे पूछना चाहिए उनको बोट देकर अधिकार दिया है। आपने किसी पार्टी को चुनकर दिया है, वे अधिकारी हैं। और रूस कहता है कि, 'अगर हम पाकिस्तान को मुफ्त राश देते, तो कह सकते हैं कि हमने गुटबंदी की। हम तो उन्हें राश बेच रहे हैं। आपको भी बेचने की राजी है। हमारा तो पचा ही है राश बनाना और बेचना। उससे हमारे देश में इम्प्लायमेंट बढ़ता है। आप अमेरिका से भी राशीद सकते हैं। हम यह भी नहीं कहते कि उनसे न राशीदें। और यह भी नहीं कहते कि हम आपको नहीं देते। आपको भी देने की राजी है। यह तो व्यापार का सवाल है, हम बेच रहे हैं।

जब तक आप पाकिस्तान से प्रेम सम्बन्ध नहीं बनाते, तब तक आपको खतरा है और पाकिस्तान को भी तब तक खतरा है। राशाल से खतरा कम नहीं होगा। राश-मुक्ति की हिम्मत आप करेंगे, तो कम-से-कम पाकिस्तान के साथ आपका मामला हल हो जायगा। यह हिम्मत आप नहीं कर रहे हैं। उसके लिए न आपको दोष नहीं देता, वह तो बहुत बड़ी बात है। लेकिन पाकिस्तान से प्रेम-सम्बन्ध नहीं बनाता, तब तक ऐसा ही चलता रहेगा।

पाकिस्तान चीन और इंग्लैंड में मदद ले रहा है। आपको भी सबसे मदद लेने की इजाजत है। आप चीन से मदद लेते नहीं क्योंकि आपका उसका विरोध है। बाका सबसे आप मदद मांगते हैं। और आप मदद लेते हैं, तो पाकिस्तान उससे ज्यादा लेगा और फिर तो आप उससे ज्यादा लेंगे। ४० प्रतिशत सचाँ अफका सेना पर होता है। बाकी सब पर मिलाकर ६० प्रतिशत। २१ प्रतिशत तालीम पर, और ४० प्रतिशत सेना पर। तालीम पर तो ज्यादा सचाँ होना चाहिए। लेकिन हिन्दुस्तान समझता है कि आर्मी पर हम कम सचाँ करेंगे तो हिन्दुस्तान खतरे में है। आप अपना प्लानिंग कर नहीं रहे हैं। बजट बनाने में आप स्वतन्त्र नहीं हैं। पाकिस्तान ने आर्मी पर कितना सचाँ किया, यह देखकर आप अपना बजट तय करते हैं, पाकिस्तान आपकी और देखकर। रूस अमेरिका की और देखकर और अमेरिका रूस की और देखकर। दूसरे की और देखकर आप अपना बजट बना रहे हैं, यानी आप गुलाम हैं। यह गुलामी सब राष्ट्र में है। इसमें से जनता को मुक्त करना है। उनकी समझना है। सरकार पर गौड़ों का रण चढ़ाना है। सारे गौड़ मिलकर अपना मनुष्य चुनाव के लिए सड़ा करेंगे। पार्टी-जारी की बात नहीं रहेगी। गौड़ों की संयुक्तमति से उनका मनुष्य सड़ा किया जायगा। हर जगह से ऐसे लोग एसेम्बली में आँवेंगे। सरकार गौड़ों के रण से रेंगेगी। यह सारा काज होगा। जब जनशाक्ति सड़ी होगी।

— विनोबा

श्री संपादकजी,

'भूदान-पत्र' के २६ जुलाई '६८ के पक्ष में चिन्तन-प्रवाह के अन्तर्गत मानवीय श्री मिश्रदास डडवा ने गोहत्या की प्रथम योजना के बारे में जो विचार व्यक्त किये हैं; मैं उनसे पूर्ण रूप से सहमत नहीं हूँ। यदि उचित समझें तो मेरे विचार प्रकाशित कर दाका-समाधान हेतु प्रवर्तक प्रदान करें।

एक दुःख देनेवाले पशु के रूप में गाय निश्चय ही अत्यन्त पशुओं के समकक्ष ही है तथा मित्राद्य गो-भूत्र, गो-शुत्र (पुराना) तथा ऐसी ही कुछ अन्य वस्तुओं की छोड़कर गाय को एक विशेष स्थान प्राप्त करने का धर्मव्यय्य मुझे कुछ समझ में नहीं आता है। प्रश्न है, क्या भारतीय संस्कृति और जिन मूल्यों की गाय के संदर्भ में हम दुःखी होते हैं, वे महज भावनात्मक बौद्धिकता की उपज हैं अथवा उसमें कुछ युक्तवत्ता (Rationality) भी है तथा जो विचार व्यक्त किये गये हैं, वे क्या एक सामाजिक व्यक्तिकी अनुभूतियाँ भी हैं? और अगर हैं भी, तो क्या वे सोपी भावुकता की प्रतीक नहीं हैं?

हिन्दू पाप का मास नहीं मानते हैं (ऐसा सोचने और पढ़ने में भी साधारण बहुरों की पाप की अनुभूति हो), मुसलमान मूषर का मास नहीं खाते, सिक्ख भट्टे का पसन्द करते हैं और मुसलमान हवाला का, इनके पीछे जो भी भावना है, वह एक धर्म-विशेष की उपज भले ही हो, परन्तु एक मानव होने के भावे मुझे लगता है, ऐसा सोचना अनुचित (Irrational) है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि एक सामाजिकी व्यक्तिके लिए किसी ओ जानकर का मास खाने में शिक्षक अथवा परदेस के वापस उमकी संकीर्ण अनुभूति की उपज है।

बहुत-से काल्पनिक आधारवादी जब सूरे और वेचार, पशु-धन के समाप्त करने की पूर्वा की मुक्त हैं जो एक तीखा अर्थ

करते हैं—क्या घर में माँ-बाप के वृद्ध होने पर उन्हें खाना नहीं दिया जाता है, अथवा भूतों मार दिया जाता है? उनमें मैं नम्रता-पूर्वक निवेदन करना चाहता हूँ कि पशु की कद्र केवल उसकी शारीरिक क्षमता तथा मनुष्य हेतु उसकी उपयोगिता पर निर्भर करती है, परन्तु मनुष्य की कद्र में उनके मानसिक विकास तथा चिन्तन का बहुत बड़ा योग होता है। मनुष्यों में भी वृद्ध हो जाने पर उनकी तुलनात्मक बौद्धिक योग्यता एवं उनकी मनुष्यमात्र के लिए उपयोगिता के आधार पर ही उनका मूल्यांकन किया जाता है। वृद्धों में चाहे वाग विनोदा हो, दोष अनुभवा ही अथवा वर्द्ध रहते हैं, हर व्यक्ति की अलग-अलग उपयोगिता है और जिस दिन उनका मूल्यांकन समाप्त की नजरों में लगाने हो जायगा, उन दिन उनकी उपयोगिता के समझ भी एक प्रसन्नचित्त लय जायगा।

मुझे ऐसा लगता है कि कुछेक धार्मिक-वादिओं को उपयोगिता की 'ध्योगी' हास्यास्पद लगती है, परन्तु हममें न तो कुछ अन्ध-भाविक ही है और न अतिविकारी है। 'जो सबको पैदा करना है, वही गवयी किन भी करेगा', अधिक अच्छा हो कि हम इस भावना एवं सोचें भाग्यवाद को अपने जीवन से निचाल दें, और केवल मात्र इतना याद रखें 'अन्नदान उन्हींकी मदद करता है, जो स्वयं अपनी मदद करते हैं।'

आज जब मनुष्यमात्र का ही पेट भरना मुश्किल हो गया है, (अर्थात् उनका कारण गलत धर्म-अवस्था हो) तब सुबद्ध-नाम गो-मल्ला को ठक रोटीयें चिन्तने और गना जाने समय बाँटियों को माता निराने में एक सूत्री गुंति भले ही मिल जायों हों, पर अपने प्राण में यह गुंति किनकी धोनी और गुंति है, यह तो उन अनभिज्ञत भूतों में गुंति, जो मरुत एक बक्त गावर किन्तनी की वारीय बदरते रहते हैं! मैं आपने गुंता

चाहता हूँ; 'आखिर प्राण वृद्ध और अनुभवयोगी पशु-धन का संरक्षण क्यों करना चाहते हैं तथा ऐसा न करने से भारतीय-संस्कृति की कोनसी गरिमा अथवा अक्षय्य मूल्य गूँथ होते हैं? आखिर हम कब तक सूँठे भावनात्मक मूल्यों के बंधक में अग्रित रहेंगे?

इस बारे में दो प्रश्न रह जाते हैं।

पहला—जिन जीव को हमने पैदा नहीं किया, क्या उसको मारने का मनुष्य को कोई अधिकार है, और—

दूसरा—क्या किसी जीव की उपयोगिता मनुष्य मात्र के लिए समाप्त हो गयी, महज इस कारण उसका वध कर दिया जाय?

जीवों में मनुष्य की श्रेष्ठता यदि स्वयं मिथ है तो एक श्रेष्ठ जीवन को जीवित रखने के लिए एक अनुभवयोगी जीवन को एक उपयोगी मरण में बदलने की प्रविदा में कुछ भी अतिविकार नहीं रह जाता है, तथा मनुष्य को जीवित रहने का अधिकार यदि प्रथम जीवों के जीवित रहने से ऊपर है (जो उनको श्रेष्ठता के कारण होना ही चाहिए), तो किसी पशु के मारने में भी वही अतिविकार नहीं रह जायता है।

उपयोगिता-रहित पशु-धन के संरक्षण की दर्शन-रहित प्रणाली हैं, अर्थात् केवल भावना (Sentiment) की उपज है, क्या इस दर्शन में युक्तवत्ता (Rationality) बची है?

अतिविकार,

—राजकुमार कपूर, सगिरट्ट ईजीनिवर, ६३, प्रकृती बाग, रामपुर (३० प्र०)

क्या भावना को सुनिश्चित बौद्धिकता का विरोधी बहना सुनिश्चित है? (अर्थात्, अर्थने संक में श्री मिश्रदास डडवा प्रवाह)

पटनीय	अनवीय
नयी तात्वीम	
सैद्धिक क्रांति की अग्रदूत मासिगी	
वर्षिक मूल्य : ६ रु०; एक प्रति : २० पैसे	
अर्थ सेवा संघ प्रकाशन	
राजवाट, वाराणसी-१	

स्वाधीनता-दिवस...

“आज स्वाधीनता-दिवस है।” आज हम लोग स्वतंत्र हो गये हैं। “तब हम इस उत्सव को क्यों मनायें?” आज हम यह उत्सव इसलिए मना सकते हैं कि हमारी अनेक नयी आशाएँ परिपूर्ण हों। अब भारत के सात लाख (अब ५५ लाख) गाँव स्वतंत्र होकर यह दिखायें कि भारत का सच्चा सीना और सीमाएँ तो हम ही हैं। यह नूर दिखाना स्वतंत्रता में ही सम्भव है।
—सो० क० गांधी

जब रूस ने पाकिस्तान को लड़ाई के हथियार देना तय किया तो भारत को बहुत बुरा लगा। इस सोच नकले थे कि पाकिस्तान ने किसी हथियार लिए तो हमसे क्या, हम भी किसी से ले लेंगे! लेकिन नहीं, हमको लगा कि हमारा पुपुना दोस्त होते हुए भी रूस ने हमारे 'दुश्मन' से दोस्ती दिखायी तो हमारे साथ दगा हुआ। 'दुश्मन' के नये 'दोस्त' की नीयत पर कैसे भरोसा किया जाय ?

रूस से हथियार पाकर पाकिस्तान की जो शक्ति बढ़ेगी, उसका इस्तेमाल वह हमारे सिवाय और किसके खिलाफ करेगा ? दूसरा दुश्मन उसका है कौन ? पाकिस्तान चीन का 'दोस्त' है। चीन हमारा 'दुश्मन' है।

रूस की मदद से हमारे 'दुश्मनों' की शक्ति बढ़े, यह हमसे अपनाने लिए खतरा मालूम होता है। क्यों न मालूम हो ? हमारी शक्ति से पाकिस्तान को भी इसी तरह खतरा मालूम होता होगा।

पाकिस्तान अपनी ताकत बढ़ानेगा तो भारत और अधिक बढ़ायेगा। इस तरह हथियार बढ़ाने की होड़ बढ़नी चली जायगी। फिर पड़ोसी देश भी पुप नहीं बैठेंगे। नतीजा यह होगा कि दक्षिणी एशिया में शीत युद्ध का वातावरण बन जायगा। भारत कहता है कि पाकिस्तान को हथियार देकर रूस ने एशिया के इस भाग में युद्ध के वातावरण को बढ़ावा दिया है, जब कि रूस हमसे बड़ा धार्मा है कि वह भारत और पाकिस्तान के बीच मित्रता और पूरे क्षेत्र में शान्ति चाहता है। उसने इस हैसियत से कई काम किये भी हैं।

राजनीति में कौन किसका दोस्त और कौन किसका दुश्मन होता है ? राजनीति में होती ही है 'मतलब की यारी'। राजनीति धामको की होती है; उनमें नैतिकता बर्हा ? यह सोचना बेकार है। कि रूस साम्यवादी है, और पाकिस्तान साम्यवादी, दोनों में दोस्ती कैसे होगी ? हर देश अपनी मतलब देखकर दोस्त-दुश्मन बनाता रहना है। वह हिंसाचल तय करता है कि कब, किसने, किसनी, किस तरह की दोस्ती या दुश्मनी रखनी है। पाकिस्तान धर्मो तक मोहा देखकर चीन या अमेरिका की गोद में बैठना रहा है; अब रूस ने अपनी बाहें खोल दी हैं। क्या किमान पाकिस्तान की कि उसने हथियार लिये, और क्या किमान रूस की कि उसने हथियार दिये ?

वात यह है कि जब एक बार भारत और पाकिस्तान जैसे कम-जोर और गरीब देशों ने तय कर लिया कि प्रतिरक्षा हथियार से हो हो सकती है, तो हमारी यह विवजता ही क्या और अमेरिका या

देशों के लिए अवसर बन गयी। हमारे और पाकिस्तान के बीच की फतनन ने तो जमे विदेशी झूठीनीति के लिए घामघणन का काम किया। अगर हमारे शत्रुओं इसी तरह घने रह गये, अगर हमसे अपनी आन्तरिक समस्याओं के दानिपूर्णा समाधान न निदावे, और अगर हमने प्रतिरक्षा का लोबघातिमूलक कोई रास्ता न हूँदा तो हम बड़े देशों के हाथ की कठपुतली बने ही रहेंगे। वे जैसे चाहेंगे हमें नचायेंगे। क्या यह बात धर्मो बताते की रह गयी है कि बड़े देश सशक्त और सम्पन्न देश, अपने हथियार, अपने पैसे, अपने धन, अपनी कला और साहित्य, सबका इस्तेमाल गरीब और कमजोर देशों को अपने प्रभाव, और अपने प्रभुत्व में रखने के लिए कर रहे हैं ? उनकी चालों से बचना ही तो जनता को प्रचलित तरीकों से भलग हटकर अपनी प्रतिरक्षा, अपने विकास, और अपने लोकतन्त्र के नये तरीके निकालने पड़ेंगे। बन्दूक और सन्दूक की ध्वस्त्या में जनता कभी शान्त, सुखी और सुरक्षित नहीं रह सकती। •

भगवान की थाती

एक बार नारदजी जब बँडुठ प्राये, तो उन्होंने देखा कि महा-विष्णु चित्र बनाने में निमग्न हैं। विष्णु ने नारदजी की ओर दृष्टिपात नहीं किया। नारदजी का विष्णु का यह ध्यवहार बड़ा प्रपमानजनक प्रतीत हुआ। धार्मिक में पास ही सखी सखी से पूछा— “आज इनकी तन्मयता के साथ भगवान् चित्रका चित्र बना रहे हैं ?” लक्ष्मी ने कहा— “अपने सबसे बड़े भक्त का—प्रायस भी बड़े भक्त का !”

दोहरे प्रपमानित नारदजी ने पास जाकर देखा, तो धार्मिक-स्तम्भ हो गये—ममल पानावस्थित विष्णु एक मंते-जुचने, ब्रह्मन्त मनुष्य का चित्र बना रहे थे। नारदजी का चेहरा भोध से तन्मय गया। वे उन्हे पाँवों भूलोक की ओर चल पड़े। कई दिनों के अग्रण के बाद उन्हे एक क्षयन्त पिनीनी जगह पर पशु-धर्मों में पिरा एक चमार दिखायी दिया, जो पशुनी ओर पसीने से लथपथ चमड़ी के डेर का साफ कर रहा था। पशुनी दृष्टि में ही नारदजी ने पहचान लिया - विष्णु उसीका चित्र बना रहे थे। दुर्गन्ध के कारण नारदजी उसके पास न जा सके। घटस्थ होकर दूर से ही उनका दिनचर्या का निरीक्षण करने लगे।

सच्चा होने को धार्यो, किन्तु वह चमार न तो कभी मंदिर में गया और न माल मूंदकर अपने लक्षण के लिए हृदि-मरण ही किया। नारदजी के प्रोध की सीमा न रही। साप देने के लिए उन्होंने अपना तेजस्वी बाहु ऊपर उठाया। बिन्नु, सहजा लक्ष्मी ने प्रकट होकर उनका हाथ पकड़ लिया— “देव, भक्त की उपासना का उपसंहार तो देल सोजिए। फिर जो करना हो, वह कीजिए।”

चमार ने लक्ष्मी के डेर को गमेटा। सबको एक गठरी में बांधा। फिर एक मंते कपडे में सिर से रँर तक लरीर पोटा और गठरी के सामने मुड़कर विनय-विनयन लगीं में बटने लगा— “प्रमो, दगा करना, मत भी मुके ऐसी ही मुनित देना कि, धार की तरह ही पसीना बहाकर तेरी ही दृष्टि इस धारो में सारा दिन गुजार दूँ।”
—श्री रामकृष्ण परमहंस के चचनान्त के आधार पर।

स्वामित्व, साम्प्रदायी और अमानतदारी

[इस बार आर्य सम्मेलन में कई सांख्यिक प्रश्न दिये गये। प्रश्न महत्त्व के हैं। उन प्रश्नों पर बलिष्ठा में विनोबा के साथ जो संवाद हुआ, उसे हम प्रथम प्रकाशित कर रहे हैं। — सं०]

राममूर्ति : पहले नारा था—'सब भूमि गोपाल की'। लेकिन अब मुलभ ग्रामदान में हम भूमि का स्वामित्व ग्रामसभा को सौंप रहे हैं। इस तरह हम मिलवियत को समाप्त नहीं कर रहे हैं, बल्कि एक नयी मिलवियत खड़ी कर रहे हैं ?

विनोबा : ऐसा है, यह जो भाष्य में आया है—'शब्दमात्रे विवादः स्यात् न तु ग्रह-भेदः'—'शब्दमात्र' में भेद है, ग्रह में नहीं है। जमीन परमात्मा की है और उसकी तरफ से ग्रामसभा के पास है। मिलवियत ग्रामसभा की नहीं है, भगवान की है। 'सब भूमि गोपाल की' हमने गोपाल की सत्ता हटाकर ग्रामसभा की सत्ता स्थापित की, ऐसा नहीं है। गोपाल की सत्ता नाशम है। उसकी तरफ से ग्राम-सभा काम करेगी। विरासत का, पैदावार का अधिकार व्यक्ति का रहेगा और जमीन बेचने का हक ग्रामसभा का रहेगा यानी ग्रामसभा की अनुमति से गाँव के भूखंड जमीन बेची जा सकती है। प्रेम-बिह्व के तौर पर हर कोई वीसवाँ हिस्सा जमीन दान देगा तो उनमें हमने 'सब भूमि गोपाल की' मंत्र छोड़ा है, ऐसा हमें लगना नहीं।

मिलवियत किस-किसकी हो सकती है ?—

- (१) या तो उस व्यक्ति की हो सकती है,
- (२) सामूहिक यानी गाँव की हो सकती है,
- (३) सरकार की यानी 'नेशन' की हो सकती है।

एक तीन के अलावा कुछ नहीं हो सकता है। 'नेशन' की मिलवियत करना हम उचित नहीं समझते हैं। अगर बड़े-बड़े को यह मंशा हो कि जमीन सबकी है, सबकी मसाल रूप से बाँटी जाय, और मुलभ ग्रामदान में वह छोड़ा गया है, तो यह असोप गयी है। लेकिन मुख्य बात यह है कि हृदय को हृदय के साथ जोड़ना है। भूमि को आप छोड़कर जान-बूझते हैं और भूमि यही पर रहनेवाली

है। इस हालत में दिल जोड़ना ही मुख्य बात है। इसलिए मुलभ ग्रामदान लाखों होगे। पुराने ग्रामदान तो पाँच लाख में से मुकिल से पाँच-छ हजार हुए थे। क्लानि व्यापक होगी है। बाँटें बटन प्रच्छेदी चीज है, जैसे—शकराचार्य का भंडेल। लेकिन वह व्यापक कब होगा ? व्यापक तो उपासना होती है। इसलिए मुलभ ग्रामदान में हमने पुराना विचार छोड़ा। उस समय हमने देखा कि ग्रामी तक दो-चार हजार गाँव ही हाथ में आये हैं। इनकी गति से काम चलेंगा तो पाँच लाख तक कब पहुँचेंगे ? और चीज का जवाब कब देंगे ? इसलिए हमने मुलभ ग्रामदान की बात बलायी। हमारे कुछ माथियों को लगा कि यह 'वाटर डायन' किया गया है, बरखा बतया है। लेकिन जब बगाल जैसे प्रदेश में तीन-चार तो ग्रामदान हुए, तब जयप्रकाशजी के ध्यान में आया कि जिन बगाल से बापू की भी नहीं बली, वहाँ पर इतने ग्रामदान होते हैं तो यह भीय प्रथमव है। इनकी पक्षता व्यापक है। और, जिनकी पक्षता व्यापक होगी है उनमें ज्ञानि होटी है, इसलिए जयप्रकाशजी का यह बात सच थी।

राममूर्ति : पहले के ग्रामदान में जमीन का समय विवरण था। नये ग्रामदान में नहीं है। केवल बीधा-बिम्बा में 'मिडगिंग' नहीं होनी और जब 'मिडगिंग' नहीं रह जाती तो क्लानि-कारिता बड़ी है ?

विनोबा : क्लानि प्रच्छेद विचार में है और क्लानि व्यापक विचार में है। एक विचार प्रच्छेद है, लेकिन वह व्यापक नहीं हो सकता है, तो भावने स्थान पर है। लेकिन वह क्लानि नहीं हो सकता है। गाँव का विचार प्रच्छेद है। जिन जमाने में उसकी प्रायश्चित्त की उस जमाने में - काल के कारण उपयोग हुआ। लेकिन समझने की बात है कि आज की प्रच्छेद विचार क्लानि

करेगा जो व्यापक बन सकेगा। मुझे उस बात उम्मीद नहीं थी और आज भी नहीं है कि पुराना ग्रामदानवाला विचार एक 'बीजरेतुड पोरिण्ड' (संघटित काल) में व्यापक बन सकता है। अपनी पीढ़ी में जो, यह प्रथमव दिखता है और भागे तो और कम सम्भव होगा, क्योंकि जन-सहया बड़ रही है। एक हालत में यह काम और बटिन होगा। फिर लोगों को दूसरे धर्मों में लगाना पड़ेगा। इसलिए जमीन का बंटवारा तो 'देवेन' (प्रतीक) स्वरूप हो होगा। इस में सामू-हित मिलवियत मानी गयी है। तो साम-गाय एक चीज मानी गयी है कि 'किंचेन गाडेनिग' के तौर पर हर एक को पौन एकड़ जमीन दी जानी चाहिए और बाकी जमीन की मिलवियत सामूहिक होगी चाहिए। मैं सोचता हूँ, भारत में मैं बीसवाँ और हर परिवार को पौन एकड़ दूँ तो सामूहिक मिलवियत के लिए जमीन बटिन नहीं रहेगी। बलिष्ठा में टोटल 'त्रिबोड्राफिक्तन एरिया' (कुल भोगोपनि प्रयोग) आया मूड है। जिनमें पहाड़, नदी, ताल, उपर सब कुछ था गया। तो फिर भारत के लिए कितना धारणा ? ल-पीयार्ड एरर। इस हालत में 'किंचेन गाडेन' के लिए जमीन बटिन दो जाय तो सामूहिक मिलवियत के लिए कुछ भी रूप नहीं रहेगी।

इसलिए भारत की परिस्थिति देखते हुए मुलभ ग्रामदान अत्यन्त स्वाधर्ष्य चीज है और प्रच्छेदी भी है। हमने यह भी कहा है कि गाँव में जमीन की विषी होगी, तो उपर गाँव भी बीसवाँ हिस्सा बंटना चाहिए। बिगिने २० एकड़ जमीन शरीरी तो उसे एक एकड़ जमीन दान देनी होगी। मुलभ ग्रामदान में 'घाम-मो' के लिए ५० बी हिस्सा देने की बात है, सुनाते का गरी, ग्रामदारी का ६० बी हिस्सा देने की बात है। अगर मैं आपकी धीनते रिगुन जमीन के साथ और एक २० बी हिस्सा दूँ, तो आपकी उसमें मेरुन बनने पड़ेगी, लेकिन ग्रामदान के द्वारा तो पैदावार का ही हिस्सा देना है। इस तरह कुछ मिलकर आठवाँ हिस्सा देना और 'किंचेन प्रयोग' (समानोपकरण की प्रक्रिया) जारी रहेगी। आप की विडिनी जमीन के बारे में बार-बार सोचेंगे, बीसवें-

विपना में गांधी-विनोबा की याद

रात्रि में गनाटे को बोगडी हुई हमारी रेल निवटवत्तड को गेले छोडकर प्रायिड्या की पवती पर रीड रही थी। यूरोप की रेल शक्तप्रीडम होली है और सोमाषी पर दीना उरक के भेड प्रायिड्य तथा रस्टम की चर्चिग के लिए धरने पहरेदार भेजने हैं। वे कभी नींद भंग करते हैं तो कभी सामान की तहरीकत के नाम पर गम करते हैं। कभी कभी यात्रिमा और पहरेदारों ने बीच खवानी लग को छिड जाता है। इन सब धनुषधरो का भारत ही रंग होता है जो कारी मयभ भी खती करता है। यूरेस और विपना के बीच पूरी गल क सफर है। रेल बहुत महती है पर भीड बाड का सामोरीगाल नहीं। प्रखर लोग बार से सात्र करते हैं, या फिर हुदादिमाल में।

विपना की पहली रेल मुहल महल-नदर की तरफी के शरख भती प्रवेन हो रही थी। प्रायिड्या का प्रथम-द्वान भतर-श्रीमता की झडक दे रहा था। पबिनी-यूरो के लिए भी और पूर्वी यूरो के लिए भी प्रायिड्या झर को भंति है। प्रायिड्य-श्रीर यन सामान्य के दशद्वाम को प्रायण हवा के भी सुनो या सक्ती है जब कि १२ देगो के नामरिडक पर ही ल्याम-युव में बंधे हुए वे। काण-हरीरिए प्रायिड्या के सातावरण में शिंचि पावभ-भङ्गिती एव स्वभाष की महरी उषा है। यह बाडा ही है कि युव

—डुकडे इडडा कले बाहिए कगह बावो पर धारयवता के प्रभार मोचरी।

राममूर्ति प्रामाण्य में दुन्दुलिन का निजात नहीं है जब कि बाणु ने सबसे द्रविड और दुन्दुलिन पर ही गिग था ?

विनोबा : यह प्रतीक बल है। यह प्रमाण परले उजा वा मुकताम में। जब कहा गया था कि बाणु का विचार दुन्दुलीगिग वा है और वडा भोजनीगिग ड्रानवर (मिच विवड वा ह्यागारल) कहा है। तब की मनशाया वा कि दुन्दुलीगिग वा प्रथ रवा है ? मिच धरने युव के लिए डुली है। उमर दो लगन है—(१) युव की यत् के उमर समर्थ बनार उनके हाथ में सब कुछ सोचन बाधता है। (२) जब तक उनके हाथ में नहीं सोचन सब उरक बड प्रावी जितनी विपना करेगा उतने न्याय विजय धरने के भी करेगा। बहन प्रपरी विपना कल्या और बाणु ने दुम् की बला बड डुली वा लगन नहीं है। मैं उजबन डुली

मोचिडन सध की धरती के चरण पखागो यह नदी कानि सावर से जाकर मिल जाती है। भाड देगो को एव ही पले में फिर देने वा काम करनेवानी इन नदी को गुग से कम पबिच नहीं कहा वा गुजल। इनालक विपना ने घनेक कलकारो मनीततो और दासिको को प्ररगा दी होगी। महानु सती-साथी को प्ररगा में लेकर महानु मानम शारी प्रायण तक जैले लगेगो की रचना भूमि विपना रही है। तनीन और नाटक के प्रती यूरोविपनो के लिए विपना मक्का की तरह महत्वपूर्ण है। गांधी परिलख की हुमागो मिच कल्या भीर बहुत के जीवन को गांधी और बीधोवन ने प्रभावित किया है इगलिष प्रावी की धनु के बाद वे विपना घाहर रहने लगे हैं रात्रि भवनी सुभावरमा में वे बीधोवन के समीत का सागिण्य पा सक।

भीरा बहुत से मुलाहात

मैं भीरा बहुत से कभी विपना हुमा रही पर। भारत दैत विडिन छोडकर के भारतीय नामिक बन गयी भी और धर भी वे विपना भारतीय प्रायसोटी पर रह रही है। मिण्डु गांधी के बाद के भारत में या गांधी रहित भारत में उनके लिए कोई प्राण नहीं बकी होगी और प्रायण दुनीरिए के बीधोवन को पाटुलक मिण्डुली के निरट धाकर बम गयो और उदो युवान लतावर जमकर युके नेटव प्रगटना हुई।

शांति मान्योलन और रामदास

विपना पूर और पबिच के बीच युव की तट्ट है। इगलिष यहाँ उनके दानरीडिय शांति प्रायोलनो के प्रयाण बायोवर है। शांतिबादीयो के युव संघष की धनरय कलेशनी उषा सरदाम और उताम विवड के प्रगलीगिग (शरिषवती) को शानि के कार्य जयो में प्रा नेरी की प्ररगा देीशाकी संस्था केनेगलिष धाक रीच-मोनिपलन (एक-डी-कार) के के-गीय बादीय विपना में ही है। गीवर-नयाव की घोर से भी यहाँ एक बाउदीयिय नेत्र है। गवेरर के-ने संघातक श्री मरकराक एक-डी-घोर-घार-के मनी श्री लनेट एव प्रागिण्य

(उत्तर प्रागले बंड में)

पान्ति-फ्रान्कोलन के दो प्रमुख नेता, श्रीमती हिल्डगार्ड गोम्स एवं डा० प्रवास के साथ एक मधुकर मीटिंग में हमारी बातचीत हुई।

वैचारिक दृष्टि में तो उन सज्जनों को विशेष कुछ समझने की जरूरत नहीं थी, क्योंकि वे सभी शान्तिवादी हैं और सर्वोदय विचारों की मूलभूत बातों से परिचित हैं। परन्तु वर्तमान गांधी-फ्रान्कोलन, ग्रामदान भी उन्नत विचारों एवं विचारों तथा विज्ञान-मन्दिरों में आधुनिक-ज्ञान की समावनाओं के बारे में चर्चा करने के लिए हम एवत्र हुए थे। श्रीमती हिल्डगार्ड गोम्स विशेष रूप में दक्षिण अमेरिका की समस्याओं का अध्ययन करती रही हैं और वहाँ के फ्रान्कोलनों के साथ निवृत्त से सम्बन्ध हैं। आर्थिक विषयगत, सामाजिक अन्वेषण और मानवीय शोषण के खिलाफ विधायक शक्ति का कार्यक्रम दिखे बिना कोई हिंसा विरोधी बातेंवाला शान्ति-फ्रान्कोलन नाकामयाब ही रहेगा, इस बात पर वे काफी जोर दे रही थीं। यूरोप का परंपरागत शान्ति-फ्रान्कोलन दूसरे दिशा में अथ सोचने लगता है, और हमीलिण्ड वहा ग्रामदान, जिज्ञादान एवं ग्रामदान की अन्वेषण जानकारी प्राप्त करने के लिए वेहद उत्सुक हैं। इन मित्रों ने ग्रामदान, सुष्टि, ग्रामसभा, उसके बाद का निर्माण कार्य, सरकार के साथ का हमारा सम्बन्ध, इत्यादि सबलों को समझने के लिए हमारे साथ कोई तीन-चार घण्टे चर्चा की।

नॉनवायनेस इंटरनेशनल

“जिस प्रकार ‘कम्युनिस्ट इंटरनेशनल’ है, उसी प्रकार हमें ‘नॉनवायनेस इंटरनेशनल’ की बात दिमाग में रखकर काम करना चाहिए। अमेरिका में नीची लोग कोई कदम उठाते हैं, या भारत में विरोध का प्रामदान चलता है, या सिमली में डेनिलो डोवरी भाषिणा विरोधी फ्रान्कोलन करते हैं तो इन आधुनिक फ्रान्कोलनों के सम्बन्ध में हमारे विषय के आह्वानवादीयों को ‘मोसिडेरेटी’ जाहिर करना चाहिए।” एक० प्रो० मार० के मनी रेनेटी ने कहा।

हम विद्यमान में अन्तर्राष्ट्रीय ‘पीस इस्टीमेट’ के प्रतिनिधि थे। ‘अन्ट पीस काउन्सिल’

हजारीबाग-गोष्ठी का निष्कर्ष

सर्वोदय की राज्य-व्यवस्था

गांव से राज्य और राष्ट्र-स्तर तक के संगठन के बारे में
बिठन और विवेचन की आवश्यकता

काफी विचार-विमर्श के बाद इस गोष्ठी में ऐसा महसूस किया गया कि सभी देशों में राजनीतिक संगठन में इन दिनों गांधी की सबसे कम महत्त्व दिया जाता है, जिसके फलस्वरूप न जाने कितनी समस्याएँ संधी हो गयी हैं। अपना देग और राज्य इसका अभाव नहीं है। अतः यह गोष्ठी सर्वप्रथम जोर डालती है कि ग्रामदानी गांधी की ग्रामदान ही देश की स्थानीय से लेकर राष्ट्रीय स्तर तक की सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक रचना की मुख्य इकाई होगी। ग्रामदान फ्रान्कोलन के कारण गांव के संगठन का चित्र सर्वोदय-दान के अनुसार स्पष्ट हुआ है।

परन्तु दूसरे ही चरण में यह भी महसूस किया गया कि जिला और राज्यदल के रूप

के अभावधान में यह इस्टीमेट चलता है। इस्टीमेट के प्रमुख सचालकों के साथ भी हमारी बन्धी बैठक चली। गांधी ने विषयता पूर्ण आर्थिक रचना की बदलने के लिए शान्तिपूर्ण मध्यम की जिन प्रक्रिया की विवेचना की, उस पर अंधेरे धोष का नाम गांधी-यतान्दी के अभाव पर यह इस्टीमेट करने काय में लेना चाहिए है। साथ ही गांधी ने दक्षिण अमेरिका में रजिस्ट्रार एवं भारत में जातिभेद को समाप्त करने का जो मध्यम किया, उस पर एक हीमातर करने की योजना भी इस्टीमेट कर रहा है।

दूसरे ही के मनी डा० एरिच जोरर ने मुझे बताया कि एक आधुनिक लेखक श्री वेचो ने गांधी पर एक अत्यन्त नाटक लिखा है, गांधी-यतान्दी के शीतल यह नाटक प्रदर्शित करने की योजना बनाने चाहिए। आधुनिक के यह-विद्युत पिछा लाग्नी प्रो० अर्नेस्ट रिचर की गभीरता में विवेकीकरण एवं योनों से दमिठ समाज को मानवीय-रकेल पर संगठित करने के गांधी-वैचार का महत्त्व स्वीकार करते हैं।

में फ्रान्कोलन के बढते चरण के अनुसार अतः यह आवश्यक हो गया है कि गांधी के बाद प्रत्यक्ष से जिला, राज्य तथा पूरे देश के स्तर तक के राजनीतिक संगठन का अन्वेषण स्पष्ट होना चाहिए, जिसका अर्थ ठक निवृत्त अभाव रहा है।

इन मन्दिरों में यह गोष्ठी समझती है कि विचार की एक विशेष परिस्थिति है, क्योंकि यही ऐसा राज्य है, जिनमें सारे देश में सबसे पहले राज्यदल का सन्तान लिया है और यहाँ के लोग इन घोर प्रयत्नशील भी हैं। साथ ही इन राज्य की राजनीतिक परिस्थिति भी हमें मजबूर करती है कि हम सर्वोदय-दान के अनुसार राजनीतिक संगठन की आधुनिक और वैश्विक योजना प्रस्तुत करें। इसलिए—

सुप्रसिद्ध जयन्त-लेखिका एवं देव बल की अग्रणी श्रीमती हिल्डे रील, यूनाइटेड नेटवर्क एगोमिण्डन के मंत्री श्री आर्येन मुन्टेन हागेन, आस्ट्रो-इन्डियन एगोमिण्डन की अग्रणी श्रीमती बेचरिनद एव उनके प्रोफेसर पति इत्यादि अनेक दिनपारा अग्रणी से हमारी मुलाकात हुई। इन सब लोगों से बातचीत करने के दौरान मुझे बार-बार महसूस होता है कि यदि हमारा यह कार्य कायम रहे मने, इन सब लोगों की हमारे फ्रान्कोलन की नियमित जानकारी भेजी जा मने, ग्रामदान की मोटी-मोटी उन्नतियों का परिचय देनेवाली कोई छोटी-सी पुस्तिका इन्हें भेजी जा मने, तो वास्तव में ‘नॉनवायनेस इंटरनेशनल’ का निर्माण करने में इन लोगों को पूरा महत्त्व प्राप्त होगा। निष्पत्ति ही अन्वेषण की बुनियाद में हमारा विश्व के साथ सर्व बढता चाहिए और ग्रामदान की बात मारे नगरी की आतंकी में अधिक-से-अधिक जानी चाहिए।

—सतीशकुमार

भारत में छात्र-आन्दोलन संदर्भ . राष्ट्रीय नहीं, स्थानीय विशाल-व्यवस्था में परिवर्तन आवश्यक

'भारत का छात्र आन्दोलन दुनियाँ में विभाजित है कि अभी तक उसका कोई राष्ट्रीय स्वरूप नहीं बन पाया है। यहाँ के छात्र आन्दोलन ज्यादातर स्थानीय समस्याओं को लेकर होते हैं। छात्रों का यह असंतोष बलुन परिवार और समाज में व्याप्त व्यापक असंतोष और निराशा का ही एक भाग है। छात्र के भारतीय छात्र जो भी कर रहे हैं वह इसके पूर्व की पीढ़ी को देन है। इस स्थिति में परिवर्तन के बिना शिक्षा व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन आवश्यक है।'

उन निष्पत्ति है गांधी विद्या स्थान, वाराणसी में सांख्यिक शिक्षणविचार-मोहरी के, जो नियमन के क्षेत्र रहे छात्र आन्दोलन की लहर में उदयन स्थिति पर विचार करने के, निम्न सांख्यिक की गयी थी।

गाँधी की सम्प्रदाय की भी अग्रगण्य मारा धरु के और उद्घाटन किया भी प्रचलन पर कर्षण ने। छात्रन अपने उद्घाटन भाषण में कहा कि भारत के युक्त आन्दोलन का न तो कोई अन्त है और न ही उसका कोसलिक सम्बन्धों के सम्बन्ध हैं। छात्रों दृष्टि में भारत का युवा आन्दोलन प्रतिक्रियावादी और पुनर्जागरणवादी है।

और अग्रगण्य माराधण ने कहा कि आन्दोलन युवाओं की स्थिति को उनके परिचय में ही समझा चाहिए। अपने इस भाषण में कहा किया कि भारतीय युवा आन्दोलन में सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व शिक्षित हो रहा है राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के रूप में, जिसका आराधण की इस छात्रों का भी पूरा करना देन न भारतीय विचारकों का प्रथम कर्षण हो गया है।

इन कर्षण को पूरा करने के लिए गाँधी का कहना है कि इस समस्या पर विचारकों के विचार आभारित किये जायें। ताज ही अन्तर्गत समाज के रूप आभावों नियन्त्रण के ही भीतर दिया की एक गाँधी के आराधण विचार में किसी स्थान में शिक्षा कोप नियम इस विचार के सांख्यिक तथा सांख्यिक मभी पहचानों पर पूरा विचार किया जा सके है।

राष्ट्र थाका है कि भारत हिंदू राष्ट्र है और दूसरे लोग आक्रामक हैं। भारतीय एवम् और कोषलिक के निन्दालो के लिए—किंतु भारत में शिक्षित दिनों विचलित किया है यह एक धारक स्थिति है। अपने कहा कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ वसमत सांख्यिक और सामाजिक क्रांति को सम्पन्न देना है इसकी शक्ति के बढ़ाने से सामाजिक और सांख्यिक सुधार काशी की सम्पत्ति हो जायगी।

गाँधी ने सर्व सेवा संघ के आराधण की सम्बन्धन कोषली ने इस बात पर इस प्रकट किया कि भारत का छात्र आन्दोलन एक क्रांति में विभाजित है; इसकी दृष्टि से छात्रों का आन्दोलन कोई राष्ट्रीय आन्दोलन नहीं रह गया है; अपने कहा कि छात्रों को विभिन्न समस्याओं पर आन्दोलन में विचार करना चाहिए।

परिचरिणी परिवर्तन दिनेश के मारादक को. अन्तर्गत सांख्यिक का मन का कि भारत के लोग स्थानीय समस्याओं पर ज्यादा ध्यान देने हैं और यहाँ के परिचारिकों को यह सामुह्य नहीं है कि कोई स्थिति उत्पन्न हो जाने पर उसका सामना किया जग से किया जाय। भारतीय संघ की परिचरिणी कोषली, दोनों जगह सचको तथा सचरिया की आराधण कर्षण की उम में ही मनाधिकार दे दिया अन्तर्गत चाहिए। आराधण किया में सुनिवार्य परिवर्तन की आराधणका पर और देन हुए कहा कि कोषली सटी में दिया देन की सांख्यिक स्थिति के संरक्षित होनी चाहिए।

राजस्थान के विचार-विचार के अग्रगण्य

निदेशक श्री पी० बी० अन्त वा मन था कि हमारे युवा कोई कार्यक प्रान्ति करने के योग्य नहीं है। छात्रों की जिन, बुद्धि का के विचार उन्हें बलुन विरोध करना चाहिए, उसे उच्छेद नहीं किया। अपने कहा कि जिनका और अन्तर्गत उसी व्यक्ति को होना चाहिए, जिनका बलुन शिक्षा के प्रति स्वाभाविक सम्मान हो।

गांधी शिक्षा स्थान के सयुक्त निदेशक मोरार मुगत दासमुगत ने कहा कि भारत युवाओं की समस्या मभी लोगों के सामने एक प्रथम प्रथमविद्युत के रूप में उभरिथ है। शिक्ष के युवाका म उदयन इन अन्तर्गत का निराधण अपने बलुनपरक दृष्टि म करने की आराधण वहाँ उभरिथ सोचो म को।

एवम् विचारविद्यालय के समानांतर विभाग के अन्तर्गत प्रोफेसर डा० नरसिंहर प्रभाद के एक देना आराधण विचारविद्यालय धर्मिण म अन्तर्गत बा सुभाष दिया, जिनके न केवल विचारविद्यालय की स्वायत्तता की रक्षा हो बल्कि उममें प्रगतिशील पाठ्यक्रम और वैज्ञानिक परीक्षा पद्धति का भी समावण हो।

गांधी हिंदू विचारविद्यालय के मारा आराधण विभाग के प्रोफेसर डा० एच० के० श्रीवास्तव ने कहा कि भारतीय युवा आन्दोलन में न केवल अपने को अन्तर्देशीय सम्पन्न म आराधण रखा है बल्कि अपना अन्तर्गत कोई राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ म भी बन पाया है। यह स्थानीय और क्षेत्रीय सम्बन्धों में युवा उदयन उच्छेद हुआ है, जिनके भीषण आराधण का मध्यस्थतावादी प्रवृत्ति काय कर रही है।

यहाँ के युवाओं के अपने के अन्तर्गत कि नई वह प्रवृत्ति है, का उदयन युवाओं की शिक्ष के लोको म प्राप्त की है कि यह सम्पन्न को हट करने के लिए मध्यम का उच्छेद प्रवृत्ति गत करे।

मराठिने गुवायरात (राजस्थान) के अन्तर्गत अन्तर्गत ए० के० अन्तर्गत ने कहा कि यह कहना विचारुण मनन है कि भारत में युवाओं का कोई विरोध ही रहा है। अन्तर्गत से-अन्तर्गत इने केवल छात्रों की बेचनी कहा का अन्तर्गत है।

भाषने कहा कि विद्या-संस्थाओं के प्राथ-
न्य में इस प्रकार का परिवर्तन किया जाना
चाहिए, जिसमें छात्र हर समय निरिक्त-निरिक्त
उपयोगी काम में लगे रहें और उन्हें कोई
प्रशासनिक कार्य करने का मौका ही न
मिल पाये।

भाषने कहा कि जिस नेत्रों से छात्रों की
संख्या बढ़ रही है, उतने दिग्गम से खेल के
मैदान, पुस्तकालयों और छात्र की अन्य
सुविधाओं का विस्तार नहीं हो रहा है। यह
भी उनके घस्तोष का एक प्रमुख कारण है।
भाषने छात्रों और अध्यापकों के बीच की
दूरी को समाप्त करने की आवश्यकता पर जोर
दिया और कहा कि स्कूलों में नैतिक शिक्षा
और कर्तव्य-भावना के विकास पर विशेष
जोर दिया जाना चाहिए।

भाषने ऐसे भावनासौम्य स्कूलों की बड़ी
संख्या में स्थापना पर जोर दिया, जिसमें
छात्रों पर कड़ा अनुशासन रखा जा सके और
जहाँ कोई राजनीतिक हस्तक्षेप न कर सके।

प्रसौपा के नेता डा० रामचन्द्र शुक्ल
एम० एल० सी० ने कहा कि मूल्यों में तेजी
से हो रहे परिवर्तनों और धनके प्रकार के
सम्पर्कों के कारण युवक पीढ़ी में बेचैनी होना
स्वाभाविक है। उनमें व्याप्त अनुशासनहीनता
भी परिवार और समाज में व्याप्त भ्रम अनु-
शासनहीनता का ही एक भ्रम है। छात्रों में
व्याप्त इन बुरादमों का एक मुख्य कारण
हमारे राजनीतिक नेतृत्व का दिवालियापन
भी है।

भाषने कहा कि विद्या समाप्त करने के
बाद काम न मिलने की सम्भावना और भ्रष्टा-
चार की घोर स्थितियों के कारण युवकों में
निराशा फैल रही है, जिसकी वजह से वह
सामान्य उदात्तता पर भी उबल पड़ता है।

बिनीमाजी का कार्यक्रम

बम्बानर (बिहार) : ३१ अगस्त '६८ तक
मा० बिहार सादी-प्रामोद्योग संघ,
मोतीहारी, जिला : बम्बानर
मुनरफरपुर (बिहार), ७ से १२ सितम्बर '६८
मा० बिहार सादी-प्रामोद्योग संघ,
सबौरधपाम, जिला : मुनरफरपुर

खादी और प्रामोद्योग पर अशोक मेहता समिति का प्रतिवेदन

निष्कर्ष और सुझावों का सारांश—१

खादी और प्रामोद्योग समिति ने, जिसके अध्यक्ष केंद्रीय पेट्रोलियम, रसायन और
सापार्थिक मुरक्षा-मंत्री श्री प्रमोद मेहता थे, हाल ही में भारत सरकार को प्रस्तुत भाषने
प्रतिवेदन में मुख्यतः सुदृढ़ "शामीय कार्यक्रम" के लिए वृत्ति-प्रौद्योगिक आधार" बनाने
हेतु खादी और प्रामोद्योग-कार्यक्रमों को नया रूप देने की सिफारिश की है। यह प्रतिवेदन
समय में भी पेश कर दिया गया है।

समिति ने कहा है कि खादी-कार्यक्रम के प्रयोजन और मूल दृष्टिकोण का निर्धारण
तीन वित्तीय उद्देश्यों की रूप में रखकर करना चाहिए एव इन तीनों में प्रत्येक पर
समुचित जोर डालना चाहिए। ये तीनों उद्देश्य हैं - (१) बिकने लायक चीज का उत्पादन
करने का आर्थिक उद्देश्य, (२) लोगों को रोजगार देने का सामाजिक उद्देश्य और
(३) लोगों में आत्मनिर्भरता पैदा करने तथा एक सुदृढ़ ग्रामीण सामुदायिक भावना पैदा
करने का बृहत्तर उद्देश्य।

समिति की सिफारिशों में से विशेष महत्व के हैं - वर्तमान खादी और प्रामोद्योग
वर्षीय की शामीय उद्योग-प्रयोग तथा राज्य खादी और प्रामोद्योग-मंडलों की राज्य
प्रामोद्योग उद्योग-मंडलों में पुनर्गठित करना; शामीय उद्योगों के लिए समुचित प्रौद्योगिकी की
समस्याओं पर अनुसंधान करने हेतु छोटे उद्योगों के लिए एक प्रौद्योगिक अनुसंधान-संस्थान
की स्थापना, प्रामोद्योग उद्योगों की स्थापना में प्रतिभरिच रखनेवालों को उत्पादन या वित्त
के स्तर पर तकनीकी, सेवा और विशेष सुविधाओं के रूप में प्रोत्साहन देना चाहिए,
न कि सरकारी सहायता पर आश्रित निर्भर करना; कार्यक्रम के लिए प्रबन्ध अनुदान,
बिन्दन-मुक्त, उपदान, परम्परागत कताई (अम्बर सहित) प्रशिक्षण आदि के रूप में प्रति
वर्ष दिये जानेवाले सरकार के कुल रकम के लिए पाँच करोड़ रुपये की उच्चतम
राशि निर्धारित करना, परम्परागत खादी-कार्यक्रम व्यक्ति व ग्राम-स्वावलम्बन के लिए
संगठित करना तथा बिन्ने के लिए खादी का उत्पादन नये नमूने के चरण पर बने मूल से
करना, धपने राज्य में कार्यक्रम के कार्यान्वय की पूरी जिम्मेदारी पाँच वर्षों के अन्दर ले न
हमके लिए राज्य-मण्डलों को मजबूत बनाना, परम्परागत उद्योगों में से प्रत्येक को—खादी
की भी—जीव्य बनाने हेतु उनकी तकनीकी में निरन्तर सुधार लाने के लिए महत्वपूर्ण कार्यक्रम
बनाना, केवल उन्हीं उद्योगों को प्रोत्साहनपूर्वक सहायता देने के लिए लेना, जिसमें एक
निश्चित अर्थिक के बाद अक्षयण भार तथा ऋण न उसके बजाय के मुगलतन के लिए लागत
अल्प के ऊपर पर्याप्त बचत से सम्भाव्यता हो।

समिति का गठन जून १९६६ में भ्रम तक
खादी और प्रामोद्योगों द्वारा की गयी प्रगति
का मूल्यांकन, सप्टेम्बर तक पहुँचाने का परी-
क्षण तथा अनुसंधान योजनाबद्ध में आर्थिक-वित्त
दिये जानेवाले कार्यक्रम के अन्तर्ग में; बनीगन
एवं खादी और प्रामोद्योग कार्यक्रमों के
कार्यान्वय में लगे अन्य संस्थाओं के बीच
सम्पर्क में सुधार लाने के लिए आवश्यक
स्वस्थापक अथवा वैधानिक परिवर्तन हेतु
उपलब्ध की सिफारिश करने के लिए किया
गया था।

समिति के सदस्य थे : श्री प्रमोद मेहता
(अध्यक्ष), श्री ज. न. डेबर, श्री संजुआर्द
धियाई, श्री जी. रामचन्द्र, श्री एम. पी.
भांगव, श्री अन्वेषण, श्री अण्णगाह
सहस्रकुडे, श्री मनमोहन चौधरी, डा. पी.
एन. लोनायन, डा. डी. के. रामनेर, श्री
अन्वेषण श्री पाटील, श्री टी. व. अन्वेषण
भागा, डा. महादेव प्रसाद, श्री अन्वेषण
चन्दा, श्री डी. के. मन्वेषण (अधिकारी) और
श्री मुन्वेषण मन्वेषण (अधिकारी)।

भाषने डेढ़ साल से भी अधिक के कार्य-

कार में ममिन्द्रि ने विभिन्न कार्यक्रमों की प्रगति के अद्ययन में समीक्षा, राज्य-मण्डलों और अन्य सम्बन्धित संस्थाओं द्वारा प्रस्तुत, प्राकृतिक व अन्य मामलों का अध्ययन व उनके सगठनात्मक स्वरूप का मूल्यांकन करने के अनिश्चित ध्याचार्थ विनोदा भावे तथा श्री जयप्रकाश नारायण से मुलाकात की, चन्द्र राज्य खादी और ग्रामोद्योग मंडलों के अध्यक्षों, खादी ग्रामोद्योग कार्यों में लगे प्रमुख रचनात्मक कार्यकर्ताओं व प्रसिद्ध कर्मशास्त्रियों को कार्यक्रमों के विभिन्न पहलुओं पर अपने विचार व प्रभाव प्रस्तुत करने के लिए निम्नित किया, राज्य मण्डलों के खादी ग्रामोद्योग कार्य में लगे कार्यकर्ताओं व समिति के सदस्यों के साथ अलग अलग व सामूहिक रूप से विचार विमर्श किया तथा कार्यक्रमों का प्रत्यक्ष वाचनिकयन देखने हेतु विभिन्न राज्यों के चन्द्र बुनियादा उत्पादन-केन्द्रों का निरीक्षण किया।

यहाँ पर ममिन्द्रि ने प्रतिवेदन का भावपूर्ण अध्ययन प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें 'निम्नो धोर मुद्याओं का सार' है

निष्कर्ष और सुझाव

१ खादी-ग्रामोद्योग कार्यक्रम के सम्बन्ध में मूत्र दृष्टिकोण विकासोन्मुख होना चाहिए और देश के रोजगार की माग रख परिस्थिति तथा भाविक विकास के सद्य को ध्यान में रखकर निमित्त होना चाहिए। प्रायिके पार पच्छिम उद्योग के सम्बन्ध में, विशेषे खादी भी शामिल है, एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम उत्पत्ती तकनीक के अनिश्चित सुधार व किए बनाना चाहिए, ताकि यह उद्योग यथनयन बन सके। पारंपरिक ग्रामोद्योग उद्योगों में पहले से ही सय हुए भारतीय उच्चतर तकनीकों को अपनाते की अवधि से बेजार न हो जायें, इसके निम्न सुरक्षा-अवस्था होनी चाहिए। जिन पारंपरिक उद्योगों में प्रौद्योगिक निम्न स्तर के तकनीकों का काम में लाया जाना है, उनमें और अधिक भावनी जायें, इसके लिए प्रशिक्षण की सुविधाओं और अन्य सहायता द्वारा निजी तरह का प्रोत्साहन नहीं दिया जाना चाहिए। छोटे नगरीय और शीघ्रों में विभिन्न उद्योगों के बीच के निर्माण के

लिए सामाजिक उपरिधय तथा अन्य आवश्यक सुविधाओं—जिनमें यातायात, पानी और बिजली की पूर्ति, श्रृण, तकनीकी प्रशिक्षण तथा परामर्श आदि की अच्छी व्यवस्था शामिल है—के प्रवर्ध के लिए समुचित उपयोक्त अवसरों का प्रावण्य है। विशेषकर पिछड़े हुए क्षेत्र और मूला तथा बाढ़ जैसे महाधायक कठिनाई की परिस्थिति में उच्चतर तकनीकों को अपनाते की प्रकृति को समुचित रूप से समर्थित किया जा सकता है, ताकि मौजूदा पारंपरिक कारीगरों को कुछ लची अवधि के लिए सरक्षण दिया जा सके।

मूत्र दृष्टिकोण

२ खादी कार्यक्रम के प्रयोजन और मूल दृष्टिकोण का निर्माण तीन विस्तृत उद्देश्यों को लक्ष्य में रखकर करना चाहिए एवं इन तीनों में प्रत्येक पर समुचित और डालना चाहिए। ये तीनों उद्देश्य हैं

- (१) बिचने साम्य कीय का उत्पादन करने का प्राथिक उद्देश्य,
- (२) लोगों को रोजगार देने का सामाजिक उद्देश्य, और
- (३) लोगों में आत्मनिर्भरता पैदा करने तथा एक सुदृढ़ ग्राम सामुदायिक भावना पैदा करने का वृत्तार उद्देश्य।

इन तीनों उद्देश्यों में से किसीकी उपेक्षा नहीं की जा सकती है, पर साथी कार्यक्रम के भावी विकास में उत्पादन के ऐसे तरीके पर श्रमशायिक जोर डाला जाय कि प्रत्यक्ष या प्रत्यक्ष अनुदान और मुक्त बुलाई की सुविधाओं के रूप में सरकारी सहायता पत्रकर यथासम्भव कम-से-कम रह जाय। इसके लिए कलाई बुलाई की उच्चतर तकनीकों को अपनाते होना और सगठन के उपस्थितियों को पटाना होगा।

रोजगार

३ जैसे परिमाण में रोजगार देना खादी कार्यक्रम का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य जारी रहना चाहिए। शायीय क्षेत्रों में जीवन के निम्न स्तर, अव्यधिक आर्थिक बेकारी की निर्मित और शायीय परिवारों के लिए प्रायिके किन्हीं सहायक क्षेत्रों की आवश्यकता के कारण यह अनिवार्य हो जाय है कि खादी-

कार्यक्रम को एक समुचित स्तर पर कियन रखा जाय। शायीय क्षेत्रों में काम देने के प्राय सभी जरिये इस बीच क्षेत्र निकाले जायें।

४ खादी कार्यक्रम में रोजगार देना एक साम्य के रूप में न मानकर शायीय परिवारों की प्राय को बढ़ाने के एक साधन के रूप में मानना चाहिए। अतः खादी-कार्यक्रम से छोटे तथा मध्यम श्रेणियों के श्रमिकों के प्रतिरिक्त ज्यादा जरूरतमंद लोगों के, सामकर सेलिहूर मजदूरों तथा गरीब किसानों के परिवारों को महत्वपूर्ण धना मिलना चाहिए। इस कार्यक्रम के द्वारा शायीय दैनिक मजदूरी इतनी मिलनी चाहिए कि जरूरतमंद लोग हाथकलाई और बुलाई को अपनाते के लिए माकपिन हों।

५ खादी के जिन मौजूदा कार्यक्रम में सन् १९६२-६६ में ७६० लाख मीटर बुनी खादी का उत्पादन हुआ, उसका लोंगों को पूरक तथा देश के सामाजिक उद्देश्य पर तथा लोगों में आत्मनिर्भरता एवं सुदृढ़ ग्राम्य सामुदायिक भावना निर्माण करने के बृहत्तर उद्देश्य पर जोर देने का बतयान रख जारी रहना चाहिए। इसके लिए सरकारी सहायता जारी रखनी होगी। पर इस कार्यक्रम को कार्यान्वित करने में सगठनात्मक तथा अन्य सुधारों द्वारा सरकार की कुल वित्तीय सहायता का परिमाण घटाया जाना चाहिए।

६ कुल खादी उत्पादन में वैयक्तिक स्वायत्तता उत्पादन का अनुपात अभी वैचल्य ४ प्रतिशत है। इसकी अधिक कार्यक्रम द्वारा बढ़ाना चाहिए।

७. नये खादी कार्यक्रम वाली खादी उत्पादन के भावी विस्तार के सम्बन्ध में (क) पारंपरिक, जिनमें अन्वय खादी भी शामिल है, तथा (ख) नये माडल के प्राय से उत्पादित खादी के बारे में मूल दृष्टि एवं उद्देश्य पर अलग अलग विचार किया जा सकता है। पारंपरिक खादी के बारे में दृष्टि यह होनी चाहिए कि प्रथिय का सहायता नया उत्पादन स्वायत्तता के आधार पर हो। नये माडल के चरणों की खादी के बारे में न्यायिक आधार पर इतनी विवर्धित करने की दृष्टि होनी चाहिए। सरकारी अनुदानों का परिमाण, सामकर सहायता के रूप में, बहुत कम होना चाहिए।

ग्रामोद्योग

ग्रामोद्योगों के कार्यक्रम के संबंध में अपने प्रयत्नों और संगठनों को सबसे ज्यादा महत्व के उद्योगों पर केन्द्रित करना वांछनीय है तथा ये उद्योग एक वृहत्तर क्षेत्र में फँसे हों एवम् उनमें ज्यादा परिमाण में कारीगर लगे हों, यह भी ध्यान में रखना उचित होगा। तकनीकी सुधारों और विजली के उपयोग के लिए उनमें व्यापक गुञ्जाइश होनी चाहिए।

६. ग्रामीण उद्योगों में से एक के रूप में खादी का मान्यता-प्राप्त स्थान जारी रहेगा और कुछ क्षेत्रों में ग्रामीण उद्योगों में उत्तम स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण हों। सक्ता है, पर वैज्ञानिक क्षेत्रों के विकास तथा ग्रामीण विजलीकरण की प्रगति के साथ यह महत्व है कि हृदय-संबंधी चीजों के प्रयोग तथा हृदय में लगनेवाली चीजों के निर्माण जैसे अधिक ग्रामस्थानीय ग्रन्थ ग्रामीण उद्योग खादी का स्थान ले लें। खादी के बारे में किमीका यह दृष्टिकोण हो सकता है कि यह एक स्थायी कार्यक्रम है। इसके बावजूद इस बात से सहमत हुआ जा सकता है कि निरुद्ध भविष्य के कुछ समय के लिए पिछड़े हुए ग्रामीण क्षेत्रों में तथा पिछड़े वर्ग के लोगों को काम देने के हेतु इनका एक उपयोगी स्थान होगा। इस क्षेत्र पर जोर देने कि संगठन में प्राथमिक परिवर्तन करने के ग्रामीण उद्योगों की हम धारणा को ठोस अभिव्यक्ति होनी चाहिए, जिसमें खादी का समुचित स्थान हो सकता है।

१०. आत्मनिर्भर व्यक्तियों और समुदायों के निर्माण के लिए तथा ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े परिमाण में सामाजिक एवम् धार्मिक परिवर्तन का आधार बनाने के लिए एक साधन के रूप में खादी को बित्तनी सामग्री है इसके पुनः परीक्षण की आवश्यकता है, क्योंकि धार्मिक विद्वानों की धर्म जो दृष्टि है उनके दर्शन में केवल खादी से परिवर्तन के लिए आवश्यक प्रोत्साहन नहीं दे सकते।

११. खादी-कार्यक्रम इस धर्म में धार्मिक-निर्भर नहीं बनाया जा सकता कि वह बिना सरकारी सहायता तथा छूट (रिबट) के चलने में समर्थ नहीं है। यदि खादी-कार्यक्रम से

स्व० महादेव भाई

(उपवर्तित : १५ अगस्त)

एक मोती

इनने धार्मिक की कमी पूरी कर दी है। वह धार्मिक से धर्म होने के लिए नहीं, बल्कि धार्मिक को धर्म बनाने के लिए भावा है। कहे मुझे शर्म प्राप्ति है, पर बात यह सब है कि यहाँ कुछ लोग ऐसे हैं, जो धार्मिक को धर्म बनाते हैं, धार्मिक से अपने को धर्म नहीं बनाते। ऐसे कुछ मोती मुझे मिल गये हैं। उन्हींमें से एक यह (महादेव-भाई) है। — मो० क० गांधी

× × ×

एक स्नेहिल टॉट

दान को श्रुत मिलने-भेटने के बाद मोती गये। मुझ ही मुझ मुझे बुलाकर (बापू ने) एक प्रवचन सुना दिया : तुमने प्रेम से किया है, इसलिए क्या कहूँ ? किन्तु मुझे यह कहना पड़ता है कि सामाजिक दृष्टि से तुमने बहुत बुरा काम किया। तुमने उस दिन मेरे प्राये विना भोजन क्यों नहीं किया ? मुझे उस दिन

बड़ा कष्ट हुआ। तुमने प्रीति की भावना से न खाया हो, तो वह प्रीति व्यर्थ है। बिना इस भावना से न खाया हो कि मेरे प्राये के बाद भोजन से साथ खायेंगे, तो वह तो विषय-भोग करने जैसा हुआ। मुझे मुझे उत्पन्न नहीं भोजन था, पर मैंने देखा कि तुमने खाया नहीं है। इस तरह मैं तुमने कैसे बाव ले सकता हूँ ? तुमने अपनी बुरी भारत को भी अच्छी मानने की आदत पढ़ गयी है। फर्ना बात नहीं हो सकती, ऐसा कैसे चल सकता है ?

— 'महादेव भाई की सारणी' से, पृष्ठ : १०५

× × ×

पुण्य-स्मरण

महादेव में अद्भुत सामर्थ्य थी। आज पता-पग पर महादेव की कमी घटकर रही। उसमें समर्पण शक्ति तो अद्भुत थी !

— मो० क० गांधी

ग्रामीण लोगों के कुछ वर्गों को महादेव कथा देने का मुझ प्रयोजन निम्न करना है तो इसके लिए गांधीजी सहायता और छूट देना निश्चय नवित्य के कुछ समय के लिए जारी रखना होगा। पर इस बारे में सरकारी बचन बदला धर्मनिश्चय या धर्मनिश्चय नहीं होनी चाहिए।

विद्यासागरक सहायता

१२. भविष्य में विद्यासागरक सहायता के स्थापनात्मक स्वरूप पर धार्मिक जोर न देकर विधायक स्वरूप पर धार्मिक जोर देना चाहिए। सहायता के विधायक प्रकारों में प्रतिशत, अनुदान, तथा तकनीकी परामर्श और सहायता के लिए अनुदान एवं बाँधबाहक प्रौद्योगिकी के लिए बर्ज है। किन्हीं धार्मिक-सहायता-नुसार बन्नाया जाना चाहिए। खादी-कार्यक्रम के लिए बर्ज पर ध्यान को गियायती दरें भी स्वीकार करनी चाहिए।

१३. खादी-कार्यक्रम के लिए सरकारी सहायताओं का परिमाण सीमा के भीतर रखना चाहिए। धार्मिक खादी (जिसमें धर्म चरखा भी शामिल है) कार्यक्रम के

लिए प्रत्येक अनुदान, बिना-बुद्ध, गरीबी, प्रतिशत आदि के रूप में प्रतिवर्ष दिने जाने जाने सरकारी अनुदानों की कुछ रकम से लिए ५ प्रतिशत दरों की एक उच्चतम गति निर्धारित कर देनी चाहिए। इन राशि में ऐसी वारी सहायता शामिल होगी, जिसकी धर्म-प्रतिशत सीमा में या धर्म-उत्पन्न क्षेत्रों में या एक धर्म या धर्म-धर्म धर्म में पूर्ण बर्ज के पुर्ण धार्मिक करने आवश्यकता खादी के विस्तार के लिए हो सकती है।

(आरू रटना)

मूद्रान तहरीक

जुई भाग में अद्वितीय प्राप्ति की संदेश-साहक प्राप्ति-धार्मिक श्रुत : ११५५ धर्म सेबा संघ प्रकाशन, राइसाहाट, धारणा—१

अमेरिका में अध्यक्ष पद का चुनाव

मुख्य प्रश्नों पर उम्मीदवारों के विचार

विभिन्न प्रश्नों पर उन लोगों के क्या विचार हैं जो अमेरिका का प्रमिडेट बनना चाहते हैं? प्रतीडेण्ट के इन चुनाव-पत्र में जनता की सबसे अधिक दिलचस्पी के प्रश्नों पर सभी उम्मीदवारों ने अपने विचार व्यक्त किये हैं और उनके दृष्टिकोण अधिवाधिक स्पष्ट होते जा रहे हैं।

मुख्य उम्मीदवारों के नाम हैं

डेमोक्रैटिक—वाइस प्रेसिडेण्ट ह्यूबर्ट एच० हम्ब्री और **रिपब्लिकन** सेनेटर एड्विन मैकार्थी।

रिपब्लिकन—भूतपूर्व वाइस प्रेसिडेण्ट रिचर्ड एम० निक्सन और **न्यूयार्क** के गवर्नर रीकरोलर।

अमेरिकन इन्डिपेंडेण्ट—अलाबामा के भूतपूर्व गवर्नर जॉन सी० बालेस।

इन उम्मीदवारों ने चुनाव प्रार्थना के सितारों में प्रकाशित सामग्री भाषणों वक्तव्यों तथा दस्तावेजों से की गयी बातों और पत्रकार सम्मेलनों में दो मुख्य प्रश्नों— विपत्तियों और नागरिक अधिकारों—के विषय में जो विचार व्यक्त किये वे इन प्रकार हैं

विपत्तियाँ

श्री हम्ब्री वह जानमन्द प्रशासन की नीति के हद और विह तर समर्थक रहे हैं। उनका कहना है कि प्रशासन की नीति का एकाग्र पदार्थ कोई ऐसा उपाय योजना है जिसमें शांति बनी रहे राजनीतिक समाधान के लिए बातचीत की जा सके और इस काय को सम्मानजनक तरीके से निजा जाय व कि अपने जीवन की रूपरेखा बनाने और अपनी शासन प्रणाली तथा सामाजिक व्यवस्था का निर्माण करने के बारे में लोगों के अधिकारों की धारा से बचने और वे अपने पक्षियों के साथ शक्ति से रह सकें।

श्री मैकार्थी उनको सम्मिलित में अपने विचारों के सम्मानजनक तरीके से और यथा शीघ्र उन युद्ध से अलग हो जाना चाहिए जिसका नैतिक और दृष्टिकोण दृष्टि से समर्थन नहीं किया जा सकता। यह इन पक्ष में है कि अधिकार के तिनक प्रदर्शनों में तेजी से रुकी की जाय और दक्षिण विपत्तियों को राष्ट्रीय मुक्ति मार्ग (विपत्तियों) से समर्थन की परतनी बनायी जाय।

श्री निक्सन : उन्होंने इन बातों की पैरवी की है कि बातचीत द्वारा समर्थन बनाने के लिए तिनक अधिकार और दृष्टिकोण सभी पक्ष से दबाव डाला जाय। उन्होंने अन्तर-द्वि-पक्षी है कि एडम रूप में साम्य

समर्थन करने से बचने के लिए बराबर चौकस रहने की आवश्यकता है।

श्री रीकरोलर विपत्तियों के बारे में अमेरिका की नीति के प्रालोचक होते हुए भी उन्होंने बातचीत द्वारा इन समस्याओं से निराकरण के लिए पेरिस सम्मेलन को सही दिशा में उन्मुख किया गया बतलाया है। उनका अर्थ है कि अपने रक्तों को बातचीत के दौर में एकाग्र प्रयत्न करना चाहिए जिससे दक्षिण विपत्तियों की रोक और सरकार। अधिकारी कहीं अधिक शक्ति सम्पन्नता के सम्मिलित होने पर हम व्यवस्थित ढंग में वहाँ से हटने के लिए तैयार हो सकें।

श्री बालेस इनका कहना है कि मैं सम्मानजनक शांति और दक्षिण विपत्तियों को सरकार और जनता की समर्थन की रक्षा चाहता हूँ। किन्तु कुछ एनी बातें हैं जिन्हें हमें वहाँ अपने उल्लंघन के कारण सोचना चाहिए—उदाहरण के तौर पर यह कि हमें अपने रक्तों नहीं उल्लंघन चाहिए।

नागरिक अधिकार

श्री हम्ब्री यह धारणा जीवन में सम्पूर्ण सरकार वहाँ को नागरिक अधिकार तथा सम्मान प्रदान करने के बारे में राष्ट्र के प्रथम समर्थक रहे हैं। उनका कहना है क्या हम इन में हम प्रत्यक्ष लोगों के

व्यक्तिगत अधिकारों को तरह नहीं रह सकते? जिस राष्ट्र ने राष्ट्र का विचार करना सीखा है उसे यह भी सीखना चाहिए कि बड़े और छोटे लोगों के बीच भेद को कैसे दूर किया जा सकता है।

श्री मैकार्थी यह नागरिक अधिकारों के बारे में जानना बताते हैं कि बराबर समर्थक रहे हैं। उनका कहना है कि सश्रीय सरकार की धार से ऐसे बोरदार कर्म उठाये जायें जिससे विभिन्न जातियों में सुलह-सफाई हो सके लोगों को एक विशिष्ट नागरिक अधिकारों का भरोसा हो सके और सरकारी सहायता से स्वाम्य सम्बन्धी बाधक धार लोगों को रोजगार का प्रयास करने की व्यवस्था हो सके।

श्री निक्सन अमेरिका में प्रथम प्राप्त होने का अधिकार या गोरे लोगों की दृष्टि से नहीं है—लेकिन यदि हमें अपनी जनता को एक करके अपने राष्ट्र को फिर अलग बनाना है तो हमें काले लोगों को अधिक प्रथम प्रदान करने की बात माननी होगी। अपने नगरों में शक्ति का ठीक अनुकूल रखने का एकमात्र उपाय यह है कि नीचो मोहत्तों को अस्वीकार अधिक शक्ति की जाय एसी शक्ति विषय में लोग धरती व सत्य पर अपना प्रभाव डाल सकें एनी शक्ति का समाज की राजनीतिक और अधिकार प्रविधियों में भाग लेने से मानी है। उन्होंने सन् १९४७ से नागरिक अधिकार सम्बन्धी सभी विधियों को का सम्मिलित किया है।

श्री रीकरोलर उनका कहना है कि नीचो लोगों ने व्यक्तिगत प्रविधियाँ प्राप्त करने का एक बोरदार प्रयत्न प्रारम्भ किया है और उन्हें इन पक्ष को प्राप्त करने में मदद देने के लिए राष्ट्रीय वचनबद्धता के एक सम्मेलन द्वारा की आवश्यकता है। उनका अर्थ है कि सभी धर्मों में समाज के सम्मिलित सम्मेलनों के सम्मिलित सरकार की धार से भी आवश्यकता किये जाने की आवश्यकता है। उसे उन लोगों की विशेष सहायता करने के लिए उन्हें पहले यह प्रथम प्राप्त गयी था सम्मिलित अधिकारों के प्रयत्नों की रक्षा देना चाहिए। यह सत्य और गरीबों की सरकारों द्वारा नागरिक

८ प्रामोद्योगों के कार्यक्रम के संबंध में अपने प्रयत्नों और संसाधनों को मजबूत करना महत्त्व के उद्योगों पर केन्द्रित करना वांछनीय है तथा वे उद्योग एक वृहत्तर क्षेत्र में फँसे हों एवम् उनमें व्यादा परिणाम से कारीगर लगे हों, यह भी ध्यान में रखना उचित होगा। तकनीकी सुधारों और विज्ञानी के उद्योग के लिए उनमें व्यापक मुञ्जरादण होनी चाहिए।

९ प्रामोद्य उद्योगों में से एक के रूप में खादी का मान्यता-प्राप्त स्थान जारी रखें और कुछ क्षेत्रों में प्रामोद्य उद्योगों में उसका स्थान सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हो सकता है, पर वंशानुक्रम के विना तथा प्रामोद्य विज्ञान-कारण की प्रगति के साथ यह संभव है कि वृद्धि-संबंधी चीजों के प्रयोग तथा वृद्धि में लगनेवाली चीजों के निर्माण जैसे ग्रहिक मामलोंवाले ग्रन्थ प्रामोद्य उद्योग खादी का स्थान ले लें। खादी के बारे में किसीका यह दृष्टिकोण हो सकता है कि यह एक स्थायी कार्यक्रम है। इसके वास्तविक रूप में सफलता हुआ जा सकता है कि निरंतर भविष्य के कुछ समय के लिए पिछड़े हुए प्रामोद्य क्षेत्रों में साथ पिछड़े वर्गों के लोगों को काम देने के हेतु इसका एक उपयोगी स्थान होगा। हम इस पर जोर देंगे कि गणतन्त्र में आवश्यक परिवर्तन करके प्रामोद्य उद्योगों की एक धारणा की ओर अभिव्यक्ति होनी चाहिए, जिसमें खादी का समुचित स्थान हो सकता है।

१० शास्त्रनिर्भर व्यक्तियों और समुदायों के निर्माण के लिए तथा प्रामोद्य क्षेत्रों में बड़े परिणाम से सामाजिक एवम् प्राथमिक परिवर्तन का आधार बनाने के लिए एक शासन के रूप में खादी की नितनी क्षमता है इसके पुनः परीक्षण की आवश्यकता है, क्योंकि प्राथमिक विज्ञान की प्रगति जो दृष्टि है उनके समर्थ में केवल खादी वीमे परिवर्तन के लिए आवश्यक प्रोत्साहन नहीं दे सकती।

११. खादी-कार्यक्रम इस धर्म में प्राथमिक नहीं बनाया जा सकता कि वह बिना सरकारी सहायता तथा छूट (रिबेट) के चलने में समर्थ नहीं है। यदि खादी-कार्यक्रम में

स्व० महादेव भाई

(पुष्पतिथि : १५ अगस्त)

एक मोती

इसमें प्राथम की कमी पूरी कर दो है। वह प्राथम से धन्य होने के लिए नहीं, बल्कि प्राथम को धन्य बनाने के लिए प्राया है। वहने मुझे शर्म छाती है, पर वान यह सब है कि यहाँ कुछ लोग ऐसे हैं, जो प्राथम को धन्य बनाते हैं, प्राथम से अपने को धन्य नहीं बनाते। ऐसे कुछ मोती मुझे मिल गये हैं। उन्हीं में से एक यह (महादेव-भाई) है। —मो० क० गांधी

× × ×

एक स्नेहिल डॉट

रात को मूँब मिसले-भेटने के बाद मो गये। सुबह ही सुबह मुझे कुलाकर (बापू ने) एक प्रवचन सुना दिया : तुमने प्रेम से किया है, इसलिए क्या है? बिल्कुल मुझे यह कहना पड़ता है कि प्राथमिक दृष्टि से तुमने बहुत बुरा काम किया। तुमने उस दिन मेरे भाँये बिना भोजन क्यों नहीं किया? मुझे उस दिन

बड़ा कष्ट हुआ। तुमने प्रीति की भावना में न खाया हो, तो यह प्रीति धर्म्य है। सिर्फ़ इस भावना से न खाया हो कि मेरे खाने में बाद भ्रान्त से साथ खावेंगे, तो यह तो विषय-भोग करने जैसा हुआ। मुझे तुम्हें उरुष्ट नहीं भोजना था, पर मैंने देखा कि तुमने खाया नहीं है। इस तरह मैं तुमसे कैसे काम ले सकता हूँ? तुमने अपनी बुरी भावना को भी धच्छी मानने की धादत पट गयी है। फलाँ वात नहीं हो सकती, ऐसा वीमे बन सकता है?

—महादेव भाई की दायरी' में, पृष्ठ : १०५

× × ×

पुण्य-स्मरण

महादेव में अद्भुत सामर्थ्य थी। प्रायः पग-पग पर महादेव की कमी बटकर रही ! उसमें समर्पण शक्ति उद्भूत थी ! —मो० क० गांधी

प्रामोद्य लोगों के कुछ वर्गों को महापक धया देने का मुख्य प्रयोजन सिद्ध करना है तो इसके लिए मजबूती सहायता और छूट देना निरंतर भविष्य के कुछ समय के लिए जारी रखना होगा। पर इस बारे में सरकारी बचन बढ़ता अनिश्चित या अपरिमित नहीं होनी चाहिए।

विद्यासात्मक सहायता

१२. भविष्य में विद्यासात्मक सहायता के संरक्षण-स्वरूप पर प्राथमिक जोर न देकर विषय-स्वरूप पर प्राथमिक जोर देना चाहिए। महायता के विषय-स्वरूप प्रसारों में प्रशिक्षण, अनुसंधान, तथा तकनीकी परामर्श और सहायता के लिए अनुदान एवं वारंसाहक पूर्वी के लिए बर्न हैं, जिन्हें आवश्यकता-नुसार बढ़ाया जाना चाहिए। खादी-कार्यक्रम से लिए बर्न पर व्याज की ग्यायती दरों की स्वीकार करनी चाहिए।

१३. खादी-कार्यक्रम के लिए सरकारी महायताओं का परिणाम सीमा के भीतर रखना चाहिए। पारम्परिक खादी (जिसमें मबर चरमा की शामिल है) कार्यक्रम के

लिए प्रबन्ध अनुदान, विक्रय-सूट, गारान्ती, प्रशिक्षण आदि के रूप में प्रतिवर्ष दिने जाने वाले सरकारी अनुदानों को कुल रूप से लिए ५ करोड़ रुपये की एक उच्चतम शक्ति निर्धारित कर देनी चाहिए। इस शक्ति में ऐसी खादी सहायता शामिल होगी, जिसकी अन्तर्गत सामग्री गाँवा में या ग्रन्थ उपभूत क्षेत्रों में या एक और दो समुदाय के बर्न की खातु करने या पारलपरित करने में बुरी कटौती के पुर्न धारित करने आवश्यकता खादी के विस्तार के लिए हो सकती है।

(खातु रहेगा)

भूदान तहरीक

उर्दू भाषा में अहिंसक प्रार्थना की

संदेशवाहक पाठिका

वर्षिक मुद्रक : ४८११

सर्प सेवा संघ अध्यक्ष, राजपाट, पारायसी—१

अधिकारों के बारे में कानून बनाये जाने के प्रबल समर्थक हैं।

श्री वाखेस :- वह जातीय पृथक्करण के समर्थक और नागरिक-अधिकारों के सम्बन्ध में कानून बनाये जाने के विरोधी हैं। वह सन् १९६४ के नागरिक-अधिकार कानून और १९६५ के मनाधिकार सम्बन्धी कानून को रद्द किये जाने के समर्थक हैं। अपने को पृथक्तावादी मानते हुए भी उनका कहना है कि मैं कट्टर जातिवादी नहीं हूँ।

- डब्ल्यू० ए० स्वाटवर्थ
(‘यू एम घाई एम’ के सौजन्य से)

कमिटीक-समाचार

धारवाड जिले की हुबली तहसील में १२ और धारवाड तहसील में ५ नये ग्रामदान प्राप्त हुए हैं। अगस्त १९ से २४ तक धारवाड तहसील में तीन पददानार्थ चलेगी। हुबली तहसील की पददाना में १४१ रु० का साहित्य विद्या और वन्य ‘भूदान’ के ५० नये शाहक बने।

चेनारी (शाहवाड) प्रसण्डदान की तैयारी

विहारदान धान्दोलन की दिशा में दक्षिणी शाहवाड के चेनारी प्रसण्ड के भलावा कुदरा और भगवानपुर में सघन कार्य चल रहा है। भगवानपुर में सबसे पहले कार्य प्रारम्भ किया गया है। जन-सम्पर्क कार्य चल रहा है। सुलभ ग्रामदान का प्रयास लोगों के हाथों में पहुँचाया जा रहा है। —सुसु

राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति

प्रधान केन्द्र

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति

१, राजघाट कालोनी, नयी दिल्ली-१

टुंकलिया भवन, कुन्दगिरों का भेरो

फोन : २७६१०५

जयपुर-३ (राजस्थान)

फोन : ७२६८३

अध्यक्ष : शा० जाकिर हुसैन, राष्ट्रपति
उपाध्यक्ष : श्री बी० बी० गिरी, उपराष्ट्रपति
अध्यक्ष : कार्यकारिणी :

अध्यक्ष : श्री मनमोहन घोषरी
मंत्री : श्री पूर्णचन्द्र जैन

श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधानमंत्री
मंत्री : श्री भार० आर० दिवाकर

गांधीजी के जन्म के १०० वर्ष २ अक्टूबर, १९६६ को पूरे होंगे।
आइये, आप और हम इस शुभ दिन के पूर्व—

(१) देश के गांव-गांव और घर-घर में गांधीजी का संदेश पहुँचायें।

(२) लोगों को समझायें कि गांधीजी क्या चाहते थे ?

(३) व्यापक प्रचार करें कि विनोबाजी भी भूदान-ग्रामदान द्वारा
गांधीजी के काम को ही आगे बढ़ा रहे हैं।

यह सब आय-हम कैसे करेंगे ?

- यह समझने समझाने के लिए, रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति ने विभिन्न प्रकार के फोल्डर, पोस्टर, पुस्तक-पुस्तिकादि सामग्री प्रकाशित की है। इसे आप पढ़ें और दूसरों को मा पढ़ने को दें।
- इस प्रकार की सामग्री और विशेष जानकारी के लिए आप अपने प्रदेश की गांधी-जन्म-शताब्दी समिति तथा प्रदेश के सर्वोच्च-संगठन से सम्पर्क व पत्र-व्यवहार करें।

सहरसा जिले में प्रखण्डदान (२५-६-६८ तक)

प्रखण्ड	कुल जनसंख्या	शामिल जनसंख्या	कुल रकबा एकड़	शामिल रकबा	दानदान में शामिल रकबा	शामिल गाँव
१ सतधुषा	७१,८१६	४४,४६४	६१,६७२	४,२८४ ७२	१२६	८०
२ मिपरी बलत्वारपुर	६२,४४६	७१,४६२	११,२००	६,७००	२२६	७५
३ सुपीक	१,१२,००२	७१,४६२	४३,७७३	६,३३६ ४८	२२६	७५
४ छानापुर	८२,६१८	४७,१८०	६६,३६४	२४,०००	१२४	७५
५ विपनपुर	६६,४८७	६२,०००	६६,०००	२४,०००	१२४	७५
६ दुयारक्षप	८०,६२१	६६,१४०	६२,४१६ ४१	११,०२२ ६१	१२४	७५
७ त्रिकेणोगञ्ज	१,००,०००	७८,३१६	७४,११४	४२,११८	१२४	७५
८ धारमनगर	६४,३७७	४६,८००				
९ मरौता						
१० निर्मली						

मुजफ्फरपुर जिला के

सर्वप्रथम बाबा का शुभमंगल इस मगर मे सन् १९४२ मे हुआ, तब स घन तक का शिक्षित बाप विनयता जिने के २९७२ गाँवो के १६,७४४ दाजानो ने भूदान-यज्ञ मे ११,८७० एकड़ जमीन दान की, त्रिमे मे १४०४ गाँवो के ८२८ भूदान किमानो के बीच ४,९१४ एकड़ विनरित कर दी गयी।

साहित्य-प्रसार :

सर्वोदय साहित्य मंडा, इन्दौर की प्रगति का एक वर्ष

वर्ष	मंडार	स्टाल	कुल
नई '६७ मे प्रगति '६८ तक की विभी	४०४६८-८६	१३४०६ १७	६४३४६ ०३
एत वर्ष की कुल विभी	४६१७६ ८७	१००१७ ९८	६६१९४-४४
प्राय '६८ तक की कुल विभी	३२८३११ १४	४७२१२ १६	३७५४६६-३३

प्रखण्ड का नाम	गौरास	पानेपुर
कुल जनसंख्या	१२३,१६६	१३२,६६२
शामिल जनसंख्या	६४४६७	१,०८,४०८
कुल रकबा, एकड़ मे	७६%	८२%
शामिल रकबा	४२,०६४	६६,६६८
शामिल रकबा	२७,२६४	३४,४४६
कुल पंचायतें	४२%	४१%
शामिल पंचायतें	२७	२३
कुल गाँव	२८	२३
शामिल गाँव	१४४	१४४
कुल परिवार	१२०	१३८
शामिल परिवार	२२,६३६	२४,०६६
शामिल परिवार	१८३२७	१८,०६८
	८०%	७४%

- (१) गांधी तथा सर्वोदय-साहित्य
- (२) माध्यमिक साहित्य उपरोक्त के प्रति रिक (भा० शा० उपरोक्त मे सम्मिलित ४०%) इस तरह कुल ९०%
- (३) प्राथमिक शिक्षिता एव स्वराज्य मन्त्रो
- (४) बाज साहित्य
- (५) कान्य, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि
- (६) विविध (रवि, गीताञ्ज, आदि)
- (७) विविध

भारत के कुल स्थायी मन्त्र १०१ स्थायी मन्त्रा मे साहित्य हेतु प्राय मन्त्रात १०३ इन सभ्य भ्रार मे कुल साहित्य :

- प्रतिशत ६४%
- प्रकाशकवार सब सेवा सच प्रकाशन ६०%
- मला साहित्य मन्त्र ७%
- नवनीत प्रकाशन ९%
- परपाम, सर्वोदय प्रयुगलय ४ भाग सर्वोदय प्रकाशन ४%
- विवेकामन्द, नितक, दायदण्य रामजीर्ष, रमण धाम्य, आदि प्रकाशन ६%
- गीता मंत्र, गोरखपुर ४%
- पासकोय तथा कान्य विविध प्रकाशन २८%
- ४० १,१००-००
- ४० ४२,७७५ १२

—मन्त्री, जिला सर्वोदय मंडल, मुजफ्फरपुर
जुलाई '६८ तक सहर एव बीजानपुरी अनुमंडल के २६ प्रखण्डान के क्लवाका हाजीपुर के ४ प्रखंडदान भी हो चुके हैं। इन प्रकार कुल ३३ प्रखंडदान घोषित हो चुके हैं। वेप ७ प्रखंडा में प्राति के लिए अभिमान जोरा से जारी है। जिने भर मे बीज हृजार धामदान हो चुके हैं, बिममे मे २४० गाँवो में धामदान संघटित हो चुकी है। पुष्टि का काम विवेककर मन्त्रा-मुष्टीन प्रखण्ड मे चल रहा है। जहाँ भी गोपालनी मिथ, मन्त्री, धनुमन्त्रीय धामदान प्राति समिति, मुजफ्फरपुर के सक्रिय—

—स्वराज्य, सर्वोदय साहित्य भ्रार, महात्मा गांधी मार्ग, इन्दौर



पुस्तक-परिचय

गांधी विविलियोग्राफी :

लेखक : धर्मवीर

प्रकाशक : गांधी स्मारक निधि, पंजाब, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़-१७।

पृष्ठ : ५७५; मूल्य : २५-००

अभी उन दिन अमेरिका की विस्वामिन भूनिर्मिती के एक भारतीय प्रोफेसर बना रहे थे कि अमेरिका का बुद्धिवादी धर्मनी धर्मि सम्प्रदाय, धर्मो सरकार, धोर धर्मन पूँजीवादी सामाजिक ढाँचे से ऊँचा हुआ है। ऊँचा हुआ है, लेकिन साम्यवाद में बनना चाहता है, क्योंकि वह देख रहा है कि साम्यवादी ढाँचा पूँजीवादी ढाँचे से भी अधिक कठोर है। दमन में बचे, तो शोषण हो, शोषण से बचे तो दमन हो; इस दुष्परिणाम से वह किसी तरह मुक्ति चाहता है लेकिन मुक्तिमिने कैसे ? रास्ता कौन दिखाये ? यह पूछ रहा है।

प्रो० मित्र कह रहे थे कि जो लोग कुछ भांगे की बात सोचते हैं वे गांधी की धोर मुद्रा रहे हैं। जगह-जगह गांधी के नाम से स्नाय्याय-मण्डल खुल रहे हैं। राजनीति के

विद्यार्थी चाव में गांधी-दिवार वा विषय ले रहे हैं। लोग गांधी की धर्म नये मिरे से जानना चाहते हैं। स्वान्ध-धर्मनाम वा नेता गांधी बीत चुका; धर्म सामाजिक नान्ति-वारी के रूप में गांधी वा समय ध्याय है। दुनिया में गांधी वा नया धर्मकार हो रहा है।

पंजाब, हरियाणा, हिमाचल गांधी स्मारक निधि के यद्यधी सचलक श्री धोम-प्रनाम विद्या ने जमाने की माँग पदकनी है धोर यह पुस्तक प्रकाशन कर दी है। धर्मो में '९९ तक गांधी की याद में जो काम होंगे, धोर जो तरह-तरह के प्रकाशन होंगे, उनमें इस ग्रन्थ का विशिष्ट स्थान होगा। गांधीजी ने क्या पढा, किन पुस्तकों की प्रभावना किसी, दूसरों ने उनके वारे में क्या लिखा, विश्वविद्यालयों में क्या शोध हो रहे हैं, आदि नव कुछ इन ग्रन्थ में है। जिनके लिए गांधी बुद्धि का विषय है— विज्ञान के जमाने में बुद्धि नहीं तो क्या होगा धोर किम चीज का विषय ?—उनके लिए यह अत्यंत उपयोगी ग्रन्थ है। अरो-पूरी सूचिवा है। ग्रन्थ अध्येजी में है, इसलिए भारत धोर विदेश, हर जगह उपयोगी होगा। इस ग्रन्थ की निरालकर निधि ने वास्तव में गांधी का एक उपयुक्त स्मारक प्रस्तुत किया है।

—विद्यार्थी

अकाल पुरप गांधी

लेखक : जैनेन्द्रकुमार
प्रनाशक : पूर्वोदय प्रकाशन,
= नेनाजी सुभाय मार्ग, दिल्ली-६
पृष्ठ ४५३; मूल्य १५ रुपये
'अकाल पुरप गांधी' पुस्तक पढ़ने वा धनतर प्राय। लैनेन्द्रजी ने जिम रूप में गांधीजी की ममदा धोर प्रस्तुत किया है, वीमे ममध धोर तटस्थ भाव से धरने की गांधीजी के निकट-गे-निकट माननेवाला कोई धर्म तक नहीं कर सवा है। दूसरे यह जानकारी मेरे लिए मुलकर धोर नयी है, कि यद्यपि मैं लैनेन्द्रजी को हतने समय मे मानना-जानता रहा हूँ, कि वह गांधीजी के आदित्य रूप से हतने निजीय रहे हैं। तीसरे—

प्रकृति और पुरुष सत्ता और सतस्व

मनुष्य की चेतना में एक बात है, जो नियम की चीखट में नहीं बसो जा सकती। यह है, धामसत्ता वा आन्तरिक सतस्व। उसमे उनकी एक ऐसी श्रद्धा होती है, जो जीव-भाव के उत्तर्प में साध बनो जाति है। इन आन्तरिक सत्ता में सत्ता वा सतस्व प्रकृति नहीं, बल्कि पुरुष है। प्रकृति धर्म पुरुष की एक शक्ति है। मूल ही एक धामसा है, एक पुरुष है, एक धामरवध है, धो सबसे धर्मर एक है। वही पुरुष इन जगत् वा स्वामी है धोर यह जगत् उसका केवण एक धर्म-मात्र है। उसकी धममति में ही प्रकृति वा कानून चलता है धोर प्रकृति की शक्ति विविध भांगों में वाम करती है। प्रकृति वे धर्मर जो पुरुष है, वही जैय है। वही पुरुष प्रकृति की प्रकाश देता है धोर हमारे धर्मर उसे चेतन बनाता है। मातृपी तन का पुरुष की इहो मयवान वा धंश है धोर वह इहोके स्वभाववाला है।

—धीधरविन्द

→प्रयत्न से ३७ गाँवों के कागजात पुष्ट हो चुके हैं, जो सरकार की गजट में प्रकाशनार्थ भेजे जा रहे हैं।

११ सितम्बर '९८ तक मुजफ्फरपुर के लिए श्री धनना प्रमाद साहू, धधयश, जिला सर्वोदय मयन, श्री यदो नारायण सिंह, मधो, जिला सर्वोदय मडल; मुजफ्फरपुर श्री धामिधर ठाकुर, उपाध्याय, जिला सर्वोदय मडल, मुजफ्फरपुर धरने साधी कार्यकर्ताओं महित पूरी सुन्दरी के साथ सगे हुए हैं, इन विश्वाम के साथ कि "राम-कविन गाने बिना भोगे नहीं किमाम"। —गंगा प्रसाद सहनी तार से

धधरान जिले में दो प्रधयधदान : मेहली, धमका।

→मुझे यह धर्वा याद धायो की कुछ दिन हुए लैनेन्द्रजी मे साथ हुई थी। उधोने कहा था कि पराजयो गांधी की धर्म धरने धर्म में दुनिया के सामने नहीं रख सके हैं। राष्ट्रनीति के द्वारा उनको प्रस्तुत धरने मे देश-नेता धमसर्व हुए हैं। इसलिए राष्ट्र-जीवन में से उनकी शलक देने धोर लेने वा प्रयाग गांधी के ध्यक्तित्व की धधुरा रखता है, पूरा नहीं दे पाता। धधरयक है कि उनके धनरधर सत्त्व को लेकर एक नयी ममध जीवननीति के प्रनोक के रूप में गांधी की दुनिया के ममध लाया जाय। लैनेन्द्रजी के "गांधी इन्टरनेशनल" के प्रस्ताव के लिए यह पुस्तक समुचित धूमना प्रस्तुत करती है। मयमुध धन्तराष्ट्रीय क्षेत्र में उनसे एक नया मंड धा सकता है। —संकरधधध

भूदान-पत्र

सर्वो ज्येष्ठा संस्था तथा मुख्य पत्र

वर्ष : १४ अंक : ४७
 सोमवार २६ अगस्त, १९८

अन्य पृष्ठों पर

विवादास के बाद विचार पुष्टि
 —सोपेन चन्द्रपण्डित १७८

बपु विदाय
 —सम्पादन १७९

सर्व लोग
 —सम्पादन १७९

राजनीतिक दल मूलतः धार्मिक
 —विरोधा १८०

महात्मा और महापद नहीं विचारपत्र
 —विरोधा १८१

साहित्य प्रकार के कुछ बातें
 —त्रिविक भाई १८२

आज का समाचार

आज के दल
 भादोलाल के समाचार
 परिशिष्ट
 'राज' का 'पाल'

सामयिक

सर्वो ज्येष्ठा संस्था
 राजपत्र कार्यालय-१ बहाल प्रदेश
 कोल ४२८५

नमूने से क्रांति नहीं होती, क्रांति तो एकदम होती है

आपका पुत्रि यानी क्या ? सरका मान्य करे, तो यह सारा गाँव हुए, ऐसा ? गाँव में मनुष्य बना तो यह बना ही है। लेकिन जब तक सरकार के रजिस्ट्रार से दर्ज नहीं होता, तब तक सरकारमान्य बना नहीं। क्या पदा हुआ, वह तो हुआ ही है। जब उससे रजिस्ट्री होती रहेगी। थोड़े की किशा हाने में भय देर लगे। पहले कीया, आर्थिक कार्य गाँव करे, यानी वस्तुस्थिति में सुदि हो जाय। फिर कानूनही तोपेगे और सोचना बनाने।

विकास निर्माण आदि बड़े काम (कार्यकर्ता) होते बहुत करते हैं। धुराना विचार था कि शक्ति के बाद एक दम अपने निरवेदारी से अपने अपना चाहिए, ताकि कौन मरा, कौन जीवित रहे यह बता चले। यहाँ जीवन इतना भराभरा है, यहाँ विकास का विचार करना धर्मसभा का और सरकार का काम न हो, हम अपना भाते यह अभी-सा बात है। अहंकार है। हम यही है करनेवाले ?

'अपने सातिर महल बनाया, आप ही बाहर जलत सोया।'

ऐसा हालत ने हम कहाँ करे ? 'बहु हय करेगे' मानना चाहूँ किशा धाम उठाया है अहंकार-नाम है। यह तो लगी शोके' है। आराम में क्या करता है उनका समझन करवा दे। उसके बाद विकास भी परे हाना महया। वह अनादि काय से हाना आया है। इसलिए हमने कहा कि कि 'न' की बात इ-ही-से करना है वह हम अपना विम्या न भाते।

किर कुछ लोगों को लगता है कि कोई एक नमूना बनाया जाय। इनसे बरकर तो बेकरूनी नहीं। नमूने तो कई बनाये जा सकते हैं। लेकिन नमूने बनाकर जयति नहीं हानी। समझना चाहिए कि इस दंग से क्रांति नहीं होता। क्रांति एकदम होती है। नमूने दरासर नहीं होती। एसा सोचें कि नमूना बनाया है तो हमसे और कुछ नहीं करना होगा। यह बात सागू हानी है तालीम से, न कि निर्माण से बात में। तालीम में कुछ अच्छे नमूने निर्माण किने नमूने के ता यह आदर्शक है, यद्यपि उससे तालीम का 'साधन बनाना है। गते ही प्रायत ही सिस्टम बनी। उसने प्रयोग किने नमूने बनाने, ता यहाँ नमूना नहीं बनना है, वह शोकेत सिस्टम सट-जाना है। भारतीय काय में भारत ने भी यह था। प्रयोगों के साथ विचारों रहते थे, और यहाँ तालीम के उदय नमूने मिलने द। उपर्युक्त प्रयोग का सा सिस्टम, उनमें से एक 'विमिनी विरामे और एक पारिणी। विमिनी का 'विमिनी' देकर विद्यालय बनाया। उदय, आरंभ ही शुरू चलना जाय। यहाँ विमिनी विद्याया जाता है, उदयक देर-पुत्रक बनाया जाय, ता गमन है उदात्त। साधन' बने। उदयक आरंभ शुरू हो। लभित जहा तक विमिनी का प्रयत्न है, नमूना राडे करने से ही काम होगा, और कुछ करना नहीं पड़ेगा, यह उदात्त गमन है।

—विरोधा

गाय के साथ भाव-सम्बन्ध :

मानवीय-श्राकान्ता-पूति की एक मंजिल भावना और युक्तिसंगत बौद्धिकता परस्पर-विरोधी नहीं

श्री राजकुमार कपूर का पत्र मैं पढ़ गया। श्री कपूर ने सिटी-मेट और रिंगेनोटी, अर्थात् भावना और युक्ति-संगत बौद्धिकता, को जो एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा किया है वह मेरे खयाल से ठीक नहीं है। दोनों मिलकर ही मनुष्य का चिन्तन पूरा होता है। मानव में शरीर और आत्मा का मेल है, इसी प्रकार भावना और बुद्धि दोनों मिलकर ही मानव-चिन्तन और मानवता पूरी होती है।

गाय बंध नहीं है, इसके पीछे केवल मांसाहार और शाकाहार का खयाल नहीं है, उसके पीछे एक विशेष भावना दृष्टजगत् की है। जिस प्राणी के जरिये हमें बहुत कुछ अर्थों में जीवन मिलता है, उसके प्रति दृष्टजगत् की भावना है। कहा जा सकता है कि बकरी और भैंस भी इसी प्रकार हमें जीवन देती हैं। लेकिन कुल मिलाकर इनके और गाय के, दोनों के बीच इस बात के अनुपात में बहुत भिन्नता है। धी, दूध, बंस; सभी दृष्टियों से दृष्टि-प्रधान भारतीय जीवन में गाय का जो स्थान है वह अन्य किसी पशु का नहीं है।

मैं कपूरजी के इस विचार से नम्रतापूर्वक असहमति ज़ाहिर करता हूँ कि "पशु की कद्र केवल उसकी पारोरिक धमता तथा मनुष्य हेतु उसकी उपयोगिता पर निर्भर करती है, परन्तु मनुष्य की कद्र में उसके मानसिक विकास तथा चिन्तन का बहुत बड़ा योग होता है"। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि मनुष्य की तरह पशु-पक्षी, पेड़-पौधे यदि सबमें प्राणी का सत्त्व है। इतना ही नहीं, प्राण तो विशाल बड़ा तर्क पहुँचा है कि मानव में जड़-चेतन का भेद भी नहीं है, अन्ततोगत्वा जड़ वस्तुओं भी चेतन वस्तुओं का समुच्चय ही है। अर्थात् सारी वस्तुएँ सृष्टि में एक ही शक्ति व्याप्त है। अतः पशु की कद्र केवल उसकी उपयोगिता पर निर्भर नहीं है, बल्कि इस अनुभूति पर है कि उसमें भी बड़ी शक्ति काम कर रही है जो हममें। मनुष्य की झाड़ंशा है, और उसके जीवन की सफलता भी इसीमें है, कि वह सारी वस्तुएँ सृष्टि के साथ में एकरूपता का अनुभव करे। जाना उस मंत्रिल तक है, लेकिन सब लोग एवदम धारित्री मंत्रिल तक नहीं पहुँच पाते, इसलिए सबके लिए सुभक्त ही देना भाग्य बनाना होता है। गाय के प्रति हजारों वर्षों से हमने जिस भावना का पोषण किया है वह पशु-जगत् के साथ तादात्म्य का प्रतीक या पहुँची सोची है।

यह सही है कि किनोश या वस्ट्रेण्ड रोजल तथा एक सामान्य मनुष्य के प्रति हमारी भावनाएँ भलग-भगम होती हैं, लेकिन एक

मानव के ताते उनके प्राणों का मूल्य समान है। एक सामान्य व्यक्ति के हत्यारे को भी फाँसी होती है और गांधी के हत्यारे को भी फाँसी हुई। व्यक्ति-व्यक्ति के बीच भिन्नता जिग स्तर पर है वह भलग है, लेकिन युनिवर्सी दृष्टि से समानता है। यही बात पशु-सृष्टि या अन्य सृष्टि के लिए लागू होती है। व्यक्ति-विशेष भले ही अपने विवेक का उपयोग करके अपने व्यवहार में फुल कर सकता है, लेकिन सारे सभाम के ध्यान में रखते हुए कुछ मान्यताएँ, कुछ मूल्य, कुछ परम्पराएँ स्थिर करने और कायम रखने होते हैं।

गपूरजी से मेरा सामुदायिक निवेदन है कि वे 'रिंगेनोटी' और 'सिटीमेट' में इस प्रकार भेद न करें। धारित्री हजारों वर्षों की भावना का जीवन में प्रवचन एक विशेष स्थान होता है, उसे कोरा या काल्पनिक भावदर्शवाद बहकर उसकी प्रवृत्तिला करना उचित नहीं है।

—सिद्धराज ढड्डा
सदाकत ध्याम, पटना-१०

जिलादान के बाद 'विचार-पुष्टि'

आज दुनिया में कोलाहल है। और इसी कोलाहल के बीच हमें जोर-जोर से ध्यामज लगानी है। दुनिया के इस कोलाहल में ही हमने ध्यामदात की 'हाक' लगायी है और देश के ५ जिलों में इसे सुनकर प्रतिउत्तर में 'जी हाँ' कह दिया है, यानी उन्होंने हमारी पुकार सुनी है, लेकिन अभी 'कमर' फँसा है, जम्का 'धर्म' फँसाना बाकी है।

लोगों ने जामदान-नामपंशु-पत्र पर हताशर किया है, यह बहुत बड़ी बात है। इसके बाद पहला काम यह करना है कि लोग यह समझें कि ध्याम का संकट क्या है, जिसके समाधान के लिए यह ध्यामदान है। अब तक लोगों के सामने यह स्पष्ट नहीं होगा, तब तब ध्याम ध्यागे नहीं बढ़ेगा। इसलिए लोक-प्रियाण के गानक कार्यक्रम चलाने हैं, और यही पुष्टि का कार्य है। जिस तूषानी की ध्याम से प्राति का काम किया है, उसी तूषानी रचना से पुष्टि का यह काम करना है।

उत्तर प्रदेश की यह परम्परा रही है कि गैबडी गांधी ध्याम के कार्यकर्ता जेल गये हैं स्वराज्य के ध्यामोलन में, लेकिन काम एक दिन बम नहीं टूटा है। ध्याम भी यह परम्परा कायम रखनी है, और ध्याम-स्वराज्य का यह ध्यामोलन चलाना है।

ध्याम (गांधीजी) की सम्पत्ति के वारिध बने हैं, तो उनके विचार का बाहक भी हमें ही बनना पड़ेगा। हर गाँव में कुछ प्रवृत्ति-सूचक नहीं, बल्कि वृत्ति-सूचक कार्यकर्ता सजे करने के लिए गाँव, पंचायत, प्रपण्ड और तहसील स्तर पर मोटियो का काम चलाना है। इस प्रकार पद्वि विचार-पुष्टि और उसके माप ध्याम-सपदन का काम करना है। विचार-पुष्टि के लिए हर गाँव में मोट्टर और 'गाँव की बात' पत्रिका पत्रिका पहुँचाने का काम करना है।

दुनिया में इस दिना में काम होगा तो ध्याम्य ही प्राय स्वराज्य का मांग प्रदान होगा।

—पौरेन्द्र मजूमदार

दुनिया . १५ जुलाई '६८

धर्म-विज्ञाप

बस सधनमेदा के टोकासयु विजे के बा की सूचना थायी तो ऐसा मया जैसे कुछ के किनी मोर्भ ते विजय का संदेश भाष्य हो । धीरे विजय भी पीछे ? घुमार ते प्राप्त हुंनेबावी विजय नहीं, पराजित मन्नाट घण्टीक के छत्रो मे 'धर्म विजय' । यह शासन देना धर्म-युद्ध है विनासे लिनीको सनवर नहीं है, इसलिए उरभे एक की विजय धीरे धीरे की हार भी नहीं है । इसम विजय ही विजय है । यही सारी विजय धीरे किनीकी हार न ही, वह हृदय परिवर्तन की प्रक्रिया है । यह युद्ध बलवन्तिस धर्म युद्ध है ।

टीकासयु के विनाशय के राज्यशास के 'धर्मशास्य' मे एक धीरे बसा शेष युद्ध गया । विद्वान्, उत्तर प्रदेस, उज्जैना, तमिळनाड, धीरे धर्म सधन प्रदेस की विनाशकर देना का एक बड़ा भूभाग हो जाता है, धीरे धीरे मयले परतहू-मोहल पहलुनी मे इन बडे क्षेत्र का दान हो गया, जो भारतक्षत्र हूट नहीं रह जायागा ।

केलिना एक भाग है । धर्म सधन धर्म गया है कि दान मे 'वैराज्य' को जो हाँकी है उसे छुट्टी तरह बनना के सारने पाना चहिए । धर्मशास्य हमारी शान्ति का पोष है दान उन्की प्रथिमा धीरे यहीँस उतरा समुर्ध संदान । जनता धर्मशास्य की हाँकी देना चाहती है, भेजे ही धाल बहु कितीवी भी धुंधली हो । जनता की भावना उन धर्मो के लिए उदार है । शासना को ठक मुह होवी जब धर्मशास्य के बाहू हजारी उदार बरधन एक दिया मे एक साथ धर संदे । लेकिन प्रत्युप के वेर बडे हृदये लिए उन्की केलना की बगानेबाधा विन चाहिए । हमारा मुज भी लोभे, कुछ भी नहीं, मानाय मनुष्य यह करोना चाहता ही है कि जो कुछ उरभे बरत मुन रहे है वह उरभे हापो की वहीँन के भीतर है । बस धर्म धर्म भी नहीं बडा लभते कि धर्मशास्य के माव बरा है धीरे शासनशास देस के जीवन को बना मोड देना चाहता है ? विचार की पूरी शानि प्रकट हूट, हमने निरु धर्मशास्य है कि मनुष्य उन्क प्रभाव के जरा हूट तक एक संके ।

मनुष्य प्रवेस यह हाता को बर्दा मयन नहीं था । विविध धर्मशास्य, विविध धर्म, विविध साधन्य के मनुष्य एक छत्र मे केते रहेने, यह सारे प्रयो के प्रय है । इन एक धर्म में दूसरे मर प्रय समाये हुए हैं । एनी धर्म को वेरन मारी प्रयमीति भरी है । धर्म धीरे लोभ की छोकर पदार्थों को प्रथिमात् विनाशकर धर्मिक को सधुन के साथ जोडने का विचार प्रयन सधनय के विचार की सधरी धीरे रोडक चहती है । धर्म शासनशास किन उरभे धर्म सधरी पहलुनी मे एक धर्मियन प्रभाव जोडना चाहता है, यह बात सधन के सामने सुन्दर प्रदर्शनी चाहिए । प्रकृति, प्रयोगी धीरे प्रकृति के प्रदर्शों ते हीना धर्म-युद्ध शासनशास होता चाहता है । धर्मियन हमारे धर्मशास्य मे धर्म एक विचार विनय हुआ है उरभे बड़ी धर्मियन विचार धीरे शासन की प्रकट है, कर्नाल एक यह धर्म धर्म धर्म

मे सुवाची देने लगा है कि शासन के बाद क्या, विनाशान के बाद क्या, धीरे शासन के बाद क्या ? धर्मशास्यय मे मनुष्य अपनी मुक्ति का धर्मशासन देने को उत्सुक है । यह धर्मशासन टीकासयु को जनता को वही के मनुष्य सारियो के, जो एक धर्मशासन के मनुष्यों धीरे विचार के बाधन रहे हैं, मिचता चाहिए । धर्म, उरभे यह धर्मशासन देना है इस उदारधर्मियन का भाव सधु हृदये धर्म-युद्ध सारियो को बरना चाहिए । जो युद्ध के विपारी है जनकी सधन्यदेस के हृदये जिलो मे धर्म शाना जाँरी रहे, लेकिन जो नागरिक हैं, शासन है, उरभे शास विजय को स्वामी बनने की धीरे उरभे शासन पान देना चाहिए । इस सतह पर धर्म टीकासयु का धर्मशासन की विरादरी मे हृदय ते स्वागत है ।

धर्म-धोष

विजय सधन मयम प्रदेस मे धर्म को विजय हूट सधनय उरभे सधन शासनय मे धर्म का योग हुआ । वहीँ के सारियो ते इस सधनय की धारणा की कि वे सबसे पहले सिरोही के विनाशान मे शानि ललाये । सिरोही मे मनुष्यो है जो विनाश यहीँस समेतल हुआ था । बलिगा मे सारोद-समेतल हुआ ती बलिगा का शिनाशन हुआ । मोरद मरुदा नहीं कि मनुष्य के सारोद-समेतल हुआ ती सिरोही का शिनाशन न ही । समेतल मे धी धीनुड भाई भूट के मनुष्य मे सिरोही के सिरो को जो शानिक मनुष्यो देवते को विना उरभे मने मरोगी होता है कि उस सधनय मे हूट धीरे शान है जो धीरे धीनुड भाई के मनुष्य मे प्रकट हो सकती है ।

सिरोही के विनाशान का सधनय उरभे धर्म विचार मे मे विचरता है जो शासन के सारियो मे सारोद-समेतल के शासनय मे सधनय देना हुआ है । इसी धारणा मे विनाशान मे मनुष्यो की धारोवर्त को विचार वा वहीँ तो सधनयकी के सधनय के लिए कुछ धर्म को धरन जा सनय था, धीरे उरभे धर्म-युद्ध का सधनय भी दुपय होता ।

शासन एक मया है । मनुष्य दुपय मया है । उरभे बंद होना ही चाहिए । लोभ सधनय मे धीरे, यह धर्मो है । लेकिन सधनय—जनता के मोट ते बननेवाली धीरे जनता के मोट मे बननेवाली सधनय—शासन का धारणा करे, तथा धर्मय सधनयशास धीरे बरदानयो मे सधनय का धारणा बने, यह धर्मो है । शिनु सधनय के धर्म का धर्मय मये भी है । शासन यहीँस बनार मनुष्य को बेकार कर देती है, तथा धीरे सधनय का मया बरहोस कर मनुष्य को मर-बन बना देता है । एनी धीरे मे सुविधा को सधनय के सधनय बर धर्मय विचार है, एनी धर्म सधनय धीरे धर्मय का धर्मय शान है, धीरे मनुष्य को मनुष्य का धर्म बनना है । ऐसा सधनय है कि सधनय धीरे सधनय का धर्म मयाव को ही मयाव करने बर उरभे है । शासन के मने का मुर्दाविना किन का मरना है लेकिन धर्म धर्म मने का मुर्दाविन करे होगा ? धर्म होगा ? धर्मय विचार मरना विना मयाव ? शासनय का बरा सधनय होता ? धर्मय धर्मो है, यह—

सभी राजनीतिक दल मूलतः एक ही—'थार्मीस्ट'

ग्रून : सोशलिस्ट फोर्सेस के एकीकरण के बारे में आपकी क्या राय है ? यह इष्ट होगा या नहीं ?

उत्तर : सोशलिस्ट फोर्सेस कौन है, मुझे मासूम नहीं। इसमें इट है नहीं। सारे फ्रिण्ट है। सोशलिज्म अगर करना हो, तो शक्ति बढ़ा होनी चाहिए। वे छोक-दाकि की धोर ध्यान देते नहीं। सत्ता हासिल करने सोशलिज्म स्थापित करेंगे। गरीबों की धोर ध्यान देना उनका मन है। वह सारा सत्ता प्राप्त करने करेंगे।

सत्ता मानी भी क्या ? मान लीजिए आप बन गये एम. पी., तो क्या आपकी अमन बढ़ गयी ? आपकी प्रकृत तो आज जो है वही वही होगी। सत्ता मानी क्या है ? आज नहीं है आपकी सत्ता ? आपके विचार आप प्रकट नहीं कर सकते हैं ? यहाँ भी प्रकट कर सकते हैं, वहाँ भी प्रकट कर सकते हैं। लेकिन वहाँ आपके विचार आप धार्मी के द्वारा प्रकट करेंगे। आज आपके विचार लोग मानें न मानें, लेकिन वहाँ आप मजबूत लगे धोर लोग नहीं मानेंगे, तो धार्मी है ही !

नमालवाट्टी में दगा हुआ था। वहाँ भी गया था। वहाँ थर्म्युनिस्टों में कुछ उपम मचाया था। उनको मैंने समझाया कि तुम मंते में बकूफ हो ? सरकार को थोट धोर टैकम देकर सेवा रखने का अधिकार दिया—उनके हाथ में लक्ष्मण दिने, धोर धार धुनी शक्ति की शालें बरते ही। अगर सुधारी धुनी शक्ति सरल होनेवाली है, तो जाया उनका विरोध करेगा नहीं। लेकिन वह लक्षण

→ भाग्यता बढ़नी हुई घराबखोपी के इस जमाने में भी इस देश में प्रचलित है, लेकिन सत्ता के दमन धोर सम्पत्ति के लोपण के बारे में धार्मिकता अभी बन नहीं पायी है। उन्हें, उनके साथ जन-जन की भावना जुड़ी हुई है। धार्मिकता ही नहीं, बेवनी भी है। साथ मात्र हमारा सत्ता के अर्थ धोर सम्पत्ति के लोभ में पूर है। घराब का नामा मुहह होने पर उतर जाता है, पर इनका नामा तो दिन-रात अभी उतरना ही नहीं। घराब के नाम तक वे परदेख करलेवाले एक-से-एक सात्विक लोग सत्ता के ह्वाव के लिए लालचिज रहते हैं। तारीफ तो यह है कि इनके 'डीकेदार' बुद चारते है कि जनता सत्ता धोर सम्पत्ति के 'अने' में दूर रहे। सत्ताधर को जल्द ही बनी हो ? यह स्थिति इनकी मर्याद है। अब प्रज है कि दूर कैसे हो ? धोर, अगर यह स्थिति दूर न हुई तो देश का भविष्य क्या होगा ? अब हम उन बुरोड़ो नर-नारियों में—ब्रिक्की रिपुनी मम की एक लक्ष्मी कहानी है, क्या कहेंगे कि वे धारदा मम मालत कैसे करें ? बेहोमी की हालत में तो किसी तरह रात बट जानी है, लेकिन होप में रहेतो तो धूर बोर लक्षण में दिन कैसे बटेगा, रात कैसे बटेगी ? उनके लिए धूरि क्युत चाहिए। सामदान-त्रिवादान-नामदान के विचार धोर किसी धोर में वह धूरि दिवादी नहीं देगा। इनबिद राजस्थान के मिनी को उनसे संकल्प पर बार-बार बधाई ! *

नहीं होगी। बरॉकि वह सेवा के द्वारा दयावी जायेगी। धार्मिक तीर-धनुद, धार्मी के सामने टिकेंगे नहीं।

सार यह है कि यह मारी सत्ता धार्मी की है। नाम है सोशलिस्ट पार्टी, थर्म्युनिस्ट पार्टी, बरौरह। लेकिन सभी धार्मीस्ट पार्टी हैं। मैंने उसको नाम दिया है 'थार्मीस्ट'। तुम्हारा Final sanction (प्रासिरी तावन) क्या है ? लोग नहीं मानते, तो धार क्या करेंगे ? धार्मी की मदद लेंगे। प्रासिरी शक्ति सेवा है।

धर्म-राज्य से पूछा था कि धार समझते हैं, लोग नहीं समझेंगे, तो धार क्या करेंगे ? बोले—धुवारा समझाऊंगा। धोर धुवाय समझाने पर भी नहीं समझें तो ? तो विवारा समझ ऊंगा। बीबी बार, पांचवी बार समझाऊंगा—धोर समझाना ही वाऊंगा। मेरा एव ही हथियार है समझाना। मुझे दूसरे हथियार चाहिए नहीं। दूसरे हथियारों पर मेरी थड्डा नहीं। विचार जिनको समझ में आ गया, वह प्रभावित हुआ। उनको थडा विचार पर है। इनकी किस पर है ? धार्मी पर। बाहें सोशलिस्ट हो, थर्म्युनिस्ट हो, जन-धपी हो, स्वतंत्र हो, या बार्स हो—इनका final sanction (प्रासिरी तावन) धार्मी है। जब कोई ऐसी पार्टी बनेगी, जो कहेगी कि हम धार्मिक, तो धार्मी हटावेंगे, नव वह 'स्वतंत्र विचार' होगा। धार जिनो के पास स्वतंत्र विचार है नहीं। नाम धार्मिक-मल्ल है। एक है धर्मबधारी, एक है हासंवादी, एक है धोखारवादी।

मनुष्य को योग्यता तो धार्मिक शक्ति से बढ़ती है। एक होता है प्राइमरी क्वैज धोर सेकेंडरी क्वैज। प्राइमरी क्वैज है, प्रामा-गिऊना, निज, हिम्मत, निभंवेता। विद्या, कला, उपाय वे गेरेएरी क्वैज है। इसलिए सोशलिस्ट फोर्सेस के एकीकरण पर मेरी थडा बंट लगेगी है, अगर वे जाहिर करेंगे कि हम सत्ता में धार्मिक, तो जनता पर हमारा पूरा विश्वास है धोर धारने पीछे हम जनता का बल महसूस करते हैं, हम धार्मी हटावेंगे।

मान लीजिए, धार्मी हटावी, तो क्या होगा ? पाकिस्तान हमारा करेगा ? करेगा, तो धर्म-धार होगी। धर्महीन, धर्म गब धर्म-धम धार्मिक, मान्य नहीं बंटेंगे। इस मान्य हमने बा हर तो हमारी धार्मी ही बनी है। हिन्दुधारा की बाग तो फिलहाल छोरकें, बमबोर है बधारा। मान लीजिए इन्वेक के धार्मी हटावी, तो क्या समझते हैं धार ? इनका बरदा देना, धार्मी हटावी, तो क्या एवधम उग पर धर का हमला होगा ? इन्वेक की धार्मिक एवधम धूम में लुभंकी, दुनिया पर धमर होगा। लेकिन कोई हिम्मत नहीं करना।

मान लीजिए, सोशलिस्ट फोर्सेस एक हो जाते हैं धोर जाहिर करत है कि हम सोशलिस्ट फोर्सेस है, हम धार्मी हटा देने है। धार्मी के लोपी को बेकार हो नहीं रहे देंगे, मम को धुनी में लला देंगे। तो बिजना समाजान परिणाम होगा धूल दुनिया की राजनीति पर। इनबिद डर छोरना चाहिए। जब तक थडा धार्मी पर बालब रहेंगी, एक लक्ष देगा ही बलबेधारा है। इसलिए बरों भी पार्टी बहो धार्मिक, बरों कथक परदेखना है नहीं।

—बिनीक

टीकामती : २२-७-६८ : प्रथमपत्रों के मध्य की बर्षों में



‘जीवकायान’ पुस्तक के अन्तर्गत अंग्रेजी भाषा में - १५० पृष्ठ
 इस पुस्तक में स्वामी जी की विचारधारा का स्पष्ट चित्रण है।
 अन्तर्गत अंग्रेजी भाषा में - १५० पृष्ठ

इस अंक में पढ़ें

बच्चों की मूलभूत शिक्षा
 गीत-कविता से शक्ति-विकास
 भासा धोत्रा का जीवन-संघर्ष की कहानी
 पत्नी धोत्रा का जीवन-संघर्ष की कहानी
 बाल्यालय का पत्र
 एक छात्रावली का नाम
 भासा का जीवन-संघर्ष की कहानी
 गीत-कविता से शक्ति-विकास का संकलन
 पुरानी भासा का नाम

२६ अगस्त, '६८

पृष्ठ ३, अंक २]

[१८ पृष्ठ

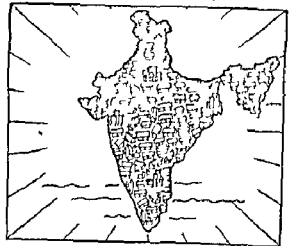
भाषणों की मूलभूत शिक्षा

बनिराम पांडे जब सप्तमक ग सौं तो मा में बहुत हल
 पन मच रही थी। हुआ यह कि इसी सात उना गजनी के
 मुरारी ने इलाक़ा का इन्टर कालेज की पढ़ाई पूरी की और
 सप्तमक विद्याविद्यालय में बी० ए० में नाम लिखाया। बनिराम
 पांडे का एक बहुत पुराने मित्र हरिवंश शोभा सप्तमक में रहते
 हैं। वंश का नाम मित्र पर पुरा मरोना है इतिहास उन्होंने
 मुरारी को सातवें के नाम पर हरिवंश की व पाल भेज दिया
 था, क्योंकि मुद्र लेनी के काम में बहुत पैसे हुए थे। मातमर
 मुद्र लेनी की इतनी योग्यता गाड़ी भेजी व वन से ही भेजा करते
 हैं, इसलिए उन काम में जरा भी सावरबाही उनमें नहा होती।
 हरिवंश की भरोसे व मित्र तो हैं ही पढ़ाईवाले भी हैं।

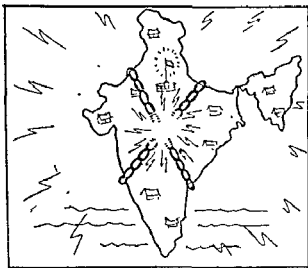
स्वराज नहीं हुआ था, तब न ही सप्तमक में रह रहे हैं।
 गीत व लोगों के सामने मुद्रम में पैरवी करना उनका मुख्य
 पणा हुआ च रहा है। स्वराज के बाद उन्होंने यह पणा छोड़
 देने की बात सोची थी। सोचने में कि स्वराज के बाद यह
 पैरवीबाना पणा तो चलेगा नहीं, इसलिए दाल रोने के लिए
 कोई और काम करना चाहिए। दोस्त का गीत जाकर
 लेनी करने की कोशिश की, लेकिन सामला जमा नहीं। इसी
 बीच उन्होंने यह भी देखा लिया कि स्वराज के बाद पैरवी
 का पंथा समाप्त नहीं हुआ है। हरिवंश भी बरोबर-बरोबर बड़ी
 हैं, और लोग भी बड़ी हैं। हाँ, 'अपनी साहसों की जगह लेना
 या उनके 'भ्रान्ती जकर ऊपर के दफ्तारों में धा गये हैं। इसी
 लिए दो-बाई साल बाद ही लेनी-बारी का सतराग छोड़ छोड़कर

हरिवंश की सप्तमक पाने पुराने पना में ली जाये। और जब
 'टीकेगरी का पना तथा शोभा भी सामान्य का दिग्गज पना
 भी समाप्त का नाम खबर नग बानी गया व भी 'मदोने
 उतर गया। माता कि टीकेगरीवाली इन बानी पना के रिवाजे
 जब पना ही गये तो गिर हाथ धोकर सौं जाया तो बचपनी
 ही न बही जायगी? जराके दम मद्रुक्ति का हा पन है कि
 हरिवंश की पात्र सप्तमक के जाने-बारी लोगों में गे हैं। हर
 जगह उनका पढ़ना है, पाहे यह मककारी दफतर ही, इतना
 ताज विद्वान्मिशालय ही सरकारी-मैमरारागी नेत्र का पर हो,
 या बरे-बरे और छोटे से छोटे सेठ साहूदारा की गरी ह।

इतिहास पुरारी का नाम विमाने में कोई अक्षर नहीं हुई
 थी। 'हास्टल में रहने का इंतजाम भी हो गया था और



भासा गीतों का देश ।



१५ अगस्त '४७ को गुलामी की जंजीरें टूटी !

मुरारी ने चिट्ठी लिख भी दी कि 'हरिवंश चाचा ने सब कुछ ठीक कर दिया है, भापको भ्रान्ते की जरूरत नहीं है !'

लेकिन बाप का दिल ठहरा ! माया नहीं। खेती-बारी का काम संभलते ही बलिराम पांडे एक बार सारा इंतजाम अपनी आँखों से देख भ्रान्ते के लिए लखनऊ पहुँच गये थे।

मुरारी के रहने, खाने-पीने और पहने-लिखने का इंतजाम देखकर बलिरामजी को इतमीनान हो गया और उसी दिन रात की गाड़ी से गाँव लौट भ्रान्ते की सोच लिये थे लेकिन जब हरिवंशजी से मिलने गये तो उन्होंने भ्रान्ते ही नहीं दिया। बोले, 'एक तो वर्षों बाद भेंट हुई, और तिसपर भाज ही भाग जाना चाहते हो ? दो दिन और ठहरो। परसों पन्द्रह अगस्त है, स्वराज की २१वीं वर्षगांठ। लखनऊ का जलसा देस कर जाना !'

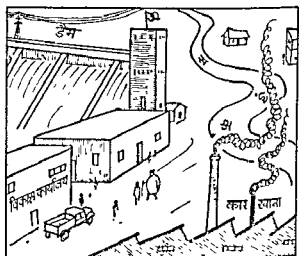
बलिराम के मन में भी चालच हो प्रायो। सोचा कि गाँव छोड़कर कभी बाहर निकलने का मौका तो मिलता नहीं, यों ही मुएँ का मेढक बने रहते हैं। अब यहाँ भा ही गये हैं तो दो दिन एक ही जायँ।

गाँव में रहते हैं तो १५ अगस्त कब प्राया और कब गया, इसका पता ही नहीं चलता है, लेकिन लखनऊ की तो बात ही निराती है। यहाँ की बहल-पहल और रौनक देखकर तो बलिराम पांडे हैरत में पड़ गये। स्वराज का जलसा मनाने में इतना खर्चा, इतनी दीडपूय, खेल-उमादो ध्य भी सहरों में होते हैं, यह तो बलिराम की मातृभ ही नहीं था। वह तो सोचते थे कि भ्रंश गये सब उनके जाने की सुगो तो मना ही ली अब उसके बाद जो चीजें प्रायो हैं, क्या उनके भ्रान्ते की सुगो भी मनायो जा सकती है ? भ्रष्टाचार, गरीबी, बेकारी, भ्रंशगाईं, डुराचार, घुसखोरी, बलबन्दी, दंगे-भ्रंसाद, बुर्सी की छीना-भपटी,

जाति के झगड़े, धर्म के नाम पर खून-खराबे—क्या इन्हींके भ्रान्ते पर खुशी मनायो जाती है हर साल ? गाँव में रहनेवाले बलिराम पांडे कभी-कभी जिला कचहरी या ब्लाक आफिस में किसी काम से जाते हैं, तो यही सब देखकर घाते हैं; और मन ही मन सोचते हैं, क्या स्वराज इन्हीं सबके लिए प्राया था ?

१५ अगस्त को बलिराम पांडे हरिवंश के साथ एक नेताजी का भापण सुनने गये। हरिवंश ने बताया कि नेताजी बहुत बड़े हैं। देश भर में भ्राजकल इनके नाम का जयजयकार हो रहा है। भापण बहुत अच्छा देते हैं।

बलिराम पांडे ने पहली बार इनके बड़े नेता को देखा और भापण सुना था। बगुले की पाँव जैसे सफेद कपड़े पहने हुए 'नेताजी' ने बहुत धान से भ्रंशवा फहराया था। एक ही तरह के कपड़े पहने 'स्कूलिहा' (स्कूल में पढ़नेवाले) लड़कों ने बतार



विद्युत की बड़ी-बड़ी योजनाएँ चालू हुई !

में गड़े होकर माना गया था, सत्ताभी दागो थी। और नारे लगाये थे। उसके बाद नेताजी ने लम्बा भापण दिया था और हजारों लोग बैठे सुनते रहे थे।

लौटते समय बलिराम पांडे के मन को जो बात मय रही थी यह यह कि नेताजी ने अपने भापण में तो कहा था कि 'भारत गाँवों का देश है। देश की तरक्की तभी होगी जब भारत के साठे पाँच लाख गाँवों का विकास होगा। ... भ्रंशजों ने हमारे देश को, हमारे गाँवों को घुस लिया था, उन्हें चींट बर दिया था। हमें देश को बनाना है, हर गाँव को बनाना है। ... गाँवों के विकास का जितना काम हम करना चाहते थे उसे नहीं कर पाये हैं, उसे करना है। फिर भी पिछले दिनों हमने बहुत

तरफ़ों की है। वह दिन दूर नहीं जब हमें भ्रान्त के लिए दूसरे देशों का मुँह नहीं ताकना पड़ेगा। और भी सब चीज़ें धीरे-धीरे अपने देश में बनने लगेंगी। जैसा कि गांधीजी ने कहा था, 'मन ही मन बलिराम कुछ गये थे। हुँह २१ साल बीत गये। दवा का क्या हाल हुआ, गाँव कहीं और किस हालत में पहुँचे हैं, यह कोई कहने और भाषण में समझने की बातें हैं? अर्थों के सामने क्या दिखाई नहीं देता? विकास की माया देख लो, पचायती जास देख लिये। नेताओं के बाड़े और उनके करतब देख लिये। अब क्या देखना बाकी है? गाँव भरहास होते जा रहे हैं, हम गाँव के लोग टूटते चले जा रहे हैं, लगता है कि गाँव का ढाँचा भर रह गया है, गाँव कहीं है ही नहीं। और नेताजी जोर-जोर से भाषण दे रहे हैं कि भारत गाँवों का देश है। वो' लेने चले आते हैं नेता और लगान वसूलने चला आता है सरकारी कर्मचारी, इसके बाद कौन पूछता है गाँव को ?

यों तो बाहर से बलिराम पाड़े बहुत शात रहते हैं। गाँव में कभी इधर उधर में नहीं पड़ते? अपनी घर गृहस्थों में ही लगे रहते हैं। लेकिन जब स्वराज्य हुआ था तब उनके दिव्य में जो धरमात पैदा हुए थे स्वराज्य के बाद वे दिनों दिन मरते गये। आज उस मन में बड़ी बुद्धि बन गयी। और जब उन्होंने नेताजी का भाषण सुना तो मन में हलचल पैदा हो गयी कि 'आपिर यह घोषणाओं का आरोपण कबतक चलता रहेगा?' क्या कभी गाँवों की बेवृथ जनता चिन्नेगी भी या नेताओं के भाषणों की भुन भुलैया में ही भटकती रहेगी? (कमन)



लेकिन गाँव इतने गये
दीकेदार सेठ और अचभर की बन भागी !

गाँव गाँव में शान्ति-सेना

(पिछले शक में पचास हूँ थी प्रामसभा के भारत गाँव में व्यवस्था विकास और न्याय के लिए होनेवाले काम के बारे में। उसके बाद प्राम शान्ति-सेना की चर्चा चली थी। प्रश्न था कि इस प्राम शान्ति सेना के काम क्या होंगे ?)

उत्तर—प्रश्न गाँव के लोग मिलकर अपने गाँव की व्यवस्था नहीं चला सकते तो फिर प्रामस्वराज्य का अर्थ क्या होगा? प्रश्न विकास और व्यवस्था की जिम्मेदारी गाँव के बाहर की ही किसी संस्था, या सरकारी अधिकारी के हाथ में रह गयी तो स्वराज्य किस बात का होगा? प्रामस्वराज्य की मुख्य बात यह है कि सब मिलकर अपने निष्पक्ष से अपना काम चलाया।

प्रश्न—लेकिन, आपकी याद होगा, आपने कहा था कि प्रामसभा इसलिए नहीं है कि गाँव पर दुरुस्मान करे। वह इसलिए है कि गाँव की सेवा करे, गाँव का समर्थन करे, गाँव गाँव में इतनी ठोस और पक्की एकाता कायम करे कि बाहर चाहे जो आता रहे गाँव के भीतर की एकाता अपनी जगह अधिग रहे।

उत्तर—असली वान यही है। गाँव की शान्ति गाँव की एकाता में ही है। गाँव में शान्ति बनी रहे, एकाता कायम रहे, और गाँव में जो भी सवाल खड़े हों उनका हल गाँव के लोग आपस में बैठकर निकाल लें। बस, इतना होता रहे तो दूसरे सब काम आसानी से होते चले जायेंगे।

प्रश्न—शान्ति का काम कठिन है। भाजकल ऐसा हो गया है कि गाँव में हर एक ठनाव सा बना रहता है। भूमि के, लेन देन के, तथा कुछ दूसरे भगडे पहले भी थे, लेकिन राजनीति और चुनाव ने तो गजब ही कर डाला है। पचायत का चुनाव, विधानसभा का चुनाव, समद का चुनाव, वस चुनाव ही चुनाव की चर्चा रहती है। चुनाव तो अपने समय से आता है और चला जाता है, लेकिन गाँव में भगडे का धोखे हो जाता है। चुनाव से दुस्मनी की जो आग लग जाती है वह बन्नी नहीं बुझती। आपका क्या स्याल है, क्या यह हवा कभी बदलेगी?

उत्तर—बदलेगी बसों भगडे के कारणों को जब से दूर कर दिया गया। प्रामदान से जमीन के भगडे समाप्त हो जायेंगे, और राजनीतिक दलबन्दी भी समाप्त हो जायगी। वे दो भूत हैं, जिनसे छुटकारा मिल जाय तो छोटे मोटे भगडों की दूर करना मुश्किल नहीं रह जायगा। फिर भी दो काम तो करने ही पड़ेंगे। एक तो गाँव की व्यवस्था बदले, दूसरे लोगों का शिक्षण हो। प्रामदान आन्दोलन में तीन मुख्य चीजें हैं—प्रामदान, गाँव की शांति और प्राम शान्ति-सेना। •

माता और संतान : समाज की बुनियाद

[धारमवर्ष पर शुरू में बच्चों के मन और तन के विद्यास पर धन ध्यान नहीं देते । क्या गाँव, क्या गहर, सब जगह एक ही सिलसिला चलता है कि घात-भात पर बच्चे को डाँट दो, डरा दो, धमका दो । जरूरत पड़े तो पीट दो या बहलाने के लिए खाने को लुब्ध धमा दो । इसमें बच्चे का तन-मन दोनों बिगड़ता है । यह होता है अधिकतर साधारणवर्गी और जानकारी की कमी के कारण । जरूरत की चीजों का अभाव भी तन-मन को बहुत बिगाड़ता है । और अभाव तो गाँव में है भरपूर ही । इस अभाव को दूर करने के लिए ही भ्रामदान धान्मरोलन चल रहा है । अभाव तो सभी दूर होगा, जब गाँव के सभी लोग मिलकर सबके बारे में सोचेंगे । भ्रामदान से वह सिलसिला शुरू होता है । लेकिन अभाव के साथ ही एक दूसरी बात भी है, वह है अज्ञान । घर के पुरुष और छो, यानी बच्चे की माँ और बाप नहीं जानते कि जो जन्मेदारी बच्चे की उनके ऊपर है उसे वे कैसे निभायें । इसीलिए "माँ की बात" के इस अंक में माताओं की जानकारी के लिए जरूरी बातें छाप रहे हैं । इसी तरह हम बाप, भाई, बहन, दादा, दादी, नाना, नानी आदि सब लोगों के जानने लायक बातें छापेंगे कि बच्चों के साथ किस तरह का व्यवहार करना चाहिए ।—सं०]

श्रिय बहन राधा,

तुम्हारे जाने के बाद मेरे मन में कई बार यह बात उठी कि तुम सगामी हुई, शादी हुई और एक दिन समुराल भी बली गयी । वहाँ जाकर तुमने अपनी घर-गृहस्थी संभाली, एक नया बानावरण मिला । प्रब अगला एक अगला संसार बनाओगी, और सयोग हुआ तो इसी तरह छोटी ही उम्र में माँ भी बन जाओगी । लेकिन माँ बनने से पहले माँ बनने की विद्या तुमको नहीं मिली । एक तुम ही नहीं, अपने देस में अधिक लड़कियाँ ऐसी ही हैं जो माँ बन जाती हैं, लेकिन मातृत्व की जानकारी उनको कुछ नहीं रहती । इस प्रावश्यक जानकारी के न रहने के कारण ऐसी भूलें हो जाती हैं जिनसे माँ तथा बच्चे, दोनों को जीवन भर अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है । मैं चाहती हूँ कि तुम ऐसी भूनों से बचो । समझदार हो, कोशिश करोगी तो जरूर बच जाओगी ।

राधा, सौ के जीवन में कितने ही परिवर्तन आते हैं । वह छोटी-सी बच्ची से किशोरी और किशोरी से युवती बनती है । युवती होने पर उनमें साज और संरोच आ जाता है, जिससे

उसे अपने तथा अपने सामाजिक जीवन को समझने का मौका नहीं मिल पाता । सो-पुरुष सम्बन्ध तथा मातृत्व की बातें परिवार में लड़की में सामने कोई करता नहीं । इधर-उधर मुनकर, सोचकर, चोरी से देखकर जो जान लेती है, वस उतनी ही उसकी जानकारी होती है । अक्सर वह पत्नी बनती है और माँ भी बन जाती है, फिर भी उसे कोई सही जानकारी नहीं रहती है । सोचो, जिस मातृत्व की शिक्षा पर माँ तथा संतान का जीवन टिका हुआ है उसकी प्रावश्यक जानकारी तुम जैसी लड़कियों को न मिले, यह कितनी बड़ी कमी है ।

पुराने जमाने में बड़े परिवार होते थे । हर परिवार की बूढ़ी सियों सयानों लड़कियों को और नयी बहूयों को अपने अनुभव के आधार पर वे बातें समय-समय पर समझाया करती थीं । लेकिन आज नये जमाने में कई कारणों से परिवार छोटा हो गया है; उस छोटे परिवार में सौ बिलकुल अकेली पड़ गयी है । कौन उसे बताये, कौन सिखाये ?

शायद तुम्हें मासूम हो, जानकार लोगों ने मातृत्व के विषय पर बड़ा ध्यान दिया है । आज के युग में ही नहीं पुराने जमाने से ही इस विषय पर अनेक ग्रन्थ लिखे गये हैं । जिनमें गर्भाधान एक पूरा संस्कार माना गया है, ठीक उसी तरह जैसे विवाह, श्राद्ध आदि । उन ग्रन्थों में इन सत्कारों की सारी विधियाँ लिखी हुई हैं । यह नहीं माना गया है कि माँ-बाप सो ही बन जाया जाता है । आज का जमाना पहले से कहीं अधिक विज्ञान का है, इसलिए हमारे हर काम में, चाहे वह छोटा हो या बड़ा, विज्ञान होना चाहिए । विज्ञान वा बहुत विकास हो गया है, और प्रायः कितना होगा इसकी कल्पना हम-तुम आज नहीं कर सकते ।

ऐसा मान लिया गया है कि बच्चे का निराशा उसी समय से शुरू हो जाना है जब वह माँ के गर्भ में आ जाता है । जन्म लेने के बाद से तो निराशा साफ-नाफ शुरू हो ही जाता है । माँ बच्चे की प्रथम गुरु मानी गयी है । वच्चा माँ के गर्भ में ही माह रहता है और जन्म लेने के बाद भी माँ के ही निवट संभार में उमरा अधिक समय बीतता है । बच्चे के जीवन में माँ की गोद और उसकी देखभाल वा बहुत महत्व है । बच्चे के चारों ओर जो लोग रहते हैं उनमें सबसे ऊँचा स्थान माँ का है ।

राधा, सोचो सौ की कितनी बड़ी जन्मेदारी है । सौ का अपना बच्चा तो है ही, देस में बरौड़ों बच्चे हैं उनकी जन्मेदारी मुख्य रूप से सियों पर ही है । देसने में सगना है कि हमारे सामने अपनी घर-गृहस्थी और बात-बच्चों के विषय और कुछ नहीं है, लेकिन जब जरा दूर तक सोचो तो सगना है कि

सबमुच कितनी बड़े जिम्मेदारी हम लोगों पर है। इतनी बड़ी जिम्मेदारी निभाने के लिए हमारी कितनी तैयारी है? जैसे किसान को लेनी का घौर डाक्टर को शरीर का ज्ञान होना चाहिए उसी तरह माँ के लिए भावत्व तथा बच्चे के पालन-पोषण का पूरा ज्ञान आवश्यक है।



पम्मी और उसकी मम्मी

किसी भी देश के लिए यह गौरव की बात है कि वहाँ के नागरिक सभ्य तथा स्वस्थ हो। देश की उन्नति, सुख और समृद्धि इसी पर निर्भर है। आज के बच्चे ही बच देश के सभ्य नागरिक होंगे, उसे बनानेवाले, चलानेवाले होंगे। इन बच्चों को बनाने की जिम्मेदारी किसकी है? हमारी, तुम्हारी, घौर किसकी?

राधा, जिसी छोटे से बच्चे को देखकर कई लोग ऐसा सोच खेते हैं कि यह मास के एक लोपडे से अधिक घौर कुछ नहीं है। लेकिन ऐसा नहीं, बच्चा अपने में पूर्ण होता है। उसके धन्दर भविय का क्या प्रकुर छिया हुआ है, इसे कौन जानता है? जिस तरह से छोटे-से बीज में विशाल वृक्ष छिया रहता है, उसी तरह बच्चे को बड़े का छोटा रूप समझो। बच्चा शुरू में ही समाज में सब कुछ शीघ्रता है। समाज का प्रभाव उस पर पड़ता है, और वह समाज को प्रभावित करता है। मनुष्य समाज में ही जन्म लेता है, बड़ा होता है, सब कुछ सीखता है और समाज में ही मरता है। समाज के बिना मनुष्य रह नहीं सकता और मनुष्य के बिना समाज बन नहीं सकता। मनुष्य और समाज का तन घौर प्राण का सम्बन्ध है। आज जो बच्चे लोगों की गोद में हैं, वे बचल हमारे नहीं हैं; वे सबमुच हमारी गोद में समाज की धरोहर हैं। इस धरोहर को पालना घौर पालकर समाज के लिए उपयोगी बनाकर समाज को सौंपना हमारा कर्तव्य है। बहन, हर माँ की यह जिम्मेदारी है कि वह बच्चे को योग्य बनाये। इसीमें माँ तथा बच्चे, दोनों का सुख है।

बच्चे के जीवन के शुरू के दिनों का जिनका मत्त्व माना जाता है सबसे बड़ी अधिक है। इन दिनों में बच्चा जैसे वातावरण में पलता है, और जैसा शिक्षण उसको मिलता है उसकी पमिट छाप उसके जीवन में रहती है। जन्म से ही नहीं, जन्म से पहले गर्भ से ही शिक्षण शुरू हो जाता है। जन्म से लेकर चौदह साल तक की आयु तक बच्चे को तीन मजिल पार करनी पड़ती है। एक जन्म से ३ साल तक, दूसरी ३ से ६ साल तक, तीसरी ७ से १४ साल तक। इन्हीं दिनों में विदेय ध्यान देने को आवश्यकता है। इसी समय के सत्कार

पम्मी की मम्मी के दुलावे पर हम उसके घर पहुँचे। घर में पांच रखते ही सामने दिखाई पड़ी एक छोटी सी मेज, एक छोटी-सी कुर्ची। मेज पर रखी हुई थी पम्मी की चित्रोपलौ एक किताब तथा कुछ खिलौने। समझते देर नहीं लगी कि सारी व्यवस्था नहीं पम्मी के लिए है।

बहुत दिनों से छोटे बच्चों के शिक्षण का काम में कर रही हूँ। अनेको घनो-गरीब, शिक्षित-प्रशिक्षित परिवारों से परिचय हुआ है, उनके घरों में गयी हूँ लेकिन बच्चे के लिए इस तरह भ्रमण से व्यवस्था इसके पहले कही नहीं देखी थी। गरीब परिवारों में तो ऐसी व्यवस्था करना बहुत कठिन है, लेकिन घनो परिवारों में भी बच्चों के लिए ठेर में फपडे घौर खिलौने रहते हैं, उनकी देखभाल के लिए नौकरानी भी रहती है, लेकिन बच्चों को शक्ति घौर उभर के हिसाब से कोई चीज नहीं होती। बच्चों की जरूरत क्या है, उनके मन की पसन्द क्या है, देने कोई समझते की कोशिश नहीं करता। बच्चों के वपडे खिलौने घादि सब चीजे भाँ-बाप भ्रमणी घान शक्ति के हिसाब से खरीदते हैं।

लेकिन पम्मी के माँ-बाप बच्चों के मन की समझने को कोशिश करते हैं। इसीलिए उन्हीने पम्मी के लिए पकने-खिलने घाने के जीवन के मूल आधार बनते हैं। यही से मादते बनने सगती हैं और यही से जीवन के सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं का विकास शुरू होता है।

पौधे की तरह बच्चे को उचित खाद पानी, हवा-धूप, प्यार-दुलार जैसे मिले यह सोचने की बात है। तुम सोचना। यो तो मेरो जानकारो भी कुछ बहुत नहीं है, और अनुभव भी नहीं के बराबर है, फिर भी कुछ तो सुद भोगने के कारण इस विषय में शक्ति पैदा हुई, और कुछ इसलिए भी हुई कि जो भूने हम लोगों से हुई वह तुमसे न हो। अगर तुम चाहो तो इस विषय में मैं समय समय पर तुम्हें लिखती रहूँगी।

आज इतना ही। तुम प्रमद होगी। हम सबको बराबर तुम्हारी माद रहती है।

तुम्हारी बहन,
—बिया

की छोटी-छोटी मेज-कुर्सी की व्यवस्था तो रखी ही है, उसके खाने-पीने के छोटे-छोटे वरतन भी धलम से रखे हैं।

मेरे सत्कार के लिए पम्मी की माँ जद नमकीन और शरबत लायी तो पम्मी भी अपनी कुर्सी पर बैठ गयी। माँ सबसे पहले पम्मी के छोटे ग्लास में शरबत ढालने लगी। ग्लास पूरा भर भी नहीं पाया था कि पम्मी ने माँ का हाथ पकड़ कर रोक लिया और मेरे ग्लास की तरफ इशारा करने लगी। शायद उसकी जिद थी कि पहले घर प्राये मेहमान को शरबत देना चाहिए।

आज तक मैंने इस उमर के बच्चों को अपने लिए कोई चीज माँगने की जिद पकड़े देखा था, पहले न मिलने पर रोते देखा था, लेकिन यह दृश्य पहली बार देखा कि इतनी छोटी-सी बच्ची घर प्राये मेहमान का ग्लास करे और शरबत पहले मेहमान को देने के लिए जिद करे। मेरा दिल खुशी से भर गया। माँ सचमुच समझदार और काविल माँ थी। तभी तो उमने बच्चे का पूरा ध्यान रखा था। बच्चे को श्रद्धा-सम्मान के साथ व्यवहार करने का ही यह नतीजा था कि पम्मी खुद से पहले मेहमान का ध्यान रख रही थी।

बच्चे के साथ सब कठोर व्यवहार करने या बिना सोचे-समझे बहुत लाड़-दुलार करने का ही नतीजा होता है कि बच्चे जिद्दी, लालची, स्वार्थी बनते हैं। जब बुनियाद शुरू में बिगड़ जाय, तो जिन्दगी का भवन सुन्दर कैसे बनेगा? इसलिए बच्चों के साथ बराबरी का, श्रद्धा व आदर का और प्रेम का सही व्यवहार करना हर माँ-बाप का फर्ज है। --क्रान्ति

ग्रामदान की धुन

पृथ्वीपुर के स्थानीय प्राथमिक चिकित्सालय में हिमाचल प्रदेश को एक बहन शांति-सेना विद्यालय की छात्रा कु० उर्वशी अपने तेज सुवार में बेहोशी की स्थिति में भी अपने माता-पिता की याद न करके ग्रामदान की डेर लगाती थी। कहती थी, "उम गाँव में सभा हुई कि नहीं? ग्रामदान हुआ कि नहीं? ग्रामदान करो।" ग्राम मंडवा के सरपंच उसके पैरों के पास खड़े-खड़े कह रहे थे कि बहन, ग्रामदान होगा। कु० उर्वशी गत दिनों ग्राम मंडवा, जिला टीकमगढ़ में ग्रामदान-टोली में धूमने-धूमते बीमार हो गयी थी। जब ग्रामदान कराने के लिए टोलियाँ जा रही थी, तो उसने कस्तूरबाग्राम की बहनों से कहा कि हमें भी से बनों।

—गायत्री प्रसाद शर्मा

एक श्राद्ध गाँव की कल्पना

प्रश्न : आपकी राय में श्राद्ध भारतीय ग्राम की कल्पना क्या है? और हिन्दुस्तान की मौजूदा सामाजिक और राजनीतिक हालत में 'श्राद्ध ग्राम' के ढंग पर एक गाँव का किस हद तक वास्तविक पुनर्निर्माण किया जा सकता है?

जवाब : श्राद्ध भारतीय गाँव इस तरह बताया और बनाया जाना चाहिए, जिससे वह सम्पूर्णतया नीरोग हो सके। उसके झोंपड़ों और मकानों में काफी प्रकाश और वायु आना सके। ये ऐसी चीजों के बने हों, जो पाँच मील की सीमा के श्रद्धर उपलब्ध हो सकती हैं। हर मकान के प्रासपास या आगे-पीछे इतना बड़ा प्रांगण हो, जिसमें गृहस्थ अपने लिए सागमाजी लगा सकें और अपने पशुओं को रख सकें। गलियों और रास्तों पर जहाँ तक हो सके धूल न हो। अपनी ज़रूरत के अनुसार गाँव में कुएँ हों, जिनसे गाँव के सब श्राद्धमी पानी भर सकें। सबके लिए प्रायश्ना-घर या मन्दिर हों, सार्वजनिक सभा बगैरा के लिए एक धलम स्थान हो, गाँव की अपनी गोबर-भूमि हो, सूदकारी ढंग की एक गोदाला हो, ऐसी प्राथमिक और माध्यमिक शालाएँ हों, जिनमें शैक्षिक शिक्षा सर्वप्रधान वस्तु हो, और गाँव के अपने मामलों का निपटारा करने के लिए एक ग्राम-संचायत भी हो। अपनी ज़रूरतों के लिए अनाज, सागमाजी, फल, खादो बगैरा खुद गाँव में ही पैदा हों। एक श्राद्ध गाँव की मेरी अपनी यह कल्पना है।

मौजूदा परिस्थिति में उसके मकान ज्यों-के-रथों रहेंगे, तिर्फ यहाँ-वहाँ पोड़ा-सा सुधार कर देना अभी काफी होगा। श्रद्धर गाँव के लोगों में सहयोग और प्रेमभाव हो, तो बगैर सरकारी सहायता के खुद श्राद्ध हो अपने बल पर लगभग ये सारी बातें कर सकते हैं। मुझे तो यह निश्चय हो गया है कि अगर उन्हे उचित सलाह और मार्गदर्शन मिलता रहे, तो गाँव की—में व्यक्तियों की बात नहीं करता—प्राय बराबर दूनी हो सकती है। व्यापारी दृष्टि से काम में घाने लायक धन्युट साधन-सामग्री हर गाँव में भले ही न हो, पर स्थानीय उपयोग और लाभ के लिए तो लगभग हर गाँव में है। पर सबसे बड़ी बद-विस्मयी तो यह है कि अपनी दशा सुधारने के लिए गाँव के लोग खुद, कुछ नहीं करना चाहते।

['हरिजन सेवक', १६-१-३७]

—सहायता गांधी



खेत की मिट्टी की जाँच

हम खेती करते हैं। खेत से अधिक-से अधिक उपज लेना चाहते हैं, परन्तु अधिक उपज होने के लिये, इसकी जानकारी का हमें अभाव है। इस सम्बन्ध में कृषि की प्रयोगशालाओं में जो प्रयोग होते हैं उनका लाभ किसान कम से पाते हैं या उन्हें कम मिल पाता है। प्रायः खाद और बीज का कुछ लाभ किसानों को मिलने लगता है, तो किसान का इस ओर ध्यान गया है। परन्तु समय-समय पर खेत की मिट्टी की भी जाँच होनी चाहिए, इस ओर ध्यान अभी नहीं गया है। बीज-बीज में मिट्टी की जाँच होती रहे तो किस खेत में कौनसी फसल लगायी जाय, कौनसी खाद कितनी दी जाय, इसे तय करना आसान हो जायगा। जिस मिट्टी में खेती होती है उसमें विभिन्न तत्व हैं, जिनका इस्तेमाल उपज के लिए होता रहता है। उत्पादन के लिए वे तत्व अत्यन्त उपयोगी हैं। इन तत्वों का मिट्टी में भरपूर होना जरूरी है। जब इनमें कमी बेशी होती है तो उपज में घात पड़ जाता है। इसलिए यह बहुत जरूरी है कि मिट्टी की जाँच कर ली जाय। प्रायः तो सारा-का-सारा काम अन्धाधुंध पर ही चलता है। वैज्ञानिक खेती तो तब होगी जब खेत की मिट्टी की जाँच हो, मिट्टी के अनुसार फसल का चुनाव हो, उचित मात्रा में पर्याप्त खाद दी जाय, जिस समय जितने की आवश्यकता है उस समय उतना पानी मिले।

भारत की खेती में विज्ञान का प्रवेश होने लगा है, यह प्रसन्न बात है। खेती के बारे में विद्वानों की नयी-नयी जानकारीयों मिलती हैं, उन्हें अपनाना चाहिए।

अपने देश में मिट्टी की जाँच की ३६ प्रयोगशालाएँ हैं। इन प्रयोगशालाओं में ५ लाख नमूनों की जाँच की जाती है। इनके अभाव में हर राज्य में अनेक छोटी-छोटी प्रयोगशालाएँ भी हैं। किसानों को मिट्टी की जाँच का महत्व बताने के लिए कुछ चलती-फिरती प्रयोगशालाएँ अल्ती ही चालू होनेवाली हैं। सन् १९७० तक देश के विभिन्न भागों में इतनी प्रयोगशालाएँ हो जायँगी, जिनमें लगभग २० लाख नमूनों की जाँच एक वर्ष में हो सकेगी।

मिट्टी की सही जाँच सब हो सकेगी जब खेत से मिट्टी के सही नमूने इकट्ठे दिये जायँ। अगर खेत की अधीन ऊँची-नीची है,

मिट्टी अलग-अलग रंग की है, फसल की बढवार कही नम, कही ज्यादा होती है या फसल अलग-अलग ढग से बोयी जाती है, तो उस हालत में हर खेत का अलग-अलग नमूना भेजना चाहिए। प्रायः तौर पर जाँच के लिए आधा किलो मिट्टी चाहिए। एक हेक्टर जमीन से २०-२५ जगह से ऊपरी परत की मिट्टी लेकर नमूने इकट्ठे करने चाहिए। उन्हें फिर मिला लिया जाय। इसमें से आधा किलो मिट्टी जाँच के लिए भेजी जाय। नमूने की मिट्टी को साफ कपड़े के बैग में भरकर बन्द कर दे। किसान का नाम तथा पता किसी कागज पर लिखकर बैग पर चिपका दे।

किसानों को इससे सम्बन्धित एक सूचना-पत्र भरना भी जरूरी है। यह फार्म इलाके के ग्रामसेवक, कृषि अधिकारी या प्रयोगशाला से भी मिल सकता है। प्रयोगशालाओं के पत्र अपने पास के कृषि-अधिकारी से पूछें। *

नीम के घोल से टिड्डियों की रोकथाम

टिड्डियों का आक्रमण किसी समय हो जाता है। इनके आक्रमण से फसल की बहुत बरबादी होती है। पूर्वी अफ्रीका और पश्चिमी तथा दक्षिणी एशिया में फसलों को खतरा पैदा करनेवाली इन टिड्डियों की रोकथाम के लिए अन्तर्राष्ट्रीय प्रयत्न किया जा रहा है।

भारतीय कृषि अनुसन्धान संस्थान, नयी दिल्ली व कोट-विशेषज्ञों ने टिड्डियों पर काटू पाने के लिए एक प्रभाव-शाली औषधि खोज निकाली है।

प्रयोगशाला में किये गये प्रयोगों से यह पता चला है कि भूली टिड्डियाँ भी उन पत्तियों को खाने के बजाय मूँह मर जाना अधिक पसन्द करती हैं, जिन पर निर्मौली (नीम का पल) का घोल छिड़का जाता है। निर्मौली को सुखाकर पहले उसका पूर्ण नैवार कर लिया जाता है, फिर उसे पानी में घोल दिया जाता है।

फसल पर १ प्रतिशत घोलवाले जल का छिड़काव कर देने पर टिड्डियाँ २ से लेकर ३ सप्ताह तक फसल को नहीं चार्यंगी।

इसका १०० गैलन घोल एक एकड़ के लिए पर्याप्त है तथा लगभग आधा किलोग्राम निर्मौली से यह तैयार किया जा सकता है। इस पर एक रुपये से भी कम की लागत लागेगी।

—एस० एन० सेठ
‘अमेरिकन रिपॉर्टर’ से

पुराने काया की करामात

श्री रामनाथ पुरानी परम्परा को माननेवाले प्रादमी हैं। जाड़ा, बर्सा या बरसात, चाहे जो मौसम हो, वे भोर में ही नींद से जाग जाते हैं। बेलों को खाने के लिए हौथी पर बांधना, लोटा लेकर मैदान जाना, मैदान से लौटकर स्नान, फिर कुछ देर ध्यानवन्दन करना और अन्त में मुंह में कुछ मीठा रखकर पानी पी लेना, यह श्री रामनाथ का रोज का प्रातः-कर्म है।

साठ वर्ष की आयु हो जाने पर भी श्री रामनाथ के शरीर में गजब की चुस्ती है। नागपंचमी के दिन जब गाँव के युवक कबड्डी खेलने के लिए पाले में उतरे तो रामनाथ ने अपने बचपन के साथी रामदेव को यह कहते हुए उठाया कि उस्ताद साल में एक दिन तो जवानी के दिनों की याद कर लो जाय। गाँव के युवकों में हँसी और खुशी की सहर दौड़ बघी। वाह काका! आप लोग तो साठा में पाठा हैं।

गाँव की युवक-मंडली में लगभग प्राधे ऐसे लोग हैं, जो ५ या ७ दर्जे तक की पढाई करके खेती-बारी के काम में लग गये हैं। अधिकांश प्राधे युवक कस्बे के माध्यमिक विद्यालय और महाविद्यालय के छात्र हैं।

कबड्डी शुरू होने पर खेल जयते देर नहीं लगी। एक गोल के नायक बने रामनाथ और दूसरी गोल के नायक बने रामदेव। रामदेव की गोल में वे नवजवान थे, जो गाँव में रहकर खेलते बारी करते थे। रामनाथ की गोल में माध्यमिक विद्यालय और महाविद्यालय में पढ़नेवाले ऐसे युवक थे, जो फुटबाल और हार्नो के खिलाड़ी हैं। रामनाथ और रामदेव बचपन के लॉटेरिया दोस्त हैं। लेकिन आज वे अपनी-अपनी गोल की अगुवाई करने में एक-दूसरे के मुनाबले में टट गये। पहले-पहले रामनाथ की गोल के खिलाड़ी बड्डी में चुस्त दिखायी पड़े, लेकिन पाँच-दस मिनट के बाद ही खेल का रंग-रंग बदलने लगा। रामदेव के दल के खिलाड़ियों का उरमाह धीरे-धीरे बढ़ता गया, उपर रामनाथ के दल के खिलाड़ी दोले पड़ने लगे और एक-एक कर हारते गये। देखते-देखते रामनाथ के दल में झकेले थे ही बचे रहे।

रामनाथ पकते खिलाड़ी हैं। विरोधी दल के पाते में उनके पहुँचते ही हलचल मच जाती है। इस बार के उनके खेल पर हार-जीत का फैसला होनेवाला है। रामनाथ ने अपनी पीठो की एक बार और कस लिया, पाले की मेड़ के पास सटे होकर एक चुटकी धूल उठाकर अपने माथे से छुटाया, फिर लम्बी साँस भरकर—“बल...बड्डी...बड्डी” कहते हुए पाले में पहुँच गये। खेल और जम गया। प्रथम रामनाथ के शरीर में न जाने कितनी शक्ति थी! वे नीचे बैसी स्फूर्ति से एक छलांग में पाले के एक छोर से दूसरे छोर पर पहुँचकर त्रिको-न-किसी खिलाड़ी को छू देते। रामनाथ ५ छलांग में ५ खिलाड़ियों को हराकर जब लौटने के लिए मुड़े तो उस ओर के कई खिलाड़ी उन्हें पकड़ने के लिए लपके। रामनाथ सबको भटककर भट अपने पाले में लौट प्राये।

कबड्डी खेलनेवाले युवकों ने कहा—“काका, आप सच्चे खिलाड़ी हैं। आपने अपने बचपन और जवानी के दिनों में इतना दूध पीर पी खाया है कि देह आज भी पानीदार बनी हुई है।” रामनाथ ने कहा—“राजू! हम लोगों ने जिन्दगी में कभी आलस नहीं किया। इसीलिए हमारी देह चुकुआर नहीं हुई। तुम लोगों की सोने-चाग्ने और खाने-पीने की आरत ऐसी बन गयी है कि कुछ न पूछो। हमें बचपन में दूध-पीर अपने आप मिलता था ऐसा नहीं। हमें उसका शौक था। घर में बराबर दूध मिले, इसके लिए हम भरपूर उपाय करते थे।

“आज के युवकों का शौक शरीर बनाने की ओर उठना नहीं, जितना कि शरीर को सजाने की ओर है। कीमती कपड़े पहनने और चुकुआर बनने में कौन धामे है इसीकी जेने जवानों में होड़ मची हुई है। आज के जवान यह बात भूल ही गये हैं कि स्वस्थ और बलवान शरीर का होना एक बड़ी सुन्दर बात है। स्वस्थ और बलवान शरीर सिर्फ दूध और पीर खाने से नहीं, बल्कि सही जीवन जीने से बनता है।”

जेल खाम हुआ और सब लोग अपने-अपने घर जाने लगे तो पुराने और नये जमाने की ओर-ओर से चर्चा चल पड़ी। शरीर को बनाने की जगह सजानेवाली शौकीनी की बात गहर-बाजार में जाकर पढ़नेवाले युवकों की बहुत सतक रही थी। दिलीप से तो रहा नहीं गया और धामिर-धामिर में उभिर का लिहाज छोड़कर रामनाथ को मुना हो दिया, “हुतमान-धाय प्रादमी की आज के जमाने में कोई पूछनेवाला नहीं है। बहुत हुआ तो शौकीनारी जम जायगी! आज की दुनिया में जीने के लिए दिमाग चाहिए... दिमाग!”

‘गाँव की घाट’ : बरपिंड थन्दा ; चार रुपये, एक प्रति ; छटारह पैसे।

मध्य भारत भूदान यज्ञ पर्यटन का संचित्त कार्यक्रम-विवरण

अप्रैल '६८ से जून '६८ तक

भूदान-भूमि का वितरण

पिछने तीन महीनों मे मुरेना तथा, तानपुरी जिले के ८ ग्रामों में ६४ भूमिहीन परिवारों के बीच ४८७ एकड़ भूमि का वितरण-कार्य पर्यट की देखरेख में सम्पन्न हुआ है। इन वितरण-कार्य में ८ हरिजन २६ आदिवासी, तथा ६० अन्य भूमिहीन परिवारों को क्रमशः ४६, १८२, २५६ एकड़ भूमि वितरित की गयी।

भूदान-ग्रुपकों को आर्थिक सहायता

भूमिहीन ग्रामिकों को भूमि देकर बनाने सम्बन्धी केन्द्रीय योजना के अन्तर्गत जिला मुरेना में ६५, तानपुरी में १, तथा गुना में ५० भूदान ग्रुपकों को, प्रति परिवार ७५० रु० के हिमाव से राज्य-शासन द्वारा आर्थिक सहायता प्रदान की गयी है। यह जानकारी राज्य उपनिवेशन विभाग में प्राप्त हुई है।

ग्रामदान यात्राएँ

मार्च १९६८ में खालियर में हुए सर्वोदय सम्मेलन के अन्तर्गत पर स्वीडिश कार्यक्रम के अनुसार गुना तथा भिल्ल-जिले में आयोजित ग्राम-स्वराज्य दिवस और ग्रामदान-यात्राओं में पर्यट के कार्यक्रमों में भी भाग लिया। परिणामस्वरूप गुना में ७, तथा भिल्ल में १०४ ग्रामदान हुए। भिल्ल यात्रा के परिणाम उत्साहपूर्णक तथा धनरकारक रहे हैं।

कारावास मुक्त बागी भाइयों को

भूमि तथा साधन

विनोबाजी की सलाह और इन सम्बन्ध में इच्छुराजजी की भोर से प्राप्त पत्र के अनुसार श्री लोचनन दीक्षित तथा श्री वैजसिंह को ग्राम चर्चा बुजुर्ग में क्रमशः २०.३, २०.३ भूमि देकर बसाया गया है। रहने के लिए एक एक कांटेर तथा जमीन जोवने के लिए फिलहाल २००० रुपये की एक बैंक-जोडी तात्कालिक सहायता के रूप में उन्हें दी गयी है। राज्य-शासन की भोर से भूदान-ग्रुपकों को मिलनेवाली आर्थिक सहायता के लिए भी पर्यट की भोर से लिफारिस कर दी गयी है।

—हेमदेव शर्मा, मंत्री

राष्ट्रीय गांधी-जन्म-शताब्दी समिति

प्रधान केन्द्र

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति

१, राजघाट कालोनी, नयी दिल्ली-१

टुकलिया भवन, कुन्दगौरों का भेरोँ

फोन : २७६१०५

जयपुर-३ (राजस्थान)

फोन : ७२६८३

अध्यक्ष : डा० जाकिर हुसैन, राष्ट्रपति

अध्यक्ष : श्री मनमोहन चौधरी

उप-अध्यक्ष : श्री वी० वी० गिरी, उपराष्ट्रपति

मंत्री : श्री पूर्णचन्द्र जैन

अध्यक्ष : कार्यकारिणी :

श्रीमती इन्दिरा गांधी, प्रधानमंत्री

मंत्री : श्री आर० आर० दिवाकर

गांधीजी के जन्म के १०० वर्ष २ अक्टूबर, १९६६ को पूरे होंगे।

आइये, आप और हम इस शुभ दिन के पूर्व—

(१) देश के गाँव-गाँव और घर-घर में गांधीजी का संदेश पहुँचायें।

(२) लोगों को समझायें कि गांधीजी क्या चाहते थे ?

(३) व्यापक प्रचार करें कि विनोबाजी भी भूदान-ग्रामदान द्वारा गांधीजी के काम को ही आगे बढ़ा रहे हैं।

यह सब आप-हम कैसे करेंगे ?

- यह समझने समझाने के लिए रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति ने विभिन्न प्रकार के फोल्डर, पोस्टर, पुस्तक-पुस्तिकादि सामग्री प्रकाशित की है। इसे आप पढ़ें और दूसरों को भा पढ़ने को दें।
- इस प्रकार की सामग्री और विशेष जानकारी के लिए आप अपने प्रदेश की गांधी-जन्म-शताब्दी समिति तथा प्रदेश के सर्वोदय-संगठन से सम्पर्क व पत्र-व्यवहार करें।



मध्यप्रदेश का प्रथम जिलादान

टीकमगढ़

इन्दौर, १५ अगस्त। तार से वहाँ प्राप्त जानकारी के अनुसार मध्यप्रदेश के टीकमगढ़ का जिलादान हो गया है। समूचे जिले में १००३ गाँव हैं, जिनमे से पचहत्तर प्रतिशत से अधिक गाँवों में अपने गाँवों के ग्रामदान की घोषणा की है।

टीकमगढ़ जिले का क्षेत्रफल १८०१.१७ वर्गमील है। और जिले की कुल जनसंख्या ४,५५,६६२ है; जिसमें २०,४६६ नगरीय आबादी है। शिक्षित जनसंख्या का प्रतिशत १७ है।

यह हमरखीय है कि गत कुछ वर्षों से मध्यप्रदेश सर्वोदय मंडल और प्रदेश गांधी स्मारक निधि के संयोजन में विभिन्न रचनात्मक सत्याग्रहों के कार्यक्रमों टीकमगढ़ जिलादान के लिए प्रयाग कर रहे थे। टीकमगढ़ जिलादान की विधिवत घोषणा और समारोह बाद में किया जाएगा।

टीकमगढ़ मध्यप्रदेश का प्रथम और देश का छठवाँ जिलादान है। (संदेश)

गांधी जन्म-शताब्दी की विशेष देनदिनी १९६६

गांधी जन्म-शताब्दी के दूसरे पर ग् १९६६ की देनदिनी घोषित प्रकाशित हो रही है। देनदिनी प्राकृतिक प्लास्टिक बनर के दो प्रकारों में उपलब्ध है। कामरी की कुछ विशेषताएँ :

- पुष्ट हवादार।
- प्रायिक पुष्ट पर गांधीजी के प्रेरक वक्ता विये गये हैं।
- गांधी जन्म-शताब्दी के समय पर ईश्वर, प्राणियों, मत्स्य, घटिया, धरतृण्यना-

निवारण, प्रत, मत्स्याग्रह यदि विषयो से सम्बन्धित गांधीजी के विचारों के ८-१० पुष्ट की विशिष्ट स्वाच्छाय मोय अतिरिक्त सामग्री दी गयी है।

- सर्व सेवा सप और प्रामस्वराज्य आन्दोलन की सम्प्र जानकारी दी गयी है।

आपूर्ति के नियम

- विक्रेताओं को २५ प्रतिशत तक कमीशन दिया जा नकेगा।
- कागज, छपाई आदि के भाव बढ़ने पर भी मूल्य में गिरा २५ पैसे की वृद्धि की गयी है, जो निम्न है :
डिमाई ६" x ५ 1/2" ₹ ० ३-२५ प्रति शीट
७ 1/2" x ५" ₹ ० ३-०० प्रति
- एकमात्र ५० अथवा अधिक प्रतिभों मांगने पर वाहक के निकटतम स्टेशन तक की डिलीवरी से भिजवायी जायेंगी। इसके कम प्रतिभों मांगने पर रोक, पोन्टेज और रेल-महामूल वाहक को बहन करना होगा।
- बिक्री हुई देनदिनी चापन नहीं ली जाती, प्रत उतनी ही मंगाये जितनी आप बेच सकें।
- देनदिनी की बिक्री पूर्णतया त्वर की जायगी, प्रत वीमत अधिम भिजवाकर या वी० पी० बैंक के माफत देनदिनी की बिल्टी मंगाये।
- धपना नाम, पता, निश्चयत रेलवे-स्टेशन का नाम साफ साफ लिखिए और यह स्पष्ट रूप से निर्देश दीजिए कि बिल्टी वी० पी० या बैंक से भेजी जाय या आप देनदिनी की वीमत में से २५ प्रतिशत कमीशन बाद पर आप रकम अधिम भिजवा रहे हैं।

- दशवा दालाने

संवाकक

सर्व सेवा संघ प्रकाशन,
राजघाट, वाराणसी-१

वायिक शुक्र : १० रु०; बिदेरा में २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ श्वर। एक प्रति : २० पैसे
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इरिडियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित

चेकोस्लोवाकिया

दुनिया में हिटलर को देखा था। उसने जानसक को विल्लेनाम में देखा, और भय वह 'पोलीजिन-ब्रेनेन' को चेकोस्लोवाकिया में देख रही है। अगर कभी प्रमाण की अक्षरत रही होगी कि माओवाद, पूँजीवाद और साम्यवाद मूलतः एक ही हैं, तो वह प्रमाण भय विप गया। हिया पर सड़ी होनेवाली व्यवस्थाएँ गुण में एक ही होती हैं, नाम उनके चाहे जो हों। जर्मनी हो, अमेरिका हो, रूस या चीन हो, जो भी देश अपने राज्य के हाथ में शक्त, यत्न, पूँजी और बुद्धि, चारों दक्षिणा केन्द्रित करेगा वह साम्राज्यवादी होकर रहेगा। रूस ने साम्यवाद के नाम में ऐसा ही किया है। कब तक उसकी निरंतुष व्यवस्था अपनी साम्राज्यवादी लिप्ता को छिपाकर रखती ?

सत्ता—निरंतुष सत्ता—की एक विशेषता यह होती है कि वह बुद्धि में डरती है। इनकी मारण सत्ता माथी से डरती है, जनता से डरती है, स्वयं स्वतंत्रता से डरती है। सत्ता भय में डरती है, और भय में डरती है। चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी ने अपनी बुद्धि का प्रयोग किया और निरंतुष किया कि अपने देश में समाजवाद, लोकतांत्रिक समाजवाद, का एक नया मनुष्य बनाने का काम करेगी। फौरन रूस के मन में प्रश्न उठा : 'साथी ने यह क्या किया ? जनता वहीं खुद सोचने लग गयी तो हमारा क्या होगा ? और, अगर चेकोस्लोवाकिया विकास के किमी नये रास्ते पर चल पडा तो हमारे साम्यवादी साम्राज्य का क्या होगा ?' रूस की शक्त-शक्ति आज पहले से कहीं ज्यादा है, लेकिन उसकी बड़ी हुई हिंसा-शक्ति ही उसके बड़े हुए भय का कारण बन गयी है। रूस का यह कहना कि 'वह 'इम बारे में तटस्थ नहीं रह भवना कि दूसरे देशों में समाजवाद का क्या होता है' उसके आत्म-नाशी भय का प्रमाण है। वह जानता है कि अगर चेकोस्लोवाकिया का नया प्रयोग सफल हो गया तो आज रूसी मनुष्य पर समर्थित दूसरे राज्य भी दिवा बदलने को प्रोत्साहित होंगे, और तब पूर्वी यूरोप की साम्यवादी व्यवस्थाएँ—स्वयं रूस की भी—खतरे में पड़ जायेंगी। अगर चेकोस्लोवाकिया कम्युनिस्ट विरादरी के बाहर ने देशों से भी सम्बंध करने सयोग तो मध्य यूरोप में पश्चिमी जर्मनी तथा उसके द्वारा दूसरों को पुनर्ने का मौका मिल जायेगा। यह भय इसलिए है कि साम्यवाद भय विचार की विरादरी नहीं रह गया है। वह भी विस्तरकारियों का गुट बन गया है जिसमें हर एक दूसरे के प्रति सशक है।

चेकोस्लोवाकिया की स्वतंत्रता से साम्यवाद के लिए क्या खतरा पैदा होगा ? क्या साम्यवाद की शक्ति कम हो जायेगी ? आदि, साम्यवाद की शक्ति के आधार क्या हैं ? पार्टी का सरकार

पर एकाधिकार, निरंतर विचारार्थों का दाता, ये आ प्रोदु ; का धातक, पत्र-पत्रिकाओं पर सेंसर, स्वतंत्र बुद्धि का बहिष्कार, प्राथिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक जीवन का केन्द्रित नियोजन और मंचालन—ये हैं वे आधार, जिन पर साम्यवादी सत्ता टिकी हुई है। इन क्रोधशरी बंधों को चेकोस्लोवाकिया के कम्युनिस्ट नेता ढीला करना चाहते हैं, तोड़ना चाहते हैं। पार्टी और सरकार चलन रहे, स्वतंत्र विचार की छूट हो, सेंसर न रहे, बुद्धि का धातक उठ जाय, और देश को यह अधिकार हो कि वह अपनी प्रतिभा और परिस्थिति के अनुसार समाजवाद का विकास तथा दूसरे देशों से सम्बंध स्थापित कर सके—यह इनकी माँग ! वास्तव में ये लोकतंत्र के सामान्य नागरिक-अधिकार हैं। लेकिन रूस के साम्यवाद के अनुसार तो मनुष्य का यही सबसे बड़ा अधिकार है कि वह खाने-कपड़े की चिन्ता से मुक्त हो, बाकी सब बातों के लिए वह अपने नेतृत्व की बुद्धि पर भरोसा करे। उनकी नजर में नागरिक-अधिकार की बात 'पूँजीवादी घोसा' है। रोटी की चिन्ता से मुक्ति का यह आश्वासन ही तो अपनी को वह छूटी है जिसे पिलाकर आज के राज्य ने मनुष्य को आत्मा की कुठिठ किया है। वह पेट के लिए बिकने को विवचन हुआ है, और विवचन होकर पणु की तरह किनी भी नूँट में बंधने को तैयार किया गया है।

लेकिन नहीं, मनुष्य की भ्रमणा भ्रमेय है। उसे मिथ्या समझने वाले मित गये, और मित जायेंगे। चेकोस्लोवाकिया का छोटा-सा देश रूस और उसके पिट्टुओं की शक्त-शक्ति का मुकाबला शक्त से नहीं कर सकता। उसमें हार निश्चिन है। लेकिन आया की शक्ति से—जिसे गाँधीजी ने 'बहादुर की ब्रह्मिणा' कहा था, हार है ही नहीं। ग्रहिनक प्रतिकार में मृत्यु हो सकती है, पराजय नहीं। एक नहीं हजारों की भी मीन के फाट उतारे जा सकते हैं, लेकिन उनका शहादत दुनिया को चौंका देगी। फिर या तो मुगल हिया समाप्त होगी, या स्वयं मनुष्य-शक्ति विषम-हजार में समाप्त हो जायेगी। कुछ भी हो, मनुष्य और भ्रमणा वा सहप्रतिवत धाम हो जायेगा।

चेकोस्लोवाकिया की लड़ाई नैतिक स्वतंत्रता की लड़ाई है। उसे अधिकार है कि वह रूसी हिंसा द्वारा अपनी स्वतंत्रता को सखिण न होने दे। और, उसे यह भी अधिकार है कि वह रूस के बनाये रास्ते पर चलने में इनकार कर दे। लेकिन देश के धातक जीवन में स्वतंत्रता एक-एक नागरिक के लिए विधापक तब होगी जब वह लोकतंत्र के साथ जुड़ेगी, और लोकतंत्र ग्रहिया को अपनी आधार बनायेगा। ग्रहिया जीवन का अंग तब बनेगी जब प्रचलित राजनीति, अर्थनीति और गिरानीति, सीनो की बुनियादें बदल जायेंगी। माथ बाहरी हिंसा से मुक्ति वा अविचार्य रूप से यह धर्म नहीं होगा कि आत्मनिक हिंसाशरी और मयपों से भी मुक्ति मिल जायेगी। चेकोस्लोवाकिया के प्रबुद्ध समाज को उप करना पड़ेगा कि अगर वह रूस की तरह शक्त, बड़े यत्न, केन्द्रित

पूर्वी, और प्राणिक जीवन के व्यापक नियंत्रण की राह चलता रहा तथा सब के लिए कम्युनिस्ट पार्टी की क्रांतिकारिता का कायम बना रहा तो उसकी दिशा का नवापन क्या होगा, और सब सड़क वह अधिक घातिलते देशों का पिछलग्गू होने से बच सकेगा ? क्या उनकी स्वतंत्रता का यह भय मंजरी होगा चाहिए कि एक बार साहस करते साम्यवादी पार्टी के साम्यवाद से भ्रांति बड़े और साम्य' की एक नयी जीवन पद्धति का विकास करे ?

प्रश्न चेकोस्लोवाकिया का ही नहीं, सभी छोटे देशों का है । प्राय की दुनिया में छोटे देशों की उनकी छोटी हिमा में सुरक्षा नहीं है । और, न ही बड़े देशों की व्यवस्था और जीवन-पद्धति की नकल करने में मान्ति और स्वतंत्रता की गारंटी । इसलिए

छोटे देश को अपनी प्रतिरक्षा, अपने लोकतंत्र, और अपने विकास को कोई स्वतंत्र पद्धति विकसित करनी चाहिए । अपना राज्य ही या पराया, राज्य की शक्ति में जनता की मुक्ति नहीं है । चेकोस्लोवाकिया की घटना से दुनिया की धर्मों बुल जानी चाहिए । कोई भी विचार ही, अगर उनके साथ बड़क जुड़ेगी और उनके प्रकार का साम्य राज्य की शक्ति बनेगी तो जनता की तुलना हो रहना पड़ेगा । साम्यवाद और समाजवाद सभी समान के नहीं हैं, सरकार के हैं । वे जनता के बनें और राज्य शक्ति का प्रयत्न लेंगे ही, यही उनके विकास की नयी दिशा है ।

चेकोस्लोवाकिया के विद्रोह में मुक्ति की शक्ति है । हर देश में मुक्ति की प्यासी जनता का हृदय उनके साथ है । *

चेकोस्लोवाकिया को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और घटनाक्रम

सन् १९१८—पामस मेज़ारिक द्वारा चेको स्लोवाकिया गणराज्य की स्थापना ।

सन् १९१९—मेज़ारिक की मृत्यु । बेनग प्रपक्ष निर्वाचित ।

सन् १९३८—बेन्गलेन और हिटलर के बीच शून्यत्व समझौता । जर्मनी का सुटेन लेंड पर अधिकार ।

सन् १९३९—चेकोस्लोवाकिया में नाजी नेता का प्रवेश । बेनग द्वारा लण्डन में शरण लेकर बड़े सरकार की स्थापना ।

सन् १९४५—साम युद्ध में बेनग की विजय । कम्युनिस्टों को ३५ प्रतिशत मत की प्राप्ति ।

सन् १९४८—रूस की सहायता में कम्युनिस्टों द्वारा सत्ता पर अधिकार ।

सन् १९५५—बेक कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा समाजवाद के विपरीत का प्रदर्शन ।

सन् १९६०—शुबार्ड—चेकोस्लोवाकिया के सेतक के संघर्ष द्वारा स्थापना के घातिलन की शुरुआत ।
मसकद—छात्रों द्वारा रक्त बना के घातिलन का समर्थन ।

सन् १९६८—अनवरों—कम्युनिस्ट पार्टी के नेता नौराजनी की जगह हुए बेक कम्युनिस्ट पार्टी के नेता निर्वाचित, गुपारा को भीषण ।

मार्च—लोगा के विचारों का प्रवृद्ध करनेवाले बलून की मनाति ।

अप्रैल—नोवोतनी कम्युनिस्ट पार्टी से निष्कासित ।

मई—चेकोस्लोवाकिया की सीमा पर सोवियत और रूस की सेनाओं द्वारा सैनिक अभ्यास का कार्यक्रम । बोनी गिन का प्राण घायल । बागसा सॉथि के राष्टों द्वारा चेकोस्लोवाकिया में सैनिक प्रयास होने के बारे में चेको स्लोवाकिया की स्वीडिति ।

जून—चेकोस्लोवाकिया से रूस को अपनी सेनाएँ हटाने से मुरुला । चेकोस्लोवाकिया के ७० सेनको, विचारकों और बुद्धिवाधियों द्वारा दो हबार प्रश्नों का घोषणा पत्र प्रकासित ।

जुलाई—नारास में रूस, पूर्वी जर्मनी, पोलैंड हूयेर, बुल्गेरिया की कम्युनिस्ट पार्टियों द्वारा चेकोस्लोवाकिया में विद्रोह जानेवाले गुपारों का विरोध करते हुए बमकी भरती बिट्टी प्रविष्ट । दुस्वेह द्वारा उनकी घातिलन को बंदीकार करते हुए उत्तर प्रेषित । कम्युनिस्टों तथा युगोस्लावा

विश्व की कम्युनिस्ट पार्टियों की चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी के गुपारों से सहमति । इटली, फ्रिंज फ्रांस, नार्वे, योनुगाल, भारतमैण्ड, स्पेन, फ्रांसिस्का, स्वीडजरलैंड, फ्रिंजग्रेड, डेनमार्क ब्रेडिस्वम, स्वीडन, सपेरीलो और सारप्रय की कम्युनिस्ट पार्टियाँ द्वारा चेकोस्लोवाकिया की पार्टी का समर्थन ।

अगस्त—नोविपल रूस की सीमा के विपरीत सोवियत रूस की कम्युनिस्ट पार्टी का पारिष्ट शूरो (नीति निर्धारित करने वाली सर्वोच्च समिति) के सदस्यों के साथ बेक कम्युनिस्ट पार्टी के प्रेमीशियम की वार्ता ।

३ अगस्त—श्रादित्पारा में रूस पूर्वी जर्मनी, पोलैंड हूयेरी और बुल्गेरिया के नारास द्वारा मार्ग-सॉथि के प्रति धमकी निष्ठा की मुद्रि तथा चरों स्लोवाकिया के गुपारों की स्वीडिति ।

२१ अगस्त—पार्गो-सॉथि के राष्टों की सेनाओं द्वारा शॉथि के चेको स्लोवाकिया में प्रवेश, सभी मुकद नवरी प बमक १—

साम्यवाद का मानवीकरण

चेकोस्लोवाकिया में साम्यवादी शासन के परिणामों का विश्लेषण और संशोधन का प्रयास

[२१ जून, १९६८ को चेकोस्लोवाकिया के लेखकों तथा बुद्धिजीवियों द्वारा घोषित घोषणा पत्र का एक अंश—जिसके कारण वर्तमान संघर्ष पैदा हुआ है ।]

समाजवाद के कार्यक्रम को चेक राष्ट्र ने एक नयी भाषा के साथ स्वीकार किया था। राष्ट्र के नियंत्रण की बागडोर गलत लोगों के हाथों में पहुँची। राजनीतिज्ञ की हैसियत से भगवत नेतृत्व वर्ग के लोगों में श्रमप्रिय, व्यावहारिक ज्ञान, या दार्शनिक शिक्षण की कमी रही होती तो ऐसा नहीं हुआ होता, वशर्ते वे लोग दूसरों की राय सुनने के काबिल होते और धीरे-धीरे नेतृत्व के लिए अपने से अधिक योग्य लोगों के लिए जगह खाली करते जाते।

द्वितीय महायुद्ध के बाद कम्युनिस्ट पार्टी ने जनता का विश्वास प्राप्त किया। धीरे-धीरे इनने सत्ता पर आसन्न होना शुरू किया, और अन्त में सत्ता के सभी पदों पर आसन्न हो गयी। सत्ता के सभी पदों पर कब्जा बुरा होने-होते यह जनता का भरोसा पूरी तरह हवा बँटी। नेतृत्व की इस श्रृंखले के कारण एक राजनैतिक झल और वैचारिक सप सत्ता-प्राप्ति के संगठन में रुपांतरित हो गया। इसमें ऐसे लोग आकर्षित हुए जो मूलतः सत्तालोभुष, भ्रष्टकारी और खराब नीयन वाले थे।

ऐसे लोगों को पार्टी में दाखिल होने रहने में पार्टी के स्वरूप और व्यावहारिक मार्ग में फरक पैदा हुआ। पार्टी-संगठन आसानी से ईमानदार लोगों को न तो महत्व का स्थान प्राप्त करने देता और न आधुनिक दुनिया

← २७ अगस्त—चेक-नेताओं और नार्गो-सर्गो के राष्ट्रीय नेताओं के बीच समझौता, बातों का दौर समाप्त कर चेक-नेताओं की स्वदेश वापसी।

२८ अगस्त—युव. स्वोदा की सरकार और दुबनेक का नेतृत्व चेकोस्लोवाकिया में प्रस्थापित।

की आवश्यकताओं के अनुसार स्वरूप-परिवर्तन होने देता था। पार्टी की इस तरह की द्रव्यवधि से बचाने की बहुत-से कम्युनिस्टों ने बर्बादों की, लेकिन जो कुछ हो रहा था उसे ठोकरने में वे असफल हुए।

कम्युनिस्ट पार्टी की इस तरह की भ्रष्ट-रूनी परिस्थिति ने राज्यस्तरी पर भी ऐसी ही परिस्थिति का निर्माण किया। चूंकि पार्टी राज्य की सत्ता के साथ जुड़ गयी थी इसलिए सत्ता की शक्ति में अपने को झलक रखने के लाभ से वह बचिन हो गयी। राज्य के कार्यक्षेत्रों या उसके प्राथिक संगठन की कोई आलोचना नहीं होती थी। मसब ने ससदीय प्रणाली का परिष्कार कर दिया, और सरकार शासन करना भूल गयी। चुनावों का कोई महत्व नहीं रहा और न मान्यता का।

किसी भी संगठन में हम अपने प्रतिनिधियों का भरोसा नहीं कर सकते थे। अगर हम उनका विश्वास करते हो तो उनसे कुछ करने के लिए नहीं बढ़ सकते थे, क्योंकि वे कुछ करने में असमर्थ थे। सबसे गदो-गुजरी हालत यह थी कि हम एक-दूसरे का भरोसा नहीं कर सकते थे। इस प्रकार हमारी संगठित और सामूहिक प्रवृत्ति गिरती गयी।

न ईमानदारी का कोई उपयोग रह गया था और न योग्यता का ही कोई उद्देश्य। इसका नतीजा यह हुआ कि लोगों को सामूहिक कामों से रचि समाप्त हो गयी। उनकी तर्क अपने ध्यान में और पैनी में दिलबस्ती रह गयी। कुछ समय के बाद ऐसी परिस्थिति बन गयी कि लोगों की पैनी में भी कोई दिलबस्ती नहीं रह गयी।

लोगों के धारणी सम्बन्ध नष्ट हो चुके थे। काम करने में किसी प्रकार का आनन्द

नहीं रह गया था। कुल मिलाकर ऐसी हालत पैदा हो गयी कि पूरे राष्ट्र के आर्थिक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य पर खतरा मँसपाने लगा। चेक राष्ट्र की इस हालत के लिए वैसे हम सब और खास तौर से हममें से जो कम्युनिस्ट हैं, वे जिम्मेदार हैं किन्तु इतकी गलती जिम्मेदारी उन लोगों की है जो इन परिस्थिति में अनियंत्रित सत्ता के जोरदार और खाम हकदार बन गये थे। यह एक ऐसी गुट की सत्ता थी जो पार्टी के संगठन और शक्ति के घूने पर आग से लेकर छोटे-छोटे जिन और कम्यून की सत्ता पर बराम था।

पार्टी-अर्थोनी ही यह तय करती थी कि बिते क्या करना है और क्या नहीं करना है। देश में महकरी मभितियों की और उनके सदस्य थे, बारखाये थे और उनमें नाम बरनेवाले थे, राष्ट्रीय संगठन थे और नागरिक थे; लेकिन इनमें से कोई भी संगठन उनके सदस्यों के हाथ में नहीं था। यहाँ तक कि कम्युनिस्ट पार्टी भी उसके सदस्यों के हाथ में न थी।

सत्ता पर काबिज इन नेताओं की सबसे बड़ी गलती और दुष्की नीति यह थी कि वे अपने आपको व्यक्ति की इच्छा का प्रतीक मानते थे। यदि हम इन मिथ्या स्थिति को सही मान लें तो राष्ट्र की अर्थ-अवस्था की गिरावट, निर्दोष नागरिकों के प्रति निरूपे अत्याचारों और अनियमित की शोभी की जानकारी में न आने देने की दृष्टि से बनाये गये सैनरशिप की व्यवस्था के लिए अर्थियों की ही बोयी मानना पड़ेगा। यह सैनरशिप हीनिए लागू की कि लोगों को अनियमित का पना ही न बनने पाये।

कही चाहे पूँजी की मूलन ढग में इनमें-माल करने की गलती हुई हो, या व्यापारिक गुणमान हुआ हो या लोगों की मजदूरी में र्थिन हुई हो, इन सबके लिए अर्थिया का ही दोषी ठहराया जाना था।

बन्तुः कोई भी समझदार आदमी नहीं मानता कि इस स्थिति के लिए व्यक्ति लोग किसी भी प्रकार जिम्मेदार माने जा सकते हैं। सब लोगों का यह वान अच्छी तरह मान्य है कि सबदूर लोगों ने दक्षणा

कभी किसी मामले में ईंगला किया ही नहीं। मजदूरों के प्रतिबन्धी कर्म का चुनाव हमारे लोगों के द्वारा होना था। बहुत से मजदूर यह विश्वास करते थे कि बाखानो पर उड़ीशा नियंत्रण चल रहा है अब कि उनके नाम पर वरदानों पर ऐसे लोग का नियंत्रण था, जो पार्टी का राज्य के तंत्र द्वारा नियुक्त किये गये थे।

इन परिस्थितियों का ही एक तथ्य वह भी है कि पार्टी के भीतर कुछ ऐसे लोग भी मौजूद थे जिन्होंने एक क्षण तक यह शकल देनाकर मजदूरों का कि इतिहास के गलत प्रभावों को जितने जा रहे हैं। आज हम इन बातों को जान सकते हैं क्योंकि वे लोग ही हमको उद्घाटन कर रहे हैं। अब पुरानी गलतियों को सुधार आने लगा है श्रमिकों और नागरिकों को धनना निर्णय करने का हक प्राप्त मिल रहा है और गौरवशाली वे दलित तथा जमकी ताकत को बम किया जा रहा है।

आज जो कम्युनिस्ट पार्टी में ऐसे लोग मौजूद हैं जो इस तरह के परिवर्तन के खिलाफ हैं और ऐसे लोगों का आज भी अक्षर खम नहीं हुआ है। वे आज भी सत्ता के पक्ष पर बने हुए हैं।

इन कर्मों के प्रभाव से लोकतान्त्रिकता की यह प्रक्रिया शुरू हुई है। यह सत्य है कि कम्युनिस्ट पार्टी के भीतर शुरू हुई। हमें यह बात जोर देना बहने की जरूरत है क्योंकि जो लोग पार्टी के बाहर हैं और जो कुछ पहले तक मानते थे कि हमारी कोजिब से कोई तथ्यही नहीं हो सकती वे भी इन बातों को जानते हैं। हम यह वादा कहना चाहते हैं कि यह प्रक्रिया पूरी होने में नहीं शुरू हो सकती थी।

कम्युनिस्ट पार्टी ईंगलाकारी में इन बातों को जितना कर रही है कि उसकी और बेहतर रूप की प्रतिष्ठा सुरक्षित रहे। पुनरावर्तन को इस प्रक्रिया में कोई बटन नहीं माना नहीं है। इस सन्दर्भ में जो विचार और सुझाव दिए जा रहे हैं वे समाजवाद की गलतियों के पहले के मौजूद रहे हैं। कुछ विचार देने भी हैं जो सत्य के भीतरे बने हुए थे। उन्हें बहुत जल्द ही आतङ्कारी में धाना

आक्रमण वापस लें

सर्वसौधा राय के अध्यक्ष श्री मनमोहन चौधरी का चैकोस्लोवाकिया की स्थिति पर बलव्य मोचिपन रुस और प्र वार देशों की सेनाओं के चैकोस्लोवाकिया में प्रवेश करने की खबर सुनकर नगर स्तम्भ यह यथा है। वह एक छोटे-से बहादुर देश पर अपनी स्वाभिमान हारने का कूट प्रयास है और चैकोस्लोवाकिया ने हाल ही में उदार नीतियों को अपनाते की जो स्वागत योग्य प्रक्रियाएँ शुरू की थी उन्हें उलटने की दबीर कीशिंग है। हमारी महापुरुषि चैकोस्लोवाकिया की विरोधी हुई जनता के साथ है। प्रणकारों में समाचार है कि वहाँ के नेताओं ने जनता से प्रतीक भी है कि वे इन आक्रमण का दृढ़ता और शान्ति के साथ सामना करें और निष्पक्ष प्रतिकार करें। यह बहुत प्राधान्य समाचार है क्योंकि इन प्रकार का साम्यपूर्ण प्रतिरोध जनता के नीतिवर्ण को हक बनाने और अपने हेतु के प्रति बुनिया की महापुरुषि जगते में अधिक प्रभावशाली होगा।

हम आशा करते हैं कि विश्व जनतंत्र में प्रभाव से और अधिक जनता की मुद्रा और चातुर्यों प्रतिरोध में पाँचों राह भी प्रणवा आक्रमण वापस ले लें और वहाँ की जनता को अपने प्रतिबन्ध निर्माण के लिए स्वतन्त्र छोड़ दें।

वाराणसी, २२ न ६८

चाहिए या लेकिन अब तक वे बाहरी अब रोप के कारण बाहिर नहीं हो पाये थे।

हमें इन श्रम में नहीं पडना चाहिए कि वे विचार मय ही ताकत होने के कारण विजयी हो चुके हैं। दरमस्तल पुराने नेतृत्व की भी बर्षों की अनिश्चित सत्ता की कम जोशियों के वरते ये सामने प्राये। जाहिर है कि इस तंत्र की बुनियाद में जो भी धन बाहे और प्रभावशालक तथ्य छिपे हुए थे उन्हें मलौ भाँति प्रकट होने के पहले परिपक्व होना

जसरी था।
आशा के ये शरय श्रमी गिराफ्त नहीं हैं अभी कुछ ही महीने बीते हैं कि हमें यह खबर कइने का मौका मिला है। हमने से कुछ लोगों को अभी भी यह भरोसा नहीं है कि हम ऐसा मौका मिला है।

जो कुछ भी हमें हमें अपने तंत्र का मतलबोबरण करने में देर नहीं बरनी चाहिए वही तो पुराने ताकत हमसे भारी धरना उरुने में पीछे नहीं रहनी।

अपने श्रम में पडे

चैकोस्लोवाकिया की जनता और पार्टी का समर्थन और सरकार चाहते क्या है? वेक कम्युनिस्ट पार्टी की सेन्ट्रल कमेटी ने अपनी अग्रज इस को बैठक में क्या कार्यक्रम तय किया है, और मोचिपन रुस के साथ पिनाद की क्या बुनियाद है?

भारत में आमदान प्रखंडदान जिलादान

दरभंगा जिलादान में प्रखंडदान	४४	आमदान	१,७२०
पूर्विया " " "	३८	"	८,१५७
विश्वेखनेनी " " "	१३१	"	२,८६६
बलिया " " "	१८	"	१,४६६
उत्तरकाशी " " "	४	"	५६६
विहार में जिलादान	२	प्रखंडदान	१७६
आमदान			२५,३७६
उत्तर प्रदेश में " २	"	"	४५
"	"	"	७,१३२
तमिलनाडु में " १	"	"	५०
"	"	"	५,३०२
भारत में " ५	"	"	३५२
"	"	"	६५,१८१

विनोबा विनास दिनांक ११ अगस्त ६८

—शुभप्रकाश मेहन

सैलाय से संरक्षण का सरकारी नुस्खा

एक और कानूनी करामात
न होगा वाँस : न वजेगी वाँसुरी

भारत सरकार के सिचाई और विजली-मन्त्री डा० के० एल० राव ने, जिनके महुकमे के अन्तर्गत बाढ से सम्बन्धित काम भी आता है, वाइ-नियन्त्रण के लिए - लोकरामना मे जिस उपाय की घोषणा की है वह नौकरशाही मनोवृत्ति और काम करने के सरकारी पद्धति का एक अच्छा उदाहरण है।

हर साल देश के कई हिस्सों में बाढ़ आती है, जिन तरह कई हिस्सों में अकाल भी पड़ता रहता है, और हर साल संसद मे इन विपत्तियों की चर्चा हो जाती है, इनसे पीड़ित गरीब और निर्बल जनता के हाल पर थोड़े ध्यान बहाये जाते हैं, विपत्ती नेताओं को सरकार की अलोचना वा एक और श्रवण मिल जाता है और चन्द दिन बाद देश के 'विधान' (विधायक गण) फिर अपने रोजमर्रा में कामो मे व्यस्त हो जाते हैं। अलोचना मे कुछ ज्यादा जोर पड़ता तो सरकार की तरफ से इन विपत्तियों की आसिरी जिम्मेवारी प्रकृति पर डाल दी जाती है। अकाल पडा तो वर्षा न होना उसने लिए जिम्मेदार है, बाढ़ आयी तो वर्षा की अधिकता। इनमें सरकार सुरक्षित है, क्योंकि प्रकृति तो अपने बचाव के लिए संसद मे प्रतिनिधि भेज नहीं सकती। विपत्ती नेता भी इस बचाव को मान लेते हैं क्योंकि जनता के नाम पर जो राजनैतिक तेल झाबल चलता है उनमे कभी उठे भी 'सरकार' होने वा और ऐसी अलोचना का पात्र बनने वा मौका मा सकता है यह वे अच्छी तरह जानते हैं।

कमीशन-निवृत्ति की माया और मूक जनता

जब विपत्ति असाधारण रूप धारण कर लेती है—जैसे, वर्ष १९६६-६७ मे अकाल ने बिहार मे और अभी इन वर्ष बाढ़ ने गुजरात मे, तो सरकार उसके लिए कुछ बचम उठाती है—जैसे, सब पहलुओं से समस्या के अध्ययन के लिए बड़े-बड़े विभागों की समिटी वा कमीशन की निवृत्ति, वा सम्बन्धित काम के लिए एक और सरकारी विभाग की स्थापना आदि। इन बचमों की बजह से और जो भी हो कम-से-कम कुछ लोगों की अपनी समस्याओं वा हाल जरूर हो जाया है। जनता के पास तो निबाय इन सब बातों के मूक दलक बने उठने के और धारा ही क्या है ? कुछ भोले लोग इन बातों से यह मनोप भी मान लेते हैं कि सरकार कुछ कर रही है।

सरकार की यह मूक !

गुजरात की अनामान्य बाढ से प्रेरित मनद की बहम के दौरान सिचाई-मन्त्री ने यह घोषणा की है कि बाढ से आज-आज की ह्राति न

हो इसके लिए सरकार जल्दी ही एक कानून बनाकर नदियों के किनारे, जहाँ बाढ़ आने की सम्भावना हो वहाँ, लोगों का बसना रोक देगी। हम समझते हैं कि सरकार की इन सुम-सुम के सभी कायल होंगे। बाढ़ की समस्या का आखिरकार कितना कारगर उपाय सरकार ने खोज निकाला है ! बाढ़ से होनेवाला हानि को रोकने के लिए इससे बढ़कर और उपाय क्या हो सकता है कि लोगों को बाढ़ के क्षेत्र में बसने ही न दिया जाय ? न होगा बात, न वजेगी वाँसुरी। जब रोगी ही नहीं रहेगा तो रोग कहाँ से होगा ?

पर डा० राव ने यह घोषणा विनोद में नहीं की है। बात यह है कि किसी भी समस्या को हल करने का सबसे आसान उपाय सरकार को यही सुझता है कि उसके लिए कानून बना दिया जाय। कानून ने धार ममस्याओं वा समाधान हो जाता तो देश अथ तक स्वयं हो गया होता और उसकी यह परिस्थिति नहीं होती जो आज है। आयादी के बाद पिछले २१ बरसों में कितने कानून हमने बनाये !

कानून की नकली मार

सरकार ने कानून का एक जंगल ही सडा कर दिया। एसाइन है तो उसे मिटाने के लिए कानून, वचन की आदिर्नी रोकने के लिए कानून, जमीन के शायोजित घंटवारे के लिए मौलिक आर्थिक के कानून, मदिरों-मठों की मांजजिक मंपत्ति के दुरुपयोग को रोकने के लिए कानून, गरीब बम-के-कम अपनी शोशी में सुरक्षित रह सके उसके लिए कानून, जीवनवाला बेदबल न हो उसके लिए कानून, घोर-बाजारी न हो उसके लिए कानून, बीबों के भाव अनाप-अनाप न बडे उसके लिए कानून। हम सब यह भी जानते हैं कि वायजूद इन कानूनों के इनमें से एक भी ममया वा हल नहीं हया है। जिन तरह से सभ-मे कानून पाय होकर भी बरसों से बेबल कानून की विनाश मे बरद हैं, उनमे आहिर है कि कानून बनानेवाले भी जानते हैं कि कानून ममस्याओं के समाधान की अदेशा इगलिय उपाय बनाये जाते हैं कि सरकार के पाय यह करने को हो जाय कि वे ममयाओं से बेखबर नहीं हैं, उनमें हल के लिए बचम भी उठाते हैं।

लेकिन इनका ही होता तो बात ज्यादा संभीर नहीं होती। कानूनों मे समस्याओं वा समाधान तो दूर रहा, पर उठे जनता के लिए नयी ममयाएँ और नयी परेशानियाँ सडी हो जाती हैं। नये-नये कानूनों वा मनीजा यह दूषा है कि इनमे मन्त्रय रमनेवासे मरकारी महबनों की अनाप-अनाप मुडि हुई है, सरकारी पदों, अणवरी, नौकरियों और नौकरों की संख्या बडी है, जनता के जीवन में सरकार और कानून वा दखल कडा है, अशांति और बरीनों वा बारीबार बडा है और नेताओं तथा नीररशाही की जनता को परेशान करने और धरना स्वार्थ मायने की ताकत बडी है। जनता दिना-दिन बल और अशहय होनी जा रही है। डा० राव और अन्य मंत्रीगण इनका अनुपात तो प्रकथन लगा पाते हैं कि नदियों के किनारे बाढ की अदेशाने क्षेत्र मे न बगने वा कानून नीबे के अविचारियों, बर्भकारियों तथा उन स्वर के राजनैतिक दलों के

चेकोस्लोवाकिया

समाजवाद और लोकशाही के समन्वय की तलाश में

[चेकोस्लोवाकिया इस समय विश्व की निगाहों का केन्द्रबिन्दु बना हुआ है। पूंजीवादी 'सोपण' से अपने को मुक्त कर लेनेवाली चेक की समाजवादी जनता अब 'साम्यवादी दमन' से भी मुक्त होकर मार्क्स के सपने की—'समाज मुक्त मानवों का मुक्त भाईचारा'—साकार करना चाहती है। प्रस्तुत लेख में सतीश कुमार ने चेकोस्लोवाकियों के चिन्तन और वहाँ की जनता के अन्दर की हलचल का परिचय प्रस्तुत किया है अपनी चेकोस्लोवाकिया की यात्रा के प्रत्यक्ष अनुभव और मुलाकातों के आधार पर।—सं०]

जनवरी '६८, चेकोस्लोवाकिया के इतिहास में मील के पत्थर की तरह दिखाई देनेवाला महीना है। इसे भले ही अहिंसक-क्रान्ति न कहा जाय, पर क्रान्तिपूर्ण क्रान्ति तो यह थी ही। अब तक ऐसा माना जाता रहा है कि जहाँ समाजवाद है, वहाँ लोकशाही संभव नहीं और जहाँ लोकशाही है, वहाँ पूंजीवाद के बिना चारा नहीं। स्टालिन ने इस मतव्यवही स्थापना की और पूर्वी यूरोप के स्टालिनवादी शासकों ने 'बाबा यावण प्रमाणण' कड़कर इस मतव्यव का अनुकरण किया। चेकोस्लोवाकिया में पिछले १५ वर्षों से थोमान् गोत्रोत्तरी का इचार बनान की तरह स्वीकार होता था और लेखक, बुद्धिजीवी एवं रचनात्र विचारकी की मन मनोसंकर बँटे रहना पड़ता था। पिछली जनवरी-क्रान्ति ने गोत्रोत्तरी साहब की हत्या और अघोराहृत वखण और समाजवाद व लोकशाही में समन्वय की तलाश करनेवाले नेता अलेक्जेंडर दुबचेक ने समाजवाद के अतर्कनीकरण के माध्यम के साथ कम्युनिस्ट पार्टी के प्रथम-प्रतिव का कार्यभार संभाला।

जब मैं अनेक ने प्राण पड़ता, तो जनवरी-क्रान्ति का दूसरा चरण सपन होने का रहा था। कितो भी साम्यवादी देश के इतिहास में शायद पहली बार विद्यार्थी जुड़त निकालकर बिनी 'समुक' ध्यक्ति के दायुप्रति बुने जाने के लिए आन्दोलन कर रहे थे। श्री स्कोबोस के राष्ट्रपति बुने जाने के समय मैं बुनाद-स्थल पर एक नये वातावरण की उपस्थिति अनुभव कर रहा था। इसी वातावरण में से राजनीतिक और प्राथिक परिवर्तन का जन्म होनेवाला था और चेकोस्लोवाकिया के भविष्य की नयी दिशा मिलने-

वाली थी। समूचे यूरोप के बुद्धिजीवी और विद्यार्थी एक गहरी उषल-पुषल एवं साहसिक-क्रान्ति के दौर से इस समय गुजर रहे हैं और चेकोस्लोवाकिया की यह क्रान्ति भी उसी व्यापक उषल-पुषल व एक प्रग है।

ओरिएटल इन्स्टीट्यूट के हिन्दी प्राध्यापक दिगोस्लाव ब्रास ने मुझे कहा कि 'गांधी के

चेकोस्लोवाकिया के भविष्य की नयी दिशा' 'एक गहरी उषल-पुषल...गांधी-विचार में संतुलन... अनुप्य नहीं, पैसा' प्रन्थों और 'सभों में बँद ईसा की याणी...लुकि का संघर्ष और हिंसा-अहिंसा' प्रथम समाज-रचना का आधार हिंसा...विज्ञान और सम्पत्ता के विकास का परिणाम ? 'मार्क्सवाद और मीडूला साम्यवादी रचना के बीच की खाई'...

विचारों में व्यष्टि और संमष्टि के बीच संतुलन खोजने की कोशिश है। जहाँ पूंजीवादी व्यष्टि की प्रवृत्ति के मोड़ में संमष्टि को एकदम भूल गये वहाँ स्थापित ने संमष्टि के माथने व्यष्टि को एकदम लुप्त और नगण्य बना दिया। गांधी ने दोनों को एक सूत्र में पिरोने की दिशा में अनेक प्रयोग किये। इसलिए हमारा देश इन समय जिन परिवर्तन के दौर में गुजर रहा है, जगमें गांधी के विचार बहान महापक हो सकते हैं।" मुझे ओरिएटल इन्स्टीट्यूट में 'गांधी की रचना का समाज' विषय पर स्थापना देना था। मैंने अपने आन्धान में जब कहा कि 'समाजवाद और लोकशाही ३६ का अक नहीं, बल्कि ६३ का अक है' तो आनापी की ओर से एक विमिष्ट हर्षवर्नि मिली। यह हर्षवर्नि चेकोस्लोवाकिया के बुद्धिजीवियों के रव की जातकारी देती है। प्राग्दान के प्राग्गोजन और संयोजन के बारे में श्रोनाम में अनेक सवाल पूछे और आन्दोलन के बारे में अधिक जानने के लिए उल्लुब्धता भी दिखाई। ओरिएटल इन्स्टीट्यूट में हिन्दी, बंगाली, उमिल, मलयालम आदि भाषायों

के अनावा उपनिषद् गीता और भारतीय दर्शनों का अध्ययन काफी महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मैंने इन्स्टीट्यूट के अधिकांशों से निवेदन किया कि भारत में चल रहे वर्तमान सामाजिक एवं राजनीतिक आन्दोलन में भी वे परिचित रहे। गांधी-रचनाओं वष के दौरान ओरिएटल इन्स्टीट्यूट कुछ विशिष्ट अध्ययन-परिसंवादी का प्राग्गोजन करेगा, ऐसी प्राशा है।

मेरे प्राग्-प्रवाम के दौरान अन्तर्देशीय त्रिचिन्तन प्राग् कलफरमें भी चल रही थी। मुझे इस कलफरमें में भाग लेने का अवसर मिला। यूरोप की यात्रा करनेवाला मानी यह अनुमान नहीं लगा सकता कि त्रिचिन्तन मर्म यान्त्रव में किन सिद्धान्तों पर सड़ा है, क्योंकि वहाँ के लोगों के जीवन, धारा और व्यवहार में त्रिचिन्तन धर्म का कोई अर

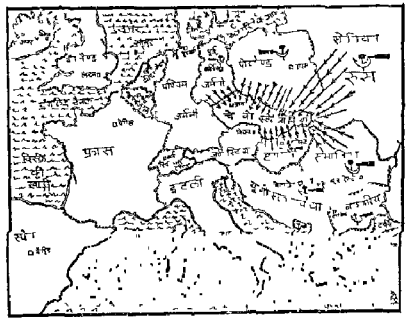
दिखाई नहीं देता। शिक्षा, राजनीति और जीवन के दूसरे सभी प्रागों का केन्द्र 'मनुष्य' नहीं बल्कि 'पैसा' है। 'मूर्ख के छेद में से ऊँट का निकल जाना साधद संभव है, पर किसी घनी वा स्वर्ण के द्वार में प्रविष्ट हो सवना जगमें भी जगदा क्रमअर है।' यह दिया मसीह की बाणी केवल विनावी और वच के उपदेशों तक सीमित है। प्राग् में प्राग्गोजन त्रिचिन्तन महीना-परंत में वतापी में इन वष्यों का महत्पूर्ण बिचा और दक्षिणापी शब्दों में एक सामाजिक क्रान्ति के लिए आवाहन किया। पर मुझे ऐसा अनुभव हां रहा था कि अमनुषित योम और आगदंत में बान्फरमें में वतागण 'हितव' क्रान्ति की भी स्वीकार करने के लिए तैयार थे। मैंने बान्फरमें के साधियों को प्राग्दान-क्रान्ति का जातकारी देते हुए बताया कि अहिंसा का धर्म अर्ध-एकना नहीं है और न उगका अर्ध अघनिवार है। अहिंसा अर्धमाय के निरद लक्ष्ने तथा योग्य के विनायक विरोध करने का एक व्यावहारिक एवं तात्पर्य हरिवार है। पर मेरी इन वक्तव्य में साधरीत त्रिचिन्तन

मिथों की भरोसा नहीं था। दक्षिण प्रकीका, श्रील, विद्यमान भादि के उदाहरण देकर यह साबित किया जा रहा था कि मुक्ति, स्वातंत्र्य और शान्ति के उद्देश्य में हिंसा का मार्ग अपमाना भी पलन नहीं है। रूस, न्यूवा, चीन और भव विद्यमान में मुक्ति की जो लड़ाई लड़ी जा रही है, वहाँ लड़ाई जारी दुनिया के लिए उदात्त है। समार में पाठो और जो विषयता, सोपण और स्थापित स्थाय का साक्ष्य है, उन पर विजय पागे ना कोई प्राथमिक मार्ग इन क्रिश्चियन मिथो को सिद्ध नहीं करे रहा है।

एक नवी से प्रविष्ट देशों के प्रतिनिधि तथा लगभग सभी प्रकार की क्रिश्चियन सम्प्रदायों और सस्थाओं की तरफ के लोग इन कार्फरस में भाग ले रहे थे। दुनिया की साधारण यह मन्थने बड़ी क्रिश्चियन कार्फरस है जो प्रति-बध भयना अधिवेशन करती है। भारत से सार० बैयान और सन् १०-१५ प्रतिनिधि प्राय थे। अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, जर्मनी, फ्रांस, रूस आदि सभी प्रमुख देशों के मित्र-मण्डल प्राये हुए थे। विताबो के प्रोस्ट और चर्च की क्रिश्चियनीटी की समकालीन के बारे में इन प्रतिनिधियों से बड़ी उदात्तपूर्ण तर्करीय मुन्थने की मिली।

क्रान्तवादी क्रिश्चियनिटी से इन समर्थकों का बहना था कि भव प्रथमता से स्थान पर विकेंडिंग का आयोजन करने को अटका है। उद्योगवाद और मनो-वाद पर आधारित पश्चिमी सभ्यता का साक्ष्य, सामुदायिकता और मानविय सम्बन्धों पर आधारित क्रिश्चियन सभ्यता क साथ एक जबरदस्त समर्थन है। सम-सायिक क्रिश्चियन चिन्तक सस्था हुआ-सा प्रतीत होता है। इन धूम-धूम में क्रिश्चियन कार्फरस न जो प्रस्ताव पाय किया उसका निषेध था सभ्यो में विद्याका जागतो यही था नि भव एक सम्पूर्ण कानि के बिना कोई शान नहीं। 'अन्वित्र रत्न क्रिश्चियन हो-सा जा-रि-रि'।

पेक गवर्नमेंट के सहजित मंत्री श्री बुजेक से मैने मुवाकान की। उन्होंने एक बड़ी महत्वपूर्ण बात कही 'मात्र हमारे समाज की जारी रखना हिंसा पर खरी है यदि इन रचना को बदलकर हम महिमक समाज बनाना चाहते हैं तो दल, सेवा, सपति के



सामयबासी चेकोस्लोवाकिया पर सोशियल रूस और उसके गुट के देशों का कार्यक्रम

स्थान पर कला संगीत, साहित्य, नृत्य, आदि नये सांस्कृतिक मूल्या की स्थापना करनी होगी तभी अहितक समाज बनेगा। एक करोड़पति की तुलना में एक बिज्जुकार को ज्यादा सम्मान, प्रतिष्ठा और महत्व दिया जाय, एक मजदूरी मन्थी की तुलना में एक नबि को अधिक जंचा माना जाय तो प्रति-योगिता का थ व बदल जायगा। सदा और सपति से ज्यादा कला और कविता मूल्यवान होगी। बन्दूक और टैंक का स्थान नउम, ब्रश और मिट्टार लेगे। पश्चिमी समाज के बारे में टिप्पणी करते हुए श्री बुजेक ने कहा 'यहाँ लोग मत्तन की तरह का जीवन जीते हैं। बंधा बंधाया बायक्रन, दाउर, टेलिविजन, रेसरी, पीना नयचना, पाटिबो और बय इन्ही के इदयिद सारा जीवन चलता है। मपपना और परमिता ने हमारे समाज को अधिक मानवीय और अधिक सांस्कृतिक नहीं बनाया। उन्निरेडिगस और प्रेडिगस भीते देर, यहाँ लोग सपपना के शिखर पर हैं, यहाँ लोग ज्यादा सम्य हैं, एगा मानना मुल होगी। अमेरिका में प्रतिवय ११ हजार हत्याएँ की जाती हैं। जपान में, ११ हजार हत्याएँ। एक करोड़ लोग पायलसानी में हैं। फ्रीड, एक करोड़ पायल। क्या यही विज्ञान और

सभ्यता के विकास का परिणाम है?' यह स्वाभाविक ही है कि श्री बुजेक आर्थिक और भौतिक विकास से ज्यादा सांस्कृतिक विकास पर बल देते हैं।

जब मैं बुजिस्ट से रेल द्वारा प्राय पहुँचा तो स्टेशन पर श्रीमती दुर्गदिलोवा और जोसेफ स्लोस्ट ने मुझे रिमाव किया। श्रीमती दुर्गदिलोवा के प्रति भारत में चक-दुखाना में 'कन्चल मन्थे' थे। अगले पति के साथ श्रीमती दुर्गदिलोवा भारत में रह चुकी हैं और उनके एक पुत्र का जन्म भी भारत में हुआ। इसलिए उनका भारत व भारतीयों के प्रति विशेष लगाव स्वाभाविक है। श्री जोसेफ स्लोस्ट चेक यूनेस्को के सचिव हैं और गणरी मन्थरी के आयोजन में विशेष दिल-चस्पी ले रहे हैं। इन दोनों का मुझे प्राय प्रवान के दौरान विशेष सद्गुण मिला। इन दोनों मिथो के मन में चेकोस्लोवाकिया से नये सभ्यता के प्रति विशेष सद्गुण हैं। इन्हें लगता है कि मार्क्स और माज के साम्यवादी संस्करण के बीच एक खाई पैदा हो गयी है। इन खाई को पाटने के लिए मार्क्सवादी, मानि की नवी प्रावृत्ति आवश्यक है। इन नये रचनात्मक पाटने का मनुष्य साधारण चेको-स्लोवाकिया बनेगा। —सतीराकुमार

खादी और ग्रामीण अशोक मेहता-समिति का प्रतिवेदन

निष्कर्ष और सुझावों का सारांश-२

एक नये नमूने का चरखा

१४—नये नमूने के चरखे का कार्यक्रम इस प्रकार बनाना चाहिए कि सरकारी सहायता की जरूरत पट्टर कम-से-कम रह जाय और बाजार में सपट की जितनी क्षमता हो उतनी सीमा के भीतर उत्पादन किया जाय। नये नमूने के चरखे की बालू करने के लिए किसी बड़े नियमित कार्यक्रम को मजूरी देने के पहले कमीशन और सरकार द्वारा उसके प्राथिक तथा संगठनात्मक स्वरूप की प्रच्छा तर्ह जाँच की जानी चाहिए।

१५—बीस धंको से नीचे के सूत से कपडे का उत्पादन केवल खादी के लिए सुरक्षित रखा जाय, तब प्रतिरिक्त हाथकटा सूत सरकार खरीद ले और मिल-सूत के साथ मिलाकर बुनवाये तथा बेचे, एवं मिलाई, हाथ-करी तथा बिजली-करघों द्वारा तैयार कपडों के और खादी के मूल्यों को मिलाकर कपडों की बिक्री हो, ऐसे अनेक प्रस्ताव और सुझाव पेश किये गये, पर वे नव व्यावहारिक नहीं मान्य होते हैं।

१६—पारंपरिक खादी का कार्यक्रम व्यक्ति-स्वावलम्बन और ग्राम-स्वावलम्बन की ओर अभिमुख होना चाहिए। भविष्य में विक्री के लिए खादी का उत्पादन नये नमूने के चरखे पर कते सूत की मदद से होनी चाहिए। तकनीकी सुधारों की दालिल करने तथा बिजली के उपयोग के लिए इसमें व्यापक सुझाव होनी चाहिए।

१७—खादी के उत्पादन हेतु जो तकनीक प्रयोगों गयी है उसमें लगातार और तेज गति से सुधार की तथा इस प्रयोजन से व्यवस्थित अनुसन्धान के संगठन की आवश्यकता है। अनुसन्धान सुनिश्चित उद्देश्य को सामने रखकर किया जाना चाहिए। अनुसन्धान का साधारण उद्देश्य कारीगर के स्वतः धरना काम करने के स्वरूप को बनाये रखना होना चाहिए, पर उसका विशेष उद्देश्य कारीगर को कार्यक्षमता को बढ़ाना होना चाहिए, ताकि वह एक निम्नतम मजदूरी कमा

सके और मिष्ट-कपडा, हाथकरघा कपडा तथा खादी के बीच काम में जो फर्क है उसे घटाया जा सके। भविष्य के लिए तकनीकी सुधार की कमीटी, नये नमूने के चरखे में जो उत्पादनता प्राप्त हो चुकी है उस स्तर से प्राये बढ़ाना, होनी चाहिए। निम्न तकनीक में सुधार की किसी ऐसी योजना को सरकार अलग से वित्तीय सहायता न दे, जो उपयुक्त कमीटी के अनुकूल नहीं हो।

१८—खादी की सुधारी तकनीक में अनुसन्धान करने के लिए इस क्षेत्र में पहले से जो अनेक अनुसन्धान-शाखाएँ तथा संस्थाएँ लगी हुई हैं उनमें उपलब्ध विद्वानों और साधनों का लाभ अधिक-से-अधिक उठाना चाहिए। अनुसन्धान-वाहियों का संगठन अधिकारिणिक मात्रा में क्षेत्रीय तथा राज्यस्तर पर करना चाहिए।

१९—पानी धोने में खादी-कार्यक्रम के नवी विस्तार को उन क्षेत्रों की पूर्ण और प्राथिक बेकारी के प्रभाव के माप जोड़ने का प्रयास करना चाहिए और किसी क्षेत्र में खादी-काम के विकास के लिए किसी योजना को तैयार करने के पहले स्थानीय माँग का सर्वेक्षण करना तथा उत्पादन-सर्च का मन्दाज लगाना चाहिए। राज्य मण्डल विधि निर्णय पर पहुँचने के लिए ऐसे सर्वेक्षण के परिणामों को तथा वहाँ की साधारण प्राथिक स्थिति को देखे कि उन क्षेत्रों में काम देने का सबसे प्रच्छा तथा सबसे मितव्ययी उपाय खादी का विकास ही था नहीं।

२०—खादी-कार्यक्रम का ऐम ढग में संगठन करना तथा उसे ऐसी दिशा की ओर मोड़ना चाहिए कि उनका अधिक-से-अधिक लाभ विच्छेद हुए क्षेत्रों के, प्रादिवासी तथा ग्राम्य क्षेत्रों के, प्रकाल तथा मूला-वीडित क्षेत्रों के, और हरिजनो, भूमिहीन क्षेत्रों में मजदूरी, छोटे किसानों आदि के सामन विच्छेद हुए तथा धलन सुविधा-प्राप्त लोगों को मिले। जहाँ तक सम्भव हो, इन प्रयोजनों के लिए खादी कामों का विकास तकनीकी दृष्टि से सुधरे हुए साधनों की मदद से करना चाहिए।

मजदूरी

२१—पानी खादी की मजदूरी का निर्धारण मनवाने रूप से किया गया है, हालाँकि यह कहा जाता है कि उनका सम्बन्ध कृषि मौसम के बाद सेतिहर मजदूरी को जो स्थानीय मजदूरी दी जाती है उससे है। चूँकि खादी की ग्रामीण उद्योगों में से एक के रूप में मानना चाहिए, इसलिए खादी के ऐसे विस्तार के कार्यक्रम में, जिसका आधार सुधरे हुए धोयार हो, कतवारी की मजदूरी कृषि मौसम के बाद सेतिहर मजदूरी को ही दी जानेवाली मजदूरी के बराबर होनी चाहिए।

२२—संस्थाओं को तकनीकी सेवाएँ देने में कमीशन द्वारा जो खर्च किया जाता है और कमीशन का जो प्रयातकीय खर्च होता है उन्हीं दम कार्यक्रम पर होनेवाले खर्च का ही एक हिस्सा मानना होगा, पर उन्हीं अनुदान के रूप में समझना होगा। धतः उन्हीं खादी के विच्छेद मूल्य में शामिल करने की आवश्यकता नहीं है। कमीशन द्वारा जो व्यापारिक कार्य और उत्पादन किया जाना है उसके सम्बन्ध में उपरिच्यो का कोई मानक निर्धारित किया जाना चाहिए।

२३—धमी रेशमी और ऊनी कपडे पर जो १० प्रतिशत विच्छेद सूट (रिस्ट) दी जा रही है उसे, ब्रडी, मूंगा तथा कते हुए रेशम एव धाम तोर पर उपयोग में प्रादे-वाले ऊनी बस्तो को छोड़कर, प्रथमः पदाना चाहिए और धत में बन्द कर देना चाहिए।

ग्रामीणों का स्वल्प

२४—ग्रामीणों का कार्यक्रमों को खादी-कार्यक्रम से दो महत्वपूर्ण बातें धतन करती हैं : (१) इन कार्यक्रमों को न्यायिक बनने का ज्यादातर भार राज्य खादी-ग्रामीण मण्डलों के जिम्मे है और (२) क्षेत्रों में उन्हीं प्रकाल में जाने का मुश्किल नार (पंजीय संस्थाओं की प्रपेश) मजदूरी समितियों पर है। ग्रामीणों में से कुछ, कामवर हाकुड तथा ठाठ-गत के उत्पादन, ग्रामीण धमका, लघुधो के उत्पादन, नैत तथा प्रसाध लेल और साधुन के सम्बन्ध में प्रारम्भिक काम करने का खेप खादी और ग्रामीण बमीधन की है। ग्रामीण उद्योगों का विलुट लेन और

उनमें लगे बहुत ज्यादा कारीगर खादी और सामोलेग बनीयत कायम में थे।
 २१—स्वामीय भाषायात। श्री कुमाता पर भाषायात सामोलेगों का बहुत महत्व है। उनको समुचित भाषायात दिया जाय तथा उनके तबनीयों में लगातार सुधार हो तो सामोलेग-भाषायात से वास्तविक के जीवन-स्तर की ऊपर उठने में मदद मिल सकती है। अपने मान की समुचित पूर्ति समुचित करने, दुखकरता तथा तबनीयों के स्तर को उँचा उठाने और विषय हाहाय की व्यवस्था बनी सुख मानय को के समाधान के लिए अधिक किन्तुत कायम रखना चाहिए, जिसका उद्देश्य सामोलेग अर्थव्यवस्था के लिए एक सुदृढ़ बुद्धि-आधुनिक आधार का निर्माण हो।

२२—राज्य सामोलेग उद्योग मण्डल सामोलेग उद्योग सामोलेग के माध्यम परामर्श करते हुए राज्य में सामोलेग उद्योगों के लिए विकास-कार्यक्रम को तैयार करे। इन कार्य-क्रमों का आधार भाषायात में लगे लोगों द्वारा स्वामीय संस्थाओं का अधिकतम उद्योग योग्य होना चाहिए। इन लोगों की प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए और सुन्दर योजनाओं तथा तबनीयों के एक कठोर समर्थन हो। छोटे बगीचे तथा बिकली के उद्योग के लिए समर्थन बनाया जाना चाहिए। पर शासनिक कार्यकारियों का बड़े पैमाने पर विस्थापन समाधान देना चाहिए।

समुद्रपान-सेवायात

२३—छोटे उद्योगों के लिए एक प्राथमिक समुद्रपान संस्था की स्थापना करनी चाहिए, जो सामोलेग उद्योगों के लिए समुचित प्रयोजनों (टेकनोलॉजी) की व्यवस्थाओं पर समुद्रपान करे और सामोलेग उद्योगों के विकास की तबनीयों का समाधान के समाधान के बारे में सामोलेग उद्योग समर्थन तथा राज्य मण्डल को परामर्श देना सहायता दे।

२४—सामोलेग क्षेत्रों में छोटे उद्योगों को प्रोत्साहित करने में छोटे उद्योगों में से एक है उन लोगों को समुचित प्रोत्साहन देना, जो इन उद्योगों की स्थापना में समर्थन दे रहे हैं। प्रोत्साहन उपयुक्त या विषय

चेक-स्वायत्तता पर प्रहार

सर्वे सेवा संघ, प्रधान कार्यालय तथा गांधी विद्या स्थान, आरामपुरी की दिनांक १२ व १३ की समिपित समा में चेक-स्वायत्तता पर स्वीकृत प्रस्ताव सर्वे सेवा संघ के प्रधान कार्यालय और गांधी विद्या स्थान की यह समिपित समा इस द्वारा चेक-स्वायत्तता पर स्वीकृत पर किये गये प्रहार को मरत मानती है और इस के इस कार्य की निष्ठा करती है।

हमारी यह मान्यता है कि सुविधा के छोटे-छोटे और बड़े-बड़े हर सुक को सामोलेग स्वायत्तता कायम रखने और अपनी विचार शक्ति के साथ जीने का अधिकार है और अपना बिना भी देश के द्वारा बिना प्रकार का अधिकार नहीं होना चाहिए। इस को चाहिए कि चेक-स्वायत्तता में सामोलेग सेवाएँ हलाना हूय वे।

चेक-स्वायत्तता का जो उद्देश्य है साथ ही अपनी पूरी हदतक जर्दिर करते हैं और साथ समाचारों के समुद्रपान इस हिसक और विस्फोटक परिस्थिति में बड़े की अन्याय में हदतक के साथ निश्चय प्रतिकार का जो माग्य समाधान है उनका स्वागत करते हैं क्योंकि हम मानते हैं कि प्रतिकार का वही सही माग्य है और इसी रखने दुविधा की समाधान का एक सम्भव है।

हमारा विश्वास है कि चेक-स्वायत्तता की उद्देश्य द्वारा किये जा रहे इस प्रतिकार में समार को एक नवी शक्ति का दर्शन होगा।

के स्तर पर मुख्यतः तबनीयों की सहायता सेवाएँ और विविध सुविधाओं के रूप में दिया जाना चाहिए। एक मजदूरी महत्त्व पर बहुत निर्भर नहीं होना चाहिए। कुछ उद्योगों के लिए आधार, समुद्रपान (प्रशिक्षण) व्यवस्था प्राप्त के रूप में भी उद्योग करना आवश्यक समझा जा सकता है। सामोलेग उद्योग सामोलेग और राज्य मण्डल उन सामोलेग उद्योगों तथा उनके उद्देश्यों के बारे में निर्धारित करे, जिनमें सम्भव में अधिक हजे में, विविध उत्पादन के क्षेत्रों का स्तर हाथ समुद्रपान व्यवस्था प्रादि की शामिल हैं, साथ ही मण्डल की आवश्यकता है एवं इनके सम्बन्ध में प्रस्तावना बनाये।

क्षेत्रीय समिपिकरण

२६—विविध क्षेत्रों में जित सामोलेग उद्योगों की विभिन्न करना है और उन विकास-कार्यक्रमों की कार्यान्वित करने के लिए सम क्षेत्रीय समिपिकरण (एन सी) को काम में लाना है उनके चुनाव के लिए आवश्यक हित धारणनी चाहिए। सामोलेग उद्योग कार्यक्रम में समाधान का समर्थन उन सामोलेग उद्योगों के विकास पर अकेन्द्रित करना चाहिए, जिनके एक निश्चय समय बाद अर्थव्यवस्था होने की समुचित समाधान हो। क्षेत्रीय समिपिकरण कोई मजदूरी समिपित, कोई पत्रिकृत समाधान, कोई विविध उपकरणों या

कारिगर कोई साम्यवादा या कोई पैग्य स्वेच्छादेशी ही समाधान है जो समुद्रपान कर विभागे।

२७—सामोलेग उद्योगों के उत्पादन की योजना ऐसी होनी चाहिए कि उत्पादन उपयोग्य समाधान उनी माग्य के भीतर था उनके समाधान के सामोलेग क्षेत्रों में हो जाय। सामोलेग उपयोग्य में यदि कुछ बच जाय तो उसकी बिना बाय सामोलेग और बाहरी क्षेत्रों में पत्रिकृत समाधान या अन्य मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय समिपिकरणों द्वारा उनके विविध-मजदूरी की माग्य होनी चाहिए। जिन सामोलेग उद्योगों के उत्पादन की विविध क्षेत्रों का ले उन पर विविध समाधान देना चाहिए।

२८—सर्वे सेवा संघने और मजदूरों के कामों को पत्रिकृत समाधानों और मध्य मान्यता प्राप्त क्षेत्रीय समिपिकरणों के हाथ कम्य हीय देने के लिए प्रभावकारी और अधिकतम समाधान उद्योग जाना चाहिए।

२९—सहायता का मौजूदा इच्छा पत्रिकृत समाधान और उपयुक्त हों चला है, इसलिए उसे अधिक स्तर और अधिक कार्य हल तथा सुविधयुक्त बनाने की आवश्यकता है।

(अपूर्व)

बिहार-दान की प्रगति

२ अक्टूबर '६८ तक सम्पूर्ण उत्तर-बिहार-दान की सम्भावना

कार्यकर्ता और धन के अभाव के बावजूद तुफानी प्रगति

दक्षिण बिहार में भी प्रयत्न जारी

संपादन : ग्रामदान-आन्दोलन के सभा-कार की दृष्टि से बिहार में सभाकार की ही सभी प्रमुखा है। गिरफ्त इगलिए नहीं कि बाबा बहा हैं, बल्कि इसलिए भी कि जहाँ पहले से कोई संगठन नहीं था और न कोई इन आन्दोलन की ओर ध्यान दे रहा था, वहाँ पूरे जिनके का वातावरण ग्रामदानमय हो गया है। संपादन पहलूने ही बाबा ने कहा कि यह जिनके उनके जीवन का अन्तिम संघर्ष क्षेत्र हो नकना है या 'बादरखू' हो सकता है। विनोबाजी का चम्पारण 'बादरखू' बने यह किंगोसे केने संजूर होगा ? घत ब्यादी, गर्वोदय एवं अन्य रबनारमक संघासो के कार्यकर्तागण गरीब-गरीब में छा गये हैं। मादी की दृष्टानें बन्द कर दो गयी हैं। दरभंगा से करीब सो कार्यकर्ता पहुँच बने हैं। दरभंगा की अधिकांश, विद्येपकर प्रान्त विकास पदा-धिकारी, अध्यापक, प्राध्यापक, मुखिया, विभिन्न राजनैतिक पक्षों के कुछ प्रतिष्ठित कार्यकर्ता एवं कई विशिष्ट नागरिक नगिय हो गये है। वर्षों, बाढ़ और बीमारों के बावजूद विचार-प्रचार एवं ग्रामदान प्रपत्तों पर हस्तक्षर हो रहे हैं। ३६ प्रवृत्तों में से १५ प्रवृत्तदान की प्राप्ति की सुचना मिल चुकी है। होमल्ला तो यह है कि शीघ्र ही जिलादान का काम प्रबन्ध पुरा कर लिया जायगा।

मुजफ्फरपुर : ग्रामदान-आन्दोलन में मुजफ्फरपुर की रूपनी गति है। आन्दोलन का उचार-भाटा यहाँ आता ही नहीं है। बरबर एक-सी लहर उठती रहती है। रज्जा बाबू की तीव्रता और वेबनी पत्नी जगह पर है, किन्तु मुजफ्फरपुर चलेगा तो अपनी धारा से। मनमद पर पहुँचना है, जरूर पहुँचेंगे; किन्तु अमल-बगल की हवा से उद्धतिय नहीं होंगे, पायद देगा नियम है मुजफ्फरपुर का। ५० प्रवृत्तों में से ३३ का प्रवृत्तदान हो गया, बाकी ७ में काम लगा है। जिला के नेता कहते

हैं, बाबा के जन्मदिवस तक मुजफ्फरपुर का जिलादान प्रबन्ध संपन्न होना चाहिए। स्वाभाविक गति में काम पूरा हो गया तो प्रबन्ध समाप्त होगा, मुजफ्फरपुर का जिला-दान विनोबा-जयन्ती के अवसर पर।

सहरसा : बाबा ने कहा था, सहरसा का तो मर्यादा होना चाहिए। एकमात्र नुब जोरो से जून माह में काम लगा और १० प्रवृत्तदान प्राप्त हुए। फिर उचार के काद भाटा थाया। धर्म के अभाव में कार्यकर्ता लगे नहीं रह सके। बिहार सारी-प्राप्तोयोग सभ ने कुछ कार्यकर्ताओं के अलावा कुछ धार्मिक महायाना पहुँचायी है तो काम में पनि धायी है। उरणरान भाई लिखते हैं कि सर्वोत्तम राजेन्द्र मिश्र, भूतपूर्व नभापति, बिहार प्रांतीय कार्येण कपिटी एष महेन्द्र नारायण का पत्र उन्हे प्राप्त हुआ है कि ११ मिश्रर तक सहरसा का जिलादान प्राप्त हो जायगा।

सारण : "ग्रामदान हो मारण मारा" का नारा मारण में सभी भी नूज रहा है। बाबा बलिया जाने की राह में और वहाँ से छोड़ने की राह में १५ दिनों तक सारण के विभिन्न सर्वशिविकों में रहे। वातावरण काफी अनुकूल बना है। धन तक न प्रवृत्त दान हो गये और सभी ३२ प्रवृत्त बाकी हैं। मारण में कुछ बाहर की भी शक्ति लगे तो सम्भव है मारण का जिलादान २ अक्टू-बर तक सम्पन्न हो जाय। इन तरह बिहार नहीं तो उत्तर बिहार का दान २ अक्टूबर तक हो सकता है। दरभंगा और पूर्णिया का जिलादान तो ही हो चुका है, तथा मुनेर और भागलपुर के गंगा के उत्तर के प्रवृत्त भी प्रवृत्तदान में आ चुके हैं। उत्तर बिहार में कुल २४१ प्रवृत्त हैं, जिनमें से १६८ प्रवृत्त-दान में आ चुके हैं।

जहाँ तक दक्षिण बिहार का प्रश्न है, दक्षिण बिहार में ३४६ प्रवृत्त है, जिनमें से

गिरफ्त २० प्रवृत्त प्रवृत्तदान में प्राप्त हुए हैं। पटना एवं रांची एसा जिला है, जहाँ एक भी प्रवृत्तदान नहीं हुआ है। पटना में तो थो विद्यासागर भाई के नेतृत्व में सभ प्रयास चल भी रहा है, किन्तु बकलता नहीं मिल पा रही है।

मुनेर : मुनेर के दो सर्वशिविक जो गंगा के उत्तर में हैं, ग्रामदान में आ चुके हैं। दक्षिण के दो सर्वशिविकों में जोबनापूर्वक काम चालू है। सर्वोत्तम मदन, ग्रामदान प्राप्ति समिति, ग्राम-स्वराज्य मंच, पंचायत परिवर्ध, भारत-सैवक-मन्दाय एवं गिरधर-सभ का सम्मिलित प्रयास जारी है। राजनैतिक पक्षों के कार्यकर्ताओं का भी सहयोग मिल रहा है। प्रथम है कि ११ सितम्बर तक मुनेर का जिलादान प्रबन्ध हो जाय।

भागलपुर : भागलपुर की प्रगति बहुत दिनों से खी हुई है। बिहारदान के अरुण के पहले ही भागलपुर में प्रवृत्तदान की आश्चर्यजनक प्रगति हुई थी। अतः धारा यह थी कि बिहारदान के संकल्प के बाद निम्नय ही भागलपुर का बटन पहले जिला दान सम्पन्न हो जायगा। किन्तु अभी भी प्रगति है उनमें २ अक्टूबर तक जिलादान पूरा होने की कोई आशा नहीं है।

गया, हजारीबाग, संथाल परगना, मिर्जापुर, धनबाद, पलामू एवं शारदापुर में कार्यकर्ता सक्रिय है। छिटपुट : प्रवृत्तदान भी हो रहे हैं। किन्तु आन्दोलन की सर्वा एन जिलों में सभी नहीं बने पायी है।

मुख्य रूप से सारी-कार्यकर्ताओं एवं मुद्री भर सर्वोदय के कार्यकर्ताओं के द्वारा ही हस्तक्षर-प्राप्ति-समिधान चल रहा है। शिवक, नेता, अधिकारी एष पंचायतों के पदाधिकारी वातावरण अनुकूल बनाने में प्रबन्ध सक्रिय हैं, जिनका लाभ यह हो रहा है कि पहुँचने पर सुगमता से हस्तक्षर प्राप्त हो जाते हैं। एक प्रवृत्तदान में शीघ्रम १०० गाँव होने हैं। जिनमें करीब १०० से-सेपर २०० तक परिवार होने हैं। विधो-विधो गाँव में तो पाँच में एक हजार तक परिवार होने हैं। इन परिवारों के मुख्य अधिकारियों से मिलना, उन्हें ग्रामदान का प्रस्ताव समझा-कर अनुकूल कराना, तथा उनका हस्तक्षर

प्राप्त करना अपने मे कितना बड़ा काम है, यह अन्दाज लगाना या सकता है। यदि विचार लीगो को मान्य है और निर्भ हत्या धार ही प्राप्त करना है तो भी गांधी में अपने अपने काम मे विश्वरे लोभो के पास पहुँचकर हस्ताक्षर प्राप्त करने मे ही काफी कार्यकर्ता एवं समय की आवश्यकता होती है। फिर भी जिम तरह साधारण-मे साधारण कार्यकर्ता वर्षों और वाढ की परबतह किने बिना इस काम मे जुटे हैं और सफलता प्राप्त कर रहे हैं यह विस्मयजनक निष्पत्ति प्रतीत होना है। यो तो बराबर थप का अभाव सतबता ही रहा है किन्तु इस अवधि मे तो थप का अभाव भी अपनी परत सोमा पर है।

— कैलाश प्रसाद शर्मा
सहस्रश्री
बिहार ग्रामदान प्रासि समिति

गांधी जन्म-शताब्दी तक

महाराष्ट्रदान का संकल्प

प्रदेशीय सर्वाध्य सम्मेलन अधूतपूर्व उत्साह और आशावादी सफलता के साथ सम्पन्न

महाराष्ट्र सर्वाध्य मण्डल के अध्यक्ष श्री ठाकुरदास बग मे पत्र द्वारा सूचित किया है कि शिरडी मे आयोजित महाराष्ट्र सर्वाध्य सम्मेलन में आगामी गांधी जन्म शताब्दी तक महाराष्ट्र के कार्यकर्ताओं ने महाराष्ट्र के सभी गाँवों को ग्रामदान मे लाने का संकल्प घोषित किया है। अपने अपने पत्र में लिखा है कि दिनांक ६ मे १० अगस्त तक ग्रहभदनगर त्रिने मे शिरडी नामक स्थान पर महाराष्ट्र के लगभग १२५ कार्यकर्ताओं का एक अध्ययन सचिव श्री शबरदास देव के माध्यम

द्वारा मे बना। ११ अगस्त को रवनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन और १२ १३ अगस्त को महाराष्ट्र सर्वाध्य सम्मेलन भी श्री जयप्रकाश नारायण की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन में श्री जयप्रकाश नारायण के अलावा श्री नारायण देसाई, मुष्टी निमना देसायडे श्री गोविंद दराव देसायडे का भाग दर्शन मिला। इस अवसर पर अमदावादी का विचलदरा प्रसंगदान और ४७,००० रुपये की रकम भी जयप्रकाश नारायण को समर्पित की गयी। •

भूमि-समस्या और ग्रामदान

गांधीजी ने १९४४ में लिखा था :

'किमान अने भूमि जोतनेवाला चाहे वह भूमिपाटी हो या भूमिहीन अर्थिक सर्वप्रथम आता है। वही भूमि का नामक अर्थका प्राण है, धन उद्योग वास्तविक अधिकारी भी वही है न कि वह जो केवल मालिक है और जोषना वही। लेकिन दार्शनिक पद्धति में भूमिहीन अधिक न जोतनेवाले मालिक को जबरन बेदखल गही करेगा। उनकी कार्य-पद्धति ही इस प्रकार की होगी कि जमींदार द्वारा उसका शोषण अक्षमभव हो जाय। इसमे किसानो के परस्पर निकटतम सहकार-सद्भाव की प्रतिपाद्य आवश्यकता है। इसके लिए जहाँ भी जरूरत हो, विशेष संगठन या समितियाँ बनायी जायँ। हमारे ज्यादातर किसान मे गड़े लिये हैं। प्रोडों व स्कूल जाने लायक उम्र के नौदान्तो को शिक्षित करना होगा। भूमिहीन अधिको का वेतन मान इतना तो ऊँचा उठना ही चाहिए जिसमे कि वे एक सामान्य सुखप्रद जीवन बिता सकें। इसका अर्थ है कि उनको समुचित माह्रार मिलने रहने को मकान तथा पहनने को कापडे हो, और उनकी स्वास्थ्य सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूर्ण हो सकें।

आप इन करोड़ों किसान भाइयों को अपने पाँवों पर सडा होने के लिए समर्थ करते में क्या कर रहे हैं ?

ग्रामदान वह कार्यक्रम है, जिसके जरिए आप ग्रहिसक पद्धति से यह कर सकते हैं।

सन् १९६६ गांधीजी की जन्म-शताब्दी का साल है।

माह्रार, हम सब तुरन्त इस काम में जुट जायँ।



राष्ट्रीय गांधी जन्म शताब्दी समिति की गांधी रचनारमक कार्यक्रम संचालित द्वारा प्रसारित

सर्वोदय-पर्व मनाने के लिए कुछ व्यावहारिक सुझाव

पिछले कई वर्षों से हम लोग ११ सितम्बर से २ अक्टूबर तक अर्थात् विनोबा-जयन्ती से गांधी-जयन्ती तक की अवधि सर्वोदय-पर्व के रूप में मनाते आये हैं। पूरे विनोबाजी ने इस अवधि को 'भारतोपगमन' का पर्व कहा है। इसी लक्ष्य की ध्यान में रखकर विभिन्न प्रदेशों और स्थानों पर सर्वोदय-पर्व के अनेकविध आयोजन किये जाते हैं, जिनमें साहित्य-प्रचार और ध्यान पत्र-पत्रिकाओं के प्राहक बनाने का कार्यक्रम मुख्य रूप से चलता है।

सर्वोदय-पर्व की इन अवधि में सर्वोदय-विचार को जन-प्रिय बनाने की दृष्टि से स्थानीय लोगों की रधि, प्रवृत्ति और परिस्थितियों के अनुकूल कार्यक्रम उठाये जाते हैं।

इस वर्ष के सर्वोदय-पर्व के साथ गांधी-जन्म-शताब्दी-वर्ष भी शुरू हो रहा है। उस दृष्टि से कार्यक्रमों की दिशा के संकेत के धार पर कुछ बातें :

सर्वोदय-पर्व और गांधी-जन्म-शताब्दी की अवधि में कार्यक्रम की रूपरेखा

- गांधी के पदनामों द्वारा सर्वोदय तथा गांधी-साहित्य के प्रचार का आयोजन।
- सहरो में टोलियों द्वारा घर-घर पहुँचकर सर्वोदय-साहित्य और पत्रिकाओं के प्राहक बनाना।
- स्कूल और वास्तवों में अल्पबालीन प्रदर्शनों द्वारा साहित्य-विषयों का आयोजन तथा पुस्तकालयों के लिए गांधी-साहित्य के सेतो की विप्री करना।
- प्राथमिक और माध्यमिक पाठशालाओं तथा हाईस्कूलों में गांधी-विचार पर वक्तव्य या निबन्ध-स्पर्धाओं का आयोजन करके पुरस्कार के रूप में साहित्य दिलाने की योजना चलाना।
- गांधीजी के निजी सचिव १३० श्री महादेव भाई की डायरी के प्राहक बनाना।
- राष्ट्रीय-अङ्कटो पर सर्वोदय-साहित्य और पत्रिकाओं की धार्यक ढग से सजाकर विप्री के लिए प्रोत्साहन देना।
- रेलवे प्लेटफार्म और बस-स्टेशनो पर अस्थायी विप्री का विरोप आयोजन।
- विभिन्न रवि के पाठकों की ध्यान में रखकर तैयार किये गये साहित्य के सेतो का प्रचार और विप्री करना।
- कारखानों एवं औद्योगिक वस्तियों में एवं की अवधि में साहित्य-प्रदर्शनी और विरोप विप्री का आयोजन करना।
- व्याख्यान-मालाओं और विचार-मोक्षियों के द्वारा सर्वोदय तथा गांधी-विचार पर सहृदयता और उपयुक्त साहित्य का परिचय देना।
- गाँहरी, कम्पा तथा सार्वजनिक स्थानो पर छोटी-बड़ी साहित्य-प्रदर्शनीयों का आयोजन तथा पोस्टरों द्वारा प्रचार।
- सर्वोदय-साहित्य को जनवारी देनेवाली छोटी पत्रिका, कोल्डमें, और सूचीपत्र वितरित करना।
- स्थानीय समाचार-पत्रों के सहयोग से सर्वोदय-पर्व और गांधी-जन्म-शताब्दी के प्रगम पर विविध पुस्तकों की समीक्षाएँ और विभाषण प्रकृत कराना।

ध्यान है, उक्त कार्यक्रमों के मदन में जगह-जगह सपन रूप में आयोजन किये जायें और सर्वोदय-साहित्य तथा गांधी-साहित्य का अधिकारिक प्रचार जनता में हो सकेगा।

कुछ प्रतिनिधि पुस्तकें

गांधी-साहित्य

महादेवभाई की डायरी	प्यारे बापू	एनेनी रोमियो	१-००
(गांधीजी के साथ पचीस वर्ष)	गांधीजी और विचार-विज्ञान	देवदत्त गर्मा	०-५०
अङ्क १ से ५, प्रत्येक :	गांधी पुण्य-चरमण	दादा धर्माधिकारी	०-५०
शिक्षा में अद्वितीय भक्ति	गांधीजी	गांधी (एक राष्ट्रनैतिक अध्यायन)	०-५०
गांधीजी के महत्त्व	छान्नि कुमार	गांधीजी क्या चाहते थे ?	०-५०
	सविन्द	विचार-माला (नृत्य नाटिका)	०-६०
मुण-मुण गांधी	१०० ना० उपाध्याय	बापू के जीवन में प्रेम और श्रद्धा	०-३५
अन्वीषा में गांधी	जी० जे० डोक	गांधी : एक सामाजिक क्रान्तिकारी	०-३७

विनोया साहित्य

धर्म ग्रन्थाम	२५०	वि एमैत माफ बुयान (प्रबन्धी)	४.००	समय घोर सन्तति	०.२५
गीता प्रबन्ध (हिन्दी)	२५०	भागवत धम सार	१.५०	भाव य-दुःख	१.००
स्वियान्न दशान	१.२५	नामधोषा सार	१.५०	सर्वोत्तम श्रीर साम्प्रवाद (धर्मोक्ति)	२.००
ईगावासम्बुति	०.३०	बसुजो	०.९०	शामदान प्रामस्वरान्य	१.००
आमनान मोर विज्ञान	०.४०	रामनाम (एक चिन्तन)	२.००	मुल्लर आमदान (नया मल्लकरण)	१.००
शुचिना से धामचरान	०.७५	प्ररणा प्रकाह (प्रथ में)	१.२५	गाति सेना	२.००
सम साहित्यो	०.७५	सामाज शास्त्र	१.२५	धामाभिमुख हरी	१.२५
शान्तेन-विस्तारिता	१.२५	मर्वोन्ध विचार श्रीर स्वराज्य शास्त्र	१.२५	शामदान प्रफोसती (१)	०.७५
जगन्निचो का ग्रन्थयान	१.००	गिद्युल विचार	२.५०	धाम पचायत	०.५५
बहुन बुयान (प्रबन्धी)	१.२०	लोभनीति	२.००	एक बनी तेक बनी	०.५५
बहुन बुयान (उद्ध)	१.२०	स्त्री शक्ति	१.५०	धाम पचायत श्रीर शानदान	०.५०
बहुन बुयान (उद्ध भाषा नागरी लिपि)	४.००	मोहन्यत का पैगाम	२.५०	कायकर्मा क्या करें ?	१.२५
बुयान सार (हिन्दी प्रमुवाह मूल)	६.००	साहित्यिको से	१.००	सर्वोन्धयान	०.५०
बुयान सार (हिन्दी भाषरी लिपि में)	६.००	सादी विचार	०.७५	जय जयन्त	०.५०
		व्यापारियो से	०.७५	मधुकर	१.००
		भाषा का प्राल	०.५०	प्राप्त-उत्पान	२.००
			०.५०	जीवन दृष्टि	१.२५

रूपया ध्यान रख

इस पत्र में बिके साहित्य की रजम घोर बका दुभा साहित्य ३१ प्रकृत्तर १९९६ तक या देर के देर में १५ नवम्बर १९९६ तक कायम कर दें। पत्र के प्रयोग पर जयान-साहित्य हूय ज-हीनो से सकैय जिनका विच्छला हियाय साफ है। प्रत धापके नाम यदि सख्या की कोई सख्या देय है तो उसे भी जिनका दीजिये। जिनका चात्रु लेन-देन भव सेवा तप प्रयाजत से नहीं है वे लोग रजम प्रथिम भेजकर धपका बी० पी० या वर द्वारा साहित्य की जिन्टी मगाकर साहित्य कायम कर सकते हैं।

सब सेवा तप के प्रयासो की जिन्ची पर हूय सामायतया २५ प्रतिशत बर्मीशन देओ है। इनके प्रतिशत १ प्रतिशत नकद धूर देने की तैजिन मबोदध तक के धपतर पर ५ प्रतिशत धारितिक बर्मीशन भी दिना जायगा पत्र के प्रयोग पर मगाये गये साहित्य का हियाय साफ कर देनेवाले साहसो को नकद धूर धोर पत्र नमीशन दोनो प्राप्त हो सवेगा। देर से भानेवाली रजम पर नकद धूर देना कभव नहीं होगा। इनाफ मयव से ही बिको की रजम भिजवा बी जाय।

एक बार में एक ही रजमा में धारिक का साहित्य धापके निरटतम स्थेयन तक की द्वितीवरी से भेजा जायगा। एगवे रजम का साहित्य ममान पर धारिक बोस्टेज धोर रेल-मह्युन धाहू को देना होगा। पत्र के दोरान मगाया गया जो माफि, व धाप वापत करना चाहे वह कासो रेलवे स्थेशन के लिए बुक करा दें। धायम भत्र गये साहित्य के धापके सबासक सर्वे सेवा धोर प्रकाशन धापकत धाराधामो—१

चम्पारण (बिहार) के कुञ्च प्रखण्डदान

विचरण	प्रखण्ड	चनपटिया	श्रानि के धाँकडे	वि.बा	मेहसी	बाहा	पकड़ोदुवाय	ममर्सिवा
कुन पंचायत		१६	१८	१३		२२	१७	२५
कुन चनपटिया		११२०६८	६५२५७	५५८२५		६१५०१	६६३३७	११००००
धायमान में धामित		८४२२५	७३६६०	५४५७८		६६५०७	५८००२	८२७०८
प्रतिशत		७%	७७%	७८%		७६%	८७%	७६%
कुन श्रुति शास्त्र भं		५०६१८८२	३६६७५	२६७२५७		३८६६६	२८८२२	५६५११
धायमान में धामित		२२१५०००	२८५१५	१७६०००		२२०६१	१६१७१	२६६३६६
प्रतिशत		३२.३%	९.५%	६.०%		५.०%	५.६%	५.३%
प्रतिशत मबोदध		३२.३%	९.५%	६.०%		५.०%	५.६%	५.३%

धायम.क.ध. : सोमनाथ, १ सितम्बर १९८

रूस ने इतिहास को पीछे ढकेला है

लेकिन सैन्यबल से मानव की शक्ति कुचली नहीं जा सकती

दुर्बल और छोटे देशों को स्वाधीनता को सुरक्षा के नये उपाय खोजने होंगे

चेकोस्लोवाकिया की घटना पर जयशंकरा नारायण का वक्तव्य

यह भयानक दुःख और उल्टू प्रार्थना का नमन है। फिर एक बार न्याय पर बल ने विजय पायी है, और जंगल की नीति हाथी हो रही है। रूस ने मानव-सन्ध्या को सारी प्रतिष्ठा और शोषण पर पानी केर दिया है।

हमारे प्रथम मंत्री और कांग्रेस प्रवक्ताओं ने हृदय की दुर्बलता दिखाई है। कल लोकमभा के अध्यक्ष इस देश के वासियों की भावना को करीब-करीब प्रष्ट कर सके। आज सचद को हसी भाग्यल की स्पष्ट शब्दों में निन्दा करने चाहिए और चेकोस्लोवाकिया की जनता के प्रति तथा वास्तविक चेक नेताओं के प्रति—जो हसी हिसासत में हैं, अपने गहरी सहस्रभूमि और नैतिक समर्थन व्यक्त करना चाहिए।

रूस की कार्रवाई ने इतिहास को चौपाई शताब्दी पीछे ढकेल दिया है। विश्व-जाति तथा छोटे, दुर्बल और विवासशील राष्ट्रों की सुरक्षा मंत्री संकट में पड़ गयी है। इस घटना से एक बार फिर बड़ी शक्तियों को निर्मात्त करने में समुक्त राष्ट्रमण की धमकियाँ जादिर कर दी है। विक्तराम में अमेरिका, तिन्वत में चीन, चेकोस्लोवाकिया में रूस, इस बात का संकेत दे रहे हैं कि राष्ट्रों की सुरक्षा और स्वाधीनता के तथा मानव-स्वातंत्र्य के संरक्षण के अधिक सुनिश्चित उपाय खोजने की आवश्यकता है।

चेक जनता ने जिस बहादुरी और मजबूतदारी के साथ अपने धात्र-प्रतिनार का नमूना देना किया है, वह एक आकैतिक-भी घटना है। टैक और हवाई जहाज नि.पत्र प्रतिकार के सामने बेकार हैं। मधुप की धात्रा को कोई भी सैनिक धात्रमण नहीं कुचल सकता और इसमें कोई एक नहीं कि धत में बात चेकोस्लोवाकिया की ही रहेगी, भले ही उसमें कितना भी नमय लगे।

रूस की इस कार्रवाई ने स्वयं साम्यवाद को भी गहरा घना पहुँचाया है। पिछले दिनों स्तालिन-युग की बर्बंसा उत्तरोत्तर छूटी जा रही थी। साम्यवाद मानवीय बनता जा रहा था, किन्तु उल्टू उदाहरण ही युवके और उनके मायी रहे हैं। परन्तु हसी साम्यवाद ने फिर एक बार अपने जहरीले दाँत दिखाये हैं।

विश्व साम्यवाद के लए प्रथकार की दूत घटी में यूगोस्लाविया, रमानिया और इटली तथा प्राग की वमुनिस्ट पाटियाँ धरावा की किरण हैं। यह स्पष्ट बहना कठिन है कि यह ही उत्तरोत्तर बढ़ने इस प्रथकार में विलीन हो जायेंगी या उन प्रथकार को मिटाकर विजयी होंगी।

भारत के साम्यवादियों ने अभी तक कुछ भी स्पष्ट नहीं कहा है। वे इस प्रथकार पर जो रस लगे उस पर इन देश में उनका भाग्य निर्भर करेगा। इस देश की जनता ने स्वतंत्रता इसलिये प्राप्त नहीं की है कि विचार के नाम पर किसी दूसरे साम्राज्यवाद के अधीन हो जायें।

रूस ने धात्रे इस विश्वापदाती कृत्य के समर्थन में जो भी शीलें दी हैं, वे सब धारावर भूटी है और दुनिया में कोई भी दूर पर विश्वास करने की नादानो नहीं करेगा, यहाँ तक कि उसके साधारण के धात्रे जिनका दिमाग बन्दी हो चुका है, वे भी नहीं करेंगे। प्रगर धात्र उन साम्राज्य पर हसी साम्यवादी प्रभुत्व नान धात्रबल और भूट के धात्रार के बर पर टिकाया जा सकता है तो स्पष्ट है कि इस प्रभुत्व की सुविधाएँ बिलकुल निरामी हैं।

भारत को चेकोस्लोवाकिया की इस घटना में महत्वपूर्ण सबक लेना है। हम

भारतवासी सन्धे घरसे से बड़े राष्ट्रों की उदारता पर निर्भर रहने प्राये हैं। इनसे हमारा धात्रमसमान पटा है और हमारी धात्रादी लतरे में पडी है। धम हये धपने पैरो पर खडे होने का निश्चय करना चाहिए। इसके लिए धम हये धात्रसी धमडों में धपने समय और शक्ति का धमव्यय नहीं होने देना चाहिए और धपने भेद-भाव मिटाकर हममें से हरेक की देश के लिए धपनी पूरी शक्ति लगाने का सबल्य करना चाहिए और उस दिशा में पूरी मेहनत में काम करना चाहिए। यह एक गभीर समय है, जो देश की एवना और समर्थन का धात्रहव कर रहा है।

मद्रास २२-८-६८

गांधी जन्म-शताब्दी वर्ष

शुभारम्भ के अग्रसर पर

भूदान-यज्ञ

(अर्थिक कान्ति का संशोधक)
सासाहिक
की विनिष्ट भेट

नोक-कान्ति के अग्रदूत : गांधी

२ अग्रदूत '६८ की प्रवाग

विद्योपांक के कुछ विषय

- धात्रमण, धवजा और धमहवार
- विद्रोह और रचना
- नयी रचना की नयी दुनियाँ
- रचनात्मक कार्यक्रम का सौर मण्डल और धात्रमण
- गांधी एक प्रवाहातान विचारधारा मण्डाक : धात्राचर्य राममूनि वापिन मुक्त : १० राये एव प्रति २० पैने इस धम का : ५० पैने सर्व सेवा संघ प्रकाशन, रात्रपाट, धाराखसी—१

धात्रिक शुल्क : १० रु०; विदेश से २० रु०; या २५ शिलिंग या ३ कालर। एक प्रातः २० पैने श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशक एवं इच्छियन प्रेस (प्रा०) सि० धाराखसी में मुद्रित

भूदान-यज्ञ



नितान्त-स्वता मूलक-यानिद्योप-प्रदान-जी-हिंसक-क्रान्ति-की-सम्पत्-ध्यात्मिक-सा-त्त्विक

शर्च स्वेचा र्शघ का मुख प्रथ

वर्ष : १४

शंक : ४६

सोमवार

६ सितम्बर, १६८

अन्य पृष्ठों पर

कन, जी शर समाज और स्नेह

—गण मोठी ६०२

वाताशाही

—सम्पत्कौय ६०३

मालिन्य के प्रवास-स्तम्भ

—रामभूति ६०४

एक पत्र, उनकी प्रतिक्रिया और

६०७

कम की माराजगी

६०९

मेहुता समिति का प्रतिवेदन

६१३

मान्दीशर के समाचार भादि

आवश्यक सूचना

धरमासी २ अक्टूबर १६८ गायी
जयती : के प्रशस्तर पर 'भूदान-यज्ञ' का
विशेषक प्रकाशित होगा। इसलिए १६
नवम्बर के पत्र क बाद २३ और ३०
सितम्बर के पत्र बन्द रहेंगे। दोनों का
मिना मुसा विशेषक २ अक्टूबर के पत्रपर
पर प्रकाशित होगा। —म०

नमस्कार
आभारगुलि

सर्व सेवा सच प्रकाशन

राजवार, कारावासी-१, उधर प्रदेश

कोड : ४२८५

प्रतिक्षण विकासशील व्यक्तित्व

प्रसिद्धि की जिनको कभी परवाह नहीं थी उनकी पूज्य गाधीजी के सत्यो
यह ने असाधारण प्रसिद्धि दे दी। यह प्रसिद्धि मिल गयी तो उससे भी जल-
कमलवत् निलस रहने की शक्ति जितनी श्री विनोबा जी हैं उतनी और किसी की
नहीं है। जिन विशेषताओं के लिए पूज्य गाधीजी ने उन्हें प्रथम सत्याग्रही की
हैसियत से पसन्द किया उन विशेषताओं को सब लोग समझ नहीं सके हैं ऐसी
मुझे आशंका है। कई बड़े-बड़े सरकारी अफसरों ने मुझसे कहा कि जवाहरलालजी,
भूलाभाई तो बड़े नेता हैं, उनको कच्ची सजा देनी पड़ती है क्योंकि उनका प्रभाव
हजारों लोगों पर है। विनोबा तो 'स्माल फ्रॉइ' यानी 'अल्प जीव' हैं। उनकी
गाधी ने घटाया है, उनके असर का सरकार को डर नहीं है। डर हो या न हो
मि० एमरी ने भी प्रथ श्री विनोबा का नाम अपने निवेदन में दिया और उनका
एक सच्चे दयाधर्मों के नाम से उल्लेख किया है।

विनोबा का प्रभाव आज नहीं, क्यों के बाद लोग जानेंगे। उनकी धोही
विशेषताओं का निदेश करना मैं आवश्यक समझता हूँ। वे नैतिक वक्ताचारी हैं,
शायद वेसे नैतिक वक्ताचारी और भी होंगे। वे प्रसर विद्वान् हैं, वेसे प्रसर विद्वान्
और भी हैं। उन्होंने सादगी को बरण किया है, उनसे भी अधिक सादगी से रहने
वाले गाधीजी के अनुयायियों में कई हैं। वे रचनात्मक कार्य के महान् पुरस्कर्ता
और दिन रात उसी में लगे रहने वाले व्यक्ति हैं, ऐसे भी कुछ गाधी-संगानुगामी
हैं। उनके जैसी तैजस्वी बुद्धि-शक्तिवाले भी कई हैं। परन्तु उनमें कुछ और भी
चीजें हैं जो और किसी में नहीं हैं। एक निश्चय किया, एक तत्त्व महण किया तो
उसका उसी क्षण से अभल करना—उनका प्रथम धर्म का गुण है। उनका दूसरा
गुण निरंतर विकासशीलता का है। शायद ही हममें से कोई ऐसा हो जो कह सके
कि मैं प्रतिक्षण विकास कर रहा हूँ। बापू को छोड़कर यदि और किसी में यह गुण
मैंने देखा है तो विनोबा में। इसलिए ४६ साल की उम्र में उन्होंने आर्यी-जैसी
कठिन भाषा का अभ्यास किया, कुरान शरीर का अनुष्ठान किया और उनके
हार्मोन बन गये हैं। बापू के कई बड़े अनुयायी ऐसे हैं जिनका प्रभाव जनता पर
बहुत पड़ता है, पर बापू के शायद ही किसी अनुयायी ने सत्य अहिंसा के पुनारी
और कार्यरत गन्धे सेवक उतने पैदा किये हो जितने कि विनोबा ने पैदा किये हैं।
"योग कर्मसु कौशलम्" के अर्थ में विनोबा सच्चे योगी हैं। उनके विचार, वाणी
और आचार में जैसा एक राग है वैसा एक राग बहुत कम लोगों में होगा, इसलिए
उनका जीवन एक मधुर संगीतमय है। "संसार करो सत्कर्म से सत्य तोमार संद"
कवित्त टैगोर की यह प्रार्थना शायद विनोबा पूर्वं जन्म से करते आये हैं। ऐसे
अनुयायी से गाधीजी और उनके सत्याग्रही की भी शोभा है।

—महादेव देशाई

सेवाधाम . २३-११-५०

व्रत, जीवन, समाज और स्नेह

[आगामी १० सितम्बर की धीरेन्द्र भाई का जन्म दिन पड़ता है, और ११ को विनीतार का। इस अवसर पर हम धीरेन्द्र भाई की निराली गणेशशैली की गोष्ठी का एक संक्षिप्त प्रस्तुत कर रहे हैं, जो विनीतार के साथ नाटक मिलन की फलश्रुति है।—सं०]

विनीतार (धीरेन्द्र से) : धनोत्पादन और प्रशुचर्य दोनों दृष्टियों में खुशी हवा में बाम करना अच्छा है। एकादशव्रत 'गाइड-लाइन' है। व्रत स्वेच्छा से, जे, जो वे जकड़ते नहीं, संभनकारी नहीं होने। शुद्ध होकर भी प्रशुचर्य की दिशा में जा सकते हैं। व्रत 'पोलस्टार' की तरह मार्गनिर्देश करते हैं। मूर्खनारायण का तापमान ६८ डिग्री रहे तो हमारे शरीर टंडे होकर समाप्त हो जायेंगे। हमने मूरज की तोखता हो अब समाज में ६८ 'उष्णता' रहेगी।

अध्यात्म, नीति, तुलनात्मक समाजशास्त्र, धर्मशास्त्र के प्राथमिक प्रमेय—सब मिलकर जीवनशास्त्र बनाता है। हर रूपने बापू की प्रश्नोत्तरी छाती थी। मैं प्रश्न पढा करता था, बापू के उत्तर नहीं। मैं उत्तर मन में सोचता, मानो वही प्रश्न चुकते किया गया हो। बाद में बापू का उत्तर पढ़ता था, दोनों मिलाता था। इससे मेरा लाभ होता था। बापू यद्यपि पर्याप्त अध्ययन नहीं करते थे, फिर भी हर हफ्ते लेख लिखते थे, यह मैं उनसे कहता था।

धीरेन्द्र दा . वे पढ़ने से 'डिम्करेज' करते थे, 'बाम करो' कहते थे।

विनीतार हमसे बुद्धि कुंठित होंगे, और समाज को प्रेरणा नहीं दे सकेंगे। धाड़ पटे धम करके बुद्धि जड़ बन जाती है, पठ नहीं पाते, नौद आती है। अध्ययन और लोकसेवा नहीं हो पावी। काम चार घंटे हो, चार घंटे अध्ययन, और एक-दो घंटे समाज में सम्बन्ध रखने के लिए घूमें, लोगों को ममसायें।

अन्योत्पादन, प्रशुचर्य मादि व्रतों का पालन, अध्ययन—तीनों बातें प्राथमिक है। चापके जैने समाजमहयोगी छोटे प्राथम हर गाँव में रहे। कुछ प्राथम 'ब्रह्म-विद्या-मंदिर' को तरह 'विश्वेदेवी' के अन्दर प्रयाग करें, जिससे नया दर्शन हो सके, बरना नयी सोच नहीं होगी। ब्रह्मविद्या मंदिर समाज-प्रभिवुल होकर भी प्रसिद्ध रहेगा।

ब्रह्मविद्या मंदिर में चित्तशुद्धि ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि चित्तशुद्धि के ऊपर धर्मिमानस, चित्त में प्रलय होना है वहाँ।

धीरेन्द्रदा : प्राप जानते हैं, मैंने जीवन में एक भी कित्वाव नहीं पकी। गांधी ने कहा, 'खून छोड़ो'। मैंने कहा, 'पदार्थ छोड़ो'। (बाबा हँस)

विनीतार : (नामदेव के अग्रंग गाते हुए) 'तू कृष्ण, मैं रविमणी हूँ' यह कहने में कितना बड़ा प्रतिकार है। नामदेव कर माँगते

हैं, कि 'शुभ घंटा में मैं तुझे देखूँ। क्या मैंने क्या माँग लिया? प्रेमनारी वाली से भगवान से पुछने हैं। 'मान-सम्मान के लिए टूटा हो, कोई अग्रमान करे तो मुझ उल्लाप धामे, निरंतर तेरा ध्यान रहे। मेरी कीर्ति विद्युत्, तृप्ति तू ही तू है, विट्ठल। ठीक है, भूटभूट गाता हूँ, फिर भी तेरा नाम ही तो गाता हूँ। नाम पर तेरा विश्वास मरय है। हृदय में माधव का तो पाठकों को छाग ने नहीं जलाया, लका में हनुमान को, गोरुल को, प्रह्लाद को, सीता को—माधव के स्मरण से मसार रूपी धर्मिणी वी बाधा नहीं छुड़ेगी। जीव विट्ठल, धामा विट्ठल, पर-मात्मा विट्ठल, विट्ठल। सर्वत्र श्यामरंग दोखता है। तेरा नाम सुन्दर, रूप सुन्दर, तेरा प्रेम उससे भी सुन्दर है।

हमारे घर में मय कुछ है, प्रेम की बनी है। प्रेम तो बहुत दीखता है, पर स्थ-निर्मल नहीं। उसमें धासता है, अहकार है। मैं इन दिनों प्रेम की बहुत अस्तर मरुम करता हूँ। दुनिधा में प्रेम बहुत है, मगर खालिस नहीं। भोगवासना, धासक्ति, अहकार इन 'डेकली प्वायजन' (भारक बिप) से प्रेम मिथिन है। ऐसा प्रेम ताक होने के बजाय मारक है, दुबोनेवाला है। महाराष्ट्र के पाँच प्रमुख सानो में नामदेव में प्रेम को महिमा सबसे अधिक है।

प्रस्तुतकर्ता: जगदीश धवानी

'टैन फमेन्डमेंट्स'

वेबोस्कोवाकिया की राजधानी प्राय नगर में तोषिवय दखलवारो से पूर्ण निष्पत्त प्रतिकार के लिए जगह-जगह लगाये गये 'पोस्टिंग' में लिखित 'टैन फमेन्डमेंट्स' :

- हमने कुछ नहीं सीखा है !
- हम कुछ नहीं जानते !
- हमारे पास कुछ नहीं है !
- हम कुछ नहीं देते !
- हम कुछ नहीं बेचते !
- हम मदद नहीं करते !
- हम धोखा नहीं देते !
- (गूर बडे धकारों में)
- हम कुछ भी भुलेंगे नहीं !



धीरेन्द्र भाई : विनीतार
प्रान्तिचरय : युगचरय

धीरेन्द्र भाई श्रुति हैं। कमर टूटी है, फिर भी रात-दिन लोगों को सम्भालते हैं। वे कहते हैं कि उनका बुनियादी धंधा 'गण्य' है। अरसठ साल उम्र हो रही है। फिर भी जगह-जगह जाते हैं, कितना काम करते हैं; यह सबके लिए मिशाल है।

—विनीतार

रवतीव : २१ अगस्त '६६

तानाशाही

पार्टी के मादर मैनुयल के जो प्रांतीयक हो उन्हें खत्म करो। देश में पार्टी के जो प्रांतीयक हों उन्हें खत्म करो। दुनिया में देश के जो प्रांतीयक हों उन्हें खत्म करो।

बिना लिए खत्म करो ? कम्युनिस्ट नहेणा सवहारा की तानाशाही के लिए। फासिस्ट कहेणा दे-धोर उसकी समुक्ति के लिए। खत्म करने में दोना को समान रूप में विचाराल है। स्वतंत्र बुद्धि में दोनो को मान्य ही सनग विचारि देना है। कम्युनिस्ट को उर है कि स्वतंत्र बुद्धि के नाम में पूजोवाद हीट कायेणा फासिस्ट को उर है कि मनुष्य राष्ट्रवाद के धरौदे में निवमकर विधवाणी हो जायेगा।

मनुष्य की जिगा धोर नियम में दोनो को अक्षिपण है। इस लिए दना मनुष्य को तानाशाह का भय सिखाकर सही रास्ते पर रखना चाहते हैं। सही रास्ता कौन तय करेगा ? कम्युनिस्ट धोर फासिस्ट तानाशाह स्वयं तय करेगे। दूसरों को बंदी मही मानना पड़ेगा जो उन्हें सही लगता है।

कम्युनिस्ट को भय है फासिस्ट के राष्ट्रवाद से और फासिस्ट को डर है साम्यवाद के यनिकवाद से।

बेक्रीमोन्वाकिया के समय में खत्म ने एक बार फिट साफ-साफ जाहिर कर दिया है कि उसके लोकतंत्र का आधार सवहाराप की तानाशाही ही है। इसमें डिगडि करने के लिए वह तयार नहीं है उसका यह मनन है कि इन तानाशाहों को शक्ति में ही प्रतिबिम्बित वाने धोर पूजोवाद का मिर और मध्य समय पर उतने की कोशिस करना है पुचका जं सनका है, धोर उनके प्रहारी में समाजवादी की रणनीति का सनका है। दुनिया सपस गयी कि चाहे जिसकी हा तानाशाही तानाशाही है। साम्यवाद को बादूक से प्रलय करने की हकी कोशिस को हम को खोखर नहीं है क्योंकि उसे विचार की शक्ति में भरोसा नहीं है। शक्ति बन्दूक की नली से निरन्तरी है इस विषय में हम धोर चीन एक ही। हम धोर चीन की प्रतिडि इन मूल रक्षाओं में नहीं है माशा-पवानी-साम्यवादी विस्तारवादी राष्ट्र हित में है।

लेकिन हम का साम्यवाद ही या चीन का दोनो के फलाज में सबसे बड़ी रक्षाएं हैं साम्यवाद ही हैं जो अपनी राष्ट्रीयता। धर्मो कोई लेना नहीं है न अविद्या में गन्नाश ही दिव्या देनो है, बिषयो कोई देण राष्ट्रीयता की छीटकर साम्यवाद को खोखर करे। इसलिए हम जसे साम्यवाद के मान्यता को भी भिन्न देश की राष्ट्रीयता धर्म की विरहिरी बन जाती है। यही कारण है कि हम की धोर से इस बात का पूर खबर किया पर रहा है कि साम्यवाद को प्रणाली राष्ट्रीयता में नहीं सवहारा की धनरराष्ट्रीयता (शक्ति वैतन्त्र इतरनेताशक्ति) में है। राष्ट्रीय स्वतंत्रता के नाम में मात्र-लेनिन के सिद्धांतों से खुब होना साम्य नहीं हो सनका।

इसी समय में यह भी कहा जा रहा है कि हम की कम्युनिस्ट पार्टी धरणी है उनके अनुभव धोर नेटव की यह कहकर उदेश्य नहीं की जा सकती कि हम दूसरा देश है। सवहारा की धनरराष्ट्रीयता के बिना सवहारा की विध शक्ति सभव नहीं है। इसी सिद्धांत के नाम में मादर के कुछ साम्यवादी मित्रों के सह की लेनिन कारखाने का समय किया है। उनका कहना है कि साम्यवाद के दोनो सिद्धांत समान पहलव के हैं—बग-मध्य धोर सवहारा की तानाशाही। दोनो को मिलाकर साम्यवादी शक्ति को ब्यूह रचना पूरी होनी है।

कुछ दूसरे साम्यवादी मित्रों का जा हम की कारखाने का समय नहीं कर रहे हैं कहना है कि भेने ही बेक्रीमोन्वाकिया को अपने भीतर के दापो को दूर करने की 'दूट ही लेनिन समाजवादी विरोधी तरीकों को समाप्त करने की इच्छा से जने सवहारा की तानाशाही' की शक्ति भरपूर बनाये रखनी चाहिए। उनके बिना वह समाजवादी को बाधम नहीं रख सकेगा।

यही वा मुख्य प्रश्न है। साम्यवादी समाजवाद के लिए मांग है तानाशाही की। बेक्रीमोन्वाकिया की मांग है कि हम को तानाशाही बेक्रीमोन्वाकिया पर न हो और बेक्रीमोन्वास्ट पार्टी की तानाशाही खत्म बनना पर न हो। हम कहना है कि यह मांग प्रतिक्रियावादी राष्ट्रीयता के कारण है दुबके धोर उतने साथी कहते हैं कि राष्ट्र की परिस्थिति धोर प्रविदा से अलग समाजवाद का स्वका क्या होगा ?

हम धोर उतने मित्रों ने जो कुछ बिना है उनमें साम्यवाद को या रा धावात रखा है। मात्रक साम्यवाद बग-मध्य धोर सवहारा की तानाशाही के दो नत्वों पर भडा था। अब हम में तीव्रता जोडा है—हम का प्रश्नच। इन तीनों के कारण साम्यवाद को फकना नहीं कायम रह सनती।

इन सुराई में एक धाऊई भी निकली है। मनुष्य अपने में सन-गुह प्रय है चायद यह तत्व अब साम्यवाद में टाकित हो। लेकिन दूसरी धोर यह भी हो सनका है कि जो मनुष्य राष्ट्रवाद से धीरे धीरे ऊपर उठकर विश्व परिवार की भावना की धोर का रहा था धर फिर विश्व प्रभुत्व के भय के कारण अपने राष्ट्र के तय धरौदे में बंद होने को सज्जर हो जाय। कई मामल में बचपान धोर कहीं हम के हाणो साम्यवाद की यह शक्ति ? अब मध्य की साम्यवाद से रक्षा बरनेवाणी कोई तयी शक्ति चाहिए।

वह शक्ति क्या होगी ? स्वतंत्रता की तो होगी ही साम्य की ओ भवक्य होगी। किन्तु उन नयी स्वतंत्र साम्यवादी शक्ति का उदय था-य की शक्ति का जगम जोप हुए बिना नये स्वतंत्र होगा ? उन शक्ति के बिनाम में धनरराष्ट्रीयता बादूक की नहीं होगी जनता के हठ पर मूल मानव-दूधय की होगी। लेकिन तानाशाही तो मानव दूधय को ही समाप्त करने पर तालक है। धर हम ही न रहा जो 'जय जनत किन बात का ? दूधय के समाप हो जान पर के सब मिडाकित बोरे नाम रह जायेंगे बरना के किमिस सनका के ।

क्रांतिपथ के प्रकाश-स्तम्भ :

मार्क्स, गांधी और विनोबा



कई वर्ष हुए फिमलेट का एक युवक खादीप्राप्त थाया था। दर्शन-शास्त्र का विद्यार्थी था। गांधी-विचार का अध्ययन करने भारत आया था। खादीप्राप्त में एक दिन वर्षों "शासन-मुक्ति समाज" पर चल पड़ी। मैंने काफी देर तक उसे गांधी-विचार के सदर्भ में शासन-मुक्ति की बात समझाने की कोशिश की, लेकिन किसी भी तरह शासन ने मुक्ति उसके गले के नीचे नहीं उतर सकी। यह बराबर यही कहता रहा कि राज्य (स्टेट) से ही मनुष्य का कल्याण है। अन्त में कहते-कहते वह यहाँ तक कह गया : "भेरी समझ में आप लोगों ने शासन-मुक्ति को इसलिए सिखावत बना रखा है क्योंकि आपकी सरकार हतनी निकम्मी और भ्रष्ट है। हमारे देश में राज्य (स्टेट) का अर्थ है हर व्यक्ति को रोज 'दो सेर दूध'।"

राज्य यानी दो सेर दूध ! जब उसने यहाँ तक कह दिया तो उसके आगे में क्या कहता ? जिन लोगों के जीवन में राज्य रोज दूध के रूप में प्रकट होता हो उनको कैसे समझाया जाय कि शासन-मुक्ति का अर्थ है दूध छोड़े बिना मनुष्य की मुक्ति। क्योंकि वे कीमत कह पड़ेंगे कि राज्य नहीं रहेगा तो भूल ले, बेकारी से, आपसी हिंसा और बाहरी आक्रमण से सुरक्षित रखनेवाली दूसरी कीमती शक्ति होगी ? रोज-रोज के शत्रुत्व से उपर उठकर सोचना कठिन होता है।

राज्य का संरक्षण :
समाज का अस्तित्व

राज्य दूध-जैसा सुस्वादु और पोषक बन गया है।

समाज का नियमन

राज्य के दायरे से बाहर

जो लोग राज्य के बारे में ऐसी धारणा रखते हैं उनका सोचना बहुत गलत भी नहीं है। हम यह नहीं कह सकते कि उनका भय निराधार है। अगर मनुष्य के हज़ारों वर्षों से इतिहास में राज्य को निराल दिया जाय तो यह कहना कठिन होगा कि राज्य से मिलनेवाले सरक्षण के बिना समाज का क्या हाल होता ? क्या समाज-जैसी कोई चीज भी बन पाती ? आज के जमाने में तो राज्य कल्याण की शक्ति बनकर हम तरह-तरह है कि लगता ही नहीं कि उनसे भ्रमण किसी चीज का अस्तित्व भी हो सकता है। मैंने उस दिन देखा कि राज्य का नाम लेते ही जैते फिमलेट के उस युवक के मुँह में दूध का स्वाद आ गया।

सामान्य जीवन में सामान्य शक्ति चाहे जो सोचता हो, लेकिन दार्शनिकों और विचारकों में हमेशा राज्य को दार्शनिकों की सोचा मानी है। जब भारत के प्राचीनों ने सिपाए को, और समाज का नियमन करनेवाली नीतियों और रीतियों को वर्ण-व्यवस्था के रूप में राज्य के दायरे से बाहर ही नहीं, बल्कि उनकी शक्ति से ऊपर रखा तो यह मान लेना चाहिए कि उन्हें राज्य-व्यवस्था की मर्यादा और प्रभुता का स्पष्ट भान था। सभी दो वे अपनी प्रतीति को व्यावहारिक स्वरूप दे के।

मार्क्स : राज्य की सीमाओं का दोषक और वर्ग-संघर्ष का प्राक्विवर्ति

सदियों-सदियों से राज्य की मोद में प्रसह्य बन्धु की तरह मुखा वा अनुभव करनेवाली दुनिया चौकी तो तब, जब 19वीं शताब्दी के मध्य में मार्क्स ने यह कह दिया— वहाँ ही नहीं बल्कि शास्त्र से मिट कर दिया— कि राज्य का बाहरी स्वरूप चाहे जितना मोहक हो, यह सार्थक में जिन शक्तियों के हाथ में रहता है वे मार्शल-वर्गों के दमन और शोषण की ही होती हैं। मार्क्स वर्ग-संघर्ष का प्राक्विवर्ति था। राज्य को उसने शोषक वर्गों—उत्पादन के साधनों का स्वामी वर्गों—के हाथों में शोषण और दमन का साधन माना। इसी स्थिति का वह अन्त करना चाहता था। इसका उसके पान एक ही उपाय था—यह कि राज्य पर अधिकार श्रमिक वर्ग का, यानी शोषित का, हो जाय। ऐसा होने से राज्य खदब जायेगा और समाज-परिवर्तन का माध्यम बन जायेगा। वर्ग-संघर्ष सामाजिक क्रान्ति की शक्ति का स्रोत है, और 'मर्यादा' के हाथों में बाहर राज्य उस क्रान्ति का समर्थ माध्यम है : इन दो मुद्दों पर मार्क्स ने अपनी प्राक्विवर्तना बनायी।

वोर्ड भी शक्ति का, दार्शनिक हो, श्रमिक या शान्तिकारी हो, उसकी दोषता परिस्थितियों से सीमित होती है। मार्क्स की भी थी। उसने दुनिया को एक विशाल सत्य दिया, सत्ता का सही स्वरूप बताया, और वर्गों के संघर्ष द्वारा आगे के विराग का सोचा रास्ता दिखा दिया। उसके जमाने में हिया का जवाब हिंसा के विनाम दूसरा था क्या ?

छह से आठ तेर भनाज पीमना भुल किया ।
आजकल तीन सो नमस्कार धीरे पुमना मेरी
पसरत है । इससे मेरा स्वास्थ्य बचठा
हो गया है ।

“भोजन के सम्बन्ध में । पहले छह
महीने तक नमक खाना था, मगर बाद में
छोड़े दिया । मसाला बर्गहद बिलकुल नहीं
खाया और आजकल नमक और मसाला न
खाने का बत लिया है । दूध बुरा किया ।
बाई प्रयोग करने के बाद साबित हुआ कि
दूध के बिना अच्छी तरह काम नहीं चल
सकता । लेकिन यह भी छोटा जग सके, तो
छोड़ने की मेरी इच्छा है । एक महीना
सिर्फ केले, नीरू और दूध पर बिनयाया ।
साकल काम हो गयी । आजकल मेरी सुनाक
इन प्रकार है । दूध डेढ़ तेर (साठ वॉले),
रोटी दो (बीस तोले ज्वार की), केले चार-
पाँच, नीरू एक (जब मिल सके) । अब
मैं जब आश्रम में आऊँगा, तब आपसे
सप्लाह लेकर अपना आहार निश्चित करने का
विचार है । स्वाद के कारण और कोई
पर्याय खाने की इच्छा नहीं होती । तो भी
ऐसा लगता है कि उपयुक्त आहार भी काफी
अनीदाना है । रोज का खाने सगनम इस
प्रकार है—बेने और नीरू चार पैसे, ज्वार
दो पैसे, दूध पाँच पैसे, कुम ग्यारह पैसे ।
आपसे मुझे यह जानना है कि इनमें क्या
हेरकर करना चाहिए । वह आप मुझे पत्र
द्वारा लिखिएगा ।

“द्वारे वान :

(१) गोवा जी का वर्ग चलाया ।
उगमें छह विद्यार्थियों को मागी गोवा प्रथ-
सहित पढ़ायी, निःशुल्क ।

(२) ज्ञानेश्वरी, छह अध्याय । दस
वर्ग में चार विद्यार्थी थे ।

(३) उपनिषदे की । इन वर्ग में दो
छात्र थे ।

(४) हिन्दी का प्रचार : मैं खुद ही
हिन्दी अच्छी तरह नहीं जानता । फिर भी
हिन्दी श्रवणार विद्यार्थियों को साव बेहर
पढ़ने का बार्थनम रखा था ।

(५) दो विद्यार्थियों को धर्मगी ।

(६) प्रथम : लगभग ४०० मील
(वेदल) : रायगढ़, सितगढ़, तोरल-गढ़

बर्गहद इतिहास-प्रसिद्ध किले देखे ।

(७) प्रवास करते समय गीताजी पर
प्रवचन करने का कार्यक्रम रखा था । आज
तक ५० प्रवचन हुए । अब भी मैं आश्रम
में आने से पहले प्रवास करता हुआ वेदल
बाबई आऊँगा और वहाँ से रेल द्वारा आश्रम
में प्रवेश करूँगा । मेरे साथ एक २६ बरस
का विद्यार्थी प्रमता है । इसका विचार
मुझसे ही गोवा पढ़ने का है । यह काम भी
आजकल प्रवास में ही हो रहा है । मेरी
आश्रम में प्रवेश करने की अधिक से-अधिक
मीयाद फेब्रुवारी १ तक है ।

(८) बाई में 'विद्यार्थी-मण्डल' नाम की
एक संस्था स्थापित की । उसमें एक वाच-
नालय नाम दिया और वाचनालय की
सहायता के लिए पीसने का एक वर्ग रखा ।
उसमें १५ विद्यार्थी और मैं खुद पीसता था ।
जो लोग बचकी (मशीन) से पीसना जानते
हैं, उनका काम (२ तेर पर एक पैसा
लेकर) करना और पैसे वाचनालय को दे
देना । बड़े साहूकारों के बच्चे भी इन वर्ग
में भरती हुए थे । बाईं पुदाने विचार का
स्थान होने के कारण और इन वर्ग में
हार्बरकुल में पढ़नेवाले सारे श्राद्धियों के
लखके होने के कारण मशीने हमारी मूर्तों
में निवृत्त कर दी । फिर भी यह वर्ग दो
महीने चला । वाचनालय में ४०० पुस्तकें
जमा हो गयी हैं ।

(९) सत्याग्रह-आश्रम के मिट्टानों
का प्रचार करने की मैंने बहुत कोशिश की ।

(१०) वडोद. में १-१५ मित्र है ।
उन सबकी लोक-सेवा करने की इच्छा है ।
इसलिए वहाँ तीन वर्ष पहले मातृभाषा-प्रचार
के लिए एक मस्था स्थापित की । जब उन
मस्था का वारिक उत्सव हुआ, तब मैं वहाँ
गया । (उ-मद भर्षान् केवल संस्था के मदस्य
मिलकर इन बारे में बर्षा करें कि क्या
काम किया है और क्या करना है) उन
समय मैंने यह विचार रखा कि हिन्दी भाषा
का प्रचार करना चाहिए । मेरा विचार है
कि संस्था यह काम श्रवण करेगी । आपने
हिन्दी-प्रचार का जो प्रयत्न शुरू किया है,
उगमें बडीसा की यह संस्था काम करने के
लिए तैयार रहेगी ।

“अन में यह बहुत जरूरी है कि मैंने
सत्याग्रह-आश्रम के निवासी की हैसियत से
नया धावरण किया ।

“असाद धन . इन बारे में आहार के
विषय में लिख दिया है ।

“अपरिग्रह लकड़ी की थाली, बटोरा,
आश्रम का एक लोटा, धोती, बन्धन और
पुस्तकें, सब इतना प्रपच रखा है । कुर्ता,
कोट, टापी बर्गहद इस्तेमान न करने का
बत किया है, इसलिए शरीर पर भी धोनी ।
करके पर खुले हुए कण्डे ही काम में वेता हूँ ।”

“स्वदेशी विदेशी का मेरे साथ कोई
बान्ता ही नहीं है । आपने असाद के
व्याख्यान के अनुसार व्यापक धर्म न किया
ही, तभी)

“सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य - मुझे विश्वास
है कि अपनी जानकारी के अनुसार मैंने इन
बन्तों का परिपालन अच्छी तरह किया है ।

“अधिक क्या कहूँ ? जब सत्ये आते
हैं, तब भी एक ही विचार मन में आता है ।
क्या ईश्वर मुझसे सेवा करा लेगा ? मैं पूर्ण
असाद से इतना बह सकता हूँ । मैं आश्रम के
निगमों के अनुसार (एक को छोड़कर) चलता
हूँ । इसलिए मैं आश्रम में ही हूँ । आश्रम ही
मेरा साधन है । जिस एक विषय का उत्सव
किया गया है, वह अपना भोजन (अर्थात्
रोटी) खुद बनाना है । इसका भी मैंने प्रयत्न
किया, पर प्रथम में चल नहीं पाया ।

“सत्याग्रह का या दूसरा (साधन रेलवे
के सम्बन्ध में सत्याग्रह करना ही) सवाल
उठाना ही, तो मैं तुरन्त ही था पहुंचना ।
अपना मीयाद ऊपर लिखा ही है ।

“अभी गोवा म क्या हेरकर हुए है
और किसने विद्यार्थी है, राष्ट्रीय दिना की
योजना क्या है और मेरे आहार में क्या
परिवर्तन करना चाहिए, यह जानने की मेरी
प्रवृत्ति इच्छा है । आप को मुझे खुद पत्र
लिखना चाहिए । यह 'विनोबा' का—
आपको विस्तृत समझनेवाले आपके पुत्र का
अपवाद है ।

“मैं दो बार दिनों में यह गाँव
छोड़ूँगा ।”

“य पत्र को पढ़ने हुए यापुजी के पुत्र में
इन प्रकार के उद्गार निकलें थे :

“गोरख ने सङ्घर को हटा दिया। भीम है भीम। दूरे तिन तरे उहें इम प्रचार उत्तर दिया।

दस्तावेज

रूस की नाराजगी : किन बातों पर ?

‘गमन म महा घात गुम्हारे त्रिप कोन-जा विजयण लगाई। तुम्हारा प्रेम और तुम्हारा चरित्र मुझे मोह में डाल देता है। तुम्हारी परीक्षा मुझे मोह में डूबा देती है। मैं तुम्हारी परीक्षा करने में असमर्थ हूँ। तुम्हारी ही हुई परीक्षा को मैं स्वीकार करता हूँ और तुम्हारे त्रिप पिता का पद ग्रहण करना हूँ। मंगलुस पटना है मेरा लोभ तुमने लगाया पूरा कर दिया। मेरी मान्यता है कि सच्चा पिता अपने में अधिक चरित्रवान पुत्र को जन्म देता है। सच्चा पुत्र वह है जो पिता के द्वेष हुए में वृद्धि करे। पिता सत्यवादी, दृढ़ और दयालु हो तो स्वयं अपने से बड़ा पुत्र अधिक पैदा करे। नागुन होता है तुमने ऐसा हा किया है। मुझे एता तो महा दीनता कि यह तुमने मेरे प्रयत्न स किना है। इसलिए तुम मुझे आ पद द रहे हा उमे तुम्हारा प्रेम मे भेज के रूप में मैं स्वीकार करता हूँ। उस पद के योग्य बनन का प्रयत्न करूँगा और जब मैं दूरस्थस्थितु भारत होऊँ, तब भक्त प्रह्लाद की तरह मेरा सादर निरादर करना।

तुम्हारा यह बात गदा है कि तुमने बाहर रहकर धार्मिक के निपणो का बहूत यत्नो तरह चलन दिया है। तुम्हारा भाने क विपय म मुझे प्रवा भी ही नहीं। तुम्हारे लिख हुए म उ मुझे मानने पदण गुता दिव है। ईश्वर तुम्हें दीपति करे और मैं चाहा है कि तुम्हारा उपयोग भगन की उन्नति के निव हा।

तुम्हारा चुरान म हारके करने तापक यमी तो कोई बात नकर नहीं घारी। किन्तु मैं रूप मही छोडना चाहिए। बरिह बरुन सागुन हो, तो रूप की मरना कष दो बाय।

रुप व मानन म समाग्रह की प्राथमिकता नही है। तैरिन एत बार में मानन-द प्रवायका का अकुरत है। सम्यक है थैदा त्रिने के मानन म समय मान पर लड़ाई लडती बके। मैं तो यमी रमना राम

【 पिछले एक मे अपने चकोस्लोवाकिया म साम्यवाद के मानवीकरण के लिए वहाँ के लेखकों और बुद्धिजीवियों द्वारा घोषित घोषणा पत्र के कुछ प्रमुख अंश प्रकाशित किए थे। चेकोस्लोवाकिया के जनप्रिय और विश्व में बहुचर्चित नेता श्री कुबेक इस नयी हलचल के नेतृत्व में हैं, यह तो जातिर है ही। इस अर्थ में लेखका और बुद्धिजीवियों के सकार प्रसिद्ध उक्त वाङ्मय इच्छित शोभापत्र की प्रतिविधा मे तोचिबत हस और उनके सम्यक देवों की मार से जो वर चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिष्ट पार्टी के नाम भजा गया था उसने प्रमुख अर्थ अ समस्त को चेकोस्लोवाकिया सहित सभी वारसा-मन्थि के देवों की जो बंटक वाचिसवाधा में हुई थी उसका सबसम्मत वक्तव्य, और धत मे चेकोस्लोवाकिया म साम्यवाद के मानवीकरण के लिए प्रस्तावित हुए और हस की नाराजगी के बुनियादी कारणों को प्रकाशित कर रहे हैं।

यद्यपि इस समय परिस्थिति बदल गयी है और निरन्तर बदलते जाने की सम्भावना बढ़ती गयी है लेकिन शरयतून बनथान क्षम्यरता के चेकोस्लोवाकिया की घटना से साम्यवादी साम्यवाद मे मुक्ति का जो प्रक्रिया तथा उसका लिए होनेवाला सफल बुनियाद के सामने प्रवृत्त हुआ है वह अनिहोम का बहुत है और य घटनाजन उपक तथ्यों का प्रस्तुत करने है।—सं०]

चेकोस्लोवाकिया के परिवर्तन चिन्ताजनक

१४ और १५ जुलाई को दारस्त की बैठक की शीर्षक चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिष्ट पार्टी की केन्द्रीय कमेटी का नाम सयुक्त पत्र के कुछ प्रमुख अंश

घानके देश के घटनाक्रम मे हम प्राथमिक चिन्तित किया है। हमानी गहन मान्यता है कि आपकी पार्टी और चेकोस्लोवाक समाजवादी जनतन्त्र म सामाजिक प्रणाली की आपारदिता ज कि सिलाफ प्रान्कियावादी मानियों का जि हैं सामाज्यवाद का समयन प्राप्त है अधिमान आपके देश को समाजवादी राट मे परे धकेलने का खतरा पैदा करता है और इस तरह वह पूरी समाजवादी प्रणाली के हिता का खतरा मे डालता है।

हमारा कभी भी यह इच्छा नहीं था और न हम है कि हम ऐसे मामलों म हस्त

है। एक दो दिन मे दिन्नी जाना होगा।
‘और वहाँ बड़ तुम प्राथमिक मन।
नर तुमने मिनने को उल्लुख हैं।

बापू ने प्राचीनार।
सहायक आई की बायरी मे

क्षेप करे जो विमुक्त दर मे आपकी पार्टी और आपके राष्ट्र का समर्थनी मानता है कि हम कम्युनिस्ट पार्टीको और समाजवादी देश के बीच सम्बन्धो मे परस्पर श्रद्धा मान स्वतन्त्रता के सिद्धांतों का उल्लंघन करे।

साथ ही हम शर बाग पर महमत नहीं हों सवने कि विरोधी शक्तियाँ आपके देश को समाजवादी पथ से दूर धकेलें और चेकोस्लोवाकिया का समाजवादी समुदाय मे वृषक करने का खतरा पैदा करें। वह एसी चीज है जो आपके ध्येय दक्ष ही नीमित नहीं है। यह तमाम कम्युनिस्ट और मजदूर पार्टियों तथा राज्यों का—जो अधि मयमेन सहयोग और मैत्री व सुनो मे ऐवयवद है समन ध्येय है। यह हमारे देशों का—जो यूरोप मे स्वतन्त्रता, शांति और सुस्था सुनिश्चित करन तथा सामाज्यवादी प्राशासना और प्रगतिशोध की परिस्थिती की साजिशों के विनाशक कन्द्यर कटून लखी करने के लिए वास्तव-मन्थि मे शामिल हुए हैं समान ध्येय हैं।

देग पर पार्टी के नेतृत्व के निवर्त होने का लाभ उठाने हुए और ‘नरसदाकरण के तारे का अस्थाडम्बरपूष धंग से दुस्वस्था करते हुए प्रतिविध्यावाद की शक्तियों ने

चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी के खिलाफ और उनके ईमानदार तथा सफादार कार्यकर्ताओं के खिलाफ एक मुहिम आरम्भ कर दी। इन तरह वे स्पष्ट रूप में यह चाहती है कि पार्टी की धरणी भूमिका समाप्त कर दी जाय, समाजवादी प्रणाली को नष्ट कर दिया जाय और चेकोस्लोवाकिया को अन्य समाजवादी देशों के विरोध में खड़ा कर दिया जाय।

इन राष्ट्रीय मोर्चों के ढँके के बाहर जिन राजनीतिक सगठनों और कलशों का जन्म हुआ है, वे दरम्यान प्रतिक्रियावाद की शक्तियों का सदर मुकाम बन गये हैं।

ऐसा सही वजह है कि प्रतिक्रियावाद पूरे राष्ट्र की मार्क्सवादी रूप में सम्बोधित करने और 'दो हजार शब्द' शीर्षक के अन्तर्गत अपना वह राजनीतिक मंच प्रस्तावित करने में गफलत रहा जिनमें कम्युनिस्ट पार्टी और संवैधानिक सत्ता के विनाश सम्बंध, हड़तालें और गडबडी पैदा करने के लिए खुला आह्वान किया गया है, यह आह्वान पार्टी, राष्ट्रीय मोर्चों और समाजवादी राज्य के लिए अंधीर सतारा है और घा-बकला का पथ प्रस्तुत करने की कोशिश है।

हाल के गद्दीनों में आपके देश का पूरा घटनाक्रम यह गिड़ करता है कि प्रतिक्रान्तियों की शक्तियों ने साम्राज्यवादी केन्द्रों के सहारे समाजवादी प्रणाली के खिलाफ एक व्यापक अभियान आगे बढ़ाया है जिसमें पार्टी और जनसत्ता मनुष्यविरोधी के साथ मुकाबिला मूटी कर रही है। हममें कोई सन्देह नहीं है कि अन्तरराष्ट्रीय साम्राज्यवादी प्रतिपक्षवाद के केन्द्र भी चेकोस्लोवाकिया के घटनाक्रम से जुड़े हुए हैं और वे परिस्थितियों को भड़काने तथा उग्र बनाने लिए भरपूर कोशिश कर रहे हैं, समाजवाद विरोधी शक्तियों को इन दिना में कार्य करने के लिए उकसा रहे हैं। पूंजीवादी समाजवाद-पथ चेकोस्लोवाक समाजवादी जनतंत्र में "जनवादीकरण" और "उदासीकरण" के गुच्छणन को आगे बढ़ाते कम्युनिस्ट समाजवादी देशों के खिलाफ उजगला भरा आन्दोलन चला रहे हैं।

शक्तियों, क्या आप इन खतराओं को नहीं देखते हैं? कुंजी परिस्थिति में उदामीज करने

रहना, समाजवाद के ध्येय के प्रति और अपने माथियों के प्रति कर्तव्यों के बारे में धकादारी की केवल घोषणाएँ करने और आरंभवाचन देने तक अपने को सीमित रखना क्या सम्भव है?

हमारे देश शक्ति और समझौते से एक-दूसरे से सुखद है। राज्य और जनतंत्र के ये महत्वपूर्ण पारस्परिक दायित्व समाजवाद की रक्षा करने तथा समाजवादी देशों की सामूहिक सुरक्षा सुनिश्चित करने की आत्म आकांक्षा पर आधारित है।

चेकोस्लोवाकिया में मजदूर-बर्ग और मजदूर मेहनतगार जनता की सत्ता, समाजवादी उपलब्धियों की रक्षा करने का ध्येय निम्न चीजों का तकावा करना है:

—दक्षिण पक्षी और समाजवाद विरोधी शक्तियों के खिलाफ निष्पक्ष और साहसपूर्ण अभियान, प्रतिरक्षा के लिए समाजवादी राज्य द्वारा निर्मित नगाम सामग्री को शोषण करना,

—समाजवाद का विरोध करनेवाले तमाम राजनीतिक सगठनों की गतिविधि रोकना,

—जन-संचार के माध्यमों पर पत्रिकाओं, रेडियो, टेलीविजन—एर पार्टी का हक नियंत्रण तथा मजदूर वर्ग के हितों, सत्ता मेहनतगार जनता और समाजवाद के हितों पर उनका उपयोग,

—साम्यवाद-नेतिनवाद के सिद्धान्त-निष्ठ आधार पर स्वयं पार्टी की पंक्तियों को एंजुट करना, जनवादी केन्द्रवाद के सिद्धान्तों का अविचार रूप से परिपालन तथा उन सबके विरुद्ध गम्भीर, अपने हस्तों के जरिये मनुष्यपूर्ण शक्तियों को मदद पहुँचाना है।

पारसा, १५ जुलाई '६८

चेकोस्लोवाकिया की कम्युनिस्ट पार्टी की प्रेज़ीडियम का उच्चर

१—हमने मई में जो कार्यक्रम तय किया उसे प्रामत्त में लागू करने में देग में किसी तरह का गम्भीर आदि न हो, इसके लिए हम पूरे शौर पर प्रयत्नशील रहेंगे, साथ ही

हम इन बात के लिए अपनी पूरी शक्ति लगावेंगे कि चेकोस्लोवाकिया की समाजवादी व्यवस्था के लिए निर्भीक तरह का खतरा न पैदा हो।

२—हमारी विदेश-नीति शुरू से स्पष्ट रही है। उसकी बुनियादी बात है सोवियत संघ तथा दूसरे समाजवादी देशों के साथ सहयोग। हम कोशिश करेंगे कि समाजवादी राष्ट्रों के साथ हमारे सम्बन्ध परस्पर आदर, समता, सार्वभौमिकता तथा टोल अन्तरराष्ट्रीय भाईचारे के प्राचार पर गहरे हों। इस तरह हमलोग वारसा-सन्धि और 'कोसिल आफ म्युचुअल इकॉनॉमिक अग्रीमेंट्स' की प्रवृत्तियों में ज्यादा सार्थक योगदान दे सकेंगे।

यह वजह सही नहीं है कि चेकोस्लोवाकिया में पश्चिमी जर्मनी के पक्ष की शक्तियाँ सिर उठा रही हैं। अगर कभी किसी व्यक्ति के मुँह से उस तरह की बात निकली हागी तो वह ई-जर्मनीवादी की बात रही होगी। जर्मन साम्राज्यवाद का हथें की अनुभव हो चुका है, उसे जानते हुए हम अपने देश का भाग्य खतरों में डालेंगे, इसकी जो कल्पना भी नहीं की जा सकती। पश्चिमी जर्मनी हमारा एक दीवाल का पड़ोसी है, फिर भी हमने, अन्य समाजवादी देशों के बाद, उसमें अपने सम्बन्ध स्थिर करने का कदम उठाया। इनके विपरीत हम पूर्वी जर्मनी के हितों की रक्षा और उसकी अन्तरराष्ट्रीय स्थिति को मजबूत करने चाहते हैं।

३—पारसा शक्ति के मित राष्ट्रों की सेनाओं का शक्ति सम्मान चेकोस्लोवाकिया में है। यह हमारे उत्तरदायित्व का प्रमाण है। हमारी पार्टी के शक्ति लोगों तथा हमारी सेना ने उनका स्वागत किया। लेकिन हमारी जनता के मन में गहरे उब पैदा हुआ जब मित राष्ट्रों की सेनाओं ने चेकोस्लोवाकिया से जाने के दिन बार-बार टांगे गये।

४—अपनी पार्टी के 'एकजान प्रोग्राम' में हमने निम्नलिखित बातें रखी हैं —

(१) देग में समाजवादी विचारों में पार्टी का नेतृत्व का स्थान। यह स्थान पार्टी की शक्ति के कारण नहीं, बल्कि सेवा से मिला है। पार्टी देगवातियों को आगे देकर अपनी बात नहीं मनवा सकती।

उपरा स्थान सरसों के लिए सेवा कार्य तथा प्राद्यों की शुद्धता पर निर्भर है।

(३) देश में पार्टी की प्रतिष्ठा का नवीन स्वी की नीति से महाराज बना लिया था। उनके कारण स्वी सचप भी देश हुए, जैन चैक और स्लोवाको के बीच, बुद्धिजीवियों और श्रमिकों के बीच, युवा और पुरानी पीढ़ी के बीच। उनको नीतिया के कारण श्राविक समस्याएँ भी उलझ गयीं, वहाँ तक कि हम श्रमिका की उचित मानें नहीं पूरे कर सके, और पुरी श्राविक व्यवस्था का निष्कर्ष देना ही गया। इनका परिणाम यह हुआ कि जलवा का पार्टी में भरोसा कम हो गया तथा जगह जगह श्राविकोचना होने लगी। इसका उचित हल न निकाल कर उलझे शक्ति



अनेकबेहतर बुचकेक शक्ति के मोर्च का प्रदर्शन किया गया। नतिनाइवा दबकी गयी। बाद धन्य हम फिर अदररकी व उन तरीका को नकल करें ता नया होगा ? पार्टी के सदस्य विगत धरें हगें, तथा श्रमिक, धन्य काम करनेवाले, महाराठी विगत बुद्धिजीवों, सभी धन्यकार करने लग जायेंगे। मुल मिश्रकर पार्टी का नेतृत्व सन्देश में पठ जायेगा, और सत्ता का सपनें गुरु हो जायेगा। हमारा साम्राज्यवाद विरोधी मोर्चा भी बजोर पठ जायेगा।

(३) इसलिए हमने तय किया है कि पार्टी की पुनर्नेतृत्व के दोषों से बचन करें, और उनके लिए साम्यवादी व्यक्तियों से ब्राह्मण शरक करें।

(४) पार्टी की कार्य के चोरस्वी

वैठक बुलाएँ जो पार्टी की दिशा निर्धारित करे, बैकरोलोवाकिया की मधोय व्यवस्था तय करे, और एच नयी केन्द्रीय समिति चुने, जिनमें पार्टी और पूरे समाज का विश्वास प्राप्त हो।

(५) १४वीं बैठक के बाद बुद्धिवादी राजनीतिक प्रयोग के हल के लिए श्राविकान घनाया जाय। वेगनल फाट और सामाजिक स्वराज्य के आधार पर राजनीतिक व्यवस्था मधोय मतिधान का प्रवन्ध, राज्य की (मधीक, राक्षीय स्वधीय) प्रतिनिधि मन्थाम्रा व चुनाव और एक नय मतिधान की रचना।

(६) पार्टी की बैठक हानक तुरत वाद विताम्बर में दूसरे विषय पर विचार होगा। वेगनलफाट के मच पर धन्य दल को मायता देनी होगी, ऐच्छित सगठना समुदायो, कथवा आदि को इच्छा होने और धन्य काम करन की सुविधा देनी होगी। इस तरह ह्यलोग गैर सम्पुनित शक्तियों का सुनयन-मुक्तता युकाविका कर सकेंगे।

बहुमुक्ति लोग ने श्रम मण्डलों और श्रम-मधोयियों का साथ भी देखने का निष्पत्त किया है। हमने पुरान और सन्धरी बढ़ाने का प्रयत्न हाय म ने रखा है। हम श्राविक समस्यो को इस तरह हल करना चाहते हैं कि जनता का जीवन स्तर ऊँचा उठे।

हमने राज्य की सीमाया की सुनयन के लिए भी उचित कार्रवाई की है।

हमारे देग के सभी मधुसया के बहुमयन लाग चाहें हैं कि प्रय का संकेर उठा दिया जाय और धन्ये स्वयं विचार व्यक्त करने की छूटी जाय।

बैकरोलोवाकिया की बहुमुक्ति पार्टी दिया गया चाहनी है कि नोकरशाही और बुद्धि व तरीका से मित्र नतुच सम्भव है और साम्यिक गतिक साम्यवादी लेनिनवादी विचार में है, उनमें कार्यक्रमों में है, उनकी मरी नीतियों में है, बिना साम्यन जनता से प्राप्त है।

धन्ये का समय हमारी पार्टी के लिए बटिनायो का है। जन पर हम सभी विजय या सकेँगे जब हम मर्क क और १४वीं बैठक

के निर्णयों को अमल में ला सकें। इसलिए हम जानते हैं कि १४वीं बैठक का ठोकर दूरी बनाह और दूसरे दय से प्रस्ता का हल करने का प्रयत्न अत्यन्त अनुचित होगा। इन वक्त समाजवाद का शरीर हिन है कि पार्टी क नेतृत्व में श्रोभा किया जाय। हमने व्यवस्था की है कि सभी धाराओं के उभय बैठकर प्रापन म चर्चा कर।

हमें उल है कि हमारी इन कथा पर स्थान नहीं दिया गया। बारता की बैठक भी बिना हम लोगों क की गयी। एक पार्टी की नीति नीति पर उनकी अनुपस्थिति में विचार हो यह समाजवाद ने गिए हिनकर नहीं है। हम मानन ह कि ३० प्रनूजर १९४६ को साम्यन सपन जो धारणा की थी वह श्रव भी सही है। उनम कहा गया है कि

“समाजवाद” राष्ट्रों का महान भाईचारा समाजवादी समाज के निर्माण, तथा सर्वहारा के अन्तर्जाग्रत के आदर्शों के आधार पर बना है। उनके आदर्शों सम्बन्ध पूर्ण समता, उनकी राष्ट्रीय सीमाओं की मग्यता, राष्ट्रीय स्वतंत्रता, साम्योन्मिकता, तथा एक दूसरे के आन्विक मामलों में हस्तक्षेप न करने की नीति के आधार पर ही टिक सकते हैं।”

सोवियत संघ रूस, पोलैंड, हंगरी, बुल्गारिया, पूर्वी जर्मनी और बैकरोलोवाकिया की बहुमुक्ति पार्टी की आतिमत्तावा की ३ अगस्त की बैठक में संयुक्त घोषणा :

१—उन्नी हुई अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति और साम्राज्यवादियों की शक्ति, समाजवाद और अन्तर्राष्ट्रीय मुक्तता क विरुद्ध का मयी कार्रवाइया के कारण समाजवादियों द्वारा म एकता और इच्छा को पढ़ने से श्राविक प्रवन्ध है। इसके अलावा समाजवाद के विकास में ऐसी बटिनाइयां प्राणी है जिन्ह हल करने के लिए श्राविक और साम्यन को इच्छा करने की जरूरत होती है। इन बागों का अन्त म रखकर समाजवादी दलों की बहुमुक्ति

और श्रमिक पार्टियों ने शान्तिलवा में यह कार्यक्रम सुझाया।

हर देश की जनता के परिश्रम, दाय, और उत्सर्ग में हमें जो धनसंसार मिला है उसकी रक्षा होनी चाहिए। इस दृष्टिकोण में सभी परोक्ष हैं। हर पार्टी ने, जो समाजवादी विचारों के प्रयोग को विधायक रूप से हल कर रही हैं, महत्त्व दिया कि हर राष्ट्र की अपनी विवेचना और परिस्थिति है।

हमारे समान सद्यो को प्राप्त के लिए प्राप्त में अधिक महयोग आवश्यक है। इसलिए महत्त्व दिया गया कि जल्द-से-जल्द एक उच्च-स्तर की श्रमिक कार्यक्रम सुझाया जाय।

समाजवादी पार्टियाँ मानती हैं कि भिन्न-भिन्न राष्ट्रों में भिन्न-भिन्न समाज-व्यवस्थाएँ रहेंगी, इसलिए सट-अस्थिरता का सिद्धांत नर्वय मान्य है।

६ देशों की ये पार्टियाँ धितनाम की जनता का समर्थन करती हैं, और इसराइल के आक्रमण के कारण मध्य-पूर्व में उत्पन्न स्थिति के सम्बन्ध में चिन्ता प्रकट करती हैं।

ये पार्टियाँ यूरोप में एक सुनिश्चित नीति का समर्थन करेंगी, और दूसरे महा-युद्ध के बाद जो सीमाएँ निर्धारित हुई हैं, उन्हें बदलने के प्रस्ताव का विरोध करेंगी। ये वारसा की सन्धि को पूरे तौर पर माननी और अपनी सशक्ति शक्ति से साम्राज्यवादियों का मुखाविरुद्ध करेंगी।

ये पार्टियाँ मानती हैं कि समाजवादी राष्ट्रों की एजन्डा के आधार हैं मार्क्स-लेनिन की दृष्टि, ममान में कम्युनिस्ट और श्रमिकों की पार्टियों का नेतृत्व, तथा राष्ट्रीय अर्थनीति की समाजवादी बुनियादें। इनको बनाये रखने में ही समान सद्यो की सिद्धि है।

चेकोस्लोवाकिया में सुधार के सुदे

प्रशासनिक

(१) कम्युनिस्ट पार्टी के शान्तरिक चुनावों में गुप्त मतदान।

(२) सुधी शालोचना और मतभेद का प्रवित्कार। साथ ही अपनी बात को मनवाने की कोशिश करते रहने का प्रवित्कार।

(३) पार्टी और सरकार में दोनों पदों को एक साथ एक ही व्यक्ति को देने की मनाही। शान्ता ही नहीं, पार्टी के अन्दर भी एक व्यक्ति को कई ऊँचे पद देने की मनाही।

(४) १२ साल में अधिक पार्टी की केन्द्रीय समिति का कार्य-भूमि की सदस्यता की समाप्ति।

(५) गैर-कम्युनिस्ट पत्र-पत्रिकाओं के संस्कार की मनाहि।

स्वतंत्र आर्थिक सम्बन्ध

(१) चेकोस्लोवाकिया और यूगोस्लाविया में वित्तिक को सम्मिलित व्यवस्था। ईरान से सरोदे लेन के लिए सम्मिलित पादर लाइन बनाने की योजना।

(२) चेकोस्लोवाकिया में यूरोप-स्लाविया के श्रमिकों को काम देना।

(३) 'तीसरी दुनिया' बनाने में यूरोप-स्लाविया से सहयोग करने का वादा करना।

(४) पश्चिमी जर्मनी से सम्बन्धों को खुला रखना।

(५) कुछ बैंक उद्योगों के लिए विश्व-बैंक से ऋण लेने का निर्णय।

रूस के मय

(१) चेकोस्लोवाकिया में कम्युनिस्ट पार्टी की गितम्बर की वंशर रन के दबे खुले ममर्थकों को समाप्त कर देगी।

(२) चेकोस्लोवाकिया द्वारा स्वतंत्र अर्थ-नीति अपनाने की कोशिश। सभी चर-हता-वाकिया अर्थना पूरा लेट, ८० प्रतिशत लोहा, ६३ प्रतिशत रबड़, ४६ प्रतिशत विदेश प्रचार की पानुदें रूज से लेजा है, और रूज चेकोस्लोवाकिया से मधीन और तीवरा मात लेता है। बदले में रूज ईरानियरियर के गामान, कचका मात, गेज, और वैहें देजा है। रूज को भय हुआ कि चेकोस्लोवाकिया की अर्थनीति उगते प्रलय नहीं यूरोप-स्लाविया, रुमानिया और पाश्चात्य यूरोप की ओर न मुड़ जाय और धीरे-धीरे रूज और 'कोमिगान' (कम्युनिस्ट देशों का रूज के नेतृत्व में अधिक सयुक्त) को छोड़ दे। सभी चेकोस्लोवा-

वाकिया कर ६०% निर्यात 'कोमिगान' के द्वारा हाता है।

(३) उदार साम्यवाद। सबसे बड़ा भय इसी का है। साम्यवाद उदार होते-हुते वही 'बुद्धि' का न हो जाय? रूनी पत्र 'इजबेस्तिया' ने लिखा कि 'सर्वहारा की तानाशाही आज भी रूनी शान्त का आधार है। और, रूनी लोकतन्त्र तथा शमरीकी जीवन-पद्धति के बीच में कोई तीसरा रास्ता नहीं है। 'यह या वह', दुवरा कुछ नहीं। कम्युनिस्ट पार्टी की प्रमुत्तना, भीतरों ममलो में केन्द्रवाद, प्रेस पर बड़ा शुकुच, पार्टी (कम्युनिस्ट) के शालोचकों का दमन—रूज की नम में य चीत्रें रूनी देश को साम्यवाद के रास्ते पर रखने के लिए आवश्यक है। रूज को मुझा है कि चेकोस्लोवाकिया उदारता के नाम में सुधारवादी बन रहा है। यह छूत हुनरे देशों में भी फँड सकती है, और यूरोप में साम्यवादी मार्क्सवादी की बमजोर कर सकती है। शक्ति में नागरिक प्रवित्कारों की बान बुजुवादी चंचला है। अधिक मुत्तसा से प्रथिन मनुत्तय की चाहिए क्या? नागरिक के प्रवित्कारों की शान प्रागे बनेगी तो बई पार्टियाँ मत सरती है। दम तरह का बुद्धि-भेद नामवाद के लिए पानर है।

(४) वारसा-सन्धि में निज राष्ट्रों के सम्मिलित नैतिक वगागटर का प्रमन। चेकोस्लोवाकिया ने प्रमन उठाया कि नव मुग्य पदों पर रती ही अकार बघो रहे? जनता बहना था कि ऊँचे-पकारे वारी-वारी हर देश के हाम साथ ही यह था भी की बि जब कोई देण चाहना नरु तो उम्में विदेगी मेना बगी रती जान? •

कार्यालय स्थानान्तरित

उत्तर प्रदेश सामन्दात शान्ति मन्त्रि का कार्यालय, जो धर्मो तय १९५३ में २-महानगर, लखनऊ-६ में था, प्र. प्र. 'दरेकाली' की दृष्टि में अधिक उपयुक्त म्चान बालाशुनी के लिए अन्तगामन्त्रि हो गया है। अधिक में डा. मन्त्रि का पत्रा निम्नान्वित ही रहेगा :

उत्तर प्रदेश सामन्दात प्रति-मन्त्रि मन्त्रि सेवा मय, राउतधा, बालाशुनी -१
—कृपितभाई, संवायक

२६ अगस्त १९८८ तक

उत्तर प्रदेश की विद्वां

पूरब से पश्चिम तक तृप्तान

प्रदेशीय ग्रामदान प्रति-समिति का संयोजक श्री कपिल भार्गव ने २६ अगस्त का प्रदेशीय ग्रामदान तृप्तान का प्रतिपत्तिका की जानकारी लेते हुए लिखा है

महानगपुर के सदरी तहसील की तृप्तान प्रवण्डा एटकी, भगवानपुर और नामनेन म दा-० घटनाके और श्री रामश्री भार्गव तथा श्री कामनाशय शुद्ध (जन साहब) ने धर्म धनन म प्रतिपत्तन बना। पून संघर्षी के लिए २० २१ अगस्त का शिक्ति किया गया था। ५६ टोलियां व प्रतिपत्तिका म कुल ११२ ग्रामदान प्राप्त हुए। शिक्तिका की संविध मध्याय मिला।

ग्रामदान न नियनपुर प्रमण्ड म २० वापसना १० टोलियां मे पून। कुल ६१ ग्रामदान प्राप्त हुए।

कंठाबाद क पुनबाजार और गाजीपुर क मादाद प्रखण्ड मे प्रतिपत्तिका जारी है।

'बली त्रिने मे ३० वापसनाओ का एन शिक्ति ३० अगस्त को हुआ। उनके बाद वे प्रतिपत्तिका चल रहा है। एम प्रचार मगहर क्षेत्र के घोषपुर, देवरिया और बली इन तीन जिलों मे भी ग्रामदान तृप्तान की हवा पड्डव गयी है।'

बरेली स प्रात पूनवानुसार २२ अगस्त को स्वाभीष्टण्डा स्वरुप और श्री प्रोमप्रकाश गोड की उपस्थिति मे हुई विशार-मोही म जिन मे ग्रामदान-प्रतिपत्तिका चलाये की सम्भवना पर विचार हुआ। यहाँ घोष ही तृप्तान शुरू होने की आशा है।

फर्रुखाबाद जिन मे प्रतिपत्तिका और शिक्ति का गिनगिन चल रहा है।

मध्य प्रदेश मे दो नये प्रखण्डदान इन्चो के प्रात पूनवानुसार १० विनाड में सेवक बोड बनगुना मे खीनपुर प्रखण्ड का दान बोधवत हुआ है।

भारत म

जिार में

प्रान्त	ग्रामदान	प्रखण्डदान	जिलादान	जिला	ग्रामदान	प्रखण्डदान	जिलादान
१ बिहार	२५,६२६	२००	२	पुलिया	८,१५७	३८	१
२ उड़ीसा	८,५०६	३६	—	बतभवा	३,७२०	५५	१
३ उत्तर प्रदेश	७,६०४	५५	२	मुनगणपुर	२,२०६	३६	—
४ तमिलनाड	५,३०२	५०	१	मुणे	२,०६१	१८	—
५ घास	६,२००	१०	—	हजागावि	१,२७३	५	—
६ म० पंजाब	३,६३३	६	—	गया	१,२१७	२	—
७ महाराष्ट	३,१०६	११	—	साधात परगना	१,०२६	२	—
८ मध्यप्रदेश	३,२६७	८	१	मारण	८६८	६	—
९ पंजाब	१,५८६	१	—	पलामू	८२२	५	—
१० राजस्थान	१,०२१	—	—	महलवा	२,३२२	१६	—
११ गुजरात	८०३	३	—	भानलपुर	५६३	३	—
१२ बंगाल	६५६	—	—	मिहलूमि	५६१	५	—
१३ कर्नाटक	६१०	—	—	पलवाड	५१५	१	—
१४ कल	८०६	—	—	बाटोवार	११६	१	—
१५ दिल्ली	७४	—	—	धमाराण	२५८	१२	—
१६ हिमाचल प्रदेश	१७	—	—	दीना	८४	—	—
१७ जम्मू-काश्मीर	१	—	—	पटना	५७	—	—

दरभंगा जिलादान में प्रखण्डदान	ग्रामदान	प्रखण्डदान
पुलिया	३८	३,०२०
तिरुनलवली	३८	८,१५०
बलिया	१६	२,०६१
उत्तरकाशी	५	१,५१६
टीकमगढ़	—	५६३

बिहार में जिलादान	प्रखण्डदान	ग्रामदान
उत्तर प्रदेश में	२	२५,६२६
तमिलनाड में	१	७,६०४
मध्यप्रदेश में	१	५,३०२
भारत में	६	३,२६७
विनोबा विनाम देविना चम्पारण	३७३	६६,१३५

विनोबा विनाम देविना चम्पारण

—कृप्यराज मेहरा

मुजफ्फरपुर जिलादान-ममारोह

प्राणामी ११ सितम्बर ६८ को विनोबा जयली के मजगद पर मुजफ्फरपुर में जिला दान-ममारोह प्राणोदित किया जा रहा है। प्राणा की जारी है कि एम अमरद पर देम म और भी जिलादान की घोषणा हो मरगी।

थदाञ्जलि

उत्तर प्रदेश रचनात्मक परिवार के वरिष्ठ सदस्य श्री रामचन्द्रण एल का मनगपुर म दिनांक २०-८ ६८ की देहांतवत हो गया। उनकी स्वर्गिय आत्मा को हमारी विनम्र और शक्ति थदाञ्जलि।

ग्रामदान-ग्रामस्वराज्य आन्दोलन

की कुछ विशिष्ट पुस्तकें

देश को समझाएँ और ग्रामदान	जयप्रकाश नारायण	०-८०
ग्रामदान : शाका-समाधान	धीरेन्द्र मजूमदार (प्रेस में)	
गांव का विद्रोह (संगीत; परिवर्तित)	रामभूति	१-२५
जनता का राज	मनमोहन चौधरी	०-२५
ग्रामदान : प्रचार, प्राप्ति और पुष्टि	रामभूति	१-००
तूफान यात्रा	सुरेश राम	३-००
ग्रामदान-मार्गदर्शिका	मनमोहन चौधरी	०-५०
ग्रामदान क्यों ?	बाबुचन्द्र भट्टागरी	१-२५
गांव-गांव में अपना राज	श्रीकृष्णदत्त मट्ट	०-५०
लोकस्वराज्य	जयप्रकाश नारायण	०-६०
प्राजादो खतरे में	"	०-४०
लोकशक्ति का उदय	रामभूति	०-३५
चुनाव और लोकतंत्र	संकलन	०-७५
कोरापुट के ग्रामदान (निर्माण-कार्य) अण्णा सहस्रबुडे		०-६०
तमिलनाडु के ग्रामदान	वसन्त भास	२-००
कोरापुट के ग्रामदान	"	२-००
गुजरात के ग्रामदान	"	२-००
अन्ध्र के ग्रामदान	"	१-००
मध्यप्रदेश का ग्रामदान : मोहकरी	"	१-००
ग्रामसभा : स्वरूप और संगठन	रामचन्द्र राही	०-४०
गांव बचाएँ देना बनाएँ (कहानी)	"	०-६०
गांव की पुकार (लघु नाटिका)	"	०-५०
सुनो बहानी मानकर की	प्रेमकाई	१-००
शान्ति-मेना क्या है ?	नारायण देसाई	०-५०
भारत में शान्ति-मेना	"	०-२५
किसीतर पत्र	"	०-३०
शान्ति-मेना	"	०-३०
स्वाध्याय	"	०-२०
दंगाधमन	"	०-१५
शान्ति-वेन्द्र	"	०-१५
मार्गदर्शिका : शान्ति-सैनिकों के लिए	"	०-७५
गांव की खादी	"	०-२५
अर्थिक शान्ति का नया धायाम : बिहारदान	"	०-२५



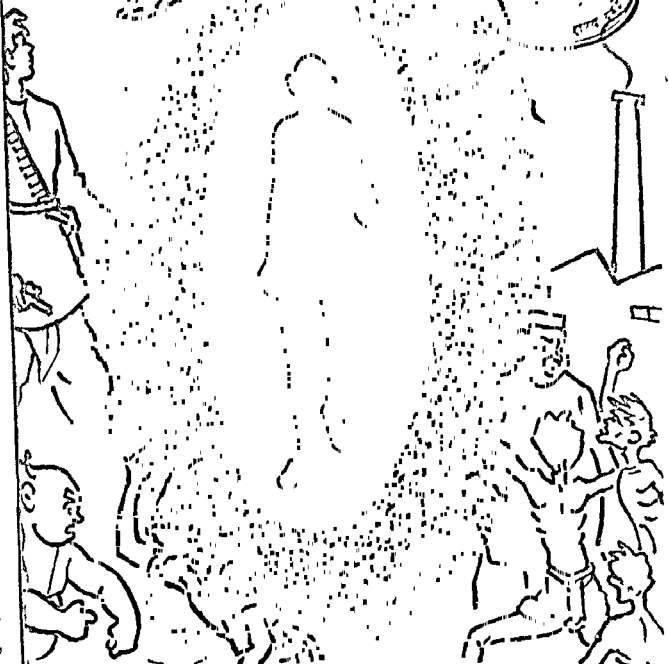
आन्दोलन की पत्र-पत्रिकाएँ

			दा० शुल्क
भूदान-ग्रन्थ	हिन्दी	सामाहिक	१०-००
गांव की बात	हिन्दी	पारिक्त	४-००
भूदान तहरीक	उर्दू	पारिक्त	४-००
नयी तालीम	हिन्दी	मासिक	६-००
सर्वोदय	अंग्रेजी	मासिक	६-००
न्यूज लेटर	अंग्रेजी	मासिक	१०-००
विनोबा-चिन्तन	हिन्दी	मासिक	६-००

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ डिजिट या ३ बाहर। एक प्रॉन : २० पैसे
 श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सवे सेवा संघ के द्विप प्रकाशित एवं इस्तिफन प्रेस (मा०) डि० बाराखसी में मुद्रित

गांधी-जयन्ती

२० अक्टूबर १९६०



भद्राना-याज्ञा



मेरे इस दुनिया से चले जाने के बाद कोई भी एक आदमी पूरी तरह मेरा प्रतिनिधित्व नहीं कर सकेगा। लेकिन मेरा थोड़ा थोड़ा अंश सबमें जीवित रहेगा। अगर हर आदमी ध्येय को पहला स्थान और स्वयं को अंतिम स्थान दे, तो मेरे जाने से पैदा हुई रिक्तता बड़ी हद तक पूरी हो जायेगी।

—मो० क० गांधी

गांधीजी अपने ग्रन्थों से बढ़े थे

गांधीजम एक इज्जत है ऐसा जिस किसी ने माना, वह समझा नहीं है। वे तो ऐसे पुरुष हो गये जो बहुत व्यापक विचार करनेवाले थे और लगभग स्मृतिकारों की कीर्ति में आते हैं। किसी ने उनकी तुलना ईसा के साथ की है, किसी ने तिलक के साथ की है। मेरी राय में उनकी तुलना स्मृतिकारों के साथ हो सकती है। मनु और याज्ञवल्क्य के साथ हो सकती है, जिनका व्यापक विचार जीवन के सब पहलुओं को रक्षित करता है। लेकिन उनको आध्यात्मिक प्रतिभा अन्दर से ही मिलती है। इसलिए उनकी तुलना किसी के साथ नहीं हो सकती। गांधीजी बहुत व्यापक समाज शास्त्रज्ञ थे। फिर भी मनु में और उनमें एक फर्क था। मनु चिन्तन-प्रधान थे और गांधीजी सेवा-प्रधान थे।

जहाँ तक जीवन का सवाल आता है, वहाँ वे व्यापकता के साथ विचार करते हैं। उस हालत में संस्कृति का सवाल आता है। इस बारे में अगर सोचना है, तो टास्टराय और रवीन्द्रनाथ टाकुर काफी व्यापक विचारक थे, लेकिन गांधीजी ऐक्टिविस्ट (कर्मप्रधान) थे। विवेकानन्द मिस्टिक (रहस्यवादी) थे। गांधीजी का वर्णन करना है तो वे ऐक्टिविस्ट-प्रधान थे, मिस्टिक गौण थे। विवेकानन्द मिस्टिक प्रधान थे, ऐक्टिविस्ट गौण थे।

गांधीजी ने जो प्रभाव डाला, वह अत्यन्त और अप्रमत्त भी है। उनके ह्निपेरेशन में संस्कृति का काफी स्थान है। मेरा मानना है कि अगर कदचरल चार्लेवट (सांस्कृतिक इन्फ्लो) से देखना है तो किसके जीवन का उनके ऊपर प्रभाव रहा वह देखना होगा। इसलिए मैंने कहा था कि गांधीजी की खूबी यह थी कि वे अपने ग्रन्थों से बढ़े थे, और कवि शंकराचार्य तथा मिहटन अपने ग्रन्थों से छोटे थे—जीवन के तथ्यात्मक से। उन्होंने बहुत प्रतिभावान् ग्रन्थ लिखे, लेकिन गांधीजी का जीवन बहुत ऊँचा, अर्थ और उन्नत था, एम्पेरेशन में—विचार प्रकट करने में, वे कमजोर थे। इसलिए किताब से भी उनके जीवन में अधिक प्रतिभा थी।

माचला, इन्दौर : ३०-५-१०

— विनोबा



गांधी की बाल

जीवन-स्तर का सवाल और मजदूर नेता

“हाँ, तो मिस्टर राजन्, इस हड़ताल के पीछे आप लोगों की माँग क्या है?” अपनी नोट बुक संभालता हुआ मैं कुछ इत-मीनान से बैठकर, दिल्ली के एक प्रमुख मजदूर नेता से पूछना हूँ।

“जनाव, आप भ्रखबारवाले होकर भी इस हड़ताल के उद्देश्य से परिचित नहीं? ताज्जुब है।” मिस्टर राजन् सीधी नजरों से मुझे घूरते हैं।

मैं जरा सहम जाता हूँ। लेकिन पत्रकारिता करता हूँ इस-लिए नेताओं के इस प्रकार के भावों से अचछ्छ खासा परिचय है। जवाब देते हुए पूछना हूँ:

“भाफ कीजिएगा, बात यह है कि हड़ताल के जाहिर उद्देश्यों से तो मैं भली प्रकार परिचित हूँ, लेकिन प्रामी मैं विशेष तौर पर आप जैसे चोटी के मजदूर नेताओं से व्यक्तिगत रूप से मिलकर उनके विचार जानने की कोशिश में निकला हूँ और इसीलिए... ..।”

“श्रोपको! तो यों कहिए कि आप हड़ताल के बारे में मेरा वक्तव्य चाहते हैं।” मिस्टर राजन् अपनी शानदार मेज के कोने में सगो हुई बिजली की घंटी का बटन दबाते हैं। “लियिए... सिगरेट पीजिये। आपको कुछ भी कष्ट नहीं करना पड़ेगा। वक्तव्य मेरा पी० ए० (निजी सचिव) तैयार कर रहा है, अभी आ जाया है। मैं तो खुद ही शाम तक उसे प्रेस भेजनेवाला था।... तैर, अच्छा हुआ आप आ गये। आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।” मिस्टर राजन् एक साथ इतनी बातें सुनाते हुए सिगरेट पेश करते हैं।

कुछ हिचक के साथ मैं दो सिगरेटें सुलगाकर एक मिस्टर राजन् को पमाता हूँ, और एक से तुद ही धुएँ का बादल बनाना शुरू कर देता हूँ। सिगरेट के धुएँ का बादल बनाना मेरा लास शौक है।

मिस्टर राजन् के छोटे-से लेकिन निहायत खूबसूरत ‘फैट’ के इस सजे-सजाए ‘ड्राइंग-रूम’ में माहॉलीतो की भीनी-भीनी चाक-लेटो सुगंध भर जाती है। वैसे मेरी अपनी जैव तो इतनी मंहंगी विदेशी सिगरेट पीने की इजाजत नहीं देती, लेकिन पचा मेरा ऐसा है कि वहाँ के यहाँ माना-जाना रहता है, और यह भासू होते ही कि मैं प्रमुख प्रमुख दैनिक का विशेष प्रतिनिधि हूँ, मेरे लिए सातिरभाव कुछ विशेष ही माता है। और तब वसों और सड़कों पर भोजू में चलते समय बोड़ी और सस्ती सिगरेटों की जो मिसलानेवाली गंध से बोड़ी देर के लिए ही सही, राहत मिल जाती है।

“यस सर्!” मिस्टर राजन् का पी० ए० माता है।

“देखो, हड़तालवाला मेरा वक्तव्य (मेरी और इशारा करते हुए) आपको दे दो।... और ‘बाय’ की कह दो, चाय भेज दे।”

पी० ए० फिर ‘यस सर्’ दुहराता हुआ थापस लीट जाता है; और चंद मिनटों में ही वक्तव्य की एक प्रति मुझे पमा जाता है:

वक्तव्य की सरसरी निगाह से देख जाता हूँ। कुछ पूछने की इच्छा होती है, कि तभी मिस्टर राजन् की भावाज मेरा ध्यान उनकी ओर खींचती है:

“देखो भई, तुम भ्रखबारवाले लोग भी इस देश की समस्याओं को सामने नहीं लाते, सर्वहारा मजदूरों की तकलीफों की ओर सरकार और समाज का ध्यान नहीं दिवाते, तो कमी-कमी यह सोचकर बहुत दुख होता है कि इस देश का भाविय आस्तिर किधर जा रहा है? स्वराज्य हुए २१ साल हो गये। इतने दिनों में बच्चा बालिग हो जाता है, लेकिन यह देश आज भी जहाँ का वहाँ पड़ा है। ऐसा लगता है कि इस स्वराज्य-सिन्धु के पैदा होते ही इत्ते लकवा मार गया। अब तक उठ-बैठ पाने की शक्ति शरीर में नहीं प्रायी, पता नहीं कमी प्रायेगी भी या... ..।”

“भाफ कीजिएगा मिस्टर राजन्, क्या मैं जान सकता हूँ कि आपकी इस बात से और जहरत के भाधार पर बेतन की बेन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों की माँग से क्या सम्बन्ध है? और जिस हड़ताल के कार्यक्रम में आप अपनी पूरी शक्ति लगा रहे हैं, वह देश के हित में कहाँ तक उचित है?” मैं पूछता हूँ।

“मिस्टर प्रमरेड, आप सर्वहारा वर्ग के होकर भी अपने वर्ग के हित को नहीं समझ पा रहे हैं? ताज्जुब है। प्रातिर, बेन्द्रीय सरकार के कर्मचारियों की माँग इतनी ही तो है कि कम से-कम २०० रुपये माहवार हर कर्मचारी को मिले! इस जमाने में अरब दो सौ रुपये भी न मिले, तो वताइये न कि कोई कौन अपने परिवार वा खर्च चलाये, कैसे अपने जीवन वा स्तर ऊँचा उठाये? आप क्या चाहते हैं कि लोग भूले मरें? नंगे रहें? इसी से देश का हित सधेगा?” मिस्टर राजन् कुछ शीप के साथ पढ़ते हैं।

“लेकिन भारत की प्राथिक स्थिति की देखाए हुए तो...।”
“यह सब बुझुं वा सोचो की दोषी दलीलें हैं। सरकार की सोझारदत बायें हैं। भारत का प्राथिक विनाश नहीं हुआ, मई

संस्कार के निश्चय के कारण, इसके लिए सरकारी कर्मचारी] क्यों कष्ट झोले ? उनही यमिं पूरी होनी ही चाहिए, चाहे सरकार की जो भी मजबूरी हो।" मिस्टर राजन् मेरी बात की बीच में ही काटकर प्रपना तक पैसा करते हुए खोर देकर कहते हैं।

मेरा प्रनुभव है कि नेता जब जोश में आते हैं तो सुनते नहीं, सिर्फ बोलते हैं। और बड़ी सिससिसा यहाँ शुरू हो रहा है, यह प्रनाज करना कठिन नहीं था। इसलिए अब मैं मिस्टर राजन् से विदा लेना ही उचित समझता हूँ।

"अच्छा तो, मिस्टर राजन्, अब आप इजाजत दीजिये, पापका काफी बक्त लिया, बहुत-बहुत मुकिया।"

"ममो, ऐसी क्या जल्दी है, बैठो बैठो। शनो तो तूने चाय बाय भी नहीं पी।" मिस्टर राजन् मुझे बैठने की मजबूर करते हैं। इसी बीच 'बाँय' चाय रख जाता है। जापानी डिजाइन की सूत्रमूरत ट्रे और टी-सेट में चाय का जापका कुछ बदा हुया ही मान्य होमा है।

"प्रमरेष, यह टी-सेट मेरे एक जापानी मित्र ने भेंट की थी, जब मैं बहाँ के मजदूर सम्मेलन में 'लेक्चर' देने गया था।"

"जी हाँ, काफी सूत्रमूरत है।"

"यहाँ ट्रे सेट की कीमत पाँच सौ से कम नहीं होगी।"

पाँच सौ ! मैं हैरत में पड जाता हूँ। चाय पीने के लिए मजदूर नेता के पास पाँच सौ का एक टी-सेट ! फिर अपने धार पर कुछ रंज भी होता हूँ। 'क्या उलफ गया मैं भी इस टी-सेट और उसकी कीमत में ? मैं तो 'इटरेम्पु' लेने आया हूँ। प्रपना काम है नेताओं की बात जनता तक पहुँचा देना, लेकिन !

गांधी का प्रचार और भारत के टूटते सपने

छोटी छोटी बातों से भी मेरा मन प्रभावित होता रहता है। कभी-कभी ऐसा लगता है कि मेरे अन्दर उदासी का कुहरा मर गया है, जैसे पहाड़ों पर बने मकानों में खिडकी खुलने पर भर जाता है। चायद इसलिए मेरे मित्र मुझे भावुक और अस्वाभाविक बलते हैं, प्ररवाले तो यहाँ तक बह जाते हैं कि तुमको गाहक भगवान ने इस दुनिया में भेज दिया। तुमको तो किशो और ही लोभ में पैदा होगा चाहिए था। कुछ समयदार माने जातेबान लोग मौका मिलने पर सदुपदेश भी प्रसूज ही दे जाते हैं—'साथी दुनिया की चिन्ता करके अपनी जिन्दगी क्यों बरबाद कर रहे हो ? होनदार पुवक हो, दुनिया में खपे-पैसे की कमी नहीं है, कमी है सिर्फ उसे कमानेवाल बुद्धिमान लोगों

"क्या सोच रहे हो प्रमरेष ! मई, तुम लिखनेवालों का कोई ठिकाना नहीं, कि कब कहाँ खो जाओ।" मिस्टर राजन् चातावरण की हलका बताने के लिए पूछते हैं।

"मिस्टर राजन्, मेरे मन में एक खयाल घा रहा था कि सचमुच हमारे देश का जीवन-स्तर बहुत नीचा है। वह ऊपर उठना ही चाहिए। लेकिन यह तय नहीं कर पा रहा हूँ कि करोड़ों की सख्या में देश के देहातों में फैले किसान मजदूर—जिनको दोनों वक्त खना नहीं मिलता, तन पर जिनके पूरा कपडा नहीं रहता, टूटी और गदी मोपडियो में जिनकी जिन्दगी बीत जाती है, पहले उनका जीवन-स्तर ऊपर उठाने की कोशिश होनी चाहिए, या जिनमें सौ शेट सौ रुपये माहवार बंधे बंधामे मिल जाते हैं, उन्हें कम से कम दो सौ रुपये माहवार मिले, इसकी कोशिश होनी चाहिए ? पहले कौन ?"

जान पडता है कि पहले मुझे जाने की जल्दी थी और मिस्टर राजन् रोचना चाहते थे, अब मुझे जाने की जल्दी नहीं है, मिस्टर राजन् को जल्दी है मुझे टालने की। इसलिए मेरी बात सुनकर कहते हैं।

'अच्छा, मई प्रमरेष, माफ करना, जरा मुझे वाहर जाना है, मैं भूल गया था, तीन पैंतीस पर मेरा एक 'इन्वेजमेंट' है। फिर कभी मिलेंगे तो इन प्रश्नों पर बर्बा होगी। तुम नवबवान पत्रकार हो, देश दुनिया की बातें समझने की बराबर कोशिश करते रहे। फिलहाल इतना ही मानो, कि हडताल तो देश में काम करनेवालों की सत्ता स्थापित करने की दिशा का एक प्रयास है। अच्छा बार्द बार्द।" मिस्टर राजन् पुर्तों से उठकर अन्दर चले जाते हैं, घोर में नमस्कार करता दुभा बाहट पा जाता हूँ।

की। भगवान की कृपा से अच्छी सेहत के साथ ही तेज बुद्धि भी मिली है, जमकर कमाओ, डटकर खाओ, दुनिया के मजे लूटो। यह जिन्दगी बार बार नहीं मिलनेवाली है !'

लेकिन इन सदुपदेशों को न जाने क्यों मेरा दिल बचल नहीं कर पाता। सोचता हूँ, आदमी अपने लिए ही जिम्म, अपने मुख के लिए किया, तो क्या जिया और क्या किया ? और, सुन भी क्या दुनिया में प्राज ओ शर्द का दरिया उफन रहा है, उससे बचा रह सकेगा ?

अब यही हडतालवाली बात ! मुझे शुरू में बहुत सहाय-भूति थी। इन हडताल करनेवालों से। लेकिन जब से मिस्टर राजन् के यहाँ से लौटा हूँ, तब से न जाने कहाँ से मन

में यह सवाल फाट्टे की तरह चुभ गया है कि क्या यह देश उन्हीं का है जो अपनी माँगों के लिए देश की जिनगी को छिन्न-भिन्न कर सकते हैं ? अपनी माँग पूरी कराने के लिए हड़तालें करा सकते हैं, हँट पत्थर चलवा सकते हैं ? उन करोड़ों-करोड़ यूँगे लोगों का भी इस देश में कोई स्थान है या नहीं, जो सदियों से इस धरती को खून का पसीना बनाकर सींचते प्राये हैं ? यासकों, सैनिकों और सभ्य माने जानेवाले समाज का पेट भरते प्राये हैं ! जो आज भी यूँगे हैं; और रोज-रोज की बढ़ती हुई इन माँगों का वोक स्विकारते और होते चले जा रहे हैं। काश ! ये करोड़ों यूँगे लोग भी कभी एक साथ अपनी आवाज लगाते, देश के सामने अपनी माँगें रखते ! तब, चापद उस आवाज से देश का तिनका-तिनका सिहर उठता ! लेकिन ऐसा कभी होगा ? कौन इन यूँगे लोगों को वाणी देगा ?

“हेलो ... अमरेस ... कहाँ जा रहे हो यार खोये-खोये से ? दिल्ली की सड़कों पर इस तरह दीवाना बनकर चलना ठीक नहीं मेरे दोस्त ! कहीं टकरा गये तो मुश्किल होगी !” साइकिल की धरती की टन... टन और वृष्णकान्त की बेतकल्लुक आवाज सुनकर मैं कुछ चौंक-सा जाता हूँ।

“भ्रूँ वृष्णकान्त ! कहाँ जा रहे हो इस जर्जर साइकिल को घसीटते हुए ?” मैं कुछ हल्का होकर पूछता हूँ।

“भई, आजकल एक नये हकीमजी के यहाँ चूरन बनाने की नौकरी कर रहा हूँ।”

“हकीम और चूरन... ? पागल तो नहीं हो गये... ? तुम्हें इससे क्या लेना-देना... ? वैसे कलाकार आधा पागल तो... !” वृष्णकान्त की बात पर मुझे हँसी प्राती है।

“बात कुछ पागलोवासी ही है अमरेस; लेकिन यहाँ फुट-पाय पर खड़े होकर नहीं... चलो, चाय पिलाओ, यहाँ सामने घाले रेस्तराँ में बैठकर बतार्जना।”

वृष्णकान्त की हमेशा की यही आदत है। जब भी मिलेगा, उसकी एक ही फरमाइश होगी, “यार, चलो चाय पिलाओ।”

हम रेस्तराँ में बैठ जाते हैं। चाय का आर्डर देने के बाद मैं वृष्णकान्त की मोर रख करता हूँ।

“हाँ, तो जरा अपने नये हकीम और चूरन चटनीवासी चटपटी बात तो बताओ, यह कौन-सा गया घंघा दूँड़ निकाला है ?” मैं पूछता हूँ।

“बुरा न मानना यार; छोटा आदमी हूँ, धक्कों के धारे में कूद रहा हूँ। लेकिन दिल में जो पक रहा है उसे कही-न-कहीं तो उगलना ही पड़ेगा न ?” वृष्णकान्त के धिरे पर कुछ परीक्षार्थी के भाव दिखाई देते हैं।

वृष्णकान्त एक लोकप्रिय कलाकार हैं। उसके बनाये चित्र लोग बहुत पसन्द करते हैं। लेकिन चित्र बनाने के पन्धे से पूरे परिवार का पेट नहीं भरता। इसलिए एक मसबूर में कर्टून बनाने की चार घंटेवासी नौकरी के बाद फुटकर काम तलाशता रहता है। बड़ी मिहनत से गृहस्थी की गाड़ी सींच पाता है।

“बात तो सुनाओ, कि पहली धुम्कते रहोगे ?” धूल धात को जानने के लिए मैं जरा उतावला हो प्राता हूँ।

“तुम जानते हो न; सन् १९६६ में देश-विदेश में गांधी-जन्म-शताब्दी मनाने की तैयारियाँ हो रही हैं।”

“हाँ, हो रही हैं। तो ?”

“मुझे विदेशों का नहीं पता, लेकिन इस देश में तो गांधी की हठियों को फूट-पीसकर, मिस-धासकर, भूत-भानकर चूरन-चटनी की तरह बेच डालने की ही कोशिश चल रही है, अमरेस। बहुत तकलीफ हो रही है यह सब देखकर !”

“वृष्णकान्त, सगता है तुम अमतक प्राधे पागल थे, अब पूरे पागल हो गये हो। नहीं तो जो बात तुम कह रहे हो, भला एक सही दिमाग का आदमी उसे सोच भी सकता है ?”

“गुरु पर क्यों बिगड़ रहे हो यार, जानते हो मिस्टर ‘क’ को ? है कोई वास्ता उनकी जिनगी से और गांधी से ? लेकिन आजकल वे गांधी की ही नीच सोचते-जागते हैं। उनके लिए गांधी-जन्म-शताब्दी का अर्थ है—सिर्फ एक लास रुपये। समझे ?”

“और उसमें तुम्हें भी कुछ छूटन घाटने-घूटने की मिल जायेगा, इसीलिए इस पंधे में तुम भी धरकी हो गये हो, है न ?”

“यही तो मेरी बेचैनी है अमरेस, कि पेट के लिए यह भी करना पड़ रहा है।” वृष्णकान्त दुखी होकर कहता है।

“लेकिन किसी एक ब्याँक को लेकर तुम पूरे जन्म-शताब्दी के काम पर कीचड़ उधालो, यह तो ठीक नहीं है। और, फिर आदमी बदलता भी तो है, कौन जाने मिस्टर ‘क’ के जीवन में एक नया मोड़ आ रहा हो, और गांधी का प्रभाव उनपर पड़ रहा हो। यह क्यों नहीं सोचते कि एक गलत आदमी सुधार रहा है, गांधीजी के विचारों का प्रचार करने में जुटा है।” मैं वृष्णकान्त को समझाने की कोशिश करता हूँ।

जिन मिस्टर ‘क’ की बात वृष्णकान्त कर रहा है, उन सबन से मैं भी परिचित हूँ। चात्रू कितम के आदमी हैं। प्रवसर कभी धूँकते नहीं, हर हासल में कुछ ब्यापारिक लाभ उठा ही लेते हैं। उनके लिए यह कठिन नहीं है कि गांधीजी की जन्मशती मनाये जाने वाले प्रवसर वा भी कुछ एतुपयोग कर लें। लेकिन यह वृष्णकान्त भी जरा जल्दी ही किसी के धारे में

राय बना लेता है। और, एक बार जब राय बना लेता है तो नीचे-नीचे स्तर तक जाने में उसे देर नहीं लगती, इसलिए मैं उसकी बातों को बहुत महत्व नहीं देता हूँ।

“गांधी के विचार-प्रचार में नहीं जुटा है वह, जुटा है गांधी की भावना का व्यापार करने में। गांधीछाप कैसेण्डर बनाओ और वांटो, कागज दवानेवाले परधर और शीशे (पेपरबेट) पर गांधी का चित्र बनाकर बेचो, कलम और पसिल पर गांधी का नाम लिखवाकर बेचो, गांधीछाप दिशामलाई का कार-खाना खोलो, यही सब घड़े हैं उसके भाइयकल। क्या इसीसे गांधी का विचार फैलेगा, गांधी की भावना प्रसर रहेगी? मेरी सिखावन पर दृष्टकान्त भ्रूला उठता है।

चाय हमारी घरी घरी ठकी हो गयी है। बातों की गर्मी कुछ बढ गयी है।

“भ्रमरेवा, गुलाम भारत में प्राजादी की भोर में एक नयी जिन्यदी का, नये सजाज का, नये देस का सपना देसल था। सरल हृदयवाले लोगों ने मान लिया था कि भोर का दखल हूमा सपना सच होता है। लेकिन क्या तुम नहीं देखते कि वह सपना टूट गया सच नहीं हो सका? गुलामी की प्रचेरी रातों में चाँद बनकर जिस गांधी ने रोसानी दिशामी थी, वह चना गया। भ्रव कौन है जो वह रोसानी दे और उस रोसानी के साथ एक नयी जेतना पेश करनेवाली चीतलता दे?” दृष्टक-

कान्त बहुत भावुक हो उठा है। उसकी आँखों से उसके दिल का दर्द भाँक रहा है।

“ठीक कहते हो, भ्रमरेवा, गांधी ने इस देस का एक बड़ा आकार सबकी आँखों के सामने सजीव रूप में सजा कर दिया था। देस का एक एक भादमी इस बड़े देस की महान भावना का भ्रम वन गया था। लगता था कि सब-से-सब महान हो गये हैं, लेकिन आज ऐसा नहीं रहा। इस देस के नेता और धर्मभंसार कहे जानेवाले नागरिक दौने हो गये हैं। देस के बड़े और विशाल भवन को छोड़कर भ्रमने प्रपने घरों में सिमट गये हैं। सजुचित स्वार्थों के हमारे ये घरों के भापस में टकरा रहे हैं, और टूट-टूटकर लगातार छोटे होते जा रहे हैं। पूरे देस के जीवन में दूटने का ही सिलसिला चल रहा है। ऐसा लगता है कि भारतवासी भ्रव भापस में जुबना सदा सदा के लिए भूल ही जायेंगे। सच है कि ऐसी घडी में गांधी की प्रतिमा नहीं, गांधी की भावना की जख्तर है। उसके विचारों की दिशा में धाने बढ़कर नये मनुष्य, नये समाज और नये देस को बनाने की बुनियाद डालन की जरूरत है। लेकिन यह कसे होगा? कौन कर सकता है उसे?”

दृष्टकान्त की कडवी बातें ध्यान से उतर जाती हैं। दिमाग में गूँज रही है नेत्रीयकर्मचारियों की माँग गांधी की याद। हम बिल के पैसे चुका कर रेस्तराँ से बाहर निकल पाते हैं।

चाँदनीचौक का चौराहा और भारत की एक नारी

पत्रकारों की जिन्यदी हवा पर डोलती फिरती है। उसमें कहीं स्थिरता नहीं होती। इस क्षण यहाँ, तो उस क्षण वहाँ। खबरों के पीछे माफते-फिरने में एक विशेष प्रकार का मजा आता है, यह बात सही है, लेकिन कभी-कभी जब तर्कीयन एक जाती है तो इस जिन्यदी से ऊँच भी होने लगती है।

मात्र कुछ उठे ही दफ्तर से साहब का फोन आया कि बिहार के पूर्णियाँ जिले में ननसालदाही-जैसी कुछ हरेकत भ्रव भी हो रही है। वहाँ चाकर रिपोर्ट माली है। मुझे जरूर भी दृष्टक नहीं की कि माया में निकलूँ, लेकिन नौकरो करता हूँ, वो पाड़े भ्रनवाड़े साहब का हुनम भावना फर्ज है। इसलिए निबल पडा हूँ। आठ बजे हैं। भ्रसम भेल के दूटने में तिरफ ४५ मिनट की देर है। टैक्सीवाले को और जल्दी, और तेज गाँी चलाने के लिए लगातार कहटा जा रहा हूँ। प्रघनक चाँदनीचौक के एक चौराहे के पास आकर गांधी भटक के से रुक जाती है।

टैक्सी ड्राइवर सरदारजी रास्ते पर खड़ी भीड़ की एक भड़ी सी गली देते हुए उतर पडते हैं। भीड़ में किसी के फूट फूटकर रोने की आवाज सुनाई पडती है। सरदारजी की पुकारना चाहता हूँ। कहीं गाडी न दूर जाय, इसका भय हो रहा है। लेकिन हवाई की आवाज में हतना दर्द है कि मैं खुद भी उतर पडता हूँ। भीड़ में घुसकर देखता हूँ—‘ठीस पैंतीस साल की एक औरत लगभग नगो बैठे है। तन पर एक चियडा भूल रहा है। लेकिन उसमें तन दकने की सामर्थ्य बिलकुल नहीं है। दोनों घुटनों को भ्रपनी कमजोर-लो बाहों में कसे हुई है और घुटनों में ही भ्रपना मुँह भी गडामे हुई है। छाती से अक्षमनियम का एक भ्रघट्टा जयता-जाला कटोरा बियवामी है। तन घने उलते बाल बेतर-तोबी से बिसरे हुए हैं। जैदा लगता है कि उसके रोम रोम से पसीना नहीं प्रापू बढ रहा है। रह रहकर उसका पूरा तन काँप उठता है।’

उसकी रलाई की कृपा प्रावाज और सामने का वह दृश्य मेरे तन-मन में एक सिहरन पैदा कर देते हैं। सोचता हूँ कि इस मामले की कुछ जानकारी तुँ या कम से-कम एक कोटो ही... कि तभी सरदारजी की आवाज सुनाई देती है :

“आइए बाबूजी, नहीं तो गाड़ी छूट जायेगी।” और मैं भागकर टैक्सी में बैठ जाता हूँ। टैक्सी तेजी से दौड़ पड़ती है। स्टेशन पहुँचकर भागते-भागते किसी प्रकार प्रसम भेल पकड़ लेता हूँ। गाड़ी का डीजल इंजिन बरती आवाज में और कभी-कभी

तीली आवाज में चीखता हुआ बहुत ही तेज गति में भाग रहा है। गाड़ी में सवार होकर मैं महसूस करता हूँ कि दिल्ली पीछे छूट रही है, चांदनीचौक पहले ही पीछे छूट चुका है, कि तभी उस औरत की रलाई कानों में गूँज जाती है। ऐसा लगता है कि वह मेरा पीछा कर रही है। टैक्सी की तेज गति उस दर्द-भरी आवाज को पीछे नहीं छोड़ सकी। प्रसम भेल की रकती से भी तेज रफतार उस रलाई से अपना पीछा नहीं छुड़ा पा रही है...।

कृपा नहीं, राह भटके कौरव

मेरे पूर्णियाँ आने का कारण जानकर अविनाश कहता है :

“यार, ये नक्सालवाड़ीवाली बातें तो बासी पड़ गयीं, चलो तुम्हें एक नयी चीज दिखाता हूँ।” अविनाश मेरा विचारों जीवन का साथी है। हलाहावाद विद्वविद्यालय में हम दोनों एक ही साथ पाँच साल तक छात्रावास में रहे हैं। वह पूर्णिया के एक अच्छे जमींदार का लड़का है, एल० एल० बी० करने के बाद पैसा की बगह प्रतिष्ठा कमाने पर तुला हुआ है। इसीलिए उसे समाज-सेवा की धुन लगी है। यह खबर मुझे काफी पहले ही मिल चुकी थी, लेकिन कटिहार में उससे इस तरह अचानक मुलाकात हो जायेगी, यह प्राधान्य न थी।

मैं अविनाश के साथ चल पड़ता हूँ। कटिहार से भवानीपुर तक पक्की सड़क है। यहाँ तक जीप से आते हैं। भवानीपुर से पाँच मील बैलगाड़ी पर और उसके बाद तीन-चार मील पैदल।

“यह भी भारत है।” अविनाश कहता है।

“तो मैं कहाँ कहता हूँ कि चीन है। लेकिन इस घोर देहात में मुझे घसीटने से तुम्हें क्या मिला ? मेरो तो पाँव की नसें तन गयीं हैं, अब चला नहीं जाता।” मैं थककर और उससे भी अधिक ज़क़र जबाब देता हूँ। कहाँ दिल्ली की आगली भोज और कहाँ इस घोर देहात का जकड़ता हुआ सूनापन !

“इसी झूठे पर पत्रकारिता करने चले हो, और ऊपर से नयेपन का दावा भी करते हो ? जनाव, दिल्ली इन्हो गाँवों से रस खींचकर जो रही है। वे गाँव न रहें तो तुम्हारी दिल्ली भीगी दिल्ली बन जाय।”

अविनाश कुछ मजाक और कुछ ध्वंग्य करके पकान को मिटाने की कोशिश करता है।

हम गाँव के करीब पहुँच रहे हैं। एक बुढ़िया माये पर पटसन का बोझ लिये गाँव की ओर जा रही है। अविनाश को देखते ही कहती है, ‘परनाम सरकार’। इपर ‘परनाम सरकार’

‘परनाम हज़ूर’ ‘परनाम मालिक’ कहने का रिवाज है। जवाब में लोग ‘परनाम-परनाम’ बो बार बोलते हैं।

अविनाश बुढ़िया से पूछता है :

“रामउजागर चौधरी गाँव पर हैं ?”

“जी हाँ, मालिक हैं।” बुढ़िया धीमी आवाज में कहती है और हमारे साथ हो सेती है।

हम लोग गाँव के काफी करीब आ गये हैं। ‘डग-डग... डम-डम ... डग-डग... डम-डम’—जैसी आवाज सुनाई पड़ती है।

“क्या गाँव में कोई नाच-तमाशा हो रहा है ? यह बाजा कैसा बज रहा है ?” मैं जिज्ञासा से पूछता हूँ। बुढ़िया हँस पड़ती है।

“नाच-तमाशा नै मालिक, पंचैती के डुगी यजे छी।” बुढ़िया अपनी बोली में कहती है, जिसे अविनाश मुझे खड़ी बोली में समझाता है—“नाच-तमाशा नहीं मालिक, पंचायत की डुगी बज रही है।”

“कैसी पंचायत ?” मेरे इस प्रश्न का जवाब देते हुए अविनाश कहता है :

“अब जब गाँव में पहुँच रहे हो, हो छोरे-छोरे सब मालूम हो जायेगा। होंगी गाँव की समा किसी सपस्या पर विचार करने के लिए। बहुत-सी बड़ो-बड़ो और बड़े-बड़े लोगों की समारोहों में रिपोर्टें लिखे गये हो, मात्र इस छोटे-से गाँव की एक छोटी-सी समा भी देख लो। भारत की संगद के अध्येयों में कोटी के नेताओं के भाग्य सुने हो, देस और दुनिया के सवासों पर उनकी बहूँ और भड़पें देख-सुन चुके हो, मात्र इन निपट गाँव लोगों की प्राम-संसद भी देख लो।”

हम रामउजागर चौधरी के दरवाजे पर पहुँच गये हैं। दाँत और पास-पूत के बने भोपड़ों का ही यह पूरा गाँव है। अविनाश ने टीक ही बताया था कि पूर्णिया के गाँवों में आमतौर

पर धास-पूस के हो मकान बनते हैं।

दरवाजे पर बांस की बनी एक भवान पर हम जाकर बैठ जाते हैं। हवा में नमी है। थककर चूर हो गया है। इसलिए पोड़ी देर बैठने के बाद लेट जाता हूँ। भवकी-सी भाने लगती है।

“सूख न जाने बासी भात, नीद न जाने दूनी खाट।”

श्रवणाश शायद मुझे भवकी लेते देखकर कहता है।

कुछ देर में भोपड़े से एक ब्रथेड सज्जन बाहर आते हैं। 'परनाम परनाम' का अभिवादन होता है। जरा देर बैठकर शुशल समाचार पूछते हैं, और फिर भोपड़े के अन्दर चले जाते हैं।

मकान पर सेठे-सेठे मुने याद आता है मजदूर नेता मिस्टर राजू के 'ड्राइङ्ग रूम' का 'सोफासेट', जिसकी मुनायमियत में भादमी बैठते ही धीम जाता है। और, यहाँ में एक भूमि के मालिक, बोट के मालिक और नैताओं के भाषणाँ के अनुसार देश के मालिक किसान के दरवाजे पर लेटा है, जहाँ मकान में लगे बांस के फट्टे मेरी पीठ में बँसते जा रहे हैं।

गांधी यहाँ हैं, इनकी निगाहों में

रात को कांशोयान के नीचे 'पंचेती' होती है। योडा सा धान का पुवाल बिखेर दिया गया है। एक लालटेन नीम के पेड़ को निचली टहनी में लटका दी गयी है, जिससे बहुत ही मद्धिम रोशनी फैल रही है।

'पंचेती' की चर्चा का विषय है कि हास ही में विधवा हुई विपुली अभिगिन रंधिया का दाना पानी कैसे चले? मरद जित्ता था तो कमाकर खिलता था, अब उसको सहारा कौन देगा? रंधिया के दोनों पाँव में एटिया है, इसलिए चल फिरकर नमाई नहीं कर सकती।

बहुत देर तक सर्फ-धितक होता है, और अन्त में सब साज मिलकर सय करते हैं कि रंधिया इस गाँव की 'देवा' है। अभिगिन है तो क्या हुआ, गाँव की 'द्वजत' है। इसलिए गाँव उसको जिम्मेदारी लगा। 'ग्रामकोप' से उसे खोराकी दी जायगी। मुझे याद आती है चौदनीचौर के चौगहेवाली नगी औरत, उसकी ब्याई, और तमाशा देखनेवाली मीठ।

“यह ग्रामकोप क्या है?” मैं भविनाश से पूछता हूँ।

'अभी तक तो तुमको इस गाँव के बारे में कुछ बताया ही नहीं था परमेसर, लेकिन अब वह थोड़ा भाग्य है, कि तुम्हें यहाँ लाने का असल मकसद बताया।'

“लोजिये, 'जललै' कर लोजिये!” राम उजागर चौधरी कासे के एक कटोरे में धूडा-गुड साकर रखते हैं, पीतल के चमकते लोटे में जल भी है। भविनाश ने धायद मेरे बारे में बता दिया है कि मैं दिल्ली से आया है।

“इस, घर भाग, सुदामा के घर सिरी किशुनजी पधारें। हम गरीब लोग का पास भरर का है कि स्वागत करें श्रीमान् जी का। चाह वाह तो यहाँ मिलती नहीं। पोड़ी देर में मैंस दुहेगी तो थोडा गरम गरम दूध..” बहूत ही सक्च के साथ चौधरीजी अपनी भावना जाहिर करते हैं।

अचानक मैं महसूस करता हूँ कि मेरी आँखें गोली हो गयी हैं। कोई पहने का परिचय नहीं, कोई रिश्ता नाता नहीं, गाँव में आये तो भावना का सागर उमड़ पड़ा। यह भारत के रिछडे हुए एक गाँव का गंवार है या, भारत की भावना का निर्मल प्रवाह। जहाँ दिल्ली के पैसेबासे रिखते गाले और जहाँ यह हृदय का प्रेमभाव।

मेरी इच्छा होती है यह कहने की कि,— 'हम वृष्ण नहीं, राह मटके कौरव हों मेर भाई।' लेकिन कह नहीं पाता। उठकर हाथ मुँह धोता है, और धुआ चवाने लगता है।

“तो क्या इसके पीछे कोई राज छिपा हुआ है?” मैं पूछता हूँ।

“वात यह है कि यह गाँव ग्रामदानी है। मैं तुसे इसीलिए आया हूँ कि भाँखों से देखो और तब दिमाग से समझो। मैं जानता हूँ कि बुद्धिवालो को सुचकर इस बात पर यकीन नहीं होता कि जो यहाँ चल रहा है, वह वास्तविक है।

“ग्रामदान यानी क्या? तुम्हें इन लोगों ने अपने गाँव का दान कर दिया है?”

“भरे भोले भाई, यही तुम्हारे लिए राज है। दिल्लीवाले गाँव के दिल को क्या समझेंगे? ग्रामदान एक नया गाँव बनाने का ग्रामोत्थान है, जिसे गांधी के गिण्य विनोबा चला रहे हैं।

“तुम हैरत में पड़ जाओगे समझो यह सुनकर कि इस गाँव के सब लोगों ने एक पैर-भर-पारी ग्रामसभा बनाकर उसे अपनी अपनी जमीन की मिश्रकृत सौंप दी है। हर जमीनवाले ने अपनी जमीन का ५ प्रतिशत भाग धेजभोनवानों को बाँट दिया है। हर किसान अपनी फसल में से चालीसवाँ और, हर मजदूर अपनी मजदूरी में से तीसवाँ हिस्सा निकालकर एक जगह जमा करते हैं, जिसे ग्रामकोप कहते हैं। रंधिया को 'सोराकी' देने की जो व्यवस्था हुई, वह इस ग्रामकोप में से।” भविनाश पूरी बात समझाता है।

मुझे बहुत ही कौतूहल हो रहा है। क्या यह सच है? मैं गाँव वालों से तरह-तरह के सवाल पूछता हूँ।

एक नवजवान मेरे एक सवाल का जवाब देते हुए कहता है:

“गाँव की मालिकी न बनायें तो भ्रमण-भ्रमण रहकर भिखारी यमों? भ्रमण भ्रमण मालिकी रखने पर सारी जमीन तो साहूकार हड़प लेता है, कर्ज के सूद में ही। सुना है कि ‘कमुनिस्टों’ का राज होगा तो सारी जमीन सरकार छीन लेगी। इस सबके तो प्रसन्न है कि जमीन का मालिक गाँव-समाज ही रहे। उसमें तो प्राखिर हम ही लोग हैं न?”

“सब काम एक राय होकर करोगे? भगडे नहीं होंगे?”

“होंगे नहीं तो क्या हम सब देवता बन गये हैं, लेकिन जब साथ-भरना जीना है, तो मिलकर रहने और सबकी राय से काम करने में ही तो सचकी भलाई है।” एक प्रपेड ब्रादमी मेरे दूसरे सवाल का जवाब देता है।

“प्राप लोग अपने-अपने ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सरकार के सामने अपनी माँग क्यों नहीं रखते?”

“सरकार के भरोसे बैठे-बैठे बहुत भ्रम मार लिया गया साहब! नेता लोगों को कहीं पुसंत है अपने लडाई-भगडे से। अब तो हमने तथ्य कर लिया है कि : कर बहियाँ बल प्रापनी, छाडि बीरानी प्राप्त।” रामउजागर चौधरी जवाब देते हैं।

समाजवाद के नारे बहुत सुन चुका है, लोकतंत्र की गाथा गाते-गाते मैं खुद ही नहीं भ्रमता। लेकिन सब हवाई बातें लगती हैं यहाँ प्राकर।

यह तथ्य है कि जो कुछ प्राखों के सामने से गुजर रहा है, वह नहीं गुजरा होता तो प्रविनाश की इस बात को मैं गप्प कहकर उडा देता, लेकिन बुद्धि जिसे संभव मानने की तैयार नहीं होती, प्राखें उसे ‘तथ्य’ मानने को मजबूर कर रही हैं। लगता है कि भारतीय समाजवाद और वास्तविक लोकतंत्र की शुधप्राप्त तो यही से होगी, गाँवों से...नेताप्राँ से नहीं, दिल्ली से नहीं।

× × ×

पंचैती समाप्त हो गयी है। लोग अपने-अपने घर जाकर खा-पीकर ढाढस सो गये हैं। मैं और प्रविनाश उसी मचान पर सोये हुए हैं।

मुझे याद आती है दिल्ली की केन्द्रीय कर्मचारियों की हड़ताल...उनकी कम से कम २०० रुपये माहवारी तनख्वाह की माँग...मजदूर नेता की जीवन-स्तरवाली बात...गांधी की भावना का ध्यापार और चांदनीचौक की रोती-बलपती नंगी

देह...। कितने जीवन-स्तर हैं इस देश में? कहां से शुध होगी उसमें तरक्की?...चांदनीचौक वाली नंगी प्रौरत के स्तर से...इस गाँव की बेवा प्रौरत रघिया के प्रौर गरीब शमीणों के स्तर से या केन्द्रीय सरकार के बाबुप्राँ के स्तर से? शायद गांधी ने इसे समझा था। ढाढस उसकी लंगोटी के पीछे यही राज है कि इस देश के जीवन-स्तर को ऊपर उठाना है तो शुधप्राप्त यहाँ से करनी होगी, भारत के इन गाँवों से।

पंचैती में मैंने एक बूढ़े सज्जन से पूछा था कि प्रापने गांधी का नाम सुना है?

“दसन किया है, भायण सुना है। दो साल पहले ही तो भवानीपुर प्राये थे।” उसने जवाब दिया था।

“दो साल पहले!” मैं चौंक उठा था। तब प्रविनाश ने समझाया था कि ‘दो साल पहले विनोबा प्राये थे’ गाँव के प्राधिक-तर लोग उन्हें ही गांधी समझते हैं।

ये गाँववाले विनोबा को गांधी के रूप में देखते हैं, मैं तो इन गाँववालों में ही गांधी का दर्शन कर रहा हूँ।

प्राकाश में तारे मिलमिला रहे हैं। लगता है कि इस घरटी पर दिखरे हुए सत्ता, सम्पत्ति और प्राज की सम्मत्ता के पैमाने के अनुसार पिछडे हुए सोधे-सरल लोगों में गांधी का भंग इन सितारों की तरह चमक रहा है। गांधी के विचारों की बुनियाद पर इन गाँवों में भारत का भविष्य गढा जा रहा है!

... ..

प्रिय सम्पादकजी,

प्रापने भेजा था मुझे नवसालबाड़ी जैसी हरकतों की रिपोर्ट लेने के लिए, लेकिन मैं यहाँ से एक दूसरी ही हरकत की तरवीर भेज रहा हूँ। प्राया है कि दिल्ली की रंगीन दुनिया में यह पीकी-सी दोतनेवाली तस्वीर भी काफी महत्व की सावित होगी।

प्रापका,

प्रमरेस

... ..

प्रिय कुष्णकात,

तुमने ठीक ही कहा था कि ‘कैलेण्डरी’ और ‘पेपरवेटी’ पर गांधी प्रमर नहीं होंगे! मेरी इतनी सी बात उसमें और जोड़ लो, गांधी प्रमर होंगे तो भारत के गाँवों में, गाँववालों की निगाहों में। पत्र के साथ अपने प्रखबार के लिए तैयार किये गये विवरण की नकल भो है। प्राया है, तुम्हें पढ़कर प्रानन्द प्रायेगा।

गुम्हारा,

प्रमरेस

‘गाँव की बात’ : वार्षिक चन्दा : चार रुपये, एक प्रति : छठारह पैसे।

श्रीकृष्णदास मट्ट द्वारा सर्व सैवा संघ के लिए इंद्रियन प्रेस (प्रा०) लि०, नारायणी में शुधित और प्रकाशित।

सर्व सैत्ता संघ का मुख पत्र

वर्ष : १४

अंक : ५१-५२

बुधवार

२ अक्टूबर, '६८

अन्य पृष्ठों पर

- सोना जनहित — सम्पादकीय ६२८
- मानमण, धनता, धीर — विनोदा मनमोहन सखाव ६२९
- गांधी की शाश्वत देव — जैनेन्द्रगुप्त ६३३
- गांधी की नयी शोण — रामशूल ६३५
- गांधी, छांदी और धामदान — काका कालेलकर ६३७
- रचना मक कायत्रम का सौरभपंडित — पीरे ड मलूमदार ६५०
- गांधी ने कहा था एक माल मे हवराय विनोदा ने कहा है गांधी जम मानासी तक राज्यदान — व्यवस्थापक नारायण ६५१
- वर्तमान जागतिक समझ
- धौर गांधी शिक्षा — सतीशकुमार ६५३
- वेदोन्मोचकिका नि शाख बीरता का उदाहरण — दादा धर्माधिकारी ६५५
- आशौचन के समाचार

परिशिष्ट
"गांधी की बात"

आवश्यक सूचना

दयाहरे की छुट्टी में प्रग बंद रहेगा, दयाहरे 'अज्ञान यज्ञ' का ७ अक्टूबर ६८ का अंक नवी प्रकाशित होगा। इस अंक के बाद का अंक १५ अक्टूबर को प्रकाशित होगा।



सर्व सैत्ता संघ प्रकाशन

प्राथम्य, नारायणी-१, बस्तर प्रदेश
फोन : ४१८५

सत्य की शोध

मेरे मन में सत्य ही सर्वोपरि है, और उसमें अग्रणीत वस्तुओं का समावेश हो जाता है। यह सत्य स्थूल—वाचिक—सत्य नहीं है। यह तो धारणी की तरह विचार का भी है। यह सत्य केवल हमारा व्यक्ति सत्य ही नहीं है, बल्कि स्वतंत्र चिरस्थायी सत्य है, अर्थात् परमेश्वर ही है।

परमेश्वर की व्याख्याएँ अनगिनत हैं, क्योंकि उसकी विभूतियों भी अनगिनत हैं। ये विभूतियों मुझे आश्चर्यचकित करती हैं। क्षणभर के लिए ये मुझे मुग्ध भी करती हैं। किन्तु मैं पुजारी तो सत्यरूपी परमेश्वर का ही हूँ। वह एक ही सत्य है, और दूसरा सब मिथ्या है। यह सत्य मुझे मिला नहीं है, लेकिन मैं इसका शोधक हूँ। इस शोध के लिए मैं अपनी प्रिय-से प्रिय वस्तु का त्याग करने को तैयार हूँ, और मुझे यह विश्वास है कि इस शोधरूपी यज्ञ में इस शरीर को भी होने का मेरी तैयारी है, और शक्ति है। लेकिन जब तक मैं इस सत्य का साक्षात्कार न कर लूँ, तब तक मेरी अनारात्मा जिसे सत्य समझती है, उस काल्पनिक सत्य को अपना आधार मानकर, अपना दीपस्तम्भ समझकर, उसके गहारे में अपना जीवन व्यतीत करता हूँ।

यद्यपि यह मार्ग तलवार की धार पर चलने जैसा है, तो भी मुझे यह सरल से सरल लगा है। इस मार्ग पर चलते हुए अपनी भयंकर भूलों में मुझे नगण्यनी लगी है, क्योंकि बेसी भूलें करने पर भी मैं चब गया हूँ और अपनी समझ के अनुसार आगे बढ़ा हूँ। दूर दूर से विद्युद सत्य की—ईश्वर की—अर्शिकी भी कर रहा हूँ। मेरा यह विश्वास दिन प्रतिदिन बढ़ता जाता है कि एक सत्य ही है, जलके अलावा दूसरा कुछ भा इस जगत् में नहीं है। साथ ही मैं यह भी अधिकाधिक मानने लगा हूँ कि जितना कुछ मेरे लिए सम्भव है, उतना एक बालक के लिए भी सम्भव है, और इसके लिए मेरे पास सबल कारण है। सत्य की शायद के साधन जितने बढिन है, उतने ही सरल भी हैं। वे अनिमानी को असम्भव मान लेंगे। और एक विदग्ध बालक को निकल सत्य सम्भव लगे। सत्य के शोधक को रजकण से भी नीचे रहना पड़ता है। सारा संसार रजकणों को कुचलता है, पर सत्य का पुजारी तो जब तक इतना अत्य नहीं बनता कि रजकण भी उसे कुचल सके, तब तक उसके लिए स्वतंत्र सत्य की भोकी भी दुर्लभ है। यह भी बशिश, विद्या मित्र के आस्थान में स्वतंत्र रीति से बताया गया है। ईश्वरार्थम और इत्थान भी इसी वस्तु को सिद्ध करते हैं।

मेरी शोध में सामा है, और मेरी भौतिकीयें मुगजल के समान हैं। मेरे समान अनेकों का सत्य चाहे हो, पर सत्य की जय हो। अत्यन्तों को मापने के लिए हम सत्य का गज कभी छोटा न करें।

मैं चाहता हूँ कि मेरे लेखों को कोई प्रमाणभूत न समझे। यही मेरी निवृत्ती है। मैं तो सिर्फ यह चाहता हूँ कि उनमें बताये गये प्रयोगों की दृष्टान्तरूप मानकर सब अपने अपने प्रयोग यथाराकि और यथावति करें।

—सो. क. गोधी

प्राथम्य साबरमती मार्गशीर्ष सुक्ल-११, १९६२

सौवाँ जन्म-दिन

गांधीजी जीवित थे तो भारत के थे। मरने के बाद दुनिया के हो गये। इसलिए जन्म-शताब्दी-समारोह की जितनी तैयारी हमें भारत में दिखाई देती है उतने बम दूंगरे देगों में नहीं है, बल्कि भाषणचर्म नहीं कि गुण और गहराई की दृष्टि में बर्द देस हमसे भागे निरल जायें।

सेविन दुनिया उस गांधी की जन्म-शताब्दी नहीं मना रही है जो भारत की आजादी के लिए लड़ा। उसे उस गांधी में भी रचि नहीं है जिसे हमने 'महात्मा' कहा, और बाद की मार डाला। बाहर की दुनिया ने सचमुच उस गांधी को ढूँढ़ लिया है जिसने धात्र की सम्पत्ता की उमके अपने प्रतिपादों से मुक्त करने का रास्ता बनाया। धात्र का मनुष्य अपनी ही सम्पत्ता से धार्मिक है उस सम्पत्ता से जिसकी उमके बनाया, मज्जावा, संभारा। अपनी ही बनायी हुई मज्जावा का वह हम तरह गुलाम बन जायगा, हमकी उसे बचना भी नहीं थी। सेविन गांधी ने जान लिया था कि जिसे मनुष्य बँधव मान रहा है उतमें विरता रचि है।

भारत को गांधी ने 'मुक्त' की एक पद्धति सिखायी। हमने गांधी को बराबर घोडा के रूप में देखा। प्रतिवाँसातावाप से लेकर 'निरल संविदा' तक गुलाम देव ने गांधी के दूंगरे क्तों को पढलया ही नहीं। यही कारण है कि जो गैरजि सम्मान एक विरयी घोडा का होना चाहिए वह हमने उनके क्त की की। और, गांधी के बाद हमारी राजनीति ने जो मोड़ लिया उतने गांधी की मार जिन्हीं ही मज्ज में रही है कि गांधी एक 'प्रोटेस्ट' थे। बही 'महापट्टी' गांधी धात्र देव के मारे दुगारपट्टी और उगारपट्टी की प्रेरणा बनाने गये हैं।

एहिक प्रतिवार के धार्मिकता गांधी, महापट्ट और सविन मज्जा को जीवन चर्म मानेयाने गांधी, की दुनिया को दर उकरत नहीं रह गयी है, ऐसी बात नहीं है। उकरत कर्तीति और धम्या है तब तक प्रतिवार रहेगा। हाँ, यह ही सज्जा है, और हीना चाहिए, कि सम्पत्ता के विरता के माय-माय बहपत की उकरत बम होनी जान, और प्रतिवार गोमय से गोमप्टर होना जान। मरत प्रार, धात्रमान और हीना में निरलर कमी न हो तो सम्पत्ता का क्या चर्च होगा? गांधी ने अपने जीवन और विरतन के यह सिद्ध कर दिया है कि सम्पत्ता का विरत बहिया के साथ युग हुआ है।

बहिया की नीव पर समाज का संगठन हो सकता है, और पहिया के धात्रार पर मनुष्य और मनुष्य के सम्पत्ता विरगित हो सकते हैं। गांधी के इन 'सत्य' को पश्चिम पहचान रहा है, क्योंकि इन सत्य के बिना वह अपनी सम्पत्ता के प्रतिपादों और मन्त-परिवेदों से मुक्त नहीं हो सकता। धात्र की सम्पत्ता की रग रग में भीनी हुई हीना मनुष्य के मंदार पर उठारू है। तब मानव मुक्ति के लिए गांधी की और देस रहा है। उसे नव-मज्जा-निर्माता गांधी की उकरत है। उकरत तो उतसे धार्मिक हमें है, किन्तु हमारी वेरता पर प्रमाण और राजनीति का पदां पदा हुआ है।

गांधी जन्म-शताब्दी तो सा मयी सेविन गांधी ने जिस बहियाक समाज का 'भू मिट' तैयार किया था उसकी सुनिवार बम डाली जायेगी? प्रमिड धार्मिकता प्रमोड विधारक और सेरत ऐश ने एक सेरत में मुग्यावा है कि गांधी, की जन्म-शताब्दी के धमर पर उगयी 'बाउटर सोगापट्टी' (नये मज्जा) की नीव पढ़ जानी चाहिए। प्रतिवार प्रकटी हो तो उकर हो, सेविन उहस्य महरार और रचना का हो। धमिच, ही और दलिन को मुक्ति चाहिए। मुक्ति दूंगरो की दूणा से नहीं मिलेगी, बल्कि ऐसा जीवन जीने से मिलेगी जो अपने में धमय होगा। धम्याक धार्मिकता और बहिया से ही मिलेगी। वह नाम धात्र, धमो मुक्त होना चाहिए।

जन्म-शताब्दी के साल हम हमसे बराबर दूंगरे बिग डंन से गांधी का स्मरण करे। न उतने 'मज्ज' का नव सिरे से पहचानें और उस मज्ज के नियम नये प्रयोग के लिए तैयार हों? गांधीजी की जन्म-शताब्दी में प्रल मज्ज मज्जा, भाषणी, या ईट-पुमर के मज्जाको का नहीं है; प्रल है मज्ज मानव के जीवन-माल का। उस प्रल का उमर है गांधी की मयी रचना से प्रमये मज्जाक हीना से मुक्त है, धमिच 'रच' की प्रतीति से मज्ज उकरत है और बुद्धि मज्ज के प्रयोग में सदा मज्ज है।

हमारा यह विचारों गांधी की मज्जा-मज्जा-रचना की बुनियाद के लिए एक छोटी ईट के रूप में प्रयुक्त है।

गांधीजी ने कहा था...

राजनीतिक मज्जा अपने-आप में मज्ज नहीं है, मज्जा जीवन के प्रमोक विरता में सोनी के लिए मज्जा हीना मुग्याक मज्जे का एक मज्ज है। राजनीतिक मज्जा का धर्म है मज्जाक प्रतिविरोध हीना मज्जाक जीवन का विरतन करने की बलि। मज्जाक मज्जाक जीवन उकरत मुक्त ही मज्जा है कि वह कर्त मज्जा निरतन कर के, तो निर विरती इति-निधिच की मज्जाक मज्जा नहीं रह जाती। उस मज्ज मज्जाक मज्जाक मज्जा की विरति हो जाती है। ऐसी विरति में हर एक मज्जा मज्जा होता है। यह ही उत के मज्ज पर मज्जाक मज्जा है। कि मज्जे परमिनी के लिए यह मज्जा काच मज्जा बनता। इतिमज्ज मज्जाक मज्जा के कर्त मज्जाक मज्जा मज्जा नहीं होती। कर्त मज्जाक मज्जा मज्जा नहीं होता।

आक्रमण, अवज्ञा और असहकार से सौम्य, सौम्यतर सत्याग्रह तक

[आक्रमण और प्रत्याग्रह का ही स्वतंत्र और स्वतंत्र पद्धति में भिन्न प्रवृत्त, असहकार की सज्जिं पार काता हुआ नि सध संरक्ष्य और स्वतंत्र्य की पद्धति का विकास गांधीयुग से प्रारंभ हुआ है । नि सध प्रतिकार और उचये भी प्रागे सत्याग्रह की पद्धति से मसमायी की इल क.ने की एक नयी तकनीक का निरन्तर सशोधन होता आ रहा है । विरोधा से सत्याग्रह के सौम्य, सौम्यतर, सौम्यतर स्वरूप का भित्तन और प्रयोग किया है । करने की आवश्यकता नहीं; कि सत्याग्रह के विज्ञान के शोध का कार्य निरन्तर चलता रहेगा । प्रत्युत सबाद शोधकर्तियों और भित्तनों के लिए इलाके त्तित्त होगा, ऐसी प्राशा है ।—सं०]

अनमोदित—गांधीजी के जमाने में सत्ता पक्ष निरौचित्य था । उसके 'वंश' में विचार में यह थे कि लोग भयभीत थे और लोगो का भय मिटाने के लिए कुछ करना चाहते थे तो लोगों के मानन में दबा हुआ पैदा बाहर फूट निरलन का स्वर उठाया होगा था । विदेशी बला जमाने के नार्थक्य के समर्थन में गांधीजी ने कहा था कि बपटा चलाने का वाक्य हम लोगों के मानने नहीं रहेगे तो लोग बिलायती मनुष्यो की ही उम्मा देवे । गांधीजी के छुदे ने दिख में ही प्रवेजों के लिए प्रेम था, जेजिन हम सब लोगों के दिक् में ऐसा प्रेम तो था नहीं, इसलिए उनके 'पारिचित्त' सत्याग्रह का परिणाम भी 'निरौचित्त' हुआ, या इसके प्रभाव उनके सत्याग्रह में 'निरौचित्त' स्वरूप और कुछ था ?

विरोधा—इसमें शक नहीं है । उनमें से तुमने दो मुर्दों को इलाक कर दिया । पहली बाव, हमारे लोग भयभीत थे और उनको निर्धय बसाने के साथ-साथ जनको परिपूर्ण बरादुरो की बाहिया लक पहुँचाना समझ नहीं था, इसलिए बाव में निरौचित्त सत्याग्रह का एक रास्ता निक गया, जो चला हुआ । दूसरी बाव, देश में सत्तावादी लोग भी थे । वे सत्ते देव प्रक थे । उनकी सही शम्ते पर मानने की बात थी । तुमने भी मनुष्यो के जमाने की बात नहीं, बही बात यह सत्तावादी लोग करने । यह सोनो मुद्दे तुमने निष्ठा दिवे ।

तीसरी बात, हल सत्याग्रह के साथ उन्होंने सध के तीर पर सत्तावादी कार्यक्रम की ओर दिशा था और बदलर करने थे कि पारर हल नार्थक्य को पूरा किया जान ली

बगदा सत्याग्रह करने की आवश्यकता नहीं रहेगी । इनके कारण एक बबाध होता था । चौथी बाव, स्वतंत्र्य प्रवय ही, यह बात सर्वमान्य थी और उसकी प्राति के लिए हिनक सत्यत युद्ध भी उचित समझा जाता था । इसलिए सगले युद्ध के बन्दे निरौचित्त सत्याग्रह का रास्ता मिला तो प्रवय ही उसमें बदलर था । पाँचवी बाव, प्रवेज राज्यकर्तियों पर बापू न विधान उठ गया था । इमानत के माने प्रवेज जाति पर ली उनका विधाय था, पर मानको वर से उठ गया था ।

एक विचार प्रचीका मे ती वे सार्थको के साम्राज्य के गीठ भी गते थे । हिन्दुस्तान लौटने पर वे 1816-17 के सामन-मुधार को निरासाजनक बहने के लिए तैयार नहीं थे । उन समय उन्होंने कहा था कि प्रगर ऐसा बहूना जो मुझे फिर पूरा सत्यकार ही करना पड़ेगा । उन्होंने युद्ध के लिए विगाही रिप्ट करने का काम भी किया था । इन तीनों मामलों में लोकनाय तिलक के साथ उनका मतभेद था । तिलक महाराज ने ती गांधीजी के मान पर दग हवार राये रल दिने थे और बावो लयायो भी कि प्रगर तुम एक ही रिप्ट प्राप्त कर सकीये वी मैं तुमको यह राये सर्व करने के लिए दे ईना । पर तुम प्राप्त नहीं कर सकीये । मेरी बात मानकर उन्हें खहर रिप्ट सल्ल करने का काम करो । तिलक महाराज की यह उल्लुख ज्यादा नहीं थी । इतना ही था कि हमार देन के विपारिधों को ऊँचे छोड़े पर भी रखा जाय । पर गांधीजी की यह पक्ष नहीं था । वे कहते थे कि हम प्रकर कर्द सत्ता ठीक नहीं है । प्रगर तुम बिना सर्व ही चौकी माना म भी सत्कार की मदर

कर सकीये तो उनमें से एक ताकन पैदा होगी ।

प्लियांवाता बाग की पटना के बाद ही सरकार पर से उचका विषय उठ गया । राज्यकर्तियों को नोयन पर भी वे पारिधायन करने लगे । इनके पहले ही वे पूर्ण स्वतंत्र्य की बात भी करने के लिए तैयार नहीं थे । प्रगर राज्यकर्तों की नीयता पर वे उचका विधात उठ गया नहीं होगा तो उन्होंने प्रगर प्रनार से काम किया होता । एक बार उन्होंने खुद मुमले कहा कि प्रगर एना हुआ होता तो उन्होंने चर्चाल बँडे ही छोटे छोटे सत्याग्रह किये होते, जिसमें पन्थाप मेरीकेट' ही बाते सल्ल दिने और जिनको प्रवेज भी प्रयाय मानते, पर एना हुआ नहीं, इसलिए उन्होंने प्रगर सल्ल पकडा । इसलिए पहली बात में ती गांधीजी काफी हद तक सफल हुए । लोग बिन्दुल इलाक होने की बजाय 'निरौचित्त' प्रतिकार के लिए तैयार हुए । इससे बने प्रुद्धयद ने भी लोगो की भीक्षा निवारण का प्रयोग करने देखा था । पहले ती वे प्रारम्भ के बिलाक हिनक प्रतिकार की इजाजत नहीं देने थे, पर उन्होंने देखा कि उनके हिनक मार साकर भागने लगे, वी उन्होंने सत्यरक्षा के लिए सल्ल उग्राने की इजाजत उनको दी । फिर उससे सार्थ-प्रकर के लिए 'निरौचित्त' और 'सार्थक्य' का प्रतिकार से राज्य विस्तार के निम्न भी सदादर्श बली । 'निरौचित्त' सत्याग्रह में कम-से-कम इस प्रकार कुछ होने की उम्मावाता तो नहीं थी ।

दूसरी बात में वे कुछ हद तक सफल हुए । पर्वीक सत्तावादी उनके शम्ते कर माने । बाकी बहुत धारे खुद कुछ कर सकने की हालत में न होते हुए भी बही कह कर

घरने जो तमल्लरी देने में कि हम गांधीजी को बाम करने के लिए एक मोक्षा दे रहे हैं। बचे हुए गमागवादी फिर १९४७ के साम्प्रदायिक दंगे के समय निराल बड़े धोर उनरी 'हिन्दू-मैट्रिडी' उन समय प्रवृत्त हुई।

मनमोहन—गांधीजी के दूसरे सत्याग्रहों की बनिस्वत हरिजन-गमस्वा की लेकर १९३२ में उन्होंने जो उपवास किया, यह अधिक 'पारिचित्य' था, ऐसी मेरी धारणा है। इन उपवास में कारण कुछ हद तक दबाव तो थाया, पर कुछ मिलाकर हरिजनों के प्रति न्याय करने की दिशा में सबकी जो भाव-निरीक्षण करने के लिए इसमें प्रेरणा मिली। हरिजना की बनिस्वत सभों पर इसका परिणाम प्रगटा हुआ। अग्रजों पर दूसरे धान्दोलनों का उन प्रकार का 'पारिचित्य' परिणाम नहीं हुआ।

विनोबा—दंगे भी मेरा यह विचार है कि अगर गांधीजी ने भागणर उपवास करने के बदले २० दिन का उपवास किया होता तो वह अधिक सोम्य हुआ होता। इन उपवास के कारण बनि रवीन्द्रनाथ पर भी दबाव थाया था। गांधीजी को जीवन-रक्षा के लिए उत्सर्गित होकर जो वे पूना वैश्ट का मुना समझते की स्वीकार करने के लिए तैयार हो गये। लेकिन कुछ दिनों के बाद उन्होंने अनुभव किया कि यह समझौता ठीक नहीं हुआ। इस समझौते के कारण बगाल के प्रति अन्याय हुआ, यह बगालियों ने बराबर माना और उसके कारण उनमें असंतोष रहा। गांधीजी को बचाने की उत्सर्गिता के रवीन्द्रनाथ का एक गलत समझौते को स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाना, उनकी दुर्बलता भी हम कह सकते हैं। पर वहाँ एक इतने बड़े महात्मा ब्याकि का जीवन खट में हो, सब बनि रवीन्द्रनाथ के उद्वेग को बुझलता कह कर उनको दोष देना ठीक नहीं होगा, बरन् यह कहना ठीक होगा कि सत्याग्रह में ही रांय था।

इसलिए, यद्यपि २१ दिन का अनशन करने पर सावध वह उत्तमा तुरन्त अगर बरनेवाला नहीं बोलता, फिर भी धाम्पेटकर और रवीन्द्रनाथ पर जो दबाव थाया वह दबाव थाया नहीं होता। धनका बहने के बाद

यह कहा जा सकता है कि फिर भी यह बाकी परिशुद्ध सत्याग्रह या धोर लोगों पर कुल मिलाकर उगना सटी परिणाम हुआ।

मनमोहन—घाप बहने है कि भू-प्राप्ति सारे हिन्दुस्तान में एक ही दिन होगी। अगर इसके लिए दो दिन लगे तो शान्ति नहीं हुई। इसका मतलब मैं यही समझता हूँ कि ऐसी परिस्थिति का निर्माण होगा और कोई ऐसा बन्द उठाया जायेगा जिससे जमीन के मालिक सुद ही महसूस करने लगेंगे कि आज तक वे जो गलती करते आये हैं सब उसको तुरन्त सुधारना चाहिए। ग्राम्यपरोक्षण धोर सुद्वि के लिए उनको प्रेरणा मिलेगी और ऐसी भावना उनके देश में एक ही दिन में पैदा होगी। पर कुछ लोगों का विचार, जिसको घाप 'निरेटिव' कहेंगे, यह है कि मालिकों पर सख्या का या परिचित्य का ऐसा दबाव डाला जायेगा, जिससे वे इच्छा न होंगे हुए भी फिर वास्तव होकर मालिकियन छोड़ेंगे, इसी को मैं 'निरेटिव प्रभाव' समझता हूँ।

विनोबा—जी हाँ। गोग जो तो अब पार्टीसिम शासन के लिए सत्याग्रह करने की बात सोच रहे हैं। ऐसा सोचने में हिंसा भी प्रगट है। गोराम्रो में मुझसे कहा—घापने मेरे प्रति बड़ी बोलखला की। पर वास्तव में मैं कठोर नहीं था। इसमें किंचित विचार को ही हिंसा नहीं, सुलंता भी है। अगर ऐसा करने के लिए साकन भी होती, तो बात थी। पर बैसी साकन भी आज है नहीं? बरमोर में मैंने एक मने की बात कही थी। वह अस-बासो में दूसरी बसों के अन्दर छापा गया। अगर मोटे टाक्रे में दिया होता, तो लोगों के ध्यान में आता। मैंने कहा था कि कयोर में मुझे दो चीजों से प्रगन्ना हां रही है। एक तो इसलिये कि मैंने मुझा कि हिन्दुस्तान पर सोलिया लागू करने का पानून बना दिया है और उन्होंने बिना मुझबने की जमीन से लो ही और दूसरी बात, इसमें प्रगन्ना हो रही है कि लोगों ने आपने भाई, देटा, भतीजा, भाया आदि के नाम से जमीन आपस में बांट ली है। गरवार के हाथ में जरा भी जमीन नहीं आया है। अगर ऐसा नहीं हुआ होता तो मुझे बड़ी निराशा हुई होती कि हिन्दुस्तान के अधिकतर में जन्मति को कोई आता नहीं है,

यहाँ के लोग बिल्कुल गमे हैं। पर यह देव बर सुधी होंगे है कि लोगों में सुद्वि है। मेरी यह बात सुनकर सभा में तो लांग धूर हो। पर ऐसी स्थिति वास्तव में है। दबाव का परिणाम वास्तव में इसी प्रकार का होता है।

मनमोहन—पारिचित्य सत्याग्रह के बारे में दो बातें मुझ रही हैं। एक यह कि सोम्य धोर गोम्पतर एक सतत्व चलनेवाली प्रक्रिया है। आज सोम्पतर हमारे ध्यान में नहीं है, इसलिए हम सोम्य तक ही बड़े हुए हैं। जब सोम्य से कोई नतीजा नहीं मिलेगा तब हम धान्य निरीक्षण करेंगे और सोम्पतर का दर्शन हमें होगा और वह हमारा साधन होगा। विचार, बाणी और शक्ति को उसी तरह उच्चतरत धोरोहरित धोर परिशुद्ध करने जाने की यह एक सतत्व साधना चलेगी। पर समय-समय पर लोगों के विचार को बालना देने के लिए कुछ नैतिक बन्द भी उठाने होंगे हैं। ऐसी बात नहीं कि यह बन्द पहले से हमको पानून नहीं हां। पर धमक परिस्थिति में वह बन्द योग्य है, ऐसा समझकर उसका उपयोग करना पडता है। आपने बरमोर में जो एक काम का खाना छोड़ा दिया, वह उसी प्रकार का था। पर यह तो रोज करने जैसी बात नहीं थी। इसलिए यह सोम्य, सोम्पतर की प्रक्रिया में कैसे बँडेगी?

विनोबा—सोम्पतर आदि कभी नित्य नहीं हो सकता है। बयोकि मनुष्य कभी भी सोम्पतर तक पहुँच नहीं सकेगा। यह हमेशा सोम्य में ही रहेगा। बयोकि धान्य जिसको वह सोम्पतर समझ रहा है, उससे भी अधिक सोम्पतर तो है न? इसलिए मनुष्य को सोम्पतर का विचार एकदम सूझता नहीं है। मैं पहले सिर्फ भूदान की ही बात करता था। पर बाद में मुझे मुझा कि कुछ देनेवाले होंगे और कुछ सेनेवाले होंगे, इन प्रकार का एषानी धर्म ठीक नहीं। धर्म समान होना चाहिए। तो मेरे ध्यान में आया कि भूमि-हीनों के पास भी कुछ देने लायक है। वह उनकी धम-गति ही क्या न हो। जिसके पास कुछ भी नहीं है, सोन तो कि असंतोष में बिनकुल असहाय, बीमार होकर पड़ा हुआ हो, और अपने लड़कों को बंधने पर उनकी आँखों से धीरे प्रेम का प्राप्ति बहने

लगता है, उस प्रकार का प्रेम बह दे भगना है।

जब मैं पहले मृत्युदण्ड की बातें जानती थी तब मैं माने से डरने से। हाँ, यह जरूर था कि दूसरी समाया से ज्यादा लोग मेरी गधा से घात थे। पर जमीनदमि डरने से। एक जगह तो एक आई हमारे पढान के गाँव से ही बाहर चल गये। जो दूसरी ने कहा कि जमीन देना थरेगा इसलिए वे माग यश। पर चार पाँच दिन के बाद उन आई से मेरी भेंट हुई। तो मैंने उनसे पूछा घोर उहाने क्याया कि उनका पहले से ही आई कायबन नय था और वही जरूरी काम था इसलिए वह उस दिन गाँव से रह नहीं गये। हाँ सकना है कि ऐसे बंद लाग मचुचुब सिमी काम के कारण पढान के गाँव से रह नहीं गये। पर उनका शर मैं बहुत ही पनी बननाई। जो जाना था जो उनसे लिए थाया ही था। मैं ता विनोद न बहुत था कि जो डर के मारे माग गये, वह तो पहले छड़ी हमारे विचार को मान गये। उनकी जमीन मेरी हो गयी। लेकिन मेरे मन में यह विचार चलता था कि एसा भय लोगो को क्या होना चाहिए। पर जब सबसे कुछ न कुछ मानने का विचार आया तो धम परिपुषण हुआ और भद्र का कारण चला गया। इस लिए धनुवन से विचार मुझका है।

पर कभीसे मैं भोजन छोड़ने का बदन मैंने दूसरे पर प्रभाव डालने के लिए नहीं बिक चाप बुद्धि के लिए उछाया। कभीसे मैं सब सोच धुनवमोनी हूँ भीर भरी बातों का। उन पर बंध परिणाम हुआ इस सम्बन्ध में मेरे दिव में शका थी। वह भय बुद्धि की चुपनी है तो ठीक। पर हृदय की चुपना ठीक नहीं। हिदुस्तान के लोगो का वृत्ति तो बुझे पहर से ही मायुष थी। पर कभीसे का बुझे पना नहीं था इसलिए मैंने एक आम का भोजन छोड़ दिया इन्की स्मारक के तौर पर कि वहाँ माथथान रहता है। इनसे मुझे लग भी हुआ। यह मेरे लिए कोई नवी बात नहीं थी। 1833 में जब मैंने एक माल धर्मोपदेश के अध्यापन से लिए गिया तब मैं राज भोजन पर निर्म दो घाता ही लख करता था। गणू के घनान के समय जब

मैं शिन्नी गया तो वहाँ भी वही चलता था। लेकिन वहाँ महीगाई बर्बा से उपाया थी और दो घाने से पेट भी नहा भला था। अब अध्यापक के अध्यापन के गाय रचना क्या सम्भव ? पर घाने बित को एहाय करने के लिए ऐसा करना है। वेद का अध्यापन करते समय भी मैं केवा दूध और भान खाता था। इनको गल्लापह नहने के लिए घाने सत्य प्रह शब्द के उपयोग को इतना दूर तक लावने के लिए मुम लोग उभार होये कि नहीं, पर इनसे लिए मैंने मलयगरी शब्द हूँह निकाला है।

मनमोहन—प्रायतः का नाम मैं भी वही मानता हूँ कि म पव सोम्य मल्लापह करना रहता है। उनसे था। सोम्यतर का दशन धिया ता उमरी पचना है। पर उनसे भी सोम्यतर का दशन नहीं मिलने तक वह सोम्यतर का ही धारण करता है। पर शान एक क्षण का भोजन छोडना दोना घाम पदयायाई करना या पनायाई बंद करना इत्यादि कुछ ऐसे कदम है जो हमेशा करने लायक नहीं है। वह धनुष परिस्थिति में करने योग्य होते हैं। यह भी स्थायी रूप से चल नहीं सकते। उसी प्रकार के नैमित्तिक कदमो को सोम्य सोम्यतर के ढाँचे में न विद्यतार उनसे लिए दूसरी तत्वा हूँदनी चाहिए।

विनोद—ओ हाँ। इस प्रकार प्रायणिक बदन उगना कभी-कभी धारणक होता है, पर वह बदन सोम्य सोम्यतर के चिन्तन की प्रविधा में से ही मूतया है। उनको नैमित्तिक तात्कालिक संस्थापह नहा जायेगा। पर इनसे लोगों पर धमर डालने की इष्टि से सोचता ठीक नहीं है। मिद्वार की इष्टि से क्या करना योग्य है वही सोचना चाहिए। हमारा तय लही होगा तो वतना शरर सम्भव हो होगा।

मनमोहन—अपने धर्मिन धमर नहीं हुआ तो धर्मकी शोचना होगा कि इनसे विचार से कुछ योग्य है भीर विचार का परिणाम करना चाहिए।

विनोद—मैं तुमसे यह नहीं मानना रहूँगा कि मेरे ही काम म योग्य है। धमरय मेरे काम म शय ही सचदा है और उनका

निरीक्षण भी करना चाहिए। पर धमनी सानता के लिए परिस्थिति भी जिम्मेदार हो सकती है। मेरी ही गतनी के कारण संख्या नहीं मिली, एसा सोचने में बहवार होगा। इसलिए धमर डालने की इष्टि से नहीं पर सोम्यतर की इष्टि से सोचने पर इन प्रकार के तात्कालिक, नैमित्तिक उपाय सुझेंगे। शरर की इष्टि से तोसूँगा तो शरर होगा ही नहीं, बिक बहवार हा बनेगा। कभीसे यथैम्वान जाने की जान उठे थी। उस प्रकार की इजाजत भी पाकिस्तान सरकार से मिल सकती थी। यह शायदी कैसा है, इनको उरता था परस में यह सोच कर वे लोग इजाजत देने न लिए उभार हो जाने पर वहाँ परिस्थिति ऐसी थी कि मेरे जाने का कोई परिणाम हुआ नहा होता। पर लोग फिर मुझे यही पूछने कि कभीसे क कारे में आरकी क्या यश है ? और आध्यापिक विद्या प्रादि जो सारी बातें हमारी सुनाने को हैं, यह सब सुनने की मन स्थिति किसी की नहीं होती। इसलिए मैंने सोचा कि इस तरह पश्चिम पाकिस्तान न जाना ही ठीक है। और सिने तो पूरा पाकिस्तान जाने की इजाजत माँगना।

प्रायतः मैं सोचना कि कभीसे नमस्वा के हल करने की जिम्मेदारी सुभार है—धमर के दोनो पक्षों को बात थी मैंने सुन ली है और शय मैं जाऊँ पाकिस्तान में और तीरने पर भी बात सुनूँ और तब मैं कोई फलता दे सकूँगा। इस तरह सम्भव टल करने की जिम्मेदारी प्रापर है एसा सभलकर धमर डालने के प्रयत्न करने का प्रयं वही होगा कि उनसे बहवार बनेगा।

मनमोहन—प्रायतः कहा कि सत्यापहो धार डालने के लिए कोई काम नहीं करेगा यह सही काम करना जायेगा और यह उम्मीद रहेगा कि इन काम का अचेतित परिणाम होगा। उसी बात को उभार लोहिया प्रादि उलटने में करते हैं। वे कहते हैं कि भाषू को सत्य समझने से, वही कहते य मोरे उनसे प्रमुदण धारणन कहने से। उनके कहने या करने के कारण सामनेवले के दिव न सुनना पैदा होगा या उनको मोडलगा का धनुषय होगा, सचका विचार करके नीचे

हृदये नहीं थे, पर विनोबाजी तो कह रहे हैं कि सत्याग्रह के द्वारा विच को रीतशुद्धा का अनुभव होना चाहिए, सुनने वाले में गुस्सा या भय पैदा नहीं होना चाहिए, यह पक्ष है।

विनोबा—परिणाम का हिसाब और परिणाम के लिए प्राप्तिकि इन दोनों में फरक समझना चाहिए। जब हम कोई काम करना चाहते हैं तो प्राथमिक उसका कोई परिणाम प्राप्ति, वह सोचकर ही तो काम करते हैं। अगर परिणाम की फिकर हमको बिनाकुल ही न हो तो हम कुछ करे ही नहीं? तो कार्यक्रम का विचार करते समय उसमें परिणाम का विचार और हिसाब प्रा ही जाता है। उसको हम विचार के अन्तर्गत ही समझें। कार्य का हेतु, स्वरूप और परिणाम, इन तीनों का विचार करना पड़ता है। पहले देखना होता है कि कार्य का हेतु ठीक है या नहीं? अगर हेतु ठीक है तो फिर कार्य का स्वरूप क्या होगा, यह विचार करना पड़ता है और फिर उसमें उस कार्य का परिणाम क्या होगा यह उस विचार के साथ प्रा ही जाता है। अगर एक बार एक कार्यक्रम तय कर लिया तो फिर उसका परिणाम जैसा चाहिए था, वैसा नहीं प्राया तो भी उसे छोड़ना नहीं चाहिए। इस प्रकार से परिणाम के लिए प्राप्तिकि नहीं होनी चाहिए। यह सोचना गलत है कि बापू इस प्रकार का विचार नहीं करते थे।

मनमोहन—बापू तो इसका बहुत ब्यापार रखते थे। रायकोट के प्रकरण में उनके अज्ञान का तथा सुप्रीम कोर्ट के उनके विचारों से पीछा होने के बारे में मिलसिले का अंतर पीयूषाला वगैरह पर ठीक नहीं हुआ इसलिए बापू ने श्रवण उम कदम को गलत माना।

अगर कभी ऐसा हो सकता है कि किसी सत्याग्रही कार्यक्रम का अगर पहले-पहले सामनेवाले पर कुछ उलटा ही प्राये। उसका रिमाण क्या हुआ होने के कारण उसमें पहले भय या शोक का उदय हो सकता है जो बाद में निरुल जाय ?

विनोबा—भय और शोक में फरक करना है। भय सर्वथा खराब चीज नहीं है। बोझ-ता भय का रूढ़ा लाभदायी भी हो सकता है। जैसे मानो हमें जगत में से होकर

पाना पड़े और हमें शेर का बोझ-सा भय हो और हम उसका बन्दोबस्त करने निकलें तो यह भय कोई बुरी चीज नहीं है। हाँ, शेर हमारे सामने आ जाय तो हम निर्भय रहें, यह बड़ी चीज है और शेर को देखते ही हम इनना भयभीत हो जायें कि हमारे हाँव-पाँव उठे पड़ जायें और हमारा दिमाग ही न चले तो यह एक खतरनाक चीज होगी। अगर बोझ-सा भय का होना बुरा नहीं है। उर्ध्वनिर्घ्न में एक विलक्षण बात प्रायी है कि हवा देयं, मित्रा देयं, शत्रुदेयं, अशत्रुदेयं श्रेयम्। प्राणे शरण से देना चाहिए, भय से देना चाहिए, शत्रु से देना चाहिए, अगर अशत्रु से नहीं देना चाहिए। तो जहाँ मनुष्य बोझ-सा भय या लज्जा अनुभव करता है और उसके कारण कुछ करता है तो इनका मतलब उसकी बुद्धि काम करती है, वह कुछ सोचकर काम करता है।

अगर शोक प्रसंग चीज है। जहाँ शोक प्राया वहाँ मनुष्य की बुद्धि कुंठित हो जाती है। उसका दिमाग काम नहीं करता। तो सत्याग्रह का उद्देश्य हर हालत में मनुष्य को सोचने के लिए प्रेरित करने का होना चाहिए। अगर उसकी बुद्धि ही कुंठित हो गयी तो सारा मामला बिगड़ता है। किसी भी मानसिक भाव की प्रायोजितिकता हो जाने पर शोक उत्पन्न होता है। जैसे बोझ-सा भय का होना घण्टा है। अगर शेर को देखते ही इनना भय हो कि हमारे हाथ-पाँव उठे पड़ जायें तो यह बुरी हालत होगी। जैसे बोझ-सा कामवातना या होना एक सौम्य वस्तु है, अगर वह अगर हम हट तक बढ़ जाय कि चित्त में शोक उत्पन्न हो तो बुरा हालत होगी। जैसे बोझ-सा बोध हो तो शयान नुस्मान नहीं, अगर शोक यहाँ

तक बढ़ जाय कि चित्त सुख्य हो और दिमाग ही काम न करे तो ठीक नहीं। तो इन तरह से हमें यह ब्यापार करना पड़ेगा कि हमारे काम से सामने वाले के दिल में शोक पैदा होने की सम्भावना तो नहीं है। जहाँ सामनेवाले के हाथ में बड़े हथियार हों, वहाँ यह चीज जल्द ब्यापक में प्राती है। शोक में प्राकर वह श्रानना दिमाग खो बैठे और कुछ-न-कुछ कर दें तो प्राती नुस्मान हो सकता है। बापू के जमाने में शशास्त्र छोटे-छोटे थे, अब जमाना बदला है। हमें बड़े-बड़े शस्त्रास्त्र प्रयुक्त प्रादि का मुकाबिला करना है। शोक में प्राकर श्रानुभव चलाकर वह हमारे शोक-साथ प्राये को और दुनिया को भी खतम कर सकता है। इन जमाने में तीन फरक हुए हैं—(१) प्राथमिक राज्य-सत्ता के स्थान पर लोकशाही, (२) परतन्त्रता के स्थान पर स्वतन्त्रता और (३) विद्वान का जमाना। तो सत्याग्रह में सामनेवाले के मन में बोझ-सा भय उत्पन्न हो सकता है, उसको दुःख ही हो सकता है—प्राये श्रयो के बारे में नहीं, अगर उनके बिलम्ब हमें सत्याग्रह करना पड़ रहा है। इन्का—अगर शोक उत्पन्न न हो इसकी सावधानी रखनी प्राये।

मनमोहन—हमारा चित्त क्षीभप्रतिष्ठ कैसे हो ?

विनोबा—एक 'माइंटिक ऐटिट्यूट', 'वर्ल्डवाइड प्राउटलुक' और उसके साथ प्राध्यात्मिक बुनियाद होनी चाहिए। 'वर्ल्ड प्राउटलुक' के प्राये से हम ब्यापक दृष्टि से सोच सकेंगे और 'माइंटिक ऐटिट्यूट' के कारण हमारे चिन्तन में 'प्राथमिक विद्वान' प्रायेगी।

१, २ अक्षर 'प्र' की हई बर्बादी से।

बापू के चरखों में

लेखक:—विनोबा

साधन साध्य की एकता, प्राहिमा का सांख्यिक प्रयोग सांख्यिक साधन

इस मुग को प्राधीनी की ये महत्पूर्ण देन हैं, ओ विनोबाजी की इष्ट से महत्पूर्ण हैं। लगभग १०० पृष्ठ की पुस्तक का मूल्य: एक रुपया।

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, बाराणसी-१

गांधी की शाश्वत देन : असत्य से इनकार और असत्य को ललकार

[समाज भवेगा और बड़ेगा अगर वह बराबर असत्य से इनकार करता जाय, और इस क्रम में आवश्यकतातुल्य अग्रगण्य की खलकारता जाय। लेकिन ये हम स्वयंसेवक और ललकार को गांधीजी की आशा देन माना है। उनकी राय है कि आज के सर्वोदय में—ग्रामदान में भी—यह इनकार और ललकार नहीं है। इसलिए आज के सर्वोदय में वह जग नहीं दिखाई देतो जो गांधीजी के जमाने में दिखाई देती थी। लेकिन की भाँति है कि सर्वोदय के लोगों को इस पहलू पर गंभीरता के साथ विचार करना चाहिए। जरूर करना चाहिए। प्रश्न इतना ही है कि पहले की संस्था का स्वीकार या असत्य से इनकार ? नये सत्य की स्वीकृति के बिना प्रचलित असत्य की स्वीकृति होगी कैसे ? हमने प्रयत्न करके श्री जेनेन्द्रजी के विचार प्रस्तुत किये हैं, और उन्हें यहाँ इस आशा से दे रहे हैं कि हमें उनमें अपने और अपने काम को परखने की भाँति प्रेरणा मिलेगी।—सं.]

(१) प्रश्न गांधीजी के दाद की भारत की परिस्थिति को देखते हुए लगे बहने हैं कि गांधीजी के नाम पर धारा बहने की संभावना क्या रही है? बहुत से ध्यानोपलब्ध चर्चा रहे हैं पर कुछ मिलाकर देख की राजनीति और समाजनीति पर दृष्टा। प्रभाव न जैसा दीक्षा है।

गांधीजी के लक्ष्यो हेतु कार्यक्रम और धार्मिक एक नयी भोजन पद्धति के चोकर थे, जिसे नये मानों का दर्शन हुआ था। प्रत्येक व्यक्ति को उस काल की भाँति से नयी जिंदगी मान्य होती थी। प्रश्न यह सब नहीं है।

उत्तर हाँ, ऐसा है। यह प्रश्न गांधी के माननेवालों के सामने पुरानी दबकर आया था। ये कुछ समय के लिए बुनियादी प्रश्न बन जाते चाहिए। अगर अपनी गोश्रियाँ समीचीन रूप से विस्तार और हमारे तत्त्व विवेचन की अगह बंध समर्थ के लिए ये प्रश्न ही जिसे रहें तो यह प्रवृत्ति न होगी।

गांधीजी की भाषना 'सूचना की थी। उनमें अपने पास कुछ भी नहीं रहने दिया जाता, यहाँ तक कि स्वतंत्र और मन तक नहीं। "प्राणिमार्गि नामधर" प्राणियों की यह धारणा ही मानो रीते पुरुषों के प्राणों की धारणा रखती है। उनमें जो रहता है उसका सब स्वाहा हो जाता है, और उने ही 'सूचना की' उपाय-युक्त होती है। तभीपरी के साथ मर और प्रहिया के दुगसे प्रश्न होने वाला धर्म मानव को इरी मिडि की धोर बसाता से वा रहा था। वह अपने दान में कोई स्वतंत्र तत्त्व न था। मुझे मन है कि नये प्रहिया का एक मरवाए न बन गया है और सोचो-मरथें उनमें फिर यकी है।

प्राणिमार्गि में उनका संवेदन का सम्बन्ध दृढ़ नहीं गया तो जीर्ण और शिविव सम्बन्ध ही गया है।

हम यह वा बह करता जाते हैं। लोक जीवन की साधना वेदना में हावी बनने की भाषा में सोचना हमसे छुट गया है। हमारे शब्दों में स्वतंत्र का उपार्जन हमें अभीष्ट है। स्वतंत्र विमर्जन की राह से कुछ हट आये हैं।

प्रश्न आज की दुनियाके लोग गुणात्मक से अधिक नरणात्मक परिणामों से प्रभावित होते देखते हैं। स्वतंत्र विमर्जन की

जेनेन्द्र कुमार

प्रवृत्ति क्या हमें बन्दपना (आश्रयलेपन) की धोर नहीं ले पायेगी ?

उत्तर स्वतंत्र विमर्जन ही है जिसमें आदमी अपने में शिमतता नहीं बल्कि बाहर पाता है और सबमें मानने लगता है। प्रहिया अपरिग्रह के बिना नहीं बचेगी। स्वतंत्र विमर्जन के बजाय उपाजन में परिग्रह और सत्य की निष्ठा और प्रहिया की भाषना कमजोर पड़ेगी।

सच्चा मजदूरों की एक मिल में विवनी ही हजार हो चुकी है। राज्य की पौन कई बर्दास। उस सब सरया की पैना यहाँवा कर जुगने रमा जाता है। प्रहिया अपरिग्रह के बिना प्रहिया काकर बग तोड़ नहीं सकता ? अपना सच्चा अपने प्राण में मृत में लिख लक-को-लेखर जुगनी है जग एत उपाय बन निरर करता है। सच्चा वा गुण से यदि विरोध नहीं है तो पैनी सच्चा काम नहीं बनती शक्ति बन जाती है। चिन्तापूर्वक जो सच्चा बड़ापी जाती है वह सच्चा पर दबाव लाती है। धर्मय निरर बनकर प्रदो सत्य बनने की धर बसाता है, वह सत

नहीं होता। गांधीजी के अन्वयण में हमने नहीं देखा। बैरिस्टर गांधी का स्वयंचारी न था, पर वास्तव में गांधी होने के लिए नव स्वाहा करना पडा। परिणाम नवा धारा ? परिणाम धारा कि इन तरह श्रुय होकर गांधी विराट ही होना चला गया। कहना मुझे नहीं है। अपने को धोने की नगरी और पैनी प्रदा हममें कम हो गयी है। नरने और भरने का प्रश्न गांधी के हमने जगा दिया था। धव वह करने और भरने पर था रिखा है। नर्म की पून है। धर्मय गांधव हो गया है।

विनोद बार-बार धर्मय की भाग उठाते हैं। लेकिन लगता है कि मरने से जोड़कर धर्मय को देखा समझा जायगा तो धर्मय जयेगा। दूसरी चेष्टाओं से वह नहीं बचेगा।

धर्मय सत्तात्मक नहीं है। उसका उल्टा रूप सत्तात्मक है। सत्यप्रह में सब छोड कर धर्मय व्याप्य को परनेवर को नौर दिया जागा है। करना उगने पहले ही चुकता है। सत्याप्रह में उसका धर्म भी नहीं रहता है। धर्मयिण सत्याप्रह प्रचलनय धर्म है।

मुझे लगता है कि सत्याप्रह की गहर विवन् रूप भाषा में समाकर सर्वोदय के एक निगरे उतल दिया गया है। धार्मिकता है कि उनमें धर्मय की प्रतिष्ठा हो सर्वोदय के क्षेत्र में वह उडित होता विमर्दि है। प्रहिया यदि प्रवल और अशुद्ध बगनी तो सत्याप्रह के बिना नहीं।

असत्य, शिरोधार्य-ता-स्वयन है कि प्राण दान धर्म लन के जरिये उनके अशुद्ध सत्याप्रह की प्रतिष्ठा हो चक रही है।

उत्तर ये ठीक रहते हैं। लेकिन देश के करोड़ों-करोड लोगों की सच्चा बना बहती है, वह भी हमें नुनगा चाहिए। धर्मयनानी सत्याप्रह को प्रतिष्ठा नै धरर उन व्याप्य वा

जोड़ बैठा नहीं दीखता है तो क्या मोचने को धारयकता नहीं है ?

सत्याग्रह कम नहीं, धर्म है, धर्म उषमें धारक जो किया जाता है वह प्रक्रिया का फंग नहीं होता है। शक्ति निकलेगी तो वही से निकलेगी। धनु टूटा तो झूमनपूर्व शक्ति के खोना का भाविकरण हुआ। धारण से धर्म का साथ दूट सकेगा तो चेतन्य क्षेत्र में उससे भी वही चमत्कारी शक्ति का प्रादुर्भाव होगा।

गांधी के व्यक्तित्व में यही घटित हुआ और हो रहा था। सर्वोदय के क्षेत्र में यह प्रक्रिया जिस दिन घटेगी झूमन चमत्कार दिखाई दे धारिया और राजनीति उसके प्रवास में दाहिनी तरफ प्रवृत्त होगी। राजनीति की शक्ति पहिचान नहीं होगी। इसलिए वह प्रति-जियात्मक होती है। वह शक्ति पहिचान होगी और हो सकता है कि मनुष्य विश्व की शक्तता की और राजनीति की दिशा को उससे नया संकेत और प्रकाश मिले।

सत्याग्रह शब्द का धारण किसीको खल भी सकता है किन्तु वही उस शब्द का मूल्य भी है। सत्याग्रही को सत्याग्राही बना देना प्रष्टा लगना है, लेकिन प्रहण में सत्य के प्रति धारणा सम्बन्ध समाविष्ट होता है। धमस्य के प्रति वह धारणायामि हो बना रहता है। धारण में मानो इधर सत्य का स्वीकार है तो उधर शक्तता का इनकार भी स्वीकार है। ये इनकार ही जियमें वे चेतन्य का नेत्र प्रकट होता है। याद रखना चाहिए कि परम सत्य अविचल है। उमका न प्रहण हो सकता है, न उस पर धारण हो हो सकता है। यह इनका परम और अन्वष्ट है कि प्रहण करनेवाला उससे प्रलग कही बच ही नहीं सकता। सत्याग्रह प्रयत्न कर प्रहण प्रदंत सत्य के क्षेत्र की सन्धिविकता नहीं है। ईश्वरामक भूमिका पर ही यह सम्भव है। प्रदंत में तो ब्रह्मिण के लिए स्थान नहीं है। इसीलिए सत्याग्रह के लिए ब्रह्मिण धारणशक बन ही जाती है।

मारा जीवन दैन की भूमिका पर ही स्थिर है। दैन जर्न है किन्तु प्रदंत शक्त है। दैन में से प्रदंत की ओर हमें बढने ही जाना है। उसी जान में सत्याग्रह धारियां और धारयक हो जाना है। धारण ब्रह्मिण है—

प्रहण नहीं कहता, क्योंकि धारण में प्रतीत होनेवाले प्रसत्य, धर्म्याय, धर्मिण का सामना है, उससे बचाव नहीं है।

मेरा मानना है कि जिस सत्य के स्वीकार में से प्रसत्य को इनकार और ललकार नहीं मिलेगी वह स्वीकार मुक्त करनेवाला न होगा, केवल लुप्त करके रह जायेगा।

प्रश्न : धारणने प्रतीत कहें कि परम सत्य अविचल है। उमका न प्रहण हो सकता है, न उस पर धारण ही हो सकता है। फिर धारण यह भी कहते हैं कि जिस सत्य के स्वीकार में से प्रसत्य को इनकार और ललकार नहीं मिलेगी वह स्वीकार मुक्त करनेवाला न होगा।

प्रश्न यह उठता है कि सत्याग्रही सत्याग्रह द्वारा जिस सत्य का धारण करता है ? एक सत्याग्रही व्यथा से सम्बन्ध होकर जिस सत्य का दर्शन करता है वह सत्य एक युद्धवादी को काल्पनिक और हृष्टवादी रट्टिरोज प्रतीत होता है।

उत्तर : धारण धारण में सत्याग्रही का यह दावा नहीं है—और नहीं हो सकता कि उनका सत्य सबके लिए उसी रूप में सत्य हो और वही परम सत्य मित्रा जाय। ऐसा हो तो सत्याग्रह सविनय नहीं रह जाता। विनय धारण पहिचान की शक्त सत्याग्रह को धारण धारण से प्रलग कर देनी है। सत्य सत्याग्रह में उनके लिए भी संपूर्ण धारण है जो उनके सत्य को निरा हूँगीला दूँट मानने हैं और इनलिए उम जेपक्षणीय हो नहीं, बल्कि सपक्षणीय भी मानने हैं। एम सत्य और सत्य को सत्याग्रही स्वेच्छता से प्रदने कर लेता है और सपक्षणीय के लिए तदधिक भी मलिनता अपने मन में नहीं धारण देता।

सत्य धारणने लिए धारणित करने और बाहर सबके प्रति सुरक्षा और सम्मान का भाव रखने हुए जो धारण होता है वही क्या उसके लक्ष्य को सत्य प्रमाणित नहीं कर देता ? मान भी लिया जाय कि धारणबाला सत्य सत्य है ही नहीं, केवल विद और हृष्ट है तो पहिचान की शक्त पूरी होने पर उन सत्याग्रह से समाज का क्या धर्मिण होता है ? विनय को धर्मिण होता है वह उमने व्यक्तित्व तक ही तो सीमित है ? इसलिए यह मान-

कर भी कि सत्याग्रह धारण ही कोई धारण की माप में पूरा उतर सके तो भी उसको जीवन मूल्य और समाज-मूल्य के रूप में स्वीकार कर लेना होगा। उममें खनपा है और धारण के बाद एकाध धारणवादी जोड़कर सत्याग्रह के नाम पर धारण सब दुःख हो हुए हैं तो भी उस खतर को उठाना होगा, और उन मूल्य को निरुत्ता को दूँटने नहीं देना होगा। धर्म्याय गांधी का दाव वैधाय जायेगा और इतिहास जिस हिता के सहारे चलता रहा है उमका कोई विचलन मित्रता प्रसम्भव होगा।

प्रश्न सत्याग्रह को धारणने वा धारण क्या नहीं न माना जाय कि सत्याग्रही लोक-शिक्षण की यत्नता और सम्भावना के सम्बन्ध में धारणी धारणा से विचलित हो गया है ?

उत्तर : हाँ, सत्याग्रही सत्याग्रह के धारण में धारण ही धारणने को शिक्षक मानना छोड़ उठता होता है। यह धारणने को धारण मानने लगता है। तभी सत्याग्रह का धारण-वार उम धारण होता या हो सकता है।

लेकिन शिक्षण का धारण क्या धारण शब्द-पाठ या शब्दोपदेश ही मानने रहेंगे। क्या पदार्थ-पाठ के लिए धारण नहीं देते। 'प्रोसेट' से क्या धारण 'एकत्रैमुक्त' तक नहीं धारण चाहेंगे ? तो सत्याग्रह वो पदार्थ-पाठ है। यह कही ईश्वर शिक्षण है। सुरक्षा ने शब्द द्वारा ही शिक्षण नहीं दिया था, बल्कि मिले हुए शिक्षण को उगारा ही था। धारण में फिर उमने धारणी धारणा के लिए सत्य का धारण कर दिया। क्या धारणने लिए धारणने में धारण तब उमको महार नहीं माना है ? और, प्रमू ईशु को क्या बहिष्णा ? उनसे बड़े शिक्षक को क्या इतिहास में से ईश्वर विधान भी मन्वत्ता ? उमने धारण से स्वीकार इतिहास अधिक धारणाप्रद हो मन्वी है।

पटनीय मननीय

नयी तालीम

शैक्षिक क्रांति की अप्रदूत मासिकी धारण मूल्य : ६ रु०, एक प्रति : ५० पैसे
मई सेवा संघ प्रकाशन
राजबाट, वाराणसी-१

गांधी की नयी खोज

उस दिन अमेरिका के विरूद्ध गिंसन विवरविद्यालय के राजनीति के एक भारतीय प्रोफेसर कहने लगे कि इस वक् अमेरिका के तस्खों और बुद्धिवादियों में गांधी 'ईशानेदुल' हो रहे हैं। गांधी के नाम से बल्लभ और स्वाध्याय मसजद खूब रहे हैं। उनकी बात सुनकर मैंने कहा 'ईशान में भारत भी पीले नहीं रहेगा। अगर आप सन् ६४ में आयें तो देखेंगे कि भारत गांधीमय हो गया है। लेकिन शरद्विद्यत क्या है, आप जानते हैं।' उन्होंने अपना तिर हिलाया और कहा 'अमेरिका के जिन लोगों के बारे में मैंने कहा है उनके साथ ऐसी बात नहीं है। वे किसी चीज की खोज में हैं, और सोचते हैं कि शायद गांधी के पास वह चीज मिल जाय।' मैंने पूछा 'किस चीज की खोज में है?' वह बोले : 'नये जीवन की। अमेरिका का युवक—अमेरिका का ही नहीं, हमारा परिवर्ती बुनिया का—आज के 'इंस्टिजियमन्ट' (सर्वि) में उच्च गया है। बड़ों ने जो बुनिया बना रखी है उसमें यह नहीं रहना चाहता। वह नया जीवन जोना चाहता है, नये विचार का प्रकाश चाहता है।'

किसी चीज की खोज

नया जीवन जीने की चाह रखनेवाले पंचिमो युवक गांधी की ओर देख रहे हैं—वह भी अमेरिका के। दूसरे लोग गांधी की पैली में चाहे जिस होरे-मोनी का तलाश कर, लेकिन खुद गांधी ने कभी यह दावा नहीं किया कि उनका 'मदर उनकी या 'महिमा' कोई नयी चीज थी। गांधी के खाने, पहनने, और काम करने के ढंग में बहुत नयापन था, लेकिन उन नयापन को कौन युवक ग्रहण करेंगा, और क्यों करेगा? गांधी ने जो कुछ किया, वह सब बीता इतिहास है। उसमें भी कुछ लोगो को रुचि हो सकती है, लेकिन शायद धमली नयापन उन सपना में है जिन्हें गांधी ने देखा, लेकिन युवक देस रहा है कि उनके अपने अपने बड़े बाता में गांधी के सपनों से मिलने जुलते हैं, इसलिए वह गांधी के पास जाना चाहता है। युवक आज की राजनीति में ऊंचा हुआ है, इस धर्मनीति और विचार पद्धति से ऊंचा हुआ है। वह इनके नागफता से निकलता चाहता है। वह ऐसा है कि गांधी का निवाय दूसरा कोई ऐसा है नहीं जो निरुचने का रास्ता बता सके। रास्ता बना सके, साथ ही उस नये जीवन की तांकी भी दिया तक जो प्राथमिक युवक को सुनाने तो लगा है लेकिन वह जानता नहीं कि बड़ा पहूना कैसे जाय।

स्वतंत्रता से स्वराज्य

गांधी नहीं भी होने तो भारत स्वतंत्र होता ही। इतिहास भंगनी साम्राज्यवाद को धमर नहीं होने देता। कोई भी साम्राज्यवाद धमर नहीं हो सकता। मनुष्य की प्रात्या (लिटिड) धनीति का धर्म उचर है।

लेकिन अगर स्वतंत्रता तक ही गांधी की विशेषता सीमित होती तो उन्हे आज कोई बरो माद करत, और अमेरिका का युवक तो नयापन न माद करता। गांधी याद तो इस लिए किये जा रहे हैं क्योंकि वह स्वतंत्रता में एक एक व्यक्ति के स्वराज्य का स्वप्न भर कर गये। उस स्वप्न में मुक्ति की जो धलक है उसे करीब से देखने के लिए, और अपने जीवन में उतारने के लिए, दुनिया में करोड़ों लोग बेचैन हैं।

गांधी ने युव कभी यह दावा नहीं किया कि उनके सत्य और उनकी महिमा में कोई नयापन है। वह सत्य और महिमा को जीवन

रामभूति

का सातत और सायत मूख ही मानते रहे, लेकिन कौन नहीं जानता कि गांधी ने जिस सत्य और जिस महिमा को जिस प्रकार सर्व गुलन कर दिया उसमें नयेपन की कमी नहीं थी। सचमुच उसमें इतना नयापन था कि गांधी को सगा जैसे कोई बमकार हो रहा हो। नयापन न होता वा भला एक पंगेध, गुत्तम, निहत्या देग धमकी साम्राज्यवाद जैसे शक्ति के दुकाविते मबा हो सकता? नयापन न होता तो यह खाल ही बयो उठता कि सही साम्य के लिए युद्ध साधन होने चाहिए? लेकिन सबसे बड़ा चौराहेरानी बाउ तो गांधीजी ने धर्मिय दिव रही। बात इतनी थी कि स्वतंत्रता प्राप्त करनेवाली कल्पे को स्वतंत्रता के बाद की सत्ता में नहीं जाना चाहिए। मत्तार दूसरे बलायें, कायंज जनता में रहे उनकी सेवा करे, उसे सगठित करे, शक्तिशाली बनाये यह गांधी का धर्मिय गत्य था।

बात बहुत सीधी थी, सादी थी, लेकिन इस सत्य का आज तक किंगी राजिजवारी ने इस रूप में जनता के सामने रखा नहीं था। कायस सत्ता में न जाकर जनता के बीच रहे इन सत्य के लिए न नायस तैयार थी, और न स्वयं जनता। इसके उलटे जनता चाहती थी कि ययजी की जगह कायस उन पर शासन करे, कायस चाहती थी कि धामन की धारों शक्ति उसके हाथ में आ जाय ताकि वह अपनी टट्टि में शत्रुमार देस को बना सके।

गांधी के मन में जो सत्य था उसे न जनता समझ सकी, न कायस। गांधी को चिन्ता थी कि ऐसी स्थिति न आने पाये जिसमें जनता को अपनी राटी के लिए, थोड़े छुप के लिए सरकार के हाथों और सरसग के लिए अपना स्वराज्य बेचने की मजबूर होना पड़े, और इन मजबूरी का यह नतीजा हो कि सरकार दिनों दिन निरकुश होती जाय और जनता धमहाय बदकर प्रविचार की शक्ति खोती चली जाय। गांधी के सामने जो सत्य था वह 'मुक्ति' था या। मानव ने मुक्ति का मत्य इस रूप में पूँटा था कि मालिक-वर्ग मजदूर-वर्ग का शोषण करता है, और सरकार का मयन हाथ में रखकर उसकी शक्ति को दमन और शोषण में लयाता है। इसलिए मजदूर की मुक्ति इसम है कि वह सगठित होकर सरकार पर पच्छा कर दे, और शोषक वर्ग को अपनी तासमझी हाथ ध्मेता के लिए समात कर दे। वर्ष सधर्ष हाया बग दिसा से मुक्ति यह सत्य था मानर्ष था। लेकिन रिच्छे पचान क्यों में हमने देखा कि बग दिसा के मुक्ति का नारा देकर वर्ग-धर्ष में मरकर

राज्य-हिंसा का निर्माण किया है। यह^१ राज्य-हिंसा इतनी भयंकर है कि जनता की किसी हिंसा क्षत्र उसमें मुक्त होने की बात सोचना भी बठिन है। गांधी ने कहा कि मनुष्य को सारी हिंसाओं से मुक्त होना चाहिए—अपने अन्दर की हिंसा, वर्ग की हिंसा राज्य की हिंसा। इस व्यापक हिंसा में वीरन है तोपक और वीरन है शोषित? क्या दोनों एक ही व्यवस्था की उपज नहीं हैं? क्या दोनों नदम और शोषण की व्यवस्था के शिकार नहीं हैं? और, वीरन है मालिक, वीरन है मजदूर? क्या दोनों ही मालिक नहीं हैं— एक भूमि और पूँजी का, तथा दूसरा श्रम का? गांधी ने कहा कि वास्तव में मनुष्य एक है, और उनकी समस्या भी एक ही है— हिंसा। मानव ने वर्ग-हिंसा से मुक्ति के लिए मजदूरों को एक होने की कहा। गांधी ने कहा कि राज्य की हिंसा से मुक्त होने के लिए सब मनुष्यों को एक हो जाना चाहिए। मनुष्य-मनुष्य के एक हो जाने का अर्थ है समाज की शक्ति का बनना। राज्य की हिंसा से मुक्ति का अर्थ है सरकार की शक्ति का लोप होना। सरकार की शक्ति का लोप होना सब शुरू होगा जब अधिकांश-अधिक काम जो आज सरकार की दण्ड-शक्ति से हो रहे हैं, वे समाज की सरकार-शक्ति से होने लग जायें। सहकार-शक्ति को दूसरे पदों में हम लोक शक्ति भी कह सकते हैं। लोकशक्ति में नेतृत्व—सामूहिक नेतृत्व—लोक का होता है, न कि किसी तानाशाह का, या कुछ विभिन्न व्यक्तियों का, या किसी संगठित दल का।

समानान्तर समाज

गांधीजी ने अपने जीवन में लोक-नेतृत्व विकसित करने का व्यापक प्रयत्न किया। उनके प्रयत्न के दो पहलू थे। एक पहलू में उन्होंने हिंसा का सीधा मुकाबिला किया। उसे हम प्रतिकारत्मक पहलू मान सकते हैं। दूसरा पहलू रचनात्मक था जिसमें उन्होंने अपने 'रचनात्मक कार्य' (सेवा, संगठन, उत्पादन और शिक्षण) द्वारा नये समाज (काउंटर मोवाइटी) की नयी बुनियाद स्थापित रूप से डालने की कोशिश की। दोनों पहलू एक ही समन्वित प्रक्रिया के अभिन्न अंग थे।

उनके सामने हिंसा के चार स्वरूप थे— एक, साम्राज्यवादी हिंसा; दो, साम्प्रदायिक हिंसा; तीन, जातिगत हिंसा; चार, वर्गगत हिंसा। साम्राज्यवादी हिंसा उस समय राज्य की हिंसा थी। उसका मुनाबिला करने के लिए उन्होंने स्वतंत्रता की लड़ाई में अस्त्र-योग और सविनय अवज्ञा की जो पद्धति विकसित की उसमें पहले-गहल लोक-शक्ति का प्रारंभिक लेकिन अनेक पंक्तियों पर दर्शन हुआ। साम्प्रदायिक हिंसा के मुकाबिले में तो उन्होंने अपने प्राणों की ही बाजी लगा दी, लेकिन अन्त में उन्हें इन हिंसा का शिकार होना पड़ा। हरिजनो के ऊपर होनेवाली हिंसा के प्रतिशर में वह सर्वथ हिल्नू की अन्तरात्मा काफी हद तक जना ढके। जहाँ तक वर्ग-हिंसा का सम्बन्ध है वह कोई सविनय कार्यक्रम तो नहीं उठा सके, क्योंकि स्वान्ध-संग्राम के समय उसका अवनम नहीं था, फिर भी शोषण-मुक्ति की स्पष्ट चल्पना और योजना दे गये। मालिक मालिक नहीं दूरी है, और मजदूर भी अपने श्रम का उभो तरह स्वामी है जैसे कोई अपनी भूमि या पूँजी का, धार्मिक विचार ऐसे हैं जो वर्ग-शोषण, वर्ग-हिंसा, और वर्ग-गर्पण में मुक्ति का रास्ता साफ दिखाते हैं। उसी ढोर को परदकर आज विनोबा अथवा ग्रामदान-आन्दोलन चला रहे हैं। ग्रामदान समर्थमुक्त शान्ति और दृष्टीशेष का नियामक स्वरूप है। और ग्रामदान, ग्रामामिषुल खादी, तथा धान्तिसेना के विविध कार्यक्रम में नयी सामाजिक व्यवस्था की रूपरेखा भी स्पष्ट हो जाती है। गांधीजी की 'रचना' अन्तर्मास इन त्रिविध-कार्यक्रम में समा गयी है। ग्रामदान-मुक्त सारी शान्ति-योजना का आधार लोक-निर्णय है। ग्रामदान गाँव में स्तर पर लोक-शक्ति के तीनों मुख्य पहलुओं को पूरा कर देता है—ग्राम-निर्णय, ग्राम-स्वामित्व, और ग्राम-प्रतिनिधित्व। इनमें मालिक का स्वामित्व, सरकार का प्रभुत्व, और दल का नेतृत्व, वीरन एक साथ समाप्त हो जाते हैं, और समाज की शक्ति अपने विकास के लिए बंधन-मुक्त हो जाती है।

कौड़ी भी समाज हो उसके तीन आधार होते हैं—सत्ता, सम्पत्ति, और सरकार। इनकी शक्ति से समाज बनता है। इनमें

हृद शान्ति को यह अंगत तय करता हो पड़ता है कि उसकी कल्पना के समाज में सत्ता का क्या स्वरूप होगा, सम्पत्ति का स्वामित्व किसके हाथ में रहेगा, और संस्कार-निर्माण के क्या माधन होंगे।

सज्जन और जन

घाज की दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न है सत्ता का। सत्ता समाज की संगठित शक्ति है। शक्ति के बिना न नया स्वामित्व दिवेगा, और न नये संस्कार टिकेंगे। इन लिए सत्ता का स्वरूप तय हुए बिना नये समाज की कल्पना संभव नहीं है।

सत्ता का महत्व तो है ही, लेकिन उसकी रचना कैसे हो, तथा राजनैतिक सत्ता का समाज की दूसरी सत्ताओं में स्थान क्या हो? आज राजनैतिक सत्ता का भी स्वरूप है वह अशांति के आधार पर स्थिर है, लोक-शक्ति के आधार पर नहीं। अगर उसे लोकशक्ति के आधार पर संगठित करना हो तो उसका स्वरूप बदलना होगा। अपने जीवन के अन्तिम दिन जब गांधीजी ने काउंसेल को सलाह दी कि वह सरकार में न जाय तो उनके दिमाग में सत्ता का नया चित्र था। वह क्या था?

एक-एक गांव अपनी जगह एक सहायक इकाई है। उसकी स्वायत्तता इतनी बड़ी हुई हो कि वह अपने में एक गणराज्य दिखाई दे। शान्त ऐसी स्वायत्त, सदायची, परस्पर-वलम्बी इकाइयों का एक महासंघ हो। यह बनना ही गांधीजी की। जाहिर है कि ऐसी व्यवस्था में सत्ता बिखरी हुई होगी। उनका मुख्य आधार सैनिक-शक्ति न होकर नागरिक-शक्ति होगी, और वह अंडे के जोर से न चलकर जनता की सम्पत्ति से चलेगी। यही नहीं, अधिकांश सत्ता सर्वय जनता में ही हाथ में रहेगी जिसका वह अपने नियय के जीवन में इन्तेमाल करेगी। इस प्रकार गांधीजी लोकशक्ति को एक बरम प्राण बढ़ाना चाहते थे। लोकतंत्र दलतंत्र का प्रतिनिधित्व होकर क्यों रब जाय? वह भाकेदारी की व्यवस्था (हिमायती आद पाठिकोचन) क्यों न बने? शोहर अपने शोहर से दूसरों की धना धान्य बनाने हैं, तो वे सब दिलबर सुद धनी व्यवस्था क्यों न बतायें?

गांधी, खादी, ग्रामदान, शांतिसेना और जगत् का भविष्य

गांधीजी ने स्वयं कहा था 'मेरी भनेकाने रचना तक प्रवृत्तियों के ग्रहणरत्न का सूर्य है खादी।'

• झांका कालेकर

खादी का अर्थ 'हाथ से की हुई मूल का हाथ करपा पर से बना हुआ कपड़ा'—इतना ही नहीं है। गांधी चाहते थे कि दुनिया 'खादी मानस धारण करे। जिस तरह के सूत्र, निष्पात, सर्व कल्याणकारी जीवन की शाही बाधुनी देश की कराना चाहते थे उन जीवन की ही वे खादी जीवन कहते थे। खादी जीवन ही सर्वोच्च जीवन का प्रतीक है।

खेती के बाद सबसे बड़ा सर्वोपयोगी उद्योग है धन निर्माण-कला। उसके द्वारा धन को ईश्वर से अधिक मुनाफा करना चाहे और इसलिए उसमें यंत्रोद्योग की पद्धति दाखिल कर समाज में बेकारी फैला देते तो वह राष्ट्रद्रोह है ऐदा जो ममके हैं उहाँ के मानस की हम खादी-मानस कहते हैं। गांधी जी का सर्वोत्तम सिद्धान्त कहाँ है 'देश के सब लोगों को खाने बिलाने का प्रबन्ध किये बिना जो धर्महीन खादी है वह चोर है। यह

पाप खाता है। उसका जीवन व्यर्थ है। मीठ पार्थ स जीवति। सबको खाना हम सब दे सकते हैं जब सबको राष्ट्रहित का कोई न कोई काम करने का मौका देते हैं। इस तरह कराएँ तो रोटी देने की शक्ति केवल खेती और खादी में है। खेती का काम गांधी के चलाया है राहरो में नहीं। धारा का काम दोनों स्वाम पर चल सकता है। गांधी और धरत का सहयोग पण्डित बनाने की शक्ति खादी में है।

सार्वभौम तोरभोग्य विज्ञान

एक दफा दस गुरुकुलशाळा एक चरखा बनाने को भुलना भायी। इनके लिए लाख रुपय का इनाम भी घोषित किया गया। एक महराष्ट्री मन्त्रक ने एसा चरखा तैयार किया। इनाम की गलों के धनुषार वह काम देता है या नहीं इनको जांच करनी थी। गांधीजी ने चिन्तेबाजी की और मुझको परी

क्षक के तोर पर विमुक्त किया था, बसोकि चरखे को यत्र विद्या के हम दोनों माहिर गिने जाते थे। इन्ही के मिनसिले में जब प्राये जाकर सन्तर चरखे का अ विचार हुआ सब हम गांधीबादियों में बड़ा मजबूत हुआ। बिनबा ने और मैंने धन्वर चरखे का समर्थन किया। उन चरखे का तदर्थ पूरा विरोध करनेवालों में ये (और धान भी हैं) गांधी जी के अनीचे और आश्रम के किसी समय के व्यवस्थापक श्री नारायणदास गांधी। हम तो तरह-तरह की तर्कियाँ, धनुषतर्की, पुराने नये चरखे सबका प्रयोग कर चुके थे। धन्वर चरखे को धरेलू मिल का भाँवा बन्देवाले को भी हमने सुना था। हमारा कहना था, जो धान भी खरी है कि हम सबभोग्य लोकभोग्य विज्ञान का बहिष्कार नहीं कर सकते। धात घटे मूल काबनेवाले को पेट भरने जिनकी रोटी मिलनी चाहिए जो धन्वर चरखे से ही मिल सकती है।

उसी शिखरिसे मे मैंने बिरोधियों से सवाल पूछा था कि क्या हम खादी का परि धार रोककर देश में आदिवाधियों का जीवन फिर से खाना चाहते हैं ?

गांधीजी की खाल नहीं मानी गयी। न मानने से हमारी राजनीति की दिशा बिल्कुल दूसरी हो गयी। उस दूसरी दिशा में चलते चलते प्राय हम कहाँ से कहाँ पहुँच गये। नीचे यह बात जमादा स्पष्ट की गयी है।

- १—उदारवादी राजनीति (गांधी से पहले)
- २—जातिव्यवस्था राजनीति (गांधी)
- ३—पार्लियामेंटरी राजनीति (नेहरू)
- ४—गुरुवादी राजनीति (धाम)

विशिष्ट जन	प्राधान्य	बुद्धि शक्ति	उक्त
	(प्रथम)		
बहुजन	दवाज	धार्मिक शक्ति	सकल्प
	(प्रथम)		
दल	धन्व प्रसार	पार्लियामेंट	बादत
		(पार्लियामेंट)	
गुरु	सोपेवादी	धार्मिक शक्ति	स्वार्थ
	(प्रतिष्ठ)		

हिए 'इस राजनीति का तबीया यह हुआ है कि जहाँ राजनीतिक क्षेत्र में सत्ता की धारने हाथ में रखने की इच्छा से दलों और गुटों में तरह-तरह का 'कोरुलियन' बन रहे हैं यहाँ दूसरी ओर धार्मिक क्षेत्र में तरह-तरह के स्वार्थों के कामिनेशन हो रहे हैं। इन दोनों

उसी तरह मैंने गांधी का उपास्य है वह निष्पार्थिक मानव जिसे उहाने दिखानारायण की उपाधि दी।

गांधी 'महाजन थे। वह चाहते थे कि देश के मज्जन देश के जन' के साथ रहे। लेकिन 'मज्जन' जन से धन्य हो गये। प्रलय होकर सज्जनों ने राजनीतिक सत्ता को लोकगतिक के विरोध में लड़ा कर दिया, और देश की सभ्रति को जनता के शौरण का साधन बना दिया। और, शिष्य-जीनी तो कोई चीज रह ही गयी गयी।

लेकिन गांधीजी 'लोक वा जो वाज बो गये थे वह धन ग्रामदान के रूप में अनुचित हुआ है। लोक धन को पहचान रहा है। इस प्रतीति में से लोक शक्ति का जन्म होगा। छोटे छोटे समुदायों में सत्ता का बंट जाने से ही मनुष्य की शक्ति का दरवाजा खुलेगा। रामदास गांधीजी ने दिखा दिया है। यह धर्मज्ञ ही है कि धन हम नहीं खाना करके गांधी तक पहुँच रहे हैं।

के कारण राष्ट्र के जीवन में हर बगल वास्तविक बट और अनुभव दिखाई देता है।

यह बात जानने की है कि गांधी को 'राजनीति प्रचलित धर्म में न सचर्च की है, और न संनद की। उसमें प्रचलित न देना की है, न टिकन की। उनका धारण है नागरिक,

विनोबा की खादी-निष्ठा

श्री विनोबाजी तो इससे एक चरम धारण गये। उन्होंने बाबायदा ईमानदारी से धाड़ घंटा चरखा चलाकर बाजार के हिसाब से जो कुछ मजदूरी मिल सकती थी उसके अन्दर ही जीने का सब किया था। तब उनका बाह्य पर घट गया था। पौष्टिक पदार्थ के अभाव में उनका स्वास्थ्य खींच हुआ था। बात गांधीजी के कानो तक पहुँची थी। तब देश भर में खादी का नाम फैलने का ही भार जिनके सिर पर था ऐसे लोगों को गांधीजी ने इकट्ठा किया, और विनोबा का उदाहरण उनके सामने रखकर सबसे अगली की कि भूत कानने-वालो कतिनो को जीवन-वेदन मिलना ही चाहिए। इससे खादी मम्ही हुई तो वह ईष्टप्राप्ति ही है। खादी सस्ती करने के लिए गरीबों का शोषण करने का पाप हमें नहीं करना है।

यह सारा किस्सा मैंने यहाँ पर इसलिये दोहराया है कि आप समझ लें कि श्री विनोबा खादी के साथ कितने एकरूप हो गये हैं। जो निष्ठा जीवन में उत्तरी नहीं वैसी उत्खनिष्ठा केवल सांख्यिक ही समझनी चाहिए।

भाज विनोबाजी ने ग्रामाभिमुख खादी का विचार देश के सामने रखा है। शहर के लोग खादी कम पहनें या अधिक, (आजकल तो खादी का प्रचार शहरों में विलुप्त हो चढ़ नहीं रहा है) शहरों का जीवन खादी-जीवन के विरुद्ध ही है। खादी पहनकर शहर के लोग गाँवों की जिलाने का पुष्प हासिल कर सकते हैं। लेकिन शहरों का जीवन खादी-संस्कृति को बढ़ावा नहीं दे रहा है। 'घरूट के लोग खादी पहनकर और खादी को बढ़ावा देकर अपना पाप कुछ हद तक धो सकते' इतनी ही प्रेरणा हम उनसे कर सकते हैं।

ग्रामघातो कल-संस्कृति

जब मैं शहरों जीवन और खादी-विचार का चिन्तन करता हूँ तब मेरा खादी पर का विश्वास कहता है कि जिस तरह ऐतमम ने मुट्ट की विफलता ही सिद्ध की है, उसी तरह यशोयोगी वड़े-बड़े बल बाखाने जब सारी दुनिया में हलकर देश में समान रूप से फैल जायेंगे तब उनकी 'कल-संस्कृति' ही ग्राम-

घातक साबित होगी। (जब हमारे युगर्गति रवीन्द्रवाद टाटने ने कहा कि सचमुच बल-बाखानो का फलयुग ही मलियुग है, तब उनके छयाल में नहीं छाया होगा कि वे किसी दिन हमारी खादी के ही गमर्षक होने वाले हैं।)

खादी के मन्दि-जल पर बटल विश्वास रखकर ही हम भाज खादी का परिष्कार कर सकते हैं। आजकल का प्रदूर-दृष्टि जन-मानव खादी को सहन करता है केवल इसी-लिये कि उसके द्वारा हम गांधीजी के प्रति अपनी प्रतीम वृत्तजवा व्यक्त कर सकते हैं। जब खादी युग के दिन सच्चे धारणें तब लोग दूसरी तरह से गांधीजी के प्रति वृत्तज होने कि उन्होंने हमें सत्यानाश से बचाया।

ग्रामदान : साम्यवाद का विकल्प

जिस तरह ग्रामोद्योग में खादी बँसे ही ग्रामदानमूलक सर्वोदय प्रान्ति के लिए ग्राम-दान भूदान है।

हमके बारे में मैंने कुछ विवेक लिखा नहीं है। बात सही है इस प्रकृति के लिए मेरे सम्बंधन की प्राथम्यकता नहीं थी। हाँ, जब-जब मौका मिला, परदेश में मैंने भूदान-प्रदान के बारे में उल्लासपूर्वक व्याख्यान दिये हैं। पूर्व भूमिका में प्राथम्यक्य कहाँ था। इतिहास में, मैं समझता हूँ, मैंने सबसे पहले विस्तृत व्याख्यान दिया था। मैं तो ग्रामीणों में और जावान में भी कई दके मैंने ग्रामदान का अर्थ समझाया है, और कहा है कि एक दिन आदेश जव ग्रामदान ही कम्युनिज्म का स्थान लेगा। मैं हमेशा मानता थाया हूँ कि ग्रामदान का लाभ जब जनता के प्रमुख में प्रायेगा तब उसका प्रचार प्राप-ही-प्राप होने लगेगा। ग्रामदान की बात लोगों की समझाना आसान नहीं है। लेकिन वह नाम तो हो सकेगा। अगली मन्दिनाई है ग्रामदानी गाँव चलाने की। ऐसे निष्ठावान और कार्यकुशल सेवक मिलने चाहिए जो एक-एक गाँव को ग्रामदानकर ग्रामदान रूपी सामाजिक प्रान्ति को गिद्ध कर सकेंगे। मेरा हृद्द प्रभिप्राय है कि ग्रामदान को चलाने के लिए सरकार की अनुमति जरूरी भवे ही हो, विन्तु सरकार की अंरणा

ही जनता को कर्मोदेश निष्क्रम बनाती है। 'हमें बोट दो, टैक दो, बाकी का हम सब देख लेंगे, यही वृत्ति होनी है आजकल की सरकारों की।'

और हम तो समाजवाद के नाम पर जनता का सारा जीवन ही सरकार के हाथ में सौंप देते हैं। सर्वोदयकी पब्लिक सेक्टर में सरकार की और उनके कानूनों की दखल-गोरी होनी नहीं चाहिए। पब्लिक सेक्टर के मानी ही है जनता का शैव। सरकारी उद्यम को ही हम पब्लिक सेक्टर कहकर विचार-भावि कर रहे हैं। सब काम अग्र सरकार अपने हाथ में ले ले तो उसे हम सरकारी सेक्टर प्रथवा गवर्नमेंट सेक्टर कह सकते हैं। पब्लिक सेक्टर का संचालन सार्वजनिक सस्थाओं के हाथ में हो होना चाहिए, न कि सरकार के। सर्वोदय को, ग्रामदान, बिलादान और ग्रामदान को प्राप सरकार-निरोध सार्वजनिक समाजवाद कह सकते हैं। ग्रामदान इसी की पूर्ण तैयारी है।

ग्रहिसक प्रान्ति सेना

और इसी का पूरक तीसरा वर्गम है प्रान्तिसेना। यह नाम गांधीजी का दिया हुआ है। मुझे लगता है कि गांधीजी का विचार और भी स्पष्ट करने के लिए वह नाम बदलना होगा—'ग्रहिसक प्रान्तिसेना'। सुनता हूँ कि ग्रामीणों में ऐसे प्रान्तिमैत्रिक भाई हैं जो कोविच करते हैं अपने देश में, और दुनिया में भी प्रान्ति की रक्षा हो। जानमाल सुरक्षित रहे और कोई विपत्ती को परेपान न करे। लेकिन ऐसे लोग स्वयं शरत्र धारण करने भी प्रान्ति की रक्षा करने की बात करते हैं। गांधीजी की प्रान्ति सेना स्वयं दखनग्रहण नहीं करेगी। सशस्त्र फौज का सामना करना पड़े तो भी दखन धारण बिचे बिना, हिमा का प्रयोग बिचे बिना, केवल मत्याग्रह से वे सामना करेंगे। और उनका नियंत्रण रहता है कि उनमें उनकी सफलता प्रथम्य मिलेगी ही। जिस प्रान्ति-सेना की हम यहाँ बात करते हैं वह विपत्ती भी हावत में हिमा के अस्त्र का उपयोग नहीं करेगी।

ऐसी प्रान्ति-सेना की उन्ना ही तानीम-बद्ध होना चाहिए, जितना अस्त्र सेना होनी

रचनात्मक कार्यक्रम का सौरमण्डल और त्रिविध कार्यक्रम का केन्द्रविन्दु

[गांधीजी ने चरखे को रचनात्मक कार्यक्रम का सौरमण्डल कहा था, किन्तु वर्तमान समाज चरखे को मान्य नहीं कर पा रहा है; क्योंकि वह स्वतंत्र तथा स्वावलम्बी ग्रामस्वराज्य के विचार को स्वीकार नहीं करता। अगर चरखे को समाज में अग्रिष्ठित होना है, तो उसके विचार यानी ग्रामस्वराज्य के विचार का उद्बोधन, अग्रिष्ठान और संगठन करना होगा। चूँकि बिना भावना और संकल्प के सार्वजनिक पैमाने पर कोई भी प्रवृत्ति चल नहीं सकती; अतएव चरखे के अग्रिष्ठान के लिए भी ग्रामभावना के उद्बोधन और ग्रामस्वराज्य के संगठन की आवश्यकता है। रचनात्मक जगत् के दृष्टि सद्यस्वी धीरेन्द्र मजूमदार ने पूछे गये प्रश्नों के उत्तर में ग्रामदान को उसका सारम-विन्दु और आधार-भूमि माना है। —सं०]

प्रश्न—गांधीजी ने चरखे को रचनात्मक कार्यक्रम का सौरमण्डल कहा था। विनोबाजी ने त्रिविध कार्यक्रम को रचनात्मक कार्यक्रमों का सार-सत्त्व माना और ग्रामदान को त्रिविध कार्यक्रम का सौरमण्डल। इस प्रकार नये सन्दर्भ में रचनात्मक कार्यक्रम के सौरमण्डल में चरखे का स्थान ग्रामदान में ले लिया है, ऐसा दिसता है। कुछ लोग चरखे को गांधी के दरिद्रनारायण का प्रतिनिधि मानते हैं। वे मानते हैं कि रचनात्मक कार्यक्रम के सौरमण्डल के केन्द्र में ग्रामदान को स्थापित करने पर दरिद्रनारायण का प्रतीक हमारी नजरों से धोखा हो जायेगा और गांधी के मपने का समाज नहीं बन सकेगा।

उत्तर—दरिद्रनारायण नाम से कोई ठहरे स्थायी रहे, वह चरखे के विचार के विपरीत है। चरखे और दरिद्र के सह-अस्तित्व की कल्पना गांधी ने नहीं की थी। अगर उन्होंने कभी-नभी कहा भी है कि चरखा गरीबों का सहारा है तो वह तत्कालिक परिस्थिति के सन्दर्भ में ही कहा है। लेकिन उन्होंने हमेशा यह कहा है कि चरखा इतिहास का प्रतीक है और स्वराज्य का साधन है। इसी विचार के आधार पर स्वराज्य की अर्थनीति का चित्र प्रस्तुत करते हुए उन्होंने चरखे को मूर्धन्य के केन्द्र में रखकर ग्राम-उद्योग के विचार यानी स्वावलम्बी अर्थव्यवस्था के विचार का प्रतिपादन किया।

गांधीजी की कल्पना के स्वराज्य में ग्रामस्वराज्य प्राथमिक दृष्टाई के रूप में केन्द्र में अग्रिष्ठित है। इस स्थिति के अग्रिष्ठान के लिए अ.व.स.योजना इन बातों की है कि समाज इस विचार को माने और गांधी के नागरिकों के दिल में ग्राम-भावना पैदा हो। केवल ग्राम-भावना ही नहीं, बल्कि स्वतंत्र ग्राम-स्वराज्य की भावना का विकास हो। दस्तुतः

अब समाज चरखे को जो मान्य नहीं कर पा रहा है वह इसलिए कि वह स्वतंत्र तथा स्वावलम्बी ग्रामस्वराज्य के विचार को स्वीकार नहीं कर पा रहा है। जबतक समाज में विचार की स्वीकृति नहीं होगी तबतक विचार के लिए आवश्यक प्रवृत्तियों को कोई भी स्वीकार नहीं करेगा। बिना ग्रामस्वराज्य की भावना पैदा किये अगर हम गांधीजी के नाम से और उनकी स्मृति-रक्षा के लिए चरखे का प्रचार करते रहेगे तो समाज उनकी स्वीकार नहीं करेगा। अतएव अगर चरखे को समाज में अग्रिष्ठित करना है तो उनका विचार यानी स्वावलम्बी ग्रामस्वराज्य का विचार

धीरेन्द्र मजूमदार

तथा सैन्य और शस्त्र-निरपेक्ष इतिहास समाज के विचार का समाज में उद्बोधन, अग्रिष्ठान और संगठन करना होगा।

ग्रामदान-ग्रामदोलन इसी भावना के उद्बोधन का प्राग्दोष्य है। इसीलिए विनोबाजी ग्रामदान, ग्राम-स्वामी और शान्ति-सेना के त्रिविध कार्यक्रम को मुख्य रूप में पेश करते हैं। पहले ग्रामदान से ग्राम-स्वराज्य का संकल्प होगा है फिर ग्राम-स्वराज्य के संगठन के लिए चरखा-नैर्द्विज स्वावलम्बी अर्थनीति की आवश्यकता होती है। फिर उसे दरिद्र-निरपेक्ष शक्ति से टिकाये रखने के लिए शान्ति-सेना का संगठन अनिवार्य हो जाता है।

इस प्रकार जब प्रायः गहराई में विचार करेंगे तो स्पष्ट हो जायेगा कि ग्रामदान दरिद्रनारायण की सेवा के लिए भी प्राथमिक आवश्यकता है, क्योंकि बिना भावना और संकल्प के सार्वजनिक पैमाने पर कोई भी प्रवृत्ति चल नहीं सकती।

प्रश्न—ग्रामदान द्वारा ग्राम-भावना तथा ग्राम-स्वराज्य के विचार का उद्बोधन होगा

यह बात तो समझ में आती है, लेकिन इसका लाभ गांधी के दरिद्रनारायण को ही पहले प्राप्त होगा यह अनिवार्य कैसे माना जा सकता है? ग्रामदान की घोषणा के दौरान गांधी के संगठित स्वार्थियों का भरपूर सहयोग लेने की कोशिश की जाती है। ग्राम-भावना का अधिक-से-अधिक नाम भी वे ही लोग उठायेगे, यह क्या सम्भव नहीं है?

उत्तर—ऐसा नहीं होगा। जब ग्रामदान होने पर गांधी के सब लोग यह संकल्प करते हैं कि सबकी रोजी-रोटी देने की जिम्मेदारी हमारी है तो जिसे प्रायः दरिद्रनारायण कहते हैं उनके लिए चरखा-नैर्द्विज ग्राम-उद्योग का संगठन करना अनिवार्य हो जाता है। ग्रामदान की शर्त के अनुसार ग्रामिणियों की योग्यता हिसाब जमाने देने का कार्यक्रम चरखे के कार्यक्रम के अलावा होता है।

इस तरह ग्रामदान से दरिद्रनारायण की सेवा समाज को प्रत्यक्ष जिम्मेदारी होती है। केवल चरखे की सहायता बढ़ाने का काम सहायों का होना है। समाज इसे अपनी जिम्मेदारी तब समझेगा जब वह गांधीजी की कल्पना के अनुसार ग्राम-स्वराज्य के लिए स्वावलम्बी औद्योगिक संगठन के अग्रिष्ठान के रूप में चरखे को मान्य करेगा।

अगर प्रायः तत्कालिक परिस्थिति के सन्दर्भ में भी सोचते हैं और समझते हैं कि चरखा दरिद्रनारायण की सेवा का साधन है तब भी प्रायः तो समाज द्वारा इनके विचार को मान्य कराया होगा; नहीं तो केवल किसी अन्वय-मुद्रण के नाम से उसे चलाना चाहेंगे तो वह अन्ततोगत्वा एक सार्वजनिक कर्मशास्त्र के रूप में रहेगा सामाजिक कार्यक्रम के रूप में वह टिक नहीं सकेगा। अतएव चरखे के प्रचार के लिए भी ग्रामदान की प्राथमिकता देनी होगी।

गांधी ने कहा था एक साल में स्वराज्य

बिनाया ने कहा है गांधी जन्म-शताब्दी तक राज्यदान

[गांधीजीनाम्ही तक राज्यदान के संकल्प 'एक साल में स्वराज्य' की भाषु की संकल्पना की ही भांति की कटियाँ हैं। उस समय काज की माँग थी 'स्वराज्य' की। 'स्वराज्य से कम कुछ भी नहीं' चाहिए था। आज बालपुरष की माँग है प्रामस्वराज्य की, इससे कम कुछ भी नहीं चाहिए। 'राज्यदान' के संकल्प हमें उस धोर बड़ने की प्रेरणा, साहस और शक्ति देगे दे रहे हैं। प्रभुत्व है हम भाव की सशक्त बनानेवाला जो जयप्रकाश नारायण का विचार, जिसे उन्होंने महााज सचोदर संमेलन में कार्यकर्ताओं के सामने प्रस्तुत किया था।—सं०]

गोपुरी ने धियेजान म बिनायाजी ने 'कृष्ण' की बात बहो धोर बिहारवालों के कहा कि था नृपान सग करोगे तो मैं बिहार का सजता हूँ। हम लोग ने उस योग की स्वीकार कर तीन महीने में एक हजार प्रामदान प्राप्त करने का ध्वन्य किया। मुझे लगता है कि इन तरह का, अपनी शक्ति के बाहर था, ऐसा मन्व्य हमन नहीं किया होता तो न बिहार हमनी दू गया होता जैसा थाय गया है धोर न देश का प्रान्दालन हमनी दूर गया होता और न साठ हशार प्रामदान प्राप्त हुए होते। हमोलिए महाराष्ट्र ने कार्यकर्ताओं से मैं कहा चाहता हूँ कि वे प्रदेशदान का मन्व्य करें, क्योंकि हम मन्व्य बदा सवला करते हैं तो वास्तव शाली हैं। प्राय दिग्गव कर रहे हैं कि प्राची शक्ति निवनी है। प्राय तोन रहे हैं। बिहार में हम इन तरह कोलने मही। प्राय प्राय अपनी शक्ति को देखकर ही काम करते तो हम काम वे पीछे जो मुग का प्रया है, उन शक्ति की तरह प्रायका ध्यान नहीं जायेगा। थावा जिने ईश्वर की शक्ति बहने है, यह हमके पीछे नहीं होती तो यह काम नहीं होता। इसी शक्ति से यह माय काम ही रहे है और हम निमित्त माय हैं।

मन्व्य का सम्बन्ध

जब बिहारदान पर सफल हुआ उस तक वह मडिन मागुन होता था। मैंने कहा कि मैं भी तीन महीने के लिए बिदेज वा रहा हूँ, हमलिए मन्व १९५५ की जो दसवतुर के बजाय १९६६ की जो दसवतुर तक बिहार दान करने का मन्व्य करने तो थायद यह काम पूरा हा जायेगा। थावा ने एक ही बात बही कि गांधीजी ने एक बरन में स्वराज्य

की बात बहो थी या जो बरन में २ मेरे लिए वह उत्तर थाही था और जो दसवतुर १९६५ तक बिहारदान का मन्व्य करने की बात मुझे जैव गयी। प्राय मन्व १९६१ पर अमाना देलिए। उन तक दसवतुर साम्राज्य चट्टान जैसा दीखता था। लेकिन एक नेता गगा निरकता जिसे दूर का दशन था। उठने कहे कि एक बरन में स्वराज्य हाजिल करेगे। मेरा मानना है कि गांधीजी ने एक बरन में स्वराज्य की बात नहीं बहो होती तो सत्ताधन बरन से भी स्वराज्य नहीं होता। प्रायजी

जयप्रकाश नारायण

राज्य की हम साम कर सजते हैं, इनने जम्बी सत्य कर सजते हैं, यह मोचने की हिमन भी नहीं होती।

गांधीवालों का फर्ज

यहाँ पर रबन तक मरपया के नेता भी धमनी सोच ही रहे हैं। लेकिन मैं मानता हूँ कि वारे रबनात्मक कार्यक्रम में लगे हुए कार्यकर्ताओं का पहले से ही यह कर्तव्य है। वे मन धनी विचार के वाहन हैं और उ नें महानिष्ठ इसी विचार का प्रचार करग है। पानी चलाना, तेल बेचना, लाठी के जरिए कुछ लोगों की काम देना—ये सारे कल्याण के काम तो राज्यदाने भी करते हैं, बड़े काम प्राय करते रहे तो नया प्राय प्रायने कर्तव्य का पालन करेंगे ? हमलिए रबनात्मक संस्थावाले गांधी निधिये दन मककी धमनी पूरी शक्ति हमने लगानी चाहिए और सत्य करना चाहिए कि २ दसवतुर १९६६ तक महााराष्ट्रदान करेंगे। जब बिहारदान की बात चली और हमने कहा कि २ दसवतुर १९६५ के बजाय १९६६ की शारील स्वी जाय तो

धीरेनाना मैंने कहा कि जैने हम सारे घने हैं, १९६६ की २ शायिप रखने ल, १९६५ तक हम धीरे धीरे चरणे धोर १९६६ जनवरी के बाद बाद सायेगा कि दसवतुर तक काम पूरा करना है, तो फिर जोर लपगा। हमलिए १९६५ रमिने धी धमो ते जोर लयेगा। लदशाय वगो ?

कमी कमी कुछ लोग कहते हैं कि यह लम्बाना (अरबेट) बरा है, इनने महचरुणें काय के लिए लम्बाना की बात करना बेल लगता है। लेकिन इन तरह सदराक की प्रायममना इयाँकर पवती है कि हम मव जो प्राय-ममात्र ने लोग हैं हमारे प्रायद यह प्राय नहीं जल रही है, जो बिनीगानी ने प्रायद जल रही है। वह जगनी हानी तो कोई प्रायमवगत नहीं होती यह तय करने की कि फजनीली शारील तक बिहारदान करेंगे। ईश्वरान का वाद, गांधी बिचारकारता के सामने कई काम प्राये और वे कई पधों से बंट गये। स्वराज्य की सजाई के समय जो एकाग्रता की एक ही केन्द्र बिन्दु था, स्वराज्य का, यह भाव नहीं है इसलिए दान प्रचार के प्रेरणाशाली संकल्प की प्रायमवगत पवती है। प्राय प्राय लोग निगय लेते हैं कि हम महाराष्ट्रदान का मन्व्य कर रहे हैं तो एकदम जल्दिए धियेगा और हन रूपने दन से मोचने लगये।

प्राधि का वाहन

मैं इन निर्णय पर पड़का हूँ कि प्रामदान-प्राप्ति का प्रयाह तेजी से बढना रहे वह हमारा मुम्य काम है। यह काम हमे कोई दल-बीम हाल में नहीं करना है जर-से अदर करना है, धयया इहियाम हम पीछे धीकरद प्राये बड़ जायेगा। इसलिए समझने

की बात है, महात्माजी का नाम दण्ड-वीस परम में नहीं, दो एक परम में ही करना है। यह काम हम करते रहें और इसके साथ-साथ थोड़ा-बहुत खर्च का काम कर सकते हैं तो करें। हमने कोई 'एलाइज' (मित्र) पैदा किये हैं, राजनीतिक दलवाने शिक्षक आदि, तो उन्हें पुष्टि खर्च का काम सौंपें। तर्जिम का महत्त्वपूर्ण लक्ष्य यह है कि परिवर्तन वेदों के साथ ही, हीन गति में ही और व्यर्थ हो। परिवर्तन वीस परम में भी हो सकता है, लेकिन उसे प्राप्त नहीं कहेंगे। उसी तरह तो हम योग प्रतिष्ठान गाँवों में प्राप्ति करके बैठें तो देश में शान्ति नहीं होगी। देश में गाँव गाँव लाख गाँवों में प्राप्ति होनी चाहिए, और तीर्थ गति से होनी चाहिए। व्यापकता में गाँव होना है। आज हम थोड़े में लोग दीक्षित हैं, लेकिन आन्दोलन बनता है तो काम फेंकेगा, नये लोग आवेंगे, जैसा गांधीजी के आन्दोलन में आते थे। हम देखते हैं कि फ्राँस-कहीं नये-नये लोग आते हैं तो अपनी जमाव के पुराने लोग पकड़ते हैं कि हमारा क्या होगा? लेकिन नये लोगों को मौका देना चाहिए। सोचने की बात है कि 'कांसोलिडेशन' चाहिए, यह बड़कर उसके पीछे पड़े और यह भी न हो और प्राप्ति में भी हीनता न आये तो क्या रहा हाथ में? इसलिए समझना चाहिए कि ग्रामदान-प्राप्ति में तीव्रता आनी चाहिए।

राज्यदान के बाद ?

आज दिल्ली में क्या हो रहा है? बहुत से महत्त्व के प्रश्नों के उत्तर 'कांसोलिडेशन' (सर्वानुमति) के बँध नहीं हमलिन हों सकते हैं। पार्लियामेंट, चीन, नागालैण्ड का प्रश्न, भाषा का प्रश्न, इन सब प्रश्नों के उत्तर कोई एक पार्टी नहीं दे सकती है। मसल में सबसे बड़ा पक्ष है कांग्रेस, लेकिन उच्च पक्ष के अन्दर भी कुछ तय करने के लिए 'कांसोलिडेशन' (सर्वानुमति) की जरूरत होती है, और यहाँ तय होना है, तो भी कांग्रेस की छात्र यह प्राप्ति नहीं है कि वह किसी भी एक प्रश्न को हल कर दे। नागालैण्ड का छोटा सा प्रश्न भी वह हल नहीं कर सकती है। हर प्रश्न के लिए 'बान्नेसस' (सर्वानुमति) की जरूरत है। हमने देखा कि सविद सरकारें बनीं,

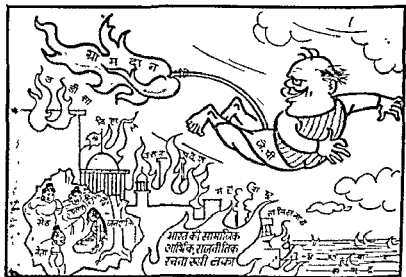
उनमें शान्तिकारी लोग बैठें, लेकिन 'बान्नेसस' नहीं बना, इसलिए वे एक पक्ष भी धारण नहीं कर सके। आज देश भूखा है, नगा है, इसलिए सब पार्टियों को मिलकर एक राय बनानी होगी। आज देश की परिस्थिति में यह जरूरी है कि भूमिदान, भूमिहीन और गृहकार, सब मिलकर ग्रामसभा में बैठें और सोचें।

क्रांति का काम : विचार फैलाना

पूँकि मैं साम्यवाद और लोकतांत्रिक समाजवाद में से इन आन्दोलन में प्राया है, तो प्राप्ति के लिए मुझे कोई बन्धन नहीं है। लेकिन अगर मुझे चुनकर बना पड़ेगा कि जो ग्रामदान हुए हैं, उनमें बैठकर कुछ काम करना है या जो गाँव ग्रामदान नहीं हुए, उन्हें ग्रामदान करना है, तो मैं ग्रामदान पराना ही पसन्द करूँगा। हमें खुशी है कि प्राप्ति के बाद वे पुष्टि का काम करें। वरना वे बड़ा कि पुष्टि हो गयी मानी ग्राम-निर्माण हो गया। जिज्ञा-प्रधिकारी, पंचायत समितिवाने, शिक्षक आदि सब लोगों को पुष्टि का काम करना चाहिए। वे हमसे बड़े विप्लवकरण वर्ग रहें सब काम करें और शान्ति का काम, यानी विचार फैलाने का काम धारण करें।

आज से निवेदन है कि प्राप महात्माजी के बारे में आज ही निगम कीजिए। केवल अपनी शक्ति को देकर, अपने ही भरोसे

यह निगम नहीं करना है, कुछ इस विचार के भरोसे पर, कुछ गांधीजी की शताब्दी के भरोसे पर, और कुछ बाल-पुष्प के भरोसे पर, निर्णय करें तो मैं मानता हूँ कि अगले साल, २ फरवरी तक महात्माजी हो सकता है, जो आज कठिन लगता है। रचनात्मक कार्यकर्ताओं को यह काम उठाना चाहिए। गांधीजी आज होते तो इन रचनात्मक कार्यों को कुछ नया रूप दें। 'इटीपेटेड डेवलपमेंट' (क्षेत्रीय विकास) आदि की बात हम बहते हैं, लेकिन अपने को छोटे-से छोटे में रखते हैं। वास्तव में निर्माण करना है तो प्रखण्ड-दान, या जिलादान होना चाहिए, अभी प्राप के काम के लिए व्यापक धाराएं मिले। स्वावलम्बन करना है तो वन-से-वन प्रखण्ड या क्षेत्र तो मिलना ही चाहिए। नहीं तो व्यक्तिगत स्वावलम्बन करना हो तो कुछ ब्रह्मी लोग करते रहेंगे। महाराष्ट्र और गुजरात में ऐसे ब्रह्मी ज्यादा हैं। लेकिन अभी हमें समग्र विकास की बात सोचनी चाहिए, 'करल डेवलपमेंट' करना चाहिए। 'कम्मुनिटी डेवलपमेंट' का उद्देश्य सफल नहीं हुआ, क्योंकि 'कम्मुनिटी' ही नहीं बनी तो 'डेवलपमेंट' कैसे होगा? एस० के० डे० ने बड़ा था कि प्रापदान के द्वारा 'कम्मुनिटी' बनती है, तब 'डेवलपमेंट' होगा। हम सर्वांगीण दृष्टि से विचार करते हैं तो काम करने के लिए कुछ सुझाव चाहिए, जो ग्रामदान से मिलेंगे।



वे० पो० शात्रकल लंकादहन करते फिर रहे हैं।—विनोबा

वर्तमान जागतिक सदर्म और गांधी दिशा

[गांधी विचार और पद्धति पत्रसमय जागतिक सदर्म में कितनी प्रबल और प्रभावकारी है यह चेकोस्लोवाकिया की घटनाओं से स्पष्ट होता है। साथ ही चेकोस्लोवाकिया की जनता के आन्धव विश्वास प्रतिहार से इस बात का भी दर्शन होता है कि दुनिया भर के जन हृदय में किस तरह गार्भीयत्व पल और पुस रहा है। सोवियत प्रभुत्व है ही सतीशकमार द्वारा चेकोस्लोवाकिया के पड़ोसी देश जर्मनी में भजा हुआ यह नोट ।—सं०]

चेकोस्लोवाकिया ने पिछले दिनों विश्व के राजनयिक समीक्षकों को अचरित और आश्चर्य में डाल दिया। घटनाएँ इतनी तेजी से घट रही थीं और परिस्थितियों में इतना विरोधाभास था कि बित्ती भी स्पष्ट नहीं कर पाएँ। क्या सामान नहीं है। इन सारी उल्लेखनीय घटनाओं के पीछे किसका हाथ है यह शायद कभी नहीं जाना जा सकेगा। पर इन सबकाई को छुटाना नया या सचता कि वेक प्रौर स्लावाक जनता विगायी बुद्धिजीवी और सामान्य जन समाज के लिए लाभायित है। मुक्ति की इन भ्रम्य लानता को परि भोले समय के लिए भी प्यारा ही तो टका और मनोमन्यो का शहरा लिये विना यह समझ नहीं है। पर चेकोस्लोवाकिया की घटनाओं ने यह निष्कर्ष देना है कि आर्थिक प्रतिकार की जन शक्ति का सामन में टैक और भ्रमणजन्य प्रत्याह्वारिक निरुद्ध में तथा पुनः पालन के हो गये हैं।

जब बारदा सधि की सातमेना ने परोस्लोवाकिया की राजधानी प्राग सहित सभी प्रमुख शहरों पर कब्जा कर लिया तब सामान्य जनता के सामने दो ही रास्ते थे या ही सम्पूर्ण समर्थन या अर्द्धिक प्रतिकार एक सेना के साथ सम्पूर्ण समर्थन। सन् १९४६ में ऐसा वरह रही टक हुररी पड़ने से पर हुररी में टैक ना जवाब बहूक स विना प्रौर परिणामस्वरूप एक भाग रत्नगत हुआ और स्वतंत्रता की शक्ति का समाप्त कर दिया गया। पर चेकोस्लोवाकिया की जनता ने टक भा जवाब चुने से विना प्रौर हस्तनिष्ट दती की अपनी सातत विस्था ने वा जयधर ही पड़ी मिला। आर्थिक लाभसेवा में पारिवारिक हाउज राष्ट्रपति भवन रैडियो-स्टेशन आदि सभी प्रमुख स्थानों पर कब्जा कर लिया था पर स्वातंत्र्यवादी ने जनशक्ति के प्रभुत्व पालन के साथ आभारजनक सेरी से एक

अवकाश उद्धार लाना काठिन किया। ये स्वातंत्र्यवादी प्रारण में बराबर सतक कायम रखने में सक्षम हो सके प्रौर स्वातंत्र्य-शक्तियों तथा जनता की सगठित रख सकने में काम पाव हो सके। तरुण बुद्धिजीवी और विद्यार्थी सोवियत-सैनिकों को समझाने लगे कि सम्बन्धन चेकोस्लोवाकिया पर कोई खतरा नहीं है प्रौर सैनिक नियंत्रण की कोई जरूरत नहीं है। बीमारों पर बड़े बड़े पोस्टर तथा नारे लिखे जाने लगे कि 'दुबके जिंदाबाद।' तसी सेना वापस जाओ इयदि। ये तरुण

सत्योद्युक्त

सनी टकों पर भी नारे लिखने लगे। कुछ तरुण तो टकों के सामने गेट मये और टकों को शरणे रखने से रोक दिया।

यूरोप में पहली बार

आर्थिक प्रतिकार का ऐसा उदाहरण स यय यूरोप में पहली बार प्रभुत्व किया है। पुनरुत्पन्न-निष्ठा में घामा की थी कि भीम काय टकी की देखने ही सामान्य जन प्रयोज्य होकर पुनः टैक देना पर वा तीन दिन स ही सोवियन कमाण्डों और बन्धुनिष्ठ नेताओं ने इन लिश कि भले ही प्रोवाकिया टौर पर उड़ीने बेर घरनों पर कब्जा कर लिया हो किन्तु अचलितय में चेक-जनता की स्वातंत्र्यलालना को दबाना प्रौर सामान्य जन के शिनों पर कब्जा करना अर्भव है।

१९०० उदात्तादी बन्धुनिष्ठ प्रतिनिधियों ने सोवियत टकी की धृया के वावजूद प्राग में बन्धुनिष्ठ पार्टी का एक अडवाउड अधिवेशन बरके पार्टी के नियमों के प्रनुसार नयी कार्यकारिणी का चुनाव भी कर माला। इन नयी कार्यकारिणी में अधिकांश स्वातंत्र्यवादी सम्पन्न चुने गये। भले ही दाम में इन कार्यकारिणी की सोवियत प्रभाव के नीचे सली

कार कर दिया जाय पर इन आर्थिक कदम में स्वातंत्र्यवादीयों की निर्भीकता और निष्ठा भी छा रही है। इतिहास के पन्नों पर टाक ही थी। सभी प्रौर जम्मे बालोबाले अनेक हिण्डो प्रौर बोडनिक तरुणों ने कण्ठ भंग कर के प्राग के प्रमुख बाजारों में प्रदर्शन लिये घरने दिये और २६ घंटे का सनान किया। सामान्य जनता ने इन प्रतिनिधियों की यदि तावसे ही टाकने की कायिप्य करती ही वह कल्पने ही कल्प से अपने को टूटी गाबिन करती कि हम तो सामान्य जनता की मुक्ति के लिए यहाँ भाये हैं।

अनर्थाक भी प्रवलता

चेक-जनता ने हिंसा या प्रतिकार हिंसा से नहीं किया उ होने प्रत्या माहृग नहीं सोचा। एकना नहीं टूटन थी। अपनी राजनीतिक परिस्थितियों को बंद नहीं किया। उदात्तादी नेनाभा ने प लिगामेंट का अधिवेशन पार्टी की अधिवेशन मजदूर सभों का अधिवेशन ऐसे छू रखा मानो देश में सोवियत सेना है ही नहीं। इन अधिवेशन में एर रबर में सचन यही मांग की कि बारदा सधि की सेना वास्तव जाये प्रौर चेक सरकार को अपनी समस्याओं में चुन-चुन निबटन का प्रवसर दिया जाव। जनशक्ति ने सुनिधा के लोचन पर सोवियत-सेना पर तथा बन्धुनिष्ठ नेताओं पर एक जबर-स्त नैतिक प्रभाव डाला।

भले ही सोवियत-टैकों ने रैडियो-स्टेशन की इमारत पर कब्जा कर लिया था पर भी चेकोस्लोवाकिया रैडियो की मावाज यूरोप भर में निरन्तर गुनावो दती रही। सोवियत-सेना इन अडवाउड रैडियो का पता लगा सकने में पूरी तरह अक्षम प्रौर घण फन रही। इन 'रेडियो' प्रौर पत्रिकाओं द्वारा ये चेक-समाज प्रभावित करवाने रैडियो-स्टेशनों की आवाज को जाम करने

के लिए विभिन्न मशीनों तथा अन्य सामानों को लेकर आनेवाली सोवियत ट्रेनों को चेकोस्लोवाकिया में २४ घंटे लेट कर दिया गया। रेल-कर्मचारियों ने छोटे-छोटे ऐमोडेंट करके इंतजाम में खराबी बता करके भयबा प्रत्य किसी सहान्ते से रेलों को धीरे चलाया। शीकट टूकों में भर-भर कर जब चेकोस्लोवाकिया की धरती पर पहुँचने लगे तो लोगों ने मटकों पर से गस्ते बतानेवाले निशान धा तो हटा दिये या उल्टी तरफ लगा दिये। गाँवों और नगरों के नामोबाले माइनबोर्ड भी हटा दिये गये, ताकि नोचियत-सेना के पहुँचने में शेर हो जाय और इस सम्बन्ध में जनता को ठीक तरह से आगाह कर दिया जाय।

वहूँ और विकसित देशों की छोटी और अविश्वसित राजनीति जिना पक्षों के प्रतिहार की यह घटना पूरे यूरोप में अद्भुत मानी जा रही है और

कुछ लोग तो इस प्रतिहार की तुलना गांधीवादी या माटिन सूपर किंगवादी प्रतिहार के साथ कर रहे हैं। जहाँ चेक जनता इस तरह के अहिंसक प्रतिहार के लिए प्रशंसा और बर्बाद की पात्र है, वहाँ टैकों के बल पर राजनीतिक खेल रचनेवाले दया के पात्र है। 'जिमकी लाठी उसकी भैंस' के सिद्धान्त पर चलनेवाले ये राजनीतिक लोग अभी भी वार्षिक युग में जी रहे हैं। कुछ समय पहले डेमोक्रेटिक रिपब्लिक में अमेरिका ने ठीक ऐसा ही खेल किया था। वहाँ अमेरिका जनतंत्र की रक्षा के लिए पहुँचा था। इस समय विद्यतनाम में अमेरिकी दखल भी ऐसा ही भद्रा राजनीतिक खेल है। विद्यतनाम में जनतंत्र की रक्षा का दावित्व अमेरिका संभाल रहा है, टैकों और वनों के बल पर तथा हजारों मनुष्यों की भीतों के भूजव पर। इस चेकोस्लोवाकिया में 'समाशवादा' की

रफा का दावित्व पूरा कर रहा है, टैकों के बल पर। यह है इन विकसित और 'बड़े' देशों की 'विकसित' और 'बड़ी' राजनीति, जिसे छोटा सामान्य आदमी ममस नहीं पाता। न तो विनाश अमरीकी सेना नियतनाम में विजयी हो सकती है और न वात सेना चेकोस्लोवाकिया को दबा सकती है। पर यह छोटी-सी बात मोटी घबल के राजनीतिक समझ नहीं पाते।

भूदान तहरीक

उर्दू भाषा में अहिंसक क्रांति की

संदेशवाहक पाक्षिक

वाकिक शुल्क ४ रुपये

सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी-१

भूमि-समस्या और ग्रामदान

गांधीजी ने १९४५ में लिखा था :

"किमान याने भूमि जोतनेवाला, चाहे वह भूमिधारी हो या भूमिहीन श्रमिक, सर्वप्रथम श्राव्य है। वही भूमि का नमक भ्रववा प्राण है, अतः उसका वास्तविक अधिकारी भी वही है, न कि वह जो केवल मालिक है और जोतना नहीं। लेकिन अहिंसक पद्धति में भूमिहीन श्रमिक न जोतनेवाले मालिक को जबरनू बेदखल नहीं करेगा। उसकी कार्य-पद्धति ही इस प्रकार की होगी कि जमींदार द्वारा उसका दोषपूर्ण प्रसम्भव हो जाय। इसमें किसानों के परस्पर निकटतम सहकार-सद्भाव की प्रतिबन्ध भावव्यक्तता है। इसके लिए वहाँ भी जरूरत हो, विशेष संगठन या समितियाँ बनायी जायें। हमारे ज्यादातर किमान बे-बडे-लिखे हैं। प्रीति व स्कूल जाने सामक उम्र के नौबतारों को शिक्षित करना होगा। भूमिहीन श्रमिकों का वेतन-मान इतना तो ऊँचा उठना ही चाहिए, जिससे कि वे एक सामान्य सुखप्रद जीवन बिना सकें। इसका अर्थ है कि उनको संतुलित आहार मिले, रूढ़ने को पसल तथा पहनने को बपडे हो, और उनकी स्वास्थ सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके।"

आप इन करोड़ों किसान भाइयों को अपने पाँवों पर खड़ा होने के लिए समर्थ करने में क्या कर रहे हैं ?

ग्रामदान वह कार्यक्रम है, जिसके जरिए आप अहिंसक पद्धति से यह कर सकते हैं।

सन् १९६६ गांधीजी की जन्म-शताब्दी का मास है।

भाइए, हम सब तुरन्त इस काम में जुट जायें।



राष्ट्रीय गांधी जन्म-शताब्दी समिति की गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति द्वारा प्रसारित

नहीं है। क्या इसका अर्थ आन्दोलन पर नहीं पड़ेगा ?

उत्तर—गांधीजी के प्रयोग में दो प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती थी—एक विधायक, दूसरी प्रतिकारात्मक। प्रतिकारात्मक प्रक्रिया का उद्देश्य प्रचलित बुराइयों का इतिहास की पद्धति से निवारण करना था, और विधायक प्रक्रिया का उद्देश्य नयी समाज-रचना के बुलन्दगुण प्रस्तुत करना था। यह तो स्पष्ट ही है कि ये नमूने आदर्श नहीं हो सकते थे, परन्तु नयी समाज-रचना का इतिहास प्रवर्धन कर सकते थे। बीजपाणित की परिभाषा में इन्हें संकेत कह सकते हैं। गांधीजी का रचनात्मक कार्यक्रम और उस कार्यक्रम को कार्यान्वित करनेवाली संस्थाएँ गांधी के अभीष्ट समाज का इतिहास करती थीं। परन्तु उस परिस्थिति में इतना प्रयास नहीं था। जो राज्य-पद्धति हम देश में बढभूल हो चुकी थी उसकी जड़ें उखाड़ने के लिए प्रतिकार की भी आवश्यकता थी। गांधी ने ऐसी प्रतिकार-पद्धति का शोध किया जो नयी रचना के लिए अनुकूल ही नहीं बल्कि उपकारक हो। रचना प्रतिकार की शक्ति की पोषक हो और प्रतिकार रचना की क्षमता के अक्षुण्ण हो। यह धारणा ही विशेषतः गांधीजी प्रक्रिया में थी। स्मरण रहे कि गांधी ने बल हमेशा रचना और सहयोग पर दिया। उन्होंने प्रतिकार को परिस्थिति-विशेष में अतिबाध्यता प्राप्त कर्तव्य माना। इसलिए वह कह सका कि रचनात्मक कार्यक्रम को परिपूर्ण ही स्वराज्य है। परन्तु परिस्थिति-विषम भी : रचनात्मक कार्यक्रम पूर्णरूप से सम्पन्न नहीं हो सकता था। इसलिए प्रतिकार के प्रयोग भी आवश्यक के रूप में करने पड़े। १९१६ में जमला के नजदीक कोटपड़ के निवासी श्री एस. ई. स्टोवेल ने गांधीजी को पत्र लिखकर कहा था—“भाषकी भूमिका तो धार्मिक और नैतिक है। धार्मिक साधन ‘मिडिल रेंजस्टेंट्स’ (गिरि प्रतिकार) का नहीं, बल्कि ‘सिविल असिस्टेंट्स’ (गिरि सहयोग) का होना चाहिए।” गांधी ने उत्तर दिया—“मेरा प्रतिबन्ध गिरि तो है ही, इसके प्रतिरिक्त सहयोगात्मक भी है।” आज भाये दिन विनोबा के मुँह से हम ‘मिडिल असिस्टेंट्स’ की बात सुनते हैं। प्रतिकार की बात भवचित ही सुनते हैं। कारण यह है कि

आज साम्यवादी नागरिक के हाथ में बोट की प्रदम्य शक्ति है। यह शक्ति ऐसी है जो देखने में तो प्रत्यक्ष साम्य मायूम होती है, लेकिन सिंहासनो को उलट सकती है; भूमिभण्डो को बना सकती है, विगाड सकती है। आज वह शक्ति अचानक कारणों से कुठित हो गयी है। उन कारणों का निराकरण भी जड़ित नागरिक की मददान की प्रक्रिया से हो सकता है। इसलिए आज के सर्वभूमि में प्रतिकार उतना प्रासंगिक नहीं है जितना गांधीजी के जमाने में था। मददान के प्रयोग को युवा-कार प्रतिकार के अन्वय साधनों पर नागरिक का ध्यान केन्द्रित करने में हम लोचनचक्र के अधिष्ठान को शक्ति पहुँचाते हैं। इसलिए आज की परिस्थिति में जिन अन्वय उपायों का प्रयोग हम करें उनका स्वरूप ऐसा होना चाहिए जिससे नागरिक का विश्वास मददान की प्रक्रिया में बढता बढा जाय। इस विषय में गहराई से विचार करने की आवश्यकता है।

प्रथम समाज-रचना की बुनियादों की बदलने के लिए यह जरूरी है कि प्रचलित मूल्यों को हम बदलने की कोशिश करें। आमदान की प्रक्रिया में हम देखते हैं कि उन्हीं लोगों का सहयोग पहले प्राप्त करने की कोशिश की जाती है जो प्रचलित मूल्यों के कारण प्रतिष्ठान के पद पर हैं। फिर आमदान द्वारा मूल्य-परिवर्तन कैसे हो पायेगा ?

उत्तर विधायक नाट्य की प्रक्रिया में भी हमारा अभिप्राय तो यही है कि समाज में प्रचलित प्रतिष्ठित मूल्यों को हम बदलें। आज समाज में तीन मूल्य प्रतिष्ठित हैं—धन, सत्ता और शक्ति। आज के नागरिक समाज में ये मूल्य पैदा, दुर्लभ और उन्हे के रूप में प्रकट होते हैं। सवाल यह है कि क्या हमारी विधा एक शान्ति की प्रक्रिया में तीव्र मफकठा प्राप्त करने के लोभ से हम उन्हीं मूल्यों को स्थायी बनाते चले जायेंगे ? आमदान, चन्दा, साहित्य-प्रचार, इत्यादि के अधिदान में हम पैदावाला दूकमतवाला, और उन्हेवाला, इन तीनों की या इन तीनों में से किसी की अरण सेने तो हमारे आन्दोलन से समाज को प्रचलित प्रतिष्ठानों का निर्मूलन नहीं होगा। तब क्या ऐसे व्यक्तियों का बहिष्कार किया जाय ? बदायि नहीं। हमारा

आन्दोलन तो सार्वत्रिक सहयोग का है। उनमें हमें सबका सहयोग और सहभाव चाहिए। यही हमारा सम्बल है। तो फिर इसमें से कौन-सा रास्ता है ? रास्ता यही है कि हम सबका सहयोग चाहें और खोजें लेकिन किसी के आश्रित न बनें। सहयोग में हमारी अपनी शक्ति चाहे कितनी ही प्रबल क्यों हो, शहीत है। हमारी अपनी शक्ति में आत्म-मर्यादा और आत्म-प्रत्यय निहित है। आत्म-प्रत्यय सर्वद पिन्यान्वित रहता है। उसमें अधिनयन या घुटणा नहीं होती। सबके सहयोग का समावद है, आश्रय किसी का नहीं। हमारे आन्दोलन के सर्वभूमि में यही योग या धर्म-कोशल है।

स्वस्थ, विचार-श्रेयक तथा ज्ञानवर्द्धक

सामग्री देनेवाला मासिक

जीवन साहित्य

पिछले २६ वर्ष से पाठकों की सेवा कर रहा है। उसने लोक-शक्ति को ऊपर उठाते जा निरंतर प्रयत्न किया है। उसके विशेषकों के लिए पाठक सबालासित रहते हैं। उनका प्राणामी विधायक :

वैष्णव जनु शंकर

जनवरी के प्रथम सप्ताह में निकालने की तैयारियाँ हो रही हैं। तो पृष्ठ का यह विद्योपाक अपनी परम्परा के अक्षुण्ण ही निबलेगा। उसकी रचनाएँ सारा मानव बने की प्रेरणा देगी।

सत्काल

आहूक वन जाहए। बापिक गुल्क केवल पाँच रुपये है। विशेषकों के लिए अनिश्चित कुछ भी नहीं देना होगा, बस उतना मूल्य ३-०० होगा।

सम्पादक

हरिभाऊ, उपाध्याय, पयसल श्रीम

अनुरोधायक, जीवन साहित्य

सत्ता साहित्य मंडल

नयी दिल्ली

विनोबाजी का कार्यक्रम

१ से ३ अक्टूबर तक सर्व सेवा संघ, वाराणसी
४ अक्टूबर से : समन्वय आयोग
१० अक्टूबर तक : योगयवा (विहार)

दैनंदिनी १९६६

गांधी जन्म शताब्दी के अवसर पर
सन् १९६६ की दैनंदिनी प्रकाशित हो
गयी है। उक्त दैनंदिनी प्लास्टिक बरत
के दो भागबंदक भागों में उपलब्ध है।

- पुः कल्पदा
- प्रत्येक पुः पर गांधीजी के प्रेरक वचन
- गांधी जन्म शताब्दी के अवसर पर ईश्वर, श्रमणा, सत्य, सहिष्णुता, धर्मपुत्रता निवारण, वज, सत्याग्रह आदि विषयों के सम्बन्धित गांधीजी के विचारों की ८० पुः को विविध स्वरूप में योग्य सामग्री।
- सर्व श्रेष्ठ संघ और प्रापदान प्रादोषन आदि की प्रस्तावी।

आपूर्ति के नियम

- विभिन्न भागों को २५ प्रतिशत तक कमोका कम दिया जा सकेगा।

दैनंदिनी की कीमत निम्नप्रकार है —

प्लास्टिक बरत सहित डिमाई ६ × ४ × ३ ६० ३-५०

प्लास्टिक बरत सहित आठव ७ × ४ × ३ ६० ३-६०

- एक साद ३० अथवा अधिक प्रतिभाई भेजने पर बहुत के निशुल्क रूपसे भेजने की विशेषता को लागू होने से भेजने पर वैश्विक पोस्टेज और तेल मध्यम मात्रा को बहुत करना होगा।
- दिनांक १९६६ दैनंदिनी प्राप्त नहीं की जागी उन्नी ही भेजने के दिनांक के बाद भेजने की विशेषता को लागू करना सखर रना नहीं है पर भीमान अर्थात् निशुल्क साद वा १०० री० पी०, बैंक के माध्यम दैनंदिनी की विन्दी भेजने।
- भाग्य मान, पत्रा निशुल्क भेजने के लिए का नाम साफ-साफ लिखने और यह लिखने के लिए को लिखने कि लिखने को पी० पी० वा बहुत से भेजी जाय वा प्रादा दैनंदिनी की कोषण में से २५ प्रतिशत कमोका कम कर देय करिय निशुल्क रहे हैं।

सर्व श्रेष्ठ संघ प्रकाशन,
राजवाड़ा, आराधनी—१

आन्दोलन

के समाचार

उत्तर प्रदेश की विन्दी

उत्तरप्रदेशी विन्दीयान के परभाव उत्तर-
प्रदेश क्षेत्र के चमोकी जिले में मचन रूप में
प्रापदान परिभाषा १८ प्रमाण के प्रारम्भ
हूमा। केदावनाम और मन्दाकिनी विन्दी
साथी में ६ प्रापदान प्राप्त हुए। चमोकी
के जिलाधिकारी भी प्राप गिहू भी गाँव गाँव
प्रापदान कराने में सहयोग दे रहे हैं। दिहरी
जिले के जिलापुत्र इन्जल में ३१ असाद ४ प्राप

हूए। गड़वाण में २ असाद पर से विन्दीयान-
परिभाषा चलाने की योजना है। पामोय
के परक विन्दीयान साद में ५० प्रापदान हुए।
उत्तरप्रदेशी में विन्दीयान के बाद भव रथानीय
सहयोग से पुष्टि कार्य किया जा रहा है।

अधिका जिलापुत्रा के बाद चौकगोह
सहयोग से पुष्टि कार्य सबसे पहले किया गया
है। दूरेअपरा हाटर शालेय और सुनपुत्र
इन्टर कालज में तरण साहित्यता के गिबिर
स्वातीय सहयोग से साद प्राप्त हुए। जिले के
कोले कोले में ११ मिठम्बर को विन्दीयान-
जय ती सो-जाल मनेापी गयी।

पामोय के समाचार मिला है विन्दीयान-
७५ ता ४ असाद पर सर्वोत्तम साहित्य प्रदर्शनी

गांधी वीर सामोयोगी राष्ट्र की परषद्वयवस्था की रीत है
इतके सम्बन्ध में पूरी जानकारी के लिए

खादी प्रामोयोग

(मासिक)

(संपादक—जगदीश नाशपय वर्मा)

प्रकाशन वा चौपटकी वर्ष।
विशाल जानकारी क प्रापान पर धाम
विशाल का सम्बन्धों और सम्बन्ध
साथों पर वर्ष करने-कली परिक।
सादी और सामोयोग के अनिर्दि-
तामोय उद्योगीकरण की सम्बन्ध लं
नया प्रहोकरण के प्रकार पर मुक्त
विचार विमर्श का माध्यम।
पामोय धर्मो के उगाधनों में उन्नत
साधनिक उन्नतापुत्री के संयोजन क
सम्बन्धन कार्य की जानकारी देनेगली
मासिक पत्रिका।

बिबिध दृष्टक २ रुपये ५० पैसे
अथ ४६ ०५ पैसे

गांधी में उर्जा से संबंधित विषय पर मुक्त
विचार विमर्श का माध्यम।

मासिक दृष्टक ४ रुपये
९६ प्रति १० पैसे।

सर्व श्रेष्ठ के लिए लिखें
"प्रचार निर्देशानुसंग"

खादी और प्रामोयोग कमीशन, 'प्रामोयद'
इर्ला रोड, विले पार्ले (पश्चिम),
मुम्बई—४६ ए एम

का उद्घाटन जिलाधिकारी श्री भागुछन्द पाण्डे ने किया। उन्होंने जिले भर में गांधी-शताब्दी तक माहिल्य-प्रसार एवं ग्रामदान-प्रभियान में सार्वजनिक सहयोगी की भूमिका की।

प्रतापगढ़ जिले में जिलादान-प्रभियान की दृष्टि से १२ सितम्बर को आयोजित तीन वृहद् गोश्रियों में उ० प्र० शान्ति-सेना समिति के संयोजक श्री सुरेशराम भार्गवे ने जमाने की 'कुनौतो का उत्तर ग्रामदान' पर विशेष रूप से प्रकाश डाला। रोटी-नलक को गोश्री के बाद स्वामीय ५ नेताओं ने ग्रामदान के प्रभियान में समय देने का निश्चय किया।

फर्रुखाबाद जिला परिवर्द्ध के अग्रदूत ने प्रदेश के समस्त जिला परिवर्द्धों के अध्यक्षों के नाम एक परिपत्र प्रसारित कर ग्रामदान ग्राम-स्वराज्य की महत्ता समझाते हुए इन समयानुसृत नान्ति के प्रति कर्तव्य-पालन-हेतु सहयोग प्रदान करने की भूमिका की है। कन्नौज तहसील में ४ से ११ सितम्बर तक चलाये गये प्रभियान में ३६२ ग्रामदान प्राप्त हुए।

फर्रुखाबाद जिले में ६५६ ग्रामदान हुए। भाजमगढ़ जिले से प्राप्त सूचना के अनुसार अग्रजगतद ब्लॉक में ग्रामदान-प्रभियान

चलाया गया और प्रखण्डदान पोषित हुआ। इन प्रखण्ड में १६४ ग्रामदान हुए हैं। इन जिले में अब कुल ६०६ ग्रामदान हुए।

गोरखपुर से समाचार मिला है कि १८-१९ सितम्बर को श्री गांधी आश्रम मगहर (बंसी), में क्षेत्रीय ग्रामदान शिविर हुआ, जिसमें श्री दादा धर्माधिकारी का प्रेरणादायी सूचन हुआ। श्री दादा ने गोरखपुर विश्व-विद्यालय के प्रोफेसरों एवं शिक्षकों को गोश्री में गांधी दर्शन के जागतिक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

प्रदेघदान की दृष्टि से ३८ जिलों में चल रहे ग्रामदान-प्रभियान की २५ सितम्बर तक प्राप्त फलश्रुति के अनुसार ८,५५८ ग्रामदान, ५६ प्रखण्डदान एवं २ जिलादान प्राप्त हुए।

हरीद्वी जिले से तार द्वारा समाचार मिला है कि बिलग्राम तहसील के मल्लखो ब्लॉक में १७१ एवं बिलग्राम ब्लॉक में १६५ ग्रामदान प्राप्त हुए।

फैजाबाद जिले के पूरा बाजार ब्लॉक में २५ ग्रामदान और हो जाने से प्रखण्डदान पूर्ण हो गया।

दस प्रकार २६ सितम्बर '६८ तक कुल ८,८७१ ग्रामदान, ५० प्रखण्डदान और बलिवा-उत्तरवासी के जिलादान घोषित हुए। दोष जिलों में प्रभियान चल रहे हैं।

—पिन माई संयोजक,

उ० प्र० ग्रामदान प्राप्ति समिति,
राजघाट, धारापत्नी-१

बिहारदान

प्राप्त सूचनाओं के अनुसार बिहार के सारन जिले का जिलादान ३० सितम्बर '६८ तक प्राप्त कर लेने के लिए सूफानी प्रयाग जारी है। पूरी भाषा है कि हमी धरधि तक उत्तर बिहारदान का काम सम्पूर्ण हो जायगा। यह भी अन्दाज है कि '६८ के अन्त तक बिहारदान का सम्पूर्ण सम्पूर्ण करने के लिए अब दक्षिण बिहार में पूरा जोर लगाया जायेगा।

शांति-सेना विद्यालय

बन्सुरवा प्राम, इन्दौर-रिजिन महिला शांति-सेना विद्यालय का नया मद्र २ अक्टूबर '६८ में प्रारम्भ हो रहा है।

जिलादान के बाद

१५ सितम्बर '६८ को पूर्णिया जिला के सभी राजनैतिक एवं सामाजिक संस्थाओं के प्रमुखों तथा स्त्रीवादी धाने के सभी राजनैतिक पार्टियों, सामाजिक संस्थाओं के कार्यकर्ताओं तथा झगड़े में सम्बन्धित किसान-बँदोंदारों को एक विद्यालय जनसभा सर्वोदय प्राथम स्त्रीवादी में हुई। सभा का मार्ग-दर्शन श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी कर रहे थे, अध्यक्षता जिला कांग्रेस कमिटी के अध्यक्ष श्री शारोगा प्रसाद चौधरी ने की।

सर्वोदय नेता श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी ने बँदक के उद्देश्यों पर प्रकाश डालते हुए उपस्थित जन-समुदाय से यह निवेदन किया कि कोर्ट में दायर ६५ हजार दायतल-सूट एवं अन्य मुकदमों को प्रापसी हमतीयों द्वारा निपटाने का प्रयत्न किया जाय। श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी के प्रस्ताव एवं श्री सुबराज सिंह के समर्थन पर सर्व-सम्मति से 'स्त्रीवादी धाना बँदोंदारी विचार सममोदा मसिधति' गठित करने का निश्चय हुआ। निम्नानुसार श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह के प्रस्ताव एवं श्री सुबरेश्वर प्रसाद सिंह के समर्थन पर सर्वसम्मति से श्री वैद्यनाथ प्रसाद चौधरी को सभा की प्रोर से अधिकार दिया गया कि वे सदस्यों का मनोन्मन कर दें।

पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता

श्री तुलसीदासजी राठी का निधन
राजस्थान के पुराने रचनात्मक कार्यकर्ता श्री तुलसीदासजी राठी का निधन १६-६-६८ की राति में जोधपुर में हो गया। उनकी उम्र ६२ वर्ष की प्रोर पिछले कुछ दिनों से वे अँधर के रोग से पीड़ित थे। दिवंगत धारणा की हमारी वित्त मद्दत।



गांधी जन्म-शती के अवसर पर

विशेष सुविधा

'सूदान-पत्र' के पाठकों को कृपि साहित्य पर २५ प्रतिशत कमीशन
डा० मिश्र एवं डा० तिवारी लिखित :
मिट्टी का प्रारम्भिक अध्ययन २.७५
कृषिशास्त्र को रूपरेखा ५.७५
(भूमि एवं भूमि उर्वरता)
कृषिपालन की रूपरेखा ५.७५
(पशुपालन के विद्यान्त)
नवीन दृष्टिबिज्ञान भाग-१ ३.५०
(भूमि एवं भूमि प्रबन्ध)
नवीन दृष्टिबिज्ञान भाग-२ ३.५०
(शास्त्र, विज्ञान एवं पशुपालन)
हिन्दी में प्रतिमाह प्रकाशित होनेवाली सभी विद्यों की पुस्तकों की सूची हमसे नि मुक्त प्राप्त करें।

हिन्दी प्रकाशक संस्थान
पौ० बा० नं० १०६, एरि २११३०
विद्याच मोहन, धारापत्नी
फोन : २११४
तार : प्रकाशक

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या २५ सिगिंग या ३ बालर। विशेषतः एक प्रति : ५० पैसे
श्रीकृष्णदत्त अष्ट द्वारा सवे सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इच्छिदयन प्रेस (मा०) लि० धारापत्नी में मुद्रित

गांधी जन्म शताब्दी पर विशेष भेंट :-

विश्व-साहित्य की अनसोल निधि

ऐतिहासिक आलेख और साहित्यिक प्रतिभा से समन्वित

१९७०-७१

महादेव भाई
की
डायरी
(दिन्यो)

DAY-TO-DAY
WITH
GANDHI
(अंग्रेजी)

सन् १९१७ से १९४२ तक

२० खण्डों में

सत्र खण्ड तक अभी उपलब्ध है

महादेव भाई
द्वारा अंकित

गांधीजी के जीवन का हर पल हर दिन

- राष्ट्रीय आन्दोलन का इतिहास
- विचारों के अन्तस्तन में प्रविष्ट योग
- राष्ट्र-मानस का सजीव चित्र
- अन्तरराष्ट्रीय मन्दर्भ और हलचलें
- ग्रहस्था के अमर पथिक के अभियानों

की

जीती जागती कहानी

विशेष जानकारी के लिए लिखें :-

सर्व सेवा संघ प्रकाशन

राजघाट :: वाराणसी-१